हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गाँन्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : [illegible] श्री मंजर अली साख्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:०:—

गाँन्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया जैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

—:०:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गाँन्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलहबद

ھندی گھر

کلچر پر ھر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ھندی' اردو' انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ھمیں لکھیں۔

ھماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ھندی اور اردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: مو،کیه شری منظر علی سوختہ
صفحے 225' قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواھر لال نہرو
موٹا کاغذ' موٹا ٹائپ' بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران

275 صفحے' دام ڈھائی روپیہ

ھندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

قیمت دو آنے۔

ھندستانی کلچر سوسائٹی

145' مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Mutthiganj, Allahabad.

सांस्कृतिक साहित्य

سانسکرتک ساهتیہ

हज़रत मोहम्मद और इसलाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया

इसलाम के पैग़म्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

महात्मा ज़रथुश्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

यहूदी धर्म और सामी संकृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संकृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

सुमेर बाबुल और असुरिया की ाचीन संकृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

प्रचीन यूननी सभ्यत और संकृति.

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिज़वी, क़ीमत—दो रुपया

आग और आँसू

(भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख़्तर हुसेन रायपुरी, क़ीमत—डेढ़ रुपया

क़ुरान और धर्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, क़ीमत—डेढ़ रुपया

झंकर

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय फ़िराक़, क़ीमत—तीन रुपया

حضرت محمد اور اِسلام

لیکھک—پنڈت سندر لال، مولیہ—تین روپیہ

اِسلام کے پیغمبر کے سمبندھ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اِس سے سندر کوئی دوسری پستک نہیں

حضرت عیسیٰ اور عیسائی دھرم

لیکھک—پنڈت سندر لال، مولیہ—ڈیڑھ روپیہ

مہاتما زر تھستر اور ایرانی سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

یہودی دھرم اور سامی سنسکرتی

لیکھک وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

پراچین مصر کی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

سمیر بابل اور اسوریا کی پراچین سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

پراچین یونانی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

گنگا سے گومتی تک

(پرگتی شیل کہانی سنگرہ)

لیکھک—شری مجیب رضوی، قیمت—دو روپیہ

آگ اور انسو

(بھاؤپورن سماجک کہانیاں)

لیکھک—ڈاکٹر اختر حسین رائے پوری، قیمت—ڈیڑھ روپیہ

قرآن اور دھارمک مت بھید

لیکھک—مولانا ابوکلام آزاد، قیمت—ڈیڑھ روپیہ

جھنکار

(پرگتی شیل کویتاؤں کا سنگرہ)

لیکھک—رگھوپتی سہائے فراق، قیمت—تین روپیہ

मिलने का पता ملنے کا پتہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी هندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलहबद 145 مٹھی گنج، الہ آباد

नए-नए रास्ते खुलने की आशा है. आकाश के दूसरे गोलों के साथ हमारा सम्बन्ध मानव उन्नति के मार्ग पर एक बहुत बड़ा सीमा चिन्ह है. मानव समाज की इससे बहुत बड़ी आर्थिक और नैतिक काया पलट हो सकती है.

एक ख़ास मज़ाक़ की बात इस बनावटी चाँद के सम्बन्ध में यह हुई कि हीरोशिमा और नागासाकी के बमों द्वारा इन्सानी बरबादी से जिन लोगों के अंतःकरन (ज़मीरों) को चोट नहीं लगी थी, जो लाखों बन्दरों और सुअरों को हर साल अपने साइन्सी तजरबों के लिए तड़पा-तड़पा कर मारते रहते हैं, रूसी सैटिलाइट की एक कुतिया की मौत का ख़याल करके ही उनके दिल पिघल गए और उनकी छातियों से दूध टपक पड़ा !

हम सोवियत रूस को, दुनिया को और दुनिया की जनता को इस नई ईजाद के लिए दिल से बधाई देते हैं.

15-11-57 —सुन्दरलाल

نئے نئے راستے کھلنے کی آشا ہے ۔ آکاش کے دوسرے گولوں کے ساتھ ہمارا سمبندھ مانو اُنتی کے مارگ پر ایک بہت بڑا سیما چنھ ہے ۔ مانو سماج کی اِس سے بہت بڑی آرتھک اور نیتک کایاپلٹ ہو سکتی ہے ۔

ایک خاص مذاق کی بات اِس بناوٹی چاند کے سمبندھ میں یہ ہوئی کہ ھیروشما اور ناگا ساکی کے بموں دوارا انسانی بربادی سے جن لوگوں کے انتہ کرن (ضمیروں) کو چوٹ نہیں لگی تھی، جو لاکھوں بندروں اور سوروں کو ہر سال اپنے سائنسی تجربوں کے لئے تڑپا کر مارتے رہتے ہیں، روسی سیٹیلائٹ کی ایک کتیا کی موت کا خیال کر کے ہی اُن کے دل پگھل گئے اور اُن کی چھاتیوں سے دودھ ٹپک پڑا ۔

ہم سوویت روس کو، دنیا کو اور دنیا کی جنتا کو اِس نئی ایجاد کے لئے دل سے بدھائی دیتے ہیں ۔

—سندر لال ۔ 15. 11. 57

में वह कहीं अधिक सहायक है. इस रास्ते में और गाँधी जी के बताए हुए रास्ते में समन्वय भी हो सकता है और हमारे और दुनियाँ दोनों के लिए हितकर हो सकता है. पर हमारे लिए इस समय सबसे बड़ी जरूरत यही है कि हम राजनैतिक, नैतिक, आर्थिक, औद्योगिक और सामाजिक सब मामलों में पहले अपने अन्दर निगाह डालें और देश की करोड़ों ग़रीब जनता, उसकी आवश्यकताओं और अपने आदर्शों को निगाह में रखते हुए अपने आगे का रास्ता तय करें और विश्वास के साथ उस पर चलें.

रूस का बनावटी चाँद

पिछले कुछ सप्ताह से दुनिया भर के लोगों की निगाहें सोवियत रूस के दोनों सेटिलाइट की तरफ़ जा रही हैं जिन्हें लोग बनावटी चाँद भी कहते हैं. दुनिया भर के अख़बारों में जितनी चरचा इन बनावटी चाँदों की हुई है उतनी शायद ही कभी किसी और चीज़ की हुई हो. इस घटना के हमें दो ख़ास नतीजे मालूम होते हैं. पहला यह कि दुनिया को युद्ध से बचाने और शान्ति क़ायम रखने में इससे बहुत बड़ी मदद मिल सकती है. दुनिया ने देख लिया कि साइन्सी उन्नति की दौड़ में रूस दूसरे सब देशों से कहीं आगे निकल गया. रूस की इस ईजाद ने साबित कर दिया कि यह ज़माना जनता का ज़माना है और साइन्सी और दिमाग़ी दौड़ में भी कोई साम्राज्य वादी देश साम्यवादी या समाजवादी देशों से अन्त में बाज़ी नहीं ले जा सकता. दूसरे देशों के अन्दरूनी मामलों में बार-बार दख़ल देने वाले साम्राज्य वादी देशों के ग़लत मनसूबों को भी इससे काफ़ी धक्का पहुँचा है. यह भी ज़ाहिर है कि इस तरह के ग़लत मनसूबे अभी ख़त्म नहीं हुए हैं. हाल में अमरीका और इंगलैन्ड की तरफ़ से जो ख़बर निकली है कि वह पचास और छोटे बड़े राष्ट्रों को अपने साथ मिलाकर कम्युनिस्ट देशों और ख़ासकर रूस के ख़िलाफ़ एक नया मोर्चा खड़ा करना चाहते हैं, वह ख़ासी अफ़सोसनाक है. ज़ाहिर है कि दुनिया के दोनों प्रधान अखाड़ों में एक दूसरे को मिटाने की घातक इच्छा अभी मिटी नहीं है. पर हमें विश्वास है कि दुनिया के छोटे-छोटे और पिछड़े हुए देश इस बात को समझते जा रहे हैं और समझेंगे कि इस तरह की गुट्टों में शामिल होना उनके अपने लिए कितना घातक और दुनिया के लिए कितना ख़तरनाक है. कुल मिलाकर हमें विश्वास है कि रूस की इस नई ईजाद का असर—जिसका युद्ध विद्या के साथ भी गहरा सम्बन्ध है—दुनिया की शान्ति के लिए अच्छा ही होगा.

दूसरा बड़ा नतीजा रूस की इस नई ईजाद का यह होगा कि दुनिया की जनता, उसकी आर्थिक उन्नति, उसके स्वास्थ्य, उसके फैलाव और उसकी ख़ुशहाली के लिए अब

میں وہ کہیں بہتر اور عام جنتا کے لئے کہیں ادھک ہتکر ہے۔ وشو شانتی کے قایم کرنے میں بھی امریکی راستے کے مقابلے میں وہ کہیں ادھک سہائک ہے۔ اس راستے میں اور گاندھی جی کے بتائے ہوئے راستے میں سمنوے بھی ہو سکتا ہے اور ہمارے اور دنیا دونوں کے لئے ہتکر ہو سکتا ہے۔ پر ہمارے لئے اِس سمے سب سے بڑی ضرورت یہی ہے کہ ہم راجنیتک، نیتک، آرتھک، ادیوگک اور ساماجک سب معاملوں میں پہلے اپنے اندر نگاہ ڈالیں اور دیش کی کروڑوں غریب جنتا' اس کی اوشکتاؤں اور اپنے آدرشوں کو نگاہ میں رکھتے ہوئے اپنے آگے کا راستہ طے کریں اور وشواس کے ساتھ اس پر چلیں۔

روس کا بناوٹی چاند

پچھلے کچھ سپتاہ سے دنیا بھر کے لوگوں کی نگاہیں سوویت روس کے دونوں سیٹیلائٹ کی طرف جا رہی ہیں جنہیں لوگ بناوٹی چاند بھی کہتے ہیں۔ دنیا بھر کے اخباروں میں جتنی چرچا اِن بناوٹی چاندوں کی ہوئی ہے اتنی شاید ہی کبھی کسی اور چیز کی ہوئی ہو۔ اِس گھٹنا کے ہمیں دو خاص نتیجے معلوم ہوتے ہیں۔ پہلا یہ کہ دنیا کو یدھ سے بچانے اور شانتی قایم رکھنے میں اِس سے بہت بڑی مدد مل سکتی ہے۔ دنیا نے دیکھ لیا کہ سائنسی اُنتی کی دوڑ میں روس دوسرے سب دیشوں سے کہیں آگے نکل گیا۔ روس کی ایجاد نے یہ ثابت کر دیا کہ یہ زمانہ جنتا کا زمانہ ہے اور سائنسی اور دماغی دوڑ میں بھی کوئی سامراج وادی دیش سامیہ وادی یا سماج وادی دیشوں سے انت میں بازی نہیں لے جا سکتا۔ دوسرے دیشوں کے اندرونی معاملوں میں بار بار دخل دینے والے سامراج وادی دیشوں کے غلط منصوبوں کو بھی اِس سے کافی دھکا پہنچا ہے۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ اِس طرح کے غلط منصوبے ابھی ختم نہیں ہوئے ہیں۔ حال میں امریکہ اور انگلینڈ کی طرف سے جو خبر نکلی ہے کہ وہ پچاس اور چھوٹے بڑے راشٹروں کو اپنے ساتھ ملا کر کمیونسٹ دیشوں اور خاص کر روس کے خلاف ایک نیا مورچہ کھڑا کرنا چاہتے ہیں' وہ خاصی افسوسناک ہے۔ ظاہر ہے کہ دنیا کے دونوں پردھان اکھاڑوں میں ایک دوسرے کو مٹانے کی گھاتک اِچھا ابھی مٹی نہیں ہے۔ پر ہمیں وشواس ہے کہ دنیا کے چھوٹے چھوٹے اور پچھڑے ہوئے دیش اِس بات کو سمجھتے جا رہے ہیں اور سمجھیں گے کہ اِس طرح کی گٹوں میں شامل ہونا اُن کے لئے کتنا گھاتک اور دنیا کے لئے کتنا خطرناک ہے۔ کل ملا کر ہمیں وشواس ہے کہ روس کی اِس نئی ایجاد کا اثر—جس کا یدھ ودیا کے ساتھ بھی گہرا سمبندھ ہے—دنیا کی شانتی کے لئے اچھا ہی ہوگا۔

دوسرا بڑا نتیجہ روس کی اِس نئی ایجاد کا یہ ہوگا کہ دنیا کی جنتا' اس کی آرتھک اُنتی' اس کے سواستھ' اس کے پھیلاؤ اور اس کی خوشحالی کے لئے اب

खड़ा कर दिया. हाल में रूस से मदद के समझौते की खबरें छपी हैं. हमारी राय इस बारे में साफ़ है. सबसे पहले यह कि न हम यह चाहते हैं और न इसकी ज़रूरत मानते हैं कि भारत किसी भी दूसरे देश के सामने इस बात के लिए हाथ पसारे, या किसी-से-किसी रूप में करज़ा ले. दूसरे यह कि अगर किसी से मदद लेनी ही हो तो वह बजाय दान या नक़द क़रज़े के केवल माल के आदान प्रदान के रूप में होनी चाहिए और वह भी अपनी हैसियत और अपनी बिसात देखकर. चीन की आर्थिक कठिनाइयाँ आज से दस बरस पहले हमारी आजकल की कठिनाइयों से कम नहीं थीं. पर चीन ने किसी साम्राज्यवादी देश के सामने हाथ नहीं पसारा. अपनी औद्योगिक (सनअती) उन्नति के लिए चीन ने केवल रूस से थोड़ी बहुत मदद ली है, और वह मदद भी, जहाँ तक हमें मालूम है' केवल इस रूप में थी कि तीन अरब अमरीकी डालर की क़ीमत का माल, मशीनें इत्यादि, जिसकी चीन को ज़रूरत थी और रूस दे सकता था, रूस चीन को पाँच बरस के अन्दर पाँच क़िस्तों में दे, और उतनी ही क़ीमत का माल, ऐसा जिसकी रूस को ज़रूरत है और चीन दे सकता है, कच्चा माल इत्यादि, चीन रूस को दस साल के अन्दर दस क़िस्तों में दे, और इस लेन देन में रूस का जो रुपया कुछ दिनों अटका रहे उसके लिए एक फ़ीसदी सालाना सूद के हिसाब से उतना ही अधिक माल चीन अपने यहाँ से रूस जाने वाले माल में बढ़ा दे, और बस. तीसरे हमारी साफ़ राय यह भी है कि इस तरह की अगर कोई मदद लेनी ही हो तो हमें साम्राज्यवादी देशों के बजाय जहाँ तक हो सके कम्युनिस्ट या ग़ैर साम्राज्यवादी देशों की मदद का अधिक स्वागत करना चाहिए. इस निगाह से यदि रूस से भारत का इस तरह का समझौता हमें अमरीका या इंगलैन्ड की मदद से बेनिजाज़ कर सके तो उस दरजे तक हम उसे ग़नीमत समझते हैं.

असली इलाज

लेकिन अन्त में हम फिर दुहरा देना चाहते हैं कि देश के जिन दुखों की ऊपर के ख़त में चरचा की गयी है उनका असली इलाज हमारा इन सब बातों में महात्मा गाँधी के बताए हुए रास्ते को ठीक-ठीक समझना और उस पर अमल करना ही हो सकता है. इंगलैन्ड और अमरीका के पूँजी-वादी रास्तों की नक़ल, जो हम इस समय कर रहे हैं, हमारे इन दुखों को और अधिक बढ़ा देगी. रूस और चीन का कम्युनिस्ट रास्ता भी एक रास्ता हो सकता है और है. अंग्रेज़ी या अमरीकी रास्ते के मुक़ाबले में वह कहीं बेहतर और आम जनता के लिए कहीं अधिक हितकर है. विश्व-शान्ति के क़ायम करने में भी अमरीकी रास्ते के मुक़ाबले

کھڑا کردیا ۔ حال میں روس سے مدد کے سمجھوتے کی خبریں چھپی ہیں ۔ ہماری رائے اِس بارے میں صاف ہے ۔ سب سے پہلے یہ کہ نہ ہم یہ چاہتے ہیں اور نہ اِس کی ضرورت مانتے ہیں کہ بھارت کسی بھی دوسرے دیش کے سامنے اِس بات کے لیئے ہاتھ پسارے، یا کسی سے کسی روپ میں قرضہ لے ۔ دوسرے یہ کہ اگر کسی سے مدد لینی ہی ہو تو وہ بجائے دان یا نقد قرضے کے کیول مال کے آدان پردان کے روپ میں ہونی چاہیئے اور وہ بھی اپنی حیثیت اور اپنی بساط دیکھ کر ۔ چین کی آرتھک کٹھنائیاں آج سے دس برس پہلے ہماری آجکل کی کٹھنائیوں سے کم نہیں تھیں ۔ پر چین نے کسی سامراج وادی دیش کے سامنے ہاتھ نہیں پسارا ۔ اپنی اودیوگک (صنعتی) اُنتی کے لیئے چین نے کیول روس سے تھوڑی بہت مدد لی ہے ۔ اور وہ مدد بھی ' جہاں تک ہمیں معلوم ہے' کیول اِس روپ میں تھی کہ تین ارب امریکی ڈالر کی قیمت کا مال ' مشینیں اتیادی' جس کی چین کو ضرورت تھی اور روس دے سکتا تھا' روس چین کو پانچ برس کے اندر پانچ قسطوں میں دے' اور اتنی ہی قیمت کا مال' ایسا جس کی روس کو ضرورت ہے اور چین دے سکتا ہے' کچا مال اتیادی' چین روس کو دس سال کے اندر دس قسطوں میں دے' اور اِس لین دین میں روس کا جو روپیہ کچھ دنوں اٹکا رہے اُس کے لیئے ایک فیصدی سالانہ سود کے حساب سے اتنا ہی ادھک مال چین اپنے یہاں سے روس جانے والے مال میں بڑھا دے' اور بس ۔ تیسرے ہماری صاف رائے یہ بھی ہے کہ اِس طرح کی اگر کوئی مدد لینی ہی ہو تو ہمیں سامراج وادی دیشوں کے بجائے جہاں تک ہوسکے کمیونسٹ یا غیر سامراج وادی دیشوں کی مدد کا ادھک سواگت کرنا چاہیئے ۔ اِس نگاہ سے یدی روس سے بھارت کا اِس طرح کا سمجھوتہ ہمیں امریکہ یا انگلینڈ کی مدد سے بے نیاز کرسکے تو اُس درجے تک ہم اُسے غنیمت سمجھتے ہیں ۔

اصلی علاج

لیکن انت میں ہم پھر دوہرا دینا چاہتے ہیں کہ دیش کے جن دکھوں کی اوپر کے خط میں چرچا کی گئی ہے اُن کا اصلی علاج ہمارا اِن سب باتوں میں مہاتما گاندھی کے بتائے ہوئے راستے کو ٹھیک ٹھیک سمجھنا اور اُس پر عمل کرنا ہی ہو سکتا ہے ۔ انگلینڈ اور امریکہ کے پونجی وادی راستوں کی نقل' جو ہم اِس سمے کر رہے ہیں' ہمارے اِن دکھوں کو اور ادھک بڑھا دیگی ۔ روس اور چین کا کمیونسٹ راستہ بھی ایک راستہ ہو سکتا ہے اور ہے ۔ انگریزی یا امریکی راستے کے مقابلے

तिजोरियों और बंकों में जमा हैं, सच्ची सफलता का अन्दाज़ा उस हालत से करना चाहिये जिसमें देश के सब से नीचे के लोग, सब से ग़रीब लोग रहते हैं. पूँजीपति की अर्थनीति की कसौटी इसके ठीक उल्टी है. हमारे आजकल के शासक जैसे भी हो सके देश की कुल औद्योगिक (सनअती) उपज और देश का कुल धन बढ़ाने की चिंता में हैं. देश के लाखों और करोड़ों ग़रीबों, मज़दूरों, किसानों और दस्तकारों को ऊपर उठाना उनके लिये इतने अधिक महत्व की और इतनी जल्दी की चीज़ नहीं है. यह ग़लत आर्थिक नीति ही हमारे इस समय के अधिकतर दुक्खों का कारण है. हमें पूरा विश्वास है कि अगर इस मामले में हम गांधी जी के बताए रास्ते पर चले होते या अब भी चलें तो हमें बाहर के किसी देश से एक पैसा भी भीख या क़र्ज़ माँगने की ज़रूरत नहीं है. इस बारे में गांधी जी के विचार और कम्युनिस्ट विचार, कई बातों में अलग अलग होते हुए भी, बहुत दरजे तक मिलते हुए हैं. पर रोना यही है कि हमारी आज की आर्थिक नीति न गांधी वादी है और न मार्क्सवादी. हमारी आजकल की आर्थिक नीति शुद्ध पूँजीवादी है, जो अन्त में साम्राज्यवाद की तरफ़ ले जाए बग़ैर नहीं रह सकती. अभी से जब कि प्रान्त प्रान्त में हमारे लाखों बुनकर भूखे मर रहे हैं और गांव गांव के कोल्हू पट पड़े हुए हैं, हमें अपनी मिलों के कपड़े और मिलों की चीनी बेचने के लिये देश के बाहर मन्डियों की तलाश रहती है. हम बार बार कह चुके हैं कि देश की जनता के हित में यह नीति ग़लत और बरबादकुन है.

अपनी इस ग़लत आर्थिक नीति के कारण दूसरे देशों के सामने हाथ पसारने ने हमारे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी पेचीदगियां पैदा कर दी हैं. श्री के० के० कृष्णमचारी ने अमरीका में और दूसरे साम्राज्यवादी, देशों में जिस तरह की गिरी हुई बातें कहीं उन पर देश और पार्लिमेंट के अन्दर काफ़ी ले दे मच चुकी है. श्री कृष्णमचारी ने भारत की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को अमरीका में ग़लत चित्रित किया और अपने देश को लजाया इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता. "न्युयार्क टाइम्स" के सम्वाददाता ने श्री कृष्णमचारी की तरदीद की. जिस तरह तरदीद की है वह कृष्णमचारी को इस विषय में गुनहगार ठहराने के लिये काफ़ी है. हमारे प्रधान मन्त्री को उनका बचाव इसलिये करना पड़ता है कि बदक़िस्मती से प्रधान मन्त्री की राय में देश के बढ़ने के लिये बाहर से पैसा आना ज़रूरी है और श्री कृष्णमचारी ने जैसे भी बन पड़े पैसा लाने की कोशिश में कसर नहीं उठा रखी.

एक दूसरी पेचीदगी हमारी इस ग़लत चाल ने यह पैदा कर दी कि उसने हमें मदद देने वालों में रूस और अमरीका को फिर एकबार प्रतिस्पर्धी (रक़ीबों) के रूप में लाकर

تجوریوں اور بنکوں میں جمع هیں، سچی سپھلتا کا اندازہ اُس حالت سے کرنا چاهئے جس میں دیش کے سب سے نیچے کے لوگ، سب سے غریب لوگ رهتے هیں. پونجی پتی کے ارتھ نیتی کی کسوٹی اِس کے ٹھیک الٹی هے. همارے آج کل کے شاسک جیسے بھی هوسکے دیش کی کل ادیوگک (صنعتی) اُپج اور دیش کا کل دھن بڑھانے کی چنتا میں هیں. دیش کے لاکھوں اور کروڑوں غریبوں، مزدوروں، کسانوں اور دستکاروں کو اوپر اٹھانا اُن کے لئے اِتنی ادھک مہتو کی اور اِتنی جلدی کی چیز نہیں هے. یہ غلط آرتھک نیتی هی همارے اِس سمے کے ادھک تر دکھوں کا کارن هے. همیں پورا وشواس هے کہ اگر اِس معاملے میں هم گاندھی جی کے بتائے راستے پر چلے هوتے یا اب بھی چلیں تو همیں باهر کے کسی دیش سے ایک پیسہ بھی بھیک یا قرض مانگنے کی ضرورت نہیں هے. اِس بارے میں گاندھی جی کا وچار اور کمیونسٹ وچار، کئی باتوں میں الگ الگ هوتے هوئے بھی، بہت درجے تک ملتے هوئے هیں. پر رونا یہی هے کہ هماری آج کی ارتھک نیتی نہ گاندھی وادی هے اور نہ مارکس وادی. هماری آجکل کی ارتھک نیتی شدھ پونجی وادی هے، جو انت میں سامراجیہ واد کی طرف لے جائے بغیر نہیں رہ سکتی. ابھی سے جب کہ پرانت پرانت میں همارے لاکھوں بنکر بھوکے مر رهے هیں اور گاؤں گاؤں کے کولھو پٹ پڑے هوئے هیں، همیں اپنی ملوں کے کپڑے اور ملوں کی چینی بیچنے کے لئے دیش کے باهر منڈیوں کی تلاش رهتی هے. هم بار بار کہہ چکے کہ دیش کی جنتا کے هت میں یہ نیتی غلط اور برباد کن هے.

اپنی اِس غلط ارتھک نیتی کے کارن دوسرے دیشوں کے سامنے هاتھ پسارنے نے همارے انتر راشٹریہ سمبندھوں میں بھی پیچیدگیاں پیدا کردی هیں. شری کے. کے. کرشنامچاری نے امریکہ میں اور دوسرے سامراجیہ وادی دیشوں میں جس طرح کی گری هوئی باتیں کہیں اُن پر دیش اور پارلیمنٹ کے اندر کافی لے دے مچ چکی هے. شری کرشنامچاری نے بھارت کی انتر راشٹریہ اِستھتی کو امریکہ میں غلط چترت کیا اور اپنے دیش کو لجایا اِس میں کوئی سندیہ نہیں هوسکتا. "نیویارک ٹائمس" کے سمواددا تانے شری کرشنامچاری کی تردید کی. جس طرح تردید کی هے وہ شری کرشنامچاری کو اِس وشے میں گنہگار ٹھہرانے کے لئے کافی هے. همارے پردھان منتری کو اُن کا بچاؤ اِس لئے کرنا پڑتا هے کہ بدقسمتی سے پردھان منتری کی رائے میں دیش کے بڑھنے کے لئے باهر سے پیسہ آنا ضروری هے اور شری کرشنامچاری نے جیسے بھی بن پڑے پیسہ لانے کی کوشش میں کسر نہیں اٹھارکھی.

ایک دوسری پیچیدگی هماری اِس غلط چال نے یہ پیدا کردی کہ اُس نے همیں مدد دینے والوں میں روس اور امریکہ کو پھر ایک بار پرتی اسپردھی (رقیبوں) کے روپ میں لاکر

तरफ़ अन्दर की यह खिंच-घसीट और बरबादकुन शक्तियों दोनों के बीच से देश की नाव को सफलता पूर्वक लेकर लेजा सकने वाला आदमी हमें अभी दूसरा दिखाई नहीं देता. जवाहरलाल जी की देशभक्ति, सचाई और बहादुरी में भी किसी को सन्देह नहीं हो सकता.

देश के दुखों का मूल कारण

देश के इस समय के उन दुखों का जिनकी ऊपर के खत में चरचा है मूल कारण हमें यह दिखाई देता है कि देश के और कांग्रेस के अनेक बड़े बड़े नेताओं को शायद कभी भी महात्मा गांधी के आर्थिक (माली), औद्योगिक (सनअती), और एक दरजे तक नैतिक (इखलाक़ी) सिद्धान्तों में विश्वास नहीं हुआ. देश के इस समय के अधिकतर नेता अंगरेज़ी तालीम की उपज हैं, और अनेक अच्छाइयां रखते हुए भी और बरसों महात्मा गांधी के नज़दीक रहते हुए भी, पच्छमी तालीम के ग़लत असर से ऊपर नहीं उठ सके.

बाहर से पैसे की मदद और हमारी आर्थिक नीति

पिछले अगस्त के महीने में तोक्यो के अन्दर हम एक दिन एक अमरीकी दोस्त से बातें कर रहे थे. हम उनसे कह रहे थे कि एशियाई देशों की इच्छा और उनके हित के विरुद्ध अमरीका का एशियाई देशों के उद्योग धन्धों में अपनी पूँजी लगाना और इस तरह उन देशों के अन्दर के मामलों में जबरदस्ती दखल देना बड़ी ग़लत चीज़ और आर्थिक साम्राज्यवाद (इकानामिक इम्पीरियलीज़म) की जड़ है, इत्यादि. हमारे अमरीकी दोस्त ने तुरन्त उलट कर हमें जवाब दिया, उनके शब्द हमें अब तक याद हैं—"you cannot say that. Your own......has been going on his knees requesting U. S. A. to invest money in India and promising them all sorts of concessions, no nationalisation or socialisation for fifty years and so forth."

अर्थात्—"आप यह नहीं कह सकते. आपका अपना ......घुटनों के बल अमरीका से प्रार्थना करता रहा है कि अमरीका भारत में अपनी पूँजी लगावे, और इसके बदले में अमरीका से हर तरह की रिआयतों का वादा करता रहा है, जैसे यह कि भारत सरकार पचास साल तक ऐसे उद्योगों को जिनमें अमरीका की पूँजी लगी होगी राष्ट्र की या समाज की सम्पत्ति नहीं बनाएगी, इत्यादि."

महात्मा गांधी का उसूल था और हमें विश्वास है कि वह सोलह आने ठीक था कि किसी भी देश की आर्थिक सफलता का अन्दाज़ा उन धनराशियों से नहीं करना चाहिये जो वहां के बड़े बड़े लोगों और अमीरों की

طرف اندر کی یہ کھینچ گھسیٹ اور بربادکن شکتیاں دونوں کے بیچ سے دیش کی ناؤ کو سپھلتا پوروک لے کر لے جا سکنے والا آدمی ہمیں ابھی دوسرا دکھائی نہیں دیتا۔ جواہر لال جی کی دیش بھکتی، سچائی اور بہادری میں بھی کسی کو سندیہہ نہیں ہو سکتا۔

دیش کے دکھوں کا مول کارن

دیش کے اِس سمے کے اُن دکھوں کا جن کی اُوپر کے خط میں چرچا ہے مول کارن ہمیں یہ دکھائی دیتا ہے کہ دیش کے کانگریس کے انیک بڑے بڑے نیتاؤں کو شاید کبھی بھی مہاتما گاندھی کے آرتھک (مالی)، ادیوگک (صنعتی)، اور ایک درجے تک نیتک (اخلاقی) سدھانتوں میں وشواس نہیں ہوا۔ دیش کے اِس سمے کے ادھکتر نیتا انگریزی تعلیم کی اپج ہیں، اور انیک اچھائیاں رکھتے ہوئے بھی اور برسوں مہاتما گاندھی کے نزدیک رہتے ہوئے بھی، پچھمی تعلیم کے غلط اثر سے اُوپر نہیں اُٹھ سکے۔

باہر سے پیسے کی مدد اور ہماری ارتھک نیتی

پچھلے اگست کے مہینے میں توکیو کے اندر ہم ایک دن ایک امریکی دوست سے باتیں کر رہے تھے۔ ہم اُن سے کہہ رہے تھے کہ ایشیائی دیشوں کی اِچھا اور اُن کے ہت کے ورودھ امریکہ کا ایشیائی دیشوں کے ادیوگ دھندوں میں اپنی پونجی لگانا اور اِس طرح اُن دیشوں کے اندر کے معاملوں میں زبردستی دخل دینا بڑی غلط چیز اور ارتھک سامراجواد (اکانومک امپیریل ازم) کی جڑ ہے، اِتیادی۔ ہمارے امریکی دوست نے تُرنت اُلٹ کر ہمیں جواب دیا، اُن کے شبد ہمیں اب تک یاد ہیں—"You cannot say that. Your own......has been going on his knees requesting U. S. A. to invest money in India and promising them all sorts of concessions, no nationalisation or socialisation for fifty years and so forth."

ارتھات—"آپ یہ نہیں کہہ سکتے۔ آپ کا اپنا...گھٹنوں کے بل امریکہ سے پرارتھنا کرتا رہا ہے کہ امریکہ بھارت میں اپنی پونجی لگاوے، اور اِس کے بدلے میں امریکہ سے ہر طرح کی رعایتوں کا وعدہ کرتا رہا ہے، جیسے یہ کہ بھارت سرکار پچاس سال تک ایسے ادیوگوں کو جن میں امریکہ کی پونجی لگی ہوگی راشٹر کی یا سماج کی سمپتی نہیں بنائے گی، اِتیادی۔"

مہاتما گاندھی کا اصول تھا اور ہمیں وشواس ہے کہ وہ سولہ آنے ٹھیک تھا کہ کسی بھی دیش کی آرتھک سپھلتا کا اندازہ اُن دھن راشیوں سے نہیں کرنا چاہئے جو وہاں کے بڑے بڑے لوگوں اور امیروں کی

देश की पीछे घसीट शक्तियाँ

दूसरी ओर देश में अभी तक इस तरह की पीछे घसीटने वाली शक्तियों का भी ज़ोर ख़त्म नहीं हुआ है जो अगर क़ाबू पाजाएं तो देश को रसातल में पहुँचाए बिना नहीं रह सकतीं. इन्हीं शक्तियों ने महात्मा गांधी की जान ली. पंजाब के "हिन्दी रक्षा आन्दोलन" पर हम अपने विचार प्रगट कर चुके हैं. यह ग़लत आन्दोलन अधिकतर इसी तरह की शक्तियों का कारनामा है.

हाल में पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन के दो मुख्य कार्यकर्ता दिल्ली में हमारे एक प्रतिष्ठित मित्र से मिलने आए. हमारे मित्र ने उनसे इस आन्दोलन की निरर्थकता पर बातें कीं. इस पर उन दोनों में से एक ने बड़ी संजीदगी के साथ कहा—"मुख्य प्रश्न हमारे सामने हिन्दी का नहीं है, मुख्य प्रश्न जवाहरलाल और जवाहरलाल की सरकार को गिराना है." यह भी एक खुली बात है कि इस आन्दोलन में पंजाब भर के अन्दर और कहीं कहीं पंजाब से बाहर भी पंडित जवाहरलाल नेहरू को हिन्दुओं का विरोधी दर्शा कर जनता की नज़रों में गिराने की काफ़ी कोशिश की गई है.

देश को पीछे घसीटने वाली और बरबादी के गड्ढे में गिराने वाली ये शक्तियां जगह जगह और भी तरह तरह के रूप धारण करती रहती हैं.

पंजाब के इस ग़लत हिन्दी आन्दोलन से देश को और ख़ासकर हिन्दी को कितना नुक़सान पहुंचा है इसका कुछ अन्दाज़ा इस एक बात से लगाया जा सकता है कि हमारी पार्लिमेंट के अठासी मेम्बरों ने सरकार को यह नोटिस दे दिया है कि सन् 1990 से पहले हिन्दी को अंग्रेज़ी का स्थान देने की बात न की जावे. श्री राजगोपालाचारी जैसे अनेक नेताओं ने तो यह साफ़ कह दिया है कि अंगरेज़ी की जगह हिन्दी को अगर कभी भी सरकारी अन्तर्प्रादेशीय भाषा बनाने की कोशिश की गई तो बलकान की तरह देश के टुकड़े टुकड़े हो जावेंगे. पंजाब के नादान हिन्दी प्रेमियों और उनके मददगारों ने राष्ट्र भाषा की हैसियत से हिन्दी को ख़त्म कर देने में अपनी तरफ़ से कोई कोशिश उठा नहीं रखी.

पं० जवाहरलाल नेहरू और उनकी सरकार

इन नाज़ुक हालात में वर्तमान शासन के अन्दर अनेक दोषों के होते हुए भी—और वह दोष बड़े गहरे दोष हैं—हमें पंडित जवाहरलाल नेहरू का अस्तित्व और देश के शासन की बाग का उनके हाथों में होना बहुत ही ग़नीमत मालूम होता है. कई बातों में हमारा उनका गहरा मतभेद है. पर एक तरफ़ नाज़ुक अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और दूसरी

دیش کی پیچھے گھسیٹ شکتیاں

دوسری اور دیش میں ابھی تک اس طرح کے پیچھے گھسیٹنے والی شکتیوں کا زور بھی ختم نہیں ہوا ہے جو اگر قابو پا جائیں تو دیش کو رساتل میں پہنچائے بنا نہیں رہ سکتیں۔ انہیں شکتیوں نے مہاتما گاندھی کی جان لی۔ پنجاب کے "ہندی رکشا آندولن" پر ہم وچار پرگٹ کر چکے ہیں۔ یہ غلط آندولن ادھکتر اسی طرح کی شکتیوں کا کارنامہ ہے۔

حال میں پنجاب ہندی رکشا آندولن کے دو مکھیہ کاریہ کرتا دلی میں ہمارے ایک پرتشٹھت متر سے ملنے آئے۔ ہمارے متر نے ان سے اس آندولن کی نررتھکتا پر باتیں کیں۔ اس پر ان دونوں میں سے ایک نے بڑی سنجیدگی کے ساتھ کہا—"مکھیہ پرشن ہمارے سامنے ہندی کا نہیں ہے، مکھیہ پرشن جواہر لال اور جواہر لال کی سرکار کو گرانا ہے۔" یہ بھی ایک کھلی بات ہے کہ اس آندولن میں پنجاب بھر کے اندر اور کہیں کہیں پنجاب سے باہر بھی پنڈت جواہر لال نہرو کو ہندوؤں کا ویرودھی درشا کر جنتا کی نظروں میں گرانے کی کافی کوشش کی گئی ہے۔

دیش کو پیچھے گھسیٹنے والی اور بربادی کے گڑھے میں گرانے والی یہ شکتیاں جگہ جگہ اور بھی طرح طرح کے روپ دھارن کرتی رہتی ہیں۔

پنجاب کے اس غلط آندولن سے دیش کو اور خاص کر ہندی کو کتنا نقصان پہنچا ہے اس کا کچھ اندازہ اس ایک بات سے لگایا جا سکتا ہے کہ ہماری پارلیمنٹ کے اٹھاسی ممبروں نے سرکار کو یہ نوٹس دے دیا ہے کہ سن 1990 سے پہلے ہندی کو انگریزی کا استھان دینے کی بات نہ کی جاوے۔ شری راج گوپالاچاری جیسے انیک نیتاؤں نے تو یہ صاف کہہ دیا ہے کہ انگریزی کی جگہ ہندی کو اگر کبھی بھی سرکاری انتر پردیشیہ بھاشا بنانے کی کوشش کی گئی تو بلقان کی طرح دیش کے ٹکڑے ہو جاویں گے۔ پنجاب کے نادان ہندی پریمیوں اور ان کے مددگاروں نے راشٹر بھاشا کی حیثیت سے ہندی کو ختم کر دینے میں اپنی طرف سے کوئی کوشش اٹھا نہیں رکھی۔

پنڈت جواہر لال نہرو اور ان کی سرکار

ان نازک حالات میں ورتمان شاسن کے اندر انیک دوشوں کے ہوتے ہوئے بھی—اور وہ دوش بڑے گہرے دوش ہیں—ہمیں پنڈت جواہر لال نہرو کا استتو اور دیش کے شاسن کی باگ کا ان کے ہاتھوں میں ہونا بہت ہی غنیمت معلوم ہوتا ہے۔ کئی باتوں میں ہمارا ان کا گہرا متبھید ہے۔ پر ایک طرف نازک انترراشٹریہ استھتی اور دوسری

है, न कि उस का .खयाल करना और अपने दिल पर .खराब नक़्श (असर) डालना और दिल को मैला करना."

देश के दिल की आवाज़

ज़ाहिर है ऊपर की हर बात हर अंश में ठीक नहीं कही जा सकती. कहीं कहीं अत्युक्ति (मुबालगा) की मात्रा भी साफ़ है. लेकिन इस में भी शक नहीं कि जिन मित्र ने यह .खत लिखा है उनके यह दिल की आवाज़ है. एक वह ही नहीं, लगभग ये ही या इसी तरह की बातें आज लाखों देश वासियों की ज़बान पर हैं. इसमें कोई शक नहीं कि यह आवाज़ इस समय देश के दिल की आवाज़ है.

दिल्ली में हमने भारत सरकार के एक ऊँचे और ज़िम्मेदार कर्मचारी को यह .खत पढ़कर सुनाया. उन्होंने बड़े ध्यान के साथ सुना. उनका चेहरा कुछ गम्भीर मालूम हुआ. हमने समझा शायद उन्हें यह बातें अच्छी नहीं लगीं. हमने झिझकते हुए कहा:—"इन बातों में कुछ सचाई तो अवश्य है." उन्होंने तुरन्त उसी गम्भीरता के साथ जवाब दिया:—"जी नहीं! कुछ सचाई नहीं, पूरी सचाई है, इसमें जो लिखा है वह बिलकुल सच है." हमारी उनकी इस पर देर तक बातें होती रहीं.

अंग्रेज़ी की एक कहावत है—'जनता की आवाज़ भगवान की आवाज़ होती है.' इसी से मिलती हुई उर्दू की एक कहावत है—'आवाज़-ए-.खल्क़ को नक़्क़ारए .खुदा समझो.' इसमें कोई शक नहीं कि ऊपर के .खत की बातों में एक बहुत बड़ा अंश सचाई का है.

आज की कांगरेस

बयालीस बरस हमने अपने नाचीज़ ढंग से कांगरेस की सेवा की है और काफ़ी नज़दीक से तन्मय होकर की है. कांगरेस का देश पर बहुत बड़ा अहसान है. हमारे दिल में अब भी कांगरेस का बड़ा आदर है. कांगरेस और कांगरेस सरकार दोनों में इस समय भी काफ़ी ऐसे लोग हैं जिनसे बढ़कर आदमी देश में मिलना कठिन है. पर इसमें भी सन्देह नहीं कि कांगरेस संस्था आज़ादी मिलने के बाद से तेज़ी के साथ नीचे को जा रही है. काँगरेसी नेताओं, धारा सभाओं और पार्लिमेंट के कांगरेसी मेम्बरों और कांगरेसी मिनिस्ट्रों में आज काफ़ी तादाद ऐसे लोगों की है जो देश की आज़ादी के संग्राम के दिनों में शायद कहीं दिखाई भी न देते थे. काफ़ी मिनिस्टर ऐसे हैं जिन्हें हमारे जैसे लोग पहचानते भी नहीं, जो सन् 1947 के बाद कांगरेसी बने हैं, और आज कांगरेस के बड़े से बड़े मशविरों में उनकी आवाज़ सुनी जाती है.

ہے' نہ کہ اُس کا خیال کرنا اور اپنے دل پر خراب' نقش (اثر) ڈالنا اور دل کو میلا کرنا ۔"

دیش کے دل کی آواز

ظاہر ہے اُوپر کی ہر بات ہر انش میں ٹھیک نہیں کہی جا سکتی ۔ کہیں کہیں اتیشیوکتی (مبالغہ) کی ماترا بھی صاف ہے ۔ لیکن اِس میں بھی شک نہیں کہ جن متر نے یہ خط لکھا ہے اُن کے یہ دل کی آواز ہے ۔ ایک وہ ہی نہیں' لگ بھگ یہ ہی یا اِسی طرح کی باتیں آج لاکھوں دیش واسیوں کی زبان پر ہیں ۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ یہ آواز اِس سمے دیش کے دل کی آواز ہے ۔

دلی میں ہم نے بھارت سرکار کے ایک اُونچے اور ذمہ دار کرمچاری کو یہ خط پڑھ کر سنایا ۔ اُنہوں نے بڑے دھیان کے ساتھ سنا ۔ اُن کا چہرہ کچھ گمبھیر معلوم ہوا ۔ ہم نے سمجھا شاید اُنہیں یہ باتیں اچھی نہیں لگیں ۔ ہم نے جھجھکتے ہوئے کہا:—"اِن باتوں میں کچھ سچائی تو اوشیہ ہے ۔" اُنہوں نے ترنت اُسی گمبھیرتا کے ساتھ جواب دیا :—"جی نہیں ! کچھ سچائی نہیں' پوری سچائی ہے' اِس میں جو لکھا ہے وہ بالکل سچ ہے ۔" ہماری اُن کی اِس پر دیر تک باتیں ہوتی رہیں ۔

انگریزی کی ایک کہاوت ہے—'جنتا کی آواز بھگوان کی آواز ہوتی ہے'؛ اِسی سے ملتی جلتی اُردو کی ایک کہاوت ہے—'آوازِ خلق کو نقارۂ خدا سمجھو' اِس میں کوئی شک نہیں کہ اُوپر کے خط کی باتوں میں ایک بہت بڑا انش سچائی کا ہے ۔

آج کی کانگریس

بیالیس برس ہم نے اپنے ناچیز ڈھنگ سے کانگریس کی سیوا کی ہے اور کافی نزدیک سے تنمے ہو کر کی ہے ۔ کانگریس کا دیش پر بہت بڑا احسان ہے ۔ ہمارے دل میں اب بھی کانگریس کا بڑا آدر ہے ۔ کانگریس اور کانگریس سرکار دونوں میں اِس سمے بھی کافی ایسے لوگ ہیں جن سے بڑھ کر آدمی دیش میں ملنا کٹھن ہے ۔ پر اِس میں بھی سندیہہ نہیں کہ کانگریس سنستھا آزادی ملنے کے بعد سے تیزی کے ساتھ نیچے کو جا رہی ہے ۔ کانگریسی نیتاؤں' دھارا سبھاؤں اور پارلیمنٹ کے کانگریسی ممبروں اور کانگریسی منسٹروں میں آج کافی تعداد ایسے لوگوں کی ہے جو دیش کی آزادی کے سنگرام کے دنوں میں شاید کہیں دکھائی بھی نہ دیتے تھے ۔ کافی منسٹر ایسے ہیں جنہیں ہمارے جیسے لوگ پہچانتے بھی نہیں ہیں جو سن 1947 کے بعد کانگریسی بنے ہیں' اور آج کانگریس کے بڑے سے بڑے مشوروں میں اُن کی آواز سنی جاتی ہے ۔

के चलाने के पहले उसके लिये बुनियाद मज़बूत बनानी थी, यानी होशियार, क़ाबिल, मोतबिर (विश्वसनीय) लोग जिम्मेदार बनाने थे, और हुकूमत का डर होना चाहिये था, न कि इस .क़द्र आज़ादी दे दी कि हर शख़्स अपने फ़रायज़ (कर्तव्यों) को भूल बैठा और मन माना जो चाहा सो कर रहा है. कोई पुरसाँ हाल नहीं. दफ़्तरों की अजीबो .ग़रीब हालत है. किसी के काम करने से मतलब नहीं. समा ख़राशी (कान खाना) और गोलबाज़ी (पार्टीबन्दी), फ़िरक़ाबन्दी से .फ़ुरसत नहीं. मालूम नहीं यह हुकूमत इस तरह कब तक और कैसे चलेगी. लोगों के दिलों में डर, तहज़ीब, प्रेम, आजज़ी (नम्रता) जैसी चीज़ें रह नहीं गई हैं. नई रोशनी के लोग और लड़के सिर्फ़ इसी धुन में रहते हैं कि किस तरह दूसरे की आँखों में धूल झोंकें और ज़ियादह से ज़ियादह फ़ायदा उठावें. सिवाय इसके कुछ नहीं कहा जाता—.ख़ुदा हाफ़िज़ ! बाहर चाहे हिन्दुस्तान की कुछ भी .क़द्र हो या नाम हो, अन्दरूनी हालत तो बदतर ही नज़र आती है. ऐसा मालूम होता है कि हिन्दुस्तान मग़रबी (पच्छमी) चका चौंध में आ गया है और उसका दिलदादा (प्रेमी) हो गया, जो कि निशान बरबादी और ज़वाल (पतन) का है. हमारे देश में भी कारख़ानेजात बकसरत खुलते जा रहे हैं जिसकी वजह से दस्तकारी का ज़वाल और बेरोज़गारी बढ़ती जा रही है. एजुकेशन का बुरा हाल है. वह दिन बदिन एक्सपेन्सिव (.ख़र्चीली) और बेसूद (निरर्थक) सी हो गई है. ज़माने के बदलने से या रविश (गति) से हर चीज़ और तौर तरीक़ में बेहतरी की सूरत पैदा करनी थी. इस नए पैसे ने ज़िन्दगी अलग तल्ख़ (कड़वी) करदी. बाज़ारों में जल्द कोई चीज़ मिलती नहीं, इसका बदल पुराने पैसे में अनपढ़ और ग़रीब दुकानदार जानते नहीं, और होशियार लोगों ने अपनी कमाई की सूरत निकाल ली. चाहिये तो यह था कि ज़िन्दगी की रविश (चाल) बिलकुल सादा और पाक हो, दिलों में नेकी, हमदर्दी, सेवा का भाव पैदा हो, न कि सिनेमा और तरीक़ तालीम व .क़ायदे कानून उलझन पैदा करने वाले बनाकर लोगों को और नई जेनरेशन (नसल) के आदर्श को गिरा दिया. क्या यही हमारी चुनीदह (चुनी हुई) हुकूमत का शेवा (तरीक़ा) है ? ऐसी डेमाक्रेसी से तो .ग़ुलामी बदरजहाँ बेहतर थी ! ख़ैर, कहाँ तक कहा जावे. और आप पर तो सब रोशन है. मेरा कहना सूरज को चिराग़ दिखाना है. लेकिन सिर्फ़ यही है कि आप से दिल का बोझ कुछ हलका करने को जी चाह उठता है. फिर भी सोचता हूँ कि जो कुछ हो रहा है मालिक (ईश्वर) की मौज (इच्छा) से ही है. इसमें आगे चलकर कुछ फ़ायदा मक़सूद (उद्दिष्ट) होगा. शिकवा शिकायत करना बेकार है. ख़राब चीज़ की तरफ़ से आँख हटा लेना ही बेहतर

کسی اسکیم کے چلانے سے پہلے اُس کے لئے بنیاد مضبوط بنانی تھی ۔ یعنی ہوشیار، قابل، معتبر (وشواسنیہ) لوگ ذمہ دار بنانے تھے ۔ اور حکومت کا ڈر ہونا چاہئے تھا، نہ کہ اِس قدر آزادی دے دی کہ ہر شخص اپنے فرائض (کرتویوں) کو بھول بیٹھا اور من مانا جو چاہا سو کر رہا ہے ۔ کوئی پرساں حال نہیں ۔ دفتروں کی عجیب و غریب حالت ہے ۔ کسی کو کام کرنے سے مطلب نہیں ۔ سمع خراشی (کان کھانا) اور غول بازی (پارٹی بازی)، فرقہ بندی سے فرصت نہیں ۔ نہ معلوم یہ حکومت اِس طرح کب تک اور کیسے چلے گی ۔ لوگوں کے دلوں میں ڈر، تہذیب، پریم، عاجزی (نمرتا) جیسی چیزیں رہ نہیں گئی ہیں ۔ نئی روشنی کے لوگ اور لڑکے صرف اِسی دھن میں رہتے ہیں کہ کس طرح دوسرے کی آنکھوں میں دھول جھونکیں اور زیادہ سے زیادہ فائدہ اُٹھاویں ۔ سوائے اِس کے کچھ نہیں کہا جاتا—خدا حافظ ! باہر چاہے ہندستان کی کچھ بھی قدر ہو یا نام ہو، اندرونی حالت تو بدتر ہی نظر آتی ہے ۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ہندستان مغربی (پچھمی) چکاچوندھ میں آگیا ہے اور اُس کا دلدادہ (پریمی) ہو گیا ہے، جو نشان بربادی اور زوال (پتن) کا ہے ۔ ہمارے دیش میں بھی کارخانے جات بکثرت کھلتے جا رہے ہیں جس کی وجہ سے دستکاری کا زوال اور بےروزگاری بڑھتی جا رہی ہے ۔ ایجوکیشن کا برا حال ہے ۔ وہ دن بدن ایکسپینسو (خرچیلی) اور بےسود (نررتھک) سی ہو گئی ہے ۔ زمانہ کے بدلنے سے روش (گتی) سے ہر چیز اور طور طریقے میں بہتری کی صورت پیدا کرنی تھی ۔ اِس نئے پیسے نے زندگی الگ تلخ (کڑوی) کر دی ۔ بازاروں میں جلد کوئی چیز ملتی نہیں ۔ اِس کا بدل پرانے پیسے میں ان پڑھ اور پرانے دوکاندار جانتے نہیں، اور ہوشیار لوگوں نے اپنی کمائی کی صورت نکال لی ۔ چاہئے تو یہ تھا کہ روش (چال) بالکل سادہ اور پاک ہو، دلوں میں نیکی، ہمدردی، سیوا کا بھاؤ پیدا ہو ۔ نہ کہ سنیما اور طریقے تعلیم، قاعدے قانون اُلجھن پیدا کرنے والے بنا کر لوگوں کو اور نئی جنریشن (نسل) کے آدرش کو گرا دیا ۔ کیا یہی ہماری چنیدہ (چنی ہوئی) حکومت کا شیوا (طریقہ) ہے ۔ ایسی ڈیمو کریسی سے تو غلامی بدرجہا بہتر تھی ! خیر، کہاں تک کہا جاوے ۔ اور آپ پر تو سب روشن ہے ۔ میرا کہنا سورج کو چراغ دکھانا ہے ۔ لیکن صرف یہی ہے کہ آپ سے دل کا بوجھ کچھ ہلکا کرنے کو جی چاہ اُٹھتا ہے ۔ پھر بھی سوچتا ہوں کہ جو کچھ ہو رہا ہے مالک (ایشور) کی موج (اِچھا) سے ہی ہے ۔ اِسی میں آگے چل کر ضرور کچھ فائدہ مقصود (اُدِّشٹ) ہوگا ۔ شکوہ شکایت بیکار ہے ۔ خراب چیز کی طرف سے آنکھ ہٹا لینا ہی بہتر

हमारी राय

ہماری رائے

देश की हालत पर एक .खत

देश और सरकार के एक सच्चे हितचिन्तक, नेक, ईमानदार, समझदार, ग़ैर जानिबदार, और तजरबेकार मित्र का हमारे पास एक .खत आया है. "नया हिन्द" के भी वह शुरू से प्रेमी रहे हैं. उस खत का एक हिस्सा, उन्हीं शब्दों में हम नीचे दे रहे हैं. कमानों के अन्दर के शब्द हमारे हैं. वह लिखते हैं—

"ज़माना कुछ ऐसा .खराब आगया है कि इनसान .खुदग़रज होता जा रहा है. सेवा भाव और प्रेम भाव बिलकुल नेस्त नाबूद होते जा रहे हैं. हरेक अपने कारबार में मश.गूल और परेशान है. मँहगाई और टैक्स बढ़ते जा रहे हैं जिसकी वजह से ज़िन्दगी वबाले जान बन गई है. अगर कोई ईमानदारी, नेकनीयती से रहना चाहे भी तो हज़ार मुशकिलों और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है. बेईमानी, रिश्वतखोरी, दग़ाबाज़ी और झूट का बोल बाला है, जिसकी ज़िम्मेदार हमारी मौजूदा हकूमत और कारकुनों का गिरा हुआ कैरेक्टर है. पब्लिक पर इस क़दर टैक्स लगा दिये हैं कि जिनका असर बेचारी मिडिल क्लास पर पड़ रहा है और वह पिसी जा रही है, और पूँजी वाले या धन्धा करने वाले अपनी चालाकी और ऐयारी से .खुश और मालामाल हैं और बेईमानी का मौक़ा मिल रहा है, जो रुपया हकूमत इकट्ठा कर रही है या आमदनी बढ़ा रही है वह बिलकुल बेतरतीबी और बेहूदा तौर से बरबाद हो रहा है. या यह कहो कि चन्द चालाक और ग़द्दार लोगों की जेबों में जा रहा है. यह फ़र्स्ट और सेकेण्ड फ़ाइव इयर प्लेन्स सिर्फ़ काग़ज़ी घोड़े हैं या दुनिया की आँखों में धूल झोंकी जा रही है. देखना तो यह है कि जिस .क़दर रुपया .खर्च हो रहा है क्या वाक़ई हुआ भी है और काम भी उसके एवज़ हुआ है? लेकिन इसकी ग़रज़ किसको है? यह सर दर्द मोल कौन ले? जो हो रहा है होने दो! किसी स्कीम

دیش کی حالت پر ایک خط

دیش اور سرکار کے ایک سچے ہت چنتک، نیک، ایماندار، سمجھدار، غیر جانب دار، اور تجربہ‌کار متر کا ہمارے پاس ایک خط آیا ہے۔ "نیا ہند" کے بھی وہ شروع سے پریمی رہے ہیں۔ اس خط کا ایک حصہ، انہیں کے شبدوں میں ہم نیچے دے رہے ہیں۔ کمانوں کے اندر کے شبد ہمارے ہیں۔ وہ لکھتے ہیں —

"زمانہ کچھ ایسا خراب ہو گیا ہے کہ انسان خود غرض ہوتا جا رہا ہے۔ سیوا بھاؤ اور پریم بھاؤ بالکل نیست نابود ہوتے جا رہے ہیں۔ ہر ایک اپنے کاربار میں مشغول اور پریشان ہے۔ مہنگائی اور ٹیکس بڑھتے جا رہے ہیں جس کی وجہ سے زندگی وبال جان ہو گئی ہے۔ اگر کوئی ایمانداری، نیک نیتی سے رہنا چاہے بھی تو ہزار مشکلوں اور مصیبتوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔ بے ایمانی، رشوت خوری، دغابازی اور جھوٹ کا بول بالا ہے۔ جس کی ذمہ دار ہماری موجودہ حکومت اور کارکنوں کا گرا ہوا کیریکٹر ہے۔ پبلک پر اس قدر ٹیکس لگا دیئے ہیں کہ جس کا اثر بے چاری مڈل کلاس پر پڑ رہا ہے اور وہ پسی جا رہی ہے، اور پونجی والے یا دھندا کرنے والے اپنی چالاکی اور عیاری سے خوش اور مالا مال ہیں، اور بے ایمانی کا موقع مل رہا ہے۔ جو روپیہ حکومت اکٹھا کر رہی ہے یا آمدنی بڑھا رہی ہے وہ بالکل بے ترتیبی اور بیہودہ طور سے برباد ہو رہا ہے۔ یا یہ کہو کہ چند چالاک اور غدار لوگوں کی جیبوں میں جا رہا ہے۔ یہ فرسٹ اور سیکنڈ فائیو ایئر پلین صرف کاغذی گھوڑے ہیں یا دنیا کی آنکھوں میں دھول جھونکی جا رہی ہے۔ دیکھنا تو یہ ہے کہ جس قدر روپیہ خرچ ہو رہا ہے کیا واقعی ہوا بھی ہے اور کام بھی اس کے عوض ہوا ہے؟ لیکن نہ اس کی غرض کسی کو ہے؟ یہ سر درد کون مول لے؟ جو ہو رہا ہے ہونے دو!

18 हिस्सों में तक़सीम कर दिया गया है ताकि मज़मून आसानी से समझ में आ सकें. इन जिल्दों में गान्धी जी की ज़िन्दगी की फ़िलासफ़ी, उनके जीवन दर्शन की झाँकी हमें देखने को मिलती है. इनसे हमें सबक़ मिलता है कि जिस रास्ते चलकर आज पच्छिम ज़िन्दगी और मौत का खेल खेल रहा है उससे हिन्दुस्तान को कैसे बचाया जा सकता है और ख़ुद पच्छिम इस ख़ुदकुशी से कैसे अपने को बचा सकता है ?

पहली जिल्द के पहले हिस्से में स्वराज, समाजवाद और साम्यवाद की चर्चा है. दूसरे में इस बात की चर्चा है कि जो श्रम करे वही खाने का हक़दार है. तीसरे में आर्थिक बराबरी का सिद्धान्त पेश किया गया है. चौथे में पैदायशी अमीरों को बताया गया है कि उनकी जायदाद उनके पास महज़ थाती या धरोहर की शक्ल में है, वे उसके मालिक नहीं हैं.

दूसरी जिल्द के पहले हिस्से में मशीनरी और उद्योगवाद की चरचा है. इसमें यह दिखाया गया है कि ज़िन्दगी में मशीनों की मुनासिब जगह क्या है. दूसरे में स्वदेशी की विवेचना की गई है. तीसरे में उत्पादन के स्वरूप पर तफ़सील में बहस की गई है. चौथे में गाँव के उद्योग धन्धों की मुल्क के आर्थिक निज़ाम में मुनासिब जगह आँकी गई है. पाँचवें में खादी के बुनियादी पहलू और विकेन्द्रित उद्योगवाद में उसकी महत्ता को दिखाया गया है. छठवें में दूसरे हाथ के धन्धों का ज़िक्र किया गया है और सातवें में नुमाइशों को किस ढंग से करना चाहिये इस पर विचार किया है.

तीसरी जिल्द के पहले हिस्से में काम और मज़दूरी की चरचा है कि किस तरह मज़दूर के शोषण को ख़त्म किया जा सकता है ? दूसरे में मज़दूरी की दर पर बहस की गई है कि कम-से-कम मज़दूरी कितनी होनी चाहिये उतनी कि जिससे पेट भरा जा सके और इनसान-इनसान की तरह रह सके. तीसरे में किसानों और मज़दूरों के संगठन पर प्रकाश डाला गया है. चौथे में अहमदाबाद की मशहूर हड़ताल पर रोशनी डाली गई है जिसके नेता ख़ुद गान्धी जी थे. पाँचवें में हड़ताल और पिकेटिंग की चरचा है. छाँठवें में किसानों और ज़मींदारों की चरचा है. साँतवें में औद्योगिक विवादों को किस तरह शान्ति से सुलझाया जा सकता है इसके उसूल समझाये गये हैं.

श्री खेर ने बड़ी मेहनत के साथ इन जिल्दों का सम्पादन किया है. हम नवजीवन पब्लिशिंग हाउस को इतने उपयोगी प्रकाशन के लिये बधाई देते हैं. हमारी दरख़ास्त है कि राजनीति और मज़दूरों की तहरीक में दिलचस्पी लेने वाले हर कार्यकर्त्ता और देश भक्त देशवासियों को इन जिल्दों का गम्भीर अध्ययन करना चाहिए. छपाई सफ़ाई सब बहुत अच्छा है.

—वि० ना० पांडे.

18 حصوں میں تقسیم کر دیا گیا ہے تاکہ مضمون آسانی سے سمجھ میں آ سکیں۔ اِن جلدوں میں گاندھی جی کی زندگی کی فلاسفی، اُن کے جیون درشن کی جھانکی ہمیں دیکھنے کو ملتی ہے۔ اِن سے ہمیں سبق ملتا ہے کہ جس راستے پر چل کر آج پچھم زندگی اور موت کا کھیل کھیل رہا ہے اُس سے ہندستان کو کیسے بچایا جا سکتا ہے اور خود اِس خودکشی سے کیسے اپنے کو بچا سکتا ہے ؟

پہلی جلد کے پہلے حصے میں سوراج، سماج واد اور سامیہ واد کی چرچا ہے۔ دوسرے میں اِس بات کی چرچا ہے کہ جو شرم کرے وہی کھانے کا حقدار ہے۔ تیسرے میں آرتھک برابری کا سدھانت پیش کیا گیا ہے۔ چوتھے میں پیدائشی امیروں کو بتایا گیا ہے کہ اُن کی جائیداد اُن کے پاس محض تھاتی یا دھروھر کی شکل میں ہے، وے اُس کے مالک نہیں ہیں۔

دوسری جلد کے پہلے حصے میں مشینری اور ادیوگ واد کی چرچا ہے۔ اِس میں یہ دکھایا گیا ہے کہ زندگی میں مشینوں کی مناسب جگہ کیا ہے۔ دوسرے میں سودیشی کی وویچنا کی گئی ہے۔ تیسرے میں اُتپادن کے سوروپ پر تفصیل میں بحث کی گئی ہے۔ چوتھے میں گاؤں کے ادیوگ دھندوں کی ملک کے آرتھک نظام میں مناسب جگہ آنکی گئی ہے۔ پانچویں میں کھادی کے بنیادی پہلو اور وکیندرت ادیوگ واد میں اُس کی مہتتا کو دکھایا گیا ہے۔ چھٹویں میں دوسرے ہاتھ کے دھندوں کا ذکر کیا گیا ہے اور ساتویں میں نمائشوں کو کس ڈھنگ سے کرنا چاہئے اِس پر وچار کیا گیا ہے۔

تیسری جلد کے پہلے حصے میں کام اور مزدوری کی چرچا ہے کہ کس طرح مزدور کی شوشن کو ختم کیا جا سکتا ہے ؟ دوسرے میں مزدوری کے در پر بحث کی گئی ہے کہ کم سے کم مزدوری کتنی ہونی چاہئے، اتنی کہ جس سے پیٹ بھرا جا سکے اور اِنسان اِنسان کی طرح رہ سکے۔ تیسرے میں کسانوں اور مزدوروں کے سنگٹھن پر پرکاش ڈالا گیا ہے۔ چوتھے میں احمدآباد کی مشہور ہڑتال پر روشنی ڈالی گئی ہے جس کے نیتا خود گاندھی جی تھے۔ پانچویں میں ہڑتال اور پکیٹنگ کی چرچا ہے۔ چھٹویں میں کسانوں اور زمینداروں کی چرچا ہے۔ ساتویں میں اُدیوگک دِیوادوں کو کس طرح شانتی سے سلجھایا جا سکتا ہے اِس کے اُصول سمجھائے گئے ہیں۔

شری کھیر نے بڑی محنت کے ساتھ اِن جلدوں کا سمپادن کیا ہے۔ ہم نوجیون پبلشنگ ہاؤس کو اِتنے اُپیوگی پرکاشن کے لئے بدھائی دیتے ہیں۔ ہماری درخواست ہے کہ راج نیتی اور مزدوروں کی تحریک میں دلچسپی لینے والے ہر کاریہ کرتا اور دیش بھکت دیشواسیوں کو اِن جلدوں کا گمبھیر ادھیّن کرنا چاہئے۔ چھپائی صفائی سب بہت عمدہ ہے۔

—وی۔ نا۔ پانڈے۔

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

ECONOMIC AND INDUSTIAL LIFE AND RELATIGNS, VOLS. (i), (ii) AND (iii)

ज़िन्दगी के आर्थिक (इक़्तसादी) और औद्योगिक पहलुओं और कारखाने के मालिकों और मज़दूरों के आपसी सम्बन्धों पर महात्मा गान्धी के लेखों, ख़तों, तक़रीरों, उपदेशों और बातचीतों का संग्रह (मजमुआ). संग्रहकार और सम्पादक—वी० बी० खेर; शाया करने वाले नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद; तीनों जिल्दों के दाम आठ रुपया.

महात्मा गान्धी न सिर्फ़ मुल्क के सियासी नेता थे बल्कि नई बुनियादों पर दुनिया की तामीर करने की तालीम देने वाले भी थे. पच्छिम ने यूरोप और अमरीका के मुल्कों और रियासतों में इस दरजे कारख़ाने बनाये और इन कारख़ानों की पैदावार को इस क़दर यकजाई (केन्द्रित) कर दिया कि मुल्कों की दौलत चन्द पूँजीपतियों के हाथों में इकट्ठा हो गई और अमीरों और ग़रीबों के बीच की खाई इतनी गहरी और चौड़ी हो गई और वह नफ़रत और आपसी कशमकश से इतनी भर गई कि उसने पच्छिमी सभ्यता और तहज़ीब की बुनियादों को ही जड़ से खोखला कर दिया. अमीर बेहद अमीर हो गये और ग़रीब बेहद ग़रीब हो गये. ग़रीबों के पेट ख़ाली हो गये और अमीरों की पेटियाँ भर गईं. पच्छिम ने उसका एक ही हल निकाला और वह हिंसात्मक समाजवाद. गान्धी जी ने तजवीज़ की कि इस हल के नतीजे में हम दो ख़ौफ़नाक जंग देख चुके हैं और तीसरे जंग की जिस पैमाने पर तैयारियाँ हो रही हैं उससे मर्ज़ और मरीज़ दोनों ही ख़त्म हो जायेंगे. मर्ज़ को ठीक करने के लिए गान्धी जी का नुसख़ा था—अहिंसात्मक सोशलीज़्म. इसे कैसे दुनियाँ में क़ायम किया जाय, समाज को कैसे इस तरफ़ लाया जाय, लालच को कैसे त्याग में बदला जाय, नफ़रत के दरिया को कैसे मुहब्बत के सरचश्मे में बदला जाय, किन बुनियादों पर मज़दूरों का संगठन किया जाय, अमीरों और ग़रीबों के फ़र्क़ को मिटाकर कैसे समाज में बराबरी के रुतबे को क़ायम किया जाय, उत्पादन का किस तरह विकेन्द्रीकरण किया जाय और दुनिया की तहज़ीब को किस तरह हिंसा की बुनियादों से हटाकर अहिंसा की बुनियादों पर क़ायम किया जाय—इसकी तफ़सील आपको इन तीन जिल्दों के क़रीब आठ सौ सफ़ों में देखने को मिलेगी. इन जिल्दों को

ECONOMIC AND INDUSTRIAL LIFE AND RELATIONS, Vols. (i) (ii) AND (iii)

زندگی کے ارتھک (اقتصادی) اور اودیوگک پہلوؤں اور کارخانے کے مالکوں اور مزدوروں کے آپسی سمبندھوں پر مہاتما گاندھی کے لیکھوں، خطوں، تقریروں، اُپدیشوں اور بات چیتوں کا سنگرہ (مجموعہ)۔ سنگرہ کار اور سمپادک—وی۔ بی۔ کھیر؛ شائع کرنے والے نوجیون پبلشنگ ہاؤس احمدآباد؛ تینوں جلدوں کے دام آٹھ روپئے۔

مہاتما گاندھی نہ صرف ملک کے سیاسی نیتا تھے بلکہ نئی بنیادوں پر دنیا کی تعمیر کرنے کی تعلیم دینے والے بھی تھے۔ پچھم نے یورپ اور امریکہ کے ملکوں اور ریاستوں میں اِس درجے کارخانے بنائے اور اِن کارخانوں کی پیداوار کو اِس قدر یکجائی (کیندرت) کر دیا کہ ملکوں کی دولت چند پونجی پتیوں کے ہاتھوں میں اکٹھا ہو گئی اور امیروں اور غریبوں کے بیچ کی کھائی اتنی گہری اور چوڑی ہو گئی اور وہ نفرت اور آپسی کشمکش سے اتنی بھر گئی کہ اُس نے پچھمی سبھیتا اور تہذیب کی بنیادوں کو ہی جڑ سے کھوکھلا کر دیا۔ امیر بے حد امیر ہو گئے اور غریب بے حد غریب ہو گئے۔ غریبوں کے پیٹ خالی ہو گئے اور امیروں کی پیٹیاں بھر گئیں۔ پچھم نے اِس کا ایک ہی حل نکالا اور وہ ہنساتمک سماجواد۔ گاندھی جی نے تجویز کی کہ اِس حل کے نتیجے میں ہم دو خوفناک جنگ دیکھ چکے ہیں اور تیسرے جنگ کی جس پیمانے پر تیاریاں ہو رہی ہیں اُس سے مرض اور مریض دونوں ہی ختم ہو جائیں گے۔ مرض کو ٹھیک کرنے کے لئے گاندھی جی کا نسخہ تھا—اہنساتمک سوشلزم۔ اسے کیسے دنیا میں قایم کیا جائے، سماج کو کیسے اِس طرف لایا جائے، لالچ کو کیسے تیاگ میں بدلا جائے، نفرت کے دریا کو کیسے محبت کے سرچشمے میں بدلا جائے، اِن بنیادوں پر مزدوروں کا سنگٹھن کیا جائے، امیروں اور غریبوں کے فرق کو مٹا کر کیسے سماج میں برابری کے رتبے کو قایم کیا جائے، اُتپادن کا کس طرح وکیندریکرن کیا جائے اور دنیا کی تہذیب کو کس طرح ہنسا کی بنیادوں سے ہٹا کر اہنسا کی بنیادوں پر قایم کیا جائے—اِس کی تفصیل آپ کو اِن تین جلدوں کے قریب آٹھ سو صفحوں میں دیکھنے کو ملے گی۔ اِن جلدوں کو

इन टोपियों के इस्तेमाल का भी अजीब हाल होता है. कोई इनको किसी के खौफ़ से लगाता है तो कोई इनका उप्योग स्वार्थी लोभ से करता है. कोई किसी पालिसी से लगाता है तो कोई रयाकारी से. लिहाजा सियासी टोपी एक शुबहे की चीज हो कर रह गई है और "अविश्वास" की छाप उसपर लग गई है इसलिये उसकी पोजीशन किसी हाल में साफ़ नहीं रही.

यह टोपियाँ और झन्डियाँ प्रचार तो अपना अधिक रखती हैं समाचार से भी अधिक, परन्तु सर रहते हुए भी अगर इज्ज़त न पा सकें तो 'अचरज'.

लाखों मनुष्य रंग बिरंगे लेबिल लगाये हुये हैं अपने सरों पर, लेकिन हमारी नज़र और अनुभव में कितने ही वह सर है कि जो बे लेबिल हैं और ज्यादा आनरेबिल .

اِن ٹوپیوں کے استعمال کا بھی عجیب حال ہوتا ھے ۔ کوئی اِن کو کسی کے خوف سے لگاتا ھے تو کوئی اِن کا اپیوگ ذاتی لوبھ سے کرتا ھے ۔ کوئی کسی پالیسی سے لگاتا ھے تو کوئی ریاکاری سے ۔ لہذا سیاسی ٹوپی ایک شبہ کی چیز ہوکر رہ گئی ھے اور 'اوشواس' کسی حال میں چھاپ اُس پر لگ گئی ھے اِس لئے اُس کی پوزیشن کسی حال میں صاف نہیں رہی ۔

یہ ٹوپیاں اور جھنڈیاں پرچار تو اپنا ادھک رکھتی ھیں سماچار سے بھی ادھک' پرنتو سر پر رہتے ہوئے بھی اگر عزت نہ پاسکیں تو 'اچرج' ۔

لاکھوں منشیہ رنگ برنگ لیبل لگائے ہوئے ھیں اپنے سروں پر' لیکن ھماری نظر اور انوبھو میں کتنے ھیں وہ سر کہ جو بے لیبل ھیں زیادہ آنرایبل ھیں ۔

दिमागों के अन्दर सियासी खिचड़ी पकती रहती है और सरपोश ढँका रहता है खोपड़ी की देगची पर—बाज भूखे और नदीदे अधपकी ही खा जाते हैं ढकनी खोलकर, और बाज जली भी नहीं छोड़ते वे सबेरे होकर, जिसके नतीजे में या तो उनके पेट में दर्द उठने लगता है या बद-हजमी हो जाती है. यह सियासी बदहजमी समाजी जिन्दगी के लिये निहायत खतरनाक है जिसका खमयाजा बुरी तरह भुगतना पड़ता है न केवल उस एक व्यक्ति को बल्कि सारी देगची को.

यह 'सरपोश' क़ौम-फ़रोश भी साबित होते हैं बाज-बाज समय. क़ौम-फ़रोशी का सौदा सूदमन्द साबित होता है इनके लिये, इसलिये वह टोपियाँ अपनी रंगीन कमाई से आलीशान कोठियाँ बनाती हैं बक़ीया अपनी ज़िन्दगी ऐश आराम से गुज़ारने के लिये—आज हमारी नजर में बहुत सी ऐसी टोपियाँ भी हैं और इनकी बनाई हुई कोठियाँ भी.

यह रंग-बिरंग की टोपियाँ जैसे किशतियाँ हों रंगीन बादबान वाली और चल रही हों जीवन के समुन्दर पर विचार धाराओं के सहारे सहारे.

या जैसे यह टोपियाँ साइज में जैसे कमरशियल लिफ़ाफ़े, पर रंग में गोया सियासी इशारे.

यह टोपियाँ अपने-अपने रंग में सन्देश लिये फिरती हैं इधर से उधर.

हर टोपी नीति रखती है अपनी-अपनी और पैग़ाम अपना अपना. इसलिये यह कहना ठीक है कि हर टोपी प्रचारक भी है और प्रकाशक भी, मगर क्योंकि इनके रंग पक्के और वचन सच्चे नहीं इसलिये मार खा जाती हैं सियासत के मैदान में और आ गिरती हैं अन्त में सत्य के चरणों में.

दिमाग़ी भावनाओं का असर टोपियों पर अवश्य पड़ता है. इसी का यह कारण होता है कि बाज टोपियाँ काली, बाज पीली और बाज लाल या सुफ़ेद नजर आती हैं. ऊपर से जो भी उनके रंग हों पर भीतर से अकसर काली होती हैं और तास्सुब के उन पर जाले होते हैं. इसलिये जो कुछ वह देखती हैं जालेदार आंखों से.

जब किसी पार्टी का पार्टी से और नीति का नीति से विरोध होता है तो उसका आप से लाज़मी तौर पर विचार बदलता है—ख्याल पलटता है. विचार और ख्याल बदलता है तो मार्ग भी बदलता है और मार्क भी. ऐसी ही हालत में सर टोपियाँ बदलते हैं और टोपियाँ सर बदलती हैं. बाज टोपियाँ "फ़िट सिर" न मिलने के कारण उड़ती फिरती हैं हवा में या अटकी रह जाती हैं मुअल्लक़ फ़िज़ा में.

دماغوں کے اندر سیاسی کھچڑی پکتی رہتی ہے اور سرپوش ڈھکا رہتا ہے کھوپڑی کی دیگچی پر— بعض بھوکے اور ندیدے ادھ پکی ہی کھاجاتے ہیں ڈھکنی کھول کر' اور بعض جلی بھی نہیں چھوڑتے وہ سویرے ہوکر' جس کے نتیجے میں یا تو اُن کے پیٹ میں درد اُٹھنے لگتا ہے یا بدہضمی ہوجاتی ہے - یہ سیاسی بدہضمی سماجی زندگی کے لئے نہایت خطرناک ہے جس کا خمیازہ بری طرح بھگتنا پڑتا ہے نہ کیول اُس ایک ویکتی کو بلکہ ساری دیگچی کو.

یہ 'سرپوش' قوم فروش بھی ثابت ہوتے ہیں بعض بعض سمئے . قوم فروشی کا سودا سودمند ثابت ہوتا ہے اِن کے لئے. اِس لئے وہ ٹوپیاں اپنی رنگین کمائی سے عالیشان کوٹھیاں بناتی ہیں بقیہ اپنی زندگی عیش آرام سے گزارنے کے لئے— آج ہماری نظر میں بہت سی ایسی ٹوپیاں بھی ہیں اور اُن کی بنائی ہوئی کوٹھیاں بھی .

یہ رنگ برنگ کی ٹوپیاں جیسے کشتیاں ہوں رنگین بادبان والی اور چل رہی ہوں جیون کے سمندر پر وچار دھاراؤں کے سہارے سہارے .

یا جیسے یہ ٹوپیاں سائز میں جیسے کمرشل لفافے' پر رنگ میں گویا سیاسی اشارے .

یہ ٹوپیاں اپنے اپنے رنگ میں سندیش لئے پھرتی ہیں اِدھر سے اُدھر .

ہر ٹوپی نیتی رکھتی ہے اپنی اپنی اور پیغام اپنا اپنا . اِسلئے یہ کہنا ٹھیک ہے کہ ہر ٹوپی پرچارک بھی ہے اور پرکاشک بھی' مگر کیونکہ اِن کے رنگ پکے اور وچن سچے نہیں اِس لئے مار کھاجاتی ہیں سیاست کے میدان میں اور آ گرتی ہیں انت میں ستیہ کے چرنوں میں .

دماغی بھاؤناؤں کا اثر ٹوپیوں پر اوشیہ پڑتا ہے .سی کا یہ کارن ہوتا ہے کہ بعض ٹوپیاں کالی' بعض پیلی اور بعض لال یا سفید نظرآتی ہیں. اوپر سے جو بھی اُن کے رنگ ہوں پر بھیتر سے اکثر کالی ہوتی ہیں اور تعصب کے اُن پر جالے ہوتے ہیں . اِس لئے جو کچھ وہ دیکھتی ہیں جالے دار آنکھوں سے .

جب کسی پارٹی کا پارٹی سے اور نیتی کا نیتی سے ورودھ ہوتاہے تو اسکی آپ سے لازمی طور پر وچار بدلتا ہے . خیال پلٹتا ہے . وچار اور خیال بدلتا ہے تو مارگ بھی اور مارک بھی . ایسی ہی حالت میں سر ٹوپیاں بدلتے ہیں اور ٹوپیاں سر بدلتی ہیں . بعض ٹوپیاں" فٹ سر" نہ ملنے کے کارن اُڑتی پھرتی ہیں ہوا میں یا اٹکی رہ جاتی ہیں معلق فضا میں .

इन्तिक़ाम का भाव यह रखती हैं अपने चाव में.
तलवार की काट यह रखती हैं अपनी धार में.
जिदाल क़िताल में खून की नदियाँ यह बहाती हैं.
अमन आशती में सुलह के फरहरे यह उड़ाती हैं.
दरगाह की कलसी पर हिलाल का परचम यह लहराती हैं.
बजरंगबलि की छतर पर हनुमान का निशान यह उड़ाती हैं.
शासन के भवन पर इठला इठला के यह चलती हैं.
जनसंघ के संगठन से अखन्ड अखन्ड यह पुकारती हैं.
दलित के मन मन से दमन दमन यह चिल्लाती हैं.
सुर्ख़ फ़ौज के मोर्चे से नारा इंक़लाब का यह लगाती हैं.
एकता के संगम पे गङ्गा जमनी राग यह आलापती हैं.
प्रेम के मन्दिर पे धार्मिक भाव यह जगाती हैं.
पीपल के दरख़्त पे हिन्दू मुसलिम फ़िसाद यह कराती हैं.

यदि 'विश्व शान्ति' के अन्दोलन इनके दम से चलते है तो 'विश्व युद्ध' के हंगामों में झंडे इनके लहराते हैं.

यह सब कुछ सही; इनकी तमाम रंगीनियाँ, दिलचस्पियाँ और ख़ूबसूरतियाँ अपनी जगह पर, लेकिन इसतक़लाल नहीं होता इनके मिज़ाज में. धैर्य नहीं होता इनके स्वाभाव में—हवा का रुख़ देखकर यह अपना रुख़ फेरती हैं और फ़िज़ा का रङ्ग भांप कर यह अपना रंग बदलती हैं. कितनी तलव्वन मिज़ाज होती हैं यह और कितनी हवा परस्त !

झंडियों और टोपियों का एक दूसरे से ऐसा ही सम्बन्ध है जैसे हर रंग को रंग से निसबत, लेकिन जब हवा साथ नहीं देती समय का तो हम देखते हैं रंग बिरंग की टोपयाँ उड़ती फिरती हैं पवन में या जलती नज़र आती हैं अग्नि में.

जैसे किसी राज का सिक्का चालू रहता है राज भर में, इसी प्रकार राज-रंग की टोपियाँ परछाईं होती हैं राज-चलन की. जैसे किसी खोट के कारण या किसी नीति के अनुसार सिक्का टकसाल बाहर हो जाता है, वैसे ही टोपियाँ भी यकायक उड़ जाती हैं सरों से और दूसरी आ बैठती हैं उनकी जगह.

टोपियाँ ढक्कन का काम भी देती हैं. इसलिये इनको सरपोश भी कहा जा सकता है. सरपोश बनकर यह बहुत से बड़े-बड़े बेवक़ूफ़ों की ऐब पोशी भी करती हैं और बहुत से शासकों को नई-नई आफ़तों से बचाती हैं उनके पाप ढांककर.

यह रंगीन सरपोश कितने ख़ूबसूरत ऐब पोश होते हैं सचमुच. लेकिन इनके नीचे कितना गन्दा माद्दा परवरिश पाता रहता है कभी-कभी. आख़िर यह कि अन्दर ही अन्दर फूलते-फलते किसी भी वक़्त वह फूट निकलता है और सारा भेद खुल जाता है बदबू फेलकर.

انتقام کا بھاؤ یہ رکھتی ہیں اپنے چاؤ میں ۔
تلوار کی کاٹ یہ رکھتی ہیں اپنی دھار میں ۔
جدال قتال میں خون کی ندیاں یہ بہاتی ہیں ۔
امن آشتی میں صلح کے پھریرے یہ اڑاتی ہیں ۔
درگاہ کی کلسی پر ہلال کا پرچم یہ لہراتی ہیں ۔
بجرنگ بلی کی چھتری پر ہنومان کا نشان یہ اڑاتی ہیں ۔
شاسن کے بھون پر اِٹھلا اِٹھلا کے یہ چلتی ہیں ۔
جن سنگھ کے سنگٹھن سے اکھنڈ اکھنڈ یہ پکارتی ہیں ۔
دلت کے من من سے دمن دمن یہ چلاتی ہیں ۔
سرخ فوج کے مورچے سے نعرہ انقلاب کا یہ لگاتی ہیں ۔
ایکتا کے سنگم پہ گنگا جمنی راگ یہ الاپتی ہیں ۔
پریم کے مندر پہ دھارمک بھاؤ یہ جگاتی ہیں ۔
پیپل کے درخت پہ ہندو مسلم فساد یہ کراتی ہیں ۔

یدی 'وشو شانتی' کے آندولن ان کے دم سے چلتے ہیں تو 'وشو یدھ' کے ہنگاموں میں جھنڈے ان کے لہراتے ہیں ۔

یہ سب کچھ سہی؛ ان کی تمام رنگینیاں، دلچسپیاں اور خوبصورتیاں اپنی جگہ پر، لیکن استقلال نہیں ہوتا ان کے مزاج میں ۔ دھیریہ نہیں ہوتا ان کے سوبھاؤ میں— ہوا کا رخ دیکھ کر یہ اپنا رخ پھیرتی ہیں اور فضا کا رنگ بھانپ کر یہ اپنا رنگ بدلتی ہیں ۔ کتنی تلون مزاج ہوتی ہیں یہ اور کتنی ہوا پرست !

جھنڈیوں اور ٹوپیوں کا ایک دوسرے سے ایسا ہی سمبندھ ہے جیسے رنگ کو رنگ سے نسبت، لیکن جب ہوا ساتھ نہیں دیتی سمے کا تو ہم دیکھتے ہیں رنگ برنگ کی ٹوپیاں اڑتی پھرتی ہیں پون میں یا جلتی نظر آتی ہیں اگن میں ۔

جیسے کسی راج کا سکہ چالو رہتا ہے راج بھر میں، اسی پرکار راج رنگ کی ٹوپیاں پرچھائیں ہوتی ہیں راج چلن کی ۔ جیسے کسی کھوٹ کے کارن یا کسی نیتی کے انوسار سکہ ٹکسال باہر ہو جاتا ہے ویسے ہی ٹوپیاں بھی یکایک اُڑ جاتی ہیں سروں سے اور دوسری آ بیٹھتی ہیں اُن کی جگہ ۔

ٹوپیاں ڈھکن کا کام بھی دیتی ہیں ۔ اس لئے ان کو سرپوش بھی کہا جا سکتا ہے ۔ سرپوش بن کر یہ بہت سے بڑے بڑے بیوقوفوں کی عیب پوشی کرتی ہیں اور بہت سے شاسکوں کو نئی نئی آفتوں سے بچاتی ہیں اُن کے پاپ ڈھانک کر ۔

یہ رنگین سرپوش کتنے خوبصورت عیب پوش ہوتے ہیں سچ مچ ۔ لیکن ان کے نیچے کتنا گندہ مادہ پرورش پاتا رہتا ہے کبھی کبھی ۔ آخر یہ کہ اندر ہی اندر پھولتے پھلتے کسی بھی وقت وہ پھوٹ نکلتا ہے اور سارا بھید کھل جاتا ہے بدبو پھیلا کر ۔

झंडियाँ बेज़बान होती हैं लेकिन आवाज़ रखती हैं अपनी हरकत में. अपनी हरकत से वह अपना मतलब प्रगट करती हैं और अपने रङ्ग से अपना संदेश देती हैं. इनके रंग में एलान होता है जंग का भी, पैग़ाम होता है अमन का भी, इनके साये में तहरीक होती है इनक़लाब की, इनकी सरपरस्ती में तक़रीब होती है बग़ावत की, भूख के मारे इनके गहवारे में पलते हैं और ख़ून के धारे इनकी लहरों में रहते हैं. इनसानी ख़ून से यह अपना कपड़ा रंगती हैं और ख़ून का क़तरा इनका इनक़लाब को न्योता देता है. इनकी मचलती लहरें हवा को अपना हमनवा बनाती हैं और फ़िज़ा पे आते जाते रङ्ग इनको अपना हमरङ्ग करते हैं.

झंडी के रङ्ग से शासन का रद्दोबदल होता है. और टोपी की बदला बदली से नीति में तबदीली आती है (जैसी नीति वैसी टोपी) जब विचार बदलता और ख़याल पलटता है तो उसका असर खोपड़ी पर पड़ता है. खोपड़ी से क्या क्या गुल खिलते और भेद निकलते हैं वह सब इन टोपियों का ही असर होता है, क्योंकि टोपियों को दिमाग़ से पका हुआ माद्दा तैयार मिलता है.

पार्टी की नीति का—झंडियाँ अपने ऊँचे स्थान से हुक्म चलाती और फ़रमान जारी करती हैं. सलाम करने वाले झुक झुक जाते हैं उनके सम्मुख. नमस्कार करने वाले कमान हो जाते हैं इनके सामने दरबार में.

अलम-बरदार उनकी वफ़ादारी का हलफ़ उठाते और प्रण (प्रहद) करते हैं इताअत गुज़ारी का—वह उन सब को अपनी सरपरस्ती में लेकर उनके पक्ष में अपनी राय जताती हैं.

झंडिया कभी हरकत करती हैं कभी साकित (ख़ामोश) रहती हैं. जब हरकत करती हैं तो जैसे साँप लहराते और बल खाते हैं. अपनी हरकत से वह हरकत लाती हैं समाज में और हवायें लाती हैं एहसास की अवाम में. जब ख़ामोश रहती हैं तो जैसे फ़िज़ा ख़ामोश, जब चलती हैं तो चलती ही चली जाती हैं पूरब से पच्छिम, फिर पलट कर दक्खिन से उत्तर तक. जब चुप रहती हैं तो पत्ता तक दम साध जाता है उनकी एक चुप पर, लेकिन इनकी चुप में भी मसलहत होती है. वह अपनी चुप के वक़्फ़े में बहुत कुछ काम कर लेती हैं चुपके चुपके.

सलामती कौंसिल में लहरा कर यह अमन शान्ति की नुमाइन्दगी करती हैं मगर क्रान्ति से भी साज़बाज़ रखती हैं.

पीस कानफ़्रेंस में उड़ कर हवा अमन की यह बांधती हैं पीस-मेकर बनकर.

(UNO) यूनो की फ़ौजें लेकर यह आगे आगे जाती हैं चीफ़-आफ़ दी आर्मी होकर. समाज-सभा की स्थापना करके प्रार्थना और धर्म के पाठ पढ़ाती हैं.

جھنڈیاں بےزبان ہوتی ہیں لیکن آواز رکھتی ہیں اپنی حرکت میں ۔ اپنی حرکت سے وہ اپنا مطلب پرگٹ کرتی ہیں اور اپنے رنگ سے اپنا سندیش دیتی ہیں۔ ان کے رنگ میں اعلان ہوتا ہے جنگ کا بھی، پیغام ہوتا ہے امن کا بھی، ان کے سایہ میں تحریک ہوتی ہے انقلاب کی، ان کی سرپرستی میں تقریب ہوتی ہے بغاوت کی، بھوک کے مارے ان کے گہواروں میں پلتے ہیں اور خون کے دھارے ان کی لہروں میں رہتے ہیں ۔ انسانی خون سے یہ اپنا کپڑا رنگتی ہیں اور خون کا کرتا ان کا انقلاب کو نیوتا دیتا ہے ۔ ان کی مچلتی لہریں ہوا کو اپنا ہم نوا بناتی ہیں اور فضا پہ آتے جاتے رنگ ان کو اپنا ہمرنگ کرتے ہیں ۔

جھنڈی کے رنگ سے شاسن کا رد و بدل ہوتا ہے ۔ اور ٹوپی کی بدلا بدلی سے نیتی میں تبدیلی آتی ہے (جیسی نیتی ویسی ٹوپی) ۔ جب وچار بدلتا اور خیال پلٹتا ہے تو اُس کا اثر کھوپڑی پر پڑتا ہے ۔ کھوپڑی سے کیا کیا گل کھلتے اور بھید نکلتے ہیں وہ سب ان ٹوپیوں کا ہی اثر ہوتا ہے ۔ کیونکہ ٹوپیوں کو دماغ سے پکا ہوا مادہ تیار ملتا ہے ۔

پارٹی کی نیتی کا—جھنڈیاں اپنے اونچے استھان سے حکم چلاتی اور فرمان جاری کرتی ہیں ۔ سلام کرنے والے جھک جھک جاتے ہیں ان کے سنمکھ ۔ "نمسکار کرنے والے کمان ہو جاتے ہیں ان کے سامنے دربار میں ۔

علمبردار ان کی وفاداری کا حلف اٹھاتے اور پرن (عہد) کرتے ہیں اطاعت گذاری کا—وہ اُن سب کو اپنی سرپرستی میں لے کر اُن کے پکش میں اپنی رائے جتاتی ہیں ۔

جھنڈیاں کبھی حرکت کرتی ہیں کبھی ساکت (خاموش) رہتی ہیں ۔ جب حرکت کرتی ہیں تو جیسے سانپ لہراتے اور بل کھاتے ہیں ۔ اپنی حرکت سے وہ حرکت لاتی ہیں، سماج میں اور ہوائیں لاتی ہیں احساس کی عوام میں ۔ جب خاموش رہتی ہیں تو جیسے فضا خاموش ۔ جب چلتی ہیں تو چلتی ہی چلی جاتی ہیں پورب سے پچھم تک اور پھر پلٹ کر دکھن سے اتر تک ۔

جب چپ رہتی ہیں تو پتا تک دم سادھ جاتا ہے اُن کی ایک چپ پر، لیکن اُن کی چپ میں بھی مصلحت ہوتی ہے ۔ وہ اپنی چپ کے وقفے میں بہت کچھ کام کر لیتی ہیں چپکے چپکے ۔

سلامتی کونسل میں لہرا کر یہ امن شانتی کی نمائندگی کرتی ہیں مگر کرانتی سے بھی سازباز رکھتی ہیں ۔

پیس کانفرنسوں میں اڑ کر ہوا امن کی یہ باندھتی ہیں—پیس میکر بن کر ۔

(UNO) یو نو کی فوجیں لے کر یہ آگے آگے جاتی ہیں چیف آف دی آرمی ہو کر ۔ سماج سبھا کی استھاپنا کر کے پرارتھنا اور دھرم کے پاٹھ پڑھاتی ہیں ۔

टोपियाँ और झंडियाँ

श्री अब्दुल हलीम अंसारी

दोनों तरजुमान होते हैं अपने अपने लक्ष और मत के.
दोनों पैग़ाम होते हैं अपने अपने संघ और मन के.

टोपियाँ जब सरपर होती हैं तो कुछ लेती हैं दिमाग़ से और कुछ देती भी हैं दिमाग़ को.

दिमाग़ इनके प्रभाव से बहुत सी चीज़ें स्वीकार करते हैं और टोपियाँ कुछ प्रभाव अपनी भरती भी हैं दिमाग़ों के भीतर. टोपियाँ पार्टी परिचय का काम करती हैं अपने ऊँचे स्थान से. टोपियाँ नीतियाँ रखती हैं अपनी अपनी तर्ज़ और रंगत में जैसे झंडियाँ क्रांतियाँ रखती हैं अपनी अपनी लहर और हरकत में. विशेष रङ्ग और विशेष ढङ्ग की टोपियाँ और झंडियाँ निशानियाँ होती हैं जो अपनी अपनी संस्थाओं की नुमायन्दगी करती हैं, जिनके प्लान और प्रोग्राम वैसे ही अलग अलग होते हैं जैसे छूत छात के स्थान अलग अलग. एक के स्टेज पर दूसरा नहीं जा सकता. दूसरे की सीमा में तीसरा नहीं आ सकता. जो क़ौमी सुधारकों के "लफ़्ज़ी एकता" के मरकज़ (केन्द्र) होते हैं वही मूल में सियासी छुआछूत के संगठन होते हैं.

झंडियाँ प्रेम और एकता का पैग़ाम देती हैं मिली-जुली सभा में—कितनी ठन्डी और शान्त पूर्ण होती हैं, उनकी वह शीतल छाया और प्रेम सभा—ज़ाहिर में कितनी अच्छी होती हैं वह प्रेम भरी झंडियाँ और दिलकश उनकी रंगीनियाँ.

यह एकता का संगठन रचाती हैं और मेल मिलाप का संगम बनाती हैं. यही अपने ताने बाने से क़ौमी जामे तैयार करती हैं. लेकिन क़ौम का शीराज़ा भी यही बिखेरती हैं और एकता का दामन भी यही नोचाती हैं. फ़िरक़ेवारी की आग भी यही बुझाती हैं लेकिन अपने दामन से हवा देकर उस आग को भड़काती भी यही हैं. मुख़ालिफ़ हवा को आप यह रोकती हैं लेकिन काट भी यही करती हैं हवा का, औरी रुख़भी उसका यही फेरती हैं. यह दबी आग पर फूंक मारती हैं लेकिन सुलगी आग पर ख़ाक भी यह डालती हैं. संगठन यह बनाती और बिगाड़ती हैं. हलचल यह मचाती और दबाती हैं—बेशक चूँकि दो रुख़ी इनकी पालिसी होती है और दोतरफ़ा इनका रुख़, इधर कुछ तो उधर कुछ, कभी कुछ तो कभी कुछ.

ٹوپیاں اور جھنڈیاں

شری عبدالحلیم انصاری

دونوں ترجمان ہوتے ہیں اپنے اپنے لکش اور مت کے ۔
دونوں پیغام ہوتے ہیں اپنے اپنے سنگھ اور من کے ۔
ٹوپیاں جب سر پر ہوتی ہیں تو کچھ لیتی ہیں دماغ سے اور کچھ دیتی بھی ہیں دماغ کو ۔

دماغ اُن کے پربھاؤ سے بہت سی چیزیں سوئیکار کرتے ہیں اور ٹوپیاں کچھ پربھاؤ اپنے بھرتی بھی ہیں دماغوں کے بھیتر ۔ ٹوپیاں پارٹی پریچے کا کام کرتی ہیں اپنے اونچے استھان سے ۔ ٹوپیاں نیتیاں رکھتی ہیں اپنی اپنی طرز اور رنگت میں جیسے جھنڈیاں کرانتیاں رکھتی ہیں اپنی اپنی لہر اور حرکت میں ۔ وشیش رنگ اور وشیش ڈھنگ کی ٹوپیاں اور جھنڈیاں نشانیاں ہوتی ہیں جو اپنی اپنی سنستھاؤں کی نمایندگی کرتی ہیں ۔ جن کے پلان اور پروگرام ویسے ہی الگ الگ ہوتے ہیں جیسے چھوت چھات کے استھان الگ الگ ۔ ایک کے اِسٹیج پر دوسرا نہیں جا سکتا ۔ دوسرے کی سیما میں تیسرا نہیں آ سکتا ۔ جو قومی سدھارکوں کے "لفظی ایکتا" کے مرکز (کیندر) ہوتے ہیں وہی مول میں سیاسی چھوا چھوت کے سنگٹھن ہوتے ہیں ۔

جھنڈیاں پریم اور ایکتا کا پیغام دیتی ہیں ملی جلی سبھا میں ، کتنی ٹھنڈی اور شانت پورن ہوتی ہے اُن کی وہ شیتل چھایا اور پریم سبھا—ظاہر میں کتنی اچھی ہوتی ہیں وہ پریم بھری جھنڈیاں اور دلکش اُن کی رنگینیاں ۔

یہ ایکتا کا سنگٹھن رچاتی ہیں اور میل ملاپ کا سنگم بناتی ہیں ۔ یہی اپنے تانے بانے سے قومی جامے تیار کرتی ہیں ۔ لیکن قوم کا شیرازہ بھی یہی بکھیرتی ہیں اور ایکتا کا دامن بھی یہی نوچاتی ہیں ۔ فرقہ واری کی آگ بھی یہی بجھاتی ہیں لیکن اپنے دامن سے ہوا دیکر آگ کو بھڑکاتی بھی یہی ہیں ۔ مخالف ہوا کی بھاپ یہ روکتی ہیں لیکن کاٹ بھی یہی کرتی ہیں ہوا کا اور رخ بھی اُس کا یہی پھیرتی ہیں ۔ یہ دبی آگ پر پھونک مارتی ہیں لیکن سلگی آگ پر خاک بھی یہ ڈالتی ہیں ۔ سنگٹھن یہ بناتی اور بگاڑتی ہیں ۔ ہلچل یہ مچاتی اور دباتی ہیں—بےشک چونکہ دورخی اِن کی پالیسی ہوتی ہے اور دو طرفہ اِن کا رخ، اِدھر کچھ تو اُدھر کچھ، کبھی کچھ تو کبھی کچھ ۔

की देवी मानी जाती है. शिव का विवाह गौरी काली से हुआ. गौरी का अर्थ है सफेद और काली का अर्थ है काली. गौरी प्रेम को .जाहिर करती है और काली नफ़रत को. इन दोनों की क्रिया और प्रतिक्रिया से ही सृष्टि का अन्त होता है. इस तरह भारत के पुराणों में इस विश्व के सारे फैलाव को कहानियों के रूप में समझाया गया है, ताकि कम समझ आदमी भी आसानी से समझ सके. इस ढंग से उसमें ऐसी बातें भी कह दी गई हैं जिन्हें ठीक ठीक समझने के लिये बड़ी व्याख्या की .जरूरत है.

इसी तरह शरीर विद्या (फ़िज़ियालोजी) का हाल है जिसमें वैद्यक विद्या (इल्मेतिब), इल्मे सेहत, दिन और रात का बनना, मौसमों का बनना, नसलों की पैदाइश, कफ, वात और पित्त सब अपनी अपनी जगह आ जाते हैं.

इसी तरह रोगों (पैथालोजी) का हाल है. रोग भी तीन तरह के होते हैं—शरीर के रोग, मन के रोग और जीवनी शक्ति के रोग. इसमें भी शक नहीं कि यह सब अलग अलग चीज़ें एक दूसरे में रली मिली हुई हैं. हम कह चुके हैं कि .क़ुदरत में कोई ऐसी लकीरें या दीवारें हैं ही नहीं जो एक चीज को दूसरी चीज से या एक क़िस्म की चीज़ों को दूसरी क़िस्म की चीज़ों से अलग करती हों. हक़ीक़त एक अथाह और बेपायां, बे किनार समन्दर है जिसमें हम सब बुलबुलों की तरह बनते और बिगड़ते और फिर बनते और बिगड़ते रहते हैं. कड़े से कड़े रोग .क़ुव्वते इरादी से, मन की अवस्थाओं से अच्छे किये जा सकते हैं और सूक्ष्म से सूक्ष्म मानसिक विचार जड़ औषधियों द्वारा बदले जा सकते हैं.

इनसाइक्लोपीडिया ब्रीटेनिका में प्राणीशास्त्र (ज़ुओलोजी) पर निबन्ध इस सम्बन्ध में पढ़ने योग्य है. सब जगह वही तीन के जोड़े और वही अनेकता में एकता यानी कसरत में वहदत.

کی دیوی مانی جاتی ہے . شو کا وِواہ گوری کالی سے ہوا . گوری کا ارتھ ہے سفید اور کالی کا ارتھ ہے کالی . گوری پریم کو ظاہر کرتی ہے اور کالی نفرت کو . ان دونوں کی کریا اور پرتیکریا سے ہی سرشٹی کا انت ہوتا ہے . اِسی طرح بھارت کے پرانوں میں اِس شو کے سارے پھیلاؤ کو کہانیوں کے روپ میں سمجھایا گیا ہے، تاکہ کم سمجھ آدمی بھی آسانی سے سمجھ سکے . اِس ڈھنگ سے اُس میں ایسی باتیں بھی کہہ دی گئی ہیں جنہیں ٹھیک ٹھیک سمجھنے کے لئے بڑی ویاکھیا کی ضرورت تھی .

اِسی طرح شریر ودیا (فزیالوجی) کا حال ہے جس میں ویدک ودیا (علم طب)، علم صحت، دن اور رات کا بننا، موسموں کا بننا، نسلوں کی پیدائش، کف، وات اور پت سب اپنی اپنی جگہ آ جاتے ہیں .

اِسی طرح روگوں (پیتھالوجی) کا حال ہے . روگ بھی تین طرح کے ہوتے ہیں—شریر کے روگ، من کے روگ اور جیون شکتی کے روگ . اِس میں بھی شک نہیں کہ یہ سب الگ الگ چیزیں ایک دوسرے میں رلی ملی ہوئی ہیں . ہم کہہ چکے ہیں کہ قدرت میں کوئی ایسی لکیریں یا دیواریں ہیں ہی نہیں جو ایک چیز کو دوسری چیز سے یا ایک قسم کی چیزوں کو دوسری قسم کی چیزوں سے الگ کرتی ہوں . حقیقت ایک اتھاہ اور بےپایاں، بےکنار سمندر ہے جس میں ہم سب بلبلوں کی طرح بنتے اور بگڑتے اور پھر بنتے اور بگڑتے رہتے ہیں . کڑے سے کڑے روگ قوت ارادی سے، من کی اوستھاؤں سے اچھے کئے جا سکتے ہیں اور سوکشم سے سوکشم مانسک وچار جڑ اوشدھیوں دوارا بدلے جا سکتے ہیں .

انسائکلوپیڈیا برٹینیکا میں پرانی شاستر (زوالوجی) پر نبندھ اِس سمبندھ میں پڑھنے یوگیہ ہے . سب جگہ وہی تین تین کے جوڑ اور وہی انیکتا میں ایکتا یعنی کثرت میں وحدت .

और कारण शरीर कहा जाता है और जिन्हें ईसाई सन्त सेन्ट पाल ने 'बाडी, सोल एण्ड स्पिरिट' के नाम से पुकारा है. इन तीनों का एक दूसरे से नाता एक अलग और दूसरा विषय है.

मन्वन्तर विद्या यानी ऐन्थ्रापालोजी के अन्दर हम चित्त विद्या (साइकालोजी), देह विद्या (फ़िज़ियालोजी) और समाज शास्त्र (सोशियालॉजी) तीनों को शामिल कर सकते हैं. यही तीन आत्मा, ग़ैर आत्मा और इन दोनों का मेल है. यही माइन्ड, मैटर और लाइफ़ यानी चेतन, अचेतन और प्राण हैं.

इस तरह चक्कर पूरा करके हम फिर उन्हीं उसूलों पर आजाते हैं. हमारा ज्ञान (इल्म) और हमारा अनुभव (तजरबा) जितना बढ़ता जाता है और हमारी अन्दर की शक्तियाँ जितनी जितनी खुलती जाती हैं उतना उतना ही जिन चीज़ों को हम दूर और निकम्मा समझते थे उन्हें नज़दीक और काम का समझने लगते हैं. निजी स्वार्थ और ख़ुदग़रज़ी की निगाह से यही चीज़ें हमारे दुनियावी सुख सौख्य को बढ़ाने वाली साबित होती हैं और त्याग और हक़ीक़ी शान्ति की निगाह से यही चीज़ें हमें सबके साथ हमारी एकता दिखलाकर लोकसंग्रह यानी ख़िदमते ख़ल्क़ में ज़ियादह से ज़ियादह मदद देने वाली बन जाती हैं.

इतिहास (तारीख़) में तीन चीज़ें ख़ास होती हैं. एक तिथिवार हालात जिसे क्रानालोजी कहते हैं जिसका सम्बन्ध काल यानी समय से है. दूसरे भुगोल यानी जियोग्रेफ़ी जिसका सम्बन्ध देश और जगह से है. तीसरे घटनाओं का बयान यानी नैरेटिव जो इतिहास का मुख्य अंग है, जिसका सम्बन्ध गति यानी हरकत से है. यह तीनों भी उसी शक्ति के कारनामे हैं जो अकेली ही, सब कुछ कर सकती है और जिसके बिना कहीं कुछ किया ही नहीं जा सकता. इन्ही अर्थों में ईश्वर अल्लाह को सर्व शक्तिमान क़ादिरे मुतलक़ या 'आलमाइटी' कहा जाता है.

यदि हम इतिहास को ध्यान से देखें तो इतिहास के यही तीन रूप गोरी, काली, और शक्ति के रूप में दिखाई देते हैं. इन्हीं के ज़रिये दुनिया के सब पदार्थ, सब जानदार सब राष्ट्र, क़ौमें नसलें और सभ्यताएँ पैदा होती हैं, बढ़ती हैं और गिर कर ख़तम हो जाती हैं. इन्हीं तीनों ताक़तों को ब्रह्मा, विष्णु और शिव या रुद्र नामों से पुकारा गया है. यही तीनों नाम तीनों गुणों रजस, सत्व और तमस को ज़ाहिर करते हैं. ब्रम्हा का विवाह 'सरस्वति' से हुआ जो ज्ञान की देवी मानी जाती है, क्योंकि कर्म बिना ज्ञान के निष्फल है और ज्ञान बिना कर्म के ख़तरनाक. विष्णु का विवाह लक्ष्मी से हुआ जो धन और सुख सौख्य

اور کارن شریر کہا جاتا ھے اور جنھیں عیسائی سنت سینٹ پال نے ' باڈی' سول اینڈ اسپرٹ' کے نام سے پکارا ھے۔ اِن تینوں کا ایک دوسرے سے ناتا ایک الگ اور دوسرا وشے ھے۔

منونتر ودیا یعنی اینتھراپالوجی کے اندر ہم چت ودیا (سائیکالوجی)' دیہہ ودیا (فزیالوجی) اور سماج شاستر (سوشیالوجی) تینوں کو شامل کرسکتے ھیں۔ یہی تین آتما' غیر آتما اور اِن دونوں کا میل ھے۔ یہی مائنڈ' میٹر اور لائف یعنی چیتن' اچیتن اور پران ھیں۔

اِسی طرح چکر پورا کرکے ہم پھر اُنھیں اصولوں پر آجاتے ھیں۔ ہمارا گیان (علم) اور ہمارا انبھو (تجربہ) جتنا بڑھتا جاتا ھے اور ہماری اندر کی شکتیاں جتنی جتنی کھلتی جاتی ھیں اتنا اتنا ہی جن چیزوں کو ہم دور اور نکما سمجھتے تھے اُنھیں نزدیک اور کام کا سمجھنے لگتے ھیں۔ نجی سوارتھ اور خود غرضی کی نگاہ سے یہی چیزیں دنیاوی سکھ سوکھیہ کو بڑھانے والی ثابت ہوتی ھیں اور تیاگ اور حقیقی شانتی کی نگاہ سے یہی چیزیں ھمیں سب کے ساتھ ہماری ایکتا دکھلا کر لوک سنگرہ یعنی خدمت خلق میں زیادہ سے زیادہ مدد دینے والی بن جاتی ھیں۔

اِتہاس (تاریخ) میں تین چیزیں خاص ہوتی ھیں۔ ایک تتھی وار حالات جسے کرانالوجی کہتے ھیں جس کا سمبندھ کال یعنی سمے سے ھے۔ دوسرے بھوگول یعنی جیوگریفی جس کا سمبندھ دیش اور جگہہ سے ھے۔ تیسرے گھٹناؤں کا بیان یعنی نریٹو جو اتہاس کا مکھیہ انگ ھے' جس کا سمبندھ گتی یعنی حرکت سے ھے۔ یہ تینوں بھی اُسی شکتی کے کارنامے ہیں جو اکیلی ہی سب کچھ کر سکتی ھے اور جس کے بنا کہیں کچھ کیا ہی نہیں جا سکتا۔ اِنھیں ارتھوں میں ایشور اللہ کو سروشکتیمان' قادر مطلق یا 'آل مائیٹی' کہا جاتا ھے۔

یدی ہم اِتہاس کو دھیان سے دیکھیں تو اتہاس کے یہی تین روپ گوری' کالی' اور شکتی کے روپ میں دکھائی دیتے ھیں۔ اِنھیں کے ذریعے دنیا کے سب پدارتھ' سب جاندار' سب راشٹر' قومیں' نسلیں اور سبھیتائیں پیدا ہوتی ھیں' بڑھتی ھیں اور گر کر ختم ہو جاتی ھیں۔ انھیں تینوں طاقتوں کو برھما' وشنو اور شو یا رودرناموں سے پکارا گیا ھے۔ یہی تین نام تینوں گنوں رجس' ستو اور تمس کو ظاہر کرتے ھیں۔ برھما کا وِیواہ 'سرسوتی' سے ہوا جو گیان کی دیوی مانی جاتی ھے' کیونکہ کرم بنا گیان کے نشپھل ھے اور گیان بنا کرم کے خطرناک۔ وشنو کا وِیواہ لکشمی سے ہوا جو دھن اور سکھ سوکھیہ

भारत के "इतिहास" में मानव इतिहास के खास खास युगों का बयान है.

यूरोपियन विद्वान बर्गसन ने जिसे 'टार्पर, इन्सटिंक्ट और इनटैलीजेन्स' कहा है उसी को भारत के पुराणों में 'तमस, रजस और सत्व' कहा गया है. देवी भागवत में इसे बड़े विस्तार के साथ बयान किया गया है.

हम ऊपर कह चुके हैं कि आजकल की सान्इस के अनुसार क़ुदरत की सारी ताक़तें एक तरह बिजली की ताक़त के अन्दर आ जाती हैं. यह विश्वास बड़े बड़े साइन्सदानों का विश्वास है. हो सकता है कि अगला क़दम साइन्स यह ले कि वह बिजली की ताक़त को विश्वव्यापी प्राण यानी सबकी जान के साथ मिलाकर एक कर दे. इसी विज्ञान को अंगरेज़ी में ऐनीमामुन्डी या वाइटैलिटी कहते हैं. इसी प्राण या जान को माइन्ड फ़ोर्स भी कहा जाता है. यही वह इच्छा शक्ति, वह क़ुवते इरादी यानी रूहे कुल की ज़हूर में आने की वह इच्छा है जिसकी बाबत उपनिषदों में कहा गया है—'मैं एक हूँ और बहुत हो जाऊँ'. इसलाम में इसी को अल्लाह के मुंह से 'हो जा' कहना बताया गया है. यह व्यापक इच्छा शक्ति ही ज्ञान शक्ति, बुद्धि शक्ति या संकल्प शक्ति के ज़रिये काम करती है. यही विश्व की क्रिया शक्ति है. क़ुदरत की सारी शक्तियाँ इसी के अन्दर समाई हुई हैं और इसी से काम कर रही हैं.

मामूली नल से निकला हुआ पानी का फ़ौवारा बहुत बड़े दबाव के अन्दर फ़ौलाद की छड़ से ज़ियादा सख़्त हो जाता है. हवा का एक ज़बरदस्त झोंका अपनी हरकत की तेज़ी की वजह से समन्दर के ऊपर पानी की उलटी मीनार या सहारा के रेगिस्तान में रेत की मीनार बन जाता है. ठोस चीज़ें तरल हो जाती हैं, तरल गैस यानी हवा बन जाती हैं. गैसें और अधिक लतीफ़ होकर ईथर बन जाती हैं, वग़ैरह वग़ैरह. इसी तरह इनकी तेज़ी को कम करने और बहाव को बढ़ाने से तरह तरह की लहरें पैदा हो जाती हैं जिन्हें साइन्सदाँ 'वेव्ज़' कहते हैं. अन्त में जाकर ये सब गति, हरकत और लहरें चाहे पिन्ड के अन्दर और चाहे ब्रह्मान्ड के अन्दर उसी विश्वात्मा की गति है जो अपनी माया (लीला) के ज़रिये एक से अनेक मालूम होने लगता है. इसी से अनगिनत नाम और रूप पैदा होते हैं. आत्मा के इसी अपने चारों तरफ़ के नृत्य को पुराणों में शिव का ताण्डव नृत्य कहा गया है.

जो शक्ति आत्मा और ग़ैर आत्मा में नाता जोड़ती है उसी को योगभाष्य में 'चित्त बल' और महाभारत और पुराणों में 'काम संकल्प शक्ति' कहा गया है. इसी से मनुष्य के वह तीन शरीर बनते हैं जिन्हें स्थूल शरीर,

بھارت کے "اتہاس" میں مانو اتہاس کے خاص خاص یگوں کا ورنن ھے .

یوروپین ودوان برگسن نے جسے' ٹارپر' انسٹنکٹ اور انٹلیجینس' کہا ھے اُسی کو بھارت کے پرانوں میں 'تمس' رجس اور ستو' کہا گیا ھے . دیوی بھاگوت میں اِسے بڑے وستار کے ساتھ بیان کیا گیا ھے .

هم اُوپر کہہ چکے ھیں کہ آجکل کی سائنس کے انوسار قدرت کی ساری طاقتیں ایک طرح بجلی کی طاقت کے اندر آجاتی ھیں . یہ وشواس بڑے بڑے سائنسدانوں کا وشواس ھے . ھوسکتا ھے کہ اگلا قدم سائنس یہ لے کہ وہ بجلی کی طاقت کو وشوویاپی' پران یعنی سب کی جان کے ساتھ ملا کر ایک کر دے . اِسی وگیان کو انگریزی میں اینیما مونڈی یا وائٹیلٹی کہتے ھیں . اِسی پران یاجان کو مائنڈ فورس بھی کہا جاتا ھے . یہی وہ اچھا شکتی' وہ قوت ارادی یعنی روح کل کی ظہور میں آنے کی وہ اچھا ھے جس کی بابت اپنشدوں میں کہا گیا ھے— "میں ایک ھوں اور بہت ھوجاؤں ." اِسلام میں اسی کو اللہ کے منھ سے 'ھوجا' کہنا بتایا گیا ھے . یہ ویاپک اچھا شکتی ھی گیان شکتی' بدھی شکتی یاسنکلپ شکتی کے ذریعے کام کرتی ھے . یہی وشو کی کریا شکتی ھے . قدرت کی ساری شکتیاں اِسی کے اندر سمائی ھوئی ھیں اور اِسی سے کام کررھی ھیں .

معمولی نل سے نکلا ھوا پانی کا فوارہ بہت بڑے دباؤ کے اندر فولاد کی چھڑ سے زیادہ سخت ھو جاتا ھے . ھوا کا ایک زبردست جھونکا اپنی حرکت کی تیزی کی وجہ سے سمندر کے اوپر پانی کی الٹی مینار یا صحارا کے ریگستان میں ریت کی مینار بن جاتا ھے . ٹھوس چیزیں ترل ھو جاتی ھیں' ترل گیس یعنی ھوا بن جاتی ھیں . گیسیں اور ادھک لطیف ھوکر ایتھر بن جاتی ھیں' وغیرہ وغیرہ . اِسی طرح اِن کی تیزی کو کم کرنے اور بہاؤ کو بڑھانے سے طرح طرح کی لہریں پیدا ھوجاتی ھیں جنھیں سائنسداں 'ویوز' کہتے ھیں . انت میں جاکر یہ سب گتی' حرکت اور لہریں' چاھے پنڈ کے اندر اور چاھے برہمانڈ کے اندر' اُسی وشوآتما کی گتی ھے جو اپنی مایا (لیلا) کے ذریعے ایک سے انیک معلوم ھونے لگتا ھے . اِسی سے انگنت نام اور روپ پیدا ھوتے ھیں . آتما کے اِسی اپنے چاروں طرف کے نرتیہ کو پرانوں میں شوکا تانڈو نرتیہ کہا گیا ھے .

جو شکتی آتما اور غیر آتما میں ناتا جوڑتی ھے اُسی کو یوگ بھاشیہ میں 'چت بل' اور مہابھارت اور پرانوں میں 'کام سنکلپ شکتی' کہا گیا ھے . اِسی سے مانشیہ کے وہ تین شریر بنتے ھیں جنھیں استھول شریر'

एक दूसरे के साथ खिल्त मिल्त होती रही हैं. सच्ची बात यह है और हम शब्दशः यह कह सकते हैं कि हम सब शारीरिक निगाह से और आत्मा की निगाह से दोनों निगाहों से एक दूसरे का अंग हैं और एक हैं, फिर भी हर एक अपना अलग सापेक्ष वजूद भी रखता है. इसी का नाम एकता में अनेकता और अनेकता में एकता, यानी वहदत में कसरत और कसरत में वहदत है.

इंजील में लिखा है:—"ईश्वरीय क़ानून के अनुसार सब चीजें एक दूसरे के वजूद में मिल जाती हैं." कारण साफ़ है क्योंकि सब एक ही चेतन की कल्पना से पैदा हुई हैं और उसी एक कल्पना के अंग हैं. वह सब जगह हाज़िर नाज़िर, सर्व व्यापक, सर्व शक्तिमान, रूहेकुल, सबको सबके अन्दर एक किये हुए है. यूरोप के मशहूर साइन्सदां" डाक्टर ऐलेक्सिस कैरल ने अपनी पुस्तक "मैन दि अननोन में इसी सचाई को साइन्स के शब्दों और साइन्स के तरीक़े से बड़ी सुन्दरता के साथ बयान किया और समझाया है.

यही कारण है कि आदमी के दिल में इस बात की ज़बरदस्त और गहरी लगन है कि वह इस भिन्नता में एकता को देख सके. इसीलिये साइन्स प्रकृति की सब शक्तियों को अपने अधिकार में लाने की कोशिशों में लगी रहती है. इसीलिये मानव समाज धीरे धीरे इसी एकता को साक्षात करने की तरफ़ क़दम बढ़ा रहा है. सबके साथ अपनी एकता को साक्षात करने में ही सर्व शक्तिमत्ता का रहस्य यानी क़ुदरते कामिल का राज़ छिपा हुआ है.

ज्योतिष विद्या यानी इल्मेनजूम (ऐस्ट्रानोमी) के अन्दर भूगोल विद्या (जियाग्रैफ़ी) और भूगर्भ विद्या (जियोलाजी) दोनों शामिल हैं. पुराणों के अनुसार हमारी इस धरती की रचना में सात आवरण हैं. इन्हीं को मिट्टी, पानी, आग, हवा वग़ैरह नामों से पुकारा जाता है. इसी ज्योतिष के अन्दर भूतल विद्या (फ़िज़ियोग्राफ़ी) और इसी में वंश विद्या (बायोलाजी) शामिल हैं. वंश विद्या में मणि विद्या (मिनरालोजी) वृक्ष विद्या (बाटेनी), प्राणी विद्या (ज़ूआलोजी), आ जाती हैं. प्राणी विद्या का ही एक रूप मन्वन्तर विद्या यानी ऐन्थ्रापालोजी है.

भारत के पुराणों में पाँच ख़ास चीज़ों का बयान आता है :—एक सर्ग यानी दुनिया कैसे बनी, दूसरे प्रति सर्ग यानी दुनिया कैसे ख़त्म होती है, तीसरे वंश यानी जानदार कैसे पैदा होते हैं, चौथे मन्वन्तर यानी मनुष्य की पैदाइश का इतिहास और, पाँचवे वंशानुचरित यानी मनुष्य की नसलों का इतिहास. इन्हीं पांचों के साथ साथ पुराणों में अवतारों का ज़िक्र है. अवतार का मतलब है "हुलूल" के ज़रिये उस अल्लाह की क़ुदरत और उसकी शक्ति का ख़ास ख़ास चीज़ों या आदमियों में ज़हूर.

یک دوسرے کے ساتھ خلت ملت ہوتی رہی ہیں۔ سچی بات یہ ہے اور ہم شبدشہ یہ کہہ سکتے ہیں کہ ہم سب شاریرک نگاہ سے اور آتما کی نگاہ سے دونوں نگاہوں سے ایک دوسرے کا انگ ہیں اور ایک ہیں، پھر بھی ہر ایک اپنا الگ ساپیکش وجود بھی رکھتا ہے۔ اِسی کا نام ایکتا میں انیکتا یعنی وحدت میں کثرت اور کثرت میں وحدت ہے۔

انجیل میں لکھا ہے:—"ایشوریہ قانون کے انوسار سب چیزیں ایک دوسرے کے وجود میں مل جاتی ہیں۔" کارن صاف ہے کیونکہ سب ایک ہی چیتن کی کلپنا سے پیدا ہوئی ہیں اور اُسی ایک کلپنا کے انگ ہیں۔ وہ سب جگہہ حاظر ناظر، سروویاپک، سرو شکتیمان، روح کل، سب کو سب کے اندر ایک کئے ہوئے ہے۔ یورپ کے مشہور سائنسداں ڈاکٹر ایلیکسس کیرل نے اپنی پستک "مین دی انٹون" میں اِس سچائی کو سائنس کے شبدوں اور سائنس کے طریقے سے بڑی سندرتا کے ساتھ بیان کیا اور سمجھایا ہے۔

یہی کارن ہے کہ آدمی کے دل میں اِس بات کی زبردست اور گہری لگن ہے کہ وہ اِس بھننتا میں ایکتا کو دیکھ سکے۔ اِسی لئے سائنس پرکرتی کی سب شکتیوں کو اپنے ادھیکار میں لانے کی کوششوں میں لگی رہتی ہے۔ اِسی لئے مانو سماج دھیرے دھیرے اِسی ایکتا کو ساکشات کرنے کی طرف قدم بڑھا رہا ہے۔ سب کے ساتھ اپنی ایکتا کو ساکشات کرنے میں ہی سرو شکتی متا کا رہسیہ یعنی قدرت کامل کا راز چھپا ہوا ہے۔

جیوتش ودیا یعنی علم نجوم (ایسٹرانومی) کے اندر بھوگول ودیا (جیوگریفی) اور بھوگربھ ودیا (جیولاجی) دونوں شامل ہیں۔ پرانوں کے انوسار ہماری اِس دھرتی کی رچنا میں سات آورن ہیں۔ اِنہیں مٹی، پانی آگ، ہوا وغیرہ ناموں سے پکارا جاتا ہے۔ اِسی جیوتش کے اندر بھوتل ودیا (فزیوگرافی) اور اِسی میں ونش ودیا (بائیولاجی) شامل ہے۔ ونش ودیا میں منی ودیا (منرالوجی)، ورکش ودیا (باٹینی)، پرانی ودیا (ذوالوجی) آجاتی ہیں۔ پرانی ودیا کا ہی ایک روپ منونتر ودیا یعنی اینتھراپالوجی ہے۔

بھارت کے پرانوں میں پانچ خاص چیزوں کا بیان آتا ہے:— ایک سرگ یعنی دنیا کیسے بنی، دوسرے پرتی سرگ یعنی دنیا کیسے ختم ہوتی ہے، تیسرے ونش یعنی جاندار کیسے پیدا ہوتے ہیں، چوتھے منونتر یعنی منشیہ کی پیدائش کا اتہاس پانچویں ونشانو چرت یعنی منشیہ کی نسلوں کا اتہاس، اِنہیں پانچوں کے ساتھ ساتھ پرانوں میں اوتاروں کا ذکر ہے۔ اوتار کا مطلب ہے "حلول" کے ذریعے اُس اللہ کی قدرت اور اُس کی شکتی کا خاص خاص چیزوں یا آدمیوں میں ظہور۔

भागवत में और योग वासिष्ट में लिखा है कि:—"सब चीज़ें, हर जगह, हर तरह से और हर समय मौजूद हैं." योग भाष्य में लिखा है:—"सब में सब की आत्मा है. सब में सब के सब गुण मौजूद हैं." मशहूर साइन्सदाँ जीन्स लिखता है:—"हर इलेक्ट्रान सारे विश्व भर में फैला हुआ है." एक दूसरा साइन्सदां ड. ऐलेक्सस कैरल लिखता है:—"मनुष्य का आपा सब जगह यानी सारे विश्व में फैला है." योग वासिष्ट में लिखा है:— "अणु दुनियाओं में हैं और दुनियाएँ अणुओं में हैं."

इस बुनियादी सचाई के होते हुए भी हम चीज़ों को अलग अलग नाम दे लेते हैं. यह नाम हम हर चीज़ के किसी न किसी अलग गुण या उसकी किसी न किसी ख़ास सिफ़त के कारण देकर अपना काम चलाते हैं. न्याय शास्त्र में, योग वासिष्ट में और ब्रह्म सूत्रों में इस बात को बहुत अच्छी तरह खोल कर और विस्तार के साथ बयान किया गया है.

दुनिया के सब नाम रूप आदमी ने अपनी आसानी के लिये गढ़े हैं. इन नाम रूपों पर ही सब साइन्सों की बुनियादें हैं. नहीं तो क़ुदरत में सब एक है. सब रोशनियों की किरनें एक दूसरे में मिली हुई हैं. शबनम (ओस) की बूँद के अन्दर आफ़ताब (सूर्य) मौजूद है और शबनम की बूँद आफ़ताब के धधकते हुए गोले के अन्दर मौजूद है मैं जब उत्तरी ध्रुव और दक्खिनी ध्रुव यानी क़ुतुब शुमाली और क़ुतुब जनूबी की बात करता हूँ तो वह मेरे मन के अन्दर होते हैं और मेरा मन उनमें मौजूद होता है. यह अनन्त आकाश और उसके अन्दर अरबों खरबों और शंखों सितारे और सैयारे सब मेरी छोटी सी आँख के अन्दर हैं और इन सब में भी सब को देखने वालों की आंखें मौजूद हैं. बेतार के रेडियो ने साबित कर दिया है कि सब आवाजें, सब जगह से उठने वाली सब जगह सुनी जा सकती हैं और सब जगह मौजूद हैं. जो सितारे और सैयारे एक दूसरे से करोड़ों और अरबों मील की दूरी पर हैं उन सब पर रोशनी की किरनों के द्वारा बराबर एक दूसरे का अक्स पड़ता रहता है. हमारे शरीर के सब तन्तु हमारे ख़ून के ज़रिए एक दूसरे से मिले रहते हैं. हर छोटे से छोटे ऐटम की हर हरकत विश्व भर की अनगिनत हरकतों का नतीजा होती है और वह ख़ुद अपने द्वारा अनगिनत हरकतों को जन्म देती है. हर मनुष्य अनगिनत पुरखों की औलाद होता है और उसी तरह अनगिनत मनुष्यों का पुरखा होता है. यदि हम दुनिया के मनुष्यों के सब पिछले रिश्तों का पता लगा सकें तो हमें मालूम होगा कि हर मनुष्य दुनिया भर के बाक़ी सब मनुष्यों के साथ ख़ून के रिश्ते से जुड़ा हुआ है. इनसान की सारी नसलें बराबर

بھاگوت میں اور یوگ واسشٹ میں لکھا ہے کہ:—"سب چیزیں، ہر جگہ، ہر طرح سے اور ہر سمے موجود ہیں." یوگ بھاشیہ میں لکھا ہے:—"سب میں سب کی آتما ہے. سب میں سب کے گن موجود ہیں." مشہور سائنسداں جینس لکھتا ہے:—"ہر الیکٹران سارے وشو بھر میں پھیلا ہوا ہے." ایک دوسرا سائنسداں ڈاکٹر ایلکسس کیرل لکھتا ہے:— "منشیہ کا آپا سب جگہ یعنی سارے وشو میں پھیلا ہے." یوگ واسشٹ میں لکھا ہے:—"انو دنیاؤں میں ہیں اور دنیائیں انوؤں میں ہیں."

اِس بنیادی سچائی کے ہوتے ہوئے بھی ہم چیزوں کو الگ الگ نام دے لیتے ہیں. یہ نام ہم ہر چیز کے کسی نہ کسی الگ گن یا اُس کی کسی نہ کسی خاص صفت کے کارن دے کر اپنا کام چلاتے ہیں. نیائے شاستر میں، یوگ واسشٹ میں اور برہم سوتروں میں اِس بات کو بہت اچھی طرح کھول کر اور وستار کے ساتھ بیان کیا گیا ہے.

دنیا کے سب نام روپ آدمی نے اپنی آسانی کے لئے گڑھے ہیں. اِن نام روپوں پر ہی سب سائنسوں کی بنیادیں ہیں. نہیں تو قدرت میں سب ایک ہیں. سب روشنیوں کی کرنیں ایک دوسرے میں ملی ہوئی ہیں. شبنم (اوس) کی بوند کے اندر آفتاب (سوریہ) موجود ہے اور شبنم کی بوند آفتاب کے دہکتے ہوئے گولے کے اندر موجود ہے. میں جب اُتری دھرو اور دکھنی دھرو یعنی قطب شمالی اور قطب جنوبی کی بات کرتا ہوں تو وہ میرے من کے اندر ہوتے ہیں اور میرا من اُن میں موجود ہوتا ہے. یہ اننت آکاش اور اُس کے اندر اربوں کھربوں اور شنکھوں ستارے اور سیارے سب میری چھوٹی سی آنکھ کے اندر ہیں اور اِن سب میں بھی سب کو دیکھنے والوں کی آنکھیں موجود ہیں. بے تار کے ریڈیو نے یہ ثابت کر دیا ہے کہ سب آوازیں، سب جگہ سے اُٹھنے والی، سب جگہ سنی جا سکتی ہیں اور سب جگہ موجود ہیں. جو ستارے اور سیارے ایک دوسرے سے کروڑوں اور اربوں میل کی دوری پر ہیں اُن سب پر روشنی کی کرنوں کے دوارا برابر ایک دوسرے کا عکس پڑتا رہتا ہے. ہمارے شریر کے سب تنتو ہمارے خون کے ذریعے ایک دوسرے سے ملے رہتے ہیں. ہر چھوٹے سے چھوٹے ایٹم کی ہر حرکت وشو بھر کی انگنت حرکتوں کا نتیجہ ہوتی ہے اور وہ خود اپنے دوارا انگنت حرکتوں کو جنم دیتی. ہر منشیہ انگنت پرکھوں کی اولاد ہوتا ہے اور اُسی طرح انگنت منشیوں کا پرکھا ہوتا ہے. یدی ہم دنیا کے منشیوں کے سب پچھلے رشتوں کا پتہ لگا سکیں تو ہمیں معلوم ہوگا کہ ہر منشیہ دنیا بھر کے باقی سب منشیوں کے ساتھ خون کے رشتے سے جڑا ہوا ہے. اِنسان کی ساری نسلیں برابر

यानी साउन्ड, रोशनी यानी लाइट, गरमी यानी हीट, बिजली(इलेक्ट्रीसिटी), और तरह तरह की किरनें (रेज) और इनसे सम्बन्ध रखने वाली विद्याएँ आजाती हैं. अन्त में जाकर इन सब का सम्बन्ध विद्युत यानी बिजली से बताया जाता है. अणु यानी ऐटम की बाबत अभी तक यूरोप के विद्वानों में अलग अलग विचार हैं. कोई उसे एक छोटी से छोटी माद्दी यानी ठोस चीज समझते हैं और कोई केवल एक लहर (वेव) या शक्ति (इनरजी) बताते हैं. ऐसे ही दो विचार रोशनी के बारे में भी रह चुके हैं. तीसरे हिस्से में ज्योतिष शास्त्र है जिसे अंगरेजी में ऐस्ट्रानोमी कहते हैं. इस तीसरे हिस्से में भी ऊपर के दोनों आकार एक तरह से मिल जाते हैं. इसमें सब ब्रह्मान्डों यानी आकाश के गोलों, अनन्त सूर्यों, सितारों, सैयारों, सौर्य जगतों, आसमानों का बनना, चक्कर काटना, उनके आपस के रिश्ते और एक दूसरे पर उनके असर, हमारी जमीन के रहने वालों पर उनके असर, सब आजाते हैं.

इस निगाह से ज्योतिष के दो भाग हो गए हैं. एक गणित यानी मामूली ऐस्ट्रानोमी और दूसरा फलित यानी ऐस्ट्रालोजी. इन्हीं दोनों को नजूम भी कहते हैं. इनका सम्बन्ध हमारी धरती की बनावट, हमारे समय के विभागों, हमारे मन की हालतों और हमारी धरती के अन्दर की धातों, हमारे मौसमों, हमारे ज्वार भाटों, हमारे सम्मूम व तूफ़ानों जिन्हें अंगरेजी में Simooms and Typhoons कहते हैं, हमारे जलजलों, तरह तरह के जानवरों, वनस्पतियों और इनसानी क़ौमों की पैदायशों वग़ैरह वग़ैरह से भी बिलकुल साफ़ है. इसी पर हमारे ज्योतिषी पाँच साल, सात साल, बारह साल, छत्तीस साल, सौ साल, बारहसौ साल, छत्तीस सौ साल, चार हजार तीन सौ बीस साल वग़ैरह के युग बना लेते हैं. इन सबका सम्बन्ध उन अरबों खरबों दुनियाओं से है जो ज्योतिष का विषय है.

यह बात भी साफ़ समझ में आ सकती है कि ये सब चीजें और सब साइन्सें एक दूसरे में मिल जाती हैं. अगर ऐटमों से दुनियाएँ बनी हैं तो हर ऐटम के अन्दर सब दुनियाएँ मौजूद हैं. बड़ के दरख्त में बीज और बीज में पूरा दरख्त मौजूद है. बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा दोनों बेअन्त हैं. जगह, समय और हरकत यानी स्पेस, टाइम और मोशन सब द्रष्टा यानी आत्मा के मन की हालतें हैं. इन सबका अस्तित्व सापेक्ष यानी केवल एक दूसरे के सम्बन्ध से है. दूरबीन को अगर हम ध्यान से देखें, चलती रेल को पास से खड़े होकर और फिर दूर पहाड़ से खड़े होकर देखें तो यह बात साफ़ समझ में आ जाती है. हम अपने सपनों और गहरी नींद पर निगाह डालें तब भी हम इसे समझ सकते हैं.

یعنی ساؤنڈ، روشنی یعنی لائٹ، گرمی یعنی ہیٹ، بجلی (ایلیکٹروسٹی)، اور طرح طرح کی کرنیں (ریز) اور اِن سے سمبندھ رکھنے والی ودیائیں آجاتی ہیں۔ انت میں جا کر اِن سب کا سمبندھ ودیت یعنی بجلی سے بتایا جاتا ہے۔ انو یعنی ایٹم کی بابت ابھی تک یورپ کے ودوانوں میں الگ الگ وچار ہیں۔ کوئی اِسے ایک چھوٹی سی چھوٹی مادی یعنی ٹھوس چیز سمجھتے ہیں اور کوئی کیول ایک لہر (ویو) یا شکتی (انرجی) بتاتے ہیں۔ ایسے ہی دو وچار روشنی کے بارے میں بھی رہ چکے ہیں۔ تیسرے حصے میں جیوتش شاستر ہے جسے انگریزی میں ایسٹرا نومی کہتے ہیں۔ اِس تیسرے حصہ میں بھی اوپر کے دونوں آکار ایک طرح سے مل جاتے ہیں۔ اِس میں سب براہمانڈوں یعنی آکاش کے گولوں، اننت سوریوں، ستاروں، سیاروں سوریہ جگتوں، آسمانوں کا بننا، چکر کاٹنا، اُن کے آپس کے رشتے اور ایک دوسرے پر اُن کے اثر، ہماری زمین کے رہنے والوں پر اُن کے اثر، سب آ جاتے ہیں۔

اِس نگاہ سے جوتش کے دو بھاگ ہو گئے ہیں۔ ایک گنیت یعنی معمولی ایسٹرانومی اور دوسرا پھلت یعنی ایسٹرالاجی۔ انہیں دونوں کو نجوم بھی کہتے ہیں۔ ان کا سمبندھ ہماری دھرتی کی بناوٹ، ہماری سمے کے وبھاگوں، ہمارے من کی حالتوں اور ہماری دھرتی کے اندر کی دھاتوں، ہمارے موسموں، ہمارے جوار بھاٹوں، ہمارے سموم و طوفانوں جنہیں انگریزی میں Simooms and Typhoons, کہتے ہیں، ہمارے زلزلوں، طرح طرح کے جانوروں، ونسپتیوں اور اِنسانی قوموں کی پیدائشوں وغیرہ وغیرہ سے بھی بالکل صاف ہے۔ اِس پر ہمارے جوتشی پانچ سال، سات سال، بارہ سال چھتیس سال، سو سال، بارہ سو سال، چھتیس سو سال، چار ہزار تین سو بیس سال وغیرہ کے یگ بنا لیتے ہیں۔ اِن سب کا سمبندھ ان اربوں کھربوں دنیاؤں سے ہے جو جوتش کا وشیئے ہے۔

یہ بات بھی صاف سمجھ میں آسکتی ہے کہ یہ سب چیزیں اور سب سائنسیں ایک دوسرے میں مل جاتی ہیں۔ اگر ایٹموں سے دنیائیں بنی ہیں تو ہر ایٹم کے اندر سب دنیائیں موجود ہیں۔ بڑ کے درخت میں بیج اور بیج میں دوسرا درخت موجود ہے۔ بڑے سے بڑا اور چھوٹے سے چھوٹا دونوں بےانت ہیں۔ جگہ، سمے اور حرکت یعنی اِسپیس، ٹائم اور موشن سب درشٹا یعنی آتما کے من کی حالتیں ہیں۔ اِن سب کا استتو ساپیکش یعنی کیول ایک دوسرے کے سمبندھ سے ہے۔ دوربین کو اگر ہم دھیان سے دیکھیں، چلتی ریل کو پاس سے کھڑے ہو کر اور پھر دور پہاڑ سے کھڑے ہو کر دیکھیں تو یہ بات صاف سمجھ میں آجاتی ہے۔ ہم اپنے سپنوں اور گہری نیند پر نگاہ ڈالیں تب بھی ہم اِسے سمجھ سکتے ہیں۔

पर केवल इस माद्दी दुनिया, इस अचेतन जगत की निगाह से भी अगर हम ज़रा ध्यान से देखें तो हमारे सब आदि और अन्त, आग़ाज़ और अंजाम, सब एक दूसरे में मिल जाते हैं. मानव समाज के अन्दर न कोई अलग नस्ल है और न कोई अलग राष्ट्र या क़ौम. साइन्स भी इस चीज़ को मानती है कि इनसान की सब नसलें एक दूसरे में मिली हुई हैं. सब में सब का ख़ून है. कोई किसी से जुदा नहीं. आजकल की राजनीति भी इस चीज़ को समझती जा रही है और इसे जल्दी से जल्दी साक्षात कर लेना चाहती है कि दुनिया में कोई अलग राष्ट्र नहीं, कोई अलग क़ौम नहीं. सब सब में हैं और सब एक हैं. इसे समझ लेना ही असली बहबूदी के रास्ते पर चलना है. यही ईश्वर अल्लाह को समझने का ज़ीना है.

अंगरेज़ कवि टेनिसन ने लिखा है : "हर आदमी के छोटे से वजूद के दोनों तरफ़ एक अथाह गहरा समन्दर है जिसमें से एक तरफ़ से निकल कर वह उसी में दूसरी तरफ़ जा मिलता है". गीता में लिखा है :—"सब भूत यानी प्राणी शुरू में अव्यक्त यानी ग़ैर ज़ाहिर मिले हुए थे, बीच में यह सब अलग अलग व्यक्त यानी ज़हूर पिज़ीर हुए और आख़ीर में फिर यह सब अव्यक्त यानी एक दूसरे में मिल जावेंगे". हम सब ग़ैब (अज्ञात) से आये हैं और ग़ैब ही की तरफ़ जा रहे हैं. हमारी जो यह बीच की हालत है यही हमारी सारी इनसानी तारीख़ है. संस्कृत में इसी को इतिहास-पुराण कहते हैं. सब इतिहास-पुराण इसी बीच की हालत का बयान करते हैं. इसमें हमारी सर्ग यानी ख़िलक़त, हमारा विकास यानी इर्तक़ा (एवोलूशन), और प्रलय यानी क़यामत (डिज़ोलूशन), सब आ जाते हैं. इसी में महाभूतों यानी ऐटम्स और जीव ग्राम यानी सब जानदारों का हाल शामिल है.

हरबर्ट स्पेन्सर ने इस सचाई को अपनी पुस्तक "दि सिन्थेटिक फ़िलासोफ़ी" में बड़ी सुन्दरता से दर्शाया है. रूसी सन्त विदूषी मैडम ब्लेवैट्सकी ने अपनी पुस्तक "दि सीक्रेट डाक्ट्रिन" की तीन बड़ी बड़ी जिल्दों में इसे और भी अधिक सुन्दरता के साथ बयान किया है. यह दोनों पुस्तकें इस मामले में भारत के इतिहास-पुराण का ही नया रूप हैं.

विश्व के इस इतिहास को और हमारी सारी साइन्सों और विद्याओं को तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है. एक पंचभूत-शास्त्र जिसमें आजकल की सब केमिस्ट्री, फ़िज़िक्स, उन अणुओं और परमाणुओं का हाल, जिन्हें न्यूट्रान प्रोटान, इलेक्ट्रान वग़ैरह नामों से पुकारा जाता है, सब गैसें, धातें, तरल पदार्थ, ठोस पदार्थ सब इसी में आ जाते हैं. दूसरे मूलशक्ति-शास्त्र, जिसमें कुछ फ़िज़िक्स, कुछ डाय-नैमिक्स शामिल है. इसमें शक्ति, इनरजी, फ़ोर्स, आवाज़,

پر کیول اِس مادّی دنیا، اِس اچیتن جگت کی نگاہ سے بھی اگر ہم ذرا دھیان سے دیکھیں تو ہمارے سب آدی اور انت، آغاز اور انجام، سب ایک دوسرے میں مل جاتے ہیں۔ مانو سماج کے اندر نہ کوئی الگ نسل ہے اور نہ کوئی الگ راشٹر یا قوم۔ سائنس بھی اِس چیز کو مانتی ہے کہ اِنسان کی سب نسلیں ایک دوسرے میں ملی ہوئی ہیں۔ سب میں سب کا خون ہے۔ کوئی کسی سے جدا نہیں۔ آجکل کی راجنیتی بھی اِس چیز کو سمجھتی جا رہی ہے اور اِسے جلدی سے جلدی ساکشات کر لینا چاہتی ہے کہ دنیا میں کوئی الگ راشٹر نہیں، کوئی الگ قوم نہیں۔ سب سب میں ہیں اور سب ایک ہیں۔ اِسے سمجھ لینا ہی اصلی بہبودی کے راستے پر چلنا ہے۔ یہی ایشور اللہ کو سمجھنے کا زینہ ہے۔

انگریز کوی ٹینیسن نے لکھا ہے:—"ہر آدمی کے چھوٹے سے وجود کے دونوں طرف ایک اتھاہ گہرا سمندر ہے جس میں سے ایک طرف سے نکل کر وہ اُسی میں دوسری طرف جا ملتا ہے۔" گیتا میں لکھا ہے:—"سب بھوت یعنی پرانی، شروع میں اویکت یعنی غیر ظاہر ملے ہوئے تھے، بیچ میں یہ سب الگ الگ ویکت یعنی ظہور پذیر ہوئے اور آخیر میں پھر یہ سب اویکت یعنی ایک دوسرے میں مل جاویں گے۔ ہم سب غیب (اگیات) سے آئے ہیں اور غیب ہی کی طرف جا رہے ہیں۔ ہماری یہ جو بیچ کی حالت ہے یہی ہماری ساری اِنسانی تاریخ ہے۔ سنسکرت میں اِسی کو اِتہاس پوران کہتے ہیں۔ سب اتہاس پوران اِسی بیچ کی حالت کو بیان کرتے ہیں۔ اِس میں ہماری سرگ یعنی خلقت، ہمارا وکاس یعنی ارتقا (ایوولوشن)، اور پرلے یعنی قیامت (ڈیزولوشن)، سب آ جاتے ہیں۔ اِسی میں مہابھوتوں یعنی ایٹمس اور جیو گرام یعنی سب جانداروں کا حال شامل ہے۔

ہربرٹ اسپنسر نے اِس سچائی کو اپنی پستک "دی سنتھیٹک فلسفی" میں بڑی سندرتا سے درشایا ہے۔ روسی سنت ودوشی میڈم بلیوٹسکی نے اپنی پستک "دی سیکریٹ ڈاکٹرن" کی تین بڑی بڑی جلدوں میں اِسے اور بھی ادھک سندرتا کے ساتھ بیان کیا ہے۔ یہ دونوں پستکیں اِس معاملے میں بھارت کے اتہاس پوران کا ہی نیا روپ ہیں۔

وشو کے اِس اِتہاس کو اور ہماری ساری سائنسوں اور ودیاؤں کو تین حصوں میں بانٹا جا سکتا ہے۔ ایک پنچ بھوت شاستر جس میں آجکل کی سب کیمسٹری، فزکس انوؤں اور پرمانوؤں کا حال، جنھیں نیوٹران، پروٹان، الیکٹران وغیرہ ناموں سے پکارا جاتا ہے، سب گیسیں، دھاتیں، ترل پدارتھ، ٹھوس پدارتھ سب اِسی میں آجاتے ہیں۔ دوسرے مول شکتی شاستر، جس میں کچھ فزکس کچھ ڈائے نیمکس شامل ہے۔ اِس میں شکتی، انرجی، فورس، آواز

अनेकता में एकता यानी कसरत में वहदत

डाक्टर भगवानदास

पिछले लेखों में हम आत्मा और अनात्मा की चरचा कर चुके हैं, और आत्मा यानी रूह को ही अस्ल वजूद और अनात्मा यानी बाहर की सारी दुनिया को एक तरह से फ़रेब, माया या धोखा दिखा चुके हैं. हम यह भी बता चुके हैं कि आत्मा या रूह यानी अस्ल वजूद एक ही है. उस एकता में अनेकता यानी वहदत में कसरत भी एक धोखा है. वही अल्लाह है. वही हम सब का "मैं" है. वही है, और कुछ है ही नहीं. इस लेख में हम यह दिखाना चाहते हैं कि इस दुनिया में अनात्मा की सारी साइन्सें, सब जड़ विद्याएँ, इस दिखाई देने वाले विश्व आलमे ज़हूर से ही सम्बन्ध रखती हैं और इसी का इतिहास हैं.

इन साइन्सों में से एक एक के लिये हमें एक एक विषय यानी एक एक महदूद दुनिया, परिमित सृष्टि गढ़नी पड़ती है. हमें कोई ऐसा मज़मून लेना पड़ता है जिसका शुरू भी हो और आख़ीर भी, जबकि असल वजूद में कहीं कोई अलहदगी, कोई सिरा, कोई शुरू या कोई आख़ीर, है ही नहीं. सारा वजूद, सारा अस्तित्व, अस्ल हक़ीक़त एक बे-अन्त समन्दर है, एक दरियाए बेकिनार है जिसका न कोई ओर है और न कोई छोर. पर हमारे लिए इस दुनिया को समझने के सिवाय इस तरह के फ़रज़ी टुकड़े कर करके देखने के और कोई तरीक़ा भी नहीं है.

मिसाल के तौर पर हमने अपना एक सौर्य जगत, एक निज़ामे शम्सी फ़र्ज़ कर रखा है. उसी के अन्दर हमारी धरती का यह गोला है, इनकी हमने एक एक इकाई बना रखी है. तब हम इनकी अलग अलग साइन्सें बना पाते हैं और उनमें अलग अलग खोज कर सकते हैं.

ऐसे ही मानव इतिहास को समझने के लिये हमें अलग अलग नसलें, जातियाँ और राष्ट्र यानी क़ौमें फ़र्ज़ कर लेनी पड़ती हैं. हर जाति या क़ौम का हम एक प्रारम्भ यानी आग़ाज़ और एक अन्त यानी अंजाम मान लेते हैं. फिर इस तरह के एक ही फ़रज़ी राष्ट्र की आयु के भी हम अलग अलग फ़रज़ी टुकड़े कर लेते हैं और टुकड़ों को राष्ट्र के इतिहास के अलग अलग युग (ज़माने) मान लेते हैं. यही हमारी दिमाग़ी दौड़ के लिये अलग अलग मैदान हो जाते हैं.

انیکتا میں ایکتا یعنی کثرت میں وحدت

(ڈاکٹر بھگوان داس)

پچھلے لیکھوں میں ہم آتما اور اناتما کی چرچا کر چکے ہیں، اور آتما یعنی روح کو ہی اصل وجود اور اناتما یعنی باہر کی ساری دنیا کو ایک طرح سے فریب مایا یا دھوکا دکھا چکے ہیں ۔ ہم یہ بھی بتا چکے ہیں کہ آتما یا روح یعنی اصل وجود ایک ہی ہے ۔ اس ایکتا میں انیکتا یعنی وحدت میں کثرت بھی ایک دھوکا ہے ۔ وہی اللہ ہے ۔ وہی ہم سب کا "میں" ہے ۔ وہی ہے اور کچھ ہے، ہی نہیں ۔ اس لیکھ میں ہم یہ دکھانا چاہتے ہیں کہ اِس دنیا میں انا تما کی ساری سائنس، سب جڑ ودیائیں، اِس دکھائی دینے والے وشو عالم ظہور سے ہی سمبندھ رکھتی ہیں اور اسی کا اتہاس ہیں ۔

ان سائنسوں میں سے ایک ایک کے لئے ہمیں ایک ایک وشے یعنی ایک ایک محدود دنیا، پریمت سرشٹی گڑھنی پڑتی ہے ۔ ہمیں کوئی ایسا مضمون لینا پڑتا ہے جس کا شروع بھی ہو اور اخیر بھی، جب کہ اصل وجود میں کہیں کوئی علیحدگی، کوئی سرا، کوئی شروع یا کوئی اخیر، ہے ہی نہیں ۔ سارا وجود، سارا استتو، اصل حقیقت ایک بےانت سمندر ہے، ایک دریائے بے کنار ہے جس کا نہ کوئی اور ہے اور نہ کوئی چھور ۔ پر ہمارے لئے اِس دنیا کو سمجھنے کے سوائے اِس طرح کے فرضی ٹکڑے کر کر کے دیکھنے کے اور کوئی طریقہ بھی نہیں ہے ۔

مثال کے طور پر ہم نے اپنا ایک سوریہ جگت، ایک نظام شمسی فرض کر رکھا ہے ۔ اُسی کے اندر ہماری دھرتی کا یہ گولا ہے، اِن کی ہم نے ایک ایک اکائی بنا رکھی ہے ۔ تب ہم اِن کی الگ الگ سائنسیں بنا پاتے ہیں اور اُن میں الگ الگ کھوج کر سکتے ہیں ۔

ایسے ہی مانو اِتہاس کو سمجھنے کے لئے ہمیں الگ الگ نسلیں، جاتیاں اور راشٹر یعنی قومیں فرض کر لینی پڑتی ہیں ۔ ہر جاتی یا قوم کا ایک ہی فرضی راشٹر کی وایو کے بھی ہم الگ الگ فرضی ٹکڑے کر لیتے ہیں اور ٹکڑوں کو راشٹر کے اتہاس کے ایک پرارمبھ یعنی آغاز اور ایک انت یعنی انجام مان لیتے ہیں ۔ پھر اِس طرح کے ہم الگ الگ یگ (زمانے) مان لیتے ہیں ۔یہی ہماری دماغی دوڑ کے لئے الگ الگ میدان ہو جاتے ہیں ۔

अनाजील—बाइबिल (इंजील का बहु वचन)
सालिक—ईश्वर-प्रेमी, आसार—लक्षण (असर का बहुवचन) नजात—मोक्ष हालिक—मौत
तरदीद—खंडन हक़—ईश्वर
मा अन्ज़िला मिन क़ब्लिक़—"यही बातें हमने पहली धर्म पुस्तकों में कही हैं".

ऐ ईश्वर प्रेमी तू गीता और बाइबिल को भी पढ़ और यह मालूम कर कि मोक्ष के लक्षण और मौत का कारण क्या है. ऐ 'मुहिब' ईश्वर की किताबों का खंडन नहीं करना चाहिये. क़ुरआन में भी लिखा है कि "यही बातें हमने पहली धर्म पुस्तकों में कही हैं".

(29)

करते हैं मसाजिद में यह अल्लाह को बन्द,
मंदिर को समझते हैं समाँ से वह बुलंद,
हिन्दू-ओ-मुसलमाँ हैं यह दोनों जाहिल,
लड़ते हैं मज़ाहिब पे कहीं दानिशमंद ?

मसाजिद—(मसजिद का बहु वचन) समाँ—आकाश (ईश्वर से मतलब है) बुलंद—ऊँचा
जाहिल—मूर्ख मज़ाहिब—धर्म (मज़हब का बहु-वचन) दानिशमंद—समझदार

मुसलमान मसजिदों में अल्लाह को बंद किये हुए हैं. हिन्दू मंदिर को ईश्वर से भी ऊँचा समझते हैं. यह दोनों ही मूर्ख हैं. समझदार लोग कहीं धर्म के पीछे लड़ाई करते हैं ?

اناجیل—بائبل (انجیل کا بہو وچن) سالک—ایشور پریمی آثار—لکشن (اثر کا بہو وچن) نجات—موکش" ھالک—موت تردید—کھنڈن حق—ایشور "ماأنزل من قبلک"—"یہی بات ہم نے پہلی دھرم پستکوں میں کہی ہیں .

اے ایشور پریمی تو گیتا اور بائبل کو بھی پڑھ اور یہ معلوم کر کہ موکش کے لکشن اور موت کا کارن کیا ہے . اے محب ایشور کی کتابوں کا کھنڈن نہیں کرنا چاہئے . قرآن میں بھی لکھا ہے کہ "یہی باتیں ہم نے پہلی دھرم پستکوں میں کہی ہیں" .

(29)

کرتے ہیں مساجد میں یہ اللہ کو بند،
مندر کو سمجھتے ہیں سماں سے وہ بلند،
ہندو و مسلماں ہیں یہ دونوں جاہل،
لڑتے ہیں مذاہب پہ کہیں دانش مند؟

مساجد—(مسجد کا بہو وچن) سماں—آکاش (ایشور سے مطلب ہے) بلند—اونچا، جاہل—مورکھ، مذاہب—دھرم (مذہب کا بہو وچن)، دانش مند—سمجھدار

مسلمان مسجدوں میں اللہ کو بند کئے ہوئے ہیں—ہندو مندر کو ایشور سے بھی اونچا سمجھتے ہیں . یہ دونوں ہی مورکھ ہیں . سمجھدار لوگ کہیں دھرم کے پیچھے لڑائی کرتے ہیں ؟

शाही—बादशाहत　　ग़म—रंज
वहम—शंकाएँ　　नजात—छुटकारा
हक़—ईश्वर　　आगाही—परिचय

जब तक शराब नहीं होती, मछली और मुरग़ी बेकार होती है. जब तक फ़क़ीरी न हो बादशाही दुनिया के लिए मुसीबत हो जाती है. ऐ 'मुहिब' हम जबतक ईश्वर को न समझेंगे तब तक दुनिया की चिन्ताओं और दुखों से छुटकारा नहीं मिल सकता.

(26)

जिस दिल में न हो उस बुते दिलदार की याद,
होती नहीं उस क़ल्ब को हिस्से बेदाद,
आक़िल है तो भाग अहले दुई से सौ कोस,
इस नफ़्स की यारी का है अंजाम फ़साद.

बुते दिलदार—प्रियतम (ईश्वर)　क़ल्ब—मन, अंतर.
हिस्से बेदाद—अन्याय की अनुभूति
आक़िल—समझदार　अहले दुई—ईश्वर को संसार से अलग समझने वाले　नफ़्स—मन
अंजाम—नतीजा　फ़िसाद—झगड़ा

जिस दिल में ईश्वर की याद नहीं है वह अन्याय करता है तो उसे दुख नहीं होता. अगर तू समझदार है तो ईश्वर को संसार से अलग समझने वालों से अलग रह. अपने मन की बात मानने का नतीजा हमेशा झगड़ा ही होता है.

(27)

इस ज़ाते अहद के हैं अजब रंग हज़ार,
बुलबुल है कहीं और कहीं है गुल्ज़ार,
इस आलमे अश्काल से छूटेगा वही,
रखेगा जो हर वक़्त ख़याले दिलदार.

ज़ाते अहद—ईश्वर　　गुल्ज़ार—बाग़
आलम—दुनिया, अश्काल—रूप (शक्ल का बहु वचन)
दिलदार—प्रियतम (ईश्वर)

उस एक परमेश्वर के हज़ार रंग हैं. कहीं वह बुलबुल है और कहीं बाग़. जो आदमी हमेशा ईश्वर का ध्यान रखेगा उसीको इस रूपों के संसार से मुक्ति मिलेगी.

(28)

गीता को, अनाजील को ऐ सालिक पढ़,
आसारे नजातो सबबे हालिक पढ़,
तरदीद न कर हक़ की किताबों की 'मुहिब'
क़ुरआन में "मा अंज़ल मिन क़ब्लिक़" पढ़,

فقر—فقیری　غم—رنج　وہم—شنکائیں
نجات—چھٹکارا　حق—ایشور　آگاہی—پریچے

جب تک شراب نہیں ہوتی، مچھلی اور مرغی بیکار ہوتی ہے ۔ جب تک فقیری نہ ہو بادشاہی دنیا کے لئے مصیبت ہوجاتی ہے ۔ اے 'محب' ہم جب تک ایشور کو نہ سمجھینگے تب تک دنیا کی چنتاؤں اور دکھوں سے چھٹکارا نہیں مل سکتا ۔

(26)

جس دل میں نہ ہو اُس بت دلدار کی یاد،
ہوتی نہیں اُس قلب کو حس بے داد،
عاقل ہے تو بھاگ اہل دوئی سے سو کوس،
اِس نفس کی یاری کا ہے انجام فساد

بت دلدار—پریتم (ایشور)، قلب—من، انتر
حس بے داد—انیائے کی انوبھوتی عاقل—سمجھدار اہل دوئی—ایشور کو سنسار سے الگ سمجھنے والے نفس—من
انجام—نتیجہ فساد—جھگڑا

جس دل میں ایشور کی یاد نہیں ہے وہ انیائے کرتا ہے تو اُسے دکھ نہیں ہوتا ۔ اگر تو سمجھدار ہے تو ایشور کو سنسار سے الگ سمجھنے والوں سے الگ رہ ۔ اپنے من کی بات ماننے کا نتیجہ ہمیشہ جھگڑا ہی ہوتا ہے ۔

(27)

اُس ذات احد کے ہیں عجب رنگ ہزار،
بلبل ہے کہیں اور کہیں ہے گلزار،
اِس عالم اشکال سے چھوٹیگا وہی،
رکھے گا جو ہر وقت خیال دلدار ۔

ذات احد—ایشور گلزار—باغ عالم—دنیا اشکال—روپ (شکل کا بہو وچن) دلدار—پریتم (ایشور)

اُس ایک پرمیشور کے ہزار رنگ ہیں ۔ کہیں وہ بلبل ہے اور کہیں باغ۔ جو آدمی ہمیشہ ایشور کا دھیان رکھیگا اُسی کو اِس روپوں کے سنسار سے مکتی ملے گی ۔

(28)

گیتا کو اناجیل کو، اے سالک پڑھ،
آثار نجات و سبب حالک پڑھ،
تردید نہ کر حق کی کتابوں کی 'محب'
قرآن میں "ماانزل من قبلق" پڑھ،

जाहिल—मूर्ख   ग़ाफ़िल—बेख़बर
बल्लाह—ईश्वर की सौगंद   आक़िल—योग्य
दीवाना—पागल

मैंने माना कि तू इस समय बड़ा विद्वान माना जाता है और तुझे विद्वानों के कपड़े पहनने का अधिकार है लेकिन अगर तुझे अपनी और ख़ुदा की ख़बर नहीं है तो ईश्वर की सौगन्द तू विद्वान नहीं, पागल है.

(23)

हिन्दू-ओ-मुसलमाँ में अगर्चे दिल है,
भाई का मगर भाई 'मुहिब' क़ातिल है,
हो जाए अगर तफ़रिक़-ए-वहमी दूर,
अक़वाम का इत्तिहाद क्या मुश्किल है ?

क़ातिल—हत्यारा तफ़रिक़-ए-वहमी—बेकार का मतभेद
अक़वाम—जातियाँ (क़ौम का बहुवचन)   इत्तिहाद—एकता

अगर्चे हिन्दू और मुसलमान दोनों के सीने में दिल है मगर फिर भी भाई भाई का ख़ून बहा रहा है. अगर दोनों का बेकार का मत भेद दूर हो जाए तो इन दोनों जातियों का मिलना क्या मुश्किल है ?

(24)

है दोस्तीए अहले-वतन ग़ैर पै शाक़,
लेकिन है बिरादर का बिरादर मुश्ताक़,
साँपों से नहीं कम हैं 'मुहिब' वह इंसाँ,
जो हिन्दू-ओ-मुस्लिम में बढ़ाते हैं निफ़ाक़.

अहलेवतन—देशवासी   शाक़—असह्य
मुश्ताक़—प्रेमी   निफ़ाक़—दुश्मनी

देशवासियों में आपस का प्रेम दूसरे लोग नहीं देख सकते. लेकिन भाई को भाई से प्यार तो होता ही है. ऐ 'मुहिब' वह लोग जो हिन्दुओं और मुसलमानों में झगड़ा बढ़ाते हैं साँपों से कम नहीं हैं.

(25)

बे मै के हैं बेलुत्फ़ यह मुरग़ो माही,
बे फ़ुक़्र के इदबारे जहाँ है शाही,
दुनिया से ग़मो वहम से न पायेंगे नजात,
जब तक न हक़ से हो 'मुहिब' आगाही.

मै—शराब
मुर्गो माही—मछली और (मुरग़ी का गोश्त)
फ़ुक़्र—फ़क़ीरी   इदबार—दुर्भाग्य

جاہل—مورکھ' غافل—بےخبر' واللہ—ایشور کی سوگند' عاقل—یوگیہ' دیوانہ—پاگل ۔

میں نے مانا کی تو اس سمے بڑا ودوان مانا جاتا ہے اور تجھے ودوانوں کے کپڑے پہننے کا ادھیکار ہے لیکن اگر تجھے اپنی اور خدا کی خبر نہیں ہے تو ایشور کی سوگند تو ودوان نہیں' پاگل ہے ۔

(23)

ہندو و مسلماں میں اگرچہ دل ہے'
بھائی کا مگر بھائی 'محب' قاتل ہے'
ہو جائے اگر تفرقۂ وہمی دور'
اقوام کا اتحاد کیا مشکل ہے ؟

قاتل—ہتیارا' تفرقۂ وہمی—بیکار کا مت بھید' اقوام—جاتیاں (قوم کا بہو وچن)' اتحاد—ایکتا ۔

اگرچہ ہندو اور مسلمان دونوں کے سینے میں دل ہے مگر پھر بھی بھائی بھائی کا خون بہا رہا ہے ۔ اگر دونوں کا بیکار کا مت بھید دور ہو جائے تو ان دونوں جاتیوں کا ملنا کیا مشکل ہے ؟

(24)

ہے دوستئی اہل وطن غیر پہ شاق'
لیکن ہے برادر کا برادر مشتاق'
سانپوں سے نہیں کم ہے 'محب' وہ انساں'
جو ہندو و مسلم میں بڑھاتے ہیں نفاق ۔

اہل وطن—دیش واسی' شاق—اسہیہ' مشتاق—پریمی' نفاق—دشمنی ۔

دیش واسیوں میں آپس کا پریم دوسرے لوگ نہیں دیکھ سکتے ۔ لیکن بھائی کو بھائی سے پریم تو ہوتا ہی ہے ۔ اے 'محب' وہ لوگ جو ہندوؤں اور مسلمانوں میں جھگڑا بڑھاتے ہیں سانپوں سے کم نہیں ہیں ۔

(25)

بے مئے کے ہے بےلطف یہ مرغ و ماہی'
بے فقر کے ادبار جہاں ہے شاہی'
دنیا کے غم و وہم سے نہ پائیں گے نجات
جب تک نہ حق سے ہو 'محب' آگاہی ۔

مئے—شراب' مرغ و ماہی—مچھلی اور مرغی (کا گوشت) ادبار—دربھاگیہ

दीद—दर्शन   खुदावंदे जलील—महान ईश्वर
खलील—हजरत इब्राहीम का नाम   ज़ात—व्यक्तित्व
दलील—सबूत, तर्क   क़ंदील—बड़ा लैम्प

यदि तू ईश्वर को देखना चाहता है तो इब्राहीम की भाँति अपने को संसार की हर चीज़ में समझ. ऐ 'मुहिब' हर आदमी खुद ही इस बात का सबूत है कि वह ईश्वर से एकाकार है. सूरज के दिखाने के लिये सूरज ही क़ंदील हो सकता है, इसी तरह ईश्वर से एकाकार होना स्वयं सिद्धि है.

(20)

क्या ढूंढता है काबे की गिल में उसको,
मेहराब में या फ़र्श की सिल में उसको,
बर्बाद न कर उम्र जहाँगर्दी में,
घर बैठ के देख अपने ही दिल में उसको.

क़ाबा—मक्का में मुसलमानों का तीर्थ   गिल—मिट्टी, जहाँगर्दी—दुनिया में घूमना.

ईश्वर तुझे न काबे की मिट्टी में मिलेगा न वहाँ की मेहराब में और न फ़र्श के पत्थर में. दुनिया में घूम कर उम्र बर्बाद न कर. ईश्वर को अपने दिल में देख.

(21)

क्या रूहे खुदा क़ल्बे मज़ाहिर में है नेस्त?
क्या रूहे ज़नो मर्द मक़ाबिर में है नेस्त ?
देख अपने खयाल को झुका कर गर्दन,
बातिन में तो हस्त और ज़ाहिर में है नेस्त.

क़ल्ब—मन, अंतर   मज़ाहिर—प्रकट वस्तुएँ
ज़नोमर्द—स्त्री पुरुष   मक़ाबिर—(क़ब्र का बहु वचन)
नेस्त—नहीं है   बातिन—मन, अंतर.

क्या भगवान की आत्मा प्रकट वस्तुओं के अंदर नहीं है ? वह ऐसे ही उनके अन्दर है जैसे क़ब्रों में मनुष्यों की आत्माएँ. तू गर्दन झुका कर भगवान का ध्यान कर तो उसे देखेगा. वह दिल के अन्दर है, बाहर कहीं नहीं.

(22)

माना कि तू इस वक़्त का अल्लामा है
बर में भी फ़ज़ीलत का तेरे जामा है,
जाहिल जो रहे खुद से खुदा से ग़ाफ़िल,
बल्लाह तू आक़िल नहीं दीवाना है.

अल्लामा—विद्वान   बर—शरीर
फ़ज़ीलत—योग्यता   जामा—पोशाक

دید—درشن٬ خداوند جلیل—مہان ایشور٬ خلیل—حضرت ابراہیم کا نام٬ ذات—ویکتتو٬ دلیل—ثبوت٬ ترک٬ قندیل—بڑا لیمپ .

یدی تو ایشور کو دیکھنا چاہتا ہے تو ابراہیم کے بھانتی اپنے کو سنسار کی ہر چیز میں سمجھ . اے 'محب' ہر آدمی خود ہی اِس بات کا ثبوت ہے کہ ایشور سے ایکا کار ہے . سورج کے دکھانے کے لئے سورج ہی قندیل ہو سکتا ہے٬ اسی طرح ایشور سے ایکاکار ہونا سویم سدھی ہے .

(20)

کیا ڈھونڈتا ہے کعبہ کی گل میں اس کو؛
محراب میں یا فرش کی سل میں اُس کو٬
برباد نہ کر عمر جہاں گردی میں٬
گھر بیٹھ کے دیکھ اپنے ہی دل میں اُس کو .

کعبہ—مکہ میں مسلمانوں کا تیرتھ٬ گل—مٹی٬ جہاں گردی—دنیا میں گھومنا .

ایشور تجھے نہ کعبہ کی مٹی میں ملیگا نہ وہاں کی محراب میں اور نہ فرش کے پتھر میں . دنیا میں گھوم کر عمر برباد نہ کرنا . ایشور کو اپنے دل ہی میں دیکھ .

(21)

کیا روح خدا قلب مظاہر میں ہے نیست ؟
کیا روح زن و مرد مقابر میں ہے نیست ؟
دیکھ اپنے خیال کو جھکا کر گردن٬
باطن میں تو ہست اور ظاہر میں ہے نیست .

قلب—من٬ انتر٬ مظاہر—پرکٹ وستوئیں٬ زن و مرد—استری پرش٬ مقابر—(قبر کا بہووچن)٬ نیست—نہیں ہے٬ باطن—من٬ انتر .

کیا بھگوان کی آتما پرکٹ وستوؤں کے اندر نہیں ہے ؟ وہ ایسے ہی اُن کے اندر ہے جیسے قبروں میں منشیوں کی آتمائیں . تو گردن جھکا کر بھگوان کا دھیان کر تو اسے دیکھے گا . وہ دل کے اندر ہے٬ باہر کہیں نہیں .

(22)

مانا کہ تو اِس وقت کا علامہ ہے٬
بر میں بھی فضیلت کا تیرے جامہ ہے٬
جاہل جو رہے خود سے خدا سے غافل٬
واللہ تو عاقل نہیں دیوانہ ہے .

علامہ—ودوان٬ بر—شریر٬ فضیلت—یوگتا٬ جامہ—پوشاک .

[पिछले नम्बर से आगे]

रुबाइयात मुहिब

श्री 'मुहिब'

(17)

सब एक हैं हिन्दू-ओ-मुसलमाँ जंगी,
करती है अलग इनको दिलों की तंगी,
हर रंग हुआ डूब के जिस खुम में साफ़,
वह खुम है मुहम्मद की 'मुहिब' बेरंगी.

जंगी—काला (यहाँ मतलब पापी से है) खुम—शराब का मटका

बेरंगी—(यहां तात्पय निस्पृहता से है)

हिन्दू और मुसलमान दोनों एक से पापी हैं. इन दोनों को दिलों की तंगी अलग करती है. ऐ 'मुहिब' मुहम्मद साहब की निस्पृहता हर एक पाप को धो देती है.

(18)

बातिन है वही हक़, वही जाहिर है,
फ़ाइल है वही और वही क़ादिर है,
हिन्दू-ओ-मुसलमाँ पे नहीं कुछ मौक़ूफ़,
जो मुनकिरे वहदत है वही काफ़िर है.

बातिन—छिपा हुआ जाहिर—खुला

फ़ाइल—करने वाला क़ादिर—शक्तिमान

मौक़ूफ़—निर्भर

मुनाकिरे वहदत—ईश्वर की एक रूपता को न मानने वाला.

वही ईश्वर खुला भी है, छिपा भी है, वही सब कुछ करता है और वही सर्व शक्तिमान है. चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान, ईश्वर की एक रूपता जो भी न मानेगा वह काफ़िर कहा जायगा.

(19)

गर चाहता है दीदे ख़ुदावंदे जलील,
देख आप को हर चीज़ में मानिन्दे ख़लील,
तू जात पे अपने है 'मुहिब' आप दलील,
सूरज के दिखाने को है सूरज क़ंदील.

[پچھلے نمبر سے آگے]

رباعیات محب

شری 'محب'

(17)

سب ایک ہیں ہندو-و-مسلماں زنگی'
کرتی ہے الگ اُن کو دلوں کی تنگی'
ہر رنگ ہوا ڈوب کے جس خم میں صاف'
وہ خم ہے محمد کی 'محب' بیرنگی ۔

زنگی—کالا (یہاں مطلب پاپی سے ہے) خم—شراب کا مٹکا' بیرنگی—(یہاں تاتپریہ نس پرھتا سے ہے) ۔

ہندو اور مسلمان دونوں ایک سے پاپی ہیں ۔ ان دونوں کو دلوں کی تنگی الگ کرتی ہے ۔ اے 'محب' محمد صاحب کی نس پرھتا ہر ایک پاپ کو دھو دیتی ہے ۔

(18)

باطن ہے وہی حق' وہی ظاہر ہے'
فاعل ہے وہی اور وہی قادر ہے'
ہندو-و-مسلماں پہ نہیں کچھ موقوف'
جو منکر وحدت ہے وہی کافر ہے ۔

باطن—چھپا ہوا؛ ظاہر—کھلا' فاعل—کرنے والا' قادر—شکتی مان' موقوف—نربھر' منکر وحدت—ایشور کی ایک روپتا کو نہ ماننے والا ۔

وہی ایشور کھلا بھی ہے' چھپا بھی ہے' وہی سب کچھ کرتا ہے اور وہی سرو شکتیمان ہے ۔ چاہے ہندو ہو چاہے مسلمان ایشور کی ایک روپتا جو بھی نہ مانے گا وہ کافر کہا جائیگا ۔

(19)

اگر چاہتا ہے دید خداوند جلیل'
دیکھ آپکو ہر چیز میں مانند خلیل'
تو ذات پہ اپنی ہے 'محب' آپ دلیل'
سورج کے دکھانے کو ہے سورج قندیل ۔

उसे ज़रूर दे दो; क्योंकि निःसंशय उसने आग की गरमी बरदाश्त करके खाना तैयार किया है और उसका सारा प्रबन्ध किया है."

—अबुहुरैरह, बुखारी: अबुदाऊद: तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"एक दूसरे के साथ हाथ मिलाओ, तो एक दूसरे के खिलाफ़ तुम्हारे सब बुग्ज़ यानी द्वेष तुम्हारे दिलों से मिट जावेंगे; एक दूसरे को हदिये यानी भेंट दिया करो, इससे तुम में एक दूसरे के साथ मुहब्बत बढ़ेगी, और इससे तुम्हारे दिलों की गहरी से गहरी नफ़रतें भी मिट जावेंगी."

—अता-अल-ख़ुरासानी, मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा कि —"अपनी पारसाई (धार्मिकता) का ज़रा सा भी मज़ाहरा (दिखावा) करना 'शिर्क' है, यानी अल्लाह के सिवा दूसरे की इबादत करने के बराबर है."

—उमर बिन अल ख़त्ताब, मुआज़ बिन जबल से, इब्न माजह: बेहक़ी.

—अनुवादक—श्री मुजीब रिज़वी.

اسے ضرور دے دو؛ کیونکہ بلا شک اس نے آگ کی گرمی برداشت کر کے کھانا تیار کیا ھے اور اس کا سارا پربندھ کیا ھے ."

—ابوھریرہ، بخاری: ابوداؤد: ترمذی .

محمد صاحب نے کہا:—"ایک دوسرے کے ساتھ ھاتھ ملاؤ، تو ایک دوسرے کے خلاف تمھارے سب بغض یعنی دویش تمھارے دلوں سے مٹ جاویں گے؛ ایک دوسرے کو ھدیے یعنی بھینٹ دیا کرو، اس سے تم میں ایک دوسرے کے ساتھ محبت بڑھے گی، اور اس سے تمھارے دلوں کی گہری نفرتیں بھی مٹ جاویں گی ."

—عطا الخراسانی، مسلم .

محمد صاحب نے کہا کہ—"اپنی پارسائی (دھارمکتا) کا ذرا سا بھی مظاہرہ (دکھاوا) کرنا 'شرک' ھے، یعنی اللہ کے سوا دوسرے کی عبادت کرنے کے برابر ھے ."

—عمر بن الخطاب، معاذ بن جبل سے، ابن ماجہ: بیہقی .

انوادک—شری مجیب رضوی .

पैग़म्बर ने कहा कि:—"तुम में से कोई ईमान वाला नहीं है जब तक कि उसने उस तालीम के ज़रिये जो मैंने लाकर दी है अपनी ख़ाहिशों पर क़ाबू हासिल न कर लिया हो."

—अब्दुल्लाह बिन अमरू नवावी.

पैग़म्बर ने कहा :—"ऐ अबुज़र ! इनसानों की तंज़ीम यानी संगठन से बढ़कर कोई अक़्लमन्दी का काम नहीं है, अपनी नफ़्स पर क़ाबू रखने से बढ़कर कोई तक़वा यानी परहेज़गारी नहीं है और सबके साथ अच्छा बरताव करने से बढ़कर कोई तारीफ़ की बात नहीं है."

—अबुज़र, बेहक़ी.

जाबिर कहता है कि :—"रसूल से एक आदमी की चरचा की गई जो बहुत इबादत करता था और उसी में लगा रहता था, फिर रसूल से एक ऐसे आदमी की चरचा की गई जो अपने को गुनाह से बचाता रहता था. इस पर रसूल ने कहा—'इबादत करने वाला उसके बराबर नहीं हो सकता जो गुनाह से अपने को बचाता है."

—जाबिर, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—

"तुम्हारे ख़िदमतगार तुम्हारे भाई हैं और तुम्हारे जान माल की रक्षा करते हैं; अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे हाथों में सौंपा है; जिस किसी के हाथों में उसका भाई हो उसे चाहिये कि उसे वही खाना खिलावे जो ख़ुद खाता है और वही कपड़े पहनावे जो ख़ुद पहनता है. उनसे कोई ऐसा काम न लो जो उनकी ताक़त से बाहर हो और अगर तुम उनसे कोई ऐसा काम लो तो उन्हें उस काम के करने में ख़ुद मदद दो."

—मारूर बिन सुवैद, बुख़ारी: मुसलिम: अबुदाऊद: तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जब कभी तुम में से किसी का ख़िदमतगार तुम में से किसी के पास खाना लेकर आवे, तो अगर तुम उसे अपने साथ बिठाकर खाना न खिलाओ, तो कम से कम उस खाने में से दो चार लुक़मे

پیغمبر نے کہا کہ:—"تم میں سے کوئی ایمان والا نہیں ہے جب تک کہ اُس نے اُس تعلیم کے ذریعہ جو میں نے لاکر دی ہے اپنی خواہشوں پر قابو حاصل نہ کر لیا ہو۔"

—عبداللہ بن عمرو، نواوی۔

پیغمبر نے کہا:—"اے ابوذر! اِنسانوں کی تنظیم یعنی سنگٹھن سے بڑھ کر کوئی عقلمندی کا کام نہیں ہے، اپنے نفس پر قابو رکھنے سے بڑھ کر کوئی تقویٰ یعنی پرہیزگاری نہیں ہے اور سب کے ساتھ اچھا برتاؤ کرنے سے بڑھ کر کوئی تعریف کی بات نہیں ہے۔"

—ابوذر، بیہقی۔

جابر کہتا ہے کہ:—"رسول سے ایک آدمی کی چرچا کی گئی جو بہت عبادت کرتا تھا اور اُسی میں لگا رہتا تھا، پھر رسول سے ایک ایسے آدمی کی چرچا کی گئی جو اپنے کو گناہ سے بچاتا رہتا تھا۔ اِس پر رسول نے کہا—'عبادت کرنے والا اُس کے برابر نہیں ہو سکتا جو گناہ سے اپنے کو بچاتا ہے۔"

—جابر، ترمذی۔

محمد صاحب نے کہا کہ:—

"تمہارے خدمتگار تمہارے بھائی ہیں اور تمہارے جان مال کی رکشا کرتے ہیں۔ اللہ نے انہیں تمہارے ہاتھوں میں سونپا ہے؛ جس کسی کے ہاتھوں میں اُس کا بھائی ہو اُسے چاہئے کہ اُسے وہی کھانا کھلاوے جو خود کھاتا ہے اور وہی کپڑے پہناوے جو خود پہنتا ہے۔ اُن سے کوئی ایسا کام نہ لو جو اُن کی طاقت سے باہر ہو اور اگر تم اُن سے کوئی ایسا کام لو تو انہیں اُس کام کے کرنے میں خود مدد دو۔"

—معرور بن سوید، بخاری: مسلم: ابوداؤد: ترمذی۔

محمد صاحب نے کہا—"جب کبھی تم میں سے کسی کا خدمتگار تم میں سے کسی کے پاس کھانا لے کر آوے؛ تو اگر تم اسے اپنے ساتھ بٹھاکر کھانا نہ کھلاؤ، تو کم سے کم اُس کھانے میں سے دو چار لقمے

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"हर आदमी को चाहिये कि अपने घर में घुसते वक़्त अपनी बीबी और बच्चों को सलाम करे."

—अनस, तिरमिज़ी.

अनस कहता है कि :—

"मुहम्मद साहब जब कभी बच्चों के पास से निकलते थे तो उन्हें 'सलाम' ! करते थे."

—अनस, बुख़ारी: मुसलिम.

जरीर और अनस दोनों का बयान है कि :—

"पैग़म्बरे ख़ुदा जब कभी औरतों के पास से निकलते थे तो उन्हें 'सलाम' ! करते थे."

—जरीर, अहमद; अनस; बुख़ारी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जो आदमी सवारी के ऊपर चला जा रहा हो उसका फ़र्ज़ है कि उस आदमी को सलाम करे जो पैदल चला जा रहा है; जो आदमी पैदल चला जा रहा हो उसका फ़र्ज़ है कि उस आदमी को सलाम करे जो बैठा हो, और जो लोग थोड़ी तादाद में हों उनका फ़र्ज़ है कि अपने से बड़ी तादाद वालों को सलाम करें."

—अबु हुरैरह, बुख़ारी: मुसलिम: तिरमिज़ी: अबुदाऊद.

अनस कहता है :–"पैग़म्बर साहब मुझसे कहा करते थे—'ऐ मेरे बच्चे ! जब तू अपने बाल बच्चों में जाय तो उन्हें सलाम कर, यह चीज़ तेरे लिये और तेरे घर वालों के लिये दोनों के लिये बरकत साबित होगी.'"

—अनस, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जब तुम लोग अपने घरों के अन्दर जाओ तो घर के लोगों को सलाम करो और जब बाहर निकलो तो घर के लोगों से सलाम करके बिदा लो."

—क़तादह, बेहक़ी.

लोगों ने पैग़म्बर से पूछा :—"नजात क्या है ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो और घर में बैठकर गुनाहों पर रोओ."

—उक़्बह बिन आमिर, तिरमिज़ी.

محمد صاحب نے کہا کہ:—"ہر آدمی کو چاہئے کہ اپنے گھر میں گھستے وقت اپنی بیوی اور بچوں کو سلام کرے."

—انس، ترمذی.

انس کہتا ہے کہ:—

"محمد صاحب جب کبھی بچوں کے پاس سے نکلتے تھے تو اُنھیں 'سلام' ! کرتے تھے."

—انس، بخاری: مسلم.

جریر اور انس دونوں کا بیان ہے کہ:—

"پیغمبر خدا جب کبھی عورتوں کے پاس سے نکلتے تھے تو اُنھیں 'سلام' ! کرتے تھے."

—جریر، احمد؛ انس؛ بخاری.

محمد صاحب نے کہا کہ:—"جو آدمی سواری کے اُوپر چلا جا رہا ہو اُس کا فرض ہے کہ اُس آدمی کو سلام کرے جو پیدل چلا جا رہا ہے؛ جو آدمی پیدل چلا جا رہا ہو اُس کا فرض ہے کہ اُس آدمی کو سلام کرے جو بیٹھا ہو، اور جو لوگ تھوڑی تعداد میں ہوں اُن کا فرض ہے کہ اپنے سے بڑی تعداد والوں کو سلام کریں."

—ابو ہریرہ، بخاری: مسلم: ترمذی: ابوداؤد.

انس کہتا ہے:—"پیغمبر صاحب مجھ سے کہا کرتے تھے—'اے میرے بچے ! جب تو اپنے بال بچوں میں جائے تو اُنھیں سلام کر، یہ چیز تیرے لئے اور تیرے گھر والوں کے لئے دونوں کے لئے برکت ثابت ہوگی.'"

—انس، ترمذی.

محمد صاحب نے کہا—"جب تم لوگ اپنے گھروں کے اندر جاؤ تو گھر کے لوگوں کو سلام کرو اور جب باہر نکلو تو گھر کے لوگوں سے سلام کر کے بدا لو."

—قتادہ، بیہقی.

لوگوں نے پیغمبر سے پوچھا:—"نجات کیا ہے ؟" پیغمبر نے جواب دیا—"اپنی زبان پر قابو رکھو اور گھر میں بیٹھ کر اپنے گناہوں پر روؤ."

—عقبہ بن عامر، ترمذی.

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

एक बद्दू अरब पैग़म्बर के पास आया और कहने लगा :—"मुझे कोई ऐसा काम बता दीजिये जिससे मैं जन्नत में जा सकूँ." पैग़म्बर ने जवाब दिया—"तुमने बात थोड़ी कही पर सवाल बहुत बड़ा किया. अगर कोई जानदार तुम्हारे पास हैं तो उन्हें आज़ाद कर दो, अगर कोई ग़ुलाम तुम्हारे पास हैं तो उन्हें भी आज़ादी दे दो. तुम्हारा कोई नातेदार अगर तुम्हारे साथ बुराई करे तो तुम उससे प्यार करो; और अगर तुम यह न कर सको तो भूखों को खाना खिलाओ और प्यासों को पानी पिलाओ, और लोगों से नेक काम करने के लिये कहो और बुरे काम करने से उन्हें मना करो; अगर तुम यह भी न कर सको तो अपनी ज़बान बन्द रखो जब तक कि उससे कोई अच्छी बात न निकले."

—बरा बिन आज़िब, बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—

"क़यामत के दिन सात तरह के आदमियों को अल्लाह अपने साए में ले लेगा, और उस दिन सिवाय अल्लाह के और किसी का साया काम न देगा: एक वह आदमी जो लोगों के ऊपर सरदार है और सबके साथ इन्साफ़ का बरताव करता है; दूसरे वह जवान आदमी जिसने अपनी जवानी को अल्लाह की ख़िदमत में बिताया हो; तीसरे वह आदमी जो जब भी दुआ माँगने की जगह से निकलता है तो जब तक फिर उसी जगह वापिस न आ जावे उसका दिल उसी जगह अटका रहता है; चौथे वह जो अल्लाह के लिये एक दूसरे से प्यार करते हैं; उसी के लिये मिलते हैं और उसी के लिये अलग होते हैं; पाँचवे वह आदमी जो अल्लाह को याद करता रहता है और जब भी याद करता है तो उसकी आँखों से आँसू गिरते रहते हैं; छटे वह आदमी जिसके दिल को अगर कोई ऊँचे ख़ानदान की और ख़ूबसूरत औरत भी अपनी तरफ़ खींचती है तो वह कहता है,—'सचमुच, मैं अल्लाह से डरता हूँ;' और सातवें वह आदमी जो ख़ैरात देता है और उसे छिपाता है, यहाँ तक कि उसका दाँया हाथ जो कुछ देता है उसकी उसके बाँए हाथ तक को ख़बर नहीं होती."

—अबु हुरैरह, बुख़ारीः मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"आदमियों में सब से ज़ियादह लायक़ वह है जो दूसरों को उनसे पहले सलाम करता है."

—अबु उमामह, अबु दाऊदः तिरमिज़ी.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

ایک بدو عرب پیغمبر کے پاس آیا اور کہنے لگا:—"مجھے کوئی ایسا کام بتا دیجئے جس سے میں جنت میں جا سکوں." پیغمبر نے جواب دیا—"تم نے بات تھوڑی کہی پر سوال بہت بڑا کیا. اگر کوئی جاندار تمہارے پاس ہیں تو انہیں آزاد کر دو، اگر کوئی غلام تمہارے پاس ہیں تو انہیں بھی آزادی دے دو. تمہارا کوئی ناتے دار اگر تمہارے ساتھ برائی کرے تو تم اسے پیار کرو؛ اور اگر تم یہ نہ کر سکو تو بھوکوں کو کھانا کھلاؤ اور پیاسوں کو پانی پلاؤ، اور لوگوں سے نیک کام کرنے کے لئے کہو اور برے کام کرنے سے انہیں منع کرو؛ اگر تم یہ بھی نہ کر سکو تو اپنی زبان بند رکھو جب تک کہ اس سے کوئی اچھی بات نہ نکلے."

—براابن عازب، بیہقی.

محمد صاحب نے کہا کہ:—

"قیامت کے دن سات طرح کے آدمیوں کو اللہ اپنے سائے میں لے لیگا، اور اس دن سوائے اللہ کے کسی کا سایہ کام نہ دے گا. ایک وہ آدمی جو لوگوں کے اوپر سردار ہے اور سب کے ساتھ انصاف کا برتاؤ کرتا ہے؛ دوسرے وہ جوان آدمی جس نے اپنی جوانی کو اللہ کی خدمت میں بتایا ہو؛ تیسرے وہ آدمی جو جب بھی دعا مانگنے کی جگہہ سے نکلتا ہے تو جب تک پھر اسی جگہہ واپس نہ آجاوے اس کا دل اسی جگہہ اٹکا رہتا ہے؛ چوتھے وہ دو آدمی جو اللہ کے لئے ایک دوسرے سے پیار کرتے ہیں، اسی کے لئے ملتے ہیں اسی کے لئے الگ ہوتے ہیں؛ پانچویں وہ آدمی جو اللہ کو یاد کرتا رہتا ہے اور جب بھی یاد کرتا ہے تو اسکی آنکھوں سے آنسو گرتے رہتے ہیں؛ چھٹے وہ آدمی جس کے دل کو اگر کوئی اونچے خاندان کی اور خوبصورت عورت بھی اپنی طرف کھینچتی ہے تو وہ کہتا ہے—'سچ مچ، میں اللہ سے ڈرتا ہوں؛ اور ساتویں وہ آدمی جو خیرات دیتا ہے اور اسے چھپاتا ہے، یہاں تک کہ اس کا دایاں ہاتھ جو کچھ دیتا ہے اس کی اس کے بائیں ہاتھ تک کو خبر نہیں ہوتی."

—ابو ہریرہ، بخاری: مسلم.

محمد صاحب نے کہا کہ:—"آدمیوں میں سب سے زیادہ لائق وہ ہے جو دوسروں کو ان سے پہلے سلام کرتا ہے."

—ابو امامہ، عبداللہ: ترمذی.

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

डाक्टर मिरज़ा अबुल फ़ज़ल

मुहम्मद साहब ने कहा :—

"क़यामत के दिन हर आदमी से 'पाँच बातों की बाबत सवाल किया जावेगा: उसकी जिन्दगी की बाबत यह कि तूने अपनी ज़िन्दगी कैसे बसर की; उसकी जवानी की बाबत यह कि तुम जवान से बूढ़े कैसे हो गए; उसकी दौलत की बाबत यह कि तुमने दौलत कैसे कमाई और यह कि वह दौलत किस किस काम में खर्च की; और उसके इल्म की बाबत यह कि तुमने अपने इल्म का क्या उपयोग किया."

—इब्ने मसऊद, तिरमिज़ी.

अबु मूसा कहता है कि :—"मैं अपने दो भतीजों को लेकर रसूल के पास गया. मेरे भतीजों में से एक ने कहा,—'ऐ अल्लाह के रसूल ! अल्लाह ने जो मुल्क आपको हुकूमत करने के लिये दिया है उसके किसी हिस्से पर हम दोनों को गवरनर मुक़र्रर कर दीजिये.' मेरे दूसरे भतीजे ने भी यही बात कही. इस पर पैग़म्बर ने जवाब दिया,—'अल्लाह की क़सम ! मैं किसी ऐसे आदमी को कहीं अफ़सर मुक़र्रर नहीं करता जो खुद मुझ से मुक़र्रर किये जाने के लिये कहता है, या जो अफ़सर होने की इच्छा रखता है.'"

—अबू मूसा, बुखारी: मुसलिम: अबु दाऊद: नसाई.

अनस कहता है:—"मैंने यह देखा कि जब कभी पैग़म्बर के सामने कोई ऐसा मामला लाया गया जिसमें किसी ने किसी को कोई नुक़सान पहुँचाया हो और जिसे नुक़सान पहुँचा है वह बदला लेना चाहता हो तो पैग़म्बर ने हमेशा यही हुकुम दिया कि माफ़ कर दो."

—अनस, अबु दाऊद: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"अल्लाह नेक है और वह लोगों से सिवाय नेक कामों के और कोई काम क़बूल नहीं करता.''

—अबु हुरैरह, मुसलिम : तिरमिज़ी.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

ڈاکٹر مرزا ابوالفضل

محمد صاحب نے کہا:—

"قیامت کے دن ہر آدمی سے پانچ باتوں کی بابت سوال کیا جائیگا : اُس کی زندگی کی بابت یہ کہ تو نے اپنی زندگی کیسے بسر کی؛ اُس کی جوانی کی بابت یہ کہ تم جوان سے بوڑھے کیسے ہو گئے؛ اُس کی دولت کی بابت یہ کہ تم نے دولت کیسے کمائی اور یہ کہ وہ دولت کس کس کام میں خرچ کی؛ اور اُس کے علم کی بابت یہ کہ تم نے اپنے علم کا کیا اُپیوگ کیا."

—ابن مسعود، ترمذی۔

ابو موسیٰ کہتا ہے کہ:—"میں اپنے دو بھتیجوں کو لے کر رسول کے پاس گیا. میرے بھتیجوں میں سے ایک نے کہا—'اے اللہ کے رسول! اللہ نے جو ملک آپ کو حکومت کرنے کے لئے دیا ہے اُس کے کسی حصے پر ہم دونوں کو گورنر مقرر کر دیجیئے.' میرے دوسرے بھتیجے نے بھی یہی بات کہی. اِس پر پیغمبر نے جواب دیا—'اللہ کی قسم! میں کسی ایسے آدمی کو کہیں افسر مقرر نہیں کرتا جو خود مجھسے مقرر کئے جانے کے لئے کہتا ہے' یا جو افسر ہونے کی اِچھا رکھتا ہے."

—ابن موسیٰ، بخاری؛ مسلم: ابوداؤد: نسائی۔

انس کہتا ہے:—"میں نے یہ دیکھا کہ جب کبھی پیغمبر کے سامنے کوئی ایسا معاملہ لایا گیا جس میں کسی نے کسی کو کوئی نقصان پہنچایا ہو اور جسے نقصان پہنچا ہو وہ بدلہ لینا چاہتا ہو تو پیغمبر نے ہمیشہ یہی حکم دیا کہ معاف کر دو."

—انس، ابوداؤد: نسائی۔

محمد صاحب نے کہا :—"اللہ نیک ہے اور وہ لوگوں سے سوائے نیک کاموں کے اور کوئی کام قبول نہیں کرتا."

—ابو ہریرہ، مسلم : ترمذی۔

बराबर पैदल ही आया जाया करते थे. मेरे दिल पर चिन्तामणि जी का, उनकी सादगी और सच्चरित्रता का बहुत असर पड़ा. हालाँकि मेरे विचार उनसे नहीं मिलते थे लेकिन फिर भी उस समय से लेकर आखीर तक मेरे ऊपर हमेशा उनकी मेहरबानी बनी रही.

चिन्तामणि जी को स्वदेशी आन्दोलन के बढ़ते हुए सैलाब को रोकने के लिये इलाहाबाद लाया गया था. खास तौर पर युनिवर्सिटी के अन्दर विद्यार्थियों पर गरम दल के बढ़ते हुए असर को रोकने का काम चिन्तामणि जी के सुपुर्द किया गया. चिन्तामणि जी बहुत अच्छे वक्ता थे. उनकी दलीलों की काट आसान न थी. उनके प्रोपेगेन्डा का श्रीगणेश जहाँ तक मुझे याद है, आक्सफोर्ड कैम्ब्रिजबोर्डिंग हाउस से हुआ था, जो अब गालिबन हालेन्ड हाल के नाम से प्रसिद्ध है. उनके पहले लेक्चर में मैं भी मौजूद था. हाल ठसा ठस भरा हुआ था. प्रोफेसर भी मौजूद थे. चिन्तामणि जी ने स्वदेशी और बायकाट के खिलाफ़ बड़ी तर्क पूर्ण तक़रीर की. ज्योंही उन्होंने बोलकर खत्म किया विद्यार्थियों ने आवाजें लगाईं —,"सुन्दरलाल जी भी बोलें." दोनों तरफ़ के ख़याल विद्यार्थियों ने सुने और जब वोट लिये गये तो कुल इने गिने चार वोट चिन्तामणि जी को मिले और क़रीब चार सौ उनके खिलाफ़. चिन्तामणि जी ने प्रेम से आकर मुझसे हाथ मिलाया और कहा—"बधाई !" उस पहली मीटिंग का तजरबा इतना मँहगा पड़ा कि फिर बायकाट के विरोधियों को युनिवर्सिटी के किसी होस्टल में दूसरी मीटिंग करने का साहस न हुआ.

[बाक़ी अगले नम्बर में]

برابر پیدل ہی آیا جایا کرتے تھے ۔ میرے دل پر چنتامنی جی کا اُن کی سادگی اور سچرترتا کا بہت اثر پڑا ۔ حالانکہ میرے وچار اُن سے نہیں ملتے تھے لیکن پھر بھی اُس سمے سے لے کر آخر تک میرے اوپر ہمیشہ اُن کی مہربانی بنی رہی ۔

چنتامنی جی کو سودیشی آندولن کے بڑھتے ہوئے سیلاب کو روکنے کے لئے الہ آباد لایا گیا تھا ۔ خاص طور پر یونیورسٹی کے اندر ودیارتھیوں پر گرم دل کے بڑھتے ہوئے اثر کو روکنے کا کام چنتامنی جی کے سپرد کیا گیا ۔ چنتامنی جی بہت اچھے وکتا تھے ۔ اُن کی دلیلوں کی کاٹ آسان نہ تھی۔ اُن کے پروپیگنڈا کا شری گنیش' جہاں تک مجھے یاد ہے' آکسفورڈ کیمبرج بورڈنگ ہاؤس سے ہوا تھا' جو اب غالباً ہالینڈ ہال کے نام سے پرسدھ ہے۔ اُن کے پہلے لیکچر میں میں بھی موجود تھا ۔ ہال ٹھسا ٹھس بھرا ہوا تھا ۔ پروفیسر بھی موجود تھے ۔ چنتامنی جی نے سودیشی اور بائیکاٹ کے خلاف بڑی ترک پورن تقریر کی ۔ جیوں ہی اُنہوں نے بول کر ختم کیا ودیارتھیوں نے آوازیں لگائیں— "سندر لال جی بھی بولیں" دونوں طرف کے خیال ودیارتھیوں نے سنے اور جب ووٹ لئے گئے تو کل اِنے گنے چار ووٹ چنتامنی جی کو ملے اور قریب چار سو ان کے خلاف ۔ چنتامنی جی نے پریم سے آکر مجھ سے ہاتھ ملایا اور کہا— "بدھائی!" اِس پہلی میٹنگ کا تجربہ اتنا مہنگا پڑا کہ پھر بائیکاٹ کے ورودھیوں کو یونیورسٹی کے کسی ہوسٹل میں دوسری میٹنگ کرنے کا ساہس نہ ہوا ۔

[باقی اگلے نمبر میں]

[बाक़ी सफ़ा 264 का]

बहुत सी बातें कम कर दीं जो हिन्दुओं को विदेशी लगती थीं. अपनी इस कुरबानी से उन्होंने हिन्दोस्तान की मिली-जुली कलचर की वह शानदार कहानी लिखी कि जिसकी झाँकी हमें मँझले ज़माने में बनी हुई हर किताब और हर तस्वीर में, हर किले और हर महल में, हर शेर और हर नज़्म में मिलती है.

[अंग्रेज़ी से अनुवादक—वि० ना० पांडे]

[باقی صفحہ 264 کا]

بہت سی باتیں ترک کردیں جو ہندوؤں کو ودیشی لگتی تھیں ۔ اپنی اِس قربانی سے اُنہوں نے ہندستان کی ملی جلی کلچر کی وہ شاندار کہانی لکھی کہ جس کی جھانکی ہمیں منجھلے زمانے میں بنی ہوئی ہرکتاب اورہر تصویر میں' ہر قلعے اور محل میں' ہرشعر اور ہرنظم میں ملتی ہے ۔

[انگریزی سے انوادک— وی ۔ نا ۔ پانڈے]

मजबूर होकर घर लौट जाऊँ तो इलाहाबाद में आन्दोलन ठन्डा पड़ जायगा. मकान मालिक बेचारा बड़ा परेशान हुआ. पुलिस के सामने उसने इक़रारनामा रक्खा. सरकारी वकील से भी सलाह मशविरा लिया गया, मगर मुझे निकालने की कोई क़ानूनी सूरत न निकली. ज़ाब्ते से अब हमारी पार्टी का अड्डा 56 चौक गंगादास में क़ायम हो गया.

इसी बीच कुछ ऐसे वाक़ेयात पेश आये जिनसे गरम दल के हिन्दुस्तान के नक़्शे में इलाहाबाद की एक ख़ास जगह हो गई.

जो बुज़ुर्ग हमें मदद और सलाह मशविरा दिया करते थे उनके ख़िलाफ़ सरकार ने क़दम उठाने शुरू किये. सबसे पहला हमला पंडित श्रीकृष्ण जोशी पर हुआ. वह सरकारी अफ़सर थे और डिप्टी कलेक्टरी के ओहदे पर थे. उन्हें बरख़ास्त कर दिया गया. बाबू शशि भूषण चटर्जी का इलाहाबाद से ग़ाज़ीपुर तबादला कर दिया गया. पंडित बालकृष्ण भट्ट को कायस्थ पाठशाला की मैनेजिंग कमेटी पर ज़ोर डालकर नौकरी से बरख़ास्त करा दिया गया और अन्त में कायस्थ पाठशाला की मैनेजिंग कमेटी के ज़रिये बाबू रामानन्द चटर्जी को प्रिंसपल के पद से इस्तीफ़ा देने को मजबूर कर दिया गया. प्रिन्सिपल के पद से हटकर बाबू रामानन्द ने इलाहाबाद में ही इन्डियन प्रेस से, 'प्रवासी' नामक बंगला मासिक पत्र और 'Modern Review' नामक अंग्रेज़ी मासिक-पत्र निकालना शुरू किया. बाद में रामानन्द बाबू कलकत्ते चले गये और अपने दोनों पत्र भी कलकत्ते से जाकर निकालने लगे.

सर तेजबहादुर सप्रू को, जो उस समय डाक्टर सप्रू थे, मुझसे बेहद दिली मोहब्बत थी हालाँकि राय उनकी मालवीय जी से मिलती थी. यही क़ैफ़ियत डाक्टर सच्चिदानन्द सिन्हा और मुंशी ईश्वर शरण की थी.

इलाहाबाद से उस ज़माने में 'नीम सरकारी' दैनिक 'पायोनियर' और नरम दल का दैनिक 'इन्डियन पीपुल' निकलते थे. 'इन्डियन पीपुल' का सम्पादन काली बाबू करते थे किन्तु काली बाबू भी नरम दल के नेताओं की नज़रों में उतने नरम न थे जितना कि वे उम्मीद करते थ. चुनानचे मालवीय जी, पंडित मोतीलाल जी और दूसरे नरम दली नेताओं ने मिल कर 'लीडर' का प्रकाशन शुरू किया. 'इन्डियन पीपुल' भी 'लीडर' में ही मिला लिया गया. 'लीडर' के सम्पादन में मदद देने और गरम दल के नौजवानों से मोर्चा लेने के लिये स्वर्गीय सी० वाई० चिन्तामणि को इलाहाबाद बुलाया गया. यह तो याद नहीं रहा कि चिन्तामणि जी उस समय कहाँ रहते थे लेकिन इतना मुझे याद है कि वे साउथ रोड में 'लीडर' के दफ़्तर में

مجبور ہوکر گھر لوٹ جاؤں تو الہ آباد میں آندولن ٹھنڈا پڑ جائیگا ۔ مکان مالک بے چارہ بڑا پریشان ہوا ۔ پولیس کے سامنے اُس نے اِقرار نامہ رکھا ۔ سرکاری وکیل سے بھی صلاح و مشورہ لیا گیا مگر مجھے نکالنے کی کوئی قانونی صورت نہ نکلی ۔ ضابطہ سے اب ہماری پارٹی کا اڈا 56 چوک گنگا داس میں قایم ہوگیا ۔

اِسی بیچ کچھ ایسے واقعات پیش آئے جن سے گرم دل کے ھندستان کے نقشے میں الہ آباد کی ایک خاص جگہ ہو گئی ۔

جو بزرگ ہمیں مدد اور صلاح مشورہ دیا کرتے تھے ان کے خلاف سرکار نے قدم اُٹھانا شروع کیئے ۔ سب سے پہلا حملہ پنڈت شری کرشن جوشی پر ہوا ۔ وہ سرکاری افسر تھے اور ڈپٹی کلکٹری کے عہدے پر تھے ۔ اُنھیں برخاست کردیا گیا ۔ بابو ششی بھوشن چٹرجی کا الہ آباد سے غازی پور تبادلہ کر دیا گیا ۔ پنڈت بال کرشن بھٹ کو کائستھ پاٹھ شالا کی منیجنگ کمیٹی پر زور ڈال کر نوکری سے برخاست کرا دیا گیا اور انت میں کائستھ پاٹھ شالا کی منیجنگ کمیٹی کے ذریعے بابو رامانند چٹرجی کو پرنسپل کے پد سے استعفیٰ دینے کو مجبور کر دیا گیا ۔ پرنسپل کے پد سے ہٹ کر بابو رامانند نے الہ آباد میں ہی انڈین پریس سے 'پرواسی' نامک بنگلا ماسک پتر اور 'Modern Review' نامک انگریزی ماسک پتر نکالنا شروع کیا ۔ بعد میں رامانند بابو کلکتے چلے گئے اور اپنے دونوں پتر بھی کلکتے سے جاکر نکالنے لگے ۔

سرتیج بہادر سپرو کو' جو اُس سمے ڈاکٹر سپرو تھے' مجھسے بے حد دلی محبت تھی حالانکہ رائے اُن کی مالویہ جی سے ملتی تھی ۔ یہی کیفیت ڈاکٹر سچدا نند سنہا اور منشی ایشور شرن کی تھی ۔

الہ آباد سے اُس زمانے میں 'نیم سرکاری' دینک پایونیر' اور نرم دل کا دینک 'انڈین پیپل' نکلتے تھے ۔ 'انڈین پیپل' کا سمپادن کالی بابو کرتے تھے کنتو کالی بابو بھی نرم دل کے نیتاؤں کی نظروں میں اُتنے نرم نہ تھے جتنا کہ وہ امید کرتے تھے ۔ چنانچہ مالویہ جی' پنڈت موتی لال جی اور دوسرے نرم دلی نیتاؤں نے مل کر 'لیڈر' کا پرکاشن شروع کیا ۔ 'انڈین پیپل' بھی 'لیڈر' میں ہی ملا لیا گیا ۔ 'لیڈر' کے سمپادن میں مدد دینے اور گرم دل کے نوجوانوں سے مورچہ لینے کے لئے سورگیہ سی ۔ وائی ۔ چنتامنی کو الہ آباد بلایا گیا ۔ یہ تو یاد نہیں رہا کہ چنتامنی جی اُس سمے کہاں رہتے تھے لیکن اِتنا مجھے یاد ہے کہ وہ ساؤتھ روڈ میں 'لیڈر' کے دفتر میں

पिता जी क्या ख़याल करेंगे. मगर सब कुछ सोचने के बाद मैं आख़री निश्चय पर पहुँच गया.

वाइस चान्सलर ने पूछा—"क्या फ़ैसला किया ?"

मैंने जवाब दिया—"आपकी सलाह न मानने का मुझे बड़ा अफ़सोस है. मेरी गुस्ताख़ी माफ़ हो, मैं बहुत मजबूर हूँ."

दूसरे दिन मैं वाइस चान्सलर के हुक्म से यूनिवर्सिटी से अलग कर दिया गया. इस तरह मेरे विद्यार्थी जीवन का अन्त हो गया.

मेरे युनिवर्सिटी और हिन्दू बोर्डिंग हाउस से निकाले जाने के बाद साथियों के दिल गुस्से से भर गये. नित्यानन्द चटर्जी मेरे साथ ही एल-एल० बी० में पढ़ते थे. युनिवर्सिटी से मेरे निकाले जाने के बाद उन्हें एक दिन भी युनिवर्सिटी में रहना गवारा न हुआ. उन्होंने वाइस चांसलर को मेरे साथ किये गये अन्याय के ख़िलाफ़ एक सख़्त ख़त लिखा और उस ख़त के साथ साथ एल-एल० बी० के दर्जे से अपना इस्तीफ़ा भी भेज दिया.

बोर्डिंग हाउस से निकलने के बाद मैंने दोस्तों के साथ मकान की तलाश शुरु की. आगे-आगे हम लोग पहुँचते थे और पीछे-पीछे तीन-चार पुलिस के दरोग़ा और आधे दर्जन सिपाही. मकान मालिक यदि अपना मकान क़िराये पर देने को राज़ी भी हो जाता था तो पुलिस वाले उसे बाद में इतना डराते-धमकाते थे कि वह अपनी बात से फिर जाता था. कई घन्टे सर्फ़ किये, कई ख़ाली माकानों को देखा मगर पुलिस के डर के मारे सभी मकान मालिक अपने वादे से फिर गये. आख़िर में वह रात मुझे नित्यानन्द के यहाँ बितानी पड़ी.

दूसरे दिन कुछ और दोस्त, जिनसे पुलिस वाले पूरी तरह वाक़िफ़ न थे, मकान की तलाश में निकले. आख़ीर में चौक गंगादास में 56 नम्बर का मकान किराये पर लेने का उन्होंने फ़ैसला किया, होशियार दोस्तों ने, जिनमें एक या दो वकील भी थे, मकान मालिक से यह इक़रार-नामा लिखवाया—"चाहे कैसी ही आफ़तें इनसानी, आफ़तें सुलतानी और आफ़ते नागहानी आये साल भर तक न किरायेदार मकान ख़ाली करेगा और न मकान मालिक ही किरायेदार को हटायेगा." जब इक़रारनामा लिख लिया गया और मकान मालिक के उसपर दस्तख़त हो गये तो एक दोस्त उसे मेरे दस्तख़त के लिये मेरे पास लाये. फ़ौरन ही हम लोग अपना सामान लिये दिये माकान में दाख़िल हो गये. हस्ब मामूल पुलिस भी हमारे पीछे पीछे पहुँची. मकान मालिक से उसने ज़ोर दिया कि वह मुझे मकान से अलग करे. उस का ख़याल था कि अगर मैं इलाहाबाद से

پتا جی کیا خیال کریں گے. مگر سب کچھ سوچنے کے بعد میں آخری نشچے پر پہنچ گیا.

وائس چانسلر نے پوچھا—"کیا فیصلہ کیا ؟"

میں نے جواب دیا—"آپ کی صلاح نہ ماننے کا مجھے بڑا افسوس ہے. میری گستاخی معاف ہو' میں بہت مجبور ہوں."

دوسرے دن میں وائس چانسلر کے حکم سے یونیورسٹی سے الگ کر دیا گیا. اس طرح میرے ودیارتھی جیون کا انت ہو گیا.

میرے یونیورسٹی اور ہندو بورڈنگ ہاؤس سے نکالے جانے کے بعد ساتھیوں کے دل غصے سے بھر گئے. نتیا نند چٹرجی میرے ساتھ ہی ایل. ایل. بی. میں پڑھتے تھے. یونیورسٹی سے میرے نکالے جانے کے بعد انہیں ایک دن بھی یونیورسٹی میں رہنا گوارا نہ ہوا. انہوں نے وائس چانسلر کو میرے ساتھ کئے گئے انیائے کے خلاف ایک سخت خط لکھا اور اس خط کے ساتھ ساتھ ایل. ایل. بی. کے درجے سے اپنا استعفیٰ بھی بھیج دیا.

بورڈنگ ہاؤس سے نکلنے کے بعد میں نے دوستوں کے ساتھ مکان کی تلاش شروع کی. آگے آگے ہم لوگ پہنچتے تھے اور پیچھے پیچھے تین چار پولیس کے داروغہ اور آدھے درجن سپاہی. مکان مالک یدی اپنا مکان کرایہ پر دینے کو راضی بھی ہو جاتا تھا تو پولیس والے اسے بعد میں اتنا ڈراتے دھمکاتے تھے کہ وہ اپنی بات سے پھر جاتا تھا. کئی گھنٹے صرف کئے' کئی خالی مکانوں کو دیکھا مگر پولیس کے ڈر کے مارے سبھی مکان مالک اپنے وعدے سے پھر گئے. آخر میں وہ رات مجھے نتیانند کے یہاں بتانی پڑی.

دوسرے دن کچھ اور دوست' جن سے پولیس والے پوری طرح واقف نہ تھے' مکان کی تلاش میں نکلے. آخر میں چوک گنگاداس میں 56 نمبر کا مکان کرائے پر لینے کا انہوں نے فیصلہ کیا. ہوشیار دوستوں نے' جن میں ایک یا دو وکیل بھی تھے' مکان مالک سے یہ اقرارنامہ لکھوایا—"چاہے کیسی ہی آفت انسانی' آفت سلطانی اور آفت ناگہانی آئے سال بھر تک نہ کرایہ دار مکان خالی کرے گا اور نہ مکان مالک ہی کرایہ دار کو ہٹائے گا." جب اقرار نامہ لکھ لیا گیا اور مکان مالک کے اس پر دستخط ہوگئے تو ایک دوست اسے میرے دستخط کے لئے میرے پاس لائے. فوراً ہی ہم لوگ اپنا سامان لئے دئے مکان میں داخل ہوگئے. حسب معمول پولیس بھی ہمارے پیچھے پیچھے پہنچی. مکان مالک سے اس نے زور دیا کہ وہ مجھے مکان سے الگ کرے. پولیس کا خیال تھا کہ اگر میں الہ آباد سے

विलियम डिग्बी जैसे लेखकों की किताबें उन्होंने ध्यान से पढ़ीं. इटली आदि के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास भी उन्होंने पढ़ा. ठीक उस समय एक छोटी सी घटना हुई जिसने मंज़र अली की ज़िन्दगी पर गहरा असर डाला. म्योर सेंट्रल कालेज के प्रिंसिपल जे० जी० जेनिंग्ज़ उन दिनों एम०ए० को अंगरेज़ी पढ़ाया करते थे. जेनिंग्ज़ ने मंज़र अली से भारत के आए दिन के दुष्कालों और उनके कारणों पर एक निबन्ध लिखने को कहा. जो किताबें कोर्स में पढ़ाई जाती थीं उनमें इन दुष्कालों या क़हतों की वजह बारिश की कमी बताया गया था. लेकिन नई किताबें पढ़े हुये मंज़र अली ने इसकी वजह अपने निबन्ध में अंगरेज़ों की शोषण नीति को बताया. प्रिंसिपल जेनिंग्ज़ को निबन्ध पढ़कर गुस्सा आ गया. उन्होंने मंज़र अली को डाँटा डपटा और समझा कर निबन्ध बदलने को कहा. मंज़र अली ने अपनी राय न बदली. इस पर वह एम० ए० क्लास से निकाल दिये गये. सन् 1908 में उन्होंने एल० एल० बी० पास कर लिया. इस सबका नतीजा यह हुआ कि मंज़र अली हमारे दल में जी-जान और जोश ख़रोश के साथ शामिल हो गये.

विद्यार्थियों के अन्दर गरम दल के बढ़ते हुये प्रभाव को देखकर यू० पी० की सरकार चौकन्ना हो गई. यूनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर के साथ मिलकर उन्होंने हम लोगों के ख़िलाफ़ .क़दम उठाने का .फ़ैसला किया. मैं ही पेश पेश था इसलिये मेरे ख़िलाफ़ पहले .क़दम उठाने की बात सोची गई.

सबसे पहले मुझ पर हिन्दू बोर्डिंग हाउस से निकलने का नोटिस तामील कर दिया गया. मार्च 1907 का महीना था. इम्तहान क़रीब थे. [illegible] [illegible] बोर्डिंग हाउस [illegible] हिन्दू [illegible] थे [illegible] मुझे [illegible] अलग करते हुये [illegible] साथ यह [illegible] थे कि मैं [illegible] जारी रखूं, यूनिवर्सिटी अधिकारियों के पास से यह परवाना आया कि मुझे एल० एल० बी० क्लास से रस्टीकेट किया जाता है. वाइस चांसलर की ओर से यह भी कहा गया कि यदि मैं वादा कर लूँ कि इम्तहान ख़त्म होने तक राजनीति में कोई भाग न लूँगा तो मेरे निकाले जाने का हुक्म रद्द किया जा सकता है, यह भी कहा गया कि ऐसी सूरत में हिन्दू बोर्डिंग से भी मुझे अलग करने का हुक्म भी वापस ले लिया जायगा. मैंने थोड़ी देर तक सोचा. बन्दिनी भारत माता की तस्वीर मेरे सामने आई. अपनी ज़िन्दगी की मोड़ पर मैं खड़ा था. मेरे उस वक़्त के .फ़ैसले पर मेरी आगे की ज़िन्दगी का दार मदार था. मैंने यह भी सोचा कि मेरे बूढ़े

ولیم ڈگبی جیسے لیکھکوں کی کتابیں اُنھوں نے دھیان سے پڑھیں. اِٹلی آدی کے سوتنترتا سنگرام کا اتہاس بھی اُنھوں نے پڑھا. ٹھیک اُسی سمے ایک چھوٹی سی گھٹنا ھوئی جس نے منظر علی کی زندگی پر گہرا اثر ڈالا. میورسنٹرل کالج کے پرنسپل جے. جی جینگز اُن دنوں ایم. اے کو انگریزی پڑھایا کرتے تھے. جینگز نے منظر علی سے بھارت کے آئے دن کے دشکالوں اور اُن کے کارنوں پر ایک نبندھ لکھنے کو کہا. جو کتابیں کورس میں پڑھائی جاتی تھیں اُن میں اِن دشکالوں یا قحطوں کی وجہ بارش کی کمی بتایا گیا تھا. لیکن نئی کتابیں پڑھے ہوئے منظر علی نے اُس کی وجہ اپنے نبندھ میں انگریزوں کی شوشن نیتی کو بتایا. پرنسپل جینگز کو نبندھ پڑھ کر غصہ آگیا. اُنھوں نے منظر علی کو ڈانٹا ڈپٹا اور سمجھا کر نبندھ بدلنے کو کہا - منظر علی نے اپنی رائے نہ بدلی. اِس پر وہ ایم. اے کلاس سے نکال دیئے گئے. سن 1908 میں اُنھوں نے ایل. ایل. بی پاس کرلیا. اِس سب کا نتیجہ یہ ھوا کہ منظر علی ھمارے دل میں جی. جان اور جوش خروش کے ساتھ شامل ھوگئے.

ودیارتھیوں کے اندر گرم دل کے بڑھتے ھوئے پربھاؤ کو دیکھ کر یو. پی. کی سرکار چوکنی ھو گئی. یونیورسٹی کے وائس چانسلر کے ساتھ مل کر اُنھوں نے ھم لوگوں کے خلاف قدم اٹھانے کا فیصلہ کیا. میں ھی پیش پیش تھا اِس لئے میرے ھی خلاف پہلے قدم اٹھانے کی بات سوچی گئی.

سب سے پہلے مجھ پر ھندو بورڈنگ ھاؤس سے نکلنے کا نوٹس تعمیل کر دیا گیا. مارچ 1907 کا مہینہ تھا [illegible] [illegible] [illegible] کو تھا. میرا سامان بورڈنگ ھاؤس کے کمرے سے باھر کر دیا گیا. مالویہ جی ھندو بورڈنگ ھاؤس کے [illegible] تھے اور مجھے ھوسٹل سے الگ کرتے ھوئے [illegible] جبکہ ساتھ یہ [illegible] [illegible] پڑھائی جاری رکھوں، یونیورسٹی ادھیکاریوں کے پاس سے یہ پروانہ آیا کہ مجھے ایل. بی. کلاس سے رسٹی کیٹ کیا جاتا ھے. وائس چانسلر کی اور سے یہ بھی کہا گیا کہ یدی میں وعدہ کر لوں کہ امتحان ختم ھونے تک راج نیتی میں کوئی بھاگ نہیں لونگا تو میرے نکالے جانے کا حکم رد کیا جا سکتا ھے، یہ بھی کہا گیا کہ ایسی صورت میں ھندو بورڈنگ ھاؤس سے بھی مجھے الگ کرنے کا حکم بھی واپس لے لیا جائیگا. میں نے تھوڑی دیر تک سوچا. وندنی بھارت ماتا کی تصویر میرے سامنے آئی. اپنی زندگی کی موڑ پر میں کھڑا تھا. میرے اِس وقت کے فیصلے پر میری آگے کی زندگی کا دارو مدار تھا. میں نے یہ بھی سوچا کہ میرے بوڑھے

और लक्ष्मण एल-एल. बी. के विद्यार्थी थे. लाला जगन्नाथ खन्ना ने बाद में लन्दन जाकर इंजीनियरिंग पढ़ी और बी. बी. सी. आइ. रेलवे के डिवीजनल इंजीनियर होगये. स्वर्गीय रामप्रसाद सिंह हिन्दी की कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के बड़े भाई थे. पुलिस में दारोगा थे. स्तीफा देकर क्रान्तिकारी पार्टी में शामिल हो गये. लक्ष्मण प्रसाद के पिता रायबहादुर लाला प्रागदास सेशन्स जज थे और लक्ष्मण प्रसाद भी बाद में सेशन्स जजी से ही रिटायर हुये. जब तक जिये खादी ही पहनते रहे और इसके लिये कई साल उनकी तरक्की रुकी रही.

भाई मंजरअली सोख़्ता के साथ मेरा प्रेम इतना बढ़ा कि हम दोनों 'एक जान दो क़ालिब' की तरह बन गये. मंजरअली का जन्म सन् 1884 में बदायूँ में हुआ था. उनके पिता शेख मुबारक अली नवाब बदायूँ के चचेरे भाइयों में से थे. एक पुराने सूफ़ी सिलसिले से उनके घराने का सम्बन्ध था. उसी से खानदान की अल्ल 'सोख्ता' यानी 'दग्ध' या 'जला हुआ' पड़ गई. 1857 में इनके ख़ानदान ने इन्क़लाब में हिस्सा लिया, और नतीजे में खानदान के बहुत से लोग लड़ाई के मैदान में मारे गये. बहुतों को फाँसी लगी और ख़ानदान की तमाम जायदाद जब्त हो गई. शेख मुबारिक अली फ़ारसी के विद्वान थे. नौकरी की तलाश में इलाहाबाद आकर पंडित मोतीलाल नेहरू के यहाँ मुन्शी हो गये. मोतीलाल जी ने हमेशा उनके साथ दोस्त और भाई का सा बर्ताव किया. मंजर अली का ख़ानदान आनन्द भवन में ही रहता था. मंजर अली वहीं रहकर बड़े हुये. नेहरू ख़ानदान के साथ उनका आख़ीर तक प्रेम सम्बन्ध क़ायम रहा. सब उन्हें आम तौर पर मन्ना भाई कह कर पुकारते थे.

बंग भंग के जमाने में मंजर अली मेरे साथ ही म्योर सेंट्रल कालेज में एम० ए० और एल-एल० बी० साथ साथ पढ़ रहे थे. एल-एल० बी० के और विद्यार्थियों में भाई पुरुषोत्तमदास टण्डन, स्वर्गीय रमाकान्त मालवीय, मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री स्वर्गीय रविशंकर शुक्ल, डाक्टर कैलासनाथ काटजू, और श्री दुर्गाशङ्कर मेहता भी थे. नीचे के दर्जों में पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त, स्वर्गीय आचार्य नरेन्द्र देव, स्वर्गीय गणेश शङ्कर विद्यार्थी, वेंकटेश नारायन तिवारी और स्व० कृष्णाकान्त मालवीय भी थे. हालाँकि ये लोग पार्टी के मेम्बर नहीं थे लेकिन राजनीति से इन्हें पूरी हमदर्दी थी. बाद में उसी हमदर्दी ने इन्हें आजादी की लड़ाई में आगे की लाइन में लाकर खड़ा कर दिया और बड़ी बड़ी क़ुरबानियाँ इन लोगों ने कीं.

बंगभंग के आन्दोलन का मंजर अली पर गहरा असर पड़ा. देश की आर्थिक और राजनैतिक क़ैफ़ियत को उन्होंने समझना शुरू किया. दादाभाई नौरोजी, रमेश चन्द्र दत्त

اور لچھمن ایل . ایل . بی کے ودیارتھی تھے . لالہ جگناتھ کھنا نے بعد میں لندن جاکر انجینیرنگ پڑھی اور بی . بی . سی . آئی . ریلوے کے ڈویژنل انجینیر ہوگئے . سورگیہ رام پرساد سنگھ ہندی کی کویتری سوبھدرا کماری چوہان کے بڑے بھائی تھے . پولیس میں داروغہ تھے . استعفیٰ دے کر کرانتی کاری پارٹی میں شامل ہوگئے . لچھمن پرساد کے پتا رائے بہادر لالہ پراگ داس سیشن جج تھے اور لچھمن پرساد بھی بعد میں سیشن ججی سے ہی ریٹائر ہوئے. جب تک جیئے کھادی ہی پہنتے رہے اور اِس کے لئے کئی سال اُن کی ترقی رکی رہی .

بھائی منظار علی سوختہ کے ساتھ میرا پریم اتنا بڑھا کہ ہم دونوں 'ایک جان دو قالب' کی طرح بن گئے . منظار علی کا جنم سن 1884 میں بدایوں میں ہوا تھا . اُن کے پتا شیخ مبارک علی نواب بدایوں کے چچیرے بھائیوں میں سے تھے . ایک پرانے صوفی سلسلے سے اُن کے گھرانے کا سمبندھ تھا . اُسی سے خاندان کی ال' سوختہ' یعنی 'دگدھ' یا' جلا ہوا' پڑگئی . 1857 میں اِن کے خاندان نے انقلاب میں حصہ لیا' اور نتیجے میں خاندان کے بہت سے لوگ لڑائی کے میدان میں مارے گئے . بہتوں کو پھانسی لگی اور خاندان کی تمام جائداد ضبط ہو گئی . شیخ مبارک علی فارسی کے ودوان تھے . نوکری کی تلاش میں الہ آباد آکر پنڈت موتی لال نہرو کے یہاں منشی ہوگئے. موتی لال جی نے ہمیشہ اُن کے ساتھ دوست اور بھائی کا سا برتاؤ کیا . منظار علی کا خاندان آنند بھون میں ہی رہتا تھا . منظار علی وہیں رہ کر بڑے ہوئے . نہرو خاندان کے ساتھ اُن کا آخیر تک پریم سمبندھ قایم رہا. سب اُنہیں عام طور پر منا بھائی کہہ کر پکار تے تھے .

بنگ بھنگ کے زمانے میں منظر علی میرے ساتھ ہی میورسنٹرل کالج میں ایم . اے اور ایل . ایل . بی . ساتھ ساتھ پڑھ رہے تھے . ایل . ایل . بی . کے اور ودیارتھیوں میں بھائی پروشوتم داس ٹنڈن' سورگیہ رما کانت مالویہ' مدھیہ پردیش کے مکھیہ منتری سورگیہ روی شنکر شکل' ڈاکٹر کیلاس ناتھ کاٹجو' اور شری درگا شنکر مہتا' بھی تھے . نیچے کے درجوں میں پنڈت گووند ولبھ پنت' سورگیہ اچاریہ نریندردیو' سورگیہ گنیش شنکر ودیارتھی' وینکٹیش نراین تیواری اور سورگیہ کرشنا کانت مالویہ بھی تھے . حالانکہ یہ لوگ پارٹی کے ممبر نہیں تھے لیکن راج نیتی سے اُنہیں پوری ہمدردی تھی بعد میں اُسی ہمدردی نے اُنھیں آزادی کی لڑائی میں آگے کی لائن میں لاکر کھڑا کردیا اور بڑی بڑی قربانیاں اِن لوگوں نے کیں .

بنگ بھنگ کے آندولن کا منظار علی پر گہرا اثر پڑا . دیش کی آرتھک اور راج نیتک کیفیت کو انھوں نے سمجھنا شروع کیا . دادا بھائی نوروجی' رمیش چندر دت'

और श्रद्धा पैदा हो गई और उन्हें भी मुझसे दिली प्रेम हो गया. हालाँकि मेरे विचार उनसे नहीं मिलते थे लेकिन जब जब मैं पूना जाता था ठहरता लोकमान्य के यहाँ था मगर पूज्य गोखले से मिलने जरूर जाता था. श्री गोखले के साथ मेरा यह प्रेम सम्बन्ध उनकी मौत के समय तक बराबर बढ़ता ही गया और आज भी मैं उन्हें प्रेम और आदर से याद करता हूँ.

गोखले जी की इलाहाबाद यात्रा से यहाँ की राजनैतिक हालत पर कोई खास असर नहीं पड़ा. नरमदली नेताओं ने फिर आपस में सलाह करके 1907 में ही यू. पी. पोलिटिकल कान्फ्रेंस का इजलास यहाँ करने का फैसला किया. मेयो हाल में पंडित मोतीलाल नेहरू की सदारत में सम्मेलन हुआ. पार्टी की हिदायत पर मैं भी इस कान्फ्रेंस में दर्शक की हैसियत से शामिल हुआ. मुझे मोतीलाल जी के वे फ़िक़रे याद रह गये हैं जो इन्होंने सदर की हैसियत से कहे थे. उनके लफ़्ज़ हैं :—

"For Indians to talk of Swaraja and of- turning out the British is like a pygmy with- a broom in his hand trying to fight the giant."

यानी—"हिन्दुस्तानियों के लिये स्वराज्य की और अंग्रेजों को निकालने की बात करना वैसा ही है जैसे कोई नाचीज़ आदमी बड़े भारी जिन्न से झाड़ू लेकर लड़ने की कोशिश करे."

मोतीलाल जी के इस फ़िक़रे को सुनकर दर्शकों ने इतना हो हल्ला मचाया कि मालूम हुआ कान्फ्रेंस टूट जायगी, मगर बड़ी कोशिशों के बाद लोग ख़ामोश हुए.

मोतीलाल जी उस जमाने में नरमदल वालों के सरताज समझे जाते थे. एक बार वे प्रसिद्ध इतिहासकार मेजर बामनदास बसु से एक दावत में इलाहाबाद में मिले. मेजर बसु धोती पहनकर उस सरकारी अफ़सरों की दावत में गये थे. मोतीलाल जी ने इनकी धोती की ओर इशारा करके इन्हें टोका :—

"Major Basu! you appear to have got Swaraja."

यानी—"मेजर बसु, मालूम होता है कि आपको तो स्वराज्य मिल गया."

ग़रज़ यह कि यू. पी. पोलिटिकल कान्फ्रेंस का इजलास भी बढ़ती हुई आज़ादी की चाह को कम न कर सका. हमारे काम का दायरा बढ़ा और नये नये साथी पार्टी में भरती होने लगे. इन नये साथियों में स्वर्गीय मंज़रअली सोख़्ता, स्वर्गीय बाबू लक्ष्मण प्रसाद, स्वर्गीय लाला जगन्नाथ खन्ना और स्वर्गीय ठाकुर रामप्रसाद सिंह मुख्य थे. इनमें मंज़र

اور شردھا پیدا ہو گئی اور انہیں بھی مجھسے دلی پریم ہو گیا. حالانکہ میرے وچار ان سے نہیں ملتے تھے لیکن جب جب میں پونا جاتا تھا ٹھہرتا لوکمانیہ کے یہاں تھا مگر پوجیہ گوکھلے سے ملنے ضرور جاتا تھا . شری گوکھلے کے ساتھ میرا یہ پریم سمبندھ ان کی موت کے سمے تک برابر بڑھتا ہی گیا اور آج بھی میں انہیں پریم اور آدر سے یاد کرتا ہوں .

گوکھلے جی کی الہ آباد یاترا سے یہاں کی راجنیتک حالت پر کوئی خاص اثر نہیں پڑا . نرم دلی نیتاؤں نے پھر آپس میں صلاح کر کے 1907 میں ہی یو. پی. پولیٹکل کانفرنس کا اجلاس یہاں کرنے کا فیصلہ کیا . میو ہال میں پنڈت موتی لال نہرو کی صدارت میں سمیلن ہوا . پارٹی کی ہدایت پر میں بھی اس کانفرنس میں درشک کی حیثیت سے شامل ہوا . مجھے موتی لال جی کے وے فقرے یاد رہ گئے ہیں جو انہوں نے صدر کی حیثیت سے کہے تھے . ان کے لفظ ہیں :—

"For Indians to talk of Swaraja and of turning out the British is like a pygmy with a broom in his hand trying to fight the giant."

یعنی—"ہندستانیوں کے لئے سوراجیہ کی اور انگریزوں کے نکالنے کی بات کرنا ویسا ہی ہے جیسے کوئی ناچیز آدمی بڑے بھاری جن سے جھاڑو لے کر لڑنے کی کوشش کرے ."

موتی لال جی کے اس فقرے کو سن کر درشکوں نے اتنا ہو ہلہ مچایا کہ معلوم ہوا کانفرنس ٹوٹ جائیگی، مگر بڑی کوششوں کے بعد لوگ خاموش ہوئے .

موتی لال جی اس زمانے میں نرم دل والوں کے سرتاج سمجھے جاتے تھے . ایک بار وے پرسدھ اِتہاسکار میجر بامن داس بسو سے ایک دعوت میں الہ آباد میں ملے . میجر بسو دھوتی پہن کر اس سرکاری افسروں کی دعوت میں گئے تھے . موتی لال جی نے ان کی دھوتی کی اور اشارہ کر کے انہیں ٹوکا :—

"Major Basu ! You appear to have got Swaraja."

یعنی—"میجر بسو، معلوم ہوتا ہے آپ کو تو سوراجیہ مل گیا ."

غرض یہ کہ یو . پی . پولیٹکل کانفرنس کا اجلاس بھی بڑھتی ہوئی آزادی کی چاہ کو کم نہ کرسکا . ہمارے کام کا دایرہ بڑھا اور نئے نئے ساتھی پارٹی میں بھرتی ہونے لگے . ان نئے ساتھیوں میں سورگیہ منظر علی سوختہ، سورگیہ بابو لچھمن پرساد، سورگیہ لالہ جگناتھ کھنا اور سورگیہ ٹھاکر رام پرساد سنگھ مکھیہ تھے . ان میں منظر

[पिछले अंक से आगे]

सन् 1905 का स्वदेशी आन्दोलन और मेरा राजनैतिक जीवन

पंडित सुन्दरलाल

मुल्क के सियासी नक़शे में इलाहाबाद की एक ख़ास जगह बन गई. ख़ुदीराम बोस, मुज़फ़्फ़रपुर बम दुर्घटना से दो महीने पहले इलाहाबाद आये. उनके बाद रासबिहारी बोस, अरविन्द बाबू के भाई बारीन्द्र कुमार घोष, सूफ़ी अम्बा प्रसाद, भगतसिंह के चचा सरदार अजीतसिंह और लाला हर दयाल आदि नेता बारी-बारी से इलाहाबाद आए. गुप्त सभाओं में उन्होंने हम लोगों से बातें कीं, कार्य-क्रम बनाया और चले गये. हम लोगों की यह गुप्त सभायें चौक गंगादास के 56 नम्बर के मकान में हुआ करती थीं. यह मकान मैंने किराये पर ले लिया था. उस ज़माने के चौक गंगादास के लड़कों में बड़ी देश भक्ति और निडरता थी. हमारी मीटिंगों के वक़्त वह ऐसा चौकस पहरा बैठा देते कि ख़ुफ़िया पुलिस की वहाँ परछाईं तक न फटक पाती.

इलाहाबाद की यह कैफ़ियत देखकर नरम दली नेताओं की परेशानी बहुत बढ़ गई. मालवीय जी ने स्वर्गीय गोखले को निमंत्रण देकर इलाहाबाद बुलाया. लाल-पाल-बाल (लाला लाजपत राय, बिपिनचन्द्र पाल और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की त्रिमूर्ति को लोग इसी नाम से पुकारते थे) के व्याख्यानों के असर को वे काटना चाहते थे. किन्तु खुले मैदान में श्री गोखले का व्याख्यान कराने की हिम्मत नहीं पड़ी. पुराने कायस्थ पाठशाला के हाल में श्री गोखले की मीटिंग हुई. क़रीब दो सौ आदमी व्याख्यान सुनने के लिये मौजूद थे. मैं भी कौतूहल वश उस मीटिंग में चला गया. मेरी तरफ़ इशारा करके लोगों ने शिकायत की कि इसी लड़के ने इलाहाबाद में आग सुलगा रक्खी है. गोखले ने मुझे अपने पास बुलाया और मुझसे वादा लिया कि मैं दूसरे दिन उनसे ज़रूर मिलूँ. दूसरे दिन डाक्टर सच्चिदानन्द सिनहा के यहाँ गोखले जी की दावत थी. वहीं मैं पहुँच गया. इत्तला होने पर श्री गोखले ने मुझे वहीं बुलाया. मुझे देखते ही सब ने एक साथ मेरी शिकायतें शुरू कर दीं. मगर गोखले जी बहुत प्रेम से मुझसे मिले. मुझसे उन्होंने कहा—"मैं तो तुम्हारे जैसे नौजवानों की तलाश में हूँ. मुझे तो तुम्हारे जैसे ही युवक चाहियें." श्री गोखले से मेरी जो बातें उस अवसर पर हुई उससे मेरे दिल में उनके लिये बेहद इज़्ज़त

[پچھلے انک سے آگے]

سن 1905 کا دیشی آندولن اور میرا راجنیتک جیون

پنڈت سندر لال

ملک کے سیاسی نقشہ میں الہ آباد کی ایک خاص جگہ بن گئی۔ خودی رام بوس، مظفرپور بم درگھٹنا سے دو مہینے پہلے الہ آباد آئے۔ اُن کے بعد راس بہاری بوس، اروند بابو کے بھائی بارِیندر کمار گھوش، صوفی امبا پرساد، بھگت سنگھ کے چچا سردار اجیت سنگھ اور لالہ ہر دیال آدی نیتا باری باری سے الہ آباد آئے۔ گپت سبھاؤں میں اُنہوں نے ہم لوگوں سے باتیں کیں، کاریہ کرم بنایا اور چلے گئے۔ ہم لوگوں کی یہ گپت سبھائیں چوک گنگا داس کے 56 نمبر کے مکان میں ہوا کرتی تھیں۔ یہ مکان میں نے کرایہ پر لے لیا تھا۔ اُس زمانے کے چوک گنگاداس کے لڑکوں میں بڑی دیش بھگتی اور نڈرتا تھی۔ ہماری میٹنگوں کے وقت وہ ایسا چوکس پہرہ بیٹھا دیتے کہ خفیہ پولس کی وہاں پرچھائیں تک نہ پھٹک پاتی۔

الہ آباد کی یہ کیفیت دیکھ کر نرم دلی نیتاؤں کی پریشانی بہت بڑھ گئی۔ مالویہ جی نے سورگیہ گوکھلے کو نمنترن دے کر الہ آباد بلایا۔ لال-پال-بال (لالہ راجپت رائے، وپن چندر پال اور لوکمانیہ بال گنگا دھر تلک کی تری مورتی کو لوگ اِسی نام سے پکارتے تھے) کے ویاکھیانوں کے اثر کو وے کاٹنا چاہتے تھے۔ کنتو کھلے میدان میں شری گوکھلے کا ویاکھیان کرانے کی ہمت نہیں پڑی۔ پرانے کائستھ پاٹھ شالا کے حال میں شری گوکھلے کی میٹنگ ہوئی۔ قریب دو سو آدمی ویاکھیان سننے کے لئے موجود تھے۔ میں بھی کتوہل وش اُس میٹنگ میں چلا گیا۔ میری طرف اشارہ کر کے لوگوں نے شکایت کی کہ اِسی لڑکے نے الہ آباد میں آگ سلگا رکھی ہے۔ گوکھلے نے مجھے اپنے پاس بلایا اور مجھسے وعدہ لیا کہ میں دوسرے دن اُن سے ضرور ملوں۔ دوسرے دن ڈاکٹر سچدانند سنہا کے یہاں گوکھلے جی کی دعوت تھی۔ وہیں میں پہنچ گیا۔ اِطلاع ہونے پر شری گوکھلے نے مجھے وہیں بلوایا۔ مجھے دیکھتے ہی سب نے ایک ساتھ میری شکائیتیں شروع کر دیں۔ مگر گوکھلے جی بہت پریم سے مجھسے ملے۔ مجھسے اُنہوں نے کہا—"میں تو تمہارے جیسے نوجوانوں کی تلاش میں ہوں۔ مجھے تو تمہارے جیسے ہی یووک چاہئیں۔" شری گوکھلے سے میری جو باتیں اُس اوسر پر ہوئیں اُس سے میرے دل میں اُن کے لئے بےحد عزت

सियासी पद्धति के ऐसे ज़रूरी और लाज़मी जुज़ बन गये थे कि जब 1857 की पहली आज़ादी की जंग छिड़ी तो उसमें आज़ाद फ़ौजों ने मुग़ल बादशाह बहादुर शाह को ही अपना क़ौमी नेता बनाया, हालाँकि मुग़ल बादशाह के पास न तो ख़ज़ाना ही था और न फ़ौज ही.

भाषा (ज़बान), साहित्य (अदब), विज्ञान (साइंस), दर्शन (फ़लसफ़ा), कला (आर्ट, और धर्म सम्बन्धी बातों के आधार पर हमें यह मानना पड़ेगा कि मुसलमानों और हिन्दुओं ने सदियों एक साथ रह कर एक भावना (जज़बा), एक से रहन सहन और एक सी मिली जुली तहज़ीब और कलचर को तरक़्क़ी दी. एक से माली (आर्थिक ढाँचे की बुनियाद पर उन्हों ने मिली-जुली शानदार हिन्दोस्तानी कलचर का महल खड़ा किया. चाहे मुग़ल बादशाह के मातहत लोगों को देखा जाय या किसी सूबे के नीम आज़ाद सूबेदार के मातहत रहने वालों को, ये लोग रीति-नीति में, सदाचार में, मज़हबी उसूलों में, सियासत और हुकूमत की बातों में, कला और आर्ट में तथा ज़िन्दगी के नुक़्ते नज़र में मराठों, राजपूतों, सिक्खों और जाटों या दूसरे हिन्दोस्तानियों से जुदा न थे.

पुराने ज़माने का अगर हम ग़ैर जानिबदारी से अध्ययन करें तो हम इसी नतीजे पर पहुँचते हैं कि मध्य युग में हिन्दू मुसलमानों के आपसी सम्बन्धों के इतिहास में ऐसी कोई बात हमें नहीं मिलती जिससे बटवारे से पहले के हिन्दोस्तान के फ़िरक़ेवाराना दंगों और झगड़े-फ़िसाद की जड़ें हम उनमें खोज सकें. इसके बरख़िलाफ़ उस ज़माने की तारीख़ (इतिहास) से यह ज़ाहिर होता है कि मध्य युग के मुसलमान शासक बिना भेदभाव के हुकूमत करते थे. वह हिन्दू और मुसलमानों दोनों के साथ एक सा बरताव करते थे. हुकूमत के मामलों में, आर्ट और कलचर के मामलों में, अदब और शायरी के मामलों में वह कोई भेद भाव नहीं करते थे. वह हिन्दुओं को, हिन्दू मज़हब को, हिन्दू रहन-सहन और आचार-विचारों को, हिन्दू दर्शन और अध्यात्म को बारीकी से देखते और समझते थे और उस पर अमल करने की कोशिश करते थे. मुसलमान बादशाहों, सुलतानों और सूबेदारों के इस रवैये को देखकर हिन्दोस्तान का आम मुसलमान भी हिन्दुस्तानियत का दावेदार बन गया. वह हिन्दुस्तान का दम भरने लगा. मुसलिम जनता ने हिन्दू रीति-रिवाजों को अपना लिया. दूसरी तरफ़ हिन्दुओं की प्राचीन और सच्ची बर्दाश्त या सहन शीलता और विभिन्नता में भी एकता खोज निकालने की ज़बरदस्त ख़्वाहिश ने मोहब्बत से बढ़ाये हुए मुसलमानों के हाथ को उसी मोहब्बत के साथ क़ुबूल किया. इसका असर यह हुआ कि मुसलमानों ने अपनी कलचर से ऐसी

[बाक़ी सफ़ा 271 पर]

سیاسی پدھتی کے ایسے ضروری اور لازمی جز بن گئے تھے کہ جب 1857 کی پہلی آزادی کی جنگ چھڑی تو اُس میں آزاد فوجوں نے مغل بادشاہ بہادر شاہ کو ہی اپنا قومی نیتا بنایا، حالانکہ مغل بادشاہ کے پاس نہ تو خزانہ ہی تھا اور نہ فوج ہی۔

بھاشا (زبان)، ساہتیہ (ادب) ، وگیان (سائنس) ، درشن (فلسفہ) ، کلا (آرٹ) ، اور دھرم سمبندھی باتوں کے آدھار پر ہمیں یہ ماننا پڑیگا کہ مسلمانوں اور ہندوؤں نے صدیوں ایک ساتھ رہکر ایک بھاؤنا (جذبہ) ، ایک سے رہن سہن اور ایک سی ملی جلی تہذیب اور کلچر کو ترقی دی۔ ایک سے مالی (آرتھک) ڈھانچے کی بنیاد پر اُنہوں نے ملی جلی شاندار ہندستانی کلچر کا محل کھڑا کیا۔ چاہے مغل بادشاہ کے ماتحت لوگوں کو دیکھا جائے یا کسی صوبے کے نیم آزاد صوبیدار کے ماتحت رہنے والوں کو، یہ لوگ ریتی، نیتی میں سداچار میں، مذہبی اُصولوں میں، سیاست اور حکومت کی باتوں میں، کلا اور آرٹ میں تتھا زندگی کے نقطہ نظر میں مراٹھوں، راجپوتوں، سکھوں اور جاٹوں یا دوسرے ہندستانیوں سے جدا نہ تھے۔

پرانے زمانے کا اگر ہم غیر جانب داری سے ادھین کریں تو ہم اسی نتیجے پر پہنچتے ہیں کہ مدھیہ یگ میں ہندو مسلمانوں کے آپسی سمبندھوں کے اتہاس میں ایسی کوئی بات ہمیں نہیں ملتی جس سے بٹوارے سے پہلے کے ہندوستان کے فرقہ وارانہ دنگے اور جھگڑے فساد کی جڑیں ہم اُن میں کھوج سکیں! اِس کے برخلاف اُس زمانے کی تاریخ (اِتہاس) سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ مدھیہ یگ کے مسلمان شاسک بنا بھید بھاؤ کے حکومت کرتے تھے۔ وہ ہندو اور مسلمانوں دونوں کے ساتھ ایک سا برتاؤ کرتے تھے۔ حکومت کے معاملوں میں، آرٹ اور کلچر کے معاملوں میں، ادب اور شاعری کے معاملوں میں وہ کوئی بھید بھاؤ نہیں کرتے تھے۔ وہ ہندوں کو، ہندو مذہب کو، ہندو رہن سہن اور آچار۔ وچاروں کو، ہندو درشن اور ادھیاتم کو باریکی سے دیکھتے اور سمجھتے تھے اور اُسی پر عمل کرنے کی کوشش کرتے تھے۔ مسلمان بادشاہوں، سلطانوں اور صوبیداروں کے اِس رویے کو دیکھ کر ہندوستان کا عام مسلمان بھی ہندستانیت کا دعویدار بن گیا۔ وہ ہندستان کا دم بھرنے لگا۔ مسلم جنتا نے ہندو ریت رواجوں کو اپنا لیا۔ دوسری طرف ہندوؤں کی پراچین اور سچی برداشت یا سہن شیلتا اور وبھنتا میں بھی ایکتا کھوج نکالنے کی زبردست خواہش نے محبت سے بڑھائے ہوئے مسلمانوں کے ہاتھ کو اُسی محبت کے ساتھ قبول کیا۔ اِس کا اثر یہ ہوا کہ مسلمانوں نے اپنی کلچر سے ایسی

[باقی صفحہ 271 پر]

में हमें सिर्फ कुछ शासकों की हुकूमत में थोड़ी बहुत कट्टरता या ज्यादती की मिसालें मिलती हैं. और इन शासकों के बारे में भी यह साबित किया जा सकता है कि उनकी ज्यादतियों की वजह कुछ और ही थी और उनका वार भी थोड़े से लोगों को ही सहना पड़ा.

कई घटनाओं से यह साबित होता है कि धार्मिक मत-भेद का ज्यादा असर न था. मिसाल के तौर पर अगर ओहदों की ही बात ले ली जाय तो यह साफ है कि मुसलमान बादशाहों के यहाँ हिन्दू ऊँचे से ऊँचे ओहदों पर मुकर्रर किये जाते थे. बग़ैर हिन्दुओं की सलाह के मुसलमान हाकिम एक क़दम भी न चलते थे. औरंगजेब ऐसे बादशाह के बड़े से बड़े जनरल भी राजपूत राजा थे. महमूद ग़ज़नवी ने खुरासान जीतने के लिये अपने जिस जनरल को भेजा वह तिलक नाम का एक ब्राह्मण था. हम देखते हैं कि उस समय की आपसी लड़ाई में हिन्दुओं और मुसलमानों की अलग अलग मज़हबी हैसियत से कभी लड़ाई नहीं हुई. मुसलमान सुलतानों के हिन्दू सेनापति और हिन्दू राजाओं के मुसलमान सेनापति अपने ही मज़हब वालों से लड़ते हुए नजर आते हैं. इतिहास में ऐसे हिन्दू और मुसलमानों के सैकड़ों क़िस्से भरे पड़े हैं जहाँ दोनों ने अपने मालिकों की तरफ़ वफ़ादार रहकर अपने ही मज़हब वालों के साथ भंयकर लड़ाई लड़ी. ऐसी भी मिसालें हैं कि जहाँ हिन्दुओं के साथ हिन्दुओं ने दग़ाबाजी की है और मुसलमानों ने मुसलमानों के साथ. असली बात तो यह है कि उस समय जाती अहसानों का ही सबसे ज्यादा असर पड़ता था, न कि क़ौम, मज़हब या मुल्क का. उस ज़माने की वफ़ादारी की भावना (जज़्बा) सिर्फ़ दो शब्दों में ज़ाहिर होती है—'नमक हलाल' और 'नमक हराम'.

यह भी याद रखना चाहिये कि हिन्दोस्तान के मुसलमान हाकिमों ने, चाहे वह जहाँ से आये हों, दर असल हिन्दोस्तान को ही अपना घर बना लिया था. बाबर फ़रग़ाना से आया और वह कभी कभी समरक़न्द लौटने के मीठे सपने भी देखता था. लेकिन बाबर और उसकी औलाद इसी मुल्क में रही. क़िस्मत उन्हें यहाँ खींच लाई और हिन्दोस्तान के बाहर से सारे नाते-रिश्ते उन्होंने तोड़ लिये. उनके अपने वतन में उनके खानदान के अनगिनत दुश्मन थे जो मौक़ा पाते ही उनका सब कुछ छीन लेने पर उतारू थे. ऐसी हालत में उन्हों ने हिन्दोस्तान की जनता की जिन्दगी में अपने आपको मिला-खपा दिया. हिन्दुस्तान की जनता की जिन्दगी के साथ उन्होंने हमदर्दी दिखाई और उनके सुख दुख में सच्चे साथी बने. यह कोई छोटी बात नहीं है. मुग़ल बादशाह हिन्दोस्तान की समाजी और

میں ہمیں صرف کچھ شاسکوں کی حکومت میں تھوڑی بہت کٹرتا یا زیادتی کی مثالیں ملتی ہیں۔ اور ان شاسکوں کے بارے میں بھی یہ ثابت کیا جا سکتا ہے کہ ان کی زیادتیوں کی وجہ کچھ اور ہی تھی اور اُن کا وار بھی تھوڑے سے لوگوں کو ہی سہنا پڑا۔

کئی گھٹناؤں سے یہ ثابت ہوتا ہے کہ دھارمک مت بھید کا زیادہ اثر نہ تھا۔ مثال کے طور پر اگر عہدوں کی ہی بات لے لی جائے تو یہ صاف ہے کہ مسلمان بادشاہوں کے یہاں ہندو اونچے سے اونچے عہدوں پر مقرر کئے جاتے تھے۔ بغیر ہندوؤں کی صلاح کے مسلمان حاکم ایک قدم بھی نہ چلتے تھے۔ اورنگزیب ایسے بادشاہ کے بڑے سے بڑے جنرل بھی راجپوت راجا تھے۔ محمود غزنوی نے خراسان جیتنے کے لئے اپنے جس جنرل کو بھیجا وہ تلک نام کا ایک براہمن تھا۔ ہم دیکھتے ہیں کہ اُس سمے کی آپسی لڑائی میں ہندوؤں اور مسلمانوں کی الگ الگ مذہبی حیثیت سے کبھی لڑائی نہیں ہوئی۔ مسلمان سلطانوں کے ہندو سیناپتی اور ہندو راجاؤں کے مسلمان سیناپتی اپنے ہی مذہب والوں سے لڑتے ہوئے نظر آتے ہیں۔ اِتہاس میں ایسے ہندو اور مسلمانوں کے سیکڑوں قصے بھرے پڑے ہیں، جہاں دونوں نے اپنے مالکوں کی طرف وفادار رہ کر اپنے ہی مذہب والوں کے ساتھ بھینکر لڑائی لڑی۔ ایسی بھی مثالیں ہیں کہ جہاں ہندوؤں کے ساتھ ہندوؤں نے دغابازی کی ہے اور مسلمانوں نے مسلمانوں کے ساتھ۔ اصلی بات تو یہ ہے کہ اُس سمے ذاتی احسانوں کا ہی سب سے زیادہ اثر پڑتا تھا، نہ کہ قوم، مذہب یا ملک کا۔ اُس زمانے کی وفاداری کی بھاؤنا (جذبہ) صرف دو شبدوں میں ظاہر ہوتی ہے—'نمک حلال' اور 'نمک حرام'۔

یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ ہندستان کے مسلمان حاکموں نے، چاہے وہ جہاں سے آئے ہوں، دراصل ہندستان کو ہی اپنا گھر بنا لیا تھا۔ بابر فرغانہ سے آیا اور وہ کبھی کبھی سمرقند لوٹنے کے میٹھے سپنے بھی دیکھتا تھا۔ لیکن بابر اور اُس کی اولاد اِسی ملک میں رہی۔ قسمت اُنہیں یہاں کھینچ لائی اور ہندستان کے باہر سے سارے ناتے رشتے اُنہوں نے توڑ لئے۔ اُن کے اپنے وطن میں اُن کے خاندان کے انگنت دشمن تھے جو موقع پاتے ہی اُن کا سب کچھ چھین لینے پر اُتارو تھے۔ ایسی حالت میں اُنہوں نے ہندستان کی جنتا کی زندگی میں اپنے آپ کو ملا کھپا دیا۔ ہندستان کی جنتا کی زندگی کے ساتھ اُنہوں نے ہمدردی دکھائی اور اُن کے سکھ دکھ میں سچے ساتھی بنے۔ یہ کوئی چھوٹی بات نہیں ہے۔ مغل بادشاہ ہندستان کی سماجی اور

रामायण के मशहूर लेखक गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है—

जित देखौं तित तोय।
काँकर, पाथर, ठीकरी सब में देखूँ तोय॥

अल्लाह कहाँ नहीं है ? वह हर जगह है और कहीं भी नहीं है ! वही मूरत में है और वही पुजारी में भी है. वही कुफ़ में भी है और वही इसलाम में भी है ! वही हिन्दुओं में भी है और वही मुसलमानों में भी है ! इनसान ने अपनी कम अक़्ली की वजह से दुई का परदा डाल रक्खा है इसीलिये वह अपने ग़ुरूर में यह समझने लगा है कि अल्लाह यहाँ है और वहाँ नहीं है, वह इसलाम में है और कुफ़ में नहीं है.

ऐसी बहुत सी मिसालें आसानी से दी जा सकती हैं कि हिन्दुस्तान में इसलाम ने हिन्दुओं की पूजा के तरीक़ों से बहुत सी बातें अपने अन्दर शामिल कर ली हैं. माला, प्राणायाम, योगाभ्यास, वेदान्त, फ़लसफ़ा—सब इसलाम में शामिल हो गये. हिन्दू मजहब और इसलाम के संगम को ही 'प्रेम धर्म' या 'मजहबे इश्क़' के नाम से पुकारा गया. यहाँ उसकी तफ़सील में जाने की जरूरत नहीं है. इतना ही कह देना काफी है कि बिना ख़ास कोशिश के ही यह दोनों मजहब आसानी से एक दूसरे से मिल जुल गये. कबीर, नानक, दादू, चैतन्य, तुकाराम, शाह क़लंदर, बाबा फ़रीद, चिश्ती और दूसरे सूफ़ी सन्तों ने कामयाबी के साथ हिन्दोस्तान की जनता में एक ऐसा धर्म फैला देने की कोशिश की जिसमें हिन्दू-मुसलमानों, दोनों की मजहबी ख़ूबियाँ शामिल थीं.

मध्य युग के धार्मिक साहित्य (अदब) से, चाहे वह मुसलमानों का हो या हिन्दुओं का, पढ़ने वाला उसके आज़ादाना नुक़्ते नजर और उदार दृष्टि से जरूर प्रभावित हो जावेगा. हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों ने यह महसूस कर लिया था कि ऊपरी रीति रिवाजों, रूढ़ियों और कर्म-कांडों और पूजा और परिस्तिश के बाहरी ढँगों में चाहे जो फ़र्क़ हों, मजहबी जिन्दगी की भीतरी और बुनियादी सचाई दोनों में एक सी थी. इसीलिये मध्य युग के सूफ़ी सन्तों ने हिन्दू धर्म और इसलाम के बाहरी तरीक़ों को अहमियत न देकर उनकी भीतर की सुन्दरता पर ही जोर दिया. यही वजह है कि उस जमाने के हिन्दू और मुसलमान दोस्ती और मोहब्बत के साँचे में ढल गये. दोनों के लिये एक ही मुल्क, एक ही राज, एक ही शहर, एक ही मोहल्ले, और और एक ही गली में मित्रता और शांति से रहना मुमकिन हो सका. दोनों मजहबी तास्सुब को कम करने में कामयाब हुए. पूरे एक हजार वर्ष के मुश्तरका (सम्मिलित) इतिहास

رامائن کے مشہور لیکھک گوسوامی تلسی داس جی نے لکھا ہے :—

جت دیکھوں تت توئے
کانکر، پاتھر، ٹھیکری سب میں دیکھوں توئے ۔

اللہ کہاں نہیں ہے ؟ وہ ہر جگہہ ہے اور کہیں بھی نہیں ہے ! وہی مورت میں ہے اور وہی پوجاری میں بھی ہے ۔ وہی کفر میں بھی ہے اور وہی اسلام میں بھی ہے ! وہی ہندوؤں میں بھی ہے اور وہی مسلمانوں میں بھی ہے ! انسان نے اپنی کم عقلی کی وجہ سے دوئی کا پردہ ڈال رکھا ہے اسی لئے وہ اپنے غرور میں یہ سمجھنے لگا ہے کہ اللہ یہاں ہے اور وہاں نہیں ہے، وہ اسلام میں ہے اور کفر میں نہیں ہے ۔

ایسی بہت سی مثالیں آسانی سے دی جا سکتی ہیں کہ ہندستان میں اسلام نے ہندوؤں کی پوجا کے طریقوں سے بہت سی باتیں اپنے اندر شامل کر لی ہیں ۔ مالا، پرانا یام، یوگا بھیاس، ویدانت، فلسفہ—سب اسلام میں شامل ہو گئے ۔ ہندو مذہب اور اسلام کے سنگم کو ہی 'پریم دھرم' یا 'مذہب عشق' کے نام سے پکارا گیا ۔ یہاں اس کی تفصیل میں جانے کی ضرورت نہیں ہے ۔ اتنا ہی کہہ دینا کافی ہے کہ بنا خاص کوشش کے ہی یہ دونوں مذہب آسانی سے ایک دوسرے سے مل جل گئے ۔ کبیر، نانک، دادو، چیتن، تکارام، شاہ قلندر، بابا فرید، چشتی اور دوسرے صوفی سنتوں نے کامیابی کے ساتھ ہندستان کی جنتا میں ایک ایسا دھرم پھیلا دینے کی کوشش کی جس میں ہندو مسلمانوں، دونوں کی مذہبی خوبیاں شامل تھیں ۔

مدھیہ یگ کے دھارمک ساہتیہ (ادب) سے، چاہے وہ مسلمانوں کا ہو یا ہندوؤں کا، پڑھنے والا اس کے آزادانہ نقطۂ نظر اور اُدار درشٹی سے ضرور پربھاوت ہو جاوے گا ۔ ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں نے یہ محسوس کر لیا تھا کہ اوپری ریتی رواجوں، روڑھیوں اور اور کرم کانڈوں اور پوجا کے اور پرستش کے باہری ڈھنگوں میں چاہے جو فرق ہوں، مذہبی زندگی کی بھیتری اور بنیادی سچائی دونوں میں ایک سی تھی ۔ اس لئے مدھیہ یگ کے صوفی سنتوں نے ہندو دھرم اور اسلام کے باہری طریقوں کو اہمیت نہ دے کر ان کی بھیتر کی سندرتا پر ہی زور دیا ۔ یہی وجہہ ہے کہ اس زمانے کے ہندو اور مسلمان دوستی اور محبت کے سانچے میں ڈھل گئے ۔ دونوں کے لئے ایک ہی ملک، ایک ہی راج، ایک ہی شہر، ایک ہی محلے اور ایک ہی گلی میں مترتا اور شانتی سے رہنا ممکن ہو سکا ۔ دونوں مذہبی تعصب کو کم کرنے میں کامیاب ہوئے ۔ پورے ایک ہزار ورش کے مشترکہ (سملت) اتہاس

उन्होंने .क़रीब-.क़रीब सभी मशहूर हिन्दू ग्रंथों का .फ़ारसी में तरजुमा कर डाला. उपनिषद्, महाभारत, रामायन, भगवद्गीता, धर्मशास्त्र, पुराण, योगवशिष्ट, योगसूत्र, वेदान्त-शास्त्र आदि सभी ग्रंथों के .फ़ारसी में तरजुमें किये गये.

इनके बाद के लेखकों में शेख़ अहमद .फ़ारूक़ी (1563-1624 जोकि मुजाहिद-अलीफ़-ए-सानी के समान ही मशहूर है और मिर्ज़ा जान जानान मज़हर (1699) के नाम लिये जा सकते हैं. मज़हर साहब ने हिन्दुओं की मूर्ति पूजा के बारे में लिखा है—

"मूर्ति पूजा—मुसलमान सूफ़ियों की ध्यान और साधना यानी 'ज़िक्र' के समान ही है. इसलाम के पहले अरब के बाशिन्दों के विश्वास से इस मूर्ति पूजा की कोई समानता नहीं है. अरब के बाशिन्दे समझते थे कि मूर्तियों ही में .ख़ुद शक्ति और असर भरा हुआ है. वे महज़ परमात्मा को पाने का ज़रिया मात्र नहीं हैं, जबकि हिन्दुस्तान के मूर्ति पूजक मूर्तियों को अल्लाह तक पहुँचने का सिर्फ़ एक ज़रिया मानते हैं."

इतना ही न था . एक ओर मुसलमान आलिम अपनी छान-बीन और दलीलों के ज़रिये हिन्दू अध्यात्म और फ़लसफ़े को समझने की कोशिश करते थे तो दूसरी ओर उसे फ़लसफ़े को अपनी ज़िन्दगी में उतार कर उसका अभ्यास करते थे. 'गुलशने राज़' के मशहूर लेखक महमूद शबिस्तारी (1317) ने बुतपरस्ती के बारे में लिखते हुये इसलाम से उसका मेल और उसकी बराबरी इस तरह समझाई है:—

"मूर्ति इस दुनिया में मोहब्बत और एके की तस्वीर खींचकर रख देता है. ज़ुन्नार या जनेऊ पहनने का क्या मतलब है ? जनेऊ पहनने का मतलब यह है कि जनेऊ पहनने वाला तीन तरह की ख़िदमता (सेवा) का अहद लेता है—(1) अपने माँ बाप और ख़ानदान की ख़िदमत (2) जनता की ख़िदमत और (3) अल्लाह की ख़िदमत. जनेऊ के तीन तागे इन्हीं तीन तरह की सेवाओं की याद दिलाते हैं. 'कुफ़्र' हो चाहे 'दीन' दोनों का मक़सद अल्लाह तक पहुँचना है. मूर्ति पूजा कहती है कि ईश्वर एक है अगर मुसलमान यह समझ ले कि मूर्ति क्या है तो वह यह भी समझ जायगा कि मूर्ति पूजा भी अल्लाह तक पहुँचने का ज़रिया है; और यदि मूर्ति पूजक जान ले कि मूर्ति क्या है तो वह ईश्वर के रास्ते से कभी न भटकेगा. मूर्ति के पुजारी ने मूर्ति को सिर्फ़ बाहर से देखा इसीलिये वह '.क़ाफ़िर' हो गया और मुसलमान ने भी मूर्ति को सिर्फ़ बाहर से देखा इसीलिये वह भी मूर्ति के राज़ (रहस्य) को न समझ सका और इन्साफ़ की रू से अपने मज़हब से हट गया.

اُنھوں نے قریب قریب سبھی مشہور هندو گرنتھوں کا فارسی میں ترجمہ کر ڈالا. اُپنشد، مہابھارت، رامائن، بھاگود گیتا، دھرم شاستر، پران، یوگ وششٹ، یوگ سوتر، ویدانت شاشتر آدی سبھی گرنتھوں کے فارسی میں ترجمے کئے گئے.

اِن کے بعد کے لیکھکوں میں شیخ احمد فاروقی (1563-1624) جو کہ مجادد الیف ثانی کے سمان هی مشہور هے اور مرزا جان جانان مظہر (1699) کے نام لئے جا سکتے هیں. مظہر صاحب نے هندوؤں کی مورتی پوجا کے بارے میں لکھا هے:—

"مورتی پوجا—مسلمان صوفیوں کی دھیان اور سادھنا یعنی 'ذکر' کے سمان هی هے. اِسلام کے پہلے عرب کے باشندوں کے وشواس سے اِس مورتی پوجا کی کوئی سمانتا نہیں هے. عرب کے باشندے سمجھتے تھے کہ مورتیوں هی میں خود شکتی اور اثر بھرا هوا هے. وہ محض پرماتما کو پانے کا ذریعہ ماتر نہیں هے جبکہ هندستان کے مورتی پوجک مورتیوں کو اللہ تک پہنچنے کا صرف ایک ذریعہ مانتے هیں."

اتنا هی نہ تھا. ایک اور مسلمان عالم اپنی چھان بین اور دلیلوں کے ذریعہ هندو ادھیاتم اور فلسفے کو سمجھنے کی کوشش کرتے تھے تو دوسری اور اُس فلسفے کو اپنی زندگی میں اتار کر اُس کا ابھیاس کرتے تھے. 'گلشن راز' کے مشہور لیکھک محمود شبستاری (1317) نے بت پرستی کے بارے میں لکھتے هوئے اِسلام سے اُس کا میل اور اُس کی برابری اِس طرح سمجھائی هے:—

"مورتی اِس دنیا میں محبت اور ایکے کی تصویر کھینچ کر رکھ دیتی هے. زنار یا جنیؤ پہننے کا کیا مطلب هے؟ جنیؤ پہننے کا مطلب یہ هے کہ جنیؤ پہننے والا تین طرح کی خدمتوں (سیوا) کا عہد لیتا هے— (1) اپنے ماں باپ اور خاندان کی خدمت (2) جنتا کی خدمت اور (3) اللہ کی خدمت. جنیؤ کے تین تاگے اِنھیں تین طرح کی سیواؤں کی یاد دلاتے هیں. 'کفر' هو چاهے 'دین' دونوں کا مقصد اللہ تک پہنچنا هے. مورتی پوجا کہتی هے کہ ایشور ایک هے. اگر مسلمان یہ سمجھ لے کہ مورتی کیا هے تو وہ یہ بھی سمجھ جائیگا کہ مورتی پوجا بھی اللہ تک پہنچنے کا ذریعہ هے؛ اور یدی مورتی پوجک جان لے کہ مورتی کیا هے تو وہ ایشور کے راستے سے کبھی نہ بھٹکے گا. مورتی کے پجاری نے مورتی کو صرف باهر سے دیکھا اِسی لئے وہ 'کافر' هو گیا اور مسلمان نے بھی مورتی کو صرف باهر سے دیکھا اِسی لئے وہ بھی مورتی کے راز (رهسیہ) کو نہ سمجھ سکا اور انصاف کی رو سے اپنے مذهب سے هٹ گیا.

हिन्दुस्तान और इसलाम

डाक्टर सयद महमूद

इसलाम के दुश्मनों ने, जिनमें .खास तौर पर यूरोप के इतिहास लेखक हैं, इसलाम को बदनाम करने की भरसक कोशिश की है. उन्होंने इसलाम के ख़िलाफ़ हर तरह का झूठा प्रचार किया है. इस प्रचार का नतीजा यह है कि ग़ैर मुसलिम दुनिया को .करीब-.करीब इस बात का यक़ीन हो गया है कि इसलाम कठमुल्लापन, तास्सुब, मारकाट और .कत्लेआम का प्रचार करने वाला मजहब है, हालाँकि सचाई इसके बिलकुल ख़िलाफ़ है. यह सही है कि मौलवियों का एक तबक़ा ऐसा था जो इसलाम को सबसे ऊँचा मजहब मानता था, लेकिन ऐसे मुसलमानों की भी कोई कमी न थी जो सब मजहबों में सचाई ढूढ़ने की बराबर कोशिश करते रहते थे. ऐसे मुसलमानों की भी कमी न थी जो सब मजहबों में बुनियादी सचाई के दर्शन करते थे और चाहते थे कि सब मजहब मिल जुल कर रहें. ऐसे भी बेशुमार मुसलमान फ़क़ीर और सूफ़ी थे जो अल्लाह के रास्ते पर सिर्फ़ सचाई का ही सहारा लेकर चलते थे. ये .फ़क़ीर और सूफ़ी कहते थे कि अलग अलग मजहब अल्लाह तक पहुँचने के महज़ अलग अलग रास्ते की तरह हैं जिनका मक़सद एक उसी अल्लाह तक पहुँचना है. ऐसे बहुत से मुसलमान दरवेश और उपासक थे जो बिना किसी भेद भाव के हिन्दुओं और मुसलमानों, अमीरों और ग़रीबों सबको परमात्मा के एक ही रास्ते पर, यानी नेकी और सचाई के रास्ते पर चलने का उपदेश देते थे.

यूरोप वालों ने तो बहुत बाद में आज़ादी के साथ मुख़तलिफ़ [illegible] विद्या जारी की और वह भी [illegible], लेकिन मुसलमानों में ऐसे बहुत से आलिम हुए हैं जिन्होंने अपनी किताबों में ख़ालिस अक़्ल को कसौटी मानकर ग़ैर जानिबदारी (निष्पक्षता) के साथ मुख़्तलिफ़ मजहबों के एक से बुनियादी उसूलों पर रोशनी डाली है. इनमें सबसे मशहूर विद्वान और आलिम अबू रेहान अलबेरूनी थे. उन्होंने ग्यारहवीं सदी में तफ़सील के साथ हिन्दू मजहब, हिन्दू .फ़लसफ़े, और हिन्दू शास्त्रों पर लिखा है.

[illegible] ज़माने में, जिसे 'मध्ययुग' कहा जाता है, हिन्दुओं के धार्मिक साहित्य को पढ़ने और समझने के लिये मुसलमान विद्वानों ने बड़ी मेहनत की है.

ھندستان اور اِسلام

ڈاکٹر سید محمود

اِسلام کے دشمنوں نے، جن میں خاص طور پر یورپ کے اِتہاس لیکھک ہیں، اِسلام کو بدنام کرنے کی بھرسک کوشش کی ہے ۔ اُنہوں نے اِسلام کے خلاف ہر طرح کا جھوٹا پرچار کیا ہے ۔ اِس پرچار کا نتیجہ یہ ہے کہ غیر مسلم دنیا کو قریب قریب اِس بات کا یقین ہو گیا ہے کہ اِسلام کٹھ ملاپن، تعصب، مار کاٹ اور قتلِ عام کا پرچار کرنے والا مذہب ہے ۔ حالانکہ سچائی اِس کے بالکل خلاف ہے ۔ یہ صحیح ہے کہ مولویوں کا ایک طبقہ ایسا تھا جو اِسلام کو سب سے اونچا مذہب مانتا تھا، لیکن ایسے مسلمانوں کی بھی کوئی کمی نہ تھی جو سب مذہبوں میں سچائی ڈھونڈھنے کی برابر کوشش کرتے رہتے تھے ۔ ایسے مسلمانوں کی بھی کمی نہ تھی جو سب مذہبوں میں بنیادی سچائی کے درشن کرتے تھے اور چاہتے تھے کہ سب مذہب مل جل کر رہیں ۔ ایسے بھی بےشمار مسلمان فقیر اور صوفی تھے جو اللہ کے راستے پر صرف سچائی کا ہی سہارا لے کر چلتے تھے ۔ یہ فقیر اور صوفی کہتے تھے کہ الگ الگ مذہب اللہ تک پہنچنے کے محض الگ الگ راستے کی طرح ہیں جن کا مقصد ایک اُسی اللہ تک پہنچنا ہے ۔ ایسے بہت سے مسلمان درویش اور اپاسک تھے جو بنا کسی بھید بھاؤ کے ہندوؤں اور مسلمانوں، امیروں اور غریبوں سب کو پرماتما کے ایک ہی راستے پر، یعنی نیکی اور سچائی کے راستے پر چلنے کا اُپدیش دیتے تھے ۔

یورپ والوں نے تو بہت بعد میں آزادی کے ساتھ مختلف دھرموں کی چھان بین کرنے کی ودیا جاری کی اور وہ بھی صرف اِنے گنے لوگوں نے؛ لیکن مسلمانوں میں ایسے بہت سے عالم ہوئے ہیں جنہوں نے اپنی کتابوں میں خالص عقل کو کسوٹی مان کر غیر جانبداری (نشپکشتا) کے ساتھ مختلف مذہبوں کے ایک سے بنیادی اصولوں پر روشنی ڈالی ہے ۔ اِن میں سب سے مشہور ودوان اور عالم ابوریحان البیرونی تھے ۔ انہوں نے گیارھویں صدی میں تفصیل کے ساتھ ہندو مذہب، ہندو فلسفے اور ہندو شاستروں پر لکھا ہے ۔

ھندستان کے منجھلے زمانے میں، جسے 'مدھیہ یگ' کہا جاتا ہے، ھندوں کے دھارمک ساھتیہ کو پڑھنے اور سمجھنے کے لئے مسلمان ودوانوں نے بڑی محنت کی ہے ۔

लिये आज तक 'विश्व वाटिका' या बागे दुनिया' (Garden of the world) के नाम से मशहूर है. इतिहास लेखक सर विलियम म्योर के मुताबिक़ :—

"मैसोपोटामिया का यह कुल दोआब सदा से अरब बद्दुओं से ही आबाद रहा है और काल्डिया और दक्खिनी शाम दर अस्ल अरब के ही हिस्से हैं. इस प्रदेश में रहने वाले क़बीले, जिनमें उस समय कुछ प्रवीन मूर्ति पूजक थे और अधिकतर कम से कम कहने के लिये ईसाई थे, अरब जाति के मज़बूती से जुड़े हुये अंग थे और इस हैसियत से नए अरब धर्म यानी इसलाम के दायरे में शामिल थे." ❀

अरब के ये दोनों प्रान्त शाम और इराक़ सदियों से पच्छिम की रोमी हुकूमत और पूरब की ईरानी शहनशाहियत के मातहत चले आते थे. इसी प्रदेश में इन दोनों विशाल बादशाहतों की सरहदें एक दूसरे से मिलती थीं. सन् 527 ई० के बाद से इन दोनों बादशाहतों में पूरे सौ बरस तक लगातार जंग होती रही जिनमें कभी ईरानी विजेता यूरोपीय महाद्वीप के अन्दर तक अपनी सल्तनत बढ़ा ले जाते थे और कभी रोमी सेना फ़िरात के किनारे तक आ पहुँचती थी. सरहद के इन प्रदेशों की क़िस्मत बार बार बदलती रहती थी. ठीक इस समय पूरा शाम और इराक़ का उत्तर-पच्छिमी भाग रोम के मातहत था और बाक़ी इराक़ ईरान के अधीन जबकि दक्खिन के रेगिस्तानी अरब क़बीलों ने मोहम्मद साहब ही के वक़्त में अपना नाता मदीने की नई क़ौमी सरकार के साथ जोड़ लिया था शाम और इराक़ का ज़रख़ेज़ अरब इलाक़ा विदेशियों के क़ब्ज़े में था और वहां की अरब प्रजा ग़ुलामी के दिन काट रही थी.

ऐसी सियासी कैफ़ियत में अरब की नई क़ौमी सरकार के नेताओं की विदेशियों की ग़ुलामी में आहें भरते हुए इस अरब इलाके को ग़ुलामी से छुड़ाकर मदीने के साथ मिलाने की ख़्वाहिश एक क़ुदरती और जायज़ ख़्वाहिश थी. लेकिन इससे भी ज़्यादा गहरे सबब थे जिन्होंने अबुबक्र और उस के सलाहकारों को इराक़ और शाम की राजनीति में दख़ल देने और ईरान और शाम की ज़बरदस्त और ताक़तवर बादशाहतों से लोहा लेने पर मजबूर कर दिया.

[बाक़ी अगले नम्बरों में]

لئے آج تک 'وشو باٹیکا' یا 'باغ دنیا' (Garden of the world) کے نام سے مشہور ہے ۔ اِتہاس لیکھک سر ولیم میور کے مطابق :—

"میسو پوٹامیا کا یہ کل دو آب سدا سے عرب بدؤں سے ہی آباد رہا ہے اور کالیڈیا اور دکھنی شام دراصل عرب کے ہی حصے ہیں ۔ اِس پردیش میں رہنے والے قبیلے، جن میں اُس سمے پراچین مورتی پوجک تھے اور ادھکتر کم سے کم کہنے کے لئے عیسائی تھے، عرب جاتی کے مضبوطی سے جڑے ہوئے انگ تھے اور اِس حیثیت سے نئے عرب دھرم یعنی اِسلام کے دائرے میں شامل تھے ۔" ❀

عرب کے یہ دونوں پرانت شام اور اعراق صدیوں سے پچھم کی رومی حکومت اور پورب کی ایرانی شہنشاہیت کے ماتحت چلے آتے تھے ۔ اِسی پردیش میں اِن دونوں وشال بادشاہتوں کی سرحدیں ایک دوسرے سے ملتی تھیں ۔ سن 527 عیسوی کے بعد سے اِن دونوں بادشاہتوں میں پورے سو برس تک لگاتار جنگ ہوتی رہی جن میں کبھی ایرانی وجیتا یورپی مہادیپ کے اندر تک اپنی سلطنت بڑھا لے جاتے تھے اور کبھی رومی سینا فرات کے کنارے تک آپہنچتی تھی ۔ سرحد کے اِن پردیشوں کی قسمت بار بار بدلتی رہتی تھی ۔ ٹھیک اِس سمے پورا شام اور اعراق کا اتر پچھمی بھاگ روم کے ماتحت تھا اور باقی اعراق ایران کے ادھین ۔ جب کہ دکھن کے ریگستانی عرب قبیلوں نے محمد صاحب ہی کے وقت میں اپنا ناتا مدینے کی نئی قومی سرکار کے ساتھ جوڑ لیا تھا شام اور اعراق کا زرخیز عرب علاقہ ودیشیوں کے قبضے میں تھا اور وہاں کی عرب پرجا غلامی کے دن کاٹ رہی تھی ۔

ایسی سیاسی کیفیت میں عرب کی نئی قومی سرکار کے نیتاؤں کی ودیشیوں کی غلامی میں آہیں بھرتے ہوئے اِس عرب علاقے کو غلامی سے چھڑا کر مدینے کے ساتھ ملنے کی خواہش ایک قدرتی اور جائز خواہش تھی ۔ لیکن اِس سے بھی زیادہ گہرے سبب تھے جنہوں نے ابوبکر اور اُس کے صلاح‌کاروں کو اعراق اور شام کی راج نیتی میں دخل دینے اور ایران اور روم کی زبردست اور طاقتور بادشاہتوں سے لوہا لینے پر مجبور کردیا ۔

[باقی اگلے نمبروں میں]

❀ The Caliphate by Sir W. Muir, p.48.

फिर से सुशासन क़ायम किया. ग़रज़ यह कि बारह महीने के अन्दर राज भर में फिर से शान्ति, अमन और व्यवस्था क़ायम होगई. जिन बाग़ियों ने ख़ुद अधीनता स्वीकार कर ली अबुबक्र ने उनको माफ़ कर दिया.

[6]

अब हम अरब के भूगोल (जुग़राफ़िया) की ओर एक नज़र डालना चाहते हैं. अगर अरब में वह सब इलाक़ा शामिल किया जावे जो भौगोलिक लिहाज़ से साफ़ साफ़ अरब के जज़ीरे में शामिल है, जिसमें अरब जाति के लोग बसते हैं और जहाँ अरबी भाषा बोली जाती है, तो अभी तक अरब का एक बहुत बड़ा और ज़रख़ेज़ इलाक़ा मदीने की क़ौमी सरकार से बाहर और विदेशियों के क़ब्ज़े में था. अगर हम अरब की भौगोलिक सरहदें मुक़र्रर करना चाहें तो ईरान की खाड़ी से लेकर हिन्द महासागर, लाल समुद, स्वीज़ नहर तक तीनों ओर का समुद्र तट, उसके बाद उत्तर में लेबेनान पर्वत से मिला हुआ रूम सागर का किनारा और ऊपर जाकर छोटी छोटी पहाड़ियों का वह सिलसिला जो एशिया कोचक से शाम को अलग करता है और दज़ला और फ़िरात नाम की बड़ी नदियाँ जो इन पर्वतों से निकल कर एक दूसरे के बराबर बराबर बहती हुई, गंगा और जमुना की तरह एक दूसरे में मिलकर ईरान की खाड़ी में जा गिरती हैं. या दज़ले से पूरब की वे पहाड़ियाँ जो आजकल इराक़-अरबी को इराक़-अजमी से अलग करती हैं, अरब की क़ुदरती भौगोलिक सरहदें हैं. इसके सिवाय अरब की कोई दूसरी सरहदें मुक़र्रर की ही नहीं जा सकतीं. ईरान की खाड़ी के पच्छिम के प्रदेश बहरैन को बसरा के मैदान से अलग करना जबकि दोनों के बीच कोई भौगोलिक रेखा नहीं है और दोनों में सदियों से एक ही क़बीलों के लोग आबाद चले आते हैं, या शाम के रेगिस्तान को नज्द के रेगिस्तान से अलग समझना क़ुदरती हद बन्दी के उसूलों के ख़िलाफ़ एक बेइन्साफ़ी होगी.

दज़ला और फ़िरात का दोआब 'मैसोपोटामिया' या 'इराक़' के नाम से मशहूर है. पुराने इतिहास में इसी इलाक़े को सुमेर या बैबीलोनिया (बाबुल) कहा गया है. इस का अधिक दक्खिनी भाग 'काल्डिया' या 'ख़ल्द' कहलाता है. काल्डियाके उत्तर में बाबुल और असुरिया के बहुत पुराने देश हैं. दज़ला और फ़िरात की नहरों का हज़ारों बरस पुराना सिलसिला इस समय तक केवल अपने अवशेषों द्वारा संसार के निर्माण कला-विशारदों को चकित करता रहा है. उत्तर में शाम (सुरिया) संसार की सभ्यता का लगभग उतना ही प्राचीन और उतना ही मशहूर केन्द्र रह चुका है. काल्डिया का प्रदेश अपने दिल को लुभाने वाले नज़ारों और सरसब्ज़ी के

پھر سے سوشاسن قایم کیا. غرض یہ کہ بارہ مہینے کے اندر راج بھر میں پھر سے شانتی، امن اور ویوستھا قایم ہو گئی ۔ جن باغیوں نے خود ادھینتا سویکار کر لی ابوبکر نے اُن کو معاف کر دیا ۔

[6]

اب ہم عرب کے بھوگول (جغرافیہ) کی اور ایک نظر ڈالنا چاہتے ہیں ۔ اگر عرب میں وہ سب علاقہ شامل کیا جاوے جو بھوگولک لحاظ سے صاف صاف عرب کے جزیرے میں شامل ہے، جس میں عرب جاتی کے لوگ بستے ہیں اور جہاں عربی بھاشا بولی جاتی ہے، تو ابھی تک عرب کا ایک بہت بڑا اور زرخیز علاقہ مدینے کی قومی سرکار سے باہر اور ودیشیوں کے قبضے میں تھا ۔ اگر ہم عرب کی بھوگولک سرحدیں مقرر کرنا چاہیں تو ایران کی کھاڑی سے لے کر ہند مہاساگر، لال سمدر، سویز نہر تک تینوں اور کا سمدر تٹ، اُس کے بعد اتر میں لبنان پربت سے ملا ہوا روم ساگر کا کنارہ اور اوپر جاکر چھوٹی چھوٹی پہاڑیوں کا وہ سلسلہ جو ایشیا کوچک سے شام کو الگ کرتا ہے اور دجلہ اور فرات نام کی بڑی ندیاں جو اِن پربتوں سے نکل کر ایک دوسرے کے برابر برابر بہتی ہوئی، گنگا اور جمنا کی طرح ایک دوسرے میں مل کر ایران کی کھاڑی میں جا گرتی ہیں، یا دجلے سے پورب کی وے پہاڑیاں جو آجکل اعراق عربی کو اعراق عظمی سے الگ کرتی ہیں، عرب کی قدرتی بھوگولک سرحدیں ہیں ۔ اِس کے سوائے عرب کی کوئی دوسری سرحدیں مقرر کی ہی نہیں جا سکتیں ۔ ایران کی کھاڑی کے پچھم کے پردیش بحرین کو بصرہ کے میدان سے الگ کرنا جب کہ دونوں کے بیچ کوئی بھوگولک ریکھا نہیں ہے اور دونوں میں صدیوں سے ایک ہی قبیلوں کے لوگ آباد چلے آتے ہیں، یا شام کے ریگستان کو نجد کے ریگستان سے الگ سمجھنا قدرتی حدبندی کے اُصولوں کے خلاف ایک بےانصافی ہو گی ۔

دجلہ اور فرات کا دوآب، 'میسو پوٹامیا' یا 'عراق' کے نام سے مشہور پرانے اتہاس میں اِسی علاقے کو سومیر یا بیبیلونیا (بابل) کہا گیا ہے ۔ اس کا ادھک دکھنی بھاگ 'کالیڈیا' یا 'خلد' کہلاتا ہے ۔ کالیڈیا کے اُتر میں بابل اور اسوریا کے بہت پرانے دیش ہیں ۔ دجلہ اور فرات کی نہروں کا ہزاروں برس پرانا سلسلہ اُس سمے تک کیول اپنے اوشیشوں دوارا سنسار کے نرمان کلا وشاردوں کو چکت کرتا رہا ہے۔ اتر میں شام (سوریا) سنسار کی سبھیتا کا لگ بھگ اتنا ہی پراچین اور اتنا ہی مشہور کیندر رہ چکا ہے ۔ کالیڈیا کا پردیش اپنے دل کو لبھانے والے نظاروں اور سرسبزی کے

अरब ख़ालिद की ओर मारे गए. बनी हनीफ़ा के जिन लोगों ने बग़ावत में हिस्सा न लिया था उनका एक प्रतिनिधि मण्डल अबुबक्र से मिलने मदीने गया. अबुबक्र ने उनके साथ प्रेम और इज़्ज़त का बर्ताव किया. इन अरबों ने भी अब अरब ख़लीफ़ा की मातहती और इसलाम दोनों को क़ुबूल कर लिया. जिस तरह ख़ालिद ने उत्तर और मध्य अरब की बग़ावतों को शान्त किया उसी तरह दूसरी टोलियों ने दूसरे सेनापतियों के अधीन पूरब और दक्खिन के प्रान्तों में फिर से सुशासन क़ायम किया.

बहरैन प्रान्त के ईसाई सरदार मोज़ेर ने मोहम्मद साहब के समय में इसलाम क़ुबूल कर लिया था. मोज़ेर के उत्तराधिकारी ने अबुबक्र के ख़िलाफ़ बग़ावत खड़ी कर दी और अपने को फिर से ईसाई ज़ाहिर किया. बहरैन के मुसलमान रेज़िडेण्ट अला ने उसे एक दिन शराब के नशे में चूर पाकर गिरफ़्तार कर लिया और उस प्रान्त को अपने क़ाबू में कर लिया. होज़ैफ़ के मातहत एक सैन्यदल ने उमान प्रान्त में फिर से सुशासन क़ायम किया.

तिहामा में कुछ बद्दू डाकुओं ने मौक़ा पाकर अपनी पुरानी आदत के मुताबिक़ क़ाफ़िलों को लूटना शुरू कर दिया और थोड़े दिनों के लिये उस इलाक़े में राह चलना नामुमकिन कर दिया. इनके एक सरदार फ़ुजाअ ने ख़लीफ़ा के पास आकर यह कहकर कि मैं आस पास के बाग़ियों को शान्त करना चाहता हूँ. कुछ अस्त्र-शस्त्र हासिल कर लिये और फिर इन्हीं हथियारों की मदद से उस संकट के समय में तिजारती तथा दूसरे क़ाफ़िलों की लूट मार जारी कर दी. अबुबक्र ने फ़ुजाअ को पकड़वा मंगाया और इस दग़ाबाज़ी की सज़ा में मदीने के क़ब्रिस्तान के पास ज़िन्दा जलवा दिया.

आम तौर पर अबुबक्र अपने फ़ैसलों में नरम दिल था और शरण में आये शत्रु के साथ उदारता का बर्ताव करता था.† फ़ुजाअ की सज़ा की ओर इशारा करते हुये अबुबक्र अपने अन्त के दिनों में अकसर कहा करता था—"यह काम मेरी ज़िन्दगी के उन तीन कामों में से है जिनकी बाबत मैं सोचा करता हूँ कि अगर मैंने ये न किये होते तो अच्छा था." लेकिन फ़ुजाअ की यह सज़ा दूसरों के लिये एक नसीहत हो गई. अरब की उस समय की हालत पर इसका डरावना असर पड़ा.

यमन में अबुबक्र ने एक ईरानी सरदार फ़ीरोज़ को हाकिम मुक़र्रर करके भेजा. वहां के कुछ अरबों ने फ़ीरोज़ के ख़िलाफ़ बग़ावत की लेकिन बग़ावत शान्त कर दी गई. इसी प्रकार मुहाजिर और अकरमा ने हज़्रमौत के सूबे में

† Sir William Muir.

عرب خالد کی اور مارے گئے بنی حنیفہ کے جن لوگوں نے بغاوت میں حصہ نہ لیا تھا اُن کا ایک پرتینِدھی منڈل ابوبکر سے ملنے مدینے گیا۔ ابوبکر نے اُن کے ساتھ پریم اور عزت کا برتاؤ کیا۔ اُن عربوں نے بھی اب عرب خلیفہ کی ماتحتی اور اسلام دونوں کو قبول کرلیا۔ جس طرح خالد نے اتر اور مدھیہ عرب کی بغاوتوں کو شانت کیا اُسی طرح دوسری ٹولیوں نے دوسرے سینا پتیوں کے ادھین پورو اور دکھن کے پرانتوں میں پھر سے سوشاسن قایم کیا۔

بحرین پرانت کے عیسائی سردار موزیر نے محمد صاحب کے سمے میں اِسلام قبول کر لیا تھا۔ موزیر کے اُتر ادھیکاری نے ابوبکر کے خلاف بغاوت کھڑی کر دی اور اپنے کو پھر سے عیسائی ظاہر کیا۔ بحرین کے مسلمان ریذیڈنٹ الہ نے اُسے ایک دن شراب کے نشے میں چور پا کر گرفتار کرلیا اور اُس پرانت کو اپنے قابو میں کر لیا۔ ہوزیف کے ماتحت ایک سینیہ دل نے عومان پرانت میں پھر سے سوشاسن قایم کیا۔

تہاما میں کچھ بدو ڈاکوؤں نے موقع پاکر اپنی پرانی عادت کے مطابق قافلوں کو لوٹنا شروع کر دیا اور تھوڑے دنوں کے لئے اُس پرانت میں راہ چلنا ناممکن کر دیا۔ اُن کے ایک سردار فوجاع نے خلیفہ کے پاس آ کر یہ کہہ کر کہ میں اُس پاس کے باغیوں کو شانت کرنا چاہتا ہوں کچھ استر شستر حاصل کر لئے اور پھر اُنھیں ہتھیاروں کی مدد سے اُس سنکٹ کے سمے میں تجارتی تتھا دوسرے اَنیہ قافلوں کی لوٹ مار جاری کر دی۔ ابوبکر نے فوجاع کو پکڑوا منگایا اور اِس دغابازی کی سزا میں مدینے کے قبرستان کے پاس زندہ جلوا دیا۔

عام طور پر ابو بکر اپنے فیصلوں میں نرم دل تھا اور شرن میں آئے شترو کے ساتھ اُدارتا کا برتاؤ کرتا تھا۔ † فوجاع کے سزا کی اور اِشارہ کرتے ہوئے ابوبکر اپنے انت کے دنوں میں اکثر کہا کرتا تھا—"یہ کام میری زندگی کے اُن تین کاموں میں سے ہے جن کی بابت میں سوچتا ہوں کہ اگر میں نے یہ نہ کئے ہوتے تو اچھا تھا۔" لیکن فوجاع کی یہ سزا دوسروں کے لئے ایک نصیحت ہو گئی۔ عرب کی اُس سمے کی حالت پر اِس کا ڈراونا اثر پڑا۔

یمن میں ابوبکر نے ایک ایرانی سردار فیروز کو حاکم مقرر کر کے بھیجا۔ وہاں کے کچھ عربوں نے فیروز کے خلاف بغاوت کی لیکن بغاوت شانت کر دی گئی۔ اِس پرکار مہاجر اور اکرما نے حضرموت کے صوبہ میں

इनकार कर दिया. सजाह् अपनी सेना सहित यमामा सूबे की ओर बढ़ी.

यमामा का सूबा अरब के ठीक बीच में थोड़ा सा पूरब की ओर है. यहाँ पर बनी हनीफ़ा नाम का एक बड़ा ईसाई क़बीला आबाद था. इन लोगों ने मोहम्मद साहब के समय में मदीने की सरकार को अपनी सरकार मान लिया था. लेकिन अब वे चालीस हज़ार की तादाद में अपने एक सरदार मुसैलमा के अधीन बग़ावत पर आमादा थे. मुसैलमा कुछ पहले से पैग़म्बरी का दावा कर रहा था और बनी हनीफ़ा के ज़्यादातर लोग उसे अपना शासक मानते थे. मुमकिन है अनेक विश्वासी ईसाइयों के दिलों में इस समय यह ख़्याल पैदा हो रहा हो कि अगर अरब के क़दीम बुत परस्तों में एक महान पैग़म्बर पैदा हो सकता है तो ईसाइयों में क्यों नहीं ?

सजाह् अपनी सेना के साथ मुसैलमा से जाकर मिल गई. दोनों में बात चीत हुई और उनके दिल इस क़दर मिल गए कि यमामा के पैग़म्बर ने इराक़ की पैग़म्बरा के साथ शादी करली. यमामा सूबे की आधी मालगुज़ारी सजाह् को सदा के लिए दहेज (मेहर) में देदी गई. चन्द रोज़ के बाद ही अपनी ज़्यादातर फ़ौज मुसैलमा के सुपुर्द करके सजाह् उत्तर की ओर अरब की सरहद को फिर से पार कर इराक़ लौट गई. इसके बाद उसकी कोई ख़बर नहीं मिली. अलबत्ता इस बेइन्तज़ामी के वक़्त में कुछ दिनों तक थोड़े से इराक़ी घुड़सवार उसके नाम पर यमामा और उसके आस पास थोड़ी बहुत मालगुज़ारी वसूल करते रहे.

अबुबक्र ने इकरीमा और शोरह् बिल के मातहत एक फ़ौजी टुकड़ी मुसैलमा को परास्त करने के लिये पहले ही से यमामा भेज दी थी. इस फ़ौज ने मुसैलमा की विशाल सेना से बुरी तरह हार खाई. रोमी साज़िशों का सबसे ज़्यादह असर इसी सेना पर था. इसी पर उन्होंने सबसे ज़्यादह धन हरबे-हथियार और अपनी क़ाबलियत सर्फ़ की थी. ख़ालिद अब यमामा की ओर बढ़ा. अक़रबा नामक मुक़ाम पर दोनों ओर की सेनाओं में बड़ी घमासान लड़ाई हुई. दोनों ओर के सेनानियों ने ख़ूब वीरता के जौहर दिखाए. आख़ीर में बाग़ियों को पीछे हटना पड़ा. मुसैलमा अपने बचे हुए आदमियों के साथ पीछे हटकर एक बाग़ में दाख़िल हुआ और उसका दरवाज़ा भीतर से बन्द कर लिया. बाग़ के बाहर एक ऊँची चहार दीवारी थी. ख़ालिद की अरब सेना ने बाग़ को घेर लिया. दरवाज़ा खुला. मुसैलमा और उसके सब साथी मैदान में काम आए. यह बाग़ मुस्लिम इतिहास में "मौत के बाग़" के नाम से मशहूर है. विजय ख़ालिद की ओर रही, लेकिन अनेक ज़ख़्मियों के अलावा 360 मुहाजिर, क़रीब 300 अनसार और क़रीब 500 दूसरे

انکار کر دیا ۔ سجاہ اپنی سینا سہت یماما صوبہ کی اور بڑھی ۔

یماما صوبہ عرب کے ٹھیک بیچ میں تھوڑا سا پورب کی اور ہے ۔ یہاں پر بنی حنیفا نام کا ایک بڑا عیسائی قبیلہ آباد تھا ۔ ان لوگوں نے محمد صاحب کے سمے میں مدینے کی سرکار کو اپنی سرکار مان لیا تھا ۔ لیکن اب وے چالیس ہزار کی تعداد میں اپنے ایک سردار موسیلما کے ادھین بغاوت پر آمادہ تھے ۔ موسیلما کچھ پہلے سے پیغمبری کا دعویٰ کر رہا تھا اور بنی حنیفا کے زیادہ تر لوگ اسے اپنا شاسک مانتے تھے ۔ ممکن ہے انیک وشواسی عیسائیوں کے دلوں میں اس سمے یہ خیال پیدا ہو رہا ہو کہ اگر عرب کے قدیم بت پرستوں میں ایک مہان پیغمبر پیدا ہوسکتا ہے تو عیسائیوں میں کیوں نہیں ؟

سجاہ اپنی سینا کے ساتھ موسیلما سے جاکر مل گئی ۔ دونوں میں بات چیت ہوئی اور ان کے دل اس قدر مل گئے کہ یماما کے پیغمبر نے اعراق کی پیغمبرا کے ساتھ شادی کرلی ۔ یماما صوبہ کی آدھی مال گذاری سجاہ کو سدا کے لئے دہیز (مہر) میں دے دی گئی ۔ چند روز کے بعد ہی اپنی زیادہ تر فوج موسیلما کے سپرد کر کے سجاہ اتر کی اور عرب کی سرحد کو پھر سے پار کر اعراق لوٹ گئی ۔ اس کے بعد اس کی کوئی خبر نہیں ملی ۔ البتہ بے انتظامی کے وقت میں کچھ دنوں تک تھوڑے سے اعراقی گھوڑ سوار اس کے نام پر یماما اور اس کے آس پاس تھوڑی بہت مال گذاری وصول کرتے رہے ۔

ابوبکر نے اکریما اور شورہ بل کے ماتحت ایک فوجی ٹکڑی موسیلما کو پراست کرنے کے لئے پہلے ہی سے بھیج دی تھی ۔ اس فوج نے موسیلما کی وشال سینا سے بری طرح ہار کھائی ۔ رومی سازشوں کا سب سے زیادہ اثر اسی سینا پر تھا ۔ اسی پر انہوں نے سب سے زیادہ دھن حربہ ہتھیار اور اپنی قابلیت صرف کی تھی ۔ خالد اب یماما کی اور بڑھا ۔ اقربا نامک استھان پر دونوں اور کی سیناؤں میں بڑی گھماسان لڑائی ہوئی ۔ دونوں اور کے سینانیوں نے خوب ویرتا کے جوہر دکھائے ۔ آخر میں باغیوں کو پیچھے ہٹنا پڑا ۔ موسیلما اپنے بچے ہوئے آدمیوں ساتھ پیچھے ہٹ کر ایک باغ میں داخل ہوا اور اس کا دروازہ بھیتر سے بند کرلیا ۔ باغ کے باہر ایک اونچی چہاردیواری تھی ۔ خالد کی عرب سینا نے باغ کو گھیر لیا ۔ دروازہ کھلا ۔ موسیلما اور اس کے سب ساتھی میدان میں کام آئے ۔ یہ باغ مسلم اتہاس میں "موت کے باغ" کے نام سے مشہور ہے ۔ وجے خالد کی اور رہی، لیکن انیک زخمیوں کے علاوہ 360 مہاجر، قریب 300 انصار اور قریب 500 دوسرے

लड़ाई में क़ुरैश की तरफ़ से लड़कर एक बार मोहम्मद साहब को परास्त किया था और जिसने मोहम्मद साहब की मौत से थोड़े ही दिनों पहले मुता की लड़ाई में रोमन सेना के हाथों से खोई हुई जीत छीनी थी. ख़ालिद को इस समय सबसे पहले मदीने से उत्तर की ओर पैग़म्बरी के एक नए दावेदार तोलैहा को ज़ेर करने के लिये भेजा गया.

तोलहा बनी असद नाम के बाग़ी क़बीले का सरदार था. शाम की सरहद पर बनी ग़तफ़ान नाम का एक दूसरा पुराना ईसाई क़बीला था. बनी ग़तफ़ान का एक सरदार उयेना सात सौ सिपाहियों के साथ तोलैहा से जा मिला. बोज़ाख़ाँ की लड़ाई में ख़ालिद ने दोनों बाग़ी क़बीलों की मुश्तरका फ़ौज को शिकस्त दी. तोलैहा ने अपनी बीवी समेत भाग कर शाम में रोमी हुकूमत की सरहद के अन्दर पनाह ली. उयेना गिरफ़्तार करके जंग के दूसरे क़ैदियों के साथ ख़लीफ़ा के पास मदीने भेज दिया गया. ख़लीफ़ा ने उयेना और उसके सब साथियों को माफ़ कर दिया और उन्हें आज़ाद करवा दिया. तोलैहा को भी माफ़ कर दिया गया. उसे इत्तला भेज दी गई. उसके दिल पर इसका असर हुआ. उसने फ़ौरन शाम से अरब लौटकर इसलाम क़ुबूल कर लिया और इसके बाद ईरान के साथ अरबों की लड़ाइयों में उसने ख़ूब वीरता के हाथ दिखाए. बनी असद और बनी ग़तफ़ान दोनों क़बीलों के लोगों ने अबुबक्र को मोहम्मद साहब का वारिस और अपना हाकिम मान लिया. ख़ालिद ने इसके बाद एक महीना बोज़ाख़ाँ में रहकर आस पास के सूबों में फिर से अमन और आमान क़ायम किया. ख़ालिद के इतनी जल्दी फ़तह हासिल करने की एक ख़ास वजह यह थी कि जबकि तोलैहा, उयेना और उनके थोड़े से साथी रोमी शासकों के हाथों में खेल रहे थे. ज़्यादातर अरब मदीने की नई क़ौमी सरकार को अपनी सरकार समझते थे. बाग़ियों की और अबुबक्र की मेहरबानी ने भी इस समय बहुत बड़ा काम दिया.

ख़ालिद अब पूरब की ओर मुड़ा. इस ओर ईरान की खाड़ी के पास बनी तमीम नाम का एक बहुत बड़ा ईसाई क़बीला था जिसकी अनेक शाखें उत्तर में इराक़ के अन्दर फ़िरात नदी तक फैली हुई थीं. इस क़बीले की एक शाख़ का नाम बनी यरबोआ था. बनी यरबोआ की एक ईसाई औरत सजाह ने, जो बहुत दिनों से इराक़ में रहती थी, इस समय ख़ुद पैग़म्बरी का दावा किया, कई ईसाई क़बीलों से एक बहुत बड़ी सेना लेकर, मदीने को ज़ेर करने के लिये, वह अरब की सरहद में दाख़िल हुई. सरहद के इस पार बनी यरबोआ के लोगों ने सजाह का साथ दिया. लेकिन बनी तमीम के ज़्यादातर लोगों ने सजाह का साथ देने से

لڑائی میں قریش کی طرف سے لڑکر ایک بار محمد صاحب کو پرلست کیا تھا اور جس نے محمد صاحب کی موت سے تھوڑے ہی دنوں پہلے مُتاع کی لڑائی میں رومن سینا کے ہاتھوں سے کھوئی ہوئی جیت چھینی تھی . خالد کو اِس سمے سب سے پہلے مدینے سے اُتر کی اور پیغمبری کے ایک نئے دعویدار طولیحا کو زیر کرنے کے لئے بھیجا گیا .

طولیحا بنی اسد نام کے باغی قبیلے کا سردار تھا . شام کی سرحد پر بنی گتفان نام کا ایک دوسرا پرانا عیسائی قبیلہ تھا . بنی گتفان کا ایک سردار اُئینہ سات سو سپاہیوں کے ساتھ طولیحا سے جا ملا . بوزاخاں کی لڑائی میں خالد نے دونوں باغی قبیلوں کی مشترکہ فوج کو شکست دی . طولیحا نے اپنی بیوی سمیت بھاگ کر شام میں رومی حکومت کی سرحد کے اندر پناہ لی . اُئینہ گرفتار کر کے جنگ کے دوسرے قیدیوں کے ساتھ خلیفہ کے پاس مدینہ بھیج دیا گیا . خلیفہ نے اُئینہ اور اُس کے سب ساتھیوں کو معاف کر دیا اور اُنہیں آزاد کروا دیا . طولیحا کو بھی معاف کر دیا گیا . اُسے اطلاع بھیج دی گئی . اُس کے دل پر اِس کا اثر ہوا . اُس نے فوراً شام سے عرب لوٹ کر اِسلام سویکار کر لیا اور اُس کے بعد ایران کے ساتھ عربوں کی لڑائیوں میں اُس نے خوب ویرتا کے ہاتھ دکھائے . بنی اسد اور بنی گتفان دونوں قبیلوں کے لوگوں نے ابوبکر کو محمد صاحب کا وارث اور اپنا حاکم مان لیا . خالد نے اِس کے بعد ایک مہینہ بوزاخاں میں رہ کر آس پاس کے صوبوں میں پھر سے امن اور امان قایم کیا . خالد کے اِتنی جلدی فتح حاصل کرنے کی ایک خاص وجہہ یہ تھی کہ جب کہ طولیحا، اُئینہ اور اُن کے تھوڑے سے ساتھی رومی شاسکوں کے ہاتھوں میں کھیل رہے تھے، زیادہ تر عرب مدینہ کی نئی قومی سرکار کو اپنی سرکار سمجھتے تھے . باغیوں کی اور ابوبکر کی مہربانی نے بھی اِس سمے بہت بڑا کام دیا .

خالد اب پورب کی اور مڑا . اِس اور ایران کی کھاڑی کے پاس بنی تمیم نام کا ایک بہت بڑا عیسائی قبیلہ تھا جسکی انیک شاخیں اتر میں اعراق کے اندر فرات ندی تک پھیلی ہوئی تھیں . اِس قبیلے کی ایک شاخ کا نام بنی یربوا تھا . بنی یربوا کی ایک عیسائی عورت سجاہ نے جو بہت دنوں سے اعراق میں رہتی تھی اِس سمے خود پیغمبری کا دعویٰ کیا اور کئی عیسائی قبیلوں سے ایک بہت بڑی سینا لے کر مدینے کو زیر کرنے کے لئے عرب کی سرحد میں داخل ہوئی . سرحد کے اس پار بنی یربوا کے لوگوں نے سجاہ کا ساتھ دیا . لیکن بنی تمیم کے زیادہ تر لوگوں نے سجاہ کا ساتھ دینے سے

[5]

ओसामा की फ़ौज शाम तक बढ़ी चली गई. रोमी सेना पीछे हट चुकी थी. ओसामा शाम की सरहद पर के कुछ सरकश ईसाई क़बीलों को सजायें देकर जुरमाने के धन और बाग़ियों के ज़ब्त शुदा माल के साथ दो महीने के बाद मदीने लौट आया. शहर की हिफ़ाज़त की फ़िक्र अब जाती रही. अबुबक्र ने फिर थोड़ी सी सेना लेकर मदीने पर हमला करने वाले बाग़ियों को, जो ज़ूख़ा के मैदान में फिर से इकट्ठा हो रहे थे, आख़री शिकस्त दी. इसके बाद अबुबक्र फिर कभी मदीने से बाहर जंग के लिये नहीं निकला.

अब सिर्फ़ मदीने से बाहर की बग़ावतों को ख़त्म करने का मसला बाक़ी था. अबुबक्र ने कुल वफ़ादार अरब सरदारों को जमा किया और जितनी फ़ौज जमा की जा सकी उसकी अलग अलग टुकड़ियाँ बनाकर उन्हें अलग अलग दिशाओं में रवाना कर दिया. इन सब बग़ावतों को शान्त करके अरब को फिर से एक राष्ट्रीय शासन के अधीन लाने में अबुबक्र को पूरा एक साल लग गया. इन फ़ौजी दलों में जो ख़ालिद इब्न वलीद के मातहत भेजा गया उसने बग़ावत को दबाने में बहुत तारीफ़ के क़ाबिल काम किया. ख़ालिद के चरित्र को बयान करते हुए इतिहास लेखक सर विलियम म्योर लिखता है —

"इसमें कोई शुबहा नहीं कि इसलाम के शुरू के दिनों में अबुबक्र और उमर के बाद सबसे अधिक महान व्यक्ति वलीद का बेटा ख़ालिद था. इस बात का सेहरा सबसे अधिक उसी के सर बाँधना चाहिये कि इसलाम ने इतनी जल्दी अपनी हालत को फिर से मज़बूत कर लिया और इसके बाद वह इतना अधिक तेज़ी के साथ फैलता चला गया. ख़ालिद एक जाँबाज़ सिपाही था. उसकी बहादुरी जल्दबाज़ी की हद को पहुँची हुई थी, लेकिन बहादुरी के साथ साथ उसमें ठण्डे दिल से और तुरन्त फ़ैसले तक पहुँचने की भी क़ाबलियत थी.

"जिन जंग के मैदानों में ईरान की बादशाहत और शाम की रोमी शहनशाहियत दोनों की क़िसमत का फ़ैसला हो गया उनमें ख़ालिद ने जो अमली होशियारी दिखलाई उसके सबब उसे दुनिया के बड़े से बड़े सिपहसालारों में गिना जाता है. बार बार लेकिन हमेशा अजीबो ग़रीब होशियारी और जाँबाज़ी के साथ उसने ऐसी मुसीबतों के वक़्त पांसा फेंक दिया जिनमें अगर वह हार जाता तो उसकी हार का मतलब इसलाम का ख़ात्मा होता."

ख़ालिद की ग़ैर मामूली बहादुरी के सबब इसलाम के इतिहास में उसे 'सैफ़-अल्लाह' यानी 'अल्लाह की तलवार' के नाम से पुकारा जाता है. यह वही ख़ालिद था जिसने ओहद की

[5]

اوساما کی فوج شام تک بڑھتی چلی گئی ۔ رومی سینا پیچھے ہٹ چکی تھی ۔ اوساما شام کی سرحد پر کے کچھ سرکش عیسائی قبیلوں کو سزائیں دے کر جرمانے کے دھن اور باغیوں کے ضبط شدہ مال کے ساتھ دو مہینے کے بعد مدینے لوٹ آیا ۔ شہر کی حفاظت کی فکر اب جاتی رہی ۔ ابوبکر نے پھر تھوڑی سی سینا لے کر مدینے پر حملہ کرنے والے باغیوں کو، جوخذا کے میدان میں پھر سے اکٹھا ہو رہے تھے، آخری شکست دی ۔ اس کے بعد ابوبکر پھر کبھی مدینے سے باہر جنگ کے لئے نہیں نکلا ۔

اب صرف مدینے سے باہر کی بغاوتوں کو ختم کرنے کا مسئلہ باقی تھا ۔ ابوبکر نے کل وفادار عرب سرداروں کو جمع کیا اور جتنی فوج جمع کی جاسکی اس کی الگ الگ ٹکڑیاں بنا کر انہیں الگ الگ دشاؤں میں روانہ کردیا ۔ ان سب بغاوتوں کو شانت کر کے عرب کو پھر سے ایک راشٹریہ شاسن کے ادھین لانے میں ابوبکر کو پورا ایک سال لگ گیا ۔ ان فوجی دلوں میں جو خالد ابن ولید کے ماتحت بھیجا گیا اس نے بغاوت کو دبانے میں بہت تعریف کے قابل کام کیا ۔ خالد کے چرتر کو بیان کرتے ہوئے اتہاس لیکھک سر ولیم میور لکھتا ہے —

" اس میں کوئی شبہ نہیں کہ اسلام کے شروع کے دنوں میں ابوبکر اور عمر کے بعد سب سے ادھک مہان ویکتی ولید کا بیٹا خالد تھا ۔ اس بات کا سہرا سب سے ادھک اسی کے سر باندھنا چاہئے کہ اسلام نے اتنی جلدی اپنی حالت کو پھر سے مضبوط کرلیا اور اس کے بعد وہ اتنی ادھک تیزی کے ساتھ پھیلتا چلا گیا ۔ خالد ایک جانباز سپاہی تھا ۔ اس کی بہادری جلدبازی کی حد کو پہنچی ہوئی تھی، لیکن بہادری کے ساتھ ساتھ اس میں ٹھنڈے دل سے اور تورنت فیصلے تک پہنچنے کی بھی قابلیت تھی ۔

"جن جنگ کے میدانوں میں ایران کی بادشاہت اور شام کی رومی شہنشاہیت دونوں کی قسمت کا فیصلہ ہوگیا انہیں خالد نے جو عملی ہوشیاری دکھلائی، اس کے سبب اسے دنیا کے بڑے سے بڑے سپہ سالاروں میں گنا جاتا ہے ۔ بار بار لیکن ہمیشہ عجیب و غریب ہوشیاری اور جانبازی کے ساتھ اس نے ایسی مصیبتوں کے وقت پانسہ پھینک دیا جن میں اگر وہ ہار جاتا تو اس کی ہار کا مطلب اسلام کا خاتمہ ہوتا ۔"

خالد کی غیر معمولی بہادری کے سبب اسلام کے اتہاس میں اسے 'سیف اللہ' یعنی 'اللہ کی تلوار' کے نام سے پکارا جاتا ہے ۔ یہ وہی خالد تھا جس نے احد کی

अबुबक्र ने धीरज के साथ उमर को जवाब दिया—

"यदि शहर के चारों तरफ़ ख़ूंख़ार भेड़ियों के झुण्ड के झुण्ड फिर रहे हों और मैं शहर के अन्दर अकेला रह गया हूँ तब भी सेना जायगी. मेरे मालिक (मोहम्मद साहब) के मुँह से निकला हुआ एक लफ़्ज़ भी ख़ाली नहीं जा सकता."

मुमकिन है दूरन्देश अबुबक्र की निगाहें इस समय इस बात की ओर भी रही हों कि इन तमाम बग़ावतों का असली सरचश्मा कहाँ है. सेना गई. अबुबक्र कुछ दूर तक पैदल ओसामा के साथ साथ गया. बिदाई के वक़्त अबुबक्र ने ओसामा को इन लफ़्ज़ों में आदेश दिया—

"देखना बेवफ़ाई से ख़बरदार रहना, अदल और इन्साफ़ (न्याय) के रास्ते से ज़रा भर भी इधर उधर न होना. किसी को अंग-भंग की सज़ा न देना. न किसी बालक, या बूढ़े या औरत का क़त्ल करना. खजूर के दरख़्तों को आग न लगाना न उन्हें किसी तरह का नुक़सान पहुँचाना, न किसी ऐसे दरख़्त को काटना जिससे आदमियों या जानवरों को खाना मिलता हो. सिवाय जीवन निर्वाह की ज़रूरत के किसी पशु-पक्षी या ऊँट को न मारना. उस मुल्क के लोग जो खाना तुम्हारे खाने के लिये अपने बर्तनों में लाएँ उसे अल्लाह का नाम लेकर खा लेना. सिर मुँडाए साधू अगर तुम्हारी मुख़ालफ़त न करें तो उन्हें किसी तरह की तकलीफ़ न पहुँचाना अब अल्लाह के नाम पर आगे बढ़ो. अल्लाह तलवारों और वबाओं से तुम्हारी हिफ़ाज़त करे!"

ओसामा के जाने के बाद अरब की जो हालत हुई उसे एक लेखक ने इन लफ़्ज़ों में बयान किया है—

"अरब में चारों ओर बग़ावत होने लगी. लोग इसलाम छोड़ने लगे. नई क़ौमी सरकार के ख़िलाफ़ ईसाई और यहूदी गरदन उभारने लगे. विश्वासी मुसलमानों की हालत ऐसी हो गई जैसे बिना गड़रिये की भेड़ें! उनका रसूल जा चुका था, उनकी तादाद घट रही थी और उनके दुश्मन बढ़ रहे थे."

मौक़ा पाकर कुछ बाग़ियों ने फ़ौरन मदीने पर चढ़ाई कर दी. मुख्य सेना ओसामा के साथ रवाना हो चुकी थी. अबुबक्र ने हर बालिग़ आदमी को हथियारबन्द होने और शहर की हिफ़ाज़त करने के लिये सबको जमा होने का हुक्म दिया. ख़ुद फ़ौज की कमान्दारी की. लड़ाई हुई. बाग़ी परास्त होकर तितर-बितर हो गए. इस छोटी सी जीत का आम अरबों के दिलों पर बहुत अच्छा असर पड़ा. नतीजा यह हुआ कि आस पास के क़बीलों से ख़िराज मदीने आने लगा.

ابوبکر نے دھیرج کے ساتھ عمر کو جواب دیا—

"یدی شہر کے چاروں طرف خونخوار بھیڑیوں کے جھنڈ کے جھنڈ پھر رہے ہوں اور میں شہر کے اندر اکیلا رہ گیا ہوں تب بھی سینا جائیگی۔ میرے مالک (محمد صاحب) کے منھ سے نکلا ہوا ایک لفظ بھی خالی نہیں جاسکتا۔"

ممکن ہے دور اندیش ابوبکر کی نگاہیں اس سمئے اس بات کی اور بھی رہی ہوں کہ ان تمام بغاوتوں کا اصلی سرچشمہ کہاں ہے۔ سینا گئی۔ ابوبکر کچھ دور تک پیدل اوساما کے ساتھ ساتھ گیا۔ بدائی کے وقت ابوبکر نے اوساما کو ان لفظوں میں آدیش دیا—

"دیکھنا بیوفائی سے خبردار رہنا۔ عدل اور انصاف (نیائے) کے راستے سے ذرہ بھر بھی ادھر ادھر نہ ہونا۔ کسی کو انگ بھنگ کی سزا نہ دینا۔ نہ کسی بالک، یا بوڑھے یا عورت کو قتل کرنا۔ کھجور کے درختوں پر آگ نہ لگانا نہ انہیں کسی طرح کا نقصان پہنچانا، نہ کسی ایسے درخت کو کاٹنا جس سے آدمیوں یا جانوروں کو کھانا ملتا ہو۔ سوائے جیون نرواہ کی ضرورت کے کسی پشو پکشی یا اونٹ کو نہ مارنا۔ اس ملک کے لوگ جو کھانا تمہارے کھانے کے لئے اپنے برتنوں میں لائیں اسے اللہ کا نام لے کر کھالینا۔ سر منڈائے سادھو اگر تمہاری مخالفت نہ کریں تو انہیں کسی طرح کی تکلیف نہ پہنچانا۔ اب اللہ کے نام پر آگے بڑھو۔ اللہ تلواروں اور وباؤں سے تمہاری حفاظت کرے!"*

اوساما کے جانے کے بعد عرب کی جو حالت ہوئی اسے ایک لیکھک نے ان لفظوں میں بیان کیا ہے—

"عرب میں چاروں اور بغاوت ہونے لگی۔ لوگ اسلام چھوڑنے لگے۔ نئی قومی سرکار کے خلاف عیسائی اور یہودی گردن ابھارنے لگے۔ وشواسی مسلمانوں کی حالت ایسی ہوگئی جیسے بنا گڈریے کی بھیڑیں! ان کا رسول جا چکا تھا، ان کی تعداد گھٹ رہی تھی اور ان کے دشمن بڑھ رہے تھے۔"

موقع پاکر کچھ باغیوں نے فوراً مدینے پر چڑھائی کردی۔ مکھیہ سینا اوساما کے ساتھ روانہ ہو چکی تھی۔ ابوبکر نے ہر بالغ آدمی کو ہتھیار بند ہونے اور شہر کی حفاظت کے کرنے لئے سب کو جمع ہونے کا حکم دیا۔ خود فوج کی کمانداری کی۔ لڑائی ہوئی۔ باغی پراست ہوکر تتر بتر ہوگئے۔ اس چھوٹی سی جیت کا عام عربوں کے دلوں پر بہت اچھا اثر پڑا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ آس پاس کے قبیلوں سے خراج مدینے آنے لگا۔

---

*The Caliphate, its Rise, Decline and Fall, by William Muir, pp. 10-11.

[पिछले अंक से आगे]

अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम

विश्वम्भरनाथ पांडे

[4]

बग़ावत की पहली ख़बर उत्तर में शाम की सरहद पर के उन सूबों से आई जो मोहम्मद साहब के समय में भी रोमी साजिशों का मरकज़ (केन्द्र) रह चुके थे. धीरे धीरे दूसरे अनेक सूबों से भी इसी तरह की ख़बरें मदीने पहुँचने लगीं. लेकिन ये सब बग़ावतें उत्तर, पूब और दक्खिन के सिर्फ़ उन प्रान्तों में हुईं जो रोम या ईरान दोनों में से किसी के मातहत रह चुके थे. इन बग़ावतों में हिस्सा लेने वाले सिर्फ़ या तो कुछ ईसाई अरब क़बीले थे और या वह क़बीले थे जो हाल में ईसाई से मुसलमान हुये थे क़ुदरती तौर पर इन्हीं में रोमी लोगों की साजिशें सबसे ज़्यादह कामयाब हो सकती थीं. रोम और ईरान की सरहद से ही यह सब बग़ावत शुरू हुईं. इन बग़ावतों का सबसे बड़ा केन्द्र अरब की सरहद से भी दूर इराक़ के उत्तर में था जहाँ से सजाह नाम की एक ईसाई स्त्री ने निकलकर अरब पर धावा किया और मोहम्मद साहब के बाद ख़ुद पैग़म्बर होने का दावा किया.

एक बार मालूम होता था कि 23 बरस की सारी कोशिशें बेकार गईं.

ओसामा के कूच से पहले ही उस ज़माने के दूसरे सब से बड़े अरब नीतज्ञ उमर ने आकर अबुबक्र को इन बग़ावतों की अफ़वाहों की ख़बर दी. उसने इत्तला दी कि कई ओर से मदीने पर हमले की तय्यारियाँ हो रही हैं और यह सलाह दी कि सेना को शाम जाने से रोककर मदीने की हिफ़ाज़त के लिये रखा जाए.

अबुबक्र के नाज़ुक और अनभ्यस्त कन्धों पर इस समय बड़ी गहरी ज़िम्मेवारी थी. केवल उसकी सच्चाई, उसके धीरज, उसके साहस, उसकी व्यावहारिक बुद्धि और इन सब से बढ़कर एक अल्लाह और उसके रसूल मोहम्मद पर उस की गहरी श्रद्धा ने इस संकट के समय उसका साथ दिया. इसलाम और अबुबक्र की ख़ुशक़िस्मती से मदीना, मक्का और तायफ़ जैसे ख़ास-ख़ास अरब शहरों और बीच के वह सब अरब क़बीले जो सियासी नुक़्ते नज़र से कभी दूसरों के मातहत न हुये थे अपने ईमान और नई क़ौमी सरकार की ओर अपनी वफ़ादारी में पक्के रहे.

[پچھلے انک سے آگے]

عرب کی کلچر ' سبھیتا اور اِسلام

وشومبھر ناتھ پانڈے

[4]

بغاوت کی پہلی خبر اتر میں شام کی سرحد پر کے اُن صوبوں سے آئی جو محمد صاحب کے سمے میں بھی رومی سازشوں کا مرکز (کیندر) رہ چکے تھے ۔ دھیرے دھیرے دوسرے انیک صوبوں سے بھی اِسی طرح کی خبریں مدینے پہنچنے لگیں ۔ لیکن یہ سب بغاوتیں اُتر' پورو اور دکھن کے صرف اُن پرانتوں میں ہوئیں جو روم یا ایران دونوں میں سے کسی کے ماتحت رہ چکے تھے ۔ اِن بغاوتوں میں حصہ لینے والے صرف یا تو کچھ عیسائی عرب قبیلے تھے یا وہ قبیلے تھے جو حال میں عیسائی سے مسلمان ہوئے تھے ۔ قدرتی طور پر انہیں میں رومی لوگوں کی سازشیں سب سے زیادہ کامیاب ہوسکتی تھیں ۔ روم اور ایران کی سرحد سے ہی یہ سب بغاوتیں شروع ہوئیں ۔ اِن بغاوتوں کا سب سے بڑا کیندر عرب کی سرحد سے بھی دور اعراق کے اُتر میں تھا جہاں سے سجاہ نام کی ایک عیسائی استری نے نکل کر عرب پر دھاوا کیا اور محمد صاحب کے بعد خود پیغمبر ہونے کا دعویٰ کیا ۔

ایک بار معلوم ہوتا تھا کہ 23 برس کی ساری کوششیں بےکار گئیں ۔

اوساما کے کوچ سے پہلے ہی اُس زمانے کے دوسرے سب سے بڑے عرب نیتگیہ عمر نے آکر ابوبکر کو اِن بغاوتوں کی افواہوں کی خبردی ۔ اُس نے اطلاع دی کہ کئی اور سے مدینے پر حملے کی تیاریاں ہورہی ہیں اور یہ صلاح دی کہ سینا کو شام جانے سے روک کر مدینے کی حفاظت کے لئے رکھاجائے ۔

ابوبکر کے نازک اور ان ابھیست کندھوں پر اِس سمے بڑی گہری ذمہ‌واری تھی ۔ کیول اُس کی سچائی' اُس کے دھیرج' اُس کے ساھس' اُس کی ویاوھارک بدھی اور ان سب سے بڑھ کر ایک اللہ اور اُس کے رسول محمد پر اُس کی گہری شردھا نے اِس سنکٹ کے سمے اُس کا ساتھ دیا ۔ اِسلام اور ابوبکر کی خوش‌قسمتی سے مدینہ' مکہ اور طایف جیسے خاص خاص عرب شہروں اور بیچ کے وہ سب عرب قبیلے جو سیاسی نقطہ نظر سے کبھی دوسروں کے ماتحت نہ ہوئے تھے اپنے ایمان پر نئی قومی سرکار کی اور اپنی وفاداری میں پکے رہے ۔

ग़ज़ल

श्री सआदत 'नज़ीर' एम.ए.

कई इन्क़लाब1 देखे, सुने कितने ही फ़साने2 !
मुझे क्या फ़रेब 3 देंगे तेरे वादे या बहाने !
मेरे तजरबों ने आख़िर किया राज़ आशकारा4,
कि हैं जालसाज़ियों 5 के यह तमाम कारख़ाने.
न वह वलवले6 हैं बाक़ी, न बुलन्द हौसले7 हैं,
उन्हें आँखें ढूँढ़ती हैं, जो गुज़र गये ज़माने.
मेरी कमनसीबियों ने मेरी आस8 को न तोड़ा.
मेरी ज़िन्दगी ने ठुकरा दिये मर्ग9 के बहाने.
कहीं अब्र10 बन के बरसे, कहीं मिस्ल राद11गरजे,
बने इन्क़लाब आवर12 मेरे इश्क़13 के तराने.
मैं मिटा के चैन लूँगा तेरे नादरी चलन को,
मैं लुटा ही के रहूँगा तेरे जौर14 के ख़ज़ाने.
मुझे! बर्क़ 15 देखना है ! तू जलाएगी कहाँ तक?
मैं नये-नये बनाता ही रहूँगा आशियाने16.
मेरी कोशिशें यही हैं कि बहार ऐसी आये,
कि ज़बाँ से बुलबुलों की सुने गुल17 नये तराने.
मेरा इश्क़ एक मोअम्मा,18 मेरीज़ीस्त19 एक उक़्दा20,
जो है ज़ीशऊर 21 समझे, जो है दर्दमन्द, जाने
तेरी बज़्म22 में पलट कर मैं अब आऊँ या न आऊँ,
न भुला सकेगी दुनिया मेरे दर्द के फ़साने
यह 'नज़ीर' ! रंज23 कैसा ? वही फिर बना ले माला !
कि फ़क़त समेटना हैं, जो बिखर गये हैं दाने.

---

1. क्रान्ति 2. कहानी 3. धोखा 4. भेद का खुल जाना 5. धोखेबाज़ियाँ 6. जोश 7. इरादे 8. उम्मीद 9. मृत्यु 1o. बादल 11. बिजली 12. क्रान्ति लाने वाले 13. प्रेम 14. अत्याचार 15. बिजली 16. घोंसले, घर 17. फूल 18. समस्या 19. जीवन 20. भेद 21. बुद्धिमान 22. सभा 23. दुख.

غزل

شری سعادت 'نظیر' ایم. اے.

کئی انقلاب 1 دیکھے' سنے کتنے ہی فسانے2 !
مجھے کیا فریب 3 دینگے ترے وعدے یا بہانے !
میرے تجربوں نے آخر کیا راز آشکارا4'
کہ ہیں جعل سازیوں 5 کے یہ تمام کارخانے .
نہ وہ ولولے 6 ہیں باقی' نہ بلند حوصلے7 ہیں'
انہیں آنکھیں ڈھونڈھتی ہیں' جو گزر گئے زمانے .
میری کم نصیبیوں نے میری آس 8 کو نہ توڑا'
میری زندگی نے ٹھکرا دیئے مرگ 9 کے بہانے .
کہیں ابر 10 بن کے برسے' کہیں مثل رعد 11 گرجے'
بنے انقلاب آور 12 میرے عشق 13 کے ترانے .
میں مٹا کے چین لونگا ترے نادری چلن کو'
میں لٹا ہی کے رہونگا ترے جور 14 کے خزانے .
مجھے' برق ! 15 دیکھنا ہے ! تو جلائیگی کہاں تک ؟
میں نئے نئے بناتا ہی رہوں گا آشیانے 16 .
میری کوششیں یہی ہیں کہ بہار ایسی آئے'
کہ زباں سے بلبلوں کی سنیں گل 17 نئے ترانے .
مرا عشق اک معمہ' 18 میری زیست 19 ایک عقدہ 20'
جو ہے ذی شعور 21 سمجھے' جو ہے درد مند' جانے .
تیری بزم 22 میں پلٹکر میں اب آؤں یا نہ آؤں'
نہ بھلا سکے' گی دنیا میرے درد کے فسانے .
یہ 'نظیر' ! رنج 23 کیسا ؟ وہی پھر بنالے مالا !
کہ فقط سمیٹنا ہیں' جو بکھر گئے ہیں دانے .

---

1. کرانتی؛ 2. کہانی؛ 3. دھوکا؛ 4. بھید کا کھل جانا؛ 5 دھوکے بازیاں؛ 6. جوش؛ 7. ارادے؛ 8. امید؛ 9. مرتیو؛ 10. بادل؛ 11. بجلی؛ 12. کرانتی لانے والے؛ 13. پریم؛ 14. اتیاچار؛ 15. بجلی؛ 16. گھونسلے' گھر 17. پھول؛ 18. سمسیا؛ 19. جیون؛ 20. بھید؛ 21. بدھیمان؛ 22. سبھا؛ 23. دکھ .

दिसम्बर 1957 دسمبر

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 24 جلد नम्बर 6 نمبر

दिसम्बर 1957 دسمبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

145، مٹھی گنج، الٰہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

Can be had from —

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख	اِس نمبر کے خاص لیکھ
अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम	عرب کی کلچر، سبھیتا اور اسلام
—विश्वम्भरनाथ पांडे	—وشومبھر ناتھ پانڈے
हिन्दुस्तान और इसलाम	ہندستان اور اسلام
—डाक्टर सैयद महमूद	—ڈاکٹر سید محمود
अंग्रेजी से अनुवादक	—انگریزی سے انوادک
—वि॰ ना॰ पांडे॰	وی نا پانڈے۔
सन् 1905 का स्वदेशी आंन्दोलन और मेरा राजनैतिक जीवन	سن 1905 کا سودیشی آندولن اور میرا راجنیتک جیون
—पंडित सुन्दरलाल	—پنڈت سندر لال
अनेकता में एकता यानी कसरत में वहदत	انیکتا میں ایکتا یعنی کثرت میں وحدت
—डाक्टर भगवानदास	—ڈاکٹر بھگوان داس
हमारी राय	ہماری رائے
देश की हालत एक पर ख़त	دیش کی حالت پر ایک خط
—पंडित सुन्दर लाल.	—پنڈت سندر لال۔

स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

[illegible] and Published by Suresh [illegible] Press, 145, [illegible]

कानों से सुना है कि उनके सामने असली प्रश्न भाषा का नहीं. असली प्रश्न पं० जवाहर लाल नेहरू और उनकी सरकार को गिराने का है. देश की इस समय की स्थिति में यह जानकर कि इस तरह के नासमझ और खतरनाक लोग भी अभी तक देश में मौजूद हैं हमारा दिल काँप उठता है. कुछ सिख भाइयों, सिख अफ़सरों, वगैरा के पक्षपात पूर्ण व्यवहार और कुचरित्र तक की शिकायतें सुनने में आई हैं. यदि ऐसा है तो जिन्हें ऐसी शिकायतें हैं उनका फ़र्ज़ है कि उन्हें प्रेम के साथ मास्टर तारासिंह और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के नोटिस में लावें. और मास्टर तारासिंह और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का धर्म है कि इस तरह की शिकायतों की पूरी जाँच करके पंजाब के अन्दर सिखों के चरित्र को ऊँचा, निष्पक्ष और सबके लिये प्रेम भरा बनाने की पूरी कोशिश करें. कम से कम इस तरह के रोग का यह इलाज नहीं है कि देश भर में या प्रान्त भर में वैमनस्य की आग भड़काई जावे.

भाषायें और लिपियाँ सदा बदलती रही हैं, और बदलती रहेंगी. हिन्दी भाषा के प्रेमियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि वे देश की सब दूसरी भाषाओं से प्रेम दर्शाकर और उनकी उन्नति चाह कर ही राष्ट्रभाषा हिन्दी का सच्चा भला कर सकते हैं. दूसरी भाषाओं से द्वेश पैदा करके कदापि नहीं कर सकते. पंजाब की जनता और पंजाब के सब देश सेवकों से हमारी प्रार्थना है कि वे जिस तरह भी और जितनी जल्दी हो सके इस झगड़े को खतम करें और सिखों, हिन्दुओं और सब पंजाब निवासियों में प्रेम और मेल मिलाप को बढ़ाने, मजबूत करने और बनाए रखने का हर तरह प्रयत्न करें. इसी में उनका भला है, इसी में देश का भला है. इसके विपरीत रास्ता बरबादी का रास्ता है.

12-10-57 —सुन्दरलाल.

نہیں ہے ... اصلی پرشن بھاشا کا نہیں ... اصلی پرشن پنڈت جواہر لال نہرو اور اُن کی سرکار کو گرانے کا ہے . دیش کی اِس سمے کی اِستھتی میں یہ جان کر کہ اِس طرح کے ناسمجھ اور خطرناک لوگ بھی ابھی تک دیش میں موجود ہیں ہمارا دل کانپ اُٹھتا ہے . کچھ سکھ بھائیوں، سکھ افسروں وغیرہ کے پکشپات پورن ویوہار اور کو چرتر تک کی شکایتیں سننے میں آئی ہیں . یدی ایسا ہے تو جنہیں ایسی شکایتیں ہیں اُن کا فرض ہے کہ اُنہیں پریم کے ساتھ ماسٹر تارا سنگھ اور شرومنی گوردوارا پربندھک کمیٹی کے نوٹس میں لائیں' اور ماسٹر تارا سنگھ اور شرومنی گوردوارا پربندھک کمیٹی کا دھرم ہے کہ اِس طرح کی شکایتوں کی پوری جانچ کر کے پنجاب کے اندر سکھوں کے چرتر کو اُونچا، نشپکش اور سب کے لئے پریم بھرا بنانے کی پوری کوشش کریں . کم سے کم اِس طرح کے روگ کا یہ علاج نہیں ہے کہ دیش بھر میں یا پرانت بھر میں ویمنسیہ کی آگ بھڑکا دی جائے .

بھاشائیں اور لپیاں سدا بدلتی رہی ہیں' اور بدلتی رہیں گی . ہندی بھاشا کے پریمیوں سے ہماری ونمر پرارتھنا ہے کہ وے دیش کی سب دوسری بھاشاؤں سے پریم درشا کر اور اُن کی اُنتی چاہ کر ہی راشٹر بھاشا ہندی کا سچا بھلا کر سکتے ہیں . دوسری بھاشاؤں سے دویش پیدا کر کے کداپی نہیں کر سکتے . پنجاب کی جنتا اور پنجاب کے سب دیش سیوکوں سے ہماری پرارتھنا ہے کہ وے جس طرح بھی اور جتنی جلدی ہو سکے اِس جھگڑے کو ختم کریں اور سکھوں' ہندوؤں اور سب پنجاب نواسیوں میں پریم اور میل ملاپ کو بڑھانے' مضبوط کرنے اور بنائے رکھنے کا ہر طرح پریتن کریں . اِسی میں اُن کا بھلا ہے . اِسی میں دیش کا بھلا ہے . اِس کے وپریت راستہ بربادی کا راستہ ہے .

—سندر لال . 12. 10. 57

और [illegible] हम नहीं कर रहे हैं.

[illegible] सुनते हैं तो हमें और [illegible] हिन्दी कहां खतरे [illegible] हिन्दी पर हमला कर रहा है ? कौन किसको हिन्दी [illegible] पढ़ने से रोक रहा है ? हाल के पंजाब के दौरे में हम [illegible] भाइयों से बात कर चुके हैं, कोई भी सिख हिन्दी पढ़ने से इन्कार नहीं कर रहा है. इन्कार केवल कुछ हिन्दुओं को पंजाबी या गुरुमुखी पढ़ने से है. तब फिर इस आन्दोलन का नाम हिन्दी रक्षा आन्दोलन की जगह पंजाबी विरोधी आन्दोलन शायद ज्यादा ठीक होता. इलाज बिलकुल साफ है. दो ही उपाय हो सकते हैं. या तो यह कि जिन इलाकों की बोल चाल की ज़बान पंजाबी है उनका एक पंजाबी सूबा और जिन में बोल चाल की ज़बान हिन्दी है उनका एक हिन्दी सूबा, दो अलग अलग सूबे ईमानदारी के साथ बना दिये जावें और या अगर सारे पंजाब का एक 'सूबा' या एक 'राज' रखना है तो जरूरी है कि पंजाबी इलाके में अधिकतर काम पंजाबी में हो और हिन्दी इलाके में हिन्दी में, और सिख और हिन्दू और और सब लोग, पंजाबी बोलने वाले और हिन्दी बोलने वाले' सब प्रेम के साथ दोनों भाषाएँ और दोनों लिपियां अच्छी तरह सीखें जिस से सारे पंजाब के सब कामों में सबको आसानी हो. जरूरत इस बात की है कि दिलों में बजाय नफरतों, डरों और दुश्मनियों के प्रेम, विश्वास और भाई चारे के भाव हों.

कहीं कहीं यह भी सुनने में आया है कि हिन्दी के प्रेमी चाहते हैं कि पंजाबी पढ़ना उनके लिये लाजमी न हो. उन की बात को छोड़कर हम इसे भी बिलकुल नहीं समझ सकते. स्कूलों में कौन कौन विषय लाजमी हों और कौन कौन अख्तियारी यह बात बहुत छोटी और शिक्षा विभाग के तय करने की है. हमें भूगोल के लाजमी होने में कोई एतराज नहीं, गणित के लाजमी होने में कोई एतराज नहीं, शायद अंगरेजी के लाजमी होने में भी कोई एतराज नहीं. हमें एतराज है केवल पंजाबी के लाजमी होने में और वह भी पंजाब में रहकर ! आखिर पंजाबी बेचारी से इतनी नाराजगी क्यों ? पंजाबी न जानने से हिन्दी वालों को प्रान्त भर की नौकरियों, काम काज और व्यापार में जो नुकसान रहेगा वह जाहिर ही है.

हमने अपने पंजाब के दौरे में और भी कई तरह की बातें सुनी हैं. कहा जाता है कि यह सारा झगड़ा कुछ लोगों की मिनिस्टरियों और मेम्बरियों का झगड़ा है. अगर यह सच है तो जनता और उसके सच्चे सेवकों को इस बाहर मुके [illegible] से जितनी जल्दी हो निकल आना चाहिये. हमने [illegible] आदमियों को यह कहते भी अपने

[illegible] کی بڑے جھگڑوں کی چرچا [illegible] نہیں کر [illegible]

جب ہم "ہندی کی رکشا" کی بات سنتے ہیں تو ہمیں اور بھی اچرج ہوتا ہے . پنجاب کے اندر ہندی کہاں خطرے میں ہے ؟ کون ہندی پر حملہ کر رہا ہے ؟ کون کس کو ہندی پڑھنے پڑھانے سے روک رہا ہے ؟ حال کے پنجاب کے دورے میں ہم سیکڑوں سکھ بھائیوں سے باتیں کر چکے ہیں' کوئی بھی سکھ ہندی پڑھنے سے انکار نہیں کر رہا ہے . انکار کیول کچھ ہندوؤں کو پنجابی یا گرمکھی پڑھنے سے ہے . تب پھر اِس آندولن کا نام ہندی رکشا آندولن کی جگہ پنجابی ودروھی آندولن شاید زیادہ ٹھیک ہوتا . علاج بالکل صاف ہے . دو ہی اپائے ہو سکتے ہیں . یا تو یہ کہ جن علاقوں کی بول چال کی زبان ہندی ہے اُن کا ایک ہندی صوبہ' دو الگ الگ صوبے ایمانداری کے ساتھ بنا دئے جاویں . اور یا اگر سارے پنجاب کا ایک 'صوبہ' یا ایک 'راج' رکھنا ہے تو ضروری ہے کہ پنجابی علاقے میں ادھکتر کام پنجابی میں ہو اور ہندی علاقے میں ہندی میں' اور سکھ اور ہندو اور سب لوگ' پنجابی بولنے والے اور ہندی بولنے والے' سب پریم سے ساتھ دونوں بھاشائیں اور دونوں لپیاں اچھی طرح سیکھیں جس سے سارے پنجاب کے سب کاموں میں سب کو آسانی ہو . ضرورت اِس بات کی ہے کہ دلوں میں بجائے نفرتوں' ڈروں اور دشمنیوں کے پریم' وشواس اور بھائی چارے کے بھاؤ ہوں .

کہیں کہیں یہ بھی سننے میں آیا ہے کہ ہندی پریمی چاہتے ہیں کہ پنجابی پڑھنا اُن کے لئے لازمی نہیں . اُن کی بات کو چھوڑ کر ہم اِسے بھی بالکل نہیں سمجھ سکتے . اِسکولوں میں کون کون وشے لازمی ہوں اور کون کون اختیاری یہ بات بہت چھوٹی اور شکشا وبھاگ کے طے کرنے کی ہے . ہمیں بھوگول کے لازمی ہونے میں کوئی اعتراض نہیں' شاید انگریزی کے لازمی ہونے میں بھی کوئی اعتراض نہیں . ہمیں اعتراض ہے کیول پنجابی کے لازمی ہونے میں اور وہ بھی پنجاب میں رہ کر . آخر پنجابی بےچاری سے اِتنی ناراضگی کیوں ؟ پنجابی نہ جاننے سے ہندی والوں کو پرانت بھر کی نوکریاں کام کاج اور ویو پار میں جو نقصان رہے گا وہ ظاہر ہی ہے .

ہم نے اپنے پنجاب کے دورے میں اور بھی کئی طرح کی باتیں سنی ہیں . کہا جاتا ہے کہ یہ سارا جھگڑا کچھ لوگوں کی منسٹریوں اور ممبریوں کا جھگڑا ہے . اگر یہ سچ ہے تو جنتا اور اُس کے سچے سیوکوں کو اِس [illegible] سے جتنی جلدی ہو نکل آنا چاہئے . ہم نے کچھ پڑھے لکھے آدمیوں کو یہ کہتے بھی اپنے

की मदद देकर सीरिया पर हमला करने के लिए उकसाया गया, रूस ने इज़रेल को आगाह कर दिया, उधर से भी मामला रुक गया फिर टरकी को मदद देकर सीरिया पर हमला करने के लिये तैयार किया गया, टरकी में रूस विरोधी अमरीकी प्रोपैगैन्डा इस समय पूरे ज़ोर पर है, रूस ने फिर टरकी को भी चेतावनी दी. मामला इस समय यहीं पर अटका हुआ है. दुनिया भर के लिये जिस तरह के ख़तरे का मुक़ाम आज सीरिया बना हुआ है उसी तरह के ख़तरे के मुक़ाम एक दरजन और चारों तरफ़, ख़ासकर भारत के चारों तरफ़, फैले हुए हैं. इन्हीं में से एक मुक़ाम हमारी ठीक उत्तर-पच्छमी सरहद पर भी है. इन हालतों में आजकल की कोई लड़ाई सारी दुनिया को अपने घेरे में लपेटे बिना नहीं रह सकती. किसी की भी भूल, ग़लती या बेपरवाही से कल कहां क्या होजावे कोई नहीं कह सकता. हमें अपने देश की हालत और अपने सम्बन्धों का भी पता है. ऐसी परिस्थिति में पंजाब जैसी सरहद के ऊपर देशवासियों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के विरुद्ध भड़का देने से बढ़कर देश की नई आज़ादी को ख़तरे में डाल देने का दूसरा काम नहीं हो सकता, और वह इसलिये कि देश की दो प्यारी भाषाओं, पंजाबी और हिन्दी में से सरकारी काग़ज़ एक में लिखे जावें या दूसरी में या दोनों में, या इसलिये कि बारहखड़ी के अक्षर एक तरह लिखे जावें या दूसरी तरह.

हम अपने हिन्दी रक्षा समिति के भाइयों से यह कहे बिना भी नहीं रह सकते कि अपने इस ग़लत और कुसमय के आन्दोलन से उन्होंने सबसे अधिक नुक़सान राष्ट्र भाषा हिन्दी को पहुँचाया है. हमने पचास बरस हिन्दी की सेवा की है. हमें यह देखकर दुख होता है कि बंगाल के और ख़ासकर दक्खिन के वह भाई जो पहले भी हमारे इसी अंधेपन और हमारी कट्टरता के कारण हिन्दी से कुछ बिदके बिदके रहते थे और अंगरेज़ी को उसकी आजकल की जगह से हटाना नहीं चाहते थे उनकी आशंकाएं पंजाब के इस हिन्दी रक्षा आन्दोलन से बेहद बढ़ गई हैं. पूरब और दक्खिन के हिन्दी विरोधी आन्दोलन को बेहद बल मिल गया है. हिन्दी रक्षा समिति के नेताओं के बयान दक्खिन में ख़ूब छापे जा रहे हैं. उनका कहना है कि अगर पंजाब के पंजाबी बोलने वाले हिन्दी-प्रेमी पंजाबी को नहीं सह सकते तो इस तरह हिन्दी प्रेमियों से तमिल और तेलगू के भले की क्या आशा हो सकती है! उनके कहने में बहुत कुछ सच्चाई भी दिखाई देती है. इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि यदि यह हिन्दी रक्षा आन्दोलन उसी तरह कुछ दिनों और चलता रहा तो भारत की पार्लिमेन्ट के अन्दर राष्ट्र भाषा हिन्दी का अंगरेज़ी का स्थान लिया जा सकना पीढ़ियों दूर चला जावेगा. देश के कई कई टुकड़ों

کی مدد دے کر سیریا پر حملہ کرنے کے لئے اکسایا گیا، روس نے اسرائیل کو آگاہ کر دیا، اُدھر سے بھی معاملہ رک گیا، پھر ٹرکی کو مدد دے کر سیریا پر حملہ کرنے کے لئے تیار کیا گیا، ٹرکی میں روس ورودھی امریکی پروپیگنڈا اِس سمے زور پر ہے، روس نے پھر ٹرکی کو بھی چتاونی دی۔ معاملہ اِس سمے یہیں پر اٹکا ہوا ہے۔ دنیا بھر کے لئے جس طرح کے خطرے کا مقام آج سیریا بنا ہوا ہے اُسی طرح کے خطرے کے مقام ایک درجن اور چاروں طرف، خاص کر بھارت کے چاروں طرف، پھیلے ہوئے ہیں۔ انہیں میں سے ایک مقام ہمارے ٹھیک اتر پچھمی سرحد پر بھی ہے۔ اِن حالتوں میں آجکل کی کوئی لڑائی ساری دنیا کو اپنے گھیرے میں لپیٹے بنا نہیں رہ سکتی۔ کسی کی بھی بھول، غلطی یا بےپرواہی سے کل کہاں کیا ہو جاوے کوئی نہیں کہہ سکتا۔ ہمیں اپنے دیش کی حالت اور سمبندھوں کا بھی پتہ ہے۔ ایسی پرستھتی میں پنجاب جیسی سرحد کے اوپر دیش واسیوں کے ایک گروہ کو دوسرے گروہ کے ورُدھ بھڑکا دینے سے بڑھ کر دیش کی نئی آزادی کو خطرے میں ڈال دینے کا دوسرا کام نہیں ہو سکتا اور وہ اِس لئے کہ دیش کی دو پیاری بھاشاؤں، پنجابی اور ہندی، میں سے سرکاری کاغذ ایک میں لکھے جاویں یا دوسری میں یا دونوں میں، یا اِس لئے کہ بارہ کھڑی کے اکشر ایک طرح لکھے جاویں یا دوسری طرح۔

ہم اپنے ہندی رکشا سمتی کے بھائیوں سے یہ کہے بنا بھی نہیں رہ سکتے کہ اپنے اِس غلط اور کسمے کے آندولن سے اُنہوں نے سب سے ادھک نقصان راشٹر بھاشا ہندی کو پہنچایا ہے۔ ہم نے پچاس برس ہندی کی سیوا کی ہے۔ ہمیں یہ دیکھ کر دکھ ہوتا ہے کہ بنگال کے اور خاص کر دکھن کے وہ بھائی جو پہلے بھی ہمارے اِس اندھے پن اور ہماری کٹرتا کے کارن ہندی سے کچھ بدکے بدکے رہتے تھے اور انگریزی کو اُس کی آجکل کی جگہ سے ہٹانا نہیں چاہتے تھے اُن کی شنکائیں پنجاب کے اِس ہندی رکشا آندولن سے بے حد بڑھ گئی ہیں۔ پورب اور دکھن کے ہندی ورودھی آندولن کو بے حد بل مل گیا ہے۔ ہندی رکشا سمتی کے نیتاؤں کے بیان یہاں بھی خوب چھاپے جا رہے ہیں۔ اُن کا کہنا ہے کہ اگر پنجاب کے پنجابی بولنے والے ہندی پریمی پنجابی کو نہیں سہہ سکتے تو اِس طرح کے ہندی پریمیوں سے تمل اور تیلگو کے بھلے کی کیا آشا ہو سکتی ہے! اِن کے کہنے میں بہت کچھ سچائی بھی دکھائی دیتی ہے۔ اِس میں ذرا بھی سندیہہ نہیں کہ یدی یہ ہندی رکشا آندولن اِسی طرح کچھ دنوں اور چلتا رہا تو بھارت کی پارلیمنٹ کے اندر راشٹر بھاشا ہندی کو انگریزی کا استھان دیا جا سکنا پیڑھیوں دور چلا جاوے گا۔ دیش کے کئی کئی ٹکڑوں

और क़ीमती उपदेश दिये. साथ ही पंजाबी में गंदे-से-गंदे गाने भी सैकड़ों बरस से लाहौर और अमृतसर की गलियों में गाए जाते रहे हैं. और आज तक गाए जाते हैं. सच यह है कि दुनिया की कोई भाषा न पाक है और न नापाक. न संस्कृत अरबी से ज़ियादह पाक और न अरबी संस्कृत से ज़ियादह पाक, और न इन दोनों में से कोई चीनी, जापानी, रूसी, लातीनी फ्रांसीसी या दुनिया की किसी और भाषा से ज़ियादह पाक है. या यूँ कहिये कि दुनिया की सब भाषाएँ एक बराबर पाक और एक बराबर नापाक हैं. न कोई भाषा देवताओं की भाषा है और न कोई बोली फ़रिश्तों की बोली है. भाषाएँ और बोलियाँ सब आदमियों की बोलियाँ हैं. कम या अधिक सब में अच्छी चीज़ें भी मिलेंगी और बुरी चीज़ें भी. भाषा केवल एक साधन है विचारों के आदान प्रदान का. भाषा कोई देवी या देवता नहीं. जो भाषा जिस समय जहाँ जिन हालात में हमें सब से अच्छा काम दे वही उस समय के लिये सब से अधिक उचित है. इस तरह के अंधविश्वास, या मूढ़ग्राह किसी भी देश या क़ौम को मिटा सकते हैं, उनमें फूट डाल सकते हैं, उन्हें बरबाद कर सकते हैं, पर उनकी उन्नति या विकास में सहायक नहीं हो सकते. यह अलग बात है कि किसी को किसी भाषा में अपने धर्म ग्रंथ होने के कारण या उसके अपनी मातृ भाषा होने के कारण उससे विशेष प्रेम या दिलचस्पी हो. पर यह दिलचस्पी किसी दूसरी भाषा से द्वेष के कारण नहीं होनी चाहिये. हमें इस तरह की सब बातों में यह अपने दिल पर जमा लेना चाहिये कि सब की उन्नति में ही हर एक की उन्नति और सब के भले में ही हर एक का भला है.

दुनिया की अन्तर राष्ट्रीय स्थिति से जो आदमी कुछ भी परिचित है वह देख सकता है कि दुनिया इस वक़्त एक बहुत बड़े संकट में से निकल रही है. जगह जगह वह ख़तरनाक मसाले जमा हो रहे हैं और भयंकर स्थितियाँ पैदा हो रही हैं जो किसी समय भी कहीं भी भड़क कर सारी दुनिया की आज़ादी, ख़ुशहाली और उसके वजूद तक को ख़तरे में डाल सकती हैं. केवल एक मिसाल काफ़ी होगी. हाल में सीरिया यानी शाम की सरकार को हथियारों की ज़रूरत पड़ी, उन्होंने अमरीका से हथियार ख़रीदना चाहा, अमरीका ने बेतुकी शरतें पेश करदीं. सीरिया ने रूस से बात की, रूस ने बिना शर्त सीरिया के हाथ हथियार बेचना मंज़ूर कर लिया, हथियार ख़रीद लिये गए, अमरीका ने सीरिया को धमकी दी, अमरीकी जहाज़ी बेड़ा सीरिया के किनरे पर आ धमका, सीरिया घबराया. कि इतने में रूसी जहाज़ी बेड़ा भी वहीं आ पहुँचा, अमरीकी मंसूबे कुछ देर के लिये ठंडे होगए. अब इज़रेल को हथियारों

اور قیمتی اپدیش دئے . ساتھ ہی پنجابی میں گندے سے گندے گانے بھی سیکڑوں سے لاہور اور امرتسر کی گلیوں میں گائے جا رہے ہیں اور آج تک گائے جاتے ہیں . سچ یہ ہے کہ دنیا کی کوئی بھاشا پاک ہے نہ ناپاک . نہ سنسکرت عربی سے زیادہ پاک اور نہ عربی سنسکرت سے زیادہ پاک، اور نہ اِن دونوں میں سے کوئی چینی، جاپانی، روسی، لاطینی، فرانسیسی یا دنیا کی کسی اور بھاشا سے پاک ہے . یا یوں کہئے کہ دنیا کی سب بھاشائیں ایک برابر پاک اور ایک برابر ناپاک ہیں . نہ کوئی بھاشا دیوتاؤں کی بھاشا ہے اور نہ کوئی بولی فرشتوں کی بولی ہے . بھاشائیں اور بولیاں سب آدمیوں کی بولیاں ہیں . کم یا ادھک سب میں اچھی چیزیں بھی ملیں گی اور بری چیزیں بھی . بھاشا کیول ایک سادھن ہے وچاروں کے آدان پردان کا . بھاشا کوئی دیوی یا دیوتا نہیں . جو بھاشا جس سمے جہاں جس حالت میں ہمیں سب سے اچھا کام دے وہی اس سمے کے لئے سب سے ادھک اُچت ہے . اِس طرح کے اندھ وشواس، یا مُڑ گراہ کسی بھی دیش یا قوم کو مٹا سکتے ہیں، اُن میں پھوٹ ڈال سکتے ہیں، انہیں برباد کر سکتے ہیں، پر اُن کی اُنتی یا وکاس میں سہایک نہیں ہو سکتے . یہ الگ بات ہے کہ کسی کو کسی بھاشا میں اپنے دھرم گرنتھ ہونے کے کارن یا اُس کے اپنی ماتر بھاشا ہونے کے کارن اُس سے وشیش پریم یا دلچسپی ہو . کسی دوسری بھاشا سے دویش کا کارن نہیں ہونی چاہئے . اِس طرح کی سب باتوں میں یہ اپنے دل پر جما لینا چاہئے کہ سب کی اُنتی اور سب کے بھلے میں ہی ہر ایک کا بھلا ہے .

دنیا کی انتر راشٹری استھتی سے جو آدمی کچھ بھی پریچت ہے وہ دیکھ سکتا ہے کہ دنیا اِس وقت ایک بہت بڑے سنکٹ میں سے نکل رہی ہے . جگہ جگہ وہ خطرناک مسالے جمع ہو رہے ہیں . اور بھینکر استھتیاں پیدا ہو رہی ہیں جو کسی سمے بھی کہیں بھی بھڑک کر ساری دنیا کی آزادی، خوشحالی اور اُس کے وجود تک کو خطرے میں ڈال سکتی ہے . کیول ایک مثال کافی ہو گی . حال میں سیریا یعنی شام کی سرکار کو ہتھیاروں کی ضرورت پڑی، اُنہوں نے امریکہ سے ہتھیار خریدنا چاہا، امریکہ نے بےتکی شرطیں پیش کر دیں . سیریا نے روس سے بات کی، روس نے بنا شرط سیریا کے ہاتھ ہتھیار بیچنا منظور کر لیا، ہتھیار خرید لئے گئے، امریکہ نے سیریا کو دھمکی دی، امریکی جہازی بیڑا سیریا کے کنارے پر آ دھمکا، سیریا گھبرایا، اتنے میں روسی جہازی بیڑا بھی وہاں آ پہنچا، امریکی منصوبے کچھ دیر کے لئے ٹھنڈے ہو گئے . اب اسرائل کو ہتھیاروں

बार दुहराना पड़ता था और सुनने वालों के आनन्द प्रदर्शन से हाल बार बार गूँज उठता था, इसी तरह का तजरबा हमें और भी अनेक बार हुआ है और हमें विश्वास है कि पंजाब के अन्दर और भी हजार और लाखों को हुआ होगा. पंजाबी एक जीवित भाषा है और बड़ी सुन्दर, प्यारी और धनाढ्य भाषा है.

पंजाब में आजकल एक "हिन्दी रक्षा समिति" है. सुना है उसकी ओर से कहा जाता है और प्रचार किया जाता है कि हिन्दुओं की भाषा हिन्दी है. यह कहना भी बहुत ही गलत और खतरनाक है. अगर हिन्दुओं की भाषा हिन्दी है तो यह तय करना पड़ेगा कि श्री राजगोपालाचारी हिन्दू कहे जा सकते हैं या नहीं. और स्वयं हिन्दू सभा के पिछले सदर श्री एन० सी० चैटरजी हिन्दू हैं या नहीं. कोई बड़े से बड़ा हिन्दुत्व-प्रेमी मदरासी या बंगाली या गुजराती या महाराष्ट्रीय हिन्दी को अपनी मातृ भाषा मानने को तैयार नहीं होगा. वह हिन्दी को भारत की राजभाषा या राष्ट्र भाषा मानने को तैयार हो सकता है पर अपनी मातृ भाषा पूरे गर्व के साथ उसी भाषा को कहेगा जो वह अपनी मां बहनों के साथ घर में बोलता है. भाषाएँ धर्मों की नहीं हुआ करतीं, भाषाएं इलाक़ों और देशों की होती हैं.

इस तरह की गलत फ़हमियों की जड़ में एक खास विचार यह काम करता हुआ मालूम होता है कि कोई भाषा पाक है और कोई नापाक. यह विचार भी बहुत ही गलत विचार है. हमारे एक मित्र जिन्हें उर्दू से कुछ नाराजगी है और जो संस्कृत के बड़े भक्त हैं एक बार हमसे कहने लगे कि उर्दू साहित्य और खास कर उरदू शायरी में अश्लीलता बहुत होती है. पर जब हमने इस विषय में संस्कृत साहित्य का उन्हें हाल बताया तो वह कुछ सोचने लगे. आज से पचपन बरस पहले हम बी० ए० में संस्कृत पढ़ते थे. महाकवि कालिदास रचित कुमार-सम्भव पढ़ाते पढ़ाते जगह जगह वह प्रसंग आ जाते थे. जहाँ हमारे महाराष्ट्र प्रोफेसर श्री रामचन्द्र हरि हरलिकर कुछ झेंपते हुए और कुछ मुसकराते हुए विद्यार्थियों से कह देते थे:—'इसे आप अपने मन ही मन में पढ़ लीजिये.' शायद कोई पिता अपनी पुत्री के सामने उन श्लोकों को पढ़कर उनका अर्थ नहीं कर सकता. हम नाम लेना नहीं चाहते, पर इससे भी कहीं अधिक अशलील साहित्य भी संस्कृत में भरा पड़ा है. इसी के साथ-साथ संस्कृत में वह साहित्य भी है जो दुनिया के ऊँचे-से-ऊँचे साहित्य में स्थान पा सकता है और पाता है. अरबी क़ुरान की भाषा है साथ ही अरबी के अंदर मुहम्मद साहब से पहले की और उनके बाद की अशलील से अशलील कविताएँ भी मिलेंगी. पंजाबी वह भाषा है जिसमें गुरु नानक ने अपने प्रेम भरे

بار دوهرانا پڑتا تها اور سننے والوں کے آنند پردرشن سے هال بار بار گونج اٹھا تها . اِسی طرح کا تجربہ همیں اور بهی انیک بار هوا هے اور همیں وشواس هے که پنجاب کے اور بهی هزاروں اور لاکهوں کو هوا هو گا . پنجابی ایک جیوت بهاشا هے اور بڑی سندر' پیاری اور دهنادهیه بهاشا هے .

پنجاب میں آجکل ایک "هندی رکشا سمیتی" هے . سنا هے اُس کی اور سے کہا جاتا هے اور پرچار کیا جاتا هے که هندؤں کی بهاشا هندی هے . یه کہنا بهی بہت غلط اور خطرناک هے . اگر هندؤں کی بهاشا هے تو یه طے کرنا پڑے گا که شری راج گوپالا آچاریه هندو کہے جا سکتے هیں یا نہیں' اور سویم هندو سبها کے پچهلے صدر شری این. سی. چٹر جی هندو هیں یا نہیں . کوئی بڑے سے بڑا هندتو پریمی مدراسی یا بنگالی یا گجراتی یا مہاراشٹری هندی کو اپنی ماترا بهاشا ماننے کو تیار نہیں هوگا . وہ هندی کو بهارت کی راج بهاشا یا راشٹر بهاشا ماننے کو تیار هو سکتا هے پر اپنی ماتر بهاشا پورے گرو کے ساتھ اُسی بهاشا کو کہے گا جو وہ اپنی ماں بہنوں کے ساتھ گهر میں بولتا هے . بهاشائیں دهرموں کی نہیں هوا کرتیں . بهاشائیں علاقوں اور دیشوں کی هوتی هیں .

اِس طرح کی غلط فہمیوں کی جڑ میں ایک خاص وچار یہ کام کرتا هوا معلوم هوتا هے که کوئی بهاشا پاک هے اور کوئی ناپاک . یه وچار بهی بہت غلط وچار هے . همارے ایک مترا جنہیں اردو سے کچھ ناراضگی هے اور جو سنسکرت کے بڑے بهگت هیں ایک بار هم سے کہنے لگے که اردو ساهت اور خاص کر اردو شاعری میں اشلیلتا بہت هوتی هے . پر جب هم نے اِس وشے میں سنسکرت ساهتیه کا اُنہیں حال بتایا تو وہ کچھ سوچنے لگے . آج سے پچپن برس پہلے هم بی. اے میں سنسکرت پڑهتے تهے . مہاکوی کالیداس رچت کمار سمبهو پڑهاتے پڑهاتے جگہه جگہه وہ پرسنگ آ جاتے تهے جہاں همارے مہاراشٹر پروفیسر شری رام چندر هری هرلیکر کچھ جهینپتے هوئے اور کچھ مسکراتے هوئے ودیارتهیوں سے کہه دیتے تهے:—"اِسے آپ اپنے من هی من میں پڑھ لیجئے" شاید کوئی پتا اپنی پتری کے سامنے اُن شلوکوں کو پڑھ کر اُن کا ارتھ نہیں کر سکتا . هم نام لینا نہیں چاهتے' پر اِس سے بهی کہیں ادهک اشلیل ساهتیه سنسکرت میں بهرا پڑا هے . اِسی کے ساتھ ساتھ سنسکرت میں وہ ساهتیه بهی هے جو دنیا کے اونچے سے اونچے ساهتیه میں استهان پا سکتا هے . عربی قرآن کی بهاشا هے . ساتھ هی عربی کے اندر محمد صاحب سے پہلے کی اور اُن کے بعد کی اشلیل سے اشلیل کویتائیں بهی ملیں گی . پنجابی وہ بهاشا هے جس میں گرونانک نے اپنے پریم بهرے

उसके यहाँ के सरकारी दफ़्तरों का काम हो. पर हम उस हिन्दू को नहीं समझ सकते जो अमृतसर या जालन्धर में जन्म लेकर अपनी मां बहनों के साथ पंजाबी बोलता है और अपनी मातृभाषा हिन्दी बताता है. मातृभाषा उस और केवल उस भाषा को कहते हैं जिसमें हमारी मां सब से पहले प्यार के साथ हमें तुतलाना सिखाती है. हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि जो अपनी मातृ भाषा से प्रेम नहीं रखता उसका किसी भी दूसरी भाषा के साथ प्रेम टिकाऊ या विश्वास की चीज़ नहीं हो सकता. हरियाना जैसे इलाके के लोग जो सचमुच हिन्दी बोलते हैं अगर हिन्दी में ही अपनी तालीम और अपना दफ़्तरी कारबर चाहते हैं तो उनकी बात समझ में आ सकती है.

यह कहना भी कि पंजाबी कोई भाषा नहीं, बल्कि केवल खड़ी बोली हिन्दी की ही एक डाइलेक्ट यानी 'उप भाषा, है, बिलकुल ग़लत और बेमानी है. डाइलेक्ट या उपभाषा की परिभाषा हम किसी भी कोष या भाषा विज्ञान की किसी भी प्रामाणिक पुस्तक में देख सकते हैं. भारत के विधान में देश की चौदह मुख्य भाषाएँ गिनाई गई हैं जिनमें से एक पंजाबी है. उप भाषाएँ भारत भर में ढाई सौ के लगभग हैं. जो आदमी पंजाब से कुछ भी परिचित हो वह जानता है कि पंजाबी की अपनी अनेक उपभाषाएँ हैं जो सब साफ़ साफ़ एक ही भाषा की अलग अलग शैलियाँ दिखाई देती हैं.

यह दलील कि पंजाबी का अपना कोई साहित्य नहीं और भी अधिक लचर दलील है, ग्रंथ साहब से बढ़कर ऊँचा और उपयोगी साहित्य और क्या हो सकता है? और अगर श्रृंगार रस की चीज़ें ही साहित्य मानी जाती हों तो "हीर रांझा" दुनिया के साहित्य में कम क़ीमत की चीज़ नहीं है. हमें मालूम है कि जरमनी के कई विश्व विद्यालयों में "हीर रांझा" ऊँची से ऊँची डिगरी के कोर्सों में पढ़ाया जाता था, और दुनिया के विश्वविद्यालयों में उसे आदर का स्थान मिला हुआ है.

आज़ादी से कुछ बरस पहले की बात है कि लाहौर के ब्रेडला हाल में एक बहुत बड़ा कवि सम्मेलन और मुशायरा हो रहा था. हम भी मौजूद थे. अनेक कवियों ने हिन्दी में अपनी रचनाएँ पढ़कर सुनाईं और अनेक शायरों ने उर्दू में अपनी नज़्में सुनाईं. ब्रेडला हाल श्रोताओं से ठसाठस भरा हुआ था. उर्दू और हिन्दी दोनों तरह की कविताएँ फीकी पड़ रही थीं, उनमें से कोई भी सुनने वालों के दिलों को चुभती हुई मालूम नहीं होती थी. इतने में अधेड़ उमर के एक मुसलमान कवि ने, जिनका तख़ल्लुस हमें आज तक याद है 'इश्क़ इलाही' था, पंजाबी में अपनी कविता पढ़ी और सारा हाल फड़क उठा. एक एक शेर को उन्हें बार

ہو اُس کے یہاں کے سرکاری دفتروں کا کام ہو، پر ہم اُس ہندو کو نہیں سمجھ سکتے جو امرتسر یا جالندھر میں جنم لے کر اپنی ماں بہنوں کے ساتھ پنجابی بولتا ہے اور اپنی ماتر بھاشا ہندی بتاتا ہے۔ ماتر بھاشا اُس اور کیول اُس بھاشا کو کہتے ہیں جس میں ہماری ماں سب سے پہلے پیار کے ساتھ ہمیں تتلانا سکھاتی ہے۔ ہم یہ کہے کے بنا نہیں رہ سکتے کہ جو اپنی ماتر بھاشا سے پریم نہیں رکھتا اُس کا کسی بھی دوسری بھاشا کے ساتھ پریم ٹکاؤ یا وشواس کی چیز نہیں ہو سکتا۔ ہریانا جیسے علاقے کے لوگ جو سچ مچ ہندی بولتے ہیں اگر ہندی میں ہی اپنی تعلیم اور اپنا دفتری کاربار چاہتے ہیں تو اُن کی بات سمجھ میں آسکتی ہے۔

یہ کہنا بھی کہ پنجابی کوئی بھاشا نہیں، بلکہ کیول کھڑی بولی ہندی کی ہی ایک ڈائیلیکٹ یعنی 'اُپ بھاشا' ہے، بالکل غلط اور بےایمانی ہے۔ ڈائیلیکٹ یا اُپ بھاشا کی کسی بھی پرمانک پستک میں دیکھ سکتے ہیں۔ بھارت کے ودھان میں دیش کی چودہ مکھیہ بھاشا گنائی گئیں ہیں، جن میں سے ایک پنجابی ہے۔ اُپ بھاشائیں بھارت بھر میں ڈھائی سو کے لگ بھگ ہیں۔ جو آدمی پنجاب سے کچھ بھی پرچت ہو وہ جانتا ہے کہ پنجابی کی اپنی انیک اُپ بھاشائیں ہیں جو سب صاف صاف ایک ہی بھاشا کی الگ الگ شیلیاں دکھائی دیتی ہیں۔

یہ دلیل کہ پنجابی کا کوئی اپنا ساہتیہ نہیں اور بھی ادھک لچر دلیل ہے۔ گرنتھ صاحب سے بڑھ کر اُونچا اور اُپیوگی ساہتیہ اور کیا ہو سکتا ہے؟ اور اگر شرنگار رس کی چیزیں ہی ساہتیہ مانی جاتی ہوں تو "ہیر رانجھا" دنیا کے ساہتیہ میں کم قیمت کی چیز نہیں ہے۔ ہمیں معلوم ہے کہ جرمنی کے کئی وشودیالوں میں "ہیررانجھا" اُونچی سے اُونچی ڈگری کے کورسوں میں پڑھایا جاتا تھا، اور آج بھی دنیا کے وشودیالوں میں اُسے آدر کا استھان ملا ہوا ہے۔

آزادی سے کچھ برس پہلے کی بات ہے کہ لاہور کے بریڈلا ہال میں ایک بہت بڑا کوی سمیلن اور مشاعرہ ہو رہا تھا۔ ہم بھی موجود تھے۔ انیک کویوں نے ہندی میں اپنی رچنائیں پڑھ کر سنائیں اور انیک شاعروں نے اردو میں اپنی نظمیں سنائیں۔ بریڈلا ہال شروتاؤں سے ٹھساٹھس بھرا ہوا تھا۔ اردو اور ہندی دونوں طرح کی کویتائیں پھیکی پڑ رہی تھیں۔ اُن میں سے کوئی بھی سننے والوں کے دلوں کو چبھتی ہوئی معلوم نہیں دیتی تھی۔ اتنے میں ادھیڑ عمر کے ایک مسلمان کوی نے، جن کا تخلص ہمیں آج تک یاد ہے 'عشق الہیٰ' تھا، پنجابی میں اپنی کویتائیں پڑھیں اور سارا ہال پھڑک اُٹھا۔ ایک ایک شعر کو اُنہیں بار

और अनिवार्य हैं. भलाई और बुराई भी सब में होती है. पर कोई इन्कार नहीं कर सकता कि आर्य समाज का इस देश के ऊपर बहुत बड़ा एहसान है. अनेक क्षेत्रों में उसके प्रचार और काम की देश को अब भी बड़ी जरूरत है. भाई घनश्याम सिंह गुप्त, जो आर्य सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष की हैसियत से पंजाब के इस हिन्दी आन्दोलन को चला रहे हैं, हमारे पचास बरस से ऊपर के घनिष्ट मित्रों में से हैं. उनकी नेकी और सचाई का हमारे दिल में बहुत बड़ा मान है.

हिन्दू सभा के नेता भाई परमानन्द के साथ बरसों हमारा गहरा सम्बन्ध रहा है. भाई सावरकर के साथ हमारा पत्र व्यवहार लोकमान्यतिलक की मार्फत सन् 1907 में उस समय हुआ था जब वह इंगलैन्ड में पढ़ रहे थे और वहीं बैठे बैठे देश की आजादी के सपने देख रहे थे. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक, गुरू गोलवलकर के गुरु, डक्टर हिडगेवार के साथ नागपुर में हमने बरसों गांधी जी के आन्दोलन में मिलकर काम किया है. उन दिनों के असहयोग आन्दोलन में डाक्टर हिडगेवार के शरीर का पुलिस की लाठियों से चूर चूर किया जाना हमें आज तक प्रेम और दर्द के साथ याद है.

जहाँ तक सिख धर्म का सम्बन्ध है हमने ग्रन्थ साहब को ध्यान और श्रद्धा के साथ पढ़ा है. हम अनेक बार कह चुके हैं और हमारे दिल में यह विश्वास जमा हुआ है कि यदि पंजाब ने गुरु नानक ही की शिक्षा पर अमल किया होता तो पंजाब में हिन्दू, मुसलिम, हिन्दू-सिख या किसी तरह के भी साम्प्रदायिक झगड़ों का हो सकना असम्भव होता और पंजाब आज साम्प्रदायिक मेल मिलाप की निगाह से सारे भारत का सरताज दिखाई देता.

हमारा दिल हरगिज यह मानने को तयार नहीं है कि किसी भी धर्म, दल या सम्प्रदाय का कोई भी भारतवासी जान बूझकर देश में फूट डालना चाहता है या देश के टुकड़े करना चाहता है. दोष दिलों का नहीं है. दोष केवल समझ का या देश की समस्याओं पर सोचने और उन्हें समझने के उन तरीकों का है जो आज़ादी से पहले के दो सौ बरस तक विदेशी शासक अपने तुच्छ स्वार्थ के लिये हमें सिखा ते पढ़ाते रहे.

इस तरह के झगड़ों में आम तौर पर कुछ न कुछ जिम्मेदारी दोनों तरफ़ की होती है. कुछ न कुछ सत्य भी दोनों तरफ़ होता ही है फिर भी मोटे तौर पर हम उस सिख को समझ सकते हैं जो अमृतसर या जालन्धर में रहकर अपनी मां बहनों के साथ पंजाबी बोलता है, पंजाबी को अपनी मातृभाषा, कहता है और चाहता है कि पंजाबी में ही उसके बच्चों की तालीम हो और पंजाबी में

مہت انیوار ھے ۔ بھلائی اور برائی بھی سب میں ھوتی ھے پر انکار کوئی نہیں کر سکتا کہ آریہ سماج کا اِس دیش کے اوپر بہت بڑا احسان ھے ۔ انیک چھیتروں میں اِس کے پرچار اور کام کی دیش کو اب بھی بڑی ضرورت ھے ۔ بھائی گھنشیام سنگھ گپت، جو آریہ سرودیشک سبھا کے ادھیکش کی حیثیت سے پنجاب کے اِس ھندی آندولن کو چلا رھے ھیں، ھمارے پچاس برس سے اُوپر کے گھنشٹھ متروں میں سے ھیں ۔ اُن کی نیکی اور سچائی کا ھمارے دل میں بہت بڑا مان ھے ۔

ھندو سبھا کے نیتا بھائی پرمانند کے ساتھ برسوں ھمارا گہرا سمبندھ رھا ھے ۔ بھائی ساورکر کے ساتھ ھمارا پتر ویوھار لوکمانیہ تلک کی معرفت سن 1907 میں اُس سمے ھوا تھا جب وہ انگلینڈ میں پڑھ رھے تھے اور وھیں بیٹھے بیٹھے دیش کی آزادی کے سپنے دیکھ رھے تھے ۔ راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کے سنستھاپک، گرو گول ولکر کے گرو، ڈاکٹر ھڈگوار کے ساتھ ناگپور میں ھم نے برسوں گاندھی جی کے آندولن میں مل کر کام کیا ھے ۔ اُن دنوں کے اسہیوگ آندولن میں ڈاکٹر ھڈگوار کے شریر کا پولیس کی لاٹھیوں سے چور چور کیا جانا ھمیں آج تک پریم اور درد کے ساتھ یاد ھے ۔

جہاں تک سکھ دھرم کا سمبندھ ھے ھم نے گرنتھ صاحب کو دھیان اور شردھا کے ساتھ پڑھا ھے ۔ ھم انیک بار کہہ چکے ھیں اور ھمارے دل میں یہ وشواس جما ھوا ھے کہ یدی پنجاب نے گرونانک ھی کی شکشا پر عمل کیا ھوتا تو پنجاب میں ھندو مسلم، ھندو سکھ یا کسی طرح کے بھی سامپردائک جھگڑوں کا ھو سکنا اسمبھو ھوتا اور پنجاب آج سامپردائک میل ملاپ کی نگاہ سے سارے بھارت کا سرتاج دکھائی دیتا ۔

ھمارا دل ھرگز یہ ماننے کو تیار نہیں ھے کہ کسی بھی دھرم، دل یا سامپردائے کا کوئی بھی بھارت واسی جان بوجھ کر دیش میں پھوٹ ڈالنا چاھتا ھے یا دیش کے ٹکڑے کرنا چاھتا ھے ۔ دوش دلوں کا نہیں ھے دوش کیول سمجھ کا یا دیش کی سمسیاؤں پر سوچنے اور انہیں سمجھنے کے اُن طریقوں کا ھے جو آزادی سے پہلے کے دو سو برس تک ودیشی شاسک اپنے تچھ سوارتھ کے لئے ھمیں سکھاتے پڑھاتے رھے ۔

اِس طرح کے جھگڑوں میں عام طور پر کچھ کچھ ذمہ داری دونوں طرف کی ھوتی ھے ۔ کچھ نہ کچھ ستیہ بھی دونوں طرف ھوتا ھی ھے ۔ پھر بھی موٹے طور پر ھم اُس سکھ کو سمجھ سکتے ھیں جو امرتسر یا جالندھر میں رہ کر اپنی ماں بہنوں کے ساتھ پنجابی بولتا ھے ۔ پنجابی کو اپنی ماتر بھاشا کہتا ھے اور چاھتا ھے کہ پنجابی میں

हिन्दी और पंजाबीका झगड़ा

पंजाब में हिन्दी और पंजाबी का झगड़ा काफ़ी ज़ोरों के साथ चल रहा है. आम तौर पर वहाँ के हिन्दू हिन्दी के तरफ़दार हैं और सिख पंजाबी के. इस तरह इस झगड़े ने हिन्दू सिख वैमनस्य का रूप ले लिया है. मामला यहाँ तक बढ़ चुका है कि कहीं कहीं शहरों में दोनों दलों के जुलूस निकलते हैं जिनमें सिखों के तरफ़ से "टोपी धोती जमना पार." और हिन्दुओं की तरफ़ से "कैंची उस्तरा है तैयार." के नारे तक बुलन्द किये जाते हैं. कहीं कहीं इससे भी अधिक शर्मनाक और दर्दनाक घटनाएँ हो चुकी हैं. जिन्हें इतिहास जितनी जल्दी जल्दी भूल जावे उतना ही अच्छा है. यदि हालत इसी तरह जारी रहा और वैमनस्य बढ़ता गया तो डर है कि देश के और अधिक टुकड़े करने पड़ जावें और आबादी के तबादले. .खून ख़राबा और तरह तरह के पापों के वही दृश्य फिर देखने पड़ें जो सन् 47 में देखने पड़े थे. आजकल की अन्तर राष्ट्रीय स्थिति में देश इज्ज़त की, स्वाधीनता और सुरक्षा पर इसका कितना बुरा असर पड़ सकता है यह सोचने की चीज़ है. कुछ नेक लोगों की तरफ़ से मेल और समझौते की कोशिशें भी जारी हैं.

इस सारे घरेलू झगड़े में कुछ संस्थाओं और दलों के नाम ख़ास तौर पर सामने आ रहे हैं, जैसे आर्य समाज, हिन्दू महासभा और जनसंघ, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, अकाली दल, कुछ असन्तुष्ट अथवा साम्प्रदायिक दृष्टि-कोण वाले कांग्रेसी इत्यादि. ख़बर है कि कुछ विदेशी साम्राज्य प्रेमी भी कुछ देशी पूँजी पतियों की मारफ़त, हमारे इस घरेलू झगड़े में दिलचस्पी ले रहे हैं.

विचारों या आदर्शों का मतभेद एक अलग चीज़ है. ग़लत विचारों या ग़लत आदर्शों पर चलने की कोशिश कर के क़ौमें मिट भी सकती हैं और मिट चुकी हैं पर हम यह नहीं मानते कि देश का कोई भी दल या कोई भी व्यक्ति जान बूझकर देश में फूट डालने और देशवासियों को एक दूसरे से लड़ाने की कोशिश करेगा. आर्य समाज के साथ हमारा साठ बरस का गहरा सम्बन्ध है. बरसों हमने लाहौर के दयानन्द ऐंगलो वैदिक कालिज में शिक्षा पाई है. वहीं से हमने सन् 1905 में बी० ए० किया था. महात्मा हंसराज के चरणों में बैठकर हम पढ़े हैं. लाला लाजपत राय के साथ हमारा घनिष्ट सम्बन्ध रहा है स्वामी श्रद्धानन्द का भी हमें प्रेम प्राप्त रहा है. देश भक्ति और देश-सेवा के सबसे पहले पाठ हमने आर्य समाज ही की गोद में पढ़े हैं. व्यक्तियों की तरह संस्थाओं और सोसाइटियों की भी उमरें होती हैं, उनका भी जन्म, जवानी, बुढ़ापा और

ہندی اور پنجابی کا جھگڑا

پنجاب میں ہندی اور پنجابی کا جھگڑا کافی زوروں سے چل رہا ہے ۔ عام طور پر وہاں کے ہندو ہندی کے طرفدار ہیں اور سکھ پنجابی کے ۔ اس طرح اس جھگڑے نے ہندو سکھ ویمنسیہ کا روپ لے لیا ہے۔ معاملہ یہاں تک بڑھ چکا ہے کہ کہیں کہیں شہروں میں دونوں دلوں کے جلوس نکلتے ہیں جن میں سکھوں کی طرف سے "ٹوپی دھوتی جمنا پار" اور ہندوؤں کی طرف سے "قینچی اُسترا ہے تیار !" کے نارے تک بلند کئے جاتے ہیں ۔ کہیں کہیں اس سے بھی ادھک شرمناک اور دردناک گھٹنائیں ہو چکی ہیں، جنہیں اتہاس جتنی جلد بھول جاوے اتنا ہی اچھا ہے ۔ یدی یہ حالت اسی طرح جاری رہی اور ویمنسیہ بڑھتا گیا تو ڈر ہے کہ دیش کے اور ادھک ٹکڑے کرنے پڑ جاویں اور آبادی کے تبادلے، خون خرابہ اور طرح طرح کے پاپوں کے وہی درش پھر دیکھنے پڑیں جو سن 47' میں دیکھنے پڑے تھے ۔ آج کل کی انترراشٹریہ استھتی میں دیش کی عزت، سوادھینتا اور سورکشا اس کا کتنا برا اثر پڑ سکتا ہے یہ سوچنے کی چیز ہے ۔ کچھ نیک لوگوں کی طرف سے میل اور سمجھوتے کی کوشش بھی جاری ہیں ۔

اس سارے گھریلو جھگڑے میں کچھ سنستھاؤں اور دلوں کے نام خاص طور پر سامنے آ رہے ہیں، جیسے آریہ سماج، ہندو مہاسبھا اور جن سنگھ، راشٹریہ سیوک سنگھ، اکالی دل، کچھ اسنتشٹ اتھوا سامپردائک درشٹی کون والے کانگریسی اتیادی ۔ خبر ہے کہ کچھ ودیشی سامراج پریمی بھی، کچھ دیشی پونجی پتیوں کے معرفت، ہمارے اس گھریلو جھگڑے میں دلچسپی لے رہے ہیں ۔

وچاروں یا آدرشوں کا مت بھید ایک الگ چیز ہے ۔ غلط وچاروں یا غلط آدرشوں پر چلنے کی کوشش کر کے قومیں مٹ بھی سکتی ہیں اور مٹ چکی ہیں ۔ پر ہم یہ نہیں مانتے کہ دیش کا کوئی بھی دل یا کوئی بھی ویکتی جان بوجھ کر دیش میں پھوٹ ڈالنے اور دیش واسیوں کو ایک دوسرے سے لڑانے کی کوشش کرے گا ۔ آریہ سماج کے ساتھ ہمارا ساٹھ برس کا گہرا سمبندھ ہے ۔ برسوں ہم نے لاہور کے دیانند اینگلو ویدک کالج میں شکشا پائی ہے ۔ وہیں سے ہم نے سن 1905 میں بی۔ اے۔ کیا ہے ۔ مہاتما ہنسراج کے چرنوں میں بیٹھ کر ہم پڑھے ہیں ۔ لالہ لاجپت رائے کے ساتھ ہمارا گھنشٹ سمبندھ رہا ہے ۔ شوامی شردھا نند کا بھی ہمیں پریم پراپت رہا ہے ۔ دیش بھکتی اور دیش سیوا کے سب سے پہلے پاٹھ ہم نے آریہ سماج ہی کی گود میں پڑھے ہیں ۔ ویکتیوں کی طرح سنستھاؤں اور سوسائٹیوں کی بھی عمریں ہوتی ہیں، اُن کا بھی جنم، جوانی، بڑھاپا اور

रूस सीरिया के हाथ बिना शर्त हथियार बेचने को तैयार हो गया. हथियार रूस से खरीद लिये गए. इस पर अमरीका ने तरह तरह से एतराज़ किया. सीरिया एक आज़ाद देश है. उसने जो कुछ किया उसका उसे पूरा अधिकार था. किसी बाहर की ताक़त को उसमें दखल देने का हक़ नहीं पहुँचता. फिर भी अमरीका का छठे नम्बर फ़ौजी जहाज़ी बेड़ा सीरिया के किनारे पर आ धमका. सीरिया को खतरा हुआ. बेजा शर्तें सीरिया की सरकार के सामने पेश की जाने लगीं जिन्हें मानने से सीरिया ने फिर इनकार कर दिया. रूस को खबर लगी. सीरिया की इजाज़त से एक रूसी बेड़ा भी उसी जगह पहुँच गया. इन पंक्तियों को लिखते समय मामला शायद यहीं पर अटका हुआ है. यू. एन. ओ. में भी सीरिया के मामले पर बहस हो रही है. सीरिया इस समय दुनिया के नाज़ुक से नाज़ुक स्थानों में से है. पर सीरिया के लोग बहादुर हैं, देश-भक्त हैं और सचाई और इनसाफ़ उनकी तरफ़ है. सारे अरब देशों और अरब क़ौम की उनके साथ हमदर्दी है. अन्त में इस मामले में सीरिया का सर ऊँचा रहेगा, इसमें हमें कोई शक नहीं हो सकता.

हमारा अनुभव यह है कि दुनिया के सब देश अन्त में समझदारी से काम लेंगे और दुनिया बरबादी से बची रहेगी. यह हमारी और दुनिया की जनता की हार्दिक इच्छा भी है. किन्तु हमारे अनुमानों के विरुद्ध कब कहाँ क्या हो जावे यह शायद कोई नहीं कह सकता. अच्छी से-अच्छी आशा करते हुए भी और दिल से सब का भला चाहते हुए भी हमें हर आज़मायश के लिये तैयार रहना चाहिये.

हमें पूरा विश्वास है कि यदि रूस के बाईस करोड़ लोग, चीन की साठ करोड़ जनता, भारत की चालीस करोड़ जनसंख्या और एशिया और अफ़्रीका के आज़ाद देश, जिनकी सब आबादी पृथ्वी की कुल आबादी के आधे से कहीं अधिक होती है, एकता, प्रेम और सचाई के साथ मिलकर खड़े हों और मिलकर खड़े रहें तो साम्राज्यवाद, युद्धवाद और पूँजीवाद के यह काले काले बादल छटे बग़ैर नहीं रह सकते. हमारे इस एके के सामने ऐटम और हाइड्रोजिन बमों के अम्बार पानी होते हुए दिखाई देंगे. दुनिया का भविष्य हमारे इसी एके पर निर्भर है. यही आज समय की सब से बड़ी माँग है.

3-10-57 —सुन्दरलाल

روس سیریا کے ھاتھ بنا شرط ھتھیار بیچنے کے لئے تیار ھوگیا۔ ھتھیار روس سے خرید لئے گئے۔ اِس پر امریکہ نے طرح طرح سے اعتراض کیا۔ سیریا ایک آزاد دیش ھے۔ اُس نے جو کچھ کیا اُس کا اُسے پورا ادھیکار تھا۔ کسی باھر کی طاقت کو اُس میں دخل دینے کا حق نہیں پہنچتا۔ پھر بھی امریکہ کا چھ نمبر فوجی جہازی بیڑا سیریا کے کنارے پر آدھمکا۔ سیریا کو خطرہ ھوا۔ بیجا شرطیں سیریا کی سرکار کے سامنے پیش کی جانے لگیں جنھیں ماننے سے سیریا نے پھر انکار کردیا۔ روس کو خبر لگی۔ سیریا کی اجازت سے ایک روسی بیڑا بھی اُسی جگہ پہنچ گیا۔ اِن پنکتیوں کو لکھتے سمے معاملہ شاید یہیں پر اٹکا ھوا ھے۔ یو۔ این۔ او۔ میں بھی سیریا کے معاملہ پر بحث ھو رھی ھے۔ سیریا اِس سمے دنیا کے نازک سے نازک استھانوں میں سے ھے۔ پر سیریا کے لوگ بہادر ھیں، دیش بھکت ھیں اور سچائی اور انصاف اُن کی طرف ھے۔ سارے عرب دیشوں اور عرب قوم کی اُن کے ساتھ ھمدردی ھے۔ انت میں اِس معاملے میں سیریا کا سر اونچا رھے گا۔ اِس میں ھمیں کوئی شک نہیں ھوسکتا۔

ھمارا انوبھو یہ ھے کہ دنیا کے سب دیش انت میں سمجھداری سے کام لیں گے اور دنیا بربادی سے بچی رھے گی۔ یہ ھماری اور دنیا کی جنتا کی ھاردک اچھا بھی ھے۔ مگر ھمارے انومانوں کے ورودھ کب کہاں کیا ھو جائے یہ شاید کوئی نہیں کہہ سکتا۔ اچھی سے اچھی آشا کرتے ہوئے بھی اور دل سے سب کا بھلا چاہتے ہوئے بھی ھمیں ھر آزمائش کے لئے تیار رھنا چاھئے۔

ھمیں پورا وشواس ھے کہ یدی روس کے بائیس کروڑ لوگ، چین کی ساٹھ کروڑ جنتا، بھارت کی چالیس کروڑ جن سنکھیا اور ایشیا اور افریکہ کے آزاد دیش، جن سب کی آبادی پرتھوی کی کل آبادی کے آدھے سے کہیں ادھک ھوتی ھے، ایکتا، پریم اور سچائی کے ساتھ مل کر کھڑے ھوں اور مل کر کھڑے رھیں تو سامراج واد، یدھ واد اور پونجی واد کے یہ کالے کالے بادل چھٹے بغیر نہیں رہ سکتے۔ ھمارے اِس ایکتا کے سامنے ایٹم اور ھائیڈروجن بموں کے انبار پانی ھوتے ہوئے دکھائی دیں گے۔ دنیا کا بھوشیہ ھمارے اِس ایک پر نربھر ھے۔ یہی آج سمے کی سب سے بڑی مانگ ھے۔

—سندر لال 3. .10 57

हमारा ध्यान इस तरफ़ भी जाए बिना नहीं रह सकता कि एशिया के सब से ऊपर रूस, उसके नीचे और उससे मिला हुआ चीन, उसके नीचे और उससे मिला हुआ भारत, और इनके इधर-उधर और सब छोटे बड़े देश हैं. यह सब ख़तरनाक अम्बार अधिकतर कहा जाता है कि रूस के ख़िलाफ़ जमा किये जा रहे हैं. पर यदि कभी यह आग भड़की, या कभी यह फन्दा कसा, तो भारत इसका सहज शिकार हो सकता है. यह भी मानी हुई बात है कि इन घातक हथियारों का असर बहुत दूर-दूर तक जाता है और प्रायः कोई भी देश इनके ख़तरे से नहीं बच सकता. जो तजरबे आजकल किये जा रहे हैं उनकी बाबत भी कहा जाता है कि उनका ज़हरीला माद्दा दो घंटे के अंदर सारी धरती का चक्कर लगा जाता है.

भारत न रूसी गुट में है और न अमरीकी में. वह ईमानदारी के साथ इस गुटबन्दी से अलग, तटस्थ और ग़ैर जानिबदार है और ग़ैर जानिबदार ही रहना चाहता है. वह अमरीका, इंगलैंड, फ्रांस, रूस, चीन, जापान और दुनिया के सब देशों के साथ दोस्ती निबाहना चाहता है. पर ऊपर का चित्र यह साफ़ दरशा देता है कि रूस, चीन, भारत और एशिया के लगभग सब देश, यहाँ तक कि पूरब और उत्तर अफ़रीक़ा के देश भी एक कराती के अन्दर हैं. मालूम होता है कि ये सब तरेंगे तो साथ और डूबेंगे तो साथ.

हम यह भी नहीं भूल सकते कि स्वेज़ नहर के ऊपर से इंगलैंड और फ्रांस की फ़ौजें उस समय हटीं जब रूसी सरकार ने हमला करने वालों को यह साफ़-साफ़ आगाह कर दिया कि यदि और अधिक देर तक हमला करने वाले पीछे न हटे तो रूस मिस्र की रक्षा के लिये क़दम बढ़ाने पर मजबूर हो जायगा. बहादुर प्रेज़ीडेन्ट नासिर को इन संकट के समय सबसे बड़ा सहारा रूस ही का मिला. कशमीर के ऊपर अगर अभी तक आग भड़कने से रुकी हुई है तो इसका कम-से-कम एक कारण यह भी ज़रूर है कि रूसी नेता ख़ुरुशचेव जब कशमीर गये थे तो उन्हों ने कशमीरियों से कहा था कि यदि कोई अचानक आफ़त आ जावे तो पास की पहाड़ी पर से खड़े होकर हमें आवाज़ दे देना हम आ जाएँगे. रूस के लिये यह क़ुदरती और लाज़मी भी है. रूस के कुछ बड़े-से-बड़े कारख़ाने कशमीर की सरहद से थोड़ी ही दूर पर हैं.

हाल में अरब देश सीरिया ने जिसे 'शाम' भी कहते हैं, कुछ हथियार ख़रीदना चाहा. सीरिया की सरकार ने अमरीका से बात की. अमरीकी सरकार ने हथियार बेचने के लिये बेजा और शरारत भरी शरतें लगाईं. सीरिया की सरकार ने मानने से इंकार किया. उन्होंने रूस से बात की.

ہمارا دھیان اِس طرف بھی جائے بنا نہیں رہ سکتا کہ ایشیا کے سب سے اُوپر روس، اِس کے نیچے اور اُس سے ملا ہوا چین، اُس کے نیچے اور اُس سے ملا ہوا بھارت، اور ان کے اِدھر اُدھر اور سب چھوٹے بڑے دیش ہیں ۔ یہ سب خطرناک انبار ادھکتر کہا جاتا ہے کہ روس کے خلاف جمع کئے جا رہے ہیں ۔ پر یدی کبھی آگ بھڑکی، یا کبھی یہ پھندا کسا، تو بھارت اِس کا سہج شکار ہو سکتا ہے ۔ یہ بھی مانی ہوئی بات ہے کہ ان گھاتک ہتھیاروں کا اثر بہت دور دور تک جاتا ہے اور پرائے کوئی بھی دیش اِن کے خطرے سے نہیں بچ سکتا ۔ جو تجربے آجکل کئے جا رہے ہیں اُن کی بابت بھی کہا جاتا ہے کہ اُن کا زہریلا مادہ دو گھنٹے کے اندر ساری دھرتی کا چکر لگا جاتا ہے ۔

بھارت نہ روسی گٹ میں ہے اور نہ امریکی میں ۔ وہ ایمانداری کے ساتھ اِس گٹ بندی سے الگ تٹستھ اور غیر جانب دار ہے اور غیر جانبدار ہی رہنا چاہتا ہے ۔ وہ امریکہ، انگلینڈ، فرانس، روس، چین، جاپان اور دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ دوستی نبھانا چاہتا ہے ۔ پر اوپر کا چتر یہ صاف درشا دیتا ہے کہ روس، چین، بھارت اور ایشیا کے لگ بھگ سب دیش، یہاں تک کہ پورب اور اتر افریقہ کے دیش بھی ایک کشتی کے اندر ہیں ۔ معلوم ہوتا ہے کہ سب تیرینگے تو ساتھ اور ڈوبیں گے تو ساتھ ۔

ہم یہ بھی نہیں بھول سکتے کہ سویز نہر کے اوپر سے انگلینڈ اور فرانس کی فوجیں اُس سمے ہٹیں جب روسی سرکار نے حملہ کرنے والوں کو یہ صاف صاف آگاہ کر دیا کہ یدی اور ادھک دیر تک حملہ کرنے والے پیچھے نہ ہٹے تو روس مصر کی رکشا کے لیئے قدم بڑھانے پر مجبور ہو جائیگا ۔ بہادر پریزیڈنٹ ناصر کو عین سنکٹ کے سمے سب سے بڑا سہارا روس ہی کا ملا ۔ کشمیر کے اوپر اگر ابھی تک آگ بھڑکنے سے رکی ہوئی ہے تو اِس کا کم سے کم ایک کارن یہ بھی ضرور ہے کہ روسی نیتا خرشچیو جب کشمیر گئے تھے تو انہوں نے کشمیریوں سے کہا تھا کہ یدی کوئی اچانک آپتی آجاوے تو پاس کی پہاڑی پر کھڑے ہوکر ہمیں آواز دے لینا ہم آجائیں گے ۔ روس کے لیئے یہ قدرتی اور لازمی بھی ہے ۔ روس کے کچھ بڑے سے بڑے کارخانے کشمیر کی سرحد سے تھوڑی ہی دور پر ہیں ۔

حال میں عرب دیش سیریا نے جیسے 'شام' بھی کہتے ہیں، کچھ ہتھیار خریدنا چاہا ۔ سیریا کی سرکار نے امریکہ سے بات کی ۔ امریکی سرکار نے ہتھیار بیچنے کے لئیے بیجا اور شرارت بھری شرطیں لگائیں ۔ سیریا کی سرکار نے ماننے سے انکار کیا ۔ انہوں نے روس سے بات کی ۔

इस मौक़े पर हम अमरीका के उन बहादुर सत्याग्रहियों की ओर अपनी श्रद्धा और अपना प्रेम फिर से प्रगट किये बिना नहीं रह सकते जो अपनी ही सरकार के इस तरह के तजरबों के विरुद्ध सत्याग्रह करके आए दिन गिरफ़्तार किये जा रहे हैं और अपनी जानें तक जोखम में डाल रहे हैं. इंगलैन्ड के अन्दर भी बहुत से लोग अपनी सरकार के इस तरह के तजरबों के ख़िलाफ़ तरह तरह से आन्दोलन कर के सच्ची बहादुरी, सत्य निष्ठा और मानव प्रेम का सबूत दे रहे हैं.

एशिया महाद्वीप के उत्तर में अनन्त और अगम्य बरफ़ के पहाड़ हैं. बाक़ी तीन तरफ़ समन्दर है या योरप की सरहद. इन तीनों तरफ़ अमरीका की तरफ़ से जगह जगह ऐटम और हाइड्रोजिन बमों के अम्बार लगाए जा रहे हैं. ओकीनावा जापान का एक बड़ा टापू है जिसके आस पास उसी सिलसिले के कुछ और छोटे छोटे टापू हैं. ओकीनावा पर शुद्ध अमरीकी क़ब्ज़ा और अमरीकी हकूमत है. ओकीनावा में अमरीका की तरफ़ से ऐटम और हाइड्रोजिन बमों का अम्बार जमा है और बढ़ाया जा रहा है. ओकीनावा से ज़रा हटकर दक्खिन कोरिया में अमरीका की तरफ़ से इसी तरह के हिंसक हथियारों का दूसरा अम्बार जमा है. कुछ और नीचे उतर कर ताइवान यानी फ़ारमोसा के टापू में भी — जहाँ देश घातक च्यांग-काई-शेक अमरीकी संगीनों के बल अभी तक नए जनवादी चीन की छाती पर तीर की तरह डटा हुआ है — अमरीका की तरफ़ से ऐटम और हाइड्रोजिन बमों का एक बहुत बड़ा अम्बार जमा है. और नीचे उतर कर इसी तरह का एक अमरीकी अम्बार दक्खिन वीतनाम में जमा है. और अधिक दक्खिन के उन अम्बारों को छोड़ कर जो उन देशों में हैं जो अमरीका और इंगलैन्ड के साथियों में गिने जाते हैं, पाकिस्तान में भी, भारत की ठीक उत्तर-पच्छमी सरहद पर अमरीका के टैकनिकल न्युक्लीयर हथियारों का अम्बार जमा है. और अधिक पच्छिम और फिर उत्तर की तरफ़ चलते हुए इसी तरह के अम्बार इसराइल, पच्छिम-जरमनी वग़ैरह में जमा किये जा रहे हैं.

यदि हम दुनिया के नक़शे की तरफ़ निगाह डालें तो यह सब अम्बार एशिया के तीनों तरफ़ एशिया के गले में एक ज़बरदस्त और घातक फंदे की तरह हैं. हो सकता है और आशा की जाती है कि दुनिया के साम्राज्य प्रेमी देशों की सरकारों को अब भी होश आ जावे और वे दुनिया का सर्वनाश करने से बचे रहें. पर हद दरजे ख़तरनाक मसाला सब तरफ़ जमा है. कौन कह सकता है कि कब कहाँ किसी एक की छोटी सी भूल या शरारत से इस मसाले में किसी तरह चिंगारी न पड़ जावे जो सारी दुनिया को और ख़ासकर सारे एशिया को अपने लपेटे में ले ले ?

اِس موقع پر ہم امریکہ کے اُن بہادر ستیاگرہیوں کی اور اپنی شردھا اور اپنا پریم پھر سے پرگٹ کئے بنا نہیں رہ سکتے جو اپنی ہی سرکار کے اِس طرح کے تجربوں کے ورُدھ ستیاگرہ کر کے آئے دن گرفتار کئے جا رہے ہیں اور اپنی جانیں تک جوکھم میں ڈال رہے ہیں ۔ انگلینڈ کے اندر بھی بہت سے لوگ اپنی سرکار کے اِس طرح کے تجربوں کے خلاف طرح طرح سے آندولن کر کے سچی بہادری، ستیہ نشٹھا اور مانو پریم کا ثبوت دے رہے ہیں ۔

ایشیا مہادیپ کے اُتر میں اننت اور اگمیہ برف کے پہاڑ ہیں ۔ باقی تین طرف سمندر ہے یا یورپ کی سرحد ۔ اِن تینوں طرف امریکہ کی طرف سے جگہہ جگہہ ایٹم اور ہائڈروجن بموں کے امبار لگائے جا رہے ہیں۔ اوکی ناوا جاپان کا ایک بڑا ٹاپو ہے جس کے آس پاس اُسی سلسلے کے کچھ اور چھوٹے چھوٹے ٹاپو ہیں ۔ اوکی ناوا پر شدھ امریکی قبضہ اور امریکی حکومت ہے ۔ اوکی ناوا میں امریکہ کی طرف سے ایٹم اور ہائڈروجن بموں کا امبار جمع ہے اور بڑھایا جا رہا ہے ۔ اوکی ناوا سے ذرا ہٹ کر دکھن کوریا میں امریکہ کی طرف سے اِسی طرح کے ہنسک ہتھیار کا دوسرا امبار جمع ہے ۔ کچھ اور نیچے اتر کر تائیوان یعنی فارموسا کے ٹاپو میں بھی—جہاں دیش گھاتک چیانگ کائی شیک امریکی سنگینوں کے بل ابھی تک نئے جن وادی چین کی چھاتی پر تیر کی طرح اَڑا ہوا ہے—امریکہ کی طرف سے ایٹم اور ہائڈروجن بموں کا ایک بہت بڑا امبار جمع ہے ۔ اور نیچے اتر کر اِسی طرح کا ایک امریکی امبار دکھن ویتنام میں جمع ہے ۔ اور ادھک دکھن کے اُن امباروں کو چھوڑ کر جو اُن دیشوں میں ہیں جو امریکہ اور انگلینڈ کے ساتھیوں میں گنے جاتے ہیں، پاکستان میں بھی، بھارت کی ٹھیک اتر پچھم سرحد پر امریکہ کے ٹیکنیکل نیوکلیر ہتھیاروں کا امبار جمع ہے ۔ اور ادھک پچھم اور پھر اُتر کی طرف چلتے ہوئے اِسی طرح کے امبار اسرائل، پچھمی جرمنی وغیرہ میں جمع کئے جا رہے ہیں ۔

یدی ہم دنیا کے نقشہ کی طرف نگاہ ڈالیں تو یہ سب امبار ایشیا کے تینوں طرف ایشیا کے گلے میں ایک زبردست اور گھاتک پھندے کی طرح ہے ۔ ہو سکتا ہے اور آشا کی جاتی ہے کہ دنیا کے سامراج پریمی دیشوں کی سرکاروں کو اب بھی ہوش آ جاوے اور وے دنیا کا سروناش کرنے سے بچے رہیں ۔ پر حد درجے خطرناک مصالحہ سب طرف جمع ہے۔ کون کہہ سکتا ہے کہ کب کہاں کسی ایک کی چھوٹی سی بھول یا شرارت سے اِس مصالحہ میں کسی طرح چنگاری نہ پڑ جاوے جو ساری دنیا کو اور خاص کر سارے ایشیا کو اپنے لپیٹ میں لے لے ؟

हमारी राय / ہماری رائے

एशिया के गले में फंदा

लगभग सारे संसार की जनता, जिसमें पाँचों महाद्वीपों और सब देशों के लोग शामिल हैं, एक आवाज़ से यह मांग कर चुकी है, करती रही है और कर रही है कि न्युक्लीयर और थर्मो न्युक्लीयर हथियारों यानी ऐटम और हाइड्रोजिन बमों के तजरबे बन्द किये जावें. दुनिया के सैकड़ों बड़े से बड़े साइन्सदाँ, जिनमें अमरीका के बड़े से बड़े साइन्सदाँ शामिल हैं, साफ़ साफ़ कह रहे हैं कि इन तजरबों से मानव जाति की तन्दुरुस्ती को बहुत सख्त नुक़सान पहुँच रहा है, इनफ्लुएंजा और दूसरी इसी तरह की महामारियां जो आजकल जगह जगह फैल रही हैं इन तजरबों ही का नतीजा हैं, और अगर यह तजरबे कुछ दिनों और जारी रह गए तो इनका सबसे खतरनाक प्रभाव सारी मानवजाति की जननेन्द्रियों पर पड़ेगा, जिसके नतीजे की शकल में हो सकता है कि सैकड़ों बरस तक बहुत से इनसानी बच्चे अजीब अजीब शकलों के अजीब-अजीब और तरह-तरह के अंगों वाले, यहाँ तक कि आधे इनसान और आधे जानवर पैदा हों. फिर भी अमरीका, रूस और इंगलैन्ड तीनों की तरफ़ से हाइड्रोजिन बमों के नित नए तजरबे आए दिन होते रहते हैं, जिनकी खबरें दुनिया भर के अखबारों में छपती रहती हैं.

रूस के शासक बार बार यह कह चुके हैं कि अगर अमरीका और इंगलैंड इस तरह के तजरबे बन्द करदें तो रूस भी इन्हें फौरन बन्द करने को तैयार है. रूस. सरकार की तरफ़ से यह प्रस्ताव भी यू० एन० ओ० के सामने पेश है, पर अमरीका किसी तरह हामी भरने को तैयार नहीं. यू० एन० ओ० या उसकी कमेटियों के सामने जब कभी इस तरह के प्रस्ताव आते हैं अमरीका और इंगलैण्ड हज़ार तरह से अड़ंगे लगाकर उन्हें टालते रहते हैं, इस तरह के प्रस्ताव इस समय भी यू० एन० ओ० के सामने पेश हैं.

ایشیا کے گلے میں پھندا

لگ بھگ سارے سنسار کی جنتا، جس میں پانچوں مہادیپوں اور سب دیشوں کے لوگ شامل ہیں، ایک آواز سے یہ مانگ کر چکی ہے، کرتی رہی ہے اور کر رہی ہے کہ نیوکلیر اور تھرمو نیوکلیر ہتھیار یعنی ایٹم اور ہائڈروجن بموں کے تجربے بند کئے جاویں۔ دنیا کے سیکڑوں بڑے سے بڑے سائنسدانوں، جن میں امریکہ کے بڑے سے بڑے سائنسداں شامل ہیں، صاف صاف کہہ رہے ہیں کہ اِن تجربوں سے مانو جاتی کی تندرستی کو سخت نقصان پہنچ رہا ہے، انفلوئنزا اور دوسری اِسی طرح کی مہاماریاں جو آجکل جگہہ جگہہ پھیل رہی ہیں اِن تجربوں ہی کا نتیجہ ہے، اور اگر یہ تجربے کچھ دنوں اور جاری رہ گئے تو اِن کا سب سے خطرناک پربھاؤ ساری مانو جاتی کی جنیندریوں پر پڑے گا، جس کے نتیجے کی شکل میں ہو سکتا ہے کہ سیکڑوں برس تک بہت سے اِنسانی بچے عجیب عجیب شکلوں کے، عجیب عجیب اور طرح طرح کی انگوں والے، یہاں تک کہ آدھے اِنسان اور آدھے جانور، پیدا ہوں۔ پھر بھی امریکہ، روس اور انگلینڈ تینوں کی طرف سے ہائڈروجن بموں کے نت نئے تجربے آئے دن ہوتے رہتے ہیں۔

روس کے شاسک بار بار یہ کہہ چکے ہیں کہ اگر امریکہ اور انگلینڈ اِس طرح کے تجربے بند کر دیں تو روس بھی اِنہیں فوراً بند کرنے کو تیار ہے۔ روسی سرکار کی طرف سے یہ پرستاؤ بھی یو۔ این۔ او۔ کے سامنے پیش ہے۔ پر امریکہ کسی طرح حامی کرنے کو تیار نہیں۔ یو۔ این۔ او۔ یا اُس کی کمیٹیوں کے سامنے جب کبھی اُس طرح کے پرستاؤ آتے ہیں امریکہ اور انگلینڈ ہزار طرح سے اڑنگے لگا کر اُنہیں ٹالتے ہیں۔ اِسی طرح کے پرستاؤ اِس سمے بھی یو۔ این۔ او۔ کے سامنے پیش ہیں۔

नाक और दर्दनाक इज़हार नोआखाली और बिहार के कत्ले आम में दिखाई दिये. गान्धी जी ने अकेले पैदल नोआखाली की जात्रा शुरू की. डरे और सहमे हुये हिन्दुओं को दिलासा और तसल्ली दी. राजनीति में जिससे 'करो या मरो' के उसूल को उन्होंने चालू किया था उस का फिरके-वाराना जंग का खत्म करने में भी अमल शुरू किया. उन्होंने मुसलमानों के दिल को जीता और नफ़रत को बुझाने में कामयाब हुए. फिर वह बिहार आये वहाँ मज़लूम मुसलमानों के आँसू पोंछे और हिन्दुओं के दिलों में अपनी वहशियाना हरकतों के लिये शर्म पैदा की. सारी किताब में सैकड़ों घटनायें दर्ज हैं जिनसे गान्धी जी की उस वक्त की दिमाग़ी कैफ़ियत का पता चलता है. किताब क्या है एक अनमोल ग्रन्थ है. मुल्क की राजनीति, इतिहास, समाज शास्त्र और जन आन्दोलन के विद्यार्थियों को न सिर्फ़ इस किताब को पढ़ना जरूरी है बल्कि इसका अध्ययन करना जरूरी है. आज भी हमारे दिलों से वह फिरके-वाराना ज़हर खत्म नहीं हुआ है बल्कि तरह-तरह की शक्लों में वह मुल्क की आबो हवा को ज़हरीला बना रहा है. यह किताब हमें उस ज़हर को अपने दिलों से निकाल फेंकने में मदद देगी.

—वि० ना० पांडे

सरदार वल्लभ भाई पटेल (जिल्द दूसरी अंगरेज़ी)—मूल गुजराती के लेखक नरहरि डी॰ परीख; प्रकाशक ऊपर के; सफ़े 492; क़ीमत 5 रुपया.

इस किताब के हिन्दी एडीशन की आलोचना हम अक्तूबर' 57 के नया हिन्द में कर चुके हैं. किताब की छपाई सफ़ाई बहुत उम्दा है. हिन्दी और गुजराती न जानने वालों के लिए सरदार पटेल की ज़िन्दगी और उनके महान् कामों के समझने में यह अंगरेज़ी एडीशन मदद देगा.

वि० ना० पांडे.

शाहकार; माहाना रिसाला; क़ीमत १); निकालने वाले मकतबा-शाहकार-इलाहाबाद.

इलाहाबाद की अदबी फ़िज़ा में कितने ही रिसालों ने जन्म लिया और मीठी नींद सो गये. इस वक्त कोई रोज़नामा यहाँ से नहीं निकल रहा है. रिसालों में किसी को मयारी नहीं कहा जा सकता.

शाहकार का पहला नम्बर मेज़ पर है. पढ़ने के बाद एक गूना आसूदगी हुई. हुनर साहब की मेहनत और तजस्सुस की दाद देनी ही पड़ेगी. वाक़ई इसके देखने के बाद साबित होता है कि इस रिसाले में अदब बराये अदब से लेकर अदब बराये ज़िन्दगी सभी कुछ, बिला तख़सीस मौजूद है. यानी मुमताज़ शीरी के 'नया जहन्नुम' से लेकर

[बाक़ी सफ़ा 236 पर]

اور دردناک اظہار نواکھالی اور بہار کے قتل عام دکھائی دیئے ۔ گاندھی جی نے اکیلے پیدل نواکھالی کی یاترا شروع کی ۔ ڈرے اور سہمے ہوئے ہندؤں کو دلاسا اور تسلی دی ۔ راج نیتی میں جس 'درو یا مرو' کے اصول کو انہوں نے چالو کیا تھا اس پر فرقہ وارانہ جنگ کو ختم کرنے میں بھی عمل شروع کیا ۔ انہوں نے مسلمانوں کے دل کو جیتا اور نفرت کو بجھانے میں کامیاب ہوئے ۔ پھر وہ بہار آئے وہاں مظلوم مسلمانوں کے آنسو پونچھے اور ہندؤں کے دلوں میں اپنی وحشیانہ حرکتوں کے لئے شرم پیدا کی ۔ ساری کتاب میں سیکڑوں گھٹنائیں درج ہیں جن سے گاندھی جی کی اس وقت کی دماغی کیفیت کا پتہ چلتا ہے ۔ کتاب کیا ہے انمول گرنتھ ہے ۔ ملک کی راج نیتی' اتہاس' سماج شاستر اور جن آندولن کے ودیارتھیوں کو نہ صرف اس کتاب کو پڑھنا ضروری ہے ۔ آج بھی ہمارے دلوں سے وہ فرقہ وارانہ زہر ختم نہیں ہوا ہے بلکہ طرح طرح کی شکلوں میں وہ ملک کی آب وہوا کو زہریلا بنا رہا ہے ۔ یہ کتاب ہمیں اس زہر کو اپنے دلوں سے نکال پھینکنے میں مدد دیگی ۔

—وی. نا. پانڈے ۔

سردار ولبھ بھائی پٹیل (جلد دوسری انگریزی) مول گجراتی لیکھک نرہری ڈی ۔ پاریکھ' پرکاشک اوپر والے؛ صفحے 492؛ قیمت 5 روپیہ ۔

اس کتاب کے ہندی ایڈیشن کی آلوچنا ہم اکتوبر 57 کے نیا ہند میں کر چکے ہیں ۔ کتاب کی چھپائی صفائی بہت عمدہ ہے ۔ ہندی اور گجراتی نا جاننے والوں کے لئے سردار پٹیل کی زندگی اور ان کے مہان کاموں کے سمجھنے میں یہ انگریزی ایڈیشن مدد دے گا ۔

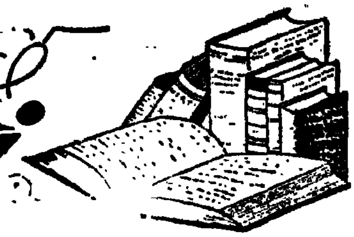
—وی. نا. پانڈے ۔

شاہکار؛ ماہانہ رسالہ' قیمت ایک روپیہ؛ نکالنے والے قیمت ایک روپیہ مکتبہ شاہکار الہ آباد ۔

الہ آباد کی فضا میں کتنے ہی رسالے اور اخبارات نے جنم لیا اور میٹھی نیند سو گئے ۔ اس وقت کوئی روزنامہ یہاں سے نہیں نکل رہا ہے ۔ رسالوں میں کسی کو معیاری نہیں کہا جا سکتا ۔

شاہکار کا پہلا نمبر میز پر ہے ۔ پڑھنے کے بعد ایک گونہ آسودگی ہوئی ۔ ہنر صاحب کی محنت اور تجسس کی داد دینی پڑے گی ۔ واقعی اس کے دیکھنے کے بعد ثابت ہوتا ہے کہ اس رسالے میں اور پرانے ادب سے لیکر ادب برائے زندگی سبھی کچھ بلا تخصیص موجود ہیں ۔ یعنی ممتاز شیریں کے 'نیا جہنم' کے لیکر

[باقی صفحہ 236 پر]

कुछ किताबें  کچھ کتابیں

MAHATMA GANDHI, The Last Phase; लेखक प्यारेलाल; जिल्द पहली; प्रकाशक-नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद-14; सफ़े 750, क़ीमत 20 रुपया; चवालीस सफ़ों में सौ से ज़्यादा तसवीरें; काग़ज़ मोटा और उम्दा, छपाई सुन्दर और साफ़; खादी की जिल्द और ख़ूबसूरत डस्ट कवर.

किताब, जैसा कि बहुत मुनासिब था, श्री महादेव देसाई को समर्पित है. शुरू की योजना यही थी कि गान्धी जी की आटोबायोग्राफ़ी के सिलसिले को महादेव भाई पूरा करेंगे. इसके लिये उनके पास बेहद सामग्री थी लेकिन मौत ने उन्हें छीन लिया और वह ज़िम्मेवारी प्यारेलालजी के कन्धों पर पड़ी. पुस्तक की भूमिका 10 सफ़ों में डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने लिखी है.

जैसा कि पुस्तक के नाम से साफ़ है इसमें गान्धी जी की ज़िन्दगी के आख़री पहलू को दर्ज किया गया है. पुस्तक उस दिन के बयान से शुरू होती है जब भारत छोड़ो आन्दोलन के बाद आग़ा ख़ाँ के महल से गान्धी जी की नज़रबन्दी की क़ैद से रिहाई होती है. और ख़त्म होती है उस वक़्त जब गान्धी जी फ़रवरी 1947 में नोआखाली से लौटकर बिहार आते हैं. पुस्तक को पाँच हिस्सों में बाँटा गया है। पहले हिसे में छै, दूसरे में छै, तीसरे में छै, चौथे में पाँच और पाँचवें में पाँच अध्याय हैं. आख़री हिस्से में गान्धी जी के ख़ास लेखों का संग्रह है. पुस्तक के आख़ीर में नोट, ग्लासरी और इन्डेक्स जोड़कर पुस्तक को बहुत ही काम की चीज़ बना दिया गया है.

किताब की इस पहली जिल्द में गान्धी जी की उन अज़ीमुश्शान कोशिशों का ज़िक्र है जिस में उन्होंने फ़िरक़ेवाराना तहरीक के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी. यह वह ज़माना था जब ब्रिटिश कूटनीति ने हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को कामयाबी के साथ फाड़ दिया था और मुल्क के बटवारे की दाग़बेल डाल दी थी. चारों तरफ़ हिन्दू मुसलमानों के ख़ूनी दंगे हो रहे थे जिनके ख़ौफ़

MAHATMA GANDHI, The Last Phase; جلد پہلی؛ پرکاشک نوجیون پریس، احمدآباد—14؛ صفحے 750؛ قیمت 20 روپئے؛ چوالیس صفحوں میں سو سے زیادہ تصویریں؛ کاغذ موٹا اور عمدہ؛ چھپائی سندر اور صاف؛ کھادی کی جلد اور خوبصورت ڈسٹ کور .

کتاب جیسا کہ بہت مناسب تھا، شری مہادیو دیسائی کو سمرپت ہے . شروع کی یوجنا یہی تھی کہ گاندھی جی کی آٹو بایو گرافی کے سلسلے کو مہادیو بھائی پورا کریں گے . اِس کے لئے اُن کے پاس بےحد سامگری تھی لیکن موت نے اُنھیں چھین لیا اور ذمہداری پیارے لال جی کے کندھوں پر پڑی . پستک کی بھومیکا 10 صفحوں میں ڈاکٹر راجیندر پرساد نے لکھی ہے .

جیسا کہ پستک کے نام سے صاف ہے کہ اِس میں گاندھی جی کی زندگی کے آخری پہلو کو درج کیا گیا ہے . پستک اُس دن کے بیان سے شروع ہوتی ہے جب بھارت چھوڑو آندولن کے بعد آغا خاں کے محل سے گاندھی جی کو نظربندی کے قید سے رہائی ہوتی ہے . اور ختم ہوتی ہے اُس وقت جب گاندھی جی فروری 1947 میں نواکھالی سے لوٹ کر بہار آتے ہیں . پستک کو پانچ حصوں میں بانٹا گیا ہے . پہلے حصے میں چھ، دوسرے میں چھ، تیسرے میں چھ، چوتھے میں پانچ اور پانچویں میں پانچ ادھیائے ہیں . آخری حصے میں گاندھی جی کے خاص لیکھوں کا سنگرہ ہے . پستک کے آخیر میں نوٹ، گلسری اور انڈیکس جوڑ کر پستک کو بہت ہی کام کی چیز بنا دیا گیا ہے .

کتاب کی اِس پہلی جلد میں گاندھی جی کی عظیم‌الشان اُن کوششوں کا ذکر ہے جس میں اُنہوں نے فرقہ وارانہ تحریک کے خلاف زبردست لڑائی لڑی . یہ وہ زمانہ تھا جب برٹش کوٹ نیتی نے ہندستان کے ہندو اور مسلمانوں کے دلوں کو کامیابی کے ساتھ پھاڑ دیا تھا اور ملک کے بٹوارے کی داغ بیل ڈال دی تھی . چاروں طرف ہندو مسلمانوں کے خونی دنگے ہو رہے تھے جن کے خوفناک

"आदमी को चाहिए कि अपने मन पर सख़्ती करे और उसे संयम से रखे. अपने दिल की आँख खोलना जरूरी है. अगर बाहरी आँखों में ईश्वर को देखने की ताक़त होती तो जानवर भी ईश्वर को देख लेते."

[16]

चौंकें तो 'मुहिब' ख़्वाबे परीशाँ से कभी,
बाज़ आएँ तो ख़ूँरेज़ी-ए-इन्साँ से कभी,
सूफ़ी की मए साफ़ जो चक्खे योरोप,
हो बादा-परस्ती भी न शैताँ से कभी !

ख़्वाबे परीशाँ—दुःस्वप्न, ख़ूँरेज़ी—ख़ून बहाना, सूफ़ी—वेदांती, मए साफ़—साफ़ शराब (यहाँ तात्पर्य प्रेम से है), बादा परस्ती—शराब पीना (जो इस्लाम में पाप है), शैतान—ईश्वर का विरोधी फ़रिश्ता,

"ऐ 'मुहिब,' काश दुनिया के लोग इस (लड़ाई के) दुःस्वप्न से चौंकते और आदमी का ख़ून न बहाते. अगर योरोप वाले सूफ़ी के प्रेम का अनुभव करें तो उनकी कौन कहे शैतान तक से पाप न हो सके."

"آدمی کو چاهئے که اپنے من پر سختی کرے اور اسے سنیم سے رکھے . اپنے دل کی آنکھ کھلنا ضروری ہے . اگر باھری آنکھوں میں ایشور کی دیکھنے کی طاقت ہوتی تو جانور بھی ایشور کو دیکھ لیتے ."

(16)

چونکیں تو 'محب' خواب پریشاں سے کبھی،
باز آئیں تو خونریزئی انساں سے کبھی،
صوفی کی مئے صاف جو چکھے یورپ
ہو بادہ پرستی بھی نہ شیطان سے کبھی !

خواب پریشاں—دکھی سوپن، خوں ریزی—خون بہانا، صوفی—ویدانتی، مئے صاف—صاف شراب (یہاں تاپ پر یم سے ہے) بادہ پرستی—شراب پینا (جو اسلام میں پاپ ہے)، شیطان—ایشور کا ورودھی فرشتہ .

"اے 'محب' کاش دنیا کے لوگ اس (لڑائی کے) دکھی سوپن سے چونکتے اور آدمی کا خون نہ بہاتے . اگر یورپ والے صوفی کے پریم کا انوبھو کریں تو اُن کی کون کہے شیطان تک سے پاپ نہ ہو سکے ."

[सफ़ा 238 से आगे]

ख़ुबैज़ा मस्तूर के 'डोली' तक इस रिसाले में शफ़ीक़ुर्रहमान और कशमीरी लाल ज़ाकिर भी दोश-बदोश हैं लेकिन मंज़िलें अलग-अलग.

यह रिसाला उन लोगों के लिये तो एक नेमत साबित होगा जिनके पास न इतने पैसे हैं कि सारे रिसालों को ख़रीद कर पढ़ सकें और न इतना वक़्त जो इनके तलाश करने में सर्फ़ हो.

ग़ज़लों का इन्तख़ाब अच्छा और नज़्मों का ग़नीमत है. बेहतर होता कि शाहकार में इलमी और तन्क़ीदी मज़ामीन भी शामिल किये जायें. फ़िराक़ साहब का आर्टिकिल अलबत्ता कुछ इस क़िस्म का है. रिसाले की छपाई और साइज़ का हमारे एडिटर साहब ने ख़ास ख़्याल रखा है. और क़ीमत के लिहाज़ से 144 सफ़हों का रिसाला सस्ता ही कहा जायेगा.

—मुन्ने भाई.

[صفحہ 238 سے آگے]

خدیجہ مستور کے ڈولی تک . اِس رسالے میں شفیق الرحمان اور کشمیری لال ذاکر بھی دوش بدوش ہیں . لیکن منزلیں الگ الگ .

یہ رسالہ اُن لوگوں کے لئے تو ایک نعمت ثابت ہوگا جن کے پاس نہ اِتنے پیسے ہیں کہ سارے رسالوں کو خرید کر پڑھ سکیں اور نہ اتنا وقت جو اِن کے تلاش کرنے میں صرف ہو .

غزلوں کا انتخاب اچھا اور نظموں کا غنیمت ہے . بہتر ہوتا کہ شاہکار میں علمی اور تنقیدی مضامین بھی شامل کئے جاتے . فراق صاحب کا آرٹکل البتہ کچھ اِس قسم کا ہے . رسالہ کی چھپائی اور سائز کا ہمارے اڈیٹر صاحب نے خاص خیال رکھا ہے . اور قیمت کی لحاظ سے 144 صفحوں کا رسالہ سستا ہی کہا جائیگا .

—منے بھائی .

"कोई देश सिर्फ़ इसलिए हानि नहीं उठाता कि उसमें कई धर्म हैं. न धार्मिक भेदभाव की आग किसी को जला सकती है. कोई चाहे हिन्दू हो जाए चाहे मुसलमान, धर्म के बदलने से देश नहीं बदलता."

[13]

हिन्दुओ-मुसलमाँ में तअस्सुब जो नहीं,
तो कसरते मज़हब से नहीं हर्ज कहीं,
है नाम मुसलमाँ का 'मुहिब' सय्यदलाल
और नाम है हिन्दू का यहाँ गंगादीन !

तअस्सुब—धार्मिक भेदभाव, कसरत—अधिक होना,

"अगर हिन्दुओं और मुसलमानों में भेदभाव न हो तो धर्मों की संख्या में अधिकता होने से कोई हर्ज नहीं है.हमारे यहाँ तो मुसलमान का नाम सैय्यदलाल होता है और हिन्दू का गंगादीन

[14]

इनसान में कमाल है दुई से बचना,
हैवां को नहीं दानिशे तौहीदे खुदा,
हैवाँ से भी अरज़ल है 'मुहिब' वह इनसान,
जो ख़ल्क़ को और हक़ को समझता है जुदा !

कमाल—पूर्णता, दुई—दो होने की भावना,
हैवाँ (हैवान)—पशु, दानिश—समझ,
तौहीद—एक होना, अरज़ल—पतित,गिरा हुआ,
ख़ल्क़—दुनियाँ, हक़—ईश्वर,

"आदमी की पूर्णता इसी बात में है कि वह ईश्वर और उसकी सृष्टि को अलग-अलग न समझे. जानवर को भगवान के एक होने की समझ नहीं है. लेकिन ऐ 'मुहिब' वह आदमी तो जानवरों से भी बुरा है जो ईश्वर और उसकी दुनिया को एक दूसरे से अलग समझता है.

[15]

कुछ नफ़्स पे अपने तो जफ़ा की होती,
कुछ चश्मे बसीरत भी तो वा की होती,
इन आँखों में गर नूरे खुदा-बीं होता !
हैवाँ को भी मारिफ़त खुदा की होती !

नफ़्स—मन, जफ़ा—सख़्ती
चश्मे बसीरत—दिल की आँख, वा—खुली,
नूर—रोशनी, खुदाबीं-खुदा को देखने वाला
हैवाँ—जानवर, मारिफ़त—ईश्वर के पास होना,

"کوئی دیش صرف اس لئے ہانی نہیں اٹھاتا کہ اس میں کئی دھرم ہیں . نہ دھارمک بھید بھاؤ کی آگ کسی کو جلا سکتی ہے . کوئی چاہے ہندو ہو جائے چاہے مسلمان . دھرم کے بدلنے سے دیش نہیں بدلتا ."

(13)

ہندو مسلماں میں تعصب جو نہیں،
تو کثرت مذہب سے نہیں حرج کہیں،
ہے نام مسلم کا 'محب' سید لال
اور نام ہے ہندو کا یہاں گنگا دین !

تعصب—دھارمک بھید بھاؤ، کثرت—ادھک ہونا .

"اگر ہندو اور مسلمان میں بھید بھاؤ نہ ہو تو دھرموں کی سنکھیا میں ادھک ہونے سے کوئی حرج نہیں ہے . ہمارے یہاں تو مسلمان کا نام سید لال ہوتا ہے اور ہندو کا گنگا دین ."

(14)

انساں میں کمال ہے دوئی سے بچنا،
حیواں کو نہیں دانش توحید خدا،
حیواں سے بھی ارزل ہے 'محب' وہ انساں
جو خلق کو اور حق کو سمجھتا ہے جدا !

کمال—پورنتا، دوئی—دو ہونے کی بھاؤنا، حیواں—(حیوان) پشو، دانش—سمجھ، توحید—ایک ہونا، ارزل—پست، گرا ہوا، خلق—دنیا، حق—ایشور .

"آدمی کی پورنتا اسی بات میں ہے کہ وہ ایشور اور اس کی سرشٹی کو الگ الگ نہ سمجھے . جانور کو بھگوان کے ایک ہونے کی سمجھ نہیں ہے . لیکن اے 'محب' وہ آدمی تو جانوروں سے بھی برا ہے جو ایشور اور اس کی دنیا کو ایک دوسرے سے الگ سمجھتا ہے ."

(15)

کچھ نفس پہ اپنے تو جفا کی ہوتی،
کچھ چشم بصیرت بھی تو وا کی ہوتی،
ان آنکھوں میں گر نور خدابیں ہوتا
حیواں کو بھی معرفت خدا کا ہوتا !

نفس—من، جفا—سختی، چشم بصیرت—دل کی آنکھ، وا—کھلی، نور—روشنی، خدابیں—خدا کو دیکھنے والا، حیواں—جانور، معرفت—ایشور کے پاس ہونا .

लड़ते हैं यह किस बात पे हिन्दू मुस्लिम
क्या इनका .ख़ुदा और है और उनका और !

तक़लीद-अंधानुकरण, भेड़िया धसान

"दुनिया में भेड़िया धसान का बोलबाला है, ऐ मुहिब हम लोग मज़हब पर कुछ भी ग़ौर नहीं करते. आख़िर यह हिन्दू मुसलमान किस बात पर लड़ते हैं ? क्या दोनों के ईश्वर अलग अलग हैं."

(10)

हिन्दू ओ- मुसलमाँ के नहीं दो हैं .ख़ुदा,
दोनों में हैं इक शान ख़ुदावन्दे उला,
जब इनका वतन एक है और शक्लें एक
क्यों त.फ़रिक़ा-ए-दीं से हैं दोनों यह जुदा !

.ख़ुदावंदे उला—महान ईश्वर, वतन—देश त फ़रिक़ा—भेद भाव, दीं (दीन)—धर्म

'हिन्दू और मुसलमान के ख़ुदा अलग-अलग नहीं हैं दोनों में एक ही भगवान की महानता के दर्शन होते हैं. जब हिन्दू मुसलमान दोनों का देश और उनकी शक्लें एक ही हैं तो केवल धर्म अलग होने से यह दोनों अलग-अलग क्यों हैं ?"

(11)

कहने से रक़ीबों के 'मुहिब' हैं भड़के,
मिल जायेंगे फिर इल्मो हुनर में पड़के,
हिन्दू-ओ-मुसलमां में तनाफ़ुर क्यों है,
हैं मादरे हिंद के यह दोनों लड़के !

रक़ीब—दुश्मन, इल्मो हुनर—विद्या
तनाफ़ुर—नफ़रत, मादरे हिंद—भारत माता

"ऐ 'मुहिब' यह (हिन्दू और मुसलमान) दुश्मनों के कहने पर भड़के हुए हैं (और आपस में लड़ते हैं) विद्या और समझ आने पर यह एक हो जायेंगे. इन दोनों को एक दूसरे से नफ़रत क्यों है ? दोनों ही भारत माता के पुत्र हैं."

(12)

कसरत से मज़ाहिब के पिघलता नहीं मुल्क,
आतिश से तअस्सुब के भी जलता नहीं मुल्क,
हिन्दू हो जाय या मुसलमान हो जाए
मज़हब के बदलने से बदलता नहीं मुल्क.

कसरत—अधिक होना, मज़ाहिब—धर्म (मज़हब का बहुवचन), आतिश—आग, तअस्सुब—धार्मिक भेदभाव,

لڑتے ہیں یہ کس بات سے ہندو مسلم
کیا اِن کا خدا ہے اور ہے اور اُن کا اور !

تقلید—اندھا نوکرن، بھیڑیا دھسان ۔

"دنیا میں بھیڑیا دھسان کا بول بالا ہے ۔ اے محب ہم لوگ مذہب پر کچھ بھی غور نہیں کرتے ۔ آخر یہ ہندو مسلمان کس بات پر لڑتے ہیں ؟ کیا دونوں کے ایشور الگ الگ ہیں ؟"

(10)

ہندو و مسلمان کے نہیں ہیں دو خدا،
دونوں میں ہے ایک شان خداوند علا،
جب اُن کا وطن ایک ہے اور شکلیں ایک
کیوں تفریقۂ دیں سے ہیں دونوں یہ جدا !

خداوند علا—مہان ایشور، وطن—دیش، تفریقہ—بھید بھاؤ، دیں—(دین) دھرم۔

"ہندو اور مسلمانوں کے خدا الگ الگ نہیں ہیں ۔ دونوں میں ایک ہی بھگوان کی مہانتا کے درشن ہوتے ہیں ۔ جب ہندو مسلمان دونوں کا دیش اور اُن کی شکلیں ایک ہی ہیں تو کیول دھرم الگ ہونے سے یہ دونوں الگ الگ کیوں ہیں ؟"

(11)

کہنے سے رقیبوں کے 'محب' ہیں بھڑکے،
مل جائیں گے پھر علم و ہنر میں پڑ کے،
ہندو مسلماں میں تنافر کیوں ہے،
ہیں مادر ہند کے یہ دونوں لڑکے !

رقیب—دشمن، علم و ہنر—ودیا، تنافر—نفرت، مادر ہند—بھارت ماتا ۔

"اے 'محب' یہ (ہندو اور مسلمان) دشمنوں کے کہنے پر بھڑکے ہوئے ہیں (اور آپس میں لڑتے ہیں) ودیا اور سمجھ آنے پر یہ ایک ہو جائیں گے ۔ اِن دونوں کو ایک دوسرے سے نفرت کیوں ہے ؟ دونوں ہی بھارت ماتا کے پتر ہیں ۔"

(12)

کثرت سے مذاہب کے پگھلتا نہیں ملک،
آتش سے تعصب کے بھی جلتا نہیں ملک،
ہندو ہوجائے یا مسلمان ہو جائے
مذہب کے بدلنے سے بدلتا نہیں ملک !

کثرت—ادھک ہونا، مذاہب—دھرم (مذہب کا بہو وچن)، آتش—آگ، تعصب—دھارمک بھید بھاؤ۔

वह तेरी समझ और है आँखों का क़सूर
बुत भी है वही और ख़ुदा भी है वही !

जुदा—अलग,   गुल—फूल, बुत—मूर्ति

"वह (ईश्वर) मुझसे मिला भी है और अलग भी. वही बुलबुल है, वही फूल और हवा भी वही है। मूर्ति और ख़ुदा एक ही हैं. अगर तू इसे न समझ पाए तो यह तेरी समझ और आँखों का क़सूर है।"

(7)

दिल बोलता हर दम है 'मुहिब' अल्लाहू,
दो देखने की एक को मुतलक़ नहीं .ख़ू,
वह सबको समझता है वही ज़ाते अहद
सूफ़ी को बराबर है मुसलमाँ हिन्दू!

अल्लाहू—ईश्वर का नाम, मुतलक़—बिल्कुल ख़ू—आदत, ज़ाते अहद—एक ईश्वर, सू.फी—मुसलमानों में वेदांत जैसा एक मार्ग.

ऐ 'मुहिब' हमारा दिल तो हर समय ईश्वर का नाम लिया करता है. हम जिसे (ईश्वर और सृष्टि को) एक समझते हैं उसे दो समझने की हमें बिलकुल आदत नहीं है. सू.फी के लिए हिन्दू मुसलमान बराबर हैं क्योंकि उसे तो सभी लोग उसी ईश्वर के रूप दिखाई देते हैं."

(8)

है तफ़ारिक़ा-ए ज़ातो सि.फत वहशत में,
अशिया-ए-जहाँ एक है सब वहदत में,
ज़र में है, न तोपों में, न वह लश्कर में,
जो ज़ोरे .ख़ुदाई है 'मुहिब' उलफ़त में !

तफ़रिक़ा—भेद, लड़ाई, ज़ातो सिफ.त—व्यक्तित्व और गुण वहशत—जंगलीपन अशिया-चीजें (शै का बहुवचन) ज़र—धन, वहदत—ईश्वर का एक होना ज़ोरे ख़ुदाई—ईश्वरीय ताक़त, उलफ.त—प्रेम

"(ईश्वर के) व्यक्तित्व और गुणों पर झगड़ा जंगलीपन के कारण उठता है. सारी चीज़ें उसी एक भगवान का रूप हैं इसलिए एक हैं. ऐ 'मुहिब' जो ईश्वरीय ताक़त प्रेम में पाई जाती है वह धन दौलत, तोप, लश्कर किसी में नहीं."

(9)

तक़लीद का दुनिया में मचा है क्या शोर,
करते नहीं मज़हब पे 'मुहिब' हम कुछ ग़ौर,

یہ تیری سمجھ اور ہے آنکھوں کا قصور
بت بھی ہے وہی اور خدا بھی ہے وہی !

جدا—الگ، گل—پھول، بت—مورتی ۔

"وہ (ایشور) مجھ سے ملا بھی ہے اور الگ بھی ۔ وہی بلبل ہے ۔ وہی پھول اور ہوا بھی وہی ہے، مورتی اور خدا ایک ہی ہے اگر تو اسے نہ سمجھ پائے تو یہ تیری سمجھ اور آنکھوں کا قصور ہے ۔"

(7)

دل بولتا ہر دم ہے 'محب' اللہ ہو،
دو دیکھنے کی ایک کو مطلق نہیں خو،
وہ سب کو سمجھتا ہے وہی ذات احد
صوفی کو برابر ہے مسلماں ہندو !

اللہ ہو—ایشور کا نام، مطلق—بالکل، خو—عادت، ذات احد—ایشور، صوفی—مسلمانوں میں ویدانت جیسا ایک مارگ ۔

"اے 'محب' ہمارا دل تو ہر سمے ایشور کا نام لیا کرتا ہے ۔ ہم جسے (ایشور اور سرشٹی کو) ایک سمجھتے ہیں اسے دو سمجھنے کی ہمیں بالکل عادت نہیں ہے ۔ صوفی کے لئے ہندو مسلمان دونوں برابر ہیں کیونکہ اسے تو سبھی لوگ اسی ایشور کے روپ دکھائی دیتے ہیں ۔"

(8)

ہے تفرقہ ذات صفت وحشت میں،
اشیاء جہاں ایک ہیں سب وحدت میں،
زر میں ہے، نہ توپوں میں نہ وہ لشکر میں
جو زور خدائی ہے 'محب' الفت میں !

تفرقہ—بھید، لڑائی، ذات و صفت—ویکتتو اور گن، وحشت—جنگلی پن، اشیاء—چیزیں (شے کا بہو بچن) زر—دھن، وحدت—ایشور کا ایک ہونا، زور خدائی—ایشوری طاقت، الفت—پریم ۔

"(ایشور کے) ویکتتو اور گنوں پر جھگڑا جنگلی پن کے کارن اٹھتا ہے ۔ ساری چیزیں اسی ایک بھگوان کا روپ ہیں ۔ اے 'محب' جو ایشوری طاقت پریم میں پائی جاتی ہے وہ دھن دولت، توپ، لشکر کسی میں نہیں ۔"

(9)

تقلید کی دنیا میں مچا ہے کیا شور،
کرتے نہیں مذہب پہ 'محب' ہم کچھ غور،

"संसार की प्रत्येक विद्या ईश्वर को हमसे छिपाती है. हम किताबों को पढ़ कर के (ईश्वर के बारे में) शंकाएँ करने लगते हैं. यह (किताबी) योग्यता तो दर असल अंधापन है. ऐ 'मुहिब' दुनिया के लिए जो होशियारी है वह सबसे बड़ी नींद है।"

(4)

है कुफ़्र 'मुहिब' ग़ैर गर उसको माना,
हमने तो बुतों को भी ख़ुदा ही जाना,
तश्बीह से ग़फ़लत का नतीजा यह हुआ,
मूसा ने जो देखा भी तो क्या पहचाना !

कुफ़्र—अधार्मिकता, तश्बीह—उपमा,
ग़फ़लत—बेपरवाही, बुत—मूर्ति.

"मूसा—एक नबी. हज़रत मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना कीथी कि तू मुझे अपना मुख दिखा. ईश्वर ने उनके बहुत कहने सुनने पर अपना चेहरा तो नहीं सिर्फ़ जल्वा (दीप्ति) दिखाया. लेकिन हज़रत मूसा इसे भी देखने की ताब न ला सके. वे बेहोश हो गए और जिस तूर पहाड़ पर वे खड़े थे वह जल गया)."

"ऐ 'मुहिब' ईश्वर से किसी को अलग समझना अधार्मिकता है. हम तो मूर्तियों में भी ईश्वर को देखते हैं. ईश्वर के उपनामों पर ध्यान न देने का फल यह हुआ कि मूसा ईश्वर को देखकर भी न पहचान सके."

(5)

पर्दे में हैं मख़लूक़ के वह ज़ाते ख़ुदा,
बेपर्दा नज़र आए यह इमकान हैं क्या,
तश्बीह का होता जो 'मुहिब' कुछ भी मज़ाक़
सुनते न शजर से लनतरानी मूसा !

मख़लूक़—दुनिया, इमकान—संभावना,
तश्बीह—उपमा, मज़ाक़—रुचि,

शजर—पेड़, लनतरानी—ईश्वर का रहस्य (हज़रत मूसा को एक पेड़ ने ईश्वर का रहस्य बताया था).

"ईश्वर संसार के ही पर्दे में छिपा है. वह बेपर्दा (यानी दुनिया से अलग) नहीं दिखाई दे सकता. ऐ 'मुहिब' मूसा में अगर ईश्वर के उपनामों के लिए कुछ रुचि होती तो (हर एक चीज में ईश्वर को न देखकर) वे पेड़ से क्यों उपदेश लेते।"

(6)

वह मुझसे मिला और जुदा भी है वही,
बुलबुल भी है गुल भी है, हवा भी है वही,

"سنسار کی پرتیک ودیا ایشور کو ہم سے چھپاتی ہے ۔ ہم کتابوں کتابوں پڑھ کر کے (ایشور کے بارے میں) شنکائیں کرنے لگتے ہیں ۔ یہ (کتابی) یوگتا تو دراصل اندھاپن ہے ۔ اے "محب" دنیا کے لئے جو ہوشیاری ہے وہ سب سے بڑی نیند ہے ۔"

(4)

ہے کفر "محب" غیر گر اُس کو مانا،
ہم نے تو بتوں کو بھی خدا ہی جانا،
تشبیہ سے غفلت کا نتیجہ یہ ہوا
موسیٰ نے جو دیکھا بھی تو کیا پہچانا !

کفر — ادھارمکتا، تشبیہ — ایمان،
غفلت — بےپروائی، بت — مورتی

موسیٰ ایک نبی (حضرت موسیٰ نے ایشور سے پرارتھنا کی تھی کہ تو مجھے اپنا مکھ دکھا ۔ ایشور نے اُن کے بہت کہنے سننے پر اپنا چہرہ تو نہیں جلوہ (دیپتی) دکھایا ۔ لیکن حضرت موسیٰ اسے بھی دیکھنے کی تاب نہ لاسکے ۔ وے بےہوش ہو گئے اور اور جس طور پہاڑ پر وے کھڑے تھے وہ جل گیا) ۔"

"اے "محب" ایشور سے کسی کو الگ سمجھنا ادھارمکتا ہے ۔ ہم تو مورتیوں میں بھی ایشور کو دیکھتے ہیں ۔ ایشور کے اپ ناموں پر دھیان نہ دینے کا پھل یہ ہوا کہ موسیٰ ایشور کو دیکھ کر بھی نہ پہچان سکے ۔"

(5)

پردے میں ہے مخلوق کے وہ ذات خدا،
بےپردہ نظر آئے یہ امکان ہے کیا،
تشبیہ کا ہوتا جو 'محب' کچھ بھی مذاق
سنتے نہ شجر سے لنترانی موسیٰ !

مخلوق — دنیا، امکان — سمبھاؤنا، تشبیہ — اپما، مذاق — روچی، شجر — پیڑ۔

لنترانی - ایشور کا رہسیہ (حضرت کو ایک پیڑ نے ایشور کا رہسیہ بتایا تھا)۔

"ایشور سنسار کے ہی پردے میں چھپا ہے ۔ وہ بےپردہ (یعنی دنیا سے الگ) نہیں دکھائی دے سکتا ۔ اے 'محب' موسیٰ میں اگر ایشور کے اپ ناموں کے لئے کچھ روچی ہوتی تو (ہر ایک چیز میں ایشور کو نہ دیکھ کر) وے پیڑ کیوں اپدیش لیتے ۔"

(6)

وہ مجھ سے ملا اور جدا بھی ہے وہی،
بلبل بھی ہے، گل بھی ہے، ہوا بھی ہے وہی،

रुबाइयात मुहिब

श्री 'मुहिब'

(1)

अल्लाह कहो, राम कहो, गाड कि रब,
हर नाम उसी का है "मुहिब" कर न अजब
हिन्दू-ओ-मुसलमाँ-ओ-नसारा-ओ-यहूद
सबका है वही एक उसूले मजहब!

गाड—ईश्वर ( ), रब—भगवान, अजब—आश्चर्य, नसारा—ईसाई, उसूल—सिद्धांत,

"चाहे उसे अल्लाह कहो, चाहे राम कहो, चाहे गाड कहो चाहे रब— यह सब उसी एक ईश्वर के नाम हैं। ऐ "मुहिब" तू इस बात पर आश्चर्य न करें. हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी सब के धर्मों के सिद्धांत एक ही हैं।"

(2)

अल्फाज पे लड़ते हैं, अजब है इद्बार,
मानी को जो समझें तो नहीं कुछ तकरार,
जो देखते हैं हक़ को "मुहिब" आँखों से
तुम उनको पयम्बर कहो चाहे अवतार.

अल्फ़ाज़—शब्द (लफ्ज का बहुवचन), इद्बार—दुर्भाग्य हक़—परमात्मा. पयम्बर—ईश्वरीय संदेश लाने वाला,

"यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम शब्दों पर ही झगड़ने लगते हैं. यदि शब्दों के अर्थ पर ग़ौर करें तो झगड़ा ही न रहे. 'ऐ' 'मुहिब' जो लोग ईश्वर को अपनी आंखों से देखते हैं चाहे उन्हें पयम्बर कह लो चाहे अवतार कहो।"

(3)

पर्दा है रुखे ज़ात पे हर इल्मे जहाँ,
पढ़ पढ़ के किताबों को बढ़ा वहमो गुमाँ,
यह दानिशो बीनश भी तो है कोरिचश्म,
बेदारीए दुनिया है 'मुहिब' ख्वाबेगराँ.

रुखेज़ात—ईश्वर का चेहरा, वहमो गुमाँ—शंकाएं दानिश—योग्यता, विद्वत्ता, बीनश—देखने की ताक़त कोर—अंधापन, चश्म—आँख, बेदारी—जागना, होशियारी ख्वाबे गराँ—गहरी नींद

رباعیات محب

شری 'محب'

(1)

اللہ کہو' رام کہو' گاڈ کہ رب'
ہر نام اُسی کا "محب" کرنہ عجیب
ھندو-و-مسلماں -و- نصارا -و- یہود'
سب کا ھے وھی ایک اُصول مذھب !

گاڈ—ایشور (God)' رب—بھگوان' عجب—اشچریہ' نصارا—عیسائی' اُصول—سدھانت .

"چاھے اُسے اللہ کہو' چاھے رام کہو' چاھے گاڈ کہو چاھے رب—' یہ سب اُسی ایک ایشور کے نام ھیں . اے "محب" تو اِس بات میں آشچریہ نہ کر . ھندو' مسلمان' عیسائی' یہودی سب کے دھرموں کے سدھانت ایک ھی ھیں ."

(2)

الفاظ پہ لڑتے ھیں عجب ھے اِدبار'
معنی کو جو سمجھیں تونہیں ھے کچھ تکرار'
جو دیکھتے ھیں حق کو "محب" آنکھوں سے
تم اُن کو پیمبر کہو چاھے اوتار !

الفاظ—شبد (لفظ کا بہو بچن) ادبار—دربھاگیہ' حق—پرماتما' پیمبر—ایشوری سندیش لانے والا

' یہ ھمارا دربھاگیہ ھے کہ شبدوں پر ھی جھگڑنے لگتے ھیں . یدی شبدوں کے ارتھ پر غور کریں تو جھگڑا ھی نہ رھے . اے 'محب' جو لوگ ایشور کو اپنی آنکھوں سے دیکھتے ھیں چاھے انھیں پیمبر کہہ لو چاھے اوتار کہو ."

(3)

پردہ ھے رخ ذات پہ ھر علم جہاں'
پڑھ پڑھ کے کتابوں کو بڑھا وھم وگماں'
یہ دانش بینش بھی تو ھےکوری چشم
بیداری دنیا ھے "محب' خواب گراں'

رخ ذات—ایشور کا چہرہ' وھم گماں—شنکائیں دانش—یوگتا' ودتا' بینش دیکھنے کی طاقت ,کوری—اندھاپن' چشم—آنکھ بیداری—جاگنا' ھوشیاری' خواب گراں—گہری نیند

छा गई. हारकर मैं अपने एक रिश्तेदार श्री गोविन्द प्रसाद के पास पहुँचा। वे हाइकोर्ट के एक अच्छे एडवोकेट थे और आज जहां एंग्लोबंगाली इंटरमिजिएट कालेज है, वहीं उनका बंगला था. हमने उनसे प्रार्थना की कि वे अपने बंगले के टेनिस लान पर लोकमान्य की सभा करने की इजाज़त दे दें. गोविन्द प्रसाद जी तुरंत राजी हो गए। अब हमारे उत्साह का ठिकाना न रहा. हमने जलसे का नोटिस निकाला जिस पर मेरे, एन० एम० धरमा के और के० पी० मिश्र के दस्तख़त थे. सारा इंतज़ाम हमें तीन चार घंटे के अंदर करना पड़ा. शाम को छै बजे लोक मान्य तिलक का उसी लान के ऊपर व्याख्यान हुआ. विषय था वर्तमान राजनैनिक स्थिति . सवाल था, सभा का सभापति किसे बनाया जाय ? बड़े बड़े लोगों में सब इन्कार कर चुके थे. तब हमने एंग्लो बंगाली हाई स्कूल के हेडमास्टर बाबू नैपाल चन्द्र राय को पकड़ा. नैपाल बाबू बड़ी ही नेक तबियत और प्रगतिशील विचारों के आदमी थे. सभा में क़रीब दो हज़ार आदमी इकट्ठा हुए, लोकमान्य जोशीले वक्ता नहीं थे लेकिन उनका एक एक शब्द दिल का गहराई से निकलता मालूम होता था। जलसे में एक समा सा बँधा हुआ था. इलाहाबाद में लोकमान्य का वह पहला राजनैतिक व्याख्यान था। उसने सिर्फ़ इलाहाबाद के शहर में ही नहीं बल्कि सारे सूबे में एक नए राजनैतिक जीवन की बुनियादें डाल दीं. अगले दिन पूरे पेज का हैडिंग देकर अख़बारों ने छापा—"इलाहाबाद में नए विचारों का पैग़म्बर।" 'इंडियन पीपुल ने जो 'लीडर' से पहले उस वक़्त इलाहाबाद से निकलता था, लिखा—"बड़ा ही उत्साह-पूर्ण व्याख्यान"

इसके बाद तो व्याख्यानों का सिलसिला ही शुरू हो गया. मार्च 1907 में बाबू विपिन चन्द्र पाल इलाहाबाद आए. इलाहाबाद में उनके तीन व्याख्यान हुए. उनके व्याख्यानों के लिये स्टेनली रोड पर सत्याचरण बाबू वकील के बंगले का आहाता ठीक किया. हर व्याख्यान में क़रीब तीन-चार हज़ार लोगों की भीड़ होती थी. अप्रैल सन् 1907 में लाला लाजपत राय इलाहाबाद आए. लोकमान्य तिलक की मीटिंग रामलीला ग्राउंड में न हो सकी थी इसके लिए रामलीला कमेटी के मेम्बर बहुत शरमिन्दा थे. सेक्रेटरी से उन्होंने स्तीफ़ा ले लिया था और लाला जी की मीटिंग रामलीला ग्राउंड में करने का वादा कर दिया था. वहीं लाला जी का व्याख्यान हुआ. दस हज़ार से ज़्यादा आदमी उन्हें सुनने के लिए इकट्ठा हुए। जनता के जोश और उत्साह का कोई ठिकाना न था.

(बाक़ी अगले नम्बर में)

چھاگئی ۔ ہار کر میں اپنے ایک رشتےدار شری گووند پرساد کے پاس پہنچا ۔ وے ہائیکورٹ کے ایک اچھے ایڈوکیٹ تھے اور آج جہاں انیگلو بنگالی انٹرمیڈیٹ کالج ہے، وہیں اُن کا بنگلہ تھا ۔ ہم نے اُن سے پرارتھنا کی کہہ وے اپنے بنگلے کے ٹینس لان پر لوکمانیہ کی سبھا کرنے کی اجازت دے دیں ۔ گوند پرساد جی ترنت راضی ہوگئے ۔ اب ہمارے اُتساہ کا ٹھکانہ نہ رہا ۔ ہم نے جلسے کا نوٹس نکالا جس پر میرے، ایم.این دھرما کے اور کے.پی مشرا کے دستخط تھے ۔ سارا انتظام تین چار گھنٹوں کے اندر کرنا پڑا ۔ شام کو چھ بجے لوکمانیہ تلک کا اُسی لان کے اوپر ویاکھیان ہوا ۔ وشے تھا ورتامان راج نیتک استھتی ۔ سوال تھا، سبھا کا سبھاپتی کیسے بنایا جائے ؟ بڑے بڑے لوگوں میں سب انکار کرچکے تھے ۔ تب ہم نے انیگلوبنگالی ہائی اسکول کے ہیڈ ماسٹر بابو نیپال چندر رائے کو پکڑا ۔ نیپال بابو بڑے ہی نیک طبیعت اور پرگتی شیل وچاروں کے آدمی تھے ۔ سبھا میں قریب دو ہزار آدمی اکٹھا ہوئے ۔ لوکمانیہ جوشیلے وکتا نہیں تھے ۔ لیکن اُن کا ایک ایک شبد دل کی گہرائی سے نکلتا معلوم ہوتا تھا ۔ جلسے میں ایک سماں سا بندھا ہوا تھا ۔ الہ‌آباد میں لوکمانیہ کا وہ پہلا راج نیتک ویاکھیان تھا ۔ اُس نے نہ صرف الہ‌آباد کے شہر میں ہی نہیں بلکہ سارے صوبے میں ایک نئے راج نیتک جیون کی بنیادیں ڈال دیں ۔ اگلے دن پورے پیج کا ہیڈنگ دے کر اخباروں نے چھاپا—"الہ‌آباد میں نئے وچاروں کا پیغمبر" ۔ "انڈین پیوپل' نے جو 'لیڈر' سے پہلے اُس وقت الہ‌آباد سے نکلتا تھا" لکھا—" بڑا ہی اُتساہ پورن ویاکھیان ۔"

اِس کے بعد تو ویاکھیانوں کا سلسلہ ہی شروع ہوگیا ۔ مارچ 1907 میں بابو وپن چندر پال الہ‌آباد آئے ۔ الہ‌آباد میں اُن کے تین ویاکھیان ہوئے ۔ اُن کے ویاکھیانوں کے لئے اسٹینلی روڈ پر ستیاچرن بابو وکیل کے بنگلے کا احاطہ ٹھیک کیا ۔ ہر ویاکھیان میں قریب تین چار ہزار لوگوں کی بھیڑ ہوتی تھی ۔ اپریل سن 1907 میں لالہ لاجپت رائے الہ‌آباد آئے ۔ لوکمانیہ تلک کی میٹنگ رام لیلا گراؤنڈ میں نہ ہو سکی تھی اس کے لئے رام لیلا کمیٹی کے ممبر بہت شرمندہ تھے ۔ سکریٹری سے اُنہوں نے استعفیٰ لے لیا تھا اور لالہ جی کی میٹنگ رام لیلا گراؤنڈ میں کرنے کا وعدہ کر لیا تھا ۔ وہیں لالہ جی کا ویاکھیان ہوا ۔ دس ہزار سے زیادہ آدمی اُنہیں سننے کے لئے اکٹھا ہوئے ۔ جنتا کے اُدیش اور اُتساہ کا کوئی ٹھکانہ نہ تھا ۔

[باقی اگلے نمبر میں]

कलकत्ता कांग्रेस के समय पहली बार हमें तिलक महाराज से देर तक रू बरू बैठकर बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. वे उस समय श्री पद्मराज जैन के यहाँ ठहरे हुये थे. हमने तिलक महराज से कहा कि यू० पी० और खासकर इलाहाबाद में उनके व्याख्यान होने चाहिएँ. उन्होंने हमारी बात का समर्थन किया. वे चाहते थे कि यू० पी० के कोई नेता उन्हें बुलावें. बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र में उन दिनों गरम दल का ज़ोर था. यू० पी०, बम्बई और मद्रास नरम दल के गढ़ थे. तिलक महराज ने हमसे वादा किया कि कांग्रेस के दो तीन दिन बाद वे कलकत्ते से इलाहाबाद होते हुए पूना जायेंगे और अगर इलाहाबाद में उनके व्याख्यान का प्रबन्ध हो सका तो वे उसके लिये भी तैयार रहेंगे. उन्होंने यह भी वादा किया कि अपने इलाहाबाद पहुँचने की वे हमें पहले से सूचना दे देंगे.

जहाँ तक मुझे याद है जनवरी सन् 1907 की 6 तारीख थी. सुबह की किसी गाड़ी से तिलक महाराज इलाहाबाद पहुँचे. बहुत से विद्यार्थी और शहर के लोग उनके स्वागत के लिए स्टेशन पहुँचे. वे दारागंज में अपने दामाद श्री साने के यहाँ ठहरे. स्टेशन पर ही हमने उनसे उनके व्याख्यान की बातें छेड़ीं. उन्होंने कहा कि वे दो एक घंटे के बाद पंडित मदन मोहन मालवीय से मिलने के लिये उनके मकान पर पहुँचेंगे और वहाँ अगर तय हुआ तो व्याख्यान देंगे.

हम भी भारती भवन मालवीय जी के मकान पर पहुँच गए. वहाँ उस समय पंडित मदन मोहन मालवीय के अलावा कांग्रेस के कई बड़े बड़े नेता तिलक महराज से मिलने के लिए जमा थे. हमने तिलक महराज से उनके व्याख्यान की चर्चा की. वे ख़ुशी से राज़ी थे. पर वहाँ बैठे हुए अधिकतर नेता उनके व्याख्यान के ख़िलाफ़ थे और चाहते थे कि अगर तिलक महाराज इलाहाबाद में बोलें ही तो "वैदिक साहित्य" पर बोलें, "राजनीति" पर नहीं. मैंने तिलक महराज से पूछा कि अगर मैं और मेरे साथी विद्यार्थी उनके व्याख्यान का प्रबन्ध कर सकें तो वे व्याख्यान देंगे या नहीं. वे राज़ी हो गए. मैंने यह भी कहा कि इलाहाबाद की जनता आपको वैदिक साहित्य पर सुनना नहीं चाहती, 'राजनीतिक स्थिति' पर सुनना चाहती है. तिलक महराज ने स्वीकार कर लिया.

व्याख्यान कराने की ज़िम्मेदारी तो हमने अपने ऊपर ले ली, लेकिन सबसे बड़ी दिक्क़त हमें जगह की पड़ी. जहाँ जाते नरम दल के नेताओं के दूत हमसे पहले पहुंच जाते और वहीं से हमें इन्कार हो जाता. हमने सोचा था कि रामलीला ग्राउंड में सभा कर लें मगर उसके मंत्री को ऐसा सबक़ पढ़ा दिया गया कि उसने साफ़ इन्कार कर दिया। हम सब की तबियतों में बेहद मायूसी

کلکتہ کانگریس کے سمے پہلی بار ہمیں تلک مہاراج سے دیر تک روبرو بیٹھ کر باتیں کرنے کا سوبھاگیہ پراپت ہوا ۔ وہ اُس سمے شری پدم راج جین کے یہاں ٹھہرے ہوئے تھے ۔ ہم نے تلک مہاراج سے کہا کہ یو.پی اور خاص کر الہ آباد میں اُن کے ویاکھیان ہونے چاہئے ۔ اُنہوں نے ہماری بات کا سمرتھن کیا ۔ وے چاہتے تھے کہ یو پی کے کوئی نیتا انہیں بلاویں ۔ بنگال؛ پنجاب اور مہاراشٹر میں اُن دنوں گرم دل کا زور تھا ۔ یو. پی، بمبئی اور مدراس نرم دل کے گڑھ تھے ۔ تلک مہاراج نے ہم سے وعدہ کیا کہ کانگریس کے دو تین دن بعد وے کلکتے سے الہ آباد ہوتے ہوئے پونا جائیں گے ۔ اگر الہ آباد میں اُن کے وکھیان کا پربندھ ہو سکا تو وے اُس کے لئے بھی تیار رہیں گے ۔ انہوں نے یہ بھی وعدہ کیا کہ اپنے الہ آباد پہنچنے کی وے ہمیں پہلے سے سوچنا دے دیں گے ۔

جہاں تک مجھے یاد ہے جنوری سن 1907 کی 6 تاریخ تھی ۔ صبح کی کسی گاڑی سے تلک مہراج الہ آباد پہنچے ۔ بہت سے ودیارتھی اور شہر کے لوگ اُن کے سواگت کے لیئے اسٹیشن پہنچے ۔ وے داراگنج میں اپنے داماد شری سانے کے یہاں ٹھہرے ۔ اسٹیشن پر ہی ہم نے اُن سے اُن کے وکھیان کی باتیں چھیڑیں ۔ اُنہوں نے کہا کہ وے دو ایک گھنٹے کے بعد پنڈت مدن موہن مالویہ سے ملنے کے لیئے وہ اُن کے مکان پر پہنچیں گے اور وہاں اگر طے ہوا تو وکھیان دیں گے ۔

ہم بھی بھارتی بھون مالویہ جی کے مکان پر پہنچ گئے وہاں اُس سمئے پنڈت مدن موہن مالویہ کے علاوہ کانگریس کے کئی بڑے بڑے نیتا تلک مہراج سے ملنے کے لئے جمع تھے ۔ ہم نے تلک مہراج سے اُن کے وکھیان کی چرچا کی وے خوشی سے راضی تھے ۔ پر وہاں بیٹھے ہوئے ادھک تر نیتا اُن کے وکھیان کے خلاف تھے اور چاہتے تھے کہ اگر تلک مہراج الہ آباد میں بولیں ہی تو" ویدک ساہتیہ "پر بولیں" راج نیتی" پر نہیں ۔ میں نے تلک مہراج سے پوچھا کہ اگر میں اور میرے ساتھی ودیارتھی اُن کے وکھیان کا پربندھ کر سکیں تو وکھیان دیں گے یا نہیں ۔ وے راضی ہوگئے ۔ میں نے یہ بھی کہا الہ آباد کی جنتا آپ کو ویدک ساہتیہ پر سنا نہیں چاہتی' راج نیتک استھتی' پر سنا چاہتی ہے ۔ تلک مہراج نے سویکار کر لیا ۔

یا وکھیان کرانے کی ذمہداری تو ہم نے اپنے اوپر لے لی' لیکن سب سے بڑی دقت ہمیں جگہ کی پڑی ۔ جہاں جاتے نرم دل کے نیتاؤں کے دوت ہم سے پہلے پہنچ جاتے اور وہاں سے ہمیں انکار ہوجاتا ۔ ہم نے سوچا تھا کہ رام لیلا گراونڈ میں سبھا کرلیں مگر اُس کے منتری کو ایسا سبق پڑھا دیا گیا کہ اُس نے صاف انکار کر دیا ۔ ہم سب کی طبعیتوں میں بےحد مایوسی

था जिसमें 60 करोड़ रुपया सालाना का सिर्फ़ कपड़ा था. देश के कारीगर भूखे मर रहे थे, देश ग़रीब होता जा रहा था, 'स्वदेशी' का मतलब था कि हम अपने देश के उद्योग-धंधों को फिर से चमकाएँ और अपने रोजमर्रा के इस्तेमाल में जहाँ तक हो सके, देश की बनी हुई चीज़ें ही काम में लाएँ. दूसरा था 'बायकाट' यानी यह कि हम अंग्रेज़ों के अन्याय के जवाब में इंगलैण्ड के बने हुये हर तरह के माल का खास तौर से बहिष्कार करें. इस 'बायकाट' में सरकारी नौकरियाँ और ख़िताब भी शामिल थे. तीसरा था 'राष्ट्रीय शिक्षा' यानी अंग्रेज़ों के बनाये स्कूलों और कालेजों को छोड़कर राष्ट्रीय ढंग की शिक्षा हासिल करें. इस सिलसिले में मुल्क भर में जगह-जगह नेशनल कालेज और स्कूल क़ायम किये गये. चौथा था 'स्वराज' यानी देश को आज़ाद करना. हमारी टोली के प्रसिद्ध राष्ट्र कवि पंडित माधव शुक्ल ने उस चौमुखी कार्यक्रम पर नीचे लिखी कविता लिखी:—

"जय-जय श्री तिलक देव! भारत हितकारी!
स्वदेशी अरु बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार,
हिन्द में स्वराज—चारि पन्थ के पुजारी!"

नरम दल के नेता लोकमान्य तिलक के नये चतुर्मुखी कार्य-क्रम के ख़िलाफ़ थे. कांग्रेस के ज्यादातर पुराने नेता इसी नरम दल में थे. लेकिन देश भर में जनता के अन्दर गरम दल का असर तेजी के साथ बढ़ता जा रहा था.

अंग्रेज शासकों ने नये दल को दबाने और बंग भंग के मक़सद को पूरा करने के लिये ज़ोरदार कोशिश की. ढाका के नवाब सलीमुल्ला ख़ाँ को चौदह लाख रिश्वत देकर मुसलिम लीग क़ायम कराई गई और उसी साल लाहौर में हिन्दू सभा की स्थापना हुई. लाहौर के जिस जल्से में हिंदू सभा क़ायम हुई उसमें मैं भी इत्तफ़ाक़ से मौजूद था. मैं पंजाब यूनिवर्सिटी के कानवोकेशन में अपनी डिगरी लेने गया था.

दिसम्बर सन् 1906 में कलकत्ते में कांग्रेस का बाईसवाँ इजलास हुआ. मैं, धर्मा और दूसरे साथी कलकत्ते की कांग्रेस में भी वालंटियरों की हैसियत से शामिल हुए. जनता का जोश हद को पहुँच चुका था. सरकार की चालों का उल्टा असर हो रहा था. सलीमुल्ला ख़ाँ और उनकी मुसलिम लीग के जवाब में उनके भाई अतीक़उल्ला ख़ाँ ने कांग्रेस में खूब खुलकर हिस्सा लिया. गरम दल के सौभाग्य से दादा भाई नौरोजी, जो तीस साल के राजनीतिक तजरबे के बाद उसी साल इंगलैंड से भारत आये थे, कांग्रेस के सभापति थे. दादा भाई नौरोजी ने सभापति के आसन से गरम दल वालों का खुलकर साथ दिया और कांग्रेस के मंच से इतिहास में पहली बार 'स्वराज' शब्द का उपयोग किया. गरम दल के सब प्रस्ताव थोड़े बहुत अदल बदल के साथ पास हो गये. देश में जोश बढ़ता चला गया.

تھا ۔ جس میں 60 کروڑ روپیہ سالانہ کا صرف کپڑا تھا ۔ دیش کے کاریگر بھوکے مر رہے تھے' دیش غریب ہوتا جا رہا تھا' شودیشی کا مطلب تھا کہ ہم اپنے دیش کے اُدیوگ دھندوں کو پھر سے چمکائیں اور اپنے روزمرہ کے استعمال میں جہاں تک ہو سکے' دیش کی بنی ہوئی چیزیں کام میں لائیں ۔ دوسرا تھا بائیکاٹ' یعنی یہ کہ ہم انگریزوں کے انیائے کے جواب میں انگلینڈ کے بنے ہوئے ہر طرح کے مال کا خاص طور سے بہشکار کریں گے' اِس بائیکاٹ میں سرکاری نوکریاں اور خطابات بھی شامل تھے ۔ تیسرا تھا' 'راشٹری شکشا' انگریزوں کے بنائے اسکولوں اور کالجوں کو چھوڑ کر راشٹری ڈھنگ کی شکشا حاصل کریں ۔ اِس سلسلے میں ملک بھر میں جگہہ جگہہ نیشنل کالج اور اسکول قایم کئے گئے ۔ کا 'سوراج' یعنی دیش کو آزاد کرنا ۔ ہمارے ٹولی کے پرسدھ راشٹر کوی پنڈت مادھو شکل نے اُس چومکھی کاریہ کرم پر نیچے لکھی کویتا لکھی ۔

"جے جے شری تلک دیو! بھارت ہت کاری!
سودیشی اور بہشکار' راشٹری شکشا پر سار
ہند میں سوراج' چاری پنتھ کے پجاری!"

نرم دل کے نیتا لوکمانیہ تلک کے نئے چتورمکھی کاریہ کرم کے خلاف تھے ۔ کانگریس کے زیادہ تر پرانے نیتا اِسی نرم دل میں تھے ۔ لیکن دیش بھر میں جنتا کے اندر گرم دل کا اثر تیزی کے ساتھ بڑھتا جا رہا تھا ۔

انگریزی شاسکوں نے نئے دل کو دبانے اور بنگ بھنگ کے مقصد کو پورا کرنے کے لئے زوردار کوشش کی ۔ ڈھاکا کے نواب سلیم‌اللہ خاں کو چودہ لاکھ رشوت دے کر مسلم لیگ قایم کرائی گئی اور اُسی سال لاہور میں ہندو سبھا کی استھاپنا ہوئی ۔ لاہور کے جس جلسے میں ہندو سبھا قایم ہوئی اُس میں میں بھی اتفاق سے موجود تھا ۔ میں پنجاب یونیورسٹی کے کانووکیشن میں یہ ڈگری لینے گیا تھا ۔

دسمبر سن 1906 میں کلکتے میں کانگریس کا بائیسواں اجلاس ہوا ۔ میں' دھرما اور دوسرے ساتھی کلکتہ کی کانگریس میں بھی والنٹیروں کی حیثیت سے شامل ہوئے ۔ جنتا کا جوش حد کو پہنچ چکا تھا ۔ سرکار کی چالوں کا الٹا اثر ہو رہا تھا ۔ سلیم‌اللہ خاں اور اُن کی مسلم لیگ کے جواب میں اُن کے بھائی عتیق اللہ خاں نے کانگریس میں خوب کھل کر حصہ لیا ۔ گرم دل کے سوبھاگیہ سے دادا بھائی نوروجی' جو تیس سال کے راجنیتک تجربے کے بعد اُس سال انگلینڈ سے بھارت آئے تھے' کانگریس کے سبھاپتی تھے ۔ دادا بھائی نوروجی نے سبھا پتی کے آسن سے گرم دل والوں کا کھل کر ساتھ دیا اور کانگریس کے منچ سے اِتہاس میں پہلی بار 'سوراج' شبد کا اُپیوگ کیا ۔ گرم دل کے سب پرستاؤ تھوڑے بہت ادل بدل کے ساتھ پاس ہو گئے' دیش میں جوش بڑھتا گیا ۔

हम चाहते हैं कि इलाहाबाद की टोली भी हमारे साथ मिलकर काम करे. मै सबसे नहीं मिलूँगा. गुप्त रहकर ही अरविन्द बाबू और तुम्हारे बीच मे सन्देश वाहक (क़ासिद) का काम करूँगा." उसके बाद से ज्योतिन बोस हमारे और अरविन्द बाबू के बीच में कई बरस तक पोस्ट आफिस का काम करते रहे.

इस हालत में दिसम्बर सन् 1905 में बनारस में कांग्रेस का इक्कीसवाँ अधिवेशन हुआ. श्री गोपाल कृष्ण गोखले सभापति थे. देश में काफी जोश था. इलाहाबाद से साथियों को लेकर मैं बनारस पहुँचा. हम लोग स्वयं सेवक की हैसियत से कांग्रेस में शामिल हुए थे. उस समय कांग्रेस की अजब कैफ़ियत थी. उसके हर इजलास में सबसे पहला प्रस्ताव इंगलैंड के बादशाह की तरफ़ वफादारी का होता था. उस साल भी सबसे पहले यही प्रस्ताव आया. पहली बार देश के कुछ नेताओं ने उसका विरोध किया. उनके अगुआ थे लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत राय. मुझे लोकमान्य केयह लफ़्ज़ आज तक याद हैं:—

"We have been over loyal up to this time let us decrease our loyalty."

लोकमान्य का समर्थन करते हुए लाला लाजपत राय ने कहा:—

"Let the prince go and tell his father that there is no welcome for him in the Indian heart."

मैं नाम भूल गया लेकिन एक वक्ता के मुझे ये शब्द अब तक याद हैं:—

"कांग्रेस अभी तक नाबालिग़ थी. उसे शासकों की देख-रेख की जरूरत थी, अब वह 21साल की यानी बालिग़ हो, चुकी. अब उसे अपना काम खुद सँभालना चाहिए."

मगर फिर भी कांग्रेस में पुराने नेताओं का जोर था और वफ़ादारी का प्रस्ताव किसी तरह पास हो ही गया.

उस समय देश में दो राजनीतिक दल साफ़ दिखाई देने लगे. एक जिसे एक्स्ट्रीमिस्ट, राष्ट्रीय, या गरम दल कहा जाता था, जिसके ख़ास नेता तिलक महाराज, लाला लाजपत राय, श्री विपिन चन्द्र पाल और श्री अरविन्द घोष थे. और दूसरा जो माडरेट, लिबरल या नरम दल कहलाता था, जिसके मुख्य नेता सर फ़ीरोज़शाह मेहता, श्री दिनशा ईदुलजी वाचा, पंडित मदन मोहन मालवीय और श्री गोपाल कृष्ण गोखले थे. बनारस कांग्रेस के बाद भी बंग भंग के जवाब में तिलक महराज ने चौमुखी प्रोग्राम देश के सामने रखा. इनमें पहला स्वदेशी है. देश के उद्योग धन्धे उस समय बेहद दबे हुये थे. अरबों रुपयों का माल योरोप से आता

چاهتے هیں الٰہ آباد کی ٹولی بھی همارے ساتھ مل کر کام کرے ۔ میں سب سے نہیں ملونگا. گپت رہ کر هی اروند بابو اور تمہارے بیچ میں سندیش واہک (قاصد) کا کام کرونگا ." اس کے بعد جیوتن بوس همارے اور اروند بابو کے بیچ میں کئی برس تک پوسٹ آفس کا کام کرتے رهے ۔

اِس حالت میں دسمبر سن 1905 میں بنارس میں کانگریس کا اکیسواں ادھیویشن ہوا ۔ شری گوپال کرشن گوکھلے سبھا پتی تھے ۔ دیش میں کافی جوش تھا ۔ الٰہ آباد سے ساتھیوں کو لے کر میں بنارس پہنچا. هم لوگ سویم سیوک کی حیثیت سے کانگریس میں شامل ہوئے تھے ۔ اس سمے کانگریس کی عجیب کیفیت تھی. اس کے هر اجلاس میں سب سے پہلا پرستاؤ انگلینڈ کے بادشاہ کی طرف وفاداری کا هوتا تھا. اس سال بھی سب سے پہلے یہی پرستاؤ آیا. پہلی بار دیش کے کچھ نیتاؤں نے اس کا ورودھ کیا - ان کے اگوا تھے لوکمانیہ تلک اور لاله لجپت رائے مجھے لوکمانیہ کے یہ لفظ آج تک یاد هیں :—

"We have been over loyal up to this time, let us decrease our loyalty."

لوکمانیہ کا سمرتھن کرتے ہوئے لاله لاجپت رائے نے کہا :—

"Let the prince go and tell his father that there is no welcome for him in the Indian heart."

میں نام بھول گیا لیکن ایک وقتا کے یہ شبد اب تک یاد هیں:—

"کانگریس ابھی تک نابالغ تھی ۔ اُسے شاسکوں کی دیکھ ریکھ کی ضرورت تھی' اب وہ 21 سال کی یعنی بالغ هو چکی ۔ اب اُسے اپنا کام خود سنبھالنا چاهئے ۔"

مگر پھر بھی کانگریس میں پرانے نیتاؤں کا زور تھا اور وفاداری کا پرستاؤ کسی طرح پاس هو هی گیا ۔

اُس سمے دیش میں دو راج نیتک دل صاف دکھائی دینے لگے ۔ ایک جسے اکسٹریمسٹ' راشٹری گرم دل کہا جاتا تھا' جس کے خاص نیتا تلک مہاراج' لاله لجپت رائے' شری وپن چندر پال' اور شری اروند گھوش تھے' اور دوسرے جو ماڈریٹ لبرل یا نرم دل کہلاتا تھا' جس کے مکھیہ نیتا سر فیروز شاہ مہتا' شری دنشا ایدولجی واچا' پنڈت مدن موهن مالویہ اور شری گوپال کرشن گوکھلے تھے . بنارس کانگریس کے بعد بھی بنگ بھنگ کے جواب میں تلک مہراج نے چومکھی پروگرام دیش کے سامنے رکھا اُن میں پہلا سودیشی ہے ۔ دیش کے اُدیوگ دھندے اُس سمے بے حد دبے ہوئے تھے ۔ اربوں روپئے کا مال یورپ سے آتا

सदारत में यह जलसा हुआ. जलसे में गिने चुने क़रीब दो सौ आदमी थे, जिसमें खुफ़िया पुलिस के आदमियों का भी एक जत्था था. आज तो जलसों में लाखों की भीड़ होती है मगर उस समय जलसे में जाना भी बड़ी हिम्मत का काम समझा जाता था. बहुत धुंधली सी याद रह गई है उस जलसे की, क्योंकि उसे बीते ठीक ५१ बरस हो चुके हैं. लेकिन इतना मुझे साफ़ साफ़ याद है कि जब पंडित बालकृष्ण भट्ट बहुत गरमा गरम तक़रीर कर रहे थे तो किसी ने पीछे से उनके अँगरखे का पल्ला खींचा. भट्ट जी इस पर बिगड़ पड़े. कहने लगे—

"हमारे अंगरखे का पल्ला खींचत है, चाहत है हम बोली न. हिए में तो लागी है आग, कही काहे न."

हम नौजवान शहर में घूमते और लोगों से स्वदेशी व्रत की प्रतिज्ञा लेने को कहते. बंगाल का उस समय का नारा था—

'भाई भाई एक ठाँई'
भेद नाईं भेद नाईं !

लोगों से वादा लेते कि जब तक हमारा मुल्क आज़ाद न हो जाए हम आपस के सब भेद भाव भुला देंगे.

रोज़ रोज़ तो आम जलसे हो नहीं सकते थे लिहाज़ा हम नौजवान बोर्डिंग हाउस से एक स्टूल लेकर शाम को घंटाघर पहुँचते थे और बारी बारी से स्टूल पर खड़े होकर व्याख्यान देते थे. हममें से जो कवि या शायर थे, वह कविताएँ या नज़में पढ़ते. रोज़ रोज़ की मीटिंगों का यह अखंड सिलसिला उसी वक़्त टूटता जबकि कोई दूसरी बड़ी आम सभा होती या हम सब के सब शहर के बाहर होते. एक मुसलमान नौजवान दोस्त की तक़रीर का एक फ़िक़रा अब तक मुझे याद रह गया है, हालांकि ख़ुद उनका नाम मुझे याद नहीं रहा, वह कहा करते—"हिन्दू और मुसलमानो ! तुम दोनों चने की दाल की तरह हो ? जब तक इत्तफ़ाक़ यानी एकता का छिलका तुम दोनों के ऊपर रहेगा तब तक तुम सलामत रहोगे, वरना मिट जाओगे."

दिसम्बर १९०५ की बात है, एक दिन मैं बोर्डिंग हाउस में अपने कमरे में बैठा हुआ था कि एक नौजवान दस्तक देकर भीतर आया. २६-२७ बरस की उम्र होगी, गठीला बदन, चेहरे से क़ूवत और हिम्मत प्रगट होती थी, आकर पूछा—"तुम्हीं सुन्दरलाल हो ?"

मैंने कहा—"हाँ"

"मेरा नाम ज्योतिन बोस है, यहाँ मैं कीडगंज में ठहरा हूँ. अरविन्द बाबू ने मुझे तुमसे मिलने भेजा है.

صدارت میں یہ جلسہ ہوا ۔ جلسہ میں گنے چنے قریب دو سو آدمی تھے' جس میں خفیہ پولیس کے آدمیوں کا بھی ایک جتھا تھا ۔ آج تو جلسوں میں لاکھوں کی بھیڑ ہوتی ہے مگر اُس سمے جلسہ میں جانا بھی بڑی ہمت کا کام سمجھا جاتا تھا ۔ بہت دھندلی سی یاد رہ گئی ہے اُس جلسہ کی' کیونکہ اُسے بیتے ٹھیک 51 برس ہو چکے ہیں ۔ لیکن مجھے صاف صاف یاد ہے کہ جب پنڈت بال کرشن بھٹ بہت سر گرم تقریر کر رہے تھے تو کسی نے پیچھے سے اُن کے انگرکھے کا پلہ کھینچا ۔ بھٹ جی اُس پر بگڑ پڑے ۔ کہنے لگے—

"ہمارے انگرکھے کا پلہ کھینچت ہیں، چاہت ہیں ہم بولی نا ۔ ہئے میں تو لاگی ہے آگ' کہی کاہے نا ۔"

ہم نوجوان شہر میں گھومتے اور لوگوں سے سودیشی ورت کی پرتگیاں لینے کو کہتے ۔ بنگال کا اُس سمے کا نعرہ تھا—

"بھائی بھائی ایک ٹھائیں
بھید نائیں بھید نائیں !"

لوگوں سے وعدہ لیتے کہ جب تک ہمارا ملک آزاد نہ ہو جائیگا ہم آپس کے سب بھید بھاؤ بھلا دیں گے ۔

روز روز تو عام جلسے ہو نہیں سکتے تھے لہذا ہم نوجوان بورڈنگ ہاؤس سے ایک اسٹول لے کر شام کو گھنٹہ گھر پہنچتے تھے اور باری باری سے اسٹول پر کھڑے ہو کر ویاکھیان دیتے تھے۔ ہم میں سے جو کوی یا شاعر تھے' وہ کویتا یا نظم پڑھتے ۔ روز روز کی میٹنگوں کا یہ اکھنڈ سلسلہ اُسی وقت ٹوٹتا جب کہ کوئی دوسری بڑی عام سبھا ہوتی یا ہم سب کے سب شہر باہر ہوتے ۔ ایک مسلمان نوجوان دوست کی تقریر کا ایک ٹکڑا اب تک مجھے یاد رہ گیا ہے' حالانکہ خود مجھے اُن کا نام یاد نہیں رہا ۔ وہ کہا کرتے—"ہندو اور مسلمانو ! تم دونوں چنے کی دال کی طرح ہو ۔ جب تک اتفاق کی یکتا کا چھلکا تم دونوں کے اوپر رہے گا تب تک تم دونوں سلامت رہو گے ۔ ورنہ مٹ جاؤ گے ۔"

دسمبر 1905 کی بات ہے' ایک دن میں بورڈنگ ہاؤس میں اپنے کمرے میں بیٹھا ہوا تھا کہ ایک نوجوان دستک دے کر بھیتر آ گیا ۔ 26-27 برس کی عمر ہوگی' گٹھیلا بدن' چہرے سے قوت اور ہمت پرگٹ ہوتی تھی ۔ آخر پوچھا—"تم ہی سندر لال ہو ؟"

میں نے کہا ۔ "ہاں ۔"

"میرا نام جیوتن بوس ہے' یہاں میں کیڈ گنج میں ٹھہرا ہوں ۔ اروند بابو نے مجھے تم سے ملنے بھیجا ہے ۔

यह नहीं कि इस गरम मंडली में खाली नौजवान ही थे, बल्कि कुछ बुज़ुर्ग भी अंदर ही अंदर हमारी मदद करते और हमारे साथ पूरी हमदर्दी रखते थे. इन बुज़ुर्गों में 'माडेन रिव्यू' और 'प्रवासी' के मशहूर संपादक बाबू रामानन्द चटर्जी, हिन्दी के मशहूर लेखक पंडित बालकृष्ण भट्ट, डिप्टी कलक्टर और मशहूर विद्वान पंडित श्रीकृष्ण जोशी और इनके अलावा गवर्नमेंट कालेज के साइन्स के अध्यापक बाबू शशि भूषण चटर्जी थे. रामानन्द बाबू कायस्थ पाठशाला कालेज के प्रिंसिपल थे. पंडित बालकृष्ण भट्ट उसी कालेज में संस्कृत और हिन्दी के प्रोफेसर थे. पंडित श्री कृष्ण जोशी थे तो डिप्टी कलक्टर और सरकारी अफ़सर लेकिन उनके दिल में अपने मुल्क की आज़ादी के लिए एक तड़प थी. शशि बाबू उन बुज़ुर्गों में थे जिनकी क़ाबलियत और चरित्र ने उन्हें लोगों की नज़रों में बहुत ऊँचा उठा दिया था. शशि बाबू को संगीत और ज्ञान चरचा का बेहद शौक़ था. यह बुज़ुर्ग मंडली अक्सर उनके यहाँ इकट्ठा होती थी. कभी कभी इस मंडली में उर्दू के मशहूर शायर अकबर हुसेन और पंडित मदन मोहन मालवीय भी शामिल हो जाते थे.

नौजवान दोस्तों में पंडित बाल कृष्ण भट्ट के पुत्र महादेव भट्ट, और शशि बाबू के सबसे बड़े बेटे नित्यानन्द चटरजी थे. रास बिहारी शुक्ल को हम सब लोग प्रेम से 'राशी' कहकर पुकारते थे. बाद में ज़माने ने पलटा खाया, राशी को मजबूर होकर सरकारी नौकरी करनी पड़ी. अपनी क़ाबलियत के लिए वह रायसाहब भी बने और सेक्रेटेरियट में हेल्थ डिपार्टमेंट के सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद से रिटायर हुए. टीकाराम त्रिपाठी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के स्कूल के अध्यापक थे लेकिन बाद में उन्हें अपनी अध्यापकी से इस्तीफ़ा देना पड़ा. टीकाराम को छोड़कर और सभी साथियों को मौत ने अपनी गोद में समेट लिया है, और जब मैं यह लाइनें लिख रहा हूँ, मेरी आँखों के सामने इन देश प्रेमी साथियों के चेहरे घूम रहे हैं.

इलाहाबाद में अभी हमारी टोली को संगठित हुए दो महीने भी न बीत पाए थे कि बंगाल में एक ऐसी घटना घटी जिसने सारे मुल्क की निगाहें अपनी तरफ़ कर लीं. 16 अक्टूबर सन् 1905 को बंगाल के दो टुकड़े कर दिए गये. बंग-भंग ने एक आन्दोलन की शकल ले ली. बंगाल के दो टुकड़े तो हुए मगर बंग-भंग के आन्दोलन ने बिछड़े हुए दिलों को मिला दिया.

इलाहाबाद में हम नौजवानों की टोली अगला क़दम उठाने की तजवीज़ें करने लगी. हम लोगों ने फ़ैसला किया ३१ अक्तूबर को जमना के किनारे बलुआघाट पर पहला आम जलसा किया जाए. पंडित बालकृष्ण भट्ट की

یہ نہیں کہ اس گرم منڈلی میں خالی نوجوان ہی تھے بلکہ کچھ بزرگ بھی اندر ہی اندر ہماری مدد کرتے اور ہمارے ساتھ پوری ہمدردی رکھتے تھے ۔ ان بزرگوں میں ماڈرن ریویو اور پرواسی' کے مشہور سمپادک بابو رامانند چٹر جی' ہندی کے مشہور لیکھک پنڈت بال کرشن بھٹ' ڈپٹی کلکٹر اور مشہور ودوان پنڈت شری کرشن جوشی اور ان کے علاوہ گورنمنٹ کالج کے سائنس کے ادھیاپک بابو ششی بھوشن چٹر جی تھے ۔ رامانند بابو کائستھ پاٹھ شالا کالج کے پرنسپل تھے ۔ پنڈت بال کرشن بھٹ اسی کالج میں سنسکرت اور ہندی کے پروفیسر تھے ۔ پنڈت شری کرشن جوشی تھے تو ڈپٹی کلکٹر اور سرکاری افسر لیکن ان کے دل میں اپنے ملک کی آزادی کے لئے ایک تڑپ تھی ۔ ششی بابو ان بزرگوں میں سے تھے جن کی قابلیت اور چرتر نے انہیں لوگوں کی نظروں میں بہت اونچا اٹھا دیا تھا ۔ ششی بابو کو سنگیت اور گیان چرچا کا بےحد شوق تھا ۔ یہ بزرگ منڈلی اکثر ان کے یہاں اکٹھا ہوتی تھی ۔ کبھی کبھی اس منڈلی میں اردو کے مشہور شاعر اکبر حسین اور پنڈت مدن موہن مالویہ بھی شامل ہوجاتے تھے ۔

نوجوان دوستوں میں پنڈت بال کرشن بھٹ کے پتر مہادیو بھٹ اور ششی بابو کے سب سے بڑے بیٹے نتیا نند چٹر جی تھے ۔ راس بہاری شکل کو ہم سب پریم سے 'راشی' کہہ کر پکارتے تھے ۔ بعد میں زمانہ نے پلٹا کھایا' راشی کو مجبور ہو کر سرکاری نوکری کرنی پڑی ۔ اپنی قابلیت کے لئے وہ رائے صاحب بھی بنے اور سکریٹریٹ میں ہیلتھ ڈپارٹمنٹ کے سپرنٹنڈنٹ کے پد سے ریٹائر ہوئے ۔ ٹیکا رام ترپاٹھی ڈسٹرکٹ بورڈ کے اسکول کے ادھیاپک تھے لیکن بعد میں انہیں اپنی ادھیاپکی سے استعفیٰ دینا پڑا ۔ ٹیکا رام کو چھوڑ کر اور سبھی ساتھیوں کو موت نے اپنی گود میں سمیٹ لیا ہے اور جب میں یہ لائنیں لکھ رہا ہوں' میری آنکھوں کے سامنے ان دیش پریمی ساتھیوں کے چہرے گھوم رہے ہیں ۔

الہ آباد میں ابھی ہماری ٹولی کو سنگٹھت ہوئے دو مہینے بھی نہ بیت پائے تھے کہ بنگال میں ایک ایسی گھٹنا گھٹی جس نے سارے ملک کی نگاہیں اپنی طرف کر لیں ۔ 17 اکتوبر سن 1905 کو بنگال کے دو ٹکڑے کر دیئے گئے ۔ بنگ بھنگ نے ایک آندولن کی شکل لے لی ۔ بنگال کے دو ٹکڑے تو ہوئے مگر بنگ بھنگ کے آندولن نے بچھڑے ہوئے دلوں کو ملا دیا ۔

الہ آباد میں ہم نوجوانوں کی ٹولی اگلا قدم اٹھانے کی تجویزیں کرنے لگی ۔ ہم لوگوں نے فیصلہ کیا کہ 31 اکتوبر کو جمنا کے کنارے بلوا گھاٹ پر پہلا عام جلسہ کیا جائے ۔ پنڈت بال کرشن بھٹ کی

वह ज़माना ही ऐसा था जब सियासत और वकालत एक ही तसवीर के दो पहलू थे. उन्हीं की सलाह से मैंने इलाहाबाद पहुँचकर ला कालेज में नाम लिखाने का फ़ैसला किया. इत्तफ़ाक़ से मेरे पिता जी को भी यही मशविरा पसंद आया, मगर एक दूसरे नुक़्तेनज़र से. वह चाहते थे कि मैं मुंसिफ़ बनूँ क्योंकि उस ज़माने में मुंसिफ़ी से हाईकोर्ट का जजी तक एक खुला सीधा रास्ता था और मुंसिफ़ी के लिये वकालत पढ़ना ज़रूरी था. नतीजा यह हुआ कि सन् 1905 में यूनिवर्सिटी खुलने पर मैं इलाहाबाद पहुंच गया और हिन्दू बोर्डिंग हाउस में दाख़िल हो गया.

सर सुन्दरलाल और उनके भाई पंडित कन्हैयालाल, जो बाद में हाईकोर्ट के जज बने, मेरे पिता जी के दोस्तों में से थे. पिता जी के हुक्म के मुताबिक़ इलाहाबाद पहुँचते ही मैं उनसे भी मिलने गया. उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं एम० ए० और लॉ दोनों में ही अपना नाम लिखा लूँ. चुनांचे एम० ए० में फ़िलासफ़ी और एल-एल० बी० में मैंने अपना नाम लिखा लिया.

पंजाब में उस ज़माने में कालेजों और यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी आम तौर पर पगड़ी बाँधा करते थे. बाद में पगड़ी की जगह टोपी ने ले ली और अब तो टोपी की जगह नंगा सर ही लोग पसंद करने लगे. मगर उस ज़माने में सर खुला रखना तहज़ीब के ख़िलाफ़ बात समझी जाती थी. मालवीय जी एक निराली किस्म की पगड़ी बाँधते थे. वह तरीक़ा मुझे इतना पसंद आया कि लाहौर ही से मैंने मालवीय जी की तरह पगड़ी बाँधनी शुरू कर दी. इतनी अच्छी पगड़ी मैं बाँध लेता था कि मेरे साथी, मालवीय जी के बड़े पुत्र पंडित रमाकान्त मालवीय को भी मुझसे ईर्षा होती थी. किन्तु इस पगड़ी का यह असर पड़ा कि लोग मुझे निहायत नरम विचारों का समझने लगे, लेकिन धीरे-धीरे लोगों की यह ग़लतफ़हमी दूर हो गई, और लोग यह जान गये कि मालवीय छाप पगड़ी के नीचे एक गरम सिर है.

यूनीवर्सिटी के विद्यार्थियों में गरम ख़याल के दो विद्यार्थियों की तरफ़ मेरी नज़र गई, एक बुरहानपुर के के० पी० मिश्र थे और दूसरे नागपुर निवासी एन० एम० धरमा. दोनों ही मेरे साथ एल-एल० बी० में पढ़ते थे. कुछ महीनों के बाद ही गरम विचार के नौजवानों की मंडली काफ़ी ताक़त पकड़ने लगी और धीरे धीरे इलाहाबाद गरम दल का एक ख़ास अड्डा बन गया. नए साथियों में बाबू नित्यानन्द चटर्जी, महादेव भट्ट, रास बिहारी शुक्ल, टीकाराम त्रिपाठी और माधो शुक्ल थे. माधो शुक्ल बड़ी लय के साथ अपनी देश-प्रेम से भरी कविताएं पढ़ते और नौजवानों के दिलों को अपनी ओर कर लेते थे.

وہ زمانہ ہی ایسا تھا جب سیاست اور وکالت ایک ہی تصویر کے دو پہلو تھے۔ اُنہوں کی صلاح سے میں نے الٰہ‌آباد پہنچ کر لا کالج میں نام لکھانے کا فیصلہ کیا۔ اتفاق سے میرے پتا جی کو بھی یہی مشورہ پسند آیا۔ مگر ایک دوسرے نقطۂ نظر سے۔ وہ چاہتے تھے کہ میں منصف بنوں کیونکہ اُس زمانہ میں منصفی سے ہائی کورٹ کی ججی تک ایک کھلا سیدھا راستہ تھا اور منصفی کے لئے وکالت پڑھنا ضروری تھا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سن 1905 میں یونیورسٹی کھلنے پر میں الٰہ‌آباد پہنچ گیا اور ہندو بورڈنگ ہاؤس میں داخل ہوگیا۔

سر سندر لال اور اُن کے بھائی پنڈت کنہیا لال، جو بعد میں ہائی کورٹ کے جج بنے، میرے پتا جی کے دوستوں میں سے تھے۔ پتا جی کے حکم کے مطابق الٰہ‌آباد پہنچتے ہی میں اُن سے ملنے گیا۔ انہوں نے مجھے صلاح دی کہ ایم۔اے اور لا دونوں ہی میں اپنا نام لکھالوں۔ چنانچہ ایم۔اے میں فلاسفی، اور ایل۔ایل۔بی میں میں نے اپنا نام لکھا لیا۔

پنجاب میں اُس زمانے میں کالجوں اور یونیورسٹی کے ودیارتھی عام طور پر پگڑی باندھا کرتے تھے۔ بعد میں پگڑی کی جگہ ٹوپی نے لے لی اور اب تو ٹوپی کی جگہ ننگا سر ہی لوگ پسند کرنے لگے۔ مگر اُس زمانے میں سر کھلا رکھنا تہذیب کے خلاف بات سمجھی جاتی تھی۔ مالویہ جی ایک نرالی قسم کی پگڑی باندھتے تھے۔ اور وہ طریقہ مجھے اتنا پسند آگیا کہ لاہور ہی سے میں نے مالویہ جی کی طرح پگڑی باندھنی شروع کردی۔ اتنی اچھی پگڑی میں باندھ لیتا تھا کہ میرے ساتھی مالویہ جی کے بڑے پتر پنڈت رماکانت مالویہ کو بھی مجھ سے ایرشا ہوتی تھی۔ کنتو اِس پگڑی کا یہ اثر پڑا کہ لوگ مجھے نہایت نرم وچاروں کا سمجھنے لگے۔ لیکن دھیرے دھیرے لوگوں کی یہ غلط فہمی دور ہوگئی اور لوگ یہ جان گئے کہ مالویہ چھاپ پگڑی کے نیچے ایک گرم سر ہے۔

یونیورسٹی کے ودیارتھیوں میں گرم خیال کے دو ودیارتھیوں کی طرف میری نظر گئی۔ ایک برہان پور کے کے۔پی۔ مشر تھے اور دوسرے ناگپور نواسی این۔ایم۔ دھرما۔ دونوں ہی میرے ساتھ ایل۔ایل۔بی میں پڑھتے تھے۔ کچھ مہینوں کے بعد ہی گرم وچار کے نوجوانوں کی منڈلی کافی طاقت پکڑنے لگی اور دھیرے دھیرے الٰہ‌آباد گرم دل کا ایک خاص اڈا بن گیا۔ نئے ساتھیوں میں بابو نتیانند چٹرجی، مہادیو بھٹ، راس بہاری شکل اور ٹیکا رام ترپاٹھی اور مادھو شکل تھے۔ مادھو شکل بڑی لے کے ساتھ اپنی دیش پریم سے بھری اپنی کویتائیں پڑھتے اور نوجوانوں کے دلوں کو اپنی اور کرلیتے تھے۔

सन् 1905 का स्वदेशी आन्दोलन और मेरा राजनैतिक जीवन

पण्डित सुन्दरलाल

सन् 1905 की बात है !

डी० ए० वी० कालेज लाहौर से बी० ए० पास करने के बाद मेरे सामने आगे की पढ़ाई का सवाल था.

लाहौर में लाला लाजपतराय के साथ बहुत नज़दीकी ताल्लुक़ात पैदा हो चुके थे. उनके क़दमों के पास बैठकर मैंने राजनीति के पहल पाठ पढ़े थे. मैं उन्हें अपने पिता की तरह पूज्य मानता था और उन्हें मुझसे सगे बेटे से भी ज़्यादा मुहब्बत थी. उन्हीं की हिदायत के मुताबिक़ सन् 1904 में यू० पी० के पूर्वी ज़िलों में अकाल पीड़ितों की सेवा सार्वजनिक जीवन में मेरा पहला क़दम था.

मेरे सामने सवाल था कि मैं एम० ए० पास करके शिक्षक बनूँ या वकालत पास करके राजनीति में गहराई से हिस्सा लूँ. लाला जी से मैंने मशविरा किया. उनकी राय थी कि सियासी ज़िन्दगी के लिए वकालत पढ़ना ही ठीक है.

سن 1905 کا سودیشی اندولن اور میرا راج نیتک جیون

پنڈت سندر لال

سن 1905 کی بات ہے !

ڈی۔ اے۔ وی۔ کالج لاہور سے بی۔ اے۔ پاس کرنے کے بعد میرے سامنے آگے کی پڑھائی کا سوال تھا۔

لاہور میں لالہ لجپت رائے کے ساتھ بہت ہی نزدیکی تعلقات پیدا ہوچکے تھے۔ اُن کے قدموں کے پاس بیٹھ کر میں نے راج نیتی کے پہلے پاٹھ پڑھے تھے۔ میں اُنہیں اپنے پتا کی طرح پوجیہ مانتا تھا اور اُنہیں مجھ سگے سے بیٹے سے بھی زیادہ محبت تھی۔ اُنہیں کی ہدایت کے مطابق سن 1904 میں یو۔پی۔ کے پوروی ضلعوں میں اکال پیڑتوں کی سیوا ساروجنک جیون میں میرا پہلا قدم تھا۔

میرے سامنے سوال تھا کہ میں ایم۔ اے۔ پاس کر کے شکشک بنوں یا وکالت پاس کر کے راج نیتی میں گہرائی سے حصہ لوں۔ لالہ جی سے میں نے مشورہ کیا۔ اُن کی رائے تھی کہ سیاسی زندگی کے لئے وکالت پڑھنا ہی ٹھیک ہے۔

[पिछले सफ़े से आगे]

अफ़लातून ने ईश्वर को एक बड़े गणितज्ञ के रूप में ही देखा था. यही बात वेदान्त और वेदांगों में कही गई है. उक्लैदस के सूत्रों की पहली शकल बिलकुल भारत के 'श्री यन्त्र' से मिलती है जिसमें एक अनन्त अनादि ब्रह्म चक्र के रूप में दिखाया जाता है और उसके अन्दर जड़ और चेतन सृष्टि दो एक दूसरे को काटते हुये त्रिकोणों के रूप में. यह चक्र कभी-कभी एक साँप की शकल में भी दिखाया जाता है जिसका मुँह खुद अपनी दुम को खाने की कोशिश कर रहा है.

यही संसार यानी जगत है. यही माया यानी भ्रम है.

इस तरह यूनानी गणितज्ञ उक्लैदस विश्वात्मा, प्रकृति और उन दोनों के मेल से पैदा होने वाली सारी सृष्टि को नमस्कार करता हुआ अपनी पुस्तक को प्रारम्भ करता है.

दुनिया की सारी साइन्सें इन्हीं दोनों के सहारे क़ायम हैं.

[پچھلے صفحے سے آگے]

افلاطون نے ایشور کو ایک بڑے گنڑگیہ کے روپ میں ہی دیکھا تھا۔ یہی بات ویدانت اور ویدانگوں میں کہی گئی ہیں۔ اقلیدس کے سوتروں کی پہلی شکل بالکل بھارت کے 'شری ینتر' سے ملتی ہے جس میں ایک اننت انادی برہم چکر کے روپ میں دکھایا جاتا ہے اور اُس کے اندر جڑ اور چیتن سرشٹی دو ایک دوسرے کو کاٹتے ہوئے تریکون کے روپ میں۔ یہ چکر کبھی کبھی ایک سانپ کی شکل میں بھی دکھایا جاتا ہے جس کا منہ خود اپنی دم کو کھانے کی کوشش کر رہا ہے۔

یہی سنسار یعنی جگت ہے۔ یہی مایا یعنی بھرم ہے۔

اِس طرح یونانی گنڑگیہ اقلیدس وشو آتما، پرکرتی اور اُن دونوں کے میل سے پیدا ہونے والی ساری سرشٹی کو نمسکار کرتا ہوا اپنی پستک کو پرارمبھ کرتا ہے۔

دنیا کی ساری سائنس انہیں دونوں کے سہارے قایم ہیں۔

देश, काल और हरकत इन्हीं तीन से सारी दुनिया समझी जा सकती है. इसीलिये गणित सब साइन्सों की जड़ है. इसीलिये असल ज्ञान को संस्कृत में 'सम्यक-ज्ञानम्' कहा गया है. इसी से 'संख्या' बना है जिसका अर्थ गिनती है. इसी से सांख्य शास्त्र का नाम 'सांख्य' पड़ा. जब गीता लिखी गई थी उस समय वेदान्त सांख्य में शामिल था.

सर जे० जीन्स अपनी पुस्तक 'दि मिस्टीरियस यूनीवर्स' के आखीर में लिखता है:—

"चेतन और जड़ यानी रूह और माद्दा के बीच की पुरानी दुई (द्वैत) अब मिटती हुई मालूम होती है......क्योंकि जिसे हम ठोस माद्दा कहते हैं वह अब चेतन की ही रचना और उसका ही एक ज़हूर मालूम होने लगा है. यह चेतन एक ऐसी कल्पना शक्ति और नियन्त्रण शक्ति है जो उसी तरीक़े से सोचने की आदी है जिस तरीक़े को हम गणित का तरीक़ा कहते हैं."

जोड अपनी पुस्तक 'गाइड टु मार्डन थाट' में लिखता है:—

"यदि हम यह प्रश्न करें कि इस सारे वजूद की असल हक़ीक़त क्या हो सकती है तो इसके जवाब में सर जे० जीन्स की राय है, कि वह असल हक़ीक़त एक बहुत बड़े गणितज्ञ (ईश्वर) का मस्तिष्क है, प्रोफ़ेसर एडिंगटन के अनुसार असल हक़ीक़त एक सर्वव्यापक मस्तिष्क है, प्रोफ़ेसर वाइटहेड के अनुसार अस्ल हक़ीक़त एक तरह की शारीरिक इकाई है जो एक व्यक्ति या मनुष्य सी है, और बर्गसन के अनुसार अस्ल हक़ीक़त जीवन की धारा या शक्ति है."

वेदान्त के अद्वैतवाद यानी 'सोऽहम्' में यह सब सिद्धान्त समा जाते हैं. योरप का वैज्ञानिक विचार तरह-तरह से घूम फिर कर वेदान्त के ठीक दरवाजे तक पहुँच जाता है. लेकिन वहां जाकर रुक जाता है, अन्दर जाने की उसे अभी हिम्मत नहीं हो रही है जहाँ जाकर वह यह देख सके कि एक ही आत्मा विश्वात्मा यानी रूहेकुल सबमें रमी हुई है और वही सब है.

मशहूर यूनानी गणितज्ञ उक्लैदस ने अपनी रेखा गणित के सूत्रों में पहली शकल त्रिकोण को ही क्यों रखा इसकी कोई खास वजह नहीं बताई जाती. इतिहासकारों का कहना है कि रेखागणित की विद्या मिस्र से यूनान गई थी जहाँ उक्लैदस ने अपनी किताब ईसा से तीन सौ बरस पहले लिखी. इतिहासकारों की यह भी राय है कि यह रेखा-गणित मिस्र में भारत से गया था. कुछ की यह भी राय है कि मिस्र के पहले राजकुल का क़ायम करने वाला 'मैनी' आर्य जाति के आदि-मनुओं में से था. इससे मालूम होता है कि उक्लैदस के दिमाग़ में गणित और दर्शन शास्त्र (फ़ल-सफ़े) में गहरा सम्बन्ध था. पाइथागोरस और प्लेटो (अफ़लातून) भी गणित और दर्शन शास्त्र को एक ही मानते थे.

دیش، کال اور حرکت انہیں تین سے ساری دنیا سمجھی جا سکتی ہے اسی لئے گنت سب سائنسوں کی جڑ ہے۔ اسی لئے اصلی گیان کو سنسکرت میں 'سمیک—گیانم' کہا گیا ہے۔ اسی سے 'سنکھیا' بنا ہے جس کا ارتھ گنتی ہے۔ اس سے سانکھیہ شاستر کا نام 'سانکھیہ' پڑا۔ جب گیتا لکھی گئی تھی اس سمے ویدانت سانکھیہ میں شامل تھا۔

سر جے جینس اپنی پستک 'دی مسٹیریس یونیورس' کے آخیر میں لکھتا ہے:—

"چیتن اور جڑ یعنی روح اور مادہ کے بیچ کی پرانی دوئی (دویت) اب مٹتی ہوئی معلوم ہوتی ہے...کیونکہ جسے ہم ٹھوس مادہ کہتے ہیں وہ اب چیتن کی ہی رچنا اور اس کا ہی ایک ظہور معلوم ہونے لگا ہے۔ یہ چیتن ایک ایسی کلپنا شکتی اور نینترن شکتی ہے جو اسی طریقے سے سوچنے کی عادی ہے جس طریقے کو ہم گنت کا طریقہ کہتے ہیں۔"

جوڈ اپنی پستک 'گائڈ ٹو ماڈرن تھاٹ' میں لکھتا ہے:—

"یدی ہم یہ پرشن کریں کہ اس سارے وجود کی اصل حقیقت کیا ہوسکتی ہے تو اس کے جواب میں سر جے جینس کی رائے ہے کہ وہ اصل حقیقت ایک بہت بڑے گنتگیہ (ایشور) کا مستشک ہے، پروفیسر ایڈنگٹن کے انوسار اصل حقیقت ایک سرو ویاپک مستشک ہے، پروفیسر وائٹ ہیڈ کے انوسار اصل حقیقت ایک طرح کی شاریرک اکائی ہے جو ایک ویکتی منشیہ سی ہے، اور برگسن کے انوسار اصل حقیقت جیون کی دھارا یا شکتی ہے۔"

ویدانت کے ادویت واد یعنی 'سوہم' میں یہ سب سدھانت سما جاتے ہیں۔ یورپ کا وگیانک وچار طرح طرح سے گھوم پھر کر ویدانت کے ٹھیک دروازے تک پہنچ جاتا ہے۔ لیکن وہاں جا کر رک جاتا ہے، اندر جانے کی اسے ابھی ہمت نہیں ہو رہی ہے جہاں جاکر وہ یہ دیکھ سکے کہ ایک ہی آتما وشو آتما یعنی روح کل سب میں رمی ہوئی ہے اور وہی سب ہے۔

مشہور یونانی گنتگیہ اقلیدس نے اپنی ریکھا گنت کے سوتروں میں پہلی شکل تریکون کو ہی کیوں رکھا اس کی کوئی خاص وجہ نہیں بتائی جاتی۔ اتہاسکاروں کا کہنا ہے کہ ریکھا گنت کی ودیا مصر سے یونان گئی تھی جہاں اقلیدس نے اپنی کتاب عیسیٰ سے تین سو برس پہلے لکھی۔ اتہاسکاروں کی یہ بھی رائے ہے کہ یہ ریکھا گنت مصر میں بھارت سے گیا تھا۔ کچھ کی یہ بھی رائے ہے کہ مصر کے پہلے راج کل کا قایم کرنے والا 'مینی' آریہ جاتی کے آدی منوؤں میں سے تھا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ اقلیدس کے دماغ میں گنت اور درشن شاستر (فلسفے) میں گہرا سمبندھ تھا۔ پائتھاگورس اور پلیٹو (افلاطون) بھی گنت اور درشن شاستر کو ایک ہی مانتے تھے۔

असल हक़ीक़त केवल एक है और वह 'निर्विकार' है 'निर्विशेष' है, 'प्रशान्त' है, 'पूर्ण' है वही 'आत्मा' है, वही 'स्वयं-सिद्ध' यानी ख़ुद अपना प्रमाण है, सारी दुनिया उसके अन्दर है, वही 'निरपेक्ष' यानी ऐबसोलूट है, और सब 'सापेक्ष' यानी 'रैलेटिव' है. फिर फिर कर यही आइन्स्टाइन का सिद्धान्त है और यही वेदान्त का उसूल. यही असली 'विज्ञान' है, यही प्राचीन 'प्रज्ञान' है, मुसलिम सूफ़ियों के अनुसार यही वहदतुलवजूद है.

आजकल के बड़े-बड़े साइन्सदानों का बयान वेदान्त के असूलों से बेहद मिल जाता है. मिसाल के लिये सर जे. जीन्स की 'दि मिस्टीरियस यूनीवर्स', और डाक्टर एलैकसिस कैरल की 'मैन दि अन्नोन' पढ़ने योग्य किताबें हैं. सर जे०जीन्स लिखता है कि:—"आजकल की साइन्स इसी नतीजे पर पहुँच रही है कि दुनिया की सब चीज़ों का वजूद एक अनादि और अनन्त आत्मा के मन के अन्दर है." "दुनिया की घटनाएँ घटित नहीं होतीं, केवल हम उन्हें घटित होते हुए देखते हैं. प्लैटो (अफ़लातून) कहता था कि:—"हम 'था' 'हैं', और 'होगा' कहते हैं लेकिन सचाई यह है कि हमें केवल 'है' ही कहना चाहिये." ऊपर के सब वाक्य सर जे० जीन्स की किताब से लिये गये हैं.

डाक्टर एलैकसिस कैरल ने लिखा है कि:—"हम अभी तक ऐसे संसार में डूबे हुये हैं जिसे बेजान माद्दे की साइन्सों ने पैदा किया है. यह संसार हमारी समझ की ग़लती से पैदा हुआ है. हम अपनी असली आत्मा को नहीं जान पाये इसीलिये यह दुनिया पैदा हुई. आजकल के शहरों के शोर शर के अन्दर भी जो अपनी अन्तरात्मा की शान्ति को क़ायम रखते हैं वह तरह-तरह की दिमाग़ी और दूसरी बीमारियों से बचे रहते हैं. जो आत्मा ईश्वर के अन्दर डूब जाती है उसकी रोशनी के सामने मौत भी मुसकराकर रह जाती है."

लेकिन आजकल की साइन्स अभी यह कहने को तैयार नहीं है कि वह अनादि और अनन्त आत्मा, वह हमारी सच्ची आत्मा, हमारी अन्तरात्मा, ईश्वर, वही एक आत्मा सब के अन्दर है. और वही सब है. तत्त्वमसि, अहम ब्रह्मास्मि, अनलहक़ जैसी सच्चाइयाँ अभी तक साइन्स की समझ के दायरे से दूर हैं. इसीलिये अभी साइन्स को असलियत तक पहुँचने में दिक़्क़त पड़ रही है.

समय का गणित अंकगणित है जिसमें जोड़, बाक़ी और शून्य (सिफ़र) सब हमारी कल्पनाएँ हैं. देश का गणित रेखागणित है, जिसमें पाइंट यानी नुक़्ता, लाइन, सतह, कोण, त्रिकोण, दायरा, समानान्तर सब दार्शनिक कल्पनाएँ हैं. इनमें से कोई कहीं असली शकल में देखी नहीं जा सकती.

اصل حقیقت کیول ایک ہے اور وہ نروکار، ہے؛ 'نروشیش' ہے' پرشانت ہے' پورن، ہے۔ وہی 'آتما' ہے۔ وہی 'سویم سدھ' یعنی خود اپنا پرمان ہے۔ ساری دنیا اُس کے اندر ہے۔ وہی' نرپیکش' یعنی ایبسولوٹ ہے۔ اور سب' ساپیکش' یعنی' ریلیٹو' ہے۔ ہر پھر کر یہی آئنسٹائن کا سدھانت ہے اور یہی ویدانت کا اصول. یہی اصلی' وگیان ہے'یہی پراچین' پرگیان' ہے۔ مسلم صوفیوں کے انوسار یہی وحدۃ الوجود ہے۔

آجکل کے بڑے بڑے سائنسدانوں کا بیان ویدانت کے اصولوں سے بہت جاتا ہے۔ مثال کے لئے سرجے۔ جینس کی' دی مسٹیریس یونی ورس' اور ڈاکٹر الیکسس کیرل کی' مین دی ان نون' پڑھنے یوگ کتابیں ہیں۔ سر جے۔ جینس لکھتا ہے کہ:—" آجکل کی سائنس اِسی نتیجے پر پہنچ رہی ہے کہ دنیا کی سب چیزوں کا وجود ایک انادی اور اننت آتما کے من کے اندر ہے" "دنیا کی گھٹنائیں گھٹت نہیں ہوتیں؛ کیول ہم اُنہیں گھٹت ہوتے ہوئے دیکھتے ہیں۔ پلیٹو (افلاطون) کہتا ہے کہ:—ہم 'تھا' کہتے ہیں۔ اور 'ہوگا' کہتے ہیں لیکن سچائی یہ ہے کہ ہمیں کیول' ہیں ہی کہنا چاہیے." اوپر کے سب واکیہ سر جے۔ جینس کی کتاب سے لیئے گئے ہیں۔

ڈاکٹر الیکسس کیرل نے لکھا ہے کہ:—"ہم ابھی تک ایک ایسے سنسار میں ڈوبے ہوئے ہیں جسے بےجان مادے کی سائنسوں نے پیدا کیا ہے۔ یہ سنسار ہماری سمجھ کی غلطی سے پیدا ہوا ہے۔ ہم اپنی اصلی آتما کو نہیں جان پائے اِس لئے یہ دنیا پیدا ہوئی۔ آجکل کے شہروں کے شور و شر کے اندر بھی جو اپنی انتر آتما کی شانتی کو قایم رکھتے ہیں' وہ طرح طرح کی دماغی اور دوسری بیماریوں سے بچے رہتے ہیں۔ جو آتما ایشور کے اندر ڈوب جاتی ہے اُسی کی روشنی کے سامنے موت بھی مسکرا کر رہ جاتی ہے۔"

لیکن آجکل کی سائنس ابھی یہ کہنے کو تیار نہیں ہے کہ وہ انادی اور اننت آتما' وہ ہماری سچی آتما' ہماری انتر آتما' ایشور' وہی ایک آتما سب کے اندر ہے۔ اور وہی سب ہے۔ تتوسی' اہم برہماسمی' اناالحق جیسی سچائیاں ابھی تک سائنس کے سمجھ کے دائرے سے دور ہیں۔ اِسی لئے ابھی سائنس کو اصلیت تک پہنچنے میں دقت پڑ رہی ہے۔

سمے کا گنت انک گنت ہے جس میں جوڑ' باقی اور شونیہ (صفر) سب ہماری کلپنائیں ہیں۔ دیش کا گنت ریکھا گنت ہے' جس میں پائنٹ یعنی نقطہ' لائن' سطح' کونڑ تریکن' دائرہ' سمانانتر سب دارشنک کلپنائیں ہیں۔ اِن میں سے کوئی کہیں اصلی شکل میں دیکھی نہیں جا سکتی۔

अपनी उम्र है , हर एक का जन्म है , हर एक की मौत है और हर एक का बीच का ज़माना है , और यह सब भी दिखावा ही दिखावा है क्योंकि एक दूसरे से अलहदिगी और परिवर्तन की कल्पना ही अन्त में धोखा है, सपना है, माया है .

प्रकृति यानी क़ुदरत के दो पहलू हैं . मूल प्रकृति और दैवी प्रकृति. मूल प्रकृति माद्दा है और दैवी प्रकृति शक्ति है, यह शक्ति बराबर जन्म , मरण , अमल , रद्दे अमल के रूप में काम करती रहती है . इसका चलाने वाला ब्रह्मा कहा जाता है. वही विश्व की आत्मा है . जब एक रचना खिलक़त ख़त्म हो जाती है तो उसकी जगह दूसरी जन्म ले लेती है . ठीक जिस तरह कुछ आदमी मरते हैं तो दूसरे पैदा होते रहते हैं . जो हालत छोटे से छोटे की है वही हालत बड़े से बड़े की भी है . जो छोटे से छोटे पिन्ड में है वही बड़े से बड़े ब्रह्मान्ड में भी है. यह सब सदा बदलती हुई सूरतें आत्मा यानी असल वजूद का केवल एक सपना है.

आशा है कि आइन्स्टाइन की थ्योरी आफ़ रैलेटिविटि और वेदान्त अन्त में एक दूसरे के बहुत निकट दिखाई देंगे. आइन्स्टाइन के सिद्धान्त के ऊपर नए-नए विचारकों की जो किताबें निकल रही हैं उनसे यह बात और भी साफ़ दिखाई दे जाती है.

वास्तव में कोई दो समानान्तर रेखाएं हो ही नहीं सकती, हैं ही नहीं, सब चीज़ें चक्कर काट रही हैं या पेच की चूड़ियों की तरह हरकत कर रही हैं. देश, काल और संसार सब नाशमान हैं, सुषुप्ति या प्रलय में जाकर इन सब का अन्त हो जाता है, पाश्चात्य गणित जो सब से पक्की साइन्स गिनी जाती है, सब से फ़रज़ी अधिक कल्पनाओं के आधार पर चल रहा है. बड़े से बड़े साइन्सदानों में मतभेद हैं, बहसें हैं. एडिंगटन कहता है कि आधे बड़े से बड़े साइन्सदानों का कहना है कि 'ईश्वर' नाम की चीज़ का वजूद है, और बाक़ी आधे बड़े से बड़े साइन्सदानों का कहना है कि 'ईश्वर' का कोई वजूद ही नहीं. इसपर एक और विद्वान जोड़ लिखता है कि इन दोनों का मतलब एक ही है केवल शब्दों का झगड़ा है. सर विलियम ब्रैग कहता है कि:—"हम हर सोमवार; बुधवार और शुक्रवार को एक सिद्धान्त से काम लेते हैं और हर मंगलवार, वीरवार और शनिवार को दूसरे सिद्धान्त से काम लेते हैं."

आइन्स्टाइन के सिद्धान्त के वैज्ञानिक नतीजे कुछ भी निकलें वह सिद्धान्त वेदान्त के बिलकुल निकट और उसके अन्दर शामिल हैं. यह सब जो कुछ हम देखते हैं सापेक्ष है यानी केवल एक दूसरे की मुनासिबत से वजूद रखता है.

اپنی عمر ہے ۔ ہر ایک کا جنم ہے، ہر ایک کی موت ہے اور ہر ایک کا بیچ کا زمانہ ہے اور یہ سب بھی دکھاوا ہی دکھاوا ہے کیونکہ ایک دوسرے سے علیحدگی اور پریورتن کی کلپنا ہی انت میں دھوکا ہے، سپنا ہے، مایا ہے ۔

پرکرتی یعنی قدرت کے دو پہلو ہیں ۔ مول پرکرتی اور اور دیوی پرکرتی ۔ مول پرکرتی مادہ ہے اور دیوی پرکرتی شکتی ہے ۔ یہ شکتی برابر جنم، مرن عمل' ردعمل کے روپ میں کام کرتی رہتی ہے ۔ اِس کا چلانے والا برہما کہا جاتا ہے ۔ وہی وشو کی آتما ہے ۔ جب ایک رچنا (خلقت) ختم ہو جاتی ہے تو اُس کی جگہ دوسری جنم لے لیتی ہے ۔ ٹھیک جس طرح کچھ آدمی مرتے ہیں تو دوسرے پیدا ہوتے رہتے ہیں ۔ جو حالت چھوٹے سے چھوٹے کی ہے وہی حالت بڑے سے بڑے کی بھی ہے ۔ جو چھوٹے سے چھوٹے پانڈ میں ہے وہی بڑے سے بڑے برہمانڈ میں بھی ہے ۔ یہ سب سدا بدلتی ہوئی صورتیں آتما یعنی اصل وجود کا کیول ایک سپنا ہے ۔

آشا ہے کہ آئنسٹائن کی تھیوری آف ریلیٹیوٹی اور ویدانت انت میں ایک دوسرے کے بہت نکٹ دکھائی دیں گے ۔ آئنسٹائن کے سدھانت کے اوپر نئے نئے وچارکوں کی جو کتابیں نکل رہی ہیں اُن سے یہ بات اور بھی صاف دکھائی دے جاتی ہے ۔

واستو میں کوئی دو سمانانتر ریکھائیں ہو ہی نہیں سکتیں، ہیں ہی نہیں ۔ سب چیزیں چکر کاٹ رہی ہیں یا پیچ کی چوڑیوں کی طرح حرکت کر رہی ہیں ۔ دیش کال اور سنسار سب ناشمان ہیں ۔ سوشوپتی یا پرلئے میں جاکر اِن سب کا انت ہوجاتا ہے ۔ پاشچاتیہ گنت جو سب سے پکی سائنس گنی جاتی ہے، سب سے ادھک کلپناؤں کے ادھار پر چل رہی ہے ۔ بڑے سے بڑے سائنسدانوں میں مت بھید ہیں، بحثیں ہیں ۔ ایڈنگٹن کہتا ہے کہ آدھے بڑے سے بڑے سائنسدانوں کا کہنا ہے کہ' ایشور' نام کی چیز کا وجود ہے' اور باقی آدھے بڑے سے بڑے سائنسدانوں کا کہنا ہے کہ' ایشور' کا کوئی وجود ہی نہیں ۔ اِس پر ایک اور ودوان جوڑ لکھتا ہے کہ' اِن دونوں کا مطلب ایک ہی ہے کیول شبدوں کا جھگڑا ہے ۔ سر ولیم بریگ کہتا ہے کہ:— "ہم ہر سوموار' بدھ وار اور شکروار کو ایک سدھانت سے کام لیتے ہیں اور ہر منگل وار' ویر وار اور شنیوار کو دوسرے سدھانت سے کام لیتے ہیں ۔"

آئنسٹائن کے سدھانت کے ویگیانک نتیجے کچھ بھی نکلیں' وہ سدھانت ویدانت کے بالکل نکٹ اور اُسی کے اندر شامل ہے ۔ یہ سب جو کچھ ہم دیکھتے ہیں ساپیکش ہے یعنی کیول ایک دوسرے کی مناسبت سے وجود رکھتا ہے ۔

आजकल योरप में आइंस्टाइन की 'थ्योरी आफ़ रैलेटिविटी' की बहुत चरचा है. मोटे तौर पर इसका अर्थ यह लिया जाता है कि दुनिया की सब चीज़ों का वजूद जिनमें देश, काल और क्रिया भी शामिल हैं, केवल सापेक्ष यानी दूसरी चीज़ों की मुनासिबत से ही है इनका अपना असल वजूद कुछ नहीं. आइन्स्टाइन के इस सिद्धान्त को लेकर योरप में तरह-तरह की चरचाएँ हो रही हैं और बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं. कुछ का कहना है कि समय कोई चीज़ नहीं, केवल चौड़ाई, लम्बाई और गहराई की तरह समय भी एक फ़रज़ी दिशा है. कुछ का कहना है कि देश यानी जगह अन्त में जाकर मुड़ जाती है यानी गोल हो जाती है. कुछ का कहना है कि समानान्तर यानी मुतवाज़ी लकीरें अगर काफ़ी दूर तक बढ़ाई जावें तो आख़ीर में मिल जावेंगी. कुछ कहते हैं कि देश, काल और विश्व सब सान्तक यानी फ़ानी और महदूद हैं. कुछ यह भी कहते हैं कि यह विश्व कहीं बढ़ रहा है, कहीं सिकुड़ रहा है और हर सूरत में इसकी शक्ति के क्षीण होने के साथ साथ यह एक दिन नष्ट हो जावेगा, इत्यादि इत्यादि. कुछ का यह भी कहना है कि विश्व की असलीयत को सिवाय बड़े गहरे साइन्सदानों के और कोई समझ ही नहीं सकता.

इस देश का पुराना दर्शन शास्त्र हमेशा से मानता चला आया है कि देश, काल और क्रिया तीनों तीन हैं, फिर भी इनमें से किसी को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता और तीनों एक बराबर माया यानी फरेब हैं. इनका वजूद आदमी के सपने से ज़ियादह हैसियत नहीं रखता. जो दुनियाएँ, चाँद, सूरज वग़ैरा हमें दिखाई देते हैं इनके बीच बीच में और इनमें को निकलती हुई और भी दुनियाएँ हैं जो बिलकुल दूसरी ही तरह के माद्दे से बनी हैं. उन दुनियाओं में देश, काल और हरकत के भी और ही अर्थ होते हैं. यह दुनियाएं हमारे जागते समय की दुनियाएँ भी हैं और सपने के समय की दुनियाएँ भी हैं. हमारे नीचे भी हैं और ऊपर भी हैं. यूरोपियन विद्वान फूरनियर डी. एलबे ने इस विषय पर एक बहुत अच्छी किताब 'टू न्यु वर्ल्ड्स' यानी दो नई दुनियाएं लिखी है. उसके अनुसार इनमें से एक दुनिया वह है जो बिना ख़ुर्दबीन के नहीं देखी जा सकती. वह भी करोड़हा करोड़ संखहा संख जन्तुओं की दुनिया है. और दूसरी वह दुनिया है जो बिना दूरबीनों के नहीं देखी जा सकती जिस में अरबों छोटे, बड़े सितारे, सैयारे, चाँद, सूरज और सूरजों के सूरज शामिल हैं.

योरप का विज्ञान आइन्सटाइन के बाद वेदान्त की इस कल्पना की तरफ़ साफ़ बढ़ रहा है कि अन्त में जाकर सब क्रिया या हरकत गोलाकार चक्रों में रह जाती है. इस संसार चक्र का न कोई आदि है और न कोई अन्त, यूँ हर चीज़ की

آجکل یورپ میں آئنسٹائن کی 'تھیوری آف ریلیٹیوٹی' کی بہت چرچا ہے. موٹے طور پر اِس کا ارتھ یہ لیا جاتا ہے کہ دنیا کی سب چیزوں کا وجود' جن میں دیش' کال اور کریا بھی شامل ہیں' کیول ساپیکش یعنی دوسری چیزوں کی مناسبت سے ہی ہے. اِن کا اپنا اصل وجود کچھ نہیں. آئنسٹائن کے اِس سدھانت کو لے کر یورپ میں طرح طرح کی چرچائیں ہو رہی ہیں اور بہت سی کتابیں لکھی جا چکی ہیں. کچھ کا کہنا ہے کہ سمے کوئی چیز نہیں' کیول چوڑائی' لمبائی اور گہرائی کی طرح سمے بھی ایک فرضی دِشا ہے. کچھ کا کہنا ہے کہ دیش یعنی جگہہ انت میں جاکر مُڑ جاتی ہے یعنی گول ہو جاتی ہے. کچھ کا کہنا ہے کہ سمانانتر یعنی متوازی لکیریں اگر کافی دور تک بڑھائی جاویں تو آخر میں مل جاویں گی. کچھ کہتے ہیں کہ دیش' کال اور وشو سب سانتک یعنی فانی اور محدود ہیں. کچھ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ وشو کہیں بڑھ رہا ہے' کہیں سکڑ رہا ہے اور ہر صورت میں اِس کی شکتی کے چھین ہونے کے ساتھ ساتھ یہ ایک دن نشٹ ہو جاوے گا' اتیادی اتیادی. کچھ کا یہ بھی کہنا ہے کہ وشو کی اصلیت کو سوائے بڑے گہرے سائنسدانوں کے اور کوئی سمجھ ہی نہیں سکتا.

اِس دیش کا پرانا درشن شاستر ہمیشہ سے مانتا چلا آیا ہے کہ دیش' کال اور کریائیں تینوں تین ہیں' پھر بھی اِن میں سے کسی ایک دوسرے سے الگ نہیں کیا جا سکتا اور تینوں ایک برابر مایا یعنی فریب ہیں. اِن کا وجود آدمی کے سپنے سے زیادہ حیثیت نہیں رکھتا. جو دنیائیں' چاند' سورج وغیرہ ہمیں دکھائی دیتے ہیں اِن کے بیچ بیچ میں اور اِن میں کو نکلتی ہوئی اور بھی دنیائیں ہیں جو بالکل دوسرے ہی طرح کے مادے سے بنی ہیں. اُن دنیاؤں میں دیش' کال اور حرکت کے بھی اور ہی ارتھ ہوتے ہیں. یہ دنیائیں ہمارے جاگتے سمے کی دنیائیں بھی ہیں اور سپنے کے سمے کی دنیائیں بھی ہیں. ہمارے نیچے بھی ہیں اور اوپر بھی ہیں. یورپین ودوان فورنیئر ڈی. البے نے اِس وشے پر ایک بہت اچھی کتاب 'ٹو نیو ورلڈس' یعنی دو نئی دنیائیں لکھی ہے. اُس کے انوسار اِن میں سے ایک دنیا وہ ہے جو بنا خوردبین کے نہیں دیکھی جا سکتی. وہ بھی کروڑہا کروڑ سنکھ ہا سنکھ جنتوؤں کی دنیا ہے. اور دوسری وہ دنیا ہے جو بنا دوربینوں کے نہیں دیکھی جا سکتی جس میں اربوں چھوٹے بڑے ستارے' سیارے' چاند' سورج اور سورجوں کے سورج شامل ہیں.

یورپ کا وگیان آئنسٹائن کے بعد ویدانت کی اِس کلپنا کی طرف صاف بڑھ رہا ہے کہ انت میں جا کر سب کریا یا حرکت گولاکار چکروں میں رہ جاتی ہیں. اِس سنسار چکر کا نہ کوئی آدی اور نہ کوئی انت. یوں ہر چیز کی

आईस्टाइन का सिद्धान्त और वेदान्त

डाक्टर भगवानदास

यह दुनिया क्या है ?

आत्मा, रूह यानी 'मैं' क्या हूँ और अनात्मा यानी मादा यानी यह सब जो दिखाई देता है यह क्या है, और इन दोनों में क्या सम्बन्ध है ? यही सवाल दर्शन शास्त्र (फ़लसफ़े) का मुख्य सवाल है और यही सवाल. तेज़ी के साथ साइन्स का मुख्य सवाल होता जा रहा है.

आत्मा और अनात्मा के मेल के दो पहलू हैं. एक पहलू है जिसे हम देश, काल, और क्रिया, यानी मकान, ज़मान और हरकत कहकर बयान करते हैं, और दूसरा पहलू शक्ति के रूप में दिखाई देता है, जिसे हम क्रिया, प्रतिक्रिया और कार्यकारण सम्बन्ध यानी अमल, रद्दे अमल और इल्लत और मालूल का रिश्ता कह सकते हैं. दुनिया में हमारे सारे अनुभव इन्हीं में आ जाते हैं.

जब हमें चीज़ें एक दूसरे के बाद होती मालूम होती हैं तो काल (समय) की कल्पना पैदा होती है. बहुत सी चीज़ों के एक साथ वजूद से देश (जगह) की कल्पना पैदा होती है. चीज़ों के अदलने बदलने से क्रिया (हरकत) की कल्पना पैदा होती है. इन तीनों काल, देश और क्रिया का एक दूसरे के साथ अटूट सम्बन्ध है.

काल (समय) के तीन क्रम हैं भूत, भविष्य और दोनों को मिलाने वाला वर्तमान. देश (जगह) के तीन पाद (क़दम) हैं. ऊपर, नीचे और दोनों को मिलाने वाला बीच. 'वहाँ' भी कह सकते हैं. इन्हीं के रूप लम्बाई, चौड़ाई और गहराई हैं.

क्रिया (हरकत) की तीन दिशाएँ (तीन सिम्त) हैं. इन्हीं को तीन 'प्रकार' भी कह सकते हैं,—आगे, पीछे और गोल चक्कर, दूसरे शब्दों में बढ़ना, सिकुड़ना और सुरीलापन. या वह शक्ति जो सब चीज़ों को मरकज़ की तरफ़ खींचती है, वह जो सबको मरकज़ से दूर फेंकती है, और वह जो चीज़ों को गोलाकार घुमाती है.

यह सब केवल कल्पनाएँ हैं, तसव्वुर हैं, सब ख़ाम-ख़याली हैं. इनका रूप जब बनता है जब इनके साथ किसी द्रव्य, किसी तत्व, किसी तरह के ठोस मादे का सम्बन्ध होता है, तब यह सब कल्पनाएँ हमारी ज़िन्दगी के तजरबे बन जाती हैं.

آئنسٹائن کا سدھانت اور ویدانت

ڈاکٹر بھگوان داس

یہ دنیا کیا ہے ؟

آتما' روح یعنی 'میں' کیا ہوں اور ان آتما یعنی مادہ یعنی یہ سب جو دکھائی دیتا ہے یہ کیا ہے' اور اِن دونوں میں کیا سمبندھ ہے ؟ یہی سوال درشن شاستر (فلسفے) کا مکھیہ سوال ہے اور یہی سوال تیزی کے ساتھ سائنس کا مکھیہ سوال ہوتا جا رہا ہے ۔

آتما اور ان آتما کے میل کے دو پہلو ہیں ۔ ایک پہلو ہے جسے ہم دیش' کال' اور کریا' یعنی مکان' زمان اور حرکت کہہ کر ہم بیان کرتے ہیں' اور دوسرا پہلو شکتی کے روپ میں دکھائی دیتا ہے' جسے ہم کریا' پرتی کریا اور کاریہ کارن سمبندھ یعنی عمل' رد عمل اور علت اور معلول کا رشتہ کہہ سکتے ہیں ۔ دنیا میں ہمارے سارے انوبھو اِنھیں میں آجاتے ہیں ۔

جب ہمیں چیزیں ایک دوسرے کے بعد ہوتی معلوم ہوتی ہیں تو کال (سمے) کی کلپنا پیدا ہوتی ہے ۔ بہت سی چیزوں کے ایک ساتھ وجود سے دیش (جگہ) کی کلپنا پیدا ہوتی ہے ۔ چیزوں کے ادلنے بدلنے سے کریا (حرکت) کی کلپنا پیدا ہوتی ہے ۔ اِن تینوں کال' دیش اور کریا کا ایک دوسرے کے ساتھ اٹوٹ سمبندھ ہے ۔

کال (سمے) کے تین کرم ہیں بھوت' بھوشیہ اور دونوں کو ملانے والا ورتمان ۔ دیش (جگہ) کے تین پاد (قدم) ہیں ۔ اوپر' نیچے اور دونوں کو ملانے والا بیچ ۔ اِنھیں کو پیچھے' آگے اور ملانے والا 'یہاں' بھی کہہ سکتے ہیں ۔ اِنھیں کے روپ لمبائی' چوڑائی اور گہرائی ہیں ۔

کریا (حرکت) کی تین دشائیں (تین سمت) ہیں ۔ اِنھیں کو تین 'پرکار' بھی کہہ سکتے ہیں'— آگے' پیچھے اور گول چکر دوسرے شبدوں میں بڑھنا' سکڑنا اور سریلا پن ۔ یا وہ شکتی جو سب چیزوں کو مرکز کی طرف کھینچتی ہے' وہ جو سب کو مرکز سے دور پھینکتی ہے' اور وہ جو چیزوں کو گولاکار گھماتی ہے ۔

یہ سب کیول کلپنائیں ہیں' تصور ہیں' سب خام خیالی ہیں ۔ اِن کا روپ جب بنتا ہے جب اِن کے ساتھ کسی درویہ' کسی تتو' کسی طرح کے ٹھوس مادے کا سمبندھ ہوتا ہے ۔ تب یہ سب کلپنائیں ہماری زندگی کے تجربے بن جاتی ہیں ۔

चित्रकला और ईरानी और वस्त एशिया की चित्रकला को मिलाकर एक बहुत ही .ख़ूबसूरत चित्रकला के नये ढंग को जनम दिया गया. ईरानी और मध्य एशिया के चितेरों ने भारतीय चित्रकारों के पास बैठकर भारतीय कला के सुन्दर आदर्शों को अपनी कल्पना की उड़ान से और ज़्यादा माँझा और सुन्दर बनाया. दोनों, हिन्दू और मुसलमान, कलाकारों ने इस नई शैली को यकसाँ अपनाया. उस समय के किसी चित्र को देखकर यह कह सकना नामुमकिन है कि अमुक चित्र का बनाने वाला हिन्दू चित्रकार है या मुसलमान चित्रकार. जगह जगह इस नई कला के केन्द्र या मरकज़ क़ायम किये गये. राजपूताना के राजपूत राजाओं, कांगड़ा की रियासतों और मध्य भारत के शासकों ने इस नई चित्रकला को बढ़ावा दिया. इसके अलावा मुख़तलिफ़ सूबों में जहाँ मुग़ल सूबेदार रहते थे या आज़ाद मुसलमान राजाओं ने अपने अपने दरबारों में इस कला को बेहद बढ़ावा दिया. अलग अलग सूबों में और अलग अलग दरबारों में मुक़ामी हालत की वजह से थोड़ा थोड़ा फ़र्क़ इन चित्रकारों की कला में दिखाई देता है लेकिन असली रूह एक ही है. वही सुन्दरता, वही चमक दमक, वही रूमानी अन्दाज़, वही रहस्यवाद—इस नई कला के विविध रूपों में दिखाई देता है और इस कला को एकता को क़ायम रखता है.

संगीत कला

कला में संगीत की एक ख़ास जगह है. यह हर शख़्स जानता है कि मुसलमान संगीतकार और गवइये जिस संगीत का अभ्यास करते हैं वह बिलकुल हिन्दुओं का ही संगीत है. यूँ उत्तर और भारत की संगीत शैली में ऊपरी .फ़र्क़ है; या एक शैली और दूसरी शैली और थोड़ा बहुत अन्तर है लेकिन यह अन्तर मज़हब की वजह से नहीं है. इसकी वजह सिर्फ़ मुक़ामी है. मुसलमानों ने हिन्दू संगीत की महारत हासिल की और नये नये बाजों, नये नये रागों और नई शैलियों से संगीत के दायरे को बढ़ाया. हिन्दुओं ने भी इन नये बाजों और नई राग-रागनियों को खुले दिल से सीखा. हिन्दू उस्तादों के मुसलिम शागिर्द और मुसलिम उस्तादों के हिन्दू शागिर्द एक आम बात थी. उस्ताद और शागिर्दों में अगर हम कोई .फ़र्क़ ढूँढ़ना चाहें तो ढूँढ़ना नामुमकिन है. संगीत और नाच की कला में बड़ी कामयाबी के साथ दोनों कलाओं का मेल जोल बैठाया गया.

लेकिन कल्चरी मेल जोल का कोई बयान उस समय तक पूरा नहीं हो सकता जब तक हम इस बात को न जान लें कि मज़हबी दायरे में हिन्दू मज़हब ने इसलाम पर क्या क्या असरात डाले. हम आगे कभी इस मज़हबी मेल जोल को और इसलाम पर हिन्दू धर्म के असर को बयान करेंगे.

[अंगरेज़ी से तर्जुमा—विश्वम्भरनाथ पांडे]

چترکلا اورایرانی اور وسط ایشیا کی چترکلا کو ملا کر ایک بہت ہی خوبصورت چترکلا کے نئے ڈھنگ کو جنم دیا گیا۔ ایرانی اور مدھیہ ایشیا کے چتیروں نے بھارتیہ چتر کاروں کے پاس بیٹھ کر بھارتیہ چترکلا کے سندر آدرشوں کو اپنی کلپنا کی اڑان سے اور زیادہ مانجھا اور سندر بنایا۔ دونوں ' ہندو اور مسلمان ' کلاکاروں نے اِس نئی شیلی کو یکساں اپنایا۔ اُس سمے کے کسی چتر کو دیکھ کر یہ کہہ سکنا ناممکن ہے کہ امک چتر کا بنانے والا ہندو چترکار ہے یا مسلمان چترکار۔ جگہ جگہ اِس نئی کلا کے کیندر یا مرکز قایم کیئے گئے۔ راجپوتانہ کے راجپوت راجاؤں 'کانگڑا کی ریاستوں اور مدھیہ بھارت کے شاسکوں نے اِس نئی چترکلا کو بڑھاوا دیا۔ اِس کے علاوہ مختلف صوبوں میں جہاں مغل صوبیدار رہتے تھے یا آزاد مسلمان راجاؤں نے اپنے اپنے درباروں میں اِس کلا کو بےحد بڑھاوا دیا۔ الگ الگ صوبوں میں اور الگ الگ درباروں میں مقامی حالت کی وجہ سے تھوڑا تھوڑا فرق اِن چترکاروں کی کلا میں دکھائی دیتا ہے لیکن اصلی روح ایک ہی ہے۔ وہی سندرتا وہی چمک دمک ' وہی رومانی انداز ' وہی رہسواد— اِس نئی کلا کے وودھ روپوں میں دکھائی دیتا ہے اور اس کلا کی ایکتا کو قایم رکھتا ہے۔

سنگیت کلا

کلا میں سنگیت کی ایک خاص جگہ ہے۔ یہ ہر شخص جانتا ہے کہ مسلمان سنگیت کار اور گویئے جس سنگیت کا ابھیاس کرتے ہیں وہ بالکل ہندوؤں کا ہی سنگیت ہے۔ یوں اتر اور بھارت کی سنگیت میں شیلی اوپری فرق ہے یا ایک شیلی اور دوسری شیلی میں تھوڑا بہت انتر ہے لیکن یہ انتر مذہب کی وجہ سے نہیں ہے۔ اُسکی وجہ صرف مقامی ہے۔ مسلمانوں نے ہندو سنگیت کی مہارت حاصل کی اور نئے نئے باجوں' نئے نئے راگوں' نئی شیلیوں سے سنگیت کے دایرے کو بڑھایا۔ ہندوؤں نے بھی اِن نئے باجوں اور نئی راگ راگنیوں کو کھلے دل سے سیکھا۔ ہندو استادوں کے مسلم شاگرد اور مسلم استادوں کے ہندو شاگرد ایک عام بات تھی۔ استاد اور شاگردوں میں اگر آج ہم کوئی فرق ڈھونڈھنا چاہیں تو ڈھونڈھنا ناممکن ہے۔ سنگیت اور ناچ کی میں کلا بڑی کامیابی کے ساتھ دونوں کلاؤں کا میل جول بیٹھ گیا۔

لیکن کلچری میل جول کا کوئی بیان اُس سمے تک پورا نہیں ہوسکتا جب تک ہم اِس بات کو نہ جان لیں کہ مذہبی دائرے میں ہندو مذہب نے اِسلام پر کیا کیا اثرات ڈالے۔ ہم آگے کبھی اِس مذہبی میل جول کو اور اِسلام پر ہندو دھرم کے اثر کو بیان کریں گے۔

[انگریزی سے ترجمہ—وشومبھر ناتھ پانڈے]

हुये थे, यहीं पले थे और यहीं बड़े हुये थे. उनकी रग रग में हिंदुस्तानियत पेवस्त थी फिर उनकी कला पर हिंदुस्तान का असर क्यों न पड़ता, हालाँकि उनके रास्ते में रुकावटें थीं और वे चोटी के कारीगर भी न थे फिर भी उनकी छेनी और हथौड़ी ने उन इमारतों पर हिन्दुस्तान की कला की साफ़ छाप छोड़ी है. इस तरह उस जमाने की मुसलिम इमारतों पर हिन्दुस्तानी कल्चर का गहरा असर दिखाई देता है. हर डिज़ाइन में हिन्दू तर्ज़ ढूँढ लीजिये. यह जोरदार लफ़्ज़ों में कहा जा सकता है कि मुसलमानों को हिन्दुस्तान में रहते रहते ज्यों-ज्यों ज्यादा दिन बीतते गये, त्यों त्यों उनकी कला पर हिन्दुस्तानियत का गहरा पुट चढ़ता गया."

मुग़लों की तामीरी कला

मुग़लों की तामीरी कला के मुताल्लिक़ यहाँ कुछ कहने की जरूरत नहीं. मुग़ल कला का निखार अकबर के जमाने में हुआ. अकबर ने ऊँचे दरजे के एक ख़ास हिन्दुस्तानी आर्ट को जनम दिया. शाहजहाँ का झुकाव ईरानी आर्ट की तरफ़ था. लेकिन शाहजहाँ भी अकबर के आर्ट की रूह को न बदल सका. तामीरी कला के जानने वालों का बयान है कि शाहजहाँ की इमारतों का बाहरी हिस्सा ईरानी तर्ज़ का है लेकिन इमारतों के भीतर ख़ालिस हिन्दुस्तानी कला के ठोस नमूने नजर आते हैं.

अगर हम इस उसूल को मान लें कि कला के ही जरिये किसी मुल्क या क़ौम की आत्मा का पता चलता है तो यह एक बेकाट सचाई है कि मँझले जमाने के भारत की तामीरी कला में एक ही आत्मा और एक ही कल्चर के दर्शन मिलते हैं. पन्द्रहवीं सदी के बाद से हिन्दू या मुसलमानों की बनवाई हुई एक भी इमारत ऐसी न मिलेगी, चाहे वह क़िला हो या महल, मन्दिर हो या मसजिद जिस पर मिली जुली हिन्दुस्तानी कला की छाप न पड़ी हो—ऐसी कला जिसे मुसलमान हुक्मरानों के साये में हिन्दू शिल्पी और संगतराशों ने तरक़्क़ी दी. पन्द्रहवीं सदी में ग्वालियर में राजा मानसिंह के बनवाये हुये महल इस भारतीय मुसलिम कला के सबसे पहले नमूने हैं. जिस तरह मुसलमान शासकों के बनवाये हुये मक़बरों, महलों और मसजिदों पर भारतीय हिन्दू कला की छाप है उसी तरह वृन्दावन के वैष्णव मन्दिरों, हिन्दू राजाओं और साधुओं की समाधियों और छतरियों पर और भारत में फैली हुई बेशुमार हिन्दू इमारतों पर भारतीय मुसलिम कला की यानी मिली-जुली भारतीय कला की छाप है.

चित्रकला

चित्रकला यानी तसवीर साज़ी के दायरे में भी इसी मिली जुली कला के हमें दर्शन मिलते हैं. क़दीम भारतीय

ہوئے تھے، یہیں پلے تھے اور یہیں بڑے ہوئے تھے۔ اُن کی رگ رگ میں ہندستانیت پیوست تھی پھر اُن کی کلا پر ہندستان کا اثر کیوں نہ پڑتا؟ حالانکہ اُن کے راستے میں رکاوٹیں تھیں اور وے چوٹی کے کاریگر بھی نہ تھے پھر بھی اُن کی چھینی اور ہتھوڑیوں نے اُن عمارتوں پر ہندستان کی کلا کی صاف چھاپ چھوڑی ہے۔ اِس طرح اُس زمانے کی مسلم عمارتوں پر ہندستانی کلچر کا گہرا اثر دکھائی دیتا ہے۔ ہر ڈزائن میں ہندو طرز ڈھونڈھ لیجئے۔ یہ زوردار لفظوں میں کہا جا سکتا ہے کہ مسلمانوں کو ہندستان میں رہتےرہتے جیوں جیوں دن بیتتے گئے، تیوں تیوں اُن کی کلا پر ہندستانیت کا گہرا پٹ چڑھتا گیا۔"

مغلوں کی تعمیری کلا

مغلوں کی تعمیری کلا کے متعلق یہاں کچھ کہنے کی ضرورت نہیں۔ مغل کلا کا نکھار اکبر کے زمانے میں ہوا۔ اکبر نے اونچے درجے کے ایک خاص ہندستانی آرٹ کو جنم دیا۔ شاہجہاں کا جھکاؤ ایرانی آرٹ کی طرف تھا۔ لیکن شاہجہاں بھی اکبر کے آرٹ کی روح کو نہ بدل سکا۔ تعمیری کلا کے جاننے والوں کا بیان ہے کہ شاہجہاں کی عمارتوں کا باہری حصہ ایرانی طرز کا ہے لیکن عمارتوں کے بھیتر خالص ہندستانی کلا کے ٹھوس نمونے نظر آتے ہیں۔

اگر ہم اِس اصول کو جان لیں کہ کلا کے ہی ذریعہ کسی ملک یا قوم کی آتما کا پتہ چلتا ہے تو یہ ایک بےکاٹ سچائی ہے کہ مانجھلے زمانے کے بھارت کی تعمیری کلا میں ایک ہی آتما اور ایک ہی کلچر کے درشن ملتے ہیں۔ پندرھویں صدی کے بعد سے ہندو یا مسلمانوں کی بنوائی ہوئی ایک بھی عمارت ایسی نہ ملےگی، چاہے وہ قلعہ ہو یا محل، مندر ہو یا مسجد جس پر ملی جلی ہندستانی کلا کی چھاپ نہ پڑی ہو— ایسی کلا جسے مسلمان حکمرانوں کے سایہ میں ہندو شلپی اور سنگتراشوں نے ترقی دی۔ پندرھویں صدی میں گوالیر کے راجہ مان سنگھ کے بنوائے ہوئے محل اِس بھارتیہ مسلم کلا کے سب سے پہلے نمونے ہیں۔ جس طرح مسلمان شاسکوں کے بنوائے ہوئے مقبروں، محلوں اور مسجدوں پر بھارتیہ ہندو کلا کی چھاپ ہے اُسی طرح ورنداون کے ویشنو مندروں، ہندو راجاؤں اور سادھوؤں کی سمادھیوں اور چھتریوں پر اور بھارت میں پھیلی ہوئی بےشمار ہندو عمارتوں پر بھارتیہ مسلم کلا کی یعنی ملی جلی بھارتیہ کلا کی چھاپ ہے۔

چتر کلا

چتر کلا یعنی تصویر سازی کے دائرے میں بھی اِسی ملی جلی کلا کے ہمیں درشن ملتے ہیں۔ قدیم بھارتیہ

हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम

हिन्दुस्तान के पुरातत्त्व यानी आर्कियालाजी डिपार्टमेंट के साबिक डाइरेक्टर जनरल सर जान मार्शल ने 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया' के भाग तीन के 'मुसलिम ज़माने की इमारतें' नामक अध्याय में लिखा है:—

"जब हिन्दू और मुसलिम तामीरी कला यानी इमारत साज़ी का समन्वय (मेल) हुआ तो मुसलिम तामीरी कला ने हिन्दू तामीरी कला से बहुत कुछ सीखा. हिन्दू फ़लसफ़े को ज़ाहिर करने वाली हिन्दू शकलें, बेल बूटे और नक़्क़ाशी किसी न किसी शक्ल में मुसलिम इमारतों में शामिल कर ली गईं. इस तरह जो हिन्दू चीज़ें मुसलिम इमारतों में ली गईं उनकी तादाद बेशुमार है. मुसलिम आर्ट के ऊपर हिन्दू शैली का यह क़रज़ा तो ठोस और ऊपर दिखाई देता है लेकिन हिन्दुस्तानी मुसलिम आर्ट पर हिन्दू कला की दो बातों ने सबसे ज़्यादा असर डाला और वे दो बातें हैं—इमारतों की मज़बूती और मज़बूती के साथ साथ उनका आलीशान होना. दूसरे मुल्कों में मुसलिम तामीरी कला की कुछ दूसरी ख़ुसूसियतें हैं. यरुसलम में हरे और सुनहले पत्थरों के स्लैब (चौके) फ़र्श पर या कमरों की दीवारों पर लगाये जाते हैं. ईरान में मकानों के टाइल बढ़िया से बढ़िया रंगों में रंगे जाते हैं. स्पेन की मुसलिम तामीरी कला ने अजीबो ग़रीब तर्ज़ पैदा किये लेकिन किसी भी मुल्क में मुसलिम तामीरी कला में इमारतों की मज़बूती और ख़ूबसूरती का उससे बेहतर मेल नहीं बैठाया गया जितना हिन्दुस्तान में. ये दोनों ख़ुसूसियतें हिन्दुस्तान की अपनी हैं और ये ऐसी ख़ुसूसियतें हैं जिनको तामीरी कला में और दूसरी ख़ुसूसियतों से ज़्यादा अहमियत है."

हिन्दुस्तान में पहली मुसलिम इमारत सन 1911 में तामीर हुई. यह 'क़ुव्वतुल इसलाम' नाम की एक मसजिद है जिसे क़ुतुबुद्दीन ऐबक ने तामीर कराया. इस मसजिद के मुताल्लिक सर जान मार्शल लिखते हैं:—

"इस मसजिद को चाहे भीतर से देखिये चाहे बाहर से, यही मालूम होता है कि यह कोई हिन्दू इमारत है. सिर्फ़ पीछे दीवार के पाँच मेहराबों को छोड़कर इस इमारत में एक भी चिह्न ऐसा नहीं है जिससे इसका मुसलमानी होना ज़ाहिर होता हो."

क़ुतुबुद्दीन के दो सौ बरस बाद फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ को भी इमारतें बनाने का बेहद शौक़ हुआ. इतिहास लेखक उसके बनवाये हुये शहरों, क़िलों, महलों, मसजिदों और मक़बरों आदि की एक लम्बी फ़ेहरिस्त पेश करते हैं. तुग़लक़ ज़माने के फ़ने तामीर के मुताल्लिक कहा जाता है कि उस पर से हिन्दू असर कम हो गया था. ताहम—

"जिन संगतराशों और मेमारों ने इन तुग़लक़ी इमारतों को तामीर किया वे सब के सब हिन्दुस्तान में पैदा

ہندستان کی کلچر اور اسلام

ہندستان کے پُراتتو یعنی آرکیالاجی ڈیپارٹمنٹ کے سابق ڈائرکٹر سر جان مارشل نے 'کیمبرج ہسٹری آف انڈیا' کے بھاگ تین کے 'مسلم زمانے کی عمارتیں' نامک ادھیائے میں لکھا ہے:—

"جب ہندو اور مسلم تعمیری کلا یعنی عمارت سازی کا سنگم (میل) ہوا تو مسلم تعمیری کلا نے ہندو تعمیری کلا سے بہت کچھ سیکھا۔ ہندو فلسفے کو ظاہر کرنے والی ہندو شکلیں، بیل بوٹے اور نقاشی کسی نہ کسی شکل میں مسلم عمارتوں میں شامل کر لی گئیں۔ اِس طرح جو ہندو چیزیں مسلم عمارتوں میں لی گئیں اُن کی تعداد بےشمار ہے۔ مسلم آرٹ کے اوپر ہندو شیلی کا یہ قرضہ تو ٹھوس اور اوپر دکھائی دیتا ہے لیکن ہندستانی مسلم آرٹ پر ہندو کلا کی دو باتوں نے سب سے زیادہ اثر ڈالا اور وہ دو باتیں ہیں—عمارتوں کی مضبوطی اور مضبوطی کے ساتھ ساتھ اُن کا عالیشان ہونا۔ دوسرے ملکوں میں مسلم تعمیری کلا کی کچھ دوسری خصوصیتیں ہیں۔ یروشلم میں ہرے اور سنہلے پتھروں کے سلیب (چوکے) فرش پر یا کمروں کی دیواروں پر لگائے جاتے ہیں۔ ایران میں مکانوں کے ٹائل بڑھیا سے بڑھیا رنگوں میں رنگے جاتے ہیں۔ اسپین کی مسلم تعمیری کلا نے عجیب و غریب طرز پیدا کئے لیکن کسی بھی ملک میں مسلم تعمیری کلا میں عمارتوں کی مضبوطی اور خوبصورتی کا اِس سے بہتر میل نہیں بیٹھایا گیا جتنا ہندستان میں۔ یہ دونوں خاصیتیں ہندستان کی اپنی ہیں اور یہ ایسی خاصیتیں ہیں جن کی تعمیری کلا میں اور دوسری خاصیتوں سے زیادہ اہمیت ہے۔"

ہندستان میں پہلی مسلم عمارت سن 1191 میں تعمیر ہوئی۔ یہ 'قوۃالاسلام' نام کی ایک مسجد ہے جسے قطب الدین ایبک نے تعمیر کرایا۔ اِس مسجد کے متعلق سر جان مارشل لکھتے ہیں:—

"اِس مسجد کو چاہے بھیتر سے دیکھئے چاہے باہر سے، یہی معلوم ہوتا ہے کہ یہ کوئی ہندو عمارت ہے۔ صرف پیچھے دیوار کے پانچ محرابوں کو چھوڑ کر اِس عمارت میں ایک بھی چنہ ایسا نہیں ہے جس سے اِس کا مسلمانی ہونا ظاہر ہوتا ہو۔"

قطب الدین کے دو سو برس بعد فیروز شاہ تغلق کو بھی عمارتیں بنانے کا بےحد شوق ہوا۔ اتہاس لیکھک اس کے بنائے ہوئے شہروں، قلعوں، محلوں، مسجدوں اور مقبروں آدی کی ایک لمبی فہرست پیش کرتے ہیں۔ تغلق زمانے کے فنِ تعمیر کے متعلق کہا جاتا ہے کہ اُس پر سے ہندو اثر کم ہو گیا تھا۔ تاہم:—

"جن سنگتراشوں اور معماروں نے اِن تغلقی عمارتوں کو تعمیر کیا وہ سب کے سب ہندستان میں پیدا

मुसलमान और सूबाई ज़बानें

यहाँ इसका ज़िक्र कर देना ज़रूरी है कि मुसलमानों ने हिन्दुस्तान की दूसरी सूबाई ज़बानों को तरक्क़ी देने में कोई कसर बाक़ी नहीं उठा रखी पंजाबी, हिन्दी और बंगला की तरक्क़ी का एक बहुत बड़ा सबब यह है कि मुसलमान नवाबों, उमराओं, और मसलमान मुसन्निफ़ों और शायरों ने इन ज़ुबानों को तरक्क़ी देने और माला-माल करने में बहुत बड़ा हिस्सा लिया. आज अगर इन ज़ुबानों को अपनी तरक़्क़ी पर नाज़ है तो उसके लिये हिन्दू और मुसलमान दोनों को बधाई देनी चाहिये। यह भी कहने की ज़रूरत नहीं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों का तर्जे अदब और तर्जे सख़ुन यकसाँ था. लोगों के लिये यह बता सकना नामुमकिन है कि अमुक नज़्म किसी मुसलमान की लिखी है या हिन्दू की। पंजाबी और बंगला के हिन्दू और मुसलमान लेखकों का लिखने का तर्ज बिल्कुल एक सा है. उसमें किसी तरह का फ़र्क़ नहीं पाया जाता. दोनों में कल्चर की एक ही धारा दिखाई देती है. बल्कि अगर हिन्दुस्तान के मुसलमान लेखकों और शायरों की रचनाओं और ईरान, तुर्की और मिस्र के शायरों और लेखकों की रचनाओं का मुक़ाबला किया जाय तो साफ़ फ़र्क़ नज़र आयेगा. हिन्दुस्तान के मुसलमानों और बाहर के मुसलमानों की कल्चर, सोचने के तरीक़ों और लिखने के तर्ज़ में बहुत फ़र्क़ है. अंगरेज़ों के आने से पहले मुख़्तलिफ़ सूबों के रहने वाले मुसलमानों ने अपने अपने सूबों की ज़बानें अपना ली थीं. वे उन्हीं में बोलते थे, उन्हीं में लिखते थे और उन्हीं में सोचते थे.

मुसलिम तामीरी कला

कल्चरी या सांस्कृतिक मेल-जोल की यह धारा सिर्फ़ ज़बान और अदब तक ही महदूद नहीं रही. उसका असर फ़लसफ़ा, साइंस, और आर्ट पर भी पड़ा. गणित, ज्योतिष, भूगोल, हिकमत, धर्म शास्त्र वग़ैरह सभी बातों में एक दूसरी की अच्छी बातों का एक दूसरे से सीखा गया. लेकिन दोनों कल्चरों का अज़ीमुश्शान संगम आर्ट के दायरे में हुआ.

मुसलमानों ने हिन्दुस्तान में आने से पहले कला के दायरे में एक नई तरह की कला यानी आर्ट को जनम दिया था. लेकिन जब वे इस मुल्क में आकर बसे, उन्होंने हिन्दुस्तान की कला का ख़ास ख़ास बातों को अपनी कला में शामिल करना शुरू कर दिया. तेरहवीं सदी से लेकर उन्नीसवीं सदी तक मुसलमानों ने जो इमारतें, क़िले और मक़बरे बनाये उनमें इसी एकता और मेल-जोल की तसवीर दिखाई देती है. दोनों कलाओं का संगम साफ़ चमकता हुआ नज़र आता है.

مسلمان اور صوبائی زبانیں

یہاں اُس کا ذکر کر دینا ضروری ھے کہ مسلمانوں نے هندستان کی دوسری صوبائی زبانوں کو ترقی دینے میں کوئی کسر باقی نہیں اٹھا رکھی ۔ پنجابی٬ هندی اور بنگلا کی ترقی کا ایک بہت بڑا سبب یہ ھے کہ مسلمان نوابوں٬ اُمراؤں٬ اور مسلمان مصنفوں اور شاعروں نے اِن زبانوں کو ترقی دینے اور مالا مال کرنے میں بہت بڑا حصہ لیا ۔ آج اگر اِن زبانوں کو اپنی ترقی پر ناز ھے تو اُس کے لئے هندؤں اور مسلمانوں دونوں کو بدھائی دینی چاهئے۔ یہ بھی کہنے کی ضرورت نہیں کہ هندو اور مسلمان دونوں کا طرز ادب اور طرز سخن یکساں تھا۔ لوگوں کے لئے یہ بتا سکنا ناممکن ھے کہ امک نظم کسی مسلمان کی لکھی ھے یا هندو کی ۔ پنجابی اور بنگلا کے هندو اور مسلمان لیکھکوں کا لکھنے کا طرز بالکل ایکسا ھے ۔ اُس میں کسی طرح کا فرق نہیں پایا جاتا ۔ دونوں میں کلچر کی ایک هی دھارا دکھائی دیتی ھے ۔ بلکہ اگر هندستان کے مسلمان لیکھکوں اور شاعروں کی رچناؤں اور ایران٬ ترکی اور مصر کے شاعروں اور لیکھکوں کی رچناؤں کا مقابلہ کیا جائے تو صاف فرق نظر آئیگا ۔ هندستان کے مسلمانوں اور باهر کے مسلمانوں کی کلچر٬ سوچنے کے طریقوں اور لکھنے کے طرز میں بہت فرق ھے ۔ انگریزوں کے آنے سے پہلے مختلف صوبوں کے رهنے والے مسلمانوں نے اپنے اپنے صوبوں کی زبانیں اپنا لی تھیں ۔ وہ اُنہیں میں بولتے تھے٬ اُنہیں میں لکھتے تھے اور اُنہیں میں سوچتے تھے ۔

مسلم تعمیری کلا

کلچری یا سانسکرتک میل جول کی یہ دھارا صرف زبان اور ادب تک هی محدود نہیں رهی ۔ اس کا اثر فلسفہ٬ سائنس اور آرٹ پر بھی پڑا ۔ گنت٬ جیوتش٬ بھوگول٬ حکمت٬ دھرم شاستر وغیرہ سبھی باتوں میں ایک دوسرے کی اچھی باتوں کو ایک دوسرے سے سیکھا گیا ۔ لیکن دونوں کلچروں کا عظیم الشان سنگم آرٹ کے دائرے میں هوا ۔

مسلمانوں نے هندستان میں آنے سے پہلے کلا کے دائرے میں ایک نئی طرح کی کلا یعنی آرٹ کو جنم دیا تھا ۔ لیکن جب وہ اس ملک میں آ کر بسے٬ اُنہوں نے هندستان کی کلا کی خاص خاص باتوں کو اپنی کلا میں شامل کرنا شروع کر دیا ۔ تیرھویں صدی سے لے کر اُنیسویں صدی تک مسلمانوں نے جو عمارتیں٬ قلعے اور مقبرے بنائے اُن میں اِسی ایکتا اور میل جول کی تصویر دکھائی دیتی ھے ۔ دونوں کلاؤں کا سنگم صاف چمکتا هوا نظر آتا ھے ۔

मुसलमान और हिन्दुस्तान की ज़बानें

अगर हम बाहरी बातों को छोड़कर तहज़ीब, तमद्दुन और कल्चर (संस्कृति) पर ग़ौर करें, तो हम देखेंगे कि यहाँ भी उसी तरह का मेल-मिलाप का संगम हुआ है. ज़रा इस बात पर ग़ौर किया जाय कि सच्ची हिन्दुस्तानी कल्चर की तामीर में मुसलमानों ने कितनी क़ुर्बानी की है. ज़बान (भाषा) की ही मिसाल को लीजिये. किसी क़ौम के जज़बातों और उसके ख़यालों को ज़ाहिर करने का सबसे अहम ज़रिया ज़बान ही है. इसलाम की पाक ज़बान अरबी है। जो हमलावर मुसलमान सबसे पहले सिन्ध में आये अरबी उनकी मादरी और वतनी ज़बान थी। हालाँकि पढ़े लिखे लोग ही अरबी की तालीम लेते थे ताहम अरबी हिन्दुस्तान के हर हिस्से में रायज हो गई. मध्य ऐशिया से जो हमलावर यहाँ आये उनकी मादरी ज़बान तुर्की थी. हिन्दुस्तान में मुसलमानों की हुकूमत के आग़ाज़ और ख़ात्मे के वक्त तक सरकारी ज़बान फ़ारसी थी। आज हिन्दुस्तानी मुसलमान इन तीनों ज़ुबानों में से एक भी ज़ुबान नहीं बोलते और न हमलावरों ने ही हारे हुओं पर इन ज़ुबानों को लादा.

इसके बरअक्स मुसलमानों ने हिन्दुस्तान की सूबाई ज़ुबानों को अपना लिया और अपनी भाषाओं के शब्दों और महाविरों से उन्हें सजाया और सँवारा. पँजाब के मुसलमान पंजाबी बोलते हैं, बंगाल के मुसलमान बंगला बोलते हैं, गुजरात के मुसलमान गुजराती और महाराष्ट्र के मुसलमान मराठी बोलते हैं, ग़रज़ यह कि मुसलमान जिस सूबे में रहते हैं उसी सूबे की ज़ुबान बोलते हैं. उस सूबे के हिन्दू और मुसलमान एक ही ज़ुबान में अपने ख़यालातों का इज़हार करते हैं. सिर्फ़ एक ही ज़ुबान रह जाती है और वह है उर्दू. लेकिन उर्दू मुसलमानों की ज़ुबान है ही नहीं. वह हिन्दुस्तान से बाहर किसी भी मुसलिम मुल्क में नहीं बोली जाती. उसे कोई मुसलिम विजेता बाहर से यहाँ नहीं लाया. उर्दू हिन्दी भाषा की ही एक रूप है. उसके ज़्यादातर अलफ़ाज़, उसका व्याकरण सब यहीं से लिया गया. दर असल उर्दू का मूल रूप वह भाषा है जो दिल्ली के आस-पास बोली जाती है और जिसे खड़ी बोली कहते हैं. जब मुसलमान दिल्ली और उसके आस पास के इलाक़े में बस गये तो वे भी खड़ी बोली ही बोलने लगे. वही बाद में अदबी ज़बान बन गई. हिन्दू और मुसलमान दोनों ने इसके अदब को बढ़ाया और सजाया. सच पूछा जाय तो अंग्रेज़ी के प्रचार के पहले उर्दू हिन्दुस्तान की बोलचाल की ज़बान थी

مسلمان اور هندستان کی زبانیں

اگر هم باهری باتوں کو چھوڑ کر 'تہذیب' تمدن اور کلچر (سنسکرتی) پر غور کریں، تو هم دیکھیں گے که یہاں بھی اُسی طرح کا میل ملاپ کا سنگم ہوا ھے ۔ ذرا اِس بات پر غور کیا جائے که سچی هندستانی کلچر کی تعمیر میں مسلمانوں نے کتنی قربانی کی ھے ۔ زبان (بھاشا) کی ھی مثال کو لیجئے۔ کسی قوم کے جذباتوں اور اُس کے خیالوں کو ظاہر کرنے کا سب سے اہم ذریعہ زبان ھی ھے ۔ اِسلام کی پاک زبان عربی ھے ۔ جو حملهآور مسلمان سب سے پہلے سندھ میں آئے عربی اُن کی مادری اور وطنی زبان تھی ۔ حالانکه پڑھے لکھے لوگ ھی عربی کی تعلیم لیتے تھے تاهم عربی هندستان کے هر حصه میں رائج هو گئی ۔ مدھیه ایشیا سے جو حملهآور یہاں آئے اُن کی مادری زبان ترکی تھی ۔ هندستان میں مسلمانوں کی حکومت کے آغاز اور خاتمه کے وقت تک سرکاری زبان فارسی تھی ۔ آج هندستانی مسلمان اِن تینوں زبانوں میں سے ایک بھی زبان نہیں بولتے اور نه حملهآوروں نے ھی هارے هوؤں پر اِن زبانوں کو لادا ۔

اُس کے برعکس مسلمانوں نے هندستان کی صوبائی زبانوں کو اپنا لیا اور اپنی بھاشاؤں کے شبدوں اور محاوروں سے انہیں سجایا اور سنوارا ۔ پنجاب کے مسلمان پنجابی بولتے هیں، بنگال کے مسلمان بنگلا بولتے هیں، گجرات کے مسلمان گجراتی اور مہاراشٹر کے مسلمان مراٹھی بولتے هیں ۔ غرض یه که مسلمان جس صوبے میں رہتے هیں اُس صوبے کی زبان بولتے هیں ۔ اِس صوبے کے هندو اور مسلمان ایک هی زبان میں اپنے خیالوں کا اظہار کرتے هیں ۔ صرف ایک هی زبان رہ جاتی ھے اور وہ ھے اُردو ۔ لیکن اردو مسلمانوں کی زبان ھے هی نہیں ۔ وہ هندستان کے باہر کسی ملک میں نہیں بولی جاتی ۔ اُسے کوئی مسلم وجیتا باہر سے یہاں نہیں لایا ۔ اُردو هندی بھاشا کا هی ایک روپ ھے ۔ اُس کے زیادہتر الفاظ، اُس کا ویاکرن سب یہیں سے لیا گیا ۔ دراصل اردو کا مول روپ وہ بھاشا ھے جو دلی کے آس پاس بولی جاتی ھے اور جسے کھڑی بولی کہتے هیں ۔ جب مسلمان دلی اور اُس کے آس پاس کے علاقے میں بس گئے تو وے بھی کھڑی بولی هی بولنے لگے ۔ وهی بعد میں ادبی زبان بن گئی ۔ هندو اور مسلمان دونوں نے اُس کے ادب کو بڑھایا اور سجایا ۔ سچ پوچھا جائے تو انگریزی کے پرچار کے پہلے اردو هندستان کی بول چال کی زبان تھی ۔

वेद मंत्रों की धुन के साथ सात भाँवरें डालते हैं, मुसलमानों में क़ाज़ी .क़ुरान की आयत पढ़कर निकाह करा देता है. छोटी उम्र में लड़कियों की शादी, विधवा विवाह की रोक, औरतों के ऊपर मर्दों का क़तई हक़ और परदा ये सब बातें हिन्दू और मुसलमानों दोनों में एक सी हैं.

यह सही है कि मज़हबी त्यौहार, व्रत, उपवास और रो.ज़े दोनों के अलग-अलग हैं लेकिन उनके मनाने का ढंग बहुत कुछ एक सा है. मोहर्रम और दशहरा एक तरह से मनाया जाने लगा. शबे बरात और शिवरात्रि, रमज़ान और नवरात्रि, दिवाली और ईद के उत्सव एक ही तरह से होने लगे. इसके अलावा और बहुत से मेले, तीज और त्यौहार पड़ते थे जिनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल जुलकर हिस्सा लेते थे. हज़ारों मुसलमान होली खेलते थे और लाखों हिन्दू मुहर्रम मनाते थे. मुसलमानों ने मरने के बाद के क्रिया-करम में बहुत से हिन्दू रिवाज अपना लिये, जैसे तीजा, दसवाँ वग़ैरह. इसके अलावा हामला औरत का पचमाँसा, सतमासा, और बच्चे की पैदायश की छठ, बच्चे की खीर चटाई, सालगिरह, मुण्डन, कनछेदन, हिन्दू-मुसलमान दोनों एक ही तरह से मनाने लगे. ऐसे रस्म-रिवाज, जो ख़ालिस हिन्दू थे, जैसे सती और जौहर का रिवाज, ये भी मुसलमान औरतें अपने ख़ाविन्द के मरने पर करने लगीं. इब्न बतूता मोहम्मद बिन तुग़लक़ और ऐनुलमुल्क की लड़ाई का हाल लिखता है, जिसमें ऐनुलमुल्क के हारने पर इसकी बेगम ने जौहर व्रत करके अपने को जिन्दा जला दिया था. 'ज़ाफ़र नामा' में लिखा है कि भटनैर के सूबेदार कमालुद्दीन की बेगम ने अपने शौहर तैमूर के ख़िलाफ़ लड़ाई में जाते समय जौहर व्रत करके अपने को जला डाला था. अमीर ख़ुसरो ने इस पर लिखा था:—

"चूँ ज़ने हिन्दी कसे दर आशिक़ी दीवाना अस्त,
सोख्तन बर शमा शौहर कारे ओ परवाना अस्त!"

लिबास और पहनावा

किसी भी समाज के अन्दरूनी जज़बात की सबसे नुमायाँ मिसाल उस समाज के लोगों की पोशाक है. इस नुक़्ते नज़र से अगर हम देखें तो हमें पता चलेगा कि किस तरह हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अरब, ईरान और मध्य एशियाई मुल्कों के लिबास और पोशाकों को छोड़कर हिन्दुस्तान के लिबास और पहनावे को .क़ुबूल किया. अरबी अमामा, जुब्बा, रिदा, तहमद; तस्मा, मध्य एशिया का कुर्ता, निमा, मोज़ा सब यहाँ आकर ग़ायब हो गये और उनकी जगह हिन्दू पगड़ी, चिरा, कुरता, अंगरखा, पटका, दुपट्टा, पाजामा और जूते ने ले ली.

وید منتروں کی دھن کے ساتھ سات بھانوریں ڈالتے ہیں، مسلمانوں میں قاضی قرآن کی آیت پڑھ کر نکاح کرا دیتا ہے ۔ چھوٹی عمر میں لڑکیوں کی شادی، ودھوا وواہ کی روک، عورتوں کے اوپر مردوں کا قطعی حق اور پردہ یہ سب باتیں ہندو اور مسلمانوں دونوں میں ایک سی ہیں ۔

یہ صحیح ہے کہ مذہبی تیوہار، ورت، اپواس اور روزے دونوں کے الگ الگ ہیں لیکن ان کے منانے کا ڈھنگ بہت کچھ ایک سا ہے ۔ محرم اور دشہرہ ایک طرح سے منایا جانے لگا ۔ شب‌برات اور شیوراتری، رمضان اور نوراتری، دیوالی اور عید کے اتسو ایک ہی طرح سے ہونے لگے ۔ اس کے علاوہ اور بہت سے میلے، تیج اور تیوہار پڑتے تھے جن میں ہندو اور مسلمان دونوں مل جل کر حصہ لیتے تھے۔ ہزاروں مسلمان ہولی کھیلتے تھے اور لاکھوں ہندو محرم مناتے تھے ۔ مسلمانوں نے مرنے کے بعد کے کریا کرم میں بہت سے ہندو رواج اپنا لئے، جیسے تیجا، دسواں وغیرہ ۔ اس کے علاوہ حاملہ عورت کا پچ ماسا، ست ماسا، اور بچے کی پیدائش کی چھٹ، بچے کی کھیر چٹائی، سال گرہ، مونڈن، کن چھیدن، ہندو مسلمان دونوں ایک ہی طرح سے منانے لگے ۔ ایسے رسم رواج جو خالص ہندو تھے جیسے ستی اور جوہر کا رواج، یہ بھی مسلمان عورتیں اپنے خاوند کے مرنے پر کرنے لگیں ۔ ابن بطوطہ محمد بن تغلق اور عین‌الملک کی لڑائی کا حال لکھتا ہے، جس میں عین‌الملک کے ہارنے پر اس کی بیگم نے جوہر برت کر کے اپنے کو زندہ جلا دیا تھا ۔ 'جعفر نامہ' میں لکھا ہے کہ بھٹنیر کے صوبیدار کمال‌الدین کی بیگم نے اپنے شوہر تیمور کے خلاف لڑائی میں جاتے سمے جوہر برت کر کے اپنے کو جلا ڈالا تھا ۔ امیر خسرو نے اس پر لکھا تھا:—

"چوں زن ہندی کسے در عاشقی دیوانہ است،
سوختن بر شمع شوہر کار او پروانہ است !"

لباس اور پہناوا

کسی بھی سماج کے اندرونی جذبات کی سب سے نمایاں مثال اس سماج کے لوگوں کی پوشاک ہے ۔ اس نقطۂ نظر سے اگر ہم دیکھیں تو ہمیں پتہ چلیگا کہ کس طرح ہندوستان کے مسلمانوں نے عرب، ایران اور مدھیہ ایشیائی ملکوں کے لباس اور پوشاکوں کو چھوڑ کر ہندوستان کے لباس اور پہناوے کو قبول کیا ۔ عربی عمامہ، جبہ، ردا، تہمد؛ تسمہ، مدھیہ ایشیا کا دلہ، نیما، موزہ سب یہاں آ کر غیب ہو گئے اور ان کی جگہ ہندو پگڑی، چیرا، کرتا، انگرکھا، پٹکا، دوپٹہ، پاجامہ اور جوتے نے لے لی ۔

एशिया की जिन और दूसरी मुसलमान क़ौमों ने हिन्दुस्तान पर हमला करके यहाँ राज क़ायम किया और जिनकी औलादों ने क़रीब पाँच सौ बरस यहाँ हुकूमत की उन सबका आज पता तक नहीं चलता. मुसलमान हुक्मरानों ने न तो अपने क़ौमी ग़ुरूर की परवाह की और न अपने ख़ून को पाक बनाये रखने की. उन्होंने हिन्दुस्तान के क़ौमी समुन्दर में अपने आपको मिला दिया. मुसलिम हुकूमत के ज़माने में जिन क़ौमों, फ़िरक़ों, क़बीलों और ख़ानदानों की धूम थी आज न उनका चर्चा है और न कोई उन्हें जानता है. वे सब रल-मिलकर एक हो गये. यह काम कोई एक दो दिनों में नहीं हुआ, सैकड़ों बरसों तक साथ साथ रहने का यह नतीजा है. इसी मुल्क में हमेशा हमेशा के लिये बस जाने की ख़्वाहिश, आपसी शादी-ब्याह, मज़हब में तब्दीली, अपने वतन से किसी तरह का कोई ताल्लुक़ न रखना, वग़ैरह ऐसी बातें थीं, जिनकी वजह से मुसलमान क़ौमी लिहाज़ से बिलकुल हिन्दुस्तानी बन गये. हिन्दू और मुसलमानों का मज़हब बेशक जुदा जुदा है मगर रङ्ग एक है, रूप एक है, शक्ल एक है और क़ौम एक है.

हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अपने हिन्दू भाइयों ही की तरह अपना समाजी निज़ाम क़ायम किया. बाहर के मुसलमानों में जात-पाँत नहीं मगर यहाँ के मुसलमानों ने हिन्दुओं ही की तरह अपनी अलग-अलग बिरादरियाँ बना ली हैं. सय्यदों का रुतबा बिरहमनों की तरह, मुग़ल और पठानों का क्षत्रियों या राजपूतों की तरह, शेख़ बनियों की तरह और बुनकर और दूसरे पेशे वालों का शूद्रों की तरह समझा जाने लगा. ये फ़र्क़ न सिर्फ़ काम धन्धों और रुपये-पैसे की वजह से हो गये बल्कि हिन्दुओं की तरह मुसलमानों की ये बिरादरियाँ पैदाइशी हो गईं. ऊँची बिरादरी के मुसलमानों में एक ग़ुरूर पैदा हो गया.

कलचरी मेल जोल का संगम

हर समाज के संगठन में औरत की एक ख़ास जगह है. इस मामले में अरबों, तुर्कों और हिन्दुओं में बहुत फ़र्क़ है. लेकिन हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अरबों और तुर्कों के तरीक़े को नहीं बरता. मुसलमान औरतों ने अपनी हिन्दू बहिनों का ही चलन अपनाया. साज-सिंगार, पहनावा, गहने और ज़ेवर, मिलने-जुलने और रोज़मर्रा के बरताव की बातों में उन्होंने हिन्दू बहिनों का तरीक़ा बरतना शुरू किया. मुसलमानों के शादी-ब्याह बिलकुल हिन्दुओं की तरह ही होने लगे. निसबत, हल्दी, मेंहदी, तेल, मँढवा, बरात, जलवा, कंगन वग़ैरह की रस्में मुसलमानों ने ज्यों की त्यों हिन्दुओं से ले लीं. शादी की रस्म में हिन्दुओं और मुसलमानों में सिर्फ़ एक फ़र्क़ रह गया और वह यह कि हिन्दुओं में हवन कुंड के चारों तरफ़ दूल्हा और दुल्हन

ایشیا کی جن اور دوسری مسلمان قوموں نے ہندستان پر حملہ کر کے یہاں راج قایم کیا اور جن کی اولادوں نے قریب پانچ سو برس یہاں حکومت کی اُن سب کا آج پتہ تک نہیں چلتا ۔ مسلمان حکمرانوں نے نہ تو اپنے قومی غرور کی پرواہ کی اور نہ اپنے خون کو پاک بنائے رکھنے کی ۔ اُنہوں نے ہندستان کے قومی سمندر میں اپنے آپ کو ملا دیا ۔ مسلم حکومت کے زمانے میں جن قوموں، فرقوں، قبیلوں اور خاندانوں کی دھوم تھی آج نہ اُن کا چرچا ہے اور نہ کوئی اُنہیں جانتا ہے ۔ وہ سب رل مل کر ایک ہو گئے ۔ یہ کام کوئی ایک دو دنوں میں نہیں ہوا، سیکڑوں برسوں تک ساتھ ساتھ رہنے کا یہ نتیجہ ہے ۔ اِسی ملک میں ہمیشہ ہمیشہ کے لئے بس جانے کی خواہش، آپسی شادی بیاہ، مذہب میں تبدیلی، اپنے وطن سے کسی طرح کا تعلق نہ رکھنا، وغیرہ ایسی باتیں تھیں، جن کی وجہ سے مسلمان قومی لحاظ سے بالکل ہندستانی بن گئے ۔ ہندو اور مسلمانوں کا مذہب بےشک جدا جدا ہے مگر رنگ ایک ہے، روپ ایک ہے، شکل ایک ہے اور قوم ایک ہے ۔

ہندستان کے مسلمانوں نے اپنے ہندو بھائیوں ہی کی طرح اپنا سماجی نظام قایم کیا ۔ باہر کے مسلمانوں میں جات پانت نہیں مگر یہاں کے مسلمانوں نے ہندؤں ہی کی طرح اپنی الگ الگ برادریاں بنا لی ہیں ۔ سیدوں کا رتبہ برہمنوں کی طرح، مغل اور پٹھانوں کا چھتریوں یا راجپوتوں کی طرح، شیخ بنیوں کی طرح اور بنکر اور دیگر پیشہ والوں کو شودروں کی طرح سمجھا جانے لگا ۔ یہ فرق نہ صرف کام دھندوں اور روپیہ پیسے کی وجہ سے ہو گئے بلکہ ہندؤں کی طرح مسلمانوں کی یہ برادریاں پیدائشی ہو گئیں ۔ اُونچی برادری کے مسلمانوں میں ایک غرور پیدا ہو گیا ۔

کلچری میل جول کا سنگم

ہر سماج کے سنگٹھن میں عورت کی ایک خاص جگہہ ہے ۔ اِس معاملے میں عربوں، ترکوں اور ہندؤں میں بہت فرق ہے ۔ لیکن ہندستان کے مسلمانوں نے عربوں اور ترکوں کے طریقے کو نہیں برتا ۔ مسلمان عورتوں نے اپنی ہندو بہنوں کا ہی چلن اپنایا ۔ ساج سنگار، پہناوا، گہنے اور زیور، ملنے جلنے اور روزمرہ کے برتاؤ کی باتوں میں انہوں نے ہندؤں بہنوں کا طریقہ برتنا شروع کیا ۔ مسلمانوں کے شادی بیاہ بالکل ہندوں کی ہی طرح ہونے لگے ۔ نسبت، ہلدی، مہندی، تیل، منڈوا، برات، جلوا، کنگن وغیرہ کی رسموں مسلمانوں نے جیوں کی تیوں ہندؤں سے لے لیں ۔ شادی کی رسم میں ہندؤں اور مسلمانوں میں صرف ایک فرق رہ گیا اور وہ یہ کہ ہندؤں میں ہون کنڈ کے چاروں طرف دولہا اور دلہن

गाड़ी उनके सामने से तेजी के साथ निकल गई और नज़र से गुम हो गई.

बरफ अब और ज़्यादह तेजी के साथ गिर रहा था. उस बरफ में से ही बच्चों के सवाल का जवाब आता हुआ मालूम पड़ता था. यह बरफ, यह हवा और यह जवाब पश्चिम की तरफ़ से लड़ाई के उस मैदान से आ रहा था जहाँ पिरट नाम के गाँव के क़रीब, अंगूर की टट्टियों में, यही बरफ़ स्वोयान की क़ब्र के ऊपर जमा होता जा रहा था!

گاڑی اُن کے سامنے سے تیزی کے ساتھ نکل گئی اور نظر سے گم ہو گئی۔

برف اب اور زیادہ تیزی کے ساتھ گر رہا تھا۔ اُس برف میں سے ہی بچوں کے سوال کا جواب آتا ہوا معلوم پڑتا تھا۔ یہ برف، یہ ہوا اور یہ جواب پچھم کی طرف سے لڑائی کے اُس میدان سے آ رہا تھا جہاں پرٹ نام کے گاؤں کے قریب، انگور کی ٹٹیوں میں، یہی برف اسٹویان کی قبر کے اوپر جما ہوتا جا رہا تھا!

हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम

डाक्टर सय्यद महमूद

मुसलमानों पर एक इलज़ाम यह लगाया जाता है कि चूँकि वे हमलावर विदेशियों की हैसियत से इस मुल्क में आये इसलिये वे इस मुल्क के लोगों से बिलकुल अलग-थलग रहे. यह भी इलज़ाम लगाया जाता है कि हिन्दू और मुसलमानों के बीच कोई बात मेल की नहीं है इसलिये इस मुल्क की भलाई बुराई के साथ मुसलमानों का कोई सरोकार नहीं है. यह भी कहा जाता है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों और बाहर के मुसलमानों में सब बातें मिलती जुलती और मेल की हैं. इसलिये बाहर के मुसलमानों के साथ यहाँ के मुसलमानों का खूब निभ सकती है. अब हमें देखना चाहिये कि इस मामले में इतिहास क्या रोशनी डालता है ?

क़ौमों की मिलावट

यह बात सभी क़बूल करेंगे कि थोड़े से लोगों को छोड़कर कौम के लिहाज़ से हिन्दुओं और मुसलमानों में कोई, भेद या फ़र्क़ नहीं है. दोनों की जिस्मानी बनावट, गठन, रंग, रूप, चेहरा-मोहरा बिलकुल यकसाँ है. पुराने हमलावार अरबों तुर्कों, और ईरानियों का आज हिन्दुस्तान में कहीं पता तक नहीं चलता जिन अरब फ़ौजियों ने मोहम्मद बिन क़ासिम की जनरैली में सिन्ध के सूबे पर हमला किया था या जिन अरब खानदानों ने सिन्ध पर सैकड़ों बरसों तक हुकूमत की थी, उनका आज नामोनिशान तक नहीं मिलता. ग़ज़नवी, ग़ोरी, मुग़ल, तुर्क और अफ़ग़ानों के अलावा वस्त (मध्य)

هندستان کی کلچر اور اِسلام

ڈاکٹر سید محمود

مسلمانوں پر ایک الزام یہ لگایا جاتا ہے کہ چونکہ وے حملہ آور ودیشیوں کی حیثیت سے اِس ملک میں آئے اِس لئے وے ملک کے لوگوں سے بالکل الگ تھلگ رہے۔ یہ بھی الزام لگایا جاتا ہے کہ ہندو اور مسلمانوں کے بیچ کوئی بات میل کی نہیں ہے اِس لئے ملک کی بھلائی برائی کے ساتھ مسلمانوں کا کوئی سروکار نہیں ہے۔ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ ہندستان کے مسلمانوں اور باہر کے مسلمانوں میں سب باتیں ملتی جلتی اور میل کی ہیں اِس لئے باہر کے مسلمانوں کے ساتھ یہاں کے مسلمانوں کی خوب نبھ سکتی ہے۔ اب ہمیں دیکھنا چاہئے کہ اِس معاملے میں اِتہاس کیا روشنی ڈالتا ہے ؟

قوموں کی ملاوٹ

یہ بات سبھی قبول کریں گے کہ تھوڑے سے لوگوں کو چھوڑ کر قوم کے لحاظ سے ہندوؤں اورمسلمانوں میں کوئی بھید یا فرق نہیں ہے۔ دونوں کی جسمانی بناوٹ، گٹھن، رنگ، روپ، چہرہ مہرہ بالکل یکساں ہے۔ پرانے حملہ آور عربوں، ترکوں، اور ایرانیوں کا آج ہندستان میں پتہ تک نہیں چلتا۔ جن عرب فوجیوں نے محمد بن قاسم کی جنریلی میں سندھ کے صوبے پر حملہ کیا تھا یا جن عرب خاندانوں نے سندھ پر سیکڑوں برسوں تک حکومت کی تھی، اُن کا آج نام و نشان تک نہیں ملتا۔ غزنوی، غوری، مغل، ترک اور افغانستان کے علاوہ وسط (مدھیہ)

अफ़सर रुक गये और हैरान होकर लड़की की तरफ़ देखने लगे.

उनमें से एक अफ़सर ने पूछाः—"तुम्हारा भाई कौन है ?"

रादुलचो ने घबराये हुये जवाब दिया—"स्तोयान भैया ! हमारा भाई स्तोयान !" रादुलचो को इस बात पर अचरज मालूम होता था कि फ़ौजी वरदी पहने हुये कप्तान यह न जानता हो कि स्तोयान उनका भाई है.

अफ़सर ने फिर हैरान होकर पूछाः—"कौन स्तोयान ?"

कीना ने बड़ी दृढ़ता के साथ जवाब दियाः—"वेतरेन गाँव का रहने वाला स्तोयान !"

अफ़सर ने अपने साथी से कुछ कहा और फिर बड़े प्यार के साथ कीना से पूछाः—

"क्या तुम्हारा भाई घुड़सवार फ़ौज में है ?"

बेचारी कीना ने बिना कुछ समझे जवाब दे दियाः—"हाँ, हाँ."

अफ़सर ने कहाः—"बेटी ! वह हमारे साथ नहीं है."

दूसरे अफ़सर ने बच्चों से कहाः—"गाँव को लौट जाओ, नहीं तो तुम यहीं सरदी में जम जाओगे."

यह कहकर दोनों अफ़सर अपने घोड़े को हण्टर लगाते हुये बाक़ी सवारों के पीछे-पीछे चल दिये.

कीना अब चिल्ला रही थी. रादुलचो के टपाटप आंसू गिर रहे थे. दोनों के हाथ और पैर सरदी से ठिठुर रहे थे. उनके गाल नीले पड़ गये थे. सामने गाँव का रास्ता साफ़ दिखाई दे रहा था. पर उस पर अब कोई आदमी या आदम-ज़ाद न था. सब अपने-अपने घर चले गये थे. शाम हो गई थी. अँधेरा बढ़ रहा था. ठन्डी हवा और ज़्यादह काटती हुई मालूम होती थी. केवल दूर फ़ासले पर घुड़सवारों का वह गिरोह एक काले बादल की तरह चला जाता हुआ और गुम होता हुआ नज़र आता था. ठन्डी हवा के साथ सवारों के गाने की आवाज़ भी बच्चों के कानों में पड़ रही थी. कीना और रादुलचो ने अब अपने गाँव की तरफ़ लौटना शुरू किया.

रात होती जा रही थी. दोनों ने अपने-अपने हाथ अपने कपड़ों में छिपा रखे थे. दोनों धीरे-धीरे रोते हुये चले जा रहे थे. उन्हें बार-बार यह ख़याल आ रहा था कि माँ दरवाज़े पर खड़ी हुई भैया की बाट जोह रही होगी.

पहाड़ी के पीछे की तरफ़ से एक और गाड़ी आती हुई दिखाई दी जिसमें तीन घोड़े जुते हुये थे.

कीना ने फिर चिल्लाकर पूछाः—"जनाब ! क्या फ़ौज के कुछ और सिपाही अभी पीछे आ रहे हैं ?"

افسر رک گئے اور حیران ہو کر لڑکی کی طرف دیکھنے لگے .

اُن میں سے ایک افسر نے پوچھا :—"تمہارا بھائی کون ہے ؟"

رادل چو نے گھبرائے ہوئے جواب دیا:—"استویان بھیا ! ہمارا بھائی استویان !" رادل چو کو اِس بات پر اچرج معلوم ہوتا تھا کہ فوجی وردی پہنے ہوئے کپتان یہ نہ جانتا ہو کہ استویان اُن کا بھائی ہے .

افسر نے پھر حیران ہو کر پوچھا—"کون استویان ؟"

کسینا نے بڑی دردھتا کے ساتھ جواب دیا—"ویترین گاؤں کا رہنے والا استویان !"

افسر نے اپنے ساتھی سے کچھ کہا اور پھر بڑے پیار کے ساتھ کینا سے پوچھا:—

"کیا تمہارا بھائی گھڑسوار فوج میں ہے ؟"

بیچاری کینا نے بنا کچھ سمجھے جواب دے دیا:—"ہاں' ہاں ."

افسر نے کہا:—"بیٹی ! وہ ہمارے ساتھ نہیں ہے ."

دوسرے افسر نے بچوں سے کہا:—"گاؤں کو لوٹ جاؤ' نہیں تو تم یہاں سردی میں جم جاؤ گے ."

یہ کہہ کر دونوں افسر اپنے گھوڑوں کو ہنٹر لگاتے ہوئے باقی سواروں کے پیچھے پیچھے چل دیئے .

کینا اب چلا رہی تھی . رادل چو کے ٹپاٹپ آنسو گر رہے تھے . دونوں کے ہاتھ اور پیر سردی سے ٹھٹھر رہے تھے . اُن کے گال نیلے پڑ گئے تھے . سامنے گاؤں کا راستہ صاف دکھائی دے رہا تھا . پر اُس پر اب کوئی آدمی یا آدم زاد تھا . سب اپنے اپنے گھر چلے گئے تھے . شام ہو گئی تھی . اندھیرا بڑھ رہا تھا. ٹھنڈی ہوا اور زیادہ کاٹتی ہوئی معلوم ہوتی تھی . کیول دور فاصلے پر گھوڑ سواروں کا وہ گروہ ایک کالے بادل کی طرح چلا جاتا ہوا اور گم ہوتا ہوا نظر آتا تھا . ٹھنڈی ہوا کے ساتھ سواروں کے گانے کی آواز بھی بچوں کے کانوں میں پڑ رہی تھی . کینا اور رادل چو نے اب اپنے گاؤں کی طرف لوٹنا شروع کیا .

رات ہوتی جا رہی تھی . دونوں نے اپنے اپنے ہاتھ اپنے کپڑوں میں چھپا رکھے تھے . دونوں دھیرے دھیرے روتے ہوئے چلے جا رہے تھے . اُنہیں بار بار یہ خیال آرہا تھا کہ ماں دروازے پر کھڑی ہوئی بھیا کی باٹ جوہ رہی ہوگی .

پہاڑی کے پیچھے کی طرف سے ایک اور گاڑی آتی ہوئی دکھائی دی جن میں تین گھوڑے جتے ہوئے تھے .

کینا نے پھر چلا کر پوچھا:—"جناب ! کیا فوج کے کچھ اور سپاہی ابھی پیچھے آ رہے ہیں ؟"

हुई थी. दो सिपाही उन्हें मोड़ पर आते दिखाई दिये. दोनों के ऊपर काफ़ी बरफ़ जमा हुआ था. बच्चों ने उन्हें देखा. स्तोयान उनमें नहीं था.

कीना ने उन सिपाहियों से पूछा:—"क्यों जी! क्या फ़ौज इधर को आ रही है?"

उनमें से एक ने जवाब दिया—"ऐ लड़की, हमें नहीं मालूम. तुम किसके इन्तज़ार में खड़ी हो?"

रादुलचो ने जवाब दिया:—"अपने भाई के इन्तज़ार में!"

सिपाही थके हुये थे. वे आगे बढ़ गये.

कीना ने फिर दूर तक देखने की कोशिश की. दोनों को सरदी लगने लगी. कीना लड़खड़ाने लगी. रादुलचो को कप-कपी लग गई. पर उनके स्तोयान भैया आने वाले थे, इसलिये वह दोनों भैया का इन्तज़ार करते रहे. उन्हें यह भी ख्याल था कि अगर वह भैया को अपने साथ घर न ले गये तो माँ उन्हें डाँटेगी और रोवेगी.

सामने से एक गाड़ी आई. उसमें दो मुसाफ़िर बैठे हुये थे. दोनों भेड़ की खाल के लम्बे गरम कोट पहने हुये थे. उनके सरों पर ऊँची गरम टोपियाँ थीं. गाड़ी जब दोनों बच्चों के बराबर में आई तो कीना घोड़ों के सामने आकर खड़ी हो गई.

उसने गाड़ी में बैठे हुये मुसाफ़िरों से पूछा:—"जनाब! क्या उधर से कोई फ़ौज आ रही है?"

मुसाफ़िरों में से एक ने जवाब दिया:—"प्यारी लड़की! हमें नहीं मालूम" मुसाफ़िर ने अपनी टोपी को कुछ ऊँचा करके हैरानी के साथ लड़की को देखा. लड़की सरदी से लाल और नीली हो रही थी.

गाड़ी आगे बढ़ी चली गई.

दोनों बच्चे उसी जगह डटे खड़े रहे. घंटों बीत गये. ठंडी पहाड़ी हवा और जियादह तेज़ हो गयी और उनके चेहरों पर थपेड़े देने लगी. उनके कपड़े हवा में उड़ने लगे. बरफ़ भी तेज़ी के साथ गिरता रहा. लेकिन दोनों बच्चे वहाँ से न हटे. उनकी आँखें सड़क के मोड़ पर लगी हुई थीं. वह इन्तज़ार में थे कि कोई और आदमी उधर से आता हुआ दिखाई दे.

यकायक कीना का दिल आशा से उछलने लगा. कुछ घुड़सवार मोड़पर दिखाई दिये जो उन्हीं की तरफ़ आ रहे थे. सवार बहुत से थे. कीना ने सोचा हो सकता है भैया भी इन्हीं में हो. वह टकटकी लगाये उनकी तरफ़ देखती रही. सवार आगे बढ़ते गए और दोनों बच्चों के सामने से जाने लगे. उनके पीछे-पीछे दो अफ़सर मालूम होते थे. कीना ने हाथ उठाकर उन अफ़सरों की तरफ़ इशारा करके रोते हुये कहा:—"कप्तान साहब! क्या मेरा भैया आ रहा है?"

ہوئی تھی۔ دو سپاہی انہیں موڑ پر آتے دکھائی دیئے۔ دونوں کے اوپر کافی برف جمع ہوا تھا۔ بچوں نے انہیں دیکھا۔ استویان اُن میں نہیں تھا۔

کینا نے اُن سپاہیوں سے پوچھا:—"کیوں جی! کیا فوج اِدھر کو آرہی ہے؟"

اُن میں سے ایک نے جواب دیا—"اے لڑکی ہمیں نہیں معلوم، تم کس کے انتظار میں کھڑی ہو؟"

رادلچو نے جواب دیا:—"اپنے بھائی کے انتظار میں!"

سپاہی تھکے ہوئے تھے۔ وہ آگے بڑھ گئے۔

کینا نے پھر دور تک دیکھنے کی کوشش کی۔ دونوں کو سردی لگنے لگی۔ کینا لڑکھڑانے لگی۔ رادلچو کو کپکپی لگ گئی۔ پر اُن کے استویان بھیا آنے والے تھے، اِس لئے وہ دونوں بھیا کا انتظار کرتے رہے۔ انہیں یہ بھی خیال تھا کہ اگر وہ بھیا کو اپنے ساتھ گھر نہ لے گئے تو ماں انہیں ڈانٹیگی اور روئے گی۔

سامنے سے ایک گاڑی آئی۔ اس میں دو مسافر بیٹھے ہوئے تھے۔ دونوں بھیڑ کی کھال کے لمبے گرم کوٹ پہنے ہوئے تھے۔ اُن کے سروں پر اونچی گرم ٹوپیاں تھیں۔ گاڑی جب دونوں بچوں کے برابر میں آئی تو کینا گھوڑوں کے سامنے آ کر کھڑی ہو گئی۔

اس نے گاڑی میں بیٹھے ہوئے مسافروں سے پوچھا:—"جناب! کیا اِدھر سے کوئی فوج آرہی ہے؟"

مسافروں میں سے ایک نے جواب دیا:—"پیاری لڑکی! ہمیں نہیں معلوم۔" مسافر نے اپنی ٹوپی کو کچھ اونچا کر کے حیرانی کے ساتھ لڑکی کو دیکھا۔ لڑکی سردی سے لال اور نیلی ہو رہی تھی۔

گاڑی آگے بڑھی چلی گئی۔

دونوں بچے اسی جگہ ڈٹے کھڑے رہے۔ گھنٹوں بیت گئے۔ ٹھنڈی پہاڑی ہوا اور زیادہ تیز ہو گئی اور اُن کے چہروں پر تھپیڑے دینے لگی۔ ان کے کپڑے ہوا میں اڑنے لگے۔ برف بھی تیزی کے ساتھ گرتا رہا۔ لیکن دونوں بچے وہاں سے نہ ہٹے۔ ان کی آنکھیں سڑک کے موڑ پر لگی ہوئی تھیں۔ وہ انتظار میں تھے کہ کوئی اور آدمی اُدھر سے آتا ہوا دکھائی دے۔

یکایک کینا کا دل آشا سے اچھلنے لگا۔ کچھ گھوڑسوار موڑ پر دکھائی دیئے جو انہیں کی طرف آ رہے تھے۔ سوار بہت سے تھے۔ کینا نے سوچا ہو سکتا ہے بھیا بھی انہیں میں ہوں۔ وہ ٹکٹکی لگائے اُن کی طرف دیکھتی رہی۔ سوار آگے بڑھتے گئے اور دونوں بچوں کے سامنے سے جانے لگے۔ ان کے پیچھے پیچھے دو افسر معلوم ہوتے تھے۔ کینا نے ہاتھ اٹھا کر اُن افسروں کی طرف اشارہ کر کے روتے ہوئے کہا:—"کپتان صاحب! کیا میرا بھیا آ رہا ہے؟"

इससे उसने मोम बत्तियाँ खरीदीं और उन्हें गिरजे में सब मूर्तियों के सामने जला-जला कर रख दीं. ख़ुशी-ख़ुशी वह घर लौटी.

रास्ते में वह अपने मन ही मन में बड़बड़ाती जाती थी:—"अच्छा, अच्छा, आज का दिन यह है, कल बड़ा दिन है......अभी भी वक़्त है. ऐ प्रभु ईसा की माँ ! मेरा फ़रिश्ते जैसा लाल मुझ तक पहुँचा दो......ऐ प्रभु ईसा मसीह ! मेरे मुरझाए हुए दिल को ख़ुशी अता करो."

कीना दौड़ती हुई घर में आई और माँ से कहने लगी:—"माँ ! गाँव के कुछ और नौजवान लड़ाई के मैदान से लौट आए हैं."

बूढ़ी तसेना को कुछ ग़ुस्सा सा आ गया. उसने अनमने दिल से जवाब दिया:—"मुझे दूसरों के संदेशे ही ला ला कर मत दो, बल्कि जिस तरह और दूसरी लड़कियाँ अपने भाइयों से मिलने जा रही हैं तुम भी जाकर अपने भैया का स्वागत करो."

बालक रादुलचो ने बीच में दख़ल देकर कहा.—"माँ ! मैं भी कीना बहन के साथ जाऊँगा."

दोनों बच्चे दौड़ते हुए बरफ़ से ढकी हुई गली को पार कर गये. वह गाँव के बाहर की बड़ी सड़क तक पहुँच गये और सड़क के उस पार खेतों में जाकर खड़े हो गए.

बूढ़ी तसेना अपने दरवाज़े के बाहर खड़ी हुई बेटे का इन्तज़ार करने लगी.

पहाड़ की तरफ़ से ठन्डी सनसनाती हुई हवा चली आ रही थी. पहाड़ों की चोटियाँ, घाटियाँ और मैदान सब बरफ़ से सफ़ेद हो रहे थे. बादल घिरे चले आ रहे थे. काले कौवे सड़क के ऊपर पर फड़फड़ा रहे थे या दरख़्तों की नंगी शाख़ों पर बैठे हुए थे. वह सड़क इख़्तिमान घाटी तक जाती थी. सड़क पर जगह-जगह नौजवान लड़कियों, बच्चों और बूढ़ी औरतों के झुन्ड जमा थे. हर झुन्ड किसी न किसी के इन्तज़ार में था......सिपाही अभी तक घर लौट रहे थे. कोई अकेले-अकेले आ रहे थे और कोई कई-कई के गिरोह में. कीना और रादुलचो पहले एक गिरोह की तरफ़ गए, फिर दूसरे की तरफ़, और फिर तीसरे की तरफ़ और फिर और आगे बढ़ गये. वे चाहते थे कि वे ही स्तोयान को सबसे पहले देखें और उससे मिलें. उन्हें विश्वास था कि वे उसे तुरन्त ही पहचान लेंगे. बरफ़ पड़ना शुरू हो गया था और बरफ़ के गिरते हुए गाले उनकी आँखों के सामने बार-बार परदा सा डाल देते थे.

सड़क पहले ऊपर को जाती थी और फिर पहाड़ी के पीछे गुम हो जाती थी. कीना और रादुलचो उस पहाड़ी चोटी के ऊपर पहुँच गए. हवा वहाँ और भी ज़ियादह तेज़ और काटती

اس سے اُس نے موم بتیاں خریدیں اور انہیں گرجے میں سب مورتیوں کے سامنے جلا جلا کر رکھ دیں ۔ خوشی خوشی وہ گھر لوٹی ۔

راستے میں وہ اپنے من ہی من میں بڑبڑاتی جاتی تھی: —"اچھا' اچھا' آج کا دن یہ ہے' کل بڑا دن ہے...ابھی بھی وقت ہے ۔ اے پربھو عیسیٰ کی ماں ! میرا فرشتہ جیسا لال مجھ تک پہنچا دو..اے پربھو عیسیٰ مسیح ! میرے مرجھائے ہوئے دل کو خوشی عطا کرو ۔"

کینا دوڑتی ہوئی گھر میں آئی اور ماں سے کہنے لگی:— "ماں ! گاؤں کے کچھ اور نوجوان لڑائی کے میدان سے لوٹ آئے ہیں ۔"

بوڑھی تسینا کو کچھ غصہ سا آ گیا ۔ اُس نے اَن‌منے دل سے جواب دیا:—"مجھے دوسروں کے سندیشے ہی لا لا کر مت دو' بلکہ جس طرح اور دوسری لڑکیاں اپنے بھائیوں سے ملنے جا رہی ہیں تم بھی جا کر اپنے بھیا کا سواگت کرو ۔"

بالک رادلچو نے بیچ میں دخل دے کر کہا:—ماں ! میں بھی کینا بہن کے ساتھ جاؤنگا ۔"

دونوں بچے دوڑتے ہوئے برف سے ڈھکی ہوئی گلی کو پار کر گئے ۔ وہ گاؤں کے باہر کی بڑی سڑک تک پہنچ گئے اور سڑک کے اس پار کھیتوں میں جا کر کھڑے ہو گئے ۔

بوڑھی تسینا اپنے دروازے کے باہر کھڑی ہوئی بیٹے کا انتظار کرنے لگی ۔

پہاڑ کی طرف سے ٹھنڈی سنسناتی ہوا چلی آ رہی تھی ۔ پہاڑوں کی چوٹیاں' گھاٹیاں اور میدان سب برف سے سفید ہو رہے تھے ۔ بادل گھرے چلے آ رہے تھے ۔ کالے کوئے سڑک کے اوپر پر پھڑ پھڑا رہے تھے یا درختوں کی ننگی شاخوں پر بیٹھے ہوئے تھے ۔ وہ سڑک اختیمان گھاٹی تک جاتی تھی ۔ سڑک پر جگہ جگہ نوجوان لڑکیوں' بچوں اور بوڑھی عورتوں کے جھنڈ جمع تھے ۔ ہر جھنڈ کسی نہ کسی کے انتظار میں تھا...سپاہی ابھی تک گھر لوٹ رہے تھے ۔ کوئی اکیلے اکیلے آ رہے تھے اور کوئی کئی کئی کے گروہ میں ۔ کینا اور رادلچو پہلے ایک گروہ کی طرف گئے' پھر دوسرے کی طرف' اور پھر تیسرے کی طرف اور پھر اور آگے بڑھ گئے ۔ وے چاہتے تھے کہ وے ہی استویان کو سب سے پہلے دیکھیں اور اس سے ملیں۔ انہیں وشواس تھا کہ وے اسے ترنت ہی پہچان لیں گے ۔ برف پڑنا شروع ہو گیا تھا اور برف کے گرتے ہوئے گالے اُن کی آنکھوں کے سامنے بار بار پردہ سا ڈال دیتے تھے ۔

سڑک پہلے اوپر کو جاتی تھی اور پھر پہاڑی کے پیچھے گم ہو جاتی تھی ۔ کینا اور رادلچو اُس پہاڑی کی چوٹی پر پہنچ گئے ۔ ہوا وہاں اور بھی زیادہ تیز اور کاٹتی

पर दिमितर को भी स्तोयान की कोई खबर नहीं थी. उसने जवाब दिया:—"शायद उसे विदिन की तरफ़ भेजा गया है." माँ की चिन्ता देखकर दिमितर को भी दुख हुआ. उसने फिर कहा:—"शायद वह कहीं से किसी दूसरे रास्ते से आता होगा." यह कहकर दिमितर कुछ सोचने सा लगा.

तसेना ने ठन्डी साँस भरकर कहा:—"हे ईश्वर! हे प्रभू! मेरा लाल इस समय कहाँ होगा!"

वहाँ से वह स्तोयानका के घर गई. दरवाज़े पर पहुँचते ही उसका दिल काँपने लगा. वह सोचने लगी कि शायद स्तोयानका से उसे अपने बेटे का कुछ समाचार मिल सके और यह मालूम हो जाय कि स्तोयानका बड़े दिन के त्योहार तक घर आ जायगा या नहीं. वह स्तोयानका से कुछ खुशखबरी सुनना चाहती थी. पर स्तोयानका चुप रही. कवल उसकी आँखें लाल दिखाई दीं.

[4]

आज सारे गाँव में चहल-पहल है. लड़ाई के मैदान से पहली पलटन वापिस आ रही है. गाँव वाले उसके स्वागत की तैयारियाँ कर रहे हैं. गली के बीच में तसेना के घर के पास एक दूसरे के आमने सामने दो बल्लियाँ गाड़ी गई. उन दोनों के ऊपर मेहराब के तौर पर एक हरी शाख़ मोड़कर बाँध दी गई. इस तरह पलटन के स्वागत के लिए एक फाटक बना दिया गया. लोगों ने चीड़ के दरख़्तों की ख़ुशबूदार टहनियाँ पहाड़ों पर से लाकर दोनों बल्लियों और मेहराब के ऊपर लपेट दीं. पास के शहर पाज़ारजिक से एक तख़्ता लाकर उस महराब पर लटका दिया गया. तख़्ते पर लिखा हुआ था:— बहादुर सिपाहियो! स्वागत! चारों तरफ़ तिरंगे राष्ट्रीय झन्डे लगा दिए गए.

विजयी पलटन आई और चली गई.

बेचारी माँ सोचने लगी:—

"हो सकता है कि मेरा बेटा पीछे आ रहा हो. शायद वह त्यौहार से ठीक एक दिन पहले पहुँचना चाहता है. उसे परदेस में बड़ा दिन बिताने की क्या ज़रूरत! अभी तो सिपाही आ ही रहे हैं. एक-एक कर चले आ रहे हैं. शाम तक उसके आने के लिए काफ़ी समय है. उसे मालूम है कि यहाँ घर पर इतने आदमी बेचैनी के साथ उसकी तरफ़ आँख लगाए बैठे हैं."

[5]

सुबह के वक़्त बूढ़ी तसेना बहुत जल्दी गिरजा गई. स्तोयान ने जो लेख उसके पास भेजा था उसे उसने सुना डाला.

پر دیمیتر کو بھی استویان کی کوئی خبر نہیں تھی ۔ اُس نے جواب دیا:—"شاید اُسے ودن کی طرف بھیجا گیا ہے ۔" ماں کی چنتا دیکھ کر دیمیتر کو بھی دکھ ہوا ۔ اس نے پھر کہا —"شاید وہ کہیں سے کسی دوسرے راستے سے آتا ہوگا ۔" یہ کہہ کر دیمیتر کچھ سوچنے سا لگا ۔

تسینا نے ٹھنڈی سانس بھرکر کہا:—"ہے ایشور! ہے پربھو! میرا لال اِس سمے کہاں ہوگا!"

وہاں سے وہ استویانکا کے گھر گئی ۔ دروازے پر پہنچتے ہی اُس کا دل کانپنے لگا ۔ وہ سوچنے لگی شاید استویانکا سے اُسے اپنے بیٹے کا کچھ سماچار مل سکے اور یہ معلوم ہو جائے کہ استویانکا بڑے دن کے تیوہار تک گھر آ جائے گا یا نہیں ۔ وہ استویانکا سے کچھ خوش خبری سننا چاہتی تھی ۔ پر استویانکا چپ رہی ۔ کیول اُس کی آنکھیں لال دکھائی دیں ۔

[4]

آج سارے گاؤں میں چہل پہل ہے ۔ لڑائی کے میدان سے پہلی پلٹن واپس آرہی ہے ۔ گاؤں والے اُس کے سواگت کی تیاریاں کر رہے ہیں ۔ گلی کے بیچ میں تسینا کے گھر کے پاس ایک دوسرے کے آمنے سامنے دو بلیاں گاڑی گئیں ۔ اُن دونوں کے اوپر محراب کے طور پر ایک ہری شاخ موڑ کر باندھ دی گئی ۔ اِس طرح پلٹن کے سواگت کے لئے ایک پھاٹک بنا دیا گیا ۔ لوگوں نے چیڑ کے درختوں کی خوشبودار ٹہنیاں پہاڑوں پر سے لا کر دونوں بلیوں اور محراب کے اوپر لپیٹ دیں ۔ پاس کے شہر پازارجک سے ایک تختہ لاکر اُس محراب پر لٹکا دیا گیا ۔ تختے پر لکھا ہوا تھا:— بہادر سپاہیو! سواگت! چاروں طرف ترنگے راشٹریہ جھنڈے لگا دیئے گئے ۔

وجئی پلٹن آئی اور چلی گئی ۔

بیچاری ماں سوچنے لگی:—

"ہو سکتا ہے کہ میرا بیٹا پیچھے آرہا ہو ۔ شاید وہ تہوار سے ٹھیک ایک دن پہلے پہنچنا چاہتا ہے ۔ اُسے پردیس میں بڑا دن بتانے کی کیا ضرورت! ابھی تو سپاہی آ ہی رہے ہیں ۔ ایک ایک کر چلے آ رہے ہیں ۔ شام تک اس کے آنے کے لئے کافی سمے ہے ۔ اُسے معلوم ہے کہ یہاں گھر پر اتنے آدمی بےچینی کے ساتھ اُس کی طرف آنکھ لگائے بیٹھے ہیں ۔"

[5]

صبح کے وقت بوڑھی تسینا بہت جلدی گرجا گئی ۔ استویان نے جو لیکھ اس کے پاس بھیجا تھا اسے اُس نے سنا ڈالا ۔

फिर उसने उन क़ैदियों को मुखातिब करके कहा :—"बेटो ! एक मिनट ठहरो."

यह कहकर वह अपने घर दौड़ी हुई गई और एक मिनट के अन्दर एक पीपा राकिया हाथ में लिए हुए लौट आई. उसने सरबिया के उन क़ैदी सिपाहियों से कहा:—"ज़रा ठहरो, थोड़ा थोड़ा राकिया पी लो." उसने उन्हें राकिया पीने को दी. बुलग़ारिया का जो सिपाही उन क़ैदियों को लिये जा रहा था उसने मुसकरा कर सबको रुकने की इजाज़त दे दी. थके हुये क़ैदी सिपाहियों ने राकिया पी और तसेना का बहुत-बहुत शुक्रिया अदा किया. राकिया पीकर उनकी सरदी कुछ कम हुई.

बुलग़ारिया के सिपाही ने यह देखकर कि पीपे में कुछ राकिया बच गई है बड़ी खुशी के साथ उसे अपने मुँह में डाल लिया और बूढ़ी माँ को बहुत-बहुत सलाम किया.

तसेना ने फिर हैरान होकर कहा:—"यह सब ईसाई हैं, सब एक ही ईश्वर के बन्दे हैं......यह एक दूसरे से लड़ते क्यों हैं ?......"

उसके देखते-देखते वह लोग चले गए.

[3]

जंग रुक गई. सुलह की बात चीत शुरू हो गई.

बड़े दिन का त्योहार नज़दीक आने लगा. सिपाही लोग छुट्टी ले लेकर घर आने लगे. बेतरेन से गए हुये बहुत से सिपाही भी लौट आये. पर स्तोयान अभी नहीं आया. न उसका कोई सन्देश आया. बूढ़ी तसेना को चिन्ता होने लगी. वह घबराने लगी. उसके दिल में बुरे-बुरे ख़याल आने लगे......दिन गुज़रते चले गए. तसेना की आँख बराबर दरवाज़े की तरफ़ लगी रहतीं. न जाने कब स्तोयान आवे और दरवाज़ा खोले.

रंगल स्तोयानोव लड़ाई से लौटकर उससे मिलने आया. दिनको का बेटा पीटर भी उससे मिलने आया. दोनों भाई स्तामेतली उससे मिलने आये. वह उठकर बाहर जाकर लोगों से पूछती. पर स्तोयान की किसी से कोई ख़बर न मिलती. उन सब ने कुछ दिन पहले स्तोयान को देखा था. लेकिन उसके बाद की उन्हें ख़बर न थी.

बूढ़ी माँ का दिल घबराने लगा. उसकी आँखों के सामने बार-बार अँधेरा आ जाता. वह घर के आस-पास चक्कर काटती और बार-बार स्तोयान को याद करती.

उसकी बेटी कीना दरवाज़े से दौड़ती हुई आई और चिल्ला कर कहने लगी:—"माँ ! दिमितर चाचा लड़ाई से आ गए !"

माँ तुरन्त उठी और दिमितर के यहाँ गई. दिमितर के यहाँ पहुँचकर उसने कहा:— "दिमितर ! स्वागत ! स्तोयान को तुमने कहाँ छोड़ा ?"

پھر اس نے ان قیدیوں کو مخاطب کر کے کہا:—"بیٹو ! ایک منٹ ٹھہرو ۔"

یہ کہہ کر وہ اپنے گھر دوڑی ہوئی گئی اور ایک منٹ کے اندر ایک پیپا راکیا ہاتھ میں لئے ہوئے لوٹ آئی ۔ اس نے سربیا کے ان قیدی سپاہیوں سے کہا:—"ذرا ٹھہرو، تھوڑا تھوڑا راکیا پی لو۔" اس نے انہیں راکیا پینے کو دی ۔ بلغاریہ کا جو سپاہی ان قیدیوں کو لئے جا رہا تھا اس نے مسکرا کر سب کو رکنے کی اجازت دے دی ۔ تھکے ہوئے قیدی سپاہیوں نے راکیا پی اور تسینا کا بہت بہت شکریہ ادا کیا ۔ راکیا پی کر ان کی سردی کچھ کم ہوئی ۔

بلغاریہ کے سپاہی نے یہ دیکھ کر کہ پیپے میں کچھ راکیا بچ گئی ہے بڑی خوشی کے ساتھ اس نے اپنے منھ میں ڈال لیا اور بوڑھی ماں کو بہت بہت سلام کیا ۔

تسینا نے پھر حیران ہو کر کہا:—"یہ سب عیسائی ہیں، سب ایک ہی ایشور کے بندے ہیں......یہ ایک دوسرے سے لڑتے کیوں ہیں ؟ ..."

اس کے دیکھتے دیکھتے وہ لوگ چلے گئے ۔

[3]

جنگ رک گئی ۔ صلح کی بات چیت شروع ہو گئی ۔

بڑے دن کا تیوہار نزدیک آنے لگا ۔ سپاہی لوگ چھٹی لے لے کر گھر آنے لگے ۔ بیترین سے گئے ہوئے بہت سے سپاہی بھی لوٹ آئے ۔ پر ستویان ابھی نہیں آیا۔ نہ اس کا کوئی سندیش آیا ۔ بوڑھی تسینا کو چنتا ہونے لگی ۔ وہ گھبرانے لگی ۔ اس کے دل میں برے برے خیال آنے لگے......دن گزرتے چلے گئے ۔ تسینا کی آنکھیں برابر دروازے کی طرف لگی رہتیں ۔ نہ جانے کب ستویان آوے اور دروازہ کھولے ۔

رنگل استویانوو لڑائی سے لوٹ کر اس سے ملنے آیا ۔ دنکو کا بیٹا پیٹر بھی اس سے ملنے آیا ۔ دونوں بھائی استامیتلی اس سے ملنے آئے ۔ وہ اٹھ کر باہر جا کر لوگوں سے پوچھتی ۔ پر استویان کی کسی سے کوئی خبر نہ ملتی ۔ ان سب نے کچھ دن پہلے استویان کو دیکھا تھا ۔ لیکن اس کے بعد کی انہیں خبر نہ تھی ۔

بوڑھی ماں کا دل گھبرانے لگا ۔ اس کی آنکھوں کے سامنے بار بار اندھیرا آجاتا ۔ وہ گھر کے آس پاس چکر کاٹتی اور بار بار استویان کو یاد کرتی ۔

اس کی بیٹی کینا دروازے سے دوڑتی ہوئی آئی اور چلا کر کہنے لگی:—"ماں ! دیمیتر چا چا لڑائی سے آ گئے !"

ماں فورًا اٹھی اور دیمیتر کے یہاں گئی ۔ دیمیتر کے یہاں پہنچ کر اس نے کہا:—"دیمیتر ! سواگت ! استویان کو تم نے کہاں چھوڑا ؟"

जा रहा था. तसेना उस ख़त को पढ़वाने के लिये दौड़कर उसे अपने पुरोहित के पास ले गई.

चिट्ठी यह थी:—

"माँ ! में यह चिट्ठी तुम्हें यह बताने के लिये लिख रहा हूँ कि मैं जिन्दा और ख़ैरियत से हूँ. हमने सरबिया के लोगों को हरा दिया है. बुलग़ारिया जिन्दाबाद ! मैं अच्छी तरह हूँ. रंगल स्तोयानोव भी अच्छी तरह से है. चचा दिमितर भी अच्छी तरह से हैं और अपनी माँ को सलाम भेजते हैं. सरबिया के लोग हमेशा एक साथ अपनी बन्दूकें छोड़ते हैं. पर जब हम जवाब में 'हुर्रा !' कहकर बढ़ते हैं तो वे डर जाते हैं. मैं अपना नया बिस्तरबन्द त्स्वेताम के यहाँ भूल आया था, वह वहाँ से मंगा लेना. बच्चे उसे कहीं ख़राब न कर दें. कल हम ड्रागोमान की घाटियों में से तेज़ी के साथ निकल जाएँगे. मैं जब घर लौटूँगा तो कीना के लिये निश शहर से कोई अच्छी सी चीज़ लेता आऊँगा. तुम्हारे ख़र्चे के लिये मैं एक लेव (बुलग़ारिया का एक सिक्का) भेज रहा हूँ. जब घर आऊँगा तो रादुलचो को बताऊँगा कि तोप के गोले किस तरह आवाज़ करते हैं.

स्तोयान दोब्रेव

"बूढ़े पीटर को मेरा बहुत बहुत सलाम कहना. मैं उन्हें सरबिया की एक बन्दूक़ भेजना चाहता था पर इन्तजाम नहीं कर सका. वह लोग बन्दूक़ तो बहुत दूर से चलाते हैं पर उनका निशाना ठीक नहीं बैठता . माँ ! स्तोयानका को भी मेरा सलाम कहना."

तसेना का दुखी हृदय खिल उठा. अपने बूढ़े हाथों में चिट्ठी लिये वह स्तोयानका के घर गई. सब को बड़ी ख़ुशी हुई. पर सबसे ज़ियादह ख़ुशी रादुलचो को हुई. वह ख़ुश होकर यह सोचने लगा कि मेरा बड़ा भैया जब घर लौटेगा तो मुझे एक नया गाना सिखाएगा.

गली में पहुँचते ही तसेना को लड़ाई के क़ैदियों का एक नया गिरोह मिल गया. बुलग़ारिया का एक सिपाही उनके पीछे-पीछे था. उस सिपाही की शकल स्तोयान से इतनी मिलती हुई थी कि बार-बार तसेना को शक हुआ कि वह स्तोयान ही है. पर वह कोई और निकला. तसेना ने झट से बढ़कर उससे पूछना चाहा कि उसे स्तोयान की भी कुछ ख़बर है या नहीं. पर मुँह खोलने से पहले उसका ध्यान सरबिया के क़ैदियों की तरफ़ गया. जंग के क़ैदी उसने जीवन में पहली बार देखे थे.

तसेना ने उन क़ैदियों की तरफ़ देखकर कहा:—"ऐ ईश्वर ! क्या यही सरबिया के लोग हैं ? ख़ासे अच्छे आदमी हैं......इन बेचारों की माएँ कहाँ होंगी, क्या कहती होंगी ? ...उन्हें क्या पता उनके बेटे कहाँ हैं ?"

لے جا رہا تھا ۔ تسینا اُس خط کو پڑھوانے کے لئے دوڑ کر اسے اپنے پروہت کے پاس لے گئی ۔

چٹھی یہ تھی :—

"ماں ! میں یہ چٹھی تمہیں یہ بتانے کے لئے لکھ رہا ہوں کہ میں زندہ اور خیریت سے ہوں ۔ ہم نے سربیا کے لوگوں کو ہرا دیا ہے۔ بلغاریہ زندہ باد ! میں اچھی طرح ہوں ۔ رنگل استویانوو بھی اچھی طرح سے ہے ۔ چچا دیمیتر بھی اچھی طرح سے ہیں اور اپنی ماں کو سلام بھیجتے ہیں ۔ سربیا کے لوگ ہمیشہ ایک ساتھ اپنی بندوقیں چھوڑتے ہیں ۔ پر جب ہم جواب میں 'ہرا !' کہہ کر بڑھتے ہیں تو وے ڈر جاتے ہیں ۔ میں اپنا بستر بند تسویتان کے یہاں بھول آیا تھا' وہ وہاں سے منگا لینا ۔ بچے اسے کہیں خراب نہ کر دیں ۔ کل ہم دراگومان کی گھاٹیوں میں سے تیزی کے ساتھ نکل جائیں گے ۔ میں جب گھر لوٹونگا تو کینا کے لئے نش شہر سے کوئی اچھی سی چیز لیتا آؤنگا۔ تمہارے خرچ کے لئے میں ایک لیو (بلغاریہ کا ایک سکہ) بھیج رہا ہوں ۔ جب گھر آؤنگا تو رادل چو کو بتاؤنگا کہ توپ کے گولے کس طرح آواز کرتے ہیں ۔

استویان دوبریو ۔

"بوڑھے پیٹر کو میرا بہت بہت سلام کہنا ۔ میں انہیں سربیا کی ایک بندوق بھیجنا چاہتا تھا پر انتظام نہیں کر سکا ۔ وہ لوگ بندوق تو بہت دور سے چلاتے ہیں پر اُن کا نشانہ ٹھیک نہیں بیٹھتا ۔ ماں ! استویانکا کو بھی میرا سلام کہنا ۔"

تسینا کا دکھی ہردئے کھل اٹھا ۔ اپنے بوڑھے ہاتھوں میں چٹھی لئے وہ استویانکا کے گھر گئی ۔ سب کو بڑی خوشی ہوئی ۔ پر سب سے زیادہ خوشی رادل چو کو ہوئی ۔ وہ خوش ہو کر یہ سوچنے لگا کہ میرا بڑا بھیا جب گھر لوٹے گا تو مجھے ایک نیا گانا سکھاویگا ۔

گلی میں پہونچتے ہی تسینا کو لڑائی کے قیدیوں کا ایک نیا گروہ مل گیا ۔ بلغاریہ کا ایک سپاہی اُن کے پیچھے پیچھے تھا ۔ اُس سپاہی کی شکل استویان سے اتنی ملتی ہوئی تھی کہ بار بار تسینا کو شک ہوا کہ وہ استویان ہی ہے ۔ پر وہ کوئی اور نکلا ۔ تسینا نے جھٹ سے بڑھ کر اُس سے پوچھنا چاہا کہ اسے استویان کی بھی کچھ خبر ہے یا نہیں ۔ پر منھ کھولنے سے پہلے اُس کا دھیان سربیا کے قیدیوں کی طرف گیا ۔ جنگ کے قیدی اس نے جیون میں پہلی بار دیکھے تھے ۔

تسینا نے ان قیدیوں کی طرف دیکھ کر کہا :—"اے ایشور ! کیا یہی سربیا کے لوگ ہیں ؟ خاصے اچھے آدمی ہیں...... اِن بیچاروں کی مائیں کہاں ہونگی' کیا کہتی ہونگی ؟ ...... انہیں کیا پتہ ان کے بیٹے کہاں ہیں ؟"

कपड़े उठाए. उनके नीचे से उसने एक मोमबत्ती निकाली और घर के छोटे से उपासनाघर के सामने उस बत्ती को जलाकर दुआ माँगनी शुरू की.

ठीक उस समय ड्रागामान के मैदान में तोपें गोले उगल रही थीं. नवम्बर 1885 की चौथी तारीख़ थी.

[2]

बुढ़िया तसेना ने उस रात को एक सपना देखा:—

एक बहुत बड़ा बादल है, और एक फ़ौज उस बादल के अन्दर घुसी चली जा रही है. स्तोयान भी उसी फ़ौज में है.

तसेना ने सपने ही के अन्दर डरकर कहा:—"ऐ माता मेरी ! ऐ प्रभु ईसा की माँ ! मेरा जी डरता है !"

बादल गरजा, आसमान में बिजली कड़की, धरती हिल गई—जंग की सी हालत मालूम हुई. उसी बादल में स्तोयान गुम हो गया. कहाँ चला गया ! अब क्या होगा !

माँ काँपकर जाग उठी. कोठरी में घुप अँधेरा था. बाहर ठन्डी हवा सन-सन कर रही थी. लड़ाई का नकशा माँ की आँखों के सामने से फिर रहा था.

माँ ने कहा:—"ऐ ईश्वर ! ऐ प्रभु ! ऐ ईसा मसीह ! उसकी रक्षा करना......प्रभु ईसा की माँ मेरी ! स्तोयान पर दया करना !"

उसके बाद सुबह तक बुढ़िया तसेना को नींद न आई.

सुबह होते ही वह गाँव के सयाने बूढ़े पीटर के पास गई. उसने पीटर से पूछा — 'चचा पीटर ! सपने में बादल दिखाई देने का क्या मतलब होता है ?"

पीटर ने जवाब दिया:—"बादल दो तरह के होते हैं. कुछ बादल वह होते हैं जो बरसते है और कुछ बादल वह होते हैं जो बारिश को इधर-उधर छिटका देते हैं. तसेना ! तुमने सपने में किस तरह का बादल देखा था ?"

तसेना ने अपना सपना बयान कर दिया. बूढ़ा पीटर कुछ देर सोचता रहा. उसे याद नहीं आ रहा था कि उसकी पोथी में उस तरह के बादल का ज़िक्र है या नहीं. पर जब उसने तसेना के चेहरे पर डर और घबराहट देखी और यह देखा को तसेना टिकटिका लगाए उसकी ओर देख रही है, तो उसने तसेना पर दया करके कहा:—"तसेना ! फ़िक्र मत करो, तुम्हारा सपना अच्छा सपना है. बादल का मतलब यहाँ सन्देसा से है. तुम्हें स्तोयान की चिट्ठी मिलेगी."

बुढ़िया का चेहरा चमक उठा.

छै दिन के बाद एक वालन्टियर ने जो स्तोयान का दोस्त था, स्तोयान की माँ को स्तोयान की एक चिट्ठी लाकर दी. स्तोयान उस समय सरविया के कुछ युद्ध के क़ैदियों को

کپڑے اٹھائے ۔ ان کے نیچے سے اُس نے ایک موم بتی نکالی اور گھر کے چھوٹے سے اپاسنا گھر کے سامنے اس بتی کو جلا کر دعا مانگنی شروع کی ۔

ٹھیک اس سمے ڈراگومان کے میدان میں توپیں گولے اگل رہی تھیں ۔ نومبر 1885 کی چوتھی تاریخ تھی ۔

[2]

بڑھیا تسینا نے اُس رات کو ایک سپنا دیکھا:—

ایک بہت بڑا بادل ہے، اور ایک فوج اس بادل کے اندر گھسی چلی جا رہی ہے ۔ استویان بھی اُسی فوج میں ہے ۔

تسینا نے سپنے ہی کے اندر ڈر کر کہا:—اے ماتا میری ! اے پربھو عیسیٰ کی ماں ! میرا جی ڈرتا ہے !"

بادل گرجا، آسمان میں بجلی کڑکی، دھرتی ہل گئی— جنگ کی سی حالت معلوم ہوئی ۔ اسی بادل میں استویان گم ہو گیا ۔ کہیں چلا گیا ! اب کیا ہوگا !

ماں کانپ کر جاگ اٹھی ۔ کوٹھری میں گھپ اندھیرا تھا ۔ باہر ٹھنڈی ہوا سن سن کر رہی تھی ۔ لڑائی کا نقشہ ماں کی آنکھوں کے سامنے سے پھر رہا تھا ۔

ماں نے کہا:—"اے ایشور ! اے پربھو ! اے عیسیٰ مسیح ! اُس کی رکشا کرنا......پربھو عیسیٰ کی ماں میری ! استویان پر دیا کرنا !"

اُس کے بعد صبح تک بڑھیا تسینا کو نیند نہ آئی ۔

صبح ہوتے ہی وہ گاؤں کے سیانے بوڑھے پیٹر کے پاس گئی ۔ اُس نے پیٹر سے پوچھا:—"چچا پیٹر ! سپنے میں بادل دکھائی دینے کا کیا مطلب ہوتا ہے ؟"

پیٹر نے جواب دیا:—"بادل دو طرح کے ہوتے ہیں ۔ کچھ بادل وہ ہوتے ہیں جو برستے ہیں اور کچھ بادل وہ ہوتے ہیں جو بارش کو اِدھر اُدھر چھٹکا دیتے ہیں ! تسینا ! تم نے سپنے میں کس طرح کا بادل دیکھا تھا ؟"

تسینا نے اپنا سپنا بیان کر دیا ۔ بوڑھا پیٹر کچھ دیر تک سوچتا رہا اُسے یاد نہیں آ رہا تھا کہ اس کی پوتھی میں اُس طرح کے بادل کا ذکر ہے یا نہیں ۔ پر جب اُس نے تسینا کے چہرے پر ڈر اور گھبراہٹ دیکھی اور یہ دیکھا کہ تسینا ٹکٹکی لگائے اس کی اُور دیکھ رہی ہے، تو اس نے تسینا پر دیا کر کے کہا:—

"تسینا فکر مت کرو، تمہارا سپنا اچھا سپنا ہے ۔ بادل کا مطلب یہاں سندیش سے ہے ۔ تمہیں استویان کی چٹھی ملے گی ۔"

بڑھیا کا چہرا چمک اٹھا ۔

چھ دن کے بعد ایک والنٹیر نے، جو ستویان کا دوست تھا، استویان کی ماں کو استویان کی ایک چٹھی لا کر دی ۔ استویان اس سمے سرویا کے کچھ یدھ کے قیدیوں کو

इनके साथ एक पलटन थी जो हरमानली से आ रही थी. हरमानली में वह तुरकों से लड़ने गई थी. अब वह सोफ़िया के मैदान पर जा रही थी जहाँ उसे सरबिया वालों से लड़ना था.

रँगरूटों को देखकर गाँव वालों की भीड़ में से एक ने कहा :—"वह देखो, जारजी का बेटा स्वेतको जा रहा है ! स्वेतको ! ख़ुदा हाफ़िज़ !"

दूसरे ने कहा :—"वह देखो, रंगल जा रहा है !'

तीसरे ने कहा :—"और वह नदलका का बेटा आइवन जा रहा है. आइवन ! देखो तुम्हारी माँ खड़ी है !'

जल्दी जल्दी में भीड़ में से कुछ ने कुछ रंगरूटों को फूल दिये. गालों के ऊपर से आँसू टपकते जाते थे. शब्द आधे मुँह से निकलते थे और आधे अन्दर ही अन्दर घुटकर रह जाते थे. रंगरूट फौज के साथ आगे बढ़ते जाते थे.

इतने में एक लड़की ने चिल्लाकर कहा :—"माँ ! यह देखो, भाई जा रहा है !"

आठ बरस के एक लड़के ने जो उसी लड़की के पास खड़ा था अपने हाथ रंगरूटों की तरफ़ बढ़ा कर चिल्लाकर कहा :—"स्तोयान भैया !"

माँ ने रोते रोते कहा :—"मेरे बेटे ! मेरे लाल !''

काली आँखों वाला एक सुन्दर तन्दुरुस्त नौजवान क़तार में से बाहर निकल पड़ा. उसने अपनी माँ का हाथ चूमा, अपनी बहन और अपने भाई का माथा चूमा, उनसे लेकर कुछ फूल उसने अपनी छाती में लगा लिये एक और नौजवान लड़की ने भी उसे कुछ फूल दिये. उन्हें उसने अपने कानों पर रख लिया. फिर जल्दी से दौड़कर वह क़तार में जा मिला और सब के साथ गाता हुआ चला गया.

माँ ने दूर से चिल्लाकर कहा:—'मेरे लाल ! ख़ुदा हाफ़िज़ !"

बहन ने क़रीब-क़रीब बेहोश होते हुये चीख़कर कहा:—'स्तोयान !'

उन सब की आवाजें गूँज कर रह गईं. स्तोयान बाक़ी सिपाहियों के अंदर नज़र से ओझल हो गया. रँगरूट गहरे कुहरे में दिखाई देने बन्द हो गए.

माँ कुछ देर तक आँखें फाड़ फाड़कर उसी तरफ़ देखती रही पर अब देखने को कुछ न था.

नौजवान लड़की ने अपनी चुंदरी का धारीदार पल्ला अपने सर पर डाल लिया.

घर लौटकर स्तोयान की माँ बैठी रोती रही. उसने एक पुराना टूटा हुआ सन्दूक़ खोला. उसमें से कुछ क़मीजें और

اُن کے ساتھ ایک پلٹن تھی جو ہرمانلی سے آرہی تھی ۔ ہرمانلی میں وہ ترکوں سے لڑنے گئی تھی ۔ اب وہ صوفیا کے میدان پر جا رہی تھی جہاں اسے سرویا والوں سے لڑنا تھا ۔

رنگروٹوں کو دیکھ کر گاؤں والوں کی بھیڑ میں سے ایک نے کہا:—"وہ دیکھو' جارجی کا بیٹا سویتکو جا رہا ہے ! سویتکو ! خدا حافظ !"

دوسرے نے کہا:—"وہ دیکھو' رانگل جا رہا ہے !"

تیسرے نے کہا:—"اور وہ ندلکا کا بیٹا آئیون جا رہا ہے ۔ آئیون ! دیکھو تمہاری ماں کھڑی ہے !"

جلدی جلدی میں بھیڑ میں سے کچھ نے کچھ رنگروٹوں کو پھول دیئے ۔ گالوں کے اوپر سے آنسو ٹپکتے جاتے تھے ۔ شبد آدھے منہ سے نکلتے تھے اور آدھے اندر ہی اندر گھٹ کر رہ جاتے تھے ۔ رنگروٹ فوج کے ساتھ آگے بڑھتے جاتے تھے ۔

اِتنے میں ایک لڑکی نے چلاکر کہا:—"ماں ! یہ دیکھو' بھائی جا رہا ہے !"

آٹھ برس کے ایک لڑکے نے جو اسی لڑکی کے پاس کھڑا تھا اپنے ہاتھ رنگروٹوں کی طرف بڑھا کر چلا کر کہا:—"استویان بھیا !"

ماں نے روتے روتے کہا:—"میرے بیٹے ! میرے لال !"

کالی آنکھوں والا ایک سندر تندرست نوجوان قطار میں سے باہر نکل پڑا. اُس نے اپنی ماں کا ہاتھ چوما' اپنی بہن اور اپنے بھائی کا ماتھا چوما' ان سے لے کر کچھ پھول اس نے اپنی چھاتی میں لگائے ۔ ایک اور نوجوان لڑکی نے بھی اسے کچھ پھول دیئے ۔ انہیں اُس نے اپنے کانوں پر رکھ لیا ۔ پھر جلدی سے دوڑ کر وہ قطار میں جا ملا اور سب کے ساتھ گاتا ہوا چلا گیا ۔

ماں نے دور سے چلا کر کہا:—"میرے لال ! خدا حافظ !"

بہن نے قریب قریب بیہوش ہوتے ہوئے چیخ کر کہا:—"استویان !"

اُن سب کی آوازیں گونج کر رہ گئیں ۔ استویان باقی سپاہیوں کے اندر نظر سے اوجھل ہو گیا ۔ رنگروٹ گہرے کہرے میں دکھائی دینے بند ہو گئے ۔

ماں کچھ دیر تک آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر اُسی طرف دیکھتی رہی پر اب دیکھنے کو کچھ نہ تھا ۔

نوجوان لڑکی نے اپنی چندری کا دھاریدار پلہ اپنے سر پر ڈال لیا ۔

گھر لوٹ کر استویان کی ماں بیٹھی روتی رہی ۔ اُس نے ایک پرانا ٹوٹا ہوا صندوق کھولا ۔ اس میں سے کچھ قمیضیں اور

बुल्गारिया की एक मशहूर कहानी

क्या वह घर आ रहा है?

श्री आइवन वाज़ोव

[1]

सन् 1885 की बात है. नवम्बर की चौथी तारीख़ थी. जंग जारी थी. ड्रागोमान के मैदान में तोपें गोले उगल रही थीं.

बल्गारिया के वेतरेन गाँव में कुहरा छाया हुआ था. चारों तरफ़ नमी थी, हल्की-हल्की बारिश हो रही थी. गाँव के झोपड़े, मालूम होता था, दबे जा रहे हैं. गलियों में कीचड़ थी. फिर भी लोग जगह-जगह जमा थे और कुछ चिन्ता के साथ बातें कर रहे थे.

गाँव के अन्दर दो छोटी छोटी सराएँ एक दूसरे के आमने सामने थीं. दोनों के बीच की सड़क पर से बैलों के छकड़े और देहाती घोड़ेगाड़ियाँ फ़ौजी रसद के सामान से लदी हुई चूँ चूँ करती चली जा रही थीं.

उन्हीं छकड़ों और गाड़ियों के बीच बीच से नए फ़ौजी रंगरूट जा रहे थे. उनमें से कुछ लम्बे-लम्बे फ़ौजी ओवरकोट पहने हुए थे. कुछ भेड़ की खाल के कोट पहने हुए थे. बहुत से अपने मोटे मोटे कम्बलों की पिछौरियाँ बनाकर उनसे अपनी सरदी दूर कर रहे थे. पैरों मे ऊँचे ऊँचे जूते थे. कन्धों पर बन्दूकें रखी थीं, जिनके नीचे कारतूसें लटक रही थीं. बन्दूकों के पीछे वाले सिरे से थैले लटक रहे थे. थैलों में काफ़ी सामान था. सड़क पर घुटनों घुटनों कीचड़ थी. सरदी काफ़ी थी. बीच बीच मे ओले भी पड़ रहे थे. फिर भी यह सब रंगरूट हँसते गाते चले जा रहे थे.

एक सराय के दरवाज़े पर कुछ किसान, कुछ मुसाफ़िर और कुछ फ़ौजी अफ़सर खड़े हुए इन नौजवान रंगरूटों को ध्यान से देख रहे थे.

एक तरफ़ गाँव की कुछ औरतें, कुछ लड़कियां और कुछ बच्चे भी खड़े थे. इनमें से अधिकतर चीथड़े लपेटे हुए सरदी से ठिठुर रहे थे. उनके चेहरों पर ख़ून की लाली झलक रही थी.

यह लोग इसलिये खड़े थे कि जो नौजवान रंगरूट उनके गाँव से भरती होकर जा रहे थे उन्हें आख़री बिदाई दें.

यह सब रंगरूट सोफ़िया आ रहे थे.

بلغاریہ کی ایک مشہور کہانی

کیا وہ گھر آ رہا ھے ؟

شری آئیون وازوو

[1]

سن 1885 کی بات ھے ۔ نومبر کی چوتھی تاریخ تھی ۔ جنگ جاری تھی ۔ ڈراگومان کے میدان میں توپیں گولے اگل رھی تھیں ۔

بلغاریہ کے ویتریں گاؤں میں کہرا چھایا ھوا تھا ۔ چاروں طرف نمی تھی ' ھلکی ھلکی بارش ھو رھی تھی ۔ گاؤں کے جھونپڑے ' معلوم ھوتا تھا ' دبے جا رھے ھیں ۔ گلیوں میں کیچڑ تھی ۔ پھر بھی لوگ جگہہ جگہہ جمع تھے اور کچھ چنتا کے ساتھ باتیں کر رھے تھے ۔

گاؤں کے اندر دو چھوٹی چھوٹی سرائیں ایک دوسرے کے آمنے سامنے تھیں ۔ دونوں کے بیچ کی سڑک پر سے بیلوں کے چھکڑے اور دیہاتی گھوڑے گاڑیاں فوجی رسد کے سامان سے لدی ھوئی چوں چوں کرتی چلی جا رھی تھیں ۔

انھیں چھکڑوں اور گاڑیوں کے بیچ بیچ سے نئے فوجی رنگروٹ جا رھے تھے ۔ اُن میں سے کچھ لمبے لمبے فوجی اوورکوٹ پہنے ھوئے تھے ۔ کچھ بھیڑ کی کھال کے کوٹ پہنے ھوئے تھے ۔ بہت سے اپنے موٹے موٹے کمبلوں کی پچھوریاں بنا کر ان سے اپنی سردی دور کر رھے تھے ۔ پیروں میں اونچے اونچے جوتے تھے ۔ کندھوں پر بندوقیں رکھی تھیں ' جن کے نیچے کارتوسیں لٹک رھی تھیں ۔ بندوقوں کے پیچھے والے سرے سے تھیلے لٹک رھے تھے ۔ تھیلوں میں کافی سامان تھا ۔ سڑک پر گھٹنوں گھٹنوں کیچڑ تھی ۔ سردی کافی تھی ۔ بیچ بیچ میں اولے بھی پڑ رھے تھے ۔ پھر بھی یہ سب رنگروٹ ھنستے گاتے چلے جا رھے تھے ۔

ایک سرائے کے دروازے پر کچھ کسان ' کچھ مسافر اور کچھ فوجی افسر کھڑے ھوئے اِن نوجوان رنگروٹوں کو دھیان سے دیکھ رھے تھے ۔

ایک طرف گاؤں کی کچھ عورتیں ' کچھ لڑکیاں اور کچھ بچے بھی کھڑے تھے ۔ اِن میں سے ادھک تر چیتھڑے لپیٹے ھوئے سردی سے ٹھٹھر رھے تھے ۔ اُن کے چہروں پر خون کی لالی جھلک رھی تھی ۔

یہ لوگ اِس لئے کھڑے تھے کہ جو نوجوان رنگروٹ اُن کے گاؤں سے بھرتی ھو کر جا رھے تھے انھیں آخری بدائی دیں ۔

یہ سب رنگروٹ صوفیا جا رھے تھے ۔

क़ौमी एकता को क़ायम किया था उसकी बुनियादें अभी काफी मजबूत न हो पाई थीं. सदियों की कमज़ोरियाँ एक पीढ़ी के अन्दर इतनी आसानी से नहीं मिट सकतीं. सदियों की पुरानी दुशमनियाँ भी अभी कहीं कहीं दिलों में पड़ी सुलग रही थीं. जिन बद्दू क़बीलों को सदियों से एक तरह की मनमानी करने की आदत पड़ गई थी, जो किसी मरकज़ी ताक़त (केन्द्रीय शक्ति) के अधीन होकर रहना, या किसी को टैक्स देना जानते ही न थे, इन सब के दिलों में फ़ायदेमन्द सामाजिक और राष्ट्रीय बन्धनों की क़द्र अभी पूरी तरह न जमी थी. इसके अलावा इस तरह के खुदग़रज़ और मौक़ापरस्त लोगों की भी किसी देश या किसी ज़माने में पूरी तरह कमी नहीं होती जो अपने चन्द-रोज़ा फ़ायदों के लिए अपने देश के हितों के खिलाफ़ ग़ैरों की साज़िशों में मददगार हो सकें।

[बाक़ी अगले नम्बर में]

می ایکتا کو قایم کیا تھا اس کی بنیادیں ابھی کافی مضبوط نہ ہو انیں تھیں ۔ صدیوں کی کمزوریاں ایک پیڑھی کے اندر اتنی آسانی ے نہیں مٹ سکتیں ۔ صدیوں کی پرانی دشمنیاں بھی ابھی ہیں کہیں دلوں میں پڑی سلگ رہی تھیں ۔ جن بدو بیلوں کو صدیوں سے ایک طرح کی من مانی کرنے کی عادت ڑ گئی تھی، جو کسی مرکزی طاقت (کیندریہ شکتی) کے دھین ہو کر رہنا، یا کسی کو ٹیکس دینا جانتے ہی نہ تھے، ن سب کے دلوں میں فائدہ مند سماجک اور راشٹری بندھنوں ی قدر ابھی پوری طرح نہ جمی تھی ۔ اس کے علاوہ اس طرح کے خودغرض اور موقع پرست لوگوں کی بھی کسی دیش ا کسی زمانے میں پوری طرح کمی نہیں ہوتی جو اپنے چند روزہ ائدوں کے لئے اپنے دیش کے ہتوں کے خلاف غیروں کی سازشوں یں مددگار ہو سکیں ۔

[باقی اگلے نمبر میں] ۔

---

[३]

उत्तर के बहुत से अरब सूबे अभी तक रोमी सल्तनत के हिस्से बने हुये थे. इन सूबों के अरबों में इसलाम का प्रचार करने के लिये मोहम्मद साहब सैकड़ों प्रचारक भेज चुके थे. रोम के ईसाई बादशाहों की नीति में उस समय मजहबी आजादी की गुंजाइश न थी. रोम के उस समय के अत्याचारों और वहाँ की प्रजा की हालत का ज़िक्र हम एक दूसरी जगह करेंगे. वहाँ के जिन अरबों ने नया धर्म क़ुबूल किया उन्हें रोमी शासकों ने मौत की सजा देनी शुरू की. मोहम्मद साहब के भेजे हुये पचासों प्रचारकों को उन्होंने क़त्ल करवा दिया. वहाँ के ज्यादातर अरबों में इससे नए राष्ट्रीय धर्म के साथ प्रेम और ज्यादा बढ़ा. बहुत से अरब क़बीलों ने, जो पहले ईसाई इत्यादि थे, बख़ुशी इसलाम क़ुबूल कर लिया और रोमी साम्राज्य की अधीनता छोड़कर मदीने की नई राष्ट्रीय सरकार के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ लिया. इसी प्रकार अनेक ईसाई अरब क़बीलों ने भी रोम से अपना ताल्लुक तोड़कर मदीने की अरब सरकार के साथ जोड़ना चाहा. मदीने की क़ौमी सरकार और रोमी शहन्शाहियत के बीच युद्ध अनिवार्य (लाज़मी) था. मुहम्मद साहब ही के समय में युद्ध छिड़ चुका था. वास्तव में यह युद्ध अरबों की धार्मिक और राजनैतिक स्वाधीनता का युद्ध था और उसे जीवित रखने के लिए अरबों में राष्ट्रीय एकता की भावना भी काफ़ी पैदा हो चुकी थी.

मौत से कुछ दिन पहले मोहम्मद साहब ने रोमी साम्राज्य के मुक़ाबले के लिये शाम की सरहद पर नई फ़ौज भेजने का फ़ैसला कर लिया था. फ़ौज मदीने से बाहर मैदान में पहुँच चुकी थी. मोहम्मद साहब अपने हाथों से फ़ौज की कमाण्डरी का झण्डा नौजवान ओसामा के हाथों में सौंप चुके थे. किन्तु मोहम्मद साहब की मौत के कारण इस फ़ौज का जाना रुक गया था.

ख़लीफ़ा होने के दूसरे ही दिन अबुबक्र ने फिर से फ़ौज की कमानदारी का झण्डा ओसामा के हाथों में देकर उसे फ़ौरन उत्तर की ओर बढ़ने का हुक्म दिया.

उधर रोम के चालाक हाकिमों ने भी मोहम्मद साहब की मौत से पूरा फ़ायदा उठाने की कोशिश की. पूरे अरब में, और ख़ासकर उन सूबों में जो इससे पहले रोम या ईरान के मातहत रह चुके थे, मदीने की नई सरकार के ख़िलाफ़ साज़िशों का एक जाल बिछा दिया गया. चारों ओर से बग़ावतों की ख़बरें आने लगीं, यहाँ तक कि पैग़म्बरी के कई नए दावेदार खड़े हो गए।

32 बरस की कठिन तपस्या और क़ुर्बानियों के ज़रिये मोहम्मद साहब ने अलग अलग क़बीलों की जगह जिस

[3]

اتر کے بہت سے عرب صوبے ابھی تک رومی سلطنت کے حصے بنے ہوئے تھے۔ ان صوبوں کے عربوں میں اسلام کا پرچار کرنے کے لئے محمد صاحب سیکڑوں پرچارک بھیج چکے تھے۔ روم کے عیسائی بادشاہوں کی نیتی میں اس سمے مذہبی آزادی کی گنجائش نہ تھی۔ روم کے اس سمے کے اتیاچاروں اور وہاں کی پرجا کی حالت کا ذکر ہم ایک دوسری جگہ کریں گے۔ وہاں کے جن عربوں نے نیا دھرم قبول کیا انہیں رومی شاسکوں نے موت کی سزا دینی شروع کی۔ محمد صاحب کے بھیجے ہوئے پچاسوں پرچارکوں کو انہوں نے قتل کروا دیا۔ وہاں کے زیادہ تر عربوں میں اس سے نئے راشٹری دھرم کے ساتھ پریم اور زیادہ بڑھا۔ بہت سے عرب قبیلوں نے جو عیسائی اتیادی تھے، بخوشی اسلام قبول کر لیا اور رومی سامراج کی ادھینتا چھوڑ کر مدینے کی نئی راشٹریہ سرکار کے ساتھ اپنا سمبندھ جوڑ لیا۔ اس پرکار انیک عیسائی عرب قبیلوں نے بھی روم سے اپنا تعلق توڑ کر مدینے کی عرب سرکار کے ساتھ جوڑنا چاہا۔ مدینہ کی قومی سرکار رومی شہنشاہیت کے بیچ یدھ انیواریہ (لازمی) تھا۔ محمد صاحب ہی کے سمے میں یدھ چھڑ چکا تھا۔ واستو میں یہ یدھ عربوں کی دھارمک اور راجنیتک سوادھینتا کا یدھ تھا اور اسے جیوت رکھنے کے لئے عربوں میں راشٹریہ ایکتا کی بھاونا بھی کافی پیدا ہو چکی تھی۔

موت سے کچھ دن پہلے محمد صاحب نے رومی سامراجیہ کے مقابلے کے لئے شام کی سرحد پر نئی فوج بھیجنے کا فیصلہ کر لیا تھا۔ فوج مدینے سے باہر میدان میں پہنچ چکی تھی۔ محمد صاحب اپنے ہاتھوں سے فوج کی کمانڈری کا جھنڈا نوجوان اوسامہ کے ہاتھوں میں سونپ چکے تھے۔ کنتو محمد صاحب کی موت کے کارن اس فوج کا جانا رک گیا تھا۔

خلیفہ ہونے کے دوسرے ہی دن ابوبکر نے پھر سے فوج کی کمانداری کا جھنڈا اوسامہ کے ہاتھوں میں دے کر اسے فوراً اتر کی اور بڑھنے کا حکم دیا۔

ادھر روم کے چالاک حاکموں نے بھی محمد صاحب کی موت سے پورا فائدہ اٹھانے کی کوشش کی۔ پورے عرب میں، اور خاص کر ان صوبوں میں، جو اس سے پہلے روم یا ایران کے ماتحت رہ چکے تھے، مدینے کی نئی سرکار کے خلاف سازشوں کا ایک جال بچھا دیا گیا۔ چاروں اور سے بغاوتوں کی خبریں آنے لگیں، یہاں تک کہ پیغمبری کے کئی نئے دعویدار کھڑے ہو گئے۔

23 برس کی کٹھن تپسیا اور قربانیوں کے ذریعے محمد صاحب نے الگ الگ قبیلوں کی جگہ جس

अबूबक्र मोहम्मद साहब के सबसे शुरू के अनुयाइयों और बहुत बड़े भक्तों में से थे. मोहम्मद साहब की प्यारी बीबी आयशा के वह पिता थे. इसलाम क़ुबूल करने के पहले वह अरब के एक बहुत बड़े धनी सौदागर थे. इसलाम क़ुबूल करने के बाद उन्होंने अपनी सारी जायदाद इसलाम के प्रचार, मुसलमानों की ख़िदमत और उन मुसलमान ग़ुलामों को ख़रीद ख़रीद कर आज़ाद कर देने में ख़र्च कर दी थी जिन्हें उनके पुराना मज़हब मानने वाले आक़ा उनके मुसलमान हो जाने के सबब तकलीफ़ें पहुँचाया करते थे.15 अपने त्याग, अपनी ईश्वर भक्ति, अपनी दूरन्देशी, अपनी क़ाबलीयत और अपने चलन की पाक़ीज़गी के सबब अबूबक्र अपने सब साथियों के आदर के पात्र थे. कुछ इतिहासकारों के मुताबिक़ मोहम्मद साहब के बाद अरब और इसलाम के हक़ में इससे बेहतर चुनाव न हो सकता था.

जिस दिन मोहम्मद साहब का शरीर धरती को सौंपा गया उसी दिन मदीने की आलीशान मसजिद में जो मुसलमान जमा हुए उन्हें नमाज़ पढ़ाने के लिये अबूबक्र मिम्बर पर पहुंचे. मुसलमानों की जमाअत को नमाज़ पढ़ाना इसलाम के इतिहास में हमेशा रहनुमाई की निशानी समझी गई है. नमाज़ से पहले मौजूद लोगों ने एक आवाज़ से अबूबक्र को 'ख़लीफ़ा' मानना मंज़ूर किया. अबूबक्र ने खड़े होकर यह सीधी सादी तक़रीर की—

"ऐ लोगो ! मैं तुम सबसे बेहतर आदमी नहीं हूँ. फिर भी अब मैं तुम्हारे ऊपर हाकिम हूँ. अगर मैं भलाई करूँ तो मेरी मदद करना और अगर बुराई करूँ तो मेरी बुराई बता देना. हमेशा सच के पीछे चलना. यही वफ़ादारी है. झूठ से बचना क्योंकि उसमें दग़ा है. तुममें से जो कमज़ोर और दुखी है वह उस वक़्त तक मेरे लिये ताक़तवर होगा जब तक कि मैं उसके दुखों को दूर न कर सकूँ; और तुममें जो बलवान और ज़ालिम है वह उस वक़्त तक मेरे लिए कमज़ोर होगा जब तक कि, यदि अल्लाह ने चाहा तो, मैं उससे वह सब न ले लूँ जो उसने अत्याचार द्वारा दूसरे से लिया है. अल्लाह की राह में कोशिश करना न छोड़ना. जो ज़ुल्म करेगा उसे बेशक अल्लाह नीचा दिखायेगा. जब तक मैं अल्लाह और उसके रसूल की हिदायतों के मुताबिक़ चलूँ तुम भी मेरा हुक्म मानना और जहाँ कहीं मैं उनकी हिदायतों पर अमल न करूँ तुम मेरा हुक्म न मानना. अब नमाज़ के लिये उठ खड़े हो. अल्लाह तुम्हारे साथ है."

अबूबक्र की उम्र इस वक़्त साठ बरस की थी.

ابوبکر محمد صاحب کے سب سے شروع کے انویائیوں اور بہت بڑے بھکتوں میں سے تھے۔ محمد صاحب کی پیاری بیوی عائشہ کے وہ پتا تھے۔ اسلام قبول کرنے کے پہلے وہ عرب کے ایک بہت بڑے دھنی سوداگر تھے۔ اسلام قبول کرنے کے بعد انہوں نے اپنی ساری جائداد اسلام کے پرچار، مسلمانوں کی خدمت اور اُن مسلمان غلاموں کو خرید خرید کر آزاد کر دینے میں خرچ کر دی تھی جنہیں اُن کے پرانا مذہب ماننے والے آقا ان کے مسلمان ہو جانے کے سبب سے تکلیفیں پہنچایا کرتے تھے۔15 اپنے تیاگ، اپنی ایشور بھکتی، اپنی دوراندیشی، اپنی قابلیت اور اپنے چلن کی پاکیزگی کے سبب ابوبکر اپنے سب ساتھیوں کے آدر کے پاتر تھے۔ کچھ اتہاسکاروں کے مطابق محمد صاحب کے بعد عرب اور اسلام کے حق میں اس سے بہتر چناؤ نہ ہو سکتا تھا۔

جس دن محمد صاحب کا شریر دھرتی کو سونپا گیا اُسی دن مدینے کی عالیشان مسجد میں جو مسلمان جمع ہوئے انہیں نماز پڑھانے کے لئے ابوبکر ممبر پر پہنچے۔ مسلمانوں کی جماعت کو نماز پڑھانا اسلام کے اتہاس میں ہمیشہ رہنمائی کی نشانی سمجھی گئی ہے۔ نماز سے پہلے موجود لوگوں نے ایک آواز سے ابوبکر کو 'خلیفہ' ماننا منظور کیا۔ ابوبکر نے کھڑے ہو کر یہ سیدھی سادی تقریر کی—

"اے لوگو! میں تم سب سے بہتر آدمی نہیں ہوں، پھر بھی اب میں تمہارے اوپر حاکم ہوں۔ اگر میں بھلائی کروں تو میری مدد کرنا اور اگر برائی کروں تو میری برائی بتا دینا۔ ہمیشہ سچ کے پیچھے چلنا۔ یہی وفاداری ہے۔ جھوٹ سے بچنا کیونکہ اس میں دغا ہے۔ تم میں سے جو کمزور اور دکھی ہے وہ اس وقت تک میرے لئے طاقتور ہوگا جب تک کہ میں اس کے دکھوں کو دور نہ کر سکوں؛ اور تم میں جو بلوان اور ظالم ہے وہ اس وقت تک میرے لئے کمزور ہوگا جب تک کہ، یدی اللہ نے چاہا تو، میں اس سے وہ سب نہ لے لوں جو اس نے اتیاچار دوارا دوسرے سے لیا ہے۔ اللہ کی راہ میں کوشش کرنا نہ چھوڑنا۔ جو ظلم کرے گا اُسے اللہ بیشک نیچا دکھائے گا۔ جب تک میں اللہ اور اُس کے رسول کی ہدایتوں کے مطابق چلوں تم بھی میرا حکم ماننا اور جہاں کہیں میں اُن کی ہدایتوں پر عمل نہ کروں تم میرا حکم نہ ماننا۔ اب نماز کے لئے اٹھ کھڑے ہو۔ اللہ تمہارے ساتھ ہے۔

ابوبکر کی عمر اُس وقت ساٹھ برس کی تھی۔

15. Preaching of Islam, T. W. Arnold, p. 10.

के पास हम सब को लौटकर जाना है.' अगर वे सब लोग इसलाम क़ुबूल कर लें तब उनसे वे तीनों छड़ियां मांगना जिनकी वे पूजा करते हैं. इनमें एक समरिश्क की है जिस पर सफ़ेद और पीली चित्तियां हैं. दूसरी बेत की तरह गिरहदार है और तीसरी आबनूस की तरह काली है. इन तीनों छड़ियों को बाहर मैदान में लाकर जला डालना."

अयाश लिखता है कि उसने पैग़म्बर की आज्ञा का ठीक ठीक पालन किया. शान्ति और विनय के साथ अपने धर्म का प्रचार किया और कुछ दिनों में ही यमन के सब लोगों ने नया मज़हब क़ुबूल कर लिया.

शुरू के दिनों में अनेक प्रचारकों के नाकामयाब रहने, मुसीबतें झेलने और मारे जाने का भी ज़िक्र आता है, लेकिन जिस अधिक पाक और अधिक सरल धार्मिक विश्वास को और जिस ऊंचे सामाजिक संगठन को इसलाम ने अरबों में पैदा किया उसकी क़द्र लोगों के दिलों में बढ़ती चली गई. धीरे धीरे मोहम्मद साहब की ज़िन्दगी में ही क़रीब क़रीब सब अरब क़बीलों ने नए मज़हब को क़ुबूल कर लिया. मदीने की बढ़ती हुई क़ौमी ताक़त और उसी के साथ साथ अलग अलग क़बीलों की धीरे धीरे टूटती हुई संहति ने भी इसलाम के प्रचार में बहुत बड़ी मदद दी.

[२]

मोहम्मद साहब एक मामूली ग़रीब घर में पैदा हुए ।. अपनी मौत से पहले वे समूचे अरब के बादशाह थे. नकी बादशाहत संसार में एक अनोखी और नए ढङ्ग की ादशाहत थी. अरब में नए मज़हब की उन्होंने बुनियाद ली और अल्लाह के रसूल की उन्हें पदवी मिली. इस ादशाहत को न उन्होंने अपने पुर्खों या बुज़ुर्गों से हासिल ग्या था और न इसे अपने ख़ानदान में जारी रखने का उनका विचार था. उनका देहान्त होते ही लोगों को इस त की फ़िक्र हुई कि मुसलमानों की रहनुमाई और अरब । नई क़ौमी सरकार को चलाने के लिये अब क्या तज़ाम किया जाय? दूसरा रसूले ख़ुदा तो कोई हो न कता था लेकिन मदीने की गद्दी के लिये मोहम्मद साहब वारिस चुना जाना भी ज़रूरी था. कुछ सलाह-ावरे के बाद, जिसकी तफ़सील में जाना हमारे लिये रूरी नहीं है, मदीने के ख़ास ख़ास लोगों ने जमा होकर, नमें अनसार और मुहाजिर दोनों शामिल थे, एक राय अबूबक्र को मोहम्मद साहब का वारिस चुना और लीफ़तुर रसूल' यानी रसूल के ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) की सियत से अबूबक्र ने अरबों की इस नई क़ौमी ताक़त बाग डोर अपने हाथों में ली.

کے پاس ہم سب کو لوٹکر جانا ہے؛ اگر وے سب لوگ اسلام قبول کر لیں تو ان سے وے تینوں چھڑیاں مانگنا جن کی وے پوجا کرتے ہیں۔ ان میں سے ایک سمرشک کی ہے جس پر سفید اور پیلی چتیاں ہیں۔ دوسری بیت کی طرح گرہدار ہے اور تیسری آبنوس کی طرح کالی ہے۔ ان تینوں چھڑیوں کو باہر میدان میں لاکر جلا ڈالنا۔"

عیاش لکھتا ہے کہ اس نے پیغمبر کی آگیاں کا ٹھیک ٹھیک پالن کیا۔ شانتی اور ونئے کے ساتھ اپنے دھرم کا پرچار کیا اور کچھ دنوں میں ہی یمن کے سب لوگوں نے نیا مذہب قبول کر لیا۔

شروع کے دنوں میں انیک پرچارکوں کے ناکامیاب رہنے، مصیبتیں جھیلنے اور مارے جانے کا بھی ذکر آتا ہے، لیکن جس ادھک پاک اور ادھک سرل دھارمک وشواس کو اور جس اونچے سماجک سنگٹھن کو اسلام نے عربوں میں پیدا کیا اس کی قدر لوگوں کے دلوں میں بڑھتی چلی گئی۔ دھیرے دھیرے محمد صاحب کی زندگی میں ہی قریب قریب سب عرب قبیلوں نے نئے مذہب کو قبول کر لیا۔ مدینہ کی بڑھتی ہوئی قومی طاقت اور اسی کے ساتھ ساتھ الگ الگ قبیلوں کی دھیرے دھیرے ٹوٹتی ہوئی سنگھتی نے بھی اسلام کے پرچار میں بہت بڑی مدد دی۔

[2]

محمد صاحب ایک معمولی غریب گھر میں پیدا ہوئے تھے۔ اپنی موت سے پہلے وے سموچے عرب کے بادشاہ تھے۔ ان کی بادشاہت سنسار میں ایک انوکھی اور نئے ڈھنگ کی بادشاہت تھی۔ عرب میں نئے مذہب کی انہوں نے بنیاد رکھی اور اللہ کے رسول کی انہیں پدوی ملی۔ اس بادشاہت کو نہ انہوں نے اپنے پرکھوں یا بزرگوں سے حاصل کیا تھا اور نہ اسے اپنے خاندان میں جاری رکھنے کا ہی ان کا وچار تھا۔ ان کا دیہانت ہوتے ہی لوگوں کو اس بات کی فکر ہوئی کہ مسلمانوں کی رہنمائی اور عرب کی نئی قومی سرکار کو چلانے کے لئے اب کیا انتظام کیا جائے؟ دوسرا رسول خدا تو کوئی نہ ہو سکتا تھا لیکن مدینہ کی گدی کے لئے محمد صاحب کا وارث چنا جانا بھی ضروری تھا۔ کچھ صلاح مشورے کے بعد، جس کی تفصیل میں جانا ہمارے لئے ضروری نہیں ہے، مدینہ کے خاص خاص لوگوں نے جمع ہوکر، جن میں انصار اور مہاجر دونوں شامل تھے، ایک رائے سے ابوبکر کو محمد صاحب کا وارث چنا اور 'خلیفۃالرسول' یعنی رسول کے خلیفہ (پرتیندھی) کی حیثیت سے ابوبکر نے عربوں کی اس نئی قومی طاقت کی باگ ڈور اپنے ہاتھوں میں لی۔

कर लिया. मोहम्मद साहब ने उसे अपने कबीले में जाकर प्रचार करने की हिदायत दी. तुफैल को शुरू में कुछ नाउम्मीदी हुई. उसने मदीने वापस आकर मोहम्मद साहब से कहा—"बनूदास हठी हैं, आप उन्हें बद्दुआ दीजिये." मोहम्मद साहब ने ईश्वर से दुआ की—' ऐ अल्लाह ! बनूदास को सच्चा रास्ता दिखा.' उन्हों ने तुफैल को दिलासा और हिम्मत दिलाकर धीरज और शान्ति से अपना काम जारी रखने की सलाह दी। इस बार एक और मित्र तुफैल के साथ था। इन लोगों ने एक एक घर जाकर शान्ति के साथ नए मजहब का प्रचार किया. सन छै हिजरी तक बनूदास क़बीले के ज्यादातर लोगों ने नए मत को मान लिया. इसके और दो बरस बाद पूरे क़बीले ने अपने पुराने बुतों की पूजा को छोड़कर इसलाम कुबूल कर लिया. तुफैल ने अब लकड़ी के उस लट्ठे को, जिसकी उस क़बीले के लोग देवता समझकर पूजा करते थे, सबकी रजामन्दी से आग लगा दी." 14

यमन सूबे के इसलाम कुबूल करने की कहानी और भी दिलचस्प है. इब्न साद लिखता है कि मोहम्मद साहब ने अयाश इब्न अबी रबी अतिल् मख़जूमी नाम के एक शख्स के हाथ वहां के हिमयार क़बीले के कुछ लोगों के पास एक ख़त भेजा जिसमें इसलाम के ख़ास ख़ास उसूलों की तरफ़ उनकी तवज्जह दिलाई और उन्हें नया मजहब कुबूल करने की दावत दी. चलते समय मोहम्मद साहब ने अयाश से कहा—

"जब तुम पहुंचो तो रात को उनके शहर में दाख़िल न होना। सुबह होने तक शहर के बाहर ही ठहरना. सुबह अच्छी तरह नहा धोकर दो रकअत नमाज पढ़ना और अल्लाह से दुआ माँगना कि वह तुम्हें अपने मिशन में कामयाबी दे और तुम्हारी हिफ़ाजत करे। फिर अपने दाहिने हाथ से मेरा ख़त उनके दाहिने हाथ में देना. वे उसे ले लेंगे. फिर क़ुरान की अट्ठानवीं सूरत की आयतें उन्हें पढ़कर सुनाना. जब ख़त्म कर चुको तो कहना—'मोहम्मद ने इसपर विश्वास किया है और मैंने भी विश्वास किया है.' अल्लाह चाहेगा तो तुम उनकी हरशङ्का का समाधान कर सकोगे. अगर वे कोई बात किसी ग़ैर ज़बान में पूछें तो उनसे तरजुमा करा लेना और उनसे कहना 'मेरे लिये एक अल्लाह बस है. मैं उसी की भेजी हुई किताब में विश्वास करता हूँ. मुझे इन्साफ़ करने का हुक्म दिया गया है. अल्लाह ही हमारा और तुम्हारा रब है. हमारे कर्मों का फल हमें मिलेगा और तुम्हारे कर्मों का तुम्हें. हममें और तुम में कोई झगड़ा नहीं है. अल्लाह हम सबको मिला देगा और उसी

کر لیا۔ محمد صاحب نے اسے اپنے قبیلے میں جا کر پرچار کرنے کی ہدایت دی۔ طفیل کو شروع میں کچھ ناامیدی ہوئی۔ اس نے مدینے واپس آ کر محمد صاحب سے کہا—"بنوداس ہٹھی ہیں، آپ انہیں بددعا دیجئے۔" محمد صاحب نے ایشور سے دعا کی—"اے اللہ! بنوداس کو سچا راستہ دکھا۔" انہوں نے طفیل کو دلاسا اور ہمت دلا کر دھیرج اور شانتی سے اپنا کام جاری رکھنے کی صلاح دی۔ اس بار ایک اور متر طفیل کے ساتھ تھا۔ ان لوگوں نے ایک ایک گھر جا کر شانتی کے ساتھ نئے مذہب کا پرچار کیا۔ سن چھ ہجری تک بنوداس قبیلے کے زیادہ تر لوگوں نے نئے مت کو مان لیا، اس کے اور دو برس بعد پورے قبیلے نے اپنے پرانے بتوں کی پوجا کو چھوڑ کر اسلام قبول کر لیا۔ طفیل نے اب لکڑی کے اس لٹھے کو جس کو اس قبیلے کے لوگ دیوتا سمجھ کر پوجا کرتے تھے، سب کی رضامندی سے آگ لگا دی۔ 14

یمن صوبے کے اسلام قبول کرنے کی کہانی اور بھی دلچسپ ہے۔ ابن سعد لکھتا ہے کہ محمد صاحب نے عیاش ابن ابی ربی اتل مخزومی نام کے ایک شخص کے ہاتھ وہاں کے حمیار قبیلے کے کچھ لوگوں کے پاس ایک خط بھیجا جس میں اسلام کے خاص خاص اصولوں کی طرف ان کی توجہ دلائی اور انہیں نیا مذہب قبول کرنے کی دعوت دی۔ چلتے سمے محمد صاحب نے عیاش سے کہا—

"جب تم پہنچو تو رات میں ان کے شہر میں داخل نہ ہونا۔ صبح ہونے تک شہر کے باہر ہی ٹھہرنا۔ صبح اچھی طرح نہا دھو کر دو رکعت نماز پڑھنا اور اللہ سے دعا مانگنا کہ وہ تمہیں اپنے مشن میں کامیابی دے اور تمہاری حفاظت کرے۔ پھر اپنے داہنے ہاتھ سے میرا خط ان کے داہنے ہاتھ میں دینا۔ وے اسے لیں گے۔ پھر قرآن کی اٹھانویں صورت کی آیتیں انہیں پڑھ کر سنانا۔ جب ختم کر چکو تو کہنا—'محمد نے اس پر وشواس کیا ہے اور میں نے بھی وشواس کیا ہے' اللہ چاہے گا تو تم ان کی ہر شنکا کا سمادھان کر سکو گے۔ اگر وے کوئی بات کسی غیر زبان میں پوچھیں تو ان سے ترجمہ کرا لینا اور ان سے کہنا میرے لئے ایک اللہ بس ہے۔ میں اسی کی بھیجی ہوئی کتاب میں وشواس کرتا ہوں۔ مجھے انصاف کرنے کا حکم دیا گیا ہے۔ اللہ ہی ہمارا اور تمہارا رب ہے۔ ہمارے کرموں کا پھل ہمیں ملیگا اور تمہارے کرموں کا تمہیں۔ ہم میں اور تم میں کوئی جھگڑا نہیں ہے۔ اللہ ہم سب کو ملا دیگا اور اسی

14. Sprenger, vol. iii, pp. 255-56.

उसी तरह की कोशिशें की जाती रहीं जिस तरह कि उससे पहले मोहम्मद साहब की राजनैतिक निबलता के दिनों में की जाती थीं.11 टी. डब्लू. आरनल्ड ने अपने इस दावे के सबूत में अनेक घटनाओं का ज़िक्र किया है जिनमें से एक हम नीचे नक़ल करते हैं :—

जिस तरह मक्के में हज़रत उमर इब्न ख़त्ताब ने इसलाम धर्म को क़बूल किया था उसी तरह की कहानी मदीने में उमैर इब्न वहब की है. कुरैश ने मोहम्मद साहब की गुप्त हत्या के इरादे से उमैर का बद्र की लड़ाई के बाद मक्के से मदीने भेजा. इसलाम धर्म के उसूलों के बारे में उमैर की मोहम्मद साहब से देर तक तफ़सील में बातचीत हुई. षड्यन्त्रकारी उमैर, जो कुरैश की साजिश से मोहम्मद साहब को क़त्ल करने गया था इस बातचीत के बाद इसलाम का क़ायल हो गया और उनका भक्त बनकर मदीने से लौटा.

अरब के मुख़्तलिफ़ क़बीलों के जो नुमाइन्दे दूसरे कामों के लिये मोहम्मद साहब से मिलने मदीने आते थे उनके साथ मोहम्मद साहब का बर्ताव इतना अच्छा होता था, उनकी शिकायतों को वह इतने ग़ौर से सुनते थे और इस तरह इन्साफ़ और ख़ूबसूरती के साथ उनके आपसी झगड़ों का निपटारा कर देते थे कि मोहम्मद साहब का नाम जल्दी ही सारे अरब में मशहूर और सर्वप्रिय हो गया और एक महान और उदार शासक की हैसियत से उनका यश चारों ओर फैल गया. 12

क़बीलों के जो नुमाइन्दे मोहम्मद साहब से मिलने आते थे उनके हाथ के लिखे हुए या जो लोग मौके पर मौजूद होते थे उनके लिखे अनेक ऐसे बयान अरब के इतिहास में मौजूद हैं जिनसे पता चलता है कि जो लोग किसी दूसरे काम के लिये आते थे उनपर मोहम्मद साहब की बातचीत का इतना अच्छा असर पड़ता था कि वे मुसलमान होकर लौटते और फिर ख़ुद अपने क़बीलों में जाकर इसलाम का प्रचार करते थे. 13

हुदैबिया की जंग के बाद जब अरब के दक्खिनी सूबों के लोग मदीने आने जाने लगे यमन के उत्तर से बनूदास क़बीले के कुछ लोग मोहम्मद साहब से मिलने के लिये आए. मोहम्मद साहब से पहले भी इस क़बीले के कुछ लोगों में अपनी पुरानी बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ असन्तोष और किसी अधिक सच्चे धर्म की खोज पैदा हो चुकी थी. इनमें से अब एक तुफ़ैल नाम के आदमी ने इसलाम क़बूल

اُسی طرح کی کوشش کی جاتی رہیں جس طرح کہ اُس سے پہلے محمد صاحب کی راج نیتک نربلتا کے دنوں میں کی جاتی تھیں۔" 11 ٹی۔ ڈبلو۔ آرنلڈ نے اپنے اِس دعوے کے ثبوت میں انیک گھٹناؤں کا ذکر کیا ہے جن میں سے ایک ہم نیچے نقل کرتے ہیں :—

جس طرح مکے میں حضرت عمر ابن خطاب نے اسلام دھرم کو قبول کیا تھا اُسی طرح کی کہانی مدینے میں امر ابن وحب کی ہے۔ قریش نے محمد صاحب کی گپت ہتیا کے ارادے سے عمیر کو بدر کی لڑائی کے بعد مکے سے مدینے بھیجا۔ اِسلام دھرم کے اصولوں کے بارے میں عمیر کی محمد صاحب سے دیر تک تفصیل میں بات چیت ہوئی۔ شڑینترکاری عمیر جو قریشوں کی سازش سے محمد صاحب کو قتل کرنے گیا تھا اِس بات چیت کے بعد اِسلام کا قائل ہو گیا اور اُن کا بھکت بن کر مدینے سے لوٹا۔

عرب کے مختلف قبیلوں کے جو نمائندے دوسرے کاموں کے لئے محمد صاحب سے ملنے مدینے آتے تھے اُن کے ساتھ محمد صاحب کا برتاؤ اِتنا اچھا ہوتا تھا، اُن کی شکایتوں کو وہ اتنے غور سے سنتے تھے اور اِس طرح اِنصاف اور خوبصورتی کے ساتھ ان کے آپسی جھگڑوں کا نپٹارا کر دیتے تھے کہ محمد صاحب کا نام جلدی ہی سارے عرب میں مشہور اور سرو پریہ ہو گیا اور ایک مہان اور ادار شاسک کی حیثیت سے اُن کا یش چاروں اور پھیل گیا۔ 12

قبیلوں کے جو نمائندے محمد صاحب سے ملنے آتے تھے ان کے ہاتھ کے لکھے ہوئے یا جو لوگ موقع پر موجود ہوتے تھے اُن کے لکھے انیک ایسے بیان عرب کے اتہاس میں موجود ہیں، جن سے پتہ چلتا ہے کہ جو لوگ کسی دوسرے کام کے لئے آتے تھے اُن پر محمد صاحب کی بات چیت کا اتنا اچھا اثر پڑتا تھا کہ وے مسلمان ہو کر لوٹتے اور پھر خود اپنے قبیلوں میں جا کر اِسلام کا پرچار کرتے تھے۔ 13

حدیبیا کی جنگ کے بعد جب عرب کے دکھنی صوبوں کے لوگ مدینے آنے جانے لگے یمن کے اُتر سے بنوداس قبیلے کے کچھ لوگ محمد صاحب سے ملنے کے لئے آئے۔ محمد صاحب سے پہلے بھی اِس قبیلے کے کچھ لوگوں میں اپنی پرانی بت پرستی کے خلاف اسنتوش اور کسی ادھک سچے دھرم کی کھوج پیدا ہو چکی تھی۔ اُن میں سے اب ایک طفیل نام کے آدمی نے اِسلام قبول

11. The Preaching of Islam by T. W. Arnold, P. 33.
12. Life of Mohammet by sir William Muir, vol iv, pp. 107-8.
13. Sprenger, vol iii and Ibn Sad Section 118.

लोगों दोनों से कहदो कि क्या तुम भी इस इसलाम को क़ुबूल करते हो? अगर वे क़ुबूल कर लें तो वे सच्चे रास्ते पर हैं और अगर वे न मानें तो उनकी मर्ज़ी! तुम्हारा काम सिर्फ़ समझा देना है और बस. अल्लाह अपने सब बन्दों के हाल को देखता है."5

"हमने हर क़ौम के लिये उपासना की अलग अलग विधियां नियत कर दी हैं जिनपर उस कौम के लोग चलते हैं. इसलिये लोगों को चाहिये कि इस बारे में झगड़ा न करें. तुम केवल उन्हें अपने रब्ब की ओर बुलाओ, निस्सन्देह तुम्हारा रास्ता सीधा है किन्तु फिर भी अगर वे तुम से झगड़ा करें तो कह दो—'जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है.' "6

"धर्म के मामले में किसी के साथ किसी तरह की भी जबरदस्ती नहीं होनी चाहिये."7

"निस्सन्देह हमने तुम्हें गवाह के तौर पर भेजा है ताकि तुम लोगों को ख़ुशख़बरी दो 'और आगाह करदो, ताकि लोग अल्लाह में और उसके रसूल में विश्वास करें, अल्लाह के काम में सहायता दें, अल्लाह की इज्ज़त करें और सुबह शाम उसकी उपासना करें.'"8

जो लोग एक बार इसलाम क़ुबूल करके उससे फिर जावें उनके लिये क़ुरान का साफ़ हुक्म है—

"ऐ मोहम्मद थोड़े सों को छोड़कर बाक़ी लोगों में तुम्हें सदा विश्वासघातक भी मिलेंगे. उन्हें क्षमा करके उनसे हट जाओ. निस्सन्देह अल्लाह दूसरों पर अहसान करने वालों को प्यार करता है."9

क़ुरान की जो सूरत सबसे आख़ीर में आई उसमें कहा गया है—

"यदि मुशरिकों में से कोई तुम्हारी शरण में आना चाहे तो उसे अपनी शरण में ले लो ताकि वह अल्लाह के कलाम को सुन सके. इसके बाद भी यदि वह इसलाम क़ुबूल करना मुनासिब न समझे तो उसे उसके स्थान तक सुरक्षित पहुँचा दो क्योंकि ये लोग बेचारे अज्ञानी हैं." 10

इसी तरह की और बहुत-सी आयतें नक़ल की जा सकती हैं. "इसलाम का प्रचार करने और अविश्वासी अरबों को अपने धर्म में लाने के लिये हिजरत के बाद ठीक

5 क़ुरान 3-19.
6 क़ुरान 22-66,67.
7 क़ुरान 2-256.
8 क़ुरान 48-8, 9.
9 क़ुरान 5-13
10 क़ुरान 8-6.

لوگوں دونوں سے کہہ دو کہ کیا تم بھی اِس اِسلام کو قبول کرتے ہو؟ اگر وے قبول کر لیں تو وے سچے راستے پر ہیں اور اگر وے نہ مانیں تو اُن کی مرضی! تمہارا کام صرف سمجھا دینا ہے اور بس. اللہ اپنے سب بندوں کے حال کو دیکھتا ہے." 5

"ہم نے ہر قوم کے لئے اُپاسنا کی الگ الگ ودھیاں نیت کر دی ہیں جن پر اُس قوم کے لوگ چلتے ہیں. اِس لئے لوگوں کو چاہئے کہ اِس بارے میں جھگڑا نہ کریں. تم کیول انہیں اپنے رب کی اور بلاؤ' نیسندیہہ تمہارا راستہ سیدھا ہے کنتو پھر بھی اگر وے تم سے جھگڑا کریں تو کہہ دو—"جو کچھ تم کرتے ہو اُسے اللہ اچھی طرح جانتا ہے'." 6

"دھرم کے معاملے میں کسی کے ساتھ کسی طرح کی بھی زبردستی نہیں ہونی چاہئے.' 7

"نسندیہہ ہم نے تمہیں گواہ کی طور پر بھیجا ہے تاکہ تم لوگوں کو خوشخبری دو اور آگاہ کرو' تاکہ لوگ اللہ میں اور اس کے رسول میں وشواس کریں' اللہ کے کام میں سہائیتا دیں' اللہ کی عزت کریں اور صبح شام اُس کی اُپاسنا کریں." 8

جو لوگ ایک بار اِسلام قبول کر کے اُس سے پھر جاویں اُن کے لئے قرآن کا صاف حکم ہے—

"اے محمد تھوڑے سوں کو چھوڑ کر باقی لوگوں میں تمہیں سدا وشواس گھاتک بھی ملیں گے. انہیں چھما کر کے اُن سے ہٹ جاؤ. نیسندیہہ اللہ دوسروں پر احسان کرنے والوں کو پیار کرتا ہے." 6

قرآن کی جو صورت سب سے آخیر میں آئی اُس میں کہا گیا ہے—

"یدی مشرکوں میں سے کوئی تمہاری شرن میں آنا چاہے تو اسے اپنی شرن میں لے لو تاکہ وہ اللہ کے کلام کو سن سکے. اُس کے بعد بھی یدی وہ اسلام قبول کرنا نامناسب نہ سمجھے تو اُسے اس کے استھان تک سورکشت پہنچا دو کیونکہ یہ لوگ بیچارے اگیانی ہیں." 10

اِسی طرح کی اور بہت سی آئتیں نقل کی جا سکتی ہیں. "اِسلام کا پرچار کرنے اور وشواسی عربوں کو اپنے دھرم میں لانے کے لئے ہجرت کے بعد ٹھیک

5 قرآن 3-19.
6 قرآن 22-66. 67.
7 قرآن 2-256.
8 قرآن 48-8, 9.
قرآن 5-13.
10 قرآن 8-6.

अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम

विश्वम्भरनाथ पांडे

[1]

इसलाम के पैग़म्बर मोहम्मद साहब ने इसलाम के प्रचार में कौन से तरीक़े इस्तेमाल किये और दूसरों को इसके मुताल्लिक क्या हिदायतें दीं इस सिलसिले में .क़ुरान की कुछ आयतें ग़ौर करने के क़ाबिल हैं—

"ऐ पैग़म्बर लोगों को अपने रब्ब की राह में बुलाओ तो अक़्लमन्दी की बातों और अच्छी अच्छी नसीहतों से बुलाओ और जब उनके साथ बहस करो तो इस तरह करो कि उनके जी को भाए.' 1

"अगर वे कुछ बेजा बात तुमसे कहें तो उसे सब्र के साथ बर्दाश्त करो और सौजन्य के साथ अलग हट जाओ."2

"फिर अगर लोग तुम्हारे समझाने पर भी तुमसे मुँह मोड़ लें तो उनको तुम्हारा काम केवल साफ़ साफ़ समझा देना है इससे ज्यादा कुछ नहीं."3

"लेकिन अगर तुम्हारे समझाने पर भी लोग न मानें तो हमने तुम्हें उनका संरक्षक बनाकर नहीं भेजा है, तुम्हारा काम तो केवल इतना ही है कि तुम उन तक हमारा सन्देश पहुँचा दो और बस." 4

ऊपर की आयतें उस समय की हैं जबकि मोहम्मद साहब मक्के में थे और उन्हें और उनके अनुयाइयों को अपने धार्मिक विचारों के सबब बेहद यातनाएँ भोगनी पड़ी थीं. जिस समय मदीने में पूरे अरब के अनन्य शासक की हैसियत से मोहम्मद साहब की ताक़त अपनी चोटी पर थी उस समय भी .क़ुरान की इस नीति में कोई तब्दीली नहीं हुई.

"अगर वे तुमसे झगड़ा करें तो उनसे कहदो कि मैंने और जो भी मेरा अनुयायी है उसने एक अल्लाह के सामने मस्तक झुका दिया है. यही इसलाम शब्द का अर्थ है. जिन लोगों के पास इससे पहले के ईश्वरीय ग्रंथ या इलहामी किताबें मौजूद हैं उनसे और अरब के अनपढ़

1 .क़ुरान 16-125.
2 .क़ुरान 10-73.
3 .क़ुरान 16-28.
4 .क़ुरान 42-48.

عرب کی کلچر، سبھیتا اور اِسلام

وشومبھر ناتھ پانڈے

[1]

اِسلام کے پیغمبر محمد صاحب نے اسلام کے پرچار میں کون سے طریقے اِستعمال کئے اور دوسروں کو اُس کے متعلق کیا ہدایتیں دیں اِس سلسلے میں قرآن کی کچھ آیتیں غور کرنے کے قابل ہیں—

"اے پیغمبر لوگوں کو اپنے رب کی راہ میں بلاؤ تو عقلمندی کی باتوں اور اچھی اچھی نصیحتوں سے بلاؤ اور جب اُن کے ساتھ بحث کرو تو اِس طرح کرو کہ اُن کے جی کو بھائے." 1

"اگر وے کچھ بیجا بات تم سے کہیں تو اُسے صبر کے ساتھ برداشت کرو اور سوجنیہ کے ساتھ الگ ہٹ جاؤ. 2

"پھر اگر لوگ تمہارے سمجھانے پر بھی تم سے منہ موڑ لیں تو اُن کو تمہارا کام کیول صاف صاف سمجھا دینا ہے. اِس سے زیادہ کچھ نہیں." 3

"لیکن اگر تمہارے سمجھانے پر بھی لوگ نہ مانیں تو ہم نے تمہیں اُن کا سنرکشک بنا کر نہیں بھیجا ہے تمہارا کام کیول اتنا ہی ہے کہ تم اُن تک ہمارا سندیش پہنچا دو اور بس." 4

اُوپر کی آیتیں اُس سمے کی ہیں جب کہ محمد صاحب مکے میں تھے اور انہیں اور ان کے انویائیوں کو اپنے دھارمک وچاروں کے سبب بےحد یاتنائیں بھوگنی پڑیں تھیں. جس سمے مدینے میں پورے عرب کے اننیہ شاشک کی حیثیت سے محمد صاحب کی طاقت اپنی چوٹی پر تھی اُس سمے بھی قرآن کی اِس نیتی میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی.

"اگر وے تم سے جھگڑا کریں تو اُن سے کہہ دو کہ میں نے اور جو بھی میرا انویائی ہے اُس نے ایک اللہ کے سامنے مستک جھکا دیا ہے. یہی اِسلام شبد کا ارتھ ہے. جن لوگوں کے پاس اِس سے پہلے کے ایشوری گرنتھ یا الہامی کتابیں موجود ہیں اُن سے اور عرب کے انپڑھ

1 قرآن .16-125
2 قرآن .10-73
3 قرآن .16-28
4 قرآن .42-48

नवम्बर 1957 نومبر

क्या किस से	सफ़ा صفحہ	کیا کس سے
1. अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम —विश्वम्भरनाथ पांडे	193	1. عرب کی کلچر، سبھیتا اور اسلام —وشومبھر ناتھ پانڈے
2. क्या वह घर आ रहा है ? —श्री आइवन वाज़ोव	201	2. کیا وہ گھر آ رہا ہے ؟ —شری آئیون وازوو
3. हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम —डाक्टर सैयद महमूद	210	3. ھندستان کی کلچر اور اسلام —ڈاکٹر سید محمود
4. आइंस्टाइन का सिद्धान्त और वेदान्त —डाक्टर भगवानदास	218	4. آئنسٹائن کا سدھانت اور ویدانت —ڈاکٹر بھگوان داس
5. सन 1905 का स्वदेशी आन्दोलन — पंडित सुन्दरलाल	223	5. سن 1905 کا سودیشی آندولن —پنڈت سندر لال
6. रुबाइयात मुहिब —श्री 'मुहिब'	231	6. رباعیات محب —شری 'محب'
7. कुछ किताबें	237	7. کچھ کتابیں
8. हमारी राय— —एशिया के गले में फंदा; हिन्दी और पंजाबी का झगड़ा —पंडित सुन्दरलाल.	239	8. ھماری رائے— — ایشیا کے گلے میں پھندا؛ ھندی اور پنجابی کا جھگڑا —پنڈت سندر لال ۔

नया हिन्द / ہندستانی

जिल्द 24 جلد   नम्बर 5 نمبر

नवम्बर 1957 نومبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी   ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145 مٹھی گنج، الہ آباد

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)
Mahatma Bhagwan Din
Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law
Pandit Sundarlal
Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asstt. Editor

Suresh Ramabhai

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

Can be had from—

Manager, NAYA HIND

[illegible]-MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख	اس نمبر کے خاص لیکھ
अरब की कल्चर सभ्यता और इसलाम	عرب کی کلچر، سبھیتا اور اسلام
—विश्वम्भरनाथ पांडे	—وشومبھر ناتھ پانڈے
हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम	ہندوستان کی کلچر اور اسلام
—डाक्टर सैयद महमूद	—ڈاکٹر سید محمود
आइंस्टाइन का सिद्धान्त और वेदान्त	آئنسٹائن کا سدھانت اور ویدانت
—डाक्टर भगवानदास	—ڈاکٹر بھگوان داس
सन् 1905 का स्वदेशी आन्दोलन	سن 1905 کا سودیشی آندولن
—पंडित सुन्दरलाल	—پنڈت سندر لال

"आज इतना तो सभी क़ुबूल करते हैं कि इन पार्लिमेंटों के मेम्बर ख़ुदग़रज़ और ढोंगी होते हैं. जिस दल का जो मेम्बर होता है वह आंख बन्द करके उसी दल को वोट देता है क्योंकि डिसिप्लिन के ख़याल से वह ऐसा करने के लिये मजबूर है."

पार्लिमेंटी हुकूमत के तरीक़े के लिये मरते दम तक गांधी जी की यह राय रही और उन्होंने पेशीनगोई की कि अगर हिन्दुस्तान में पार्लिमेंटी राज क़ायम हो गया तो इस मुल्क को बरबादी से कोई नहीं बचा सकता.

गाँधी जी का दिल और दिमाग़ दोनों ग़ैर मामूली थे. उनके सोचने और महसूस करने के तरीक़े बेशुमार और बेअन्त थे। दर अस्ल वे एक शायर या कवि थे लेकिन ऐसे कवि जिनकी कल्पना शक्ति की उड़ान छपे हुये हरफ़ों में नहीं दिखाई देती बल्कि लाखों और करोड़ों मेहनत करने वाले इनसानों की जिन्दगी में झलकती है। गाँधी जी एक सच्चे फ़िलासफ़र थे लेकिन उनका दिमाग़ ख़याली दुनिया की फ़र्ज़ी तसवीरें नहीं गढ़ता था. उनका दिमाग़ इनसानों के आदर्शों और उनकी ख़ाहिशों को एक साँचे में ढालता था. वे एक बहुत बड़े कलाकार थे लेकिन रंग या स्वर के कलाकार नहीं. वे नाउम्मीदी से भरे चेहरों को आशा और उमंगों के रंग से चमका देते थे और उनके सीनों और दिलों में मीठे और सुरीले गीत भर देते थे. यही वजह है कि सारा हिन्दुस्तान फ़ख़ के साथ कहता था कि गाँधी जी का बड़ापन सारे मुल्क का बड़ापन है और उनका यश सारे हिन्दुस्तान का यश है.

आयें आज इस मौक़े पर हम अपने-अपने गिरेबानों में मुँह डालकर यह छान-बीन करें कि कहाँ तक गाँधी जी की तालीम पर हमने अमल किया है या कर रहे हैं या करने वाले हैं. इस जवाब पर ही हिन्दुस्तान की क़िस्मत का दारो मदार है.

गान्धी जयन्ती,
2-10-57.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

"آج اِتنا تو سبھی قبول کرتے ھیں کہ اِن پارلیمنٹوں کے ممبر خودغرض اور ڈھونگی ھوتے ھیں . جس دل کا جو ممبر ھوتا ھے وہ آنکھ بند کر کے اُسی دل کو ووٹ دیتا ھے کیونکہ ڈسپلن کے خیال سے وہ ایسا کرنے کے لئے مجبور ھے ."

پارلیمینٹری حکومت کے طریقہ کے لئے مرتے دم تک گاندھی جی کی یہ رائے رھی اور اُنھوں نے پیشین گوئی کی کہ اگر هندستان میں پارلیمینٹری راج قائم ھوگیا تو اس ملک کو بربادی سے کوئی نہیں بچا سکتا .

گاندھی جی کا دل اور دماغ دونوں غیر معمولی تھے . اُن کے سوچنے اور محسوس کرنے کے طریقے بےشمار اور بے انت تھے . دراصل وے ایک شاعر یا کوی تھے لیکن ایسے کوی جن کی کلپنا شکتی کی اُڑان چھپے ھوئے حرفوں میں نہیں دکھائی دیتی بلکہ لاکھوں اور کروڑوں محنت کرنے والے انسانوں کی زندگی میں جھلکتی ھے . گاندھی جی ایک سچے فلسفر تھے لیکن اِن کا دماغ خیالی دنیا کی فرضی تصویریں نہیں گڑھتا . ان کا دماغ اِنسانوں آدرشوں اور اُن کی خواهشوں کو ایک سانچے میں ڈھالتا ھے . وے ایک بہت بڑے کلاکار تھے لیکن رنگ یا سور کے کلاکار نہیں . وے نااُمیدوں کے چہروں کو آشا اور امنگوں کے رنگ سے چمکا دیتے تھے اور اُن کے سینوں اور دلوں میں میٹھے اور سریلے گیت بھر دیتے تھے . یہی وجہ ھے کہ سارا هندستان فخر کے ساتھ کہتا تھا کہ گاندھی جی کا بڑاپن سارے ملک کا بڑاپن ھے اور اُن کا یش سارے هندستان کا یش ھے .

آئیے آج اِس موقع پر هم اپنے اپنے گریبانوں میں منہ ڈال کر یہ چھان بین کریں کہ کہاں تک گاندھی جی کی تعلیم پر هم نے عمل کیا ھے یا کر رھے ھیں یا کرنے والے ھیں . اِس جواب پر ھی هندستان کی قسمت کا دارومدار ھے .

گاندھی جینتی .
2. 10. 57

—وشمبھر ناتھ پانڈے .

कारबार शुरू करे. इसके लिये वह चाहते थे कि हुकूमत की ताक़त एक जगह जमा न होकर चारों तरफ़ दूर दूर तक बँट जावे. देश को इतने छोटे-छोटे हलकों में बांटा दिया जावे कि जनता अपने जाने बूझे आदमी को प्रतिनिधि चुन सके.

पार्लिमेंटी हुकूमत में नुमाइन्दगी का ढोंग तो है ही इससे भी बढ़कर चुनाव का ढोंग है. चुनाव का आजकल का ढंग जनता को बरबाद करने वाला है. इसमें हर तरह की बेईमानी, धोखा, फ़रेब, ज़्यादती, अन्याय, फ़िज़ूल ख़र्ची और दुशमनी का एक सोता खुल जाता है, इन चुनावों ने देश के देश बरबाद कर दिये. इनकी बुराइयाँ दिनों दिन बढ़ती जा रही हैं. गाँधी जी इसके सुधार का नीचे लिखा ढङ्ग बताते थे :—

(1) वोटरों की जानकारी को और उनके चलन को, उनमें नेकी-बदी और भले-बुरे के विचार को इतना ऊँचा कर दिया जाय कि वह हमेशा ऐसे लोगों को ही वोट दें जो नेक हों, त्यागी हों, दूसरों की सेवा और भलाई करने वाले हों और जिनमें ईमानदारी, सादगी और नम्रता हो.

(2) जनता में इतनी ताक़त हो कि वह अपने इन नुमाइन्दों से सच्ची सेवा ले सकें और.

(3) जब चाहे इन्हें बदल सकने का भी जनता को हक़ हो.

पार्लिमेंटी तरीक़े में चुनाव से भी बुरी इसकी दलबन्दी है जिसे पार्टी सिस्टम कहा जाता है. दो पार्टियों का होना पार्लिमेंटी हुकूमत में ज़रूरी समझा जाता है. इसके बिना यह तरीक़ा चल नहीं सकता. इन पार्टियों का यह बुनियादी हक़ होता है कि वे एक दूसरे को गिराती मिटाती रहें. इस पार्टी बाज़ी से देश को जो धक्का पहुँचता है उसका कोई अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता। पार्टीबाज़ी देश भर में फल-फूलकर गांव-गांव और कोने-कोने में फैल जाती है. हर शख़्स का यह फ़र्ज़ हो जाता है कि वह इन्साफ़ ग़ैर इन्साफ़, सच-झूठ, ईमानदारी-बेईमानी का ख़याल न करते हुये अपनी पार्टी वाले को जिताये. इसीलिये गांधी जी को पश्चिमी तरीक़े की इस पार्लिमेंटी हुकूमत से सख़्त नफ़रत थी. 'हिन्द स्वराज़' में वह लिखते हैं :—

"इंगलैण्ड की इस समय जो हालत है उसे देखकर तो सचमुच दया आती है और मैं तो ईश्वर से मनाता हूँ कि भारत की ऐसी हालत कभी न हो. जिसे आप पार्लिमेंटों की मां कहते हैं वह इंगलैंड की पार्लिमेंट तो एक बांझ और वेश्या है. ये दोनों लफ़्ज कड़े हैं पर उस पर पूरी तरह लागू होते हैं.

اِس کے لئے وہ چاہتے تھے کہ حکومت کی طاقت ایک جگہ جمع نہ ہو کر چاروں طرف دور دور تک بٹ جاوے . دیش کو اِتنے چھوٹے چھوٹے حلقوں میں بانٹ دیا جاوے کہ جنتا اپنے جانے بوجھے آدمی کو پرتِنِدھی چن سکے .

پارلیمنٹری حکومت میں نمائندگی کا ڈھونگ تو ہے ہی اِس سے بھی بڑھ کر چناؤ کا ڈھونگ ہے . چناؤ کا آجکل کا ڈھنگ جنتا کو برباد کرنے والا ہے . اِس میں ہر طرح کی بے ایمانی، دھوکا، فریب، جرم، زیادتی، انیائے فضول خرچی اور دشمنی کا ایک سوتا کھل جاتا ہے . اِن چناؤ نے دیش کے دیش برباد کر دئے . اُن کی برائیاں دنوں دن بڑھتی جا رہی ہیں . گاندھی جی اس کے سدھار کا نیچے لکھا ڈھنگ بتاتے تھے :—

(1) ووٹروں کی جانکاری کو اور اُن کے چلن کو، اُن میں نیکی بدی اور بھلے برے کے وچار کو اِتنا اونچا کر دیا جائے کہ وہ ہمیشہ ایسے لوگوں کو ووٹ دیں جو نیک ہیں، تیاگی ہوں، دوسروں کی سیوا اور بھلائی کرنے والے ہوں اور جن میں ایمانداری سادگی اور نمرتا ہو .

(2) جنتا میں اِتنی طاقت ہو کہ وہ اپنے اِن نمائندوں سے سچی سیوا لے سکے اور .

(3) جب چاہے اُنہیں بدل سکنے کا بھی جنتا کو حق ہو .

پارلیمنٹری طریقے میں چناؤ سے بھی بری اِس کی دل بندی ہے جسے پارٹی سسٹم کہا جاتا ہے . دو پارٹیوں کا ہونا پارلیمنٹری حکومت میں ضروری سمجھا جاتا ہے . اِس کے بنا یہ طریقہ چل نہیں سکتا . اِن پارٹیوں کا یہ بنیادی حق ہوتا ہے کہ وہ ایک دوسرے کو گراتی مٹاتی رہیں . اِس پارٹی بازی سے دیش کو جو دھکا پہونچتا ہے اُس کا کوئی اندازہ نہیں کیا جا سکتا . پارٹی بازی دیش بھر میں پھل پھول کر گاؤں گاؤں اور کونے کونے پھیل جاتی ہے . ہر شخص کا یہ فرض ہو جاتا ہے کہ وہ انصاف غیر انصاف سچ جھوٹ، ایمانداری بے ایمانی کا خیال نہ کرتے ہوئے اپنی پارٹی والے کو جتائے . اِس لئے گاندھی جی کو پچھمی طریقے کی اِس پارلیمنٹری حکومت سے سخت نفرت تھی . 'ھندو سوراج' میں وہ لکھتے ہیں :—

" انگلینڈ کی اِس سمے جو حالت ہے اُسے دیکھ کر تو سچ مچ دیا آتی ہے اور میں تو ایشور سے مناتا ہوں کہ بھارت کی ایسی حالت کبھی نہ ہو . جسے آپ پارلیمنٹ کی ماں کہتے ہیں وہ انگلینڈ کی پارلیمنٹ تو ایک بانجھ اور ویشیا ہے . یہ دونوں لفظ کڑے ہیں پر اِس پر پوری طرح لاگو ہوتے ہیں .

चिह्न मशीनें हैं. मशीनें एक बहुत बड़े पाप का चिह्न हैं. मिलों में काम करने वाली औरतों की हालत और भी दर्दनाक है. अगर मशीनों का खब्त हमारे देश में बढ़ता गया तो यह देश बड़ा दुखी देश हो जायगा. मुमकिन है मेरे इस कहने को लोग कुफ्र समझें लेकिन मैं यह कहने पर मजबूर हूँ कि हमारे लिये हिन्दुस्तान के अन्दर मिलों की तादाद बढ़ाने के बजाय यह ज्यादा अच्छा है कि हम मैनचेस्टर का निकम्मा कपड़ा इस्तेमाल करें और अपना रुपया मैनचेस्टर भेजें. मैनचेस्टर का कपड़ा इस्तेमाल करने से हम अपना धन नष्ट करते हैं लेकिन हिन्दुस्तान को मैनचेस्टर बनाने से हमारा ईमान और इन्सानियत नष्ट हो जायगी।"

यूरोप के इक्तसादी या आर्थिक संगठन का ढाँचा बड़े शहरों की बुनियाद पर क़ायम हुआ है इसके खिलाफ़ हिन्दुस्तानी सभ्यता का केन्द्र (मरकज़) गाँव है। गाँधी जी कहते थे कि हमें अपनी आर्थिक और तामीरी योजना ग्रामों के उद्योग-धन्धों पर ही क़ायम करनी होगी वरना गाँव शहरों के चंगुल में फँसकर बरबाद होते रहेंगे और हिन्दुस्तान माली नुक़्ते नज़र से कभी पनप न सकेगा.

गांधी जी और पार्लिमेण्टरी राज

दुनिया के आम लोगों में पार्लिमेंटी राज की इतनी चाह क्यों है इसका सबब यह है कि यह राज आम जनता का राज समझा जाता है. इसमें जनता इस तरह राजा बनाई जाती है कि लाखों आदमी अपना एक नुमाइन्दा चुनते हैं. सौ पीछे पचानवे न उसे जानते हैं और न पहचानते हैं फिर भी वह उनका नुमाइन्दा माना जाता है. चुने जाने के बाद यह नुमाइन्दा उनकी बात भी नहीं पूछता। वह उन्हें असली फ़ायदा भी नहीं पहुंचा सकता क्योंकि वह तो सैकड़ों नुमाइन्दों में से एक होता है. इस तरह एक राजा हटाकर सैकड़ों राजा बन जाते हैं और मिनिस्टरों की शक्ल में दस-बीस बादशाह बन जाते हैं। जनता बेचारी वही लौंडी और दासी बनी रहती है. राजकाज चलाने का खर्चा पहले से सैकड़ों गुना बढ़ जाता है. सरकारी नौकरों की गिनती, तनख्वाहें और भत्ते अनाप शनाप बढ़ जाते हैं. अफसरों मिनिस्टरों और राष्ट्रपति की शान शौकत के आडम्बर पुराने बादशाहों को भी शरमाते हैं और यह कहलाता है 'जनता का राज' !

गाँधी जी भोली जनता को ठगने वाले इस पार्लिमेंटी हुकूमत के मायाजाल को जड़ से बदल देना चाहते थे. वे अपने को सच्चा डेमोक्रेट यानी सच्चा लोकतंत्री कहते थे. वह चाहते थे कि जनता सचमुच राजा बने और अपना

چنھ مشینیں ھیں ۔ مشینیں ایک بہت بڑے پاپ کا چنھ ھیں ۔ بمبئی کی ملوں کے مزدور دوسروں کے غلام ھیں ۔ ملوں میں کام کرنے والی عورتوں کی حالت اور بھی دردناک ھے ۔ اگر مشینوں کا خبط ھمارے دیش میں بڑھتا گیا تو یہ دیش بڑا دکھی دیش ھو جائیگا ۔ ممکن ھے میرے اِس کہنے کو لوگ کفر سمجھیں لیکن میں یہ کہنے پر مجبور ھوں کہ ھمارے لئے ھندستان کے اندر ملوں کی تعداد بڑھانے کے بجائے یہ زیادہ اچھا ھے کہ ھم مانچسٹر کا نکما کپڑا استعمال کریں اور اپنا روپیہ مانچسٹر بھیجیں ۔ مانچسٹر کا کپڑا استعمال کرنے سے ھم اپنا دھن نشٹ کرتے ھیں لیکن ھندستان کو مانچسٹر بنانے سے ھمارا ایمان اور انسانیت نشٹ ھو جائیگی ۔"

یورپ کے اقتصادی یا ارتھک سنگٹھن کا ڈھانچہ بڑے شہروں کی بنیاد پر قایم ھوا ھے اِس کے خلاف ھندستانی سبھتا کا کیندر (مرکز) گاؤں ھے ۔ گاندھی جی کہتے ھیں کہ ھمیں اپنی ارتھک اور تعمیری یوجنا گراموں کے اُدیوگ دھندوں پر ھی قایم کرنی ھو گی ورنہ گاؤں شہروں کے چنگل میں پھنس کر برباد ھوتے رھیں گے اور ھندستان مالی نقطے نظر سے کبھی پنپ نہ سکیگا ۔

گاندھی جی اور پارلیمنٹری راج

دنیا کے عام لوگوں میں پارلیمنٹری راج کی اِتنی چاہ کیوں ھے اِس کا سبب یہ ھے کہ یہ راج عام جنتا کا راج سمجھا جاتا ھے ۔ اس میں جنتا اِس طرح راجا بنائی جاتی ھے کہ لاکھوں آدمی اپنا ایک نمائندہ چنتے ھیں ۔ سو پیچھے پچانوے نہ اُسے جانتے ھیں اور نہ پہچانتے ھیں پھر بھی وہ اُن کا نمائندہ مانا جاتا ھے ۔ چنے جانے کے بعد یہ نمائندہ ان کی بات بھی نہیں پوچھتا ۔ وہ اُنھیں اصلی فائدہ بھی نہیں پہنچا سکتا کیونکہ وہ تو سیکڑوں نمائندوں میں سے ایک ھوتا ھے ۔ اِس طرح ایک راجا ھٹا کر سیکڑوں راجا بن جاتے ھیں اور منسٹروں کی شکل میں دس بیس بادشاہ بن جاتے ھیں۔ جنتا بیچاری وھی لونڈی اور داسی بنی رھتی ھے ۔ راج کاج چلانے کا خرچہ پہلے سے سیکڑوں گنا بڑھ جاتا ھے ۔ سرکاری نوکروں کی گنتی، تنخواھیں اور بھتے اناپ سناپ بڑھ جاتے ھیں۔ افسروں، منسٹروں اور راشٹرپتی کی شان شوکت کے اڈمبر پرانے بادشاھوں کو بھی شرماتے ھیں اور یہ کہلاتا ھے 'جنتا کا راج' !

گاندھی جی بھولی جنتا کو ٹھگنے والے اِس پارلیمنٹری حکومت کے مایا جال کو جڑ سے بدل دینا چاھتے تھے ۔ وہ اپنے کو سچا ڈیمو کریٹ یعنی سچا لوک تنتری کہتے تھے ۔ وہ چاھتے تھے کہ جنتا سچ مچ راجا بنے اور اپنا

करने के बजाय जबर्दस्ती की और बनावटी एकता क़ायम करना है."

गाँधी जी कहा करते थे अहिंसा कमज़ोर से कमज़ोर इनसान को भी फौलाद की सी ताक़त दे देती है. उनकी अहिंसा के अचरज भरे नतीजे हमने हिन्दुस्तान में सत्याग्रह की लड़ाइयों में देखे. भारत की स्त्रियाँ बहुत कमज़ोर और पिछड़ी हुई समझी जाती थीं. गाँधी जी ने उन्हें भी सत्याग्रह में शामिल होने की दावत दी. लोगों ने सोचा गाँधी जी दिक़्क़तों को नहीं समझ रहे. मगर उन्हें क्या पता था कि गाँधी जी के सामने आने वाले हिन्दुस्तान की सही तसवीर है.

थोड़े ही दिनों के बाद नमक सत्याग्रह की लड़ाई में लोगों ने अचरज भरा नज़ारा देखा। हज़ारों स्त्रियाँ घरों की ममता छोड़कर आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ीं। जो स्त्रियाँ कभी चौके-चूल्हे से बाहर नहीं निकली थीं, जिन औरतों ने जनानख़ाने की बन्द रोशनी के बाहर कभी क़दम नहीं रखा था, जो शायद ही कभी आम रास्तों पर चली हों, पुराने दक़ियानूसी रीत-रिवाजों में फँसी हुई औरतें, शर्मीली और लजीली औरतें, जो घूँघट हटाने की बात न सोच सकती थीं, पुरानी तहज़ीब पर एतक़ाद रखने वाली बुज़ुर्ग औरतें—सब की सब ताक़त और हिम्मत बटोर कर जनता के समुन्दर में कूद पड़ीं। बेपढ़ी होते हुये भी जगह जगह उन्होंने सत्याग्रह कमेटियों की सदारत की. कमज़ोर होते हुये भी उन्होंने सत्याग्रहियों के जत्थों की कमानी की. उन्होंने पुलिस और उनकी लाठियों का सामना किया. धूप और बारिश में बैठकर पिकटिंग की. जेल के सीख़चों के भीतर सज़ायें काटीं, और बाज़ मौक़ों पर मशीनगन की गोलियों का भी सामना किया. गाँव की औरतें हँसते हुये अपने ख़ाविन्दों, बेटे और बेटियों को टीका लगाकर जेलख़ाने भेजतीं. सदियों की दबी और सताई हुई हिन्दुस्तानी नारी ने अपनी क़ुर्बानी और हिम्मत से सारी दुनिया को अचरज में डाल दिया. यह करिश्मा महज़ गाँधी जी की अहिंसा की वजह से हो पाया.

गाँधी जी खादी और गाँव के धन्धों के इसलिये हक़ में थे कि वे समझते थे कि कल कारख़ाने और मशीनें शोषन की जड़ हैं. गाँधी जी ने 'हिन्द स्वराज' में लिखा है :—

"मशीनों ने ही हिन्दुस्तान को कंगाल कर दिया. मैनचेस्टर की ही वजह से हिन्दुस्तान की कारीगरी क़रीब-क़रीब लोप हो चुकी है. मशीनों ने यूरोप को भी बरबाद करना शुरू कर दिया है. बरबादी इस समय अंग्रेजों के दरवाज़े खटखटा रही है। आजकल की सभ्यता का ख़ास

کرنے کے بجائے زبردستی کی اور بناوٹی یکتا قائم کرنا ھے."

گاندھی جی کہا کرتے تھے اہنسا کمزور سے کمزور اِنسان کو بھی فولاد کی سی طاقت دے دیتی ھے . اُن کی اہنسا کے اچرج بھرے نتیجے ھم نے ھندستان میں ستیاگرہ کی لڑائیوں میں دیکھے . بھارت کی استریاں بہت کمزور اور پچھڑی ھوئی سمجھی جاتی تھیں . گاندھی جی نے اُنھیں بھی ستیاگرہ میں شامل ھونے کی دعوت دی . لوگوں نے سوچا گاندھی جی دقتوں کو نہیں سمجھ رھے . مگر اُنھیں کیا پتہ کہ گاندھی جی کے سامنے آنے والے ھندستان کی صحیح تصویر ھے .

تھوڑے ھی دنوں کے بعد نمک ستیاگرہ کی لڑائی میں لوگوں نے اچرج بھرا نظارہ دیکھا . ھزاروں اِستریاں گھروں کی ممتا چھوڑ کر آزادی کی لڑائی میں کود پڑیں . جو استریاں کبھی چوکے چولھے سے باھر نہیں نکلی تھیں' جن عورتوں نے زنان خانے کی بند روشنی سے باھر کبھی قدم نہیں رکھا تھا' جو شاید ھی کبھی عام راستوں پر چڑھی ھوں' پرانے دقیانوسی ریت رواجوں میں پھنسی ھوئی عورتیں' شرمیلی اور لجیلی عورتیں جو گھونگھٹ ھٹانے کی بات نہ سوچ سکتی تھیں پرانی تہذیب پر اعتقاد رکھنے والی بزرگ عورتیں——سب کی سب طاقت اور ھمت بٹور کر جنتا کے سمندر میں کود پڑیں . بےپڑھی ھوتے ھوئے بھی جگہہ جگہہ اُنھوں نے ستیاگرہ کمیٹیوں کی صدرت کی . کمزور ھوتے ھوئے بھی اُنھوں نے ستیاگرھیوں کے جتھوں کی کپتانی کی . اُنھوں نے پولیس اور اُن کی لاٹھیوں کا سامنا کیا . دھوپ اور بارش میں بیٹھ کر پکیٹنگ کی . جیل کے سیخچوں کے بھیتر سزائیں کاٹیں' اور بعض موقعوں پر مشین گن کی گولیوں کا بھی سامنا کیا . گاؤں کی عورتیں ھنستے ھوئے اپنے خاوندوں' بیٹے بیٹیوں کو ٹیکا لگا کر جیل خانے بھیجتیں . صدیوں کے دبی اور ستائی ھوئی ھندستانی ناری نے اپنی قربانی اور ھمت سے ساری دنیا کو اچرج میں ڈال دیا . یہ کرشمہ محض گاندھی جی کی وجہ سے ھو پایا .

گاندھی جی کھادی اور گاؤں کے دھندوں کے اِس لئے حق میں تھے کہ وہ سمجھتے تھے کہ کل کارخانے اور مشینیں شوشن کی جڑ ھیں . گاندھی جی نے 'ھند سوراج' لکھا ھے :——

"مشینوں نے ھی ھندستان کو کنگال کر دیا . مانچسٹر کی ھی وجہ سے ھندستان کی کاریگری قریب قریب لوپ ھو چکی ھے . مشینوں نے یورپ کو بھی برباد کرنا شروع کر دیا ھے . بربادی اِس سمے انگریزوں کے دروازے کھٹکھٹا رھی ھے . آج کل کی سبھیتا کا خاص

जड़ एक ही है और ये सब एक दूसरे के मददगार हैं. और जब कभी आपसे मैं यह कहता हूँ कि आप अपने दिलों से छुआ छूत को निकाल बाहर करें तो मैं आपसे यही चाहता हूँ, इससे कम कुछ नहीं कि आप समूची इनसानी क़ौम की बराबरी और बुनियादी एकता में विश्वास करें. ईश्वर एक है. वही सबका ईश्वर है और मैं आप सबसे कहता हूँ कि आप इसे भूल जाइये कि एक ईश्वर के बच्चों में ऊँच, नीच का कोई फ़रक़ हो सकता है." (हरिजन 16 फ़रवरी, 1934).

आगे चलकर गान्धी जी ने कहा—"जब ऐसा पाक और शुभ दिन आयेगा तब स्टेशनों के ऊपर हिन्दू पानी और मुसलिम पानी या हिन्दू चाय और मुसलिम चाय की शर्मनाक आवाज़ें सुनाई न देंगी. तब स्कूलों और कालिजों में हिन्दुओं और ग़ैर हिन्दुओं के अलग-अलग पढ़ने का इन्तज़ाम न होगा, न अलग-अलग बरतन होंगे, तब न जात पाँत या फ़िरक़ों के नाम पर स्कूल या कालिजों के नाम होंगे और न मुसलिम, हिन्दू, जैन सम्प्रदायों के नाम के अस्पताल होंगे." (कन्स्ट्रक्टिव प्रोग्राम, सफ़ा 4, दिसम्बर 13, 1941).

गुजरात विद्यापीठ में तक़रीर करते हुये एकबार गाँधी जी ने कहा था—

"मैं यह नहीं चाहता कि मेरे मकान के चारों तरफ़ ऊँची दीवारें खड़ी हों और सब तरफ़ की खिड़कियाँ ठूँस-ठूँस कर बन्द कर दी गई हों. मैं चाहता हूँ कि मेरे मकान के चारों तरफ़ सब मुल्कों की कल्चर खुली हवा की तरह पूरी आज़ादी के साथ बहती रहें लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि कोई हवा मेरे पाँव उखाड़ दे. मैं यह नहीं चाहता कि पुरानी कल्चर पर ही हम गुज़ारा करते रहें बल्कि हम एक ऐसी नई कल्चर की तामीर करना चाहते हैं कि जिसकी जड़ें मुल्क की तहज़ीब की पुरानी गहराइयों में हों और जो हमारे अब तक के तजरुबों से मालामाल हो. हम उन सब कल्चरों के समन्वय और मेल के तरफ़दार हैं कि जो हिन्दुस्तान में बाहर से आकर बस गईं, जिन्होंने यहाँ की ज़िन्दगी पर असर डाला और जिन पर ख़ुद यहाँ की धरती का असर पड़ा. क़ुदरती तौर पर हमारा यह कल्चरी मेल जोल और समन्वय स्वदेशी ढंग का होगा जिसमें हर कल्चर को मुनासिब जगह मिलेगी. यह अमरीकी ढंग का न होगा जिसमें ज़्यादा तादाद वाले लोगों का या जिनका ज़ोर है उनकी कल्चर और सब कल्चरों को अपने अन्दर हज़म किये हुये है और जहाँ समन्वय या मेल का मक़सद सब राग रागनियों को मिलाकर एक मधुर सुरीला राग पैदा

جڑ ایک ہی ہے اور یہ سب ایک دوسرے کے مددگار ہیں ۔ اور جب کبھی آپ سے میں یہ کہتا ہوں کہ آپ اپنے دلوں سے چھوت چھات کو نکال باہر کریں تو میں آپ سے یہی چاہتا ہوں ۔ اس سے کم کچھ نہیں کہ آپ سموچی انسانی قوم کی برابری اور بنیادی یکتا میں وشواس کریں ۔ ایشور ایک ہے ۔ وہی سب کا ایشور ہے اور میں سب سے کہتا ہوں کہ آپ اسے بھول جائیے کہ ایک ایشور کے بچوں میں اونچ، نیچ کا کوئی فرق ہو سکتا ہے ۔" (ہریجن 16 فروری، 1934) ۔

آگے چل کر گاندھی جی نے کہا—"جب ایسا پاک اور شبھ دن آئیگا تب اسٹیشنوں کے اوپر ہندو پانی اور مسلم پانی یا ہندو چائے اور مسلم چائے کی شرمناک آوازیں سنائی نہ دینگی ۔ تب اسکولوں اور کالجوں میں ہندوؤں اور غیر ہندوؤں کے الگ الگ پڑھنے کا انتظام نہ ہوگا، نہ الگ الگ برتن ہونگے تب نہ ذات پات کا یا فرقوں کے نام پر اسکول یا کالج کے نام ہونگے اور نہ مسلم، ہندو، جین سمپردائیوں کے نام کے اسپتال ہوں گے ۔" (کنسٹرکٹو پروگرام، صفحہ 4، دسمبر 13، 1941) ۔

گجرات ودیا پیٹھ میں تقریر کرتے ہوئے ایکبار گاندھی جی نے کہا تھا—

"میں یہ نہیں چاہتا کہ میرے مکان کے چاروں طرف اونچی دیواریں کھڑی ہوں اور سب طرف کی کھڑکیاں ٹھونس ٹھونس کر بند کر دی گئیں ہوں ۔ میں چاہتا ہوں کہ میرے مکان کے چاروں طرف سب ملکوں کی کلچر کھلی ہوا کی طرح پوری آزادی کے ساتھ بہتی رہیں لیکن میں یہ نہیں چاہتا کہ کوئی ہوا میرے پاؤں اکھاڑ دے ۔ میں یہ نہیں چاہتا کہ پرانی کلچر پر ہی ہم گذارا کرتے رہیں بلکہ ہم ایک ایسی نئی کلچر کی تعمیر کرنا چاہتے ہیں کہ جس کی جڑیں ملک کی تہذیب کی پرانی گہرائیوں میں ہوں اور جو ہمارے اب تک کے تجربوں سے مالا مال ہو ۔ ہم ان سب کلچروں کے سمنو اور میل کے طرفدار ہیں کہ جو ہندستان میں باہر سے آ کر بس گئیں، جنہوں نے یہاں کی زندگی پر اثر ڈالا اور جن پر خود یہاں کی دھرتی کا اثر پڑا ۔ قدرتی طور پر ہمارا یہ کلچری میل جول اور سمنو سودیشی ڈھنگ کا ہوگا جس میں ہر کلچر کو مناسب جگہ ملیگی ۔ یہ امریکی ڈھنگ کا نہ ہو جس میں زیادہ تعداد والے لوگوں کا یا جن کا زور ہے ان کی کلچر اور سب کلچروں کو اپنے اندر ہضم کئے ہوئے ہیں اور جہاں سمنو یا میل کا مقصد سب راگ راگنیوں کو ملا کر ایک مدھر سریلا راگ پیدا

रंग, जाति, या मजहब का कोई सवाल नहीं. हमें सबके साथ एकसा मोहब्बत का बर्ताव करना चाहिये. अपने सब कामों में सब की भलाई को मद्दे नजर रखना चाहिये. हरिजन आन्दोलन का जिक्र करते हुये गान्धी जी ने सन् 1934 में कहा था :—"अपनी ढलती हुई जिन्दगी के दौर में मैं कोई ऐसा साम्प्रदायिक काम हाथ में नहीं ले सकता जिससे आम जनता को कोई नुक़सान पहुँचे. हरिजनों की सेवा में भी मेरे दिल की गहराई में यह ख्वाहिश मौजूद है कि इससे सारी जनता और सब लोगों का भला हो. क्यों कि मैं यह नहीं मानता कि इनसान की जिन्दगी कोई ऐसी अलग-अलग कोठरियों में बन्द है जिनमें एक की दूसरे को हवा न लग सके या इनसानी जिन्दगी के टुकड़े किये जा सकते हैं. इसके खिलाफ़ इनसानी समाज का जीवन एक ऐसी समूची चीज है जिसके न अलग-अलग टुकड़े हैं और न टुकड़े किये जा सकते हैं. इसलिये जो चीज एक के सच्चे भले की है या हो सकती है वह जरूर सब के भले की होगी. यह कसौटी कभी धोखा नहीं दे सकती.

"मैंने अपनी जिन्दगी भर सबकी भलाई के इस उसूल में विश्वास किया है. इसी लिये मैंने कभी भी कोई ऐसा काम, फिरक़े वाराना या राष्ट्रीय, हाथ में नहीं लिया जो पूरी इनसानी क़ौम के हित को नुक़सान पहुंचाने वाला हो. जब मैंने यह अच्छी तरह देख लिया कि आजकल हिन्दुओं में जिस तरह की छुआ छूत बरती जाती है वह सिर्फ़ हिन्दुओं की आगे की तरक्की के रास्ते में ही रुकावट नहीं है बल्कि आम तौर पर सब लोगों की तरक्की के रास्ते में रुकावट है. सरसरी नजर से देखने वाला भी यह अच्छी तरह देख सकता है कि इस छुआछूत ने न सिर्फ़ ऊँची जाति के हिन्दुओं को बल्कि हिन्दुस्तान में रहने वाले सब मजहबों के लोगों को मुसलमानों, ईसाइयों और दूसरों को भी उसी तरह जकड़ रखा है जिस तरह साँप किसी को अपनी कुन्डलियों में जकड़ लेता है. छुआ छूत के इस पिशाच से युद्ध करने में मेरे दिल के अन्दर यह ख्वाहिश नहीं है कि सिर्फ़ हिन्दुओं हिन्दुओं में ही भाई चारा क़ायम हो जाय, मेरी दिली ख्वाहिश यह है कि इनसान इनसान के बीच भाई चारा क़ायम हो जाय जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, और यहूदी सब एक समान शामिल हों क्योंकि मुझे दुनिया के सब बड़े-बड़े मजहबों की बुनियादी सचाई में विश्वास है. मुझे विश्वास है कि ये सब मजहब ईश्वर के दिये हुये हैं, और मुझे विश्वास है कि ये सब मजहब उन लोगों के लिये जरूरी थे जिन्हें ये ईश्वर से मिले. मुझे इस बात का भी विश्वास है कि अगर हम सब अलग-अलग धर्म-मजहबों की किताबों को उन धर्मों के मानने वालों की निगाह से पढ़ें तो हमें पता चलेगा कि इन सब धर्मों की

کوئی سوال نہیں ۔ ہمیں سب کے ساتھ ایک سا محبت کا برتاؤ کرنا چاہئے ۔ اپنے سب کاموں میں سب کی بھلائی کو مدنظر رکھنا چاہئے ۔ ہریجن آندولن کا ذکر کرتے ہوئے گاندھی جی نے سن 1934 میں کہا تھا—"اپنی ڈھلتی ہوئی زندگی کے دور میں میں کوئی ایسا سامپردائک کام ہاتھ میں نہیں لے سکتا جس سے عام جنتا کو کوئی نقصان پہنچے ۔ ہریجنوں کی سیوا میں بھی میرے دل کی گہرائی میں یہ خواہش موجود ہے کہ اس سے ساری جنتا اور سب لوگوں کا بھلا ہو ۔ کیونکہ میں نہیں مانتا کہ انسان کی زندگی کوئی ایسی الگ الگ کوٹھریوں میں بند ہے جن میں ایک کی دوسرے کو ہوا نہ لگ سکے یا انسانی زندگی کے ٹکڑے کئے جا سکتے ہیں ۔ اس کے خلاف انسانی سماج کا جیون ایک ایسی سموچی چیز ہے جس کے نہ الگ الگ ٹکڑے ہیں اور نہ ٹکڑے کئے جا سکتے ہیں ۔ اس لئے جو چیز ایک کے سچے بھلے کی ہے یا ہو سکتی ہے وہ ضرور سب کے بھلے کی ہوگی ۔ یہ کسوٹی کبھی دھوکا نہیں دے سکتی ۔

میں نے اپنی زندگی بھر سب کی بھلائی کے اس اصول میں وشواس کیا ہے ۔ اس لئے میں نے کبھی بھی کوئی ایسا کام، فرقہ وارانہ یا راشٹری، ہاتھ میں نہیں لیا جو پوری انسانی قوم کے ہت کو نقصان پہنچانے والا ہو ۔ جب میں نے یہ اچھی طرح دیکھ لیا کہ آجکل ہندوؤں میں جس طرح کی چھوا چھوت برتی جاتی ہے وہ صرف ہندوؤں کی آگے کی ترقی کے راستے میں ہی روکاوٹ نہیں ہے بلکہ عام طور پر سب لوگوں کی ترقی کے راستے میں روکاوٹ ہے ۔ سرسری نظر سے دیکھنے والا بھی یہ اچھی طرح دیکھ سکتا ہے کہ اس چھوا چھوت نے نہ صرف اونچی جاتی کے ہندوؤں کو بلکہ ہندستان میں رہنے والے سب لوگوں کو مسلمانوں، عیسائیوں اور دوسروں کو بھی اسی طرح جکڑ رکھا ہے جس طرح سانپ کسی کو کنڈلیوں میں جکڑ لیتا ہے ۔ چھوا چھوت کے اس پشاچ سے یدھ کرنے میں میرے دل کے اندر یہ خواہش نہیں ہے نہ صرف ہندوؤں ہندوؤں میں ہی بھائی چارا قایم ہو جائے، میری دلی خواہش یہ ہے کہ انسان انسان کے بیچ بھائی چارا قایم ہو جائے جس میں ہندو، مسلمان، عیسائی، پارسی اور یہودی سب ایک سمان شامل ہوں کیونکہ مجھے دنیا کے سب بڑے بڑے مذہبوں کی بنیادی سچائی میں وشواس ہے ۔ مجھے وشواس ہے کہ یہ سب مذہب ایشور کے دئے ہوئے ہیں ۔ اور مجھے وشواس ہے کہ یہ سب مذہب ان لوگوں کے لئے ضروری تھے جنہیں یہ ایشور سے ملے ۔ مجھے اس بات کا بھی وشواس ہے کہ اگر ہم سب الگ الگ دھرم مذہبوں کی کتابوں کو ان دھرموں کے ماننے والوں کی نگاہ سے پڑھیں تو ہمیں پتہ چلے گا کہ ان سب دھرموں کی

का ख़ून बहाकर अगर आज़ादी मिलती है तो ऐसी आज़ादी नहीं चाहिये. इसीलिये उन्होंने चौरीचौरा के क़त्ले-आम के बाद सत्याग्रह की लड़ाई बन्द कर दी. दर्जनों बार उन्होंने लम्बे-लम्बे उपवास और फ़ाक़े किये और रो-रोकर ईश्वर से दुआएँ माँगीं.

इनसानी तारीख़ में शायद पहली बार जमात की हैसियत से हमें यह बताया गया कि हमारा काम दूसरों को क़त्ल करना नहीं है बल्कि ख़ुद अपने आपका बलिदान कर देना है और फिर भी आख़ीर में हम फ़तहयाब होंगे. गांधीजी का यह कितना शानदार पैग़ाम था. किसी सियासी मक़सद को हासिल करने का यह पैग़ाम नहीं था बल्कि इनसानी क़ौम की भलाई का बुनियादी पैग़ाम था. जिस जंग में सचाई की कोई जगह न हो उसमें मरना मानो अपनी हस्ती को मिटा देना है. पर सत्य और अहिंसा के युद्ध में कुछ बात बाक़ी रह जाती है. उसमें हार जाने पर भी जीत होती है और मर जाने पर भी अमर जीवन मिलता है.

गांधीजी की सबसे बड़ी ख़ासियत यह थी कि वे एक बहुत बड़े सियासतदां थे, बहुत बड़े नेता थे, बहुत बड़े समाज सुधारक थे लेकिन सब से ज़्यादा वे एक बहुत बड़े इनसान थे. यदि समाज के फ़ायदे के लिये वे किसी क़ुर्बानी का विधान करते तो सब से पहले अपने आप पर उसका अमल करके देख लेते. अगर कोई नया प्रयोग करना चाहते तो सब से पहले उसकी तकलीफ़ें ख़ुद बर्दाश्त करके देख लेते. अपना सब कुछ त्यागकर तब वे दूसरों को त्याग करने का उपदेश देते.

गाँधी जी हर क़दम पर अपने आपको कसौटी पर कसते थे. खाने में, पीने में, किसी से बात करने में, बहस करने में, कोई भी छोटा बड़ा क़दम उठाने में, हर बात और हर फ़िक़रे में वह बराबर अन्दर ही अन्दर देखते रहते थे कि कहीं वह बेसब्र तो नहीं हो रहे हैं? माफ़ी के उसूल को तोड़ तो नहीं रहे हैं? कोई बात ख़ुदी या घमण्ड के असर में तो नहीं कर रहे हैं? दूसरे का हक़ तो नहीं छीन रहे हैं? ज़ायक़े के लिये तो नहीं खा रहे हैं? सचाई से बाल बराबर भी तो नहीं हट रहे हैं? दिल के अन्दर कहीं ग़ुस्से की रमक़ तो नहीं है? अहिंसा के उसूल से तो नहीं डिग रहे हैं? वग़ैरह वग़ैरह.

गान्धी जी जो भी काम करते उसे तोल कर देख लेते कि क्या वह सारी इनसानी क़ौम के फ़ायदे का है या नहीं! हिन्दुस्तान की जनता के ज़रिये ही वह सारी इनसानी क़ौम की ख़िदमत करने की बात सोचते। उन्होंने एक उसूल बना लिया था कि सारी इनसानी क़ौमों का एक ही ख़ानदान है. दुनिया के सब इन्सान भाई-भाई हैं. इसमें देश,

کا خون بہاکر اگر آزادی ملتی ہے تو ایسی آزادی نہیں چاہئیے.
اسی لئے انہوں نے چوری چورا کے قتل عام کے بعد ستیاگرہ کی لڑائی بند کر دی. درجنوں بار انہوں نے لمبے لمبے اپواس اور فاقے کئے اور رو رو کر ایشور سے دعائیں مانگیں.

انسانی تاریخ میں شاید پہلی بار جماعت کی حیثیت سے ہمیں یہ بتایا گیا کہ ہمارا کام دوسروں کو قتل کرنا نہیں ہے بلکہ خود اپنے آپ کو بلیدان کر دینا ہے اور پھر بھی آخیر میں ہم فتحیاب ہونگے. گاندھی جی کا یہ کتنا شاندار پیغام تھا. کسی سیاسی مقصد کو حاصل کرنے کا یہ پیغام نہیں تھا بلکہ انسانی قوم کی بھلائی کا بنیادی پیغام تھا. جس جنگ میں سچائی کی کوئی جگہ نہ ہو اس میں مرنا مانو اپنی ہستی کو مٹا دینا ہے. پر ستیہ اور اہنسا کی یدھ میں کچھ بات باقی رہ جاتی ہے. اس میں ہار جانے پر بھی جیت ہوتی ہے اور مر جانے پر بھی امر جیون ملتا ہے.

گاندھی جی کی سب سے بڑی خاصیت یہ تھی کہ وے ایک بہت بڑے سیاست داں تھے، بہت بڑے نیتا تھے، بہت بڑے سماج سدھارک تھے لیکن ان سب سے زیادہ وے ایک بڑے انسان تھے. یدی سماج کے فائدے کے لئے کسی قربانی کا ودھان کرتے تو سب سے پہلے اپنے آپ پر عمل کر کے دیکھ لیتے. اگر کوئی نیا پریوگ چاہتے تو سب سے پہلے اس کی تکلیف خود برداشت کر کے دیکھ لیتے. اپنا سب کچھ تیاگ کر تب وے دوسروں کو تیاگ کرنے کا اپدیش دیتے.

گاندھی جی ہر قدم پر اپنے آپ کو کسوٹی پر کستے تھے. کھانے میں، پینے میں، کسی سے بات کرنے میں، بحث کرنے میں، کوئی بھی چھوٹا بڑا قدم اٹھانے میں، ہر بات اور فقرے میں وہ برابر اندر ہی اندر دیکھتے رہتے تھے کہ کہیں وہ بےصبر تو نہیں ہو رہے ہیں؟ معافی کے اصول کو توڑ تو نہیں رہے ہیں؟ کوئی بات خودی یا گھمنڈ کے اثر میں تو نہیں کر رہے ہیں؟ دوسرے کا حق تو نہیں چھین رہے ہیں؟ ذائقے کے لئے تو نہیں کھا رہے ہیں؟ سچائی سے بال برابر تو نہیں ہٹ رہے ہیں؟ دل کے اندر کہیں غصے کی رمق تو نہیں ہے؟ اہنسا کے اصول سے تو نہیں ڈگ رہے ہیں؟ وغیرہ وغیرہ.

گاندھی جی جو بھی کام کرتے اسے تول کر دیکھ لیتے کہ وہ ساری انسانی قوم کے فائدے کے لئے ہے کہ نہیں! ہندستان کی جنتا کے ذریعے ہی وہ ساری انسانی قوم کی خدمت کرنے کی بات سوچتے. انہوں نے ایک اصول بنا لیا تھا کہ ساری انسانی قوموں کا ایک ہی خاندان ہے. دنیا کے سب انسان بھائی بھائی ہیں. اس میں دیش،

हर शोषन को जन्म देती है इसलिये इनसान 'अपरिग्रही' बने यानी जायदाद के ऊपर से मालिकाना हक़ छोड़ दे. सब की कमाई सब के लिये हो. उनकी सातवीं हिदायत थी कि 'आपसी' मुल्की और अन्तर्राष्ट्रीय—सब झगड़े हमदर्दी, प्रेम, भाईचारे की भावना, और बिना ख़ून बहाये अहिंसा के उसूल पर हल किये जाँय. हर इनसान ईश्वर की औलाद है और ईश्वर कभी यह पसन्द न करेगा कि हम अपनी ख़ुदग़रज़ियों के लिये उसकी सन्तानों को ईज़ा पहुँचायें या उनका ख़ून बहायें उनकी आठवीं हिदायत थी कि इनसान इनसान के बीच न कोई छोटा है और न बड़ा. ईश्वर कभी यह पसन्द न करेगा कि हम अपने ग़ुरूर या घमन्ड में किसी को छोटा या हक़ीर समझें. एक ही ईश्वर की सन्तान होने के नाते हर इनसान बराबरी का दावेदार है. दर अस्ल हीन और पतित समझे जाने वाले इनसानों के बीच में ही ईश्वर निवास करता है. जो ग़ुरूर करता है उसका सिर नीचा होता है. जो तलवार उठाता है वह उसी तलवार से मिट जाता है. छोटे-बड़े और अमीर-ग़रीब के सब भेद नक़ली हैं. अपने घमन्ड में इनसान ने इन भेदों की बुनियाद डाली है. उनकी नवीं हिदायत थी कि इनसान हर तरह की चोरी से बचे. इसे वह 'अस्तेय' कहते थे. चार रोटी की भूख है और अगर हम छै रोटी खाते हैं तो हमने दो रोटी की चोरी की. ग़रीबों के मुँह से उतने कौर हमने छीन लिये. अगर हमारा काम तीन कुरतों से चल जाता है और हम छै कुरते अपने लिये जमा करते हैं तो हम चोरी करते हैं. हम एक भाई को नंगा रखने में मदद देते हैं. सब इनसानों के बराबर ही हमारा हक़ है, अगर हम ज़्यादा लेते हैं तो हम चोरी करते हैं, गुनाह करते हैं, अमानत में ख़यानत करते हैं. उनकी दसवीं हिदायत थी कि सब बड़े-बड़े मज़हबों में एक सी सचाइयाँ हैं. इसलिये सब मज़हबों का आदर करो. ईश्वर और अल्लाह एक हैं. इनसान ने अपनी बेवक़ूफ़ी में ईश्वर में भी फ़र्क़ करने की बदतमीज़ी की. उनकी ग्यारहवीं हिदायत थी कि कोई काम ऊँचा-नीचा नहीं है. सच्चा ब्राह्मण वही है जो सच्चा मेहतर है. हरिजनों को छोटा समझकर, उनके साथ नफ़रत करके हम इनसानों की बराबरी के दावेदार नहीं बन सकते. हर तरह का श्रम बराबर है चाहे वह राष्ट्रपति का काम हो और चाहे भंगी का. अपने हर क़दम को गान्धीजी ने इन्हीं उसूलों की रोशनी में जाँचा और परखा. गांधीजी की सबसे बड़ी ख़ासियत यह थी कि फ़ौरन काम बनाने के लिये अपनी ज़िन्दगी के इन बुनियादी उसूलों के साथ उन्होंने कभी समझौता नहीं किया. उन्होंने बार-बार कहा कि सचाई को त्याग कर अगर स्वराज आता है तो ऐसा स्वराज मुझे नहीं चाहिये. दूसरों

ہر شوشن کو جنم دیتی ہے۔ اِس لئے اِنسان 'اَپ گرھی' بنے یعنی جائداد کے اوپر سے مالکانہ حق چھوڑ دے۔ سب کی کمائی سب کے لئے ہو۔ اُن کی ساتویں ہدایت تھی کہ آپسی' ملکی اور انتر راشٹری—سب جھگڑے ہمدردی' پریم' بھائی چارے کی بھاؤنا' اور بنا خون بہائے اَہنسا کے اُصول پر حل کئے جائیں۔ ہر انسان ایشور کی اولاد ہے اور ایشور کبھی یہ پسند نہ کریگا کہ ہم اپنی خودغرضیوں کے لئے اُس کی سنتانوں کو ایذا پہونچائیں یا اُن کا خون بہائیں۔ اُن کی آٹھویں ہدایت تھی کہ اِنسان انسان کے بیچ نہ کوئی چھوٹا ہے اور نہ بڑا۔ ایشور کبھی یہ پسند نہ کریگا کہ ہم اپنے غرور یا گھمنڈ میں کسی کو چھوٹا یا حقیر سمجھیں۔ ایک ہی ایشور کی سنتان ہونے کے ناتے ہر انسان برابری کا دعویدار ہے۔ دراصل ہین اور پتت سمجھے جانے والے اِنسانوں کے بیچ میں ہی ایشور نواس کرتا ہے۔ جو غرور کرتا ہے اُس کا سر نیچا ہوتا ہے۔ جو تلوار اٹھاتا ہے وہ اُسی تلوار سے مٹ جاتا ہے۔ چھوٹے بڑے اور امیر غریب کے سب بھید نقلی ہیں۔ اپنے گھمنڈ میں اِنسان نے اِن بھیدوں کی بنیاد ڈالی ہے۔ اُن کی نویں ہدایت تھی کہ اِنسان ہر طرح کی چوری سے بچے۔ اُسے وہ 'اَستیہ' کہتے تھے۔ چار روٹی کی بھوک ہے اور اگر ہم چھ روٹی کھاتے ہیں تو ہم نے دو روٹی کی چوری کی۔ غریبوں کے منھ سے اُتنے کور ہم نے چھین لئے۔ اگر ہمارا کام تین کرتوں سے چلتا ہے اور ہم چھ کرتے اپنے لئے جمع کرتے ہیں تو ہم چوری کرتے ہیں۔ ہم ایک بھائی کو ننگا رکھنے میں مدد دیتے ہیں۔ سب اِنسانوں کے برابر ہی ہمارا حق ہے؛ اگر ہم زیادہ لیتے ہیں تو ہم چوری کرتے ہیں' امانت میں خیانت کرتے ہیں۔ اُن کی دسویں ہدایت تھی کہ سب بڑے بڑے مذہبوں میں ایک سی سچائیاں ہیں۔ اِس لئے سب مذہبوں کا آدر کرو۔ ایشور اور اللہ ایک ہیں۔ اِنسان نے اپنی بیوقوفی میں ایشور میں بھی فرق کرنے کی بدتمیزی کی۔ اُن کی گیارھویں ہدایت تھی کہ کوئی کام اُونچا نیچا نہیں ہے۔ سچا برھمن وہی ہے جو سچا مہتر ہے۔ ہریجنوں کو چھوٹا سمجھ کر' اُن کے ساتھ نفرت کر کے ہم اِنسانوں کی برابری کے دعویدار نہیں بن سکتے۔ ہر طرح کا شرم برابر ہے چاہے وہ راشٹرپتی کا کام ہو اور چاہے بھنگی کا۔ اپنے ہر قدم کو گاندھی جی نے اُنھیں اصولوں کی روشنی میں جانچا اور پرکھا۔ گاندھی جی کی سب سے بڑی خاصیت یہ تھی کہ فوراً کام بنانے کے لئے اپنی زندگی کے اِن بنیادی اصولوں کے ساتھ انھوں نے کبھی سمجھوتہ نہیں کیا۔ انھوں نے بار بار کہا کہ سچائی کو تیاگ کر اگر سوراج آتا ہے تو ایسا سوراج مجھے نہیں چاہئے۔ دوسروں

हमारी राय

ہماری رائے

गान्धी जी के जनम दिन पर

दो अक्तूबर सन् 1957 को सारे हिन्दुस्तान ने राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के जनम दिन को मनाया। उन्हें हम से बिछुड़े क़रीब-क़रीब दस बरस हो रहे हैं. इन दस बरसों में मुल्क ने कितने ही उतार चढ़ाव देखे. हमारे इम्तहान के कितने ही मौके आये. क़ुदरती था कि ऐसे मौक़ों पर हम गान्धी जी की पाक हस्ती को याद करते. ये भी याद करते कि ऐसी पेचीदगियों को सुलझाने के लिये गान्धी जी क्या करते. सन् 1917 से 1947 तक मुल्क की सियासत पर गान्धी जी की ज़बरदस्त छाप थी. वह जिधर डग उठाते थे उधर सारा हिन्दुस्तान चलता था. वे हमें अँधेरे से रोशनी में लाये. हमें कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था उन्होंने हमें रास्ता बताया. आज़ादी हासिल करने के लिये हमारे पास कोई हथियार नहीं थे उन्होंने हमें अहिंसा और सत्याग्रह का हथियार दिया. वे बोलते थे और मुल्क महसूस करता था कि वह मुल्क की भावनाओं को ही पेश कर रहे हैं. मिट्टी से उन्होंने योधा पैदा किये. वह जहाँ बैठते थे वह जगह मन्दिर बन जाती थी. वह जो कुछ कहते थे मुल्क आँख बन्द करके उसपर अमल करता था. उन्होंने सबसे पहली हिदायत हमें दी कि हम अपने दिल से डर के जज़बे को क़तई निकाल दें, उनकी दूसरी हिदायत थी कि अन्याय के सामने सर झुकाना हम बन्द कर दें, उनकी तीसरी हिदायत थी कि जो कुछ सच है उसी का हम आग्रह करें यानी उसी पर हम ज़ोर दें, उनकी चौथी हिदायत थी कि अहिंसा को हम अपनी ज़िन्दगी में ढालें और अपने हर काम को अहिंसा की दूरबीन से देखें. उनकी पाँचवीं हिदायत थी कि हम बुराई से तो नफ़रत करें लेकिन बुराई करने वाले से प्रेम करें, उनकी छठी हिदायत थी कि इनसान के ज़रिये इनसान के शोषन के हम सब दरवाज़े बन्द कर दें स्वामित्व की भावना

گاندھی جی کے جنم دن پر

دو اکتوبر سن 1957 کو سارے ہندستان نے راشٹرپتا مہاتما گاندھی کے جنم دن کو منایا ۔ اُنہیں ہم سے بچھڑے قریب قریب دس برس ہو رہے ہیں ۔ اُن دس برسوں میں ملک نے کتنے ہی اتار چڑھاؤ دیکھے۔ ہمارے امتحان کے کتنے ہی موقع آئے ۔ قدرتی تھا کہ ایسے موقعوں پر ہم گاندھی جی کی پاک ہستی کو یاد کرتے ۔ یہ بھی یاد کرتے کہ ایسی پیچیدگیوں کو سلجھانے کے لئے گاندھی جی کیا کرتے تھے۔ 1917 سے 1947 تک ملک کی سیاست پر گاندھی جی کی زبردست چھاپ تھی ۔ وہ جدھر ڈگ اٹھاتے تھے ادھر سارا ہندستان چلتا تھا ۔ وے ہمیں اندھیرے سے روشنی میں لائے ۔ ہمیں کوئی راستہ سوجھ نہیں رہا تھا ۔ اُنہوں نے ہمیں راستہ بتایا ۔ آزادی حاصل کرنے کے لئے ہمارے پاس کوئی ہتھیار نہیں تھے۔ اُنہوں نے ہمیں اہنسا اور ستیاگرہ کا ہتھیار دیا ۔ وے بولتے تھے اور ملک محسوس کرتا تھا کہ وہ ملک کی بھاؤناؤں کو ہی پیش کر رہے ہیں ۔ مٹی سے اُنہوں نے یودھا پیدا کئے ۔ وہ جہاں بیٹھتے تھے وہ جگہ مندر بن جاتی تھی ۔ وہ جو کچھ کہتے تھے ملک آنکھ بند کر کے اس پر عمل کرتا تھا ۔ انہوں نے سب سے پہلی ہدایت ہمیں دی کہ ہم اپنے دل سے ڈر کے جذبے کو قطعی نکال دیں ۔ اُن کی دوسری ہدایت تھی کہ انیائے کے سامنے سر جھکانا ہم بند کر دیں ۔ اُن کی تیسری ہدایت تھی کہ جو کچھ سچ ہے اُسی کا ہم آگرہ کریں یعنی اُسی پر ہم زور دیں۔ اُن کی چوتھی ہدایت تھی کہ اہنسا کو ہم اپنی زندگی میں ڈھالیں ۔ اپنے ہر کام کو اہنسا کی دوربین سے دیکھیں ۔ اُن کی پانچویں ہدایت تھی کہ ہم برائی سے تو نفرت کریں لیکن برائی کرنے والے سے پریم کریں ۔ اُن کی چھٹی ہدایت تھی کہ انسان کے ذریعہ انسان کے شوشن کے ہم سب دروازے بند کریں ۔ سوامتوں کی بھاؤنا

पूरी पुस्तक छै खंडों और उनचास अध्यायों में बांटी गई है. पहले खंड में भारतीय अर्थशास्त्र की पृष्ठ भूमि यानी पसे मंजर दिया गया है. दूसरे खंड में अर्थशास्त्र के विषय को समझाया गया है. तीसरे खंड में इस्तेमाल और जरूरत के उसूल को समझाया गया है. चौथे खंड में पैदावार की मुख्तलिफ शक्लों को दिखाया गया है. पांचवें खण्ड में अदल-बदल के सिद्धान्त पर रोशनी डाली गई है और छठे खण्ड में पैदावार के बटवारे को समझाया गया है. इसी खंड में समाजवादी ढांचा और आर्थिक बराबरी के उसूलों पर बहस की गई है. पुस्तक को 'ईसावास्य मिदम् सर्वम्'—उपनिषद् के श्लोक से शुरू किया गया है और सन्तविदान से खत्म किया गया है. कीमती आंकड़ों के सहारे पुस्तक में दिये हुये उसूल समझाये गये हैं.

नये नुक़्ते नजर से लिखी गई केला जी की यह पुस्तक हिन्दी अर्थशास्त्र की दिशा में एक तारीफ के लायक क़दम है. हमें उम्मीद है और दूसरी जबानों में भी इसका तर्जुमा होगा.

—वि. ना. पांडे

پوری پستک چھ کھنڈوں اور اُنچاس ادھیایوں میں بانٹی گئی ہے۔ پہلے کھنڈ میں بھارتیہ ارتھ شاستر کی پرشٹھ بھومی یعنی پس منظر دیا گیا ہے۔ دوسرے کھنڈ میں ارتھ شاستر کے وشئے کو سمجھایا گیا ہے۔ تیسرے کھنڈ میں استعمال اور ضرورت کے اُصول کو سمجھایا گیا ہے۔ چوتھے کھنڈ میں پیداوار کی مختلف شکلوں کو دکھایا گیا ہے۔ پانچویں کھنڈ میں ادل بدل کے سدھانت پر روشنی ڈالی گئی ہے اور چھٹے کھنڈ میں پیداوار کے بٹوارے کو سمجھایا گیا ہے۔ اسی کھنڈ میں سماج وادی ڈھانچہ اور آرتھک برابری کے اُصولوں پر بحث کی گئی ہے۔ پستک کو 'ایسا واسیہ مدم سروم'—اُپنشد کے شلوک سے شروع کیا گیا ہے اور سنتودان سے ختم کیا گیا ہے۔ قیمتی آنکڑوں کے سہارے پستک میں دیئے ہوئے اُصول سمجھائے گئے ہیں۔

نئے نقطہ نظر سے لکھی گئی کیلا جی کی یہ پستک ہندی ارتھ شاستر کی دشا میں ایک تعریف کے لائق قدم ہے۔ ہمیں اُمید ہے اور دوسری زبانوں میں بھی اُسکا ترجمہ ہوگا

—وی۔ نا۔ پانڈے۔

विचार हों सो सही. अकेले रहा जा सके तो सबसे अच्छा. जैसे अकेले रहने में दुख है वैसे बच्चों के लिये सौतेली माँ के लाने में भी दुख है. अब तुम थोड़े समय भाई के साथ रह सकोगी. बार बार ऐसा मौक़ा न मिलेगा ! दिलों की सफ़ाई कर लेना. कोई चिन्ता न करना. सुख-दुख तो धूप-छाँव की तरह आते ही रहते हैं. संसार माया से भरा है. थोड़ी माया वाले को थोड़ा दुख. इसलिये माया और जंजाल बढ़ाने में कोई लाभ नहीं.

"कोनां छोरू, कोनां वाछरू, कोना माने बाप जी,
अन्त काले जवुं एकला, साथे पुण्यने पाप जी."

यानी—"किसके बेटे-बेटी, किसकी जायदाद और किसके माँ-बाप, आख़ीर में तो अकेले ही जाना पड़ेगा. साथ में सिफ नेकी और बदी ही जायगी."

जवाहर लाल जी के बारे में सरदार की राय देखें (सफ़ा 255)—"जवाहर लाल जी की सचाई परस्ती और अहिंसा प्रेम ऐसा था कि वे नापाक साधनों को बर्दाश्त नहीं करते थे."

व्यक्तिगत सत्याग्रह के सिलसिले में सरदार जब फिर यरवदा जेल पहुंचे तो गांधी जी के बजाय दूसरी ही मंडली वहां थी. सरदार ने इसपर लिखा :—

"इस बार की मंडली दूसरी ही तरह की है इसलिये बापू के साथ का रस जिसने चखा हो वही जान सकता है. फिर भी यह समझकर दिन काट रहा हूँ :—

"तुलसी या संसार में भांति भांति के लोग,
सबसे हिल मिलकर चलो नदी नांव संयोग."

इसी तरह के सैकड़ों प्रसंगों से पुस्तक भरी पड़ी है. आज़ाद हिन्दुस्तान के इतिहास को समझने के लिये इस पुस्तक से काफ़ी मदद मिलेगी.

भारतीय अर्थशास्त्र

लेखक श्री भगवान दास केला, प्रकाशक भारतीय ग्रंथ-माला दारागंज, इलाहाबाद; सफ़े 651, मोल पांच रुपया।

भारतीय अर्थशास्त्र के ऊपर केला जी ने भारतीय नुक़्ते नज़र से हिन्दी भाषा में जितना और जो कुछ लिखा है उतना और किसी ने नहीं. अर्थशास्त्र में उनका नज़रिया गान्धी जी का नज़रिया है. इस बड़ा किताब को भी उन्होंने सर्वोदय की निगाह से लिखा है. उनका दावा है कि यही अर्थशास्त्र भारतीय जनता के हित और कल्यान का अर्थ-शास्त्र है.

وچار هوں سو صحیح ۔ اکیلے رها جا سکے تو سب سے اچها ۔ جیسے اکیلے رهنے میں دکھ هے ویسے بچوں کے لئے سوتیلی ماں کے لانے میں بهی دکھ هے ۔ اب تم تهوڑے سمئے بهائی کے ساتھ رہ سکو گی ۔ بار بار ایسا موقع نه ملیگا ۔ دلوں کی صفائی کر لینا ۔ کوئی چنتا نه کرنا ۔ سکھ دکھ تو دهوپ چهاؤں کی طرح آتے هی رهتے هیں ۔ سنسار مایا سے بهرا هے ۔ تهوڑی مایا والے کو تهوڑا دکھ ۔ اس لئے مایا اور جنجال بڑهانے میں کوئی لابھ نهیں ۔

کونا چهورو، کونا واچهرو، کونا مانے باپ جی،
انت کالے جوون اکیلا، ساتھے پنیہ نے پاپ جی ۔"

یعنی—کس کے بیٹے بیٹی، کس کی جائداد اور کس کے ماں باپ ! آخیر میں تو اکیلے هی جانا پڑیگا ۔ ساتھ میں صرف نیکی اور بدی هی جائیگی ۔"

جواهر لال جی کے بارے میں سردار کی رائے دیکهیں (صفحه 255)—جواهر لال جی کی سچائی پرستی اور اهنسا پریم ایسا تها که وہ ناپاک سادهنوں کو برداشت نهیں کرتے تهے ۔"

ویکتی گت ستیاگره کے سلسلے میں سردار جب پهر یروڈا جیل پهونچے تو گاندهی جی کے بجائے دوسری هی منڈلی وهاں تهی ۔ سردار نے اس پر لکها :—

"اس بار کی منڈلی دوسری هی طرح کی هے اسلئے باپو کے ساتھ کا رس جس نے چکها هو وهی جان سکتا هے ۔ پهر بهی یه سمجهکر دن کاٹ رها هوں :—

"تلسی یا سنسار میں بهانتی بهانتی کے لوگ،
سب سے هل مل کر چلو ندی ناؤ سنجوگ ۔"

اسی طرح کے سیکڑوں پرسنگوں سے پستک بهری پڑی هے ۔ آزاد هندستان کے اتهاس کو سمجهنے کے لئے اس پستک سے کافی مدد ملیگی ۔

بهارتیه ارتھ شاستر

لیکهک شری بهگوان داس کیلا، پرکاشک بهارتیه گرنتھ مالا داراگنج، الٰه آباد؛ صفحے 651، مول پانچ روپیه بهارتیه ارتھ شاستر کے اوپر کیلا جی نے بهارتیه نقطه نظر سے هندی بهاشا میں جتنا اور جو کچھ لکها هے اتنا اور کسی نے نهیں ۔ ارتھ شاستر میں انکا نظریه گاندهی جی کا نظریه هے ۔ اس بڑی کتاب کو بهی انهوں نے سرودیه کی نگاه سے لکها هے ۔ انکا دعوی هے که یهی ارتھ شاستر بهارتیه جنتا کے هت اور کلیان کا ارتھ شاستر هے ۔

यरवदा जेल में एक बार गान्धीजी ने कहा—"रक्खा हुआ साँप भी काम का"—पूछने पर कि यह कहावत कैसे चली ? बापू ने कहा—"एक बुढ़िया के यहाँ साँप निकला. उसे मार दिया गया. बुढ़िया ने उसे फेंकने के बजाय छप्पर पर रख दिया. एक उड़ती हुई चील ने, जो कहीं से मोतियों का हार ले आई थी, उसे देखा. हार से साँप उसे ज़्यादा क़ीमती लगा, इसलिये हार तो उसने छप्पर पर डाल दिया और साँप उठा ले गई. इस तरह बुढ़िया को साँप संग्रह करने से हार मिला.'

सरदार ने कहा—"बापू ! इसका मूल दूसरा है !"

बापू ने पूछा—"क्या ?"

सरदार बोले :—"एक बनिये के यहाँ साँप निकला. उसे मारने वाला कोई मिलता न था और बनिये की हिम्मत नहीं होती थी. इसलिये उसने साँप को पतीली के नीचे ढाँक दिया. रात को चोर आये. वे कुतूहल से पतीली उघाड़ने लगे तो साँप ने काट लिया और चोरी करने के बजाय स्वर्ग सिधार गये ." (सफ़ा 117).

14 जून 32. गरमी में नीबू मँहगे हो गये. बापू बोले—"हम नीबू के बजाय इमली लें ."

बल्लभ भाई बोले—"इमली के पानी से वायु बढ़ेगी और हड्डियों में दर्द होगा."

बापू "लेकिन जमनालाल तो पीते हैं ?"

बल्लभ भाई—"जमना लाल की हड्डियों तक इमली को घुसने का रास्ता नहीं ."

बापू—"मगर एक बार मैंने इमली बहुत खाई है ."

बल्लभ भाई—"उस समय आप पत्थर भी हज़म कर सकते थे. आज तो बूढ़े हैं."

एक बार बापू ने यरवदा जेल में नारियल की रस्सी की खाट अपने सोने के लिये मँगवाई. बल्लभ भाई निवाड़ की खाट के पक्ष में थे. बापू ने कहा—"मुझे याद है कि हमारे यहाँ बचपन में इस तरह की नारियल की रस्सी की खाटें काम में आती थीं. मेरी माँ उन पर अदरख छीलती थी."

बल्लभ भाई—"इसी लिये तो कहता हूँ कि इस पर निवाड़ लगवा लीजिये. वरना मुट्ठी भर हड्डियों की चमड़ी छिल जायगी."

गान्धी जी ने जब हरिजन अवार्ड के खिलाफ़ उपवास किया तो बल्लभ भाई को नासिक जेल में हटा दिया गया. इस पर बापू ने कहा—"पिंजड़ा तो है पर पंछी उड़ गया."

सरदार के पारिवारिक जीवन की झाँकी अपनी लड़की मणि बहिन के नाम लिखे इस ख़त में देखें —"फिर से नवाड़ के बारे में डाया भाई (सरदार के बेटे) के जो

یرودا جیل میں ایکبار گاندھی جی نے کہا—"رکھا ہوا سانپ بھی کام کا"—پوچھنے پر کہ یہ کہاوت کیسے چلی ؟ باپو نے کہا—ایک بڑھیا کے یہاں سانپ نکلا ۔ اسے مار دیا گیا ۔ بڑھیا نے اسے پھینکنے کے بجائے چھپر پر رکھ دیا ۔ ایک اڑتی ہوئی چیل نے جو کہیں سے موتیوں کا ہار لے آئی تھی' اسے دیکھا ۔ ہار سے سانپ اسے زیادہ قیمتی لگا ۔ اس لئے ہار تو اس نے چھپر پر ڈال دیا اور سانپ اٹھا لے گئی ۔ اس طرح بڑھیا کو سانپ سنگرہ کرنے سے ہار ملا ۔"

سردار نے کہا—"باپو ! اس کا مول دوسرا ہے ."

باپو نے پوچھا—"کیا ؟"

سردار بولے—"ایک بنئے کے یہاں سانپ نکلا ۔ اسے مارنے والا کوئی ملتا نہ تھا اور بنئے کی ہمت نہیں ہوتی تھی ۔ اس لئے اس نے سانپ کو پتیلی کے نیچے ڈھانک دیا ۔ رات کو چور آئے ۔ وے کتوہل سے پتیلی اکھاڑنے لگے تو سانپ نے کاٹ لیا اور چوری کرنے کے بجائے سورگ سدھار گئے ."
(صفحہ 117) .

14 جون 32' گرمی میں نیبو مہنگے ہو گئے ۔ باپو بولے—"ہم نیبو کے بجائے املی لیں ."

ولبھ بھائی بولے—"املی کے پانی سے وایو بڑھیگی اور ہڈیوں میں درد ہوگا !"

باپو بولے—"لیکن جمنا لال تو پیتے ہیں ؟"

ولبھ بھائی—"جمنا لال کی ہڈیوں تک املی کو گھسنے کا راستہ نہیں ."

باپو—"مگر ایکبار میں نے املی بہت کھائی ہے ."

ولبھ بھائی—"اس سمئے آپ پتھر بھی ہضم کر سکتے تھے ۔ آج تو بوڑھے ہیں ."

ایکبار باپو نے یرودا جیل میں ناریل کی رسی کی کھاٹ اپنے سونے کے لئے منگوائی ۔ ولبھ بھائی نواڑ کی کھاٹ کے پکش میں تھے ۔ باپو نے کہا—"مجھے یاد ہے کہ ہمارے یہاں بچپن میں اس طرح کی ناریل کی رسی کی کھاٹیں کام میں آتی تھیں ۔ میری ماں ان پر ادرک چھیلتی تھی ."

ولبھ بھائی—"اسی لئے تو کہتا ہوں کہ اس پر نواڑ لگوا لیجئے ۔ ورنہ مٹھی بھر ہڈیوں کی چمڑی چھل جائیگی ."

گاندھی جی نے جب ہریجن اوارڈ کے خلاف اپواس کیا تو ولبھ بھائی کو ناسک جیل میں ہٹا دیا گیا ۔ اس پر باپو نے کہا—"پنجڑا تو ہے پر پنچھی اڑ گیا ."

سردار کے پریوارک جیون کی جھانکی اپنی لڑکی منی بہن کے نام لکھے اس خط میں دیکھیں—"پھر سے نواڑ کے بارے میں ڈاھیا بھائی (سردار کے بیٹے) کے جو

ज्ञान-विज्ञान के खोजियों के लिये पुस्तक काफ़ी दिलचस्प है

भूदान गंगोत्री

लेखक श्री दामोदरदास मूँदड़ा, प्रकाशक सर्व सेवा संघ, राजघाट, काशी; सफ़े 312, मोल दो रुपया आठ आने.

लेखक आचार्य विनोबा के पट्टशिष्य और सेक्रेटरी थे और इस नाते भूदान आन्दोलन के आग़ाज़ के चश्मदीद गवाह थे . तेलंगाना के पहले भूदान से लेकर सेवागाँव पहुँचने तक विनोबा के रोज़-बरोज़ के काम, बातचीत और उपदेशों की दिलचस्प झाँकी हमें इस डायरी में देखने को मिलती है. पढ़ने वाले के दिल पर भूदान की अहमियत साफ़ नक़्श हो जाती है. विनोबाजी के बेशक़ीमत उपदेशों का अमृत इसमें मिलता है. भूदान आन्दोलन को समझने वाले हर शख़्स के लिये यह किताब बड़े काम की है.

सर्वोदय पदयात्रा

लेखक, प्रकाशक वही. स.फ़े 225; मोल एक रुपया.

विनोबा जी ने अपनी पद यात्रा के सिलसिले में जो अनमोल उपदेश दिये वह इस किताब में इकट्ठा करके छापे गये हैं. आजकल की दुनिया और हिन्दुस्तान की सियासत की रोशनी में विनोबा जी के इस पुस्तक में जाहिर किये हुए विचार सही रास्ता दिखाने का काम करेंगे. पुस्तक सबके पढ़ने लायक़ है. छपाई, सफ़ाई को देखते हुये पुस्तक सस्ती है.

सरदार वल्लभ भाई (दूसरा भाग)

सम्पादक नरहरि डा० परीख, प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, स.फ़े 651, जिल्दवाली पुस्तक के दाम पाँच रुपये.

सरदार वल्लभ भाई पटेल की सवाने उमरी यानी जीवन चरित्र की यह दूसरी जिल्द है. इस जिल्द में सन 30 के नमक सत्याग्रह से लेकर सन 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन तक के 12 बरसों के उन वाक़यात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ सरदार पटेल की ज़िन्दगी से था. इसमें कोई शक नहीं कि ये बारह बरस मुल्क की सियासी ज़िन्दगी के लिहाज़ से बहुत ही अहम थे. लेखक ने छोटी-छोटी घटनाओं को भी शामिल कर लिया है, ऐसी घटनाएँ जिनसे सरदार के चरित्र पर रोशनी पड़ सकती थी. ये घटनाएँ काफ़ी दिलचस्प, शिक्षा देने वाली और उसूलों से ताल्लुक़ रखने वाली हैं. इनसे गान्धीजी. औरजवाहर लाल जी के साथ सरदार के मीठे ताल्लुक़ात की झाँकी मिलती है.

بھودان گنگوتری

لیکھک شری دامودر داس موندڑا، پرکاشک سرو سیوا سنگھ، راجگھاٹ، کاشی؛ صفحے 312، مول دو روپیہ آٹھ آنے ۔

لیکھک آچاریہ ونوبا کے پٹو ششیہ اور سکریٹری تھے اور اس ناتے بھودان آندولن کے آغاز کے چشم دید گواہ تھے ۔ تیلنگانا کے پہلے بھودان سے لیکر سیوا گاؤں پہونچنے تک ونوبا کے روز بروز کے کام، بات چیت اور اُپدیشوں کی دلچسپ جھانکی ہمیں اس ڈائری میں دیکھنے کو ملتی ہے ۔ پڑھنے والے کے دل پر بھودان کی اہمیت صاف نقش ہو جاتی ہے ۔ ونوبا جی کے بیش قیمت اُپدیشوں کا امرت اِس میں ملتا ہے ۔ بھودان آندولن کو سمجھنے والے ہر شخص کے لئے یہ کتاب بڑی کام کی ہے ۔

سرودئے پد یاترا

لیکھک، پرکاشک وہی صفحے 225؛ مول ایک روپیہ ۔

ونوبا جی نے اپنی پد یاترا کے سلسلے میں جو انمول اُپدیش دیئے وہ اِس کتاب میں اِکٹھا کر کے چھاپے گئے ہیں ۔ آجکل کی دنیا اور ہندستان کی سیاست کی روشنی میں ونوبا جی کے اس پستک میں ظاہر کئے ہوئے وچار صحیح راستہ دکھانے کا کام کرینگے ۔ پستک سب کے پڑھنے کے لایق ہے ۔ چھپائی، صفائی کو دیکھتے ہوئے پستک سستی ہے ۔

سردار ولبھ بھائی (دوسرا بھاگ)

سمپادک نرہری ڈا . پریکھ، پرکاشک نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد، صفحے 651، جلد والی پستک کے دام پانچ روپئے ۔

سردار ولبھ بھائی پٹیل کی سوانح عمری یعنی جیون چرتر کی یہ دوسری جلد ہے ۔ اِس جلد میں سن 30 کے نمک ستیاگرہ سے لیکر سن 42 کے بھارت چھوڑو آندولن تک کے 12 برسوں کے اُن واقعات کا ذکر ہے جن کا تعلق سردار پٹیل کی زندگی سے تھا ۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ یہ بارہ برس ملک کی سیاسی زندگی کے لحاظ سے بہت ہی اہم ہیں ۔ لیکھک نے چھوٹی چھوٹی گھٹناؤ کو بھی شامل کر لیا ہے، ایسی گھٹنائیں جن سے سردار کے چرتر پر روشنی پڑ سکتی تھی ۔ یہ گھٹنائیں کافی دلچسپ، شکشا دینے والی اور اُصولوں سے تعلق رکھنے والی ہیں۔ اِن سے گاندھی جی، جواہر لال جی اور سردار کے میٹھے تعلقات کی جھانکی ملتی ہے ۔

सैकड़ों ऊँचाइयों से कामयाब तूफ़ान ,
जनता के अधिकारों की गरजती हुई लहर बनकर बह रहा है !
सिपाही और सैनिकों की कम्पनियाँ यके बाद दीगरे जा रही हैं !
आखिर में उन्हें याद आता है कि उनकी भी मातृ-भूमि है !
यह क्या कम है कि अपने बस भर वे लड़े जनता की आज़ादी के लिये और अपने .फ़ौजी नाम के लिये !
ईश्वर, उम्मीद और इतिहास तीनों हिन्दुस्तानियों की तरफ़ थे !

पुस्तक की छपाई वग़ैरह अच्छी है. अंगरेज़ीदाँ हर देशभक्त से हमारी यह प्रार्थना है कि वह इस पुस्तक को जरूर पढ़े,

न जाने राम और उसके साथियों का अभियान

मूल रूसी ज़बान के लेखक एन० नसोव; मूलरूसी से अनुवादक श्री अर्द्धेन्दु गोस्वामी; अनुवाद की भाषा के सम्पादक-डाक्टर महादेव साहा; प्रकाशक ईस्टर्न ट्रेडिंग कम्पनी, 64 ए धरमतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता- 13, मोल तीन रुपया. छपाई, सफ़ाई, जिल्द सब अच्छी.

बच्चों के साहित्य की यह रूसी पुस्तक रूस में बहुत नाम कमा चुकी है. सरल कहानी के रूप में लेखक ने विज्ञान के चमत्कारों को बड़ी दिलचस्पी से बच्चों को समझाने की कोशिश की है. एक बार हाथ में उठा लेने से बच्चे इसे पूरा पढ़कर ही छोड़ते हैं. प्रकाशक बधाई के हक़दार हैं कि बच्चों के लिये ऐसी सरल वैज्ञानिक ईजादों की पुस्तक उन्होंने शाया की. रंगीन चित्रों से पुस्तक की उपयोगिता बेहद बढ़ गई है.

मानव जाति का उद्भव

मूल रूसी लेखक गगुरेव, अनुवादक और प्रकाशक वही ऊपर की पुस्तक के; क़ीमत एक रुपया बासठ नए पैसे. सफ़े 133; सचित्र; छपाई, सफ़ाई अच्छी.

१३३ सफ़ों की इस किताब में विद्वान लेखक ने इस बात की छान-बीन की है कि इनसानी नस्ल का आग़ाज़ क्या था ? पाँच करोड़ बरस पहले उसकी क्या शक्ल थी ? फिर दर्जेवार उसने कैसे तरक़्क़ी की और आख़ीर में किस तरह बन्दर की योनि और जिस्म में तब्दील होते-होते कैसे वह इनसान बना. लेखक ने पुस्तक के सफ़ों में जो दावे पेश किये हैं उनको समझाने के लिये तस्वीरें भी दी हैं. दूसरे वैज्ञानिक मतों को पेश करके उनकी ताईद या मुख़ालिफ़त की है. डारविन और एंगल्स की राय को लेखक ने सराहा है और नई खोजों के आधार पर उन्हीं रायों पर अपनी दलीलों को क़ायम किया है.

سیکڑوں اونچائیوں کے کامیاب طوفان !
جنتا کے ادھیکاروں کی گرجتی ہوئی لہر بن کر بہہ رہا ہے !
سپاہی اور سینکوں کی کمپنیاں یکےبعد دیگرے جا رہی ہیں !
آخر میں انہیں یاد آتا ہے کہ اُنکی بھی ماتر بھومی ہیں !
یہ کیا کم ہے کہ اپنے بس بھر وے لڑے
جنتا کی آزادی کے لئے اور اپنے فوجی نام کے لئے !

پستک کی چھپائی وغیرہ اچھی ہے ! ہر انگریزی داں دیش بھکت سے ہماری یہ پرارتھنا ہے کہ وہ اس پستک کو ضرور پڑھے .

نجانے رام اور اس کے ساتھیوں کا ابھیان

مول روسی زبان کے لیکھک این. نسوو؛ مول روسی سے انوادک شری اردھیندو گوسوامی؛ انواد کی بھاشا کے سمپادک ڈاکٹر مہادیو ساہا؛ پرکاشک ایسٹرن ٹریڈنگ کمپنی، 64-A دھرم تلہ اسٹریٹ، کلکتہ -13؛ مول تین روپیہ، چھپائی، صفائی، جلد سب اچھی .

بچوں کے ساہتیہ کی یہ روسی پستک روس میں بہت نام کما چکی ہے . سرل کہانی کے روپ میں لیکھک نے وگیان کے چمتکاروں کو بڑے دلچسپ طریقے سے بچوں کو سمجھانے کی کوشش کی ہے. ایک بار ہاتھ میں اُٹھا لینے سے بچے اِسے پورا پڑھکر ہی چھوڑتے ہیں . پرکاشک بدھائی کے حقدار ہیں کہ بچوں کے لئے ایسی سرل ویگیانک ایجادوں کی پستک انہوں نے شائع کی . رنگین چتروں سے پستک کی اُپیوگتا بےحد بڑھ گئی ہے .

مانو جاتی کا اُدبھو

مول روسی لیکھک گ . گروریو؛ انوادک اور پرکاشک وہی اوپر کی پستک کے؛ قیمت ایک روپیہ باسٹھ نئے پیسے . صفحے 133؛ چھپائی، صفائی اچھی .

133 صفحوں کی اِس کتاب میں ودوان لیکھک نے اِس بات کی چھان بین کی ہے کہ انسانی نسل کا آغاز کیا تھا، پانچ کروڑ برس پہلے اُس کی کیا شکل تھی پھر درجہ وار اُس نے کیسی ترقی کی اور آخیر میں کس طرح بندر کی یونی اور جسم سے تبدیل ہوتے ہوتے کیسے وہ انسان بنا . لیکھک نے پستک کے صفحوں میں جو دعوے پیش کئے ہیں اُن کو سمجھانے کے لئے تصویریں بھی دی ہیں . دوسرے ویگیانک متوں کو پیش کر کے اُن کی تائید یا مخالفت کی ہے . ڈارون اور اینگلس کی رائے کو لیکھک نے سراہا ہے اور نئی کھوجوں کے آدھار پر اُنہوں رائیوں پر اپنی دلیلوں کو قایم کیا ہے .
گیان وگیان کے کھوجیوں کے لئے پستک کافی دلچسپ ہے.

कुछ किताबें  کچھ کتابیں

The Revolt of Hindostan—लेखक अर्नेस्ट जोन्स, सम्पादक श्री स्नेहांशु कान्त आचार्य और श्री महादेव प्रसाद साहा, प्रकाशक ईस्टर्न ट्रेडिङ्ग कम्पनी, 64,A धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता-13, क़ीमत तीन रुपया, पृष्ठ संख्या 55.

चार्टिस्टनेता अर्नेस्ट चार्ल्स जोन्स का मशहूर काव्य ग्रन्थ 'रिवोल्ट आफ हिन्दुस्तान' का यह हिन्दुस्तानी एडीशन बड़े मौक़े से छाप कर प्रकाशित किया गया जबकि मुल्क सन 1853 की शताब्दी मना रहा था. कविता के साथ साथ जोन्स के सन 1857 के मुताल्लिक़ लेख भी पुस्तक के आख़ीर में दिये गये हैं. सम्पादक अपनी भूमिका में लिखते हैं :—"जबकि हिन्दुस्तान में देश भर में सन 1857 की शताब्दी मनाई जा रही हैं यह याद करके ख़ुशी होती है कि कम से कम एक अङ्गरेज तो था जो 1857 के विद्रोह को न केवल मुनासिब और ठीक समझता था बल्कि उसे होके रहने वाली घटना मानता था." जोन्स 26 जनवरी 1859 को पैदा हुआ और 2i जनवरी 1869 को मरा. जोन्स ने ब्रिटिश शासन नीति की ज़बरदस्त मुख़ालफ़त की. उसके विद्रोही विचारों के सबब उसे 6 जून सन 1848 को गिरफ़्तार कर लिया गया और 9 जुलाई सन् 1850 तक उसे जेल में रहना पड़ा. जिस काल कोठरी में उसे तनहाई में रखा गया वह 13 फ़ुट लम्बी और सिफ़ 6 फ़ुट चौड़ी थी. इतनी खुली हुई थी कि बारिश का पानी और बरफ़ीले तूफ़ानों के थपेड़े इधर से उधर निकल जाते थे. जोन्स की सेहत बेहद ख़राब हो गई. वहीं उस काल कोठरी में जोन्स ने 'दि न्यू वर्ल्ड' नाम की कविता लिखी जो बाद में सन 1857 में 'दि रिवोल्ट आफ हिन्दुस्तान आर न्यू वर्ल्ड,' नाम से छपकर शाया हुई. जेल में लिखने का सामान नहीं था. जोन्स ने एक पुरानी किताब के हाशियों पर अपने ख़ून से यह कविता लिखी. पूरी की पूरी नज़्म बेहद सुन्दर है. एक नमूना देखें :—

The Revolt of Hindostan لیکھک آرنسٹ جونس' سمپادک شری اسنیہانشو کانت آچاریہ اور شری مہا دیو پرساد ساہا' پرکاشک ایسٹرن ٹریڈنگ کمپنی' 46 A' دھرم تلہ اسٹریٹ' کلکتہ 13' قیمت تین روپیہ' پرشٹھ سنکھیا 55 .

چارٹسٹ نیتا ارنیسٹ چارلس جونس کا مشہور کاویہ گرنتھ 'ریولٹ آف ہندستان' کا یہ ہندستانی ایڈیشن بڑے موقع سے چھاپ کر پرکاشت کیا گیا جب کہ ملک سن 1857 کی شتابدی منا رہا تھا۔ کویتا کے ساتھ ساتھ جونس کے سن 1857 کے متعلق لیکھ بھی پستک کے آخیر میں دیئے گئے ہیں . سمپادک اپنی بھومیکا میں لکھتے ہیں:—"جب کہ ہندستان میں دیش بھر میں سن 1857 کی شتابدی منائی جا رہی ہے یہ یاد کر کے خوشی ہوتی ہے کہ کم سے کم ایک انگریز تو تھا جو 1857 کے ودروہ کو نہ کیول مناسب اور ٹھیک سمجھتا تھا بلکہ اسے ہو کے رہنے والی گھٹنا مانتا تھا ." جونس 26 جنوری 1819 کو پیدا ہوا اور 26 جنوری 1869 کو مرا . جونس نے برٹش شاشن نیتی کی زبردست مخالفت کی . اس کے ودروہی وچاروں کے سبب اسے 6 جون سن 1848 کو گرفتار کر لیا گیا اور 9 جولائی سن 1856 تک اسے جیل میں رہنا پڑا . جس کال کوٹھری میں اسے تنہائی میں رکھا گیا وہ 31 فٹ لمبی اور صرف 6 فٹ چوڑی تھی . اتنی کھلی ہوئی تھی کہ بارش کا پانی اور برفیلے طوفانوں کے "تھپیڑے ادھر سے ادھر نکل جاتے تھے . جونس کی صحت بےحد خراب ہو گئی . وہیں اس کال کوٹھری میں جونس نے 'دی نیو ورلڈ' نام کی کویتا لکھی جو بعد میں سن 1857 میں 'دی ریولٹ آف ہندستان آر نیو ورلڈ' نام سے چھپ کر شائع ہوئی . جیل میں لکھنے کا سامان نہیں تھا . جونس نے ایک پرانی کتاب کے حاشیوں پر اپنے خون سے وہ کویتا لکھی . پوری کی پوری نظم بےحد سندر ہے . ایک نمونہ دیکھیں:—

में नफंसना. हिन्दू और मुसलमान भाइयो, अपने छोटे-छोटे तफरकों को भूल जाओ और मैदाने-जंग में एक झंडे के नीचे खड़े हो जाओ. जो भी शख्स इस क़ौमी जंग की मुखालफ़त करेगा वह खुद अपने सर पर कुल्हाड़ी मारेगा और ख़ुदकुशी का गुनाह करेगा."

इस नोट से यह साफ़ होजाता है कि देश की सियासी तसवीर उस समय भी लोगों के सामने उतनी ही साफ़ थी कि जितनी आज है.

दिल्ली के घेरे के दिनों में इनक़लाबी नेताओं में आपस में सख्त तफ़रके पैदा हो गये थे. इसका इशारा 'पयामे अज़ादी' में छपी सम्राट बहादुरशाह 'ज़फ़र' की एक नज़्म के इस शेर से मिलता है:—

"क़फ़स में है क्या फ़ायदा शोरो गुल से'
असीरो करो कुछ रिहाई की बातें'."

अखबार के ग्राहक फाँसी के तख़्ते पर

ऊपर के बयान से यह साफ़ है कि 'पयामे आज़ादी' बिलाशक भारत का सब से पहला राष्ट्रीय पत्र था. सर विलियम हावर्ड ने लिखा है कि "दिल्ली पर कबजा करने के बाद 'पयामे आज़ादी' के सम्पादक मिरज़ा बेदारबख्त के बदन पर सुअर की चरबी मलकर उन्हें फाँसी दे दी गयी. सर हेनरी काटन अपनी पुस्तक 'इंडियन ऐन्ड होम मेमायर्स' में लिखते हैं कि "अंग्रेजों के दिल्ली पर क़ब्ज़ा करने के बाद वे सभी लोग फाँसी पर लटका दिये जाते थे जिनके घरों में 'पयामे आज़ादी' का कोई नम्बर मिलता था. दुनिया के अख़बारी इतिहास में शायद किसी भी अख़बार के पाठकों को पाठक होने के अपराध की ऐसी ज़ालिमाना सज़ा न मिली होगी.

میں نہ پھنسنا ۔ ھندو اور مسلمان بھائیو' اپنے چھوٹے چھوٹے تفرقوں کو بھول جاؤ اور میدان جنگ میں ایک جھنڈے کے نیچے کھڑے ھو جاؤ ۔ جو بھی شخص اِس قومی جنگ کی مخالفت کریگا وہ خود اپنے سر پر کلہاڑی ماریگا اور خودکشی کا گناہ کریگا ۔"

اِس نوٹ سے یہ صاف ھو جاتا ھے کہ دیش کی سیاسی تصویر اُس سمے بھی لوگوں کے سامنے اتنی صاف تھی کی جتنی آج ھے ۔

دلی کے گھیرے کے دنوں میں انقلابی نیتاؤں میں آپس میں سخت تفرقے پیدا ھو گئے تھے ۔ اِس کا اِشارہ 'پیام آزادی' میں چھپی سمراٹ بہادر شاہ 'ظفر' کی ایک نظم کے اِس شعر سے ملتا ھے ۔

"قفس میں ھے کیا فائدہ شور و غل سے؛
اسیرو کرو کچھ رہائی کی باتیں ۔"

اخبار کے گاھک پھانسی کے تختے پر

اُوپر کے بیان سے یہ صاف ظاھر ھے کہ 'پیام آزادی' بلاشک بھارت کا سب سے پہلا راشٹری پتر تھا ۔ سر ولیم ھاورڈ نے لکھا ھے کہ "دلی پر قبضہ کرنے کے بعد 'پیام آزادی' کے سمپادک مرزا بیدار بخت کے بدن پر سور کی چربی مل کر انہیں پھانسی دے دی گئی ۔" سر ھینری کاٹن اپنی پستک 'انڈین اینڈ ھوم میمایرس' میں لکھتے ھیں کہ "انگریزوں کے دلی پر قبضہ کرنے کے بعد وے سبھی لوگ پھانسی پر لٹکا دیئے جاتے تھے جن کے گھروں میں 'پیام آزادی' کا کوئی نمبر ملتا تھا ۔" دنیا کے اخباری اتہاس میں شاید کسی بھی اخبار کے پاٹھکوں کو پاٹھک ھونے کے اپرادھ کی ایسی ظالمانہ سزا نہ ملی ھو گی ۔

बहादुरशाह का ऐलान

'लन्दन टाइम्स'ने सर विलियम रसल को ही सन 1956 के जंगे आजादी की रिपोर्ट देने के लिए अपना खास संवाददाता बनाकर यहाँ भेजा था. उन्होंने 'लन्दन टाइम्स' के सम्पादक जान डिलेन के नाम लखनऊ से अपने एक पत्र के साथ 'पयामे आजादी' में प्रकाशित सम्राट बहादुरशाह का एक ऐलान भी भेजा था जिसे पढ़कर इसमें जरा भी शुबहा नहीं रह जाता कि सन 57 का युद्ध भारत की स्वाधीनता का संग्राम था और 'पयामे आजादी' उस युद्ध का मुख पत्र था. वह ऐलान इस प्रकार है:—

'हिन्दुस्तान के हिन्दुओं और मुसलमानों' उठो! भाइयों, उठो! ख़ुदा ने इनसान को जितनी बरकतें अता की हैं उनमें सब से कीमती बरकत आजादी की है. वह जालिम नाकस जिसने धोका दे दे कर हम से यह बरकत छीन ली है क्या हमेशा के लिए हमें उससे महरूम रख सकेगा? क्या ख़ुदा की मरजी के खिलाफ इस तरह का काम हमेशा जारी रह सकता है? नहीं, कभी नहीं, फिरंगियों ने इतने ज़ुल्म किये हैं कि उनके गुनाहों का प्याला लबरेज हो चुका है... ख़ुदा अब नहीं चाहता कि तुम खामोश रहो क्योंकि उसने हिन्दुओं और मुसलमानों के दिलों में अंग्रेजों को अपने वतन से बाहर निकालने की ख्वाहिश पैदा कर दी है और ख़ुदा के फ़ज्ल से और तुम लोगों की बहादुरी से जल्द ही अंग्रेजों को इतनी कामिल शिकस्त मिलेगी कि हमारे इस मुल्क हिन्दुस्तान में उनका जरा भी निशान न रह जायगा. हमारी इस फौज में छोटे बड़े की कोई तमीज न होगी. सब के साथ बराबरी का बर्ताव किया जायगा. इस पाक जंग में शरीक होने वाले सब आपस में भाई-भाई हैं. उनमें छोटे-बड़े का कोई फ़र्क़ नहीं. मैं अपने तमाम हिन्दी भाइयों से दरखास्त करता हूँ कि वह ख़ुदा के बताये हुए इस पाक फ़र्ज़ को पूरा करने के लिए मैदाने जंग में कूद पड़े."

जी० बी० मालेसन ने अपनी पुस्तक 'दि रेड पैम्फ़्लेट' में 'पयामे आजादी' के एक सम्पादकीय नोट का जिक्र किया है जिसमें लिखा है कि "हिन्द के बाशिन्दों. अरसे से जिसका इन्तजार था आजादी की वह पाक घड़ी आन पहुँची है......हिन्दुस्तान के बाशिन्दे अब तक धोखे में आते रहे और अपनी ही तलवारों से अपने ही गले काटते रहे. अब हमें मुल्क फरोशी के इस गुनाह का कुफ्फारा (प्रायश्चित) करना चाहिये. अंग्रेज अब भी अपनी पुरानी दग़ाबाजी से काम लेंगे. वे हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ और मुसलमानों को हिन्दुओं के खिलाफ उभारने की कोशिश करेंगे. लेकिन भाइयों, उनके जाल और फरेबों

ادر شاہ کا اعلان

"لندن ٹائمس' نے سر ولیم رسل کو ہی سن 1958 کی
نگ آزادی کی رپورٹ دینے کے لئے اپنا خاص سنوادداتا بنا کر
ں بھیجا تھا. اُنہوں نے لندن 'ٹائمس' کے سمپادک جان ڈیلین
نام لکھنؤ سے ایک پتر کے ساتھ پیام آزادی' میں پرکاشت
راٹ بہادر شاہ کا ایک اعلان بھی بھیجا تھا. جسے پڑھ کر
ں میں ذرا بھی شبہ نہیں رہ جاتا تھا کہ سن '57 کا یدھ
ارت کی سوادھینتا کا سنگرام تھا اور 'پیام آزادی' اُس یدھ کا
ھ پتر تھا. وہ اعلان اِس پرکار ہے .

"ہندستان کے ہندو اور مسلمانو' اٹھو! بھائیو اٹھو! خدا
اِنسان کو جتنی برکتیں عطا کی ہیں اِن میں سب سے
متی برکت آزادی کی ہے . وہ ظالم ناکس جس نے دھوکا
ے کر ہم سے یہ آزادی چھین لی ہے کیا ہمیشہ کے لئے ہمیں
ں سے محروم رکھ سکیگا ؟ کیا خدا کی مرضی کے خلاف اِس
ح کا کام ہمیشہ جاری رہ سکتا ہے ؟ نہیں' کبھی نہیں'
گیوں نے اتنے ظلم کئے ہیں کہ ان کے گناہوں کا پیالہ لبریز ہو
ا ہے...خدا اب نہیں چاہتا کہ تم خاموش رہو کیونکہ اس
ہندؤں اور مسلمانوں کے دلوں میں انگریزوں کو اپنے وطن
باہر نکالنے کی خواہش پیدا کر دی ہے اور خدا کے فضل اور
لوگوں کی بہادری سے جلد ہی انگریزوں کو اتنی کامل
ست ملیگی کہ ہمارے اِس ملک ہندستان میں ان کا ذرا
ی نشان نہ رہ جائیگا . ہماری اِس فوج میں چھوٹے بڑے کی
ی تمیز نہ ہوگی . سب کے ساتھ برابری کا برتاؤ کیا جائیگا .
ں پاک جنگ میں شریک ہونے والے سب آپس میں بھائی
ائی ہیں . ان میں چھوٹے بڑے کا کوئی فرق نہیں . میں
ہندی بھائیوں سے درخواست کرتا ہوں کہ وہ خدا کے بتائے
ے اِس پاک فرض کو پورا کرنے کے لئے میدان جنگ میں
د پڑیں ."

جی. جی. مالیسن نے اپنی پستک 'دی ریڈ پمفلیٹ' میں
یام آزادی' کے ایک سمپادکی نوٹ کا ذکر کیا ہے جس میں
ا ہے کہ "ہند کے باشندے . عرصے سے جس کا انتظار تھا آزادی
، وہ پاک گھڑی آن پہنچی ہے...ہندستان کے باشندے اب
ک دھوکے میں آتے رہے اور اپنی تلواروں سے اپنے ہی گلے کاٹتے
، . اب ہمیں ملک فروشی کے اِس گناہ کا کفارہ 'پرائشچت'
ا چاہئے . انگریز اب بھی اپنی پرانی دغابازی سے کام لینگے .
ہندؤں کو مسلمانوں کے خلاف اور مسلمانوں کو ہندؤں کے
اف ابھارنے کی کوشش کرینگے . لیکن بھائیو' اُن کے جال فریبوں

मैदान में हुई थी. उन्होंने अपनी पुस्तक 'दि वॉर इन क्रीमिया' में अजीमुल्ला की बाअसर शख़्सीयत का रोचक ढंग से ज़िक्र किया है. उन्होंने लिखा है कि 'भारत में राजनीतिक अख़बारों के न होने से अजीमुल्ला चिन्तित थे. उनके कुछ अख़बारी बयानों की चर्चा करते हुए सर विलियम ने लिखा है कि 'अनेक यूरोपीय और एशियाई भाषाओं से वाक़िफ़ भारतीय आज़ादी के इस सन्देशवाहक में पत्रकार की वे सभी ख़ासियतें मौजूद थीं जो उन्हें यूरोप की किसी प्रमुख भाषा का मशहूर और बाअसर अख़बार नवीस बना सकती थीं.

ऐतिहासिक सिलसिले की वे कड़ियाँ टूट गई हैं जो यह बतातीं कि भारत वापस आकर अजीमुल्ला ने कौन सा ख़ास कार्यक्रम अपने हाथों में लिया, पर 'पयामे आजादी' के जो नम्बर ब्रिटिश संग्रहालय में सन् १९३६ तक सुरक्षित थे उनसे पता चलता है कि 'पयामे आजादी' के तीसरे नम्बर में भारतीय नरेशों की एकता के मुताल्लिक अज़ीमुल्ला का एक बयान छपा था. इन्हीं अंकों से यह पता चलता है कि भारत के इस सब से पहले और सच्चे राष्ट्रीय पत्र का प्रकाशन फ़रवरी सन १८५७ के क़रीब शुरू हुआ था और मिरज़ा बेदारबख़्त के दस्तख़ती परवाने से यह छपा करता था. यानी आजकल के माइनों में बादशाह के हुक्म से मिरज़ा बेदारबख़्त इस पत्र के 'सम्पादक, मुद्रक और प्रकाशक' थे.

'पयामे आजादी' के नम्बरों से सन 1757 के स्वाधीनता संग्राम पर ख़ासी अच्छी रोशनी पड़ती है. सन 1858 में लन्दन से छपी हुई 'दि नैरेटिव आफ दि इंडियन रिवोल्ट' नामक पुस्तक में 'पयामे आजादी' का एक उद्धरण दिया हुआ है जिसमें रुहेलखंड की पल्टनों से आजादी की जंग में शामिल होने की अपील की गई थी. उसमें लिखा है :—

"भाइयो, दिल्ली में फिरंगियों के साथ आजादी की जंग हो रही है. अल्लाह की दुआ से हमने उन्हें जो पहली शिकस्त दी है उससे वह इतना घबरा गये हैं जितना किसी दूसरे वक़्त वह दस शिकस्तों से भी न घबराते. बेशुमार हिन्दुस्तानी बहादुर दिल्ली में आन-आन कर जमा हो रहे हैं. ऐसे मौक़े पर अगर आप वहाँ खाना खा रहे हैं तो हाथ यहाँ आ कर धोइये. हमारे कान इस तरह आप की ओर लगे हुए हैं जिस तरह रोज़ेदारों के कान मुअज़्ज़िन की अज़ान की तरफ़ लगे रहते हैं. हम आप की तोपों की आवाज़ सुनने के लिए बेचैन हैं. हमारी आँखें आपके दीदार की प्यासी सड़क पर लगी हुई हैं. आपका फ़र्ज़ है कि फ़ौरन आइये. हमारा घर आपका घर है. बिना आपकी आमद के बहार के गुलाब में फूल नहीं आ सकते."

میدان میں ہوئی تھی. انہوں نے اپنی پستک 'دی وار اِن کریمیا' میں عظیم اللہ کی باأثر شخصیت کا روچک ڈھنگ سے ذکر کیا ہے . انہوں نے لکھا ہے کہ "بھارت میں راج نیتک اخباروں کے نہ ہونے سے عظیم اللہ چنتت تھا." اُن کے کچھ اخباری بیانوں کی چرچا کرتے ہوئے سرولیم نے لکھا ہے کہ "انیک یوروپی اور ایشیائی بھاشاؤں سے واقف بھارتیہ آزادی کے اِس سندیش واہک میں پترکار کی وہ سبھی خاصیتیں موجود تھیں جو انہیں یوروپ کی کسی پرمکھ بھاشا کا مشہور اور باأثر اخبار نویس بنا سکتی تھیں .

ایتہاسک سلسلے کی وہ کڑیاں ٹوٹ گئی ہیں جو یہ بتاتیں کہ بھارت واپس آکر عظیم اللہ نے کون سا خاص کاریہ کرم اپنے ہاتھوں میں لیا' پر 'پیام آزادی کے جو نمبر برٹش سنگرہالیہ میں سن 1936 تک' سورکشت تھے اُن سے پتہ چلتا ہے کہ 'پیام -آزادی' کے تیسرے نمبر میں بھارتی نریشوں کی ایکتا کے متعلق عظیم اللہ کا ایک بیان چھپا تھا . اِنہیں انکوں سے یہ پتہ چلتا ہے کہ بھارت کے اِس سب سے پہلے اور سچے راشٹری پتر کا پرکاشن فروری سن 1857 کے قریب شروع ہوا تھا اور مرزا بیدار بخت کے دستخطی پروانے سے یہ چھپا کرتا تھا . یعنی آج کل کے معنوں میں بادشاہ کے حکم سے مرزا بیدار بخت اِس پتر کے 'سمپادک مدرک' اور پرکاشک تھے .

'پیام آزادی' کے نمبروں سے سن 1857 کے سوادھینتا سنگرام پر خاصی اچھی روشنی پڑتی ہے . سن 1858 میں لندن سے چھپی ہوئی 'دی اِنڈین ریولٹ' نامک پستک میں 'پیام آزادی' کا ایک اداہرن دیا ہوا ہے جن میں روہیلکھنڈ کی پلٹنوں سے آزادی کی جنگ میں شامل ہونے کی اپیل کی گئی تھی . اُس میں لکھا ہے—

"بھائیو" دلی میں فرنگیوں کے ساتھ آزادی کی جنگ ہو رہی ہے . اللہ کی دعا سے ہم نے جو اُنہیں پہلی شکست دی ہے اس سے وہ اِتنا گھبرا گئے ہیں جتنا کسی دوسرے وقت وہ دس شکستوں سے بھی نہ گھبراتے . بےشمار ہندستانی بہادر دلی میں آن آن کر جمع ہو رہے ہیں . ایسے موقع پر اگر آپ کھانا کھا رہے ہوں تو ہاتھ یہاں آ کر دھوئیے . ہمارے کان اِس طرح آپ کی اور لگے ہوئے ہیں جس طرح روزے داروں کے کان موذن کی اذان کی طرف لگے رہتے ہیں . ہم آپ کی توپوں کی آواز سننے کے لئے بےچین ہیں . ہماری آنکھیں آپ کی دیدار کی پیاسی سڑک پر لگی ہوئی ہیں . آپ کا فرض ہے کہ فوراً آئیے . ہمارا گھر آپ کا گھر ہے . بنا آپ کی آمد کے بہار کے گلاب میں پھول نہیں آسکتے ."

सन् १८५७ से लेकर सन् १९३० तक भारत के वतन परस्त अखबारों की तरक्क़ी का इतिहास कमोबेश भारतीय राष्ट्रीयता की तरक्क़ी का इतिहास समझा जा सकता है. इस लम्बे दौर में एक ओर भारतीय पत्रकारों को अगर रुपये पैसों की जबरदस्त दिक़्क़त का सामना करना पड़ा तो दूसरी ओर भयंकर सरकारी दमन का भी. फिर भी जिस निडरता के साथ त्यागमय सेवाभाव लेकर भारतीय पत्रकारों ने नागरिक स्वाधीनता, विचारों की आज़ादी और राजनीतिक आज़ादी के भावों का प्रचार किया वह संसार की पत्रकार कला के इतिहास का एक शानदार अध्याय है देशव्यापी कोशिशों से आज़ादी का जो चमकदार भवन आज हम अपने देश में तामीर कर रहे हैं उसकी नींव में शहीदों के साथ-साथ पत्रकारों के भी अस्थिपंजर पड़े हुए हैं. सन् १९०५ से लेकर सन् १९३० ई० तक भारतीय अख़बार नवीसी और वतन परस्ती दोनों का एक ही मतलब रहा है.

'पयामे आज़ादी'

सच्चे अर्थ में जो सब से पहला राष्ट्रीय पत्र हमारे देश में प्रकाशित हुआ वह 'पयामे आज़ादी' था. यह फ़रवरी १८५७ से दिल्ली में छपना और शाये होना शुरू हुआ. यह नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लीथो पर छपा करता था. पर इसके प्रकाशन की कोई तै शुदा तारीखें न थीं. कभी सवेरे छपता था तो कभी शाम को, कभी रोज़ छपता था तो कभी एक दिन के अंतर पर. इस पत्र के प्रकाशन की योजना नाना साहब धुन्धपन्त के मंत्री और सलाहकार तथा सन् १८५७ की महान् क्रांति के संयोजक अज़ीमुल्ला ने बनाई थी. सितम्बर सन् १८५७ में झाँसी से 'पयामे आज़ादी' का एक मराठी एडीशन भी प्रकाशित होने लगा था. उसकी केवल एक ही कापी ब्रिटिश म्यूज़ियम में मिलती है.

सन् १८५४ में अज़ीमुल्ला पेशवा नानासाहब के वकील की हैसियत से विलायत गये थे, पर उनका असली मक़सद यूरोप के जनमत को भारतीय स्वाधीनता का समर्थक बनाना था और रूस तथा इटली से ख़ास तौर पर जंगे इनक़लाब के लिये हथियारों और सैनिकों की सहायता हासिल करना था. अपने इसी सफ़र में अज़ीमुल्ला ने यूरोपीय भाषाओं के कई अख़बारों के ज़रिये भारतीय आज़ादी के सवाल को यूरोपीय जनता के सामने रखा था. ग़ालिबन इसी सफ़र में उन्होंने 'पयामे आज़ादी' के लिए प्रेस आदि का इन्तज़ाम भी किया था.

'लन्दन टाइम्स' के विशेष प्रतिनिधि सर विलियम हावर्ड रसल से अज़ीमुल्ला की भेंट क्रीमिया के लड़ाई के

سن 1857 سے لے کر سن 1930 تک بھارت کے وطن پرست اخباروں کی ترقی کا اِتہاس کم و بیش بھارتیہ راشٹریتا کی ترقی کا اِتہاس سمجھا جا سکتا ہے۔ اِس لمبے دور میں ایک اور بھارتیہ پترکاروں کو اگر روپئے پیسوں کی زبردست دقت کا سامنا کرنا پڑا تو دوسری اور بھیانکر سرکاری دمن کا بھی؛ پھر بھی جس نڈرتا کے ساتھ تیاگ مے سیوا بھاؤ لے کر بھارتیہ پترکاروں نے ناگرک سوادھینتا' وچاروں کی آزادی اور راج نیتک آزادی کے بھاؤں کا پرچار کیا وہ سنسار کی پترکار کلا کے اتہاس کا ایک شاندار ادھیائے ہے۔ دیش وباپی کوششوں سے آزادی کا جو چمکدار بھون آج ہم اپنے دیش میں تعمیر کر رہے ہیں اُس کی نیو میں شہیدوں کے ساتھ ساتھ پترکاروں کے بھی اِستھی پنجر پڑے ہوئے ہیں۔ سن 1905 سے لے کر سن 1930 عیسوی تک بھارتیہ اخبار نویسی اور وطن پرست دونوں کا ایک ہی مطلب ہے۔

'پیام آزادی'

سچے ارتھ میں جو سب سے پہلا راشٹریہ پتر ہمارے دیش میں پرکاشت ہوا وہ 'پیام آزادی' تھا۔ یہ فروری 1857 سے دلی میں چھپنا اور شائع ہونا ہوا۔ یہ ناگری اور اردو دونوں لپیوں میں لیتھو پر چھپا کرتا تھا۔ پر اِس کے پرکاشن کی کوئی طے شدہ تاریخیں نہ تھیں۔ کبھی سویرے چھپتا تھا تو کبھی شام کو' کبھی روز چھپتا تو کبھی ایک دن کے انتر پر۔ اِس پتر کے پرکاشن کی یوجنا نانا صاحب دھند پنت کے منتری اور صلاحکار تتھا سن 1857 کی مہان کرانتی کے سنیوجک عظیم اللہ نے بنائی تھی۔ ستمبر سن 1857 میں جھانسی سے 'پیام آزادی' کا ایک مراٹھی ایڈیشن بھی پرکاشت ہونے لگا تھا۔ لیکن اُس کی کیول ایک ہی کاپی برٹش میوزیم میں ملتی ہے۔

سن 1854 میں عظیم اللہ پیشوا نانا صاحب کے وکیل کی حیثیت سے ولایت گئے تھے۔ پر اُن کا اصلی مقصد یورپ کے جن مت کو بھارتیہ سوادھینتا کا سمرتھک بنانا تھا اور روس تتھا اٹلی سے خاص طور پر جنگ انقلاب کے لئے ہتھیاروں اور سینکوں کی سہائیتا حاصل کرنا تھا۔ اپنے اِسی سفر میں عظیم اللہ نے یورپی بھاشاؤں کے کئی اخباروں کے ذریعہ بھارتیہ آزادی کے سوال کو یورپی جنتا کے سامنے رکھا تھا۔ غالباً اِسی سفر میں انہوں نے 'پیام آزادی' کے لئے پریس آدی کا انتظام بھی کیا تھا۔

'لندن ٹائمس' کے وشیش پرتیندھی سر ولیم ہاورڈ رسل سے عظیم اللہ کی بھینٹ کریمیا کے لڑائی کے

एक दिन एक फिरंगी रंगून की सड़क पर जा रहा था. उसे मालूम न था कि बादशाह का मज़ार वहीं पर है. उसे उसने एक मिट्टी का टीला समझकर "बूट" की एक ठोकर जमा दी. उस बेचारे को क्या मालूम था कि एक आज़ादी का पुजारी उसमें हमेशा की नींद सो रहा है.

हमारे हर दिल अज़ीज़ नेताजी सुभाष जब रंगून गये तब उस मज़ार की मिट्टी को उन्होंने अपने माथे पर लगाया और शहीद बहादुरशाह की क़ब्र पर लिपटकर अक़ीदत (भक्ति) के आँसू चढ़ाये. बहुत देर तक वे आंसू बहाते रहे, हां, बहादुर हमेशा बहादुर की इज़्ज़त करता है! भारत के हिन्दू मुसलमान भाइयों को बहादुरशाह की बहादुरी पर नाज़ (गर्व) होना चाहिये.

हिन्दू मुसलिम एकता ज़िन्दाबाद!
शहीदे आज़म बहादुरशाह ज़िन्दाबाद!

ایک دن ایک فرنگی رنگون کی سڑک پر جا رہا تھا۔ اسے معلوم نہ تھا کہ بادشاہ کا مزار وہیں پر ہے۔ اسے اس نے ایک مٹی کا ٹیلہ سمجھ کر "بوٹ" کی ایک ٹھوکر جما دی۔ اس بیچارے کو کیا معلوم تھا کہ ایک آزادی کا پجاری اس میں ہمیشہ کی نیند سو رہا ہے۔

ہمارے ہر دلعزیز نیتا جی سوبھاش جب رنگون گئے تب اس مزار کی مٹی تو انہوں نے ماتھے پر لگایا اور شہید بہادرشاہ کی قبر پر لپٹ کر عقیدت (بھکتی) کے آنسو چڑھائے۔ بہت دیر تک وے آنسو بہاتے رہے۔ ہاں، بہادر ہمیشہ بہادر کی عزت کرتا ہے! بھارت کے ہندو مسلمان بھائیوں تو بہادر شاہ کی بہادری پر ناز (گرو) ہونا چاہئے۔

ہندو مسلم ایکتا زندہباد!
شہید اعظم بہادرشاہ زندہ باد!

१८५७ का देशभक्त अख़बार 'पयामे आज़ादी'

विश्वम्भरनाथ पांडे

भारत की आज़ादी की लड़ाई के लम्बे दौर में भारतीय समाचार पत्रों, ख़ासकर देशी भाषाओं के समाचार पत्रों का सहयोग उतना ही शानदार है जितना कि उसके लिये आत्मबलि देने वाले शहीदों का। आज़ादी के इतिहास के पन्नों में उनके सहयोग का ज़िक्र अकसर किया नहीं जाता. सच तो यह है कि आज़ादी की शानदार इमारत की नींव में शहीदों के साथ अनेक शहीद पत्रकारों की भी हड्डियाँ पड़ी हुई हैं. १८५७ के ऐसे एक बहादुर अख़बार के बलिदान की अमर कहानी यहाँ दी जा रही है, जबकि अनेक शहीदों की यादगारें जहाँ तहाँ खड़ी की जा रही हैं तब क्या इस साथी पत्रकार की कोई यादगार खड़ी नहीं की जा सकती?

1857 کا دیش بھکت اخبار 'پیام آزادی'

وشمبھر ناتھ پانڈے

بھارت کی آزادی کی لڑائی کے لمبے دور میں بھارتیہ سماچار پتروں، خاص کر دیشی بھاشاؤں کے سماچار پتروں کا سہیوگ اتنا ہی شاندار ہے جتنا کہ اس کے لئے آتم بلی دینے والے شہیدوں کا آزادی کے اتہاس کے پنوں میں ان کے سہیوگ کا ذکر اکثر کیا نہیں جاتا۔ سچ تو یہ ہے کہ آزادی کی شاندار عمارت کی نیو میں شہیدوں کے ساتھ انیک شہید پترکاروں کی بھی ہڈیاں پڑی ہوئی ہیں۔ 1857 کے ایسے ایک بہادر اخبار کے بلیدان کی امر کہانی یہاں دی جا رہی ہے۔ جب کہ انیک شہیدوں کی یادگاریں جہاں تہاں کھڑی کی جا رہی ہیں تب کیا اس ساتھی پترکار کی کوئی یادگار کھڑی نہیں کی جا سکتی!

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

शाह के ख़यालों से ख़ूब वाक़िफ़ थे. बहादुर शाह ने चारों तरफ़ फ़रमान भेजे. वे लोग अपने वतन की इज़्ज़त व आबरू बचाने के लिये तलवार की धार पर चलने को भी तैयार थे. "चाहे जान ही चली जाय मगर आन नहीं" यही उनका उसूल था. उन लोगों की जद्दोजहद से ही सिपाहियों की आज़ादी की लड़ाई शुरू हो गयी ! फ़िरंगियों की नज़र में यह "ग़दर" था "म्यूटिनी" थी ! मगर आज़ादी के मतवालों के लिये यह "जंगे आज़ादी" का पहला क़दम था. इसने हिन्दुस्तान की तवारीख़ को और भी रौशन कर दिया था ! फ़िरंगियों के साथ लड़ाई होने लगी. लेकिन हुआ क्या ? "घर का भेदी लंका ढावे" वाली मसल सच निकली ! बादशाह का समधी इलाही बख़्श फ़िरंगियों से मिल गया. उनकी चालों से बादशाह तंग आ चुके थे और आख़िर हुमायूँ के मक़बरे में गिरफ़्तार कर लिये गये.

उनकी गिरफ़्तारी के बाद हडसन ने बादशाह के बेटों को गोली मार दी.

बादशाह के बेटों के सिर एक तश्त में रख कर हडसन उन्हें बादशाह के सामने ले गया और कहा—"बादशाह सलामत की ख़िदमत में कम्पनी की ओर से यह नज़र पेश है !" उस ज़ालिम ने ढंके सिरों पर से कपड़ा हटा दिया ! बादशाह ने मुँह फेर कर कहा—"अलहम्दोलिल्लाह ! (ईश्वर महान है) तैमूर की औलाद इसी तरह सुर्ख़रू (प्रतिष्ठित) होकर अपने बाप के सामने आया करती थी !"

देश के दुश्मनों ने कहा—

"दमदमों में दम नहीं अब ख़ैर माँगो जान की !
ऐ ज़फ़र ठंडी हुई शमशीर हिन्दुस्तान की !

बादशाह ने जवाब दिया—

"ग़ाज़ियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की,
तख़्ते लन्दन तक चलेगी, तेग़ हिन्दुस्तान की !"

बादशाह गिरफ़्तार हुए और रंगून भेजे गये. वहाँ उन पर जो कुछ बीती वह बयान से बाहर है. उनकी हालत पर पत्थर भी रो देगा. उनको दाने-दाने के लिये तरसना पड़ा ! रंगून में बादशाह में एक बड़ा तग़य्युर (परिवर्तन) हुआ, तब का एक शेर सुनिये—

"पसे मर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किसू ने जला दिया,
उसे आह दामने बाद ने सरे शाम से ही बुझा दिया.
मेरी आँख झपकी थी एक पल, तभी दिल ने कहा कहीं उठके चल,
दिले बेक़रार ने आनकर मुझे चुटकी लेके जगा दिया,
पसे मर्ग क़ब्र पै ऐ 'ज़फ़र' पढ़े फ़ातिहा कोई आनकर
वो जो टूटी क़ब्र का था निशाँ उसे ठोकरों से मिटा दिया

شاہ کے خیالوں سے خوب واقف تھے . بہادر شاہ نے چاروں طرف فرمان بھیجے . وے لوگ اپنے وطن کی عزت وآبرو بچانے کے لئے تلوار کی گھاٹ پر چلنے کو بھی تیار تھے . چاہے جان ہی چلی جائے مگر آن نہیں" یہی اُن کا اصول تھا . اُن لوگوں کی جدو جہد سے ہی سپاہیوں کی آزادی کی لڑائی شروع ہو گئی ! فرنگیوں کی نظر میں یہ "غدر" تھا "میوٹنی" تھی ! مگر آزادی کے متوالوں کے لئے یہ "جنگ آزادی کا" پہلا قدم تھا . اِس نے ہندستان کی تواریخ کو اور بھی روشن کر دیا تھا ! فرنگیوں کے ساتھ لڑائی ہونے لگی . لیکن ہوا کیا ؟ "گھر کا بھیدی لنکا ڈھا وے" والی مثل سچ نکلی ! بہادر شاہ کا سمدھی الٰہی بخش فرنگیوں سے مل گیا . اُن کی چالوں سے بہادر شاہ تنگ آچکے تھے اور آخر ھمایوں کے مقبرہ میں گرفتار کر لئے گئے .

اُن کی گرفتاری کے بعد هڈسن نے بادشاہ کے بیٹوں کو گولی ماردی . بادشاہ کے بیٹوں کے سر ایک طشت میں رکھ کر هڈسن انھیں بادشاہ کے سامنے لے گیا اور کہا—"بادشاہ سلامت کی خدمت میں کمپنی کی اور سے یہ نذر پیش ہے !" اُس ظالم نے ڈھکے سروں پر سے کپڑا ھٹا دیا ! بادشاہ نے منھ پھیر کر کہا—"الحمداللہ !"

("ایشور مہان ھے") تیمور کی اولاد اِسی طرح سرخرو (پرتشٹھت) ھو کر اپنے باپ کے سامنے آیا کرتی تھی !

"دمدموں میں دم نہیں اب خیر مانگو جان کی !
لو ظفر ٹھنڈی ھوئی شمشیر ھندستان کی !"

بادشاہ نے جواب دیا—

دیش کے دشمنوں نے کہا—

"غازیوں میں بو رھیگی جب تلک ایمان کی،
تخت لندن تک چلیگی تیغ ھندستان کی !"

بادشاہ گرفتار ھوئے اور رنگون بھیجے گئے . وھاں اُن پر جو کچھ بیتی وہ بیان سے باہر ھے . اُن کی حالت پر پتھر بھی رو دیگا . اُن کو دانے دانے کے لئے ترسنا پڑا ! رنگون میں بادشاہ میں ایک بڑا تغیر (پریورتن) ھوا . تب کا ایک شعر سنیئے—

پس مرگ میرے مزار پر جو دیا کسو نے جلا دیا'
اُسے آہ دامن باد نے سر شام سے ھی بجھا دیا .
میری آنکھ جھپکی تھی ایک پل' تبھی دل نے کہا
کہیں اُٹھ کے چل'
دل بیقرار نے آن کر مجھے چٹکی لے کے جگا دیا .
پس مرگ قبر پہ اے 'ظفر' پڑھے فاتحہ کوئی آن کر' .
وہ جو ٹوٹی قبر کا تھا نشاں اُسے ٹھوکروں سے مٹا دیا .

बहादुरशाह बराये नाम बादशाह थे. अपनी ज़िन्दगी की शुरूआत में ही वे रंजोग़म के शिकार हो चुके थे. उनके वालिद (पिता) भी उनसे नाराज़ थे. वे अपने दूसरे फरज़न्द (पुत्र) को 'राजगद्दी' देना चाहते थे. इसलिये बहादुरशाह को घर से अलग रहना पड़ा. वे "फ़न व हिकमत" (कला-कारी) के क़द्रदाँ थे. वे उस्ताद ज़ौक़ के शागिर्द थे. बहादुरशाह की शायरी में निजी मजबूरियों की झलक दीख पड़ती है—

"मेरी आँख बंद थी जब तलक,
वह नज़र में नूरे-जमाल था,
खुली आँख तो न ख़बर रही,
कि वह ख़्वाब था कि ख़्याल था.
मेरे दिल में था कि कहूँगा मैं,
जो यह दिल पै रंजो-मलाल है,
वह जब आ गया मेरे सामने,
न तो रंज था न मलाल था."

बहादुरशाह की बेबसी के दिनों में उनकी बेगम ज़ीनत-महल ही मदद देती थीं. बेगम सियासत की गुत्थी ठीक-ठीक सुलझाती थी. इसीलिये अंग्रेज़ उनसे ख़बरदार थे.

बेगम ज़ीनतमहल ने अपने प्यारे बादशाह के लिये अपने ऐश-व-आराम को छोड़ दिया था. वे बहादुरशाह के साथ इन्क़लाब में कूद पड़ीं और जेल मे क़ैद रहकर आख़िरी दम तक बहादुरशाह के साथ मुसीबतें झेलीं.

बहादुरशाह का बेटा जवाँबख़्त था, जो अंग्रेज़ों की चालबाज़ी और मक्कारी से ख़ूब वाक़िफ़ था. इसलिये अंग्रेज़ उससे जलते थे. इसलिये उसे वलीअहद मानने से उन्होंने इन्कार कर दिया. बादशाह के अँधेरे के दो चिराग़ थे. एक जवाँ बख़्त था और दूसरा ज़ीनत-महल! ज़ीनत-बेगम बादशाह की ज़िन्दगी में जगमगाता नूर बनकर चमकीं. जवाँबख़्त इनकी ज़िन्दगी का अरमान था. वे थे बराये नाम के बादशाह! उनको कोई आज़ादी न दी गयी. अंग्रेज़ों की यह करतूत बहदुरशाह की ख़ुद्दारी के लिये एक चैलेंज थी. लार्ड एलनबरो गवर्नर जनरल हुआ. उसने बादशाह को ईद और उनके जनम दिन में नज़र देने की जो रस्म थी, उसे बंद कर दिया. बादशाह की हालत बड़ी दर्द-नाक थी—

"उड़ाकर आशियाँ सर पर ने मेरा,
किया साफ़ इस क़दर तिनका न पाया!"

अब तक फ़िरंगियों का पैर ख़ूब जम चुका था. लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह का तख़्त छीन लिया गया! झाँसी का हक़ ठुकराया गया! अब भारत फिर से जाग उठा! नाना साहब की पेन्शन बंद हो चुकी थी. वे बहादुर

بہادر شاہ برائے نام بادشاہ تھے۔ اپنی زندگی کی شروعات میں ہی وہ رنج و غم کے شکار ہو چکے تھے۔ اُن کے والد (پتا) بھی اُن سے ناراض تھے۔ وہ اپنے دوسرے فرزند (پتر) کو راجگدی دینا چاہتے تھے۔ اِس لئے بہادر شاہ کو گھر سے الگ رہنا پڑا۔ وہ "فن و حکمت" (کلاکاری) کے قدرداں تھے۔

وہ استاد ذوق کے شاگرد تھے۔ بہادر شاہ کی شاعری میں نجی مجبوریوں کی جھلک دیکھ پڑتی ہے—

"میری آنکھ بند تھی جب تلک،
وہ نظر میں نور جمال تھا۔
کھلی آنکھ تو نہ خبر رہی،
کہ وہ خواب تھا کہ خیال تھا۔
میرے دل میں تھا کہ کہونگا میں،
جو یہ دل پہ رنج و ملال ہے۔
وہ جب آگیا میرے سامنے،
نہ تو رنج تھا نہ ملال تھا۔

بہادر شاہ کی بےبسی کے دنوں میں اُن کی بیگم زینت محل مدد دیتی تھیں۔ بیگم سیاست کی گتھی ٹھیک ٹھیک سلجھاتی تھی۔ اِس لئے انگریز اُن سے خبردار تھے۔ بیگم زینت محل ہی نے اپنے پیارے بادشاہ کے لئے اپنے عیش و آرام کو چھوڑ دیا تھا۔ وہ بہادر شاہ کے ساتھ انقلاب میں کود پڑی اور جیل میں قید رہ کر آخری دم تک بہادر شاہ کے ساتھ مصیبتیں جھیلیں۔

بہادر شاہ کا بیٹا جواں بخت تھا جو انگریزوں کی چال بازی اور مکاری سے خوب واقف تھا۔ اِس لئے انگریز اُس سے جلتے تھے۔ اِس لئے اسے ولی عہد ماننے سے اُنھوں نے انکار کر دیا۔ بادشاہ کے اندھیرے کے دو چراغ تھے۔ ایک جواں بخت تھا اور دوسرا زینت محل! زینت بیگم بادشاہ کی زندگی میں جگمگاتا نور بن کر چمکیں۔ جواں بخت اُن کی زندگی کا ارمان تھا۔ وہ تھے برائے نام کے بادشاہ۔ اُن کو کوئی آزادی نہ دی گئی۔ انگریزوں کی یہ کرتوت بہادر شاہ کی خود داری کے لئے ایک چیلنج تھی۔ لارڈ ایلن برو گورنر جنرل ہوا اِس نے بادشاہ کو عید اور اُن کے جنم دن میں نذر دینے کی جو رسم تھی اسے بند کر دیا۔ بادشاہ کی حالت بڑی دردناک تھی۔

"اڑا کر آشیانہ صرصر نے میرا۔
کیا صاف اِس قدر تنکا نہ پایا۔

اب تک فرنگیوں کا پیر خوب جم چکا تھا۔ لکھنؤ کے نواب واجد علی شاہ کا تخت چھین لیا گیا! جھانسی کا حق ٹھکرایا گیا! اب بھارت پھر سے جاگ اٹھا! نانا صاحب کی پنشن بند ہو چکی تھی۔ وہ بہادر

मैं ज़मीं की पीठ का बोझ हूँ,
मैं फ़लक के दिल का गुबार हूँ.
वो हँसी के दिन वो ख़ुशी के दिन,
गये 'हसरतें' बाक़ी रह गयीं,
कभी बादये जामे-नाज़ था,
मगर अब मैं उसका उतार हूँ."

अगर कोई सच्चा शायर शायराना-दिल लेके बहादुर शाह के मज़ार के पास टहलता हो तो वहाँ की सर्द हवा में यही आवाज़ सुनायी पड़ेगी! मामूली शायर को अपनी हैसियत ख़ूब मालूम है पर बहादुरशाह बादशाह थे, बाबर, अकबर और औरंगज़ेब के तख़्त-व-ताज को रौशन करने वाले थे. उन जैसे बादशाह को मामूली इनसान से ज़्यादा तकलीफ़देह ज़िन्दगी बसर करनी पड़ी हो तो उसका अंदाज़ा आसानी से लगा सकते हैं—

चारागर भर न सके मेरे जिगर के नासूर,
एक दर बंद किया दूसरा रौज़न निकला.

बहादुरशाह को 72 साल की उम्र में "राजगद्दी" मिली. वह भी कैसी? अकबरशाह के ज़माने में ही कम्पनी ने उनके हक़ो-हुक़ूक़ (अधिकार) को छीन लिया, जिन का "समझौता" कम्पनी के हाकिमों ने बादशाह शाहेआलम से किया था. अकबरशाह ने पैरवी के वास्ते राजा राम मोहन राय को वकील बनाकर इंगलिस्तान भेजा. वहीं राजा साहब का इन्तकाल हो गया, तो मामला ज्यों का त्यों रह गया. अकबर शाह की शिकस्त (हार) हो चुकी थी. अब अंग्रेज़ों ने और भी ज़ुल्म शुरू किये.

जब बहादुरशाह तख़्त पर बैठे, तब भी फ़िरंगियों का वही रवैया जारी रहा. ख़ास मौक़ों पर जो तोहफ़े (भेंट) नज़र के तौर पर बादशाह को दिये जाते थे, मौक़ूफ़ (बन्द) हो चुके थे. जब चार्ल्स मेटकाफ़ रेज़िडेन्ट हुआ, तो उसने सलाम, कोरनिश व मुजरा सब ख़त्म कर दिया. मुग़ल-सल्तनत के ज़वाल (अवनति) के दिन नज़दीक़ आ गये थे.

फ़िरंगियों ने जो बरबरता की था उसे बहादुरशाह जैसे आज़ादी के मतवाले कैसे बर्दाश्त कर सकते थे? उनकी उम्र ज़्यादा हो चुकी थी. बुढ़ापे के हाल में भी उन्होंने हिम्मत न हारी.

सुनिये तो सही—

यूँ ही तबीयत अपनी हविस पर लगी हुई,
मक्खी की जैसे ताक मगस पर लगी हुई.
आज़ाद कब करे हमें सैयाद देखिये,
रहती है आँख बादे-क़फ़स पर लगी हुई.

میں زمیں کی پیٹھ کا بوجھ ہوں'
میں فلک کے دل کا غبار ہوں ۔
وہ ہنسی کے دن وہ خوشی کے دن'
گئے حسرتیں باقی رہ گئی ۔
کبھی بادۂ جام ناز تھا'
مگر اب میں اُس کا اُتار ہوں ۔

اگر کوئی سچا شاعر شاعرانہ دل لے کے بہادر شاہ کے مزار کے پاس ٹہلتا ہو تو وہاں کی سرد ہوا میں یہی آواز سنائی پڑیگی! معمولی شاعر کو اپنی حیثیت خوب معلوم ہے پر بہادر شاہ بادشاہ تھے۔ بابر' اکبر اور اورنگزیب کے تخت و تاج کو روشن کرنے والے تھے، اُن جیسے بادشاہ کو معمولی انسان سے بھی زیادہ تکلیف دہ زندگی بسر کرنا پڑی ہو' تو اُس کا اندازہ آسانی سے لگا سکتے ہیں—

چارہ گر بھر نہ سکے میرے جگر کا ناسور'
ایک گر بند کیا دوسرا روزن نکلا ۔

بہادر شاہ کو 72 سال کی عمر میں "راجگدی" ملی ۔ وہ بھی کیسی؟ اکبر کے زمانے میں ہی کمپنی نے اُن حق و حقوق (ادھیکار) کو چھین لیا جن کا "سمجھوتہ" کمپنی کے حاکموں نے بادشاہ شاہ عالم سے کیا تھا ۔ اکبرشاہ نے پیروی کے واسطے راجا رام موہن رائے کو وکیل بنا کر انگلستان بھیجا ۔ وہیں راجہ صاحب کا انتقال ہو گیا' تو معاملہ جیوں کا تیوں رہ گیا ۔ اکبر شاہ کی شکست (ہار) ہو چکی تھی' اب انگریزوں نے اور بھی ظلم شروع کئے ۔

جب بہادرشاہ تخت پر بیٹھے' تب بھی فرنگیوں کا وہی رویہ جاری رہا ۔ خاص موقع پر جو تحفے (بھینٹ) نذر کی طور پر بادشاہ کو دیئے جاتے تھے' موقوف (بند) ہو چکے تھے ۔ جب چارلس میٹکاف ریزیڈینٹ ہوا تو اُس نے سلام' کورنش و مجرا سب ختم کر دیا ۔ مغل سلطنت کے زوال (اونتی) کے دن نزدیک آگئے تھے ۔

فرنگیوں نے جو بربرتا کی تھی اُسے بہادر شاہ جیسے آزادی کے متوالے کیسے برداشت کر سکتے تھے؟ اُن کی عمر زیادہ ہو چکی تھی ۔ بڑھاپے کے حال میں بھی اُنہوں نے ہمت نہ ہاری ۔

سنیئے تو سہی—

یوں ہی طبیعت اپنی ہوس پر لگی ہوئی'
مکھی کی جیسے تاک مگس پر لگی ہوئی ۔
آزاد کب کرے ہمیں صیاد دیکھئے'
رہتی ہے آنکھ باد قفس پر لگی ہوئی ۔

शुमाल हिन्द में भी झाँसी की रानी से लेकर भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, आदि शहीदों ने जंगे आज़ादी का ऐलान किया. हमारे सामने शहीदों में कोई फ़र्क़ नहीं है. सबों का मक़सद आज़ादी था !

बहादुरशाह भी आज़ादी के लिये काम आए. वे सल्तनते मुग़लिया के आख़िरी चिराग़ थे. वे बादशाह होते हुए भी वतन-परस्ती (देश-भक्ति) के शायर थे. उनकी शायरी में जोश था. जज़्बाती लहरें (भावना की तरंगें) उमड़ उठती थीं. बहादुरशाह के बारे में जानना हरेक का फ़र्ज़ है.

बहादुरशाह 'उर्दू' के एक ऊँचे शायर थे. उन्होंने "ज़फ़र" के तख़ल्लुस (उपनाम) से शेरो शायरी की. सब से ज़्यादा भारत की आज़ादी को क़ायम रखने के लिये उन्होंने जो .क़ुरबानी की थी वह हमेशा ज़िन्दा-जावेद (सदैव के लिये) रहेगी.

बहादुरशाह की शायरी में गहरे जज़बात थे और ज़िन्दादिली थी. असल में उनके ज़माने तक उर्दू अदब (साहित्य) का रवैया इश्क़-हक़ीक़ी" या "मजाज़ी" के नाम पर ही बहुत कुछ गुलो बलबुल तक महदूद (सीमित) था. दीगर (अन्य) शायरों की तरह उन्हें भी "उर्दू शायरी" में रदीफ़ काफ़िये की तंगी में ज़्यादा मज़ा आता था. उन्होंने 'ज़फ़र' के नाम से बहुत कुछ लिखा है. आज़ादी के लिये उन्हें जो तकलीफ़ उठानी पड़ीं उन्हें सुनकर पत्थर का कलेजा भी दो बूँद आँसू गिरा देगा.

अब उनका कलाम सुनिये—

"न पूछ मुझसे 'ज़फ़र' तू मेरा हक़ीक़ते हाल,
अगर कहूँगा अभी तुझको मैं रुला दूँगा."

ज़फ़र ने अपनी हक़ीक़त (वास्तविकता) को साफ़ तौर से बयान किया है. फिर भी तवारीख़ (इतिहास) ने भी उनकी ज़िन्दगी की दर्दनाक-हालत पर आँसू की बूँदें बहायी हैं—

"जो ख़िज़ाँ हुई वो बहार हूँ,
जो उतर गया वो ख़ुमार हूँ,

जो बिगड़ गया वह नसीब हूँ,
जो उजड़ गया वो सिंगार हूँ.

मेरा हाल क़ाबिले-दीद है,
कि न आस है न उमीद है,

मेरी घुट के हसरतें रह गयीं,
मैं उन हसरतों का मज़ार हूँ.

मैं कहाँ रहूँ, मैं कहाँ बसूँ,
न ये मुझसे ख़ुश न वो मुझसे ख़ुश,

شمال ہند میں بھی جھانسی کی رانی سے لیکر بھگت سنگھ، راج گرو، سکھ دیو، آدی شہیدوں نے جنگ آزادی کا اعلان کیا ۔ ھمارے سامنے شہیدوں میں کوئی فرق نہیں ہے ۔ سبوں کا مقصد آزادی تھا !

بہادر شاہ بھی آزادی کے لئے کام آئے ۔ وہ سلطنت مغلیہ کے آخری چراغ تھے ۔ وہ بادشاہ ہوتے ہوئے بھی وطن پرستی (دیش بھکتی) کے شاعر تھے ۔ اُن کی شاعری میں جوش تھا ۔ جذباتی لہریں (بھاونا کی ترنگیں) اُمڑ اُٹھتی تھیں ۔ بہادر شاہ کے بارے میں جاننا ہر ایک کا فرض ہے ۔

بہادر شاہ 'اردو' کے اونچے شاعر تھے ۔ انہوں نے "ظفر" کے تخلص (اُپ نام) سے شعر و شاعری کی ۔ سب سے زیادہ بھارت کی آزادی کو قایم رکھنے کے لئے انہوں نے جو قربانی کی تھی وہ ھمیشہ زندہ جاوید (سدیو کے لئے) رھیگی ۔

بہادر شاہ کی شاعری میں گہرے جذبات اور زندہ دلی تھی ۔ اصل میں ان کے زمانے تک اردو ادب (ساھتیہ) کا رویہ "عشق حقیقی" یا "مجازی" کے نام پر ھی سہی بہت کچھ گل و بلبل تک ھی محدود (سیمت) تھا ۔ دیگر (انیہ) شاعروں کی طرح انہیں بھی "اردو شاعری" میں ردیف قافیہ کی تنگی میں زیادہ مزا آتا تھا ۔ انہوں نے 'ظفر' کے نام سے بہت کچھ لکھا ہے ۔ آزادی کے لئے انہیں جو تکلیفیں اٹھانی پڑیں سن کر پتھر کا کلیجہ بھی دو بوند آنسو گرا دیگا ۔

اب اُن کا کلام سنیئے—

"نہ پوچھ مجھسے 'ظفر' تو میرا حقیقت حال ۔
اگر کہونگا ابھی تجھکو میں رولا دوں گا ۔"

ظفر نے اپنی حقیقت (واستوکتا) کو صاف طور سے بیان کیا ھے ۔ پھر بھی تواریخ (اتہاس) نے بھی اُن کی زندگی کی دردناک حالت پر آنسو کی بوندیں بہائیں ھیں—

جو خزاں ھوئی وہ بہار ھوں،
جو اُتر گیا وہ خمار ھوں ۔

جو بگڑ گیا وہ نصیب ھوں،
جو اُجڑ گیا وہ سنگار ھوں ۔

میرا حال قابل دید ہے،
کہ نہ آس ہے نہ اُمید ھے ۔

میری گھٹ کے حسرتیں رہ گئیں،
میں اُن حسرتوں کا مزار ھوں ۔

میں کہاں رھوں، میں کہاں بسوں،
نہ یہ مجھسے خوش نہ وہ مجھسے خوش ۔

हम तो अपनी अजन्ताओं में मग्न हैं,
तुम तिलिस्मी ग़ुबारे उड़ाते रहो.
फिर न कहना जो यह "ऐटमी शोबिदा,८"
.ख़ुद तुम्हारा नशेमन९ जलाने लगे.

हम तो इक सुबह हैं, सुबहे अमनो अमां।
अपना पैग़ाम है "रोशनी-रोशनी,"
ऐ अंधेरो, उजाले में आजाओ अब,
हिन्द के बामोदर१० जगमगाने लगे.

[नोट:—1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के शताब्दी महोत्सव पर लाल क़िले में हुए मुशायरे में यह नज़्म 16 अगस्त 1957 को पढ़ी गई.]

शहीदे आज़म बहादुरशाह की याद में

श्री टी० राजन

जो वतन की आज़ादी या मज़हब के लिये मर मिटता है वह शहीद है. आज़ादी के लिये क़ुरबानी की ज़रूरत है. ऐसे ही "देश भक्त" हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये हज़ारों लाखों की तादाद में क़ुर्बान हो चुके हैं. दरअसल हमारी आज़ादी की "अमर कहानी" शहीदों के ख़ून से लिखी गयी है. कन्या कुमारी से हिमालय तक कई वतन-परस्त देश-भक्त भारत की आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़े. कन्या कुमारी दक्खिन में है इसीलिये पहले उसका नाम लिया है कि दक्खिन में ही पहले पहल संतों के प्रेम-धर्म ने जन्म लिया और उत्तर तक फैला. शंकर, रामानुज, मध्वाचार्य वैष्णव और शैव-धर्म के संतों ने अपनी अमृत-बानी सुनाई. उत्तर में भी कई संत लोग पैदा हुए.

आज़ादी की लड़ाई में भी दक्खिन कभी पीछे नहीं रहा. कट्टबोम्मन, राजा देसिंह, वीर चिदम्बरम, व० वे० सु० अय्यर, हैदर, टिप्पु, तिरुप्पूर कुमरन जैसे शहीदों ने हमेशा के लिये आज़ादी की अमर ज्योति जलाई.

१. नूर=प्रकाश, २. निकहत=सुगन्ध, ३. बज़्म=सभा ४. शमए=दीप-मोमबत्ती, ५. गुलफ़िशाँ=फूल का खिलना, ६. मुस्तक़िल=स्थाई, ७. मशग़ले=काम-काज, ८. शोबिदा=जादू का खेल , ९. नशेमन=घोंसला, १०. बामोदर=कोठे और दरवाजे.

هم تو اپنی اجنتاؤں میں مگن ہیں'
تم طلسمی غبارے اڑاتے رہو'
پھر نہ کہنا جو یہ "ایٹمی شعبدا" 8
خود تمہارا نشیمن 9 جلانے لگے !

هم تو اِک صبح ہیں صبح امن و اماں'
اپنا پیغام ہے "روشنی-روشنی ."
اے اندھیرو' اُجالے میں آجاؤ اب'
هند کے بام و در 10 جگمگانے لگے !

[نوٹ :—1857 کے سوتنترا سنگرام کے شتابدی مہتو پر لال قلعے میں ہوئے مشاعرے میں یہ نظم 16 اگست 1957 کو پڑھی گئی ۔]

شہید اعظم بہادر شاہ کی یاد میں

شری ٹی۔ راجن

جو وطن کی آزادی یا مذہب کے لئے مر مٹتا ہے وہ شہید ہے ۔ آزادی کے لئے قربانی کی ضرورت ہے ۔ ایسے ہی "دیش بھکت" ہندستان کی آزادی کے لئے ہزاروں لاکھوں کی تعداد میں قربان ہو چکے ہیں ۔ دراصل ہماری آزادی کی "امر کہانی" شہیدوں کے خون سے لکھی گئی ہے ۔ کنیا کماری سے ہمالیہ تک کئی وطن پرست دیش بھکت بھارت کی آزادی کی لڑائی میں کود پڑے ۔ کنیا کماری دکھن میں ہے اِس لئے پہلے اُس کا نام لیا ہے کہ دکھن میں ہی پہلے پہل سنتوں کے پریم دھرم نے جنم لیا اور اُتر تک شنکر' رامانج' مدھوا چاریہ ویشنو اور شیو دھرم کے سنتوں نے اپنی امرت بانی سنائی ۔ اُتر میں بھی کئی سنت' لوگ پیدا ہوئے ۔

آزادی کی لڑائی میں بھی دکھن کبھی پیچھے نہیں رہا ۔ کٹومن راجا دے سنگھ ویر چدمبرم وہ وے۔ ایر' حیدر' ٹیپو' تروپٹ کمرن جیسے شہیدوں نے ہمیشہ کے لئے آزادی کی امر جیوتی جلائی تھی ۔

1. نور = پرکاش' 2. نکہت = سوگندھ' 3. بزم = سبھا' 4. شمعیں = دیپ موم بتی' 5. گل فشاں = پھول کا کھلنا' 6. مستقل = استھائی' 7. مشغلے = کام کاج' 8. شعبدا = جادو کا کھیل 9. نشیمن = گھونسلا' 10. بام و در = کوٹھے اور دروازے

चिराग़ों के सिलसिले (अंग्रेज़ों से ख़िताब)

श्री सलाम मछलीशहरी

नूर१-ओ-नकहत२ की ख़ातिर जो क़ुरबाँ हुए,
जिनको तुमने यह समझा ठिकाने लगे.
फूल बनकर वही मुस्कराने लगे,
चाँद बनकर वही जगमगाने लगे.

बात उलझी सी है, मैं दिवाना जो हूँ,
ख़ैर, अब तुम ज़रा यह बताओ मुझे
क्या कहोगे उसे जो बुझे दीप से,
बज़्म३ की ताज़ा शमएँ४ जलाने लगे ?

तुमने भारत से ताजे ज़फ़र ले लिया,
हमको भारत ने गान्धी जवाहर दिया.
तुमने इस लाल क़िले में शोले भरे,
परचमे गुलफ़िशाँ५ हम उड़ाने लगे.

तुमने झाँसी की रानी का सर ले लिया,
देश की गोद में नायडू आ गईं।
तुमने इस शहर दिल्ली को वीरां किया,
जन्नतें हर तरफ़ हम सजाने लगे.

यूँ बुझे दीप से दीप जलते रहे,
और हम मुस्तक़िल६ रोशनी बन गए.
फिर भी पिछले अंधेरे सदी बाद भी—
आज क्या जाने क्यों याद आने लगे ?

बात यह है कि हम अहले हिन्दोस्ताँ,
एक आदर्श रखते हैं तहज़ीब का.
हम तो उस दम भी तुम से गले ही मिले,
जब यहाँ से, हुज़ूर ! आप जाने लगे.

ख़ैर, इतना तो बतलाओ ऐ दोस्तो !
आजकल क्या मशग़ले७ हैं, क्या हाल है ?
कोई कहता था तुम छिप के परदे में फिर,
सरहदे हिन्द पर गुल खिलाने लगे.

چراغوں کے سلسلے (انگریزوں سے خطاب)

شری سلام مچھلی شہری

نور و نکہت 2 کی خاطر جو قربان ہوئے،
جن کو تم نے یہ سمجھا ٹھکانے لگے۔
پھول بن کر وہی مسکرانے لگے—
چاند بن کر وہی جگمگانے لگے!

بات اُلجھی سی ہے، میں دیوانہ جو ہوں،
خیر، اب تم ذرا یہ بتاؤ مجھے۔
کیا کہوگے اُسے جو بجھے دیپ سے،
بزم 3 کی تازہ شمعیں 4 جلانے لگے!

تم نے بھارت سے تاجِ ظفر لے لیا،
ہم کو بھارت نے گاندھی جواہر دیا۔
تم نے اِس لعل قلعے میں شعلے بھرے۔
پرچم گل‌فشاں 5 ہم اُڑانے لگے!

تم نے جھانسی کی رانی کا سر لے لیا،
دیش کی گود میں نایڈو آگئیں!
تم نے اِس شہر دلی کو ویراں کیا۔
جنتیں ہر طرف ہم سجانے لگے!

یوں بجھے دیپ سے دیپ جلتے رہے،
اور ہم مستقل 9 روشنی بن گئے!
پھر بھی پچھلے اندھیرے صدی بعد بھی۔
آج کیا جانے کیوں یاد آنے لگے!

بات یہ ہے کہ ہم اہلِ ہندستان،
ایک آدرش رکھتے ہیں تہذیب کا،
ہم تو اِس دم بھی تم سے گلے ہی ملے،
جب یہاں سے حضور! آپ جانے لگے!

خیر، اِتنا تو بتلاؤ اے دوستو!
آجکل کیا مشغلے 7 ہیں، کیا حال ہے؟
کوئی کہتا تھا تم چھپ کے پردے میں پھر،
سرحدِ ہند پر گل کھلانے لگے!

इनसान की ज़िन्दगी नपी तुली है. क़यामत तक तो किसी का जीना नहीं—फिर वचन की मुद्दत क़यामत तक क्यों हो ?

जीवन में उसको वह सब मिलना चाहिये जो उसका हक़ और हिस्सा है—फिर उसमें देरी क्यों—और संकोच क्यों ?

.ख़ाली वादों ही वादों पर तो इनसान जी नहीं सकता और न परिवार ही पाल सकता है.

यह कौन सा इन्साफ़ और इनसानियत है कि एक परिवार के आधार पर केवल एक सियासी त्यागी अपना जीवन बनाये—क्या एक अक्सा परिवार को एक अकेला खा जाने वाला "त्यागी" होता है आज के राज के अर्थ में ?

आख़िर यह हवाई वायदे कब तक उड़ान भरते रहेंगे और कब तक झूठे वचन सब्ज़ बाग़ दिखाते रहेंगे ?

जिनमें न आशाओं की कलियाँ, न आज़ादी के फल फूले.'

केवल काँटे ही काँटे.

लेकिन इसने वह काँटे ही टाँके हैं अपने दामन में आज़ादी के लिबास की शोभा बढ़ाने के लिये—और इसलिये '.ख़ारे वतन' हैं और वतन के .ख़ार से प्यार होता है हर सच्चे देश भगत को.

वचन के चमन के फूल भी इसके सामने अधिक से अधिक हैं और रंग रंग के.

देखने में बड़े सुन्दर, बड़े दिलकश, बड़े नज़रफ़रेब,

मगर न बू न महक.

अलबत्ता तेज़रंगत.

लेकिन वह रंगत कब तक ?

काग़ज़ के फूलों की शोख़ी और उनकी ज़िन्दगी ही कितनी ?

पानी के ऊपर काग़ज़ की नाव की उमर ही क्या ?

नई नई तरकीबों से अवाम को लुभाये रखना और जीवन के मीठे सपनों में भुलाये रखना. अजीब अनुभव है राजनीति का—यह बात कितनी विचित्र है कि आज़ाद होते हुऐ वचनों के रंगीन फन्दों में अवाम गिरफ्तार हैं—यानी आज़ादी में क़ैद हैं—फिर भी वचन आये दिन नित नये जतन करते ही रहते हैं और जनता के साथ शातिराना चालें चलने में कोई कसर बाक़ी नहीं रख रहे. इस प्रकार अब तक जितने भी जतन हुए और हो रहे हैं उन पर जितना भी मातम क्रिया जाय कम है और जितना शोक मनाये ठीक है.

اِنسان کی زندگی نپی تلی ہے ۔ قیامت تک تو کسی کو جینا نہیں—پھر وچن کی مدت قیامت تک کیوں ؟

جیون ہی میں اُسی کو وہ سب ملنا چاہئے جو اُس کا حق اور حصہ ہے—پھر اُس میں دیری کیوں—اور سنکوچ کیوں ہوں ؟

خالی وعدوں ہی وعدوں پر تو اِنسان جی نہیں سکتا اور نہ پریوار ہی پال سکتا ہے ۔

یہ کون سا انصاف اور اِنسانیت ہے کہ ایک پریوار کے آدھار پر کیول ایک سیاسی تیاگی اپنا جیون بنائے—کیا ۔ ایک اکھا پریوار کو ایک اکیلا کھا جانے والا "تیاگی" ہوتا ہے آج کے راج کے ارتھ میں ؟

آخر یہ ہوائی وعدے کب تک اُڑان بھرتے رہیں گے اور کب تک جھوٹے وچن سبز باغ دکھاتے رہیں گے ؟

جن میں نہ آشاؤں کی کلیاں' نہ آزادی کے پھل پھولے ۔

کیول کانٹے ہی کانٹے ۔

لیکن اُس نے وہ کانٹے ہی ٹانکے ہیں اپنے دامن میں آزادی کے لباس کی شوبھا بڑھانے کے لئے—اور اِسی لئے وہ 'خارِ وطن' ہیں اور وطن کے خار سے پیار ہوتا ہے ہر سچے دیش بھکت کو ۔

وچن کے چمن کے پھول بھی اِس کے سامنے ادھک سے ادھک ہیں اور رنگ رنگ کے ۔

دیکھنے میں بڑے سندر' بڑے دل کش' بڑے نظر فریب ۔

مگر نہ بو نہ مہک ۔

البتہ تیز رنگت ۔

لیکن وہ رنگت کب تک ؟

کاغذ کے پھولوں کی شوخی اور اُن کی زندگی ہی کتنی ؟

پانی کے اُوپر کاغذ کی ناؤ کی عمر ہی کیا ؟

نئی نئی ترکیبوں اور باتوں سے عوام کو لبھائے رکھنا اور وچنوں کے میٹھے سپنوں میں جھلائے رکھنا ۔ عجیب انوبھو ہے راجنیتی کا یہ بات کتنی وچتر ہے کہ آزاد ہوتے ہوئے وچنوں کے رنگین پھندوں میں عوام گرفتار ہیں—یعنی آزادی میں قید ہیں—پھر بھی وچن آئے دن نت نئے جتن کرتے ہی رہتے ہیں اور جنتا کے ساتھ شاطرانہ چالیں چلنے میں کوئی کور کسر باقی نہیں رکھ رہے ۔ اِس پرکار اب تک جتنے بھی جتن ہوئے اور ہو رہے ہیں اُن پر جتنا بھی ماتم کیا جائے کم ہے اور جتنا شوک منایا جائے ٹھیک ہے ۔

आखिर जनता का भी कुछ हिस्सा है आजादी में और कुछ हक है जम्हूरियत में—पर उनको जनता के दुःख दर्द से क्या वास्ता, और क्यों वास्ता हो ?

फिर दावा भी करते हैं अहिंसा का.

बचन भी देते हैं सेवा का.

कितना अजीब तमाशा है यह और कितना हसीन फ़रेब !

उनका दावा धोखा और बचन ग़लत साबित हो गया. उस की मियाद भी खतम हो गई. आस की भी मियाद होती है. छलकते पैमाने को कब तक रोका जा सकता है—और कब तक विश्वासी जनता सियासी झूठ और फ़रेब का पालन कर सकती है—जब किसी भी इन्सान का बचन बेवज़न हो जाता है तो फिर उसका ख़ुद का कोई वज़न नहीं रहता उसकी ज़िन्दगी में और समाज में—इन्सान सच्चाई और विश्वास के बल पर इज्ज़त और स्वागत पाता है—इन्सान की इज्ज़त और क़ीमत उसके ठोस विश्वास में होती है. विश्वास खतम होते ही वह भी खतम हो जाता है जैसे सूरज डूबते ही दिन खतम हो जाता है और अन्धेरा छा जाता है.

वक़्त किसी की परवाह नहीं करता. न किसीकी तरफ़दारी करता है. मतलब यह कि वक़्त फ़िरक़ापरस्त नहीं होता. वह इन्साफ़परस्त होता है और न्याय करता है. वह अपने अख़्त्यार से अपना फ़ैसला ख़ुद सादिर करता है. इसका फ़ैसला इसका निज़ाम घड़ी की सुई की नोक पर रहता है. जो भी उसकी ज़द में आ जाता है "कसेबाशद" छिन के छिन में पीस डालता है. कस देता है इंसाफ़ के शिकंजे में. वह किसी की रूरियायत नहीं रखता. न किसी की सिफ़ारिश स्वीकार करता है—कितने घमन्डियों को उसने आन की आन में ख़ाक में मिला दिया है. कितने तानाशाह और नेताशाह झुके पड़े हैं उनके चरणों में.

बचन इनसान को गिराता भी है, उठाता भी है, बनाता भी है बिगाड़ता भी है—अपनी इज्ज़त, अपना विक़ार, अपनी बात, अपनी साख क़ायम रखने के लिये इसका फ़ैसला ख़ुद इनसान के अख़त्यार में है कि वह अपने लिए क्या निश्चय करता है ?

किसी भी इनसान का बड़प्पन बड़े से बड़े ओहदे में नहीं होता. और न उसका बड़प्पन बड़े से बड़े बंगले में रहता है. इनसान का बड़प्पन केवल बात की सच्चाई, सदाचार की सुन्दरता और किरदार की मज़बूती और पाकीज़गी में होता है. जिस में यह गुण नहीं वह बड़ा होते हुए भी छोटा है और भारी होते हुये भी हलका है.

آخر جنتا کا بھی کچھ حصہ ہے آزادی میں اور کچھ حق ہے جمہوریت میں—پر اُن کو جنتا کے دکھ درد سے کیا واسطہ' اور کیوں واسطہ ہو؟

پھر دعویٰ بھی کرتے ہیں اہنسا کا۔

بچن بھی دیتے ہیں سیوا کا۔

کتنا عجیب تماشہ ہے یہ اور کتنا حسین فریب !

اُن کا دعویٰ جب دھوکا اور بچن غلط ثابت ہو گیا. اُس کی میعاد بھی ختم ہو گئی۔ آس کی بھی میعاد ہوتی ہے۔ چھلکتے پیمانے کو کب تک روکا جا سکتا ہے—اور کب تک وشواسی کی جنتا سیاسی جھوٹ اور فریب کا پالن کر سکتی ہے .جب کسی بھی انسان کا وچن بےوزن ہو جاتا ہے تو پھر اُس کا خود کا کوئی وزن نہیں رہتا اُس کی زندگی میں اور سماج میں—انسان صرف سچائی اور وشواش کے بل پر عزت اور سواگت پاتا ہے۔ اِنسان کی عزت اور قیمت اُس کے ٹھوس وشواس میں ہوتی ہے۔ وشواس ختم ہوتے ہی وہ بھی ختم ہو جاتا ہے۔ جیسے سورج ڈوبتے ہی دن ختم ہو جاتا ہے اور اندھیرا چھا جاتا ہے۔

وقت کسی کی پرواہ نہیں کرتا۔ نہ کسی کی طرفداری کرتا ، مطلب یہ کہ وقت فرقہ پرست نہیں ہوتا۔ وہ اِنصاف پرست ہوتا ہے اور نیائے کرتا ہے۔ وہ اپنے اختیار سے اپنا فیصلہ خود صادر کرتا ہے۔ اُس کا فیصلہ اور اُس کا نظام گھڑی کی سوئی کی نوک پر رہتا ہے۔ جو بھی اُس کی زد میں آجاتا ہے' "کسے باشد" چھن چھن میں پیس ڈالتا ہے' کس دیتا ہے اِنصاف کے شکنجے میں۔ وہ کسی کی رو رعایت نہیں رکھتا۔ نہ کسی کی سفارش سویکار کرتا—کتنے گھمنڈیوں کو اُس نے آن کی آن میں خاک میں ملا دیا ہے۔ کتنے تاناشاہ اور نیتا شاہ جھکے پڑے ہیں اُس کے چرنوں میں۔

وچن اِنسان کو گراتا بھی ہے اٹھاتا بھی ہے۔ بناتا بھی ہے بگاڑتا بھی ہے—اپنی عزت' اپنا وقار' اپنی بات' اپنی ساکھ قایم رکھنے کے لئے اِس کا فیصلہ خود اِنسان کے اختیار میں ہے کہ وہ اپنے لئے کیا نشچے کرتا ہے ؟

کسی بھی اِنسان کا بڑپن بڑے سے بڑے عہدے میں نہیں ہوتا۔ اور نہ اُس کا بڑپن بڑے سے بڑے بنگلے میں رہتا۔ اِنسان کا بڑپن کیول بات کی سچائی' سداچار کی سندرتا اور کردار کی مضبوطی اور پاکیزگی میں ہوتا ہے—جس میں یہ گن نہیں وہ بڑا ہوتے ہوئے بھی چھوٹا اور بھاری ہوتے ہوئے بھی ہلکا ہے۔

कितने अनमोल मोती और नायाब जौहर नाक़द्री और सम्प्रदाय के धार में बह गये और कितने गुणी मुनि फ़ना के दामन में सिमटकर नष्ट हो गये. राज्य ने वह धन खोया जो क़ौम की माया था और माया से हाथ धोया जो जाकर कभी वापस नहीं आती —

देखते के देखते और आन ही आन में कितने क़बीले ख़तम हो गये. कितने परिवार अन्याय की ऊँची दीवार फाँद गये. कितनी बेचैन आत्माएँ जम्हूरियत के लुभावने और रंगीन जाल के फंदों से निकलकर आज़ाद फ़िज़ा में घुल मिल गईं.

यह दिल-शिकन नज़ारा देखकर लाज़मी तौर पर आस टूटी. आस के टूटते ही आशाओं के तार भी टूट गये और उन तारों से धाराएं फूट निकलीं तेज़-तेज़ जज़बात और लाल ग़ुस्से की.

कहाँ गये वह त्यागी और सेवक जिन के अन्दर से हमदर्दी का एक भाव भी न उभरा—और दुखी इन्सानियत पर जिनकी आँखों से एक झूठा आँसू भी न टपका. जिनकी आत्मा नफ़सानियत के कीचड़ में लुथड़ी पड़ी है — अबतक.

कहाँ हैं वह जन सेवक जिन की ज़बानों पर आत्मा और महात्मा की रट धोखा देती रही है इन्सानियत को और इन्सान की अच्छी अक़ीदत को,—यानी मानवता को और मानव की सुन्दर श्रद्धा को.

आज़ादी के दस वर्ष कम नहीं होते. दस वर्ष के काल में दस नई पीढ़ियाँ जन्म ले सकती हैं. दस नए आकाश बुलन्द हो सकते हैं— समय की लम्बाई, चौड़ाई और पस्ती या बुलन्दी का नाम केवल ख़ुशहाली और परेशानी के पैमाने से होती है. मुसीबत और तक़लीफ़ का एक वर्ष तो बहुत होता है. एक दिन भी अधिक और बहुत अधिक होता है—उसका एक-एक मिनट शताब्दियों की विशालता और गहराई अपने अन्दर रखता है लेकिन उसको वही जानते और समझते हैं जिन पर मुसीबत के पहाड़ टूटते हैं या दुख के दिन बीतते हैं.

सवाल यह है कि इन तमाम चीज़ों की ज़िम्मेदारी किस पर है ?

इनकी ज़िम्मेदारी झूठे वचन देने वालों पर.

असली अपराधी कौन हैं ?

जिन्होंने आशावादियों के दिलों को ख़ाक करके और उनकी आशाओं की दीवारें गिराकर उन पर अपने भवन खड़े किये.

जिन्होंने ग़रीबों का हक़ मारकर अपने जीवन को बहार दी और अपने जमाई को मोटरकार दी.

کتنے انمول موتی اور نایاب جوہر ناقدری اور سامپردائے کے دھار میں بہ گئے ۔ اور کتنے گنی منی فنا کے دامن میں سمٹ کر نشٹ ہو گئے ۔ راجیہ نے وہ دھن کھویا جو قوم کی مایہ تھا اور اُس مایہ سے ہاتھ دھویا جو جاکر کبھی واپس نہیں آتی—

دیکھتے دیکھتے اور آن ہی آن میں کتنے قبیلے ختم ہو گئے ۔ کتنے پریوار انیائے کی اُونچی دیوار پھاند گئے ۔ کتنی بےچین آتمائیں جمہوریت کے لبھاؤنے اور رنگین جال کے پھندوں سے نکل کر آزاد فضا میں گھل مل گئیں ۔

یہ دل شکن نظارہ دیکھ کر لازمی طور پر آس ٹوٹی ۔ آس کے ٹوٹتے ہی آشاؤں کے تار بھی ٹوٹ گئے ۔ اور اُن تاروں سے دھاریں پھوٹ نکلیں تیز تیز جذبات اور لال لال غصے کی ۔

کہاں گئے اب وہ تیاگی اور سیوک جن کے اندر سے ہمدردی کا ایک بھاؤ بھی نہ اُبھرا—اور دکھی انسانیت پر جن کی آنکھوں سے ایک جھوٹھا آنسو بھی نہ ٹپکا ۔ جن کی آتما انسانیت کے کیچڑ میں لتھڑی پڑی ہے اب تک ۔

کہاں ہیں وہ جن سیوک جن کی زبانوں پر آتما اور مہاتما کی رٹ دھوکا دیتی رہی ہے انسانیت کو اور انسانوں کی اچھی عقیدت کو—یعنی مانوتا کو اور مانو کی سندر شردھا کو ۔

آزادی کے دس ورش کم نہیں ہوتے ۔ دس ورش کے کال میں دس نئی پیڑھیاں جنم لے سکتی ہیں ۔ دس نئے آکاش بلند ہو سکتے ہیں ۔ سمے کی لمبائی یا چوڑائی اور پستی بلندی کی ناپ کیول خوشحالی اور پریشانی کے پیمانے سے ہوتی ہے ۔ مصیبت اور تکلیف کا ایک ورش تو بہت ہوتا ہے ۔ ایک دن بھی ادھک اور بہت ادھک ہوتا ہے—اُس کا ایک ایک منٹ شتابدیوں کی وشالتا اور گہرائی اپنے اندر رکھتا ہے لیکن اِس کو وہی جانتے اور سمجھتے ہیں جن پر مصیبت کے پہاڑ ٹوٹتے ہیں یا دکھ کے دن بیتتے ہیں ۔

سوال یہ ہے اِن تمام چیزوں کی ذمہداری کس پر ہے ؟

اِن کی ذمہداری جھوٹے بچن دینے والوں پر ۔

اصلی اپرادھی کون ہیں ؟

جنھوں نے آشا وادیوں کے دلوں کو خاک کر کے اور اُن کی آشاؤں کی دیواریں گرا کر اُن پر اپنے بھون کھڑے کئے ؛ جنھوں نے غریبوں کا حق مار کر اپنے جیون کو بہار دی اور اپنے جمائی کو موٹرکار دی ۔

वह शान्ति पूर्ण जीवन पाकर ग़ुलामी और आज़ादी का अन्तर समझ सकती. आज़ादी की क़द्र क़ीमत जान सकती और अपना कर्तव्य पहचान सकती.

पर नया जोड़ा नया जीवन तो दूर की बात, आज़ादी के मतवालों को फ़ाकों की नौबत तक पहुँचा दिया गया. कितनी पुरानी ग़ुलामी और कितनी पुश्तों की ग़रीब जनता की फटी पुरानी लँगोटी तक बिक गई.

क्या यही आज़ादी का वरदान इन ग़रीब और बेज़ुबान इन्सानों के लिए है ?

क्या यही है जमहूरियत का न्याय दलित बहुमत के लिये ?

यह ग़रीब दुखी वह लोग हैं जो अपनों के वचनों पर भरोसा किये और "सन्तोष की सिल" छाती पर रखे वर्षों से ख़ामोश बैठे रहे हैं और ताकते रहे हैं आने वाले अच्छे दिनों की ओर.

लेकिन इन क़िसमत के मारों का दुर्भाग्य तो देखो कि इनके अच्छे दिनों को भी रास्ते से चुरा ले गये कोई चोर.

अगर उनसे कुछ कहा जाय तो कहने वाला भी हैरान होकर रह जाय जब "उलटा डाँटे कोतवाल को चोर"

यही वह नामुराद और निराश जनता है कि आज़ादी के नाम पर ख़ुशहाली के सपने देखते देखते जिसकी आँखें पथरा गईं. दिल बैठ गये. आशायें मर गईं, हसरतों का ख़ून हो गया— गोदियाँ ख़ाली हो गईं. झोलियाँ सड़-गल गईं. कितनों ने अपने अज़ीज़ प्यारों तक की हड्डियाँ दफ़न करदीं या ख़ाक बनाकर उड़ा दीं.

आशा ही आशा में बेकार रहते-रहते कितने काम के हाथ शल पड़ गये. कितने जौलानी दिमाग़ ठस पड़ गये. कितनी योग्यतायें फ़ना हो गईं और अन्दर ही अन्दर घुल-घुल कर अपने जौहर खो बैठीं—योग्यतायें मूल्य में वरदान होतीं हैं क़ुदरत की ओर से किसी क़ौमी राज्य के लिये यह वह भारी नुक़सान है जिसका बदल कठिन—लेकिन इस महान नुक़सान को केवल ज़िन्दा, क़ाबिल, हक़ पसन्द और इन्साफ़ परवर हकूमतें ही समझती हैं—जौहर की क़ीमत केवल जौहरी ही जानता है और उनकी नाक़द्री पर उसी का मातम और सदमा भी बजा !

नाक़द्री, बेग़ौरी और बेपरवाही का कारण सभ्यता और इतिहास के ज्ञानियों की हिम्मत और साहस को भी ठेस पहुँचाती है और उनकी कार्य शक्ति का उस पर प्रभाव पड़ता है. तहज़ीब और कल्चर के अनमोल भन्डार और प्राचीन संस्कृति के अनेक अनेक चित्र और ख़ज़ाने दुनिया के सामने आते-आते रह जाते हैं और दुनिया उनके लाभ से महरूम हो जाती है. अच्छी, तरक्क़ी-पसन्द और कृपालु हुकूमतों का कर्तव्य होता है कि वे ऐसी योग्यताओं की क़द्र करें और क़ौमी गुण गान को सम्मान दें.

وہ شانتی پورن جیون پاکر غلامی اور آزادی کا انتر سمجھ سکتی ۔ آزادی کی قدر قیمت جان سکتی اور اپنا کرتویہ پہچان سکتی ۔

پرنیا جوڑا اور نیا جیون تو دور کی بات، آزادی کے متوالوں کو فاقوں کی نوبت تک پہونچا دیا گیا ۔ کتنی پرانی غلامی اور کتنی پشتوں کی غریب جنتا کی پھٹی پرانی لنگوٹی تک بک گئی ۔

کیا یہی ہے آزادی کا وردان ان غریب اور بےزبان انسانوں کے لئے ؟

کیا یہی ہے جمہوریت کا نیائے دلت بہومت کے لئے ؟

یہ غریب دکھی وہ لوگ ہیں جو اپنوں کے بچنوں پر بھروسہ کئے اور "سنتوش کی سل" چھاتی پر رکھے ورشوں سے خاموش بیٹھے رہے ہیں اور تکتے رہے ہیں آنے والے اچھے دنوں کی اور ۔

لیکن ان قسمت کے ماروں کا دربھاگیہ تو دیکھو کہ اِن کے اچھے دنوں کو بھی راستے سے چرا لے گئے کوئی چور ۔

اگر اُن سے کچھ کہا جائے تو کہنے والا بھی حیران ہو کر رہ جائے جب " اُلٹا ڈانٹے کوتوال کو چور ۔"

یہی وہ نامراد اور نراش جنتا ہے کہ آزادی کے نام پر خوشحالی کے سپنے دیکھتے دیکھتے جس کی آنکھیں پتھرا گئیں، دل بیٹھ گئے ۔ آشائیں مر گئیں، حسرتوں کا خون ہو گیا—گودیاں خالی ہو گئیں، جھولیاں سڑ گل گئیں ۔ کتنوں نے اپنے عزیز پیاروں تک کی ہڈیاں دفن کر دیں یا خاک بنا کر اُڑا دیں ۔

آشا ہی آشا میں بےکار رہتے رہتے کتنے کام کے ہاتھ شل پڑ گئے ۔ کتنے جولانی دماغ ٹھس پڑ گئے ۔ کتنی یوگتائیں فنا ہو گئیں اور اندر ہی اندر گھل گھل کر اپنے جوہر کھو بیٹھیں— یوگیتائیں مول میں وردان ہوتی ہیں قدرت کی اور سے ۔ کسی قومی راجیہ کے لئے یہ وہ بھاری نقصان ہے جس کا بدل کٹھن—لیکن اِس مہان نقصان کو کیول زندہ، قابل، حق پسند اور انصاف پرور حکومتیں ہی سمجھتی ہیں—جوہر کی قیمت کیول جوہری ہی جانتا ہے ۔ اور اُن کی ناقدری پر اُسی کا ماتم اور صدمہ بھی بجا !

ناقدری، بےغوری اور بےپروائی کے کارن سبھیتا اور اتہاس کے گیانیوں کی ہمت اور ساہس کو بھی ٹھیس پہونچاتی ہے اور اُن کی کاریہ شکتی پر اُس کا پربھاؤ پڑتا ہے ۔ تہذیب کلچر کے انمول بھنڈار اور پراچین سنسکرتی کے انیک انیک چتر اور خزانے دنیا کے سامنے آتے آتے رہ جاتے ہیں اور دنیا اُن کے لابھ سے محروم ہو جاتی ہے ۔ اچھی، ترقی پسند اور کرپالو حکومتوں کا کرتویہ ہوتا ہے کہ وے ایسی یوگیتاؤں کی قدر کریں اور قومی گن گان کو سمان دیں ۔

एक आदमी रसूल के पास आया और पूछने लगा:—"क्या मैं अपने ऊँट की टाँगों को बाँध दूँ और अल्लाह पर तवक्कल करूँ (छोड़ दूँ) या मैं ऊँट को खुला रहने दूँ और अल्लाह पर छोड़ दूँ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"ऊँट की टाँगों को बाँध दो और फिर अल्लाह पर छोड़ दो."

—अनस, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सच्ची आगाही यानी चेतावनी ही दीन है."

—अबू हुरैरा, तिरमिज़ी, शमीउलदारी' मुसलिम, अबूदाऊद, निसाई.

मुहम्मद साहब ने मुझसे कहा:—"ऐ अबूज़र ख़बरदार रहो, तुम्हारे अन्दर कमज़ोरी आने न पावे. मैं जो अपने लिये चाहता हूँ वही तुम्हारे लिये. कभी दो आदमी के बीच में यह फ़ैसला न करो कि कौन अच्छा है और कौन बुरा. और कभी यतीमों के माल पर क़बज़ा न करो."

—अबूज़र, अबूदाऊद, निसाई.

[डाक्टर मिरज़ा अबुलफ़ज़ल की अंग्रेज़ी किताब से तरजुमा. अनुवादक—श्री मुजीब रिज़वी.]

वचन और जतन

श्री अबदुल हलीम अन्सारी

आज़ादी हासिल करते वक़्त वचन देने वालों का कर्तव्य था और राज की कुर्सी पर ठाठ से बैठने वालों पर लाज़िम था कि ग़ुलामी से रिहाई और आज़ादी की प्राप्ति पर सदियों की ग़ुलाम जनता को आज़ादी का नया जोड़ा पहिनाया जाता और आज़ादी के दीपक से उनके अंधेरे घरों में उजाला किया जाता. ग़ुलाम और तरसी जनता को सुख शान्ति का पयाम दिया जाता, नया जीवन नया प्राण दिया जाता. बेशक

ایک آدمی رسول کے پاس آیا اور پوچھنے لگا :—"کیا میں اپنے اونٹ کی ٹانگوں کو باندھ دوں اور پھر اللہ پر توکل کروں (چھوڑ دوں) یا میں اونٹ کو کھلا رہنے دوں اور اللہ پر چھوڑ دوں ؟" پیغمبر نے جواب دیا :—"اونٹ کی ٹانگوں کو باندھ دو اور پھر اللہ پر چھوڑ دو ."

—انس' ترمزی .

محمد صاحب نے کہا کہ :—"سچی آگاہی یعنی چیتاونی ہی دین ہے ."

—ابو ہریرہ' ترمزی' شمیم الداری' مسلم' ابو داعود' نساعی .

محمد صاحب نے مجھسے کہا:—"اے ابوذر! خبردار رہو' تمہارے اندر کمزوری آنے نہ پاوے . میں جو اپنے لئے چاہتا ہوں وہی تمہارے لئے چاہتا ہوں . کبھی دو آدمیوں کے بیچ میں یہ فیصلہ نہ کرو کہ کون اچھا ہے اور کون برا . اور کبھی یتیموں کے مال پر قبضہ نہ کرو ."

—ابوذر' ابو داعود' نساعی .

[ڈاکٹر میرزا ابوالفضل کی انگریزی کتاب سے ترجمہ .
—انوادک شری مجیب رضوی .]

وچن اور جتن

شری عبدالحلیم انصاری

آزادی حاصل کرتے وقت بچن دینے والوں کا کرتویہ تھا اور راج کی کرسی پر ٹھاٹھ سے بیٹھنے والوں پر لازم تھا کہ غلامی سے رہائی اور آزادی کی پراپتی پر صدیوں کی غلام جنتا کو آزادی کا نیا جوڑا پہنایا جاتا اور آزادی کے دیپک سے اُن کے اندھیرے گھروں میں اُجالا کیا جاتا. غلام اور ترسی جنتا کو سکھ شانتی کا پیام دیا جاتا . نیا جیون نیا پران دیا جاتا. بیشک

कर दूसरे कान से निकाल दिया. उस आदमी ने दोबारा अबुबकर का अपमान किया अबुबकर ने फिर भी कोई परवाह न की. उस आदमी ने तीसरी बार अबुबकर का उसी तरह अपमान किया. इस पर अबुबकर ने उसका उसी तरह के शब्दों में जवाब दिया. यह देख मुहम्मद साहब फ़ौरन खड़े हो गये और वहाँ से चलने लगे. इस पर अबुबकर ने पूछा:—"ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप मुझसे नाराज़ हो गये?" पैग़म्बर ने जवाब दिया:— "नहीं! लेकिन जब उस आदमी ने पहले तुम्हारा अपमान किया था तो एक .फ़रिश्ता इसे झुठलाने के लिये आसमान से उतरा था लेकिन जब तुमने उसका उसी तरह जवाब दे दिया तो वह .फ़रिश्ता चला गया और उसकी जगह शैतान तुम्हारे पास आ बैठा. इसलिये जब तक शैतान यहाँ बैठा है मैं नहीं बैठ सकता.

—इब्न मुसैयब, अबू दाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"क़ुरान पढ़ो और लोगों को पढ़ाओ. क्योंकि सचमुच मैं केवल एक आदमी हूँ और एक दिन तुम्हारे बीच से उठा लिया जाऊँगा."

—इब्ने मसऊद, दारयमी, दारक़ुतनी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"क़ुरान में पाँच तरह की चीज़ें उतरी हैं: एक मारूफ़ जिनका करना जायज़ है, दूसरे मुनकिर यानी वह चीज़ें जिनका करना नाजायज़ है, तीसरे वह चीज़ें जो साफ़ और सरीह हैं, चौथे वह चीज़ें जो मुतशाबेहात यानी तशबीह (अलंकार) के रूप में की गई हैं और पाँचवें वह चीज़ें जो कहानियों की शकल में हैं. इसलिये जिन चीज़ों को जायज़ बताया गया है उन्हें जायज़ मानो, जिन्हें नाजायज़ बताया गया है उनसे बचो जो सीधी साफ़ हिदायतें हैं उनपर अमल करो, जो तशबीह यानी अलंकार के तौर पर कही गई हैं उन्हें वैसा ही मानो, और जो कहानियाँ कही गई हैं उनसे सबक़ सीखो."

—अबू हुरैरा' बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सचमुच अल्लाह अपने लोगों के लिये हर सौ साल के शुरू में एक ऐसा आदमी पैदा कर देगा जो लोगों के दीन को ताज़ा कर देगा.

—अबू हुरैरा, अबूदाऊद.

دوسرے کان سے نکال دیا. اُس آدمی نے دوبارہ ابوبکر کا اپمان ابو بکر نے پھر بھی کوئی پرواہ نہ کی. اُس آدمی نے تیسری ابوبکر کا اُسی طرح اپمان کیا . اِس پر ابوبکر نے اُس کا طرح کے شبدوں میں جواب دیا . یہ دیکھ محمد صاحب کھڑے ہوگئے اور وہاں سے چلنے لگے. اِس پر ابوبکر نے پوچھا"— ے اللہ کے رسول ! کیا آپ مجھ سے ناراض ہو گئے ؟" پیغمبر جواب دیا—"نہیں ! لیکن جب اِس آدمی نے پہلے ہارا اپمان کیا تھا تو ایک فرشتہ اِسے جھٹلانے کے لئے آسمان سے ا تھا لیکن جب تم نے اُس کا اُسی طرح جواب دے دیا وہ فرشتہ چلا گیا اور اُس کی جگہ شیطان تمہارے پاس بیٹھا . اس لئے جب تک شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں ہو سکتا ."

—ابن مصیب' ابوداءود .

محمد صاحب نے کہا :—قرآن پڑھو اور لوگوں کو پڑھاؤ . یونکہ سچ مچ میں کیول ایک آدمی ہوں اور ایک دن تمہارے بیچ سے اُٹھا لیا جاؤنگا ."

—ابن مسعود' داریمی: ذارقطنی .

محمد صاحب نے کہا :—"قرآن میں پانچ طرح کی چیزیں اُتری ہیں: ایک معروف یعنی وہ چیزیں جن کا کرنا جائز ہے' دوسرے منکر یعنی وہ چیزیں جن کا کرنا ناجائز ہے' تیسرے وہ چیزیں جو صاف اور صریح ہیں' چوتھے وہ چیزیں جو متشابہات یعنی تشبیہہ (النکار) کے روپ میں کہی گئی ہیں ور پانچویں وہ چیزیں جو کہانیوں کی شکل میں ہیں . اِس لئے جن چیزوں کو جائز بتایا گیا ہے اُنہیں جائز مانو' جنہیں ناجائز بتایا گیا ہے اُن سے بچو' جو سیدھی صاف ہدائتیں ہیں اُن پر عمل کرو' جو تشبیہہ یعنی النکار کے طور پر کہی گئی ہیں اُنہیں ویسا ہی مانو' اور جو کہانیاں کہی گئی ہیں اُن سے سبق سیکھو ."

—ابو ہریرہ' بیہقی .

محمد صاحب نے کہا :—"سچ مچ اللہ اپنے لوگوں کے لئے ہر سو سال کے شروع میں ایک ایسا آدمی پیدا کر دیگا جو لوگوں کے دین کو تازہ کر دیگا ."

—ابو ہریرہ' ابو داءود .

भी छोड़ देगा तो वह बरबाद हो जायगा. इसके बाद एक ऐसा ज़माना आयेगा जबकि उस ज़माने के लोगों में से अगर कोई इसमें से दसवें हिस्से पर भी अमल करेगा तो निजात पायेगा."

—अबू हुरैरा, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब से पूछा गया कि :—"आदमियों में सबसे बढ़कर आदमी कौन है ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया :—"हर वह आदमी जो दिल का साफ़ है और ज़बान का सच्चा." फिर पूछा गया : "ज़बान का सच्चा कौन है, यह हम समझ सकते हैं लेकिन दिल का साफ़ कौन है यह हम कैसे जानें ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया :— "दिल का साफ़ वह है जो पाक हो, नेक हो, पाप न करता हो, कोई बुराई न करता हो और किसी के साथ न बुग्ज़ (द्वेष) रखता हो और न किसी से हसद (ईर्षा) करता हो."

—अबदुल्ला बिन उम्र, इबने माजह, बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"आदमी के लिये दूसरे से झगड़ते रहना और झगड़ा बन्द न करना काफ़ी बड़ा गुनाह है."

—इब्न अब्बास, तिरमिज़ी

मुहम्मद साहब ने कहा:—"अल्लाह की नज़रों में सब से ज़्यादा नफ़रत अंगेज़ आदमी वह है जो सब से ज़्यादा झगड़ता और तकरार करता है."

—आयशा, बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"कोई क़ौम जिसे एक बार हिदायत मिल गई थी उस वक़्त तक गुमराह नहीं हुई जब तक उस क़ौम के लोगों ने आपस में झगड़ना शुरू नहीं कर दिया."

—अबु अमामा, तिरमिज़ी. इब्ने माजा, अहमद.

एक दिन मुहम्मद साहब अपने सहाबियों (साथियों) के साथ बैठे थे. उनमें से एक आदमी ने उठकर अबुबकर का कुछ अपमान किया. लेकिन अबुबकर ने एक कान से सुन-

ی چھوڑ دے گا تو وہ برباد ہو جائیگا ۔ اِس کے بعد ایک ایسا زمانہ آئیگا جب کہ اُس زمانے کے لوگوں میں سے اگر کوئی اِس میں سے دسویں حصے پر بھی عمل کریگا تو وہ نجات پائیگا ۔"

—ابو ہریرہ، ترمزی ۔

محمد صاحب سے پوچھا گیا کہ :—"آدمیوں میں سب سے بڑھکر آدمی کون ہے ؟" محمد صاحب نے جواب دیا:—"ہر وہ آدمی جو دل کا صاف ہے اور زبان کا سچا ۔" پھر پوچھا گیا :—زبان کا سچا کون ہے یہ ہم سمجھ سکتے ہیں، لیکن دل کا صاف کون ہے یہ ہم کیسے جانیں ؟" پیغمبر نے جواب دیا :— "دل کا صاف وہ ہے جو پاک ہو، نیک ہو، پاپ نہ کرتا ہو، کوئی برائی نہ کرتا ہو اور کسی کے ساتھ نہ بغض (دویش) رکھتا ہو اور نہ کسی سے حسد (ایرشا) کرتا ہو ۔"

—عبداللہ بن عمرو، ابن ماجہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا :—"آدمی کے لئے دوسرے سے جھگڑتے رہنا اور جھگڑا بند نہ کرنا کافی بڑا گناہ ہے ۔"

—ابن عباس، ترمزی ۔

محمد صاحب نے کہا:—"اللہ کی نظروں میں سب سے زیادہ نفرت انگیز آدمی وہ ہے جو سب سے زیادہ جھگڑتا اور تکرار کرتا ہے ۔"

—عائشہ، بخاری، مسلم، ترمزی، نسائی ۔

محمد صاحب نے کہا :—"کوئی قوم جسے ایک بار ہدایت مل گئی تھی اُس وقت تک گمراہ نہیں ہوئی جب تک اُس قوم کے لوگوں نے آپس میں جھگڑنا شروع نہیں کر دیا ۔"

—ابو امامہ، ترمزی، ابن ماجہ: احمد ۔

ایک دن محمد صاحب اپنے صحابیوں (ساتھیوں) کے ساتھ بیٹھے ہوئے تھے ۔ اُن میں سے ایک آدمی نے اُٹھ کر ابوبکر کا کچھ اپمان کیا ۔ لیکن ابوبکر نے ایک کان سے سن

मुहम्मद साहब के कुछ उपदेश

डाक्टर मिरज़ा अबुल फज़ल

मुहम्मद साहब ने कहा:—"अपनी नसल या खानदान के घमन्ड में कोई किसी को बुरा न कहे. तुम सब आदम की औलाद हो और इस तरह एक दूसरे के बराबर हो जिस तरह एक माप दूसरे माप के बराबर होता है और तुम में से कोई भी माप में पूरा नहीं है. कोई किसी बात में दूसरे से बड़ा नहीं है. सिवाय उनके कि जो नेकी और धार्मिकता में बढ़े हुऐ हों. आदमी के लिये घमन्डी होना, बेशर्म होना या कंजूस होना बहुत बुरी बात है."

—ओक़बा बिन आमिर, अहमद, बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"उन सब लोगों को जो अपनी नसल का घमन्ड करते हैं, जो कहते हैं हमारे बाप दादा यह थे और वह थे, उन्हें चाहिये इस तरह का घमन्ड करना बन्द कर दें. इस तरह का घमंड उन्हें दोज़ख की आग के कोयले बना देगा. इस तरह का घमन्ड करने से अल्लाह की नज़रों में वह उस कीड़े से भी ज़यादा ज़लील होंगे जो मैले पर अपनी नाक रगड़ता है. सचमुच में इस तरह का घमन्ड जहालत के दिनों की चीज़ थी. अल्लाह ने अब उसे तुम्हारे लिए नाजायज़ कर दिया है. आदमी या तो नेक और ईमान वाला होता है या बद और गुनहगार —सब आदमी आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से बना हुआ था."

—अबू हुरैरा, तिरमिज़ी, अबू दाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"जो कोई अपने भाई का ख़त बिना उसकी इजाज़त के पढ़ता है वह दोज़ख की आग में पड़ता है (और उसी में फेंका जायगा)."

—इब्ने अब्बास, अबू दाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सचमुच तुम आजकल ऐसे ज़माने में रह रहे हो जिसमें जो कुछ करने का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है उसमें से अगर कोई दसवाँ हिस्सा

محمد صاحب کے کچھ اُپدیش

ڈاکٹر مرزا ابوالفضل

محمد صاحب نے کہا :—"اپنی نسل یا خاندان کے گھمنڈ میں کوئی کسی کو برا نہ کہے . تم سب آدم کی اولاد ہو اور ایسی طرح ایک دوسرے کے برابر ہو جس طرح ایک ماپ دوسرے ماپ کے برابر ہوتا ہے اور تم میں سے کوئی بھی ماپ میں پورا نہیں ہے . کوئی کسی بات میں دوسرے سے بڑا نہیں ہے . سوائے اُن کے کہ جو نیکی اور دھارمکتا میں بڑھے ہوئے ہوں . آدمی کے لئے گھمنڈی ہونا' بےشرم ہونا یا کنجوس ہونا بہت بری بات ہے ."

—عقبہ بن عامر' احمد' بیہقی .

محمد صاحب نے کہا :—"اُن سب لوگوں کو جو اپنی نسل کا گھمنڈ کرتے ہیں' جو کہتے ہیں کہ ہمارے باپ دادا یہ تھے اور وہ تھے' اُنہیں چاہئیے کہ اِس طرح کا گھمنڈ کرنا بند کر دیں . اِس طرح کا گھمنڈ اُنہیں دوزخ کی آگ کے کوئلے بنا دیگا . اِس طرح کا گھمنڈ کرنے سے اللہ کی نظروں میں وہ اُس کیڑے سے بھی زیادہ ذلیل ہونگے جو میلے پر اپنی ناک رگڑتا ہے . سچ مچ اِس طرح کا گھمنڈ جہالت کے دنوں کی چیز تھی . اللہ نے اب اُسے تمہارے لئے ناجائز کر دیا ہے . آدمی یا تو نیک اور ایمان والا ہوتا ہے اور یا بد اور گنہ گار . سب آدمی آدم کی اولاد ہیں اور آدم مٹی سے بنا ہوا تھا ."

—ابو ہریرہ' ترمذی' ابوداؤد .

محمد صاحب نے کہا :—"جو کوئی اپنے بھائی کا خط بنا اُس کی اجازت کے پڑھتا ہے وہ دوزخ کی آگ میں پڑتا ہے (اور اُسی میں پھینکا جائیگا) ."

—ابن عباس' ابو داؤد .

محمد صاحب نے کہا:—"سچ مچ آجکل تم ایک ایسے زمانے میں رہ رہے ہو جس میں جو کچھ کرنے کو تمہیں حکم دیا جا رہا ہے . اُس میں سے اگر کوئی دسواں حصہ

यह तो हुईं बड़ी-बड़ी बातें. रोजमर्रा के जीवन में भी इस तरह की उम्मती भावना गोधूली के सितारों की तरह झिलमिल करती रहती है. भारत में सदियों से सूफी पीरों के बेशुमार हिन्दू मुरीद रहे और अब भी हैं. मुगलिया बादशाहों ने कई वेदान्ती गुरु बनाये हैं और दारा शिकोह और अकबर बादशाह ने जो वेदान्त-इस्लाम का मौलिक और अत्यन्त महत्वपूर्ण समन्वय किया है, उसके असर शायद हम कुछ सदियों के बाद समझ सकेंगे जब उन जमानों और उन पुरुष श्रेष्ठों का खरा इतिहास खुलेगा और जनता के सामने बेधड़क पेश किया जायगा.

कलाओं के दायरे में वेदान्त-इस्लाम के तत्व एकमेक में घुल-मिलकर कुछ अजब खूबसूरती पैदा कर गये ! इनका असर हमारी जिन्दगी में ऐसा व्यापक हो गया है कि हिन्दू सङ्गीतकार सहज ही बोल बैठता है, 'जी, मैं तो हिन्दुस्तानी तरीके से गाता हूँ.' और उसे दिन भर भी भान नहीं होता कि वह किस अद्भुत संगम और समन्वय का प्रतीक बना हुआ है.

अफसोस है कि आज के स्थापत्य में इस असल और सुन्दर संगम-समन्वय की कोई झलक तक नजर नहीं आती. हमने जो सदियों के पुरुषार्थ से कमाया है, सो हमें इस तरह फेंक न देना चाहिये. इससे हमारा ही नहीं, तमाम दुनिया का भारी नुक़सान होगा. हम भारतियों को बड़ा नाज़ होना चाहिये कि सारी दुनिया के देशों में एक भारत ही है जो सच्चे मानों में संगम देश रहा है; और आज के लड़ते-झगड़ते, मारते-काटते, जलाते-डुबाते संसार में संगम-राज्य बनने का अधिकार रखता है.

'उम्मत' शब्द अरबिस्तान से आया है मगर 'उम्मत' भारत में ही उगा और पनपा है. ये ही हमारा सच्चा, सनातन और अमर विरसा (विरासत) है, हम भारतीयों को इसके लायक़ बनने की भरसक कोशिश करते रहना है, और इसे सुरक्षित रखकर इसके बढ़ाने और चढ़ाने में अपनी जान और जीवन लगा देना है.

अल्लाह करे ऐसा ही हो !
अल्लाह हमें सद्बुद्धि बख्शे !
अल्लाह हमें मदद करे !
आमीन !

[मङ्गल प्रभात से]

یہ تو ہوئی بڑی بڑی باتیں ۔ روز مرہ کے جیون میں بھی اس طرح کی اُمتی بھاونا گودھولی کے ستاروں کی طرح جھل مل کرتی رہتی ہے ۔ بھارت میں صدیوں سے صوفی پیروں کے بے شمار ہندو مرید رہے اور اب بھی ہیں ۔ مغلیہ بادشاہوں نے کئی ویدانتی گرو بنائے ہیں اور دارا شکوہ اور اکبر بادشاہ نے جو ویدانت اسلام کا مولک اور اتینت مہتو پورن سمنو کیا ہے، اسکے اثر شاید ہم کچھ صدیوں کے بعد سمجھ سکیں گے۔ جب ان زمانوں اور ان پُروش شریشٹھوں کا کھرا اِتہاس کھلے گا اور جنتا کے سامنے بے دھڑک پیش کیا جائیگا ۔

کلاؤں کے دائرے میں ویدانت اِسلام کے تتو ایکم ایک میں گھل ملکر کچھ عجب خوبصورتی پیدا کر گئے ! اِنکا اثر ہماری زندگی میں ایسا ویاپک ہو گیا ہے کہ ہندو سنگیت‌کار سہج ہی بول بیٹھتا ہے، 'جی' میں تو ہندستانی طریقے سے گاتا ہوں' اور اُسے دن بھر بھی بھان نہیں ہوتا کہ وہ کس ادبھت سنگم اور سمنوے کا پرتیک بنا ہوا ہے ۔

افسوس ہے کہ آج کے استھاپتیہ میں اِس اصل اور سندر سنگم سمنوے کی کوئی جھلک نظر نہیں آتی ۔ ہم نے جو صدیوں کے پُروشارتھ سے کمایا ہے، سو ہمیں اِس طرح پھینک نہ دینا چاہیئے ۔ اِس سے ہمارا ہی نہیں تمام دنیا کا بھاری نقصان ہوگا ۔ ہم بھارتیوں کو بڑا ناز ہونا چاہئے کہ ساری دنیا کے دیشوں میں ایک بھارت ہی ہے جو سچے معنوں میں سنگم دیش رہا ہے؛ اور آج کے لڑتے جھگڑتے، مارتے کاٹتے، جلاتے ڈباتے سنسار میں سنگم راجیہ بننے کا ادھکار رکھتا ہے ۔

'اُمت' شبد عربستان سے آیا ہے مگر 'اُمت' بھارت میں ہی اُگا اور پنپا ہے ۔ یہ ہی ہمارا سچا، سناتن اور امر ورثہ (وراثت) ہے، ہم بھارتیوں کو اِس کے لائق بننے کی بھرسک کوشش کرتے رہنا ہے، اور اِسے سورکشت رکھکر اِسکے بڑھانے اور چڑھانے میں اپنی جان اور جیون لگا دینا ہے ۔

اللہ کرے ایسا ہی ہو !
اللہ ہمیں سدبدھی بخشے !
اللہ ہمیں مدد کرے !
آمین !

[منگل پربھات سے]

दी, और जहाँ तक मुझे याद है कहा, 'अब्बास अली, तुम अन्दाज़ा लगा लो कि मस्जिद बनाने में कितना रुपया लगेगा. तुम जितना जमा कर सको, कर लो. अधूरा मैं पूरा कर दूँगा.' हमारे बाबाजान बरसों बड़ौदा और बम्बई में ग़रीब मुसलमानों, ताँगेवालों, विक्टोरिया वालों, कारीगरों व हर तरह के पेशेकारों से पाई-पैसा जमा करते रहे. न गरमी देखी न सर्दी, न दिन देखा न रात. बम्बई की मूसलाधार बरसात में, टख़नों तक के कीचड़ में फचाफच घूमते फिरे और आख़िर एक दिन उनका काम ख़तम हुआ. महाराज ने अपना वादा पूरा किया. मुझे अच्छी तरह याद है (मैं कितनी छोटी थी) कि एक सुबह हमारे बाग़ के फाटक पर महल का सवार आ खड़ा हुआ. मैंने दौड़कर फाटक खोला —महाराज की तरफ़ से लिफ़ाफ़ा आया था. मैं चीख़ती-चिल्लाती बाबाजान अम्माजान की तरफ़ दौड़ी : 'महाराज का चेक आया है, महाराज का चेक आया है.'

मस्जिद बनी. बड़ौदे की पुरानी मस्जिद में एक छः फ़ुट लंबा क़ुरानेपाक था, जो बरसों कहीं महफ़ूज़ बन्द पड़ा था. बड़े जुलूस, बड़ी धूमधाम और शान के साथ वह क़ुरानेपाक मस्जिद में लाया गया और एक बग़दादी पीर के हाथों नए घर में उसकी स्थापना हुई. वह जुलूस, वह स्थापना, वह मस्जिद में पहली नमाज़, वह पीर साहब की इमामत, वअज़ (प्रवचन) मैं कभी नहीं भूलूँगी. लेकिन सबसे ज़्यादा चमकदार तस्वीर मेरी आँखों और दिल में यह समाई है कि ज़बरदस्त शानदार जुलूस के सामने महाराज के मुख्य हाथी पर ज़र्रीन हौदे पर ज़र्रीन कपड़े से ढका हुआ वह क़ुरानेपाक मस्जिद की ओर जा रहा है और उसके पीछे हमारे महाराज, पीर साहब के साथ अपने सुनहरी अंबारी में अपने शानदार हाथी की पीठ पर आ रहे हैं.

बड़ौदे में एक बड़ा अजीब वातावरण था. पुराने ज़माने से वहाँ के एक बड़े नवाबी ख़ान्दान की राज दरबार में बड़ी प्रतिष्ठा थी. क़िस्सा मैंने यों सुना था कि पुराने ज़माने में इस नवाबी ख़ान्दान के पूर्वजों ने उस ज़माने के गायकवाड़ को दुश्मनों के सामने मदद की थी, जिससे राजा अपनी गद्दी पर सलामत रहे. चुनांचे, इस नवाबी ख़ान्दान को बहुत कुछ पुरस्कार के साथ यह अधिकार हासिल हुआ कि दरबारों में वह गायकवाड़ के साथ सिंहासन पर बिराजें, और उनके सदर दरवाज़े के सामने हाथी डोलते रहें. एक गायकवाड़ के लिए तो यह भी सुना था कि वे मस्जिद में जुमा की नमाज़ में कई बार शरीक रहते थे. मैंने उमर भर इस उम्मती वातावरण का मज़ा लूटा है. हिन्दू, इस्लामी, ईसाई, ज़रथस्त्री—सभी त्योहार मिल-जुलकर मनाये जाते थे. भारत संगम देश है, तो बड़ौदा ज़रूर संगम राज्य था—और दुआ है कि अब भी वही हाल होगा और सदा रहेगा.

دی' اور جہاں تک مجھے یاد ہے کہا 'عباس علی' تم اندازہ لگالو کہ مسجد بنانے میں کتنا روپیہ لگے گا۔ تم جتنا جمع کر سکو' کر لو۔ ادھورا میں پورا کردونگا۔' ہمارے بابا جان برسوں بڑودہ اور بمبئی میں غریب مسلمانوں' تانگے والوں' وکٹوریہ والوں' کاریگروں و ہر طرح کے پیشہ کاروں سے پائی پیسہ جمع کرتے رہے۔ نہ گرمی دیکھی نہ سردی' نہ دن دیکھا نہ رات۔ بمبئی کی موسلادھار برسات میں' ٹخنوں تک کے کیچڑ میں پھچاپھچ گھومتے پھرے اور آخر ایک دن اُن کا کام ختم ہوا۔ مہاراج نے اپنا وعدہ پورا کیا۔ مجھے اچھی طرح یاد ہے (میں کتنی چھوٹی تھی) کہ ایک صبح ہمارے باغ کے پھاٹک پر محل کا سوار آ کھڑا ہوا۔ میں نے دوڑ کر پھاٹک کھولا—مہاراج کی طرف سے لفافہ آیا تھا۔ میں چیختی چلاتی بابا جان اما جان کی طرف دوڑی : 'مہاراج کا چیک آیا ہے' مہاراج کا چیک آیا ہے۔'

مسجد بنی۔ بڑودے کی پرانی مسجد میں ایک چھ فٹ لمبا قرآن پاک تھا' جو برسوں کہیں محفوظ بند پڑا تھا۔ بڑے جلوس' بڑی دھوم دھام اور شان کے ساتھ وہ قرآن پاک مسجد میں لایا گیا اور ایک بغدادی پیر کے ہاتھوں نئے گھر میں اسکی استھاپنا ہوئی۔ وہ جلوس' وہ استھاپنا' وہ مسجد میں پہلی نماز' وہ پیر صاحب کی امامت' وعظ (پرِوچن) میں کبھی نہیں بھولوں گی۔ لیکن سب سے زیادہ چمکدار تصویر میری آنکھوں اور دل میں یہ سمائی ہے کہ زبردست شاندار جلوس کے سامنے مہاراج کے مکھیہ ہاتھی پر زریں ہودے پر' زریں کپڑے سے ڈھکا ہوا وہ قرآن پاک مسجد کی اور جا رہا ہے اور اسکے پیچھے ہمارے مہاراج' پیر صاحب کے ساتھ اپنی سنہری انباری میں اپنے شاندار ہاتھی کی پیٹھ پر جا رہے ہیں۔

بڑودے میں ایک بڑا عجیب واتاورن تھا۔ پرانے زمانے سے وہاں کے ایک بڑے نوابی خاندان کی راج دربار میں بڑی پرتشٹھا تھی۔ قصہ میں نے یوں سنا تھا کہ پرانے زمانے میں اس نوابی خاندان کے پوروجوں نے اس زمانے کے گایکواڑ کو دشمنوں کے سامنے مدد کی تھی' جس سے راجہ اپنی گدی پر سلامت رہے۔ چنانچہ' اس نوابی خاندان کو بہت کچھ پرسکار کے ساتھ یہ ادھیکار حاصل ہوا کہ درباروں میں وہ گایکواڑ کے ساتھ سنگھاسن پر وراجیں' اور انکے صدر دروازہ کے سامنے ہاتھی ڈولتے رہیں۔ ایک گایکواڑ کے لئے تو یہ بھی سنا تھا کہ وے مسجد میں جمعہ کی نماز میں کئی بار شریک رہتے تھے۔ میں نے عمر بھر اس امتی واتاورن کا مزہ لوٹا ہے۔ ہندو' اسلامی' عیسائی' زرتھشتوری'—سبھی تیوہار مل جلکر منائے جاتے تھے۔ بھارت سنگم دیش ہے' تو بڑودہ ضرور سنگم راج تھا— اور دعا ہے کہ اب بھی وہی حال ہوگا اور سدا رہیگا۔

उम्मत

कुमारी रैहाना तैयबजी

ये लफ़्ज़, 'उम्मत' कितना प्यारा लफ़्ज़ है ! अरबी लफ़्ज़ 'अुम्म' का मतलब है 'माँ' ; अुम्मत यानी 'एक माँ-बाप के बच्चे' । इसलिये अल्लाह पाक को विश्व का परम पिता मानकर, इस्लामी जमात को उम्मत कहा गया है. लेकिन कोई ज़रूरी नहीं कि उम्मत महज़ इस्लामियों की हो. जहाँ आपसी प्रेम, हमदर्दी, सहकार और नेक ख़ाहिश होती है, वहाँ 'उम्मत' होती ही है. देखा गया है कि निजी साधना में भी जैसे-जैसे दिल की सफ़ाई और चरित्र-सुधार होने लगता है, वैसे-ही-वैसे प्रेम, ख़ुशी और सभ्यता भी बढ़ने लगती है—बल्कि सफल साधना की पहली निशानी प्रेम और प्रसन्नता की बढ़ती ही होती है. जिस तरह से हम किसी इनसान का बर्ताव देखकर उसकी साधना का ख़ूबी फ़ैसला सहज ही करते हैं, उसी तरह किसी सभ्यता की का फ़ैसला भी उसके नैतिक और आध्यात्मिक प्रभाव से होता है. जब हम दुनिया भर से शिकायतें सुनते हैं कि मग़रिबी संस्कृति से स्वार्थ, हरफ़ाई (स्पर्धा) और दुश्मनी, चालबाज़ी बढ़ती है, तो हमारे दिल में इस तहज़ीब के लिए एक नफ़रत पैदा होना क़ुदरती ही है. ऐसी संस्कृति बुराई फैलाने वाली होती है. इसका सबूत आज सारी दुनिया के पीड़ित देश और दुखी प्रजायें दे रही हैं.

ऐसे आसुरी वातावरण में उम्मत भावना के सितारे कुछ अजब नूर से चमक उठते हैं. तीन-चार रोज़ से बरेली के मंदिर की दिल फड़का देने वाली बात जब से सुनी है मेरा दिल बाग़-बाग़ बना हुआ है. एक मन्दिर, और एक मुस्लिम के हाथ से उसकी नींव डाली जाय, और सुना कि मूर्ति-साज़ भी मुस्लिम ही है जिसने तीन सौ रुपये मन्दिर को भेंट दिये हैं. रहमान साहब ने जो आर्थिक मदद दी, सो बेशक क़ाबिले तारीफ़ है; मगर मन्दिरवालों और रहमान साहब ने जो दिली उम्मत की शानदार इबादतगाह खड़ी की है, उसमें हर भारतीय का ही क्या, हर इन्सान का दिल सिज्दे में झुक सकता है. जहाँ प्रेम है वहाँ ख़ुदा है, जहाँ एका है वहाँ ख़ुदा है !

बरेली का मन्दिर मुझे बड़ौदे की मस्जिद की याद दिलाता है. मैं बिलकुल बच्ची थी तब बाबाजान से शिकायतें सुनती रहती थी कि बड़ोदे में कोई जामा मस्जिद नहीं. एक टूटी मस्जिद थी सही, पर वह किसी के काम न आती थी. बाबाजान ने हमारे महाराज से ज़िक्र किया. महाराज ने बड़ी सहानुभूति से बाबाजान की बात सुनी, अपनी सहमति

اُمت

کماری ریحانہ طیب جی

یہ لفظ' "اُمت'' کتنا پیارا لفظ ھے ! عربی لفظ 'اُم' کا مطلب ھے 'ماں' ؛ اُمت یعنی 'ایک ماں باپ کے بچے' ۔ اسلیئے اللہ پاک کو وشو کا پرم پتا مان کر' اسلامی جماعت کو اُمت کہا گیا ھے ۔ لیکن کوئی ضروری نہیں کہ اُمت محض اسلامیوں کی ھو ۔ جہاں آپسی پریم' ھمدردی سہکار اور نیک خواھش ھوتی ھے' وھاں 'اُمت' ھوتی ھی ھے ۔ دیکھا گیا ھے کہ نجی سادھنا میں بھی جیسے جیسے دل کی صفائی اور چرتر سدھار ھونے لگتا ھے' ویسے ھی ویسے پریم' خوشی اور سبھیتا بھی بڑھنے لگتی ھے—بلکہ سپھل سادھنا کی پہلی نشانی پریم اور پرسنتا کی بڑھتی ھی ھوتی ھے ۔ جس طرح سے ھم کسی انسان کا برتاؤ دیکھکر اسکی سادھنا کا فیصلہ سہج ھی کرتے ھیں' اسی طرح کسی سبھیتا کی خوبی کا فیصلہ بھی اسکے نیتک اور ادھیاتمک پربھاؤ سے ھوتا ھے. جب ھم دنیا بھر سے شکایتیں سنتے ھیں کہ مغربی سنسکرتی سے سوارتھ' حریفائی (اسپردھا) اور دشمنی' چالبازی بڑھتی ھے تو ھمارے دل میں اس تہذیب کے لئے ایک نفرت پیدا ھونا قدرتی ھی ھے ۔ ایسی سنسکرتی برائی پھیلانے والی ھوتی ھے ۔ اسکا ثبوت آج ساری دنیا کے پیڑت دیش اور دکھی پرجائیں دے رھی ھیں ۔

ایسے آسوری واتاورن میں اُمت بھاونا کے ستارے کچھ عجب نور سے چمک اٹھتے ھیں ۔ تین چار روز سے بریلی کے مندر کی دل پھڑکا دینے والی بات جب سے سنی ھے میرا دل باغ باغ بنا ھوا ھے ۔ ایک مندر' اور ایک مسلم کے ھاتھ سے اسکی نیو ڈالی جائے' اور سنا کہ مورتی ساز بھی مسلم ھی ھے جسنے تین سو روپیہ مندر کو بھینٹ دیئے ھیں ۔ رحمان صاحب نے جو آرتھک مدد دی' سو بیشک قابل تعریف ھے؛ مگر مندر والوں اور رحمان صاحب نے جو دلی اُمت کی شاندار عبادت گاہ کھڑی کی ھے' اس میں ھر بھارتیہ کا ھی کیا' ھر انسان کا دل سجدے میں جھک سکتا ھے. جہاں پریم ھے وھاں خدا ھے' جہاں ایکا ھے وھاں خدا ھے !

بریلی کا مندر مجھے بڑودے کی مسجد کی یاد دلاتا ھے ۔ میں بالکل بچہ تھی تب بابا جان سے شکایتیں سنتی رھتی تھی کہ بڑودے میں کوئی جامع مسجد نہیں۔ ایک ٹوٹی مسجد تھی سہی' پر وہ کسی کے کام نہ آتی تھی۔ بابا جان نے ھمارے مہاراج سے ذکر کیا ۔ مہاراج نے بڑی سہانبھوتی سے بابا جان کی بات سنی' اپنی سہمتی

हुस्न में गेती१९ ढल के रहेगी
फूल दुलहन के खिल के रहेंगे
फ़र्क़े मरातिब२० उठ जायेगा
जलवे वह महफ़िल के रहेंगे

फ़स्ले ख़िज़ां जाती है 'नज़ीर' ! अब
चाके गरीबाँ२१ सिल के रहेंगे !

१. उक़दे = समस्याएँ, २. हवादिस = दुर्घटनायें, ३. मंज़िल के होकर रहना = मंज़िल पर पहुँच जाना, ४. अज़मते आदम = आदमी का महत्व, ५. मसलके आदम = आदमी के जीवन का लक्ष्य, ६. मुस्तक़बिल = भविष्य, ७. ग़ुंचे = कलियाँ, ८. अज़्म = संकल्प, ९. कोह-शिकन = पहाड़ तोड़ने वाला, १०. क़स्र = महल, ११. जादह = काम का ढङ्ग, १२. ख़िज़ाँ = पतझड़, १३. जोया = खोजी, १४. साहिल = किनारा, १५. ख़न्दाँ = हँसते हुए, १६. मरहले = कठनाइयाँ, १७. ऐवाँ = महल १८. चारा = इलाज, १९. गेती = धरती, २०. फ़र्क़े मरातिब = रुतबे का फ़र्क़ यानी ऊँच-नीच, २१. चाके गरीबाँ = फटा हुआ गरीबाँ.

حسن میں گیتی 19 ڈھل کے رہے گی
پھول دلہن کے کھل کے رہیں گے
فرق مراتب 20 اٹھ جائے گا
جلوے وہ محفل کے رہیں گے

فصل خزاں جاتی ہے 'نظیر' ! اب
چاک گریباں 21 سل کے رہیں گے !

1. عقدے = سمسیائیں، 2. حوادث = درگھٹنائیں، 3. منزل کے ہو کر رہنا = منزل پر پہنچ جانا، 4. عظمت آدم = آدمی کا مہتو، 5. مسلک آدم = آدمی کے جیون کا لکش، 6. مستقبل = بھوشیہ، 7. غنچے = کلیاں، 8. عزم = سنکلپ، 9. کوہ شکن = پہاڑ توڑنے والا، 10. قصر = محل، 11. جادہ = کام کا ڈھنگ، 12. خزاں = پت جھڑ، 13. جویا = کھوجی، 14. ساحل = کنارہ، 15. خنداں = ہنستے ہوئے، 16. مرحلے = کٹھنائیاں، 17. ایواں = محل، 18. چارہ = علاج، 19. گیتی = دھرتی، 20. فرق مراتب = رتبہ کا فرق یعنی اونچ نیچ، 21. چاک گریباں = پھٹا ہوا گریباں ۔

ग़ज़ल

श्री सआदत नज़ीर एम० ए०

कब तक दुश्मन दिल के रहेंगे ?
हमसे वह आख़िर मिलके रहेंगे
कब उक़दे१ मुश्किल के रहेंगे ?
आख़िर दिल दिल मिल के रहेंगे

लाख हवादिस २ राह में आयें
हम हो के मंज़िल ३ के रहेंगे
कितने भी तुम तफ़रके डालो !
साथी साथी मिल के रहेंगे

अज़मत४ आदम ! मसलिके ५आदम !!
तौर यह मुस्तक़बिल६ के रहेंगे
गरम हवा के झोकों में भी
ग़ुंचे७ दिल के खिल के रहेंगे

अज़्म८ हमारा कोहशिकन९ है
क़स्र १० तुम्हारे दिल के रहेंगे
एक हो जादा११, एक हो मंज़िल
दिल भी फिर तो मिल के रहेंगे

लाख ख़िज़ाँ१२ आँखें दिखलाए
ज़िद्दी ग़ुंचे खिल के रहेंगे
ज़ुल्म किये जा ! जौर किये जा !
हौसले ऊँचे दिल के रहेंगे

लाख घिरें तूफ़ाने बला में
हम जोया१३ साहिल के रहेंगे
तय करेंगे ख़न्दाँ-ख़न्दाँ१५
मरहले१६ जो मुश्किल के रहेंगे

ज़लज़ला वह है आनेवाला
आपके ऐवाँ१७ हिल के रहेंगे
ग़ैर से १८ चारा ग़म का न होगा
ज़ख़्म हरे सब दिल के रहेंगे

غزل

شری سعادت نظیر ایم اے

کب تک دشمن دل کے رہیں گے ؟
ہم سے وہ آخر مل کے رہیں گے
کب عقدے 1 مشکل کے رہیں گے ؟
آخر دل دل مل کے رہیں گے

لاکھ حوادث 2 راہ میں آئیں
ہم ہو کے منزل 3 کے رہیں گے
جتنے بھی تم تفرقے ڈالو !
ساتھی ساتھی مل کے رہیں گے

عظمت 4 آدم، مسلک 5 آدم !!
طور یہ مستقبل 6 کے رہیں گے
گرم ہوا کے جھونکوں میں بھی
غنچے 7 دل کے کھل کے رہیں گے

عزم 8 ہمارا کوہ شکن9 ہے
قصر 10 تمہارے ہل کے رہیں گے
ایک ہو جادہ، 11 ایک ہو منزل
دل بھی پھر تو مل کے رہیں گے

لاکھ خزاں 12 آنکھیں دکھلائے
ضدی غنچے کھل کے رہیں گے
ظلم کئے جا ! جور کئے جا !
حوصلے اونچے دل کے رہیں گے

لاکھ گھریں طوفان بلا میں
ہم جویا 13 ساحل کے رہیں گے
طے کریں گے، خنداں خنداں 15
مرحلے 16 جو مشکل کے رہیں گے

زلزلہ وہ ہے آنے والا
آپ کے ایواں 17 ہل کے رہیں گے
غیر سے چارہ 18 غم کا نہ ہوگا
زخم ہرے سب دل کے رہیں گے

गाँधी जी ने सुन लिया. उस समय कोई जवाब न दिया. वह अपने मित्रों के साथ किसी तरह की जबरदस्ती करना ठीक न समझते थे. अगले दिन सुबह को उन्होंने कुछ आश्रम वासियों से कहा—"अहमदाबाद के भंगी बाड़े में जाओ, वहाँ कोई मकान या जगह देखो. अपना आश्रम हम वहीं उठाकर ले जायेंगे और वहाँ के रहने वाले जो खाना हमें अपने हाथों से लाकर देंगे वही हम खा लेंगे या मजदूरी करके पेट भर लेंगे. जो मिलने आएगा वहीं आकर हमसे मिल लेगा." जगह ढूँढ़ी जाने लगी. उन धनवान मित्रों के कानों तक यह खबर पहुँची. हो सकता है उन्होंने आपस में कुछ सलाह की हो. आकर गाँधी जी से मिले. उन्होंने अपने दो दिन पहले के सुझाव की माफ़ी माँगी. आश्रम, आश्रम-वासियों, आश्रम प्रेमियों और आश्रम में आने-जाने वालों के लिये छूत छात हमेशा के लिये मिट गई. यह था गाँधी जी और उनके आश्रम का दर्जे बदर्जे लेकिन काफ़ी तेज़ी के साथ विकास.

گاندھی جی نے سن لیا ۔ اس سمے کوئی جواب نہ دیا ۔ وہ اپنے متروں کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی کرنا ٹھیک نہ سمجھتے تھے ۔ اگلے دن صبح کو انہوں نے کچھ آشرم واسیوں سے کہا—"احمدآباد کے بھنگی باڑے میں جاؤ، وہاں کوئی مکان یا جگہ دیکھو ۔ اپنا آشرم ہم وہیں اٹھا کر لے جائینگے اور وہاں کے رہنے والے جو کھانا اپنے ہاتھوں سے لا کر دینگے وہی ہم کھا لینگے یا مزدوری کر کے پیٹ بھر لینگے ۔ جو ملنے آئیگا وہیں آکر ہم سے مل لیگا ۔" جگہ ڈھونڈھی جانے لگی ۔ ان دھنوان متروں کے کانوں تک یہ خبر پہونچی ۔ ہو سکتا ہے انہوں نے آپس میں کچھ صلاح کی ہو ۔ وہ آکر گاندھی جی سے ملے ۔ انہوں نے اپنے دو دن پہلے کے سجھاؤ کی معافی مانگی ۔ آشرم، آشرم واسیوں، آشرم پریمیوں اور آشرم میں آنے جانے والوں کے لئے چھوت چھات ہمیشہ کے لئے مٹ گئی ۔ یہ تھا گاندھی جی اور ان کے آشرم کا درجے بدرجے لیکن کافی تیزی کے ساتھ وکاس ۔

यह शब्द मैं याद से ही लिख रहा हूँ पर शायद ही एक दो शब्द का फ़र्क़ हो. उससे असल मतलब में फ़र्क़ बिलकुल नहीं पड़ सकता.

मैं इसे पढ़कर कुछ हैरान हुआ. गाँधीजी को पढ़कर सुनाया और पूछा यह क्या ? उन्होंने तुरन्त जवाब दिया—"यह तुम्हारे लिये नहीं है. इसे रख दो. तुम आश्रमवासी बनो तो इसे न मानना. मैं कहाँ मानता हूँ ? तुम इसे रहने दो. तुम अपने काम की बात करो."

उनके यह फ़िक़रे भी मैं याद से लिख रहा हूँ. मैं समझ गया कि गाँधीजी और उनका आश्रम दोनों अभी विकास की हालत में थे, अभी खिल रहे थे और रूप ले रहे थे.

रौलट एक्ट के ख़िलाफ़ सत्याग्रह शुरू हो जाने के बाद से गाँधी जी सारे देश के सामने देश के सब से बड़े और अनन्य नेता के रूप में आगए. मैंने और मेरे जैसे विचारों के बहुत से पुराने काम करने वालों ने अब देख लिया कि अपने नये तरीक़े से गाँधी जी ने जो जान, जो बेदारी, जो जोश और जो त्याग की भावना देश भर में पैदा कर दी थी वह हम अपने पुराने तरीक़ों से न कर पाये थे और न कर सकते थे. मेरा उनसे बार-बार जगह-जगह मिलना, साथ रहना और साथ सफ़र करना तेज़ी के साथ बढ़ता चला गया.

साबरमती (अहमदाबाद) आश्रम में बम्बई में और जगह-जगह उनसे मिलना हुआ. कभी-कभी कुछ फुटकर बातें जो याद में जमी रह गई मैं यहाँ दे रहा हूँ.

यहाँ एक बात गाँधी जी से सुनी हुई लिख रहा हूँ.

साबरमती आश्रम क़ायम हो चुका था, पहले सत्याग्रह में उसकी बुनियाद पड़ी. वह सत्याग्रह आश्रम ही कहलाता था. कई हज़ार रुपये महीने का ख़र्च था. गाँधी जी के कुछ धनवान मित्र में और प्रेमी जो सब या अधिकतर गुजराती थे आश्रम का ख़र्च चलाते थे. खाना बनाने वाले हिन्दू थे. इन धनवान मित्रों में से भी कोई-कोई और उनके घर वाले जब-तब आश्रम में आकर भोजन कर लेते थे. उन्हें ऐसा करने में बड़ी ख़ुशी होती थी. थोड़े ही दिनों में एक मेहतर परिवार आश्रम में आकर ठहर गया और गाँधी जी के हुकुम से और सब की तरह रसोई में आने-जाने और सब के साथ खाने पीने लगा. बहुत से ग़ैर हिन्दू मेहमान भी आश्रम में आने, रहने और बिना भेद भाव सब के साथ खाने-पीने लगे. आश्रम का ख़र्च चलाने वाले कुछ धनवान भाइयों के लिये यह नई बात थी. वह इसके आदी न थे, उन्हें और उनके घर वालों को आश्रम में खाने में संकोच होने लगा. उन्होंने गांधी जी के पास आकर बड़ी नम्रता से यह सुझाया कि कम से कम उनकी ख़ातिर आश्रम की रसोई को ज़रा छोटी जात वालों और ग़ैर हिन्दुओं से अलग रखा जाये.

یہ شبد میں یاد سے ہی لکھ رہا ہوں پر شاید ہی ایک دو شبد کا فرق ہو ۔ اُس سے اصل مطلب میں فرق بالکل نہیں پڑ سکتا ۔

میں اسے پڑھ کر کچھ حیران ہوا ۔ گاندھی جی کو پڑھ کر سنایا اور پوچھا یہ کیا ؟ انہوں نے ترنت جواب دیا—"یہ تمہارے لئے نہیں ہے ۔ اِسے رکھ دو ۔ تم آشرم واسی بنو تو اِسے نہ ماننا ۔ میں کہاں مانتا ہوں ؟ تم اِسے رہنے دو ۔ تم اپنے کام کی بات کرو ۔"

اُن کے یہ فقرے بھی میں یاد سے لکھ رہا ہوں ۔ میں سمجھ گیا کہ گاندھی جی اور اُن کا آشرم دونوں ابھی وکاس کی حالت میں تھے، ابھی کھل رہے تھے اور روپ لے رہے تھے ۔

رولٹ ایکٹ کے خلاف ستیاگرہ شروع ہو جانے کے بعد سے گاندھی جی سارے دیش کے سامنے دیش کے سب سے بڑے اور اننیہ نیتا کے روپ میں آگئے ۔ میں نے اور میرے جیسے وچاروں کے بہت سے پرانے کام کرنے والوں نے اب دیکھ لیا کہ اپنے نئے طریقے سے گاندھی جی نے جو جان، جو بیداری، جو جوش اور جو تیاگ کی بھاونا دیش میں پیدا کر دی تھی وہ ہم اپنے پرانے طریقوں سے نہ کر پائے تھے اور نہ کر سکتے تھے ۔ میرا اُن سے بار بار جگہ جگہ ملنا، ساتھ رہنا اور ساتھ سفر کرنا تیزی کے ساتھ بڑھتا چلا گیا ۔

سابرمتی (احمدآباد) آشرم میں بمبئی میں اور جگہ جگہ اُن سے ملنا ہوا ۔ کبھی کبھی کچھ پھٹکر باتیں جو یاد میں جمی رہ گئیں میں یہاں دے رہا ہوں ۔

یہاں ایک بات گاندھی جی سے سنی ہوئی لکھ رہا ہوں ۔

سابرمتی آشرم قایم ہو چکا تھا ۔ پہلے ستیاگرہ میں اُس کی بنیاد پڑی ۔ وہ ستیاگرہ آشرم ہی کہلاتا تھا ۔ کئی ہزار روپئے مہینے کا خرچ تھا ۔ گاندھی جی کے کچھ دھنوان متر اور پریمی جو سب یا ادھکتر گجراتی تھے آشرم کا خرچ چلاتے تھے ۔ کھانا بنانے والے ہندو تھے ۔ اِن دھنوان متروں میں سے بھی کوئی کوئی اور اُن کے گھر والے جب تب آشرم میں آکر بھوجن کر لیتے تھے ۔ اُنہیں ایسا کرنے میں بڑی خوشی ہوتی تھی ۔ تھوڑے ہی دنوں میں ایک مہتر پریوار آشرم میں آکر ٹھہر گیا اور گاندھی جی کے حکم سے اور سب کی طرح رسوئی میں آنے جانے اور سب کے ساتھ کھانے پینے لگا ۔ بہت سے غیر ہندو مہمان بھی آشرم میں آنے، رہنے اور بنا بھید بھاؤ سب کے ساتھ کھانے پینے لگے ۔ آشرم کا خرچ چلانے والے کچھ دھنوان بھائیوں کے لئے یہ نئی بات تھی ۔ وہ اِس کے عادی نہ تھے ۔ اُنہیں اور اُن کے گھر والوں کو آشرم میں کھانے میں سنکوچ ہونے لگا ۔ انہوں نے گاندھی جی کے پاس آکر بڑی نمرتا سے یہ سجھایا کہ کم سے کم اُن کی خاطر آشرم کی رسوئی کو ذرا چھوٹی ذات والوں اور غیر ہندوؤں سے الگ رکھا جائے ۔

में ही काट कर काफ़ी दुख और ग़ुस्से के साथ जवाब दिया—"मैं तुम्हारी सभा का सद्र नहीं बनूँगा. मैं अपनी मंज़ूरी वापिस लेता हूँ ! तुम तो मेरे सत्याग्रह को बिलकुल ही नहीं समझे. अब जाओ, जो ठीक समझो करो, मैं सद्र नहीं. यह मेरा सत्याग्रह नहीं है."

मैं सुनकर घबरा गया और हलके से उनकी इस नाराज़गी का कारण पूछा. उन्होंने फिर कहा—"मुझे कोई दूसरा प्रतिज्ञा पत्र नहीं चाहिये. मुझे पंडित मोतीलाल जी नहीं चाहिये. मुझे कोई बड़ा आदमी नहीं चाहिये. इलाहाबाद के अगर चार मेहतर मिलकर मेरे प्रतिज्ञा पत्र पर दसख़त कर देंगे और अपनी सत्याग्रह सभा बनायेंगे तो मैं उनका सद्र बन जाऊँगा. तुम्हारी सभा का सद्र बनना मुझे नामंज़ूर है.' तुम तो सत्याग्रह को समझे ही नहीं.'

अब मैंने उनसे कहा—"आप नाराज़ न होइये. मेरी अपनी निजी राय भी यही थी जो आपकी है. कुछ और साथियों की राय वह थी जिस पर आप को इतना दुख हुआ. मैंने पहले से आप को अपना और दूसरों का यह फ़र्क़ बताना ठीक नहीं समझा. अब हम वही करेंगे जो आप चाहते हैं. आपके बिना सत्याग्रह कैसा ? आप ही रास्ता बतायें तो हम चल सकते हैं. दूसरा प्रतिज्ञा पत्र नहीं होगा. और कोई आए, चाहे न आए."

गांधीजी ने थोड़ा सोचा. मेरी तरफ़ को बार-बार देखा एक दो और छोटी-मोटी बात हुई. उनका ग़ुस्सा ठंडा हुआ फिर ख़ुश होकर कहा—"जाओ काम करो, मैं तुम्हारा सद्र और तुम सिक्रेटरी."

उसी दिन शाम को या अगले दिन मैं इलाहाबाद के लिये चल पड़ा. यू॰ पी॰ सत्याग्रह सभा का विधान छप गया. गाँधीजी सद्र, मैं और मंज़र अली सिक्रेटरी. मेम्बरों की फ़ेहरिस्त शायद तीस के क़रीब रही होगी, जिसमें एक नाम जवाहरलाल जी का भी था.

[5]

मेरी उसी अहमदाबाद यात्रा की एक और छोटी सी घटना मुझे याद आ रही है.

शायद तीसरे पहर का वक़्त था. मैं गाँधीजी के पास बैठा हुआ था. उनके सत्याग्रह आश्रम की नियमावली छप चुकी थी. छोटे साइज़ की पाँच सात सफ़े की छोटी सब चीज़ थी. एक कापी वहीं कहीं आस-पास पड़ी हुई थी. मेरी निगाह उस पर गई. मैं उसे पढ़ गया. उसमें एक नियम यह छपा हुआ था—"वर्ण आश्रम धर्म को बाधा न पहुँचे इसलिये आश्रमवासी जब कभी आश्रम से बाहर जायंगे तो केवल फल या दूध खाकर ही रहेंगे."

میں ہی کاٹ کر کافی دکھ اور غصہ کے ساتھ جواب دیا—"میں تمہاری سبھا کا صدر نہیں بنونگا . میں اپنی منظوری واپس لیتا ہوں ! تم تو میرے ستیاگرہ کو بالکل ہی نہیں سمجھے . اب جاؤ' جو ٹھیک سمجھو کرو' میں صدر نہیں . یہ میرا ستیاگرہ نہیں ہے ."

میں سن کر گھبرا گیا اور ہلکے سے اُن کی اِس ناراضگی کا کارن پوچھا . انہوں نے پھر کہا—"مجھے کوئی دوسرا پرتگیاں پتر نہیں چاہئے . مجھے پنڈت موتی لال جی نہیں چاہئیں . مجھے کوئی بڑا آدمی نہیں چاہئے . الٰہ آباد کے اگر چار مہتر ملکر میرے پرتگیاں پتر پر دستخط کر دینگے اور اپنی ستیاگرہ سبھا بنائینگے تو میں اُن کا صدر بن جاؤنگا . تمہاری سبھا کا صدر بننا مجھے نامنظور ہے . تم تو ستیاگرہ کو سمجھے ہی نہیں ."

اب میں نے اُن سے کہا—"آپ ناراض نہ ہوئیے . میری اپنی نجی رائے بھی یہی تھی جو آپ کی ہے . کچھ اور ساتھیوں کی رائے وہ تھی جس پر آپ کو اِتنا دکھ ہوا . میں نے پہلے سے آپ کو اپنا اور دوسروں کا یہ فرق بتانا ٹھیک نہیں سمجھا . اب ہم وہی کرینگے جو آپ چاہتے ہیں . آپ کے بنا ستیاگرہ کیسا ؟ آپ ہی راستہ بتائیں تو ہم چل سکتے ہیں . دوسرا پرتگیاں پتر نہیں ہوگا . اور کوئی آئے' چاہے نہ آئے ."

گاندھی جی نے تھوڑا سوچا . میری طرف کو بار بار دیکھا . ایک دو اور چھوٹی موٹی بات ہوئی . اُن کا غصہ ٹھنڈا ہوا . پھر خوش ہو کر کہا—"جاؤ کام کرو' میں تمہارا صدر اور تم سکریٹری ."

اُسی دن شام کو یا اگلے دن میں الٰہ آباد کے لئے چل پڑا . یو. پی. ستیاگرہ سبھا کا ودھان چھپ گیا . گاندھی جی صدر' میں اور منظر علی سکریٹری . ممبروں کی فہرست شاید تیس کے قریب رہی ہوگی' جس میں ایک نام جواہرلال جی کا بھی تھا .

[5]

میری اُسی احمدآباد یاترا کی ایک اور چھوٹی سی گھٹنا مجھے یاد آرہی ہے .

شاید تیسرے پہر کا وقت تھا . میں گاندھی جی کے پاس بیٹھا ہوا تھا . اُن کے ستیاگرہ آشرم کی نیماولی چھپ چکی تھی . چھوٹے سائز کی پانچ سات صفحہ کی چھوٹی سی چیز تھی . ایک کاپی وہیں کہیں آس پاس پڑی ہوئی تھی . میری نگاہ اُس پر گئی . میں اسے پڑھ گیا . اُس میں ایک نیم یہ چھپا ہوا تھا—"ورن آشرم دھرم کو بادھا نہ پہونچے اِس لئے آشرم واسی جب کبھی آشرم سے باہر جائینگے تو کیول پھل یا دودھ کھا کر ہی رہینگے ."

सुनकर सीधे जाकर उसी दालान में एक चारपाई पर चित लेट गए. किसी ने उनके इशारे पर तह किया हुआ एक भीगा कपड़ा उनके सर और माथे पर रख दिया. मैं ज़रा दूर बैठकर देखता रहा. चाहता था वह थोड़ा आराम कर लें तो पास पहुँचूँ. एक पल के अन्दर उन्होंने मेरी तरफ़ को आँख फेरी और इशारा करके अपनी चारपाई के पास बुलाया. मैं पास जाकर बैठ गया. कहने लगे—"सब हाल सुनाओ." मैंने जवाब दिया—"अभी आप बहुत थके हैं. ज़रा आराम कर लीजिये," जवाब मिला—"नहीं शुरू कर दो."

मैंने सारा हाल कह सुनाया. केवल पन्डित मोतीलाल और दूसरे प्रतिज्ञा पत्र की बात अभी नहीं कही.

इसके बाद मैंने कहा—"आप हमारी यू० पी० सत्याग्रह सभा के सद्र बनना मंज़ूर कीजिये."

उन्होंने जवाब दिया—"मुझे बड़ी ख़ुशी से मंज़ूर है. मैं तुम्हारी सभा का सद्र बन गया. तुम सिक्रेटरी हो न ?"

मैंने कहा—"हाँ, मैं और मंज़ार अली दो सिक्रेटरी हैं."

गांधीजी ने पसन्द किया और कहा—"काम शुरू कर दो.

इससे कुछ पहले गांधीजी ने देश भर से उन लोगों के नाम माँगे थे जो अपने आप को क़ानून तोड़कर जेल जाने के लिये पेश करें. इस पर मैं और मंज़र अली दोनों अपने नाम भेज चुके थे. यह नाम बम्बई के अख़बारों में छपते जाते थे.

गांधीजी से उनके सद्र होने और अपने और मंज़र अली के सिक्रेटरी होने की बात तय करने के बाद मैंने उनसे दूसरे प्रतिज्ञा पत्र की बात छेड़ी. मैंने उनसे कहा—"पन्डित मोती लाल जी को आपका प्रतिज्ञा पत्र मंज़ूर नहीं. उनके लिये और उन जैसे विचार वालों के लिये हमने एक दूसरा प्रतिज्ञा पत्र बना लिया है."

यहाँ मैंने उन्हें दूसरा प्रतिज्ञा पत्र पढ़ सुनाया और कहा—"यह पन्डित मोतीलाल जी को मंज़ूर है. हम चाहते हैं वह हमारी सभा के नायब सद्र हो जायँ इसलिये हमने सोचा है कि जो आदमी दोनों में से किसी एक भी प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तख़त कर दे वह हमारी सभा का मेम्बर बन सके. मोतीलाल जी के आजाने से जवाहरलाल जी का आना आसान हो जायगा, और फिर शायद हम तीन सिक्रेटरी हो जायँगे."

मैंने देखा कि मेरे यह सब बात कहते-कहते गांधीजी के चेहरे का रंग बदल गया, उन्होंने तुरन्त मेरी बात बीच

سن کر سیدھے جاکر اُسی دالان میں ایک چارپائی پر چت لیٹ گئے ۔ کسی نے اُن کے اِشارہ پر تہ کیا ہوا ایک بھیگا کپڑا اُن کے سر اور ماتھے پر رکھ دیا ۔ میں ذرا دور بیٹھ کر دیکھتا رہا ۔ چاہتا تھا وہ تھوڑا آرام کر لیں تو پاس پہونچوں ۔ ایک پل کے اندر انہوں نے میری طرف کو آنکھ پھیری اور اشارہ کر کے اپنی چارپائی کے پاس بلایا ۔ میں پاس جاکر بیٹھ گیا ۔ کہنے لگے—"سب حال سناؤ ۔" میں نے جواب دیا—"ابھی آپ بہت تھکے ہیں ذرا آرام کر لیجئے ۔" جواب ملا—"نہیں' شروع کر دو ۔"

میں نے سارا حال کہہ سنایا ۔ کیول پنڈت موتی لال اور دوسرے پرتگیاں پتر کی بات ابھی نہیں کہی ۔

اِس کے بعد میں نے کہا—"آپ ہماری یو. پی. ستیاگرہ سبھا کے صدر بننا منظور کیجئے ۔"

انہوں نے جواب دیا—"مجھے بڑی خوشی سے منظور ہے ۔ میں تمہاری سبھا کا صدر بن گیا ۔ تم سکریٹری ہو نہ ؟"

میں نے کہا—"ہاں' میں اور منظار علی دو سکریٹری ہیں ۔"

گاندھی جی نے پسند کیا اور کہا—"کام شروع کر دو ۔"

اِس سے کچھ پہلے گاندھی جی نے دیش بھر سے اُن لوگوں کے نام مانگے تھے جو اپنے آپ کو قانون توڑ کر جیل جانے کے لئے پیش کریں ۔ اِس پر میں اور منظار علی دونوں اپنے نام بھیج چکے تھے ۔ یہ نام بمبئی کے اخباروں میں چھپتے جاتے تھے ۔

گاندھی جی سے اُن کے صدر ہونے اور اپنے اور منظارعلی کے سکریٹری ہونے کی بات طے کرنے کے بعد میں نے اُن سے دوسرے پرتگیاں پتر کی بات چھیڑی ۔ میں نے اُن سے کہا—"پنڈت موتی لال جی کو آپ کا پرتگیاں پتر منظور نہیں ۔ اُن کے لئے اور اُن جیسے وچاروالوں کے لئے ہم نے ایک دوسرا پرتگیاں پتر بنا لیا ہے ۔"

یہاں میں نے انہیں دوسرا پرتگیاں پتر پڑھ سنایا اور کہا—"یہ پنڈت موتی لال جی کو منظور ہے ۔ ہم چاہتے ہیں وہ ہماری سبھا کے نایب صدر ہو جائیں اِس لئے ہم نے سوچا ہے کہ جو آدمی دونوں میں سے کسی ایک بھی پرتگیاں پتر پر دستخط کر دے وہ ہماری سبھا کا ممبر بن سکے ۔ موتی لال جی کے آجانے سے جواہر لال جی کا آنا آسان ہو جائیگا اور پھر شاید ہم تین سکریٹری ہو جائیں ۔"

میں نے دیکھا کہ میرے یہ سب بات کہتے کہتے گاندھی جی کے چہرے کا رنگ بدل گیا ۔ انہوں نے ترنت میری بات بیچ

सरकार के खिलाफ सत्याग्रह शुरू करने से पहले लोग उपवास और प्रार्थनाओं के जरिये अपनी आत्माओं को शुद्ध कर लें. बड़ों-बड़ों का अन्दाजा यह था कि मुमकिन है बड़े-बड़े शहरों में आधी पक्की हड़ताल हो जावे. पर यह एक इतिहासी घटना है कि उस दिन हिमालय से लेकर रासकुमारी तक दूर से दूर किसी गाँव में भी हल नहीं चला.

अहमदाबाद से खबर आते ही इलाहाबाद होम रूल लीग के दफ़्तर में जिसका मैं एक मन्त्री था, मैंने कुछ मित्रों को जमा किया. एक यू. पी. सत्याग्रह सभा क़ायम हुई. गांधीजी को उसका सदर रखने की तजवीज़ हुई. मैं और मंज़रअली सोख़्ता उसके सिक्रेटरी बने. अहमदाबाद जाकर गांधीजी को इसकी इत्तला देने, उनसे हिदायतें लेने और सदर बनाने के लिये राजी करने का काम मुझे सौंपा गया.

इस बीच एक और छोटी सी घटना हुई. गांधीजी ने देश भर के सत्याग्रहियों के लिये एक प्रतिज्ञा पत्र निकाला था जो सब अख़बारों में छप चुका था. यू० पी० सत्याग्रह सभा के मेम्बरों के लिये भी इस प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तख़त करना ज़रूरी थे. हम में से कुछ लोग चाहते थे कि पंडित मोतीलाल नेहरू यू० पी० सत्याग्रह सभा के नायब सदर हों. पन्डित मोतीलाल जी को गांधीजी का प्रतिज्ञा पत्र पसन्द न था. वह क़ानून तोड़ने और जेल जाने को तैयार थे, पर अपनी नकेल दूसरे के हाथ में देना पसन्द न करते थे. कुछ साथियों की सलाह से एक दूसरा प्रतिज्ञा पत्र लिखा गया जिसे पन्डित मोतीलाल जी ने पसन्द कर लिया. वह उस पर दसख़त करने को राजी हो गये. तय हुआ कि यू० पी० सत्याग्रह सभा का जो मेम्बर चाहे गांधीजी वाले प्रतिज्ञा पत्र पर दसख़त कर दे और जो चाहे इस नये प्रतिज्ञा पत्र पर. दोनों बराबर के मेम्बर समझे जायँ. पर इस सबके लिये भी गांधीजी की सलाह और इजाज़त ज़रूरी थी. यह इजाज़त हासिल करना भी मेरे सुपुर्द हुआ.

गांधीजी से मिलने के लिये मैं अहमदाबाद पहुँचा. हाल ही में अहमदाबाद और वीरमगाम में बलवे हो चुके थे. इन ज़ख़्मों के बहुत से घायल अहमदाबाद के किसी अस्पताल या अस्पतालों में पड़े हुए थे. जिस वक़्त मैं आश्रम पहुँचा गांधीजी इन घायलों को देखने गये हुए थे. मैं बैठकर इन्तज़ार करने लगा.

थोड़ी देर बाद गांधीजी आए. मालूम होता था बेहद थके हुए हैं. पाँव लड़खड़ाते से पड़ रहे थे. मैंने नमस्कार किया. मुझे देखकर ख़ुश हुए. पूछा कब आए? मेरा जवाब

سرکار کے خلاف ستیاگرہ شروع کرنے سے پہلے لوگ اُپواس اور پرارتھناؤں کے ذریعہ اپنی آتماؤں کو شدھ کر لیں ۔ بڑوں بڑوں کا اندازہ یہ تھا کہ ممکن ہے بڑے بڑے شہروں میں آدھی پوری ہڑتال ہو جاوے۔ پر یہ ایک اِتہاسی گھٹنا ہے کہ اُس دن ہمالیہ سے لیکر راس کماری تک دور سے دور کسی گاؤں میں بھی ہل نہیں چلا ۔

احمداباد سے خبر آتے ہی الہ آباد ہوم رول لیگ کے دفتر میں جس کا میں ایک منتری تھا' میں نے کچھ متروں کو جمع کیا ۔ ایک یو. پی. ستیاگرہ سبھا قایم ہوئی ۔ گاندھی جی کو اُس کا صدر رکھنے کی تجویز ہوئی ۔ میں اور منظر علی سوختہ اُس کے سکریٹری بنے ۔ احمداباد جا کر گاندھی جی کو اِس کی اِطلاع دینے' ان سے ہدایتیں لینے اور صدر بنانے کے لئے راضی کرنے کا کام مجھے سونپا گیا ۔

اِس بیچ ایک چھوٹی سی گھٹنا ہوئی ۔ گاندھی جی نے دیش بھر کے ستیاگرہیوں کے لئے ایک پرتگیاں پتر نکالا تھا جو سب اخباروں میں چھپ چکا تھا ۔ یو. پی. ستیاگرہ سبھا کے ممبروں کے لئے بھی اِس پرتگیاں پتر پر دستخط کرنا ضروری تھے ۔ ہم میں سے کچھ لوگ چاہتے تھے کہ پنڈت موتی لال نہرو یو. پی. ستیاگرہ سبھا کے نایب صدر ہوں ۔ پنڈت موتی لال جی کو گاندھی جی کا پرتگیاں پتر پسند نہ تھا ۔ وہ قانون توڑنے اور جیل جانے کو تیار تھے' پر اپنی نکیل دوسرے کے ہاتھ میں دینا پسند نہ کرتے تھے ۔ کچھ ساتھیوں کی صلاح سے ایک دوسرا پرتگیاں پتر لکھا گیا جسے پنڈت موتی لال جی نے پسند کر لیا ۔ وہ اُس پر دستخط کرنے کو راضی ہو گئے ۔ طے ہوا کہ یو. پی. ستیاگرہ سبھا کا جو ممبر چاہے گاندھی جی والے پرتگیاں پتر پر دستخط کر دے اور جو چاہے اِس نئے پرتگیاں پتر پر ۔ دونوں برابر کے ممبر سمجھے جائیں ۔ پر اِس سب کے لئے بھی گاندھی جی کی صلاح اور اجازت ضروری تھی ۔ یہ اجازت حاصل کرنا بھی میرے سپرد ہوا ۔

گاندھی جی سے ملنے کے لئے میں احمداباد پہونچا ۔ حال ہی میں احمداباد اور ویرم گام میں بلوے ہو چکے تھے ۔ ان زخموں کے بہت سے گھایل احمداباد کے کسی اسپتال یا اسپتالوں میں پڑے ہوئے تھے ۔ جس وقت میں آشرم پہونچا گاندھی جی اِن گھایلوں کو دیکھنے گئے ہوئے تھے ۔ میں بیٹھ کر اِنتظار کرنے لگا ۔

تھوڑی دیر بعد گاندھی جی آئے ۔ معلوم ہوتا تھا بیحد تھکے ہوئے ہیں ۔ پاؤں لڑکھڑاتے سے پڑ رہے تھے ۔ میں نے نمسکار کیا ۔ مجھے دیکھ کر بیحد خوش ہوئے ۔ پوچھا کب آئے ؟ میرا جواب

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट था उसे उस किताब के दर्शन नहीं कराए गये और अंगरेज़ ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेटों तक को पढ़ने को दी गई. मुझे उस किताब को देखने और उसमें अपना नाम और हाल पढ़ने का सौभाग्य मिला था. अब सवाल था कि इन सबको और इसी तरह के औरों को अंगरेज़ी राज की राह के रोड़ों को किस तरह हटाया जाये. खुर्राट और तजरबेकार अफ़सरों की एक कमेटी मुक़र्रर हुई. उसने एक बहुत बड़ी रिपोर्ट इस बात की तैयार की कि अंगरेज़ी राज के खिलाफ़ कब-कब, कहाँ-कहाँ और किस-किस तरह बग़ावत के ख़याल पैदा हुए और फैले और कहाँ क्या-क्या कोशिशें हुईं. इस रिपोर्ट के आधार पर और इस कमेटी की सलाह के मुताबिक़ बड़े लाट की कौंसिल में दो नये क़ानून पेश किये गए. यह दोनों क़ानून रौलट ऐक्ट कहलाते हैं और देश में उस समय 'काले क़ानूनों' के नाम से मशहूर थे. इन नए क़ानूनों में देश के छोटे से छोटे पुलिस अफ़सरों को वह ज़बरदस्त अधिकार दे दिये गए जिनके रहते देश के अन्दर नरम या गरम किसी तरह के राजकाजी आन्दोलन का चल सकना भी नामुमकिन था. नरम दल के बड़े से बड़े नेता भी इन्हें देखकर हैरानी, असन्तोश और ग़ुस्से से भर गये. लाट साहब की कौंसिल के अन्दर इन क़ानूनों के खिलाफ़ माननीय श्रीनिवास शास्त्री और मिस्टर एम. ए. जिन्नाह की जो ज़ोरदार तक़रीरें हुईं वह एक बार सारे देश में गूँज गईं. क़ानून पास हो गए. सारा देश ग़ुस्से और बेचैनी से भर गया. गांधी जी कैसे चुप रह सकते थे ? उनके लिये यह भगवान का दिया हुआ मौक़ा था.

इस गरमा गरमी के शुरू के दिनों में गांधीजी अहमदाबाद में सख़्त बीमार पड़े हुए थे. कहा जाता है कि एक बार उनके बचने की भी आशा कम दिखाई देती थी. हो सकता है कि उनकी बीमारी शरीर की कम और मन की अधिक रही हो. हो सकता है उनकी आत्मा अन्दर से कर्त्तव्य-पथ का दरवाज़ा खोजने के लिये बेचैन रही हो. जो हो, देश के रोग के सामने वह अपना रोग भूल गए. अहमदाबाद से ही उन्होंने नये काले क़ानूनों के ख़िलाफ़ सत्याग्रह करने यानी खुले तौर पर सरकार का कोई न कोई क़ानून तोड़ने और उसकी सज़ा में जेल जाने का प्रोग्राम देश के सामने रक्खा. देश भर के लिए एक सत्याग्रह सभा बनाई गई जिसके गाँधीजी सद्र थे. गाँधीजी ने ख़ुद बम्बई जाकर ज़ब्त किताबों को खुले आम बेचकर सत्याग्रह शुरू किया. देश पर इसका कितना गहरा असर हुआ इसका पहले से किसी को गुमान भी न हो सकता था और अब भी अन्दाज़ा लगा सकना कठिन है. 6 अप्रैल 1919 के लिये हड़ताल ऐलान हो चुकी थी, गाँधीजी का उससे मक़सद यह था, कि

ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ تھا اسے اس کتاب کے درشن نہیں کرائے گئے اور انگریز جوائنٹ مجسٹریٹوں تک کو پڑھنے کو دی گئی۔ مجھے اس کتاب کو دیکھنے اور اس میں اپنا نام اور حال پڑھنے کا سوبھاگیہ ملا تھا۔ اب سوال تھا کہ ان سب کو اور اسی طرح کے اوروں کو انگریزی راج کی راہ کے روڑوں کو کس طرح ہٹایا جائے۔ خرانٹ اور تجربہ‌کار افسروں کی ایک کمیٹی مقرر ہوئی۔ اس نے ایک بہت بڑی رپورٹ اس بات کی تیار کی کہ انگریزی راج کے خلاف کب کب، کہاں کہاں اور کس کس طرح بغاوت کے خیال پیدا ہوئے پھیلے کہاں اور کیا کیا کوششیں ہوئیں۔ اس رپورٹ کے آدھار پر اور اس کمیٹی کی صلاح کے مطابق بڑے لاٹ کی کونسل میں دو نئے قانون پیش کئے گئے۔ یہ دونوں قانون رولٹ ایکٹ کہلاتے ہیں اور دیش میں اس سمے 'کالے قانونوں' کے نام سے مشہور تھے۔ ان نئے قانونوں میں دیش کے چھوٹے سے چھوٹے پولس افسروں کو وہ زبردست ادھیکار دے دیئے گئے جن کے رہتے دیش کے اندر نرم یا گرم کسی طرح کے راجکاجی آندولن کا چل سکنا بھی ناممکن تھا۔ نرم دل کے بڑے سے بڑے نیتا بھی انہیں دیکھ کر حیرانی، اسنتوش اور غصہ سے بھر گئے۔ لاٹ صاحب کی کونسل کے اندر ان قانونوں کے خلاف مانیہ شرینواس شاستری اور مسٹر ایم۔ اے۔ جناح کی جو زوردار تقریریں ہوئیں وہ ایک بار سارے دیش میں گونج گئیں۔ قانون پاس ہو گئے۔ سارا دیش غصہ اور بےچینی سے بھر گیا۔ گاندھی جی کیسے چپ رہ سکتے تھے؟ ان کے لئے یہ بھگوان کا دیا ہوا موقع تھا۔

اس گرما گرمی کے شروع کے دنوں میں گاندھی‌جی احمدآباد میں سخت بیمار پڑے ہوئے تھے۔ کہا جاتا ہے کہ ایک بار ان کے بچنے کی بھی آشا کم دکھائی دیتی تھی۔ ہو سکتا ہے کہ ان کی بیماری شریر کی کم اور من کی ادھک رہی ہو۔ ہو سکتا ہے ان کی آتما اندر سے کرتویہ پتھ کا دروازہ کھوجنے کے لئے بےچین رہی ہو۔ جو ہو، دیش کے روگ کے سامنے وہ اپنا روگ بھول گئے۔ احمدآباد سے ہی انہوں نے نئے کالے قانونوں کے خلاف ستیاگرہ کرنے یعنی کھلے طور پر سرکار کا کوئی نہ کوئی قانون توڑنے اور اس کی سزا میں جیل جانے کا پروگرام دیش کے سامنے رکھا۔ دیش بھر کے لئے ایک ستیاگرہ سبھا بنائی گئی جس کے گاندھی جی صدر تھے۔ گاندھی جی نے خود بمبئی جاکر ضبط کتابوں کو کھلے عام بیچ کر ستیاگرہ شروع کیا۔ دیش پر اس کا کتنا گہرا اثر ہوا اس کا پہلے سے کسی کو گمان بھی نہ ہو سکتا تھا اور اب بھی اندازہ لگا سکنا کٹھن ہے۔ 6 اپریل 1919 کے لئے ہڑتال اعلان ہو چکی تھی۔ گاندھی جی کا اس سے مقصد یہ تھا کہ

दोपहर को मैं तुम्हें बुलाऊँगा, तब तुमसे बातें होंगी." मैंने उनकी आज्ञा मान ली.

दोपहर बाद उन्होंने मुझे ऊपर के एक कमरे में बुलाया. वह और मैं ही थे. फ़र्श पर बैठकर लगभग दो घंटे तक फिर बातें होती रहीं. वह सब बातें मुझे अब याद नहीं रहीं. इतना याद है कि गांधी जी को हिन्दुस्तान भर की एक-एक छावनी के बारे में यह जानकारी थी कि किसमें कितनी फ़ौज है, कितनी देसी और कितनी अंगरेज़ी, और कितने हथियार हैं, और कहाँ कोई बग़ावत या आन्दोलन खड़ा हो जाने पर सरकार कितना मुक़ाबला कर सकती है. उन्होंने इन चीज़ों को अच्छी तरह पढ़ रखा था. फ़ौजों के इधर से उधर आने जाने को भी वह ध्यान से पढ़ते सुनते रहते थे. मुझ पर यह भी असर पड़ा कि किसी एक जगह को अपने आन्दोलन के लिये या सत्याग्रह के लिये चुनते समय यह सब चीज़ें उनकी निगाह में रहती हैं. उस दिन की दो घंटे की बात-चीत से दो बातें मेरे दिल पर जम गईं. एक यह कि अंगरेज सरकार की हिंसा करने की शक्ति की जितनी अच्छी जानकारी गाँधी जी को थी उतनी हमारे पुराने क्रान्तिकारी दल में किसी को न थी. दूसरी यह कि विदेशी हुकूमत से नफ़रत और मुल्क की आज़ादी के लिये तड़प भी गाँधीजी में किसी दूसरे से कम न थी. कुछ ऐसा भी लगा कि उनकी धर्म, पाप और अहिंसा की बातें केवल वक़्त की ज़रूरत थीं और वह बड़ी मेहनत के साथ कोई नया रास्ता ढूँढ़ रहे थे या बना रहे थे.

मेरा दिल बदला, मैं गहरे सोच में पड़ गया. फिर भी अधिक न ठहरा. शाम की गाड़ी से मैं इलाहाबाद के लिये रवाना हो गया.

इस तरह मेरी गाँधी जी की दूसरी मुलाक़ात ख़तम हुई.

[4]

पहली जंग के ख़तम होने से पहले-पहले देश में नई जान और नई उमंगें पैदा हो रही थीं. गाँधी जी के छोटे-छोटे नये तजरबे भी बहुत सों का ध्यान अपनी तरफ़ खींच रहे थे. सरकार इन सब बातों को देख और समझ रही थी. बढ़ती हुई बेचैनी और आज़ादी की प्यास को कुचलने की तरकीबें सोची जाने लगीं. देश भर के कुछ चुने हुए काम करने वालों या आज़ादी के प्रेमियों की एक फ़ेहरिस्त तैयार करके हर एक का थोड़ा-थोड़ा हाल देते हुए अंगरेज़ी में एक छोटी सी किताब तैयार की और गुप्त रीति से उसे हिन्दुस्तान भर के सब अंगरेज अफ़सरों के हाथों में पहुँचाया गया. मुझे मालूम है कि बाज़-बाज़ ज़िलों में जहाँ हिन्दुस्तानी

دوپہر کو میں تمہیں بلاؤنگا' تب تم سے باتیں ہونگی ۔ میں نے اُن کی آگیاں مان لی ۔

دوپہر بعد انہوں نے مجھے اُوپر کے ایک کمرے میں بلایا ۔ وہ اور میں ہی تھے ۔ فرش پر بیٹھ کر لگ بھگ دو گھنٹے تک پھر باتیں ہوتی رہیں ۔ وہ سب باتیں مجھے اب یاد نہیں رہیں ۔ اِتنا یاد ہے کہ گاندھی جی کو ہندستان بھر کی ایک ایک چھاؤنی کے بارے میں یہ جانکاری تھی کہ کس میں کتنی فوج ہے' کتنی دیسی اور کتنی انگریزی' اور کتنے ہتھیار ہیں' اور کہاں کوئی بغاوت یا آندولن کھڑا ہو جانے پر سرکار کتنا مقابلہ کر سکتی ہے ۔ انہوں نے اِن چیزوں کو اچھی طرح پڑھ رکھا تھا ۔ فوجوں کے اِدھر سے اُدھر آنے جانے کو بھی وہ دھیان سے پڑھتے سنتے رہتے تھے ۔ مجھ پر یہ بھی اثر پڑا کہ کسی ایک جگہہ کو اپنے آندولن کے لئے یا ستیاگرہ کے لئے چنتے سمے یہ سب چیزیں ان کی نگاہ میں رہتی ہیں ۔ اُس دن کی دو گھنٹے کی بات چیت سے دو باتیں میرے دل پر جم گئیں ۔ ایک یہ کہ انگریز سرکار کی ہنسا کرنے کی شکتی کی جتنی اچھی جانکاری گاندھی جی کو تھی اُتنی ہمارے پرانے کرانتکاری دل میں کسی کو نہ تھی ۔ دوسرے یہ کہ ودیشی حکومت سے نفرت اور ملک کی آزادی کے لئے تڑپ بھی گاندھی جی میں کسی دوسرے سے کم نہ تھی ۔ کچھ ایسا بھی لگا کہ ان کی دھرم' پاپ اور اہنسا کی باتیں کیول وقت کی ضرورت تھیں اور وہ بڑی محنت کے ساتھ کوئی نیا راستہ ڈھونڈ رہے تھے یا بنا رہے تھے ۔

میرا دل بدلا' میں گہرے سوچ میں پڑ گیا ۔ پھر بھی ادھک نہ ٹھہرا ۔ شام کی گاڑی سے میں الہ‌آباد کے لئے روانہ ہو گیا ۔

اِس طرح میری گاندھی جی کی دوسری ملاقات ختم ہوئی ۔

[4]

پہلی جنگ کے ختم ہونے سے پہلے پہلے دیش میں نئی جان اور نئی اُمنگیں پیدا ہو رہی تھیں ۔ گاندھی جی کے چھوٹے چھوٹے نئے تجربے بھی بہت سوں کا دھیان اپنی طرف کھینچ رہے تھے ۔ سرکار اِن سب باتوں کو دیکھ اور سمجھ رہی تھی ۔ بڑھتی ہوئی بےچینی اور آزادی کی پیاس کو کچلنے کی ترکیبیں سوچی جانے لگیں ۔ دیش بھر کے کچھ چنے ہوئے کام کرنے والوں یا آزادی کے پریمیوں کی ایک فہرست تیار کر کے ہر ایک کا تھوڑا تھوڑا حال دیتے ہوئے انگریزی میں ایک چھوٹی سی کتاب تیار کی اور گپت ریتی سے اُسے ہندستان بھر کے سب انگریز افسروں کے ہاتھوں میں پہونچایا گیا. مجھے معلوم ہے کہ بعض بعض ضلعوں میں جہاں ہندستانی

मैं गुजरात पहुँचा. गाँधी जी उस समय नडियाद के अनाथालय में ठहरे हुए थे. मैं उनसे वहीं मिलने के लिये गया. मेरी उनकी यह दूसरी मुलाक़ात थी.

सुबह का वक़्त था. गाँधी जी अनाथालय के हाल के एक कोने में फ़र्श के ऊपर एक गद्दा बिछाए बैठे हुए थे. आठ दस काम करने वाले उनके दाएँ-बाएँ और सामने थे. उनमें से दो की याद मेरे अन्दर अभी तक बाक़ी है. एक शंकर लाल बैंकर और दूसरे वल्लभ भाई पटेल. गांधी जी में और उनमें बातें हो रही थीं, कुछ गुजराती में और कुछ हिन्दुस्तानी में मिली-जुली. मैंने जाकर नमस्कार किया. गाँधी जी ने मुझे पहचान लिया. पूछा कि मैं वही हूँ न जो उनसे अहमदाबाद में मिल चुका था. मेरे हाँ करने पर उन्होंने प्रेम के साथ मुझे अपने पास बैठने का इशारा किया. मैं बैठ गया. उनकी बातें सुनने लगा. लगभग दो घंटे बातें होती रहीं. मैं गुजराती और हिन्दुस्तानी दोनों समझ रहा था. मुझे अब उन बातों की तफ़सील तो याद नहीं रही पर इतना अच्छी तरह याद है कि दो घंटे तक लगातार गाँधी जी उन सब काम करने वालों को तरह-तरह से यही समझाते रहे कि धर्म पर क़ायम रहना, पाप नहीं करना, किसी को मारना नहीं, किसी को दुख भी नहीं पहुँचाना, अन्यायियों के साथ भी दिल में प्रेम रखना और प्रेम के साथ ही उनसे बरतना वग़ैरा-वग़ैरा. मैं ध्यान से सुनता रहा. कभी-कभी मैंने बात को साफ़ करने के लिये कोई छोटा सा सवाल भी कर लिया. हर बात का वही जवाब. उन्हें इतनी इस बात की चिन्ता नहीं थी कि किसानों का अन्याय दूर हो जितनी इसकी कि किसी भी सरकारी आदमी या सरकारी नौकर को ज़रा सा भी दुख न पहुँचा हो. मेरे मन में गाँधी जी की तरफ़ से फिर वही भाव उभरे जो एक साल पहले पैदा हुए थे. दो-तीन घंटे की बातें सुन कर और अच्छे से अच्छे काम करने वालों के साथ मुझ में फिर उनकी तरफ़ से निराशा और एक तरह की नफ़रत ही जागी. खाने का वक़्त आ रहा था. सब खड़े हो गए. मैं भी खड़ा हो गया. मैंने गाँधी जी से कहा—"मैं पहले भी आप से मिलने आया था और इतने दिनों बाद फिर आया हूँ. अब मैं इसी दोपहर की गाड़ी से लौट जाऊँगा. सिर्फ़ इतना अर्ज़ कर दूँ कि मैं उतना ही disappointed (निराश) और disgusted (बेज़ार) जा रहा हूँ जितना पहली बार."

गाँधी जी फिर मुस्कराए. कुछ और लोग भी देख रहे थे. मुझसे कहा—"अभी और ठहरो." मैंने जवाब दिया—"मुझे ठहरने से कोई फ़ायदा दिखाई नहीं देता." गाँधी जी ने कहा—"इतनी दूर से आए हो. मेरे कहने से कुछ देर और ठहर जाओ. तुम भी खाना खा लो, मैं भी खा लूँ. फिर

میں گجرات پہونچا ۔ گاندھی جی اُس سمے نڈیاد کے اناتھالیہ میں ٹھہرے ہوئے تھے ۔ میں اُن سے وہیں ملنے کے لئے گیا ۔ میری اُن کی یہ دوسری ملاقات تھی ۔

صبح کا وقت تھا ۔ گاندھی جی اناتھالیہ کے ہال کے ایک کونے میں فرش کے اوپر ایک گدا بچھائے بیٹھے ہوئے تھے ۔ آٹھ دس کام کرنے والے اُن کے دائیں بائیں اور سامنے تھے ۔ اُن میں سے دو کی یاد میرے اندر ابھی تک باقی ہے ۔ ایک شنکر لال بینکر اور دوسرے ولبھ بھائی پٹیل ۔ گاندھی جی میں اور اُن میں باتیں ہو رہی تھیں ' کچھ گجراتی میں اور کچھ ہندستانی میں ملی جلی ۔ میں نے جاکر نمسکار کیا ۔ گاندھی جی نے مجھے پہچان لیا ۔ پوچھا کہ میں وہی ہوں نہ جو اُن سے احمدآباد میں مل چکا تھا ۔ میرے ہاں کرنے پر اُنہوں نے پریم کے ساتھ مجھے اپنے پاس بیٹھنے کا اِشارہ کیا ۔ میں بیٹھ گیا ۔ اُن کی باتیں سننے لگا ۔ لگ بھگ دو گھنٹے باتیں ہوتی رہیں ۔ میں گجراتی اور ہندستانی دونوں سمجھ رہا تھا ۔ مجھے اب اُن باتوں کی تفصیل تو یاد نہیں رہی پر اِتنا اچھی طرح یاد ہے کہ دو گھنٹے تک لگاتار گاندھی جی اُن سب کام کرنے والوں کو طرح طرح سے یہی سمجھاتے رہے کہ دھرم پر قایم رہنا' پاپ نہیں کرنا' کسی کو مارنا نہیں' کسی کو دکھ بھی نہیں پہنچانا' انیائیوں کے ساتھ بھی دل میں پریم رکھنا اور پریم کے ساتھ ہی اِن سے برتنا وغیرہ وغیرہ ۔ میں دھیان سے سنتا رہا ۔ کبھی کبھی میں نے بات کو صاف کرنے کے لئے کوئی چھوٹا سا سوال بھی کر لیا ۔ ہر بات کا وہی جواب ۔ انہیں اِتنی اِس بات کی چنتا نہیں تھی کہ کسانوں کا انیائے دور ہو جتنی اِس کی کہ کسی بھی سرکاری آدمی یا سرکاری نوکر کو ذرا سا بھی دکھ نہ پہنچا ہو ۔ تو میرے من میں گاندھی جی کی طرف سے پھر وہی بھاؤ اُبھرے جو ایک سال پہلے پیدا ہوئے تھے ۔ دو تین گھنٹے کی باتیں سن کر اور اچھے سے اچھے کام کرنے والوں کے ساتھ مجھ میں پھر اُن کی طرف سے نراشا اور ایک طرح کی نفرت ہی جاگی ۔ کھانے کا وقت آ رہا تھا ۔ سب کھڑے ہو گئے ۔ میں بھی کھڑا ہو گیا ۔ میں نے گاندھی جی سے کہا—"میں پہلے بھی آپ سے ملنے آیا تھا اور اِتنے دنوں بعد پھر آیا ہوں ۔ اب میں اِسی دوپہر کی گاڑی سے لوٹ جاؤنگا ۔ صرف اِتنا عرض کر دوں کہ میں اُتنا ہی disappointed (نراش) اور disgusted (بیزار) جا رہا ہوں جتنا پہلی بار ۔"

گاندھی جی پھر مسکرائے ۔ کچھ اور لوگ بھی دیکھ رہے تھے ۔ مجھسے کہا—"ابھی اور ٹھہرو ۔" میں نے جواب دیا—"مجھے ٹھہرنے سے کوئی فائدہ دکھائی نہیں دیتا ۔" گاندھی جی نے کہا—"اِتنی دور سے آئے ہو ۔ میرے کہنے سے کچھ دیر اور ٹھہر جاؤ ۔ تم بھی کھانا کھا لو' میں بھی کھا لوں ۔ پھر

चलते मैंने उनसे यह भी कहा—"मेरी आप से एक ही प्रार्थना है, ईश्वर के लिये आप और जो चाहे कीजिये, हिन्दुस्तान की राजनीति में दख़ल न दीजिये, नहीं तो आप इस देश को और मिटा देंगे." वह सुनकर मुस्कराए और कहने लगे—"अच्छा, अभी तो और फिर भी आओगे."

मैंने—"देखिये—नमस्कार !" कह कर विदा ली. स्टेशन आया. सोलन के लिये वापिस चल दिया.

मैं रास्ते भर यही सोचता आया कि इतना लम्बा सफ़र और इतना ख़र्च सब बेकार गया.

सोलन पहुँचकर मैंने इसी मज़मून के ख़त अपने दोस्तों को लिख दिये.

कुछ दिनों के बाद मुझे मालूम हुआ कि गाँधीजी जब पहले पहल दक्खिन अफरीक़ा से हिन्दुस्तान आए थे तब मिस्टर गोखले ने, जिन्हें गाँधीजी अपने गुरु की तरह मानते थे, यह वायदा ले लिया था कि वह यहाँ आने के एक साल बाद तक इस देश की हालत को चुपचाप बैठकर देखेंगे और समझेंगे और किसी तरह का कोई अमली क़दम कम से कम उस साल तक नहीं उठाएंगे. मैं जब गाँधीजी से पहली मरतबा मिला तो यह उसी एक साल के अन्दर का दिन था.

[3]

पहली मुलाक़ात हुए लगभग दो साल बीत चुके थे. पहला महायुद्ध ख़तम होने पर आ रहा था. जो हज़ारों हिन्दुस्तानी सिपाही योरप के लड़ाई के मैदानों से लौट-लौट कर आ रहे थे और जो ख़बरें लड़ाई की देश भर में फैल रही थीं उनकी बदौलत एक नई उमंग और आज़ादी की नई लगन देश भर में फैलती जा रही थी. मैं पहाड़ छोड़ कर इलाहाबाद आ चुका था. अभी आगे के काम के लिये दोस्तों से सलाह ही कर रहा था कि इतने में सुना कि उन्हीं मिस्टर गाँधी ने चम्पारन बिहार में वहाँ के ग़रीब किसानों पर निलहे गोरों के अत्याचारों के ख़िलाफ़ कुछ आन्दोलन शुरू किया है. गाँधी जी के अपने पहले तजरबे से मुझे इतना जोश भी न आ सका कि बिहार, जो इलाहाबाद से बहुत दूर न था, जाकर उनके आन्दोलन को देखूँ.

थोड़े दिन और बीते. सुना कि गुजरात में खेड़ा ज़िला के किसानों की फ़सलें ख़राब हो गई थीं. सरकार उनसे ज़बरदस्ती लगान वसूल कर रही थी. इस अन्याय के ख़िलाफ़ गाँधी जी ने गुजरात में एक नया आन्दोलन खड़ा किया है.

چلتے میں نے اُن سے یہ بھی کہا—"میری آپ سے ایک ہی پرارتھنا ہے، ایشور کے لئے آپ اور جو چاہے کیجئے، ہندستان کی راجنیتی میں دخل نہ دیجئے، نہیں تو آپ اِس دیش کو اور مٹا دینگے." وہ سن کر مسکرائے اور کہنے لگے—"اچھا ابھی تو اور پھر بھی آؤگے۔"

میں نے—"دیکھئے—نمسکار !" کہہ کر بدا لی. اسٹیشن آیا. سولن کے لئے واپس چل دیا .

میں راستے بھر یہی سوچتا آیا کہ اِتنا لمبا سفر اور اِتنا خرچ سب بیکار گیا .

سولن پہونچکر میں نے اِسی مضمون کے خط اپنے دوستوں کو لکھ دیئے .

کچھ دنوں کے بعد مجھے معلوم ہوا کہ گاندھی جی جب پہلے پہل دکھن افریقہ سے ہندستان آئے تھے تب مسٹر گوکھلے نے، جنہیں گاندھی جی اپنے گرو کی طرح مانتے تھے، یہ وعدہ لے لیا تھا کہ وہ یہاں آنے کے ایک سال بعد تک اِس دیش کی حالت کو چپ چاپ بیٹھ کر دیکھینگے اور سمجھینگے اور کسی طرح کا کوئی عملی قدم کم سے کم اِس سال تک نہیں اُٹھائیں گے. میں جب گاندھی جی سے پہلی مرتبہ ملا تو یہ اُسی ایک سال کے اندر کا دن تھا .

[3]

پہلی ملاقات ہوئے لگ بھگ دو سال بیت چکے تھے . پہلا مہایدھ ختم ہونے پر آ رہا تھا . جو ہزاروں ہندستانی سپاہی یورپ کے لڑائی کے میدانوں سے لوٹ لوٹ کر آ رہے تھے اور جو خبریں لڑائی کی دیش بھر میں پھیل رہی تھیں اُن کی بدولت ایک نئی اُمنگ اور آزادی کی نئی لگن دیش بھر میں پھیلتی جا رہی تھی . میں پہاڑ چھوڑ کر اِلہ‌آباد آ چکا تھا . ابھی آگے کے کام کے لئے دوستوں سے صلاح ہی کر رہا تھا کہ اِتنے میں سنا کہ ان ہی مسٹر گاندھی نے چمپارن بہار میں وہاں کے غریب کسانوں پر نلہے گوروں کے اتیاچاروں کے خلاف کچھ آندولن شروع کیا ہے . گاندھی جی کے اپنے پہلے تجربے سے مجھے اِتنا جوش بھی نہ آسکا کہ بہار، جو الہ‌آباد سے بہت دور نہ تھا، جا کر اُن کے آندولن کو دیکھوں .

تھوڑے دن اور بیتے . سنا کہ گجرات میں کھیڑا ضلع کے کسانوں کی فصلیں خراب ہوگئی تھیں . سرکار اُن سے زبردستی لگان وصول کر رہی تھی . اِس انیائے کے خلاف گاندھی جی نے گجرات میں ایک نیا آندولن کھڑا کیا ہے .

नहा था. एक छोटी सी लड़की, शायद पाँच छै बरस की रही होगी, उनके आगे बैठी थी. मुझे जहाँ तक याद है, गांधीजी उसके सर से जुएं बीन-बीन कर पास रखे हुए एक पानी के कटोरे में डालते जाते थे. उसी सज धज के एक दो और आदमी कमरे के पास से आते जाते दिखाई दिए. मैं कमरे में घुसा. मालूम करके कि यही मिस्टर गांधी हैं कुछ अचम्भा सा लगा. उन्होंने टाट का एक टुकड़ा मेरी तरफ़ करके मुझे बैठने को कहा. मैं बैठ गया. बातें शुरू हुईं.

मैंने अपना और हाल की देश की आज़ादी की कोशिशों का हाल जो मैं जानता था सब उन्हें तफ़सील से कह सुनाया. मालूम होता था बड़े ध्यान से सुन रहे हैं और जो-जो मैं कहता हूँ सब पीते जाते हैं. बीच-बीच में उन्होंने कई सवाल भी किये. इस बात-चीत में कई घन्टे लगे. दोपहर से शाम होने आई. कभी-कभी वह उठकर दूसरा काम भी करते रहे. पर जब-जब मैंने उनसे उनकी राय पूछी और उनसे आगे के लिए सलाह लेना चाहा तो लग-भग हर बात पर वह कुछ ऐसा ही जवाब देते थे—"मैं तो राजनीति नहीं समझता. मैं तो धरम जानता हूँ. सबकूँ अपने धरम पर रहना चाहिये. अपना धरम पालना चाहिये. पाप तो नहीं करना चाहिये. किसी कूँ मारना पाप है, 'वग़ैरा-वग़ैरा. मैंने बार-बार और तरह-तरह से उनसे पूछना चाहा कि आख़िर हिन्दुस्तान को आज़ादी कैसे मिल सकती है. हर बार वह कोई न कोई इसी तरह का फ़िक़रा दोहरा देते थे. मुझ पर यह असर ज़रूर पड़ा कि वह मुझमें और मेरी बातों में रस ले रहे थे. उनकी आँखों में मुझे बार-बार एक अनोखा स्नेह और अपनापन दिखाई देता था. मालूम होता था वह चाहते हैं मैं और ठहरूँ और उनसे बातें करूँ. पर बार-बार तोते की तरह रटे हुए उनके वही फ़िक़रे सुन-कर—"मैं तो धरम जानता हूँ. पाप तो नहीं करना चाहिये सब कूँ अपना धरम पालना चाहिये," मैं उकता गया. मेरे इस पूछने पर भी कि आख़िर धर्म है क्या चीज़, वह मेरी तसल्ली का जवाब न दे सके. मुझे उनसे एक तरह की नफ़रत हो गई. मैं सोचने लगा कि धर्म अधर्म के जिन दक़ियानूसी ख़यालों ने इस मुल्क को बरबाद किया है और उसे ग़ुलामी के यह दिन दिखाए हैं. वही ख़याल इस आद-मी के अन्दर कूट-कूट कर भरे हुए हैं. मैंने मन में तय कर लिया कि शाम की गाड़ी से सोलन लौट जाया जाय. आख़िर में मैंने उनसे कहा कि आज ही मैं सोलन वापिस जा रहा हूँ. मैंने उनसे यह भी साफ़ कह दिया कि मैं आपसे disappointed और disgusted यानी निराश होकर और बेज़ार होकर जा रहा हूँ. मुझे याद है कि मैंने अंगरेज़ी के ही यही दोनों शब्द उपयोग किये थे. चलते

نہاتا تھا ۔ ایک چھوٹی سی لڑکی شاید پانچ چھ برس کی رہی ہوگی اُن کے آگے بیٹھی تھی ۔ مجھے جہاں تک یاد ہے گاندھی جی اُس کے سر سے جوئیں بین بین کر پاس رکھے ہوئے پانی کے کٹورے میں ڈالتے جاتے تھے ۔ اُسی سج دھج کے ایک دو اور آدمی کمرہ کے پاس سے آتے جاتے دکھائی دیئے ۔ میں کمرہ میں گھسا ۔ معلوم کر کے کہ یہی مسٹر گاندھی ہیں کچھ اچنبھا سا لگا ۔ اُنہوں نے ٹاٹ کا ایک ٹکڑا میری طرف کر کے مجھے بیٹھنے کو کہا ۔ میں بیٹھ گیا ۔ باتیں شروع ہوئیں ۔

میں نے اپنا اور حال کی دیش کی آزادی کی کوششوں کا حال جو میں جانتا تھا سب اُنہیں تفصیل سے کہہ سنایا ۔ معلوم ہوتا تھا بڑے دھیان سے سن رہے ہیں اور جو جو میں کہتا ہوں سب پیتے جاتے ہیں ۔ بیچ بیچ میں اُنہوں نے کئی سوال بھی کئے ۔ اِس بات چیت میں کئی گھنٹے لگے ۔ دوپہر سے شام ہونے آئی ۔ کبھی کبھی وہ اُٹھ کر دوسرا کام بھی کرتے رہے ۔ پر جب جب میں نے اُن سے اُن کی رائے پوچھی اور ان سے آگے کے لئے صلاح لینا چاہا تو لگ بھگ ہر بات پر وہ کچھ ایسا ہی جواب دیتے تھے—"میں تو راجنیتی نہیں سمجھتا ۔ میں تو دھرم جانتا ہوں ۔ سب کوں اپنے دھرم پر رہنا چاہئے ۔ اپنا دھرم پالنا چاہئے ۔ پاپ تو نہیں کرنا چاہئے ۔ کسی کوں مارنا تو پاپ ہے" وغیرہ وغیرہ ۔ میں نے بار بار اور طرح طرح سے ان سے پوچھنا چاہا کہ آخر ہندستان کو آزادی کیسے مل سکتی ہے ۔ ہر بار وہ کوئی نہ کوئی اِسی طرح کا فقرہ دوہرا دیتے تھے ۔ مجھ پر یہ اثر ضرور پڑا کہ وہ مجھ میں اور میری باتوں میں رس لے رہے تھے ۔ اُن کی آنکھوں میں مجھے بار بار ایک انوکھا سنیہہ اور اپنا پن دکھائی دیتا تھا ۔ معلوم ہوتا تھا وہ چاہتے ہیں میں اور ٹھہروں اور اُن سے باتیں کروں ۔ پر بار بار طوطے کی طرح رٹے ہوئے اُن کے وہی فقرے سن کر— "میں تو دھرم جانتا ہوں ۔ پاپ تو نہیں کرنا چاہئے ۔ سب کوں اپنا دھرم پالنا چاہئے" میں اُکتا گیا ۔ میرے اِس پوچھنے پر بھی کہ آخر دھرم ہے کیا چیز' وہ میری تسلی کا جواب نہ دے سکے ۔ مجھے اُن سے ایک طرح کی نفرت ہو گئی ۔ میں سوچنے لگا کہ دھرم ادھرم کے جن دقیانوسی خیالوں نے اِس ملک کو برباد کیا ہے اور اسے غلامی کے یہ دن دکھائے ہیں وہی خیال اِس آدمی کے اندر کوٹ کوٹ کر بھرے ہوئے ہیں ۔ میں نے من میں طے کر لیا کہ شام کی گاڑی سے سولن لوٹ جایا جائے ۔ آخر میں میں نے اُن سے کہا کہ میں آج ہی سولن واپس جا رہا ہوں ۔ میں نے اُن سے یہ بھی صاف کہہ دیا کہ میں آپ سے disappointed اور disgusted یعنی نراش ہو کر اور بیزار ہو کر جا رہا ہوں ۔ مجھے یاد ہے کہ میں نے انگریزی کے ہی یہی دونوں شبد اپیوگ کئے تھے ۔ چلتے

करके सैकड़ों बरस तक भी इस उपजाऊ देश को छोड़कर नहीं जा सकती थी. कुछ बरसों के तजरबे ने अच्छी तरह दिखा दिया कि यह रास्ता थोड़ा-बहुत अंगरेजों के दिलों में हिंदुस्तानियों का डर भले ही पैदा कर दे, न जनता में जान फूँक सकता था, न उन्हें आजादी की लड़ाई के लिये तैयार कर सकता था और न देश को आजाद करा सकता था. इस दल के आम लोगों में एक गहरी निराशा छाई हुई थी.

सन् 1908 में लोकमान्य तिलक के जेल भेजे जाने ने इस दल को खासा धक्का पहुँचाया था. सन 1910 में अरविन्द बाबू के कलकत्ता छोड़ के भागने से दल की हिम्मतें और पस्त हो गईं, अरविन्द बाबू के उस आखरी दिन मैं कलकत्ते में ही था और कई घन्टे उनके साथ रहा. सन 1912 के बाद दल के बहुत से लोग इधर-उधर आसाम की सरहद पर या हिमालय की तराई में छिपे दबे किसी तरह दिन काट रहे थे. जिस गली से वह चल रहे थे वह आगे बन्द दिखाई देती थी और दूसरा कोई रास्ता भी मुड़कर आजादी की मंजिल तक पहुँचने का दिखाई न देता था.

इसी सिलसिले में सन 1912 से 1916 तक के दिन मैंने सोलन में काटे. दिल के अन्दर गहरी निराशा थी. जापान, रूस आयरलैंड और फ्रान्स के इतिहासों के ख़ूब पन्ने लौटने पर अपने देश की आजादी का कोई रास्ता दिखाई न दिया.

[2]

सुनने में आया कि मिस्टर गांधी नाम के एक सज्जन इसी साल हिन्दुस्तान आए हैं. दक्खिन अफ़रीक़ा में वह वहाँ के हिन्दुस्तानियों के अधिकारों के लिए लड़ते रहे हैं और कामयाबी के साथ लड़ते रहे हैं. वहाँ की हिन्दुस्तानी जनता ने भी इनका ख़ूब साथ दिया है. क़ुदरती तौर पर उनसे मिलने की ख्वाहिश दिल में पैदा हुई, इस उम्मीद में कि उनकी सलाह से शायद अपने देश की आजादी के लिये कोई आगे का रास्ता सूझे.

मैं अकेला सोलन से चला. सीधा अहमदाबाद पहुँचा. पता लगाया तो मालूम हुआ कि मिस्टर गांधी शहर के बाहर किसी छोटे से बँगले में रह रहे हैं. मैं वहाँ पहुँचा. मेरी गाँधीजी की यह पहली मुलाक़ात थी.

मुझे अब तक याद है वह एक छोटे से कमरे के अन्दर जिसका फ़र्श बीच-बीच में उखड़ा हुआ था, टाट का एक छोटा सा टुकड़ा बिछाए उस पर बैठे थे. एक छोटी सी मैली सी घुटनों तक की धोती बाँधे हुए थे, बाक़ी बदन

کر کے سیکڑوں برس تک بھی اِس اُپجاؤ دیش کو چھوڑ کر نہیں جا سکتی تھی . کچھ برسوں کے تجربے نے اچھی طرح دکھا دیا کہ یہ راستہ تھوڑا بہت انگریزوں کے دلوں میں ہندستانیوں کا ڈر بھلے ہی پیدا کر دے٬ نہ جنتا میں جان پھونک سکتا تھا نہ اُنہیں آزادی کی لڑائی کے لئے تیار کر سکتا تھا اور نہ دیش کو آزاد کرا سکتا تھا٬ اِس دل کے عام لوگوں میں ایک گہری نراشا چھائی ہوئی تھی .

سن 1908 میں لوکمانیہ تلک کے جیل بھیجے جانے نے اِس دل کو خاصہ دھکا پہونچایا تھا . سن 1910 میں اروند بابو کے کلکتہ چھوڑ کے بھاگنے سے دل کی ہمتیں اور پست ہو گئیں . اروند بابو کے اس آخری دن میں کلکتہ میں ہی تھا اور کئی گھنٹے اُن کے ساتھ رہا . سن 1912 کے بعد دل کے بہت سے لوگ اِدھر اُدھر آسام کی سرحد پر یا ہمالیہ کی ترائی میں چھپے دبے کسی طرح دن کاٹ رہے تھے جس گلی سے وہ چل رہے تھے وہ آگے بند دکھائی دیتی تھی اور دوسرا کوئی راستہ بھی مڑ کر آزادی کی منزل تک پہونچنے کا دکھائی نہ دیتا تھا .

اِس سلسلے میں سن 1912 سے 1916 تک کے دن میں نے سولن میں کاٹے . دل کے اندر گہری نراشا تھی . جاپان٬ روس٬ آئرلینڈ اور فرانس کے اِتہاسوں کے خوب پنے لوٹنے پر اپنے دیش کی آزادی کا کوئی راستہ دکھائی نہ دیا .

[2]

سننے میں آیا کہ مسٹر گاندھی نام کے ایک سجن اِسی سال ہندستان آئے ہیں . دکھن افریقہ میں وہ وہاں کے ہندستانیوں کے ادھیکاروں کے لئے لڑتے رہے ہیں اور کامیابی کے ساتھ لڑتے رہے ہیں . وہاں کی ہندستانی جنتا نے بھی اِن کا خوب ساتھ دیا ہے . قدرتی طور پر اُن سے ملنے کی خواہش دل میں پیدا ہوئی٬ اِس اُمید میں کہ اُن کی صلاح سے شاید اپنے دیش کی آزادی کے لئے کوئی آگے کا راستہ سوجھے .

میں اکیلا سولن سے چلا . سیدھا احمدآباد پہونچا . پتہ لگایا تو معلوم ہوا کہ مسٹر گاندھی شہر کے باہر کسی چھوٹے سے بنگلے میں رہ رہے ہیں . میں وہاں پہونچا . میری گاندھی جی کی یہ پہلی ملاقات تھی .

مجھے اب تک یاد ہے کہ وہ ایک چھوٹے سے کمرے کے اندر جس کا فرش بیچ بیچ میں اُکھڑا ہوا تھا ٹاٹ کا ایک چھوٹا سا ٹکڑا بچھائے اُس پر بیٹھے تھے . ایک چھوٹی سی میلی سی گھٹنوں تک کی دھوتی باندھے ہوئے تھے . باقی بدن

से अंगरेज़ हिन्दुस्तानियों से सँभलकर बैठने लगे. उस आन्दोलन का सब से बड़ा अड्डा कलकत्ता था. कलकत्ते की उस नाख़ुशगवार हवा से बाहर निकलने के लिए अंगरेज़ों ने दिल्ली को राजधानी बनाया. दिल्ली में बड़े शानदार जलूस के साथ दाख़िल होते हुए जब उन्होंने मुग़लों के तीन सौ बरस के रोब को अपने ऊपर ओढ़ना चाहा तो सन 1912 के लार्ड हार्डिंग के बम ने फिर एकदम अंगरेज़ क़ौम की उस सारी शान और सारे मज़े को किरकिरा कर दिया. सारे हिन्दुस्तान में एक लहर सी दौड़ गई कि दिल्ली को राजधानी बनाना अंगरेज़ सरकार को रास नहीं आयेगा. बम और पिस्तौल की राह ने कुछ देर के लिये अपना कुछ न कुछ चमत्कार दिखलाया इससे इनकार नहीं किया जा सकता.

पर वह चमत्कार चन्द रोज़ से ज़्यादह न ठहर सका. दिल्ली बम के बाद ही सरकार ने जो चौतरफ़ा दमन शुरू किया उससे मुल्क में फिर एक बार अन्धयारी छा गई और बढ़ती गई. उसके बाद भी कुछ हिम्मत वाले लोगों ने इधर उधर इसी तरह की चीज़ें जारी रखीं. पर पाँच सात बरस के तजरबे से उस दल के विचारवान लोगों ने देख लिया कि इन तरीक़ों से और जो कुछ भी हम कर पाएँ या न कर पायें अंगरेज़ी राज देश से नहीं मिटाया जा सकता. एक एक गुप्त हत्या को ठीक ठाक करने में बीस-बीस और तीस-तीस आदमियों की ज़रूरत पड़ती थी. सफलता हो भी गई तो पुलिस के सुराग़ लगाने पर क़रीब-क़रीब नामुमकिन था कि इनमें से कोई न कोई फूट न जावे. बरसों मुक़दमा चलने के बाद एक जान के बदले बीस-बीस और तीस-तीस देश भक्तों से जिन्दगी भर के लिये हाथ धो बैठना पड़ता था. जनता में जो लोग इनके काम से अन्दर-अन्दर हमदर्दी भी रखते थे वह इन सज़ाओं को देखकर सहम जाते थे. डकैतियों में एक-एक डकैती पर कभी-कभी इतना ख़र्च हो जाता था जितना वसूल न हो पाता था, फिर जो लोग जान पर खेल कर डकैती डालते थे उन्हीं में रुपये पैसे या हथियारों के बँटवारे पर या इनके ठीक-ठीक इस्तेमाल पर फिर वह सिर-फुटौवल होती थी कि जिससे दिल फट जाते थे. पुलिस को अगर पता चलता था कि इस दल का कोई आदमी फलाँ गाँव में ठहरा था तो उस गाँव के लोगों पर वह मारें पड़ती थीं कि एक-एक गाँववाला पुलिस की चौकी पर जाकर नाक रगड़ता था और सरकार की वफ़ादारी की क़समें खाने लगता था. दल के समझदार लोगों को दिखाई दे गया कि जो अंगरेज़ क़ौम एक जंग में अपने हज़ारों आदमी कटवा सकती है और लाखों रुपये गोले बारूद पर ख़र्च कर सकती है वह इक्का-दुक्का आदमियों की साल दो साल के अन्दर जानें गँवा कर और वह भी इतनी ज़बरदस्त क़ीमत वसूल

میں انگریز ہندستانیوں سے سنبھل کر بیٹھنے لگے ۔ اِس آندولن کا سب سے بڑا اڈا کلکتہ تھا ۔ کلکتے کے اُس ناخوشگوار ہوا سے باہر نکلنے کے لئے انگریزوں نے دلی کو راجدھانی بنایا ۔ دلی میں بڑے شاندار جلوس کے ساتھ داخل ہوتے ہوئے جب اُنھوں نے مغلوں کے تین سو برس کے رعب کو اپنے اُوپر اوڑھنا چاہا تو سن 1912 کے لارڈ ہارڈنگ کے بم نے پھر ایکدم انگریز قوم کی اُس ساری شان اور سارے مزے کو کرکرا کر دیا ۔ سارے ہندستان میں ایک لہر سی دوڑ گئی کہ دلی کو راجدھانی بنانا انگریز سرکار کو راس نہیں آئیگا ۔ بم اور پستول کی راہ نے کچھ دیر کے لئے اپنا کچھ نہ کچھ چمتکار دکھلایا اِس سے اِنکار نہیں کیا جا سکتا ۔

پر وہ چمتکار چندروز سے زیادہ نہ ٹھہر سکا ۔ دلی بم کے بعد ہی سرکار نے جو چوطرفہ دمن شروع کیا اُس سے ملک میں پھر ایک بار اندھیاری چھا گئی' اور بڑھتی گئی ۔ اُس کے بعد بھی کچھ ہمت والے لوگوں نے اِدھر اُدھر اِسی طرح کی چیزیں جاری رکھیں ۔ پر پانچ سات برس کے تجربے سے اُس دل کے وچاروان لوگوں نے دیکھ لیا کہ اِن طریقوں سے' اور جو کچھ بھی ہم کر پائیں یا نہ کر پائیں انگریزی راج دیش سے نہیں مٹایا جا سکتا ۔ ایک ایک گپت ہتیا کا ٹھیک ٹھاک کرنے میں بیس بیس اور تیس تیس آدمیوں کی ضرورت پڑتی تھی ۔ سپھلتا ہو بھی گئی تو پولیس کے سراغ لگانے پر قریب قریب ناممکن تھا کہ اُن میں سے کوئی نہ کوئی پھوٹ نہ جاوے ۔ برسوں مقدمہ چلنے کے بعد ایک جان کے بدلے بیس بیس اور تیس تیس دیش بھگتوں سے زندگی بھر کے لئے ہاتھ دھو بیٹھنا پڑتا تھا ۔ جنتا میں جو لوگ اِن کے کام سے اندر اندر ہمدردی بھی رکھتے تھے وہ اِن سزاؤں کو دیکھ کر سہم جاتے تھے ۔ ڈکیتوں میں ایک ایک ڈکیتی پر کبھی کبھی اِتنا خرچ ہو جاتا تھا جتنا وصول نہ ہو پاتا تھا' پھر جو لوگ جان پر کھیل کر ڈکیتیاں ڈالتے تھے اُنھیں میں روپئے پیسے یا ہتھیاروں کے بٹوارے پر یا اِن کے ٹھیک ٹھیک استعمال پر پھر وہ سر پھٹول ہوتی تھی کہ جس سے دل پھٹ جاتے تھے ۔ پولیس کو اگر پتہ چلتا تھا کہ اِس دل کا کوئی آدمی فلاں گاؤں میں ٹھہرا تھا تو اُس گاؤں کے لوگوں پر وہ ماریں پڑتی تھیں کہ ایک ایک گاؤں والا پولیس کی چوکی پر جاکر ناک رگڑتا تھا اور سرکار کی وفاداری کی قسمیں کھانے لگتا تھا ۔ دل کے سمجھدار لوگوں کو دکھائی دے گیا کہ جو انگریز قوم ایک جنگ میں اپنے ہزاروں آدمی کٹوا سکتی ہے اور لاکھوں روپئے گولے بارود پر خرچ کر سکتی ہے وہ اِکا دکا آدمیوں کی سال دو سال کے اندر جانیں گنوا کر اور وہ بھی اِتنی زبردست قیمت وصول

गांधी जी के साथ पहली मुलाक़ातें

पंडित सुन्दरलाल

सन 1915 की बात है.

मैं सोलन में था. हिन्दुस्तान की राजनीति में उस समय दो ही दल थे. एक नरम दल जो इंगलिस्तान के बादशाह की वफ़ादारी की क़समें खाता था, अंगरेज़ सरकार के रहते अपने देश को शिक्षा प्रचार और समाज सुधार के ज़रिये ऊँचा ले जाना और मज़बूत करना चाहता था, और दरख़ास्तों और अरज़ी परचों के ज़रिये अंगरेज़ों से राज-काज में छोटे-मोटे अधिकार और नौकरियाँ लेकर अपने को सफल मानता था. कांगरेस इसी दल के हाथों में थी. दूसरा गरम दल जो स्वदेशी, अंगरेज़ी माल के बायकाट, क़ौमी तालीम और 'स्वराज' की प्यास लोगों में पैदा करके बम और पिस्तौल के ज़रिये इधर-उधर अंगरेज़ हाकिमों की हत्या करके और ख़ज़ानों वग़ैरा को लूटकर अंगरेज़ों को इस देश से निकाल देने की आशा करता था. इस दूसरे दल का जन्म बँगाल की तक़सीम के साथ-साथ सन 1905 में हुआ था. इस दल में बहुत से जान पर खेलने वाले नौजवान थे. उन्होंने अपनी समितियाँ बनाईं. कई अंगरेज़ों और उनके हिन्दुस्तानी मददगारों की जगह-जगह हत्याएँ कीं. ख़ज़ानों और हथियारों के गोदामों पर डाके डाले. मालूम होता है अच्छी और बुरी सभी चीज़ें अपने-अपने समय पर और अपनी जगह कुछ न कुछ उपयोग रखती हैं. शायद अच्छे और बुरे का फ़रक़ भी अन्धेरे और उजाले के फ़रक़ की तरह मौक़े और महल का ही फ़रक़ है. मुझे अच्छी तरह याद है कि सन 1907 से पहले अंगरेज़ों का दबदबा और उनका घमन्ड कितना गहरा था और सारे देश पर किस तरह छाया हुआ था. बड़े से बड़े हिन्दुस्तानी के लिए पहले या दूसरे दर्जे के रेल के किसी ऐसे डिब्बे में घुसने की हिम्मत करना जिसमें कोई अंगरेज़ पहले से बैठा हो एक ग़ैर मामूली बात थी और कोई भी छोटे से छोटा अंगरेज़ ऐसे मौक़े पर किसी बड़े से बड़े हिन्दुस्तानी का खुले अपमान कर सकता था. सन 1907 के खुदीराम बोस के मुज़फ़्फ़रपुर बम ने इस हालत को मानो जादू की तरह एक रात में बदल दिया. अंगरेज़ समझ गए कि यह कीड़ा काट भी सकता है. हिन्दुस्तानियों को इधर से उधर तक निराशा की अंधियारी घटा में आशा की एक बिजली सी कौंधती हुई दिखलाई पड़ गई. रेल के डिब्बों

گاندھی جی کے ساتھ پہلی ملاقاتیں

پنڈت سندر لال

سن 1915 کی بات ھے .

میں سولن میں تھا . ھندستان کی راجنیتی میں اُس سمے دو ھی دل تھے . ایک نرم دل جو اِنگلستان کے بادشاہ کی وفاداری کی قسمیں کھاتا تھا؛ انگریز سرکار کے رھتے اپنے دیش کو شکشا پرچار اور سماج سدھار کے ذریعہ اُونچا لیجانا اور مضبوط کرنا چاھتا تھا' اور درخواستوں اور عرضی پرچوں کے ذریعہ انگریزوں سے راجکاج میں چھوٹے موٹے ادھیکار اور نوکریاں لیکر اپنے کو سپھل مانتا تھا . کانگریس اُسی دل کے ھاتھوں میں تھی . دوسرا گرم دل جو سودیشی' انگریزی مال کے بائیکاٹ' قومی تعلیم اور 'سوراج' کی پیاس لوگوں میں پیدا کر کے بم اور پستول کے ذریعہ اِدھر اُدھر انگریز حاکموں کی ھتیا کر کے اور خزانوں وغیرہ کو لوٹ کر انگریزوں کو اِس دیش سے نکال دینے کی آشا کرتا تھا . اِس دوسرے کے دل کا جنم بنگال کی تقسیم کے ساتھ ساتھ سن 1905 میں ھوا تھا . اس دل میں بہت سے جان پر کھیلنے والے نوجوان تھے . اُنھوں نے اپنی سمتیاں بنائیں . کئی انگریزوں اور اُن کے ھندستانی مددگاروں کی جگہہ جگہہ ھتیائیں کیں . خزانوں اور ھتھیاروں کے گوداموں پر ڈاکے ڈالے . معلوم ھوتا ھے اچھی اور بری سبھی چیزیں اپنے اپنے سمے پر اور اپنی جگہہ کچھ نہ کچھ اُپیوگ رکھتی ھیں . شاید اچھے اور برے کا فرق بھی اندھیرے اور اُجالے کے فرق کی طرح موقع اور محل کا ھی فرق ھے . مجھے اچھی طرح یاد ھے کہ سن 1907 سے پہلے انگریزوں کا دبدبہ اور اُن کا گھمنڈ کتنا گہرا تھا اور سارے دیش پر کس طرح چھایا ھوا تھا . بڑے سے بڑے ھندستانی کے لئے پہلے یا دوسرے درجہ کے ریل کے کسی ایسے ڈبے میں گھسنے کی ھمت کرنا جسمیں کوئی انگریز پہلے سے بیٹھا ھو ایک غیر معمولی بات تھی اور کوئی بھی چھوٹے سے چھوٹا انگریز ایسے موقع پر کسی بڑے سے بڑے ھندستانی کا کھلے اپمان کر سکتا تھا . سن 1907 کے خودی رام بوس کے مظفر پور بم نے اِس حالت کو مانو جادو کی طرح ایک رات میں بدل دیا . انگریز سمجھ گئے کہ یہ کیڑا کاٹ بھی سکتا ھے . ھندستانیوں کو اِدھر سے اُدھر تک نراشا کی اندھیاری گھٹا میں آشا کی ایک بجلی سی کوندتی ھوئی دکھائی پڑ گئی . ریل کے ڈبوں

अक्तूबर 1957 اکتوبر

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 24 جلد   नम्बर 4 نمبر

अक्तूबर 1957 اکتوبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145، مٹھی گنج، الہ آباد

[illegible]

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

[illegible] be had from—

Manager, NAYA HIND

[illegible], MUTTHIGANJ, ALLA[illegible]

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख	اس نمبر کے خاص لیکھ
गांधीजी के साथ पहली मुलाक़ातें	گاندھی جی کے ساتھ پہلی ملاقاتیں
—पंडित सुन्दरलाल	—پنڈت سندر لال
शहीदे आज़म बहादुरशाह की याद में	شہید اعظم بہادر شاہ کی یاد میں
—श्री डी राजन	—شری ڈی راجن
1857 का देश भक्त अख़बार 'पयामे आज़ादी'	1857 کا دیش بھگت اخبار 'پیام آزادی'
—विश्वम्भरनाथ पांडे	—وشومبھر ناتھ پانڈے
हमारी राय—	ہماری رائے—
—गांधी जी के जनम दिन पर	گاندھی جی کے جنم دن پر—
—विश्वम्भरनाथ पांडे	وشومبھر ناتھ پانڈے

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)

लेखक—गान्धीवाद के माने जाने विद्वान : स्व० श्री मंज़र अली सोख़्ता

सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:o:—

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)

लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी

भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू

मोटा कागज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें

दाम दो रुपया

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सो...

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ہندی گھر

کلچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ہندی، اردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)

لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے ودوان: سورگیہ شری منظر علی سوختہ

صفحے 225، قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)

لیکھکا—قدسیہ زیدی

بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو

موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں

دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران

275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ہندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

قیمت چار آنے

بنگال اور اس سے سبق

قیمت دو آنے

ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 مٹھی گنج الہ آباد

[illegible]

[illegible] संस्कृति

[illegible] सभ्यता और संस्कृति

[illegible] और [illegible] संस्कृति

[illegible] सभ्यता और संस्कृति

[illegible]

[illegible] اور [illegible] کی

[illegible] اور ایرانی [illegible] کی

[illegible] اور [illegible] کی

[illegible] اور [illegible] کی

[illegible]

सोसायटी [illegible]

(2) एशिया और अफ्रीक़ा की सरकारें यू० एन० ओ० की आने वाली जनरल एसम्बली के सामने यह तजवीज़ पेश करें कि इन तजरबों को बिना किसी शर्त के बन्द करके एक ऐसे समझौते की तरफ़ क़दम उठाया जावे जिस से दुनिया की सब फ़ौजें आम तौर पर ख़त्म की जा सकें.

(3) इस तरह के तजरबों की आगे की सब तजवीजें जिनमें एनीवेटाक एटालस की तजवीज़ भी शामिल है मन्सूख़ कर दी जावें. ऐटमी शक्तियाँ, ऐटमी अड्डे बनाना और दूसरे देशों के फ़ौजी अड्डों में ऐटमी हथियार दाख़िल करना या ऐटमीसपोर्ट (Task force units) दाख़िल करना बन्द कर दें.

इन उद्देश्यों के पूरा हो जाने से विश्व शान्ति को और राष्ट्रों की आज़ादी को बहुत बड़ी मदद मिलेगी. इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिये एशिया और अफ्रीक़ा के सब देशों को मिलकर पूरी कोशिश करनी चाहिये चाहे किसी देश के राजकाजी आदर्श या धार्मिक विचार कुछ भी क्यों न हों या किसी देश में कितने भी विचारों और धर्मों के लोग क्यों न रहते हों. एशिया और अफ्रीक़ा के बाहर के लोगों का इसमें सहयोग प्राप्त करने के लिये भी हम पूरी कोशिश करेंगे.

अगस्त सन् 1957 —सुन्दरलाल

2. ایشیا اور افریقہ کی سرکاریں یو . این . او کی آنے والی جنرل اسمبلی کے سامنے یہ تجویز پیش کریں کہ ان تجربوں کو بنا کسی شرط کے بند کرکے ایک ایسے سمجھوتے کی طرف قدم اٹھایا جاوے جس سے دنیا کی سب فوجیں عام طور پر ختم کی جا سکیں .

3. اس طرح کے تجربوں کی آگے کی سب تجویزیں جن میں اینی ویٹاک ایٹالس کی تجویز بھی شامل ہے منسوخ کردی جاویں . ایٹمی شکتیاں' ایٹمی اڈے بنانا اور دوسرے دیشوں کے فوجی اڈوں میں ایٹمی ہتھیار داخل کرنا یا ایٹمی سپورٹ (Task Force Units) داخل کرنا بند کردیں .

ان ادیشوں کے پورا ہوجانے سے وشو شانتی کو اور راشٹروں کی آزادی کو بہت بڑی مدد ملے گی . ان ادیشوں کو پورا کرنے کے لئے ایشیا اور افریقہ کے سب دیشوں کو مل کر پوری کوشش کرنی چاہیے چاہے کسی دیش کے راج کاجی آدرش یا دھارمک وچار کچھ بھی کیوں نہ ہو یا دیش میں کتنے بھی وچاروں اور دھرموں کے لوگ کیوں نہ رہتے ہوں . ایشیا اور افریقہ کے باہر کے لوگوں کا اس میں سہیوگ پراپت کرنے کے لئے بھی ہم پوری کوشش کریں گے .

اگست سن 1957 —سندر لال

यद्यपि मिस्र पर फ़ौजी हमला कामियाब नहीं हुआ फिर भी बीच पूरब के देशों में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव अब भी कई शकलों में बढ़ रहा है.

(१) जापानियों के राष्ट्रीय भावों और उनकी ऐतिहासिक परम्पराओं के खिलाफ़ ओकीनावा टापुओं को जापान से अलग कर दिया गया है और उन्हें संयुक्त राज अमरीका के लिये ऐटमी अड्डा बनाया जा रहा है.

(२) संयुक्त राज अमरीका ने जारडन और अरब देशों के अन्दर के मामलों में जबरदस्ती दखल देने के लिये अपना छटा जहाज़ी बेड़ा लबनान के समन्दर में भेज दिया है और उस बेड़े को ऐटमी हथियारों से लैस कर दिया है.

(३) ताईवान का टापू पीपुल्स रिपबलिक आफ़ चाइना का एक अंग और उसके जिस्म का एक टुकड़ा है. फिर भी ऐटमी मिसाइल "मेटेडोर" ताईवान भेज दिया गया. दक्खिन कोरिया में भी लड़ाई बन्द समझौते के खिलाफ़ ऐटमी हथियार दाखिल किये जा रहे हैं.

बड़ी-बड़ी ताकतों की युद्ध नीति ऐटमी युद्ध की तरफ़ जा रही है. जो फ़ौजी अड्डे फ़ौजी गुट बन्दियों की ज़रूरत के लिये क़ायम किये गए हैं उनमें अब ऐटमी युद्ध का सामान जमा किया जा रहा है और वे ऐटमी अड्डे बन रहे हैं. विदेशी ऐटमी अड्डों का बनाया जाना और दूसरे देशों में ऐटमी हथियारों का दाखिल किया जाना इन देशों की स्वाधीनता पर एक हमला है इससे ऐटमी युद्ध का खतरा बढ़ता जाता है.

एशिया और अफ़्रीका के किसी देश में भी नए ऐटमी अड्डों का क़ायम किया जाना एशिया और अफ़्रीका के सारे इलाक़े के लिये खतरनाक है.

शान्त महासागर में सारी एशियाई और अफ़्रीक़ी क़ौमों की इच्छा के विरुद्ध ऐटमी और हाइड्रोजिन बमों के तजरबे जारी हैं.

ऐटमी शक्तियाँ अपने इलाक़ों से बहुत दूर अपने को नुक़सान से बचाने के लिये शान्त महासागर में यह तजुरबे कर रही हैं. इन तजरबों का ज़हरीला असर एशिया और अफ़्रीका के लोगों पर पड़ रहा है. यह तजरबे इसलिये किये जा रहे हैं कि करोड़ों लोगों को एक साथ कैसे खत्म किया जा सके. संयुक्त राज अमरीका अगले साल एनीवेटाक एटाल्स (Eniwetok Atolls) में एक बड़े पैमाने पर इस तरह के तजरबे करने की तजवीज कर रहा है.

इन हालतों में हम एशिया और अफ़्रीका के नुमाइन्दे माँग करते हैं कि:

(1) ऐटमी शक्तियाँ बिना किसी शर्त के इन तजरबों को बन्द करें.

یدیپی مصر پر فوجی حملہ کامیاب نہیں ہوا پھر بھی بیچ پورب کے دیشوں میں انتر راشٹریہ تناؤ اب بھی کئی شکلوں میں بڑھ رہا ہے۔

(1) جاپانیوں کے راشٹریہ بھاؤں اور اُن کی اتہاسک پرمپراؤں کے خلاف اوکی ناوا ٹاپوں کو جاپان سے الگ کر دیا گیا ہے اور انہیں سنیکت راج امریکہ کے لئے ایٹمی اڈّا بنایا جا رہا ہے۔

(2) سنیکت راج امریکہ نے جارڈن اور عرب دیشوں کے اندر کے معاملوں میں زبردستی دخل دینے کے لئے اپنا چھٹا جہازی بیڑا لبنان کے سمندر میں بھیج دیا ہے اور اُس بیڑے کو ایٹمی ہتھیاروں سے لیس کر دیا ہے۔

(3) تائی وان کا ٹاپو پیپلس ری پبلک آف چائنا کا ایک انگ اور اُس کے جسم کا ایک ٹکڑا ہے۔ پھر بھی ایٹمی مسائل "میٹیڈور" تائی وان بھیج دیا گیا۔ دکھن کوریا میں بھی لڑائی بند سمجھوتے کے خلاف ایٹمی ہتھیار داخل کئے جا رہے ہیں۔

بڑی بڑی طاقتوں کی یدھ نیتی ایٹمی یدھ کی طرف جا رہی ہے۔ جو فوجی اڈّے فوجی گٹ بندیوں کی ضرورتوں کے لئے قائم کئے گئے ہیں اُن میں اب ایٹمی یدھ کا سامان جمع کیا جا رہا ہے اور وے ایٹمی اڈّے بن رہے ہیں۔ ودیشی ایٹمی اڈّوں کا بنایا جانا اور دوسرے دیشوں میں ایٹمی ہتھیاروں کا داخل کیا جانا ان دیشوں کی سوادھینتا پر ایک حملہ ہے اِس سے ایٹمی یدھ کا خطرہ بڑھتا جاتا ہے۔

ایشیا اور افریقہ کے کسی دیش میں بھی نئے ایٹمی اڈّوں کا قائم کیا جانا ایشیا اور افریقہ کے سارے علاقے کے لئے خطرناک ہے۔

شانت مہا ساگر میں ساری ایشیائی اور افریقی قوموں کی اِچھا کے وِرودھ ایٹم اور ہائیڈروجن بموں کے تجربے جاری ہیں۔

ایٹمی شکتیاں اپنے علاقوں سے بہت دور اپنے کو نقصان سے بچانے کے لئے شانت مہا ساگر میں یہ تجربے کر رہی ہیں۔ اِن تجربوں کا زہریلا اثر ایشیا اور افریقہ کے لوگوں پر پڑ رہا ہے۔ یہ تجربے اِس لئے کئے جا رہے ہیں کہ کروڑوں لوگوں کو ایک ساتھ کیسے ختم کیا جا سکے۔ سنیکت راج امریکہ اگلے سال اینی ویٹوک ایٹالس (Eniwetok Atolls) میں ایک بڑے پیمانے پر اِس طرح کے تجربے کرنے کی تجویز کر رہا ہے۔

اِن حالتوں میں ہم ایشیا اور افریقہ سے مانگ کرتے ہیں کہ :

1. ایٹمی شکتیاں بنا کسی شرط کے اِن تجربوں کو بند کریں۔

विचारकों से बातचीत के आधार पर कह रहे हैं. जापानी लोग साहसी हैं, नेक हैं, बहादुर हैं, मेहनती हैं, होशियार हैं, प्रेमी हैं और उन्नतिशील हैं. इस समय सारे एशिया की, अफ़रीक़ा की और दुनिया के सब स्वतन्त्रता प्रेमी और न्याय प्रेमी लोगों को उनके साथ पूरी हमदरदी है. हमें विश्वास है कि जापान बहुत जलदी ही फिर से पूरी तरह आज़ाद होगा और एशिया और अफ़रीक़ा के दूसरे देशों के साथ मिलकर दुनिया के सब देशों और सब लोगों की आज़ादी, ख़ुशहाली और यकजेहती को फिर से क़ायम करने में बहुत बड़ा हिस्सा लेगा.

وچارکوں سے بات چیت کے آدھار پر کہہ رھے ھیں ۔ جاپانی لوگ ساھسی ھیں، نیک ھیں، بہادر ھیں، محنتی ھیں، ھوشیار ھیں، پریمی ھیں اور اُنتی شیل ھیں ۔ اس سمے سارے ایشیا کی افریقہ کی اور دنیا کے سب سوتنترتا پریمی اور نیائے پریمی لوگوں کو اُن کے ساتھ پوری ھمدردی ھے ۔ ھمیں وشواس ھے کہ جاپان بہت جلدی ھی پھر سے پوری طرح آزاد ھوگا اور ایشیا اور افریقہ کے دوسرے دیشوں کے ساتھ مل کر دنیا کے سب دیشوں اور سب لوگوں کی آزادی خوشحالی اور یکجہتی کی پھر سے قائم کرنے میں بہت بڑا حصہ لیگا ۔

एशिया और अफ़्रीक़ा के प्रतिनिधियों का एलान, तोकियो 16-8-57

अगस्त सन् १९५७ के तोक्यो विश्व सम्मेलन में एशिया और अफ़्रीक़ा के जो नुमाइन्दे जमा हुये थे उन्हों ने मिलकर नीचे लिखा ऐलान शाया किया.

हम एशिया और अफ़्रीक़ा के देशों के नुमाइन्दे जो ऐटम और हाइड्रोजिन बम के ख़िलाफ़ और फ़ौजों को ख़त्म करने के पक्ष में तीसरे विश्व सम्मेलन के मौक़े पर तोक्यो में जमा हुए हैं नीचे लिखा ऐलान शाया करते हैं.

एशिया और अफ़्रीक़ा की क़ौमों की सभ्यता बहुत प्राचीन सभ्यता है. यह क़ौमें अब सब की आज़ादी और विश्व शान्ति का एक नया युग लाने की कोशिश कर रही हैं.

सन १९५५ में एशिया और अफ़्रीक़ा की २९ सरकारों के नुमाइन्दे बानडुंग कानफ़ेन्स में जमा हुए थे. उन्होंने यह प्रस्ताव पास किया था कि ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों का उपयोग न किया जाय और एक देश के लोगों का दूसरे देश के लोगों पर राज करना बन्द किया जावे. इन देशों की डेढ़ अरब जनता का संकल्प इस प्रस्ताव के पीछे था.

हाल में एशिया और अफ़्रीक़ा के देशों में कुछ ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन से इस इलाक़े की आज़ादी और शान्ति ख़तरे में पड़ गई है.

ایشیا اور افریقہ کے پرتی ندھیوں کا اعلان، توکیو 16-8-57

اگست سن 1957 کے توکیو وشو سمیلن میں ایشیا اور افریقہ کے جو نمائندے جمع ھوئے تھے اُنہوں نے مل کر نیچے لکھا اعلان شائع کیا ۔

ھم ایشیا اور افریقہ کے دیشوں کے نمائندے جو ایٹم اور ھائیڈروجن بم کے خلاف اور فوجوں کو ختم کرنے کے پکش میں تیسرے وشو سمیلن کے موقع پر توکیو میں جمع ھوئے ھیں نیچے لکھا اعلان شائع کرتے ھیں ۔

ایشیا اور افریقہ کی قوموں کی سبھیتا بہت پراچین سبھیتا ھے یہ قومیں اب سب کی آزادی اور وشو شانتی کا ایک نیا یگ لانے کی کوشش کر رھی ھے ۔

1955 میں ایشیا اور افریقہ کی 29 سرکاروں کے نمائندے بانڈنگ کانفرنس میں جمع ھوئے تھے ۔ اُنہوں نے یہ پرستاؤ پاس کیا تھا کہ ایٹم اور ھائیڈروجن میں ھتھیار کا اُپیوگ نہ کیا جائے اور ایک دیش کے لوگوں کا دوسرے دیش کے لوگوں پر راج کرنا بند کیا جاوے ۔ ان دیشوں کی ڈیڑھ ارب جنتا کا سنکلپ اس پرستاؤ پیچھے تھا ۔

حال میں ایشیا اور افریقہ کے دیشوں میں کچھ ایسی گھٹنائیں ھوئیں ھیں جن سے اس علاقے کی آزادی اور شانتی خطرے میں پڑ گئی ھے ۔

तीनों ख़ास प्रस्तावों के पास हो जाने के बाद, सम्मेलन समाप्त होने से पहले, "अब और हिरोशिमा नहीं होने देंगे"—नाम का जापानी गाना पूरे बीस हज़ार आदमियों ने खड़े होकर बड़े जोश और एक आवाज़ के साथ गाया. गाते समय सब एक दूसरे की बाहों में बाहें डालकर ज़ंजीरे की तरह बँधे हुए थे और गाने के स्वर के साथ-साथ सबके सब दाँए और बाँए को झुकते जाते थे. बिलकुल समन्दर की सी लहरें मालूम होती थीं. जनता की संकल्प शक्ति और जोश दोनों सीमा को लाँघते हुए दिखाई दे रहे थे।

जापान की इस यात्रा में हमने जो ख़ास चीज़ें देखीं उनमें से एक यह भी थी कि नागासाकी में ठीक उस जगह जिस जगह बारह वर्ष पहले बम गिराया गया था आज एक बड़ी सुन्दर और ऊँची पत्थर की मूर्ति बनी हुई है. मूर्ति शायद लगभग दस फ़ुट ऊँचे खंबे-नुमा चबूतरे पर बैठे हुए आसन में है. एक पैर नीचे लटक रहा है. दूसरा पैर पालथी में है. बदन नंगा है. केवल एक छोटी सी धोती पत्थर ही में खुदी हुई कमर से लिपटी है. उस धोती का एक सिरा बाँए कंधे पर पड़ा है. दाहना हाथ ऊपर की तरफ़ उठा हुआ अंगूठे के पास की उँगली से आसमान की तरफ़ इशारा करता मालूम होता है. बाँयाँ हाथ सीधा फैला हुआ है. हथेली नीचे की तरफ़ है. हमने जापानी मित्रों से इसका मतलब पूछा. हमें बताया गया कि दाहना हाथ ईश्वर की तरफ़ इशारा करता है और बायाँ शान्ति की तरफ़. कहा गया कि मूर्ति शान्ति के उस देवता की मूर्ति है जो ईश्वर से सब के भले और विश्व शान्ति के लिये प्रार्थना कर रहा है. मूर्ति को देखकर बिलकुल महात्मा गाँधी की याद आ-जाती है. माथे पर ठीक बीच में कुछ उभरा हुआ निशान है. हमने पूछा यह क्या है तो हमें बताया गया कि हिन्दुओं का तिलक.

जापन में एक "गाँधी पीस लीग" नाम की संस्था भी क़ायम है जिसके एक ख़ास कार्यकर्ता रेवरेण्ड शोजुन मोचु हैं जो हमसे मिले थे.

जापान जाकर जापानी जाति के लिये आदर और जापानियों से प्रेम हमारे दिल में बहुत बढ़ा. जापानी एशियाई हैं. उनका रहन सहन एशियाई है. उनका दिल एशियाई है. इसमें सन्देह नहीं पिछली दो तीन पीढ़ियों के अन्दर जापान अधिक से अधिक पश्चिमीयता यानी मग़रबीयत की तरफ़ बढ़ चला था. इसी कारण पूरब के दूसरे देशों से वह कुछ कट सा गया था. लेकिन इसमें भी शक नहीं कि जापान को अपनी इस ग़लती के लिये—और ग़लतियाँ हम सबसे होती हैं—काफ़ी से कहीं अधिक दुख भुगतना पड़ा है. जापान आज अन्याय पीड़ित है. जापान के अधिकतर विचारवान लोग अपनी ग़लती को भी अच्छी तरह महसूस कर रहे हैं. हम यह जापानी

تینوں خاص پرستاؤں کے پاس ہو جانے کے بعد، سمیلن سماپت ہونے سے پہلے، "اب اور ہیرو شما نہیں ہونے دینگے"— نام کا جاپانی گانا پورے بیس ہزار آدمیوں نے کھڑے ہو کر بڑے جوش اور ایک آواز کے ساتھ گایا۔ گاتے سمے سب ایک دوسرے کی باہوں میں باہیں ڈال کر زنجیرے کی طرح بندھے ہوئے تھے اور گانے کے سور میں ساتھ ساتھ سب کے سب داہیں اور بائیں کو جھکتے جاتے تھے۔ بالکل سمندر کی سی لہریں معلوم ہوتی تھیں۔ جنتا کی سنکلپ شکتی اور جوش دونوں سیما کو لانگتے ہوئے دکھائی دے رہے تھے۔

جاپان کی اِس یاترا میں ہم نے جو خاص چیز دیکھیں اُن میں سے ایک یہ بھی تھی کہ ناگا ساکی میں ٹھیک اُس جگہ جس جگہ بارہ برس پہلے بم گرایا گیا تھا آج ایک بڑی سندر اور اونچی پتھر کی مورتی بنی ہوئی ہے۔ مورتی شاید لگ بھگ دس فٹ اونچے کھمبے—نماچبوترے پر بیٹھے ہوئے آسن میں ہے؛ ایک پیر نیچے لٹک رہا ہے۔ دوسرا پیر پالتھی میں ہے۔ بدن ننگا ہے۔ کیول ایک چھوٹی سی دھوتی پتھر ہی میں کھدی ہوئی کمر سے لپٹی ہے۔ اُس دھوتی کا ایک سرا بائیں کندھے پر پڑا ہے۔ داہنا ہاتھ اُوپر کی طرف اُٹھا ہوا انگوٹھے کے پاس کی اُنگلی سے آسمان کی طرف اشارہ کرتا معلوم ہوتا ہے۔ بایاں ہاتھ سیدھا پھیلا ہوا ہے۔ ہتھیلی نیچے کی طرف ہے۔ ہم نے جاپانی متروں سے اِس کا مطلب پوچھا۔ ہمیں بتایا گیا کہ داہنا ہاتھ ایشور کی طرف اشارہ کرتا ہے اور بایاں شانتی کی طرف، کہا گیا کہ مورتی شانتی کے اُس دیوتا کی مورتی ہے جو ایشور سے سب کے بھلے اور وشو شانتی کے لئے پراتھنا کر رہا ہے۔ مورتی کو دیکھ کر بالکل مہاتما گاندھی کی یاد آجاتی ہے۔ ماتھے پر ٹھیک بیچ میں کچھ ابھرا ہوا نشان ہے۔ ہم نے پوچھا یہ کیا ہے تو ہمیں بتایا گیا کہ ہندوؤں کا تلک۔

جاپان میں ایک "گاندھی پیس لیگ" نام کی سنستھا بھی قائم ہے جس کے ایک خاص کاریہ کرتا ریورینڈ شوجن موچو ہیں جو ہم سے ملے تھے۔

جاپان کے جاپانی جاتی کے لئے ادر اور جاپانیوں سے پریم ہمارے دل میں بہت بڑھا۔ جاپانی ایشیائی ہیں اُن کا رہن سہن ایشیائی ہے۔ اُن کا دل ایشیائی ہے۔ اِس میں سندیہ نہیں پچھلی دو تین پیڑھیوں کے اندر جاپان ادھک سے ادھک پچھمیتا یعنی مغربیت کی طرف بڑھ چلا تھا۔ اِسی کارن پورب کے دوسرے دیشوں سے وہ کچھ کٹ سا گیا تھا۔ لیکن اِس میں بھی شک نہیں کہ جاپان کو اپنی اُس غلطی کے لئے— اور غلطیاں ہم سب سے ہوتی ہیں— کافی سے کہیں ادھک دُکھ بھگتنا پڑا ہے۔ جاپان آج انیائے پیڑت ہے۔ جاپان کے ادھک تر وچاروان لوگ اپنی غلطی کو بھی اچھی طرح محسوس کر رہے ہیں۔ ہم یہ جاپانی

(ब) "इस तरह के जलसों की कारवाई सीधे या मुख्तलिफ़ देशों की सरकारों की मारफ़त यू॰ एन॰ ओ॰ के पास भेजी जावे."

(स) "इस तरह का आन्दोलन हर देश के लोग अपने अपने ढंग से करें ताकि अधिक से अधिक जनता इस आन्दोलन में साथ दे सके".

इस प्रस्ताव में यू॰ एन॰ ओ॰ की उस "डिस आरमामेंट सब कमेटी" यानी '.फौज, तोड़ सब-कमेटी" का भी जिकर किया गया है जो लन्दन में हो रही है, जिसमें पाँच राष्ट्र शामिल हैं और जिसकी यही गरज है कि इन तजरबों को बन्द किया जावे और .फौजों को खत्म करने की तरफ़ क़दम बढ़ाया जावे.

दुनिया के लोगों से सिफ़ारिश की गई है कि वह अपनी-अपनी सरकारों पर जोर दें कि वे यू॰ एन॰ ओ॰ जनरल एसम्बली से और लन्दन की सब-कमेटी से इस काम को पूरा करावें.

इस बात पर जोर दिया गया है कि इस बारे में सब देशों और सब क़ौमों को मिलकर काम करना चाहिये, ख़ासकर :—

(1) दुनिया के साइन्सदानों ने इस बारे में जो खोज की है उसके नतीजों को सब देशों में फैलाया जावे और जहाँ तक हो सके जलदी साइन्सदानों की एक अन्तर राष्ट्रीय बैठक की जावे.

(2) सब देशों के धार्मिक नेताओं, स्त्रियों, विद्यार्थियों, मजदूरों, मछियारों, किसानों वग़ैरह से सिफ़ारिश की गई है कि वह इस नेक और जरूरी काम के लिये दूसरे देशों के इसी तरह के लोगों के साथ मिलकर काम करें.

इस प्रस्ताव में एशिया और अफ़रीक़ा के देशों और शान्त महासागर यानी पैसिफ़िक ओशन के किनारे के लोगों से ख़ास तौर पर सिफ़ारिश की गई है कि वह इस काम के लिये मिलकर खड़े हो जाएं "क्योंकि हाल में इस तरह के जो तजरबे हुए हैं वह अधिकतर इसी इलाक़े में हुए हैं और इसी इलाक़े में ऐटम और हाइड्रोजिन हथियार अधिकतर दाखिल किये जा रहे हैं. ख़ासकर ओकीनावा, कोरिया और दूसरी जगहों के .फौजी अड्डों में ऐटमी युद्ध की तैयारीयाँ जारी है."

"हम इस बात को भी जरूरी समझते हैं कि इन मक़सदों को पूरा करने के लिये जहाँ तक हो सके जलदी दूसरी अफ़रीक़ा-एशियन कानफरेन्स की जावे.

इस प्रस्ताव के आख़ीर में उन लोगों की मदद के लिये भी अपील की गई है जिन्हें इस तरह के बमों और तजरबों से नुक़सान पहुँचा है.

ب—"اِس طرح کے جلسوں کی کاروائی سیدھے یا مختلف دیشوں کی سرکاروں کی معرفت یو ۔ این ۔ او کے پاس بھیجی جائے ۔

س—"اِس طرح کا آندولن ہر دیش کے لوگ اپنے اپنے ڈھنگ سے کریں تاکہ ادھک سے ادھک جنتا اِس اندولن میں ساتھ دے سکے" ۔

اِس پرستاؤ میں یو ۔ این ۔ او کی اُس "ڈس آرمامنٹ سب کمیٹی" یعنی فوج توڑ سب کمیٹی" کا بھی ذکر کیا گیا ہے جو لندن میں ہو رہی ہے' جس میں پانچ راشٹر شامل ہیں اور جس کی یہی غرض ہے کہ اُن تجربوں کو بند کیا جاوے اور فوجوں کو ختم کرنے کی طرف قدم بڑھایا جاوے ۔

دنیا کے لوگوں سے شفارش کی گئی ہے کہ وہ اپنی اپنی سرکاروں پر زور دیں کہ وے یو ۔ این ۔ او کی جنرل اسمبلی سے اور لندن کی سب کمیٹی سے اِس کام کو پورا کراویں ۔

اِس بات پر زور دیا گیا ہے کہ اِس بارے میں سب دیشوں اور سب قوموں کو مل کر کام کرنا چاہئے' خاص کر :

1. دنیا کے سائنسدانوں نے اِس بارے میں جو کھوج کی ہے اُس کے نتیجوں کو سب دیشوں میں پھیلایا جاوے اور جہاں تک ہو سکے جلدی سائنسدانوں کی ایک انتر راشٹریہ بیٹھک کی جاوے ۔

2. سب دیشوں کے دھارمک نیتاؤں' استریوں' ودیارتھیوں' مزدوروں' مچھیاروں' کسانوں وغیرہ سے شفارش کی گئی ہے کہ وہ اِس نیک اور ضروری کام کے لئے دوسرے دیشوں کے اِسی طرح کے لوگوں کے ساتھ مل کر کام کریں :

اِس پرستاؤ میں ایشیا اور افریقہ کے دیشوں اور شانتی مہاساگر یعنی پیسفک اوشن کے کنارے کے لوگوں سے خاص طور پر شفارش کی گئی ہے کہ وہ اِس کام کے لئے مل کر کھڑے ہو جائیں کیونکہ "حال میں جو اِس طرح کے تجربے ہوئے ہیں وہ ادھک تر اِسی علاقے میں ہوئے ہیں اور اِسی علاقے میں ایٹم اور ہائڈروجن ہتھیار ادھک تر داخل کئے جا رہے ہیں ۔ خاص کر اوکی ناوا' کوریا اور دوسری جگہوں کے فوجی اڈوں میں ایٹمی یدھ کی تیاریاں جاری ہیں" ۔

"ہم اِس بات کو بھی ضروری سمجھتے ہیں کہ ہم مقصدوں کو پورا کرنے کے لئے جہاں تک ہو سکے جلدی دوسری افریکہ - ایشین کانفرنس کی جاوے ۔"

اِس پرستاؤ کے آخر میں اُن لوگوں کی مدد کے لئے بھی اپیل کی گئی ہے جنھیں اِس طرح کے بموں اور تجربوں سے نقصان پہنچا ہے ۔

इस अपील में लिखा है कि "दुनिया के सब लोग इस बात के लिये उत्सुक हैं कि क़ौमों-क़ौमों के बीच तनाव घटे, दुनिया की फ़ौजें ख़त्म हों और ऐटम और हाइड्रोजन बम ख़त्म हों".

इसके लिये सब से पहली जरूरत इस बात की बताई गई है कि "ऐटम और हाइड्रोजिन बमों के तजरबे .फ़ौरन बन्द किये जावें". क्योंकि "इन तजरबों से ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों की दौड़ तेज होती जा रही है, और दुनिया के लोगों के स्वास्थ्य का ख़तरा बढ़ता जा रहा है".

इसके बाद इस अपील में कहा गया है कि 'जापान केलोग तीन बार इन बमों की बरबादी बरदाश्त कर चुके हैं, इसलिये सब महाद्वीपों के नुमाइन्दों के साथ मिलकर हम, जिनमें हिरोशिमा और नागासाकी के जख़मी लोग भी शामिल हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ से और दुनिया की सरकारों से यह मांग करते हैं कि :

"अमरीका, इंगलैंड और सोवियत रूस .फ़ौरन और बिना किसी शर्त के आपस में यह समझौता करें कि ऐटम और हाइड्रोजिन बम के तजरबे बन्द कर दिये जावें.

"इस तरह का समझौता कराने में यू० एन० ओ० अपनी पूरी ताक़त लगा दे.

और "दुनिया की सरकारें इस तरह का समझौता कराने की हर तरह से कोशिश करें"

अन्त में कहा गया कि :—"इस तरह का समझौता होजाने से ऐटम और हाइड्रोजन बमों का बनाना, जमा करना और काम में लाना भी बन्द हो सकेगा और आम तौर पर फ़ौजों के ख़त्म करने के लिये रास्ता साफ़ हो जायगा".

और "उन सब लोगों के नाम पर जो दुनिया की शान्ति और ख़ुशहाली चाहते हैं, यू० एन० ओ० से और दुनिया की सरकारों से अपील करते हैं कि वह हमारी आवाज़ की तरफ़ ध्यान दें".

तीसरे प्रास्ताव में ऐटम और हाइड्रोजिन बम को बन्द कराने और दुनिया की फ़ौजों का ख़त्म कराने के लिये दुनिया के सब लोगों से मिलकर काम करने की सिफ़ारिश की गई है.

इस प्रस्ताव में कहा गया है कि "यू० एन० ओ० की जनरल ऐसम्बली पर जोर डालने के लिये और तीनों ऐटमी देशों से इन तजरबों को बन्द कराने के लिये दुनिया के लोगों को नीचे लिखे काम करने चाहियें :

(अ) "अक्तूबर और नवम्बर के महीनों में तारीख़ें मुक़र्रर करके जलसे वग़ैरह करके यह माँग की जावे कि इन तजरबों को .फ़ौरन और बिना शर्त के बन्द किया जाय."

اِس اپیل میں لکھا ہے کہ "دنیا کے سب لوگ اِس بات کے لئے اُتسک ہیں کہ قوموں کے بیچ تناؤ گھٹے، دنیا کی فوجیں ختم ہوں اور ایٹم اور ہائیڈروجن بم ختم ہوں."

اِس کے لئے سب سے پہلی ضرورت اِس بات کی بتائی گئی ہے کہ "ایٹم اور ہائیڈروجن بموں کے تجربے فوراً بند کئے جائیں." کیونکہ تجربوں سے ایٹم اور ہائیڈروجن ہتھیاروں کی دوڑ تیز ہوتی جا رہی ہے، اور دنیا کے لوگوں کے سواستھ کو خطرہ بڑھتا جا رہا ہے."

اِس کے بعد اپیل میں کہا گیا ہے کہ، جاپان کے لوگ تین بار اِن بموں کی بربادی برداشت کر چکے ہیں، اِس لئے سب مہادیپوں کے نمائندوں کے ساتھ مل کر ہم، جن میں ہیروشما اور ناگا ساکی کے زخمی لوگ بھی شامل ہیں، سنگھت راشٹر سنگھ سے اور دنیا کی سرکاروں سے یہ مانگ کرتے ہیں کہ :—

"امریکہ، انگلینڈ اور سوویت روس فوراً اور بنا کسی شرط کے آپس میں یہ سمجھوتا کریں کہ ایٹم اور ہائیڈروجن بم کے تجربے بند کر دئے جاویں.

'اِس طرح کا سمجھوتا کرانے میں یو. این. او اپنی پوری طاقت لگا دے.

اور "دنیا کی سرکاریں اِس طرح کا سمجھوتا کرانے کی ہر طرح سے کوشش کریں".

انت میں کہا گیا ہے کہ :—"اِس طرح کا سمجھوتا ہوجانے سے ایٹم اور ہائیڈروجن بموں کا بنانا، جمع کرنا اور کام میں لانا بھی بند ہو سکے گا اور عام طور پر فوجوں کے ختم کرنے کے لئے راستہ صاف ہو جائیگا".

اور "اُن سب لوگوں کے نام پر جو دنیا کی شانتی اور سب کی خوش حالی چاہتے ہیں، یو. این. او سے اور دنیا کی سرکاروں سے اپیل کرتے ہیں کہ وہ ہماری آواز کی طرف دھیان دیں".

تیسرے پرستاؤ میں ایٹم اور ہائیڈروجن بم کو بند کرانے اور دنیا کی فوجوں کو ختم کرانے کے لئے دنیا کے سب لوگوں سے مل کر کام کرانے کی سفارش کی گئی ہے.

اِس پرستاؤ میں کہا گیا ہے کہ "یو. این. او کی جنرل اسمبلی پر زور ڈالنے کے لئے اور تینوں ایٹمی دیشوں سے اِن تجربوں کو بند کرانے کے لئے دنیا کے لوگوں کو نیچے لکھے کام کرنے چاہئے.

الف— "اکتوبر اور نومبر کے مہینوں میں تاریخیں مقرر کرکے جلسے وغیرہ کرکے یہ مانگ کی جاوے کہ اِن تجربوں کو فوراً اور بنا شرط بند کیا جائے.

तोक्यो सम्मेलन के आखिरी फ़ैसले भी दुनिया के लिये बहुत ही अधिक महत्व के थे. 16 अगस्त सन् 1957 को कम से कम बीस हज़ार जनता की मौजूदगी में सम्मेलन में तीन प्रस्ताव एक राय से पास हुए. प्रस्तावों के पास होने के समय जनता का जोश देखने ही की चीज़ थी.

पहला प्रस्ताव सम्मेलन की तरफ़ से एक एलान के रूप में था जिसे 'तोक्यो का एलान' कहा गया. इस एलान के अन्दर सम्मेलन में शामिल होने वाले सब देशों के सब प्रतिनिधियों का एक उद्देश्य 'एटमी युद्ध की सब तैयारियों को खत्म करना' बताया गया है. और यह मांग की गई कि :—

(1) "जो सरकारें इस तरह के बमों के तजरबे कर रही हैं वे आपस में एक तरह का समझौता करें जिससे ऐटम और हाईड्रोजन बमों के तजरबे फ़ौरन और बिना किसी शर्त के बन्द कर दिये जावें".

(2) "ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों का बनाना, जमा करना और काम में लाना बिल्कुल बन्द कर दिया जावे".

(3) "जिन राष्ट्रों के पास इस तरह के हथियार हैं वह किसी दूसरे देशों में इन हथियारों को हरगिज़ दाखिल करने न पावें".

(4) "आम तौर पर सब देशों की फ़ौजें खतम कर दी जावें और इस काम पर इस तरह की निगरानी रहे जिसे सब देश मन्जूर कर लें, यदि इस तरह सारी फ़ौजों का खतम करना अभी सम्भव नहीं है तो फ़िलहाल कम से कम सब देशों की फ़ौजों को कम करने का समझौता कर लिया जावे".

(5) "दूसरे देशों में फ़ौजी अड्डे क़ायम करने और उन्हें बढ़ाने के हम खिलाफ़ हैं".

(6) "हम इस बात को समझते हैं कि सब अलग-अलग फ़ौजी दलों और अखाड़ों को एक साथ तोड़ देने से, सब फ़ौजी अड्डों को खत्म कर देने से और सब दूसरे देशों से अपनी-अपनी फ़ौजों को हटा लेने से ऐटमी युद्ध का खतरा कम हो जावेगा"

इसके बाद इस एलान में एक ऐसे भविष्य की मांग की गई है जिससे हिरोशिमा और नागासाकी के शहीदों की आत्माओं को शान्ति मिले. और "हर तरह के युद्ध को नाजायज़ क़रार देना और बन्द कराना "अपना आखरी मक़सद" बनाया गया है.

दूसरा प्रस्ताव "संयुक्त राष्ट्र संघ यानी यू० एन० ओ० और दुनिया की सरकारों के नाम एक अपील" की शक्ल में है.

توکیو سمیلن کے آخری فیصلے بھی دنیا کے لئے بہت ہی ادھک مہتو کے تھے . 16 اگست 1957 کو کم سے کم بیس ہزار جنتا کی موجودگی میں سمیلن میں تین پرستاؤ ایک رائے سے پاس ہوئے . پرستاؤ کے پاس ہونے کے سمئے جنتا کا جوش دیکھنے کی چیز تھی .

پہلا پرستاؤ سمیلن کی طرف سے ایک اعلان کے روپ میں تھا جسے 'توکیو کا اعلان' کہا گیا . اِس اعلان کے اندر سمیلن میں شامل ہونے والے سب دیشوں کے سب پرتی ندھیوں کا ایک ادیش 'ایٹمی یدھ کی سب تیاریوں کو ختم کرنا' بتایا گیا ہے' اور یہ مانگ کی گئی کہ :—

(1) "جو سرکاریں اس طرح کے بموں کے تجربے کر رہی ہیں وے آپس میں ایک اِس طرح کا سمجھوتا کریں جس سے ایٹم اور ہائڈروجن بموں کے تجربے فوراً اور بنا کسی شرط کے بند کر دئے جاویں ."

(2) "ایٹم اور ہائڈروجن ہتھیاروں کا بنانا' جمع کرنا اور کام میں لانا بالکل بند کر دیا جاوے ."

(3) "جن راشٹروں کے پاس اِس طرح کے ہتھیار ہیں وہ کسی دوسرے دیشوں میں اِن ہتھیاروں کو ہرگز داخل کرنے نہ پاویں ."

(4) "عام طور پر سب دیشوں کی فوجیں ختم کر دی جاویں اور اِس کام پر اِس طرح کی نگرانی رہے جسے سب دیش منظور کر لیں' یدی اِس طرح ساری فوجوں کا ختم کرنا ابھی سمبھو نہیں ہے تو فی الحال کم سے کم سب دیش کی فوجوں کو کم کرنے کا سمجھوتا کر لیا جاوے ."

( ) "دوسرے دیشوں میں فوجی اڈے قائم کرنے اور اُنہیں بڑھانے کے ہم خلاف ہیں ."

(6) "ہم اِس بات کو سمجھتے ہیں کہ سب الگ الگ فوجی دلوں اور اکھاڑوں کو ایک ساتھ توڑ دینے سے' سب فوجی اڈے ختم کر دینے سے اور سب دوسرے دیشوں سے اپنی اپنی فوجوں کو ہٹا لینے سے ایٹمی یدھ کا خطرہ کم ہو جائیگا ."

اِس کے بعد اِس اعلان میں ایک ایسے بھوش کی مانگ کی گئی ہے جس میں ہیروشما اور ناگا ساکی کے شہیدوں کی آتماؤں کو شانتی ملے' اور "ہر طرح کے یدھ کو ناجائز قرار دینا اور بند کرانا "اپنا" آخری مقصد بنایا گیا ہے .

دوسرا پرستاؤ "سنیوکت راشٹر سنگھ یعنی یو. این. او اور دنیا کی سرکاروں کے نام ایک اپیل" کی شکل میں ہے .

टापू के मछिहारों के नुमाइन्दे भी थे. कुल जापानी नुमाइन्दों की तादाद लगभग चार हज़ार थी.

दस दिन के सम्मेलन से पहले अलग-अलग व्यवसाय के लोगों की अलग-अलग सभाएँ हुईं, जैसे धार्मिक लोगों की सभाएं, साइन्सदानों की सभाएं, वकीलों की सभाएं, ट्रेडयूनियनिस्टों की सभाएं, माताओं की सभाएं वग़ैरह. सब ने अपने-अपने दृष्टिकोण और अपने-अपने ढंग से सम्मेलन के उद्देशों का समर्थन किया, और अपने-अपने बयान लिखकर बड़े सम्मेलन के सामने पेश किये. इन सभाओं के अन्दर और सम्मेलन के अन्दर बहसें बहुत ही दिल खोलकर और सफ़ाई के साथ हुईं जो देखने के क़ाबिल चीज़ थी.

सम्मेलन के प्रस्तावों और उसके अन्तर राष्ट्रीय राजकाजी प्रभाव से हटकर केवल यह एक बात ही बड़ी अच्छी क़ीमती और गहरा असर रखने वाली थी कि सम्मेलन के अन्दर लगभग दो सप्ताह तक सब देशों के अच्छे से अच्छे लोग जिन में सब धर्मों, सब नसलों और रंगों के, गोरे, काले, पीले, भूरे, और लाल सब तरह के लोग शामिल थे. रात दिन पूरी बेतकल्लुफ़ी के साथ एक दूसरे से मिलते-जुलते साथ खाते पीते और खुलकर बातें करते रहे. साफ़ दिखाई देता था कि ये लोग अपने को इस देश या उस देश के नागरिक न समझकर, विश्व के नागरिक समझ रहे हैं. सम्मेलन के अन्दर और उसके चारों ओर के वातावरण में एक नई मानवता जन्म लेती हुई दिखाई दे रही थी. अपने-अपने राष्ट्रों के अलग-अलग दृष्टिकोण भी थे, अलग-अलग बहसें भी थीं, लेकिन इन सब के अन्दर से यह साफ़ चमक रहा था कि आख़िर में सारा मानव समाज एक कुटुम्ब है, उसे एक कुटुम्ब ही की तरह रहना होगा, और उसकी व्यापक अन्तरात्मा, उसकी इन्तमाई रूह, एक कुटुम्ब की तरह रहने के लिये बेचैन है.

इस समय दुनिया में दो ही ख़ास संगठन ऐसे हैं जिनमें सब देशों के लोग मिलकर बैठते हैं और सब के मिले-जुले हित की बातें सोचते हैं—एक संयुक्त राष्ट्र सङ्गठन यानी यू० एन० ओ० और दूसरे इस तरह के शान्ति सम्मेलन. फ़रक़ यह है कि संयुक्त राष्ट्र सङ्गठन में अधिकतर सरकारों के नुमाइन्दे होते हैं. उनके मिलने में एक ऊपरीपन, थोड़ी बहुत बनावट, क़ायदों की पाबन्दी और कुछ एहतियात और संकोच क़ुदरती है. जबकि इस तरह के सम्मेलनों में जनता और जन संस्थाओं के नुमाइन्दे होते हैं जिनमें ज़ाब्तों की कोई पाबन्दी नहीं होती और लोग कहीं ज़्यादा दिल खोलकर मिलते-जुलते और विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं और करते हैं.

ٹاپو کے مچھیاروں کے نمائندے بھی تھے ۔ کل جاپانی نمائندوں کی تعداد لگ بھگ چار ہزار تھی ۔

دس دن کے سمیلن میں پہلے الگ الگ ویواسائے کے لوگوں کی الگ الگ سبھائیں ہوئیں، جیسے دھارمک لوگوں کی سبھائیں، سائنس دانوں کی سبھائیں، وکیلوں کی سبھائیں، ٹریڈیونینسٹوں کی سبھائیں، ماتاؤں کی سبھائیں وغیرہ ۔ سب نے اپنے اپنے درشٹی کون اور اپنے ڈھنگ سے سمیلن کے اُدیشوں کا سمرتھن کیا، اور اپنے اپنے بیان لکھ کر بڑے سمیلن کے سامنے پیش کئے ۔ اِن سبھاؤں کے اندر اور سمیلن کے اندر بحثیں بہت ہی دل کھول کر اور صفائی کے ساتھ ہوئیں جو دیکھنے کے قابل چیز تھی ۔

سمیلن کے پرستاؤں اور اُس کے انترراشٹریہ راج کاجی پربھاؤ سے ہٹ کر کیول یہ ایک بات ہی بڑی اچھی، قیمتی اور گہرا اثر رکھنے والی تھی کہ سمیلن کے اندر لگ بھگ دو سپتاہ تک سب دیشوں کے اچھے سے اچھے لوگ جن میں دھرموں، سب نسلوں اور سب رنگوں کے، گورے، کالے، پیلے، بھورے اور لال سب طرح کے لوگ شامل تھے ۔ رات دن پورے بے تکلفی کے ساتھ ایک دوسرے سے ملتے جلتے ساتھ کھاتے پیتے کھل کر باتیں کرتے رہے ۔ صاف دکھائی دیتا تھا کہ یہ لوگ اپنے کو اِس دیش یا اُس دیش کے ناگرک نہ سمجھ کر، وشو کے ناگرک سمجھ رہے ہیں ۔ سمیلن کے اندر اور اُس کے چاروں اور کے واتاورن میں ایک نئی مانوتا جنم لیتی ہوئی دکھائی دے رہی تھی ۔ اپنے اپنے راشٹروں کے الگ الگ درشٹی کون بھی تھے، الگ الگ بحثیں بھی تھیں ۔ لیکن اِن سب کے اندر سے یہ صاف چمک رہا تھا کہ آخر میں سارا مانو سماج ایک کٹمب ہے، اُسے ایک کٹمب ہی کی طرح رہنا ہوگا، اور اس کی ویاپک انتر آتما، اُس کی اجتماعی روح، ایک کٹمب کی طرح رہنے کے لئے بے چین ہے ۔

اِس سمے دنیا میں دو ہی خاص سنگٹھن ایسے ہیں جن میں سب دیشوں کے لوگ مل کر بیٹھتے ہیں اور سب کے ملے جلے ہت کی باتیں سوچتے ہیں—ایک سنیوکت راشٹر سنگٹھن یعنی یو. این. او. اور دوسرے اِس طرح کے شانتی سمیلن ۔ فرق یہ ہے کہ سنیوکت راشٹری سنگٹھن میں ادھکتر سرکاروں کے نمائندے ہوتے ہیں ۔ اُن کے ملنے میں ایک اُوپری پن، تھوڑی بہت بناوٹ، قاعدوں کی پابندی اور کچھ احتیاط اور سنکوچ قدرتی ہے ۔ جب کہ اِس طرح کے سمیلنوں میں جنتا اور جن سنستھاؤں کے نمائندے ہوتے ہیں جن میں ضابطوں کی کوئی پابندی نہیں ہوتی اور لوگ کہیں زیادہ دل کھول کر ملتے جلتے اور وچاروں کا آدان پردان کر سکتے ہیں اور کرتے ہیں ۔

कर कई दरजन बड़े-बड़े और सैकड़ों छोटे-छोटे अड्डे हैं. ओकीनावा जैसे जापान के टापुओं पर तो अमरीका का पूरा फ़ौजी क़ब्ज़ा है. सन् 1945 में हिरोशिमा और नागासाकी पर बम पड़ने के बाद जापान को अमरीका के साथ जो सन्धि करनी पड़ी थी उससे छुटकारा पाने के लिये और अपने देश को फिर से पूरी तरह आज़ाद करने के लिये जापानी पूरी कोशिश कर रहे हैं. क़ुदरती तौर पर जापान की इस समय की अन्तर राष्ट्रीय नीति भी पूरी तरह आज़ाद जापानी नीति नहीं समझी जा सकती.

लगभग तीन सप्ताह जापान में रहकर हमने वहाँ के अनेक नगरों जैसे तोक्यो, कामाकुरा, योकोहामा आदि में और अनेक बड़े-बड़े जलसों में इन अमरीकी जकड़बन्दियों के ख़िलाफ़ जापानी जनता और ख़ासकर जापानी नौजवानों के असन्तोष और उनकी तड़प को अच्छी तरह देखा है. जापानी लोग बहुत धीर, गम्भीर, हद दरजे के मेहनती और बहादुर हैं. ज़ाहिर है इन गुणों के सामने अमरीकी जकड़बन्दी और यह अन्तर राष्ट्रीय अन्याय बहुत देर तक नहीं ठहर सकते. सवाल केवल समय का है.

शायद इस परवशता ही के कारण सम्मेलन के अन्दर कुछ देशों के नुमाइन्दों के आने में भी दिक़्क़तें पेश आईं. ख़ासकर नए चीन और रूस के नुमाइन्दों को इजाज़त (विज़ा) मिलने में बड़ी कठिनाई हुई. एक बार तो ऐसा लगता था कि शायद इन देशों के नुमाइन्दे सम्मेलन में भाग न ले सकें. लेकिन फिर किसी तरह ज्यूं त्यूं कर मामला हल हुआ. चीन और रूस के नुमाइन्दे समय पर भाग लेने के लिये सम्मेलन में पहुँच सके. मंगोलिया के नुमाइन्दे सम्मेलन समाप्त होने से ठीक एक दिन पहले पहुँचे. कुछ पूर्वीय योरप के देशों के नुमाइन्दे आख़ीर तक भी नहीं पहुँच सके.

फिर भी तोक्यो सम्मेलन ख़ासा ज़बरदस्त और सार्वदेशिक सम्मेलन था. अमरीका, इन्गलैन्ड, फ़्रान्स, पूर्व जरमनी, पश्चिम जरमनी, आसट्रीया, हालैन्ड, रूस, मंगोलिया, चीन, मिस्र, भारत, लंका, बरमा, आस्ट्रेलिया, न्युज़ीलैन्ड, फ़िलिप्पाइन, इन्डोनेशिया, इन्डोचाइना, पेरु, पोलैन्ड, रोमेनया, चेकोस्लोवाकिया, थाइलैन्ड, कोरिया, पुर्तगाल, वैनेज़ुला आदि लगभग तीस देशों पृथ्वी के पाँचों महाद्वीपों और दुनिया भर की अनेक सार्वजनिक संस्थाओं और अन्तर राष्ट्रीय संगठनों के नुमाइन्दे सम्मेलन में शामिल थे. इन नुमाइन्दों में बौद्ध, शिन्तो, ईसाई, मुसलिम, यहूदी, और हिन्दू सब धर्मों के मानने वाले, बड़े-बड़े ईसाई पादरी और बौद्ध महन्त, राजनैतिक नेता, प्रोफ़ेसर, डाक्टर, वकील, लेखक, पत्रकार दुनिया की पार्लमेंटों के मेम्बर मौजूद थे. जापान के नुमाइन्दों में हिरोशिमा और नागासाकी के घायल लोगों के नुमाइन्दे और बिकिनी

کر کئی درجن بڑے بڑے اور سیکڑوں چھوٹے چھوٹے اڈے ہیں ۔ اوکیناوا جیسے جاپان کے ٹاپوؤں پر امریکہ کا پورا قبضہ ہے ۔ سن 1945 میں ہیروشیما اور ناگاساکی پر بم پڑنے کے بعد جاپان کو امریکہ کے ساتھ جو سندھی کرنی پڑی تھی اُس سے چھٹکارا پانے کے لئے اور اپنے دیش کو پھر سے پوری طرح آزاد کرنے کے لئے جاپانی پوری کوشش کر رہے ہیں ۔ قدرتی طور پر جاپان کی اِس سمے کی انتر راشٹریہ نیتی بھی پوری طرح آزاد جاپانی نیتی نہیں سمجھی جا سکتی ۔

لگ بھگ تین سپتاہ جاپان میں رہ کر ہم نے وہاں انیک نگروں جیسے توکیو' کاماکورا' یوکوہاما ادی میں انیک بڑے بڑے جلسوں میں اِن امریکی جکڑبندیوں کے خلاف جاپانی جنتا اور خاص کر جاپانی نوجوانوں کے اسنتوش اور اُن کی تڑپ کو اچھی طرح دیکھا ہے ۔ جاپانی لوگ بہت 'دھیر' گمبھیر حد درجے کے محنتی اور بہادر ہیں ۔ ظاہر ہے کہ اِن گنوں کے سامنے امریکی جکڑبندی اور یہ انتر راشٹریہ انیائے بہت دنوں تک نہیں ٹھہر سکتے ۔ سوال کیول سمے کا ہے ۔

شاید اِس پروشتا ہی کے کارن سمیلن کے اندر کچھ دیشوں کے نمائندوں کے جانے میں بھی دقتیں پیش آئیں ۔ خاص کر نئے چین اور روس کے نمائندوں کو اجازت (ویزا) ملنے میں بڑی کٹھنائی ہوئی ۔ ایک بار تو ایسا لگتا تھا کہ شاید اِن دیشوں کے نمائندے سمیلن میں بھاگ نہ لے سکیں ۔ لیکن پھر کسی طرح جیوں تیوں کر معاملہ حل ہوا۔ چین اور روس کے نمائندے سمے پر بھاگ لینے کے لئے سمیلن میں پہنچ سکے ۔ منگولیا کے نمائندے سمیلن سماپت ہونے سے ٹھیک ایک دن پہلے پہنچے ۔ کچھ پوروِیہ یورپ کے دیشوں کے نمائندے آخر تک بھی نہیں پہنچ سکے ۔

پھر بھی توکیو سمیلن خاصہ زبردست اور سارودیشک سمیلن تھا ۔ امریکہ' انگلینڈ' فرانس' پورو جرمنی' آسٹریا' ہالینڈ' روس' منگولیا' چین' مصر' بھارت' لنکا' برما' آسٹریلیا' نیوزی لینڈ' فلپائن' انڈونیشیا' انڈوچائنا' پیرو' پولینڈ' رومانیا' چیکوسلوواکیا' تھائی لینڈ' کوریا' پرتگال' وینزولا آدی لگ بھگ تیس دیشوں پرتھوی کے پانچوں مہادیپوں اور دنیا بھر کی انیک سارو جنک سنستھاؤں اور انتر راشٹریہ سنگٹھنوں کے نمائندے سمیلن میں شامل تھے۔ اِن نمائندوں میں بودھ' شنتو' عیسائی' مسلم' یہودی اور ہندو سب دھرموں کے ماننے والے بڑے بڑے عیسائی پادری اور بودھ مہنت' راج نیتک نیتا' پروفیسر' ڈاکٹر' وکیل' لیکھک' پترکار' دنیا کی پارلیمنٹوں کے ممبر موجود تھے۔ جاپان کے نمائندوں میں ہیروشیما اور ناگاساکی کے گھائل لوگوں کے نمائندے اور بکنی

हमारी राय — ہماری رائے

ऐटम और हाईड्रोजन बम के खिलाफ़ तीसरा विश्व सम्मेलन

ऐटम और हाईड्रोजन बमों से सब से अधिक नुक़सान अभी तक जापान को उठाना पड़ा है. क़ुदरती तौर पर जापान में ऐटम और हाईड्रोजन बम के खिलाफ़ और फ़ौजें कम करने के हक़ में एक जापान कौंसिल' है. इस कौनसिल की तरफ़ से जापान के अन्दर दो विश्व सम्मेलन पहले हो चुके हैं. तीसरा विश्व सम्मेलन तोक्यो 6 अगस्त सन् 1957 से 16 अगस्त सन् 1957 तक हुआ.

सम्मेलन की तैयारी के लिए 'तैयारी कमेटी' (प्रिपेरेटरी कमेटी) बनाई गई थी, जिनमें दुनिया के लगभग सब देशों के थोड़े-थोड़े आदमी शामिल थे और जिसकी बैठकें तोक्यो में कई सप्ताह पहले से होती रहीं. इंगलैन्ड अमरीका, आसट्रेलिया, फ़्रान्स, चीन, भारत, लंका, बरमा आदि अनेक देशों के नुमाइन्दे इस तैयारी कमेटी में शामिल थे.

तैयारी कमेटी के एक मेम्बर की हैसियत से हम भी 28 जुलाई को पहुँच गए थे.

जापान की जनता और वहाँ की सरकार दोनों ऐटम और हाईड्रोजन बम के तजरबों के सख़्त खिलाफ़ हैं. वह दिल से चाहते हैं कि हर तरह के सर्वनाशक हथियारों का बनना और काम में लाया जाना क़ानूनन बन्द कर दिया जावे और इस तरह के बमों के जो ढेर कुछ देशों ने जमा कर रखे हैं उन्हें नष्ट कर दिया जावे. वह चाहते हैं कि दुनिया भर के देशों की फ़ौजें धीरे-धीरे, आपसी समझौते से, कम कर दी जावें ताकि अन्त में युद्ध की सम्भावना ही दुनिया में मिट जावे. इस काम के लिये जापान के प्रधान मन्त्री और वहाँ की जनता के प्रतिनिधि दोनों दुनिया भर में घूम चुके हैं और भारत भी आ चुके हैं. दुनिया के देशों में शायद जापान ही अकेला देश है जिसके विधान की एक धारा में साफ़-साफ़ शब्दों में युद्ध का विरोध किया गया है और यह लिख दिया है कि जापान की अन्तर्राष्ट्रीय नीति युद्ध विरोधी नीति होगी.

लेकिन जापान आज बुरी तरह अमरीका के फ़ौजी शिकंजे में जकड़ा हुआ है. छोटे से जापान के अन्दर अमरीका की स्थल सेना, जल सेना और हवाई सेना के मिला-

ایٹم اور ھائیڈروجن بم کے خلاف

تیسرا وشو سمیلن

ایٹم اور ھائیڈروجن بموں سے سب سے ادھک نقصان ابھی تک جاپان کو اٹھانا پڑا ھے ۔ قدرتی طور پر جاپان میں 'ایٹم اور ھائیڈروجن بم کے خلاف اور فوجیں کم کرنے کے حق میں ایک جاپان کونسل' ھے ۔ اِس کونسل کی طرف سے جاپان کے اندر دو وشو سمیلن ھو چکے ھیں ۔ تیسرا وشو سمیلن توکیو میں 6 اگست سن 1957 سے 16 اگست 1957 تک ھوا ۔

سمیلن کی تیاری کے لئے ایک 'تیاری کمیٹی' (پریپریٹری کمیٹی) بنائی گئی تھی' جس میں دنیا کے لگ بھگ سب دیشوں کے تھوڑے تھوڑے آدمی شامل تھے اور جس کی بیٹھکیں توکیو میں کئی سپتاہ پہلے سے ھوتی رھیں ۔ انگلینڈ' امریکہ' آسٹریلیا' فرانس' چین' بھارت' لنکا' برما آدی انیک دیشوں کے نمائندے اِس تیاری کمیٹی میں شامل تھے ۔

تیاری کمیٹی کے ایک ممبر کی حیثیت سے ھم بھی 28 جولائی کو توکیو پہنچ گئے تھے ۔

جاپان کی جنتا اور وھاں کی سرکار دونوں ایٹم اور ھائیڈروجن بم کے تجربوں کے سخت خلاف ھیں ۔ وہ دل سے چاھتے ھیں کہ اِس طرح کے سروناشک ھتھیاروں کا بننا اور کام میں لایا جانا قانوناً بند کر دیا جاوے اور اِس طرح کے بموں کے جو ڈھیر کچھ دیشوں نے جمع کر رکھے ھیں انھیں نشٹ کر دیا جاوے ۔ وہ چاھتے ھیں کہ دنیا بھر کے دیشوں کی فوجیں دھیرے دھیرے' آپسی سمجھوتے سے' کم کر دی جاویں تاکہ انت میں یدھ کی سمبھاؤنا ھی دنیا سے مٹ جاوے۔ اِس کام کے لئے جاپان کے پردھان منتری اور وھاں کی جنتا کے پرتینِدھی دونوں دنیا بھر میں گھوم چکے ھیں اور بھارت بھی آچکے ھیں ۔ دنیا کے دیشوں میں شاید جاپان ھی ایک اکیلا دیش ھے جس کے ودھان کی ایک دھارا میں صاف صاف شبدوں میں یدھ کا ورودھ کیا گیا ھے اور یہ لکھ دیا گیا ھے کہ جاپان کی انتر راشٹریہ نیتی یدھ ورودھی نیتی ھوگی ۔

لیکن جاپان آج بری طرح امریکہ کے فوجی شکنجے میں جکڑا ھوا ھے ۔ چھوٹے سے جاپان کے اندر امریکہ کی استھل سینا' جل سینا اور ھوائی سینا ملا

आवे तो मैं और मेरे बहुत से हिन्दुस्तानी साथी बड़ी .ख़ुशी के साथ उसमें हिस्सा लेना चाहेंगे.

डेलिगेट बहनो और भाइयो ! आप का काम इस युग का सबसे बड़ा आध्यात्मिक काम है. हम में से हर एक पूरी श्रद्धा और पक्के इरादे के साथ अपने कर्तव्य को पूरा करें तो हमारी सफलता लाज़मी है.

آوے میں اور میرے بہت سے ہندستانی ساتھی بڑی خوشی کے ساتھ اس میں حصہ لینا چاہیں گے ۔

ڈیلیگیٹ بہنوں اور بھائیوں ! آپ کا کام اِس یُگ کا سب سے بڑا ادھیاتمک کام ہے۔ ہم سے ہر میں ایک پوری شردھا اور پکے ارادے کے ساتھ اپنے کرتویہ کو پورا کرے تو ہماری سپھلتا لازمی ہے ۔

में सहयोग देने से साफ इन्कार कर दें, चाहे इस इन्कार के लिये उसे प्राण ही क्यों न देना पड़े. इसी तरह हर मजदूर का और हर काम करने वाले का, जो युद्ध के सामान के बनाने या लाने लेजाने में लगा हो, यह पवित्र कर्तव्य है कि यदि उसे इस बात का विश्वास हो गया है कि युद्ध बुरी चीज है तो इस तरह का काम करने से इनकार करदे.

हम सब यह चाहते हैं कि अपने .फैसलों पर अमल कराने के लिए हम कुछ अमली क़दम बढ़ा सकें. मैं आप से कहना चाहता हूँ कि दुनिया के मजदूर ही दुनिया की सब सरकारों की आर्थिक और राजनीतिक नीति को असली रूप देने वाले हैं. वे यदि एक बार इस सचाई को समझ लें और अपनी शक्ति को जान जायँ तो दुनिया की कोई ताक़त मानव समाज को नए युद्ध की ओर नहीं ढकेल सकती.

जो सरकार या जो देश दुनिया की जनता की इस राय की परवाह न करते हुए इसके खिलाफ़ अमल करता रहे उसका आर्थिक, सामाजिक और जरूरत पड़े तो राजनैतिक बहिष्कार यानी उसके साथ असहयोग भी एक ऐसा तरीक़ा है जिसकी तरफ़ सब शान्ति प्रेमियों को गम्भीरता के साथ ध्यान देना चाहिये.

अन्त में हाइड्रोजन बमों के नित्य नए तजरबों को बन्द कराने के लिये मेरी प्रार्थना है कि इस इतने बड़े मामले में दुनिया की अन्तरात्मा को जानने के लिये हम सब को हर तरह की .कुरबानी के लिये तैयार रहना चाहिये. हम सब का यह पवित्र कर्तव्य है. इस लिये मैं फिर एक बार अमरीका के सत्याग्रहियों को प्रणाम करता हूँ. भारत में हम लोगों ने जब यह सुना कि क्रिस्मस टापुओं की तरफ़ एक सत्याग्रही जहाज भेजे जाने की तजवीज हो रही है, तो हम में से बहुत से जैसे मेरे मैथडिस्ट दोस्त डा० जे० सी० कुमारप्पा, मेरे दोस्त डा० चोथ राम गिडवानी, खुद मैं, और बहुत से लोग उस सत्याग्रह में शामिल होने के लिये उत्सुक थे. अपने लिये तो मैं इस से अच्छी किसी मौत का अनुमान ही नहीं कर सकता कि दुनिया की शान्ति के लिये मैं प्राण दे सकूँ. मैंने कुछ अमरीकी दोस्तों से पूछा था कि हम में से कुछ अमरीकी सत्याग्रहियों के साथ शामिल हो सकते हैं या नहीं. मुझसे कहा गया कि इससे अमरीकी सत्याग्रहियों की कठिनाइयाँ और बढ़ सकती हैं. मैं फिर जापान के, आस्ट्रेलिया के, अमरीका के और दुनिया के किसी भी हिस्से के दोस्तों और साथियों से नम्रता के साथ अपील करता हूँ कि जहाँ कहीं भी और जब कभी भी मिलकर इस तरह के काम करने का मौका

میں سہیوگ دینے سے صاف انکار کریں، چاہے اِس اِنکار کے لئے اُسے پران ہی کیوں نہ دینا پڑے ۔ اِسی طرح ہر مزدور کا اور ہر کام کرنے والے کا، جو یدھ کے سامان کے بنانے یا لانے لے جانے میں لگے ہیں، یہ پوتر کرتویہ ہے کہ یدی اُسے اِس بات کا وشواس ہو گیا ہے کہ یدھ بری چیز ہے تو اِس طرح کا کام کرنے سے انکار کر دے ۔

ہم سب یہ چاہتے ہیں کہ اپنے فیصلوں پر عمل کرانے کے لئے ہم کچھ عملی قدم اٹھا سکیں، میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ دنیا کے مزدور ہی دنیا کی سب سرکاروں کی ارتھک اور راج نیتک نیتی کو اصلی روپ دینے والے ہیں ۔ وے یدی ایک بار اِس سچائی کو سمجھ لیں اور اپنی شکتی کو جان جائیں تو دنیا کی کوئی طاقت سماج کو نئے یدھ کی اور نہیں ڈھکیل سکتی ۔

جو سرکار یا جو دیش دنیا کی جنتا کی اِس رائے کی پرواہ نہ کرتے ہوئے اِس کے خلاف عمل کرتا رہے اُس کا ارتھک، سماجک اور ضرورت پڑے تو راج نیتک بہشکار یعنی اُس کے ساتھ اسہیوگ بھی ایک ایسا طریقہ ہے جس کی طرف سب شانتی پریمیوں کو گمبھیرتا کے ساتھ دھیان دینا چاہئے ۔

انت میں ہائیڈروجن بموں کے نت نئے تجربوں کو بند کرانے کے لئے میری پرارتھنا ہے کہ اِس اتنے بڑے معاملے میں دنیا کی انتر آتما کو جاننے کے لئے ہم سب کو ہر طرح قربانی کے لئے تیار رہنا چاہئے ۔ ہم سب کا یہ پوتر کرتویہ ہے ۔ اِس لئے میں پھر ایک بار امریکہ کے ستیاگرہیوں کو پرنام کرتا ہوں ۔ بھارت میں ہم لوگوں نے جب یہ سنا کہ کرسمس ٹاپوؤں کی طرف ایک ستیہ گرہی جہاز بھیجے جانے کی تجویز ہو رہی ہے، تو ہم میں سے بہت کے جیسے میرے میتھوڈسٹ دوست ڈاکٹر جے۔ سی۔ کمارپا، میرے دوست ڈاکٹر چوتھ رام گدوانی، خود میں، اور بہت سے لوگ اِس ستیاگرہ میں شامل ہونے کے لئے اُتسک تھے ۔ اپنے لئے تو میں اِس سے اچھی کسی موت کا انومان ہی نہیں کر سکتا کہ دنیا کی شانتی کے لئے میں پران دے سکوں ۔ میں نے کچھ امریکی دوستوں سے پوچھا تھا کہ ہم میں سے کچھ امریکی ستیاگرہیوں کے ساتھ شامل ہو سکتے ہیں یا نہیں ۔ مجھ سے کہا گیا کہ اِس سے امریکی ستیہ گرہیوں کی کٹھنائیاں اور بڑھ سکتی ہیں ۔ میں پھر جاپان کے، آسٹریلیا کے، امریکہ کے اور دنیا کے کسی بھی حصے کے دوستوں اور ساتھیوں سے نمرتا کے ساتھ اپیل کرتا ہوں کہ جہاں کہیں بھی اور جب کبھی بھی مل کر اِس طرح کے کام کرنے کا موقعہ

रीत दिशा में है और हमारी आजकल की अधिकतर मुसीबतों की जड़ हमारा यही ग़लत झुकाव है.

आत्म-संयम यानी अपनी इच्छाओं को क़ाबू में रखना और अपरिग्रह यानी किसी चीज़ का अपनी निजी सम्पत्ति न समझना यह दोनों बातें हमारे सर्वोच्च आदर्श होने चाहियें. हम मानते हैं कि दुनिया के सब लोग तब ही सुखी रह सकते हैं जब कि हर आदमी दूसरों के सुख की अधिक और अपने सुख की कम चिन्ता करे.

इससे यह भी नतीजा निकलता है कि जहाँ तक हो सके दुनिया की सब अच्छी चीज़ों और आम तौर पर उत्पत्ति के सब साधन समाज की सम्पत्ति होने चाहियें, न कि व्यक्ति की. इस मामले में हम कम्युनिज़्म के बहुत निकट पहुँच जाते हैं और हमें इसका गर्व है.

तीसरी बात यह है कि महात्मा गाँधी की तालीम में सब से अधिक महत्व की चीज़ "अहिंसा" है. गाँधी जी के अनुसार हर मर्द और हर औरत का यह पवित्र कर्तव्य है कि वह हर अन्याय और हर बुराई का डटकर मुक़ाबला करे और यदि आवश्यकता हो तो इस मुक़ाबला करने में अपने सर्वस्व की बाज़ी लगा दे. लेकिन गाँधी जी का कहना है कि यह मुक़ाबला "अहिंसात्मक" होना चाहिये. इस तरह के मुक़ाबला करने वाले को गाँधीजी "सत्याग्रही" कहते हैं. सत्याग्रही को चाहिये कि जहाँ तक हो सके अपने दिल को सब की तरफ़ से, यहाँ तक कि बुराई या अन्याय करने वालों की तरफ़ से भी, प्रेम से भर ले और फिर ख़ुद अपने त्याग और कष्ट सहने के ज़रिये बुराई या अन्याय करने वाले को ठीक रास्ते पर लाने की कोशिश करे.

मैं जानता हूँ कि यह मामला कुछ कठिन मामला है. बहन श्रीमती रामेश्वरी नहरू ने उस दिन इस रास्ते की तुलना तलवार की धार पर चलने से की थी. लेकिन भारत ने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में इसी रास्ते पर चलकर अपने को सब से बड़ी साम्राज्य प्रेमी शक्ति के पंजे में आज़ाद किया.

दुनिया के सब शान्ति प्रेमियों से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि वे अहिंसात्मक सत्याग्रह के इस तरीक़े को अधिक गम्भीरता के साथ जानने और समझने की कोशिश करें, इस रास्ते की अपनी एक अलग तकनीक है, उसके लिये एक ख़ास तरह की तैयारी की आवश्यकता होती है, एक साधन की ज़रूरत होती है. यह साधना और तैयारी हिंसात्मक विरोध की साधना और तैयारी से बिलकुल दूसरी ही तरह की होती है.

इस रास्ते के अनुसार हर ऐसे साइंसदाँ, एंजीनियर या कारीगर का, जिसे इस बात का विश्वास हो गया हो कि ऐटम और हाइड्रोजिन हथियार बुरी चीज़ें हैं, यह पवित्र कर्तव्य है कि वह इस तरह के हथियारों के बनाने

دشا میں ہے اور ہماری آجکل کی ادھکتر مصیبتوں کی جڑ ہمارا یہی غلط جھکاؤ ہے ۔

آتم‌سنیم یعنی اپنی اِچھاؤں کو قابو میں رکھنا اور اَپریگرہ یعنی کسی چیز کو اپنی نجی سمپتی نہ سمجھنا یہ دونوں باتیں ہمارے سروچ آدرش ہونے چاہئیں ۔ ہم مانتے ہیں کہ دنیا کے سب لوگ تب ہی سکھی رہ سکتے ہیں جب کہ ہر آدمی دوسروں کے سکھ کی ادھک اور اپنے سکھ کی کم چنتا کرے ۔

اِس سے یہ بھی نتیجہ نکلتا ہے کہ جہاں تک ہو سکے دنیا کی سب سے اچھی چیزوں اور عام طور پر اُتپتی کے سب سادھن سماج کی سمپتی ہونے چاہئیں' نہ کی ویکتی کی اِس معاملے میں ہم کمیونزم کے بہت نکٹ پہنچ جاتے ہیں اور ہمیں اِس کا گرو ہے ۔

تیسری بات یہ ہے کہ مہاتما گاندھی کی تعلیم میں سب سے ادھک مہتو کی چیز "اہنسا" ہے گاندھی جی کے انوسار ہر مرد اور ہر عورت کا یہ پوتر کرتویہ ہے کہ وہ ہر انیائے اور ہر برائی کا ڈٹ کر مقابلہ کرے اور یدی اوشیکتا ہو تو اِس مقابلہ کرنے میں اپنے سروسو کی بازی لگا دے ۔ لیکن گاندھی جی کا کہنا ہے کہ یہ مقابلہ "اہنسا تمک" ہونا چاہئے ۔ اِس طرح کے مقابلہ کرنے والے کو گاندھی جی "ستیا گرہی" کہتے ہیں ۔ ستیا گرہی کو چاہئے کہ جہاں تک ہو سکے اپنے دل کو سب کی طرف سے یہاں تک کہ برائی یا انیائے کرنے والوں کی طرف سے بھی' پریم سے بھر لے اور پھر خود اپنے تیاگ اور کشٹ سہنے کے ذریعے برائی یا انیائے کرنے والے کو ٹھیک راستے پر لانے کی کوشش کرے ۔

میں جانتا ہوں کہ یہ معاملہ کچھ کٹھن معاملہ ہے بہن شریمتی رامیشوری نہرو نے اُس اِس راستے کی تولنا تلوار کی دھار پر چلنے سے کی تھی ۔ لیکن بھارت میں مہاتما گاندھی کے نیتُرت میں اِسی راستے پر چل کر اپنے کو دنیا کی سب سے بڑی سامراج پریمی شکتی کے نیچے سے آزاد کیا ۔

دنیا کے سب شانتی پریمیوں سے میری پرارتھنا ہے کہ وہ اہنسا آتمک ستیہ گرہ کے اِس طریقہ کو ادھک گمبھیرتا کے ساتھ جاننے اور سمجھنے کی کوشش کریں' اس راستے کی اپنی ایک الگ ٹکنیک ہے' اِس کے لئے ایک خاص طرح کی تیاری کی اوشیکتا ہوتی ہے' ایک سادھن کی ضرورت ہوتی ہے ۔ یہ سادھن اور تیاری ہنسا آتمک وِرودھ کی سادھنا اور تیاری کے بالکل دوسری طرح کی ہوتی ہے ۔

اِس راستے کے انوسار ہر ایسے سائنسداں' انجینیر یا کاریگر کا' جسے اِس بات کا وشواس ہوگیا ہو کہ ایٹم اور ہائڈروجن ہتھیار بری چیزیں ہیں' یہ پوتر کرتویہ ہے کہ وہ اِس طرح کے ہتھیاروں کے بنانے

भेजा है जिसमें हम सब ने उन्हें प्रणाम किया है और उनका पूरा-पूरा समर्थन करने का उनसे वादा किया है. तीस वर्ष तक मैं अपने गुरु महात्मा गाँधी के चरणों में बैठा हूँ और उनके नेतृत्व में अपने देश की आजादी के लिये लड़ चुका हूँ. इसलिये मैं आप से इजाजत चाहता हूँ कि मैं आपके सामने उस रास्ते को पेश करूँ जिसे मैं गाँधी जी का बताया हुआ शान्ति का रास्ता समझता हूँ और यह भी बताऊँ कि ऐटम और हाइड्रोजिन बम के सवाल के साथ उसका क्या सम्बन्ध है.

पहली बात यह है कि महात्मा गाँधी की सबसे बड़ी विशेषता उनकी धार्मिकता थी. धर्म में उन्हें गहरा विश्वास था. मैं स्वयं धर्म का मानने वाला हूँ. मैं ईश्वर में विश्वासी हूँ, मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वासी हूँ, आध्यात्मिक यानी रूहानी ज़िन्दगी का मानने वाला हूँ और रूहानी ("कम्युनियन" यानी योग या सलूक का भी मानने वाला हूँ. लेकिन हम लोग दुनिया के सब बड़े-बड़े धर्म मजहबों की बुनियादी एकता के मानने वाले हैं. हम मानते हैं कि इन धर्म मजहबों में जो फ़रक़ हैं वह अधिकतर ग़ैर जरूरी बातों से सम्बन्ध रखते हैं. इस पृथ्वी पर किस तरह का जीवन बिताना चाहिये इस बारे में सब धर्मों की बुनियादी शिक्षा एक सी है. हम मानते हैं कि हर सभ्य देश के अन्दर लोगों को धर्म मजहब के मामले में पूरी आजादी होनी चाहिये. जो-जो चाहें माने और जिस तरह चाहे अपने ईश्वर अल्लाह की पूजा-आराधना करे. साथ ही हम यह भी कहना चाहते हैं कि अब समय आ गया है जबकि, विश्व शान्ति के हित में, मानव समाज को प्रेम के साथ एक दूसरे को समझा-बुझाकर और निस्पक्षता के साथ एक दूसरे को समझ कर, इस बात की कोशिश करनी चाहिये कि मानव जाति एक मिले-जुले बीच के ऐसे धर्म की तरफ़ क़दम बढ़ा सके जिस धर्म का अधिक सम्बन्ध इस बात के साथ हो कि हम सब किस तरह अपनी ज़िन्दगी बसर करें और एक दूसरे के साथ किस तरह बरतें, और कम सम्बन्ध इस बात के साथ हो कि हम संसार की उत्पत्ति या परलोक आदि के बारे में क्या मान्यताएँ रखते हैं या किस विधि के साथ उस ईश्वर अल्लाह की पूजा-आराधना करते हैं जो हम सब का मालिक है. इस तरह के धर्म में हम सब बड़े-बड़े धर्मों के क़ायम करने वालों का एक बराबर आदर कर सकेंगे और दुनिया की सब बड़ी-बड़ी धर्म पुस्तकों से एक लाभ उठा सकेंगे.

दूसरी बात यह है कि महात्मा गाँधी की शिक्षा के अनुसार मनुष्य की ज़िन्दगी का आदर्श अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू हासिल करना होना चाहिये, न कि इन्द्रियों के सुखों की ओर दौड़ना आजकल की सभ्यता का झुकाव इसके ठीक विप-

. انہیں ایک سندیشا بھی بھیجا ہے جس میں ہم سب نے
ں پرنام کیا ہے اور اُن کا پورا پورا سمرتھن کرنے کا اُن سے
کیا ہے ۔ تیس ورش تک میں اپنے گرو مہاتما گاندھی کے
ں میں بیٹھا ہوں اور اُن کے نیترتو میں اپنے دیش کی
ی کے لئے لڑ چکا ہوں ۔ اِس لئے میں آپ سے اجازت چاہتا
کہ میں آپ کے سامنے اُس راستے کو پیش کروں جسے
گاندھی جی کا بتایا ہوا شانتی کا راستہ سمجھتا ہوں اور
ی بتاؤں کہ ایٹم اور ہائڈروجن بم کے سوال کے ساتھ اُس کا
سمبندھ ہے ۔

پہلی بات یہ ہے کہ مہاتما گاندھی کی سب سے بڑی وشیشتا
کی دھارمکتا تھی ۔ دھرم میں انہیں گہرا وشواس تھا ۔ میں
، دھرم کا ماننے والا ہوں ۔ میں ایشور میں وشواسی ہوں'
یو کے بعد کے جیون میں وشواسی ہوں' ادھیاتمک یعنی
انی زندگی کا ماننے والا ہوں اور روحانی "کمونین" یعنی
ب یا سلوک کا بھی ماننے والا ہوں ۔ لیکن ہم لوگ دنیا کے
سب بڑے بڑے دھرم مذہبوں کی بنیادی ایکتا کے ماننے والے
ں ۔ ہم مانتے ہیں کہ اِن دھرم مذہبوں میں جو فرق ہیں،
دھکتر غیر ضروری باتوں سے سمبندھ رکھتے ہیں ۔ اِس پرتھوی
اس طرح کا جیون بتانا چاہئے اِس بارے میں سب دھرموں
بنیادی شکشا ایک سی ہے ۔ ہم مانتے ہیں کہ ہر سبھیہ
ں کے اندر لوگوں کو دھرم مذہب کے معاملے میں پوری
دی ہونی چاہئے ۔ جو جو چاہے مانے اور جس طرح چاہے
ایشور اللہ کی پوجا ارادھنا کرے ۔ ساتھ ہی ہم یہ بھی کہنا
تے ہیں کہ اب سمے آ گیا ہے جب کہ' وشو شانتی کے ہت
ں' مانو سماج کو پریم کے ساتھ ایک دوسرے کو سمجھا بجھا
اور نشپکشتا کے ساتھ ایک دوسرے کو سمجھ کر' اِس بات
کوشش کرنی چاہئے کہ مانو جاتی ایک ملے جلے بیچ کے
ے دھرم کی طرف قدم بڑھا سکیں جس دھرم کا ادھک
بندھ اِس بات کے ساتھ ہو کہ ہم سب کس طرح اپنی زندگی
ر کریں اور ایک دوسرے کے ساتھ کس طرح برتیں' اور کم
بندھ اِس بات کے ساتھ ہو کہ ہم سنسار کی اُتپتی یا پرلوک
ی کے بارے میں کیا مانیتائیں رکھتے ہیں یا کس ودھی کے
تھ ایشور اللہ کی پوجا آرادھنا کرتے ہیں جو ہم سب کا مالک
۔ اِس طرح کے دھرم میں ہم سب بڑے بڑے دھرموں کے
ئم کرنے والوں کا ایک برابر آدر کر سکیں گے اور دنیا کی سب
ی بڑی دھرم پستکوں سے ایک لابھ اُٹھا سکیں گے۔

دوسری بات یہ ہے کہ مہاتما گاندھی کی شکشا کے
سار منشیہ کی زندگی کا آدرش اپنی اندریوں پر قابو
حاصل کرنا ہونا چاہئے' نہ کہ اندریوں کے سکھوں کی اور
وڑنا ۔ آج کل کی سبھیتا کا جھکاؤ اِس کے ٹھیک وپریت

सद्र साहब, डैलीगेट साथियो और मेरे जापानी भाइयो और बहनो !

मैं अपने उन जापानी दोस्तों का आभारी हूँ जिन्हों ने हमें इस सुन्दर देश में आने का और ऐटम और हाइड्रोजिन बम के ख़िलाफ़ और दुनिया की फ़ौजों को कम करने के पक्ष में अपनी कोशिशों में हिस्सा लेने का यह मौक़ा दिया, उनकी इन नेक कोशिशों में सारे भारतवासी पूरी तरह उनके साथ हैं.

चन्द और डैलिगेट भाइयों के साथ में अभी नागासाकी और हिरोशिमा होकर आया हूँ. उस भयंकर दुर्घटना को हुए बारह बरस बीत चुके. इतने दिनों के बाद भी जो कुछ मैंने अपनी आँखों से देखा उसे देखकर मुझे अचरज होता है कि कोई भी मनुष्य इस तरह का काम कैसे कर सका. बेगुनाह माताओं की गोद में बैठे हुए मासूम बच्चों को ज़िन्दा भून डालना और बीमारों और बूढ़ों को उनके बिस्तरों के अन्दर जलाकर ख़ाक कर देना इतनी बड़ी दुष्टता और इतना बड़ा पाप है जिसे दुनिया की जनता को बरदाश्त नहीं करना चाहिये, और मुझे आशा है कि दुनिया की जनता इसे आइन्दा कभी बरदाश्त नहीं करेगी. "अब और हिरोशिमा नहीं होने देंगे" यह आवाज़ आज मानव समाज के हृदय से ज़ोरों के साथ निकल रही है. कोई अब इस आवाज़ की अवहेलना नहीं कर सकता.

भारतवासी यह भी मानते हैं कि किसी भी देश या राष्ट्र को यह अधिकार नहीं है कि वह दुनिया के किसी भी दूसरे देश में अपनी फ़ौजी अड्डे क़ायम करे. नए नए देशों में ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों को दाख़िल करना तो भारत वासियों की निगाह से एक अव्वल दरजे का अन्तर्राष्ट्रीय जुर्म है. भारत उन सब सन्धियों और समझौतों के भी ख़िलाफ़ है जो दुनिया को एक दूसरे के विरुद्ध दो जंगी अखाड़ों में बाँट देते हैं भारतवासी सब राष्ट्रों के मिले जुले एक ऐसे सुलहनामे के पक्ष में हैं जिसके अनुसार सब मिल कर दुनिया की शान्ति को क़ायम रखने का वचन दें और जिसमें अमरीका और रूस दोनों शामिल हों. भारत किसी तरह का युद्ध नहीं चाहता. भारत सारे मानव समाज को एक कुटुम्ब मानता है और दुनिया की सब लोगों की एकता का हामी है.

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये क्या-क्या उपाय करने चाहिये इस पर इस सम्मेलन में काफ़ी बहसें हो चुकी हैं. उन बहसों के दौरान में कई बार उन उपायों की भी चरचा हुई है जो भारत के नेता महात्मा गाँधी ने हमें सिखाए हैं. हमारे बहादुर अमरीकी दोस्त हाइड्रोजिन बम के ख़िलाफ़ इस समय भी वह उपाय काम में ला रहे हैं जिन्हें वह "गांधियन उपाय" और "अहिंसात्मक उपाय" कहते हैं. विश्व सम्मेलन के इस मंच से हमने उन्हें एक संदेशा भी

صدر صاحب، ڈیلیگیٹ ساتھیو اور میرے جاپانی بھائیو اور بہنو !

میں اپنے اُن جاپانی دوستوں کا آبھاری ہوں جنھوں نے ہمیں اِس سندر دیش میں آنے کا اور ایٹم اور ہائڈروجن بم کے خلاف اور دنیا کے فوجوں کو کم کرنے کے پکش میں اپنی کوششوں میں حصہ لینے کا یہ موقعہ دیا، اُن کی اِن نیک کوششوں میں سارے بھارت واسی پوری طرح اُن کے ساتھ ہیں ۔

چند اور ڈیلیگیٹ بھائیوں کے ساتھ میں ابھی ناگاساکی اور ہیروشما ہو کر آیا ہوں ۔ اُس بھینکر درگھٹنا کو ہوئے بارہ برس بیت چکے۔ اِتنے دنوں کے بعد بھی جو کچھ میں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا اُسے دیکھ کر مجھے اچرج ہوتا ہے کہ کوئی بھی مانشیہ اِس طرح کا کام کیسے کر سکا ۔ بے گناہ ماتاؤں کی گود میں بیٹھے ہوئے معصوم بچوں کو زندہ بھون ڈالنا اور بیماروں اور بوڑھوں کو اُن کے بستروں کے اندر جلاکر خاک کر دینا اتنی بڑی دشٹتا اور اِتنا بڑا پاپ ہے جسے دنیا کی جنتا کو برداشت نہیں کرنا چاہئے، اور مجھے آشا ہے کہ دنیا کی جنتا اِسے آئندہ کبھی برداشت نہیں کرے گی ۔" اب اور ہیروشما نہیں ہونے دیں گے" یہ آواز آج مانو سماج کے ہردے سے زوروں کے ساتھ نکل رہی ہے ۔ کوئی اب اِس آواز کی اوہیلنا نہیں کر سکتا ۔

بھارت واسی یہ بھی مانتے ہیں کہ کسی بھی دیش یا راشٹر کو یہ ادھیکار نہیں ہے کہ وہ دنیا کے کسی بھی دوسرے دیش میں اپنے فوجی اڈے قائم کرے ۔ نئے نئے دیشوں میں ایٹم اور ہائڈروجن ہتھیاروں کو داخل کرنا تو بھارت واسیوں کی نگاہ میں ایک اول درجے کا انتر راشٹریہ جرم ہے۔ بھارت اُن سب سندھیوں اور سمجھوتوں کے بھی خلاف ہے جو دنیا کو ایک دوسرے کے وِرودھ دو جنگی اکھاڑوں میں بانٹ دیتے ہیں ۔ بھارت واسی سب راشٹروں کے ملے جلے ایک ایسے صلحنامے کے پکش میں ہیں جس کے انوسار سب مل کر دنیا کی شانتی کو قائم رکھنے کا وچن دیں اور جس میں امریکہ اور روس دونوں شامل ہوں ۔ بھارت کسی طرح کا یدھ نہیں چاہتا ۔ بھارت سارے مانو سماج کو ایک کٹمب مانتا ہے اور دنیا کے سب لوگوں کی ایکتا کا حامی ہے ۔

اِس اُدیش کو پورا کرنے کے لئے کیا کیا اُپائے کرنے چاہئے اِس پر اِس سمیلن میں کافی بحثیں ہو چکی ہیں۔ اُن بحثوں کے دوران میں کئی بار اُن اُپائیوں کی بھی چرچا ہوئی ہے جو بھارت کے نیتا مہاتما گاندھی نے ہمیں سکھائے ہیں۔ ہمارے بہادر امریکی دوست ہائڈروجن بم کے خلاف اِس سمے بھی وہ اُپائے کام میں لا رہے ہیں جنھیں وہ "گاندھین اُپائے" اور "اہنساتمک اُپائے" کہتے ہیں ۔ وشو سمیلن کے اِس منچ سے

कर्म या फ़ेल के अन्दर हमें तीन तरह के काम मिलते हैं—स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ यानी ख़ुदग़रज़ी, दूसरों का भला और केवल फ़र्ज़ समझकर सब का यकसाँ भला पहली तरह के काम ऐसे हैं जैसे क़रज़ा लेना, दूसरी तरह के काम ऐसे हैं जैसे दूसरे को क़रज़ा देना और तीसरी तरह के काम सब क़रज़ों से छुटकारा पाना. पाप और पुण्य दोनों बन्धन हैं. मोक्ष यानी निजात इन दोनों से आज़ाद हो जाना है. पाप करना, कोई बुराई करना ऐसा ही है जैसा क़रज़ा लेना जिसे हमें दण्ड या तकलीफ़ की शकल में अदा करना होगा. नेकी करना, परोपकार करना ऐसा है जैसा किसी को क़रज़ा देना. वह हमें सुख के रूप में वापिस मिलेगा. और असली आज़ादी इन दोनों विचारों से ऊपर उठकर सब हिसाब चुकता यानी बेबाक कर देना है. यही हालत हमें कड़ी मेहनत के बाद गहरी मीठी नींद यानी 'निर्वाण' का हक़दार बना देती है.

यह सब चीज़ें तीन-तीन के रूप में चलती हैं, इनमें दो रूप एक दूसरे के ख़िलाफ़ मालूम होते हैं और तीसरा उन्हें जोड़ता है. जैसे इच्छा किसी चीज़ की जानकारी को और उसके साथ हमारे काम को दोनों को जोड़ती है. हमारे सारे शरीर की बनावट में यही तीन-तीन के जोड़े दिखाई देते हैं. हमारे हाथ पैर, हमारे दिल और दिमाग़ दोनों में नाता जोड़ते हैं. यही आत्मा और ग़ैर-आत्मा के नाते का हाल है.

अपने शरीर की बनावट को अगर हम इस प्रकार अच्छी तरह समझ सकें और शरीर और मन और आत्मा यानी रूह के सम्बन्ध को समझ सकें तो यह सारा भेद हम पर खुल सकता है. इस भेद को ठीक-ठीक समझने का रास्ता वही है जिसे हिन्दू धर्म ग्रन्थों में "योग" मुसलिम धर्म ग्रथों में "सलूक" या "शग़ल" और ईसाई धर्म ग्रंथों में "कम्यूनियन विद दि स्पिरिट" कहा गया है.

महत्मा गाँधी के अनुसार शान्ति का रास्ता, और ऐटम और हाईड्रोजन बम का सवाल

पण्डित सुन्दरलाल

(वह भाषण जो 16 अगस्त सन 1957 को तोक्यो (जापान) में तीसरे विश्व सम्मेलन के सामने दिया गया)

❀ ❀ ❀

کرم یا فعل کے اندر ہمیں تین طرح کے کام ملتے ہیں— کیول سوارتھ' پرارتھ اور پرمارتھ یعنی خود غرضی' دوسروں کا بھلا' اور کیول فرض سمجھکر سب کا یکساں بھلا ۔ پہلی طرح کے کام ایسے ہیں جیسے قرضہ لینا؛ دوسری طرح کے کام ایسے ہیں جیسے دوسرے کو قرضہ دینا' اور تیسری طرح کے کام سب قرضوں سے چھٹکارا پانا ۔ پاپ اور پنیہ دونوں بندھن ہیں ۔ موکھش یعنی نجات ان دونوں سے آزاد ہو جانا ہے ۔ پاپ کرنا' کوئی برائی کرنا ایسا ہی ہے جیسا قرضہ لینا جسے ہمیں دنڈ یا تکلیف کی شکل میں ادا کرنا ہوگا ۔ نیکی کرنا' پروپکار کرنا ایسا ہے جیسا کسی کو قرضہ دینا ۔ وہ ہمیں سکھ کے روپ میں واپس ملیگا ۔ اور اصلی آزادی ان دونوں وچاروں سے اوپر اٹھ کر سب حساب چکتا یعنی بیباق کر دینا ہے ۔ یہی حالت ہمیں کڑی محنت کے بعد گہری میٹھی نیند یعنی 'نروان' کا حقدار بنا دیتی ہے ۔

یہ سب چیزیں تین تین کے روپ میں چلتی ہیں' ان میں دو روپ ایک دوسرے کے خلاف معلوم ہوتے ہیں اور تیسرا انہیں جوڑتا ہے ۔ جیسے اچھا کسی چیز کی جانکاری کو اور اس کے ساتھ ہمارے کام کو دونوں کو جوڑتی ہے ۔ ہمارے سارے شریر کی بناوٹ میں یہی تین تین کے جوڑے دکھائی دیتے ہیں ۔ ہمارے ہاتھ پیر' ہمارے دل اور دماغ دونوں میں ناتا جوڑتے ہیں ۔ یہی آتما اور غیر-آتما کے ناتے کا حال ہے ۔

اپنے شریر کی بناوٹ کو اگر ہم اس پرکار اچھی طرح سمجھ سکیں اور شریر اور من اور آتما یعنی روح کے سمبندھ کو سمجھ سکیں تو یہ سارا بھید ہم پر کھل سکتا ہے ۔ اس بھید کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کا راستہ وہی ہے جسے ہندو دھرم گرنتھوں میں "یوگ" مسلم دھرم گرنتھوں میں 'سلوک' یا "شغل" اور عیسائی دھرم گرنتھوں میں "کمیونین ود دی اسپرٹ" کہا گیا ہے ۔

مہاتما گاندھی کے انوسار شانتی کا راستہ' اور ایٹم اور ہائڈروجن بم کا سوال

پنڈت سندر لال

(وہ بھاشن جو 16 اگست سن 1957 کو ٹوکیو (جاپان) میں تیسرے وشو سمیلن کے سامنے دیا گیا ۔)

❀ ❀ ❀

रीर-आत्मा को वह अभी तक सच समझे हुए था वह अब उसे झूठ और केवल धोका मालूम होने लगता है. जवानी में जो चीज़ सुन्दर, आनन्द देने वाली और चित्त को मोहती हुई मालूम होती थी, वह बुढ़ापे में बदसूरत, बदशकल और तकलीफ़देह मालूम होने लगती है. एक पुराना मुहावरा है "ज्ञान रञ्ज को बढ़ाता है." अंगरेज़ी शब्द 'वाइज़' के मूल मानी ही 'ग़मगीन' है. जो चीज़ अच्छी लगती थी वह अब बुरी लगने लगती है. जो ठीक मालूम होती थी वह ग़लत होने लगता है और आगे चलकर अच्छा और बुरा, ठीक और ग़लत दोनों ही ग़लत मालूम होने लगते हैं. पुण्य और पाप यानी ख़ैर और शर दोनों पाप यानी शर मालूम होने लगते हैं. सोने की बेड़ियाँ वैसी ही बेड़ियाँ हैं जैसी लोहे की. एक पीढ़ी के लोग पैदा होते हैं, बढ़ते हैं और तजरबों और तकलीफ़ों के अन्दर से गुज़रते हुए उन्हें अक़ल और समझ आती है. वह फिर चल देते हैं. दूसरी पीढ़ी उनकी जगह लेती है. उसी तरह की ग़लतियों, तजरबों और तकलीफ़ों में से निकल कर उसे समझ आती है. वह भी चल देती है. यह चक्कर बराबर जारी रहता है. एक बीमारी ख़तम हो जाती है. दूसरी बीमारियाँ उसकी जगह आ जाती हैं. एक बुराई मिटती है, दूसरी सर उठाती है. नेकी और बदी, सुख और दुख हमेशा एक दूसरे को काटते रहते हैं. अन्त में दोनों एक साथ ख़तम होते हैं. इस दुई को आत्मा ख़ुद ही पैदा करता है और ख़ुद ही ख़तम करता है. नेकी और बदी दोनों जुड़वाँ बच्चे हैं. दोनों साथ साथ ख़तम होते हैं. जब तक आदमी जागता रहता है और काम करता रहता है तब तक उस आत्मा के लिये जिसकी आँखें खुल गई हैं नेकी यानी निष्काम कर्म का रास्ता ही फ़र्ज़ यानी कर्त्तव्य का रास्ता है. लेकिन धीरे-धीरे यह बेदारी भी कम होने लगती है. थका हुआ आत्मा फिर 'निर्वाण' की नींद सोना चाहता है. कुछ देर के लिये वह कठिन मेहनत और आरामदेह आलस्य दोनों से थक जाता है. पाप और पुण्य, स्वार्थ और परमार्थ दोनों के चक्कर से वह निकलना चाहता है.

इस तरह ज्ञान के अन्दर हमें तीन तरह की चीज़ें मिलती हैं—सत्य, मिथ्या और माया, यानी जो चीज़ें हैं, जो नहीं हैं और जिनका होना एक धोका है. इच्छा यानी ख़ाहिश के अन्दर तीन सूरतें आ जाती हैं—राग, द्वेश और वैराग्य, यानी ख़ास चीज़ों से मोह या लगाव होना, ख़ास चीज़ों से नफ़रत होना और सब चीज़ों की तरफ़ से बेलाग होना, ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर. इन्हीं तीनों को काम, क्रोध और नैष्काम्य भी कह सकते हैं. यह वैराग्य या नैष्काम्य एक शान्ति और सकून की हालत है.

ہیر-آتما کو وہ ابھی تک سچ سمجھے ہوئے تھا وہ اب اُسے جھوٹ اور کیول' دھوکا معلوم ہونے لگتا ہے۔ جوانی میں جو چیز سندر اور آنند دینے والی اور چِت کو موہتی ہوئی معلوم ہوتی تھی' وہ بڑھاپے میں بدصورت' بدشکل اور تکلیف دہ معلوم ہونے لگتی ہے۔ ایک پرانا محاورہ ہے "گیان رنج کو بڑھاتا ہے۔" انگریزی شبد 'وائز' کے مول معنی ہی 'غمگین' ہے۔ جو چیز اچھی لگتی تھی وہ اب بری لگنے لگتی ہے۔ جو ٹھیک معلوم ہوتی تھی وہ غلط معلوم ہونے لگتی ہے اور آگے چلکر اچھا اور برا' ٹھیک اور غلط دونوں ہی غلط معلوم ہونے لگتے ہیں۔ پنیہ اور پاپ یعنی خیر اور شر دونوں پاپ یعنی شر معلوم ہونے لگتے ہیں۔ سونے کی بیڑیاں ویسی ہی بیڑیاں ہیں جیسی لوہے کی۔ ایک پیڑھی کے لوگ پیدا ہوتے ہیں' بڑھتے ہیں اور تجربوں اور تکلیفوں کے اندر سے گذرتے ہوئے' اُنہیں عقل اور سمجھ آتی ہے۔ وہ پھر چل دیتے ہیں۔ دوسری پیڑھی اُن کی جگہ لیتی ہے۔ اُسی طرح کی غلطیوں' تجربوں اور تکلیفوں میں سے نکلکر اُسے سمجھ آتی ہے۔ وہ بھی چل دیتی ہے۔ یہ چکر برابر جاری رہتا ہے۔ ایک بیماری ختم ہو جاتی ہے' دوسری بیماریاں اُس کی جگہ آجاتی ہیں۔ ایک برائی مٹتی ہے' دوسری سر اُٹھاتی ہے۔ نیکی اور بدی' سکھ اور دکھ ہمیشہ ایک دوسرے کو کاٹتے رہتے ہیں۔ انت میں دونوں ایک ساتھ ختم ہوتے ہیں۔ اِس دوئی کو آتما خود ہی پیدا کرتا ہے اور خود ہی ختم کرتا ہے۔ نیکی اور بدی دونوں جڑواں بچے ہیں۔ دونوں ساتھ ساتھ ختم ہوتے ہیں۔ جب تک آدمی جاگتا رہتا ہے اور کام کرتا رہتا ہے تب تک اُس آتما کے لئے جس کی آنکھیں کھل گئی ہیں نیکی یعنی نشکام کرم کا راستہ ہی فرض یعنی کرتویہ کا راستہ ہے۔ لیکن دھیرے دھیرے یہ بیداری بھی کم ہونے لگتی ہے۔ تھکا ہوا آتما پھر 'نروان' کی نیند سونا چاہتا ہے۔ کچھ دیر کے لئے وہ کٹھن محنت اور آرامدہ آلسیہ دونوں سے تھک جاتا ہے۔ پاپ اور پنیہ' سوارتھ اور پرمارتھ دونوں کے چکر سے وہ نکلنا چاہتا ہے۔

اس طرح گیان کے اندر ہمیں تین طرح کی چیزیں ملتی ہیں—ستیہ' متھیا اور مایا' یعنی جو چیزیں ہیں' جو نہیں ہیں اور جن کا ہونا ایک دھوکا ہے۔ اچھا یعنی خواہش کے اندر تین صورتیں آجاتی ہیں—راگ' دویش اور ویراگیہ' یعنی خاص چیزوں سے موہ یا لگاؤ ہونا' خاص چیزوں سے نفرت ہونا اور سب چیزوں کی طرف سے بےلاگ ہونا' نا کاہو سے دوستی نا کاہو سے بیر۔ اِنہیں تینوں کو کام' کرودھ اور نیشکامیہ بھی کہہ سکتے ہیں۔ یہ ویراگیہ یا نیشکامیہ ایک شانتی اور سکون کی حالت ہے۔

कर्म, अपनी भलाई को सब की भलाई के लिये क़ुरबान कर देना, व्यक्ति की भलाई को कुटुम्ब की भलाई के लिये या समाज की भलाई के लिये क़ुरबान कर देना, यही यह "यज्ञ" है. भगवद्‌गीता में लिखा है :—"प्रजापति ने जब शुरू में दुनिया को बनाया तो "यज्ञ" के साथ बनाया और अपनी सारी प्रजा से कह दिया कि "यज्ञ" के द्वारा ही तुम बढ़ोगे और फलो फूलोगे....हमारा छोटा आपा हमारे बड़े और व्यापक आपे के लिये अपने को क़ुरबान करता है यही यज्ञ है". यह बड़ा आपा ही असली सत्यम् सुन्दरम् और शिवम् है. इस दुनिया में जो कुछ हमें सच्चा, सुन्दर और अच्छा दिखाई देता है वह सब उसी का अक्स है.

सर्वात्मा या रूहे कुल के इन गुणों के मुक़ाबले में ग़ैर-आत्मा यानी प्रकृति या जड़ माद्दे में सत्व, तमस और रजस्—यह तीन गुण पाये जाते हैं. सत्व चीज़ों का वह गुण है जिसके ज़रिये चीज़ें जानी जा सकती हैं. तमस् वह गुण है जिसके कारण उन्हें रखने की आत्मा को इच्छा होती है. रजस् वह गुण है जिसका सम्बन्ध चीज़ों की हरकत से है. अगर हम किसी भी ठोस चीज़ को ले लें तो यही तीनों बातें गुण, द्रव्य और कर्म शब्दों से प्रकट की जा सकती हैं. हम चीज़ों के गुणों से उन्हें जानते समझते हैं. उनके द्रव्य रूप के कारण उन्हें रखने की इच्छा करते हैं. और उनके कर्म रूप के कारण हम उनके साथ तरह-तरह के काम करते हैं. हमारे शरीर भी ग़ैर-आत्मा यानी जड़ पदार्थ ही हैं. लेकिन अकसर हम उन्हें ही अपना आपा समझ बैठते हैं यह ऐसा ही है. जैसे लोहे की किसी लाल तपती हुई गेंद की गरमी को हम उसकी लाली और और उसके लोहे से अलग करके नहीं देख सकते. पर हैं वह अलग-अलग चीज़ें और फिर भी एक.

हमारे जिस्म हमारे आत्मा के इतने निकट हैं कि अकसर हम जिस्म के तीन गुणों यानी सत्व, तमस् और रजस् को आत्मा के गुण समझने और कहने लगते हैं. कभी-कभी हम इन तीन शब्दों से मतलब अपने मन की तीन हालतों से लेते हैं. और यूँ उसे आत्मा से जोड़ देते हैं. हम कहते हैं कि सात्विक आत्मा ज्ञानी, आरिफ़, समझदार और नेक आदमी का ज्ञानवान, सुसंस्कृत, प्रकाशवान और नूरानी आत्मा है, जो चीज़ों को ठीक-ठीक समझता है. तामस् आत्मा उस आदमी का जो अपनी ख़्वाहिशों के क़ाबू में है आलस्य और प्रमाद भरा आत्मा है, जो दुनिया की चीज़ों को चिपटा हुआ हो. राजस् आत्मा क्रियाशील यानी बाअमल आदमी का आत्मा है जो सदा चंचल, बेचैन और काम में लगा रहता है.

आत्मा जब ग़ैर-आत्मा की तरफ़ से हटने लगता है और उसे अपने से अलग कर देना चाहता है तब जिस

کرم، اپنی بھلائی کو سب کی بھلائی کے لئے قربان کر دینا، ویکتی کی بھلائی کو کٹمب کی بھلائی کے لئے یا سماج کی بھلائی کے لئے قربان کر دینا، یہی یہ 'یگیہ' ہے۔ بھگود گیتا میں لکھا ہے :—"پرجا پتی نے جب شروع میں دنیا کو بنایا تو "یگیہ" کے ساتھ بنایا اور اپنی ساری پرجا سے کہہ دیا کہ "یگیہ" کے دوارا ہی تم بڑھوگے اور پھلو پھولوگے...ہمارا چھوٹا آپا ہمارے بڑے اور ویاپک آپے کے لئے اپنے کو قربان کرتا ہے یہی یگیہ ہے۔" وہ بڑا آپا ہی اصلی ستیم، سندرم اور شوم ہے۔ اِس دنیا میں جو کچھ ہمیں سچا، سندر اور اچھا دکھائی دیتا ہے وہ سب اُسی کا عکس ہے۔

سرو آتما یا روح کل کے اِن گنوں کے مقابلے میں غیر-آتما یعنی پرکرتی یا جڑ مادے میں ستو، تمس، اور رجس—یہ تین گن پائے جاتے ہیں۔ ستو چیزوں کا وہ گن ہے جس کے ذریعے چیزیں جانی جا سکتی ہیں۔ تمس وہ گن ہے جس کے کارن اُنہیں رکھنے کی آتما کو اِچھا ہوتی ہے۔ رجس وہ گن ہے جس کا سمبندھ چیزوں کی حرکت سے ہے۔ اگر ہم کسی بھی ٹھوس چیز کو لے لیں تو یہی تینوں باتیں گن، دروبیہ اور کرم شبدوں سے پرکٹ کی جا سکتی ہیں۔ ہم چیزوں کے گنوں سے اُنہیں جانتے سمجھتے ہیں۔ اُن کے درویہ روپ کے کارن اُنہیں رکھنے کی اِچھا کرتے ہیں۔ اور اُن کے کرم روپ کے کارن ہم اُن کے ساتھ طرح طرح کے کام کرتے ہیں۔ ہمارے شریر بھی غیر-آتما یعنی جڑ پدارتھ ہی ہیں۔ لیکن اکثر ہم اُنہیں ہی اپنا آپا سمجھ بیٹھتے ہیں۔ یہ ایسا ہی ہے جیسے لوہے کی کسی لال تپتی ہوئی گیند کی گرمی کو ہم اُس کی لالی اور اُس کے لوہے سے الگ کر کے نہیں دیکھ سکتے۔ پر ہیں وہ الگ الگ چیزیں اور پھر بھی ایک۔

ہمارے جسم ہمارے آتما کے اِتنے نکٹ ہیں کہ اکثر ہم جسم کے تین گنوں یعنی ستو، تمس اور رجس کو آتما کے گن سمجھنے اور کہنے لگتے ہیں۔ کبھی کبھی ہم اِن تین شبدوں سے مطلب اپنے من کی تین حالتوں سے لیتے ہیں، اور یوں اُسے آتما سے جوڑ دیتے ہیں۔ ہم کہتے ہیں کہ ساتوک آتما گیانی، عارف، سمجھدار اور نیک آدمی کا گیانوان، سو سنسکرت، پرکاشوان اور نورانی آتما ہے، جو چیزوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھتا ہے۔ تامس آتما اُس آدمی کا جو اپنی خواہشوں کے قابو میں ہے آلسیہ اور پرماد بھرا آتما ہے، جو دنیا کی چیزوں کو چپٹا ہوا ہو۔ راجس آتما کریا شیل یعنی باعمل آدمی کا آتما ہے جو سدا چنچل، بےچین اور کام میں لگا رہتا ہے۔

آتما جب غیر-آتما کی طرف سے ہٹنے لگتا ہے اور اُسے اپنے سے الگ کر دینا چاہتا ہے تب جس

आत्मा या रूह को अपनी इस जीवन यात्रा में दो रास्तों से गुज़रना पड़ता है. पहला 'प्रवृत्ति मार्ग' यानी 'क़ौसे नज़ूल' जिसमें रूह ग़ैर-आत्मा यानी ग़ैर-रूह यानी बाहर की चीज़ों को अपनाती है, यानी उन्हें अपने ऊपर ओढ़ती है. और दूसरा 'निवृत्ति मार्ग' यानी 'क़ौसे उरूज' जिसमें फिर से ऊपर चढ़ने के लिये रूह ग़ैर-रूह को अपने से अलग करती है या उतार फेंकती है.

आत्मा के जो तीन रूप हमने ऊपर बताये हैं उन तीनों का अलग-अलग सम्बन्ध ज्ञान, इच्छा और क्रिया यानी इल्म, ख़्वाहिश और अमल से है. इनमें 'इच्छा' यानी 'ख़्वाहिश' ही वह असल चीज़ है जो एक व्यक्त आत्मा को दूसरी व्यक्त आत्मा से, एक रूह को दूसरी रूह से, एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अलग करती है. जब इच्छा मिट जाती है तो यह अलहदगी भी जाती रहती है. यही हमारे सब अच्छे बुरे कामों की जड़ है.

यही तीन यानी ज्ञान, इच्छा और क्रिया रूहों या जीवों को एक दूसरे से अलग करते हैं. ऐसा अलग आत्मा 'पराग आत्मा' कहलाता है. पर जब इस आत्मा का रुख़ अन्दर को हो जाता है तब वह 'प्रत्याग आत्मा' हो जाता है. तब यह सब अलहदगी मिट जाती है. तब यही तीनों सूरतें एक व्यापक आत्मा यानी रूहेकुल के तीन गुणों—चित्त, आनन्द और सत्त यानी मारफ़त, क़ुदरत और वजूदे हक़ीक़ी—में बदल जाती हैं. यह मारफ़त ही अक़्ले कुल है. इन्हीं तीनों को सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता और सर्व व्यापकता भी कहते हैं. शुद्ध आत्मा यानी रूहेकुल के इन्हीं तीन गुणों के नाम सत्यम, प्रियम और हितम, या शान्तम, सुन्दरम और शिवम भी हैं. असली वजूद यानी वजूदे हक़ीक़ी केवल यही शुद्ध आत्मा या रूहेकुल है. वही देखने वाला है और वही देखने की चीज़. वही जानने वाला है और वही जानने की चीज़. उसी से सब रौशन है जिस तरह यह दुनिया सूरज से. वह अपने को भी जानता है और ग़ैर-आपे को भी. वह अपने जानने को भी जानता है. वही है और कुछ है ही नहीं. वह नित्य है और सब बदलता हुआ धोका है. इससे हमें कभी धोका नहीं हो सकता. वही आनन्द का भण्डार है, सुन्दरता का ख़ज़ाना है, वही प्रेम है, वही अनन्त बरकत है, वही एक चाहने की चीज़ है. सब दिलों का वही एक प्रीतम है और जो कुछ प्यार के क़ाबिल है केवल उसी के कारण. वह नित्य है, अनन्त है. वह नेकी का भण्डार है. वही यज्ञ यानी क़ुरबानी है. प्रेम और सेवा के ज़रिये अपने छोटे आपे को उस बड़े आपे के लिये, जो सब के अन्दर रमा हुआ है, क़ुरबान कर देना ही उसके दर्शन, दीदार, यानी आत्म दर्शन का तरीक़ा है. इसी का नाम निःश्रेयस है यानी सब का भला है. अन्त में निःस्वार्थ कर्म, निष्काम

آتما یا روح کو اپنی اِس جیون یاترا میں دو راستوں سے گزرنا پڑتا ہے ۔ پہلا 'پرورتی مارگ' یعنی 'قوس نزول' جس میں روح غیر-آتما یعنی غیر-روح یعنی باہر کی چیزوں کو اپناتی ہے' یعنی انہیں اپنے اوپر اوڑھتی ہے ۔ اور دوسرا 'نروِرتی مارگ' یعنی 'قوس عروج' جسمیں پھر سے اوپر چڑھنے کے لئے روح غیر-روح کو اپنے سے الگ کرتی ہے یا اُتار پھینکتی ہے ۔

آتما کے جو تین روپ ہم نے اوپر بتائے ہیں اُن تینوں کا الگ الگ سمبندھ گیان' اچھا' اور کریا یعنی علم خواہش اور عمل سے ہے ۔ اُن میں اِچھا' یعنی 'خواہش' ہی وہ اصل چیز ہے جو ایک ویکت آتما کو دوسری ویکت آتما سے' ایک روح کو دوسری روح سے' ایک ویکتی کو دوسرے ویکتی سے' الگ کرتی ہے ۔ جب اِچھا مٹ جاتی ہے تو یہ علیحدگی بھی جاتی رہتی ہے ۔ یہی ہمارے سب اچھے برے کاموں کی جڑ ہے ۔

یہی تین یعنی گیان' اچھا اور کریا روحوں یا جیوں کو ایک دوسرے سے الگ کرتے ہیں ۔ ایسا الگ آتما 'پراگ آتما' کہلاتا ہے ۔ پر جب اِس آتما کا رخ اندر کو ہو جاتا ہے تب وہ 'پرتیاگ آتما' ہو جاتا ہے ۔ تب یہ سب علیحدگی مٹ جاتی ہے ۔ تب یہی تینوں صورتیں ایک ویاپک آتما یعنی روح کل کے تین گنوں—چت' آنند اور ست یعنی معرفت' قدرت اور وجود حقیقی—میں بدل جاتی ہیں ۔ یہ معرفت ہی عقل کل ہے ۔ اِنہیں تینوں کو سروگیتا' سرو شکتیمتا اور سرو ویاپکتا بھی کہتے ہیں ۔ شدھ آتما یعنی روح کل کے اِنہیں تین گنوں کے نام ستیم' پریم اور ہتم' یا شانتم' سندرم اور شوم بھی ہیں ۔ اصلی وجود یعنی وجود حقیقی کیول یہی شدھ آتما یا روح کل ہے ۔ وہی دیکھنے والا ہے اور وہی دیکھنے کی چیز ۔ وہی جاننے والا ہے اور وہی جاننے کی چیز ۔ اُسی سے سب روشن ہے جس طرح یہ دنیا سورج سے ۔ وہ اپنے کو بھی جانتا ہے اور غیر-آپے کو بھی ۔ وہ اپنے جاننے کو بھی جانتا ہے ۔ وہی ہے اور کچھ ہے ہی نہیں ۔ وہ نتیہ ہے اور سب بدلتا ہوا دھوکا ہے ۔ اُس سے ہمیں کبھی دھوکا نہیں ہو سکتا ۔ وہی آنند کا بھنڈار ہے' سندرتا کا خزانہ ہے' وہی پریم ہے' وہی اننت برکت ہے' وہی ایک چاہنے کی چیز ہے ۔ سب دلوں کا وہی ایک پریتم ہے اور جو کچھ پیار کے قابل ہے کیول اُسی کے کارن ۔ وہ نتیہ ہے' اننت ہے ۔ وہ نیکی کا بھنڈار ہے ۔ وہی یگیہ یعنی قربانی ہے ۔ پریم اور سیوا کے ذریعے اپنے چھوٹے آپے کو اُس بڑے آپے کے لئے' جو سب کے اندر رما ہوا ہے' قربان کردینا ہی اُس کے درشن' دیدار یعنی آتم درشن کا طریقہ ہے ۔ اِسی کا نام نہشریس ہے یعنی سب کا بھلا ہے ۔ انت میں نسوارتھ کرم' نشکام

एक आत्मा के अलग-अलग रूप

डाक्टर भगवान दास

आत्मा एक और बेअन्त है. उसका कोई ओर छोर नहीं. उससे बाहर कुछ नहीं. उसी आत्मा को सर्वात्मा या रूहेकुल भी कह सकते हैं. लेकिन इस दुनिया में देखने समझने के लिए उसी एक को तीन अलग-अलग रूपों में देखा जा सकता है. एक आत्मा का व्यापक अव्यक्त रूप जो सब में रमा हुआ है. दूसरे अलग-अलग व्यक्त आत्मायें जिन्हें अलग-अलग आत्मा, जीव या रूह कहते हैं. और तीसरे हमारे यह अलग-अलग मन और शरीर. पहले यानी व्यापक अव्यक्त आत्मा के अन्दर सब व्यक्त आत्मा यानी अलग-अलग रूहें शामिल हैं. और हमारे अलग-अलग मन-शरीर ही इन अलग-अलग आत्माओं को एक दूसरे से अलग और व्यक्त यानी ज़ाहिर करते हैं.

इसकी एक मिसाल एक ही नदी के अन्दर अलग अलग बरतनों में एक ही पानी की शकलें बदल जाने से दी जाती है.

उस व्यापक अव्यक्त आत्मा की जानकारी का नाम 'मैटाफ़िज़िक' यानी 'दर्शन शास्त्र' या 'फ़लसफ़ा' है. अलग-अलग व्यक्त आत्माओं के बयान को 'साइकालोजी' यानी 'मनोविज्ञान' कहते हैं. हमारे मन-शरीरों से सम्बन्ध रखने वाली साइन्सों को मामूली जड़विज्ञान या 'साइको फ़िज़िक्स' कहा जाता है. दर्शन शास्त्र या फ़लसफ़े में हमें सब साइन्सों के बुनियादी असूल मिल जाते हैं.

जब आत्मा ग़ैर-आत्मा यानी अपने से बाहर की चीज़ों की बात करता है तो तीन सूरतें पैदा होती हैं. पहली यह कि आत्मा ग़ैर-आत्मा को अपने सामने रखकर उसकी जानकारी हासिल करता है. फिर चाहे उसके वजूद को सच्चा माने या झूठा. दूसरी यह कि आत्मा ग़ैर-आत्मा के साथ कुछ न कुछ काम करता है. उसे अपने ऊपर ओढ़ता है जैसे आदमी कपड़े पहनता है,, या उसे अपने अन्दर दाखिल कर लेता है जैसे आदमी खाना खाता है. उसके साथ अपना अपनापन जोड़ता है. या उसे उतार फेंकता है और अपने को उससे अलग कर लेता है. तीसरी यह कि जानने और काम करने के बीच में आत्मा ग़ैर-आत्मा से अपने को जोड़ लेने की या उसे अपने अन्दर हज़म कर लेने की या उसे फेंक देने की 'इच्छा' करता है. यह 'इच्छा' तीसरी सूरत है. यह इच्छा या ख़ाहिश आत्मा की ही वृत्ति या हालत है.

ایک آتما کے الگ الگ روپ

ڈاکٹر بھگوان داس

آتما ایک اور بے انت ہے. اُس کا کوئی اور چھور نہیں. اُس سے باہر کچھ نہیں. اُسی آتما کو سرو آتما یا روح کل بھی کہہ سکتے ہیں. لیکن اِس دنیا میں دیکھنے سمجھنے کے لئے اُسی ایک کو تین الگ الگ روپوں میں دیکھا جا سکتا ہے. ایک آتما کا ویاپک اویکت روپ جو سب میں رما ہوا ہے. دوسرے الگ الگ ویکت آتمائیں جنہیں الگ الگ آتما، جیو یا روح کہتے ہیں. اور تیسرے ہمارے یہ الگ الگ من اور شریر. پہلے یعنی ویاپک اویکت آتما کے اندر سب ویکت آتما یعنی الگ الگ روحیں شامل ہیں. اور ہمارے الگ الگ من-شریر ہی اِن الگ الگ آتماؤں کو ایک دوسرے سے الگ اور ویکت یعنی ظاہر کرتے ہیں.

اِس کی ایک مثال ایک ہی ندی کے اندر الگ الگ برتنوں میں ایک ہی پانی کی شکلیں بدل جانے سے دی جاتی ہے.

اُس ویاپک اویکت آتما کی جانکاری کا نام 'میٹافزک' یعنی 'درشن شاستر' یا 'فلسفہ' ہے. الگ الگ ویکت آتماؤں کے بیان کو 'سائیکالوجی' یعنی 'منو وگیان' کہتے ہیں. ہمارے من-شریروں سے سمبندھ رکھنے والی سائنسوں کو معمولی جڑ وگیان یا 'سائکو فزکس' کہا جاتا ہے. درشن شاستر یا فلسفے میں ہمیں سب سائنسوں کے بنیادی اُصول مل جاتے ہیں.

جب آتما غیر-آتما یعنی اپنے سے باہر کی چیزوں کی بات کرتا ہے تو تین صورتیں پیدا ہوتی ہیں. پہلی یہ کہ آتما غیر آتما کو اپنے سامنے رکھ کر اِس کی جانکاری حاصل کرتا ہے، پھر چاہے اُس کے وجود کو سچا مانے یا جھوٹا. دوسری یہ کہ آتما غیر آتما کے ساتھ کچھ نہ کچھ کام کرتا ہے. اُسے اپنے اوپر اوڑھتا ہے جیسے آدمی کپڑے پہنتا ہے، یا اُسے اپنے اندر داخل کر لیتا ہے جیسے آدمی کھانا کھاتا ہے. اُس کے ساتھ اپنا اپناپن جوڑتا ہے. یا اُسے اتار پھینکتا ہے اور اپنے کو اُس سے الگ کر لیتا ہے. تیسری یہ کہ جاننے اور کام کرنے کے بیچ میں آتما غیر-آتما سے اپنے کو جوڑ لینے کی یا اسے اپنے اندر ہضم کر لینے کی یا اسے پھینک دینے کی 'اِچھا' کرتا ہے. یہ اِچھا تیسری صورت ہے. یہ اِچھا یا خواہش آتما کی ہی ایک ورتی یا حالت ہے.

कारण हुई. उस समय मेरी बहन की उम्र सिर्फ़ पाँच वर्ष की थी. कितनी प्यारी और दया-पात्र थी वह ! मैं अब उसे देख सकता हूँ. वे माँ को समझाकर रोने से चुप कर रहे थे, लेकिन वह बिना रुके हुए लगातार रो रही थी. शायद उसका रोना सुनकर इनका अन्त:करण छिदता था, क्योंकि इन्होंने मेरी बहन को खा डाला था. यदि इनका अन्त:करण छिदता था तो……

मेरी बहन को मेरे भाई ने खा डाला ! मैं नहीं कह सकता कि यह बात मेरी माँ को मालूम था या नहीं.

माँ को जरूर मालूम हुआ होगा, लेकिन रोते समय उसने कुछ कहा नहीं. शायद उसने इसे ठीक समझा हो. मुझे याद है कि जब मैं चार या पाँच वर्ष का था तो उस समय मेरे भाई ने मुझसे कहा था कि पुत्र के लिये माता-पिता के प्रति सब से बड़ा भक्ति का काम यह है कि जब वे बीमार पड़ें तो वह अपने माँस का एक टुकड़ा काटकर उसे पकाये और उन्हें खाने के लिए दे. और माँ ने यह नहीं कहा था कि यह ठीक नहीं है. यदि एक टुकड़ा खाया जा सकता है, तो वास्तव में पूरा भी खाया जा सकता है ! लेकिन अब मैं सोचता हूँ कि जिस ढंग से माँ रो रही थी उससे दूसरों के हृदय फटे जा रहे थे. अब उसे याद करने से भी मुझे दु:ख होता है. कितना अजीब है !

12

पिछले चार हज़ार वर्षों से मनुष्य एक दूसरे को खा रहे हैं और मैं आज ही यह जान सका कि मैं आजीवन उन्हीं में घुला-मिला रहा. मेरी बहन ठीक उसी समय मरी जब मेरे बड़े भाई घर-गृहस्थी का प्रबन्ध कर रहे थे. मुझे कैसे विश्वास हो सकता है कि हमें खिलाने के लिये उन्होंने गुप्त रूप से उसे हमारे खाने में नहीं मिला दिया ?

हो सकता है कि अनजाने मैंने अपनी बहन को खा लिया ! और अब मेरी बारी आई है कि मैं खाया जाऊँ !

मेरी चार हज़ार वर्ष पुरानी मनुष्य-भक्षी वंश-परम्परा है. यद्यपि इसे मैं पहले नहीं समझ सका, लेकिन अब मैं इसे समझ रहा हूँ. वास्तविक मनुष्य पाना कठिन है !

13

शायद अब भी कुछ ऐसे बच्चे हैं जिन्होंने मनुष्य का माँस नहीं खाया है. उन बच्चों को बचाइये !

अप्रैल 1918

کارن هوئی . اُس سمے میری بہن کی عمر صرف پانچ ورش کی تھی . کتنی پیاری اور دیا پاتر تھی وہ ! میں اب اُسے دیکھ سکتا ہوں . وے ماں کو سمجھا کر رونے سے چپ کر رہے تھے، لیکن وہ بنا رکے ہوئے لگاتار رو رہی تھی . شاید اُس کا رونا سن کر اِن کا انتہ کرن چھدتا تھا، کیونکہ اِنہوں نے میری بہن کو کھا ڈالا تھا . یدی اِن کا انتہ کرن چھدتا تھا تو…

میری بہن کو میرے بھائی نے کھا ڈالا ! میں نہیں کہہ سکتا کہ یہ بات میری ماں کو معلوم تھی یا نہیں .

ماں کو ضرور معلوم ہوا ہوگا، لیکن روتے سمے اس نے کچھ کہا نہیں . شاید اُس نے اِسے ٹھیک سمجھا ہو . مجھے یاد ہے کہ جب میں چار یا پانچ ورش کا تھا تو اُس سمے میرے بھائی نے مجھسے کہا تھا کہ پتر کے لئے ماتا پتا کے پرتی سب سے بڑا بھکتی کا کام یہ ہے کہ جب وے بیمار پڑیں تو وہ اپنے مانس کا ایک ٹکڑا کاٹ کر اسے پکائے اور انہیں کھانے کے لئے دے . اور ماں نے یہ نہیں کہا تھا کہ یہ ٹھیک نہیں ہے . یدی ایک ٹکڑا کھایا جا سکتا ہے، تو واستو میں پورا بھی کھایا جا سکتا ہے ! لیکن اب میں سوچتا ہوں کہ جس ڈھنگ سے ماں رو رہی تھی اُس سے دوسروں کے ہردے پھٹے جا رہے تھے . اب اسے یاد کرنے سے بھی مجھے دکھ ہوتا ہے . کتنا عجیب ہے !

12

پچھلے چار ہزار ورشوں سے منشیہ ایک دوسرے کو کھا رہے ہیں، اور میں آج ہی یہ جان سکا کہ میں آجیون انہیں میں گھلا ملا رہا . میری بہن ٹھیک اُسی سمے مری جب میرے بڑے بھائی گھر گرہستی کا پربندھ کر رہے تھے . مجھے کیسے وشواس ہو سکتا ہے کہ ہمیں کھلانے کے لئے انہوں نے گپت روپ سے اسے ہمارے کھانے میں نہیں ملا دیا ؟

ہو سکتا ہے کہ انجانے میں نے اپنی بہن کو کھا لیا ! اور اب میری باری آئی ہے کہ میں کھایا جاؤں !

میری چار ہزار ورش پرانی منشیہ بھکشی ونش پرمپرا ہے . یدیپی اِسے میں پہلے نہیں سمجھ سکا، لیکن اب میں اِسے سمجھ رہا ہوں . واستوک منشیہ پانا کٹھن ہے .

13

شاید اب بھی کچھ ایسے بچے ہیں جنہوں نے منشیہ کا مانس نہیں کھایا ہے . اُن بچوں کو بچائیے .

اپریل 1918

तब उनका एक और तरीक़ा भी मेरी समझ में आ गया. वे सिर्फ़ सुधार करने से ही इनकार नहीं करते बल्कि उसके साथ ही साथ उन्होंने अपनी तैयारी भी कर ली है. उन्होंने मेरे ऊपर 'पागल आदमी' की चिप्पी भी चिपका दी है. जब वे मुझे खा डालेंगे तो उसके बाद उनके कार्य का कोई कुपरिणाम न होगा. यही नहीं, वास्तव में लोग उनकी तारीफ़ करेंगे. जब आसामियों ने यह कहा था कि उन्होंने एक बदमाश को मारकर खा डाला तो वे भी यही तरीक़ा अपना रहे थे. यह उनका पुराना राग है.

इस पर चेन लाओ-वू हम लोगों के पास बड़े गुस्से से आये. लेकिन वे मेरा मुंह कैसे बन्द कर सकते थे? मैं जालसाज़ी के इन सदस्यों के सामने अपने विचार रखने के लिये तुल गया. उनसे मैंने कहा कि 'आप लोगों को सुधार करना चाहिए! आप लोगों को हृदय के भीतर से सुधार करना चाहिए! आप लोगों को समझ लेना चाहिए कि मनुष्य-भक्षी मनुष्यों के लिये संसार में कोई स्थान नहीं होगा! अगर आप सुधार नहीं करते तो आप लोग ख़ुद खा डाले जायेंगे! अगर आप बहुत-से बच्चों को भी पैदा करें तो भी वे सब के सब असली मनुष्यों के द्वारा उसी तरह नष्ट कर दिये जायेंगे जैसे शिकारियों द्वारा भेड़िये! आप सब कीड़ों की तरह नष्ट कर दिये जायेंगे!'

चेन लाओ-वू ने उन सब मनुष्यों को भगा दिया और मैं नहीं जानता कि मेरा भाई कहां ग़ायब हो गया. चेन लाओ-वू ने मुझे समझाकर मेरे कमरे में वापस भेजा. पूरा कमरा अन्धकार में डूबा था. छत की शहतीर और धन्नियाँ काँपने लगीं. कुछ देर काँपने के बाद उनकी लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई बहुत अधिक बढ़ गई और वे सब मेरे ऊपर ढेर हो गईं.

वे बहुत ही ज़्यादा भारी हैं. वे हिलाई-डुलाई भी नहीं जा सकतीं. वे लोग चाहते हैं कि मैं मर जाऊँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि वास्तव में वे भारी नहीं हैं. इस लिये मैं उन्हें धक्का देकर हटा दूँगा. मेरा शरीर पसीने से तर हो गया है. लेकिन आप लोग मुझे चिल्लाने से नहीं रोक सकते, 'फ़ौरन सुधार कीजिये! अपने हृदय के भीतर से सुधार कीजिये! आप लोगों को जानना चाहिये कि मनुष्य-भक्षी मनुष्यों के लिये संसार में कोई स्थान न रहेगा!'

11

सूरज नहीं चमक रहा है. द्वार कभी नहीं खुलता. प्रति-दिन दो बार भोजन. अपनी खाने की दोनों छोटी-छोटी लकड़ियों को पकड़े हूँ. मैंने अपने भाई के बारे में सोचा और यह अनुभव किया कि मेरी बहन की मृत्यु इन्हीं के

تب ان کا ایک اور طریقہ بھی میری سمجھ میں آگیا۔ وے صرف سدھار کرنے سے ھی اِنکار نہیں کرتے بلکہ اِس کے ساتھ ھی ساتھ انہوں نے اپنی تیاری بھی کر لی ھے۔ انہوں نے میرے اوپر 'پاگل آدمی' کی چِپّی بھی چپکا دی ھے۔ جب وے مجھے کھا ڈالینگے تو اِس کے بعد اُن کے کاریہ کا کوئی کوپرینام نہ ھوگا۔ یہی نہیں' واستو میں لوگ اُن کی تعریف کرینگے۔ جب آسامیوں نے یہ کہا تھا کہ انہوں نے ایک بدمعاش کو مار کر کھا ڈالا تو وے بھی یہی طریقہ اپنا رہے تھے۔ یہ اُن کا پرانا راگ ھے۔

اس پرچین لاؤ-وو ھم لوگوں کے پاس بڑے غصے سے آئے۔ لیکن وے میرا منھ کیسے بند کر سکتے تھے؟ میں جال‌سازی کے اِن سدسیوں کے سامنے اپنے وچار رکھنے کے لئے تل گیا۔ ان سے میں نے کہا کہ 'آپ لوگوں کو سدھار کرنا چاھئے! آپ لوگوں کو ھردئے کے بھیتر سے سدھار کرنا چاھئے! آپ لوگوں کو سمجھ لینا چاھئے کہ منشیہ بھکشی منشیوں کے لئے سنسار میں کوئی استھان نہیں ھوگا! اگر آپ سدھار نہیں کرتے تو آپ لوگ خود کھا ڈالے جائینگے! اگر آپ بہت سے بچوں کو بھی پیدا کریں تو بھی وے سب کے سب اَصلی منشیوں کے دوارا اسی طرح نشٹ کر دیئے جائینگے جیسے شکاریوں دوارا بھیڑیئے! آپ سب کیڑوں کی طرح نشٹ کر دیئے جائینگے!

چین لاؤ-وو نے اُن سب منشیوں کو بھگا دیا اور میں نہیں جانتا کہ میرا بھائی کہاں غایب ھو گیا۔ چین لاؤ-وو نے مجھے سمجھا کر میرے کمرے میں واپس بھیجا۔ پورا کمرا اندھکار میں ڈوبا تھا۔ چھت کی شہتیر اور دھنیاں کانپنے لگیں۔ کچھ دیر کانپنے کے بعد اُن کی لمبائی' چوڑائی اور موٹائی بہت ادھک بڑھ گئی اور وے سب میرے اوپر ڈھیر ھو گئیں۔

وے بہت ھی زیادہ بھاری ھیں۔ وہ ھلائی ڈلائی بھی نہیں جا سکتیں۔ وے لوگ چاھتے ھیں کہ میں مر جاؤں۔ لیکن میں جانتا ھوں کہ واستو میں وے بھاری نہیں ھیں۔ اِس لئے میں اُنھیں دھکا دیکر ھٹا دونگا۔ میرا شریر پسینے سے تر ھو گیا ھے۔ لیکن آپ لوگ مجھے چلانے سے نہیں روک سکتے' 'فوراً سدھار کیجئے! اپنے ھردئے کے بھیتر سے سدھار کیجئے! آپ لوگوں کو جاننا چاھئے کہ منشیہ بھکشی منشیوں کے لئے سنسار میں کوئی استھان نہ رہیگا!'

11

سورج نہیں چمک رھا ھے۔ دوار کبھی نہیں کھلتا۔ پرتی دن دوبار بھوجن۔ اپنی کھانے کی دونوں چھوٹی چھوٹی لکڑیوں کو پکڑے ھوں۔ میں نے اپنے بھائی کے بارے میں سوچا اور یہ انوبھو کیا کہ میری بہن کی مرتیو اِنھیں کے

तक कि पिछले दिन उन्होंने वुल्फ विलेज में उस मनुष्य को पकड़ा. पिछले साल जब एक सार्वजनिक स्थान पर एक मनुष्य को प्राण-दण्ड मिला तो तपेदिक के एक रोगी ने उस मरे हुए अपराधी के .खून में रोटी का टुकड़ा डुबोकर इस आशा से चाटा कि उससे उसका रोग ठीक हो जायेगा.

'मेरे भाई, अगर वे सब मनुष्यों को खाना चाहते हैं तो आप उन्हें रोक नहीं सकते. परन्तु आप भी उस जालसाज़ी में क्यों शामिल हुए हैं ? उनकी तरह के मनुष्य-भक्षी दानव कुछ भी करने में न चूकेंगे. वे मुझे भी खा सकते हैं. वे आपको भी खा सकते हैं. और उसी जालसाज़ी में वे एक-दूसरे को भी खा सकते हैं. लेकिन अगर वे घूम पड़ें और अचानक अपने को सुधार लें तो हर-एक को शान्ति मिल जायगी. अगर ऐसी ही हालत रहे तो भी हम दोनों ख़ासतौर से एक-दूसरे को स्नेह कर सकते हैं, मेरे भाई ! उनका साथ छोड़ दीजिये ! उनका खण्डन कीजिये ! उनसे कहिये कि आप ऐसा नहीं कर सकते, मेरे भाई ! मुझे विश्वास है कि आप 'नहीं' कह सकते हैं, क्योंकि अभी पिछले दिन जब आसामियों ने आपसे लगान कम करने के लिये कहा था तो आपने 'नहीं' कह दिया था.

जब मैंने अपने भाई से इस प्रकार कहा तो पहले तो वे रूखे ढंग से मुस्कराये. लेकिन शीघ्र ही उनकी मुद्रा क्रूर हो गई. और जब मैंने जालसाज़ी के गुप्त मामलों का भंडा फोड़ दिया तो उनके मुंह का रंग बिल्कुल ही बदल गया. सामने के दरवाज़े के बाहर मनुष्यों का एक झुण्ड खड़ा था. उसमें बड़े चाओ और उनका कुत्ता भी था. वे सब अपनी गर्दनें निकाल कर आगे बढ़ने लगे. मैं कुछ चेहरों को नहीं पहचान सका. वे ऐसे दिखाई दे रहे थे जैसे कि पर्दे से ढँके हों. लेकिन दूसरे आदमी गम्भीर थे. उनके दाँत खुले हुए थे और वे अपनी मुस्कराहट छिपाने के लिये अपने होंठ काट रहे थे. मैं सब को पहचान गया. वे सब उसी जालसाज़ी में शामिल थे. वे सब मनुष्य-भक्षी दानव थे. लेकिन इसके साथ-साथ मैं यह भी जान गया था कि उनके विचारों और उनकी भावनाओं में फ़र्क था. उनमें से कुछ का विचार था कि मनुष्य-भक्षण सदा से चलता आया है और वह ठीक भी है. इनके विरुद्ध कुछ ऐसे भी थे जिनका विचार था कि मनुष्य-भक्षण ठीक नहीं है, लेकिन फिर भी वे करते थे. उन्हें यह डर था कि कहीं उनका भण्डा फोड़ न हो जाय और इसी से वे मेरे कथनों पर क्षुब्ध थे. वे मुझे मुँह चिढ़ा रहे थे.

ऐसा प्रतीत होता है कि उसी समय मेरा भाई भी मुझसे क्षुब्ध हो गया और उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, 'चले जाओ ! पागल आदमी का दखने में क्या मज़ा आता है ?

تک کہ پچھلے دن اُنہوں نے وُلف ولیج میں اُس منشیہ کو پکڑا ۔ پچھلے سال جب ایک سارودنک استھان پر ایک منشیہ کو پران دنڈ ملا تو تپیدق کے ایک روگی نے اُس مرے ہوئے اپرادھی کے خون میں روٹی کا ٹکڑا ڈبو کر اِس آشا سے چاٹا کہ اس سے اُس کا روگ ٹھیک ہوجائیگا ۔

'میرے بھائی' اگر وے سب منشیوں کو کھانا چاہتے ہیں تو آپ انہیں روک نہیں سکتے ۔ پرنتو آپ بھی اُس جال‌سازی میں کیوں شامل ہوئے ہیں ؟ اُن کی طرح کے منشیہ بھکشی دانو کچھ بھی کرنے میں نہ چوکینگے ۔ وے مجھے بھی کھا سکتے ہیں ۔ وے آپ کو بھی کھا سکتے ہیں ۔ اور اُسی جال سازی میں وے ایک دوسرے کو بھی کھا سکتے ہیں ۔ لیکن اگر وے گھوم پڑیں اور اچانک اپنے کو سدھار لیں تو ہر ایک کو شانتی مل جائیگی ۔ اگر ایسی ہی حالت رہے تو بھی ہم دونوں ' خاص طور سے ایک دوسرے کو سنیہہ کر سکتے ہیں' میرے بھائی ! اُن کا ساتھ چھوڑ دیجئے ! اُن کا کھنڈن کیجئے ! اُن سے کہئے کہ آپ ایسا نہیں کر سکتے' میرے بھائی ! مجھے وشواس ہے کہ آپ 'نہیں' کہہ سکتے ہیں' کیونکہ ابھی پچھلے دن جب آسامیوں نے آپ سے لگان کم کرنے کے لئے کہا تھا تو آپ نے 'نہیں' کہہ دیا تھا ۔

جب میں نے اپنے بھائی سے اِس پرکار کہا تو پہلے تو وے روکھے ڈھنگ سے مسکرائے ۔ لیکن شیگھر ہی اُن کی مدرا کرور ہو گئی ۔ اور جب میں نے جال‌سازی کے گپت معاملوں کا بھنڈا پھوڑ دیا تو اُن کے منھ کا رنگ بالکل ہی بدل گیا ۔ سامنے کے دروازے کے باہر منشیوں کا ایک جھنڈ کھڑا تھا ۔ اُس میں بڑے چاؤ اور اُن کا کتا بھی تھا ۔ وے سب اپنی گردنیں نکال کر آگے بڑھنے لگے ۔ میں کچھ چہروں کو نہیں پہچان سکا ۔ وے ایسے دکھائی دے رہے تھے جیسے کہ پردے سے ڈھکے ہوں ۔ لیکن دوسرے آدمی گمبھیر تھے ۔ اُن کے دانت کھلے ہوئے تھے اور وے اپنی مسکراہٹ چھپانے کے لئے اپنے ہونٹ کاٹ رہے تھے میں سب کو پہچان گیا. وے سب اُسی جال‌سازی میں‌شامل تھے. وے سب منشیہ بھکشی دانو تھے ۔ لیکن اِس کے ساتھ ساتھ میں یہ بھی جان گیا کہ اُن کے وچاروں اور اُن کی بھاوناؤں میں فرق تھا ۔ اُن میں سے کچھ کا وچار تھا کہ منشیہ بھکشن سدا سے چلتا آیا ہے اور وہ ٹھیک بھی ہے ۔ اِن کے وِرودھ کچھ ایسے بھی تھے جن کا وچار تھا کہ منشیہ بھکشن ٹھیک نہیں ہے' لیکن پھر بھی وے کرتے تھے ۔ انہیں یہ ڈر تھا کہ کہیں اُن کا بھنڈا پھوڑ نہ ہو جائے اور اِسی سے وے میرے کتھنوں پر چھبدھ تھے ۔ وے مجھے منھ چڑھا رہے تھے ۔

ایسا پرتیت ہوتا ہے کہ اُسی سمے میرا بھائی بھی مجھسے چھبدھ ہو گیا اور اُس نے زور سے چلا کر کہا' چلے جاؤ ! پاگل آدمی کو دیکھنے میں کیا مزا آتا ہے ؟'

अगर अपने उस स्थायी विचार से उन्हें छुटकारा मिल जाय तो वे आत्म-विश्वास के साथ अपने काम-काज कर सकते हैं और शान्तिपूर्वक घूम-फिर सकते हैं, खाना खा सकते हैं और सो सकते हैं. तब वे कितने अधिक सुख-चैन में होंगे ! अपनी आदतों में सुधार करने का मतलब होगा एक नई दुनिया में प्रवेश, एक दर्रे से गुज़र कर आगे के एक नये दृश्य का दर्शन !

लेकिन पिता और पुत्र, भाई और बहन, पति और पत्नी, मित्र और शत्रु, अध्यापक और शिष्य और अजनबी —सभी आलसाज़ी में हैं, एक-दूसरे को बढ़ावा दे रहे हैं, एक-दूसरे को शामिल कर रहे हैं. वे मर जाना पसन्द करेंगे, लेकिन सुधार का एक मामूली क़दम नहीं उठायेंगे.

10

प्रात:काल तड़के मैं अपने भाई की खोज में निकला. वह हाल के द्वार के सामने खड़े थे और आकाश की ओर देख रहे थे. मैं उनके पीछे जा पहुँचा और रास्ता रोककर मैंने उनसे बड़ी सच्चाई और शान्ति से कहा – 'भाई साहब, मुझे आपसे कुछ कहना है.'

'कह डालो,' जल्दी से घूमकर और अपना सिर हिलाते हुए उन्होंने उत्तर दिया.

'मुझे सिर्फ़ कुछ शब्द कहने हैं, परन्तु मेरे लिये उन्हें कहना कठिन हो रहा है. भाई साहब, मेरा विचार है कि शुरू में सब असभ्य मनुष्य कुछ न कुछ मनुष्य-भक्षी थे. बाद को उनके विचारों में अन्तर हो गया. उनमें से कुछ ने मनुष्यों को खाना छोड़ दिया. अपनी नैतिक अवस्था को सुधारने की प्रबल प्रेरणा से वे मनुष्य बन गये, मेरा मतलब है, वास्तविक मनुष्य. उनमें से कुछ ने मनुष्यों को खाना जारी रक्खा. वे कीड़ों की तरह थे. उन्होंने मछली और बन्दरों की स्थिति से होकर विकास किया और आखिर में वे आदमी बन गये. उनमें से कुछ सुधरना चाहते ही न थे, और वे अब भी कीड़े हैं. मनुष्यों को खाने वाले मनुष्य मनुष्यों को न खाने वाले मनुष्यों की अपेक्षा कितनी अधिक लज्जा और घृणा के पात्र हैं. जितना अन्तर कीड़ों और बन्दरों में है उससे भी अधिक अन्तर इन दो कोटियों के मनुष्यों में है.

यह घटना बहुत पुराने युग की है जब यी-या ने चीह और चाउ को खिलाने के लिये अपने पुत्र का मांस पकाया था. इस बात की कल्पना कौन कर सकता था कि पान-कू के पृथ्वी और आकाश को अलग-अलग बाँटने के दिन से लेकर यी-या के पुत्र के समय तक मनुष्य मनुष्य को खाता रहा है ? यी-या के पुत्र के समय से लेकर सू-सू-लिंग के समय तक वे मनुष्य को खाते आये हैं. और सी-सु-लिंग के आगे भी उन्होंने मनुष्य को खाना जारी रक्खा है, यहां

اگر اپنے اُس استھائی وچار سے اُنھیں چھٹکارا مل جائے تو وہ آتم وشواس کے ساتھ اپنے کام کاج کر سکتے ھیں اور شانتی پوروک گھوم پھر سکتے ھیں' کھانا کھا سکتے ھیں اور سو سکتے ھیں ۔ تب وہ کتنے ادھک سکھ چین میں ھونگے ! اپنی عادتوں میں سدھار کرنے کا مطلب ھوگا ایک نئی دنیا میں پرویش' ایک درہ سے گذر کر آگے کے ایک نئے درشیہ کا درشن !

لیکن پتا اور پتر' بھائی اور بہن' پتی اور پتنی' متر اور شترو' ادھیاپک اور ششیہ اور اجنبی——سبھی جال سازی میں ھیں اور ایک دوسرے کو بڑھاوا دے رہے ھیں ۔ ایک دوسرے کو شامل کر رہے ھیں ۔ وہ مر جانا پسند کرینگے' لیکن سدھار کا ایک معمولی قدم نہیں اُٹھائینگے ۔

10

پراتہکال تڑکے میں اپنے بھائی کی کھوج میں نکلا ۔ وہ ھال کے دوار کے سامنے کھڑے تھے اور آکاش کی اور دیکھ رہے تھے ۔ میں اُن کے پیچھے جا پہونچا اور راستہ روک کر میں نے ان سے بڑی سچائی اور شانتی سے کہا—'بھائی صاحب' مجھے آپ سے کچھ کہنا ھے!'

'کہہ ڈالو' جلدی سے گھوم کر اور اپنا سر ھلاتے ھوئے انھوں نے اُتر دیا ۔

'مجھے صرف کچھ شبد کہنے ھیں' پرنتو میرے لئے انھیں کہنا کٹھن ھو رھا ھے ۔ بھائی صاحب' میرا وچار ھے کہ شروع میں سب اسبھیہ منشیہ کچھ نہ کچھ منشیہ بھکشی تھے ۔ بعد کو اُن کے وچاروں میں انتر ھو گیا ۔ اُن میں سے کچھ نے منشیوں کو کھانا چھوڑ دیا ۔ اپنی نیتک اوستھا کو سدھارنے کی پربل پریرنا سے وہ منشیہ بن گئے' میرا مطلب ھے' واستوک' منشیہ ۔ اُن میں سے کچھ نے منشیوں کو کھانا جاری رکھا ۔ وہ کیڑوں کی طرح تھے ۔ انھوں نے مچھلی اور بندروں کی استھتی سے ھو کر وکاس کیا اور آخر میں وہ آدمی بن گئے ۔ ان میں سے کچھ سدھرنا چاھتے ھی نہ تھے' اور وہ اب بھی کیڑے ھیں ۔ منشیوں کو کھانے والے منشیہ منشیوں کو نہ کھانے والے منشیوں کی اپیکشا کتنی ادھک لجا اور گھرنا کے پاتر ھیں ۔ جتنا انتر کیڑوں اور بندروں میں ھے اس سے بھی ادھک انتر اِن دو کوٹیوں کے منشیوں میں ھے ۔

وہ گھٹنا بہت پرانے یگ کی ھے جب یی-یا نے چیھ اور چاؤ کو کھلانے کے لئے اپنے پتر کا مانس پکایا تھا ۔ اِس بات کی کلپنا کون کر سکتا تھا کہ پان-کو کے پرتھوی اور آکاش کو الگ الگ بانٹنے کے دن سے لیکر یی-یا کے پتر کے سمئے تک منشیہ منشیہ کو کھاتا رھا ھے ؟ یی-یا کے پتر کے سمے سے لیکر سو-سو-لنگ کے سمے تک وہ منشیہ کو کھاتے آئے ھیں ۔ اور سی-سو لنگ کے آگے بھی انھوں نے منشیہ کو کھانا جاری رکھا ھے' یہاں

नहीं थी. मैंने उससे पूछा—'क्या मनुष्य-भक्षण ठीक है ?' मुस्कराते हुए ही उसने जवाब दिया—"इस वर्ष कोई अकाल तो पड़ा नहीं है. फिर मनुष्य-भक्षण की क्या जरूरत ?" मैं फौरन समझ गया कि यह भी जालसाजी में शामिल है। यह भी मनुष्यों को खाना चाहता है. इसलिये मेरी हिम्मत सौ-गुनी बढ़ गई.

मैंने हठ करते हुए फिर वही सवाल पूछा—'क्या यह ठीक है ?'

वह बोला—'ऐसी चीजों के बारे में पूछने से क्या लाभ ? सचमुच आपको मज़ाक करना आता है. आज मौसम बड़ा अच्छा है.'

"मौसम बड़ा अच्छा है. चन्द्रमा .खूब चमकदार है. लेकिन फिर भी मैं आपसे हठ करके पूछता हूँ कि 'क्या यह ठीक है ?' "

मेरे हठ करने से वह हड़बड़ा गया और गुनगुनाकर कहा—'नहीं...'

'नहीं ठीक है. फिर वे मनुष्यों को क्यों खाते रहते हैं ?'

'यह सच नहीं है.'

'सच नहीं है ! वुल्फ विलेज में उन्होंने यही किया और सब पुरानी किताबों में यह मोटे-मोटे अक्षरों में साफ-साफ लिखा है !'

उसका भाव बदल गया और उसका मुख बदरंग हो गया. आँखें फाड़ कर देखते हुए उसने कहा'—मुमकिन है कि यह सच हो. ऐसा हमेशा से होता रहा है.'

'हमेशा से होता रहा है—पर क्या यह ठीक है ?'

'मैं आपके साथ बहस करने नहीं जा रहा हूँ. आप इसका जिक्र न कीजिये. अगर आप जिक्र करते हैं तो गलती करते हैं.'

मैं उछल कर खड़ा हो गया और मैंने उसकी ओर घूर कर देखा. परन्तु तभी वह ग़ायब हो गया. चोटी से एड़ी तक मैं पसीना-पसीना हो गया. उम्र में वह मेरे भाई से कहीं ज्यादा छोटा था. लेकिन फिर भी वह उस जालसाजी में शामिल था. उसके माता-पिता ने उससे ऐसा करने के लिये कहा होगा. और मुझे डर है कि कहीं उसने अपने लड़कों को भी यही शिक्षा न दी हो. इसी से बच्चे भी मेरी ओर क्रूर दृष्टि से देखते हैं.

9

वे मनुष्यों को खाना चाहते हैं, लेकिन .खुद खाये जाने से डरते हैं. वे चौकन्ने होकर चारों ओर सन्देहपूर्ण दृष्टि से देखते हैं.

ہیں تھی۔ میں اُس سے پوچھا—'کیا منشیہ بھکشن ٹھیک ہے ؟'
سکراتے ہوئے ہی اسے نے جواب دیا—"اِس ورش کوئی اکال تو
ا نہیں ہے۔ پھر منشیہ بھکشن کی کیا ضرورت ؟" میں فوراً
مجھ گیا کہ یہ بھی جال‌سازی میں شامل ہے۔ یہ منشیوں کو
انا چاہتا ہے۔ اِس لئے میری ہمت سوگنی بڑھ گئی۔

مینے هٹھ کرتے ہوئے پھر وہی سوال پوچھا—'کیا یہ ٹھیک
؟'

وہ بولا—'ایسی چیزوں کے بارے میں پوچھنے سے کیا لابھ ؟
چ مچ آپ کو مزاق کرنا آتا ہے۔ آج موسم بڑا اچھا ہے.'

"موسم بڑا اچھا ہے۔ چندرماں خوب چمکدار ہے۔ لیکن پھر
ں میں آپ سے ہٹھ کر کے پوچھتا ہوں کہ 'کیا یہ ٹھیک
؟"

میرے ہٹھ کرنے سے وہ ہڑبڑا گیا اور گنگنا کر کہا—
نہیں...'

'نہیں ٹھیک ہے۔ پھر وے منشیوں کو کیوں کھاتے رہتے
ہیں ؟'

'یہ سچ نہیں ہے.'

'سچ نہیں ہے ! وُلف ولیج میں اُنھوں نے یہی کیا اور
ب پرانی کتابوں میں یہ موٹے موٹے اکشروں میں صاف صاف
ا ہے !'

اُس کا بھاو بدل گیا اور اُس کا مکھ بدرنگ ہو گیا۔ آنکھیں
ڑ کر دیکھتے ہوئے اس نے کہا۔ 'ممکن ہے کہ یہ سچ ہو۔ ایسا
میشہ سے ہوتا رہا ہے'

'ہمیشہ سے ہوتا رہا ہے— پر کیا یہ ٹھیک ہے ؟'

'میں آپ کے ساتھ بحث کرنے نہیں جا رہا ہوں۔ آپ
ں کا ذکر نہ کیجئے۔ اگر آپ ذکر کرتے ہیں تو غلطی کرتے
ں'

میں اُچھل کر کھڑا ہو گیا اور میں نے اُس کی اور گھور کر
کھا۔ پرنتو تبھی وہ غایب ہو گیا۔ چوٹی سے ایڑی تک میں
سینہ پسینہ ہو گیا۔ عمر میں وہ میرے بھائی سے کہیں زیادہ
چھوٹا تھا۔ لیکن پھر بھی وہ اس جال‌سازی میں شامل تھا۔
ں کے ماتا پتا نے اُس سے ایسا کرنے کے لئے کہا ہوگا۔ اور مجھے
ہے کہ کہیں اس نے اپنے لڑکوں کو بھی یہی شکشا نہ دی
۔ اِسی سے بچے بھی میری اور کرور درشٹی سے دیکھتے
ں۔

9

وے مانشوں کو کھانا چاہتے ہیں، لیکن خود کھائے جانے
ڈرتے ہیں۔ وہ چوکنے ہو کر چاروں اور سندیہہ پورن درشٹی
دیکھتے ہیں۔

वे इस मतलब से जाल बिछा रहे हैं कि मैं खुद अपने को मार डालूँ. पिछले दिन के सड़क पर आदमियों के जमाव और अपने भाई के बर्ताव का मिलान करके ही मैं उनकी जालसाजी का लगभग 9/10 भाग समझ गया हूँ. अगर मैं अपनी कमर में बँधी हुई पेटी को खोल लूँ और उसे छत की किसी शहतीर में डाल कर फाँसी लगा लूँ तो इससे अधिक खुशी की दूसरी बात उनके लिये न होगी. मेरा खूब अच्छी तरह से दम घुट जायेगा. वे हत्यारे कहे जाने की बदनामी से भी बच जायँगे और इसके साथ ही साथ उनके हृदय की इच्छा भी पूरी हो जायगी. सचमुच वे खुशी के मारे नाचेंगे. इसके विरुद्ध, अगर मैं डर या चिन्ता से मर जाऊँ, तो मैं और अधिक दुबला हो जाऊँगा. लेकिन इसे भी वे स्वीकार कर लेंगे.

वे सिर्फ मरे हुए का माँस खा सकते हैं ! जरा ठहरिये— एक बार मैंने एक प्रकार के जानवर के बारे में पढ़ा था. उसे 'लकड़बग्घा' कहते हैं. उसकी आँखें और पूरा शरीर देखने में बड़ा डरावना लगता था. वह अकसर मरा माँस खाता था और बड़ी से बड़ी हड्डियाँ चबा कर निगल जाता था. उसके बारे में सोचने से ही मुझे डर लगता है. लकड़बग्घा भेड़िये का रिश्तेदार होता है और भेड़िया कुत्ते का. पिछले दिन चाओ के कुत्ते ने कई बार मेरी ओर देखा था. उसके दिमाग में भी वही विचार होगा. वह भी इन लोगों से मिला है और उसने भी अपना हिस्सा पक्का कर लिया है. वह बुड्ढा आदमी अपनी आँखें बराबर फर्श पर जमाये था, लेकिन उससे मैं धोखे में नहीं आया.

सबसे अधिक धिक्कार मुझे अपने भाई पर आता है. आखिर वह मनुष्य है. उसे डर क्यों नहीं लगता ? मुझे खाने के लिये वह इस जालसाजी में क्यों शामिल हुआ ? अभ्यास हो जाने से क्या उसका स्वभाव कठोर हो गया है ? इसी से क्या वह इस काम में कोई बुरी बात नहीं देखता ? या वह यह जानता है कि वह अपराध कर रहा है और जान बूझ कर भी वह अपने अन्तःकरण की आवाज के खिलाफ काम कर रहा है ?

पहले तुम्हें और फिर सब मनुष्य भक्षी दानवों को मैं कोसता हूँ ! पहले तुम्हें और फिर सब मनुष्य-भक्षी दानवों को मैं बदल दूँगा !

8

अब वे सारे विचार उन्हें साफ-साफ मालूम हो जाने चाहिये'......

अचानक एक नौजवान आदमी मेरे पास आया. उसकी उम्र बीस वर्ष से ज्यादा न रही होगी. मैं उसका चेहरा अच्छी तरह से नहीं देख सका. लेकिन वह मुस्करा रहा था. उसने मुझे देखकर सिर हिलाया. उसकी मुस्कराहट असली

وہ اِس مطلب سے جال بچھا رہے ہیں کہ میں خود اپنے کو مار ڈالوں ۔ پچھلے دن کے سڑک پر آدمیوں کے جماؤ اور اپنے بھائی کے برتاؤ کا میلان کر کے ہی میں اُن کی جال‌سازی کا لگ بھگ 9/10 بھاگ سمجھ گیا ہوں ۔ اگر میں اپنی کمر میں باندھی ہوئی پیٹی کو کھول لوں اور اسے چھت کے کسی شہتیر میں ڈال کر پھانسی لگا لوں تو اِس سے ادھک خوشی کی دوسری بات اُن کے لئے نہ ہوگی ۔ میرا خوب اچھی طرح سے دم گھٹ جائیگا ۔ وے ہتیارے کہے جانے کی بدنامی سے بھی بچ جائینگے اور اِس کے ساتھ ہی ساتھ اُن کے ہردئے کی اِچھا بھی پوری ہو جائیگی ۔ سچ مچ وے خوشی کے مارے ناچیں گے ۔ اِس کے وِرودھ، اگر میں ڈر یا چنتا سے مرجاؤں، تو میں اور ادھک دبلا ہو جاؤں گا ۔ لیکن اِسے بھی وے سویکار کر لینگے ۔

وے صرف مرے ہوئے کا مانس کھا سکتے ہیں ! ذرا ٹھہرئیے— ایک بار میں نے ایک پرکار کے جانور کے بارے میں پڑھا تھا ۔ اُسے 'لکڑبگھا' کہتے ہیں ۔ اس کی آنکھیں اور پورا شریر دیکھنے میں بڑا ڈراونا لگتا تھا ۔ وہ اکثر مرا مانس کھاتا تھا اور بڑی سے بڑی ہڈیاں چبا کر نگل جاتا تھا ۔ اُس کے بارے میں سوچنے سے ہی مجھے ڈر لگتا ہے ۔ لکڑبگھا بھیڑیئے کا رشتہ‌دار ہوتا ہے اور بھیڑیا کتے کا ۔ پچھلے دن چاؤ کے کتے نے کئی بار میری اور دیکھا تھا ۔ اُس کے دماغ میں بھی وہی وچار ہوگا ۔ وہ بھی اِن لوگوں سے ملا ہے اور اس نے بھی اپنا حصہ پکا کر لیا ہے ۔ وہ بڈھا آدمی اپنی آنکھیں برابر فرش پر جمائے تھا، لیکن اِس سے میں دھوکے میں نہیں آیا ۔

سب سے ادھک دھکار مجھے اپنے بھائی پر آتا ہے ۔ آخر وہ منشیہ ہے ۔ اسے ڈر کیوں نہیں لگتا ۔ مجھے کھانے کے لئے وہ اِس جال‌سازی سے کیوں شامل ہوا ؟ ابھیاس ہو جانے سے کیا اس کا سوبھاؤ کٹھور ہو گیا ہے ؟ اِس سے کیا وہ اِس کام میں کوئی بری بات نہیں دیکھتا ؟ یا وہ یہ جانتا ہے کہ وہ اپرادھ کر رہا ہے اور جان بوجھ کر بھی وہ اپنے انتہ کرن کی آواز کے خلاف کام کر رہا ہے ؟

پہلے تمھیں اور پھر سب منشیہ بھکشی دانوں کو میں کوستا ہوں ! پہلے تمھیں اور پھر سب منشیہ بھکشی دانووں کو میں بدل دونگا !

8

اب وے سارے وچار اُنھیں صاف صاف معلوم ہو جانے چاہئیں...

اچانک ایک نوجوان آدمی میرے پاس آیا ۔ اُس کی عمر بیس ورش سے زیادہ نہ رہی ہوگی ۔ میں اُس کا چہرہ اچھی طرح سے نہیں دیکھ سکا ۔ لیکن وہ مسکرا رہا تھا ۔ اُس نے مجھے دیکھ کر سر ہلایا ۔ اُس کی مسکراہٹ اصلی

5

जब मैं और आगे सोचता हूँ तो इस नतीजे पर पहुँचता हूँ कि अगर यह बुड्ढा आदमी छिपे भेस में जल्लाद नहीं है और सचमुच एक डाक्टर ही है, तो भी इतना तो तय है ही कि वह मनुष्य-भक्षी मनुष्य है. आजकल के डाक्टरों के पूर्वगामी पथप्रदर्शक ली-शीह-चेन ने 'जड़ी-बूटियों पर' नामक जो ग्रन्थ लिखा है उसमें साफ़-साफ़ कहा गया है कि मनुष्य का माँस तल कर खाया जा सकता है. इसलिये क्या वह मनुष्य-भक्षी मनुष्य होने से इनकार कर सकता है ?

जहाँ तक मेरे भाई का सवाल है, मैं उस पर झूठा आरोप नहीं लगाता हूँ. जब वे मुझे प्राचीन-काल का इतिहास पढ़ाते थे, तो उन्होंने ख़ुद कहा था कि मनुष्य अपने 'पुत्रों के बदले में अन्न' पा सकता था. और एक बार एक दुष्ट मनुष्य के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा था कि उसकी हत्या करना उसे एक अत्यन्त नम्र दण्ड देना था. 'उसका तो माँस खा डालना चाहिये था और उसकी खाल का कम्बल बनवाना चाहिये था.' उस समय मैं बहुत छोटा था और बहुत देर तक मेरा दिल धड़कता रहा और पिछले दिन जब वुल्फ़ विलेज नामक गाँव के आसामियों ने मनुष्य के दिल और जिगर के खाये जाने की कहानी बताई तो मुझे तनिक भी अचरज न हुआ. उस समय मेरा भाई बिना रुके हुये लगातार अपना सिर हिलाता रहा था. इससे आप समझ सकते हैं कि उनके विचार अब भी बिलकुल पहले-जैसे ही क्रूर हैं. यदि आप 'पुत्र देकर बदले में खाना' ले सकते हैं तो आप बदले में कुछ भी ले-दे सकते हैं. आप किसी को भी खा सकते हैं. पहले मैं सिर्फ़ उनके भाषण सुन भर लेता था और किसी बात पर पूछ-ताछ नहीं करता था. लेकिन अब मैं समझ गया कि मुझे भाषण देते समय उनके होंठों पर मनुष्य की चर्बी तो रगड़ी ही रहती थी, इसके साथ-साथ उनका पूरा दिल भी मनुष्य को खाने के विचारों से भरा रहता था.

6

हर जगह अँधेरा. मैं नहीं जानता कि इस समय दिन है या रात. चाओ का कुत्ता फिर भूँकने लगा है.

शेर की क्रूरता, ख़रगोश का डरपोकपन, लोमड़ी की मक्कारी...

7

मैं उनका तरीक़ा भलीभाँति समझ गया हूँ. वे मुझे सीधे नहीं मारना चाहते. उनकी हिम्मत नहीं है. वे नतीजों से डरते हैं. इसलिये उन सबने मिलकर गुटबन्दी की है और

5

جب میں اور آگے سوچتا ہوں تو اِس نتیجے پر پہونچتا ہوں کہ اگر یہ بڈھا آدمی چھپے بھیس میں جلاد نہیں ہے اور سچ مچ ایک ڈاکٹر ہی ہے تو بھی اِتنا تو طے ہے ہی کہ وہ منشیہ بھکشی منشیہ ہے ۔ آجکل کے ڈاکٹروں کے پورگامی پتھ پردرشک لی شیہ-چین نے 'جڑی بوٹیوں پر' نامک جو گرنتھ لکھا ہے اُس میں صاف صاف کہا گیا ہے کہ منشیہ کا مانس تل کر کھایا جا سکتا ہے ۔ اِس لئے کیا وہ منشیہ بھکشی منشیہ ہونے سے انکار کر سکتا ہے ؟

جہاں تک میرے بھائی کا سوال ہے، میں اُس پر جھوٹا آروپ نہیں لگاتا ہوں ۔ جب وے مجھے پراچین کال کا اِتہاس پڑھاتے تھے، تو اُنہوں نے خود کہا تھا کہ منشیہ اپنے 'پتروں کے بدلے میں ان' پا سکتا تھا ۔ اور ایک بار ایک دشٹ منشیہ کے بارے میں بتاتے ہوئے اُنہوں نے کہا تھا کہ اُس کی ہتیا کرنا اسے ایک اتینت نمر دنڈ دینا تھا ۔ اُس کا تو مانس کھا ڈالنا چاہئے تھا اور اُس کی کھال کا کمبل بنوانا چاہئے تھا؛ اُس سمے میں بہت چھوٹا تھا اور بہت دیر تک میرا دل دھڑکتا رہا اور پچھلے دن جب وُلف ولیج نامک گاؤں کے آسامیوں نے منشیہ کے دل اور جگر کے کھائے جانے کی کہانی بتائی تو مجھے تنک بھی اچرج نہ ہوا ۔ اِس سمے میرا بھائی بنا رکے ہوئے لگاتار اپنا سر ہلاتا رہا تھا ۔ اِس سے آپ سمجھ سکتے ہیں کہ اُن کے وچار اب بھی بالکل پہلے جیسے ہی کرور ہیں ۔ یدی آپ 'پتر دیکر بدلے میں کھانا' لے سکتے ہیں تو آپ بدلے میں کچھ بھی لے دے سکتے ہیں ۔ آپ کسی کو بھی کھا سکتے ہیں ۔ پہلے میں صرف اُن کے بھاشن سن بھر لیتا تھا اور کسی بھی بات پر پوچھ تاچھ نہیں کرتا تھا ۔ لیکن اب میں سمجھ گیا کہ مجھے بھاشن دیتے سمے اُن کے ہونٹوں پر منشیہ کی چربی تو رگڑی ہی رہتی تھی، اِس کے ساتھ ساتھ اُن کا پورا دل بھی منشیہ کو کھانے کے وچاروں سے بھرا رہتا تھا ۔

6

ہر جگہہ اندھیرا ۔ میں نہیں جانتا کہ اِس سمے دن ہے یا رات ۔ چاؤ کا کتا پھر بھونکنے لگا ہے ۔

شیر کی کرورتا، خرگوش کا ڈرپوک پن، لومڑی کی مکاری......

7

میں اُن کا طریقہ بھلی بھانت سمجھ گیا ہوں ۔ وے مجھے سیدھے نہیں مارنا چاہتے ۔ اُن کی ہمت نہیں ہے ۔ وے نتیجوں سے ڈرتے ہیں ۔ اِس لئے اُن سب نے ملکر گٹ بندی کی ہے اور

अच्छा'. क्या वे सोचते थे कि मैं यह नहीं समझा कि दूसरा भेष धारण किये हुए वह बुड्ढा आदमी वास्तव में एक जल्लाद था. नब्ज़ देखने के बहाने वह सिर्फ़ यह पता लगाना चाहता था कि मारे जाने के लिए मैं काफ़ी मोटा हूँ अथवा नहीं. और इस ख़ास काम के लिये उसे एक टुकड़ा मिलेगा. लेकिन मैं डरा नहीं. गो कि मैं उनकी तरह मनुष्य-भक्षी नहीं हूँ तो भी मुझमें उनसे ज़्यादा हिम्मत है. मैंने अपनी दोनों मुट्ठियाँ बाँधकर बाहर निकाल लीं और इन्तिज़ार करने लगा कि देखें अब आगे वह क्या करता है. बुड्ढा आदमी चुपचाप बैठ गया. उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और बहुत देर तक मेरी नब्ज़ देखता रहा. वह बहुत देर तक चुप रहा. इसके बाद उसने अपनी दानवी आँखें खोलीं और कहा—'तरह-तरह की बातें न सोचा करो. शान्त रहो और कुछ दिनों तक आराम करो. इससे तुम बिलकुल अच्छे हो जाओगे.'

'तरह-तरह की बातें न सोचा करो ! शान्त रहो और आराम करो.' आराम करते-करते जब मैं और ज़्यादा मोटा हो जाऊँगा तब मुझमें उनके खाने के लिये और ज़्यादा सामान हो जायगा. इस आराम से मेरा क्या लाभ होगा ? मैं 'बिलकुल अच्छा' कैसे हो जाऊँगा ? मनुष्यों का यह झुण्ड जो दूसरों को निगल जाना चाहता है, लेकिन जो चोरों की तरह सब बात को छिपाने की कोशिश करता रहता है और जो सीधे-सीधे मारने की हिम्मत नहीं करता है—ये तो मुझे हँसाते-हँसाते मार डालेंगे. मैं अपने को रोक न सका और मेरी हँसी फूट निकली. मैं पूरी तरह से ख़ुश था. मैं स्वयं जानता था कि मेरी हँसी में हिम्मत और सच्ची भावना है. वह बुड्ढा आदमी और मेरे भाई हक्का-बक्का हो गये. मेरी हिम्मत और सच्ची भावना ने उन्हें जीत लिया था.

लेकिन मुझमें हिम्मत है, इस कारण वे मुझे निगलने के लिये और भी अधिक उत्सुक हो जायेंगे, क्योंकि मुझे निगलने पर उन्हें मेरी हिम्मत मिल जायेगी. वह बुड्ढा आदमी द्वार से बाहर चला गया. लेकिन बहुत दूर जाने के पहले ही उसने धीमी आवाज़ में मेरे भाई से कहा—'जल्दी लेना है'. मेरे भाई ने अपना सिर हिलाया. तो आप भी इसमें शामिल हैं ! अपने भाई की साजिश की मुझे आशा न थी, फिर भी मुझे यह जानकर अचरज नहीं हुआ, मुझे खाने की साजिश में मेरा ही भाई है !

मेरा भाई मनुष्य-भक्षी दानव है !
मैं मनुष्य-भक्षी दानव का भाई हूँ !

चाहे मैं ख़ुद ही खा डाला जाऊँ, तो भी मैं एक मनुष्य-भक्षी दानव का भाई ही कहलाऊँगा !

اچھا۔' کیا وے سوچتے تھے کہ میں یہ نہیں سمجھا کہ دوسرا بھیس دھارن کئے ہوئے وہ بڈھا آدمی واستو میں ایک جلاد تھا۔ نبض دیکھنے کے بہانے وہ صرف یہ پتہ لگانا چاہتا تھا کہ مارے جانے کے لئے میں کافی موٹا ہوں اتھوا نہیں۔ اور اِس خاص کام کے لئے اسے ایک ٹکڑا ملیگا۔ لیکن میں ڈرا نہیں۔ گوکہ میں اُن کی طرح منشیہ بھکشی نہیں ہوں تو بھی مجھ میں اُن سے زیادہ ہمت ہے۔ میں نے اپنی دونوں مٹھیاں باندھکر باہر نکال لیں اور انتظار کرنے لگا کہ دیکھیں اب آگے وہ کیا کرتا ہے۔ بڈھا آدمی چپ چاپ بیٹھ گیا۔ اس نے اپنی آنکھیں بند کر لیں اور بہت دیر تک میری نبض دیکھتا رہا۔ وہ بہت دیر تک چپ رہا۔ اِس کے بعد اُس نے اپنی دانوی آنکھیں کھولیں اور کہا—'طرح طرح کی باتیں نہ سوچا کرو۔ شانت رہو اور کچھ دنوں تک آرام کرو۔ اِس سے تم بالکل اچھے ہو جاؤ گے۔'

'طرح طرح کی باتیں نہ سوچا کرو! شانت رہو اور آرام کرو۔' آرام کرتے کرتے جب میں اور زیادہ موٹا ہو جاؤنگا تب مجھ میں اُن کے کھانے کے لئے اور زیادہ سامان ہو جائیگا۔ اِس آرام سے میرا کیا لابھ ہوگا؟ میں 'بالکل اچھا' کیسے ہو جاؤنگا؟ منشیوں کا یہ جھنڈ جو دوسروں کو نگل جانا چاہتا ہے، لیکن جو چوروں کی طرح سچ بات کو چھپانے کی کوشش کرتا رہتا ہے اور جو سیدھے سیدھے مارنے کی ہمت نہیں کرتا ہے—یہ تو مجھے ہنساتے ہنساتے مار ڈالینگے۔ میں اپنے کو روک نہ سکا اور میری ہنسی پھوٹ نکلی۔ میں پوری طرح سے خوش تھا۔ میں سوئم جانتا تھا کہ میری ہنسی میں ہمت اور سچی بھاونا ہے۔ وہ بڈھا آدمی اور میرے بھائی ہکا بکا ہو گئے۔ میری ہمت اور سچی بھاونا نے اُنہیں جیت لیا تھا۔

لیکن مجھ میں ہمت ہے، اِس کارن وے مجھے نگلنے کے لئے اور بھی ادھک اُتسک ہو جائینگے، کیونکہ مجھے نگلنے پر اُنہیں میری ہمت مل جائیگی۔ وہ بڈھا آدمی دوار سے باہر چلا گیا۔ لیکن بہت دور جانے کے پہلے ہی اس نے دھیمی آواز میں میرے بھائی سے کہا—'جلدی لینا ہے'۔ میرے بھائی نے اپنا سر ہلایا۔ تو آپ بھی اِس میں شامل ہیں! اپنے بھائی کی سازش کی مجھے آشا نہ تھی۔ پھر بھی مجھے یہ جان کر اچرج نہیں ہوا۔ مجھے کھانے کی سازش میں میرا ہی بھائی ہے!

میرا بھائی منشیہ بھکشی دانو ہے!
میں منشیہ بھکشی دانو کا بھائی ہوں!

چاہے میں خود ہی کھا ڈالا جاؤں، تو بھی میں ایک منشیہ بھکشی دانو کا بھائی ہی کہلاؤنگا!

नहीं करते. मैं कैसे कल्पना कर सकता था कि इन मनुष्यों के विचार क्या हैं, ख़ास तौर पर उस समय जबकि वे किसी को निगलने की तैयारी कर रहे हों ?

अब प्रत्येक वस्तु को समझने के पूर्व उसकी जाँच-पड़ताल कर लेना जरूरी है. यद्यपि साफ़-साफ़ नहीं तो भी थोड़ा-बहुत तो मुझे याद पड़ता ही है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक मनुष्य अक्सर खाये गये हैं. पता लगाने के लिए मैं एक इतिहास की पुस्तक देख रहा था, लेकिन उसमें तिथियाँ नहीं दी थीं हर एक पन्ने पर सिर्फ़ 'दान-शीलता, 'सदाचारिता,' 'नैतिकता' और 'गुण' के लिए कुछ शब्द लिखे थे. मैं बराबर करवटें बदलता रहा, लेकिन मुझे नींद न आई. आधी रात तक मैं पुस्तक में बड़ी साव-धानी के साथ छान-बीन करता रहा. तब कहीं मैं यह समझ पाया कि उन शब्दों के बीच में क्या लिखा था. पूरी पुस्तक में सिर्फ़ दो ही शब्द थे 'मनुष्य-भक्षण'.

पुस्तक में वे सब शब्द और आसामियों द्वारा कही गई वे सारी बातें हँसती हुई अपनी बड़ी-बड़ी आँखें खोल रही हैं अजीब तरह से मेरी ओर देख रही हैं.

मैं भी मनुष्य हूँ. वे मुझे निगल जाना चाहते हैं !

4

आज प्रातःकाल मैं चुपचाप बैठा था. तभी चेन लाओ-वू ने खाना भेजा—तरकारियों का एक कटोरा और उबली हुई मछली का एक कटोरा. मछली की आँखें सफ़ेद और कड़ी थीं. मनुष्य-भक्षी उस जन-समूह की भाँति ही उसका मुँह खुला था. मैंने कुछ लुक़मे खा लिये. परन्तु मुझे यह पता न लगा कि यह चिकनी चीज़ मछली है या मनुष्य. इसलिए मैंने क़ै कर दी और उसे फ़र्श पर उगल दिया.

मैंने कहा—'लाओ-वू, कृपया जाकर मेरे भाई से कह दीजिए कि मेरा मन बहुत बुरी तरह से ऊब गया है और मैं बाग़ में टहलना चाहता हूँ. लाओ-वू ने कोई जवाब न दिया. वे बाहर निकल गए. कुछ समय बाद वे वापस आए और उन्होंने द्वार खोला.

वास्तव में मेरी समझ में यह न आया कि वे मेरे साथ क्या करने जा रहे थे। लेकिन मैं यह समझ गया कि वे मेरे ऊपर रक्खे गए अपने शिकञ्जे को ढीला करने नहीं जा रहे हैं. निःसन्देह, मेरे भाई एक बूढ़े आदमी को भीतर लाए. वह धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ा. वह आदमी डर रहा था कि कहीं मैं उसकी आँखों की क्रूर दृष्टि न देख लूँ. इसी से वह अपनी आँखों को फ़र्श पर झुकाए रहा. उसने मुझे अपनी आँखों की कोरों से देखा. मेरे भाई ने कहा—'आज तुम बिल्कुल ठीक मालूम होते हो.' मैंने कहा, 'हाँ'. इस पर मेरे भाई ने कहा—'हम लोगों ने डाक्टर से आज आकर तुम्हें ठीक करने के लिये कहा है —'मैंने कहा, 'बहुत

نہیں کرتے. میں کیسے کلپنا کر سکتا تھا کہ اِن منشیوں کے وچار کیا ہیں' خاص طور پر اُس سمے جب کہ وے کسی کو نگلنے کی تیاری کر رہے ہوں ؟

اب پرتییک وستو کو سمجھنے کے پوروَ اس کی جانچ پڑتال کرلینا ضروری ہے ۔ یدیپی صاف صاف نہیں تو بھی تھوڑا بہت تو مجھے یاد پڑتا ہی ہے کہ پراچین کال سے لیکر آج تک منشیہ اکثر کھائے گئے ہیں ۔ پتہ لگانے کے لئے میں ایک اِتہاس کی پستک دیکھ رہا تھا' لیکن اس میں تتھیاں نہیں دی تھیں. ہر ایک پنّے پر صرف 'دان شیلتا' 'سداچاریتا' 'نیتکتا' اور 'گن' کے لئے کچھ شبد لکھے تھے ۔ میں برابر کروٹیں بدلتا رہا لیکن مجھے نیند نہیں آئی. آدھی رات تک میں پستک میں بڑی ساودھانی کے ساتھ چھان بین کرتا رہا ۔ تب کہیں میں یہ سمجھ پایا کہ اُن شبدوں کے بیچ میں کیا لکھا تھا ۔ پوری پستک میں صرف دو ہی شبد تھے 'منشیہ بھکشن .'

پستک میں وے سب شبد اور آسامیوں دوارا کہی گئی وے ساری باتیں ہنستی ہوئی اپنی بڑی بڑی آنکھیں کھول رہی ہیں اور عجیب طرح سے میری اور دیکھ رہی ہیں ۔

میں بھی منشیہ ہوں ۔ وے مجھے نگل جانا چاہتے ہیں !

4

آج پراتہ کال میں چپ چاپ بیٹھا تھا ۔ تبھی چین لاؤ-وو نے کھانا بھیجا—ترکاریوں کا ایک کٹورا اور اُبلی ہوئی مچھلی کا ایک کٹورا ۔ مچھلی کی آنکھیں سفید اور کڑی تھیں ۔ منشیہ بھکشی اُس جن سموہ کی بھانت ہی اُس کا منھ کھلا تھا ۔ میں نے کچھ لقمے کھا لئے ۔ پرنتو مجھے یہ پتہ نہ لگا کہ یہ چکنی چیز مچھلی ہے یا منشیہ ۔ اِس لئے میں نے قے کر دی اور اُسے فرش پر اُگل دیا ۔

میں نے کہا—'لاؤ وو؛ کرپیا جا کر میرے بھائی سے کہہ دیجئے کہ میرا من بہت بری طرح سے اُوب گیا ہے اور میں باغ میں ٹہلنا چاہتا ہوں؛ لاؤ وو نے کوئی جواب نہیں دیا ۔ وے باہر نکل گئے ۔ کچھ سمے بعد وے واپس آئے اور انہوں نے دوار کھولا ۔

واستو میں میری سمجھ میں یہ نہ آیا کہ وے میرے ساتھ کیا کرنے جا رہے ہیں ۔ لیکن میں یہ سمجھ گیا کہ وے میرے اُوپر رکھے گئے اپنے شکنجے کو ڈھیلا کرنے نہیں جا رہے ہیں ۔ نسندیہہ' میرے بھائی ایک بوڑھے آدمی کو بھیتر لائے اور وہ دھیرے دھیرے میری اور بڑھا ۔ وہ آدمی ڈر رہا تھا کہ کہیں میں اس کی آنکھوں کی کرور درشٹی نہ دیکھ لوں ۔ اِسی سے وہ اپنی آنکھوں کو فرش پر جھکائے رہا ۔ اُس نے مجھے اپنی آنکھوں کی کوروں سے دیکھا ۔ میرے بھائی نے کہا—'آج تم بالکل ٹھیک معلوم' ہوتے ہو ۔ میں نے کہا—'ہاں''. اِس پر میرے بھائی نے کہا—ہم لوگوں نے ڈاکٹر ہو سے آج آکر تمہیں ٹھیک کرنے کے لئے کہا ہے؛ میں نے کہا' 'بہت

इस पर विरूप मुख वाले मनुष्यों का वह झुण्ड दाँत खोलकर जोरों से हँसने लगा. तब चेन लाओ-वू मेरे पास आये और मुझे खींचकर घर ले गये.

वे मुझे खींचकर घर ले गये. घर के मनुष्यों ने ऐसा रुख अपनाया कि जैसे वे मुझे जानते ही न हों., उनके मुख के भाव वैसे ही थे जैसे कि दूसरे मनुष्यों के. जब मैं अपने पढ़ने-लिखने वाले कमरे में घुस गया तो उन्होंने द्वार पर ताला लगा दिया. ऐसा लग रहा था कि जैसे वे किसी मुर्गी अथवा बतख को कटघरे में बन्द कर रहे हों.

कुछ दिन हुए, वुल्फ विलेज नामक गाँव के आसामी यह कहने के लिये आये थे कि उनके जिले में अकाल पड़ा है. उन्होंने मेरे भाई को सूचना दी कि वहाँ गाँव वालों ने एक बड़े बदमाश को मार डाला और इसके बाद उनमें से कुछ एक ने उसे चीरकर उसका हृदय और जिगर निकाल लिया. उन्होंने उन टुकड़ों को तला और उन्हें खा डाला जिससे उनमें हिम्मत पैदा हो. मैं उनके बीच में ही बोल पड़ा. आसामियों और मेरे भाई ने बुरी तरह मेरी ओर देखा. अब मेरी समझ में आया कि उन्होंने मेरी ओर उसी प्रकार देखा था जिस प्रकार बाहर के झुन्ड ने.

जब मैं इसे सोचता हूँ तो चोटी से लेकर एड़ी तक सिहर जाता हूँ.

वे उस मनुष्य के भीतरी अङ्ग खा गये, तो क्या वे मुझे न खाजायेंगे ?

उस स्त्री के कथन पर विचार कीजिये, 'जी चाहता है कि तुझे कई बार दाँतों से काट खाऊँ.' और इस कथन का उस हँसी अथवा विरूप मुख और खुले हुए दाँतों वाले मनुष्यों के उस झुन्ड तथा आसामियों द्वारा कही गई उस कहानी से मिलान कीजिये. साफ जाहिर है कि ये शब्द एक गुप्त सङ्केत थे. उनके शब्दों में जहर था, उनकी हँसी में कटारें थीं, और उनके चमकते हुए सफेद दाँतों की कतारें प्रकट कर रही थीं कि वे मनुष्य-भक्षी दानव हैं.

अब, जैसा कि मैं सोचता हूँ, मैं कोई बदमाश नहीं हूँ. लेकिन मुझसे श्री कु-चिउ का कुत्ता कुचल गया था, इसलिये अब यह कहना कठिन है. ऐसा लगता है कि उनके दूसरी तरह के विचार हैं. उनकी मैं कल्पना तक नहीं कर सकता. इसके अलावा, जब कभी वे आप से नाराज होंगे तो आपको बदमाश समझने लगेंगे. मुझे वे बातें याद हैं जब मेरे बड़े भाई मुझे निबन्ध लिखना सिखाते थे. जब कभी भले से भले मनुष्य की भी मैं कटु आलोचना करता था तो मेरे भाई उसका अनुमोदन करते थे, और यदि मैं दुष्ट मनुष्यों को क्षमा कर देता था तो वे कहा करते थे कि, 'तुम बड़े भले लड़के हो जो सर्वसाधारण की तरह व्यवहार

اِس پر وروپ مکھ والے منشوں کا وہ جھنڈ دانت کھول کر زوروں سے ہنسنے لگا۔ تب چین لاؤ-وو میرے پاس آئے اور مجھے کھینچ کر گھر لے گئے۔

وہ مجھے کھینچ کر گھر لے گئے۔ گھر کے منشوں نے ایسا رخ اپنایا کہ جیسے وہ مجھے جانتے ہی نہ ہوں۔ اُن کے مکھ کے بھاؤ ویسے ہی تھے جیسے کہ دوسرے منشوں کے۔ جب میں اپنے پڑھنے لکھنے والے کمرے میں گھس گیا تو اُنہوں نے دوار پر تالا لگا دیا۔ ایسا لگ رہا تھا کہ جیسے وہ کسی مرغی اتھوا بطخ کو کٹگھرے میں بند کر رہے ہوں۔

کچھ دن ہوئے، وُلف ولیج نامک گاؤں کے آسامی یہ کہنے کے لئے آئے تھے کہ اُن کے ضلع میں اکال پڑا ہے۔ اُنہوں نے میرے بھائی کو سوچنا دی کہ وہاں گاؤں والوں نے ایک بڑے بدمعاش کو مار ڈالا اور اِس کے بعد اُن میں سے کچھ ایک نے اسے چیر کر اُس کا ہردیہ اور جگر نکال لیا۔ اُنہوں نے اُن ٹکڑوں کو تلا اور اُنہیں کھا ڈالا جس سے اُن میں ہمت پیدا ہو۔ میں اُن کے بیچ میں ہی بول پڑا۔ آسامیوں اور میرے بھائی نے بری طرح میری اور دیکھا۔ اب میری سمجھ میں آیا کہ انہوں نے میری اور اُسی پرکار دیکھا تھا جس پرکار باہر کے جھنڈ نے۔

جب میں اِسے سوچتا ہوں تو چوٹی سے لیکر ایڑی تک سہر جاتا ہوں۔

وہ اُس منشیہ کے بھیتری انگ کھا گئے۔ تو کیا وہ مجھے نہ کھا جائیں گے؟

اُس اِستری کے کتھن پر وچار کیجئے، 'جی چاہتا ہے کہ تجھے کئی بار دانتوں سے کاٹ کھاؤں،' اور اِس کتھن کا اُس ہنسی اتھوا وروپ مکھ اور کھلے ہوئے دانتوں والے منشوں کے اُس جھنڈ تتھا آسامیوں دوارا کہی گئی اُس کہانی سے ملان کیجئے۔ صاف ظاہر ہے کہ یہ شبد ایک گپت سنکیت تھے۔ اُن کے شبدوں میں زہر تھا؛ ان کی ہنسی میں کٹاریں تھیں۔ اور ان کی چمکتے ہوئے سفید دانتوں کی قطاریں پرکٹ کر رہی تھیں کہ وہ منشیہ بھکشی دانو ہیں۔

اب، جیسا کہ میں سوچتا ہوں، میں کوئی بدمعاش نہیں ہوں۔ لیکن مجھ سے شری کو-چیو کا کتا کچل گیا تھا۔ اِس لئے اب یہ کہنا کٹھن ہے۔ ایسا لگتا ہے کہ اُن کے دوسری طرح کے وچار ہیں۔ ان کی میں کلپنا تک نہیں کر سکتا۔ اِس کے علاوہ، جب کبھی وہ آپ سے ناراض ہونگے تو آپ کو بدمعاش سمجھنے لگیں گے۔ مجھے وہ باتیں یاد ہیں جب میرے بڑے بھائی مجھے نبندھ لکھنا سکھاتے تھے۔ جب کبھی بھلے سے بھلے منشیہ کی بھی میں کٹو آلوچنا کرتا تھا تو میرے بھائی اس کا انوموdn کرتے تھے؛ اور یدی میں دشٹ منشوں کو چھما کر دیتا تھا تو وہ کہا کرتے تھے کہ، 'تم بھلے لڑکے ہو جو سروسادھارن کی طرح ویوہار

सात आदमी और भी थे जो मेरे बारे में काना-फूसी कर रहे थे. वे डर रहे थे कि कहीं मैं उन्हें देख न लूँ. सड़क के सारे आदमी वैसे ही थे. उनमें से एक खास तौर से क्रूर था. वह सीधे मेरी ओर देखकर मुँह फाड़कर हँसा. मैं चोटी से लेकर एड़ी तक काँप उठा. मैं जानता हूँ कि उन्होंने पूरी तैयारी कर ली है.

लेकिन मैं डरा नहीं. मैंने सड़क पर घूमना जारी रक्खा. वहाँ बच्चों का एक झुन्ड था. वह भी मेरे बारे ही में बातें कर रहा था. उनके मुख का भाव वैसा ही था जैसा कि बड़े चाओ का. उनके मुख विरूप थे. मैं सोचने लगा, 'छोटे बच्चों से मेरी क्या दुश्मनी है जिससे ये भी इस प्रकार के हैं?' बरबस मैं चिल्ला उठा, 'तुम लोग मुझे बताओ!' इस पर वे सब भाग गये.

मैं सोचने लगा, 'बड़े चाओ और मुझमें क्या दुश्मनी है? मुझमें और सड़क के मनुष्यों में क्या दुश्मनी है?' सिवाय इसके कि बीस वर्ष पूर्व मुझसे श्री कु-चिउ का कुत्ता कुचल गया था और इससे श्री कु-चिउ बहुत चिढ़ गये थे. गोकि बड़ा चाओ उन्हें नहीं जानता तो भी उसने इसके बारे में सुना होगा और उसी अपमान का बदला लेना चाहता है. इसी ने सड़क के मनुष्यों को मेरा शत्रु बना दिया है. परन्तु बच्चों के बारे में क्या कहा जाय? उस समय तो वे पैदा भी नहीं हुए थे. फिर वे मेरी तरफ आँखें फाड़-फाड़कर क्यों घूरते हैं जैसे कि वे मुझसे डरते हों अथवा इसी से मैं डरता हूँ. इसी से मुझे बेहद अचरज और दुःख होता है.

अब मैं समझ गया—उनके माता-पिता ने उन्हें ऐसा बर्ताव करने के लिए कहा है!

3

रात को मैं सो नहीं पाता हूँ. किसी बात को समझने के लिये पहले उस पर छान-बीन करना जरूरी हो जाता है. वे मनुष्य—उनमें से कुछ को मजिस्ट्रेट ने दण्ड दिये हैं, कुछ जनसाधारण द्वारा चाँटे खा चुके हैं, कुछ की पत्नियाँ साधारण कोटि के मनुष्यों की गालियां खा चुकी हैं, कुछ के माता-पिता महाजनों (ऋण दाताओं) द्वारा मार डाले गये हैं; लेकिन इतनी बड़ी-बड़ी मुसीबतों के समय भी ये ऐसे डरावने नहीं दिखाई दिए जैसे कि कल दिखाई दे रहे थे—और उस समय न तो ये इतने क्रूर ही थे.

कल सड़क पर सब से ज्यादा अजीब तो वह स्त्री थी. उसने यह कहते हुए अपने लड़के को चाँटा मारा, 'जी चाहता है कि तुम्हें कई बार दांतों से काट खाऊँ, तभी मेरा गुस्सा शान्त होगा'. लेकिन जब वह यह कह रही थी तब मेरी ओर देख रही थी.

سات آدمی اور بھی تھے جو میرے بارے میں کانا پھوسی کر رہے تھے وہ ڈر رہے تھے کہ کہیں میں انہیں دیکھ نہ لوں۔ سڑک کے سارے آدمی ویسے ہی تھے۔ اُن میں سے ایک خاص طور سے کرور تھا۔ وہ سیدھے میری اور دیکھ کر منھ پھاڑ کر ہنسا۔ میں چوٹی سے لے کر ایڑی تک کانپ اٹھا۔ میں جانتا ہوں کہ انہوں نے پوری تیاری کرلی ہے۔

لیکن میں ڈرا نہیں۔ میں نے سڑک پر گھومنا جاری رکھا۔ وہاں بچوں کا ایک جھنڈ تھا۔ وہ بھی میرے بارے ہی میں باتیں کر رہا تھا۔ اُن کے مکھ کا بھاؤ ویسا ہی تھا جیسا کہ بڑے چاؤ کا۔ اُن کے مکھ وروپ تھے۔ میں سوچنے لگا' 'چھوٹے بچوں سے میری کیا دشمنی ہے جس سے یہ بھی اِس پرکار کے ہیں؟' بربس میں چلا اُٹھا' 'تم لوگ مجھے بتاؤ!' اِس پر وے سب بھاگ گئے۔

میں سوچنے لگا' 'بڑے چاؤ اور مجھ میں کیا دشمنی ہے؟ مجھ میں اور سڑک کے منشیوں میں کیا دشمنی ہے؟' سوائے اِس کے بیس ورش پورو مجھسے شری کو-چیؤ کا کتا کچل گیا تھا اور اِس سے شری کو-چیؤ بہت چڑھ گئے تھے۔ گوکہ بڑا چاؤ اُنہیں نہیں جانتا تو بھی اُس نے اِس کے بارے میں سنا ہوگا اور اُسی اپمان کا بدلہ لینا چاہتا ہے۔ اِسی نے سڑک کے منشیوں کو میرا شترو بنا دیا ہے۔ پرنتو بچوں کے بارے میں کیا کہا جائے؟ اُس سمے تو وے پیدا بھی نہیں ہوئے تھے۔ پھر وے میری طرف آنکھ پھاڑ پھاڑ کر کیوں گھورتے ہیں جیسے کہ وے مجھسے ڈرتے ہوں اتھوا اِسی سے میں ڈرتا ہوں۔ اِسی سے مجھے بےحد اچرج اور دکھ ہوتا ہے۔

اب میں سمجھ گیا—اُن کے ماتا پتا نے اُنہیں ایسا برتاؤ کرنے کے لئے کہا ہے!

3

رات کو میں سو نہیں پاتا ہوں۔ کسی بات کو سمجھنے کے لئے پہلے اس پر چھان بین کرنا ضروری ہو جاتا ہے۔ وے منشیہ—اُن میں کچھ کو مجسٹریٹ نے دنڈ دیئے ہیں' کچھ جن سادھارن دوارا چانٹے کھا چکے ہیں' کچھ کی پتنیاں سادھارن کوٹی کے منشیوں کی گالیاں کھا چکی ہیں' کچھ کے ماتا پتا مہاجنوں (رنڑ داتاؤں) دوارا مار ڈالے گئے ہیں؛ لیکن اِتنی بڑی بڑی مصیبتوں کے سمے بھی یہ ایسے ڈراونے نہیں دکھائی دیئے جیسے کہ کل دکھائی دے رہے تھے—اور اُس سمے نہ تو یہ اِتنے کرور ہی تھے۔

کل سڑک پر سب سے زیادہ عجیب تو وہ استری تھی۔ اُس نے یہ کہتے ہوئے اپنے لڑکے کو چانٹا مارا' 'جی چاہتا ہے کہ تجھے کئی بار دانتوں سے کاٹ کھاؤں۔ تبھی میرا غصہ شانت ہوگا'۔ لیکن جب وہ یہ کہہ رہی تھی تب میری اور دیکھ رہی تھی۔

दिया और आश्वासन देते हुए पुनः सूचित किया कि अब उसका भाई बिल्कुल ठीक हो गया है और इस समय दफ्तर के एक काम से बाहर गया है. इसके बाद वह खिल-खिलाकर हँस पड़ा और उसने मुझे अपने भाई की वह डायरी दिखाई जिसे वह अपने पागलपन में लिखा करता था. शायद यह डायरी मेरे मित्रों की रुचि का विषय बन सके.' यह कहते हुए उसने मुझे वह डायरी दे दी.

मैं पढ़ने के लिये डायरी घर ले आया. मुझे उससे पता चला कि मेरे मित्र को 'परिपीड़न-भ्रम' का रोग था. डायरी की भाषा में न स्पष्टता थी और न क्रम. स्थान-स्थान पर उसमें बेलगाम और बे सिर-पैर की बातें लिखी थीं. डायरी में कहीं पर भी तारीख न थी और न उसकी स्याही अथवा लेख ही एक से थे. इन बातों से मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि यह एक साँस में एक ही बार बैठकर नहीं लिखी गई थी. परन्तु फिर भी सम्पूर्ण डायरी में एक तुक, एक तथ्य, दिखाई देता है. इसी से मैं उस डायरी की एक नक़ल तैयार कर रहा हूँ. इसे मैं दिमाग़ी रोगों के विशेषज्ञों के सामने रखना चाहता हूँ. डायरी में लिखे हुए मनुष्यों के नामों को ही मैंने बदला है, गोकि वे सभी नाम मेरे गाँव के मनुष्यों के ही थे जिन्हें बाहर की दुनिया का कोई भी मनुष्य नहीं जानता. इनके अलावा डायरी का एक शब्द भी मैंने नहीं बदला. इससे डायरी के शेष मूल में कोई अन्तर नहीं आया है. जहाँ तक इसके शीर्षक का प्रश्न है, उसे स्वयं मेरे मित्र ने बीमारी से छुटकारा मिलने के बाद दिया है और उसे बदलने का कोई कारण नहीं दिखाई देता.

❀ ❀ ❀

2 अप्रैल

गणतन्त्र का सातवाँ वर्ष

(अर्थात् 1918)

आज शाम का चन्द्रमा बड़ा चमकदार है. इस प्रकार का चन्द्रमा मैंने पिछले 30 वर्षों में नहीं देखा. आज इसे मैंने देखा और इससे मुझे एक अजीब ताज़गी का अनुभव हुआ. तब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे बीते हुए जीवन के तीस वर्ष से ज़्यादा का समय सिर्फ़ एक सपना रहा है. लेकिन मुझे बहुत ही होशियार रहना चाहिए. नहीं तो—नहीं तो चाओ के कुत्ते ने मेरी तरफ़ इस प्रकार क्यों देखा? और कई बार!

2

आज रात को चन्द्रमा नहीं निकला. मैं जानता हूँ कि कुछ अनिष्ट होने वाला है. आज सवेरे बाहर जाते समय मैं बड़ा सावधान था. बड़े चाओ की मुख-मुद्रा बड़ी अजीब थी. वह मुझसे डरा हुआ सा मालूम होता था, जैसे कि वह मेरी कुछ हानि करना चाहता हो. उसके अलावा छः—

یا اور آشواسن دیتے ہوئے پنہ سوچت کیا کہ اب اُس کا بھائی بالکل ٹھیک ہو گیا ہے اور اس سمے دفتر کے ایک کام سے باہر گیا ہے۔ اِس کے بعد وہ کھِلکھلا کر ہنس پڑا اور اُس نے مجھے اپنے بھائی کی وہ ڈائری دکھائی جسے وہ اپنے پاگلپن میں لکھا کرتا تھا۔ شاید یہ ڈائری میرے مِتروں کی روچی کا وِشے بن سکے؛ یہ کہتے ہوئے اُس نے مجھے وہ ڈائری دے دی۔

میں پڑھنے کے لئے ڈائری گھر لے آیا۔ مجھے اُس سے پتہ چلا کہ میرے مِتر کو 'پریپیڑن بھرم' کا روگ تھا۔ ڈائری کی بھاشا میں نہ اسپشٹتا تھی اور نہ کرم۔ استھان استھان پر اُس میں بےلگام اور بے سر پیر کی باتیں لکھی تھیں۔ ڈائری میں کہیں پر بھی تاریخ نہ تھی اور نہ اُس کی سیاہی اتھوا لیکھ ہی ایک سے تھے۔ اِن باتوں سے میں اِس نتیجے پر پہنچا کہ یہ ایک سانس میں ایک ہی بار بیٹھ کر نہیں لکھی گئی تھی۔ پرنتو پھر بھی سمپورن ڈائری میں ایک تک، ایک تتھیہ، دکھائی دیتا ہے۔ اِسی سے میں اُس ڈائری کی ایک نقل تیار کر رہا ہوں۔ اِسے میں دماغی روگوں کے وِشیشگیوں کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں۔ ڈائری میں لکھے ہوئے منشیوں کے ناموں کو ہی میں نے بدلا ہے، گوکہ وے سبھی نام میرے گاؤں کے منشیوں کے ہی تھے جنہیں باہر کی دنیا کا کوئی بھی منشیہ نہیں جانتا۔ اِس کے علاوہ ڈائری کا ایک شبد بھی میں نے نہیں بدلا۔ اِس سے ڈائری کے شیش مول میں کوئی انتر نہیں آیا ہے۔ جہاں تک اِس کے شیرشک کا پرشن ہے، اُسے سوئم میرے مِتر نے بیماری سے چھٹکارا ملنے کے بعد دیا ہے اور اُسے بدلنے کا کوئی کارن نہیں دکھائی دیتا۔

❀ ❀ ❀

2 اپریل

گن تنتر کا ساتواں ورش

(ارتھات 1918)

آج شام کا چندرماں بڑا چمکدار ہے۔ اِس پرکار کا چندرماں میں نے پچھلے 30 ورشوں میں نہیں دیکھا۔ آج اِسے میں نے دیکھا اور اِس سے مجھے ایک عجیب تازگی کا انوبھو ہوا۔ تب مجھے گیات ہوا کہ میرے بیتے ہوئے جیون کے تیس ورش سے زیادہ کا سمے صرف ایک سپنا رہا ہے۔ لیکن مجھے بہت ہی ہوشیار رہنا چاہئے۔ نہیں تو—نہیں تو چاؤ کے کتے نے میری طرف اِس پرکار کیوں دیکھا؟ اور کئی بار!

2

آج رات کو چندرماں نہیں نکلا۔ میں جانتا ہوں کہ کچھ انشٹ ہونے والا ہے۔ آج سویرے باہر جاتے سمے میں بڑا ساودھان تھا۔ بڑے چاؤ کی مکھ مدرا بڑی عجیب تھی۔ وہ مجھ سے ڈرا ہوا سا معلوم ہوتا تھا، جیسے کہ وہ میری کچھ ہانی کرنا چاہتا ہو۔ اُس کے علاوہ چھ—

"मगर इस बीच थीं कहाँ तुम ?"

कई शहरों के नाम उन्होंने बताए—कुछ इस तरह गोया बहुत पहले भूली किसी बात को याद करने की कोशिश कर रही हैं. और इस बीच बराबर किसी बाज़ की तरह सारे कमरे में बग़ैर ज़रा भी आवाज़ किये चक्कर काटती रहीं.

"वह पोशाक कहाँ से मिली ?"

"मैंने ही बनाई है. अपने सारे कपड़े मैं ही बनाती हूँ."

यह सोचकर मुझे अच्छा लग रहा था कि वह औरों से मुख़्तलिफ़ हैं. लेकिन अफ़सोस यही था कि वह बोलती बहुत ही कम थीं. जब तक मैं कुछ पूछता नहीं था तब तक अमूमन वह चुप्पी ही साधे रहती थीं.

अब वह फिर आकर मेरे पास कोच पर बैठ गईं और चुपचाप, एक दूसरे से चिपटे हम दोनों उसी तरह बैठे रहे—जब तक कि नाना-नानी लौट नहीं आए. वह लोग जब आए तब उनमें से मोम और धूपबत्ती की महक आ रही थी, और एक अजीब सी संजीदगी और मिठास थी उनके बरताव में.

रात का खाना हम लोगों ने त्योहारों के दिन की तरह खाया—वैसी ही संजीदगी के साथ और खाते वक़्त बहुत ही कम बोले और इतने धीरे-धीरे गोया बहुत ही हलकी नींद कोई सोया हुआ है, जिसके जग जाने का डर है.

—अनुवादक, श्री सुमंगल प्रकाश

"مگر اس بیچ تھیں کہاں تم ؟"

کئی شہروں کے نام اُنہوں نے بتائے—کچھ اِس طرح گویا بہت پہلے بھولی کسی بات کو یاد کرنے کی کوشش کر رہی ہیں . اور اِس بیچ برابر کسی باز کی طرح سارے کمرے میں بغیر ذرا بھی آواز کئے چکر کاٹتی رہیں .

"وہ پوشاک کہاں سے ملی ؟"

"میں نے ہی بنائی ہے . اپنے سارے کپڑے میں ہی بناتی ہوں ."

یہ سوچکر مجھے اچھا لگ رہا تھا کہ وہ اوروں سے مختلف ہیں . لیکن افسوس یہی تھا کہ وہ بولتی بہت ہی کم تھیں . جب تک میں کچھ پوچھتا نہیں تھا تب تک عموماً وہ چپ ہی سادھے رہتی تھیں .

اب وہ پھر آکر میرے پاس کوچ پر بیٹھ گئیں اور چپ چاپ، ایک دوسرے سے چپٹے ہم دونوں اُسی طرح بیٹھے رہے—جب تک کہ نانا-نانی لوٹ نہیں آئے . وہ لوگ جب آئے تب اُن میں سے موم اور دھوپ بتی کی مہک آرہی تھی، اور ایک عجیب سی سنجیدگی اور مٹھاس تھی اُن کے برتاؤ میں .

رات کا کھانا ہم لوگوں نے تیوہاروں کے دن کی طرح کھایا—ویسی ہی سنجیدگی کے ساتھ اور کھاتے وقت بہت ہی کم بولے اور اِتنے دھیرے دھیرے گویا بہت ہی ہلکی نیند کوئی سو یا ہوا ہے، جس کے جگ جانے کا ڈر ہے .

—انوادک، شری سومنگل پرکاش .

एक पागल आदमी की डायरी

श्री लुइ सुन

दो भाई थे. यहाँ उनके नाम बताना ज़रूरी नहीं हैं. मिडिल स्कूल में वे दोनों मेरे गहरे दोस्त रह चुके थे. लेकिन इधर पिछले बहुत वर्षों से हम लोग अलग-अलग हो गये थे. इससे उन दोनों भाइयों के बारे में मिलने वाले समाचार भी बराबर कम होते गये । लेकिन कुछ दिन पहले, अचानक मुझे ख़बर मिली कि उनमें से एक बहुत बीमार हो गया था. इसलिये जब मैं अपनी जन्म-भूमि वापस आया तो विशेषतया उन्हें देखने गया. वहाँ बड़े भाई ने मेरा स्वागत किया और यह बताया कि उसका छोटा भाई बीमार था, अपने घर पर आने के लिये उसने मुझे धन्यवाद

ایک پاگل آدمی کی ڈائری

شری لوئی سن

دو بھائی تھے . یہاں اُن کے نام بتانا ضروری نہیں ہیں . مڈل اسکول میں وے دونوں میرے گہرے دوست رہ چکے تھے . لیکن اِدھر پچھلے بہت ورشوں سے ہم لوگ الگ الگ ہو گئے تھے . اِس سے اُن دونوں بھائیوں کے بارے میں ملنے والے سماچار بھی برابر کم ہوتے گئے . لیکن کچھ دن پہلے، اچانک مجھے خبر ملی کہ اُن میں سے ایک بہت بیمار ہو گیا تھا . اِس لئے جب میں اپنی جنم بھومی واپس آیا تو وشیشتیا اُنہیں دیکھنے گیا . وہاں بڑے بھائی نے میرا سواگت کیا اور یہ بتایا کہ اُس کا چھوٹا بھائی بیمار تھا . اپنے گھر پر آنے کے لئے اُس نے مجھے دھنیہ واد

और कुछ देर तक वह संजीदगी और कड़ाई के साथ मुझसे बातें करती रहीं; लेकिन उन्होंने जो कुछ कहा वह मेरी समझ में नहीं आया और वह उठ खड़ी हुई और अपनी ठोड़ी पर उँगलियाँ मारती हुईं कमरे में टहलने लगीं—उनकी घनी भौंहें कभी तन जातीं, कभी ढीली पड़ जातीं.

मेज़ पर जलती हुई मोमबत्ती पिघलती चली जा रही थी और शीशे में उसका अक्स जगमगा रहा था, फ़र्श पर काली-काली परछाइयाँ लोट रही थीं, कोने में मूर्ति के आगे रोशनी जल रही थी और बर्फ़ से ढकी हुई खिड़कियों के शीशों पर चाँदनी ने चाँदी कर दी थी. माँ चारों तरफ़ इस तरह देख रही थीं गोया नङ्गी दीवारों या छत पर कुछ ढूँढ़ रही हों.

"सोने का क्या वक्त है तेरा ?"

"थोड़ी देर और रहने दो मुझे यहाँ !"

"ओ हाँ, आज दिन में भी तो थोड़ा सो लिया है", उन्हें याद आया.

"क्या तुम फिर चली जाना चाहती हो ?" मैं उनसे पूछ बैठा.

"कहाँ ?" वह चौंक सी पड़ीं, और मेरा सिर ऊपर को उठाकर मेरी तरफ़ इतनी देर तक ताकती रहीं कि मेरी आँखों में आँसू आ गये.

"क्या बात है रे ?" उन्होंने पूछा.

"गरदन दुख रही है".

दिल भी दुख रहा था मेरा, क्योंकि यकायक मैं यह समझ गया था कि वह हमारे घर नहीं रहेंगी और फिर चली जायेंगी.

"अपने बाप-सा होता जा रहा है तू", पायदान को ठोकर से एक तरफ़ को हटाते हुए वह बोलीं. "उनके बारे में कुछ बताया है तुझे—तेरी नानी ने ?"

"हाँ".

"वह मैक्सिम को बहुत प्यार करती थीं—बहुत ही ज्यादा. और वह भी उन्हें प्यार करते थे—"

"मैं जानता हूँ."

माँ मोमबत्ती की तरफ़ देखने लगीं और उनकी भौंहें सिकुड़ गईं. फिर उन्होंने उसे बुझा दिया और कहा—"अब ठीक है."

सचमुच इससे हवा में ताज़गी और उम्दगी आ गई, और काली-काली परछाइयाँ ग़ायब हो गईं. जगह-जगह फ़र्श पर तेज़ दूधिया रोशनी बिखर गई और खिड़की के शीशों पर सुनहरे दाने चमक उठे.

اور کچھ دیر تک وہ سنجیدگی اور کڑائی کے ساتھ مجھسے باتیں کرتی رہیں؛ لیکن اُنھوں نے جو کچھ کہا وہ میری سمجھ میں نہیں آیا اور وہ اُٹھ کھڑی ہوئیں اور اپنی ٹھوڑی پر اُنگلیاں مارتی ہوئیں کمرے میں ٹہلنے لگیں—اُن کی گھنی بھونہیں کبھی تن جاتیں، کبھی ڈھیلی پڑ جاتیں۔

میز پر جلتی ہوئی موم بتی پگھلتی چلی جا رہی تھی اور شیشے میں اُس کا عکس جگمگا رہا تھا، فرش پر کالی کالی پرچھائیاں لوٹ رہی تھیں۔ کونے میں مورتی کے آگے روشنی جل رہی تھی اور برف سے ڈھکی ہوئی کھڑکیوں کے شیشوں پر چاندنی نے چاندی کر دی تھی۔ ماں چاروں طرف اِس طرح دیکھ رہی تھیں گویا ننگی دیواروں یا چھت پر کچھ ڈھونڈھ رہی ہوں۔

"سونے کا کیا وقت ہے تیرا ؟"

"تھوڑی دیر اور رہنے دو مجھے یہاں !"

"او ہاں، آج دن میں بھی تو تھوڑا سو لیا ہے،" انھیں یاد آیا۔

"کیا تم پھر چلی جانا چاہتی ہو ؟" میں اُن سے پوچھ بیٹھا۔

"کہاں ؟" وہ چونک سی پڑیں، اور میرا سر اُوپر کو اُٹھا کر میری طرف اِتنی دیر تک تاکتی رہیں کہ میری آنکھوں میں آنسو آ گئے۔

"کیا بات ہے رے ؟" انھوں نے پوچھا۔

"گردن دکھ رہی ہے۔"

دل بھی دکھ رہا تھا میرا، کیونکہ یکایک میں یہ سمجھ گیا تھا کہ وہ ہمارے گھر نہیں رہینگی اور پھر چلی جائیں گی۔

"اپنے باپ-سا ہوتا جا رہا ہے تو۔" پائدان کو ٹھوکر سے ایک طرف کو ہٹاتے ہوئے وہ بولیں—"اُن کے بارے میں کچھ بتایا ہے تجھے—تیری نانی نے۔"

"ہاں۔"

"وہ میکسم کو بہت پیار کرتی تھیں—بہت ہی زیادہ۔

اور وہ بھی انھیں پیار کرتے تھے—"

"میں جانتا ہوں۔"

ماں موم بتی کی طرف دیکھنے لگیں اور اُن کی بھو نہیں سکڑ گئیں۔ پھر اُنھوں نے اُسے بجھا دیا اور کہا—"اب ٹھیک ہے۔"

سچ مچ اِس سے ہوا میں تازگی اور عمدگی آ گئی، اور کالی کالی پرچھائیاں غایب ہو گئیں۔ جگہہ جگہہ فرش پر تیز دودھیا روشنی بکھر گئی اور کھڑکی کے شیشوں پر سنہرے دانے چمک اُٹھے۔

शाम को नाना जी और नानी अपनी मर्ज़ी से उम्दा पोशाक पहनकर 'वेस्पर्स' की दुआ के लिये गिरजाघर चल दिए. नानाजी रंगसाज़ों के मुखिया की अपनी वर्दी में चमचमा रहे थे, जिसके ऊपर रोयेंदार ऊनी लबादा पड़ा हुआ था, और उनकी तोंद शान के साथ बाहर को निकली हुई थी. चुलबुलाहट के साथ उनकी तरफ़ आँखों का इशारा करके नानी मेरी माँ से बोलीं—"ज़रा देख तो बाबू जी को! कितने शानदार लग रहे हैं न?—छोटे से बकरे की तरह फुरतीले". और माँ खिलखिला कर हँस पड़ीं.

जब माँ के कमरे में उनके साथ मैं अकेला रह गया तब वह कोच के ऊपर पालथी मार कर बैठ गईं और अपनी बग़ल की तरफ़ इशारा करती हुई बोलीं—"आ, यहाँ बैठ जा. अच्छा बता कैसा लगता है तुझे यहाँ? अच्छा नहीं लगता, क्यों?"

"कैसा लगता है मुझे यहाँ?" कैसा सवाल था यह! मैंने जवाब दिया—"मैं क्या जानूँ".

"नाना जी पीटते हैं तुझे, क्यों?"

"अब उतना नहीं पीटते!"

"ओह?—अच्छा, अब मुझे अपनी सारी बातें सुना—जो कुछ कहना चाहता हो कह डाल—हाँ, तो?"

नाना जी के बारे में मैं उनसे कुछ नहीं कहना चाहता था. इसलिये मैं उन्हें उस भले आदमी की बातें सुनाने लगा जो ऊपर की कोठरी में रहा करता था और जो किसी को भी अच्छा नहीं लगता था और नाना जी ने जिसे निकाल दिया था. पर मैं समझ गया कि यह बातें उन्हें अच्छी नहीं लग रही थीं, क्योंकि वह बोलीं—"ठीक, और बातें सुना".

उन तीन लड़कों की बात मैंने कही और किस तरह उस कर्नल ने अपने अहाते से मुझे निकाल बाहर किया था, यह भी सुनाया. और यह सब सुनते-सुनते उन्होंने मुझे अपनी बाँहों में और भी कस लिया.

"यह क्या बेहूदा बातें!" उनकी आँखें जल उठीं, और एक मिनट तक फ़र्श की तरफ़ वह चुपचाप ताकती रहीं.

"नाना जी क्यों बिगड़ रहे थे तुमसे?" मैंने पूछा.

"क्योंकि मैंने ग़लती की है, उनके हिसाब से".

"कि उस बच्चे को यहाँ नहीं लाईं तुम—?"

वह गोया आसमान से गिरीं—एकदम चौंक पड़ीं, भौंहें सिकुड़ गईं और अपने होंट काटने लगीं. फिर क़ह-क़हा मारकर हँस पड़ीं और मुझे और भी कसकर चिपटा के बोलीं—"तू तो बड़ा शैतान है रे! देख ख़बरदार, कभी किसी से नहीं कहना यह बात, समझा? कभी मुँह से न निकले—बस, भूल ही जा कि कभी यह बात सुनी थी".

شام کو نانا جی اور نانی اپنی مرضی سے عمدہ پوشاک پہن کر 'ویسپرس' کی دعا کے لئے گرجا گھر چل دیئے۔ نانا جی رنگسازوں کے مکھیا کی اپنی وردی میں چمچما رہے تھے' جس کے اوپر روئیں دار اونی لبادہ پڑا ہوا تھا' اور ان کی توند شان کے ساتھ باہر کو نکلی ہوئی تھی۔ چلبلاہٹ کے ساتھ ان کی طرف آنکھوں کا اشارہ کر کے نانی میری ماں سے بولیں— "ذرا دیکھ تو بابو جی کو! کتنے شاندار لگ رہے ہیں نہ؟— چھوٹے سے بکرے کی طرح پھرتیلے۔" اور ماں کھلکھلا کر ہنس پڑیں۔

جب ماں کے کمرے میں ان کے ساتھ میں اکیلا رہ گیا تب وہ کوچ کے اوپر پالتھی مار کر بیٹھ گئیں اور اپنی بغل کی طرف اشارہ کرتی ہوئی بولیں—"آ' یہاں بیٹھ جا۔ اچھا بتا کیسا لگتا ہے تجھے یہاں؟ اچھا نہیں لگتا' کیوں؟"

"کیسا لگتا ہے مجھے یہاں؟ کیا سوال تھا یہ! میں نے جواب دیا—"میں کیا جانوں۔"

نانا جی پیٹتے ہیں تجھے' کیوں؟"

"اب اتنا نہیں پیٹتے!'

"اوہ؟—اچھا' اب مجھے اپنی ساری باتیں سنا—جو کچھ کہنا چاہتا ہو کہہ ڈال—ہاں' تو؟"

نانا جی کے بارے میں میں ان سے کچھ نہیں کہنا چاہتا تھا۔ اس لئے میں انہیں اس بھلے آدمی کی باتیں سنانے لگا جو اوپر کی کوٹھری میں رہا کرتا تھا اور جو کسی کو بھی اچھا نہیں لگتا تھا اور ناناجی نے جسے نکال دیا تھا۔ پر میں سمجھ گیا کہ یہ باتیں انہیں اچھی نہیں لگ رہی تھیں' کیونکہ وہ بولیں—"ٹھیک' اور باتیں سنا۔"

ان تین لڑکوں کی بات میں نے کہی اور کس طرح اس کرنل نے اپنے احاطے سے مجھے نکال باہر کیا تھا' یہ بھی سنایا۔ اور یہ سب سنتے سنتے انہوں نے مجھے اپنی بانہوں میں اور بھی کس لیا۔

'یہ کیا بیہودہ باتیں!" ان کی آنکھیں جل اٹھیں' اور ایک منٹ تک فرش کی طرف وہ چپ چاپ تاکتی رہیں۔

"نانا جی کیوں بگڑ رہے تھے تم سے؟" میں نے پوچھا۔

"کیونکہ میں نے غلطی کی ہے' ان کے حساب سے۔"

"کہ اس بچے کو یہاں نہیں لائیں تم—؟"

وہ گویا آسمان سے گریں—ایکدم چونک پڑیں' بھونہیں سکڑ گئیں اور اپنے ہونٹ کاٹنے لگیں۔ پھر قہقہہ مار کر ہنس پڑیں اور مجھے اور بھی کس کر چپٹا کے بولیں—"تو تو بڑا شیطان ہے رے! دیکھ خبردار' کبھی کسی سے نہیں کہنا یہ بات' سمجھا؟ کبھی منہ سے نہ نکلے—بس' بھول ہی جا کہ کبھی یہ بات سنی تھی۔"

अब मैं अपने को रोक नहीं सका—मेरे आँसू किसी तरह भी नहीं रुक रहे थे—और मैं तन्दूर पर से नीचे कूद पड़ा और उनके पास दौड़ गया. मेरी आँखों से ख़ुशी के आँसू बह रहे थे—यह देखकर कि इतनी अजीब और गहरी मोहब्बत के साथ नाना-नानी एक दूसरे से गुफ़्तगू कर रहे हैं और मेरे आँसू इसलिये भी बह रहे थे कि उनकी बातें सुनकर मुझे रंज हो रहा था, और इसलिए भी कि मेरी माँ आ गई थीं और फिर आख़िर में इसलिए भी कि उन्होंने मुझे—आँसुओं समेत लेकर अपनी छाती से लगा लिया. उन्होंने मुझे कसकर चिपटा लिया और मेरे साथ ख़ुद भी रोने लगे.

बड़ी धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हुए से नाना जी मुझसे कहने लगे—"तो तू यहाँ था, शैतान की दुम ! ले, तेरी माँ फिर आ गई है और अब तो हमेशा तू उसी के पीछे लगा फिरेगा न, क्यों ? और बूढ़े खूसट नाना जी अब जाँय भाड़ में ! है न यही बात ? और नानी ने तो बिलकुल चौपट ही कर दिया है तुझे...सो वह भी नहीं चाहिये अब—क्यों ? धत तेरे की !"

हमें हटाकर वह उठ खड़े हुए और ऊँची आवाज़ में गुस्से के साथ बोले—सबके सब छोड़ते जा रहे हैं हमें—सब मुँह फेरे ले रहे हैं हमारी तरफ़ से,—तो फिर बुला लाओ उसे अब, देर क्यों करती हो ? जल्दी करो !"

नानी बावरचीख़ाने से चली गईं, और नाना जी कोने में जाकर सिर झुकाए खड़े हो गए.

"या ख़ुदाए करीम !" उन्होंने बुदबुदाना शुरू किया "देख—तू तो हमारे दिल की सब जानता है !" और अपने सीने पर उन्होंने एक घूँसा मारा.

यह सब मुझे अच्छा नहीं लगा. असल में ख़ुदा से दुआ करने का उनका तरीक़ा ही मुझे बहुत बुरा लगता था, क्योंकि अपने बनाने वाले के आगे भी गोया वह अपने ही को बड़ा समझते थे.

जब माँ अन्दर आईं तब उनकी लाल पोशाक से सारा बावरचीख़ाना रोशन हो गया, और जब वह मेज़ के आगे नाना जी और नानी के बीच में बैठ गईं तब उनकी पोशाक की चौड़ी-चौड़ी ढीली बाँहें नाना जी और नानी जी के कन्धों पर लहराने लगीं. वह अहिस्ता-अहिस्ता संजीदगी के साथ कुछ सुनाने लगीं, और वे दोनों भी चुपचाप, बीच में दख़ल देने की कोशिश किए बग़ैर, इस तरह मेरी माँ की बात सुनने लगे गोया वही उनकी माँ है और वे उनके बच्चे !

जोश के सबब से मैं इतना थक गया था कि कोच पर बैठे-बैठे ही मुझे गहरी नींद आ गई.

اب میں اپنے کو روک نہیں سکا—میرے آنسو کسی طرح بھی نہیں رک رہے تھے—اور میں تندور پر سے نیچے کود پڑا اور اُن کے پاس دوڑ گیا۔ میری آنکھوں سے خوشی کے آنسو بہہ رہے تھے—یہ دیکھ کر کہ اِتنی عجیب اور گہری محبت کے ساتھ نانا نانی ایک دوسرے سے گفتگو کر رہے ہیں اور میرے آنسو اِس لئے بھی بہہ رہے تھے کہ اُن کی باتیں سن کر مجھے رنج ہو رہا تھا' اور اس لئے بھی کہ میری ماں آگئی تھیں' اور پھر آخیر میں اِس لئے بھی کہ انہوں نے مجھے—آنسوؤں سمیت لیکر اپنی چھاتی سے لگا لیا۔ اُنہوں نے مجھے کس کر چپٹا لیا اور میرے ساتھ خود بھی رونے لگے۔

بڑی دھیمی آواز میں بدبداتے ہوئے سے نانا جی مجھسے کہنے لگے—"تو تو یہاں تھا' شیطان کی دم ! لے تیری ماں پھر آگئی ہے اور اب تو ہمیشہ تو اُسی کے پیچھے لگا پھریگا نہ' کیوں ؟ اور بوڑھے کھوسٹ نانا جی اب جائیں بھاڑ میں ! ہے نہ یہی بات ؟ اور نانی نے تو بالکل چوپٹ ہی کر دیا ہے تجھے......سو وہ بھی نہیں چاہئے اب—کیوں ؟ دھت تیرے کی !"

ہمیں ہٹا کر وہ اُٹھ کھڑے ہوئے اور اونچی آواز میں غصہ کے ساتھ بولے—"سب کے سب چھوڑتے جا رہے ہیں ہمیں—سب منھ پھیرے لے رہے ہیں ہماری طرف سے۔ —تو پھر بلا لاؤ اسے اب' دیر کیوں کرتی ہو ؟ جلدی کرو !"

نانی باورچی خانے سے چلی گئیں' اور نانا جی کونے میں جا کر سر جھکائے کھڑے ہو گئے۔

"یا خدائے کریم !" اُنہوں نے بدبدانا شروع کیا "دیکھ—تو تو ہمارے دل کی سب جانتا ہے !" اور اپنے سینے پر انہوں نے ایک گھونسہ مارا۔

یہ سب مجھے اچھا نہیں لگا۔ اصل میں خدا سے دعا کرنے کا اُن کا طریقہ ہی مجھے بہت برا لگتا تھا' کیونکہ اپنے بنانے والے کے آگے بھی گویا وہ اپنے ہی کو بڑا سمجھتے تھے۔

جب ماں اندر آئیں تب ان کی لال پوشاک سے سارا باورچی خانہ روشن ہو گیا' اور جب وہ میز کے آگے نانا جی اور نانی کے بیچ میں بیٹھ گئیں تب ان کی پوشاک کی چوڑی چوڑی ڈھیلی باہیں نانا جی اور نانی جی کے کندھوں پر لہرانے لگیں۔ وہ آہستہ آہستہ سنجیدگی کے ساتھ کچھ سنانے لگیں' اور وہ دونوں بھی چپ چاپ' بیچ میں دخل دینے کی کوشش کئے بغیر' اِس طرح میری ماں کی بات سننے لگے گویا وہی اُن کی ماں ہے اور وے ان کے بچے !

جوش کے سبب سے میں اِتنا تھک گیا تھا کہ کوچ پر بیٹھے بیٹھے ہی مجھے گہری نیند آ گئی۔

"बाबू जी' माफ़ कर दो उसे! ईसामसीह के लिये, माफ़ कर दो उसे! क्या इस तरह उसे छोड़ ही दोगे बिलकुल? क्या तुम्हारा ख्याल है कि बड़े आदमियों और रईसों के घर ऐसी बातें नहीं होतीं? जानते हो कि औरतें कैसी होती हैं. देखो, माफ़ करदो उसे इस बार! ग़लती किससे नहीं होती बाबू जी?"

नाना जी ने दीवार के सहारे अपनी पीठ टेककर नानी की तरफ़ देखा. और फिर कड़वी हँसी हँसकर—हँसे क्या, रोना भरा था बस हँसी में—वह भुनभुना उठे—"और? फिर इसके बाद? कोई भी है ऐसी ग़लती जो तुम माफ़ न कर दो? क्यों? अगर तुम्हारी चल सके तो सभी को माफ़ी मिल जाया करे…धत् तेरे की."

और नानी के ऊपर झुककर, उनके दोनों कंधे पकड़कर वह उन्हें हिलाने लगे और जल्दी-जल्दी फुसफुसाते हुए बोले—"लेकिन तुम क्यों इतनी परेशान हो? मेरे अन्दर रहम नहीं रह गया है ज़रा भी. देखो न, बिलकुल क़ब्र में पैर लटकाए बैठे हैं हम लोग, फिर भी इस बुढ़ापे में सज़ा ही सज़ा भुगतनी पड़ रही है! न ज़रा भी चैन मिल पाता है न सुख… और न कभी मिलेगा अब…और इसके अलावा…देख लेना तुम!…मरने के पहले भीख माँगने की नौबत आएगी—हाँ भीख!"

नानी ने उनका हाथ अपने हाथ में ले लिया, और उनकी बग़ल में बैठी-बैठी धीरे-धीरे हँसती हुई बोलीं—"अरे, छिः छिः! तो भीख माँगने से घबड़ाते हो तुम? अच्छा मान लो, इस भीख माँगने की ही नौबत आ गई! तुम्हें कुछ नहीं करना पड़ेगा तब, तुम घर में बैठे रहा करना और मैं भीख माँग लाया करूँगी.—हमारा घर तब भी भरा-पूरा रहेगा; इसकी फ़िक्र तुम बिलकुल छोड़ दो!"

वह अचानक क़हक़हा मारकर हँस पड़े और बकरे की तरह अपना सिर हिलाने लगे और फिर उन्होंने नानी की गरदन पकड़कर उन्हें अपने सीने से लगा लिया, बिलकुल ज़रा से और सिकुड़े-सिकुड़ाए से लग रहे थे वह नानी की बग़ल में!

"ओह, कैसी नादान हो तुम," वह बोल उठे "कितनी भोली भाली!—बस, अब तुम्हीं तो एक मेरी रह गई हो! तुम समझती नहीं हो न कुछ, इसीलिये किसी भी बात की घबड़ाहट नहीं होती तुम्हें. लेकिन पीछे तो फिर कर देखो ज़रा—और सोचो तो, कि कितनी मेहनत की है तुमने और मैंने इनके लिये—कैसे-कैसे गुनाह तक किये हैं मैंने इनकी ख़ातिर—लेकिन फिर भी, इतना करने पर भी, आज—"

"بابو جی' معاف کر دو اُسے! عیسیٰ مسیح کے لئے' معاف کر دو اُسے! کیا اِس طرح اُسے چھوڑ ہی دو گے بالکل؟ کیا تمہارا خیال ہے کہ بڑے آدمیوں اور رئیسوں کے گھر ایسی باتیں نہیں ہوتیں؟ جانتے ہو کہ عورتیں کیسی ہوتی ہیں۔ دیکھو' معاف کر دو اُسے اس بار! غلطی کس سے نہیں ہوتی بابو جی؟"

نانا جی نے دیوار کے سہارے اپنی پیٹھ ٹیک کر نانی کی طرف دیکھا۔ اور پھر کڑوی ہنسی ہنسکر— ہنسے کیا' رونا بھرا تھا اُس ہنسی میں— وہ بھنبھنا اُٹھے—"اور؟ پھر اِس کے بعد؟ کوئی بھی ہے ایسی غلطی جو تم معاف نہ کر دو؟ کیوں؟ اگر تمہاری چل سکے تو سبھی کو معافی مل جایا کرے……دھت تیرے کی۔"

اور نانی کے اوپر جھک کر' اُن کے دونوں کندھے پکڑ کر وہ اُنہیں ہلانے لگے اور جلدی جلدی پھسپھساتے ہوئے بولے—"لیکن تم کیوں اِتنی پریشان ہو؟ میرے اندر رحم نہیں رہ گیا ہے ذرا بھی۔ دیکھو نہ' بالکل قبر میں پیر لٹکائے بیٹھے ہیں ہم لوگ' پھر بھی اِس بڑھاپے میں سزا ہی سزا بھگتنی پڑ رہی ہے! نہ ذرا بھی چین مل پاتا ہے نہ سکھ…اور نہ کبھی ملیگا اب…اور اِس کے علاوہ…دیکھ لینا تم…مرنے کے پہلے بھیک مانگنے کی نوبت آئیگی—ہاں بھیک!"

نانی نے اُن کا ہاتھ اپنے ہاتھ میں لے لیا' اور اُن کی بغل میں بیٹھی بیٹھی دھیرے دھیرے ہنستی ہوئی بولیں—"ارے' چھی چھی! تو بھیک مانگنے سے گھبراتے ہو تم؟ اچھا مان لو' اِس بھیک مانگنے کی ہی نوبت آگئی! تمہیں کچھ نہیں کرنا پڑیگا تب' تم گھر میں بیٹھے رہا کرنا اور میں بھیک مانگ لایا کرونگی۔—ہمارا گھر تب بھی بھرا پورا رہیگا' اِس کی فکر تم بالکل چھوڑ دو!"

وہ اچانک قہقہہ مار کر ہنس پڑے اور بکرے کی طرح اپنا سر ہلانے لگے۔ اور پھر اُنہوں نے نانی کی گردن پکڑ کر اُنہیں اپنے سینے سے لگا لیا' بالکل ذرا سے اور سکڑے سکڑائے سے لگ رہے تھے وہ نانی کی بغل میں!

"اوہ' کیسی نادان ہو تم۔" وہ بول اُٹھے' "کتنی بھولی بھالی!—بس' اب تمہیں تو ایک میری رہ گئی ہو! تم سمجھتی نہیں ہو نہ کچھ' اِسی لئے کسی بھی بات کی گھبراہٹ نہیں ہوتی تمہیں۔ لیکن پیچھے تو پھر کر دیکھو ذرا—اور سوچو تو' کہ کتنی محنت کی ہے تم نے اور میں نے اِن کے لئے— کیسے کیسے گناہ تک کئے ہیں میں نے اِن کی خاطر—لیکن پھر بھی' اِتنا کرنے پر بھی' آج—"

आँख ही आँख और कान ही कान हैं. मेरे सीने के अन्दर न जाने कैसा होने लगा और मेरी बड़ी ज़बरदस्त ख़्वाहिश हुई कि चीख़ उठूँ.

"लेक्सी तू जा यहाँ से !" नाना जी ने रुखाई के साथ मुझसे कहा ।

"क्यों ?" मेरी माँ ने मुझे फिर अपनी तरफ़ खींचते हुए उनसे पूछा. "नहीं, तू यहाँ से नहीं जाएगा. मैं मना कर रही हूँ." और किसी गुलाबी बादल की तरह उठकर मेरी माँ धीरे-धीरे नाना जी के पीछे जा खड़ी हुईं.

"ज़रा सुनो तो बाबू जी—"

नाना जी उनकी तरफ़ मुड़कर चीख़ उठे—

"चुप रह."

"अपनी ज़बान को क़ाबू में रखिये, बाबू जी." संजीदगी से माँ ने जवाब दिया.

नानी कोच पर से उठ खड़ी हुईं और अपनी उँगली दिखाते हुए उन्हों ने माँ को टोका—"यह क्या' वारवारा ?"

और नाना भी बुड़बुड़ाते हुए बैठ गए—"अच्छा ठैरो तो ज़रा ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि किसने—? क्यों ? कौन था वह ?……कैसे हुआ यह सब ?"

और अचानक ऐसी आवाज़ में, जो उनकी नहीं मालूम पड़ती थी, वह गरज उठे—"मेरा मुँह काला कर दिया तूने" वारका !"

"भाग यहाँ से !" नानी मुझसे बोलीं, और मैं बावरचीख़ाने में जा छुपा. ऐसा लग रहा था गोया मेरा दम घुटा जा रहा है. तन्दूरी चूल्हे के ऊपर मैं जा चढ़ा, और बहुत देर तक वहाँ बैठा-बैठा उन लोगों की बात-चीत सुनता रहा, जो बीच के दीवार के बावजूद सुनाई पड़ रही थी. या तो वे सब के सब एक साथ बोलने लगते थे, और या बड़ी देर तक बिल्कुल चुप रहते, गोया सो गये हों. उन लोगों की बातचीत का मज़मून था कोई बच्चा, जो हाल ही में मेरी माँ के पैदा हुआ था और किसी के यहाँ छोड़ दिया गया था. लेकिन मैं यह नहीं समझ सका कि नाना जी की नाराज़ी किस बात पर थी—उनसे बग़ैर पूछे बच्चा पैदा किया गया इस पर या इसलिये कि वह उस बच्चे को नाना जी के यहाँ नहीं लाईं.

बाद को वह बावरचीख़ाने में चले आए. उनके बाल बिखरे हुए थे, चेहरा नीला सा पड़ रहा था, और बेहद थके दिखाई दे रहे थे. उनके पीछे नानी भी आ पहुँचीं, अपने गालों पर बहते हुए आँसुओं को कुरते से पोंछती हुई. नाना जी एक बेंच पर ऊपर पैर करके बैठ गए और अपने हाथ भी उसी पर टेककर कांपते कांपते अपने पीले पड़े हुए होंटों को काटने लगे. और नानी उनके आगे घुटनों के बल झुक गईं और सुकून के साथ लेकिन ज़ोर देकर बोलीं—

آنکھ ہی آنکھ اور کان ہی کان ہیں۔ میرے سینے کے اندر نہ جانے کیسا ہونے لگا اور میری زبردست خواہش ہوئی کہ چیخ اٹھوں۔

"لیکسی' تو جا یہاں سے!" ناناجی نے رکھائی کے ساتھ مجھسے کہا!

"کیوں؟" میری ماں نے مجھے پھر اپنی طرف کھینچتے ہوئے اُن سے پوچھا۔ "نہیں' تو یہاں سے نہیں جائیگا۔ میں منع کر رہی ہوں۔" اور کسی گلابی بادل کی طرح اُٹھ کر میری ماں دھیرے دھیرے نانا جی کے پیچھے جا کھڑی ہوئیں۔

"ذرا سنو تو بابو جی—"

"نانا جی اُن کی طرف مڑ کر چیخ اُٹھے—

"چپ رہ۔"

"اپنی زبان کو قابو میں رکھئیے' بابو جی۔" سنجیدگی سے ماں نے جواب دیا۔

نانی کوچ پر سے اُٹھ کھڑی ہوئیں اور اپنی اُنگلی دکھاتے ہوئے انہوں نے ماں کو ٹوکا—"یہ کیا' واروارا؟"

اور نانا بھی بڑبڑاتے ہوئے بیٹھ گئے—"اچھا ٹھہرو تو ذرا! میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ کسنے—؟ کیوں؟ کون تھا وہ؟... کیسے ہوا یہ سب؟"

اور اچانک ایسی آواز میں' جو اُن کی نہیں معلوم پڑتی تھی' وہ گرج اُٹھے۔ "میرا منھ کالا کر دیا تونے' وارکا!"

"بھاگ یہاں سے!" نانی مجھ سے بولیں' اور میں باورچی خانے میں جا چھپا۔ ایسا لگ رہا تھا گویا میرا دم گھٹا جا رہا ہے۔ تندوری چولہے کے اوپر میں جا چڑھا' اور بہت دیر تک وہاں بیٹھا بیٹھا اُن لوگوں کی بات چیت سنتا رہا' جو بیچ کی دیوار کے باوجود سنائی پڑ رہی تھی۔ یا تو وے سب کے سب ایک ساتھ بولنے لگتے تھے' اور یا بڑی دیر تک بالکل چپ رہتے' گویا سو گئے ہوں۔ اُن لوگوں کی بات چیت کا مضمون تھا کوئی بچہ' جو حال ہی میں میری ماں کے پیدا ہوا تھا اور کسی کے یہاں چھوڑ دیا گیا تھا۔ لیکن میں یہ نہیں سمجھ سکا کہ نانا جی کی ناراضی کس بات پر تھی—اُن سے بغیر پوچھے بچہ پیدا کیا گیا اِس پر یا اِس لئے کہ وہ اُس بچے کو نانا جی کے یہاں نہیں لائیں۔

بعد کو وہ باورچی خانے میں چلے آئے' اُن کے بال بکھرے ہوئے تھے' چہرہ نیلا سا پڑ رہا تھا اور بےحد تھکے ہوئے دکھائی دے رہے تھے۔ اُن کے پیچھے پیچھے نانی بھی آ پہونچیں' اپنے گالوں پر بہتے ہوئے آنسوؤں کو کرتے سے پونچھتی ہوئی۔ نانا جی ایک بینچ پر اوپر پیر کر کے بیٹھ گئے اور اپنے ہاتھ بھی اُسی پر ٹیک کر کانپتے کانپتے اپنے پیلے پڑے ہوئے ہونٹوں کو کاٹنے لگے۔ اور نانی اُن کے آگے گھٹنوں کے بل جھک گئیں اور سکون کے ساتھ لیکن زور دیکر بولیں—

उतार कर वह देहलीज़ के उधर फेंकती जाती थीं और हिक़ारत से अपने लाल-लाल होंट सिकोड़े लगातार बोलती ही चली जा रही थीं—"बोलता क्यों नहीं है तू ? ख़ुशी नहीं हुई तुझे मेरे आने की ? उफ़ ! कैसी गन्दी है यह क़मीज़......"

फिर उन्होंने बतख़ की चरबी से मेरे कान मलने शुरू किये जिससे मुझे तकलीफ़ होने लगी, लेकिन इतनी बढ़िया ख़ुशबू निकल रही थी उनके कपड़ों से उस वक़्त कि तकलीफ़ जितनी हो रही थी उससे कम मालूम हुई.

मैं उनकी आँखों की तरफ़ ताकता हुआ उनसे चिपटता ही चला जा रहा था. ख़ौफ़ के सबब मेरे मुँह से आवाज़ नहीं निकल पा रही थी. और उनके अल्फ़ाज़ के साथ-साथ बीच-बीच में नानी की दुखभरी आवाज़ मेरे कानों तक पहुँच रही थी—"इतनी मनमानी करने लगा है यह...ज़रा किसी की नहीं सुनता. अपने नाना तक से नहीं डरता, ज़रा भी......अरी वारिया ! वारिया !"

"क्यों पैं-पैं कर रही हो माँ, चुप भी रहो. इस तरह बक-बक करके क्या कर लोगी ?"

सभी चीज़ें माँ के सामने छोटी लगने लगी थीं, रहम के क़ाबिल और बूढ़ी ! मैं ख़ुद भी बूढ़ा सा लगने लगा था, नाना जी की तरह बूढ़ा.

अपने घुटनों से मुझे चिपटा कर मेरे बालों पर अपना गरम-गरम, भारी हाथ फेरती हुई वह बोलीं—"किसी कड़े आदमी की देख-भाल में रखने की ज़रूरत है इसे. और अब स्कूल भी तो जाना चाहिये...कुछ सीखना चाहता है कि नहीं ? क्यों रे ?"

"मैं तो सब सीख चुका, जो जानना था."

"और भी थोड़ा-बहुत सीखना बाक़ी है रे !...अरे ! कितनी ताक़त आगई है तुझमें !" और मेरे साथ खेल-तमाशा करते हुए वह अपनी तेज़ मीठी आवाज़ में दिल खोलकर हसने लगीं.

उसी वक़्त नाना जी अन्दर दाख़िल हुए. उनका चेहरा एकदम सफ़ेद पड़ गया था, आँखें लाल हो रही थीं, और ग़ुस्से के मारे वह काँप रहे थे. मेरी माँ ने उन्हें देखते ही मुझे दूर हटा दिया और ऊँची आवाज़ में उनसे पूछा—"तो फिर क्या तय किया आपने बाबू जी ? मुझे नहीं रहने देंगे यहाँ ?"

नाना जी खिड़की के पास खड़े होकर अपनी उँगलियों के नाख़ूनों से शीशे पर जमी बरफ़ ख़ुरचने लगे, और बड़ी देर तक कुछ नहीं बोले. हालत बहुत ही नाज़ुक और तकलीफ़देह थी और, जैसा कि ऐसे संगीन मौक़ों पर मेरे साथ हमेशा होता था, मुझे लग रहा था गोया मेरे जिस्म भर में

اُتار کر وہ دہلیز کے اُدھر پھینکتی جاتی تھیں اور حقارت سے اپنے لال لال ہونٹ سکوڑے لگاتار بولتی ہی چلی جارہی تھیں—"بولتا کیوں نہیں ہے تو ؟ خوشی نہیں ہوئی تجھے میرے آنے کی ؟ اُف ! کیسی گندی ہے یہ قمیض..."

پھر اُنھوں نے بطخ کی چربی سے میرے کان ملنے شروع کئے جس سے مجھے تکلیف ہونے لگی ۔ لیکن اِتنی بڑھیا خوشبو نکل رہی تھی اُن کے کپڑوں سے اُس وقت کہ تکلیف جتنی ہو رہی تھی اُس سے کم معلوم ہوئی ۔

میں اُن آنکھوں کی طرف تاکتا ہوا اُن سے چپٹتا ہی چلا جا رہا تھا۔ خوف کے سبب میرے منھ سے آواز نہیں نکل پا رہی تھی ۔ اور اُن کے الفاظ کے ساتھ ساتھ بیچ بیچ میں نانی کی دکھ بھری آواز میرے کانوں تک پہونچ رہی تھی—"اِتنی من مانی کرنے لگا ہے یہ...ذرا کسی کی نہیں سنتا ۔ اپنے نانا تک سے نہیں ڈرتا، ذرا بھی...اری واریا ! واریا !"

"کیوں پیں پیں کر رہی ہو ماں، چپ بھی رہو۔ اِس طرح بک بک کر کے کیا کر لوگی ؟"

سبھی چیزیں ماں کے سامنے چھوٹی لگنے لگی تھیں، رحم کے قابل اور بوڑھی ! میں خود بھی بوڑھا سا لگنے لگا تھا، نانا جی کی طرح بوڑھا۔

اپنے گھٹنوں سے مجھے چپٹا کر میرے بالوں پر اپنا گرم گرم بھاری ہاتھ پھیرتی ہوئی وہ بولیں—"کسی کڑے آدمی کی دیکھ بھال میں رکھنے کی ضرورت ہے اِسے ۔ اور اب اِسکول بھی تو جانا چاہئے......کچھ سیکھنا چاہتا ہے کہ نہیں ؟ کیوں رے ؟"

"میں تو سب سیکھ چکا، جو جاننا تھا ۔"

"اور بھی تھوڑا بہت سیکھنا باقی ہے رے !...ارے ! کتنی طاقت آگئی ہے تجھ میں !" اور میرے ساتھ کھیل تماشا کرتے ہوئے وہ اپنی تیز میٹھی آواز میں دل کھولکر ھنسنے لگیں ۔

اِسی وقت نانا جی اندر داخل ہوئے ۔ اُن کا چہرہ ایکدم سفید پڑ گیا تھا، آنکھیں لال ہو رہی تھیں، اور غصہ کے مارے وہ کانپ رہے تھے ۔ میری ماں نے اُنھیں دیکھتے ہی مجھے دور ھٹا دیا اور اُونچی آواز میں اُن سے پوچھا—"تو پھر کیا طے کیا اپنے بابو جی ؟ مجھے نہیں رہنے دینگے یہاں ؟"

نانا جی کھڑکی کے پاس کھڑے ہو کر اپنی اُنگلیوں کے ناخونوں سے شیشے پر جمی برف کھرچنے لگے، اور بڑی دیر تک کچھ نہیں بولے ۔ حالت بہت ہی نازک اور تکلیف دہ تھی اور، جیسا کہ ایسے سنگین موقعوں پر میرے ساتھ ھمیشہ ہوتا تھا، مجھے لگ رہا تھا گویا میرے جسم بھر میں

मुझे यक़ीन नहीं आया, और अगर पादरी साहब ही हों तो वह किसी किराएदार के ही यहाँ आए होंगे.

"चल-चल!" कोचवान ने घोड़ों को हाँका, और उनकी पीठ पर कोड़ा फटकारते हुए मौज के साथ फिर सीटी बजाने लगा.

घोड़े मैदान को चीरते हुए दौड़ चले, और मैं खड़ा खड़ा उनकी तरफ़ ताकता रहा, फिर मैंने फाटक बन्द कर दिया. सूने पड़े बावरचीखाने में घुसते ही सबसे पहली आवाज़ मैंने अपनी माँ की सुनी. पास वाले कमरे में अपनी ज़ोरदार आवाज़ में वह कह रहीं थीं—"तो अब चाहते क्या हैं आप? मेरी जान लेंगे?"

अपनी ऊपरी पोशाक बदले बग़ैर ही मैं पिंजड़ों को पटक-पटकाकर दौड़ा हुआ बाहर के बरामदे में आया और नाना जी से टकरा गया. उन्होंने मेरी गरदन दबोच ली और अपनी खूँख्वार सी आँखें मेरे चेहरे पर गाड़ दीं, और बड़ी मुश्किल से एक घूँट सा सटक कर भारी गले से बोले—

"तेरी माँ फिर आ गई है......जा उसके पास...... ठैहरो......!" उन्होंने इतनी ज़ोर से मुझे झकझोर डाला कि मैं मुश्किल से गिरते-गिरते बचा और भीतर के दरवाज़े तक लुढ़कता चला गया. "चला जा......! जा......!"

मैं दरवाज़े से जा टकराया, जिस पर ऊन और मोमजामा चढ़ा हुआ था, लेकिन खटका गिराने में मुझे काफ़ी देर लग गई क्योंकि मेरा हाथ सर्दी से ठिठुरकर बिल्कुल सुन्न हो गया था और घबड़ाहट के मारे काँप रहा था. जब आख़ीर में मैं धीरे से अन्दर घुसा तो बिल्कुल ख़ौफ़ज़दा और अचंभे से भरा हुआ देहलीज़ पर ही रुक गया.

"यह आ गया!" मेरी माँ बोल उठी, "परमात्मा, कितना बड़ा हो गया है यह! क्यों, मुझे पहचानता नहीं है?......यह कैसे कपड़े पहनाए हैं इसे माँ?......और देखो तो, इसके कान बिल्कुल सफ़ेद पड़े जा रहे हैं! बतख़ की चरबी तो लाओ माँ, ज़रा जल्दी से."

कमरे के बीचोंबीच खड़ी वह मेरे ऊपर झुककर मेरी ऊपरी पोशाक उतारने लगीं और मुझे इस तरह उलट पलट कर देखने लगीं गोया मैं कोई गेंद हूँ. उनके लम्बे चौड़े बदन पर एक गरम, मुलायम, ख़ूबसूरत पोशाक थी, मर्दों के पूरे लबादे से बड़ी; और कंधे से लेकर कमर तक उस पर काले काले बटन तिरछी क़तार में टँके हुए थे. पहले कभी मैंने वैसी कोई पोशाक नहीं देखी थी.

उनका चेहरा पहले से छोटा लग रहा था और आँखें पहले से ज़्यादा बड़ी और धँसी हुई थीं; पर उनके बालों का सुनहरापन और भी गहरा हो उठा था. मेरे कपड़े उतार-

مجھے یقین نہیں آیا، اور اگر پادری صاحب ہی ہوں تو وہ کسی کرایہ‌دار کے ہی یہاں آئے ہونگے۔

"چل چل!" کوچوان نے گھوڑوں کو ہانکا، اور اُن کی پیٹھ پر کوڑا پھٹکارتے ہوئے موج کے ساتھ پھر سیٹی بجانے لگا۔

گھوڑے میدان کو چیرتے ہوئے دوڑ چلے، اور میں کھڑا کھڑا اُن کی طرف تاکتا رہا، پھر میں نے پھاٹک بند کر دیا۔ سونے پڑے باورچی خانے میں گھستے ہی سب سے پہلی آواز میں نے اپنی ماں کی سنی۔ پاس والے کمرے میں اپنی زوردار آواز میں وہ کہہ رہی تھیں—"تو اب چاہتے کیا ہیں آپ؟ میری جان لینگے؟"

اپنی اوپری پوشاک بدلے بغیر ہی میں پنجروں کو پٹک پٹکا کر دوڑا ہوا باہر کے برآمدے میں آیا اور نانا جی سے ٹکرا گیا۔ اُنہوں نے میری گردن دبوچ لی اور اپنی خونخوار سی آنکھیں میرے چہرے پر گاڑ دیں، اور مشکل سے ایک گھونٹ سا سٹک کر بھاری گلے سے بولے—

"تیری ماں پھر آگئی ہے...جا اُس کے پاس...ٹھہرو...!" اُنہوں نے اِتنی زور سے مجھے جھکجھور ڈالا کہ میں مشکل سے گرتے گرتے بچا اور بھیتر کے دروازے تک لڑھکتا چلا گیا۔ "چلا جا...! جا...!"

میں دروازے سے جا ٹکرایا، جس پر اون اور موم‌جامہ چڑھا ہوا تھا، لیکن کھٹکا گرانے میں مجھے کافی دیر لگ گئی کیونکہ میرا ہاتھ سردی سے ٹھٹھر کر بالکل سن ہو گیا تھا اور گھبراہٹ کے مارے کانپ رہا تھا۔ جب آخیر میں میں دھیرے سے اندر گھسا تو بالکل خوف زدہ اور اچنبھے سے بھرا ہوا دہلیز پر ہی رک گیا۔

"یہ آگیا!" میری ماں بول اُٹھی، "ہے پرماتما، کتنا بڑا ہو گیا ہے یہ! کیوں، مجھے پہچانتا نہیں ہے؟...یہ کیسے کپڑے پہنائے ہیں اِسے ماں؟...اور دیکھو تو، اِس کے کان بالکل سفید پڑے جا رہے ہیں! بطخ کی چربی تو لاؤ ماں، ذرا جلدی سے۔"

کمرے کے بیچوں بیچ کھڑی وہ میرے اوپر جھک کر میری اوپری پوشاک اُتارنے لگیں اور مجھے اِس طرح اُلٹ پلٹ کر دیکھنے لگیں گویا میں کوئی گیند ہوں۔ اُن کے لمبے چوڑے بدن پر ایک گرم، ملایم، خوبصورت پوشاک تھی، مردوں کے پورے لبادے سے بڑی؛ اور کندھے سے لیکر کمر تک اُس پر کالے کالے بٹن ترچھی قطار میں ٹنکے ہوئے تھے۔ پہلے کبھی میں نے ویسی کوئی پوشاک نہیں دیکھی تھی۔

اُن کا چہرہ پہلے سے چھوٹا لگ رہا تھا اور آنکھیں پہلے سے زیادہ بڑی اور دھنسی ہوئی تھیں، پر اُن کے بالوں کا سنہرا پن اور بھی گہرا ہو اُٹھا تھا۔ میرے کپڑے اُتار

मेरी माँ

श्री गोर्की

एक रोज़ सनीचर के दिन बहुत सबेरे मैं पेत्रोवना के सब्ज़ी के खेत में बुलबुल पकड़ने के लिये जा घुसा. वहाँ मैं बहुत देर तक रहा, क्योंकि वे इतनी तेज़ थीं कि मेरे जाल में फँसती ही नहीं थीं. उनकी ख़ूबसूरती ने मुझे बुरी तरह से लुभा लिया था. चाँदी से चमकते जमे हुए बर्फ़ पर वह फुदकती फिरतीं. और बर्फ़ से ढकी हुई झाड़ियों की डालों पर उड़कर जा बैठती थीं और बर्फ़ का दूधिया बुरादा सा चारों तरफ़ झड़ उठता था. यह सब मुझे इतना लुभावना लग रहा था कि मैं अपनी नाकामयाबी की परेशानी भूल गया. यों भी मैं शिकार के फ़न में उस्ताद नहीं था, क्योंकि दरअसल अपना शिकार पाने से ज़्यादा मुझे उसके पीछे लगे फिरने में मज़ा आता था और सब से ज़्यादा मज़ा चिड़ियों के तौर तरीक़े जानने और उनके बारे में सोचने समझने में मिलता था. बर्फ़ से ढके हुए एक खेत के किनारे अकेले बैठे बैठे, उस बर्फ़ीले दिन के गहरे सन्नाटे में, चिड़ियों की चहचहाहट सुनने में मैं मस्त था कि किसी गाड़ी की घन्टियों की टुनटुनाहट मुझे दूर पर हलकी सी सुनाई दी, किसी पपीहे के दिलसोज़ गीत की तरह.

बर्फ़ पर बैठा बैठा मैं अकड़ सा गया था और मुझे लगा कि मेरे कान बर्फ़ के मारे जम से गये हैं. इसलिये जाल और पिंजड़ों को बटोरकर मैं दीवार पर चढ़ बाग़ीचे में कूद पड़ा और घर आ पहुँचा.❀

सड़क की तरफ़ का फाटक खुला पड़ा था और एक बहुत बड़ा, लम्बा चौड़ा आदमी मौज से सीटी बजाता, एक बड़ी सी बन्द गाड़ी में जुते हुए पसीने से तरबतर तीन घोड़ों की रास पकड़कर अहाते से बाहर लिये जा रहा था. मेरा दिल उछलने लगा.

"किसे लेकर आए थे तुम ?"

उसने मेरी तरफ़ मुड़कर अपनी बाँहों के नीचे से मुझे देखा और कोचवान की गद्दी पर चढ़कर जवाब दिया— "पादरी साहब को."

❀ बचपन में ही वालिद के इन्तक़ाल हो जाने के बाद गोर्की अपनी वालदा के साथ नाना नानी के पास रहने लगा था. उसके नाना रंगरेज़ थे और बड़े अच्छे मिज़ाज के थे. गोर्की की माँ कुछ दिन ही वहाँ रहकर कहीं बाहर चली गई और गोर्की अपनी प्यारी नानी के साये में रहकर पलने लगा.

میری ماں

شری گورکی

ایک روز سنیچر کے دن بہت سویرے میں پیتروونا کے سبزی کے کھیت میں بلبل پکڑنے کے لئے جا گھسا۔ وہاں میں بہت دیر تک رہا، کیونکہ وے اِتنی تیز تھیں کہ میرے جال میں پھنستی ہی نہیں تھیں۔ اُن کی خوبصورتی نے مجھے بری طرح سے لبھا لیا تھا۔ چاندی سے چمکتے جمے ہوئے برف پر وہ پھدکتی پھرتیں، اور برف سے ڈھکی ہوئی جھاڑیوں کی ڈالوں پر اُڑ کر جا بیٹھتی تھیں اور برف کا دودھیا برادہ سا چاروں طرف جھڑ اُٹھتا تھا۔ یہ سب مجھے اِتنا لبھاؤنا لگ رہا تھا کہ میں اپنی ناکامیابی کی پریشانی بھول گیا۔ یوں بھی میں شکار کے فن میں اُستاد نہیں تھا، کیونکہ دراصل اپنا شکار پانے سے زیادہ مجھے اُس کے پیچھے لگے پھرنے میں مزہ آتا تھا اور سب سے زیادہ مزہ چڑیوں کے طور طریقے جاننے اور اُن کے بارے میں سوچنے سمجھنے میں ملتا تھا۔ برف سے ڈھکے ہوئے ایک کھیت کے کنارے بیٹھے بیٹھے، اُس برفیلے دن کے گہرے سناٹے میں، چڑیوں کی چہچہاہٹ سننے میں میں مست تھا کہ کسی گاڑی کی گھنٹیوں کی ٹنٹناہٹ مجھے دور پر ہلکی سی سنائی دی، کسی پپیہے کے دلسوز گیت کی طرح۔

برف پر بیٹھا بیٹھا میں اکڑ سا گیا تھا اور مجھے لگا کہ میرے کان برف کے مارے جم سے گئے ہیں۔ اِس لئے جال اور پنجڑوں کو بٹور کر میں دیوار پر چڑھ باغیچے میں کود پڑا اور گھر آ پہونچا۔❀

سڑک کی طرف کا پھاٹک کھلا پڑا تھا اور ایک بہت بڑا، لمبا چوڑا آدمی موج سے سیٹی بجاتا، ایک بڑی سی بند گاڑی میں جتے ہوئے پسینے سے تربتر تین گھوڑوں کی راس پکڑ کر احاطے سے باہر لئے جا رہا تھا۔ میرا دل اُچھلنے لگا۔

"کسے لیکر آئے تھے تم؟"

اُس نے میری طرف مڑ کر اپنی بانہوں کے نیچے سے مجھے دیکھا اور کوچوان کی گدی پر چڑھکر جواب دیا—"پادری صاحب کو۔"

❀بچپن میں ہی والد کے اِنتقال ہوجانے کے بعد گورکی اپنی والدہ کے ساتھ نانا نانی کے پاس رہنے لگا تھا۔ اُس کے نانا رنگریز تھے اور بڑے اچھے مزاج کے تھے۔ گورکی کی ماں کچھ دن ہی وہاں رہ کر کہیں باہر چلی گئیں اور گورکی اپنی پیاری نانی کے سایہ میں رہ کر پلنے لگا۔

के तौर पर इंगलैन्ड में जो ऐडवर्ड छटे के नाम पर हुकूमत करता था उसने हुक्म दे दिया कि तमाम अंग्रेज़ी क़ौम प्रोटेस्टेंट मज़हब को माने और सारा इंगलिस्तान प्रोटेस्टेंट हो गया. इसके बाद मल्का मेरी तख़्त पर बैठी और गोया किसी ने जादू कर दिया. फ़ौरन तमाम इंगलिस्तान के लोग फिर से रोमन कैथोलिक हो गये. मल्का मरी और पहिया फिर घूम गया. सारा इंगलिस्तान अब ऐंगलीकन मज़हब का मानने वाला हो गया. आजकल हम इस बात के सुनने के बहुत आदी हो गये हैं कि राज्य या बादशाह रिआया के मज़हब में कोई दख़ल नहीं देता. लेकिन हिटलर और उसके वारिस आजकल भी दुनिया को इस तरह की आज़ादी देने को तैयार नहीं हैं. सोलहवीं और सत्तरहवीं सदी में दुनिया के हर मुल्क के अन्दर राज को इससे गहरा ताल्लुक़ होता था कि रिआया किस मज़हब को मानती है. लेकिन हिन्दुस्तान में मुग़ल बादशाहों ने अपनी रिआया के मज़हबी विश्वास में दख़ल नहीं दिया और इस मामले में रिआया को आज़ाद छोड़ दिया था और इस बात में मुग़ल बादशाह अपने ज़माने के लिहाज़ से अपनी एक अलग मिसाल थे. सोलहवीं सदी ईसवी में एक दूसरे के बाद इंगलैन्ड के कई बादशाहों ने ऐक्ट्स आफ़ सुपरीमेसी और एक्ट्स आफ़ यूनिफ़ारमिटी नाम के क़ानून पास करके जबरदस्ती यह हुक्म दे दिया कि इंगलैन्ड के लाखों रोमन कैथोलिक अपने मज़हब को छोड़कर अपने गिरजों में बादशाह के मज़हब यानी प्रोटेस्टेंट मज़हब की लिखी हुई दुआएँ भी पढ़ा करें और हर मज़हबी बात में सब से बड़े पुरोहित पोप के बजाय प्रोटेस्टेन्ट बादशाही हुक्म मानें. इस शाही फ़रमान के न मानने पर हज़ारों रोमन कैथोलिक पादरियों को कड़ी सज़ाएँ दी गईं. इस तरह सन 1562 ईसवी में इंगलैंड में राज की तरफ़ से उन्तालीस मज़हबी उसूलों की एक फ़ेहरिस्त क़ानून की शकल में पास कर दी गई और उनमें से हर उसूल का मानना मुल्क के हर एक आदमी का क़ानूनी फ़र्ज़ बना दिया गया. यह बात भी याद रखनी चाहिये कि उस वक़्त तक इंगलैंड के मुख़्तलिफ़ ज़िलों में पचास फ़ीसदी से लेकर नब्बे फ़ीसदी तक आबादी रोमन कैथोलिक थी. इन सब को जबरदस्ती अपना मज़हब छोड़कर उस वक़्त के बादशाह का मज़हब मानना पड़ा. मुग़ल बादशाहों ने कभी इस तरह के कोई क़ानून जारी नहीं किये. और अपनी रियाया की बहुत बड़ी तादाद को, जो ग़ैर मुसलिम थी, मज़हब के मामले में पूरी तरह आज़ाद रखा. मुसलमानों के लिये भी किसी मुग़ल बादशाह ने या तो इसलाम छोड़कर दूसरा मज़हब अख़्तियार करने वालों को कभी कोई सज़ा दे दी या ज़्यादा से ज़्यादा यह हुक्म दे दिया कि आम रहन सहन में मुसलमान एक ख़ास ऊपरी तरीक़े की पाबन्दी करें, मसलन यह कि लोग शराब न पियें वग़ैरा.

کے طور پر انگلینڈ میں جو ایڈورڈ چھٹے کے نام پر حکومت کرتا تھا اُس نے حکم دے دیا کہ تمام انگریزی قوم پروٹسٹینٹ مذہب کو مانے اور سارا انگلستان پروٹسٹینٹ ہو گیا ۔ اِس کے بعد ملکہ میری تخت پر بیٹھی اور گویا کسی نے جادو کر دیا ۔ فوراً تمام انگلستان کے لوگ پھر سے رومن کیتھولک ہو گئے ۔ ملکہ مری اور پہیا پھر گھوم گیا ۔ سارا انگلستان اب اینگلیکن مذہب کا ماننے والا ہو گیا ۔ آجکل ہم اِس بات کے سننے کے بہت عادی ہو گئے ہیں کہ راج یا بادشاہ رعایا کے مذہب میں کوئی دخل نہیں دیتا ۔ لیکن ہٹلر اور اُس کے وارث آجکل بھی دنیا کو اِس طرح کی آزادی دینے کو تیار نہیں ہیں ۔ سولہویں اور سترھویں صدی میں دنیا کے ہر ملک کے اندر راج کو اِس سے گہرا تعلق ہوتا تھا کہ رعایا کس مذہب کو مانتی ہے ۔ لیکن ہندستان میں مغل بادشاہوں نے اپنی رعایا کے مذہبی وشواس میں دخل نہیں دیا اور اس معاملے میں رعایا کو آزاد چھوڑ دیا تھا اور اِس بات میں مغل بادشاہ اپنے زمانے کے لحاظ سے اپنی ایک الگ مثال تھے ۔ سولہویں صدی عیسوی میں ایک دوسرے کے بعد انگلینڈ کے کئی بادشاہوں نے ایکٹس آف سوپریمیسی اور ایکٹس آف یونیفارمٹی نام کے قانون پاس کر کے زبردستی یہ حکم دے دیا کہ انگلینڈ کے لاکھوں رومن کیتھولک اپنے مذہب کو چھوڑ کر اپنے گرجوں میں بادشاہ کے مذہب یعنی پروٹیسٹینٹ مذہب کی لکھی ہوئی دعائیں ہی پڑھا کریں اور ہر مذہبی بات میں سب سے بڑے پروہت پوپ کے بجائے پروٹیسٹینٹ بادشاہی حکم مانیں ۔ اِس شاہی فرمان کے نہ ماننے پر ہزاروں رومن کیتھولک پادریوں کو کڑی سزائیں دی گئیں ۔ اِس طرح سن 1562 عیسوی میں انگلینڈ میں راج کی طرف سے اُنتالیس مذہبی اصولوں کی ایک فہرست قانون کی شکل میں پاس کر دی گئی اور اُن میں سے ہر اُصول کا ماننا ملک کے ہر ایک آدمی کا قانونی فرض بنا دیا گیا ۔ یہ بات بھی یاد رکھنی چاہئے کہ اُس وقت تک انگلینڈ کے مختلف ضلعوں میں پچاس فیصدی سے لیکر نبے فیصدی تک آبادی رومن کیتھولک تھی ۔ اِن سب کو زبردستی اپنا مذہب چھوڑ کر اُس وقت کے بادشاہ کا مذہب ماننا پڑا ۔ مغل بادشاہوں نے کبھی اِس طرح کے کوئی قانون جاری نہیں کئے ۔ اُور اپنی رعایا کی بہت بڑی تعداد کو، جو غیر مسلم تھی، مذہب کے معاملے میں پوری طرح آزاد رکھا ۔ مسلمانوں کے لئے بھی کسی مغل بادشاہ نے یا تو اِسلام چھوڑ کر دوسرا مذہب اختیار کرنے والوں کو کبھی کوئی سزا دے دی یا زیادہ سے زیادہ یہ حکم دے دیا کہ عام رہن سہن میں مسلمان ایک خاص اُوپری طریقہ کی پابندی کریں، مثلاً یہ کہ لوگ شراب نہ پیئیں، وغیرہ ۔

को मानने से इन्कार कर दिया क्योंकि उस वक्त वह ख़ुद दुनिया भर में सबसे बड़ा हाकिम था. अपने को ख़लीफ़ा का नाइब मानने से कुछ दिनों तक यहाँ के बादशाहों का काम ज़रूर चल गया लेकिन उससे इस बात का कोई क़ायदा न बन पाया कि एक बादशाह के बाद तख़्त का हक़दार कौन और कैसे हो. इस बारे में न कोई क़ानून था और न पुराने बादशाहों के अमल से कोई मदद मिल सकती थी. क़ुदरती नतीजा यह था कि क़रीब क़रीब बादशाहों के मरने के वक्त तख़्त के लिये ख़ासी गरमा गरमी और भाग दौड़ दिखाई देती है. जिस वक्त बाबर मौत के बिस्तर पर पड़ा हुआ था उसका वज़ीर आज़म इस फ़िक्र और साज़िश में लगा हुआ था कि हुमायूँ को किस तरह तख़्त से अलग किया जावे. हुमायूँ की मौत इतनी अचानक हुई और हिन्दुस्तान में मुग़लों की हालत उस वक्त इतनी नाज़ुक थी कि उस वक्त तख़्त के लिये ज्यादा झगड़ा न हो पाया. अकबर की मौत के बाद जहाँगीर तख़्त पर बैठा लेकिन जहाँगीर के सब से बड़े बेटे ख़ुसरो ने अपने बाप के उस हक़ के ख़िलाफ़ हाथ पैर मारे. जहाँगीर की हुकूमत के आख़िरी दिनों में तख़्त के लिये तरह तरह की भद्दी साज़िशें हुईं. जहाँगीर के मरने के वक्त शाहजहाँ दकन में था इसलिये शाहजहाँ के लिये तख़्त को तैयार रखने की ग़रज़ से बदक़िस्मत बुलाक़ी को चुना गया. शाहजहाँ के पहुँचते ही बुलाक़ी मार डाला गया और तख़्त के दूसरे दावेदारों के ख़ून में से अपना रास्ता बनाकर शाहजहाँ बाप के तख़्त पर बैठा. औरंगज़ेब ने शाहजहाँ से बदला चुकाया. उसने शाहजहाँ को क़ैद करके शाहजहाँ की ज़िन्दगी में शाहजहाँ के नाम पर नहीं बल्कि ख़ुद अपने नाम पर बादशाहत करनी शुरू की. इस सबसे ज़ाहिर होता है कि इस ज़माने के बारे में मुसलमानों में जो आम ख़याल था इसी से मिलता जुलता मुग़लों का अमल था. यह बात नहीं थी कि एक बादशाह के बाद दूसरे को गद्दी मिलने का कोई माना हुआ क़ानून या रिवाज रहा हो और किसी ने ज़बरदस्ती बग़ावत करके उसे तोड़ा हो, बल्कि जो कुछ होता था वह एक मामूली चीज़ थी और इसलिये होता था कि इस मामले में कोई ख़ास क़ानून पहले से नहीं था.

यह भी याद रखना ज़रूरी है कि मुग़ल बादशाहों ने रियाया को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ आज़ाद ज़िन्दगी बसर करने की बहुत बड़ी आज़ादी दे रखी थी. उसमें बादशाह कोई दख़ल न देता था. यह वह ज़माना था जब यूरप में वे बादशाह भी जो बिल्कुल ख़ुदमुख़्तार थे और वे भी जिनके यहाँ पार्लीमेंट बनी हुई थी, दोनों अपनी अपनी रियाया को साफ़-साफ़ यह हुक्म देते थे कि रियाया इस ख़ास क़िस्म के मज़हबी अक़ीदों (विश्वासों) को माने और उसके ख़िलाफ़ किसी दूसरे अक़ीदों को न माने. मिसाल

کو ماننے سے انکار کر دیا کیونکہ اُس وقت وہ خود دنیا بھر میں سب سے بڑا حاکم تھا ۔ اپنے کو خلیفہ کا نائب ماننے سے کچھ دنوں تک یہاں کے بادشاہوں کا کام ضرور چل گیا لیکن اُس سے اِس بات کا کوئی قاعدہ نہ بن پایا کہ ایک بادشاہ کے بعد تخت کا حقدار کون اور کیسے ہو ۔ اِس بارے میں نہ کوئی قانون تھا اور نہ پرانے بادشاہوں کے عمل سے کوئی مدد مل سکتی تھی ۔ قدرتی نتیجہ یہ تھا کہ قریب قریب بادشاہوں کے مرنے کے وقت تخت کے لئے خاصی گرما گرمی اور بھاگ دوڑ دکھائی دیتی ہے ۔ جس وقت بابر موت کے بستر پر پڑا ہوا تھا اُس کا وزیراعظم اِس فکر اور سازش میں لگا ہوا تھا کہ ہمایوں کو کسی طرح تخت سے الگ کیا جاوے ۔ ہمایوں کی موت اتنی اچانک ہوئی اور ہندستان میں مغلوں کی حالت اُس وقت اتنی نازک تھی کہ اُس وقت تخت کے لئے زیادہ جھگڑا نہ ہو پایا ۔ اکبر کی موت کے بعد جہانگیر تخت پر بیٹھا لیکن جہانگیر کے سب سے بڑے بیٹے خسرو نے اپنے باپ کے اُس حق کے خلاف ہاتھ پیر مارے ۔ جہانگیر کی حکومت کے آخری دنوں میں تخت کے لئے طرح طرح کی بھدی سازشیں ہوئیں ۔ جہانگیر کے مرنے کے وقت شاہ جہاں دکن میں تھا اِس لئے شاہ جہاں کے لئے تخت کو تیار رکھنے کی غرض سے بدقسمت بلاقی کو چنا گیا ۔ شاہجہاں کے پہنچتے ہی بلاقی مار ڈالا گیا اور تخت کے دوسرے دعویداروں کے خون میں سے اپنا راستہ بناکر شاہ جہاں باپ کے تخت پر بیٹھا۔ اورنگزیب نے شاہجہاں سے بدلہ چکایا ۔ اُس نے شاہجہاں کو قید کر کے شاہ جہاں کی زندگی میں شاہ جہاں کے نام پر نہیں بلکہ خود اپنے نام پر بادشاہت کرنی شروع کی ۔ اِس سب سے ظاہر ہوتا ہے کہ اِس زمانے کے بارے میں مسلمانوں میں جو عام خیال تھا اِسی سے ملتا جلتا مغلوں کا عمل تھا ۔ یہ بات نہیں تھی کہ ایک بادشاہ کے بعد دوسرے کو گدی ملنے کا کوئی مانا ہوا قانون یا رواج رہا ہو اور کسی نے زبردستی بغاوت کر کے اسے توڑا ہو، بلکہ جو کچھ ہوتا تھا وہ ایک معمولی چیز تھی اور اِس لئے ہوتا تھا کہ اِس معاملے میں کوئی خاص قانون پہلے سے نہیں تھا ۔

یہ بھی یاد رکھنا ضروری ہے کہ مغل بادشاہوں نے رعایا کو اپنی مرضی کے مطابق آزاد زندگی بسر کرنے کی بہت بڑی آزادی دے رکھی تھی ۔ اُس میں بادشاہ کوئی دخل نہ دیتا تھا ۔ یہ وہ زمانہ تھا جب یورپ میں وے بادشاہ بھی جو بالکل خود مختار تھے اور وے بھی جن کے یہاں پارلیمینٹ بنی ہوئی تھی، دونوں اپنی اپنی رعایا کو صاف صاف یہ حکم دیتے تھے کہ رعایا اِس خاص قسم کے مذہبی عقیدوں (وشواسوں) کو مانے اور اُس کے خلاف کسی دوسرے عقیدوں کو نہ مانے۔ مثال

हैसियत से काम कर रहा हूँ, लेकिन इसलाम उससे क्या चाहता है इसका वह ख़ु.द फैसला करता था. मुग़ल राज में एक ऐसी शख़्सी हुकूमत थी जिसमें उसूल के तौर पर भी और अमली तौर पर भी लोगों को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ आज़ाद ज़िन्दगी बसर करने का एक बहुत बड़ा मैदान छूटा हुआ था.

लेकिन इस बारे में एक बात याद रखनी चाहिये. कई बातों में मुग़ल बादशाह के अख़्तयार बँधे हुए थे. फिर भी अगर कोई बादशाह उन हदों से बढ़ जाने का फैसला कर लेता था तो राज के तौर तरीक़ों में पार्लमिन्ट या असेम्बली या कौंसिल जैसी कोई ऐसी चीज़ मौजूद नहीं थी जो बादशाह को ऐसा करने से रोक सके. बादशाह की किसी पालिसी के साथ अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने का रियाया के पास सिर्फ़ एक तरीक़ा था और वह था बग़ावत करने का तरीक़ा. वह तरीक़ा उन दिनों हमेशा ठीक तरीक़ा माना जाता था. मसलन उस ज़माने में इंगलैंड के बादशाह के ख़िलाफ़ इस तरह की बग़ावत एक मज़हबी गुनाह समझा जाता था. हिन्दुस्तान में यह बात नहीं थी. इसके अलावा शुरू शुरू ज़माने के मुसलिम क़ानून में बादशाह के बारे में कोई ऐसा क़ायदा नहीं था कि किसी बादशाह के बाद गद्दी उसके लड़के ही को मिले. शुरू के मुसलमान बादशाहों ने अपने अमल में भी इस तरह का कोई क़ायदा नहीं माना. यह सही है कि शीओं ने इस तरह का दावा किया था और इसी वजह से शीओं और सुन्नियों में फ़र्क़ पड़ गया. मिस्र में ख़लीफ़ा ही मुसलमानों का हाकिम होता था. ख़लीफ़ा को मुसलमान अपने में से चुनते थे. शीओं को छोड़कर क़ुरान या हदीस में किसी ने भी बेटे को बाप की गद्दी पर बैठने के हक़ या उसूल को नहीं माना. यहाँ तक कि बादशाहत के मामले में मुसलमानों में कोई ख़ास क़ानून एक के बाद दूसरे के गद्दी पर बैठने का है ही नहीं. बादशाहत के लिये किसी इनसान का ज़ाती हक़ इसलाम नहीं मानता. इसलाम के मुताबिक़ बादशाहत किसी की ज़ाती मिल्कियत नहीं होती और न किसी की बपौती हो सकती है. क़ुदरती तौर पर तख़्त का कौन हक़दार है और कौन नहीं, इस पर न किसी क़ानून की ज़रूरत थी और न कोई क़ानून माना जा सकता था. हिन्दुस्तान में शुरू के मुसलमान बादशाहों ने इस मुश्किल काम को इस तरह हल किया कि उन्होंने कम से कम कहने के लिये अपने को ख़ुदमुख़्तार बादशाह नहीं माना. वे कहते थे कि हम अपने किसी ज़ाती हक़ से बादशाहत नहीं कर रहे हैं बल्कि उस दूसरे बैठे हुए मुसलिम बादशाह के मुक़र्रर किये हुए अफ़सर या नाइब की हैसियत से काम कर रहे हैं जो अपने को ख़लीफ़ा कहता है. बाबर और उसके बाद के बादशाहों ने इसलिये इस पुरानी फ़र्ज़ी रस्म

حیثیت سے کام کر رہا ہوں، لیکن اِسلام اُس سے کیا چاہتا ہے اِس کا وہ خود فیصلہ کرتا تھا . مغل راج میں ایک ایسی شخصی حکومت تھی جس میں اُصول کے طور پر بھی اور عملی طور پر بھی لوگوں کو اپنی مرضی کے مطابق آزاد زندگی بسر کرنے کا ایک بہت بڑا میدان چھوٹا ہوا تھا .

لیکن اِس بارے میں ایک بات یاد رکھنی چاہئے . کئی باتوں میں مغل بادشاہ کے اختیار بندھے ہوئے تھے . پھر بھی اگر کوئی بادشاہ اُن حدوں سے بڑھ جانے کا فیصلہ کر لیتا تھا تو راج کے طور طریقوں میں پارلیمنٹ یا اسمبلی یا کونسل جیسی کوئی ایسی چیز موجود نہیں تھی جو بادشاہ کو ایسا کرنے سے روک سکے. بادشاہ کی کسی پالیسی کے ساتھ اپنی ناراضگی ظاہر کرنے کا رعایا کے پاس صرف ایک طریقہ تھا اور وہ تھا بغاوت کرنے کا طریقہ . وہ طریقہ اُن دنوں ہمیشہ ٹھیک طریقہ مانا جاتا تھا . مثلاً اُس زمانے میں انگلینڈ کے بادشاہ کے خلاف اِس طرح کی بغاوت ایک مذہبی گناہ سمجھا جاتا تھا . ہندستان میں یہ بات نہیں تھی . اِس کے علاوہ شروع شروع زمانے کے مسلم قانون میں بادشاہ کے بارے میں کوئی ایسا قاعدہ نہیں تھا کہ کسی بادشاہ کے بعد گدی اُس کے لڑکے ہی کو ملے . شروع کے مسلمان بادشاہوں نے اپنے عمل میں بھی اِس طرح کا کوئی قاعدہ نہیں مانا . یہ صحیح ہے کہ شیعوں نے اِس طرح کا دعویٰ کیا تھا اور اِسی وجہ سے شیعوں اور سنیوں میں فرق پڑ گیا . مصر میں خلیفہ ہی مسلمانوں کا حاکم ہوتا تھا . خلیفہ کو مسلمان اپنے میں سے چنتے تھے . شیعوں کو چھوڑ کر قرآن یا حدیث میں کسی نے بھی بیٹے کو باپ کی گدی پر بیٹھنے کے حق یا اُصول کو نہیں مانا . یہاں تک کہ بادشاہت کے معاملے میں مسلمانوں میں کوئی خاص قانون ایک کے بعد دوسرے کے گدی پر بیٹھنے کا ہے ہی نہیں . بادشاہت کے لئے کسی انسان کا ذاتی حق اِسلام نہیں مانتا . اسلام کے مطابق بادشاہت کسی کی ذاتی ملکیت نہیں ہوتی اور نہ کسی کی باپوتی ہو سکتی ہے . قدرتی طور پر تخت کا کون حقدار ہے اور کون نہیں، اِس پر نہ کسی قانون کی ضرورت تھی اور نہ کوئی قانون مانا جا سکتا تھا . ہندستان میں شروع کے مسلمان بادشاہوں نے اِس مشکل کام کو اِس طرح حل کیا کہ اُنہوں نے کم سے کم کہنے کے لئے اپنے کو خودمختار بادشاہ نہیں مانا . وے کہتے تھے کہ ہم اپنے کسی ذاتی حق سے بادشاہت نہیں کر رہے ہیں بلکہ اُس دوسرے بیٹھے ہوئے مسلم بادشاہ کے مقرر کئے ہوئے افسر یا نائب کی حیثیت سے کام کر رہے ہیں جو اپنے کو خلیفہ کہتا ہے . بابر اور اُس کے بعد کے بادشاہوں نے اِس لئے اِس پرانی فرضی رسم

बातों में मुग़ल बादशाह इसलाम के एजेन्टों की तरह भी काम करते थे. यहाँ एक उसूल की बात है. मुग़ल बादशाह और सबसे ज्यादा औरंगजेब, इसलाम के एजेंट से ज्यादा और कुछ न थे. अकबर इस बात के कहने में फ़ख्र करता था कि मेरी फ़तहों से इसलाम के उसूल दूर दूर तक फैलते हैं और इसलाम के पैग़म्बर का हुक्म उन मुल्कों तक पहुँचता है जहाँ पहले कभी पैग़म्बर का नाम भी नहीं सुनाया गया था.

जहाँगीर और शाहजहाँ दोनों अपने को सच्चे दीन के रक्षक मानते थे और दीन के जायज़ हक़ का ख्याल रखते थे. औरंगजेब की सबसे बड़ी ख़ाहिश यह थी कि न सिर्फ़ मुसलमानों बल्कि कम से कम बाहर के रहन सहन में ग़ैर मुसलमानों में भी मुसलिम रहन सहन को बढ़ाया जाय. साथ ही औरंगजेब को भी इस मामले में ईसाइयों के साथ यह रियायत करनी पड़ी थी. उन्हें शराब पीने की इजाज़त दी गई थी जबकि बाक़ी तमाम रियाया के लिये शराब पीना क़ानूनन मना था. लेकिन इसलामी हुकूमत के वे उसूल जो ख़ासकर क़ुरान पर नहीं बल्कि बाद के मुसलिम बादशाहों के रिवाजों और ईरान के ग़ैर मुसलिम बादशाहों की रिवायतों पर ढाल लिये गये थे आसानी से हिन्दुस्तान में न चल सकते थे. एक सवाल यह था कि हिन्दुस्तान दारुल-इसलाम है, या दारुलहरब. दारुलइसलाम के माने हैं मुसलमानों का घर और दारुलहरब के माने हैं मुसलमानों के हमले की जगह. इस तरह के सीधे सादे मामले में भी औरंगजेब जैसे बादशाह के लिये भी उन मुसलिम रिवाजों को जो हिन्दुस्तान के बाहर चलते थे हिन्दुस्तान में जारी करना नामुमकिन था. इससे पहले के हिन्दुस्तान के मुसलिम बादशाहों ने कभी-कभी मुसलिम शरअ या मुसलिम रिवाज के ख़िलाफ़ अमल करने की भी हिम्मत न की थी. मालूम होता है कि इसलाम के हिन्दुस्तान आने के शुरू के दिनों में ही यह बात समझ ली गई थी कि तमाम हिन्दुस्तान का इसलाम का अपनाना नामुमकिन है. यह मामला यहीं पर रह गया और इसकी वजह से हिन्दुस्तान के अन्दर इसलामी क़ानून और इसलामी रिवाज में काफ़ी तब्दीलियाँ करनी पड़ी. इसका क़ुदरती नतीजा यह हुआ कि यह उसूल बिल्कुल ख़त्म हो गया कि हिन्दुस्तान में यहाँ के मुसलमान बादशाह मज़हबे इसलाम के महज़ एजेन्ट बनकर हुकूमत करें.

अब हम फिर यह देखना चाहते हैं कि मुग़लों की हुकूमत का ढंग क्या था. मुग़ल हुकूमत यानी शख्सी हुकूमत यानी एक आदमी की हुकूमत तो थी ही लेकिन वह एक हद के अन्दर ही शख्सी हुकूमत थी. बादशाह आम तौर पर यह दावा करता था कि मैं इसलाम के एक एजेन्ट की

باتوں میں مغل بادشاہ اِسلام کے ایجنٹوں کی طرح بھی کام کرتے تھے. یہاں ایک اُصول کی بات ھے. مغل بادشاہ اور سب سے زیادہ اورنگزیب، اسلام کے ایجنٹ سے زیادہ اورکچھ نہ تھے. اکبر اِس بات کے کہنے میں فخر کرتا تھا کہ میری فتحوں سے اِسلام کے اُصول دور دور تک پھیلتے ھیں اور اِسلام کے پیغمبر کا حکم اُن ملکوں تک پہنچتا ھے جہاں پہلے کبھی پیغمبر کا نام بھی نہیں سنایا گیا تھا .

جہانگیر اور شاہجہاں دونوں اپنے کو سچے دین کے رکشک مانتے تھے اور دین کے جائز حق کا خیال رکھتے تھے . اورنگزیب کی سب سے بڑی خواھش یہ تھی کہ نہ صرف مسلمانوں بلکہ کم سے کم باھر کے رھن سھن میں غیر مسلمانوں میں بھی مسلم رھن سھن کو بڑھایا جائے . ساتھ ھی اورنگزیب کو بھی اِس معاملے میں عیسائیوں کے ساتھ یہ رعایت کرنی پڑی تھی . اُنھیں شراب پینے کی اجازت دے گئی تھی جب کہ باقی تمام رعایا کے لئے شراب پینا قانوناً منع تھا . لیکن اِسلامی حکومت کے وے اُصول جو خاص کر قرآن پر نہیں بلکہ بعد کے مسلم بادشاھوں کے رواجوں اور ایران کے غیر مسلم بادشاھوں کی رعایتوں پر ڈھال لئے گئے تھے آسانی سے ھندستان میں نہ چل سکتے تھے . ایک سوال یہ تھا کہ ھندستان دارالسلام ھے، یا دارالحرب . دارالسلام کے معنے ھیں مسلمانوں کا گھر اور دارالحرب کے معنے ھیں مسلمانوں کے حملے کی جگہہ . اِس طرح کے سیدھے سادے معاملے میں بھی اورنگزیب جیسے بادشاہ کے لئے بھی اُن مسلم رواجوں کو جو ھندستان کے باھر چلتے تھے ھندستان میں جاری کرنا ناممکن تھا . اُس سے پہلے کے ھندستان کے مسلم بادشاھوں نے کبھی کبھی مسلم شرع یا مسلم رواج کے خلاف عمل کرنے کی بھی ھمت نہ کی تھی . معلوم ھوتا ھے کہ اِسلام کے ھندستان آنے کے شروع کے دنوں میں ھی یہ بات سمجھ لی گئی تھی کہ تمام ھندستان کو اِسلام کا اپنانا ناممکن ھے . یہ معاملہ یہیں پر رہ گیا اور اِس کی وجہ سے ھندستان کے اندر اِسلامی قانون اور اِسلامی رواج میں کافی تبدیلیاں کرنی پڑیں . اِس کا قدرتی نتیجہ یہ ھوا کہ یہ اُصول بالکل ختم ھو گیا کہ ھندستان میں یہاں کے مسلمان بادشاہ مذھب اِسلام کے محض ایجنٹ بن کر حکومت کریں .

اب ھم پھر یہ دیکھنا چاھتے ھیں کہ مغلوں کی حکومت کا ڈھنگ کیا تھا . مغل حکومت یعنی شخصی حکومت یعنی ایک آدمی کی حکومت تو تھی ھی لیکن وہ ایک حد کے اندر ھی شخصی حکومت تھی . بادشاہ عام طور پر یہ دعویٰ کرتا تھا کہ میں اِسلام کے ایک ایجنٹ کی

लिया था. सद्रुलसद्र राज का ख़ास आलिम होता था. शायद मुल्क भर में वह शरअ का सब से ज्यादा जानने वाला समझा जाता था और मुमकिन है कि शरअ पर सब से ज्यादा वाक़िफ़ भी वही हो. सब मुग़ल बादशाहों ने शरअ का मतलब ऐलान करने का पूरा हक़ सद्र को दे रखा था. सिर्फ़ अकबर ने यह हक़ अपने हाथ में लिया था कि जब कभी उलमाओं की राय न मिलती थी तो बादशाह आदिल की हैसियत से .खुद उनमें से जिस राय को ठीक समझे उसी पर अमल करे. लेकिन इस ऐलान पर भी अकबर उस वक़्त तक अमल न कर सका जब तक उसने अपने पुराने सद्रुलसद्र को निकालकर उसकी जगह दूसरा सद्र मुक़र्रर न कर लिया. अब्दुल नबी को निकालकर उसकी जगह सद्रजहाँ को मुक़र्रर किया गया. उलमाओं के फ़तवे का ऐलान भी तब तक नहीं हो सका जब तक कि सद्रुलसद्र ने ख़ासकर दस्तख़त नहीं कर दिया. यह एक अजीब सूरत थी. सद्रुलसद्र जब तक सद्रुलसद्र रहता था तब तक सिर्फ़ उसे ही यह ऐलान करने का हक़ था कि शरअ का हुक्म क्या है. लेकिन बादशाह सद्र को मुक़र्रर और बरख़ास्त कर सकता था. वह बादशाह के मातेहत न था पर बादशाह उसे निकाल सकता था. औरंगज़ेब के तख़्त पर बैठने के वक़्त इसकी बहुत अच्छी मिसाल देखने को मिली. सद्रुलसद्र ने शाहजहाँ के जिन्दा रहते हुए औरंगज़ेब को बादशाह क़रार देने से इनकार कर दिया. औरंगज़ेब को उसे बरख़ास्त करके दूसरा सद्र मुक़र्रर करना पड़ा. इस दूसरे सद्र ने पहले ही से यह राय ज़ाहिर कर दी थी कि चूँकि शाहजहाँ क़ैद में होने की वजह से काम करने के क़ाबिल नहीं इसलिये उसके जिन्दा रहते हुए भी औरंगज़ेब के नाम का .खुतबा पढ़ा जा सकता है. इस तरह मुग़ल बादशाहों के लिये अपने किसी काम को ठीक साबित करने के लिये यह लाज़िमी था कि वह कोई न कोई ऐसा आलिम ढूँढ लें जो सद्रुलसद्र बनकर बादशाह के काम को जायज़ क़रार दे सके. औरंगज़ेब के ज़माने में एक और तरह से यह चमक गया कि शरअ के मामले में बादशाह किस तरह दूसरे के मातेहत था. कुछ अफ़सर इस काम के लिये मुक़र्रर किये गये थे जो रियाया को इजाज़त देते थे कि वे अगर बादशाह के ख़िलाफ़ कोई नालिश करना चाहें तो कर सकें. यह अफ़सर वकलाए शरअ कहलाते थे. यह मुक़द्मे बादशाह के ख़िलाफ़ उस तरह के ज़ाती मामलों में दायर किये जा सकते थे जिस तरह कि अंग्रेज़ी क़ानून में पेटन्ट्स-आफ़-राइट के मातेहत दायर किया जाता था. औरंगज़ेब की हुकूमत की पालिसी से इनका कोई ताल्लुक़ नहीं था और न कोई उसके मुताबिक़ मुल्क के राज काज में दख़ल दे सकता था.

मुग़ल सल्तनत मज़हबी सल्तनत तो नहीं थी, लेकिन कई

ا تھا. صدر الصدر راج کا خاص عالم ہوتا تھا. شاید ملک بھر میں وہ شرع کا سب کے زیادہ جاننے والا سمجھا جاتا تھا اور ممکن ھے کہ شرع پر سب سے زیادہ واقف بھی وھی ھو. سب مغل بادشاھوں نے شرع کا مطلب اعلان کرنے کا پورا حق صدر کو دے رکھا تھا. صرف اکبر نے یہ حق اپنے ھاتھ میں لیا تھا کہ جب کبھی علماؤں کی رائے نہ ملتی تھی تو بادشاہ عادل کی حیثیت سے خود اُن میں سے جس رائے کو ٹھیک سمجھے اُسی پر عمل کرے. لیکن اِس اعلان پر بھی اکبر اُس وقت تک، عمل نہ کر سکا جب تک اُس نے اپنے پرانے صدر الصدر کو نکال کر اُس کی جگہہ دوسرا صدر مقرر نہ کر لیا. عبدالنبی کو نکال کر اُس کی جگہہ صدر جہاں کو مقرر کیا گیا. علماؤں کے فتوے کا اعلان بھی تب تک نہیں ھو سکا جب تک کہ صدرالصدر نے خاص کر دستخط نہیں کر دیا. یہ ایک عجیب صورت تھی. صدرالصدر جب تک صدر الصدر رھتا تھا تب تک صرف اُسے ھی یہ اعلان کرنے کا حق تھا کہ شرع کا حکم کیا ھے. لیکن بادشاہ صدر کو مقرر اور برخاست کر سکتا تھا. وہ بادشاہ کے ماتحت نہ تھا پر بادشاہ اُسے نکال سکتا تھا. اورنگزیب کے تخت پر بیٹھنے کے وقت اِس کی بہت اچھی مثال دیکھنے کو ملی. صدر الصدر نے شاہجہاں کے زندہ رھتے ھوئے اورنگزیب کو بادشاہ قرار دینے سے انکار کر دیا. اورنگزیب کو اُسے برخاست کر کے دوسرا صدر مقرر کرنا پڑا. اِس دوسرے صدر نے پہلے ھی سے یہ رائے ظاھر کر دی تھی کہ چونکہ شاہجہاں قید میں ھونے کی وجہ سے کام کرنے کے قابل نہیں اِس لئے اُس کے زندہ رھتے ھوئے بھی اورنگزیب کے نام کا خطبہ پڑھا جا سکتا ھے. اِس طرح مغل بادشاھوں کے لئے اپنے کسی کام کو ٹھیک ثابت کرنے کے لئے یہ لازمی تھا کہ وہ کوئی نہ کوئی ایسا عالم ڈھونڈھ لیں جو صدرالصدر بن کر بادشاہ کے کام کو جائز قرار دے سکے. اورنگزیب کے زمانے میں ایک اور طرح سے یہ چمک گیا کہ شرع کے معاملے میں بادشاہ کس طرح دوسرے کے ماتحت تھا. کچھ افسر اِس کام کے لئے مقرر کئے گئے تھے جو رعایا کو اجازت دیتے تھے کہ وے اگر بادشاہ کے خلاف کوئی نالش کرنا چاھیں تو کر سکیں. یہ افسر وکلاء شرع کہلاتے تھے. یہ مقدمے بادشاہ کے خلاف اُس طرح کے ذاتی معاملوں میں دائر کئے جاسکتے تھے جس طرح کہ انگریزی قانون میں پیٹینٹس آف رائٹ کے ماتحت دائر کیا جاتا تھا. اورنگزیب کی حکومت کی پالسی سے اِن کا کوئی تعلق نہیں تھا اور نہ کوئی اُس کے مطابق ملک کے راج کاج میں دخل دے سکتا تھا.

مغل سلطنت مذھبی سلطنت تو نہیں تھی، لیکن کئی

जान बख्श देने के बजाय उसे क़ाज़ी के पास हुक्म के लिए भेज दिया. औरंगज़ेब का ज़माना मुसलमानों के पूरे ज़ोर का ज़माना था और औरंगज़ेब .ख़ुशी से मुसलमानों के फ़ैसले के आगे सर झुका देता था.

अब यह सवाल पैदा होता है कि मुग़ल राज मज़हबी राज था. मुग़ल राज से पहले के यानी शुरू ज़माने के मुसलिम बादशाहों का अमल चाहे कैसा भी रहा हो मुग़लों की हुकूमत इसलामी या मज़हबी नहीं कही जा सकती. मज़हबी हुकूमत का मतलब यह है कि हुकूमत यानी सरकार पुरोहितों, पादरियों या मुल्लाओं के मातेहत हो. इसलाम ने ईसाई चर्च की तरह कभी मुसलिम मुल्लाओं का इजतमा नहीं खड़ा किया. इसलाम में कभी भी कोई ख़ास पुरोहित यानी मज़हबी रस्में अदा करने कराने वाली कोई ख़ास जमाअत नहीं रही. मज़हबी तौर पर इसलाम में कभी भी कोई ख़ास छोटे बड़े पुरोहित या पादरी नहीं हुए. इसलिये मज़मून में मज़हबी हुकूमत मुसलिम राज में हो ही नहीं सकती थी जबकि किसी को किसी वक़्त भी शरअ का ऐसा मतलब बता देने का हक़ नहीं था जिसमें ग़ल्ती न हो सके. मुसलमानों में ख़लीफ़ा हुए हैं. कभी कभी एक साथ एक से ज़्यादा भी ख़लीफ़ा हुए हैं. लेकिन ख़लीफ़ा उन मानों में मुसलमानों का रूहानी हाकिम नहीं होता था जिन मानों में अभी तक पोप कैथोलिक ईसाइयों का रूहानी हाकिम है. जिस तरह पोप को ईसाई धर्म के मामलों में इस तरह के हुक्म जारी करने का हक़ है जिनका मानना हर ईसाई का फ़र्ज़ है उस तरह ख़लीफ़ा को कभी आम मुसलमानों के लिये हुक्म जारी करने का हक़ हासिल नहीं हुआ. इसलाम अभी तक मज़हबी मामलों में सिर्फ़ एक ही चीज़ को सनद मानता है और वह है रसूल की हदीसों और सहाबा की ज़िन्दगी के वाक़यों की रोशनी में क़ुरान का हुक्म. उसमें सिर्फ़ एक तब्दीली मान ली गई थी. वह यह कि तमाम मुसलिम दुनिया मिलकर जिस चीज़ को जायज़ कह दे वह जायज़ है.

जबकि सब जगह इसलाम की सूरत यह थी तो हिन्दुस्तान में और ख़ासकर मुग़ल हिन्दुस्तान में तो यह और भी ज़्यादा ज़रूरी थी. इस मुल्क में हिन्दुस्तान की आबादी के एक बहुत बड़े हिस्से के साथ इसलाम को शरअ से कोई ताल्लुक़ नहीं था. जिस मुल्क में आबादी के इतने बड़े हिस्से को बड़े-बड़े मामलों में उनके अपने क़ानून के मातेहत छोड़ दिया गया था वहाँ इसलाम की कोई मज़हबी हुकूमत हो ही नहीं सकती थी. इस मामले में औरंगज़ेब ने भी कोई तब्दीली करने की कोशिश नहीं की.

लेकिन एक बात ऐसी थी कि जिस में मुग़ल राज ने एक मज़हबी आलिम के अख़्तियार को बहुत दर्जे तक मान

جان بخش دینے کے بجائے اُسے قاضی کے پاس حکم کے لئے بھیج دیا ۔ اورنگزیب کا زمانہ مسلمانوں کے پورے زور کا زمانہ تھا اور اورنگزیب خوشی سے مسلمانوں کے فیصلے کے آگے سر جھکا دیتا تھا ۔

اب یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ مغل راج مذہبی راج تھا۔ مغل راج سے پہلے کے یعنی شروع زمانے کے مسلم بادشاہوں کا عمل چاہے کیسا بھی رہا ہو مغلوں کی حکومت اِسلامی یا مذہبی نہیں کہی جا سکتی ۔ مذہبی حکومت کا مطلب یہ ہے کہ حکومت یعنی سرکار پروہتوں، پادریوں یا ملاؤں کے ماتحت ہو ۔ اِسلام نے عیسائی چرچ کی طرح کبھی مسلم ملاؤں کا اجتماع نہیں کھڑا کیا ۔ اِسلام میں کبھی بھی کوئی خاص پروہت یعنی مذہبی رسمیں ادا کرنے کرانے والی کوئی خاص جماعت نہیں رہی ۔ مذہبی طور پر اسلام میں کبھی بھی کوئی خاص چھوٹے بڑے پروہت یا پادری نہیں ہوئے ۔ اِس لئے مضمون میں مذہبی حکومت مسلم راج میں ہو ہی نہیں سکتی تھی جب کہ کسی کو کسی وقت بھی شرع کا ایک ایسا مطلب بتا دینے کا حق نہیں تھا جس میں غلطی نہ ہو سکے ۔ مسلمانوں میں خلیفہ ہوئے ہیں ۔ کبھی کبھی ایک ساتھ ایک سے زیادہ بھی خلیفہ ہوئے ہیں ۔ لیکن خلیفہ اُن معنوں میں مسلمانوں کا روحانی حاکم نہیں ہوتا تھا جن معنوں میں ابھی تک پوپ کیتھولک عیسائیوں کا روحانی حاکم ہے ۔ جس طرح پوپ کو عیسائی دھرم کے معاملوں میں اِس طرح کے حکم جاری کرنے کا حق ہے جن کا ماننا ہر عیسائی کا فرض ہے اُس طرح خلیفہ کو کبھی عام مسلمانوں کے لئے حکم جاری کرنے کا حق حاصل نہیں ہوا ۔ اسلام ابھی تک مذہبی معاملوں میں صرف ایک ہی چیز کو سند مانتا ہے اور وہ ہے رسول کی حدیثوں اور صحابہ کی زندگی کے واقعوں کی روشنی میں قرآن کا حکم ۔ اِس میں صرف ایک تبدیلی مان لی گئی تھی ۔ وہ یہ کہ تمام مسلم دنیا مل کر جس چیز کو جائز کہہ دے وہ جائز ہے ۔

جب کہ سب جگہ اسلام کی صورت یہ تھی تو ہندستان میں اور خاص کر مغل ہندستان میں تو یہ اور بھی زیادہ ضروری تھی ۔ اِس ملک میں ہندستان کی آبادی کے ایک بہت بڑے حصے کے ساتھ اِسلام کو شرع سے کوئی تعلق نہیں تھا ۔ جس ملک میں آبادی کے اتنے بڑے حصے کو بڑے بڑے معاملوں میں اُن کے اپنے قانون کے ماتحت چھوڑ دیا گیا تھا وہاں اِسلام کی کوئی مذہبی حکومت ہو ہی نہیں سکتی تھی ۔ اِس معاملے میں اورنگزیب نے بھی کوئی تبدیلی کرنے کی کوشش نہیں کی ۔

لیکن ایک بات ایسی تھی کہ جس میں مغل راج نے ایک مذہبی عالم کے اختیار کو بہت درجے تک مان

किया जाता था कि जो मुसलमान मज़हबी जुर्म करेगा यानी अपने किसी मज़हबी फ़र्ज़ को पूरा नहीं करेगा उसपर ख़ास हालतों में शरअ के मुताबिक़ मुक़दमा नहीं चलाया जायगा. मानना पड़ता है कि मुग़ल बादशाहों ने इस मामले में लोगों को काफ़ी रियायत दे दी थी. बाज़ लोग समझते हैं कि इसकी पहल अकबर ने की थी लेकिन यह ग़लत है. अकबर से पहले अलाउद्दीन और मुहम्मद तुग़लक़ इसी तरह का आज़ाद ढंग अख़्तियार कर चुके थे. अकबर ने ख़ुद अपने सुल्तान, आदिल या इमाम आदिल होने का जो फ़रमान उल्माओं को जमा करके उनसे जारी कराया था जिसके मुताबिक़ उल्माओं की एक दूसरे के ख़िलाफ़ दो रायों में किसी एक को ठीक ऐलान कर देने का अकबर को हक़ मिल गया था, जिसे योरुप वाले ग़ल्ती से "इनफ़ालिएबिलिटि डिक्री" यानी 'बादशाह की मासूमियत का फ़रमान' कहते हैं, वह भी असल में मुसलिम शरअ को बदलने वाली चीज़ नहीं थी बल्कि एक बहुत बड़े दर्जे तक मुसलमानों को तसल्ली देने वाली चीज़ थी. अलाउद्दीन ने यह ऐलान कर दिया था कि "मैं शरअ का क़ानून नहीं जानता और इसलिये जो मेरा दिल कहता है वही करता हूँ" इसके ख़िलाफ़ अकबर का यही कहना था कि मैं जो करता हूँ शरअ के मुताबिक़ करता हूँ. सिर्फ़ शरअ के जानने वाले मुख़्तलिफ़ आलिमों की जो अलग अलग राय एक दूसरे के ख़िलाफ़ मौजूद हैं उनमें से मैं किसी एक राय को चुन लेता हूँ." इसका मतलब यह हुआ कि जहाँ तक उसूल की बात है अकबर ने भी शरअ को बदलने का अख़्तियार अपने हाथ में नहीं लिया. यह दूसरी बात है कि अमल में उसने शरअ के कुछ हुक्मों की परवाह नहीं की और उसका अमल किसी बात में शरअ के ख़िलाफ़ रहा.

औरंगज़ेब ने शरअ के बदलने के इस हक़ से बिलकुल ही हाथ खींच लिया. बार बार देखने में आता है कि औरंगज़ेब न सिर्फ़ दीवानी और फ़ौजदारी के मामले में ही शरै के आलिमों की राय लेता था बल्कि सरकारी टैक्स लगाने के मामले, तिजारत और ब्योपार के क़ायदे क़ानून बनाने में भी वह अक्सर शरअ का हुक्म देखता था. अहमदाबाद में कुछ लोगों ने तार बनाने का काम अपने ही हाथों में ले रखा था. औरंगज़ेब ने आलिमों से सलाह कर इस इजारे को तोड़ दिया और सबको तार बनाने और बेचने की इजाज़त दे दी. एक मर्तबा औरंगज़ेब ने ग़ल्ला वग़ैरा का निर्ख़ बाँध देना चाहा लेकिन जैसे ही उसे मालूम हुआ कि ऐसा शरअ के ख़िलाफ़ है उसने अपनी कोशिश बन्द कर दी. उसे किसी के मुसलमान होने पर ख़ुशी होती थी लेकिन फिर भी एक मर्तबा जब किसी आदमी ने, जिसे क़त्ल के मामले में मौत की सज़ा दी गई थी, मुसलमान हो जाने और जान बख़्शवाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो औरंगज़ेब ने उसकी

کیا جاتا تھا کہ جو مسلمان مذہبی جرم کریگا یعنی اپنے کسی مذہبی فرض کو پورا نہیں کرے گا اُس پر خاص حالتوں میں شرع کے مطابق مقدمہ نہیں چلایا جائیگا ۔ ماننا پڑتا ہے کہ مغل بادشاہوں نے اِس معاملے میں لوگوں کو کافی رعایت دے دی تھی ۔ بعض لوگ سمجھتے ہیں کہ اِس کی پہل اکبر نے کی تھی لیکن یہ غلط ہے ۔ اکبر سے پہلے علاؤالدین اور محمد تغلق اِسی طرح کا آزاد ڈھنگ اختیار کر چکے تھے ۔ اکبر نے خود اپنے سلطان عادل یا امام عادل ہونے کا جو فرمان علماؤں کو جمع کر کے اُن سے جاری کرایا تھا جس کے مطابق علماؤں کی ایک دوسرے کے خلاف دو رایوں میں کسی ایک کو ٹھیک اعلان کر دینے کا اکبر کو حق مل گیا تھا' جیسے یورپ والے غلطی سے "اِنفالئیبلیٹی ڈکری" یعنی 'بادشاہ کی معصومیت کا فرمان' کہتے ہیں' وہ بھی اصل میں مسلم شرع کو بدلنے والی چیز نہیں تھی بلکہ ایک بڑے درجے تک مسلمانوں کو تسلی دینے والی چیز تھی ۔ علاؤ الدین نے یہ اعلان کر دیا تھا کہ "میں شرع کا قانون نہیں جانتا اور اِس لئے جو میرا دل کہتا ہے وہی کرتا ہوں ۔" اِس کے خلاف اکبر کا یہی کہنا تھا کہ "میں جو کرتا ہوں شرع کے مطابق کرتا ہوں ۔ صرف شرع کے جاننے والے مختلف عالموں کی دو الگ الگ رائے ایک دوسرے کے خلاف موجود ہیں ان میں سے میں کسی ایک رائے کو چن لیتا ہوں ۔" اِس کا مطلب یہ ہوا کہ جہاں تک اصول کی بات ہے اکبر نے بھی شرع کو بدلنے کا اختیار اپنے ہاتھ میں نہیں لیا ۔ یہ دوسری بات ہے کہ عمل میں اُس نے شرع کے کچھ حکموں کی پرواہ نہیں کی اور اُس کا عمل کسی بات میں شرع کے خلاف رہا ۔

اورنگزیب نے شرع کے بدلنے کے اِس حق سے بالکل ہی ہاتھ کھینچ لیا ۔ بار بار دیکھنے میں آتا ہے کہ اورنگزیب نہ صرف دیوانی اور فوجداری کے معاملے میں ہی شرع کے عالموں کی رائے لیتا تھا بلکہ سرکاری ٹیکس لگانے کے معاملے' تجارت اور بیوپار کے قاعدے قانون بنانے میں بھی وہ اکثر شرع کا حکم دیکھتا تھا ۔ احمدآباد میں کچھ لوگوں نے تار بنانے کا کام اپنے ہی ہاتھوں میں لے رکھا تھا ۔ اورنگزیب نے عالموں سے صلاح کر اِس اجارے کو توڑ دیا اور سب کو تار بنانے اور بیچنے کی اجازت دے دی ۔ ایک مرتبہ اورنگزیب نے غلہ وغیرہ کا نرخ باندھ دینا چاہا لیکن جیسے ہی اُسے معلوم ہوا کہ ایسا شرع کے خلاف ہے اُس نے اپنی کوشش بند کر دی ۔ اُسے کسی کے مسلمان ہونے پر خوشی ہوتی تھی لیکن پھر بھی ایک مرتبہ جب کسی آدمی نے' جسے قتل کے معاملے میں موت کی سزا دی گئی تھی' مسلمان ہو جانے اور جان بخشوانے کی خواہش ظاہر کی تو اورنگزیب نے اُس کی

ज़रूर था लेकिन उसके बनाने में मुग़ल राज का कोई हाथ नहीं था. इन यूरप वालों को कोई मुग़ल क़ानून नहीं मिले क्योंकि मुग़लों ने कभी नये क़ानून बनाये ही नहीं. लिखे हुए क़ानून तो उस ज़माने में इतने ज़्यादा थे कि औरंगज़ेब ने, जो ख़ुद बड़ा आलिम था, यह महसूस किया कि मुसलिम शरअ की पेचीदगियों में से रास्ता मिलना भी कभी कभी मुश्किल हो जाता है. इसलिये औरंगज़ेब ने शरअ के क़ानून को फिर से तरतीब देकर लिखवाया. इस काम में औरंगज़ेब ने बादशाह की हैसियत से अपना कोई अख़्तियार नहीं जताया. "फ़तवए आलमगीरी" नाम की किताब तैयार कराई गई. बहुत से आलिमों ने मिलकर उसे तैयार किया. किताब के नाम के साथ आलमगीरी के नाम से यह नहीं समझना चाहिये कि उसमें कोई आलमगीर का हुक्म शामिल है. हर बात जो किताब में कही गई है उसके लिये किताब लिखने वाले आलिमों ने शरअ की किसी न किसी पुरानी किताब से हवाला दिया है.

मुग़ल ज़माने में ही हिन्दू धर्म शास्त्र की भी कई संस्कृत किताबें तैयार कराई गई, लेकिन इनमें भी किसी बादशाह के हुक्म से कोई बात नहीं लिखी गई. कमलाकर, रघुनन्दन, मित्र मिश्र, नरसिंह और बहुत से छोटे मोटे पंडितों ने धर्मशास्त्र के अलग अलग हिस्सों पर मेहनत की, इन विद्वानों ने हमेशा पुराने शास्त्रों से ही लेकर अपनी राय ज़ाहिर की है. कहीं कहीं इतना ज़रूर किया है कि जहाँ उन्हें पुरानी किताबों में तरह तरह की एक दूसरे के ख़िलाफ़ रायें मिली हैं वहाँ उन्होंने उन्हीं में से किसी एक राय को लेकर अपना एक नया रास्ता बनाया है. इस मामले में हिन्दुओं को एक और रियायत थी जो मुसलमानों को नहीं थी. हिन्दुओं की अपनी कचहरियाँ थीं जो पंचायतें कहलाती थीं. धर्मशास्त्र का मतलब मालूम करने में जहाँ दिक़्क़त होती थी यह पंचायतें उसी पर आख़िरी फ़ैसला देती थीं. आम मुग़ल ज़माने में किसी मुग़ल बादशाह की तरफ़ से इन पंचायतों के रंग रूप, उनके पंचों या उनके काम के ढंग को बदलने या उसमें दख़ल देने की कोशिश नहीं की गई.

फ़ौजदारी का क़ानून यानी जुर्मों की सज़ा देने का क़ानून इसलामी क़ानून था. मामूली तौर पर रियाया और राज और रियाया के ताल्लुक़ इसलामी क़ानून से चलते थे. अकबर ने मुग़ल राज की मज़हबी पालिसी को बदलकर एक ख़ास नई तब्दीली की थी. लेकिन जो तब्दीलियाँ अकबर ने कीं वे भी असल में मुल्क के अमन आमान से ही वास्ता रखती थीं. ऐसे मौक़ों पर आम तौर से राज की तरफ़ से यह ऐलान कर दिया जाता था कि कुछ क़ायदे क़ानून को तोड़ देने पर भी सरकार, ख़ासकर, ग़ैर मुसलिम मुजरिमों पर मुक़दमा नहीं चलावेगी. कभी कभी यह ऐलान

ضرور تھا لیکن اُس کے بنانے میں مغل راج کا کوئی ھاتھ نہیں تھا۔ ان یورپ والوں کو کوئی مغل قانون نہیں ملے کیونکہ مغلوں نے کبھی نئے قانون بنائے ھی نہیں۔ لکھے ھوئے قانون تو اُس زمانے میں اِتنے زیادہ تھے کہ اورنگزیب نے، جو خود بڑا عالم تھا، یہ محسوس کیا کہ مسلم شرع کی پیچیدگیوں میں سے راستہ ملنا بھی کبھی کبھی مشکل ھو جاتا ھے۔ اِس لئے اورنگزیب نے شرع کے قانون کو پھر سے ترتیب دے کر لکھوایا۔ اس کام میں اورنگزیب نے بادشاہ کی حیثیت سے اپنا کوئی اختیار نہیں جتایا۔ "فتوئہ عالمگیری" نام کی کتاب تیار کرائی گئی۔ بہت سے عالموں نے مل کر اُسے تیار کیا۔ کتاب کے نام کے ساتھ عالمگیری کے نام سے یہ نہیں سمجھنا چاھئے کہ اُس میں کوئی عالمگیر کا حکم شامل ھے۔ ھر بات جو کتاب میں کہی گئی ھے اُس کے لئے کتاب لکھنے والے عالموں نے شرع کی کسی نہ کسی پرانی کتاب سے حوالہ دیا ھے۔

مغل زمانے میں ھی ھندو دھرم شاستر کی بھی کئی سنسکرت کتابیں تیار کرائی گئیں؛ لیکن اِن میں بھی کسی بادشاہ کے حکم سے کوئی بات نہیں لکھی گئی۔ کملا کر، رگھونندن، مِتر مِشر، نرسنگھ اور بہت سے چھوٹے موٹے پنڈتوں نے دھرم شاستر کے الگ الگ حصوں پر محنت کی، اِن ودوانوں نے ھمیشہ پرانے شاستروں سے ھی لے کر اپنی رائے ظاھر کی ھے۔ کہیں کہیں اتنا ضرور کیا ھے کہ جہاں انہیں پرانی کتابوں میں طرح طرح کی ایک دوسرے کے خلاف رائیں ملی ھیں وھاں اُنہوں نے اُنہیں میں سے کسی ایک رائے کو لے کر اپنا ایک نیا راستہ بنایا ھے۔ اِس معاملے میں ھندوؤں کو ایک اور رعایت تھی جو مسلمانوں کو نہیں تھی۔ ھندوؤں کی اپنی کچہریاں تھیں جو پنچائتیں کہلاتی تھیں۔ دھرم شاستر کا مطلب معلوم کرنے میں جہاں دقت ھوتی تھی یہ پنچائتیں اُس پر آخری فیصلہ دیتی تھیں۔ عام مغل زمانے میں کسی مغل بادشاہ کی طرف سے اِن پانچایتوں کے رنگ روپ، اُن کے پنچوں یا اُن کے کام کے ڈھنگ کو بدلنے یا اُس میں دخل دینے کی کوشش نہیں کی گئی۔

فوجداری کا قانون یعنی جرموں کی سزا دینے کا قانون اِسلامی قانون تھا۔ معمولی طور پر رعایا اور راج اور رعایا کے تعلق اِسلامی قانون سے چلتے تھے۔ اکبر نے مغل راج کی مذھبی پالیسی کو بدل کر ایک خاص نئی تبدیلی کی تھی۔ لیکن جو تبدیلیاں اکبر نے کیں وے بھی اصل میں ملک کے امن آمان سے ھی واسطہ رکھتی تھیں۔ ایسے موقعوں پر عام طور سے راج کی طرف سے یہ اعلان کر دیا جاتا تھا کہ کچھ قاعدے قانون کو توڑ دینے پر بھی سرکار، خاص کر، غیر مسلم مجرموں پر مقدمہ نہیں چلاوے گی۔ کبھی کبھی یہ اعلان

शाही हुकूमत के सम्बंध में आता है वह सिर्फ़ एक रिवाजी चीज़ है या वह लफ़्ज़ों का हेर फेर है या यह है कि और सब चीज़ों की तरह बादशाह का पैदा करनेवाला भी अल्लाह ही है. अब हम अपने दूसरे मसले पर आ जाते हैं यानी यह कि मुग़ल हुकूमत कहाँ तक एशियाई तानाशाही थी. इससे यह सवाल भी पैदा होता है कि "एशियाई तानाशाही" क्या चीज़ है ? इस बात में बहुत शक है कि एशिया में कभी किसी ख़ास क़िस्म की तानाशाही गढ़ी गई हो जो यूरप की तानाशाही से ज़्यादा बुरी हो. इस क़िस्म की हुकूमत में पूरब और पश्चिम, एशिया और यूरप का कोई फ़र्क़ नहीं. जैसे .फ्रांस में लुई चौदहवाँ यह दावा करता था कि मैं ही हुकूमत हूँ वैसे ही हिन्दुस्तान में औरंगज़ेब ने उससे बढ़कर कोई बात नहीं कही. बल्कि आम तौर पर यह दावा भी नहीं किया.

इसमें कोई शक नहीं कि मुग़ल बादशाहों की हुकूमत शख़्सी हुकूमत थी. उस ज़माने में आम जनता के चुने हुए लोगों की कोई इस तरह की कौंसिल या पार्लीमेंट वग़ैरा नहीं थी जिसके ज़रिये बादशाह के कामों पर रोक थाम रखी जा सकती. लेकिन अगर उसके यह मानी लें कि मुग़ल बादशाह अपनी रियाया के जान माल के पूरे मालिक थे और जो चाहे कर सकते थे या सियासी मामलों में भी जो चाहे हुक्म दे सकते थे, उन्हें कभी भी क़ानून के मातेहत नहीं माना गया, बल्कि वे अक्सर .ख़ुद अपने को क़ानून के नौकर कहते थे तो दूसरी बात है. जायदाद वग़ैरा सब तरह के मामलों में रियाया का कुल ज़ाती क़ानून हिन्दू धर्म शास्त्र और मुसलिम शरअ पर चलता था. मुग़ल बादशाह मानते थे कि उन्हें उसमें तब्दीली करने का कोई अख़्तियार नहीं है. जहाँ तक पता चलता है सिर्फ़ शाहजहाँ ने एक मौक़े पर हिन्दू धर्म शास्त्र में कुछ तब्दीली की थी. यह उस वक़्त जब शाहजहाँ ने यह हुक्म जारी कर दिया कि अगर कोई हिन्दू इसलाम को अपनाना चाहे तो उस घर के लोग उस पर जायदाद वग़ैरा के डर का बेजा दबाव न डालें. मुमकिन है कि इससे धर्मशास्त्र के जायदाद के विरासत के क़ानून में कोई तब्दीली पैदा हुई हो. क्योंकि धर्मशास्त्र का क़ानून यह रहा होगा कि मज़हब बदल लेन पर कोई शख़्स अपनी ख़ान्दानी विरासत नहीं पा सकता. और शाहजहाँ के क़ानून के मुताबिक़ एक हिन्दू मुसलमान हो जाने पर भी अपनी ख़ान्दानी विरासत पा सकता था. मुसलमानों की शरअ में तो कभी किसी बादशाह ने किसी तब्दीली की कोशिश नहीं की.

इस वजह से कुछ मशहूर योरोपियन मुसाफ़िरों ने यह अजीब बात कह डाली है कि मुग़लों के ज़माने में कोई लिखा हुआ क़ानून था ही नहीं. लिखा हुआ क़ानून तो

شاہی حکومت کے سمبندھ میں آتا ہے وہ صرف ایک رواجی چیز ہے یا وہ لفظوں کا ھیر پھیر ہے یا یہ ہے کہ اور سب چیزوں کی طرح بادشاہ کا پیدا کرنے والا بھی اللہ ھی ہے . اب ہم اپنے دوسرے مسئلے پر آجاتے ھیں یعنی یہ کہ مغل حکومت کہاں تک ایشیائی تاناشاھی تھی . اُس سے یہ سوال بھی پیدا ھوتا ہے کہ "ایشیائی تانا شاھی" کیا چیز ہے ؟ اِس بات میں بہت شک ہے کہ ایشیا میں کبھی کسی خاص قسم کی تاناشاھی گڑھی گئی ھو جو یورپ کی تاناشاھی سے زیادہ بری ھو . اِس قسم کی حکومت میں پورب اور پچھم، ایشیا اور یورپ کا کوئی فرق نہیں . جیسے فرانس میں لوئی چودھواں یہ دعوی کرتا تھا کہ میں ھی حکومت ھوں ویسے ھی ھندستان میں اورنگزیب نے اُس سے بڑھ کر کوئی بات نہیں کہی . بلکہ عام طور پر یہ دعوی بھی نہیں کیا .

اِس میں کوئی شک نہیں کہ مغل بادشاھوں کی حکومت شخصی حکومت تھی . اُس زمانے میں عام جنتا کے چنے ھوئے لوگوں کی کوئی اِس طرح کی کونسل یا پارلیمینٹ وغیرہ نہیں تھی جس کے ذریعہ بادشاہ کے کاموں پر روک تھام رکھی جا سکتی . لیکن اگر اُس کے یہ معنی لیں کہ مغل بادشاہ اپنی رعایا کے جان مال کے پورے مالک تھے اور جو چاھے کر سکتے تھے یا سیاسی معاملوں میں بھی جو چاھے حکم دے سکتے تھے، انھیں کبھی بھی قانون کے ماتحت نہیں مانا گیا، بلکہ وے اکثر خود اپنے کو قانون کے نوکر کہتے تھے تو دوسری بات ہے . جائیداد وغیرہ سب طرح کے معاملوں میں رعایا کا کل ذاتی قانون ھندو دھرم شاستر اور مسلم شرع پر چلتا تھا . مغل بادشاہ مانتے تھے کہ اُنھیں اُس میں تبدیلی کرنے کا کوئی اختیار نہیں ہے . جہاں تک پتہ چلتا ہے صرف شاہ جہاں نے ایک موقع پر ھندو دھرم شاستر میں کچھ تبدیلی کی تھی . یہ اُس وقت جب شاہجہاں نے یہ حکم جاری کر دیا کہ اگر کوئی ھندو اسلام کو اپنانا چاھے تو اُس گھر کے لوگ اُس پر جائیداد وغیرہ کے ڈر کا بیجا دباؤ نہ ڈالیں . ممکن ہے کہ اِس سے دھرم شاستر کے جائداد کے وراثت کے قانون میں کوئی تبدیلی پیدا ھوئی ھو . کیونکہ دھرم شاستر کا قانون یہ رھا ھوگا کہ مذھب بدل لینے پر کوئی شخص اپنی خاندانی وراثت نہیں پا سکتا . اور شاہجہاں کے قانون کے مطابق ایک ھندو مسلمان ھوجانے پر بھی اپنی خاندانی وراثت پا سکتا تھا . مسلمانوں کی شرع میں تو کبھی کسی بادشاہ نے کسی تبدیلی کی کوشش نہیں کی .

اِس وجہ سے کچھ مشہور یوروپین مسافروں نے یہ عجیب بات کہہ ڈالی ہے کہ مغلوں کے زمانے میں کوئی لکھا ھوا قانون تھا ھی نہیں . لکھا ھوا قانون تو

कुछ होता है वह .ख़ुदा के ही हुक्म से होता है. इन बातों से यह साबित नहीं होता कि मुग़ल बादशाहों का यह दावा था कि वह मामूली इन्सान से कुछ भी ऊँचा रुतबा रखते थे और न इन चीजों से उन्हें कोई मजहबी या दीनी रुतबा हासिल होता था. उस जमाने के यूरप के बहुत से बादशाहों का यह दावा था कि उनकी तख़्तनशीनी के वक़्त उनके सर पर पवित्र तेल की मालिश किये जाने से उनको ख़ास मजहबी रुतबा हासिल हो जाता था जो आम इन्सानों को हासिल नहीं था. इस बारे में मुग़ल बादशाहों का जो ख़्याल था और यूरप के (Divine Right) .ख़ुदाई हक़ मानने वाले बादशाहों का जो ख़्याल था उन दोनों का फ़र्क़ सत्रहवीं सदी के इंगलिस्तान की तारीख़ को देखने से अच्छी तरह समझ में आ सकता है. जब जेम्स अव्वल ने राज के लिये अपने हक़ को ख़ुदा का दिया हक़ बताया तो यह एक मजहबी उसूल पैदा होगया कि बादशाह की किसी चीज की किसी को मुख़ालिफ़त नहीं करनी चाहिये और सबको बादशाह का हुक्म चुपचाप मान लेना चाहिये. बादशाह से बग़ावत करना सिर्फ़ एक क़ानूनी जुर्म ही नहीं रहा बल्कि एक मजहबी गुनाह भी समझा गया जिसको परलोक या आख़िरत में भुगतना पड़ेगा. इसी से इंगलैंड के इन्क़लाब के बाद ऐसे पादरी पैदा हो गये थे जिन्होंने विलियम और मेरी की वफ़ादारी की क़सम खाने से इन्कार कर दिया था. उनमें उस जमाने के इंगलिस्तान के कुछ बड़े से बड़े पादरी भी शामिल थे. उन्होंने यह ख़्याल जाहिर किया कि जेम्स दोयम जो समुद्र पार चला गया था उनका क़ानूनी बादशाह है. उन्हीं में से कुछ लोगों ने मिलकर हालैन्ड से विलियम को बुला भेजा था ताकि जेम्स दोयम इंगलिस्तान को कैथोलिक बना डालने की कोशिश न कर सके. शाही मरतबे के बारे में इस तरह का ख़्याल मुग़ल जमाने के हिन्दुस्तान में मौजूद न था. जब सलीम ने अपने बाप अकबर के ख़िलाफ़ बग़ावत की तो किसी क़ाज़ी ने उसके ख़िलाफ़ फ़तवा नहीं दिया और न जब .ख़ुर्रम ने जहाँगीर के ख़िलाफ़ बग़ावत की तो किसी क़ाज़ी ने उसे गुनहगार ठैहराया. अलबत्ता यह सच है कि औरंगजेब के गद्दी पर बैठने के वक़्त सदरुस्सदर ने उसी के नाम को पढ़ने और उसके शहन्शाह होने का ऐलान करने से इन्कार कर दिया था, इसलिये कि औरंगजेब का बाप शाहजहाँ उस वक़्त ज़िन्दा था. मगर उस मिसाल से मुग़ल ताज के दैवी या .ख़ुदाई होने का उसूल साबित नहीं होता. अकबर के जमाने में भी जब उसके सौतेले भाई हकीम ने हिन्दुस्तान पर हमला किया तो अकबर ने कोई .ख़ुदाई दावा पेश नहीं किया बल्कि बाप की सल्तनत को विरासत में पाने के लिये सिर्फ़ अपनी फ़ौजी ताक़त पर ही भरोसा किया था. इस तरह जहाँ कहीं .ख़ुदाई हक़ का जिक्र, शाही ताक़त या

کچھ ہوتا ہے وہ خدا کے ہی حکم سے ہوتا ہے۔ اِن باتوں سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ مغل بادشاہوں کا یہ دعویٰ تھا کہ وہ معمولی اِنسان سے کچھ بھی اُونچا رتبہ رکھتے تھے اور نہ اِن چیزوں سے اُنہیں کوئی مذہبی یا دینی رتبہ حاصل ہوتا تھا۔ اُس زمانے کے یورپ کے بہت سے بادشاہوں کا یہ دعویٰ تھا کہ اُن کی تخت نشینی کے وقت اُن کے سر پر پوتر تیل کی مالش کئے جانے سے اُن کو خاص مذہبی رتبہ حاصل ہو جاتا تھا جو عام اِنسانوں کو حاصل نہیں تھا۔ اِس بارے میں مغل بادشاہوں کا جو خیال تھا اور یورپ کے (Divine Right) خدائی حق ماننے والے بادشاہوں کا جو خیال تھا اُن دونوں کا فرق سترھویں صدی کے انگلستان کی تاریخ کو دیکھنے سے اچھی طرح سمجھ میں آ سکتا ہے۔ جب جیمس اول نے راج کے لئے اپنے حق کو خدا کا دیا حق بتایا تو یہ ایک مذہبی اُصول پیدا ہو گیا کہ بادشاہ کی کسی چیز کی کسی کو مخالفت نہیں کرنی چاہئے اور سب کو بادشاہ کا حکم چپ چاپ مان لینا چاہئے۔ بادشاہ سے بغاوت کرنا صرف ایک قانونی جرم ہی نہیں رہا بلکہ ایک مذہبی گناہ بھی سمجھا گیا جس کو پرلوک یا آخرت میں بھگتنا پڑیگا۔ اِسی سے انگلینڈ کے انقلاب کے بعد ایسے پادری پیدا ہو گئے تھے جنھوں نے ولیم اور میری کی وفاداری کی قسم کھانے سے انکار کر دیا تھا۔ اُن میں اُس زمانے کے انگلستان کے کچھ بڑے سے بڑے پادری بھی شامل تھے۔ انھوں نے یہ خیال ظاہر کیا کہ جیمس دویم جو سمندر پار چلا گیا تھا اُن کا قانونی بادشاہ ہے۔ اِنھیں میں سے کچھ لوگوں نے مل کر ہالینڈ سے ولیم کو بلا بھیجا تھا تاکہ جیمس دویم انگلستان کو کیتھولک بنا ڈالنے کی کوشش نہ کر سکے۔ شاہی مرتبہ کے بارے میں اِس طرح کا خیال مغل زمانے کے ہندستان میں موجود نہ تھا۔ جب سلیم نے اپنے باپ اکبر کے خلاف بغاوت کی تو کسی قاضی نے اُس کے خلاف فتویٰ نہیں دیا اور نہ جب خرم نے جہانگیر کے خلاف بغاوت کی تو کسی قاضی نے اُسے گناہگار ٹھہرایا۔ البتہ یہ سچ ہے کہ اورنگزیب نے گدی پر بیٹھنے کے وقت صدرالصدر نے اس کے نام کو پڑھنے اور اُس کے شہنشاہ ہونے کا اعلان کرنے سے انکار کر دیا تھا، اِس لئے کہ اورنگزیب کا باپ شاہجہاں اُس وقت زندہ تھا۔ مگر اُس مثال سے مغل تاج کے دیوی یا خدائی ہونے کا اصول ثابت نہیں ہوتا۔ اکبر کے زمانے میں بھی جب اُس کے سوتیلے بھائی حکیم نے ہندستان پر حملہ کیا تو اکبر نے کوئی خدائی دعویٰ پیش نہیں کیا بلکہ باپ کی سلطنت کو وراثت میں پانے کے لئے صرف اپنی فوجی طاقت پر ہی بھروسہ کیا تھا۔ اِس طرح جہاں کہیں خدائی حق کا ذکر شاہی طاقت یا

हिन्दुस्तान में मुग़ल हुकूमत का ढंग

प्रोफ़ेसर श्रीराम शर्मा एम० ए०

हिन्दुस्तान में मुग़ल बादशाहों की मजहबी पालिसी पर इतनी गरमा गरम बहस होती रही है कि मुग़लों के हुकूमत करने के तरीक़े के बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है. कोई कहता है कि मुग़लों की हुकूमत बिलकुल एक एशियाई तानाशाही थी और कोई कहता है कि वह एक इसलामी यानी मजहबी हुकूमत थी. यहाँ तक दावा किया गया है कि हिन्दुस्तान का राज मुग़लों की .ख़ुदाई देन थी और कुछ लोग मुग़ल बादशाहों को अल्लाह के मुक़र्रर किये हुए कहते हैं, यानी यह कि .ख़ुद अल्लाह ने उन्हें इस मुल्क पर हुकूमत करने का हुक्म दिया था. बदक़िस्मती से इन नतीजों पर पहुँचने से पहले लोगों ने उन असली किताबों और दस्तावेज़ों को अच्छी तरह नहीं देखा जो हमारे पास हिन्दुस्तान में मुग़ल हुकूमत के बारे में इस वक़्त मौजूद हैं. शुरू के अरब क़ानून बनाने वालों के क़ानूनी मसलों और दूसरे मुल्कों में मुसलमान बादशाहों के कामों, या हिन्दुस्तान के बाहर के लेखकों की बड़ी-बड़ी लफ़्ज़ी बहसों से यहाँ की मुग़ल हुकूमत का ठीक-ठीक रूप समझने में हमें कोई मदद नहीं मिलती. हाँ, इन बातों को ध्यान में रखकर हम अपनी तहक़ीक़ात आगे बढ़ा सकते हैं.

मुग़ल जमाने के कुछ इतिहास लिखने वालों और कुछ हाल के लेखकों ने बाज़ मुग़ल बादशाहों की बाबत यह दावा किया है कि उन्हें .ख़ुदा ने बादशाहत का हक़ दिया था. पहले हम इसी दावे पर ग़ौर कर लेना चाहते हैं. अकबर और उसके बाद के बादशाहों को उस ज़माने की तारीख़ लिखने वालों और ख़ासकर शाही इतिहास लेखकों ने अक्सर .ख़ुदा का ख़लीफ़ा या नायब कहकर बयान किया है. जब जहाँगीर के बेटे .ख़ुसरो ने अपने बाप के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी तो जहाँगीर ने ख़ु.द अपनी डायरी (तुज़क जहाँगीरी में दावा किया था कि उसको .ख़ुदा ने हिन्दुस्तान का शहन्शाह बनाया है. शाहजहाँ ने गोलकुन्डा के आदिल-शाह के नाम अपने एक ख़त में अपने को "ज़िलइल्लाह" (.ख़ुदा का साया) लिखा है. औरंगज़ेब ने अपने को दुनिया में .ख़ुदा का वकील लिखा है.

यह सब दावे साबित करते हैं कि मुग़ल बादशाह मानते थे कि उन्हें राज करने का हक़ ज़ाहिरा देखने में .ख़ुदा से मिला हुआ है. लेकिन जब हम ज़रा ग़ौर से देखें तो पता चलता है कि इन बादशाहों के यह सब दावे सिर्फ़ इस आम इसलामी यक़ीन को दुहराते हैं कि दुनिया में जो

ھندستان میں مغل حکومت کا ڈھنگ

پروفیسر شری رام شرما ایم۔ اے۔

ھندستان میں مغل بادشاھوں کی مذھبی پالیسی پر اتنی گرما گرم بحث ھوتی رھی ھے کہ مغلوں کے حکومت کرنے کے طریقہ کے بارے میں لوگوں کو بہت کم جانکاری ھے ۔ کوئی کہتا ھے کہ مغلوں کی حکومت بالکل ایک ایشیائی تاناشاھی تھی اور کوئی کہتا ھے کہ وہ ایک اسلامی یعنی مذھبی حکومت تھی ۔ یہاں تک دعویٰ کیا گیا ھے کہ ھندستان کا راج مغلوں کی خدائی دین تھی اور کچھ لوگ مغل بادشاھوں کو اللہ کے مقرر کئے ھوئے کہتے ھیں، یعنی یہ کہ خود اللہ نے انہیں اس ملک پر حکومت کرنے کا حکم دیا تھا ۔ بدقسمتی سے ان نتیجوں پر پہنچنے سے پہلے لوگوں نے ان اصلی کتابوں اور دستاویزوں کو اچھی طرح نہیں دیکھا جو ھمارے پاس ھندستان میں مغل حکومت کے بارے میں اس وقت موجود ھیں ۔ شروع کے عرب قانون بنانے والوں کے قانونی مسئلوں اور دوسرے ملکوں میں مسلمان بادشاھوں کے کاموں، یا ھندستان کے باھر کے لیکھکوں کی بڑی بڑی لفظی بحثوں سے یہاں کی مغل حکومت کا ٹھیک ٹھیک روپ سمجھنے میں ھمیں کوئی مدد نہیں ملتی ۔ ھاں، ان باتوں کو دھیان میں رکھ کر ھم اپنی تحقیقات آگے بڑھا سکتے ھیں ۔

مغل زمانے کے کچھ اتہاس لکھنے والوں اور کچھ حال کے لیکھکوں نے بعض مغل بادشاھوں کی بابت یہ دعویٰ کیا ھے کہ انہیں خدا نے بادشاھت کا حق دیا تھا ۔ پہلے ھم اسی دعوے پر غور کر لینا چاھتے ھیں ۔ اکبر اور اس کے بعد کے بادشاھوں کو اس زمانے کے تاریخ لکھنے والوں اور خاص کر شاھی اتہاس لیکھکوں نے اکثر خدا کا خلیفہ یا نایب کہہ کر بیان کیا ھے ۔ جب جہانگیر کے بیٹے خسرو نے اپنے باپ کے خلاف بغاوت کی تھی تو جہانگیر نے خود اپنی ڈائری (تزک جہانگیری) میں دعویٰ کیا تھا کہ اس کو خدا نے ھندستان کا شہنشاہ بنایا ھے ۔ شاہجہاں نے گولکنڈہ کے عادل شاہ کے نام اپنے ایک خط میں اپنے کو "ظل اللہ" (خدا کا سایہ) لکھا ھے ۔ اورنگ زیب نے اپنے کو دنیا میں خدا کا وکیل لکھا ھے ۔

یہ سب دعوے ثابت کرتے ھیں کہ مغل بادشاہ مانتے تھے کہ انہیں راج کرنے کا حق ظاھرہ دیکھنے میں خدا سے ملا ھوا ھے ۔ لیکن جب ھم ذرا غور سے دیکھیں تو پتہ چلتا ھے کہ ان بادشاھوں کے یہ سب دعوے صرف اس عام اسلامی یقین کو دوھراتے ھیں کہ دنیا میں جو

सितम्बर 1957 ستمبر

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 24 جلد   नम्बर 3 نمبر

सितम्बर 1957 ستمبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद
145، مٹھی گنج، الہ آباد

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy As. / [illegible]

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص لیکھ

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, [illegible]

संस्कृति

क़ीमत—दो रुपया

संस्कृति

क़ीमत—दो रुपयों

और संस्कृति

क़ीमत—दो रुपया

सुमेर ... की प्राचीन संस्कृति

पांडे, क़ीमत—दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

पांडे, क़ीमत—दो रुपया

गंगा से गोमती तक

... संग्रह)

क़ीमत—दो रुपया

और आंसू

(... सामाजिक कहानियाँ)

अख़्तर हुसैन रायपुरी, क़ीमत—डेढ़ रुपया

और धार्मिक ...

... क़ीमत—डेढ़ रुपया

اور ایرانی سنسکرتی

قیمت — دو روپیہ

اور سامی سنسکرتی

قیمت — دو روپیہ

اور سنسکرتی

قیمت — دو روپیہ

کی پراچین سنسکرتی

قیمت — دو روپیہ

یونانی سبھیتا اور سنسکرتی

قیمت — دو روپیہ

گنگا سے گومتی تک

قیمت — دو روپیہ

اور انسو

قیمت — ڈیڑھ روپیہ

قیمت — ڈیڑھ روپیہ

इनमें कई सौ बेचारे कोढ़ी हैं जो अपना कोढ़ दिखा दिखा कर पैसे माँगते फिरते हैं और कभी-कभी कुछ अधिक पा जाते हैं तो शराब पीकर या किसी और बुराई में फँसकर अपना ग़म ग़लत करने की भी कोशिश करते हैं. इन सब से ऊपर उठकर दिल्ली के लाखों ग़रीबों की हालत से भी हम वाक़िफ़ हैं पर इस से ज़ियादा कहने को अब दिल नहीं उभरता.

शासकों, शायद दुनिया के अधिकतर शासकों की एक बहुत बड़ी बदक़िसमती यह होती है कि उन्हें ख़ास ऐनकों के ज़रिये से ही दुनिया को देखना मिल सकता है. उनके कान दूसरों के कान होते हैं, उनकी आँखें दूसरों की आँखें. उनको ख़बरें देनेवाले यह ताड़ लेते हैं कि उनके मालिक किस तरह कीख़बरें सुनना चाहते हैं और उसी तरह की ख़बरें उन्हें सुनाते हैं. जैसे वह चाहते हैं उसी तरह के आँकड़े उनके लिये तैयार हो जाते हैं. हम दंग रह गए जबकि दिल्ली के एक बहुत बड़े शासक ने हम से बात करते हुए कहा की —"लोग ख़ाहमख़ाह ग़लत कहते हैं कि देश में बेकारी है. कहीं बेकारी नहीं है." एक और साहब ने राय ज़ाहिर की कि—"देश को निकम्मे ग्रेजुएटों की ज़रूरत नहीं है, देश को ज़रूरत है एन्जीनियर्स की और वह कभी बेकार नहीं रह सकते." यह बताने का उन पर कोई ख़ास असर नहीं हुआ कि देश के अनेक एन्जीनियरिंग कालिजों से पास हुए काफ़ी नौजवान बरसों एक दफ़्तर से दूसरे दफ़्तर अरज़ियाँ लेकर घूमते फिरते हैं. भ्रष्टाचार की बाबत तो आम तौर पर यह कहा जाता है कि देश में जो कुछ भ्रष्टाचार है वह हमें अंग्रेज़ी हकूमत से वरासत में मिला है और इन छै सात बरस के अन्दर काफ़ी कम हुआ है, और दूसरे देशों से हमारे देश में भ्रष्टाचार अब भी बहुत कम है ! इन बातों का क़ुदरती नतीजा यह है कि नेताओं और जनता के बीच, शासकों और शासितों के बीच खाई और बदगुमानी बढ़ती चली जा रही है.

—सुन्दरलाल

اِن میں سے کئی سو بیچارے کوڑھی ھیں جو اپنا کوڑھ دکھا دکھا کر پیسے مانگتے پھرتے ھیں اور کبھی کبھی کچھ ادھک پا جاتے ھیں تو شراب پی کر یا کسی اور برائی میں پھنس کر اپنا غم غلط کرنے کی بھی کوشش کرتے ھیں ۔ اِن سب سے اوپر اٹھ کر دلی کے لاکھوں غریبوں کی حالت سے بھی ھم واقف ھیں پر اِس سے زیادہ کہنے کو اب دل نہیں اُبھرتا ۔

شاسکوں، شاید دنیا کے ادھکتر شاسکوں کی ایک بہت بڑی بدقسمتی یہ ھوتی ھے کہ اُنہیں خاص عینکوں کے ذریعے سے ھی دنیا کو دیکھنا مل سکتا ھے ۔ اُن کے کان دوسروں کے کان ھوتے ھیں، اُن آنکھیں دوسروں کی آنکھیں ۔ اُن کو خبریں دینے والے یہ تاڑ لیتے ھیں کہ اُن کے مالک کس طرح کی خبریں سننا چاھتے ھیں اور اُسی طرح کی خبریں وہ اُنھیں سناتے ھیں ۔ جیسے وہ چاھتے ھیں اُسی طرح آنکڑے اُن کے لئے تیار ھو جاتے ھیں ۔ ھم دنگ رہ گئے جب کہ دلی کے ایک بہت بڑے شاسک نے ھم سے بات کرتے ھوئے کہا کہ—"لوگ خواہ مخواہ غلط کہتے ھیں کہ دیش میں بیکاری ھے ۔ کہیں بیکاری نہیں ھے ۔" ایک اور صاحب نے رائے ظاھر کی کہ—" دیش کے نکمے گریجوائیوں کی ضرورت نہیں ھے، دیش کو ضرورت ھے انجینیرس کی اور وہ کبھی بیکار نہیں رہ سکتے ۔" یہ بتانے کا اُن پر کوئی خاص اثر نہیں ھوا کہ دیش کے انیک انیجینیرنگ سے کالجوں پاس ھوئے کافی نوجوان برسوں ایک دفتر سے دوسرے دفتر عرضیاں لیکر گھومتے پھرتے ھیں ۔ بھرشٹاچار کی بابت تو عام طور پر یہ کہا جاتا ھے کہ دیش میں جو کچھ بھرشٹاچار ھے وہ ھمیں انگریزی حکومت سے وراثت میں ملا ھے اور اِن چھ سات برس کے اندر کافی کم ھوا ھے، اور دوسرے دیشوں سے ھمارے دیش میں بھرشٹا اب بھی بہت کم ھے ! اِن باتوں کا قدرتی نتیجہ یہ ھے کہ نیتاؤں اور جنتا کے بیچ، شاسکوں اور شاسکوں کے بیچ کھائی اور بدگمانی بڑھتی چلی جا رھی ھے ۔

—سندر لال

ड्यूटी हमारे मित्र के साथ लगी हुई थी इसी तरह सभी मीपति की ओर से एक मोटर और एक मोटर ड्राइवर ही भी ड्यूटी उसी जगह लगी हुई थी. और अधिक कुरेदने र हमारी आँखों से आँसू टपक पड़े. अधिक पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि पारलिमेन्ट के और भी बहुत से मेम्बर इसी तरह के असरों से दबे हुए हैं. उन पर खर्च करने वाले अपने खर्च का पूरा बदला चुका लेने में कोई कसर उठा नहीं रखते. इन पंक्तियों के लिखते समय भी हमारा दिल खून के आँसू बहा रहा है. हमें नहीं मालूम कि पारलिमेन्ट के मेम्बरों में इस तरह के भाइयों का अल्पमत है या बहुमत. पर हम समझते हैं कि इस बात में किसी को भी किसी तरह का कोई शक नहीं हो सकता कि हमारी आजकल की पारलिमेन्टों और धारा सभाओं में मुशकिल से दस फ़ीसदी मेम्बर ऐसे होंगे जो सचमुच पारलिमेन्टों के या धारा सभा के कामों में, तजवीज़ों और बिलों में कोई सच्ची, और समझदारी की दिलचस्पी रखते हों. शासन पर और देश भर में छोटे बड़े सरकारी कर्मचारियों पर जो इसका बुरा असर पड़ता है वह कहीं भी थोड़ी सी आँख खोलकर देखा जा सकता है. देश भर में जिस तरह की बेजा दख़लअन्दाज़ी, तरह तरह के सरकारी कामों में होती रहती है उसकी कहानियाँ दिल्ली से कलकत्ते, दिल्ली से बम्बई, या दिल्ली से मद्रास के किसी भी रेल के सफ़र में अनेक सुनने को मिल सकती हैं. सुनने की इच्छा रखने वाले को इसके लिये दिल्ली से बाहर जाने की भी ज़रूरत नहीं है.

ऊँचे से ऊँचे नेताओं और सरकारी लोगों पर भी इसका असर पड़े बग़ैर नहीं रह सकता. चुनाओं के लिये नामज़दगी के तरीक़े, नामज़दगी की कसौटियाँ और चुनाओं के ढंग लगभग सब सदाचार की दृष्टि से पतन की हद को पहुंच चुके हैं. गाड़ी चल रही है, जिस तरह भी चल सके और जब तक चल सके.

दिल्ली में पिछले साल पीलिया (Jaundice) की वबा के फैलने की जो दुर्घटना हुई और अभी तक जारी है वह केवल अन्दर के गहरे रोग का केवल एक ऊपरी लक्षण है. इस बीमारी का फैलना इन हालात में किसी को कोई अजीब बात मालूम नहीं होनी चाहिये. दिल्ली भारत की राजधानी है. बड़े से बड़े शासकों और नेताओं का यहाँ सदा जमघट रहता है. यहाँ बड़े-बड़े महलों जैसे बंगले हैं आए दिन बड़ी-बड़ी दावतें होती हैं. इसी दिल्ली में लगभग दस हज़ार इनसान गली-गली भीख माँगते फिरते हैं. इनमें से लगभग आठ हज़ार कड़ाके की सर्दी में चीथड़ों में लिपटे हुए या बिना चीथड़ों के खुले आसमान के नीचे पटरियों पर सोते हैं या किसी तरह रात बिताते हैं.

ڈیوٹی ہمارے متر کے ساتھ لگی ہوئی تھی اسی طرح سی پوتجی پتی کی اور سے ایک موٹر اور ایک موٹر ڈرائیور کی بھی ڈیوٹی اسی جگہ لگی ہوئی تھی۔ اور ٹھک کریدنے پر ہماری آنکھوں سے آنسو ٹپک پڑے۔ ادھک پوچھ تاچھ کرنے پر معلوم ہوا کہ پارلیمنٹ کے اور بھی بہت سے ممبر اسی طرح کے اثروں سے دبے ہوئے ہیں۔ اُن پر خرچ کرنے والے اپنے خرچ کا پورا بدلہ چکا لینے میں کوئی کسر اٹھا نہیں رکھتے۔ ان پنکتیوں کے لکھتے سمے بھی ہمارا دل خون کے آنسو بہا رہا ہے۔ ہمیں نہیں معلوم کہ پارلیمنٹ کے ممبروں میں اِس طرح کے بھائیوں کا الپمت ہے یا بہومت۔ پر ہم سمجھتے ہیں کہ اِس بات میں کسی کو بھی کسی طرح کا کوئی شک نہیں ہو سکتا کہ ہماری آجکل کی پارلیمنٹوں اور دھارا سبھاؤں میں مشکل سے دس فیصدی ممبر ایسے ہونگے جو سچ مچ پارلیمنٹوں کے یا دھارا سبھا کے کاموں میں، تجویزوں اور بلوں میں کوئی سچی، اور سمجھداری کی دلچسپی رکھتے ہوں۔ شاسن پر اور دیش بھر میں چھوٹے بڑے سرکاری کرمچاریوں پر جو اِس کا برا اثر پڑتا ہے وہ کہیں بھی تھوڑی سی آنکھ کھول کر دیکھا جا سکتا ہے۔ دیش بھر میں جس طرح کی بیجا دخل اندازی، طرح طرح کے سرکاری کاموں میں ہوتی رہتی ہے اُس کی کہانیاں دلی سے کلکتہ، دلی سے بمبئی، یا دلی سے مدراس کے کسی بھی ریل کے سفر میں انیک سننے کو مل سکتی ہیں۔ سننے کی اِچھا رکھنے والے کو اِس کے لئے دلی سے باہر جانے کی بھی ضرورت نہیں ہے۔

اونچے سے اونچے نیتاؤں اور سرکاری لوگوں پر بھی اِس کا اثر پڑے بغیر نہیں رہ سکتا۔ چناؤں کے لئے نامزدگی کے طریقے، نامزدگی کی کسوٹیاں اور چناؤں کے ڈھنگ لگ بھگ سب سداچار کی درشٹی سے پتن کی حد کو پہونچ چکے ہیں۔ گاڑی چل رہی ہے، جس طرح بھی چل سکے اور جب تک چل سکے۔

دلی سے پچھلے سال پیلیا (Jaundice) کی وبا کے پھیلنے کی جو درگھٹنا ہوئی اور ابھی تک جاری ہے وہ کیول اندر کے گہرے روگ کا کیول ایک اوپری لچھن ہے۔ اس بیماری کا پھیلنا اِن حالات میں کسی کو کوئی عجیب بات معلوم نہیں ہونی چاہئے۔ دلی بھارت کی راجدھانی ہے۔ بڑے سے بڑے شاسکوں اور نیتاؤں کا یہاں سدا جمگھٹ رہتا ہے۔ یہاں بڑے بڑے محلوں جیسے بنگلے ہیں۔ آئے دن بڑی بڑی دعوتیں ہوتی ہیں۔ اسی دلی میں لگ بھگ دس ہزار انسان گلی گلی بھیک مانگتے پھرتے ہیں۔ اِن میں سے لگ بھگ آٹھ ہزار کڑاکے کی سردی میں چیتھڑوں میں لپٹے ہوئے یا بنا چیتھڑوں کے کھلے آسمان کے نیچے پٹریوں پر سوتے ہیں یا کسی طرح رات بتاتے ہیں۔

पार्टी से सम्बन्ध रखने वाले बहुत से मेम्बरों को अकसर ऐसे विषयों पर भी जिनका देश के भले या बुरे के साथ गहरा सम्बन्ध होता है अपनी अन्तर आत्मा की आवाज़ के खिलाफ़ भरे सदन में हाथ उठाना पड़ता है. इसका क़ुदरती और लाज़मी नतीजा यह है कि हमारी आजकल की पार्लिमेंटों या धारा सभाओं के अधिकांश मेम्बर इस बात पर सोचना भी बन्द कर देते हैं कि किस तजवीज़ या किस बिल से देश का क्या फ़ायदा या क्या नुक़सान होगा. वह मजबूर होकर अपनी मेम्बरी से दूसरी ही तरह के फ़ायदे उठाने में लग जाते हैं.

इस तरह के मेम्बरों की हालत कुछ-कुछ उस जज की सी हालत होती है जो उस जवान माँ को जिसने किसी ज़बरदस्त दुख और निराशा की हालत में अपने तीन बरस के बच्चे का गला घोंट कर मार डाला और फिर उस पर रोना और सिर पीटना शुरू किया. इसलिये फाँसी की सज़ा देनी पड़ती है क्योंकि क़ानून की दफ़ा, क़ानून का ज़ाब्ता और क़ानूनी गवाहियाँ जज के लिये और कोई रास्ता ही नहीं छोड़तीं. अकसर पढ़े लिखे जज तो इसे अपनी "डियुटी" अपना "फ़र्ज़" समझ कर भी इस तरह के फ़ैसले देते हैं.

आज हमारे सदाचार के गिरावट की यह हालत है कि देश के उत्तर से दक्खिन तक और पूरब से पच्छिम तक सैकड़ों शिक्षा संस्थाएं ऐसी हैं जिनमें अध्यापकों से एक सौ बीस रुपये तनख़ाह लेकर दो सौ की रसीद पर दसख़त करने पड़ते हैं. हमें बड़ी हार्दिक वेदना के साथ कहना पड़ता है कि जिस तरह इस तरह की शिक्षा संस्थाओं में इस तरह के अध्यापकों से शिक्षा लेने वाले बालकों से यह आशा करना कि उनका चरित्र कभी भी जीवन में ऊँचा हो सकेगा, लगभग वैसा ही है, जैसा बबूल बोकर उससे आम की आशा करना. ठीक उसी तरह पारलिमेन्ट के या धारा सभाओं के जिन मेम्बरों को पारटी भक्ति के कारण अपनी अन्तर आत्मा की आवाज़ के ख़िलाफ़ हाथ उठाना पड़ जाता है उनसे यह आशा करना कि वह उन ज़िम्मेवारी की कुरसियों पर बैठ कर देश को सचमुच ऊँचा ले जा सकेंगे या करोड़ों जनता का सच्चा भला कर सकेंगे उतना ही ग़लत है.

इस दर्दनाक हालत का असर देश की इन पारलिमेन्टों और धारा सभाओं में साफ़ दिखाई देता है. दिल्ली में हम एक दिन अचानक अपने एक पुराने मित्र पारलिमेन्ट के एक मेम्बर के घर पहुँच गए. हमने वहाँ एक नौजवान को टाइप करते हुए देखा जिसे हम पहले से जानते थे. हम कुछ हैरान हुए. पूछने पर मालूम हुआ कि वह अब भी देश के उसी मशहूर पूँजीपति का नौकर था और उसी से वेतन पाता था, जिससे कभी पहले पाया करता था. अब उसकी

پارٹی سے سمبندھ رکھنے والے بہت سے میمبروں کو اکثر ایسے وشیوں پر بھی جن کا دیش کے بھلے یا برے کے ساتھ گہرا سمبندھ ھوتا ھے اپنی انتر آتما کی آواز کے خلاف بھرے سدن میں ھاتھ اُٹھانا پڑتا ھے۔ اِس کا قدرتی اور لازمی نتیجہ یہ ھے کہ ھماری آجکل کی پارلیمنٹوں یا دھارا سبھاؤں کے ادھیکانش میمبر اِس بات پر سوچنا بھی بند کر دیتے ھیں کہ کس تجویز یا کس بل سے دیش کا کیا فائدہ یا کیا نقصان ھوگا۔ وہ مجبور ھو کر اپنی میمبری سے دوسری ھی طرح کے فایدے اُٹھانے میں لگ جاتے ھیں۔

اِس طرح کے ممبروں کی حالت کچھ کچھ اُس جج کی سی حالت ھوتی ھے جو اُس جوان ماں کو جس نے کسی زبردست دکھ اور نراشا کی حالت میں اپنے تین برس کے بچے کا گلا گھونٹ کر مار ڈالا اور پھر اُس پر رونا اور سر پیٹنا شروع کیا۔ اِس لئے پھانسی کی سزا دینی پڑتی ھے کیونکہ قانون کی دفعہ، قانون کا ضابطہ اور قانونی گواھیاں جج کے لئے اور کوئی راستہ ھی نہیں چھوڑتیں۔ اکثر پڑھے لکھے جج تو اِسے اپنی "ڈیوٹی"، اپنا "فرض" سمجھ کر بھی اِس طرح کے فیصلے دیتے ھیں۔

آج ھمارے سداچار کے گراوٹ کی یہ حالت ھے کہ دیش کے اُتر سے دکھن تک اور پورب سے پچھم تک سیکڑوں شکشا سنستھائیں ایسی ھیں جنمیں ادھیاپکوں کو ایک سو بیس روپئے تنخواہ لیکر دو سو کی رسید پر دستخط کرنے پڑتے ھیں۔ ھمیں بڑی هاردک ویدنا کے ساتھ کہنا پڑتا ھے کہ جس طرح اِس طرح کی شکشا سنستھاؤں میں اِس طرح کے ادھیاپکوں سے شکشا لینے والے بالکوں سے یہ آشا کرنا کہ اُن کا چرتر کبھی بھی جیون میں اُونچا ھو سکیگا، لگ بھگ ویسا ھی ھے، جیسا ببول بو کر اُس سے آم کی آشا کرنا۔ ٹھیک اُسی طرح پارلیمنٹ کے یا دھارا سبھاؤں کے جن میمبروں کو پارٹی بھکتی کے کارن اپنے انتر آتما کی آواز کے خلاف ھاتھ اُٹھانا پڑ جاتا ھے اُن سے یہ آشا کرنا کہ وہ اُن ذمہ‌واری کی کرسیوں پر بیٹھ کر دیش کو سچ مچ اُونچا لیجا سکینگے یا کروڑوں جنتا کا سچا بھلا کر سکینگے اُتنا ھی غلط ھے۔

اِس دردناک حالت کا اثر دیش کی اِن پارلیمنٹوں اور دھارا سبھاؤں میں صاف دکھائی دیتا ھے۔ دلی میں ھم ایک دن اچانک اپنے ایک پرانے مترپارلیمنٹ کے ایک میمبر کے گھر پہونچ گئے۔ ھمنے وھاں ایک نوجوان کو ٹائپ کرتے ھوئے دیکھا جسے ھم پہلے سے جانتے تھے۔ ھم کچھ حیران ھوئے۔ پوچھنے پر معلوم ھوا کہ وہ اب بھی دیش کے اُسی مشہور پونجی پتی کا نوکر تھا اور اُسی سے ویتن پاتا تھا جس سے کبھی پہلے پایا کرتا تھا۔ اب اُس کی

पार्टी शासन के लिये दो बातें जरूरी हैं. एक यह कि देश में एक से अधिक राजनीतिक पारटियां हों और दूसरी यह कि देश की सारी हुकूमत किसी एक पार्टी के हाथों में हो. इस तरह की राजकाजी पारटियां आम तौर पर किसी एक लक्ष या उद्देश को सामने रखकर बनाई जाती हैं. मसलनइस देश की कांगरेस पार्टी शुरू में केवल "शान्त और वैध उपायों द्वारा स्वराज प्राप्ति" केउद्देश से बनी. भारत के जो नर नारी इस उद्देश से सहमत थे वह कांगरेस के मेम्बर बन गए. देश के विदेशी शासन से आज़ाद हो जाने के बाद इस उद्देश में थोड़ा सा फ़रक़ आया. कांगरेस का उद्देश अब देश में कल्याणकारी राज (Welfare State) क़ायम करना या उसके बाद समाजवादी ढाँचे (Socialistic pattern) पर राज क़ायम करना ठहराया गया. काँगरेस ने समय समय पर कुछ और ख़ास ख़ास विषयों पर भी एक मत से या बहुमत से ठहराव पास किये. इस बीच देश की सब से बड़ी पार्टी होने के कारण हुकूमत की बाग काँगरेस पार्टी के हाथों में आई. पारलिमेंट के सामने या किसी धारा सभा के सामने कोई ऐसा सवाल आया या कोई ऐसा बिल पेश हुआ जिसका काँगरेस के उस समय तक के निर्धारित उद्देश से कोई ख़ास सम्बन्ध नहीं था. कोई मेम्बर उस ख़ास सवाल पर इधर या उधर वचन देकर काँगरेस का मेम्बर नहीं हुआ था. अब वह सवाल या वह बिल बहस के लिये काँगरेस पार्टी की बैठक में सामने आया. काँगरेस के प्रधान नेताओं की राय या हाई कमांड की राय एक तरफ़ दिखाई दी. इस पर भी जब पार्टी की बैठक में वोट लिये गए तो मामूली कसरत राय से नेताओं की राय के हक़ में फ़ैसला हो गया. इसके बाद उन सब लोगों के लिये जिनकी राय बहुमत से नहीं मिलती थी जरूरी समझा जाता है कि वह बहुमत के साथ ही वोट दें चाहे वह कितना भी उनकी आत्मा की आवाज़ के ख़िलाफ़ क्यों न हो. अगर हम इस बात का भी ध्यान रखें कि बहुमत में कम या अधिक कुछ न कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जिन्होंने ख़ास ख़ास नेताओं के जा या बेजा असर में आकर पार्टी मीटिंग में वोट दिया हो तो यह बात भी दावे से नहीं कही जा सकती कि सचमुच पार्टी का सच्चा बहुमत उसी ओर था जिस ओर अधिकांश के हाथ उठे. यह घटना पारटियों के आधार पर शासन की आए दिन की घटना है.

इस एक मामले में जो हाल उस पार्टी का है जिसके हाथों में शासन की बाग है लगभग वही हाल विरोधी पारटियों या और दूसरी पारटियों का है. पार्टी शासन का यह एक ख़ास और उजागर पहलू है. नतीजा यह होता है कि हर पारलिमेंट और हर धारा सभा के अन्दर किसी भी

پارٹی شاسن کے لئے دو باتیں ضروری ہیں ۔ ایک یہ کہ دیش میں ایک سے ادھک راجنیتک پارٹیاں ہوں اور دوسری یہ کہ دیش کی ساری حکومت کسی ایک پارٹی کے ہاتھوں میں ہو ۔ اس طرح کی راجکاجی پارٹیاں عام طور پر کسی ایک لکش یا اُدیش کو سامنے رکھ کر بنائی جاتی ہیں ۔ مثلاً اِس دیش کی کانگریس پارٹی شروع میں کیول "شانت اور ویدھ اُپایوں دوارا سوراج پراپتی" کے اُدیش سے بنی ۔ بھارت کے جو نر ناری اِس اُدیش سے سہمت تھے وہ کانگریس کے میمبر بن گئے۔ دیش کے ودیشی شاسن سے آزاد ہو جانے کے بعد اِس اُدیش میں تھوڑا سا فرق آیا ۔ کانگریس کا اُدیش اب دیش میں کلیان کاری راج (Welfare State) قایم کرنا یا اُس کے بعد سماج وادی ڈھانچے (Socialistic pattern) پر راج قایم کرنا ٹھہرایا گیا ۔ کانگریس نے سمے سمے پر کچھ اور خاص خاص وشیوں پر بھی ایک مت سے یا بہومت سے ٹھہراؤ پاس کئے ۔ اِس بیچ دیش کی سب سے بڑی پارٹی ہونے کے کارن حکومت کی باگ کانگریس پارٹی کے ہاتھوں میں آئی ۔ پارلیمنٹ کے سامنے یا کسی دھارا سبھا کے سامنے کوئی ایسا سوال آیا یا کوئی ایسا بل پیش ہوا جس کا کانگریس کے اُس سمے تک کے نردھارت اُدیش سے کوئی خاص سمبندھ نہیں تھا ۔ کوئی میمبر اُس خاص سوال پر اِدھر یا اُدھر وچن دیکر کانگریس کا میمبر نہیں ہوا تھا ۔ اب وہ سوال یا وہ بل بحث کے لئے کانگریس پارٹی کی بیٹھک میں سامنے آیا ۔ کانگریس کے پردھان نیتاؤں کی رائے یا ہائی کمانڈ کی رائے ایک طرف دکھائی دی ۔ اِس پر بھی جب پارٹی کی بیٹھک میں ووٹ لئے گئے تو معمولی کثرت رائے سے نیتاؤں کی رائے کے حق میں فیصلہ ہو گیا ۔ اِس کے بعد اُن سب لوگوں کے لئے جن کی رائے بہومت سے نہیں ملتی تھی ضروری سمجھا جاتا ہے کہ وہ بہومت کے ساتھ ہی ووٹ دیں چاہے وہ کتنا ہی اُن کی آتما کی آواز کے خلاف کیوں نہ ہو۔ اگر ہم اِس بات کا بھی دھیان رکھیں کہ بہومت میں کم یا ادھک کچھ نہ کچھ لوگ ایسے بھی ہو سکتے ہیں جنہوں نے خاص خاص نیتاؤں کے جا یا بیجا اثر میں آکر پارٹی میٹنگ میں ووٹ دیا ہو تو یہ بات بھی دعوے سے نہیں کہی جا سکتی کہ سچ مچ پارٹی کا سچا بہومت اُسی اور تھا جس اور ادھیکانش کے ہاتھ اُٹھے ۔ یہ گھٹنا پارٹیوں کے آدھار پر شاسن کی آئے دن کی گھٹنا ہے ۔

اِس ایک معاملے میں جو حال اُس پارٹی کا ہے جس کے ہاتھوں میں شاسن کی باگ ہے لگ بھگ وہی حال ورودھی پارٹیوں یا اور دوسری پارٹیوں کا ہے ۔ پارٹی شاسن کا یہ ایک خاص اور اُجاگر پہلو ہے ۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ ہر پارلیمنٹ اور ہر دھارا سبھا کے اندر کسی بھی

महात्मा गांधी की कुछ बातें इस सम्बन्ध में याद रखने के क़ाबिल हैं. एक यह कि उन्होंने इंग्लैन्ड की उस पार्लिमेंट की तुलना, जो दुनिया की पार्लिमेंटों की माँ मानी जाती है, एक "बाँझ वेश्या" (A barren prostitute) से की थी. दूसरी यह कि जब आज़ादी के दिन नज़दीक आने लगे तो उन्होंने यह साफ़ कहा था कि—"आजकल के कांग्रेसी नेता पार्लिमेंटरी हुकूमत के लिये काम कर रहे हैं, मैं पार्लिमेंटरी हुकूमत नहीं चाहता, पर इस समय तो मैं उन्हीं का साथ दे रहा हूँ." तीसरे गांधीजी के बलिदान से थोड़े ही दिन पहले जब दिल्ली में आज़ाद हिन्द की पार्लिमेंटरी हुकूमत बाज़ाब्ता क़ायम हो गई तो उसका रूप देखकर गाँधीजी के मुँह से निकल पड़ा :—"यह तो एक बहुत बड़ी बला आ गई ! मुझे अब इस बला से लड़ना पड़ेगा !"

अब हम ज़रा अपनी आजकल की शासन व्यवस्था की तरफ़ एक निगाह डालें. हमारे आजकल के अधिकतर राजकाजी नेता अंगरेज़ों की दी हुई शिक्षा पाए हुए और अंगरेज़ी विचारों में ही पले हुए थे. क़ुदरती तौर पर वह अंगरेज़ी शासन पद्धति के दिलदादा थे. अपने देश में अच्छी से अच्छी नियत के साथ भी वह उसी की नक़ल कर सकते थे. यही उन्होंने किया—वही पार्लिमेंटरी तर्ज़, वही दो सदन, वही चुनाव के ढंग, इंगलैन्ड के बादशाह की जगह भारत का राष्ट्रपति, गवरनरों और लेफ़टीनेन्ट गवरनरों का वही सिलसिला, पार्लिमेंट और धारा सभाओं के अन्दर वही सरकारी दल (Treasury Benches) और विरोधी दल (Opposition) और वही धुवाँधार तक़रीरें. हालत यहाँ तक पहुँच चुकी है कि हमारे स्वतन्त्र दलों और विरोधी दलों के बड़े से बड़े नेता भी ईमानदारी के साथ मानते और कहते हैं कि शासन चाहे किसी भी दल के हाथों में हो अच्छे शासन के लिये अच्छे और ज़बरदस्त विरोधी दलों का होना ज़रूरी है. बिना अलग अलग और कम या अधिक एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी राजकाजी दलों के वह शासन की कल्पना भी नहीं कर सकते. इसीलिये हम में से बहुत से रूस और चीन जैसे देशों की बाबत यह सुनकर कि वहाँ अलग अलग राजकाजी पार्टियां नहीं हैं, या अगर हैं तो एक दूसरे के विरोधी या प्रतिस्पर्धी नहीं हैं, हैरान रह जाते हैं और यह समझ ही नहीं सकते कि इस तरह के किसी भी देश की हुकूमत अच्छी और जनता के लिये हितकर हुकूमत कैसे हो सकती है.

पार्टियों के आधार पर शासन व्यवस्था दूसरे किसी देश के लिये कहां तक हितकर साबित हुई है या नहीं या इस समय हितकर है या नहीं इस सवाल में हम अभी नहीं पड़ना चाहते. हम केवल अपने देश की आजकल की व्यवस्था को ही ज़रा और पास से देखना चाहते हैं.

مہاتما گاندھی کی کچھ باتیں اِس سمبندھ میں یاد رکھنے کے قابل ہیں ۔ ایک یہ کہ اُنہوں نے انگلینڈ کی اُس پارلیمنٹ کی تلنا جو دنیا کی پارلیمنٹوں کی ماں مانی جاتی ہے، ایک "بانجھ ویشیا" (A barren prostitute) سے کی تھی ۔ دوسری یہ کہ جب آزادی کے دن نزدیک آنے لگے تو اُنہوں نے یہ صاف کہا تھا کہ—"آجکل کے کانگریسی نیتا پارلیمنٹری حکومت کے لئے کام کر رہے ہیں، میں پارلیمنٹری حکومت نہیں چاہتا، پر اِس سمے تو میں اُنہیں کا ساتھ دے رہا ہوں ۔" تیسرے گاندھی جی کے بلیدان سے تھوڑے ہی دن پہلے جب دلی میں آزاد ہند کی پارلیمنٹری حکومت باضابطہ قایم ہو گئی تو اُس کا روپ دیکھ کر گاندھی جی کے منھ سے نکل پڑا:—"یہ تو ایک بہت بڑی بلا آ گئی! مجھے اب اِس بلا سے لڑنا پڑیگا!"

اب ہم ذرا اپنی آجکل کی شاسن ویوستھا کی طرف ایک نگاہ ڈالیں ۔ ہمارے آجکل کے ادھکتر راجکاجی نیتا انگریزوں کی دی ہوئی شکشا پائے ہوئے اور انگریزی وچاروں میں ہی پلے ہوئے تھے ۔ قدرتی طور پر وہ انگریزی شاسن پدھتی کے دلدادہ تھے ۔ اپنے دیش میں اچھی سے اچھی نیت کے ساتھ بھی وہ اُسی کی نقل کر سکتے تھے۔ یہی اُنہوں نے کیا—وہی پارلیمنٹری طرز، وہی دو سدن، وہی چناؤ کے ڈھنگ، انگلینڈ کے بادشاہ کی جگہ بھارت کا راشٹرپتی، گورنروں اور لفٹیننٹ گورنروں کا وہی سلسلہ، پارلیمنٹ اور دھارا سبھاؤں کے اندر وہی سرکاری دل (Treasury Benches) اور ورودھی دل (Opposition) اور وہی دھواں دھار تقریریں ۔ حالت یہاں تک پہونچ چکی ہے کہ ہمارے سوتنتر دلوں اور ورودھی دلوں کے بڑے سے بڑے نیتا بھی ایمانداری کے ساتھ مانتے اور کہتے ہیں کہ شاسن چاہے کسی بھی دل کے ہاتھوں میں ہو اچھے شاسن کے لئے اچھے اور زبردست ورودھی دلوں کا ہونا ضروری ہے ۔ بنا الگ الگ اور کم یا ادھک ایک دوسرے کے پرتی اسپردھی راجکاجی دلوں کے وہ شاسن کی کلپنا بھی نہیں کر سکتے۔ اِسی لئے ہم میں سے بہت سے روس اور چین جیسے دیشوں کی بابت یہ سن کر کہ وہاں الگ الگ راجکاجی پارٹیاں نہیں ہیں، یا اگر ہیں تو ایک دوسرے کے ورودھی یا پرتی اسپردھی نہیں ہیں، حیران رہ جاتے ہیں اور یہ سمجھ ہی نہیں سکتے کہ اِس طرح کے کسی بھی دیش کی حکومت اچھی اور جنتا کے لئے ہتکر حکومت کیسے ہو سکتی ہے ۔

پارٹیوں کے آدھار پر شاسن ویوستھا دوسرے کسی دیش کے لئے کہاں تک ہتکر ثابت ہوئی ہے یا نہیں یا اِس سمے ہتکر ہے یا نہیں اِس سوال میں ہم ابھی نہیں پڑنا چاہتے ۔ ہم کیول اپنے دیش کی آجکل کی ویوستھا کو ہی ذرا اور پاس سے دیکھنا چاہتے ہیں ۔

आजकल की सरकारें

दुनिया के अन्दर एक एक जमाने में एक एक चीज़ का खास जोर होता है. उसीके अनुसार कोई जमाना धर्म प्रधान समझा जाता है, कोई संस्कृति प्रधान, कोई अर्थ प्रधान इत्यादि. कभी कभी एक ही समय में अलग अलग देशों में अलग अलग चीज़ों का जोर होता है. आजकल लगभग सारी दुनिया में राजनीति का बोल बाला है. इसलिये इस युग को राजनीति प्रधान युग कहा जा सकता है. धर्म, सदाचार, अर्थ, संस्कृति, कला और साहित्य सब को आज हम अधिकतर राजनीति ही की निगाह से देखते हैं. राजनीति आज हमारे सारे मानव जीवन पर छाई हुई है. इसीलिये राजनीतिक नेता और कार्यकर्ता ही सब जगह आज दुनिया के नेता माने जाते हैं.

कहा जाता है कि मानव इतिहास के शुरू में मनुष्य और पशुओं में बहुत कम अन्तर था. धीरे धीरे मनुष्य ने अपने मस्तिष्क के सहारे उन्नति करना शुरू किया. कुटुम्ब बना. समाज बना. छोटे छोटे गिरोह बने. उन गिरोहों में प्रबन्ध और संचालन के लिये सरदार होने लगे. धीरे धीरे राजा बने, सम्राट बने, और राजा और प्रजा का अन्तर पैदा हुआ.

दुनिया के स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली समाज शास्त्र की अधिकतर किताबें मनुष्य की सबसे पहले की जंगली हालत से शुरू होती हैं. राजनीति की अधिकतर किताबें राजाओं और सम्राटों के युग से शुरू होती हैं.

आजकल अकसर कहा जाता है कि राजाओं या सम्राटों यानी बादशाहों या शहनशाहों का जमाना बड़े अन्धकार का जमाना था. उसी से गुलामी का रिवाज चला, राजा और प्रजा, मालिक और गुलाम का अन्तर पैदा हुआ, समाज में ऊँच नीच की बात आई. दूसरों को चूस कर थोड़े से बड़ा बनने वालों और लाखों और करोड़ों दलित, नादार चुसने वालों में दुनिया बंट गई, इत्यादि.

यह भी कहा जाता है कि जिसे आजकल डेमोक्रेसी, जमहूरियत, प्रजातन्त्र, जनतन्त्र या लोकशाही कहा जाता है उसने जनम लेकर दुनिया और दुनिया की जनता को मुसीबत के उस गड्ढे में से निकाला. इस तरह की अधिकतर बातों में सचाई का एक अंश तो होता ही है, फिर चाहे वह रुपये में छै आने हो या दस आने. इस तरह के जनतंत्र की सबसे बड़ी मिसालें आज संयुक्त राज अमरीका और इंगलैन्ड की दी जाती हैं. भारत का आजकल का विधान भी, यूं तो कहीं से कुछ और कहीं से कुछ लेकर तैयार किया गया है, पर अधिकतर प्रजातंत्र या जनतन्त्र की इसी कल्पना पर ढला हुआ है.

آجکل کی سرکاریں

دنیا کے اندر ایک، ایک زمانے میں ایک ایک چیز کا خاص زور ہوتا ہے ۔ اسی کے انوسار کوئی زمانہ دھرم پردھان سمجھا جاتا ہے، کوئی سنسکرتی پردھان، کوئی ارتھ پردھان اتیادی۔ کبھی کبھی ایک ہی سمے میں الگ الگ دیشوں میں الگ الگ چیزوں کا زور ہوتا ہے ۔ آجکل لگ بھگ ساری دنیا میں راجنیتی کا بول بالا ہے۔ اس لئے اس یگ کو راجنیتی پردھان یگ کہا جا سکتا ہے ۔ دھرم، سداچار، ارتھ، سنسکرتی، کلا اور ساہتیہ سب کو آج ہم ادھکتر راجنیتی ہی کی نگاہ سے دیکھتے ہیں ۔ راجنیتی آج ہمارے سارے مانو جیون پر چھائی ہوئی ہے ۔ اسی لئے راجنیتک نیتا اور کاریہ کرتا ہی سب جگہ آج دنیا کے نیتا مانے جاتے ہیں ۔

کہا جاتا ہے کہ مانو اتہاس کے شروع میں منشیہ اور پشوؤں میں بہت کم انتر تھا ۔ دھیرے دھیرے منشیہ نے اپنے مستشک کے سہارے انتی کرنا شروع کیا ۔ کٹمب بنا ۔ سماج بنا ۔ چھوٹے چھوٹے گروہ بنے۔ ان گروہوں میں پربندھ اور سنچالن کے لئے سردار ہونے لگے ۔ دھیرے دھیرے راجا بنے، سمراٹ بنے، اور راجا اور پرجا کا انتر پیدا ہوا ۔

دنیا کے اسکولوں میں پڑھائی جانے والی سماج شاستر کی ادھکتر کتابیں منشیہ کی سب سے پہلے کی جنگلی حالت سے شروع ہوتی ہیں ۔ راجنیتی کی ادھکتر کتابیں راجاؤں اور سمراٹوں کے یگ سے شروع ہوتی ہیں ۔

آجکل اکثر کہا جاتا ہے کہ راجاؤں یا سمراٹوں یعنی بادشاہوں یا شہنشاہوں کا زمانہ بڑے اندھکار کا زمانہ تھا ۔ اسی سے غلامی کا رواج چلا، راجا اور پرجا، مالک اور غلام کا انتر پیدا ہوا، سماج میں اونچ نیچ کی بات آئی ۔ دوسروں کو چوس کر تھوڑے سے بڑا بنے والوں اور لاکھوں اور کروڑوں دلت، نادار چسنے والوں میں دنیا بٹ گئی، اتیادی ۔

یہ بھی کہا جاتا ہے کہ جیسے آجکل ڈیموکریسی، جمہوریت پرجا تنتر، جن تنتر یا لوک شاہی کہا جاتا ہے اس نے جنم لیکر دنیا اور دنیا کی جنتا کو مصیبت کے اس گڈھے میں سے نکالا ۔ اس طرح کی ادھکتر باتوں میں سچائی کا ایک انش تو ہوتا ہی ہے، پھر چاہے وہ روپئے میں چھ آنے ہو یا دس آنے ۔ اس طرح کے جن تنتر کی سب سے بڑی مثالیں آج سنیکت راج امریکہ اور انگلینڈ کی دی جاتی ہیں ۔ بھارت کا آجکل کا ودھان بھی، یوں تو کہیں سے کچھ اور کہیں سے کچھ لیکر تیار کیا گیا ہے، پر ادھکتر پرجاتنتر یا جن تنتر کی اسی کلپنا پر ڈھلا ہوا ہے ۔

अमरीका या इंगलैंड बना देने के ही चक्कर में पड़े हुए हैं. दूसरी तरफ़ विदेशों के साथ अपने सम्बन्ध में हम शान्ति और अहिंसा के उस रास्ते पर चलने की कोशिश कर रहे हैं जो राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी ने हमारे सामने रखा था. कभी कभी तो हम लगभग उन्हीं के शब्दों में उन्हीं के भावों को प्रगट भी करते रहते हैं. यह है आजकल के भारत का दो रुखा पन.

इस दो रुखी चाल के चलने में सब से बड़ी भूल हम यह कर रहे हैं कि हम एक ऐसे बुनियादी उसूल को भूल जाते हैं कि जो जड़ और चेतन यानी बेजान और जानदार दोनों तरह की सृष्टि में साफ़ काम करता हुआ दिखाई देता है. वह उसूल यह है कि कोई भी परस्पर विरोधी शक्तियाँ जब एक साथ मैदानों में छोड़ दी जाती हैं तो वह दोनों एक दूसरे को काटकर अपने को नष्ट कर देती हैं. एक ही देश की शासन नीति में हिंसा और अहिंसा को साथ-साथ चलाने की यह कोशिश देश को अन्दर से और बाहर से दोनों तरफ़ से बेहद खोखला करती जा रही है. अगर भारत एक बार इस बात को समझ ले और पक्के इरादे के साथ देश के अन्दर की व्यवस्था को अपनी पुरानी कलचर से मिलाकर चले, अपनी औद्योगिक और आर्थिक आकांक्षाओं यानी सनअती और माली प्रोग्रामों को अपने नैतिक और रूहानी उसूलों के साथ मिलाकर चले, और निडरता और सच्चाई के साथ 'पीसफ़ुल को-एग्ज़िस्टेन्स यानी शान्ति पूर्वक सब के साथ मिलकर रहने के उन अहिंसात्मक उसूलों और आदर्शों पर खुद अमल करने लगे जिन्हें वह दुनिया के सामने पेश कर रहा है, तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि दुनिया की आजकल की कठिनाइयों पर भारत उसे वैसी ही अपूर्व विजय दिला सकता है जैसी विजय राष्ट्र-पिता ने हमें अपने आज़ादी के संग्राम में दिलाई है.

इसी भाव और इसी आशा के साथ हम अपने देश भाइयों और अपनी सरकार से यह अपील कर रहे हैं. हमें विश्वास है कि अगर हम सब मिलकर समय की आवश्यकता को समझें और उस पर अमल करें तो हम अमरीका और यूरप के नक़लची और उनके दस्तनिगर बने रहने के बजाय उनको राह दिखाने वाले और उन्हें नजात दिलाने वाले बन सकते हैं. आज हम साफ़-साफ़ उनके नक़लची और दस्तनिगर बने हुए हैं.

—सुन्दरलाल

امریکہ یا انگلینڈ بنا دینے کے ہی چکر میں پڑے ہوئے ہیں ۔ دوسری طرف ودیشوں کے ساتھ اپنے سمبندھ میں ہم شانتی اور اہنسا کے اُس راستے پر چلنے کی کوشش کر رہے ہیں جو راشٹر پتا مہاتما گاندھی نے ہمارے سامنے رکھا تھا ۔ کبھی کبھی تو ہم لگ بھگ اُنہیں کے شبدوں میں اُنہیں کے بھاؤں کو پرگٹ بھی کرتے رہتے ہیں ۔ یہ ہے آجکل کے بھارت کا دورخاپن ۔

اِس دو رخی چال کے چلنے میں سب سے بڑی بھول ہم یہ کر رہے ہیں کہ ہم ایک ایسے بنیادی اُصول کو بھول جاتے ہیں کہ جو جڑ اور چیتن یعنی بےجان اور جاندار دونوں طرح کی سرشٹی میں صاف کام کرتا ہوا دکھائی دیتا ہے ۔ وہ اُصول یہ ہے کہ کوئی بھی پرسپر ورودھی شکتیاں جب ایک ساتھ میدان میں چھوڑ دی جاتی ہیں تو وہ دونوں ایک دوسرے کو کاٹ کر اپنے کو نشٹ کر دیتی ہیں ۔ ایک ہی دیش کی شاسن نیتی میں ہنسا اور اہنسا کو ساتھ ساتھ چلانے کی یہ کوشش دیش کو اندر سے اور باہر سے دونوں طرف سے بےحد کھوکھلا کرتی جا رہی ہے ۔ اگر بھارت ایکبار اِس بات کو سمجھ لے اور پکے اِرادے کے ساتھ دیش کے اندر کی ویوستھا کو اپنی پرانی کلچر سے ملا کر چلے، اپنی اودیوگک اور آرتھک آکانشاؤں یعنی صنعتی اور مالی پروگراموں کو اپنے نیتک اور روحانی اُصولوں کے ساتھ ملاکر چلے، اور نِڈرتا اور سچائی کے ساتھ 'پیسفل کوایگزسٹینس' یعنی شانتی پوروک سب کے ساتھ مل کر رہنے کے اُن اہنساتمک اُصولوں اور آدرشوں پر خود عمل کرنے لگے جنھیں وہ دنیا کے سامنے پیش کر رہا ہے، تو اِس میں کوئی سندیہہ نہیں کہ دنیا کی آجکل کی کٹھنائیوں پر بھارت اُسے ویسی ہی اپوروِ وجئے دلا سکتا ہے جیسی وجئے راشٹر پتا نے ہمیں اپنے آزادی کے سنگرام میں دلائی ہے ۔

اِسی بھاؤ اور اِسی آشا کے ساتھ ہم اپنے دیش بھائیوں اور اپنی سرکار سے یہ اپیل کر رہے ہیں ۔ ہمیں وشواس ہے کہ اگر ہم سب ملکر سمئے کی آوشیکتا کو سمجھیں اور اُس پر عمل کریں تو ہم امریکہ اور یورپ کے نقلچی اور اُن کے دست نگر بنے رہنے کے بجائے اُن کو راہ دکھانے والے اور انہیں نجات دلانے والے بن سکتے ہیں ۔ آج ہم صاف صاف اُن کے نقلچی اور دست نگر بنے ہوئے ہیں ۔

—سندر لال ۔

लेकिन सवाल यह है कि इस मामले में पहल कौन करे, और कैसे करे ?

मेरी राय में इस सवाल का जवाब सीधा और साफ़ है. जवाब यह है कि यह पहल भारत ही कर सकता है और उसे ही करनी चाहिये. भारत ही को सबसे पहले अपने सब हथियार फेंक देने चाहियें और अपनी सब फ़ौजें बरखास्त कर देनी चाहियें. भारत ही इस पर तुरन्त और पूरी तरह अमल करके दिखा सकता है.

इस के कारण भी साफ़ हैं और भारत के प्राचीन और हाल के इतिहास के पन्नों पर मोटे अक्षरों में लिखे हुए हैं. प्राचीन समय में अशोक ने दुनिया को एक नया रास्ता ऐसे बड़े पैमाने पर दिखाया कि जिस से उस समय उसी की सारी नैतिक बुनियादें हिल गईं. अशोक के उस कारनामे ने ही महात्मा गांधी के आगमन के लिये ज़मीन तैयार की जिसने उनके उसूलों, उनके तरीक़ों, उनके अहिंसात्मक उपायों, और उनकी आज़ादी की लड़ाई और उसकी अन्तिम विजय को मुमकिन बना दिया.

पर कठिनाई यह है कि भारत की पुरानी मज़हबी और रूहानी तहज़ीब के साथ यूरप की दुनिया और माद्दा परस्ती के भयंकर टकराव ने भारत के राष्ट्रीय जीवन में एक अजीब दो रुख़ी और दो दिली पैदा कर दी है. इस द्वंद्व या दो रुख़े पन ने जब तक महात्मा गांधी जीवित रहे, उनके स्वतंत्रता संग्राम में बराबर तरह तरह की रुकावटें डालीं जिनसे उन के अहिंसात्मक मिशन को काफ़ी नुक़सान पहुँचा और वह जैसा चाहिये था कामयाब न हो सका. उन के मरते ही हमारे इस दो रुख़ेपन ने देश की लगभग सारी शक्ति को पच्छिमी राहों पर डाल दिया. मगर फिर भी हमारी यह ग़लत रवी और कमज़ोरी ने ज़माने के उस रुख़, हालात और उन ज़रूरतों को न बदल सकी जिन्होंने महात्मा गाँधी को जन्म दिया था और न दुनिया की उन शक्तियों को नष्ट कर सकी जिन की मदद से महात्मा गाँधी भारत को अपने ढंग से आज़ादी दिलाने में कामयाब हो सके.

इस दुविधा या दो रुख़े पन को ठीक ठीक समझने के लिये हमें एक बार अपने देश के अन्दर की हालत और अपने विदेशी सम्बन्धों दोनों को पूरी तरह समझना होगा और दोनों का मुक़ाबला करके देखना होगा. इन दोनों का मुक़ाबला करने से पता चलेगा कि एक तरफ़ तो देश के अंदर के प्रोग्राम, प्रबंध और व्यवस्था में, और देश को आगे बढ़ाने की योजनाओं में हमने अपने आप को बिलकुल पच्छिमी विचारों और पच्छिमी तरीक़ों के हवाले कर रखा है, और देश के प्रबन्ध और फ़ौजों के संगठन दोनों में हमने जीवन के वही आदर्श अपने सामने रख रखे हैं जो अमरीका और यूरप के सामने रहे हैं, यहां तक कि हम अपने देश को

لیکن سوال یہ ہے کہ اِس معاملے میں پہل کون کرے، اور کیسے کرے ؟

میری رائے میں اِس سوال کا جواب سیدھا اور صاف ہے ۔ جواب یہ ہے کہ یہ پہل بھارت ہی کر سکتا ہے اور اُسے ہی کرنی چاہئے ۔ بھارت ہی کو سب سے پہلے اپنے سب ہتھیار پھینک دینے چاہئیں اور اپنی سب فوجیں برخاست کر دینی چاہئیں ۔ بھارت ہی اِس پر ترنت اور پوری طرح عمل کر کے دکھا سکتا ہے ۔

اِس کے کارن بھی صاف ہیں اور بھارت کے پراچین اور حال کے اِتہاس کے پنّوں پر موٹے اکشروں میں لکھے ہوئے ہیں ۔ پراچین سمے میں اشوک نے دنیا کو ایک نیا راستہ ایسے بڑے پیمانے پر دکھایا کہ جس سے اُس سمے اُسی کی ساری نیتک بنیادیں ہل گئیں۔ اشوک کے اُس کارنامے نے ہی مہاتما گاندھی کے آگمن کے لئے زمین تیار کی جس نے اُن کے اُصولوں، اُن کے طریقوں، اُن کے اہنساتمک اُپایوں، اور اُن کی آزادی کی لڑائی اور اُس کی انتم وجے کو ممکن بنا دیا ۔

پر کٹھنائی یہ ہے کہ بھارت کی پرانی مذہبی اور روحانی تہذیب کے ساتھ یورپ کی دنیا اور مادہ پرستی کے بھینکر ٹکراؤ نے بھارت کے راشٹریہ جیون میں ایک عجیب دورخی اور دو دلی پیدا کر دی ہے ۔ اِس دوندوہ یا دو رخے پن نے جب تک مہاتما گاندھی جیوت رہے اُن کے سوتنترتا سنگرام میں برابر طرح طرح کی رکاوٹیں ڈالیں جن سے اُن کے اہنساتمک مشن کو کافی نقصان پہونچا اور وہ جیسا چاہئے تھا کامیاب نہ ہو سکا ۔ اُن کے مرتے ہی ہمارے اِس دورخے پن نے دیش کی لگ بھگ ساری شکتی کو پچھمی راہوں پر ڈال دیا ۔ مگر پھر بھی ہماری یہ غلط روی اور کمزوری نے زمانے کے اُس رخ، حالات اور اُن ضرورتوں کو نہ بدل سکی جنہوں نے مہاتما گاندھی کو جنم دیا تھا اور نہ دنیا کی اُن شکتیوں کو نشٹ کر سکی جن کی مدد سے مہاتما گاندھی بھارت کو اپنے ڈھنگ سے آزادی دلانے میں کامیاب ہو سکے ۔

اِس دویدھا یا دورخے پن کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کے لئے ہمیں ایکبار اپنے دیش کے اندر کی حالت اور اپنے ودیشی سمبندھوں دونوں کو پوری طرح سمجھنا ہوگا اور دونوں کا مقابلہ کر کے دیکھنا ہوگا ۔ ان دونوں کا مقابلہ کرنے سے پتہ چلیگا کہ ایک طرف تو دیش کے اندر کے پروگرام، پربندھ اور ویوستھا میں، اور دیش کو آگے بڑھانے کی یوجناؤں میں ہم نے اپنے آپ کو بالکل پچھمی وچاروں اور پچھمی طریقوں کے حوالے کر رکھا ہے، اور دیش کے پربندھ اور فوجوں کے سنگٹھن دونوں میں ہم نے جیون کے وہی آدرش اپنے سامنے رکھ رکھے ہیں جو امریکہ اور یورپ کے سامنے رہے ہیں، یہاں تک کہ ہم اپنے دیش کو

हमने इसे 'शान्ति युद्ध' कहा है. शान्ति युद्ध सचमुच एक अनोखा वाक्य है. यह आन्दोलन भी अपने ढंग का वैसा ही नया और अनोखा है. लेकिन जाने या अनजाने समय की आवश्यकताओं और माँगों को जितनी अच्छी तरह यह आन्दोलन ज़ाहिर कर रहा है उतनी अच्छी तरह दुनिया का कोई आन्दोलन इस समय नहीं कर रहा है. वास्तव में यही आन्दोलन इस दौर का 'युग धर्म' है.

यह बात भी क़ुदरती और लाज़मी है कि इस शान्ति-युद्ध का सब से ख़ास मक़सद, और आख़िरी मंज़िल वह तहरीक हो जो आज 'डिस-आरमामेन्ट' के रूप में चल रही है यानी यह कि दुनिया की सब क़ौमों के सब हथियार ले लिये जावें और दुनिया की सब फ़ौजें बरख़ास्त कर दी जावें. इस शान्ति आन्दोलन की असली और आख़री जीत हार इन्हीं फ़ौजों और हथियारों के कम या ख़तम हो जाने के सवाल पर निर्भर है. इसी एक सवाल पर यह भी निर्भर है कि मानव जाति का जीवन ख़त्म होगा या मानव इतिहास में एक ऐसे नए युग और नई सभ्यता का उदय होगा जो अब तक के सब युगों और सब सभ्यताओं से कहीं अधिक शानदार होगी. आजकल दुनिया के सामने जितनी समस्याएँ हैं उन सब के हल की कसौटी भी डिसआरमामेन्ट ही है. अगर एक बार यह सवाल ठीक ठीक हल हो जाये तो बाक़ी के वह सब सवाल धीरे-धीरे अपने आप शान्ति और समझौते के साथ हल हो जाँयगे जो आज मानव जाति को एक ज़बरदस्त भूल भूलैयां में डाले हुए हैं और जिनका हल आसानी से किसी को सूझ नहीं रहा है. पिछले पचास बरस के अन्दर जैसे-जैसे हिंसा के नये नये हथियार और तरीक़े निकलते गये वैसे ही आदमी के अन्दर सच्ची मानवता और इनसानियत भी ज़ोरों के साथ पैदा होती गई. यह मानवता ही शान्ति आन्दोलन में राष्ट्रों के एक दूसरे को अधिक अच्छी तरह समझने की इच्छा में और पूरी या अधूरी हथियार-बन्दी में अपने को प्रगट कर रही है.

एक ओर सोवियत रूस की राजनीति और उसकी पालिसी में जो ज़बरदस्त उलट फेर हुए हैं उन्होंने और दूसरी ओर भारत की अहिंसात्मक तटस्थता यानी ग़ैर जानिबदारी और इसके साथ भारत के 'पंचशील' के उसूल ने जो विश्व शान्ति और विश्व मैत्री की बुनियाद हो सकता है, इन दोनों ने मिलकर पूरी कामयाबी के साथ दुनिया की नैतिक तराज़ू के पलड़े को शान्ति की तरफ़ झुका दिया है. सारी दुनिया अब शान्ति के हक़ में आवाज़ ऊँची कर रही है. दुनिया को इससे जो शक्ति मिली है और जो अवसर मिला है उससे यदि ठीक ठीक और सच्चाई के साथ फ़ायदा उठाया जा सके तो मानव इतिहास में एक नया पन्ना पलटा जा सकता है जिसके लिये सारी मानव जाति इस समय भूकी और प्यासी है.

هم نے اِسے شانتی یدھ کہا ہے . شانتی یدھ سچ مچ ایک انوکھا واکیہ ہے . یہ آندولن بھی اپنے ڈھنگ کا ویسا ہی نیا اور انوکھا ہے. لیکن جانے یا انجانے سمے کی آوشیکتاؤں اور مانگوں کو جتنی اچھی طرح یہ آندولن ظاهر کر رہا ہے اُتنی اچھی طرح دنیا کا کوئی آندولن اِس سمے نہیں کر رہا ہے . واستو میں یہی آندولن اِس دور کا 'یگ دھرم' ہے .

یہ بات بھی قدرتی اور لازمی ہے کہ اِس شانتی یدھ کا سب سے خاص مقصد اور آخری منزل وہ تحریک ہو جو آج 'ڈس آرما مینٹ' کے روپ میں چل رہی ہے یعنی یہ کہ دنیا کی سب قوموں کے سب ہتھیار لے لئے جاویں اور دنیا کی سب فوجیں برخاست کردی جاویں. اِس شانتی اندولن کی اصلی اور آخری جیت هار اِنہیں فوجوں اور ہتیاروں کے کم یا ختم ہو جانے کے سوال پر نربھر ہے . اِسی ایک سوال پر یہ بھی نربھر ہے کہ مانو جاتی کا جیون ختم ہوگا یا مانو اِتہاس میں ایک ایسے نئے یگ اور نئی سبھیتا کا ادئے ہوگا جو اب تک کے سب یگوں اور سب سبھیتاؤں سے کہیں ادھک شاندار ہوگی. آجکل دنیا کے سامنے جتنی سمسیائیں ہیں اُن سب کے حل کی کسوٹی بھی ڈس آرما مینٹ ہی ہے . اگر ایک بار یہ سوال ٹھیک ٹھیک حل ہو جائے تو باقی کے وہ سب سوال دھیرے دھیرے اپنے آپ شانتی اور سمجھوتے کے ساتھ حل ہو جائینگے جو آج مانو جاتی کو ایک زبردست بھول بھلیاں میں ڈالے ہوئے ہیں اور جن کا حل آسانی سے کسی کو سوجھ نہیں رہا ہے . پچھلے پچاس برس کے اندر جیسے جیسے ہنسا کے نئے نئے ہتیار اور طریقے نکلتے گئے ویسے ہی آدمی کے اندر سچی مانوتا اور انسانیت بھی زوروں کے ساتھ پیدا ہوتی گئی . یہ مانوتا ہی شانتی اندولن میں راشٹروں کے ایک دوسرے کو ادھک اچھی طرح سمجھنے کی اچھا میں اور پوری یا ادھوری ہتیار بندی میں اپنے کو پرگٹ کر رہی ہے .

ایک اور سوویت روس کی راجنیتی اور اُس کی پالیسی میں جو زبردست اُلٹ پھیر ہوئے ہیں اُنہوں نے اور دوسری اور بھارت کی اہنسا تمک تٹسھتا یعنی غیر جانب داری اور اِس کے ساتھ بھارت کے 'پنچ شیل' کے اصول نے جو وشو شانتی اور وشو میتری کی بنیاد ہو سکتا ہے اِن دونوں نے مل کر پوری کامیابی کے ساتھ دنیا کی نیتک ترازو کے پلڑے کو شانتی کی طرف جھکا دیا ہے . ساری دنیا اب شانتی کے حق میں آواز اُونچی کر رہی ہے . دنیا کو اِس سے جو شکتی ملی ہے اور جو اوسر ملا ہے اُس سے یدی ٹھیک ٹھیک اور سچائی کے ساتھ فایدہ اُٹھایا جا سکے تو مانو اتہاس میں ایک نیا پنّا پلٹا جا سکتا ہے جس کے لئے ساری مانوتا جاتی اِس سمے بھوکی اور پیاسی ہے .

हमारी राय — ہماری رائے

शान्ति युद्ध

अंगरेजी में एक मशहूर कहावत है कि आदमी के जीवन और उसके तरह तरह के मामलों में कभी कभी इस तरह की एक ज़ोरदार लहर आती है जिससे अगर उसी समय पूरा पूरा फ़ायदा उठा लिया जाय तो आदमी की क़िस्मत जाग जाती है और अगर आदमी उस समय चूक जाय तो लहर के एक बार चढ़कर उतर जाने के बाद सिवाय बरबादी और पछतावे के और कुछ बाक़ी नहीं रह जाता, यहाँ तक कि उस बरबादी से फिर पनप सकना भी कठिन हो जाता है. आज दुनिया में ठीक इसी तरह की एक लहर आई हुई है. मानव जाति का सबसे अधिक भला इसी में है कि इस लहर से वह पूरा पूरा फ़ायदा उठा ले और उसे पीछे हट जाने का मौक़ा न दे.

यह लहर दुनिया का वह जबरदस्त आन्दोलन है जिसे शान्ति आन्दोलन, अमन तहरीक या पीस मूवमेन्ट कहा जाता है. कोई कोई इसे "पीस-वार" यानी शान्ति-युद्ध या 'शान्ति के लिए युद्ध' भी कहते हैं. यह अद्‌भुत युद्ध वास्तव में हिंसा और अहिंसा के बीच का युद्ध है. इस युद्ध के अन्त में चाहे हिंसा जीते और चाहे अहिंसा जीते मगर हक़ीक़त यह है कि इतना बड़ा संग्राम मानव जीवन में हिंसा और अहिंसा के बीच आज तक दुनिया में कभी नहीं हुआ था. इस संग्राम में बाज़ी और दाँव भी बहुत गहरे लगे हुए हैं हार जीत केवल इसमें नहीं है कि मानव सभ्यता और संस्कृति ज़िन्दा रहे या न रहे, बल्कि इस बात की भी है कि मानव जाति ज़िन्दा बचे या न बचे.

हिंसा ने दुनिया में इस समय वह विराट रूप और एक ऐसे भयंकर ज्वालमुखी पहाड़ का सा रूप धारण कर लिया है कि उस का क़ुदरती नतीजा यह हुआ कि इनसान के दिलो दिमाग़ के अन्दर अहिंसा और शान्ति की जो प्रवृत्तियाँ और रुजहान सोए हुए थे वह एकदम जगह जगह जाग उठे. इन सब हितकर प्रवृत्तियों और रुजहानों को विश्वव्यापी और आलमगीर शान्ति आन्दोलन में अपने को ज़ाहिर करने का मौक़ा मिल रहा है. इसीलिये यह आन्दोलन इतना गहरा, जबरदस्त और व्यापक दिखाई देता है.

شانتی یدھ

انگریزی میں ایک مشہور کہاوت ہے کہ آدمی کے جیون اور اس کے طرح طرح کے معاملوں میں کبھی کبھی اس طرح کی ایک زوردار لہر آتی ہے جس سے اگر اسی سمے پورا پورا فایدہ اُٹھا لیا جائے تو آدمی کی قسمت جاگ جاتی ہے اور اگر آدمی اس سمے چوک جائے تو لہر کے ایک بار چڑھ کر اُتر جانے کے بعد سوائے بربادی اور پچھتاوے کے اور کچھ باقی نہیں رہ جاتا ۔ یہاں تک کہ اس بربادی سے پھر پنپ سکنا بھی کٹھن ہو جاتا ہے ۔ آج دنیا میں ٹھیک اسی طرح کی ایک لہر آئی ہوئی ہے ۔ مانو جاتی کا سب سے ادھک بھلا اسی میں ہے کہ اس لہر سے وہ پورا پورا فایدہ اُٹھا لے اور اسے پیچھے ہٹ جانے کا موقع نہ دے ۔

یہ لہر دنیا کا وہ زبردست آندولن ہے جسے شانتی آندولن' امن تحریک یا پیس موومینٹ کہا جاتا ہے ۔ کوئی کوئی اسے "پیس-وار" یعنی شانتی یدھ یا 'شانتی کے لئے یدھ' بھی کہتے ہیں ۔ یہ ادبھت یدھ واستو میں ہنسا اور اہنسا کے بیچ کا یدھ ہے ۔ اس یدھ کے انت میں چاہے ہنسا جیتے اور چاہے اہنسا جیتے مگر حقیقت یہ ہے کہ اتنا بڑا سنگرام مانو جیون میں ہنسا اور اہنسا کے بیچ آج تک دنیا میں کبھی نہیں ہوا تھا ۔ اس سنگرام میں بازی اور داؤں بھی بہت گہرے لگے ہوئے ہیں ۔ ہار جیت کیول اس میں نہیں ہے کہ مانو سبھیتا اور سنسکرتی زندہ رہے یا نہ رہے بلکہ اس بات کی بھی ہے کہ مانو جاتی زندہ بچے یا نہ بچے ۔

ہنسا نے دنیا میں اس سمے وہ وراٹ روپ اور ایک ایسے بھینکر جوالامکھی پہاڑ کا سا روپ دھارن کر لیا ہے کہ اس کا قدرتی نتیجہ یہ ہوا کہ انسان کے دل و دماغ کے اندر اہنسا اور شانتی کی جو پرورتیاں اور رجحان سوئے ہوئے تھے وہ ایکدم جگہہ جگہہ جاگ اُٹھے ۔ ان سب ہتکر پرورتیوں اور رجحانوں کو وشوویاپی اور عالمگیر شانتی آندولن میں اپنے کو ظاہر کرنے کا موقع مل رہا ہے ۔ اسی لئے یہ آندولن اتنا گہرا' زبردست اور ویاپک دکھائی دیتا ہے ۔

बहादुरी को सराहते हुए अपनी पिछली दुश्मनी को भुला दिया. इस दोस्ती से सिखों में फिर कुछ हौसला बढ़ा और वह अंग्रेजी फ़ौज में भरती होने लगे जहाँ वे अपनी सिख निशानियों को जैसे के तैसा ही क़ायम रख सकते थे. लेकिन और सब बातों में सिखों में कोई जीवन नहीं रह गया था. उनमें न तो धार्मिक जीवन था और न क़ौमी जीवन. वह उन्हीं पुराने देवताओं को पूजने लगे थे और वही पुरानी और लचर रस्में अदा करते थे जिनमें से उन्हें निकालने के लिये उनके गुरुओं ने निहायत बहादुरी से कोशिश की थी. सिखों की तालीम और पाँच निशानियाँ सिर्फ़ बराए नाम रह गईं. आजकल की संघ सभा सिखों को फिर पुराने ठीक रास्ते पर लाने की कोशिश कर रही है.

بہادری کو سراہتے ہوئے اپنی پچھلی دشمنی کو بھلا دیا ۔ اس دوستی سے سکھوں میں پھر کچھ حوصلہ بڑھا اور وہ انگریزی فوج میں بھرتی ہونے لگے جہاں وے اپنی سکھ نشانیوں کو جیسا کے تیساہی قائم رکھ سکتے تھے ۔ لیکن اور سب باتوں میں سکھوں میں کوئی جیون نہیں رہ گیا تھا ۔ اُن میں نہ تو دھارمک جیون تھا اور نہ قومی جیون۔ وہ اُنہیں پرانے دیوتاؤں کو پوجنے لگے تھے اور وہی پرانی اور لچر رسمیں ادا کرتے تھے جن میں سے اُنہیں نکالنے کے لئے اُن کے گروؤں نے نہایت بہادری سے کوشش کی تھی ۔ سکھوں کی تعلیم اور اور پانچ نشانیاں صرف برائے نام رہ گئیں ۔ آجکل کی سنگھ سبھا سکھوں کو پھر پرانے ٹھیک راستے پر لانے کی کوشش کر رہی ہے ۔

नन्द सिंह बेरार, खैरसिंह अंबाबा और करमसिंह मान वग़ैरा. एक मुसलमान को जिसका नाम सोनता था सिख बनाकर उसका नाम भी रामसिंह रखा गया था और उसकी लड़कियों की शादी रामगढ़िया के सरदारों के यहाँ हुई थी. मेंदों के भाई हरिसिंह पैदाइशी मुसलमान थे. उनको भाई ओनेसिंह कंथल वाले ने सिख बनाया था. एक मुसलमान, जिसका सिख नाम निहालसिंह रखा गया था, गुरुद्वारा भिलयानी का महंत हो गया था. महाराज नरेन्द्र सिंह पटियाला नरेश के इशारे से एक शख़्स सद्र उद्दीन सिख बनाया गया था और महंत दयासिंह ने उसका नाम फतह सिंह रखा था. यह शख़्स 26 साल तक धर्मशाला फूल का महंत रहा और सन1869 में मर गया. इस तरह महाराजा रंजीतसिंह के ज़माने में हज़ारों मुसलमान मर्द और औरतें सिख धर्म के हलक़े में शामिल हुए थे.3

लेकिन महाराजा रंजीतसिंह की हुकूमत में हिन्दू असर ने सिख धर्म को सख़्त धक्का पहुँचाया. उसका असर ख़ालसा सिपाहियों पर भी पड़ा. अगरचे इन सिपाहियों में सिख धर्म क़रीब क़रीब अपनी पुरानी पाकीज़गी में मौजूद था. नयी ऐश पसन्दी ने सिखों की सादगी और आज़ादी को बरबाद कर दिया. असल में सिख धर्म एक सादा और सख़्त धर्म है और आसानी से सिख लोग ऐश और आराम की तरफ़ नहीं झुकते. सिखों के मज़हबी और दुनियावी रस्मों में अकसर सिवाय भजन गाने और प्रार्थना करने के और कुछ नहीं होता.

एक महाराजा अपने बराबर वाले महाराजों में अपना मर्तबा किस तरह क़ायम रख सकता है जब तक कि वह गद्दी पर बैठने व अपनी शादी के मौक़े पर नजूमियों और पंडितों को बुलाकर उन रस्मों और जलसों को शानदार न बना दे. सिख राजाओं और अमीरों को सिख धर्म को अपनी पसन्द के मुताबिक़ बना लेना हमेशा मुश्किल रहा है. इसलिये जब कभी वह दिखावा और रस्में पूरी करना चाहते हैं तो सिख धर्म के दायरे के बाहर जाने के लिये मजबूर होते हैं.

महाराजा रंजीत सिंह के बाद जब बादशाहत सिर्फ़ ज़ेवरों और क़ीमती कपड़ों तक ही रह गई तो ऊँचे ख़ान्दानों के लिये सिख धर्म भी सिर्फ़ पगड़ी और दाढ़ी का फ़ैशन रह गया. नतीजा यह हुआ कि आगे चलकर ऐसेलोगों ने, जिनके रहन सहन के तरीक़े सख़्त और जिनमें ज़ब्त मौजूद था, सिख सरदारों के हाथ से हुकूमत छीन ली. आम सिखों में अभी पुरानी इसप्रिट कुछ बाक़ी थी लेकिन वह भी गुरुद्वारों की हालत बदल जाने और लड़ाई में धक्का पहुँचने की वजह से कम होने लगी. अंग्रेज़ों ने उससे फ़ायदा उठाने की कोशिश की और सिखों की शरीफ़ाना

نند سنگھ بیرار، کھیر سنگھ انبھاوا اور کرم سنگھ مان وغیرہ ۔ ایک مسلمان کو جس کا نام سونتا تھا سکھ بناکر اُس کا نام بھی رام سنگھ رکھا گیا تھا اور اُس کی لڑکیوں کی شادی رام گڑھیا کے سرداروں کے یہاں ہوئی تھی ۔ میندوں کے بھائی ہری سنگھ پیدائشی مسلمان تھے ۔ اُن کو بھائی اونے سنگھ کنتھل والے نے سکھ بنایا تھا۔ ایک مسلمان، جس کا سکھ نام نہال سنگھ رکھا گیا تھا، گرودوارا بھلیانی کا مہنت ہو گیا تھا ۔ مہاراج نریندر سنگھ پٹیالہ نریش کے اشارے سے ایک شخص صدر الدین سکھ بنایا گیا تھا اور مہنت دیا سنگھ نے اُس کا نام فتح سنگھ رکھا تھا ۔ یہ شخص 26 سال تک دھرم شالا پھول کا مہنت رہا اور سن 1869 میں مر گیا ۔ اِس طرح مہاراجہ رنجیت سنگھ کے زمانے میں ہزاروں مسلمان مرد اور عورتیں سکھ دھرم کے حلقے میں شامل ہوئے تھے ۔ 3

لیکن مہاراجہ رنجیت سنگھ کی حکومت میں ہندو اثر نے سکھ دھرم کو سخت دھکا پہنچایا ۔ اُس کا اثر خالصہ سپاہیوں پر بھی پڑا، اگرچہ اِن سپاہیوں میں سکھ دھرم قریب قریب اپنی پرانی پاکیزگی میں موجود تھا ۔ نئی عیش پسندی نے سکھوں کی سادگی اور آزادی کو برباد کر دیا ۔ اصل میں سکھ دھرم ایک سادا اور سخت دھرم ہے اور آسانی سے سکھ لوگ عیش اور آرام کی طرف نہیں جھکتے ۔ سکھوں کے مذہبی اور دنیاوی رسموں میں اکثر سوائے بھجن گانے اور پرارتھنا کرنے کے اور کچھ نہیں ہوتا ۔

ایک مہاراجہ اپنے برابر والے مہاراجوں میں اپنا مرتبہ کس طرح قائم رکھ سکتا ہے جب تک کی وہ گدی پر بیٹھنے و اپنی شادی کے موقع پر نجومیوں اور پنڈتوں کو بلا کر اُن رسموں اور اور جلسوں کو شاندار نہ بنا دے ۔ سکھ راجاؤں اور امیروں کو سکھ دھرم کو اپنی پسند کے مطابق بنا لینا ہمیشہ مشکل رہا ہے ۔ اِس لئے جب کبھی وہ دکھاوا اور رسمیں پوری کرنا چاہتے ہیں تو سکھ دھرم کے دائرے کے باہر جانے کے لئے مجبور ہوتے ہیں ۔

مہاراجہ رنجیت سنگھ کے بعد جب بادشاہت صرف زیوروں اور قیمتی کپڑوں تک ہی رہ گئی تو اُونچے خاندانوں کے لئے سکھ دھرم بھی صرف پگڑی اور داڑھی کا فیشن رہ گیا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ آگے چل کر ایسے لوگوں نے، جن کے رہن سہن کے طریقے سخت اور جن میں ضبط موجود تھا، سکھ سرداروں کے ہاتھ سے حکومت چھین لی ۔ عام سکھوں میں ابھی پرانی اسپرٹ کچھ باقی تھی لیکن وہ بھی گرودواروں کی حالت بدل جانے اور لڑائی میں دھکا پہنچنے کی وجہ سے کم ہونے لگی ۔ انگریزوں نے اُس سے فائدہ اُٹھانے کی کوشش کی اور سکھوں کی شریفانہ

रखा.3 ईसाई गिरजे के कुल हक़ तो उन्हीं लोगों को दिये जाते थे जो यहूदियों से ईसाई होते थे और जिनका खतना होता था.

इसी तरह जब पुराने सिख जिनको गुरु गोविन्द सिंह ने खुद दीक्षा दी थी, शहीद हो गये और उनकी औलाद जिलावतनी (परदेस) में रहने के लिये मजबूर हो गई और संगतें बिना सरदारों के रह गईं तो वह पुराने रसम रिवाजों और विश्वासो में ढल गईं. जो लोग छोटी क़ौमों में से आए थे उनसे और उन लोगों से फ़र्क होने लगा जो ऊँची जातों से आए थे. दीक्षा लेने के बाद भी कुछ को तो सिर्फ़ दरवाजे पर ही जगह मिलती थी, और दूसरों को मन्दिर के अन्दर दाखिल होने का हुक्म होता था. कुछ लोग ऐसे थे जो उस मुसीबत के जमाने में खुले तौर पर सिख होने का इक़रार करने की हिम्मत नहीं करते थे. उनको इजाज़त दी गई कि वह सिख धर्म की ऊपरी निशानियों के बग़ैर ही काम चलाएँ और ऐसे आदमियों को 'सहजधारी' कहा गया. उन दिनों जब लम्बे केश रखना मौत को बुलाना था कोई आदमी उनके उस भेस बदलने पर ऐतराज़ करने का ख्याल दिल में नहीं लाता था जो सहजधारियों ने अख्तयार कर रखा था. उनको सिख धर्म पर पूरा ऐतक़ाद था मगर वह इसके लिये मरने को तैयार न थे. जिन सहजधारियों ने यह रियायती तरीक़ा अख्तयार कर रखा था वह असली सिखों की बराबरी का दावा नहीं करते थे. यह अपने जिलावतन भाइयों की इसप्रिट और उनकी ज़ाहिरी शकल का हमेशा ख्याल रखते थे और हर तरह उनकी मदद किया करते थे.

इस तरह सिख इसप्रिट और तर्ज़े जिन्दगी खालसा की सूरत में उस वक्त भी क़ायम रखा गया जबकि क़सबों और शहरों में पाबन्दियाँ ढीली पड़ गई थीं. सरदार रतनसिंह के लिखे हुए "पुन्य प्रकाश" में लिखा है कि मुसीबत के जमाने के बाद भी जिसमें होकर वह गुज़र चुके थे लड़ने वाले सिखों के दिलों में पुरानी भावना अब भी साफ़ साफ़ और मुस्तैदी से मौजूद है. वह अब भी मूर्ति पूजा से दूर रहते हैं और नये तरीक़े पर शादी करते और पंथ की हुकूमत सब से बढ़कर मानते हैं. जो सुझाव (तजवीज़ें) उनकी संगत या पंचायत में तै होती हैं उन पर अमल करते हैं. जनेऊ, अवतार, जात पात या छुआ छूत को नहीं मानते और आज़ादी से उन लोगों को वापस ले लेते हैं जो मुसलमान हो गये थे. बहुत से मशहूर सिखों ने ऐसी मुसलमान औरतों से शादी की जिन्होंने सिख धर्म को अपना लिया था. उनमें से बाज़ के नाम यह हैं—अनूप सिंह जो चन्द्रथाल का रहने वाला ब्राह्मण था, सखतसिंह पेजगढ़ का खत्री था.

फिर भी बन्दा के सरहद फ़तह करने पर कुछ मुसलमानों ने सिख धर्म अख्तयार किया था (दीक्षा दस्तूर उलनीशा, मुसन्निफ़ बाज़ मोहम्मद).

رکھا . 3 عیسائی گرجے کے کل حق تو انہیں لوگوں کو دیئے جاتے تھے جو یہودیوں سے عیسائی ہوتے تھے اور جن کا ختنہ ہوتا تھا .

اسی طرح جب پرانے سکھ جن کو گرو گووند سنگھ نے خود دیکشا دی تھی، شہید ہوگئے اور ان کی اولاد جلاوطنی (پردیس) میں رہنے کے لئے مجبور ہو گئی اور سنگتیں بنا سرداروں کے رہ گئیں تو وہ پرانے رسم رواجوں اور وشواسوں میں ڈھل گئیں . جو لوگ چھوٹی قوموں میں سے آئے تھے ان سے اور ان لوگوں سے فرق ہونے لگا جو اونچی ذاتوں سے آئے تھے . دیکشا لینے کے بعد بھی کچھ کو تو صرف دروازے پر ہی جگہ ملتی تھی اور دوسروں کو مندر کے اندر داخل ہونے کا حکم ہوتا تھا . کچھ لوگ ایسے تھے جو اس مصیبت کے زمانے میں کھلے طور پر سکھ ہونے کا اقرار کرنے کی ہمت نہیں کرتے تھے . ان کو اجازت دی گئی کہ وہ سکھ دھرم کی اوپری نشانیوں کے بغیر ہی کام چلائیں اور ایسے آدمیوں کو 'سہجدھاری' کہا گیا . ان دنوں جب لمبے کیش رکھنا موت کو بلانا تھا کوئی آدمی ان کے اس بھیس بدلنے پر اعتراض کرنے کا خیال دل میں نہیں لاتا تھا جو سہجدھاریوں نے اختیار کر رکھا تھا . ان کو سکھ دھرم پر پورا اعتقاد تھا مگر وہ اس کے لئے مرنے کو تیار نہ تھے . جن سہجدھاریوں نے یہ رعایتی طریقہ اختیار کر رکھا تھا وہ اصلی سکھوں کی برابری کا دعوہ نہیں کرتے تھے . یہ اپنے جلاوطن بھائیوں کی اسپرٹ اور ان کی ظاہری شکل کا ہمیشہ خیال رکھتے تھے اور ہر طرح ان کی مدد کیا کرتے تھے .

اس طرح سکھ اسپرٹ اور طرز زندگی خالصہ کی صورت میں اس وقت بھی قائم رکھا گیا جب کہ قصبوں اور شہروں میں پابندیاں ڈھیلی پڑ گئیں تھیں . سردار رتن سنگھ کے لکھے ہوئے "پنیہ پرکاش" میں لکھا ہے کہ مصیبت کے زمانے کے بعد بھی جس میں ہو کر وہ گذر چکے تھے لڑنے والے سکھوں کے دلوں میں پرانی بھاونا اب بھی صاف صاف اور مستعدی سے موجود ہے . وہ اب بھی مورتی پوجا سے دور رہتے ہیں اور نئے طریقے پر شادی کرتے اور پنتھ کی حکومت سب سے بڑھ کر مانتے ہیں . جو سوجھاؤ (تجویزیں) ان کی سنگت یا پنچایت میں طے ہوتی ہیں ان پر عمل کرتے ہیں . جنیو، اوتار، ذات-پات یا چھوا چھوت کو نہیں مانتے اور آزادی سے ان لوگوں کو واپس لے لیتے ہیں جو مسلمان ہو گئے تھے . بہت سے مشہور سکھوں نے ایسی مسلمان عورتوں سے شادی کی جنہوں نے سکھ دھرم کو اپنا لیا تھا . ان میں سے بعض کے نام یہ ہیں— انوپ سنگھ جو چندر تھال کا رہنے والا برہمن تھا، سخت سنگھ پیج گڑھ کا کھتری تھا .

پھر بھی بندا کے سرحد فتح کرنے پر کچھ مسلمانوں نے سکھ دھرم اختیار کیا تھا (دیکشا دستورالنیشا، مصنف باز محمد) .

गुरु गोबिन्द सिंह ने बिलकुल साफ़-साफ़ कहा है कि सिख दूसरी क़ौमों से हमदर्दी और मोहब्बत रखते भी ऐसा न करें कि अपने मैआर को दूसरों के साथ मिलाकर गड़बड़ कर दें. सिख अपनी रसमों को चारों फ़िरक़ों के लोगों से अलग ही रखेंगे. वह सब से मुनासिब बर्ताव करेंगे लेकिन उनका विश्वास और जिन्दगी के काम का अमल सबसे अलग रहेगा." 2 सिख अपने उसूलों को बहुत दिनों तक बरक़रार रखे रहे और हिन्दू और मुसलमान दोनों के मेल से बहुत फ़ायदा उठाते रहे और अपनी तरक़्क़ी को दोनों तरफ़ के ग़लत असर से बचाते रहे. लेकिन जब सिखों को मुग़ल हुकूमत से लड़ना पड़ा तो उनकी वह भावना कम होने लगी. गुरु गोविन्द सिंह मोहब्बत के भन्डार होने के सबब से अपने दुश्मनों के दिलों में भी मोहब्बत पैदा कर सके. औरंगज़ेब का एक सिपहसालार सैयद बेग गुरु से जंग करने आया लेकिन उनसे मुलाक़ात होने पर उसे अफ़सोस हुआ और शर्म से लौटकर उसने अहद कर लिया कि जुल्म की मदद के लिये मैं कभी जंग न करूँगा. बुद्धू-शाह, नबीख़ाँ और ग़नीख़ाँ मुसलमान ही थे जिन्होंने बहुत नाज़ुक वक्त पर गुरु की मदद की थी. सिखों से मुसलमानों की बढ़ती हुई नफ़रत का नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों में सिख धर्म की बढ़ती पर असर पड़ा और मुसलमानों का सिक्खों में शामिल होना कम होता गया. यहाँ तक कि जब बाद के मुग़ल बादशाहों की सख्तियाँ बाबा बन्दा के हिन्दुओं और सिखों के ख़िलाफ़ बढ़ गईं तो सिखों में दीक्षा सिर्फ़ हिन्दुओं तक ही महदूद हो गई. नतीजा यह हुआ कि सिख धर्म ने जो नया ख्याल पैदा किया था उसमें पुराने हिन्दू ख्याल भी शामिल होने लगे.

यही हाल ईसाई धर्म का भी हुआ था. शुरू में जब ज्यादातर यहूदियों में से भी ईसाई बनते थे तो नये ईसाइयों के साथ पुराने यहूदी तरीक़े पर बर्ताव होता था. उस तरीक़े में अन्दर के हलक़े के मुरीदों और बाहर वाले मुरीदों में फ़र्क़ समझा जाता था.

अन्दर के हलक़े के मुरीदों का ख़तना हुआ करता था और वह यहूदी रस्म अदा किया करते थे, गिरजे के सब से अन्दर के हिस्से तक जाने के हक़दार होते थे और बाहर के हलक़े के मुरीदों को जो उन रस्मों की पाबन्दी न करते थे सिर्फ़ 'हमदर्द' समझा जाता था, उनको सिर्फ़ गिरजे के दरवाज़े पर ही पूजा करने की इजाज़त होती थी. ईसाइयों और ग़ैर यहूदियों में यही फ़र्क़

2. सूर्य प्रकाश—अवत 3—अध्याय 50.

گرو گوبند سنگھ نے بالکل صاف صاف کہا ہے کہ سکھ دوسری قوموں سے ہمدردی اور محبت رکھتے بھی ایسا نہ کریں کہ اپنے معیار کو دوسروں کے ساتھ ملا کر گڑبڑ کر دیں ۔ سکھ اپنی رسموں کو چاروں فرقوں کے لوگوں سے الگ ہی رکھیں گے ۔ وہ سب سے مناسب برتاؤ کریں گے لیکن اُن کا وشواس اور زندگی کے کام کا عمل سب سے الگ رہیگا ۔" 2 سکھ اپنے اُصولوں کو بہت دنوں تک برقرار رکھے رہے اور ہندو اور مسلمان دونوں کے میل سے بہت فائدہ اٹھاتے رہے اور اپنی ترقی کو دونوں طرف کے غلط اثر سے بچاتے رہے ۔ لیکن جب سکھوں کو مغل حکومت سے لڑنا پڑا تو اُن کی وہ بھاؤنا کم ہونے لگی ۔ گرو گووند سنگھ محبت کے بھنڈار ہونے کے سبب سے اپنے دشمنوں کے دلوں میں بھی محبت پیدا کر سکے ۔ اورنگزیب کا ایک سپہ سالار سید بیگ گرو سے جنگ کرنے آیا لیکن اُن سے ملاقات ہونے پر اُسے افسوس ہوا اور شرم سے لوٹ کر اُس نے عہد کر لیا کہ ظلم کی مدد کے لئے میں کبھی جنگ نہ کرونگا ۔ بدھوشاہ، نبی خاں اور غنی خاں مسلمان ہی تھے جنہوں نے بہت نازک وقت پر گرو کی مدد کی تھی ۔ سکھوں سے مسلمانوں کی بڑھتی ہوئی نفرت کا نتیجہ یہ ہوا کہ مسلمانوں میں سکھ دھرم کی بڑھتی پر اثر پڑا اور مسلمانوں کا سکھوں میں شامل ہونا کم ہوتا گیا ۔ یہاں تک کہ جب بعد کے مغل بادشاہوں کی سختیاں بابا بندا کے ہندؤں اور سکھوں کے خلاف بڑھ گئیں تو سکھوں میں دیکشا صرف ہندؤں تک ہی محدود ہو گئی ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سکھ دھرم نے جو نیا خیال پیدا کیا تھا اُس میں پرانے ہندو خیال بھی شامل ہونے لگے ۔

یہی حال عیسائی دھرم کا بھی ہوا تھا ۔ شروع میں جب زیادہ تر یہودیوں میں سے بھی عیسائی بنتے تھے تو نئے عیسائیوں کے ساتھ پرانے یہودی طریقے پر برتاؤ ہوتا تھا ۔ اُس طریقے میں اندر کے حلقے کے مریدوں اور باہر والے مریدوں میں فرق سمجھا جاتا تھا ۔

اندر کے حلقے کے مریدوں کا ختنہ ہوا کرتا تھا اور وہ یہودی رسم ادا کیا کرتے تھے، گرجے کے سب سے اندر کے حصے تک جانے کا حقدار ہوتے تھے اور باہر کے حلقے کے مریدوں کو جو اُن رسموں کی پابندی نہ کرتے تھے صرف 'ہمدرد' سمجھا جاتا تھا" اُن کو صرف گرجے کے دروازے پر ہی پوجا کرنے کی اجازت ہوتی تھی ۔ عیسائیوں اور غیر یہودیوں میں یہی فرق

2— سوریہ پرکاش—رُت 3—ادھیائے 50 ۔

"न मैं मक्के को हज करने जाऊँ और न हिन्दुओं के तीर्थों में पूजा करने."

"मैं सिर्फ उस एक की बन्दगी करूँगा किसी दूसरे की नहीं."

"मैं न मूर्तियों को पूजूँगा और न नमाज़ पढ़ूँगा."

"मैं अपने दिल को सिर्फ उसके क़दमों में लगाऊँगा जो सब से ऊपर है."

"हम न हिन्दू हैं और न मुसलमान."

"हमने अपने तन और अपनी जानों को अल्लाह व राम के नाम क़ुर्बान कर दिया है."—भैरो राग,

दबिस्तान का लेखक छटे और सातवें गुरुओं के ज़माने में पंजाब आया था. वह सिखों की बाबत लिखता है—

"गुरु नानक के सिख मूर्ति पूजा को बुरा कहते हैं. उनका विश्वास है कि सब गुरु गुरु नानक के ही अवतार हैं. वह हिन्दू मन्त्रों को नहीं पढ़ते और न हिन्दू मन्दिरों की कोई खास इज़्ज़त करते हैं. वे हिन्दू अवतारों को नहीं मानते और न संस्कृत ही पढ़ते हैं जो हिन्दुओं की राय में देवताओं की ज़बान है."

सिखों को हिन्दू शास्त्रों में लिखे हुए रीत रिवाज पर यक़ीन नहीं और न वे खाने पीने में छूत छात की पाबंदियों के क़ायल हैं. एक आलिम हिन्दू प्रतापमल ने जब यह देखा कि उसका लड़का इसलाम की तरफ़ झुका है तो उसने उससे कहा था—"तुमको मुसलमान होने की कोई ज़रूरत नहीं, अगर तुम खाने पीने की आज़ादी चाहते हो तो अच्छा हो कि तुम सिख हो जाओ."

गुरु के लन्गरखाने में और बराबरी सिखाने के लिये सब का एक साथ बिठाकर खाना खाने के सिवाय सिख अपने गुरुद्वारों में किसी तरह की कोई बड़ी रसम अदा नहीं करते. इसलिये आपस में झगड़े की कोई वजह नहीं पैदा होती और न उनमें अलग अलग फ़िरक़े ही पैदा हुए. अमृतसर के गुरुद्वारे में मज़हबी पूजा सिर्फ़ यह होती है कि रात दिन अखंड पाठ ग्रंथ साहब का जारी रखा जाता है. सिर्फ़ आधी रात के क़रीब एक दो घन्टे बन्द रहता है. बाक़ी तमाम वक़्त रागी लोग ग्रन्थ साहब के शब्द बारी बारी से मिलकर गाया करते हैं. किसी तरह की कोई लैकचर बाज़ी या बहस मुबाहिसा वहाँ नहीं होता और इसीलिये कोई हुज्जत आपस में पैदा नहीं होती. सिखों का यह सादा और ख़ूबसूरत रिवाज 250 बरस पहले सुजानराय बटाला वाले ने देखा था. उसने 1667 ईसवी में अपनी किताब "खुलास उत्तवारीख़ में लिखा है—

"उनके लिये सिर्फ पूजा का यह तरीक़ा है कि वह अपने गुरुओं के बनाये भजनों को मीठे स्वरों में साज़ और बाजों के साथ मिलकर गाते हैं."

"نہ میں مکے کو حج کرنے جاؤں اور نہ ہندوؤں کے تیرتھوں میں پوجا کرنے."

"میں صرف اُس ایک کی بندگی کرونگا کسی دوسرے کی نہیں."

"میں نہ مورتیوں کو پوجوں گا اور نہ نماز پڑھوں گا."

"میں اپنے دل کو صرف اُس ایک کے قدموں میں لگاؤنگا جو سب سے اوپر ہے."

"ہم نہ ہندو ہیں اور نہ مسلمان."

"ہم نے اپنے تن اور اپنی جانوں کو اللہ و رام کے نام قربان کر دیا ہے."—بھیروں راگ.

دبستان کا لیکھک چھٹے اور ساتویں گروؤں کے زمانے میں پنجاب آیا تھا. وہ سکھوں کی بابت لکھتا ہے—

"گرو نانک کے سکھ مورتی پوجا کو برا کہتے ہیں. اُن کا وشواس ہے کہ سب گرو گرونانک کے ہی اوتار ہیں. وہ ہندو منتروں کو نہیں پڑھتے اور نہ ہندو مندروں کی کوئی خاص عزت کرتے ہیں. وے ہندو اوتاروں کو نہیں مانتے اور نہ سنسکرت ہی پڑھتے ہیں جو ہندوؤں کی رائے میں دیوتاؤں کی زبان ہے."

سکھوں کو ہندو شاستروں میں لکھے ہوئے ریت رواج پر یقین نہیں اور نہ وے کھانے پینے میں چھوت-چھات کی پابندیوں کے قائل ہیں. ایک عالم ہندو پرتاپ مل نے جب یہ دیکھا کہ اُس کا لڑکا اِسلام کی طرف جھکا ہے تو اُس نے اُس سے کہا تھا—"تم کو مسلمان ہونیکی کوئی ضرورت نہیں' اگر تم کھانے پینے کی آزادی چاہتے ہو تو اچھا ہوکہ تم سکھ ہو جاؤ."

گرو کے لنگرخانے میں اور برابری سکھانے کےلئے سب کو ایک ساتھ بیٹھا کر کھانا کھانے کے سوائے سکھ اپنے گرودواروں میں کسی طرح کی کوئی بڑی رسم ادا نہیں کرتے. اِس لئے آپس میں جھگڑے کی کوئی وجہ نہیں پیدا ہوتی اور نہ اُن میں الگ الگ فرقے ہی پیدا ہوئے. امرتسر کے گرودوارے میں مذہبی پوجا صرف یہ ہوتی ہے کہ رات دن اکھنڈ پاٹھ گرنتھ صاحب کا جاری رکھا جاتا ہے. صرف آدھی رات کے قریب ایک دو گھنٹے بند رہتا ہے. باقی تمام وقت راگی لوگ گرنتھ صاحب کے شبد باری باری سے مل کر گایا کرتے ہیں. کسی طرح کی کوئی لکچر بازی یا بحث مباحثہ وہاں نہیں ہوتا اور اِس لئے کوئی حجت آپس میں پیدا نہیں ہوتی. سکھوں کا یہ سادہ اور خوبصورت رواج 250 برس پہلے سوجان رائے بٹالہ والے نے دیکھا تھا. اُس نے 1667 عیسوی میں اپنی کتاب "خلاص التواریخ" میں لکھا ہے—

اُن کے لئے صرف پوجا کا یہ طریقہ ہے کہ وہ اپنے گروؤں کے بنائے بھجنوں کو میٹھے سروں میں ساز اور باجوں کے ساتھ ملکر گاتے ہیں.

बिला किसी फ़र्क़ के सबको अपने मज़हब में शामिल कर लेने के अलावा और भी ऐसे तरीक़े थे जिनसे सिख धर्म की इस भावना को क़ायम रक्खा जाता था. "गुरुओं का लंगर" जिसमें बिला लिहाज़ छोटे बड़े सबको खाना मिलता था, इसलिये क़ायम किया गया था कि वे तमाम रुकावटें जो फ़िरक़े और मज़हब के तास्सुब की वजह से क़ायम थीं दूर हो जायें और सब बराबर हो जायें. इस लिये यह क़ायदा रक्खा गया था कि जो भी खाना खाने आये, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सबको एक पंगत में बैठकर एक साथ खाना खाना होगा, यहाँ तक कि अकबर और राजा साहब हरीपुर को भी, जब वह गुरु अमरदास से मुलाक़ात करने गये थे, उसी तरह सब के साथ बैठकर खाना खाना पड़ा था. यह ज़ाहिर करने के लिये कि मुसल-मान और नीच जात के हिन्दू सब वैसे ही रहते हैं जैसे ऊँची जात वाले, गुरु अर्जुन देव ने 1 ग्रंथ साहब में इन लोगों की साखियाँ भी शामिल की हैं. इनमें कबीर साहब मुसलमान जुलाहे थे, फ़रीद एक मुसलमान फ़क़ीर, भीखन एक मुस्लिम आलिम, साईं नाई, नाम देव छीपी, रवि-दास मोची, मर्दाना मुसलमान, मिरदहा और बहुत से दूसरे मुसलमान रागी शामिल हैं. यह बात और भी साफ़ हो जाती है जब हम यह देखते हैं कि सिख लोग उस पूरे ग्रंथ साहब को जिसमें यह सब राग साखियाँ वग़ैरा शामिल ईश्वरी या इलहामी समझते हैं और उसकी बेहद इज़्ज़त करते हैं.

इन बातों का असर उस ज़माने के सिखों की अदालतों और रस्म रिवाजों पर बराबर दिखाई पड़ता है. सिख लोग हिन्दुओं और मुसलमानों को एक ही निगाह से देखते थे और मज़हबी तौर पर अपने को इनमें से किसी फ़रीक़ में शामिल नहीं करते थे. गुरु नानक का पहला क़ौल जब उन्होंने प्रचार शुरू किया था यह था कि "ना कोई हिन्दू न मुसलमान और जब उनका चोला छूटा तो हिन्दू मुसलमान दोनों उनको अपना बताते थे. गुरु अर्जुन ने अपनी किताब में निहायत दिलेरी से साफ़-साफ़ कहा है—

"मैं न हिन्दू व्रत रखता हूँ और न रमज़ान के रोज़े."

"मैं सिर्फ़ उसकी इबादत करता हूँ, वही मेरी आख़िरी पनाह है."

"मैंने हिन्दू और तुर्क दोनों से नाता तोड़ लिया है."

"मैं सिर्फ़ एक मालिक को मानता हूँ जो अल्लाह है."

1. "सारी संगत एक साथ बिला लिहाज़ बरन या आश्रम के लंगरख़ाने में दाख़िल होकर एक पंगत में बैठती थी और समझा जाता था कि सब एक बराबर साफ़ और पाक हैं"—सूर्य प्रकाश रास 1—बाब 30

بلا کسی فرق کے سب کو اپنے مذہب میں شامل کر لینے کے علاوہ اور بھی ایسے طریقے تھے جن سے سکھ دھرم کی اِس بھاؤنا کو قائم رکھا جاتا تھا. "گرؤں کا لنگر" جس میں بالحاظ چھوٹے بڑے سب کو کھانا ملتا تھا' اِسی لئے قائم کیا گیا تھا کہ وے تمام رکاوٹیں جو فرقے اور مذہب کے تعصب کی وجہ سے قائم تھیں دور ہو جائیں اور سب برابر ہو جائیں. اِس لئے یہ قاعدہ رکھا گیا تھا کہ جو بھی کھانا کھانے آئے' چاہے وہ ھندو ہو یا مسلمان' سب کو ایک پنگت میں بیٹھ کر ایک ساتھ کھانا ہوگا' یہاں تک کہ اکبر اور راجہ صاحب ھری پور کو بھی' جب وہ گرو امرداس سے ملاقات کرنے گئے تھے' اُسی طرح سب کے ساتھ بیٹھ کر کھانا کھانا پڑا تھا. یہ ظاہر کرنے کے لئے کہ مسلمان اور نیچ ذات کے ھندو سب ویسے ھی رہتے ھیں جیسے اُونچی ذات والے' گرو ارجن دیو نے 1 گرنتھ صاحب میں اِن لوگوں کی ساکھیاں بھی شامل کی ھیں. اِن میں کبیر صاحب مسلمان جولاہے تھے' فرید ایک مسلمان فقیر' بھیکھن ایک مسلم عالم' سائیں نائی' نام دیو چھیپی' روی داس موچی' مردانہ مسلمان' مردھا اور بہت سے دوسرے مسلمان راگی شامل ھیں. یہ بات اور بھی صاف ھو جاتی ھے جب ھم یہ دیکھتے ھیں کہ سکھ لوگ اُس پورے گرنتھ صاحب کو جس میں یہ سب راگ ساکھیاں وغیرہ شامل ھیں ایشوری یا الہامی سمجھتے ھیں اور اُس کی بےحد عزت کرتے ھیں.

اِن باتوں کا اثر اُس زمانے کے سکھوں کی عدالتوں اور رسم رواجوں پر برابر دکھائی پڑتا ھے. سکھ لوگ ھندؤں اور مسلمانوں کو ایک ھی نگاہ سے دیکھتے تھے اور مذہبی طور پر اپنے کو اِن میں سے کسی فریق میں شامل نہیں کرتے تھے. گرو نانک کا پہلا قول جب اُنہوں نے پرچار شروع کیا تھا یہ تھا کہ "نا کوئی ھندو نا مسلمان" اور جب اُن کا چولا چھوٹا تو ھندو مسلمان دونوں اُن کو اپنا بتاتے تھے. گرو ارجن نے اپنی کتاب میں نہایت دلیری سے صاف صاف کہا ھے—

"میں نہ ھندو ورت رکھتا ھوں اور نہ رمضان کے روزے."

"میں صرف اُس کی عبادت کرتا ھوں' وھی میری آخری پناہ ھے."

"میں نے ھندو اور ترک دونوں سے ناتا توڑ لیا ھے."

"میں صرف ایک مالک کو مانتا ھوں جو اللہ ھے."

1 "ساری سنگت ایک ساتھ بالحاظ برن یا آشرم کے لنگر خانے میں داخل ھو کر ایک پنگت میں بیٹھتی تھی اور سمجھا جاتا تھا کہ سب ایک برابر صاف اور پاک ھیں."—سوریہ پرکاش' راس 1—باب 30.

सज्जन—जोकि पहले एक डाकू था मगर गुरु नानक की नसीहत से सिख हुआ और उनके धर्म का उसने प्रचार किया; एक नवाब का लड़का जिसको डला के भाई यारू ने जलन्धर दोआब में सिख बनाया था; वज़ीरख़ाँ—अकबर का एक नायब वज़ीर था और ख़ुफ़िया तौर पर गुरु अर्जुन देव की तालीम पर अमल करता था; बुधनशाह—गुरु नानक का बड़ा भक्त था और आख़िर में गुरु गोविन्द के ज़माने में सिख होकर ही मरा; बीबी गुल्दन—लाहौर के क़ाज़ी की लड़की थी और उसको गुरु हर गोविन्द ने सिख धर्म की तालीम दी थी; सैफ़ाबाद रियासत पटियाला के रहने वाले शफ़ी उद्दीन को गुरु तेरा बहादुर ने ऐन अपनी गिरफ़्तारी से पहले सिख बनाया था; सैयद शाह को भाई नन्दलाल ने सिख बनाया. एक मुसलमान फ़क़ीर इब्राहीम ने सब से पहले अपने को गुरु गोविन्द सिंह के रू बरू सिख धर्म अख़्तियार करने के लिये पेश किया था. गुरु ने उसका नाम अजमेर सिंह रखा और सिखों को एक हुक्म जारी किया कि "अगर कोई मुसलमान अदना हो या आला, सचाई से ख़ालसा धर्म मानना चाहता हो तो मुनासिब है कि उसको दीक्षा दी जाय और संगत में शामिल कर लिया जाय."

बहुत से नामों में से जिन्होंने सिख धर्म अख़्तियार किया था यह सिर्फ़ चन्द नाम हैं. इन नये सिक्खों की हालत जाँच करने पर, जो गुरु नानक और उनके बाद संगत में शामिल हुए थे, ऐसा मालूम होता है कि पठान, सैयद और शिया जिनको मुग़लों ने शकिस्त दे दी थी सिख मज़हब को ज्यादा पसन्द करते थे, जबकि मग़रूर मुग़ल उन लोगों का धर्म अख़्तियार करना अपनी तौहीन समझते थे जिनको उन्होंने जंग में शकिस्त दी थी. जहाँगीर को गुरु अर्जुन के ख़िलाफ़, जैसा कि जहाँगीर ने ख़ुद "तुज़क जहाँगीरी" में लिखा है, सब से बड़ी शिकायत यह थी कि "बहुत से सीधे सादे हिन्दू ही नहीं बल्कि बहुत से बेवक़ूफ़ मुसलमान भी गुरु अर्जुन की दीक्षा और तर्ज़ों से मोहित हो जाते हैं." गुरु ने बहुत से ऐसे लोगों को भी दीक्षा दी थी जो नीची जातों के थे, मसलन रामदास जो मोची थे. गुरु गोविन्द सिंह ने पहुल (सिख बनने) का दरवाज़ा सब के लिये बराबर खोल दिया था. यहाँ तक कि मेहतरों को भी दीक्षा दी थी, और उन्हें उनके मज़बूत विश्वास के लिये 'मज़हबी' कहा जाता था. उन मज़हबियों का आज कल 'रँघरीटा' भी कहते हैं. इसकी वजह यह हो सकती है कि उनमें से बहुत से लोग 'राँगड़' जात के मुसलमान थे. इन लोगों ने गुरु तेरा बहादुर की कटी हुई लाश को निकाल लाने में निहायत जवाँमर्दी से काम लिया था. इसपर उनको गुरु गोविन्द सिंह ने 'रँघरेटे के बेटे' कहकर पुकारा था.

سجن — جو کہ پہلے ایک ڈاکو تھا مگر گرو نانک کی نصیحت سے سکھ ہوا اور اُن کے دھرم کا اُس نے پرچار کیا؛ ایک نواب کا لڑکا جس کو ڈلا کے بھائی یارو نے جالندھر دوآب میں سکھ بنایا تھا؛ وزیر خاں— اکبر کا ایک نائب وزیر تھا اور خفیہ طور پر گرو ارجن دیو کی تعلیم پر عمل کرتا تھا؛ بدھن شاہ— گرو نانک کا بڑا بھگت تھا اور آخر میں گرو گووند کے زمانے میں سکھ ہو کر ہی مرا؛ بی بی گلدن— لاہور کے قاضی کی لڑکی تھی اور اُس کو گرو ہرگووند نے سکھ دھرم کی تعلیم دی تھی؛ سیفاباد ریاست پٹیالہ کے رہنے والے شفیع الدین کو گرو تیغ بہادر نے عین اپنی گرفتاری سے پہلے سکھ بنایا تھا؛ سید شاہ کو بھائی نند لال نے سکھ بنایا۔ ایک مسلمان فقیر ابراہیم نے سب سے پہلے اپنے کو گرو گووند سنگھ کے روبرو سکھ دھرم اختیار کرنے کے لئے پیش کیا تھا۔ گرو نے اُس کا نام اجمیر سنگھ رکھا اور سکھوں کو ایک حکم جاری کیا کہ "اگر کوئی مسلمان ادنیٰ ہو یا اعلیٰ، سچائی سے خالصہ دھرم ماننا چاہتا ہو تو مناسب ہے کہ اُس کو دیکشا دی جائے اور سنگت میں شامل کر لیا جائے۔"

بہت سے ناموں میں سے جنھوں نے سکھ دھرم اختیار کیا تھا یہ صرف چند نام ہیں۔ اِن نئے سکھوں کی حالت جانچ کرنے پر، جو گرو نانک اور اُن کے بعد سنگت میں شامل ہوئے تھے، ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پٹھان، سید اور شیعہ جن کو مغلوں نے شکست دے دی تھی سکھ مذہب کو زیادہ پسند کرتے تھے، جب کہ مغرور مغل اُن لوگوں کا دھرم اختیار کرنا اپنی توہین سمجھتے تھے جن کو اُنھوں نے جنگ میں شکست دی تھی۔ جہانگیر کو گرو ارجن کے خلاف، جیسا کہ جہانگیر نے خود "تزک جہانگیری" میں لکھا ہے، سب سے بڑی شکایت یہ تھی کہ "بہت سے سیدھے سادے ہندو ہی نہیں بلکہ بہت سے بیوقوف مسلمان بھی گرو ارجن کی دیکشا اور طریقوں سے موہت ہو جاتے ہیں۔" گرو نے بہت سے ایسے لوگوں کو بھی دیکشا دی تھی جو نیچی ذاتوں کے تھے۔ مثلاً رام داس جو موچی تھے۔ گرو گووند سنگھ نے پہول (سکھ بننے) کا دروازہ سب کے لئے برابر کھول دیا تھا۔ یہاں تک کہ مہتروں کو بھی دیکشا دی تھی اور اُنھیں اُن کے مضبوط وشواس کے لئے 'مذہبی' کہا جاتا تھا۔ اُن مذہبیوں کو بعض وقت ورن رنگھریٹا بھی کہتے ہیں، اِس کی وجہ یہ ہو سکتی ہے کہ اُن میں سے بہت سے لوگ 'رانگڑ' ذات کے مسلمان تھے۔ اِن لوگوں نے گرو تیغ بہادر کی کٹی ہوئی لاش کو نکال لانے میں نہایت جوانمردی سے کام لیا تھا۔ اِس پر اُن کو گرو گووند سنگھ نے 'رنگھریٹے کے بیٹے' کہہ کر پکارا تھا۔

दोबारा जारी करने का मौक़ा मिल गया था. सिख गुरुद्वारे मठधारी महन्तों के हाथ में पड़ गये और संगतों से जब पहले के हम-मज़हब सिख ख़त्म हो गये तो हकूमत उन्हीं महन्तों के हाथ में आ गई जो गुरुद्वारों पर क़ब्ज़ा रखते थे.

एक बात और भी थी जिस से सिख धर्म के सच्चाई के साथ बढ़ने में ख़लल पड़ गया. सिक्खों की तारीख़ के आख़िरी ज़माने में सिख धर्म में दाख़िला सिर्फ़ एक मौक़े के लिये रह गया. चूँकि इस पहलू पर आम तौर से विचार नहीं किया गया है इसलिये मैं इसको कुछ तफ़सील के साथ बयान करना चाहता हूँ.

सिख धर्म सब जातों और फ़िरक़ों के लिये था और शुरू में हिन्दू और मुसलमान दोनों में से ही सिख लिये जाते थे. गुरु नानक ने एशियाई कोचक, ईरान और दूसरे मुल्कों में, जहाँ जहाँ वह गये थे, बहुत से मुरीद बनाये थे. सेवादास ने अपने ग्रंथ "जन्म साखी" (1528 ईसवी) में बहुत सी ऐसी जगहों का ज़िक्र किया है जैसे "पठानों की किरी", जहाँ बहुत से मुसलमानों ने सिख धर्म अपनाया था. सिक्खों की इस फ़ेहरिस्त से जो भाई गुरदास (1629) ने अपने ग्यारहवें गीत में दी है इसमें और नामों के साथ ऐसे नाम भी लिखते हैं जैसे मर्दाना जो गुरु नानक के साथ रहता था, दौलतख़ाँ पठान जो बाद में एक सिख संत हुआ है और गूजर लोहार जो गुरु अंगद का चेला था. उसने अपने गाँव में सिख धर्म की लोगों को तालीम दी थी. इनके अलावा हमज़ा और मियाँ जमाल बराबर गुरु गोविन्द की ख़िदमत में हाज़िर रहते थे. तारीख़ में हमको मुसलमानों के बहुत से नाम मिलते हैं जो सिख धर्म को सराहते थे; मसलन राय बूला रतलवन्डी का मुसलमान सरदार जो गुरुनानक के माँ बाप की निस्बत भी गुरु नानक की ज़्यादा क़द्र करता था. अल्लाहयार और हुसेनी शाह, जिन्होंने गुरु अमरदास से रूहानी सबक़ लिया था, क़रीब क़रीब सिख ही समझे जा सकते हैं. अकबर को रवादारी पर और सती के रिवाज के बन्द करने पर भी गुरु अमरदास का असर था. साईं मियाँ मीर का गुरु अर्जुन देव से इस क़द्र गहरा ताल्लुक़ था कि गुरु जी अमृतसर के गुरुद्वारे की नींव रखने के लिये साईं मियाँ मीर को लाये थे. गुरुद्वारे की नींव साईं मियाँ मीर के हाथों की रखी हुई है. दाराशिकोह का सिखों की तरफ़ इतना ज़्यादा झुकाव था कि इसी वजह से औरंगज़ेब ने उनके साथ ज़्यादतियाँ की थीं. सैयद बुद्धू शाह साकिन सुधौरा, कालेख़ाँ और सैयद बेग गुरु गोविन्द सिंह की तरफ़ से लड़े थे. इनके सिवाय और बहुत से ऐसे लोग भी थे जिन्होंने सिख धर्म क़बूल कर लिया था. इनमें सिर्फ़ थोड़े से नाम यहाँ दिये जा सकते हैं. मसलन—

دوبارہ جاری کرنے کا موقعہ مل گیا تھا ۔ سکھ گوردوارے مٹھ دھاری مہنتوں کے ھاتھ میں پڑ گئے اور سنگتوں سے جب پہلے کے ہم مذھب سکھ ختم ھو گئے تو حکومت انھیں مہنتوں کے ھاتھ میں آ گئی جو گردواروں پر قبضہ رکھتے تھے ۔

ایک بات اور بھی تھی جس سے سکھ دھرم کے سچائی کے ساتھ بڑھنے میں خلل پڑ گیا ۔ سکھوں کی تاریخ کے آخری زمانے میں سکھ دھرم میں داخلہ صرف ایک موقعہ کے لئے رہ گیا ۔ چونکہ اِس پہلو پر عام طور سے وچار نہیں کیا گیا ھے اِس لئے میں اِس کو کچھ تفصیل کے ساتھ بیان کرنا چاھتا ھوں ۔

سکھ دھرم سب جاتوں اور فرقوں کے لئے تھا اور شروع میں ھندو اور مسلمان دونوں میں سے ھی سکھ لئے جاتے تھے ۔ گرونانک نے ایشیائی کوچک، ایران اور دوسرے ملکوں میں، جہاں جہاں وہ گئے تھے، بہت سے مرید بنائے تھے ۔ سیوا داس نے اپنے گرنتھ "جنم ساکھی" (1628 عیسوی) میں بہت سی ایسی جگہوں کا ذکر کیا ھے جیسے "پٹھانوں کی کری" جہاں بہت سے مسلمانوں نے سکھ دھرم اپنایا تھا ۔ سکھوں کی اِس فہرست سے جو بھائی گرداس (1559) نے اپنے گیارھویں گیت میں دی ھے اِس میں اور ناموں کے ساتھ ایسے نام بھی لکھتے ھیں جیسے مردانہ جو گرو نانک کے ساتھ رھتا تھا، دولت خاں پٹھان جو بعد میں ایک سکھ سنت ھوا ھے اور گوجر لوہار جو گرو انگد کا چیلا تھا ۔ اُس نے اپنے گاؤں میں سکھ دھرم کی لوگوں کو تعلیم دی تھی ۔ اِن کے علاوہ ھمزہ اور میاں جمال برابر گروگوبند کی خدمت میں حاضر رھتے تھے ۔ تاریخ میں ھم کو مسلمانوں کے بہت سے نام ملتے ھیں جو سکھ دھرم کو سراھتے تھے؛ مثلاً رائے بولا رتل ونڈی کا مسلمان سردار جو گرونانک کے ماں باپ کی نسبت بھی گرونانک کی زیادہ قدر کرتا تھا ۔ اللہ یار اور حسینی شاہ، جنھوں نے گرو امرداس سے روحانی سبق لیا تھا، قریب قریب سکھ ھی سمجھے جا سکتے ھیں ۔ اکبر کی رواداری پر اور ستی کے رواج کے بند کرنے پر بھی گرو امر داس کا اثر تھا ۔ سائیں میاں میر کا گرو ارجن دیو سے اِس قدر گہرا تعلق تھا کہ گرو جی امرتسر کے گردوارے کی نیو رکھنے کے لئے سائیں میاں میر کو لائے تھے ۔ گردوارے کی نیو سائیں میاں میر کے ھاتھوں کی رکھی ھوئی ھے ۔ دارا شکوہ کا سکھوں کی طرف اتنا زیادہ جھکاؤ تھا کہ اِسی وجہ سے اورنگ زیب نے اُن کے ساتھ زیادتیاں کی تھیں ۔ سید بدھو شاہ، ساکن سودھورا، کالے خاں اور سید بیگ گرو گوبند سنگھ کی طرف سے لڑے تھے ۔ اِن کے سوائے اور بہت سے ایسے لوگ بھی تھے جنھوں نے سکھ دھرم قبول کر لیا تھا ۔ اِن میں سے صرف تھوڑے سے نام یہاں دیئے جا سکتے ھیں ۔ مثلاً—

सिख मज़हब का दरमियानी रास्ता

प्रोफ़ेसर तेजासिंह एम० ए०

सिख धर्म उस वक़्त तक सिर्फ़ एक मज़हबी आन्दोलन था जब तक कि दुनियावी ताक़त की हविस का उस पर असर न हुआ था. शुरू के सिख गुरुओं ने जालिम हाकिमों से लड़ाई जरूर लड़ी थी मगर वह किसी लोभ में न आये थे. छटे सिख गुरु ने जितनी लड़ाइयाँ लड़ीं उन सब में फ़तह पाई और दसवें गुरु साहब ने भी ज्यादातर लड़ाइयों में फ़तह पाई थी. मगर उन लड़ाइयों में जीतने पर भी उन्होंने एक इंच जमीन पर भी क़ब्ज़ा नहीं किया. जो कुछ जमीन उनके पास थी उसको उन्होंने या तो नक़द रुपया देकर खरीदा था या उनके चेलों ने उन्हें नजर दी थी.

सिख गुरुओं के पास जब ऐशो आराम के सारे सामान मौजूद थे तब भी उन्होंने अपना रहन सहन सादा ही बनाये रखा. जिन रागियों की साखियाँ ग्रंथ साहब में जमा की गई हैं उन्होंने हमेशा औसत दर्जे के रहन सहन के तरीक़े को ही सराहा है. इसे वे राजयोग कहा करते थे—ऐसा योग जो त्याग और भोग दोनों के बीच का रास्ता है. यह कहना ठीक नहीं है कि पाँचवें या छटे सिख गुरु के जमाने से सिख धर्म का मेआर गिर गया और गुरुओं को सच्चा बादशाह और उनकी गद्दी को तख़्त और सिखों की संगत को दरबार कहा जाने लगा. लेकिन शुरू गुरुओं और खासकर उन रागियों की तहरीरों से जिनकी साखियाँ दूसरे गुरु के वक़्त से ही लिखी जाने लगी थीं यह साफ़ मालूम होता है कि इस तरह के लफ़्ज़ बाद में नहीं चले बल्कि शुरू से ही काम में आते रहे हैं. एशिया में फ़क़ीर महात्माओं का दर्जा बादशाहों से बड़ा माना जाता रहा है और उनकी शान में इसी तरह की पदवियाँ काम में लाई जाती रही हैं.

सिख धर्म में तब्दीली बाद में जरूर हुई लेकिन यह तब्दीली उस वक़्त से ही नजर आती है जब आख़िरी गुरु साहब पंजाब से चले गये थे और दक्खिन में जाकर उन्होंने शरीर त्याग दिया था. गुरु के जिन चुने हुए भक्तों ने गुरु गोबिन्दसिंह से सबक़ पाया था और जिनकी मौजूदगी से आम सिक्खों में सच्चाई की भावना क़ायम रह सकती थी उनको गुरु के शरीर त्यागने के बाद कमजोरों की हिफ़ाज़त करने के लिये अपनी ज़िन्दगी बचाना और ज़ालिमों से लड़ना पड़ गया और उन्हें आम लोगों से दूर चला जाना पड़ा. उस वक़्त आम सिक्खों को या तो अपनी क़िस्मत पर भरोसा करना पड़ा या उन पुराने पेशेवर गुरुओं से सबक़ लेना पड़ा जिन को अब रुपया लेकर अपने पुराने पेशे को

سکھ مذھب کا درمیانی راستہ

پروفیسر تیجا سنگھ. ایم. اے.

سکھ دھرم اُس وقت تک صرف ایک مذھبی آندولن تھا جب تک کہ دنیاوی طاقت کی حرص کا اُس پر اثر نہ ھوا تھا ۔ شروع کے سکھ گرؤں نے ظالم حاکموں سے لڑائی ضرور لڑی تھی مگر وہ کسی لوبھ میں نہ آئے تھے ۔ چھٹے سکھ گرو نے جتنی لڑائیاں لڑیں اُن سب میں فتح پائی، اور دسویں گرو صاحب نے بھی زیادہ تر لڑائیوں میں فتح پائی تھی ۔ مگر اُن لڑائیوں میں جیتنے پر بھی اُنھوں نے ایک انچ زمین پر بھی قبضہ نہیں کیا ۔ جو کچھ زمین اُن کے پاس تھی اُس کو اُنھوں نے یا تو نقد روپیہ دے کر خریدا تھا یا اُن کے چیلوں نے اُنھیں نذر دی تھی ۔

سکھ گرؤں کے پاس جب سب عیش و آرام کے سارے سامان موجود تھے تب بھی اُنھوں نے اپنا رھن-سہن سادہ ھی بنائے رکھا ۔ جن راگیوں کی ساکھیاں گرنتھ صاحب میں جمع کی گئیں ھیں اُنھوں نے ھمیشہ اوسط درجے کے رھن سہن کے طریقے کو ھی سراھا ھے ۔ اِس وے راج یوگ کہا کرتے تھے—ایسا یوگ جو تیاگ اور بھوگ دونوں کے بیچ کا راستہ ھے ۔ یہ کہنا ٹھیک نہیں ھے کہ پانچویں یا چھٹے سکھ گرو کے زمانے سے سکھ دھرم کا معیار گر گیا اور گرؤں کو سچا بادشاہ اور اُن کی گدی کو تخت اور سکھوں کی سنگت کو دربار کہا جانے لگا ۔ لیکن شروع گرؤں اور خاص کر اُن راگیوں کی تحریروں سے جن کی ساکھیاں دوسرے گرو کے وقت سے ھی لکھی جانے لگی تھیں یہ صاف معلوم ھوتا کہ ھے اِس طرح کے لفظ بعد میں نہیں چلے بلکہ شروع سے ھی کام میں آتے رھے ھیں ۔ ایشیا میں فقیر مہاتماؤں کا درجہ بادشاھوں سے بڑا مانا جاتا رھا ھے اور اُن کی شان میں اِسی طرح کی پدویاں کام میں لائی جاتی رھی ھیں ۔

سکھ دھرم میں تبدیلی بعد میں ضرور ھوئی لیکن یہ تبدیلی اُس وقت سے ھی نظر آتی ھیں جب آخری گرو صاحب پنجاب سے چلے گئے تھے اور دکھن میں جاکر اُنھوں نے شریر تیاگ دیا تھا. گرو کے جن چنے ھوئے بھکتوں نے گرو گوبند سنگھ سے سبق پایا اور تھا جن کی موجودگی سے عام سکھوں میں سچائی کی بھاونا قایم رہ سکتی تھی اُن کو گرو کے شریر تیاگنے کے بعد کمزوروں کی حفاظت کرنے کے لئے اپنی زندگی بچانا اور ظالموں سے لڑنا پڑ گیا اور اُنھیں عام لوگوں سے دور چلا جانا پڑا ۔ اُس وقت عام سکھوں کو یا تو اپنی قسمت پر بھروسہ کرنا پڑا یا اُن پرانے پیشہ‌ور گرؤں سے سبق لینا پڑا اور جن کو اب روپیہ لے کر اپنے پرانے پیشے کو

मुसलमानों की दोस्ताना मजहबी बहस बराबर चलती रहती थी.

مسلمانوں کی دوستانہ مذہبی بحث برابر چلتی رہتی تھی۔

---

1. Islamic Culture Vol. 1, No. 2 pp. 190-191.
2. फुतूह अल-बलदान (लेडेन), सफा 446 صفحہ (لیڈن) فتوح البلدان
3. Ibn Batuta (H. A. R. Gibb) p. 295
4. Burton's Pilgrimage to Al-Madinah, Vol. 11, p. 174.
5. AS. Soc. Vols. iii and iv
6. Balazuri, p. 489.
7. The Caliphate its Rise, Decline and Fall, by Sir W. Muir, pp. 354-355.
8. Islamic Culture, Vol. I, No. 2. p. 205
9. 'Ajaib al Hind (ed. P. A. Von Der Lith), p. 155.
10. Abid, p. 481.
11. Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.
12. Ibn Hauqal (de Goeje)' p. 232.
13. Ahsan ut-Taqasim, p. 482.
14. Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.
15. Muruj-uz-Zahab (Paris), Vol I. pp. 253-54.
16. Ajaib al-Hind, pp. 2-3
17. Voyage du Merchand Arb (Frrand), p. 139.
18. Ajaib al-Hind, p. 147.
19. Fihrist pp. 345-349.

पुजारी थे और अनगिनत तादाद में अरब सैयाह, आलिम, तारीखदाँ और जुग़राफ़ियादाँ भारत में आ आकर ज्ञान के इस लामहदूद ख़ज़ाने से दान हासिल करने लगे. हारूँ-अर-रशीद के वज़ीर यहया बरमकी ने एक आलिम को इस बात के लिये मुक़र्रर किया कि वह हिन्दुस्तानमें राइज मुख़तलिफ़ मज़हबों और हिन्दुस्तान की जड़ी बूटियों के बारे में अपनी तफ़सीली रिपोर्ट पेश करे. इब्न-अन-नजीम का कहना है कि उसने बतारीख़ 349 हिजरी की अलकिन्दी के हाथ की लिखी हुई इस रिपोर्ट की एक नक़ल देखी है. इब्न-अन-नजीम के मुताबिक़ इस रिपोर्ट में बल्लभराय की राजधानी महानगर के देव मन्दिरों और मुलतान और भारत के मुख़तलिफ़ मज़हबों और मज़हबी किताबों का भी बयान था. इब्न-अन-नजीम ने पूरी किताब का ख़ुलासा भी दिया है. जिन मज़हबी किताबों का इनमें बयान है उनमें से कुछ ये हैं— महाकालिया, आदित्यभक्तिया, चेन्द्रभक्तिया, वक्रान्तिया (जिसके पैरोकार जंजीर पहनते थे), गङ्गायात्रिया, राज-पुत्रिया और एक और फ़िरक़ा जिसके हामी लम्बे बाल रखते थे, शराब से परहेज करते थे और औरतों की सोहबत से बचते थे."19

हिन्दुस्तान के मग़रिबी साहिल पर जगह जगह हिन्दू मुसलमानों की जिस तरह की मिली जुली आबादियाँ उस वक्त बस गई थीं और जिस तरह दोनों एक दूसरे के मज़हब की कहानी और मज़हबी गहराइयों में दाख़िला पाने की कोशिश कर रहे थे. उनका यह शौक़ आपस के गहरे ताल्लुक़ और मेल जोल से ही पूरी हो सकती थी.

उस वक्तके एक राजा की बाबत लिखा है कि उसने ख़लीफ़ा हारूँ रशीद को ख़त लिखकर किसी ऐसे मुसलिम आलिम को भेजने की दरख़ास्त की जो राजा के हिन्दू पण्डितों से मज़हबी बहस कर सके. इसी वाक़िये का एक दूसरा बयान यह है कि राजा ने मुसलमान आलिम को इसलिये बुलाया ताकि वह एक बहुत ऊँचे बौद्ध आलिम से मज़हबी बहस मुबाहिसा कर सके. यह सही भी हो सकता है. बहर हाल वह मुसलिम आलिम भारत आया, लेकिन उस बौद्ध आलिम के सामने उसकी एक न चली. कई दिन तक बहस होती रही. मुसलिम आलिम क़ुरान और हदीस को आख़िरी सनद कहकर पेश करता था जबकि बौद्ध आलिम .क़ुरान और हदीस दोनों से इनकार करता था. इसके बाद बहस ख़ुदा के वजूद पर शुरू हो गई और बौद्ध लाजवाब होने लगा और उसने हार की शर्म से बचने के लिये, कहते हैं, एक दिन उस मुसलमान आलिम को ज़हर देकर मरवा डाला. लेकिन इस अफ़सोसनाक वाक़ये से यह मज़हबी बहस रुकी नहीं और उस ज़माने के वाक़ेयात में इनकी ऐसी मिसालें मिलती हैं जिनसे ज़ाहिर होता है कि हिन्दू

پجاری تھے اور انگنت تعداد میں عرب سیاح، عالم، تاریخ داں اور جغرافیہ داں بھارت میں آ آ کر گیان کے اِس لامحدود خزانے سے دان حاصل کرنے لگے۔ ہارون الرشید کے وزیر یحییٰ برمکی نے ایک عالم کو اِس بات کے لئے مقرر کیا کہ وہ ہندستان میں رائج مختلف مذہبوں اور ہندستان کی جڑی بوٹیوں کے بارے میں اپنی تفصیلی رپورٹ پیش کرے۔ ابن-ان-نظیم کا کہنا ہے: کہ اُس نے بتاریخ 349 ہجری کی الکندی کے ہاتھ کی لکھی ہوئی اِس رپورٹ کی ایک نقل دیکھی ہے۔ ابن-ان نظیم کے مطابق اِس رپورٹ میں بلبھ رائے کی راجدھانی مہانگر کے دیو مندروں اور ملتان اور بھارت کے مختلف مذہبوں اور مذہبی کتابوں کا بھی بیان تھا۔ ابن-ان-نظیم نے پوری کتاب کا خلاصہ بھی دیا ہے۔ جن مذہبی کتابوں کا اِس میں بیان ہے اُن میں سے کچھ یہ ہیں ـــــ مہاکالیا، آدت بھکتیا، چندر بھکتیا، وکرانتیا (جس کے پیروکار زنجیر پہنتے تھے)، گنگا یاتریا، راج پتریا اور ایک اور فرقہ جس کے حامی لمبے بال رکھتے تھے، شراب سے پرہیز کرتے تھے اور عورتوں کی صحبت سے بچتے تھے۔" 19

ہندستان کے مغربی ساحل پر جگہ جگہ ہندو مسلمانوں کی جس طرح کی ملی جلی آبادیاں اُس وقت بس گئیں تھیں اور جس طرح دونوں ایک دوسرے کے مذہب کی کہانی اور مذہبی گہرائیوں میں داخلہ پانے کی کوشش کر رہے تھے، اُن کا یہ شوق آپس کے گہرے تعلق اور میل جول سے ہی پوری ہو سکتی تھی۔

اس وقت کے ایک راجہ کے بابت لکھا ہے کہ اُس نے خلیفہ ہارون الرشید کو خط لکھ کر کسی ایسے مسلم عالم کو بھیجنے کی درخواست کی جو راجہ کے ہندو پنڈتوں سے مذہبی بحث کر سکے۔ اسی واقعہ کا ایک دوسرا بیان یہ ہے کہ راجہ نے مسلمان عالم کو اِس لئے بلایا تاکہ وہ ایک بہت اُونچے بودھ عالم سے مذہبی بحث مباحثہ کر سکے۔ یہ صحیح بھی ہو سکتا ہے۔ بہر حال وہ مسلم عالم بھارت آیا، لیکن اُس بودھ عالم کے سامنے اُس کی ایک نہ چلی۔ کئی دن تک بحث ہوتی رہی۔ مسلم عالم قرآن اور حدیث کو آخری سند کہہ کر پیش کرتا تھا جب کہ بودھ عالم قرآن اور حدیث دونوں سے انکار کرتا تھا۔ اِس کے بعد بحث خدا کے وجود پر شروع ہو گئی اور بودھ لاجواب ہونے لگا اور اُس ہار کی شرم سے بچنے کے لئے، کہتے ہیں، ایک دن اُس مسلمان عالم کو زہر دے کر مروا ڈالا۔ لیکن اِس افسوسناک واقعے سے یہ مذہبی بحث رکی نہیں اور اُس زمانے کے واقعات میں اِن کی ایسی مثالیں ملتی ہیں جن سے ظاہر ہوتا ہے کہ ہندو

अरमान भी बढ़ा. मिसाल के तौर पर मसूदी लिखता है—
"खम्भात का राजा मुसलमानों और दूसरे मज़हबी पैरोकारों के साथ, जो उसके दरबार में आते थे, मज़हबी ख्यालात का तबादला करता था." 15

इसी तरह से बुज़ुर्ग बिन शहरयार लिखता है कि अलोर के राजा महरुग ने जिसकी हकूमत ऊँचे और नीचे के काश्मीर के बीच में थी, मनसूरा के राजा को लिखा कि वह किसी ऐसे आदमी को भेजे जो हिन्दी ज़बान में इसलाम के उसूलों को उसे समझा सके. मनसूरा के शाह ने अब्दुल्ला नामी एक क़ाबिल शख्स को, जो तीन बरस तक मनसूरा में रह चुका था, अलोर भेजा. उसने क़ुरान का हिन्दी में तर्जुमा करके रोज़ राजा को सुनाना शुरू किया. राजा पर उसका गहरा असर पड़ा. 16 इस तरह के असर पड़ने उस वक्त क़ुदरती थे; इसके बाद मुसलिम मुल्कों में हिन्दुओं की आमद रफ़्त शुरू हुई और दोनों के बीच के समाजी ताल्लुक़ात और ज़्यादा गहरे और दिलचस्प होते गये. सुलेमान लिखता है—

इराक़ के बन्दरगाह सैराफ़ में बहुत से हिन्दू रहते हैं और जब कोई अरब सौदागर उनकी दावत करता है तो उनकी तादाद सौ तक पहुँच जाती है. उनमें से हर शख्स का खाना अलग अलग रकाबियों में परसा जाता है क्योंकि एक ही रकाबी में कोई एक दूसरे के साथ नहीं खाता."17 इन्हीं हिन्दुओं के मुताल्लिक़ बुज़ुर्ग बिन शहरयार कहता है—

"ये लोग बोल चाल की अरबी इस सफ़ाई से और जल्द जल्द बोलते हैं कि हमारे आलिम फ़ाज़िल मौलवी दंग और हैरान रह जाते हैं. इन लोगों में आम तौर पर सिंधी, गुजराती और मुलतानी हैं जो अरसए क़दीम से हमारे मुल्कों के साथ तिजारत करते आ रहे हैं."18

इस तिजारती रिश्ते से हिन्दुस्तान मुसलिम मुल्कों के गहरे मेल जोल में आया और इसलामी दुनिया पर अपने ज्ञान, साइन्स, रूहानी ताल्लुक़ात और मज़हब का असर डाल पाया. अरब और ईरानी सौदागर हिन्दुस्तान से तिजारती माल के साथ साथ सनत और साइंस के खेत्र भी ले जाते थे.

दूसरी तरफ़ अब्बासी खलीफ़ाओं के दरबार की इनसानी रहम दिली और मज़हबी बरदाश्त से मुतास्सिर होकर हिन्दू पंडित बड़ी तादाद में बग़दाद में जमा होने लगे. खलीफ़ा के दरबार में नजूम और वैद्यक के सब से आला ओहदों पर हिन्दू पंडित ही सरफ़राज़ थे. मुसलमानों के दिलों में हिन्दुस्तान के ज्ञान की भेद भरी गहराई की थाह लेने की, ज्ञानी, ध्यानी और सिरजनशील भारत को जानने का गहरा शौक़ पैदा हुआ. अरब के आलिम ज्ञान के सच्चे

ارمان بھی بڑھا ۔ مثال کے طور پر مسعودی لکھتا ہے—

"کھمبھات کا راجہ مسلمانوں اور دوسرے مذہبی پیروکاروں کے ساتھ' جو اُس کے دربار میں آتے تھے' مذہبی خیالات کا تبادلہ کرتا تھا ۔ 15

اِسی طرح سے بزرگ بن شہریار لکھتا ہے کہ الور کے راجہ مہروگ نے جس کی حکومت اونچے اور نیچے کے کشمیر کے بیچ میں تھی' منصورا کے راجہ کو لکھا کہ وہ کسی ایسے آدمی کو بھیجے جو ہندی زبان میں اِسلام کے اصولوں کو سمجھا سکے ۔ منصورا کے بادشاہ نے عبداللہ نامی ایک قابل شخص کو' جو تین برس تک منصورا میں رہ چکا تھا' الور بھیجا ۔ اُس نے قرآن کا ہندی میں ترجمہ کر کے روز راجہ کو سنانا شروع کیا. راجہ پر اُس کا گہرا اثر پڑا ۔ 16 اِس طرح کے اثر پڑنے اُس وقت قدرتی تھے ۔ اِس کے بعد مسلم ملکوں میں ہندوؤں کی آمدورفت شروع ہوئی اور دونوں کے بیچ کے سماجی تعلقات اور زیادہ گہرے اور دلچسپ ہوتے گئے ۔ سلیمان لکھتا ہے—

عراق کے بندرگاہ سیراف میں بہت سے ہندو رہتے ہیں اور جب کوئی عرب سوداگر اُن کی دعوت کرتا ہے تو اُن کی تعداد سو تک پہنچ جاتی ہے ۔ اُن میں سے ہر شخص کا کھانا الگ الگ رکابیوں میں پروسا جاتا ہے کیونکہ ایک ہی رکابی میں کوئی ایک دوسرے کے ساتھ نہیں کھاتا ۔" 17 اِنہیں ہندوؤں کے مطابق بزرگ بن شہریار کہتا ہے—

"یہ لوگ بول چال کی عربی اِس صفائی سے اور جلد جلد بولتے ہیں کہ ہمارے عالم فاضل مولوی دنگ اور حیران رہ جاتے ہیں ۔ اِن لوگوں میں عام طور پر سندھی' گجراتی اور ملتانی ہیں جو عرصۂ قدیم سے ہمارے ملکوں کے ساتھ تجارت کرتے آ رہے ہیں ۔" 18

اِس تجارتی رشتے سے ہندوستان مسلم ملکوں کے گہرے میل جول میں آیا اور اسلامی دنیا پر اپنے گیان' سائنس' روحانی تعلقات اور مذہب کا اثر ڈال پایا ۔ عرب اور ایرانی سوداگر ہندوستان سے تجارتی مال کے ساتھ ساتھ صنعت اور سائنس کے کھیتر بھی لے جاتے تھے ۔

دوسری طرف عباسی خلیفاؤں کے دربار کی انسانی رحمدلی اور مذہبی برداشت سے متاثر ہو کر ہندو پنڈت بڑی تعداد میں بغداد میں جمع ہونے لگے ۔ خلیفہ کے دربار میں نجوم اور ویدک کے سب سے اعلیٰ عہدوں پر ہندو پنڈت ہی سرفراز تھے؛ مسلمانوں کے دلوں میں ہندستان کے گیان کی بھید بھری گہرائی کی تھاہ لینے کی' گیانی' دھیانی اور سرجن شیل بھارت کو جاننے کا گہرا شوق پیدا ہوا ۔ عرب کے عالم گیان کے سچے

उसने इसलाम के बारे में अपनी वाक़फ़ियत लोगों को बताई. उसने बताया कि मुसलमानों का ख़लीफ़ा निहायत सादी ज़िन्दगी बसर करता है और ग़रूर उसे छू तक नहीं गया. शहरयार लिखता है—"यही वजह है कि बौद्ध मुसलमानों से इतनी मोहब्बत करते हैं और उनके साथ इतनी हमदर्दी रखते हैं." (10) सुलेमान सौदागर लिखता है—"राजा बल्हर की तरह राजा गुर्ज भी अरबों' कीजा निब दोस्ताना बर्ताव रखता है." 11

अस्तख़री 951 ईसवी में हिन्दुस्तान आया था. उसके जुग़राफ़िये की किताब में हिन्दुस्तान का बयान है. अस्तख़री ने सबसे पहले हिन्दुस्तान के एक सूबे सिन्ध का नक़्शा तैयार किया. अस्तख़री के वक़्त तक ख़ास-ख़ास शहरों में हिन्दू-मुसलिम तिजारत के मरकज़ क़ायम हो चुके थे. एक मुसलिम मुसन्निफ़ के मुताबिक़ इन मरकज़ों में हिन्दू और मुसलमानों के समाजी रिश्ते के नतीजे की शकल में मिले जुले रस्म रिवाज और बर्ताव बनते जा रहे थे. इब्न हौकल लिखता है—"मुलतान में हिन्दू और मुसलमान एक ही सी पोशाक पहनते हैं और एक ही फ़ैशन के बाल सँवारते हैं. मनसूरा और मुलतान और आस पास के शहरों में दोनों यकसाँ अरबी और सिन्धी ज़बान बोलते हैं." 12 बस्सहरी लिखता है कि—"सिंध में अरबी, फ़ारसी और सिन्धी तीनों यकसाँ समझी जाती हैं." 13 अस्तख़री और इब्न हौकल लिखते हैं कि हिन्दू इलाक़ों में मुसलमान जगह जगह बस गये थे और उन्होंने इबादत के लिये मसजिदें तामीर कर ली थीं. सुलेमान सौदागर सिंहल के बारे में लिखता है कि "सिंहल में मुख़तलिफ़ मज़हबों के पैरोकार बसते हैं और सिंहल का राजा इन मुख़तलिफ़ मज़हबी पैरोकारों को अपने अपने मज़हब को फैलाने की इजाज़त देता है."14

यह ज़ाहिर है कि तिजारत के मरकज़ तहज़ीबी रद्दो बदल के भी मरकज़ थे. इनमें ख़ास शहर ख़ुज़दार महफ़ूज़ाह, मन्सूराह और जन्द्रौर वग़ैरा थे. जो मुसलमान इन शहरों में बस गये थे वे क़ौम के अरब थे. वे भारतीयों में इस दरजे मिल जुल गये थे कि कुछ पीढ़ियों बाद उनका पहचाना जाना भी नामुमकिन हो गया.

इनके तौर तरीक़े, ख़्यालात बिकुल हिन्दुओं जैसे हो गये. इन लोगों की एक अलग ही जमात बन गई जो तमाम जनूबी भारत में फैल गई. इनमें से एक जमात अली को शिव का अवतार समझकर पूजा करती थी.

तिजारती रिश्ते के साथ ज्यों ज्यों तहज़ीबी लेन देन बढ़ा त्यों त्यों भारतीयों और अरबों में एक दूसरे को जानने, समझने और एक दूसरे से मोहब्बत करने और एक दूसरे के मज़हब की ज़्यादा से ज़्यादा वाक़फ़ियत हासिल करने का

اُس نے اسلام کے بارے میں اپنی واقفیت لوگوں کو بتائی. اُس نے بتایا کہ مسلمانوں کا خلیفہ نہایت سادی زندگی بسر کرتا ھے اور غرور اُسے چھو تک نہیں گیا. شہر یار لکھتا ھے—"یہی وجہ ھے کہ بودھ مسلمانوں سے اتنی محبت کرتے ھیں اور اُن کے ساتھ اِتنی ھمدردی رکھتے ھیں." 10 سلیمان سوداگر لکھتا ھے—" راجہ بلھر کی طرح راجہ گجر بھی عربوں کی جانب دوستانہ برتاؤ رکھتا ھے." 11

استاخری 951 عیسوی میں ھندستان آیا تھا. اُس کے جغرافیہ کی کتاب میں ھندستان کا بیان ھے. استاخری نے سب سے پہلے ھندستان کے ایک صوبے سندھ کا نقشہ تیار کیا. استاخری کے وقت تک خاص خاص شہروں میں ھندو مسلم تجارت کے مرکز قائم ھو چکے تھے. ایک مسلم مصنف کے مطابق اِن مرکزوں میں ھندو اور مسلمانوں کے سماجی رشتے کے نتیجے کی شکل میں ملے جلے رسم رواج اور برتاؤ بنتے جارھے تھے. ابن ھوکل لکھتا ھے—"ملتان میں ھندو اور مسلمان ایک ھی سی پوشاک پہنتے ھیں اور ایک ھی فیشن کے بال سنوارتے ھیں. منصورہ اور ملتان اور آس پاس کے شہروں میں دونوں یکساں عربی اور سندھی زبان بولتے ھیں." 12 بسہری لکھتا ھے کہ—"سندھ میں عربی' فارسی اور سندھی تینوں یکساں سمجھی جاتی ھیں." 13 استاخری اور ابن ھوکل لکھتے ھیں کہ ھندو علاقوں میں مسلمان جگہ جگہ بس گئے تھے اور اُنہوں نے عبادت کے لئے مسجدیں تعمیر کر لی تھیں. سلیمان سوداگر سنگھل کے بارے میں لکھتا ھے کہ "سنگھل میں مختلف مذہبوں کے پیروکار بستے ھیں اور سنہال کا راجہ اِن مختلف مذہبی پیروکاروں کو اپنے اپنے مذھب کو پھیلانے کی اجازت دیتا ھے." 14

یہ ظاھر ھے کہ تجارت کے مرکز تہذیبی ردوبدل کے بھی مرکز تھے. اِس میں خاص شہر خوزدار, ماحفوزا' منصورا اور جندر وغیرہ تھے. جو مسلمان اِن شہروں میں بس گئے تھے وے قوم کے عرب تھے. وے بھارتیوں میں اِس درجے مل جل گئے تھے کہ کچھ پیڑھیوں بعد اُن کا پہچانا جانا بھی ناممکن ھو گیا.

اِن کے طور طریقے' خیالات بالکل ھندوؤں جیسے ھو گئے. اِن لوگوں کی ایک الگ ھی جماعت بن گئی جو تمام جنوبی بھارت میں پھیل گئی. اِن میں سے ایک جماعت علی کو شو کا اوتار سمجھکر پوجا کرتی تھی.

تجارتی رشتے کے ساتھ جیوں جیوں تہذیبی لین دین بڑھا تیوں تیوں بھارتیوں اور عربوں میں ایک دوسرے کو جاننے' سمجھنے اور ایک دوسرے سے محبت کرنے اور ایک دوسرے کے مذھب کی زیادہ واقفیت حاصل کرنے کا

मोहब्बत का .ख़याल .क़ायम हो गया जिसमें ख़लीफ़ा तक ने सिन्ध में मन्दिरों को गिराने या इसलाम को फैलाने की इजाज़त नहीं दी.

अंग्रेज़ तारीख़दाँ सर विलियम म्यूर अफ़सोस के साथ लिखता है :—

"यह बात याद रखनी चाहिये कि अरब .फ़ातेह जो रवय्या मातेहत .क़ौमों के साथ बरतते थे वह हिन्दुस्तान में जाकर बिलकुल उलट गया. मन्दिरों को ज्यों का त्यों मह.फ़ूज़ छोड़ दिया गया और बुत-परस्ती की कोई मनाही नहीं की गई. जैसा कि वेल ने लिखा है 'हिन्दुस्तान की लड़ाई मज़हबी जंग या जेहाद नहीं रह गई क्योंकि वहाँ मज़हबी तब्दीली का सवाल ही नहीं उठाया गया. सिन्ध मे अल्लाह की परिस्तिश के साथ साथ बुतों की परिस्तिश की भी आज़ादी हो गई.……और इस तरह बावजूद इसलामी हकूमत के भारत एक बुत-परस्त मुल्क बना रह गया." 7

जर्मन आलिम वान क्रेमर लिखता है —

सिन्ध में अबुल .क़ासिम की हकूमत में और उसके बाद भी ब्राह्मणों की इज़्ज़त और शान ज्यों की त्यों .क़ायम रही. ज़मीन की मालगुज़ारी भी 3 .फ़ीसदी ज्यों की त्यों जारी रखी गई. हिन्दुओं को खुली इजाज़त थी कि वे मन माने मन्दिर बनवायें, मुसलमानों के साथ तिजारत करें और बेख़ौफ़ होकर अपनी बढ़ती के लिये जो कुछ मुनासिब समझें करें." 8

इस पर आसानी से ऐतबार किया जा सकता है कि इन हालतों के अन्दर दोनों गिरोह एक दूसरे की तरफ़ बहुत दरजे तक नरम हो गये होंगे और दोनों में तहज़ीबी रिश्ता .क़ायम हुआ होगा. लेकिन सिन्ध ही अकेला ऐसा सूबा नहीं था जहाँ दोनों गिरोहों के बीच दोस्ताना समाजी बर्ताव चल रहा था. भारत के तमाम मग़रिबी साहिल के मुसलमान हिन्दुओं के साथ मिल जुल कर मोहब्बत के साथ रह रहे थे. मुसलिम सय्याहों के मुताबिक़ मुसलमानों और भारती बौद्धों में बेहद भाईचारा हो गया था. बुज़ुर्ग बिन शहरयार नवीं सदी के भारत के पच्छिमी किनारे के बारे में अपने ख़ास तजरबों के बल पर लिखता है — "बिकुर या भिक्खुओं का गिरोह सिंहल का रहने वाला है. इन्हें मुसलमानों से मोहब्बत और मुसलमानों की जानिब ये बेहद नरम हैं." 9 इन भिक्खुओं ने इसलाम के बारे में वाक़फ़ियत हासिल करने के लिये अपना एक नुमाइन्दा अरब भेजा यह नुमाइन्दा ख़लीफ़ा उमर के वक़्त में अरब पहुँचा. वापस लौटते हुए मकरान में उसका इन्तक़ाल हो गया. लेकिन उसका एक साथी सही सलामत सिंहल पहुँचा और वहाँ

محبت کا خیال قائم ہو گیا جس میں خلیفہ تک نے سندھ میں مندروں کو گرانے یا اسلام کو پھیلانے کی اجازت نہیں دی۔

انگریز تاریخ داں سر ولیم میور افسوس کے ساتھ لکھتا ہے:—

"یہ بات یاد رکھنی چاہئے کہ عرب فاتح جو رویہ ماتحت قوموں کے ساتھ برتتے تھے وہ ہندستان میں جاکر بالکل الٹ گیا۔ مندروں کو جیوں کا تیوں محفوظ چھوڑ دیا گیا اور بت پرستی کی کوئی مناہی نہیں کی گئی۔ جیسا کہ ویل نے لکھا ہے 'ہندستان کی لڑائی مذہبی جنگ یا جہاد نہیں رہ گئی کیونکہ وہاں مذہبی تبدیلی کا سوال ہی نہیں اٹھایا گیا۔ سندھ میں اللہ کی پرستش کے ساتھ ساتھ بتوں کی پرستش کی بھی آزادی ہوگئی……اور اس طرح باوجود اسلامی حکومت کے بھارت ایک بت پرست ملک بنا رہ گیا۔" 7

جرمن عالم وان کریمر لکھتا ہے—

سندھ میں ابوالقاسم کی حکومت میں اور اس کے بعد بھی برہمنوں کی عزت اور شان جیوں کی تیوں قائم رہی۔ زمین کی مالگزاری بھی 3 فیصدی جیوں کی تیوں جاری رکھی گئی۔ ہندوؤں کو کھلی اجازت تھی کہ وہ من مانے مندر بنوائیں، مسلمانوں کے ساتھ تجارت کریں اور بےخوف ہو کر اپنی بڑھتی کے لئے جو کچھ مناسب سمجھیں کریں۔" 8

اس پر آسانی سے اعتبار کیا جا سکتا ہے کہ ان حالتوں کے اندر دونوں گروہ ایک دوسرے کی طرف بہت درجے تک نرم ہو گئے ہوں گے اور دونوں میں تہذیبی رشتہ قائم ہوا ہوگا۔ لیکن سندھ ہی اکیلا ایسا صوبہ نہیں تھا جہاں دونوں گروہوں کے بیچ دوستانہ سماجی برتاؤ چل رہا تھا۔ بھارت کے تمام مغربی ساحل کے مسلمان ہندوؤں کے ساتھ مل جل کر محبت کے ساتھ رہ رہے تھے۔ مسلم سیاحوں کے مطابق مسلمانوں اور بھارتی بودھوں میں بےحد بھائی چارا ہو گیا تھا۔ بزرگ بن شہر یار نویں صدی کے بھارت کے پچھمی کنارے کے بارے میں اپنے خاص تجربوں کے بل بر لکھتا ہے—"بیکور یا بھکشوؤں کا گروہ سنگھل کا رہنے والا ہے۔ انہیں مسلمانوں سے محبت اور مسلمانوں کی جانب یہ بےحد نرم ہیں۔" 9 ان بھکشوؤں نے اسلام کے بارے میں واقفیت حاصل کرنے کے لئے اپنا ایک نمائندہ عرب بھیجا۔ یہ نمائندہ خلیفہ عمر کے وقت میں عرب پہنچا۔ واپس لوٹتے ہوئے مکران میں اس کا انتقال ہو گیا۔ لیکن اس کا ایک ساتھی صحیح سلامت سنگھل پہنچا اور وہاں

बासबूत और तफसील से लिखा है और जिसका बाद के मुसन्निफों ने भी सनद के तौर पर हवाला दिया है. इनके अलावा इब्न रिस्ताह (903 ई०), अबु ज़ुल्फ़ (943 ई०), अस्ताखरी (951 ई०) मसूदी (945 ई०) मुताहर इब्न ताहिर, अलबेरूनी (999 ई०), इब्न बतूता (943 ई०), हमदुल्ला मुस्तफ़ा और बाद के दूसरे मुसलिम तारीखदानों ने उस वक्त के हिन्दुस्तान के बारे में निहायत .क़ीमती तारीख़ी, तिजारती, जुग़राफ़ियाई और समाजी जानकारी की बातें अपनी किताबों में दर्ज की हैं.

अब्बासी या अरबी तहज़ीब ने यूनानी और भारती आर्य तहज़ीब से ही वजूद पाया. अरब-अब्बासी तहज़ीब की बैरूनी शकल हालाँकि सेमेटिक और ईरानी थी लेकिन उसका साइन्सी और रूहानी ज्ञान, उसकी वैद्यक और उसकी फ़िलास.फ़ी पर गहरा भारती और बाद में यूनानी असर पड़ा. उसके अरबी ढाँचे में भारती रूह ज़ाहिर हो रही थी. सिन्ध की .फ़तह के बाद भारत की माली दौलत के साथ-साथ भारत की रूहानी दौलत भी ख़लीफ़ा के दरबार में पहुँची. भारती यूनिवर्सिटियों में तक्षिला में ज़रूर मुसलिम तालिबइल्म रहे होंगे. काश्मीर उस ज़माने में तहज़ीब का ख़ास मरकज़ था जहाँ ईरानी-बौद्ध तुल्बा तालीम हासिल करने आया करते थे. अब्बासी तहज़ीब को ख़ली.फ़ा के बरमकी (बौद्ध) वज़ीरों ने जो अज़मत और शान दी वह बिलाशक बेमिसाल है. .क़ानून और इन्सा.फ़ के वज़ीरों की हैसियत से और तहज़ीब के रोशनी के मीनार की हैसियत से कोई भी ईरानी या अरब शाही ख़ानदान उनका मुक़ाबला नहीं कर सकता. ये बरमकी उस वक्त बौद्ध मज़हब स इसलाम में दाख़िल हुए थे और इन्हीं की कोशिश से अ.बों और भारतीयों में गहरा तहज़ीबी रिश्ता .क़ायम हुआ था. इन्हीं की कोशिशों से इसलामी तहज़ीब ने दिल खोलकर भारती तहज़ीब की देन को दोनों हाथों से .क़बूल किया.

जब मुसलमानों ने सन् 707 ईसवी में सिन्ध .फ़तह किया तो उन्होंने देखा कि मुल्क बौद्धों और ब्राह्मण हुक्मरानों में बँटा हुआ है और ब्राह्मण धीरे-धीरे बौद्धों को पछाड़ते जा रहे हैं. ब्राह्मणों और अरबों की जंग में बौद्धों ने अरबों का साथ दिया और इस तरह से अरबों की सिन्ध .फ़तह को आसान बना दिया. सिन्ध .फ़तह करने के बाद अबुल क़ासिम ने ऐलान किया कि भारत के बाशिन्दे भी एक .ख़ुदा की परिस्तिश करते हैं और उनके मन्दिर भी ईसाइयों के गिरजों, यहूदियों के सिनागागों और मागियों के आतिशकदों की तरह हैं और उसी तरह से ये लोग अहले किताब हैं जिस तरह से ईसाई और यहूदी." 6 सिन्ध विजय के बाद से ही अरबों और भारतीयों में एक ऐसी मज़बूत

باثبوت اور تفصیل سے لکھا ہے اور جس کا بعد کے مصنفوں نے بھی سند کے طور پر حوالہ دیا ہے ۔ ان کے علاوہ ابن رستاح (903 عیسوی) ابوظرزلف (943 عیسوی)، اسٹاخری (951 عیسوی) مسعودی (945 عیسوی) مطاہر ابن طاہر، البیرونی (999 عیسوی)، ابن بطوطہ (943 عیسوی) حمداللہ مصطفیٰ اور بعد کے دوسرے مسلم تاریخ دانوں نے اُس وقت کے ہندستان کے بارے میں نہایت قیمتی تاریخی، تجارتی، جغرافیائی اور سماجی جانکاری کی باتیں اپنی کتابوں میں درج کی ہیں ۔

عباسی یا عربی تہذیب نے یونانی اور بھارتی آریہ تہذیب سے ہی وجود پایا ۔ عرب عباسی تہذیب کی بیرونی شکل حالانکہ سیمیٹک اور ایرانی تھی لیکن اُس کا سائنسی اور روحانی گیان، اُس کی ویدک اور اُس کی فلسفی پر گہرا بھارتی اور بعد میں یونانی اثر پڑا ۔ اُس کے عربی ڈھانچے میں بھارتی روح ظاہر ہو رہی تھی ۔ سندھ کی فتح کے بعد بھارت کی مالی دولت کے ساتھ ساتھ بھارت کی روحانی دولت بھی خلیفہ کے دربار میں پہنچی ۔ بھارتی یونیورسٹیوں میں ٹکشلا میں ضرور مسلم طالب علم رہے ہوں گے ۔ کاشمیر اُس زمانے میں تہذیب کا خاص مرکز تھا جہاں ایرانی بودھ طلبا تعلیم حاصل کرنے آیا کرتے تھے ۔ عباسی تہذیب کو خلیفہ کے برمکی (بودھ) وزیروں نے جو عظمت اور شان دی وہ بلاشک بےمثال ہے ۔ قانون اور انصاف کے وزیروں کی حیثیت سے اور تہذیب کے روشنی کے مینار کی حیثیت سے کوئی بھی ایرانی یا عرب شاہی خاندان اُن کا مقابلہ نہیں کر سکتا ۔ یہ برمکی اُس وقت بودھ مذہب سے اِسلام میں داخل ہوئے تھے اور انہیں کی کوشش سے عربوں اور بھارتیوں میں گہرا تہذیبی رشتہ قائم ہوا تھا ۔ انہیں کی کوششوں سے اسلامی تہذیب نے دل کھول کر بھارتی تہذیب کی دین کو دونوں ہاتھوں سے قبول کیا ۔

جب مسلمانوں نے سن 707 عیسوی میں سندھ فتح کیا تو انہوں نے دیکھا کہ ملک بودھوں اور براہمن حکمرانوں میں بٹا ہوا ہے اور براہمن دھیرے دھیرے بودھوں کو پچھاڑتے جا رہے ہیں ۔ براہمنوں اور عربوں کی جنگ میں بودھوں نے عربوں کا ساتھ دیا اور اِس طرح سے عربوں کی سندھ فتح کو آسان بنا دیا ۔ سندھ فتح کرنے کے بعد ابوالقاسم نے اعلان کیا کہ "بھارت کے باشندے بھی ایک خدا کی پرستش کرتے ہیں اور اُن کے مندر بھی عیسائیوں کے گرجوں، یہودیوں کے سناگاگوں اور ماگیوں کے آتشکدوں کی طرح ہیں اور اُسی طرح سے یہ لوگ اہل کتاب ہیں جس طرح سے عیسائی اور یہودی ۔" 6 سندھ وجے کے بعد سے ہی عربوں اور بھارتیوں میں ایک ایسی مضبوط

निशाने .क़दम एक ऊँचे काले पत्थर पर नक़्श है. यह निशान पत्थर पर इतने अन्दर धँस गया है कि अब तक ज्यों का त्यों .क़ायम है. यह निशान सवा आठ .फ़ुट लम्बा है. 3 इस सच्चाई को साबित करने के लिये कि हिन्दुस्तान सब मुल्कों का सरताज है इस तरह की दलीलें आख़िरी सबूत की तरह पेश की जाती थीं. इन बातों से मुसलमान हिन्दुस्तान के और .ज़्यादा .क़रीब आते थे और उसे अपना पाक मुल्क समझकर उससे मोहब्बत करने लगते थे. लोग उस वक़्त तक रिवायतें नहीं गढ़ा करते जब तक कि उसके पीछे कोई ख़ास वजह न हो.

इसी तरह हिन्दू भी मुसलमानों के काबे को अपना ही धर्म-मन्दिर समझते थे. एक ज़माने में काबा, अरब और अरब के आस-पास के रहने वाले सभी धर्म मज़हब वालों का एक पाक मरकज़ था. नीचे के वाक़ये को नामुमकिन मानते हुए भी हमें उससे हैरत में नहीं आना चाहिये. बर्टन लिखता है—

"हिन्दू पंडित इस बात को ज़ोर के साथ कहते हैं कि मक्के में शिव और पार्वती 'कपोतेश्वर' और 'कपोतेश्वरी' की शकल में जलवा अफ़रोज़ हैं......कुछ मुसन्निफ़ों का कहना है कि हज़रत मोहम्मद के वक़्त मक्का के देवी-देवताओं में लकड़ी में खुदी हुई कपोतेश्वर और कपोतेश्वरी के बुत थे जिन्हें अली ने पैग़म्बर के कन्धों पर चढ़कर नीचे गिरा दिया था. 4

विलफ़ोर्ड लिखता है—

"हिन्दु कहते हैं कि मक्का या 'मोक्षेश' या 'मोक्षस्थान' में जो काला पत्थर या 'संग-ए-अस्वद' है वह 'मोक्षेश्वर' भगवान शिव के अवतार का निशान है. भगवान शिव और पार्वती अल-हेजाज़ के अपने भक्तों की पूजा से .ख़ुश होकर मोक्षेश्वर की शकल में मक्का में जलवागर हुये थे. 5

हमअसर मुसलमान सय्याहों और मुसन्निफ़ों ने भारत की उस वक़्त की हालत को अपने ग्रन्थों में दर्ज किया है. सिन्ध के इतिहास पर पहला ग्रन्थ 'छछ-नामा' है, जो बुनियादी शकल में अरबी में लिखा गया. वह मुसलिम तारीख़दानों की हिन्दुस्तान पर पहली तारीख़ी किताब है. 'छछ-नामा' के बाद इब्न .ख़ुदादादबीह ने सन् 815 ईसवी में हिन्दुस्तान के जुग़राफ़िये पर एक किताब लिखी. एक दूसरी किताब अबु ज़ाहिद ने सन् 916 ईसवी में लिखी जिसमें सुलेमान सौदागर की भारत और चीन की सियाहतों का हाल दर्ज है. इसमें हिन्दुस्तान की मज़हबी और समाजी हालतों पर बहुत तफ़सील के साथ रोशनी डाली गई है. इसी ज़माने का एक दूसरा तारीख़दाँ अबु ज़ाहिद अलबलख़ी (934 ईसवी) है जिसने हिन्दुस्तान की तारीख़ पर बहुत

نشانِ قدم ایک اُونچے کالے پتھر پر نقش ہے. یہ نشان پتھر پر اتنے اندر دھنس گیا ہے کہ اب تک جوں کا توں قائم ہے. یہ نشان سوا آٹھ فٹ لمبا ہے. 3 اِس سچائی کو ثابت کرنے کے لئے کہ ہندستان سب ملکوں کا سرتاج ہے اِس طرح کی دلیلیں آخری ثبوت کی طرح پیش کی جاتی تھیں. اِن باتوں سے مسلمان ہندستان کے اور زیادہ قریب آتے تھے اور اُسے اپنا پاک ملک سمجھ کر اُس سے محبت کرنے لگتے تھے. لوگ اُس وقت تک روایتیں نہیں گڑھا کرتے جب تک کہ اُس کے پیچھے کوئی خاص وجہ نہ ہو.

اِسی طرح ہندو بھی مسلمانوں کے کعبے کو اپنا ہی دھرم مندر سمجھتے تھے. ایک زمانے میں کعبہ، عرب اور عرب کے آس پاس کے رہنے والے سبھی دھرم مذہب والوں کا ایک پاک مرکز تھا. نیچے کے واقعہ کو ناممکن مانتے ہوئے بھی ہمیں اُس سے حیرت میں نہیں آنا چاہئے. برٹن لکھتا ہے—

"ہندو پنڈت اِس بات کو زور کے ساتھ کہتے ہیں کہ مکہ میں شو اور پاروتی 'کپوتیشور' اور 'کپوتیشوری' کی شکل میں جلوہ افروز ہیں...کچھ مصنفوں کا کہنا ہے کہ حضرت محمد کے وقت مکہ کے دیوی دیوتاؤں میں لکڑی میں کھدی ہوئی کپوتیشور اور کپوتیشوری کے بت تھے جنہیں علی نے پیغمبر کے کندھوں پر چڑھ کر نیچے گرا دیا تھا. 4

ول فورڈ لکھتا ہے—

"ہندو کہتے ہیں کہ مکہ یا 'موکشیش' یا 'موکش استھان' میں جو کالا پتھر یا 'سنگِ اسود' ہے وہ 'موکشیشور' بھگوان شو کے اوتار کا نشان ہے. بھگوان شو اور پاروتی الحجاز کے اپنے بھکتوں کی پوجا سے خوش ہوکر موکشیشور کی شکل میں مکہ میں جلوہ‌گر ہوئے تھے. 5

ہمعصر مسلمان سیاحوں اور مصنفوں نے بھارت کی اُس وقت کی حالت کو اپنے گرنتھوں میں درج کیا ہے. سندھ کے اتہاس پر پہلا گرنتھ 'چھچھ نامہ' ہے' جو بنیادی شکل میں عربی میں لکھا گیا. وہ مسلم تاریخ دانوں کی ہندستان پر پہلی تاریخی کتاب ہے. 'چھچھ-نامہ' کے بعد ابن خدادادبیہ نے سن 815 عیسوی میں ہندستان کے جغرافیہ پر ایک کتاب لکھی. ایک دوسری کتاب ابوزاہد نے سن 916 عیسوی میں لکھی جس میں سلیمان سوداگر کی بھارت اور چین کی سیاحتوں کا حال درج ہے. اِس میں ہندستان کی مذہبی اور سماجی حالتوں پر بہت تفصیل کے ساتھ روشنی ڈالی گئی ہے. اِس زمانے کا ایک دوسرا تاریخ داں ابوزاہدالبلخی (934 عیسوی) ہے جس نے ہندستان کی تاریخ پر بہت

अरब सौदागरों का एक जत्था सिंहलद्वीप में 'आदम की चोटी' का सफ़र करने के लिले रवाना हुआ. क्रैंगानोर के बन्दरगाह में राजा चेरूमन पेरूमल ने इन सौदागरों का इसतक़बाल किया. सौदागरों ने पैग़म्बर मोहम्मद के ज़रिये चाँद के टुकड़े किये जाने की कहानी राजा को सुनाई. राजा ने इसलाम .क़ुबूल कर लिया और चुपचाप इन सौदागरों के साथ मदीने का सफ़र किया. वापस लौटते हुए रास्ते में उसका इन्तकाल हो गया. मरते वक़्त चेरूमन ने मुसलमानों को शाही .फ़रमान के ज़रिये मसजिदें बनवाने की इजाज़त दे दी. उसी के मुताबिक़ मलाबार में कई जगह मसजिदें बनाई गईं. बलाज़री भी सन् 842 ईसवी के .क़रीब पच्छिमी उत्तर भारत के एक राजा के इसलाम .क़ुबूल करने का वाक़या सुनाता है. 2 बुज़ुर्ग बिन शहरयार और सौदागर सुलेमान, जो नवीं सदी में हिन्दुस्तान आये थे, लिखते हैं कि हिन्दुस्तान के राजाओं के दिलों में मुसलमानों की तरफ़ बेहद अच्छा .ख़्याल मौजूद था.

पता नहीं कैसे मुसलमानों के दिलों में यह ऐतबार घर कर गया है कि इनसानी .क़ौम के पहले पैग़म्बर और पहले इनसान हज़रत आदम बहिश्त से निकाले जाने के बाद हिन्दुस्तान में सिंहलद्वीप में आकर उतरे. हिन्दुस्तान में जो .ख़ुशबूदार फूल और जड़ी बूटी भरी पड़ी है वे हज़रत आदम ही बहिश्त के 'बाग़े इरम' से यहाँ लाए थे. जिस पत्थर पर हज़रत आदम उतरे उस पर उनके क़दमों का निशान आज तक मौजूद है. इसी पत्थर के निशान को सिंहल के बौद्ध भगवान बुद्ध के निशाने क़दम समझकर पूजते हैं. बाद के मुसलिम लेखकों ने दूसरे मुल्कों के मुक़ाबले में भारत की अज़मत पर इस बिना पर और .ज़्यादा ज़ोर दिया है कि हज़रत आदम इनसानी .क़ौम के पहले पैग़म्बर थे और अल्लाह ने अपना हुक्म सबसे पहले उन्हीं को सुनाया और आदम चूँकि उस वक़्त हिन्दुस्तान में थे इसलिये हिन्दुस्तान ही को सब से पहले हुक्मे .ख़ुदा सुनने का .फ़ख़्र हो सकता है व मुमकिन है कि शायद इसीलिये इसलाम के पैग़म्बर ने फ़रमाया है—"मैं हिन्दुस्तान से बहकर आई हुई अल्ला के वजूद की भीनी-भीनी ख़ुशबू सूँघ रहा हूँ." आम मुसलमानों के लिये हिन्दुस्तान की सरज़मीन की पाकीज़गी की यह आख़िरी और ज़बरदस्त दलील है. इस तरह की रिवायतें क्यों शुरू हुईं इसकी मैं वजह नहीं खोज सका लेकिन फिर भी ये भारत के मुसलमानों के आम ऐतबार का जुज़ बनी हुई हैं. पढ़े-लिखे और समझदार लोग भी इन रिवायतों को लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ सच मानते हैं.

इब्न बतूता (1377 ई०) ने भी हज़रत आदम के इस पाक निशाने क़दम की ज़ियारत की थी. इस निशान को देखकर उसने लिखा है—"हज़रत आदम का यह पाक

عرب سوداگروں کا ایک جتھا سنگھل دیپ میں 'آدم کی چوٹی' کا سفر کرنے کے لئے روانہ ہوا ۔ کرنگانور کے بندرگاہ میں راجہ چیرومن پیرومل نے ان سوداگروں کا استقبال کیا ۔ سوداگروں نے پیغمبر محمد کے ذریعہ چاند کے ٹکڑے کئے جانے کی کہانی راجہ کو سنائی ۔ راجہ نے اسلام قبول کر لیا اور چپ چاپ اِن سوداگروں کے ساتھ مدینے کا سفر کیا ۔ واپس لوٹتے ہوئے راستے میں اُس کا انتقال ہو گیا ۔ مرتے وقت چیرومن نے مسلمانوں کو شاہی فرمان کے ذریعہ مسجدیں بنوانے کی اجازت دے دی ۔ اُسی کے مطابق ملابار میں کئی جگہ مسجدیں بنائی گئیں ۔ بلاذری بھی سن 842 عیسوی کے قریب پچھمی اتر بھارت کے ایک راجہ کے اِسلام قبول کرنے کا واقعہ سناتا ہے ۔ 2 بزرگ بن شہریار اور سوداگر سلیمان' جو نویں صدی میں ہندستان آئے تھے' لکھتے ہیں کہ ہندستان کے راجاؤں کے دلوں میں مسلمانوں کی طرف بےحد اچھا خیال موجود تھا ۔

پتہ نہیں کیسے مسلمانوں کے دلوں میں یہ اعتبار گھر کر گیا ہے کہ اِنسانی قوم کے پہلے پیغمبر اور پہلے اِنسان حضرت آدم بہشت سے نکالے جانے کے بعد ہندستان میں سنگھل دیپ میں آکر اترے ۔ ہندستان میں جو خوشبودار پھول اور جڑی بوٹی بھری پڑی ہے وے حضرت آدم ہی بہشت کے 'باغ ارم' سے یہاں لائے تھے جس پتھر پر حضرت آدم اُترے اُس پر اُن کے قدموں کا نشان آج تک موجود ہے ۔ اِسی پتھر کے نشان کو سنگھل کے بودھ بھگوان بودھ کے نشان قدم سمجھ کر پوجتے ہیں ۔ بعد کے مسلم لیکھکوں نے دوسرے ملکوں کے مقابلے میں بھارت کی عظمت پر اِس بنا پر اور زیادہ زور دیا ہے کہ حضرت آدم انسانی قوم کے پہلے پیغمبر تھے اور اللہ نے اپنا حکم سب سے پہلے انہیں کو سنایا اور آدم چونکہ اُس وقت ہندستان میں تھے اِس لئے ہندستان ہی کو سب سے پہلے حکم خدا سننے کا فخر ہو سکتا ہے و ممکن ہے کہ شاید اِسی لئے اسلام کے پیغمبر نے فرمایا ہے—"میں ہندستان سے بہہ کر آتی ہوئی اللہ کے وجود کی بھینی بھینی خوشبو سونگھ رہا ہوں ۔" عام مسلمانوں کے لئے ہندستان کی سرزمین کی پاکیزگی کی یہ آخری اور زبردست دلیل ہے ۔ اِس طرح کی روایتیں کیوں شروع ہوئیں اِس کی میں وجہ نہیں کھوج سکا لیکن پھر بھی یہ بھارت کے مسلمانوں کے عام اعتبار کا جز بنی ہوئی ہیں ۔ پڑھے لکھے اور سمجھدار لوگ بھی اِن روایتوں کو لفظاً بہ لفظاً سچ مانتے ہیں ۔

اِبن بطوطہ (1377 عیسوی) نے بھی حضرت آدم کے پاک نشان قدم کی زیارت کی تھی ۔ اِس نشان کو دیکھ کر اُس نے لکھا ہے—"حضرت آدم کا یہ پاک

.ख़ुशबुओं से मुअत्तर हैं." लेकिन हिन्दुस्तान के बारे में सही सही जानकारी हासिल करने की पहली कोशिश शायद ख़लीफ़ा उसमान के जमाने में की गई. उसमान ने 624 और 664 ईसवी के बीच हकीम बिन जबाला को मुक़र्रर किया कि वह पता लगाकर हिन्दुस्तान के बारे में सही-सही .ख़बरें ख़लीफ़ा को दे. जबाला ने हिन्दुस्तान आकर यहाँ के बारे में एक रिपोर्ट (Thaghar-al Hind) तैयार करके .ख़लीफ़ा की ख़िदमत में पेश की. 1. इस बात के भी बहुत से सबूत मिलते हैं कि सातवीं सदी ईसवी के शुरूआत में ईरान से लगे हुए हिन्दुस्तान के सूबों के साथ अरब सौदागरों का तिजारती रिश्ता .क़ायम था और वे जाटों और मदरों से वाक़िफ़ थे, चूँकि हिन्दुस्तान के इन हिस्सों पर एक वक़्त ईरानियों की हुकूमत थी इसलिये इन हिस्सों के हिन्दुस्तानी .क़बीलों और ईरानियों के बीच .क़रीबी रिश्ता रहा होगा. जब ईरान ने इसलाम क़ुबूल किया तो तिजारती रिश्ते के साथ-साथ वह नज़दीकी और ज्यादा बढ़ी होगी. एक बात हमें और ध्यान में रखनी चाहिये कि एक जमाने में .ख़ुरासान, तुर्किस्तान और ईरान में बौद्ध मज़हब बेहद फैला हुआ था और बौद्ध मज़हब के पैरो इराक़, मोसल और शाम की सरहद तक फैले हुये थे. इन मुल्कों के बाशिन्दों ने हालाँकि बौद्ध मज़हब की जगह इसलाम .क़ुबूल कर लिया था फिर भी उनके दिलों में हिन्दुस्तान के लिये एक मोहब्बत और इज़्ज़त का ख़याल ज़रूर रहा होगा.

जबकि आपस के ताल्लुक़ात बहुत थोड़े थे तब भी मुसलमान हिंदुस्तान को दुनिया का सब से .ज्यादा तहज़ीब याफ़्ता मुल्क समझकर उसकी बेहद क़द्र और इज़्ज़त करने लगे थे. सबूत के तौर पर हिन्दुस्तान की तारीफ़ में इसलाम के पैग़म्बर और उसके मशहूर पैरोकारों की रिवायतें लफ़्ज़-ब लफ़्ज़ पेश की जाती थीं. इस तरह की रिवायतों की सचाई पर थोड़ा बहुत मत भेद हो सकता है लेकिन यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि शुरू ज़माने के इसलाम के अदब में हिन्दुस्तान की बेहद तारीफ़ भरी पड़ी है.

उस वक़्त के अरब सौदागरों ने गुजरात के बल्हर राजाओं और मलाबार के सामुरी राजाओं को अपनी तरफ़ बेहद मेहरबानी और दोस्ती से भरा हुआ पाया. समन्दर के किनारे-किनारे उन्हें अपनी बस्तियाँ बसाने और मसजिदें बनवाने की इजाज़त थी. इन मुसलमानों ने हिन्दू लड़कियों से ही शादी की जिनकी मिली जुली औलादें मलाबार में 'मोपला' और कोकण में 'हृदिया' के नाम से मशहूर हुईं. अगर हम मलाबार के राजा चेरुमन पेरुमल के इसलाम .क़ुबूल करने की आम .फ़हम रिवायत मान लें तो हमें हिन्दुस्तान की मुसलिम नौआबादियों का वक़्त पैग़म्बर की ज़िन्दगी के ही .क़रीब मानना पड़ेगा. रिवायत यह है कि

خوشبوؤں سے معطر ہیں ." لیکن ہندستان کے بارے میں صحیح صحیح جانکاری حاصل کرنے کی پہلی کوشش شاید خلیفہ عثمان کے زمانے میں کی گئی. عثمان نے 624 اور 664 عیسوی کے بیچ حکیم بن جبالہ کو مقرر کیا کہ وہ پتہ لگاکر ہندستان کے بارے میں صحیح صحیح خبریں خلیفہ کو دے. جبالہ نے ہندستان آکر یہاں کے بارے میں ایک رپورٹ (Thaghar-al Hind) تیار کر کے خلیفہ کی خدمت میں پیش کی : 1 اِس بات کے بھی بہت سے ثبوت ملتے ہیں کہ ساتویں صدی عیسوی کے شروعات میں ایران سے لگے ہوئے ہندستان کے صوبوں کے ساتھ عرب سوداگروں کا تجارتی رشتہ قائم تھا اور وے جاٹوں اور مدروں سے واقف تھے . چونکہ ہندستان کے اِن حصوں پر ایک وقت ایرانیوں کی حکومت تھی اِس لئے اِن حصوں کے ہندستانی قبیلوں اور ایرانیوں کے بیچ قریبی رشتہ رہا ہوگا . جب ایران نے اِسلام قبول کیا تو تجارتی رشتے کے ساتھ ساتھ یہ نزدیکی اور زیادہ بڑھی ہوگی . ایک بات ہمیں اور دھیان میں رکھنی چاہئے کہ ایک زمانے میں خراسان، ترکستان اور ایران میں بودھ مذہب بےحد پھیلا ہوا تھا اور بودھ مذہب کے پیرو اعراق، موصل اور شام کی سرحد تک پھیلے ہوئے تھے . اِن ملکوں کے باشندوں نے حالانکہ بودھ مذہب کی جگہ اسلام قبول کر لیا تھا پھر بھی اُن کے دلوں میں ہندستان کے لئے ایک محبت اور عزت کا خیال ضرور رہا ہوگا .

جب کہ آپس کے تعلقات بہت تھوڑے تھے تب بھی مسلمان ہندستان کو دنیا کا سب سے زیادہ تہذیب یافتہ ملک سمجھ کر اُس کی بےحد قدر اور عزت کرنے لگے تھے . ثبوت کے طور پر ہندستان کی تعریف میں اِسلام کے پیغمبر اور اُن کے مشہور پیروکاروں کی روایتیں لفظ بہ لفظ پیش کی جاتی تھیں . اِس طرح کی روایتوں کی سچائی پر تھوڑا بہت مت بھید ہو سکتا ہے لیکن یہ بات دعوے کے ساتھ کہی جا سکتی ہے کہ شروع زمانے کے اِسلام کے ادب میں ہندستان کی بےحد تعریف بھری پڑی ہے .

اُس وقت کے عرب سوداگروں نے گجرات کے بلہر راجاؤں اور ملابار کے سامری راجاؤں کو اپنی طرف بےحد مہربانی اور دوستی سے بھرا ہوا پایا . سمندر کے کنارے کنارے انہیں اپنی بستیاں بسانے اور مسجدیں بنوانے کی اجازت تھی . اِن مسلمانوں نے ہندو لڑکیوں سے ہی شادی کی جن کی ملی جلی اولادیں ملابار میں 'موپلا' اور کوکن میں 'ھتیا' کے نام سے مشہور ہوئیں . اگر ہم ملابار کے راجہ چیرومن پیرومل کے اِسلام قبول کرنے کی عام فہم روایت مان لیں تو ہمیں ہندستان کی مسلم نو آبادیوں کا وقت پیغمبر کی زندگی کے ہی قریب ماننا پڑیگا. روایت یہ ہے کہ

तुर्कों का हिन्दुस्तान में आना एक उतना ही अजीब-ओ-ग़रीब .क़ुदरती वाक़ेया है जितना तूफ़ानों का एक जगह से दूसरी जगह मँडराना ! तुर्कों ने आकर हिन्दुस्तान को उसकी जड़ों तक हिला दिया और लोगों को झकझोर कर नये इमकिनात के लिए जगाकर तैयार और बाख़बर कर दिया. ये बदलाव अपने आप में .फ़ायदेमन्द या नुक़सानदेह हैं इसका .फ़ैसला मैं नहीं कर सकता, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि इस बदलाव ने भारत की समाजी बुनियादों को ही बदल दिया. आर्यों के हमले ने भारत की समाजी ज़िन्दगी को जिस तरह जड़ से हिला दिया था तुर्कों का हमला इससे थोड़ा ही कुछ कम रहा. लेकिन तूफ़ान के बाद सुकून लाज़िमी है. ज़लज़ले के बाद दोबारा तामीर ज़रूरी है. जब नदियों का मेल होता है तो दोनों नदियों की धारायें गरजते हुए टकराती हैं लेकिन जल्द ही वे .ख़ामोश होकर रल मिलकर एक धारा में बहने लग जाती हैं. इलाहाबाद के बाद गङ्गा जमुना की धारा में कोई .फ़र्क़ नहीं रह जाता. इसी तरह हिन्दू और मुसलमान आपस में टकराकर एक इन्सानी संगम में मिले थे और फिर उनकी तहज़ीबें रल मिलकर भारतीय तहज़ीब की अटूट धारा बनकर बहने लगी थीं कि जिसने सनत और हिरफ़त, कारीगरी और साइन्स, अदब और शायरी, मुसव्विरी और बुत तराशी—सभी मैदानों को सरसब्ज़ और हरा भरा कर दिया था. आज हम फिर एक बार ज़लील तरीक़ों के ज़रिये तहज़ीब की उस अटूट धारा के टुकड़े-टुकड़े करने की, जमुना की धारा को गंगा की धारा से अलग करने की शर्मनाक कोशिश कर रहे हैं.

भारत में तुर्कों के हमले के तीन सो बरस पहले से मुसलमानों में भारत की अज़ीम तहज़ीब और उसके साइन्स के लामहदूद ज़ख़ीरे को समझने और उसकी तरफ़ इज़्ज़त का इज़हार करने की लगातार कोशिश हो रही थी. भारत और अरब के बीच बहुत पुराने ज़माने से तिजारती ताल्लुक़ात चले आ रहे थे लेकिन मौजूदा ताल्लुक़ात का सिरा हम उसी वक़्त से जोड़ सकते हैं जब अरबों ने अपने मशरिक़ी हकूमत में तहज़ीब के नये नये मरकज़ क़ायम किये. ख़लीफ़ा उमर के ज़माने तक इसलामी दुनिया को हिन्दुस्तान के बारे में सच्ची जानकारी थी. हिन्दुस्तान के समुद्री किनारों के बारे में अरब और ईरानी मल्लाहों को थोड़ी बहुत वाक़फ़ियत थी और वे हिन्दुस्तान की तिजारती दौलत की तारीफ़ के गीत गाया करते थे. जब ख़लीफ़ा उमर ने एक अरब मल्लाह से हिन्दुस्तान के बारे में पूछा तो वह तारीफ़ के पुल बाँधने लगा कि—"हिन्दुस्तान के दरिया मोतियों से भरे हैं और उसके पहाड़ों में हीरे जवाहरात की ख़ानें हैं और उसके पेड़ पौधे

ترکوں کا هندستان میں آنا ایک اتنا هی عجیب و غریب قدرتی واقعه هے جتنا طوفانوں کا ایک جگهه سے دوسری جگهه منڈرانا ! ترکوں نے آکر هندستان کو اُس کی جڑوں تک هلا دیا اور لوگوں کو جهنجهوڑ کر نئے امکانات کے لئے جگا کر تیار اور باخبر کر دیا . یه بدلاؤ اپنے آپ میں فائده مند یا نقصان‌ده هیں اِس کا فیصله میں نهیں کر سکتا، لیکن اِس میں کوئی شک نهیں که اِس بدلاؤ نے بهارت کی سماجی بنیادوں کو هی بدل دیا. آریوں کے حمله نے بهارت کی سماجی زندگی کو جس طرح جڑ سے هلا دیا تها ترکوں کا حمله اُس سے تهوڑا هی کچھ کم رها . لیکن طوفان کے بعد سکون لازمی هے . زلزلے کے بعد دوباره تعمیر ضروری هے . جب ندیوں کا میل هوتا هے تو دونوں ندیوں کی دهارائیں گرجتے هوئے ٹکراتی هیں لیکن جلد هی وے خاموش هو کر رل مل کر ایک دهارا میں بهنے لگ جاتی هیں. الهآباد کے بعد گنگا جمنا کی دهارا میں کوئی فرق نهیں ره جاتا . اِسی طرح هندو اور مسلمان آپس میں ٹکرا کر ایک اِنسانی سنگم میں ملے تهے اور پهر اُن کی تهذیبیں رل مل کر بهارتی تهذیب کی اٹوٹ دهارا بن کر بهنے لگی تهیں که جس نے صنعت اور حرفت، کاریگری اور سائنس، ادب اور شاعری، مصوری اور بت تراشی—سبهی میدانوں کو سرسبز اور هرا بهرا کر دیا تها . آج هم پهر ایک بار ذلیل طریقوں کے ذریعے تهذیب کی اُس اٹوٹ دهارا کے ٹکڑے ٹکڑے کرنے کی، جمنا کی دهارا کو گنگا کی دهارا سے الگ کرنے کی شرمناک کوشش کر رهے هیں .

بهارت میں ترکوں کے حمله کے تین سو برس پهلے سے مسلمانوں میں بهارت کی عظیم تهذیب اور اُس کے سائنس کے لامحدود ذخیرے کو سمجهنے اور اُس کی طرف عزت کا اظهار کرنے کی لگاتار کوشش هو رهی تهی . بهارت اور عرب کے بیچ بهت پرانے زمانے سے تجارتی تعلقات چلے آرهے تهے لیکن موجوده تعلقات کا سرا هم اُسی وقت سے جوڑ سکتے هیں جب عربوں نے اپنے مشرقی حکومت میں تهذیب کے نئے نئے مرکز قائم کئے . خلیفه عمر کے زمانے تک اسلامی دنیا کو هندستان کے بارے میں سچی جانکاری تهی . هندستان کے سمندری کناروں کے بارے میں عرب اور ایرانی ملاحوں کو تهوڑی بهت واقفیت تهی اور وے هندستان کی تجارتی دولت کی تعریف کے گیت گایا کرتے تهے . جب خلیفه عمر نے ایک عرب ملاح سے هندستان کے بارے میں پوچها تو وه تعریف کے پل باندهنے لگا که—"هندستان کے دریا موتیوں سے بهرے هیں اور اُس کے پهاڑوں میں هیرے جواهرات کی کهانیں هیں اور اُس کے پیڑ پودے

हिन्दू-मुसलमानों के तहज़ीबी मेल-जोल की शुरूआत

डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी एम० ए०, डी० फ़िल

मुसलमान तुर्कों के पंजाब आने के एक सदी बाद ही हिन्दू और मुसलमानों के तहज़ीबी मेल-जोल की पहली दाग़बेल मिली-जुली बोली के शक्ल में पड़ी. हिन्दी और फ़ारसी ने मिलकर उर्दू बोली को जन्म दिया. मिली-जुली बोली की पैदायश इस बात को ज़ाहिर करती है कि उस वक़्त तक हिन्दू और मुसलमानों में एक मिला-जुला बाहमी ख़्याल हमारी समाजी, सियासी और दिमाग़ी ज़िन्दगी के हर मैदान में गहराई के साथ पैदा हो रहा था. इस मिले-जुले ख़्याल ने तहज़ीबी एकता की गहरी छाप हमारी कारीगरी, हमारे अदब और हमारे मज़हब के ऊपर छोड़ी है.

भारत के इस तहज़ीबी एकता के खोज से भरे हुए मुताले की अब तक बहुत थोड़ी सी कोशिश की गई है. इस बारे में जो चन्द किताबें छपी हुई हैं उनमें मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी की 'अरब और हिन्द के ताल्लुक़ात' 'डाक्टर डी० आर० भंडारकर की 'The Slow Progress of Islam in India' 'डाक्टर ताराचन्द की 'The Influence of Islam on Indian Culture' और एक यूरपी आलिम की किताब Scriptorum Arabum de Rebus Indicis loci et Opuscula Inedita' वग़ैरा ख़ास हैं. पिछले सैकड़ों बरस में इन्सानी बेहतरी के पुजारी कई मुसलमान सन्तों, सियासतदानों और आलिमों ने हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमानों के मिलने से जो उलझनें पैदा हो गई थीं उनके मोहब्बत से भरे हुए हल खोजने में बहुत सा ग़ौर ख़ोज किया है. हिन्दुस्तानी आलिमों के ज़रिये इनकी नेक कोशिशों को जितनी अहमियत दी जानी चाहिये उतनी अहमियत नहीं दी गई. अहमियत देना तो दूर रहा दोनों फ़रीक़ों के आलिम ग़ैर तारीख़ी और झूठी दलीलों के ज़रिये मिली-जुली भारती तहज़ीब को टुकड़े टुकड़े करने के और हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को एक दूसरे से जुदा करने की ख़राब और बुरी कोशिशें कर रहे हैं. हिन्दू और मुसलमानों ने सैकड़ों बरस तक जिस हिन्दुस्तानी तहज़ीब को इतना वसी बनाया है उन्हीं के नाम लेवा आज शर्मनाक तरीक़ों से उसकी धज्जियाँ उड़ाने में मशग़ूल हैं.

هندو مسلمانوں کے تہذیبی میل جول کی شروعات

ڈاکٹر لطیف دفتری ایم. اے. ڈی. فل.

مسلمان ترکوں کے پنجاب آنے کے ایک صدی بعد ہی هندو اور مسلمانوں کے تہذیبی میل جول کی پہلی داغ بیل ملی، جلی بولی کے شکل میں پڑی. هندی اور فارسی نے مل کر اُردو بولی کو جنم دیا. ملی جلی بولی کی پیدائش اِس بات کو ظاہر کرتی ھے کہ اُس وقت تک هندو اور مسلمانوں میں ایک ملا جلا باهمی خیال هماری سماجی، سیاسی اور دماغی زندگی کے هر میدان میں گہرائی کے ساتھ پیدا هو رها تها. اِس ملے جلے خیال نے تہذیبی ایکتا کی گہری چھاپ هماری کاریگری، همارے ادب اور همارے مذهب کے اوپر چھوڑی ھے.

بھارت کے اِس تہذیبی ایکتا کے کھوج سے بھرے هوئے مطالعہ کی اب تک بہت تھوڑی سی کوشش کی گئی ھے. اِس بارے میں جو چند کتابیں چھپی هوئی هیں اُن میں مولوی سید سلیمان ندوی کی 'عرب اور هند کے تعلقات' ڈاکٹر ڈی. آر. بھنڈارکر کی 'The Slow Progress of Islam in India, ڈاکٹر تاراچند کی 'The Influence of Islam on Indian Culture' اور ایک یورپی عالم کی کتاب 'Scriptorum Arabum de Rebus Indicis loci et Opuscula Inedita' وغیرہ خاص هیں. پچھلے سیکڑوں برس میں انسانی بہتری کے پجاری کئی مسلمان سنتوں، سیاستدانوں اور عالموں نے هندستان میں هندو اور مسلمانوں کے ملنے سے جو الجھنیں پیدا هو گئی تھیں. اُن کے محبت سے بھرے هوئے حل کھوجنے میں بہت سا غور خوض کیا ھے. هندستانی عالموں کے ذریعہ اِن کی نیک کوششوں کو جتنی اهمیت دی جانی چاهئے اُتنی اهمیت نہیں دی گئی. اهمیت دینا تو دور رها دونوں فریقوں کے عالم غیر تاریخی اور جھوٹی دلیلوں کے ذریعہ ملی جلی بھارتی تہذیب کو ٹکڑے ٹکڑے کرنے کے اور هندو اور مسلمانوں کے دلوں کو ایک دوسرے سے جدا کرنے کی خراب اور بری کوششیں کر رہے هیں. هندو اور مسلمانوں نے سیکڑوں برس تک جس هندستانی تہذیب کو اتنا وسیع بنایا ھے اُنهیں کے نام لیوا آج شرمناک طریقوں سے اُس کی دھجیاں اُڑانے میں مشغول هیں.

अब रहज़न कहलाने लगा है. आज का इन्सान जिन नित्य नए तजरबों से गुज़र रहा है उनकी बिना पर उसे कहना पड़ता है :

> कितने शिक्षक ऐसे हैं इनमें जो भक्षक हैं मूल में !
> कितने धर्मात्मा ऐसे हैं ऊपर से जो पापी है भीतर से !
> कितने प्रेमधारी हिंसाकारी हैं और कर्मचारी अत्याचारी हैं !

इख़लाक़ी तौर पर अन्याय और अत्याचार से तोबा करके, पाप का दामन गंगाजल से धोकर, दुई की बू मन से निकालकर और भगवान का भय दिल में रखकर अपना नैतिक सुधार करना चाहिये. वरना जब इन्सानों की दुनिया बसेगी तो ऐसे लोग उस दायरे से ख़ारिज समझे जाएंगे.

अन्त से बेख़बर रहने वाले ज़ीहोश नहीं बेहोश होते हैं. समय ही इनको होश में ला सकेगा. तब तक यह लत-पथ ही रहेंगे. हमने बहुत कुछ देखा इस उलट फेर में, कल से लेकर आज तक और आज से लेकर आगे तक.

नागों को धार्मिक संसार में बड़ा मान मिलता है और दूध का उनको दान मिलता है, उनकी पूजा भी होती है, लेकिन हर देश और हर हृदय में नहीं. हर देश और हर मन का चलन जुदा होता है. कहीं यह पूजा जाता है, कहीं पाला जाता है, कहीं खाया जाता है, कहीं मारा जाता है—अपने अपने मन की बात है, किसी के मन पर किसी का बस नहीं. मन भी देश की मानिन्द आज़ाद होता है जैसे आज़ाद हुकूमत ! मन ज़ोर जब्र से कभी क़ाबू में नहीं लाया जा सकता. मन पर विजय रही है हमेशा प्रेम की.

कहने को एक साँप है आस्तीन में लेकिन उसकी पौध और फ़ौज कितनी रेंगती फिर रही है आस पास तनज़ीम के साथ, जैसे कि संघ हो साँपों का और घेरा डालकर क़ैद में ले रखा हो धैर्य और निर्भीकता की एक अतम और महान चट्टान को. उनकी लकीरें और निशान, उनके क्रास और जाल दर्शन शास्त्र का काम देते हैं, सोचने समझने वालों के लिये और भविष्य वाणियों के लिये.

अगर साँप मारना हिंसा है या मना है आपके मत में तो यह छोड़े भी जा सकते हैं, लेकिन इनको आज़ाद करने के दो ही साधन हैं. या तो डाल दो "श्री शंकर" के गले में इनको, या फिर दे दो यह सब साँप सियासी सँपेरों को जो राजनीतिक बीन पर प्रेम के राग अलापकर और तमाशा उनका दिखाकर खाते कमाते फिरें नगर नगर, प्रान्त प्रान्त, पथ पथ, ग्राम ग्राम.

اب رہزن کہلانے لگا ہے . آج کا انسان جن نتیہ نئے تجربوں سے گذر رہا ہے اُن کی بنا پر اُسے کہنا پڑتا ہے :

> کتنے شکشک ایسے ہیں اِن میں جو بھکشک ہیں مول میں !
> کتنے دھرماتما ایسے ہیں اوپر سے جو پاپی ہیں بھیتر سے !
> کتنے پریم دھاری ہنساکاری ہیں اور کتنے کرمچاری اتیاچاری ہیں !

اخلاقی طور پر انیائے اور اتیاچار سے توبہ کر کے' پاپ کا دامن گنگا جل سے دھو کر' دوئی کی بو من سے نکال کر اور بھگوان کا بھے دل میں رکھ کر' اپنا نیتک سدھار کرنا چاہئے . ورنہ جب انسانوں کی دنیا بسے گی تو ایسے لوگ اُس دائرے سے خارج سمجھے جائیں گے .

انت سے بےخبر رہنے والے ذی ہوش نہیں بےہوش ہوتے ہیں . سمے ہی اِن کو ہوش میں لا سکیگا . تب تک یہ لتھ پتھ ہی رہیں گے. ہم نے بہت کچھ دیکھا اِس اُلٹ پھیر میں' کل سے لیکر آج تک اور آج سے لیکر آگے تک .

ناگوں کو دھارمک سنسار میں بڑا مان ملتا ہے اور دودھ کا اُن کو دان ملتا ہے . اُن کی پوجا بھی ہوتی ہے' لیکن ہر دیش اور ہر ہردے میں نہیں . ہر دیش اور ہر من کا چلن جدا ہوتا ہے . کہیں یہ پوجا جاتا ہے' کہیں پالا جاتا ہے' کہیں کھایا جاتا ہے' کہیں مارا جاتا ہے—اپنے اپنے من کی بات ہے' کسی کے من پر کسی کا بس نہیں . من بھی دیش کی مانند آزاد ہوتا ہے جیسے آزاد حکومت ! من زور جبر سے کبھی قابو میں نہیں لایا جا سکتا . من پر وجے رہی ہے ہمیشہ پریم کی .

کہنے کو ایک سانپ ہے آستین میں لیکن اُس کی پودھ اور فوج کتنی رینگتی پھر رہی ہے آس پاس تنظیم کے ساتھ' جیسے کہ سنگھ ہو سانپوں کا' اور گھیرا ڈال کر قید میں لے رکھا ہو دھیریہ اور نربھیکتا کی ایک اتم اور مہان چٹان کو . اُن کی لکیریں اور نشان' اِن کے کراس اور جال درشن شاستر کا کام دیتے ہیں' سوچنے سمجھنے والوں کے لئے اور بھوشیہ وانیوں کے لئے .

اگر سانپ مارنا ہنسا ہے یا منع ہے آپ کے مت میں تو یہ چھوڑے بھی جا سکتے ہیں' لیکن اِن کو آزاد کرنے کے دو ہی سادھن ہیں . یا تو ڈالدو "شری شنکر" کے گلے میں اِن کو' یا پھر دیدو یہ سب سانپ سیاسی سپیروں کو' جو راجنیتک بین پر پریم کے راگ الاپ کر اور تماشا اُن کا دکھا کر کھاتے کماتے پھریں نگر نگر' پرانت پرانت' پتھ پتھ' گرام گرام .

किसी भी जात या नाम का हो, किसी भी भेस या भेद का हो, दुश्मन से अपनी हिफ़ाज़त में देरी केवल ग़फ़लत का ही नतीजा होती है. पर कुछ डर और सहम का भी कारण होता है. सहमे रहने से शत्रु साहस पाता है. शत्रु या दुश्मन को कभी हक़ीर न समझना चाहिये. साँप का बच्चा साँप ही कहलाता है. नाग की औलाद नाग ही होती है आख़िर.

सामाजिक राजनीति की तरह "नागिक नीति" में भी बदले का भाव होता है जिसकी मुद्दत बारह बरस तक कही जाती है. लेकिन राजनीतिक नाग का बदला शताब्दियों तक चलता है और चलता ही रहता है. वह तो सिर्फ़ एक से बदला लेता है और यह नसलों तक ज़हर उगलता रहता है साम्प्रदायिकता का; अपने दुश्मन को पकड़ने या क़ैद करने के लिये नागों के पास हड्डियों की गिरहबन्द रस्सियाँ होती हैं. और बलिदान का पद देने के लिले ज़हर का जाम तैयार रहता है. इन कालों के पास केवल मीठी छुरी होती है मगर ज़हर की बुझी !

महात्मा गाँधी पर हमला करने वाला कौन था ? वह एक नाग ही तो था जिसने उनको डसा.

मगर दुनिया उसे दूसरे नाम से जानती है. दुनिया की नज़रों में वह इन्सान ही था जिसने इन्सान की जान ली.

अब भी कितने ऐसे हिंसक हैं जो नुमायशी रूप और लिबास में अहिंसक हैं मगर उनको उपदेश देने का बड़ा शौक़ है. न देखें बड़ा न देखें मौक़ा, न देखें विद्वान न देखें सभ्य, बदतमीज़ी शुरू कर देते हैं.

अपना सुधार और निर्माण करने से पहले दूसरे के घरों की ताक झाँक बड़ी हद तक बेहूदा जसारत है. सेवा और सुधार के काम में तमीज़ और तहज़ीब पहली चीज़ है. पहले अपना मन साफ़ करें और अपना दामन धोवें. पहले अपनी अन्तर आत्मा को जवाब दे लें फिर आगे बढ़ें.

मानते हैं हम कि प्रेम इन्सानियत का सन्देश है. और एकता का केन्द्र ही सही मुक़ाम है इन्सानियत का. लेकिन इसी मुक़ाम पर प्रेम और एकता का गला काटा जाता है और इन्सानियत का ख़ून किया जाता है. कितना दुख होता है यह कहते कि इसी प्रेमिक और अहिंसक वातावरण में कितने बेगुनाह शूट किये गए, कितनों को ज़हर दिया गया, कितने साज़िशों का शिकार हुए और कितनों को "डोज़ आफ़ डेथ" दिया गया. यह वह सच्चाइयाँ हैं जिनसे कोई इनकार नहीं कर सकता और जिनको तारीख़ ने समेट कर अपने दामन में महफ़ूज़ कर रखा है.

आज शिक्षक और उपदेशक इतने ही सस्ते शब्द हो गए हैं जैसे लीडर और नेता के शब्द हलके और बेवज़न हो गए हैं. इनके अर्थ तक अब पलट गए हैं. रहबर

کسی بھی جات یا نام کا ہو' کسی بھی بھیس یا بھید کا ہو؛ دشمن سے اپنی حفاظت میں دیری کیول غفلت کا ہی نتیجہ ہوتی ہے. پر کچھ ڈر اور سہم کا بھی کارن ہوتا ہے ۔ سہمے رہنے سے شترو ساہس پاتا ہے ۔ شترو یا دشمن کو کبھی حقیر نہ سمجھنا چاہئے ۔ سانپ کا بچہ سانپ ہی کہلاتا ہے ۔ ناگ کی اولاد ناگ ہی ہوتی ہے آخر ۔

سماجک راجنیتی کی طرح "ناگک نیتی" میں بھی بدلے کا بھاؤ ہوتا ہے جس کی مدت بارہ برس تک کہی جاتی ہے ۔ لیکن راجنیتک ناگ کا بدلہ شتابدیوں تک چلتا ہے اور چلتا ہی رہتا ہے ۔ وہ تو صرف ایک سے بدلہ لیتا ہے اور یہ نسلوں تک زہر اُگلتا رہتا ہے سمپردایکتا کا؛ اپنے دشمن کو پکڑنے یا قیدکرنے کے لئے ناگوں کے پاس ہڈیوں کی گرہ بند رسیاں ہوتی ہیں۔ اور بلیدان کا پد دینے کے لئے زہر کا جام تیار رہتا ہے ۔ اِن کالوں کے پاس کیول میٹھی چھری ہوتی ہے مگر زہر کی بجھی !

مہاتما گاندھی پر حملہ کرنے والا کون تھا؟ وہ ایک ناگ ہی تو تھا جس نے اُن کو ڈسا ۔

مگر دنیا اُسے دوسرے نام سے جانتی ہے ۔ دنیا کی نظروں میں وہ اِنسان ہی تھا جس نے انسان کی جان لی ۔

اب بھی کتنے ایسے ہنسک ہیں جو نمائشی روپ اور لباس میں اہنسک ہیں مگر اُن کو اُپدیش دینے کا بڑا شوق ہے ۔ نہ دیکھیں بڑا نہ دیکھیں موقعہ نہ دیکھیں ودوان نہ دیکھیں سبھیہ' بدتمیزی شروع کر دیتے ہیں ۔

اپنا سدھار اور نرمان کرنے سے پہلے دوسروں کے گھروں کی تاک جھانک بڑی حد تک بیہودہ جسارت ہے ۔ سیوا اور سدھار کے کام میں تمیز اور تہذیب پہلی چیز ہے ۔ پہلے اپنا من صاف کریں اور اپنا دامن دھوئیں ۔ پہلے اپنی انتر آتما کو جواب دے لیں پھر آگے بڑھیں ۔

مانتے ہیں ہم کہ پریم اِنسانیت کا سندیش ہے ۔ اور ایکتا کا کیندر ہی صحیح مقام ہے انسانیت کا ۔ لیکن اِسی مقام پر پریم اور ایکتا کا گلا کاٹا جاتا ہے اور انسانیت کا خون کیا جاتا ہے ۔ کتنا دکھ ہوتا ہے یہ کہتے کہ اِسی پریمک اور اہنسک واتاورن میں کتنے بےگناہ شوٹ کئے گئے' کتنوں کو زہر دیا گیا' کتنے سازشوں کا شکار ہوئے اور کتنوں کو "ڈوز آف ڈیتھ" دیا گیا ۔ یہ وہ سچائیاں ہیں جن سے کوئی انکار نہیں کر سکتا اور جن کو تاریخ نے سمیٹ کر اپنے دامن میں محفوظ کر رکھا ہے ۔

آج شکشک اور اُپدیشک اِتنے ہی سستے شبد ہو گئے ہیں جیسے لیڈر اور نیتا کے شبد ہلکے اور بےوزن ہو گئے ہیں ۔ اِن کے ارتھ تک اب پلٹ گئے ہیں ۔ رہبر

घात में लगी रहती हैं. घात और काट का असर सर्प की सन्तान को विरसे में मिलता है.

नाग के सम्बन्ध में हमने "गुण गान" के शब्दों के बारे में कुछ खोज की है. इस खोज के अनुसार हम "गान" के मानी नाग के लेते हैं. गान को उल्टा करके देखो तो मालूम होगा कि गान ही से नाग ने जन्म लिया है. इसी तरह "गुण" से नाग का अर्थ निकलता है. वह नग ही तो है जो नाग के मणि से निकल कर राज के ताज को जगमगाता और शोभा देता है—कहने को तो यह एक कीड़ा है मगर मणि का हीरा है.

भारत में नाग और नागिन देवी देवता माने जाते हैं. इनमें राजा भी होता है जिसको "वासुकी" कहते हैं.

आजकल विश्व मित्रता के कारण देश और अन्तर देश भाई-भाई का नारा बुलन्द है. इसी राजनीतिक नीति के अनुसार अमरीका और भारत में भी बहनापा शुरू हो गया है. मगर यह नाता हमको खटकता है. अमरीका का "मिल्क पावडर" भारती नागिन के स्वभाव और मिजाज को अनुकूल नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह हमेशा से शुद्ध दूध के आदी रहे हैं. यह बात अच्छी तरह अनुभव में आ चुकी है कि सियासी भाई एतबारी भाई नहीं होते, इसलिये कि सियासत खुद एतबारी चीज नहीं.

यूँ तो साँपों की सैकड़ों क़िस्में हैं लेकिन भारत में इनकी दो जातें खास हैं—धार्मिक और राजनैतिक.

धार्मिक अहिंसक होते हैं और राजनैतिक हिंसक.

आजकल राजनीतिक काले अधिक उबल पड़े हैं देश के भाग-भाग में, बस्ती-बस्ती और गाँव-गाँव में. यही काले ज्यादा कटीले और जियादा जहरीले होते हैं.

यह बात याद रखने की है कि धार्मिक नाग अहिंसक ही नहीं रहता सदा. डस भी लेता है अचानक. मगर उसका दोष नहीं. वह तो उसकी फ़ितरत है.

नाग जब डसता है तो हिंसक कहलाता है और जब हँसता है तो अहिंसक होता है. उस समय वह कितना सुन्दर और प्रेमी मालूम होता है! उसका डसना जितना खतरनाक है, उसका हँसना भी खतरे से खाली नहीं. वह हँसते-हँसते जान लेता है और खेलते-खेलते जाम पी जाता है किसी के भी प्राण का, उसपर भरोसा ग़लत. भरोसे की चीज तो मनुष्य भी नहीं; वह तो फिर आखिर कीड़ा है.

मनुष्य भी डसता है अवश्य, पर सर्प और मनुष्य के डसने डसने में अन्तर है. भाव भाव में अन्तर है.

सर्प डसता है अपनी जात बाहर किसी भी प्राणी को, और मनुष्य डसता है अपनी ही जात को, यानी आदमी आदमी को. यही इसकी वह विशेषता है जिसके कारण इसने बरबरता को जीता है और विजय प्राप्त की है हैवानों की .खू .खसलत पर.

گھات میں لگی رہتی ہیں۔ گھات اور کاٹ کا اثر سرپ کی سنتان کو ورثہ میں ملتا ہے ۔

ناگ کے سمبندھ میں ہم نے "گن گان" کے شبدوں کے بارے میں کچھ کھوج کی ہے ۔ اِس کھوج کے انوسار ہم "گان" کے معنی ناگ کے لیتے ہیں ۔ گان کو اُلٹا کر کے دیکھو تو معلوم ہوگا کہ گان ہی سے ناگ نے جنم لیا ہے ۔ اِسی طرح "گن" سے نگ کا ارتھ نکلتا ہے ۔ وہ نگ ہی تو ہے جو ناگ کے من سے نکلکر راج کے تاج کو جگمگاتا اور شوبھا دیتا ہے—کہنے کو تو یہ ایک کیڑا ہے مگر من کا ہیرا ہے ۔

بھارت میں ناگ اور ناگن دیوی دیوتا مانے جاتے ہیں ۔ اِن میں راجا بھی ہوتا ہے جس کو "واسکی" کہتے ہیں ۔

آجکل وشومترتا کے کارن دیش اور انتر دیش بھائی بھائی کا نعرہ بلند ہے۔ اِسی راجنیتک نیتی کے انوسار امریکہ اور بھارت میں بھی بہناپا شروع ہو گیا ہے ۔ مگر یہ ناتا ہم کو کھٹکتا ہے ۔ امریکہ کا "ملک پوڈر" بھارتی ناگن کے سبھاؤ اور مزاج کو انوکول نہیں پڑیگا، کیونکہ وہ ہمیشہ سے شدھ دودھ کے عادی رہے ہیں ۔ یہ بات اچھی طرح انوبھو میں آچکی ہے کہ سیاسی بھائی اعتباری بھائی نہیں ہوتے، اِس لئے کہ سیاست خود اعتباری چیز نہیں ۔

یوں تو سانپوں کی سینکڑوں قسمیں ہیں لیکن بھارت میں اِن کی دو جاتیں خاص ہیں—دھارمک اور راجنیتک ۔

دھارمک اہنسک ہوتے ہیں اور راجنیتک ہنسک ۔

آجکل راجنیتک کالے ادھک اُبل پڑے ہیں دیش کے بھاگ بھاگ میں، بستی بستی اور گاؤں گاؤں میں ۔ یہی کالے زیادہ کٹیلے اور زیادہ زہریلے ہوتے ہیں ۔

یہ بات یاد رکھنے کی ہے کہ دھارمک ناگ اہنسک ہی نہیں رہتا سدا ۔ ڈس بھی لیتا ہے اچانک ۔ مگر اُس کا دوش نہیں ۔ وہ تو اُس کی فطرت ہے ۔

ناگ جب ڈستا ہے تو ہنسک کہلاتا ہے اور جب ہنستا ہے تو اہنسک ہوتا ہے۔ اُس سمے وہ کتنا سندر اور پریمی معلوم ہوتا ہے! اُس کا ڈسنا جتنا خطرناک ہے اُس کا ہنسنا بھی خطرے سے خالی نہیں ۔ وہ ہنستے ہنستے جان لیتا ہے اور کھیلتے کھیلتے جام پی جاتا ہے کسی کے بھی پران کا، اُس پر بھروسہ غلط ۔ بھروسے کی چیز تو منشیہ بھی نہیں؛ وہ تو پھر آخر کیڑا ہے ۔

منشیہ بھی ڈستا ہے اوشیہ، پر سرپ اور منشیہ کے ڈسنے ڈسنے میں انتر ہے ۔ بھاؤ بھاؤ میں انتر ہے ۔

سرپ ڈستا ہے اپنی جات باہر کسی بھی پرانی کو، اور منشیہ ڈستا ہے اپنی ہی جات کو، یعنی آدمی آدمی کو ۔ یہی اِس کی وہ وشیشتا ہے جس کے کارن اِس نے بربرتا کو جیتا ہے اور وجے پراپت کی ہے حیوانوں کی خو خصلت پر ۔

आस्तीन में साँप

भाई अब्दुल हलीम अनसारी, आरटिस्ट

जैसे अमन में जंग—रंग में भंग—मन्दिर में पाप—यह केवल सियासत की बात कि आसतीन में साँप.

सियासत हमेशा सेवा और प्रेम का दम भरती रहती है. कितनी सुन्दर होती हैं उसकी भावनाएं और कितने लुभावने होते हैं उसके प्रेम भाषण सियासी स्टेज पर.

जैसे किसी पिक्चर हाउस के फ़िल्मी परदे पर झूठी मुहब्बत के बनावटी अदाकार !

जैसे समाज सुधार के नाटक और प्रेम प्यार के झूटे किरदार !

सफ़ेद आस्तीन की लम्बी गुफा में रहने वाला सर्प राजनीति की बीन पर प्रेम की रागिनी से कितना आनन्द लेता है और गोल कुन्डल पर बैठा पहरा देता है. केवल उसके फुंकार की दहशत और विष का भय मनमानी कराने के लिये काफ़ी होता है. इनसानियत के साथ प्रेम और हमदर्दी के कारण हमारी यह शुभ कामना कभी-कभी दिल से निकले बिना नहीं रहती कि उस आसतीन का झिटक देना ही उचित है.

जैसे धन के ढेर पर साँप नाथ लहराते हैं, इसी तरह राज्य के संघ पर नाग नाथ पहरा देते हैं. राज्य का भन्डार केवल धन का ही नहीं होता. उसका भन्डार भिन्न भिन्न प्रकार का होता है. यह कहना अनुचित नहीं कि आज के समय जबकि नए-नए टैक्सों की भरमार है, भूमि का कण-कण भन्डार है और मनुष्य का अंश-अंश धन है राज्य के निकट.

जान की रक्षा सब से अधिक अक़्लमन्दी की बात है और शत्रु की मित्रता बड़ी नादानी !

एक शत्रु को ज़ियादा दिन मुहलत देने से एक के दो होते हैं, और दो के चार. अब भी कितने रंग बिरंग के सर्प छुपे हुए हैं, मतभेद के सूराखों में, साम्प्रदायिकता के ग़ारों में, और राजनीति के पिटारों में. इनकी ज़बान का बारीक और लहरदार करेन्ट ऐटम से कम नहीं, इसलिये कि जान लेना दोनों का मक़सद है.

एक नागिन सैकड़ों अन्डे देती है, उन अन्डों से सैकड़ बच्चे निकालती है. उनसे कितनी नसलें बनती हैं. कितनी पीढ़ियां चलती हैं जो रेंगती फिरती हैं धरती के ऊपर भी और भीतर भी और फुंकारती रहती हैं इधर उधर, जिससे वातावरण ज़हरीला होता है—कितने ही ग़ाफ़िल और लापरवाह लोग ख़तरों के घेरे में आ जाते हैं. साँपों की रस्सी के जाले में बँध जाते हैं. नई नसलें उनको अपनी निगरानी में रखते हुए अपनी-अपनी

آستین میں سانپ

بھائی عبدالحلیم انصاری آرٹسٹ

جیسے امن میں جنگ—رنگ میں بھنگ—مندر میں پاپ—یہ کیول سیاست کی بات کہ آستین میں سانپ ۔

سیاست ہمیشہ سیوا اور پریم کا دم بھرتی رہتی ہے ۔ کتنی سندر ہوتی ہیں اُس کی بھاؤنائیں اور کتنے لبھاؤنے ہوتے ہیں اُس کے پریم بھاشن سیاسی اسٹیج پر ۔

جیسے کسی پکچر ہاؤس کے فلمی پردے پر جھوٹی محبت کے بناوٹی اداکار !

جیسے سماج سدھار کے ناٹک اور پریم پیار کے جھوٹے کردار ۔

سفید آستین کی لمبی گپھا میں رہنے والا سرپ راجنیتی کی بین پر پریم کی راگنی سے کتنا آنند لیتا ہے اور گول کنڈل پر بیٹھا پہرا دیتا ہے ۔ کیول اُس کے پھنکار کی دہشت اور وش کا بھے من مانی کرانے کے لئے کافی ہوتا ہے ۔ اِنسانیت کے ساتھ پریم اور ہمدردی کے کارن ہماری یہ شبھ کامنا کبھی کبھی دل سے نکلے بنا نہیں رہتی کہ اُس آستین کا جھٹک دینا ہی اُچت ہے ۔

جیسے دھن کے ڈھیر پر سانپ ناتھ لہراتے ہیں' اِسی طرح راجیہ کے سنگھ پر ناگ ناتھ پہرہ دیتے ہیں ۔ راجیہ کا بھنڈار کیول دھن کا ہی نہیں ہوتا ۔ اُس کا بھنڈار بھن بھن پرکار کا ہوتا ہے ۔ یہ کہنا انوچت نہیں کہ آج کے سمے جب کہ نئے نئے ٹیکسوں کی بھرمار ہے ۔ بھومی کا کن کن بھنڈار ہے اور مانشیہ کا انش انش دھن ہے راجیہ کے نکٹ ۔

جان کی رکشا سب سے ادھک عقلمندی کی بات ہے اور شترو کی مترتا بڑی نادانی !

ایک شترو کو زیادہ دن مہلت دینے سے ایک کے دو ہوتے ہیں' اور دو کے چار ۔ اب بھی کتنے رنگ برنگ کے سرپ چھپے ہوئے ہیں' مت بھید کے سوراخوں میں' سامپردایکتا کے غاروں میں' اور راجنیتی کے پٹاروں میں ۔ اِن کی زبان کا باریک اور لہردار کرینٹ ایٹم سے کم نہیں' اِس لئے کہ جان لینا دونوں کا مقصد ہے ۔

ایک ناگن سیکڑوں انڈے دیتی ہے' اُن انڈوں سے سیکڑوں بچے نکالتی ہے ۔ اُن سے کتنی نسلیں بنتی ہیں ۔ کتنی پیڑھیاں چلتی ہیں جو رینگتی پھرتی ہیں دھرتی کے اُوپر بھی اور بھیتر بھی ۔ اور پھنکارتی رہتی ہیں اِدھر اُدھر' جس سے واتاورن زہریلا ہوتا ہے—کتنے ہی غافل اور لاپرواہ لوگ خطروں کے گھیرے میں آجاتے ہیں' سانپوں کی رسی کے جالے میں بندھ جاتے ہیں ۔ نئی نسلیں اُن کو اپنی نگرانی میں رکھتے ہوئے اپنی اپنی

हेरात की घाटी में 'ताजिकों' की काफ़ी बड़ी आबादी है. ताजिक मुल्क के बहुत पुराने बाशिन्दे हैं और अफ़ग़ानों के बाद इन्हीं की आबादी सब से ज़्यादा है. आजकल यह ज़्यादातर अफ़ग़ानिस्तान के शुमाल में रहते हैं ख़ासकर हेरात सूबे में जहाँ वे कुल आबादी के 34 फ़ीसदी हैं; काबुल सूबा (28.8 फ़ीसदी), कताघान-बदख़शाँ सूबा (46फ़ीसदी) मज़ारा शरीफ़ सूबे में (23.7 फ़ीसदी). वे हिन्दूकुश, गोरबन्द, पंजशीर, नेजराब, नूरस्तान और लोगर की पहाड़ियों में भी रहते हैं.

ताजिक मेहनतकश आदमी हैं. लेकिन वे ज़्यादातर किसान हैं और ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़ों पर काम करते हैं. यह लोग चेरीकर कहलाते हैं और बहुत ग़रीबी में रहते हैं.सूखी या ताज़ा मलबरी ही उनकी ख़ुराक है. बहुत से गाँव में ज्वार का दलिया, जिसमें घास भी मिली रहती है, बहुत ज़ायक़े से खाया जाता है. हरीरूद और बालामरग़िब की घाटियों में और उनके जनूब में भी किसानों को लकड़ी के हलों से ज़मीन जोतते हुए देखा जा सकता है.

किसान अफ़ग़ानिस्तान की आबादी के 70 फ़ीसदी हैं, लेकिन उनको सिर्फ़ दो-तिहाई हैक्टर ज़मीन फ़ी शख़्स मिलती है.

खेती की जाने वाली ज़मीन का रक़बा 15,00,000 है, जिसमें से 9,00,000 बड़े ज़मींदारों के पास है, बाक़ी मुल्लाओं के पास है. 60 फ़ीसदी किसानों के पास या तो कोई ज़मीन नहीं है और किसी के पास है भी तो बहुत कम.

'लतीफ़न्दिया' नामी इलाक़ों में, जोकि शुमाली अफ़ग़ानिस्तान में हैं, हज़ारों हैक्टर, जिनमें कि साझेदार लोग काम करते हैं, उन्हें ग़ल्ले का दर नवाँ गट्ठा मिलता है. यह लोग अपना नवाँ हिस्सा या अच्छी फ़सल होने पर पाँचवा हिस्सा पाने के लिये शबो रोज़ काम करते हैं, कुदालियों से ज़मीन खोदते हैं. इस तरह के क़ानूनों से खेती की तरक़्क़ी नहीं हो सकती.

अफ़ग़ानिस्तान की ज़िन्दगी इसी तरह चलती रहती है लेकिन ख़ाना बदोशों के तम्बुओं में पुराना अमन ही क़ायम है. हर नये अप्रैल के महीने में ग्वाले और उनके जानवरों के झुन्ड अपने सफ़र के लिये रवाना होते हैं, जैसा कि सदियों से करते आये हैं. हर बसन्त को यह जफ़ाकश और मेहनतकश क़ाफ़िला शुमाल की जानिब कूच करता है, जबकि ख़िज़ां उसे वापस अपने पहले की जगह पर ले आती है.

ہرات کی گھاٹی میں 'تاجکوں' کی کافی بڑی آبادی ہے. تاجک ملک کے بہت پرانے باشندے ہیں اور افغانوں کے بعد انہیں کی آبادی سب سے زیادہ ہے۔ آجکل یہ زیادہ تر افغانستان کے شمال میں رہتے ہیں خاصکر ہرات صوبہ میں جہاں وہ کل آبادی کے 34 فیصدی ہیں؛ کابل صوبہ (28.8 فیصدی)، کاتگھان بدخشان صوبہ (46 فیصدی) مزارِ شریف صوبہ میں (23.7 فیصدی) . وہ ہندوکش، گوربند، پنجشیر، نیجراب، نورستان اور لوگر کی پہاڑیوں میں بھی رہتے ہیں۔

تاجک محنت کش آدمی ہیں۔ لیکن وہ زیادہ تر کسان ہیں اور زمین کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں پر کام کرتے ہیں۔ یہ لوگ چیریکر کہلاتے ہیں اور بہت غریبی میں رہتے ہیں۔ سوکھی یا تازہ ملبری ہی ان کی خوراک ہے۔ بہت سے گاؤں میں جوار کا دلیا، جس میں گھاس بھی ملی رہتی ہے، بہت ذایقہ سے کھایا جاتا ہے۔ ہری رود اور بالامرغب کی گھاٹیوں میں اور ان کے جنوب میں بھی کسانوں کو لکڑی کے ہلوں سے زمین جوتتے ہوئے دیکھا جا سکتا ہے۔

کسان افغانستان کی آبادی کے 70 فیصدی ہیں، لیکن ان کو صرف دو تہائی ہیکٹر زمین فی شخص ملتی ہے۔

کھیتی کی جانے والی زمین کا رقبہ 15,00,000 ہے، جس میں سے 9,00,000 بڑے زمینداروں کے پاس ہے، باقی ملاؤں کے پاس ہے۔ 60 فیصدی کسانوں کے پاس یا تو کوئی زمین نہیں ہے اور کسی کے پاس ہے بھی تو بہت کم۔

''طیفادیہ'' نامی علاقوں میں، جو کہ شمالی افغانستان میں ہیں، ہزاروں ہیکٹر، جن میں کہ ساجھےدار لوگ کام کرتے ہیں انہیں غلہ کا ہر نواں گٹھا ملتا ہے۔ یہ لوگ اپنا نواں حصہ یا اچھی فصل ہونے پر پانچواں حصہ پانے کے لئے شب و روز کام کرتے ہیں، کدالیوں سے زمین کھودتے ہیں۔ اس طرح کے قانونوں سے کھیتی کی ترقی نہیں ہو سکتی۔

افغانستان کی زندگی اسی طرح چلتی رہتی ہے لیکن خانہ بدوشوں کے تمبوؤں میں پرانا امن ہی قایم ہے۔ ہر نئے اپریل کے مہینے میں گوالے اور ان کے جانوروں کے جھنڈ اپنے سفر کے لئے روانہ ہوتے ہیں، جیسا کہ صدیوں سے کرتے آئے ہیں۔ ہر بسنت کو یہ جفاکش اور محنت کش قافلہ شمال کی جانب کوچ کرتا ہے، جب کہ خزاں اسے واپس اپنے پہلے کی جگہہ پر لے آتی ہے۔

मशरिक़ी अफ़ग़ान जातियों ने अपने खास क़िस्म के जम्हूरी पंचायती शक्ल को क़ायम रखा है—मगर मग़रिबी जातियों, खासकर ग़िल्ज़ाई और दुर्रानी फ़िरक़ों का क़बीली तआवुन टूट रहा है और उनमें अमीरों और जागीरदारों का ज़ोर बढ़ रहा है. यह जातियाँ अब ख़ानाबदोशी छोड़कर सिंचाई वाली ज़मीन पर आबाद हो रही हैं. क़बीलों के ऊँचे ख़ान्दान तमाम ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं और क़बीले के सरदार बन जाते हैं. यह ऊँचा तबक़ा धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है. इससे क़बीले वालों को नुक़सान है. यह सरदार ख़ान उन गड़रियों से ऊन ख़रीद लेते हैं जिन्हें उन्होंने उधार देकर क़र्ज़दार बना दिया है. यह ख़ान सरकार के लिये टैक्स भी वसूल करते हैं.

क़न्धार से .फ़राह तक का सफ़र गर्मियों के दिनों में बरदाश्त नहीं किया जा सकता क्योंकि गर्मी बहुत सख्त पड़ती है. मगर बसन्त की शुरूआत में यह ज़िले बहुत .ख़ुशनुमा हो जाते है. गरिश्क के नज़दीक गहरी हिल्मन्द घाटी को यह सड़क पार करती है. 'दिलाराम' नामी जगह के पास से याक़ुआ नामी रेगिस्तान शुरू होता है. इधर अब ख़ानाबदोशों के तम्बू भी बहुतायत से लगने लगे हैं.

फ़राह नामी सूबाई दारुलसल्तनत, जिसको पहले फ़ेद्रा कहते थे, पहले एक तहज़ीबी मरकज़ था. इसके जनूब में रुस्तम का मशहूर शहर निमरोज़ है. पुराने ज़माने में यह हिस्सा सीस्तान के नाम से मशहूर था, यहाँ बहुत सी सिंचाई की नहरें थीं और यहाँ की खेती भी बढ़ी चढ़ी थी. इसका सबसे .ज़्यादा उरूज यूनानियों के वक्त में हुआ था.

लेकिन मंगोलों ने सब कुछ बरबाद कर दिया. आख़िरी हमला तैमूर लन्ग के ज़रिये किया गया, जिसने हिलमन्द दरिया के सब पुश्तों और सब सिंचाई की नहरों को बरबाद कर दिया. नतीजा यह हुआ कि रेगिस्तान सीस्तान को पार कर तमाम इलाक़े में फैल गया और आज .फ़राह की हालत अज़हद क़ाबिले रहम है.

फ़राह से शुमाल की तरफ़ जाते हुए, हम काले तम्बुओं (ख़ानाबदोशों) के इलाक़े को छोड़कर उन ज़िलों में दाख़िल होते हैं जहाँ पश्तो नामी अफ़ग़ानी ज़बान बहुत कम सुन पड़ती है.

हम एक पहाड़ी सड़क पर चलकर शुमाली अफ़ग़ानिस्तान चले जाते हैं, जहाँ हम हेरात की ज़रख़ेज़ घाटी में रुकते हैं. अफ़ग़ानिस्तान का चौथा नम्बर का शहर हेरात इस घाटी के ठीक वस्त में है, जो लम्बाई में 120 क्लोमीटर और चौड़ाई में 30 क्लोमीटर है.

हेरात की पुरानी शान चली गई है. शहर की आबादी आज 25,000 आदमियों से .ज़्यादा नहीं है, लेकिन यह एक पुश्तैनी रिवायत है कि मंगोलों के हमले के पहले हेरात की आबादी दस लाख थी.

مشرقی افغانی جاتیوں نے اپنے خاص قسم کے جمہوری پنچایتی شکل کو قایم رکھا ہے — مگر مغربی جاتیوں، خاص کر غلذائی اور درانی فرقوں کا قبیلی تعاون ٹوٹ رہا ہے اور اُن میں امیروں اور جاگیرداروں کا زور بڑھ رہا ہے۔ یہ جاتیاں اب خانہ‌بدوشی چھوڑ کر سنچائی والی زمین پر آباد ہو رہی ہیں۔ قبیلوں کے اونچے خاندان تمام زمین پر قبضہ کر لیتے ہیں اور قبیلے کے سردار بن جاتے ہیں۔ یہ اونچا طبقہ دھیرے دھیرے بڑھتا جا رہا ہے۔ اِس سے قبیلے والوں کو نقصان ہے۔ یہ سردار خان اُن گڈریوں سے اُون خرید لیتے ہیں جنہیں اُنہوں نے اُدھار دیکر قرضدار بنا دیا ہے۔ یہ خان سرکار کے لئے ٹیکس بھی وصول کرتے ہیں۔

قندھار سے فراح تک کا سفر گرمیوں کے دنوں میں برداشت نہیں کیا جا سکتا کیونکہ گرمی بہت سخت پڑتی ہے۔ مگر بسنت کی شروعات میں یہ ضلعے بہت خوشنما ہو جاتے ہیں۔ گرشک کے نزدیک گہری ہلمند گھاٹی کو یہ سڑک پار کرتی ہے۔ 'دلارام' نامی جگہ کے پاس سے یاقوہ نامی ریگستان شروع ہوتا ہے۔ اِدھر اب خانہ‌بدوشوں کے تمبو بھی بہوتایت سے لگنے لگے ہیں۔

فراح نامی صوبائی دارالسلطنت، جس کو پہلے فیدرہ کہتے تھے، پہلے ایک تہذیبی مرکز تھا۔ اِس کے جنوب میں رستم کا مشہور شہر نمروز ہے۔ پرانے زمانے میں یہ حصہ سیستان کے نام سے مشہور تھا، یہاں بہت سی سنچائی کی نہریں تھیں اور یہاں کی کھیتی بھی بڑھی چڑھی تھی۔ اِس کا سب سے زیادہ عروج یونانیوں کے وقت میں ہوا تھا۔

لیکن منگولوں نے سب کچھ برباد کر دیا۔ آخری حملہ تیمور لنگ کے ذریعہ کیا گیا، جس نے ہلمند دریا کے سب پشتوں اور سب سنچائی کی نہروں کو برباد کر دیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ریگستان سیستان کو پار کر تمام علاقے میں پھیل گیا اور آج فراح کی حالت ازحد قابل رحم ہے۔

فراح سے شمال کی طرف جاتے ہوئے، ہم کالے تمبوؤں (خانہ بدوشوں) کے علاقے کو چھوڑ کر اُن ضلعوں میں داخل ہوتے ہیں جہاں پشتو نامی افغانی زبان بہت کم سن پڑتی ہے۔

ہم ایک پہاڑی سڑک پر چل کر شمالی افغانستان چلے جاتے ہیں، جہاں ہم ہرات کی زرخیز گھاٹی میں رکتے ہیں۔ افغانستان کا چوتھا نمبر کا شہر ہرات اِس گھاٹی کے ٹھیک وسط میں ہے، جو لمبائی میں 120 کلو میٹر اور چوڑائی میں 30 کلومیٹر ہے۔

ہرات کی پرانی شان چلی گئی ہے۔ شہر کی آبادی آج 25,000 آدمیوں سے زیادہ نہیں ہے، لیکن یہ ایک پشتینی روایت ہے کہ منگولوں کے حملے کے پہلے ہرات کی آبادی دس لاکھ تھی۔

दुनिया में ऐसा कोई मुल्क नहीं है जहाँ कि अफ़ग़ानिस्तान की तरह बाशिन्दों की ख़ाना बदोश ज़िन्दगी में बदलाव हुए हों, तमाम साल भर जानवरों के झुन्ड के झुन्ड चरते रहते हैं और मुल्क की चौथाई आबादी हमेशा चरागाह ही ढूँढने में मशग़ूल रहती है. गर्मी के मौसम की गरमी जनूब के चरागाहों को सुखा देती है, जिससे हज़ारों अफ़ग़ान शुमाल से जनूब और मशरिक़ से मग़रिब तक हर साल चरागाहों की तलाश में भटकते रहने पर मजबूर होते हैं. भेड़ों, बकरों, और ऊँटों के बड़े-बड़े झुन्ड सड़कों में भरे रहते हैं और उनके साथ उनका स्याह तम्बू और सीधा सादा सामान भी रहता है. अपने 'ख़ानों' और बड़े-बूढ़ों की देख-रेख में यह क़ाफ़िले हमेशा चलते फिरते रहते हैं.

जब ख़िज़ाँ आती है तो यह क़ाफ़िले अपने जाड़ों की चरागाहों की तरफ़ वापस चले जाते हैं. हरेक क़बीले और फ़िरक़े के अपने ख़ास रास्ते हैं, और उन लोगों की ख़राबी होती है जो दूसरे क़बीलों के चरागाहों को छीनने की कोशिश करते हैं. अच्छे चरागाहों की कमी के सबब से कई ज़िलों में इस तरह के हथियार बन्द झगड़े होते रहते हैं जहाँ पर हमलावरों के ख़िलाफ़ हथियारों का इस्तेमाल किया जाता है.

यह ख़ानाबदोश धीरे-धीरे घूमते हैं—क़स्बों में ऊन, चमड़ा और फ़र बेचते हैं और बदले में रूई का कपड़ा, बारूद, कारतूस और राइफ़ल ख़रीदते हैं.

ज़्यादातर लोग हथियार रखते हैं. ज़िन्दगी उनके लिये आराम की चीज़ नहीं है और वे हमेशा चौकन्ने रहते हैं. उनकी मुश्किलात में उनकी बहादुर अफ़ग़ान औरतें, माँ और बच्चे भी उनका साथ देते हैं. अपने शहर की बहनों की तरह गाँव की अफ़ग़ानी औरतें अपनी ख़ानाबदोशी में पर्दे का इस्तेमाल नहीं करतीं.

अफ़ग़ान एक ख़ूबसूरत और मेहनतकश क़ौम है. वे लम्बे मज़बूत पट्ठों वाले, नपे तुले सिडौल क़द के और घुँघराले बालों वाले होते हैं.

अफ़ग़ान अपनी आज़ादी की मोहब्बत के लिये मशहूर हैं. बूढ़े अपनी लड़ी गई पुरानी लड़ाइयों को बयान करने के लिये हमेशा तैयार रहते हैं.

अफ़ग़ानिस्तान ने बरतानिया से तीन लड़ाइयाँ लड़ीं. 1838-42 की जंग में अंग्रेज़ी फ़ौजें हारीं. दूसरी लड़ाई 1878-80 में हुई. इस जंग के नतीजे की शकल में अफ़ग़ानिस्तान बरतानिया के पूरे क़ब्ज़े में नहीं तो मातेहती में तो आ ही गया. सन 1919 में लड़ी गई तीसरी जंग से, जिसमें अफ़ग़ानिस्तान के साथ सोवियत रूस की फ़ौजें भी थीं, अफ़ग़ानिस्तान को आज़ादी मिल गई.

دنیا میں ایسا کوئی ملک نہیں ہے جہاں کہ افغانستان کی طرح باشندوں کی خانہ بدوش زندگی میں بدلاؤ ہوئے ہوں، تمام سال بھر جانوروں کے جھنڈ کے جھنڈ چرتے رہتے ہیں اور ملک کی چوتھائی آبادی ہمیشہ چراگاہ ہی ڈھونڈھنے میں مشغول رہتی ہے۔ گرمی کے موسم کی گرمی جنوب کے چراگاہوں کو سکھا دیتی ہے، جس سے ہزاروں افغان شمال سے جنوب اور مشرق سے مغرب تک ہر سال چراگاہوں کی تلاش میں بھٹکتے رہنے پر مجبور ہوتے ہیں۔ بھیڑوں، بکروں اور اونٹوں کے بڑے بڑے جھنڈ سڑکوں میں بھرے رہتے ہیں اور اُن کے ساتھ ہزاروں آدمی چلتے رہتے ہیں۔ اُن کے ساتھ اُن کا سیاہ تمبو اور سیدھا سادہ سامان بھی رہتا ہے۔ اپنے 'خانوں' اور بڑے بوڑھوں کی دیکھ ریکھ میں یہ قافلے ہمیشہ چلتے پھرتے رہتے ہیں۔

جب خزاں آتی ہے تو یہ قافلے اپنے جاڑوں کی چراگاہوں کی طرف واپس چلے جاتے ہیں۔ ہر ایک قبیلے اور فرقے کے اپنے خاص راستے ہیں، اور اُن لوگوں کی خرابی ہوتی ہے جو دوسرے قبیلوں کے چراگاہوں کو چھیننے کی کوشش کرتے ہیں۔ اچھے چراگاہوں کی کمی کے سبب سے کئی ضلعوں میں اِس طرح کے ہتھیار بند جھگڑے ہوتے رہتے ہیں، جہاں پر حملہ آوروں کے خلاف ہتھیاروں کا اِستعمال کیا جاتا ہے۔

یہ خانہ بدوش دھیرے دھیرے گھومتے ہیں—قصبوں میں اون، چمڑا اور فر بیچتے ہیں اور بدلے میں روئی کا کپڑا، بارود، کارتوس اور رائفل خریدتے ہیں۔

زیادہ تر لوگ ہتھیار رکھتے ہیں۔ زندگی اُن کے لئے آرام کی چیز نہیں ہے اور وے ہمیشہ چوکنے رہتے ہیں۔ اُن کی مشکلات میں اُن کی بہادر افغان عورتیں، ماں اور بچے بھی اُن کا ساتھ دیتے ہیں۔ اپنے شہر کی بہنوں کی طرح گاؤں کی افغانی عورتیں اپنی خانہ بدوشی میں پردے کا اِستعمال نہیں کرتیں۔

افغان ایک خوبصورت اور محنت کش قوم ہے۔ وے لمبے مضبوط پٹھوں والے، نپے تلے سڈول قد کے اور گھنگھرالے بالوں والے ہوتے ہیں۔

افغان اپنی آزادی کی محبت کے لئے مشہور ہیں۔ بوڑھے اپنی لڑی گئی پرانی لڑائیوں کو بیان کرنے کے لئے ہمیشہ تیار رہتے ہیں۔

افغانستان نے برطانیہ سے تین لڑائیاں لڑیں۔ 42-1838 کی جنگ میں انگریزی فوجیں ہاریں۔ دوسری لڑائی 80-1878 میں ہوئی۔ اِس جنگ کے نتیجے کی شکل میں افغانستان برطانیہ کے پورے قبضے میں نہیں تو ماتحتی میں تو آ ہی گیا۔ سن 1919 میں لڑی گئی تیسری جنگ سے، جس میں افغانستان کے ساتھ ہی سوویت روس کی فوجیں بھی تھیں، افغانستان کو آزادی مل گئی۔

ग़ज़नी पहले चंगेज़ख़ाँ के ज़रिये और बाद को अमीर हुसेन के ज़रिये बरबाद कर दिया गया था. इस चोट से कमज़ोर होकर शहर का ज़वाल हो चला है, उसकी पुरानी चमक-दमक के आख़िरी निशान कुछ टूटी हुई शानदार क़ब्रें और एक पुराना क़िला ही रह गये हैं.

ग़ज़नी सूबे में अफ़ग़ान क़ौम का 16,25,000 आबादी वाला ग़िलज़ाई फ़िरक़ा रहता है. हज़ाराजात तक सारा ग़ज़नी का पठार इन्हीं जातियों से बसा है, जिनका पेशा ज़राअत और गोदाम इकट्ठे करना है, मगर वहाँ मिट्टी की बहुत कमी है और ग़िलज़ाइयों में से एक हिस्सा हर साल ख़ानाबदोशी के लिए भारत की तरफ़ निकल जाता है. और भी जनूब की एक और बड़ी, फैली हुई घाटी में मुल्क का पुराना दारुलसल्तनत क़न्धार है. यहाँ की हरारत सदा जाड़ों में भी पानी जमने की हरारत से ज़्यादा नहीं घटती. क़न्धार जनूबी और जनूबी-मग़रिबी अफ़ग़ानिस्तान का एक बड़ा तिजारती मरक़ज़ है. काबुल जाने वाली सड़कों और हरात को भारत से मिलाने वाले रास्तों का भी यह मरक़ज़ है.

क़न्धार और फ़ाराह सूबे जिनके ज़रख़ेज़ नख़लिस्तान हेलमन्द, अरग़न्दाब और फ़राहरूद की घाटियों में हैं, 14,40,000 आबादी वाले दुर्रानी फ़िरक़े के हैं—जोकि मुल्क के हकूमत करने वाले अफ़ग़ान फ़िरक़ों में से सब से ज़बरदस्त हैं. इसी फ़िरक़े में से हकूमत करने वालों और ऊँचे ओहदों के सरकारी काम करने वालों को छाँटा जाता है.

ग़ज़नी से कन्धार जाने वाली सड़क से गुज़रने पर हम किसानों को अपने छोटे से खेतों को अपने लकड़ी के हलों से जोतते या पत्थर और लकड़ी की कुदालियों से खोदते देख सकते हैं. सारे जनूबी अफ़ग़ानिस्तान की (हज़ाराजात की पहाड़ी तलहटियों को छोड़कर) खेती सिंचाई के ऊपर मुनहसिर है, मगर सिंचाई बड़े ही पुराने तरीक़ों से होती है, वे पुराने बाँध, जिन्होंने यहाँ सिंचाई से बड़े-बड़े ज़रख़ेज़ नख़लिस्तान बना दिये थे, अब नहीं रहे. नये बाँध बनाये भी नहीं जा रहे हैं. एरिया और एराकोशिया के तवारीख़ी मशहूर शहरों के आज खंडहर ही वहाँ नज़र आते हैं, पुरानी बस्तियों के खंडहर भी रेत से पटे जा रहे हैं.

क़न्धार से फ़राह जाने वाली सड़क पर भेड़ों के बड़े-बड़े झुन्ड चरते हैं. काली पगड़ी और ढीले लबादे पहने अफ़ग़ान गड़रिये उन्हें चराया करते हैं.

मुल्क की माली ज़िन्दगी में जानवरों का पाला जाना भी ख़ास अहमियत रखता है क्योंकि उसके ज़रिये बहुत सा कच्चा सामान जैसे ऊन, चमड़ा और काराकुल दरामद के लिये पैदा होता है.

غزنی پہلے چنگیز خاں کے ذریعہ اور بعد کو امیر حسین کے ذریعہ برباد کر دیا گیا تھا ۔ اِس چوٹ سے کمزور ہو کر شہر کا زوال ہو چلا ہے' اُس کی پرانی چمک دمک کے آخری نشان کچھ ٹوٹی ہوئی شاندار قبریں اور ایک پرانا قلعہ ہی رہ گئے ہیں ۔

غزنی صوبہ میں افغان قوم کا 16, 26,000 آبادی والا غلزائی فرقہ رہتا ہے ۔ ہزارہ جات تک سارا غزنی کا پٹھار اِنہیں جاتیوں سے بسا ہے' جن کا پیشہ زراعت اور گودام اِکھٹے کرنا ہے' مگر وہاں مٹی کی بہت کمی ہے اور غلزائیوں میں سے ایک حصہ ہر سال خانہ بدوشی کے لئے بھارت کی طرف نکل جاتا ہے ۔ اور بھی جنوب کی ایک اور بڑی' پھیلی ہوئی گھاٹی میں ملک کا پرانا دارالسلطنت قندھار ہے ۔ یہاں کی حرارت سدا جاڑوں میں بھی پانی جمنے کی حرارت سے زیادہ نہیں گھٹتی ۔ قندھار جنوبی اور جنوبی-مغربی افغانستان کا ایک بڑا تجارتی مرکز ہے ۔ کابل جانے والی سڑکوں اور ہرات کو بھارت سے ملانے والے راستوں کا بھی یہ مرکز ہے ۔

قندھار اور فاراح صوبے جن کے زرخیز نخلستان ہیلمند' ارغنداب اور فرا-رود کی گھاٹیوں میں ہیں' 14,40,000 آبادی والے درانی فرقے کے ہیں—جو کہ ملک کے حکومت کرنے والے افغان فرقوں میں سے سب سے زبردست ہیں ۔ اِسی فرقہ میں سے حکومت کرنے والوں اور اونچے عہدوں کے سرکاری کام کرنے والوں کو چھانٹا جاتا ہے ۔

غزنی سے قندھار جانے والی سڑک سے گذرنے پر ہم کسانوں کو اپنے چھوٹے سے کھیتوں کو اپنے لکڑی کے ہلوں سے جوتتے یا پتھر اور لکڑی کی کدالیوں سے کھودتے دیکھ سکتے ہیں ۔ سارے جنوبی افغانستان کی (ہزارہ جات کی پہاڑی تلہٹیوں کو چھوڑ کر) کھیتی سنچائی کے اوپر منحصر ہے' مگر سنچائی بڑے ہی پرانے طریقوں سے ہوتی ہے' وے پرانے باندھ' جنہوں نے یہاں سنچائی سے بڑے بڑے زرخیز نخلستان بنا دیئے تھے' اب نہیں رہے ۔ نئے باندھ بنائے بھی نہیں جا رہے ہیں ۔ ایریا اور ایراکوشیا کے تواریخی مشہور شہروں کے آج کھنڈر ہی وہاں نظر آتے ہیں' پرانی بستیوں کے کھنڈر بھی ریت سے پٹے جا رہے ہیں ۔

قندھار سے فراح جانے والی سڑک پر بھیڑوں کے بڑے بڑے جھنڈ چرتے ہیں ۔ کالی پگڑی اور ڈھیلے لبادے پہنے افغان گڈریے اُنہیں چرایا کرتے ہیں ۔

ملک کی مالی زندگی میں جانوروں کا پالا جانا بھی خاص اہمیت رکھتا ہے کیونکہ اُس کے ذریعہ بہت سا کچا سامان جیسے اُون' چمڑا اور کراکل درآمد کے لئے پیدا ہوتا ہے ۔

अफ़ग़ान जातियाँ ख़ास तौर पर जनूब की तरफ़ पाई जाती हैं, जबकि हिन्दूकुश के शुमाल में मुक़ीम मुल्क के बाक़ी हिस्से में, अफ़ग़ान शुमार में कम व थोड़े ही हैं.

अफ़ग़ानी चार ख़ास हिस्सों में बँटे हैं—शरबानी, गिल्ज़ाई, कैरलानी और गरश्त. इनमें से भी हर शाख़ कई फ़िरक़ों, ख़ान्दानों और बड़े या छोटे क़बीलों में तक़सीम हो गई है. मग़रिबी गिरोह के ख़ान्दानी क़बीलों का हकूमतीइन्तज़ाम पुश्तैनी 'ख़ान' नामी अफ़सर करते हैं. लेकिन मशरिक़ी कैरलानी गिरोह आज भी बड़े बूढ़ोंके पचायती गिरोह जिन्हें 'जिर्गा' कहा जाता है, क़बीलों की तनज़ीम करते हैं.

अफ़ग़ानिस्तान एक शाही ख़ुदमुख़्तार मुल्क है. यहाँ का शाह, जो साथ ही साथ तमाम फ़ौजी दस्तों का कमान्डर-इन-चीफ़ भी है, यहाँ का सब से ऊँचा हाकिम है. यहाँ की पार्लीमेंट में दो चेम्बर, एक हकूमती मजलिस, जिसके नुमाइन्दे रियाया चुनती है और एक सिनेट होता है जिसके मेम्बर ख़ान्दानी अमीरों और सरदारों में से शाह की राय के मुताबिक़ चुने जाते हैं.

क़ानून के ज़रिये पार्लीमेंट को बिल पेश करने व पास करने की आज़ादी है. उसके ज़रिये सरकारी क़ानून भी बनाये जाते हैं और सुलहनामों को मंज़ूर करने का हक़ भी उसी को है. दूसरे लफ़्ज़ों में पार्लीमेंट को क़ानून बनाकर वज़ीरों को उनके मुताबिक़ हकूमत के लिये ज़िम्मेदार बनाना है. पर असलियत में क़ानूनी मजलिस में ऐसे क़ायदे भी हैं, जिन्होंने पार्लीमेंट की ताक़तों को महदूद कर दिया है जैसे कि क़ानून में यह भी है कि हकूमती नुमाइन्दों की मजलिस के फ़ैसले सरकारी पालिसी या इस्लाम के ख़िलाफ़ नहीं होने चाहियें. पार्लीमेंट सरकार के ऊपर अदम ऐतमाद की तजवीज़ नहीं पास कर सकती और न वज़ीरों की मजलिस के इस्तीफ़े की ही मांग कर सकती है. तमाम वज़ीर वज़ीर आज़म की राय से शाह के ज़रिये क़ायम किये या निकाले जाते हैं.

इस वक़्त ज़ाहिरा तौर पर अफ़ग़ानिस्तान ने भारती हद के 'आज़ाद क़बीलों' की हिफ़ाज़ती पालिसी को छोड़ दिया है. इन क़बीलों के कुछ सरदारों का यह ऐतबार है कि बरतानिया ने अफ़ग़ानिस्तान को उनके ख़िलाफ़ करने के लिये कुछ माली रियायतें दी हैं जिनमें अफ़ग़ान माल के भारत से होकर गुज़रने देने की मंज़ूरी और उस मुल्क से ज़्यादा तिजारत करने की मंज़ूरी भी शामिल है.

अगर यहाँ पर देखा जाये कि अफ़ग़ानिस्तान की ज़्यादातर दरामद भारती हद के अन्दर से ही होती है तो राय मज़कूर दुरुस्त मालूम देती है.

काबुल से जनूब को तरफ़ मुड़कर, कुछ घन्टों के सफ़र के बाद ग़ज़नी नामी सूबे के ग़ज़नी नामी मरकज़ में ही पहुँचते हैं. महमूद ग़ज़नवी के वक़्त में ग़ज़नी ही मुल्क का दारुलसल्तनत था. उसकी शोहरत की शुरूआत दसवीं सदी में ही हो गई थी, जबकि वह जनूबी-मशरिक़ी ईरान की सियासत का मरकज़ था.

افغان جاتیاں خاص طور پر جنوب کی طرف پائی جاتی ہیں، جب کہ ہندوکش کے شمال میں مقیم ملک کے باقی حصے میں، افغان شمار میں کم و تھوڑے ہی ہیں۔

افغانی چار خاص حصوں میں بٹے ہیں—شربانی، غلذائی، کیرلانی اور گرشت۔ ان میں سے بھی ہر شاخ کئی فرقوں، خاندانوں اور بڑے یا چھوٹے قبیلوں میں تقسیم ہو گئی ہے۔ مغربی گروہ کے خاندانی قبیلوں کا حکومتی انتظام پشتینی 'خان' نامی افسر کرتے ہیں۔ لیکن مشرقی کیرلانی گروہ میں آج بھی بڑے بوڑھوں کے پنچایتی گروہ جنہیں 'جرگہ' کہا جاتا ہے، قبیلوں کی تنظیم کرتے ہیں۔

افغانستان ایک شاہی خودمختار ملک ہے۔ یہاں کا شاہ جو ساتھ ہی ساتھ تمام فوجی دستوں کا کمانڈر-ان-چیف بھی ہے، یہاں کا سب سے اونچا حاکم ہے۔ یہاں کی پارلیمنٹ میں دو چیمبر، ایک حکومتی مجلس، جس کے نمائندے رعایا چنتی ہے اور ایک سنیٹ ہوتا ہے جس کے ممبر خاندانی امیروں اور سرداروں میں سے شاہ کی رائے کے مطابق چنے جاتے ہیں۔

قانون کے ذریعہ پارلیمنٹ کو بل پیش کرنے و پاس کرنے کی آزادی ہے۔ اس کے ذریعہ سرکاری قانون بھی بنائے جاتے ہیں اور صلحناموں کو منظور کرنے کا حق بھی اسی کو ہے۔ دوسرے لفظوں میں پارلیمنٹ کو قانون بنا کر وزیروں کو ان کے مطابق حکومت کے لئے ذمہ‌دار بنانا ہے۔ پر اصلیت میں قانونی مجلس میں ایسے قاعدے بھی ہیں، جنہوں نے پارلیمنٹ کی طاقتوں کو محدود کر دیا ہے جیسے کہ قانون میں یہ بھی ہے کہ حکومتی نمائندوں کی مجلس کے فیصلے سرکاری پالیسی یا اسلام کے خلاف نہیں ہونے چاہئیں۔ پارلیمنٹ سرکار کے اوپر عدم اعتماد کی تجویز نہیں پاس کر سکتی اور نہ وزیروں کی مجلس کے استیفے کی ہی مانگ کر سکتی ہے۔ تمام وزیر وزیر اعظم کی رائے سے شاہ کے ذریعہ قایم کئے یا نکالے جاتے ہیں۔

اس وقت ظاہرہ طور پر افغانستان نے بھارتی حد کے 'آزاد قبیلوں' کی حفاظتی پالیسی کو چھوڑ دیا ہے۔ ان قبیلوں کے کچھ سرداروں کا یہ اعتبار ہے کہ برطانیہ نے افغانستان کو ان کے خلاف کرنے کے لئے کچھ مالی رعایتیں دی ہیں جن میں افغان مال کے بھارت سے ہو کر گذرنے دینے کی منظوری اور اس ملک سے زیادہ تجارت کرنے کی منظوری ہی شامل ہے۔

اگر یہاں پر دیکھا جائے کہ افغانستان کی زیادہ تر درآمد بھارتی حد کے اندر سے ہی ہوتی ہے تو رائے مذکور درست معلوم دیتی ہے۔

کابل سے جنوب کی طرف مڑکر، کچھ گھنٹوں کے سفر کے بعد غزنی نامی صوبہ کے غزنی نامی مرکز میں ہی پہونچتے ہیں۔ محمود غزنوی کے وقت میں غزنی ہی ملک کا دارالسلطنت تھا۔ اس کی شہرت کی شروعات دسویں صدی میں ہی ہو گئی تھی، جب کہ وہ جنوبی مشرقی ایران کی سیاست کا مرکز تھا۔

जनूब की तरफ यह सूबा जनूबी इलाक़े के हिस्से से मिला हुआ है जिसमें अफ़ग़ानी पहाड़ी बाशिन्दों की,जाडजी, मनाल, जाडन, दर्वेशखेल, वज़ीरी वग़ैरा जातियाँ बस्ती हैं. इन पहाड़ी गाँवों में बड़ी ग़रीबी है. यहाँ की मिट्टी की तोल सोने के बराबर है, क्योंकि लोग उसे हाथ और सर में भर और रखकर ऊँचे पहाड़ों में अपने चट्टानी खेतों तक ले गये हैं. अपने इस अन्थक मेहनत से भी लोगों का गुज़र नहीं होती और क़बीले के क़बीले ख़ूराक हासिल करने के लिये भारत की तरफ चल पड़ते हैं.

मशरिक़ी और जनूबी सूबा उन जंगजू अफ़ग़ान जातियों के रहने के इलाक़े हैं जोकि कोह सुलेमान से इधर चली आई हैं. शुमाल और मग़रिब की तरफ बढ़कर इन जातियों ने बाहरी हमलावरों के रास्ते को रोक दिया और पहली अफ़ग़ान रियासत की बुनियाद डाली. जनूबी हद के पार भी कई ज़िले हैं जोकि अफ़ग़ानों से आबाद हैं. यह क़बीले, जोकि अपने मुल्क से अलग कर दिये गये हैं, 'आज़ाद क़बीलों के इलाक़े' नामी अपनी ख़ास ज़मीन में रहते हैं. एक सदी से वे अंग्रेज़ों के ज़रिये जीते जाने की कोशिशों का मुक़ाबला करते रहे हैं. कितने ही छोटे-छोटे फ़ौजी दस्ते इनको दबाने के लिये भेजे जा चुके हैं; चन्दे इकट्ठे किये जा चुके हैं और उनके सरदारों को रिश्वत देकर फोड़ लेने की कोशिश भी हुई है, पर उनके हिफ़ाज़ती मोर्चे को कभी नहीं तोड़ा जा सका.

अफ़ग़ानिस्तान में आने वाले मुसाफ़िर यहाँ की जातियों और बाशिन्दों में फैली हुई बदइन्तज़ामी को देखकर दंग रह जाते हैं. यह इस मुल्क की जुग़राफ़ियायी हालत का ही नतीजा नहीं है, जिसने कि पिछले दिनों में कई तरह की जातियों के लिये रास्ता बनाया. इसका सबब कुछ हद तक बरतानवी नौ-आबादयाती पालिसी भी है, जिसने इस मुल्क की हदों को भी क़ायम किया. बरतानिया अफ़ग़ानिस्तान को एक बफ़र (ढकावटी) रियासत बनाने पर तुला हुआ था. इस तरह उसकी हदों में ऐसे ज़िले भी हैं जहाँ तुर्कमानी, उज़बेक व ताजी जातियाँ रहती हैं, जबकि जनूब में 40 लाख से ज़्यादा (41, 78,500) अफ़ग़ानी रियाया अपने मुल्क से अलग करके हिन्दुस्तान और बलोचिस्तान में मिला दी गई है. यह हिस्सा आज़ाद क़बीलों का और बन्नू, पेशावर, कोहाट, डेरा इस्माईल ख़ाँ और भारती हज़ारा के शुमाली सरहदी सूबे में है.

अफ़ग़ानिस्तान में रहने वाली ख़ास जातियाँ अफ़ग़ान (44,84,562), ताजी (21,06,000), उज़बेक (8,02,000) और हज़ारा (8,67,000) हैं. बाक़ी रियाया तुर्कमानियों और दूसरी ग़ैर जातियाँ जैसे नूरस्तान, तैमिनी, फ़र्ज़कोह, जमशेदी, तैमूरी, बलोची, अरब, हिन्दुस्तानी, तुर्की, यहूदी, क्यानी, कुर्द और क़पचाक लोगों से बनी है.

جنوب کی طرف یہ صوبہ جنوبی علاقے کے حصے سے ملا ہوا ہے جس میں افغانی پہاڑی باشندوں کی جاڈ جی، منال، جاڈن، دُرّانی خیل، وزیری وغیرہ جاتیاں بستی ہیں۔ ان پہاڑی گاؤں میں بڑی غریبی ہے۔ یہاں کی مٹی کی تول سونے کے برابر ہے، کیونکہ لوگ اُسے ہاتھ اور سر میں بھر اور رکھ کر اُونچے پہاڑوں میں اپنے کھیتوں تک لے گئے ہیں۔ اپنے اِس انتھک محنت سے بھی لوگوں کی گذر نہیں ہوتی اور قبیلے کے قبیلے خوراک حاصل کرنے کے لئے بھارت کی طرف چل پڑتے ہیں۔

مشرقی اور جنوبی صوبہ اُن جنگجو افغان جاتیوں کے رہنے کے علاقے ہیں جو کہ کوہ سلیمان سے اِدھر چلی آئی ہیں۔ شمال اور مغرب کی طرف بڑھ کر اِن جاتیوں نے باہری حملہ آوروں کے راستے کو روک دیا اور پہلی افغان ریاست کی بنیاد ڈالی۔ جنوبی حد کے پار بھی کئی ضلعے ہیں جو کہ افغانوں سے آباد ہیں۔ یہ قبیلے، جو کہ اپنے ملک سے الگ کر دیئے گئے ہیں، 'آزاد قبیلوں کے علاقے' نامی اپنی خاص زمین میں رہتے ہیں۔ ایک صدی سے وے انگریزوں کے ذریعہ جیتے جانے کی کوششوں کا مقابلہ کرتے رہے ہیں۔ کتنے ہی چھوٹے چھوٹے فوجی دستے اِن کو دبانے کے لئے بھیجے جا چکے ہیں؛ چندے اِکٹھے کئے جا چکے ہیں اور اُن کے سرداروں کو رشوت دیکر پھوڑ لینے کی کوششیں بھی ہوئی ہیں، پر اُن کے حفاظتی مورچہ کو کبھی نہیں توڑا جا سکا۔

افغانستان میں آنے والے مسافر یہاں کی جاتیوں اور باشندوں میں پھیلی بدانتظامی کو دیکھ کر دنگ رہ جاتے ہیں۔ یہ اِس ملک کی جغرافیائی حالت کا ہی نتیجہ نہیں ہے، جس نے کہ پچھلے دنوں میں کئی طرح کی جاتیوں کے لئے راستہ بنایا۔ اِس کا سبب کچھ حد تک برطانوی نوآبادیاتی پالیسی بھی ہے، جس نے اِس ملک کی حدوں کو بھی قایم کیا۔ برطانیہ افغانستان کو ایک بفر (روکاوٹی) ریاست بنانے پر تلا ہوا تھا۔ اِس طرح اُس کی حدوں میں ایسے ضلعے بھی ہیں جہاں ترکمانی، اُزبیک و تازی جاتیاں رہتی ہیں، جب کہ جنوب میں 40 لاکھ سے زیادہ (41,78,500) افغانی رعایا اپنے ملک سے الگ کر کے ہندوستان اور بلوچستان میں ملا دی گئی ہے۔ یہ حصہ آزاد قبیلوں کا اور بنوں، پشاور، کوہاٹ، ڈیرہ اسمعیل خاں اور بھارتی ہزارہ کے شمالی مغربی سرحدی صوبہ میں ہے۔

افغانستان میں رہنے والی خاص جاتیاں افغان (44'84'562)، تازی (21 '06'000)، اُزبیک (8, 0 2,000) اور ہزارہ (8, 67, 000) ہیں۔ باقی رعایا ترکمانیوں اور دوسری غیر جاتیوں جیسے نورستانی، طیمنی، فرز کوہ، جمشیدی، تیموری، بلوچی، عرب، ہندستانی، ترکی، یہودی، کیانی، کرد اور قپچاک لوگوں سے بنی ہے۔

हिन्दूकुश का बड़ा पहाड़ मुल्क को दो हिस्सों में तक़सीम कर देता है—शुमाली और जनूबी, जिनमें कि जुग़राफ़ियायी और आबादी से ताल्लुक़ रखने वाला फ़र्क़ है. मुल्क के सब से बड़े ज़राअती नख़लिस्तान शुमाली अफ़ग़ानिस्तान में ही हैं, जहाँ दरजनों जातियाँ और फ़िरक़े आबाद हैं. यही हिस्सा जनूबी अफ़ग़ानिस्तान को ख़ूराक देता है जोकि चट्टानी और अफ़ग़ान जातियों से बसी ऊसर ज़मीन है।

सब से ऊँचे कोहिस्तान शुमाल-मशरिक़ में हैं, जहाँ कि समन्दर की सतह से तीन या चार हज़ार मीटर तक की ऊँचाई के बहुत से दर्रे हैं. हिन्दूकुश कोह अबाबा के नाम से आगे फैलकर आमू दरिया और सिंध के बीच के मैदान में पानी बाँटने वाले का काम करता है. वस्ती अफ़ग़ानिस्तान 'हज़ार जत' नाम के सख़्त पहाड़ी हिस्से से बना व घिरा है. मग़रिब की तरफ़ कोह अबाबा की पहाड़ी तीन सिलसिलों में बँट जाती है जोकि धीरे-धीरे लक़त्रा, हलमन्द और रेगिस्तान की चट्टानी और बालूदार ज़मीन में तब्दील हो जाती है.

अफ़ग़ानी जातियों की पैदाइशी जगह भारत सुलेमान पहाड़ियों के उस पार है. ब्लोचिस्तान चुग़ताई के पहाड़ों के जनूब में है.

यह पहाड़ी सिलसिले मुल्क को अलग-अलग हिस्सों में तक़सीम कर देते हैं, गोकि हाल ही में बनी सड़कों ने अलग अलग सूबों को एक धागे में बाँधने में मदद दी है—लेकिन हालत में सुधार नहीं हुआ है. शुमाली और जनूबी हिस्सों को मिलाने वाली एक ख़ास कड़ी ख़ाना-बदोश अफ़ग़ान जातियाँ हैं, जोकि हर साल मुल्क को पार करती हैं और जनूब से शुमाल हेरात, मेमाना और कथाघान-बदख़शाँ के सूबों की तरफ़ जाती हैं.

अफ़ग़ानिस्तान का मशरिक़ी सूबा भारती सरहद से मिला हुआ है. इस सूबे का वस्त जलालाबाद का मैदान है. यहाँ की आब-हवा गरम है, जहाँकि खजूर व गन्ने की खेती होती है. काबुल और कोनार नदियों की घाटियाँ बहुत घनी आबाद हैं; पर शुमाल की तरफ़ नूरस्तान नामी पहाड़ है जोकि अभी तक दुश्वारगुज़ार ही है.

नदी की घाटियों को छोड़कर इस सूबे की सारी ज़मीन ज़रख़ेज़ नहीं है और खेती सिर्फ़ पहाड़ों पर बिखरे हुए अलग अलग खेतों पर ही होती है.

मशरिक़ी सूबों की आबादी अफ़ग़ान जातियों से बनी है जोकि कोहयानी, शनवारी, मोहमन्द, सफ़ी वग़ैरा नस्ल की हैं. इनमें से कुछ जातियाँ अभी भी ग़ारों में रहती हैं. सूबाई मरकज़ जलालाबाद ही यहां का एक क़स्बा है. पेशावर से काबुल जाने वाले रास्ते पर आबाद यह जगह काबुल के अमीर तबक़े के लोगों की जाड़ों के रहने की जगह है. इसके छोटे शहरों में बहुत से ख़ूबसूरत बाग़ीचों से घिरे हुए शाही महल भी हैं.

ہندوکش کا بڑا پہاڑ ملک کو دو حصوں میں تقسیم کر دیتا ہے — شمالی اور جنوبی' جن میں کہ جغرافیائی اور آبادی سے تعلق رکھنے والا فرق ہے ۔ ملک کے سب سے بڑے زراعتی نخلستان شمالی افغانستان میں ہی ہیں' جہاں درجنوں جاتیاں اور فرقے آباد ہیں۔ یہی حصہ جنوبی افغانستان کو خوراک دیتا ہے جو کہ چٹانی اور افغان جاتیوں سے بسی اوسر زمین ہے ۔

سب سے اونچے کوہستان شمال ۔ مشرق میں ہیں' جہاں کہ سمندر کی سطح سے تین یا چار ہزار میٹر تک کی اونچائی کے بہت سے درے ہیں ۔ ہندو کش' کوہ ابابا کے نام سے آگے پھیل کر آمو دریا اور سندھ کے بیچ کے میدان میں پانی بانٹنے والے کا کام کرتا ہے ۔ وسطی افغانستان 'ہزار جت' نام کے سخت پہاڑی حصہ سے بنا و گھرا ہے۔ مغرب کی طرف کوہ ابابا کی پہاڑی تین سلسلوں میں بٹ جاتی ہے جو کہ دھیرے دھیرے لقرہ' ہلمند اور ریگستان کی چٹانی اور بالودار زمین میں تبدیل ہو جاتی ہے ۔

افغانی جاتیوں کی پیدایشی جگہ بھارت سلیمان پہاڑیوں کے اس پار ہے ۔ بلوچستان چغتائی کے پہاڑوں کے جنوب میں ہے ۔

یہ پہاڑی سلسلے ملک کو الگ الگ حصوں میں تقسیم کر دیتے ہیں' گو کہ حال ہی میں بنی سڑکوں نے الگ الگ صوبوں کو ایک دھاگے میں باندھنے میں مدد دی ہے — لیکن حالت میں سدھار نہیں ہوا ہے ۔ شمالی اور جنوبی حصوں کو ملانے والی ایک خاص کڑی خانہ بدوش افغان جاتیاں ہیں' جو کہ ہر سال ملک کو پار کرتی ہیں اور جنوب سے شمال ہرات' میمانہ اور کتھاگھان ۔ بدخشاں کے صوبوں کی طرف جاتی ہیں ۔

افغانستان کا مشرقی صوبہ بھارتی سرحد سے ملا ہوا ہے ۔ اس صوبہ کا وسط جلال آباد کا میدان ہے۔ یہاں کی آب ہوا گرم ہے' جہاں کہ کھجور و گنّے کی کھیتی ہوتی ہے ۔ کابل اور کونار ندیوں کی گھاٹیاں بہت گھنی آباد ہیں؛ پر شمال کی طرف نورستان نامی پہاڑ ہے جو کہ ابھی تک دشوار گذار ہی ہے ۔

ندی کی گھاٹیوں کو چھوڑ کر اس صوبہ کی ساری زمین زرخیز نہیں ہے اور کھیتی صرف پہاڑوں پر بکھرے ہوئے الگ الگ کھیتوں پر ہی ہوتی ہے ۔

مشرقی صوبوں کی آبادی افغان جاتیوں سے بنی ہے جو کہ کوہیانی' شنواری' موہمند' صفی وغیرہ نسل کی ہیں ۔ ان میں سے کچھ جاتیاں ابھی بھی غاروں میں رہتی ہیں ۔ صوبائی مرکز جلال آباد ہی یہاں کا ایک قصبہ ہے ۔ پشاور سے کابل جانے والے راستے پر آباد یہ جگہ کابل کے امیر طبقے کے لوگوں کی جاڑوں کے رہنے کی جگہ ہے ۔ اس کے چھوٹے شہروں میں بہت سے خوبصورت باغیچوں سے گھرے ہوئے شاہی محل بھی ہیں ۔

हमारा पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान

प्रोफ़ैसर क़ज़लबाश ख़ाँ

अफ़ग़ानिस्तान एशिया के ठीक दरमियान उस जगह पर आबाद है जहाँकि बड़ी-बड़ी पहाड़ियाँ मिलकर हिन्दुस्तान की तरफ़ एक पहाड़ी सिलसिला बनकर मुड़ जाती हैं.

अफ़ग़ानिस्तान ग्वालों और किसानों का मुल्क है. आज भी यहाँ की क़रीब-क़रीब चौथाई जनता ख़ाना-बदोश है.

अफ़ग़ानिस्तान का रक़बा 6,,55,000 मुरब्बा (वर्ग) क्लोमीटर है पर उसकी आबादी95,00,000 से ज्यादा नहीं है. मुसल्लस मगर शुमाल मशरिक़ की तरफ़ कुछ तंग हद लिये हुए, अफ़ग़ानिस्तान के शुमाल में सोवियत रूस का तुर्कमानिया, उज़्बैक और ताजी जम्हूरियत, मग़रिब में ईरान और जनूब व जनूब-मशरिक़ में भारत और ब्लोचिस्तान हैं.

मौजूदा अफ़ग़ानिस्तान के संगठन से पहिले, जोकि अठारहवीं सदी में किया गया, यह मुल्क कई हिस्सों में मुनक़सिम था, जिसकी तवारीख़ मुख़तलिफ़ थी. इसकी जुग़राफ़ियाई हालत ने इस सारे इलाक़े को वस्ती-मशरिक़ से दूर दराज़ मग़रिक़ को मिलाने वाले मरकज़ का रुतबा देकर दुनिया की ख़ास शाहराहों में ख़ास जगह दे दी है. एक वक़्त था जबकि योरप और ऐशिया से बड़ी-बड़ी फ़ौजों और आबादियों ने इस मुल्क के अन्दर से गुज़र कर हिन्दुस्तान में क़दम रखा. अफ़ग़ानिस्तान में पार्थी, हुण, और सक जातियाँ आईं; मेसिडोन के सिकन्दर आज़म ने भी इस मुल्क को फ़तह किया. चंगेज़ख़ाँ के गिरोहों, तेमूर लंग की फ़ौजों और इस्लाम क़ायम करने वाली अरब फ़ौजों ने भी इस देश पर वक़्तन् फ़वक़तन् क़ब्ज़ा किया. मशरिक़ से लेकर मग़रिब तक और शुमाल से लेकर जनूब तक बस्तियाँ बनती और बरबाद होती रहीं. कोई भी ऐसा हमला नहीं हुआ जिसके नतीजे के बाइस यहाँ नये आदमियों की कोई नई बस्ती आबाद न हुई हो. यहाँ से बड़ी-बड़ी सलतनतों के उरूज के सितारे का दौर शुरू हुआ और यहीं से वे ज़वाल के तवारीख़ी निशान से बनकर ग़ायब भी हो गये.

अपनी ज़मीन के 4/5 हिस्से के पहाड़ियों से घिरे होने के सबब अफ़ग़ानिस्तान एक पहाड़ी मुल्क है. इसलिये यहाँ की रिआया का बड़ा हिस्सा बड़ी या छोटी घाटियों में, नदियों के किनारे या शुमाल व शुमाल - मग़रिब के तंग सरहदी मैदानों में क़याम करता था.

ہمارا پڑوسی افغانستان

پروفیسر قزلباش خاں

افغانستان ایشیا کے ٹھیک درمیان اُس جگہ پر آباد ہے جہاں کہ بڑی بڑی پہاڑیاں مل کر ہندستان کی طرف ایک پہاڑی سلسلہ بن کر مڑ جاتی ہیں ۔

افغانستان گوالوں اور کسانوں کا ملک ہے ۔ آج بھی یہاں کی قریب قریب چوتھائی جنتا خانہ بدوش ہے ۔

افغانستان کا رقبہ 6,55,000 مربع (ورگ) کیلومیٹر ہے پر اُس کی آبادی 95,00,000 سے زیادہ نہیں ہے ۔ مثلث مگر شمال مشرق کی طرف کچھ تنگ حد لئے ہوئے، افغانستان کے شمال میں سوویت روس کا ترکمانیہ، اُزبیک اور تاجی جمہوریت، مغرب میں ایران، اور جنوب و جنوب مشرق میں بھارت اور بلوچستان ہیں ۔

موجودہ افغانستان کے سنگٹھن سے پہلے، جوکہ اٹھارویں صدی میں کیا گیا، یہ ملک کئی حصوں میں منقسم تھا، جس کی تواریخ مختلف تھی ۔ اِس کی جغرافیائی حالت نے اِس سارے علاقہ کو وسطی مشرق سے دور دراز مشرق کو ملانے والے مرکز کا رتبہ دیکر دنیا کی خاص شاہراہوں میں خاص جگہہ دے دی ہے ۔ ایک وقت تھا جبکہ یورپ اور ایشیا سے بڑی بڑی فوجوں اور آبادیوں نے اِس ملک کے اندر سے گذر کر ہندستان میں قدم رکھا ۔ افغانستان میں پارتھی، هن اور سک جاتیاں آئیں؛ میسیڈون کے سکندر اعظم نے بھی اِس ملک کو فتح کیا ۔ چنگیز خاں کے گروہوں، تیمور لنگ کی فوجوں اور اسلام قایم کرنے والی عرب فوجوں نے بھی اِس دیش پر وقتاً فوقتاً قبضہ کیا ۔ مشرق سے لیکر مغرب تک اور شمال سے لیکر جنوب تک بستیاں بنتی اور برباد ہوتی رہیں ۔ کوئی بھی ایسا حملہ نہیں ہوا جس کے نتیجے کے باعث یہاں نئے آدمیوں کی کوئی نئی بستی آباد نہ ہوئی ہو ۔ یہیں سے بڑی بڑی سلطنتوں کے عروج کے ستارے کا دور شروع ہوا اور یہیں سے وے زوال کے تواریخی نشان سے بن کر غایب بھی ہو گئے ۔

اپنی زمین کے 4/5 حصے کے پہاڑیوں سے گھرے ہونے کے سبب افغانستان ایک پہاڑی ملک ہے ۔ اِس لئے یہاں کی رعایا کا بڑا حصہ بڑی یا چھوٹی گھاٹیوں میں، ندیوں کے کنارے یا شمال و شمال-مغرب کے تنگ سرحدی میدانوں میں قیام کرتا تھا ۔

अगस्त 1957 اگست

क्या किस से | सफ़ा صفحہ | کیا کس سے

नया हिंद
نیا ہند

जिल्द 24 جلد नम्बर 2 نمبر

अगस्त 1957 اگست

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद
145، مٹھی گنج، الہ آباد

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

NAYA HIND

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص مضامین

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत
(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : स्व० श्री मंजर अली सोख्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:o:—

गान्धी बाबा
(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान
275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता
100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़
क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है
क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़
क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी
145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

هندی گھر

کلچر پر ھر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک هندی، اردو، انگریزی کی اپنی پسند کتابوں کے لئے ھمیں لکھیں۔

ھماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت
(هندی اور اردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: سورگیہ شری منظر علی سوختہ
صفحے 225، قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا
(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواھر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران
275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ھندو مسلم ایکتا
100 صفحے دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق
قیمت بارہ آنے

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے
قیمت چار آنے

بنگال اور اس سے سبق
قیمت دو آنے

ھندستانی کلچر سوسائٹی
145، مٹھی گنج الہ آباد

और अपने अहंकार को भूलकर गाँव गाँव में ज़मीन की मालकियत मिटाने में, गाँव गाँव का ग्रामदान कराने में जुट जायें. अगामी दूसरी अक्तूबर को ही, बापू-जयन्ती के दिन इस काम की पूर्ति हो सकती है. सन्तावन माई का आशीर्वाद हमारे साथ है. भगवान खुद हमारे साथ है.

22. 6. 57 —सुरेश रामभाई

اور اپنے اہنکار کو بھول کر گاؤں گاؤں میں زمین کی ملکیت مٹانے میں، گاؤں گاؤں کا گرامدان کرانے میں جٹ جائیں. آگامی دوسری اکتوبر کو ہی، باپو جینتی کے دن اس کام کی پورتی ہو سکتی ہے. ستاون مائی کا آشیرواد ہمارے ساتھ ہے. بھگوان خود ہمارے ساتھ ہے.

—سریش رام بھائی 22 .6 .57

जैसे बच्चों के काम करके उनको सही श्रद्धांजलि दे सकेंगी? वह तो अपनी कायरता का, अपनी निर्बलता का, अपनी लाचारी का ही प्रतीक होगा. वीर पुरुषों की औलाद अगर हमारे जैसी डरपोक व कायर निकली तो फिर औलाद कहलाने के अपने दावे को ही खो बैठेगी.

लेकिन नहीं, हमें हिम्मत नहीं हारनी है. जमीन की मालकियत मिटाने का काम उतना मुश्किल नहीं है जितना कि भास होता है. जमीन की मालकियत की दीवारें ढह रही हैं, जो बाक़ी हैं वे भी हिल रही हैं. एक-दो नहीं, दस-बीस नहीं, सौ-सवासौ नहीं—ढाई हजार गाँव में जमीन की मालकियत मिट चुकी है! मिट चुकी है!! मिट चुकी है!!! हमेशा के लिये खत्म. पुराने जमाने की एक सत्यता रह गई है. उन गाँवों में उसका कोई आस्तित्व नहीं बचा. तो जो बात ढाई हजार गाँवों में हो सकती है, वह देश के कुल के कुल साढ़े पाँच लाख गाँवों में क्यों नहीं हो सकती? क्या उन ढाई हजार गाँवों के लोग देवता या फ़रिश्ते हैं और बाक़ी के उनसे गये बीते हैं?

नहीं, नहीं, कमी केवल अपने पुरुषार्थ की है, बल्कि हम कहेंगे कि कमी अपनी श्रद्धा की है. जो श्रद्धा हमारे पूर्वजों को अंग्रेजों की हुकूमत मिटाने में थी, वह हमको जमीन की मालकियत मिटाने में अभी तक नहीं आई है. श्रद्धा कोई पर्दा नहीं है जो इधर-उधर डोले. श्रद्धा दीवार की तरह है जो या तो गिरी है या खड़ी है. या तो है या नहीं है. अपना दिल टटोल कर हम देखें कि हम कहाँ है, वह श्रद्धा हम में कितनी है, है भी कि नहीं?

जहाँ हमारे अन्दर वह श्रद्धा आई, जमीन की मालकियत मिटने की आवश्यकता और 'अनिवार्यता पर यक़ीन आया कि देखते देखते यह मालकियत टूट कर चकनाचूर हो जायेगी. जिस तरह सदियों का अंधेरा एक छोटा-सा चिराग़ क्षण भर में ख़त्म कर देता है, उसी तरह सदियों की जमीन का व्यक्तिगत स्वामित्व एक दिन में, निश्चित घड़ी पर ख़त्म हो सकता है. फिर यह तीसरी चीज नहीं जो अनहोनी हो. संतो ने कहा है "सबै भूमि गोपाल की". पिछले दो-ढाई सौ साल में हम इस पाठ को भूल से गये थे. इसे फिर से याद कर उस पर अब अमल कर डालना है. देखते देखते यह मालकियत मिट जायेगी और अपने मुरब्बी बुजुर्गों को हम सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे.

यही है सत्तावन माई की असली पूजा करने की विधि. सत्तावन के छः महीने पूरे हो रहे हैं, छः ही बचे हैं. 'बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि ले'—अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, अब भी सब चीज संभल सकती है. हम अब चेत जायें और सब मिलकर—अपने जाति-भेद, भाषा-भेद, पक्ष-भेद

جیسے بچوں کے کام کر کے اُن کو صحیح شردھانجلی دے سکیں گی؟ وہ تو اپنی کایرتا کا، اپنی نربلتا کا، اپنی لاچاری کا ہی پرتیک ہوگا۔ ویر پرشوں کی اولاد اگر ہمارے جیسی ڈرپوک و کایر نکلی تو پھر اولاد کہلانے کے اپنے دعوے کو ہی کھو بیٹھے گی۔

لیکن نہیں، ہمیں ہمت نہیں ہارنی ہے۔ زمین کی مالکیت مٹانے کا کام اُتنا مشکل نہیں ہے جتنا کہ بھاس ہوتا ہے۔ زمین کی مالکیت کی دیواریں ڈھہ رہی ہیں، جو باقی ہیں وہ بھی ہل رہی ہیں۔ ایک دو نہیں، دس بیس نہیں، سو سوا سو نہیں— ڈھائی ہزار گاؤں میں زمین کی مالکیت مٹ چکی ہے! مٹ چکی ہے!! مٹ چکی ہے!!! ہمیشہ کے لئے ختم۔ پرانے زمانے کی ایک ستیتا رہ گئی ہے۔ اُن گاؤں میں اُس کا کوئی استتو نہیں بچا۔ تو جو بات ڈھائی ہزار گاؤں میں ہو سکتی ہے، وہ دیش کے کل کے ساڑھے کل پانچ لاکھ گاؤں میں کیوں نہیں ہو سکتی؟ کیا اُن ڈھائی ہزار گاؤں کے لوگ دیوتا یا فرشتے ہیں اور باقی اُن سے گئے بیتے ہیں؟

نہیں، نہیں، کمی کیول اپنے پرشارتھ کی ہے۔ بلکہ ہم کہیں گے کمی اپنی شردھا کی ہے۔ جو شردھا ہمارے پوروجوں کو انگریزوں کی حکومت مٹانے میں تھی، وہ ہمکو زمین کی مالکیت مٹانے میں ابھی تک نہیں آئی ہے۔ شردھا کوئی پردا نہیں ہے جو اِدھر اُدھر ڈولے۔ شردھا دیوار کی طرح ہے جو یا تو گری ہے یا کھڑی ہے۔ یا تو ہے یا نہیں ہے۔ اپنا دل ٹٹول کر ہم دیکھیں کہ ہم کہاں ہیں، وہ شردھا ہم میں کتنی ہے، ہے بھی کہ نہیں؟

جہاں ہمارے اندر وہ شردھا آئی، زمین کی مالکیت مٹنے کی آوشیکتا اور انیوارتا پر یقین آیا کہ دیکھتے دیکھتے یہ مالکیت ٹوٹ کر چکنا چور ہو جائیگی۔ جس طرح صدیوں کا اندھیرا ایک چھوٹا سا چراغ چھن بھر میں ختم کر دیتا ہے، اُسی طرح صدیوں کی زمین کا ویکتی گت سوامتو ایک دن میں، ایک نشچت گھڑی پر ختم ہو سکتا ہے۔ پھر یہ تیسری چیز نہیں جو انہونی ہو۔ سنتوں نے کہا ہے "سبھے بھومی گوپال کی۔" پچھلے دو ڈھائی سو سال میں ہم اِس پاٹھ کو بھول سے گئے تھے۔ اِسے پھر سے یاد کر اُس پر اب عمل کر ڈالنا ہے۔ دیکھتے دیکھتے یہ مالکیت مٹ جائیگی اور اپنے مربی بزرگوں کو ہم سچی شردھانجلی ارپت کر سکیں گے۔

یہی ہے ستاون مائی کی اصلی پوجا کرنے کی ودھی۔ ستاون کے چھ مہینے پورے ہو رہے ہیں، چھ ہی بچے ہیں۔ "بیتی تاہی بسار دے، آگے کی سدھ لے"— ابھی کچھ نہیں بگڑا ہے، اب بھی سب چیز سنبھل سکتی ہے۔ ہم اب چیت جائیں اور سب مل کر— اپنے جاتی بھید، بھاشا بھید، پکش بھید

फुंकाकर गाँव गाँव में पहुंचा दे. तभी समाज बलवान होगा और हर इन्सान में भी आत्म-शक्ति निखर उठेगी. क्या व्यक्ति, क्या समाज, दोनों गुणवान बनेंगे.

सवाल है कि यह हो कैसे ? बहुत ही कठिन सवाल है कि गाँव गाँव किस तरह बलवान और .ख़ुद मुख़तयार बने. ज़रा ध्यानपूर्वक विचार करेंगे तो सहज पता चलेगा कि देश भर में, गांव गांव के अन्दर जिस चीज ने हमको निस्तेज और निर्वीर्य बना दिया है, जिसके कारण हममें न आत्म-सम्मान बचा है न सहृदयता, जिसकी वजह से हमने आत्म विश्वास और मानवता को उठा कर मानो ताक़ पर रख दिया है, वह है धरती को व्यक्तिगत स्वामित्व या निजी मालकियत. व्यक्तिगत स्वामित्व के अहंकार से भू-स्वामी भू-माता की अपने हाथ से सेवा करना अनादर ही नहीं, अधर्म समझता है. दूसरी तरफ़ व्यक्तिगत स्वामित्व के पूर्ण अभाव में, भूमिहीन मज़दूरों की भू-सेवा निष्प्राण और जड़ बन गई है, और जब तक जमीन की यह निजी मालकियत क़ायम रहती है, जब तक जमीन की ख़रीद बिरी चलती है. जब तब धरती माता की पुत्रवत् उपासना कुल औलाद नहीं करती, तब तक कैसा स्वराज्य, कैसी स्वाधीनता और कैसी श्रद्धांजलि !!!

इस वास्ते सत्तावन माई की पूजा के लिये सबसे पहली ज़रूरत इस बात की है कि धरती माता व्यक्तिगत स्वामित्व के बन्धनों से मुक्त होनी चाहिये. उसकी ख़रीद-बिक्री सदा-सर्वदा के लिये बन्द होनी चाहिये. उसका इन्साफ़ से और एक राय से गाँव गाँव में फिर से बंटवारा होना चाहिये. देश में न कोई भूमिहीन रहे न भूमि-स्वामी. सब भूमि-पुत्र बनें. पुत्र बनकर माता की यथा शक्ति सेवा करें और प्रेम से एक दूसरे का सहयोग लें. अगर हम ऐसा न करके, इधर-उधर की बीसियों बातें करें, सैकड़ों कार्य-क्रम रचें, व्याख्यान झाड़ें, फूल मालायें स्मारकों को पहनायें तो उसका कोई असर न हमारे जीवन पर पड़ेगा, न समाज पर पड़ेगा और न उन पवित्र आत्माओं को संतोष ही होगा. इन छुट-पुट कामों में अपनी ताक़त न ख़र्च कर हमको अपनी पूरी ताक़त बुनियादी और पहला काम करने में लगानी चाहिये.

ज़ाहिर बात है कि काम मुश्किल है. दूर दूर से देखने में नामुमकिन भी लगता है. लेकिन क्या अंग्रेज़ी राज को निकाल बाहर कर देना भी कोई आसान काम था ? जिस अंग्रेज़ की परछाईं देखकर ही हम भाग खड़े होते थे, उसका शासन उखाड़ फेंकना कोई हँसी-खेल था ? वीर आसान काम के लिये नहीं, मुश्किल काम करने के लिये पैदा होते हैं. तो जिन वीरों ने अंग्रेज़ी राज्य से मुक्ति के जैसा मुश्किल काम उठाया, क्या हम केवल फूल-माला या व्याख्यान देना

پھونکا کر گاؤں گاؤں میں پہنچا دے۔ تبھی سماج بلوان ہوگا اور ہر انسان میں بھی آتم شکتی نکھر اٹھے گی۔ کیا ویکتی، کیا سماج، دونوں گنوان بنیں گے۔

سوال ہے کہ یہ ہو کیسے ؟ بہت ہی کٹھن سوال ہے کہ گاؤں گاؤں کس طرح بلوان اور خودمختار بنے۔ ذرا دھیان پوروک وچار کریں گے تو سہج پتہ چلیگا کہ دیش بھر میں گاؤں گاؤں کے اندر جس چیز نے ہم کو نس تیج اور نرویریہ بنا دیا ہے، جس کے کارن ہم میں نہ آتم سمان بچا ہے نہ سہردیتا، جس کی وجہ سے ہم نے آتم وشواس اور مانوتا کو اٹھا کر مانو طاق پر رکھ دیا ہے، وہ ہے دھرتی کا ویکتی گت سوامتو یا نجی مالکیت۔ ویکتی گت سوامتو کے اہنکار سے بھوسوامی بھو ماتا کی اپنے ہاتھ سے سیوا کرنا انادر ہی نہیں، ادھرم سمجھتا ہے۔ دوسری طرف ویکتی گت سوامتو کے پورن ابھاؤ میں، بھومی ہین مزدوروں کی بھو سیوا نشپران اور جڑ بن گئی ہے۔ اور جب تک زمین کی یہ نجی ملکیت قایم رہتی ہے، جب تک زمین کی خرید بکری چلتی ہے، جب تک دھرتی ماتا کی پتروت اپاسنا کل اولاد نہیں کرتی، تب تک کیسا سوراجیہ، کیسی سوادھینتا اور کیسی شردھانجلی !!!

اِس واسطے ستاون مائی کی پوجا کے لئے سب سے پہلی ضرورت اِس بات کی ہے کہ دھرتی ماتا ویکتی گت سوامتو کے بندھنوں سے مکت ہونی چاہئے۔ اُس کی خرید بکری سدا سروداکے لئے بند ہونی چاہئے۔ اُس کا انصاف سے اور ایک رائے سے گاؤں گاؤں میں پھر سے بٹوارہ ہونا چاہئے۔ دیش میں نہ کوئی بھومی ہین رہے نہ بھومی سوامی۔ سب بھومی پتر بنیں۔ پتر بن کر ماتا کی یتھا شکتی سیوا کریں اور پریم سے ایک دوسرے کا سہیوگ لیں۔ اگر ہم ایسا نہ کر کے، اِدھر اُدھر کی بیسیوں باتیں کریں، سیکڑوں کاریہ کرم رچیں، ویاکھیان جھاڑیں، پھول مالائیں اِسمارکوں کو پہنائیں تو اس کا کوئی اثر نہ ہمارے جیون پر پڑیگا، نہ سماج پر پڑیگا اور نہ اُن پوتر آتماؤں کو سنتوش ہی ہوگا۔ اِن چھٹ پٹ کاموں میں اپنی طاقت نہ خرچ کر ہم کو اپنی پوری طاقت بنیادی اور پہلا کام کرنے میں لگانی چاہئے۔

ظاہر بات ہے کہ کام مشکل ہے، دور دور سے دیکھنے میں ناممکن بھی لگتا ہے۔ لیکن کیا انگریزی راج کو نکال باہر کر دینا بھی کوئی آسان کام تھا ؟ جس انگریز کی پرچھائیں دیکھ کر ہی ہم لوگ بھاگ کھڑے ہوتے تھے، اُس کا شاسن اُکھاڑ پھینکنا کوئی ہنسی کھیل تھا ؟ ویر آسان کام کے لئے نہیں، مشکل کام کرنے کے لئے پیدا ہوئے ہیں۔ تو جن ویروں نے انگریزی راج سے مکتی کے جیسا مشکل کام اُٹھایا، کیا ہم کیول پھول مالا یا ویاکھیان دینا

सत्तावन माई की पूजा कैसे हो ?

पिछली दस मई से देश भर में, खासकर हिन्दी भाषा-भाषी इलाके में, सन् 1857 के अपने प्रातः स्मरणीय शहीदों, वीरों और योद्धाओं के प्रति श्रद्धांजलि की धूम मची है. शहरों में तो इस कार्यक्रम को मनाने के लिये सभायें होती हैं, जुलूस निकलते हैं, स्मारकों पर फूल-मालायें चढ़ायी जाती हैं. लेकिन दूर देहात में इस श्रद्धांजलि ने सत्तावन माई की पूजा का नाम लिया है. आजकल देहातों में चेचक की यानी देवी माई का ज़ोर वैसे ही है, माई की पूजा होती है. इसी तरह दशहरे पर काली माई की और दूसरे मौक़ों पर दूसरी माईयों की पूजा होती है. तो सत्तावन शताब्दि समारोह भी माई बनकर सामने आ रहा है. मगर इस पूजा का अभी कोई ठोस शकल नहीं निकल पाई है. पर धीरे-धीरे वह शकल निकल भी आयेगी. क्या शकल निकलेगी, कोई नहीं कह सकता—पर उसकी दिशा क्या हो, इस सम्बन्ध में कुछ सुझाव यहाँ पर नम्रतापूर्वक पेश किये जा रहे हैं.

अपने बुज़ुर्गों को श्रद्धांजलि अर्पित करना हर किसी का धर्म है. वह पूजा सचमुच अपने समाधान और सन्तोष के लिये होती है. फिर, जब हमारे जैसे देश में, जो आत्मा को शरीर, मन और बुद्धि से अलग मानता हो, इस पूजा का प्रयोजन अपने हित के लिये ही है, न कि दिवंगत पूज्य आत्माओं के लिये. और कौन नहीं जानता कि आत्मा की शान्ति सद्गुण के विकास में, सद्भावना के निर्माण में है. इसलिये सच्ची श्रद्धांजलि वही है जिससे पूजा करने वाले आदमी या समाज के अन्दर सद्गुण या सद्भावना जाग जावे. अगर ऐसा नहीं होता तो सारी पूजा बाहरी आडम्बर बन जायेगी और ढकोसला साबित होगी. सत्तावन माई की पूजा इस दृष्टि को ध्यान में रखकर ही होनी चाहिये.

ज़ाहिर है कि सन सत्तावन में जो बीड़ा उठाया गया वह था स्वाधीनता के लिये. किस की स्वाधीनता ? देश भर की—देश भर के गांव गांव में रहने वाले हर बच्चे की. अंग्रेज़ी सरकार उसमें सबसे बड़ी बाधा थी, इसलिये उसको हटाना पहला ज़रूरी काम समझा गया. इसी कामना ने स्वराज्य का नाम लिया. 1857 में हमारी वीर आत्माओं ने जो बीज बोया, 1947 में उसमें फल आया और देश को स्वराज्य मिला. देश स्वाधीन हुआ. लेकिन कहने की ज़रूरत नहीं कि इस स्वाधीनता का अर्थ केवल यही है कि शक्ति व शासन का पारसल लंदन से छुड़ाकर दिल्ली ले आया गया. देश का नियंत्रण, संचालन, संयोजन आदि सब कुछ दिल्ली से होता है. गाँव वहीं के वहीं हैं. इस तरह देश ज़रूर स्वाधीन है, पर गाँव पराधीन है. सत्तावन माई की वही पूजा सार्थक कही जायेगी जो इस पराधीनता को मिटाये—यानी शक्ति व शासन के पारसल को दिल्ली से

ستاون مائی کی پوجا کیسے ہو ؟

پچھلی دس مئی سے دیش بھر میں' خاص کر ہندی بھاشا بھاشی علاقے میں' سن 1857 کے اپنے پراتہ اسمرنیہ شہیدوں؛ ویروں اور یودھاؤں کے پرتی شردھا نجلی کی دھوم مچی ہے ۔ شہروں میں تو اِس کاریہ کرم کو منانے کے لئے سبھائیں ہوتی ہیں؛ جلوس نکلتے ہیں' سمارکوں پر پھول مالائیں چڑھائی جاتی ہیں ۔ لیکن دور دیہات میں اِس شردھا نجلی نے ستاون مائی کی پوجا کا نام لیا ہے ۔ آجکل دیہاتوں میں چیچک کا یعنی دیوی مائی کا زور ویسے ہی ہے' مائی کی پوجا ہوتی ہے ۔ اِسی طرح دسہرے پر کالی مائی کی اور دوسرے موقعوں پر دوسری مائیوں کی پوجا ہوتی ہے ۔ تو ستاون شتابدی سماروہ بھی مائی بن کر سامنے آ رہا ہے ۔ مگر اِس پوجا کی ابھی کوئی ٹھوس شکل نہیں نکل پائی ہے ۔ پر دھیرے دھیرے وہ شکل نکل بھی آئیگی ۔ کیا شکل نکلے گی' کوئی نہیں کہہ سکتا— پر اُس کی دشا کیا ہو' اِس سمبندھ میں کچھ سوجھاؤ یہاں پر نمرتا پوروک پیش کئے جا رہے ہیں ۔

اپنے بزرگوں کو شردھا نجلی ارپت، کرنا ہر کسی کا دھرم ہے ۔ وہ پوجا سچ مچ اپنے سمادھان اور سنتوش کے لئے ہوتی ہے ۔ پھر' جب ہمارے جیسے دیش میں' جو آتما کو شریر' من اور بدھی سے الگ مانتا ہو' اِس پوجا کا پریوجن اپنے ہت کے لئے ہی ہے' نہ کہ دونگت پوجیہ آتماؤں کے لئے ۔ اور کون نہیں جانتا کہ آتما کی شانتی سدگن کے وکاس میں' سد بھاؤنا کے نرمان میں ہے ۔ اِس لئے' سچی شردھا نجلی وہی ہے جس سے پوجا کرنے والے آدمی یا سماج کے اندر سدگن یا سد بھاؤنا جاگ جائے ۔ اگر ایسا نہیں ہوتا تو ساری پوجا باہری آڈمبر بن جائیگی اور ڈھکوسلا ثابت ہوگی ۔ ستاون مائی کی پوجا اِس درشٹی کو دھیان میں رکھ کر ہی ہونی چاہئے ۔

ظاہر ہے کہ سن ستاون میں جو بیڑا اٹھایا گیا وہ تھا سوادھینتا کے لئے ۔ کس کی سوادھینتا ؟ دیش بھر کی— دیش بھر کے گاؤں گاؤں میں رہنے والے ہر بچے کی ۔ انگریزی سرکار اُس میں سب سے بڑی بادھا تھی' اِس لئے اُس کو ہٹانا پہلا ضروری کام سمجھا گیا ۔ اِسی کامنا نے سوراجیہ کا نام لیا ۔ 1857 میں ہماری ویر آتماؤں نے جو بیج بویا' 1947 میں اس میں پھل آیا اور دیش کو سوراجیہ ملا ۔ دیش سوادھین ہوا ۔ لیکن کہنے کی ضرورت نہیں کہ اِس سوادھینتا کا ارتھ کیول یہی ہے کہ شکتی و شاسن کا پارسل لندن سے چھڑا کر دلی لے آیا گیا۔ دیش کا نینترن' سنچالن' سنیوجن آدی سب کچھ دلی سے ہوتا ہے۔ گاؤں وہیں کے وہیں ہیں۔ اِس طرح دیش ضرور سوادھین ہے' پر گاؤں پرادھین ہے ۔ ستاون مائی کی وہی پوجا سارتھک کہی جائیگی جو اِس پرادھینتا کو مٹائے— یعنی شکتی و شاسن کے پارسل کو دلی سے

हमारी राय

ہماری رائے

हिन्दुस्तान की दौलत बढ़ी है !

पिछले पाँच बरसों में पहली पंचसाला योजना के ज़रिये हिन्दुस्तान की आमदनी में कुछ न कुछ इज़ाफ़ा हुआ है माहिरों का ख़याल है कि हर फ़र्द पीछे यह इज़ाफ़ा मुल्क की माली तरक़्क़ी को ज़ाहिर करता है. माहिर जब कोई बात करता है तो मुल्क कैसे उसकी सचाई से इनकार कर सकता है ? आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेटरी आचार्य अग्रवाल भी इस सचाई से इनकार नहीं करते लेकिन वे कहते हैं कि दौलत के इस इज़ाफ़े से मुल्क के अमीरों की तिजोरियाँ और ज़्यादा भरी हैं. वे बड़े दर्द के साथ कहते हैं कि "अमीर ज़्यादा अमीर होते जा रहे हैं और ग़रीब दिनों दिन ज़्यादा ग़रीब होते जा रहे. अमीरों और ग़रीबों का यह फ़र्क़ दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है." अगर इसी रफ़्तार से यह फ़र्क़ बढ़ता गया तो मुल्क में समाजवादी समाज कैसे क़ायम होगा ? एक ओर जबकि उत्पादन बढ़ा है दूसरी ओर लोगों की ख़रीदारी की ताक़त दिनों दिन घटती जा रही है. दूसरी पंचसाला योजना को पूरा करने के लिये और ज़्यादा धन की ज़रूरत है. इस धन का एक बड़ा हिस्सा टैक्सों से ही इकठ्ठा करना पड़ेगा. माहिर कहते हैं कि जनता को ख़ुशहाल बनाने के लिये ये टैक्स ज़रूरी हैं. और जनता इन टैक्सों के बोझ से दिन बदिन ज़िन्दगी के बुनियादी स्तर से भी नीचे गिरती आ रही है.

हमें तसल्ली है कि इस मसले पर वे लोग भी अब संजीदा तौर पर ग़ौर करने लगे हैं जो इस दर्दनाक कैफ़ियत के लिये ज़िम्मेवार हैं.

—वि. ना. पांडे

ہندستان کی دولت بڑھی ہے !

پچھلے پانچ برسوں میں پہلی پنچ‌سالہ یوجنا کے ذریعہ ہندستان کی آمدنی میں کچھ نہ کچھ اضافہ ہوا ہے ۔ ماہروں کا خیال ہے کہ ہر فرد پیچھے یہ اضافہ ملک کی مالی ترقی کو ظاہر کرتا ہے ۔ ماہر ظاہر جب کوئی بات کرتا ہے تو ملک کیسے اس کی سچائی سے انکار کر سکتا ہے ؟ آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے جنرل سیکریٹری آچاریہ اگروال بھی اس سچائی سے انکار نہیں کرتے لیکن وہ کہتے ہیں کہ دولت کے اس اضافے سے ملک کے امیروں کی تجوریاں اور زیادہ بھری ہیں ۔ وہ بڑے درد کے ساتھ کہتے ہیں کہ "امیر زیادہ امیر ہوتے جا رہے ہیں اور غریب دنوں دن زیادہ غریب ہوتے جا رہے ہیں ۔ امیروں اور غریبوں کا یہ فرق دنوں دن بڑھتا جا رہا ہے ۔" اگر اسی رفتار سے یہ فرق بڑھتا گیا تو ملک میں سماج وادی سماج کیسے قایم ہوگا ؟ ایک اور جب کہ اُتپادن بڑھا ہے دوسری اور لوگوں کی خریداری کی طاقت دنوں دن گھٹتی جا رہی ہے ۔ دوسری پنچ‌سالہ یوجنا کو پورا کرنے کے لئے اور زیادہ دھن کی ضرورت ہے ۔ اس دھن کا ایک بڑا حصہ ٹیکسوں سے ہی اکٹھا کرنا پڑیگا ۔ ماہر کہتے ہیں کہ جنتا کو خوشحال بنانے کے لئے یہ ٹیکس ضروری ہیں ۔ اور جنتا ان ٹیکسوں کے بوجھ سے دن بدن زندگی کے بنیادی لیول سے بھی نیچے گرتی جا رہی ہے ۔

ہمیں تسلی ہے کہ اس مسئلے پر وہ لوگ بھی اب سنجیدہ طور پر غور کرنے لگے ہیں جو اس دردناک کیفیت کے لئے ذمہ دار ہیں ۔

—وی. نا. پانڈے

एक टोली होगी. तुम्हें उनका ख्याल होगा ! तुम्हें बेगानों और ओहदोंसे प्यार होगा ! ज़रा सोचो तो सही. समाज के बेशुमार जीव जिनकी माएँ बहिनें तड़प-तड़प कर प्राण दे रही हैं, जिनके बच्चे रोटी के टुकड़ों के न मिलने पर सीधे स्वर्ग चले जाते हैं, तो सोचो ! अगर समाज को उठाने के काम में, उसे चेतनमय कर डालने में अगर कष्ट आ पड़े, जेलों की हवा खानी पड़े, अगर तुम्हें फाँसी का डर भी दिखाया जावे तो इतना याद रक्खो, हमारे समाज के हजारों लाखों को इस नरक से बचाने के काम में अगर तुम सहायक हो सको तो तुम चेतनामय हो, उठ चुके हो।

ऐसी कठिनाई में याद करो राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी को, दरिद्र नारायण के उस सच्चे पुजारी को, ग़रीब हिन्दुस्तानियों के उस सच्चे वकील को, अपने आत्म बल से तोपों का मुक़ाबला करने वाले उस फ़क़ीर को. उनका रास्ता तुम्हारा रास्ता रहे, उनका प्रेम भरा दिल तुम्हारा दिल हो तो तुम अजय हो.

आज का समाज जिसमें अभी ,शोषण है, दोहन है, ग़रीबी है, उसमें पिसने वाले, उसको भुगतने वाले बेशुमार साथियो उठो ! इसलिये कि तुम्हारा काम आज उठना है, तुम्हारा काम आज इन्सानियत की स्थापना करना है, पर उसका रास्ता क्या हो ? उसका रास्ता यही है कि समाज को उठने दो. ठेकेदारों को इजारेदारों को, समाज की इजारेदारी से अलग करो, अपने प्रेम और बलिदान के सहारे अलग करो ! क्यों ? इसलिये कि अब तुम भी सोच सकने का माद्दा रखते हो, और पहले भी तुम में माद्दा था, पर उस समय उसपर परदा था !पर्दे हटा दो, लम्बी नींद से जाग उठो, और उठकर एक काम करो ! पैसे कि ग़ुलामी और छीना झपटी से इनसान को मुक्त करो ! शोषण का—मेहनत के शोषण का—रास्ता बन्द करो, विचार की आज़ादी दो ! यही पुन्य काम है ! समाज की कुरूपता को मिटा दो !

उठो, मेहनत का लाभ उसे उठाने दो जिसकी मेहनत है, जिसका जिस्म है, जिसकी मशक़्क़त है !

ایک ٹولی ہوگی۔ تمھیں ان کا خیال ہو گا! تمھیں [illegible] اور عہدوں سے پیار ہوگا! ذرا سوچو تو سہی۔ سماج کے بےشمار جیو جن کی مائیں بہنیں تڑپ تڑپ کر پران دے رہی ہیں جن کے بچے روٹی کے ٹکڑوں کے نہ ملنے پر سیدھے سورگ چلے جاتے ہیں، تو سوچو! اگر سماج کو اٹھانے کے کام میں، اُسے چیتن مے کر ڈالنے میں اگر کشٹ آپڑیں، جیلوں کی ہوا کھانی پڑے، اگر تمھیں پھانسی کا ڈر بھی دکھایا جاوے تو اتنا یاد رکھو، ہمارے سماج کے ہزاروں لاکھوں کو اِس نرک سے بچانے کے کام میں اگر تم سہایک ہو سکو تو تم چیتنا مے ہو، اُٹھ چکے ہو!

ایسی کٹھنائی میں یاد کرو راشٹر پتا مہاتما گاندھی کو، دردنرائن کے اُس سچے پجاری کو، غریب ہندستانیوں کے اُس سچے وکیل کو، اپنے آتم بل سے توپوں کا مقابلہ کرنیوالے اُس فقیر کو۔ ان کا راستہ تمھارا راستہ رہے، اُن کا پریم بھرا دل تمھارا دل ہو تو تم اجئے ہو۔

آج کا سماج جس میں ابھی شوشن ہے، دوھن ہے، غریبی ہے، اُس میں پسنے والے، اُس کو بھگتنے والے بےشمار ساتھیو اُٹھو! اس لئے کہ تمھارا کام آج اٹھنا ہے، تمھارا کام آج انسانیت کی استھاپنا کرنا ہے، پر اُس کا راستہ کیا ہو؟ اُس کا راستہ یہی ہے کہ سماج کو اٹھنے دو۔ ٹھیکیداروں کو، اجارے داروں کو سماج کی اِجاریداری سے الگ کرو، اپنے پریم اور بلیدان کے سہارے الگ کرو! کیوں؟ اس لئے کی اب تم بھی سوچ سکنے کا مادہ رکھتے ہوئے اور پہلے بھی تم میں مادہ تھا، پر اُس سمئے اُس پر پردہ تھا! پردے ہٹا دو، لمبی نیند سے جاگ اُٹھو، اور اُٹھ کر ایک کام کرو! پیسےکی غلامی اور چھینا جھپٹی سے انسان کو مکت کرو۔ شوشن کا — محنت کے شوشن کا — راستہ بند کرو، وچار کی آزادی دو! یہی پن کام ہے! سماج کی کوروپتا کو مٹا دو!

اٹھو! محنت کا لابھ اسے اٹھانے دو جس کی محنت ہے، جس کا جسم ہے، جس کی مشقت ہے!

पर मैं भूल गया, तुम भी तो आज भूखे हो ! बेकार हो, बेकसी के मज़ार पर खड़े हो ! पर भूखे मरना, ग़ुलामी स्वीकार करना, यह भी तो हिंसा है ! चोरी करना, समाज की रोटी छीनना, बहुत बड़ी हिंसा है ! दूसरों की मेहनत पर जीवित रहना, पिस्सू और खटमलों की कोटि में आता है ! पर पिस्सू और खटमल जानवरों की गिनती में हैं और तुम आदमी हो ! विश्वास के साथ उठो, इस जघन्य अपराध को छोड़ दो !

उठो ! जवानो विश्वास करो ! अब इनसान ग़ुलाम नहीं रहनेवाला है, उठो, अब मेहनत करके भी आदमी भूखा नहीं सोने वाला है ! धोखादेही और यह असत्यता का व्यापार अब मरजाने वाला है. यह महाजनी सभ्यता का समाज, दम घोंटू समाज अब मर जानेवाला है ! उठो ! आज इन्सान की आज़ादी की रोटी और मकान की बात पर उठो ! यह माँग अटपटी नहीं, यह माँग ज़ियादा नहीं ! इतना तो सबका हक़ है कि आदमी का बेटा, आदमी की तरह ही रह सके, वह मजबूरियों का मारा जानवरपन को अंगीकार न करले ! जवानो ! तुम्हारी जवानी ज़िन्दाबाद !

उठो ! लेखको ! बहुत लिखा जा चुका है प्रेम और इश्क़ के थोथे क़िस्सों पर, अपनी क़लम को अब मोड़ दो. तुम्हारे सामने ही दम तोड़ते अनाथ बच्चों, माताओं और दुखिया समाज की तरफ़ ! मानता हूँ, इसमें तुम्हें कठिनाई होगी, पर याद करो, टाल्सटाय को, याद करो गोर्की को, और याद करो अभी-अभी ही मरे हमारे साहित्य के देवता प्रेमचन्द को ! प्रेमचन्द ने जो कुछ लिखा, वह बेजोड़ है ! पर प्रेमचन्द आज अमर है, हाँ जासूसी कहानियाँ लिख जानेवालों को ज़माना याद न रख सकेगा ! हिन्दुस्तान के जागीरदारों के द्वारा शोषित किसान आज प्रेमचन्द पर गर्व कर सकता है, विधवाएँ, व बीच के दरजे के पिसे हुए जवान आज भी प्रेमचन्द को याद करके उठ सकते हैं. क्योंकि प्रेमचन्द उन किसानों का था, उन ग़रीबों का था, जिनका कोई न था ! प्रेमचन्द ने आत्मा न बेची, ग़ुलामी को तोड़ फेंका, साहित्य की धारा उसने वहाँ मोड़ दी जहाँ समाज का अकिंचन वर्ग, समाज का सर्वहारा वर्ग, सो रह था ! उठो, लिखना हो तो लिखो उनपर जो सताए हुए हैं, जो घबराए हुए हैं, जो पीड़ित हैं. तुम पीड़ामय हो जाओ, अपनी वाणी और क़लम को उनके ऊपर न्योछावर कर दो ! यही तुम्हारा उठना है !

पर तुम्हारी एक दलील हो सकती है कि यह सब शायद कुछ सरकारी लोगों को पसन्द न होगा, यह सब समाज का वह वर्ग पसन्द न करेगा जोकि आज पढ़ लिख सकता है. और इस जगह आकर मुझे रोना आजाता है. हाँ, तुम्हारे भी माँ होगी, बहिन होगी, पत्नी होगी, फुदकने वाले बच्चों की

پر میں بھول گیا، تم بھی تو آج بھوکے ہو ! بیکار ہو. بیکسی کے مزار پر کھڑے ہو ! پر بھوکے مرنا، غلامی سوئیکار کرنا، یہ بھی تو ہنسا ہے ! چوری کرنا، سماج کی روٹی چھیننا، بہت بڑی ہنسا ہے ! دوسروں کی محنت پر جیوت رہنا، پسو اور کھٹملوں کی کوٹی میں آتا ہے ! پر پسو اور کھٹمل جانوروں کی گنتی میں ہیں اور تم آدمی ہو ! وشواس کے ساتھ اٹھو، اس جگھنیہ اپرادھ کو چھوڑ دو !

اٹھو ! جوانو وشواس کرو ! اب انسان غلام نہیں رہنے والا ہے، اٹھو، اب محنت کر کے بھی آدمی بھوکا نہیں سونے والا ہے ! دھوکادیہی اور یہ استیتا کا بیوپار اب مر جانے والا ہے. یہ مہاجنی سبھیتا کا سماج، دم گھونٹو سماج اب مر جانے والا ہے ! اٹھو ! آج انسان کی آزادی کی روٹی اور مکان کی بات پر اٹھو ! یہ مانگ اٹپٹی نہیں، یہ مانگ زیادہ نہیں ! اتنا تو سب کا حق ہے کہ آدمی کا بیٹا، آدمی کی طرح ہی رہ سکے، وہ مجبوریوں کا مارا جانور پن کو انگیکار نہ کر لے ! جوانو ! تمہاری جوانی زندہ باد !

اٹھو ! لیکھکو ! بہت لکھا جا چکا ہے پریم اور عشق کے تھوتھے قصوں پر، اپنی قلم کو اب موڑ دو. تمہارے سامنے ہی دم توڑتے اناتھ بچوں، ماتاؤں اور دکھیا سماج کی طرف ! مانتا ہوں، اس میں تمہیں کٹھنائی ہوگی. پر یاد کرو، ٹالسٹائے کو، یاد کرو گورکی کو، اور یاد کرو ابھی ابھی ہی مرے ہمارے ساہتیہ کے دیوتا پریم چند کو ! پریم چند نے جو کچھ لکھا، وہ بےجوڑ ہے ! پر پریم چند آج امر ہے، ہاں جاسوسی کہانیاں لکھ جانے والوں کو زمانہ یاد نہ رکھ سکیگا ! ہندستان کے جاگیرداروں کے دوارا شوشت کسان آج پریم چند پر گرو کر سکتا ہے، ودھوائیں، و بیچ کے درجے کے پسے ہوئے جوان آج بھی پریم چند کو یاد کر کے اٹھ سکتے ہیں. کیونکہ پریم چند ان کسانوں کا تھا، ان غریبوں کا تھا، جن کا کوئی نہ تھا ! پریم چند نے آتما نہ بیچی، غلامی کو توڑ پھینکا، ساہتیہ کی دھارا اس نے وہاں موڑ دی جہاں سماج کا آکنچن ورگ، سماج کا سروہارا ورگ سو رہا تھا. اٹھو ! لکھنا ہو تو لکھو ان پر جو ستائے ہوئے ہیں، جو گھبرائے ہوئے ہیں، جو پیڑت ہیں. تم پیڑا مے ہوجاؤ، اپنی وانی اور قلم کو ان کے اوپر نچھاور کر دو ! یہی تمہارا اٹھنا ہے !

پر تمہاری ایک دلیل ہو سکتی ہے کہ یہ سب شاید کچھ سرکاری لوگوں کو پسند نہ ہوگا، یہ سب سماج کا وہ ورگ پسند نہ کریگا جو کہ آج پڑھ لکھ سکتا ہے. اور اس جگہ آکر مجھے رونا آجاتا ہے. ہاں، تمہارے بھی ماں ہوگی، بہن ہوگی، پتنی ہوگی، پھدکنے والے بچوں کی

उठो ! मोटे मोटे गद्दों पर, रुई के बिछोनों पर, पंखों की ठंडी हवा के नीचे, खसकी टट्टियों की महकती हवा के नीचे, कुरसी तोड़ धनकुबेर ! थैलियों के मालिक ! बैंक के रक्षक, उठो ! अनाज का भाव मँहगा करने के लिये नहीं; इसलिये भी नहीं कि सट्टे और फाटके में गरीबों की तक़दीर के साथ खिलवाड़ करो ! इसलिये भी नहीं कि चोर बाज़ारी, और रुपयों का ढेर जमा करो, पर इसलिये उठो कि तुम्हें समाज की अगुआई करनी है, शोषण की, .खून चूसने की कला से आज़ाद होना है और सबको आज़ाद करना है ! इनसान और समाज एक दूसरे के पूरक हैं. इनसान को आज़ादी दो, इनसान को रोटी मिलने दो, उसे रोटी बाँटो मत, वह तो ख़ुद रोटी पैदा करता है. फिर उसे तुम क्या रोटी बाँटोगे ! उसे मकान दो, क्योंकि वह .ख़ुद मकान बनाता है. यह सब होने दो, समाज अपने आप बढ़ेगा. उठो ! इनसान की आज़ादी के नाम पर समाज में फैली हुई इन ख़न्दक़ों और खाइयों को पाट दो ! शोषण के शेष-नागो ! आज फुफकारना बन्द करो, कमज़ोरों को काटना रोक दो ! उठो ! तुम्हारा समाज बदल रहा है, इनसान और आज का धर्म, मज़हब, विश्वास बदल रहा है ! उस बदलते हुए इनसान, विश्वास और समाज सबका साथ दो ! अपनी मानसिक ग़ुलामी के हटाने के लिये दिमाग़ के रोशनदान खोल दो, फिर तुम महसूस करोगे सड़क पर पड़े भूखों की कराहट, खेत में बिलखते पेट की रोटी की माँग ! पर एक को उठाकर दूसरे को न गिराओ—सबका धर्म है उठना ! उठो ! इस विश्वास के साथ उठो कि इनसान को उठना है, इसलिये उठना है कि वह पतन की सीमा लाँघ चुका है, वह आत्महत्या करने पर उतारू है आज ! पर क्या तुम जानते हो कि भेड़ियों को उपदेश देने से .ख़ून की तृप्ति नहीं होती, उन्हें .ख़ून की ही चाह होती है ! तो शर्म करो, तुम इनसान हो, भेड़िये नहीं. अपनी सभ्यता और संस्कृति पर आज बहुत गर्व करते हो, तुम जीव दया धर्म के प्रचारक हो, इस भेड़ियेपन से आज़ाद होओ ! शोषण का जामा उतार फेंको ! उठो ! सबको उठने दो ! उठना सब का अधिकार है.

जवानो उठो ! तुम्हारा यह सबसे बड़ा काम है ! तुम तो सृष्टि के खम्बे हो ! उठो ! हर देश की लाज है तुम पर ! विधवाओं की आहों को सुनकर उठो, बेबसी की मारी माँ की चीख़ सुनकर उठो ! उठो ! इन्सानियत को भी शर्मा देने वाली वेश्या कही जाने वाली माँ बहिनों की लाज की ख़ातिर उठो ! उठो ! शोषण की चक्की के पाटों से पिस रहे समाज को आगे बढ़ाकर शोषण मुक्त कर देने का काम तुम पर है, आओ उठो ! घुटने मत टेको ! ईमान मत बेचो ! आओ, ग़ुलामी को स्वीकार मत करो !

اُٹھو ! موٹے موٹے گدّوں پر، روئی کے بچھونوں پر، پنکھوں کی ٹھنڈی ہوا کے نیچے، خس کی ٹٹیوں کی مہکتی ہوا کے نیچے، کرسی توڑ دھن کوبیر ! تھیلیوں کے مالک ! بینک کے رکشک، اٹھو ! اناج کا بھاؤ مہنگا کرنے کے لئے نہیں ہے، اس لئے بھی نہیں کہ سٹے اور پھاٹکے میں غریبوں کی تقدیر کے ساتھ کھلواڑ کرو ! اس لئے بھی نہیں کہ چور بازاری، اور روپیوں کا ڈھیر جمع کرو، پر اس لئے اٹھو کہ تمہیں سماج کی اگوائی کرنی ہے، شوشن کی، خون چوسنے کی کلا سے آزاد ہونا ہے اور سب کو آزاد کرنا ہے ! انسان اور سماج ایک دوسرے کے پورک ہیں ۔ انسان کو آزادی دو، انسان کو روٹی ملنے دو، اسے روٹی بانٹو مت، وہ تو خود روٹی پیدا کرتا ہے ۔ پھر اسے تم کیا روٹی بانٹو گے ؟ اسے مکان دو، کیونکہ وہ خود مکان بناتا ہے ۔ یہ سب ہونے دو، سماج اپنے آپ بڑھے گا ۔ اٹھو ! انسان کی آزادی کے نام پر سماج میں پھیلی ہوئی ان خندقوں اور کھائیوں کو پاٹ دو ! شوشن کے شیش ناگو ! آج پھپھکارنا بند کرو، کمزوروں کو کاٹنا روک دو ! اٹھو ! تمہارا سماج بدل رہا ہے، انسان اور آج کا دھرم، مذہب، وشواس بدل رہا ہے ! اس بدلتے ہوئے انسان، وشواس اور سماج سب کا ساتھ دو ! اپنی مانسک غلامی کے مٹانے کے لئے دماغ کے روشندان کھول دو، پھر تم محسوس کرو گے سڑک پر پڑے بھوکوں کی کراہٹ، کھیت میں بلکھتے پیٹ کی روٹی کی مانگ ! پر ایک کو اٹھا کر دوسرے کو نہ گراؤ — سب کا دھرم ہے اٹھنا ! اٹھو ! اس وشواس کے ساتھ اٹھو کہ انسان کو اٹھنا ہے، اس لئے اٹھنا ہے کہ وہ پتن کی سیما لانگھ چکا ہے، وہ آتم ہتیا کرنے پر اتارو ہے آج ! پر کیا تم جانتے ہو کہ بھیڑیوں کو اپدیش دینے سے خون کی ترپتی نہیں ہوتی، انہیں خون کی ہی چاہ ہوتی ہے ! تو شرم کرو، تم انسان ہو، بھیڑیئے نہیں، اپنی سبھیتا اور سنسکرتی پر آج بہت گرو کرتے ہو، تم جیو دیا دھرم کے پرچارک ہو، اس بھیڑیئے پن سے آزاد ہوؤ ! شوشن کا جامہ اتار پھینکو ! اٹھو ! سب کو اٹھنے دو ! اٹھنا سب کا ادھیکار ہے ۔

جوانو اٹھو ! تمہارا یہ سب سے بڑا کام ہے ! تم تو سرشٹی کے کھمبے ہو ! اٹھو ! ہر دیش کی لاج ہے تم پر ! ودھواؤں کی آہوں کو سن کر اٹھو، بے بسی کی ماری ماں کی چیخ کو سن کر اٹھو ! اٹھو ! انسانیت کو بھی شرما دینے والی ویشیا کہی جانے والی ماں بہنوں کی لاج کی خاطر اٹھو ! اٹھو ! شوشن کی چکی کے پاٹوں سے پس رہے سماج کو آگے بڑھا کر شوشن مکت کر دینے کا کام تم پر ہے، آؤ اٹھو ! گھٹنے مت ٹیکو ! ایمان مت بیچو ! آؤ، غلامی کو سویکار مت کرو !

अब पठान ने उसे बताया कि मेरी गर्दन पर तलवार का एक हाथ मारो." बनिये ने कहा—"अच्छा", और तलवार झपटो करके उसकी गर्दन पर धीरे से मारी. इस पर बिगड़ कर पठान ने कहा—"भई तुम तो बिल्कुल अनाड़ी मालूम होते हो. क़त्ल करना एक ज़रा सी बात है, वह भी तुम नहीं जानते !"

बनिये ने तलवार फेंक दी और कहा—"भई, मैंने तेरी उँगलियों से ख़ून तो बहा दिया. ख़ून बहने से तेरे बाप की बात पूरी हो गई."

उठो !

एक अहिन्दी भाषी भाई

उठो ! क्यों ? इसलिये कि बहुत सो चुके हो ! पर सोना, और उठना तो नित्य का काम है ! नहीं, मैं तुम्हारी चेतना को जगाना चाहता हूँ, मैं तुम्हें झकझोर देना चाहता हूँ ! क्यों ? तुम जागते हुए भी सो रहे हो ! यह नींद नहीं—तन्द्रा है. यह जब आदमी पर छा जाती है, तो आदमी सो जाता है, और फिर समाज भी सो जाता है.

आज उठने की बेला है, बलिदान की घड़ी है. उठो ! पूजा का सामान बाँध लो ! पर सामान नहीं, बाँधना नहीं, पूजा भी नहीं—यह सब पुराना हो चुका ! आज सामान बांधो नहीं, उसको बिखेर दो ! बाँटने की भी आवश्यकता नहीं, सबको पाने दो ! पूजा की थाली को आज मन्दिर में नहीं वहाँ जाने दो, जहाँ भूख की चटपटाहट है, लाचारगी का मातम है, मौत का तांडव नाच है !

उठो ! पूजा करो इन्सान की, वही देवता है, नरनारायन है, वही राज है, वही बनाने वाला है; मजदूरी के संसार का, मेहनत की दुनिया का, गगन-चुम्बी महलों और अटारियों का, बड़े-बड़े धन के बखारों का !

उठो ! कारख़ाने की चिमनी के धुएँ में दम तोड़कर मर जाने वाले मज़दूर उठो ! जेठ की दुपहरी में पसीने में लथपथ भूखे किसानों उठो ! मेहनत की चट्टान से लड़ने वाले भगवान के प्यारे, उठो ! ओह ! तुम सोए ही कब ! हाँ, तुम सोए नहीं, पर बेबसी से हार खाकर पड़ गये, तुम सोए नहीं, चोटों की मार से घायल हो कर तन्द्रामय हो गये !

اب پٹھان نے اسے بتایا کہ "میری گردن پر تلوار کا ایک ہاتھ مارو۔ بنئے نے کہا—"اچھا" اور تلوار جھپٹی کرکے اسکی گردن پر دھیرے سے ماری۔ اس پر بگڑ کر پٹھان نے کہا—"بھئی تم تو بالکل اناڑی معلوم ہوتے ہو۔ قتل کرنا ایک ذرا سی بات ہے، وہ بھی تم نہیں جانتے !"

بنئے نے تلوار پھینک دی اور کہا—"بھائی، میں نے تیری انگلیوں سے خون تو بہا دیا۔ خون بہنے سے تیرے باپ کی بات پوری ہو گئی۔"

اٹھو !

ایک هندی بهاشی بهائی

اٹھو ! کیوں ؟ اس لئے کہ بہت سو چکے ہو ! پر سونا، اور اٹھنا تو نت کا کام ہے ! نہیں، میں تمہاری چیتنا کو جگانا چاہتا ہوں، میں تمہیں جھکجھور دینا چاہتا ہوں ! کیوں ؟ تم جاگتے ہوئے بھی سو رہے ہو ! یہ نیند نہیں—تندرا ہے۔ یہ جب آدمی پر چھا جاتی ہے، تو آدمی سو جاتا ہے، اور پھر سماج بھی سو جاتا ہے۔

آج اٹھنے کی بیلا ہے، بلیدان کی گھڑی ہے، اٹھو ! پوجا کا سامان باندھ لو ! پر سامان نہیں، باندھنا نہیں، پوجا بھی نہیں—یہ سب پرانا ہو چکا ! آج سمان باندھو نہیں، اسکو بکھیر دو ! بانٹنے کی بھی آوشیکتا نہیں، سب کو پانے دو ! پوجا کی تھالی کو آج مندر میں نہیں، وہاں جانے دو، جہاں بھوک کی چھٹپٹاہٹ ہے لاچارگی کا ماتم ہے، موت کا تانڈو ناچ ہے !

اٹھو ! پوجا کرو انسان کی، وہی دیوتا ہے، نرنرائن ہے، وہی راج ہے، وہی بنانے والا ہے، مزدوروں کے سنسار کا، محنت کی دنیا کے، گگن چمبی محلوں اور اٹاریوں کا، بڑے بڑے دھن کے بکھاروں کا !

اٹھو ! کارخانے کی چمنی کے دھوئیں میں دم توڑ کر مر جانے والے مزدور اٹھو ! جیٹھ کی دوپہری میں پسینے میں لتھ پتھ بھوکے کسان اٹھو ! محنت کی چٹان سے لڑنے والے بھگوان کے پیارے اٹھو ! آوہ ! تم سوئے ہی کب ! ہاں تم سوئے نہیں، پر بے بسی سے ہار کھا کر پڑ گئے، تم سوئے نہیں، چوٹوں کی مار سے گھائل ہوکر تندرا مے ہو گئے !

लिये उनके पास पहुँचा और बोला—"लो, आगे मुझे इस से." सेठ जी ने डर के मारे दोनों हाथों से आँखें मूँद लीं और दुहाई देने लगे.

पठान के समझाने-बुझाने पर जब सेठ जी के होश जरा ठिकाने आये, तो पठान ने उनसे माफ़ी माँगी और कहा—"भाई, तू तो मेरी जान का मालिक है. तू अभी मेरी गर्दन काट ले. इतनी दूर से चलकर जिस काम के लिये तू आया है, वह तू पूरा कर."

अब सेठ जी की समझ में आया कि दर असल मामला उल्टा है. सेठ जी सोच में पड़ गये कि क्या जवाब दें ? अगर इनकार करते हैं, तो .खैर नहीं, और मंजूर करते हैं तो क़त्ल का गुनाह होता है. कहने लगे—"अच्छा भाई, कुछ ठहर कर तुम्हें मारूँगा, क्योंकि मैं नहीं जानता, तुम हो कौन ? तुम्हारे घर पर चलकर पहले तुम्हारे भाई से पूछ लूँ, फिर मारूँगा."

भाई का नाम सुनते ही पठान ने कहा—"उस दुश्मन का मेरे सामने नाम न लो. हाँ, अगर घर पर चलकर मारना चाहते हो, तो चलो, वहीं सही."

दोनों घर आये. सेठ जी ने कहा—"भाई, मैं तुझे तब मारूँगा जब कि तू अपने भाई से मेल कर ले, वर्ना सब यही कहेंगे कि मैंने तुझे तेरे भाई के झगड़े के सबब मार डाला.' तेरे भाई से भी लोग यही कहेंगे कि आपसी झगड़े के सबब अपने मुँह बोले धर्म भाई को बुलवाकर उससे सगे भाई को मरवा डाला. जो तू मेरी बात नहीं माने तो फिर तू ही मुझे मार डाल."

हारकर पठान अपने भाई से जाकर मिला. दोनों में सुलह हो गई. आखिर में छोटे भाई ने सेठ से कहा कि "अब तू मुझे मार डाल, ताकि मेरे बाप की बात भी पूरी हो जाय." पर सेठ ने पहले दिन तो यह बहाना बताया कि आज सुलह का दिन है, इसलिये मरना-मारना ठीक नहीं. दूसरे दिन सेठ जी ने कहा—"भाई, मैंने तुझे माफ़ किया. अब तू भी मेरी जान बख्श."

छोटे भाई ने कहा—"यह नहीं हो सकता. तुम मेरी जान बख्श कर मुझे नालायक़ बेटा कहलवाओगे ? यह किसे नहीं मालूम कि तुम्हारे आते ही मैं तुम्हें मारने को दौड़ा था ? यह हो नहीं सकता कि तुम मेरा .खून न करो. मैं अपने बाप की बात को किसी तरह टालने न दूँगा."

वह किसी तरह भी न माना और खंजर बनिये के हाथ में देकर, गर्दन झुकाकर आगे बढ़ा. बनिये ने उसकी उँगली में खंजर की नोक लगाई. वह बिगड़कर बोला—"यह तुम क्या कर रहे हो ?" बनिये ने हँसकर कहा—तुम्हें क़त्ल करता हूँ." उसने कहा—"तुम भी बड़े अजीब आदमी हो." इस पर बनिया बोला—फिर मुझे बताओ, मैं तो यह सब क़त्ल-वत्ल के झगड़े जानता नहीं."

لئے ان کے پاس پہنچا اور بولا—"لو' مارو مجھے اس سے." سیٹھ جی نے ڈر کے مارے دونوں ہاتھوں سے آنکھیں موند لیں اور دہائی دینے لگے۔

پٹھان کے سمجھانے-بجھانے پر جب سیٹھ جی کے ہوش ذرا ٹھکانے آئے' تو پٹھان نے ان سے معافی مانگی اور کہا—"بھائی' تو تو میری جان کا مالک ہے۔ تو ابھی میری گردن کاٹ لے۔ اتنی دور سے چل کر جس کام کے لیئے تو آیا ہے' وہ تو پورا کر۔"

اب سیٹھ جی کی سمجھ میں آیا کہ دراصل معاملہ الٹا ہے۔ سیٹھ جی سوچ میں پڑ گئے کہ کیا جواب دیں ؟ اگر انکار کرتے ہیں' تو خیر نہیں' اور منظور کرتے ہیں' تو قتل کا گناہ ہوتا ہے۔ کہنے لگے—"اچھا بھائی' کچھ ٹھہر کر تمہیں مارونگا' کیونکہ میں نہیں جانتا' تم ہو کون ؟ تمہارے گھر پر چل کر پہلے تمہارے بھائی سے پوچھ لوں' پھر مارونگا۔"

بھائی کا نام سنتے ہی پٹھان نے کہا—"اس دشمن کا میرے سامنے نام نہ لو۔ ہاں' اگر گھر پر چل کر مارنا چاہتے ہو' تو چلو' وہیں سہی۔"

دونوں گھر آئے۔ سیٹھ جی نے کہا—"بھائی' میں تجھے تب مارونگا جب کہ تو اپنے بھائی سے میل کر لے' ورنہ سب یہی کہینگے کہ میں نے تجھے تیرے بھائی کے جھگڑے کے سبب مار ڈالا۔ تیرے بھائی سے بھی لوگ یہی کہینگے کہ آپسی جھگڑے کے سبب اپنے منہ-بولے دھرم-بھائی کو بلوا کر اس سے سگے بھائی کو مروا ڈالا۔ جو تو میری بات نہیں مانے تو پھر تو ہی مجھے مار ڈال۔"

ہار کر پٹھان اپنے بھائی سے جا کر ملا۔ دونوں میں صلح ہو گئی۔ آخر میں چھوٹے بھائی نے سیٹھ سے کہا کہ اب تو مجھے مار ڈال' تاکہ میرے باپ کی بات بھی پوری ہو جائے۔" پر سیٹھ نے پہلے دن تو یہ بہانہ بتایا کہ آج صلح کا دن ہے' اس لئے مرنا مارنا ٹھیک نہیں۔ دوسرے دن سیٹھ جی نے کہا—"بھائی' میں نے تجھے معاف کیا۔ اب تو بھی میری جان بخش۔"

چھوٹے بھائی نے کہا—"یہ نہیں ہو سکتا۔ تم میری جان بخش کر مجھے نالائق بیٹا کہلواؤگے ؟ یہ کسے نہیں معلوم کہ تمہارے آتے ہی میں تمہیں مارنے کو دوڑا تھا ؟ یہ ہو نہیں سکتا کہ تم میرا خون نہ کرو۔ میں اپنے باپ کی بات کو کسی طرح ٹالنے نہ دونگا۔"

وہ کسی طرح بھی نہیں مانا اور خنجر بنیے کے ہاتھ میں دے کر' گردن جھکا کر آگے بڑھا۔ بنیے نے اس کی انگلی میں خنجر کی نوک لگائی۔ وہ بگڑ کر بولا—"یہ تم کیا کر رہے ہو ؟" بنیے نے ہنس کر کہا—"نہیں قتل کرتا ہوں۔" اس نے کہا—"تم بھی بڑے عجیب آدمی ہو۔" اس پر بنیا بولا—"پھر مجھے بتاؤ' میں تو یہ سب قتل-وتل کے جھگڑے جانتا نہیں۔"

पठान बोला—"भाई, और तो कोई बात नहीं, सिवाय इसके कि तुम्हें उसके हमले का ख़तरा है."

सेठ जी ने कहा—"हाँ, और कोई बात नहीं."

पठान बोला—"फिर तुम बेधड़क मेरे साथ चलो. किसी बात की फ़िक्र मत करो. ज़रा भी न घबराओ, वह अगर मेरा एक मेहमान मार डाले तो मैं उसके दो मेहमान मार डालूँगा. तुम चलो, देखें अगर वह तुम्हारा बाल भी बीका करे."

उसने सेठ जी को लाख समझाया कि उन्हें अपने बारे में डरने की क़तई ज़रूरत नहीं, पर उनकी समझ में कुछ नहीं आया. पठान ने उनकी बड़ी मिन्नत .ख़ुशामद की, मगर सब बेकार. सेठ जी वहाँ से दूर जाकर ऐसी जगह ठहरे कि उसके ज़ालिम भाई को उसका पता न चले. लोटा, डोर और चादर भी गँवाई, पर जान बची लाखों पाये.

पठान के छोटे भाई ने लोटा-डोर के साथ एक चादर भी पाई, जिसमें एक गाँठ लगी थी. उसने उसे खोला, तो उसमें से उसके बाप का ख़त निकला, जिसमें सेठ जी को लिखा था कि आप आकर मेरे छोटे लड़के को मार अपने भाई के .ख़ून का बदला लें. था वह सपूत. ख़त पढ़कर बहुत सोच विचार में पड़ गया. आख़िर तै किया कि वह अपने बाप की बात पूरी करके ही दम लेगा. उसने सोचा, सेठ दर असल मुझे मार ही डालने को आया था. लेकिन वह तो मेरे बाप का बुलाया हुआ आया था और मैंने उल्टा उसे ही मार डाला होता ! बड़ा ग़ज़ब होता. .ख़ैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है. सेठ जी को तलाश कर फ़ौरन उनके हाथों क़त्ल हो जाना चाहिये. वह तो बदला लेने आवें और मैं जान चुराऊँ, यह पठान के लड़के को शोभा नहीं देता.

पठान सेठ जी का पता लगाने में रात भर हैरान होता रहा. सुबह होते-होते वह ठीक जगह पर पहुँच गया. सेठ जी उस वक़्त जंगल गये थे. वह भी उधर ही गया. सेठ जी उधर से लौट ही रहे थे कि सामने पठान का भाई आता हुआ दिखाई दिया. उसे देखते ही सेठ जी सरपट भागे तो वह भी उनके पीछे ख़ंजर हाथ में लिये यह कहता हुआ भागा कि "प्यारे भाई, तुझे क़सम है, भाग मत, मुझे मार डाल और मेरे बाप की बात पूरी कर." मगर जनाब, वहाँ होश किसे, कौन सुने और कौन समझे ? पठान हाथ में ख़ंजर लिये चीख़ता ही रहा. उसने सोचा, वे निकल न जायें, वर्ना उसके बाप की बात अधूरी रह जायगी. वह और तेज़ी से उनके पीछे भागने लगा. न वह खाई देखता और न ख़न्दक़. भागते-भागते सेठ जी के पैर थक गये थे और साँस फूल रही थी. आख़िर बेचारे गिर ही तो पड़े. उनके गिरते ही पठान ख़ंजर हाथ में

پٹھان بولا—"بھائی، اور تو کوئی بات نہیں، سوائے اس کے کہ تمہیں اس کے حملے کا خطرہ ہے۔"

سیٹھ جی نے کہا—"ہاں، اور کوئی بات نہیں۔"

پٹھان بولا—"پھر تم بےدھڑک میرے ساتھ چلو۔ کسی بات کی فکر مت کرو۔ ذرا بھی نہ گھبراؤ، وہ اگر میرا ایک مہمان مار ڈالے تو میں اس کے دو مہمان مار ڈالونگا۔ تم چلو، دیکھیں اگر وہ تمہارا بال بھی بیکا کرے۔"

اس نے سیٹھ جی کو لاکھ سمجھایا کہ انہیں اپنے بارے میں ڈرنے کی قطعی ضرورت نہیں، پر ان کی سمجھ میں کچھ نہیں آیا۔ پٹھان نے ان کی بڑی منت خوشامد کی، مگر سب بیکار۔ سیٹھ جی وہاں سے دور جاکر ایسی جگہ ٹھہرے کہ اس کے ظالم بھائی کو اس کا پتہ نہ چلے۔ لوٹا ڈور اور چادر بھی گنوائی، پر جان بچی لاکھوں پائے۔

پٹھان کے چھوٹے بھائی نے لوٹا ڈور کے ساتھ ایک چادر بھی پائی، جس میں ایک گانٹھ لگی تھی۔ اس نے اسے کھولا، تو اس میں سے اس کے باپ کا خط نکلا، جس میں سیٹھ جی کو لکھا تھا کہ آپ آکر میرے چھوٹے لڑکے کو مار اپنے بھائی کے خون کا بدلہ لیں۔ تھا وہ سپوت۔ خط پڑھ کر بہت سوچ وچار میں پڑ گیا۔ آخر طے کیا کہ وہ اپنے باپ کی بات پوری کر کے ہی دم لے گا۔ اس نے سوچا، سیٹھ دراصل مجھے مار ہی ڈالنے کو آیا تھا۔ لیکن وہ تو میرے باپ کا بلایا ہوا آیا تھا، اور میں نے الٹا اسے ہی مار ڈالا ہوتا! بڑا غضب ہوتا۔ خیر، اب بھی کچھ نہیں بگڑا ہے۔ سیٹھ جی کو تلاش کر فوراً ان کے ہاتھوں قتل ہو جانا چاہئے۔ وہ تو بدلہ لینے آویں اور میں جان چراؤں، یہ پٹھان کے لڑکے کو شوبھا نہیں دیتا۔

پٹھان سیٹھ جی کا پتہ لگانے میں رات بھر حیران ہوتا رہا۔ صبح ہوتے ہوتے وہ ٹھیک جگہ پر پہنچ گیا۔ سیٹھ جی اس وقت جنگل گئے تھے۔ وہ بھی ادھر ہی گیا۔ سیٹھ جی ادھر سے لوٹ ہی رہے تھے کہ سامنے پٹھان کا بھائی آتا ہوا دکھائی دیا۔ اسے دیکھتے ہی سیٹھ جی سرپٹ بھاگے تو وہ بھی ان کے پیچھے خنجر ہاتھ میں لئے یہ کہتا ہوا بھاگا کہ "پیارے بھائی، تجھے قسم ہے، بھاگ مت، مجھے مار ڈال اور میرے باپ کی بات پوری کر۔" مگر جناب، وہاں ہوش کسے، کون سنے اور کون سمجھے؟ پٹھان ہاتھ میں خنجر لئے چیختا ہی رہا۔ اس نے سوچا، وے نکل نہ جائیں، ورنہ اس کے باپ کی بات ادھوری رہ جائیگی۔ وہ اور تیزی سے ان کے پیچھے بھاگنے لگا۔ نہ وہ کھائی دیکھتا اور نہ خندق۔ بھاگتے بھاگتے سیٹھ جی کے پیر تھک گئے تھے اور سانس پھول رہی تھی۔ آخر بیچارے گر ہی تو پڑے۔ ان کے گرتے ہی پٹھان خنجر ہاتھ میں

इधर बदकिस्मती से सेठजी पर उनके गाँव में आफ़त आई. हाफ़िज़ रहमत खाँ बड़ा अच्छा हाकिम था. रिआया उससे निहायत खुश थी. मजाल नहीं जो रिआया पर कोई जुल्म हो. पर नवाबी जो हुई तो सरकारी अफ़सरों ने चुन-चुनकर रुपये वाले सेठ-साहूकारों को डरा-धमका कर रुपया ऐंठना शुरू किया और उन्हें इतना परेशान किया कि वे देश छोड़-छोड़कर पठानों की हकूमत में बसने लगे. मगर पठानों के पास अब रह ही क्या गया था ? सेठजी ने सोचा —चलो, अब उस शहर में चलकर रहें जहाँ हमारा धर्म-भाई पठान रहता है. चादर और लोटा-डोर कंधे पर रखकर सेठजी चल खड़े हुए. पठान का नाम तो मालूम था ही, पता मालूम न था, सो सोचा, किसी से पूछकर मालूम कर लेंगे.

बाज़ार में जा ही रहे थे कि अचानक वह पठान धर्म-भाई मिल गया. दोनों बड़े प्रेम से मिले, पठान बोला—"चलो हमारे घर चल कर ठहरो." उन्होंने कहा—"तुम को बेकार तकलीफ़ होगी !" पर पठान न माना और ले आकर अपने घर में टिकाया और ख़ुद उनके खाने-पीने का सामान लेने चला गया.

सेठ जी तो लम्बी सफ़र के मारे थक गये थे और दूसरे ठहरे बिल्कुल कमज़ोर. सामने आँगन में कुँआ जो दिखाई पड़ा तो सोचा—चलो हाथ-मुँह धो लें. बस लोटा-डोर लेकर चल पड़े उधर ही. उनकी समझ में न आया कि बीच आँगन में यह रस्सी कैसे तनी है. कुँए पर पहुँचे और लगे पानी निकाल कर हाथ-मुँह धोने.

पठान का भाई छत पर बैठा था. उसने आव देखा न ताव, खंजर लेकर नीचे उतरा और सेठ जी पर झपटा. सेठ जी ने देखा कि एक खूनी आदमी एक खंजर हाथ में लिये उन्हें मारने आ रहा है, तो लोटा डोर वहीं छोड़ सर पर पैर रखकर भागे. पठान भी बड़ी तेज़ी से दौड़ा उनके पीछे पर वे साफ़ निकल गये. बदहवास वे भागे जा रहे थे कि सामने से पठान का बड़ा भाई—उनका दोस्त—आता हुआ मिल गया. वह उनके लिये खाने-पीने का सामान लेकर लौट रहा था. सेठ जी को इस बुरी तरह भागते और परेशान देखा तो बोला—"अरे भाई, कहाँ भागे जा रहे हो आख़िर ? ख़ैर तो है ? माजरा क्या है ?"

"ख़ैर ? कैसी ख़ैर ? यहाँ तो जान पर बन आई है"—सेठ जी बोले. उन्होंने सारी घटना कह सुनाई और भागने पर उतर आए.

पठान ने कहा—अरे, तुम उधर गये ही क्यों ? तुम्हें रस्सी नहीं लांघनी चाहिये थी."

सेठ जी ने कहा—"जो कुछ हुआ, सो हुआ, मगर अब मैं वहाँ नहीं आने का."

اِدھر بدقسمتی سے سیٹھ جی پر ان کے گاؤں میں آفت آئی ۔ حافظ رحمت خاں بڑا اچھا حاکم تھا ۔ رعایا اس سے نہایت خوش تھی ۔ مجال نہیں جو رعایا پر کوئی بھی ظلم ہو ۔ پر نوابی جو ہوئی تو سرکاری افسروں نے چن چن کر روپئے والے سیٹھ ساہوکاروں کو ڈرا دھمکا کر روپیہ اینٹھنا شروع کیا اور اُنہیں اِتنا پریشان کیا کہ وے دیش چھوڑ چھوڑ کر پٹھانوں کی حکومت میں بسنے لگے ۔ مگر پٹھانوں کے پاس اب رہ ہی کیا گیا تھا ؟ سیٹھ جی نے سوچا—چلو، اب اس شہر میں چل کر رہیں جہاں ہمارا دھرم بھائی پٹھان رہتا ہے ۔ چادر اور لوٹا ڈور کندھے پر رکھ کر سیٹھ جی چل کھڑے ہوئے ۔ پٹھان کا نام تو معلوم تھا ہی، پتہ معلوم نہ تھا، سو سوچا، کسی سے پوچھ کر معلوم کرلینگے ۔

بازار میں جا ہی رہے تھے کہ اچانک وہ پٹھان دھرم بھائی مل گیا ۔ دونوں بڑے پریم سے ملے ۔ پٹھان بولا—"چلو، ہمارے گھر چل کر ٹھہرو ۔" انہوں نے کہا—"تم کو بیکار تکلیف ہوگی !" پر پٹھان نہ مانا اور سیٹھ جی کو لے جاکر اپنے گھر میں ٹکایا اور خود اُن کے کھانے پینے کا سامان لینے چلا گیا ۔

سیٹھ جی ایک تو لمبے سفر کے مارے تھک گئے تھے اور دوسرے ٹھہرے بالکل کمزور ۔ سامنے آنگن میں کنواں جو دکھائی پڑا تو سوچا—چلو، ہاتھ منہ دھو لیں ۔ بس، لوٹا ڈور لے کر چل پڑے اُدھر ہی ۔ اُن کی سمجھ میں نہ آیا کہ بیچ آنگن میں یہ رسی کیسی تنی ہے ۔ رسی باندھ کر وے کنوئیں پر پہنچے اور لگے پانی نکال کر ہاتھ منہ دھونے ۔

پٹھان کا بھائی سامنے چھت پر بیٹھا تھا ۔ اُس نے آؤ دیکھا نہ تاؤ، خنجر لے کر نیچے اترا اور سیٹھ جی پر جھپٹا ۔ سیٹھ جی نے دیکھا کہ ایک خونی آدمی ایک خنجر ہاتھ میں لئے انہیں مارنے آ رہا ہے، تو لوٹا ڈور وہیں چھوڑ سر پر پیر رکھ کر بھاگے ۔ پٹھان بھی بڑی تیزی سے دوڑا ان کے پیچھے، پر وے صاف نکل گئے ۔ بدحواس وے بھاگے جا رہے تھے کہ سامنے پٹھان کا بڑا بھائی—اُن کا دوست—آتا ہوا مل گیا ۔ وہ ان کے لئے کھانے پینے کا سامان لیکر لوٹ رہا تھا ۔ سیٹھ جی کو اِس بری طرح بھاگتے اور پریشان دیکھا، تو بولا—"ارے بھائی کہاں بھاگے جا رہے ہو آخر ؟ خیر تو ہے ؟ ماجرا کیا ہے ؟"

"خیر ؟ کیسی خیر ؟ یہاں تو جان پر بن آئی ہے"—سیٹھ جی بولے ۔ اُنہوں نے ساری گھٹنا کہہ سنائی اور بھاگنے پر اُتر آئے ۔

پٹھان نے کہا—"ارے، تم ادھر گئے ہی کیوں ؟ تمہیں رسی نہیں لانگھنی چاہئے تھی ۔"

سیٹھ جی نے کہا—"جو کچھ ہوا، سو ہوا، مگر اب میں وہاں نہیں جانے کا ۔"

नहीं." उसी रात पठान ने जाकर चुपचाप बनिये के भाई को मार डाला. लौटकर पठान ने सेठजी को यह ख़ुशख़बरी सुनाई, फिर कहा—"अब उन क़र्ज़दारों का भी नाम बताओ, जिन्होंने उसके बरग़लाने से तुम्हारा रुपया मार लिया है."

"हाय भाई! हाय" …… कहते हुए बनिया पछाड़ खाकर गिरा और गिड़गिड़ा कर बोला "यह तुमने क्या किया?" पठान घबराया कि माजरा क्या है? उसने कहा—"भाई बात क्या है? मैंने अगर तुम्हारे भाई को मारकर बुरा किया, तो तुम मेरे भाई को मार डालो. चलो, क़िस्सा ख़त्म. अब रोने-धोने से क्या हासिल? यह कहकर उसने सेठजी का हाथ पकड़ा और कहा कि "चलो मेरे घर अपने भाई के ख़ून का बदला लेने."

सेठजी ने सोचा, ग़नीमत यही है कि इसको रुख़सत किया जाय. उन्होंने उसे कुछ रुपया नक़द देकर रुख़सत किया और सोचा कि चलो, आफ़त कटी, पठान ने चलते-चलते कहा कि, "मैं अपने बाप और भाई से मिलकर बदला लेने के लिये तुमको ख़बर दूँगा."

पठान को घर छोड़े साल भर हो गया था. इसलिये उसके बाप ने समझा कि शायद मर-खप गया होगा. उसे फिर घर लौटा देखकर बुड्ढे को ख़ुशी हुई. पठान ने बनिये के यहाँ का सारा क़िस्सा अपने बाप से कह सुनाया. उसके बाप ने कहा—"पठान की बात नहीं जाना चाहिये." और दोनों बदले के लिये राज़ी हो गये. ख़ुद उसके भाई ने कहा कि मुझे ख़ुशी से जान देना मंजूर है सेठजी आकर ख़ुशी से अपने भाई के बदले में मुझे मार डालें."

पठान के बाप ने एक चिट्ठी सेठजी को आकर बदला लेने के लिये लिखा. उसमें अपने लड़के के साथ की गई उसकी मेहरबानी का शुक्रिया अदा किया और लिखा कि दूसरा बेटा हाज़िर है, जब ख़ुशी हो, आकर उसे अपने भाई के ख़ून के बदले में मार डालो.

बाप-बेटों ने महीनों इन्तज़ार किया, मगर न तो सेठजी आए और न उनका कोई जवाब ही आया, महीनों तक उन्होंने अपने कई काम रोक रखे और यह मान लिया कि छोटा बेटा अब मरने वाला है, लेकिन सेठजी की कुछ ख़बर न आई. आख़िर में सब नाउम्मीद हो गये.

थोड़े दिनों में पठान भाइयों का बाप मर गया. जायदाद की बाट पर दोनों भाइयों में बड़ा झगड़ा हुआ. घर का भी बँटवारा हो गया. आधा छोटे भाई को मिला और आधा बड़े को. बीच आँगन में चारपाई की अदवान खोलकर इस सिरे से उस सिरे तक ज़मीन पर खूँटी गाड़ कर बाँध दी गई. यही घर के दो भागों की हद बनी थी. 'अगर एक दूसरे की सरहद में क़दम रखते, तो बस जंग!

نہیں ." اُسی رات پٹھان نے جاکر چپ چاپ بنیے کے بھائی کو مار ڈالا . لوٹ کر پٹھان نے سیٹھ جی کو یہ خوشخبری سنائی' پھر کہا—"اب اُن قرضداروں کا بھی نام بتاؤ جنہوں نے اس کے ورغلانے سے تمہارا روپیہ مار لیا ہے ."

"ہائے بھائی ! ہائے"……کہتے ہوئے بنیا پچھاڑ کھا کر گرا اور گڑگڑا کر بولا کہ "یہ تم نے کیا کیا ؟ پٹھان گھبرایا کہ ماجرا کیا ہے ؟ اس نے کہا—"بھئی' بات کیا ہے؟ میں نے اگر تمہارے بھائی کو مار کر برا کیا' تو تم میرے بھائی کو مار ڈالو . چلو' قصہ ختم . اب رونے دھونے سے کیا حاصل ؟" یہ کہہ کر اس نے سیٹھ جی کا ہاتھ پکڑا اور کہا کہ "چلو میرے گھر اپنے بھائی کے خون کا بدلا لینے ."

سیٹھ جی نے سوچا' غنیمت یہی ہے کہ اُس کو رخصت کیا جائے . انہوں نے اُسے کچھ روپیہ نقد دے کر رخصت کیا اور سوچا کہ چلو' آفت ٹلی . پٹھان نے چلتے چلتے کہا کہ "میں اپنے باپ اور بھائی سے ملکر بدلا لینے کے لئے تم کو خبر دونگا ."

پٹھان کو گھر چھوڑے سال بھر ہو گیا تھا . اِس لئے اس کے باپ نے سمجھا کہ شاید مر کھپ گیا ہوگا . اُسے پھر گھر لوٹا دیکھ کر بڈھے کو خوشی ہوئی . پٹھان نے بنیئے کے یہاں کا سارا قصہ اپنے باپ سے کہہ سنایا . اس کے باپ نے کہا—"پٹھان کی بات نہیں جانی چاہیئے ." اور دونوں بدلے کے لئے راضی ہو گئے . خود اُس کے بھائی نے کہا کہ "مجھے خوشی سے جان دینا منظور ہے . سیٹھ جی آکر خوشی سے اپنے بھائی کے بدلے میں مجھے مار ڈالیں ."

پٹھان کے باپ نے ایک چٹھی سیٹھ جی کو آکر بدلہ لینے کے لئے لکھا . اس میں اپنے لڑکے کے ساتھ کی گئی اس کی مہربانی کا شکریہ ادا کیا اور لکھا کہ دوسرا بیٹا حاضر ہے' جب خوشی ہو' آکر اسے اپنے بھائی کے خون کے بدلے میں مار ڈالو .

باپ بیٹوں نے مہینوں انتظار کیا' مگر نہ تو سیٹھ جی آئے اور نہ ان کا کوئی جواب ہی آیا . مہینوں تک انہوں نے اپنے کئی کام روک رکھے اور یہ مان لیا کہ چھوٹا بیٹا اب مرنے والا ہے لیکن سیٹھ جی کی کچھ خبر نہ آئی . آخر کو سب ناامید ہو گئے .

تھوڑے دن میں پٹھان بھائیوں کا باپ مر گیا . جائیداد کی بانٹ پر دونوں بھائیوں میں بڑا جھگڑا ہوا . گھر کا بھی بٹوارا ہو گیا . آدھا چھوٹے بھائی کو ملا اور آدھا بڑے کو . بیچ آنگن میں چارپائی کی ادوائن کھول کر اِس سرے سے اُس سرے تک زمین پر کھونٹی گاڑ کر باندھ دی گئی . یہی گھر کے دو بھاگوں کی حد بنی تھی . "اگر ایک دوسرے کی سرحد میں قدم رکھ دے' تو بس جنگ !

खात्मा हो जाये कि उधर से एक बनिया आ निकला. बनिया टट्टू पर कहीं से अनाज बेचकर आ रहा था. उसने दूर से देखा और क़रीब आते हुए डरा; मगर आखिरकार आया, तो गीदड़ ज़रा हट गये. उसने देखा कि ख़ाँ साहब के पैर गीदड़ों ने नोच डाले हैं. ख़ाँ साहब ने बनिये से कहा—"भाई या तो तुम मुझे मार डालो, नहीं तो इन गीदड़ों से बचाओ." पहले तो वह बहुत डरा, मगर फिर उससे न रहा गया. उसने पठान को अपने टट्टू पर अनाज की बोरियों में छिपाकर लाद लिया, ताकि कोई देख न सके. सोचा, कहीं लेजाकर छोड़ दूँगा, मगर यह डर था कि कहीं कोई देख न ले, क्योंकि नवाब और अंग्रेज़ों के आदमी रुहेलों और उनके साथियों का बराबर पीछा कर रहे थे. जंगल में छोड़ने से ख़ाँ साहब की जान का ख़तरा था और बस्ती में ले जाने ने ख़ुद उसको मुश्किल में फँस जाने का ख़तरा था. आदमी वह रहमदिल था. सोचा घर ही ले चलो. और छिपाकर ख़ाँ साहब को अपने घर ले आया.

बनिये की बीबी ख़ाँ साहब को देखकर घबराई कि यह क्या नई आफ़त घर ले आये. लेकिन बनिये ने कहा कि इसकी सेवा करो और इसे छिपाकर रखो. पठान को घर के अन्दर एक कोठरी में छिपाकर रखा और चुपके से उसकी मरहम पट्टी और इलाज कराया गया. महीनों में जाकर कहीं पठान अच्छा हुआ. पठान ने जब चलने की बात कही, तो बनिये ने कहा, "अभी तुम कमज़ोर हो, ज़रा दूध-घी खाकर मोटे-ताज़े हो लो, तब जाना." पठान मान गया और वहीं रहकर ख़ूब दूध-घी खाने लगा.

(2)

पठान को इस बात का बड़ा ख़याल था कि बनिये ने उसकी जान बचाई है. उसने बनिये को अपना धर्म-भाई बना लिया. वह दिन-रात इसी सोच में रहता कि बनिये की भलमनसाहत का क्या बदला चुकाऊँ? उसके क़र्ज़ से कैसे छुटकारा पाऊँ? पठान अच्छा हो चुका था और जाने ही वाला था कि एक अजीब मामला पेश हुआ. बनिये का एक भाई था, जिससे उसकी लड़ाई थी, इसलिये कि वे एक दूसरे का ग्राहक तोड़ते और बिगाड़ते रहते थे. एक रोज़ बनिया बड़ा उदास था. उसे उदास देखकर पठान ने पूछा—"सेठजी, मामला क्या है? आप ग़मगीन क्यों हैं?" उसने बताया कि "मेरे अपने भाई से दुश्मनी है. उसने जीना मुश्किल कर रखा है. सारे क़र्ज़दारों को बरग़ला दिया है कि बक़ीया क़र्ज़ मत अदा करो. मेरे ख़िलाफ़ उसने पार्टी बना ली है. कई बरसों से तंग तो करता ही था, पर अब तो मुझे बिल्कुल तबाह करने पर तुला है और समझ में नहीं आता कि अभी क्या-क्या करेगा?" पठान ने बनिये को दिलासा दिया और कहा, "घबराओ

خاتمہ ہو جائے کہ اُدھر سے ایک بنیا نکلا ۔ بنیا ٹٹو پر کہیں سے اناج بیچ کر آرہا تھا ۔ اُس نے دور سے دیکھا اور قریب آتے ہوئے ڈرا؛ مگر آخرکار آیا، تو گیدڑ ذرا ہٹ گئے ۔ اُس نے دیکھا کہ خاں صاحب کے پیر گیدڑوں نے نوچ ڈالے ہیں ۔ خاں صاحب نے بنیے سے کہا—"بھائی یا تو تم مجھے مار ڈالو، نہیں تو اِن گیدڑوں سے بچاؤ ۔" پہلے تو وہ بہت ڈرا، مگر پھر اُس سے نہ رہا گیا ۔ اُس نے پٹھان کو اپنے ٹٹو پر اناج کی بوریوں میں چھپا کر لاد لیا، تاکہ کوئی دیکھ نہ سکے ۔ سوچا، کہیں لے جاکر چھوڑ دونگا، مگر یہ بھی ڈر تھا کہ کہیں کوئی دیکھ نہ لے، کیونکہ نواب اور انگریزوں کے آدمی روہیلوں اور اُن کے ساتھیوں کا برابر پیچھا کر رہے تھے ۔ جنگل میں چھوڑنے سے خاں صاحب کی جان کا خطرہ تھا اور بستی میں لے جانے میں خود اُس کو مشکل میں پھنس جانے کا خطرہ تھا ۔ آدمی وہ رحم دل تھا ۔ سوچا گھر ہی لے چلو ۔ اور چھپا کر خاں صاحب کو اپنے گھر لے آیا ۔

بنیے کی بی بی خاں صاحب کو دیکھ کر گھبرائی کہ یہ کیا نئی آفت گھر لے آئے ۔ لیکن بنیے نے کہا کہ اِس کی سیوا کرو اور اِسے چھپا کر رکھو ۔ پٹھان کو گھر کے اندر ایک کوٹھری میں چھپا کر رکھا اور چپکے سے اُن کی مرہم پٹی اور علاج کرایا گیا ۔ مہینوں میں جاکر کہیں پٹھان اچھا ہوا ۔ پٹھان نے جب چلنے کی بات کہی، تو بنیے نے کہا، "ابھی تم کمزور ہو، ذرا دودھ گھی کھا کر موٹے تازے ہو لو، تب جانا ۔" پٹھان مان گیا اور وہیں رہ کر خوب دودھ گھی کھانے لگا ۔

(2)

پٹھان کو اِس بات کا بڑا خیال تھا کہ بنیئے نے اُس کی جان بچائی ہے ۔ اُس نے بنیے کو اپنا دھرم بھائی بنا لیا ۔ وہ دن رات اِسی سوچ میں رہتا کہ بنیے کی بھلمنساہت کا کیا بدلہ چکاؤں ۔ اس کے قرض سے کیسے چھٹکارا پاؤں؟ پٹھان اچھا ہو چکا تھا اور جانے ہی والا تھا کہ ایک عجیب معاملہ پیش ہوا ۔ بنیے کا ایک بھائی تھا، جس سے اس کی لڑائی تھی، اِس لئے کہ وے ایک دوسرے کے گراہک توڑتے اور بگاڑتے رہتے تھے ۔ ایک روز بنیا بڑا اُداس تھا ۔ اسے اُداس دیکھ کر پٹھان نے پوچھا —"سیٹھ جی، معاملہ کیا ہے؟ آپ غمگین کیوں ہیں؟" اس نے بتایا کہ "میرے اپنے بھائی سے دشمنی ہے ۔ اُس نے جینا مشکل کر رکھا ہے ۔ سارے قرضداروں کو ورغلا دیا ہے کہ بقیہ قرض مت ادا کرو ۔ میرے خلاف اس نے پوری پارٹی بنا لی ہے ۔ کئی برسوں سے تنگ تو کرتا تھا، پر اب تو مجھے بالکل تباہ کرنے پر تلا ہے اور سمجھ میں نہیں آتا کہ ابھی کیا کیا کرے گا؟" پٹھان نے بنیے کو دلاسہ دیا اور کہا، "گھبراؤ

खून का बदला !

मिरजा अज़ीमबेग चुग़ताई

सन 1761 की पानीपत की लड़ाई के बाद यू० पी० में रुहेलों का ज़ोर हुआ. वे 'गंगोत्री से गंग' इलाक़े के मालिक हो गये. रुहेलों की हकूमत सरदारों के हाथ में थी, जिनका मुखिया था हाफ़िज़ रहमत खाँ. हाफ़िज़ रहमत खाँ एक जगजू और अच्छे हाकिम थे. वे अपने हिन्दू वज़ीर की मदद से मस्जिद में बैठकर हकूमत का सारा काम करते थे. रिआया भी उनसे खुश थी.

जब अवध के नवाब और रुहेलों में अनबन हो गई, तब रहमत खाँ ने अवध के नवाब को जंग के लिये ललकारा और बुरी तरह हराया. तब नवाब ने अँग्रेज़ों की मदद ली. अंग्रेज़ों और रहमत में वैसे तो सुलह थी; मगर अंग्रेज़ों ने रुहेलों का बढ़ता हुआ ज़ोर तोड़ने का यह अच्छा मौक़ा देख सुलह को बालाए ताक़ रख दिया. उन्हें डर था कि अकेले अवध के नवाब को .फुरसत के वक्त यह आसानी से भून खायेंगे. लिहाज़ा अवध के नवाब से रुपया लेकर वे उसकी तरफ़ से मगर अपने मतलब के लिये, लड़ने आ गये.

अवध और अंग्रेज़ों की फ़ौजें रुहेलों की तरफ़ बढ़ीं. उधर से हाफ़िज़ रहमत भी अपने रुहेला सरदारों को लेकर बढ़ा. दुजोड़ा के मैदान में दोनों तरफ़ की फौज़ों में घमासान जंग हुई. उस जंग में रुहेले बड़ी बहादुरी से लड़े और जीत गये; मगर दुश्मन का पीछा करने के बदले वे उनके कैम्प लूटने लगे, और रहमत खाँ उन्हें रोकते ही रह गये. अंग्रेजी .फौज, जो खेतों में छुप गई थी, लौटी और जमा होकर .फौरन रुहेलों पर टूट पड़ी. पाँसा उलट पड़ा. जीत के बदले रुहेलों की हार हुई. हाफ़िज रहमत खाँ मैदान से न हटे और बड़ी बहादुरी से लड़कर कट मरे.

रुहेलों की तरफ़ से लड़ने वालों में दो पठान भाई भी आये थे, जिनमें से एक तो लड़ते-लड़ते मारा गया और दूसरा घायल होकर मैदान में अधमरा पड़ा था. असल में यह तीन भाई थे. इनका बाप ज़िन्दा था. उसने एक भाई को रोककर और दो भाइयों को लड़ने के लिये भेज दिया था.

रात का वक्त था. गीदड़ और कुत्ते मैदान में लाशों को खा रहे थे और घायल .खाँ साहब पड़े-पड़े अपने को गीदड़ों से बचा रहे थे. मगर गीदड़ बड़े चालाक थे. उन्हें नोच-नोचकर भागते थे. इस तरह सुबह हो गई और गीदड़ बदस्तूर खाँ साहब को नोचते रहे. क़रीब था कि उनका

خون کا بدلہ !

مرزا عظیم بیگ چغتائی

سن 1761 کی پانی پت کی لڑائی کے بعد یو. پی. میں روھیلوں کا زور ہوا ۔ وے 'گنگوتری سے گنگ' علاقے کے مالک ہو گئے ۔ روھیلوں کی حکومت سرداروں کے ھاتھ میں تھی' جن کا مکھیا تھا حافظ رحمت خاں ۔ حافظ رحمت خاں ایک جنگجو اور اچھے حاکم تھے ۔ وے اپنے ھندو وزیر کی مدد سے مسجد میں بیٹھ کر حکومت کا سارا کام کرتے تھے ۔ رعایا بھی اُن سے خوش تھی ۔

جب اودھ کے نواب اور روھیلوں میں ان بن ھو گئی' تب رحمت خاں نے اودھ کے نواب کو جنگ کے لئے للکارا اور بری طرح ھرایا ۔ تب نواب نے انگریزوں کی مدد لی ۔ انگریزوں اور رحمت میں ویسے تو صلح تھی؛ مگر انگریزوں نے روھیلوں کا بڑھتا ھوا زور توڑنے کا یہ اچھا موقع دیکھ صلح کو بالائے طاق رکھ دیا ۔ انہیں ڈر تھا کہ اکیلے اودھ کے نواب کو فرصت کے وقت یہ آسانی سے بھون کھائیں گے ۔ لہٰذا اودھ کے نواب سے روپیہ لے کر وے اُس کی طرف سے مگر اپنے مطلب کے لئے' لڑنے آ گئے ۔

اودھ اور انگریزوں کی فوجیں روھیلوں کی طرف بڑھیں ۔ ادھر سے حافظ رحمت بھی اپنے روھیلا سرداروں کو لے کر بڑھا ۔ دجوڑا کے میدان میں دونوں طرف کی فوجوں میں گھماسان جنگ ھوئی ۔ اُس جنگ میں روھیلے بڑی بہادری سے لڑے اور جیت گئے؛ مگر دشمن کا پیچھا کرنے کے بدلے وے اُن کے کیمپ لوٹنے لگے' اور رحمت خاں اُنھیں روکتے ھی رہ گئے ۔ انگریزی فوج' جو کھیتوں میں چھپ گئی تھی' لوٹی اور جمع ھو کر فوراً روھیلوں پر ٹوٹ پڑی ۔ پانسہ الٹ پڑا ۔ جیت کے بدلے روھیلوں کی ھار ھوئی ۔ حافظ رحمت خاں میدان سے نہ ھٹے اور بڑی بہادری سے لڑ کر کٹ مرے ۔

روھیلوں کی طرف سے لڑنے والوں میں دو پٹھان بھائی بھی آئے تھے' جن میں سے ایک تو لڑتے لڑتے مارا گیا اور دوسرا گھائل ھو کر لڑائی کے میدان میں ادھ مرا پڑا تھا ۔ اصل میں یہ تین بھائی تھے ۔ اِن کا باپ زندہ تھا ۔ اُس نے ایک بھائی کو روک کر اور دو بھائیوں کو لڑنے کے لئے بھیج دیا تھا ۔

رات کا وقت تھا ۔ گیدڑ اور کتے میدان میں لاشوں کو کھا رھے تھے ۔ اور گھائل خاں صاحب پڑے پڑے اپنے کو گیدڑوں سے بچا رھے تھے ۔ مگر گیدڑ بڑے چالاک تھے ۔ انہیں نوچ نوچکر بھاگتے تھے ۔ اِس طرح صبح ھو گئی اور گیدڑ بدستور خاں صاحب کو نوچتے رھے ۔ قریب تھا کہ اُن کا

आफ़ताबों के सिलसिले

श्री सलाम मछलीशहरी

ज़मीं पर अगर देवता कुछ न होते
तो इंसान शायद परीशाँ ही रहता.
नज़ारे तो होते, बहारें तो होतीं,
मगर गुलशने फ़िक्र वीराँ ही रहता.
हक़ीक़त का मफ़हूम१ वाज़े न होता
अगर दिलनशीं कल्पनायें न होतीं,
कोई ख़ास मंज़र निखर ही न पाता
जो उसके लिये कुछ फ़िज़ायें न होतीं.
हक़ीक़त की इन ज़ूफ़िशाँ२ मंज़िलों में
हसीं ख़्वाब अब मुस्कराने लगे हैं,
बज़ुर्गों ने जो दीप रौशन किए थे
वही दीप फिर जगमगाने लगे हैं.
कला और संगीत के दीप फिर से
मुक़द्दम३ फ़िज़ाओं में जलने लगे हैं,
ज़हे४ अहदे हाज़िर कि "हाफ़िज़" के बरबत५ पे
"मीरा" के नग़मे मचलने लगे हैं.
मुबारिक कि वादीये गंगोजमन में
कला को नई ज़िन्दगी मिल रही है,
मुबारिक कि फिर "तूतीये हिन्द ख़ुसरो"
के अफ़कार६ की रौशनी मिल रही है.
नई रौशनी में नये ताज महलों,
अजन्ताओं का जन्म होने लगा है,
हमारे कला मन्दिरों से क़रीब आ॰
रूठा हुआ धर्म होने लगा है,
मिली है ज़ियाबार७ ताबीर८ जिसकी
वही ख़्वाब पहले भी देखा गया था,
मुबारिक वतन की सहर९ कह रही है
कि यह आफ़ताबों का एक सिलसिला था.

آفتابوں کے سلسلے

شری سلام مچھلی شہری

زمیں پر اگر دیوتا کچھ نہ ہوتے
تو اِنساں شاید پریشاں ہی رہتا
نظارے تو ہوتے بہاریں تو ہوتیں
مگر گلشن فکر ویراں ہی رہتا۔
حقیقت کا مفہوم واضح نہ ہوتا
اگر دلنشیں کلپنائیں نہ ہوتیں
کوئی خاص منظر نکھر ہی نہ پاتا
جو اُس کے لئے کچھ فضائیں نہ ہوتیں۔
حقیقت کی اِن ضوفشاں منزلوں میں
حسیں خواب اب مسکرانے لگے ہیں
بزرگوں نے جو دیپ روشن کئے تھے
وہی دیپ پھر جگمگانے لگے ہیں۔
کلا اور سنگیت کے دیپ پھر سے
مقدم فضاؤں میں جلنے لگے ہیں
زہے عہد حاضر کہ "حافظ" کے بربط پہ
"میرا" کے نغمے مچلنے لگے ہیں۔
مبارک کہ وادیٔ گنگ و جمن میں
کلا کو نئی زندگی مل رہی ہے
مبارک کہ پھر "طوطیٔ ہند خسرو"
کے افکار کی روشنی مل رہی ہے۔
نئی روشنی میں نئے تاج محلوں
اجنتاؤں کا جنم ہونے لگا ہے
ہمارے کلا مندروں سے قریب آ کے
روٹھا ہوا دھرم ہونے لگا ہے۔
ملی ہے ضیابار تعبیر جس کی
وہی خواب پہلے بھی دیکھا گیا تھا
مبارک وطن کی سحر کہہ رہی ہے
کہ یہ آفتابوں کا ایک سلسلہ تھا۔

नोट :—यह नज़्म 19 मई 1957 को इदाराये निज़ामिया, दिल्ली में यौम ख़ुसरो के मुबारिक मौक़े पर पढ़ी गई.

نوٹ :— یہ نظم 19 مئی 1957 کو ادارۂ نظامیہ دلی میں یوم خسرو کے مبارک موقع پر پڑھی گئی۔

१. मतलब, २. चमकदार, ३. पहले की, ४. बलिहारी, ५. एक प्रकार का बाजा, ६. कार्यों, ७. चमकदार, ८. फल ९. प्रभात.

कहा कि मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ. यह मालूम होता था कि वे बर्रा रहे थे. मगर थोड़ी देर में वे समझ की बातें करने लगे. हरेक को दुआ दी और आखिरी रुखसत ली.

....जब सुबह मैंने उन्हें बिस्तर पर पड़े देखा तो वे मरे हुए नहीं मालूम होते थे. उनके चेहरे पर खामोशी थी. उनकी पेशानी पर अब भी वही शान मौजूद थी, लेकिन वह शख़्सियत कहाँ थी, सिर्फ एक बेजान खोल बाक़ी रह गया था.

उनका इन्तक़ाल 80 बरस की उम्र में हुआ. उनके साथ एक नसल का ख़ात्मा हो गया. वह उन लोगों में से थे जिनको हिन्दुस्तान की जंगे आज़ादी खूब याद थी, जिसे हमारे अंग्रेज़ तारखीदाँ सन् 1857 ईस्वी का ग़दर कहते हैं. उन्होंने अपने भाइयों, प्यारों, बुज़ुर्गों और हमवतनों को बदर्दी से क़त्ल होते देखा. हर रोज़ भागने वालों की लाशें खंडहरों और गाँवों में पड़ी मिलती थीं और हर रोज़ वे एक कतार में खड़े किये जाते और उनके सर काट लिये जाते. उन्होंने औरतों को बेआबरू होते हुए, बच्चों को कुचले जाते और हज़ारों को भूखों मरते देखा था. उन्होंने बादशाह को गिरफ़्तार होते हुए और मुल्क से निकाले जाते देखा था. उनकी आँखों के सामने शहज़ादे ज़बह किये गये और उनके सर दिल्ली दरवाज़े पर लटकाये गये, जो अब भी ख़ूनी दरवाज़े के नाम से मशहूर है. उन्होंने अपने वतन और अपने शहर पर अंग्रेज़ों को क़ाबिज़ होते देखा. उनके हाथों उन्होंने हिन्दुस्तान की तहज़ीब और उसकी अज़मत को ख़ाक में मिलते हुए देखा था.

फिर क्या ताज्जुब कि अंग्रेज़ों के लिये उनके दिल में नफ़रत थी और इस क़दर कि हम भी इतनी नफ़रत नहीं कर सकते. उन्होंने अपने सबसे बड़े बेटे को, जब उन्होंने अंग्रेज़ी पढ़ना शुरू किया, घर से निकाल दिया और उनको अपने चचा के घर पनाह लेनी पड़ी, ताकि वे अपना पढ़ना जारी रख सकें. अंग्रेज़ों की हर चीज़ के साथ इस क़दर नफ़रत ग़ालिबन उनके बढ़े हुए तास्सुब की बिना पर थी. लेकिन आज हम इसको समझ सकते हैं और पसन्द करते हैं. उनके बेटों की नसल ऐसी थी जो ग़ालिबन न अंग्रेज़ों से नफ़रत करते थे और न मोहब्बत ही करते थे. वे अंग्रेज़ों के नीचे काम करते थे, क्योंकि अंग्रेज़ इनको मुलाज़िमत देते थे. लेकिन अब पहिये ने पूरा चक्कर ले लिया. आज हमारा मुल्क आज़ाद है. यह ऐसी आज़ादी है जो पहले नहीं हासिल हो सकती थी, जिसका अन्दाज़ा भी हमारे बुज़ुर्ग न कर सकते थे.

کہا کہ میں تمہارے پاس آ رہا ہوں ۔ یہ معلوم ہوتا تھا کہ وے بڑا رہے تھے ۔ مگر تھوڑی دیر میں وے سمجھ کی باتیں کرنے لگے ۔ ہر ایک کو دعا دی اور آخری رخصت لی ۔

......جب صبح میں نے انھیں بستر پر پڑے دیکھا تو وے مرے ہوئے نہیں معلوم ہوتے تھے ۔ اُن کے چہرے پر خاموشی تھی ۔ اُن کی پیشانی پر اب بھی وہی شان موجود تھی، لیکن وہ شخصیت کہاں تھی، صرف ایک بےجان خول باقی رہ گیا تھا ۔

اُن کا انتقال 80 برس کی عمر میں ہوا ۔ اُن کے ساتھ ایک نسل کا خاتمہ ہو گیا ۔ وہ اُن لوگوں میں سے تھے جن کو ھندوستان کی جنگ آزادی خوب یاد تھی، جسے ہمارے انگریز تاریخ داں سن 1857 عیسوی کا غدر کہتے ہیں ۔ انھوں نے اپنے بھائیوں، پیاروں، بزرگوں اور ہموطنوں کو بیدردی سے قتل ہوتے دیکھا ۔ ہر روز بھاگنے والوں کی لاشیں کھنڈروں اور گاؤں میں پڑی ملتی تھیں اور ہر روز وے ایک قطار میں کھڑے کئے جاتے اور اُن کے سر کاٹ لئے جاتے ۔ انھوں نے عورتوں کو بےآبرو ہوتے ہوئے، بچوں کو کچلے جاتے اور ہزاروں کو بھوکوں مرتے دیکھا تھا ۔ انھوں نے بادشاہ کو گرفتار ہوتے ہوئے اور ملک سے نکالے جاتے دیکھا تھا ۔ اُن کی آنکھوں کے سامنے شہزادے ذبح کئے گئے اور ان کے سر دلی دروازے پر لٹکائے گئے، جو اب بھی خونی دروازے کے نام سے مشہور ہے، انھوں نے اپنے وطن اور اپنے شہر پر انگریزوں کو قابض ہوتے دیکھا ۔ اُن کے ہاتھوں انھوں نے ہندستان کی تہذیب اور اس کی عظمت کو خاک میں ملتے ہوئے دیکھا تھا ۔

پھر کیا تعجب کہ انگریزوں کے لئے اُن کے دل میں نفرت تھی اور اِس قدر کہ ہم بھی اِتنی نفرت نہیں کر سکتے ۔ انھوں نے اپنے سب سے بڑے بیٹے کو، جب انھوں نے انگریزی پڑھنا شروع کیا، گھر سے نکال دیا اور ان کو اپنے چچا کے گھر پناہ لینی پڑی، تاکہ وے اپنا پڑھنا جاری رکھ سکیں ۔ انگریزوں کی ہر چیز کے ساتھ اِس قدر نفرت غالباً ان کے بڑھے ہوئے تعصب کی بنا پر تھی ۔ لیکن آج ہم اس کو سمجھ سکتے ہیں اور پسند کرتے ہیں اُن کے بیٹوں کی نسل ایسی تھی جو غالباً نہ انگریزوں سے نفرت کرتے تھے اور نہ محبت ہی کرتے تھے ۔ وے انگریزوں کے نیچے کام کرتے تھے، کیونکہ انگریز اِن کو ملازمت دیتے تھے ۔ لیکن اب پہیئے نے پورا چکر لے لیا ہے ۔ آج ہمارا ملک آزاد ہے ۔ یہ ایسی آزادی ہے جو پہلے نہیں حاصل ہو سکتی تھی، جس کا اندازہ بھی ہمارے بزرگ نہ کر سکتے تھے ۔

उनके प्यारों को दिखाते हैं. दादा अब्बा का बूढ़ा और कमज़ोर जिस्म सिसकियों से काँप रहा है.

लोग क़ब्र में मिट्टी डाल रहे हैं. दादा अब्बा अपने काँपते हुए हाथों में थोड़ी सी मिट्टी उठाते हैं. कहार डोली को क़ब्र के क़रीब ले जाते हैं. आँखों से दो क़तरे आँसू के उस ताज़ा मिट्टी पर गिर पड़ते हैं जो वे हाथों में लिये हुए हैं. वे बेबसी से हाथों की मिट्टी क़ब्र में गिरा देते हैं और चेहरा ढक लेते हैं.

❀ ❀ ❀

बेटे की मौत के तीन बरस बाद दादा और ज़िन्दा रहे, हालाँकि वे ज़िन्दगी से थककर आजिज़ हो गये थे. वे अक्सर रोते थे, लेकिन उनका ख़ात्मा बहुत ख़ामोशी से हुआ. उन पर एक मर्तबा फ़ालिज गिर ही चुका था. एक मर्तबा और गिरा. उनका दाहिना हाथ और दाहिना पाँव पहले ही बेकार था, अबकी बार बाँएं हाथ और पैर पर असर हुआ.

मरने से कुछ पहले वे बहुत चिड़चिड़े हो गये थे और हर तीमारदार को उनकी ख़फ़गी का सामना करना पड़ता था. सिर्फ़ एक बूढ़ी मामा उनको चुप करा सकती थी और उनकी तबियत के मुआफ़िक़ काम कर सकती थी. दादा अब्बा अपने लड़के के मरने के बाद जनानख़ाने में पहुँचा दिये गये थे. यह मामा भी अपनी जवानी के ज़माने से हमारे ही यहाँ मुलाज़िम थी और लोग कहते थे कि वह दादा की दाश्ता थी. इनसे एक लड़का भी हुआ था, जो बचपन में ही मर गया था. वही दादा की रोक थाम कर सकती थी, क्योंकि न तो वह उनकी बातों की परवाह करती और न उनके मिज़ाज की. यह देखकर तकलीफ़ होती कि वह अपने बूढ़े मालिक से कितनी बेपरवाही से पेश आती है. दादा अपनी कमज़ोर आवाज़ में कुछ कहते, लेकिन वह न सुनती. अगर कोई उसे कहता कि सुनो देखो क्या माँग रहे हैं, तो वह जवाब देती:—

"उनकी यही आदत है. उनको किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं. वे सिर्फ़ मुझे परेशान करते हैं"... लेकिन किसी का कुछ बस न चलता क्योंकि वही उन्हें ख़ामोश कर सकती थी. फिर इसमें शक नहीं कि अब वह सब बोझ महसूस कर रहे थे.

वह रात में शान्ति के साथ गुज़र गये. उनकी ज़ुबान आख़िरी वक़्त तक उनके क़ाबू में रही और मौत से कुछ पहले उन्होंने सबको दुआएँ दीं और अपने तमाम प्यारों को, जो वहाँ नहीं थे या मर गये थे, याद किया.

मौत से कुछ ही पहले वह ग़फ़लत में थे और कुछ बड़बड़ाते थे. एक मर्तबा उन्होंने किसी को मुख़ातिब किया, जो अर्सा हुआ मर चुका था और उससे बुलन्द आवाज़ में

اُن کے پیاروں کو دکھاتے ھیں ۔ دادا ابا کا بوڑھا اور کمزور جسم سسکیوں سے کانپ رہا ھے ۔

لوگ قبر میں مٹی ڈال رھے ھیں ۔ دادا ابا اپنے کانپتے ھوئے ھاتھوں میں تھوڑی سی مٹی اُٹھاتے ھیں ۔ کہار ڈولی کو قبر کے قریب لے جاتے ھیں ۔ آنکھوں سے دو قطرے آنسو کے اس تازہ مٹی پر گر پڑتے ھیں جو وے ھاتھوں میں لئے ھوئے ھیں ۔ وے بےبسی سے ھاتھوں کی مٹی قبر میں گرا دیتے ھیں اور چہرا ڈھک لیتے ھیں ۔

❀ ❀ ❀

بیٹے کی موت کے تین برس بعد دادا اور زندہ رھے، حالانکہ وے زندگی سے تھک کر عاجز ھوگئے تھے ۔ وے اکثر روتے تھے، لیکن اُن کا خاتمہ بہت خاموشی سے ھوا ۔ اِن پر ایک مرتبہ فالج گر ھی چکا تھا ۔ ایک مرتبہ اور گرا ۔ اِن کا داھنا ھاتھ اور داھنا پاؤں پہلے ھی بیکار تھا، اب کی بار بائیں ھاتھ اور پیر پر اثر ھوا ۔

مرنے سے کچھ پہلے وے بہت چڑچڑے ھو گئے تھے اور ھر تیمار‌دار کو اُن کی خفگی کا سامنا کرنا پڑتا تھا ۔ صرف ایک بوڑھی ماما ان کو چپ کرا سکتی تھی اور اُن کی طبیعت کے موافق کام کر سکتی تھی ۔ دادا ابا اپنے لڑکے کے مرنے کے بعد زنان خانے میں پہنچا دیئے گئے تھے ۔ یہ ماما بھی اپنی جوانی کے زمانہ سے ھمارے ھی یہاں ملازم تھی اور لوگ کہتے تھے کہ وہ دادا کی داشتہ تھی ۔ اِن سے ایک لڑکا بھی ھوا تھا، جو بچپن ھی میں مر گیا تھا ۔ وھی دادا کی روک تھام کر سکتی تھی، کیونکہ نہ تو وہ اُن کی باتوں کی پرواہ کرتی اور نہ اُن کے مزاج کی ۔ یہ دیکھ کر تکلیف ھوتی کہ وہ اپنے بوڑھے مالک سے کتنی بےپروائی سے پیش آتی ھے ۔ دادا اپنی کمزور آواز میں کچھ کہتے، لیکن وہ نہ سنتی ۔ اگر کوئی اسے کہتا کہ سنو دیکھو کیا مانگ رھے ھیں، تو وہ جواب دیتی—

"اِن کی یہی عادت ھے ۔ اُن کو کسی چیز کی ضرورت نہیں ۔ وے صرف مجھے پریشان کرتے ھیں..." لیکن کسی کا کچھ بس نہ چلتا کیونکہ وھی اُنہیں خاموش کر سکتی تھی ۔ پھر اِس میں شک نہیں کہ اب وہ سب بوجھ محسوس کر رھے تھے ۔

وہ رات میں شانتی کے ساتھ گذر گئے ۔ اُن کی زبان آخری وقت تک اُن کے قابو میں رھی اور موت سے کچھ پہلے اُنھوں نے سب کو دعائیں دیں اور اپنے تمام پیاروں کو، جو وھاں نہیں تھے یا مر گئے تھے، یاد کیا ۔

موت سے کچھ ھی پہلے وہ غفلت میں تھے اور کچھ بڑبڑاتے تھے ۔ ایک مرتبہ اُنھوں نے کسی کو مخاطب کیا، جو عرصہ ھوا مر چکا تھا اور اُس سے بلند آواز میں

वे 70 बरस के थे जब मेरे वालिद, जो उनके छठे बेटे थे, बीमार हुए. हर तरह का इलाज किया गया. तमाम डाक्टरों और हकीमों ने जवाब दे दिया. बहुत से मौलवियों ने अपने अक़्ली गद्दे लड़ाए और अपने तजुर्बे के मुताबिक़ जादू टोने और आसेब वग़ैरा का इलाज किया; मगर उनकी हालत ख़राब होती गई.

शुरू-शुरू में तो वालिद दादा अब्बा के साथ मकान के मरदाने हिस्से में ही रहते थे, क्योंकि इसी में सहूलियत थी. दूसरे पुराने ज़माने के लोग .जनानख़ाने में ज़्यादा देर तक रहना पसन्द न करते थे. दादा के सूफ़ी और फ़क़ीर दोस्त आते और दुआएँ माँगते. मगर उनकी हालत रोज़ बरोज़ ख़राब होती गई. तब वह मकान के अन्दर पहुँचा दिये गये, ताकि उनकी तीमारदारी अच्छी तरह हो सके. दादा पर फ़ालिज गिर चुका था और वह हर दूसरे तीसरे अपने बेटे को देखने एक छोटी सी चारपाई पर चार आदमियों की मदद से लाये जाते और कुछ घन्टे गुज़र जाने के बाद वह उसी तरह बाहर ले जाये जाते.

वालिद की हालत जब और ख़राब हो गई, तो ताज़ा हवा के ख़ातिर उन्हें कोठे पर ले जाया गया, दादा अब्बा ने देखा कि उनकी हालत मायूस करने वाली है और वे जब उन्हें देखने के लिये कोठे पर लाये गये, तो .जीने की तंगी की वजह से बड़ी दिक़्क़त हुई. यह देखकर कि उनके लाने लेजाने में कितनी दिक़्क़त होती है; वह फूटकर रो पड़े. मैंने उन्हें ज़िन्दगी में पहले पहले रोते देखा. वे एक बेबस और बूढ़े आदमी के ख़ामोश और दर्द से भरे आँसू थे. उन्होंने ज़ुबान से कुछ न कहा लेकिन सब समझ गये कि वे बहुत मायूस हैं.

आख़िर एक दिन वालिद का इन्तक़ाल हो गया. मुझे याद है कि दादा अपने पलंग पर पड़े रोते थे. मेरे सामने उस वक़्त की उनकी तस्वीर है—वे ज़ार-ज़ार रो रहे हैं. उनकी सिसकियों से पलंग हिल रहा है. यह एक बूढ़े आदमी की सिसकियाँ हैं, जो महसूस करता है कि उसकी हस्ती अब दुनिया में सिर्फ़ एक .फ़ज़ूल की मद है.

मुझे याद है कि फिर वे जनाज़े के पीछे-पीछे एक डोली में क़ब्रस्तान ले जाये गये. उनकी आँखें सुर्ख़ थीं. वे सिसकियाँ लेते और ज़िन्दगी के .फ़ना होने की शिकायत करते. अपनी इस बेचारगी पर रोते कि बेटे के जनाज़े को कन्धा भी न दे सकते थे. मैयत क़ब्र में उतारी जा रही है. खोदी हुई मिट्टी के ढेर पर दादा .अब्बा डोली में बैठे हुए हैं. लेकिन वह क़ब्र के अन्दर नहीं देख सकते, क्योंकि उनके आगे आदमियों की भीड़ है.

भीड़ छँटती है. मैयत क़ब्र में है. कहार डोली को क़ब्र तक लाते हैं. लोग मरहूम वालिद का चेहरा आख़िरी बार

وے 70 برس کے تھے جب میرے والد، جو اُن کے چھٹے بیٹے تھے، بیمار ہوئے۔ ہر طرح کا علاج کیا گیا۔ تمام ڈاکٹروں اور حکیموں نے جواب دے دیا۔ بہت سے مولویوں نے اپنے عقلی گدے لڑائے اور اپنے تجربہ کے مطابق جادو ٹونے اور آسیب وغیرہ کا علاج کیا؛ مگر اُن کی حالت خراب ہوتی گئی۔

شروع شروع میں تو والد دادا ابا کے ساتھ مکان کے مردانے حصے میں ہی رہتے تھے؛ کیونکہ اِسی میں سہولیت تھی۔ دوسرے پرانے زمانے کے لوگ زنانخانہ میں زیادہ دیر تک رہنا پسند نہ کرتے تھے۔ دادا کے صوفی اور فقیر دوست آتے اور دعائیں مانگتے۔ مگر اُن کی حالت روز بروز خراب ہوتی گئی۔ تب وہ مکان کے اندر پہنچا دیئے گئے، تاکہ ان کی تیمارداری اچھی طرح ہو سکے۔ دادا پر فالج گر چکا تھا اور وہ ہر دوسرے تیسرے اپنے بیٹے کو دیکھنے ایک چھوٹی سی چارپائی پر چار آدمیوں کی مدد سے لائے جاتے اور کچھ گھنٹے گذر جانے کے بعد وہ اُسی طرح باہر لے جائے جاتے۔

والد کی حالت اب اور خراب ہو گئی، تو تازہ ہوا کے خاطر انہیں کوٹھے پر لے جایا گیا۔ دادا ابا نے دیکھا کہ اُن کی حالت مایوس کرنے والی ہے اور وے جب اُنہیں دیکھنے کے لئے کوٹھے پر لائے گئے، تو زینہ کی تنگی کی وجہ سے بڑی دقت ہوئی۔ یہ دیکھ کر کہ اُن کے لانے لے جانے میں کتنی دقت ہوتی ہے؛ وہ پھوٹ کر رو پڑے۔ میں نے اُنہیں زندگی میں پہلے پہل روتے دیکھا۔ وے ایک بے بس اور بوڑھے آدمی کے خاموش اور درد سے بھرے آنسو تھے۔ اُنہوں نے زبان سے کچھ نہ کہا لیکن سب سمجھ گئے کہ وے بہت مایوس ہیں۔

آخر ایک دن والد کا اِنتقال ہو گیا۔ مجھے یاد ہے دادا اپنے پلنگ پر پڑے روتے تھے۔ میرے سامنے اُس وقت کی اُن کی تصویر ہے—وے زار زار رو رہے ہیں۔ اُن کی سسکیوں سے پلنگ ہل رہا ہے۔ یہ ایک بوڑھے آدمی کی سسکیاں ہیں، جو محسوس کرتا ہے کہ اُس کی ہستی اب دنیا میں صرف ایک فضول کی مد ہے۔

مجھے یاد ہے کہ پھر وے جنازے کے پیچھے پیچھے ایک ڈولی میں قبرستان لے جائے گئے۔ اُن کی آنکھیں سرخ تھیں۔ وے سسکیاں لیتے اور زندگی کے فنا ہونے کی شکایت کرتے۔ اپنی اِس بیچارگی پر روتے کہ بیٹے کے جنازہ کو کندھا بھی دے سکتے تھے۔ میت قبر میں اُتاری جا رہی ہے۔ کھودی ہوئی مٹی کے ڈھیر پر دادا ابا ڈولی میں بیٹھے ہوئے ہیں۔ لیکن وہ قبر کے اندر نہیں دیکھ سکتے، کیونکہ اُن کے آگے آدمیوں کی بھیڑ ہے۔

بھیڑ چھنٹتی ہے۔ میت قبر میں ہے۔ کہار ڈولی کو قبر تک لاتے ہیں۔ لوگ مرحوم والد کا چہرہ آخری بار

लाता. इस दरमियान में दादा अब्बा हमारा सबक़ दोहराते या हरूफ़ कहलाते. और जब हम में से कोई सबक़ भूल जाता, तो हम सब डर जाते, क्योंकि दादा अब्बा को गुस्सा आ जाता और वे बिगड़ने लगते, हालाँकि आम तौर पर वे मेहरबान रहते.

एक मर्तबा मैं और कुछ मेरे बड़े भाइयों ने बड़ी चची का एक रुपया चुरा लिया. दरअसल रुपया लुढ़क गया था और हमने चुपके से उसे उठा लिया था. हमने उसको जाकर भुना लिया और उसके चौंसठ पैसे कर लिये. हमने दो पैसे के बिस्कुट और मिठाई ख़रीदी. उस ज़माने में चीज़ें काफ़ी सस्ती मिलती थीं, और बाक़ी पैसों को पोशीदा जगह पर रख दिया. लेकिन किसी ने उसको देख लिया. अब तो हम सब बहुत डरे कि कहीं दादा को इसका पता न चल जाये. ,लेकिन जिस बात से डरते थे वही हुई. दादा अब्बा को बेहद गुस्सा आया और उन्होंने कहा कि मैं तुम सबको मार डालूँगा. उन्होंने अपनी तलवार के निकाले जाने का हुक्म दिया, जो एक बड़े लकड़ी के सन्दूक़ में बन्द रहती थी. यह सन्दूक़ एक अंधेरी कोठरी में रखा हुआ था, जिसके अंदर जाने के लिये लालटैन की ज़रूरत पड़ती थी; तब उन्होंने मेरे बड़े भाइयों को बुलाया और उनकी आँखों के सामने तलवार चमकाई. दोनों ने पाजामे में पेशाब कर दिया और ख़ौफ़ के मारे उनका रंग उड़ गया. शायद मेरे कमसिन होने के ख़याल से उन्होंने मुझको तलवार से नहीं धमकाया, लेकिन उनकी आवाज़ ही मेरे हवास उड़ा देने के लिये क्या कम थी. हम सबने वादा किया कि आइन्दा चोरी न करेंगे और अच्छे लड़कों की तरह रहेंगे.

मगर जब हम चाय के लिये भूखे कुत्तों की तरह दादा अब्बा के चारों तरफ़ बैठे रहते थे. तो हमको कोई ख़ौफ़ नहीं होता था. वह आम तौर से मज़े मज़े की बातें करते, मोहब्बत से पेश आते और कहानियाँ सुनाते. जब चाय तैयार हो जाती, तो उसको वह चीनी की छोटी प्यालियों में डालते. यह चीनी के प्याले आजकल की प्यालियों की तरह न थे, यह बहुत ख़ूबसूरत असली चीनी के थे. इनमें दस्ता न था. उनका पेंदा तंग और मुंह चौड़ा था. चाय दूर से महकती थी. अक्सर बेसबरी में हम अपने होंठ हिला लेते थे. हमको छोटे-छोटे, फूले फूले बिस्कुट दिये जाते, जिनको हम चाय में डबोकर चमचे से खाते. चाय ऐसी मज़ेदार होती थी कि उसके बाद कभी ऐसी मज़ेदार चाय पी ही नहीं और न मैं इसका मज़ा कभी चख सकूँगा.

दादा की चन्द और बातें मुझे याद हैं. यह याद एक अच्छे मज़हब आदमी की है, जिसे ज़िन्दगी के बोझ ने ख़त्म कर दिया.

تا ۔ اِس درمیان میں دادا ابا ہمارا سبق دہراتے یا حروف کہلاتے ۔ اور جب ہم میں سے کوئی سبق بھول جاتا، تو ہم سب ڈر جاتے، کیونکہ دادا ابا کو غصہ آجاتا اور وے بگڑنے لگتے، حالانکہ عام طور پر وے مہربان رہتے ۔

ایک مرتبہ میں اور کچھ میرے بڑے بھائیوں نے بڑی چچی کا ایک روپیہ چرا لیا ۔ دراصل روپیہ لڑھک گیا تھا اور ہم نے چپکے سے اُسے اُٹھا لیا تھا ۔ ہم نے اُس کو جاکر بھنا لیا اور اُس کے چونسٹھ پیسے کر لئے ۔ ہم نے دو پیسے کے بسکٹ اور مٹھائی خریدی ۔ اُس زمانے میں چیزیں کافی سستی ملتی تھیں؛ اور باقی پیسوں کو پوشیدہ جگہ پر رکھ دیا ۔ لیکن کسی نے اِن کو دیکھ لیا ۔ اب تو ہم سب بہت ڈرے کہ کہیں دادا کو اِس کا پتہ نہ چل جائے ۔ لیکن جس بات سے ڈرتے تھے وہی ہوئی ۔ دادا ابا کو بےحد غصہ آیا اور اُنہوں نے کہا کہ میں تم سب کو مار ڈالونگا ۔ اُنہوں نے اپنی تلوار کے نکالے جانے کا حکم دیا، جو ایک بڑے لکڑی کے صندوق میں بند رہتی تھی ۔ یہ صندوق ایک اندھیری کوٹھری میں رکھا ہوا تھا، جس کے اندر جانے کے لئے لالٹین کی ضرورت پڑتی تھی؛ تب اُنہوں نے میرے بڑے بھائیوں کو بلایا اور اُن کی آنکھوں کے سامنے تلوار چمکائی ۔ دونوں نے پاجامے میں پیشاب کر دیا اور خوف کے مارے اُن کا رنگ اُڑ گیا ۔ شاید میرے کمسن ہونے کے خیال سے اُنہوں نے مجھکو تلوار سے نہیں دھمکایا، لیکن اُن کی آواز ہی میرے حواس اُڑا دینے کے لئے کیا کم تھی ۔ ہم سب نے وعدہ کیا کہ آئندہ چوری نہ کریں گے اور اچھے لڑکوں کی طرح رہینگے ۔

مگر جب ہم چائے کے لئے بھوکے کتوں کی طرح دادا ابا کے چاروں طرف بیٹھے رہتے ' تو ہم کو کوئی خوف نہیں ہوتا تھا ۔ وہ عام طور سے مزے مزے کی باتیں کرتے، محبت سے پیش آتے اور کہانیاں سناتے ۔ جب چائے تیار ہو جاتی، تو اُس کو وہ چینی کی چھوٹی پیالیوں میں ڈالتے ۔ یہ چینی کے پیالے آجکل کی پیالیوں کی طرح نہ تھے ۔ یہ بہت خوبصورت اصلی چینی کے تھے ۔ اِن میں دستہ نہ تھا ۔ اُن کا پیندا تنگ اور منہ چوڑا تھا ۔ چائے دور سے مہکتی تھی اکثر بےصبری میں ہم اپنے ہونٹ ہلالیتے تھے ۔ ہم کو چھوٹے چھوٹے پھولے پھولے بسکٹ دیئے جاتے، جن کو ہم چائے میں ڈبو کر چمچے سے کھاتے ۔ چائے ایسی مزیدار ہوتی تھی کہ اُس کے بعد کبھی ایسی مزیدار چائے پی ہی نہیں اور نہ میں اِس کا مزا کبھی چکھ سکونگا ۔

دادا کی چند اور باتیں مجھے یاد ہیں ۔ یہ یاد ایک اچھے مذہب آدمی کی ہے، جسے زندگی کے بوجھ نے ختم کر دیا ۔

था और उनमें से बदबू आती थी. फ़र्श को भी गन्दा कर देता और अपनी उँगली को गन्दगी में तर करके सूँघता, मगर लोग उसे पागल न समझते. उनके ख़याल में वह एक मज्ज़ूब था.

दादा के पास और भी फ़क़ीर आया करते थे. लेकिन वे कुछ एक दो तो थे नहीं. चुनांचे मैं बहुतों से नावाक़िफ़ था.

दादा की सब से ज़्यादा दिलपसन्द चीज़ उनकी मज़ेदार दवाइयाँ थी. यह दवाइयाँ वे हम लोगों को बाँटते थे. दिलचस्पी के साथ वे उन्हें बनाते थे. सब लड़कों में, जो मेरे भाई होते थे, मैं ही सब से छोटा था और मुझको सबसे ज़्यादा चाहते थे. इसलिये सब लड़के मुझको दादा अब्बा के पास चूरन लेने के लिये भेजते. मैं बेधड़क उनके पास चला जाता और कहता—"दादा अब्बा, मुझे ज़रासा चूरन दे दीजिये."

वे मोहब्बत से मुस्कुराते और अपने पुराने नौकर को, जो बरसों से उनकी ख़िदमत में रहा करता था, पुकारते—"ग़फ़ूर, उस बोतल को अलमारी से निकाल ला."

ग़फ़ूर, जो अपने स्वामी की तरह ख़ुद भी बूढ़ा हो गया था, लड़खड़ाता हुआ अलमारी तक जाता और ग़लती से दूसरी बोतल उठा लाता.

"यह नहीं, दूसरी बोतल जो मैंने तुमसे कहा था"—दादा अब्बा ऊँची आवाज़ कर के कहते. फिर बोतल से एक चुटकी चूरन निकालकर मेरी हथेली पर रख देते.

"थोड़ा सा और दादा अब्बा?"

"बस अब नहीं, यह ज़्यादा नहीं खाया जाता."

"लेकिन फ़लाँ फ़लाँ भाई भी माँग रहे हैं"—मैं गिड़गिड़ा कर कहता और वे कुछ चुटकियाँ चूरन और दे देते. मैं उसे ज़ुबान से चाटता हुआ बाहर निकल जाता. मेरे भाई बाहर की तंग गली में मेरा इन्तज़ार करते और दौड़कर मुझे पकड़ लेते.

लेकिन चाय पीने में हम सब को बड़ा मज़ा आता. शाम को हम सब चार या पाँच लड़के, जो पाँच सात साल की उम्र के थे, दादा अब्बा के बड़े कमरे में जमा हो जाते. कभी कभी हम लोग बुलाए जाते और कभी ख़ुद से पहुँच जाते. दादा अब्बा आराम करते और सोते होते और हम सब अपनी छोटी छोटी मुट्ठियों से उनके पाँव पर मुक्कियाँ लगाते. तब ग़फ़ूर 'समावार' जलाता. मुझे नहीं मालूम कि क्यों उस ज़माने में चाय तैयार करने के लिये समावार इस्तेमाल किये जाते थे, ग़फ़ूर समावार लाता और पास रखता. जब पानी सनसनाने लगता तो दादा अब्बा इसमें दारचीनी और इलायची डाल देते ताकि उसमें ख़ुशबू आजाय. वे किसी दूसरे को चाय न बनाने देते. जब चाय तैयार हो रही होती, तो ग़फ़ूर चीनी के प्याले और चमचे

تھا اور اُن میں سے بدبو آتی تھی ۔ وہ فرش کو بھی گندا کر دیتا اور اپنی اُنگلی کو گندگی میں تر کر کے سونگھتا ۔ مگر لوگ اُسے پاگل نہ سمجھتے ۔ اُن کے خیال میں وہ ایک مجذوب تھا ۔

دادا کے پاس اور بھی فقیر آیا کرتے تھے ۔ لیکن وے کچھ ایک دو تو تھے نہیں ۔ چنانچہ میں بہتوں سے ناواقف تھا ۔

دادا کی سب سے زیادہ دل پسند چیز اُن کی مزیدار دوائیاں تھیں ۔ یہ دوائیاں وے ہم لوگوں کو بانٹتے تھے ۔ چاہ کے ساتھ وے اِنہیں بناتے تھے ۔ سب لڑکوں میں، جو میرے بھائی ہوتے تھے، میں ہی سب سے چھوٹا تھا اور مجھکو سب سے زیادہ چاہتے تھے ۔ اِس لئے سب لڑکے مجھ کو دادا ابا کے پاس چورن لینے کے لئے بھیجتے ۔ میں بےدھڑک اُن کے پاس چلا جاتا اور کہتا—"دادا ابا، مجھے ذرا سا چورن دے دیجئے ۔"

وے محبت سے مسکراتے اور اپنے پرانے نوکر کو جو برسوں سے اُن کی خدمت میں رہا کرتا تھا پکارتے—"غفور، اُس بوتل کو الماری سے نکال لا ۔"

غفور جو اپنے سوامی کی طرح خود بھی بوڑھا ہو گیا تھا لڑکھڑاتا ہوا الماری تک جاتا اور غلطی سے دوسری بوتل اُٹھا لاتا ۔

"یہ نہیں، دوسری بڑی بوتل جو میں نے تم سے کہا تھا—" دادا ابا اُونچی آواز کر کے کہتے ۔ پھر بوتل سے ایک چٹکی چورن نکال کر میری ہتھیلی پر رکھ دیتے ۔

"تھوڑا سا اور دادا ابا ؟"

"بس اب نہیں، یہ زیادہ نہیں کھایا جاتا ۔"

"لیکن فلاں فلاں بھائی بھی مانگ رہے ہیں—" میں گڑگڑا کر کہتا اور وے کچھ چٹکیاں چورن اور دے دیتے ۔ میں اُسے زبان سے چاٹتا ہوا باہر نکل جاتا ۔ میرے بھائی باہر کی تنگ گلی میں میرا انتظار کرتے ہوتے اور دوڑ کر مجھے پکڑ لیتے ۔

لیکن چائے پینے میں ہم سب کو بڑا مزا آتا تھا ۔ شام کو ہم سب چار یا پانچ لڑکے، جو پانچ سات سال کی عمر کے تھے، دادا ابا کے بڑے کمرے میں جمع ہو جاتے ۔ کبھی کبھی ہم لوگ بلائے جاتے اور کبھی خود سے پہنچ جاتے ۔ دادا ابا آرام کرتے اور سوتے ہوتے اور ہم سب اپنی چھوٹی چھوٹی مٹھیوں سے اُن کے پاؤں پر مکیاں لگاتے ۔ تب غفور 'سماوار' جلاتا ۔ مجھے نہیں معلوم کہ کیوں اُس زمانے میں چائے تیار کرنے کے لئے سماوار اِستعمال کئے جاتے تھے ۔ غفور سماوار لاتا اور پاس رکھتا ۔ جب پانی سنسنانے لگتا تو دادا ابا اِس میں دار چینی اور الائچی ڈال دیتے تاکہ اُس میں خوشبو آجائے ۔ وے کسی دوسرے کو چائے نہ بنانے دیتے ۔ جب چائے تیار ہو رہی ہوتی، تو غفور چینی کے پیالے اور چمچے

मज्ज़ूब कहना चाहिये. यह वे लोग हैं जिन पर रूहानियत का एक ऐसा दौरा आता है, जिसके कारन उन पर एक ख़ास रंग छा जाता है. वे दुनिया से मुँह मोड़ लेते हैं. कहा जाता है कि दुनिया का कारख़ाना सूफ़ियों की बदौलत चल रहा है. हर सूफ़ी का एक ख़ास हल्क़ए असर होता है. यह लोग बेग़रज़ फ़क़ीर होते हैं और सूफ़ियाना ज़िन्दगी बसर करते हैं. कोई उनके रुतबे को नहीं जानता; लेकिन वह अपने असर वाले हल्के की देख भाल करते हैं. हम मामूली लोग उनको नहीं जान सकते. सिर्फ़ ऊँचे दर्जे के सूफ़ी उनको पहचान सकते हैं.

बहुत से ऐसे लोग हमारे घर आया करते थे, हालाँकि दादा कोई सूफ़ी नहीं थे. अलबत्ता वह सूफ़ियों और फ़क़ीरों की क़द्र बहुत किया करते थे. मगर उनके सूफ़ी दोस्त सब के सब कीमिया बनाने में बहुत दिलचस्पी लेते थे. वह अजीबो ग़रीब जड़ी बूटियों के ,नायाब नुस्ख़े रखते थे और साँपों वग़ैरह के बारे में उनको बड़ी जानकारी थी. मेरे दादा भी साँपों के बारे में बहुत कुछ जानते थे और उन्हें हाथ से पकड़ लेते थे.

बाज़ और दूसरी तरह के फ़क़ीर भी हमारे घर आया करते थे. उनमें एक चालीस बरस की उम्र का अंधा था. वह 'अंधा हाफ़िज़' के नाम से मशहूर था. वह हमेशा नंगा और गन्दगी में लुथड़ा हुआ रहता. उसकी दाढ़ी की तरह सर और जिस्म के बाल भी उलझे रहते. वह हमेशा हाथ में एक बड़ी लाठी लिये रहता और हमारे घर पर आम तौर पर रात को डोली में बैठकर आता. वह शायद ही कभी सोता और सारी रात, चाहे जाड़ा हो या गर्मी, इधर उधर घूमा करता था. लोग उसे बहुत पहुँचा हुआ फ़क़ीर समझते. असली मज्ज़ूब ! उनके ख़याल में उसे इल्मेग़ैब भी हासिल था. वह बहुत बचपने से मज्ज़ूब हो गया था और कहा जाता है कि उसने बहुत सी करामातें भी दिखाई थीं. वह कभी कोई ज़बानी बात न कहता. उसकी गुफ़्तगू सदा उलझी हुई होती थी. जब लोग उससे अपने मुसतक़बिल की बात पूछते या कोई ख़ास मुश्किल मामला समझना चाहते तो सवाल को अपने दिमाग़ में लेकर हाफ़िज़ जी के पास बैठ जाते और अक्सर उसकी उलझी हुई बात चीत और इशारों में अपने सवाल का जवाब पा लेते.

जंगे अज़ीम के ज़माने में अंधे हाफ़िज़ पर ग़ुस्से और ग़ज़ब की हालत तारी रहती और वह अपना डन्डा ज़मीन पर बार बार पटकता. जब तक वह घर में रहता किसी फ़िक्र में इधर उधर घूमता फिरता और एक घड़ी भर भी दम न लेता. लोग कहते कि वह जंग का सब हाल जानता है कि इस वक़्त कहाँ लड़ाई हो रही है, कौन जीत रहा है और कौन हार रहा है. मैं कभी नहीं भूल सकता कि वह अपनी ही गन्दगी में लुथड़ा हुआ फ़र्श पर पड़ा रहता

مجذوب کہنا چاہئے ۔ یہ وے لوگ ہیں' جن پر روحانیت کا ایک ایسا دورہ آتا ہے' جس کے کارن اُن پر ایک خاص رنگ چھا جاتا ہے ۔ وے دنیا سے منھ موڑ لیتے ہیں ۔ کہا جاتا ہے کہ دنیا کا کارخانہ صوفیوں کی بدولت چل رہا ہے ۔ ہر صوفی کا ایک خاص حلقۂ اثر ہوتا ہے ۔ یہ لوگ بےغرض فقیر ہوتے ہیں اور صوفیانہ زندگی بسر کرتے ہیں ۔ کوئی ان کے رتبہ کو نہیں جانتا؛ لیکن وہ اپنے اثر والے حلقہ کی دیکھ بھال کرتے ہیں ۔ ہم معمولی لوگ اُن کو نہیں جان سکتے ۔ صرف اُونچے درجے کے صوفی اُن کو پہچان سکتے ہیں ۔

بہت سے ایسے لوگ ہمارے گھر آیا کرتے تھے' حالانکہ دادا کوئی صوفی نہیں تھے ۔ البتہ وہ صوفیوں اور فقیروں کی قدر بہت کیا کرتے تھے مگر اُن کے صوفی دوست سب کے سب کیمیا بنانے میں بہت دلچسپی لیتے تھے ۔ وہ عجیب و غریب جڑی بوٹیوں کے نایاب نسخے رکھتے تھے اور سانپوں وغیرہ کے بارے میں اُن کو بڑی جانکاری تھی ۔ میرے دادا بھی سانپوں کے بارے میں بہت کچھ جانتے تھے اور اُنھیں ہاتھ سے پکڑ لیتے تھے ۔

بعض اور دوسری طرح کے فقیر بھی ہمارے گھر آیا کرتے تھے ۔ اُن میں ایک چالیس برس کی عمر کا اندھا تھا ۔ وہ اندھا حافظ کے نام سے مشہور تھا ۔ وہ ہمیشہ ننگا اور گندگی میں لتھڑا ہوا رہتا ۔ اُس کی داڑھی کی طرح سر اور جسم کے بال بھی الجھے رہتے ۔ وہ ہمیشہ ہاتھ میں ایک بڑی لاٹھی لئے رہتا اور ہمارے گھر پر عام طور پر رات کو ڈولی میں بیٹھ کر آتا ۔ وہ شاید ہی کبھی سوتا اور ساری رات' چاہے جاڑا ہو یا گرمی' اِدھر اُدھر گھوما کرتا تھا ۔ لوگ اُسے بہت پہنچا ہوا فقیر سمجھتے ۔ اصلی مجذوب ! اُن کے خیال میں اُسے علمِ غیب بھی حاصل تھا ۔ وہ بہت بچپنے سے مجذوب ہو گیا تھا اور کہا جاتا ہے کہ اُس نے بہت سی کرامتیں بھی دکھائی تھیں ۔ وہ کبھی کوئی زبانی بات نہ کہتا ۔ اُس کی گفتگو سدا اُلجھی ہوئی ہوتی تھی ۔ جب لوگ اُس سے اپنے مستقبل کی بات پوچھتے یا کوئی خاص مشکل معاملہ سمجھنا چاہتے تو سوال کو اپنے دماغ میں لے کر حافظ جی کے پاس بیٹھ جاتے اور اکثر اُس کی اُلجھی ہوئی بات چیت اور اشاروں میں اپنے سوال کا جواب پا لیتے ۔

جنگ عظیم کے زمانے میں اندھے حافظ پر غصہ اور غضب کی حالت طاری رہتی اور وہ اپنا ڈنڈا زمین پر بار بار پٹکتا ۔ جب تک وہ گھر میں رہتا کسی فکر میں اِدھر اُدھر گھومتا پھرتا اور ایک گھڑی بھر بھی دم نہ لیتا ۔ لوگ کہتے کہ وہ جنگ کا سب حال جانتا ہے کہ اِس وقت کہاں لڑائی ہو رہی ہے' کون جیت رہا ہے اور کون ہار رہا ہے ۔ میں کبھی نہیں بھول سکتا کہ وہ اپنی ہی گندگی میں لتھڑا ہوا فرش پر پڑا رہتا

में कभी कामयाबी नहीं हुई, अलबत्ता माँ से मुझे मालूम हुआ था कि मेरे नाना, जो मेरे दादा के चचेरे भाई थे, एक मर्तबा कामयाब हो गये थे. किसी फ़क़ीर ने उन्हें एक शीशी में कोई चीज़ दी थी, जिसके ज़रिये उन्होंने एक ताँबे के पैसे को सोने में बदल दिया था और जिससे मेरी माँ के लिये सोने की बालियाँ बना ली गई थीं. इसके बाद उन्होंने इसको सन्दूक़ में बंद करके रख दिया. लेकिन उनके दोस्त क़लन्दर शाह सूफ़ी को जब यह मालूम हुआ कि मेरे नाना के हाथ कीमिया लग गई है, तो उन्होंने इसको बरबाद करने का हुक्म दिया; क्योंकि इससे आदमी लालची हो जाता है और उसका दिल ख़ुदा और सूफ़ियों की तरफ़ से फिर जाता है. मेरी माँ को, जो इस वक़्त बहुत छोटी थीं, इस नायाब चीज़ के बरबाद हो जाने का बड़ा दुख हुआ, जो ताँबे को सोने में बदल देती थी—लेकिन मेरे नाना, जो एक सूफ़ी बुज़ुर्ग थे और क़लन्दरशाह से मोहब्बत करते थे, आपस के ताल्लुक़ात को बिगाड़ना न चाहते थे और उन्होंने क़लन्दर शाह की दिलशिकनी के डर से दौलत की कुञ्जी को बरबाद कर दिया—दोस्ती के ख़ातिर कौन अपनी दौलत के एक हिस्से की भी क़ुरबानी गवारा करेगा और फिर आजकल ?

मुझे अपने दादा के एक दोस्त ख़ूब याद हैं. उनका नाम नादिरशाह था. वे फ़क़ीर थे. हमेशा एक काला कम्बल लपेटे रहा करते थे. वे बूढ़े थे मगर शानदार. जब कभी हम उनकी मौजूदगी में घर से बाहर निकलते, तो वे हमारे सर पर हाथ फेरते और हमको आशीर्वाद और दुआ देते. वे दादा के सब से ज्यादा गहरे दोस्त थे, उनकी ख़ातिर दादा अब्बा बहुत कुछ कर डालते. जब कभी किसी परेशानी में फँसे होते तो फ़ौरन नादिरशाह को बुलाते. उन्होंने मुझको कुछ तावीज़ दिये थे, जो दस ग्यारह बरस की उम्र में चाँदी के खोल में सिले हुए मेरे गले में पड़े रहते.

दादा के एक और कीमियागर दोस्त थे. लेकिन मैं उनसे घबराता था क्योंकि वे मुझे दोबारा ख़तना का डर दिलाकर धमकाते थे. हालाँकि यह सब मज़ाक ही मज़ाक़ था, लेकिन मैं सहम जाता था. एक दिन उन्होंने मेरा कान काट खाया. वे एक लड़के की कहानी सुना रहे थे, जिसने अपने बाप के दोस्त की तरफ़ से बेपरवाही बरती थी. उन बुज़ुर्ग ने उस वक़्त तो कुछ न कहा, लेकिन एक दिन लड़के को बुलाया और उसके कान में कुछ कहने के बहाने से झुककर उसके कान की लौ काट ली. उन्होंने वाक़िआ बताते बताते मेरा कान भी काट खाया. मैं सोचता हूँ कि कहीं मैंने तो कभी जानते हुए उनकी तरफ़ से बेपरवाही नहीं बरती थी.

इसी तरह और बहुत से लोग अक्सर मेरे दादा से मिलने आया करते थे—बहुत से गम्भीर और पागल क़िस्म के लोग. लेकिन इनको पागल कहना हिमाक़त होगी. उनको

میں کبھی کامیابی نہیں ہوئی، البتہ ماں سے مجھے معلوم ہوا تھا کہ میرے نانا، جو میرے دادا کے چچیرے بھائی تھے، ایک مرتبہ کامیاب ہو گئے تھے۔ کسی فقیر نے انہیں ایک شیشی میں کوئی چیز دی تھی، جس کے ذریعے انہوں نے ایک تانبے کے پیسے کو سونے میں بدل دیا تھا اور جس سے میری ماں کے لئے سونے کی بالیاں بنا لی گئی تھیں۔ اس کے بعد انہوں نے اس کو صندوق میں بند کر کے رکھ دیا۔ لیکن ان کے دوست قلندر شاہ صوفی کو جب یہ معلوم ہوا کہ میرے نانا کے ہاتھ کیمیا لگ گئی ہے، تو انہوں نے اس کو برباد کرنے کا حکم دیا؛ کیونکہ اس سے آدمی لالچی ہو جاتا ہے اور اس کا دل خدا اور صوفیوں کی طرف سے پھر جاتا ہے۔ میری ماں کو، جو اس وقت بہت چھوٹی تھیں، اس نایاب چیز کے برباد ہوجانے کا بڑا دکھ ہوا، جو تانبے کو سونے میں بدل دیتی تھی—لیکن میرے نانا جو ایک صوفی بزرگ تھے اور قلندر شاہ سے محبت کرتے تھے، آپس کے تعلقات کو بگاڑنا نہ چاہتے تھے اور انہوں نے قلندر شاہ کی دل شکنی کے ڈر سے دولت کی کنجی کو برباد کر دیا۔ دوستی کے خاطر کون اپنی دولت کے ایک حصہ کی بھی قربانی گوارا کرے گا اور پھر آجکل ؟

مجھے اپنے دادا کے ایک دوست خوب یاد ہیں۔ ان کا نام نادرشاہ تھا۔ وے فقیر تھے۔ ہمیشہ ایک کالا کمبل اوڑھے رہا کرتے تھے۔ وے بوڑھے تھے مگر شاندار۔ جب کبھی ہم ان کی موجودگی میں گھر سے باہر نکلتے، تو وے ہمارے سر پر ہاتھ پھیرتے اور ہم کو آشیرواد اور دعا دیتے۔ وے دادا کے سب سے زیادہ گہرے دوست تھے۔ ان کی خاطر دادا ابا بہت کچھ کر ڈالتے۔ جب کبھی کسی پریشانی میں پھنسے ہوتے تو فوراً نادرشاہ کو بلاتے۔ انہوں نے مجھکو کچھ تعویز دیئے تھے، جو دس گیارہ برس کی عمر میں چاندی کے خول میں سلے ہوئے میرے گلے میں پڑے رہتے۔

دادا کے ایک اور کیمیا گر دوست تھے۔ لیکن میں ان سے گھبراتا تھا، کیونکہ وے مجھے دوبارہ ختنہ کا ڈر دلا کر دھمکاتے تھے۔ حالانکہ یہ سب مذاق ہی مذاق تھا، لیکن میں سہم جاتا تھا۔ ایک دن انہوں نے میرا کان کاٹ کھایا۔ وے ایک لڑکے کی کہانی سنا رہے تھے، جس نے اپنے باپ کے دوست کی طرف سے بےپرواہی برتی تھی۔ ان بزرگ نے اس وقت تو کچھ نہ کہا، لیکن ایک دن لڑکے کو بلایا اور اس کے کان میں کچھ کہنے کے بہانے سے جھک کر اس کے کان کی لو کاٹ لی۔ انہوں نے واقعہ بتاتے بتاتے میرا کان بھی کاٹ کھایا۔ میں سوچتا ہوں کہ کہیں میں نے تو کبھی جانتے ہوئے ان کی طرف سے بےپرواہی نہیں برتی تھی۔

اسی طرح اور بہت سے لوگ اکثر میرے دادا سے ملنے آیا کرتے تھے—بہت سے گمبھیر اور پاگل قسم کے لوگ۔ لیکن ان کو پاگل کہنا حماقت ہوگی۔ ان کو

बालों के लच्छे थे. वे इस सफ़ाई से कटे हुए होते थे कि उनका किनारा एक तलवार की तेज़ धार की तरह मालूम होती थी. वे एक ताक़तवर .फौजी की तरह तनकर एक सीध चलते थे और उनकी हल्के रंग की कामदार टोपी उनके सर पर ज़रा आड़ी रखी रहती थी. उनकी निगाहों और आवाज़ में बड़ा रोब और दबदबा था.

गर्मियों के ज़माने में वे हमेशा तनज़ेब का अँगरखा पहनते थे, जो इस तरह बना होता था कि एक तरफ़ का सीना खुला रहता था. (उस ज़माने में नीचे दूसरा कपड़ा पहनने का रिवाज न था.) जाड़े में वे जामेदार का अँगरखा पहनते थे, जिसमें आम तौर पर स्याह ज़मीन पर सफ़ेद सादे फूल बने होते थे. वे चुस्त मोहरी का चूड़ीदार पाजामा पहनते, पैरों में धुंधले शोख रंग का जूता होता, जिसपर सुनहरे काम का एक फूल बना होता और जिसकी नोक ऊपर को मुड़ी होती. इस पर जब वे अँगरखा पहन कर खड़े होते तो बेहद शानदार मालूम होते, कभी-कभी जाड़ों में वे साफ़ा बाँधते थे, जिसके पेंच बहुत कसे हुए होते थे और उनकी एक भौं को ढक लेते थे. इससे वे चुस्त तो बहुत मालूम होते, लेकिन ख़ौफ़नाक से हो जाते.

वह जनानख़ाने में सिवाय खाने के वक्त के बहुत कम आते थे. वे अपनी चाय ख़ुद बनाया करते थे. जब कभी वे घर में आते तो अपने आने की ख़बर देने के लिये ज़ोर से खखारते ताकि औरतों में अचानक न पहुँच जायें. उनकी आवाज़ सुनते ही बालिग़ लड़कियाँ, बहुएँ और दूसरी बीबियाँ अपने डुपट्टे सम्भालकर सरों को ढक लेतीं और अदब से बैठ जातीं. बच्चे ख़ामोश होकर भाग जाते. उनकी चाल में तो रानाई हमेशा से थी, यहाँ तक कि 76 बरस की उम्र में उन पर लक़वा गिरा; इसके बाद से वे बराबर बिस्तर पर पड़े रहते. या तो किसी से बातें किया करते या अकेले ग़म खाया करते; लेकिन उनकी निगाहों और आवाज़ में अब भी वही रोब दाब था. उनके शौक़ कीमिया, मछली का शिकार, पुराने चीनी के बरतनों का भंडार जमा करना, दवायें तैयार करना वग़ैरा थे. हर तरह के फ़क़ीर और सूफ़ी उनके पास आया करते और घन्टों उनसे नायाब जड़ी बूटियों के मुताल्लिक़ बातें किया करते. मकान का मरदाना हिस्सा पौधों से भरा हुआ था और उनमें छोटे बड़े अजीब-अजीब पत्तियों के काँटेदार पौधे थे, जो एक कीमियागर के साज़ और सामान का हिस्सा होते हैं. अलमारियों में बहुत से पत्थर, हर क़िस्म की दवायें, ख़ुश्क जड़ी बूटियाँ और फूल भरे हुए थे.

दादा अब्बा अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े भी तजुर्बा किया करते और हमेशा नये नुस्ख़े की तलाश में रहते, रोज़ शाम को नौकर जामा मस्जिद जाया करता और नई बूटियाँ लाता. लेकिन जहाँतक मुझको याद है, उनको सोना बनाने

بالوں کے لچھے تھے . وہ اِس عمدگی سے کٹے ہوئے ہوتے تھے کہ اُن کا کنارہ ایک تلوار کی تیز باڑھ کی طرح معلوم ہوتی تھی . وہ ایک طاقتور فوجی کی طرح تن کر ایک سیدھ میں چلتے تھے اور اُن کی ہلکے رنگ کی کامدار ٹوپی اُن کے سرپر ذرا آڑی رکھی رہتی تھی . اُن کی نگاہوں اور آواز میں بڑا رعب اور دبدبہ تھا .

گرمیوں کے زمانے میں وہ ہمیشہ تنزیب کا انگرکھا پہنتے تھے، جو اِس طرح بنا ہوتا تھا کہ ایک طرف کا سینہ کھلا رہتا تھا . (اُس زمانے میں نیچے دوسرا کپڑا پہننے کا رواج نہ تھا) . جاڑے میں وہ جامہ دار کا انگرکھا پہنتے تھے، جس میں عام طور پر سیاہ زمین پر سفید سادے پھول بنے ہوتے تھے . وہ چست موہری کا چوڑیدار پاجامہ پہنتے، پیروں میں دھندلے شوخ رنگ کا جوتا ہوتا، جس پر سنہرے کام کا ایک پھول بنا ہوتا اور جس کی نوک اوپر کو مڑی ہوتی . اِس پر جب وہ انگرکھا پہن کر کھڑے ہوتے، تو بےحد شاندار معلوم ہوتے، کبھی کبھی جاڑوں میں وہ صافہ باندھتے تھے، جس کے پیچ بہت کسے ہوتے تھے اور اُن کی ایک بھوں کو ڈھک لیتے تھے . اِس سے وہ چست تو بہت معلوم ہوتے، لیکن خوفناک سے ہو جاتے .

وہ زنانخانہ میں سوائے کھانے کے وقت کے بہت کم آتے تھے . وہ اپنی چائے خود بنایا کرتے تھے . جب کبھی وہ گھر میں آتے، تو اپنے آنے کی خبر دینے کے لئے زور سے کھکھارتے، تاکہ عورتوں میں اچانک نہ پہنچ جائیں . اُن کی آواز سنتے ہی بالغ لڑکیاں، بہوئیں اور دوسری بیبیاں اپنے دوپٹے سنبھال کر سروں کو ڈھک لیتیں اور ادب سے بیٹھ جاتیں . بچے خاموش ہو کر بھاگ جاتے . اُن کی چال میں تو رعنائی ہمیشہ سے تھی، یہاں تک کہ 76 برس کی عمر میں اُن پر لقوہ گرا، اِس کے بعد سے وہ برابر بستر پر پڑے رہتے . یا تو کسی سے باتیں کیا کرتے یا اکیلے غم کھایا کرتے؛ لیکن اُن کی نگاہوں اور آواز میں اب بھی وہی رعب داب تھا . اُن کے شوق، کیمیا، مچھلی کا شکار، پرانے چینی کے برتنوں کا بھنڈار جمع کرنا، دوائیں تیار کرنا وغیرہ تھے . ہر طرح کے فقیر اور صوفی اُن کے پاس آیا کرتے تھے اور گھنٹوں اُن سے نایاب جڑی بوٹیوں کے متعلق باتیں کیا کرتے . مکان کا مردانہ حصہ پودوں سے بھرا ہوا تھا اور اِن میں چھوٹے بڑے عجیب عجیب پتیوں کے کانٹے دار پودے تھے، جو ایک کیمیاگر کے ساز اور سامان کا حصہ ہوتے ہیں . الماریوں میں بہت سے پتھر، ہر قسم کی دوائیں، خشک جڑی بوٹیاں اور پھول بھرے ہوئے تھے .

دادا ابا اپنے بستر پر پڑے پڑے بھی تجربہ کیا کرتے اور ہمیشہ نئے نسخے کی تلاش میں رہتے، روز شام کو نوکر جامع مسجد جایا کرتا اور نئی بوٹیاں لاتا . لیکن جہاں تک مجھکو یاد ہے، اُن کو سونا بنانے

मेरे बचपन की सब से ज़्यादा जीती जागती तस्वीर मेरे दादा की याद है. वे एक बड़ी भारी उम्र के बुज़ुर्ग थे और उन लोगों में से थे जो अब क़रीब क़रीब नायाब हैं. बर्तानिवी साम्राज के दौर दौरे और आमदनी और खर्च के पूँजीवादी तरीक़ों के शुरू होने के साथ ही जागीरदारी ज़माने के इस तरह के लोग अब बहुत कम नज़र आते हैं. कभी-कभी देहली या लखनऊ जैसे शहर की किसी तंग गली में हमें ऐसे दो-चार लोग दिखाई दे जाते हैं. वे अपने आस पास की चीज़ से मुँह मोड़ लेते हैं और मग़रिबी तहज़ीब और ख़याल को मंज़ूर करने से परहेज़ करते हैं. सड़कों पर चलते हुए शायद उनको ख़ुद झेंप मालूम होती है. वह अपने को कुछ बीते हुए ज़माने का महसूस करते हैं. ग़ालिबन वह तहज़ीब के इस नये दौर को पसन्द नहीं करते, जो उनपर लाद दिया गया है. लेकिन फिर भी वे अपना सर ऊँचा रखते हैं, शायद यह सोचकर कि वे भी कभी कुछ थे और उनकी आँखों ने भी बहुत कुछ देखा है. इन्होंने अभी अपने लिबास को नहीं छोड़ा है और अब भी मलमल का अँगरखा और पुराने तर्ज़ के सुर्ख़ रंग के जूते पहने नज़र आते हैं. उनकी दाढ़ियाँ बनी सँवरी और चढ़ी हुई होती हैं, या बड़ी शान से सीनों पर गिरी रहती हैं. उनकी दाढ़ियाँ मौलवियों की उन दाढ़ियों से जुदा होती हैं, जो गंदी और उलझी हुई होती हैं और जिनमें कोई ख़ूबसूरती और शान नहीं होती. पुराने शरीफ़ों की दाढ़ी में एक शान होती थी. वे पट्टे रखते थे, उनमें तेल लगाकर कंघी से सँवारते थे और बीच से माँग निकालते थे. देहली में वे कड़ी दीवार की गोल कामदार टोपियाँ पहनते और लखनऊ में सफ़ेद चिकन की छोटी-छोटी टोपियाँ, जो उनके सर पर बीचो बीच बड़ी सफ़ाई से रखी रहतीं.

लखनऊ वालों की आदत और तर्ज़ तरीक़े में कुछ ज़नानापन पाया जाता. उनकी चाल ढाल में एक ज़नाना लोच होता, जैसा पुराने ज़माने की मोहज़्ज़िब तवाइफ़ों में पाया जाता था. जब वे सलाम करते, तो उनकी पतली कमर बल खा जाती, उनके हाथों में एक नाचने वाली की सी अदा आजाती. ऐसा मालूम होता है कि ऊपर गर्दन के ख़म और नीचे हाथों की अदा को मिलाकर वे हवा में एक मेहराब बना रहे हैं. इसके बरख़िलाफ़ देहली के लोगों में मरदानगी ज़्यादा है. मैं यहाँ पुराने शरीफ़ों का ज़िक्र कर रहा हूँ.

मेरे दादा का क़द छै फ़ुट दो इंच था. वह बड़े डील डौल के थे और उनकी रोबदार शख़्सियत थी. उनकी दाढ़ी सफ़ेद थी और बीच में से इधर-उधर चढ़ी रहती थी. उनका सर गंजा था, मगर चारों तरफ़ सफ़ेद और नरम

میرے بچپن کی سب سے زیادہ جیتی جاگتی تصویر میرے دادا کی یاد ہے۔ وہ ایک بڑی بھاری عمر کے بزرگ تھے اور اُن لوگوں میں سے تھے، جو اب قریب قریب نایاب ہیں۔ برطانوی سامراج کے دور دورے اور آمدنی اور خرچ کے پونجی وادی طریقوں کے شروع ہونے کے ساتھ ہی جاگیرداری زمانے کے اِس طرح کے لوگ اب بہت کم نظر آتے ہیں۔ کبھی کبھی دہلی یا لکھنؤ جیسے شہر کی کسی تنگ گلی میں ہمیں ایسے دو چار لوگ دکھائی دے جاتے ہیں۔ وہ اپنے آس پاس کی چیز سے منھ موڑ لیتے ہیں اور مغربی تہذیب اور خیال کو منظور کرنے سے پرہیز کرتے ہیں۔ سڑکوں پر چلتے ہوئے شاید اُن کو خود جھینپ معلوم ہوتی ہے۔ وہ اپنے کو کچھ بیتے ہوئے زمانے کا محسوس کرتے ہیں۔ غالباً وہ تہذیب کے اِس نئے دور کو پسند نہیں کرتے، جو ان پر لاد دیا گیا ہے۔ لیکن پھر بھی وہ اپنا سر اونچا رکھتے ہیں، شاید یہ سوچ کر کہ وہ بھی کبھی کچھ تھے اور اِن کی آنکھوں نے بھی بہت کچھ دیکھا ہے۔ اِنہوں نے ابھی اپنے لباس کو نہیں چھوڑا ہے اور اب بھی ململ کا انگرکھا اور پرانے طرز کے سرخ رنگ کے جوتے پہنے نظر آتے ہیں۔ اُن کی داڑھیاں بنی سنوری اور چڑھی ہوئی ہوتی ہیں، یا بڑی شان سے سینوں پر گری رہتی ہیں۔ اُن کی داڑھیاں مولویوں کی اُن داڑھیوں سے جدا ہوتی ہیں، جو گندی اور اُلجھی ہوئی ہوتی ہیں اور جن میں کوئی خوبصورتی اور شان نہیں ہوتی۔ پرانے شریفوں کی داڑھی میں ایک شان ہوتی تھی۔ وہ پٹے رکھتے تھے، اُن میں تیل لگا کر کنگھی سے سنوارتے تھے اور بیچ سے مانگ نکالتے تھے۔ دہلی میں وہ کڑی دیوار کی گول کامدار ٹوپیاں پہنتے اور لکھنؤ میں سفید چکن کی چھوٹی چھوٹی ٹوپیاں، جو اُن کے سر پر بیچوں بیچ بڑی صفائی سے رکھی رہتیں۔

لکھنؤ والوں کی عادت اور طرز طریقے میں کچھ زنانہ پن پایا جاتا۔ اُن کی چال ڈھال میں ایک زنانہ لوچ ہوتا، جیسا پرانے زمانے کی مہذب طوائفوں میں پایا جاتا تھا۔ جب وہ سلام کرتے، تو ان کی پتلی کمر بل کھا جاتی، اُن کے ہاتھوں میں ایک ناچنے والی کی سی ادا آجاتی۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اوپر گردن کے خم اور نیچے ہاتھوں کی ادا کو ملا کر وہ ہوا میں ایک محراب بنا رہے ہیں۔ اِس کے برخلاف دہلی کے لوگوں میں مردانگی زیادہ ہے۔ میں یہاں کے پرانے شریفوں کا ذکر کر رہا ہوں

میرے دادا کا قد چھ فٹ دو انچ تھا۔ وہ بڑے ڈیل ڈول کے تھے اور اُن کی رعب دار شخصیت تھی۔ اُن کی داڑھی سفید تھی اور بیچ میں سے اِدھر اُدھر چڑھی رہتی تھی۔ اُن کا سر گنجا تھا، مگر چاروں طرف سفید اور نرم

मेरे दादा अब्बा

[सन् 1857 के ज़माने के लोगों का एक ख़ाका]

प्रोफ़ेसर अहमद अली एम. ए.

ज़िन्दगी एक दरिया की तरह बहती है और उसके बहाव को कोई नहीं रोक सकता. जब हम ज़िन्दगी के एक ख़ास दौर से गुज़रते हैं, तो उसके बहाव को देख नहीं सकते, क्योंकि हम ख़ुद उसकी रौ में बहते होते हैं, उसके भँवर में फँसे हुए खिंचे-खिंचे चले जाते हैं और हमको ज़िन्दगी का यह बहाव महसूस तक नहीं होता. दरख़्त हवा में झूमते हैं. उनकी नाचती हुई परछाँइयाँ सतह पर अपना अक्स डालती हैं और उनकी पत्तियाँ सर धुनती दिखाई देती है. जीवन की सतह पर हमारी मिसाल भी इन्हीं थरथराती हुई परछाइयों की तरह है—मगर दरिया बहता जाता है, हमारी परछाइयों से लापरवाह और पत्तियों के नाच की तरफ़ बग़ैर रुख़ किये.

कभी-कभी हमें यह ख़्याल आता है कि हम क्या हैं और क्या हो सकते थे, लेकिन जब तूफ़ान सर से गुज़र जाता है, तब हम अपनी नज़र उसपर जमा सकते हैं. उसी वक़्त हम ख़्यालों से आज़ाद होकर उसकी तफ़सीली जाँच कर सकते हैं.

ज़िन्दगी एक झूमता हुआ दरख़्त है, जिसकी तस्वीर कोई कैमरा नहीं उतार सकता. हम तो सिर्फ़ उसकी ज़िन्दगी ही महसूस कर सकते है. उसके लुभावने नाच से लुत्फ़ उठा सकते हैं.

गुज़र जाने के बाद ही हम चीज़ों की कल्पना और उनकी जाँच कर सकते हैं. उनकी ख़ूबसूरती को जान सकते हैं. उसकी ज़बरदस्त गहराई को महसूस कर सकते हैं.

याददाश्त में तूफ़ान की याद नहीं रहती. राजनैतिक उथल पुथल का निशान तक नहीं होता और हम पर आज-कल जो गुज़र रही है, उसकी याद हम से बहुत दूर होती है. खाने कमाने के लिये कशमकश, इनसानियत का शानदार जीवन-संग्राम और अपनी हालत की बहतरी और हक़ के लिये जंग, हमारी याददाश्त से सब बहुत दूर होते हैं. याद दिल के सारे ज़ख़्मों को भर देती है. सब मत भेद मिट जाते हैं क्योंकि याद, जो थके हुए दिलों को लोरियाँ देकर सुला देती है, इन्साफ़ का अज़ीज़ है.

میرے دادا ابا

[سن 1857 کے زمانے کے لوگوں کا ایک خاکہ]

پروفیسر احمد علی، ایم اے۔

زندگی ایک دریا کی طرح بہتی ہے اور اس کے بہاؤ کو کوئی نہیں روک سکتا۔ جب ہم زندگی کے ایک خاص دور سے گزرتے ہیں، تو اُس کے بہاؤ کو دیکھ نہیں سکتے، کیونکہ ہم خود اس کی رو میں بہتے ہوتے ہیں، اُس کے بھنور میں پھنسے ہوئے کھنچے کھنچے چلے جاتے ہیں اور ہم کو زندگی کا یہ بہاؤ محسوس تک نہیں ہوتا۔ درخت ہوا میں جھومتے ہیں۔ اُن کی ناچتی ہوئی پرچھائیاں سطح پر اپنا عکس ڈالتی ہیں اور اُن کی پتیاں سر دھنتی ہوئی دکھائی دیتی ہیں۔ جیون کی سطح پر ہماری مثال بھی انہیں تھرتھراتی ہوئی پرچھائیوں کی طرح ہے—مگر دریا بہتا جاتا ہے، ہماری پرچھائیوں سے لاپرواہ اور پتیوں کے ناچ کی طرف بغیر رخ کئے۔

کبھی کبھی ہمیں یہ خیال آتا ہے کہ ہم کیا ہیں اور کیا ہو سکتے تھے، لیکن جب طوفان سر سے گزر جاتا ہے، تب ہم اپنی نظر اُس پر جما سکتے ہیں۔ اُسی وقت، ہم خیالوں سے آزاد ہو کر اُس کی تفصیلی جانچ کر سکتے ہیں۔

زندگی ایک جھومتا ہوا درخت ہے، جس کی تصویر کوئی کیمرا نہیں اُتار سکتا۔ ہم تو صرف اُس کی زندگی ہی محسوس کر سکتے ہیں۔ اُس کے لبھاونے ناچ سے لطف اُٹھا سکتے ہیں۔

گزر جانے کے بعد ہی ہم چیزوں کی کلپنا اور اُن کی جانچ کر سکتے ہیں اُن کی خوبصورتی کو جان سکتے ہیں۔ اُس کی زبردست گہرائی کو محسوس کر سکتے ہیں۔

یادداشت میں طوفان کی یاد نہیں رہتی۔ راجنیتک اتھل پتھل کا نشان تک نہیں ہوتا اور ہم پر آجکل جو گزر رہی ہے، اُس کی یاد ہم سے بہت دور ہوتی ہے۔ کھانے کمانے کے لئے کشمکش، انسانیت کا شاندار جیون سنگرام اور اپنی حالت کی بہتری اور حق کے لئے جنگ، ہماری یادداشت سے سب بہت دور ہوتے ہیں۔ یاد دل کے سارے زخموں کو بھر دیتی ہے، سب مت بھید مٹ جاتے ہیں کیونکہ یاد، جو تھکے ہوئے دلوں کو لوریاں دے کر سلا دیتی ہے، انصاف کو عزیز ہے۔

❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

इफ़लास

डाक्टर असर मीनाई

कल सरे राह[१] ज़माने ने तमाशा देखा,
एक इन्सान को फ़ाक़ों से तड़पता देखा.

पेट तलवार की मानिन्द खिंचा पीठ तलक,
ऐसी तस्वीर कि था लर्ज़ा बरअन्दाम[२] फ़लक[३].

ज़िन्दगी कर्ब[४] से दम तोड़ रही थी ऐसे,
राहे उल्फ़त[५] में तड़पता हुआ बिस्मिल[६] जैसे.

ऐसी तस्वीर का हर शख़्स तमाशाई था,
मरता इन्सान भी ज़िन्दों का मगर भाई था.

मौत का था ये तक़ाज़ा[७] कि रगे जाँ[८] न रहे,
वहशी[९] ताने हुए तलवार कि इन्साँ न रहे.

बहरे इम्दाद[१०] कोई दस्ते हमैयत[११] न बढ़ा,
और बिस्मिल का उधर ख़ात्मा बिल्ख़ैर[१२] हुआ.

मेरे दिल पर वह असर था कि ज़ुबाँ थी ख़ामोश,
मुज़महिल[१३] हो गए आज़ा[१४] कि रहा कोई न होश.

कितने मुफ़लिस[१५] यों ही रोज़ाना गुज़र जाते हैं,
यानी इफ़लास[१६] से बेमौत ही मर जाते हैं.

कशमकशहाए[१७] जुनूँ चाहिये जीने के लिये,
एक तूफ़ान है दरकार[१८] सफ़ीने[१९] के लिये.

वो जुनूँ खेज़िये[२०] पैहम[२१] जो सलासिल[२२] तोड़े,
मौजे तूफ़ान है जो सीनए साहिल[२३] तोड़े.

अक़्ल बेदार[२४] है इन्सान समझदार है आज
अपने बस में है 'असर' ऐसी तबाही का इलाज

افلاس

ڈاکٹر اثر مینائی

کل سر راہ زمانے نے تماشا دیکھا،
ایک اِنسان کو فاقوں سے تڑپتا دیکھا۔

پیٹ تلوار کی مانند کھنچا پیٹھ تلک،
ایسی تصویر کہ تھا لرزہ براندام فلک۔

زندگی کرب سے دم توڑ رہی تھی ایسے،
راہ اُلفت میں تڑپتا ہوا بسمل جیسے۔

ایسی تصویر کا ہر شخص تماشائی تھا،
مرتا اِنسان بھی زندوں کا مگر بھائی تھا۔

موت کا تھا یہ تقاضا کہ رگ جاں نہ رہے،
وحشی تانے ہوئے تلوار کہ اِنساں نہ رہے۔

بہر اِمداد کوئی دست حمیت نہ بڑھا،
اور بسمل کا اُدھر خاتمہ بالخیر ہوا۔

میرے دل پر وہ اثر تھا کہ زباں تھی خاموش،
مضمحل ہو گئے اعضا کہ رہا کوئی نہ ہوش۔

کتنے مفلس یونہی روزانہ گذر جاتے ہیں،
یعنی اِفلاس سے بےموت ہی مر جاتے ہیں۔

کشمکشہائے جنوں چاہئے جینے کے لئے،
ایک طوفان ہے درکار سفینے کے لئے۔

وہ جنوں خیزئی پیہم جو سلاسل توڑے،
موج طوفان ہے جو سینۂ ساحل توڑے۔

عقل بیدار ہے اِنسان سمجھدار ہے آج
اپنے بس میں ہے 'اثر' ایسی تباہی کا علاج

१—मार्ग में, २—थर्राया हुआ, ३—आकाश, ४—बेचैनी, ५—प्रेम, ६—घायल, ७ तगादा, ८—प्राण की नस, ९—जङ्गली, १०—सहायता के लिये, ११—सहायता का हाथ, १२—मृत्यु, १३—ढीले, १४—अंग, १५—निर्धन, १६—निर्धनता, १७—खींच तान, १८—आवश्यकता, १९—बेड़ा, २०—पागलपन, २१—लगातार, २२—बंधन, २३—तट २४—जाग्रत.

यह वह पृष्ठ भूमि थी जिसपर सन् 1857 की आ.जादी ो क्रान्ति का सिरजन हुआ. एक भोजपुरी कवि इसकी स्वीर खींचता हुआ कहता है:—

बड़ा अकाल रोग देखवा मा बाटे,
बिपता के बादल गड़गड़ बोले।
दुखवा के नदिया अगम जल पनिया,
जुलुम के हउवा सन् सन् डोले।

और तब यह ग्रामकवि साहस बटोरकर पेशीनगोई रता है कि.—

अब तोर नइया न बचिहे बिदेसिया,
'राम नाम सत' अब नदिया में होले।

आज जब हम सन् 1857 की आ.जादी की लड़ाई का साला जश्न, शताब्दी समारोह, मना रहे हैं तो वह ीनगोई कितना सच बनी हुई है.

[इस लेख के लिखने में हमें भाई प्रकाश चन्द्र जी गुप्त, मिठाई लाल जायसवाल, श्री सुरेश सिंह, श्री वचनेश र श्रीमती सुशीला देवी आदि से अनमोल सहायता मिली —लेखक]

ग़ुलामी के साथ मानवता की मित्रता

श्री अब्दुलहलीम अन्सारी

आजादी आगई, आजादी आने के मानी .ग़ुलामी चली गई. लेकिन मालूम ऐसा होता है कि .ग़ुलामी के साथ मानवता भी गई. क्या .ग़ुलामी ऐसी ही अच्छी चीज़ थी कि मानवता जैसी शुद्ध और सुन्दर चीज़ को वह अपने साथ ले जाये या मानवता .ख़ुद उसके साथ हो गई केवल उसकी अच्छाई, के कारण—होगी उसमें जरूर कोई .ख़ूबी और अच्छाई वरना मानवता को तो आज़ादी का ही साथदेना चाहिये था.बिना मानवता के आज़ादी कैसी सूनी सूनी और बेरौनक़ सी है ! कितना भयानकपन है उसके वातावरन में !

मानवता ने अपने असर से .ग़ुलामी को इन्सानियत के क़ालिब में ढाला था. तहज़ीब का जामा पहनाया था. जब .ग़ुलामी मानवता,के रङ्ग रूप में अच्छी तरह ढल गई तो इसने उससे दोस्ती गाँठी. इसकी दोस्ती भी दो सौ बरस पुरानी और तारीख़ी दोस्ती थी. इस पुरानी दोस्ती के नाते यह उसके साथ हो ली. दोस्ती का हक़ भी अदा किया और मशरक़ी रवादारी को भी निभाया. हम ऐसा ख़याल भी नहीं कर सकते थे मगर यह एक नये प्रकार का अनुभव जो हम को हुआ है उसकी बिना पर कोई शक और शंका की गुन्जाइश नहीं रह जाती है अब.

یہ وہ پرشٹھ بھومی تھی جس پر سن 1857 کی آزادی کی کرانتی کا سرجن ہوا ۔ ایک بھوجپوری کوی اِس کی تصویر کھینچتا ہوا کہتا ہے :—

بڑا اکال روگ دیکھوا ما باٹے
بپتا کے بادل گڑ گڑ بولے !
دکھوا کے ندیا اگم جل پنیا
جلم کے ہووا سن سن ڈولے !

اور تب یہ گرام کوی ساہس بٹور کر پیشینگوئی کرتا ہے کہ :—

اب تور نیا نہ بچیہے بدیسیا
'رام نام ست' اب ندیا میں ہولے !

آج جب ہم سن 1857 کی آزادی کی لڑائی کا سوسالہ جشن، شتابدی سماروہ منا رہے ہیں تو وہ پیشینگوئی سچ بنی ہوئی ہے ۔

[اس لیکھ کے لکھنے میں ہمیں بھائی پرکاش چندر جی گپت شری مٹھائی لال جیسوال، شری سریش سنگھ، شری وچنیش شریمتی سوشیلا دیوی آدی سے انمول سہایتا ملی —لیکھک]

غلامی کے ساتھ مانوتا کی متر تا

شری عبدالحلیم انصاری

آزادی آ گئی ۔ آزادی آنے کے معنی غلامی چلی گئی ۔ لیکن معلوم ایسا ہوتا ہے کہ غلامی کے ساتھ مانوتا بھی گئی ۔ کیا غلامی ایسی ہی اچھی چیز تھی کہ مانوتا جیسی شدھ اور سندر چیز کو وہ اپنے ساتھ لے جائے یا مانوتا خود اُس کے ساتھ ہو گئی کیول اُس کی اچھائی کے کارن—ہوگی اُس میں ضرور کوئی خوبی اور اچھائی، ورنہ مانوتا کو تو آزادی کا ہی ساتھ دینا چاہئے تھا ۔ بنا مانوتا کے آزادی کیسی سونی سونی اور بےرونق سی ہے ! کتنا بھیانک پن ہے اِس کے واتاورن میں !

مانوتا نے اپنے اثر سے غلامی کو اِنسانیت کے قالب میں ڈھالا تھا ۔ تہذیب کا جامہ پہنایا تھا ۔ جب غلامی مانوتا کے رنگ روپ میں اچھی طرح ڈھل گئی تو اِس نے اُس سے دوستی گانٹھی ۔ اِس کی دوستی بھی دو سو برس پرانی اور تاریخی دوستی تھی ۔ اِس پرانی دوستی کے ناتے یہ اُس کے ساتھ ہو لی ۔ دوستی کا حق بھی ادا کیا اور مشرقی رواداری کو بھی نبھایا ۔ ہم ایسا خیال بھی نہیں کر سکتے تھے مگر یہ ایک نئے پرکار کا انوبھو جو ہم کو ہوا ہے اُس کی بنا پر کوئی شک اور شنکا کی گنجائش نہیں رہ جاتی ہے اب ۔

होइ गइले कंगाल हो बिदेसी तोरे रजवा में । टेक ।
सोनवा के थाली डइवाँ जेवना जेंवत रहलीं,
कठवा के डोकिया के होइ गइल मुहाल हो ॥बिदेसी तोरे०॥
भारत के लोग आज दाना बिना तरसे भैया ।
लन्दन के कुत्ता उड़ावें मजा माल हो ॥ बिदेसी तोरे० ॥

ऐसी अकाल की सूरत में सन् 57 की तहरीक शुरू हुई. उसे दबाने के लिये कम्पनी की सरकार ने जो .ज़ुल्म और अनीति की उससे तहरीक तो दब गई, हिन्दुस्तानियों के दिल में डर तो बैठ गया लेकिन भुखमरी दूर न हो सकी. रसराज कवि कहते हैं :—

ग़दर ग़नीम .ग़ुबार उठयो, सतावन में सिगरे जग जानी।
केते अनीति अनीति कियो, सब हिन्द प्रजा हिय में भय मानी॥

देश की उस समय की हालत पर समकालीन कवि 'प्रेम धन' लिखते हैं:—

भागो भागो अब काल पड़ा है भारी
भारत पे घेरी घटा बिपत की कारी.
सब गये बनज-व्यापार इतैं सो भागी,
उद्यम पौरुष नसि दिये बनाय अभागी.
अब बची खुची खेती हूँ खिसकन लागी,
चारहुँ दिसि लागी है मँहगी की आगी,
सुनिये चिलायँ सब परजा भई भिखारी,
भागो भागो अब काल पड़ा है भारी.

अंगरेज़ी राज में भारत की दरिद्रता की एक दूसरी झाँकी भारतेन्दु के शब्दों में देखें:—

कल के कलबल छलन सों छले इतै के लोग,
नित नित धन सों घटत है, बाढ़त हैं दुःख सोग.
मारकीन मलमल बिना चलत कछू नहिं काम,
परदेसी जुलहान के मानहु भए ग़ुलाम.
वस्त्र काँच काग़ज़ क़लम चित्र खिलौने आदि,
आवत सब परदेस सों नितहिं जहाज़न लादि.

उस .ज़माने के बंगाली देशभक्त बजाय क्रान्ति के महज़ लेकचर और तक़रीरों के .ज़रिये देश की हालत सुधारने पर एतक़ाद रखते थे. उनपर फब्ती कसते हुए प्रतापनारायन मिश्र कहते हैं:—

सर्वस लिये जात अंगरेज़,
हम केवल 'ल्यकचर' के तेज.
श्रम बिनु बातें का करती हैं,
कहुँ टेटकन गाजैं टरती हैं.
अपनो काम आपने ही हाथ भल होई,
परदेशिन परधर्मी ते आशा नहिं कोई.

ہوئی گیلے کنگال ھو بدیسی تورے رجوا میں؛ ٹیک ۔
سونوا کے تھالی جھوں جیونا جیوت رہلیں،
کٹھوا کے ڈوکیا کے ہوئی گئول محال ھو ۔ ودیسی تورے...
بھارت کے لوگ آج دانا بنا ترسے بھیا،
لندن کے کتا اڑاویں مجا مال ھو ۔ ودیسی تورے ۔

ایسی اکال کی صورت میں سن 57 کی تحریک شروع ہوئی۔ اسے دبانے کے لئے کمپنی کی سرکار نے جو ظلم اور انیتی کی اُس سے تحریک تو دب گئی، ھندستانیوں کے دل میں ڈر تو بیٹھ گیا لیکن بھکمری دور نہ ھو سکی ۔ رسراج کوی کہتے ھیں :—

غدر غنیم غبار اُٹھیو، ستاون میں سگرے جگ جانی،
کیتے انیتی انیتی کیو، سب ھند پرجا ھئے میں بھئے مانی ۔

دیش کی اُس سمے کی حالت پر سمکالین کوی 'پریم دھن' لکھتے ھیں :—

بھاگو بھاگو اب کال پڑا ھے بھاری،
بھارت پر گھیری گھٹا بپت کی کاری ۔
سب گئے بنج ویاپار اِتیں سو بھاگی،
اُدیم پورش نسی دیئے بنائے ابھاگی ۔
اب بچی کھچی کھیتی ھو کھسکن لاگی،
چار ھوں دس لاگی ھے مہنگی کی آگی ۔
سنیئے چلائیں سب پرجا بھئی بھکاری،
بھاگو بھاگو اب کال پڑا ھے بھاری ۔

انگریزی راج میں بھارت کی دردرتا کی ایک دوسری جھانکی بھارتیندو کے شبدوں میں دیکھیں :—

کل کے کلبل چھلن سوں چھلے اِتے کے لوگ،
نت نت دھن سوں گھٹت ھے، باڑھت ھیں دکھ سوگ ۔
مارکین ململ بنا چلت کچھو نہیں کام،
پردیسی جلاھن کے مانہو بھئے غلام ۔
وستر کانچ کاغذ قلم چتر کھلونے آدی،
آوت سب پردیس سوں نت ھیں جہازن لادی ۔

اُس زمانے کے بنگالی دیش بھکت بجائے کرانتی کے محض لیکچر اور تقریروں کے ذریعہ دیش کی حالت سدھارنے پر اعتقاد رکھتے تھے ۔ اُن پر پھبتی کستے ھوئے پرتاپ نارائن مشر کہتے ھیں :—

سربس لئے جات انگریز،
ھم کیول 'لکچر' کے تیز ۔
شرم بن باتیں کا کرتی ھیں،
کہوں ٹیٹکن گاجیں ٹرتی ھیں ۔
اپنو کام آپنے ھی ھاتھ بھل ھوئی،
پردیشن پردھرمی تے آشا نہیں کوئی ۔

"जिस मजबूती और धीरज के साथ तात्या इस बगावत की रहनुमाई कर रहा है वह सचमुच हैरतनाक है. वह हमारा सबसे चतुर शत्रु साबित हुआ. पिछले एक बरस से उसने मध्य भारत और मध्य प्रदेश में तहलका मचा रखा है. वह हमारे फ़ौजी पड़ावों को रौंद डालता है, खजानों को लूट लेता है और हमारी मैगजीनों को खाली कर देता है. उसने .फौजें जमा की और खोई हैं. लड़ाइयाँ लड़ी हैं और हारी हैं, तोपें हासिल की हैं और उन्हें खोया है. उसके .फौजी कूच इतने तेज होते हैं जैसे बिजली कौंध जाय. अठवारों वह तीस-तीस और चालीस-चालीस मील के हिसाब से कूच करता है, कभी नर्मदा के इस पार और कभी उस पार. हमारी दर्जनों फ़ौजों के कभी वह बीच से निकल जाता है, कभी पीछे से, कभी दायें से और कभी बायें से, कभी घाटियों से और कभी दलदलों से. हमारी एक लाख .फौज उसे पकड़ने की कोशिश कर रही है पर वह हाथ नहीं आता."

जाहिर है ऐसा अद्भुत वीर कवियों के लिये प्रेरणा का स्रोत बन जाता. लेकिन अफ़सोस है अब तक हमें सिवाय एक कविता के तात्या से सम्बन्धित कोई समकालीन कविता नहीं मिली. कवि ने, जो कानपुर का निवासी है, भारत वासियों से तात्या की पुकार अर्ज की है. कवि के शब्दों में तात्या कहते हैं कि एक कमान, एक झंडा, एक हुक्म या अनुशासन का पालन करने से ही देश का उद्धार हो सकता है. हम देश का मान बचाने के लिये अपनी जानों को गँवाने के लिये तैयार रहें तभी विदेशियों का संहार होगा और तभी सच्ची शान्ति या अमन क़ायम होगा. गीत के बोल हैं :—

सुनो वीरो, तात्या की पुकार हो !
एकै निसनवाँ हो रामा,
एकै कमनवाँ हो रामा,
एकै हुकुमवा हो रामा,
तबै देसवा के होई उद्धार हो !
जाये परनवा हो रामा
बचै देसुआ के मानवा हो, रामा,
तबै छाई अमनवा हो रामा,
तबै होई फिरंगिया संहार हो !

सन् 1757 की प्लासी की लड़ाई के बाद 1857 तक ईस्ट इन्डिया कम्पनी की आर्थिक या इक़्तसादी नीति ने सारे देश को कङ्गाल बना दिया था. आये दिन भुखमरी और मौत सर पर नाच रही थी. सन 1765 में जब से दीवानी के अधिकार कम्पनी को मिले थे उसकी लगान नीति ने अनगिनत किसानों को खेत छोड़कर भाग जाने पर मजबूर कर दिया था. उद्योग-धन्धे नष्ट हो रहे थे और क़हत सर पर मंडरा रहा था. देश की इस आर्थिक स्थिति की तस्वीर खींचते हुए एक कवि कहता है :—

"جس مضبوطی اور دھیرج کے ساتھ تانتیا اِس بغاوت کی رہنمائی کر رہا ہے وہ سچ مچ حیرتناک ہے۔ وہ ہمارا سب سے چتر شترو ثابت ہوا۔ پچھلے ایک برس سے اُس نے مدھیہ بھارت اور مدھیہ پردیش میں تہلکہ مچا رکھا ہے۔ وہ ہمارے فوجی پڑاؤں کو روند ڈالتا ہے، خزانوں کو لوٹ لیتا ہے اور ہماری میگزینوں کو خالی کر دیتا ہے۔ اُس نے فوجیں جمع کیں اور کھوئی ہیں، لڑائیاں لڑی ہیں اور ہاری ہیں، توپیں حاصل کی ہیں اور اُنہیں کھویا ہے۔ اُس کے فوجی کوچ اِتنے تیز ہوتے ہیں جیسے بجلی کوندہ جائے۔ اٹھواروں وہ تیس تیس اور چالیس چالیس میل کے حساب سے کوچ کرتا ہے، کبھی نرمدا کے اِس پار اور کبھی اُس پار۔ ہماری درجنوں فوجوں کے کبھی وہ بیچ سے نکل جاتا ہے، کبھی پیچھے سے اور کبھی دائیں سے اور کبھی بائیں سے، کبھی گھاٹیوں سے اور کبھی دلدلوں سے۔ ہماری ایک لاکھ فوج اُسے پکڑنے کی کوشش کر رہی ہے پر وہ ہاتھ نہیں آتا۔"

ظاہر ہے ایسا ادبھت ویر کویوں کے لئے پریرنا کا سروت بن جاتا۔ لیکن افسوس ہے اب تک ہمیں سوائے ایک کویتا کے تانتیا سے سمبندھت کوئی سمکالین کویتا نہیں ملی۔ کوی نے، جو کانپور کا نواسی ہے، بھارت واسیوں سے تانتیا کی پکار عرض کی ہے۔ کوی کے شبدوں میں تانتیا کہتے ہیں کہ ایک کمان، ایک جھنڈا، ایک حکم یہ انوشاسن کا پالن کرنے سے ہی دیش کا اُدھار ہو سکتا ہے۔ ہم دیش کا مان بچانے کے لئے اپنی جانوں کو گنوانے کے لئے تیار رہیں تبھی ودیشیوں کا سنگھار ہوگا اور تبھی سچی شانتی یا امن قایم ہوگا۔ گیت کے بول ہیں :—

سنو ویرو، تانتیا کی پکار ہو !
ایکے نسنوا ہو راما،
ایکے کمنوا ہو راما،
ایکے حکموا ہو راما،
تبے دیسوا کے ہوئی اُدھار ہو !
جائے پرنوا ہو راما،
بچے دیسوا کے منوا ہو راما،
تبے چھائی امنوا ہو راما،
تبے ہوئی فرنگیا سنگھار ہو !

سن 1757 کی پلاسی کی لڑائی کے بعد 1857 تک ایسٹ اِنڈیا کمپنی کی آرتھک یا اقتصادی نیتی نے سارے دیش کو کنگال بنا دیا تھا۔ آئے دن بھکمری اور موت سر پر ناچ رہی تھی۔ سن 1765 میں جب سے دیوانی کے ادھیکار کمپنی کو ملے تھے اُس کی لگان نیتی نے انگنت کسانوں کو کھیت چھوڑ کر بھاگ جانے پر مجبور کر دیا تھا۔ اُدیوگ دھندے نشٹ ہو رہے تھے اور قحط سر پر منڈرا رہا تھا۔ دیش کی اِس آرتھک استھتی کی تصویر کھینچتے ہوئے ایک کوی کہتا ہے :—

मध्य भारत पर अंग्रेजों ने जब फिर से क़ब्ज़ा किया और नतीजे में देशवासियों को .ज़ुल्म सहने पड़े, उसे मालवी लोक गीतों में एक 'आफ़त' और 'काली बदली' कहकर याद किया गया है :—

देस पर आफ़त अइगी हो,
देस पर आफ़त अइगी हो,
हुवो फिरंगी राज,
बादली काली छइगी हो.

आज़ादी की जंग में जब अपनी ताक़त को काफ़ी नहीं समझा गया तो देवी देवताओं की मदद के लिये भी दुआ माँगी गई. इस तरह की एक मिसाल हमें मध्यप्रदेश के कवि के बोल में मिलती है. बाबू कुँअरसिंह के प्रोत्साहन से जबलपुर के गोंड राजा शंकर शाह और उनके जेठे कुमार मैदाने जङ्ग में कूद पड़े. कवि उनकी कामयाबी के लिये कालीमाई से प्रार्थना करता है और कहता है कि शंकर शाह का एक एक सिपाही ऐसा ताक़तवर बन जाय कि हज़ार दुश्मनों का मुक़ाबला कर सके. बोल के शब्द हैं :—

तू है शत्रु विनाशिन माई !
कर शत्रू संहार मइया !
शंकरशाह है दास तिहारा
दास का रखले मान मइया !
आज फ़िरंगी बचने न पाये
गह कर में तलवार मइया !
शंकर का एक एक सिहहिया
कर तू उसे हज़ार मइया !
माँ कालिका बने रणचन्डी
बहे रुधिर की धार मइया !
अब देरी का काम नहीं है
भारत करे पुकार मइया !
सुनकर आर्त गुहार मइया
अब तू ले अवतार मइया !

कालिका ने कवि की पुकार सुनी या नहीं लेकिन बलिदान की देवी ने शंकरशाह की पुकार सुनी. जबलपुर के परेड के मैदान में शंकरशाह और उनका पुत्र और सैकड़ों देशभक्त सैनिक तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा दिये गये. जिन लोगों ने उस नज़ारे को देखा है वे स्वीकार करते हैं कि शंकरशाह और उनके साथी जब तोप के मुँह से उड़ाये गये तो उनके ओठों पर मुस्कुराहट थी.

इतिहास लेखक सर जान के के अनुसार तात्याटोपे, जिनका असली नाम रामचन्द्र पाण्डुरङ्ग था, सन् 57 के स्वाधीनता संग्राम के क़ाबिल से क़ाबिल सलाहकारों में से थे. आज़ादी की लड़ाई शुरू होने से लेकर अपनी फाँसी के दिन तक, यानी 18 अप्रैल सन् 1859 तक तात्या बिना रुके और बिना थके अंग्रेज़ी हुकूमत से मोरचा लेते रहे. 17 जनवरी सन् 1859 को लन्दन टाइम्स ने लिखा था :—

مدھیہ بھارت پر انگریزوں نے جب پھر سے قبضہ کیا اور نتیجے میں دیش واسیوں کو ظلم سہنے پڑے، اُسے مالوی لوک گیتوں میں ایک 'آفت' اور 'کالی بدلی' کہکر یاد کیا گیا ہے :—

دیس پر آفت آئیگی ہو،
دیس پر آفت آئیگی ہو،
ہوو پھرنگی راج،
بادلی کالی چھئے گی ہو۔

آزادی کی جنگ میں جب اپنی طاقت کو کافی نہیں سمجھا گیا تو دیوی دیوتاؤں کی مدد کے لئے بھی دعا مانگی گئی۔ اِس طرح کی ایک مثال ہمیں مدھیہ پردیش کے کوی کے بول میں ملتی ہے۔ بابو کنور سنگھ کے پروتساہن سے جبلپور کے گونڈ راجہ شنکر شاہ اور ان کے جیٹھے کمار میدان جنگ میں کود پڑے۔ کوی اُن کی کامیابی کے لئے کالی مائی سے پرارتھنا کرتا اور کہتا ہے کہ شنکر شاہ کا ایک ایک سپاہی ایسا طاقتور بن جائے کہ ہزار دشمنوں کا مقابلہ کر سکے۔ بول کے شبد ہیں :—

تو ہے شترو وناشن مائی
در شترو سنگھار میا !
شنکرشاہ ہے داس تہارا
داس کا رکھ لے مان میا !
آج فرنگی بچنے نہ پائے
گہہ کر میں تلوار میا !
شنکر کا ایک ایک سپاہیا
کر تو اُسے ہزار میا !
ماں کالکا بنے رن چنڈی
بہے رودھر کی دھار میا !
اب دیری کا کام نہیں ہے
بھارت کرے پکار میا !
سن کر آرت گوہار میا
اب تو لے اوتار میا !

کالکا نے کوی کی پکار سنی یا نہیں لیکن بلیدان کی دیوی نے شنکر شاہ کی پکار سنی۔ جبلپور کے پریڈ کے میدان میں شنکر شاہ اور اُن کا پتر اور سیکڑوں دیش بھکت سینک توپ کے منھ سے باندھکر اُڑا دئیے گئے۔ جن لوگوں نے اُس نظارے کو دیکھا ہے وے سویکار کرتے ہیں کہ شنکر شاہ اور اُن کے ساتھی جب توپ کے منھ سے اُڑائے گئے تو اُن کے ہونٹھوں پر مسکراہٹ تھی۔

اِتہاس لیکھک سرجان کے کے انوسار تانتیا ٹوپے، سنگرام کے قابل سے قابل صلاحکاروں میں سے تھے۔ آزادی کی لڑائی شروع ہونے سے لیکر اپنی پھانسی کے دن تک، یعنی 18 اپریل سن 1859 تک تانتیا بنا رکے اور بنا تھکے انگریزی حکومت سے مورچہ لیتے رہے۔ 17 جنوری سن 1859 کو لندن ٹائمس نے لکھا تھا :—

नक्शों और छन्दों में सन अठारह सौ सत्तावन

राजस्थान में सन् 1857 की आज़ादी की तहरीक के नेता आउवा जागीर के ठाकुर .खुशालसिंह थे. मारवाड़ के उस ख़ित्ते में, होली के मौक़े पर, आउवा ठाकुर के यशगान की पुरानी धुन अब भी सुनाई देती है :—

ढोल बाजे, थाली बाजे, भेलो बाजे बाँकियो,
अजंट ने ओ मारने दरवाजे नाकियो,
जूंझे आउवो,
हे ओ जूंझे आउवो, आउवो मुल्कों में चावो ओ,
जूंझे आउवो.

25 अगस्त सन् 1857 को एरनपुरा और डीसा की हिन्दुस्तानी फ़ौजों ने बग़ावत करदी और मारवाड़ से होकर कूच शुरू किया. इन फ़ौजों ने .खुशहालसिंह को अपना नेता और कमाण्डर बनाया. जोधपुर के राजा ने पोलिटिकल एजेंट, सर हेनरी लाटेन्स को फ़ौजी मदद भेजी. देशभक्त ठिकानेदारों में आसोप-गूलर, आलनियावास, लांबिया और भिवालिया और सामन्तों में मेवाड़ के सलुम्बर व रूपनगर के सामन्तों ने .खुशालसिंह का साथ दिया. जोधपुर का पोलिटिकल एजेंट कैप्टेन मेसन .फ़ौज लेकर आउवा गया लेकिन मारा गया. अंग्रेज़ी सेना ने आउवा पर फिर धावा बोला लेकिन .खुशालसिंह के आगे उसकी एक न चली. दुश्मन के दो हज़ार सैनिक काम आये. अंगरेज़ों की इस हार ने आउवा को सन् 57 के आज़ाद हिन्दुस्तान के नक़्शे में चमका दिया. अजमेर, नसीराबाद, नीमच और मऊ की छावनियों को हिन्दुस्तानी .फ़ौजों ने आज़ादी का बिगुल बजाकर आउवा की तरफ़ कूच किया. लेकिन इन .फ़ौजों के पहुँचने के पहिले ही तीसरी बार के ज़बर्दस्त हमले में महाराजा जोधपुर की मदद से आउवा की पुरानी गढ़ी धूल में मिला दी गई. .खुशहालसिंह ने जङ्गलों में पैठकर छापामार लड़ाई का तरीक़ा अख़्तियार किया. कोठारिया के रावत जोधसिंह ने .खुशहालसिंह का पूरा साथ दिया. राजस्थान के तत्कालीन चारण कवियों ने .खुशहालसिंह की कीर्ति को गाँव-गाँव में पहुँचा दिया. उन्हीं का एक दोहा देखें :—

थिर रण अड़ियाँ योगणी, नथपुर पूगो नाम,
आउवो खुसियाल हल, गावे गाँमो गाँव.

.खुशालसिंह के साथ साथ जोधसिंह की भी तारीफ़ राजस्थानी कवियों ने गाई. बानगी का एक छप्पय सुनें :—

मारे दोय अजंट खून मरुधर रो कीनो,
फिर फौजां चहुं ओर जोर अंगरेजां दीनो
मगरां बिच फिरतो, सहर सलुम्बर आयो,
सरणां रावत सुणें, कथन नराकार के वायो.
पलटिया देस दूजी दसा, सगा सरब ही पलटिया!
क्रम धम खुसाल चांपा-तिलक, रावत जोधे राखिया.

نقشوں اور چھندوں میں سن اٹھارہ سو ستاون

راجستھان میں سن 1857 کی آزادی کی تحریک کے نیتا آؤوا جاگیر کے ٹھاکر خوشحال سنگھ تھے۔ مارواڑ کے اس خطہ میں، ہولی کے موقع پر، آؤوا ٹھاکر کے یش گان کی پرانی دھن اب بھی سنائی دیتی ہے :—

ڈھول باجے، تھالی باجے، بھیلو باجے بانکیو،
اجنٹ نے او مارنے دروازے ناکیو۔
جونجھے آؤوو۔
ہے او جونجھے آؤوو، آؤوو ملکاں میں چاوو او،
جونجھے آؤوو۔

25 اگست سن 1857 کو ایرنپورہ اور ڈیسا کی ہندستانی فوجوں نے بغاوت کردی اور مارواڑ سے ہو کر کوچ شروع کیا۔ اِن فوجوں نے خوشحال سنگھ کو اپنا نیتا اور کمانڈر بنایا۔ جودھپور کے راجا نے پولیٹکل ایجنٹ، سر ہینری لاٹینس، کو فوجی مدد بھیجی۔ دیش بھکت ٹھکانیداروں آسوپ میں گولر، آلنیاواس، لامبیا اور بھوالیا اور سامنتوں میں میواڑ کے سلومبر و روپ نگر کے سامنتوں نے خوشحال سنگھ کا ساتھ دیا۔ جودھپور کا پولیٹکل ایجنٹ کیپٹن میسن فوج لیکر آؤوا گیا لیکن مارا گیا۔ انگریزی سینا نے آؤوا پر پھر دھاوا بولا لیکن خوشحال سنگھ کے آگے اس کی ایک نہ چلی۔ دشمن کے دو ہزار سینک کام آئے۔ انگریزوں کی اِس ہار نے آؤوا کو سن 57 کے آزاد ہندستان کے نقشہ میں چمکا دیا۔ اجمیر، نصیراباد، نیمچ اور مئو کی چھاونیوں کی ہندستانی فوجوں نے آزادی کا بگل بجا کر آؤوا کی طرف کوچ کیا۔ لیکن اِن فوجوں کے پہونچنے کے پہلے ہی تیسری بار کے زبردست حملہ میں مہاراجہ جودھپور کی مدد سے آؤوا کی پرانی گڑھی دھول میں ملا دی گئی۔ خوشحال سنگھ نے جنگلوں میں پیٹھ کر چھاپا مار لڑائی کا طریقہ اختیار کیا۔ کوٹھاریا کے راوت جودھ سنگھ نے خوشحال سنگھ کا پورا ساتھ دیا۔ راجستھان کے تتکالین چارن کویوں نے خوشحال سنگھ کی کیرتی کو گاؤں گاؤں میں پہونچا دیا۔ اُنہیں کا ایک دوہا دیکھیں :—

تھر رن اڑیاں یوگنی، نتھ پور پوگو نام،
آؤوو کھوسیال ہل، گاوے گامو گام۔

خوشحال سنگھ کے ساتھ ساتھ جودھ سنگھ کی بھی تعریف راجستھانی کویوں نے گائی۔ بانگی کا ایک چھپیہ سنیں :—

مارے دویہ اجنٹ کھون مرو دھر روکینو،
پھر پھوجاں چہوں اور جور انگریجاں دینو۔
مگراں بچ پھرتو، سہر سلومبر آیو،
سرونا راوت سنیں، کتھن نرکار کے وایو۔
پلٹیا دیو دوجی دسا، سگا سرب ہی پلٹیا،
کرم دھم کھوسال چانپا تلک، راوت جودھے راکھیا۔

सगरे सिपहियों को पेड़ा जलेबी, अपने चबाई गुड़धानी,
अरे झाँसी वाली रानी, ,खूब लड़ी मरदानी,
छोड़ मोरचा भागे फिरंगी ढूँढ़ेहु मिले नहिं पानी,
अरे झाँसी वाली रानी, खूब लड़ी मरदानी.

उस ज़माने के इसी तरह के एक गीत के बोल पर श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी मशहूर कविता लिखी है:—

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी!

इसी कविता के वज़न पर एक दूसरे आधुनिक कवि ने कुँअरसिंह पर एक तराना लिखा:—

मस्ती की थी छिड़ी रागिनी आज़ादी का गाना था!
भारत के कोने कोने में होता यही तराना था!
उधर खड़ी थी लक्ष्मीबाई और पेशवा नाना था!
इधर बिहारी वीर बाँकुड़ा खड़ा हुआ मस्ताना था!
अस्सी बरसों की हड्डी में जागा जोश पुराना था!
सब कहते हैं कुँवर सिंह भी बड़ा वीर मरदाना था!

1857 के कुछ बरस पहले राजस्थान की अदबी या साहित्यिक दुनिया में बूँदी के महाकवि सूर्यमल मीसण सूरज की तरह चमक रहे थे. उन्होंने राजस्थान के राजाओं, सरदारों और जागीरदारों को जगाने के लिये अपनी मशहूर किताब 'वीर सतसई' की रचना की. सन् 1856 में उन्होंने एक ख़त में ठाकुर फूलसिंह को लिखा:—"...म्हारो वचन राज याद रखोगा कि जै अबके अंग्रेज़ रह्यो तो ईं को गायो ही पूरो करसी. जमी को ठाकर कोई भी न रहसी. सब ईसाई हो जासी. तींसों दूरन्देसी विचारै तो फ़ायदो कोई के भी नहीं, परन्तु आपणा आछो दिन होय तो बिचारै और राज जिसो सुहृत म्हारे होय तो बड़ाई तरीके लिखी जावै, तींसूँ थोड़ी में बहुत जाण लेसी."

'वीर सतसई' में उन्होंने बेख़ौफ़ होकर राजाओं से कहा:—

इक डंकी गिया एकरी, भूली कुल साभाव,
सूरों आलस ऐस में, अकज गुमाई आव.

यानी तुमने तो विदेशियों की फ़रमाबरदारी को ही सब कुछ मान लिया. आज़ादी का अपना रास्ता भूलकर उनके बताये हुये रास्ते को ही अपना रास्ता समझ लिया. अरे ओ शूरवीरो! तुमने आलस और ऐशो आराम में ही अपनी उम्र खो दी!

ارے جھانسی والی رانی' خوب لڑی مردانی ۔
چھوڑ مورچہ بھاگے پھرنگی' ڈھونڈھے ملے ناھیں پانی'
ارے جھانسی والی رانی' خوب لڑی مردانی ۔

اِس زمانے کے اِسی طرح کے ایک گیت کے بول پر شریمتی بھدرا کماری چوھان نے اپنی مشہور کویتا لکھی ھے :—

سنگھاسن ھل اُٹھے راج ونشوں نے بھرکٹی تانی تھی'
بوڑھے بھارت میں بھی آئی پھر سے نئی جوانی تھی'
گمی ھوئی آزادی کی قیمت سب نے پہچانی تھی'
دور فرنگی کو کرنے کی سب نے من میں ٹھانی تھی'
چمک اُٹھی سن ستاون میں وہ تلوار پرانی تھی'
بادیلے ھربولوں کے مکھ ھم نے سنی کہانی تھی'
خوب لڑی مردانی وہ تو جھانسی والی رانی تھی!

اِسی کویتا کے وزن پر ایک دوسرے آدھونک کوی نے کنور سنگھ پر ایک ترانہ لکھا :—

مستی کی تھی چھڑی راگنی آزادی کا گانا تھا'
بھارت کے کونے کونے میں ھوتا یہی ترانا تھا'
اُدھر کھڑی تھی لکشمی بائی اور پیشوا نانا تھا'
اِدھر بہاری ویر بانکرا کھڑا ھوا مستانا تھا'
اسی برسوں کی ھڈی میں جاگا جوش پرانا تھا'
سب کہتے ھیں کنور ویر سنگھ بھی بڑا ویر مردانا تھا ۔

1857 کے کچھ برس پہلے راجستھان کی ادبی یا ساھتیک دنیا میں بوندی کے مہاکوی سوریہ مل میشن سورج کی طرح چمک رھے تھے ۔ اُنھوں نے راجستھان کے راجاؤں' سرداروں' اور جاگیرداروں کو جگانے کے لئے اپنی مشہور کتاب 'ویرست سئی' کی رچنا کی ۔ سن 1856 میں اُنھوں نے ایک خط میں ٹھاکر پھول سنگھ کو لکھا :—"......مھارو وچن راج یاد راکھو گا کہ جے اب کے انگریز رھیو تو اِس کو گایوھی پورو کرسی ۔ جمیں کو ٹھاکر کوئی بھی نہ رھسی ۔ سب عیسائی ھو جاسی ۔ تھیسوں دوراندیسی وچارے تو فایدو کوئی کے بھی نہیں' پرنتو اپنا آچھو دن ھوئے تو وچارے اور راجیہ جسو سوھت مھارے ھوئے تو بڑائی ترو کے لکھی جاوے' تھیسوں تھوڑی میں بہت جان لیسی ."

'ویرست سئی' میں اُنھوں نے بےخوف ھو کر راجاؤں سے کہا :—

اک ڈنکی گن ایکری' بھولے کل سابھاو'
سوراں آلس ایس میں' اکج گمائی آؤ ۔

یعنی تم نے تو ودیشیوں کی فرمانبرداری کو ھی سب کچھ مان لیا ۔ آزادی کا اپنا راستہ بھول کر اُن کے بتائے ھوئے راستے کو ھی اپنا راستہ سمجھ لیا ۔ ارے شور ویرو! تم نے آلس اور عیش و آرام میں ھی اپنی عمر کھو دی!

करते हैं. उनके बिहार पहुँचने पर एक के बाद एक मशहूर अंगरेज़ कमान्डरों के मातहत अङ्गरेजी सेनायें उन्हें हराने के लिये भेजी जाती हैं. कप्तान डनवर, मेजर आयर, मेजर मिलमैन, कर्नल डेम्स, लार्ड मार्क, जनरल लगर्ड, जनरल डगलस, और जनरल लीग्रैंड—सब को ज़िल्लत के साथ हारकर पीछे हटना पड़ा. इनमें से एक मोरचे का ज़िक्र करते हुये एक अंगरेज कमान्डर .खुद लिखता है—"हम मैदान छोड़कर भागे. कुँअर सिंह पीछे से बराबर हमला करते रहे. हमारी ज़िल्लत की कोई हद नहीं रही, हमारी बिपता का वारापार न रहा. हममें से किसी में शर्म तक बाक़ी न रही. जिधर जिसका सींग समाया वह उधर भागा. ज़ाहिर है ऐसा रणबाँकुरा बहादुर वीर कवियों का ध्यान अपनी तरफ़ खींचता. भोजपुरी में दर्जनों कविताएँ हैं जो कुँअर सिंह पर लिखी गई है. कवि शेखावत के बोल देखें:—

जानत सकल जहान बाबू कुँअरसिंह मरदान को,
शेखावत कहत बखान जेहि बिधि लड़्यो फिरंग से.

चरबी के कारतूस का ज़िक्र करते हुये कुँअर सिंह अपने भाई अमर सिंह से जो कुछ कहते हैं वह एक दूसरे कवि के बोल में देखें :—

लिखि लिखि पतिया के भेजलन .कुँअरसिंह,
ए सुन अमर सिंह, अमर सिंह भाय हो राम!
चमड़ा के टोंटवा दाँत से हो काटे कि,
छतरी के धरम नसाय हो राम !!
बाबू कुँअरसिंह औ भाई अमरसिंह,
दोनों अपने हैं भाय हो राम!
बतिया के कारन से बाबू कुँअरसिंह,
फिरंगी से रेढ़ बढ़ाय हो राम !!

बाबू कुँअरसिंह की तरह महारानी लक्ष्मीबाई भी पिछली एक सदी से आज़ादी के दीवानों के लिये उम्मीदों का सरचश्मा साबित हुई हैं. रानी लक्ष्मीबाई ने मैदाने जङ्ग में आठ आठ अंगरेजी सेनाओं का बहादुरी के साथ मुक़ाबला किया. एक तरफ़ मशहूर अंगरेज़ जनरैल और दूसरी तरफ़ बाईस बरस की रानी! मगर उसने वह बहादुरी दिखाई कि बड़े से बड़े अंगरेज़ सूरमा के दाँत खट्टे कर दिये. आख़ीर में ग्वालियर के मैदान में रानी लड़ते लड़ते खेत रही मौत की देवी ने रानी के गले में जयमाला डाली. भारत की विविध भाषाओं के कवियों को रानी ने अपनी ओर खींचा है. बुँदेलखंड के गाँव-गाँव में चारणों और हरबोलों ने रानी की कीर्ति गाथा गई है. इनमें से एक गीत की लाइनें ये हैं :—

.खूब लड़ी मरदानी, अरे झाँसी वाली रानी,
बुरजन बुरजन तोपें लगाय दईं, गोला चलाए आसमानी,
अरे झाँसी वाली रानी, .खूब लड़ी मरदानी.

کرتے ہیں ۔ اُن کے بہار پہونچنے پر ایک کے بعد ایک مشہور انگریز کمانڈروں کے ماتحت انگریزی سینائیں اُنہیں ہرانے کے لئے بھیجی جاتی ہیں ۔ کپتان ڈنور' میجر آیر' میجر ملمین' کرنل ڈیمس' لارڈ مارک' جرنل لیگرینڈ' جرنل ڈگلس' اور جرنل لیگرینڈ—سب کو ذلت کے ساتھ ہار کر پیچھے ہٹنا پڑا ۔ ان میں سے ایک مورچے کا ذکر کرتے ہوئے ایک انگریز کمانڈر خود لکھتا ہے—"ہم میدان چھوڑ کر بھاگے ۔ کنور سنگھ پیچھے سے برابر حملہ کرتے رہے ۔ ہماری ذلت کی کوئی حد نہ رہی ۔ ہماری بپتا کا وارا پار نہ رہا ۔ ہم سے کسی میں شرم تک باقی نہ رہی ۔ جدھر جس کا سینگ سمایا وہ اُدھر بھاگا ۔ ظاہر ہے ایسا رن بانکرا بہادر ویر کویوں کا دھیان اپنی طرف کھینچتا ۔ بھوجپوری میں درجنوں کویتائیں ہیں جو کنور سنگھ پر لکھی گئی ہیں ۔ کوی شکھاوت کے بول دیکھیں :—

جانت سکل جہان بابو کنور سنگھ مردان کو'
شکھاوت کہت بکھان جیہی بدھی لڑیو پھرنگ سے ۔

چربی کے کارتوس کا ذکر کرتے ہوئے کنورسنگھ اپنے بھائی امر سنگھ سے جو کچھ کہتے ہیں وہ ایک دوسرے کوی کے بول میں دیکھیں :—

لکھ لکھ پتیا کے بھیجلن کنور سنگھ'
اے سن امرسنگھ' امرسنگھ بھائے ہو رام!
چمڑا کے ٹونٹوا دانت سے ہو کاٹے کہ'
چھتری کے دھرم نسائے ہو رام !!
بابو کنور سنگھ او بھائی امرسنگھ'
دونوں اپنے ہیں بھائے ہو رام'
بتیا کے کارن سے بابو کنورسنگھ'
پھرنگی سے ریڑھ بڑھائے ہو رام !!

بابو کنور سنگھ کی طرح مہارانی لکشمی بائی بھی پچھلی ایک صدی سے آزادی کے دیوانوں کے لئے امیدوں کا سرچشمہ ثابت ہوئی ہیں ۔ رانی لکشمی بائی نے میدان جنگ میں آٹھ آٹھ انگریزی سیناؤں کا بہادری کے ساتھ مقابلہ کیا ۔ ایک طرف مشہور انگریز جرنیل اور دوسری طرف 22 برس کی رانی! مگر اُس نے وہ بہادری دکھائی کہ بڑے سے بڑے انگریز سورما کے دانت کھٹے کر دیئے ۔ آخر میں گوالیر کے میدان میں رانی لڑتے لڑتے کھیت رہی ۔ موت کی دیوی نے رانی کے گلے میں جےمالا ڈالی ۔ بھارت کی وودھ بھاشاؤں کے کویوں کو رانی نے اپنی اُور کھینچا ہے ۔ بندیلکھنڈ کے گاؤں گاؤں میں چاروں اور ہربولوں نے رانی کی کیرتی گاتھا گائی ہے ۔ اِن میں سے ایک گیت کی لائنیں یہ ہیں :—

خوب لڑی مردانی' ارے جھانسی والی رانی'
برجن برجن توپیں لگائے دئیں' گولا چلائے آسمانی'
ارے جھانسی والی رانی' خوب لڑی مردانی ۔
سیکرے سپاہیوں کو پیڑا جلیبی' اپنے چپاتی گڑدھانی'

मौत से तुम्हारे पिता को बड़ा रंज होगा." लाल प्रताप सिंह ने जवाब दिया :—"चाचा जी, मैं अपने पिता को जानता हूँ. मेरे मरने पर नहीं बल्कि मेरे लौट जाने पर उन्हें दुख होगा. आप मोह में पड़कर मुझे फ़र्ज अदा करने से न रोकें." यह कहकर वह बहादुर नौजवान तलवार लेकर दुशमनों पर टूट पड़ा और लड़ते-लड़ते वीर गति पाई. चाँदे की इस मशहूर लड़ाई का बखान उस समय के जन कवि प्राग ने अपने इस छन्द में किया है:—

श्रीमान लाल प्रताप चाँदे में जुर्यो रनधीर है,
बाँके बिसेने बंश के संग में सिपाही बीर है।
पायो हुकुम जब लाल को, धायो मनी है काल को,
लीन्हों चहूँ दिसि घेर के दीन्हों समुरचा फेरि कै।
बिछुआ कटारी ढाल है, कर में गह्यो करवाल है,
लीन्हों तमंचा तमकि के बरछी छबीली काल है।
माधो बड़ो रनधीर है, पहिरे केसरिया चीर है,
मारयो मरो मैदान में मुरक्यो न मुरचा वीर है।
गोरे झुके चहुँओर से, धावा करें बहु ज़ोर से,
तोपें जंजालें छूटतीं अरि अंगना सर कूटतीं।
मुहरा परयो परताप को डर कौन बैरिन ताप को,
ऐसो प्रतापी लाल है प्रकट्यो जो बैरिन काल है।
भूषन बिसेने बंस को छौना रह्यो मानो हँस को,
हुक्मी रह्यो हनुमन्त को ध्यायो सदा श्रीकन्त को।
सो चलि गयो सुरधाम को करिगयो जग में नाम को,
बिरुदावली यह छन्द है कवि प्राग करत प्रबन्ध है।

सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम के महारथियों में जगदीशपुर के 80 बरस के बाबू कुँअर सिंह का नाम हमेशा इज्जत से लिया जायगा. जिस समय दानापुर की हिन्दुस्तानी सेना जगदीशपुर पहुँची बूढ़े कुँअर सिंह ने फ़ौरन अपने महल से निकल कर इस सेना की कमान हाथ में ले ली. उस दिन से लेकर 26 अप्रैल सन् 1858 तक, यानी अपनी शानदार मौत के दिन तक, कुँअर सिंह एक फ़तहयाब सेनापति के रूप में उस इनक़लाब की जङ्ग में हिस्सा लेते हुये दिखाई देते हैं. शाहाबाद, आरा, आजमगढ़, गाजीपुर विजय करते हुये कुँअर सिंह रीवाँ की सरहद तक पहुँच जाते हैं. उनकी इस विजय-यात्रा से बनारस में बैठा हुआ लार्ड केनिंग घबरा जाता है. जबलपुर के राजा शंकरशाह कुँअरसिंह का पैग़ाम मिलते ही मैदान में उतर आते हैं. रीवाँ से कुँअर सिंह काल्पी पहुँचते हैं. वहाँ तात्या टोपे, लक्ष्मी बाई, राव साहब, नाना साहब से उनकी मुलाक़ात होती है. काल्पी से कुँअर सिंह लखनऊ आते हैं. बेगम हज़रत महल से मुलाक़ात करते हैं और तब वापस आरा पहुँचते हैं. सैकड़ों मील के इस जङ्गी कूच में अंगरेजी फ़ौजों की हिम्मत नहीं पड़ती कि वे कुँअर सिंह से मोरचा लें. कुँअर सिंह वापस बिहार पहुँच कर दोबारा जगदीशपुर पर क़ब्जा

موت سے تمہارے پتا کو بڑا رنج ہوگا۔" لال پرتاپ نے جواب دیا :— "چاچا جی میں اپنے پتا کو جانتا ہوں۔ میرے مرنے پر نہیں بلکہ میرے لوٹ جانے پر انہیں دکھ ہوگا۔ آپ موہ میں پڑ کر مجھے فرض ادا کرنے سے نہ روکیں۔" یہ کہکر وہ بہادر نوجوان تلوار لیکر دشمنوں پر ٹوٹ پڑا اور لڑتے لڑتے ویر گتی پائی۔ چاندے کی اِس مشہور لڑائی کا بکھان اُس کے سمے کے جن کوی پراگ نے اپنے اِس چھند میں کیا ہے :—

شریمان لال پرتاپ چاندے میں جریو رندھیر ہے،
بانکے بسنے بنس کے سنگ میں سپاہی ویر ہے!
پایو حکم جب لال کو، دھایو منی ہے کال کو،
لینو چہوں دس گھیر کے دینہو سمورچا پھیر کے!
بچھوا کٹاری ڈھال ہے، کر میں گہیو کروال ہے،
لینو طمنچہ تمک کے برچھی چھبیلی کال ہے!
مادھو بڑو رندھیر ہے، پہرے کیسریا چیر ہے،
ماریو مرو میدان میں مرکیو نہ مورچا ویر ہے!
گورے جھکے چہوں اور سے، دھاوا کریں بہو جور سے،
توپیں جنجالیں چھٹتیں اری انگنا سر کوٹتیں!
موہرا پریو پرتاپ کو ڈر کون بیرن تاپ کو،
ایسے پرتاپی لال ہے پرکٹیو جو بیرن کال ہے!
بھوشن بسینے بنس کو چھونا رہیو مانو ہنس کو،
حکمی رہیو ہنومنت کو دھیایو سدا شری کنت کو!
سو چلی گیو سر دھام کو کری گیو جگ نام کو،
برداولی یہ چھند ہے کوی پراگ کرت پربندھ ہے!

سن 1857 کے سوادھینتا سنگرام کے مہارتھیوں میں جگدیش پور کے اسی برس کے بابو کنور سنگھ کا نام ہمیشہ عزت سے لیا جائیگا۔ جس سمے داناپور کی ہندستانی سینا جگدیش پور پہونچی بوڑھے کنور سنگھ نے فوراً اپنے محل سے نکل کر اُس سینا کی کمان ہاتھ میں لے لی۔ اُس دن سے لیکر 26 اپریل سن 1858 تک، یعنی اپنی شاندار موت کے دن تک کنور سنگھ ایک فتحیاب سیناپتی کے روپ میں اُس انقلاب کی جنگ میں حصہ لیتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں۔ شاہآباد، آرہ، اعظم گڈھ، غازی پور وجئے کرتے ہوئے کنور سنگھ ریواں کی سرحد تک پہنچ جاتے ہیں۔ اُن کی اِس وجئے یاترا سے بنارس میں بیٹھا ہوا لارڈ کیننگ گھبرا جاتا ہے۔ جبلپور کے راجہ شنکر شاہ کنور سنگھ کا پیغام ملتے ہی میدان میں اُتر آتے ہیں۔ ریواں کے کنور سنگھ کالپی پہونچتے ہیں۔ وہاں تاتیا ٹوپے، لکشمی بائی، راؤ صاحب نانا صاحب سے اُن کی ملاقات ہوتی ہے۔ کالپی سے کنور سنگھ لکھنؤ آتے ہیں۔ بیگم حضرت محل سے ملاقات کرتے ہیں اور تب واپس آرہ پہونچتے ہیں۔ سیکڑوں میل کے اِس جنگی کوچ میں انگریزی فوجوں کی ہمت نہیں پڑتی کہ یہ کنور سنگھ سے مورچہ لیں۔ کنور سنگھ واپس بہار پہونچکر دوبارہ جگدیش پور پر قبضہ

राजा बखानौं मैं गोंडा के देवी बक्स महाराज रहे,
असी चार चौरासी कोस माँ जाको डंका बाजि रहे !
गोंडा से पाती गै झाँसी, झाँसी के राजा रामलला,
साथ हमारा दीजै राजा, हमरे राज माँ चोर हला !
कहीं कहीं का चलैं साँड़िया, कहीं कहीं चलते हाथी,
देस-देस औ गाँव-गाँव में, राजा लिख भेजी पाती !
यकदम से धावन पहुँच गया मानो यकीन है,
गोंडा सहर से झाँसी मंज़िल तीन है !
गोंडा सहर से पलटन चलिगै लमती कहैं तकाय रहे,
तम्मुक ऊपर तम्मू गड़िगै तम्मू-तम्मू छाइ रहे !
जाय फ़ौज लमती माँ पहुँची मार-मार डिंडियाय रहे,
पक्का यक-यक मन का गोला साँचा माँहि ढराय रहे !
फ़ौज के मानसिंह औ तोप के पुरैया,
दागै तोप दइउ अस गरजै फाटि करारा नैया !
हज़ारों गोरा बहि गये चिल्लाते बप्पा दैया,
अंगरेज़ कै नेम बोलो राजा धनिधनि तोरी मैया !
भागि चलो बिलाइत साहब राजा से पार न पैया,
भैया परमेसुर का लम्बा हाथ !

सन् 57 के इतिहास में कालाकाँकर की भी एक ख़ास जगह है. जिस वक्त आज़ादी की जङ्ग चल रही थी काला-काँकर की हुकूमत राजा हनुवन्त सिंह के हाथों में थी. अवध के नवाब के यहाँ उनका ख़ास मान दान था. एक ओर वह अंगरेज़ों के पक्के शत्रु और बेगम हज़रत महल के वफ़ादार जागीरदार लेकिन दूसरी ओर उन्होंने 32 असहाय अंगरेज़ औरतों और बच्चों को अपने महल में शरण देकर उन्हें सुरक्षित इलाहाबाद भिजवा दिया. बेगम हज़रत महल ने राजा हनुवन्त सिंह के सुपुर्द किया कि जब अंगरेज़ी फ़ौज सुलतानपुर से लखनऊ की ओर बढ़े तो राजा हनुवंतसिंह अमेठी की फ़ौजों के साथ मिलकर उससे मोरचा लें.

राजा हनुवन्तसिंह के जेठे बेटे 26 बरस के लाल प्रताप सिंह कलाकाँकर की सेना के सेनापति थे. राजा ने अपने बेटे को मोरचे के लिये रवाना किया. अपनी जवान बीवी और आठ बरस के बेटे को छोड़कर प्रताप सिंह चले. उनको अकेले जाते देखकर उनके चाचा माधो सिंह भी उनके साथ हो लिये. सुलतानपुर में चाँदा नामक मुक़ाम पर अंगरेज़ी फ़ौज के साथ उनकी घमासान लड़ाई हुई. उस लड़ाई का उस ज़माने के एक कवि ने इन लफ़्ज़ों में ज़िक्र किया है :—

कालाकाँकर के बिसेनवा रे,
चाँदे गाड़े बा निसनवा रे !

अंगरेज़ी फ़ौज की तादाद बहुत ज़्यादा थी. हालत बिगड़ती देखकर चाचा ने कहा—"बेटा ! मैं दुश्मनों की बाढ़ को रोकता हूँ तुम कालाकाँकर वापस चले जाओ, तुम्हारी

راجا بکھانوں میں گونڈہ کے دیوی بکس مہاراج رہے،
اسی چار چوراسی کوس ماں جاکو ڈنکا باج رہے!
گونڈا سے پاتی گئی جھانسی، جھانسی کے راجا رام للا،
ساتھ ہمارا دیجے راجا، ہمرے راج ماں چور ہلا!
کہیں کہیں کا چلیں سانڑیا، کہیں کہیں چلتے ہاتھی،
دیس دیس او گاؤں گاؤں میں، راجا لکھ بھیجی پاتی!
یکدم سے دھاون پہونچ گیا مانو یقین ہے،
گونڈا سہر سے جھانسی منزل تین ہے!
گونڈا سہر سے پلٹن چلگئے لمتی کہیں تکائے رہے،
تمک اوپر تمو گڑیگئے تمو تمو چھائے رہے!
جائے فوج لمتی ماں پہونچی مار مار ڈنڈیائے رہے،
پکا یک یک من کا گولا سانچا مانہی ڈھرائے رہے!
فوج کے مان سنگھ او توپ کے پوریا،
داگے توپ دیو اس گرجے پھاٹ کرارا نیا!
ہزاروں گورا بہی گے چلاتے بپا دیا،
انگریج کئے نیم بولو راجا دھن دھن توری میا!
بھاگ چلے بلائت صاحب راجا سے پار نہ پیا،
بھیا پرمیسور کا لمبا ہاتھ!

سن 57 کے اتہاس میں کالا کانکر کی بھی ایک خاص جگہہ ہے۔ جس وقت آزادی کی جنگ چل رہی تھی کالاکانکر کی حکومت راجا ہنونت سنگھ کے ہاتھوں میں تھی۔ اودھ کے نواب کے یہاں اُن کا خاص مان دان تھا۔ ایک اور وہ انگریزوں کے پکے شترو اور بیگم حضرت محل کے وفادار جاگیردار لیکن دوسری اور انہوں نے 32 اسہائے انگریز عورتوں اور بچوں کو اپنے محل میں شرن دیکر انہیں سرکشت الہ آباد بھجوا دیا۔ بیگم حضرت محل نے راجا ہنونت سنگھ کے سپرد کیا کہ جب انگریزی فوج سلطانپور سے لکھنؤ کی اور بڑھے تو راجا ہنونت سنگھ امیٹھی کی فوجوں کے ساتھ ملکر اُس سے مورچا لیں۔

راجا ہنونت سنگھ کے جیٹھے بیٹے 26 برس کے لال پرتاپ سنگھ کالا کانکر کی سینا کے سینا پتی تھے۔ راجا نے اپنے بیٹے کو مورچے کے لئے روانہ کیا۔ اپنی جوان بیوی اور آٹھ برس کے بیٹے کو چھوڑ کر پرتاپ سنگھ چلے۔ اُن کو اکیلے جاتے دیکھ کر اُن کے چاچا مادھو سنگھ بھی اُن کے ساتھ ہو لئے۔ سلطانپور میں چاندا نامک مقام پر انگریزی فوج کے ساتھ اُن کی گھماسان لڑائی ہوئی۔ اُس لڑائی کا اُس زمانہ کے ایک کوی نے اِن لفظوں میں ذکر کیا ہے :—

کالاکانکر کے بسنوا رے،
چاندے گاڑے بانسنوا رے!

انگریزی فوج کی تعداد بہت زیادہ تھی۔ حالت بگڑتی دیکھ کر چاچا نے کہا—" بیٹا! میں دشمنوں کی باڑھ کو روکتا ہوں تم کالا کانکر واپس چلے جاؤ۔ تمھاری

जै हैं फूट फूट सी तमाम तोप तोड़वालो,
कुटि जैहैं क़ाबिल कमाल फ़ौज खाना ते.
टूटि जैहे देश को दिमाग़, ज़ोर छूटि जैहै,
लूटि जैहै लाखन को माल तोप खाना ते.
भौन कवि कहत खोदाय की खबर करौ,
पीछे पछतावगे खराब खून खाना ते,
बैरिन की बनिता सिखावतीं एकान्त कन्त,
कीजिए न रारि बेनीमाधव बक्स राना ते.

अंगरेज़ औरतें अपने पतियों को एकान्त में समझाती हैं कि—"साजन ! बेनीमाधो बक्स राना से लड़ाई न छेड़िये !"

बेहआगढ़ संडीला के नज़दीक एक जागीर थी. गुलाब सिंह उसके दीवान थे. 1857 के इनक़लाब के शुरू होते ही गुलाब सिंह नाना साहब से जा मिले कानपुर में उन्होंने नाना साथ अंगरेज़ों से लड़ाई लड़ी. फिर अपनी फ़ौज के साथ गुलाब सिंह ने लखनऊ में अंगरेज़ी फ़ौज से मोरचा लिया. फिरंगी उनके ख़ून के प्यासे बन गये. एक दिन जब वे अपनी गढ़ी में लौटे तो अंगरेज़ी सेना ने उन्हें रातों रात आ घेरा. गुलाब सिंह ऐसे लड़े कि अंगरेज़ी फ़ौज को पीछे हटना पड़ा. उनके उस युद्ध को एक कवि ने अपनी जानदार कविता में बयान करते हुये कहा है :—

गुलाब सिंह ऐसे लड़े,
जैसे लंका में लड़े हनुमान !

शिकस्त खाई हुई अंगरेज़ी फ़ौज फिर मोरचा-बन्दी करके बेहआगढ़ आती है. अंगरेज़ी फ़ौज का कमानदार गुलाब सिंह से बातें करना चाहता है. वह गुलाब सिंह को मिलने की दावत देता है. इस घटना पर एक कवि के बोल हैं —

राजा गुलाब सिंह रहिया तोरी हेरूँ,
एक बार दरश दिखावा रे !
अपनी गढ़ी से यह बोले गुलाब सिंह,
सुन रे साहब मोरी बात रे !
पैदल भी मारे, सवार भी मारे,
मारी तोरी फ़ौज बेहिसाब रे !
बाँके गुलाब सिंह रहिया तोरी हेरूँ,
एक बार दरश दिखावा रे !

घमासान मोरचे के बाद रात के अँधेरे में अपने एक बहादुर पासी साथी कल्यान को लेकर गुलाब सिंह ने गढ़ी छोड़ दी. बेहआगढ़ के पीछे बाँस का घना बन था. वहीं से गुलाब सिंह जो ग़ायब हुये तो फिर उनका पता नहीं चला.

राना बेनीमाधव सिंह और गुलाब सिंह की तरह गोंडा के राजा देवी बक्स सिंह भी इतनी बहादुरी के साथ अंगरेज़ी सेनाओं से लड़े कि उन्होंने अपनी वीरता से जन-मन को मोह लिया. उनकी तारीफ़ करते हुए एक समकालीन कवि कहता है :—

جئی ہیں پھوٹ پھوٹ سی تمام توپ توڑوالو'
کوٹ جئی ہیں قابل کمال فوج خانا تے .
ٹوٹ جئی ہے دیش کو دماغ' زور چھوٹ جئی ہے'
لٹ جئی ہے لاکھن کو مال توشہ خانا تے .
بھون کوی کہت خدائے کی خبر کرو'
پیچھے پچھتاوگے خراب خون خانا تے .
بیرن کی بنیتا سکھاوتیں ایکانت کنت'
کیجئے نہ رار بینی مادھو بکس رانا تے !

انگریزی عورتیں اپنے پتیوں کو ایکانت میں سمجھاتی ہیں کہ—"ساجن ! بینی مادھو بکس رانا سے لڑائی نہ چھیڑیئے !"

بیرواگڑھ سنڈیلہ کے نزدیک ایک جاگیر تھی . گلاب سنگھ اُس کے دیوان تھے . 1857 کے انقلاب کے شروع ہوتے ہی گلاب سنگھ نانا صاحب سے جا ملے . کانپور میں اُنہوں نے نانا کے ساتھ انگریزوں سے لڑائی لڑی . پھر اپنی فوج کے ساتھ گلاب سنگھ نے لکھنؤ میں انگریزی فوج سے مورچہ لیا . فرنگی اُن کے خون کے پیاسے بن گئے . ایک دن جب وے اپنی گڑھی میں لوٹے تو انگریزی سینا نے اُنہیں راتوں رات آ گھیرا . گلاب سنگھ ایسے لڑے کہ انگریزی فوج کو پیچھے ہٹنا پڑا . اُن کے اِس یدھ کو ایک کوی نے اپنی جاندار کویتا میں بیان کرتے ہوئے کہا ہے :—

گلاب سنگھ ایسے لڑے'
جیسے لنکا میں لڑے ہنومان !

شکست کھائی ہوئی انگریزی فوج پھر مورچہ بندی کر کے بیرواگڑھ آتی ہے. انگریزی فوج کا کمانڈار گلاب سنگھ سے باتیں کرنا چاہتا ہے . وہ گلاب سنگھ کو ملنے کی دعوت دیتا ہے . اِس گھٹنا پر ایک کوی کے بول ہیں :—

راجا گلاب سنگھ رہیا توری ہیروں'
اک بار درش دکھاوا رے !
اپنی گڑھی سے یہ بولے گلاب سنگھ'
سن رے صاحب موری بات رے !
پیدل بھی مارے' سوار بھی مارے'
ماری توری فوج بےحساب رے !
بانکے گلاب سنگھ رہیا تیری ہیروں'
ایک بار درش دکھاوا رے !

گھماسان مورچے کے بعد رات کے اندھیرے میں اپنے ایک بہادر پاسی ساتھی کلیان کو لیکر گلاب سنگھ نے گڑھی چھوڑ دی . بیرواگڑھ کے پیچھے بانس کا گھنا بن تھا . وہیں سے جو گلاب سنگھ غایب ہوئے تو پھر اُن کا پتا نہیں چلا .

رانا بینی مادھو سنگھ اور گلاب سنگھ کی طرح گونڈا کے راجا دیوی بکس سنگھ بھی اِتنی بہادری کے ساتھ انگریزی سیناؤں سے لڑے کہ اُنہوں نے اپنی ویرتا سے جن من کو موہ لیا . اُن کی تعریف کرتے ہوئے ایک سمکالین کوی کہتا ہے :—

रायबरेली ज़िले के हमीर गाँव का निवासी एक दूसरा कवि बजरंग ब्रह्मभट्ट राना की तारीफ़ में कहता है :—

हिम्मत हाकिम को हज़ारन में देखि आयो,
खेदिके हटायो अंगरेज हू सकाना है!
जाको तेज तीखन तपत महि मन्डल में
हरिगे उल्लूक से न लागत ठिकाना है!
कहै बजरंग बैस वंश अवतंस भयो
कम्पनी बिलाइत सकल बिलखाना है!
नेक न डेराना छीन लीन्हयो तोपखाना
बीर बाँधे बीर बाना बैसराना बिरमदाना है!

बैसवाड़ा के इस वीर राना बेनीमाधव सिंह की शूर-वीरता की तारीफ़ करते हुये एक तीसरा कवि ज्वालाराय कहता है :—

चण्डिका के चेले बैस लरत हैं अकेले फ़ौजें
आया लीना घेरि गोला खूब ही बजायो है।
मारे जरनैल औ कंडेलन को क़ैद कीन्हे,
मारे कप्तान गोरा भेंट ही चढ़ायो है।
राजन में राजा महाराजा बेनीमाधव बक्स,
लरी है लराई अंगरेज चढ़ि आयो है।
कहत कवि ज्वालाराय राजन को काम कीन्हो,
बिना अन्न पानी गोला खूब ही बजायो है।

अवध के कवियों की बानी, ऐसा मालूम होता है, मानो राना बेनीमाधव सिंह की तारीफ़ करते हुये थकती नहीं. सर कालिन कैम्बेल की फ़ौजों ने लखनऊ पर क़ब्ज़ा कर लिया था. बेगम हज़रत महल ने आकर राना के यहाँ शरण ली. अपनी मलका महारानी को राना अगर शरण न देते तो दूसरा कौन देता? सर कालिन ने राना की बहादुरी की तारीफ़ करते हुये उनसे हथियार डालने के लिये कहा. यह भी वादा किया कि राना को उनकी सब जागीर लौटा दी जायगी मगर आज़ादी के उस दीवाने ने ब्रिटिश कमाण्डर-इन-चीफ़ के इस पैग़ाम को हिक़ारत के साथ ठुकरा दिया. एक चौथा कवि राना का गुनगान करते हुये कहता है :—

राना बहादुर सिपाही अवध माँ, धूम मचाई मोरे राम रे!
लिख लिख चिठिया लाट ने भेजी, आन मिलो राना भाई रे!
जंगी खिलत लन्दन से मँगा दूं, अवध मा सूबा बनाई रे!
जवाब सवाल लिखा राना ने, हमसे न करो चतुराई रे!
जब तक प्रान रहैं तन भीतर, तुम कन खोद बहाई रे!

बैसवारा के मशहूर कवि भौन, जिनका ज़िक्र महाकवि 'निराला' ने अपने एक लेख "भौनु कवि" में किया है 1857 में 32 बरस के थे. राना बेनीमाधव बक्स के वे साथी और क़द्र दानों में से थे. राना की शूरवीरता की तारीफ़ करते हुये भौन लिखते हैं :—

رائے بریلی ضلع کے ہمیر گاؤں کا نواسی ایک دوسرا کوی بجرنگ برہم بھٹ رانا کی تعریف میں کہتا ہے :—

ہمت کو حاکم ہجارن میں دیکھ آیو
کھید کے ہٹایو انگریج ہو سکانا ہے!
جاکو تیج تیکھن تپت مہی منڈل میں
ہریگے الوک سے نہ لاگت ٹھکانا ہے!
کہے بجرنگ بیس بنش اوتنس بھیؤ
کمپنی بلائت سکل بلکھانا ہے!
نیک نہ ڈرانا چھین لینہیو توپکھانا
بیر باندھے بیر بانا بیسرانا برمدانا ہے!

بیسواڑہ کے اس ویر رانا بینی مادھو سنگھ کی شور ویرتا کی تعریف کرتے ہوئے ایک تیسرا کوی جوالا رائے کہتا ہے :—

چنڈیکا کے چیلے بیس لڑتے ہیں اکیلے فوجے
آیا لینا گھیری گولا خوب ہی بجایو ہے،
مارے جرنیل او کنڈیل کو قید کینہو
مارے کپتان گورا بھینٹ ہی چڑھایو ہے!
راجن میں راجا مہاراجہ بینی مادھو بکس
لڑی ہے لڑائی انگریز چڑھ آیو ہے!
کہت کوی جوالا رائے راجن کو کام کینہو
بنا ان پانی گولا خوب ہی بجایو ہے!

اودھ کے کویوں کی بانی، ایسا معلوم ہوتا ہے، مانو رانا بینی مادھو سنگھ کی تعریف کرتے ہوئے تھکتی نہیں۔ سر کالن کیمبل کی فوجوں نے لکھنؤ پر قبضہ کر لیا تھا۔ بیگم حضرت محل نے آکر رانا کے یہاں شرن لی۔ اپنی ملکہ مہارانی کو رانا اگر شرن نہ دیتے تو دوسرا کون دیتا؟ سر کالن نے رانا کی بہادری کی تعریف کرتے ہوئے اُن سے ہتھیار ڈالنے کو کہا۔ یہ بھی وعدہ کیا کہ رانا کو اُن کی سب جاگیر لوٹا دی جائیگی مگر آزادی کے اس دیوانے نے برٹش کمانڈر-ان-چیف کے اس پیغام کو حقارت کے ساتھ ٹھکرا دیا۔ ایک چوتھا کوی رانا کا گن گان کرتے ہوئے کہتا ہے :—

رانا بہادر سپاہی اودھ ما، دھوم مچائی مورے رام رے!
لکھ لکھ چٹھیا لاٹ نے بھیجین، آن ملو رانا بھائی رے!
جنگی کھلت لندن سے منگادوں اودھ ما صوبا بنائی رے!
جواب سوال لکھا رانا نے، ہم سے نہ کرو چترائی رے!
جب تک پران رہیں تن بھیتر، تم کن کھود بہائی رے!

بیسوارہ کے مشہور کوی بھون، جن کا ذکر مہا کوی 'نرالا' نے اپنے ایک لیکھ 'بھونو کوی' میں کیا ہے 1857 میں 32 برس کے تھے۔ رانا بینی مادھو بکس کے وہ ساتھی اور قدردانوں میں سے تھے۔ رانا کی شور ویرتا کی تعریف کرتے ہوئے بھون لکھتے ہیں :—

इस ख़ौफ़नाक .ज़ुल्मो-सितम के बाद अहले वतन की जो कैफ़ियत हुई उसे बयान करते हुये दाग़ कहते हैं:—

.जमीं के हाल पै अब आसमान रोता है;
हर इक फ़िराक़े मकीं में मकान रोता है!
बरंगे बूए गुल अहले चमन, चमन से चले;
ग़रीब छोड़ के अपना वतन, वतन से चले;
मुक़ामे अम्न जो ढूँढ़ा तो राह भी न मिली;
ये क़हर था कि .ख़ुदा की पनाह भी न मिली!

दिल्ली के वीराने को बयान करते हुये हज़रते दाग़ की आख़री नज़्म है: –

ये वो जगह है जहाँ बेकसी भी डर जाये;
ये वो जगह है अजल ख़ौफ़ खाके मर जाये!
कहाँ तक आह लिखूँ इसका हाले बरबादी;
लिखूँ कहाँ तलक इस आसमाँ की जल्लादी!
किसी को क़ैदे मेहन से नहीं है आजादी;
कि दाग़ दाग़ है हर दिल हरेक फ़रियादी!

उर्दू .ज़ुबान के उस वक़्त के और भी बहुत से शायरों ने 1857 पर अपने जज़्बात का इज़हार किया है. हमने तो सिर्फ़ नमूने के तौर पर यहाँ ये चन्द कलाम पेश किये हैं.

(2)

जिस तरह दिल्ली की वीरानगी ने उर्दू के मशहूर शायरों के दिलों में एक दर्द और तड़प पैदा की वैसे अवध में स्वतंत्रता की लड़ाई हिन्दी के महाकवियों की भावनाओं को न छू सकी. हाँ गाँव के कवि का दिल सूरमाओं की बहादुरी और आज़ादी की तड़प को देखकर मचल पड़ा. उसने शंकरगढ़ के बहादुर राना बेनीमाधव सिंह, गोंडा के राजा देवी बक्स सिंह, राजस्थान के सुजान सिंह, सँडीला के गुलाब सिंह, जगदीशपुर के बाबू कुंअर सिंह और झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई को छन्दों का हार पहनाया.

वीरता और शूरता के इन गीतों का सबसे बड़ा ख़ज़ाना हमें अवध में मिलता है. राना बेनीमाधव सिंह की गिनती सन् सत्तावन के बड़े से बड़े वीरों और शहीदों में की जाती है. दुलारे अपनी अटपटी बानी में राना की तारीफ़ करते हुये कहता है:—

अवध मा राना भयो मरदाना!
पहिल लड़ाई भई बक्सर मा सेमरी के मैदाना,
उहाँ से कूच भयो पुरवा को तबै लाट घबराना!
नक्की मिले मानसिंग मिलिगे मिले सुदर्शन काना,
छत्री बंश एक ना मिलिहै जाने सकल जहाना!
भाय, भतीज औ कुटुम्ब-क़बीला सबको करौं सलामा,
तुम तो जाय गोरक ते मिलिगे हमहू को भगवाना!
हाथ में भाला बगल सिरोही घोड़ा चले मस्ताना,
कहै दुलारे सुनु पिय प्यारे राना उतर किये पयाना!

اِس خوفناک ظلم و ستم کے بعد اہل وطن کی جو کیفیت ہوئی اُسے بیان کرتے ہوئے داغ کہتے ہیں:—

زمیں کے حال پہ اب آسمان روتا ہے؛
ہر ایک فراقِ مکیں میں مکان روتا ہے!
برنگ بوئے گل اہل چمن، چمن سے چلے؛
غریب چھوڑ کے اپنا وطن، وطن سے چلے!
مقام امن جو ڈھونڈا تو راہ بھی نہ ملی؛
یہ قہر تھا کہ خدا کی پناہ بھی نہ ملی!

دلی کے ویرانے کو بیان کرتے ہوئے حضرت داغ کی آخری نظم ہے:—

یہ وہ جگہہ ہے جہاں بیکسی بھی ڈر جائے؛
یہ وہ جگہہ ہے اجل خوف کھا کے مر جائے!
کہاں تک آہ لکھوں اِس کا حال بربادی؛
لکھوں کہاں تلک اِس آسماں کی جلادی!
کسی کو قید محن سے نہیں ہے آزادی؛
کہ داغ داغ ہے ہر دل ہر ایک فریادی!

اُردو زبان کے اُس وقت کے اور بھی بہت سے شاعروں نے 1857 پر اپنے جذبات کا اظہار کیا ہے۔ ہم نے تو صرف نمونے کے طور پر یہاں یہ چند کلام پیش کئے ہیں۔

(2)

جس طرح دلی کی ویرانگی نے اُردو کے مشہور شاعروں کے دلوں میں ایک درد اور تڑپ پیدا کی ویسے اودھ میں سوتنترتا کی لڑائی ہندی کے مہاکویوں کی بھاوناؤں کو نہ چھو سکی۔ ہاں گاؤں کے کوی کا دل سورماؤں کی بہادری اور آزادی کی تڑپ کو دیکھ کر مچل پڑا۔ اُس نے شنکرگڑھ کے بہادر رانا بینی مادھو سنگھ، گونڈا کے راجا دیوی بکس سنگھ، راجستھان کے سجان سنگھ، سنڈیلا کے گلاب سنگھ، جگدیش پور کے بابو کنور سنگھ اور جھانسی کی رانی لکشمی بائی کو چھندوں کا ہار پہنایا۔

ویرتا اور شورتا کے ان گیتوں کا سب سے بڑا خزانہ ہمیں اودھ میں ملتا ہے۔ رانا بینی مادھو سنگھ کی گنتی سن ستاون کے بڑے سے بڑے ویروں اور شہیدوں میں کی جاتی ہے۔ دلارے اپنی اٹپٹی بانی میں رانا کی تعریف کرتے ہوئے کہتا ہے:—

اودھ ما رانا بھیو مردانا!
پہلی لڑائی بھئی بکسر ماں سمری کے میدانا؛
اُہاں سے کوچ بھیو پروا کو تبے لاٹ گھبرانا!
نکی ملے مان سنگھ مل گے ملے سدرشن کانا؛
چھتری بنس ایک نا ملہے جانے سکل جہانا!
بھائی، بھتیج او کٹمب کبیلا سبکو کروں سلاما؛
تم تو جائے گورن تے ملیگے ہم ہو کا بھگوانا!
ہاتھ ما بھالا بگل سروہی گھوڑا چلے مستانا؛
کہے دلارے سن پیہ پیارے رانا اُتر کیو پیانا!

दिल्ली शहर की अदबियात और शायराना महफ़िल पर हसरत उँडेलते हुये हाली कहते हैं :—

कभी ऐ इल्मो हुनर घर था तुम्हारा दिल्ली;
हमको भूले हो तो घर भूल न जाना हरगिज़ !
शायरी मर चुकी अब ज़िन्दा न होगी यारो;
याद कर करके उसे जी न कुढ़ाना हरगिज़ !
ग़ालिबो शेफ़्तओ नय्यरो आज़ुर्दा-ओ ज़ौक़,
अब दिखायेगा ये शक्लें न ज़माना हरगिज़ !
बज़्मे मातम तो नहीं, बज़्मे सख़ुन है हाली;
याँ मुनासिब नहीं रो रोके रुलाना हरगिज़ !

दाग़ और 1857

महाकवि दाग़, जो सन् 1857 में कुल छब्बीस बरस के नौजवान थे और जिन्होंने दिल्ली का बनाव-सिंगार देखा था, और जिनके देखते-देखते दिल्ली एक उजड़ा दयार बना दी गई, दर्द से भरकर कहते हैं :—

फ़लक़ ज़मीने मलायक जनाब थी दिल्ली,
बहिश्तो ख़ुल्द में भी इन्तख़ाब थी दिल्ली !
जवाब काहे को थी लाजवाब थी दिल्ली;
मगर ख़याल से देखा तो ख़्वाब थी दिल्ली !
ये शहर वो है कि हिन्दोस्तान का दिल था;
ये शहर वह है कि सारे जहान का दिल था !

मगर दिल्ली जब उजड़ा दयार बन गई तो दाग़ फ़रमाते हैं :—

ख़ुदापरस्ती के बदले जफ़ा परस्ती है;
जो मालेमस्त थे अब उनको फ़ाक़ेमस्ती है !
बजाय अब्रे करम मुफ़लिसी बरसती है;
बतंग जीने से हैं ऐसी तंगदस्ती है !

इस मुफ़लिसी के लिये फ़लक़ पर इल्ज़ाम मढ़ते हुये दाग़ फ़रमाते हैं :—

फ़लक़ ने क़हरो ग़ज़ब ताक-ताक कर डाला;
तमाम पर्दए नामूस चाक कर डाला !
यकायक एक जहाँ को हलाक कर डाला;
ग़रज़ कि लाख का घर उसने ख़ाक कर डाला !

इस सब कैफ़ियत के लिये सितमगर के ज़ुल्मो-सितम को हसरत के साथ बयान करते हुये दाग़ कहते हैं :—

खिलाया ज़हर सितमगर ने पान के बदले;
पिलाया ख़ूने जिगर पेचवान के बदले !
नसीब दार हुई है निशान के बदले;
मिला न गोर गढ़ा भी मकान के बदले !
.ज़ुबाने तेग़ से पुरशिश है दादख़्वाहों की;
रसन है, तौक़ है, गरदन है बेगुनाहों की !

دلی شہر کی ادبیات اور شاعرانہ محفل پر حسرت انڈیلتے ہوئے حالی کہتے ہیں :—

کبھی اے علم و هنر گھر تھا تمہارا دلی؛
همکو بھولے هو تو گھر بھول نہ جانا هرگز !
شاعری مر چکی اب زندہ نہ هوگی یارو؛
یاد کر کر کے اُسے جی نہ کڑھانا هرگز !
غالب و شیفتہ و نیر و آزردہؔ و ذوق؛
اب دکھائے گا یہ شکلیں نہ زمانہ هرگز !
بزم ماتم تو نہیں بزم سخن هے حالی؛
یاں مناسب نہیں رو رو کے رولانا هرگز !

داغ اور 1867

مہا کوی داغ، جو سن 1867 میں کل چھبیس برس کے نوجوان تھے اور جنہوں نے دلی کا بناؤ سنگار دیکھا تھا، اور جن کے دیکھتے دیکھتے دلی ایک اُجڑا دیار بنا دی گئی، درد سے بھر کر کہتے ہیں :—

فلک زمین ملائک جناب تھی دلی؛
بہشت و خلد میں بھی انتخاب تھی دلی !
جواب کاهے کو تھی لاجواب تھی دلی؛
مگر خیال سے دیکھا تو خواب تھی دلی !
یہ شہر وہ هے کہ هندوستان کا دل تھا؛
یہ شہر وہ هےکہ سارے جہان کا دل تھا !

مگر دلی جب اُجڑا دیا بن گئی تو داغ فرماتے هیں :—

خداپرستی کے بدلے جفا پرستی هے؛
جومال مست تھے اب اُنکو فاقہ مستی هے !
بجائے ابرکرم مفلسی برستی هے؛
بتنگ جینے سے هیں ایسی تنگدستی هے !

اِس مفلسی کے لئے فلک پر الزام مڑھتے ہوئے داغ فرماتے هیں :—

فلک نے قہر و غضب تاک تاک کر ڈالا؛
تمام پردۂ ناموس چاک کر ڈالا !
یکایک ایک جہاں کو هلاک کر ڈالا؛
غرض کہ لاکھ کا گھر اُس نے خاک کر ڈالا !

اِس سب کیفیت کے لئے ستمگر کے ظلم و ستم کو حسرت کے ساتھ بیان کرتے هوئے داغ کہتے هیں :—

کھلایا زہر ستمگر نے پان کے بدلے؛
پلایا خون جگر پیچوان کے بدلے !
نصیب دار هوئی هے نشان کے بدلے؛
ملا نہ گور گڑھا بھی مکان کے بدلے !
زبان تیغ سے پرشش هے داد خواهوں کی؛
رسن هے، طوق هے، گردن هے بےگناهوں کی !

चौक जिसको कहें वो मक़तल है;
सर बना है नमूना ज़िन्दाँ का !
शहर देहली का ज़र्रा ज़र्रा ख़ाक;
तिश्नए ख़ूँ है हर मुसलमाँ का !
कोई वाँ से न आ सके याँ तक;
आदमी वाँ न जा सके याँ का !
मैंने माना कि मिल गए फिर क्या;
वही रोना तनो दिलो जाँ का !
गाह जलकर किया किये शिकवा;
सोज़िशे दाग़हाय पिनहाँ का !
गाह रोकर कहा किये बाहम;
माजरा दीदहाए गिरियाँ का !

दिल्ली के क़त्ले आम पर हसरत का इज़हार करते हुये ग़ालिब ने लिखा है :—

एक अहले दर्द ने सुनसान जो देखा क़फ़स;
यूँ कहा आती नहीं क्यों अब सदाये अन्दलीब !
बालो पर दो चार दिखला कर कहा सय्याद ने;
ये निशानी रह गई है अब बजाये अन्दलीब !

हाली और 1857

ग़ालिब के शागिर्द मौलाना अल्ताफ़ हुसेन हाली, जो पहले 'शैफ़्ता' की शागिर्दी में थे और 1857 में 21 बरस के थे, दिल्ली को मरहूम या स्वर्गीय का ख़िताब देकर शायरों से कहते हैं :—

जितने रमने थे तेरे हो गए वीराँ ऐ इश्क़;
आके वीरानों में अब घर न बसाना हरगिज़ !
कूच सब कर गये दिल्ली से तेरे क़द्रशनास;
क़द्र याँ आके अब अपनी न गँवाना हरगिज़ !
तज़किरा दिल्लिए मरहूम का ऐ दोस्त न छेड़;
न सुना जायगा हमसे ये फ़िसाना हरगिज़ !
दास्ताँ गुल की ख़िज़ाँ में न सुनाए बुलबुल;
हँसते हँसते हमें ज़ालिम न रुलाना हरगिज़ !

आबादियाँ गिराकर दिल्ली को वीराना बना दिया गया. कला और अदब की नायाब यादगारें धूल में मिला दी गईं. इस कैफ़ियत का चश्मदीद हाल बयान करते हुये हाली लिखते हैं:—

लेके दाग़ आएगा सीने पे बहुत ऐ सय्याद;
देख इस शहर के खँडहर में न जाना हरगिज़ !
चप्पे चप्पे पे हैं याँ गौहरे यक्ता तहे ख़ाक;
दफ़न होगा कहीं इतना न ख़ज़ाना हरगिज़ !
वो तो भूले थे हमें हम भी उन्हें भूल गये;
ऐसा बदला है न बदलेगा ज़माना हरगिज़ !
जिसको ज़ख़्मों के हवादिस से अछूता समझें;
नज़र आता नहीं कोई भी घराना हरगिज़ !

چوک جس کو کہیں وہ مقتل ہے؛
سر بنا ہے نمونہ زنداں کا !
شہر دھلی کا ذرہ ذرہ خاک؛
تشنۂ خوں ہے ہر مسلماں کا !
کوئی واں سے نہ آسکے یاں تک؛
آدمی واں نہ جا سکے یاں کا !
میں نے مانا کہ مل گئے پھر کیا؛
وہی رونا تن و دل و جاں کا !
گاہ جل کر کیا کیئے شکوہ؛
سوزش داغہائے پنہاں کا !
گاہ روکر کہا کئے باہم؛
ماجرا دیدہائے گریاں کا !

لی کے قتل عام پر حسرت کا اظہار کرتے ہوئے غالب نے لکھا
—

ایک اہل درد نے سنسان جو دیکھا قفس؛
یوں کہا آتی نہیں کیوں اب صدائے عندلیب !
بال و پر دو چار دکھلا کر کہا صیاد نے؛
یہ نشانی رہ گئی ہے اب بجائے عندلیب !

اور 1857

الب کے شاگرد مولانا الطاف حسین حالی' جو پہلے 'شیفتہ' گردی میں تھے اور 1857 میں 21 برس کے تھے' دلی کو یا سورگیہ کا خطاب دے کر شاعروں سے کہتے ہیں :—

جتنے رمنے تھے ترے ہو گئے ویراں اے عشق؛
آ کے ویرانوں میں اب گھر نہ بسانا ہرگز !
کوچ سب کرگئے دلی سے ترے قدرشناس؛
قدر یاں آکے اب اپنی نہ گنوانا ہرگز !
تذکرہ دلئی مرحوم کا اے دوست نہ چھیڑ؛
نہ سنا جائے گا ہم سے یہ فسانہ ہرگز !
داستاں گل کی خزاں میں نہ سنائے بلبل؛
ہنستے ہنستے ہمیں ظالم نہ رلانا ہرگز !

بادیاں گرا کر دلی کو ویرانہ بنا دیا گیا . کلا اور ادب کی یادگاریں دھول میں ملا دی گئیں . اس کیفیت کا چشم ال بیان کرتے ہوئے حالی لکھتے ہیں :—

لے کے داغ آئیگا سینے پہ بہت اے صیاد؛
دیکھ اس شہر کے کھنڈر میں نہ جانا ہرگز !
چپہ چپہ پہ ہیں یاں گوہر یکتا تہ خاک؛
دفن ہوگا کہیں اتنا نہ خزانہ ہرگز !
وہ تو بھولے تھے ہمیں ہم بھی انہیں بھول گئے؛
ایسا بدلا ہے نہ بدلے گا زمانہ ہرگز !
جسکو زخموں کے حوادث سے اچھوتا سمجھیں؛
نظر آتا نہیں کوئی بھی گھرانا ہرگز !

भी नहीं था. उन्होंने बड़ी हसरत के साथ अपने दाहिने हाथ की हथेली को देखकर कहा :—

फूल लाया है माली डाली में;
कुछ लकीरें हैं दस्ते खाली में !

अपने महान मुग़ल पूर्वजों के बड़प्पन का अहसास बहादुरशाह के दिल में था. वह अपने को मुग़ल सल्तनत की एक टूटी हुई क़ब्र की तरह मानते थे. इस ख़याल को ज़ाहिर करते हुये ज़फ़र ने लिखा है :—

वो जो टूटी क़ब्र का था निशाँ उसे ठोकरों से मिटा दिया !

एक जगह दिल्ली की आज़ादी और बरबादी का चित्र खींचते हुये उन्होंनेलिखा है :—

पसे मर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किसू ने जला दिया;
उसे आह दामने बाद ने सरे शाम से ही बुझा दिया !

कितनी हसरत है इस कलाम में ! 1857 के वाक़यात पर बहादुरशाह की नज़्मों से काफ़ी रोशनी पड़ती है. अपने पुरदर्द हक़ीक़ते हाल के बारे में वे ख़ुद कहते हैं :—

न पूछ मुझसे 'ज़फ़र' मेरी तू हक़ीक़ते हाल;
अगर कहूँगा अभी तुझको मैं रुला दूँगा !

लेकिन दिल के दर्द से कोई यह न समझे कि उनमें बहादुरी की कमी हो गई थी. वे दुश्मन की संगदिली के मुताल्लिक़ कहते हैं :—

बेवफ़ा तुझसे शिकायत है सितम की बेजा;
कीजिये उससे जो आगाह वफ़ा से कुछ हो !
सर रहे या न रहे जान बचे या न बचे;
मुँह न मोड़ेंगे तेरी तेग़ो जफ़ा से कुछ हो !

सन् 1857 में दिल्ली की जो कैफ़ियत थी उस पर शहन्शाह के कुछ शेर ये हैं :—

आज देहली में जो उसकी अजब सैर हो गई;
तलवार चलते चलते रही .ख़ैर हो गई !
काबा के सिम्त हमने किया मुँह पए नमाज़;
बरगश्ता नीअत अपनी सूए दैर हो गई !
बेगानगी का दिल के गिला क्या है इश्क़ में;
जब जान भी न अपनी रही ग़ैर हो गई !
आशिक़ को जब दिखाई फ़िरंगी पिसर ने तोप;
पाया न कुछ वो कहने कि बस फ़ैर हो गई !
ज़ंजीर टूट गई मेरी वहशत से क्या 'ज़फ़र';
जल्दी अलग वो चूम के जो पैर हो गई !

ग़ालिब और 1857

दिल्ली में ख़ास तौर पर मुसलमानों के ऊपर जो ज़ुल्म ढाये गये उसका ज़िक्र अब शायरों के सरताज ग़ालिब से सुनें, जो सन् 1857 में पूरे साठ बरस के थे :—

بھی نہیں تھا ۔ اُنہوں نے بڑی حسرت کے ساتھ اپنے داھنے ھاتھ کی ھتھیلی کو دیکھ کر کہا :—

پھول لایا ھے مالی ڈالی میں؛
کچھ لکیریں ھیں دستِ خالی میں !

اپنے مہان مغل پوروجوں کے بڑپن کا احساس بہادر شاہ کے دل میں تھا ۔ وہ اپنے کو مغل سلطنت کی ایک ٹوٹی ہوئی قبر کی طرح مانتے تھے ۔ اِس خیال کو ظاھر کرتے ہوئے ظفر نے لکھا ھے :—

وہ جو ٹوٹی قبر کا تھا نشاں اُسے ٹھوکروں سے مٹا دیا !

ایک جگہ دلی کی آزادی اور بربادی چتر کا کھینچتے ہوئے اُنہوں نے لکھا ھے :—

پسِ مرگ میرے مزار پر جو دیا کسو نے جلا دیا؛
اُسے آہ دامنِ باد نے سرِ شام ھی سے بجھا دیا !

کتنی حسرت ھے اُس کلام میں ! 1857 کے واقعات پر بہادرشاہ کی نظموں سے کافی روشنی پڑتی ھے۔ اپنے پردرد حقیقتِ حال کے بارے میں وے خود کہتے ھیں :—

نہ پوچھ مجھسے 'ظفر' میری تو حقیقتِ حال؛
اگر کہونگا ابھی تجھ کو میں رلادوں گا !

لیکن دل کے درد سے کوئی یہ نہ سمجھے کہ اُن میں بہادری کی کمی ہو گئی تھی ۔ وے دشمن کی سنگدلی کے متعلق کہتے ھیں :—

بیوفا تجھسے شکایت ھے ستم کی بیجا؛
کیجئے اُس سے جو آگاہ وفا سے کچھ ھو !
سر رھے یا نہ رھے جان بچے یا نہ بچے؛
منھ نہ موڑینگے تری تیغ جفا سے کچھ ھو !

سن 1857 میں دلی کی جو کیفیت تھی اُس پر شہنشاہ کے کچھ شعر یہ ھیں :—

آج دھلی میں جو اُس کی عجب سیر ھوگئی؛
تلوار چلتے چلتے رھی خیر ھو گئی !
کعبہ کے سمت ھم نے کیا منھ پئے نماز؛
برگشتہ نیت اپنی سوئے دیر ھو گئی !
بیگانگی کا دل کے گلہ کیا ھے عشق میں؛
جب جان بھی نہ اپنی رھی غیر ھو گئی !
عاشق کو جب دکھائی فرنگی پسر نے توپ؛
پایا نہ کچھ وہ کہنے کہ بس فیر ھو گئی !
زنجیر ٹوٹ گئی میری وحشت سے کیا 'ظفر'؛
جلدی الگ وہ چوم کے جو پیر ھو گئی !

غالب اور 1857

دلی میں خاص طور پر مسلمانوں کے اوپر جو ظلم ڈھائے گئے اُن کا ذکر اب شاعروں کے سرتاج غالب سے سنیں، جو سن 1857 میں پورے ساٹھ برس کے تھے :—

कफ़स में है क्या फ़ायदा शोरो ग़ुल से;
असीरो करो कुछ रिहाई की बातें!
'ज़फ़र' अब ज़माना बुरा आ गया है;
जिधर देखो हैं वाँ बुराई की बातें!

फ़ौज के कमानदारों ने जब एक दूसरे पर तोहमतें मढ़नी शुरू कीं तो उन्हें नसीहत देते हुये शहन्शाह ने कहा :—

न थी हाल की जब हमें अपने ख़बर;
रहे देखते औरों के ऐबो हुनर!
पड़ी अपनी बुराइयों पे जो नज़र;
तो निगाह में कोई बुरा न रहा!
'ज़फ़र' आदमी उसको न जानियेगा;
वह हो कैसा ही साहिबे फ़हमो ज़का;
जिसे ऐश में यादे ख़ुदा न रही
जिसे तैश में ख़ौफ़े ख़ुदा न रहा!

14 सितम्बर 1857 के बाद दिल्ली की जनता पर इतने सितम ढाये गये कि बहादुरशाह का कवि हृदय भी ग़म से चाक चाक हो गया. मुसलमानों को तो ख़ास तौर पर खोज खोजकर सूली पर लटकाया जाता. एक नज़्म में शहन्शाह ने उसे यूँ बयान किया है :—

गई यकबयक जो हवा पलट, नहिं दिल को अपने क़रार है;
करूँ ग़म सितम का मैं क्या बया, मेरा सीना ग़म से फ़िगार है.
ये रियाया हिन्द तबाह हुई, कहो क्या न इनपे जफ़ा हुई;
जिसे देखा हाकिमे वक़्त ने, कहा ये भी क़ाबिले दार है!
कहीं ऐसा भी है सितम सुना, कि दी फाँसी लाखों को बेगुनाह,
बक़े कलमा गोयों के तर्फ़ से, अभी दिल में उनके ग़ुबार है!

जंगे आज़ादी के सबसे बड़े नेता की हैसियत से शहन्शाह बहादुरशाह को आज़ादी की सबसे भारी क़ीमत चुकानी पड़ी. शहन्शाह के 24 बेटे और पोते क़त्ल कर दिये गये और उनके सर ख़ूनी दरवाज़े पर लटका दिये गये. उन सब दर्दनाक घटनाओं पर अपने दिल की कैफ़ियत शहन्शाह ने यूँ बयान किया है :—

रिन्द हूँ मैं या ज़ाहिद हूँ, या सूफ़ी हूँ या मैकश हूँ;
आलिम हूँ या जाहिल हूँ, या मोमिन हूँ या तरसा हूँ!
कैसा रंज व कैसी राहत, किसकी शादी किसका ग़म;
ये भी नहीं मालूम मुझे, मैं जीता हूँ या मरता हूँ!

शहन्शाह बहादुरशाह, उनकी चहेती बेगम ज़ीनत महल और युवराज जवाँबख़्त को क़ैद करके रंगून भेज दिया गया. वहाँ बेहद ग़रीबी में शहन्शाह को अपने आख़री दिन काटने पड़े. रंगून में उनकी 83वीं सालगिरह के दिन एक माली तोहफ़े के, तौर पर फूलों की डाली सजा कर लाया, शहन्शाह के पास इनाम देने के लिये कुछ

قفس میں ہے کیا فائدہ شور و غل سے؛
اسیرو کرو کچھ رہائی کی باتیں!
'ظفر' اب زمانہ برا آگیا ہے؛
جدھر دیکھو ہیں واں برائی کی باتیں!

فوج کے کمانداروں نے جب ایک دوسرے پر تہمتیں مڑھنی شروع کیں تو اُنھیں نصیحت دیتے ہوئے شہنشاہ نے کہا :—

نہ تھی حال کی جب ہمیں اپنے خبر؛
رہے دیکھتے اوروں کے عیب و ہنر!
پڑی اپنی برائیوں پہ جو نظر؛
تو نگاہ میں کوئی برا نہ رہا!
'ظفر' آدمی اُس کو نہ جانیے گا؛
وہ کیسا ہی ہو صاحب فہم و ذکا!
جسے عیش میں یاد خدا نہ رہی؛
جسے طیش میں خوف خدا نہ رہا!

14 ستمبر 1857 کے بعد دلی کی جنتا پر اِتنے ستم ڈھائے گئے کہ بہادر شاہ کا کوی ہردئے بھی غم سے چاک چاک ہو گیا. مسلمانوں کو تو خاص طور پر کھوج کھوج کر سولی پر لٹکایا جاتا. ایک نظم میں شہنشاہ نے اُسے یوں بیان کیا ہے :—

گئی یک بیک جو ہوا پلٹ، نہیں دل کو اپنے قرار ہے؛
کروں غم ستم کا میں کیا بیاں، میرا سینہ غم سے فگار ہے!
یہ رعایا ہند تباہ ہوئی، کہو کیا نہ اُن پہ جفا ہوئی؛
جسے دیکھا حاکم وقت نے، کہا یہ بھی قابل دار ہے!
کہیں ایسا بھی ہے ستم سنا، کہ دی پھانسی لاکھوں کو بے گناہ
ولے کلمہ گویوں کے طرف سے، ابھی دل میں اُن کے غبار ہے!

جنگ آزادی کے سب سے بڑے نیتا کی حیثیت سے شہنشاہ بہادرشاہ کو سب سے بھاری آزادی کی قیمت چکانی پڑی. شہنشاہ کے 24 بیٹے اور پوتے قتل کر دیئے گئے اور اُن کے سر خونی دروازے پر لٹکا دیئے گئے. اُن سب دردناک گھٹناؤں پر اپنے دل کی کیفیت شہنشاہ نے یوں بیان کیا ہے :—

رند ہوں میں یا زاہد ہوں، یا صوفی ہوں یا میکش ہوں؛
عالم ہوں یا جاہل ہوں، یا مومن ہوں یا ترسا ہوں!
کیسا رنج و کیسی راحت، کس کی شادی کس کا غم؛
یہ بھی نہیں معلوم مجھے، میں جیتا ہوں یا مرتا ہوں!

شہنشاہ بہادرشاہ، ان کی چہیتی بیگم زینت محل اور یوراج جواں بخت کو قید کر کے رنگون بھیج دیا گیا. وہاں بےحد غریبی میں شہنشاہ کو اپنے آخری دن کاٹنے پڑے. رنگون میں اُن کی 83 ویں سالگرہ کے دن ایک مالی تحفہ کے طور پر پھولوں کی ڈالی سجا کر لایا. شہنشاہ کے پاس انعام دینے کے لئے کچھ

क्या क्या करे है आशिक़े नाकाम पर सितम;
ख़ौफ़े ख़ुदा कुछ उस बुते ख़ुदकाम को नहीं!
रिन्दों पे तानाज़न है अबस वाइज़ ऐ 'ज़फ़र';
कोई किसी के जानता अंजाम को नहीं!

जंगे आज़ादी में शामिल होने के लिये जब शहन्शाह ज़फ़र ने अपना दावतनामा देशी राजाओं के पास भेजा तो बीकानेर के राजा ने उसे बिना पढ़े ही फाड़ दिया. इस पर शहन्शाह ने लिखा :—

किया ख़त टुकड़े-टुकड़े तुमने तो क़ासिद से लेते ही;
मुनासिब था कि पढ़वाकर हक़ीक़त यक क़लम सुनते!

झींद के राजा ने तो शहन्शाह का ख़त लेजाने वाले क़ासिद को ही गोली से उड़ा दिया. इसपर ज़फ़र का एक शेर है :—

ढूँढा निशाँ जो हमने .क़ासिद का उस शहर में;
कुछ पाये सर के टुकड़े और कुछ बदन के टुकड़े!

अंगरेज़ी .फ़ौजों ने दिल्ली के क़िले का मोहासरा जारी कर दिया था. बक़रीद के त्यौहार के दिन जामा मसजिद में मुअज़्ज़िज़ शहरियों की.क़ुर्बानी की गई. इसपर शहन्शाह ने लिखा :—

मुबारकबाद हम देते हैं उनको ईदे .क़ुर्बां की;
गले पे रखके ख़ंजर जबकि वह तकबीर पढ़ते हैं!

अपने प्यारे पोते के .क़त्ल पर शहन्शाह ने हसरत के साथ लिखा :—

एक वो क्या बलिक उस से रोज़ लाखों बेगुनाह;
.क़त्ल होते हैं तेरे ऐ अरविदा जो हाथ से!
यह नहीं रंगे हिना छुट जाय जो दो रोज़ में;
हश्र तक छुटेगा आशिक़ का न लोहू हाथ से!

दिल्ली के पतन के बाद बेगुनाहों के .क़त्ल का जो सिलसिला चला उसपर शहन्शाह ज़फ़र ने लिखा :—

जहाँ में सबको इबरत हो गई उस दिन से ऐ क़ातिल;
सरे बाज़ार तूने लाशाऐ मक़्तूल खींचा है!
हज़ारों बेगुनाहों को सितमगर इश्क़ में तूने;
यहाँ सूली पे बेदस्तूर, बेमामूल खींचा है!

दिल्ली में आज़ादी की जंग चलाने के लिये एक जंगी कौंसिल बना दी गई थी जिसके सदर ख़ुद शहन्शाह थे. कौंसिल के मेम्बरान आपस में एक दूसरे की बुराई करते और एक दूसरे की टाँगें घसीटते. इसपर उन्हें लानत-मलामत करते हुये शहन्शाह ने लिखा :—

नहीं तुमको ज़ेबा बुराई की बातें;
भलों को हैं लाज़िम भलाई की बातें!
ग़ज़ब है कि दिल में तो रक्खो कुदूरत;
करो मुंह पे हमसे सफ़ाई की बातें!

کیا کیا کرے ہے عاشق ناکام پر ستم؛
خوف خدا کچھ اُس بت خودکام کو نہیں!
رندوں پہ طعنہ زن ہے عبث واعظ اے 'ظفر'؛
کوئی کسی کے جانتا انجام کو نہیں!

جنگ آزادی میں شامل ہونے کے لئے جب شہنشاہ ظفر نے اپنا دعوت نامہ دیشی راجاؤں کے پاس بھیجا تو بیکانیر کے راجہ نے اُسے بنا پڑھے ہی پھاڑ دیا۔ اِس پر شہنشاہ نے لکھا :—

کیا خط ٹکرے ٹکرے تم نے تو قاصد سے لیتے ہی؛
مناسب تھا کہ پڑھواکر حقیقت یک قلم سنتے!

جھیند کے راجہ نے تو شہنشاہ کا خط لے جانیوالے قاصد کو ہی گولی سے اُڑا دیا۔ اُس پر ظفر کا ایک شعر ہے :—

ڈھونڈا نشاں جو ہم نے قاصد کا اُس شہر میں؛
کچھ پائے سر کے ٹکڑے اور کچھ بدن کے ٹکڑے!

انگریزی فوجوں نے دلی کے قلعہ کا محاصرہ جاری کر دیا تھا۔ بقرعید کے تہوار کے دن جامع مسجد میں معزز شہریوں کی قربانی کی گئی۔ اِس پر شہنشاہ نے لکھا :—

مبارکباد ہم دیتے ہیں اُن کو عید قرباں کی؛
گلے پر رکھ کے خنجر جبکہ وہ تکبیر پڑھتے ہیں!

اپنے پیارے پوتے کے قتل پر شہنشاہ نے حسرت کے ساتھ لکھا :—

ایک وہ کیا بلکہ اُس سے روز لاکھوں بےگناہ؛
قتل ہوتے ہیں تیرے اے اروداَ جو ہاتھ سے!
یہ نہیں رنگ حنا چھٹ جائے جو دو روز میں؛
حشر تک چھوٹے گا عاشق کا نہ لوہو ہاتھ سے!

دلی کے پتن کے بعد بےگناہوں کے قتل کا جو سلسلہ چلا اُس پر شہنشاہ ظفر نے لکھا :—

جہاں میں سب کو عبرت ہوگئی اُس دن سے اے قاتل؛
سرے بازار تونے لاشۂ مقتول کھینچا ہے!
ہزاروں بےگناہوں کو ستمگر عشق میں تونے؛
یہاں سولی پہ بےدستور، بےمعمول کھینچا ہے!

دلی میں آزادی کی جنگ چلانے کے لئے ایک جنگی کونسل بنا دی گئی تھی جس کے صدر خود شہنشاہ تھے۔ کونسل کے ممبران آپس میں ایک دوسرے کی برائی کرتے اور ایک دوسرے کی ٹانگیں گھسیٹتے۔ اس پر اُنہیں لعنت ملامت کرتے ہوئے شہنشاہ نے لکھا :—

نہیں تمکو زیبا برائی کی باتیں؛
بھلوں کو ہیں لازم بھلائی کی باتیں!
غضب ہے کہ دل میں تو رکھو کدورت؛
کرو منھ پہ ہم سے صفائی کی باتیں!

को एक दरजे तक घटा दिया था. गवर्नर जनरल कैनिंग उस रही सही शान को भी ख़त्म करने की साजिशों में लगा हुआ था. दिल्ली के इर्द-गिर्द के शासन में भी बहादुरशाह की कोई राय न ली जाती थी. यहाँ तक कि क़िले के बाहर क़िले के सैनिकों के लिये बहादुरशाह को, जिसे नक़्शे के मुताबिक नई बैरकें तामीर करना पसन्द था, अंगरेज़ रेज़ीडेन्ट ने उन्हें उस तरह तामीर न करने दिया. बहादुरशाह से कौन किस वक़्त मुलाक़ात करे इसमें भी रेज़ीडेन्ट दख़ल देने की जुरअत करता था. अपनी उस वक़्त की दिली कैफ़ियत को बहादुरशाह ने एक नज़्म में यूँ बयान किया है :—

दिया बनाने न मुझको मकाँ मकाँ के क़रीब;
बसाये लोग उन्होंने जहाँ तहाँ के क़रीब!
निकलते हर दहने मू से हैं इस क़दर शोले;
फटकता कोई नहीं तेरे तुफ़्ता जाँ के क़रीब!
फ़लक के नीचे फ़लक और इक नया बन जाए;
जो पहुँचे दूदे जिगर मेरा आसमाँ के क़रीब!
कहे है तू कि फटकता नहीं यहाँ कोई;
खड़ा था कौन तेरे आज आस्ताँ के क़रीब!
वो हूँ मैं तायरे आतिश नफ़स कि थर्राये;
जो आये बर्क़ कभी मेरे आशियाँ के क़रीब!
क़फ़स से छूटके जब हम असीर ऐ सय्याद;
चमन में पहुँचे तो दिन आ गए ख़िज़ाँ के क़रीब!

जिस समय नाना धुन्धपन्त और अज़ीमुल्लाख़ाँ ने शहन्शाह से आज़ादी की जंग में शिरकत करने के लिये कहा तो बहादुरशाह ने अपनी रज़ामन्दी नीचे लिखी नज़्म में ज़ाहिर की :—

जाँ फ़िदा करने को हाज़िर हैं कहो तुम जिस दम;
हम हैं जिस काम के, मौजूद हैं उस काम के वक़्त!
गरचे रिंदाने तहीदस्त हैं मानिन्द गदा;
वक़्त के अपने हैं जमशेद मगर जाम के वक़्त!

इस बीच गवर्नर जनरल के रवइये और रेज़ीडेन्ट के बर्ताव से बहादुरशाह का दिल, फ़िरंगियों की तरफ़, रहा-सहा भी टूट गया. अपनी उस भावना को बहादुरशाह ने इन सतरों में अदा किया है :—

कहें क्या इन बुतों से ऐ 'ज़फ़र' हम हालेदिल अपना;
ये काफ़िर हैं नहीं इक बात अल्ला की क़सम सुनते!
न करता नूह के तूफ़ाँ का कोई ज़िक्र भी हरगिज़,
अगर मरदुम हमारा माजराए चश्मे नम सुनते!
न लेते नाम उलफ़त का कभी उलफ़त के जोइन्दे;
जो मेरा सब्र सुनते औ तेरे ज़ुल्मो सितम सुनते!

बहादुरशाह का दिल ज़िल्लत से तड़प उठा. शहन्शाह की दिली कैफ़ियत इन शेरों में ग़ौर करें :—

کو ایک درجہ تک گھٹا دیا تھا ۔ گورنر جنرل کیننگ اُس رہی سہی شان کو بھی ختم کرنے کی سازشوں میں لگا ھوا تھا۔ دلی کے اِرد گرد کے شاسن میں بھی بہادر شاہ کی کوئی رائے نہ لی جاتی تھی۔ یہاں تک کہ قلعے کے باہر قلعے کے سپاہیوں کے لئے بہادر شاہ کو' جسے نقشہ کے مطابق نئی بیرکیں تعمیر کرنا پسند تھا' انگریز ریذیڈینٹ نے اُنہیں اُس طرح تعمیر نہ کرنے دیا۔ بہادر شاہ سے کون کس وقت ملاقات کرے اُس میں بھی ریذیڈینٹ دخل دینے کی جرات کرتا تھا۔ اپنی اُس وقت کی دلی کیفیت کو بہادرشاہ نے ایک نظم میں یوں بیان کیا ھے :—

دیا بنانے نہ مجھکو مکاں مکاں کے قریب،
بسائےلوگ اُنہوں نے جہاں تہاں کے قریب!
نکلتے ہر دھن مو سے ھیں اِس قدر شعلے'
پھٹکتا کوئی نہیں تیرےتفتہ جاں کے قریب!
فلک کے نیچے فلک اور اک نیا بن جائے'
جو پہنچے دود جگرمیرا آسماں کے قریب!
کہے ھے تو کہ پھٹکتا نہیں یہاں کوئی؛
کھڑا تھا کون ترے آج آستاں کے قریب!
وہ ھوں میں طائر آتش نفس کہ تھرائے؛
جو آئے برق کبھی میرے آشیاں کے قریب!
قفس سے چھوٹ کے جب ہم اسیر اے صیاد؛
چمن میں پہنچےتو دن آگئے خزاں کے قریب!

جس سمئے نانادھندپنت اور عظیم اللہ خاں نے شہنشاہ سے آزادی کی جنگ میں شرکت کرنے کے لئے کہا تو بہادر شاہ نے اپنی رضامندی نیچے لکھی نظم میں ظاہر کی :—

جاں فدا کرنے کو حاضر ھیں کہو تم جس دم؛
ہم ھیں جس کام کے'موجود ھیں اُس کام کے وقت!
گرچہ رندان تہی دست ھیں مانند گدا؛
وقت کے اپنے ھیں جمشید مگر جام کے وقت!

اِس بیچ گورنر جنرل کے رویئے اور ریذیڈینٹ کے برتاؤ سے بہادر شاہ کا دل' فرنگیوں کی طرف' رہا سہا بھی ٹوٹ گیا۔ اپنی اُس بھاؤنا کو بہادر شاہ نے اِن سطروں میں ادا کیا ھے :—

کہیں کیا اِن بتوں سے اے 'ظفر' ہم حال دل اپنا؛
یہ کافر ھیں نہیں اک بات اللہ کی قسم سنتے!
نہ کرتا نوح کے طوفاں کا کوئی ذکر بھی ہرگز؛
اگر مردم ھمارا ماجرائے چشم نم سنتے!
نہ لیتے نام الفت کا کبھی الفت کے جوئندے؛
جو میرا صبر سنتے او ترے ظلم و ستم سنتے!

بہادر شاہ کا دل ذلت سے تڑپ اُٹھا' شہنشاہ کی دلی کیفیت اِن شعروں میں غور کریں :—

नज़्मों और छन्दों में सन् अठारहसौ सत्तावन

विश्वम्भरनाथ पांडे

सन् 1857 की तारीख़ को किस नाम से पुकारा जाय— इस पर इतिहास लिखने वालों की राय में काफ़ी मतभेद है. कोई उसे 'बग़ावत' के नाम से पुकारता है तो कोई 'जंगे आज़ादी' के नाम से; लेकिन इससे किसी को इनकार नहीं कि फ़िरंगी हुकूमत को मुल्क से ख़त्म करने की वह एक शानदार कोशिश थी. सरकारी ख़रीतों, फ़ौजी अफ़सरों की चिट्ठियों, इतिहासकारों की किताबों, सैलानियों, के रोज़नामचों, कम्पनी के देशी अफ़सरों की यादद्दाश्तों, गवरनर जनरल के ऐलानों, पार्लिमेन्ट की बहसों, नेताओं के इश्तहारों और शाही फ़रमानों में हमें 1857 की एक सरसरी झाँकी मिलती है. सन् 1857 की क्रान्तिकारी तहरीक मुल्क की ख़ुद्दारी की भावनाओं, रूहानी तड़पनों, उम्मीदों और मायूसियों, कामयाबियों और नकामयाबियों, हारों और जीतों पर तेज़ रोशनी डालती है. मुल्क की हैसियत से हमारी ख़ूबियों और हमारी कमज़ोरियों को भी सन् 57 की तहरीक नुमायाँ कर देती है. इतिहासकारों की तरह उस ज़माने के हमारे शायरों और गाँव के कवियों ने भी हमारी आज़ादी और हमारी बरबादी की, हमारी उमंगों और हमारी बिपता की पुरजोश और पुरदर्द तसवीर खींची है.

उन्नीसवीं सदी उर्दू के मशहूर शायरों की माँ कही जाती है. दिल्ली के आख़री बादशाह बहादुरशाह ख़ुद एक ऊँचे दरजे के शायर थे. वे 'ज़फ़र' के नाम से शायरी करते थे. 'ज़ौक़' 'ग़ालिब', 'दाग़', 'हाली'—सब मुग़ल दरबार के मशहूर शायर थे. इनमें ज़ौक़ का इन्तक़ाल तो 1857 के पहले हो गया था लेकिन ग़ालिब, दाग़ और हाली 1857 में मौजूद थे. 1857 पर इनकी पुरदर्द नज़्में हमें अब तक मिलती हैं. दिल्ली की तरह हिन्दू राजाओं के दरबार भी कवियों को खुले दिल से बढ़ावा देते थे. इन कवियों ने 1857 के नेताओं की कीर्ति-कहानी अपने पुरजोश छन्दों में बयान की है. आइये स्वाधीनता-संग्राम की शताब्दी के मौक़े पर हम अपने उस ज़माने के शायरों और कवियों के कलामों और छन्दों में बलिदान और त्याग के उस अद्भुत नज़ारे के दर्शन करें.

1857 के वाक़यात पर ख़ुद बहादुरशाह 'ज़फ़र' के कलामों से काफ़ी रोशनी पड़ती है. बेंटिक और डलहौज़ी के रवइये ने मुग़ल शहन्शाह के मान और दरबार की शान

نظموں اور چھندوں میں سن اٹھارہ سو ستاون

وشومبھر ناتھ پانڈے

سن 1857 کی تاریخ کو کس نام سے پکارا جائے— اس پر اتہاس لکھنے والوں کی رائے میں کافی مت بھید ہے ۔ کوئی اسے 'بغاوت' کے نام سے پکارتا ہے تو کوئی 'جنگ آزادی' کے نام سے؛ لیکن اس سے کسی کو انکار نہیں کہ فرنگی حکومت کو ملک سے ختم کرنے کی وہ ایک شاندار کوشش تھی ۔ سرکاری خریطوں، فوجی افسروں کی چٹھیوں، اتہاسکاروں کی کتابوں، سیلانیوں کے روزنامچوں، کمپنی کے دیشی افسروں کی یادداشتوں، گورنر جنرل کے اعلانوں، پارلیمنٹ کی بحثوں، نیتاؤں کے اعلانوں اور شاہی فرمانوں میں ہمیں 1857 کی ایک سرسری جھانکی ملتی ہے ۔ سن 1857 کی کرانتکاری تحریک ملک کی خودداری کی بھاوناؤں، روحانی تڑپنوں، امیدوں اور مایوسیوں، کامیابیوں اور ناکامیابیوں، ہاروں اور جیتوں پر تیز روشنی ڈالتی ہے ۔ ملک کی حیثیت سے ہماری خوبیوں اور ہماری کمزوریوں کو بھی سن 57 کی تحریک نمایاں کر دیتی ہے۔ اتہاسکاروں کی طرح اس زمانے کے ہمارے شاعروں اور گاؤں کے کویوں نے بھی ہماری آزادی اور ہماری بربادی کی، ہماری امنگوں اور ہماری بپتا کی پرجوش اور پر درد تصویر کھینچی ہے ۔

انیسویں صدی اردو کے مشہور شاعروں کی ماں کہی جاتی ہے ۔ دلی کے آخری بادشاہ بہادر شاہ خود ایک اونچے درجے کے شاعر تھے؛ وہ 'ظفر' کے نام سے شاعری کرتے تھے ۔ 'ذوق' 'غالب' 'داغ' 'حالی'— سب مغل دربار کے مشہور شاعر تھے ۔ ان میں ذوق کا انتقال تو 1857 کے پہلے ہو گیا تھا لیکن غالب، داغ اور حالی 1857 میں موجود تھے۔ 1857 پر ان کی پر درد نظمیں ہمیں اب تک ملتی ہیں ۔ دلی کی طرح ہندو راجاؤں کے دربار بھی کویوں کو کھلے دل سے بڑھاوا دیتے تھے ۔ ان کویوں نے 1857 کے نیتاؤں کی کیرتی کہانی اپنے پر جوش چھندوں میں بیان کی ہے ۔ آئیے سوادھینتا سنگرام کی شتابدی کے موقع پر ہم اپنے اس زمانے کے شاعروں اور کویوں کے کلاموں اور چھندوں میں بلیدان اور تیاگ کے اس ادبھت نظارے کے درشن کریں ۔

1857 کے واقعات پر خود بہادر شاہ 'ظفر' کے کلاموں سے کافی روشنی پڑتی ہے ۔ بینٹنک اور ڈلہوزی کے رویہ نے مغل شہنشاہ کے نام اور دربار کی شان

जुलाई 1957 جولائی

नया हिन्द

जिल्द 24 جلد नम्बर 1 نمبر

जुलाई 1957 جولائی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद
145، مٹھی گنج، الہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

Can be had from —

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

نیاھ ی

इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص لیکھ

...ानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

Registered No. A—210

नई किताब

गंगा से गोमती तक

......"मुजीब की कहानियों की विशेषता उनकी शैली भी है. मामूली पढ़ा लिखा आदमी इन्हें बिना किसी की मदद के समझ सकता है. सरलता के साथ भाषा में व्यंग और जिन्दादिली इस तरह है जिस तरह ऊँचे पाए के लेखकों में मिलती है.

इन कहानियों में हास्य भी है, करुणा भी है. कहीं हंसते हंसते पेट में बल पड़ेंगे, तो कहीं पढ़ते-पढ़ते आप दुःख से स्तंभित रह जाएंगे. मुजीब की कहानियाँ हमारी कोमल भावनाएँ जगाती हैं, हमें अच्छा इनसान बनाती हैं."

—डाक्टर राम विलास शर्मा

........'वह (मुजीब) मार्ग साफ़ करना चाहते हैं, समाज को सम्भालना चाहते हैं. इसलिये वह कला को कामकाजी चाहते हैं और ऐसी नुकीली कि धार करती चली जाए...यह कहानियाँ जगह जगह हमारा ध्यान समाज में होने वाले अन्यायों और अत्याचारों की तरफ़ खींचती हैं...संग्रह की कहानियों में एक सीधी अकृत्रिमता है, जो अच्छी लगती है."

—जैनेन्द्र कुमार

लगभग हिन्दी के सभी बड़े लेखकों ने "गंगा से गोमती" को सराहा है.

"गंगा से गोमती तक" में १८० सफ़े हैं, तिरंगा सुन्दर कवर, बढ़िया जिल्द, दाम केवल दो रुपया. जल्दी आर्डर भेजिये.

—मैनेजर नया हिन्द

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

گنگا سے گومتی تک

......"مجیب کی کہانیوں کی وشیشتا انکی شیلی ہے. معمولی پڑھا لکھا آدمی انہیں بنا کسی کی مدد کے سمجھ سکتا ہے. سرلتا کے ساتھ بھاشا میں ویِنگ و زندہ‌دلی اس طرح ہے جس طرح اونچے پائے کے لیکھکوں میں ملتی ہے.

ان کہانیوں میں ہاسیہ بھی ہے، کرونا بھی ہے. کہیں ہنستے ہنستے پیٹ میں بل پڑینگے، تو کہیں پڑھتے پڑھتے آپ دکھ سے استمبھت رہ جائینگے. مجیب کی کہانیاں ہماری کومل بھاؤناؤں جگاتی ہیں، ہمیں اچھا انسان بناتی ہیں."

—ڈاکٹر رام بلاس شرما

... ..." وہ (مجیب) مارگ صاف کرنا چاہتے ہیں، سماج کو سنبھالنا چاہتے ہیں. اس لئے وہ کلا کو کام‌کاجی چاہتے ہیں اور ایسی نوکیلی کہ دھار کرتی چلی جائے...یہ کہانیاں جگہ جگہ ہمارا دھیان سماج میں ہونے والے انیایوں اور اتیاچاروں کی طرف کھینچتی ہیں...سنگرہ کی کہانیوں میں ایک سیدھی اکرترمتا ہے، جو اچھی لگتی ہے."

—جینندر کمار

لگ بھگ ہندی کے سبھی بڑے لیکھکوں نے "گنگا سے گومتی" کو سراہا ہے.

"گنگا سے گومتی تک" میں 180 صفحے ہیں، ترنگا سندر کور، بڑھیا جلد، دام کیول دو روپیہ. جلدی آرڈر بھیجئے.

—مینیجر نیا ہند

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج الہ‌آباد.

Printed and Published by Sarvajit Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद—

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد—

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے—

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے۔

[illegible]

नोट—ये किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं।

نوٹ — یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم۔ اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم۔ اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سروودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم۔ اے۔ ایل ایل۔ بی۔ گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. [illegible]	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. [illegible]
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. [illegible]
28. [illegible]	,,	0	8	0	,,	[illegible]
29. [illegible]	,,	1	0	0	[illegible]	[illegible]

मिलने का पता—

[illegible]

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर जिन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूझ के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, उम्दा छपाई, दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास की सदी कमीशन.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے. آج کی اردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے' اب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی. غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی.

" ان کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادوتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاو کا سمبندھ ہے کویتائیں اچ استر کی ہیں."

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں."

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اسنیہ اور چاؤ سے اس سنگرہ کا آنند لینگے اور ان سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے."

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم ان کی (کویتاؤں کی) شکتی' تازگی اور سوجھ کے قائل ہیں. وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے. کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے."

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے."—'نیا سماج' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا. سندر جلد' بڑھیا کاغذ. عمدہ چھپائی' دام صرف تین روپیہ. دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن.

ملنے کا پتہ—
منیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांग्रेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की कीमत सिर्फ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान कुरबान कर दी. दाम सिर्फ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. कीमत सिर्फ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, "नया हिन्द" 145, [illegible]

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں ۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے ۔ 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے ۔

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لایا جا سکتا ہے ۔

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے ۔

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی۔ دام صرف ڈھائی روپیہ۔

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے ۔ قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے ۔

[illegible] الہ آباد

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

"उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, ऊपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپُرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں، اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اٹھانے والے اپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

"انہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے. وہ اسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے.....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، اوپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اس کتاب میں آپ کو ملے گی. راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی.

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

145 مٹھی گنج، الہ آباد.

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें है, गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक खर्च अलग.

हिन्दू मुस्लिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक आंखों देखा बयान. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुश्किलों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 के पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, "नया हिन्द" 145, [illegible]

گیتا اور قرآن

لیکھک — پنڈت سندر لال

اس کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں، گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں ان کے لئے یہ کتاب انمول ہے۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ۔

ہندو مسلم ایکتا

اس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے۔

سو صفحے کی کتاب۔ قیمت صرف بارہ آنے۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اس کا علاج۔ اسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا۔

قیمت بارہ آنے۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں ان کا دردناک آنکھوں دیکھا بیان۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مشکلوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں۔ قیمت چار آنے۔

بنگال اور اس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے۔ قیمت صرف دو آنے۔

[illegible]

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से जियादा दाम की किताबें खरीदने वालों को और बुकसेलरों को खास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. 'भारत में अंगरेजी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दोरुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی . پوری جانکاری کے لئے لکھئے .

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا .

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا . 'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انوادت .

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے . بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے .

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز . لگ بھگ چار سو پنّے . کپڑے کی سندر جلد قیمت کیول ساڑھے سات روپئے .

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا .

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے .

سندر جلد . اچھا کاغذ . دو سو صفحے . قیمت دو روپیہ .

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے . اس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اس کا مقصد کیا ہے .

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا . یہ دوسرا ایڈیشن ہے . صفحے 25 دام کیول دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج' الہ آباد .

मन में मैल था, वे गाली देने के अन्दाज़ में बात कर रहे थे......क्या दुश्मनों के अलावा कोई ऐसी बात कह सकता है ?.....जब तक मैं मैकेनिक हूं, तब तक ठीक. अगर कल के रोज़ मैं.....मन्त्री हो जाऊं तो 'तानाशाह' और 'कुरसी तोड़ने वाला' हो जाऊंगा.....देखने में यह आता है कि वे तमाम लोग जिन्हें पार्टी ने सज़ा दी है, पार्टी से लड़ने के लिये एक हो गये हैं."

लेखक ने एक तारबाबू का चित्रन बड़ा सुन्दर किया है—धीरे धीरे उसने ये शब्द काग़ज़ पर उतार दिये. अपनी लम्बी ज़िन्दगी में उसने न जाने कितने सन्देश लिखे थे, ख़ुशी के सन्देश और ग़म के सन्देश, कितनी बार दूसरों के दर्द और दूसरों की ख़ुशी की ख़बर उसी ने सब से पहले सुनी थी. अपने काम के सिलसिले में उसने न जाने कबसे तार के उन छोटे सन्देशों के अर्थ पर ध्यान देना छोड़ दिया था, उसका काम तो बस इतना था कि ध्वनियों को पकड़े और मशीन की तरह उनको काग़ज़ पर उतार दे."

सार्वजनिक काम करने वाले अपनी सेहत की परवाह नहीं करते. ऐसे लोगों के लिये बड़े काम की नसीहत है. कोर्चागिन अपने भाई को लिखता है—"मेरे भाई अब तुम अपनी सेहत की फ़िक्र करो. बूते से बाहर अपनी ताक़त को ख़र्च न करो क्योंकि सेहत की मरम्मत की भारी क़ीमत पार्टी को चुकानी पड़ती है."

ख़ुदकुशी के बारे में लिखा है—"पिस्तौल को रख दो और कभी इसकी बात किसी से न कहना. जीवन जब नाक़ाबिले बर्दाश्त हो उठे, तब भी जीने की कला सीखो."

पुस्तक एक और सुन्दर नसीहत काम करने वालों को देती है—"हम लोग कभी कभी अपनी शक्तियों को बुरी तरह बरबाद करते हैं, जिसका हमें कोई हक़ नहीं. अब मैं इस बात को समझ गया हूं कि यह वीरता की उतनी निशानी नहीं है जितनी नाक़ाबलियत और ग़ैरज़िम्मेदारी की. अब मैं समझने लगा हूं कि मुझे अपनी तन्दुरुस्ती के बारे में इतनी लापरवाही बरतने का हक़ न था."

बग़ैर उसूली लिहाज़ के हर चिन्तनशील पाठक को यह उपन्यास ज़रूर पढ़ना चाहिये. अनुवाद की ज़बान सहल और मुहावरेदार है. छपाई, सफ़ाई भी उम्दा है.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

میں میل تھا' وہ گالی دینے کے انداز میں بات کر رہے تھے...... دشمنوں کے علاوہ کوئی ایسی بات کہہ سکتا ہے ؟..... جب تک میں میکینک ہوں' تب تک ٹھیک. اگر کل کے روز میں..... منتری ہوجاؤں تو 'تاناشاہ' اور 'کرسی توڑنے والا' ہوجاؤں گا..... دیکھنے میں یہ آتا ہے کہ وے تمام لوگ جنھیں پارٹی نے سزا دی ہے' پارٹی سے لڑنے کے لئے ایک ہوگئے ہیں."

لیکھک نے ایک تار بابو کا چترن بڑا سندر کیا ہے—دھیرے دھیرے اس نے یہ شبد کاغذ پر اتار دیئے. اپنی لمبی زندگی میں اس نے نہ جانے کتنے سندیش لکھے تھے' خوشی کے سندیش اور غم کے سندیش' کتنی بار دوسروں کے درد اور دوسروں کی خوشی کی خبر اسی نے سب سے پہلے سنی تھی. اپنے کام کے سلسلے میں اس نے نہ جانے کب سے تار کے ان چھوٹے سندیشوں کے ارتھ پر دھیان دینا چھوڑ دیا تھا' اس کا کام تو بس اتنا تھا کہ دھونیوں کو پکڑے اور مشین کی طرح ان کو کاغذ پر اتار دے."

سارو جنک کام کرنے والے اپنی صحت کی پرواہ نہیں کرتے. ایسے لوگوں کے لئے بڑے کام کی نصیحت ہے. کورچاگن اپنے بھائی کو لکھتا ہے—"میرے بھائی اب تم اپنی صحت کی فکر کرو. بوتے سے باہر اپنی طاقت کو خرچ نہ کرو کیونکہ صحت کی مرمت کی بھاری قیمت پارٹی کو چکانی پڑتی ہے."

خودکشی کے بارے میں لکھا ہے—"پستول کو رکھ دو اور کبھی اس کی بات کسی سے نہ کہنا. جیون جب ناقابل برداشت ہو اٹھے' تب بھی جینے کی کلا سیکھو."

پستک ایک اور سندر نصیحت کام کرنے والوں کو دیتی ہے—"ہم لوگ کبھی کبھی اپنی شکتیوں کو بری طرح برباد کرتے ہیں' جس کا ہمیں کوئی حق نہیں. اب میں اس بات کو سمجھ گیا ہوں کہ یہ ویرتا کی اتنی نشانی نہیں ہے جتنی ناقابلیت اور غیر ذمہ داری کی. اب میں سمجھنے لگا ہوں کہ مجھے اپنی تندرستی کے بارے میں اتنی لاپرواہی برتنے کا حق نہ تھا."

بغیر اصولی لحاظ کے ہر چنتن شیل پاٹھک کو یہ اپنیاس پڑھنا چاہئے. انوواد کی زبان سہل اور محاورہ دار ہے. چھپائی' صفائی بھی عمدہ ہے.

—وشومبھر ناتھ پانڈے

[illegible] छूटता है, खुद एक अमीर पोलिश लड़के की साजिश से गिरफ्तार होता है, छूटता है और फिर रूसी कम्यूनिस्ट नौजवानों की टोली में भरती होता है, लड़ाई में हिस्सा लेता है, जख्मी होता है, फिर हिस्सा लेता है, बोल्शेविक क्रान्ति सफल होती है, अब तामीरी कामों की बारी आती है. उसूली समझ-बूझ और समाजी रहन सहन को चालने ढालने का वक्त आता है. नौजवान कोर्चागिन बढ़कर हिस्सा लेता है. कोर्चागिन और उसके दोस्त एक ऊंची इखलाक़ी नैतिक जिन्दगी बसर करते हैं. समाज को सुखी बनाने के वे ऊंचे से ऊंचे ख्वाब देखते हैं. इनक़लाबी जंग में वे जिस तरह मर मिटने को तैयार रहते हैं उसी तरह तामीरी कामों में, रेल की पटरियां बिछाने में, रेल यार्ड की सफ़ाई करने में. उनके लिये क्रान्ति जिस तरह जंगी चीज है उसी तरह तामीरी भी.

उपन्यास के नारी पात्रों में तोनिया, रिता, ताया, आना बोहार्ट, लिदिया पोलेविख का चित्रन ऊंची सतह पर किया गया है. उनके बयान में एक चरित्र की ऊंचाई मिलती है.

कोर्चागिन जिन्दगी की पुकार को सुनता है और आग और धुएं से होकर निकलता है, उसका जिस्म छलनी छलनी हो जाता है मगर लेखक कहता है—"लोहा इसी तरह आग में तपकर फ़ौलाद बनता है."

कोर्चागिन एक बहुत ऊंचे उसूलों का कम्यूनिस्ट नौजवान है. जिस कम्यूनिस्ट समाज का वह सपना देखता है उस पर खुद पाबन्दी के साथ अमल करता है. वह सबसे पहले खुद अपने साथ बेरहमी से पेश आता है. सबसे पहले तोनिया नामक एक अमीरजादी से उसकी मुहब्बत होती है. दोनों एक दूसरे के क़रीब आते हैं. लेकिन जब शादी का सवाल आता है तो कोर्चागिन अपना फ़ैसला बदल देता है. वह कहता है—तुम ग़रीब से मुहब्बत कर सकती हो लेकिन ग़रीबी से मुहब्बत नहीं. आखीर में वह ताया से शादी करता है मगर जिन्सी ख्वाहिश के लिये नहीं बल्कि एक वफ़ादार साथी के लिये.

पुस्तक नई पीढ़ी की विचारधारा पर काफ़ी रोशनी डालती है. पार्टी के भीतर बहुमत और अल्पमत का सवाल आता है तो साथी तुफ्ता कहता है—

"अगर आप बहुमत दल संगठित कर सकते हैं तो हमें भी अधिकार है कि हम अल्पमत दल संगठित करें."

तब जवाब मिलता है—"रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी कोई पार्लमेन्ट नहीं है."

[illegible] विरोधी पार्टियों के सीखने के लिये पुस्तक [illegible] पांकरातोव कहता है—" वे लोग... [illegible] संग संग लड़ने वालों की तरह [illegible] तक़रीरें दुश्मनों जैसी थीं, उनके

سے چھوٹتا ھے' خود ایک امیر پولش لڑکے کی سازش سے گرفتار ھوتا ھے' چھوٹتا ھے اور پھر روسی کمیونسٹ نوجوانوں کی ٹولی میں بھرتی ھوتا ھے' لڑائی میں حصہ لیتا ھے' زخمی ھوتا ھے' پھر حصہ لیتا ھے' بولشیوک کرانتی سپھل ھوتی ھے . اب تعمیری کاموں کی باری آتی ھے . اصولی سمجھ بوجھ اور سماجی رھن سھن کو چالنے ڈھالنے کا وقت آتا ھے . نوجوان کورچاگن بڑھکر حصہ لیتا ھے' کورچاگن اور اس کے دوست ایک اونچی اخلاقی نیتک زندگی بسر کرتے ھیں . سماج کو سکھی بنانے کے وے اونچے سے اونچے خواب دیکھتے ھیں . انقلابی جنگ میں وے جس طرح مرمٹنے کو تیار رھتے ھیں اسی طرح تعمیری کاموں میں' ریل کی پٹریاں بچھانے میں' ریل یارڈ کی صفائی کرنے میں . ان کے لئے کرانتی جس طرح جنگی چیز ھے اسی طرح تعمیری بھی .

اپنیاس کے ناری پاتروں میں تونیا' ریتا' تایا' آنابوھارٹ لدیا' پولیوخ کا چترن اونچی سطح پر کیا گیا ھے . ان کے بیان میں ایک چرتر کی اونچائی ملتی ھے .

کورچاگن زندگی کی پکار کو سنتا ھے اور آگ اور دھوئیں سے ھوکر نکلتا ھے' اس کا جسم چھلنی چھلنی ھوجاتا ھے مگر لیکھک کہتا ھے—"لوھا اسی طرح آگ میں تپکر فولاد بنتا ھے ."

کورچاگن ایک بہت اونچے اصولوں کا کمیونسٹ نوجوان ھے . جس کمیونسٹ سماج کا وہ سپنا دیکھتا ھے اس پر خود پابندی کے ساتھ عمل کرتا ھے . وہ سب سے پہلے خود اپنے ساتھ بیرحمی سے پیش آتا ھے . سب سے پہلے تونیا نامک ایک امیرزادی سے اس کی محبت ھوتی ھے . دونوں ایک دوسرے کے قریب آتے ھیں . لیکن جب شادی کا سوال آتا ھےتو کورچاگن اپنا فیصلہ بدل دیتا ھے . وہ کہتا ھے—تم غریب سے محبت کر سکتی ھو لیکن غریبی سے محبت نہیں . آخیر میں وہ تایا سے شادی کرتا ھے. مگرجنسی خواھش کے لئے نہیں بلکہ ایک وفادار ساتھی کے لئے .

پستک نئی پیڑھی کی وچار دھارا پر کافی روشنی ڈالتی ھے . پارٹی کے بھیتر بہمت اور الپمت کا سوال آتا ھے تو ساتھی تفتا کہتا ھے—

"اگر آپ بہمت دل سنگٹھت کر سکتے ھیں تو ھم کو بھی ادھکار ھے کہ ھم الپمت دل سنگٹھت کریں ."

تب جواب ملتا ھے—"روسی کمیونسٹ پارٹی کوئی پارلیمنٹ نہیں ھے ."

ھندوستان کی ورودھی پارٹیوں کے سیکھنے کے لئے پستک میں بڑے کام کی باتیں ھیں . پانکراتو کہتا ھے—"وے لوگ...... ھمارے ساتھیوں کی طرح' سنگ سنگ لڑنے والوں کی طرح نہیں بول رھے تھے . ان کی تقریریں دشمنوں جیسی تھیں' ان کے

किताबें



کتابیں

अग्नि दीक्षा

रूसी ज़बान में लिखने वाले—निकोलाई आस्त्रोवस्की; तर्जुमा करने वाले—अमृत राय; छापने वाले—पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड; आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली; क़ीमत—चार रुपया; सफ़े—472.

यह उपन्यास रूसी लेखक निकोलाई आस्त्रोवस्की का एक मशहूर उपन्यास है. लेखक सन 1904 में पैदा हुआ और 1936 में, सिर्फ़ 32 बरस की उम्र में उसकी मौत हुई. रूसी क्रान्ति में 13-14 बरस की उम्र में वह शामिल हुआ और समझदार बहादुर लड़के की हैसियत से वह नई पीढ़ी के आगे आगे चला. लड़ाई में वह जितना बहादुर निकला उससे ज़्यादा बहादुर वह तामीरी और रचनात्मक कामों में साबित हुआ. गोलियों के ज़ख़्म और रचनात्मक कामों की हड्डी तोड़ मेहनत ने उसे गठिया, लक़वा और लम्बी बीमारी का शिकार बना दिया. सन 1930 में 26 बरस की उम्र में वह बिलकुल अन्धा हो गया. महज़ इस ख़्याल ने कि वह जिस्मानी बेबसी से अब रचनात्मक काम करने वालों की क़तार से हट गया उसे बेचैन कर दिया. वह बहादुर अन्धा लड़का अब शिक्षक और लेखक बना. उसका मौजूदा उपन्यास न सिर्फ़ सोवियत रूस को उसकी महान देन है बल्कि सारी दुनिया की नई पीढ़ी के निर्माताओं के लिये वह एक रास्ता दिखाने वाली रोशनी का काम देगा. सोवियत देश ने अपने इस बहादुर अन्धे पथ-प्रदर्शक को इस उपन्यास के लिये 'आर्डर आफ़ लेनिन' का तमग़ा भेंट किया और इस तरह सारे देश का अहसान जताया. मौजूदा उपन्यास के पढ़ने से यह पता चलेगा कि एक मामूली हैसियत का बालक किस तरह अपनी ग़ैर मामूली ज़िन्दगी बनाता है और अपने मुल्क के बचपन को प्यार और [illegible] है.

उपन्यास की कहानी में कोई ख़ास पेचीदगी नहीं. सारी कहानी मुख्य नायक पॉवेल के इर्द गिर्द घूमती है. एक ग़रीब विधवा का छोटा बेटा, होटल में [illegible] वाला, सिर्फ़ दो जमात पढ़ा हुआ [illegible] पड़ता है, अपने साथी और [illegible]

اگنی دیکشا

روسی زبان میں لکھنے والے—نکولائی استروسکی؛ ترجمہ کرنے والے—امرت رائے؛ چھاپنے والے—پیپلز پبلشنگ ہاؤس لمیٹڈ؛ آصف علی روڈ، نئی دلی؛ قیمت—چار روپے؛ صفحے 472۔

یہ اپنیاس روسی لیکھک نکولائی استروسکی کا ایک مشہور اپنیاس ہے۔ لیکھک سن 1904 میں پیدا ہوا اور 1936 میں صرف 32 برس کی عمر میں اس کی موت ہوئی۔ روسی کرانتی میں 13-14 برس کی عمر میں وہ شامل ہوا اور سمجھدار بہادر لڑکے کی حیثیت سے وہ نئی پیڑھی کے آگے آگے چلا۔ لڑائی میں وہ جتنا بہادر نکلا اس سے زیادہ بہادر وہ تعمیری اور رچناتمک کاموں میں ثابت ہوا۔ گولیوں کے زخم اور رچناتمک کاموں کی ہڈی توڑ محنت نے اسے گٹھیا، لقوہ اور لمبی بیماری کا شکار بنا دیا۔ سن 1930 میں 26 برس کی عمر میں وہ بالکل اندھا ہو گیا۔ محض اس خیال نے کہ وہ جسمانی بےبسی سے اب رچناتمک کام کرنے والوں کی قطار سے ہٹ گیا اسے بےچین کر دیا۔ وہ بہادر اندھا لڑکا اب شکشک اور لیکھک بنا۔ اس کا موجودہ اپنیاس نہ صرف سوویت روس کو اس کی مہان دین ہے بلکہ ساری دنیا کی نئی پیڑھی کے نرمانتاؤں کے لئے وہ ایک راستہ دکھانے والی روشنی کا کام دےگا۔ سوویت دیش نے [illegible]

वाक़िआत उन्हें अपने तर्ज़ में फ़र्क़ करने पर मजबूर कर रहे हैं.

आख़िर में एक अर्ज़ और भी है. साइन्स वाले महज़ दिमाग़ी काम करते हैं और उन्हें जिस्मानी काम से ज्यादा क़ीमती और आला समझते हैं. शायद वह यह मानते हैं कि जिस्मानी काम करने वाला इन्सान उनके मुक़ाबिले में कहीं ज्यादा गया गुज़रा है. यह ख़याल ग़लत है. साइन्स वालों को अपनी विद्या या तालीम तो लगानी होगी मगर साइन्स का मोल पैसे में करने के मानी हैं उसे चन्द लोगों के हाथों में सौंप कर दुनिया की नव्वे फ़ीसदी आबादी को उससे महरूम रखना. यह नाइन्साफ़ी है. अगर साइन्स वाले की आह सरकार के ख़िलाफ़ जाती है, तो आम आदमी की आह साइन्स वालों के ख़िलाफ़ जाती है. अवाम से उनका ताल्लुक़ टूटता है. मजबूर होकर उन्हें सरकार का मुंह देखना पड़ता है, जो मन मानी शर्तों पर उन्हें रखती है. हमारे हिन्दुस्तान के साइन्स वालों को तो इस तरफ़ ख़ास तौर से ध्यान देना चाहिये.

29. 11. '54 —सुरेश रामभाई

राजकुमारी अमृत कौर और सन्तति-नियमन

नीचे का पत्र हम बड़ी तसल्ली और ख़ुशी के साथ ज्यों का त्यों छाप रहे हैं. हमें दुख है कि दैनिक पत्रों की रिपोर्टों के कारन यह ग़लतफ़हमी पैदा हुई.

23. 12. 54 सुन्दरलाल

नई दिल्ली

20 दिसम्बर, 1954

प्रिय महोदय,

श्री अमृतलाल नानावटी जी ने 'नया हिन्द' के नवम्बर अङ्क में प्रकाशित 'अमरीका में मिस्टर मुहम्मद अली और राजकुमारी अमृत कौर' लेख की ओर राजकुमारी जी का ध्यान आकर्षित किया है. उन्होंने बताया कि अमरीका में राजकुमारी जी ने Mechanical Constraceptives के पक्ष में विचार व्यक्त किये ऐसा इस लेख में है. मन्त्रिणी जी को यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा कि अगर इस तरह की रिपोर्ट उनके बारे में आपके पत्र में छपी है तो वह बिलकुल निराधार है—उसमें कोई सचाई नहीं. वह सन्तति नियमन के लिये हमेशा पूज्य बापू का बताया हुआ संयम का मार्ग अपनाने को कहती हैं.

आपका

जयानन्द शर्मा

पर्सनल असिस्टेन्ट

واقعات انہیں اپنے طرز میں فرق کرنے پر مجبور کر رہے ہیں۔

آخر میں ایک عرض اور بھی ہے۔ سائنس والے محض دماغی کام کرتے ہیں اور اسے جسمانی کام سے زیادہ قیمتی اور اعلیٰ سمجھتے ہیں۔ شاید وہ یہ مانتے ہیں کہ جسمانی کام کرنے والا انسان ان کے مقابلہ میں کہیں زیادہ گیا گزرا ہے۔ یہ خیال غلط ہے۔ سائنس والوں کو اپنی ودیا یا تعلیم تو لگانی ہوگی مگر سائنس کا مول پیسہ میں کرنے کے معنی ہیں اسے چند لوگوں کے ہاتھ میں سونپ کر دنیا کی نوے فیصدی آبادی کو اس سے محروم رکھنا۔ یہ ناانصافی ہے۔ اگر سائنس والے کی آہ سرکار کے خلاف جاتی ہے، تو عام آدمی کی آہ سائنس والوں کے خلاف جاتی ہے۔ عوام سے ان کا تعلق ٹوٹتا ہے۔ مجبور ہوکر انہیں سرکار کا منہ دیکھنا پڑتا ہے جو منمانی شرطوں پر انہیں رکھتی ہے۔ ہمارے ہندستان کے سائنس والوں کو تو اس طرف خاص طور سے دھیان دینا چاہئے۔

—سریش رام بھائی 29 . 11 . '54

راج کماری امرت کور اور سنتتی نیمن

نیچے کا پتر ہم بڑی تسلی اور خوشی کے ساتھ جیوں کا تیوں چھاپ رہے ہیں۔ ہمیں دکھ ہے کہ دینک پتروں کی رپورٹوں کے کارن یہ غلط فہمی پیدا ہوئی۔

—سندرلال 23 . 12 . '54

نئی دلی

20 دسمبر سن 1954ع

پریہ مہودیہ،

شری امرت لال ناناوتی جی نے 'نیا ہند' کے نومبر انک میں پرکاشت 'امریکہ میں مسٹر محمد علی اور راج کماری امرت کور' لیکھ کی اور راج کماری جی کا دھیان آکرشت کیا ہے۔ انہوں نے بتایا کہ امریکہ میں راج کماری جی نے Mechanical constraceptives کے پکش میں وچار ویکت کئے ایسا اس لیکھ میں ہے۔ منترنی جی کو یہ جان کر بڑا آشچریہ ہوا اور انہوں نے کہا کہ اگر اس طرح کی رپورٹ ان کے بارے میں آپ کے پتر میں چھپی ہے تو وہ بالکل نرادھار ہے—اس میں کوئی سچائی نہیں۔ وہ سنتتی نیمن کے لئے ہمیشہ پوجیہ باپو کا بتایا ہوا سنیم کا مارگ اپنانے کو کہتی ہیں۔

آپ کا

جیانند شرما

پرسنل آسسٹنٹ

खिलाफ़ इलज़ाम लगाया गया लेकिन सबूत में वह बेगुनाह ठहराए गये और इसलिये बरी हो गये. लेकिन इसके बाद भी उनपर निगरानी रखी जाती है. इस तरह सारा वातावरन ज़हरीला हो गया है. अमरीका की सरकार और शायद दूसरी सरकारें भी यह सोचती हैं कि साइंस वालों को दबाकर अपना ताबेदार रखा जा सकता है और क़ौम के नाम पर, कुछ पैसे का लालच देकर, उनसे जो चाहो कराया जा सकता है. हो सकता है कि कुछ साइन्स वाले इस तरह दबाकर क़ाबू में रखे जा सकें, मगर दुनिया उनको साइन्स के मन्दिर का पुजारी मानने से इन्कार करेगी. वह साइन्सदां नहीं पैसाख़ोर कहलायेंगे. जो असली और सच्चा साइन्सदां होगा वह बिला किसी डर के अपनी बात कहेगा और उसके लिये हर मुसीबत सहने को तैयार होगा.

मगर सरकारें भी धोके में हैं. वह इस गुमान में हैं कि साइन्स वालों से मनमाना काम लेकर अपने अपने मुल्क को मज़बूत बना लेंगी. लेकिन जैसा कि कप्तान हार्ट ने कहा है आज दुनिया के सामने सवाल दूसरा ही है :

"हमारी हिफ़ाज़त के लिये बुनियादी चीज़ है ठंडा दिल, सब्र और शान्ति के साथ मसलों पर सोचने की लियाक़त. हमारी हिफ़ाज़त के लिये बुनियादी ख़तरें भी तीन हैं—ग़ुस्सा, घबड़ा जाना और जल्दबाज़ी. इन तीनों के मिलने से ऐसा धमाका हो सकता है जो क्या क्या तबाह न करदे."

आज दुनिया की राजधानियों के सेक्रेट्रियों में, मुसद्दियों के घरों में ठंडे दिल, सब्र और शान्ति की ही कमी है. ग़ुस्सा उनकी नाक पर ही चढ़ा है मानो, घबराये और डरे हुए तो वह हैं ही, और जल्दबाज़ी की तो कोई इन्तहा ही नहीं है. अगर इसकी रोक थाम नहीं होती है तो जो हो जाये थोड़ा है.

लेकिन इससे बचने का रास्ता सिर्फ़ एक ही है, विज्ञान तो ताक़त है जिससे अच्छे और बुरे दोनों तरह के काम लिये जा सकते हैं. ज़रूरत है इससे अच्छा काम लेने वालों की. अच्छा काम ले कौन? वही ले सकते हैं जिनके दिल में ठंडक है, जिनमें सब्र है और जो शान्त हों. साइन्स या विज्ञान रूपी हाथी पर आत्म ज्ञान का अंकुश रहे नहीं वह क़ाबू में नहीं आ सकता. विज्ञान इन्सान की रफ़्तार बढ़ा सकता है मगर किस तरफ़ बढ़ा जाये, यानी दिशा दिखलाने का काम, आत्मज्ञान ही करेगा. लिहाज़ा इन दोनों का मेल ही मौजूदा हालत से, मौजूदा ख़तरे से, दुनिया को मुक्त कर सकता है.

इसके लिये बड़ी भारी ज़िम्मेदारी साइन्स वालों पर आती है. आज वह ख़ुद विज्ञान के नशे में चूर हैं और आत्मज्ञान का मानो वजूद तक नहीं क़ुबूल करते. लेकिन ख़ुशी की बात है कि साइन्स की खोजें और दुनिया के

خلاف الزام لگایا گیا، لیکن ثبوت میں وہ بےگناہ ٹھہرائے گئے اور اس لئے بری ہوگئے۔ لیکن اس کے بعد بھی ان پر نگرانی رکھی جاتی ہے۔ اس طرح سارا واتاورن زہریلا ہوگیا ہے۔ امریکہ کی سرکار اور شاید دوسری سرکاریں بھی یہ سوچتی ہیں کہ سائنس والوں کو دباکر اپنا تابعدار رکھا جاسکتا ہے اور قوم کے نام پر، کچھ پیسہ کا لالچ دیکر، ان سے جو چاہو کرایا جاسکتا ہے۔ ہوسکتا ہے کہ کچھ سائنس والے اس طرح دباکر قابو میں رکھے جاسکیں، مگر دنیا ان کو سائنس کے مندر کا پجاری ماننے سے انکار کریگی۔ وہ سائنس داں نہیں پیسہ خور کہلائینگے۔ جو اصلی اور سچا سائنس داں ہوگا وہ بلا کسی ڈر کے اپنی بات کہیگا اور اس کے لئے ہر مصیبت سہنے کو تیار ہوگا۔

مگر سرکاریں بھی دھوکے میں ہیں۔ وہ اس گمان میں ہیں کہ سائنس والوں سے من مانا کام لیکر اپنے اپنے ملک کو مضبوط بنا لینگی۔ لیکن جیسا کہ کپتان ہارٹ نے کہا ہے آج دنیا کے سامنے سوال دوسرا ہی ہے:

"ہماری حفاظت کے لئے بنیادی چیز ہے ٹھنڈا دل، صبر اور شانتی کے ساتھ مسئلوں پر سوچنے کی لیاقت۔ ہماری حفاظت کے لئے بنیادی خطریں بھی تین ہیں—غصہ، گھبرا جانا اور جلدبازی۔ ان تینوں کے ملنے سے ایسا دھماکا ہوسکتا ہے جو کیا کیا تباہ نہ کردے۔"

آج دنیا کی راجدھانیوں کے سیکریٹریوں میں، مسدیوں کے گھروں میں ٹھنڈے دل، صبر اور شانتی کی ہی کمی ہے۔ غصہ ان کی ناک پر ہی چڑھا ہے مانو، گھبرائے ہوئے اور ڈرے ہوئے تو وہ ہیں ہی، اور جلدبازی کی تو کوئی انتہا ہی نہیں ہے۔ اگر اس کی روک تھام نہیں ہوتی ہے تو جو ہو جائے تھوڑا ہے۔

لیکن اس سے بچنے کا راستہ صرف ایک ہی ہے۔ وگیان تو طاقت ہے جس سے اچھے اور برے دونوں طرح کے کام لئے جاسکتے ہیں۔ ضرورت ہے اس سے اچھا کام لینے والوں کی۔ اچھا کام لے کون؟ وہی لے سکتے ہیں جن کے دل میں ٹھنڈک ہے، جن میں صبر ہے اور جو شانت ہوں۔ سائنس یا وگیان روپی ہاتھی پر آتم گیان کا انکش رہے نہیں وہ قابو میں نہیں آسکتا۔ وگیان انسان کی رفتار بڑھا سکتا ہے مگر کس طرف بڑھا جائے، یعنی دشا دکھلانے کا کام، آتم گیان ہی کریگا۔ لہذا ان دونوں کا میل ہی موجودہ حالت سے، موجودہ خطرہ سے دنیا کو مکت کرسکتا ہے۔

اس کے لئے بڑی بھاری ذمہداری سائنس والوں پر آتی ہے۔ آج وہ خود وگیان کے نشہ میں چور ہیں اور آتم گیان کا مانو وجود تک نہیں قبول کرتے۔ لیکن خوشی کی بات ہے کہ سائنس کی کھوجیں اور دنیا کے

किया जा रहा हो. वह इतनी हद को पहुंच गई कि किसी भी आबरूदार इन्सान को उनका बरदाश्त करना ही नामुमकिन हो गया. और एक मर्तबा प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन को यहां तक इशारा करना पड़ा कि अमरीकन सिनेट की इन्टरनल सिक्योरिटी कमेटी (Internal Security Committee) या इस तरह की दूसरी कमेटी के सामने किसी भी दिमाग़दार आदमी को बयान देने से इन्कार कर देना चाहिये.

थोड़ा अर्सा पहले जिस यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन पढ़ाते थे वहां की साइन्स इन्सटीचूट के डाइरेक्टर डाक्टर राबर्ट ओपनहाइमर थे. उनकी सेवाओं से ख़ुश होकर अमरीकन सरकार ने उन्हें एटामिक इनर्जी कमीशन (Atomic Energy Commission) का ख़ास मशीर मुक़र्रर किया. लेकिन जब हाइड्रोजन बम बना तो उनसे सलाह ली गई कि इसके इस्तेमाल के बारे में उनकी क्या राय है. उन्होंने उसके इस्तेमाल के ख़िलाफ़ राय दी और कहा कि वह बहुत ही ख़तरनाक व तबाहकुन है. उनकी यह राय अमरीकी सरकार को पसन्द नहीं आई और उसने उन्हें कमीशन के मशीर पर से हटा दिया. लेकिन आज बड़े बड़े फ़ौजी जनरल और साइन्सदां डाक्टर ओपनहाइमर की राय से इत्तफ़ाक़ करते हैं. इंगलैन्ड के सरनाम अफ़सर कप्तान लिडिल हार्ट (Capt. Liddle Hart) का कहना है कि हाइड्रोजन बम के बाद "मुकम्मिल लड़ाई" और "जीत" लफ़्ज़ बेमानी हो जाते हैं. अगर अब कोई "लड़ाई जीतने" के ख़्वाब देखता है या इस तरह की बात करता है तो "मुहमिल से बदतर बात करता है. इससे उसके अपने मुल्क को और कुल इन्सानी क़ौम को ख़तरा है." हाल ही में जापान के नज़दीक जो हाइड्राजन बम का तजुर्बा किया गया उससे न्यूज़ीलेन्ड के लोग तक डर गये हैं और कहते हैं कि इस तरह के तजुर्बों से हमारी जान व माल को अन्देशा है.

हाइड्रोजन बम से कहीं ज़्यादा ख़तरनाक चीज़ यह है कि हाइड्रोजन बम के बारे में साइन्स वालों को राय देने का मौक़ा न दिया जाये या सच्ची राय देने पर उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई की जाये. अमरीका में फ़ेडरेशन आफ़ अमरीकन साइन्टिस्ट्स नाम की जो जमाअत है उस तक ने प्रेज़ीडेन्ट आइज़नहावर को लिखा है कि किसी वफ़ादार साइन्सदां को दिली राय ज़ाहिर करने पर निकाल बाहर कर देना अपनी क़ौम के लिये ख़तरनाक है. अमरीका में साइन्सदांनों को कहां तक दबाया जा रहा है इसका पता उस सलाह से मिलता है जो प्रोफ़ेसर लाइनस पालिंग ने अपने दोस्तों को दी. उन्होंने कहा है कि "आप इस बात की एहतियात रखें कि आप कोई ज़्यादा ऊंची या महत्वपूर्न खोज न करलें". अमरीका में मिस्टर ओवन लातिमूर के साथ जो सलूक किया गया उससे भी यही बात ज़ाहिर होती है. प्रोफ़ेसर लातिमूर के

کیا جا رھا ھو . وہ اتنی حد کو پہونچ گئی کہ کسی بھی آبرودار اِنسان کو ان کا برداشت کرنا ھی نامکن ھوگیا . اور ایک مرتبہ پروفیسر آئنسٹائن کو یہاں تک اِشارہ کرنا پڑا کہ امریکن سینیٹ کی انٹرنل سیکیورٹی کمیٹی (Internal Security Committee) یا اِس طرح کی دوسری کمیٹی کے سامنے کسی بھی دماغدار آدمی کو بیان دینے سے اِنکار کر دینا چاھئے .

تھوڑا عرصہ پہلے جس یونیورسٹی میں پروفیسر آئنسٹائن پڑھاتے تھے وھاں کی سائنس انسٹیچیوٹ کے ڈائرکٹر ڈاکٹر رابرٹ اوپن‌ھائیمر تھے . اُن کی سیواؤں سے خوش ھو کر امریکی سرکار نے انہیں ایٹامک انرجی کمیشن (Atomic Energy Commission) کا خاص مشیر مقرر کیا . لیکن جب ھائڈروجن بم بنا تو ان سے صلاح لی گئی کہ اِس کے اِستعمال کے بارے میں اُن کی کیا رائے ھے . اُنھوں نے اس کے اِستعمال کے خلاف رائے دی اور کہا کہ وہ بہت ھی خطرناک و تباہکن ھے . اُن کی یہ رائے امریکی سرکار کو پسند نہیں آئی اور اس نے اُنہیں کمیشن کے مشیر پر سے ھٹا دیا . لیکن آج بڑے بڑے فوجی جنرل اور سائنس داں ڈاکٹر اوپن‌ھائیمر کی رائے سے اتفاق کرتے ھیں . انگلینڈ کے سرنام افسر کپتان لڈل ھارٹ (Capt. Liddle Hart) کا کہنا ھے کہ ھائڈروجن بم کے بعد "مکمل لڑائی" اور "جیت" لفظ بے معنی ھو جاتے ھیں . اگر اب کوئی "لڑائی جیتنے" کے خواب دیکھتا ھے یا اِس طرح کی بات کرتا ھے تو "مہمل سے بدتر بات کرتا ھے . اِس سے اس کے اپنے ملک کو اور کل اِنسانی قوم کو خطرہ ھے ." حال ھی میں جاپان کے نزدیک جو ھائڈروجن بم کا تجربہ کیا گیا اِس سے نیوزیلینڈ تک کے لوگ ڈر گئے ھیں اور کہتے ھیں کہ اِس طرح کے تجربوں سے ھماری جان و مال کو اندیشہ ھے .

ھائڈروجن بم سے کہیں زیادہ خطرناک چیز یہ ھے کہ ھائڈروجن بم کے بارے میں سائنس والوں کو رائے دینے کا موقع نہ دیا جائے یا سچی رائے دینے پر اُن کے خلاف کارروائی کی جائے . امریکہ میں فیڈریشن آف امریکن سائنٹسٹس نام کی جو جماعت ھے اس تک نے پریزیڈینٹ آئزن‌ھاور کو لکھا ھے کہ کسی وفادار سائنس داں کو دلی رائے ظاھر کرنے پر نکال باھر کر دینا اپنی قوم کے لئے خطرناک ھے . امریکہ میں سائنس دانوں کو کہاں تک دبایا جا رھا ھے اِس کا پتہ اُس صلاح سے ملتا ھے جو پروفیسر لائنس پالنگ نے اپنے دوستوں کو دی . انھوں نے کہا ھے کہ "آپ اس بات کی احتیاط رکھیں کہ آپ کوئی زیادہ اُونچی یا مہتوپورن کھوج نہ کرلیں . امریکہ میں مسٹر اوون لاتی‌مور کے ساتھ جو سلوک کیا گیا اس سے بھی یہی بات ظاھر ھوتی ھے . پروفیسر لاتی‌مور کے

एक वैज्ञानिक की आह !

आइन्सटाइन आज विज्ञान या साइन्स की दुनिया में सब से नुमायां सितारे समझे जाते हैं. और केवल वैज्ञानिक ही नहीं, बहुत ऊंचे इख़लाक़ और नैतिकता वाली हस्ती हैं. हाल ही में एक अख़बार नवीस ने उनसे मुलाक़ात की और पूछा कि साइन्स वालों या दूसरे दिमाग़दार लोगों के साथ अमरीका में जिस तरह पेश आया जा रहा है उस पर आपकी क्या राय है. प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन चुप रहे और फिर कहा कि "अगर मुझे फिर से जवानी हासिल हो तब मैं अपनी रोज़ी कमाने के लिये वैज्ञानिक या टीचर या प्रोफ़ेसर होना पसन्द नहीं करूंगा, बल्कि एक मज़दूर होना चाहूंगा ताकि आजकल की हालत में जितनी भी थोड़ी बहुत आज़ादी हासिल है उसका अनुभव कर सकूं."

इन चन्द लफ़्ज़ों से प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन के दिल का दर्द साफ़ साफ़ पता चलता है. उन्होंने देख लिया कि आज की दुनिया में और ख़ासकर अमरीका में वह ख़याली व दिमाग़ी आज़ादी हासिल नहीं है जिसकी उन्हें उम्मीद थी या जिसकी किसी शरीफ़ आदमी को उम्मीद होनी चाहिये. आज से क़रीब बीस बरस पहले प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन अपनी जन्म भूमि जर्मनी से अमरीका आये थे. जब हिटलर का जर्मनी में बोलबाला हुआ और किसी भी यहूदी का वहां रहना नामुमकिन हो गया तब उन्होंने अपना मुल्क छोड़ा था और अमरीका की प्रिन्सटन यूनीवर्सिटी में आकर बसे थे.

कैसी ख़ुशी की बात है कि आज दुनिया के किसी हिस्से में लड़ाई नहीं चल रही है, किसी की फ़ौज दूसरे मुल्क के ख़िलाफ़ मार्च नहीं कर रही है. लेकिन कैसी बदक़िस्मती है कि आज दुनिया में जितना डर छाया हुआ है उतना शायद तारीख़ के किसी ज़माने में नहीं था. अमरीका और रूस में भगवान की कृपा से हर तरह की दौलत मौजूद है, लेकिन वहां की आबादियां एक दूसरे से बहुत डरती हैं और दोनों की सरकारें एक दूसरे के ख़िलाफ़ प्रचार करती हैं कि एक की वजह से दूसरे को ख़तरा है. इस तरह सारा यूरोप, अमरीका और उत्तरी व पच्छिमी एशिया पर डर हावी है. यही वजह है कि अमरीका में आज आज़ादख़याली मानो रह ही नहीं गई है और हर किसी को शक की निगाह से देखा जाता है. यहां तक नौबत आ गई है कि वहां की हकूमत की जो चुपचाप, जा हो या बेजा, ताबेदारी नहीं करता, तो उसका मुल्क में रहना ही मुश्किल हो जाता है. इस आफ़त का शिकार अमरीका के साइनटिस्टों को ख़ास तौर से होना पड़ा है. उनसे तरह तरह की सफ़ाई ली जाती है, और इस तरह ली जाती है मानो किसी चोर या डाकू से जवाब तलब

ایک ویگیانک کی آہ!

آئنسٹائن آج وگیان یا سائنس کی دنیا میں سب سے
نمایاں ستارے سمجھے جاتے ہیں ۔ اور وہ کیول ویگیانک ہی
نہیں، بہت اونچے اخلاق اور نیتکتا والی ہستی ہیں ۔ حال
ہی میں ایک اخبار نویس نے ان سے ملاقات کی اور پوچھا کہ
سائنس والوں یا دوسرے دماغدار لوگوں کے ساتھ امریکہ
میں جس طرح پیش آیا جا رہا ہے اس پر آپ کی
کیا رائے ہے ؟ پروفیسر آئنسٹائن چپ رہے اور پھر کہا کہ
" اگر مجھے پھر سے جوانی حاصل ہو تب میں اپنی روزی
کمانے کے لئے ویگیانک یا ٹیچر یا پروفیسر ہونا پسند نہیں
کروں گا بلکہ ایک مزدور ہونا چاہوں گا تاکہ آجکل کی حالت
میں جتنی بھی تھوڑی بہت آزادی حاصل ہے اس کا انوبھو
کر سکوں ۔"

ان چند لفظوں سے پروفیسر آئنسٹائن کے دل کا درد
صاف صاف پتہ چلتا ہے ۔ انہوں نے دیکھ لیا کہ آج کی
دنیا میں اور خاص کر امریکہ میں وہ خیالی و دماغی
آزادی حاصل نہیں ہے جس کی انہیں امید تھی یا جس کی
کسی شریف آدمی کو امید ہونی چاہئے ۔ آج سے قریب بیس
برس پہلے پروفیسر آئنسٹائن اپنی جنم بھومی جرمنی سے
امریکہ آئے تھے ۔ جب ہٹلر کا جرمنی میں بول بالا ہوا اور
کسی بھی یہودی کا وہاں رہنا ناممکن ہو گیا تب انہوں نے
اپنا ملک چھوڑا تھا اور امریکہ کی پرنسٹن یونیورسٹی میں آکر
بسے تھے ۔

کیسی خوشی کی بات ہے کہ آج دنیا کے کسی حصہ
میں لڑائی نہیں چل رہی ہے، کسی کی فوج دوسرے ملک
کے خلاف مارچ نہیں کر رہی ہے ۔ لیکن کیسی بدقسمتی ہے کہ
آج دنیا میں جتنا ڈر چھایا ہوا ہے اتنا شاید تاریخ کے کسی
زمانہ میں نہیں تھا ۔ امریکہ اور روس میں بھگوان کی کرپا
سے ہر طرح کی دولت موجود ہے، لیکن وہاں کی آبادیاں
ایک دوسرے سے بہت ڈرتی ہیں اور دونوں کی سرکاریں
ایک دوسرے کے خلاف پرچار کرتی ہیں کہ ایک کی وجہ
سے دوسرے کو خطرہ ہے ۔ اس طرح سارا یورپ، امریکہ اور
اتری و پچھمی ایشیا پر ڈر حاوی ہے ۔ یہی وجہ ہے کہ امریکہ
میں آج آزاد خیالی مانو رہ ہی نہیں گئی ہے اور ہر کسی
کو شک کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے ۔ یہاں تک نوبت آ گئی
ہے کہ وہاں کی حکومت کی جو چپ چاپ، جا ہو یا بیجا،
تابعداری نہیں کرتا، تو اس کا ملک میں رہنا ہی مشکل ہو
جاتا ہے ۔ اس آفت کا شکار امریکہ کے سائنٹسٹوں کو خاص طور
سے ہونا پڑا ہے ۔ ان سے طرح طرح کی صفائی لی جاتی ہے، اور
اس طرح لی جاتی ہے مانو کسی چور یا ڈاکو سے جواب طلب

अपनी मिलों की बनी चीनी दूसरे अपने से ज्यादा पिछड़े हुए देशों में बेचकर पैसे कमाने के नापाक साम्राजी प्रलोभन को भी हमें जीतना चाहिये.

(3) चाय के बागीचे जल्दी से जल्दी विदेशियों के हाथों से ले लेना हम भारत सरकार का फ़र्ज़ समझते हैं. हम डाक्टर लोहिया से सहमत हैं कि अगर मुआवज़े के रूप में या किसी रूप में कुछ धन देना भी पड़ जावे तो कोई हर्ज नहीं. हमें यह भी मालूम है कि अंग्रेज़ों का जितना धन इन चाय के बागीचों में लगा है वह सब भारत ही से बल्कि भारत की लूट से कमाया हुआ धन है. हम उन पुराने ज़ख़्मों को छेड़ना नहीं चाहते. पर इस ग़रीब देश से इस तरह धन का बहना और उसकी ग़रीब जनता के साथ यह बदसलूकी अब बन्द होनी चाहिये.

इस धन्दे को आगे के लिये चलाने के दो ही ढंग हो सकते हैं. एक तो हर किसान अपनी छोटी सी निजी ज़मीन पर चाय के पौधे अच्छी तरह लगा सकता है और बिलकुल घरेलू ढंग से चाय तैयार करके बाज़ार में बेच सकता है. दूसरे आजकल की सूरत में यह सारा धन्दा इस तरह की कलेक्टिव फ़ारमिंग यानी मुशतरका खेती की शकल में बड़ी सुन्दरता से चल सकता है जिसका नमूना हमने रूस के कलेक्टिव फ़ारमों में अच्छी तरह देखा है. जो लोग फ़ारम में काम करें वही उसके मालिक, वही उसका सारा प्रबन्ध करने वाले और वही मुनाफ़े के हक़दार. सरकार का काम केवल उनकी ज़रूरत के अनुसार उनके कहने पर उनकी मदद कर देना है. यही रास्ता है जिस पर धीरे धीरे हमें अपने बहुत से धन्दों को ले जाना है.

सरकार नाम की चीज़ का दुनिया से ख़तम होना

दुनिया की अधिकतर सरकारें आज इस कोशिश में हैं कि अधिक से अधिक धन्दे, अधिक से अधिक व्योपार और अधिक से अधिक शक्ति उनके हाथों में रहे. यह ढंग जनता के लिये बहुत ख़तरनाक ढंग है. जिस तरह पैसे की शक्ति कहीं भी एक जगह जमा होने के बजाय सब आदमियों में बराबर की बंटी रहे इसी में दुनिया का भला है, वैसे ही दूसरी सब शक्तियां भी ज्यादा से ज्यादा लोगों में बंटी रहें यही अच्छा है. जिन ख़ास सूरतों में किसी शक्ति का एक जगह जमा होना ज़रूरी होता है वह भी, जैसा हमने ऊपर कहा है, पंचायती ढंग से जनता के हाथों में ही रहनी चाहिये. सरकार सबसे अच्छी वही है जिसके हाथों में सब से कम अधिकार हों, यानी जिसे सबसे कम शासन करना पड़े. जनता को ताक़तवर बनाने का यही तरीक़ा है. जिस आदर्श की तरफ़ दुनिया को जाना है वह सरकारों की ताक़त को बढ़ाना नहीं है, उसे धीरे धीरे कम करके सरकार नाम की चीज़ को दुनिया से ख़तम करना है.

—सुन्दरलाल

15. 12. '54

اپنی ملوں کی بنی چینی دوسرے اپنے سے زیادہ پچھڑے ھوئے دیشوں میں بیچ کر پیسے کمانے کے ناپاک سامراجی پرلوبھن کو بھی ھمیں جیتنا چاھئے .

(3) چائے کے باغیچے جلدی سے جلدی ودیشیوں کے ھاتھوں سے لے لینا ھم بھارت سرکار کا فرض سمجھتے ھیں . ھم ڈاکٹر لوھیا سے سہمت ھیں کہ اگر معاوضے کے روپ میں یا کسی روپ میں کچھ دھن دینا بھی پڑ جاوے تو کوئی حرج نہیں . ھمیں یہ بھی معلوم ھے کہ انگریزوں کا جتنا دھن ان چائے کے باغیچوں میں لگا ھے وہ سب بھارت ھی سے بلکہ بھارت کی لوٹ سے کمایا ھوا دھن ھے . ھم ان پرانے زخموں کو چھیڑنا نہیں چاھتے . پر اس غریب دیش سے اس طرح دھن کا بہنا اور اس کی غریب جنتا کے ساتھ یہ بدسلوکی اب بند ھونی چاھئے .

اس دھندے کو آگے کے لئے چلانے کے دو ھی ڈھنگ ھوسکتے ھیں . ایک تو ھر کسان اپنی چھوٹی سی نجی زمین پر چائے کے پودھے اچھی طرح لگا سکتا ھے اور بالکل گھریلو ڈھنگ سے چائے تیار کرکے بازار میں بیچ سکتا ھے . دوسرے آجکل کی صورت میں یہ سارا دھندا اس طرح کی کلکٹیو فارمنگ یعنی مشترکہ کھیتی کی شکل میں بڑی سندرتا سے چل سکتا ھے جس کا نمونہ ھم نے روس کے کلکٹیو فارموں میں اچھی طرح دیکھا ھے . جو لوگ فارم میں کام کریں وھی اس کے مالک، وھی اس کا سارا پربندھ کرنے والے اور وھی منافع کے حقدار . سرکار کا کام کیول ان کی ضرورت کے انوسار ان کے کہنے پر ان کی مدد کردینا ھے . یہی راستہ ھے جس پر دھیرے دھیرے ھمیں اپنے بہت سے دھندوں کو لیجانا ھے .

سرکار نام کی چیز کا دنیا سے ختم ھونا

دنیا کی ادھکتر سرکاریں آج اس کوشش میں ھیں کہ ادھک سے ادھک دھندے، ادھک سے ادھک بیوپار اور ادھک سے ادھک شکتی ان کے ھاتھوں میں رھے . یہ ڈھنگ جنتا کے لئے بہت خطرناک ڈھنگ ھے . جس طرح پیسے کی شکتی کہیں بھی ایک جگہ جمع ھونے کے بجائے سب آدمیوں میں برابر کی بنٹی رھے، اسی میں دنیا کا بھلا ھے، ویسے ھی دوسری سب شکتیاں بھی زیادہ سے زیادہ لوگوں میں بنٹی رھیں یہی اچھا ھے . جن خاص صورتوں میں کسی شکتی کا ایک جگہ جمع ھونا ضروری ھوتا ھے وہ بھی، جیسا ھم نے اوپر کہا ھے، پنچایتی ڈھنگ سے جنتا کے ھاتھوں میں ھی رھنی چاھئیں . سرکار سب سے اچھی وھی ھے جس کے ھاتھوں میں سب سے کم ادھیکار ھوں، یعنی جسے سب سے کم شاسن کرنا پڑے . جنتا کو طاقتور بنانے کا یہی طریقہ ھے . جس آدرش کی طرف دنیا کو جانا ھے وہ سرکاروں کی طاقت کو بڑھانا نہیں ھے، اسے دھیرے دھیرے کم کرکے سرکار نام کی چیز کو دنیا سے ختم کرنا ھے .

15 . 12 . '54

—سندر لال

में हमेशा इस तरह की दुर्घटनाओं की सम्भावना रहेगी जैसी अभी 10 दिसम्बर को मध्य प्रदेश की न्यूटन चिकली खदान में मालिकों या मैनेजरों की लापरवाही के कारन हो चुकी है, जिसमें कहा जाता है पैंसठ बेगुनाह मजदूरों की मुफ्त में जान गई. कोयले के धंदे को चलाने के दो ही ढंग हो सकते हैं. या तो यह कि देश की सरकार इसे चलावे और या जो अधिक अच्छा है कि पंचायती ढंग से जितने आदमी इंजीनियरों और माहिरों से लेकर मामूली मजदूर तक उसमें काम करते हों उन सब की ही वह मिलकियत हो, उन्हीं का सारा प्रबन्ध हो और वही उसके मुनाफ़े के हक़दार हों. यही ढंग असली ढंग है. इसी में देश और जनता का असली भला है. जब तक सरकार इस तरह के धंदे को चलावे तब तक भी यह मुनासिब है कि चीन की तरह खदान का सारा इन्तज़ाम करने वाली कमेटी में आधे आदमी सरकार के हों और आधे खदान में काम करने वालों के चुने हुए नुमाइन्दे.

(2) चीनी तैयार करने का धंदा उन धंदों में से है जिन्हें हम गांव गांव में घरेलू ढंग से ही चलाना ठीक समझते हैं. जो लोग हमारे गांव की जिन्दगी से वाक़िफ़ हैं उन्हें मालूम है कि चीनी की मिलों ने हमारे गांव गांव के कोल्हुओं के ब्योपार को किस तरह बरबाद कर दिया और लाखों आदमियों को बेकार कर दिया. सैकड़ों पच्छिमी डाक्टरों तक की राय है कि आदमी की तन्दुरुस्ती के लिये हाथ की बनी हुई चीनी मिल की बनी चीनी से कहीं अच्छी होती है. हमने लन्दन शहर के अन्दर इस तरह के रेस्टोरां देखे हैं जिनमें तन्दुरुस्ती के ख़याल से मिल की चीनी काम में नहीं लाई जाती और उसकी जगह गुड़, हाथ की चीनी और राब तक खाने के लिये दी जाती है. राब और गुड़ मिल की सफ़ेद चीनी के मुक़ाबले में कितनी अधिक मुफ़ीद चीज़ें हैं इस पर काफ़ी अमरीकी डाक्टरों की किताबें बाज़ार में पढ़ने को मिल सकती हैं. लेकिन हम ऊपर कह चुके हैं कि साइन्सी अंधविश्वास धार्मिक अंधविश्वासों से ज्यादा ख़तरनाक होते हैं. चीनी की मिलों ने हमारे लाखों गांव वालों का एक मात्र पौष्टिक आहार उनसे छीन लिया और गन्ना पैदा करने वाले लाखों किसानों को मिल मालिकों का आश्रित और ग़ुलाम बना डाला. गन्ना पैदा करने वाले किसानों की आजकल की मुसीबतों पर किताबें लिखी जा सकती हैं. चीनी की मिलें और बनस्पति घी (?) की मिलें दोनों अक्सर साथ साथ चलती हैं. हमारे आजकल के हाकिम और उनके तनख़ाहदार साइन्टिस्ट कुछ भी कहें हम इन दोनों को जनता के लिये बरबादी की चीज़ें मानते हैं. हमारी यह साफ़ राय है कि चीनी बनाने का काम गांव गांव में कोल्हुओं और खेंचियों के ज़रिये ही होना चाहिये.

میں ہمیشہ اِس طرح کی درگھٹناؤں کی سمبھاونا رہے گی جیسی ابھی 10 دسمبر کو مدھیہ پردیش کی نیوٹن چکلی کھدان میں مالکوں یا مینیجروں کی لاپرواہی کے کارن ہوچکی ہے، جِس میں کہا جاتا ہے پینسٹھ بےگناہ مزدوروں کی مفت میں جان گئی. کوئلہ کے دھندے کو چلانے کے دو ہی ڈھنگ ہوسکتے ہیں. یا تو یہ کہ دیش کی سرکار اِسے چلا وے اور یا جو ادھک اچھا ہے کہ پنچایتی ڈھنگ سے جتنے آدمی اِنجینیروں اور ماہروں سے لیکر معمولی مزدور تک اُس میں کام کرتے ہوں اُن سب کی ہی وہ ملکیت ہو، اُنہیں کا سارا پربندھ ہو اور وہی اُس کے منافعے کے حق‌دار ہوں. یہی ڈھنگ اصلی ڈھنگ ہے. اِسی میں دیش اور جنتا کا اصلی بھلا ہے. جب تک سرکار اِس طرح کے دھندے کو چلا وے تب تک بھی یہ مناسب ہے کہ چین کی طرح کھدان کا سارا اِنتظام کرنے والی کمیٹی میں آدھے آدمی سرکار کے ہوں اور آدھے کھدان میں کام کرنے والوں کے چنے ہوئے نمائندے.

(2) چینی تیار کرنے کا دھندا اُن دھندوں میں سے ہے جنھیں ہم گاؤں گاؤں میں گھریلو ڈھنگ سے ہی چلانا ٹھیک سمجھتے ہیں. جو لوگ ہمارے گاؤں کی زندگی سے واقف ہیں اُنھیں معلوم ہے کہ چینی کی ملوں نے ہمارے گاؤں گاؤں کے کولھوؤں کے بیاپار کو کس طرح برباد کردیا اور لاکھوں آدمیوں کو بیکار کردیا. سیکڑوں پچھمی ڈاکٹروں تک کی رائے ہے کہ آدمی کی تندرستی کے لئے ہاتھ کی بنی ہوئی چینی مل کی بنی چینی سے کہیں اچھی ہوتی ہے. ہم نے لندن شہر کے اندر اِس طرح کے رستوراں دیکھے ہیں جن میں تندرستی کے خیال سے مل کی چینی کام میں نہیں لائی جاتی اور اُس کی جگہ گڑ، ہاتھ کی چینی اور راب تک کھانے کے لئے دی جاتی ہے. راب اور گڑ مل کی سفید چینی کے مقابلے میں کتنی ادھک مفید چیزیں ہیں اِس پر کافی امریکی ڈاکٹروں کی کتابیں بازار میں پڑھنے کو مل سکتی ہیں. لیکن ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ سائنسی اندھ وشواس دھارمک اندھ وشواسوں سے زیادہ خطرناک ہوتے ہیں. چینی کی ملوں نے ہمارے لاکھوں گاؤں والوں کا ایک ماتر پوشٹک آہار اُن سے چھین لیا اور گنا پیدا کرنے والے لاکھوں کسانوں کو مل مالکوں کا آشرت اور غلام بنا ڈالا. گنا پیدا کرنے والے کسانوں کی آجکل کی مصیبتوں پر کتابیں لکھی جاسکتی ہیں. چینی کی ملیں اور بنسپتی گھی (؟) کی ملیں دونوں اکثر ساتھ ساتھ چلتی ہیں. ہمارے آجکل کے حاکم اور اُن کے تنخواہ دار سائنٹسٹ کچھ بھی کہیں ہم اِن دونوں کو جنتا کے لئے بربادی کی چیزیں سمجھتے ہیں. ہماری یہ صاف رائے ہے کہ چینی بنانے کا کام گاؤں گاؤں میں کولھوؤں اور کھینچیوں کے ذریعہ ہی ہونا چاہئے.

के लिये कागज़ का प्रबन्ध करने. उन्होंने पूछा क्या इलाहाबाद में कागज़ नहीं मिलता ? हमने जवाब दिया—मिलता है लेकिन मिल का बना हुआ, मैं हाथ के बने कागज़ का प्रबन्ध करने आया हूं. गांधी जी ने जवाब दिया—"कागज़ तो मिल में ही बनना चाहिये. कुमारप्पा यहां कुछ कागज़ हाथ से बनाते हैं. मैं उसे बुरा नहीं कहता. पर कागज़ तो मिल से ही बनना चाहिये, तुम मिल ही का कागज़ अपनी किताब में लगाओ." थोड़ी सी और बात चीत के बाद हम उनकी बात समझ गए और "भारत में अंग्रेज़ी राज" में मिल का ही कागज़ लगाया गया.

यह हमने केवल एक मिसाल दी है. हाथ से जितना कागज़ बन सके और जितना अच्छा बन सके गांधी जी उसे पसन्द करते थे. पर कागज़ की आम मांग या आम ज़रूरत वह मिलों से ही पूरा करना चाहते थे. चीन में भी कागज़ की बड़ी बड़ी मिलें हमने देखीं, सरकारी भी और ग़ैर सरकारी भी. लेकिन इसके साथ साथ नए चीन में हाथ का कागज़ इतना अधिक और इतना अच्छा बनता और खपता है कि शायद उसका दसवां हिस्सा भी भारत में नहीं बनता. शंघाई के बाज़ार में चिट्ठी लिखने के कागज़ के पैड अधिकतर और बढ़िया से बढ़िया हमने हाथ के कागज़ के ही देखे. उन्होंने अपनी घरेलू उद्योगों की एक नुमाइश में भी बढ़िया से बढ़िया और तरह तरह के हाथ के बने कागज़ों के अंबार हमें दिखाए. गांधी जी मिल के धंदे और हाथ के धंदे दोनों में एक समतोल यानी समझदारी का बैलेन्स रखना चाहते थे. ख़ासकर खाने और कपड़े से सम्बन्ध रखने वाले सब ज़रूरी धंदे वह अधिकतर घरेलू ढंग से ही चलाना चाहते थे. हमारे आजकल के शासकों के इसके ख़िलाफ़ चलने की कोशिशों का नतीजा हमें अपने घरेलू धंदों की बरबादी और करोड़ों आदमियों की बढ़ती हुई बेकारी और फ़ाक़ाकशी की सूरत में साफ़ दिखाई दे रहा है.

गांधी जी की ज़िन्दगी में उनके ट्रस्टी के उसूल के नाकाम होने का सवाल ही पैदा नहीं होता. कोई ट्रस्टी अपना फ़र्ज़ पूरा न भी करे तो उससे उसूल नहीं बदल जाता. रहा विनोबा जी का सम्पत्तिदान वह केवल एक दिलों को बदलने की कोशिश है. वह उस से देश को बदलने का दावा नहीं करते.

कोयला, चीनी और चाय के धंदों पर हमारी राय

जिन तीन धंदों की डाक्टर लोहिया ने चर्चा की है—कोयला, चीनी और चाय—उनकी बाबत हमारी राय यह है—

(1) कोयले की खान का धंदा बड़ा नाज़ुक और ख़तरनाक धंदा है. यह एक दो आदमियों के बस की चीज़ नहीं है. इसे बहुत से लोग मिलकर ही चला सकते हैं. पूंजी-पतियों की निजी देख रेख में यह धंदा चलाया जायगा तो उस

کے لئے کاغذ کا پربندھ کرنے . اُنہوں نے پوچھا کیا اِلٰہ آباد میں کاغذ نہیں ملتا ؟ ہم نے جواب دیا—ملتا ہے لیکن مل کا بنا ہوا، میں ہاتھ کے بنے کاغذ کا پربندھ کرنے آیا ہوں . گاندھی جی نے جواب دیا—" کاغذ تو مل میں ہی بننا چاہئے . کمارپا یہاں کچھ کاغذ ہاتھ سے بناتے ہیں . میں اُسے برا نہیں کہتا . پر کاغذ تو مل سے ہی بننا چاہئے . تم مل ہی کا کاغذ اپنی کتاب میں لگاؤ ." تھوڑی سی اور بات چیت کے بعد ہم اُن کی بات سمجھ گئے اور "بھارت میں انگریزی راج" میں مل کا ہی کاغذ لگایا گیا .

یہ ہم نے کیول ایک مثال دی ہے . ہاتھ سے جتنا کاغذ بن سکے اور جتنا اچھا بن سکے گاندھی جی اُسے پسند کرتے تھے . پر کاغذ کی عام مانگ یا عام ضرورت وہ ملوں سے ہی پورا کرنا چاہتے تھے . چین میں بھی کاغذ کی بڑی بڑی ملیں ہم نے دیکھیں، سرکاری بھی اور غیر سرکاری بھی . لیکن اِس کے ساتھ ساتھ نئے چین میں ہاتھ کا کاغذ اتنا ادھک اور اتنا اچھا بنتا اور کھپتا ہے کہ شاید اُس کا دسواں حصہ بھی بھارت میں نہیں بنتا . شنگھائی کے بازار میں چٹھی لکھنے کے کاغذ کے پیڈ ادھکتر اور بڑھیا سے بڑھیا ہم نے ہاتھ کے کاغذ کے ہی دیکھے . اُنہوں نے اپنی گھریلو اُدیوگوں کی ایک نمائش میں بھی بڑھیا سے بڑھیا اور طرح طرح کے ہاتھ کے بنے کاغذوں کے انبار ہمیں دکھائے . گاندھی جی مل کے دھندے اور ہاتھ کے دھندے دونوں میں ایک سمتول یعنی سمجھداری کا بیلینس رکھنا چاہتے تھے . خاص کر کھانے اور کپڑے سے سمبندھ رکھنے والے سب ضروری دھندے وہ ادھکتر گھریلو ڈھنگ سے ہی چلانا چاہتے تھے . ہمارے آج کل کے شاسکوں کے اِس کے خلاف چلنے کی کوششوں کا نتیجہ ہمیں اپنے گھریلو دھندوں کی بربادی اور کروڑوں آدمیوں کی بڑھتی ہوئی بیکاری اور فاقہ کشی کی صورت میں صاف دکھائی دے رہا ہے .

گاندھی جی کی زندگی میں اُن کے ٹرسٹی کے اصول کے ناکام ہونے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا . کوئی ٹرسٹی اپنا فرض پورا نہ بھی کرے تو اُس سے اُصول نہیں بدل جاتا . رہا ونوبا جی کا سمپتی دان وہ کیول ایک دلوں کو بدلنے کی کوشش ہے . وہ اُس سے دیش کو بدلنے کا دعویٰ نہیں کرتے .

کوئلے، چینی اور چائے کے دھندوں پر ہماری رائے

جن تین دھندوں کی ڈاکٹر لوہیا نے چرچا کی ہے—کوئلہ، چینی اور چائے اُن کی بابت ہماری رائے یہ ہے—

(1) کوئلے کی کھدان کا دھندا بڑا نازک اور خطرناک دھندا ہے . یہ ایک دو آدمیوں کے بس کی چیز نہیں ہے . اِسے بہت سے لوگ مل کر ہی چلا سکتے ہیں . پونجی پتیوں کی نجی دیکھ ریکھ میں یہ دھندا چلایا جائے گا تو اُس

को बड़ी बड़ी मशीनें तरक़्क़ी की सब से बड़ी अलामतें दिखाई देती हैं और गांव की या घरेलू दस्तकारियां उन्हें केवल एक पिछड़े हुए असभ्य या अर्ध सभ्य ज़माने की यादगार नज़र आती हैं. उनका बस चले और अगर मुमकिन हो तो वह अपने बच्चों को पांव चलना पीछे सिखावें और साइकिल चलाना पहले. हम यह बात बढ़ाकर नहीं कह रहे हैं. योरप के एक बहुत बड़े साइन्सदां की पेशीनगोई है कि—"आजकल की मशीनी सभ्यता यदि इसी रफ़्तार से बढ़ती रही तो दो हज़ार बरस के बाद जो इन्सान पैदा होंगे उनके पैरों में उंगलियां नहीं होंगी, उनके सर पर जिन्दगी भर बाल या मुंह में जिन्दगी भर दांत नहीं निकलेंगे, उनकी आंखें शुरू से शीशों की मदद से देखेंगी और उनके हाथ पैर चलने फिरने के काम के न होंगे." हम हर तरह की मशीनों के खिलाफ़ नहीं हैं.

साइन्स की तरक़्क़ी की हमारे दिल में दूसरों से कम क़द्र नहीं. हम चाहते हैं कि साइन्स दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करे, हमें चांद और तारों तक उड़ा कर ले जावे और सारे विश्व को एक करने में, समझने में और उस पर क़ाबू हासिल करने में हमें मदद दे. पर आसमान में उड़ते हुए भी हम ज़मीन से अपना सम्पर्क तोड़ना नहीं चाहते. साइन्स की तरक़्क़ी के लिये हज़ारों रास्ते खुले हुए हैं. लेकिन हम उसे उस रास्ते पर चलने देना नहीं चाहते जिस पर वह आदमी के हाथों आदमी के क़त्ल के हथियारों का अंबार लगा दे. हम यह नहीं चाहते कि साइन्स आदमी की स्वाभाविक स्वतंत्रता, उस की आत्म निर्भरता, प्रकृति के साथ उसके सम्पर्क और उसकी क़ुदरती शक्तियों को बर्बाद करके आगे बढ़े. हम साइन्स को आदमी का गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं, आदमी को साइन्स का गुलाम बनने देना नहीं चाहते. हमें अफ़सोस है जैसे और बहुत मामलों में उसी तरह इस मामले में भी मुल्क के पढ़े लिखे लोग गांधी जी को ठीक नहीं समझ पाए. गांधी जी कभी भी हर तरह की मिलों या मशीनों के खिलाफ़ नहीं थे. वह मिलों और मशीनों की बाबत हमारे पढ़े लिखे लोगों के अंध विश्वास को तोड़ना चाहते थे. यह साइन्सी अन्ध-विश्वास धार्मिक अन्ध विश्वासों से भी ज़्यादा ख़तरनाक हो सकते हैं और होते हैं. इस सम्बन्ध में गांधीजी के विचारों का हमें काफ़ी अनुभव है.

हमारी किताब "भारत में अंग्रेज़ी राज" का दूसरा एडिशन 30 हज़ार जिल्दों का छप रहा था. पहला एडिशन चार हज़ार जिल्दों का पहले निकल चुका था. पहले एडिशन में जिल्द खद्दर की थी लेकिन काग़ज़ मिल का. दूसरे एडिशन के लिये हमने सोचा कि काग़ज़ भी हाथ का लगाया जावे. हम काग़ज़ का प्रबन्ध करने के लिये वर्धा पहुंचे. गांधी जी से बात चीत हुई. उन्होंने पूछा कैसे आए ? हमने जवाब दिया भारत में अंग्रेज़ी राज की तीस हज़ार जिल्दों

کو بڑی بڑی مشینیں ترقی کی سب سے بڑی علامتیں دکھائی دیتی ہیں اور گاؤں کی یا گھریلو دستکاریاں انہیں کیول ایک پچھڑے ہوئے اسبھیہ یا اردھ سبھیہ زمانے کی یادگار نظر آتی ہیں. اُن کا بس چلے اور اگر ممکن ہو تو وہ اپنے بچوں کو پاؤں چلنا پیچھے سکھاویں اور سائیکل چلانا پہلے. ہم یہ بات بڑھا کر نہیں کہہ رہے ہیں. یورپ کے ایک بہت بڑے سائنس دان کی پیشین گوئی ہے کہ—" آج کل کی مشینی سبھیتا یدی اسی رفتار سے بڑھتی رہی تو دو ہزار برس کے بعد جو انسان پیدا ہونگے اُن کے پیروں میں انگلیاں نہیں ہوں گی' اُن کے سر پر زندگی بھر بال یا منہ میں زندگی بھر دانت نہیں نکلیں گے' اُن کی آنکھیں شروع سے شیشوں کی مدد سے دیکھیں گی اور اُن کے ہاتھ پیر چلنے پھرنے کے کام کے نہ ہوں گے." ہم ہر طرح کی مشینوں کے خلاف نہیں ہیں.

سائنس کی ترقی کی ہمارے دل میں دوسروں سے کم قدر نہیں. ہم چاہتے ہیں کہ سائنس دن دونی رات چوگنی ترقی کرے' ہمیں چاند اور تاروں تک اُڑا کر لے جاوے اور سارے وشو کو ایک کرنے میں' سمجھنے میں اور اُس پر قابو حاصل کرنے میں ہمیں مدد دے. پر آسمان میں اُڑتے ہوئے بھی ہم زمین سے اپنا سمپرک توڑنا نہیں چاہتے. سائنس کی ترقی کے لئے ہزاروں راستے کھلے ہوئے ہیں. لیکن ہم اُسے اُس راستے پر چلنے دینا نہیں چاہتے جس پر وہ آدمی کے ہاتھوں آدمی کے قتل کے ہتھیاروں کا انبار لگا دے. ہم یہ نہیں چاہتے کہ سائنس آدمی کی سوابھاوک سوتنترتا' اُس کی آتم نربھرتا' پرکرتی کے ساتھ اُس کے سمپرک اور اُس کی قدرتی شکتیوں کو برباد کر کے آگے بڑھے. ہم سائنس کو آدمی کا غلام بنا کر رکھنا چاہتے ہیں' آدمی کو سائنس کا غلام بننے دینا نہیں چاہتے. ہمیں افسوس ہے جیسے اور بہت سے معاملوں میں اُسی طرح اِس معاملے میں بھی ملک کے پڑھے لکھے لوگ گاندھی جی کو ٹھیک نہیں سمجھ پائے. گاندھی جی کبھی بھی ہر طرح کی ملوں اور مشینوں کے خلاف نہیں تھے. وہ ملوں اور مشینوں کی بابت ہمارے پڑھے لکھے لوگوں کے اندھ وشواس کو توڑنا چاہتے تھے. یہ سائنسی اندھ وشواس دھارمک اندھ وشواسوں سے بھی زیادہ خطرناک ہو سکتے ہیں اور ہوتے ہیں. اِس سمبندھ میں گاندھی جی کے وچاروں کا ہمیں کافی انوبھو ہے.

ہماری کتاب "بھارت میں انگریزی راج" کا دوسرا ایڈیشن 30 ہزار جلدوں کا چھپ رہا تھا. پہلا ایڈیشن چار ہزار جلدوں کا پہلے نکل چکا تھا. پہلے ایڈیشن میں جلد کھدر کی تھی لیکن کاغذ مل کا. دوسرے ایڈیشن کے لئے ہم نے سوچا کہ کاغذ بھی ہاتھ کا لگایا جاوے. ہم کاغذ کا پربندھ کرنے کے لئے وردھا پہنچے. گاندھی جی سے بات چیت ہوئی. اُنہوں نے پوچھا کیسے آئے ؟ ہم نے جواب دیا بھارت میں انگریزی راج کی تیس ہزار جلدوں

गांधीजी उन सब लोगों को जिनके पास बड़ी बड़ी पूंजियां, ज़मीनें या कारखाने थे इन सब चीज़ों का "ट्रस्टी" कहते थे. तो फिर वह उनका मालिक किसे मानते थे? ज़ाहिर है वह मालिक मानते थे देश की जनता को. ट्रस्टी मालिक नहीं होता. असल मालिक ज्यों ही बालिग़ हो जावे या हालात बदल जावें उसे हक़ है कि अपनी चीज़ ट्रस्टी से वापिस ले ले और खुद उसका इन्तज़ाम करे. गांधीजी के इस असूल के मुताबिक़ ज़मींदार को या मिल मालिक कहलाने वाले को मुआवज़ा दिये जाने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता. ट्रस्टी की हैसियत से उसे ज़्यादा से ज़्यादा यह हक़ था कि जब तक चीज़ उसके ट्रस्ट में यानी उसके सिपुर्द थी तब तक उसके मुनाफ़े में से अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ ले ले. साथ ही उसका यह भी फ़र्ज़ है कि जब असल मालिक चाहे और हालात इजाज़त दें तो वह चीज़ बिना बिगाड़े या कम किये असल मालिक के सिपुर्द कर दे.

गांधीजी ने जिस समय ट्रस्टी का उसूल देश के सामने रक्खा था उस समय देश की जनता विदेशी शासकों के खिलाफ़ आज़ादी की लड़ाई में लगी हुई थी. उस लड़ाई के खतम होने के बाद जनता को पूरा हक़ था और है कि अपनी चीज़ ट्रस्टी से वापिस लेकर जिस तरह ठीक समझे उसका इन्तज़ाम करे. ज़मींदारों से ज़मीनों के लेने में या बड़े बड़े उद्योगों पर क़ब्ज़ा करने में हमें जो मुआवज़े की या दूसरी दिक़्क़तें पड़ रही हैं उसकी वजह सिर्फ़ यह है कि देश के नेताओं ने गांधीजी के ट्रस्टी के उसूल को नहीं समझा या नहीं माना. कम्यूनिस्ट कहलाने वाले देशों ने अपने यहां के हालात में से ही इस उसूल को ज़्यादा अच्छी तरह समझा और उस पर अमल किया है. इसी लिये वह अपने अपने यहां की जनता के दुखों को ज़्यादा आसानी से दूर कर सके और उनकी ज़रूरतों को पूरा कर सके.

शक्ति का बटवारा

इसके अलावा हम इन बातों में पैसे की शक्ति हो, या राज की शक्ति, या माल पैदा करने की शक्ति, किसी का भी थोड़े से हाथों में जमा कर देने के हक़ में नहीं हैं. बड़े बड़े कल कारखानों का यानी इंडस्ट्रीयलाइज़ेशन का खब्त एक हद से बढ़कर हमें इस गढ़े में लाकर पटक देता है. अगर दुनिया की करोड़ों और अरबों जनता को चुसने से बचाना है और उन्हें सचमुच आज़ाद और खुशहाल देखना है तो हमें इन सब तरह की शक्तियों को ज़्यादा दूर तक फैला देना होगा.

मशीनों और घरेलू धंदों पर गांधीजी

यह सवाल हमें बड़े बड़े कल कारखानों और घरेलू उद्योग धंधों के सवाल की तरफ़ ले आता है. देश के अधिकतर पढ़े लिखे लोगों और हमारे अधिकतर शासकों

گاندھی جی اُن سب لوگوں کو جن کے پاس بڑی بڑی پونجیاں، زمینیں یا کارخانے تھے اِن سب چیزوں کا "ٹرسٹی" کہتے تھے۔ تو پھر وہ اُن کا مالک کسے مانتے تھے؟ ظاہر ہے وہ مالک مانتے تھے دیش کی جنتا کو۔ ٹرسٹی مالک نہیں ہوتا۔ اصل مالک جیوں ہی بالغ ہوجاوے یا حالات بدل جاویں اُسے حق ہے کہ اپنی چیز ٹرسٹی سے واپس لے لے اور خود اُس کا اِنتظام کرے۔ گاندھی جی کے اِس اصول کے مطابق زمیندار کو یا مل مالک کہلانے والے کو معاوضہ دئے جانے کا کوئی سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ ٹرسٹی کی حیثیت سے اُسے زیادہ سے زیادہ یہ حق تھا کہ جب تک چیز اُس کے ٹرسٹ میں یعنی اُس کے سپرد تھی تب تک اُس کے منافع میں سے اپنی ضرورت کے مطابق لے لے۔ ساتھ ہی اُس کا یہ بھی فرض ہے کہ جب اصل مالک چاہے اور حالات اِجازت دیں تو وہ چیز بنا بگاڑے یا کم کئے اصل مالک کے سپرد کردے۔

گاندھی جی نے جس سمے ٹرسٹی کا اصول دیش کے سامنے رکھا تھا اُس سمے دیش کی جنتا ودیشی شاسکوں کے خلاف آزادی کی لڑائی میں لگی ہوئی تھی۔ اُس لڑائی کے ختم ہونے کے بعد جنتا کو پورا حق تھا اور ہے کہ اپنی چیز ٹرسٹی سے واپس لیکر جس طرح ٹھیک سمجھے اُس کا اِنتظام کرے۔ زمینداروں سے زمینوں کے لینے میں یا بڑے بڑے اُدیوگوں پر قبضہ کرنے میں ہمیں جو معاوضے کی یا دوسری دقتیں پڑ رہی ہیں اُس کی وجہ صرف یہ ہے کہ دیش کے نیتاؤں نے گاندھی جی کے ٹرسٹی کے اصول کو نہیں سمجھا یا نہیں مانا۔ کمیونسٹ کہلانے والے دیشوں نے اپنے یہاں کے حالات میں سے ہی اِس اصول کو زیادہ اچھی طرح سمجھا اور اُس پر عمل کیا ہے۔ اِسی لئے وہ اپنے اپنے یہاں کی جنتا کے دکھوں کو زیادہ آسانی سے دور کرسکے اور اُن کی ضرورتوں کو پورا کرسکے۔

شکتی کا بٹوارا

اِس کے علاوہ ہم اِن باتوں میں پیسے کی شکتی ہو، یا راج کی شکتی، یا مال پیدا کرنے کی شکتی، کسی کو بھی تھوڑے سے ہاتھوں میں جمع کردینے کے حق میں نہیں ہیں۔ بڑے بڑے کل کارخانوں کا یعنی اِنڈسٹریلائیزیشن کا خبط ایک حد سے بڑھ کر ہمیں اِسی گڈھے میں لاکر پٹک دیتا ہے۔ اگر دنیا کی کروڑوں اور اربوں جنتا کو چوسنے سے بچانا ہے اور اُنہیں سچ مچ آزاد اور خوشحال دیکھنا ہے تو ہمیں اِن سب طرح کی شکتیوں کو زیادہ سے زیادہ دور تک پھیلا دینا ہوگا۔

مشینوں اور گھریلو دھندوں پر گاندھی جی

یہ سوال ہمیں بڑے بڑے کل کارخانوں اور گھریلو اُدیوگ دھندوں کے سوال کی طرف لے آتا ہے۔ دیش کے ادھکتر پڑھے لکھے لوگوں اور ہمارے ادھکتر شاسکوں

नेशनेलाइज़ करना टिकाऊ इलाज नहीं है

डाक्टर लोहिया ने इस सारी स्थिति का जो इलाज बताया है जिसे वह नेशनेलाइज़ करना कहते हैं वह हमारी राय में इस रोग का कोई टिकाऊ इलाज नहीं हो सकता. इस तरह की बातों में हम अक्सर शब्दों के जंजाल में फंस जाते हैं और शब्द भी वह जो हमने योरप की कुछ किताबों से ले लिये हैं, चाहे वह हमारे देश की इस समय की हालत से ठीक बैठते हों या न बैठते हों.

खुद अपने प्रान्त के अन्दर हमें मालूम है कि पुराने ज़मींदारों की जगह सरकार के आजाने से किसानों और खेत मजदूरों की मुसीबतें घटी नहीं हैं, बढ़ गई हैं. बक़ाया की अदायगी में किसान को खेती के बैल बेचने की जरूरत पहले कभी न होती थी. अब उसे वह भी करना पड़ जाता है. हमारे जो जो व्यापार या धंदे लोगों के हाथों से निकलकर सरकार के हाथों में आ गए हैं उन में आम तौर पर लोगों की तकलीफ़ें और शिकायतें बढ़ी हैं. हम आज मानें या कल, इन बातों में देश की जनता के दुख तब तक दूर नहीं हो सकते जब तक हमारा शासन नीचे से ऊपर तक ऐसे लोगों के हाथों में न हो जो कम तनख्वाहें लेकर सादा ज़िन्दगी बसर कर सकें, आम लोगों की तरह रह सकें और हर तरह के भ्रष्टाचार से ऊपर हों. महात्मा गांधी जब हमारे वज़ीरों और हाकिमों के सामने ख़लीफ़ा उमर का आदर्श पेश करते थे तो उनका यही मतलब था. पर हमारे इन शासकों को गांधी जी की बातें अमल के क़ाबिल मालूम नहीं होती थीं और आज भी ऐसी ही लगती हैं. नतीजा आंखों के सामने है. इलाज फिर वही है जो गांधी जी कहा करते थे.

गांधीजी का ट्रस्टी का उसूल

हमें दुख है कि गांधीजी के ट्रस्टी के असूल के सम्बन्ध में हमारे बहुत से पढ़े लिखे भाई गांधीजी को ठीक नहीं समझ पाए.

बात बहुत सीधी है. कोई "ट्रस्टी" उस चीज़ का या उस जायदाद का जिसका वह ट्रस्टी है मालिक नहीं होता. ट्रस्टी के मानी ही यह हैं कि मालिक कोई दूसरा है और उस दूसरे के नाबालिग़ होने की वजह से या किसी और वजह से मुल्क के क़ानून ने या खुद उस मालिक ने उस चीज़ या जायदाद का इन्तज़ाम कुछ दिनों के लिये किसी दूसरे के सिपुर्द कर दिया है जिसे "ट्रस्टी" यानी सिपुर्दार कहा जाता है. दुनिया के किसी मुल्क के क़ानून को भी हम देखें, ट्रस्टी के मानी सिवाय इसके और कुछ नहीं होते. वह चीज़ ट्रस्टी के पास और उसके इन्तज़ाम में तब तक ही रह सकती है जब तक असली मालिक बालिग़ न हो, या जब तक वह चाहे, या जब तक वह हालात न बदल जाएं जिनकी वजह से ट्रस्टी मुक़र्रर किया गया था.

نیشنلائز کرنا ٹکاؤ علاج نہیں ہے

ڈاکٹر لوہیا نے اس ساری استھتی کا جو علاج بتایا ہے جسے وہ نیشنلائز کرنا کہتے ہیں، وہ ہماری رائے میں اس روگ کا کوئی ٹکاؤ علاج نہیں ہو سکتا۔ اس طرح کی باتوں میں ہم اکثر شبدوں کے جنجال میں پھنس جاتے ہیں اور شبد بھی وہ جو ہم نے یورپ کی کچھ کتابوں سے لے لئے ہیں، چاہے وہ ہمارے دیش کی اس سمے کی حالت سے ٹھیک بیٹھتے ہوں یا نہ بیٹھتے ہوں۔

خود اپنے پرانت کے اندر ہمیں معلوم ہے کہ پرانے زمینداروں کی جگہ سرکار کے آجانے سے کسانوں اور کھیت مزدوروں کی مصیبتیں گھٹی نہیں ہیں، بڑھ گئی ہیں۔ بقایا کی ادائیگی میں کسان کو کھیتی کے بیل بیچنے کی ضرورت پہلے کبھی نہ ہوتی تھی۔ اب اسے وہ بھی کرنا پڑ جاتا ہے۔ ہمارے جو جو بیوپار یا دھندے لوگوں کے ہاتھوں سے نکل کر سرکار کے ہاتھوں میں آگئے ہیں ان میں عام طور پر لوگوں کی تکلیفیں اور شکایتیں بڑھی ہیں۔ ہم آج مانیں یا کل، ان باتوں میں دیش کی جنتا کے دکھ تب تک دور نہیں ہوسکتے جب تک ہمارا شاسن نیچے سے اوپر تک ایسے لوگوں کے ہاتھوں میں نہ ہو جو کم تنخواہیں لیکر سادہ زندگی بسر کرسکیں، عام لوگوں کی طرح رہ سکیں اور ہر طرح کے بھرشٹاچار سے اوپر ہوں۔ مہاتما گاندھی جب ہمارے وزیروں اور حاکموں کے سامنے خلیفہ عمر کا آدرش پیش کرتے تھے تو ان کا یہی مطلب تھا۔ پر ہمارے ان شاسکوں کو گاندھی جی کی باتیں عمل کے قابل معلوم نہیں ہوتی تھیں اور آج بھی ایسی ہی لگتی ہیں۔ نتیجہ آنکھوں کے سامنے ہے۔ علاج پھر وہی ہے جو گاندھی جی کہا کرتے تھے۔

گاندھی جی کا ٹرسٹی کا اصول

ہمیں دکھ ہے کہ گاندھی جی کے ٹرسٹی کے اصول کے سمبندھ میں ہمارے بہت سے پڑھے لکھے بھائی گاندھی جی کو ٹھیک نہیں سمجھ پائے۔

بات بہت سیدھی ہے۔ "کوئی ٹرسٹی" اس چیز کا یا اس جائیداد کا جس کا وہ "ٹرسٹی" ہے مالک نہیں ہوتا۔ ٹرسٹی کے معنی ہی یہ ہیں کہ مالک کوئی دوسرا ہے اور اس دوسرے کے نابالغ ہونے کی وجہ سے یا کسی اور وجہ سے ملک کے قانون نے یا خود اس مالک نے اس چیز یا جائیداد کا انتظام کچھ دنوں کے لئے کسی دوسرے کے سپرد کردیا ہے جسے "ٹرسٹی" یعنی سپردار کہا جاتا ہے۔ دنیا کے کسی ملک کے قانون کو بھی ہم دیکھیں، ٹرسٹی کے معنی سوائے اس کے اور کچھ نہیں ہوتے۔ وہ چیز ٹرسٹی کے پاس اور اس کے انتظام میں تب تک ہی رہ سکتی ہے جب تک اصلی مالک بالغ نہ ہو، یا جب تک وہ [illegible] حالات نہ بدل جائیں جن کی وجہ سے [illegible]

के जागरूक, सच्चे और त्यागी सेवकों में से हैं. हमारी कोयले की खदानों, चीनी के कारखानों और चाय के बागीचों की जो हालत उन्होंने बताई है उसपर हमें संजीदगी से विचार करना चाहिये. जो बात डाक्टर लोहिया ने राजनीतिक पार्टियों की बाबत कही है वही हमारी आजकल की सरकार के बारे में कही जा सकती है. भारत सरकार के खर्च का बहुत बड़ा हिस्सा मिल मालिकों की जेबों से आता है. सरकार का किसी न किसी दर्जे तक इन मिल मालिकों के असर में रहना इसका क़ुदरती और लाज़मी नतीजा है. सबूत हमें क़दम क़दम पर मिलते रहते हैं. देश के हाथ के करघों की तरफ़ सरकार का जो बुनियादी रुख़ है वह इसी असर का नतीजा है. हाल में बैंक मुलाज़िमों के एवार्ड का बदला जाना भी उसी का एक नतीजा है. डाक्टर लोहिया चाहते हैं कि हमारी राजनीतिक पार्टियां आम जनता के पैसे से चलें, पूंजीपतियों के पैसों से नहीं. हम उनसे पूरी तरह सहमत हैं. साथ ही यह भी जरूरी है कि हमारी सारी हुकूमत आम जनता की गाढ़ी कमाई के पैसों से चले, पूंजीपतियों के मुनाफ़ों की हिस्से रसदी से नहीं. इसके यह मानी नहीं कि हम पूंजीपतियों को मन चाहे मुनाफ़े कमाने के लिये और अधिक आजाद कर दें और ग़रीब जनता पर बोझ और बढ़ादें. इसके यह मानी हैं कि हम अपनी हकूमत का सारा ढांचा, अपनी सारी राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था को इस तरह बदलें कि हमारी हकूमत और सारी मुल्की जिन्दगी जनता के हाथों में और उसी के असर में हो.

कोयला, चीनी और चाय के धंदे

हमारी कोयले की खदानों में मजदूरों की जो गत होती है और चीनी के कारखानों में गन्ना पैदा करने वाले ग़रीब किसानों के साथ जो बुरा सलूक होता है, जिसमें मिल मालिकों के और हकूमत के दोनों के नुमाइन्दे शामिल रहते हैं, उसकी तफ़सील में हम यहां जाना नहीं चाहते.

आसाम के चाय के बागीचों की हालत हमने वहां जा कर अपनी आंखों से देखी है. वहां मजदूरों के साथ जो सलूक किया जाता है वह किसी सभ्य देश में जानवरों के साथ भी नहीं होना चाहिये. हमने वहां के मजदूरों के क्वारटरों में कोढ़ के बढ़े हुए रोगियों को दूसरे मजदूर औरतों और बच्चों के साथ एक ही कोठरी में रक्खे जाते देखा है. जब हमने वहां के बंगाली डाक्टर से इसकी शिकायत की तो उसने हमारे एतराज को ठीक मानते हुये भी अपनी मजबूरी ज़ाहिर की. आसाम के चाय के बागीचों में जाकर मालूम ही नहीं होता कि भारत का राज अंग्रेजों के हाथों से निकल कर हिन्दुस्तानियों के हाथों में आ गया है.

ہماری رائے

کے جاگروک، سچے اور تیاگی سیوکوں میں سے ہیں۔ ہماری کوئلے کی کھدانوں، چینی کے کارخانوں اور چائے کے باغیچوں کی جو حالت اُنہوں نے بتائی ہے اُس پر ہمیں سنجیدگی سے وچار کرنا چاہئے۔ جو بات ڈاکٹر لوہیا نے راجنیتک پارٹیوں کی بابت کہی ہے وہی ہماری آجکل کی سرکار کے بارے میں کہی جا سکتی ہے۔ بھارت سرکار کے خرچ کا بہت بڑا حصہ مل مالکوں کی جیبوں سے آتا ہے۔ سرکار کا کسی نہ کسی درجہ تک اِن مل مالکوں کے اثر میں رہنا اِس کا قدرتی اور لازمی نتیجہ ہے۔ ثبوت ہمیں قدم قدم پر ملتے رہتے ہیں۔ دیش کے ہاتھ کے کرگھوں کی طرف سرکار کا جو بنیادی رخ ہے وہ اِسی اثر کا نتیجہ ہے۔ حال میں بینک ملازموں کے ایوارڈ کا بدلا جانا بھی اُسی کا ایک نتیجہ ہے۔ ڈاکٹر لوہیا چاہتے ہیں کہ ہماری راجنیتک پارٹیاں عام جنتا کے پیسے سے چلیں، پونجی پتیوں کے پیسوں سے نہیں۔ ہم اُن سے پوری طرح سہمت ہیں۔ ساتھ ہی یہ بھی ضروری ہے کہ ہماری ساری حکومت عام جنتا کی گاڑھی کمائی کے پیسوں سے چلے، پونجی پتیوں کے منافعوں کی حصہ رسدی سے نہیں۔ اِس کے یہ معنی نہیں کہ ہم پونجی پتیوں کو من چاہے منافعے کمانے کے لئے اور ادھک آزاد کر دیں اور غریب جنتا پر بوجھ اور بڑھادیں۔ اِس کے یہ معنی ہیں کہ ہم اپنی حکومت کا سارا ڈھانچہ، اپنی ساری راجنیتک اور آرتھک ویوستھا کو اِس طرح بدلیں کہ ہماری حکومت اور ساری ملکی زندگی جنتا کے ہاتھوں میں اور اُسی کے اثر میں ہو۔

کوئلہ، چینی اور چائے کے دھندے

ہماری کوئلے کی کھدانوں میں مزدوروں کی جو گت ہوتی ہے اور چینی کے کارخانوں میں گنا پیدا کرنے والے غریب کسانوں کے ساتھ جو برا سلوک ہوتا ہے، جس میں مل مالکوں کے اور حکومت کے دونوں کے نمائندے شامل رہتے ہیں، اُس کی تفصیل میں ہم یہاں جانا نہیں چاہتے۔

آسام کے چائے کے باغیچوں کی حالت ہم نے وہاں جاکر اپنی آنکھوں سے دیکھی ہے۔ وہاں مزدوروں کے ساتھ جو سلوک کیا جاتا ہے وہ کسی سبھیہ دیش میں جانوروں کے ساتھ بھی نہیں ہونا چاہئے۔ ہم نے وہاں کے مزدوروں کے کوارٹروں میں کوڑھ کے بڑھے ہوئے روگیوں کو دوسرے مزدور عورتوں اور بچوں کے ساتھ ایک ہی کوٹھری میں رکھے جاتے دیکھا ہے۔ جب ہم نے وہاں کے بنگالی ڈاکٹر سے اِس کی شکایت کی تو اُس نے ہمارے اعتراض کو ٹھیک مانتے ہوئے بھی اپنی مجبوری ظاہر کی۔ آسام کے چائے کے باغیچوں میں جاکر یہ معلوم ہی نہیں ہوتا کہ بھارت کا راج انگریزوں کے ہاتھوں سے نکل کر ہندستانیوں کے ہاتھوں میں آگیا ہے

डाक्टर राम मनोहर लोहिया ने कहा कि यही हाल कोयले की खदानों का है. हमारी कोयले की खदानों से लगभग साढ़े तीन करोड़ टन कोयला हर साल पैदा होता है, जिस पर लगभग यही पन्द्रह करोड़ रुपया सालाना खदानों के मालिकों को मुनाफा होता है.

चाय के बागीचों का जिक्र करते हुए डाक्टर लोहिया ने बताया कि हमारे देश के चाय के तीन-चौथाई बागीचों के मालिक अभी तक अंग्रेज हैं. वही उनका इन्तजाम करते हैं. देश में हर साल लगभग 75 लाख मन चाय पैदा होती है. इन बागीचों में कुल पूंजी लगभग तीस करोड़ रुपया लगी हुई है, और इस पूंजी पर मुनाफा हर साल लगभग सौ करोड़ यानी एक अरब रुपये होता है. इस मुनाफे का बहुत बड़ा हिस्सा हर साल इंगलिस्तान चला जाता है. मुलाजिमों और दूसरे लोगों के रखने में जो तरफदारियां और रू-रियायतें की जाती हैं वह अलग.

इस सब हालत का इलाज वह यह बताते हैं कि यह सब धंधे 'नेशनेलाइज' कर लिये जावें. नेशनेलाइज करने के मानी हैं 'क़ौमियाना' यानी यह कि इन सब खदानों, कारखानों और बागीचों पर क़ौम (राष्ट्र) का यानी देश की सरकार का क़ब्ज़ा हो जावे और सरकार ही उन्हें चलावे.

डाक्टर लोहिया ने यह भी कहा कि नेशनेलाइज करने में सबसे बड़ी रुकावट मुआवजे का सवाल है और बड़ी बड़ी रक़में मुआवजे में देकर नेशनेलाइज करना बेमानी है.

डाक्टर लोहिया की राय है कि इनमें से जो जो धंधे विदेशियों के हाथों में हैं उनके हिस्से सरकार को खुले बाजार में खरीद लेने चाहियें, या "कुछ मुनासिब मुआवजा" देकर भी इन धंधों को विदेशियों के हाथों से ले लेना चाहिये. बाक़ी धंदों की बाबत उनकी राय है कि जिन थोड़े से बीच के तबक़े के लोगों की रोज़ी पर नेशनेलाइज करने से असर पड़े उनको थोड़ा बहुत मुआवजा दिया जावे, औरों को मुआवजा देने की जरूरत नहीं है.

डाक्टर लोहिया ने यह भी कहा कि हम समाजवाद के जिस आदर्श की तरफ़ बढ़ना चाहते हैं उस तक गांधी जी के ट्रस्टीपन के उसूल या विनोबा जी के सम्पत्तिदान के उसूल से हम कभी नहीं पहुंच सकते. डाक्टर लोहिया का कहना है कि गांधी जी भी ट्रस्टीपन के तजुर्बे में नाकाम रहे. डाक्टर लोहिया की राय में ट्रस्टीपन और सम्पत्तिदान से वह अधूरे नतीजे पैदा होते हैं जिनसे सोशलिस्ट तहरीक को फ़ायदे की जगह नुक़सान होता है.

देश की राजनीति पर पूंजीपतियों का क़ब्ज़ा

डाक्टर राम मनोहर लोहिया की किसी राय से हम सहमत हों या न हों इसमें संदेह नहीं कि डाक्टर लोहिया देश

ڈاکٹر [illegible] نے کہا کہ یہی حال کوئلے کی کھانوں کا ہے۔ ہماری کوئلے کی کھانوں سے لگ بھگ ساڑھے تین کروڑ ٹن کوئلہ ہر سال پیدا ہوتا ہے جس پر لگ بھگ یہی پندرہ کروڑ روپیہ سالانہ کھانوں کے مالکوں کو منافع ہوتا ہے۔

چائے کے باغیچوں کا ذکر کرتے ہوئے ڈاکٹر لوہیا نے بتایا کہ ہمارے دیش کے چائے کے تین چوتھائی باغیچوں کے مالک ابھی تک انگریز ہیں۔ وہی اُن کا انتظام کرتے ہیں۔ دیش میں ہر سال لگ بھگ 75 لاکھ من چائے پیدا ہوتی ہے۔ ان باغیچوں میں کل پونجی لگ بھگ تیس کروڑ روپیہ لگی ہوئی ہے' اور اس پونجی پر منافع ہر سال لگ بھگ سو کروڑ یعنی ایک ارب روپیہ ہوتا ہے۔ اس منافع کا بہت بڑا حصہ ہر سال انگلستان چلا جاتا ہے۔ ملازموں اور دوسرے لوگوں کے رکھنے میں جو طرفداریاں اور رو رعایتیں کی جاتی ہیں وہ الگ۔

اس سب حالت کا علاج وہ یہ بتاتے ہیں کہ یہ سب دھندے 'نیشنلائز' کر لئے جاویں۔ نیشنلائز کرنے کے معنی ہیں 'قومیانا' یعنی یہ کہ ان سب کھدانوں' کارخانوں اور باغیچوں پر قوم (راشٹر) کا یعنی دیش کی سرکار کا قبضہ ہو جاوے اور سرکار ہی انہیں چلاوے۔

ڈاکٹر لوہیا نے یہ بھی کہا ہے کہ نیشنلائز کرنے میں سب سے بڑی رکاوٹ معاوضے کا سوال ہے اور بڑی بڑی رقمیں معاوضے میں دے کر نیشنلائز کرنا بےمعنی ہے۔

ڈاکٹر لوہیا کی رائے ہے کہ ان میں سے جو جو دھندے ودیشیوں کے ہاتھوں میں ہیں اُن کے حصے سرکار کو کھلے بازار میں خرید لینے چاہئیں' یا "کچھ مناسب معاوضہ" دے کر بھی ان دھندوں کو ودیشیوں کے ہاتھوں سے لے لینا چاہئے۔ باقی دھندوں کی بابت اُن کی رائے ہے کہ جن تھوڑے سے بیچ کے طبقے کے لوگوں کی روزی پر نیشنلائز کرنے سے اثر پڑے اُن کو تھوڑا بہت معاوضہ دیا جاوے' اوروں کو معاوضہ دینے کی ضرورت نہیں ہے۔

ڈاکٹر لوہیا نے یہ بھی کہا کہ ہم سماج واد کے جس آدرش کی طرف بڑھنا چاہتے ہیں اُس تک گاندھی جی کے ٹرسٹی پن کے اصول یا ونوبا جی کے سمپتی دان کے اصول سے ہم کبھی نہیں پہنچ سکتے۔ ڈاکٹر لوہیا کا کہنا ہے کہ گاندھی جی بھی ٹرسٹی پن کے تجربے میں ناکام رہے۔ ڈاکٹر لوہیا کی رائے میں ٹرسٹی پن اور سمپتی دان سے وہ ادھورے نتیجے پیدا ہوتے ہیں جن سے سوشلسٹ تحریک کو فائدے کی جگہ نقصان ہوتا ہے۔

[illegible]

[illegible]

हमारी राय
ہماری رائے

डाक्टर राम मनोहर लोहिया का भाशन

सोशलिस्ट पार्टी के मशहूर नेता डाक्टर राम मनोहर लोहिया ने 10 दिसम्बर सन 1954 को हैदराबाद (दकन) में एक भाशन दिया जिसकी कुछ बातें अखबारों में छपी हैं और बहुत काम की हैं. उन्होंने कहा कि हमारे देश की राजनीतिक पार्टियां पूंजीपतियों के पैसे से चलती हैं. उन्हों-ने लोगों से एक ऐसी राजनीतिक पार्टी बनाने की अपील की जो आम जनता के पैसे से चल सके. सोशलिस्ट पार्टी की बाबत उन्होंने कहा कि बाक़ी दुनिया भर की सोशलिस्ट पार्टियां अपने मेम्बरों के चन्दे से या आम जनता के पैसों से काम करती हैं, लेकिन भारत में सोशलिस्ट पार्टी के खर्चे के लिये पैसा "नीचे के लोगों से जमा नहीं किया जाता बल्कि ऊपर से नीचे वालों में बांटा जाता है." उन्होंने यह भी कहा कि भारत में कोयले की खदानों, चीनी के कारखानों और चाय के बाग़ीचों के मालिक हर साल इतने बड़े बड़े मुनाफ़े कमा रहे हैं कि वह बड़ी आसानी से राजनीतिक पारटियों और ट्रेड यूनियनों को चन्द लाख रुपये सालाना दे सकते हैं ताकि उनके बाक़ी मुनाफ़ों पर आंच न आने पाए. डाक्टर लोहिया ने बताया कि चीनी के मिल मालिकों का मुनाफ़ा मोटे तौर पर पन्द्रह करोड़ रुपया सालाना है. दो साल हुए भारत सरकार ने यह तय किया था कि गन्ने और चीनी दोनों के दाम घटा दिये जावें. गन्ने के दाम घटा दिये गए पर चीनी के दाम न घटाए गए. नतीजा यह हुआ कि मिल मालिकों का मुनाफ़ा और बढ़ गया, गन्ना पैदा करने वाले किसानों को पहले से भी कम पैसे मिले और चीनी खाने वाली जनता को हर सेर चीनी पीछे एक आना दाम अधिक देना पड़ा. इस पर किसानों में आन्दोलन हुआ. सरकार ने एक कमेटी बैठाई. फ़ैसला हुआ कि मिल मालिकों के मुनाफ़े में से एक हिस्सा गन्ना पैदा करने वाले किसानों को दिया जाय. पर इसके बाद भी मिल मालिकों के सन 1952-53 के मुनाफ़े में से किसानों को कुछ नहीं मिला. सन 1953-54 के मुनाफ़े का हिसाब लगना अभी बाक़ी है.

ڈاکٹر رام منوہر لوہیا کا بھاشن

سوشلسٹ پارٹی کے مشہور نیتا ڈاکٹر رام منوہر لوہیا نے 10 دسمبر سن 1954 کو حیدرآباد (دکن) میں ایک بھاشن دیا جس کی کچھ باتیں اخباروں میں چھپی ہیں اور بہت کام کی ہیں۔ اُنہوں نے کہا کہ ہمارے دیش کی راجنیتک پارٹیاں پونجی پتیوں کے پیسے سے چلتی ہیں۔ اُنہوں نے لوگوں سے ایک ایسی راجنیتک پارٹی بنانے کی اپیل کی جو عام جنتا کے پیسے سے چل سکے۔ سوشلسٹ پارٹی کی بابت اُنہوں نے کہا کہ باقی دنیا بھر کی سوشلسٹ پارٹیاں اپنے ممبروں کے چندے سے یا عام جنتا کے پیسوں سے کام کرتی ہیں، لیکن بھارت میں سوشلسٹ پارٹی کے خرچ کے لئے پیسہ "نیچے کے لوگوں سے جمع نہیں کیا جاتا بلکہ اوپر سے نیچے والوں میں بانٹا جاتا ہے۔" اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ بھارت میں کوئلے کی کھدانوں، چینی کے کارخانوں اور چائے کے باغیچوں کے مالک ہر سال اتنے بڑے بڑے منافعے کما رہے ہیں کہ وہ بڑی آسانی سے راجنیتک پارٹیوں اور ٹریڈ یونینوں کو چند لاکھ روپئے سالانہ دے سکتے ہیں تاکہ اُن کے باقی منافعوں پر آنچ نہ آنے پائے۔ ڈاکٹر لوہیا نے بتایا کہ چینی کے مل مالکوں کا منافع موٹے طور پر پندرہ کروڑ روپیہ سالانہ ہے۔ دو سال ہوئے بھارت سرکار نے یہ طے کیا تھا کہ گنے اور چینی دونوں کے دام گھٹا دیئے جاویں۔ گنے کے دام گھٹا دیئے گئے پر چینی کے دام نہ گھٹائے گئے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ مل مالکوں کا منافع اور بڑھ گیا، گنا پیدا کرنے والے کسانوں کو پہلے سے بھی کم پیسے ملے اور چینی کھانے والی جنتا کو ہر سیر چینی پیچھے ایک آنہ دام ادھک دینا پڑا۔ اِس پر کسانوں میں آندولن ہوا۔ سرکار نے ایک کمیٹی بیٹھائی۔ فیصلہ ہوا کہ مل مالکوں کے منافع میں سے ایک حصہ گنا پیدا کرنے والے کسانوں کو دیا جائے۔ پر اِس کے بعد بھی مل مالکوں کے سن 1952-53 کے منافع میں سے کسانوں کو کچھ نہیں ملا۔ سن 1953-54 کے منافعے کا حساب لگنا ابھی باقی ہے۔

उन्होंने कहा कि हमारे पास पहाड़ी इलाके में भी दस बीघा जमीन है. उसका भी छठा हिस्सा भर लीजिये. हम दोनों पर अंगूठा एक साथ लगायेंगे. कार्यकर्ता ने दूसरा दानपत्र भरा. दोनों पर म्योहरू ने अंगूठे लगाये. फिर खुशी खुशी अपने घर चले गये. कार्यकर्ता ने रात को वह दानपत्र हमें लाकर दिखाये.

× × ×

[दो रोज बाद—यही आदिवासियों का केन्द्र—पड़ाव बोरिया]

प्रार्थना प्रवचन के बाद बस्ती के कुछ मुसलमान भाइयों ने बाबा से कुछ विशेष सुनना चाहा. बाबा ने बड़ी खुशी खुशी उनकी बात मंजूर की. नजदीक में ही एक भाई का घर था. उनके सहन में बाबा को ले जाया गया. वहां वह दस मिनट बोले. वहां से लौटकर पड़ाव पर आ रहे थे. रास्ते में संथाली भाई खड़े थे. उनमें से एक ने दोनों हाथ उठाकर कहा—

बाबा, जमीन लो, जमीन लो. हम जमीन देंगे.

बाबा दो क़दम आगे बढ़े कि दूसरे संथाली ने कहा—

जमीन लो, जमीन लो, बाबा जमीन लो.

बाबा ने कहा लाओ लाओ. सब मिल कर जमीन बांट लो. बटोरना बन्द करो, बांटना शुरू करो. साथ में चलनेवाले एक भाई से कहा कि इनके दानपत्र भरवा लिये जायें.

× × ×

जमीन दो, जमीन दो इससे शुरूआत हुई. जमीन लो, जमीन लो अब यह सूरत आ गई. इससे ज्यादा और क्या हो सकता है ? अब सिर्फ हमारा और आपका, कार्यकर्ताओं का काम रह जाता है. कार्यकर्ता नहीं, हम यज्ञकर्ता कहेंगे. यज्ञकर्ता एक बार उठ खड़े हों तो देखते देखते यह यज्ञ सफल हो जाय. सारे देश में से जमीन की मिलकियत मिट जायगी. हर कहीं खेत गांव का और खेती किसान की हो. जब खेत गांव का और खेती किसान की हो गई, इस तरह प्रेम से हो गई, तब फिर कौन ऐसा सवाल है जो हम प्रेम की ताकत से, अपनी स्वतंत्र लोकशक्ति से, अपने देश में हल नहीं कर लेंगे ? तभी सच्चा स्वराज्य होगा, ग्रामराज्य होगा, राम राज्य होगा.

اُس نے کہا علاقہ یعنی پہاڑی علاقے میں بھی دس بیگھا زمین ہے۔ اُس کا بھی چھٹا حصہ بھر لیجئے۔ ہم دونوں پر انگوٹھا ایک ساتھ لگائیں گے۔ کاریہ کرتا نے دوسرا دان پتر بھرا۔ دونوں پر میوہرو نے انگوٹھے لگائے۔ پھر خوشی خوشی اپنے گھر چلے گئے۔ کاریہ کرتا نے رات کو وہ دان پتر ہمیں لاکر دکھائے۔

× × ×

[دو روز بعد—یہی آدی واسیوں کا کیندر—پڑاؤ بوریا]

پرارتھنا پروچن کے بعد بستی کے کچھ مسلمان بھائیوں نے بابا سے کچھ وشیش سننا چاہا۔ بابا نے بڑی خوشی خوشی اُن کی بات منظور کی۔ نزدیک میں ہی ایک بھائی کا گھر تھا۔ اُن کے صحن میں بابا کو لے جایا گیا۔ وہاں وہ دس منٹ بولے۔ وہاں سے لوٹکر پڑاؤ پر آرہے تھے۔ راستے میں سنتھالی بھائی کھڑے تھے۔ اُن میں سے ایک نے ہاتھ اُٹھاکر کہا—

بابا، زمین لو، ہم زمین دینگے۔

بابا دو قدم آگے بڑھے کہ دوسرے سنتھالی نے کہا—

زمین لو، زمین لو، بابا زمین لو۔

بابا نے کہا لاؤ لاؤ۔ سب ملکر زمین بانٹ لو۔ بٹورنا بند کرو، بانٹنا شروع کرو۔ ساتھ میں چلنے والے ایک بھائی سے کہا کہ اِن کے دان پتر بھروا لئے جائیں۔

× × ×

زمین دو، زمین دو اِس سے شروعات ہوئی۔ زمین لو، زمین لو اب یہ صورت آگئی۔ اِس سے زیادہ اور کیا ہوسکتا ہے؟ اب صرف ہمارا اور آپ کا، کاریہ کرتاؤں کا کام رہ جاتا ہے۔ کاریہ کرتا نہیں، ہم یگیہ کرتا کہیں گے۔ یگیہ کرتا ایک بار اُٹھ کھڑے ہوں تو دیکھتے دیکھتے یہ یگیہ سپھل ہوجائے۔ سارے دیش میں زمین کی ملکیت مٹ جائیگی۔ ہر کہیں کھیت گاؤں کا اور کھیتی کسان کی ہو۔ جب کھیت گاؤں کا اور کھیتی کسان کی ہوگئی، اِس طرح پریم سے ہوگئی، تب پھر کون ایسا سوال ہے جو ہم پریم کی طاقت سے، اپنی سوتنتر لوک شکتی سے، اپنے دیش میں حل نہیں کرینگے؟ تبھی سچا سوراجیہ ہوگا، گرام راجیہ ہوگا، رام راجیہ ہوگا۔

सीता के साथ भूमिदान और राधा के साथ सम्पत्ति दान जोड़ना बहुत ही जंचने वाली बात है. कार्यकर्ताओं ने भी इस भजन को पकड़ लिया और अब यह जगह जगह सुनाई देता है. हमें नहीं मालूम कि देश के किसी और हिस्से में राम का नाम और भूमिदान का काम इस तरह भजन के रूप में बोले जाते हों. बिहार के पूर्निया जिले में जनता जनार्दन की तरफ़ से ही इस भजन का गाया जाना साफ़ साफ़ बताता है कि भूदान का मंत्र किस गहराई तक बिहार की धरती में जा पहुंचा है.

❀ ❀ ❀

[संथाल परगना जिला—आदिवासियों का इलाक़ा—पड़ाव लोहनडीया—तारीख 27 नवम्बर]

दोपहर के दो बजे के क़रीब कुछ कार्यकर्ता बाबा से मिले. उन्होंने बताया कि यहां आदिवासी भाई ज्यादातर रहते हैं. उनसे जमीन बहुत कम मिल रही है. उनको यह डर है कि हमारी जमीन लेकर पहाड़ियों में या दूसरे लोगों में बांट दी जायगी. बाबा ने कहा कि इसका मतलब है कि आप उन तक हमारा सन्देश ठीक से नहीं पहुंचा सके. हम नहीं समझते कि आदिवासी भाई इस चीज के खिलाफ़ क्यों जायेंगे. विचारों को ठीक ठीक समझाने की जरूरत है.

प्रार्थना हुई. उसके बाद बाबा ने बताया कि हम एक बीघा, दो बीघा, जमीन नहीं चाहते. बल्कि जमीन की मिलकियत ही मिटाना चाहते हैं. गांव में जितनी जमीन है वह गांव की समझी जाय. जैसे घर के अन्दर की हर चीज किसी एक व्यक्ति की न होकर सारे घर की मानी जाती है और सब घरवाले उसका इस्तेमाल करते हैं, इसी तरह से जमीन किसी एक व्यक्ति की न होकर सारे गांव की मानी जाय और गांव के लोग मिलकर, जैसी जिसकी जरूरत हो, उसी लिहाज़ से बांट दें. अब जमीन उसे ही मिलेगी जो खेती करेगा. हम यह भी चाहते हैं कि गांव के झगड़े गांव के बाहर नहीं जायें. जैसे घर के झगड़े गांव के बाहर नहीं जाते. अपने गांव के मामले में किसी बाहर वाले का दख़ल नहीं होना चाहिये.

इस तरह क़रीब आधे घंटे तक बाबा का प्रवचन हुआ. जब वह सभा ख़त्म हो गई तो बाबा पड़ाव के स्थान पर लौट आये. इस बीच मंच के पास एक वयोवृद्ध संथाल पहुंचा. वहां एक कार्यकर्ता कुछ साहित्य बेच रहे थे. उनसे उन वृद्ध ने पूछा कि क्या तुम्हारे पास दानपत्र है? हम दान लिखाना चाहते हैं. वह कार्यकर्ता दानपत्र भरने लगा. बूढ़े सज्जन ने बताया कि हमारे पास इसी इलाक़े में 2 बीघा जमीन है, उसमें से दो बीघा लिख लीजिये. जब यह दानपत्र भर गया और वह अपना अंगूठा लगाने लगे तो ज़रा ठहरे.

سیتا کے ساتھ بھومی دان اور رادھا کے ساتھ سمپتی دان جوڑنا بہت ہی جنچنے والی بات ہے . کاریہ کرتاؤں نے بھی اِس بھجن کو پکڑ لیا اور اب یہ جگہ جگہ سنائی دیتا ہے . ہمیں نہیں معلوم کہ دیش کے کسی اور حصے میں رام کا نام اور بھومی دان کا کام اِس طرح بھجن کے روپ میں بولے جاتے ہوں . بہار کے پورنیہ ضلع میں جنتا جناردن کی طرف سے ہی اِس بھجن کا گایا جانا صاف صاف بتاتا ہے کہ بھودان کا منتر کس گہرائی تک بہار کی دھرتی میں جا پہونچا ہے .

❀ ❀ ❀

[سنتھال پرگنہ ضلع—ادی واسیوں کا علاقہ—پڑاؤ لوہن ڈیا—تاریخ 27 نومبر]

دوپہر کے دو بجے کے قریب کچھ کاریہ کرتا بابا سے ملے . اُنہوں نے بتایا کہ یہاں آدی واسی بھائی زیادہ تر رہتے ہیں . اُن سے زمین بہت کم مل رہی ہے . اُن کو یہ ڈر ہے کہ ہماری زمین لے کر پہاڑیوں میں یا دوسرے لوگوں میں بانٹ دی جائے گی . بابا نے کہا کہ اِس کا مطلب ہے کہ آپ اُن تک ہمارا سندیش ٹھیک سے نہیں پہونچا سکے . ہم نہیں سمجھتے کہ ادی واسی بھائی اس چیز کے خلاف کیوں جائیں گے . وچاروں کو ٹھیک ٹھیک سمجھانے کی ضرورت ہے .

پرارتھنا ہوئی . اُس کے بعد بابا نے بتایا کہ ہم ایک بیگھا، دو بیگھا، زمین نہیں چاہتے . بلکہ زمین کی ملکیت ہی مٹانا چاہتے ہیں . گاؤں میں جتنی زمین ہے وہ گاؤں کی سمجھی جائے . جیسے گھر کے اندر کی ہر چیز کسی ایک ویکتی کی نہ ہوکر سارے گھر کی مانی جاتی ہے اور سب گھر والے اُس کا اِستعمال کرتے ہیں، اِسی طرح سے زمین کسی ایک ویکتی کی نہ ہوکر سارے گاؤں کی مانی جائے اور گاؤں کے لوگ ملکر، جیسی جس کی ضرورت ہو اُسی لحاظ سے، بانٹ دیں . اب زمین اُسے ہی ملے گی جو کھیتی کریگا . ہم یہ بھی چاہتے ہیں کہ گاؤں کے جھگڑے گاؤں کے باہر نہیں جائیں . جیسے گھر کے جھگڑے گاؤں کے باہر نہیں جاتے . اپنے گاؤں کے معاملے میں کسی باہر والے کا دخل نہیں ہونا چاہئے .

اِس طرح قریب آدھے گھنٹے تک بابا کا پروچن ہوا . جب وہ سبھا ختم ہوگئی تو بابا پڑاؤ کے استھان پر لوٹ آئے . اِس بیچ منچ کے پاس ایک ویووردھ سنتھال پہنچا . وہاں ایک کاریہ کرتا کچھ ساہتیہ بیچ رہے تھے . اُن سے اُن بردھ نے پوچھا کہ کیا تمہارے پاس دان پتر ہے ؟ ہم دان لکھانا چاہتے ہیں . وہ کاریہ کرتا دان پتر بھرنے لگا . بوڑھے سجن نے بتایا کہ ہمارے پاس اِسی علاقے میں 12 بیگھا زمین ہے . اُس میں سے دو بیگھا لکھ لیجئے . جب یہ دان پتر بھر گیا اور وہ اپنا انگوٹھا لگانے لگے تو ذرا ٹھہرے .

[पूर्निया जिला—किशनगंज का पड़ाव, तारीख 6 नवम्बर]

एक रईस और शरीफ घराने के मुसलमान भाई बाबा से मिलने आये. बाबा ने अपनी मांग उनके सामने रखी.

उन्होंने ग़ैर मजरूआ आस कुल की कुल देना मंजूर किया—लगभग पांच हजार एकड़. बाबा ने कहा कि जोत की जमीन का हमें छठा हिस्सा चाहिये.

वह भाई कहने लगे कि हमारे यहां मुसलमानों में बहनों का भी हक़ होता है. हम पांच भाई और दो बहनें हैं.

तो हम आठवें हो जाते हैं और आप हमें आठवां हिस्सा दीजिए. हमारा हक़ आप को मंजूर है न ?

जी हां, यह कहकर उन्होंने जोत की जमीन का आठवां हिस्से का दानपत्र भर दिया. इसके बाद कहने लगे कि आपने जो काम उठाया है हमारे इस्लाम में तो यह फर्ज माना गया है. आपकी मांग हक़ की मांग है और इनशा अल्लाह, मुल्क से आपने जो मांग की है वह जरूर पूरी होगी.

× × ×

[तारीख 9 नवम्बर—सुबह का समय.]

बाबा पूर्निया जिले में ही यात्रा कर रहे थे. नवाबगंज पीरूरिया गांव से कल्यान गांव के पड़ाव पर जा रहे थे रास्ते में जगह जगह गांव वालों ने स्वागत किया. एक जगह हारमोनियम और ढोलक पर कुछ भाई एक अनोखा भजन गा रहे थे —

सीता सीता राम बोलो,
सब कोई भूमिदान दे दो,
सीता सीता राम बोलो,
राधे राधे श्याम बोलो,
सब कोई भूमिदान दे दो,
सब कोई सम्पत्ति दान दे दो,
सीता सीता राम बोलो.

बाबा यह भजन सुनकर बहुत ही खुश हुए. पड़ाव पर पहुंच कर कहने लगे कि शास्त्र में कहा गया है कि हम जो मनुष्य देह लेकर आये हैं उसके दो ही काम करने हैं— एक तो भगवान का नाम लिया जाये, दूसरा समाज के लिये दान दिया जाये. यह भजन सतत जारी रहना चाहिये. यह भजन हमेशा ही चलना चाहिये. सतत देते ही रहना चाहिये. जैसे खाना रोज खाते हैं, वैसे देना भी रोज चाहिये.

उसके बाद से यह भजन जगह जगह सुनाई पड़ने लगा और एक जगह इसने यह रूप लिया —

सीता सीता राम बोलो,
सब कोई भूमिदान दे दो,
राधे राधे श्याम बोलो,
सब कोई सम्पत्ति दान दे दो.

[پورنیہ ضلع — کشن گنج کا پڑاؤ تاریخ 6 نومبر]

ایک رئیس اور شریف گھرانے کے مسلمان بھائی بابا سے ملنے آئے بابا نے اپنی مانگ ان کے سامنے رکھی۔

انہوں نے غیر مزروعہ خاص کل کی کل دینا منظور کیا — لگ بھگ پانچ ہزار ایکڑ۔ بابا نے کہا کہ جوت کی زمین کا ہمیں چھٹا حصہ چاہئے۔

وہ بھائی بولے کہ ہمارے یہاں مسلمانوں میں بہنوں کا بھی حق ہے. ہم پانچ بھائی اور دو بہنیں ہیں۔

تو ہم آٹھ ہو جاتے ہیں اور آپ ہمیں آٹھواں حصہ دیجئے. ہمارا حق آپ کو منظور ہے نا؟

جی ہاں! یہ کہہ کر انہوں نے جوت کی زمین کا آٹھواں حصے کا دان پتر بھر دیا. اس کے بعد کہنے لگے کہ آپ نے جو کام اٹھایا ہے ہمارے اسلام میں تو یہ فرض مانا گیا ہے. آپ کی مانگ حق کی مانگ ہے اور انشا اللہ ملک سے آپ نے جو مانگ کی ہے وہ ضرور پوری ہوگی۔

× × ×

[تاریخ 9 نومبر صبح کا سمے]

بابا پورنیہ ضلع ہی میں یاترا کر رہے تھے. نواب گنج پوکھریا گاؤں سے کلیان گاؤں کے پڑاؤ پر جا رہے تھے. راستے میں جگہ جگہ گاؤں والوں نے سواگت کیا. ایک جگہ ہارمونیم اور ڈھولک پر کچھ بھائی ایک انوکھا بھجن گا رہے تھے —

سیتا سیتا رام بولو،
سب کوئی بھومی دان دے دو،
سیتا سیتا رام بولو،
رادھے رادھے شیام بولو،
سب کوئی بھومی دان دے دو،
سب کوئی سمپتی دان دے دو،
سیتا سیتا رام بولو۔

بابا یہ بھجن سن کر بہت ہی خوش ہوئے. پڑاؤ پر پہنچ کر کہنے لگے کہ شاستر میں کہا گیا ہے کہ ہم جو منش دیہ لے کر آئے ہیں اُن کو دو ہی کام کرنے ہیں — ایک تو بھگوان کا نام لیا جائے، دوسرا سماج کے لئے دان دیا جائے. یہ بھجن ستت جاری رہنا چاہئے. یہ بھجن ہمیشہ ہی چلنا چاہئے. ستت دیتے ہی رہنا چاہئے. جیسے کھانا روز کھاتے ہیں ویسے دینا بھی روز چاہئے۔

اس کے بعد سے یہ بھجن جگہ جگہ سنائی پڑنے لگا اور ایک جگہ [illegible]

سیتا سیتا رام بولو،
سب کوئی بھومی دان دے دو،
رادھے رادھے شیام بولو،
سب کوئی سمپتی دان دے دو۔

एक भाई बोले कि बिहार यूनिवर्सिटी वाला गणित तो बताया ही नहीं ?

कांग्रेसी महोदय कहने लगे कि बाबा के मुख से अब क्या क्या सुनना चाहते हो ? जो देना हो दो.

वकील साहब ने कहा कि हमारे लड़कों और हमारे हिस्से की जो जमीन है उसमें से कुल का छठा हिस्सा आपको देंगे. वह हम तीनों भाई, जो एक ही खान्दान के हैं, अलग अलग देंगे.

बाबा ने मुस्कराते हुए कहा कि हमें तो कुल परिवार का कम से कम छठा हिस्सा चाहिए. लेकिन आपने यह बिहार यूनिवर्सिटी का गणित लगा ही लियां. बाक़ी परिवार का छटा हिस्सा हमें कब मिलेगा ?

कांग्रेसी भाई ने जवाब दिया कि वह तो बाबूजी और चाचा जी सलाह करेंगे, सब घर के लोग बैठेंगे और तब जैसी राय होगी वैसा किया जायेगा. इस वक़्त तो हमने अपने अपने हिस्से का छटा हिस्सा दिया है.

अच्छी बात है, बाबा ने कहा. हम उम्मीद करेंगे कि जब आपने छटा दिया है तो अपने बड़े बूढ़ों से बात करके कुल परिवार का छठा हिस्सा तो जरूर दिलायेंगे. लेकिन यह इस वक़्त जो आप जमीन दे रहे हैं वह सब जोतवाली है न ?

समाजवादी नौजवान ने कहा कि अब तो हमने आपको अपना भाई मान कर आपका हक़ दिया है. जब हक़ मिलता है तब तो अच्छी बुरी सब तरह की चीजें लेनी होंगी.

बाबा मुस्कराए और कहने लगे कि चलिये, आपने हमें घर में जगह तो दी. आपने हमारा हक़ तो मंजूर किया. लेकिन हम इन्साफ़ चाहते हैं. आप यह तो देखिये कि जिस ग़रीब भाई को जमीन देते हैं उसको भी आपकी ही तरह अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये. तो जमीन के अलावा घर की दूसरी चीजों में से भी उसे हिस्सा मिलना चाहिये. हम आपके सबसे कमजोर और सबसे छोटे भाई हैं. छोटे भाई का दावा तो और भी ज्यादा होता है.

यह सुनकर कांग्रेसी भाई कुछ हैरान से नजर आए. कहने लगे कि बाबा आप तो धीरे धीरे आगे ही बढ़ते हैं.

आप ही बताइये कि हम क्या कोई अन्याय की बात कर रहे हैं ? आपको क्या यह बरदाश्त होगा कि आप अच्छी तरह खाते पीते हों और आपका भाई गई गुजरी हालत में रहे ? हम कम से कम यह तो जरूर उम्मीद करेंगे कि आप जो हमें परती जमीन देते हैं वह एक बार तुड़वा कर देंगे.

बाबा की यह मांग उन भाइयों ने मंजूर की.

इस तरह क़रीब सवा घंटे तक यह सत्संग रहा और हक़ के तौर पर बाबा को छठा हिस्सा जमीन दी गई.

× × ×

ایک بھائی بولے کہ یونیورسٹی والا گنرت تو بتایا ہی نہیں ؟
کانگریسی مہودے کہنے لگے کہ بابا کے مکھ سے اب کیا کیا سننا چاہتے ہو ؟ جو دینا ہو دو ۔

وکیل صاحب نے کہا کہ ہمارے لڑکوں اور ہمارے حصے کی جو زمین ہے اس میں سے کل کا چھٹا حصہ آپ کو دینگے ۔ یہ ہم تینوں بھائی، جو ایک ہی خاندان کے ہیں، الگ الگ دینگے ۔

بابا نے مسکراتے ہوئے کہا کہ ہمیں تو کل پریوار کا کم سے کم چھٹا حصہ چاہئے ۔ لیکن آپ نے یہ بہار یونیورسٹی کا گنرت لگا ہی لیا ۔ باقی پریوار کا چھٹا حصہ ہمیں کب ملےگا ؟

کانگریسی بھائی نے جواب دیا وہ تو بابوجی اور چاچا جی صلح کرینگے، سب گھر کے لوگ بیٹھیں گے اور تب جیسی رائے ہوگی ویسا کیا جائیگا ۔ اِس وقت تو ہم نے اپنے اپنے حصے کا چھٹا حصہ دیا ہے ۔

اچھی بات ہے، بابا نے کہا ۔ ہم اُمید کریں گے کہ جب آپ نے چھٹا دیا ہے تو اپنے بڑے بوڑھوں سے بات کرکے کل پریوار کا چھٹا حصہ تو ضرور دلائینگے ۔ لیکن یہ اِس وقت جو آپ زمین دے رہے ہیں وہ سب جوت‌والی ہے نا ؟

سماج‌وادی نوجوان نے کہا کہ اب تو ہم نے آپ کو اپنا بھائی مان کر آپ کا حق دیا ہے ۔ جب حق ملتا ہے تب تو اچھی بری سب چیزیں لینی ہونگی ۔

بابا مسکرائے اور کہنے لگے کہ چلئے، آپ نے ہمیں گھر میں جگہ تو دی ۔ آپ نے ہمارا حق تو منظور کیا ۔ لیکن ہم اِنصاف چاہتے ہیں ۔ آپ یہ تو دیکھئے کہ جس غریب بھائی کو زمین دیتے ہیں اس کو بھی آپ کی ہی طرح اپنے پیروں پر کھڑا ہونا چاہئے ۔ تو زمین کے علاوہ گھر کی دوسری چیزوں میں بھی اُسے حصہ ملنا چاہئے ۔ ہم آپ کے سب سے کمزور اور سب سے چھوٹے بھائی ہیں ۔ چھوٹے بھائی کا دعویٰ تو اور بھی زیادہ ہوتا ہے ۔

یہ سن کر کانگریسی بھائی کچھ حیران سے نظر آئے ۔ کہنے لگے کہ بابا آپ تو دھیرے دھیرے آگے ہی بڑھتے جاتے ہیں ۔

آپ ہی بتائیے کہ ہم کیا کوئی انیائے کی بات کہہ رہے ہیں ؟ آپ کو کیا یہ برداشت ہوگا کہ آپ اچھی طرح کھاتے پیتے ہوں اور آپ کا بھائی گئی گذری حالت میں رہے ؟ ہم کم سے کم یہ تو ضرور اُمید کریں گے کہ آپ جو ہمیں پرتی زمین دیتے ہیں وہ ایکبار تڑوا کر دیں گے ۔

بابا کی یہ مانگ اُن بھائیوں نے منظور کی ۔

اِس طرح قریب سوا گھنٹے تک یہ ست‌سنگ رہا اور حق کے طور پر بابا کو چھٹا حصہ زمین دیگئی ۔

× × ×

वह सबकी सब आप हमें क्यों नहीं ले देते ? आपके पास बेकार पड़ी है, हमारे काम आजायेगी. हम तो यही कहते हैं कि ग़ैरमज़रूआ ख़ास, अपनी कुल की कुल दे दीजिये और जोत के ज़मीन में से घर के भाई के नाते हमारा हक़ दे दीजिये.

कांग्रेसी भाई बोले कि आप उस परती ज़मीन को लेकर क्या कीजियेगा ? कहीं दरिया है, कहीं रेत है, कहीं कुछ.

आप हमें वह सब दे तो दीजिये. जैसा होगा हम संभाल लेंगे.

वह तो नये क़ानून के मुताबिक अपने हाथ से चली जाने वाली है.

जब चली जाने वाली है, तब भी आप नहीं देते !

धीमी आवाज़ से वकील साहब बोले कि उसका मुआवज़ा......

बाबा ने कहा—यह आपने अब अपना दिल खोला. उसके मुआवज़े में रुपया मिलेगा, इसी वजह से उस परती ज़मीन को भी पकड़े हुये हैं. ऐसा क्यों नहीं करते कि ग़ैर-मज़रूआ ख़ास का जो मुआवज़ा आपको मिले वह हमें दे दीजिये. ऐसा कई श्रीमानों ने किया भी है.

कांग्रेसी सज्जन बोले कि वह तो बड़े आदमी हैं. न हमारी उतनी हस्ती है और न घर वालों की ही इजाज़त है.

यह आप जानिये. लेकिन ग़ैरमज़रूआ ख़ास अगर आप दे देते हैं तो इसमें आपका कोई नुक़सान नहीं होता.

इसके बाद थोड़ी देर सभी चुप रहे. वे लोग आपस में कुछ सलाह सी करने लगे. एक भाई बोले कि बाबा हम चारों अपने अपने हिस्से का छठा हिस्सा देने को राज़ी हैं.

बाबा इस पर हंसे और कहा आपका कौन सा गणित है ? पटना यूनिवर्सिटी का या बिहार यूनिवर्सिटी का ? यह सुनकर सब को अचरज हुआ और उनमें से एक ने पूछा कि यह दोनों गणित कौन कौन से हैं ?

बाबा ने बताया कि पटना यूनिवर्सिटी के पढ़े हुए एक वकील साहब हमें एक जगह मिले. उन्होंने हमें एक बीघा ज़मीन दान में दी और कहा कि छटे हिस्से से ज़्यादा होती है. हमने उनसे पूछा कि यह कैसे ? तो कहने लगे कि हमारे घर में कुल 100 बीघा ज़मीन है. हम अपने पिता जी के चार लड़के हैं. हमारे पिता जी अभी जीवित हैं. तो हमारे कुल के हिस्से में 20 बीघा पड़ा. अब हमारे ख़ुद के तीन लड़के हैं—एक हम और तीन वह. इस तरह हमारे हिस्से के भी चार हिस्से हो गए. हमारे पल्ले पांच बीघा ही ज़मीन पड़ी. उसमें का छठा हिस्सा न दे कर कुछ ज़्यादा ही दिया.

यह सुन कर सभी लोग हंस पड़े.

बाबा बोले कि यह है आपका पटना यूनिवर्सिटी का गणित— 00 बीघा का छठा हिस्सा एक बीघा. तो बताइये कि आप हमें किस हिसाब से दे रहे हैं ?

وہ سب کی سب آپ ہمیں کیوں نہیں لے دیتے ؟ آپ کے پاس بیکار پڑی ہے ہمارے کام آجائے گی۔ ہم تو یہی کہتے ہیں کہ غیر مزروعہ خاص اپنی کل کی کل دے دیجئے اور جوت کے زمین میں سے گھر کے بھائی کے ناتے ہمارا حق دے دیجئے۔

کانگریسی بھائی بولے کہ آپ اس پرتی زمین کو لے کر کیا کیجئے گا ؟ کہیں دریا ہے کہیں ریت کہیں کچھ ۔

آپ ہمیں وہ سب دے تو دیجئے ۔ جیسا ہوگا ہم سنبھال لیں گے ۔

وہ تو نئے قانون کے مطابق اپنے ہاتھ سے چلی جانے والی ہے ۔

جب چلی جانے والی ہے تب بھی آپ نہیں دیتے !

دھیمی آواز سے وکیل صاحب بولے اُس کا معاوضہ...

بابا نے کہا— یہ آپ نے اب اپنا دل کھولا ۔ اُس کے معاوضے میں روپیہ ملے گا ۔ اِسی وجہ سے اِس پرتی زمین کو بھی پکڑے ہوئے ہیں ۔ ایسا کیوں نہیں کرتے کہ غیر مزروعہ خاص کا جو معاوضہ آپ کو ملے وہ ہمیں دے دیجئے ۔ ایسا کئی شریمانوں نے کیا بھی ہے ۔

کانگریسی سجن بولے وہ تو بڑے آدمی ہیں ۔ نہ ہماری اتنی ہستی ہے اور نہ گھر والوں ہی کی اِجازت ہے ۔

یہ آپ جانئے ۔ لیکن غیرمزروعہ خاص اگر آپ دے دیتے ہیں تو اُس میں آپ کا کوئی نقصان نہیں ہوتا ۔

اِس کے بعد تھوڑی دیر تک سبھی چپ رہے ۔ وہ لوگ آپس میں کچھ صلاح سی کرنے لگے ۔ ایک بھائی بولے کہ بابا ہم چاروں اپنے اپنے حصہ کا چھٹا حصہ دینے کو تیار ہیں ۔

بابا اِس پر ہنسے اور کہا آپ کا کونسا گنت ہے ؟ پٹنہ یونیورسٹی کا یا بہار یونیورسٹی کا ؟ یہ سنکر سب کو اچرج ہوا اور اُن میں سے ایک نے پوچھا یہ دونوں گنت کون کون سے ہیں ؟

بابا نے بتایا کہ پٹنہ یونیورسٹی کے پڑھے ہوئے ایک وکیل صاحب ہمیں ایک جگہ ملے ۔ انہوں نے ہمیں ایک بیگھا زمین دان میں دی اور کہا کہ چھٹے حصے سے زیادہ ہوتی ہے ۔ ہم نے اُن سے پوچھا کہ یہ کیسے ؟ کہنے لگے کہ ہمارے گھر میں کل 100 بیگھا زمین ہے ۔ ہم اپنے پتا جی کے چار لڑکے ہیں ۔ ہمارے پتا جی ابھی جیوت ہیں ۔ تو ہمارے کل کے حصے میں 20 بیگھا پڑا ۔ اب ہمارے خود کے تین لڑکے ہیں— ایک ہم اور تین وہ ۔ اِس طرح ہمارے حصے کے بھی چار حصے ہوگئے ۔ ہمارے پلے پانچ بیگھا ہی زمین پڑی ۔ اُس میں کا چھٹا حصہ نہ دے کر کچھ زیادہ ہی دیا ۔

یہ سنکر سب ہی لوگ ہنس پڑے ۔

بابا بولے کہ یہ ہے آپ کی پٹنہ یونیورسٹی کا گنت— 100 بیگھے کا چھٹا حصہ ایک بیگھا ۔ تو بتائیے کہ آپ ہمیں کس حساب سے دے رہے ہیں ؟

जमीन उसी के पास अब रहेगी जो खेती खुद करेगा. किताब उसी के पास रहेगी जो खुद पढ़ेगा. हम जानते हैं कि आप में से सब लोग आज खुद काम करने की हालत में नहीं हैं. हम आपको मुहलत देने को तैयार हैं. ज्यादा नहीं, चार पांच बरस की. इस बीच आप अपने लड़कों को तैयार कीजिये ताकि वह और खटने वाले मजदूरों के लड़के एक साथ मिल कर काम करें. फिर हम आपसे पूछना चाहते हैं कि जब आप वकालत करते हैं तो जमीन रख कर क्या कीजियेगा ?

बाबा की बात को टालते हुए वकील साहब ने कहा कि अभी लोग समझे नहीं हैं.

कांग्रेसी भाई कहने लगे कि बाबा हम देने को राजी भी हों, लेकिन घर के बुजुर्ग कहां मानते हैं. अपनी ऐड़ी चोटी एक करके उन्होंने जमीन हासिल की है. अब उसे कैसे जाने दें ?

बाबा बोले कि हम इस बात में नहीं पड़ेंगे कि आपके पास जमीनें किस तरह आयीं ? हम पिछली बातों में नहीं जाते. उससे न आपको फायदा है न किसी और को. लेकिन हम आप से तो यह जानना चाहेंगे कि आपकी प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी ने 32 लाख एकड़ के लिये एक प्रस्ताव पास किया है, उसे दोहराया, तब आपका क्या फर्ज हो जाता है ?

इस पर समाजवादी नौजवान बोले कि या सरकुलर तो आया ही करते हैं.

बाबा ने उनकी तरफ देखकर कहा कि आपके पार्टीवाले तो कहते हैं कि बाबा ने हमारा ही काम उठाया है. तो हम कहते हैं कि हमारे उठाने पर क्या आपने अपना काम बन्द कर दिया ? आप लोग तो बड़े विचित्र हैं. आपके नेता जय प्रकाश बाबू ने इस काम के लिये अपील की. लेकिन आप कैसे अनुयायी हैं कि अपने नेता की बात सुनी अनसुनी कर देते हैं.

ग्रेजुएट भाई बोले कि बाबा यह तो होगा ही. क्योंकि आपकी इस मांग से तो पहले अपने पर ही हाथ साफ करना पड़ता है.

हां, बाबा ने बड़े जोर से कहा. यह बात है. अगर खुद देना नहीं होता तो इनको भी कांग्रेस का प्रस्ताव मंजूर था और उनको भी प्रजा पार्टी का प्रस्ताव मंजूर था. यही हमारे काम और दूसरे के कामों में फर्क है.

वकील साहब ने कहा कि अच्छा, आज तो हमारा दान कबूल कर लीजिये, छठा हिस्सा बाद में पूरा करेंगे.

जब आप छठा हिस्सा देने को राजी हैं तो "शुभस्य शीघ्रम्." कब दोबारा आपके गांव में हमारा आना होगा और कब आपसे भेंट होगी ?

यों देखो तो जमीन बहुतेरी बेकार पड़ी है, न उसका कोई हिसाब है न किताब.

زمین اُسی کے پاس اب رہے گی جو کھیتی خود کرے گا ۔ کتاب اُسی کے پاس رہے گی جو خود پڑھے گا ۔ ہم جانتے ہیں کہ آپ میں سے سب لوگ آج خود کام کرنے کی حالت میں نہیں ہیں ۔ ہم آپ کو مہلت دینے کو تیار ہیں ۔ زیادہ نہیں، چار پانچ برس کی ۔ اِس بیچ آپ اپنے لڑکوں کو تیار کیجئے تاکہ وہ اور کھٹنے والے مزدوروں کے لڑکے ایک ساتھ مل کر کام کریں ۔ پھر ہم آپ سے پوچھنا چاہتے ہیں کہ جب آپ وکالت کرتے ہیں تو زمین رکھ کر کیا کیجئے گا ؟

بابا کی بات کو ٹالتے ہوئے وکیل صاحب نے کہا کہ ابھی لوگ سمجھے نہیں ہیں ۔

کانگریس بھائی کہنے لگے کہ بابا ہم دینے کو راضی بھی ہوں، لیکن گھر کے بزرگ کہاں مانتے ہیں ۔ اپنی ایڑی چوٹی ایک کر کے اُنہوں نے زمین حاصل کی ہے ۔ اب اُسے کیسے جانے دیں ؟

بابا بولے کہ ہم اِس بات میں نہیں پڑیں گے کہ آپ کے پاس زمینیں کس طرح آئیں ؟ ہم پچھلی باتوں میں نہیں جاتے ۔ اُس سے نہ آپ کو فائدہ ہے نہ کسی اور کو ۔ لیکن ہم آپ سے تو یہ جاننا چاہیں گے کہ جب آپ کی پرادیشک کانگریس کمیٹی نے 32 لاکھ ایکڑ کے لئے ایک پرستاؤ پاس کیا، اُسے دھرایا، تب آپ کا کیا فرض ہو جاتا ہے ؟

اِس پر سماج وادی نوجوان بولے کی یوں سرکلر تو آیا ہی کرتے ہیں ۔

بابا نے اُن کی طرف دیکھ کر کہا کہ آپ کے پارٹی والے تو کہتے ہیں کہ بابا نے ہمارا ہی کام اُٹھایا ہے ۔ تو ہم کہتے ہیں کہ ہمارے اُٹھانے پر کیا آپ نے اپنا کام بند کر دیا ؟ آپ لوگ تو بڑے وچتر ہیں ۔ آپ کے نیتا جے پرکاش بابو نے اِس کام کے لئے اپیل کی ۔ لیکن آپ ایسے انویائی ہیں کہ اپنے نیتا کی بات سنی اَن سنی کر دیتے ہیں ۔

گریجویٹ بھائی بولے کہ بابا یہ تو ہوگا ہی ۔ کیونکہ آپ کی اِس مانگ سے تو پہلے اپنے پر ہی ہاتھ صاف کرنا پڑتا ہے ۔

ہاں، بابا نے بڑے زور سے کہا ۔ یہ بات ہے ۔ اگر خود دینا نہیں ہوتا تو اِن کو بھی کانگریس کا پرستاؤ منظور تھا اور اُن کو بھی پرجا پارٹی کا پرستاؤ منظور تھا ۔ یہی ہمارے کام اور دوسرے کے کاموں میں فرق ہے ۔

وکیل صاحب نے کہا کہ اچھا آج تو ہمارا دان پتر قبول کر لیجئے، چھٹا حصہ بعد میں پورا کرینگے ۔

جب آپ چھٹا حصہ دینے کو راضی ہیں تو "شوبھسیہ شیگھرم،" کب دوبارہ آپ کے گاؤں میں ہمارا آنا ہوگا اور کب آپ سے بھینٹ ہوگی ؟

یوں دیکھو تو زمین بہتری بیکار پڑی ہے، نہ اُس کا کوئی حساب ہے نہ کتاب ۔

मेरे यहां यह कोई अदालत नहीं है जहां एक दूसरे की निन्दा की जाये. यह तो प्रेम का सत्संग है जहां हम अपने दिल की बात कहते हैं, अपने अपने दिल का मैल सब ज़ाहिर करते हैं. मैं आपके सामने बहुत सी ऐसी मिसालें पेश कर सकता हूं जिन्होंने छटे की तो बात ही क्या, चौथा हिस्सा दिया है, आधा हिस्सा दिया है और बीसियों ऐसी मिसालें हैं जिन्होंने सब का सब दे दिया है. आप नीचे गिराने वाली मिसालों का ही अनुकरन क्यों करें ?

हमारा निवेदन है कि आज जो हमने दिया है वह क़बूल किया जाये. बाक़ी आगे दिया जायेगा.

बाबा बोले हम चाहते हैं कि आप हमारी बात समझ लें. आप हमें अपने घर में दरिद्रनारायन के प्रतिनिधि के तौर पर जगह दीजिये. अगर आप घर में पांच भाई हैं तो हमें छठा हिस्सा दीजिये, तीन है तो चौथा, सात हैं तो आठवां, अकेले हैं तो बराबर का. लड़के बच्चों का हम शुमार नहीं करते, क्योंकि लड़के बच्चे सभी के होते हैं. यह हमारी धर्म की मांग है.

यह सुनकर वकील साहब ज़रा ख़ामोश हुए और कुछ सोचने लगे. ग्रैजुएट बाबू ने कहा कि हमारा ख़ुद का ही काम नहीं चलता, उधर सरकार भी तंग करने जा रही है.

उनकी बात पर ज़ोर देते हुए वकील साहब कहने लगे कि अभी सिलींग बनने जा रहा है. सिलींग बनने पर आप-को ज़मीन कौन दे देगा ?

बाबा ने कहा यह तो हम जानते हैं. और आपकी अक़्ल सरकारी क़ानून को बेकार बनाने में लगी हुई है. हैदराबाद का क़िस्सा है कि जब हम वहां घूमते थे वहां सरकार सिलींग बनाने की सोचती थी. वह सोचती रही. इस बीच वहां के ज़मींदारों ने अपने लड़के, भाई, भतीजों के नाम ज़मीनें लिखा दीं. अब वहां शायद सौ सवा सौ एकड़ का क़ानून बना है. इसका बनना न बनना बराबर है. आपके बिहार में भी सम्मिलित परिवारों को तोड़ा जा रहा है. घरवाले रिश्तेदारों के नाम से ज़मीनें लिखा रहे हैं. दो साल बाद या जब भी क़ानून आये तब सब ज़मीनें बंटी हुई मिलेंगी और उस क़ानून की एक नहीं चलेगी.

तो इसके यह माने हैं कि सरकार क़ानून फ़िज़ूल में बना रही है.

यह तो आप हमसे ज़्यादा बेहतर जानते होंगे. बाबा के लफ़्ज़ सुन कर सब हंस पड़े. फिर बाबा ने कहा कि हमारी मांग की असलियत आप समझे नहीं, हम तो ज़मीन की मिल-कियत ही मिटा देना चाहते हैं. ज़मीन पर मालकी का दावा करना ग़लत है. ईश्वर के क़ानून के ख़िलाफ़ है. यही बात समझाने के लिये हम गांव गांव घूमते हैं. जैसे हवा, पानी और सूरज की रोशनी तो किसी की मिलकियत नहीं, वैसे ही ज़मीन पर किसी की मिलकियत नहीं रह सकती.

میرے یہاں یہ کوئی عدالت نہیں ہے جہاں ایک دوسرے کی نندا کی جائے. یہ تو پریم کا ست سنگ ہے جہاں ہم اپنی دل کی بات کہتے ہیں اپنے اپنے دل کا میل سب ظاہر کرتے ہیں. میں آپ کے سامنے ایسی بہت سی مثالیں پیش کر سکتا ہوں جنھوں نے چھٹے کی تو بات ہی کیا چوتھا حصہ دیا ہے، آدھا حصہ دیا ہے اور بیسیوں ایسی مثالیں ہیں جنھوں نے سب کا سب دے دیا ہے. آپ نیچے گرانے ہی والی مثالوں کا انوکرن کیوں کریں ؟

ہمارا نویدن ہے کہ آج جو ہم نے دیا ہے وہ قبول کیا جائے. باقی آگے دیا جائے گا.

بابا بولے کہ ہم چاہتے ہیں کہ آپ ہماری بات سمجھ لیں. آپ ہمیں اپنے گھر میں دریدرنرائن کے پرتی ندھی کے طور پر جگہ دیجئے. اگر آپ گھر میں پانچ بھائی ہیں تو ہمیں چھٹا حصہ دیجئے، تین ہیں تو چوتھا، سات ہیں تو آٹھواں، اکیلے ہیں تو برابر کا. لڑکے بچوں کا ہم شمار نہیں کرتے، کیونکہ لڑکے بچے سبھی کے ہوتے ہیں. یہ ہماری دھرم کی مانگ ہے.

یہ سن کر وکیل صاحب ذرا خاموش ہوئے اور کچھ سوچنے لگے. گریجویٹ بابو نے کہا کہ ہمارا خود کا ہی کام نہیں چلتا، ادھر سرکار بھی تنگ کرنے جا رہی ہے.

ان کی بات پر زور دیتے ہوئے وکیل صاحب کہنے لگے کہ ابھی سیلنگ بننے جا رہا ہے. سیلنگ بننے پر آپ کو زمین کون دے دے گا ؟

بابا نے کہا یہ تو ہم جانتے ہیں. اور آپ کی عقل سرکاری قانون کو بیکار بنانے میں لگی ہوئی ہے. حیدرآباد کا قصہ ہے کہ جب ہم وہاں گھومتے تھے وہاں سرکار سیلنگ بنانے کی سوچتی تھی. وہ سوچتی رہی. اس بیچ وہاں کے زمینداروں نے اپنے لڑکے، بھائی، بھتیجوں کے نام زمینیں لکھا دیں. اب وہاں شاید سو سوا سو ایکڑ کا قانون بنا ہے. اس کا بننا نہ بننا برابر ہے. آپ کے بہار میں بھی سملت پریواروں کو توڑا جا رہا ہے. گھر والے رشتہ داروں کے نام سے زمین لکھا رہے ہیں. دو سال بعد یا جب بھی قانون آئے تب سب زمینیں بٹی ہوئی ملیں گی اور اس قانون کی ایک نہیں چلے گی.

تو اس کے یہ معنی ہیں کہ سرکار قانون فضول میں بنا رہی ہے.

یہ تو آپ ہم سے زیادہ بہتر جانتے ہوں گے. بابا کے یہ [illegible] سن کر سب ہنس پڑے. پھر بابا نے کہا کہ ہماری مانگ کی اصلیت آپ سمجھے نہیں. ہم تو زمین کی ملکیت ہی مٹا دینا چاہتے ہیں. زمین پر مالکی کا دعویٰ کرنا غلط ہے. ایشور کے قانون کے خلاف ہے. یہی بات سمجھانے کے لئے ہم گاؤں گاؤں گھومتے ہیں. جیسے ہوا، پانی اور سورج کی روشنی [illegible] کسی کی ملکیت نہیں، ویسے ہی زمین پر کسی کی ملکیت نہیں [illegible]

कि धर्म के चार चरन में से एक चरन, श्रद्धा तो अब भी हमारे देश में बलवान है. लेकिन बाक़ी तीनों—प्रेम, त्याग और श्रम—लुप्त पुप्त हो रहे हैं. इसी वजह से हम अधर्म को धर्म समझने लगे हैं. और आनन्द स्वरूप सृष्ठा, आनन्द स्वरूप सृष्टि होते हुए भी देश में दुख बढ़ा है. इसलिये हमें अपने धर्म को पूरी तौर पर पहचानना चाहिये.

प्रार्थना प्रवचन के बाद बाबा घूमने को निकलने वाले ही थे कि तीसरे पहर वाले भाई उनके पास आ पहुंचे. हाथ जोड़कर उन्होंने कहा कि हम आपसे कुछ कहना चाहते हैं. बाबा बोले कि कहिये, आप तो हमसे मिले भी थे.

जी हां,—उस समय आपके दर्शन किये थे. आपका व्याख्यान सुनने के बाद मैं अब पांचवा हिस्सा पूरा कर देना चाहता हूं. हमारे घर में हम चार हैं, आप पांचवे हो जाते हैं. छः बीघे का दान हम भर चुके हैं. दो बीघे का यह दानपत्र हाज़िर है.

वह दानपत्र उन्होंने बाबा के हाथ में दे दिया. बाबा ने उसे प्रेम पूर्वक स्वीकार किया. हंसते हुए बोले कि हमें उम्मीद है कि अब आप हमारे कार्यकर्ता हो गये. जिस निश्ठा से आप ने हमें दान दिया है आप दूसरों से भी दान हासिल करेंगे. उन भाई ने प्रनाम किया और चले गये. बाबा घूमने को निकल गये.

× × ×

[नवम्बर का महीना—सहरसा का ज़िला—एक छोटा लेकिन बड़ा समृद्ध गांव]

उस गांव की दो हज़ार बीघा ज़मीन में से क़रीब 3/4 दो परिवार में और बाक़ी गांव के दूसरे लोगों के पास थी. उस परिवार वालों में से क़रीब 60 बीघे का दानपत्र भरा गया. बाबा के आदेश के अनुसार वह दानपत्र उनको वापिस कर दिया गया. रात को प्रार्थना के बाद वह भाई लोग बाबा के पास आये. उनमें से एक भाई ग्रेजुएट थे. दूसरे वकील थे. तीसरे कांग्रेस के अच्छे कार्यकर्ता थे. चौथे की प्रजा समाजवादी पार्टी में बड़ी श्रद्धा थी. उन्होंने एक लिखित पत्र बाबा को दिया जिसमें कहा कि हमारा दानपत्र वापस करके इस गांव की जनता का अपमान किया गया है. दूसरे कार्यकर्ता भी मौजूद थे.

बाबा ने कहा कि सबसे पहले हम आप से कहना चाहते हैं कि हम किसी की बदनामी नहीं चाहते. हमें किसी की आबरू गिराना पसन्द नहीं. हम ऐसा काम चाहते हैं कि जिसमें प्रेम भाव पैदा हो और दिल जुड़े.

वकील भाई बोले कि हम भी यह चाहते हैं. लेकिन हमें दुख है कि हमारा दानपत्र वापिस कर दिया गया. मगर दूसरे के दानपत्र जो छठे हिस्से से कम के हैं, वह रख लिये गये हैं.

کہ دھرم کے چارچرن میں سے ایک چرن، شردھا تو اب بھی ہمارے دیش میں بلوان ہے . لیکن باقی تینوں—پریم، تیاگ اور شرم—لپت پلپت ہو رہے ہیں . اِسی وجہ سے ہم دھرم کو ادھرم سمجھنے لگے ہیں . اور آنند سروپ سرشٹھا آنند سروپ سرشٹی ہوتے ہوئے بھی دیش میں دکھ بڑھا ہے . اِس لئے ہمیں اپنے دھرم کو پوری طور پر پہچاننا چاہئے .

پرارتھنا پروچن کے بعد بابا گھومنے کو نکلنے والے ہی تھے کہ تیسرے پہر والے بھائی اُن کے پاس آ پہونچے . ہاتھ جوڑ کر اُنہوں نے کہا کہ ہم آپ سے کچھ کہنا چاہتے ہیں . بابا بولے کہ کہئے، آپ تو ہم سے ملے بھی تھے .

جی ہاں، اُس سمے آپ کے درشن کئے تھے . آپ کا ویاکھیان سننے کے بعد میں اب پانچواں حصہ پورا کردینا چاہتا ہوں . ہمارے گھر میں ہم چار ہیں، آپ پانچویں ہوجاتے ہیں . چھ بیگھے کا دان ہم بھر چکے ہیں . دو بیگھے کا یہ دان پتر حاضر ہے.

وہ دان پتر اُنہوں نے بابا کے ہاتھ میں دے دیا . بابا نے اُسے پریم پوروک سویکار کیا . ہنستے ہوئے بولے کہ ہمیں اُمید ہے کہ آپ ہمارے کاریہ‌کرتا ہوگئے . جس نشٹھا سے آپ نے ہمیں دان دیا ہے آپ دوسروں سے بھی دان حاصل کریں گے . اُن بھائی نے پرنام کیا اور چلے گئے . بابا گھومنے کو نکل گئے .

× × ×

[نومبر کا مہینہ—سہرسا کا ضلع—ایک چھوٹا لیکن بڑا سمردھ گاؤں]

اُس گاؤں کی دو ہزار بیگھا زمین میں سے قریب 3/4 دو پریوار میں اور باقی گاؤں کے دوسرے لوگوں کے پاس تھی . اُس پریوار والوں میں سے قریب 60 بیگھے کا دان پتر بھرا گیا . بابا کے آدیش کے انوسار وہ دان پتر اُن کو واپس کر دیا گیا . رات کو پرارتھنا کے بعد وہ بھائی لوگ بابا کے پاس آئے . اُن میں سے ایک بھائی گریجوئیٹ تھے . دوسرے وکیل تھے . تیسرے کانگریس کے اچھے کاریہ‌کرتا تھے . چوتھے کی پرجا سماج وادی پارٹی میں بڑی شردھا تھی . اُنہوں نے ایک لکھت پتر بابا کو دیا جس میں کہا کہ ہمارا دان پتر واپس کر کے اِس گاؤں کی جنتا کا اپمان کیا گیا ہے . دوسرے کاریہ‌کرتا بھی موجود تھے .

بابا نے کہا کہ سب سے پہلے ہم آپ سے کہنا چاہتے ہیں کہ ہم کسی کی بدنامی نہیں چاہتے . ہمیں کسی کی آبرو گرانا پسند نہیں . ہم ایسا کام چاہتے ہیں کہ جس میں پریم بھاؤ پیدا ہو اور دل جڑیں .

وکیل بھائی بولے کہ ہم بھی یہ چاہتے ہیں . لیکن ہمیں دکھ ہے کہ ہمارا دان پتر ہمیں واپس کردیا گیا . مگر دوسروں کے دان پتر جو چھٹے حصے سے کم کے ہیں، وہ رکھ لئے گئے ہیں .

बड़े भाई ने कहा कि सवा बीघा दे चुके हैं, डेढ़ ले लीजिये.

बाबा मुस्कराये और कहा कि यह तो आपने सब्जी का सा बाजार बना दिया. इस पर सभी हंस पड़े.

कार्यकर्ता भाई ने कहा कि अब यह डेढ़ दो क्या करते हैं? छठा हिस्सा पूरा कीजिये और जनता जनार्दन का आशीर्वाद हासिल कीजिये.

उन भाई ने कहा कि अच्छा दो बीघा लेकर खतम कीजिये. उन्होंने दानपत्र बाबा के आगे बढ़ाया और उठने लगे.

बाबा ने दानपत्र उन्हीं को लौटाते हुये कहा कि आप कुशल सौदागर दिखाई पड़ते है. लेकिन हमें तो यह आपका सत्संग मिला है. हम ऐसी इसमें कोई बात नहीं करना चाहते हैं जो आपकी शान के खिलाफ़ हो.

कमरे में फिर खामोशी रही. कार्यकर्ता भाई बोले कि आप श्रीमान हैं और अब आधे बीघे की बात ही क्या है? लेकिन वह दोनों टस से मस नहीं हुये. पर उनके चेहरे पर बहुत उदासी थी. दुख से गला भरा हुआ था. बाबा भी आंखें मून्द कर मानो समाधिस्थ बैठे हों.

थोड़ी देर बाद बड़े भाई ने कहा कि बाबा आप दानपत्र नहीं लेते हैं, हम घर क्या मुंह लेकर जायेंगे? और भरी हुई आवाज से कहने लगे कि अब नहीं सहा जाता है. आप यह दो बीघे की भेंट ले ही लीजिये.

बाबा शान्त रहे और कुछ नहीं बोले. कार्यकर्ता भाई ने कहा कि अब जब आप इतने दुखी हैं तो जरा उन दुखियों का ध्यान कीजिये जिनका कोई पूछनहार नहीं.

बड़े भाई ने एक हिचकी सी ली और आंखों के तले कपड़े से मोती की बूंद पोंछते हुए कहा कि अच्छा भगवन छठा हिस्सा आपको समर्पित है.

बाबा ने आंखें खोलीं और कहा कि ईश्वर आपको बल दे और दीन दुखियों की सेवा की सतत प्रेरणा दे.

इस प्रकार बड़े भाई ने, फिर छोटे भाई ने अपने अपने छटे हिस्से का दान कर दिया और बाबा से विदा ली.

❀ ❀ ❀

क़रीब एक महीने बाद बाबा दरभंगा जिले के उत्तरी हिस्से में घूम रहे थे. चालीस एकड़वाले एक श्रीमान ने छै एकड़ का दानपत्र भरा. तीन बजे के क़रीब बाबा से मिलने आये. कहा कि मैंने आपका गीता प्रवचन पढ़ा है. मुझे उससे बहुत प्रेरणा हुई है. आज मैंने अपने लगभग छठे हिस्से का दानपत्र भरकर आपके कार्यालय में दे दिया है. बाबा ने जय जय कहकर उनके प्रणाम स्वीकार किये. साढ़े तीन बजे प्रार्थना हुई. उसके बाद बाबा का प्रवचन हुआ. बाबा ने उस प्रवचन में चतुरपाद धर्म की व्याख्या की. उन्होंने कहा

بڑے بھائی نے کہا کہ سوا بیگھا دے چکے ہیں، ڈیڑھ لے لیجئے۔

بابا مسکرائے اور کہا کہ یہ تو آپ نے سبزی کا سا بازار بنا دیا۔ اس پر سبھی ہنس پڑے۔

کاریہ کرتا بھائی نے کہا کہ آپ یہ ڈیڑھ دو کیا کرتے ہیں؟ چھٹا حصہ پورا کیجئے اور جنتا جناردن کا آشیرواد حاصل کیجئے۔

اُن بھائی نے کہا کہ اچھا دو بیگھا لیکر ختم کیجئے۔ انہوں نے دان پتر بابا کے آگے بڑھایا اور اٹھنے لگے۔

بابا نے دان پتر انہیں لوٹاتے ہوئے کہا کہ آپ کشل سوداگر دکھائی پڑتے ہیں۔ لیکن ہمیں تو یہ آپ کا ست سنگ ملا ہے۔ ہم ایسی اس میں کوئی بات نہیں کرنا چاہتے ہیں جو آپ کی شان کے خلاف ہو۔

کمرے میں پھر خاموشی رہی۔ کاریہ کرتا بھائی بولے کہ آپ شریمان ہیں اور اب آدھے بیگھے کی بات ہی کیا ہے؟ لیکن وہ دونوں ٹس سے مس نہیں ہوئے۔ پر اُن کے چہرے پر اداسی تھی۔ دکھ سے گلا بھرا ہوا تھا۔ بابا بھی آنکھیں موند کر مانو سمادھست بیٹھے ہوں۔

تھوڑی دیر بعد بڑے بھائی نے کہا کہ بابا آپ دان پتر نہیں لیتے ہیں، ہم گھر کیا منہ لیکر جائیں گے؟ اور بھری ہوئی آواز سے کہنے لگے کہ اب نہیں سہا جاتا ہے۔ آپ یہ دو بیگھے کی بھینٹ لے ہی لیجئے۔

بابا شانت رہے اور کچھ نہیں بولے۔ کاریہ کرتا بھائی نے کہا کہ اب جب آپ اتنے دکھی ہیں تو ذرا اُن دکھیوں کا دھیان کیجئے جن کا کوئی پوچھن ہار نہیں۔

چھوٹے بھائی نے ایک ہچکی سی لی اور آنکھوں تلے کپڑے سے موتی کی بوند پونچھتے ہوئے کہا کہ اچھا بھگون چھٹا حصہ آپ کو سمرپت ہے۔

بابا نے آنکھیں کھولیں اور کہا کہ ایشور آپ کو بل دے اور دین دکھیوں کی سیوا کی ستت پریرنا دے۔

اس پرکار بڑے بھائی نے پھر چھوٹے بھائی نے اپنے اپنے چھٹے حصے کا دان کر دیا اور بابا سے بدا لی۔

❀ ❀ ❀

قریب ایک مہینے بعد بابا دربھنگہ ضلع کے اُتری حصہ میں گھوم رہے تھے۔ چالیس ایکڑ والے ایک شریمان نے چھ ایکڑ کا دان پتر بھرا۔ تین بجے کے قریب بابا سے ملنے آئے۔ کہا کہ میں نے آپ کا گیتا پروچن پڑھا ہے۔ مجھے اُس سے بہت پریرنا ہوئی ہے۔ آج میں نے اپنے لگ بھگ چھٹے حصے کا دان پتر بھر کر آپ کے کاریالیہ میں دے دیا ہے۔ بابا نے جے جے کہہ کر اُن کے پرنام سویکار کئے۔ ساڑھے تین بجے پرارتھنا ہوئی۔ اُس کے بعد بابا کا پروچن ہوا۔ بابا نے اُس پروچن میں چتوشپاد دھرم کی ویاکھیا کی۔ اُنہوں نے کہا

लोग यही कहेंगे कि फलाने बाबू साहब ने बाबा को ठग लिया. 15 बीघा जमीन थी, उसमें से सिर्फ सवा एकड़ दिया. हम नहीं चाहते कि इस तरह आपकी चर्चा हो. आपकी बेइज्जती हमें मंजूर नहीं. हम चाहते हैं कि आप इस पर सोचें और फिर अपनी हस्ती के मुताबिक़ दान दें.

थोड़ी देर तक कमरे में खामोशी रही. वह दोनों भाई, दूसरे श्रीमान और कार्यकर्ता सभी चुप थे. तब बाबा ने उन दोनों भाइयों की तरफ़ देखकर कहा कि पहले यह बताइये कि आप दोनों अलग अलग क्यों हो गये ?

उन भाइयों के चेहरे पर मानो हवाई सी उड़ गई. धीमे स्वर में एक ने कहा कि घर में नहीं बनती थी.

बाबा बोले कि हम जानते हैं कि आजकल ऐसा बहुत होता है, लेकिन जब आप दोनों का दिल एक था तो अपने घर में भी समझा सकते थे. यह कुनबा तोड़ने से क्या फ़ायदा ?

दोनों भाइयों की आंखों से बस आंसू गिरने की ही कसर रह गई. कमरे में सन्नाटा और भी बढ़ गया.

उस सन्नाटे को बेधते हुए बाबा ने बड़े भाई से पूछा कि आप घर में कितने प्राणी हैं ?

मैं, मेरी स्त्री, और एक लड़का जिसकी उम्र 16 बरस की है.

तो हम आपके घर में चौथे हो जाते हैं. इसलिये हमें चौथा हिस्सा मिलना चाहिये. क्या आप हमें अपने घर में भाई के तौर पर नहीं लेंगे ?

उन भाई ने हाथ जोड़कर सिर झुकाया और कहा कि इससे कौन इनकार करेगा ? लेकिन मोह नहीं छुटता. इसलिये इस वक़्त इतना स्वीकार करें, फिर आगे देखा जायेगा.

बाबा बोले कि हमें तो अपना हक़ चाहिये. अगर आप हमें अपने घर में जगह नहीं देते तो हम जबरदस्ती कैसे कर सकते हैं ?

फिर वे दूसरे भाई की तरफ़ मुख़ातिब हुये और पूछा कि आपके घर में कितने लोग हैं ?

मैं अकेला ही हूं.

तब तो आप और हम दो भाई हो जाते हैं और हमें आधा हिस्सा मिलना चाहिये.

बड़े भाई की तरफ़ इशारा करते हुये छोटे ने जवाब दिया कि जो ये देंगे वही हम देंगे.

बाबा ने कहा बहुत अच्छी बात है. हम चाहते हैं कि आप दोनों एक हो जाइये. फिर अपनी तीस बीघा जमीन में से हमें पांचवां हिस्सा दे दीजिये.

यह सुनकर दोनों भाइयों की आंखें नीची हो गईं और कुछ नहीं बोले. बाबा ने कहा कि हमने आपके सामने इन्साफ़ की बात रख दी. अब आपको जैसा मंजूर हो करें.

لوگ یہی کہیں گے کہ فلانے بابو صاحب نے بابا کو ٹھگ لیا۔ 15 بیگھا زمین تھی، اس میں سے صرف سوا ایکڑ دیا۔ ہم نہیں چاہتے کہ اس طرح آپ کی چرچا ہو۔ آپ کی بےعزتی ہمیں منظور نہیں۔ ہم چاہتے ہیں کہ آپ اس پر سوچیں اور پھر اپنی ہستی کے مطابق دان دیں۔

تھوڑی دیر تک کمرے میں خاموشی رہی۔ وہ دونوں بھائی، دوسرے شریمان اور کاریہ‌کرتا سب ہی چپ تھے۔ تب بابا نے ان دونوں بھائیوں کی طرف دیکھ کر کہا کہ پہلے یہ بتائیے کہ آپ دونوں الگ الگ کیوں ہوگئے؟

ان بھائیوں کے چہرے پر ہوائی سی اڑ گئی۔ دھیمے سور میں ایک نے کہا کہ گھر میں نہیں بنتی تھی۔

بابا بولے کہ ہم جانتے ہیں کہ آجکل ایسا بہت ہوتا ہے۔ لیکن جب آپ دونوں کا دل ایک تھا تو اپنے گھر میں بھی سمجھا سکتے تھے۔ یہ کنبہ توڑنے سے کیا فائدہ؟

دونوں بھائیوں کی آنکھوں سے بس آنسو گرنے کی ہی کسر رہ گئی۔ کمرے میں سناٹا اور بھی بڑھ گیا۔

اس سناٹے کو بیدھتے ہوئے بابا نے بڑے بھائی سے پوچھا کہ آپ گھر میں کتنے پرانی ہیں؟

میں، میری استری اور ایک لڑکا جس کی عمر 16 برس کی ہے۔

تو ہم آپ کے گھر میں چوتھے ہوجاتے ہیں۔ اس لئے ہمیں چوتھا حصہ ملنا چاہئے۔ کیا آپ ہمیں اپنے گھر میں بھائی کے طور پر نہیں لینگے؟

ان بھائی نے ہاتھ جوڑکر سر جھکایا اور کہا کہ اس سے کون انکار کریگا؟ لیکن موہ نہیں چھٹتا۔ اس لئے اس وقت اتنا سویکار کریں، پھر آگے دیکھا جائیگا۔

بابا بولے کہ ہمیں تو اپنا حق چاہئے۔ اگر آپ ہمیں اپنے گھر میں جگہ نہیں دیتے تو ہم زبردستی کیسے کرسکتے ہیں؟

پھر وے دوسرے بھائی کی طرف مخاطب ہوئے اور پوچھا کہ آپ کے گھر میں کتنے لوگ ہیں؟

میں اکیلا ہی ہوں۔

تب تو آپ اور ہم دو بھائی ہوجاتے ہیں اور ہمیں آدھا حصہ ملنا چاہئے۔

بڑے بھائی کی طرف اشارہ کرتے ہوئے چھوٹے نے جواب دیا کہ جو یہ دینگے وہی ہم دینگے۔

بابا نے کہا کہ بہت اچھی بات ہے۔ ہم چاہتے ہیں کہ آپ دونوں ایک ہوجائیے۔ پھر اپنی تیس بیگھا زمین میں سے ہمیں پانچواں حصہ دیدیجئے۔

یہ سنکر دونوں بھائیوں کی آنکھیں نیچی ہوگئیں اور کچھ نہیں بولے۔ بابا نے کہا کہ ہم نے آپ کے آگے انصاف کی بات رکھ دی۔ اب آپ کو جیسا منظور ہو کریں۔

श्रीमान ने एक नाम पेश किया. दूसरी तरफ़ वालों को वह मंजूर था. वह भाई भी वहीं बैठे थे. बाबा ने उनसे कहा कि जब दोनों पक्षवाले आपको पसन्द करते हैं तो हमें कोई ऐतराज नहीं. आप इस मामले की जांच करें और जब यह फ़ैसला आप देंगे कि इन भाई (श्रीमान) ने अन्याय नहीं किया है तभी इनका दानपत्र क़बूल होगा. फ़िलहाल इनका दानपत्र आप अपने पास सम्भाल कर रख लीजिये.

वह दानपत्र उन भाई ने पंच के हवाले कर दिया, मानो सिर पर लदा हुआ मनों बोझ उतर गया.

❀ ❀ ❀

[सितम्बर का महीना—मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले का एक गांव]

सुबह के दस बजे के क़रीब एक कार्यकर्ता ने डरते डरते बाबा के सामने पांच बीघा जमीन का एक दानपत्र रखा. दाता के पास 100 बीघा जमीन थी. उस भाई ने पूछा कि इस पर क्या आज्ञा है ?

पल भर के लिये बाबा शान्त रहे. फिर वह दानपत्र ले लिया. अपनी क़लम उठाई. उस दानपत्र के पीछे यह लिखा —

"यह दान मालिक के पास जो जमीन है उस हिसाब से बहुत ही कम है. इसलिये अस्वीकृत किया जाता है.

—विनोबा"

यह लिख कर वह दानपत्र उन भाई के हवाले कर दिया. वह उसे लेकर लौट गए और दाता के पास पहुंचा दिया. हमारे कैम्प में एक सनसनी सी फैल गई कि बाबा ने आज से दानपत्र वापिस करना शुरू कर दिया.

दूसरे दिन 15-15 बीघा रखने वाले दो भाइयों ने सवा-सवा बीघे के दानपत्र भरे. वह दानपत्र वह दोनों भाई खुद ही लेकर पड़ाव पर आए थे. कार्यकर्ता को शंका उठी और उन्होंने दोनों दाताओं से कह दिया कि आपके पास 15-15 बीघा जमीन है. ईश्वर की आपके ऊपर कृपा भी है. इसलिये हम आपसे ज्यादा की आशा करते हैं. छटे हिस्से से कम लेने से हम मजबूर हैं. और वह दानपत्र वापिस कर दिये. इस तरह के कई एक मामले और थे. उन दाताओं को बड़ी तकलीफ़ हुई कि उनके दानपत्र वापिस क्यों कर दिये गए. उनकी भेंट क्यों ठुकरा दी गई. उन्होंने इच्छा ज़ाहिर की कि हम बाबा से मिलना चाहते हैं. दो बजे का समय तय हुआ. कई श्रीमान लोगों से बाबा मिले.

उन दो भाइयों में से छोटे ने कहा कि महाराज हमने फूल पत्ती आपकी सेवा में अर्पित की थी. लेकिन हमें बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि वह स्वीकार नहीं की गई. बाबा ने कहा कि हमें आपसे ज्यादा तकलीफ़ है. लेकिन हम आपसे कहना चाहते हैं कि अगर हम आपकी यह भेंट मंजूर कर लेते हैं; आपका यह प्रेम का दान रख लेते हैं तो

شریمان نے ایک نام پیش کیا۔ دوسری طرف والوں کو وہ منظور تھا۔ وہ بھائی بھی وہیں بیٹھے تھے۔ بابا نے اُن سے کہا کہ جب دونوں پکش والے آپ کو پسند کرتے ہیں تو ہمیں کوئی اعتراض نہیں۔ آپ اِس معاملے کی جانچ کر لیں اور جب یہ فیصلہ آپ دیں گے کہ اِن بھائی (شریمان) نے انیائے نہیں کیا ہے تب ہی اِن کا دان پتر قبول ہوگا۔ فی الحال اِن کا دان پتر آپ اپنے پاس سنبھال کر رکھ لیجئے۔

وہ دان پتر اُن بھائی نے پنچ کے حوالے کر دیا، مانو سر پر لدا ہوا منوں بوجھ اُتر گیا۔

❀ ❀ ❀

[ستمبر کا مہینہ—مظفرپور ضلع کا ایک گاؤں]

صبح کے دس بجے کے قریب ایک کاریہ‌کرتا نے ڈرتے ڈرتے بابا کے سامنے پانچ بیگھا زمین کا ایک دان پتر رکھا۔ داتا کے پاس سو بیگھا زمین تھی۔ اُس بھائی نے پوچھا کہ اِس پر کیا آگیاں ہے؟

پل بھر کے لئے بابا شانت رہے۔ پھر وہ دان پتر لے لیا۔ اپنی قلم اُٹھائی۔ اُس دان پتر کے پیچھے یہ لکھا—

"یہ دان مالک کے پاس جو زمین ہے بہت ہی کم ہے اِس لئے اسویکرت کیا جاتا ہے۔

—ونوبا"

یہ لکھ کر وہ دان پتر اُن بھائی کے حوالے کر دیا۔ وہ اُسے لے کر لوٹ گئے اور داتا کے پاس پہونچا دیا۔ ہمارے کیمپ میں ایک سنسنی سی پھیل گئی کہ بابا نے آج سے دان پتر واپس کرنا شروع کر دیا۔

دوسرے دن 15-15 بیگھا رکھنے والے دو بھائیوں نے سوا—سوا بیگھے کے دان پتر بھرے۔ وہ دان پتر وہ دونوں بھائی خود ہی لے کر پڑاؤ پر آئے تھے۔ کاریہ‌کرتا کو شنکا اٹھی۔ اُنھوں نے دونوں داتاؤں سے کہہ دیا کہ آپ کے پاس 15-15 بیگھا زمین ہے۔ ایشور کی آپ کے اوپر کرپا بھی ہے۔ اِس لئے ہم آپ سے زیادہ جائداد کی آشا کرتے ہیں۔ چھٹے حصے سے کم لینے سے ہم مجبور ہیں۔ اور وہ دان پتر واپس کر دیئے۔ اِس طرح کے کئی ایک اور معاملے تھے۔ اِن داتاؤں کو بڑی تکلیف ہوئی کہ اُن کے دان پتر کیوں واپس کر دیئے گئے۔ اُن کی بھینٹ کیوں ٹھکرا دی گئی۔ اُنھوں نے اِچھا ظاہر کی کہ ہم بابا سے ملنا چاہتے ہیں۔ دو بجے کا سمے طے ہوا۔ کئی شریمان لوگوں سے بابا ملے۔

اُن دو بھائیوں میں سے چھوٹے نے کہا کہ مہاراج ہم نے پھول پتی آپ کی سیوا میں ارپت کی تھی۔ لیکن ہمیں بڑے دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ وہ سویکار نہیں کی گئی۔ بابا نے کہا کہ ہمیں آپ سے زیادہ تکلیف ہے۔ ہم آپ سے کہنا چاہتے ہیں کہ اگر ہم آپ کی یہ بھینٹ منظور کر لیتے ہیں آپ کا یہ پریم کا دان رکھ لیتے ہیں تو

और बाबा को दानपत्र पेश करने लगे. बाबा ने कहा कि हमें मालूम हुआ है कि आपने कुछ बेदखलियां की हैं. ऐसी हालत में हम आपसे दानपत्र कैसे लें? वह कहने लगे कि नहीं हुजूर, यह सब गलत बात है. आप किसी से भी दरियाफ्त करा सकते हैं. बाबा ने कहा कि अब तो हम पड़ाव पर चल ही रहे हैं, यहां रास्ते में किस से पूछें? इसलिये पड़ाव पर जाकर ही पूछ ताछ की जायेगी, और उसके बाद ही हम आपका दानपत्र ले सकेंगे.

दस बजे के क़रीब हम लोग हथौड़ी पहुंचे. नाव से उतरकर बाबा ने खुश्की पर क़दम रखा ही था कि वह भाई कहने लगे—सरकार! मेरा दानपत्र ले लिया जाये. बाबा ने उनके कंधे पर हाथ रखकर कहा कि देखिये हमने आपसे कह दिया कि आप के मामले में जानकारी हासिल करनी होगी. उसके बग़ैर आपका दानपत्र हम लेने से मजबूर हैं.

तो जब हुक्म हो मैं आपके पास अपनी बात बताने आ जाऊं.

हम चाहते हैं कि जिनको आपके खिलाफ़ शिकायत है वह भी मौजूद रहें. इसलिये आप दोनों फ़रीक़ शाम को साढ़े छै बजे प्रार्थना के बाद हमसे मिलें.

जिन भाई ने उन श्रीमान के बारे में शिकायत की थी उनसे भी यह कह दिया गया.

दिन में कई बार हमने देखा कि वह श्रीमान अपना दानपत्र लिए हुए इधर उधर घूमते थे. हमने उनको समझाया कि आप धीरज से काम लें, घबड़ाने की कोई बात नहीं. शाम को तो बाबा के सामने सब बात चीत हो ही जायेगी.

किसी तरह दिन बीता और शाम को साढ़े छै बजने आये. दोनों तरफ़ वाले भाई बाबा के पास पहुंच गये. बाबा ने कहा कि यह कोई क़ानून की अदालत नहीं है जिसमें एक दूसरे के खिलाफ़ आप शिकायत करें. यह प्रेम की सभा है, प्रेम की अदालत है जिसमें दोनों पक्षों को अपनी अपनी तरफ़ से जो ग़लती हुई हो उसे क़ुबूल करना है.

वह श्रीमान कहने लगे कि बाबा मेरे खिलाफ़ आरोप ग़लत है. बाबा ने उनको टोकते हुए कहा कि हमने आपसे पहले ही कह दिया कि आपको सिर्फ़ अपनी ग़लती जो आपने की है वह सच्चे दिल से बता देनी है.

लेकिन दोनों तरफ़ वाले एक दूसरे की ही शिकायत करते थे. बाबा ने कहा कि तब तो आप का इन्साफ़ हम नहीं कर सकते. आखिर सभा का रंग बदला और दोनों ने अपनी अपनी करनी बयान की. यह सुनने के बाद बाबा ने कहा कि इसमें दोनों पक्षों की तरफ़ से ही थोड़ी थोड़ी ग़लती हुई है. हम चाहते हैं कि आप किसी आदमी को पंच मुक़र्रर कर दें जो खास मौक़े पर जाकर पूरी तहक़ीक़ात कर ले. उसका फ़ैसला आप दोनों को मान्य होना चाहिये.

اور بابا کو دان پتر پیش کرنے لگے۔ بابا نے کہا کہ ہمیں معلوم ہوا ہے کہ آپ نے کچھ بیدخلیاں کی ہیں۔ ایسی حالت میں ہم آپ سے دان پتر کیسے لیں؟ وہ کہنے لگے کہ نہیں حضور، یہ سب غلط بات ہے۔ آپ کسی سے بھی دریافت کرا سکتے ہیں۔ بابا نے کہا کہ اب تو ہم پڑاؤ پر چل ہی رہے ہیں، یہاں راستے میں کس سے پوچھیں؟ اس لئے پڑاؤ پر آکر ہی پوچھ تاچھ کی جائے گی، اور اس کے بعد ہی ہم آپ کا دان پتر لے سکیں گے۔

دس بجے کے قریب ہم لوگ ہتھوڑی پہونچے۔ ناؤ سے اتر کر بابا نے خشکی پر قدم رکھا ہی تھا کہ وہ بھائی کہنے لگے——سرکار! میرا دان پتر لے لیا جائے۔ بابا نے ان کے کندھے پر ہاتھ رکھ کر کہا کہ دیکھئے ہم نے آپ سے کہہ دیا کہ آپ کے معاملے میں جانکاری حاصل کرنی ہوگی۔ اس کے بغیر آپ کا دان پتر ہم لینے سے مجبور ہیں۔

تو جب حکم ہو میں آپ کے پاس اپنی بات بتانے آجاؤں۔

ہم چاہتے ہیں کہ جن کو آپ کے خلاف شکایت ہے وہ بھی موجود رہیں۔ اس لئے آپ دونوں فریق شام کو ساڑھے چھ بجے پرارتھنا کے بعد ہم سے ملیں۔

جن بھائی نے ان شریمان کے بارے میں شکایت کی تھی ان سے بھی یہ کہہ دیا گیا۔

دن میں کئی بار ہم نے دیکھا کہ وہ شریمان اپنا دان پتر لئے ہوئے ادھر ادھر گھومتے تھے۔ ہم نے ان کو سمجھایا کہ آپ دھیرج سے کام لیں، گھبرانے کی کوئی بات نہیں۔ شام کو تو بابا کے سامنے سب بات چیت ہو ہی جائیگی۔

کسی طرح دن بیتا اور شام کو ساڑھے چھ بجنے آئے۔ دونوں طرف والے بھائی بابا کے پاس پہونچ گئے۔ بابا نے کہا کہ یہ کوئی قانون کی عدالت نہیں ہے جس میں ایک دوسرے کے خلاف آپ شکایت کریں۔ یہ پریم کی سبھا ہے، پریم کی عدالت ہے جس میں دونوں پکشوں کو اپنی اپنی طرف سے جو غلطی ہوئی ہو اسے قبول کرنا ہے۔

وہ شریمان کہنے لگے کہ بابا میرے خلاف آروپ غلط ہے۔ بابا نے ان کو ٹوکتے ہوئے کہا کہ ہم نے آپ سے پہلے ہی کہہ دیا کہ آپ کو صرف اپنی غلطی جو اپنے کی ہے وہ سچے دل سے بتا دینی ہے۔

لیکن دونوں طرف والے ایک دوسرے کی ہی شکایت کرتے تھے۔ بابا نے کہا تب تو آپ کا انصاف ہم نہیں کر سکتے۔ آخر سبھا کا رنگ بدلا اور دونوں نے اپنی اپنی کرنی بیان کی۔ یہ سننے کے بعد بابا نے کہا کہ اس میں دونوں پکشوں کی طرف سے ہی تھوڑی تھوڑی غلطی ہوئی ہے۔ ہم چاہتے ہیں کہ آپ کسی آدمی کو پنچ مقرر کر لیں جو خاص موقع پر جا کر پوری تحقیقات کر لے۔ اسی کا فیصلہ آپ دونوں کو ماننا ہونا چاہئے۔

बिहार के दिल की गहराई में

(लेखक—सुरेश रामभाई)

14 सितम्बर सन 1952 को सन्त विनोबा ने बिहार प्रदेश में भूदान-यज्ञ का मंत्र लेकर प्रवेश किया और आने वाली पहली जनवरी 1955 को वह बिहार से बिदा होकर बंगाल में प्रवेश करेंगे. बंगाल में 25 दिन बिताने के बाद उड़ीसा की भूमि पर क़दम रखेंगे. इस तरह बिहार में उनका प्रवास दो साल और साढ़े तीन महीने का हो रहा है. शायद ही आधुनिक इतिहास में कोई ऐसी मिसालें मिलें जब किसी भारत वासी ने बिहार में इस तरह पैदल घूम घूम कर युग धर्म का सन्देश सुनाया हो. हमें याद आ रही है कि बुद्ध भगवान की और महावीर स्वामी की जिन्होंने बिहार में दिव्य ज्योति का साक्षात्कार किया था और फिर अपने धर्म का प्रचार किया. उनके बाद जगत गुरू शंकराचार्य सुदूर केरल से आये और अद्वैत ज्ञान का डङ्का बजाया. लेकिन उनके बाद से अब तक, खासकर विज्ञान की प्रगति के इस ज़माने में, इस तरह निरन्तर घूम घूम कर सतत प्रचार करने की दूसरी मिसाल नहीं मिलती. इसका बिहार के मानस पर अजीब ग़रीब असर पड़ा है. लोक मानस के अन्दर बहुत गहराई तक वह पहुंच गया है. किसी भी आंकड़े से इसकी पैमाइश नहीं की जा सकती. लेकिन कुछ दिलदार और अनोखी घटनायें पिछले छै महीने में ऐसी हुई हैं जिससे उसका कुछ अन्दाज़ा किया जा सकता है. वैसे सच तो यह है कि इसका पूरा प्रभाव तो बरसों के बाद ही मालूम होगा.

अगस्त का महीना था और बाबा जिले के समस्तीपुर सबडिवीज़न के बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में घूम रहे थे. ऐसे ऐसे इलाक़ों में जाना हुआ जहां कोई भी सरकारी पदाधिकारी या सार्वजनिक कार्यकर्ता नहीं पहुंचा था. कोसी की भयानक बाढ़ ने जो तूफ़ान ढाया था उसके मुक़ाबले की चीज़ पिछले पचास साठ बरस में नहीं हुई थी. हमारी यात्रा कभी पैदल होती थी, कभी नाव में. अक्सर तो पानी में घूमना पड़ता था. एक दिन सुबह के समय नाव में बैठे हुये बाबा हथौड़ी नाम के मुक़ाम को जा रहे थे. रास्ते में एक गांव पड़ा. वहां के एक श्रीमान भाई दानपत्र देना चाहते थे. हमारी नाव में एक दूसरे भाई भी बैठे थे. उन्होंने बताया कि इन ज़मीन्दार ने अपने इलाक़े में बहुत ज़्यादती की है. कई किसानों को बेदख़ल किया है. कई किसानों के घर उजाड़ डाले हैं. बाबा यह चुपचाप सुनते रहे. थोड़ी देर बाद अपनी नाव में वह श्रीमान भी हमारी नाव के पास आ पहुंचे. बड़े उतावलेपन के साथ हमारी नाव में आ गये

بہار کے دل کی گہرائی میں

(لیکھک—سریش رام بھائی)

14 ستمبر سن 1952 کو سنت ونوبا نے بہار پردیش میں بھودان-یگیہ کا منتر لیکر پرویش کیا اور آنے والی پہلی جنوری 1955 کو وہ بہار سے بدا ہوکر بنگال میں پرویش کرینگے۔ بنگال میں 25 دن بتانے کے بعد اُڑیسہ کی بھومی پر قدم رکھینگے۔ اِس طرح بہار میں اُن کا پرباس دو سال اور ساڑھے تین مہینے کا ہو رہا ہے۔ شاید ہی آدھونک اِتہاس میں کوئی ایسی مثال ملے جب کسی بھارت واسی نے بہار میں اِس طرح پیدل گھوم گھوم کر یگ دھرم کا سندیش سنایا ہو۔ ہمیں یاد آرہی ہے کہ بدھ بھگوان کی اور مہاویر سوامی کی جنھوں نے بہار میں دویہ جیوت ساکشاتکار کیا تھا اور پھر اپنے دھرم کا پرچار کیا۔ اُن کے بعد جگت گرو شنکراچاریہ سدور کیرل سے آئے اور ادویت گیان کا ڈنکا بجایا۔ لیکن اُن کے بعد سے اب تک، خاص کر وگیان کی پرگتی کے اِس زمانے میں، اِس طرح نرنتر گھوم گھوم کر سنت پرچار کرنے کی دوسری مثال نہیں ملتی۔ اِس کا بہار کے مانس پر عجیب غریب اثر پڑا ہے۔ لوک مانس کے اندر بہت گہرائی تک وہ پہونچ گیا ہے۔ کسی بھی آنکڑے سے اس کی پیمائش نہیں کی جاسکتی۔ لیکن کچھ دلدار اور انوکھی گھٹنائیں پچھلے چھ مہینے میں ایسی ہوئی ہیں جس سے اس کا کچھ اندازہ کیا جاسکتا ہے۔ ویسے سچ تو یہ ہے کہ اِس کا پورا پربھاؤ تو برسوں کے بعد ہی معلوم ہوگا۔

اگست کا مہینہ تھا اور بابا دربھنگہ ضلع کے سمستی پور سب ڈویژن کے باڑھ پیڑت چھیتر میں گھوم رہے تھے۔ ایسے ایسے علاقوں میں جانا ہوا جہاں کوئی بھی سرکاری پدادھیکاری یا سارونجنک کاریہ کرتا نہیں پہونچا تھا۔ کوسی کی بھیانک باڑھ نے جو طوفان ڈھایا تھا اس کے مقابلے کی چیز پچھلے پچاس ساٹھ برس میں نہیں ہوئی تھی۔ ہماری یاترا کبھی پیدل ہوتی تھی کبھی ناؤ میں۔ اکثر تو پانی میں گھومنا پڑتا تھا۔ ایک دن صبح کے سمے ناؤ میں بیٹھے ہوئے بابا ہتھوڑی نام کے مقام کو جا رہے تھے۔ راستے میں ایک گاؤں پڑا۔ وہاں کے ایک شریمان بھائی دان پتر دینا چاہتے تھے۔ ہماری ناؤ میں ایک دوسرے بھائی بھی بیٹھے تھے۔ انہوں نے بتایا کہ اِن زمیندار نے اپنے علاقے میں بہت زیادتی کی ہے۔ کئی کسانوں کو بیدخل کیا ہے۔ کئی کسانوں کے گھر اُجاڑ ڈالے ہیں۔ بابا یہ چپ چاپ سنتے رہے۔ تھوڑی دیر بعد اپنی ناؤ میں وہ شریمان بھی ہمارے ناؤ کے پاس آپہونچے۔ بڑی اتاولےپن کے ساتھ ہماری ناؤ میں آگئے

करता हुआ वहां से निकला. इस शोर शर को देखकर वह बहुत बिगड़ा और कहने लगा —

"अव्वल तो इस तरह का सारा काम बड़ी मूर्खता का है. किसी बुद्धिमान नीतिज्ञ ने कहा है कि जो देश हमेशा शोर व गुल मचाते रहते हैं उनमें शान्ति नहीं रह सकती. यह या तो विदेशियों की बेजा मदाखलत और शरारत है और या देश के अन्दर घरेलू जंग है और या कम से कम चाय के प्याले में तूफ़ान है. जो हो, बहुत ही बेवक़ूफ़ी की बात है!

"दूसरी बात यह है कि बहुत से लोगों के इस तरह एक साथ मिलकर काम करने की यह आदत बड़ी गन्दी आदत है! मालूम होता है तुम्हारी सबकी गाड़ी पटरी से उतर गई है. सब शान्ति भंग हो गई है. शहर के सब लोग बाग़ी हो गए हैं. कोई ऐसा नहीं है जो सब की नुमाइन्दगी कर सके! मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता."

वह सांप ख़ुद अपने को एक अन्तर्राष्ट्रीय पुलिसवाला समझता था. राजनीति के अलावा वह समझता था कि धर्म और इंजील का प्रचार करना भी उसी का फ़र्ज़ है. वह फ़ौरन उस दरख़्त पर चढ़ गया. उसने तय कर लिया कि सबसे पहले इस छत्ते को तोड़ दिया जाय जो शहद की मक्खियां बना रही थीं.

पर एकदम वह सांप फिर पीछे को लौटा और गिरता पड़ता, फिसलता ज़मीन पर आ टपका. शहद की मक्खियां भी उसके पीछे पड़ी हुई थीं. सांप को मजबूर होकर जल्दी से एक घनी कांटेदार झाड़ी में घुस जाना पड़ा.

लोग आम तौर पर यह कहते हैं कि यह ज़माना बेशक साम्राजवादी ज़्यादतियों का ज़माना है. पर यह वह ज़माना भी है जब साम्राजवादियों को चारों तरफ़ उलटी क़लाबाज़ी खानी पड़ रही है.

کرتا ہوا وہاں سے نکلا ۔ اِس شور و شر کو دیکھکر بہت بگڑا اور کہنے لگا —

"اوّل تو اِس طرح کا سارا کام بڑی مورکھتا کا ھے ۔ کسی بدھیمان نیتگیہ نے کہا ھے کہ جو دیش ھمیشہ شور و غل مچاتے رھتے ھیں اُن میں شانتی نہیں رہ سکتی ۔ یہ یا تو ودیشیوں کی بیجا مداخلت اور شرارت ھے اور یا دیش کے اندر گھریلو جنگ ھے اور یا کم سے کم چائے کے پیالے میں طوفان ھے ۔ جو ھو' بہت ھی بیوقوفی کی بات ھے !

"دوسری بات یہ ھے کہ بہت سے لوگوں کے اِس طرح ایک ساتھ ملکر کام کرنے کی یہ عادت بڑی گندی عادت ھے ! معلوم ھوتا ھے تمہاری سب کی گاڑی پٹری سے اُتر گئی ھے ۔ سب شانتی بھنگ ھوگئی ھے ۔ شہر کے سب لوگ باغی ھوگئے ھیں ۔ کوئی ایسا نہیں ھے جو سب کی نمائندگی کرسکے ! میں اِسے برداشت نہیں کرسکتا ۔"

وہ سانپ خود اپنے کو انترراشٹریہ پولیس والا سمجھتا تھا ۔ راج نیتی کے علاوہ وہ سمجھتا تھا کہ دھرم اور انجیل کا پرچار کرنا بھی اُسی کا فرض ھے ۔ وہ فوراً اُس درخت پر چڑھ گیا ۔ اُس نے طے کرلیا کہ سب سے پہلے اِس چھتے کو توڑ دیا جائے جو شہد کی مکھیاں بنا رھی تھیں ۔

پر ایکدم وہ سانپ پھر پیچھے کو لوٹا اور گرتا' پڑتا' پھسلتا زمین پر آٹپکا ۔ شہد کی مکھیاں وھاں بھی اُس کے پیچھے پڑی ھوئی تھیں ۔ سانپ کو مجبور ھوکر جلدی سے ایک گھنی کانٹیدار جھاڑی میں گھس جانا پڑا ۔

لوگ عام طور پر کہتے ھیں کہ یہ زمانہ بیشک سامراج وادی زیادتیوں کا زمانہ ھے ۔ پر وہ یہ زمانہ بھی ھے جب سامراج وادیوں کو چاروں طرف اُلٹی قلابازی کھانی پڑ رھی ھے ۔

नेता को कोई निजी महत्त्वाकांक्षा नहीं रखनी चाहिये. वह अपने लिये कुछ न चाहे; न तो धन, न अधिकार, न पद, भोग, न उपभोग. और वह ईश्वर को दिन में चौबीस घंटे याद रखे.

—गांधी

نیتا کو کوئی نجی مہتواکانشا نہیں رکھنی چاھئے ۔ وہ اپنے لئے کچھ نہ چاھے' نہ دھن' نہ ادھکار' نہ پد' نہ بھوگ' نہ اُپبھوگ ۔ اور وہ ایشور کو دن میں چوبیس گھنٹے یاد رکھے ۔

—گاندھی

की सारी खुशी—उस लड़की की जो समन्दर को प्यार करती थी और जिसे समन्दर प्यार करता था—और किसी ने नहीं उसी समन्दर ने छीन ली. एक दिन अपने उस प्यारे मछियारे से भेंट होने के बाद जब वह खुश खुश खड़ी मुस्करा रही थी, वह नौजवान मछियारा अपनी डोंगी लेकर समन्दर में जा रहा था और लड़की उसे खड़ी देख रही थी, यकायक समन्दर की लहरों ने छलांग लगाई और देखते देखते समन्दर की एक लहर उस नौजवान मछियारे को निगल गई.

लड़की अब दुख में डूब गई. उसकी सारी खुशी मिट्टी हो गई. जिस समन्दर को देखकर उसे खुशी होती थी उसी को देखकर अब उसे दुख और रंज होने लगा. उसकी नजरों में समन्दर की वह सब चमक दमक और सुन्दरता अब फीकी पड़ गई. समन्दर उसे अब अनमना और दुखी दिखाई देने लगा.

इस पर भी अजीब बात यह थी कि अब भी वह रोज समन्दर को देखने जाती. अपने दुख के कारन उसने समन्दर को कोसा, समन्दर से उसे नफ़रत हुई, फिर भी वह समन्दर को छोड़ न सकी. सच यह है कि जो मुसीबत उस पर टूटी थी उसके कारन समन्दर उसे अब और भी प्यारा लगने लगा.

आखिरकार एक दिन समन्दर की तरफ़ देखते देखते उसने कहा—"ऐ समन्दर! तुम कैसे देव की तरह हो! कितने विशाल हो! मैं तुम ही से क्यों न भिड़ूं! देखूं हममें कौन जीतता है!" यह कहकर वह एक डोंगी लेकर समन्दर में कूद पड़ी. यहां तक कि कुछ दिनों के अन्दर ही वह एक मजबूत पक्के सांवले रंग की मछियारिन बन गई.

अब जब वह जवान लड़की वह सारे काम मेहनत के साथ करने लगी जो नौजवान मछियारा किया करता था और खारी, तूफ़ानी समन्दर के अन्दर प्रचन्ड लहरों पर सवारी कसने लगी तो उसे समन्दर के साथ वह अनोखा प्यार महसूस होने लगा जो पहले कभी नहीं हुआ था. उसे अब अपने उस प्यारे नौजवान मछियारे के लिये भी, जो उससे छिन चुका था, वह अनोखा प्यार महसूस होने लगा जो पहले कभी नहीं हुआ था.

(5)

शहद की मक्खियां और सांप

जंगली शहद की मक्खियों का एक झुन्ड एक दरख्त के ऊपर रहने के लिये अपना छत्ता बना रहा था. दरख्त की शाखों में मक्खियां इधर से उधर उधर से इधर तेजी से आ जा रही थीं. काफ़ी शोर और जोश था. सब भिनभिना रही थीं. जंगल की शान्ति भंग हो रही थी. एक सांप जंगल का मुआइना

کی ساری خوشی—اُس لڑکی کی جو سمندر کو پیار کرتی تھی اور جسے سمندر پیار کرتا تھا—اور کسی نے نہیں اُسی سمندر نے چھین لی ۔ ایک دن اپنے اُس پیارے مچھیارے سے بھینٹ ہونے کے بعد جب وہ خوش خوش مسکرا رہی تھی، وہ نوجوان مچھیارا اپنی ڈونگی لیکر سمندر میں جا رہا تھا اور لڑکی اُسے کھڑی دیکھ رہی تھی، یکایک سمندر کی لہروں نے چھلانگ لگائی اور دیکھتے دیکھتے سمندر کی ایک لہر اُس نوجوان مچھیارے کو نگل گئی ۔

لڑکی اب دکھ میں ڈوب گئی ۔ اُس کی ساری خوشی مٹی ہوگئی ۔ جس سمندر کو دیکھکر اُسے خوشی ہوتی تھی اُسی کو دیکھکر اب اُسے دکھ اور رنج ہونے لگا ۔ اُس کی نظروں میں سمندر کی وہ سب چمک دمک اور سندرتا اب پھیکی پڑگئی ۔ سمندر اسے اب اَن‌منا اور دکھی دکھائی دینے لگا ۔

اِس پر بھی عجیب بات یہ تھی کہ اب بھی وہ روز سمندر کو دیکھنے جاتی ۔ اپنے دکھ کے کارن اُس نے سمندر کو کوسا، سمندر سے اُسے نفرت ہوئی پھر بھی وہ سمندر کو چھوڑ نہ سکی ۔ سچ یہ ہے کہ جو مصیبت اُس پر ٹوٹی تھی اُس کے کارن سمندر اُسے اب اور بھی پیارا لگنے لگا ۔

آخرکار ایک دن سمندر کی طرف دیکھتے دیکھتے اُس نے کہا—"اے سمندر! تم کیسے دیو کی طرح ہو! کتنے وشال ہو! میں تم ہی سے کیوں نہ بھڑوں! دیکھوں ہم میں کون جیتتا ہے!" یہ کہکر وہ ایک ڈونگی لیکر سمندر میں کود پڑی، یہاں تک کہ کچھ دنوں کے اندر ہی وہ ایک مضبوط، پکے سانولے رنگ کی مچھیارن بن گئی ۔

اب جب وہ جوان لڑکی وہ سارے کام محنت کے ساتھ کرنے لگی جو نوجوان مچھیارا کیا کرتا تھا اور کھاری، طوفانی سمندر کے اندر پرچنڈ لہروں پر سواری کسنے لگی تو اُسے سمندر کے ساتھ وہ انوکھا پیار محسوس ہونے لگا جو پہلے کبھی نہیں ہوا تھا ۔ اُسے اب اپنے اُس پیارے نوجوان مچھیارے کے لئے بھی، جو اُس سے چھن چکا تھا، وہ انوکھا پیار محسوس ہونے لگا جو پہلے کبھی نہیں ہوا تھا ۔

(5)

شہد کی مکھیاں اور سانپ

جنگلی شہد کی مکھیوں کا ایک جھنڈ ایک درخت کے اوپر رہنے کے لئے اپنا چھتا بنا رہا تھا ۔ درخت کی شاخوں میں مکھیاں اِدھر سے اُدھر اُدھر سے اِدھر تیزی سے آجا رہی تھیں ۔ کافی شور اور جوش تھا ۔ سب بھنبھنا رہی تھیں ۔ جنگل کی شانتی بھنگ ہو رہی تھی ۔ ایک سانپ جنگل کا معائنہ

बालों के नशे में पीले पीले समन्दर जैसे खेत भी इसी तरह के राग गाते सुनाई देते हैं. उस लड़की को इस गाने में बड़ा आनन्द आता था. उसे इसमें कोमलता, उदारता और विशालता तीनों दिखाई देती थीं. शाम के समन्दर के इस गाने को सुनकर उसकी सब चिन्ताएं काफ़ूर हो जाती थीं. जब आसमान साफ़, खुला और शान्ति होता तो समन्दर इतना सुन्दर लगता और इतना चमकता कि उसे देख उस लड़की को किसी सुन्दर प्यारे मुखड़े की ख़ुशी भरी मुस-कराहट याद आजाती और वह स्वयं सुन्दर और ख़ुश दिखाई देने लगती. और जब तूफ़ान आते तो समन्दर के प्रचन्ड शोर से उसे ज़रा भी डर न लगता. उस समय भी वह उसी तरह किनारे पर खड़ी समन्दर के कोप में आनन्द लेती रहती. मालूम होता था कि समन्दरी तूफ़ानों का उसे उतना ही शौक़ था जितना बाज़ लड़कियों का तूफ़ानी प्रेम का होता है.

सारांश यह कि कोई भी समय हो और कैसा भी मौसम हो समन्दर को देखकर उस लड़की को सदा बड़ा आनन्द आता.

पर इसका एक और भी कारन था और वह कारन क़ुदरती था और ज़ाहिर था. सबसे अधिक समन्दर इस बात को समझता था कि लड़की के दिल में एक राज़ छिपा हुआ था. वह लड़की एक नौजवान मछियारे लड़के से प्यार करती थी. वह लड़का एक मज़बूत भुजाओं और चौड़ी छाती वाला नौजवान था जिसका चेहरा सांवला और जिसके होंट लाल रहते थे. उसके सारे बदन से समन्दर के खारी पानी और समन्दर की गड़गड़ाहट की सुगन्ध आती थी. वह एक पक्का समन्दरी मल्लाह था. वह लड़की उसे प्यार करती थी.

लड़का उसे रोज़ समन्दर के किनारे मिला करता था. वह दोनों समन्दर की ख़ूब बातें करते और समन्दर की तारीफ़ें करते, बिल्कुल इसी तरह मानो एक दूसरे के साथ अपने प्रेम की बातें कर रहे हैं और उसी प्रेम की तारीफ़ें कर रहे हैं. वह बिल्कुल इस तरह जिस तरह कोई बड़े राज़ नियाज़ की बातें आपस में कर रहे हों. एक दूसरे से वे कहते—"देखो, देखो, समन्दर कैसा प्यारा लगता है, किस तरह मुस्करा रहा है, गा रहा है और क़लाबाज़ियां खा रहा है."

बात का निचोड़ यह कि वह दोनों समन्दर से भी प्यार करते थे और एक दूसरे को भी प्यार करते थे. लड़की भी ख़ूब ख़ुश थी, वह नौजवान मछियारा भी ख़ूब ख़ुश था, और समन्दर भी ख़ूब ख़ुश था.

पर न जाने क्या बात है जिसे देख कर हमें ख़ूब ख़ुशी होती है वही अकसर हमारी ख़ुशी का चोर साबित होता है. थोड़े ही दिनों के अन्दर इस भोली ईमानदार लड़की

بالوں کے نشے میں پیلے پیلے سمندر جیسے کھیت بھی اسی طرح کے راگ گاتے سنائی دیتے ہیں۔ اُس لڑکی کو اِس گانے میں بڑا آنند آتا تھا۔ اُسے اِس میں کوملتا، اُدارتا اور وشالتا تینوں دکھائی دیتی تھیں۔ شام کے سمندر کے اِس گانے کو سنکر اُس کی سب چنتائیں کافور ہوجاتی تھیں۔ جب آسمان صاف، کھلا اور شانت ہوتا تو سمندر اتنا سندر لگتا اور اتنا چمکتا کہ اُسے دیکھ اُس لڑکی کو کسی سندر پیارے مکھڑے کی خوشی بھری مسکراہٹ یاد آجاتی اور وہ سویم سندر اور خوش دکھائی دینے لگتی۔ اور جب طوفان آتے تو سمندر کے پرچنڈ شور سے اُسے ذرا بھی ڈر نہ لگتا۔ اُس سمے بھی وہ اُسی طرح کنارے پر کھڑی سمندر کے کوپ میں آنند لیتی رہتی۔ معلوم ہوتا تھا کہ سمندری طوفانوں کا اُسے اتنا ہی شوق تھا جتنا بعض لڑکیوں کو طوفانی پریم کا ہوتا ہے:

سارانش یہ کہ کوئی بھی سمے ہو اور کیسا بھی موسم ہو سمندر کو دیکھکر اُس لڑکی کو سدا بڑا آنند آتا۔

پر اِس کا ایک اور بھی کارن تھا اور وہ کارن قدرتی تھا اور ظاہر تھا۔ سب سے ادھک سمندر اِس بات کو سمجھتا تھا کہ لڑکی کے دل میں ایک راز چھپا ہوا تھا۔ وہ لڑکی ایک نوجوان مچھیارے لڑکے سے پیار کرتی تھی۔ وہ لڑکا ایک مضبوط بھجاؤں اور چوڑی چھاتی والا نوجوان تھا جس کا چہرہ سانولا اور جس کے ہونٹ لال رہتے تھے۔ اُس کے سارے بدن سے سمندر کے کھاری پانی اور سمندر کی گڑگڑاہٹ کی سگندھ آتی تھی۔ وہ ایک پکا سمندری ملاح تھا۔ وہ لڑکی اُسے پیار کرتی تھی۔

لڑکا اُسے روز سمندر کے کنارے ملا کرتا تھا۔ وہ دونوں سمندر کی تعریفیں کرتے، بالکل اِسی طرح مانو ایک دوسرے کے ساتھ اپنے پریم کی باتیں کر رہے ہیں اور اُسی پریم کی تعریفیں کررہے ہیں۔ وہ بالکل اِس طرح جس طرح کوئی بڑے راز نیاز کی باتیں آپس میں کر رہے ہوں۔ وے ایک دوسرے سے کہتے:—"دیکھو دیکھو، سمندر کیسا پیارا لگتا ہے، کس طرح مسکرا رہا ہے، گا رہا ہے اور قلابازیاں کھا رہا ہے!"

بات کا نچوڑ یہ کہ وہ دونوں سمندر سے بھی پیار کرتے تھے اور ایک دوسرے کو بھی پیار کرتے تھے۔ لڑکی بھی خوب خوش تھی، وہ نوجوان مچھیارا بھی خوب خوش تھا، اور سمندر بھی خوب خوش تھا۔

پر نہ جانے کیا بات ہے کہ جسے دیکھکر ہمیں خوب خوشی ہوتی ہے وہی اکثر ہماری خوشی کا چور ثابت ہوتا ہے۔ تھوڑے دنوں کے اندر اِس بھولی ایماندار لڑکی

लगी—"मेरा बदन सचमुच थक गया है. अब मैं आराम करूंगी." पर देर तक आराम करने के बाद भी उसमें फिर से ताक़त न आई. वह अब अपने को निढाल महसूस करने लगी. उसका बेटा मजबूत और जवान उक़ाब था. वह दूर से उड़ कर आया. मां का यह हाल देखकर नीचे उतरा, और मां की देख भाल और रक्षा के लिये उसके पास रहने लगा. अब वह मां को छोड़ कर कहीं न जाता. अजीब बात यह हुई कि बेटे को अपने पास देख कर मां और भी कमजोरी महसूस करने लगी. उसने अपने बेटे से कहा—"बेटा! यह ढंग ठीक नहीं, तुम जितने प्रेम से मेरी देख भाल में लगे रहते हो उससे मुझे और भी अधिक कमजोरी और थकान मालूम होती है. अब बेटा, दूसरा ढंग आजमा कर देखो. तुम आसमान में उड़ो और खूब ऊंचे मंडलाओ. मैं तुम्हें मंडलाते देखूं तो मेरी हिम्मत खुले."

इस पर उसका बेटा, वह जवान उक़ाब, खूब ऊंचे जा कर आजादी और बहादुरी के साथ आसमान में मंडलाने लगा. मां कुछ देर तक शौक़ के साथ उसे देखती रही. फिर किसी न किसी तरह वह उठ खड़ी हुई और खुद उड़ने लगी, और उतने ही जोर से उड़ने लगी जितने जोर से उसका बेटा उड़ रहा था.

अगर कोई बूढ़ा आदमी चलना फिरना भूल गया हो तो सब से आसान तरीक़ा यह है कि नौजवानों को चलते फिरते देखे. फिर उस बूढ़े के दोनों पैर अपने आप चलने लगेंगे. इसी तरह जवानों की बहादुरी के क़िस्से सुनना भी बूढ़े लोगों की तन्दुरुस्ती के लिये बहुत अच्छा होता है. नौजवान आपके आस पास हों तो बुढ़ापे से क्या डर? बुढ़ापे से डर तो तबही है जब आप नौजवानों से बचते हों, उन्हें नापसन्द करते हों और उन्हें अपने से दूर रखते हों.

(4)

एक मछियारिन लड़की और समन्दर

एक जवान मछियारिन लड़की समन्दर के किनारे रहती थी. वह समन्दर को बहुत प्यार करती थी. रोज समन्दर के किनारे खड़ी होकर देर तक समन्दर को देखती रहती. कभी बहुत सवेरे समन्दर में उथल पुथल शुरू होने से पहले वह किनारे पर खड़ी दिखाई देती. उसके सामने सूरज की शुरू की किरनों में हंसते हंसते समन्दर अपनी आंखें खोलता. लड़की को समन्दर की यह हंसी बहुत प्यारी लगती. उसे बिलकुल ऐसा लगता कि कोई हाल में पैदा हुआ फूल सा सुन्दर बच्चा पालने में अपनी आंखें खोल रहा है. कभी शाम को समन्दर अपनी छोटी छोटी चमकती हुई सुनहरी लहरों के नशे में इस तरह गुनगुनाता सुनाई देता जिस तरह अकसर लोग नशे की हालत में गुनगुनाते हैं. बड़े बड़े खेतों की फ़सल जब बिलकुल पक जाती है तो अपनी सुनहरी

[illegible] جھا ہیں سچ مچ تھک گیا ہے . اب میں آرام کرونگی ."
ھیر تک آرام [illegible] بعد بھی اُس میں پھر سے طاقت نہ آئی.
اب اپنے کو نڈھال محسوس کرنے لگی . اُس کا بیٹا مضبوط
جوان عقاب تھا . وہ دور سے اُڑ کر آیا . ماں کا یہ حال
ھکر نیچے اُترا' اور ماں کی دیکھ بھال اور رکشا کے لئے اُس کے
ں رہنے لگا . اب وہ ماں کو چھوڑکر کہیں نہ جاتا . عجیب
، یہ ھوئی کہ بیٹے کو اپنے پاس دیکھکر ماں اور بھی کمزوری
سوس کرنے لگی . اُس نے اپنے بیٹے سے کہا—"بیٹا ! یہ
نگ ٹھیک نہیں' تم جتنے پریم سے میری دیکھ بھال میں لگے
، ھو اُس سے مجھے اور بھی ادھک کمزوری اور تھکان معلوم
ی ھے . اب بیٹا' دوسرا ڈھنگ آزماکر دیکھو . تم آسمان میں
اور خوب اونچے منڈلاؤ . میں تمہیں منڈلاتے دیکھوں تو
ی ھمت کھلے ."

اِس پر اُس کا بیٹا' وہ جوان عقاب' خوب اونچے آزادی اور
ری کے ساتھ آسمان میں منڈلانے لگا . ماں کچھ دیر تک
، کے ساتھ اُسے دیکھتی رھی . پھر کسی نہ کسی طرح وہ اُٹھ
ی ھوئی اور خود اُڑنے لگی' اور اُتنے ھی زور سے اڑنے لگی جتنے
سے اُس کا بیٹا اُڑ رہا تھا .

اگر کوئی بوڑھا آدمی چلنا پھرنا بھول گیا ھو تو سب سے
ن طریقہ یہ ھے کہ نوجوانوں کو چلتے پھرتے دیکھے. پھر اُس بوڑھے
دونوں پیر اپنے آپ چلنے لگیں گے . اِسی طرح جوانوں کی
ری کے قصے سننا بھی بوڑھے لوگوں کی تندرستی کے لئے بہت
ا ھوتا ھے . نوجوان آپ کے آس پاس ھوں تو بڑھاپے سے کیا
بڑھاپے سے ڈر تو تب ھی ھے جب آپ نوجوانوں سے
تے ھوں' اُنھیں ناپسند کرتے ھوں اور اُنھیں اپنے سے دور
ے ھوں .

(4)

ایک مچھیارن لڑکی اور سمندر

ایک جوان مچھیارن لڑکی سمندر کے کنارے رھتی تھی . وہ
در کو بہت پیار کرتی تھی . روز سمندر کے کنارے کھڑی ھوکر
تک سمندر کو دیکھتی رھتی. کبھی بہت سویرے سمندر میں
، پتھل شروع ھونے سے پہلے وہ کنارے پر کھڑی دکھائی دیتی .
، کے سامنے سورج کی شروع کی کرنوں میں ھنستے ھنستے
در اپنی آنکھیں کھولتا . لڑکی کو سمندر کی یہ ھنسی بہت
ی لگتی . اُسے بالکل ایسا لگتا کہ کوئی حال میں پیدا ھوا
، سا سندر بچہ پالنے میں اپنی آنکھیں کھول رہا ھے . کبھی
کو سمندر اپنی چھوٹی چھوٹی چمکتی ھوئی سنہری لہروں
نشے میں اِس طرح گنگناتا سنائی دیتا جس طرح
لوگ نشے کی حالت میں گنگناتے ھیں . بڑے بڑے
ں کی فصل جب بالکل پک جاتی ھے تو اپنی سنہری

बड़ी बहादुरी के साथ उसने एक खम्बे को अपने ऊपर संभाले रखा जिससे उसके बहुत से साथियों की जान बच गई, पर वह खुद वहीं दब कर मर गया.

बूढ़े बाप का दुख अब बहुत ही बढ़ गया. एक रात भर के अन्दर वह हद से ज़्यादा कमज़ोर और निढाल दिखाई देने लगा. पर अभी उसके एक बेटा और था. इसी से उसे कुछ तसल्ली थी. बूढ़े बाप के विचार अब कुछ बदले. उसने पक्का इरादा कर लिया कि—"अब मैं अपने इस सबसे छोटे बेटे को इस तरह बहादुर और निडर न बनने दूंगा. अब इस आख़री बेटे को खो बैठने का रंज मेरी बरदाश्त से बाहर की चीज़ है."

उसने ठंडी सांस भरकर कहा—"मेरा यह बेटा कायर और निकम्मा रह जाय तो अच्छा, बजाय इसके कि उसकी बहादुरी और उसके 'गुनों के कारन मैं उस से भी हाथ धो बैठूं'."

इसलिये बुड्ढे ने उस आख़री बेटे को अपने साथ रखकर खुद तालीम देना शुरू किया. उसने उसे इस तरह रखा जिस तरह शायद कोई बूढ़ी औरत अपनी छोटीसी पोती को भी न रखती हो. वह लड़का सचमुच बाप का आज्ञाकारी निकला. जैसा बाप चाहता था वैसा ही वह हो गया—डरपोक, स्वार्थी और निकम्मा. पर एक अजीब बात यह हुई कि अब थोड़े ही दिनों बाद उस बुड्ढे बाप को इतना दुख हुआ और इतनी ग्लानि होने लगी जितनी उसे जीवन में पहले कभी नहीं हुई थी. अपनी ग़लती पर वह बार बार पछताता था. अपने उस बेटे से उसे नफ़रत होने लगी और उसे उस पर दया आने लगी. बूढ़े ने कहा.

"इस निकम्मेपन से, इस सड़ियलपन से मुझे हमेशा चिढ़ रही है. पर अब स्वार्थ और मोह के वश में आकर मैंने खुद इस तीसरे बेटे का यह हाल कर डाला ! इसके जीने से क्या फ़ायदा, जिसे न समन्दर डुबो सके न पहाड़ कुचल सके ?"

अब बूढ़े बाप के लिये सचमुच अपने उस बेटे से प्यार करना नामुमकिन हो गया, क्योंकि उसका प्यार केवल ज़बरदस्त लहरों वाले समन्दर, या ऊंचे अडिग पहाड़ और अपने दोनों बड़े बेटों जैसे साहसी आदमियों की तरफ़ ही जा सकता था. बूढ़े बाप के दिल में अब रंज और ग्लानि की कोई सीमा न रही. यह उसे आख़री दिनों के अपने ग़लत विचारों और अपने हाथों अपने सब से छोटे बेटे को बिगाड़ देने की सज़ा थी.

(8)

एक बूढ़ी चिड़िया और उसका बेटा

एक जवान उक़ाब पक्षी और उसकी मां एक साथ रहते थे. मां बहुत बूढ़ी हो गई थी. एक दिन कुछ देर तक उड़ने के बाद वह पहाड़ की एक कगर पर बैठ गई और कहने

بڑی بہادری کے ساتھ اس نے ایک کھمبے کو اپنے اوپر سنبھالے رکھا جس سے اُس کے بہت سے ساتھیوں کی جان بچ گئی ۔ پر وہ خود وہیں دب کر مر گیا ۔

بوڑھے باپ کا دکھ اب بہت ھی بڑھ گیا ۔ ایک رات بھر کے اندر وہ حد سے زیادہ کمزور اور نڈھال دکھائی دینے لگا ۔ پر ابھی اُس کے ایک بیٹا اور تھا ۔ اِسی سے اُسے کچھ تسلی تھی ۔ بوڑھے باپ کے وچار اب کچھ بدلے ۔ اُس نے پکا اِرادہ کر لیا کہ " اب میں اپنے اِس سب سے چھوٹے بیٹے کو اِس طرح بہادر اور نڈر نہ بننے دوں گا ۔ اب اِس آخری بیٹے کو کھو بیٹھنے کا رنج میری برداشت سے باھر کی چیز ھے ۔"

اُس نے ٹھنڈی سانس بھر کر کہا—" میرا یہ بیٹا کائر اور نکما رہ جائے تو اچھا، بجائے اِس کے کہ اُس کی بہادری اور اُس کے گنوں کے کارن میں اُس سے بھی ھاتھ دھو بیٹھوں ۔"

اِس لئے بڈھے نے اُس آخری بیٹے کو اپنے ساتھ رکھ کر خود تعلیم دینا شروع کیا ۔ اُس نے اُسے اِس طرح رکھا جس طرح شاید کوئی بوڑھی عورت اپنی چھوٹی سی پوتی کو بھی نہ رکھتی ھو ۔ وہ لڑکا سچ مچ 'باپ کا آگیاں کاری نکلا ۔ جیسا باپ چاھتا تھا ویسا ھی وہ ھوگیا '—ڈرپوک' سوارتھی اور نکما ۔ پر ایک عجیب بات یہ ھوئی کہ اب تھوڑے ھی دنوں بعد اُس بڈھے باپ کو اتنا دکھ ھوا اور اتنی گلانی ھونے لگی جتنی اُسے جیون میں پہلے کبھی نہیں ھوئی تھی ۔ اپنی غلطی پر وہ بار بار پچھتاتا تھا ۔ اپنے اُس بیٹے سے اُسے اب نفرت ھونے لگی اور اُسے اُس پر دیا آنے لگی ۔ بوڑھے نے کہا :—

" اِس نکمے پن سے، اِس سڑیل پن سے مجھے ھمیشہ چڑھ رھی ھے ۔ پر اب سوارتھ اور موہ کے بس میں آ کر میں نے خود اِس تیسرے بیٹے کا یہ حال کر ڈالا ! اُس کے جینے سے کیا فائدہ، جسے نہ سمندر ڈبو سکے اور نہ پہاڑ کچل سکے ؟"

اب بوڑھے باپ کے لئے سچ مچ اپنے اُس بیٹے سے پیار کرنا ناممکن ھو گیا کیونکہ اُس کا پیار کیول زبردست لہروں والے سمندر یا اونچے اڈگ پہاڑ اور اپنے دونوں بڑے بیٹوں جیسے ساھسی آدمیوں کی طرف ھی جاسکتا تھا ۔ بوڑھے باپ کے دل میں اب رنج اور گلانی کی کوئی سیما نہ رھی ۔ یہ اُسے آخری دنوں کے اپنے غلط وچاروں اور اپنے ھاتھوں اپنے سب سے چھوٹے بیٹے کو بگاڑ دینے کی سزا تھی ۔

(3)

ایک بوڑھی چڑیا اور اُس کا بیٹا

ایک جوان عقاب پنکشی اور اُس کی ماں ایک ساتھ رھتے تھے ۔ ماں بہت بوڑھی ھوگئی تھی ۔ ایک دن کچھ دیر تک اڑنے کے بعد وہ پہاڑ کی ایک کگر پر بیٹھ گئی اور کہنے

कि दरख्त जल्दी ही खतम हो जायगा. पर अब उसने दरख्त की तरफ़ देखा तो दरख्त वैसा का वैसा ही खड़ा था. सांप को क्रोध आया. उसने और अधिक ज़ोर के साथ दरख्त को कसना शुरू किया. फिर जब उसने दरख्त को देखा तो दरख्त फिर वैसा का वैसा ही खड़ा था.

सांप को अब इतना अधिक क्रोध आया कि दरख्त को श्राप देते हुए उसने कहा—"तुम समझते हो कि तुम्हारे इस तरह खड़े रहने से और यह समझने से कि आखिर मैं थक जाऊंगा तुम्हें कोई लाभ होगा ?"

सांप ने तय कर लिया कि अपनी चाल में डटे रहकर दरख्त को घोटकर मार ही देना है चाहे कितनी भी देर क्यों न लगे. उसने दरख्त को और कसा और पल भर के लिये भी कहीं ढील आने नहीं दी. अब उसे बहुत अधिक देर तक इन्तजार करना न पड़ा. या तो शायद आखिकार सांप ही ने थक कर यह तय कर लिया कि जो थोड़ी सी शक्ति मुझ में बाक़ी रह गई है उसे अब अपनी ही रीढ़ की हड्डी तोड़ने में खर्च कर डालूं, और या शायद दरख्त का तना यकायक और मोटा हो गया और उसने सांप के टुकड़े कर दिये. जो भी हुआ हो, थोड़ी ही देर में वह सांप एक सड़ी हुई रस्सी की तरह टुकड़े टुकड़े होकर जमीन पर गिर पड़ा.

(2)

बूढ़ा आदमी और उसके तीन बेटे

एक बूढ़े आदमी के तीन बेटे थे. सबसे बड़ा बेटा बहुत अच्छा मल्लाह था, हिम्मती, बहादुर, इरादे का पक्का और जो फ़र्ज़ सामने हो उसे पूरा करने के लिए जोखम की परवाह न करने वाला. बाप उसे बहुत प्यार करता था. वह अपने उस बेटे पर फूला नहीं समाता था. उसे अपने घर की आन समझता था. पर एक दिन तूफ़ान आया और समुन्दर की तुन्द लहरें उस निडर बहादुर बेटे को निगल गईं.

दूसरा बेटा एक कोयले की खान में काम करता था. वह अथक और मेहनती था. अपने साथियों से वह कहीं ज्यादा मजबूत और हिम्मती था. वह ईमानदार और सच्चा था. अपने साथियों या मित्रों की मदद करने में उसे हमेशा आनन्द आता था. इसीलिये खान के सब मजदूर और खासकर नौजवान उसे बहुत चाहते थे और उसकी मित्रता की बड़ी क़द्र करते थे. बाप भी उसे बहुत प्यार करता था. सबसे बड़े बेटे के मरने के बाद से इस दूसरे बेटे की तरफ़ बाप का प्यार और बढ़ गया था. बाप के मन को उसे देखकर बड़ी शान्ति मिलती थी. उसे वह अब अपने लिये भगवान की सबसे बड़ी देन समझता था. पर थोड़े ही दिनों में अपनी बहादुरी और अपने सेवा भाव के कारन ही वह दूसरा बेटा भी चल बसा. उस दिन वह खान में काम कर रहा था कि एक खम्बा गिर गया और खान की ज़मीन नीचे को धसने लगी.

کہ درخت جلدی ہی ختم ہو جائے گا۔ پر جب اُس نے درخت کی طرف دیکھا تو درخت ویسا کا ویسا ہی کھڑا تھا۔ سانپ کو کرودھ آیا۔ اُس نے اور ادھک زور کے ساتھ درخت کو کسنا شروع کیا۔ پھر جب اُس نے درخت کو دیکھا تو درخت پھر ویسا کا ویسا ہی کھڑا تھا۔

سانپ کو اب اتنا ادھک کرودھ آیا کہ درخت کو شراپ دیتے ہوئے اُس نے کہا "تم سمجھتے ہو کہ تمہارے اِس طرح کھڑے رہنے سے اور یہ سمجھنے سے کہ آخر میں تھک جاؤں گا تمہیں کوئی لابھ ہوگا؟"

سانپ نے طے کر لیا کہ اپنی چال میں ڈٹے رہ کر درخت کو گھونٹ کر مار ہی دینا ہے چاہے کتنی بھی دیر کیوں نہ لگے۔ اُس نے درخت کو اور کسا اور پل بھر کے لئے بھی کہیں ڈھیل آنے نہیں دی۔ اب اُسے بہت ادھک دیر تک انتظار کرنا نہ پڑا۔ یا تو شاید آخرکار سانپ ہی نے تھک کر یہ طے کر لیا کہ جو تھوڑی سی شکتی مجھ میں باقی رہ گئی ہے اُسے اب اپنی ہی ریڑھ کی ہڈی توڑنے میں خرچ کر ڈالوں، اور یا شاید درخت کا تنا یکایک اور موٹا ہوگیا اور اُس نے سانپ کے ٹکڑے کر دیئے۔ جو بھی ہوا ہو، تھوڑی ہی دیر میں وہ سانپ ایک سڑی ہوئی رسی کی طرح ٹکڑے ٹکڑے ہو کر زمین پر گر پڑا۔

(2)

بوڑھا آدمی اور اُس کے تین بیٹے

ایک بوڑھے آدمی کے تین بیٹے تھے۔ سب سے بڑا بیٹا بہت اچھا ملاح تھا، ہمتی، بہادر، اِرادے کا پکا اور جو فرض سامنے ہو اُسے پورا کرنے کے لئے جوکھم کی پرواہ نہ کرنے والا۔ باپ اُسے بہت پیار کرتا تھا۔ وہ اپنے اُس بیٹے پر پھولا نہیں سماتا تھا۔ اُسے اپنے گھر کی آن سمجھتا تھا۔ پر ایک دن طوفان آیا اور سمندر کی تند لہریں اُس نڈر بہادر بیٹے کو نگل گئیں۔

دوسرا بیٹا ایک کوئلے کی کھان میں کام کرتا تھا۔ وہ اتھک اور محنتی تھا۔ اپنے ساتھیوں سے وہ کہیں زیادہ مضبوط اور ہمتی تھا۔ اپنے ساتھیوں یا متروں کی مدد کرنے میں اُسے ہمیشہ آنند آتا تھا۔ اِسی لئے کھان کے سب مزدور اور خاص کر نوجوان اُسے بہت چاہتے تھے اور اُس کی مترتا کی بڑی قدر کرتے تھے۔ باپ بھی اُسے بہت پیار کرتا تھا۔ سب سے بڑے بیٹے کے مرنے کے بعد سے اِس دوسرے بیٹے کی طرف باپ کا پیار اور بڑھ گیا تھا۔ باپ کے من کو اُسے دیکھ کر بڑی شانتی ملتی تھی۔ اُسے وہ اب اپنے لئے بھگوان کی سب سے بڑی دین سمجھتا تھا۔ پر تھوڑے ہی دنوں میں اپنی بہادری اور اپنے سیوا بھاؤ کے کارن ہی یہ دوسرا بیٹا بھی چل بسا۔ اُس دن وہ کان میں کام کر رہا تھا کہ ایک کھمبا گر گیا اور کھان کی زمین نیچے کو دھسنے لگی۔

और कहानियां लिखीं. सन 19 में वह 'वेन यी पाओ' (Wen Yi Pao) नाम की पत्रिका का एडीटर था. 'वेन' का अर्थ है साहित्य, 'यी' का अर्थ है कला और 'पाओ' का अर्थ है पत्रिका या गजट. फ़ेंग की कविताएं, कहानियां, ड्रामे, निबन्ध, संस्मरन और टीकाएं चीन में काफी प्रसिद्ध हैं.

यहां जो पांच कहानियां हम दे रहे हैं उनमें पहली "सांप की दरख़्त को घोटकर मार डालने की कोशिश" सब से हाल की लिखी हुई है. अमरीका और कुछ साम्राज प्रेमी ताक़तों की तरफ़ से लाल चीन का जो ब्लाकेड यानी तिजारती बहिश्कार जारी है, यह कहानी उस ब्लाकेड पर लिखी गई है. "बुड्ढा आदमी और उसके तीन बेटे" और "एक बूढ़ी चिड़िया और उसका बेटा" दोनों कहानियां चीनी जनता में दम फूंकने वाली और उन्हें जीवन के नए आदर्शों की तरफ़ ले जाने वाली कहानियां हैं. "एक बूढ़ी चिड़िया और उसका बेटा" नाम की कहानी में ख़ास कर बूढ़े लोगों को कर्मठ जीवन की तरफ़ लाने की कोशिश की गई है, तो "एक मछियारिन लड़की और समन्दर" में नौजवानों को जीवन का आदर्श बताया गया है. इस छोटी सी कहानी में नौजवानों के दिलों की क़ुदरती उमंगों के साथ साथ प्रकृति के प्रेम और जीवन की कर्मठता का ख़ासा सुन्दर बयान है. "शहद की मक्खियां और सांप" भी आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से सम्बन्ध रखती है. इन छोटी छोटी कहानियों से नए चीन की जनता की उमंगों और उनके आत्म विश्वास पर ख़ासी रोशनी पड़ती है. इन कहानियों का अनुवाद चीनी से अंग्रेजी में और अंग्रेजी से हिन्दुस्तानी में किया गया है.]

❀ ❀ ❀

(1)

सांप की दरख़्त को घोटकर मार डालने की कोशिश

एक सांप एक दरख़्त को मार डालना चाहता था. ख़ूब सोचकर उसने एक नई और ज़बरदस्त चाल निकाल ली. सांप बड़ा विद्वान था. उसकी विद्या इस मामले में उसके बड़े काम आई. उसने देख रखा था कि बहुत से दरख़्तों पर जब बेलें लिपट जाती हैं तो दरख़्त निकम्मा होकर मर जाता है.

सांप ने सोचा—"उन बेलों से मैं कहीं अधिक मोटा और मज़बूत हूं. इसलिये अगर मैं इस दरख़्त पर चारों तरफ़ से लिपट कर उसे ख़ूब कस लूं तो यह दरख़्त एकदम घुट कर नहीं मरेगा तो कम से कम धीरे धीरे सूख कर तो मर ही जायगा."

यह सोचकर वह सांप उस दरख़्त पर चढ़ा. दरख़्त के तने पर चारों तरफ़ से लिपट कर उसने उसे ज़ोरों से कस लिया. वह उसे और ज़्यादा से ज़्यादा कसता गया, इस उम्मीद में

اور کہانیاں لکھیں۔ سن 1953 میں وہ 'وین یی پاؤ' (Wen Yi Pao) نام کی پتریکا کا ایڈیٹر تھا۔ 'وین' کا ارتھ ہے ساھتیہ، 'یی' کا ارتھ ہے کلا اور 'پاؤ' کا ارتھ ہے پتریکا یا گزٹ۔ فینگ کی کویتائیں، کہانیاں، ڈرامے، نبندھ، سنسمرن اور ٹیکائیں چین میں کافی پرسدھ ہیں۔

یہاں جو پانچ کہانیاں ہم دے رہے ہیں اُن میں پہلی " سانپ کی درخت کو گھونٹ کر مار ڈالنے کی کوشش " سب سے حال کی لکھی ہوئی ہے۔ امریکہ اور کچھ سامراج پریمی طاقتوں کی طرف سے نئے چین کا جو بلاکیڈ یعنی تجارتی وہشکار جاری ہے، یہ کہانی اُس بلاکیڈ پر لکھی گئی ہے۔ " بڈھا آدمی اور اُس کے تین بیٹے " اور " ایک بوڑھی چڑیا اور اُس کا بیٹا " دونوں کہانیاں چینی جنتا میں دم پھونکنے والی اور اُنہیں جیون کے نئے آدرشوں کی طرف لے جانے والی کہانیاں ہیں۔ " ایک بوڑھی چڑیا اور اُس کا بیٹا " نام کی کہانی میں خاص کر بوڑھے لوگوں کو کرمٹھ جیون کی طرف لانے کی کوشش کی گئی ہے، تو " ایک مچھیارن لڑکی اور سمندر " میں نوجوانوں کو جیون کا آدرش بتایا گیا ہے۔ اِس چھوٹی سی کہانی میں نوجوانوں کے دلوں کی قدرتی اُمنگوں کے ساتھ ساتھ پرکرتی کے پریم اور جیون کی کرمٹھتا کا خاصہ سندر بیان ہے۔ شہد کی مکھیاں اور سانپ " بھی آج کی انتر راشٹریہ راج نیتی سے سمبندھ رکھتی ہے۔ اِن چھوٹی چھوٹی کہانیوں سے نئے چین کی جنتا کی اُمنگوں اور اُن کے آتم وشواس پر خاص روشنی پڑتی ہے۔ اِن کہانیوں کا انوواد چینی سے انگریزی میں اور انگریزی سے ہندستانی میں کیا گیا ہے۔]

❀ ❀ ❀

(1)

سانپ کی درخت کو گھونٹ کر مار ڈالنے کی کوشش

ایک سانپ ایک درخت کو مار ڈالنا چاہتا تھا۔ خوب سوچ کر اُس نے ایک نئی اور زبردست چال نکال لی۔ سانپ بڑا ودوان تھا۔ اُس کی ودیا اِس معاملے میں اُس کے بڑے کام آئی۔ اُس نے دیکھ رکھا تھا کہ بہت سے درختوں پر جب بیلیں لپٹ جاتی ہیں تو درخت نکما ہو کر مر جاتا ہے۔

سانپ نے سوچا—" اُن بیلوں سے میں کہیں ادھک موٹا اور مضبوط ہوں۔ اِس لئے اگر میں اِس درخت پر چاروں طرف سے لپٹ کر اُسے خوب کس لوں تو یہ درخت ایک دم گھٹ کر نہیں مرے گا تو کم سے کم دھیرے دھیرے سوکھ کر تو مر ہی جائے گا۔"

یہ سوچ کر وہ سانپ اُس درخت پر چڑھا۔ درخت کے تنے پر چاروں طرف سے لپٹ کر اُس نے اُسے زوروں سے کس لیا۔ وہ اُسے اور زیادہ سے زیادہ کستا گیا، اِس اُمید میں

कुछ चीनी छोटी कहानियां

(लेखक — फ़ेङ्ग शुए-फ़ेङ्ग; अनुवादक — सुन्दरलाल)

[छोटी छोटी कहानियों के ज़रिये लोगों को शिक्षा देने का ढंग बहुत पुराना ढंग है. हज़ारों बरस से इस तरह की सैकड़ों ही सुन्दर कहानियां एशिया के सब देशों में चली आ रही हैं. चीन में भी यह रिवाज बहुत पुराना रिवाज है. नए चीन की तामीर करने वालों ने इस से पूरा पूरा फ़ायदा उठाया. यहां हम नए चीन के एक चोटी के साहित्यकार फ़ेंग शुए-फ़ेंग की इस तरह की पांच कहानियां दे रहे हैं.

फ़ेंग शुए-फ़ेंग सन 1903 में चेकिआंग सूबे के यीवू इलाक़े के एक गांव में पैदा हुआ था. वह अनपढ़ किसान मां बाप का लड़का था. दस बरस की उम्र से सोलह बरस की उम्र तक वह गांव के स्कूल में पढ़ता रहा और खाली समय में अपने मां बाप के साथ खेत में काम करता रहा. इसके बाद वह एक टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल में पढ़ने लगा. विद्यार्थियों के एक आन्दोलन में भाग लेने के कारन वह ट्रेनिंग स्कूल से निकाल दिया गया. थोड़े दिनों बाद वह फिर हांगचाओ के एक नारमल स्कूल में भरती हो गया.

कुछ दिनों वह प्राइमरी स्कूल में पढ़ाता रहा. पर अधिकतर अपने आज़ाद क्रान्तिकारी विचारों के कारन उसे बेकारी में दिन बिताने पड़े. वह जगह जगह घूमता रहा. उसका गुज़ारा कुछ मित्रों की सहायता से चलता था. लगभग बीस बरस की उम्र में उसने कुछ कविताएं लिखीं. सन 19 में वह पीकिंग आ गया और प्राइवेट बच्चे पढ़ा कर अपना काम चलाता रहा. यहां उसने जापानी भाषा सीखी और सोवियत कला और साहित्य पर कुछ पुस्तकों का जापानी से चीनी में अनुवाद किया.

अब उसका ध्यान कम्युनिस्ट साहित्य की तरफ़ जाने लगा. लू शून जैसे चीन के बड़े से बड़े लेखकों के साथ मिल कर उसने कई साहित्य संस्थाओं के क़ायम करने में हिस्सा लिया. धीरे धीरे वह पूरी तरह देश की आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ा और 'लाल सेना' के इतिहास प्रसिद्ध 'लम्बे कूच' (लांग मार्च) में उस सेना के साथ था. जब वह फिर उस इलाक़े में आया जो अभी कुओमिनतांग पार्टी के अधीन था तो सन 1941 में पकड़ कर जेल में डाल दिया गया. जेल में भी उसने कई कविताएं लिखीं हैं जिन में उसने कुओमिनतांग के शासकों के अत्याचारों और उनके विदेशियों के हाथों में खेलने की तरफ़ अपने देश वासियों का ध्यान दिलाया. सन 1942 में वह जेल से छूटा. इसके बाद उसने जनता में अपने विचार फैलाने के लिये बहुत से निबन्ध

کچھ چینی چھوٹی کہانیاں

(لیکھک — فینگ شوئے فینگ' انوادک — سندرلال)

[چھوٹی چھوٹی کہانیوں کے ذریعہ لوگوں کو شکشا دینے کا ڈھنگ بہت پرانا ڈھنگ ہے. ہزاروں برس سے اس طرح کی سیکڑوں ہی سندر کہانیاں ایشیا کے سب دیشوں میں چلی آ رہی ہیں. چین میں بھی یہ رواج بہت پرانا رواج ہے. نئے چین کی تعمیر کرنے والوں نے اِس سے پورا پورا فائدہ اُٹھایا ہے. یہاں ہم نئے چین کے ایک چوٹی کے ساہتیہ کار فینگ شوئے - فینگ کی اِس طرح کی پانچ کہانیاں دے رہے ہیں.

فینگ شوئے فینگ سن 1903 میں چیکیانگ صوبے کے یی وو علاقے کے ایک گاؤں میں پیدا ہوا تھا. وہ اَن پڑھ کسان ماں باپ کا لڑکا تھا. دس برس کی عمر سے سولہ برس کی عمر تک وہ گاؤں کے اِسکول میں پڑھتا رہا اور خالی سمے میں اپنے ماں باپ کے ساتھ کھیت میں کام کرتا رہا. اِس کے بعد وہ ایک ٹیچرس ٹریننگ اِسکول میں پڑھنے لگا. ودیارتھیوں کے ایک آندولن میں بھاگ لینے کے کارن وہ ٹریننگ اِسکول سے نکال دیا گیا. تھوڑے دنوں بعد وہ پھر ہانگ چاؤ کے ایک نارمل اِسکول میں بھرتی ہوگیا.

کچھ دنوں وہ پرائمری اِسکول میں پڑھاتا رہا. پر ادھکتر اپنے آزاد کرانتی کاری وچاروں کے کارن اُسے بیکاری میں دن بِتانے پڑے. وہ جگہ جگہ گھومتا رہا. اُس کا گذارا کچھ متروں کی سہائتا سے چلتا تھا. لگ بھگ بیس برس کی عمر میں اس نے کچھ کویتائیں لکھیں. سن 1925 میں پیکنگ آ گیا اور پرائیویٹ بچے پڑھا کر اپنا کام چلاتا رہا. یہاں اس نے جاپانی بھاشا سیکھی اور سوویت کلا اور ساہتیہ پر کچھ پستکوں کا جاپانی سے چینی میں انوواد کیا.

اب اُس کا دھیان کمیونسٹ ساہتیہ کی طرف جانے لگا. لوشون جیسے چین کے بڑے سے بڑے لیکھکوں کے ساتھ مل کر اُس نے کئی ساہتیہ سنستھاؤں کے قائم کرنے میں حصہ لیا. دھیرے دھیرے وہ پوری طرح دیش کی آزادی کی لڑائی میں کود پڑا اور 'لال سینا' کے اِتہاس پرسدھ 'لمبے کوچ' (لانگ مارچ) میں اُس سینا کے ساتھ تھا. جب وہ پھر اس علاقے میں آیا جو ابھی کومن تانگ پارٹی کے ادھین تھا تو سن 1941 میں پکڑ کر جیل میں ڈال دیا گیا. جیل میں بھی اُس نے کئی کویتائیں لکھی ہیں جن میں اُس نے کومن تانگ شاسکوں کے اتیاچاروں اور اُن کے ودیشیوں کے ہاتھوں میں کھیلنے کی طرف اپنے دیش واسیوں کا دھیان دلایا. سن 1942 میں وہ جیل سے چھوٹا. اس کے بعد اُس نے جنتا میں اپنے وچار پھیلانے کے لئے بہت سے نبندھ

महात्मा गांधी के शब्दों में—"दर असल चुराया हुआ न होने पर भी बेकार का संग्रह चोरी का सा माल हो जाता है. परिग्रह का मतलब है संयम या इकट्ठा करना. परमात्मा परिग्रह नहीं करता, वह जरूरी चीज रोज की रोज पैदा करता है. रोज के काम भर का रोज पैदा करने के ईश्वरी नियम का हम पालन नहीं करते. इसीलिये दुनिया में विषमता और उससे होने वाले दुख भागते हैं. अमीरों के यहां चीजें खराब होती रहती हैं, दूसरी ओर उनकी तंगी में करोड़ों इन्सान भटकते फिरते हैं. अगर सब लोग अपनी जरूरत भर को ही इकट्ठा करें तो किसी को तंगी न हो और सबको तसल्ली रहे. आज तो करोड़पति अरबपति होने को छटपटाता है, उसे तसल्ली नहीं. अगर आज धनी अपना बेहद परिग्रह छोड़ दें तो समाज का भेद भाव दूर हो जाय."

विनोबा कहते हैं कि "आज जो धन कमाता है, वह उसके साथ रोग और फिक्र भी कमाता है. वह धन कमा कर बाल बच्चों, दोस्तों और पड़ोसियों के प्रेम को खो देता है. इसी से वह दुखी भी है. आज समाज में श्रीमान और ग़रीब दोनों दुखी हैं. इसलिये यह समाज रचना हमें बदलनी ही होगी और इसके लिये हमें दान और अपरिग्रह के दायरे को ज्यादा से ज्यादा फैलाना होगा."

आज तो मादीवाद (माद्दा परस्ती) का असर हमारी आंखों पर पड़ा है. सारी जिन्दगी का विकार, विशाद और मजबूरी से भरी हुई है. रोटी का सवाल आज की सबसे बड़ी समस्या है. दान आज रास्ता भूल कर बेजान पड़ा है. सायनाचार्य ने रुद्र की व्याख्या (तशरीह) की है—

बुभुक्षमाण: रुद्ररूपेण अवतिष्ठते—

यानी भूखे लोग रुद्र ही के अवतार हैं. उनकी भूख बुझाने के लिये तरह तरह के फ़लसफ़े और तरह तरह के राजनैतिक उसूल बन गये हैं. तरह तरह के वाद इसी रोटी की समस्या को सुलझाने के लिये भगीरथ के समान कोशिशें कर रहे हैं, संसार के धर्मों, उपनिशदों और गीता ने इसका एक ही इलाज बताया है और वह है 'ईश्वरार्पण योग'—यानी सब श्रम और सब धन ईश्वर अल्लाह के नाम पर हो, सब जनता के फ़ायदे के लिये हो, समाज के फ़ायदे के लिये हो, व्यक्तिगत यानी जाती फ़ायदे के लिये नहीं.

مہاتما گاندھی کے شبدوں میں—" دراصل چرایا ہوا نہ ہونے پر بھی بیکار کا سنگرہ چوری کا سا مال ہو جاتا ہے. پریگرہ کا مطلب ہے سنیم یا اکٹھا کرنا. پرماتما پریگرہ نہیں کرتا. وہ ضروری چیزیں روز کی روز پیدا کرتا ہے. روز کے کام بھر کا روز پیدا کرنے کے ایشوری نیم کا ہم پالن نہیں کرتے. اسی لئے دنیا میں وشمتا اور اس سے ہونے والے دکھ بھوگتے ہیں. امیروں کے یہاں چیزیں خراب ہوتی رہتی ہیں، دوسری اور ان کی تنگی میں کروڑوں انسان بھٹکتے پھرتے ہیں. اگر سب لوگ اپنی ضرورت بھر کو ہی اکٹھا کریں تو کسی کو تنگی نہ ہو اور سب کو تسلی رہے. آج تو کروڑ پتی ارب پتی ہونے کو چھٹپٹاتا ہے. اسے تسلی نہیں. اگر آج دھنی اپنا بےحد پریگرہ چھوڑ دیں تو سماج کا بھید بھاؤ دور ہو جائے."

ونوبا کہتے ہیں کہ "آج جو دھن کماتا ہے، وہ اس کے ساتھ روگ اور فکر بھی کماتا ہے. وہ دھن کما کر بال بچوں، دوستوں اور پڑوسیوں کے پریم کو کھو دیتا ہے. اسی سے وہ دکھی بھی ہے. آج سماج میں شریمان اور غریب دونوں دکھی ہیں. اس لئے یہ سماج رچنا ہمیں بدلنی ہی ہوگی اور اس کے لئے ہمیں دان اور اپریگرہ کے گھیرے کو زیادہ سے زیادہ پھیلانا ہوگا."

آج تو مادی واد (مادہ پرستی) کا اثر ہماری آنکھوں پر پڑا ہے. ساری زندگی وکار، وشے اور مجبوری سے بھری ہوئی ہے. روٹی کا سوال آج کی سب سے بڑی سمسیا ہے. دان آج راستہ بھول کر بےجان پڑا ہے. سایناچاریہ نے رودر کی ویاکھیا (تشریح) کی ہے—

بھبھوکشمانترا رودر روپینتر اوتشٹھتے—

یعنی بھوکے لوگ رودر کے ہی اوتار ہیں. ان کی بھوکھ بجھانے کے لئے طرح طرح کے فلسفے اور طرح طرح کے راجنیتک اصول بن گئے ہیں. طرح طرح کے واد اسی روٹی کی سمسیا کو سلجھانے کے لئے بھگیرتھ کے سمان کوششیں کر رہے ہیں. سنسار کے دھرموں، اپنشدوں اور گیتا نے اس کا ایک ہی علاج بتایا ہے اور وہ ہے 'ایشوراپن یوگ'—یعنی سب شرم اور سب دھن ایشور اللہ کے نام پر ہو، سب جنتا کے فائدے کے لئے ہو، سماج کے فائدے کے لئے ہو، ویکتی گت یعنی ذاتی فائدے کے لئے نہیں.

धनावानों और दीनहीनों के बीच सिर्फ़ दान ही एक जोड़ने वाला पुल रह गया है. आज दीन बनाने के बाद ही दान मुमकिन रह गया है. एक दार्शनिक के शब्दों में—"अगर ग़रीबी मुनासिब बात नहीं है तो दान को भी बढ़ावा नहीं देना होगा. ग़रीबी को अगर दूर करना है तो दान की संस्था को भी हमें इतना पाक साफ़ करना होगा कि उसमें दया भाव के लिये गुंजाइश न रह जाये. यह दिल का ऐसा सहज और लाज़मी धर्म हो जाये जैसे बादलों का जलदान. आज तो देने वाला ग़रीबपरवर है और लेने वाला हक़ीर है. ग़रीबी और दान का यह ताल्लुक़ इन्सान की शान को नहीं बढ़ाता. इससे उलझन बढ़ती है और मैल बढ़ता है. इसलिये दान को उस सतह पर पहुंचाना होगा जहां देने वाले को अपने को दाता मानने के ग़ुरूर से छुटकारा मिले."

इसी विचार को मशहूर सीरियन दार्शनिक ख़लील जिब्रान ने दूसरे शब्दों में लिखा है. वे भिखारी से कहते हैं—"भिखारी! तुम दीन हीन बन कर भीख क्यों मांगते हो? दानी की उदारता को इतनी अहमियत क्यों देते हो? तुम्हारी ग़रीबी में बनावट नहीं बेबसी है. तुम मजबूर हो. जिस दान के धन को तुम क़बूल करते हो वह देने वाले का नहीं है. वह तो उसके पास सिर्फ़ धरोहर है. तुम्हें भीख इसलिये मांगनी पड़ती है जिसमें उसके फ़र्ज़ का बोझ हल्का हो जाय. तुम योग्यता-अयोग्यता, सत्पात्र-कुपात्र की कसौटी पर इसलिये नहीं कसे जा सकते कि तुम्हारा अभाव क़ुदरती है. तुम दान लेकर दानी पर उपकार करते हो चूंकि तुम उसे कर्तव्य का रास्ता दिखाते हो. उसे धरोहर हड़प लेने से बचाने का उपकार तुम्हारा है. इसलिये ऐ भिखारी! तुम क्यों शर्म के बोझ से दबे जा रहे हो? क्यों अपने को दीन हीन मानते हो? ऐसा करके क्या तुम दानी को अभिमानी बनाने और उसे पतित होने का मौक़ा नहीं देते? इसलिये हे भिखारी! दानी से फ़र्ज़ समझकर दान लो! शाइस्तगी के ख़्याल से अहसान भले ही ज़ाहिर करो पर उपकार के बोझ से परेशान न हो!"

जिस तरह हम यज्ञ में आहुति देते समय कहते हैं कि—"इन्द्राय इदं, न मम:"—यह मेरा नहीं है, इन्द्र के लिये है. उसी तरह आज जो हम उत्पादन करते हैं, चाहे वह खेती में हो, चाहे फ़ैक्ट्री में, उसके बारे में हमें कहना चाहिये कि—"समाजाय इदं, समिस्टाय इदम्, राष्ट्राय इदम्, न मम:". यह सब मेरे लिये नहीं है, समाज के लिये है, समस्टि के लिये है, राष्ट्र के लिये है. अपने पास जो कुछ है वह सब समाज के हवाले कर देना चाहिये. फिर समाज की ओर से अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ जो कुछ मिलेगा वह अमृत होगा.

دھنوانوں اور دین ہینوں کے بیچ صرف دان ہی ایک جوڑنے والا پل رہ گیا ہے. آج دین بنانے کے بعد ہی دان ممکن رہ گیا ہے. ایک دارشنک کے شبدوں میں—" اگر غریبی مناسب بات نہیں ہے تو دان کو بھی بڑھاوا نہیں دینا ہوگا. غریبی کو اگر دور کرنا ہے تو دان کی سنستھا کو بھی ہمیں اتنا پاک صاف کرنا ہوگا کہ اُس میں دیا بھاو کے لئے گنجائش نہ رہ جائے. یہ دل کا ایسا سہج اور لازمی دھرم ہو جائے جیسے بادلوں کا جل دان. آج تو دینے والا غریب پرور ہے اور لینے والا حقیر ہے. غریبی اور دان کا یہ تعلق اِنسان کی شان کو نہیں بڑھاتا. اُس سے اُلجھن بڑھتی ہے اور میل بڑھتا ہے. اس لئے دان کو اُس سطح پر پہونچانا ہوگا جہاں دینے والے کو اپنے کو داتا ماننے کے غرور سے چھٹکارا ملے."

اِسی وچار کو مشہور سیرین دارشنک خلیل جبران نے دوسرے شبدوں میں لکھا ہے. وہ بھکاری سے کہتے ہیں—"بھکاری! تم دین ہین بنکر بھیکھ کیوں مانگتے ہو؟ دانی کی اُدارتا کو اتنی اہمیت کیوں دیتے ہو؟ تمہاری غریبی میں بناوٹ نہیں بےبسی ہے. تم مجبور ہو. جس دان کے دھن کو تم قبول کرتے ہو وہ دینے والے کا نہیں ہے. وہ تو اُس کے پاس صرف دھروھر ہے. تمہیں بھیک اِس لئے مانگنی پڑتی ہے جس میں اُس کے فرض کا بوجھ ہلکا ہو جائے. تم یوگتا-ایوگتا، ست پاتر-کوپاتر کی کسوٹی پر اِس لئے نہیں کسے جا سکتے کہ تمہارا ابھاؤ قدرتی ہے. تم دان لیکر دانی پر اُپکار کرتے ہو چونکہ تم اُسے کرتویہ کا راستہ دکھاتے ہو. اُسے دھروھر ہڑپ لینے سے بچانے کا اُپکار تمہارا ہے. اِس لئے اے بھکاری! تم کیوں شرم کے بوجھ سے دبے جا رہے ہو؟ کیوں اپنے کو دین ہین مانتے ہو؟ ایسا کر کے کیا تم دانی کو ابھیمانی بنانے اور اُسے پتت ہونے کا موقع نہیں دیتے؟ اِس لئے ہے بھکاری! دانی سے فرض سمجھ کر دان لو! شائستگی کے خیال سے احسان بھلے ہی ظاہر کرو پر اُپکار کے بوجھ سے پریشان نہ ہو!"

جس طرح ہم یگیہ میں آہوتی دیتے سمے کہتے ہیں کہ—"اندرائے اِدم نہ مم"—یہ میرا نہیں ہے، اِندر کے لئے ہے. اسی طرح آج جو ہم اُتپادن کرتے ہیں، چاہے وہ کھیتی میں ہو، چاہے فیکٹری میں، اُس کے بارے میں ہمیں کہنا چاہئے کہ—"سماجائے اِدم، سمشٹائے اِدم، راشٹرائے اِدم، نہ مم." یہ سب میرے لئے نہیں ہے، سماج کے لئے ہے، سمشٹی کے لئے ہے، راشٹر کے لئے ہے. اپنے پاس جو کچھ ہے وہ سب سماج کے حوالے کر دینا چاہئے. پھر سماج کی اور سے اپنی ضرورت کے مطابق جو کچھ ملے گا وہ امرت ہوگا.

अर्थात्—जगत में जो कुछ जीवन है, वह ईश्वर का बसाया हुआ है. इसलिये उसके नाम से त्याग करके, तू यथा प्राप्त भोगता जा. किसी के भी धन की तरफ़ वासना न रख.

तुलसीदास जी ने इसी को दूसरे शब्दों में कहा है—'सम्पति सब रघुवर की आही'. और सम्पत्ति जब सब रघुवर की ही है अर्थात समाज के फ़ायदे के लिये है तो सम्पत्ति की मिलकियत सिर्फ़ एक ट्रस्टी के रूप में ही रह जाती है और वह सम्पत्ति—"सब जन हिताय, सब जन सुखाय" के लिये ही खर्च की जा सकती है. महान पारसी सम्राट अनुशीरवां ने हिदायत दी थी कि मौत के बाद जब उसकी अर्थी ले जाई जाय तो उसके दोनों हाथ अर्थी के बाहर निकले रहें ताकि जनता देख ले कि इतना बड़ा सम्राट भी अनन्त यात्रा में खाली हाथ जा रहा है.

पैदावार सब मेहनत से ही होती है. इनसान साधन, सामग्री और श्रम के मेल से ज़िन्दगी की ज़रूरतों की तरह तरह की चीज़ों को पैदा करता है. श्रम और पैदावार के मेल के लिये सिक्के का जनम होता है. सिक्के को इसलिये लाया जाता है कि वह श्रम का वफ़ादार चाकर होकर रहे, लेकिन हालतों के उलटफेर की वजह से श्रम ही सिक्के का ताबेदार बन जाता है. जो बेशुमार कच्चा माल धरती का बेटा अपने पसीने के बल खेतों में उपजाता है, खानों से निकालता है, कारखानों में तैयार करता है उस पर बजाय श्रमिक का अधिकार होने के लक्ष्मीपुत्रों का अधिकार हो जाता है. नतीजा यह होता है कि समाज अमीरों और ग़रीबों में बंट जाता है. अनाज की खत्तियों में अनाज पड़े पड़े घुनता रहता है और करोड़ों इन्सान दाने दाने को मोहताज रहते हैं. गोदामों में कपड़े की लाखों गांठें पड़ी सड़ती रहती हैं और करोड़ों इन्सान ठन्ड से ठिठुरते रहते हैं. दिन बदिन नंगों और भिखमंगों की अनगिनत क़तारें बढ़ती जाती हैं. आज दुनिया में लोभ और परिग्रह का राज है. परिग्रह की हिफ़ाज़त के लिये राज तरह तरह के क़ानून बनाते हैं. उपनिशद की एक कहानी में राजा कहता है कि "मेरे राज में न तो कोई चोर है और न कंजूस. धन संग्रह ही चोरी को उकसावा देता है. दरअस्ल कंजूस ही चोर का पिता है." उपनिशद का यह राजा बड़े पते की बात कहता है. लेकिन आज क्या हो रहा है? चोर को तो हम जेल भेजते हैं, लेकिन चोरों के पिता पूंजीशाह को हम मुक्त रखते हैं. वे तहज़ीबयाफ़्ता शरीफ़ की शक्ल में समाज में घूमते हैं, उनकी औरतें अपनी दौलत का, अपने जगमग जवाहरातों का दरिद्र नारायनों के बीच में नंगा प्रदर्शन करती हैं! यह कैसा न्याय है? गीता ने भी परिग्रही (धनवाले) को ही चोर कहा है, लेकिन आज लोग गीता को भी नहीं मानते.

ارتھات، جگت میں جو کچھ جیون ہے، وہ ایشور کا بسایا ہوا ہے. اِس لئے اُس کے نام سے تیاگ کر کے، تو یتھا پراپت بھوگتا جا. کسی کے بھی دھن کی طرف واسنا نہ رکھ.

تلسی داس جی نے اُسی کو دوسرے شبدوں میں کہا ہے—' سمپتی سب رگھوور کی آہی. اور سمپتی جب سب رگھوور کی ہی ہے ارتھات سماج کے فائدہ کے لئے ہے تو سمپتی کی ملکیت صرف ایک ٹرسٹی کے روپ میں ہی رہ جاتی ہے اور وہ سمپتی—" سب جن ہتائے، سب جن سوکھائے " کے لئے ہی خرچ کی جا سکتی ہے. مہان پارسی سمراٹ انوشیرواں نے ہدایت دی تھی کہ موت کے بعد جب اُس کی ارتھی لے جائی جائے تو اُس کے دونوں ہاتھ ارتھی کے باہر نکلے رہیں تاکہ جنتا دیکھ لے کہ اتنا بڑا سمراٹ بھی اننت یاترا میں خالی ہاتھ جا رہا ہے.

پیداوار سب محنت سے ہی ہوتی ہے. انسان سادھن، سامگری اور شرم کے میل سے زندگی کی ضرورتوں کی طرح طرح کی چیزوں کو پیدا کرتا ہے. شرم اور پیداوار کے میل کے لئے سکے کا جنم ہوتا ہے. سکے کو اِس لئے لایا جاتا ہے کہ وہ شرم کا وفادار چاکر ہوکر رہے، لیکن حالتوں کے اُلٹ پھیر کی وجہ سے شرم ہی سکے کا تابعدار بن جاتا ہے. جو بے شمار کچا مال دھرتی کا بیٹا اپنے پسینے کے بل کھیتوں میں اُپجاتا، کھانوں سے نکالتا ہے، کارخانوں میں تیار کرتا ہے اُس پر بجائے شرمک کا ادھیکار ہونے کے لکشمی پتروں کا ادھیکار ہو جاتا ہے. نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ سماج امیروں اور غریبوں میں بٹ جاتا ہے. اناج کی کتھیوں میں اناج پڑے پڑے گھنتا رہتا ہے اور کروڑوں انسان دانے دانے کو محتاج رہتے ہیں. گوداموں میں کپڑے کی لاکھوں گانٹھیں پڑی سڑتی رہتی ہیں اور کروڑوں انسان ٹھنڈ سے ٹھٹھرتے رہتے ہیں. دن بدن ننگوں اور بھکمنگوں کی اَن گنت قطاریں بڑھتی جاتی ہیں. آج دنیا میں لوبھ اور پریگرہ کا راج ہے: پریگرہ کی حفاظت کے لئے راج طرح طرح کے قانون بناتے ہیں. اپنشد کی ایک کہانی میں راجا کہتا ہے کہ " میرے راج میں نہ تو کوئی چور ہے اور نہ کنجوس. دھن سنگرہ ہی چوری کو اُکساوا دیتا ہے. دراصل کنجوس ہی چور کا پتا ہے." اپنشد کا یہ راجا بڑے پتے کی بات کہتا ہے. لیکن آج کیا ہو رہا ہے؟ چور کو تو ہم جیل بھیجتے ہیں، لیکن چوروں کے پتا پونجی شاہ کو ہم مکت رکھتے ہیں. وہ تہذیب یافتہ شریف کی شکل میں سماج میں گھومتے ہیں، اُن کی عورتیں اپنی دولت کا، اپنے جگمگ جواہراتوں کا دردر نارائنوں کے بیچ میں ننگا پردرشن کرتی ہیں! یہ کیسا نیائے ہے؟ گیتا نے بھی پریگرہ (دھن والے) کو ہی چور کہا ہے، لیکن آج تو لوگ گیتا کو بھی نہیں مانتے.

तू उसे खाना देता तो मुझे उसके साथ देखता? मेरे एक बन्दे ने तुझसे पानी मांगा और तूने उसे पानी नहीं दिया. अगर तू उसे पानी दे देती तो सचमुच मुझे उसके पास पाता!"

क़ुरान में लिखा है कि—"धर्म या नेकी इसमें नहीं है कि तुमने अपने मुंह नमाज़ के वक़्त पूरब के तरफ़ कर लिये या पच्छिम की तरफ़. धर्म यह है कि आदमी अल्लाह को माने, कर्मों के फल को माने, फ़रिश्तों को माने, सब मज़हबी किताबों और सब नबियों या रसूलों को माने, अल्लाह के प्रेम के नाते यानी उसके नाम पर अपने माल और दौलत में से अपने नातेदारों को, यतीमों को, ज़रूरतमन्दों को, रास्ता चलतों को और याचकों को दान दे और ग़ुलामों को आज़ाद कराने में अपनी दौलत खर्च करे, अल्लाह से दुआ मांगता रहे, ज़कात यानी अपने कुल माल का कम से कम चालीसवां हिस्सा हर साल अल्लाह के नाम पर ग़रीबों को खैरात देता रहे" आदि.

एक बार मुहम्मद साहब सफ़र से लौट कर मदीने आये. वह सीधे अपनी बेटी फ़ातमा से मिलने उसके घर गये. मकान में दो चीज़ें नई थीं—एक दरवाज़े पर लटका हुआ रेशमी परदा और फ़ातमा के हाथों में चांदी के कड़े. देखते ही मुहम्मद साहब उल्टे पांव लौट आये और मसजिद में बैठकर रोने लगे. फ़ातमा ने अपने बेटे हसन को यह पूछने के लिये भेजा कि नाना इतनी जल्दी क्यों लौट गये. मोहम्मद साहब ने नवासे से कहा कि "मैं यह देख कर शरमा गया कि मसजिद में लोग भूखे बैठे हों और मेरी बेटी चांदी के कड़े पहने और रेशम के परदे लटकाये." हसन ने मां से जाकर कहा. फ़ातमा ने तुरन्त कड़ों को तोड़कर उसी रेशम के टुकड़े में बांध कर बाप के पास भेज दिया. मुहम्मद साहब ने खुश होकर उन्हें बेचकर रोटियां मंगाईं और ग़रीबों में बांट दीं. फिर फ़ातमा के पास जाकर कहा कि "अब तू सचमुच मेरी बेटी है."

पुरानों में अनेकों दानवीरों का ज़िक्र आता है जिन्होंने अपनी सारी दौलत दान में देकर अपरिग्रह का व्रत लिया. सम्राट हर्ष हर पांचवें साल प्रयाग आकर त्रिवेनी के तट पर अपने शाही ख़ज़ाने का एक एक पैसा ग़रीबों में बांट दिया करते थे. आख़ीर में सिर्फ़ एक कोपीन रह जाती थी. तब अपनी बहन राज्यश्री से अंगोछा दान मांग कर वह कोपीन भी दान कर देते थे. समाज की सम्पत्ति इस तरह फिर समाज में वापस चली जाती थी.

पुराने ज़माने के मज़हबी लोग अगर सम्पत्ति का भोग भी करते थे तो वह बेलौस होकर ईश्वर प्रसाद की तरह. ईशावास्योपनिशद में इसी भाव को उपनिशदकार ने बड़े सुन्दर ढंग से कहा है—

ईसावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
त्येन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्वद्धनम्॥

تو اُسے کھانا دیتا تو مجھے اُس کے ساتھ دیکھتا ؟ میرے ایک بندے نے تجھ سے پانی مانگا اور تو نے اُسے پانی نہیں دیا ! اگر تو اُسے پانی دے دیتا تو سچ مچ مجھے اُس کے پاس پاتا !"

قرآن میں لکھا ہے کہ—"دھرم یا نیکی اُس میں نہیں ہے کہ تم نے اپنے منھ نماز کے وقت پورب کے طرف کرلئے یا پچھم کی طرف. دھرم یہ ہے کہ آدمی اللہ کو مانے' کرموں کے پھل کو مانے' فرشتوں کو مانے' سب مذھبی کتابوں اور سب نبیوں یا رسولوں کو مانے' اللہ کے پریم کے ناتے یعنی اُس کے نام پر اپنے مال اور دولت میں سے اپنے ناتےداروں کو' یتیموں کو' ضرورتمندوں کو' راستہ چلتوں کو اور یاچکوں کو دان دے اور غلاموں کو آزاد کرانے میں اپنی دولت خرچ کرے' اللہ سے دعا مانگتا رہے' ذکاۃ یعنی اپنے کل مال کا کم سے کم چالیسواں حصہ ہر سال اللہ کے نام پر غریبوں کو خیرات دیتا رہے" آدی۔

ایک بار محمد صاحب سفر سے لوٹ کر مدینے آئے۔ وہ سیدھے اپنی بیٹی فاطمہ سے ملنے اُس کے گھر گئے۔ مکان میں دو چیزیں نئی تھیں—ایک دروازے پر لٹکا ہوا ریشمی پردہ اور فاطمہ کے ہاتھوں میں چاندی کے کڑے. دیکھتے ہی محمد صاحب اُلٹے پاؤں لوٹ آئے اور مسجد میں بیٹھکر رونے لگے۔ فاطمہ نے اپنے بیٹے حسن کو یہ پوچھنے کے لئے بھیجا کہ نانا اتنی جلدی کیوں لوٹ گئے۔ محمد صاحب نے نواسے سے کہا کہ "میں یہ دیکھکر شرما گیا کہ مسجد میں لوگ بھوکے بیٹھے ہوں اور میری بیٹی چاندی کے کڑے پہنے اور ریشم کے پردے لٹکائے." حسن نے ماں سے جاکر کہا۔ فاطمہ نے ترنت کڑوں کو توڑکر اُسی ریشم کے ٹکڑے میں باندھ کر باپ کے پاس بھیج دیا۔ محمد صاحب نے خوش ہوکر اُنہیں بیچکر روٹیاں منگائیں اور غریبوں میں بانٹ دیں. پھر فاطمہ کے پاس جاکر کہا کہ "اب تو سچ مچ میری بیٹی ہے."

پرانوں میں انیکوں دان ویروں کا ذکر آتا ہے جنھوں نے اپنی ساری دولت دان میں دےکر اپریگرہ کا ورت لیا۔ سمراٹ ہرش ہر پانچویں سال پریاگ آکر تریبنی کے تٹ پر اپنے شاہی خزانے کا ایک ایک پیسہ غریبوں میں بانٹ دیا کرتے تھے۔ آخر میں صرف ایک کوپین رہ جاتی تھی۔ تب اپنی بہن راجشری سے انگوچھا دان میں مانگ کر وہ کوپین بھی دان کردیتے تھے۔ سماج کی سمپتی اِس طرح پھر سماج میں واپس چلی جاتی تھی۔

پرانے زمانے کے مذھبی لوگ اگر سمپتی کا بھوگ بھی کرتے تھے تو وہ بےلوث ہوکر ایشور پرساد کی طرح۔ ایشواسیوپنشد میں اِسی بھاؤ کو اُپنشدکار نے بڑے سندر ڈھنگ سے کہا ہے—

ایساواسیہ مِدم سروم یتکنچ جگتیام جگت
تین تیکتین بھنجیتھا ما گردھ کسیہ سودھنم

सहल है पर धनवानों का ईश्वर के राज में दाखिल होना नामुमकिन है."

जैनों के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर दीक्षित होना चाहते थे. लेकिन उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि करोड़ों और अरबों की दौलत की उनकी मिलकियत उनकी दीक्षा में सबसे बड़ी रुकावट है. आचारांग सूत्र के मुताबिक़, उन्होंने मुनि-दीक्षा के खयाल को एक साल के लिये मुलतवी कर दिया. उस एक बरस में उन्होंने अपना सब धन और दौलत दरिद्रनारायनों में बांट दिया और तब दीक्षा ली. दीक्षा लेने के बाद भी उनके दिल में दया की धारा बहती रहती थी. एक ग़रीब ब्राह्मन के दुःख से भरकर वे उसे अपनी एक बची खुची चादर भी दे डालते हैं.

इसलाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद भी अपरिग्रह की जीती जागती मिसाल थे. अपनी मौत से एक दिन पहले उन्होंने अपनी बीबी हज़रत आयशा से कहा—"अपने पास बिलकुल पैसा न रखो, जो कुछ कहीं बचा कर रख छोड़ा हो तो उसे ग़रीबों में बांट दो." आयशा ने कहीं से किसी वक़्त के लिये छै सोने के दीनार अपने पास चुपके से बचा कर रख छोड़े थे. थोड़ी देर बाद मुहम्मद साहब ने फिर कहा कि जो कुछ हो मुझे दे दो." आयशा ने वही छै सोने के दीनार मुहम्मद साहब के हाथ पर लाकर गिन दिये. मुहम्मद साहब ने उसी दम हुक्म दिया कि उन्हें कुछ ग़रीब कुटुम्बों में बांट दिया जाय. ऐसा ही किया गया. इस पर मुहम्मद साहब ने कहा—"अब मुझे शान्ति मिली. सचमुच अच्छा नहीं था कि मैं अपने अल्लाह से मिलने जाऊं और यह सोना मेरी मिलकियत रहे."

इसलाम के मुताबिक़ मरने के बाद अल्लाह पूछेगा—"ऐ आदमी के बेटे! मैं बीमार था और तू मुझे देखने नहीं आया?" आदमी कहेगा—"ऐ मेरे रब्ब! मैं तुझे देखने के लिये कैसे आ सकता था, तू तो सारे जहान का मालिक है." अल्लाह फिर पूछेगा—"ऐ आदमी के बेटे मैंने तुमसे खाना मांगा था और तूने मुझे खाना नहीं दिया?" आदमी कहेगा—"ऐ मेरे रब्ब! तू तो सारे जहान का पालनहार है मैं तुझे खाना कैसे दे सकता था?" अल्लाह पूछेगा—"ऐ आदमी के बेटे! मैंने तुमसे पानी मांगा और तूने मुझे पानी नहीं दिया?" आदमी कहेगा—"ऐ मेरे रब्ब! मैं तुझे कैसे पानी दे सकता था तू तो सारी दुनिया का मालिक है."

और तब अल्लाह जवाब देगा—"क्या तुझे मालूम नहीं था कि मेरा एक बन्दा बीमार था, तू उसे देखने नहीं गया! क्या तुझे यह मालूम नहीं था कि अगर तू उसे देखने जाता तो सचमुच मुझे उसके पास पाता! क्या तुझे मालूम नहीं था कि मेरे एक बन्दे ने तुमसे खाना मांगा था और तूने उसे खाना नहीं दिया? क्या तू नहीं जानता था कि अगर

سہج ہے پر دھنوانوں کا ایشور کے راج میں داخل ہونا ناممکن ہے ."

جینوں کے چوبیسویں تیرتھنکر بھگوان مہاویر دیکچھت ہونا چاہتے تھے . لیکن انہیں محسوس ہوا کہ کروڑوں اور اربوں کی دولت کی اُن کی ملکیت اُن کی دیکچھا میں سب سے بڑی رکاوٹ ہے . آچارانگ سوتر کے مطابق، منی انہوں نے دیکچھا کے خیال کو ایک سال کے لئے ملتوی کردیا . اُس ایک برس میں انہوں نے اپنا سب دھن اور دولت دردر نرایئوں میں بانٹ دیا اور تب دیکچھا لی . دیکچھا لینے کے بعد بھی اُن کے دل میں دیا کی دھارا بہتی رہتی تھی . ایک غریب براہمن کے دکھ سے بھرکر وے اُسے اپنی ایک بچی کھچی چادر بھی دے ڈالتے ہیں .

اسلام کے پیغمبر حضرت محمد بھی اپریگرہ کی جیتی جاگتی مثال تھے . اپنی موت سے ایک دن پہلے انہوں نے اپنی بی بی حضرت عائشہ سے کہا—"اپنے پاس بالکل پیسہ نہ رکھو، جو کچھ کہیں بچاکر رکھ چھوڑا ہو تو اُسے غریبوں میں بانٹ دو ." عائشہ نے کہیں سے کسی وقت کے لئے چھ سونے کے دینار اپنے پاس چپکے سے بچاکر رکھ چھوڑے تھے . تھوڑی دیر بعد محمد صاحب نے پھر کہا کہ جو کچھ ہو مجھے دے دو." عائشہ نے وہی چھ سونے کے دینار محمد صاحب کے ہاتھ پر لاکر گن دیئے . محمد صاحب نے اُسی دم حکم دیا کہ انہیں کچھ غریب کنبوں میں بانٹ دیا جائے . ایسا ہی کیا گیا . اِس پر محمد صاحب نے کہا—"اب مجھے شانتی ملی . سچ مچ اچھا نہیں تھا کہ میں اپنے اللہ سے ملنے جاؤں اور یہ سونا میری ملکیت رہے ."

اسلام کے مطابق مرنے کے بعد اللہ پوچھےگا—"اے آدمی کے بیٹے ! میں بیمار تھا اور تو مجھے دیکھنے نہیں آیا ؟" آدمی کہےگا—"اے میرے رب ! میں تجھے دیکھنے کے لئے کیسے آسکتا تھا، تو تو سارے جہان کا مالک ہے ." اللہ پھر پوچھےگا—"اے آدمی کے بیٹے میں نے تجھ سے کھانا مانگا تھا اور تو نے مجھے کھانا نہیں دیا ؟ آدمی کہےگا—"اے میرے رب ! تو تو سارے جہان کا پالن ہار ہے میں تجھے کھانا کیسے دے سکتا تھا ؟" اللہ پوچھےگا—اے آدمی کے بیٹے ! میں نے تجھ سے پانی مانگا اور تو نے مجھے پانی نہیں دیا ؟" آدمی کہیگا—"اے میرے رب ! میں تجھے کیسے پانی دے سکتا تھا تو تو سارے دنیا کا مالک ہے ."

اور تب اللہ جواب دیگا—"کیا تجھے معلوم نہیں تھا کہ میرا ایک بندہ بیمار تھا، تو اُسے دیکھنے نہیں گیا ! کیا تجھے یہ معلوم نہیں تھا کہ اگر تو اُسے دیکھنے جاتا تو سچ مچ مجھے اُس کے پاس پاتا ! کیا تجھے معلوم نہیں تھا کہ میرے ایک بندے نے تجھ سے کھانا مانگا تھا اور تو نے اُسے کھانا نہیں دیا ! کیا تو نہیں جانتا تھا کہ اگر

दान की अर्थ नीति

(विश्वम्भरनाथ पांडे)

आज देश में चारों ओर तरह तरह के दानों की चर्चा सुनाई देती है—आत्मदान, विद्यादान, श्रमदान, भूदान, सम्पत्तिदान और जीवनदान आदि. जिस समाज में अमीर ग़रीब का बोलबाला हो, दान की वहां एक ख़ास अहमियत होती है. दौलत के असम बंटवारे को दान के ज़रिये बराबर करने की कोशिश की जाती है.

दान की यह परम्परा कोई नई नहीं है. हर धर्म ने इसे मुक्ति (निजात) की ज़रूरी शर्त बताया है. पानी की तरह धन भी अगर एक जगह इकट्ठा रहेगा तो वह सड़ान पैदा करेगा—रूहानी सड़ान. धर्म गुरुओं ने उपदेश दिया कि जिस तरह आसमान सूरज की तपिश से पृथ्वी का जल इकट्ठा करता है और फिर बादलों के ज़रिये बारिश से उस जल को फिर से पृथ्वी को वापस कर देता है उसी तरह समाज में भी अलग अलग आदमियों के ज़रिये कमाई हुई पूंजी को दान द्वारा फिर सब के हित में बांट देना चाहिये. मज़हबी पैग़म्बरों ने हमें बताया है कि आत्मा का परमात्मा में मिलना ही ज़िन्दगी का सब से बड़ा मक़सद है और इस मक़सद के हासिल करने में सबसे बड़ी बाधा धन है.

एक बार हज़रत ईसा के पास एक नौजवान धनी आया और बोला—"सद् गुरु! निजात हासिल करने के लिये मुझे किस तरह का व्योहार करना चाहिये?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—"तुम मुझे सद् गुरु क्यों कहते हो? सिर्फ़ एक ईश्वर ही सत्य है; लेकिन अगर तुम ज़िन्दगी में सत्य का दर्शन करना ही चाहते हो तो ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करो?" इस पर नौजवान ने पूछा—"ईश्वर की वे आज्ञायें कौन सी हैं?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—"क़त्ल न करना, व्यभिचार न करना, मां बाप की इज़्ज़त करना, और पड़ोसी से मुहब्बत करना." इस पर नौजवान ने कहा—"मैं इन सब नियमों का पालन बचपन से ही करता आया हूं. अब मुझ में किस बात की कमी है?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—"अगर तुम बेदाग़ होना चाहते हो तो जाकर अपनी सारी दौलत बेचकर उसे ग़रीबों में दान कर दो. ऐसा करने से तुम्हें अल्लाह का ख़ज़ाना मिलेगा. तब मेरे पास आकर मेरे चेले बनना." हज़रत ईसा की यह बात सुनकर वह नौजवान नाउम्मीद होकर वहां से चला गया. उसका मन धन दौलत में रमा हुआ था. तब हज़रत ईसा ने अपने चेलों से कहा—"मैं कहता हूं कि धनवानों का जन्नत में दाख़िल होना मुश्किल है. ऊंट का सुई के नाके से निकल जाना

دان کی ارتھ نیتی

(وشمبھرناتھ پانڈے)

آج دیش میں چاروں اور طرح طرح کے دانوں کی چرچا سنائی دیتی ہے—آتم دان، ودیادان، شرمدان، بھودان، سمپتی دان اور جیون دان آدی۔ جس سماج میں امیر غریب کا بول بالا ہو، دان کی وہاں ایک خاص اہمیت ہوتی ہے۔ دولت کے اسم بٹوارے کو دان کے ذریعہ برابر کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔

دان کی یہ پرمپرا کوئی نئی نہیں ہے۔ ہر دھرم نے اسے مکتی (نجات) کی ضروری شرط بتایا ہے۔ پانی کی طرح دھن بھی اگر ایک جگہ اکٹھا رہتا تو وہ سڑان پیدا کریگا—روحانی سڑان۔ دھرم گروؤں نے اپدیش دیا کہ جس طرح آسمان سورج کی تپش سے پرتھوی کا جل اکٹھا کرتا ہے اور پھر بادلوں کے ذریعہ بارش سے اس جل کو پھر سے پرتھوی کو واپس کردیتا ہے اسی طرح سماج میں بھی الگ الگ آدمیوں کے ذریعہ کمائی ہوئی پونجی کو دان دوارا پھر سب کے ہت میں بانٹ دینا چاہئے۔ مذہبی پیغمبروں نے ہمیں بتایا ہے کہ آتما کا پرماتما میں ملن ہی زندگی کا سب سے بڑا مقصد ہے اور اس مقصد کے حاصل کرنے میں سب سے بڑی بادھا دھن ہے۔

ایک بار حضرت عیسیٰ کے پاس ایک نوجوان دھنی آیا اور بولا—"سد گرو! نجات حاصل کرنے کے لئے مجھے کس طرح کا بیوہار کرنا چاہئے؟" حضرت عیسیٰ نے جواب دیا۔ "مجھے سد گرو کیوں کہتے ہو؟ صرف ایک ایشور ہی ستیہ ہے؛ لیکن اگر تم زندگی میں ستیہ کا درشن کرنا ہی چاہتے ہو تو ایشور کی آگیاؤں کا پالن کرو۔" اس پر نوجوان نے پوچھا—"ایشور کی وہ آگیائیں کون سی ہیں؟" حضرت عیسیٰ نے جواب دیا—"قتل نہ کرنا، ویبھچار نہ کرنا، ماں باپ کی عزت کرنا اور پڑوسی سے محبت کرنا۔" اس پر نوجوان نے کہا—"میں ان سب نیموں کا پالن بچپن ہی سے کرتا آیا ہوں۔ اب مجھ میں کس بات کی کمی ہے؟" حضرت عیسیٰ نے جواب دیا—"اگر تم بے داغ ہونا چاہتے ہو تو جاکر اپنی ساری دولت بیچ کر اسے غریبوں میں دان کردو۔ ایسا کرنے سے تمہیں اللہ کا خزانہ ملیگا۔ تب میرے پاس آکر میرے چیلے بننا۔" حضرت عیسیٰ کی یہ بات سن کر وہ نوجوان ناامید ہوکر وہاں سے چلا گیا۔ اس کا من دھن دولت میں رما ہوا تھا۔ تب حضرت عیسیٰ نے اپنے چیلوں سے کہا—"میں کہتا ہوں کہ دھنوانوں کا جنت میں داخل ہونا مشکل ہے۔ اونٹ کا سوئی کے ناکے سے نکل سکنا

बोली तामिल और मलयालम से ज्यादा द्राविड़ी रंग लिये हुए है तो उसके मानी यह जरूरी नहीं निकलते कि हम में द्राविड़ी खून भी ज्यादा है. साथ ही यह भी मानना पड़ता है कि खून का थोड़ा बहुत असर बोली पर पड़ ही जाता है. मुझे कोई मद्रासी बोली नहीं आती और न मुझे असल द्राविड़ी जबान का इल्म है. इसलिये मेरे पास एक ही माप रह जाता है जिससे अंदाजा लगाया जा सके कि खड़ी बोली द्राविड़ी ज्यादा है या तामिल. यह माप ड़ है. यह मैं मानता हूं कि यह माप कुछ बहुत अच्छा नहीं, लेकिन जो है उसे इस्तेमाल तो करना चाहिये. मेरे ख्याल में जितने लफ्ज आम घरों की खड़ी बोली में ड़ वाले हैं और किसी बोली में नहीं. पंजाबी, सिंधी, राजस्थानी, ब्रज, अवधी, गुजराती, मरहटी, बिहारी, बंगाली की बाबत तो मैं अपने इल्म से कह सकता हूं. तामिल, कनड़, मलयालम वगैरा का इल्म नहीं. उन से मुकाबिला करने के लिये मैंने यह लम्बी फेहरिस्त तैयार की है ताकि वह अपनी जबान की ऐसी फेहरिस्त बनाएं और जांच सकें.

بولی تامل اور ملیالم سے زیادہ دراوڑی رنگ لئے ہوئے ہے تو اس کے معنی یہ ضروری نہیں نکلتے کہ ہم میں دراوڑی خون بھی زیادہ ہے۔ ساتھ ہی یہ بھی ماننا پڑتا ہے کہ خون کا تھوڑا بہت اثر بولی پر پڑ ہی جاتا ہے مجھے کوئی مدراسی بولی نہیں آتی اور نہ مجھے اصل دراوڑی زبان کا علم ہے۔ اس لئے میرے پاس ایک ہی ماپ رہ جاتا ہے جس سے اندازہ لگایا جا سکے کہ کھڑی بولی دراوڑی زیادہ ہے یا تامل۔ یہ ماپ ڑ ہے۔ یہ میں مانتا ہوں کہ یہ ماپ کچھ بہت اچھا نہیں لیکن جو ہے اسے استعمال تو کرنا چاہئے۔ میرے خیال میں جتنے لفظ عام گھروں کی کھڑی بولی میں ڑ والے ہیں اور کسی بولی میں نہیں۔ پنجابی، سندھی، راجستھانی، برج، اودھی، گجراتی، مرہٹی، بہاری، بنگالی کی بابت تو میں اپنے علم سے کہ سکتا ہوں۔ تامل، کناڑ، ملیالم وغیرہ کا علم نہیں۔ ان سے مقابلہ کرنے کے لئے میں نے یہ لمبی فہرست تیار کی ہے تاکہ وہ اپنی اپنی زبان کی ایسی فہرست بنائیں اور جانچ سکیں۔

(आत्मा) कहा जाता है और उस आत्मा के अनुसार ही हमारा विधान कहता है कि हमारी बोली उभारी जाये.

गुन्वदी उन लफ़्ज़ों को कहा जाता है जो किसी आवाज़ की नक़ल में बने हों. खड़ी बोली में यह एक अनोखी बात है कि जितने गुन्वदी लफ़्ज़ उसमें ऐसे हैं जहां और बोलियों में र आती हो हमारी बोली में ड़ आयेगी—जैसे चिड़िया, कड़की, खड़का, धाक, धड़क, धड़ाका, धड़ाधड़, गुलगपाड़ा, बड़बड़ कड़कड़ाता जाड़ा, लड़खड़ा और ऐसे बीसों और लफ़्ज़ हैं. बच्चों की कहानियों में तो ऐसे लफ़्ज़ बच्चों को बहुत प्यारे होते हैं जैसे—सार सब्बड़ सड़ बरसों, हांडी धोई खड़बड़ क्यों. ऐसी प्यारी आवाज़ को सिर्फ़ संस्कृती पंडित ही दोहरा सकते हैं. ख़ूबी यह कि संस्कृत इस द्राविड़ी आवाज़ से बच न सकी, लेकिन उसे अपनाने की संस्कृत को हिम्मत न पड़ी. करती तो चोरी पकड़ी जाती. संस्कृत बनाने वालों की यह कोशिश थी कि संस्कृत शुद्ध आर्य भाशा समझी जाये और इसलिये वह संस्कृत के द्राविड़ीपने को छिपाना चाहते थे. संस्कृती पंडित अब भी इसी कोशिश में हैं.

जब तक कोई विद्वान यह फ़ैसला न करे कि संस्कृत में कौन से लफ़्ज़ आर्य भाशा के हैं और कौन से द्राविड़ी और दूसरी देसी बोलियों के हैं तब तक यह भी फ़ैसला नहीं होता कि खड़ी बोली में कितने लफ़्ज़ द्राविड़ी और कितने आर्य भाशा के हैं. आवाज़ और ग्रामर के हिसाब से तो खड़ी बोली साफ़ द्राविड़ी ज़बान है. उसे आर्य भाशा कहना नादानी है.

मिस्टर हेरास (Heras) जो प्राचीन हिन्दी इतिहास के माहिर समझे जाते हैं उनकी 17 बरस खोज करने के बाद यह राय है कि पंजाबी और हिन्दुस्तानी बोलने वालों में द्राविड़ी ख़ून बहुत ज़्यादा है बनिस्बत तामिल, तेलेगू या मलयालम के बोलने वालों के. हमें यह बात बुरी मालूम होती है क्योंकि हज़ारों बरस से संस्कृत वाले एक ज़बान होकर इस बात पर बड़ा ज़ोर देते हैं कि आर्य बहुत शिक्षित और महापुरुश लोग थे और उन दिनों यहां के असली बासी जंगली, कपटी और कमीने थे. यह सच है कि उन किताबों के लिखे जाने के बाद मोहनजोदारो भी निकला, हड़प्पा भी निकला और इस क़िस्म के बहुत से खंडरात इराक़ वग़ैरा में भी निकले, जिनसे साफ़ ज़ाहिर है कि इस मामले में हमारी संस्कृत की किताबें सच्ची नहीं. लेकिन हम पर तो उनका कुछ ऐसा जादू चला हुआ है कि हम उन्हें ठीक ही समझते हैं.

यह मैं जानता हूं कि बोली का नसल से सम्बन्ध ज़रूरी नहीं. यह मुमकिन है कि दो लोग जिनका आपस में ख़ून का कोई रिश्ता नहीं एक ही बोली बोलते हों और यह भी मुमकिन है कि एक बाप के दो बेटों की बोली बिलकुल जुदा हो. इसलिये अगर यह भी मान लिया जाये कि खड़ी

(آتما) کہا جاتا ہے اور اس آتما کے انوسار ہی ہمارا ودھان کہتا ہے کہ ہماری بولی ابھاری جائے۔

گنودی ان لفظوں کو کہا جاتا ہے جو کسی آواز کی نقل میں بنے ہوں۔ کھڑی بولی میں یہ ایک انوکھی بات ہے کہ جتنے گنودی لفظ اس میں ایسے ہیں جہاں اور بولیوں میں ر آتی ہو ہماری بولی میں ڑ آئے گی۔ جیسے چڑیا، کڑکی، کھڑکا، دھاک، دھڑک، دھڑاکا، دھڑادھڑ، گل گپاڑا، بڑبڑ، کڑکڑاتا جاڑا، لڑکھڑا اور ایسے بیسوں اور لفظ ہیں۔ بچوں کی کہانیوں میں تو ایسے لفظ بچوں کو بہت پیارے ہوتے ہیں جیسے سار سبڑ سڑ برسوں، ہانڈی دھوئی کھڑبڑ کیوں۔ ایسی پیاری آواز کو صرف سنسکرتی پنڈت ہی دوہرا سکتے ہیں۔ خوبی یہ کہ سنسکرت اس دراوڑی آواز سے بچ نہ سکی، لیکن اسے اپنانے کی سنسکرت کو ہمت نہ پڑی، کرتی تو چوری پکڑی جاتی۔ سنسکرت بنانے والوں کی یہ کوشش تھی کہ سنسکرت شدھ آریہ بھاشا سمجھی جائے اور اس لئے وہ سنسکرت کے دراوڑی پنے کو چھپانا چاہتے تھے۔ سنسکرتی پنڈت اب بھی اسی کوشش میں ہیں۔

جب تک کوئی ودوان یہ فیصلہ نہ کرے کہ سنسکرت میں کون سے لفظ آریہ بھاشا کے ہیں اور کون سے دراوڑی اور دوسری دیسی بولیوں کے ہیں تب تک یہ بھی فیصلہ نہیں ہوتا کہ کھڑی بولی میں کتنے لفظ دراوڑی اور کتنے آریہ بھاشا کے ہیں۔ آواز اور گرامر کے حساب سے تو کھڑی بولی صاف دراوڑی زبان ہے۔ اسے آریہ بھاشا کہنا نادانی ہے۔

مسٹر ہراس (Heras) جو پراچین ہندی اتہاس کے ماہر سمجھے جاتے ہیں ان کی 17 برس کھوج کرنے کے بعد یہ رائے ہے کہ پنجابی اور ہندستانی بولنے والوں میں دراوڑی خون بہت زیادہ ہے بنسبت تامل، تیلیگو یا ملئم کے بولنے والوں کے۔ ہمیں یہ بات بری معلوم ہوتی ہے کیونکہ ہزاروں برس سے سنسکرت والے ایک زبان ہو کر اس بات پر بڑا زور دیتے ہیں کہ آریہ بہت شکشت اور مہا پرش لوگ تھے اور ان دنوں کے یہاں کے اصلی باسی جنگلی، کپٹی اور کمینے تھے۔ یہ سچ ہے کہ ان کتابوں کے لکھے جانے کے بعد موہن جے دھارو بھی نکلا، ہڑپا بھی نکلا اور اس قسم کے بہت سے کھنڈرات عراق وغیرہ میں بھی نکلے جن سے صاف ظاہر ہے کہ اس معاملہ میں ہماری سنسکرت کی کتابیں سچی نہیں۔ لیکن ہم پر تو ان کا کچھ ایسا جادو چلا ہوا ہے کہ ہم انہیں ٹھیک ہی سمجھتے ہیں۔

یہ میں جانتا ہوں کہ بولی کا نسل سے سمبندھ ضروری نہیں۔ یہ ممکن ہے کہ دو لوگ جن کا آپس میں خون کا کوئی رشتہ نہیں ایک ہی بولی بولتے ہوں اور یہ بھی ممکن ہے کہ ایک باپ کے دو بیٹوں کی بولی بالکل جدا ہو۔ اس لئے اگر یہ مان بھی لیا جائے کہ کھڑی

लफ़्ज़ हैं तो भी यह जरूर कि हमारी बोली में पांच एक सौ लफ़्ज़ ड़ के आम बाज़ारू हैं ड़ का सिक्का जमाने के लिये काफ़ी हैं.

ड़ से कोई लफ़्ज़ शुरू नहीं होता लेकिन अगर पहला हरफ़ र हो और आख़िरी ड़ तो पहली र भी ड़ की आवाज़ अख़्तियार करने लगती है—जैसे ड़बड़, ड़बड़ी, ड़ेवड़ी, ड़ीढ़, ड़ोड़ी, ड़ौड़. कुछ ऐसे लफ़्ज़ भी हैं जिनकी बीच की र भी धीरे धीरे ड़ की आवाज़ पकड़ने लगी है. यह एक अजीब मामला है क्योंकि दो भेदरू आवाज़ें आपस में नहीं बदलतीं. भेदरू उन दो आवाज़ों को कहते हैं जिनके बदलने से बहुत लफ़्ज़ों के माने बदल जाते हैं—जैसे त और ट आपस में भेदरू हैं. तीन, बात, पात की त की जगह अगर हम ट कहेंगे तो टीन, बाट, पाट और ही लफ़्ज़ हो जाते हैं. र और ड़ आपस में बहुत थोड़े लफ़्ज़ों में भेद करती है—जैसे सरक और सड़क, सर और सड़, पर और पड़. चूंकि ऐसे लफ़्ज़ों की गिनती बहुत कम है इसलिये र और ड़ आपस में भेदरू नहीं हैं. यह ही हाल ढ़ और ड़ का है. फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि कुछ लफ़्ज़ों में पढ़े हुए र कहते हैं, अनपढ़ ड़. और कुछ लफ़्ज़ों में अनपढ़ ढ और पढ़े हुए ड़ करते हैं—जैसे बुड्ढा, बूढ़ा, मुड्ढा, मूढ़ा. ऐसा मालूम होता है कि पंजाबी का रंग अनपढ़ों पर ज़्यादा चढ़ा है. सुनने में ल और ड़ की आवाज़ में बहुत भेद है लेकिन कुछ ज़िलों में ल भी ड़ की आवाज़ ले लेता है—जैसे होली होड़ी, बावला बावड़ा, बावली बावड़ी. क्यों? मुझे नहीं मालूम.

आजकल के बोली के सारे विद्वानों की यह राय है कि जितनी कम आवाज़ें किसी बोली में हों, यानी जितने अक्षर (हर्फ़) किसी बोली में ज़रूरी हों उतनी ही वह बोली अच्छी, जितने हर्फ़ ज़्यादा हों, उतनी ही वह बोली गंदी. इन विद्वानों का यह भी कहना है कि अक्षर सिर्फ़ उन ही आवाज़ों के लिये बनाने चाहियें जो इस बोली में भेदरू हों. यह ड़ भेदरू नहीं, इसलिये अगर हम किसी तरह उसे निकाल सकें तो हम अपनी बोली को सुधार सकते हैं. मुश्किल यह है कि इन विद्वानों की यह भी राय है कि किसी बोली में कोई भी सुधार या अदल बदल और ख़ासकर उसकी आवाज़ों में सोच समझ जान बूझ कर नहीं किया जा सकता. ज़बानें बदलती हैं और उनकी आवाज़ें भी थोड़ी बहुत बदलती हैं, लेकिन इन सब तबदीलियों की जड़ में ऐसी ताक़तें होती हैं जो बेसुध अचेत होती हैं. ड़ का ही हाल देख लो. यह बढ़ रही है. एकड़, रबड़, बूचड़ तीनों लफ़्ज़ अंग्रेज़ी से हमने लिये, लेकिन अंग्रेज़ी र को हमने ड़ से बदलकर. क्यों? कोई नहीं जानता. किसने? कोई जान नहीं सकता, क्योंकि एक का काम नहीं. करोड़ों नहीं तो लाखों का काम है. बिना सोचे समझे. बोली की इन बेसुध अचेत ताक़तों को ही बोली की genius

لفظ ہیں تو بھی یہ امر کہ ہماری بولی میں پانچ ایک سو لفظ ڑ کے عام بازارو ہیں ڑ کا سکہ جمانے کے لئے کافی ہے۔

ڑ سے کوئی لفظ شروع نہیں ہوتا لیکن اگر پہلا حرف ر ہو اور آخری ڑ تو پہلی ر بھی ڑ کی آواز اختیار کرنے لگتی ہے۔ جیسے ڑبڑ، ڑبڑی، ڑیوڑی، ڑوڑھی، ڑاڑ وغیرہ۔ کچھ ایسے لفظ بھی ہیں جن کی بیچ کی ر بھی دھیرے دھیرے ڑ کی آواز پکڑنے لگی ہے۔ یہ ایک عجیب معاملہ ہے کیونکہ دو بھیدرو آوازیں آپس میں نہیں بدلتیں۔ بھیدرو ان دو آوازوں کو کہتے ہیں جن کے بدلنے سے بہت لفظوں کے معنے بدل جاتے ہیں۔ جیسے ت اور ٹ آپس میں بھیدرو ہیں۔ تین، بات، پات کی ت کی جگہ اگر ہم ٹ کہیں تو ٹین، باٹ، پاٹ اور ہی لفظ ہوجاتے ہیں۔ ر اور ڑ آپس میں بہت تھوڑے لفظوں میں بھید کرتی ہیں۔ جیسے سرک اور سڑک، سر اور سڑ، پر اور پڑ۔ چونکہ ایسے لفظوں کی گنتی بہت کم ہے اس لئے ر اور ڑ آپس میں بھیدرو نہیں۔ یہ ہی حال ڈ اور ڑ کا ہے۔ فرق صرف اتنا ہے کہ کچھ لفظوں میں پڑھے ہوئے ر کہتے ہیں انپڑھ ڑ۔ اور کچھ لفظوں میں انپڑھ ڈ اور پڑھے ہوئے ڑ کہتے ہیں۔ جیسے بڈھا، بوڑھا، مڈھا، موڑھا۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پنجابی کا رنگ انپڑھوں پر زیادہ چڑھا ہے۔ سننے میں ل اور ڑ کی آواز میں بہت بھید ہے لیکن کچھ ضلعوں میں ل بھی ڑ کی آواز لے لیتا ہے جیسے ہولی ہوڑی، باولا باوڑا، باولی باوڑی، کیوں؟ مجھے نہیں معلوم۔

آجکل کے بولی کے سارے ودوانوں کی یہ رائے ہے کہ جتنی کم آوازیں کسی بولی میں ہوں، یعنی جتنے کم اکشر (حرف) کسی بولی میں ضروری ہوں اتنی ہی وہ اچھی، جتنے حرف زیادہ ہوں اتنی ہی وہ بولی گندی۔ ان ودوانوں کا یہ بھی کہنا ہے کہ اکشر صرف ان ہی آوازوں کے لئے بنانے چاہئیں جو اس بولی میں بھیدرو ہوں۔ یہ ڑ بھیدرو نہیں اس لئے اگر ہم کسی طرح اسے نکال سکیں تو ہم اپنی بولی کو سدھار سکتے ہیں۔ مشکل یہ ہے کہ ان ودوانوں کی یہ بھی رائے ہے کہ کسی بولی میں کوئی بھی سدھار یا ادل بدل اور خاصکر اس کی آوازوں میں سوچ سمجھ جان بوجھ کر نہیں کیا جاسکتا۔ زبانیں بدلتی ہیں اور ان کی آوازیں بھی تھوڑی بہت بدلتی ہیں لیکن ان سب تبدیلیوں کی جڑ میں ایسی طاقتیں ہوتی ہیں جو بے سدھ اچیت ہوتی ہیں۔ ڑ کا ہی حال دیکھ لو۔ یہ بڑھ رہی ہے۔ ایکڑ، ربڑ، بوچڑ تینوں لفظ انگریزی سے ہم نے لئے، لیکن انگریزی ر کو ہمارا ڑ سے بدل کر۔ کیوں؟ کوئی نہیں جانتا۔ کس نے؟ کوئی جان نہیں سکتا، کیونکہ ایک کا کام نہیں۔ کروڑوں نہیں تو لاکھوں کا کام ہے۔ بنا سوچے سمجھے۔ بولی کی ان بے سدھ اچیت طاقتوں کو ہی بولی کی genius

लड़कढ़िया (पालकी), लंगड़ (ईंट), लेवा, लांगड़ी, लंगड़ (लजड़ू) लीगी (लोहा) केढ़ा (कौन सा), कड़ियल जवान, कड़क.

लंगड़ा*, लीचड़, लकड़ी*, लकड़हारा, लच्चड़, लड़ जैसे एक लड़ी दो लड़ी, लड़, (पल्ला), लड़का*, लड़कारी, लड़बावला, लाड़ी, लासड़ी (बेमद और गरसल), लप्पड़ या लप्पड़ा, लफड़ी (कपड़ा लत्ता), लोढ़ा (बड़ा), लोचड़ा, लमढंग या लमढंगा, लोड़ (जरूरत), लगड़ी (ओढ़नी), लंगुड़ी (शराब), लण्ढड़, लेढ़ा (रेवड़).

मोड़*, मीड़, मूड़, मुड़मुड़े, मंगोड़, मरोड़ (पेचिश, गुस्सा, जलन), मंडी, मूढ़ा, मीढ़, जली मुराड़ी मसूड़े मुठभेड़.

नाड़ा (इजारबन्द), नाड़ा (नाला), नाड़, नाड़ी, नाड़ (गर्दन), नुक्कड़, निगोड़ी, निवाड़, निचोड़, नकचढ़ा, नकतुड़ा, नगाड़ा, ओढ़ना, ओढ़नी.

पेड़ा, पेड़ी (आटे की), पेड़ी (धड़) परौड़ और परौड़वा, पूड़ला, परौंदा, फक्कड़, फड़क, फड़ (दूकान), फड़ (जुआ), फड़िया (जुआरी), फड़िया (छोटा दूकानदार) फफड़ा, फेफड़ा*, फोड़, फोड़ा*, पटड़ी, पटड़ा, पीछड़, पटड़ी (चलने के लिये), पाड़, पाड़, पकड़ धकड़, पीढ़ी (नसल) पीढ़ा और पीढ़ी, फुव्वार या फुवाड़, पैंतड़ा, पौड़ी, पहाड़, पगड़ी, पुड़ा, पुड़ी*, फड़, पीड़ (दर्द) पूड़ा, पिछवाड़ी, पिछवाड़ा, पपड़ी, पलंगड़ी.

रिड़ या राड़ (जिद), राड़ (डरपोक) झाड़, रीढ़, रोड़ी, रूड़, रोड़ा, रूड़, रूढ़ी (रिवाज), रूड़ी (खाली जमीन) रेवड़, रेवड़ी, रोकड़, रोकड़ बही, रूड़ा, रगड़, रसड़ी, राजवाड़ा.

सड़क, साड़ी*, साड़ा, सड़ी या सड़ियल, सड़बड़, सकेड़, साड़ी (ढाकी) सीढ़ी, सुघड़, साढ़ू, सिंघाड़ा, सुघड़ी, स्योड़ा, सोहड़, सिलखड़ी.

थोड़ी*, ठोड़ी*, टीड़ी, तपड़, थप्पड़*, तकराड़, तगड़ा, तगड़ी, टुकड़ा, टड़, टढ़ा, तड़, तड़के, थड़ा, तोड़, ताड़ा, तड़प, तुड़प, तोबड़ा, थोबड़ा, तुक्कड़, तूंबड़ी, तामड़ा, तांबड़ी. (तांब) तिलड़ा, टंगड़ी, छिकड़ा, टेढ़मेढ़, टुक्कड़, ठाड़ा, टुक्कड़ तोड़, तड़ाका, तड़ या धड़बन्दी, तम्बाड़ी, थड़ा, उड़, उड़ू, उड़ान, उड़ी.

मुझे अफसोस है कि इस फेहरिस्त की वजह से यह मजमून लम्बा ही नहीं बेढंगा सा हो गया है लेकिन इसके बगैर मैं ड़ की बड़ाई ठीक जता नहीं सकता था. इस फेहरिस्त में 700 से ऊपर लफ्ज हैं. मैं जानता हूं कि मेरे पढ़े हुए भाई उनमें से कुछ लफ्जों में ड़ की जगह र ठीक समझते हैं लेकिन चूंकि मेरा यह ख्याल है कि मेरी बोली की बागडोर मेरे बड़े भाई अनपढ़ों के हाथ में है इसलिये बोली के मामले में उनका लोहा ज्यादा मानता हूं. अगर यह मान भी लिया जाये कि इनमें से बीस या सौ भी अरबी के

لڑکھڑیا (پالکی) لنگڑ (اینٹ) لیوا، لنگڑی، لنگڑ (اجڈ) لیوڑی (لوہا) کیڑا (کونسا) کڑیل جوان، کڑک ۔

لنگڑا*، لیچڑ، لکڑی*، لکڑہارا، لچڑ، لڑ جیسے ایک لڑی دو لڑی، لڑ (پلّہ) لڑکا*، لڑکاری، لڑباولا، لاڑی، لاسڑی (بےمزہ اور گرسل) لپڑ یا لپڑا، لفڑی (کپڑا لتا) لوڑھا (بڑا) لوچڑا، لمڈھنگ یا لمڈھنگا، لوڑ (ضرورت) لگڑی (اوڑھنی) لنگڑی (شراب) لنڈھڑ، لیڑھا (ریوڑ)

موڑ*، میڑ، موڑ، مڑمڑے، منگوڑ، مروڑ (پیچش، غصہ، جلن) منڈی، موڑھا، میڑھ، جلی مراڑی، مسوڑے، مٹھ بھیڑ ۔

ناڑا* (ازاربند) ناڑا (نالا) ناڑ، ناڑی، ناڑ (گردن) نکڑ، نگوڑی، نواڑ، نچوڑ، نک چڑھا، نک توڑا، نگاڑا، اوڑھنا، اوڑھنی ۔

پیڑا، پیڑی (آٹے کی) پیڑی (دھڑ) پروڑ اور پروڑھا، پوڑلا، پروڑھا، پھکڑ، پھڑک، پھڑ (دکان) پھڑ (جوا) پھڑیا (جواری) پھڑیا (چھوٹا دوکاندار) پھکڑا، پھیپھڑا*، پھوڑ، پھوڑا*، پٹڑی، پٹڑا، پیچھڑ، پٹڑی (چلنے کے لئے) پاڑ، پاڑ، پکڑدھکڑ، پیڑھی (نسل) پیڑھا اور پیڑھی، پھوار یا پھواڑ، پینترا، پوڑی، پہاڑ، پگڑی، پڑا، پڑی*، پھڑ، پیڑ (درد) پوڑا، پچھواڑی، پچھواڑا، پپڑی، پلنگڑی ۔

رڑیا راڑ (ضد) راڑ (ڈرپوک) ڑاڑ، ریڑھ، روڑی، روڑ، روڑا، روڑ، روڑھی (رواج) روڑی (خالی زمین) ریوڑ، ریوڑی، روکڑ، روکڑ بہی، روڑا، رگڑ، رسڑی، راج واڑا ۔

سڑک، ساڑھی*، ساڑا، سڑی یا سڑیل، سڑبڑ، سکیڑ، ساڑی (ڈھاکی) سیڑھی، سگھڑ، ساڑھو، سنگھاڑا، سگھڑی، سیوڑا، سوہڑ، سل کھڑی ۔

تھوڑی*، ٹھوڑی*، ٹیڑی، تپڑ، تھپڑ*، تکراڑ، تگڑا، تگڑی، ٹکڑا*، ٹڑ، ٹڑا، تڑ، تڑکے، تھڑا، توڑ، تاڑا، تڑپ، تڑپ، توبڑا، تھوبڑا، تکڑ، تونبڑی، تامڑا، تانبڑی (تانبا) تلڑا، ٹنگڑی، چھکڑا، ٹیڑھ میڑھ، ٹکڑ، ٹھاڑا، ٹکڑ توڑ، تڑاکا، تڑ یا دھڑبندی، تمباڑی، تھڑا، اڑ، اڑو، اڑان، اڑی ۔

مجھے افسوس ہے کہ اس فہرست کی وجہ سے یہ مضمون لمبا ہی نہیں بےڈھنگا سا ہو گیا ہے لیکن اس کے بغیر میں ڑ کی بڑائی ٹھیک جتا نہیں سکتا تھا ۔ اس فہرست میں 700 سے اوپر لفظ ہیں ۔ میں جانتا ہوں کہ میرے پڑھے ہوئے بھائی ان میں سے کچھ لفظوں میں ڑ کی جگہ ر ٹھیک سمجھتے ہیں لیکن چونکہ میرا یہ خیال ہے کہ میری بولی کی باگ ڈور میرے بڑے بھائی ان پڑھوں کے ہاتھ میں ہے اس لئے بولی کے معاملہ میں ان کا لوہا زیادہ مانتا ہوں ۔ اگر یہ مان بھی لیا جائے کہ ان میں سے بیس یا سو بھی عربی کے

बड़ः॥, बाड़॥, बारह खड़ी, बाढ़ी या बढ़े हैं, बड़ा, बड़ाई, बेड़, (किश्ती) बीड़ा, बेड़, (जंजीर), बिगाड़, बिछौड़ा, बूड़ा, बनड़ा॥, बेड़, बेड़ा, बढ़ापा, बूढ़ा॥, बढ़ौती, बोड़ा (दांत टूटा), ब्योड़ा, बौछाड़, भंगड़, भड़क, भड़भड़, भड़ि, भड़भूंजा, बेड़नी (नटनी) बूचड़, बूचड़ खाना, भड़वा, भड़ास, भाड़ा, भड़ैत, भीड़ भड़क्का, मुक्कड़, भूख हड़ताल, भगोड़, बखेड़ा, बजड़ा (किश्ती) बजड़ा, (बाजरा), बंसवाड़ी, बड़भाग, बड़बोल, बढ़न, बड़हार, बड़ीमाता (सीतला), बढ़िया, बढ़ावा, बढ़ोतरी या बढ़ती (तरक़्क़ी), बढ़ती (ज़्यादा वज़न) बांकड़ी, बांड़ा, बिगड़े दिल, बेड़ (नास) बसोड़ा.

छड़, छड़ी, छड़ा (अकेला), छड़ा (ज़ेवर) चड़, छकड़ा, चड़चड़, छप्पड़, छप्पड़ (तालाब), चौड़ा॥, चूड़ा, चूड़ा, (ज़ेवर), चूड़ी, चूढ़ा॥, चूतड़, चौपड़, चुड़ैल, चीथड़े, चढ़ावा, चपड़ा, चचड़ी, चिड़चिड़ा, चींचपड़, चीड़फाड़, चिकनी चुपड़ी, चुनड़ी, चूड़ा करन, चूड़ा पाश, चौकड़, (हिरन की), चोकड़ा (ज़ेवर) चौघड़ा, चौगोड़िया, छाबड़ी, छाबड़ी वाला, चम ?, छुवाड़ा, छेड़ छाड़, छीचड़ा, चावड़ी बाज़ार.

धड़॥, धड़ंग, धड़क, धड़कन, धड़का, धड़ा, धड़ाका, धड़ाधड़, धड़ा बन्दी, धड़ाम, धड़ी, धाड़, धुलेड़ी, दौड़॥, घुड़दौड़.

घड़ा॥, घड़ौंची, घड़ी॥, घड़ी, गठड़ी, गाढ़ा, गाढ़ा, गड़बड़ गाड़ी, गढ़, घोड़ा॥, घोड़ा (बन्दूक़ का), गुड़िया, गोढ़ा, गुड़ई, गढ़, घुड़की, गोबड़, गादड़, गड़ासी, गुदड़ी, गुदड़ी बाज़ार, गुलगपाड़ा, गौड़ (जात और देस) घुड़चढ़ा, घुड़चढ़ी, घोड़ी (राग), घुमड़ी, गूगड़.

हड़ (बाढ़), हड़ (ज़ेवर), हड़कम्प, हंसोड़, हड़क, हड़काया, हड़ताल॥, हड़बड़, हड़बड़ी, हरीड़ा, हतोड़ा॥, हीजड़ा॥, हुड़कना, हड़धंग, हुल्लड़, हेकड़ी, होड़ि या होड़ा होड़ी, हाड़ (असाढ़), हाड़ी (मेवा), हाड़ी (फ़सल).

जाड़ा॥, जड़॥, जड़ (बुद्धू), जख़ीड़ा (ज़ख़ीरा), जड़याया, जोड़ी, जड़िया, जबड़ा या जबाड़ा, जोड़न, जौहड़, झाड़क, झाड़, झाड़न, झड़, पतझड़, झगड़ा, जोड़ा (लिबास का), झाड़ू.

कड़ा॥, कड़ी (छत की), कड़ी और कड़ीदार (चेन), कड़ी (सख़्त), कुड़ी या कढ़ी, कटड़ा (मोहल्ला), कड़ाई (मज़दूरी), कढ़ाई, कथक्कड़, कनपीड़ा, कड़कड़, कड़कड़ाता जाड़ा, कढ़ैया, किरकड़ा, कड़क, किड़क, खिड़की, ककड़ी, कूड़ा, खड़ाऊं॥, कपड़ा॥, कीड़ा (सख़्त), कबाड़, कुबड़ा, कांगड़ी, कासड़ा, कुड़कुड़ी, कढ़ल, कीचड़॥, कुकड़ी (सूत की), करोड़पति, कुड़क (क़ुर्क़ी), कुड़यक (ज़रा सा), कोड़, कुड़िया, कूड़ा करकट, खड़िया मिट्टी, खड़ग, खरचड़ी, खोपड़ी, खाड़ी, खिलवाड़, खेती बाड़ी, खड़खड़ा (गाड़ी),

باڑ*' باڑھ*' بارہ کھڑی' باڑھی یا بڑھتی*' بڑا*' بڑائی' بیڑی*' (کشتی)' بیڑا' بیڑی (زنجیر)' بگاڑ' بچھوڑا' بکڑا*' بیڑ' بینڈرا' بڑھاپا' بوڑھا*' بڑھوتی' بوڑا (دانت ٹوٹا)' بیوڑا' بوچھاڑ' بھنگڑ' بھڑک' بھڑبھڑ' بھاڑ' بھڑبھونجا' بیڑنی (نٹنی) بوچڑ' بوچڑ کھانا' بھڑوا' بھڑاس' بھاڑا' بھڑیت' بھیڑ بھڑ کا بھکڑ' بھوک ھڑتال' بھگوڑ' بکھیڑا' بجڑا (کشتی)' بجڑا (باجرہ)' بنس واڑی' بڑبھاگ' بڑبول' بڑھن' بڑھار' بڑی ماتا (سیتلا)' بڑھیا' بڑھاوا' بڑھوتری یا بڑھتی (ترقی)' بڑھتی (زیادہ وزن)' بانکڑی' بانڑا' بگڑے دل' بیڑہ (ناس) بسوڑا۔

چھڑ' چھڑی*' چھڑا (اکیلا' چھڑا (زیور)' چڑ' چھکڑا' چڑ چڑ' چھپڑ' چھپڑ (تالاب) چوڑا* چوڑا* چوڑا (زیور) چوڑی' چوڑھا*' چوتڑ*' چوپڑ' چڑیل' چیتھڑے' چڑھاوا' چپڑا' چچڑی' چڑچڑا' چیں چپڑ' چیرپھاڑ' چکنی چپڑی' چنڑی' چوڑا کرن' چوڑا پاش' چوکڑی (ھرن کی)' چوکڑا (زیور)' چوگھڑا' چوگوڑیا' چھابڑی' چھابڑی والا' چمڑا' چھواڑا' چھیڑ چھاڑ' چھیچھڑا' چاوڑی بازار۔

دھڑ*' دھڑنگ' دھڑک' دھڑکن' دھڑکا' دھڑا' دھڑاکا' دھڑادھڑ' دھڑا بندی' دھڑام' دھڑی' دھاڑ' دھولیڑی' دوڑ* گھوڑ دوڑ*۔

گھڑا*' گھڑونچی' گھڑی*' گھڑی' گٹھڑی' گاڑھا' گاڑھا' گڑبڑ گاڑی' گڑھا' گھوڑا*' گھوڑا (بندوق کا)' گڑیا*' گوڑھا' گڑوئی' گھڑ' گھرکی' گوبڑ' گادڑ' گنڈاسی' گدڑی' گدڑی بازار' گل گپاڑا' گوڑ (ذات اور دیس) گھڑچڑھا' گھڑچڑھی گھوڑی (راگ) گھمڑی' گوگڑ۔

ھڑ (باڑ)' ھڑ (زیور)' ھڑکمپ' ھنسوڑ' ھڑک' ھڑکایا' ھڑتال*' ھڑبڑ' ھڑبڑی' ھڑیڑا' ھتوڑا*' ھیجڑا*' ھڑکنا' ھڑدھنگ' ھلڑ' ھیکڑی' ھوڑیا ھوڑا ھوڑی' ھاڑ (اساڑھ)' ھاڑی (میوہ)' ھاڑی (فصل)

جاڑا*' جڑ*' جڑ (بدھو) جکھیڑا (ذخیرہ) جڑیایا جوڑی' جڑیا' جبڑا یا جباڑا' جوڑن' جوھڑ' جھڑک جھاڑ' جھاڑن' جھڑ' پت جھڑ' جھگڑا' جوڑا (لباس کا) جھاڑو۔

کڑا*' کڑی*' (چھت کی) کڑی اور کڑیدار (چین) کڑی (سخت) کوڑی یا کڑوی' کٹڑا (محلہ) کڑھائی (مزدوری) کڑھائی' کتھکڑ' کن پیڑا' کڑکڑ' کڑکڑاتا جاڑا' کڑھیا' کرکڑا' کڑک' کڑک' کھڑکی' ککڑی' کوڑا' کھڑاؤں*' کپڑا*' کیڑا (سخت) کباڑ' کبڑا' کانگڑی' کاسڑا' کڑکڑی' کڑل' کیچڑ' ککڑی (سوت کی) کروڑپتی' کڑک (قرقی) کڑیک (ذرا سا) کوڑھ' کڑیا' کوڑا' کوڑا کرکٹ' کھڑیا مٹی' کھڑگ' کھرچڑی' کھوپڑی' کھاڑی' کھلواڑ' کھیتی باڑی' کھڑکھڑا (گاڑی)

टहड़ा, खपरैल*, खपड़ा, छप्पड़, पैड़ी या सीढ़ी* ा पोड़ी, थड़ा, मढ़ी, बाड़ी, राजबाड़ी, चबूतड़ा, बेड़ा, ड्योढ़ी, बढ़ाव, बाड़जा, बाड़ा, फलवाड़ी, फुलवाड़ी, अड़ोस-ड़ोस, बगड़ जो शायद बगाल से निकला है.

(5) जानवर

कीड़ा, कीड़ी*, मकोड़ा*, मकड़ी* उड़ने वाली, मकड़ी* ाले वाली, चकचड़, चम चड़ा, भिड़ी, बछड़ा, बछेड़ा, टड़ा, गीदड़ी लोमड़ी, लकड़बग्घा या लकड़ बगड़, बघि-ाड़, बागड़बिल्ला, केकड़ा, घड़ियाल, सिंघाड़ा.

उड़ने वाले जानवरों का आम नाम चिड़िया*, चिड़ी*, चमगादड़, गरुड़, गरसल या गड़सल को लासड़ी भी कहते हैं, भटियाड़न, भड़भूंजा, खट बढ़ई, टटीढ़ी, गगन भेड़. ालतू जानवरों में से भेड़ और घोड़ा, घोड़े को मैंने जानकर आखिरी रखा क्योंकि यह लफ़्ज़ तवारीखी है और जताता है कि हममें और आर्यों में कितनी शुरू में चाह थी. और ेसों में तो अश्व अस्प या हार्स हो गया, हिन्दुस्तान ने उसे बिलकुल नहीं क़बूला.

(6) वनस्पति

वनस्पति के आम नाम हैं :—पेड़, झाड़, झाड़ी. दरख़्त या दरख़त कम ही कहते हैं और वृक्ष कोई भूल कर भी नहीं कहता. रुख जिसको फेर कर संस्कृत वालों ने वृक्ष गढ़ा था वह भी अब सिसकियां ले रहा है. जिन छोटे पौदों का नाम न आता हो उनका आम नाम जड़ी बूटी* है. हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा पेड़ बड़* और उसके जात भाई बोड़ी, गूलड़, रबड़ और रीढ़ी, चील या चीड़, पतगड़ा या चिड़ियों का दरख़्त. तोम्बड़े को पंजाब वाले खड़कना और दिल्ली वाले झाड़ फ़ानूस का दरख़्त कहते हैं. पापड़ी को ही पितपापड़ा या पितपापड़ा और दरख़्त है, इसका मुझे इल्म नहीं. बरना या बड़ना, जिसाड़ा, आमड़ा, आड़, भंगड़ा, क्योड़ा, करौंदा या कड़ोंदा, केकर या केकड़ी, हड़, बहेड़ा, झड़बेर, या झड़बेरी. मैं शहरी हूं इसलिये मुझे पेड़ों के नाम कम ही आते हैं. बहुत से बहुत पचास पेड़ों के नाम आते होंगे. उनमें से पंद्रह एक ऐसे होंगे जिनमें ड़ आती है. एक सोचने वाली बात है. यही हाल जानवरों के नाम का है.

(7) मुतफ़र्रिक़

आड़, अड़ा, आड़, (दौलत) आड़े आना, अड़ी, आंकड़ी, आंकड़े, आंखड़ी, आढ़त*, आढ़तिया, उखड़, अजड़, अड़ंगा, अंगड़ खंगड़, अंगड़ाई, अखाड़ा*, उखड़ैल, अगाड़ी, अनाड़ी, अड़, या अड़ियल, उड़ान, उड़ार, आड़, (मुसीबत), अल्हड़, अधेड़, अनघड़, अधड़ा, अक़ल दाढ़, अरोड़े, अड़बंग, अकड़.

کهرا، کهپریل*، کهپرا، چهپڑ، پیڑی یا سیڑهی* یا پوڑی، تهڑا، مڑهی، باڑی، راج باڑی، چبوترا، بیڑا، ڈیوڑهی، بڑهاؤ، بارجا، باڑا، پهلواڑی، پهلواڑی، اڑوس پڑوس، بگڑ جو شاید بنگال میں سے نکلا هے .

(5) جانور

کیڑا*، کیڑی*، مکوڑا*، مکڑی اڑنے والی، مکڑی*، جالے والی، چیچڑ، چم چڑا، بهڑ، بچهڑا، بچهیڑا، تڑا، گیدڑ، لومڑی، لکڑ بگها یا لکڑ بگڑ، بگهیاڑ، باگڑ بلا، کیکڑا، گهڑیال، سنگهاڑا .

اڑنے والے جانوروں کا عام نام چڑیا*، چڑی*، چمگادڑ، گرڑ، گرسل یا گڑسل کو لسڑی بهی کہتے هیں۔ بهٹیاڑن، بهڑبهونجا، کهٹ بڑهئی، ٹٹیڑی، گگن بهیڑ۔ پالتو جانوروں میں سے بهیڑ اور گهوڑا۔ گهوڑے کو میں نے جان کر آخری رکها کیونکہ یہ لفظ تواریخی هے اور جتاتا هے کہ هم میں اور آریوں میں کتنی شروع میں چاه تهی۔ اور دیسوں میں تو اشو اسپ یا هارس هو گیا مگر هندستان نے اسے بالکل نهیں قبولا ۔

(6) بنسپتی

بنسپتی کے عام نام هیں—پیڑ*، جهاڑ*، جهاڑی*، درخت یا درکهت کم هی کہتے هیں اور ورکش کوئی بهول کر بهی نهیں کہتا۔ رکه جس کو پهیر کر سنسکرت والوں نے ورکش گڑها تها وہ بهی اب سسکیاں لے رها هے۔ جن چهوٹے پودوں کا نام نہ آتا هو اُن کا عام نام جڑی بوٹی هے۔ هندستان کا سب سے بڑا پیڑ بڑ*، اور اسی کے ذات بهائی بوڑی، گولڑ، ربڑ اور ریڑی، چیل یا چیڑ، پتگڑا یا چڑیوں کا درخت، تومبڑے کو پنجاب والے کهڑکنا اور دلی والے جهاڑ فانوس کا درخت کہتے هیں۔ پاپڑی کو هی پت پاپڑا کہتے هیں یا پت پاپڑا اور درخت هے، اس کا مجهے علم نهیں، بڑنا یا بڑنا، لسوڑا، آمڑا، آڑو، بهانگڑا، کیوڑا، کروندا یا کڑوندا، کیکر یا کیکڑی، هڑ، بہیڑا، جهڑبیری یا جهڑ بیری۔ میں شہری هوں اس لئے مجهے پیڑوں کے نام کم هی آتے هیں۔ بہت سے بہت پچاس پیڑوں کے نام آتے هوں گے۔ ان میں سے پندرہ ایک ایسے هوں گے جن میں ڑ آتی هے یہ ایک سوچنے والی بات هے۔ یهی حال جانوروں کے نام کا هے۔

(7) متفرق

آڑ، آڑا، آڑ (دولت) آڑے آنا، اڑی، انکڑی، انکڑے، انکهڑی، آڑهت*، آڑهتیا، اکهڑ، اجڑ، اڑنگا، انگڑ کهنگڑ، انگڑائی، اکهاڑا*، اکهڑیت، اگاڑی، اناڑی، اڑ یا اڑیل، اڑان، اڑار، آڑ، (مصیبت)، الهڑ، ادهیڑ، انگهڑ، ادهڑا، عقل ڈاڑه، اروڑے، اڑبنگ، اکڑ۔

ठुड़कना, खड़ा होना*, खड़कना खड़काना या खड़ख-ड़ाना, खदेड़ना, लड़ना*, लड़ाना, लड़खड़ाना, लंगड़ाना, लताड़ना, लथेड़ना, लिथड़ना, लड़ना (काटना), लुढ़कना, लोड़ना (चुनना, ढूंढना), लुढ़कना मुड़ना*, मोड़ना, मरोड़ना, निचोड़ना, निबेड़ना, ओढ़ना, पड़ना*, पढ़ना*, पढ़ाना, पकड़ना*, पैड़ना (तैरना), पोढ़ना, (झूलना), पिछड़ना, पछाड़ना, पछोड़ना, फाड़ना*, फड़कना, फड़फड़ाना, फोड़ना, रिड़कना, रिढ़ना, रगड़ना, रपड़ना, सड़ना*, सुकड़ना, सोड़ना (मारना), ताड़ना*, तोड़ना*, तड़पना, तड़कना, थड़कना, तुड़ाना (भान लेना), तुड़ाना, थपड़ना, उड़ना, उड़ाना, उधड़ना*, उधेड़ना, उमेड़ना, उभड़ना, उगाड़ना, उघड़ना, उखड़ना, उखेड़ना, उचड़ना, उजड़ना, उजाड़ना, उभाड़ना, उमड़ना, अड़कना.

(२) हिसाब

गिनती के लफ़्ज़ों को आंकड़े कहा जाता है. हमारे बच्चे 'अक्कड़ बक्कड़ पूरे सौ' का खेल खेलते हैं और अगरचे एक को इक्कड़ नहीं कहते, दुकड़ी, तिकड़ी चौकड़ी आम बोले जाते हैं. डेढ़*, अढ़ाई*, और तीन से आगे साढ़े*, जोड़ा, जुड़वां, जोड़ी (जानवरों की, तबले की, मुगदर की), अड़तीस, अड़तालीस, अड़सठ. जोड़* जमा को ही नहीं कहते उसके फल को भी जोड़, जोड़ने बचाने वाला और शायद जोरू का लफ़्ज़ भी जोड़ से निकला हो क्योंकि बीवियां ही अक्सर जोड़ती हैं. पहाड़े (गुने), पैसे का सबसे छोटा भाग दमड़ी* और चौथा हिस्सा छमड़ी, अढ़ या अढ़ाई सेर और धड़ी पांच सेर, कोड़ी (बीस), हज़ार का थैला तोड़ा और सौ लाख का करोड़, तकड़ी (तराज़ू), उसके दो पलड़े, हाड़ा और धड़ा.

(३) खाना पीना

दिल्ली में दो दालें ज़्यादा खाई जाती हैं, उड़द और अरहड़ या अड़हक, लिखने में ड़ की जगह र लेकिन अक्सर बोलते ड़ से ही हैं. जैसे लिखने में तो उर्दू बोलने में उड़दू, आड़, आमड़ा, लसोड़ा, कढ़ी, खिचड़ी, कढ़ा (हलवा), कड़ाई गुड़, गंडूड़ा, टिकड़ा और टिकड़ी (बड़ी और छोटी रोटी), टुकड़ा, चुपड़ी, अंगकड़ी जो निरे कोयलों पर सिके, पराँठा या पड़ाँवठा, पूड़ी, कचौड़ी, खस्ता-कचौड़ी, बीड़ी या बेड़ी, पूड़ा, चिलड़ा, बड़ा बड़ियां, चिड़वा, मुरमुरा, मरड़ा, रबड़ी, पेड़ा, पकौड़ी, पकौड़े, पापड़*, पापड़ी, पेड़ी, मंगौड़ी, स्योड़ा, बीड़ा, बीड़ी, गुड़गुड़ी, खोपड़ा, ताड़ी, ककड़ी, सिंघाड़ा.

(४) घर

घर मकान बनाने के लिये और उसमें चोरी करने के लिये, किवाड़*, जोड़ी, खिड़की*, पड़छती, कड़ियां*,

کھڑکا؟ کھڑا ہونا*، کھڑکنا، کھڑکانا یا کھڑکھڑانا، کھدیڑنا، لڑنا*، لڑانا، لڑکھڑانا، لنگڑانا، لتاڑنا، لتھیڑنا، لتھڑنا، لڑنا (کاٹنا)، لڑھکنا، لوڑنا (چننا ڈھونڈنا)، لڑھکنا، مڑنا*، موڑنا، مروڑنا، مڑکنا، نچوڑنا، نبیڑنا، اوڑھنا، پڑنا*، پڑھنا*، پڑھانا، پکڑنا*، پیڑنا (تیرنا)، پوڑھنا (جھولنا)، پچھڑنا، پچھاڑنا، پچھوڑنا، پھاڑنا*، پھڑکنا، پھڑپھڑانا، پھوڑنا، رڑکنا، رڑھنا، رگڑنا، رپڑنا، سڑنا*، سکڑنا، سوڑنا (مارنا)، تاڑنا*، توڑنا*، تڑپنا، تڑکنا، تھڑکنا، تڑانا (بھان لینا)، تڑانا، تھپڑنا، اُڑنا*، اُڑانا، اُدھڑنا*، اُدھیڑنا، اُمیڑنا، اُبھڑنا، اُگاڑنا، اُگھڑنا، اُکھڑنا، اُکھیڑنا، اُچڑنا، اُجڑنا، اُجاڑنا، اُبھارنا، اُمڑنا، اَڑکنا ۔

(2) حساب

گنتی کے لفظوں کو آنکڑے کہا جاتا ہے ۔ ہمارے بچے 'اکڑ دکڑ پورا سو' کا کھیل کھیلتے ہیں اور اگرچہ ایک کو اکڑ نہیں کہتے دکڑی، تکڑی، چوکڑی عام بولے جاتے ہیں ۔ ڈیڑھ*، اڑھائی*، اور تین سے آگے ساڑھے*، جوڑا*، جڑواں*، جوڑی* (جانوروں کی، طبلہ کی، مگدر کی)، اڑتیس، اڑتالیس، اڑسٹھ ۔ جوڑ* جمع کو ہی نہیں کہتے اس کے پھل کو بھی ۔ جوڑ، جوڑنے بچانے والا اور شاید جورو کا لفظ بھی جوڑ سے نکلا ہو کیونکہ بیویاں ہی اکثر جوڑتی ہیں ۔ پہاڑے* (گنے)، پیسے کا سب سے چھوٹا حصہ دمڑی، اڑھیا اڑھائی سیر اور دھڑی پانچ سیر، کوڑی (بیس)، ہزار کا تھیلا توڑا اور سو لاکھ کا کروڑ*، تکڑی (ترازو) اس کے دو پلڑے، ہاڑا اور دھڑا ۔

(3) کھانا پینا

دلی میں دو دالیں زیادہ کھائی جاتی ہیں اُڑد اور اُرھڑ یا اڑھک، لکھنے میں ڑ کی جگہ ر لیکن اکثر بولتے ڑ سے ہی ہیں، جیسے لکھنے میں تو اردو بولنے میں اڑدو ۔ اڑد، آمڑا، لسوڑا، کڑھی*، کچوڑی*، کڑھا (حلوا)، کڑھائی، گڑ*، گندوڑا، ٹکڑا اور ٹکڑی (بڑی اور چھوٹی روٹی)، ٹکڑا، چپڑی، انگ کڑی جو نرے کوئلوں پر سکے، پراٹھا یا پڑانوٹھا، پوڑی، کچوڑی، خستہ کچوڑی، بیڑئی یا بیڑی، پوڑا، چلڑا، بڑا، بڑیاں، چڑوا، مرمرا، مرڑا، ربڑی، پیڑا، پکوڑی، پکوڑے، پاپڑ، پاپڑی، پیڑی، ملگوڑی، سھوڑا، بیڑا، بیڑی، گڑگڑی، کھوپڑا، تاڑی، سکڑی، سنگھاڑا ۔

(4) گھر

پاڑ*، مکان بنانے کے لئے اور اس میں چوری کرنے کے لئے، کواڑ*، جوڑی، کھڑکی*، پڑچھتی، کڑیاں*،

यह जताने के लिये कि ड़ हमारे लिये कितनी होन्हार और प्यारी आवाज़ है मैं नीचे कुछ ऐसे लफ़्ज़ों को लिखता हूं जिनमें ड़ आती है. डिक्शनरी में तो ऐसे और भी बहुत से लफ़्ज़ हैं लेकिन मैं सिर्फ़ उनको ही लेता हूं जो मामूली घरों की बोल चाल में रोज़ बरते जाते हैं. बहुत से तो उनमें ऐसे हैं जिनका तोड़ ही नहीं. मेहरबानी से उन लफ़्ज़ों की तरफ़ ज़्यादा ध्यान दें जिन पर निशान है. मेरे विचार में यह लफ़्ज़ हमारी बोली के बुनियादी पत्थर हैं. बुनियादी अंग्रेज़ी में सिर्फ़ 850 लफ़्ज़ हैं. अगर कभी हमें अक़्ल आई और हमने भी अपनी बुनियादी बोली बनाई तो उसमें बहुत से बहुत 1000 लफ़्ज़ होंगे. अगर जैसा इस फ़ेहरिस्त से दिखाई देता है सौ लफ़्ज़ उनमें ऐसे हैं जिनमें ड़ आती है तो ड़ का राज साफ़ है. अगर आपकी राय में ऐसे पचास लफ़्ज़ भी ड़ वाले हैं तो ड़ की प्रधानता में शक नहीं रहता. देवनागरी में 33 व्यंजन हैं. मेरे विचार में ऐसा कोई व्यंजन देवनागरी का नहीं जो खड़ी बोली के बुनियादी लफ़्ज़ों में ड़ जितना आता हो. अगर मेरा यह ख़्याल ठीक है तो सोचो तो सही कि कितने कितने लायक़ हैं वह लोग जो खड़ी बोली की लिपि बनाएं और उसमें वह आवाज़ जिसका हमारी बोली में सब से बड़ा महत्व (मान) हो उसे अपनी लिपि में जगह न दें. यह ड़ लफ़्ज़ खड़ी बोली में है. जिस देस में खड़ी बोली ने जन्म लिया उसे बांगड़ कहते हैं. यह बांगड़ में भी विराजमान है. हिन्दुस्तान के और भी देसों के नाम में पाई जाती है—जैसे कांगड़ा, मारवाड़, मेवाड़, उड़िया, राढ़ी उत्तर बंगाल.

क्रिया (फ़ेल)

मैं शुरू क्रिया के लफ़्ज़ों से करता हूं क्योंकि क्रिया के लफ़्ज़ों का हर बोली में ज़्यादा मान दिया जाता है.

अड़ना*, अड़ाना*, अड़ूसना, अड़कना, अंड़ाना, अड़ालना या उड़ेलना, अबड़ना या उमेड़ना (बढ़ना), अलोड़ना, बाड़*, बड़*, बढ़, बढ़ाना* (दूकान बढ़ानी, चूड़ियां बढ़ानी, दया बढ़ाना), बिगड़ना*, बिगाड़ना*, बड़बड़ाना, बिछड़ना, भिड़ना, भिड़ना या भेड़ना, भड़कना और भड़काना, बिसोड़ना, चिढ़*, चिढ़ाना, चिढ़ना, चिड़ाना, चीड़ना*, छेड़ना*, छेड़ना (शुरू करना) चिचोड़ना, छिड़कना, चपड़ना, छोड़ना, छुड़ाना, दौड़ना, धड़कना, दाड़ना (जलाना) दहाड़ना, गाड़ना*, गड़ना, घड़ना, घुड़कना, गिड़गिड़ाना, गुड़गुड़ाना, गेड़ना (घेरना), गीड़ना (कुंआ चलाना), गोड़ना*, गोड़ना, घुसेड़ना, हाड़ना, हड़पना, हुड़कना, जड़ना*, जोड़ना*, जुड़ना, झड़ना, झाड़ना, झगड़ना, जकड़ना, झिड़कना, झिंझोड़ना, कड़कना (बिजली का), कड़कड़ाना, काढ़ना (निकालना, उबालना) कढ़वाना या कढ़लाना, कुढ़ना, कुढ़ाना, ककड़ना,

یہ جتانے کے لئے کہ ڑ ہمارے لئے کتنی ہونہار اور پیاری آواز ہے میں نیچے کچھ ایسے لفظوں کو لکھتا ہوں جن میں ڑ آتی ہے. ڈکشنری میں تو ایسے اور بھی بہت سے لفظ ہیں لیکن میں صرف ان کو ہی لیتا ہوں جو معمولی گھروں کی بول چال میں روز برتے جاتے ہیں ۔ بہت سے تو ان میں ایسے ہیں کہ جنکا توڑ ہی نہیں ۔ مہربانی سے ان لفظوں کی طرف زیادہ دھیان دیں جن پر نشان ہے ۔ میرے وچار میں یہ لفظ ہماری بولی کے بنیادی پتھر ہیں ۔ بنیادی انگریزی میں صرف 850 لفظ ہیں. اگر کبھی ہمیں عقل آئی اور ہم نے بھی اپنی بنیادی بولی بنائی تو اس میں بہت سے بہت 1000 لفظ ہونگے ۔ اگر جیسا اس فہرست سے دکھائی دیتا ہے سو لفظ ان میں ایسے ہیں جن میں ڑ آتی ہے تو ڑ کا راج صاف ہے ۔ اگر آپکی رائے میں ایسے پچاس لفظ بھی ڑ والے ہیں تو ڑ کی پردھانتا میں شک نہیں رہتا ۔ دیوناگری میں 33 ویننجن ہیں ۔ میرے وچار میں ایسا کوئی وینجن دیوناگری کا نہیں جو کھڑی بولی کے بنیادی لفظوں میں ڑ جتنا آتا ہو ۔ اگر میرا یہ خیال ٹھیک ہے تو سوچو تو سہی کہ کتنے لائق ہیں وہ لوگ جو کھڑی بولی کی لپی بنائیں اور اس میں وہ آواز جس کا ہماری بولی میں سب سے بڑا مہتو (مان) ہو اسے وہ اپنی لپی میں جگہ نہ دیں ۔ یہ ڑ لفظ کھڑی بولی میں ہے ۔ جس دیس میں کھڑی بولی نے جنم لیا اسے بانگڑو کہتے ہیں ۔ یہ بانگڑو میں بھی براجمان ہے ۔ ہندستان کے اور بھی دیسوں کے نام میں پائی جاتی ہے—جیسے کانگڑہ، مارواڑ، میواڑ، اڑیا، راڑھی اتر بنگال ۔

(1) کریا (فعل)

میں شروع کریا کے لفظوں سے کرتا ہوں کیونکہ کریا کے لفظوں کو ہر بولی میں زیادہ مان دیا جاتا ہے ۔

اڑنا *، اڑانا *، اڑوسنا، اڑکنا، انیڑانا، اڑالنا یا اڑیلنا، ابڑنا یا امیڑنا (بڑھنا)، الوڑنا، باڑ *، بڑ *، بڑھ، بڑھانا * (دوکان بڑھانی، چوڑیاں بڑھانی، دیا بڑھانا)، بگڑنا *، بگاڑنا *، بڑبڑانا، بچھڑنا، بھڑنا، بھڑنا یا بھیڑنا، بھڑکنا اور بھڑکانا بسوڑنا، چڑھ *، چڑھانا، چڑنا، چڑانا، چیڑنا *، چھیڑنا *، چھیڑنا (شروع کرنا)، چچوڑنا، چھڑکنا، چپڑنا، چھوڑنا، چھڑانا، دوڑنا، دھڑکنا، داڑھنا (جلانا)، دہاڑنا، گاڑنا *، گڑنا، گھڑنا *، گھڑکنا، گڑگڑانا، گڑگڑانا، گیڑنا (گھیرنا)، گیڑنا (کنواں چلانا)، گوڑنا *، گوڑھنا، گھسیڑنا، ہاڑنا، ہڑپنا، ہڑکنا، جڑنا *، جوڑنا *، جڑنا، جھڑنا، جھاڑنا، جھگڑنا، جکڑنا، جھڑکنا، جھنجھوڑنا، کڑکنا (بجلی کا)، کڑکڑانا، کاڑھنا * (نکالنا، ابالنا)، کڑھوانا یا کڑھلانا، کڑھنا، کڑھانا، ککڑنا

ड़

(मदन गोपाल)

यह 'ड़' एक अजीब चीज़ है. शायद सिवाय हिन्दुस्तान के और कहीं नहीं पाई जाती. आर्य भाशा यानी वह बोली जो आर्य हिन्दुस्तान आने से पहले बोला करते थे उसमें गो और बहुत विचित्र आवाज़ें थीं जैसे ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ङ, ञ, ण, ष, ग़, फ़, क़ और ख़, उसमें ड़ का साया भी न था. चन्द इल्मे ज़बान (भाशा विज्ञान) के माहिरों की यह राय है कि जब आठ दस हज़ार बरस हुए द्राविड़ी यूरोप से तुर्की, एराक़ और समुन्दर के रास्ते हिन्दुस्तान में आये तो उनकी मुठभेड़ यहां कुछ ऐसी क़ौम या क़ौमों से हुई जो या र या ल या र और ल दोनों नहीं बोल सकते थे. द्राविड़ियों और उन लोगों के मिलाप से पैदा हुई यह ड़. यानी यह कि अगर हम किसी आवाज़ की बाबत कह सकते हैं कि वह हमारे देस की हमारी ख़ास अपनी है तो वह है ड़. अजब तमाशा है कि हमारे पन्डित तो उसे प्रदेसी जताकर निकालना चाहते हैं और यह फिर भी घटने की जगह बढ़ रही है.

इस ड़ से कुछ अजब सवाल पैदा होते हैं जिन पर विचार करना शायद नामुनासिब न हो. (1) पहला सवाल तो यह है कि यह ड़े है या ड़? (2) क्या ड़ हमारी बोली की जड़ है और उसका बढ़ना मुनासिब है? (3) हमारी बोली द्राविड़ी है या आर्य भाशा? (4) हमारी बोली असली द्राविड़ी बोली से ज़्यादा मिलती है या मद्रास की बोलियों से? (5) क्या हम द्राविड़ियों की नसल में से हैं या आर्यों की?

त का मोरधनी है ट और द का मोरधनी है ड. ड़ भी ट और ड की तरह मोरधनी है लेकिन र का बोलने में जो हेर फेर त और ट के कहने में किया जाता है ठीक वही हेर फेर र और ड़ के कहने में. देवनागरी में बिन्दी निरी उन आवाज़ों को जताने के लिये होती है जो हमारे देस की नहीं हैं—जैसे क़, ख़, ग़, फ़, ज़. ड को बिन्दी लगाकर ड़ की आवाज़ संस्कृती पंडित ही जता सकते हैं. पंडिती हिन्दुस्तान में यह अचरज की बात नहीं कि देवनागरी लिपी सुधारने के बड़े बड़े विद्वानों की कमेटियां बनीं लेकिन कभी किसी भलेमानुस को यह नहीं सूझा कि वह ड़ को अपनाले. अपने घर के प्यारे होनहार बच्चे को तो बिसरादें और दूसरों के ऐसे बच्चों को जिनकी हम शकल (आवाज़) से वाक़िफ़ नहीं उन्हें अपनाएं. मसलन ऋ, ष, ऌ. क़ुर्बान जाइये इस पंडिताई पर!

ڑ

(مدن گوپال)

یہ 'ڑ' ایک عجیب چیز ہے۔ شاید سوائے ہندستان کے اور کہیں نہیں پائی جاتی۔ آریہ بھاشا یعنی وہ بولی جو آریہ ہندستان آنے سے پہلے بولا کرتے تھے اس میں گو اور بہت وچتر آوازیں تھیں جیسے رِ، رری، لر، لری، انگا، یاں، اڑاں، شا، غ، ف، ق اور خ اس میں ڑ کا سایہ بھی نہ تھا۔ چند علم زبان (بھاشا وگیان) کے ماہروں کی یہ رائے ہے کہ جب آٹھ دس ہزار برس ہوئے دراوڑی یورپ سے ترکی، عراق اور سمندر کے راستے ہندستان میں آئے تو ان کی مٹھ بھیڑ یہاں کچھ ایسی قوم یا قوموں سے ہوئی جو یا ر یا ل یا ر اور ل دونوں نہیں بول سکتے تھے۔ دراوڑیوں اور ان لوگوں کے ملاپ سے پیدا ہوئی یہ ڑ۔ یعنی یہ کہ اگر ہم کسی آواز کی بابت کہہ سکتے ہیں کہ وہ ہمارے دیس کی ہماری خاص اپنی ہے تو وہ ہے ڑ۔ عجب تماشا ہے کہ ہمارے پنڈت تو اسے پردیسی جتاکر نکالنا چاہتے ہیں اور یہ پھر بھی گھٹنے کی جگہ بڑھ رہی ہے۔

اس ڑ سے کچھ عجب سوال پیدا ہوتے ہیں جن پر وچار کرنا شاید نامناسب نہ ہو۔ (1) پہلا سوال تو یہ ہے کہ یہ ڑ ہے یا ڑا؟ (2) کیا ڑ ہماری بولی کی جڑ ہے اور اس کا بڑھنا مناسب ہے؟ (3) ہماری بولی دراوڑی ہے یا آریہ بھاشا؟ (4) ہماری بولی اصلی دراوڑی بولی سے زیادہ ملتی ہے یا مدراس کی بولیوں سے؟ (5) کیا ہم دراوڑیوں کی نسل میں سے ہیں یا آریوں کی؟

ت کا موردھنی ہے ٹ اور د کا موردھنی ہے ڈ۔ ڑ بھی ٹ اور ڈ کی طرح موردھنی ہے لیکن ر کا بولنے میں جو ہیر پھیر ت اور ٹ کے کہنے میں کیا جاتا ہے ٹھیک وہی ہیر پھیر ر اور ڑ کے کہنے میں۔ دیوناگری میں بندی نری ان آواز کو جتانے کے لئے ہوتی ہے جو ہمارے دیس کی نہیں ہیں—جیسے ق، خ، غ، ف، ز۔ ڈ کو بندی لگاکر ڑ کی آواز سنسکرتی پنڈت ہی جتاسکتے ہیں۔ پنڈتی ہندستان میں یہ اچرج کی بات نہیں کہ دیوناگری لپی سدھارنے کے لئے بڑے بڑے ودوانوں کی کمیٹیاں بنیں لیکن کبھی کسی بھلے مانس کو یہ نہیں سوجھا کہ وہ ڑ کو اپنالے۔ اپنے گھر کے پیارے ہونہار بچے کو تو ہم بسرادیں اور دوسروں کے ایسے بچوں کو جن کی ہم شکل (آواز) سے واقف نہیں انہیں اپنائیں۔ مثلاً رِ، شا، لر۔ قربان جائیے اس پنڈتائی پر!

शौक़ दिखाएगा और इस काम में लग जायगा वह ब्राह्मन गिना जायगा. अपने इमान, अपनी तबियत और अपनी क़ाबलियत के अनुसार एक वर्न से दूसरे वर्न में जाना सबके लिये खुला होगा. हिन्दुओं की सैकड़ों हज़ारों जातें, उपजातें और बिरादरियां सब तोड़ दी जावेंगी और हमेशा के लिये ख़त्म हो जावेंगी. छुआछूत मिट जावेगी.

सारे समाज की इस तरह की व्यवस्था धीरे धीरे बिना किसी के साथ ज़बरदस्ती किये हमें अलग अलग धर्मों और सम्प्रदायों से ऊपर उठा कर उस एक मज़हबे इन्सानियत, मानव धर्म, प्रेम धर्म यानी मज़हबे इश्क़ की तरफ़ ले जावेगी जो सब अलग अलग धर्मों की बुनियाद और सबमें एक बराबर है. वही सच्चा इस्लाम है, वही क़ुरान का "दीनुल क़य्यमा" है, वही इस देश का सत्य सनातन धर्म है. यही समाजी निज़ाम सारी दुनिया में फैल सकता है और दुनिया को एक कर सकता है. आपसी आपाधापी और देशों देशों के बीच के अंधे स्वार्थ को ख़त्म करने का यह एक उपाय है.

वर्नाश्रम धर्म और कम्युनिज़्म

नए चीन के विधान में केवल किसानों और मज़दूरों को राज का अधिकारी माना गया है. पर नए चीन के विधान के अनुसार अपने दिमाग़ से काम करने वाले लोग और दिल और दिमाग़ दोनों को मिला कर कला और साहित्य की सेवा में लगन से काम करने वाले प्रोफ़ेसर, साहित्यकार और चित्रकार सब "वर्कर" यानी मज़दूरों में शामिल हैं और सब एक बराबर आदर के हक़दार. ऐसी सूरत में चीनी कम्युनिस्ट विचारधारा के साथ ऊपर की व्यवस्था का कोई विरोध नहीं. सब काम करें, सब अपना अपना काम करें और समाज में सबके एक बराबर हक़ और सबका एक बराबर मान हो.

दुनिया को अमन के लिये संगठित करना

अगर सब देशों और सब क़ौमों के कुछ बड़े दिल वाले और समझदार आदमी मिलकर सब क़ौमों और सब धर्मों की एक सच्ची लीग बनाकर बैठें और गम्भीरता के साथ सारी इन्सानी क़ौम के लिये इस तरह के समाजी संगठन पर विचार करें और फिर या तो उसे मन्ज़ूर करें और आगे की नसलों को उसके उसूलों की तालीम दें और या कोई इससे बेहतर दूसरा ढंग निकालें, तब ही दुनिया से आदमी आदमी और क़ौमों क़ौमों के बीच की आपाधापी मिट सकती है और दुनिया के लोग सुख चैन से जीवन बिता सकते हैं और इस धरती पर स्वर्ग ला सकते हैं. दुनिया को जंग के ख़िलाफ़ "अमन के लिये" टिकाऊ तौर पर संगठित या मुनज़्ज़म करने का यही एक तरीक़ा है.

شوق دکھائے گا اور اِس کام میں لگ جائے گا وہ براھمن گنا جائے گا. اپنے رجحان، اپنی طبیعت اور اپنی قابلیت کے انوسار ایک ورن سے دوسرے ورن میں جانا سب کے لئے کھلا ہوگا. ھندوؤں کی سیکڑوں ہزاروں جاتیں، اپ جاتیں اور برادریاں سب توڑ دی جاویں گی اور ہمیشہ کے لئے ختم ہو جاویں گی. چھواچھوت مٹ جاوے گی.

سارے سماج کی اس طرح کی ویوستھا دھیرے دھیرے بنا کسی کے ساتھ زبردستی کئے ہمیں الگ الگ دھرموں اور سمپردایوں سے اوپر اٹھاکر اس ایک مذہب انسانیت، مانو دھرم، پریم دھرم یعنی مذہب عشق کی طرف لے جاوے گی جو سب الگ الگ دھرموں کی بنیاد اور سب میں ایک برابر ھے. وھی سچا اسلام ھے، وھی قرآن کا "دین القیمہ" ھے وھی اِس دیش کا ستیہ سناتن دھرم ھے. یہی سماجی نظام ساری دنیا میں پھیل سکتا ھے اور دنیا کو ایک کر سکتا ھے. آپسی آپادھاپی اور دیشوں دیشوں کے بیچ کے اندھے سوارتھ کو ختم کرنے کا یہ ایک اپائے ھے.

ورن آشرم دھرم اور کمیونزم

نئے چین کے ودھان میں کیول کسانوں اور مزدوروں کو راج کا ادھیکاری مانا گیا ھے. پر نئے چین کے ودھان کے انوسار اپنے دماغ سے کام کرنے والے لوگ اور دل اور دماغ دونوں کو ملا کر کلا اور ساھتیہ کی سیوا میں لگن سے کام کرنے والے پروفیسر، ساھتیہ کار اور چترکار سب "ورکر" یعنی مزدوروں میں شامل ھیں اور سب ایک برابر آدر کے حقدار. ایسی صورت میں چینی کمیونسٹ وچار دھارا کے ساتھ اوپر کی ویوستھا کا کوئی ورودھ نہیں. سب کام کریں، سب اپنا اپنا کام کریں اور سماج میں سب کے ایک برابر حق اور سب کا ایک برابر مان ھو.

دنیا کو امن کے لئے سنگٹھت کرنا

اگر سب دیشوں اور سب قوموں کے کچھ بڑے دل والے اور سمجھدار آدمی مل کر سب قوموں اور سب دھرموں کی ایک سچی لیگ بنا کر بیٹھیں اور گمبھیرتا کے ساتھ ساری انسانی قوم کے لئے اس طرح کے سماجی سنگٹھن پر وچار کریں اور پھر یا تو اسے منظور کریں اور آگے کی نسلوں کو اس کے اصولوں کی تعلیم دیں اور یا کوئی اس سے بہتر دوسرا ڈھنگ نکالیں، تب ھی دنیا سے آدمی آدمی اور قوموں قوموں کے بیچ کی آپادھاپی مٹ سکتی ھے اور دنیا کے لوگ سکھ چین سے جیون بتا سکتے ھیں اور اس دھرتی پر سورگ لا سکتے ھیں. دنیا کو جنگ کے خلاف "امن کے لئے" ٹکاؤ طور پر سنگٹھت یا منظم کرنے کا یہی ایک طریقہ ھے.

मदद मिलती है. इस संगठन में मुल्क, क़ौम या नस्ल का कोई फ़रक़ नहीं. यह निज़ाम सब इंसानों के लिये एक सा है चाहे वह किसी मुल्क या किसी नस्ल के क्यों न हों. यह निज़ाम साइन्स के ऐन अनुकूल है. इसमें जब तजुरबेकार अधेड़ या बूढ़े लोग रुपये कमाने के धंदे को छोड़कर बिना तनख़ाह जनता की सेवा करेंगे तो नौजवानों के लिये मैदान खुला होगा और उन्हें राह दिखाने और सलाह देने के लिये बराबर तजुरबेकार, निस्वार्थ जन सेवक मिलते रहेंगे. सब को ज़िन्दगी में आनन्द मिलेगा और सबके दिल और दिमाग़ उनके क़ाबू में रहेंगे. सब सुखी रहेंगे.

सब धर्मों को मिलाने का तरीक़ा

इन्सानी समाज के इस तरह के संगठन का किसी ख़ास धर्म या धार्मिक विश्वास से भी कोई सम्बन्ध नहीं. हिन्दुस्तान अगर इस तरह के संगठन को अपनाले तो वह केवल उन लोगों का ही संगठन नहीं होगा जो अपने को हिन्दू कहते हैं. इसमें मौलाना अबुलकलाम आज़ाद सच्चे ब्राह्मन गिने जाएंगे. जमीयतुलउलमा के सब मेम्बर, स्कूलों और कालिजों के सब अध्यापक और प्रोफ़ेसर चाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान, ईसाई हों या पारसी या कुछ भी हों, ब्राह्मन माने जाएंगे. जिस किसी को भी विद्या पढ़ने पढ़ाने का शौक़ हो या ज्ञान ध्यान में आनन्द मिलता हो वह ब्राह्मन. उसे फिर लम्बी तनख़ाह या दुनिया की टीपटाप या राज शक्ति अपने हाथ में लेने की चिन्ता न होगी. उसका आदर्श मशहूर अंग्रेज़ी कहावत के अनुसार "सादा जीवन बिताना और ऊंचा सोचना" होगा. इसी तरह जो भी फ़ौजी सिपाही या फ़ौजी अफ़सर का काम करता है वह चाहे किसी भी धर्म का मानने वाला हो क्षत्री है. हम मौलाना शौक़त अली को उनके स्वभाव और बहादुरी के कारन हमेशा क्षत्री मानते थे. बम्बई के मुसलमान बोहरे और पारसी सौदागर सब वैश्य गिने जावेंगे. किसान चाहे किसी भी धर्म का मानने वाला हो धरती से धन पैदा करने के कारन वैश्य गिना जावेगा. गीता में खेती का काम वैश्यों का काम बताया गया है. देश भर के केवल शरीर से काम करने वाले सब लोग शूद्र गिने जावेंगे.

पर इसमें ऊंचा नीचा कोई नहीं होगा. ब्राह्मन ऊंचा और शूद्र नीचा यह ग़लत ख़्याल स्वार्थी लोगों ने देश की गिरावट के दिनों में पैदा कर लिया है. सब समाज के एक बराबर अंग, सबके राजकाज आदि में एक बराबर हक़, सबको बराबर के मौक़े, एक बार ब्राह्मन होकर भी जो विद्या में रस लेना छोड़ देगा या कम कर देगा और धन बटोरने की फ़िक्र में अधिक रहेगा वह फिर वैश्य कहलावेगा. तिजारत करने वाला जन्म से चाहे कुछ भी हो वैश्य गिना जावेगा. जो मेहनत मज़दूरी करते करते विद्या सीखने सिखाने का

مدد ملتی ھے ۔ اِس سنگٹھن میں ملک' قوم یا نسل کا کوئی فرق نہیں ۔ یہ نظام سب اِنسانوں کے لئے ایک سا ھے چاھے وہ کسی ملک یا کسی نسل کے کیوں نہ ھوں ۔ یہ نظام سائنس کے عین انوکول ھے ۔ اِس میں جب تجربہکار ادھیڑ یا بوڑھے لوگ روپیہ کمانے کے دھندے کو چھوڑکر بنا تنخواہ جنتا کی سیوا کرینگے تو نوجوانوں کے لئے میدان کھلا ھوگا اور انھیں راہ دکھانے اور صلاح دینے کے لئے برابر تجربہکار' نسوارتھ جن سیوک ملتے رھیں گے ۔ سب کو زندگی میں آنند ملیگا اور سب کے دل اور دماغ اُن کے قابو میں رھینگے ۔ سب سکھی رھینگے ۔

سب دھرموں کو ملانے کا طریقہ

اِنسانی سماج کے اِس طرح کے سنگٹھن کا کسی خاص دھرم یا دھارمک وشواس سے بھی کوئی سمبندھ نہیں ۔ ھندستان اگر اِس طرح کے سنگٹھن کو اپنا لے تو وہ کیول اُن لوگوں کا ھی سنگٹھن نہیں ھوگا جو اپنے ھندو کہتے ھیں ۔ اِس میں مولانا ابوالکلام آزاد سچے براھمن گنے جائینگے ۔ جمیعت العلما کے سب ممبر' اسکولوں اور کالجوں کے سب ادھیاپک اور پروفیسر چاھے وہ ھندو ھوں یا مسلمان' عیسائی ھوں یا پارسی یا کچھ بھی ھوں' براھمن مانے جائینگے ۔ جس کسی کو بھی ودیا پڑھنے پڑھانے کا شوق ھو یا گیان دھیان میں آنند ملتا ھو وہ براھمن ۔ اُسے پھر لمبی تنخواہ یا دنیا کی ٹیپ ٹاپ یا راج شکتی اپنے ھاتھ میں لینے کی چنتا نہ ھوگی ۔ اُس کا آدرش مشہور انگریزی کہاوت کے انوسار " سادہ جیون بتانا اور اونچا سوچنا " ھوگا ۔ اِسی طرح جو بھی فوجی سپاھی یا فوجی افسر کا کام کرتا ھے وہ چاھے کسی بھی دھرم کا ماننے والا ھو چھتری ھے ۔ ھم مولانا شوکت علی کو اُن کے سوبھاؤ اور بہادری کے کارن ھمیشہ چھتری مانتے تھے ۔ بمبئی کے مسلمان بوھرے اور پارسی سوداگر سب ویش گنے جاوینگے ۔ کسان چاھے کسی بھی دھرم کا ماننے والا ھو دھرتی سے دھن پیدا کرنے کے کارن ویش گنا جاوے گا ۔ گیتا میں کھیتی کا کام ویشیوں کا کام بتایا گیا ھے ۔ دیش بھر کے کیول شریر سے کام کرنے والے سب لوگ شودر گنے جاوینگے ۔

پر اِس میں اونچا نیچا کوئی نہیں ھوگا ۔ براھمن اونچا اور شودر نیچا یہ غلط خیال سوارتھی لوگوں نے دیش کی گراوٹ کے دنوں میں پیدا کر لیا ھے ۔ سب سماج کے ایک برابر انگ' سب کے راج کاج آدی میں ایک برابر حق' سب کو برابر کے موقعے' ایک بارا براھمن ھو کر بھی جو ودیا میں رس لینا چھوڑ دے گا یا کم کر دے گا اور دھن بٹورنے کی فکر میں ادھک رھے گا وہ پھر ویش کہا دے گا. تجارت کرنے والا جنم سے چاھے کچھ بھی ھو ویش گنا جاوے گا. جو محنت مزدوری کرتے کرتے ودیا سیکھنے سکھانے کا

में इच्छा का). जिन लोगों की तबियत और उनके काम सत्व की तरफ़ जाते हैं वह ब्राह्मन कहलाते हैं. जिनकी तबियत रजस की तरफ़ जाती है वह क्षत्री कहलाते हैं. जिन की तमस की तरफ़ जाती है वह वैश्य कहलाते हैं. जिनके अन्दर तीनों गुन सोए हुए से हों वह शूद्र कहलाते हैं."

जब तक आदमी के अन्दर सिर, बाजू, धड़ और टांगें अलग अलग हैं और इन्हीं के मुताबिक़ अलग अलग तबियतें दिखाई देती हैं तब तक सब मुल्कों और सब देशों में यह चार तरह के लोग दिखाई देंगे. जो समाज इस उसूल के ऊपर अपना ठीक ठीक संगठन कर ले और उसी उसूल पर सबके फ़र्ज़ और सबके अधिकार तय कर दे उसी समाज का संगठन "अमन यानी शान्ति के लिये है." वही समाज खुशहाल रहेगा. उसे किसी दूसरे से डर नहीं होगा. वह दूसरों के लिये भी अमन की मिसाल क़ायम करेगा और उन्हें इसमें हर तरह मदद देगा. दुनिया की सब क़ौमों का मिलाकर इस तरह संगठन हो जावे तो अपने आप आदमी आदमी में बेजा होड़, डाह, जलन, लोभ, लालच और आपा धापी दुनिया से मिट जावें. सब अपने अपने पैरों पर खड़े हो सकें. किसी को किसी पर हमला करने का कोई सबब न रहे और सब के भले के कामों में आसानी से लग सकें.

ज़िन्दगी के चार हिस्से

दुनिया में अमन क़ायम करने के लिये यह भी जरूरी है कि हर आदमी उम्र के मुताबिक़ ब्रह्मचर्य का पालन करे, अपने को रोके, अपनी तबियत को अपने क़ाबू में रक्खे, खुद तबियत के क़ाबू में न हो जावे. इसीलिये हर आदमी की उम्र के चार हिस्से किये गए हैं, जिन्हें चार आश्रम कहते हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वान प्रस्थ और सन्यास. इस मामले में अगर लोगों ने इस तरह अपनी तबियत को न रोका तो यह कमज़ोरी उनकी और दुनिया की सबसे बड़ी दुश्मन साबित होगी. ज़िन्दगी के तीसरे और चौथे हिस्सों में तो आदमी को अपने को बिल्कुल ही रोक कर रखना चाहिये. कोई चीज़ अगर दुनिया से जंगों को खतम कर सकती है तो इस तरह का नैतिक संगठन यानी इखलाक़ी निज़ाम ही कर सकता है. इसके साथ साथ हमें क़ुदरत की ताक़तों को भी जहां तक हो सके अपने क़ाबू में करके उनसे काम लेना चाहिये. समाज के अन्दर की यह इखलाक़ी जंग जितनी कामयाब होगी बाहर की जंगें उतनी ही कम होंगी.

समाज के इस तरह के संगठन में हर काम के अन्दर एक सुनहरा दरमियानापन रहता है, न किसी चीज़ की ज्यादती न किसी चीज़ की कमी. सब को अपनी अपनी तरह बढ़ने का मौक़ा मिलता है. सब की कमज़ोरियों का भी ध्यान रखा जाता है और उन्हें अपनी कमज़ोरियों पर क़ाबू हासिल करने में

میں اچھا کا) جن لوگوں کی طبیعت اور اُن کے کام ستو کی طرف جاتے ہیں وہ براھمن کہلاتے ہیں۔ جن کی طبیعت رجس کی طرف جاتی ہے وہ چھتری کہلاتے ہیں۔ جن کی تمس کی طرف جاتی ہے وہ ویش کہلاتے ہیں۔ جن کے اندر تینوں گن سوئے ہوئے سے ہوں وہ شودر کہلاتے ہیں۔"

جب تک آدمی کے اندر سر، بازو، دھڑ اور ٹانگیں الگ الگ ہیں اور انہیں کے مطابق الگ الگ طبیعتیں دکھائی دیتی ہیں تب تک سب ملکوں اور سب دیشوں میں یہ چار طرح کے لوگ دکھائی دینگے۔ جو سماج اِس اصول کے اوپر اپنا ٹھیک ٹھیک سنگٹھن رلے اور اِسی اصول پر سب کے فرض اور سب کے ادھکار طے کردے اُسی سماج کا سنگٹھن "امن یعنی شانتی کے لئے ہے۔" وہی سماج خوشحال رہیگا۔ اُسے کسی دوسرے سے ڈر نہیں ہوگا۔ وہ دوسروں کے لئے بھی امن کی مثال قائم کرے گا اور اُنہیں اِس میں ہر طرح مدد دیگا۔ دنیا کی سب قوموں کا ملاکر اِس طرح سنگٹھن ہو جاوے تو اپنے آپ آدمی آدمی میں بیجا ہوڑ، ڈاہ، جلن، لوبھ، لالچ اور آپادھاپی دنیا سے مٹ جاویں۔ سب اپنے اپنے پیروں پر کھڑے ہوسکیں۔ کسی کو کسی پر حملہ کرنے کا کوئی سبب نہ رہے اور سب سب کے بھلے کے کاموں میں آسانی سے لگ سکیں۔

زندگی کے چار حصے

دنیا میں امن قائم کرنے کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ ہر آدمی عمر کے مطابق برھمچریہ کا پالن کرے، اپنے کو روکے، اپنی طبیعت کو اپنے قابو میں رکھے، خود طبیعت کے قابو میں نہ ہو جاوے۔ اِسی لئے ہر آدمی کی عمر کے چار حصے کئے گئے ہیں، جنھیں چار آشرم کہتے ہیں—برھمچریہ، گرھستھ، بان پرستھ اور سنیاس۔ اِس معاملے میں اگر لوگوں نے اس طرح اپنی طبیعت کو نہ روکا تو یہ کمزوری اُن کی اور دنیا کی سب سے بڑی دشمن ثابت ہوگی۔ زندگی کے تیسرے اور چوتھے حصوں میں تو آدمی کو اپنے کو بالکل ہی روک کر رکھنا چاہئے۔ کوئی چیز اگر دنیا سے جنگوں کو ختم کرسکتی ہے تو اِس طرح کا نیتک سنگٹھن یعنی اخلاقی نظام ہی کرسکتا ہے۔ اِس کے ساتھ ساتھ ہمیں قدرت کی طاقتوں کو بھی جہاں تک ہوسکے اپنے قابو میں کرکے اُن سے کام لینا چاہئے۔ سماج کے اندر کی یہ اخلاقی جنگ جتنی کامیاب ہوگی باہر کی جنگیں اُتنی ہی کم ہونگی۔

سماج کے اِس طرح کے سنگٹھن میں ہر کام کے اندر ایک سنہرا درمیانہ پن رہتا ہے، نہ کسی چیز کی زیادتی نہ کسی چیز کی کمی۔ سب کو اپنی اپنی طرح بڑھنے کا موقع ملتا ہے۔ سب کی کمزوریوں کا بھی دھیان رکھا جاتا ہے اور اُنہیں اپنی کمزوریوں پر قابو حاصل کرنے میں

जिसके अन्दर क्षमा यानी माफ़ी की ज़बर्दस्त शक्ति है, उसी को सच्चा ब्राह्मन कहना चाहिये. केवल जन्म से न कोई ब्राह्मन होता है और न कोई शूद्र होता है. हर आदमी अपने कामों से और अपने रहन सहन के ढंग से ब्राह्मन या शूद्र होता है. सूरज निकलता है तो दिन हो जाता है, रात होती है तो चांद निकलता है. बहादुरी और उदारता से आदमी क्षत्री होता है. बुद्धिमत्ता और विचार शीलता से ब्राह्मन होता है."

महात्मा बुद्ध ने इन चार तरह के लोगों और पेशों का साफ़ साफ़ ज़िक्र किया है, इस फ़र्क़ को माना है, और सच्चे ब्राह्मन की जगह जगह खूब तारीफ़ की है. लेकिन वह जन्म से जात को नहीं मानते थे. जो लोग जन्म से जाति और उसके आधार पर अपने को ऊंचा नीचा या ख़ास चीज़ों का हक़दार मानते हैं उन्हें बुद्ध ने बुरा कहा है. उनकी राय है कि हर आदमी के गुन कर्म, उसकी क़ाबलियत, उसके दिल और दिमाग़ की हालत और उसकी तबियत के अनुसार उसका पेशा तय होना चाहिये, और फिर चारों में से किसी एक वर्न में उसे गिना जाना चाहिये.

जैन धर्म इस मामले में इससे भी ज़्यादा साफ़ है. जैन सूत्रों में लिखा है कि :—

"मनुष्य जाति सब एक है. लोगों की वृत्ति यानी उनके रहन सहन और काम के फ़र्क़ से चार जातियां दिखाई देती हैं. जो लोग नेक और पाक ज़िन्दगी की प्रतिज्ञाएं करके उन्हें पूरा करते हैं वह ब्राह्मन हैं. जो दूसरों की रक्षा के लिये हथियार धारन करते हैं वह क्षत्री हैं. जो सच्चा और उचित व्यापार करके धन कमाते हैं वह वैश्य हैं. और जो दूसरों की सेवा करके मजदूरी से गुज़ारा करते हैं वह शूद्र. आदमी अपने कामों से ब्राह्मन होता है, अपने कामों से क्षत्री, अपने कामों से वैश्य और अपने कामों से शूद्र. किसी का जन्म उसके चेहरे पर नहीं लिखा रहता. उसके काम सब को दिखाई देते हैं."

हिन्दू धर्म ग्रन्थों में भी यही उसूल बताया गया है. महाभारत में लिखा है :—

"दुनिया के सब आदमी ब्रह्मा की औलाद हैं, इस लिये सब ब्राह्मन हैं और एक बाप की औलाद होने के नाते सब भाई भाई हैं. शुरू में उनमें कोई फ़र्क़ नहीं था. सब का पेशा भी लगभग एक ही था. धीरे धीरे अलग अलग पेशे और अलग अलग काम पैदा हो गए जिस से चार वर्न बन गए."

गीता में श्री कृष्ण ने कहा है :—

"ईश्वर ने चार वर्न लोगों में गुन और कर्म के फ़र्क़ से बनाए हैं. हर आदमी अपने कामों से और अपने स्वभाव के गुनों से इस वर्न या उस वर्न में होता है."

भविष्य पुराण में लिखा है :—

"तीन तरह के गुन होते हैं—सत्व, रजस और तमस (सत्व में ज्ञान का ज़ोर होता है, रजस में काम का और तमस

جسکے اندر چھما یعنی معافی کی زبردست شکتی ہے' اُسی کو سچا براھمن کہنا چاہئیے . کیول جنم سے نہ کوئی براھمن ہوتا ہے اور نہ کوئی شودر ہوتا ہے. ہر آدمی اپنے کاموں سے اور اپنے رھن سہن کے ڈھنگ سے براھمن یا شودر ہوتا ہے . سورج نکلتا ہے تو دن ہو جاتا ہے . رات ہوتی ہے تو چاند نکلتا ہے . بہادری اور اُدارتا سے آدمی چھتری ہوتا ہے . بدھمتا اور وچار شیلتا سے براھمن ہوتا ہے ."

مہاتما بدھ نے اِن چار طرح کے لوگوں اور پیشوں کا صاف صاف ذکر کیا ہے' اِس فرق کو مانا ہے اور سچے براھمن کی جگہ جگہ خوب تعریف کی ہے . لیکن وہ جنم سے جات کو نہیں مانتے تھے . جو لوگ جنم سے جاتی اور اُس کے آدھار پر اپنے کو اونچا نیچا یا خاص چیزوں کا حقدار مانتے ہیں اُنہیں بدھ نے برا کہا ہے . اُن کی رائے ہے کہ ہر آدمی کے گن کرم' اُس کی قابلیت' اُس کے دل اور دماغ کی حالت اور اُس کی طبیعت کے انوسار اُس کا پیشہ طے ہونا چاہئیے اور پھر چاروں میں سے کسی ایک ورن میں اُسے گنا جانا چاہئیے .

جین دھرم اِس معاملے میں اِس سے بھی زیادہ صاف ہے . جین سوتروں میں لکھا ہے کہ :—

" منشیہ جاتی سب ایک ہے . لوگوں کی ورتی یعنی اُن کے رھن سہن اور کام کے فرق سے چار جاتیاں دکھائی دیتی ہیں . جو لوگ نیک اور پاک زندگی کی پرتگیائیں کر کے اُنہیں پورا کرتے ہیں وہ براھمن ہیں . جو دوسروں کی رکشا کے لئے ہتھیار دھارن کرتے ہیں وہ چھتری ہیں . جو سچا اور اُچت بیوپار کر کے دھن کماتے ہیں وہ ویش ہیں . اور جو دوسروں کی سیوا کر کے مزدوری سے گذارا کرتے ہیں وہ شودر . آدمی اپنے کاموں سے براھمن ہوتا ہے' اپنے کاموں سے چھتری' اپنے کاموں سے ویش اور اپنے کاموں سے شودر . کسی کا جنم اُس کے چہرے پر نہیں لکھا رہتا . اُس کے کام سب کو دکھائی دیتے ہیں ."

ہندو دھرم گرنتھوں میں بھی یہی اصول بتایا گیا ہے . مہابھارت میں لکھا ہے :—

"دنیا کے سب آدمی برھما کی اولاد ہیں' اِس لئے سب براھمن ہیں اور ایک باپ کی اولاد ہونے کے ناتے سب بھائی بھائی ہیں . شروع میں اُن میں کوئی فرق نہیں تھا . سب کا پیشہ بھی لگ بھگ ایک ہی تھا . دھیرے دھیرے الگ الگ پیشے اور الگ الگ کام پیدا ہوگئے جس سے چار ورن بن گئے ."

گیتا میں شری کرشن نے کہا ہے :—

"ایشور نے چار ورن لوگوں میں گن اور کرم کے فرق سے بنائے ہیں . ہر آدمی اپنے کاموں سے اور اپنے سوبھاؤ کے گنوں سے اِس ورن یا اُس ورن میں ہوتا ہے ."

بھوشیہ پران میں لکھا ہے :—

" تین طرح کے گن ہوتے ہیں—ستو' رجس اور تمس (ستو میں گیان کا زور ہوتا ہے' رجس میں کام کا اور تمس

पादरी सब लोगों को धोका देकर अपनी छोटी खुदगरज़ियों को पूरा करने के चक्कर में पड़ जाते हैं. मज़हब को भी नया जामा पहनाने की ज़रूरत पड़ती है. राजकाजी इन्क़लाब और मज़हबी इन्क़लाब दोनों में गहरा सम्बन्ध है. जब दोनों को नया रूप दिया जाता है तब एक नई सभ्यता जन्म लेती है. आदमी बीमार पड़ता है तो हकीम डाक्टर की ज़रूरत होती है. जब किसी सारी क़ौम की आत्मा बिगड़ जाती है तो उसमें नई ईश्वरी रूह फूंकने की ज़रूरत पड़ती है. कोई न कोई 'खुदा का बेटा', 'अवतार', 'मसीह', 'रसूल' या 'तीर्थंकर' उस क़ौम का इलाज करने के लिये आता है, उसे नया जन्म देता है, नया जिस्म देता है, और सारे समाज का नए सिरे से संगठन करता है. जब तक किसी समाज का ठीक तरह से संगठन नहीं होगा अच्छे से अच्छे रूहानी और इख़लाक़ी असूल भी बेकार रहेंगे, चाहे राज पादरी पुरोहितों के हाथों में हो, चाहे फ़ौजी सरदारों के, चाहे पूंजीपतियों के और चाहे आम जनता के. देश का इख़लाक़ यानी सदाचार तब ही ऊंचा जा सकता है जब आदमी के चारों तरह के रुझानों को ठीक ठीक समझा जावे और उनके अनुसार कामों का ठीक ठीक बंटवारा किया जावे.

असली इलाज

महात्मा बुद्ध ने और जैन धर्म के क़ायम करने वाले महावीर स्वामी ने इस उसूल को अच्छी तरह समझा था. उन्होंने जन्म की जातों को तोड़कर इस क़ुदरती उसूल पर समाज को चलाने की कोशिश की थी. बहुत दरजे तक उन्हें कामयाबी भी हुई. इसीलिये जो नई सभ्यता उन्होंने क़ायम की वह लगभग बारह सौ बरस तक खूब चली. उस ज़माने में साहित्य और साइन्स दोनों ने खूब तरक़्क़ी की, बड़ी बड़ी सल्तनतें क़ायम हुईं जो अपने ज़माने की रोमी, यूनानी, ईरानी और चीनी सल्तनतों से किसी तरह कम न थीं. बदक़िस्मती से हमारे अन्दर की अविद्या यानी जहालत और हमारी बुराई की शक्तियां फिर ऊपर आ गईं. हमारा सारा शीराज़ा फिर बिखर गया.

बौद्ध ग्रंथ "धम्मपद" में एक पूरा चैप्टर है जिसमें यह बताया गया है कि सच्चा ब्राह्मन कौन है. लिखा है :—

"लम्बी जटाएं रख लेने से, या किसी ख़ास घर में पैदा हो जाने से, या किसी ख़ास स्त्री के पेट से पैदा होने के कारन कोई ब्राह्मन नहीं बन जाता. जो कोई सच्चाई पर क़ायम रहता है और अपना धर्म यानी फ़र्ज़ पूरा करता है, वही पाक है और वही ब्राह्मन है. जो तन से, मन से और बचन से कोई बुराई नहीं करता, जो अपने लिये माल असबाब या पैसा जमा नहीं करता, जो सब्र और धीरज के साथ दूसरों के कड़वे शब्दों, बदसलूकी और मार तक को बरदाश्त कर लेता है, जो अपने मन में ग़ुस्से को पैदा नहीं होने देता,

پادری سب لوگوں کو دھوکا دیکر اپنی چھوٹی خود غرضیوں کو پورا کرنے کے چکر میں پڑ جاتے ھیں. مذھب کو بھی نیا جامہ پہنانے کی ضرورت پڑتی ھے. راج کاجی انقلاب اور مذھبی انقلاب دونوں میں گہرا سمبندھ ھے. جب دونوں کو نیا روپ دیا جاتا ھے تب ایک نئی سبھیتا جنم لیتی ھے. آدمی بیمار پڑتا ھے تو حکیم ڈاکٹر کی ضرورت ھوتی ھے. جب کسی ساری قوم کی آتما بگڑ جاتی ھے تو اُس میں نئی ایشوری روح پھونکنے کی ضرورت پڑتی ھے. کوئی نہ کوئی 'خدا کا بیٹا' 'اوتار' 'مسیح' 'رسول' یا 'تیرتھنکر' اُس قوم کا علاج کرنے کے لئے آتا ھے' اُسے نیا جنم دیتا ھے' نیا جسم دیتا ھے' اور سارے سماج کا نئے سرے سے سنگٹھن کرتا ھے. جب تک کسی سماج کا ٹھیک طرح سے سنگٹھن نہیں ھوگا اچھے سے اچھے روحانی اور اخلاقی اصول بھی بیکار رھیں گے' چاھے راج پادری پروھتوں کے ھاتھوں میں ھو' چاھے فوجی سرداروں کے' چاھے پونجی پتیوں کے اور چاھے عام جنتا کے. دیش کا اخلاق یعنی سداچار تب ھی اُونچا جا سکتا ھے جب آدمی کے چاروں طرح کے رجحانوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھا جاوے اور اُن کے انوسار کاموں کا ٹھیک ٹھیک بٹوارہ کیا جاوے.

اصلی علاج

مہاتما بدھ نے اور جین دھرم کے قائم کرنے والے مہاویر سوامی نے اِس اصول کو اچھی طرح سمجھا تھا. اُنھوں نے جنم کی جاتوں کو توڑ کر اِس قدرتی اصول پر سماج کو چلانے کی کوشش کی تھی. بہت درجے تک اُنھیں کامیابی بھی ھوئی. اِسی لئے جو نئی سبھیتا اُنھوں نے قائم کی وہ لگ بھگ بارہ سو برس تک خوب چلی. اُس زمانے میں ساھتیہ اور سائنس دونوں نے خوب ترقی کی' بڑی بڑی سلطنتیں قائم ھوئیں جو اپنے زمانے کی رومی' یونانی' ایرانی اور چینی سلطنتوں سے کسی طرح کم نہ تھیں. بدقسمتی سے ھمارے اندر کی اودیا یعنی جہالت اور ھماری برائی کی شکتیاں پھر اوپر آ گئیں. ھمارا سارا شیرازہ پھر بکھر گیا.

بودھ گرنتھ "دھم پد" میں ایک پورا چیپٹر ھے جس میں یہ بتلایا گیا ھے کہ براھمن کون ھے. لکھا ھے :—

"لمبی جٹائیں رکھ لینے سے' یا کسی خاص گھر میں پیدا ھو جانے سے' یا کسی خاص اِستری کے پیٹ سے پیدا ھونے کے کارن کوئی براھمن نہیں بن جاتا. جو کوئی سچائی پر قائم رھتا ھے اور اپنا دھرم یعنی فرض پورا کرتا ھے' وھی پاک ھے اور وھی براھمن ھے. جو تن سے' من سے اور بچن سے کوئی برائی نہیں کرتا' جو اپنے لئے مال اسباب یا پیسہ جمع نہیں کرتا' جو صبر اور دھیرج کے ساتھ دوسروں کے کڑوے شبدوں' بدسلوکی اور مار تک کو برداشت کر لیتا ھے' جو اپنے من میں غصے کو پیدا نہیں ھونے دیتا'

धर्म यानी मजहबे इन्सानियत की कुछ चिनगारियां हम में अभी तक बाक़ी हैं.

यहां यह बता देना भी जरूरी है कि बावजूद मौरूसी-पन पर इतना अधिक जोर होने के यहां जातों का अदल बदल बराबर होता रहा है. इक्का दुक्का लोग ही नहीं गिरोहों के गिरोह हमेशा अपने को नीचे की जातों से उठाकर ब्राह्मन या क्षत्री नाम देते रहे हैं और आज कोई उनसे वह नाम छीन नहीं सकता. लेकिन जो एक सुन्दर साइन्सी ढंग से सबका आदर मान रखते हुए शुरू का संगठन था वह जाता रहा.

योरप से मुक़ाबला

इस मामले में योरप हमसे अच्छा नहीं रहा. हमारे यहां मौरूसीपन पर बेजा जोर दिया गया और योरप में इसके खिलाफ़ आदमी आदमी के स्वार्थों की टक्कर और उनके बीच बेजा अन्धे मुक़ाबले पर जोर दिया गया. सच यह है कि योरप में अभी तक कोई समाज संगठन हो ही नहीं पाया. एक दरजे तक मौरूसीपन भी सब जगह चलता है और क़ुदरती है. योरप में भी लाखों करोड़ों आदमी अपने बाप दादा के ही पेशों में लगे रहते हैं. लेकिन यह एक बड़ी अच्छी निशानी है कि योरप के अधिक उन्नत देशों में बच्चों को तालीम देने वालों का ध्यान तेज़ी से इस तरफ़ जा रहा है कि छोटी उम्र से ही हर बच्चे के क़ुदरती रुझान और उसकी क़ाबलियत को समझने की कोशिश की जावे और उसी के अनुसार जीवन में उसे काम धन्दा देने की कोशिश की जावे. कुछ देशों में तो इस विद्या के खास विद्वान या माहिर स्कूलों में रखे गए हैं. कहीं भी अगर समाज का टिकाऊ संगठन किया जावेगा तो मौरूसीपन और आजाद अदल बदल दोनों को ध्यान में रखना होगा. हां, हर बच्चे का पेशा तय करने में उसकी आजाद तबियत और निजी पसन्द का अधिक लिहाज़ रखा जायेगा.

सुधार की ज़रूरत

जैसे हमारी राजकाजी और माली जिन्दगी में रक्षक भक्षक बन जाते हैं, 'लीडर' (रहबर) 'मिस लीडर' यानी गुमराह करने वाले हो जाते हैं, 'ट्रस्टी' अपने को "बैनीफ़िशरी' बना बैठते हैं, दूसरों को खिलाने वाले खुद उन दूसरों को निगलने लगते हैं, जनता के नौकर जनता के मालिक और अफ़सर बन बैठते हैं, जिससे लगातार बलवे, इन्क़लाब और क्रान्तियां होती रहती हैं, और फिर जो असली 'बैनीफ़िशरी' हैं यानी आम जनता के लोग वह फिर से अपने नए ट्रस्टी मुक़र्रर करते हैं, ठीक उसी तरह मजहब के मामले में भी होता है. मजहबी गुरु दुनयवी ताक़त छीनने के चक्कर में पड़ जाते हैं और हकूमत की ताक़त वाले धार्मिक गुरु बन जाने की फ़िक्र में रहते हैं. पुरोहित, पंडे, मुल्ला और

دھرم یعنی مذھب اِنسانیت کی کچھ چنگاریاں ھم میں ابھی تک باقی ھیں .

یہاں یہ بتا دینا بھی ضروری ھے کہ باوجود موروثی‌پن پر اتنا آدھک زور ھونے کے یہاں جاتوں کا ادل بدل برابر ھوتا رھا ھے . اِکا دکا لوگ ھی نہیں گروھوں کے گروہ ھمیشہ اپنے کو نیچے کی جاتوں سے اُٹھاکر براھمن یا چھتری نام دیتے رھے ھیں اور آج کوئی اُن سے وہ نام چھین نہیں سکتا . لیکن جو ایک سندر سائنسی ڈھنگ سے سب کا آدر مان رکھتے ھوئے شروع کا سنگٹھن تھا وہ جاتا رھا .

یورپ سے مقابلہ

اُس معاملے میں یورپ ھم سے اچھا نہیں رھا . ھمارے یہاں موروثی‌پن پر بیجا زور دیا گیا اور یورپ میں اِس کے خلاف آدمی آدمی کے سوارتھوں کی ٹکر اور اُن کے بیچ بیجا اندھے مقابلے پر زور دیا گیا. سچ یہ ھے کہ یورپ میں ابھی تک کوئی سماج سنگٹھن ھو ھی نہیں پایا . ایک درجے تک موروثی‌پن بھی سب جگہ چلتا ھے اور قدرتی ھے . یورپ میں بھی لاکھوں کروڑوں آدمی اپنے باپ دادا کے ھی پیشوں میں لگے رھتے ھیں . لیکن یہ ایک بڑی اچھی نشانی ھے کہ یورپ کے آدھک اُنت دیشوں میں بچوں کو تعلیم دینے والوں کا دھیان تیزی سے اِس طرف جا رھا ھے کہ چھوٹی عمر سے ھی ھر بچے کے قدرتی رجحان اور اُس کی قابلیت کو سمجھنے کی کوشش کی جاوے اور اُسی کے انوسار جیون میں اُسے کام دھندا دینے کی کوشش کی جاوے . کچھ دیشوں میں تو اِس ودیا کے خاص ودوان یا ماھر اسکولوں میں رکھے گئے ھیں . کہیں بھی اگر سماج کا ٹکاؤ سنگٹھن کیا جاوےگا تو موروثی‌پن اور آزاد ادل بدل دونوں کو دھیان میں رکھنا ھوگا. ھاں، بچے کا پیشہ طے کرنے میں اُس کی آزاد طبیعت اور نجی پسند کا آدھک لحاظ رکھا جائےگا.

سدھار کی ضرورت

جیسے ھماری راج کاجی اور مالی زندگی میں رکشک' بھکشک بن جاتے ھیں' 'لیڈر' (رھبر') 'مس لیڈر' یعنی گمراہ کرنے والے ھو جاتے ھیں' ٹرسٹی' اپنے کو 'بینی فیشیری' بنا بیٹھتے ھیں' دوسروں کو کھلانے والے خود اُن دوسروں کو نگلنے لگتے ھیں' جنتا کے نوکر جنتا کے مالک اور افسر بن بیٹھتے ھیں' جس سے لگاتار بلوے' انقلاب اور کرانتیاں ھوتی رھتی ھیں اور پھر جو اصلی 'بینی فیشیری' ھیں یعنی عام جنتا کے لوگ وہ پھر سے اپنے نئے ٹرسٹی مقرر کرتے ھیں' ٹھیک اِسی طرح مذھب کے معاملے میں بھی ھوتا ھے . مذھبی گرو دنیوی طاقت چھیننے کے چکر میں پڑ جاتے ھیں اور حکومت کی طاقت والے دھارمک گرو بن جانے کی فکر میں رھتے ھیں . 'پروھت' پنڈے' ملا اور

होता है. हर नतीजा अपने सबब के अन्दर बीज रूप में मौजूद होता है. सब हमेशा और हर जगह हैं, क्योंकि वह एक जिस के अन्दर यह सब हैं हर जगह है.

आजकल की बायोलोजी की साइन्स में और हमारे देश के पुराने आयुर्वेद में दोनों में विस्तार के साथ बयान किया गया है कि मां बाप के दिलों और दिमाग़ों की उस वक़्त की हालतें और आस पास की माद्दी हालतें सब मिल कर किस तरह बच्चे के ऊपर असर डालती हैं और किस तरह एक बच्चे से दूसरे बच्चे में अनगिनत फ़र्क़ पैदा होते चले जाते हैं. जब यह हालात एक से होते हैं तो बच्चों के रूप रंग और दिमाग़ भी एक से होते हैं. यह बात जुड़वां बच्चों में खूब दिखाई देती है. हिन्दुस्तान की ज्योतिश विद्या से भी हमें इस मामले में बहुत सी बातों का पता चलता है, जैसे यह कि किस वक़्त के और कैसे वक़्त के मर्द और औरत के मेल से कैसी औलाद पैदा होनी चाहिये.

हर बच्चा दो इन्सानों से पैदा होता है और उन दोनों में से भी हर एक दो दो से पैदा हुआ है. इस तरह अगर हम पीछे को चलते रहें तो इस बेअन्त सिलसिले में हमें आगे की सारी सृष्टि के बीज और उसके सबब मिल जावेंगे. दुनिया में कोई चीज नई नहीं है. सब एक में हैं और सब में एक है. इसलिये मौरूसीपन और लगातार तबदीली दोनों एक ही सिक्के के दो रुख़ हैं.

दुनिया की नई और पुरानी सब तहज़ीबों ने किसी न किसी हद तक इन चार क़िस्म के आदमियों और क़ुदरत के इन दोनों क़ानूनों को निगाह में रख कर ही समाज का संगठन किया है. अगर हम ध्यान से देखें तो जहां तक इन उसूलों को निगाह में रख कर समाज का संगठन किया गया है वहां तक ही वह तहज़ीबें कामयाब और ख़ुशहाल रही हैं. हिन्दुस्तान की पुरानी तहज़ीब ने इस उसूल को अच्छी तरह समझा था और उस पर अमल करने की कोशिश की थी. शायद इसीलिये हिन्दुस्तान की पुरानी तहज़ीब, एक चीनी तहज़ीब को छोड़ कर, शायद सबसे ज्यादा दिनों तक ज़िन्दा और फलती फूलती रही. पर जबसे हमारी इस तहज़ीब के अगुवा, उसके रक्षक और शिक्षक अधिक स्वार्थी और ख़ुदग़रज़ हो गए और उन्होंने आपस के फ़र्क़ों को हद से ज्यादा बढ़ाना शुरू कर दिया, अपने को ऊंचा और दूसरों को नीचा कहने लगे, मौरूसीपन के उसूल से ग़लत फ़ायदा उठा कर अपने को सदा ऊंचा और नीचे वालों को सदा नीचा ठहराने लगे और शख़्सी आज़ादी और बदलाव के उसूलों को जबरदस्ती दबाने की कोशिश करने लगे तब ही से हिन्दुस्तानी सभ्यता में गिरावट आने लगी. हमारी सभ्यता अभी तक बिलकुल मरी नहीं है. इसका कारन शायद यह है कि पुरानी रूहानियत और बुनियादी मानव

تا ھے . ھر نتیجہ اپنے سبب کے اندر بیج روپ میں موجود تا ھے . سب ھمیشہ اور ھر جگہ ھیں کیونکہ وہ ایک جس اندر یہ سب ھیں ھر جگہ ھے .

آجکل کی بایولوجی کی سائنس میں اور ھمارے دیش کے انے آیروید میں دونوں میں وستار کے ساتھ بیان کیا گیا ھے کہ ں باپ کے دلوں اور دماغوں کی اُس وقت کی حالتیں اور س پاس کی مادی حالتیں سب ملکر کس طرح بچے کے اوپر ر ڈالتی ھیں اور کس طرح ایک بچے سے دوسرے بچے میں گنت فرق پیدا ھوتے چلے جاتے ھیں . جب یہ حالات ایک سے تے ھیں تو بچوں کے روپ رنگ اور دماغ بھی ایک سے ھوتے ں . یہ بات جوڑواں بچوں میں خوب دکھائی دیتی ھے . دستان کی جوتش ودیا سے بھی ھمیں اِس معاملے میں بہت ں باتوں کا پتہ چلتا ھے، جیسے یہ کہ کس وقت کے اور کیسے ت کے مرد اور عورت کے میل سے کیسی اولاد پیدا ھونی چاھئے.

ھر بچہ دو اِنسانوں سے پیدا ھوتا ھے اور اُن دونوں میں سے ی ھر ایک دو دو سے پیدا ھوا ھے . اِس طرح اگر ھم پیچھے کو لتے رھیں تو اِس بےانت سلسلے میں ھمیں آگے کی ساری رشٹی کے بیج اور اُس کے سبب مل جاوینگے . دنیا میں کوئی یز نئی نہیں ھے . سب ایک میں ھیں اور سب میں ایک ھے . ں لئے موروثی پن اور لگاتار تبدیلی دونوں ایک ھی سکے کے رخ ھیں .

دنیا کی نئی اور پرانی سب تہذیبوں نے کسی نہ کسی دتک اِن چار قسم کے آدمیوں اور قدرت کے اِن دونوں قانونوں کو اہ میں رکھکر ھی سماج کا سنگٹھن کیا ھے . اگر ھم دھیان سے کھیں تو جہاں تک اِن اصولوں کو نگاہ میں رکھکر سماج کا گٹھن کیا گیا ھے وھاں تک ھی وہ تہذیبیں کامیاب اور خوشحال ی ھیں . ھندستان کی پرانی تہذیب نے اِس اصول کو اچھی رح سمجھا تھا اور اُس پر عمل کرنے کی کوشش کی تھی . شاید ے لئے ھندستان کی پرانی تہذیب، ایک چینی تہذیب کو ھوڑکر، شاید سب سے زیادہ دنوں تک زندہ اور پھلتی پھولتی رھی. جب سے ھماری اِس تہذیب کے اگوا، اُس کے رکشک اور شک ادھک سوارتھی اور خودغرض ھوگئے اور انھوں نے آپس فرقوں کو حد سے زیادہ بڑھانا شروع کردیا، اپنے کو اونچا اور سروں کو نیچا کہنے لگے، موروثی پن کے اصول سے غلط فائدہ ٹھاکر اپنے کو سدا اونچا اور نیچے والوں کو سدا نیچا ٹھہرانے اور شخصی آزادی اور بدلاؤ کے اصولوں کو زبردستی دبانے کی شش کرنے لگے تب ھی سے ھندستانی سبھیتا میں گراوٹ لگی . ھماری سبھیتا ابھی تک بالکل مری نہیں ھے . کا کارن شاید یہ ھے کہ پرانی روحانیت اور بنیادی مانو

दरख़्तों, पहाड़ों, नदियों जैसी चीज़ों की पूजा लोगों के दिमाग़ों को कुन्द कर देती है, उनकी इरादे की शक्ति को कमज़ोर कर देती है, उनके अन्दर समझ के ख़िलाफ़ अन्ध विश्वास भर देती है, और क़ौमों को उन्नति की जगह अवनति और बरबादी की तरफ़ ले जाती है.

इंजील के ऊपर के शब्दों में जो "किसी और देवता" की चरचा की गई है उससे मतलब केवल पत्थर की मूर्तियों से ही नहीं है, और ईश्वर के "हुक्म" की जो चरचा की गई है उससे मतलब केवल इस तरह की मूर्ति यों की पूजा के ख़िलाफ़ हुक्म से ही नहीं है. और सब दूसरे देवताओं से कहीं बुरे दो देवता हैं जिन्हें यूनानी 'बैक्कस' और 'प्राइपस' कहा करते थे. इनमें बैक्कस शराब का और बुरे खाने का देवता है, और प्राइपस जिन्सी बदचलनी (काम-वासना) का देवता है. यह दोनों देवता नहीं सबसे बड़े शैतान हैं. इन दोनों की पूजा से जो बुराइयां और गन्दी बीमारियां पैदा होती हैं वह "तीसरी या चौथी पीढ़ी तक" ही नहीं इससे कहीं ज़्यादा पीढ़ियों तक फलती रहती हैं. जिन्सी बदचलनी से तो दिमाग़ और जिस्म दोनों की तरह तरह की कमज़ोरियां और बीमारियां बाप से बेटे को और उससे उसके बेटे को मिलती रहती हैं. इसलिये सब धर्मों में इन दोनों बुराइयों से बचने का "हुक्म" दिया गया है. इन हुक्मों में सब से बड़े हुक्म वैद्यक यानी डाक्टरी के हुक्म हैं. यह "हुक्म" क़ुदरत के अटल क़ानून हैं. क़ुदरत ख़ुदा की क़ुदरत है. इसलिये क़ुदरत के क़ानून ख़ुदा के हुक्म हैं. ईश्वर से "प्रेम" करने या उससे "नफ़रत" करने का मतलब इन्हीं क़ुदरत के अटल क़ानूनों से प्रेम करना या उनसे नफ़रत करना है, जिस का मतलब है इन क़ानूनों को मानना या उनकी तरफ़ से बे परवाही बरतना, क्योंकि दुनिया की सब चीज़ें और सब क़ायदे क़ानून अल्लाह ही से हैं.

मौरूसीपन और हर एक का अपना अपना उठान

इन सबके लिये समाज को एक ऐसे संगठन या निज़ाम की ज़रूरत है जो मज़बूत भी हो और साथ ही लचीला भी हो. ऊपर बयान किये हुए चारों तरह के इन्सान क़ुदरत के दो क़ानूनों के अधीन होते हैं—पहला मौरूसीपन का क़ानून और दूसरा हर एक की आज़ाद निजी उठान या बदलाव का क़ानून. आत्मा यानी रूह एक है, इसलिये हममें कुछ मौरूसी गुनों का होना स्वाभाविक है. अनात्मा यानी माद्दा तरह तरह का है इसलिये सब के अलग अलग रूप होना और उन रूपों का बदलते रहना भी उतना ही क़ुदरती है. दर्शन शास्त्र यानी फ़लसफ़े में यह दोनों क़ानून एक दूसरे में आ जाते हैं. सब बच्चे मां बाप के अन्दर मौजूद होते हैं और हर मां या बाप ख़ुद अनगिनत पुरखों की औलाद

درختوں، پہاڑوں، ندیوں جیسی چیزوں کی پوجا لوگوں کے دماغوں کو کند کر دیتی ہے، اُن کی اِرادے کی شکتی کو کمزور کر دیتی ہے، اُن کے اندر سمجھ کے خلاف اندھ وشواس بھر دیتی ہے، اور قوموں کو اُنتی کی جگہ اونتی اور بربادی کی طرف لے جاتی ہے۔

اِنجیل کے اُوپر کے شبدوں میں جو "کسی اور دیوتا" کی چرچا کی گئی ہے اُس سے مطلب کیول پتھر کی مورتیوں سے ہی نہیں ہے، اور ایشور کے "حکم" کی جو چرچا کی گئی ہے اُس سے مطلب کیول اِس طرح کی مورتیوں کی پوجا کے خلاف حکم سے ہی نہیں ہے۔ اور سب دوسرے دیوتاؤں سے کہیں برے دو دیوتا ہیں جنہیں یونانی 'بیکس' اور 'پرائپس' کہا کرتے تھے۔ اُن میں بیکس شراب کا اور برے کھانے کا دیوتا ہے، اور پرائپس جنسی بدچلنی (کام واسنا) کا دیوتا ہے۔ یہ دونوں دیوتا نہیں سب سے بڑے شیطان ہیں۔ اِن دونوں کی پوجا سے جو برائیاں اور گندی بیماریاں پیدا ہوتی ہیں وہ "تیسری یا چوتھی پیڑھی تک" ہی نہیں اِس سے کہیں زیادہ پیڑھیوں تک پھلتی رہتی ہیں۔ جنسی بدچلنی سے تو دماغ اور جسم دونوں کی طرح طرح کی کمزوریاں اور بیماریاں باپ سے بیٹے کو اور اس سے اس کے بیٹے کو ملتی رہتی ہیں۔ اِسی لئے سب دھرموں میں اِن دونوں برائیوں سے بچنے کا "حکم" دیا گیا ہے۔ اِن حکموں میں سب سے بڑے حکم ویدک یعنی ڈاکٹری کے حکم ہیں۔ یہ "حکم" قدرت کے اٹل قانون ہیں۔ قدرت خدا کی قدرت ہے۔ اِس لئے قدرت کے قانون خدا کے حکم ہیں۔ ایشور سے "پریم" کرنے یا اُس سے "نفرت" کرنے کا مطلب اِنہیں قدرت کے اٹل قانونوں سے پریم کرنا یا اُن سے نفرت کرنا ہے، جس کا مطلب ہے اِن قانونوں کو ماننا یا اُن کی طرف سے بےپرواہی برتنا، کیونکہ دنیا کی سب چیزیں اور سب قاعدے قانون اللہ ہی سے ہیں۔

موروثی پن اور ہر ایک کا اپنا اپنا اُٹھان

اِس سب کے لئے سماج کو ایک ایسے سنگٹھن یا نظام کی ضرورت ہے جو مضبوط بھی ہو اور ساتھ ہی لچیلا بھی ہو۔ اوپر بیان کئے ہوئے چاروں طرح کے اِنسان قدرت کے دو قانونوں کے ادھین ہوتے ہیں—پہلا موروثی پن کا قانون اور دوسرا ہر ایک کی آزاد نجی اُٹھان یا بدلاؤ کا قانون۔ آتما یعنی روح ایک ہے، اِس لئے ہم میں کچھ موروثی گنوں کا ہونا سوابھاوک ہے۔ اناتما یعنی مادہ طرح طرح کا ہے اِس لئے سب کے الگ الگ روپ ہونا اور اُن روپوں کا بدلتے رہنا بھی اُتنا ہی قدرتی ہے۔ درشن شاستر یعنی فلسفہ میں یہ دونوں قانون ایک دوسرے میں آجاتے ہیں۔ سب بچے ماں باپ کے اندر موجود ہوتے ہیں، اور ہر ماں یا باپ خود انگنت پرکھوں کی اولاد

पर अपना असर डालती हैं वह मामूली इन्सानों की सूझ-बूझ के लिये पैदाइश और उसकी ताक़त के काम करने के तरीक़ों से कहीं ज्यादा बारीक और मुश्किल चीज़ हैं. लेकिन इन ताक़तों का असर बहुत गहरा, ज़बरदस्त और व्यापक होता है.

गीता में लिखा है :—

"आदमी के नेक कामों और क़ुरबानी (यज्ञ यानी त्याग) से बारिश होती है. उसी से नाज पैदा होता है, नाज से सब जानदारों को खूराक मिलती है,.......जिन्सी बदचलनी (संकर) उस बदचलनी से सम्बन्ध रखने वाले सबको नरक में पहुंचा देती है."

मौलाना रूम ने लिखा है :—

"जब लोग ज़कात यानी ख़ैरात देना बन्द कर देते हैं तो बादल आने बन्द हो जाते हैं और जब लोग शहवत के पीछे पड़कर बदचलन हो जाते हैं तब मुसीबतें उन्हें चारों तरफ़ से घेर लेती हैं."

इंजील में बड़े ज़ोरदार शब्दों में आदमी को हिदायत की गई है कि :—

"सिवाय एक अल्लाह के किसी और को अपना देवता न बनाना. तुम किसी तरह की मूर्ति या बुत बना कर न रखना, चाहे वह बुत हवा में उड़ने वाली किसी चीज़ की शकल में हो, चाहे धरती पर चलने वाले किसी जानदार के रूप में और चाहे पानी में रहने वाले किसी प्राणी की शकल में. तुम ऐसे किसी बुत के सामने सर न झुकाना और न उनकी पूजा सेवा करना, क्योंकि मैं तुम्हारा ईश्वर इस मामले में बहुत डाह करने वाला हूं. जो लोग गुनाह करते हैं मैं तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी औलाद को, उन लोगों को जो मुझसे नफ़रत करते हैं, सज़ा देता हूं और उन पर जो मुझसे प्रेम करते हैं और मेरे हुक्म मानते हैं दया दिखलाता हूं." (इंजील; 20 Exodus).

इंजील की यह हिदायत ध्यान से समझने की चीज़ है. यह सच है कि कभी कभी मूर्तियों के पूजने वालों में भी किसी उपासक की गहरी श्रद्धा, उसका ज़बरदस्त विश्वास उसमें इस तरह के भाव जगा देता है कि उसका दिल और दिमाग़ उसी पत्थर की मूर्ति के अन्दर हाथ पैर देखने लगता है. वह मूर्ति उसे जानदार मालूम होने लगती है, उससे बोलने लगती है, और थोड़ी देर के लिये उसकी अपनी दिल की हालत के अनुसार उसके लिये सच्चा फ़रिश्ता या सच्चा शैतान बन जाती है. यह कोई अनोखी बात नहीं है, आख़िर आत्मा सबके अन्दर है. ख़ुदा हर चीज़ में है, बुत के अन्दर भी है. आदमी की कल्पना शक्ति उसे क्या क्या नहीं दिखा सकती, पर जिस तरह की मूर्ति पूजा आज दुनिया में फैली हुई है, या उससे मिलती जुलती

ینا اثر ڈالتی ھیں وہ معمولی انسانوں کی سوجھ بوجھ کے لئے
اور اُس کی طاقت کے کام کرنے کے طریقوں سے کہیں زیادہ
ک اور مشکل چیز ھیں. لیکن ان طاقتوں کا اثر بہت
' زبردست اور ویاپک ہوتا ھے.

گیتا میں لکھا ہے :—

"آدمی کے نیک کاموں اور قربانی (یگیہ یعنی تیاگ) سے
ں ھوتی ھے. اُسی سے ناج پیدا ھوتا ھے' ناج سے سب
داروں کو خوراک ملتی ھے'.......جنسی بدچلنی (سنکر)
، بدچلنی سے سمبندھ رکھنے والے سب کو نرک میں پہونچا
ی ھے."

مولانا روم نے لکھا ھے :—

"جب لوگ زکات یعنی خیرات دینا بند کردیتے ھیں تو
ل آنے بند ھوجاتے ھیں اور جب لوگ شہوت کے پیچھے پڑکر
چلن ھوجاتے ھیں تب مصیبتیں اُنہیں چاروں طرف سے گھیر
ی ھیں."

اِنجیل میں بڑے زوردار شبدوں میں آدمی کو ھدایت کی
ہے کہ :—

"سوائے ایک اللہ کے کسی اور کو اپنا دیوتا نہ بنانا' تم کسی
ح کی مورتی یا بت بناکر نہ رکھنا' چاھے وہ بت ھوا میں
ے والی کسی چیز کی شکل میں ھو' چاھے دھرتی پر چلنے
، کسی جاندار کے روپ میں اور چاھے پانی میں رھنے والے
ب پرانی کی شکل میں. تم ایسے کسی بت کے سامنے سر نہ
کانا اور نہ اُن کی پوجا سیوا کرنا' کیونکہ میں تمہارا ایشور
ں معاملے میں بہت ڈاہ کرنے والا ھوں. جو لوگ گناہ کرتے
ں میں تیسری اور چوتھی پیڑھی تک اُن کی اولاد کو' اُن
وں کو جو مجھ سے نفرت کرتے ھیں' سزا دیتا ھوں اور اُن پر
مجھ سے پریم کرتے ھیں اور میرے حکم مانتے ھیں' دیا دکھلاتا
ں." (20 Exodus 'اِنجیل)

اِنجیل کی یہ ھدایت دھیان سے سمجھنے کی چیز ھے. یہ
ھے کہ کبھی کبھی مورتیوں کے پوجنے والوں میں بھی کسی
سک کی گہری شردھا' اُس کا زبردست وشواس' اُس میں اِس
ح کے بھاو جگا دیتا ھے کہ اُس کا دل اور دماغ اُسی پتھر کی
رتی کے اندر ھاتھ پیر دیکھنے لگتا ھے. وہ مورتی اُسے جاندار
لوم ھونے لگتی ھے' اُس سے بولنے لگتی ھے' اور تھوڑی دیر کے لئے
ی کی اپنی دل کی حالت کے انوسار اُس کے لئے سچا
شتہ یا سچا شیطان بن جاتی ھے. یہ کوئی انوکھی بات
یں ھے. آخر آتما سب کے اندر ھے. خدا ھر چیز میں
. بت کے اندر بھی ھے. آدمی کی کلپنا شکتی اُسے
کیا نہیں دکھا سکتی. پر جس طرح کی مورتی پوجا
دنیا میں پھیلی ھوئی ھے' یا اُس سے ملتی جلتی

ट्रेड गिल्ड करती हैं. पर हमारे यहां थोड़े ही दिनों के अन्दर पेशे या काम से उनका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया. यहां तक कि आजकल सिवाय एक पुरोहिताई के काम के बाक़ी सब काम सब जातियों के लोग बिना किसी फ़र्क़ के करते हैं. केवल एक पुरोहिताई का काम अब ऐसा रह गया है जिस पर ब्राह्मन जाति में पैदा हुए लोगों का इजारा चला आता है. वह इजारा भी अब धीरे धीरे ख़त्म हो रहा है.

नई पीढ़ी के लोग नई रोशनी और नई ज़रूरतों के असर में देश की इस बुराई को समझते जा रहे हैं. देश से बाहर की हवाएं भी अपना काम कर रही हैं. पुराने बन्धन टूट रहे हैं, पर अभी बहुत धीरे. इन बन्धनों के तोड़ने में हमारे सामने लक्ष्य या मक़सद, बेलगाम छूट या केवल भोग विलास नहीं होना चाहिये. हमारे सबके सामने लक्ष्य होना चाहिये समाज की और सब की असली और टिकाऊ भलाई.

इसका यह मतलब नहीं कि हमारा देश दुनिया के और देशों से अधिक गिरा हुआ है. कोई देश किसी एक बात में गिरा हुआ है तो कोई किसी दूसरी बात में. इस मामले में सब जगह सुधार की ज़रूरत और गुन्जाइश है. इन मामलों में टिकाऊ सुधार तब ही हो सकता है जब दुनिया के बच्चों को शिक्षा देने वाले हर लड़के और लड़की के स्वाभाविक 'रुझान' उसकी तबियत और क़ाबलियत को ठीक ठीक समझ कर उसी के अनुसार हर एक को तालीम दें और उसी के अनुसार शुरू से हर एक का पेशा और काम तय किया जावे और शिक्षा ख़तम होने पर उन्हें वैसा ही काम सौंपा जावे. इसके लिये ख़ास समाजी संगठन की ज़रूरत है.

रोटी का सवाल और जिन्सी सवाल

रोटी का सवाल और जिन्सी सवाल इन दो पर ही आदमी की सारी ज़िन्दगी चलती है. इन्हें ठीक ठीक हल करना और ठीक क़ाबू में रखना हर देश के रहने वालों के लिये ज़रूरी है. इसके लिये मुनासिब नियम और क़ानून होने चाहियें जिनका तोड़ना सबसे बड़ा जुर्म समझा जावे. मां का दिल और मां का शरीर इन्सानी समाज की सबसे पाक चीज़ है. यही विधाता का सबसे बड़ा मन्दिर है. जो देश इस मन्दिर को गन्दा करने की या दुख पहुंचाने की अपने लोगों को इजाज़त देता है उस पर मनु के शब्दों में— "ईश्वर की तरफ़ से बिजली गिरती है." यह बिजली या तो दिलों और दिमाग़ों के बिगड़ने की शकल में दिखाई देती है या बीमारियों, महामारियों, जंगों, भूचालों, बाढ़ों, अकालों और ज्वालामुखियों के फूटने की शकल में दिखाई देती है. इनमें से कई तरह की आफ़तों का सम्बन्ध आदमी के कामों से ज़ाहिरा दिखाई नहीं देता. लेकिन इस सम्बन्ध से इनकार नहीं किया जा सकता. इख़लाक़ी और रूहानी लहरें जिस तरह काम करती हैं और माद्दी दुनिया

ٹریڈ گلڈ کرتی ہیں. پر ہمارے یہاں تھوڑے ہی دنوں کے اندر پیشے یا کام سے اُن کا کوئی سمبندھ نہیں رہ گیا۔ یہاں تک کہ آجکل سوائے ایک پروہتائی کے کام کے باقی سب کام سب جاتیوں کے لوگ بنا کسی فرق کے کرتے ہیں۔ کیول ایک پروہتائی کا کام اب ایسا رہ گیا ہے جس پر براہمن جاتی میں پیدا ہونے لوگوں کا اِجارا چلا آتا ہے۔ وہ اِجارا بھی اب دھیرے دھیرے ختم ہو رہا ہے۔

نئی پیڑھی کے لوگ نئی روشنی اور نئی ضرورتوں کے اثر میں دیش کی اِس برائی کو سمجھتے جا رہے ہیں۔ دیش سے باہر کی ہوائیں بھی اپنا کام کر رہی ہیں۔ پرانے بندھن ٹوٹ رہے ہیں، پر ابھی بہت دھیرے۔ اِن بندھنوں کے توڑنے میں ہمارے سامنے لکش یا مقصد، بےلگام چھوٹ یا کیول بھوگ ولاس نہیں ہونا چاہئے۔ ہمارے سب کے سامنے لکش ہونا چاہئے سماج کی اور سب کی اصلی اور ٹکاؤ بھلائی۔

اِس کا یہ مطلب نہیں کہ ہمارا دیش دنیا کے اور دیشوں سے ادھک گرا ہوا ہے۔ کوئی دیش کسی ایک بات میں گرا ہوا ہے تو کوئی کسی دوسری بات میں۔ اِس معاملے میں سب جگہ سدھار کی ضرورت اور گنجائش ہے۔ اِن معاملوں میں ٹکاؤ سدھار تب ہی ہو سکتا ہے جب دنیا کے بچوں کو شکشا دینے والے ہر لڑکے اور لڑکی کے سوابھاوک 'رجحان' اس کی طبیعت اور قابلیت کو ٹھیک ٹھیک سمجھ کر اُسی کے انوسار ہر ایک کو تعلیم دیں اور اُسی کے انوسار شروع سے ہر ایک کا پیشہ اور کام طے کیا جاوے اور شکشا ختم ہونے پر اُنہیں ویسا ہی کام سونپا جاوے۔ اِس کے لئے خاص سماجی سنگٹھن کی ضرورت ہے۔

روٹی کا سوال اور جنسی سوال

روٹی کا سوال اور جنسی سوال اِن دو پر ہی آدمی کی ساری زندگی چلتی ہے۔ اِنہیں ٹھیک ٹھیک حل کرنا اور ٹھیک قابو میں رکھنا ہر دیش کے رہنے والوں کے لئے ضروری ہے۔ اِس کے لئے مناسب نیم اور قانون ہونے چاہئیں جن کا توڑنا سب سے بڑا جرم سمجھا جاوے۔ ماں کا دل اور ماں کا شریر اِنسانی سماج کی سب سے پاک چیز ہے. یہی ودھاتا کا سب سے بڑا مندر ہے۔ جو دیش اِس مندر کو گندا کرنے کی یا دکھ پہونچانے کی اپنے لوگوں کو اِجازت دیتا ہے اُس پر منو کے شبدوں میں— "ایشور کی طرف سے بجلی گرتی ہے۔" یہ بجلی یا تو دلوں اور دماغوں کے بگڑنے کی شکل میں دکھائی دیتی ہے یا بیماریوں، مہاماریوں، جنگوں، بھونچالوں، باڑھوں، اکالوں اور جوالامکھیوں کے پھٹنے کی شکل میں دکھائی دیتی ہے. اِن میں سے کئی طرح کی آفتوں کا سمبندھ آدمی کے کاموں سے ظاہرا دکھائی نہیں دیتا۔ لیکن اِس سمبندھ سے اِنکار نہیں کیا جاسکتا۔ اِخلاقی اور روحانی لہریں جس طرح کام کرتی ہیں اور مادی دنیا

रखना है तो पाक साफ़ खाना खाना चाहिये, शुद्ध जल पीना चाहिये, ऐसे लोगों के साथ बैठकर खाना पीना चाहिये जिन की आदतें अच्छी और जिन से हमारी तबियतें मिलती हों. विवाह भी ऐसे लोगों में ही होना चाहिये जिन के स्वभाव, विचार, शौक़ और तबियतें मिलती हों. पर यह बात नासमझ और स्वार्थी लोगों के हाथों में उलटी हो जाती है. समय के साथ साथ पुरानी अच्छी से अच्छी चीज़ भी सड़ जाती है और नुक़सान करने लगती है.

दूसरे देशों में तो लोगों ने केवल अपने एक राजा या एक पुरोहित के बारे में यह विचार बना लिया कि उसे ईश्वरी अधिकार मिला हुआ है. हमने इस देश में लाखों आदमियों की एक पूरी जाति के बारे में यह मान लिया कि भगवान ने जन्म से ही उन्हें दूसरों से ऊंचा और दूसरों पर हुकुम चलाने का हक़दार बना दिया है. और जब यह लोग जन्म से ऊंचे हो गए तो बाक़ी लाखों करोड़ों लोग जन्म से ही नीच समझे जाने लगे. हमने मान लिया कि उन्हें भगवान ने इन ऊपर वालों की सेवा करने और उनका हुकुम मानने के लिये ही बनाया है. दस्तकारों, किसानों, मज़दूरों सब की हमने यही दुर्गत कर डाली. यहां तक कि अमरीका के हबशी ग़ुलामों की तरह हमने देश के लाखों और करोड़ों मर्द औरतों को और पीढ़ी दर पीढ़ी उनकी औलाद को हमेशा के लिये शूद्र, अछूत और अन्त्यज क़रार दे दिया. नतीजा यह हुआ कि साइन्स और समझ की जगह हम कहीं अधिक अन्ध विश्वासों, नासमझी और गन्दगी में फंसते चले गए.

हम गन्दे और बीमार लोगों के हाथों का पका हुआ नापाक खाना खाते हैं केवल इसलिये क्योंकि पकाने वाला उसी जाति का है जिसके हम हैं. हमारे यहां रोज़ बेमेल और बेतुकी शादियां होती रहती हैं क्योंकि लड़का और लड़की दोनों की जात का नाम एक है. हम इस तरह की शादियों को 'सवर्न' कहते हैं जिसका मतलब यह है कि लड़का और लड़की दोनों एक वर्न के हैं. असल में यह सब शादियां अधिकतर 'अवर्न' होती हैं. संस्कृत क़ायदे से 'वर्न' शब्द के तीन मानी हैं :—एक वह चीज़ जो समाज के अन्दर किसी आदमी की रोज़ी, उसके पेशे या उसकी जगह को बयान करे, दूसरे वह चीज़ जिसे कोई आदमी खुद अपने लिये चुने या पसन्द करे. इसमें पेशा भी आ सकता है, तीसरे वह चीज़ जो किसी आदमी को ढके हो, जैसे उसका रंग वग़ैरा. 'वर्न' शब्द के मानी किसी तरह भी जन्म की जात नहीं होते.

अधिकतर जातों और उपजातों के नाम, पेशों और धंधों पर हैं. हो सकता है शुरू में इस तरह की जातों ने वह काम किया हो जो आजकल दुनिया में ट्रेड यूनियनें या

رکھنا ہے تو پاک صاف کھانا کھانا چاہئے، شدھ جل پینا چاہئے، ایسے لوگوں کے ساتھ بیٹھ کر کھانا پینا چاہئے جن کی عادتیں اچھی اور جن سے ہماری طبیعتیں ملتی ہوں۔ وواہ بھی ایسے لوگوں میں ہی ہونا چاہئے جن کے سبھاؤ، وچار، شوق اور طبیعتیں ملتی ہوں۔ پر یہ بات ناسمجھ اور سوارتھی لوگوں کے ہاتھوں میں الٹی ہو جاتی ہے۔ سمے کے ساتھ ساتھ پرانی اچھی سے اچھی چیز بھی سڑ جاتی ہے اور نقصان کرنے لگتی ہے۔

دوسرے دیشوں میں تو لوگوں نے کیول اپنے ایک راجا یا ایک پروہت کے بارے میں یہ وچار بنا لیا کہ اسے ایشوری ادھکار ملا ہوا ہے۔ ہم نے اس دیش میں لاکھوں آدمیوں کی ایک پوری جاتی کے بارے میں یہ مان لیا کہ بھگوان نے جنم سے ہی انہیں دوسروں سے اونچا اور دوسروں پر حکم چلانے کا حقدار بنا دیا ہے۔ اور جب یہ لوگ جنم سے اونچے ہو گئے تو باقی لاکھوں کروڑوں لوگ جنم سے ہی نیچ سمجھے جانے لگے۔ ہم نے مان لیا کہ انہیں بھگوان نے ان اوپر والوں کی سیوا کرنے اور ان کا حکم ماننے کے لئے ہی بنایا ہے۔ دستکاروں، کسانوں، مزدوروں سب کی ہم نے یہی درگت کر ڈالی۔ یہاں تک کہ امریکہ کے حبشی غلاموں کی طرح ہم نے دیش کے لاکھوں اور کروڑوں مرد عورتوں کو اور پیڑھی در پیڑھی ان کی اولاد کو ہمیشہ کے لئے شودر، اچھوت اور انتیج قرار دے دیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سائنس اور سمجھ کی جگہ ہم کہیں ادھک اندھ وشواسوں، ناسمجھی اور گندگی میں پھنستے چلے گئے۔

ہم گندے اور بیمار لوگوں کے ہاتھوں کا پکا ہوا ناپاک کھانا کھاتے ہیں کیول اس لئے کیونکہ پکانے والا اسی جاتی کا ہے جس کے ہم ہیں۔ ہمارے یہاں روز بے میل اور بے تکی شادیاں ہوتی رہتی ہیں کیونکہ لڑکا اور لڑکی دونوں کی جات کا نام ایک ہے۔ ہم اس طرح کی شادیوں کو 'سورن' کہتے ہیں جس کا مطلب یہ ہے کہ لڑکا اور لڑکی دونوں ایک ورن کے ہیں۔ اصل میں یہ سب شادیاں ادھک تر 'اسورن' ہوتی ہیں۔ سنسکرت قاعدے سے 'ورن' شبد کے تین معنی ہیں :—ایک وہ چیز جو سماج کے اندر کسی آدمی کی روزی، اس کے پیشے یا اس کی جگہ کو بیان کرے، دوسرے وہ چیز جسے کوئی آدمی خود اپنے لئے چنے یا پسند کرے۔ اس میں پیشہ بھی آ سکتا ہے، تیسرے وہ چیز جو کسی آدمی کو ڈھکے ہو، جیسے اس کا رنگ وغیرہ۔ 'ورن' شبد کے معنی کسی طرح بھی جنم کی جات نہیں ہوتے۔

ادھک تر جاتوں اور اپ جاتوں کے نام، پیشوں اور دھندوں پر ہیں۔ ہو سکتا ہے شروع میں اس طرح کی جاتوں نے وہ کام کیا ہو جو آج کل دنیا میں ٹریڈ یونینیں یا

हुआ कि इस तरह के विवाहों की औलाद की और नई नई जातें बनती चली गईं. इन जातों, उप-जातों और उप-जातों के अन्दर उप-जातों की गिनती बढ़ती गई. इस तरह देश में हज़ारों जातें बन गईं. सब एक दूसरे से अलग, जिनमें न एक से दूसरी में रोटी बेटी का सम्बन्ध हो सकता था और न कोई एक से दूसरी में आ जा सकता था. यही हाल अब तक जारी है. इन सब को एक डोर में बांधने वाला केवल एक शब्द 'हिन्दू' रह गया है जिसका अब सिवाय हिन्दुस्तानी या हिन्द वासी के और कुछ अर्थ हो ही नहीं सकता. जात या उपजात के आजकल केवल यह मानी रह गए हैं कि कुछ घरानों का एक गिरोह है जो केवल एक दूसरे के हाथ का खाते हैं और एक दूसरे के साथ ही शादी विवाह करते हैं. दूसरी जात वालों के साथ न खाते हैं और न उनके साथ शादी विवाह करते हैं. यहां तक कि दूसरी जात या उपजात वालों के हाथ का छुआ हुआ भोजन भी उनके लिये नापाक है. इस छुआछूत का कारन शुरू में कुछ भी रहा हो—हो सकता है यह छुआछूत इस डर से शुरू हुई हो कि कोई किसी को ज़हर न दे दे—पर अब इस रिवाज में कोई समझ या भलाई की बात नहीं रह गई है. हमारे देश के आगे बढ़ने में इस समय यह सारी गिरोह बन्दी सब से बड़ी रुकावट है.

आजकल की जात पात

सन 1891 की मरदुमशुमारी के अनुसार हिन्दुओं के अन्दर कुल जातियों और उपजातियों की तादाद दो हज़ार तीन सौ अठत्तर थी. उसके बाद भी कुछ जातियां टूट कर और टुकड़े होती गईं और कुछ एक दूसरे में मिलती गईं. सन 1931 की मरदुमशुमारी में सब जातियों और उपजातियों की ठीक ठीक गिनती देने की कोशिश ही नहीं की गई. राजकाजी चुनावों तक पर इसका गहरा और बहुत बुरा असर पड़ा है. देश में सच्ची एकता पैदा नहीं हो पाती. ईमानदारी और क़ाबलियत को ऊपर आने का मौक़ा नहीं मिलता. बेईमानी और गन्दी गुटबन्दी बढ़ती जा रही है. देश सेवकों का ध्यान इस बुराई की तरफ़ जाने लगा है, पर अभी बहुत कम. लेखक ने सन 1936 में जब वह हिन्दुस्तान की मरकज़ी क़ानून सभा का मेम्बर था एक क़ानून अलग अलग जातियों में विवाह शादी जायज़ क़रार दिये जाने का पेश किया था. उस समय वह पास न हो सका. पर उसके बाद इस तरह के क़ानून पास हो चुके हैं और कुछ रास्ते खुलते जा रहे हैं. ज़ाहिर है कि इस जात पात के बिना मिटे देश एकता और उन्नति की राह पर आगे नहीं बढ़ सकता.

साइंस और समझ दोनों की यह मांग है कि हम हर कोई चीज़ हर किसी के हाथ से न खावें और न हर किसी के साथ ब्याह शादी करें. इस सम्बन्ध में समझदारी और विवेक से काम लेना ज़रूरी है. हमें समाज को तन्दुरुस्त

ھوا کہ اس طرح کے وواھوں کی اولاد کی اور نئی نئی جاتیں بنتی چلی گئیں۔ اِن جاتوں، اُپ جاتوں اور اُپ جاتوں کے اندر اُپ جاتوں کی گنتی بڑھتی گئی۔ اِس طرح دیش میں ھزاروں جاتیں بن گئیں، سب ایک دوسرے سے الگ، جن میں نہ ایک سے دوسری میں روٹی بیٹی کا سمبندھ ھو سکتا تھا اور نہ کوئی ایک سے دوسری میں آ جا سکتا تھا۔ یہی حال اب تک جاری ھے۔ اِن سب کو ایک ڈور میں باندھنے والا کیول ایک شبد 'ھندو' رہ گیا ھے جس کا اب سوائے ھندستانی یا ھندواسی کے اور کچھ ارتھ ھو ھی نہیں سکتا۔ جات یا اُپ جات کے آجکل کیول یہ معنی رہ گئے ھیں کہ کچھ گھرانوں کا ایک گروہ ھے جو کیول ایک دوسرے کے ھاتھ کا کھاتے ھیں اور ایک دوسرے کے ساتھ ھی شادی وواہ کرتے ھیں۔ دوسری جات والوں کے ساتھ نہ کھاتے ھیں اور نہ اُن کے ساتھ شادی وواہ کرتے ھیں۔ یہاں تک کہ دوسری جات یا اُپ جات والوں کے ھاتھ کا چھوا ھوا بھوجن بھی اُن کے لئے ناپاک ھے۔ اِس چھواچھوت کا کارن شروع میں کچھ بھی رھا ھو—ھو سکتا ھے یہ چھواچھوت اِس ڈر سے شروع ھوئی ھو کہ کوئی کسی کو زھر نہ دے دے—پر اب اس رواج میں کوئی سمجھ یا بھلائی کی بات نہیں رہ گئی ھے۔ ھمارے دیش کے آگے بڑھنے میں اِس سمے یہ ساری گروہ بندی سب سے بڑی رکاوٹ ھے۔

آجکل کی جات پات

سن 1891 کی مردم‌شماری کے انوسار ھندوؤں کے اندر کل جاتیوں اور اُپ جاتیوں کی تعداد دو ھزار تین سو اٹھتر تھی۔ اُس کے بعد بھی کچھ جاتیاں ٹوٹ کر اور ٹکڑے ھوتی گئیں اور کچھ ایک دوسرے میں ملتی گئیں۔ سن 1931 کی مردم شماری میں سب جاتیوں اور اُپ جاتیوں کی ٹھیک ٹھیک گنتی دینے کی کوشش ھی نہیں کی گئی۔ راج کاجی چناؤں تک پر اِس کا گہرا اور بہت برا اثر پڑا ھے۔ دیش میں سچی ایکتا پیدا نہیں ھو پاتی۔ ایمانداری اور قابلیت کو اوپر آنے کا موقع نہیں ملتا۔ بے ایمانی اور گندی گٹ‌بندی بڑھتی جا رھی ھے۔ دیش سیوکوں کا دھیان اِس برائی کی طرف جانے لگا ھے، پر ابھی بہت کم۔ لیکھک نے سن 1936 میں جب وہ ھندستان کی مرکزی قانون سبھا کا ممبر تھا ایک قانون الگ الگ جاتیوں میں وواہ شادی جائز قرار دیئے جانے کا پیش کیا تھا۔ اُس سمے وہ پاس نہ ھو سکا۔ پر اُس کے بعد اس طرح کے قانون پاس ھو چکے ھیں اور کچھ راستے کھلتے جا رھے ھیں۔ ظاھر ھے کہ اِس جات پات کے بنا مٹے دیش ایکتا اور اُنتی کی راہ پر آگے نہیں بڑھ سکتا۔

سائنس اور سمجھ دونوں کی یہ مانگ ھے کہ ھم ھر کوئی چیز ھر کسی کے ھاتھ سے نہ کھاویں اور نہ ھر کسی کے ساتھ بیاہ شادی کریں۔ اِس سمبندھ میں سمجھداری اور وویک سے کام لینا ضروری ھے۔ ھمیں سماج کو تندرست

ख़ुदग़रज़ी और बिगाड़

इन्सानी समाज की चार तरह की शक्तियों की चरचा हम ऊपर कर चुके हैं—विद्या शक्ति, राज शक्ति, धन शक्ति और श्रम यानी मेहनत मज़दूरी की शक्ति. इन्सानी समाज की अधिकतर मुसीबतें इसीलिये पैदा होती हैं कि हम इन चार तरह की शक्तियों में समतोल यानी तवाज़ुन क़ायम नहीं रख सकते. विद्या यानी इल्म की शक्ति ही अक्सर धर्म मज़हब की शक्ति होती है. पर जब विद्वान लोग जो सब को राह दिखाने वाले होते हैं स्वार्थ में पड़ कर धन बटोरने या ख़ुद राज सत्ता हथियाने की सोचने लगते हैं या अत्याचारी राजाओं के हाथ के साधन बन जाते हैं या उन के लिये साधन तैयार करने लगते हैं, तो यह शक्ति समाज के लिये बरकत होने की जगह लानत बन जाती है. आज साइन्स और साइन्सदानों की भी यही दुर्गत हो रही है. ग़लत इस्तेमाल से और समतोल न रहने से यही हाल दूसरी शक्तियों का होता है.

अधिकतर देशों में सदियों से दो तरह के लोगों में खींचा-तानी और लड़ाई होती रही है—एक राजा दुनियावी हाकिम और दूसरे धार्मिक गुरु या पंडे पुरोहित. योरप के बीच के ज़माने भर में राज शक्ति और धार्मिक शक्ति के बीच की यह खींचा तानी जारी रही. यह योरप के ब्राह्मनों और क्षत्रियों की लड़ाई थी. लेकिन आज दुनिया में पैसे की शक्ति ने विद्या या धर्म और राज या हथियार दोनों को क़ाबू में कर लिया है. आज दुनिया के ब्राह्मन और क्षत्री दोनों वैश्य के चंगुल में हैं. साइन्स और राजनीति दोनों अर्थ नीति की ग़ुलाम हैं. और अब ऐसा मालूम होता है कि मज़दूरी की ताक़त पैसे की ताक़त को भी अपने क़ाबू में करती जा रही है. आगे की दुनिया में सब से बड़ी शक्ति जो साइन्स, बहादुरी, राजकाज और पैसा सब पर हावी होगी वह मेहनत मज़दूरी की शक्ति है.

इससे साफ़ मालूम होता है कि इन चार तरह की शक्तियों में हम ठीक ठीक बैठ बिठाव नहीं कर पाए, हर एक को अपनी अपनी जगह नहीं दे सके, यानी उनमें समतोल या तवाज़ुन क़ायम नहीं रख सके. हमारे देश में भी सैकड़ों बरस से स्वार्थी विद्वानों और आचार्यों ने आदमी से उसकी निजी आज़ादी छीन कर एक काम से दूसरे काम या एक पेशे से दूसरे पेशे में जाने के दरवाज़े बिलकुल बन्द कर दिये. नतीजा यह हुआ कि यह चारों जमाअतें इस तरह मौरूसी यानी जन्म की जातें हो गईं जिस तरह दुनिया में और कहीं नहीं हैं.

एक और बुरी बात हुई. क़ुदरती तौर पर बावजूद रोक थाम के समय समय पर एक वर्ण से दूसरे में विवाह भी जब तब होते रहे. उधर मौरूसीपन का उसूल आ ही चुका था. नतीजा यह

خود غرضی اور بگاڑ

انسانی سماج کی چار طرح کی شکتیوں کی چرچا ہم اوپر کر چکے ہیں—ودیا شکتی، راج شکتی، دھن شکتی اور شرم یعنی محنت مزدوری کی شکتی. انسانی سماج کی ادھک تر مصیبتیں اسی لئے پیدا ہوتی ہیں کہ ہم ان چار طرح کی شکتیوں میں سمتول یعنی توازن قائم نہیں رکھ سکتے. ودیا یعنی علم کی شکتی ہی اکثر دھرم مذہب کی شکتی ہوتی ہے. پر جب ودوان لوگ جو سب کو راہ دکھانے والے ہوتے ہیں سوارتھ میں پڑ کر دھن بٹورنے یا خود راج ستا ہتھیانے کی سوچنے لگتے ہیں یا اتیاچاری راجاؤں کے ہاتھ کے سادھن بن جاتے ہیں یا اُن کے لئے سادھن تیار کرنے لگتے ہیں، تو یہ شکتی سماج کے لئے برکت ہونے کی جگہ لعنت بن جاتی ہے. آج سائنس اور سائنس دانوں کی بھی درگت ہو رہی ہے. غلط استعمال سے اور سمتول نہ رہنے سے یہی حال دوسری شکتیوں کا ہوتا ہے.

ادھک تر دیشوں میں صدیوں سے دو طرح کے لوگوں میں کھینچا تانی اور لڑائی ہوتی رہی ہے—ایک راجا یا دنیاوی حاکم اور دوسرے دھارمک گورو یا پنڈے پروہت. یورپ کے بیچ کے زمانے بھر میں راج شکتی اور دھارمک شکتی کے بیچ کی یہ کھینچاتانی جاری رہی. یہ یورپ کے براہمنوں اور چھتریوں کی لڑائی تھی. لیکن آج دنیا میں پیسے کی شکتی نے ودیا یا دھرم اور راج یا ہتھیار دونوں کو قابو میں کر لیا ہے. آج دنیا کے براہمن اور چھتری دونوں ویش کے چنگل میں ہیں. سائنس اور راج نیتی دونوں ارتھ نیتی کی غلام ہیں. اور اب ایسا معلوم ہوتا ہے کہ مزدوری کی طاقت پیسے کی طاقت کو بھی اپنے قابو میں کرتی جا رہی ہے. آگے کی دنیا میں سب سے بڑی شکتی جو سائنس، بہادری، راج کاج اور پیسہ سب پر حاوی ہوگی وہ محنت مزدوری کی شکتی ہے.

اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ ان چار طرح کی شکتیوں میں ہم ٹھیک ٹھیک بیٹھ بٹھاؤ نہیں کر پائے، ہر ایک کو اپنی اپنی جگہ نہیں دے سکے، یعنی ان میں سمتول یا توازن قائم نہیں رکھ سکے. ہمارے دیش میں بھی سیکڑوں برس سے سوارتھی ودوانوں اور آچاریوں نے آدمی سے اس کی نجی آزادی چھین کر ایک کام سے دوسرے کام یا ایک پیشے سے دوسرے پیشے میں جانے کے دروازے بالکل بند کر دئے. نتیجہ یہ ہوا کہ یہ چاروں جماعتیں اس طرح موروثی یعنی جنم کی جاتیں ہوگئیں جس طرح دنیا میں اور کہیں نہیں ہیں.

ایک اور بری بات ہوئی. قدرتی طور پر باوجود روک تھام کے سمے سمے پر ایک ورن سے دوسرے میں وواہ بھی جب تب ہوتے رہے. ادھر موروثی پن کا اصول آ ہی چکا تھا. نتیجہ یہ

अच्छी निगाह से नहीं देखते. यह भी एक खास बात और बड़ी अच्छी बात है कि चीन में यह अलग अलग जमाअतें कभी भी जन्म से यानी पैतृक नहीं समझी गईं. इसी वजह से भारत की सी जात पात का बुरा रिवाज चीन में कभी नहीं रहा.

वेदों में जाति भेद का शुरू का रूप

अब हम यह देखें कि हिन्दू धर्म में जातों की तक़सीम का रूप शुरू में यानी वेदों के जमाने में क्या था.

ऋग् वेद में लिखा है :—

"यह जो विश्व रूप महान पुरुश यानी सारा इन्सानी समाज है इसका सिर और मुंह क्या है, इसकी भुजाएं क्या हैं, इसका धड़ और इसकी जांघें क्या हैं और इसके पैर क्या हैं? जिस आदमी के अन्दर ब्राह्मन ज्ञान यानी इल्म और हिकमत है वह इसका सिर और मुंह है और ब्राह्मन कहलाता है. जो अपनी बहादुरी से दूसरों की रक्षा करने के कारन चमकता है वह इसकी भुजाएं है और राजा या क्षत्री कहलाता है. जो धरती के ऊपर जमकर उससे नाज और धन दौलत पैदा करता है वह इसका धड़ और जांघें है और वैश्य कहलाता है. जो और सबकी सेवा में लगा रहता और दौड़ता फिरता है वह इसकी टांगें है और शूद्र कहलाता है. यह पूरा मनुश्य समाज इन्हीं चार से बना हुआ है. यही था, यही है और यही होगा. इस समाज की व्यापक आत्मा सारी दुनिया को घेरे हुए और अपने अन्दर लिये हुए है और फिर भी सबसे बाहर है."

यजुर्वेद में लिखा है :—

"ऐ परमेश्वर, सबके मालिक! हम सबके दिलों में यानी हमारे ब्राह्मनों, हमारे क्षत्रियों, हमारे वैश्यों और हमारे शूद्रों के दिलों में एक दूसरे के लिये प्रेम पैदा कर ताकि हम एक दूसरे को सुख पहुंचा सकें. हम एक दूसरे से सदा मीठी बातें करें, सबके साथ नम्रता का बरताव करें, सब एक दूसरे का भला करें और एक दूसरे की सेवा करें."

अथर्व वेद में लिखा है :—

"ऐ ईश्वर! जो इस सारे विश्व के सब हिस्सों को चला रहा है और सब के अन्दर की जान है! हम सब को एक दूसरे के साथ प्रेम के मजबूत धागों में बांध दे. हमारे ब्राह्मनों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों को और उन सब को जो हमारे मित्र हैं प्रेम के मजबूत धागों में बांध दे. और जो हमारे शत्रु हैं उन्हें भी हमारा मित्र बना दे."

अब देखना यह है कि शुरू के चार तरह के लोगों की यह कुदरती तक़सीम जो समाज के काम की आसानी के लिये थी बिगड़ कर और गिर कर सैकड़ों जन्म की जातों में कैसे बदल गई.

اچھی نگاہ سے نہیں دیکھتے . یہ بھی ایک خاص بات اور بڑی اچھی بات ھے کہ چین میں یہ لگ بھگ جماعتیں کبھی بھی جنم سے یعنی پیترک نہیں سمجھی گئیں . اسی وجہ سے بھارت کی سی جات پات کا برا رواج چین میں کبھی نہیں رہا .

ویدوں میں جاتی بھید کا شروع کا روپ

اب ہم یہ دیکھیں کہ ہندو دھرم میں جاتوں کی تقسیم کا روپ شروع میں یعنی ویدوں کے زمانے میں کیا تھا .

رگ وید میں لکھا ھے :—

"یہ جو وشو روپ مہان پرش یعنی سارا انسانی سماج ھے اس کا سر اور منہ کیا ھے، اس کی بھجائیں کیا ھیں، اس کا دھڑ اور اس کی جانگھیں کیا ھیں اور اس کے پیر کیا ھیں ؟ جس آدمی کے اندر برہم گیان یعنی علم اور حکمت ھے وہ اس کا سر اور منہ ھے اور براہمن کہلاتا ھے . جو اپنی بہادری سے دوسروں کی رکشا کرنے کے کارن چمکتا ھے وہ اس کی بھجائیں ھے اور راجا یا چھتری کہلاتا ھے . جو دھرتی کے اوپر جم کر اس سے اناج اور دھن دولت پیدا کرتا ھے وہ اس کا دھڑ اور جانگھیں ھے اور ویش کہلاتا ھے . جو اور سب کی سیوا میں لگا رہتا اور دوڑتا پھرتا ھے وہ اس کی ٹانگیں ھے اور شودر کہلاتا ھے . یہ پورا مانشیہ سماج انہیں چار سے بنا ہوا ھے . یہی تھا، یہی ھے اور یہی ہوگا . اس سماج کی ویاپک آتما ساری دنیا کو گھیرے ہوئے اور اپنے اندر لئے ہوئے ھے اور پھر بھی سب سے باہر ھے ."

یجر وید میں لکھا ھے :—

"اے پرمیشور، سب کے مالک ! ہم سب کے دلوں میں یعنی ہمارے براہمنوں، ہمارے چھتریوں، ہمارے ویشیوں اور شودروں کے دلوں میں ایک دوسرے کے لئے پریم پیدا کر تاکہ ہم ایک دوسرے کو سکھ پہونچا سکیں . ہم ایک دوسرے سے سدا میٹھی باتیں کریں، سب کے ساتھ نمرتا کا برتاؤ کریں، سب ایک دوسرے کا بھلا کریں اور ایک دوسرے کی سیوا کریں ."

اتھرو وید میں لکھا ھے :—

"اے ایشور ! جو اس سارے وشو کے سب حصوں کو چلا رہا ھے اور سب کے اندر کی جان ھے ! ہم سب کو ایک دوسرے کے ساتھ پریم کے مضبوط دھاگوں میں باندھ دے . ہمارے براہمنوں، چھتریوں، ویشیوں اور شودروں کو اور ان سب کو جو ہمارے متر ہیں پریم کے مضبوط دھاگوں میں باندھ دے . اور جو ہمارے شترو ہیں انہیں بھی ہمارا متر بنا دے ."

اب دیکھنا یہ ھے کہ شروع کے چار طرح کے لوگوں کی یہ قدرتی تقسیم جو سماج کے کام کی آسانی کے لئے تھی بگڑ کر اور گر کر سیکڑوں جنم کی جاتوں میں کیسے بدل گئی .

वेदों में जिन्हें ब्राह्मन, क्षत्री और वैश्य कहा गया है अरबी में उन्हीं को 'उलुलइल्म,' 'उलुलअम्र' और 'ज़ारीअ' कहा गया है. यह तीनों नाम क़ुरान में भी आये हैं. चौथी तरह के लोगों को अरबी और फ़ारसी में 'मज़दूर' कहा जाता है. इन्हीं चारों को आलिम, आमिल (या आमिर या अमीर)' ताजिर और मज़दूर भी कहा जाता है. पारसी धर्म में इन चारों को 'ऐर्यम्ना', 'वीरेजिन,' 'ख़ायतुश,' और 'गोवास्त्रा' कहते हैं. इन चारों पारसी शब्दों के संस्कृत रूप हैं अर्यमा, वीर्यवान, क्षतीश और गोवासी.

पारसी धर्म की किताबों में इन चारों के और और नाम भी आते हैं. पारसी धर्म ग्रन्थ 'गाथा' में इन चारों की चरचा करते हुए लिखा है :—

"वैश्य, ब्राह्मन और क्षत्री तीनों दुनिया के सुख भोगों में पड़ जाते हैं. ईश्वर करे हमारे वैश्य कभी सुस्त या काहिल न हों, हमारे क्षत्री कभी अधिक ख़ूंख़ार या तुन्द न हों, हमारे ब्राह्मन कभी अनपढ़ और जाहिल न हों, हमारे शूद्र जो सबकी सेवा करते हैं कभी हिम्मत न हारें. बुरे वक़्तों में जब दुशमन हमला करता है तो हमारे ब्राह्मन या हमारे वैश्य क्या कर सकते हैं ? उस समय हमारे क्षत्री ही भगवान की मदद से हमारी रक्षा कर सकते हैं."

इंगलैन्ड में अभी थोड़े दिन पहले तक वहां के लोग अपने देश के लोगों की तीन जमाअतें गिनाया करते थे—एक क्लरजी यानी पादरी, दूसरे नोबिलिटी यानी लार्ड ख़ान्दान के लोग, तीसरे कामन्स यानी आम लोग. अब इनमें एक चौथी जमाअत और जुड़ गई है, वह है प्रोलिटेरियट यानी मज़दूरों और दस्तकारों की जमाअत.

योरप के दूसरे मुल्कों में भी आबादी के लगभग इसी तरह के बटवारे हैं.

जापान में कुछ दिनों पहले तक चार जमाअतें गिनी जाती थीं—एक 'क्यूगे' यानी सम्राट के ख़ान्दान के लोग और दरबारी अमीर उमरा, दूसरे 'बूशी' और 'सामुराई' यानी क्षत्री और सिपहगिरी पेशे के लोग, तीसरे 'हीमिन' यानी आम लोग और चौथे 'ईता' और 'हीनिन' यानी वह लोग जो बिलकुल भारत के अछूतों जैसे समझे जाते थे.

चीन में भी कुछ दिनों पहले तक चार जमाअतें गिनी जाती थीं. वहां सबसे ऊपर विद्वान लोग थे जिनमें दरबारी अफ़सर भी शामिल थे, दूसरे दरजे पर किसान, तीसरे दरजे पर दस्तकार और चौथे दरजे पर सौदागर व्यापारी. यह एक अजीब बात है कि पुराने चीन में सिपाहियों की कोई ख़ास जगह नहीं थी. चीन में सिपाहियों को हमेशा एक हलकी और 'अन्त्यज' जमाअत की तरह समझा गया है. चीन जापान की लड़ाई, ने जो बहुत दिनों जारी रही, वहां सिपाही की क़दर को बढ़ा दिया. फिर भी शायद यही वजह है कि चीनी लोग स्वभाव से अमन पसन्द हैं और लड़ाई को

وشنوں میں جنہیں براہمن، چھتری اور ویش کہا گیا ہے ی میں انہیں کو 'اولوالعلم' 'اولوالامر' اور زراع' کہا گیا ہے۔ تینوں نام قرآن میں بھی آئے ہیں۔ چوتھی طرح کے لوگوں عربی اور فارسی میں 'مزدور' کہا جاتا ہے۔ انہیں چاروں کو م' عامل (یا آمر یا امیر)' تاجر اور مزدور بھی کہا جاتا ہے۔ رسی دھرم میں ان چاروں کو 'آیریمنا' 'ویریجن' 'خائیتش' ر 'گوواستروا' کہتے ہیں۔ ان چاروں پارسی شبدوں کے سنسکرت پ ہیں آریما' ویریوان' چھتیش اور گوواسی۔

پارسی دھرم کی کتابوں میں ان چاروں کے اور اور نام بھی ے ہیں۔ پارسی دھرم گرنتھ 'گاتھا' میں ان چاروں کی چرچا کرتے ہوئے لکھا ہے :-

"ویش' براہمن اور چھتری تینوں دنیا کے سکھ بھوگوں میں جاتے ہیں۔ ایشور کرے ہمارے ویش کبھی سست یا کاہل نہ وں' ہمارے چھتری کبھی ادھک خونخوار یا تند نہ ہوں' مارے براہمن کبھی انپڑھ اور جاہل نہ ہوں' ہمارے شودر جو ب کی سیوا کرتے ہیں کبھی ہمت نہ ہاریں۔ برے وقتوں یں جب دشمن حملہ کرتا ہے تو ہمارے براہمن یا ہمارے ویش یا کرسکتے ہیں؟ اس سمے ہمارے چھتری ہی بھگوان کی مدد ے ہماری رکھشا کرسکتے ہیں۔"

انگلینڈ میں ابھی تھوڑے دن پہلے تک وہاں کے لوگ اپنے یش کے لوگوں کی تین جماعتیں گنایا کرتے تھے—ایک کلرجی نی پادری' دوسرے نوبیلیٹی یعنی لارڈ خاندان کے لوگ' تیسرے منس یعنی عام لوگ۔ اب ان میں ایک چوتھی جماعت اور ڑ گئی ہے' وہ ہے پرولیٹیریئیٹ یعنی مزدوروں اور دستکاروں ی جماعت۔

یورپ کے دوسرے ملکوں میں بھی آبادی کے لگ بھگ سی طرح کے بٹوارے ہیں۔

جاپان میں کچھ دنوں پہلے تک چار جماعتیں گنی جاتی ھیں—ایک 'کیوگے' یعنی سمراٹ کے خاندان کے لوگ اور درباری میر امرا' دوسرے 'بوشی' اور 'سامورائی' یعنی چھتری اور پہگیری پیشے کے لوگ' تیسرے 'ہی من' یعنی عام لوگ اور چوتھے 'ایتا' اور 'ہی نن' یعنی وہ لوگ جو بالکل بھارت کے چھوتوں جیسے سمجھے جاتے تھے۔

چین میں بھی کچھ دنوں پہلے تک چار جماعتیں گنی جاتی تھیں۔ وہاں سب سے اوپر ودوان لوگ تھے جن میں درباری افسر بھی شامل تھے' دوسرے درجے پر کسان' تیسرے درجے پر دستکار اور چوتھے درجے پر سوداگر ویاپاری۔ یہ ایک عجیب بات ہے کہ پرانے چین میں سپاہیوں کی کوئی خاص جگہ نہیں ھی۔ چین میں سپاہیوں کو ہمیشہ ایک ہلکی اور 'انتیج' جماعت کی طرح سمجھا گیا ہے۔ چین جاپان کی لڑائی نے' جو بہت دنوں جاری رہی' وہاں سپاہی کی قدر کو بڑھا دیا۔ پھر بھی شاید ی وجہ ہے کہ چینی لوگ سبھاؤ سے امن پسند ہیں اور لڑائی کو

कम हों, आस पास का पानी और हवा साफ़ रहे, बीमारियां कम हों, मैला और गन्दगी खाद के काम आवे और इसी तरह के सब के भलाई के काम, यही इस जमाने में देवताओं का क़र्ज़ा अदा करने के काम हैं. दूसरा क़र्ज़ा अदा करने का तरीक़ा है अच्छे बच्चे पैदा करना और उन्हें पालना और अच्छी तालीम देना. तीसरा क़र्ज़ा अदा करने के लिये हमें इल्म यानी विद्या का दूसरों को दान देना चाहिये और आलिमों को इस बात में मदद देनी चाहिये कि वह दूसरों को इल्म सिखा सकें. हमारा यह भी फ़र्ज़ है कि दुनिया के इस वक़्त तक के इल्म और ज्ञान को बढ़ाने में मदद दें. चौथा क़र्ज़ा अदा करने के लिये ख़ास उम्र आने के बाद हमें मामूली दुनियादारी और कुनबा परवरी से अलग होकर आत्मा में ध्यान लगाना चाहिये, सब की आत्मा को अपनी आत्मा समझना चाहिये और पूरे दिल से लगातार सब का भला चेतना और चाहना चाहिये.

ऊपर जो कई तरह की चौकड़ियां गिनाई गई हैं उनमें से हर चार एक दूसरे से जुड़ी हुई और एक दूसरे पर निर्भर हैं. उनमें एक दूसरे के साथ वैसा ही सम्बन्ध है जैसा हमारे बदन के अन्दर सिर, हाथ, धड़ और टांगों में. चारों को मिला कर एक पूरा आदमी बनता है. ऐसे ही पूरा समाज इन सब को मिला कर बनता है. इसी तरह इन चारों में से हर एक की बहुत सी शाखें हैं और बहुत बार तो किसी पेशे या काम की बाबत यह तय करना भी मुशकिल हो जाता है कि उसे चारों में से किस के अन्दर गिना जावे. हम इस तरह के जितने बंटवारे करते हैं वह सब केवल इसलिये कर लेते हैं ताकि समाज का काम आसानी से चल सके.

थोड़े से शब्दों में वैदिक जाति भेद की यही असलियत है और यही उसकी बुनियाद है. वेदों में इसे वर्नाश्रम धर्म कहा गया है, यानी यह कि इन्सानी समाज में चार वर्न होते हैं यानी चार तरह के काम और चार तरह के काम करने वाले—ब्राह्मन, क्षत्री, वैश्य और शूद्र, और हर आदमी के जीवन के चार हिस्से होते हैं—ब्रह्मचारी यानी तालिब-इल्म, गृहस्थ यानी ख़ानेदार, वान प्रस्थ यानी बिना तनख़ाह का दुनिया का ख़ादिम, और सन्यासी या तारिकुद्दुनिया यानी सब को दुआए ख़ैर और नेक उपदेश देने वाला.

दूसरे देशों में इस तरह की तक़सीम

दूसरे सब धर्मों और देशों में भी इससे मिलते जुलते विचार मौजूद हैं. सबने अपने यहां के इन्सानों की इसी तरह की तक़सीमें की हैं. फ़र्क़ यह है कि किसी ने एक तरह और किसी ने दूसरी तरह. किसी ने एक पेशे वाले को ज़्यादा ज़रूरी और ऊंचा माना है और किसी ने दूसरे पेशे वाले को. किसी ने लोगों को एक जमाअत या एक पेशे से दूसरी जमाअत या दूसरे पेशे में जाने की खुली इजाज़त दी है, किसी ने नहीं दी वग़ैरा.

کم ہوں، آس پاس کا پانی اور ہوا صاف رہے، بیماریاں کم ہوں، میلا اور گندگی کھاد کے کام آوے اور اسی طرح کے سب کے بھلائی کے کام، یہی اس زمانے میں دیوتاؤں کا قرضہ ادا کرنے کے کام ہیں۔ دوسرا قرضہ ادا کرنے کا طریقہ ہے اچھے بچے پیدا کرنا اور انہیں پالنا اور اچھی تعلیم دینا۔ تیسرا قرضہ ادا کرنے کے لئے ہمیں علم یعنی ودیا کا دوسروں کو دان دینا چاہئے اور عالموں کو اس بات میں مدد دینی چاہئے کہ وہ دوسروں کو علم سکھاسکیں۔ ہمارا یہ بھی فرض ہے کہ دنیا کے اس وقت تک کے علم اور گیان کو بڑھانے میں مدد دیں۔ چوتھا قرضہ ادا کرنے کے لئے خاص عمر آنے کے بعد ہمیں معمولی دنیاداری اور کنبہ پروری سے الگ ہو کر آتما میں دھیان لگانا چاہئے، سب کی آتما کو اپنی آتما سمجھنا چاہئے اور پورے دل سے لگاتار سب کا بھلا چیتنا اور چاہنا چاہئے۔

اوپر جو کئی طرح کی چوکڑیاں گنائی گئی ہیں ان میں سے ہر چار ایک دوسرے سے جڑی ہوئی اور ایک دوسرے پر نربھر ہیں۔ ان میں ایک دوسرے کے ساتھ ویسا ہی سمبندھ ہے جیسا ہمارے بدن کے اندر سر، ہاتھ، دھڑ اور ٹانگوں میں۔ چاروں کو ملا کر ایک پورا آدمی بنتا ہے۔ ایسے ہی پورا سماج ان سب کو ملا کر بنتا ہے۔ اسی طرح ان چاروں میں سے ہر ایک کی بہت سی شاخیں ہیں اور بہت بار تو کسی پیشے یا کام کی بابت یہ طے کرنا بھی مشکل ہو جاتا ہے کہ اسے چاروں میں سے کس کے اندر گنا جاوے۔ ہم اس طرح کے جتنے بٹوارے کرتے ہیں وہ سب کیول اس لئے کر لیتے ہیں تاکہ سماج کا کام آسانی سے چل سکے۔

تھوڑے سے شبدوں میں ویدک جاتی بھید کی یہی اصلیت ہے اور یہی اس کی بنیاد ہے۔ ویدوں میں اسے ورن آشرم دھرم کہا گیا ہے، یعنی یہ کہ انسانی سماج میں چار ورن ہوتے ہیں یعنی چار طرح کے کام اور چار طرح کے کام کرنے والے—براہمن، چھتری، ویش اور شودر، اور ہر آدمی کے جیون کے چار حصے ہوتے ہیں— برہمچاری یعنی طالب علم، گرہستھ یعنی خانہ دار، وان پرستھ یعنی بنا تنخواہ کا دنیا کا خادم، اور سنیاسی یا تارک الدنیا یعنی سب کو دعائے خیر اور نیک اپدیش دینے والا۔

دوسرے دیشوں میں اس طرح کی تقسیم

دوسرے سب دھرموں اور دیشوں میں بھی اس سے ملتے جلتے وچار موجود ہیں۔ سب نے اپنے اپنے یہاں کے انسانوں کی اسی طرح کی تقسیمیں کی ہیں۔ فرق یہ ہے کہ کسی نے ایک طرح اور کسی نے دوسری طرح۔ کسی نے ایک پیشے والے کو زیادہ ضروری اور اونچا مانا ہے اور کسی نے دوسرے پیشے والے کو۔ کسی نے لوگوں کو ایک جماعت یا ایک پیشے سے دوسری جماعت یا دوسرے پیشے میں جانے کی کھلی اجازت دی ہے، کسی نے نہیں دی وغیرہ۔

चौथे सब की सेवा और मदद करना और उसके बदले में ठीक ठीक मजदूरी और मनोरंजन और तालीम के मौक़े पाना.

इन अलग अलग अधिकारों के अलावा कुछ अधिकार ऐसे भी हैं जो सबके एक बराबर अधिकार हैं. सब की जीवन की आवश्यकतायें पूरी होनी चाहियें और सब को अपनी अपनी योग्यता के अनुसार समाज की तरफ़ अपना फ़र्ज़ पूरा करने के लिये साधन मिलने चाहियें. यह अधिकार हर आदमी के जन्म के अधिकार हैं.

(9) बूढ़े लोगों के छोटी उम्र के लोगों की तरफ़ और राज की प्रजा की तरफ़ चार ख़ास फ़र्ज़ हैं—पहला फ़र्ज़ है सब को तालीम देना, दूसरा सब की हिफ़ाज़त यानी रक्षा करना, तीसरा सब का पेट पालना और सब को खाना, कपड़ा और घर देना और चौथा सब तरह से सब की मदद करना. थोड़े से शब्दों में तालीम, हिफ़ाज़त, खाना और सेवा इन चारों का सब को हक़ है.

(10) चार ही तरह के संगठन हर देश या राज के अन्दर जरूरी हैं जिन से मिल कर एक अच्छा राज बनता है. यह चारों एक दूसरे पर भी निर्भर हैं—पहला तालीम का संगठन, दूसरा राजकाजी और फ़ौजी संगठन, तीसरा आर्थिक संगठन और चौथा उद्योग धन्धों का संगठन.

(11) हर आदमी चार तरह का क़र्ज़ा अपने ऊपर लेकर पैदा होता है. इन में सब से पहला क़र्ज़ा हम पर देवताओं यानी क़ुदरत की शक्तियों का है. क़ुदरत की यह शक्तियां ही हमारे सामने उस दुनिया को पेश करती हैं जिन पर हमारी सारी ज़िन्दगी और हमारा सारा तजुर्बा निर्भर है. दूसरा क़र्ज़ा हमारे उन पुरखों का क़र्ज़ा है जिन्होंने हमें पैदा किया और यह जिस्म दिया. तीसरा क़र्ज़ा पिछले ज़माने के उन सब सन्तों, महात्माओं और विद्वानों का क़र्ज़ा है जिन्होंने हमारे लिये ज्ञान का वह भन्डार छोड़ा जो हमें दूसरे जानदारों से अलग करता है और हमारे जीवन को रौनक़ देता है. चौथा क़र्ज़ा उस परमात्मा परमेश्वर का क़र्ज़ा है जिससे हमें जीवन की वह चिनगारी मिली जिसे हम रूह या आत्मा कहते हैं.

(12) इन चारों क़र्ज़ों को अदा करने के चार तरीक़े हैं—पहला क़र्ज़ा अदा होता है सब के भले के इस तरह के काम करने से जैसे दरख़्त लगाना, ज़मीनों में फिर से जंगल लगाना, कुएं, तालाब या नहरें खुदवाना, काम के जानवरों और सुन्दर पशु पक्षियों की रक्षा करना और उन्हें बढ़ाना, हवा को साफ़ रखना, ख़ुशबूदार चीज़ें जलाना, पाक और अच्छी अच्छी किताबें पढ़ना. इन सब बातों से क़ुदरत का वह सब भन्डार फिर से भरता है जिसे हम काम में लाते हैं. हमारी दिमाग़ी ताक़तें इससे बढ़ती हैं. हमारी तबियत फिर से ताज़ा होती है. आजकल के हालात में ऐसी तरकीबें करना जिनसे धुएं की मुसीबत कम हो, शहरों के शोर व सर

چوتھے سب کی سیوا اور مدد کرنا اور اُس کے بدلے میں ٹھیک ٹھیک مزدوری اور منورنجن اور تعلیم کے موقعے پانا ۔

اِن الگ الگ ادھکاروں کے علاوہ کچھ ادھکار ایسے بھی ہیں جو سب کے ایک برابر ادھکار ہیں ۔ سب کی جیون کی آوشیکتائیں پوری ہونی چاہئیں اور سب کو اپنی اپنی یوگتا کے انوسار سماج کی طرف اپنا فرض پورا کرنے کے لئے سادھن ملنے چاہئیں ۔ یہ ادھکار ہر آدمی کے جنم کے ادھکار ہیں ۔

(9) بوڑھے لوگوں کے چھوٹی عمر کے لوگوں کی طرف اور راج کی پرجا کی طرف چار خاص فرض ہیں—پہلا فرض ہے سب کو تعلیم دینا، دوسرا سب کی حفاظت یعنی رکشا کرنا، تیسرا سب کا پیٹ پالنا اور سب کو کھانا، کپڑا اور گھر دینا اور چوتھا سب طرح سے سب کی مدد کرنا ۔ تھوڑے سے شبدوں میں تعلیم، حفاظت، کھانا اور سیوا اِن چاروں کا سب کو حق ہے ۔

(10) چار ہی طرح کے سنگٹھن ہر دیش یا راج کے اندر ضروری ہیں جن سے مل کر ایک اچھا راج بنتا ہے ۔ یہ چاروں ایک دوسرے پر بھی نربھر ہیں—پہلا تعلیم کا سنگٹھن، دوسرا راج کاجی اور فوجی سنگٹھن، تیسرا آرتھک سنگٹھن اور چوتھا اُدیوگ دھندوں کا سنگٹھن ۔

(11) ہر آدمی چار طرح کا قرضہ اپنے اوپر لے کر پیدا ہوتا ہے ۔ اِن میں سب سے پہلا قرضہ ہم پر دیوتاؤں یعنی قدرت کی شکتیوں کا ہے ۔ قدرت کی یہ شکتیاں ہی ہمارے سامنے اُس دنیا کو پیش کرتی ہیں جن پر ہماری ساری زندگی اور ہمارا سارا تجربہ نربھر ہے ۔ دوسرا قرضہ ہمارے اُن پرکھوں کا قرضہ ہے جنھوں نے ہمیں پیدا کیا اور یہ جسم دیا ۔ تیسرا قرضہ پچھلے زمانے کے ان سب سنتوں، مہاتماؤں اور ودوانوں کا قرضہ ہے جنھوں نے ہمارے لئے گیان کا وہ بھنڈار چھوڑا جو ہمیں دوسرے جانداروں سے الگ کرتا ہے اور ہمارے جیون کو رونق دیتا ہے ۔ چوتھا قرضہ اُس پرماتما پرمیشور کا قرضہ ہے جس سے ہمیں جیون کی وہ چنگاری ملی جسے ہم روح یا آتما کہتے ہیں ۔

(12) اِن چاروں قرضوں کو ادا کرنے کے چار طریقے ہیں—پہلا قرضہ ادا ہوتا ہے سب کے بھلے کے اِس طرح کے کام کرنے سے جیسے درخت لگانا، زمینوں میں پھر سے جنگل لگانا، کنویں، تالاب یا نہریں کھدوانا، کام کے جانوروں اور سندر پشو پکشیوں کی رکشا کرنا اور انھیں بڑھانا، ہوا کو صاف رکھنا، خوشبودار چیزیں جلانا، پاک اور اچھی اچھی کتابیں پڑھنا ۔ اِن سب باتوں سے قدرت کا وہ سب بھنڈار پھر سے بھرتا ہے جسے ہم کام میں لاتے ہیں ۔ ہماری دماغی طاقتیں اِس سے بڑھتی ہیں ۔ ہماری طبیعت پھر سے تازہ ہوتی ہے ۔ آج کل کے حالات میں ایسی ترکیبیں کرنا جن سے دھوئیں کی مصیبت کم ہو، شہروں کے شور و شر

(5) हर आदमी में चार तरह की ही भूक होती है—एक मामूली खाने पीने की भूक, दूसरी धन दौलत जमा करने की भूक, तीसरी जिन्सी भूक (काम वासना) और चौथी खेल तमाशे और मनोरंजन की भूक.

इन्हीं चारों के मातहत अलग अलग चार तरह की ख़ूराक भी होती है—एक उन लोगों के लिये जो रूहानी, दिमाग़ी या इल्मी काम में या साइन्स की खोजों में लगे हुए हैं, बिना गोश्त की, हलकी, जल्दी हज़म होने वाली, अधिकतर फलों और दूध वाली ख़ूराक जो उनके मन को अधिक चन्चल न होने दे, दूसरी ताक़त और जोश दिलाने वाली ख़ूराक उन लोगों के लिये जिन्हें हकूमत करनी हो, इन्तज़ाम करना हो, जल्दी फ़ैसले और जल्दी अमल करना हो, यहां तक कि सिपाहियों के लिये एक हद के अन्दर गोश्त भी हो सकता है, तीसरे व्यपारियों के लिये पेट में देर तक ठहरने वाले नाज और दूध की चीज़ें और चौथे मज़दूरों के लिये भारी खाने जिनमें काफ़ी नाइट्रोजन हो ताकि आदमी देर तक मेहनत कर सके.

इन चारों के लिये चार तरह के अलग अलग सामान की भी ज़रूरत पड़ती है—जैसे पहली तरह के लोगों के लिये किताबें और साइन्सी खोज का सामान, दूसरी तरह के लोगों लिये हथियार और उसी तरह का सामान, तीसरी तरह के लोगों के लिये मशीनें, कारख़ाने और पैदावार और तिजारत के साधन और चौथी तरह के लोगों के लिये मेहनत मज़दूरी के औज़ार.

यूं तो हर आदमी में यह चारों तरह की भूक होती है लेकिन किसी में एक चीज़ का ज़ोर होता है, किसी में दूसरी चीज़ का. इसीलिये एक प्रोफ़ेसर बन जाता है, दूसरा फ़ौजी कप्तान, तीसरा साहूकार और चौथा चरवाहा या मिल मज़दूर.

(6) लोगों में चार तरह की ही इच्छाएं होती हैं—एक दूसरों से आदर मान की इच्छा, हकूमत की शक्ति या अधिकार की इच्छा, तीसरे धन दौलत की इच्छा और चौथे केवल अपने शरीर के लिये सुख की इच्छा.

(7) हर देश में चार तरह की शक्तियां होती हैं—एक साइन्स की शक्ति, दूसरे फ़ौज की शक्ति, तीसरे धन की शक्ति और चौथे मेहनत मज़दूरी की शक्ति.

(8) चार तरह के ही कर्तव्य यानी फ़र्ज़ और उनके मुक़ाबले के चार तरह के अधिकार यानी हक़ होते हैं—पहला फ़र्ज़ विद्या हासिल करना और विद्या फैलाना और उसके मुक़ाबले का अधिकार, इज़्ज़त और मान पाना, दूसरा फ़र्ज़ सब की हिफ़ाज़त करना, देश में अमन शान्ति क़ायम रखना और उसके मुक़ाबले का हक़ हकूमत का अधिकार पाना, तीसरे सब तरह के माल की पैदावार और उसके बंटवारे का प्रबन्ध करना और उसके मुक़ाबले में देश के क़ानूनों के अन्दर रहते हुए माल की क़ीमत लेना और मुनासिब नफ़ा कमाना,

(5) ہر آدمی میں چار طرح کی ہی بھوک ہوتی ہے—ایک معمولی کھانے پینے کی بھوک، دوسری دھن دولت جمع کرنے کی بھوک، تیسری جنسی بھوک (کام واسنا) اور چوتھی کھیل تماشے اور منورنجن کی بھوک۔

انہیں چاروں کے ماتحت الگ الگ چار طرح کی خوراک بھی ہوتی ہے—ایک اُن لوگوں کے لئے جو روحانی، دماغی یا علمی کام میں یا سائنس کی کھوجوں میں لگے ہوئے ہیں، بنا گوشت کی، ہلکی، جلدی ہضم ہونے والی، ادھکتر پھلوں اور دودھ والی خوراک جو اُن کے من کو ادھک چنچل نہ ہونے دے، دوسری طاقت اور جوش دلانے والی خوراک اُن لوگوں کے لئے جنہیں حکومت کرنی ہو، انتظام کرنا ہو، جلدی فیصلے اور جلدی عمل کرنا ہو، یہاں تک کہ سپاہیوں کے لئے ایک حد کے اندر گوشت بھی ہو سکتا ہے، تیسرے ویاپاریوں کے لئے پیٹ میں دیر تک ٹھہرنے والے اناج اور دودھ کی چیزیں اور چوتھے مزدوروں کے لئے بھاری کھانے جن میں کافی نائٹروجن ہو تاکہ آدمی دیر تک محنت کر سکے۔

اِن چاروں کے لئے چار طرح کے الگ الگ سامان کی بھی ضرورت پڑتی ہے—جیسے پہلی طرح کے لوگوں کے لئے کتابیں اور سائنسی کھوج کا سامان، دوسری طرح کے لوگوں کے لئے ہتھیار اور اُسی طرح کا سامان، تیسری طرح کے لوگوں کے لئے مشینیں، کارخانے اور پیداوار اور تجارت کے سادھن اور چوتھی طرح کے لوگوں کے لئے محنت مزدوری کے اوزار۔

یوں تو ہر آدمی میں یہ چاروں طرح کی بھوک ہوتی ہے لیکن کسی میں ایک چیز کا زور ہوتا ہے، کسی میں دوسری چیز کا۔ اِسی لئے ایک پروفیسر بن جاتا ہے، دوسرا فوجی کپتان، تیسرا ساہوکار اور چوتھا چرواہا یا مل مزدور۔

(6) لوگوں میں چار طرح کی ہی اچھائیں ہوتی ہیں—ایک دوسروں سے آدر مان کی اِچھا، حکومت کی شکتی یا ادھکار کی اِچھا، تیسرے دھن دولت کی اِچھا اور چوتھے کیول اپنے شریر کے لئے سکھ کی اِچھا۔

(7) ہر دیش میں چار طرح کی شکتیاں ہوتی ہیں—ایک سائنس کی شکتی، دوسرے فوج کی شکتی، تیسرے دھن کی شکتی اور چوتھے محنت مزدوری کی شکتی۔

(8) چار طرح کے ہی کرتویہ یعنی فرض اور اُن کے مقابلے کے چار طرح کے ادھکار یعنی حق ہوتے ہیں—پہلا فرض ودیا حاصل کرنا اور ودیا پھیلانا اور اُس کے مقابلے کا ادھکار، عزت اور مان پانا، دوسرا فرض سب کی حفاظت کرنا، دیش میں امن شانتی قائم رکھنا اور اُس کے مقابلے کا حق حکومت کا ادھکار پانا، تیسرے سب طرح کے مال کی پیداوار اور اُس کے بٹوارے کا پربندھ کرنا اور اُس کے مقابلے میں دیش کے قانونوں کے اندر رہتے ہوئے مال کی قیمت لینا اور مناسب نفع کمانا،

अपनी अपनी तरक्की का मौक़ा मिल सके, सब समाज की सेवा कर सकें, सब के अन्दर स्वार्थ और परमार्थ दोनों पूरे हो सकें, सब अति से बच कर बीच की सलामती की राह चल सकें, सब अपने अपने कर्तव्यों और अधिकारों को समझ सकें, और जहां तक हो सकता है सबका सब तरह भला हो. लेखक ने अपनी कुछ अंग्रेज़ी किताबों में जैसे—(1) एनशियन्ट वरसेज़ मार्डन सांइन्टिफ़िक सोशलइज़्म, (2) दी साइन्स आफ़ दी सेल्फ़, (3) दी साइन्स आफ़ सोशल आरगेनीज़ेशन में समाज संगठन के इस ढंग को तफ़सील से बयान किया है. उसके मोटे मोटे बुनियादी उसूल नीचे दिये जाते हैं :—

चार तरह के आदमी और चार चार की चौकड़ियां

(1) दुनिया में अपने अपने स्वभाव, तबियत और क़ाबलियत के अनुसार चार तरह के आदमी होते हैं. वह अलग अलग चार तरह के ही कामों के क़ाबिल होते हैं. इनमें पहले वह लोग हैं जिनमें विद्या और ज्ञान की अधिक चाह होती है. दूसरे वह लोग हैं जिन्हें हकूमत या इन्तज़ाम करने का ज़्यादा शौक़ होता है. तीसरे वह जो कमाना और जमा करना ज़्यादा चाहते हैं. चौथे वह भोले और सीधे लोग जो आम मेहनत मज़दूरी के क़ाबिल होते हैं और उसी में आनन्द ले सकते हैं.

(2) चार तरह के ही पेशे और काम होते हैं—एक विद्या और इल्म से सम्बन्ध रखने वाले पेशे, दूसरे इन्तज़ाम और शासन से सम्बन्ध रखने वाले, तीसरे तिजारत व्यापार से सम्बन्ध रखने वाले, चौथे मेहनत मज़दूरी से सम्बन्ध रखने वाले. इन चारों की फिर अलग अलग बहुत सी शाख़ें हैं.

(3) मोटे तौर पर चार तरह की ही आमदनी या जीविका होती है—एक हदिया, पुरस्कार या भेंट रूप, दूसरे टैक्स, ख़िराज और तनख़ाह के रूप में, तीसरी तिजारती नफ़े के रूप में, चौथी मज़दूरी के रूप में.

(4) हर आदमी की ज़िन्दगी के भी चार हिस्से होते हैं—पहला तालिबइल्म यानी विद्यार्थी होने का ज़माना, दूसरा ख़ानेदार यानी गृहस्थ का, तीसरा निस्वार्थ जनता की सेवा का, चौथा यानी आख़री हिस्सा दुनिया से अलग रहकर एकान्त चिन्तन और मनन का यानी तारिकुद्दुनिया होकर ग़ौरो ख़ोज़ का. इन में पहले दो हिस्सों में आदमी की निजी इच्छाएं मुनासिब हदों के अन्दर जागनी, बढ़नी और पूरी होनी चाहियें, और दूसरे दोनों हिस्सों में आदमी की समाजी यानी परोपकार की भावनाएं बढ़नी, खिलनी और अमल में आनी चाहिएं. इस तरह हर आदमी की ज़िन्दगी का आख़री हिस्सा समाज की सेवा में ख़र्च हो सकता है.

اپنی اپنی ترقی کا موقع مل سکے' سب سماج کی سیوا کر سکیں' سب کے اندر سوارتھ اور پرمارتھ دونوں پورے ہوسکیں' سب اتی سے بچکر بیچ کی سلامتی کی راہ چل سکیں' سب اپنے اپنے کرتویوں اور ادھیکاروں کو سمجھ سکیں' اور جہاں تک ہوسکتا ہے سب کا سب طرح بھلا ہو. لیکھک نے اپنی کچھ انگریزی کتابوں میں جیسے—(1) اینشینٹ ورسز ماڈرن سائنٹفک سوشلزم' (2) دی سائنس آف دی سیلف' (3) دی سائنس آف سوشل آرگنیزیشن میں سماج سنگٹھن کے اس ڈھنگ کو تفصیل سے بیان کیا ہے . اُس کے موٹے موٹے بنیادی اصول نیچے دیئے جاتے ہیں :—

چار طرح کے آدمی اور چار چار کی چوکڑیاں

(1) دنیا میں اپنے اپنے سوبھاؤ' طبیعت اور قابلیت کے انوسار چار طرح کے آدمی ہوتے ہیں. وہ الگ الگ چار طرح کے ہی کاموں کے قابل ہوتے ہیں. اِن میں پہلے وہ لوگ ہیں جن میں ودیا اور گیان کی ادھک چاہ ہوتی ہے . دوسرے وہ لوگ ہیں جنہیں حکومت یا انتظام کرنے کا زیادہ شوق ہوتا ہے. تیسرے وہ جو کمانا اور جمع کرنا زیادہ چاہتے ہیں. چوتھے وہ بھولے اور سیدھے لوگ جو عام محنت مزدوری کے قابل ہوتے ہیں اور اُسی میں آنند لے سکتے ہیں .

(2) چار طرح کے ہی پیشے اور کام ہوتے ہیں—ایک ودیا اور علم سے سمبندھ رکھنے والے پیشے' دوسرے انتظام اور شاسن سے سمبندھ رکھنے والے' تیسرے تجارت ویاپار سے سمبندھ رکھنے والے' چوتھے محنت مزدوری سے سمبندھ رکھنے والے . اِن چاروں کی پھر الگ الگ بہت سی شاخیں ہیں .

(3) موٹے طور پر چار طرح کی ہی آمدنی یا جیوکا ہوتی ہے—ایک ہدیہ' پرسکار یا بھینٹ روپ' دوسرے ٹیکس' خراج اور تنخواہ کے روپ میں' تیسری تجارتی نفع کے روپ میں' چوتھی مزدوری کے روپ میں .

(4) ہر آدمی کی زندگی کے بھی چار حصے ہوتے ہیں—پہلا طالبعلم یعنی ودیارتھی ہونے کا زمانہ' دوسرا خانہ دار یعنی گرہستھ کا' تیسرا نسوارتھ جنتا کی سیوا کا' چوتھا یعنی آخری حصہ دنیا سے الگ رہ کر ایکانت چنتن اور منن کا یعنی تارک الدنیا ہو کر غور و خوض کا . اِن میں پہلے دو حصوں میں آدمی کی نجی اِچھائیں مناسب حدوں کے اندر جاگنی' بڑھنی اور پوری ہونی چاہئیں' اور دوسرے دونوں حصوں میں آدمی کی سماجی یعنی پروپکار کی بھاؤنائیں بڑھنی' کھلنی اور عمل میں آنی چاہئیں . اِس طرح ہر آدمی کی زندگی کا آخری حصہ سماج کی سیوا میں خرچ ہو سکتا ہے .

जीवन का मतलब क्या है, दुनिया किधर जा रही है और इन्सान और इन्सानी समाज दोनों के जीवन में 'ईश्वर की इच्छा' क्या है, तब हम समझ सकते हैं कि दुनिया में आदमी का फर्ज़ क्या है और इन्सानी समाज को किस तरह संभालना, संवारना, रूप देना और चलाना चाहिये, और समाज में और अलग अलग इन इन्सानों में किस तरह का नाता होना चाहिये, किस किस के क्या क्या फ़र्ज़ होने चाहियें और किस किस को क्या क्या अधिकार मिलने चाहियें, ताकि हर आदमी हर हालत में अपने फ़र्ज़ को समझ सके और पूरा कर सके और सब को रूहानी और जिस्मानी खुराक ठीक ठीक मिल सके. तब ही जीवन का उद्देश्य और ईश्वर की इच्छा पूरी हो सकती है.

कोई आदमी दुनिया में अकेला नहीं होता. वह किसी घर में पैदा होता है और उसका घर किसी न किसी देश या समाज के अन्दर होता है जिसमें उस जैसे बहुत से घर होते हैं. हर आदमी के सुख दुख दूसरों के सुख दुख के साथ बंधे होते हैं. कोई आदमी अपने जीवन में न ईश्वर की इच्छा पूरी कर सकता है, न सुनहरे उसूल पर अमल कर सकता है, और न अपना फ़र्ज़ पूरा कर सकता है, जब तक कि वह घर या वह समाज जिसमें वह रहता सहता है इस तरह न बना हो कि दुनिया में अमन रहे और सब सुखी और खुशहाल रहें. यह भी जरूरी है कि हर आदमी की जिन्दगी इस तरह नपी और बंटी हुई हो कि हर आदमी अपने स्वभाव, अपनी योग्यता और अपनी तबियत के अनुसार अपना भला और समाज की सेवा दोनों कर सके, उसे ठीक ठीक तालीम मिल सके, तालीम के बाद उसे और उसके घर वालों को ठीक ठीक काम और ठीक ठीक रोज़ी मिल सके, एक खास उम्र होने पर वह रोज़ी कमाने की मेहनत से छुट्टी पा सके और सबके भले का कोई ऐसा काम मुफ़्त कर सके जो उसकी तबियत और क़ाबलियत दोनों के अनुसार हो, और इस सबके बाद अपनी जिन्दगी के आखीर दिनों में, ज्ञान ध्यान में, सारी दुनिया का भला चेतने में और सबको सबके भले के कामों में लगाए रखने में अपने समय को लगा सके जिससे उसकी आत्मा को शान्ति और दुनिया को उससे लाभ मिले. धर्म वही है जो इस दुनिया में और इसके बाद भी आदमी को सुखी रहने में मदद दे. अब हम यह देखें कि वैदिक धर्म इस जरूरत को किस तरह पूरा करता है.

वैदिक धर्म समाज के संगठन का एक ऐसा ढंग पेश करता है जो बिना धर्म, मजहब, क़ौम, नसल या किसी तरह के भेद भाव के दुनिया के सब लोगों और सारी मानव जाति पर लग सके, जिसमें सब तरह के आदमी खप सकें, सबको अपने अपने स्वभाव और अपनी अपनी योग्यता के अनुसार काम मिल सके, सबकी जरूरतें पूरी हो सकें, सबको

جیون کا مطلب کیا ہے' دنیا کدھر جا رہی ہے اور انسان اور انسانی سماج دونوں کے جیون میں "ایشور کی اچھا" کیا ہے. تب ہم سمجھ سکتے ہیں کہ دنیا میں آدمی کا فرض کیا ہے اور انسانی سماج کو کس طرح سنبھالنا' سنوارنا' روپ دینا اور چلانا چاہئے' اور سماج میں اور الگ الگ ان انسانوں میں کس طرح کا ناتا ہونا چاہئے' کس کس کے کیا کیا فرض ہونے چاہئیں اور کس کس کو کیا کیا آدھیکار ملنے چاہئیں' تاکہ ہر آدمی ہر حالت میں اپنے فرض کو سمجھ سکے اور پورا کرسکے اور سب کو روحانی اور جسمانی خوراک ٹھیک ٹھیک مل سکے. تب ہی جیون کا اُدیش اور ایشور کی اچھا پوری ہو سکتی ہے.

کوئی آدمی دنیا میں اکیلا نہیں ہوتا. وہ کسی گھر میں پیدا ہوتا ہے اور اُس کا گھر کسی نہ کسی دیش یا سماج کے اندر ہوتا ہے جس میں اُس جیسے بہت سے گھر ہوتے ہیں. ہر آدمی کے سکھ دکھ دوسروں کے سکھ دکھ کے ساتھ بندھے ہوتے ہیں. کوئی آدمی اپنے جیون میں نہ ایشور کی اچھا پوری کرسکتا ہے' نہ سنہرے اصول پر عمل کرسکتا ہے' اور نہ اپنا فرض پورا کرسکتا ہے' جب تک کہ وہ گھر یا وہ سماج جس میں وہ رہتا سہتا ہے اِس طرح نہ بنا ہو کہ دنیا میں امن رہے اور سب سکھی اور خوشحال رہیں. یہ بھی ضروری ہے کہ ہر آدمی کی زندگی اِس طرح نپی اور بٹی ہوئی ہو کہ ہر آدمی اپنے سوبھاؤ' اپنی یوگتا اور اپنی طبیعت کے انوسار اپنا بھلا اور سماج کی سیوا دونوں کرسکے' اُسے ٹھیک ٹھیک تعلیم مل سکے' تعلیم کے بعد اُسے اور اُس کے گھر والوں کو ٹھیک ٹھیک کام اور ٹھیک ٹھیک روزی مل سکے' ایک خاص عمر ہونے پر وہ روزی کمانے کی محنت سے چھٹی پاسکے اور سب کے بھلے کا کوئی ایسا کام مفت کرسکے جو اُس کی طبیعت اور قابلیت دونوں کے انوسار ہو' اور اِس سب کے بعد اپنی زندگی کے آخیر دنوں میں' گیان دھیان میں' ساری دنیا کا بھلا چیتنے میں اور سب کو سب کے بھلے کے کاموں میں لگائے رکھنے میں اپنے سمے کو لگاسکے جس سے اُس کی آتما کو شانتی اور دنیا کو اُس سے لابھ ملے. دھرم وہی ہے جو اِس دنیا میں اور اِس کے بعد بھی آدمی کو سکھی رہنے میں مدد دے. اب ہم یہ دیکھیں کہ ویدک دھرم اِس ضرورت کو کس طرح پورا کرتا ہے.

ویدک دھرم سماج کے سنگٹھن کا ایک ایسا ڈھنگ پیش کرتا ہے جو بنا دھرم' مذہب' قوم' نسل یا کسی طرح کے بھید بھاؤ کے دنیا کے سب لوگوں اور ساری مانو جاتی پر لگ سکے' جس میں سب طرح کے آدمی کھپ سکیں' سب کو اپنے اپنے سوبھاؤ اور اپنی اپنی یوگتا کے انوسار کام مل سکے' سب کی ضرورتیں پوری ہوسکیں' سب کو

सवाल यही रहा है कि यह दोनों तरह की खूराकें सब आदमियों को ठीक ठीक और जरूरत के मुताबिक़ कैसे मिलें. सब धर्मों ने इस सवाल को हल करने की कोशिश की है. पर जब किसी धर्म के ठेकेदारों और आचार्यों में खुदग़रज़ी बढ़ जाती है तो उस धर्म वालों का अमल इस बारे में बिगड़ जाता है और वह धर्म गिरने लगता है. हर उस चीज़ में जो पैदा हुई है और बढ़ती है चढ़ाव के बाद उतार आना जरूरी है. फिर एक न एक दिन उसकी मौत भी आवेगी ही, और उसी काम को अधिक अच्छी तरह पूरा करने के लिये उस चीज़ की जगह कोई नई चीज़ पैदा होगी. आत्मा या विचार या उसूल वही रहता है, केवल ऊपर का शरीर, ढांचा या रूप बदल जाता है. यही हालत धर्मों की होती है. धर्म की आत्मा अमर है. पर सब धर्मों के ढांचे हालात के अनुसार बदलते रहते हैं. हमारा यह ज़माना साइन्स और मशीनों का ज़माना है, लोकशाही और समाजवाद का ज़माना है, दिल के मुक़ाबले में यह दिमाग़ की तरक़्क़ी का ज़माना है. इसी के अनुसार आजकल का धर्म और आजकल के सब क़ायदे क़ानून होने चाहियें.

केवल यह दुआ करना काफ़ी नहीं है कि 'ईश्वर की इच्छा पूरी हो.' हमें उस इच्छा के पूरा होने में मदद देने के लिये यह जानने और समझने की भी कोशिश करनी चाहिये कि हमारे ख़ास ज़माने और ख़ास हालात में ईश्वर की इच्छा क्या है. हम दुनिया में अपना फ़र्ज़ पूरा कर सकें इसके लिये केवल हमारा फ़र्ज़ पूरा करने के लिये तैयार रहना ही जरूरी नहीं है. यह भी जरूरी है कि हम जानें और समझें कि हमारा फ़र्ज़ क्या है. यह मशहूर "सुनहरा उसूल" है कि 'दूसरों के साथ वैसा ही सलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें.' बात बहुत अच्छी है. पर इसके लिये यह जानना भी जरूरी है कि वह सलूक क्या होना चाहिये. हमें यह समझना चाहिये कि ख़ास हालत में हमें अपने लिये और दूसरों के लिये क्या चाहना चाहिये और क्या नहीं चाहना चाहिये. हम इस तरह सोच समझ कर नहीं चलेंगे तो अच्छी से अच्छी नीयत रखते हुए भी दुनिया में बदअमनी और गड़बड़ पैदा कर देंगे.

यह समझ पूरी पूरी हमें दो जगह से मिलती है. एक दुनिया के उन धर्म ग्रन्थों से जो समय समय के नेक, दूरदर्शी, बुद्धिमान और सब का भला चाहने वाले अवतारों, ऋषियों, नबियों, रसूलों और महात्माओं से हमें मिले हैं, यानी उन लोगों से मिले हैं जिनके अन्दर ईश्वरी जोत जग रही थी और जिनके अन्दर तरह तरह की असाधारन शक्तियां मौजूद थीं, और दूसरे उन ज्ञानियों, आलिमों और साइन्सदानों से मिलती है जिनकी असाधारन बुद्धि क़ुदरत के बड़े से बड़े भेदों को फोड़ कर उन्हें आदमी की सेवा में लगा देती है. इन दोनों से हमें पता चलता है कि इन्सानी

وال یہی رہا ھے کہ یہ دونوں طرح کی خوراکیں سب میوں کو ٹھیک ٹھیک اور ضرورت کے مطابق کیسے لیں. سب دھرموں نے اِس سوال کو حل کرنے کی کوشش ھے . پر جب کسی دھرم کے ٹھیکےداروں اور آچاریوں میں خودغرضی بڑھ جاتی ھے تو اُس دھرم والوں کا عمل اس بارے میں ڑ جاتا ھے اور وہ دھرم گرنے لگتا ھے. ھر اُس چیز میں جو پیدا ھوئی ، اور بڑھتی ھے چڑھاؤ کے بعد اُتار آنا ضروری ھے. پھر ایک نہ ایک ن اُس کی موت بھی آویگی ھی' اور اُسی کام کو ادھک اچھی رح پورا کرنے کے لئے اُس چیز کی جگہ کوئی نئی چیز پیدا وگی . آتما یا وچار یا اصول وھی رھتا ھے' کیول اُوپر کا شریر' ھانچہ یا روپ بدل جاتا ھے . یہی حالت دھرموں کی ھوتی ، . دھرم کی آتما اَمر ھے . پر سب دھرموں کے ڈھانچے حالات ، انوسار بدلتے رھتے ھیں . ھمارا یہ زمانہ سائنس اور مشینوں زمانہ ھے' لوک شاھی اور سماج واد کا زمانہ ھے' دل کے مقابلے یں یہ دماغ کی ترقی کا زمانہ ھے . اِسی کے انوسار آجکل کا ھرم اور آجکل کے سب قاعدے قانون ھونے چاھئیں .

کیول یہ دعا کرنا کافی نہیں ھے کہ 'ایشور کی اچھا پوری ھو' میں اُس اچھا کے پورا ھونے میں مدد دینے کے لئے یہ جاننے ر سمجھنے کی بھی کوشش کرنی چاھئے کہ ھمارے خاص زمانے ر خاص حالات میں ایشور کی اچھا کیا ھے . ھم دنیا میں اپنا ض پورا کرسکیں اِس کے لئے کیول ھمارا فرض پورا کرنے کے لئے ار رھنا ھی ضروری نہیں ھے . یہ بھی ضروری ھے کہ ھم جانیں ر سمجھیں کہ ھمارا فرض کیا ھے . یہ مشہور "سنہرا اصول" ھے ، 'دوسروں کے ساتھ ویسا ھی سلوک کرو جیسا تم چاھتے ھو کہ وہ ہارے ساتھ کریں' بات بہت اچھی ھے. پر اِس کے لئے یہ جاننا ی ضروری ھے کہ وہ سلوک کیا ھونا چاھئے . ھمیں یہ سمجھنا اھئے کہ خاص حالت میں ھمیں اپنے لئے اور دوسروں کے لئے ا چاھنا چاھئے اور کیا نہیں چاھنا چاھئے . ھم اِس طرح سوچ مجھکر نہیں چلیں گے تو اچھی سے اچھی نیت رکھتے ھوئے بھی نیا میں بدامنی اور گڑبڑ پیدا کردیں گے .

یہ سمجھ پوری پوری ھمیں دو جگہ سے ملتی ھے . ایک نیا کے اُن گرنتھوں سے جو سمے سمے کے نیک' دور درشی' ھی مان اور سب کا بھلا چاھنے والے اوتاروں' رشیوں' نبیوں' سولوں اور مہاتماؤں سے ھمیں ملے ھیں' یعنی اُن لوگوں سے ملے یں جن کے اندر ایشوری جوت جگ رھی تھی اور جن کے در طرح طرح کی اسادھارن شکتیاں موجود تھیں' اور دوسرے اُن یانیوں' عالموں اور سائنس دانوں سے ملتی ھے جن کی اسادھارن ھی قدرت کے بڑے سے بڑے بھیدوں کو پھوڑ کر اُنہیں آدمی کی سیوا یں لگا دیتی ھے . اِن دونوں سے ھمیں پتہ چلتا ھے کہ اِنسانی

नया हिन्द — نیا ہند

19 JAN 1955

जिल्द 18 | दिसम्बर सन '54 | नम्बर 6
نمبر 6 | دسمبر سن '54 | جلد 18

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر - گھر لئے پریم کی جھولی ۔

हिन्दू जात पात की असलियत, उसका बुरा रूप और इलाज

(डाक्टर भगवानदास)

जाति भेद की बुनियाद

हिन्दुओं में एक ख़ास रिवाज जाति भेद यानी जातों की तक़सीम का है. समझा जाता है कि किसी दूसरे धर्म में इस तरह की कोई चीज नहीं है. यह बात एक दरजे तक ठीक है और एक दरजे तक ग़लत. दुनिया की हर सभ्यता का किसी न किसी धर्म से सम्बन्ध रहा है और हर सभ्यता में जाति भेद के बीज और उसकी कुछ न कुछ अलामतें मिलती हैं. क्योंकि इस तरह की तक़सीम इन्सान के स्वभाव में शामिल है. हिन्दू धर्म में इसी चीज ने एक साफ़ साफ़ और ख़ास रूप धारन कर लिया. लोगों के माल जायदाद के लिये, घरेलू जीवन को ठीक ठीक चलाने के लिये, लोगों की रक्षा के लिये, आदमी आदमी के बीच इन्साफ़ के लिये और सारे समाज को ठीक रास्ते पर रखने के लिये सब धर्मों में कुछ न कुछ क़ायदे क़ानून या नियम रहे हैं और हर धर्म ने उन पर अपने लोगों से अमल कराया है. इन्हीं से तरह तरह के रीत रिवाज पैदा होते हैं. इसी काम के लिये वैदिक धर्म ने समाज का एक ऐसा ढांचा तैयार कर दिया जिसमें इन्सान और समाज दोनों की यह सब जरूरतें पूरी हो सकें. यही ढांचा हिन्दुओं का जाति भेद है.

यह मज़मून इतना गहरा है कि इसे जरा और बिस्तार से देखना होगा. इन्सानी समाज को शुरू से सबसे बड़ी जरूरत ख़ुराक की होती है. ख़ुराक दो तरह की—एक रूहानी यानी आत्मा की ख़ुराक और दूसरी जिस्मानी यानी [illegible] के सामने हमेशा सबसे बड़ा

ہندو جات پات کی اصلیت' اُس کا برا روپ اور علاج

(ڈاکٹر بھگوان داس)

جاتی بھید کی بنیاد

ہندؤں میں ایک خاص رواج جاتی بھید یعنی جاتوں کی تقسیم کا ہے ۔ سمجھا جاتا ہے کہ کسی دوسرے دھرم میں اس طرح کی کوئی چیز نہیں ہے ۔ یہ بات ایک درجے تک ٹھیک ہے اور ایک درجے تک غلط ۔ دنیا کی ہر سبھیتا کا کسی نہ کسی دھرم سے سمبندھ رہا ہے اور ہر سبھیتا میں جاتی بھید کے بیج اور اُس کی کچھ نہ کچھ علامتیں ملتی ہیں ۔ کیونکہ اِس طرح کی تقسیم اِنسان کے سبھاؤ میں شامل ہے ۔ ہندو دھرم میں اِسی چیز نے ایک صاف صاف اور خاص روپ دھارن کرلیا ۔ لوگوں کے مال جایداد کے لئے' گھریلو جیون کو ٹھیک ٹھیک چلانے کے لئے' لوگوں کی رکشا کے لئے' آدمی آدمی کے بیچ انصاف کے لئے اور سارے سماج کو ٹھیک راستے پر رکھنے کے لئے سب دھرموں میں کچھ نہ کچھ قاعدے قانون یا نیم رہے ہیں اور ہر دھرم نے اُن پر اپنے لوگوں سے عمل کرایا ہے ۔ اِنہیں سے طرح طرح کے ریت رواج پیدا ہوتے ہیں ۔ اِسی کام کے لئے ویدک دھرم نے سماج کا ایک ایسا ڈھانچہ تیار کردیا جس میں اِنسان اور سماج دونوں کی یہ سب ضرورتیں پوری ہوسکیں ۔ یہی ڈھانچہ ہندؤں کا جاتی بھید ہے ۔

یہ مضمون اتنا گہرا ہے کہ اِسے ذرا اور وستار سے دیکھنا ہوگا ۔ اِنسانی سماج کو شروع سے سب سے بڑی ضرورت خوراک کی ہوتی ہے ۔ خوراک دو طرح کی — ایک روحانی یعنی آتما کی خوراک اور دوسری جسمانی یعنی شریر کی خوراک ۔ سماج کے سامنے ہمیشہ سب سے بڑا

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

هندستانی کلچر سوسائٹی

ماھواری پرچا

दिसम्बर 1954 دسمبر

क्या किस से — सफ़ा صفحہ — کیا کس سے

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے ۔

मैनेजर
'नया हिन्द'
146, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद–3

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

नया हिन्द   نیا ہند

एडीटर— ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, विश्वम्भरनाथ पांडे, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، سید محمود، وشومبھر ناتھ پانڈے، سندرلال

नायब एडीटर— सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी   نائب ایڈیٹر—سریش رام‌بھائی، مجیب رضوی

❀ ❀ ❀ ❀

इस नम्बर के ख़ास लेख   اس نمبر کے خاص لیکھ

स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

दिसम्बर 1954 دسمبر

क़ीमत एक आना   قیمت ایک آنہ

गंगा से गोमती तक

...... मुजीब की कहानियों की विशेषता उनकी शैली भी है. मामूली पढ़ा लिखा आदमी इन्हें बिना किसी की मदद के समझ सकता है. सरलता के साथ भाषा में व्यंग और ज़िन्दादिली इस तरह है जिस तरह ऊंचे पहाड़ के झरनों में मिलता है

इन कहानियों में हास्य भी है, करुणा भी [illegible] कहीं [illegible] पेट में बल पड़ेंगे, तो कहीं पढ़ते-पढ़ते आप [illegible] मुजीब की कहानियां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

— [illegible]

...... [illegible] (मुजीब) [illegible] [illegible] समाज की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में होने वाले [illegible] और [illegible] [illegible] है. मुजीब की कहानियों में [illegible] [illegible] है जो अच्छी लगती है."

— जैनेन्द्र कुमार

लगभग हिन्दी के सभी बड़े लेखकों ने "गंगा से गोमती" को सराहा है.

"गंगा से गोमती तक" में १८० सफ़े हैं, सुन्दर कवर, बढ़िया जिल्द, दाम केवल दो रुपया. जल्दी आर्डर भेजिये.

— मैनेजर नया हिन्द

گنگا سے گومتی تک

......"مجیب کی کہانیوں کی وشیشتا ان کی شیلی بھی ہے۔ معمولی پڑھا لکھا آدمی انہیں بنا کسی کی مدد کے سمجھ سکتا ہے۔ سرلتا کے ساتھ بھاشا میں ویَنگ اور زندہ دلی اس طرح ہے جس طرح اونچے پہاڑ کے جھرنوں میں ملتی ہے

ان کہانیوں میں ہاسیہ بھی ہے، کرونا بھی ہے۔ کہیں [illegible] پیٹ میں بل پڑینگے، تو کہیں پڑھتے [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

— [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

— جینندر کمار

لگ بھگ ہندی کے سبھی بڑے لیکھکوں نے "گنگا سے گومتی" کو سراہا ہے۔

"گنگا سے گومتی تک" میں 180 صفحے ہیں، سندر کور، بڑھیا جلد، دام کیول دو روپیہ۔ جلدی آرڈر بھیجئے۔

— مینیجر نیا ہند

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद—

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد—

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈینٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈینٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈینٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے—

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے۔

हमारे यहाँ मिलने वाली कुछ और किताबें — ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं. — نوٹ — یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیہ	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुख़न	”	8	0	0	”	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	”	2	8	0	”	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	”	3	0	0	”	5. سنسمرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم۔ اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیا لال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم۔ اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بکھاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	”	3	0	0	”	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	”	2	4	0	”	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	”	2	8	0	”	19. سامراجیہ اور اس کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	”	1	4	0	”	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	”	1	8	0	”	21. سروودیہ ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल. एल. बी. गदाधर प्रसाद, अम्बिष्ठ, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم۔ اے۔ ایل ایل۔ بی۔ گداھر پرساد امبشٹھ، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	”	1	0	0	”	27. مارنے کی ہمت
28. सलोना [illegible]	”	0	8	0	”	28. سلونا [illegible]
29. मेरे साथी	”	1	0	0	”	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ —
[illegible]
145 [illegible]

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. 'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی ۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا ۔

بھارت کا ودھان

پورا ھندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا ۔ 'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انووادت ۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے ۔ بھارت کے ہر گھر میں اُس پستک کا رہنا ضروری ہے ۔

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز ۔ لگ بھگ چار سو پنّے ۔ کپڑے کی سندر جلد ۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے ۔

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردائکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردائکتا کے نقصان کو سمجھے اور اِس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپئے ۔

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے ۔ اِس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اِس کا مقصد کیا ہے ۔

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا ۔ یہ دوسرا ایڈیشن ہے ۔ صفحے 25 دام کیول دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'، 145 مٹھی گنج، الہ آباد ۔

सफ़ाई को देखते हुये इस किताब का यह जनता एडीशन काफ़ी सस्ता है हालांकि यह उतना सस्ता नहीं जितने सस्ते दूसरे मुल्कों की सरकारें अपने प्रकाशन बेचती हैं.

—वि० ना०

परम गीता

लिखने वाले स्वामी दयाल आत्मदर्शी, पठान कोट, ई.पी; निकालने वाले—वही; दाम—दो रुपया; सफ़े—142.

यह किताब इस मुद्दे को लेकर लिखी गई है कि ईश्वर की सिफ़ात की परिभाशा करना ईश्वर से इनकार करना है, मगर पूरी पुस्तक में उसी ईश्वर के नाम और रूपों का वनन किया गया है.

छपाई के लिहाज़ से किताब के दाम ज़्यादा हैं.

—वि० ना०

बच्चों की देख भाल

लिखने वाले—श्री बहादुरमल एम. ए.; छापने वाले—श्री विश्वेश्वरानन्द प्रकाशन, होशियारपुर; सफ़े—140; दाम—एक रुपया बारह आना; लिखावट—हिन्दी.

डेढ़ साल के बच्चों से लेकर बारह साल की उम्र तक के बच्चों के पालने पोसने, उनकी देख भाल, उनकी बीमारी और तीमारदारी और उनकी शिक्षा दीक्षा पर यह एक बहुत अच्छे ढंग से लिखी हुई किताब है. मां बाप को किस तरह समझ बूझ के साथ अपने बच्चों की देख भाल करनी चाहिये इस पर इस किताब में ख़ास ज़ोर दिया गया है. बच्चों के बारे में मां बाप की तालीम में यह किताब मददगार होगी.

—वि० ना०

صفائی کو دیکھتے ہوئے اِس کتاب کا یہ جنتا ایڈیشن کافی سستا ہے حالانکہ یہ اتنا سستا نہیں جتنے سستے دوسرے ملکوں کی سرکاریں اپنے پرکاشن بیچتی ہیں ۔

—وی . نا .

پرم گیتا

لکھنے والے—سوامی دیال آتم درشی، پٹھان کوٹ ای . پی؛ نکالنے والے—وہی؛ دام—دو روپیہ؛ صفحے—142 .

یہ کتاب اِس مدعے کو لے کر لکھی گئی ہے کہ ایشور کی صفات کی پریبھاشا کرنا ایشور سے انکار کرنا ہے، مگر پوری پستک میں اُسی ایشور کے نام اور روپوں کا ورنن کیا گیا ہے ۔

چھپائی کے لحاظ سے کتاب کے دام زیادہ ہیں ۔

—وی . نا .

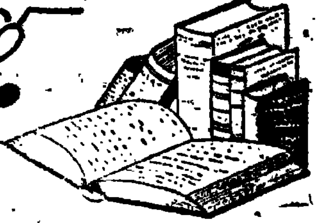
بچوں کی دیکھ بھال

لکھنے والے—شری بہادر مل ایم . اے؛ چھاپنے والے—شری وشویشورا نند پرکاشن؛ ہوشیار پور؛ صفحے—140؛ دام—ایک روپیہ بارہ آنے؛ لکھاوٹ ہندی ۔

ڈیڑھ سال کے بچوں سے لے کر بارہ سال کی عمر تک کے بچوں کے پالنے پوسنے، اُن کی دیکھ بھال، اُن کی بیماری اور تیمارداری اور اُن کی شکشا دیکشا پر یہ ایک بہت اچھے ڈھنگ سے لکھی ہوئی کتاب ہے ۔ ماں باپ کو کس طرح سمجھ بوجھ کے ساتھ اپنے بچوں کی دیکھ بھال کرنی چاہئیے اِس پر اِس کتاب میں خاص زور دیا گیا ہے ۔ بچوں کے بارے میں ماں باپ کی تعلیم میں یہ کتاب مددگار ہوگی ۔

—وی . نا .

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

हज़रत मुहम्मद अने इस्लाम

लिखने वाले—पंडित सुन्दरलाल; निकालने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; लिखावट—गुजराती; दाम—सवा रुपया.

पंडित सुन्दरलाल जी की मशहूर किताब हज़रत मुहम्मद और इस्लाम के गुजराती अनुवाद का यह दूसरा एडीशन है. इसका आमुख श्री किशोरलाल मशरूवाला का लिखा हुआ है. हिन्दुस्तान के सभी आलिमों और विद्वानों ने इस किताब को हिन्दुस्तान में इस क़िस्म की अब तक की छपी किताबों में सबसे उम्दा माना है. हम हर एक गुजराती पढ़ने वाले भाई इस किताब को ख़ास तौर पर पढ़ने की अपील करते हैं.

—वि० ना०

निर्माण

लिखने वाले—नवल भाई शाह; निकालने वाले—लक्ष्मी चंद जवेरचन्द संघवी, महावीर साहित्य प्रकाशन मन्दिर, हठी भाई नी वाड़ी, अहमदाबाद; लिखावट—गुजराती, सफ़े 212, दाम—एक रुपया बारह आना.

नवल भाई शाह की यह नवल कथा स्वराज्य हासिल करने के बाद हमें अपने देश को किस तरह बनाना और संवारना है इस पर रोशनी डालती है. निर्माण, जैसा कि इस किताब का नाम है, अमली बुनियादों पर नया देश गढ़ने के मक़सद से लिखी गई है.

—वि० ना०

पहला पंजसाला प्लान

निकालने वाले—पब्लिकेशन डिवीज़न, नई दिल्ली; सफ़े—376, बहुत सी तसवीरें और नक़्शे, लिखावट—उर्दू; क़ीमत—दो रुपया.

आजकल जिस पांच साला प्लानिंग की बेहद चरचा है उसी का ख़ाका इस सरकारी किताब में दिया हुआ है. छपाई

حضرت محمد انے اسلام

لکھنے والے—پنڈت سندر لال؛ نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ لکھاوٹ—گجراتی؛ دام—سوا روپیہ ۔

پنڈت سندر لال جی کی مشہور کتاب حضرت محمد اور اسلام کے گجراتی انوواد کا یہ دوسرا ایڈیشن ھے ۔ اِس کا آمکھ شری کشورلال مشرووالا کا لکھا ہوا ھے ۔ ھندستان کے سبھی عالموں اور ودوانوں نے اِس کتاب کو ھندستان میں اِس قسم کی اب تک کی چھپی کتابوں میں سب سے عمدہ مانا ھے۔ ھم ھر ایک گجراتی پڑھنے والے بھائی سے اِس کتاب کو خاص طور پر پڑھنے کی اپیل کرتے ھیں ۔

—وی ۔ نا ۔

نرمانڑ

لکھنے والے—نول بھائی شاہ؛ نکالنے والے—لکشمی چند زویر چند سنگھوی، مہاویر ساھتیہ پرکاشن مندر، ھٹی بھائی نی واری احمدآباد؛ لکھاوٹ—گجراتی؛ صفحے 212؛ دام—ایک روپیہ بارہ آنہ ۔

نول بھائی شاہ کی یہ نول کتھا سوراجیہ حاصل کرنے کے بعد ھمیں اپنے دیش کو کس طرح بنانا اور سنوارنا ھے اِس پر روشنی ڈالتی ھے ۔ 'رمانڑ جیسا کہ اِس کتاب کا نام ھے عملی بنیادوں پر نیا دیش گڑھنے کے مقصد سے لکھی گئی ھے ۔

—وی ۔ نا ۔

پہلا پنج سالہ پلان

نکالنے والے—پبلیکیشن ڈویژن، نئی دلی، صفحے—376، بہت سی تصویریں اور نقشے؛ لکھاوٹ—اردو؛ قیمت—دو روپیہ

آجکل جس پانچ سال پلاننگ کی بےحد چرچا ھے اُسی کا خاکہ اِس سرکاری کتاب میں دیا ہوا ھے ۔ چھپائی

जवाहरलाल आज पैंसठ बरस के जवान हैं और इस अरसे में हुकूमत या पदों का काफ़ी तजुर्बा हासिल कर चुके हैं. अब वक्त आया है कि वह इस तरह की ज़िम्मेदारियों से अलग हों और उन सबसे कहीं ज्यादा ऊँची और बड़ी ज़िम्मेदारी को संभालें—वह है समाज को धर्म सिखाना, यानी समाज में अपने पैरों पर खड़े होने की ताक़त पैदा करना, भाई चारा बढ़ाना और इन्सान की शान को बुलन्द करना. यह ज़िम्मेदारी उनकी आज की छोटी या हल्की ज़िम्मेदारियों के मुक़ाबिले कहीं ज्यादा बड़ी और ठोस है. मालिक ने उनको इतनी सामर्थ्य दी है कि वह इस ज़िम्मेदारी को ख़ुशी के साथ उठा लें.

सिरजनहार से हम प्रार्थना करते हैं कि पंडित जवाहरलाल जी को हमारे शास्त्रों के मुताबिक़ सवा सौ साल की पूरी उम्र दें और प्रेम शक्ति की बिना पर मुल्क की नई रहनुमाई करने की ताक़त और हिम्मत दें.

30. 10. '54 —सुरेशराम भाई

جواہرلال آج پینسٹھ برس کے جوان ہیں اور اس عرصے میں حکومت یا پدوں کا کافی تجربہ حاصل کر چکے ہیں۔ اب وقت آیا ہے کہ وہ اس طرح کی ذمہ داریوں سے الگ ہوں اور ان سب سے کہیں زیادہ اونچی اور بڑی ذمہ داری کو سنبھالیں — وہ ہے سماج کو دھرم سکھانا یعنی سماج میں اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی طاقت پیدا کرنا، بھائی چارہ بڑھانا اور انسان کی شان کو بلند کرنا۔ یہ ذمہ داری ان کی آج کی چھوٹی یا ہلکی ذمہ داریوں کے مقابلہ کہیں زیادہ بڑی اور ٹھوس ہے۔ مالک نے ان کو اتنی سامرتھیہ دی ہے کہ وہ اس ذمہ داری کو خوشی کے ساتھ اٹھالیں۔

سرجن ہار سے ہم پرارتھنا کرتے ہیں کہ پنڈت جواہرلال جی کو ہمارے شاستروں کے مطابق سوا سو سال کی پوری عمر دیں اور پریم شکتی کی بنا پر ملک کی نئی رہنمائی کرنے کی طاقت اور ہمت دیں۔

30 . 10 . '54 —سریش رام بھائی

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता.

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک — ڈاکٹر جے . سی . کمارپا.

انوادک — سریش رام بھائی۔

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابر بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے۔

مہاتما گاندھی نے اس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحہ کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ۔

ملنے کا پتہ۔

مینیجر، 'نیا ہند'، 145 مٹھی گنج، الہ آباد۔

आज मुल्क की पहली मांग यह है कि उसकी जड़ मज़बूत की जाये. वह जड़ किसी इमारत, सड़क या पैदावार के ज़रिये नहीं, बल्कि दिलों को नज़दीक लाने, आपस के भेद भाव मिटाने और प्रेम शक्ति को बुलन्द करने पर ही होगी. और यह इस मुल्क की ही मांग नहीं, सारे आलम की मांग है. अर्सा दराज़ से दुनिया ने तलवार, क़ानून और पैसे की ताक़तों के तजुर्बे करके देख लिये. उनसे बम, ऐटम बम और हाइड्रोजन बम हम तक पहुंचे और इन्सान की हस्ती ही ख़तरे में डाल दी. वक़्त बता रहा है कि अब दूसरे तजुरबे करें और प्रेम शक्ति को आज़मायें और उसकी बिना पर अपने समाज की तामीर करें जिस के अन्दर निज़ामे हकूमत भी शामिल है.

इस प्रेम शक्ति का एक पायदार, सही और सच्चा नमूना महात्मा गांधी ने हमारे सामने पेश भी किया है. वह शक्ति हम हिन्द वाले पूरी तरह अमल में न ला सके. लेकिन उसके जो भी तजुर्बे हमने किये उसका नतीजा सारी दुनिया आज जानती है और इसी वजह से इस चीज़ की क़दर करती है, उसका लोहा मानती है. ज़रूरत है कि इस शक्ति के ज़्यादा से ज़्यादा, बड़े और गहरे पैमाने पर तजुर्बे किये जायें. इसी रोशनी में हम पंडित जवाहरलाल के उस सरनाम ख़त का स्वागत करते हैं. जैसा कि उनका ख़्याल है कि उनको अभी इस दुनिया में बहुत काम करना है, वह हम भी मानते हैं. हम यक़ीन रखते हैं कि हमारा जो अलमबर्दार, प्रेम शक्ति की मदद से महात्मा गांधी की रहनुमाई में अंग्रेज़ी ताक़त से लड़ा था वह अब उसी प्रेम शक्ति की मदद से हिन्दुस्तान की ग़रीबी और जेहालत से लड़ेगा, ज़माने से लड़ेगा और क्या हिन्दुस्तान को, क्या दुनिया को सच्ची आज़ादी की ओर असली शान्ति का रास्ता दिखाएगा.

जहां तक मुल्क का काम चलने की बात है हम यही मानते हैं कि पंडित जी हकूमत या कांग्रेस की सदारत से अलग रह कर मुल्क की जो ख़िदमत अंजाम दे सकते हैं वह अन्दर रह कर नहीं. तन्त्र में फंसकर आदमी मंत्री न रह कर तंत्री बन जाता है और उसके दिमाग़ के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं. जब किसी मुल्क के ऊंचे से ऊंचे आदमी अपने को तन्त्र में फंसा लेते हैं तो उस मुल्क की तबाही रोके नहीं रुक सकती. हमारी राय तो यह है कि न सिर्फ़ पंडित जवाहरलाल जी बल्कि मरकज़ी और सूबे की सरकारों के वह सब मिनिस्टर या ओहदेदार जो छः साल से ज़्यादा इस तन्त्र में रह चुके हैं वह अब बाहर आजायें, दूसरों को अपनी जगह भेजें और बाहर से उनको राह दिखाते रहें.

आख़िर में एक अर्ज़ और है. हमारे मुल्क का पुराना और शानदार दस्तूर है कि एक उम्र के बाद आदमी घर की या राज पाट की सब झंझटों से सब तरह बरी होकर जन सम्पर्क और जनता जनार्दन की भक्ति व सेवा में लगे. पंडित

آج ملک کی پہلی مانگ یہ ہے کہ اس کی جڑ مضبوط کی جاوے۔ وہ جڑ کسی عمارت، سڑک یا پیداوار کے ذریعہ نہیں، بلکہ دلوں کو نزدیک لانے، آپس کے بھید بھاو مٹانے اور پریم شکتی کو بلند کرنے پر ہی ہوگی۔ اور یہ اس ملک کی ہی مانگ نہیں، سارے عالم کی مانگ ہے۔ عرصہ‌دراز سے دنیا نے تلوار، قانون اور پیسہ کی طاقتوں کے تجربے کرکے دیکھ لئے۔ ان سے بم، ایٹم‌بم اور ہائڈروجن بم ہم تک پہونچے اور انسان کی ہستی ہی خطرہ میں ڈال دی۔ وقت بتا رہا ہے کہ اب دوسرے تجربے کریں اور پریم شکتی کو آزمائیں اور اس کی بنا پر اپنے سماج کی تعمیر کریں جس کے اندر نظام حکومت بھی شامل ہے۔

اس پریم شکتی کا ایک پائدار، صحیح اور سچا نمونہ مہاتما گاندھی نے ہمارے سامنے پیش بھی کیا ہے۔ وہ شکتی ہم ہند والے پوری طرح عمل میں نہ لا سکے۔ لیکن اس کے جو بھی تجربے ہم نے کئے اس کا نتیجہ ساری دنیا آج جانتی ہے اور اسی وجہ سے اس چیز کی قدر کرتی ہے، اس کا لوہا مانتی ہے۔ ضرورت ہے کہ اس شکتی کے زیادہ سے زیادہ، بڑے اور گہرے پیمانے پر تجربے کئے جائیں۔ اسی روشنی میں ہم پنڈت جواہر لال کے اس سرنام خط کا سواگت کرتے ہیں۔ جیسا کہ ان کا خیال ہے کہ ان کو ابھی اس دنیا میں بہت کام کرنا ہے، وہ ہم بھی مانتے ہیں۔ ہم یقین رکھتے ہیں کہ ہمارا جو علم‌بردار، پریم شکتی کی مدد سے مہاتما گاندھی کی رہنمائی میں انگریزی طاقت سے لڑا تھا وہ اب اسی پریم شکتی کی مدد سے ہندستان کی غریبی اور جہالت سے لڑیگا، زمانہ سے لڑیگا اور کیا ہندستان کو، کیا دنیا کو سچی آزادی کی اور اصلی شانتی کا راستہ دکھائیگا۔

جہاں تک ملک کا کام چلنے کی بات ہے ہم یہی مانتے ہیں کہ پنڈت جی حکومت یا کانگریس کی صدارت سے الگ رہ کر ملک کی جو خدمت انجام دے سکتے ہیں وہ اندر رہ کر نہیں۔ تنتر میں پھنس‌کر آدمی منتری نہ رہ کر تنتری بن جاتا ہے اور اس کے دماغ کے دروازے بند ہوجاتے ہیں۔ جب کسی ملک کے اونچے سے اونچے آدمی اپنے کو تنتر میں پھنسا لیتے ہیں تو اس ملک کی تباہی روکے نہیں رک سکتی۔ ہماری رائے تو یہ ہے کہ نہ صرف پنڈت جواہر لال جی بلکہ مرکزی اور صوبے کی سرکاروں کے وہ سب منسٹر یا عہدے‌دار جو چھ سال سے زیادہ اس تنتر میں رہ چکے ہیں وہ اب باہر آجائیں، دوسروں کو اپنی جگہ بھیجیں اور باہر سے ان کو راہ دکھاتے رہیں۔

آخر میں ایک عرض اور ہے۔ ہمارے ملک کا پرانا اور شاندار دستور ہے کہ ایک عمر کے بعد آدمی گھر کی یا راج پاٹ کی سب جھنجھٹوں سے سب طرح بری ہوکر جن سمپرک اور جنتا جناردن کی بھکتی و سیوا میں لگے۔ پنڈت

क़िस्मत का फ़ैसला बन्द कमरे में बैठे बैठे कर देती है. हिन्दुस्तान के प्राइम मिनिस्टर के नाते पंडित जवाहरलाल आज हिन्दुस्तान भर की तलवार की ताक़त और क़ानून की ताक़त के बुलन्द नुमाइन्दा व सिपहसालार हैं. लेकिन इस सब के अलावा एक ताक़त और भी है-वह है प्रेम की ताक़त जिसे नैतिक या इख़लाक़ी ताक़त भी कह सकते हैं, जिसकी तालीम हर बच्चे को जन्म से ही मिलती है और जिस पर यह दुनिया टिकी है. आज हकूमतें इस ताक़त को नज़रअन्दाज़ कर रही हैं और तलवार, क़ानून, पैसा व दिमाग़ की ताक़तों के बल पर फूल सी रही हैं. लेकिन ज़माना साफ़ बता रहा है कि अगर वह अपनी रविश को नहीं बदलती हैं और प्रेम की ताक़त की बिना पर समाज की नई रचना नहीं होती है तो इन्सान की ज़ात के ही ख़त्म होने का अन्देशा है. प्राइम मिनिस्ट्री के शिकंजे में जकड़ जाने के कारन पंडित जवाहरलाल इस ताक़त से अछूते रह रहे हैं. दूसरे शब्दों में जनता से अछूते रह रहे हैं. यही वजह है कि उनको बासीपन महसूस होता है और पढ़ने या सोचने के लिये, बुनियादी सवालों पर ग़ौर और सलाह करने के लिये उनमें तड़प पैदा होती है.

इस सिलसिले में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि आज हमारे मुल्क में एक चीज़ की ख़ास कमी नज़र आती है. हम क़बूल करते हैं कि आज़ादी के बाद हिन्दुस्तान में खेती की पैदावार बढ़ी है. यहां की मिलों में ज़्यादा माल तैयार हो गया है. यहां की नदियों पर पुल व पुलियां बंधे हैं, नई सड़कें, रेलें और आमद-रफ़्त के रास्ते खुले हैं. लेकिन इस सबके बावजूद मुल्क में इस ताक़त का एहसास नहीं होता जो ऐसी हालत में होना चाहिये. वजह यह है कि हमारे दिल टूट रहे हैं. आपस का फ़र्क़ बढ़ रहा है. जात पात और छुआ छूत का ज़हर ज़्यादा गहरा घुस रहा है. इनसान की आबरू की क़दर कम हो रही है. अपने पैरों पर खड़े होने की ताक़त गिर रही है और मुल्क कमज़ोर पड़ रहा है. एक लाचारी सी दिखाई पड़ती है और ख़ुद करने लायक काम भी न करके लोग आम तौर से सरकार का मुंह ताकते हैं. आज़ादी के बाद जो एक जोश और हौसला सब को आना चाहिये था वह ग़ायब है. मस्ती के बजाय सुस्ती है. फ़र्क़ दिखलाई नहीं पड़ता. नतीजा यह है कि समाज का जो ग़रीब और कमज़ोर हिस्सा है वह दिन दुगुना रात चौगुना ग़रीब और कमज़ोर होता जा रहा है. और उसी के आधार पर हम हिन्दुस्तान का आलीशान महल खड़ा करने के ख़्वाब देखते हैं. ज़ाहिर है कि जिस महल की बुनियादें कमज़ोर होंगी वह बाहर की हवा से क्या, अन्दर की हवा के भी झोंके बरदाश्त नहीं कर सकेगा. हमारा मानना है कि अगर मुल्क की यही रफ़्तार जारी रही और तलवार, पैसा, क़ानून की ताक़तों के सहारे ही हम ख़ाली बैठे रहे तो हमारा भविष्य अच्छा नहीं है.

قسمت کا فیصلہ بند کمرے میں بیٹھے بیٹھے کر دیتی ہے ۔ ہندستان کے پرائم منسٹر کے ناتے پنڈت جواہر لال آج ہندستان بھر کی تلوار کی طاقت اور قانون کی طاقت کے بلند نمائندہ وسپہ سالار ہیں ۔ لیکن ان سب کے علاوہ ایک طاقت اور بھی ہے—وہ ہے پریم کی طاقت جسے نیتک یا اخلاقی طاقت بھی کہ سکتے ہیں، جس کی تعلیم ہر بچہ کو جنم سے ہی ملتی ہے اور جس پر یہ دنیا ٹکی ہے ۔ آج حکومتیں اِس طاقت کو نظر انداز کر رہی ہیں اور تلوار، قانون، پیسہ و دماغ کی طاقتوں کے بل پر پھول سی رہی ہیں ۔ لیکن زمانہ صاف بتا رہا ہے کہ اگر وہ اپنی روش کو نہیں بدلتی ہیں اور پریم کی طاقت کی بنا پر سماج کی نئی رچنا نہیں ہوتی ہے تو انسان کی ذات کے ہی ختم ہونے کا اندیشہ ہے ۔ پرائم منسٹری کے شکنجے میں جکڑ جانے کے کارن پنڈت جواہر لال اِس طاقت سے اچھوتے رہ رہے ہیں ۔ دوسرے شبدوں میں جنتا سے اچھوتے رہ رہے ہیں ۔ یہی وجہ ہے کہ اُن کو باسی پن محسوس ہوتا ہے اور پڑھنے یا سوچنے کے لئے، بنیادی سوالوں پر غور اور صلاح کرنے کے لئے اِن میں تڑپ پیدا ہوتی ہے ۔

اسی سلسلہ میں ایک مہتوپورن بات یہ ہے کہ آج ہمارے ملک میں ایک چیز کی خاص کمی نظر آتی ہے ۔ ہم قبول کرتے ہیں کہ آزادی کے بعد ہندستان میں کھیتی کی پیداوار بڑھی ہے ۔ یہاں کی ملوں میں زیادہ مال تیار ہوگیا ہے ۔ یہاں کی ندیوں پر پل و پلیاں بندھے ہیں، نئی سڑکیں، ریلیں اور آمدورفت کے راستے کھلے ہیں ۔ لیکن اس سب کے باوجود ملک میں اس طاقت کا احساس نہیں ہوتا جو ایسی حالت میں ہونا چاہئے ۔ وجہ یہ ہے کہ ہمارے دل ٹوٹ رہے ہیں ۔ آپس کا فرق بڑھ رہا ہے ۔ جات پات اور چھواچھوت کا زہر زیادہ گہرا گھس رہا ہے ۔ انسان کی آبرو کی قدر کم ہو رہی ہے ۔ اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی طاقت گر رہی ہے اور ملک کمزور پڑ رہا ہے ۔ ایک لاچاری سی دکھائی پڑتی ہے اور خود کرنے لائق کام بھی نہ کرکے لوگ عام طور سے سرکار کا منہ تاکتے ہیں ۔ آزادی کے بعد جو ایک جوش اور حوصلہ سب کو آنا چاہئے تھا وہ غائب ہے ۔ مستی کی بجائے سستی ہے ۔ فرق دکھلائی نہیں پڑتا ۔ نتیجہ یہ ہے کہ سماج کا جو غریب اور کمزور حصہ ہے وہ دن دگنا رات چوگنا غریب اور کمزور ہوتا جا رہا ہے ۔ اور اسی کے آدھار پر ہم ہندستان کا عالی شان محل کھڑا کرنے کے خواب دیکھتے ہیں ۔ ظاہر ہے کہ جس محل کی بنیادیں کمزور ہونگی وہ باہر کی ہوا سے کیا، اندر کی ہوا کے بھی جھونکے برداشت نہیں کرسکیگا ۔ ہمارا ماننا ہے کہ اگر ملک کی یہی رفتار جاری رہی اور تلوار، پیسہ، قانون کی طاقتوں کے سہارے ہی ہم خالی بیٹھے رہے تو ہمارا بھوشیہ اچھا نہیں ہے ۔

(iii) एक चीज़ अक्सर लोग पूछते हैं और अख़बार वाले लिखते भी हैं जिससे मुझे बड़ी चिढ़ होती है—वह यह कि "नेहरू के बाद क्या?" "नेहरू का वारिस कौन होगा?" यह सवाल ही मेरे लिये और क़ौम के लिये एक चुनौती हो जाता है. यह सोचना तो बड़ी भोंडी बात है कि कोई बड़ी क़ौम किसी एक या दो आदमियों पर मुनहसिर रहे. इस सवाल का असर मुझ पर यही पड़ता है कि इस चुनौती को मन्ज़ूर करूं. मुझे यक़ीन है कि जो कुछ भी होगा अच्छा ही होगा."

पन्डित जवाहरलाल का यह ख़त पढ़कर हमें इन्तहाई ख़ुशी हुई और उन पुराने जवाहरलाल की याद हो आई जो इलाहाबाद, रायबरेली और प्रतापगढ़ के गांवों में सन23-24 में आज़ादी और ख़ुद-मुख़तारी का पैग़ाम लेकर घूमते थे, उन जवाहरलाल की याद हो आई जिन्होंने 1929 में पूर्न आज़ादी का बिगुल बजाया था, उन जवाहरलाल की याद हो आई जिन्होंने सन 1942 में गांधी जी की रहनुमाई पर अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से चले जाने के लिये ललकारा था. यह ख़त उनकी अनोखी आन और ऊंची शान का आला नमूना है. यह उन ही की बुलन्द हस्ती है जो इस तरह सोच सकती है और इस तरह अपने दिल की बात मुल्क के सामने रख सकती है. अपने इस लाजवाब ख़त के ज़रिये उन्होंने मुल्क के आगे एक नई मिसाल पेश की है—ऐसी मिसाल जिसकी सख़्त ज़रूरत थी और ऐसी मिसाल जो उनके सिवा कोई दूसरा नहीं पेश कर सकता था.

हम अच्छी तरह जानते हैं कि हमारी इस ख़ुशी में बहुत से लोग—समझदार और असरदार लोग—शरीक न होंगे. अख़बारों में जो बयानात और मज़मून निकले हैं उनकी धुन यही है कि इस वक़्त तो जवाहरलाल जी को किसी हालत में मुल्क की प्राइम मिनिस्ट्री से अलग नहीं होना चाहिये और अपनी बात पर ज़िद नहीं करनी चाहिये. हम उनमें नहीं हैं. हम इस ख़याल के क़ायल नहीं कि अगर जवाहरलाल जी के अलावा कोई दूसरा भाई या बहन प्राइम मिनिस्ट्री के ताज को संभाल लेगा तो मुल्क की नाव के डूबने का ख़तरा है. और न हम यही मानते हैं कि जवाहरलाल जी या उनकी जैसी कोई और शख़्सियत मुल्क और दुनिया की सब में बेहतरीन ख़िदमत प्राइम मिनिस्ट्री के ओहदे पर रह कर ही कर सकती है.

आज दुनिया में कई तरह की ताक़तें काम कर रही हैं—जैसे तलवार की ताक़त जिसने आज ऐटम और हाइड्रोजन बम की शक्ल ले ली है, पैसे की ताक़त जिसने बड़े बड़े बैंकों और सरमायेदारों की शकल ले ली है, दिमाग़ की ताक़त जो आज एक मुल्क के आगे दूसरे को पस्त करने में चूर है और क़ानून की ताक़त जो बड़ी बड़ी आबादियों की

(iii) ایک چیز اکثر لوگ پوچھتے ہیں اور اخبار والے لکھتے بھی ہیں جس سے مجھے بڑی چڑھ ہوتی ہے—وہ یہ کہ "نہرو کے بعد کیا؟" "نہرو کا وارث کون ہوگا؟" یہ سوال ہی میرے لئے اور قوم کے لئے ایک چنوتی ہو جاتا ہے. یہ سوچنا تو بڑی بھونڈی بات ہے کہ کوئی بڑی قوم کسی ایک یا دو آدمیوں پر منحصر رہے. اس سوال کا اثر مجھ پر یہی پڑتا ہے کہ اس چنوتی کو منظور کروں. مجھے یقین ہے کہ جو کچھ بھی ہوگا اچھا ہی ہوگا."

پنڈت جواہر لال کا یہ خط پڑھ کر ہمیں انتہائی خوشی ہوئی اور ان پرانے جواہر لال کی یاد ہو آئی جو الٰہ آباد' رائے بریلی اور پرتاب گڑھ کے گاؤں میں سن 23-24 میں آزادی اور خود مختاری کا پیغام لے کر گھومتے تھے' ان جواہر لال کی یاد ہو آئی جنہوں نے 1929 میں پورن آزادی کا بگل بجایا تھا' ان جواہر لال کی یاد ہو آئی جنہوں نے سن 1942 میں گاندھی جی کی رہنمائی پر انگریزوں کو ہندستان سے چلے جانے کے لئے للکارا تھا. یہ خط ان کی انوکھی آن اور اونچی شان کا اعلیٰ نمونہ ہے. یہ انہیں کی بلند ہستی ہے جو اس طرح سوچ سکتی ہے اور اس طرح اپنے دل کی بات ملک کے سامنے رکھ سکتی ہے. اپنے اس لاجواب خط کے ذریعہ انہوں نے ملک کے آگے ایک نئی مثال پیش کی ہے—ایسی مثال جس کی سخت ضرورت تھی اور ایسی مثال جو ان کے سوا کوئی دوسرا نہیں پیش کر سکتا تھا.

ہم اچھی طرح جانتے ہیں کہ ہماری اس خوشی میں بہت سے لوگ—سمجھدار اور اثر دار لوگ—شریک نہ ہونگے. اخباروں میں جو بیانات اور مضمون نکلے ہیں ان کی دھن یہی ہے کہ اس وقت تو جواہر لال جی کو کسی حالت میں ملک کی پرائم منسٹری سے الگ نہیں ہونا چاہئے اور اپنی بات ضد نہیں کرنا چاہئے. ہم ان میں نہیں ہیں. ہم اس خیال کے قائل نہیں کہ اگر جواہر لال جی کے علاوہ کوئی دوسرا بھائی یا بہن پرائم منسٹری کے تاج کو سنبھال لے گا تو ملک کی ناؤ کو ڈوبنے کا خطرہ ہے. اور نہ ہم یہی مانتے ہیں کہ جواہر لال جی یا ان کی جیسی کوئی اور شخصیت ملک اور دنیا کی سب میں بہترین خدمت پرائم منسٹری کے عہدہ پر رہ کر ہی کر سکتی ہے.

آج دنیا میں کئی طرح کی طاقتیں کام کر رہی ہیں—جیسے تلوار کی طاقت جس نے آج ایٹم اور ہائیڈروجن بم کی شکل لے لی ہے' پیسہ کی طاقت جس نے بڑے بڑے بینکوں اور سرمایہ داروں کی شکل لے لی ہے' دماغ کی طاقت جو آج ایک ملک کے آگے دوسرے کو پست کرنے میں چور ہے اور قانون کی طاقت جو بڑی بڑی آبادیوں کی

जवाहरलाल जी और हिन्दुस्तान का भविश्य

अक्तूबर के दूसरे हफ़्ते में पंडित जवाहरलाल नेहरू का एक गश्ती ख़त अख़बारों में छपा जो उन्होंने मुल्क भर की सूबों की कांग्रेस कमेटियों के सदूर साहिबान के नाम भेजा है. उस महत्वपूर्न चिट्ठी में उन्होंने यह ख़्वाहिश ज़ाहिर की है कि जनवरी में कांग्रेस का जो सालाना जलसा होने जा रहा है उसकी सदारत वह न करें और साथ ही साथ हकूमते हिन्द की प्राइम मिनिस्ट्री के काम से कुछ अरसे के लिये हट जायें. उन्होंने इतमीनान दिलाया है कि उनके इस ख़याल के पीछे बुढ़ापा या सेहत की कमज़ोरी का कोई डर काम नहीं कर रहा है. वह फ़रमाते हैं:

"मुझे महसूस होता है कि अपने इस मुल्क में मुझे अभी और बहुत से काम करने हैं और मेरा निश्चय है कि इस मक़सद के लिये मैं अपने को तन्दुरुस्त रखूंगा. न मैं काम या ज़िम्मेदारी ही से भागता हूं और न मेरा कोई इरादा जंगल में चले जाने या पहाड़ों की राह पकड़ने का है. मुझे लगता है कि मुझे कुछ चीज़ अन्जाम देनी है और जब तक किसी को इस तरह महसूस होता है, तब तक उसे काम करने की और डटे रहने की तमन्ना बनी रहती है. मेरे अन्दर वह ज़ोरदार तमन्ना है." आगे चलकर उनका कहना है :

"आज़ादी के बाद से पिछले सात सालों में हमने जो कुछ किया है उस पर मुझे कोई नाउम्मेदी या असंतोश भी नहीं है. बल्कि मुझे ऐसा महसूस होता है कि न सिर्फ़ मैंने ज़ाती तौर पर बल्कि सारे मुल्क ने कामयाबी हासिल की है और आगे बढ़ा है. सच तो यह है कि अपने काम-काज में फ़रक़ करना मैं इसी वजह से ज़रूरी मानता हूं क्योंकि मैं सोचता हूं कि हमारे मुल्क ने अच्छा काम किया है और उसकी तरक़्क़ी के लिये अच्छी और मज़बूत बुनियाद क़ायम हो गई है. मैं डट कर काम करना चाहता हूं."

लेकिन फिर भी वह हटना क्यों चाहते हैं ? इसकी कई वजह हैं :—

"(i) बासीपन (Staleness) का कुछ एहसास होता है जो मशीन की तरह काम करने वाले को लाज़मी तौर पर आ ही जाता है.

(ii) मैं कुछ फ़ुर्सत चाहता हूं ताकि कुछ पढ़ सकूं और सोच सकूं. हम लोग जो सरकारी या इस तरह के दूसरे कामों में फंसे रहते हैं, उनके साथ एक बड़ी दिक़्क़त यह हो जाती है कि उन्हें पढ़ने और सोचने के लिये वक़्त नहीं मिलता और न दुनियावी मामलों पर एक दूसरे से बात करने का ही मौक़ा मिलता है.

جواهر لال جی اور هندستان کا بهوشیه

اکتوبر کے دوسرے هفتے میں پنڈت جواهر لال نہرو کا یک گشتی خط اخباروں میں چھپا جو انہوں نے ملک بھر ی صوبے کی کانگریس کمیٹیوں کے صدر صاحبان کے نام بھیجا ے . اِس مہتوپورن چٹھی میں انہوں نے یہ خواهش ظاهر کی هے ه جنوری میں کانگریس کا جو سالانہ جلسہ هونے جا رہا هے س کی صدارت وہ نہ کریں اور ساتھ هی ساتھ حکومت هند ی پرائم منسٹری کے کام سے کچھ عرصہ کے لئے هٹ جائیں . نهوں نے اطمینان دلایا هے کہ ان کے اِس خیال کے پیچھے ڑھاپا یا صحت کی کمزوری کا کوئی ڈر کام نہیں کر رہا هے . ہ فرماتے هیں :

" مجھے محسوس هوتا هے کہ اپنے اِس ملک میں مجھے ابھی اور بہت سے کام کرنے هیں اور میرا نشچے هے کہ س مقصد کے لئے میں اپنے کو تندرست رکھونگا . نہ میں کام ا ذمہ داری سے هی بھاگتا هوں اور نہ میرا کوئی ارادہ جنگل میں چلے جانے یا پہاڑوں کی راہ پکڑنے کا هے . مجھے لگتا ے کہ مجھے کچھ چیز انجام دینی هے اور جب تک کسی کو س طرح محسوس هوتا هے، تب تک اسے کام کرنے کی اور ڈٹے هنے کی تمنا بنی رهتی هے . میرے اندر وہ زوردار تمنا هے ." گے چل کر ان کا کہنا هے :

" آزادی کے بعد سے پچھلے سات سالوں میں م نے جو کچھ کیا هے اِس پر مجھے کوئی ناامیدی یا اسنتوش ی نہیں هے . بلکہ مجھے ایسا محسوس هوتا هے کہ نہ صرف میں نے ذاتی طور پر بلکہ سارے ملک نے کامیابی حاصل کی هے ور آگے بڑھا هے . سچ تو یہ هے کہ اپنے کام کاج میں فرق کرنا یں اِسی وجہ سے ضروری مانتا هوں کیونکہ میں سوچتا هوں کہ همارے ملک نے اچھا کام کیا هے اور اِس کی ترقی کے لئے اچھی اور مضبوط بنیاد قائم هوگئی هے . میں ڈٹ کر کام کرنا چاهتا هوں ."

لیکن پھر بھی وہ هٹنا کیوں چاهتے هیں ؟ اِسکی کئی وجہ هیں :—

"(i) باسی پن (Staleness) کا کچھ احساس هوتا هے جو مشین کی طرح کام کرنے والے کو لازمی طور پر آ هی جاتا هے .

(ii) میں کچھ فرصت چاهتا هوں تاکہ کچھ پڑھ سکوں ور سوچ سکوں . هم لوگ جو سرکاری یا اِس طرح کے دوسرے کاموں میں پھنسے رهتے هیں ان کے ساتھ ایک بڑی دقت یہ هو جاتی هے کہ انہیں پڑھنے اور سوچنے کے لئے وقت نہیں ملتا اور نہ دنیاوی معاملوں پر ایک دوسرے سے بات کرنے کا هی موقع ملتا هے .

रही है और उसके रोकने की कोई कोशिश नहीं की जाती. और अगर रुकावटें हैं जिनकी वजह से इस तालीम के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं है तो फिर इस तालीम को नाहक़ क्यों कोसा जाता है. इस का बहुत ख़राब असर उन लोगों पर पड़ता है जो आज यह तालीम हासिल करते हैं या कराते हैं. हम यह नहीं मानते कि पंडित नेहरू ने इस तरह की बात केवल जज़्बे या ग़ुस्से में आ कर कह दी होगी, क्योंकि वह बोलने की ख़ातिर कभी नहीं बोलते हैं. मगर दुनिया में एक चीज़ होती है जिस का नाम है "मजबूरी" जिसकी वजह से आदमी एक बात को सही समझ कर भी नहीं कर पाता और दूसरी बात को ग़लत जानते हुए भी करता है. ऐसे के लिये हम भगवान से यही दुआ करते हैं कि इसके विचार और अमल में जो फ़ासला है उसे दूर कर और जल्द से जल्द उसके अमल को उसके विचार की राह पर ला दे.

बहुत सोचने पर ऐसा लगता है कि आज की तालीम है तो निकम्मी पर आज जो मुल्क का समाजी आर्थिक ढांचा है उसका आईना है. आज हमारे समाज में हाथ से काम करने वाले की कोई इज़्ज़त नहीं, आबरू नहीं, कम काम करके, ज़्यादा तनख़्वाह पाने वाले का मान है, वग़ैरा वग़ैरा. सरकारी मुहकमों को लीजिये, व्यापारी दायरों को देखिये, आम जनता में देखिये सब में यही पैमाना क़ायम है. और यही ख़ूबी इस तालीम की भी है कि इसको हासिल करके काम से नफ़रत पैदा हो जाती है, ऊंची तनख़्वाह पाने की तमन्ना होने लगती है और बिना काम किये खाने को जी चाहता है. इसलिये जब तक समाज के पैमाने नहीं बदलते और सरकार के नज़रिये में फ़रक़ नहीं आता तब तक इस तालीम को बदलना उसी तरह नामुमकिन है जैसे बबूल बोकर गुलाब पाने की उम्मीद रखना. अगर तालीम निकम्मी है तो इसका मतलब यह है कि इस तालीम को चलाने वाली सरकार निकम्मी है. होना तो यही चाहिये था कि पुराने राज के साथ पुरानी तालीम को भी रुख़सत कर देना था और नये राज के साथ नई तालीम लाना था. लेकिन मद्रास में राजा जी ने अगर कुछ तबदीली करने की कोशिश भी की तो नई सरकार ने उसे ख़तम कर के पुराना ढर्रा फिर जारी कर दिया ! नया राज, पुरानी तालीम !

इसलिये हम अपने देश के शासकों से अपील करना चाहते है कि अगर उन्हें सचमुच आजकल की तालीम से नफ़रत है तो इसके बदलने के लिये मुल्क के मौजूदा सियासी और आर्थिक ढांचे को बदलना चाहिये. यह ढांचा ही निकम्मा है. इसके तबदील होने पर तालीम आप से आप तबदील हो जायगी.

—सुरेशराम भाई

28. 10. '54

رہی ہے اور اس کے روکنے کی کوئی کوشش نہیں کی جاتی ۔ اور اگر رکاوٹیں ہیں جنکی وجہ سے اس تعلیم کے علاوہ کوئی دوسرا چارہ نہیں ہے تو پھر اس تعلیم کو ناحق کیوں کوسا جاتا ہے ۔ اس کا بہت خراب اثر ان لوگوں پر پڑتا ہے جو آج یہ تعلیم حاصل کرتے ہیں یا کراتے ہیں ۔ ہم یہ نہیں مانتے کہ پنڈت نہرو نے اس طرح کی بات کیول جذبہ یا غصہ میں آکر کہہ دی ہوگی' کیونکہ وہ بولنے کی خاطر کبھی نہیں بولتے ہیں ۔ مگر دنیا میں ایک چیز ہوتی ہے جس کا نام ہے "مجبوری" جس کی وجہ سے آدمی ایک بات کو صحیح سمجھکر بھی نہیں کرپاتا اور دوسری بات کو غلط جانتے ہوئے بھی کرتا ہے ۔ ایسے کے لئے ہم بھگوان سے یہی دعا کرتے ہیں کہ اس کے وچار اور عمل میں جو فاصلہ ہے اسے دور کر اور جلد سے جلد اس کے عمل کو اس کے وچار کی راہ پر لا دے ۔

بہت سوچنے پر ایسا لگتا ہے کہ آج کی تعلیم ہے تو نکمی پر آج جو ملک کا سماجی اور آرتھک ڈھانچہ ہے اس کا آئینہ ہے ۔ آج ہمارے سماج میں ہاتھ سے کام کرنے والے کی کوئی عزت نہیں' آبرو نہیں' کم کام کرکے زیادہ تنخواہ پانے والے کا مان ہے' وغیرہ وغیرہ ۔ سرکاری محکموں کو لیجئے' ویاپاری دائروں کو دیکھئے' عام جنتا میں دیکھئے' سب میں یہی پیمانہ قائم ہے ۔ اور یہی خوبی اس تعلیم کی بھی ہے کہ اس کو حاصل کرکے کام سے نفرت پیدا ہو جاتی ہے' اونچی تنخواہ پانے کی تمنا ہونے لگتی ہے اور بنا کام کئے کھانے کو جی چاہتا ہے ۔ اس لئے جب تک سماج کے پیمانے نہیں بدلتے اور سرکار کے نظریہ میں فرق نہیں آتا تب تک اس تعلیم کو بدلنا اسی طرح ناممکن ہے جیسے ببول بوکر گلاب پانے کی امید رکھنا ۔ اگر تعلیم نکمی ہے تو اس کا مطلب یہ ہے کہ اس تعلیم کو چلانے والی سرکار نکمی ہے ۔ ہونا تو یہی چاہئے تھا کہ پرانے راج کے ساتھ پرانی تعلیم کو بھی رخصت کردینا تھا اور نئے راج کے ساتھ نئی تعلیم لانا تھا ۔ لیکن مدراس میں راجا جی نے اگر کچھ تبدیلی کرنے کی کوشش بھی کی تو نئی سرکار نے اسے ختم کر کے پرانا ڈھرا پھر جاری کردیا ! نیا راج' پرانی تعلیم !

اس لئے ہم اپنے دیش کے شاسکوں سے اپیل کرنا چاہتے ہیں کہ اگر انہیں سچ مچ آجکل کی تعلیم سے نفرت ہے تو اس کے بدلنے کے لئے ملک کے موجودہ سیاسی اور آرتھک ڈھانچے کو بدلنا چاہئے ۔ یہ ڈھانچہ ہی نکما ہے ۔ اس کے تبدیل ہونے پر تعلیم آپ سے آپ تبدیل ہو جائیگی ۔

— سریش رام بھائی

28۔10۔54

लिये पढ़ाई के दर्जे और आम जनता के लिये पढ़कर सुनाने के दर्जे चलाये जायें.

2. पंचायतों को मुल्क की पैदावार बढ़ानी चाहिये. जब तक देश की पैदावार नहीं बढ़ती और बेकारी मिटाने की योजनायें नहीं की जातीं तब तक लोगों को उत्साह नहीं आयेगा. हम सुनते हैं कि यहां की पंचायत वाले सड़कें बनाने में लगे हैं जिनमें लोगों को उत्साह नहीं आता. सड़कों का नतीजा यही निकलता है कि शहर वाले गांव वालों को जा कर लूटें.

3. पंचायत वालों को गांव की बेकारी हटानी चाहिये. जैसे स्वराज्य के लिये विदेशी माल का बाईकाट किया गया था उसी तरह गांव में स्वराज्य लाने के लिये शहर से आने वाले मशीन पर बने माल का बाईकाट करना होगा.

4. पैदावार का आधार जमीन है. इस वास्ते कुल जमीन गांव वालों की होनी चाहिये. गांव की जमीन का दोबारा बंटवारा हो और गांव में कोई भी आदमी बेजमीन न रहे.

5. गांव की पंचायतों की ताक़त लोक शक्ति ही है. गांव वालों की मर्जी के मुताबिक़ और गांव वालों की निगरानी में पंचायतें चलनी चाहियें. सरकारी मान्यता मिले या न मिले, इसकी चिंता नहीं. लोग अपनी ताक़त से काम करें. फिर सरकार की जो मदद मिलेगी सो मिलेगी.

सरकारी हाकिम या कारकुन और सार्वजनिक कार्य-कर्ता, हर एक से हमारी अर्ज है कि विनोबा जी के इन सुझावों पर गहराई से विचार करके अमल करें और मुल्क की ताक़त को मजबूत बनायें.

28. 10. 54 —सुरेश रामभाई

"एकदम निकम्मी"

हाल ही में मिरजापूर जिले में विद्यार्थियों के सामने तक़रीर करते हुए प्रधान मन्त्री पन्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि यह तालीम जो आजकल दी जा रही है "एकदम निकम्मी" है. जहां तक हमें याद पड़ता है पन्डित जी ने इस तरह की राय पहली बार नहीं दी है, इसके पेशतर बीसियों दफ़ा वह यही चीज दूसरे शब्दों में कह चुके हैं और जहां तक हमें याद है राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने भी और उनके अलावा दूसरे जिम्मेदार लोगों ने भी इस तरह के ख्याल जाहिर किये हैं. सरदार पटेल भी यही कहा करते थे. मगर आश्चर्य हैरान है कि जब ऊपर से लेकर नीचे तक सब ही इस तरह की बात कहते हैं तो फिर कौन ऐसी रुकावट है कि वही "एकदम निकम्मी" तालीम अभी तक चल रही है, यह

لئے پڑھائی کے درجے اور عام جنتا کے لئے پڑھ کر سنانے کے درجے چلئے جائیں۔

2. پنچایتوں کو ملک کی پیداوار بڑھانی چاہئے۔ جب تک دیش کی پیداوار نہیں بڑھتی اور بیکاری مٹانے کی یوجنائیں نہیں کی جاتیں تب تک لوگوں کو اُتساہ نہیں آئے گا۔ ہم سنتے ہیں کہ یہاں کی پنچایت والے سڑکیں بنانے میں لگے ہیں جن میں لوگوں کو اُتساہ نہیں آتا۔ سڑکوں کا نتیجہ یہی نکلتا ہے کہ شہر والے گاؤں والوں کو جا کر لوٹیں۔

3. پنچایت والوں کو گاؤں کی بیکاری ہٹانی چاہئے۔ جیسے سوراجیہ کے لئے ودیشی مال کا بائیکاٹ کیا گیا تھا اُسی طرح گاؤں میں سوراجیہ لانے کے لئے شہر سے آنے والے مشین پر بنے مال کا بائیکاٹ کرنا ہوگا۔

4. پیداوار کا آدھار زمین ہے۔ اِس واسطے کل زمین گاؤں والوں کی ہونی چاہئے۔ گاؤں کی زمین کا دوبارہ بٹوارہ ہو اور گاؤں میں کوئی بھی آدمی بے زمین نہ رہے۔

5. گاؤں کی پنچایتوں کی طاقت لوک شکتی ہی ہے، گاؤں والوں کی مرضی کے مطابق اور گاؤں والوں کی نگرانی میں پنچایتیں چلنی چاہئیں۔ سرکاری مانیتا ملے یا نہ ملے اِس کی چنتا نہیں۔ لوگ اپنی طاقت سے کام کریں۔ پھر سرکار کی جو مدد ملے سو ملے گی۔

سرکاری حاکم یا کارکن اور سارو جنک کاریہ کرتا' ہر ایک سے ہماری عرض ہے کہ ونوبا جی کے اِن سجھاؤں پر گہرائی سے وچار کرکے عمل کریں اور ملک کی طاقت کو مضبوط بنائیں۔

—سریش رام بھائی 28. 10. '54

"ایکدم نکمی"

حال ہی میں مرزاپور ضلع میں ودیارتھیوں کے سامنے تقریر کرتے ہوئے ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو نے کہا کہ یہ تعلیم جو آجکل دی جا رہی ہے "ایکدم نکمی" ہے۔ جہاں تک ہمیں یاد پڑتا ہے پنڈت جی نے اس طرح کی رائے پہلی بار نہیں دی ہے۔ اِس کے پیشتر بیسیوں دفعہ یہی چیز دوسرے شبدوں میں کہہ چکے ہیں اور جہاں تک ہمیں یاد ہے راشٹرپتی بابو راجیندر پرشاد نے بھی اور اِن کے علاوہ دوسرے ذمہ دار لوگوں نے بھی اِس طرح کے خیال ظاہر کئے ہیں۔ سردار پٹیل بھی یہی کہا کرتے تھے۔ مگر عقل حیران ہے کہ جب اوپر سے لیکر نیچے تک سب ہی اِس طرح کی بات کہتے ہیں تو پھر کون ایسی رکاوٹ ہے کہ وہی "ایکدم نکمی" تعلیم ابھی تک چل رہی ہے، یہ

के लिये पुलिस की इम्दाद लेने की ताक़त मिल जायेगी. नतीजा यह होने वाला है कि आज जो गांव के अन्दर भाई-चारा या प्रेम और ईमान बाक़ी है वह भी मिट जाएगा और आज जिस तरह लखनऊ या दिल्ली में नेताओं में रस्साकशी चलती है उसी तरह गांव गांव में भी चलने लगेगी, बल्कि कहीं ज्यादा बदतर और शर्मनाक सूरत में. आख़िर इसकी वजह क्या है ? सरकारी या कांग्रेसी नज़रिये में कहां चूक है ? जैसा हमने अभी कहा, इनकी निगाह में पंचायत हाकिम है, न कि सेवक. दूसरे शब्दों में, आप पंचायतों को सियासी व क़ानूनी आज़ादी जितनी चाहे दे दीजिये लेकिन अगर उसी दरजे तक आर्थिक आज़ादी नहीं देते हैं तो उनकी वही हालत होगी जैसे कि बिना बुनियाद वाले मकान की होती है. वह ढह जाता है और उसमें जो रहता है उसको भी दबा कर ख़तम कर देता है.

इसलिये हमारी साफ़ राय है कि जब तक गांव गांव को आर्थिक आज़ादी नहीं दी जाती तब तक यह सारी कोशिशें बेकार ही साबित होने वाली हैं. आर्थिक आज़ादी से हमारा मतलब यह है कि गांव की बुनियादी ज़रूरत की चीज़ें, जैसे कपड़ा, गुड़, शक्कर, तेल, जूता, दवा दारू, तालीम वग़ैरा में हर गांव अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये और गांव सभा को यह आज़ादी हासिल हो कि अगर इस तरह का माल बाहर से आए तो उसको आने से रोक दे. अगर गांव में माल बाहर से आता चला जाता है तो गांव में बेरोज़गारी बनी रहेगी, चोरी डकैती चलेंगी और आपसी फ़र्क़ बढ़ेंगे. इसके अलावा गांव की तालीम पर भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता. तालीम से हमारी मन्शा किताबी पढ़ाई से नहीं है बल्कि सदाचार और लोक मरयादा की तालीम से है. पुराने ज़माने में संतों और साधुओं ने जो घूम घूम कर ज्ञान फैलाया और जिसे गांव वालों ने कान के ज़रिये हासिल किया उससे जो उनके समझ का माद्दा बढ़ा है उसका मुक़ाबला शहर वाले अभी भी नहीं कर सकते हैं. लेकिन इधर दो सौ साल से वह तालीम बंद सी हो गई है और कोई नया ज्ञान वहां नहीं पहुंच रहा है. न पुराना ही ताज़ा कराया जा रहा है. इस तरह नैतिक और आर्थिक दोनों बाज़ुओं की तरफ़ जब तक हमारी सरकारें या पंचायतें तवज्जह नहीं देंगी तब तक वह गांव की बेहतरी बहुद के ऊपर सफ़ेदी बराबर भी नहीं कर सकतीं.

हम आचार्य विनोबा जी के उन सुझावों को यहां देते हैं जो उन्होंने चम्पारन ज़िला के सगोली मुक़ाम पर पिछले जून में पंचायत के कारकुनों के आगे रक्खे थे. इनका कहना है :—

1. जगह जगह अभ्यास मंडल यानी पढ़ाई घर होने चाहियें जिसमें इस ज़माने के नए विचार भी बताए जायें और सर्वोदय व गांधी साहित्य और कुछ धार्मिक किताबों की तालीम भी दी जाये. ख़ासकर छोटी उमर वालों के

کے لئے پولیس کی امداد لینے کی طاقت مل جائے گی. نتیجہ یہ ہونے والا ہے کہ آج جو گاؤں کے اندر بھائی چارا یا پریم اور ایمان باقی ہے وہ بھی مٹ جائے گا اور آج جس طرح لکھنؤ یا دلی میں نیتاؤں میں رسہ کشی چلتی ہے اسی طرح گاؤں گاؤں میں بھی چلنے لگے گی، بلکہ کہیں زیادہ بدتر اور شرمناک صورت میں. آخر اس کی وجہ کیا ہے ؟ سرکاری یا کانگریسی نظریہ میں کہاں چوک ہے ؟ جیسا ہم نے ابھی کہا، ان کی نگاہ میں پنچایت حاکم ہے، نہ کہ سیوک. دوسرے شبدوں میں، آپ پنچایتوں کو سیاسی و قانونی آزادی جتنی چاہے دے دیجئے، لیکن اگر اسی درجے تک آرتھک آزادی نہیں دیتے ہیں تو ان کی وہی حالت ہوگی جیسے کہ بنا بنیاد والے مکان کی ہوتی ہے. وہ ڈھ جاتا ہے اور اس میں جو رہتا ہے اس کو بھی دبا کر ختم کر دیتا ہے.

اس لئے ہماری صاف رائے ہے کہ جب تک گاؤں گاؤں کو آرتھک آزادی نہیں دی جاتی تب تک یہ ساری کوششیں بیکار ہی ثابت ہونے والی ہیں. آرتھک آزادی سے ہمارا مطلب یہ ہے کہ گاؤں کی بنیادی ضرورت کی چیزیں، جیسے کپڑا، گڑ، شکر، تیل، جوتا، دوا دارو، تعلیم وغیرہ میں ہر گاؤں اپنے پیروں پر کھڑا ہونا چاہئے اور گاؤں سبھا کو یہ آزادی حاصل ہو کہ اگر اس طرح کا مال باہر سے آئے تو اس کو آنے سے روک دے. اگر گاؤں میں مال باہر سے آتا چلا جاتا ہے تو گاؤں میں بیروزگاری بنی رہے گی، چوری ڈکیتی چلیں گی اور آپسی فرق بڑھیں گے. اس کے علاوہ گاؤں کی تعلیم پر بھی کوئی دھیان نہیں دیا جاتا. تعلیم سے ہماری منشا کتابی پڑھائی سے نہیں ہے بلکہ سداچار اور لوک مریادا کی تعلیم سے ہے. پرانے زمانے میں سنتوں اور سادھوؤں نے جو گھوم گھوم کر گیان پھیلایا اور جسے گاؤں والوں نے کان کے ذریعہ حاصل کیا اس سے جو ان کے سمجھ کا مادہ بڑھا ہے اس کا مقابلہ شہر والے ابھی بھی نہیں کر سکتے ہیں. لیکن ادھر دو سو سال سے وہ تعلیم بند سی ہو گئی ہے اور کوئی نیا گیان وہاں نہیں پہنچ رہا ہے نہ پرانا ہی تازہ کرایا جا رہا ہے. اس طرح نیتک اور آرتھک دونوں بازوؤں کی طرف جب تک ہماری سرکاریں یا پنچایتیں توجہ نہیں دیں گی تب تک وہ گاؤں کی بہتری [illegible] کے اوپر سفیدی برابر بھی نہیں کر سکتیں.

ہم آچاریہ ونوبا جی کے ان سجھاؤں کو یہاں دیتے ہیں جو انہوں نے چمپارن ضلع کے سگولی مقام پر پچھلے جون میں پنچایت کے کارکنوں کے آگے رکھے تھے. ان کا کہنا ہے :—

1. جگہ جگہ ابھیاس منڈل یعنی پڑھائی گھر ہونا چاہئیں جس میں اس زمانہ کے نئے وچار بھی بتائے جائیں اور سروودیہ و گاندھی ساہتیہ اور کچھ دھارمک کتابوں کی تعلیم بھی دی جائے. خاص کر چھوٹی عمر والوں کے

गांव हैं. यू. पी. पंचायत राज एक्ट 1947 के मुताबिक़ आज यू० पी० में 36,139 ग्राम पंचायतें और 8,543 अदालत पंचायत हैं. गांव के इन्तज़ाम में गांव सभा के अधिकारों में से कुछ ख़ास ख़ास यह हैं :—

1. सड़कों की रखवाली और मरम्मत, रोशनी, दवा-दारू, तालीम, सफ़ाई और मेलों का इन्तज़ाम.

2. पेड़ लगाना, गांव की हिफ़ाज़त के लिये चौकीदार या दूसरे लोगों का बन्दोबस्त करना, नये पुल और पुलियां बनवाना.

3. अपने काम के लिये कोई भी ज़मीन हासिल कर लेना.

4. लगान व दूसरे सरकारी टैक्स वसूल करना, गांव के लोगों पर नये तरह से नये टैक्स लगाना.

5. प्रदेश की सरकार से ज़रूरत पड़ने पर रुपया लेना और उसके साथ अपने काम के बढ़ाने के सिलसिले में कोई मुआहिदा करना या ठेका लेना.

इस तरह, कहीं ज्यादा, कहीं कम, दूसरी रियासतों में भी क़दम उठाये गये हैं. लेकिन जैसा हमारे प्रेमी पाठक जानते हैं इन पंचायतों या गांव सभाओं की वजह से न तो गांव के झगड़े कम हुये, न उनमें अमन हुआ न खुशहाली आई. उलटे गांव के रोज़गार और भी ठंडे पड़ गये, चोरी वग़ैरा बुरे काम भी ज्यादा होने लगे और सबसे दर्दनाक बात जो हुई वह यह कि देहात के लोगों के दिलों में आपस में दरारें और ज्यादा पैदा हो गईं—

मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की

लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि पंचायत नाम की वह अज़मत है कि रह रह कर हर सरकार उसकी दुहाई देती है और उसके ऊपर अपने को क़ुर्बान करने की हामी भरती है. इस सिलसिले में हिन्दुस्तान के कुल प्रदेशों के उन मिनिस्टरों की जिनका पंचायत से वास्ता है, एक कान्फ्रेंस 25, 26, 27 जून को शिमला में हुई. इधर कांग्रेस वरकिंग कमेटी ने भी एक कमेटी पंचायतों की मौजूदा हालत की जांच करने और आगे के लिये सुझाव देने के लिये बनाई. इन तमाम कान्फ्रेन्सों और कमेटियों में हसबे मामूल बातचीत हुई. कमेटी की रिपोर्ट भी निकल चुकी है. लेकिन इन सब में एक ही जज़बा काम करता दिखता है या कहना चाहिये एक ही चीज़ पर ज्यादा ज़ोर दिया गया है. वह यह कि पंचायत किस तरह से गांव की बेहतर से बेहतर हाकिम बने यानी गांव को दबाकर अपने क़बज़े में रखे. लेकिन दूसरे पहलू पर कि वह गांव के लोगों की सच्ची से सच्ची ख़िदमतगार किस तरह बने, कोई ध्यान नहीं दिया जाता. सूरत यह नज़र आती है कि जल्द ही हमारे देहात की पंचायतों या गांव सभाओं को बन्दूक़ व हथियार रखने की एक तरफ़ से और ज्यादा से ज्यादा टैक्स लगाने की और उसे वसूल करने

گاؤں ھیں ۔ یو ۔ پی پنچایت راج ایکٹ 1947 کے مطابق آج یو ۔ پی ۔ میں 36,139 گرام پنچایتیں اور 8,543 عدالت پنچایت ھیں ۔ گاؤں کے انتظام میں گاؤں سبھا کے ادھیکاروں میں سے کچھ خاص خاص یہ ھیں :—

1. سڑکوں کی رکھوالی اور مرمت، روشنی، دوا دارو، تعلیم، صفائی اور میلوں کا انتظام ۔

2. پیڑ لگانا، گاؤں کی حفاظت کے لئے چوکیدار یا دوسرے لوگوں کا بندوبست کرنا، نئے پل اور پلیاں بنوانا ۔

3. اپنے کام کے لئے کوئی بھی زمین حاصل کرلینا ۔

4. لگان و دوسرے سرکاری ٹیکس وصول کرنا، گاؤں کے لوگوں پر نئے طرح سے نئے ٹیکس لگانا ۔

5. پردیش کی سرکار سے ضرورت پڑنے پر روپیہ لینا اور اس کے ساتھ اپنے کام کے بڑھانے کے سلسلہ میں کوئی معاہدہ کرنا یا ٹھیکا لینا ۔

اِس طرح، کہیں زیادہ، کہیں کم، دوسری ریاستوں میں بھی قدم اُٹھائے گئے ھیں ۔ لیکن جیسا ھمارے پریمی پاٹھک جانتے ھیں اِن پنچائتوں یا گاؤں سبھاؤں کی وجہ سے نہ تو گاؤں کے جھگڑے کم ھوئے، نہ اِن میں امن ھوا اور نہ خوشحالی آئی ۔ اُلٹے گاؤں کے روزگار اور بھی ٹھنڈے پڑ گئے، چوری وغیرہ برے کام بھی زیادہ ھونے لگے اور سب سے دردناک بات جو ھوئی وہ یہ کہ دیہات کے لوگوں کے دلوں میں آپس میں دراریں اور زیادہ پیدا ھوگئیں—

مرض بڑھتا گیا جوں جوں دوا کی

لیکن اِس سے انکار نہیں کیا جا سکتا کہ پنچایت نام کی وہ عظمت ھے کہ رہ رہ کر ھر سرکار اِس کی دھائی دیتی ھے اور اس کے اوپر اپنے کو قربان کرنے کی حامی بھرتی ھے ۔ اِس سلسلہ میں ھندستان کے کل پردیشوں کے اُن منسٹروں کی جن کا پنچایت سے واسطہ ھے، ایک کانفرنس 25, 26, 27 جون کو شملہ میں ھوئی ۔ اِدھر کانگریس ورکنگ کمیٹی نے بھی ایک کمیٹی پنچایتوں کی موجودہ حالت کی جانچ کرنے اور آگے کے لئے سجھاؤ دینے کے لئے بنائی ۔ اِن تمام کانفرنسوں اور کمیٹیوں میں حسب معمول بات چیت ھوئیں ۔ کمیٹی کی رپورٹ بھی نکل چکی ھے ۔ لیکن اِن سب میں ایک ھی جذبہ کام کرتا دیکھتا ھے یا کہنا چاھئے ایک ھی چیز پر زیادہ زور دیا گیا ھے ۔ وہ یہ کہ پنچایت کسی طرح سے گاؤں کی بہتر سے بہتر حاکم بنے یعنی گاؤں کو دبا کر اپنے قبضہ میں رکھے ۔ لیکن دوسرے پہلو پر کہ وہ گاؤں کے لوگوں کی سچی سے سچی خدمتگار کس طرح بنے، کوئی دھیان نہیں دیا جاتا ۔ صورت یہ نظر آتی ھے کہ جلد ھی ھمارے دیہات کی پنچایتوں یا گاؤں سبھاؤں کو بندوق و ھتھیار رکھنے کی ایک طرف سے اور زیادہ سے زیادہ ٹیکس لگانے کی اور اسے وصول کرنے

रास्ता है. पर मैनदे फ्रान्स मालूम होता है महात्मा गांधी की तरह अपने देश को बाहर के और अन्दर के दोनों तरह के पापों से छुड़ाना चाहते हैं. इसमें सन्देह नहीं मैनदे फ्रांस इस समय की दुनिया के बड़े से बड़े आदमियों में से हैं.

यह सच है कि फ्रान्स अभी तक साम्राजशाही के पाप से मुक्त नहीं हुआ है. इस नोट के लिखे जाने के समय तक फ्रान्स की तरफ से अफरीका के देश भक्तों पर जुल्म हो रहे हैं. फिर भी हम फ्रान्स को श्री मैनदे फ्रांस के सामने आने पर दिल से बधाई देते हैं और उनकी कोशिशों की कामयाबी के लिये दुआ करते हैं.

11. 11. '54 —सुन्दरलाल

पंचायतों की आज़ादी

एक ज़माना था जब हमारे पुरखे कहा करते थे कि "कोई नृप होय हमें क्या हानी." इसका मतलब यह था कि राजा कोई भी क्यों न हो, जनता का अपना काम अपने ढंग से चलता था. हर गांव काफ़ी हद तक खुदमुख्तार था और बाहर वाले उसकी आज़ादी में दखल नहीं डाल पाते थे. उस ज़माने की खास बात यह थी कि गांव गांव न केवल खेती बल्कि दस्तकारियां भी चलती थीं, गांव की ज़रूरत का माल—जैसे कपड़ा, तेल, दवा दारू वग़ैरा—गांव में ही तैयार हो जाता था. दूसरी खास बात यह थी कि गांव के लोगों के झगड़े गांव के अन्दर ही मिल बैठकर तय हो जाते थे, रात को गांव की पंचायत लगती थी और एक मत से जो उसका फ़ैसला होता था वह सब को मंज़ूर होता था. लेकिन धीरे धीरे पैसे का चलन बढ़ा, गांव में बाहर का माल आना जाना शुरू हुआ और गांव की खुदमुख्तारी खतम होने लगी. अंग्रेज़ों के ज़माने में गांव की इन दोनों खासियतों को सख्त चोट पहुंची और हमारे गांव तबाह हो गये. उनका धन्धा खतम हो गया, दस्तकारी मानो मिट ही गई और पंचायतों की भी वह शान न रही. गांव वालों के झगड़े शहर की अदालतों में आने लगे और पंच परमेश्वर नाम भर के लिये रह गये. जिन दिनों हम आज़ादी के लिये अंग्रेज़ों के खिलाफ़ लड़ते थे उन दिनों गांव गांव जाकर कहते थे कि आज़ादी हासिल होने पर गांव की सनअत बढ़ाई जायेगी और यहां की पंचायतों को केवल चलाया ही नहीं जायेगा उन्हें पूरी आज़ादी भी दी जायगी ताकि हमारे गांव अपनी तरक्क़ी और अपनी बेहतरी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ कर सकें.

अंग्रेज़ों के जाने के बाद देहली में और सूबों में, सब जगह कांग्रेस की अपनी हुकूमत क़ायम हुई तो उसने पंचायत का सवाल भी हाथ में उठाया. हम यहां उत्तर प्रदेश की मिसाल सामने रखेंगे. उत्तर प्रदेश में एक लाख से कुछ ऊपर (1,01,500)

راستہ ھے ۔ پر مینڈیس فرانس معلوم ہوتا ھے مہاتما گاندھی کی طرح اپنے دیش کو باہر کے اور اندر کے دونوں طرح کے پاپوں سے چھڑانا چاھتے ھیں ۔ اِس میں سندیہہ نہیں مینڈیس فرانس اِس سمے کی دنیا کے بڑے سے بڑے آدمیوں میں سے ھیں ۔

یہ سچ ھے کہ فرانس ابھی تک سامراج‌شاھی کے پاپ سے مکت نہیں ہوا ھے ۔ اِس نوٹ کے لکھے جانے کے سمے تک فرانس کی طرف سے افریقہ کے دیش بھگتوں پر ظلم ہو رھے ھیں ۔ پھر بھی ھم فرانس کو شری مینڈیس فرانس کے سامنے آنے پر دل سے بدھائی دیتے ھیں اور اُن کی کوششوں کی کامیابی کے لئے دعا کرتے ھیں ۔

—سندر لال 11. 11. '54

پنچایتوں کی آزادی

ایک زمانہ تھا جب ھمارے پرکھے لوگ کہا کرتے تھے کہ "کوئی نرپ ہوئے ھمیں کیا ھانی۔" اِس کا مطلب یہ تھا کہ راجا کوئی بھی کیوں نہ ھو، جنتا کا اپنا کام اپنے ڈھنگ سے چلتا تھا ۔ ھر گاؤں کافی حد تک خود مختار تھا اور باہر والے اس کی آزادی میں دخل نہیں ڈال پاتے تھے۔ اس زمانہ کی خاص بات یہ تھی کہ گاؤں گاؤں نہ کیول کھیتی بلکہ دستکاریاں بھی چلتی تھیں، گاؤں کی ضرورت کا مال—جیسے کپڑا، تیل، دوا دارو وغیرہ گاؤں میں ھی تیار ھو جاتا تھا۔ دوسری خاص بات یہ تھی کہ گاؤں کے لوگوں کے جھگڑے گاؤں کے اندر ھی مل بیٹھ کر طے ھوجاتے تھے، رات کو گاؤں کی پنچایت لگتی تھی اور ایک مت سے جو اس کا فیصلہ ھوتا تھا وہ سب کو منظور ھوتا تھا ۔ لیکن دھیرے دھیرے پیسے کا چلن بڑھا، گاؤں میں باھر کا مال آنا جانا شروع ھوا اور گاؤں کی خود مختاری ختم ھونے لگی ۔ انگریزوں کے زمانہ میں گاؤں کی اِن دونوں خاصیتوں کو سخت چوٹ پہونچی اور ھمارے گاؤں تباہ ھوگئے ۔ اُن کا دھندا ختم ھوگیا، دستکاری مانو مٹ ھی گئی اور پنچایتوں کی بھی وہ شان نہ رھی ۔ گاؤں والوں کے جھگڑے شہر کی عدالتوں میں آنے لگے اور پنچ پرمیشور نام بھر کے لئے رہ گئے ۔ جن دنوں ھم آزادی کے لئے انگریزوں کے خلاف لڑتے تھے اُن دنوں گاؤں گاؤں جاکر کہتے تھے کہ آزادی حاصل ھونے پر گاؤں کی صنعت بڑھائی جائیگی اور یہاں کی پنچایتوں کو کیول چلایا ھی نہیں جائیگا، انہیں پوری آزادی بھی دی جائیگی تاکہ ھمارے گاؤں اپنی ترقی اور اپنی بہتری اپنی مرضی کے مطابق کرسکیں ۔

انگریزوں کے جانے کے بعد جب دھلی میں اور صوبوں میں، سب جگہ کانگریس کی اپنی حکومت قائم ھوئی تو اُس نے پنچایت کا سوال بھی ھاتھ میں اُٹھایا۔ ھم یہاں اُترپردیش کی مثال سامنے رکھینگے ۔ اُترپردیش میں ایک لاکھ سے کچھ اوپر (1,01,500)

गए थे कि पांच दिन के अन्दर यानी अमुक तारीख के बारह बजे रात तक या इस सवाल का फ़ैसला कर दूंगा या अपने ओहदे से इस्तीफ़ा दे दूंगा. दुनिया की कुछ बड़ी बड़ी राज-शक्तियों ने, जिनका असली मामले से कोई सम्बन्ध तक नहीं था, बड़ी बड़ी रुकावटें डालीं. दुनिया हैरान थी कि पांच दिन में क्या हो सकेगा. पर मैनदे फ़्रान्स ने समय के अन्दर फ़ैसला करा कर ही छोड़ा और फ़ैसला भी वह जो हिन्द चीन की जनता के हक़ में और दुनिया की शान्ति के हक़ में था. बात पुरानी हो चुकी. पर हम यहां इसे इसलिये दुहरा रहे हैं कि किसी भी साम्राजवादी देश का, और फ़्रान्स अभी तक साम्राजवादी देशों में गिना जाता है और है, इस तरह पक्के इरादे के साथ अपने अधीन देशों को आज़ाद होने में मदद देना कोई मामूली बात नहीं है. इस नेक काम का सेहरा सब से ज़्यादा मैनदे फ़्रान्स ही के सर है.

हमारे देश के अन्दर फ़्रान्स के जो पुराने क़बज़े चले आ रहे थे उनका इस शान्ति और सुन्दरता के साथ आज़ाद किया जाना और भारत में मिलाया जाना भी उन नेक कामों में से है जिनका काफ़ी यश मैनदे फ़्रान्स को मिलना चाहिये.

हाल में अख़बारों में एक और ख़बर छपी है जो ऊपर की दोनों बातों से किसी तरह कम महत्व की नहीं है. योरप के देशों में शराब का आम और खुला चलन है. उन सब देशों में इने गिने शराब न पीने वाले भी हैं, पर गिनती की निगाह से दाल में नमक जितने भी नहीं. मैनदे फ़्रान्स ने पहले ख़ुद शराब की जगह दूध पीना शुरू किया. उसके बाद उन्होंने अपने देश के अन्दर शराब पर रोक लगाने का बीड़ा उठाया.

कहते हैं पिछले जंग के बाद से शराब का व्योहार फ़्रांस में बहुत बढ़ गया है. उस छोटे से देश के अन्दर तीस लाख से ऊपर शराब की भट्टियां हैं. कहते हैं पिछले साल वहां पन्द्रह हज़ार आदमी जिगर की ऐसी बीमारियों से मरे जो अधिक शराब पीने से होती हैं. सड़कों की दुर्घटनाओं में जितने आदमी उस साल मरे उन में साठ फ़ीसदी शराब के नशे में थे. सन 1900 में जितनी शराब फ़्रान्स में बनी थी उससे पिछले साल पन्द्रह गुना ज़्यादा तैयार हुई. मैनदे फ़्रान्स की तजवीज़ है कि शराब की भट्टियों की तादाद बहुत कम कर दी जावे, शराब की तैयारी और बिकरी पर टैक्स बढ़ा दिया जावे, शराब के भबकों पर मीटर लगा दिये जावें, शराब की दुकानें कम कर दी जावें, हफ़्ते के कुछ दिन ऐसे तय कर दिये जावें जब देश में कोई शराब न पी सके, शराब पी कर फिरने वालों को कड़ी सज़ाएं दी जावें, वग़ैरह वग़ैरह.

देश भर में मैनदे फ़्रान्स की इन तजवीज़ों का ज़बरदस्त विरोध शुरू हो गया है. आज तक योरप के शायद ही किसी शासक को इस तरह की बात सूझी हो. इसकी हिम्मत कर बैठना और भी बड़ी बात है. सुधार का रास्ता बहुत कठिन

گئے تھے کہ پانچ دن کے اندر یعنی امک تاریخ کے بارہ بجے رات تک یا اِس سوال کا فیصلہ کردونگا یا اپنے عہدے سے استعفیٰ دے دونگا. دنیا کی کچھ بڑی بڑی راج شکتیوں نے، جن کا اصلی معاملے سے کوئی سمبندھ تک نہیں تھا، بڑی بڑی رکاوٹیں ڈالیں. دنیا حیران تھی کہ پانچ دن میں کیا ہوسکے گا. پر مینڈیس فرانس نے سمے کے اندر فیصلہ کرا کر ہی چھوڑا اور فیصلہ بھی وہ جو ہند چین کی جنتا کے حق میں اور دنیا کی شانتی کے حق میں تھا. بات پرانی ہوچکی. پر ہم یہاں اِسے اِس لئے دہرا رہے ہیں کہ کسی بھی سامراج وادی دیش کا، اور فرانس ابھی تک سامراج وادی دیشوں میں گنا جاتا ہے اور ہے، اِس طرح پکے اِرادے کے ساتھ اپنے آدھین دیشوں کو آزاد ہونے میں مدد دینا کوئی معمولی بات نہیں ہے. اِس نیک کام کا سہرا سب سے زیادہ مینڈیس فرانس ہی کے سر ہے.

ہمارے دیش کے اندر فرانس کے جو پرانے قبضے چلے آرہے تھے اُن کا اِس شانتی اور سندرتا کے ساتھ آزاد کیا جانا اور بھارت میں ملایا جانا بھی اُن نیک کاموں میں سے ہے جن کا کافی یش مینڈیس فرانس کو ملنا چاہئیے.

حال میں اخباروں میں ایک اور خبر چھپی ہے جو اوپر کی دونوں باتوں سے کسی طرح کم مہتو کی نہیں ہے. یورپ کے دیشوں میں شراب کا عام اور کھلا چلن ہے. اُن سب دیشوں میں اِنے گنے شراب نہ پینے والے بھی ہیں، پر گنتی کی نگاہ سے دال میں نمک جتنے بھی نہیں. مینڈیس فرانس نے پہلے خود شراب کی جگہ دودھ پینا شروع کیا. اُس کے بعد اُنھوں نے اپنے دیش کے اندر شراب پر روک لگانے کا بیڑا اُٹھایا.

کہتے ہیں پچھلے جنگ کے بعد سے شراب کا بیوہار فرانس میں بہت بڑھ گیا ہے. اُس چھوٹے سے دیش کے اندر تیس لاکھ سے اوپر شراب کی بھٹیاں ہیں. کہتے ہیں پچھلے سال وہاں پندرہ ہزار آدمی جگر کی ایسی بیماریوں سے مرے جو ادھک شراب پینے سے ہوتی ہیں. سڑکوں کی درگھٹناؤں میں جتنے آدمی اُس سال مرے اُن میں ساٹھ فیصدی شراب کے نشے میں تھے. سن 1900 میں جتنی شراب فرانس میں بنی تھی اُس سے پچھلے سال پندرہ گنا زیادہ تیار ہوئی. مینڈیس فرانس کی تجویز ہے کہ شراب کی بھٹیوں کی تعداد بہت کم کر دی جاوے، شراب کی تیاری اور بکری پر ٹیکس بڑھا دیا جاوے، شراب کی بھبکوں پر میٹر لگا دیئے جاویں، شراب کی دوکانیں کم کر دی جاویں، ہفتے کے کچھ دن ایسے طے کر دیئے جاویں جب دیش میں کوئی شراب نہ پی سکے، شراب پی کر پھرنے والوں کو کڑی سزائیں دی جاویں، وغیرہ وغیرہ.

دیش بھر میں مینڈیس فرانس کی اِن تجویزوں کا زبردست ورودھ شروع ہوگیا ہے. آج تک یورپ کے شاید ہی کسی شاسک کو اِس طرح کی بات سوجھی ہو. اِس کی ہمت کر بیٹھنا اور بھی بڑی بات ہے. سدھار کا راستہ بہت کٹھن

किया जाता है. हाल में रूस के एक बड़े साइन्टिस्ट ने कहा है कि यदि योजनाओं के साथ दुनिया का ठीक ठीक प्रबन्ध किया जावे तो छै: अरब से ऊपर इन्सान इस धरती पर अच्छी तरह और आराम से रह सकते हैं. इस समय धरती की कुल आबादी सवा दो अरब के लगभग है. बुराई अधिक बच्चे पैदा होने में नहीं, बुराई हमारी उन 'योजनाओं' में है जिन पर हमें बड़ा नाज़ है, बुराई हमारी आर्थिक व्यवस्था में है.

हमारा हरगिज़ यह मतलब नहीं कि हर आदमी अधिक से अधिक बच्चे पैदा करने में लग जावे. इस मामले में मर्द या औरत जो भी जितना अपने को रोक सके हम उसकी उतनी ही तारीफ़ करेंगे. पर यह रोक थाम अपने अन्दर की होनी चाहिये, नैतिक (इख़लाक़ी) होनी चाहिये, दवाओं, शीशियों और खुली काम तृप्ति की नहीं. इस दूसरी तरह की रोक थाम को हम दीनी निगाह से पाप और दुनिया की निगाह से जुर्म मानते हैं. महात्मा गांधी ने बच्चे पैदा होने पर दवाओं के ज़रिये इस तरह की रोक थाम को पाप बताते हुए अपने एक लेख में इसे "मारल बैंक्ररप्टसी" यानी "इख़लाक़ी दिवालियापन" या "सदाचार का दिवालियापन" कहा था. राजकुमारी अमृत कौर बरसों महात्मा गांधी के साथ रह चुकी हैं. अब भी हमारे दूसरे शासकों की तरह वह महात्मा गांधी के नाम की दुहाई देती रहती हैं. अमरीका में भी उन्होंने महात्मा गांधी के और अपने सम्बन्ध की चरचा की है. हम इससे अधिक क्या कहें. यदि मिस्टर मुहम्मद अली की बात उस तरफ़ के राजकाजी दिवालियेपन का सबूत है तो राजकुमारी अमृत कौर की बात इस ओर के नैतिक दिवालियापन को साबित करती है. भगवान हम दोनों को और दोनों जगह की आम जनता को इन दोनों तरह के दिवालियेपन से बचावे.

5. 11. '54 —सुन्दरलाल

एक नेक फ़्रान्सीसी नेता

आजकल के फ़्रान्स के बड़े वज़ीर मौंशियर मैनदे फ़्रान्स इस समय दुनिया के नेक से नेक और बड़े से बड़े आदमियों में से हैं. उन्हें अपने देश के शासन की बाग डोर संभाले अभी छै महीने भी नहीं हुए. इस थोड़े से समय में उन्होंने अपनी नेकी और हिम्मत दोनों से दुनिया को चकित कर दिया है और अपने समय की राजनीति पर भी गहरा असर डाला है. हिन्दचीन में फ़्रान्स ही की हुकूमत थी और फ़्रान्स की हुकूमत के ख़िलाफ़ ही वहां के देश भक्तों ने लड़ाई लड़ी थी. फिर भी सारी दुनिया आज इस बात को जानती है कि जनेवा में हिन्दचीन के मामले पर जो अन्तर राष्ट्रीय कानफ़्रेन्स हुई थी उसमें मैनदे फ़्रान्स यह क़सम खाकर

یا جاتا هے ۔ حال میں روس کے ایک بڑے سائنٹسٹ نے کہا هے که یدی یوجناؤں کے ساتھ دنیا کا ٹھیک ٹھیک پربندھ کیا جاوے تو چھ ارب سے اوپر اِنسان اِس دھرتی پر اچھی طرح اور آرام سے رہ سکتے هیں ۔ اِس سمے دھرتی کی کل آبادی سوا دو ارب کے لگ بھگ هے۔ برائی ادھک بچے پیدا کرنے میں نہیں' برائی هماری ان 'یوجناؤں' میں هے جن پر همیں بڑا ناز هے' برائی هماری آرتھک ویوستھا میں هے ۔

همارا هرگز یه مطلب نہیں که هر آدمی ادھک سے ادھک بچے پیدا کرنے میں لگ جاوے ۔ اِس معاملے میں مرد یا عورت جو بھی جتنا اپنے کو روک سکے هم اُس کی اتنی هی تعریف کرینگے ۔ پر یه روک تھام اپنے اندر کی هونی چاهئے' نیتک (اخلاقی) هونی چاهئے' دواؤں' شیشیوں اور کھلی کام ترپتی کی نہیں۔ اِس دوسری طرح کی روک تھام کو هم دینی نگاہ سے پاپ اور دنیا کی نگاہ میں جرم مانتے هیں۔ مہاتما گاندھی نے بچے پیدا هونے پر دواؤں کےذریعه اِس طرح کی روک تھام کو پاپ بتاتے هوئے اپنے ایک لیکھ میں اِسے "مارل بینک رپٹسی" یعنی "اخلاقی دیوالیه پن" یا "سداچار کا دیوالیه پن" کہا تھا۔ راج کماری امرت کور برسوں مہاتما گاندھی کے ساتھ رہ چکی هیں ۔ اب بھی همارے دوسرے شاسکوں کی طرح وہ مہاتما گاندھی کے نام کی دهائی دیتی رهتی هیں۔ امریکه میں بھی انھوں نے مہاتما گاندھی کے اور اپنے سمبندھ کی چرچا کی هے۔ هم اِس سے ادھک کیا کہیں۔ یدی مسٹر محمد علی کی بات اُس طرف کے راج کاجی دیوالیه پن کا ثبوت هے تو راج کماری امرت کور کی بات اِس اور کے نیتک دیوالیه پن کو ثابت کرتی هے ۔ بھگوان هم دونوں کو اور دونوں جگه کی عام جنتا کو اِن دونوں طرح کے دیوالیه پن سے بچاوے ۔

5 . 11 . '54 — سندر لال

ایک نیک فرانسیسی نیتا

آجکل کے فرانس کے بڑے وزیر مرنشیر مینڈیس فرانس اِس سمے دنیا کے نیک سے نیک اور بڑے سے بڑے آدمیوں میں سے هیں ۔ انھیں اپنے دیش کے شاسن کی باگ ڈور سنبھالے ابھی چھ مہینے بھی نہیں هوئے ۔ اِس تھوڑے سے سمے میں اُنھوں نے اپنی نیکی اور همت دونوں سے دنیا کو چکت کر دیا هے اور اپنے سمے کی راج نیتی پر بھی گہرا اثر ڈالا هے ۔ هند چین میں فرانس هی کی حکومت تھی اور فرانس کی حکومت کے خلاف هی وهاں کے دیش بھکتوں نے لڑائی لڑی تھی ۔ پھر بھی ساری دنیا آج اِس بات کو جانتی هے که جینیوا میں هند چین کے معاملے پر جو انتر راشٹریه کانفرنس هوئی تھی اُس میں مینڈیس فرانس یه قسم کھاکر

के पहाड़ खड़े कर लेना न उनके देश की माली हालत को बहुत अच्छा साबित करता है, न हमें मसावात या बराबरी की तरफ़ ले जा सकता है और न दूसरे देशों के लिये लाभ-दायक हो सकता है. पर हम फिर यही कहेंगे कि रूस अपनी जगह खुश रहे, अमरीका अपनी जगह खुश रहे और सब अपनी अपनी जगह खुश रहें और कोई किसी को मिटाने की चिन्ता में न पड़े. इस तरह की कोशिश करना भगवान की इच्छा से लड़ना है और किसी भी देश को किसी तरह फल नहीं सकता.

राजकुमारी अमृत कौर ने जो कुछ कहा वह भी कोई नई बात नहीं. हमने बड़े दुख और लज्जा के साथ पढ़ा था कि भारत के मर्दुमशुमारी कमिश्नर ने अपनी रिपोर्ट में यह साफ़ लिखा है कि अगर साइन्सी तरीक़ों और दवाओं से बच्चों के पैदा होने को न रोका गया तो भारत की आबादी थोड़े ही दिनों में इतनी बढ़ जाएगी कि सरकार के लिये सब को रोटी दे सकना नामुमकिन होगा. उन्होंने भारत सरकार से सिफ़ारिश की थी कि वह इन तरीक़ों का अधिक से अधिक प्रचार करे. हमारी सरकार इसका खूब और खुले प्रचार कर भी रही है. बहुत सी चीज़ों के बाहर के देशों से आने पर यहां रोक थाम है. उन्हें बाहर से लाने के लिये ख़ास परमिट लेने पड़ते हैं. पर हमने बम्बई में अपने व्यापारी दोस्तों से सुना था कि बच्चों की पैदाइश रोकने का सामान उन चीज़ों में से है जो यहां बाहर के देशों से फ़्री जनरल लाइसेन्स यानी खुले आम हर कोई जितना चाहे बिना किसी रोक थाम के मंगा सकता है. इस लज्जाजनक विशय पर हम अधिक नहीं लिखना चाहते. पैदाइश रोकने के इन तरीक़ों से करोड़ों रुपये की दवाएं और गन्दी चीज़ें हर साल देश में बिकने के साथ साथ लोगों को बदचलनी और काम तृप्ति का भी खुला मैदान मिलता है. इस मामले में हमारी भगवान से प्रार्थना है कि हमारे देश के लोग ख़ासकर हमारे गांव के लोग भले ही राजकुमारी के शब्दों में अन्ध विश्वासी बने रहें, पर इस नई तहज़ीब के गन्दे जाल में फंस कर अपने और अपनी नसलों के बदन, चलन और पैसे तीनों को बरबाद न करें.

चीन हम से बड़ा देश है. वहां की आबादी इस समय सत्तर करोड़ है. वहां की कम्युनिस्ट सरकार पैदाइश रोकने का इस तरह का सामान एक पैसे का भी कहीं से नहीं आने देती और न वहां देश में इस तरह का सामान बनता है. वहां की सरकार इस तरह बच्चों की पैदाइश रोकने के बजाय उन माओं का ख़ास आदर करती है और उन्हें इनाम और वज़ीफ़े देती है जिन के बहुत बच्चे हों. दस या बारह बच्चों की मां को वहां देश भर में बड़े आदर की निगाह से देखा जाता है. रूस में भी बहुत बच्चों वाली माओं का इसी तरह का आदर होता है और उनके साथ इसी तरह का व्यवहार

کے پہاڑ کھڑے کر لینا نہ اُن کے دیش کی مالی حالت کو بہت اچھا ثابت کرتا ہے، نہ ہمیں مساوات یا برابری کی طرف لے جا سکتا ہے اور نہ دوسرے دیشوں کے لئے لابھ دایک ہو سکتا ہے۔ پر ہم پھر یہی کہینگے کہ روس اپنی جگہ خوش رہے، امریکہ اپنی جگہ خوش رہے اور سب اپنی اپنی جگہ خوش رہیں اور کوئی کسی کو مٹانے کی چنتا میں نہ پڑے۔ اس طرح کی کوشش کرنا بھگوان کی اچھا سے لڑنا ہے اور کسی بھی دیش کو کسی طرح پھل نہیں سکتا۔

راج کماری امرت کور نے جو کچھ کہا وہ بھی کوئی نئی بات نہیں۔ ہم نے بڑے دکھ اور لجا کے ساتھ پڑھا تھا کہ بھارت کے مردم شماری کمشنر نے اپنی رپورٹ میں یہ صاف لکھا ہے کہ اگر سائنسی طریقوں اور دواؤں سے بچوں کے پیدا ہونے کو نہ روکا گیا تو بھارت کی آبادی تھوڑے ہی دنوں میں اتنی بڑھ جائیگی کہ سرکار کے لئے سب کو روزی دے سکنا ناممکن ہوگا۔ اُنھوں نے بھارت سرکار سے سفارش کی تھی کہ وہ اُن طریقوں کا ادھک سے ادھک پرچار کرے۔ ہماری سرکار اس کا خوب اور کھلے پرچار کر بھی رہی ہے۔ بہت سی چیزوں کے باہر کے دیشوں سے آنے پر یہاں روک تھام ہے۔ اُنھیں باہر سے لانے کے لئے خاص پرمٹ لینے پڑتے ہیں۔ پر ہم نے بمبئی میں اپنے بیوپاری دوستوں سے سنا تھا کہ بچوں کی پیدائش روکنے کا سامان اُن چیزوں میں سے ہے جو یہاں باہر کے دیشوں سے فری جنرل لائسنس یعنی کھلے عام ہر کوئی جتنا چاہے بنا کسی روک تھام کے منگا سکتا ہے۔ اس لجاجنک وشے پر ہم ادھک نہیں لکھنا چاہتے۔ پیدائش روکنے کے اِن طریقوں سے کروڑوں روپئے کی دوائیں اور گندی چیزیں ہر سال دیش میں بکنے کے ساتھ ساتھ لوگوں کو بدچلنی اور کام ترپتی کا بھی کھلا میدان ملتا ہے۔ اس معاملے میں ہماری بھگوان سے پرارتھنا ہے کہ ہمارے دیش کے لوگ خاصکر ہمارے گاؤں کے لوگ بھلے ہی راج کماری کے شبدوں میں اندھ وشواسی بنے رہیں، پر اِس نئی تہذیب کے گندے جال میں پھنسکر اپنے اور اپنی نسلوں کے بدن، چلن اور پیسے تینوں کو برباد نہ کریں۔

چین ہم سے بڑا دیش ہے۔ وہاں کی آبادی اِس سمے ستر کروڑ ہے۔ وہاں کی کمیونسٹ سرکار پیدائش روکنے کا اِس طرح کا سامان ایک پیسے کا بھی کہیں سے نہیں آنے دیتی اور نہ وہاں دیش میں اِس طرح کا سامان بنتا ہے۔ وہاں کی سرکار اِس طرح بچوں کی پیدائش روکنے کے بجائے اُن ماؤں کا خاص آدر کرتی ہے اور اُنھیں انعام اور وظیفے دیتی ہے جن کے بہت بچے ہوں۔ دس یا بارہ بچوں کی ماں کو وہاں دیش بھر میں بڑے آدر کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے۔ روس میں بھی بہت بچوں والی ماؤں کا اسی طرح کا آدر ہوتا ہے اور اُن کے ساتھ اسی طرح کا برتاؤ

मुसलमान समझे जाने वाले लोगों से ज़्यादा सच्चे मुस्लिम और सच्चे मोमिन साबित होंगे.

जहां तक मज़हबी आज़ादी का सवाल है ताशक़न्द की एक बड़ी मसजिद में—और उस शहर में बहुत सी सुन्दर मसजिदें हैं—इमाम के ठीक पीछे खड़े होकर हमने ख़ुद ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी है. सैकड़ों मुसलमान हमारे पीछे थे. मसजिद का सहन ठसाठस भरा हुआ था. हमने उनकी अरबी लायब्रेरी देखी, स्कूल देखा, मज़हबी तालीम देखी. हम कह सकते हैं कि इस वक़्त अगर कहीं दुनिया में कामिल मज़हबी आज़ादी है तो सोवियत रूस और कम्युनिस्ट चीन में है. अंग्रेज़ों के क़ायम किये कालिजों से निकले हुए बहुत से मुसलमान बाबुओं के इस्लाम के मुक़ाबले में उनका इस्लाम कहीं ज़्यादा मुस्तहकिम है.

हम यहां रूस और अमरीका का मुक़ाबला करने नहीं बैठे, न हमें इस मुक़ाबले से कोई मतलब है. हम चाहते हैं कि रूस अपनी जगह ख़ुश रहे और अमरीका अपनी जगह ख़ुश रहे और दुनिया के सब देश अपनी अपनी जगह ख़ुश रहें, और अपनी अपनी चाल चलें, जो उन्हें पसन्द हो. कोई दूसरे के काम में दख़ल न दे. कोई किसी के साथ ज़बरदस्ती न करे. यही सच्ची आज़ादी का मतलब है. यही इनसानी बराबरी की बुनियाद हो सकती है. इसी में सब का भला है. इस के ख़िलाफ़ जो लोग भारत में या पाकिस्तान में अमरीका की मदद से कम्युनिस्ट देशों को मिटाना चाहते हैं उन्हें यह भी याद रखना चाहिये कि भले ही अमरीका में बहुत से मज़दूरों के पास दो दो मोटरें हों, जबकि रूस में बहुत सों के पास एक भी मोटर नहीं, लेकिन रूस में शायद ढूंढने से भी कोई बेकार इनसान न मिल सकेगा और अमरीका में वहां की सरकारी रिपोर्टों के अनुसार बेकारों की तादाद जिन्हें सरकारी टुकड़ों पर पालना पड़ता है और जिनके पास कोई काम करने के लिये नहीं है इस समय पचास लाख से ऊपर है. अब अगर हम इक़्तसादी मसावात यानी आर्थिक या माली बराबरी की निगाह से देखें तो कम्युनिस्ट देश इस समय दुनिया में सब से आगे हैं. रूस में भी ग़रीब और अमीर का फ़र्क़ अभी तक है, पर कम, चीन में उससे भी कम, और अमरीका में सब से ज़्यादा. कोई ग़रीब रूसी या चीनी अगर अपने अमीर देश भाई की तरफ़ देखना चाहे तो उसे अपनी टोपी पीछे गिर जाने का डर नहीं हो सकता, जब कि एक अमरीकी ग़रीब अमरीकी अमीर की तरफ़ बिना टोपी पीछे गिराये देख ही नहीं सकता. हमारे हिसाब से मोटे तौर पर चीन के अन्दर कम से कम मज़दूरी और बड़ी से बड़ी तनख़्वाह का औसत एक और सात का है, रूस में एक और सत्तर और अमरीका में एक और कई सौ. जगह जगह का [illegible] और दुनिया की मंडियों पर क़ब्ज़ा [illegible] देश के [illegible] के आदमियों का अपने यहां सोने

مسلمان سمجھے جانے والے لوگوں سے زیادہ سچے مسلم اور سچے مومن ثابت ہونگے۔

جہاں تک مذہبی آزادی کا سوال ہے تاشقند کی ایک بڑی مسجد میں—اور اس شہر میں بہت سی سندر مسجدیں ہیں—امام کے ٹھیک پیچھے کھڑے ہوکر ہم نے خود ظہر کی نماز پڑھی ہے۔ سیکڑوں مسلمان ہمارے پیچھے تھے۔ مسجد کا صحن ٹھساٹھس بھرا ہوا تھا۔ ہم نے اُن کی عربی لائبریری دیکھی، اسکول دیکھا، مذہبی تعلیم دیکھی۔ ہم کہہ سکتے ہیں کہ اِس وقت اگر کہیں دنیا میں کامل مذہبی آزادی ہے تو سوویٹ روس اور کمیونسٹ چین میں ہے۔ انگریزوں کے قائم کئے کالجوں سے نکلے ہوئے بہت سے مسلمان بابوؤں کے اِسلام کے مقابلے میں اُن کا اِسلام کہیں زیادہ مستحکم ہے۔

ہم یہاں روس اور امریکہ کا مقابلہ کرنے نہیں بیٹھے، نہ ہمیں اِس مقابلے سے کوئی مطلب ہے۔ ہم چاہتے ہیں کہ روس اپنی جگہ خوش رہے اور امریکہ اپنی جگہ خوش رہے اور دنیا کے سب دیش اپنی اپنی جگہ خوش رہیں، اور اپنی اپنی چال چلیں جو اُنہیں پسند ہو۔ کوئی دوسرے کے کام میں دخل نہ دے۔ کوئی کسی کے ساتھ زبردستی نہ کرے۔ یہی سچی آزادی کا مطلب ہے۔ یہی اِنسانی برابری کی بنیاد ہوسکتی ہے۔ اِسی میں سب کا بھلا ہے۔ اِس کے خلاف جو لوگ بھارت میں یا پاکستان میں امریکہ کی مدد سے کمیونسٹ دیشوں کو مٹانا چاہتے ہیں اُنہیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ بھلے ہی امریکہ میں بہت سے مزدوروں کے پاس دو دو موٹریں ہوں، جب کہ روس میں بہت سوں کے پاس ایک بھی موٹر نہیں، لیکن روس میں شاید ڈھونڈنے سے بھی کوئی بیکار اِنسان نہ مل سکے گا اور امریکہ میں وہاں کی سرکاری رپورٹوں کے انوسار بیکاروں کی تعداد جنہیں سرکاری ٹکڑوں پر پالنا پڑتا ہے اور جن کے پاس کوئی کام کرنے کے لئے نہیں ہے اِس سمے پچاس لاکھ سے اُوپر ہے۔ اب اگر ہم اقتصادی مساوات یعنی آرتھک یا مالی برابری کی نگاہ سے دیکھیں تو کمیونسٹ دیش اِس سمے دنیا میں سب سے آگے ہیں۔ روس میں بھی غریب اور امیر کا فرق ابھی تک ہے پر کم، چین میں اُس سے بھی کم، اور امریکہ میں سب سے زیادہ۔ کوئی غریب روسی یا چینی اگر اپنے امیر دیش بھائی کی طرف دیکھنا چاہے تو اُسے اپنی ٹوپی پیچھے گر جانے کا ڈر نہیں ہوسکتا، جب کہ ایک امریکی غریب امریکی امیر کی طرف بنا ٹوپی پیچھے گرائے دیکھ ہی نہیں سکتا۔ ہمارے حساب سے موٹے طور پر چین کے اندر کم سے کم مزدوری اور بڑی سے بڑی تنخواہ کا اوسط ایک اور سات کا ہے، روس میں ایک اور ستر اور امریکہ میں ایک اور کئی سو۔ جگہ جگہ کا [illegible] کر اور دنیا کی منڈیوں پر قبضہ کرکے کسی دیش کے [illegible] سے آدمیوں کا اپنے یہاں سونے

अपना घर बना हुआ है, जिस पर अपनी दूध देने वाली सुन्दर और तन्दुरुस्त गाएं हैं या दूसरे जानवर पले हुए हैं और जिस पर उनकी अलग छोटी सी खेती बाड़ी और अंगूर की टट्टी है, इस सबकी आमदनी अलग. हमने हिसाब लगा कर देखा कि उज़बेकिस्तान के अन्दर चार पाँच आदमियों के एक छोटे से किसान कुनबे की आमदनी किसी तरह हमारे सिक्कों में दो हज़ार रुपये माहवार से कम नहीं होती, और खाने पीने की चीज़ें मोटे तौर पर दिल्ली या लाहौर से ज़्यादा मंहगी नहीं हैं. इन खाने पीने की चीज़ों की बहुतायत तो वहां है ही. उज़बेकिस्तान के मुसलमान किसानों के घरों में घुस घुसकर हमने अपनी आंखों से उनकी हालत को देखा है. घंटों उनके मर्दों, औरतों और बच्चों से बातें की हैं. उनके साथ खाना खाया है. हम पूरी ज़िम्मेदारी के साथ कह सकते हैं कि उज़बेकिस्तान के वह मुसलमान किसान भारत या पाकिस्तान के एक हज़ार रुपये माहवार तनख़्वाह पाने वाले बाबुओं से कहीं ज़्यादा ख़ुश और ख़ुशहाल हैं. उज़बेकिस्तान में रुई अधिक होती है. सारे रूस को रुई यहीं से जाती है. हमने उनके खेतों में पैदा हुए रुई के डोडों को देखा. हम देख कर दंग रह गए. उनका एक डोडा भारत या पाकिस्तान के अच्छे से अच्छे रुई के डोडों से कम से कम बारह गुना बड़ा तो होता ही है. हमें नहीं मालूम कि मिस्टर मुहम्मद अली और उनके हम-ख़याल लोग किस कम्युनिज़्म को मिटाना चाहते हैं, क्यों मिटाना चाहते हैं और किस बिरते पर मिटाना चाहते हैं. पैसे और तलवार ने आज तक दुनिया में न तारीख़ी ताक़तों यानी इतिहासिक शक्तियों की बाढ़ को रोका और न वह रोक सकते हैं.

हम यहां रूस की, उज़बेकिस्तान की या चीन की तालीम, वहां के बच्चों की देख रेख, वहां के घरेलू धंधों और वहां की कारीगरियों, दस्तकारियों और कारख़ानों की चरचा करके इस नोट को लम्बा करना नहीं चाहते. उज़बेकिस्तान के किसानों की हालत को भी हमने केवल नमूने के तौर पर बयान किया है. हमें आंख खोल कर दुनिया को देखना चाहिये और बड़े दिल से सबको समझने की कोशिश करनी चाहिये.

अब रही मज़हब की बात. रसूले करीम से सैकड़ों बार पूछा गया कि 'इसलाम' किसे कहते हैं, 'मुसलिम' कौन है, 'ईमान' का क्या मतलब है और 'मोमिन' की क्या तारीफ़ है? इस तरह की हदीसें सही बुख़ारी और सही मुसलिम में भरी पड़ी हैं. हमें यक़ीन है कि हमारे यह कहते ही इस तरह की पचासों हदीसें हर पढ़े लिखे मुसलमान को याद आ जायेंगी. यहां उन्हें दुहराने की ज़रूरत नहीं है. हम बड़ी नम्रता और इनकिसार के साथ कहना चाहते हैं कि अगर किसी इनसान के मुस्लिम या मोमिन होने का फ़ैसला इन हदीसों की बिना पर किया जावे तो रूस और चीन के लाखों कम्युनिस्ट कहलाने वाले इनसान भारत या पाकिस्तान के लाखों

اپنا گھر بنا ہوا ہے، جس پر اُن کی دودھ دینے والی سُندر اور تندرست گائیں ہیں یا دوسرے جانور پلے ہوئے ہیں اور جس پر اُن کی الگ چھوٹی سی کھیتی باڑی اور انگور کی ٹٹی ہے، اِس سب کی آمدنی الگ. ہم نے حساب لگا کر دیکھا کہ ازبکستان کے اندر چار پانچ آدمیوں کے ایک چھوٹے سے کسان کنبے کی آمدنی کسی طرح ہمارے سکوں میں دو ہزار روپیہ ماہوار سے کم نہیں ہوتی، اور کھانے پینے کی چیزیں موٹے طور پر دلی یا لاہور سے زیادہ مہنگی نہیں ہیں. اِن کھانے پینے کی چیزوں کی بہتات تو وہاں ہے ہی. ازبکستان کے مسلمان کسانوں کے گھروں میں گھس گھس کر ہم نے اپنی آنکھوں سے اُن کی حالت کو دیکھا ہے. گھنٹوں اُن کے مردوں، عورتوں اور بچوں سے باتیں کی ہیں. اُن کے ساتھ کھانا کھایا ہے. ہم پوری ذمہداری کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ ازبکستان کے وہ مسلمان کسان بھارت یا پاکستان کے ایک ہزار روپیہ ماہوار تنخواہ پانے والے بابوؤں سے کہیں زیادہ خوش اور خوشحال ہیں. ازبکستان میں روئی ادھک ہوتی ہے. سارے روس کو روئی یہیں سے جاتی ہے. ہم نے اُن کے کھیتوں میں پیدا ہوئے روئی کے تونڈوں کو دیکھا. ہم دیکھ کر دنگ رہ گئے. اُن کا ایک ایک تونڈا بھارت یا پاکستان کے اچھے سے اچھے روئی کے تونڈوں سے کم سے کم بارہ گنا بڑا تو ہوتا ہی ہے. ہمیں نہیں معلوم کہ مسٹر محمد علی اور اُن کے ہم خیال لوگ کس کمیونزم کو مٹانا چاہتے ہیں، کیوں مٹانا چاہتے ہیں اور کس برتے پر مٹانا چاہتے ہیں. پیسے اور تلوار نے آج تک دنیا میں نہ تاریخی طاقتوں یعنی اِتہاسک شکتیوں کی باڑھ کو روکا اور نہ روک سکتے ہیں.

ہم یہاں روس کی، ازبکستان کی یا چین کی تعلیم، وہاں کے بچوں کی دیکھ ریکھ، وہاں کے گھریلو دھندوں اور وہاں کی کاریگریوں، دستکاریوں اور کارخانوں کی چرچا کر کے اِس نوٹ کو لمبا کرنا نہیں چاہتے. ازبکستان کے کسانوں کی حالت کو بھی ہم نے کیول نمونے کے طور پر بیان کیا ہے. ہمیں آنکھ کھول کر دنیا کو دیکھنا چاہئے اور بڑے دل سے سب کو سمجھنے کی کوشش کرنی چاہئے.

اب رہی مذہب کی بات. رسول کریم سے سیکڑوں بار پوچھا گیا کہ 'اسلام' کسے کہتے ہیں، 'مسلم' کون ہے، 'ایمان' کا کیا مطلب ہے اور 'مومن' کی کیا تعریف ہے؟ اِس طرح کی حدیثیں صحیح بخاری اور صحیح مسلم میں بھری پڑی ہیں. ہمیں یقین ہے کہ ہمارے یہ کہتے ہی اِس طرح کی پچاسوں حدیثیں ہر پڑھے لکھے مسلمان کو یاد آجائیں گی. یہاں اُنہیں دہرانے کی ضرورت نہیں ہے. ہم بڑی نمرتا اور انکسار کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں کہ اگر کسی انسان کے مسلم یا مومن ہونے کا فیصلہ اِن حدیثوں کی بنا پر کیا جائے تو روس اور چین کے لاکھوں کمیونسٹ کہلانے والے انسان بھارت یا پاکستان کے لاکھوں

कर दिखाई दिया हो कि भारत भी कुछ उसी बे-दीनी और ला-मजहबी की तरफ जा रहा है और भारत को इस गलत रास्ते से हटा कर फिर से ठीक रास्ते पर लाने के लिये उन्हें खुदा और मजहब से इनकार न करने वाली अमरीकी सरकार की मदद कारगर दिखाई देती हो.

खुदा और मजहब का मामला बड़ा नाजुक मामला है. थोड़ी देर के लिये इससे हट कर हम मिस्टर मुहम्मद अली और उनके ख़याल के लोगों से यह कहना चाहते हैं कि वह दुनिया की अब तक की तारीख और इस समय की हालत को पूरी तरह ध्यान में रखते हुए इस सारे सवाल पर ग़ौर करने की कोशिश करें. यह जमाना एक नए और ऊंचे मानी में इनसानी मसावात यानी इनसानी बराबरी का जमाना है. आदमी आदमी के बीच की हजारों बरसों की दीवारें टूट रही हैं. इनसानी दुनिया तेजी के साथ एक होती जा रही है और एक कुनबा बनती जा रही है. हमने कलाम मजीद को बहुत प्रेम और श्रद्धा के साथ अनेक बार पढ़ा है. दुनिया उस तरफ बढ़ रही है जिसे कुरान में "अल्लाह का कुनबा" कहा गया है. हजारों बरस से नीचे दबे हुए इनसान ऊपर आ रहे हैं और बहुत दिनों तक ऊपर रहने वाला को इसी बराबरी को क़ायम करने के लिये कुछ नीचे उतरना पड़ रहा है. यह है दुनिया की आजकल की गति. और यही मशीयते एजदी यानी ईश्वर की इच्छा है. मिस्टर मुहम्मद अली और उनकी तरह सोचने वाले लोगों को, चाहे वह पाकिस्तान में हों या भारत में या कहीं भी, यह मालूम होना चाहिये कि उन कम्युनिस्ट देशों में से जिन्हें वह मिटाना चाह रहे हैं आज सोवियत रूस के अन्दर मुस्लिम देश उजबेकिस्तान में, जिसके शहर समरक़न्द, ताशक़न्द और बुखारा किसी समय दुनिया की तहजीब के मरकज माने जाते थे और जो आज से सौ बरस पहले दुनिया के ग़रीब से ग़रीब और वीरान से वीरान देशों में गिना जाता था, आज रूसी कम्युनिज़म के दौर में एक मामूली किसान को केवल आठ घंटे मेहनत करके शाम को जो मजदूरी मिलती है वह है :— चार सेर आलू, दो सेर फल और सबजी, तीन पाव दूध, पाव भर गोश्त और इन सबके अलावा दस या बारह रूबुल नक़द. एक रूबुल बराबर होता है हिन्दुस्तानी एक रुपये दो आने के. अगर चार या पांच आदमियों के किसी किसान कुनबे में दो आदमी भी—एक मर्द, एक औरत या दो भाई या बाप बेटे—खेत में काम करते हैं तो वह शाम को इसका ठीक दुगना सामान घर लेकर आते हैं. कलेक्टिव फार्म यानी मुश्तरका खेती की पैदावार की बिक्री से यह मजदूरी, सरकार का हिस्सा और सब खर्च देने के बाद जो हर किसान परिवार को नक़द बचता है वह अलग. इस सबके अलावा हर किसान परिवार की कुछ न कुछ अपनी निजी मिलकियत की जमीन भी है जिस पर उस परिवार का

کو دکھائی دیا ہو کہ بھارت بھی کچھ اسی بے دینی اور لامذہبی کی طرف جا رہا ہے اور بھارت کو اس غلط راستے سے ہٹا کر پھر سے ٹھیک راستے پر لانے کے لئے انہیں خدا اور مذہب سے انکار نہ کرنے والی امریکی سرکار کی مدد کارگر دکھائی دیتی ہو۔

خدا اور مذہب کا معاملہ بڑا نازک معاملہ ہے۔ تھوڑی دیر کے لئے اس سے ہٹ کر ہم مسٹر محمد علی اور ان کے خیال کے لوگوں سے یہ کہنا چاہتے ہیں کہ وہ دنیا کی اب تک کی تاریخ اور اس سمے کی حالت کو پوری طرح دھیان میں رکھتے ہوئے اس سارے سوال پر غور کرنے کی کوشش کریں۔ یہ زمانہ ایک نئے اور اونچے معنی میں انسانی مساوات یعنی انسانی برابری کا زمانہ ہے۔ آدمی آدمی کے بیچ کی ہزاروں برسوں کی دیواریں ٹوٹ رہی ہیں۔ انسانی دنیا تیزی کے ساتھ ایک ہوتی جا رہی ہے اور ایک کنبہ بنتی جا رہی ہے۔ ہم نے کلام مجید کو بہت پریم اور شردھا کے ساتھ انیک بار پڑھا ہے۔ دنیا اس طرف بڑھ رہی ہے جیسے قرآن میں "اللہ کا کنبہ" کہا گیا ہے۔ ہزاروں برس سے نیچے دبے ہوئے انسان اوپر آ رہے ہیں اور بہت دنوں تک اوپر رہنے والوں کو اسی برابری کو قائم کرنے کے لئے کچھ نیچے اترنا پڑ رہا ہے۔ یہ ہے دنیا کی آجکل کی گتی۔ اور یہی مشیت ایزدی یعنی ایشور کی اچھا ہے۔ مسٹر محمد علی اور ان کی طرح سوچنے والے لوگوں کو، چاہے وہ پاکستان میں ہوں یا بھارت میں یا کہیں بھی، یہ معلوم ہونا چاہئے کہ ان کمیونسٹ دیشوں میں سے جنہیں وہ مٹانا چاہ رہے ہیں آج سوویت روس کے اندر مسلم دیش ازبکستان میں، جس کے شہر سمرقند، تاشقند اور بخارا کسی سمے دنیا کی تہذیب کے مرکز مانے جاتے تھے اور جو آج سے سو برس پہلے دنیا کے غریب سے غریب اور ویران سے ویران دیشوں میں گنا جاتا تھا، آج روسی کمیونزم کے دور میں ایک معمولی کسان کو کیول آٹھ گھنٹے محنت کر کے شام کو جو مزدوری ملتی ہے وہ ہے :—چار سیر آلو، دو سیر پھل اور سبزی، تین پاؤ دودھ، پاؤ بھر گوشت اور ان سب کے علاوہ دس یا بارہ روبل نقد۔ ایک روبل برابر ہوتا ہے ہندستانی ایک روپیہ دو آنہ کے۔ اگر چار یا پانچ آدمیوں کے کسی کسان کنبہ میں دو آدمی بھی—ایک مرد ایک عورت یا دو بھائی یا باپ بیٹے—کھیت میں کام کرتے ہیں تو وہ شام کو اس کا ٹھیک دوگنا سامان گھر لے کر آتے ہیں۔ کلکٹیو فارم یعنی مشترکہ کھیتی کی پیداوار کی بکری سے یہ مزدوری، سرکار کا حصہ اور سب خرچ دینے کے بعد جو ہر کسان پریوار کو نقد بچتا ہے وہ الگ۔ اس سب کے علاوہ ہر کسان پریوار کی کچھ نہ کچھ اپنی نجی ملکیت کی زمین بھی ہے جس پر اس پریوار کا

अमरीका में मिस्टर मुहम्मद अली और राजकुमारी अमृत कौर

हाल में समाचार पत्रों के अन्दर दो छोटी छोटी खबरें एक साथ छपी थीं. पाकिस्तान के बड़े वजीर मिस्टर मुहम्मद अली और भारत की सेहत वजीर राजकुमारी अमृत कौर दोनों उन दिनों अमरीका में थे. पहली खबर यह थी कि मिस्टर मुहम्मद अली ने वहां यह विचार प्रगट किया कि दुनिया को बचाने के लिये दुनिया से कम्युनिज्म को मिटाना जरूरी है और उसे मिटाने के दो ही साधन हैं—पैसा और तलवार. इसके लिये अमरीका, पाकिस्तान और दूसरे इसी तरह के देशों को मिलकर कोशिश करनी चाहिये. दूसरी खबर यह थी कि राजकुमारी अमृत कौर ने अमरीकी जनता से कहा कि भारत के लोग बड़े कट्टर, हट धर्मी और अन्धविश्वासी हैं, इसी लिये वह बच्चों की पैदाइश को रोकने के साइन्सी तरीक़ों को काम में नहीं लाते. इससे भारत की आबादी बढ़ती जा रही है. यही भारत की सबसे बड़ी मुसीबत है. राजकुमारी अमृत कौर ने अमरीकी जनता को यह भी सूचना दी कि भारत सरकार हजारों अस्पतालों के जरिये और तरह तरह से यह कोशिश कर रही है कि लोग बच्चों की पैदाइश रोकने के इन तरीक़ों को जानें, उनकी क़दर करें और उन्हें काम में लावें. यह कोशिश एक बड़े पैमाने पर गांव गांव में की जा रही है ताकि देश बढ़ती हुई आबादी की इस मुसीबत से बच सके.

मिस्टर मुहम्मद अली के विचार इस मामले में सबको पहले से मालूम थे. राजकुमारी अमृत कौर के विचार पैदाइश रोकने के सम्बन्ध में भी दुनिया से छिपे हुए नहीं थे. फिर भी इन दोनों की यह तक़रीरें हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि पाकिस्तान और भारत किधर जा रहे हैं.

मिस्टर मुहम्मद अली एक ऐसे राज के बड़े वजीर की हैसियत से बोल रहे थे जो अपने को इस्लामी राज कहता है, और जिसे अपने इस्लामी होने का फ़ख़ है. खुद मिस्टर मुहम्मद अली अपने को मुसलमान मानते और कहते हैं. ज़ाहिर है उन्हें खुदा और मजहब को न मानने वाले कम्युनिज्म और कम्युनिस्टों से नाराज़गी है और उन्हें इनसे दुनिया को खतरा दिखाई देता है. इस नास्तिकता और बेदीनी को दुनिया से मिटाने के लिये और खुदा और मजहब को लोगों के दिलों में फिर से जमाने के लिये उन्हें पैसा और तलवार दो ही सबसे अच्छे साधन दिखाई देते हैं. यह भी मुमकिन है कि चीन के बड़े वजीर चाउ-एन-लाई के भारत आने और जवाहर लाल जी के चीन जाने जैसी घटनाओं से और इधर फ़ौलाद के नए कारखाने की बाबत रूस और भारत की बातचीत से मिस्टर मुहम्मद अली को यह

امریکہ میں مسٹر محمد علی اور راج کماری امرت کور

حال میں سماچار پتروں کے اندر دو چھوٹی چھوٹی خبریں ایک ساتھ چھپی تھیں. پاکستان کے بڑے وزیر مسٹر محمد علی اور بھارت کی صحت وزیر راج کماری امرت کور دونوں اُن دنوں امریکہ میں تھے. پہلی خبر یہ تھی کہ مسٹر محمد علی نے وہاں یہ وچار پرگٹ کیا کہ دنیا کو بچانے کے لئے دنیا سے کمیونزم کو مٹانا ضروری ہے اور اُسے مٹانے کے دو ہی سادھن ہیں—پیسہ اور تلوار. اس کے لئے امریکہ، پاکستان اور دوسرے اسی طرح کے دیشوں کو ملکر کوشش کرنی چاہئے. دوسری خبر یہ تھی کہ راج کماری امرت کور نے امریکی جنتا سے کہا کہ بھارت کے لوگ بڑے کٹر، ہٹ دھرمی اور اندھ وشواسی ہیں، اسی لئے وہ بچوں کی پیدائش کو روکنے کے سائنسی طریقوں کو کام میں نہیں لاتے. اس سے بھارت کی آبادی بڑھتی جا رہی ہے. یہی بھارت کی سب سے بڑی مصیبت ہے. راج کماری امرت کور نے امریکی جنتا کو یہ بھی سوچنا دی کہ بھارت سرکار ہزاروں اسپتالوں کے ذریعہ اور طرح طرح سے یہ کوشش کر رہی ہے کہ لوگ بچوں کی پیدائش روکنے کے اِن طریقوں کو جانیں، اُن کی قدر کریں اور اُنہیں کام میں لاویں. یہ کوشش ایک بڑے پیمانے پر گاؤں گاؤں میں کی جا رہی ہے تاکہ دیش بڑھتی ہوئی آبادی کی اِس مصیبت سے بچ سکے.

مسٹر محمد علی کے وچار اِس معاملے میں سب کو پہلے سے معلوم تھے. راج کماری امرت کور کے وچار پیدائش روکنے کے سمبندھ میں بھی دنیا سے چھپے ہوئے نہیں تھے. پھر بھی اِن دونوں کی یہ تقریریں ہمیں یہ سوچنے پر مجبور کرتی ہیں کہ پاکستان اور بھارت کدھر جا رہے ہیں.

مسٹر محمد علی ایک ایسے راج کے بڑے وزیر کی حیثیت سے بول رہے تھے جو اپنے کو اسلامی راج کہتا ہے، اور جسے اپنے اسلامی ہونے کا فخر ہے. خود مسٹر محمد علی اپنے کو مسلمان مانتے اور کہتے ہیں. ظاہر ہے اُنہیں خدا اور مذہب کو نہ ماننے والے کمیونزم اور کمیونسٹوں سے ناراضگی ہے اور اُنہیں ان سے دنیا کو خطرہ دکھائی دیتا ہے. اِس ناستکتا اور بے دینی کو دنیا سے مٹانے کے لئے اور خدا اور مذہب کو لوگوں کے دلوں میں پھر سے جمانے کے لئے اُنہیں پیسہ اور تلوار دو ہی سب سے اچھے سادھن دکھائی دیتے ہیں. یہ بھی ممکن ہے کہ چین کے بڑے وزیر چاؤ. این. لائی کے بھارت آنے اور جواہر لال جی کے چین جانے جیسی گھٹناؤں سے اور ادھر فولاد کے نئے کارخانے کی بابت روس اور بھارت کی بات چیت سے مسٹر محمد علی کو یہ

अधिक हों और उनकी शक्ति सचमुच बढ़ी सकती हो तो उसमें मशीनों और मिलों पर इस तरह का ज़ोर अर्थ शास्त्र की निगाह से समझदारी की बात नहीं मानी जा सकती. न यह विज्ञान यानी साइन्स है और न इसमें जनता का भला (welfare) है. यह है नंगा पूंजीवाद, थोड़े से लोगों को बड़े बड़े मुनाफ़े कमाने का मौक़ा देना और आम ग़रीब जनता को उन मुनाफ़ों के लिये चुसने देना.

यह देखकर दिल दुखता है कि आज़ाद भारत में, पहली आज़ाद सरकार के नीचे, और महात्मा गांधी के मरने के इतने थोड़े दिनों के अन्दर, बड़ी मशीनों और बड़े पैमाने पर और कम से कम मज़दूर लगा कर अधिक से अधिक माल पैदा करने का चसका हम में इतना बढ़ जावे कि देश की परिस्थिति और जनता के असली हित की तरफ़ हमारी निगाह ही न जा सके. हमें इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी के यह शब्द याद आ रहे हैं :—"लोग मज़दूरों और मज़दूरी की बचत करते चले जाते हैं, यहां तक कि हज़ारों आदमी भूखे मरने के लिये खुली गलियों में जा पड़ते हैं."

मालूम होता है कि भारत सरकार इस तहक़ीक़ाती कमेटी की सिफ़ारिशों से बहुत कुछ सहमत है. यह ऐलान हो चुका है कि तहक़ीक़ाती कमेटी का चेयरमैन 'तिजारत और उद्योग धन्दों का डिप्टी मिनिस्टर' बनाया जायगा, इसलिये ताकि वह इस "सोचे समझे बदलाव" (planned conversion) को अमल में लाने में मदद दे सके.

इस सबका निचोड़ यह है कि हमारे गांव, हमारे ग़रीबों के झोंपड़ों, उनकी दस्तकारियों, उनके उद्योग धन्दों, और देश के लाखों बल्कि करोड़ों बेकारों को सब्र के साथ उस दिन का इन्तज़ार करना चाहिये जिस दिन हमारे चोटी के आदमी इस बात को समझ सकें कि भारत की जनता का भला इस में है कि लोगों के हाथ पैरों की शक्ति और मशीनों की शक्ति दोनों का अपनी अपनी जगह उपयोग किया जावे और स्वतन्त्र कारीगर और दूसरे के लिये मेहनत करने वाला मज़दूर दोनों के बीच एक ऐसा उचित, समझदारी का, देश के हालात से मिलता हुआ और अमली सामंजस्य क़ायम किया जावे, जिससे सब को रोज़ी मिल सके, आज़ाद कारीगर के लिये दुनिया में जगह रहे और साइन्स को भी उन्नति का पूरा मैदान मिले. मिल मालिकों की बची खुची जूठन पर हमें लाखों बुनकरों को नहीं पालना, बल्कि हमारे लाखों आज़ाद बुनकरों के करघों से जो मैदान बचे वह मिलों को देना है. हम यदि शान्ति और नम्रता से समझने की कोशिश करें तो गांधी जी यही चाहते थे और इसी में देश की जनता का भला है.

26. 10. '54 —सुन्दरलाल

ادھک ہوں اور اُن کی شکتی سچ مچ بڑھ سکتی ہو تو اُس میں مشینوں اور ملوں پر اِس طرح کا زور ارتھ شاستر کی نگاہ سے سمجھداری کی بات نہیں مانی جا سکتی۔ نہ یہ وگیان یعنی سائنس ہے اور نہ اِس میں جنتا کا بھلا (welfare) ہے۔ یہ ہے ننگا پونجی واد، تھوڑے سے لوگوں کو بڑے بڑے منافعے کمانے کا موقع دینا اور عام غریب جنتا کو اُن منافعوں کے لئے چُسنے دینا۔

یہ دیکھ کر دل دُکھتا ہے کہ آزاد بھارت میں، پہلی آزاد سرکار کے نیچے، اور مہاتما گاندھی کے مرنے کے اِتنے تھوڑے دنوں کے اندر، بڑی مشینوں اور بڑے پیمانے پر اور کم سے کم مزدور لگا کر ادھک سے ادھک مال پیدا کرنے کا چسکا ہم میں اتنا بڑھ جاوے کہ دیش کی پرستھتی اور جنتا کے اصلی ہت کی طرف ہماری نگاہ ہی نہ جا سکے۔ ہمیں اس سمبندھ میں مہاتما گاندھی کے یہ شبد یاد آ رہے ہیں :—"لوگ مزدوروں اور مزدوری کی بچت کرتے چلے جاتے ہیں، یہاں تک کہ ہزاروں آدمی بھوکے مرنے کے لئے کھلی گلیوں میں جا پڑتے ہیں۔"

معلوم ہوتا ہے کہ بھارت سرکار اس تحقیقاتی کمیٹی کی سفارشوں سے بہت کچھ سہمت ہے۔ یہ اعلان ہو چکا ہے کہ تحقیقاتی کمیٹی کا چیرمین 'تجارت اور اُدیوگ دھندوں کا ڈپٹی منسٹر' بنایا جائیگا، اِس لئے تاکہ وہ "اِس سوچے سمجھے بدلاؤ" (planned conversion) کو عمل میں لانے میں مدد دے سکے۔

اِس سب کا نچوڑ یہ ہے کہ ہمارے گاؤں، ہمارے غریبوں کے جھونپڑوں، اُن کی دستکاریوں، اُن کے اُدیوگ دھندوں اور دیش کے لاکھوں بلکہ کروڑوں بیکاروں کو صبر کے ساتھ اُس دن کا انتظار کرنا چاہئے جس دن ہمارے چوٹی کے آدمی اس بات کو سمجھ سکیں کہ بھارت کی جنتا کا بھلا اِسی میں ہے کہ لوگوں کے ہاتھ پیروں کی شکتی اور مشینوں کی شکتی دونوں کا اپنی اپنی جگہ اُپیوگ کیا جاوے اور سوتنتر کاریگر اور دوسروں کے لئے محنت کرنے والا مزدور دونوں کے بیچ ایک ایسا اُچت، سمجھداری کا، دیش کے حالات سے ملتا ہوا اور عملی سامنجسیہ قائم کیا جاوے، جس سے سب کو روزی مل سکے، آزاد کاریگر کے لئے دنیا میں جگہ رہے اور سائنس کو بھی اُنتی کا پورا میدان ملے۔ مل مالکوں کی بچی کھچی جوٹھن پر ہمیں لاکھوں بنکروں کو نہیں پالنا، بلکہ ہمارے لاکھوں آزاد بنکروں کے کرگھوں سے جو میدان بچے وہ ملوں کو دینا ہے۔ ہم یدی شانتی اور نمرتا سے سمجھنے کی کوشش کریں تو گاندھی جی یہی چاہتے تھے اور اِسی میں دیش کی جنتا کا بھلا ہے۔

—سندر لال 26. 10. '54

तक और दूसरा उसके बाद. हाथ करघों को जो थोड़ी सी खास रियायतें इस समय मिली हुई हैं उन्हें पहले काल में "और अधिक नहीं बढ़ाया जायगा." इसके अलावा कमेटी ने सरकार से सिफ़ारिश की है कि "एक खास एजन्सी इस बात के लिये क़ायम की जाय कि वह इस बात को देखे कि इस बदलाव में जो खर्च करना पड़ेगा उसे कैसे और किस ढंग से किया जाय." सीधी सादी भाषा में इस सिफ़ारिश का मतलब यह है कि वह धन्धा जिसे हम हाथ करघों का धन्दा कहते हैं देश की आर्थिक व्यवस्था से "दरजे दरजे" (by stages) बिलकुल खत्म कर दिया जावे. फ़िलहाल थोड़े से ऐसे करघे रहने दिये जायेंगे जो ऐसा "नफ़ीस और बहुत नफ़ीस माल तैयार करते हैं" जिसे विदेशों में बेच कर बदले में "विदेशी सिक्के" मिल सकते हैं.

यह "बदलाव" का काम पूरी योजना के साथ कुछ दिनों से बराबर चल रहा है. इसी का नतीजा है कि हाथ बुनकरों की बहुत बड़ी तादाद बिलकुल बेरोज़गार हो चुकी है, और जो रह गए हैं उनमें से अधिकांश, जो चन्द साल पहले तक स्वतंत्र कारीगर थे, अब उन थोड़े से लोगों के लिये रोज़ की मज़दूरी करते हैं जिनके पास थोड़ा बहुत पैसा जमा था और जो आसानी से पहले दरजे से निकलकर दूसरे दरजे में पहुंच गए हैं और अब तीसरे दरजे में मिलकर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व खत्म कर देने के लिये तैयार बैठे हैं.

इस सारी समस्या में जो सब से बड़ा पहलू बेरोज़गारी का है उस पर कमेटी ने ध्यान तक नहीं दिया. मालूम होता है कमेटी को सब से बड़ी चिन्ता इसी बात की थी कि किसी तरह कपड़ा मिलों के रास्ते से हाथ करघों की इस निकम्मी अड़चन को दूर किया जावे. उसकी निगाह में हाथ करघों की अगर कोई थोड़ी बहुत उपयोगिता है तो वह इतनी ही कि उनके ज़रिये कुछ "विदेशी सिक्के" मिल सकें. इसीलिये "बदलाव" के ज़माने में हाथ करघों में तैयार हुए "मोटे और दरमियाने माल के मुक़ाबले में नफ़ीस और बहुत नफ़ीस माल को" और "मामूली खाकी माल के मुक़ाबले में रंगे छपे बढ़िया माल को" दूसरे दरजे में बने रहने की इजाज़त दी जायगी, और सरकार बड़ी दया करके उन्हें इस बीच के ज़माने में "ज़िन्दा रखने का फ़ैसला कर सकती है."

अब रहा खद्दर, तो उसके बारे में कमेटी की सिफ़ारिश है कि एक और "खास तहक़ीक़ात की जानी चाहिये और चारों तरफ़ के जितने हालात खद्दर के धन्धे से सम्बन्ध रखते हैं (या उस पर असर रखते हैं) उन सब को निगाह में रखते हुए खद्दर के धन्दे के बारे में आखरी फ़ैसला होना चाहिये."

जिस देश में आदमियों की कमी हो उसमें यदि हर काम के लिये मशीनों और मिलों पर इस तरह ज़ोर दिया जावे तो कुछ समझ में आ सकता है. पर जिस देश में आदमी इतने

تک اور دوسرا اُس کے بعد. ہاتھ کرگھوں کو جو تھوڑی سی خاص رعایتیں اِس سمے ملی ہوئی ہیں اُنہیں پہلے کال میں "اور اَدھک نہیں بڑھایا جائیگا". اِس کے علاوہ کمیٹی نے سرکار سے سفارش کی ہے کہ "ایک خاص ایجنسی اِس بات کے لئے قائم کی جائے کہ وہ اِس بات کو دیکھے کہ اِس بدلاؤ میں جو خرچ کرنا پڑیگا اُسے کیسے اور کس ڈھنگ سے کیا جائے". سیدھی سادی بھاشا میں اِس سفارش کا مطلب یہ ہے کہ وہ دھندا جسے ہم ہاتھ کرگھوں کا دھندا کہتے ہیں دیش کی آرتھک ویوستھا سے "درجہ بدرجہ" (by stages) بالکل ختم کر دیا جاوے۔ فی الحال تھوڑے سے ایسے کرگھے رہنے دئے جائینگے جو ایسا "نفیس اور بہت نفیس مال تیار کرتے ہیں" جسے ودیشوں میں بیچ کر بدلے میں "ودیشی سکے" مل سکتے ہیں۔

یہ "بدلاؤ" کا کام پوری یوجنا کے ساتھ کچھ دنوں سے برابر چل رہا ہے۔ اِسی کا نتیجہ ہے کہ ہاتھ بنکروں کی بہت بڑی تعداد بالکل بیروزگار ہو چکی ہے، اور جو رہ گئے ہیں اُن میں سے ادھیکانش، جو چند سال پہلے تک سوتنتر کاریگر تھے، اب تھوڑے سے اُن لوگوں کے لئے روز کی مزدوری کرتے ہیں جن کے پاس تھوڑا بہت پیسہ جمع تھا اور جو آسانی سے پہلے درجے سے نکل کر دوسرے درجے میں پہونچ گئے ہیں اور اب تیسرے درجے میں مل کر اپنا سوتنتر استتو ختم کر دینے کے لئے تیار بیٹھے ہیں۔

اِس ساری سمسیا میں جو سب سے بڑا پہلو بیروزگاری کا ہے اُس پر کمیٹی نے دھیان تک نہیں دیا۔ معلوم ہوتا ہے کمیٹی کو سب سے بڑی چنتا اِسی بات کی تھی کہ کسی طرح کپڑا ملوں کے راستے سے ہاتھ کرگھوں کی اِس نکمی اڑچن کو دور کیا جاوے۔ اُس کی نگاہ میں ہاتھ کرگھوں کی اگر کوئی تھوڑی بہت اُپیوگتا ہے تو وہ اتنی ہی ہے کہ اُن کے ذریعہ کچھ "ودیشی سکے" مل سکیں۔ اِسی لئے "بدلاؤ" کے زمانے میں ہاتھ کرگھوں میں تیار ہوئے "موٹے اور درمیانے مال کے مقابلے میں نفیس اور بہت نفیس مال کو" اور "معمولی خاکی مال کے مقابلے میں رنگے چھپے بڑھیا مال کو" دوسرے درجے میں بنے رہنے کی اجازت دی جائیگی، اور سرکار بڑی دیا کر کے انہیں اِس بیچ کے زمانے میں "زندہ رکھنے کا فیصلہ کر سکتی ہے۔"

اب رہا کھدر، سو اُس کے بارے میں کمیٹی کی سفارش ہے کہ ایک اور "خاص تحقیقات کی جانی چاہئے اور چاروں طرف کے جتنے حالات کھدر کے دھندے سے سمبندھ رکھتے ہیں (یا اُس پر اثر رکھتے ہیں) اُن سب کو نگاہ میں رکھتے ہوئے کھدر کے دھندے کے بارے میں آخری فیصلہ ہونا چاہئے۔"

جس دیش میں آدمیوں کی کمی ہو اُس میں یدی ہر کام کے لئے مشینوں اور ملوں پر اِس طرح زور دیا جاوے تو کچھ سمجھ میں آ سکتا ہے۔ پر جس دیش میں آدمی اتنے

कर दूना होता है. कमेटी से जो आशाएं की गई थीं वह सब ग़लत साबित हुईं.

कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार इस समय भारत में कुल इक्कीस लाख नब्बे हज़ार करघे हैं जिन में केवल बारह लाख ऐसे हैं जो "व्यापारी ढंग से सफलता के साथ चल रहे हैं." रिपोर्ट के यह आंकड़े ठीक नहीं माने जा सकते. कमेटी ने ख़ुद अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि उसने "कहीं कहीं जहां तहां नमूने के तौर पर कुछ करघे गिनवा कर उनके आधार पर सारे भारत के लिये यह आंकड़े तैयार कर लिये." पर यदि इन आंकड़ों को ठीक भी मान लिया जावे तब भी एक बात स्पष्ट है कि कमेटी ने केवल उन करघों को लिया है जो "कमेटी की तहक़ीक़ात के समय" चल रहे थे. हमें मालूम है कि इस से कहीं अधिक तादाद उन करघों की है जो कुछ साल पहले तक चल रहे थे और जो अब चीथड़े हुए या जलासे की तीलियां बने हुए कोनों में पड़े हैं, और जिन पर काम करने वाले कारीगरों के पास अब सिवा इसके कोई चारा नहीं कि या तो कहीं काई और राज़ी ढूंढें या भूखे मरें. यू० पी० बुनकर फ़ेडरेशन के सद्र की हैसियत से दौरा करते हुए उत्तर प्रदेश के कई ज़िलों के बहुत से गांव में इस तरह के हज़ारों अभागे बुनकरों, उनके बाल बच्चों और उनके करघों की इस दुर्दशा को हमने अपनी आंखों से देखा है. इस तरह के करघों की ओर ध्यान न देने में ही कमेटी को अपने काम में सुविधा दिखाई दी. जो करघे कमेटी की तहक़ीक़ात के समय तक चल रहे थे उनमें से भी कमेटी ने जो कुछ सुझाव दिये हैं वह केवल उन करघों के बारे में हैं जो उस समय तक कमेटी की निगाह में "व्यापारी ढंग से सफलता के साथ चल रहे थे," यानी जो मिलों के ज़बरदस्त मुक़ाबले और चारों तरफ़ की विरोधी परिस्थिति के होते हुए भी किसी तरह थोड़ा बहुत मुनाफ़ा कमा रहे हैं. बाक़ी सब लगभग पिछत्तर फ़ीसदी करघों के लिये, जो हमारे आज़ाद होने के दिन तक चल रहे थे और कुछ अब भी चल रहे हैं, कमेटी के अनुसार अब दुनिया में कोई जगह नहीं रही और न रहनी चाहिये.

अब हमें यह देखना है कि जो करघे अभी तक "व्यापारी ढंग से मुनाफ़ा कमा रहे हैं" उनके बारे में कमेटी का क्या सुझाव है. कमेटी ने हमारे सारे कपड़े और बुनाई के धन्धे को तीन हिस्सों या तीन दरजों में बांटा है :—एक हाथ करघे, दूसरे छोटे पैमाने पर बिजली आदि की शक्ति से चलने वाले करघे और तीसरे कपड़ा मिलें. इसके बाद कमेटी का सुझाव है कि "हाथ करघों के धन्धे को दरजे दरजे बदल कर पहले छोटे पैमाने पर बिजली आदि की शक्ति से चलने वाले करघों के धन्धे में बदल दिया जाय और फिर कपड़ा मिलों में बदल दिया जाय." इस "बदलाव (Conversion," के समय को दो कालों में बांटा गया है, पहला सन 1960

کر دگنا ہوتا ھے ۔ کمیٹی سے جو آشائیں کی گئی تھیں وہ سب غلط ثابت ہوئیں ۔

کمیٹی کی رپورٹ کے انوسار اِس سمئے بھارت میں کل اکیس لاکھ نوے ہزار کرگھے ھیں جن میں کیول بارہ لاکھ ایسے ھیں جو "ویاپاری ڈھنگ سے سپھلتا کے ساتھ چل رھے ھیں ." رپورٹ کے یہ آنکڑے ٹھیک نہیں مانے جاسکتے ۔ کمیٹی نے خود اپنی رپورٹ میں لکھا ھے کہ اُس نے "کہیں کہیں جہاں تہاں نمونے کے طور پر کچھ کرگھے گنوا کر اُن کے آدھار پر سارے بھارت کے لئے یہ آنکڑے تیار کرلئے ." پر یدی اِن آنکڑوں کو ٹھیک بھی مان لیا جاوے تب بھی ایک بات اسپشٹ ھے کہ کمیٹی نے کیول اُن کرگھوں کو لیا ھے جو "کمیٹی کی تحقیقات کے سمئے" چل رھے تھے ۔ ھمیں معلوم ھے کہ اِس سے کہیں ادھک تعداد اُن کرگھوں کی ھے جو کچھ سال پہلے تک چل رھے تھے اور جو اب چیتھڑے ھوئے یا جلانے کی تیلیاں بنے ھوئے کونوں میں پڑے ھیں' اور جن پر کام کرنے والے کاریگروں کے پاس اب سوا اِس کے کوئی چارہ نہیں کہ یا تو کہیں کوئی اور روزی ڈھونڈیں یا بھوکے مریں ۔ یو ۔ پی ۔ بنکر فیڈریشن کے صدر کی حیثیت سے دورہ کرتے ھوئے اُتر پردیش کے کئی ضلعوں کے بہت سے گاؤں میں اِس طرح کے ہزاروں ابھاگے بنکروں' اُن کے بال بچوں اور اُن کے کرگھوں کی اِس درگتی کو ھم نے اپنی آنکھوں سے دیکھا ھے ۔ اِس طرح کے کرگھوں کی اور دھیان نہ دینے میں ھی کمیٹی کو اپنے کام میں سودھا دکھائی دی ۔ جو کرگھے کمیٹی کی تحقیقات کے سمئے تک چل رھے تھے اُن میں سے بھی کمیٹی نے جو کچھ سجھاؤ دئے ھیں وہ کیول اُن کرگھوں کے بارے میں ھیں جو اُس سمئے تک کمیٹی کی نگاہ میں "ویاپاری ڈھنگ سے سپھلتا کے ساتھ چل رھے تھے" یعنی جو ملوں کے زبردست مقابلے اور چاروں طرف کی ورودھی پرستھتی کے ھوتے ھوئے بھی کسی طرح تھوڑا بہت منافع کما رھے ھیں ۔۔ باقی سب لگ بھگ پچھتر فیصدی کرگھوں کے لئے' جو ھمارے آزاد ھونے کے دن تک چل رھے تھے اور کچھ اب بھی چل رھے ھیں' کمیٹی کے انوسار اب دنیا میں کوئی جگہ نہیں رھی اور نہ رھنی چاھئے ۔

اب ھمیں یہ دیکھنا ھے کہ جو کرگھے ابھی تک "ویاپاری ڈھنگ سے منافع کما رھے ھیں" اُن کے بارے میں کمیٹی کا کیا سجھاؤ ھے ۔ کمیٹی نے ھمارے سارے کپڑے اور بنائی کے دھندے کو تین حصوں یا تین درجوں میں بانٹا ھے :—ایک ھاتھ کرگھے' دوسرے چھوٹے پیمانے پر بجلی آدی کی شکتی سے چلنے والے کرگھے اور تیسرے کپڑا ملیں ۔ اِس کے بعد کمیٹی کا سجھاؤ ھے کہ "ہاتھ کرگھوں کے دھندے کو درجے درجے بدل کر پہلے چھوٹے پیمانے پر بجلی آدی کی شکتی سے چلنے والے کرگھوں کے دھندے میں بدل دیا جائے اور پھر کپڑا ملوں میں بدل دیا جائے ۔" اِس "بدلاؤ (Conversion)" کے سمئے کو دو کالوں میں بانٹا گیا ھے' پہلا سن 1960

जनता ने दिल्ली में, लखनऊ में, बाराबङ्की में और देश भर में श्री रफ़ी अहमद के लिये जो गहरा प्रेम दरसाया और उनके चले जाने पर जो शोक मनाया वह जनता के दिल की चीज़ थी. एक जवाहर लाल जी को छोड़ कर देश भर में शायद ही कोई मिनिस्टर आज आम जनता में इतना सबको प्यारा हो जितना श्री रफ़ी अहमद थे. हमारा उनका भी पच्चीस बरस से ऊपर का गहरा और घनिष्ट सम्बन्ध था. साम्प्रदायिक मामले में श्री रफ़ी अहमद उतने ही पाक साफ़ और बेलाग थे जितना कोई भी इन्सान हो सकता है. वह अद्भुत आदमी थे जिन्हें कांग्रेसी और ग़ैर कांग्रेसी, हिन्दू सभाई और जन संघी, सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट सब एक बराबर प्यार करते थे और जिन पर सब को एक बराबर भरोसा था, क्योंकि एक पार्टी विशेश के होते हुए भी उनके बड़े दिल के अन्दर सब के लिये जगह थी, वह किसी के साथ ग़ैरियत बरतना न जानते थे, सब को ज़रूरत के वक़्त मदद देते थे, आड़े वक़्त में सब के काम आते थे. जनता के सामने इस की सैकड़ों मिसालें हैं. छोटे से छोटे काम करने वालों और जनता के मामूली से मामूली लोगों से वह जिस खुले दिल से मिलते थे उससे मालूम होता था कि हुकूमत का घमन्ड उन्हें छू भी नहीं गया था. जिस तरह से उन्होंने कन्ट्रोलों को हटाया और चीज़ों के भाव कम किये उससे पता चलता था कि वह जनता के आदमी थे, और जनता का हित करने की उनमें सूझ और साहस दोनों मौजूद थे. बड़े दरजे तक वह एक आदर्श शासक और शासकों के लिये एक आदर्श थे. प्रेम, उदारता, सरलता, निस्स्वार्थता और सेवा भाव की वह मूर्ति थे. लाखों और करोड़ों हिन्दुस्तानियों के दिलों में उनकी याद बरसों बनी रहेगी. हमारी यही ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति और उनके प्यारे कुटुम्बियों को धीरज दें.

28. 10. '54 — सुन्दरलाल

भारत सरकार और हमारे ग़रीब बुनकर

हमारा देश जब से आज़ाद हुआ है तब से हमारी हाथ के कपड़े की दस्तकारी तेज़ी से मिटती चली जा रही है, जिससे हमारे लाखों बुनकरों और उससे मिलते जुलते धन्धों में लगे हुए दूसरे कारीगरों में बेकारी बढ़ती जा रही है. भारत सरकार ने हाल में एक बुनकरी तहक़ीक़ाती कमेटी (टैक्सटाइल इन्क्वायरी कमेटी) नियुक्त की थी. लोगों को आशा हुई थी कि यह कमेटी सरकार को कुछ ऐसी बातें सुझाएगी जिनसे हमारा हाथ करघों का धन्धा फिर से चमक सके और गांवों और शहरों दोनों में बेकारी घट सके. कमेटी ने अपनी रिपोर्ट सरकार को दे दी. रिपोर्ट को पढ़

جنتا نے دِلّی میں، لکھنو میں، بارہ بنکی میں اور دیش بھر میں شری رفیع احمد کے لئے جو گہرا پریم درشایا اور اُن کے چلے جانے پر جو شوک منایا وہ جنتا کے دل کی چیز تھی ۔ ایک جواہر لال جی کو چھوڑ کر دیش بھر میں شاید ہی کوئی منسٹر آج عام جنتا میں اتنا سب کو پیارا ہو جتنا شری رفیع احمد تھے ۔ ہمارا اُن کا بھی پچیس برس سے اوپر کا گہرا اور گھنشٹ سمبندھ تھا ۔ سامپردایک معاملہ میں شری رفیع احمد اتنے ہی پاک صاف اور بے لاگ تھے جتنا کوئی بھی انسان ہو سکتا ہے ۔ وہ ادبھت آدمی تھے جنہیں کانگریسی اور غیر کانگریسی، ہندو سبھائی اور جن سنگھی، سوشلسٹ اور کمیونسٹ سب ایک برابر پیار کرتے تھے اور جن پر سب کو ایک برابر بھروسہ تھا، کیونکہ ایک پارٹی وشیش کے ہوتے ہوئے بھی اُن کے بڑے دل کے اندر سب کے لئے جگہ تھی، وہ کسی کے ساتھ غیریت برتنا نہ جانتے تھے، سب کو ضرورت کے وقت مدد دیتے تھے، آڑے وقت میں سب کے کام آتے تھے ۔ جنتا کے سامنے اِس کی سیکڑوں مثالیں ہیں ۔ چھوٹے سے چھوٹے کام کرنے والوں اور جنتا کے معمولی سے معمولی لوگوں سے وہ جس کھلے دل سے ملتے تھے اُس سے معلوم ہوتا تھا کہ حکومت کا گھمنڈ اُنہیں چھو بھی نہیں گیا تھا ۔ جس طرح سے اُنہوں نے کنٹرولوں کو ہٹایا اور چیزوں کے بھاؤ کم کئے اُس سے پتہ چلتا تھا کہ وہ جنتا کے آدمی تھے، اور جنتا کا ہت کرنے کی اُن میں سوجھ اور ساہس دونوں موجود تھے ۔ بڑے درجے تک وہ ایک آدرش شاسک اور شاسکوں کے لئے ایک آدرش تھے ۔ پریم، اُدارتا، سرلتا، نسوارتھتا اور سیوا بھاؤ کی وہ مورتی تھے ۔ لاکھوں اور کروڑوں ہندستانیوں کے دلوں میں اُن کی یاد برسوں بنی رہیگی ۔ ہماری یہی ایشور سے پرارتھنا ہے کہ وہ اُن کی آتما کو شانتی اور اُن کے پیارے کٹمبیوں کو دھیرج دیں ۔

—سندر لال 28 . 10 . '54

بھارت سرکار اور ہمارے غریب بنکر

ہمارا دیش جب سے آزاد ہوا ہے تب سے ہماری ہاتھ کے کپڑے کی دستکاری تیزی سے مٹتی چلی جا رہی ہے، جس سے ہمارے لاکھوں بنکروں اور اُن سے ملتے جلتے دھندوں میں لگے ہوئے دوسرے کاریگروں میں بیکاری بڑھتی جا رہی ہے ۔ بھارت سرکار نے حال میں ایک بنکری تحقیقاتی کمیٹی (ٹیکسٹائل انکوائری کمیٹی) نیُکت کی تھی ۔ لوگوں کو آشا ہوئی تھی کہ یہ کمیٹی سرکار کو کچھ ایسی باتیں سجھائیگی جن سے ہمارا ہاتھ کرگھوں کا دھندا پھر سے چمک سکے اور گاؤں اور شہروں دونوں میں بیکاری گھٹ سکے ۔ کمیٹی نے اپنی رپورٹ سرکار کو دے دی ۔ رپورٹ کو پڑھ

तक अपने ईश्वर भक्त थे. पर वह सब धर्मों की एकता में भी पूरा विश्वास रखते थे. किसी तरह की साम्प्रदायिक या प्रान्तीय या कोई और तंग नजरी या छुआ छूत उनमें छू भी नहीं गई थी. हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बंगाली और हिन्दुस्तानी उनके लिये सब बराबर थे. गीता और क़ुरान उनके लिये एक से आदर की पुस्तकें थीं. उनकी आखरी बीमारी में जब मौत उनके सामने नाच रही थी हमें एक दिन कई घंटे उनके पास बैठने का सौभाग्य मिला. बार बार उनकी लड़खड़ाती हुई ज़बान से महात्मा गांधी की प्रार्थना के मशहूर भजन की यही लाइन निकल रही थी :—

"ईश्वर अल्लाह तेरे नाम—सब को सम्मति दे भगवान."

बाबू नित्यानन्द चैटरजी एक ग़रीब गृहस्थ थे. पर उनकी ग़रीबी ख़ुद अपनी मोल ली हुई थी. जवानी में धन कमाने के उनके लिये बहुत से रास्ते खुले हुए थे. वह चाहते तो ख़ूब कमा सकते थे. पर उन्होंने अपना जीवन देश को आज़ाद कराने की कोशिशों में खपा देना अधिक पसन्द किया. वह हद दरजे के नेक, सच्चे, ईमानदार, कुनबापरवर, मेहमां नवाज़ और प्रेम की साक्षात मूर्ति थे. राजकाज से बाहर किसी अपने साथ बुराई करने वाले का एक पल के लिये भी बुरा चेतना उनके लिये नामुमकिन था. अख़बारों में चमकने की न उनमें कभी इच्छा हुई और न इसकी शायद उनमें योग्यता ही थी. हमारी क़ौमी आज़ादी की इमारत में वह सजावट के पत्थर बनकर कभी न चमके. पर इसमें ज़रा भी शक नहीं कि वह उन मुबारिक और ख़ुशक़िस्मत लोगों में से थे जिनकी लाशों पर यह इमारत ऊंची की गई है और आज खड़ी दिखाई दे रही है. हमें यह भी मालूम है कि दुनिया की बड़ी से बड़ी और सुन्दर से सुन्दर इमारतें सजावट के पत्थरों के सहारे नहीं खड़ी रहतीं. वह उन पत्थरों और कंकड़ों के सहारे खड़ी रहती हैं जो बुनियादों में पड़े होते हैं और जिनकी तरफ़ कभी किसी यात्री या दर्शक की निगाह तक नहीं जा सकती. जिन नौजवानों के दिलों में सच्ची देश सेवा और मानव सेवा की लगन है उनके लिये ऐसी ज़िन्दगियां काफ़ी सबक़ देने वाली हैं.

20. 10. '54 —सुन्दरलाल

श्री रफ़ी अहमद किदवाई

28 अक्तूबर सन 1954 की शाम को दिल्ली में श्री रफ़ी अहमद किदवाई की अचानक मृत्यु सारे देश के लिये एक अत्यन्त शोक भरी घटना थी.

इस व्यक्ति की फ़ौजी सलामियों और सरकारी टीपटाप से हमें कोई वास्ता नहीं. दुनिया की सरकारें अपनी शक्ति और अपनी धाक को और मज़बूत करने के लिये ऐसे सब अवसरों से फ़ायदा उठाती ही हैं. यहां हमें मतलब केवल स्वर्गीय श्री रफ़ी अहमद किदवाई के व्यक्तित्व से है.

تک پکے ایشور بھگت تھے ۔ پر وہ سب دھرموں کی ایکتا میں بھی پورا وشواس رکھتے تھے ۔ کسی طرح کی سامپرداٹک یا پرانتیہ یا کوئی اور تنگ نظری یا چھوا چھوت اُن میں چھو بھی نہیں گئی تھی ۔ ہندو، مسلمان، عیسائی، بنگالی اور ہندستانی اُن کے لئے سب برابر تھے ۔ گیتا اور قرآن اُن کے لئے ایک سے آدر کی پستکیں تھیں ۔ اُن کی آخری بیماری میں جب موت اُن کے سامنے ناچ رہی تھی ہمیں ایک دن کئی گھنٹے اُن کے پاس بیٹھنے کا سوبھاگیہ ملا ۔ بار بار اُن کی لڑکھڑاتی ہوئی زبان سے مہاتما گاندھی کی پرارتھنا کے مشہور بھجن کی یہی لائن نکل رہی تھی :—

" ایشور اللہ تیرے نام—سب کو سمتی دے بھگوان ۔"

بابو نتیا نند چیٹر جی ایک غریب گرہستھ تھے ۔ پر اُن کی غریبی خود اپنی مول لی ہوئی تھی ۔ جوانی میں دھن کمانے کے اُن کے لئے بہت سے راستے کھلے ہوئے تھے ۔ وہ چاہتے تو خوب کما سکتے تھے ۔ پر اُنھوں نے اپنا جیون دیش کو آزاد کرانے کی کوششوں میں کھپا دینا ادھک پسند کیا ۔ وہ حد درجے کے نیک، سچے، ایماندار، کنبہ پرور، مہماں نواز اور پریم کی ساکشات مورتی تھے ۔ راج کاج سے باہر کسی اپنے ساتھ برائی کرنے والے کا ایک پل کے لئے بھی برا چیتنا اُن کے لئے نا ممکن تھا ۔ اخباروں میں چمکنے کی نہ اُن میں کبھی اِچھا ہوئی اور نہ اِس کی شاید اُن میں یوگتا ہی تھی ۔ ہماری قومی آزادی کی عمارت میں وہ سجاوٹ کے پتھر بن کر کبھی نہ چمکے ۔ پر اِس میں ذرا بھی شک نہیں کہ وہ اُن مبارک اور خوش قسمت لوگوں میں سے تھے جن کی لاشوں پر یہ عمارت اونچی کی گئی ہے اور آج کھڑی دکھائی دے رہی ہے ۔ ہمیں یہ بھی معلوم ہے کہ دنیا کی بڑی سے بڑی اور سندر سے سندر عمارتیں سجاوٹ کے پتھروں کے سہارے نہیں کھڑی رہتیں ۔ وہ اُن پتھروں اور کنکروں کے سہارے کھڑی رہتی ہیں جو بنیادوں میں پڑے ہوتے ہیں اور جن کی طرف کبھی کسی یاتری یا درشک کی نگاہ تک نہیں جا سکتی ۔ جن نوجوانوں کے دلوں میں سچی دیش سیوا اور مانو سیوا کی لگن ہے اُن کے لئے ایسی زندگیاں کافی سبق دینے والی ہیں ۔

20 . 10 . '54 —سندر لال

شری رفیع احمد کدوائی

28 اکتوبر سن 1954 کی شام کو دلی میں شری رفیع احمد کدوائی کی اچانک مرتیو سارے دیش کے لئے ایک اتیہنت شوک بھری گھٹنا تھی ۔

اِس ویکتی کی فوجی سلامیوں اور سرکاری ٹیپ ٹاپ سے ہمیں کوئی واسطہ نہیں ۔ دنیا کی سرکاریں اپنی شکتی اور اپنی دھاک کو اور مضبوط کرنے کے لئے ایسے سب اوسروں سے فائدہ اٹھاتی ہی ہیں ۔ یہاں ہمیں مطلب کیول سورگیہ شری رفیع احمد کدوائی کے ویکتتو سے ہے ۔

के पीछे बाथरूम से मिली हुई कीचड़ में पड़ी एक गोल सी अजीब चीज़ दिखाई दी. उसे इम्तहान के लिये भेजा गया. पता चला कि बम बहुत खतरनाक था. इत्तफ़ाक़ से रात को फेंकने वाले का निशाना चूक गया. बम बजाय कमरे के अंदर गिरने के बाथरूम के पीछे की नरम मिट्टी में गिरा और वहीं फंसकर रह गया. खानसामां की पोशाक में कमरे के पीछे से उस बम को फेंकने वाला नौजवान यही नित्यानन्द चैटर जी था. पुलीस फेंकने वाले या उसके किसी साथी का सुराग़ न लगा सकी.

इसी तरह की और भी घटनाएं इस समय हमारी याद के सामने हैं. पर हम यहां बाबू नित्यानन्द की जीवनी लिखने नहीं बैठे. श्री अरविन्द घोश जिस ज़माने में कलकत्ते से बैठे हुए देश के क्रान्तिकारी आन्दोलन की रहनुमाई कर रहे थे उस ज़माने में अरविन्द बाबू के और इस प्रान्त के बीच में जो इने गिने लोग सन्देश लाने लेजाने का काम करते थे उनमें से एक बाबू नित्यानन्द चैटरजी थे. लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत राय दोनों से उनके गहरे सम्बन्ध थे. यह थी बाबू नित्यानन्द की शुरू की ज़िन्दगी.

तब से लेकर मौत के दिन तक बाबू नित्यानन्द चैटरजी का सारा जीवन अपनी छोटी सी शक्ति के अनुसार देश की सेवा में ही बीता. सन 1908 के उस उर्दू अख़बार "स्वराज्य" के साथ, जिसने भारत भर में शायद सबसे ज़ियादा एडिटर जेल और काले पानी भेजे, बाबू नित्यानन्द का पूरा सम्बन्ध था. हिन्दी अख़बार "कर्मयोगी" के जो सन 1909 में निकल कर सन 1910 में बन्द हो गया नित्यानन्द जी मैनेजर थे. प्रयाग पबलिशिंग कम्पनी के जो 'कर्म योगी' निकालती थी नित्यानन्द जी मैनेजिंग डाइरेक्टर थे. सन 1918 के साप्ताहिक "भविष्य" और सन 1919 के दैनिक "भविष्य" दोनों के वह मैनेजर थे. "नया हिन्द" के वह मैनेजर थे ही. अख़बारों, ख़ासकर क़ौमी अख़बारों और प्रेस के काम का उन्हें बहुत गहरा तजुर्बा था.

जन सेवा की भी बाबू नित्यानन्द में गहरी लगन थी. सन 1908 के अवध के भयंकर अकाल से लेकर सन 1934 के बिहार भूकम्प तक जगह जगह उन्होंने जान लड़ा कर और डट कर दुखियों की सेवा की. सन 1919 में इलाहाबाद होमरूल लीग के दफ़्तर को वही संभाले हुए थे. सन 1919 के बाद से वह महात्मा गांधी के सच्चे प्रशंसकों में से थे.

सन 1930 और सन 1932 के सत्याग्रह आन्दोलनों में उनका घर सब देश भक्तों और काम करने वालों के लिये आश्रय की जगह थी. सन 1930 में बहुत दिनों तक प्रान्तीय कांग्रेस का और आन्दोलन का दोनों का दफ़्तर उन्हीं के घर में रहा.

बाबू नित्यानन्द चैटरजी शुरू उमर से लेकर आख़ीर

کے پیچھے باتھ روم سے ملی ہوئی کیچڑ میں پڑی ایک گول سی عجیب چیز دکھائی دی ۔ اُسے امتحان کے لئے بھیجا گیا ۔ پتہ چلا کہ بم بہت خطرناک تھا ۔ اتفاق سے رات کو پھینکنے والے کا نشانا چوک گیا ۔ بم بجائے کمرے کے اندر گرنے کے باتھ روم کے پیچھے کی نرم مٹی میں گرا اور وہیں پھنسکر رہ گیا ۔ خانساماں کی پوشاک میں کمرے کے پیچھے سے اُس بم کو پھینکنے والا نوجوان یہی نتیانند چیٹر جی تھا ۔ پولیس پھینکنے والے یا اُس کے کسی ساتھی کا سراغ نہ لگا سکی ۔

اِسی طرح کی اور بھی گھٹنائیں اِس سمے ہماری یاد کے سامنے ہیں ۔ پر ہم یہاں بابو نتیانند کی جیونی لکھنے نہیں بیٹھے ۔ شری اروند گھوش جس زمانے میں کلکتے سے بیٹھے ہوئے دیش کے کرانتی کاری آندولن کی رہنمائی کررہے تھے ۔ اُس زمانے میں اروند بابو کے اور اِس پرانت کے بیچ میں جو اِنے گِنے لوگ سندیش لانے لیجانے کا کام کرتے تھے اُن میں سے ایک بابو نتیانند چیٹر جی تھے ۔ لوکمانیہ تلک اور لالہ لاجپت رائے دونوں سے اُن کے گہرے سمبندھ تھے ۔ یہ تھی بابو نتیانند کی شروع کی زندگی ۔

تب سے لیکر موت کے دن تک بابو نتیا نند چیٹر جی کا سارا جیون اپنی چھوٹی سی شکتی کے انوسار دیش کی سیوا میں ہی بیتا ۔ سن 1908 کے اُس اُردو اخبار "سوراجیہ" کے ساتھ' جس نے بھارت بھر میں شاید سب سے زیادہ ایڈیٹر جیل اور کالے پانی بھیجے' بابو نتیا نند کا پورا سمبندھ تھا ۔ ہندی اخبار "کرم یوگی" کے جو سن 1909 میں نکل کر سن 1910 میں بند ہوگیا نتیا نند جی منیجر تھے ۔ پریاگ پبلشنگ کمپنی کے جو 'کرم یوگی' نکالتی تھی نتیا نند جی مینیجنگ ڈائرکٹر تھے ۔ سن 1918 کے ساپتاہک "بھوشیہ" اور سن 1919 کے دینک "بھوشیہ" دونوں کے وہ مینیجر تھے ۔ "نیا ہند" کے وہ مینیجر تھے ہی ۔ اخباروں' خاص کر قومی اخباروں اور پریس کے کام کا اُنھیں بہت گہرا تجربہ تھا ۔

جن سیوا کی بھی بابو نتیا نند میں گہری لگن تھی ۔ سن 1908 کے اودھ کے بھینکر اکال سے لے کر سن 1934 کے بہار بھوکمپ تک جگہ جگہ اُنھوں نے جان لڑا کر اور ڈٹ کر دکھیوں کی سیوا کی ۔ سن 1919 میں الہ آباد ہوم رول لیگ کے دفتر کو وہی سنبھالے ہوئے تھے ۔ سن 1919 کے بعد سے وہ مہاتما گاندھی کے سچے پرشنسکوں میں سے تھے ۔

سن 1930 اور سن 1932 کے ستیاگرہ آندولنوں میں اُن کا گھر سب دیش بھکتوں اور کام کرنے والوں کے لئے آشرم کی جگہ تھی ۔ سن 1930 میں بہت دنوں تک پرانتیہ کانگریس کا اور آندولن کا [illegible] اُنہی کے گھر میں رہا ۔

بابو نتیا نند [illegible] لے کر آخیر

हमारी राय — ہماری رائے

बाबू नित्यानन्द चैटरजी

सोलह अक्तूबर सन 1954 को दिन के दो बजकर बीस मिनट पर "नया हिन्द" के मैनेजर बाबू नित्यानन्द चैटरजी का इलाहाबाद में स्वर्गवास हो गया. बाबू नित्यानन्द नया हिन्द परिवार में सब से बड़े थे. परिवार के दूसरे लोग अपनी अपनी उमर के अनुसार उन्हें 'दादा' या 'बाबा' कहा करते थे. उनकी उमर लगभग तिहत्तर बरस की थी. कई महीने से वह बीमार चले आते थे. बीमारी की हालत में भी "नया हिन्द" परिवार के दूसरे लोगों को आए दिन हर छोटे बड़े काम में उनसे जो नेक और क़ीमती सलाह मिलती रहती थी, उसका मिलना अब हमेशा के लिये बन्द हो गया. पर आजकल के जमाने में उमर के लिहाज से उनकी मृत्यु कोई अचरज की बात नहीं थी. उनके लिये वह मानसिक और शारीरिक कष्टों से छुटकारा थी. हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति और उनके कुटुम्बियों को धीरज दें.

बाबू नित्यानन्द उन पुराने त्यागी देश भक्तों में से थे जिन्होंने सन 1905 में बंगाल के दो टुकड़े किये जाने के बाद इस देश को अंगरेजी राज के पंजों से आजाद करने का बीड़ा उठाया था और जिनका सारा जीवन इसी धुन में बीता. इन पंक्तियों के लेखक का बाबू नित्यानन्द के साथ पूरे अड़तालीस साल का गहरा सम्बन्ध था. इस देश की आजादी के इतिहास के बहुत से पन्ने ऐसे हैं जो आगे की नसलों की निगाह से हमेशा ओझल ही रहेंगे. शायद यही अच्छा भी है. आगे की नसलों पर सब बातों को याद रखने का बोझ क्यों डाला जाय. फिर भी इस अवसर पर हम बाबू नित्यानन्द के शुरू के जीवन की एक छोटी सी घटना बयान करते हैं.

आज से लगभग छियालीस बरस पहले एक दिन सुबह को कुछ अखबारों में यह खबर छपी कि पिछली रात इलाहाबाद के अंगरेज़ी क्लब के एक कमरे में इस प्रान्त के कुछ बड़े बड़े अंगरेज़ हाकिमों की एक बैठक हुई थी. नए आन्दोलन को दबाने की तरकीबें सोची जा रही थीं. बैठक शान्ति से हो गई. पर अगले दिन सुबह को बैठक वाले कमरे

بابو نتیانند چیٹرجی

سولہ اکتوبر سن 1954 کو دن کے دو بجکر بیس منٹ پر "نیا ہند" کے مینیجر بابو نتیانند چیٹر جی کا الہ آباد میں سورگ واس ہوگیا۔ بابو نتیانند "نیا ہند" پریوار میں سب سے بڑے تھے۔ پریوار کے دوسرے لوگ اپنی اپنی عمر کے انوسار انہیں "دادا" یا "بابا" کہا کرتے تھے۔ ان کی عمر لگ بھگ تہتر برس کی تھی۔ کئی مہینے سے وہ بیمار چلے آتے تھے۔ بیماری کی حالت میں بھی "نیا ہند" پریوار کے دوسرے لوگوں کو آئے دن ہر چھوٹے بڑے کام میں ان سے جو نیک اور قیمتی صلاح ملتی رہتی تھی اس کا ملنا اب ہمیشہ کے لئے بند ہوگیا۔ پر آج کل کے زمانے میں عمر کے لحاظ سے ان کی مرتیو کوئی اچرج کی بات نہیں تھی۔ ان کے لئے وہ مانسک اور شاریرک کشٹوں سے چھٹکارا تھی۔ ہم بھگوان سے پرارتھنا کرتے ہیں کہ وہ ان کی آتما کو شانتی اور ان کے کٹمبیوں کو دھیرج دیں۔

بابو نتیانند ان پرانے تیاگی دیش بھکتوں میں سے تھے جنہوں نے سن 1905 میں بنگال کے دو ٹکڑے کئے جانے کے بعد اس دیش کو انگریزی راج کے پنجوں سے آزاد کرنے کا بیڑا اٹھایا تھا اور جن کا سارا جیون اسی دھن میں بیتا۔ ان پنکتیوں کے لیکھک کا بابو نتیانند کے ساتھ پورے اڑتالیس سال کا گہرا سمبندھ تھا۔ اس دیش کی آزادی کے اتہاس کے بہت سے پنے ایسے ہیں جو آگے کی نسلوں کی نگاہ سے ہمیشہ اوجھل ہی رہینگے۔ شاید یہی اچھا بھی ہے۔ آگے کی نسلوں پر سب باتوں کو یاد رکھنے کا بوجھ کیوں ڈالا جائے۔ پھر بھی اس اوسر پر ہم بابو نتیانند کے شروع کے جیون کی ایک چھوٹی سی گھٹنا بیان کرتے ہیں۔

آج سے لگ بھگ چھیالیس برس پہلے ایک دن صبح کو کچھ اخباروں میں یہ خبر چھپی کہ پچھلی رات الہ آباد کے انگریزی کلب کے ایک کمرے میں اس پرانت کے کچھ بڑے بڑے انگریز حاکموں کی ایک بیٹھک ہوئی تھی۔ نئے آندولن کو دبانے کی ترکیبیں سوچی جارہی تھیں۔ بیٹھک شانتی سے ہوگئی۔ پر اگلے دن صبح کو بیٹھک والے کمرے

लारोंग की गर्दन पर मां येह की आंखों के गरम गरम आंसू टपकने लगे. वह खड़ा हो गया और दोनों बाहों में बूढ़ी मां को समेट लिया.

वह बोला—"मां, यह सच है. मैं तुम्हारा ही बेटा हूं."

मां यह को इतनी बातें करनी थीं कि वह कहां से शुरू करें, समझ नहीं पा रही थीं. सिसकियां लेते हुये वह बोली—"मेरा मन यह सोचकर ही घृना से भर जाता है. जमींदार जेंग का अत्याचार तो आकाश की ऊंचाई और समुद्र की गहराई से भी ज्यादा था. उसकी तो बोटी बोटी काटकर कुत्तों को खिला देनी चाहिये. तुम्हें मुझसे बीस बरस तक अलग रक्खा गया. सारा परिवार इधर उधर छिन्न भिन्न रहा. यदि चेयरमैन माओ का राज न आता तो मैं शायद तुम्हें देख भी न पाती. तुम्हारे पिता, तुम्हारे बड़े भाई, तुम्हारी बहिन जेब,....जेब इतनी प्यारी लड़की है. बीस साल तक मेरे साथ तकलीफ़ उठाती रही."

شینگ کی گردن پر ماں یہہ کی آنکھوں کے گرم گرم آنسو ٹپکنے لگے. وہ کھڑا ہوگیا اور دونوں ہاتھوں میں بوڑھی ماں کو سمیٹ لیا.

وہ بولا—"ماں یہ سچ ہے. میں تمہارا ہی بیٹا ہوں."

ماں یہ کو اتنی باتیں کرنی تھیں کہ وہ کہاں سے شروع کریں، سمجھ نہیں پا رہی تھیں. سسکیاں لیتے ہوئے وہ بولی—"میرا من یہ سوچ کر ہی گھرنا سے بھر جاتا ہے. زمیندار جینگ کا اتیاچار تو آکاش کی اونچائی اور سمندر کی گہرائی سے بھی زیادہ تھا. اس کی تو بوٹی کاٹ کر کتوں کو کھلا دینی چاہئیے. تمہیں مجھ سے بیس برس تک الگ رکھا گیا. سارا پریوار ادھر ادھر چھن بھن رہا. یدی چیرمین ماؤ کا راج نہ آتا تو میں شاید تمہیں دیکھ بھی نہ پاتی. تمہارے پتا، تمہارے بڑے بھائی، تمہاری بہن جیت'.....'جیت اتنی پیاری لڑکی ہے. بیس سال تک وہ میرے ساتھ تکلیف اٹھاتی رہی."

[illegible] दिखाना चाहती थी कि उसका [illegible] गया है.

[illegible]—"मां, यह बिल्कुल सच है. एक हज़ार बार [illegible] है, [illegible] सच है. जिस दिन तुमने मुझे बताया [illegible] उसी के दूसरे दिन मैंने इस विषय पर जे-पिंग से बातें [illegible] थीं. जब वह [illegible] पहुंचाने गया था, समय निकाल कर [illegible] शेंग्या [illegible] भी गया. जे-पिंग ने उसे ढूंढ निकाला. [illegible] उनसे गांव के सरकारी दफ़्तर में मिल कर आ रही हूं. [illegible]ांव के चेयरमैन उन्हें यहां आने से पहले नाश्ता करा रहे हैं."

[illegible] के कारन मां येह को अपना शरीर हल्का होकर [illegible] हुआ मालूम होने लगा. वह आनन्द से विभोर हो उठीं. [illegible] के सामने धुंधलापन छा गया और सारी दुनिया [illegible] दिखाई देने लगी. छन भर के लिये वह यह भी भूल [illegible] कि वह कहां बैठी हैं. जब तक उसे होश आये जेह जा [illegible] थी. बूढ़ी मां आंखें मल मल कर देखने लगीं कि कहीं [illegible] तक सपना तो नहीं देख रही थीं. ज़मीन पर कपड़ा [illegible] था, सुई और डोरा भी वैसे ही रक्खा था. उसे सामने [illegible] सड़क पर आदमियों की एक टोली उसी की तरफ़ आती [illegible] दिखलाई पड़ी.

मां येह आंख फाड़ फाड़ कर देखने लगीं. जितना ही वह [illegible] का प्रयत्न करतीं, उनकी परेशानी उतनी ही बढ़ जाती. [illegible] अपने मन में निश्चय कर लिया कि उस टोली में उनका [illegible] लड़का नहीं है, वह अवश्य ही कोई दूसरा व्यक्ति होगा. [illegible] उसके घर के नज़दीक आ गई थी, पर उसे अब भी [illegible] नहीं दिखलाई पड़ता था. अब सब लोग उसके क़रीब [illegible] गये थे. भावावेग में उसका शरीर हिलने लगा,

जेह दौड़ती हुई ऊपर आई और मां को संभालते हुये [illegible]—"मां, यह देखो, भाई लाशेंग आ गये !"

धुंधली नज़रों से मां येह ने देखा कि उसके सामने एक [illegible] आदमी सिर झुकाये खड़ा है. वह बोला—"मां !" [illegible] गला भर आया था. वह आगे बढ़ कर अपने हाथों [illegible] उसका मुंह ऊंचा करना चाहती थी लेकिन वह हिल भी [illegible] सकी. तब तक सब आदमी इकट्ठा हो गये थे और वह [illegible] बीच घिर गई.

जेह ने लैम्प जला कर रोशनी की और सब लोगों को [illegible]. मां येह धीरे धीरे अपने को पूरी तौर से संभाल चुकी [illegible] और अब उनकी समझ में आया कि उनके सामने क्या [illegible] है. वह [illegible] हुईं और हाथ में लैम्प लेकर [illegible] के नज़दीक गईं. उसका सिर थोड़ा सा झुका कर [illegible] गर्दन के पास एक निशान ढूंढने का प्रयत्न [illegible] की पैदाइश की निशानी—गर्दन पर काला [illegible] व्यक्ति की गर्दन पर था.

[illegible] ही हो", वह बोली.

کے انگ انگ کو وشواس دلانا چاہتی تھی کہ اس کا بھائی آ گیا ہے۔

وہ بولی—"ماں، یہ بالکل سچ ہے۔ ایک ہزار بار سچ ہے، ایک لاکھ بار سچ ہے۔

جس دن تم نے مجھے بتایا تھا اسی کے دوسرے دن میں نے اِس وشے پر زے-پنگ سے باتیں کی تھیں۔ جب وہ غلہ پہونچانے گیا تھا، سمے نکال کر وہ شینگیا فیلڈ گاؤں بھی گیا۔ زے۔پنگ نے اُسے ڈھونڈھ نکالا۔ میں اُن سے گاؤں کے سرکاری دفتر میں ملکر آ رہی ہوں۔ گاؤں کے میئر انھیں یہاں آنے سے پہلے ناشتہ کرا رہے ہیں۔"

خوشی کے کارن ماں یہہ کو اپنا شریر ہلکا ہو کر اُڑتا ہوا معلوم ہونے لگا۔ وہ آنند سے وبھور ہو اُٹھیں۔ آنکھوں کے سامنے دھندھلاپن چھا گیا اور ساری دنیا ناچتی دکھائی دینے لگی۔ چھن بھر کے لئے وہ یہ بھی بھول گئیں کہ وہ کہاں بیٹھی ہیں۔ جب تک اُسے ہوش آئے جیہ جا چکی تھی۔ بوڑھی ماں آنکھیں مل مل کر دیکھنے لگیں کہ کہیں اب تک سپنا تو نہیں دیکھ رہی تھیں۔ زمین پر کپڑا رکھا تھا، سوئی اور ڈورا بھی ویسے ہی رکھا تھا۔ اُسے سامنے کی سڑک پر آدمیوں کی ایک ٹولی اُسی کی طرف آتی دکھائی پڑی۔

ماں یہہ آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر دیکھنے لگیں۔ جتنا ہی وہ دیکھنے کا پریتن کرتیں، اُن کی پریشانی اُتنی ہی بڑھ جاتی۔ اُس نے اپنے من میں نشچے کر لیا کہ اُس ٹولی میں اُن کا لڑکا نہیں ہے، وہ اوشیہ ہی کوئی دوسرا ویکتی ہوگا۔ ٹولی اُس کے گھر کے نزدیک آ گئی تھی، پر اُسے اب بھی صاف نہیں دکھائی پڑتا تھا۔ اب سب لوگ اس کے قریب آ گئے تھے۔ بھاوآویگ میں اس کا شریر ہلنے لگا۔

جیہ دوڑتی ہوئی اُوپر آئی اور ماں کو سنبھالتے ہوئے بولی—"ماں، یہ دیکھو، بھائی لاشینگ آ گئے!"

دھندھلی نظروں سے ماں یہہ نے دیکھا کہ اس کے سامنے ایک لمبا آدمی سر جھکائے کھڑا ہے۔ وہ بولا—"ماں!" اُس کا گلا بھر آیا تھا۔ وہ آگے بڑھکر اپنے ہاتھوں سے اُس کا منھ اونچا کرنا چاہتی تھی لیکن وہ ہل بھی نہ سکی۔ تب تک سب آدمی اکٹھا ہو گئے تھے اور وہ اُن کے بیچ گھر گئی۔

جیہ نے لیمپ جلا کر روشنی کی اور سب لوگوں کو بیٹھایا۔ ماں یہہ دھیرے دھیرے اپنے کو پوری طور سے سنبھال چکی تھیں اور اب اُن کی سمجھ میں آیا کہ اُن کے سامنے کیا ہو رہا ہے۔ وہ اُٹھ کھڑی ہوئیں اور ہاتھ میں لیمپ لیکر اجنبی کے نزدیک گئیں۔ اُس کا سر تھوڑا سا جھکا کر اُس نے اُس کی گردن کے پاس ایک نشان ڈھونڈھنے کا پریتن کیا۔ اس کے لڑکے کی پیدائش کی نشانی—گردن پر کالا نشان—اس ویکتی کی گردن پر تھا۔

"میرے بیٹے!... تم واقعی میں لاشینگ ہی ہو" وہ بولی۔

रुकता है. पहिले वह खुद वहां जाकर देखे कि क्या हाल है और फिर बाद में तय किया जायेगा कि आगे क्या हो."

उसने जेड को चेतावनी दी कि मां येह को अभी कुछ न बताये क्योंकि उनकी उम्मीदों को बढ़ा देने से और उन्हें ज़्यादा आतुर बनाने से कोई लाभ नहीं है.

जिस दिन गांव वालों की टोली शहर को जाने वाली थी जेड ने चुपके से वह समझौता पत्र जिससे बच्चों की अदला बदली हुई थी चे-पिंग को दे दिया. गांव के अधिकारियों से उसने जाने के पहले ही एक परिचय पत्र भी प्राप्त कर लिया.

एक के बाद दूसरा दिन गुज़रता गया. गांव की टोली वापस आई और दूसरी बार ग़ल्ला देने के लिये फिर वापस चली गयी. जब भी जेड दूसरी तरफ़ के ढाल को जाती वह खड़ी होकर चे-पिंग के आने का इन्तज़ार करती. अब वह आशा लिये हुए आतुर खड़ी रहती थी.

मां येह ने देखा कि आजकल उसकी लड़की जेड ज़्यादा चिन्तित रहती है. यदि घर में जेड के पास काम नहीं रहता था तो वह खाना खाते ही भाग निकलती थी.

मां येह एक दिन उस पर नाराज़ हुई और कहा—"तुम्हारा विवाह होने जा रहा है, पर तुम तैयारियां क्यों नहीं करतीं ? गांव का आवश्यक काम फिर भी हो सकता है."

एक दिन शाम के वक़्त कमरे के कोने में बैठी हुई मां येह लड़की के लिये कुछ अच्छे कपड़े सी रही थीं. सूरज डूबने ही वाला था. थक कर मां येह चूर हो चुकी थीं. वह उठ खड़ी हुई और आंख मलने लगीं. सोचा कि शाम की ठंडक में फ़सल को पानी ही दे आएं. घर से बाहर निकलते ही देखा कि गांव के सरकारी दफ़्तर से जेड दौड़ती हुई चली आ रही है. बूढ़ी मां येह खड़ी, चिन्ता से भरी नज़रों से जेड का दौड़ कर आना देखती रहीं.

हांफती हुई जेड आई और मां के गले में हाथ डाल कर लटकते हुये बोली—"मां, बहुत अच्छी खबर है, बहुत बड़ी बात मुझे कहना है."

"क्या बात है ? तुम हमेशा ऐसा ही कहती हो" मां बोलीं.

जेड ने पहले माथे पर से पसीना पोंछा और बोली—"मां, क्या मेरी बातों पर विश्वास करोगी ? भाई आया है ! वही भाई जिसके बारे में तुम उस दिन रात में बतला रही थीं !"

"कौन भाई ?"

"वही भाई जिसके बदले में तुमने मुझे लिया था, लारोंग !"

मां येह आश्चर्य चकित रह गईं. एक क्षण रुक कर वह बोली—"जेड, अब तुम बड़ी हो गई हो. बेवकूफ़ी की बातें तुम्हें शोभा नहीं देतीं."

जेड तो खुशी से पागल हो रही थी. मां के कन्धों को दोनों हाथों से पकड़ कर उन्हें हिलाने लगी. वह मां के शरीर

پڑتا ہے ۔ پہلے وہ خود وہاں جا کر دیکھے کہ کیا حال ہے اور پھر بعد میں طے کیا جائے گا کہ آگے کیا ہو۔"

اُس نے جیڈ کو چیتاونی دی کہ ماں یہہ کو ابھی کچھ نہ بتائے کیونکہ اُن کی اُمیدوں کو بڑھا دینے سے اور اُنہیں زیادہ آتور بنانے سے کوئی لابھ نہیں ہے ۔

جس دن گاؤں والوں کی ٹولی شہر کو جانے والی تھی جیڈ نے چپکے سے وہ سمجھوتہ پتر جس سے بچوں کی ادلا بدلی ہوئی تھی چے-پنگ کو دے دیا ۔ گاؤں کے ادھیکاریوں سے اُس نے جانے کے پہلے ہی ایک پریچے پتر بھی پراپت کر لیا ۔

ایک کے بعد دوسرا دن گذرتا گیا ۔ گاؤں کی ٹولی واپس آئی اور دوسری بار غلہ دینے کے لئے پھر واپس چلی گئی ۔ جب بھی جیڈ دوسری طرف کے ڈھال کو جاتی وہ کھڑی ہو کر چے-پنگ کے آنے کا انتظار کرتی ۔ اب وہ آشا لئے ہوئے آتور کھڑی رہتی تھی ۔

ماں یہہ نے دیکھا کہ آجکل اُس کی لڑکی جیڈ زیادہ چنتت رہتی ہے ۔ یدی گھر میں جیڈ کے پاس کام نہیں رہتا تھا تو وہ کھانا کھاتے ہی بھاگ نکلتی تھی ۔

ماں یہہ ایک دن اُس پر ناراض ہوئیں اور کہا—"تمہارا وواہ ہونے جا رہا ہے پر تم تیاریاں کیوں نہیں کرتیں ؟ گاؤں کا آوشیک کام پھر بھی ہو سکتا ہے ۔"

ایک دن شام کے وقت کمرے کے کونے میں بیٹھی ہوئی ماں یہہ لڑکی کے لئے کچھ اچھے کپڑے سی رہی تھیں ۔ سورج ڈوبنے ہی والا تھا ۔ تھک کر ماں یہہ چور ہو چکی تھیں ۔ وہ اُٹھ کھڑی ہوئیں اور آنکھ ملنے لگیں ۔ سوچا کہ شام کی ٹھنڈک میں فصل کو پانی ہی دے آئیں ۔ گھر سے باہر نکلتے ہی دیکھا کہ گاؤں کے سرکاری دفتر سے جیڈ دوڑتی ہوئی چلی آ رہی ہے ۔ بوڑھی ماں یہہ کھڑی، چنتا سے بھری نظروں سے جیڈ کا دوڑ کر آنا دیکھتی رہیں ۔

ہانپتی ہوئی جیڈ آئی اور ماں کے گلے میں ہاتھ ڈال کر لٹکتے ہوئے بولی—"ماں، بہت اچھی خبر ہے، بہت بڑی بات مجھے کہنا ہے ۔"

"کیا بات ہے ؟ تم ہمیشہ ایسا ہی کہتی ہو" ماں بولیں ۔

جیڈ نے پہلے ماتھے پر سے پسینہ پونچھا اور بولی—"ماں، کیا میری باتوں پر وشواس کروگی ؟ بھائی آیا ہے ! وہی بھائی جس کے بارے میں تم اُس دن رات میں بتلا رہی تھیں !"

"کون بھائی ؟"

"وہی بھائی جس کے بدلے میں تم نے مجھے لیا تھا، لارونگ !"

ماں یہہ آشچریہ چکت رہ گئیں ۔ ایک چھن رک کر وہ بولیں—"جیڈ، اب تم بڑی ہو گئی ہو ۔ بیوقوفی کی باتیں تمہیں شوبھا نہیں دیتیں ۔"

جیڈ تو [illegible] سے پاگل ہو رہی تھی ۔ ماں کے کندھوں کو دونوں ہاتھوں سے پکڑ کر اُنہیں ہلانے لگی ۔ وہ ماں کے شریر

बड़ी बड़ी मूंछें बार बार उभर आती थीं. हालांकि उसे पापा येह की सभी बातें याद नहीं थीं, फिर भी अब वह उसे पहिले से भी कहीं ज़्यादा प्यारे थे, पहिले से भी ज़्यादा बड़े और हज़ार गुना ज़्यादा समीप मालूम देते थे. जेड की बातें सुन कर मां येह टुकुर टुकुर जेड को ताकने लगीं. उसका मन भर आया......वह न मालूम कितनी बातें कहना चाहती थी. जेड के बोलने के पहिले ही मां येह ने पूछा—"जेड, क्या सोच रही हो ? मुझसे घृना तो नहीं करतीं ? हम लोगों के संग रहकर तुम्हें इतना दुख उठाना पड़ा......"

जेड ज़्यादा बरदाश्त न कर सकी. उसकी आंखों से आसुओं की धारा बह चली. मां के वक्षस्थल पर सिर रखकर वह फूट फूट कर रोने लगी.

वह बोली—"मां, तुम ऐसा क्यों कहती हो ? ज़मींदार वर्ग लड़कियों की कोई क़ीमत ही नहीं समझता. जेंग परिवार मुझे पाल पोस कर बड़ा ही नहीं करना चाहता था. मेरी जगह पर ज़मींदार के घर में मेरे भाई को व्यर्थ ही दुख उठाना पड़ा. मेरे ही कारन आज परिवार इधर उधर बिखरा पड़ा है. कैसी परिस्थितियों में पापा की मृत्यु हुई ! मेरा बस चले तो मैं जेंग की हड्डियां चबा डालूं."

मां येह लड़की के चेहरे को धीरे धीरे सहलाने लगीं. वह बोलीं—"प्यारी बच्ची, तुम बहुत अच्छी लड़की हो. तुम जानती हो कि उचित क्या है. अब तो चेयरमैन माओ आ गये हैं और मैं शान के साथ कह सकती हूं कि तुम्हारा पालन पोसन उचित ढंग से किया है. तुम्हारी शादी का दिन क़रीब आते देख कर ही मुझे तुम्हारे भाई की याद हो आई. कौन जानता है कि वह आज जीवित भी है या नहीं !"

× × ×

उस रात जेड घन्टों जागती रही. सरपत की बनी दीवार के छेदों से चांदनी की लम्बी तिरछी लकीरें बन कर कमरे में आ रही थीं, फिर भी वह सो न सकी.

दूसरे ही दिन उसने कुल बातें ज़े-पिंग को बतलाईं. जेड ने स्वयं ज़ेचुआन जाने की इच्छा प्रगट की. कुछ सोचकर ज़े-पिंग बोला—"यह आवश्यक नहीं है. यदि ज़मींदार जेंग की पोल पूरी तरह न खुल गयी होती तब जेड की बातें आवश्यक होतीं. ज़ेचुआन में तो कितने पहिले कृषि सुधार हो चुका है और जेंग को सज़ा भी मिल चुकी है. जहां तक उसके ज़ेचुआन जाने का प्रश्न है, उसे तो यही मालूम करना है कि उसका भाई जीवित भी है या नहीं ? यदि वह जीवित हो तो कितनी आनन्द की बात होगी. लेकिन यदि वह मर गया हो, तब तो मां येह का दुख और भी बढ़ जायेगा. "ज़े-पिंग ने जेड के सामने अपने विचार रक्खे—कुछ ही दिनों में उसे अपने गांव वालों के साथ पुहो नगर में गल्ला पहुंचाने जाना है. वहां से शेंग्या फील्ड गांव क़रीब 60 ली

بڑی بڑی مونچھیں بارہا ابھر آتی تھیں ۔ حالانکہ اسے پاپا یہہ کی سبھی باتیں یاد نہیں تھیں ۔ پھر بھی اب وہ اسے پہلے سے بھی کہیں زیادہ پیارے تھے' پہلے سے بھی زیادہ بڑے اور ہزار گنا زیادہ سمیپ معلوم دیتے تھے ۔ جیڈ کی باتیں سن کر ماں یہہ ٹکر ٹکر جیڈ کو تاکنے لگیں ۔ اس کا من بھر آیا.... وہ نہ معلوم کتنی باتیں کہنا چاہتی تھیں ۔ جیڈ کے بولنے کے پہلے ہی ماں یہہ نے پوچھا—" جیڈ' کیا سوچ رہی ہو ؟ مجھ سے گھرنا تو نہیں کرتیں ؟ ہم لوگوں کے سنگ رہ کر تمہیں اتنا دکھ اٹھانا پڑا......"

جیڈ زیادہ برداشت نہ کر سکی ۔ اس کی آنکھوں سے آنسوؤں کی دھارا بہ چلی ۔ ماں کے وکش استھل پر سر رکھکر وہ پھوٹ پھوٹ کر رونے لگی ۔

وہ بولی—" ماں' تم ایسا کیوں کہتی ہو ؟ زمیندار ورگ لڑکیوں کی کوئی قیمت ہی نہیں سمجھتا ۔ جینگ پریوار مجھے پال پوس کر بڑا ہی نہیں کرنا چاہتا تھا ۔ میری جگہ پر زمیندار کے گھر میں میرے بھائی کو ویرتھ ہی دکھ اٹھانا پڑا ۔ میرے ہی کارن آج پریوار ادھر ادھر بکھرا پڑا ہے ۔ کیسی پرستھتیوں میں پاپا کی مرتیو ہوئی ! میرا بس چلے تو میں جینگ کی ہڈیاں چبا ڈالوں ۔"

ماں یہہ لڑکی کے چہرے کو دھیرے دھیرے سہلانے لگیں ۔ وہ بولیں—" پیاری بچی' تم بہت اچھی لڑکی ہو ۔ تم جانتی ہو کہ اچت کیا ہے ۔ اب تو چیرمین ماؤ آگئے ہیں اور میں شان کے ساتھ کہہ سکتی ہوں کہ تمہارا پالن پوسن اچت ڈھنگ سے کیا ہے ۔ تمہاری شادی کا دن قریب آتے دیکھ کر ہی مجھے تمہارے بھائی کی یاد ہو آئی ۔ کون جانتا ہے کہ وہ آج جیوت بھی ہے یا نہیں !"

× × ×

اس رات جیڈ گھنٹوں جاگتی رہی ۔ سرپت کی بنی دیوار کے چھیدوں سے چاندنی کی لمبی ترچھی لکیریں بن کر کمرے میں آ رہی تھیں' پھر بھی وہ سو نہ سکی ۔

دوسرے ہی دن اس نے کل باتیں زے - پنگ کو بتلائیں ۔ جیڈ نے سویم زیچوان جانے کی اچھا پرگٹ کی' کچھ سوچ کر زے - پنگ بولا—" یہ آوشیک نہیں ہے ۔ یدی زمیندار جینگ کی پول پوری طرح نہ کھل گئی ہوتی تب جیڈ کی باتیں آوشیک ہوتیں ۔ زیچوان میں تو کتنے پہلے کرشی سدھار ہو چکا ہے اور جینگ کو سزا بھی مل چکی ہے ۔ جہاں تک اسکے زیچوان جانے کا پرشن ہے' اسے تو یہی معلوم کرنا ہے کہ اس کا بھائی جیوت بھی ہے یا نہیں ؟ یدی وہ جیوت ہو تو کتنی آنند کی بات ہوگی ۔ لیکن یدی وہ مر گیا ہو' تب تو ماں یہہ کا دکھ اور بھی بڑھ جائے گا ۔ زے - پنگ نے جیڈ کے سامنے اپنے وچار رکھے—کچھ ہی دنوں میں اسے اپنے گاؤں والوں کے ساتھ پرہو نگر میں غلہ پہونچانے جانا ہے ۔ وہاں سے شینچیا فیلڈ گاؤں قریب 60 لی

गांव में आने के तीसरे साल ही पापा येह छुप कर शेंञ्या फ़ील्ड गांव में अपने बच्चे को देखने के लिये गये. जब वह लौट कर घर आये तो गुस्से से कांप रहे थे. शेंञ्या फ़ील्ड में उसे मालूम हुआ कि उन लोगों के गांव छोड़ देने के बाद ज़मींदार के घर दो बच्चे पैदा हुये थे. यह दोनों ही लड़के थे. इसलिये अब येह का लड़का गुलाम जैसा माना जाता था. उसके कपड़े फटे पुराने होते थे. बार-बार मार खाते रहने से उसके बदन पर नीले दाग़ की धारियां सी पड़ गई थीं. पापा येह छुप कर अपने बेटे से मिले थे और कुछ देर बातें भी की थीं. बातें करने के लिये बहुत थोड़ा समय मिल पाया था, फिर भी पापा येह ने देख लिया था कि उनका बेटा बड़ा ही होनहार और नटखट था.

मां येह ने घर की पुरानी कहानी जेड को सुनाते हुये कहा कि शेंञ्या फ़ील्ड से लौट कर आने के बाद पापा येह इतने क्रुद्ध थे कि दिन भर उन्होंने खाना ही नहीं खाया. घर में क़दम रखते ही चिल्लाकर उन्होंने कहा था—"क्या तुम लोग जानते हो अमीर आदमियों का हृदय किस धातु का बना होता है ?"

जेड मां येह की बात शुरू से ही बड़े ध्यान पूर्वक सुन रही थी. जब उसे अपने पिता की बातें मालूम हुई तो वह बहुत ज़्यादा परेशान हो उठी और उसका मन अस्थिर हो उठा. उसने सपने में भी ऐसी बातें नहीं सोची थीं. अपने जीवन में तो जेड ने सदा दरिद्रता, अभाव, परेशानी ही देखी थी. उसे इसका गुमान भी कैसे हो सकता था कि वह एक जमींदार की बेटी है. उसने हमेशा ज़मींदारों को, कुमिन्तांग अधिकारियों को, जन-साधारन पर अन्याय ही करते देखा था. उसकी अपनी समझ में ज़मींदार और उस वर्ग के लोगों में मनुश्यता नाम-मात्र को भी नहीं होती थी, पर फिर भी वह स्वयं उसी वर्ग में पैदा हुई थी. उसका दिमाग़ चक्कर खाने लगा.

पर धीरे धीरे जेड ने अपने को संभाल लिया. वह मां से बोली—"मां, ज़मींदार वर्ग के लोगों में दिल नहीं होता, उनमें दिल की जगह पत्थर होता है. यदि कोई ज़मींदार है तो यह लाज़मी है कि वह नृशंस और अत्याचारी होगा. पापा येह वहां गये ही क्यों ? क्या उन्हें ज़मींदारों की यह विशेषता नहीं मालूम थी ?

मां येह ने धीरे से सिर हिलाया और कहा—"चिन्तित मत हो. तुम्हारे पिता येह तुम्हें बहुत प्यार करते थे. वह कहा करते थे कि बच्चा बच्चा ही है, चाहे वह लड़का हो या लड़की. प्यारी जेड के भाग्य में तकलीफ़ उठाना ही लिखा था, तभी तो वह हमारे परिवार में आ पड़ी. यदि तुम्हारा भाई तुम्हें परेशान करता था तो पापा येह उसे बहुत डांटते थे. यही कारन था कि वह तुम से बहुत डरता था."

जेड की आंखें लाल हो रही थीं. पापा येह की उसे धुंधली सी याद थी. उसकी याद में पापा के ऊपरी होंठों पर

گاؤں میں آنے کے تیسرے سال ہی پاپا یہ چھپ کر شینجیا فیلڈ گاؤں میں اپنے بچے کو دیکھنے کے لئے گئے۔ جب وہ لوٹ کر گھر آئے تو غصہ سے کانپ رہے تھے۔ شینجیا فیلڈ میں اُسے معلوم ہوا کہ اُن لوگوں کے گاؤں چھوڑ دینے کے بعد زمیندار کے گھر دو بچے پیدا ہوئے تھے۔ یہ دونوں ہی لڑکے تھے۔ اِس لئے اب یہ کا لڑکا غلام جیسا مانا جاتا تھا۔ اُس کے کپڑے پھٹے پرانے ہوتے تھے۔ بار بار مار کھاتے رہنے سے اُس کے بدن پر نیلے داغ کی دھاریاں سی پڑ گئی تھیں۔ پاپا یہ چھپ کر اپنے بیٹے سے ملے تھے اور کچھ دیر باتیں بھی کی تھیں۔ باتیں کرنے کے لئے بہت تھوڑا سے مل پایا تھا، پھر بھی پاپا یہ نے دیکھ لیا تھا کہ اُن کا بیٹا بڑا ہی ہونہار اور نٹ کھٹ تھا۔

ماں یہ نے گھر کی پرانی کہانی جیڈ کو سناتے ہوئے کہا کہ شینجیا فیلڈ لوٹ کر آنے کے بعد پاپا یہ اتنے کرودھ تھے کہ دن بھر اُنھوں نے کھانا ہی نہیں کھایا۔ گھر میں قدم رکھتے ہی چلا کر اُنھوں نے کہا تھا—"کیا تم لوگ جانتے ہو امیر آدمیوں کا ہردے کس دھاتو کا بنا ہوتا ہے ؟"

جیڈ ماں یہ کی بات شروع سے ہی بڑے دھیان پوروک سن رہی تھی۔ جب اُسے اپنے پتا کی باتیں معلوم ہوئیں تو وہ بہت زیادہ پریشان ہو اُٹھی اور اس کا من اَستھِر ہو اُٹھا۔ اس نے سپنے میں بھی ایسی باتیں نہیں سوچی تھیں۔ اپنے جیون میں تو جیڈ نے سدا دردرتا، ابھاؤ، پریشانی ہی دیکھی تھی، اُسے اُس کا گمان بھی کیسے ہو سکتا تھا کہ وہ ایک زمیندار کی بیٹی ہے۔ اُس نے ہمیشہ زمینداروں کو، کومنتانگ ادھیکاریوں کو، جن سادھارن پر انیائے ہی کرتے دیکھا تھا۔ اُس کی اپنی سمجھ میں زمیندار اور اُس ورگ کے لوگوں میں منشیتا نام ماتر کو بھی نہیں ہوتی تھی، اور پھر بھی وہ سویم اُسی ورگ میں پیدا ہوئی تھی۔ اُس کا دماغ چکر کھانے لگا۔

پر دھیرے دھیرے جیڈ نے اپنے کو سنبھال لیا۔ وہ ماں سے بولی—"ماں، زمیندار ورگ کے لوگوں میں دل نہیں ہوتا، اُن میں دل کی جگہ پتھر ہوتا ہے۔ یدی کوئی زمیندار ہے تو یہ لازمی ہے کہ نرشنس اور اتیاچاری ہوگا۔ پاپا یہ وہاں گئے ہی کیوں ؟ کیا اُنھیں زمینداروں کی یہ وشیشتا نہیں معلوم تھی ؟"

ماں یہ نے دھیرے سے سر ہلایا اور کہا—"چنتت مت ہو۔ تمہارے پتا یہ تمہیں بہت پیار کرتے تھے۔ وہ کہا کرتے تھے کہ بچہ بچہ ہی ہے، چاہے وہ لڑکا ہو یا لڑکی۔ پیاری جیڈ کے بھاگیہ میں تکلیف اُٹھانا ہی لکھا تھا، تبھی تو وہ ہمارے پریوار میں آ پڑی۔ یدی تمہارا بھائی تمہیں پریشان کرتا تھا تو پاپا یہ اُسے بہت ڈانٹتے تھے۔ یہی کارن تھا کہ وہ تم سے بہت ڈرتا تھا۔"

جیڈ کی آنکھیں لال ہو رہی تھیں۔ پاپا یہ کی اُسے دھندلی سی یاد تھی۔ اُس کی یاد میں پاپا کے اوپری ہونٹوں پر

के यहां से चले जाने के समय तक का खर्च चलाने के लिये वह उन्हें पांच यूनिट चावल देगा.

इस प्रकार मां येह के लड़का पैदा होने के एक माह के अन्दर ही येह परिवार को शॉव्या फील्ड खेत छोड़ देना पड़ा. बहुत दिनों तक वह इधर उधर भटकते रहे और अन्त में येचुआन के सीमान्त इलाके कीचाऊ की सीमा के क़रीब दाया घाटी में ठहर गये. वहां पापा येह कोयला खोदते थे, नमक की चट्टानें काटते थे या फिर जलाने की लकड़ी काट कर बेचते थे. उनका जीवन बहुत मुश्किल से चल पाता था. 1936 में भयंकर अकाल पड़ा.

येह अपने दोनों बच्चों को लेकर घर से निकल पड़े और भीख मांगने लगे. भीख मांगते मांगते वह येचुआन के चीड़ के पेड़ वाले गांव में पहुंचे. यहां जमींदार लियू ने उन्हें कुछ काम दिया. मां येह खाना पकाया करती थी और पापा येह खेत में काम करते थे. यूचिंग, जो अब नौ साल का हो गया था, जमींदार की भेड़ बकरियां चराने जाया करता था, पर उसे तनख्वाह नहीं मिलती थी. उनको कुल इतना ही मिल पाता था जिसमें वह अपना और अपनी छोटी बच्ची का पेट भर सकते थे. जमींदार लियू कहा करता था कि उसने येह दम्पति पर बड़ी दया की थी. ऐसी ही दया की नौकरी वह क़रीब एक साल करते रहे. फिर पापा येह ने पहाड़ पर थोड़ी जमीन साफ़ कर खेती करने की आज्ञा मांगी. लियू ने उन्हें थोड़ी जमीन दे दी और उसका लगान भी तय हो गया, यद्यपि यह किसी को भी पता नहीं था कि उस जमीन का असली मालिक कौन है.

उस पहाड़ी जमीन की मिट्टी पथरीली थी और उसकी तह बहुत पतली थी. वह कितनी भी मेहनत करते पर अनाज की बालियां लम्बी न होती थीं और फलियां भी बहुत ही छोटी होती थीं. इस मामूली से भी रद्दी फ़सल की रक्षा करने के लिये उन्हें जंगली सूअरों, चूहों, पहाड़ी बकरियों आदि से बराबर लोहा लेते रहना पड़ता था. इसके बाद भी उन्हें जमींदार लियू और कुमिन्तांग अधिकारी ली का अन्याय सहना पड़ता था और उनकी मांग पूरी करनी पड़ती थी. पापा येह को बहुत मेहनत करनी पड़ती थी. जब वे थक कर चूर हो जाते थे तो बहुधा झल्लाकर कहा करते थे कि मैं अपना सब कुछ खेती में लगा देता हूं पर घर ले जाने के लिये उपज में नहीं के बराबर मिलता है. भाग्यवश पास पड़ोस के अन्य किसान बड़े मिलनसार थे. वे एक दूसरे की मदद करने में सदैव तत्पर रहते थे. एक दूसरे को बड़ी आसानी से उधार दे दिया करते थे और हर प्रकार सहायता करते थे. ऐसी परिस्थितियों में दिक्कतों से संघर्ष करते हुए येह दम्पति फिर से अपना घर बसाने में सफल हुये.

येह दम्पती अपने उस बच्चे के बारे में सदा चिंतित रहते थे जिसे उन्हें जमींदार चांग को दे देना पड़ा था. नये

کے یہاں سے چلے جانے کے سمے تک کا خرچ چلانے کے لئے وہ انہیں پانچ یونٹ چاول دیگا۔

اس پرکار ماں یہ کے لڑکا پیدا ہونے کے ایک ماہ کے اندر ہی یہ پریوار کو شینچیا فیلڈ کھیت چھوڑ دینا پڑا۔ بہت دنوں تک وہ اِدھر اُدھر بھٹکتے رہے اور انت میں زیچوان کے سیمانت علاقے کیچاؤ کی سیما کے قریب دایا گھاٹی میں ٹھہر گئے۔ وہاں پاپا یہ کوئلہ کھودتے تھے، نمک کی چٹانیں کاٹتے تھے یا پھر جلانے کی لکڑی کاٹ کر بیچتے تھے۔ اُن کا جیون بہت مشکل سے چل پاتا تھا۔ 1936 میں بھینکر اکال پڑا۔

یہ اپنے دونوں بچوں کو لیکر گھر سے نکل پڑے اور بھیکھ مانگنے لگے۔ بھیکھ مانگتے مانگتے وہ زیچوان کے چیڑ کے پیڑ والے گاؤں میں پہونچے۔ یہاں زمیندار لیو نے انہیں کچھ کام دیا۔ ماں یہ کھانا پکایا کرتی تھی اور پاپا یہ کھیت میں کام کرتے تھے۔ یوچنگ، جو اب نو سال کا ہوگیا تھا، زمیندار کی بھیڑ بکریاں چرانے جایا کرتا تھا، پر اُسے تنخواہ نہیں ملتی تھی۔ اُن کو کل اتنا ہی مل پاتا تھا جس میں وہ اپنا اور اپنی چھوٹی بچی کا پیٹ بھرسکتے تھے۔ زمیندار لیو کہا کرتا تھا کہ اس نے یہ دمپتی پر بڑی دیا کی تھی۔ ایسی ہی دیا کی نوکری وہ قریب ایک سال کرتے رہے۔ پھر پاپا یہ نے پہاڑ پر تھوڑی زمین صاف کر کھیتی کرنے کی آگیاں مانگی۔ لیو نے انہیں تھوڑی زمین دے دی اور اُس کا لگان بھی طے ہوگیا، یدی یہ کسی کو بھی پتہ نہیں تھا کہ اُس زمین کا اصلی مالک کون ہے۔

اُس پہاڑی زمین کی مٹی پتھریلی تھی اور اُس کی تہ بہت پتلی تھی۔ وہ کتنی بھی محنت کرنے پر اناج کی بالیاں لمبی نہ ہوتی تھیں اور پھلیاں بھی بہت ہی چھوٹی ہوتی تھیں۔ اِس معمولی سے بھی ردی فصل کی رکشا کرنے کے لئے انہیں جنگلی سوروں، چوہوں، پہاڑی بکریوں آدی سے برابر لوہا لیتے رہنا پڑتا تھا۔ اُس کے بعد بھی انہیں زمیندار لیو اور کومنتانگ ادھیکاری لی کا انیائے سہنا پڑتا تھا اور اُن کی مانگ پوری کرنی پڑتی تھی۔ پاپا یہ کو بہت محنت کرنی پڑتی تھی۔ جب وہ تھک کر چور ہو جاتے تھے تو بہودھا جھلا کر کہا کرتے تھے کہ میں اپنا سب کچھ کھیتی میں لگا دیتا ہوں پر گھر لے جانے کے لئے اُپج میں نہیں کے برابر ملتا ہے۔ بھاگیہ وش پاس پڑوس کے انیہ کسان بڑے ملنسار تھے۔ وہ ایک دوسرے کی مدد کرنے میں سدیو تتپر رہتے تھے۔ ایک دوسرے کو بڑی آسانی سے اُدھار دے دیا کرتے تھے اور ہر پرکار سہائتا کرتے تھے۔ ایسی پرستھتیوں میں دقتوں سے سنگھرش کرتے ہوئے یہ دمپتی پھر سے اپنا گھر بسانے میں سپھل ہوئے۔

یہ دمپتی اپنے اُس بچے کے بارے میں سدا چنتت رہتے تھے جسے انہیں زمیندار جانگ کو دے دینا پڑا تھا۔ نئے

इक्कीस वर्ष पहिले मां येह और उसके पति जेपुकान के शेंज्या खेत में जमींदार जांग की जमींदारी में रह कर खेती करते थे. उसकी कोठी के पास ही उनकी फूस की एक मड़ैया थी. चांद के बारहवें महीने की चौबीसवीं तारीख को रात में जब ठंडी बरफीली हवा चल रही थी मां येह के दूसरा बच्चा हुआ. वह लड़का था. तीन दिन बाद जमींदार की पत्नी के लड़की पैदा हुई. जमींदार जांग के परिवार में पिछली तीन पीढ़ी से एक लड़का बराबर होता आया था जिससे उनका वंश चलता रहता था. जमींदार जांग भी यही चाहता था कि उसे पुत्र की प्राप्ति हो ताकि वह अपना वंश चला सके और जो उसकी सम्पत्ति का अधिकारी हो सके. जब उसके यहां बेटी ही पैदा हुई तो वह बहुत भुनभुनाया. पर वह अपना असन्तोष प्रगट करने में घबराता था क्योंकि उसकी पत्नी धनी और प्रभावशाली परिवार की थी. वह अत्यन्त सुन्दर भी थी. इसलिये जांग उसे प्यार भी करता था और उससे डरता भी बहुत था. उसकी पत्नी उसकी मनोदशा से भली भांति परिचित थी. यद्यपि वह जानती थी कि उसका पति शीघ्र ही कोई उपपत्नी नहीं ले आयेगा पर इसकी सम्भावना तो हमेशा ही थी.

उसने पति से कहा—"तुम तो समझदार और योग्य व्यक्ति हो. कोई ऐसी तरकीब क्यों नहीं सोचते कि घर में एक पुत्र आ जाय."

× × ×

नया साल शुरू होने पर जमींदार जांग ने अपने कारिन्दे को येह परिवार से पिछला क़र्ज़ वसूल करने के लिये भेजा. इस बार उन्होंने येह परिवार को बहुत तंग किया और जब येह परिवार बहुत ही ज्यादा लाचार हो गया तो यह प्रस्ताव रक्खा कि यदि वह अपने नवजात बालक शिशु को उनकी लड़की से बदलने को तैयार हो जायें तो वह लगान के बारे में उनसे कोई समझौता कर लेंगे. नहीं तो उनका (येह परिवार वालों का) नया साल बड़ा ही भयंकर बीतेगा. जमींदार के ही हाथों में उन दिनों किसानों का जीवन रहता था. मजबूर होकर, आंखों में आंसू भर कर और मन पर हजारों मन का बोझ लाद कर येह दम्पति ने इसे मंजूर किया. अन्त समय में भी जमींदार ने कुछ नयी और कठोर शर्तें जोड़ दीं. उसी रात शर्तनामा लिखा गया और उस पर हस्ताक्षर किये गये. येह दम्पति ने मंजूर किया कि इस समझौते को वे हमेशा गुप्त रक्खेंगे, जमींदार की कोठी से 50 ली के क्षेत्र के अन्दर वे नहीं रहेंगे और येह परिवार का कोई भी व्यक्ति जमींदार जांग की ज़मीन पर कभी क़दम नहीं रक्खेगा. जांग ने यह वादा किया कि वह ज़मीन का लगान दो पिकल अनाज की जगह एक पिकल अनाज कर देगा जिसके बदले में वह उनका बैल लेगा. येह परिवार

اکیس ورش پہلے ماں یہ اور اُن کے پتی زینجوکان کے شینجیا کھیت میں زمیندار جانگ کی زمینداری میں رہکر کھیتی کرتے تھے۔ اُس کی کوٹھی کے پاس ہی اُن کی پھوس کی ایک مڑیا تھی۔ چاند کے بارھویں مہینے کی چوبیسویں تاریخ کو رات میں جب ٹھنڈی برفیلی ہوا چل رہی تھی ماں یہ کے دوسرا بچہ ہوا۔ وہ لڑکا تھا۔ تین دن بعد زمیندار کی پتنی کے لڑکی پیدا ہوئی۔ زمیندار جانگ کے پریوار میں پچھلی تین پیڑھی سے ایک لڑکا برابر ہوتا آیا تھا جس سے ان کا ونش چلتا رہتا تھا۔ زمیندار جانگ بھی یہی چاہتا تھا کہ اُسے پتر کی پراپتی ہوتا کہ وہ اپنا ونش چلا سکے اور جو اُس کی سمپتی کا ادھیکاری ہوسکے۔ جب اُس کے یہاں بیٹی ہی پیدا ہوئی تو وہ بہت بھنبھنایا۔ پر وہ اپنا اسنتوش پرگٹ کرنے میں گھبراتا تھا کیونکہ اس کی پتنی دھنی اور پربھاؤ شالی پریوار کی تھی۔ وہ اتینت سندر بھی تھی۔ اِس لئے جانگ اُسے پیار بھی کرتا تھا اور اُس سے ڈرتا بھی بہت تھا۔ اُس کی پتنی اُس کی منو دشا سے بھلی بھانت پریچت تھی۔ یدیپی وہ جانتی تھی کہ اُس کا پتی شیگھرہ ہی کوئی اُپپتنی نہیں لے آئیگا پر اُس کی سمبھاونا تو ہمیشہ ہی تھی۔

اس نے پتی سے کہا—"تم تو سمجھدار اور یوگیہ ویکتی ہو۔ کوئی ایسی ترکیب کیوں نہیں سوچتے کہ گھر میں ایک پتر آجائے"

× × ×

نیا سال شروع ہونے پر زمیندار جانگ نے اپنے کارندے کو یہ پریوار سے پچھلا قرض وصول کرنے کے لئے بھیجا۔ اِس بار اُنہوں نے یہ پریوار کو بہت تنگ کیا اور جب یہ پریوار بہت ہی زیادہ لاچار ہوگیا تو یہ پرستاو رکھا کہ یدی وہ اپنے نوجات بالک ششو کو اُن کی لڑکی سے بدلنے کو تیار ہوجائیں تو وہ لگان کے بارے میں اُن سے کوئی سمجھوتہ کرلینگے۔ نہیں تو اُن کا (یہ پریوار والوں کا) نیا سال بڑا ہی بھینکر بیتیگا۔ زمیندار کے ہی ہاتھوں میں اُن دنوں کسانوں کا جیون رہتا تھا۔ مجبور ہوکر، آنکھوں میں آنسو بھرکر اور من پر ہزاروں من کا بوجھ لاد کر یہ دمپتی نے اِسے منظور کیا۔ انت سمے میں بھی زمیندار نے کچھ نئی اور کٹھور شرطیں جوڑ دیں۔ اُسی رات شرط نامہ لکھا گیا اور اُس پر دستخط کئے گئے۔ یہ دمپتی نے منظور کیا کہ اِس سمجھوتے کو وے ہمیشہ گپت رکھینگے، زمیندار کی کوٹھی سے 50 لی کے چھیتر کے اندر وے نہیں رہینگے اور یہ پریوار کا کوئی ویکتی زمیندار جانگ کی زمین پر کبھی قدم نہیں رکھیگا۔ جانگ نے یہ وعدہ کیا کہ وہ زمین کا لگان دو پکل اناج کی جگہ ایک پکل اناج کردیگا جس کے بدلے میں وہ اُن کا بیل لیگا۔ یہ پریوار

मां बोली—"यह तो ठीक है, पर क्या यह भी तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे परिवार का कोई सदस्य आज भी वहां है ?"

जेड परेशान हो गई. उसे तो यही मालूम था कि कीचाऊ में उसके परिवार के कुल चार सदस्य आये थे—वह, उसकी मां, पिता और बड़ा भाई. जब वह सात बरस की थी उसका पिता एक बार चेचुआन गया था. जब वह दस बरस की थी तब फिर उसका पिता चेचुआन गया था. उसके बाद ही उन्होंने सुना कि उसकी मृत्यु हो गई थी. उसकी मां को पूरा विश्वास था कि उसके पति की मृत्यु का कारन कुरूप जमींदार जांग ही था. जब जेड तेरह बरों की थी उसके बड़े भाई को कुमिन्तांग के लोग फ़ौज में काम करने के लिये पकड़ ले गये थे. इसके बाद उसका भी नाम फिर कभी नहीं सुनाई पड़ा. उसकी मां ने कई बार सोचा कि वह चेचुआन जाकर जमींदार जांग से मिल कर दो दो बातें करके अपना पुराना हिसाब चुकता कर ले, पर कीचाऊ के सरकारी अफ़सरों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने उसे व्यर्थ में ही परेशान न होने के लिये बहुत समझाया. उन लोगों ने कहा कि चेचुआन के रास्ते में ऊंची पहाड़ियां हैं और रास्ते खराब हैं और फिर वह बूढ़ी हो चुकी है. फिर चेयरमैन माओ द्वारा दी गई प्रेरना के बल पर चेचुआन के किसानों ने स्वयं ही वहां के जमींदार से सभी किसानों के लिये पुराने जुल्मों की क़ीमत वसूल ली होगी. बच कर तो वह कहीं जा ही नहीं सकता था.

जमींदार कुमिन्तांग द्वारा नियुक्त कई गावों का शासक भी था. जब गांव में उसका मुक़दमा हो रहा था उसने कई बार अपने बेटे के बारे में प्रश्न भी किये थे. वह यही कहती थी कि उसके बेटे को जमींदार ली-ही ले गया था.

जेड बोली—"मैं जानती हूं मां, भाई यूचिंग को जमींदार ले गया है.

मां ने कहा—"मेरी प्यारी बच्ची, तुम्हारे एक भाई और भी है. मैंने तुम्हें बीस बरस तक पाल पोस कर बड़ा किया है पर तुम्हें बराबर अन्धकार में रक्खा है. तुम उसी काग़ज़ के पुलिन्दे को लेकर मेरे यहां आई थीं." काग़ज़ के पुलिन्दे की ओर इशारा करते हुए मां की आंखों से आंसू लुढ़क पड़े, पर उसने फ़ौरन पोंछ डाले.

जेड को यह बात सुन कर बड़ा अचम्भा हुआ. वह जैसे आकाश में पहुंच गई हो. उसने पूछा—"मां, क्या यह सच है ?"

बूढ़ी मां ने बेटी की आंखों में आंखें डाल कर कहा—"ध्यान दे कर सुनो. मैंने तुम्हें बीस बरस तक दुख और सुख में अपनी बेटी की तरह पाला है, पर तुम मेरे कोख की जन्मी नहीं हो. जमींदार चाकमार्क जांग ही वास्तव में तुम्हारा बाप है !"

ماں بولیں—"یہ تو ٹھیک ہے پر کیا یہ بھی تمھیں معلوم ہے کہ تمہارے پریوار کا کوئی سدسیہ آج بھی وہاں ہے؟"

جیڈ پریشان ہوگئی. اُسے تو یہی معلوم تھا کہ کیچاؤ میں اُس کے پریوار کے کل چار سدسیہ آئے تھے—وہ، اُس کی ماں، پتا اور بڑا بھائی. جب وہ سات برس کی تھی اُس کا پتا ایک بار زیچوان گیا تھا. جب وہ دس برس کی تھی پھر اس کا پتا زیچوان گیا تھا. اُس کے بعد ہی اُنہوں نے سنا کہ اُس کی مرتیو ہوگئی تھی. اُس کی ماں کو پورا وشواس تھا کہ اُس کے پتی کی مرتیو کا کارن کروپ زمیندار جانگ ہی تھا. جب جیڈ تیرہ ورش کی تھی اُس کے بڑے بھائی کو کومنتانگ کے لوگ فوج میں کام کرنے کے لئے پکڑ لے گئے تھے. اِس کے بعد اُس کا بھی نام پھر کبھی نہیں سنائی پڑا. اُس کی ماں نے کئی بار سوچا کہ وہ زیچوان جاکر زمیندار جانگ سے ملکر دو دو باتیں کرکے اپنا پرانا حساب چکتا کرلے، پر کیچاؤ کے سرکاری افسروں اور پارٹی کاریہ کرتاؤں نے اسے ویرتھ میں ہی پریشان نہ ہونے کے لئے بہت سمجھایا. اُن لوگوں نے کہا کہ زیچوان کے راستے میں اونچی پہاڑیاں ہیں اور راستے خراب ہیں اور پھر وہ بوڑھی ہوچکی ہے. پھر چیئرمین ماؤ دوارا دی گئی پریرنا کے بل پر زیچوان کے کسانوں نے سویم ہی وہاں کے زمیندار سے سبھی کسانوں کے لئے پرانے ظلموں کی قیمت وصول لی ہوگی. بچ کر تو وہ کہیں جا ہی نہیں سکتا تھا.

زمیندار کومنتانگ دوارا نیکت کئی گاؤں کا شاسک بھی تھا. جب گاؤں میں اُس کا مقدمہ ہو رہا تھا اس نے کئی بار اپنے بیٹے کے بارے میں پرشن بھی کئے تھے. وہ یہی کہتی تھی کہ اُس کے بیٹے کو زمیندار لی - ہی لے گیا تھا.

جیڈ بولی—"میں جانتی ہوں ماں، بھائی یوچنگ کو زمیندار لے گیا ہے.

ماں نے کہا—"میری پیاری بچی، تمہارے ایک بھائی اور بھی ہے. میں نے تمھیں بیس برس تک پال پوس کر بڑا کیا ہے پر تمھیں برابر اندھکار میں رکھا ہے. تم اُسی کاغذ کے پلندے کو لیکر میرے یہاں آئی تھیں." کاغذ کے پلندے کی اور اشارہ کرتے ہوئے ماں کی آنکھوں سے آنسو لڑھک پڑے، پر اس نے فوراً پونچھ ڈالے.

جیڈ کو یہ بات سنکر بڑا اچنبھا ہوا. وہ جیسے آکاش میں پہنچ گئی ہو. اُس نے پوچھا—"ماں، کیا یہ سچ ہے؟"

بوڑھی ماں نے بیٹی کی آنکھوں میں آنکھیں ڈالکر کہا—"دھیان دیکر سنو. میں نے تمھیں بیس برس تک دکھ اور سکھ میں اپنی بیٹی کی طرح پالا ہے، پر تم میرے کوکھ کی جنمی نہیں ہو. زمیندار چاکمارک جانگ ہی واستو میں تمہارا باپ ہے!"

यदि चेयरमैन माओ का राज न आया होता तो मैं तुम्हारे लिये एक कंघा भी न खरीद सकती.

जेड बोली—"मां, आजकल दहेज की कौन चिन्ता करता है? कपड़ा एक दो दिन बाद सी लिया जायेगा."

मां ने उत्तर दिया—"अब तुम मुझसे अलग ही होने वाली हो. आज रात मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहती हूं. आज मैं तुझे कहीं भी न जाने दूंगी."

जेड ने सोचा—"आज मां बहुत चिन्तित हैं. शायद वह जे-पिंग के यहां जाकर नहीं रहना चाहतीं. पुराने लोगों का दृष्टिकोन ही कुछ दूसरी तरह का होता है. लेकिन मैं भी क्या करूं? मां की गोद में बैठ कर खेलने वाली उम्र तो अब रही नहीं. मां का जीवन तो तकलीफों में ही गुजरा है. उन्हें कुछ दिन तो आराम के, खुशी के बिताने को मिलने ही चाहियें. मुझे क्या? मेरी उम्र तो अभी केवल इक्कीस वर्षों की ही है. इतनी जल्दी भी क्या है? कुछ दिन बाद ही शादी हो जायेगी."

अपनी मां को सोने के कमरे में पहुंचाते हुए जेड ने सोचा कि वह अपने विवाह को कुछ वर्षों के लिये टाल देगी.

× × ×

लकड़ी के एक पुराने सन्दूक से मां ने कपड़े में लिपटा हुआ काराज का एक पुलिन्दा निकाला. वह एक पुराने दस्तावेज को, जो खुद वर्षों तक बक्स में रक्खे रहने के कारन पीला और जर्जर हो गया था, अपनी बेटी को दिखाना चाहती थी. उसने दस्तावेज को कमरे में रक्खी चौकोर मेज पर फैला दिया और जेड को वहीं बैठने का आदेश दिया.

जेड को ध्यान आया कि सभी बातें इतनी सरल नहीं थीं जितनी सरलता से उसने अपने मन में तय कर डाला था. कुछ परेशान, कुछ खोयी खोयी सी वह अपनी मां के चेहरे पर अपनी नज़र जमाये बैठी रही. खखार कर गला साफ़ करने के बाद मां येह धीरे से बोलीं—"जेड, तुम्हें मालूम है, हम लोग यहां कहां से आये हैं?"

जेड ने उत्तर दिया—"हां, तुम्हीं ने तो बतलाया था कि हम लोग पहिले दक्खिनी चेचुआन के शेंग्या फ़ील्ड में रहते थे."

मां बोलीं—"ठीक, पर हम लोग वहां से कीचाऊ प्रान्त के इस पहाड़ी इलाक़े में क्यों चले आये?"

जेड की समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी मां परिवार के इस पुराने इतिहास को क्यों दुहरा रही थीं. फिर भी वह प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपनी पूरी जानकारी के अनुसार देती थी. उसने कहा कि ज़मींदार जांग ने उन्हें वहां से निकाल दिया था.

یدی چیئرمین ماؤ کا راج نہ آیا ہوتا تو میں تمہارے لئے ایک کنگھا بھی نہ خرید سکتی۔

جیڈ بولی—"ماں، آج کل دہیز کی کون چنتا کرتا ہے؟ کپڑا ایک دو دن بعد سی لیا جائیگا۔"

ماں نے اُتر دیا—"تم مجھ سے الگ ہی ہونے والی ہو۔ آج رات میں تم سے کچھ باتیں کرنا چاہتی ہوں۔ آج میں تجھے کہیں بھی نہ جانے دونگی۔"

جیڈ نے سوچا—"آج ماں بہت چنتت ہیں۔ شاید وہ زے۔پنگ کے یہاں جاکر نہیں رہنا چاہتیں۔ پرانے لوگوں کا درشٹی کون ہی کچھ دوسری طرح کا ہوتا ہے۔ لیکن میں بھی کیا کروں؟ ماں کی گود میں بیٹھکر کھیلنے والی عمر تو اب رہی نہیں۔ ماں کا جیون تو تکلیفوں میں ہی گذرا ہے۔ اُنہیں کچھ دن تو آرام کے، خوشی کے بتانے کو ملنے ہی چاہئیں۔ مجھے کیا؟ میری عمر تو ابھی کیول اکیس ورش کی ہی ہے۔ اتنی جلدی بھی کیا ہے؟ کچھ دن بعد ہی شادی ہوجائیگی۔"

اپنی ماں کو سونے کے کمرے میں پہونچاتے ہوئے جیڈ نے سوچا کہ وہ اپنے وواہ کو کچھ ورشوں کے لئے ٹال دیگی۔

× × ×

لکڑی کے ایک پرانے صندوق سے ماں نے کپڑے میں لپٹا ہوا کاغذ کا ایک پلندا نکالا۔ وہ ایک پرانے دستاویز کو، جو خود ورشوں تک بکس میں رکھے رہنے کے کارن پیلا اور جرجر ہوگیا تھا، اپنی بیٹی کو دکھانا چاہتی تھی۔ اس نے دستاویز کو کمرے میں رکھی چوکور میز پر پھیلا دیا اور جیڈ کو وہیں بیٹھنے کا آدیش دیا۔

جیڈ کو دھیان آیا کہ سبھی باتیں اُتنی سرل نہیں تھیں جتنی سرلتا سے اُس نے اپنے من میں طے کر ڈالا تھا۔ کچھ پریشان، کچھ کھوئی کھوئی سی وہ اپنی ماں کے چہرے پر اپنی نظر جمائے بیٹھی رہی۔ کھکھار کر گلا صاف کرنے کے بعد ماں یہ دھیرے سے بولیں—"جیڈ، تمہیں معلوم ہے، ہم لوگ یہاں کہاں سے آئے ہیں؟"

جیڈ نے اُتر دیا—"ہاں، تمہیں نے تو بتلایا تھا کہ ہم لوگ پہلے دکشنی زیچوان کے شینگیا فیلڈ میں رہتے تھے۔"

ماں بولیں—"ٹھیک، پر ہم لوگ وہاں سے کیچاؤ پرانت کے اس پہاڑی علاقے میں کیوں چلے آئے؟"

جیڈ کی سمجھ میں نہیں آرہا تھا کہ اُس کی ماں پریوار کے اس پرانے اتہاس کو کیوں دہرا رہی تھیں۔ پھر بھی وہ پرتیک پرشن کا اُتر اپنی پوری جانکاری کے انوسار دیتی تھی۔ اس نے کہا کہ زمیندار جانگ نے انہیں وہاں سے نکال دیا تھا۔

चूल्हे पर चढ़े बर्तन को जल्दी में ढक कर जेड अपनी मां के बगल में आ गई और बोली—"मां, तुम दुखी क्यों हो रही हो? मैंने तो सब तुम से पूछ कर ही किया है. यह तो तुम जानती होगी. जे-पिंग के परिवार में तो केवल तीन ही व्यक्ति हैं. यदि मेरे संग तुम भी वहीं चलो, तो भी उन लोगों को कोई आपत्ति नहीं होगी. उनके खेत भी हमारे खेत से मिले हुए हैं. क्या तुम यह सोचती हो कि जे-पिंग तुम्हारा ख्याल नहीं रक्खेगा? यदि ऐसा हुआ, तो मैं तो हूं! मैं तो पूरा ध्यान रक्खूंगी ही. पर ऐसा हो ही नहीं सकता. जिसकी शिक्षा कम्यूनिस्ट पार्टी में हुई है वह अच्छा और दृढ़ ही होगा. पर यदि तुम वहां ठीक न रह सकीं तो तुम्हारे ही साथ मैं भी यहीं लौट आऊंगी."

मां येह ने अपनी बेटी के कन्धे पर हाथ रख कर कहा—"प्यारी बच्ची, बेवक़ूफ़ी की बातें मत करो. यह तुम्हारे जीवन में सब से महत्वपूर्न घटना है. ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिये जिस से तुम्हारे भविश्य पर आंच आये. मैं तुम्हारे लिये कुछ न कर सकी, रह रह कर यही ख्याल मेरे मन में उठता है, और मैं दुखी हो जाती हूं."

एक लम्बी सांस लेकर मां येह ने अपने आंसू पोंछ डाले, पर वह अपने भावोद्वेग को न रोक सकी. जब जेड फिर खाना बनाने चली गई, वह स्वयं उठ कर पिछवाड़े के बराम्दे में चली आई. बाहर चारों ओर चान्दनी छिटकी हुई थी. ठंडी ठंडी हवा चीड़ के जंगलों को चीर कर पहाड़ के ढालों से उतर कर आ रही थी. सामने के बाग़ को पार करते ही पहाड़ों ही की शृंखला शुरू हो जाती थी. इसी पहाड़ पर एक पथरीली सड़क थी जो सीधे 'स्वर्ग द्वार' घाटी तक पहुंचती थी, जहां से दक्षिनी चेचुआन का इलाक़ा शुरू हो जाता था. मां को यह सड़क नहीं दिखाई पड़ रही थी. थोड़ी देर तक वह रोती रही. उसे जेड का बार बार पुकारना भी नहीं सुनाई पड़ा.

जब खाना तैयार हो गया, जेड बाहर आई और मां को खाना खाने के लिये अन्दर लिवा ले गई. इस दिन मां ठीक से न खा सकी, उसका मन भरा हुआ था. बेटी के बार बार कहने पर वह बड़ी मुश्किलों से थोड़ा सा भात खा सकी.

गांव में यदि किसी सभा का कार्यक्रम नहीं रहता था तो जेड खाना खाने के बाद बहुधा गांव के स्कूल में जाकर अख़बार पढ़ा करती थी. स्कूल पहाड़ी के नीचे था. पर आज उसकी मां ने उसे नहीं जाने दिया.

"जेड, आज बाहर मत जाओ", मां ने कहा. "आज हम लोग बैठ कर उन कपड़ों को सियेंगे जो हम लोगों को विजय के फलस्वरूप उस समय मिले थे जब ज़मींदार की जायदाद का किसानों में बंटवारा हो रहा था. तुम्हारे लिये नये कपड़े बनायेंगी. कल उन्हें सीकर पूरा कर देंगे. दिन में मुझे ज़्यादा साफ़ दिखाई देता है. प्यारी बच्ची,

چولہے پر چڑھے برتن کو جلدی سے ڈھک کر جیڈ اپنی ماں کے بغل میں آگئی اور بولی—"ماں، تم دکھی کیوں ہو رہی ہو؟ میں نے تو سب تم سے پوچھ کر ہی کیا ہے. یہ تو شاید جانتی ہوگی. زے - پنگ کے پریوار میں تو کیول تین ہی ویکتی ہیں. یدی میرے سنگ تم بھی وہیں چلو، تو بھی اُن لوگوں کو کوئی آپتی نہیں ہوگی. اُن کے کھیت بھی ہمارے کھیت سے ملے ہوئے ہیں. کیا تم یہ سوچتی ہو کہ زے - پنگ تمہارا خیال نہیں رکھیگا؟ یدی ایسا ہوا، تو میں تو ہوں! میں تو پورا دھیان رکھونگی ہی. پر ایسا ہو ہی نہیں سکتا. جس کی شکشا کمیونسٹ پارٹی میں ہوئی ہے وہ اچھا اور درڑھ ہی ہوگا. پر یدی تم وہاں ٹھیک نہ رہ سکیں تو تمہارے ہی ساتھ میں بھی یہیں لوٹ آؤنگی."

ماں یہ نے اپنی بیٹی کے کندھے پر ہاتھ رکھکر کہا—"پیاری بچی، بیوقوفی کی باتیں مت کرو. یہ تمہارے جیون میں سب سے مہتوپورن گھٹنا ہے. ایسی کوئی بات نہیں ہونی چاہئے جس سے تمہارے بھوشیہ پر آنچ آئے. میں تمہارے لئے کچھ نہ کرسکی، رہ رہ کر یہی خیال میرے من میں اُٹھتا ہے، اور میں دکھی ہو جاتی ہوں."

ایک لمبی سانس لیکر ماں یہ نے اپنے آنسو پونچھ ڈالے، وہ اپنے بھاؤدویگ کو نہ روک سکی. جب جیڈ پھر کھانا بنانے چلی گئی، وہ سویم اُٹھکر پچھواڑے کے برآمدے میں چلی آئی. باہر چاروں اور چاندنی چھٹکی ہوئی تھی. ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا چیڑ کے جنگلوں کو چیرکر پہاڑ کے ڈھالوں سے اُتر کر آرہی تھی. سامنے کے باغ کو پار کرتے ہی پہاڑوں کی شرنکھلا شروع ہوجاتی تھی. اِسی پہاڑ پر ایک پتھریلی سڑک تھی جو سیدھے 'سورگ دوار' گھاٹی تک پہونچتی تھی، جہاں سے دکشنی زیچوان کا علاقہ شروع ہوجاتا تھا. ماں کو یہ سڑک نہیں دکھائی پڑ رہی تھی. تھوڑی دیر تک وہ روتی رہی. اُسے جیڈ کا بار بار پکارنا بھی نہیں سنائی پڑا.

جب کھانا تیار ہوگیا، جیڈ باہر آئی اور ماں کو کھانا کھانے کے لئے اندر لوالیگئی. اِس دن ماں ٹھیک سے نہ کھاسکی، اُس کا من بھرا ہوا تھا. بیٹی کے بار بار کہنے پر وہ بڑی مشکلوں سے تھوڑا سا بھات کھاسکی.

گاؤں میں یدی کسی سبھا کا کاریہ کرم نہیں رہتا تھا تو جیڈ کھانا کھانے کے بعد بہودھا گاؤں کے اسکول میں جاکر اخبار پڑھا کرتی تھی. اِسکول پہاڑی کے نیچے تھا. پر آج اُس کی ماں نے اُسے نہیں جانے دیا.

"جیڈ آج باہر مت جاؤ" ماں نے کہا. "آج ہم لوگ بیٹھکر اُن کپڑوں کو سئیں گے جو ہم لوگوں کو وجئے کے پھل سوروپ اُس سمے ملے تھے جب زمیندار کی جائداد کا کسانوں میں بٹوارہ ہو رہا تھا. تمہارے لئے نئے کپڑے بنائینگے. کل اُنہیں سی کر پورا کردینگے. دن میں مجھے زیادہ صاف دکھائی دیتا ہے. پیاری بچی،

पुनर्मिलन !

(लेखक—शी-कू; अनुवादक—कामेश्वर अग्रवाल)

सूरज को पच्छिमी पहाड़ों के पीछे छुपे हुए काफ़ी देर हो चुकी थी. जब जेड-येह और जे-पिंग अपने चीड़ के पेड़ों वाले गांव के नज़दीक पहुंचे अंधेरा घना हो चला था. वह अपना विवाह करने की नोटिस सरकारी ज़िला दफ़्तर में देकर वापस लौट रहे थे. कुछ ही मिन्टों में जेड-येह हांपती हुई अपने घर में दाख़िल हुई. इस घर में वह और उसकी मां रहती थीं. घर छोटा सा था जिस पर खपरैल पड़ी हुई थी. इसकी दीवारें भी कच्ची थीं और सरपत और पतले बांसों की मदद से बनाई गई थीं.

बूढ़ी मां खाना पका रही थी. वह साठ बरस की हो चली थी. अंधेरे में उसे बर्तन भी नहीं सूझ रहे थे. वह बार बार परेशान हो उठती थी. चूल्हे से निकलने वाली आग की लपटें उस अंधेरे में बिजली का काम देती थीं और इनकी छाया रह रह कर दीवारों पर नाच पड़ती थी.

घर में क़दम रखते ही जेड ने कहा—"मां, मैं वापस आ गई. अब तुम आराम करो. मैं घर का काम पूरा कर दूंगी."

चमचा उसके हाथ में देते हुए मां ने दुख भरे स्वर में कहा—"तुम लोग धीरे धीरे क्यों नहीं चला करतीं ? सांस नहीं लेते बन रहा है."

दियासलाई ढूंढ कर जेड ने तेल का दिया जलाया. सरकंडे की दीवार से छन छन कर आने वाली शाम की ठंडी हवा उस छोटे से दिये से टकरा रही थी. चूल्हे के नज़दीक ही, लकड़ी के एक स्टूल पर मां बेह बैठ गई और टिमटिमाती रोशनी में अपनी नज़रें जेड पर जमा दीं. लम्बी तनी हुई भौंं, गोल गोल काली आंखें, मुंह पर छाई हुई लाली, जेड के अंग अंग से ख़ुशी फूटी पड़ रही थी. अचानक मां के मुंह पर का भाव बदल गया और वह परेशान दिखने लगी. वह कुछ पूछना चाहती थी, पर शब्द उसके मुंह से निकल नहीं रहे थे.

शान्ति भंग करते हुए जेड ही बोली—"मां, हम लोगों ने शुभ दिन तय कर लिया है. ज़िला-नायक का कहना है कि अगले माह की पांचवीं तारीख़ को वह हमारे गांव में नये प्रमाण पत्र देंगे. यह दिन बहुत ही ख़ुशी का होगा. उनका कहना है कि हमारा विवाह भी उसी दिन हो. मैंने जे-पिंग से भी बातें कर ली हैं."

मां, कुछ चौंक कर बोली—"पांचवीं को!" उनकी आंखों से आंसू लुढ़क कर उनके चेहरे की झुर्रियों में दिखाई देने लगे. अपना मुंह दोनों हाथों के बीच कर के वह सुबकने लगीं.

پنرملن !

(لیکھک—شی کو ؛ انوادک—کامیشور اگروال)

سورج کو پچھمی پہاڑوں کے پیچھے چھپے ہوئے کافی دیر ہو چکی تھی. جب جیڈ - یہ اور جے - پنگ اپنے چیڑ کے پیڑوں والے گاؤں کے نزدیک پہونچے اندھیرا گھنا ہو چلا تھا . وہ اپنا وواہ کرنے کی نوٹس سرکاری ضلع دفتر میں دیکر واپس لوٹ رہے تھے . کچھ ہی منٹوں میں جیڈ - یہ ہانپتی ہوئی اپنے گھر میں داخل ہوئی . اس گھر میں وہ اور اُس کی ماں رہتی تھی . گھر چھوٹا سا تھا جس پر کھپریل پڑی ہوئی تھی. اس کی دیواریں بھی کچی تھیں اور سرپت اور پتلے بانسوں کی مدد سے بنائی گئی تھیں .

بوڑھی ماں کھانا پکا رہی تھی . وہ ساٹھ برس کی ہوچلی تھی . اندھیرے میں اُسے برتن بھی نہیں سوجھ رہے تھے . وہ بار بار پریشان ہو اُٹھتی تھی . چولھے سے نکلنے والی آگ کی لپٹیں اُس اندھیرے میں بجلی کا کام دیتی تھیں اور اُن کی چھایا رہ رہ کر دیواروں پر ناچ پڑتی تھی .

گھر میں قدم رکھتے ہی جیڈ نے کہا—"ماں، میں واپس آ گئی . اب تم آرام کرو . میں گھر کا کام پورا کردونگی ."

چمچہ اُس کے ہاتھ میں دیتے ہوئے ماں نے دکھ بھرے سور میں کہا—"تم لوگ دھیرے دھیرے کیوں نہیں چلا کرتیں ؟ سانس بھی لیتے نہیں بن رہا ہے ."

دیاسلائی ڈھونڈھ کر جیڈ نے تیل کا دیا جلایا . سرکنڈے کی دیوار سے چھن چھن کر آنے والی شام کی ٹھنڈی ہوا اُس چھوٹے سے دئیے سے ٹکرا رہی تھی . چولھے کے نزدیک ہی، لکڑی کے ایک اسٹول پر ماں یہ بیٹھ گئی اور ٹمٹماتی روشنی میں اپنی نظریں جیڈ پر جمادیں . لمبی تنی ہوئی بھوں، گول گول کالی آنکھیں، منہ پر چھائی ہوئی لالی، جیڈ کے انگ انگ سے خوشی پھوٹی پڑ رہی تھی . اچانک ماں کے منہ پر کا بھاو بدل گیا اور وہ پریشان دیکھنے لگی . وہ کچھ پوچھنا چاہتی تھی پر شبد اُس کے منہ سے نکل نہیں رہے تھے .

شانتی بھنگ کرتے ہوئے جیڈ ہی بولی—"ماں، ہم لوگوں نے شبھ دن طے کرلیا ہے . ضلع - نایک کا کہنا ہے کہ اگلے ماہ کی پانچویں تاریخ کو وہ ہمارے گاؤں میں نئے پرمان پتر دینگے . یہ دن بہت ہی خوشی کا ہوگا . اُن کا کہنا ہے کہ ہمارا وواہ بھی اسی دن ہو . میں نے جے - پنگ سے بھی باتیں کرلی ہیں ."

ماں کچھ چونک کر بولیں—"پانچویں کو !" اُن کی آنکھوں سے آنسو ڈھلک کر اُن کے چہرے کی جھریوں میں دکھائی دینے لگے . اپنا منہ دونوں ہاتھوں کے بیچ کرکے وہ سبکنے لگیں .

5. क्या हम अपनी औरतों को बराबरी का दर्जा देने के लिये तैयार हैं ?

6. क्या हम पिछड़ी जातियों को जगाने पर तैयार हैं ?

7. क्या हम पूंजीवादी संस्थाओं और ताल्लुक़ेदारी को मिटाने के लिये तैयार हैं ?

8. क्या हम तैयार हैं कि हिन्दुस्तान में सौ फ़ीसदी सैक्यूलर राज हो ?

9. क्या हम तैयार हैं कि तमाम ऐसी संस्थाएं जो साम्प्रदायिक और राजनैतिक हैं दोनों ही मिटा दी जायें ?

10. क्या हम यह मानने और इस पर अमल करने के लिये तैयार हैं कि मजहब समाजी नहीं शख़्सी है ?

11. क्या हम तैयार हैं कि हमारे पहनावे, बोल चाल, रहन सहन और हमारे नामों से मजहब और फ़िर्क़े की छाप मिटा दी जाये ?

12. क्या हम तमाम समाजी संस्थाओं (जैसे स्कूल, कालिज, अस्पताल वग़ैरा) को फ़िर्क़ादारी अड्डा बनाने से रोकेंगे और उन्हें नाम और काम से इन्तहाई सैक्यूलर बनाने की कोशिश करेंगे ?

13. क्या हम मजहबी आधार को छोड़ कर साइन्टिफिक और डैमोक्रेटिक आधार वाले क़ानून अपना सकते हैं ?

14. क्या हम औरतों और अछूतों को सरकारी सहायता दिये जाने पर राजी हैं ?

15. क्या हम तैयार हैं कि इस देश का विधान इन चौदह बातों के आधार पर हो ?

यह सवालात वह हैं जिनका हल हमारी समस्याओं का हल है. अगर इनका जवाब हमारे पास 'हां' है तो समझिये कि देश का कल्यान हो गया और अगर नहीं, तो मेरा जवाब सुन लीजिये :

"न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में"

5. کیا ہم اپنی عورتوں کو برابری کا درجہ دینے کے لئے تیار ہیں ؟

6. کیا ہم پچھڑی جاتیوں کو جگانے پر تیار ہیں؟

7. کیا ہم پونجی وادی سنستھاؤں اور تعلقداری کو مٹانے کے لئے تیار ہیں ؟

8. کیا ہم تیار ہیں کہ ہندستان میں سو فیصدی سیکولر راج ہو؟

9. کیا ہم تیار ہیں کہ تمام ایسی سنستھائیں جو سامپردائک اور راج نیتک ہیں دونوں ہیں مٹادی جائیں ؟

10. کیا ہم یہ ماننے اور اِس پر عمل کرنے کے لئے تیار ہیں کہ مذہب سماجی نہیں شخصی ہے؟

11. کیا ہم تیار ہیں کہ ہمارے پہناوے' بول چال' رہن سہن اور ہمارے ناموں سے مذہب اور فرقہ کی چھاپ مٹادی جائے؟

12. کیا ہم تمام سماجی سنستھاؤں (جیسے اسکول' کالج' اسپتال وغیرہ) کو فرقہ واری اڈا بنانے سے روکیں گے اور اُنھیں نام اور کام سے انتہائی سیکولر بنانے کی کوشش کریں گے؟

13. کیا ہم مذہبی آدھار کو چھوڑکر سائنٹفک اور ڈیموکریٹک آدھار والے قانون اپنا سکتے ہیں؟

41. کیا ہم عورتوں اور اچھوتوں کو سرکاری سہائتا دیئے جانے پر راضی ہیں؟

51. کیا ہم تیار ہیں کہ اِس دیش کا ودھان اِن چودہ باتوں کے آدھار پر ہو .

یہ سوالات وہ ہیں جن کا حل ہماری سمسیاؤں کا حل ہیں۔ اگر اِن کا جواب ہمارے پاس 'ہاں' ہے تو سمجھئے کہ دیش کا کلیان ہوگیا؛ اور اگر 'نہیں' تو میرا جواب سن لیجئے :

"نہ سمجھوگے تو مٹ جاؤ گے اے ہندستاں والو
تمہاری داستاں تک بھی نہ ہوگی داستانوں میں"

विकास एक सा हुआ है और अब भी हो रहा है. इब्रानी जबान के पुराने अहदनामे का तूफ़ाने नूह और मनुस्मृति का "जलप्लावन" एक सा है. सगोत्रवाद का रिवाज भी भारतवर्ष में अर्बों और मिस्रियों की तरह था. अर्बों और मिस्रियों के इतिहास में और भारत के इतिहास में महाभारत के समय तक सगी बहनों से भी शादी की मिसालें मिलती हैं जो साइन्टिफ़िक और मनोवैज्ञानिक आधारों पर बन्द हो गईं.

"हिन्दुस्तान की कलचरी समस्या"

भारती कलचरी समस्या के हल को खोजने से पहले हमें यहां के घिनावने वातावरन को बदलना होगा. हमारी जनता के बहुत बड़े अंग पर नैतिक गुलामी (Moral slavery) छाई हुई है. मजहब के ठेकेदार—चाहे ब्राह्मन हों या सैयद या शेख़ या पादरी साहब, राजा और नवाब, और पूंजीपति—तमाम भारती जनता को गुलामी के चंगुल में जकड़े हुए हैं. सच्ची ख़ुद्दारी, सच्ची स्वाधीनता, सच्ची नागरिकता और भाईचारापन, आदमी आदमी के बीच सच्चा प्यार और सच्चा व्योहार यह सब कुछ वह बातें हैं जिनके विशय में न सताये हुए सोचते हैं न सताने वाले. पढ़ने लिखने के बाद अगर कोई दलित जाति का आदमी इधर ध्यान देता है तो वह केवल बदले की भावना से और सताने वाली जातियां उनकी तहरीकों को कुचलने के लिये नये जाल बिछाती हैं. भारती समाज में आदमी नहीं पैदा होते बल्कि हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई वग़ैरा पैदा होते हैं. यह कहना झूट है कि हिन्दुस्तानी को बुनियादी आज़ादी का पैदाइशी हक़ हासिल है. हमारे भाई बड़े फ़ख़ के साथ इसे बर्दाश्त करते हैं कि उन्हें उनके बुनियादी हक़ न मिलें. हम ख़ुश हैं हमें भले ही मजहबी किताबें पढ़ने को न मिलें, होटलों में छूआ छूत हो, कुएं पर पानी न भरने दिया जाये, मन चाहा ब्याह न कर सकें, मन चाहा रोज़गार न कर सकें!

इस समाज में घृना और नफ़रत ने इन्सानियत के टुकड़े टुकड़े कर दिये हैं, आज़ादी और डेमोक्रेसी का नाम लेकर इन्सानी सूझ बूझ का मज़ाक़ न उड़ाएं. क्या हम सचमुच एक राष्ट्र के लिये एक कलचर चाहते हैं? अगर हां तो क्या हम तैयार हैं:—

1. तमाम भारती जनता को खाने पीने, पूजा पाट और शादी ब्याह में बराबरी का स्थान देने के लिये?

2. जात पात को तोड़ने वाले सरकारी क़ानूनों को मानने के लिये?

3. जात पात का भेद फैलाने वालों को मुजरिम क़रार देने के लिये?

4. क्या हम तैयार हैं कि सरकारी नौकरी पाने और पार्लिमेंट की मेम्बरी ग्रहन करने से पहले अपने जात पात को छोड़ दें?

وکاس ایک سا ہوا ہے اور اب بھی ہو رہا ہے۔ عبرانی زبان کے پرانے عہدنامے کا طوفان نوح اور منوسمرتی کا "جل پلاون" ایک سا ہے۔ سگوترواد کا رواج بھی بھارت ورش میں عربوں اور مصریوں کی طرح تھا۔ عربوں اور مصریوں کے اِتہاس میں اور بھارت کے اِتہاس میں مہابھارت کے سمے تک سگی بہنوں سے بھی شادی کی مثالیں ملتی ہیں جو سائنٹفک اور منوویگیانک آدھاروں پر بند ہوگئیں۔

"ہندستان کی کلچری سمسیا"

بھارتی کلچری سمسیا کے حل کو کھوجنے سے پہلے ہمیں یہاں کے گھناؤنے واتاورن کو بدلنا ہوگا۔ ہماری جنتا کے بہت بڑے انگ پر نیتک غلامی (Moral slavery) چھائی ہوئی ہے۔ مذہب کے ٹھیکیدار—چاہے برہمن ہوں یا سید یا شیخ یا پادری صاحب، راجہ اور نواب، اور پونجی پتی—تمام بھارتی جنتا کو غلامی کے چنگل میں جکڑے ہوئے ہیں۔ سچی خودداری، سچی سوادھینتا، سچی ناگرکتا اور بھائی چارہ پن، آدمی آدمی کے بیچ سچا پیار اور سچا بیوہار یہ سب کچھ وہ باتیں ہیں جن کے وشے میں نہ ستائے ہوئے سوچتے ہیں نہ ستانے والے۔ پڑھنے لکھنے کے بعد اگر کوئی دلت جاتی کا آدمی اِدھر دھیان دیتا ہے تو وہ کیول بدلہ کی بھاؤنا سے اور ستانے والی جاتیاں اُن کی تحریکوں کو کچلنے کے لئے نئے جال بچھاتی ہیں۔ بھارتی سماج میں آدمی نہیں پیدا ہوتے بلکہ ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی وغیرہ پیدا ہوتے ہیں۔ یہ کہنا جھوٹ ہے کہ ہندستانی کو بنیادی آزادی کا پیدائشی حق حاصل ہے۔ ہمارے بھائی بڑے فخر کے ساتھ اِسے برداشت کرتے ہیں کہ اُنہیں ان کے بنیادی حق نہ ملیں۔ ہم خوش ہیں ہمیں بھلے ہی مذہبی کتابیں پڑھنے کو نہ ملیں، ہوٹلوں میں چھوا چھوت ہو، کوئیں پر پانی نہ بھرنے دیا جائے، من چاہا بیاہ نہ کرسکیں، من چاہا روزگار نہ کرسکیں!

اس سماج میں گھرنا اور نفرت نے انسانیت کے ٹکڑے ٹکڑے کردئے ہیں، آزادی اور ڈیموکریسی کا نام لیکر انسانی سوجھ بوجھ کا مذاق نہ اڑائیں۔ کیا ہم سچ مچ ایک راشٹر کے لئے ایک کلچر چاہتے ہیں؟ اگر ہاں تو کیا ہم تیار ہیں:—

1. تمام بھارتی جنتا کو کھانے پینے، پوجا پاٹ اور شادی بیاہ میں برابری کا استھان دینے کے لئے؟

2. ذات پات کو توڑنے والے سرکاری قانونوں کو ماننے کے لئے؟

3. ذات پات کا بھید پھیلانے والوں کو مجرم قرار دینے کے لئے؟

4. کیا ہم تیار ہیں کہ سرکاری نوکری پانے اور پارلیمنٹ کی ممبری گرہن کرنے سے پہلے اپنے ذات پات کو چھوڑ دیں؟

मुसलमानों के मेल का नतीजा हैं. पुराने हिन्दुस्तानी हर चीज़ को उबाल कर या भात बना कर दूध, दही, मट्ठा या गोश्त से खाते थे. आज भी ग़रीब देहाती गेहूं, जौ, चना, मटर, जुवार, बाजरा और दूसरे अनाज उबाल कर खाते हैं. तवे और रोटी का इस्तेमाल हमें मुसलमानों से मिला है. यह दोनों शब्द भी संस्कृत, प्राकृत या अपभ्रंश के नहीं हैं. हिन्दुओं के रसोईघर जैसी पवित्र जगह में इन मुसलमानी चीज़ों का बाईकाट न हो सका.

दूसरों के देवता भी हमारी सभ्यता में अपनाये गये हैं. हिन्दुओं का बहुत बड़ा देवता "शिव" द्राविड़ों का देवता था, वेदों का खंडन करने वाले बुद्ध जी भगवान का अवतार माने जाते हैं, हिन्दुस्तानी ज्योतिश और देवमाला यूनानी ज्योतिश और देवमाला से मिलते जुलते हैं. यूनानी हारस्कोप और हमारी जन्म कुन्डली के होड़ा चक्र एक ही है. यूनानियों के रास चक्र को आज सभी हिन्दुस्तानी अपना कहते हैं. हमारी चरक संहिता के नुस्ख़े भी यूनानी दवाओं के नुस्ख़ों से मिलते जुलते हैं. आख़िर यह तहज़ीब के मेल जोल ही के तो नतीजे हैं.

मोहनजोदड़ो की लगभग चार हज़ार बरस पुरानी तहज़ीब के ख़ात्मे के बाद दो हज़ार बरस तक आर्य सभ्यता शिल्प कला के क्षेत्र में बांझ सी रही. इस सिलसिले में सब से पहला चित्रकार तीसरी सदी ईसा से पहले मौर्यों के ज़माने में हुआ. अशोक की लाटें, अजन्ता की गुफाएं वग़ैरा यूनानी और ईरानी तहज़ीब के मेल जोल का नतीजा हैं. चिकने खम्बों पर शेरों की मूर्तियां आसुरी कला की देन हैं और सांडों की मूर्तियां ईरानी कला का प्रभाव हैं जो छटी सदी ईसा से पहले ईरान में दारा के समय में अक्सर बनाई गई हैं. इसके अलावा शिलाओं पर शाही फ़रमान खुदवाने का रिवाज भी ईरानी है. अशोक से पहले किसी हिन्दुस्तानी राजा ने ऐसा नहीं किया और न ही ऐसे लाट बनवाए. हिन्दुस्तानी मूर्ति कला में गांधार शैली भी यूनानियों की देन है. आज हज़ारों ही मूर्तियां यूनानी ढंग की अफ़ग़ानिस्तान से मथुरा तक मिलती हैं.

इसी तरह हिन्दुस्तानी ड्रामों में भी यूनानी असर पड़ा है. यहां के नाटकों में पर्दे का रिवाज न था, ड्राप पर्दा के लिये संस्कृत का शब्द यवनिका ज़ाहिर करता है कि यह यूनानी देन है, क्योंकि हिन्दुस्तानी यूनानियों को यवन कहते थे.

मज़हब के दायरे में भी तहज़ीबें एक दूसरे से मेल खाती रहीं, यूनानी, मिस्री, बेबीलोनियन, पैगनिज़्म (Pag-hism) एक सी हैं और देवमालाएं भी एक हैं. सभों में पेड़, पौधों, पहाड़ों, झरनों और नदियों के पूजने का रिवाज एक सा था और सभी देशों में ख़ुदा के तसव्वुर का

مسلمانوں کے میل کا نتیجہ ہیں۔ پرانے ہندستانی ہر چیز کو اُبال کر یا بھات بنا کر دودھ، دھی، مٹھا یا گوشت سے کھاتے تھے۔ آج بھی غریب دیہاتی گیہوں، جو، چنا، مٹر، جوار، باجرہ اور دوسرے اناج اُبال کر کھاتے ہیں۔ توے اور روٹی کا استعمال ہمیں مسلمانوں سے ملا ہے۔ یہ دونوں شبد بھی سنسکرت، پراکرت یا اپبھرنش کے نہیں ہیں۔ ہندوؤں کی رسوئی گھر جیسی پوتر جگہ میں اِن مسلمانی چیزوں کا بائیکاٹ نہ ہوسکا۔

دوسروں کے دیوتا بھی ہماری سبھیتا میں اپنائے گئے ہیں۔ ہندوؤں کا بہت بڑا دیوتا "شیو" دراوڑوں کا دیوتا تھا۔ ویدوں کا کھنڈن کرنے والے بدھ جی بھگوان کا اوتار مانے جاتے ہیں، ہندستانی جیوتش اور دیو مالا یونانی جیوتش اور دیو مالا سے ملتے جلتے ہیں۔ یونانی ہارسکوپ اور ہماری جنم کنڈلی کے ہوڑا چکر ایک ہی ہیں۔ یونانیوں کے راس چکر کو آج سبھی ہندستانی اپنا کہتے ہیں۔ ہماری چرک سنہتا کے نسخے بھی یونانی دواؤں کے نسخوں سے ملتے جلتے ہیں۔ آخر یہ تہذیب کے میل جول ہی کے تو نتیجے ہیں۔

موہن جودڑو کی لگ بھگ چار ہزار برس کی پرانی تہذیب کے خاتمے کے بعد دو ہزار برس تک آریہ سبھیتا شلپ کلا کے چھیتر میں بانجھ سی رہی۔ اِس سلسلے میں سب سے پہلا چترکار تیسری صدی عیسوی سے پہلے موریوں کے زمانے میں ہوا۔ اشوک کی لاٹیں، اجنتا کی گپھائیں وغیرہ یونانی اور ایرانی تہذیب کے میل جول کا نتیجہ ہیں۔ چکنے کھمبوں پر شیروں کی مورتیاں آسوری کلا کی دین ہے اور سانڈوں کی مورتیاں ایرانی کلا کا پربھاؤ ہے جو چھٹی صدی عیسوی سے پہلے ایران میں دارا کے سمے میں اکثر بنائی گئی ہیں۔ اِس کے علاوہ شلاؤں پر شاہی فرمان کھدوانے کا رواج بھی ایرانی ہے۔ اشوک سے پہلے کسی ہندستانی راجا نے ایسا نہیں کیا اور نہ ہی ایسے لاٹ بنوائے، ہندستانی مورتی کلا میں گاندھار شیلی بھی یونانیوں کی دین ہے۔ آج ہزاروں ہی مورتیاں یونانی ڈھنگ کی افغانستان سے متھرا تک ملتی ہیں۔

اسی طرح ہندستانی ڈراموں میں بھی یونانی اثر پڑا ہے۔ یہاں کے ناٹکوں میں پردے کا رواج نہ تھا، ڈراپ پردہ کے لئے سنسکرت کا شبد یونیکا ظاہر کرتا ہے کہ یہ یونانی دین ہے، کیونکہ ہندستانی یونانیوں کو یون کہتے تھے۔

مذہب کے دائرے میں بھی تہذیبیں ایک دوسرے سے میل کھاتی رہیں، یونانی، مصری، بے بی لونین، پیگنزم (Pagnism) ایک سی ہیں اور دیومالائیں بھی ایک ہیں۔ سبھوں میں پیڑ پودوں، پہاڑوں، جھرنوں اور ندیوں کے پوجنے کا رواج ایک سا تھا اور سبھی دیشوں میں خدا کے تصور کا

'हिन्दुस्तान में तहज़ीबों का मेल जोल'

मैंने इस जगह ख़ास तौर पर इस सुर्ख़ी की ज़रूरत समझी जिसके दो अमर कारन हैं—(1) हर देश के कलचर का सब से अहम और टिकाऊ पहलू यही है. (2) मैं इतिहास के आधार पर तहज़ीबों के मेल जोल का ख़ाका पेश करना चाहता हूं. कलचर में पहनावा, कला और साहित्य के ख़ास स्थान होते हैं. लिहाज़ा मैं पहनावे से शुरू करता हूं.

आर्यों के यहां बसने से पहले दो क़िस्म के कपड़े पहने जाते थे—एक धोती और दूसरा शाल या चादर. उनके आने पर मर्दों के पहनाव में पगड़ी और द्रापी (एक तरह की बन्डी) और औरतों में चोली का रिवाज हुआ. यह पहनावे मध्य एशिया की देन हैं. चोली और द्रापी को छोड़ कर आम जनता आम तौर से बग़ैर सिले कपड़े पहनती थी. लेकिन सूती धागे का इस्तेमाल होता था, कम से कम द्रापी तो सिली ही जाती थी. आज के वह तमाम लिबास जिन्हें हम हिन्दुस्तानी कहते हैं बिदेसी हैं. अचकन जो लखनऊ के नवाबों और देहली के मुग़लों के यहां बदलते बदलते शेरवानी बन गया दर असल पहली सदी ईसवी में कुशानों की देन है. कुशान सिपाहियों और कनिश्क की मूर्तियों में भी अचकन दिखाया गया है. ग़ालिबन कुशान इसे मध्य एशिया से लाये थे. कुर्ता हिन्दुस्तानी और यूनानी तहज़ीब के मेल जोल ने पैदा किया. यूनानी कुर्ते का नाम ट्यूनिक है जो हिन्दुस्तानी कुर्ते से 90 फ़ी सदी मिलता जुलता है. कुर्ता किस ज़बान का शब्द है यह नहीं कहा जा सकता. संस्कृत, प्राकृत, पाली या अपभ्रंश किसी से भी इसका नाता नहीं जुड़ता. पाइजामा भी कुशानों की ही देन है जिसको अब मुसलमानी समझा जा रहा है. गांधी टोपी, पुर्तगाली टोपी की तरह है जो मध्य काल में पुर्तगालियों और मिस्रियों से यहां पहुंची थी. औरतों के गहनों में नथ और कान की बालियां मुसलमानों की देन हैं. नथ की तो यहां तक शुद्धि हुई कि यह बाज़ बाज़ हिन्दू जातियों में सुहाग की निशानी बन गई. इन गहनों के लिये संस्कृत भाषा में शब्द नहीं हैं और न यह पुरानी मूर्तियों में ही नज़र आते हैं.

हमारे बहुत से खाने बिदेसी हैं जिन्हें आज हम भारती भोजन कहते हैं. हमें बहुत से खाने मुसलमानों के सम्पर्क में आने से मिले. हिन्दुस्तान में आम तौर से दूध की मिठाइयों का रिवाज था. मुसलमानों ने हमें अनाज की मिठाइयां भी दीं. हम आज भी ग़ालिबन इसी वजह से पेड़ा, बर्फ़ी जैसी देर में हज़्म होने वाली मिठाई व्रत के दिन खाते हैं, लेकिन अनाज नहीं खाते. हल्वा, क़ोर्मा, चर्बी, फ़ीरीनी सब की सब मुसलमानों से ही मिली हैं. ख़ुद हल्वाई का लफ़्ज़ फ़ारसी है. पूड़ी, कचौड़ी और रोटी जैसे खाने भी

' ھندستان میں تہذیبوں کا میل جول '

میں نے اِس جگہ خاص طور پر اِس سرخی کی ضرورت سمجھی جس کے دو امر کارن ہیں—(1) ہر دیش کے کلچر کا سب سے اہم اور ٹکاؤ پہلو یہی ہے. (2) میں اتہاس کے آدھار پر تہذیبوں کے میل جول کا خاکہ پیش کرنا چاہتا ہوں . کلچر میں پہناوا، کلا اور ساہتیہ کے خاص استھان ہوتے ہیں . لہذا میں پہناوے سے شروع کرتا ہوں ،

آریوں کے یہاں بسنے سے پہلے دو قسم کے کپڑے پہنے جاتے تھے—ایک دھوتی اور دوسرا شال یا چادر . اُن کے آنے پر مردوں کے پہناؤ میں پگڑی اور دراپی (ایک طرح کی بنڈی) اور عورتوں میں چولی کا رواج ہوا . یہ پہناوے مدھیہ ایشیا کی دین ہیں . چولی اور دراپی کو چھوڑ کر عام جنتا عام طور سے بغیر سلے کپڑے پہنتی تھی ، لیکن سوتی دھاگے کا استعمال ہوتا تھا' کم سے کم دراپی تو سلی ہی جاتی تھی . آج کے وہ تمام لباس جنہیں ہم ھندستانی کہتے ہیں بدیسی ہیں . اچکن جو لکھنؤ کے نوابوں اور دہلی کے مغلوں کے یہاں بدلتے بدلتے شیروانی بن گیا دراصل پہلی صدی عیسوی میں کشانوں کی دین ہے . کشان سپاہیوں اور کنشک کی مورتیوں میں بھی اچکن دکھایا گیا ہے . غالباً کشان اِسے مدھیہ ایشیا سے لائے تھے . کرتا ھندستانی اور یونانی تہذیب کے میل جول نے پیدا کیا . یونانی کرتے کا نام ٹیونک ہے جو ھندستانی کرتے سے 90 فی صدی ملتا جلتا ہے . کرتا کس زبان کا شبد ہے یہ نہیں کہا جا سکتا . سنسکرت' پراکرت' پالی یا اپبھرنش کسی سے بھی اِس کا ناتا نہیں جڑتا . پائجامہ بھی کشانوں ہی کی دین ہے جس کو اب مسلمانی سمجھا جا رہا ہے . گاندھی ٹوپی' پرتگالی ٹوپی کی طرح ہے جو مدھیہ کال میں پرتگالیوں اور مصریوں سے یہاں پہنچی تھی . عورتوں کے گہنوں میں نتھ اور کان کی بالیاں مسلمانوں کی دین ہیں . نتھ کی تو یہاں تک شدھی ہوئی کہ یہ بعض بعض ھندو جاتیوں میں سہاگ کی نشانی بن گئی . اِن گہنوں کے لئے سنسکرت بھاشا میں شبد نہیں ہیں اور نہ یہ پرانی مورتیوں میں ہی نظر آتے ہیں .

ہمارے بہت سے کھانے بدیسی ہیں جنہیں آج ہم بھارتی بھوجن کہتے ہیں . ہمیں بہت سے کھانے مسلمانوں کے سمپرک میں آنے سے ملے . ھندستان میں عام طور سے دودھ کی مٹھائیوں کا رواج تھا . مسلمانوں نے ہمیں اناج کی مٹھائیاں بھی دیں . ہم آج بھی غالباً اِسی وجہ سے پیڑا' برفی جیسی دیر میں ہضم ہونے والی مٹھائی برت کے دن کھاتے ہیں لیکن اناج نہیں کھاتے . حلوہ' قورمہ' چربی' فیرینی سب کی سب مسلمانوں سے ہی ملی ہیں . خود حلوائی کا لفظ فارسی ہے . پوری' کچوری اور روٹی جیسے کھانے بھی

देसी सांचों में ढाल लिया गया है, नैतिक अक्सर भी विदेसी प्रभावों से बदलते बदलते रहे हैं.

3. हमारा कलचर हमेशा से साइन्टिफिक और विकास आत्मिक सिद्धान्तों का हासिल रहा है ख्वाह उनको इख़लाक़ी रंग से पेश किया गया हो या धार्मिक (creedal). साइंटिफिक आधार पर किसी चीज़ को ग्रहन करने या छोड़ने से कलचर अमर होता है. आज के साइंस और मशीन के जुग में वही पहनावा काम सकता है जो कल पुर्ज़ों से न उलझे. चुस्ती और काम की सहूलियत के लिये हमें धोती के बजाय नेकर और पतलून ही पहनना होगा. इसलिये हमें चाहिये कि हम हर सयासी और समाजी कारोबार में साइंटिफिक तरीक़ों को इस्तेमाल करें. अगर अक़्ल से कोई बात सही जंचती है तो उसके अपना लेने में हर्ज ही क्या है, बला से वह राम और कृश्न के रहन सहन में न रही हो.

4. हिन्दुस्तानी कलचर जिन्सयाती और कलात्मक (sexual and artistic) बुनियादों पर ही फला फूला है. हमारे नाच गाने, हमारी मुसव्वरी, हमारे साहित्य, हमारे त्योहार और यहां तक कि हमारे रस्मोरिवाज में भी उनकी छाप है. हमारे देवी देवताओं की कहानियां भी हुस्नो इश्क़ की हदों से बाहर नहीं हैं. हमारे मौजूदा लोक गीत, राग रंग और नाच गाने जो त्योहारों पर मन्दिरों और हर देहाती घरों में सुनाई पड़ते हैं इस कथन को और भी साफ़ कर देते हैं. हमारे घरों की तस्वीरों, मन्दिर की मूर्तियों और साहित्य में एक ऊंचे दर्जे की जिन्सी मिठास है जो अमरीका और फ़्रांस के बालरूम और होटलों को नसीब नहीं. यह जिन्सी मिठास छिछली नहीं इन्तहाई कलात्मक और बुलन्द है जो भरथरी हरी को तवाइफ़ की दूकान से उठाकर स्वर्ग के रास्ते पर खड़ा कर सकती है. हिन्दुस्तानी कलचर के इस पहलू में कुछ ऐसी ज़िन्दगी है कि उन्हें छोड़ने के बाद कलचर पर मुर्दनी छा जाती है. मुसलमानों ने भी इसे अपने कलचर में तमाम मज़हबी पाबन्दियों को ठुकरा कर अपना लिया. हिन्दुस्तान की ईद, यहां की शब्बरात और यहां के मुसलमानों के शादी ब्याह इस्लामी नहीं हिन्दुस्तानी हैं.

5. हिन्दुस्तानी कलचर में इन्तहाई सादगी है लेकिन इस सादगी के भी साम्राजी अन्दाज़ हैं जो पुराने सामन्तवादी ज़ुग से अंग्रेज़ी साम्राजशाही तक बराबर पनपती रही. मैंने रूखा सूखा खाना देखा लेकिन सोने के बर्तनों में. मैंने ख़ुशी से भूक सहने वालों को देखा जो घी और अनाज जलती आग में झोंक देते हैं. मैंने ऐसे नंगे देखे जो मरने पर रेशमी कफ़न पाते हैं. मुझे हिन्दुस्तानी सादगी पसन्द है, इसे कलचर में स्थान मिलना चाहिये, लेकिन साम्राज के और मज़हब के रंग इस पर न चलने पायें. मैं ख़ुदकुशी को सादगी नहीं कह सकता.

دیسی سانچوں میں ڈھال لیا گیا ہے؛ لیکن اسٹر بھی بدیسی پربھاؤں سے بدلتے بدلتے رہے ہیں۔

3. ہمارا کلچر ہمیشہ سے سائنٹفک اور وکاس آتمک سدھانتوں کا حاصل رہا ہے خواہ اُن کو اخلاقی رنگ سے پیش کیا گیا ہو یا دھارمک (creedal)۔ سائنٹفک آدھار پر کسی چیز کو گرہن کرنے یا چھوڑ دینے سے کلچر امر ہوتا ہے۔ آج کے سائنس اور مشین کے جگ میں وہی پہناوا کام دے سکتا ہے جو کل پرزوں سے نہ اُلجھے۔ چستی اور کام کی سہولیت کے لئے ہمیں دھوتی کے بجائے نیکر اور پتلون ہی پہننا ہوگا۔ اس لئے ہمیں چاہئے کہ ہم اپنے ہر سیاسی اور سماجی کاروبار میں سائنٹفک طریقوں کو استعمال کریں۔ اگر عقل سے کوئی بات سہی جانچتی ہے تو اُس کے اپنا لینے میں حرج ہی کیا ہے، بلا سے وہ رام اور کرشن کے رہن سہن میں نہ رہی ہو۔

4. ہندستانی کلچر جنسیاتی اور کلاتمک (sexual and artistic) بنیادوں پر ہی پھلا پھولا ہے۔ ہمارے ناچ گانے، ہماری مصوری، ہمارے ساہتیہ، ہمارے تیوہار اور یہاں تک کہ ہمارے رسم و رواج میں بھی اُن کی چھاپ ہے۔ ہمارے دیوی دیوتاؤں کی کہانیاں بھی حسن و عشق کی حدوں سے باہر نہیں ہیں۔ ہمارے موجودہ لوک گیت، راگ رنگ اور ناچ گانے جو تیوہاروں پر مندروں اور ہر دیہاتی گھروں میں سنائی پڑتے ہیں اِس کتھن کو اور بھی صاف کر دیتے ہیں۔ ہمارے گھروں کی تصویروں، مندر کی مورتیوں اور ساہتیہ میں ایک اُونچے درجہ کی جنسی مٹھاس ہے جو امریکہ اور فرانس کے بال روم اور ہوٹلوں کو نصیب نہیں۔ یہ جنسی مٹھاس چھچھلی نہیں انتہائی کلاتمک اور بلند ہے جو بھرتری ہری کو طوائف کی دوکان سے اُٹھا کر سورگ کے راستہ پر کھڑا کر سکتی ہے۔ ہندستانی کلچر کے اِس پہلو میں کچھ ایسی زندگی ہے کہ انہیں چھوڑنے کے بعد کلچر پر مُردنی چھا جاتی ہے۔ مسلمانوں نے بھی اِسے اپنے کلچر میں تمام مذہبی پابندیوں کو ٹھکرا کر اپنا لیا۔ ہندستان کی عید، یہاں کی شب برات اور یہاں کے مسلمانوں کے شادی بیاہ اِسلامی نہیں ہندستانی ہیں۔

5. ہندستانی کلچر میں انتہائی سادگی ہے لیکن اِس سادگی کے بھی سامراجی انداز ہیں جو پرانے سامنت وادی جگ سے انگریزی سامراج شاہی تک برابر پنپتی رہی۔ میں نے روکھا سوکھا کھانا دیکھا لیکن سونے کے برتنوں میں۔ میں نے خوشی سے بھوک سہنے والوں کو دیکھا جو گھی اور اناج جلتی آگ میں جھونک دیتے ہیں۔ میں نے ایسے ننگے دیکھے جو مرنے پر ریشمی کفن پاتے ہیں۔ مجھے ہندستانی سادگی پسند ہے، اِسے کلچر میں استھان ملنا چاہئے لیکن سامراج کے اور مذہب کے رنگ اِس پر نہ چلنے پائیں۔ میں خودکشی کو سادگی نہیں کہہ سکتا۔

मुसलमान शासकों की इस अदूरदर्शता का यह नतीजा निकला कि उनमें ऊंच नीच की गन्दी भावना पैदा हो गई. यूरोप की जातियों ने भी यहां की जाहिल जनता में भेद भाव को और मजबूत बनाकर अपना उल्लू सीधा किया. धार्मिक मिशनरियों ने भी (चाहे मुसलमान हों या ईसाई) यहां की जहालत को प्रचार का साधन बनाया और हमेशा हिन्दू मुसलमान और शूद्र ब्राह्मन वग़ैरा के अन्दरूनी भेद को उभारते रहे. ईसाई पादरी दलित को ईसाई बनाकर उनमें ब्राह्मनों से बुजुर्ग होने का जुनून भरते रहे. यहां तक कि बीसवीं सदी में कलचरी मतभेद उस चरम सीमा पर पहुंच गया जहां देश कलचर के नाम पर दो टुकड़े हो गया.

अगर हम रवादारी से आज के कलचर का जाइजा लें तो मालूम होगा कि हमारे देश में जाति जाति, प्रान्त प्रान्त, यहां तक कि शहर शहर और देहात देहात के कलचर और भाशा में फ़र्क़ है. कोई बंगाली, कोई मद्रासी, कोई पंजाबी, कोई यू० पी० का निवासी कलचरी ऐतबार से एक दूसरे से मेल नहीं खाता. ख़ुशक़िस्मती से पिछले कुछ दिनों में अंग्रेजी कलचर और अंग्रेजी भाशा ने पूरे भारत के कलचरी एकता के साधन जुटा दिये थे. आज भी अगर पंजाबी और बंगाली में रोटी बेटी का संबंध होता है तो कहने को वह भले ही हिन्दुस्तानियत के नाम पर हो मगर ऐसे कामों में अंग्रेजी कलचर और अंग्रेजी असर उजागर मालूम होते हैं, इसके लिये हमको अंग्रेजों का अहसानमन्द होना चाहिये. धोती और तहमद में, कुर्ते और अचकन में, पायजामा और शलवार में, दाढ़ी दाढ़ी में, मूंछे मूंछे में, तस्बीह और जनेऊ में चाहे जो भी भेद भाव हो लेकिन सूट और टाई की दुनिया में, घुटे हुए चहरों की दुनिया में तमाम फ़िर्क़ों के हिन्दुस्तानी एक से नजर आते हैं. मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और गिर्जाघरों में चाहे जितना भी बैर भाव हो लेकिन होटलों, तफ़रीहगाहों, आराम घरों में सब एक से हैं.

'हिन्दुस्तानी कलचर के टिकाऊ पहलू'

1. लचक (flexibility)—इस विशय पर काफ़ी बहस हो चुकी है. सिर्फ़ इतना कहना है कि 'इन्क़लाब' जो आदमीयत की जान है कुचलने न पाये और यह लचक अमर हो जाये. हम वक़्त के तक़ाज़ों के अनुसार बदलते बदलते रहें, ख़्वाह कलचर हो या भाशा या कोई और मामला हो.

2. हिन्दुस्तानी कलचर का आधार हमेशा से धर्म रहा है और आज भी है. इसके साथ साथ हम यह भी मानने को तैयार हैं कि हिन्दू धर्म मजहब के नाम पर मजहब नहीं है जिसके लिये हम अंग्रेजी शब्द (creed) इस्तेमाल करते हैं दरअसल हिन्दुस्तानी कलचर में उसकी प्रधानता धर्म की रवादारी और नैतिक बुनियादों पर है. रवादारी की तो यह इन्तहा है कि हमारे कलचर की हर बात विदेसी है जिसे

مسلمان شاسکوں کی اِس اَدوردرشتا کا یہ نتیجہ نکلا کہ اُن میں اُونچ نیچ کی گندی بھاونا پیدا ہوگئی۔ یورپ کی جاتیوں نے بھی یہاں کی جاہل جنتا میں بھید بھاؤ کو اور مضبوط بناکر اپنا اُلّو سیدھا کیا۔ دھارمک مشنریوں نے بھی (چاہے مسلمان ہوں یا عیسائی) یہاں کی جہالت کو پرچار کا سادھن بنایا اور ہمیشہ ہندو مسلمان اور شودر براہمن وغیرہ کے اندرونی بھید کو اُبھارتے رہے۔ عیسائی پادری دلت کو عیسائی بناکر اُن میں براہمنوں سے بزرگ ہونے کا جنون بھرتے رہے یہاں تک کہ بیسویں صدی میں کلچری مت بھید اُس چرم سیما پر پہونچ گیا جہاں دیش کلچر کے نام پر دو ٹکڑے ہوگیا۔

اگر ہم رواداری سے آج کے کلچر کا جائزہ لیں تو معلوم ہوگا کہ ہمارے دیش میں جاتی جاتی، پرانت پرانت، یہاں تک کہ شہر شہر اور دیہات دیہات کے کلچر اور بھاشا میں فرق ہے۔ کوئی بنگالی، کوئی مدراسی، کوئی پنجابی، کوئی یوپی کا نواسی کلچری اعتبار سے ایک دوسرے سے میل نہیں کھاتا۔ خوش قسمتی سے پچھلے کچھ دنوں میں انگریزی کلچر اور انگریزی بھاشا نے پورے بھارت کے کلچری ایکتا کے سادھن جٹا دیئے تھے۔ آج بھی اگر پنجابی اور بنگالی میں روٹی بیٹی کا سمبندھ ہوتا ہے تو کہنے کو وہ بھلے ہی ہندوستانیت کے نام پر ہو مگر ایسے کاموں میں انگریزی کلچر اور انگریزی اثر اُجاگر معلوم ہوتے ہیں، اِس کے لئے ہم کو انگریزوں کا احسان مند ہونا چاہئے۔ دھوتی اور تہمد میں، کرتے اور اچکن میں، پائجامہ اور شلوار میں، داڑھی داڑھی میں، مونچھے مونچھے میں، تسبیح اور جنیو میں چاہے جو بھی بھید بھاؤ ہو لیکن سوٹ اور ٹائی کی دنیا میں، گھٹے ہوئے چہروں کی دنیا میں تمام فرقوں کے ہندستانی ایک سے نظر آتے ہیں۔ مندروں، مسجدوں، گوردواروں اور گرجا گھروں میں چاہے جتنا بھی بیر بھاؤ ہو لیکن ہوٹلوں، تفریح گاہوں، آرام گھروں میں سب ایک سے ہیں۔

'ہندستانی کلچر کے ٹکاؤ پہلو'

1. لچک (flexibility)—اِس وشے پر کافی بحث ہو چکی ہے۔ صرف اتنا کہنا ہے کہ 'انقلاب' جو آدمیت کی جان ہے کچلنے نہ پائے اور یہ لچک امر ہو جائے۔ ہم وقت کے تقاضوں کے انوسار بدلتے بدلتے رہیں، خواہ کلچر ہو یا بھاشا یا کوئی اور معاملہ ہو۔

2. ہندستانی کلچر کا آدھار ہمیشہ سے دھرم رہا ہے اور آج بھی ہے۔ اِس کے ساتھ ساتھ ہم یہ بھی ماننے کو تیار ہیں کہ ہندو دھرم مذہب کے نام پر مذہب نہیں ہے جس کے لئے ہم انگریزی شبد (creed) استعمال کرتے ہیں دراصل ہندستانی کلچر میں اُس کی پردھانتا دھرم کی رواداری اور نیتک بنیادوں پر ہے۔ رواداری کی تو یہ انتہا ہے کہ ہمارے کلچر کی ہر بات بدیسی ہے جسے

हावी रहा. यह दमन अर्से तक चलता रहा. तब समय ने महात्मा बुद्ध को जन्म दिया. महात्मा बुद्ध ने आदमी और आदमियत का मूल्य आंका, उन्होंने तमाम भारती जनता को भाईचारा, प्रेम, मोहब्बत और रहम का संदेश दिया जिसे दलितों ने अपनाया, जिसका राजे महाराजाओं ने भी स्वागत किया, मगर कुछ ही अर्से बाद ब्राह्मनवाद ने शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट वग़ैरा को जन्म दिया, जिन्होंने बौद्धों को रौंद डाला. एक राश्ट्र, एक कलचर की भावना दब गई, धार्मिक कट्टरपन फिर उभरा. उसके बाद आठवीं सदी ईसवी में एक नई सभ्यता, भाईचारापन लिये हुए, इस्लाम के नाम से हिन्दुस्तान में दाख़िल हुई. यह इस्लाम शंकराचार्य और कुमरिल भट्ट के कट्टरपन पर छाता चला गया. भारत वासियों ने मन्दिर की जगह मस्जिद देखे जहां राजा रंक और फ़क़ीर बराबर थे. ऐसी दशा में ब्राह्मनवादी सभ्यता से ईमान का बदला लेती हुई हिन्दुस्तानियत इस्लामी सभ्यता क़बूल करने लगी और क़बूल करती चली गई. मगर इस्लामी सभ्यता भी शंकराचारी सभ्यता से अपना दामन न बचा सकी. नतीजे के तौर पर इस्लाम में भी ऊंच नीच का ज़हर फैलने लग गया. मुसलमानों में भी फ़िर्क़ेवारी जमाअतें बन गईं और इस्लामी तहज़ीब में पनपने की शक्ति मर गई. मुसलमान रूढ़िवादी हो गये. हट धर्मी एक सीमा पर पहुंच गई. इस्लाम इन्सानियत का आख़िरी विकास है. इसके आगे विकास का नाम न लो वर्ना भविश्य में ब्राह्मनवाद की तरह इस इस्लाम को भी बोरिया बिस्तर समेटना पड़ेगा...... इन सभ्यताओं के टकराव से और लेन देन से कुछ तरक़्क़ी पसंद सुधारकों को समानता का सबक़ देने का मौक़ा मिला. इस सिलसिले में कबीर और नानक के नाम आते हैं. कबीर ने ब्राह्मनवाद और इस्लाम की दाख़िली सभ्यता का नंगा रूप आम लोगों के सामने रखा. नानक ने छूत छात को ठुकराकर एक ईश्वर की उपासना का गीत गाया. उसके बाद जब दूसरी यूरपी जातियां हिन्दुस्तान आई तो उन्होंने भी अपनी भाशा, रहन सहन और साहित्य वग़ैरा से न चाहते हुए भी एक कलचर के ख़्याल को बढ़ावा दिया और सारे देश में जागरन की लहर दौड़ गई.

हिन्दुस्तान में सैकड़ों बरस की कोशिश पर भी कलचरी एकता अब तक क़ाइम न हो सकी, इसकी एक ख़ास वजह यह भी है कि हिन्दुस्तान की साधारन जनता साम्राजियत और ऊंच नीच की आड़ में जान बूझकर जहालत का शिकार बनाई गई, यहां तक कि मुसलमान बादशाहों ने भी अपने दरबारों में केवल ब्राह्मनों, क्षत्रियों और ऊंची जात वालों को बढ़ावा और मान दिया, रौंदी और मली हुई जातों की तरफ़ किसी का ध्यान ही नहीं गया. इस्लामी साम्राजशाही भी तरक़्क़ी पसंद अनासर (तत्वों) को मिलती रही.

حاوی رھا. یہ دمن عرصے تک چلتا رھا. تب سمے نے مہاتما بدھ کو جنم دیا. مہاتما بدھ نے آدمی اور آدمیت کا مولیہ آنکا' اُنھوں نے تمام بھارتی جنتا کو بھائی چارا' پریم' محبت اور رحم کا سندیش دیا جسے دلتوں نے اپنایا' جس کا راجے مہاراجاؤں نے بھی سواگت کیا. مگر کچھ ھی عرصہ بعد براھمن واد نے شنکراچاریہ اور کمارل بھٹ وغیرہ کو جنم دیا' جنھوں نے بودھوں کو روند ڈالا. ایک راشٹر' ایک کلچر کی بھاؤنا دب گئی' دھارمک کٹرپن پھر اُبھرا. اُس کے بعد آٹھویں صدی عیسوی میں ایک نئی سبھیتا' بھائی چارا پن لئے ھوئے' اِسلام کے نام سے ھندستان میں داخل ھوئی. یہ اِسلام شنکراچاریہ اور کمارل بھٹ کے کٹرپن پر چھاتا چلا گیا. بھارت واسیوں نے مندر کی جگہ مسجد دیکھے جہاں راجہ رنک اور فقیر برابر تھے. ایسی دشا میں براھمن وادی سبھیتا سے اِیمان کا بدلہ لیتی ھوئی ھندستانیت اِسلامی سبھیتا قبول کرنے لگی اور قبول کرتی چلی گئی. مگر اِسلامی سبھیتا بھی شنکراچاری سبھیتا سے اپنا دامن نہ بچا سکی. نتیجے کی طور پر اِسلام میں بھی اُونچ نیچ کا زھر پھیلنے لگ گیا. مسلمانوں میں بھی فرقہ واری جماعتیں بن گئیں اور اِسلامی تہذیب میں پنپنے کی شکتی مر گئی. مسلمان روڑھی وادی ھوگئے. ھٹ دھرمی ایک سیما پر پہونچ گئی. اِسلام اِنسانیت کا آخری وکاس ھے. اِس کے آگے وکاس کا نام نہ لو ورنہ بھوشیہ میں براھمن واد کی طرح اِس اِسلام کو بھی بوریا بستر سمیٹنا پڑےگا...... ان سبھیتاؤں کے ٹکراؤ سے اور لین دین سے کچھ ترقی پسند سدھارکوں کو سمانتا کا سبق دینے کا موقع ملا. اِس سلسلے میں کبیر اور نانک کے نام آتے ھیں. کبیر نے براھمن واد اور اِسلام کی داخلی سبھیتا کا ننگا روپ عام لوگوں کے سامنے رکھا. نانک نے چھوت چھات کو ٹھکرا کر ایک اِیشور کی اُپاسنا کا گیت گایا. اس کے بعد جب دوسری یورپی جاتیاں ھندستان آئیں تو اُنھوں نے بھی اپنی بھاشا' رھن سہن اور ساھتیہ وغیرہ سے نہ چاھتے ھوئے بھی ایک کلچر کے خیال کو بڑھاوا دیا اور سارے دیش میں جاگرن کی لہر دوڑ گئی.

ھندستان میں سیکڑوں برس کی کوشش پر بھی کلچری ایکتا اب تک قائم نہ ھوسکی' اس کی ایک خاص وجہ یہ بھی ھے کہ ھندستان کی سادھارن جنتا سامراجیت اور اُونچ نیچ کی آڑ میں جان بوجھ کر جہالت کا شکار بنائی گئی' یہاں تک کہ مسلمان بادشاھوں نے بھی اپنے درباروں میں کیول براھمنوں' چھتریوں اور اُونچی ذات والوں کو بڑھاوا اور مان دیا' روندی اور ملی ھوئی جاتوں کی طرف کسی کا دھیان ھی نہیں گیا. اِسلامی سامراج شاھی بھی ترقی پسند عناصر (تتوں) کو ملتی رھی.

उसके सामने चार तरह के खाने, चार तरह की चीजें, जैसे किताब, हथियार, तराजू और गन्दा बर्तन रखे जाते हैं. बच्चा जिस तरह के खाने और जिस क़िस्म की चीजों की तरफ़ लपकता है उस से उसके बर्न का अन्दाजा लगाया जाता है. यह रिवाज बर्न व्यवस्था की लचक के कारन ही पैदा हुआ था. बच्चा जन्म से तो शूद्र बर्न* का है ही उसके भविश्य के बर्न का अटकल पच्चू मालूम करने के यही सब तरीक़े पैदा किये गये थे.

समाज में आर्थिक सुखों, दुखों और पेशे की पेचीदगियों ने धीरे धीरे ऊंच नीच की विचार धारा को इतना उभारा कि आपस में एक बर्न का दूसरे बर्न से रोटी बेटी का सम्बन्ध बिल्कुल ही टूट गया. इस तरह समाज की आर्थिक व्यवस्था में समानता न होने के कारन धार्मिक कट्टरपन का भयानक भूत ऊंच नीच और छुआ छूत के नाम पर इतना आगे बढ़ा कि आज समाज की पिछली रूप रेखा ही बदल गई, लेकिन इस फ़र्ज़ी धार्मिक कट्टरपन की आड़ के बावजूद समाज की पांचन शक्ति अपना काम करती रही, हारे हुए क्षत्री शूद्र बन गये, जीते हुए यूनानी, शक और हुन वग़ैरा राजपूत बनकर क्षत्री बन बैठे और ब्राह्मनों ने उनका खान्दानी सिलसिला चांद और सूरज से मिला दिया.

आख़िरकार पूंजीवादी और साम्राजी विचार धारा आगे बढ़ी और साथ ही धार्मिक कट्टरपन का झूठा आडम्बर भी ओढ़ती गई. ब्राह्मनों ने वास्तविकता और स्वाभिमान को पूंजीवाद के हाथ बेच दिया और झूठे विचारों के नये नये हथियार गढ़ गढ़ कर पूंजीवाद और सामंतवाद को सौंपा. इस तरह अवाम के असली सुखों का चित्र केवल साम्राजी महलों, दरबारों और शहरों तक ही सीमित होकर रह गया. समाजी न्याय का गला दबा दिया गया. बराबरी, भाई चारापन का नाम लेना पाप हो गया. ग़रीब जनता पर छुआ छूत, बेगार वग़ैरा दमन के हथियार चलने लगे, पिसी हुई जनता अंधेरी झोंपड़ी से कोई कालिदास, कोई बिक्रमादित्य, कोई भरथरी हरि और कोई चानक्य न पैदा कर सकी.

'सुधार की ओर'

नई रोशनी में परखने पर पता लगता है कि हिन्दुस्तानी कलचर हमेशा से ही बीमार सी रही है. उस पर मज़ा यह कि भारती रहन सहन पर हिन्दू साम्राजशाही और पूंजीवाद

* मुझे इस समय नहीं याद आ रहा है ग़ालिबन मनुस्मृति में इसकी चर्चा है कि जो शब्दों का सही उच्चारन न कर सके वह मलेच्छ है. शूद्र मलेच्छ नहीं होते थे. इसी कारन आदमी जन्म से शूद्र है. यूनानी वग़ैरा इसी वजह से मलेच्छ कहलाए क्योंकि वह संस्कृत न जानते थे. मलेच्छपन को अपनाने से या दूर कर देने से बर्न बदल जाता है. इसका भी ज़िक्र क़रीब क़रीब उन्हीं शब्दों में ग़ालिबन मनुस्मृति में है.

اُس کے سامنے چار طرح کے کھانے، چار طرح کی چیزیں، جیسے کتاب، ہتھیار، ترازو، اور گندہ برتن رکھے جاتے ہیں۔ بچہ جس طرح کے کھانے اور جس قسم کی چیزوں کی طرف لپکتا ہے اُس سے اُس کے ورن کا اندازہ لگایا جاتا ہے یہ رواج ورن ویوستھا کی لچک کے کارن ہی پیدا ہوا تھا، بچہ جنم سے تو شودر ورن* کا ہے ہی اُس کے بھوشیہ کے ورن کا اٹکل پچو معلوم کرنے کے یہی سب طریقے پیدا کئے گئے تھے۔

سماج میں آرتھک سکھوں، دکھوں اور پیشے کی پیچیدگیوں نے دھیرے دھیرے اونچ نیچ کی وچار دھارا کو اتنا اُبھارا کہ آپس میں ایک ورن کا دوسرے ورن سے روٹی بیٹی کا سمبندھ بالکل ہی ٹوٹ گیا۔ اِس طرح سماج کی آرتھک ویوستھا میں سمانتا نہ ہونے کے کارن دھارمک کٹرپن کا بھیانک بھوت اونچ نیچ اور چھواچھوت کے نام پر اتنا آگے بڑھا کہ آج سماج کی پچھلی روپ ریکھا ہی بدل گئی، لیکن اِس فرضی دھارمک کٹرپن کی آڑ کے باوجود سماج کی پاچن شکتی اپنا کام کرتی رہی، ہارے ہوئے چھتری شودر بن گئے، جیتے ہوئے یونانی، شک اور ہن وغیرہ راجپوت بن کر چھتری بن بیٹھے اور براہمنوں نے اُن کا خاندانی سلسلہ چاند اور سورج سے ملا دیا۔

آخرکار پونجی وادی اور سامراجی وچار دھارا آگے بڑھی اور ساتھ ہی دھارمک کٹرپن کا جھوٹا آڈمبر بھی اوڑھتی گئی۔ براہمنوں نے واستوکتا اور سوابھیمان کو پونجی واد کے ہاتھ بیچ دیا اور جھوٹے وچاروں کے نئے نئے ہتھیار گڑھ گڑھ کر پونجی واد اور سامنت واد کو سونپا۔ اس طرح عوام کے اصلی سکھوں کا چتر کیول سامراجی محلوں، درباروں اور شہروں تک ہی سیمت ہوکر رہ گیا۔ سماجی نیائے کا گلا دبا دیا گیا۔ برابری، بھائی چاراپن کا نام لینا پاپ ہوگیا۔ غریب جنتا پر چھواچھوت، بیگار وغیرہ دمن کے ہتھیار چلنے لگے، پسی ہوئی جنتا اندھیری جھونپڑی سے کوئی کالیداس، کوئی وکرمادتیہ، کوئی بھرتری ہری اور کوئی چانکیہ نہ پیدا کرسکی۔

'سدھار کی اور'

نئی روشنی میں پرکھنے پر پتہ لگتا ہے کہ ہندستانی کلچر ہمیشہ سے ہی بیمار سی رہی ہے۔ اُس پر مزا یہ کہ بھارتی رہن سہن پر ہندو سامراج شاہی اور پونجی واد

* مجھے اِس سمے نہیں یاد آرہا ہے غالباً منوسمرتی میں اِس کی چرچا ہے کہ جو شبدوں کا سہی اُچارن نہ کرسکے وہ ملیچھ ہے۔ شودر ملیچھ نہیں ہوتے تھے۔ اِسی کارن آدمی جنم سے شودر ہے۔ یونانی وغیرہ اِسی وجہ سے ملیچھ کہلائے کیونکہ وہ سنسکرت نہ جانتے تھے۔ ملیچھ پن کو اپنانے سے یا دور کردینے سے ورن بدل جاتا ہے۔ اِس کا بھی ذکر قریب قریب اُنہیں شبدوں میں غالباً منوسمرتی میں ہے۔

अलग अलग पेशे अलग अलग जातों के बनने का कारन बन गये. नाई, धोबी, लोहार कुम्हार, सुनार वग़ैरा जातें पेशों की बिना पर आजतक पाई जाती हैं. लेकिन इन पेशेवर जातों में कोई छूतछात न थी, रोटी बेटी का सम्बन्ध भी राइज था. धीरे धीरे यही पेशे जातों और ख़ान्दानों के रूप में आए. एक ही पेशे के लोग तादाद बढ़ने के साथ साथ अलग अलग जगहों पर जाकर बसने लगे. उनमें जान पहिचान और ख़ान्दानी सिलसिला मालूम करने के लिये उस ख़ान्दान या क़बीले के पहले बुज़ुर्ग के नाम पर गोत्रवाद भी चल पड़ा. ग़ालिबन जातों, गोत्रों के क़ाइम हो जाने के बाद जिन पेशों ने जैसी जैसी आर्थिक तरक़्क़ी की वैसी वैसी उनमें ऊंच नीच और छुआछूत की विचार धारा भी पैदा हो गई जिससे उस ज़माने की सामाजिक ज़िन्दगी में उलझनें पड़ने लगीं. पंडित समाज को (जो कि अक़्लमन्दों और लीडरों का समाज था) रोक थाम की सूझी. लेकिन वह इस ज़हर को समाज से उतार न सका, अलबत्ता उसने इसे आगे बढ़ने से रोकने के लिये वर्न व्यवस्था का एक अलग रास्ता निकाला. पूरे समाज को चार बड़े वर्नों में बांट दिया गया. वह लोग जो विद्या पढ़ने पढ़ाने और पूजापाठ कराने का काम करते थे ब्राह्मन कहलाए. यही लोग राष्ट्र के दिमाग़ी अंग हुए और राष्ट्र और समाज की हर संस्था पर छाये हुए रहे. वह लोग जो सिपाहगीरी का काम करते थे, छत्री कहलाए. यह राष्ट्र के रक्षक होते थे और चूंकि उस समय फ़ौजी सरकारें होती थीं इसलिये उन्हीं में से राजा भी होते थे. तिजारत और खेती बाड़ी का धन्दा करने वाले वैश्य कहलाए, लेकिन यह लोग न शिल्पकार होते थे, न दस्तकार और न ही ख़ुद हल वग़ैरा इस्तेमाल करते थे. वह वर्न जो इन कामों को अंजाम देता था और इन तीनों वर्नों की सेवा करता था, शूद्र कहलाया. समाज में वर्न व्यवस्था हो जाने के बाद भी हर वर्न में रोटी बेटी के सम्बन्ध की छूट थी, बल्कि एक वर्न में पैदा होने वाला पेशा तब्दील करने के बाद दूसरे वर्न को अख़्तयार कर सकता था. मिसाल के तौर पर वेदव्यास जी पैदाइश के ऐतबार से चिड़ीमार थे. नारद मुनि किसी शूद्र दासी से पैदा हुए थे. रावन पैदाइश के ऐतबार से ब्राह्मन था जो अपने कर्म से कुछ के कुछ हो गये. यही बात मनुस्मृति के एक सूत्र* से भी ज़ाहिर है और यही बात हिन्दुओं के चालू कर्म संस्कार की बिगड़ी हुई रूप रेखा से भी साबित होती है. जैसे नामकर्न संसकार की रस्म में ब्राह्मन जहां बच्चों का रास का नाम बताता है वहीं वह बच्चों का वर्न भी बताता है कि वह ब्राह्मन वर्न है, देवता वर्न है, शूद्र वर्न है या राक्षस वर्न है वग़ैरा वग़ैरा. अन्न प्राशन संसकार में बच्चों को नहला धुला कर अच्छे कपड़े पहना कर एक जगह बिठाया जाता है जहां

* जन्मना जायते शूद्रः संसकारा द्विज उच्यतेः

الگ الگ پیشے الگ الگ ذاتوں کے بننے کا کارن بن گئے. نائی، دھوبی، لوہار، کمہار، سنار وغیرہ ذاتیں پیشوں کی بنا پر آج تک پائی جاتی ہیں. لیکن ان پیشہ ور ذاتوں میں کوئی چھوت چھات نہ تھی، روٹی بیٹی کا سمبندھ بھی رائج تھا. دھیرے دھیرے یہی پیشے ذاتوں اور خاندانوں کے روپ میں آئے. ایک ہی پیشے کے لوگ تعداد بڑھنے کے ساتھ ساتھ الگ الگ جگہوں پر جاکر بسنے لگے. ان میں جان پہچان اور خاندانی سلسلہ معلوم کرنے کے لئے اس خاندان یا قبیلے کے پہلے بزرگ کے نام پر گوترواد بھی چل پڑا. غالباً ذاتوں، گوتروں کے قائم ہوجانے کے بعد جن پیشوں نے جیسی جیسی آرتھک ترقی کی ویسی ویسی اونچ نیچ اور چھواچھوت کی وچار دھارا بھی پیدا ہوگئی جس سے اس زمانے کی سماجک زندگی میں الجھنیں پڑنے لگیں. پنڈت سماج کو (جو کہ عقلمندوں اور لیڈروں کا سماج تھا) روک تھام کی سوجھی. لیکن وہ اس زہر کو سماج سے اتار نہ سکا، البتہ اس نے اسے آگے بڑھنے سے روکنے کے لئے ورن ویوستھا کا ایک الگ راستہ نکالا. پورے سماج کو چار بڑے ورنوں میں بانٹ دیا گیا. وہ لوگ جو ودیا پڑھنے پڑھانے اور پوجا پاٹھ کرانے کا کام کرتے تھے براہمن کہلائے. یہی لوگ راشٹر کے دماغی انگ ہوئے اور راشٹر اور سماج کی ہر سنستھا پر چھائے ہوئے رہے. وہ لوگ جو سپاہ گیری کا کام کرتے تھے، چھتری کہلائے. یہ راشٹر کے رکچھک ہوتے تھے اور چونکہ اس سمے فوجی سرکاریں ہوتی تھیں اس لئے انہیں میں سے راجہ بھی ہوتے تھے. تجارت اور کھیتی باڑی کا دھندا کرنے والے ویش کہلائے، لیکن یہ لوگ نہ شلپکار ہوتے تھے، نہ دستکار اور نہ ہی خود ہل وغیرہ استعمال کرتے تھے. وہ ورن جو ان کاموں کو انجام دیتا تھا اور ان تینوں ورنوں کی سیوا کرتا تھا، شودر کہلایا. سماج میں ورن ویوستھا ہوجانے کے بعد بھی ہر ورن میں روٹی بیٹی کے سمبندھ کی چھوٹ تھی، بلکہ ایک ورن میں پیدا ہونے والا پیشہ تبدیل کرنے کے بعد دوسرے ورن کو اختیار کرسکتا تھا. مثال کے طور پر ویدویاس جی پیدائش کے اعتبار سے چڑیمار تھے. نارد منی کسی شودر داسی سے پیدا ہوئے تھے. راون پیدائش کے اعتبار سے براہمن تھا جو اپنے کرم سے کچھ کے کچھ ہوگئے. یہی بات منوسمرتی کے ایک سوتر* سے بھی ظاہر ہے اور یہی بات ہندوؤں کے چالو کرم سنسکار کی بگڑی ہوئی روپ ریکھا سے بھی ثابت ہوتی ہے. جیسے نام کرن سنسکار کی رسم میں براہمن جہاں بچوں کا اس کا نام بتاتا ہے وہیں وہ بچوں کا ورن بھی بتاتا ہے کہ وہ براہمن ورن ہے، دیوتا ورن ہے، شودر ورن ہے یا راکچھس ورن ہے وغیرہ وغیرہ. انپراسن سنسکار میں بچوں کو نہلا دھلا کر اچھے کپڑے پہنا کر ایک جگہ بٹھایا جاتا ہے جہاں

* جنمنا جایتے شودرا سنسکارا دوج اوچیتے .

थी. इस भावना के अंतरगत आगे चलकर उस कट्टरपन से काम लिया गया जो देश के लिये रोग बन गया और पूरा समाज झूठे बड़प्पन और तंगनज़री में फंस गया.

आखिर कलचर का सवाल ही क्यों उठा ? देश के कोने कोने में आज "हमारा कलचर—हमारी तहज़ीब—और हमारी सभ्यता की गूंज सी है. आखिर क्यों ? इसका केवल एक जवाब है कि हिन्दुस्तानी जनता के सामने क़ौमी नेताओं ने जो इतिहास रखा उसमें ग़लतबयानी है, तंगनज़री है और झूठा अभिमान है जिसके प्रभाव से जनता अहंकार की भूल भुलैयां में फंस गई और उसे कलचर का स्थान, मौजूदा कलचर का रूप और उसके बहाव का रुख नहीं दिखाई पड़ता. हमारी जनता का एक अंग वह है जो देसी और राष्ट्री प्रभावों के कारन पीछे की तरफ़ देख रहा है और पुराने इस्टैंडर्ड को मद्दे नज़र रखते हुए शुद्धि और पुनरुद्धार (Revivalism) का हामी है और दूसरा वह है जो पच्छिम की तरफ़ देख रहा है और अपने कलचर के ढांचे को पच्छिमी सभ्यता के रंग रूप में बदल देना चाहता है. यह दोनों ही रुझान ग़लत हैं. तीसरा एक ऐसा भी दल है जो इन्तहाई रवादारी से काम ले रहा है जो देसी और विदेसी सभी प्रभावों को क़बूल करते हुए अपने कलचर को विकास की तरफ़ ले जा रहा है. वास्तव में यही ग्रुप देश की और देश के कलचर की सेवा और हिफ़ाज़त कर रहा है.

भारती कलचर की महानता उसकी लचक और रवादारी में है. पूर्व एतिहासिक काल (Pre-historical age) से लेकर आज तक यह लचक और रवादारी क़ायम है. यहां के कलचर में शक, हुन और यूनानी तूफ़ानों के छोटे मोटे झकोले इस तरह पच गए कि हिन्दुस्तानी हवा में उनकी मौजूदगी का कोई ज़ाहिर असर नहीं मालूम पड़ता बल्कि हर विदेसी प्रभाव देसी प्रभावों में दूध और पानी की तरह ऐसा घुल मिल गया कि एक को दूसरे से अलग करना नामुमकिन है.

हमारे कलचर में जात पात की व्यवस्था बहुत पुरानी है और आज तक किसी न किसी पहलू से क़ायम भी है. ज़ाहिर में उसमें कट्टरपन है लेकिन वास्तव में वह व्यवस्था भी बहुत लचकीली (flexible) रही है जिसके लिये इतिहास खुद गवाह है. इसके अलावा भारती कलचर की पाचन शक्ति भी इस व्यवस्था के लचकीलेपन को साबित करती है.

वैदिक काल का इतिहास इस बात का गवाह है कि लोगों के पुश्तैनी धन्धों पर चलती रहने वाली रस्मों ने ही जातों को जन्म दिया. यह जग लोगों की संसारी ज़रूरतों के लिये विकास का पहला जुग था. क़रीब क़रीब सभी धन्धे पेशों के ऐतबार से बराबर थे. इसलिये पेशों के तब्दील करने की कोई ज़रूरत न समझी जाती थी. इसी कारन से अलग

تھی . اس بھاونا کے انترگت آگے چلکر اُس کٹرپن سے کام لیا گیا جو دیش کے لئے روگ بن گیا اور پورا سماج جھوٹے بڑپن اور تنگ نظری میں پھنس گیا .

آخر کلچر کا سوال ہی کیوں اُٹھا ؟ دیش کے کونے کونے میں آج "ہمارا کلچر — ہماری تہذیب — اور ہماری سبھیتا" کی گونج سی ہے . آخر کیوں ؟ اِس کا کیول ایک جواب ہے کہ ہندستانی جنتا کے سامنے قومی نیتاؤں نے جو اِتہاس رکھا اُس میں غلط بیانی ہے، تنگ نظری ہے اور جھوٹا ابھیمان ہے جس کے پربھاؤ سے جنتا اہنکار کی بھول بھلیاں میں پھنس گئی، اور اُسے کلچر کا استھان، موجودہ کلچر کا روپ اور اُس کے بہاؤ کا رخ نہیں دکھائی پڑتا . ہماری جنتا کا ایک انگ وہ ہے جو دیسی اور راشٹری پربھاؤں کے کارن پیچھے کی طرف دیکھ رہا ہے اور پرانے اسٹینڈرڈ کو مدِّنظر رکھتے ہوئے شدھی اور پنرادھار (Revivalism) کا حامی ہے اور دوسرا وہ ہے جو پچھم کی طرف دیکھ رہا ہے اور اپنے کلچر کے ڈھانچے کو پچھمی سبھیتا کے رنگ روپ میں بدل دینا چاہتا ہے . یہ دونوں ہی رجحان غلط ہیں . تیسرا ایک ایسا بھی دل ہے جو انتہائی رواداری سے کام لے رہا ہے جو دیسی اور ودیسی سبھی پربھاؤں کو قبول کرتے ہوئے اپنے کلچر کو وکاس کی طرف لیجا رہا ہے . واستو میں یہی گروپ دیش کی اور دیش کے کلچر کی سیوا اور حفاظت کر رہا ہے .

بھارتی کلچر کی مہانتا اُس کی لچک اور رواداری میں ہے . پورو اِتیہاسک کال (Pre-historical age) سے لیکر آج تک یہ لچک اور رواداری قائم ہے . یہاں کے کلچر میں شاک، ہن اور یونانی طوفانوں کے چھوٹے موٹے جھکولے اِس طرح پچ گئے کہ ہندستانی ہوا میں اُن کی موجودگی کا کوئی ظاہرا اثر نہیں معلوم پڑتا بلکہ ہر ودیسی پربھاؤ دیسی پربھاؤں میں دودھ اور پانی کی طرح ایسا گھل مل گیا کہ ایک کو دوسرے سے الگ کرنا ناممکن ہے .

ہمارے کلچر میں جات پات کی ویوستھا بہت پرانی ہے اور آج تک کسی نہ کسی پہلو سے قائم بھی ہے . ظاہر میں اُس میں کٹرپن ہے لیکن واستو میں یہ ویوستھا بھی بہت لچکیلی (flexible) رہی ہے جس کے لئے اِتہاس خود گواہ ہے . اِس کے علاوہ بھارتی کلچر کی پاچن شکتی بھی اِس ویوستھا کے لچکیلے پن کو ثابت کرتی ہے .

ویدک کال کا اِتہاس اِس بات کا گواہ ہے کہ لوگوں کے پشتینی دھندوں پر چلتی رہنے والی رسموں نے ہی ذاتوں کو جنم دیا . یہ جگ لوگوں کی سنساری ضرورتوں کے لئے وکاس کا پہلا جگ تھا . قریب قریب سبھی دھندے پیشے کے اعتبار سے برابر تھے . اِسلئے پیشوں کے تبدیل کرنے کی کوئی ضرورت نہ سمجھی جاتی تھی . اِسی کارن سے الگ

को खुदा बना देती है और मादे का ज्ञान रूहानी दृष्टिकोनों को झुठला देता है और नये रूहानी दृष्टिकोन जो सचमुच बुलन्द होते हैं मालूम हो जाते हैं. सांप को सांप न समझ कर देवता समझना माटीवाद की तौहीन है, सांप को सांप समझने के बाद किसी बुलन्द मर्तबा देवता की खोज अध्यात्मवाद की वृद्धि है. कहने का मतलब यह है कि दोनों की तरक्की एक साथ होती है और दोनों का पतन भी एक साथ होता है.

इस सिलसिले में यह बता देना जरूरी है कि कलचर का विकास एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी सीढ़ी पर नहीं हुआ है. इसमें अक्सर रुकाव, उलझाव और गिराव भी पैदा हुए हैं. इतिहास से पता चलता है कि जब भी कोई नई विचार धारा आई तो रूढ़िवादियों (conservatives) ने रास्ते में रोड़ा अटकाया. कभी कभी इन रूढ़िवादियों की जीत भी हो गई और कलचर का विकास कुछ अरसे के लिये मन्द भी पड़ गया लेकिन पूरे तौर से कलचर आगे की तरफ़ ही बढ़ता रहा. जैसे पर्वत पर चढ़ने वाला कभी ऊंचे चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है और कभी नीचे उतरता हुआ लेकिन अन्त में वह ऊंचाई पर ही होता है. कलचर भी गिराव को सहन करते हुए ऊंचा ही उठता जाता है और मजमुई हैसियत से समाज को फ़ायदा होता है.

हिन्दुस्तानी कलचर की रूप रेखा

मौजूदा कलचर की बुनियादी रूप रेखा परखने के लिये हमें अपने गुज़रे हुए दिनों के इतिहास की तरफ़ जाना होगा, हालांकि इस से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हमारे पूर्वजों में इतिहास की प्रथा न थी, फिर भी हमें कुछ ज्ञान अपने देश के साहित्य, धर्म ग्रंथों, शिल्प कलाओं और अपने देश के चालू रस्म रिवाजों से मिलता है जो हमें अपने देश की पुरानी सभ्यता की झलक दिखा देते हैं. इससे हम हिन्दुस्तान के कलचरी विकास का अन्दाज़ा लगा सकते हैं. इस अन्दाज़े से भी जो कुछ हमें अपने इतिहास का ज्ञान प्राप्त होता है वह राज महलों, दरबारों और विद्वानों की कल्पनाओं का इतिहास है. वह सच्चा भारत जो यहां के देहातों में फैला हुआ था, जो हमारे जन समूह का भारत था, उसका कुछ पता नहीं. उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के जागरन के जुग में दो विचारों के अधीन हमारे देश के इतिहास की पुस्तकें लिखी गईं. पहली भावना में अंग्रेज़ियत प्रधान है जिस के लिखने वाले ज़्यादातर अंग्रेज़ हैं. इन इतिहासों में अंग्रेज़ी हित है जिस में हर तरह से भारती कलचर को अंग्रेज़ी कलचर से बुरा साबित करने की कोशिश की गई है ताकि अंग्रेज़ी राज की जड़ें मज़बूत हों. दूसरी भावना नेशनेलिज़्म है जो पच्छिमी इतिहासकारों को जवाब भी है और चुनौती

کو خدا بنا دیتی ہے اور مادے کا گیان روحانی درشٹی کونوں کو جھٹلا دیتا ہے اور نئے روحانی درشٹی کون جو سچ مچ بلند ہوتے ہیں معلوم ہو جاتے ہیں. سانپ کو سانپ نہ سمجھ کر دیوتا سمجھنا ماٹی واد کی توہین ہے، سانپ کو سانپ سمجھنے کے بعد کسی بلند مرتبہ دیوتا کی کھوج ادھیاتم واد کی بردھی ہے . کہنے کا مطلب یہ ہے کہ دونوں کی ترقی ایک ساتھ ہوتی ہے اور دونوں کا پتن بھی ایک ساتھ ہوتا ہے .

اس سلسلے میں یہ بتا دینا ضروری ہے کہ کلچر کا وکاس ایک سے دوسری اور دوسری سے تیسری سیڑھی پر نہیں ہوا ہے . اس میں اکثر رکاؤ، الجھاؤ اور گراؤ بھی پیدا ہوئے ہیں . اتہاس سے پتہ چلتا ہے کہ جب بھی کوئی نئی وچار دھارا آئی اور روڑھی وادیوں (conservatives) نے راستہ میں روڑا اٹکایا . کبھی کبھی ان روڑھی وادیوں کی جیت بھی ہوگئی اور کلچر کا وکاس کچھ عرصہ کے لئے مند بھی پڑ گیا لیکن پورے طور سے کلچر آگے کی طرف ہی بڑھتا رہا . جیسے پربت پر چڑھنے والا کبھی اونچے چڑھتا ہوا دکھائی پڑتا ہے اور کبھی نیچے اترتا ہوا لیکن انت میں وہ اونچائی پر ہی ہوتا ہے . کلچر بھی گراؤ کو سہن کرتے ہوئے اونچا ہی اٹھتا جاتا ہے اور مجموعی حیثیت سے سماج کو فائدہ ہوتا ہے .

ہندستانی کلچر کی بنیادی روپ ریکھا

موجودہ کلچر کی بنیادی روپ ریکھا پرکھنے کے لئے ہمیں اپنے گذرے ہوئے دنوں کے اتہاس کی طرف جانا ہوگا، حالانکہ اس سے انکار نہیں کیا جاسکتا کہ ہمارے پوروجوں میں اتہاس لکھنے کی پرتھا نہ تھی، پھر بھی ہمیں کچھ گیان اپنے دیش کے ساہتیہ، دھرم گرنتھوں، شلپ کلاؤں اور اپنے دیش کے چالو رسم رواجوں سے ملتا ہے جو ہمیں اپنے دیش کی پرانی سبھیتا کی جھلک دکھا دیتے ہیں . اس سے ہم ہندستان کے کلچری وکاس کا اندازہ لگا سکتے ہیں . اس اندازے سے بھی جو کچھ ہمیں اپنے اتہاس کا گیان پراپت ہوتا ہے وہ راج محلوں، درباروں اور ودوانوں کی کلپناؤں کا اتہاس ہے . وہ سچا بھارت جو یہاں کے دیہاتوں میں پھیلا ہوا تھا، جو ہمارے جن سمرہ کا بھارت تھا، اس کا کچھ پتہ نہیں . انیسویں اور بیسویں صدی کے جاگرن کے جگ میں دو وچاروں کے ادھین ہمارے دیش کے اتہاس کی پستکیں لکھی گئیں . پہلی بھاؤنا میں انگریزیت پردھان ہے جس کے لکھنے والے زیادہتر انگریز ہیں . ان اتہاسوں میں انگریزی ہت ہے جس میں ہر طرح سے بھارتی کلچر کو انگریزی کلچر سے برا ثابت کرنے کی کوشش کی گئی ہے تاکہ انگریزی راج کی جڑیں مضبوط ہوں . دوسری بھاؤنا نیشنلزم ہے جو پچھمی اتہاسکاروں کو جواب بھی ہے اور چنوتی

कोई भी नया धर्म सही अर्थों में नया नहीं होता बल्कि चालू धर्म या चालू कलचर का विकास होता है.

विकास के इसी उसूल के आधार पर इन्सान नेचर की पूजा से चल कर एक ईश्वर की पूजा तक पहुंचा है, जब इन्सान प्यास बुझाने के लिये नदी और तालाबों का मोहताज था, जब वह नहीं सोच सकता था कि यह क्यों सूख जाते हैं, उनमें पानी कहां से आता है, पानी हासिल करने के दूसरे क्या साधन हैं, जब वह साये के लिये घने पेड़ों का मोहताज था तो वह नदी, तालाबों और घने पेड़ों की पूजा करने लगा ताकि वह रूठ कर सूख न जायें. जब इन्सान ने कुआं खोद कर पानी निकाल लिया, घर बनाकर साया पैदा कर लिया, आग जला कर गरमी पैदा कर ली तो उसकी कल्पना ने पानी के लिये पानी का देवता, आग के लिये आग का देवता पैदा किया और उनकी पूजा करने लगा. जैसे जैसे आग और पानी वग़ैरा के साइन्टिफिक आधार मालूम होते गये, देवताओं और उनके महत्व में कमी आती गई और आज का इन्सान एक ईश्वर को हर चीज़ का आधार मानने लगा. जब इन्सान नेचर के हर भेद को अक़्ल की पकड़ में पायेगा तो वह यक़ीनन ख़ुदा की शक्ति से भी इन्कार कर देगा.

कलचर के सुलझाव और उलझाव या बुलन्दी और पस्ती का सम्बन्ध विज्ञान से बहुत गहरा है. कलचर के धार्मिक मैदान में हर समाज में शुरू में बहुत से देवता माने गये जितने ही ज़्यादा देवता थे, समाज में उतनी ही भ्रांतियां या ग़लतियां थीं. जैसे जैसे साइन्स ने एक एक गुत्थी का सुलझाव पेश किया, देवता घटते गये. पहनावा, रहन सहन, खान पान सभी कुछ साइन्स की खोज पर बदलते रहते हैं.

कलचर दो क़िस्म का होता है, एक का आधार आत्मा है और दूसरे का प्रकृति, जिन्हें हम अध्यात्मवादी आधार और माटीवादी माद्दी आधार भी कहते हैं. पहले क़िस्म के कलचर में क़ायदा क़ानून, धर्म, साहित्य, विज्ञान, समाज व्यवस्था और राजनीति वग़ैरा शामिल हैं. क्योंकि यह सब इन्सान के व्योहारिक जीवन, चरित्र और आत्म विकास पर रोशनी डालते हैं जिनका बाहरी दुनिया से कोई सम्बन्ध नहीं होता. दूसरे क़िस्म का कलचर बाहरी दुनिया से सम्बन्ध रखता है. जो दुनिया आग, हवा, पानी, धरती, धात, पौदों, जानवरों और दूसरी माद्दी चीज़ों से घिरी है. इस कलचर में खेती बाड़ी के तरीक़े, आने जाने के साधन, धातों के बर्तन, हथियारों आदि के इस्तेमाल शामिल हैं. दोनों क़िस्म के कलचरों में हदबन्दी की लकीर खींचना कठिन है जिसका ख़ास कारन दोनों का एक दूसरे से उलझाव है. वास्तव में अध्यात्मवादी कलचर माटीवादी कलचर की शुरूआत है. जहालत माद्दे

کوئی بھی نیا دھرم سہی ارتھوں میں نیا نہیں ہوتا بلکہ چالو دھرم یا چالو کلچر کا وکاس ہوتا ہے ۔

وکاس کے اِسی اُصول کے آدھار پر انسان نیچر کی پوجا سے چل کر ایک ایشور کی پوجا تک پہونچا ہے' جب انسان پیاس بجھانے کے لئے ندی اور تالابوں کا محتاج تھا' جب وہ نہیں سوچ سکتا تھا کہ یہ کیوں سوکھ جاتے ہیں' ان میں پانی کہاں سے آتا ہے' پانی حاصل کرنے کے دوسرے کیا سادھن ہیں' جب وہ سایہ کے لئے گھنے پیڑوں کا محتاج تھا تو وہ ندی' تالابوں اور گھنے پیڑوں کی پوجا کرنے لگا تاکہ وہ روٹھ کر سوکھ نہ جائیں ۔ جب اِنسان نے کنواں کھود کر پانی نکال لیا' گھر بنا کر سایہ پیدا کر لیا' آگ جلا کر گرمی پیدا کر لی تو اُس کی کلپنا نے پانی کے لئے پانی کا دیوتا' آگ کے لئے آگ کا دیوتا پیدا کیا اور اُن کی پوجا کرنے لگا ۔ جیسے جیسے آگ اور پانی وغیرہ کے سائنٹفک آدھار معلوم ہوتے گئے' دیوتاؤں اور اُن کے مہتو میں کمی آتی گئی اور آج کا انسان ایک ایشور کو ہر چیز کا آدھار ماننے لگا ۔ جب اِنسان نیچر کے ہر بھید کو عقل کی پکڑ میں پائے گا تو وہ یقیناً خدا کی شکتی سے بھی انکار کر دیگا ۔

کلچر کے سلجھاؤ اور اُلجھاؤ یا بلندی اور پستی کا سمبندھ وگیان سے بہت گہرا ہے ۔ کلچر کے دھارمک میدان میں ہر سماج میں شروع میں بہت سے دیوتا مانے گئے ہیں ۔ جتنے ہی زیادہ دیوتا تھے' سماج میں اُتنی ہی بھرانتیاں یا غلطیاں تھیں ۔ جیسے جیسے سائنس نے ایک ایک گتھی کا سلجھاؤ پیش کیا' دیوتا گھٹتے گئے ۔ پہناوا' رہن سہن' کھان پان سبھی کچھ سائنس کی کھوج پر بدلتے رہتے ہیں ۔

کلچر دو قسم کا ہوتا ہے' ایک کا آدھار آتما ہے اور دوسرے کا پرکرتی' جنہیں ہم ادھیاتم وادی آدھار اور ماٹی وادی مادی آدھار بھی کہتے ہیں ۔ پہلے قسم کے کلچر میں قاعدہ قانون' دھرم' ساہتیہ' وگیان' سماج ویوستھا اور راج نیتی وغیرہ شامل ہیں ۔ کیونکہ یہ سب اِنسان کے بیوہارک جیون' چرتر اور آتم وکاس پر روشنی ڈالتے ہیں جن کا باہری دنیا سے کوئی سمبندھ نہیں ہوتا ۔ دوسرے قسم کا کلچر باہری دنیا سے سمبندھ رکھتا ہے ۔ جو دنیا آگ' ہوا' پانی' دھرتی' دھات' پودوں' جانوروں اور دوسری مادی چیزوں سے گھری ہے اِس کلچر میں کھیتی باڑی کے طریقے' آنے جانے کے سادھن' دھاتوں کے برتن' ہتھیاروں آدی کے استعمال شامل ہیں ۔ دونوں قسم کے کلچروں میں حدبندی کی لکیر کھینچنا کٹھن ہے جس کا خاص کارن دونوں کا ایک دوسرے سے اُلجھاؤ ہے ۔ واستو میں ادھیاتم وادی کلچر ماٹی وادی کلچر کی شروعات ہے ۔ جہالت مادہ

हिन्दुस्तानी कलचर

(चरन संरन नाज़)

कलचर क्या है ?

कलचर के सम्बन्ध में कुछ कहने से पहले यह समझ लेना बहुत ज़रूरी है कि कलचर क्या है. किसी भी देश का कलचर समय की बहती हुई धाराओं के आधार पर बनता आया है. कलचर अपनी प्रकृति से विकासमय (evolutionary) है और इसलिये कलचर के विकास का तारीख़ी मुताला (एतिहासिक अध्ययन) सम्भव है. कलचर के एतिहासिक विकास के कुछ अटल उसूल हैं जो हर देश, हर क़ौम के कलचर पर परखे जा सकते हैं. हम अपने लेख में पहले उन्हीं उसूलों पर प्रकाश डालेंगे.

इन्सानी समाज अपनी इन्तहाई जंगली अवस्था से मनोवैज्ञानिक, साइन्टिफ़िक और नये नये मालूमात के आधार पर, जिन्हें इन्सानी ज़रूरतों ने पैदा किया, क़दम क़दम आगे बढ़ता हुआ आज की सुधरी हुई हालत (जो अब तक भी पूरी नहीं है) पर पहुंचा है. इस प्रकार समाज उसके कलचरी विकास की एक सीढ़ी सी है, जिसका ऊपरी सिरा ओझल है. किसी भी समय का कलचर उस समय के आदमियों के मनोवैज्ञानिक, दिमाग़ी, रूहानी और साइन्टिफ़िक जानकारी का मोहताज है. किसी भी समय के कलचर को बुरा कहना या किसी भी समय के आदमी को असभ्य बतलाना अन्याय होगा. जिस समय के लोगों के जीवन सम्बन्धी या संसार सम्बन्धी ज्ञान में जितना फैलाव होता है या ओछापन होता है, उस समय के लोगों के कलचर और धर्म भी उसी सीमा में रहते हैं. शुरू ज़माने में सारी दुनिया में आदमी की क़ुर्बानी का रिवाज था. उस ज़माने में लोगों को खेती बाड़ी के तरीक़े नहीं मालूम थे और न वह नेचर से ही फ़ायदा उठाना जानते थे, उनमें समाजी तत्व की भी कमी थी. लोग एक दूसरे से काम लेना और एक दूसरे के काम आना भी नहीं जानते थे. ऐसी हालत में उनके देवी देवता अगर नर हत्या से ख़ुश होते थे तो उसमें ताज्जुब की क्या बात है ? ख़ालिस लड़ाई की प्रवृत्ति (instinct) के आधार पर उन लोगों में हारे हुओं का क़त्ले आम ही लड़ाई का धर्म समझा जाता था. जब धीरे धीरे यह ज्ञान हुआ कि इन्सान इन्सान के काम आ सकता है, वह पैदावार के कामों में, सेवा करने में सहायता दे सकता है तो क़त्ले आम की जगह ग़ुलामी ने ले ली और इन्सानी प्रवृत्ति में आहिस्ता आहिस्ता दया और धर्म दाख़िल हो गये. कलचर ख़ुद बख़ुद संवरने लगा. कोई भी नया कलचर,

هندستانی کلچر

(چرن سرن ناز)

کلچر کیا ھے ؟

کلچر کے سمبندھ میں کچھ کہنے سے پہلے یہ سمجھ لینا بہت ضروری ھے کہ کلچر کیا ھے . کسی بھی دیش کا کلچر سمے کی بہتی ہوئی دھاراؤں کے آدھار پر بنتا آیا ھے . کلچر اپنی پرکرتی سے وکاس‌مئے (evolutionary) ھے اور اِس لئے کلچر کے وکاس کا تاریخی مطالعہ (اتہاسک ادھیین) سمبھو ھے . کلچر کے اتہاسک وکاس کے کچھ اٹل اصول ھیں جو ہر دیش‘ ہر قوم کے کلچر پر پرکھے جا سکتے ھیں . ھم اپنے لیکھ میں پہلے اُنھیں اُصولوں پر پرکاش ڈالیں گے .

اِنسانی سماج اپنی انتہائی جنگلی اوستھا سے منوویگیانک‘ سائنٹفک اور نئے نئے معلومات کے آدھار پر‘ جنھیں انسانی ضرورتوں نے پیدا کیا‘ قدم قدم آگے بڑھتا ہوا آج کی سدھری ہوئی حالت (جو اب تک بھی پوری نہیں ھے) پر پہونچا ھے . اِس پرکار سماج اُس کے کلچری وکاس کی ایک سیڑھی سی ھے‘ جس کا اُوپری سرا اوجھل ھے . کسی بھی سمے کا کلچر اُس سمے کے آدمیوں کے منوویگیانک‘ دماغی‘ روحانی اور سائنٹفک جانکاری کا محتاج ھے . کسی بھی سمے کے کلچر کو برا کہنا یا کسی بھی سمے کے آدمی کو اسبھیہ بتلانا انیائے ہوگا . جس سمے کے لوگوں کے جیون سمبندھی یا سنسار سمبندھی گیان میں جتنا پھیلاو ہوتا ھے یا اوچھا پن ہوتا ھے‘ اُس سمے کے لوگوں کے کلچر اور دھرم بھی اُسی سیما میں رہتے ھیں . شروع زمانے میں ساری دنیا میں آدمی کی قربانی کا رواج تھا . اُس زمانے میں لوگوں کو کھیتی باڑی کے طریقے نہیں معلوم تھے اور نہ وہ نیچر سے ھی فائدہ اُٹھانا جانتے تھے‘ اُن میں سماجی تتو کی بھی کمی تھی . لوگ ایک دوسرے سے کام لینا اور ایک دوسرے کے کام آنا بھی نہیں جانتے تھے . ایسی حالت میں اُن کے دیوی دیوتا اگر نرھتیا سے خوش ہوتے تھے تو اس میں تعجب کی کیا بات ھے ؟ خالص لڑائی کی پرورتی (instinct) کے آدھار پر اُن لوگوں میں ہارے ہوؤں کا قتل عام ھی لڑائی کا دھرم سمجھا جاتا تھا . جب دھیرے دھیرے یہ گیان ہوا کہ انسان انسان کے کام آ سکتا ھے‘ وہ پیداوار کے کاموں میں‘ سیوا کرنے میں سہائتا دے سکتا ھے تو قتل عام کی جگہ غلامی نے لے لی اور انسانی پرورتی میں آہستہ آہستہ دیا اور دھرم داخل ہوگئے . کلچر خود بخود سنورنے لگا . کوئی بھی نیا کلچر‘

चीन के मशहूर महात्मा लाओत्से हजरत ईसा से 604 वर्ष पहले हुए थे. उनके उपदेशों का चीन पर बड़ा गहरा असर पड़ा, लाओत्से कहते हैं—

"आदमी को चाहिये कि अपना सब काम खुदी को अलग रखकर सरल और सादे ढंग से करे. उसके किसी भी काम में खुदी या घमंड न हो, न अपने पराये और तेरे मेरे का फ़रक़ हो. इनसान की सेवा उसकी पूजा हो. यही आदमी का 'ताओ' यानी धर्म है."

हजरत ईसा ने इसी तरह का उपदेश देते हुए कहा था—

"देखो, व्रत के दिन भी तुम खुद तो खूब खाते हो और दूसरों को कष्ट देते हो. तुम सब तरह की बुराई करते रहते हो. क्या ऐसे ही व्रत की आज्ञा दी गई थी ? क्या यह व्रत ईश्वर को मंजूर हो सकता है ? जिस व्रत की आज्ञा दी गई थी वह यह है—जिन बुराइयों ने तुम्हें बांध रखा है उनका बन्धन तोड़ डालो, दुखियों को आजाद करो, भूखे को अपनी रोटी में से रोटी दो, जो बेघर हैं उन्हें अपने घर में जगह दो, जो नंगे हैं उन्हें कपड़े पहिनाओ. सब दुखी इनसानों की सेवा में अपने को खपा डालो, यही सबसे बड़ा व्रत है."

बुद्ध भगवान जब धर्म प्रचार करते हुए निकले तो जहां भी दुखियों और बीमारों का पता पाते वहां जरूर ही उनकी सेवा करने ठहर जाते. उन्होंने अपने भक्तों को उपदेश दिया कि—

"भिक्षुओ ! निश्काम सेवा ही परम धर्म है. सेवा का धर्म जात पांत व धर्म के भेद भाव को नहीं मानता. भिक्षु नर (आदमी) के रूप में नारायन (अल्लाह) को देखता है और जन (इन्सान) के रूप में जर्नादन (खालिक़) का दर्शन करता है, वह खुद दुखों और मुसीबतों का स्वागत करता है और अपनी सेवा के जरिये इस धरती में स्वर्ग की रचना करता है."

सिखों के चौथे गुरू के एक चेले जब संगत में शामिल हुए तो उन्होंने अपने सुपुर्द जूठे बरतन मांजने का काम लिया. सुबह उठते ही बरतन मांजने का काम शुरू करते थे और काम समाप्त करते आधी रात बीत जाती थी. गुरू के चरनों में बैठ कर सतसंग सुनने का भी उन्हें समय नहीं मिलता था, जबकि उनके दूसरे गुरु भाई सुबह से लेकर रात तक भजन और सतसंग में ही अपना समय बिताते थे. जब गुरू जी ने समाधि ली तो जनता समझती थी कि गुरू के जो चेले रात दिन भजन गाया करते थे उन्हीं में से किसी को गुरू अपना वारिस बनाएंगे. लेकिन जब गुरू का हुक्मनामा खोला गया तो उसमें से उस जूठे बरतन मांजने वाले का नाम निकला जिसे एक दिन भी भजन गाने और संगत में बैठने का मौक़ा नहीं मिला था. और यही बरतन मांजने वाले गुरू अर्जुन देव के नाम से सिखों के प्रसिद्ध गुरू हुए.

چین کے مشہور مہاتما لاؤتزے حضرت عیسی سے 604 ورش پہلے ہوئے تھے . اُن کے اُپدیشوں کا چین پر گہرا اثر پڑا . لاؤتزے کہتے ہیں—

" آدمی کو چاہئے کہ اپنا سب کام خودی کو الگ رکھکر سرل اور سارے ڈھنگ سے کرے . اُس کے کسی بھی کام میں خودی یا گھمنڈ نہ ہو' نہ اپنے پرائے اور تیرے میرے کا فرق ہو' انسان کی سیوا اُس کی پوجا ہو . یہی آدمی کا 'تاؤ' یعنی دھرم ہے ."

حضرت عیسی نے اِسی طرح کا اُپدیش دیتے ہوئے کہا تھا—

"دیکھو' برت کے دن بھی تم خود تو خوب کھاتے ہو اور دوسروں کو کشٹ دیتے ہو . تم سب طرح کی برائی کرتے رہتے ہو . کیا ایسے ہی برت کی آگیاں دی گئی تھی ؟ کیا یہ برت ایشور کو منظور ہوسکتا ہے ؟ جس برت کی آگیاں دی گئی تھی وہ یہ ہے—جن برائیوں نے تمہیں باندھ رکھا ہے اُن کا بندھن توڑ ڈالو' دکھیوں کو آزاد کرو' بھوکے کو اپنی روٹی میں سے روٹی دو' جو بے گھر ہیں اُنہیں اپنے گھر میں جگہ دو' جو ننگے ہیں اُنہیں کپڑے پہناؤ. سب دکھی انسانوں کی سیوا میں اپنے کو کھپا ڈالو' یہی سب سے بڑا برت ہے ."

بدھ بھگوان جب دھرم پرچار کرتے ہوئے نکلے تو جہاں بھی دکھیوں اور بیماروں کا پتہ پاتے وہاں ضرور ہی اُن کی سیوا کرنے ٹھہر جاتے . اُنہوں نے اپنے بھکتوں کو اُپدیش دیا کہ—

" بھکشو ! نشکام سیوا ہی پرم دھرم ہے . سیوا کا دھرم جات پات و دھرم کے بھید بھاؤ کو نہیں مانتا . بھکشو نر (آدمی) کے روپ میں نارائن (اللہ) کو دیکھتا ہے اور جن (انسان) کے روپ میں جناردن (خالق) کا درشن کرتا ہے . وہ خود دکھوں اور مصیبتوں کا سواگت کرتا ہے اور اپنی سیوا کے ذریعے اِس دھرتی میں سورگ کی رچنا کرتا ہے ."

سکھوں کے چوتھے گرو کے ایک چیلے جب سنگت میں شامل ہوئے تو اُنہوں نے اپنے سپرد جھوٹے برتن مانجنے کا کام لیا . صبح اٹھتے ہی برتن مانجنے کا کام شروع کرتے تھے اور کام سماپت کرتے آدھی رات بیت جاتی تھی . گرو کے چرنوں میں بیٹھ کر ست سنگ سننے کا بھی اُنہیں سمے نہیں ملتا تھا' جبکہ اُن کے دوسرے گرو بھائی صبح سے لے کر رات تک بھجن اور ست سنگ میں ہی اپنا سمے بتاتے تھے . جب گرو جی نے سمادھی لی تو جنتا سمجھتی تھی کہ گرو کے جو چیلے رات دن بھجن گایا کرتے تھے اُنہیں میں سے کسی کو گرو اپنا وارث بنائینگے . لیکن جب گرو کا حکمنامہ کھولا گیا تو اُس میں سے اُس جھوٹے برتن مانجنے والے کا نام نکلا جسے ایک دن بھی بھجن گانے اور سنگت میں بیٹھنے کا موقع نہیں ملا تھا . اور یہی برتن مانجنے والے گرو ارجن دیو کے نام سے سکھوں کے پرسدھ گرو ہوئے .

छायावादी कवियों को एक तरफ़ रख माखनलाल चतुर्वेदी से लेकर 'बच्चन', 'अंचल' तक के काव्यों में हमें उर्दू शैली और भाव जहाँ कहीं मालूम पड़ते हैं. उर्दू की नई रोमानी कविता ने निस्संदेह हिंदी कवियों की कहन पर प्रभाव डाला है.

[आल इंडिया रेडियो के सौजन्य से]

सेवा धर्म

(विश्वम्भरनाथ पांडे)

जैन साधुओं को आदेश देते हुए भगवान महावीर कहते हैं—"अगर कोई साधू किसी रोगी या मुसीबत में पड़े आदमी को छोड़ कर तपस्या करने लगता है, शास्त्र पढ़ने में लग जाता है, तो वह अपराधी है और संघ में रहने के क़ाबिल नहीं है. सेवा खुद एक बड़ा भारी तप है. सेवा करने के लिये सदा दुखियों की, दीन दुखियों की, पतित और दलितों की खोज में रहना चाहिये."

एक बार मोहम्मद साहब से किसी ने पूछा कि ईमान क्या है ? उन्होंने जवाब दिया—"सब्र करना और दूसरों की भलाई और सेवा करना." एक हदीस में आता है कि मोहम्मद साहब ने कहा कि "सब इन्सानी समाज अल्लाह का कुनबा है और उन सब में अल्लाह का सबसे प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुनबे की भलाई और सेवा करता है."

सेवा का महत्व दर्शाते हुए गीता कहती है—

"मोक्ष केवल उन्हीं को मिल सकता है और उन्हीं के पाप धुल सकते हैं जिनकी दुविधा मिट गई है और जिन्होंने अपनी कामनाओं को जीत लिया है और जो सदा सबके भले और सबकी सेवा में लगे रहते हैं."

गोस्वामी तुलसीदास ने रामायन में लिखा है—

"परहित सरस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अघ भाई."

शेख़ सादी ने अपनी मशहूर किताब 'करीमा' में लिखा है—

"सच्ची दौलत सेवा से ही मिलती है.

"सेवा से सौभाग्य मिलता है.

"यदि तू सेवा के लिये कमर कस ले तो कभी न मिलने वाली दौलत का दरवाज़ा तेरे लिये खुल जायेगा.

"सेवा से भीतर की आत्मा रोशन होती है."

چھایا وادی کویوں کو ایک طرف رکھ ماکھن لال چترویدی سے لیکر 'بچن'، 'انچل' تک کے کاویوں میں ہمیں اردو شیلی اور بھاؤ جہاں کہیں معلوم پڑتے ہیں. اردو کی نئی رومانی کویتا نے نسندیہ ھندی کی کہن پر پربھاؤ ڈالا ھے.

[آل انڈیا ریڈیو کے سوجنیہ سے]

سیوا دھرم

(وشومبھر ناتھ پانڈے)

جین سادھوؤں کو آدیش دیتے ہوئے بھگوان مہاویر کہتے ھیں—" اگر کوئی سادھو کسی روگی یا مصیبت میں پڑے آدمی کو چھوڑ کر تپسیا کرنے لگتا ھے، شاستر پڑھنے میں لگ جاتا ھے، تو وہ اپرادھی ھے اور سنگھ میں رھنے کے قابل نہیں ھے. سیوا خود ایک بڑا بھاری تپ ھے. سیوا کرنے کے لئے سدا دکھیوں کی، دین دکھیوں کی، پتت اور دلتوں کی کھوج میں رھنا چاھئے."

ایک بار محمد صاحب سے کسی نے پوچھا کہ ایمان کیا ھے؟ انہوں نے جواب دیا—" صبر کرنا اور دوسروں کی بھلائی اور سیوا کرنا." ایک حدیث میں آتا ھے کہ محمد صاحب نے کہا کہ " سب انسانی سماج اللہ کا کنبہ ھے اور ان سب میں اللہ کا سب سے پیارا وہ ھے جو اللہ کے اس کنبے کی بھلائی اور سیوا کرتا ھے."

سیوا کا مہتو درشاتے ہوئے گیتا کہتی ھے—

" موکش کیول انہیں کو مل سکتا ھے اور انہیں کے پاپ دھل سکتے ھیں جن کی دویدھا مٹ گئی ھے اور جنہوں نے اپنی کامناؤں کو جیت لیا ھے اور جو سدا سب کے بھلے اور سب کی سیوا میں لگے رھتے ھیں."

گوسوامی تلسی داس نے راماین میں لکھا ھے—

" پرھت سرس دھرم نہیں بھائی،
پر پیڑا سم نہیں اگھ بھائی."

شیخ سعدی نے اپنی مشہور کتاب ' کریما ' میں لکھا ھے—

" سچی دولت سیوا سے ملتی ھے.

" سیوا سے سوبھاگیہ ملتا ھے.

" یدی تو سیوا کے لئے کمر کس لے تو کبھی نہ ملنے والی دولت کا دروازہ تیرے لئے کھل جاویگا.

سیوا سے بھیتر کی آتما روشن ہوتی ھے."

अर्थात एक नीड़ नष्ट होने पर दूसरा नीड़ फिर से बनाया जा सकता है. एक अज्ञात उर्दू कवि की यह उक्ति देखिये—

चार तिनके आशियां के जल गये तो जल गये,
फिर भी हो सकती हैं शाखे गुल पे तामीरें बहुत.

कितनी अधिक भावों में समानता है. इस भाव की समानता को निश्चय ही आकस्मिक नहीं कहा जा सकता. हमारे प्रगतिशील कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' की एक उक्ति बहुत प्रसिद्ध है—

मैं नहीं आया तुम्हारे द्वार, पथ ही मुड़ गया था.

प्रेमी प्रेमिका के घर जान बूझ कर नहीं गया, वरन जिस रास्ते पर चल रहा था वह खुद ही उधर मुड़ गया. अब उर्दू का एक शेर और ग़ौर फ़रमाइये—

मुश्किलों से लाये थे समझा बुझा के दिल को हम,
दिल हमें समझा बुझा कर कूये जानां ले चला.

कविता की गहराई तक पहुंचिये, कानों में यह लाइनें गूंजती हैं—

दिल हमें समझा बुझा कर कूये जानां ले चला.

हिन्दी में नरेन्द्र शर्मा की एक लाइन पर विचार कीजिये—
"फिर एक बार साकार बनो मेरे युग युग के आकर्षण."

इस मुक़ाबले में डाक्टर इक़बाल की बहुत मशहूर ग़ज़ल है, उसका एक शेर मुलाहिज़ा हो—

कभी ऐ हक़ीक़ते मुन्तज़िर, नज़र आ लिबासे मजाज़ में.
कि हज़ारों सिजदे तड़प रहे हैं, तेरी जबीने नियाज़ में.

हिन्दी के किन किन नौजवान कवियों ने उर्दू के, और उर्दू के किन किन शायरों ने हिन्दी के कौन कौन से भाव निस्संकोच अपना लिये हैं, अगर इसकी खोज की जावे तो उसका पूरा गोशवारा तैयार करना पड़ेगा. हिन्दी में उर्दू के भावों से या उर्दू में हिन्दी के भावों से प्रेरना लेना गुनाह नहीं, किन्तु उस पर अपनी असलियतपन का दावा नहीं करना चाहिये.

हम यह पहिले ही बता चुके हैं कि मध्यकाल में हिन्दी और उर्दू के क्षेत्र में दो बातें समान थीं : (१) एक राजदरबार तथा (२) सूफ़ियाना भक्ति प्रधान सांस्कृतिक भाव धारा. ठीक उसी तरह आधुनिक काल के प्रारम्भ में राष्ट्रीय भाव दोनों धाराओं में समान रूप से पाये जाते हैं. हाली का मुसद्दस और मैथिली शरण की भारत भारती एक ही राष्ट्रीय सामाजिक आदर्श से रंगी हुई हैं. साहित्य का जानने वाला विद्यार्थी यह निश्चय पूर्वक कह सकता है कि भारत भारती मुसद्दस से प्रभावित हुई है. डाक्टर इक़बाल, चकबस्त आदि उर्दू के राष्ट्रीय कवि हिन्दी में लोक प्रिय हुये हैं. 'प्रसाद', 'पंत', 'निराला' 'महादेवी वर्मा' जैसे पक्के

ارتھات ایک نیڑ نشٹ ہونے پر دوسرا نیڑ پھر سے بنایا
ا سکتا ہے . ایک اگیات اردو کوی کی یہ اُکتی دیکھئے—

چار تنکے آشیاں کے جل گئے تو جل گئے،
پھر بھی ہوسکتی ہیں شاخِ گل پہ تعمیریں بہت.

کتنی ادھک بھاوں میں سمانتا ہے . اِس بھاؤ کی سمانتا کو
چے ہی آکسمک نہیں کہا جا سکتا . ہمارے پرگتی شیل
ی شومنگل سنگھ 'سمن' کی ایک اُکتی بہت پرسدھ ہے—

میں نہیں آیا تمہارے دوار، پتھ ہی مڑ گیا تھا .

پریمی پریمکا کے گھر جان بوجھ کر نہیں گیا، ورن جس
تے پر چل رہا تھا وہ خود ہی اُدھر مڑ گیا. اب اُردو کا ایک
ر اور غور فرمایئے—

مشکلوں سے لائے تھے سمجھا بجھا کے دل کو ہم،
دل ہمیں سمجھا بجھا کر کوئے جاناں لے چلا.

کویتا کی گہرائی تک پہونچئے، کانوں میں یہ لائنیں
جتی ہیں—

دل ہمیں سمجھا بجھا کر کوئے جاناں لے چلا .

ھندی میں نریندر شرما کی ایک لائن پر وچار کیجئے—

" پھر ایک بار ساکار بنو میرے یگ یگ کے آکرشن ."

اس مقابلہ میں ڈاکٹر اقبال کی بہت مشہور غزل ہے، اُس
ایک شعر ملاحظہ ہو—

کبھی اے حقیقتِ منتظر، نظر آ لباسِ مجاز میں،
کہ ہزاروں سجدے تڑپ رہے ہیں، تری جبینِ نیاز میں.

ھندی کے کن کن نوجوان کویوں نے اردو کے، اور اردو
کن کن شاعروں نے ھندی کے کون کون سے بھاؤ نسنکوچ
ا لئے ہیں، اگر اس کی کھوج کی جاوے تو اُس کا
ا گوشوارہ تیار کرنا پڑے گا . ھندی میں اُردو کے بھاؤں سے یا
دو میں ھندی کے بھاؤں سے پریرنا لینا گناہ نہیں . کنتو اُس
اپنی اصلیت پن کا دعویٰ نہیں کرنا چاہئے .

ہم یہ پہلے ہی بتا چکے ہیں کہ مدھیہ کال میں ھندی اور
دو کے چھیتر میں دو باتیں سمان تھیں : (1) ایک راج دربار
ا (2) صوفیانہ بھکتی پردھان سانسکرتک بھاؤ دھارا . ٹھیک
ی طرح آدھونک کال کے پرارمبھ میں راشٹریہ بھاؤ دونوں
ھاؤں میں سمان روپ سے پائے جاتے ہیں . حالی کا مسدس
میتھلی شرن کی بھارت بھارتی ایک ہی راشٹریہ سماجک
رش سے رنگی ہوئی ہیں . ساہتیہ کا جاننے والا ودیارتھی یہ نشچے
رک کہہ سکتا ہے کہ بھارت بھارتی مسدس سے پربھاوت ہوئی ہے . ڈاکٹر
بال، چکبست آدی اردو کے راشٹریہ کوی ھندی میں بہت لوک
یہ ہوئے ہیں . 'پرساد' 'پنت' 'نرالا' مہادیوی ورما' جیسے پکے

इस पद को पढ़कर उतरे हुये नशे के मुहावरे का इस्ते-माल ज़फ़र की उस मशहूर ग़ज़ल की याद दिलाता है—

"न किसी की चश्म का नूर हूं,
न किसी के दिल का क़रार हूं."

जिसका एक मिसरा है—

"जो बिगड़ गया वह नसीब हूं,
जो उतर गया वो ख़ुमार हूं."

छायावाद के बाद हिन्दी में जो अन्य धारायें चलीं, जैसे माखनलाल चतुर्वेदी, भगवती चरन वर्मा, हरिकृश्न प्रेमी, नवीन धारायें, उनमें उर्दू की विशेशता लिये भावों की प्रचुरता मालूम पड़ती है. साक़ी, प्याला, शमा, पतंग आदि प्रतीक तो अब तक चले आ रहे हैं. 'बच्चन' की 'मधुशाला' तो प्रसिद्ध ही है. उमर ख़ैयाम के प्रभाव से हिंदी में न मालूम कितने ही उर्दू, फ़ारसी के रोमन्टिक भावों को आसरा मिला है. इस तरह हिंदी उर्दू के भावों की बराबरी के अनगिनत उदाहरन दिये जा सकते हैं. महादेवी वर्मा की यह उक्ति लीजिये—

एक ज्वाला के बिना मैं राख का घर हूं.

और इसकी तुलना कीजिये—

आग थे इब्तदाये इश्क़ में हम,
अब जो है ख़ाक इंतहा यह है.

और दिनकर की यह उक्ति लीजिये—

जब गीतकार मर गया चांद रोने आया,
चांदनी मचलने लगी कफ़न बन जाने को.

चांदनी के कफ़न बन जाने की बात ठीक उर्दू में भी इसी तरह कही गई है. सुनिये उस्ताद ज़ौक़ का एक शेर है—

अफ़सुरदा दिल के वास्ते क्या चांदनी का लुत्फ़,
लिपटा पड़ा है जिस तरह मुर्दा कफ़न के साथ.

और बच्चन ने तो अपनी प्रेरना उर्दू के मयख़ाने से ही ली है. उनका एक वाक्य लीजिये—

बजी नफ़ीरी और नमाज़ी भूल गया अल्ला ताला

और उसकी तुलना कीजिये इस शेर से और देखिये कौन सा ज़्यादा बुलंद है—

नमाज़ कैसी कहां का रोज़ा,
अभी तो शग़ले शराब में हूं.
ख़ुदा की याद आये किस तरह से,
बुतों के क़हरे हबाब में हूं.

या यह लीजिये बच्चन की एक कविता—

"नीड़ का निर्माण फिर फिर"

अपना घोंसला बनाने, नीड़ का निर्मान करने की बात ख़ास तौर से उर्दू से ही आई है. चमन, आशियां, आशियां पर बिजली गिरना आदि प्रतीक ठीक उर्दू के हैं. फिर से सुनिये—

"नीड़ का निर्माण फिर फिर"

اِس پدیہ کو پڑھکر اُترے ہوئے نشے کے محاورے کا استعمال ظفر کی اُس مشہور غزل کی یاد دلاتا ھے—

" نہ کسی چشم کا نور ھوں،
نہ کسی کے دل کا قرار ھوں."

جس کا ایک مصرہ ھے—

" جو بگڑ گیا وہ نصیب ھوں،
جو اُتر گیا وہ خمار ھوں"

چھایا واد کے بعد ھندی میں جو انیہ دھارائیں چلیں، جیسے ماکھن لال چترویدی، بھگوتی چرن ورما، ھری کرشن پریمی، نوین دھارائیں، اُن میں اُردو کی وشیشتا لئے بھاوں کی پرچورتا معلوم پڑتی ھے. ساقی، پیالہ، شمع، پتنگ آدی پرتیک تو اب تک چلے آ رھے ھیں. 'بچن' کی 'مدھو شالا' تو پرسدھ ھی ھے. عمر خیام کے پربھاؤ سے ھندی میں نہ معلوم کتنے ھی اُردو، فارسی کے رومنٹک بھاوں کو آسرا ملا ھے. اِس طرح ھندی اُردو کے بھاؤں کی برابری کے انگنت اُداھرن دئے جا سکتے ھیں. مہادیوی ورما کی یہ اُکتی لیجئے—

ایک جوالا کے بنا میں راکھ کا گھر ھوں.

اور اِس کی تولنا کیجئے—

آگ تھے ابتدائے عشق میں ھم،
اب جو ھے خاک انتہا یہ ھے.

اور دنکر کی یہ اُکتی لیجئے—

جب گیتکار مر گیا چاند رونے آیا،
چاندنی مچلنے لگی کفن بن جانے کو.

چاندنی کے کفن بن جانے کی بات ٹھیک اُردو میں بھی اِسی طرح کہی گئی ھے. سنئے اُستاد ذوق کا ایک شعر ھے—

افسردہ دل کے واسطے کیا چاندنی کا لطف،
لپٹا پڑا ھے جس طرح مردہ کفن کے ساتھ.

اور بچن نے تو اپنی پریرنا اُردو کے میخانے سے ھی لی ھے. اُن کا ایک واکیہ لیجئے—

بجی نفیری اور نمازی بھول گیا اللہ تعالیٰ

اور اُس کی تولنا کیجئے اِس شعر سے اور دیکھئے کون سا زیادہ بلند ھے—

نماز کیسی کہاں کا روزہ،
ابھی تو شغل شراب میں ھوں.
خدا کی یاد آئے کس طرح سے،
بتوں کے قہر حباب میں ھوں.

یا یہ لیجئے بچن کی ایک کویتا—

" نیڑ کا نرمانڑ پھر پھر "

اپنا گھونسلا بنانے، نیڑ کا نرمانڑ کرنے کی بات خاص طور سے اُردو سے ھی آئی ھے چمن، آشیاں، آشیاں پر بجلی گرنا آدی پرتیک ٹھیک اُردو کے ھیں. پھر سے سنئیے—

" نیڑ کا نرمانڑ پھر پھر "

ग़ालिब ने इसी भाव को मीठा घुमाव दे कर एक जीवन व्याख्या कर दी है.

इशरते क़तरा है दरिया में फ़ना हो जाना,
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना.

इस जीवन व्याख्या के कारन ही ग़ालिब का यह शेर बहुत ही ऊंचे दर्जे का है.

गोस्वामी तुलसीदास की एक उक्ति है—

जित देखूं तित तोय,
कंकर पत्थर ठीकरी, भई आरसी मोय.

अर्थात परब्रह्म की व्यक्त सत्ता में उसकी अव्यक्त सत्ता का सौंदर्य प्रकट हो रहा है. इसी बात को एक उर्दू कवि इस तरह कहता है—

निगह मेरी हक़ीक़त आशना मालूम होती है,
नज़र जिस शै पे पड़ती है ख़ुदा मालूम होती है.

हिन्दी के पुराने प्रतीक उर्दू शायरों ने, और आजकल के हिन्दी कवियों ने उर्दू की कहन को बे रोक टोक अपना लिया है.

यह तो केवल भाव परम्परा की बात हुई. मध्य कालीन हिन्दी काव्य में चंद बरदायी से लेकर आगे तक फ़ारसी अरबी शब्द आये हैं. किसी में कम, तो किसी में ज्यादा. जहां काव्य अधिक शुद्ध धार्मिक धरातल पर रहा, फ़ारसी अरबी के शब्दों का प्रयोग कम हुआ, जहां यह धार्मिक धरातल पिछड़ गया वहां फ़ारसी अरबी का बेरोक टोक प्रयोग होने लगा. गोस्वामी तुलसीदास ने ख़ुद अपनी कवितावली के सुन्दर॰ कांड में फ़ारसी शब्दों का बख़ूबी इस्तेमाल किया है. यह इस बात का सूचक है कि आम बोलचाल की भाषा में उन दिनों फ़ारसी अरबी शब्दों का बहुतायत से उपयोग होता था. मुसलमान राजाओं के समय में ऐसा होना स्वाभाविक भी है. कबीर से लगा कर भारतेन्दु हरिश्चंद तक ऐसी अनेक नज़्म गिनाई जा सकती हैं जिनमें हिन्दी के मशहूर कवियों ने उर्दू शब्दों को बहुत नफ़ासत और सलीक़े के साथ इस्तेमाल किया है.

आजकल की कविता के क्षेत्र में हम पर उर्दू का ज़बरदस्त असर हुआ है. छायावाद के पूर्वकाल में अयोध्यासिंह उपाध्याय के चोखे चौपदे इस बात की मिसाल हैं. हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों को यह मालूम है कि 'प्रसाद' जी का छायावादी काव्य "आंसू" अनेक स्थलों पर उर्दू के प्रतीकों और भावों को लेकर चला है—.

मादकता से आये तुम
संज्ञा से चले गये थे
हम व्याकुल पड़े बिलखते थे
उतरे हुये नशे से

غالب نے اِسی بھاؤ کو میٹھا گھماؤ دیکر ایک جیون ویاکھیا کردی ہے ۔

عشرت قطرہ ہے دریا میں فنا ہوجانا،
درد کا حد سے گذرنا ہے دوا ہوجانا ۔

اِس جیون کی ویاکھیا کے کارن ہی غالب کا یہ شعر بہت ہی اُونچے درجہ کا ہے ۔

گوسوامی تلسی داس کی ایک اُکتی ہے—

جت دیکھوں تت توئے،
کنکر پتھر ٹھیکری، بھئی آرسی موئے۔

ارتھات پربرہم کی ویکت ستا میں اُس کی اویکت ستا کا سوندریہ پرکٹ ہو رہا ہے ۔ اِسی بات کو ایک اُردو کوی اِس طرح کہتا ہے—

نگہہ میری حقیقت آشنا معلوم ہوتی ہے،
نظر جس شے پہ پڑتی ہے خدا معلوم ہوتی ہے۔

ہندی کے پرانے پرتیک اُردو شاعروں نے، اور آجکل کے ہندی کویوں نے اُردو کی کہن کو بے روک ٹوک اپنا لیا ہے ۔

یہ تو کیول بھاؤ پرمپرا کی بات ہوئی ۔ مدھیہ کالین ہندی کاویہ میں چند بردائی سے لے کر آگے تک فارسی عربی شبد آئے ہیں ۔ کسی میں کم، تو کسی میں زیادہ ۔ جہاں کاویہ ادھک شدھ دھارمک - دھراتل پر رہا، فارسی عربی کے شبدوں کا پریوگ کم ہوا، جہاں یہ دھارمک دھراتل پچھڑ گیا وہاں فارسی عربی بے روک ٹوک پریوگ ہونے لگا ۔ گوسوامی تلسی داس نے خود اپنی کویتاولی کے سندر کانڈ میں فارسی شبدوں کا بخوبی استعمال کیا ہے ۔ یہ اِس بات کا سوچک ہے کہ عام بول چال کی بھاشا میں اُن دنوں فارسی عربی شبدوں کا بہوتایت سے اُپیوگ ہوتا تھا ۔ مسلمان راجاؤں کے سمے میں ایسا ہونا سوابھاوک بھی ہے کبیر سے لگا کر بھارتیندو ہریشچندر تک ایسی انیک نظم گنائی جا سکتی ہیں جن میں ہندی کے مشہور کویوں نے اُردو شبدوں کو بہت نفاست اور سلیقے کے ساتھ استعمال کیا ہے ۔

آجکل کی کویتا کے چھیتر میں ہم پر اُردو کا زبردست اثر ہوا ہے۔ چھایا واد کے پوروکال میں ایودھیا سنگھ اُپادھیائے کے چوکھے چوپدے اِس بات کی مثال ہیں ۔ ہندی ساہتیہ کے ودیارتھیوں کو یہ معلوم ہے کہ 'پرساد' جی کا چھایا وادی کاویہ "آنسو" انیک استھلوں پر اُردو کے پرتیکوں اور بھاوں کو لے کر چلا ہے ۔

مادکتا سے آئے تم
سنگیا سے چلے گئے تھے
ہم ویاکل پڑے بلکھتے تھے
اُترے ہوئے نشے سے

के पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद को जगा रहा है कि उठो नमाज़ का वक़्त आ गया. ख़याल रहे कि क़ुरान शरीफ़ में मुहम्मद साहब को एक जगह काली कमली वाले कहा है. साफ़ है कि ऊपर की उर्दू कविता में हिन्दी की भाव शैली तो है ही, हिन्दी के उपादान भी हैं, इस सिलसिले में 'जागिये गोपाल लाल' वाला पद एकदम याद आ जाता है. हिन्दी के लोक गीतों में काली कमली का ज़िक्र आता है. भगवान कृष्न को भी काली कमरिया वाले कहा गया है.

जिस तरह उर्दू में हिन्दी उपादान, 'प्रतीक और भाव-शैली प्रकट हुई है, ठीक उसी तरह हिन्दी में उर्दू का सूफ़ियाना रंग भी निखरा है. यह रंग ख़ास उर्दू रंग का है. मलूकदास जी कहते हैं—

> दर्द दिवाने बावरे अलमस्त फ़क़ीरा,
> एक अक़ीदा ले रहे ऐसे मन धीरा.
> प्रेम प्याला पीवते बिसरे सब साथी,
> आठ पहर यूं झूमते ज्यों माता हाथी.

एक मिसाल और लीजिये—

> इश्क़ चमन महबूब का जहां न जावे कोय,
> जावे सो जीवे नहीं जिये सो बौरा होय.
> ऐ तबीब उठ जाव घर अबस छुयेगा हाथ,
> चढ़ी इश्क़ की क़ैफ़ यह उतरे सिर के साथ.

इसी तरह उर्दू वालों ने भी हिन्दी के पुराने भावों को बहुत भावुकता पूर्वक अपनाया है. इसके लिये एक ही मिसाल काफ़ी है. गोस्वामी तुलसीदास की कहावत है—

> कबहुंक अम्ब अवसर पाए,
> मेरियै सुधि द्याइबी कछु करुण कथा सुनाय.

इसी भाव को उर्दू शायर उस्ताद ज़ौक़ ने यों बयान किया है—

> वो कब सुनने लगे क़ासिद मगर हां यूं सुना देना,
> मिला कर दूसरों की दास्तां में दास्तां मेरी.

चूंकि तुलसीदास राम से आत्म निवेदन करना चाहते हैं, इसलिये उनका तर्ज़ेबयान दूसरा ही है. लेकिन भाव, जज़्बा एक ही है और उस जज़्बे के इज़हार के लिये दूसरों के दास्तान के इस्तेमाल की तरकीब भी बिलकुल एक है. मतलब यह है कि एक चीज़ है जिसे हम भाव परम्परा कह सकते हैं. इसी भाव परम्परा के साथ कहने का ढंग भी जुड़ा हुआ है. हिन्दी उर्दू की अभ्यंतर बराबरी की जड़ निश्चय ही वह सर्वमान्य भाव परम्परा है जो मध्यकाल की हिन्दी उर्दू की जड़ है.

सिंधु में बिंदु के समा जाने, जीव के परमात्म तत्व में लीन हो जाने वाली भाव परम्परा से जो परिचित हैं, उनके लिये यह काव्य पंक्ति नई नहीं है—

> "इशरते क़तरा है दरिया में फ़ना हो जाना"

کے پیغمبر حضرت محمد کو جگا رہا ہے کہ اٹھو نماز کا وقت آگیا . خیال رہے کہ قرآن شریف میں محمد صاحب کو ایک جگہ کالی کملی والے کہا ہے. صاف ہے کہ اوپر کی اُردو کویتا میں هندی کی بھاؤشیلی تو ہے ہی' هندی کے اُپا دان بھی ہیں. اِس سلسلے میں 'جاگیئے گوپال لال' والا پد ایکدم یاد آجاتا ہے . هندی کے لوک گیتوں میں کالی کملی کا ذکر آتا ہے . بھگوان کرشن کو بھی کالی کمریا والے کہا گیا ہے .

جس طرح اُردو میں هندی اُپادان' پریتک اور بھاؤشیلی پرکٹ ہوئی ہے' ٹھیک اُسی طرح هندی میں اُردو کا صوفیانہ رنگ بھی نکھرا ہے . یہ رنگ خاص اُردو رنگ کا ہے . ملوک داس جی کہتے ہیں—

> درد دیوانے باورے السمت فقیرا'
> ایک عقیدہ لے رہے ایسے من دھیرا.
> پریم پیالہ پیوتے بسرے سب ساتھی'
> اٹھ پہر یوں جھومتے جیوں ماتا هاتھی.

ایک مثال اور لیجئے—

> عشق چمن محبوب کا جہاں نہ جاوے کوئے'
> جاوے سو جاوے نہیں جیئے سو بورا ہوئے .
> اے طبیب اٹھ جاؤ گھر عبث چھوئیگا ہاتھ'
> چڑھی عشق کی کیف یہ اُترے سرکے ساتھ .

اِسی طرح اُردو والوں نے بھی هندی کے پرانے بھاؤں کو بہت بھاوکتا پوروک اپنایا ہے . اِس کے لئے ایک ہی مثال کافی ہے . گوسوامی تلسی داس کی ایک کہاوت ہے—

> کبھونک امب اوسر پائے '
> موریئے سدھی دھیائبوی کچھ کرن کتھا سنائے .

اِسی بھاؤ کو اُردو شاعر اُستاد ذوق نے یوں بیان کیا ہے—

> وہ کب سننے لگے قاصد مگر هاں یوں سنا دینا '
> ملاکر دوسروں کی داستاں میں داستاں میری .

چونکہ تلسی داس رام سے آتم نویدن کرنا چاهتے ہیں' اِس لئے اِن کا طرز بیان دوسرا ہی ہے . لیکن بھاؤ' جذبہ ایک ہی ہے اور اُس جذبے کے اِظہار کے لئے دوسروں کے داستان کے استعمال کی ترکیب بھی بالکل ایک ہے. مطلب یہ ہے کہ ایک چیز ہے جسے ہم بھاؤ پرمپرا کہ سکتے ہیں . اِسی بھاؤ پرمپرا کے ساتھ کہنے کا ڈھنگ بھی جڑا ہوا ہے . هندی اُردو کی ابھینتر برابری کی جڑ نشچے ہی وہ سروَمانیہ بھاؤ پرمپرا ہے جو مدھیہ کال کی هندی اُردو کی جڑ ہے .

سندھو میں بندو کے سما جانے' جیو کے پرماتم تتو میں لین ہوجانے والی بھاؤ پرمپرا سے جو پریچت ہیں' اُن کے لئے یہ کاویہ پنکتی نئی نہیں ہے—

> "[illegible]رہ ہے دریا میں فنا ہوجانا"

विचार धाराएं भी आपस में मिली जुली और एकरंग हो गई. कबीर की यह लाइनें कौन नहीं जानता—

हमन हैं इश्क़ मस्ताना
हमन को होशियारी क्या
रहे आजाद या जग में,
हमन दुनिया से यारी क्या
कबीरा इश्क़ का माता,
दुई को दूर कर दिल से
जो चलना राह लाज़िम है,
हमन सिर बोझ भारी क्या

कबीर की इस उक्ति से यह बात भी साबित हो जाती है कि खड़ी बोली की एक शैली उर्दू का विकास आगे चल कर इसी ढर्रे पर होने वाला था.

हिन्दी में प्रेम गाथाएं मशहूर ही हैं. मलिक मोहम्मद जायसी की पद्मावत इसके लिये सबसे अधिक मशहूर है. इस शैली की प्रेम कहानियां मुसलमानों द्वारा ही लिखी गई हैं. इन भावुक और उदार मुसलमानों ने हिन्दू जीवन के साथ अपनी सहानुभूति जाहिर की और फ़ारसी की मसनवी शैली को भारतीय दृष्टि से सजा कर जनता की जबान में प्रेम की पीर का वर्नन किया. मजेदार बात यह है कि इन कहानियों की हस्तलिपियां मुसलमानों के ही घरों में पाई जाती हैं. बात यह है कि मध्यकाल में सूफ़ी मत, भक्ति सम्प्रदाय, योग और तांत्रिक मत सिद्धान्त एक दूसरे में घुल मिल गये थे. गिरधर की उपासिका मीरां इश्क़ का प्याला पीती थी और हाल आते आते बेसुध होकर नाच उठती थी, तो इधर आपसी प्रेम की पीर के साथ ही, योगियों के अनुसार सिर पर करवत लेने की बात भी करते थे. इस वजह से मिली जुली विचार धारा, भाव धारा और काव्य उपादान का विस्तार और प्रचार होता था. यही वह भूमि है जिसके सबब पुराने जमाने से हिन्दी के भाव विचार और उर्दू में हिन्दी के भाव विचार और शैलियां मालूम होती रहीं, जैसे—

उठ मेरे काली कमली वाले,
रात चली है जोगिन बनकर,
ओस से अपने मुंह को धोकर,
लट छिटकाये बाल संभाले.
उठ मेरे काली—
रो के हमारा नाम जो लेगा,
नालए दिल से काम जो लेगा,
टूट पड़ेंगे अर्श से तारे.
उठ मेरे काली—

उर्दू की यह एक मशहूर कविता है जिसका मतलब यह है कि रात का पिछला पहर है और उस वक्त ईश्वर इस्लाम

بچار دھارائیں بھی آپس میں مل جائیں اور ایک رنگ ہوگئیں۔ کبیر کی یہ لائنیں کون نہیں جانتا—

ہمن ہے عشق مستانہ
ہمن کو ہوشیاری کیا
رہے آزاد یا جگ میں،
ہمن دنیا سے یاری کیا
کبیرا عشق کا ماتا،
دوئی کو دور کر دل سے
جو چلنا راہ لازم ہے،
ہمن سر بوجھ بھاری کیا

کبیر کی اِس اُکتی سے یہ بات بھی ثابت ہوجاتی ہے کہ کھڑی بولی کی ایک شیلی اُردو کا وکاس آگے چلکر اِسی ڈھرے پر ہونے والا تھا۔

ہندی میں پریم گاتھائیں مشہور ہی ہیں۔ ملک محمد جائسی کی پدماوت اِس کے لئے سب سے ادھک مشہور ہے۔ اِس شیلی کی پریم کہانیاں مسلمانوں دوارا ہی لکھی گئی ہیں۔ ان بھاوک اور اُدار مسلمانوں نے ہندو جیون کے ساتھ اپنی سہانبھوتی ظاہر کی اور فارسی کی مثنوی شیلی کو بھارتیہ درشٹی سے سجاکر جنتا کی زبان میں پریم کی پیر کا ورنن کیا۔ مزیدار بات یہ ہے کہ اِن کہانیوں کی ہست لپیاں مسلمانوں کے ہی گھروں میں پائی جاتی ہیں۔ بات یہ ہے کہ مدھیہ کال میں صوفی مت، بھکتی سمودائے، یوگ اور تانترک مت سدھانت ایک دوسرے میں گھل مل گئے تھے۔ گردھر کی اُپاسکا میرا عشق کا پیالہ پیتی تھی اور حال آتے آتے بےسدھ ہوکر ناچ اُٹھتی تھی، تو ادھر آپسی پریم کی پیر کے ساتھ ہی، یوگیوں کے انوسار سر پر کروت لینے کی بات بھی کرتے تھے۔ اِس وجہ سے ملی جلی وچاردھارا، بھاؤ دھارا اور کاویہ اُپادان کا وستار اور پرچار ہوتا تھا۔ یہی وہ بھومی ہے جس کے سبب پرانے زمانے سے ہندی کے بھاؤ وچار اور اُردو میں ہندی کے بھاؤ وچار اور شیلیاں معلوم ہوتی رہیں جیسے—

اُٹھ میرے کالی کملی والے،
رات چلی ہے جوگن بن کر،
اوس سے اپنے منہ کو دھوکر،
لٹ چھٹکائے بال سنبھالے۔
اُٹھ میرے کالی—
روکے ہمارا نام جو لیگا،
نالۂ دل سے کام جو لیگا،
ٹوٹ پڑینگے عرش سے تارے۔
اُٹھ میرے کالی—

اُردو کی یہ ایک مشہور کویتا ہے جس کا مطلب یہ ہے کہ رات کا پچھلا پہر ہے اور اُس وقت ایشور اِسلام

हिन्दी उर्दू काव्य की समानताएं

(स्वामी कृष्नानन्द सोख्ता)

हिन्दी और उर्दू का रिश्ता दो बहनों का सा है, जो अलग अलग घर ब्याही गई हैं. चूंकि वह बहनें हैं, इसलिये उनके रूप गुन समान हैं, सिवाय इसके कि जिस घर वह ब्याही गई हैं, उसका असर उन पर पड़ा है. हमने सजा कर संवार कर भाशा को हिन्दी बनाया, दूसरों ने बाहर से लाई हुई सजावट की चीज़ों से सजा कर उसी भाशा को उर्दू का नाम दे दिया. नामों के इस भेद के बावजूद सांचे ढांचे के शुद्ध स्वदेशीपन को चोट न पहुंचे, इस अहतियात को निगाह में रखते हुए उर्दू के मशहूर शायर उस्ताद दाग़ ने ज़बान की व्याख्या करते हुए ग़ज़ल कही है—

अब दिल है मुक़ाम बेकसी का
यूं घर न तबाह हो किसी का
इतनी ही तो बस कसर है तुम में
कहना नहीं मानते कम का
कहते हैं उसे ज़बाने उर्दू
जिसमें न हो रंग फ़ारसी का

इस बरायनाम भेद के होते हुये भी बनावट, अदायगी और ज़ोर के लिहाज़ से उर्दू हिन्दी की न मिटने वाली समानता यानी बराबरी और एकसेपन को अधिक विस्तार या तफ़सील से बताने की आवश्यकता नहीं.

दृष्टि की व्यापकता (नज़र की वसअत) शायर या कवि के स्वभाव का एक गुन है. एक ज़बान के शायर ने दूसरी ज़बान के शायर की ख़ूबियों (विशेशताओं) की झूम झूम कर दाद दी है. जिस बोली से उसे वास्ता पड़ा उसके लफ़्ज़ों की माहियत या असलियत को जान कर उन लफ़्ज़ों के इस्तेमाल से उसने अपनी रचनाओं को रचा. हिन्दुस्तान के सांस्कृतिक इतिहास में इस विचार धारा का ऐलान सबसे पहले मलिक मोहम्मद जायसी ने किया था—

तुरकी, अरबी, हिन्दवी; भाशा जेती आहिं
जामें मारग प्रेम का; सबै सराहत ताहिं

उर्दू भाशा और साहित्य के विकास का इतिहास लिखने वाले विद्वान अमीर ख़ुसरो, कबीर, रहीम ख़ानख़ानां, तुलसीदास, बिहारी वग़ैरा सबकी गिन्ती उर्दू के आगे आने वाले ख़ाके की बुनियाद रखने वालों में करते हैं, और यह स्वाभाविक भी है. हमारे इतिहास के बीच के ज़माने में हिन्दुओं और मुसलमानों का जो सम्मिलन हुआ उसके नतीजे में हमारे यहां सूफ़ी मत, योग, भक्ति वग़ैरा धार्मिक

ھندی اُردو کاویہ کی سمانتائیں

(سوامی کرشنانند سوختہ)

ھندی اور اُردو کا رشتہ دو بہنوں کا سا ھے' جو الگ الگ گھر بیاھی گئی ھیں . چونکہ وہ بہنیں ھیں' اس لئے اُن کے روپ گن سمان ھیں' سوائے اِس کے کہ جس گھر وہ بیاھی گئی ھیں' اُس کا اثر اُن پر پڑا ھے . ھم نے سجاکر سنوار کر بھاشا کو ھندی بنایا' دوسروں نے باھر سے لائی ھوئی سجاوٹ کی چیزوں سے سجاکر اُسی بھاشا کو اُردو کا نام دے دیا . ناموں کے اِس بھید کے باوجود سانچے تھانچے کے شدھ سودیشی‌پن کو چوٹ نہ پھونچے' اِس احتیاط کو نگاہ میں رکھتے ھوئے اُردو کے مشھور شاعر اُستاد داغ نے زبان کی ویاکھیا کرتے ھوئے غزل کہی ھے—

اب دل ھے مقام بیکسی کا
یوں گھر نہ تباہ ھو کسی کا
اتنی ھی تو بس کسر ھے تم میں
کہنا نہیں مانتے کسی کا
کہتے ھیں اُسے زبان اُردو
جس میں نہ ھو رنگ فارسی کا

اِس برائے نام بھید کے ھوتے ھوئے بھی بناوٹ' ادائیگی اور زور کے لحاظ سے اُردو ھندی کی نہ مٹنے والی سمانتا یعنی برابری اور ایک سے پن کو ادھک وستار یا تفصیل سے بتانے کی آوشیکتا نہیں .

درشٹی کی ویاپکتا (نظر کی وسعت) شاعر یا کوی کے سوبھاؤ کا ایک گن ھے . ایک زبان کے شاعر نے دوسری زبان کے شاعر کی خوبیوں (وشیشتاؤں) کی جھوم جھوم کر داد دی ھے . جس بولی سے اُسے واسطہ پڑا اُس نے لفظوں کی ماھیت یا اصلیت کو جان‌کر اُن لفظوں کے استعمال سے اُس نے اپنی رچناؤں کو رچا . ھندستان کے سانسکرتک اتہاس میں اِس وچاردھارا کا اعلان سب سے پہلے ملک محمد جائسی نے کیا تھا—

ترکی' عربی' ھندوی؛ بھاشا جیتیں آھیں
جا میں مارگ پریم کا؛ سبے سراھیں تاھیں

اُردو بھاشا اور ساھتیہ کے وکاس کا اتہاس لکھنے والے ودوان امیر خسرو' کبیر' رحیم خانخاناں' تلسی داس' بہاری وغیرہ سبکی گنتی اُردو کے آگے آنے والے خاکے کی بنیاد رکھنے والوں میں کرتے ھیں' اور یہ سوابھاوک بھی ھے . ھمارے اِتہاس کے بیچ کے زمانے میں ھندؤں اور مسلمانوں کا جو سملن ھوا اُس کے نتیجے میں ھمارے یہاں صوفی‌مت' یوگ' بھکتی وغیرہ دھارمک

इसलिये मेरे नज़दीक तो ज़िन्दगी बसर करने का बेहतरीन सलीक़ा सिर्फ़ उसे हासिल है जो इस दुनिया में अक़्ली ज़िन्दगी बसर करता है, जो दूसरों को और अपने को तकलीफ़ पहुंचाए बग़ैर इस ज़िन्दगी को तमाम ज़ेहनी व जिस्मानी लज़्ज़तों से इस तरह लुत्फ़ उठाता है जैसे भीगे हुए कपड़े को सख़्ती से निचोड़ दिया जाता है. ऐसा आदमी दूसरों के भी काम आता है और अपने काम भी आता है. दूसरों को भी जहां तक मुमकिन हो सके ख़ुश रखता है. सोसाइटी को भी आगे बढ़ाता है और ख़ुद भी आगे बढ़ता है. ख़ुद भी जीता है और दूसरों को भी जीने में सहारा देता है. और इसके साथ साथ न ख़ुदा से डरता है और न बन्दे से, बल्कि इस के नज़दीक जो चीज़ अक़्लन दुरुस्त होती है, डंके की चोट उसका ऐलान करता है और परवाह नहीं करता कि दुनिया इसकी दुश्मन हो जायेगी. बेशक ऐसा इन्सान इस ज़मीन की ऐसी दौलत है कि उसके क़दमों की ख़ाक पर आसमान के सितारों को भी निछावर किया जा सकता है, और उसके वजूद के दरवाज़े पर चांद सूरज रोशनी की भीक मांगने जा सकते हैं.

लगे हाथों कुछ अपने मुताल्लिक़ भी कह दूं ! यह सही है कि मैं भटक कर जल्द राहे रास्त पर आ जाता या जल्द आ जाने की कोशिश ज़रूर करता हूं, लेकिन तजुर्बा व अक़्ल के बावजूद अब भी बार बार भटक जाता हूं.

कौन कह सकता है कि उस क़बीले के हक़ में जिसमें कि मैं एक फ़र्द हूं शायद यह बार बार भटक जाना ही मुनासिब व मुफ़ीद हो ! किसे मालूम है कि जब हम भटक जाते हैं, उस वक़्त राहे रास्त पर होते हैं या जिस वक़्त हम राहे रास्त पर होते हैं उस वक़्त भटके हुए होते हैं.

मुख़्तसर यह कि हम लोगों पर बड़े अफ़सोस या बड़ी ख़ुशी के साथ यह चस्पां किया जा सकता है—

अब भी इक उम्र पै जीने का न अन्दाज़ आया
ज़िन्दगी छोड़ दे पीछा मेरा, मैं बाज़ आया

اس لئے میرے نزدیک تو زندگی بسر کرنے کا بہترین سلیقہ صرف اُسے حاصل ھے جو اِس دنیا میں عقلی زندگی بسر کرتا ھے . جو دوسروں کو اور اپنے کو تکلیف پہونچائے بغیر اِس زندگی کو تمام ذھنی و جسمانی لذتوں سے اِس طرح لطف اُٹھاتا ھے جیسے بھیگے ھوئے کپڑے کو سختی سے نچوڑ دیا جاتا ھے . ایسا آدمی دوسروں کے بھی کام آتا ھے اور اپنے کام بھی آتا ھے . دوسروں کو بھی جہاں تک ممکن ھوسکے خوش رکھتا ھے . سوسائٹی کو بھی آگے بڑھاتا ھے اور خود بھی آگے بڑھتا ھے . خود بھی جیتا ھے اور دوسروں کو بھی جینے میں سہارا دیتا ھے . اور اس کے ساتھ ساتھ نہ خدا سے ڈرتا ھے اور نہ بندے سے' بلکہ اِس کے نزدیک جو چیز عقلاً درست ھوتی ھے' ڈنکے کی چوٹ اس کا اعلان کرتا ھے اور پرواہ نہیں کرتا کہ دنیا اس کی دشمن ھوجائیگی . بیشک ایسا انسان اِس زمین کی ایسی دولت ھے کہ اس کے قدموں کی خاک پر اسمان کے ستاروں کو بھی نچھاور کیا جاسکتا ھے' اور اُس کے وجود کے دروازے پر چاند سورج روشنی کی بھیک مانگنے جاسکتے ھیں .

لگے ھاتھوں کچھ اپنے متعلق بھی کہدوں ! یہ صحیح ھے کہ میں بھٹک کر جلد راہ راست پر آجاتا یا جلد آجانے کی کوشش ضرور کرتا ھوں' لیکن تجربہ و عقل کے باوجود اب بھی بار بار بھٹک جاتا ھوں .

کون کہہ سکتا ھے کہ اُس قبیلے کے حق میں جس میں کہ میں ایک فرد ھوں شاید یہ بار بار بھٹک جانا ھی مناسب و مفید ھو ! کسے معلوم ھے کہ جب ھم بھٹک جاتے ھیں' اُس وقت راہ راست پر ھوتے ھیں یا جس وقت ھم راہ راست پر ھوتے ھیں اُس وقت بھٹکے ھوئے ھوتے ھیں .

مختصر یہ کہ ھم لوگوں پر بڑے افسوس یا بڑی خوشی کے ساتھ یہ چسپاں کیا جاسکتا ھے—

اب بھی اک عمر پہ جینے کا نہ انداز آیا
زندگی چھوڑ دے پیچھا میرا' میں باز آیا

एक तबक़ा है - इन्क़लाबी. यह तबक़ा माज़ी (भूत) से मुकम्मिल तौर पर मुंह फेर कर सोसाइटी को मुस्तक़बिल (भविष्य) के सांचे में ढालने की कोशिश करता रहता है.

एक तबक़ा है फ़लसफ़ियों और साइन्सदानों का—यह तबक़ा हर शै को फ़लसफ़े और साइन्स की ऐनक से देखता है और अक़्ली ज़िन्दगी बसर करने का शौक़ करता है.

इस तबक़े के नज़दीक ख़ुदा एक फ़र्ज़ी चीज़ है. इख़लाक़ सिर्फ़ इज़ाफ़ी और अहद बदलती हुई सोसाइटी के साथ बदलता और नेकी बदी के जदीद तसव्वरात (आधुनिक मान्यताएं) पैदा करता है. इस तबक़े की इन्तहाई कोशिश यह है कि इन्सान एक मुकम्मिल अक़्ली ज़िन्दगी बसर करके एक ऐसी दिमाग़ी कैफ़ियत पैदा कर ले जो जिस्मानी सेहत, क़ल्बी राहत, और ज़हनी आसूदगी (आराम) के साज़ो सामान पैदा कर दे.

मुख़्तसर यह कि इल्लते ज़िन्दगी (ज़िन्दगी का लक्ष) मक़सदे ज़िन्दगी और सलीक़ाए ज़िन्दगी का मसला इस क़दर हैरतनाक तौर पर पेचीदा और इस क़दर बेअन्त फैलाव रखता है कि इन्सान, जो अभी तक तिफ़ले मकतब से ज़्यादा हैसियत हासिल नहीं कर सकता है, सरेदस्त ज़िन्दगी की कोई मुकम्मिल शरीयत पेश करने से क़तई माज़ूर (असहाय) है.

लेकिन यह भी कोई आक़िलाना बात न होगी कि अपनी इस मजबूरी के सामने हम हाथ पांव ढीले कर दें और ख़ामोश होकर बैठ जाएं.

बहरहाल मुनासिब यह मालूम होता है कि वह जिस्मानी और ज़ेहनी तौर पर तन्दुरुस्त और क़वी (मज़बूत) रहे. जिस्मानी सेहत को बरक़रार बनाने के जो उसूल हैं उनसे हर पढ़ा लिखा आदमी वाक़िफ़ है, लेकिन ज़ेहनी तन्दुरुस्ती के उसूल अच्छे अच्छे तालीमयाफ़्ता लोगों को भी मालूम नहीं हैं.

फ़ासिद ख़्यालात, नस्ली, मज़हबी और क़ौमी तास्सुबात और इसके साथ ही ख़ौफ़, ग़ुस्सा, ग़म और नफ़रत, इन्सान के ज़ेहन को बीमार कर देते हैं. इसलिये हर साहिबे नज़र का फ़र्ज़ है कि वह ठंडे दिल से अपने बातिन का जायज़ा ले और देखे कि इन अमराज़ में से कोई मर्ज़ इसके ज़ेहन को दबाये तो नहीं हुए है.

बीमार जिस्म आसानी से दुरुस्त हो जाता है लेकिन बीमार ज़ेहन का इलाज मुश्किल है और ज़ेहनी अमराज़ से सिर्फ़ वही लोग नजात हासिल कर सकते हैं जिन्हें इल्मे हिक्मत की दौलत हासिल है. और इसके साथ साथ इनका दिल इस क़दर मसर्रतों से भर जाता है कि उसमें ग़म दाख़िल ही नहीं हो सकता. मिर्ज़ा ग़ालिब ने कहा है :—

ग़म नहीं होता है आज़ादों को बेश अज़ यक नफ़स
बर्क़ से करते हैं रोशन शमए मातमख़ाना हम

ایک طبقہ ھے اِنقلابی . یہ طبقہ ماضی (بھوت) سے مکمل طور پر منھ پھیر کر سوسائٹی کو مستقبل (بھوشیہ) کے سانچے میں ڈھالنے کی کوشش کرتا رہتا ھے .

ایک طبقہ ھے فلسفیوں اور سائنسدانوں کا — یہ طبقہ ہر شے کو فلسفے اور سائنس کی عینک سے دیکھتا ھے اور عقلی زندگی بسر کرنے کا شوق کرتا ھے .

اِس طبقہ کے نزدیک خدا ایک فرضی چیز ھے . اخلاق صرف ایک عزاتی اور عہد بدلتی ھوئی سوسائٹی کے ساتھ بدلتا اور نیکی بدی کے جدید تصورات (آدھونک مانیتائیں) پیدا کرتا ھے . اِس طبقہ کی انتہائی کوشش یہ ھے کہ انسان ایک مکمل عقلی زندگی بسر کرکے ایسی دماغی کیفیت پیدا کر لے جو جسمانی صحت، قلبی راحت، اور ذھنی آسودگی (آرام) کے سازو سامان پیدا کر دے .

مختصر یہ کہ علت زندگی (زندگی کا لکش) مقصد زندگی اور سلیقۂ زندگی کا مثلہ اِس قدر حیرت ناک طور پر پیچیدہ اور اس قدر بے انت پھیلاؤ رکھتا ھےکہ اِنسان، جو ابھی تک طفل مکتب سے زیادہ حیثیت حاصل نہیں کر سکتا ھے، سردست زندگی کی کوئی مکمل شریعت پیش کرنے سے قطعی معذور (اسہائے) ھے .

لیکن یہ بھی کوئی عاقلانہ بات نہ ھوگی کہ اپنی اس مجبوری کے سامنے ھم ھاتھ پاؤں ڈھیلے کردیں اور خاموش ھوکر بیٹھ جائیں .

بہرحال مناسب یہ معلوم ہوتا ھے کہ وہ جسمانی اور ذھنی طور پر تندرست اور قوی (مضبوط) رھے . جسمانی صحت کو برقرار بنانے کے جو اصول ھیں اُن سے ہر پڑھا لکھا آدمی واقف ھے، لیکن ذہنی تندرستی کے اصول اچھے اچھے تعلیم یافتہ لوگوں کو بھی معلوم نہیں ھیں .

فاسد خیالات، نسلی، مذھبی اور قومی تعصبات اور اِس کے ساتھ ھی- خوف، غصہ، غم اور نفرت انسان کے ذھن کو بیمار کردیتے ھیں . اِس لئے ہر صاحب نظر کا فرض ھے کہ وہ ٹھنڈے دل سے اپنے باتن کا جائزہ لے اور دیکھے کہ اِن امراض میں سے کوئی مرض اِس کے ذھن کو دبائے تو نہیں ھوئے ھیں .

بیمار جسم آسانی سے درست ھوجاتا ھے لیکن بیمار ذھن کا علاج مشکل ھے اور ذھنی امراض سے صرف وھی لوگ نجات حاصل کرسکتے ھیں جنھیں علم حکمت کی دولت حاصل ھے . اور اس کے ساتھ ساتھ اُن کا دل اِسقدر مسرتوں سے بھر جاتا ھے کہ اس میں غم داخل ھی نہیں ھوسکتا . مرزا غالب نے کہا ھے :—

غم نہیں ھوتا ھے آزادوں کو بیش از یک نفس
برق سے کرتے ھیں روشن شمع ماتم خانہ ھم

जीने का सलीक़ा

(जोश मलीहाबादी)

ज़िन्दगी क्योंकर बसर की जाय, यह उन लोगों से नहीं पूछा जा सकता जिन्हें जीने के लाले पड़े हों. वह लोग, फ़ाक़ों से जिनका जिस्म दुबला और जहालत से जिनकी अक़्ल मोटी हो, ज़िन्दगी बसर करने के सलीक़े से क्योंकर वाक़िफ़ हो सकते हैं. अलबत्ता यह मसला उन लोगों का है जिन्हें मुआशी फ़राग़त (आर्थिक निश्चिन्तता) और ज़ेहनी बेदारी (मानसिक विकास) हासिल है.

इन्सान दौड़ता, धूपता, सर खपाता और पसीना बहाता है, महज़ इसलिये कि ज़िन्दा रहने के वास्ते जिन चीज़ों की ज़रूरत है उन्हें मुहय्या कर ले. लेकिन कोई अल्लाह का बन्दा एक लमहे के वास्ते भी इस बात पर ग़ौर नहीं करता कि मैं यह जो कुछ ख़ून पसीना एक कर रहा हूं वह तो महज़ इसलिये है कि मैं ज़िन्दा रह सकूं. लेकिन ज़िन्दा रहने का मक़सद क्या है, किसी को ख़्वाब में भी उसका ख़्याल नहीं आता.

एक तबक़ा ज़िन्दगी के बाब (बारे में) इस तरह सोचता है कि अपनी तमाम तमन्नाओं, तमाम ख़्वाहिशों, ग़रज़े कि अपनी तमाम हस्ती को, अपने पैदा करने वाले की मर्ज़ी के सुपुर्द कर देना ही ज़िन्दगी का वाहिद मक़सद है.

लेकिन एक तबक़ा ऐसा है, और यह बहुत ही बड़ा तबक़ा है, जो ख़्याल करता है कि भाड़ में जाय नेकी बदी और अच्छाई बुराई, यारों को तो अपने हलवे मांडे से काम. आप भले तो जग भला. जिस तरह और जिस ज़रिये से बन पड़े कमाओ, कमाओ, नौकरी करके कमाओ—चोरी डकैती करके कमाओ—मिलें और कारख़ाने खोल कर कमाओ, अमीर बन कर कमाओ, औरत फ़रोश बन कर कमाओ, ठेके ले कर कमाओ—पैग़म्बर बन कर कमाओ—अलग़रज़ हर तरह और हर तरीक़े से कमाओ, ख़ूब जी भर कर पूरे ख़ुलूस के साथ कमाओ—कमाते कमाते मर जाओ और अगर आवागमन हो तो पैदा हो फिर कमाओ, फिर कमाओ.

यह तबक़ा समझता है कि इस कायनात की उम्र को देखते हुए, जो शायद करोड़ों अरबों साल से भी ज़ायद हो, हमारी यह बूंद भर साठ सत्तर साल की ज़िन्दगी भी कोई ऐसी चीज़ है जिस पर निगाह पड़ सके. इस हक़ीर, पोच और लचर वाहिमों पर ग़ौर करना एक अहमक़ाना वक़्त की बरबादी के सिवा और कुछ नहीं. इसलिये बस खाओ पिओ, मज़े उड़ाओ और मर जाओ.

جینے کا سلیقہ

(جوش ملیحآبادی)

زندگی کیونکر بسر کی جائے' یہ اُن لوگوں سے نہیں پوچھا جا سکتا جنہیں جینے کے لالے پڑے ہوں . وہ لوگ' فاقوں سے جن کا جسم دبلا اور جہالت سے جن کی عقل موٹی ہو' زندگی بسر کرنے کے سلیقے سے کیونکر واقف ہو سکتے ہیں . البتہ یہ مثلہ اُن لوگوں کا ہے جنہیں معاشی فراغت (آرتھک نشچنتتا) اور ذہنی بیداری (مانسک وکاس) حاصل ہے .

اِنسان دوڑتا' دھوپتا' سرکھپاتا اور پسینہ بہاتا ہے' محض اِس لئے کہ زندہ رہنے کے واسطے جن چیزوں کی ضرورت ہے اُنہیں مہیا کرلے . لیکن کوئی اللہ کا بندہ ایک لمحے کے واسطے بھی اس بات پر غور نہیں کرتا کہ میں یہ جو کچھ خون پسینہ ایک کر رہا ہوں وہ تو محض اِس لئے ہے کہ میں زندہ رہ سکوں . لیکن زندہ رہنے کا مقصد کیا ہے' کسی کو خواب میں بھی اِس کا خیال نہیں آتا .

ایک طبقہ زندگی کے باب (بارے میں) اِس طرح سوچتا ہے کہ اپنی تمام تمناؤں' تمام خواہشوں' غرضیکہ اپنی تمام ہستی کو' اپنے پیدا کرنے والے کی مرضی کے سپرد کر دینا ہی زندگی کا واحد مقصد ہے .

لیکن ایک طبقہ ایسا ہے' اور یہ بہت ہی بڑا طبقہ ہے' جو خیال کرتا ہے کہ بھاڑ میں جائے نیکی بدی اور اچھائی برائی' یاروں کو تو اپنے حلوے مانڈے سے کام . آپ بھلے تو جگ بھلا. جس طرح اور جس ذریعہ سے بن پڑے کماؤ' کماؤ' نوکری کرکے کماؤ—چوری ڈکیتی کرکے کماؤ—ملیں اور کارخانے کھول کر کماؤ' امیر بن کر کماؤ' عورت فروش بن کر کماؤ' ٹھیکے لے کر کماؤ—پیغمبر بن کر کماؤ—الغرض ہر طرح اور ہر طریقہ سے کماؤ , خوب جی بھر کر پورے خلوص کے ساتھ کماؤ—کماتے کماتے مر جاؤ اور اگر آوا گمن ہو تو پیدا ہو پھر کماؤ' پھر کماؤ .

یہ طبقہ سمجھتا ہے کہ اِس کائنات کی عمر کو دیکھتے ہوئے' جو شاید کروڑوں' اربوں سال سے بھی زائد ہو' ہماری یہ بوند بھر ساٹھ ستر سال کی زندگی بھی کوئی ایسی چیز ہے جس پر نگاہ پڑ سکے . اس حقیر' پوچ اور لچر واہموں پر غور کرنا ایک احمقانہ وقت کی بربادی کے سوا اور کچھ نہیں . اس لئے بس کھاؤ پیو' مزے اڑاؤ اور مر جاؤ .

इनसे मिलते जुलते सब में अलग अलग सन्यासी, यति, ...डलेश, साधू, बैरागी, उदासी, मठाधीश, संत, महन्त, ...क़ीर, दरवेश, औलिया, सज्जादा नशीन, शेख़, पीर, ...रशिद, तकियादार, मिस्कीन, भिक्षु, स्थानकवासी, श्रमन, ...ीर, महावीर, मांक, नन, वग़ैरा वग़ैरा सब धर्मों में होते ..., जिनकी तादाद बहुत पर जिनमें सच्चे साधू या तपस्वी ...ोई बिरले ही मिलते हैं.

सबके अपने अपने मठ, अखाड़े, धर्मशाला, विहार, ...ामासरी, दरगाह, तकिया, ख़ानक़ाह वग़ैरा हैं, जिनमें से ...धिकतर का इन्तज़ाम बहुत ही ख़राब होता है और बहुत ...े तो पाप के अड्डे होते हैं.

मशहूर जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने अपनी किताब ...hips from a German Workshop में बड़ी ...फ़सील और सुन्दरता के साथ दिखाया है कि तिब्बत के ...ौद्ध मठों और योरप के ईसाई रोमन कैथलिक गिरजों में ...क एक चीज़ और एक एक रिवाज कितने ग़ज़ब के मिलते ...ुलते हैं.

सब धर्म वालों ने अपने अपने अनगिनत टुकड़े कर ...क्खे हैं. एक एक की बहुत सी अलग अलग सम्प्रदाएं हैं. ...हुत से पंथ हैं. बहुत से फ़िर्क़े हैं. हिन्दुओं में इनकी तादाद ...ैकड़ों है. ईसाइयों में भी सैकड़ों है और इसलाम में कम ...े कम कोड़ियों. यह बात यूं तो बड़े दुख की बात है पर ...ससे एक अच्छी बात का पता चलता है कि लोग अपने ...र्म के असली रूप को अपनी सूझ बूझ के अनुसार बदल ...ेते हैं. इसका मतलब यह है कि वह धर्म के मालिक हैं, ...र्म उनका मालिक नहीं. इसका यह भी अच्छा सबूत है कि ...ोग एक मज़हब से दूसरे मज़हब में भी चले जाते हैं.

हिन्दू धर्म में एक और ख़ास चीज़ है जो मोटे तौर ...र कहा जा सकता है कि दूसरे किसी धर्म में नहीं है. वह ...ै हिन्दुओं की जात पात. पर हिन्दू जात पात का मामला ...ितना पेचीदा और बड़ा है कि उसके लिये अलग लेख की ...ावश्यकता है.

اِن سے ملتے جلتے سب میں الگ الگ سنیاسی، یتی، منڈلیش، سادھو، بیراگی، اُداسی، متھا دھیش، سنت، مہنت، فقیر، درویش، اَولیا، سجادہ نشین، شیخ، پیر، مرشد، تکیہ‌دار، مسکین، بھکشو، استھانک واسی، شرمن، تھیر، مہاتھیر، مانک، نن وغیرہ وغیرہ سب دھرموں میں ہوتے ہیں، جن کی تعداد بہت پر جن میں سچے سادھو یا تپسوی کوئی برلے ہی ملتے ہیں ۔

سب کے اپنے اپنے متھ، اکھاڑے، دھرم شالا، وہار، لاماسری، درگاہ، تکیہ، خانقاہ وغیرہ ہیں، جن میں سے اَدھکتر کا انتظام بہت ہی خراب ہوتا ہے اور بہت سے تو پاپ کے اڈے ہوتے ہیں ۔

مشہور جرمن ودوان میکس مولر نے اپنی کتاب Chips from a German Workshop میں بڑی تفصیل اور سندرتا کے ساتھ دکھایا ہے کہ تبت کے بودھ متھوں اور یورپ کے عیسائی رومن کیتھلک گرجوں میں ایک ایک چیز اور ایک ایک رواج کتنے غضب کے ملتے جلتے ہیں ۔

سب دھرم والوں نے اپنے اپنے اَنگنت ٹکڑے کر رکھے ہیں ۔ ایک ایک کی بہت سی الگ الگ سمپردائیں ہیں ۔ بہت سے پنتھ ہیں ۔ بہت سے فرقے ہیں ۔ ہندوؤں میں اِن کی تعداد سیکڑوں ہے ۔ عیسائیوں میں بھی سیکڑوں ہے اور اسلام میں کم سے کم کوڑیوں ۔ یہ بات یوں تو بڑے دکھ کی بات ہے پر اِس سے ایک اچھی بات کا پتہ چلتا ہے کہ لوگ اپنے دھرم کے اصلی روپ کو اپنی سوجھ بوجھ کے انوسار بدل لیتے ہیں ۔ اِس کا مطلب یہ ہے کہ وہ دھرم کے مالک ہیں، دھرم اُن کا مالک نہیں۔ اِس کا یہ بھی اچھا ثبوت ہے کہ لوگ ایک مذہب سے دوسرے مذہب میں بھی چلے جاتے ہیں ۔

ہندو دھرم میں ایک اور خاص چیز ہے جو موٹے طور پر کہا جاسکتا ہے کہ دوسرے کسی دھرم میں نہیں ہے ۔ وہ ہے ہندوؤں کی جات پات ۔ پر ہندو جات پات کا معاملہ اتنا پیچیدہ اور بڑا ہے کہ اُس کے لئے الگ لیکھ کی آوشیکتا ہے ۔

जीवन और अधिक दिलचस्प और ख़ुश करने वाला होता. पर इस की जगह आजकल अधिकतर इन्हें देख कर एक दूसरे से चिढ़ और नफ़रत बढ़ती है. कारन यह है कि हमारे धार्मिक नेता जो रहनुमाई करने की जगह लोगों को और गुमराह करते हैं, अपने लोगों में समझ और प्रेम की जगह नफ़रतें और गुस्से अधिक पैदा करते हैं. वह अपने अपने लोगों को यही बताते रहते हैं कि जो लोग उनकी तरह चोटी नहीं रखते, डाढ़ी रखते हैं, या डाढ़ी नहीं रखते, चोटी रखते हैं, या दूसरी तरह के कपड़े पहनते हैं, या दूसरी चीज़ें खाते पीते हैं, या दूसरी बोली बोलते हैं, या किसी दूसरी बोली में दुआ प्रार्थना करते हैं वह सब ग़ैर हैं जिनसे बचना चाहिये, बल्कि दुश्मन हैं जिन्हें दबाना चाहिये.

सब मज़हबों वाले अपनी पूजा के स्थानों को अलग अलग नामों से पुकारते हैं. इन नामों का अर्थ अकसर एकसा होता है. गिरजा को 'ख़ुदा का घर' भी कहते हैं. मन्दिर को 'देवालय' भी कहते हैं. उसके भी वही मानी हैं. मस्जिद को 'बैतुल्लाह' कहते हैं. इसके मानी भी ख़ुदा का घर है. गिरजा, मस्जिद या मन्दिर बनाने में सब ऊँची ऊँची आसमान को छूने की कोशिश करने वाली शिखर, कलश, गोपुर, मिनारा, गुम्बद, डोम, स्टीपल वग़ैरा बनाते हैं. लोगों को पूजा इबादत के लिये बुलाने के सबके कोई न कोई ढंग हैं. कोई अज़ान देते हैं, कोई घंटा बजाते हैं, कोई घड़ियाल. मरे हुओं का कोई श्राद्ध करते हैं, कोई फ़ातहा पढ़ते हैं, कोई दुआएं पढ़ते हैं. मरने के बाद कोई भोज खिलाते हैं, कोई कन्दूरी और कोई और और तरह की दावतें देते हैं. सब के कोई न कोई धार्मिक गुरु होते हैं. हिन्दू गुरु के शिष्य होते हैं, मुसलमान पीर के मुरीद कहलाते हैं और ईसाइ सेन्ट के डिसाइपल होते हैं. कोई आसन पर बैठता है, कोई सज्जादे पर. कोई घुटने टेक कर नमाज़ पढ़ता है, कोई पलौथी मार कर संध्या करता है. कोई साश्टांग दंडवत करता है, कोई परिक्रमा या तवाफ़ करता है. कोई पूजा करने में शरीर के अलग अलग भागों को बार बार हाथ लगाता है और अलग अलग मंत्र पढ़ता जाता है. कोई घुटनों के बल खड़ा हो जाता है, कोई अपनी एड़ियों के बल घूमता है—ढंग अलग अलग, मतलब सबका एक.

हिन्दुओं में पंडे, पुरोहित, पुजारी, याजक, धर्माधिकारी, और आचार्य होते हैं. मुसलमानों में मुअज़्ज़न, मुजाविर, मुतवल्ली, मुल्ला, मुफ़्ती, आलिम, मुजतहिद, इमाम और ख़लीफ़ा होते हैं. पारसियों में दस्तूर और मोबिद होते हैं. यहूदियों में स्काइब, फ़ैरीसी और रब्बी होते हैं. बौद्धों में फुंगी, लामा, बोन्ज़ होते हैं. इसी तरह के दरजनों नाम ईसाइयों में हैं वग़ैरा, वग़ैरा.

جیون اور ادھک دلچسپ اور خوش کرنے والا ہوتا۔ پر اِس کی جگہ آجکل ادھک‌تر اِنہیں دیکھ کر ایک دوسرے سے چڑھ اور نفرت بڑھتی ہے۔ کارن یہ ہے کہ ہمارے دھارمک نیتا جو رہنمائی کرنے کی جگہ لوگوں کو اور گمراہ کرتے ہیں' اپنے لوگوں میں سمجھ اور پریم کی جگہ نفرتیں اور غصے ادھک پیدا کرتے ہیں۔ وہ اپنے اپنے لوگوں کو یہی بتاتے رہتے ہیں کہ جو لوگ اُن کی طرح چوٹی نہیں رکھتے' ڈاڑھی رکھتے ہیں' یا ڈاڑھی نہیں رکھتے' چوٹی رکھتے ہیں' یا دوسری طرح کے کپڑے پہنتے ہیں' یا دوسری چیزیں کھاتے پیتے ہیں' یا دوسری بولی بولتے ہیں' یا کسی دوسری بولی میں دعا' پرارتھنا کرتے ہیں' وہ سب غیر ہیں جن سے بچنا چاہئے' بلکہ دشمن ہیں جنہیں دبانا چاہئے۔

سب مذہبوں والے اپنی پوجا کے استھانوں کو الگ الگ ناموں سے پکارتے ہیں۔ اِن ناموں کا ارتھ اکثر ایک سا ہوتا ہے۔ گرجا کو 'خدا کا گھر' بھی کہتے ہیں۔ مندر کو 'دیوالیہ' بھی کہتے ہیں۔ اُس کے بھی وہی معنی ہیں۔ مسجد کو 'بیت‌اللہ' کہتے ہیں۔ اِس کے معنی بھی خدا کا گھر ہے۔ گرجا' مسجد یا مندر بنانے میں سب اُونچی اُونچی آسمان کو چھونے کی کوشش کرنے والی شکھر' کلش' گوپر' منارا' گنبد' ڈوم' اسٹیپل وغیرہ بناتے ہیں۔ لوگوں کو پوجا عبادت کے لئے بلانے کے سب کے کوئی نہ کوئی ڈھنگ ہیں۔ کوئی اذان دیتے ہیں' کوئی گھنٹا بجاتے ہیں' کوئی گھڑیال۔ مرے ہوؤں کا کوئی شرادھ کرتے ہیں' کوئی فاتحہ پڑھتے ہیں' کوئی دعائیں پڑھتے ہیں۔ مرنے کے بعد کوئی بھوج کھلاتے ہیں' کوئی کندوری اور کوئی اور اور طرح کی دعوتیں دیتے ہیں۔ سب کے کوئی نہ کوئی دھارمک گرو ہوتے ہیں۔ ہندو گرو کے شِشیہ ہوتے ہیں' مسلمان پیر کے مرید کہلاتے ہیں' اور عیسائی سینٹ کے ڈسائپل ہوتے ہیں۔ کوئی آسن پر بیٹھتا ہے' کوئی سجادہ پر۔ کوئی گھٹنے ٹیک کر نماز پڑھتا ہے' کوئی پلوتھی مارکر سندھیا کرتا ہے۔ کوئی ساشٹانگ ڈنڈوت کرتا ہے' کوئی پرکرما یا طواف کرتا ہے۔ کوئی پوجا کرنے میں شریر کے الگ الگ بھاگوں کو بار بار ہاتھ لگاتا ہے اور الگ الگ منتر پڑھتا جاتا ہے۔ کوئی گھٹنوں کے بل کھڑا ہوجاتا ہے' کوئی اپنی ایڑیوں کے بل گھومتا ہے—ڈھنگ الگ الگ' مطلب سب کا ایک۔

ہندوؤں میں پنڈے' پروہت' پجاری' یاجک' دھرم‌ادھیکاری اور آچاریہ ہوتے ہیں۔ مسلمانوں میں موذن' مجاور' متولی' ملا' مفتی' عالم' مجتہد' امام اور خلیفہ ہوتے ہیں۔ پارسیوں میں دستور اور موبد ہوتے ہیں۔ یہودیوں میں اسکرائبس' فیریسی اور ربی ہوتے ہیں۔ بودھوں میں پھنگی' لامہ' بونز ہوتے ہیں۔ اِسی طرح کے درجنوں نام عیسائیوں میں ہیں وغیرہ وغیرہ۔

रूह यानी आत्मा की दरजे बदरजे तरक़्क़ी के लिये हिन्दू 'योग' और सूफ़ी 'सलूक' दोनों में हर तरह के गोश्त से परहेज़ जरूरी बताया गया है. हज़रत अली जो सबसे पहले सूफ़ी माने जाते हैं कहा करते थे कि :—"अपने पेटों को जानवरों की क़बरें मत बनाओ."

आदमी की कुदरती ख्वाहिशों और कमज़ोरियों को जहां एक तरफ़ क़ाबू में करना जरूरी है वहां कभी कभी और एक दरजे तक उन्हें खुले मौक़ा देना भी जरूरी हो जाता है. इसीलिये सब धर्मों में किसी न किसी रूप में जानवरों की बलि और क़ुरबानी जैसी चीजें रक्खी गई हैं. यह चीजें सब धर्मों में ऐसी ही हैं जैसी हर आदमी के शरीर के अन्दर और सुन्दर से सुन्दर आदमी के अन्दर मैले से भरी हुई अंतड़ियां होती हैं. केवल ईसाइयों, बौद्धों और जैनियों में क़ुरबानी का रिवाज नहीं है. हर मज़हब ने इन चीजों पर रोक थाम भी लगाई है और रोक थाम के रास्ते बताए हैं.

भागवत में लिखा है :—

"लोगों में स्त्री पुरुश का एक दूसरे की तरफ़ झुकाव और गोश्त और शराब की इच्छा होती ही है. उसे जगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती. इन चीजों पर रोक थाम रखने के लिये शादी का रिवाज और यज्ञों का रिवाज डाला गया है. इन से बचे रहना बहुत ज्यादा अच्छा है."

इन्जील में लिखा है :—

"जो लोग अपने को रोक नहीं सकते उन्हें चाहिये कि शादी कर लें. क्योंकि अन्दर अन्दर जलते रहने से शादी कर लेना ज्यादा अच्छा है."

हर धर्म के मानने वाले किसी न किसी तरह का अपना बाहरी निशान भी रखते हैं. कोई सर पर पीछे की तरफ़ चोटी रखते हैं, कोई दाढ़ी रखते हैं, कोई सब बाल बढ़ाते हैं और कोई कुछ ईसाई पादरियों की तरह ख़ास तरह सर मुंडवाते हैं. कोई बाएं कन्धे के ऊपर से जनेऊ डालते हैं, और माथे पर तरह तरह के तिलक लगाते हैं. कोई कमर के चारों तरफ़ ज़ुन्नार बांधते हैं. कोई टोपियों पर हेलाल और सितारा लगाते हैं, और कोई अपनी गरदनों में क्रास लटकाते हैं. लगभग सब जन्तर मन्तर या गंडे तावीज़ जैसी चीजों में भी विश्वास रखते हैं और उन्हें पहनते हैं. गहरे विश्वास के कारन इन चीजों का उनके ऊपर असर भी होता है. सब धर्म वालों की ख़ास ख़ास पाशाकें हैं. यह पाशाकें कहीं क़ौमी या राष्ट्री मानी जाती हैं और कहीं धार्मिक. यह सब अलग अलग चीजें अगर केवल कला या सुन्दरता की निगाह से पहनी जातीं ताकि एक दूसरे को अच्छी लगें, या अगर इनके साथ थोड़ा बहुत सच्चा भक्ति भाव भी होता, तो इन सब रंग बिरंगी चीजों से आदमी की सुन्दरता बढ़ती, नई नई चीजें सबको अच्छी लगतीं, और हमारा समाजी

روح یعنی آتما کی درجہ بدرجہ ترقی کے لئے ھندو 'یوگ' اور صوفی 'سلوک' دونوں میں ہر طرح کے گوشت سے پرھیز ضروری بتایا گیا ھے۔ حضرت علی جو سب سے پہلے صوفی مانے جاتے ھیں کہا کرتے تھے کہ :—"اپنے پیٹوں کو جانوروں کی قبریں مت بناؤ۔"

آدمی کی قدرتی خواہشوں اور کمزوریوں کو جہاں ایک طرف قابو میں کرنا ضروری ھے وہاں کبھی کبھی اور ایک درجہ تک انہیں کھلے موقع دینا بھی ضروری ھوجاتا ھے۔ اِسی لئے سب دھرموں میں کسی نہ کسی روپ میں جانوروں کی بلی اور قربانی جیسی چیزیں رکھی گئی ھیں یہ چیزیں سب دھرموں میں ایسی ہی ھیں جیسی ہر آدمی کے شریر کے اندر اور سندر سے سندر آدمی کے اندر میلے سے بھری ہوئی انتڑیاں ھوتی ھیں۔ کیول عیسائیوں' بودھوں اور جینیوں میں قربانی کا رواج نہیں ھے۔ ھر مذھب نے اِن چیزوں پر روک تھام بھی لگائی ھے اور روک تھام کے راستے بتائے ھیں۔

بھاگوت میں لکھا ھے :—

"لوگوں میں اِستری پورش کا ایک دوسرے کی طرف جھکاؤ اور گوشت اور شراب کی اِچھا ھوتی ہی ھے۔ اُسے جگانے کی آوشیکتا نہیں پڑتی۔ اِن چیزوں پر روک تھام رکھنے کے لئے شادی کا رواج اور یگیوں کا رواج ڈالا گیا ھے۔ اِن سے بچے رہنا بہت زیادہ اچھا ھے۔"

انجیل میں لکھا ھے :—

"جو لوگ اپنے کو روک نہیں سکتے اُنہیں چاھئے کہ شادی کرلیں۔ کیونکہ اندر اندر جلتے رہنے سے شادی کرلینا زیادہ اچھا ھے۔"

ھر دھرم کے ماننے والے کسی نہ کسی طرح کا اپنا باھری نشان بھی رکھتے ھیں۔ کوئی سر پر پیچھے کی طرف چوٹی رکھتے ھیں' کوئی داڑھی رکھتے ھیں' کوئی سب بال بڑھاتے ھیں اور کوئی کچھ عیسائی پادریوں کی طرح خاص طرح سرمنڈواتے ھیں۔ کوئی بائیں کندھے کے اوپر سے جنیو ڈالتے ھیں' اور ماتھے پر طرح طرح کے تلک لگاتے ھیں۔ کوئی کمر کے چاروں طرف زنار باندھتے ھیں۔ کوئی ٹوپیوں پر ھلال اور ستارا لگاتے ھیں' اور کوئی اپنی گردنوں میں کراس لٹکاتے ھیں۔ لگ بھگ سب جنتر منتر یا گنڈے تعویز جیسی چیزوں میں بھی وشواس رکھتے ھیں اور انہیں پہنتے ھیں۔ گہرے وشواس کے کارن اِن چیزوں کا ان کے اُوپر اثر بھی ھوتا ھے۔ سب دھرم والوں کی خاص خاص پوشاکیں ھیں۔ یہ پوشاکیں کہیں قومی یا راشٹری مانی جاتی ھیں اور کہیں دھارمک۔ یہ سب الگ الگ چیزیں اگر کیول کلا یا سندرتا کی نگاہ سے پہنی جاتیں تاکہ ایک دوسرے کو اچھی لگیں' یا اگر اِن کے ساتھ تھوڑا بہت سچا بھکتی بھاؤ بھی ھوتا' تو اِن سب رنگ برنگی چیزوں سے آدمی کی سندرتا بڑھتی' نئی نئی چیزیں سب کو اچھی لگتیں' اور ھمارا سماجی

रास्ता दिखा दिया है. ईश्वर हम से और कुछ नहीं चाहता सिवाय इसके कि हम सबके साथ इन्साफ़ करें, सब से प्रेम करें, सब पर दया करें, नम्रता के साथ झुक कर चलें."
(माइका)

"जो कोई किसी बैल की हत्या करता है उसने मानो एक आदमी की हत्या की." (इसाया)

"ऐ ईश्वर तूने हम से क़ुरबानी करने के लिये और चढ़ावे चढ़ाने के लिये नहीं कहा. तू ने हमारे कान खोल दिये हैं. तुझे आग में आहुतियों और पाप के चढ़ावों की ज़रूरत नहीं है. मैं अपने ईश्वर के भजन गाऊंगा और उसे धन्यवाद दूंगा. ईश्वर इससे ख़ुश होगा. सींगों और खुरों वाले बैलों और सांडों की हत्या से ख़ुश नहीं होगा."
(साम्स, अध्याय 40 और 69)

"जो कोई अपनी ख़ुदी को पाएगा वह अपने असल जीवन को खोवेगा और जो कोई अपनी ख़ुदी को मिटा देगा वह असली जीवन को हासिल करेगा." (इन्जील)

यहां ख़ुदी से मतलब आदमी का छोटा आपा है और असल जीवन से मतलब सबके साथ मिल कर सबका मिला जुला आपा है. वही अल्लाह है.

सूफ़ी कहता है :—

"बेख़ुदी की तरफ़ कोशिश करके बढ़, तब तू अपने असली आपे को पा सकेगा. अल्लाह सब ठीक जानता है. तू अपनी ख़ुदी का ग़ुलाम कब तक बना रहेगा? इस ख़ुदी से बाहर निकल. रीत रिवाज के नापाक जूतों को बाहर उतार कर ईश्वर के मन्दिर में जा और उसके चमत्कार देख."

कबीर साहब ने कहा है :—

"जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं"
प्रेम गली अति सांकरी, या में दो न समाहिं"

इसी ख़याल को सूफ़ी ने इन शब्दों में ज़ाहिर किया है :—

"हम मोतक़िदे दावए बातिल नहीं होते
सीने में किसी शख़्स के दो दिल नहीं होते"

एक और सूफ़ी ने कहा है :—

"मेरे जुब्बे यानी कुरते के अन्दर सिवा ख़ुदा के कोई और है ही नहीं."

यही ख़याल सूफ़ियों ने फ़ारसी और अरबी के शेरों में जगह जगह और तरह तरह से ज़ाहिर किया है.

क़ुरान में लिखा है :—

"लंय्यनालल्लह लोहूमोहा वला देमाओहा व लाकिय्यनालोहुत्तक़वा मिनकुम." (क़ुरान, 22—37)

यानी—"क़ुरबानी के जानवरों का ख़ून या गोश्त अल्लाह को नहीं पहुंचता. अल्लाह को सिर्फ़ तुम्हारे दिल का तक़्वा पहुंचता है यानी यह कि तुम बुरे कामों से बचे रहो."

راستہ دکھا دیا ھے ۔ ایشور ہم سے اور کچھ نہیں چاھتا سوائے اِس کے کہ ہم سب کے ساتھ اِنصاف کریں، سب سے پریم کریں، سب پر دیا کریں اور نمرتا کے ساتھ جھک کر چلیں ۔" (مائیکا)

"جو کوئی کسی بیل کی ھتیا کرتا ھے اُس نے مانو ایک آدمی کی ھتیا کی ۔" (اِسایا)

"اے ایشور تونے ہم سے قربانی کرنے کے لئے اور چڑھاوے چڑھانے کے لئے نہیں کہا ۔ تونے ھمارے کان کھول دیئے ھیں ۔ تجھے آگ میں آھوتیوں اور پاپ کے چڑھاؤں کی ضرورت نہیں ھے ۔ میں اپنے ایشور کے بھجن گاؤنگا اور اُسے دھنیہ باد دونگا ۔ ایشور اِس سے خوش ھوگا ۔ سینگوں اور کھروں والے بیلوں اور سانڈوں کی ھتیا سے خوش نہیں ھوگا ۔"
(سامس، ادھیائے 40 اور 69)

"جو کوئی اپنی خودی کو پائیگا وہ اپنے اصل جیون کو کھودیگا اور جو کوئی اپنی خودی کو مٹادیگا وہ اصلی جیون کو حاصل کریگا ۔" (انجیل)

یہاں خودی سے مطلب آدمی کا چھوٹا آپا ھے اور اصل جیون سے مطلب سب کے ساتھ ملکر سب کا ملا جلا آپا ھے ۔ وھی اللہ ھے ۔

صوفی کہتا ھے :—

"بےخودی کی طرف کوشش کرکے بڑھ، تب تو اپنے اصلی آپے کو پاسکیگا ۔ اللہ سب ٹھیک جانتا ھے ۔ تو اپنی خودی کا غلام کب تک بنا رھیگا ؟ اِس خودی سے باھر نکل ۔ ریت رواج کے ناپاک جوتوں کو باھر اُتارکر ایشور کے مندر میں جا اور اُس کے چمتکار دیکھ ۔"

کبیر صاحب نے کہا ھے :—

"جب میں تھا تب ھری نہیں، اب ھری ھیں میں ناھیں
"پریم گلی آتی سانکری، وامیں دو نہ سماھیں ۔"

اِسی خیال کو صوفی نے اِن شبدوں میں ظاھر کیا ھے :—

"ہم معتقد دعوئ باطل نہیں ھوتے
سینے میں کسی شخص کے دو دل نہیں ھوتے"

ایک اور صوفی نے کہا ھے :—

"میرے جبہ یعنی کرتے کے اندر سوا خدا کے کوئی اور ھے ھی نہیں ۔"

یہی خیال صوفیوں نے فارسی اور عربی کے شعروں میں جگہ جگہ اور طرح طرح سے ظاھر کیا ھے ۔

قرآن میں لکھا ھے :—

"لن ینال اللہ لحومہا ولا دماؤھا ولکن ینالہ التقوی منکم"
(قرآن 22—37)

یعنی "قربانی کے جانوروں کا خون یا گوشت اللہ کو نہیں پہونچتا ۔ اللہ کو صرف تمہارے دل کا تقویٰ پہونچتا ھے یعنی یہ کہ تم بُرے کاموں سے بچے رھو ۔"

है. तुम ग़लत समझते हो. अज का अर्थ वह दाने हैं जिन में अभी अंकुर नहीं फूटे. तुम्हें यज्ञ में बेगुनाह बकरों को नहीं मारना चाहिये. यह भले लोगों का धर्म नहीं है. यह ज़माना नेक काम करने का ज़माना है. तुम्हें जानवरों की हत्या बन्द कर देनी चाहिये."

(महाभारत शान्ति पर्व अध्याय 345)

महात्मा बुद्ध ने इस देश में जो बड़े बड़े धार्मिक सुधार किये उन में एक यह था कि उन्होंने जानवरों की क़ुरबानी को क़रीब क़रीब बन्द करा दिया. मांस का खाना इस देश में वह पूरी तरह बन्द नहीं कर पाए, पर उन्होंने उसे बहुत कम कर दिया और लाखों के जीवन में से बिलकुल मिटा दिया. राजा बिम्बसार के यहां जाकर उन्होंने जानवरों की क़ुरबानी को रोका. जैन धर्म के मानने वालों में भी जानवरों की हिन्सा से और मांस खाने से परहेज़ किया जाता है.

हज़रत ईसा से पहले यहूदियों में भी जानवरों की क़ुरबानी का रिवाज था. यहूदी ईश्वर के नाम पर आग में आहुतियां दिया करते थे और उसी में जानवरों को मार कर डाला करते थे. इन्जील में बार बार और जगह जगह इस रिवाज को बन्द करने का उपदेश दिया गया है. लिखा है :–

"जाओ और बात का असली मतलब समझो. मैं (ईश्वर) दया यानी रहम चाहता हूं, क़ुरबानी नहीं." (मैथ्यु)

"मैं चाहता था तुम्हें ईश्वर का ज्ञान हो. यह नहीं चाहता था कि तुम जानवरों को काट कर आग में उनकी आहुती दो." (होसिया)

"ईश्वर की आज्ञा मानना जानवरों की क़ुरबानी करने से अच्छा है और सच्चाई पर ध्यान देना मेंढे की चरबी से बेहतर है." (साम)

"अल्लाह कहता है—"अगर मुझे भूक लगती तब भी मैं तुम से न कहता क्योंकि दुनिया और दुनिया की सब चीज़ें मेरी हैं. क्या मैं बकरों का गोश्त खाऊंगा या सांडों का ख़ून पियूंगा ? ईश्वर को धन्यवाद दो और नेक काम करने की अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करो." (साम्स)

"मैं (अल्लाह) बैलों, मेमनों या बकरों के ख़ून से ख़ुश नहीं होता. फ़िज़ूल के चढ़ावे मुझे मत चढ़ाओ. नहीं तो जब तुम मुझसे प्रार्थनाएं करोगे, मैं नहीं सुनूंगा, क्योंकि तुम्हारे हाथ ख़ून में रंगे हुए हैं." (इसाया)

"ईश्वर के सामने अपना टूटा हुआ दिल और अपनी ग़लतियों के लिये पछतावा ले कर जाओ. यही सच्ची क़ुर्बानी है. जो ऐसा करता है ईश्वर उसी को अपनाता है. (साम्स)

"क्या मैं ईश्वर के सामने जले हुए गोश्त की आहुतियां लेकर जाऊंगा ? क्या मैं साल भर के छोटे छोटे बछड़ों का गोश्त लेकर जाऊंगा ? क्या हमारा मालिक सैकड़ों भेड़ों और तेल के दरयाओं से ख़ुश होगा ? उसने हमें नेकी का

ہ ۔ تم غلط سمجھتے ہو ۔ اج کا ارتھ وہ دانے ہیں جن میں ابھی
نکر نہیں پھوٹے ۔ تمہیں یگیہ میں بے گناہ بکروں کو نہیں مارنا
چاہئیے ۔ یہ بھلے لوگوں کا دھرم نہیں ہے ۔ یہ زمانہ نیک کام کرنے
ا زمانہ ہے ۔ تمہیں جانوروں کی ہتیا بند کر دینی چاہئیے ۔"
(مہابھارت شانتی پرو ادھیائے 345)

مہاتما بدھ نے اس دیش میں جو بڑے دھارمک سدھار
ئے اُن میں ایک یہ تھا کہ اُنھوں نے جانوروں کی قربانی کو
ریب قریب بند کرا دیا ۔ مانس کا کھانا اِس دیش میں وہ
وری طرح بند نہیں کر پائے، پر اُنھوں نے اُسے بہت کم کر دیا
ور لاکھوں کے جیون میں سے بالکل مٹا دیا ۔ راجا بمبسار کے یہاں
جا کر اُنھوں نے جانوروں کی قربانی کو روکا ۔ جین دھرم کے
ماننے والوں میں بھی جانوروں کی ہنسا سے اور مانس کھانے
ے پرہیز کیا جاتا ہے ۔

حضرت عیسیٰ سے پہلے یہودیوں میں بھی جانوروں کی
ربانی کا رواج تھا ۔ یہودی ایشور کے نام پر آگ میں آھوتیاں دیا
رتے تھے اور اُسی میں جانوروں کو مار کر ڈالا کرتے تھے ۔ انجیل
میں بار بار اور جگہ جگہ اِس رواج کو بند کرنے کا اُپدیش دیا
یا ہے ۔ لکھا ہے :—

" جاؤ اور بات کا اصلی مطلب سمجھو ۔ میں (ایشور)
یا یعنی رحم چاہتا ہوں، قربانی نہیں ۔" (میتھیئو)

" میں چاہتا تھا تمہیں ایشور کا گیان ہو ۔ یہ نہیں چاہتا
ھا کہ تم جانوروں کو کاٹ کو آگ میں اُن کی آھوتی دو ۔"
(ھوسیا)

" ایشور کی آگیاں ماننا جانوروں کی قربانی کرنے سے اچھا
ہے اور سچائی پر دھیان دینا مینڈھے کی چربی سے بہتر ہے ۔"
(سام)

اللہ کہتا ہے "—اگر مجھے بھوک لگتی تب بھی میں تم سے
نہ کہتا کیونکہ دنیا اور دنیا کی سب چیزیں میری ہیں ۔ کیا میں
بکروں کا گوشت کھاؤنگا یا سانڈوں کا خون پیونگا ؟ ایشور کو
دھنیہ واد دو اور نیک کام کرنے کی اپنی پرتگیاؤں کو پورا کرو ۔"
(سامس)

"میں (اللہ) بیلوں، میمنوں یا بکروں کے خون سے
خوش نہیں ہوتا ۔ فضول کے چڑھاوے مجھے مت چڑھاؤ ۔ نہیں
تو جب تم مجھ سے پرارتھنائیں کروگے، میں نہیں سنونگا، کیونکہ
تمہارے ہاتھ خون میں رنگے ہوئے ہیں ۔" (اِسایا)

"ایشور کے سامنے اپنا ٹوٹا ہوا دل اور اپنی غلطیوں کے لئے
پچھتاوا لیکر جاؤ ۔ یہی سچی قربانی ہے ۔ جو ایسا کرتا ہے
ایشور اُسی کو اپناتا ہے ۔" (سامس)

"کیا میں ایشور کے سامنے جلے ہوئے گوشت کی آھوتیاں
لیکر جاؤنگا، کیا میں سال بھر کے چھوٹے چھوٹے بچھڑوں
کا گوشت لیکر جاونگا؟ کیا ہمارا مالک سیکڑوں بھیڑوں
اور تیل کے دریاؤں سے خوش ہوگا؟ اس نے ہمیں نیکی کا

करते हैं. हिन्दू जप करते है. मुसलमान अज़कार, ईसाई लितानी. हिन्दू उपवास रखते हैं, मुसलमान रोज़ा, और ईसाई फ़ास्ट. हिन्दू रतजगा या जागरन करते हैं, मुसलमान शब-बेदारी और ईसाई विजिल. सबका मतलब यही है कि दिल अल्लाह पर जमे और अल्लाह दिल में आकर बैठे.

हिन्दू, मुसलमान और यहूदी सब आजकल यह भी मानते हैं कि ख़ास ख़ास मौक़ों पर जानवरों की बलि देने या उनकी क़ुरबानी करने से ईश्वर अल्लाह को खुश किया जा सकता है. सब में जानवरों की क़ुरबानी का रिवाज है. ख़ुशक़िस्मती से सब यह भी मानते हैं कि मान्स खाना कभी कभी छोड़ देने से रूहानी तरक़्क़ी में मदद मिलती है. मुसलमान सूफ़ी इसे 'तर्के हैवानात' कहते हैं और कभी कभी चालीस दिन तक और कोई कोई ज़िन्दगी भर के लिये गोश्त खाना छोड़ देते हैं. सब यह भी मानते हैं कि अपनी ख़्वाहिश को रोकना, नफ़्सकुशी यानी तृश्ना त्याग बड़े ऊंचे असूल हैं.

जानवर की क़ुरबानी का असली मतलब यह है कि हमारे अन्दर जो जानवर या दरिन्दा बैठा हुआ है यानी हमारी ख़ुदी, हमारा काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार उन्हें मार कर ख़त्म किया जाय. बकरा, भैंसा, घोड़ा, ऊंट, गाय और आदमी तक की क़ुरबानी इन ही अर्थों में करनी चाहिए. पर उलटा होता यह है कि हमारे अन्दर की वही ख़ुदी अपने को बचाने के लिये क़ुरबानी के असल मतलब को भुला कर शब्दों को चिपट जाती है और अपनी जगह बेगुनाह जानवरों की बलि चढ़ाकर अपनी तसल्ली कर लेती है. सच यह है कि उस ईश्वर अल्लाह को, जो रहमान और रहीम है, जो शिव-शंकर है, सिवाय आदमी की ख़ुदी की क़ुरबानी के और कोई क़ुरबानी क़बूल नहीं हो सकती.

वैदिक धर्म में जिसे 'गोमेध' कहते थे उसी को पार्सी धर्म की किताब 'ज़िन्दावस्ता' में 'गोमेज़' कहा गया है. विद्वान लोग इनके दूसरे दूसरे और अच्छे अच्छे अर्थ भी लगाते हैं. पर जो तफ़सील गोमेध की किताबों में दी हुई है वह काफ़ी दर्दनाक है. हिन्दू मन्दिरों में ख़ासकर देवी की मूर्तियों के सामने बकरे, भैंसे, मुरग़े, कबूतर सब की क़ुरबानियां आज भी होती हैं. सब धर्म वालों ने हमें यह समझाने की कोशिश की है कि हमें जल्दी से जल्दी इन रिवाजों से बाहर निकल आना चाहिये.

महाभारत के शान्ति पर्व में लिखा है कि एक बार ऋशियों और देवों में इस बात पर बहस हुई कि यज्ञ में जानवरों को मारना चाहिये या नहीं. आख़ीर में ऋशियों ने फ़ैसला किया कि यज्ञ में जानवरों का ख़ून नहीं बहाना चाहिये. लिखा है कि :—

"वेदों का कहना यह है कि बीजों यानी नाज के दानों से यज्ञ करना चाहिये. 'अज' शब्द के मानी यहां बकरा नहीं

کرتے هیں ۔ هندو جپ کرتے هیں' مسلمان اذکار' عیسائی لتانی ۔ هندو اُپواس رکھتے هیں' مسلمان روزہ اور عیسائی فاسٹ ۔ هندو رتجگا یا جاگرن کرتے هیں' مسلمان شب بیداری اور عیسائی وجل ۔ سب کا مطلب یہی هے کہ دل اللہ پر جمے اور اللہ دل میں آکر بیٹھے ۔

هندو' مسلمان اور یہودی سب آجکل یہ بھی مانتے هیں کہ خاص خاص موقعوں پر جانوروں کی بلی دینے یا اُن کی قربانی کرنے سے ایشور اللہ کو خوش کیا جا سکتا هے ۔ سب میں جانوروں کی قربانی کا رواج هے ۔ خوش قسمتی سے سب یہ بھی مانتے هیں کہ مانس کھانا کبھی کبھی چھوڑ دینے سے روحانی ترقی میں مدد ملتی هے ۔ مسلمان صوفی اِسے ' ترک حیوانات ' کہتے هیں اور کبھی کبھی چالیس دن تک اور کوئی کوئی زندگی بھر کے لئے گوشت کھانا چھوڑ دیتے هیں ۔ سب یہ بھی مانتے هیں کہ اپنی خواهش کو روکنا' نفس‌کشی یعنی ترشنا تیاگ بڑے اونچے اصول هیں ۔

جانور کی قربانی کا اصلی مطلب یہ هے کہ همارے اندر جو جانور یا درندہ بیٹھا هوا هے یعنی هماری خودی' همارا کام' کرودھ' لوبھ' موہ اور اهنکار اِنھیں مار کر ختم کیا جائے ۔ بکرا' بھینسا' گھوڑا' اونٹ' گائے اور آدمی تک کی قربانی اِن هی ارتھوں میں کرنی چاهئے ۔ پر الٹا هوتا یہ هے کہ همارے اندر کی وهی خودی اپنے کو بچانے کے لئے قربانی کے اصل مطلب کو بھلا کر شبدوں کو چپٹ جاتی هے اور اپنی جگہ بے گناہ جانوروں کی بلی چڑھا کر اپنی تسلی کر لیتی هے ۔ سچ یہ هے کہ اُس ایشور اللہ کو جو رحمان اور رحیم هے' جو شیو شنکر هے سوائے آدمی کی خودی کی قربانی کے اور کوئی قربانی قبول نہیں هوسکتی ۔

ویدک دھرم میں جسے' گومیدھ' کہتے تھے اُسی کو پارسی دھرم کی کتاب ' ژنداوستا ' میں ' گومیز ' کہا گیا هے ۔ ودوان لوگ اِن کے دوسرے دوسرے اور اچھے اچھے ارتھ بھی لگاتے هیں۔ پر جو تفصیل گومیدھ کی کتابوں میں دی هوئی هے وہ کافی دردناک هے ۔ هندو مندروں میں خاصکر دیوی کی مورتیوں کے سامنے بکرے' بھینسے' مرغے' کبوتر سب کی قربانیاں آج بھی هوتی هیں ۔ سب دھرم والوں نے همیں یہ سمجھانے کی کوشش کی هے کہ همیں جلدی سے جلدی اِن رواجوں سے باهر نکل آنا چاهئے ۔

مہابھارت کے شانتی پرو میں لکھا هے کہ ایک بار رشیوں اور دیوں میں اِس بات پر بحث هوئی کہ یگیہ میں جانوروں کو مارنا چاهئے یا نہیں ۔ آخیر میں رشیوں نے فیصلہ کیا کہ یگیہ میں جانوروں کا خون نہیں بہانا چاهئے ۔ لکھا هے کہ :—

" ویدوں کا کہنا یہ هے کہ بیجوں یعنی اناج کے دانوں سے یگیہ کرنا چاهئے ۔ ' اج ' شبد کے معنی یہاں بکرا نہیں

सुख को दुगना, चौगुना कर देंगे और सब को सब की अच्छी अच्छी बातों से सीख मिल सकेगी. आज की दुनिया में अलग अलग मुल्कों के शासकों और राजकाजी नेताओं का मिलना जितना जरूरी है उतना ही धार्मिक नेताओं का मिलना जरूरी है. दुनिया एक होती जा रही है. मिलना हमें है ही, फिर चाहे नफ़रतों, दंगों और जंगों के लिये अलग अलग संगठन, तनजीमें और पैक्ट करके एक दूसरे से टकराएं और एक दूसरे को मिटाएं और चाहे प्रेम, एकता, अमन और शान्ति के नाम पर एक दूसरे को गले लगाएं. पहला रास्ता बरबादी और मौत का रास्ता है और पाप है, दूसरा रास्ता खुशहाली और ज़िन्दगी का रास्ता है और यही सच्चा धर्म है. सबके भले का और सब को बराबर बराबर जिस्मानी और रूहानी ख़ूराक पहुंचाने का यही एक रास्ता है.

सब धर्मों में अपने अपने ढंग से संस्कार, सुन्नत, दीक्षा, और बपतिस्मा भी होते हैं. मुसलमान इन्हें 'तक़दीस' कहते हैं, हिन्दू 'उपनयन', और पारसी 'नवजोत'. मतलब सबका एक है, दिल को साफ़ करना और ऊंचा ले जाना. हिन्दू धर्म की किताबों में लिखा है कि संस्कार के जरिये आदमी एक तरह फिर से पैदा होता है. हजरत ईसा इसीलिये कहा करते थे—"फिर से बच्चों की तरह हो जाओ." इनमें से कुछ तरीक़े अभी तक बहुत अच्छे तरीक़े हैं. नहाने, धोने, वजू और पाकी पर इन में बहुत जोर दिया जाता है. पाकी या सफ़ाई पर सबसे ज्यादा जोर शायद पारसी धर्म में दिया गया है. पारसी किताब वेन्देदाद में लिखा है :—

"ज़िन्दगी से उतर कर पाकीज़गी आदमी के लिये सबसे अधिक भलाई की चीज है. यह पाकीज़गी उसमें आती है जो अपने को पाक विचारों, पाक शब्दों, और पाक कामों से लगातार पाक करता रहता है."

ईसाइयों में एक कहावत है—"ख़ुदा की अच्छाइयों को अपने अन्दर लाने की कोशिश से उतर कर अगर कोई चीज है तो वह पाकीज़गी यानी शुद्धता है."

कहा जाता है कि किसी नौजवान ईसाई को पादरी बनाते वक़्त उससे पूछा गया कि—"पाकीज़गी ख़ुदा की अच्छाइयों को अपने अन्दर लाने की कोशिश के ठीक पहले आनी चाहिये या ठीक बाद में ?" उसने जवाब दिया—"पहले भी और बाद में भी." उसकी बात बिलकुल ठीक थी. पाकीज़गी यानी शुद्धता के इसी ऊंचे असूल को पिछले जमाने के हिन्दू इस बुरी हद तक खींच कर ले गए कि उस से अपने में हजारों जातें और उपजातें बना डालीं और छुआछूत जैसी बुरी चीज चला दी.

भगवान को याद करते वक़्त मन को एक तरफ़ लगाने के लिये सब धर्मों वाले माला या तसबीह या रोजरी इस्तेमाल

سکھ کو دوگنا چوگنا کر دینگے اور سب کو سب کی اچھی اچھی باتوں سے سیکھ مل سکے گی. آج کی دنیا میں الگ الگ ملکوں کے شاسکوں اور راج کاجی نیتاؤں کا ملنا جتنا ضروری ہے اتنا ہی دھارمک نیتاؤں کا ملنا ضروری ہے. دنیا ایک ہوتی جا رہی ہے. ملنا ہمیں ہے ہی' پھر چاہے نفرتوں' دنگوں اور جنگوں کے لئے الگ الگ سنگٹھن' تنظیمیں اور پیکٹ کر کے ایک دوسرے سے ٹکرائیں اور ایک دوسرے کو مٹائیں اور چاہے پریم' ایکتا' امن اور شانتی کے نام پر ایک دوسرے کو گلے لگائیں. پہلا راستہ بربادی اور موت کا راستہ ہے اور پاپ ہے' دوسرا راستہ خوشحالی اور زندگی کا راستہ ہے اور یہی سچا دھرم ہے. سب کے بھلے کا اور سب کو برابر برابر جسمانی اور روحانی خوراک پہونچانے کا یہی ایک راستہ ہے.

سب دھرموں میں اپنے اپنے ڈھنگ سے سنسکار' سنت' دیکشا اور بپتسمہ بھی ہوتے ہیں. مسلمان انہیں 'تقدیس' کہتے ہیں' ہندو 'اپ نین' اور پارسی 'نوجوت'. مطلب سب کا ایک ہے' دل کو صاف کرنا اور اونچا لے جانا. ہندو دھرم کی کتابوں میں لکھا ہے کہ سنسکار کے ذریعہ آدمی ایک طرح پھر سے پیدا ہوتا ہے. حضرت عیسی اسی لئے کہا کرتے تھے—" پھر سے بچوں کی طرح ہو جاؤ." ان میں سے کچھ طریقے ابھی تک بہت اچھے طریقے ہیں. نہانے' دھونے' وضو اور پاکی پر ان میں بہت زور دیا جاتا ہے. پاکی یا صفائی پر سب سے زیادہ زور شاید پارسی دھرم میں دیا گیا ہے. پارسی کتاب 'وینڈیداد' میں لکھا ہے :—

" زندگی سے اتر کر پاکیزگی آدمی کے لئے سب سے ادھک بھلائی کی چیز ہے. یہ پاکیزگی اس میں آتی ہے جو اپنے کو پاک وچاروں' پاک شبدوں اور پاک کاموں سے لگاتار پاک کرتا رہتا ہے."

عیسائیوں میں ایک کہاوت ہے—" خدا کی اچھائیوں کو اپنے اندر لانے کی کوشش سے اتر کر اگر کوئی چیز ہے تو وہ پاکیزگی یعنی شدھتا ہے."

کہا جاتا ہے کہ کسی نوجوان عیسائی کو پادری بناتے وقت اس سے پوچھا گیا کہ—" پاکیزگی خدا کی اچھائیوں کو اپنے اندر لانے کی کوشش کے ٹھیک پہلے آنی چاہئے یا ٹھیک بعد میں؟" اس نے جواب دیا—" پہلے بھی اور بعد میں بھی." اس کی بات بالکل ٹھیک تھی. پاکیزگی یعنی شدھتا کے اسی اونچے اصول کو پچھلے زمانے کے ہندو اس بری حد تک کھینچ کر لے گئے کہ اس سے اپنے میں ہزاروں جاتیں اور اپ جاتیں بنا ڈالیں اور چھوا چھوت جیسی بری چیز چلا دی.

بھگوان کو یاد کرتے وقت من کو ایک طرف لگانے کے لئے سب دھرموں والے مالا یا تسبیح یا روزری استعمال

भी बहुत दूर चले जाते हैं और प्रेम और मेल मिलाप की जगह नफ़रत और लड़ाई का कारन बन जाते हैं. जमाने के साथ साथ इन त्योहारों का रंग रूप भी कभी कभी इतना बदल जाता है कि त्योहार की असलियत में और उसके आजकल के मनाने के ढंग में कोई नाता ही नहीं रह जाता.

यहां एक और बात की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी है. लगभग हर ज़माने और हर देश में शायरी, नाटक, ड्रामा, नाचना, गाना, बजाना, चित्रकारी, पच्चीकारी, मीनाकारी, मकान बनाना, बाग़ लगाना, कपड़े बनाना, शहर बसाना, जैसी कलाओं और कारीगरियों की जितनी उन्नति मज़हब से हुई है उतनी और किसी चीज़ से नहीं हुई. दुनिया के बड़े से बड़े हुनरमंदों और कलावन्तों ने अधिकतर मज़हब से ही नई नई सूझ बूझ पाई है और शक्ति हासिल की है. दुनिया भर में कला और हुनर के अच्छे से अच्छे नमूने मज़हब के मैदान में ही मिलते हैं. यह बात है भी क़ुदरती. सच्चा मज़हब वही है जो आदमी के अन्दर की ऊंची से ऊंची भावनाओं और उमंगों को जगावे, उजागर करे और पूरा करे. अच्छे से अच्छे हुनर और कला इन्हीं भावनाओं से पैदा होती हैं. सबके भले की भावना इन्हीं भावनाओं में से एक और शायद सबसे ऊंची भावना है. इस भावना ने दुनिया के कलावंतों को सबसे अधिक आगे बढ़ाया है. मज़हब का भी यही निचोड़ है. इस तरह मज़हब लोगों को इन्द्रिय सुख देने का भी बड़ा साधन होता है. इसी तस्वीर का दूसरा रुख़ यह है कि जब जब पंडे, पुरोहितों, मुल्ला, पादरियों की नासमझी या नालायक़ी की वजह से मज़हब में गिरावट आई है या लोगों की माद्दा-परस्ती और ऐशपरस्ती ने धर्म को नीचे घसीटा है तब तब कला और हुनर में भी भद्दापन, भोंडापन, जंगलीपन, ग़ैरियत, नफ़रत और अन्याय दिखाई देने लगे हैं. जो चीज़ आदमी के दिल के अन्दर झाड़ू देकर उसे साफ़ करेगी वही उस घर को रोशन करेगी और वही आदमी की भावनाओं, कला और दस्तकारियों को ऊंचा ले जाएगी.

आजकल हमारे अधिकतर त्योहार और उनको मनाने के ढंग हम में एक दूसरे से अलहदगी और नफ़रत पैदा करते हैं. यहां तक कि यह त्योहार मारकाट, ख़ून ख़राबियों और बदले की भावनाओं की जड़ बन रहे हैं. तमाम योरप में पिछले हज़ार बरस तक अधिकतर यही हाल रहा है. हिन्दुस्तान में आज भी बहुत दर्जे तक यही हाल है. अगर अलग अलग मज़हबों के अगुआ अपने अपने दिमाग़ों को साफ़ कर सकें और अपने दिलों को ऊंचा ले जा सकें तो उन्हें चाहिये कि एक साथ मिल बैठकर प्रेम के साथ सब धर्मों के त्योहारों में से ख़ास ख़ास को चुन लें और फिर अपने अपने धर्म के मानने वालों को सलाह दें कि उन त्योहारों को सब मिलकर मनाएं. इस तरह हर धर्म वाले अपने और दूसरों के सबके

بہی بہت دور چلے جاتے ہیں اور پریم اور میل ملاپ کی جگہ نفرت اور لڑائی کا کارن بن جاتے ہیں۔ زمانے کے ساتھ ساتھ اِن تیوہاروں کا رنگ روپ بھی کبھی بھی اتنا بدل جاتا ہے کہ تیوہار کی اصلیت میں اور اُس کے آجکل کے منانے کے ڈھنگ میں کوئی ناتا ہی نہیں رہ جاتا۔

یہاں ایک اور بات کی طرف دھیان دینا ضروری ہے۔ لگ بھگ ہر زمانے اور ہر دیش میں شاعری، ناٹک، ڈراما، ناچنا، گانا، بجانا، چترکاری، پچی کاری، مینا کاری، مکان بنانا، باغ لگانا، کپڑے بنانا، شہر بسانا، جیسی کلاؤں اور کاریگریوں کی جتنی اُنتی مذہب سے ہوئی ہے اُتنی اور کسی چیز سے نہیں ہوئی۔ دنیا کے بڑے سے بڑے ہنرمندوں اور کلاونتوں نے ادھک‌تر مذہب سے ہی نئی نئی سوجھ بوجھ پائی ہے اور شکتی حاصل کی ہے۔ دنیا بھر میں کلا اور ہنر کے اچھے سے اچھے نمونے مذہب کے میدان میں ہی ملتے ہیں۔ یہ بات ہے بھی قدرتی۔ سچا مذہب وہی ہے جو آدمی کے اندر کی اونچی سے اونچی بھاوناؤں اور اُمنگوں کو جگاوے، اُجاگر کرے اور پورا کرے۔ اچھے سے اچھے ہنر اور کلا انھیں بھاوناؤں سے پیدا ہوتی ہیں۔ سب کے بھلے کی بھاونا اِنھیں بھاوناؤں میں سے ایک اور شاید سب سے اونچی بھاونا ہے۔ اِس بھاونا نے دنیا کے کلاونتوں کو سب کے ادھک آگے بڑھایا ہے۔ مذہب کا بھی یہی نچوڑ ہے۔ اِس طرح مذہب لوگوں کو اندریہ سکھ دینے کا بھی بڑا سادھن ہوتا ہے۔ اِسی تصویر کا دوسرا رخ یہ ہے کہ جب جب پنڈے، پروہتوں، ملا، پادریوں کی ناسمجھی یا نالائقی کی وجہ سے مذہب میں گراوٹ آئی ہے یا لوگوں کی مادہ‌پرستی اور عیش‌پرستی نے دھرم کو نیچے گھسیٹا ہے تب تب کلا اور ہنر میں بھی بھدا پن، غیریت، نفرت اور انیائے دکھائی دینے لگے ہیں۔ جو چیز آدمی کے دل کے اندر جھاڑو دے کر اُسے صاف کرے گی وہی اُس گھر کو روشن کرے گی اور وہی آدمی کی بھاوناؤں، کلا اور دستکاریوں کو اونچا لے جائے گی۔

آجکل ہمارے ادھک‌تر تیوہار اور اُن کو منانے کے ڈھنگ ہم میں ایک دوسرے سے علیحدگی اور نفرت پیدا کرتے ہیں۔ یہاں تک کہ یہ تیوہار مار کاٹ، خون خرابیوں اور بدلے کی بھاوناؤں کی جڑ بن رہے ہیں۔ تمام یورپ میں پچھلے ہزار برس تک ادھک تر یہی حال رہا ہے۔ ہندستان میں آج بھی بہت درجہ تک یہی حال ہے۔ اگر الگ الگ مذہبوں کے اگوا اپنے اپنے دماغوں کو صاف کر سکیں اور اپنے دلوں کو اونچا لے جا سکیں تو اُنھیں چاہئے کہ ایک ساتھ مل بیٹھکر پریم کے ساتھ سب دھرموں کے تیوہاروں میں سے خاص خاص کو چن لیں اور پھر اپنے اپنے دھرم کے ماننے والوں کو صلاح دیں کہ اُن تیوہاروں کو سب ملکر منائیں۔ اِس طرح ہر دھرم والے اپنے اور دوسروں کے سب کے

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 18 | नवम्बर सन '54 | नम्बर 5

نمبر 5 | نومبر سن '54 | جلد 18

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ھے' ھندستانی بولی'
'نیا ھند' پہنچے گا گھر - گھر لئے پریم کی جھولی .

धर्मों के अलग अलग रीत रिवाज

(डाक्टर भगवान दास)

दुनिया के सब धर्मों में जिस तरह बुनियादी सच्चाइयां या सदाचार के नियम एक से हैं उसी तरह ऊपर के रीत रिवाज, खेल तमाशे, खुशी और रंज के त्योहार भी लगभग एक से होते हैं. हिन्दुओं में सत्यनारायन की कथा होती है तो मुसलमानों में मौलूद शरीफ़. मुसलमान मुहर्रम में अपने ख़ास महापुरुषों को याद करते हैं तो हिन्दू पितृपक्ष में अपने पुरखों को याद करते हैं. वह इकादशी का व्रत रखते हैं तो यह रमज़ान में रोज़े रखते हैं. हिन्दुओं का चांद्रायन व्रत तो बिलकुल रमज़ान से मिलता हुआ है. उनका रामलीला का जुलूस निकलता है तो उनके दुलदुल और ताज़िया निकलते हैं. ईसाइयों और दूसरे धर्म वालों के भी इसी तरह के ख़ास ख़ास त्योहार हैं. अठवारे के दिनों में भी किसी ने किसी को पाक मान रखा है तो किसी ने किसी को वैदिक धर्म वाले आम तौर पर चांद की हर पहली, आठवीं और ग्यारहवीं तारीख़ को पाक मानते हैं. यहूदी सनीचर को, मुसलमान जुमा को, ईसाई इतवार को. कहीं कहीं हिन्दू मंगल को ख़ास दिन मानते हैं. यही इनके अलग अलग आराम करने के दिन समझे जाते हैं.

आदमी के दिल की मांग सब जगह क़ुदरती तौर पर एक ही सी होती है. वह कभी खेल तमाशा चाहता है, कभी हंसना, कभी रोना और कभी अपने ईश्वर अल्लाह की याद में खाने पीने को भी भूल जाना चाहता है. अन्दर की इस मांग को पूरा करने के लिये तरीक़े अलग अलग हैं, पर बात वही है. अफ़सोस केवल इतना है कि यह खेल तमाशे और रीत रिवाज अधिकतर अपने धर्म के बुनियादी असूलों से

دھرموں کے الگ الگ ریت رواج

(ڈاکٹر بھگوان داس)

دنیا کے سب دھرموں میں جس طرح بنیادی سچائیاں یا سداچار کے نیم ایک سے ھیں اُسی طرح اُوپر کے ریت رواج' کھیل تماشے' خوشی اور رنج کے تیوھار بھی لگ بھگ ایک سے ھوتے ھیں . ھندوؤں میں ستیہ‌نارائن کی کتھا' ھوتی ھے تو مسلمانوں میں مولود شریف . مسلمان محرم میں اپنے خاص مہاپرشوں کو یاد کرتے ھیں تو ھندو پتر پکش میں اپنے پرکھوں کو یاد کرتے ھیں. وہ اِکادشی کو برت رکھتے ھیں تو یہ رمضان میں روزے رکھتے ھیں . ھندوؤں کا چاندرائن برت تو بالکل رمضان سے ملتا ھوا ھے . اُن کا رام لیلا کا جلوس نکلتا ھے تو اُن کے دلدل اور تازیہ نکلتے ھیں . عیسائیوں اور دوسرے دھرم والوں کے بھی اِسی طرح کے خاص خاص تیوھار ھیں . اٹھوارے کے دنوں میں بھی کسی نے کسی کو پاک مان رکھا ھے تو کسی نے کسی کو . ویدک دھرم والے عام طور پر چاند کی ھر پہلی' آٹھویں اور گیارھویں تاریخ کو پاک مانتے ھیں . یہودی سنیچر کو' مسلمان جمعہ کو' عیسائی اتوار کو . کہیں کہیں ھندو منگل کو خاص دن مانتے ھیں . یہی اِن کے الگ الگ آرام کرنے کے دن سمجھے جاتے ھیں .

آدمی کے دل کی مانگ سب جگہ قدرتی طور پر ایک ھی سی ھوتی ھے. وہ کبھی کھیل تماشا چاھتا ھے' کبھی ھنسنا' کبھی رونا اور کبھی اپنے ایشور اللہ کی یاد میں کھانے پینے کو بھی بھول جانا چاھتا ھے . اندر کی اس مانگ کو پورا کرنے کے لئے طریقے الگ الگ ھیں' پر بات وھی ھے . افسوس کیول اتنا ھے کہ یہ کھیل تماشے اور ریت رواج اکثر اپنے دھرم کے بنیادی اصولوں

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

هندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماهواری پرچا

नवम्बर 1954 نومبر

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے ۔

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद–3

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

नया हिन्द

सम्पादक — [illegible], सुन्दरलाल

सहायक सम्पादक — सुरेशराम भाई, [illegible]

इस नम्बर के ख़ास मज़्मून

हमारी राय

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

नवम्बर 1954 نومبر

क़ीमत दस आना

नई किताब

गंगा से गोमती तक

……' मुजीब की कहानियों की विशेषता उनकी शैली भी है. मामूली पढ़ा लिखा आदमी इन्हें बिना किसी की मदद के समझ सकता है सरलता के साथ भाषा में व्यंग और जिन्दादिली इस तरह है जिस तरह ऊँचे पाए के लेखकों में मिलती है.

इन कहानियों में हास्य भी है, करुणा भी है. कहीं हंसते हंसते पेट में बल पड़ेंगे, तो कहीं पढ़ते-पढ़ते आप दुःख से स्तंभित रह जाएंगे. मुजीब की कहानियाँ हमारी कोमल भावनाएँ जगाती हैं, हमें अच्छा इनसान बनाती हैं."

—डाक्टर राम विलास शर्मा

……..'वह (मुजीब) मार्ग साफ़ करना चाहते हैं, समाज को सम्भालना चाहते हैं. इसलिये वह कला को कामकाजी चाहते हैं और ऐसी नुकीली कि धार करती चली जाए…यह कहानियाँ जगह जगह हमारा ध्यान समाज में होने वाले अन्यायों और अत्याचारों की तरफ़ खींचती हैं…संग्रह की कहानियों में एक सीधी अकृत्रिमता है, जो अच्छी लगती है."

—जैनेन्द्र कुमार

लगभग हिन्दी के सभी बड़े लेखकों ने "गंगा से गोमती" को सराहा है.

"गंगा से गोमती तक" में १८० सफ़े हैं, तिरंगा सुन्दर कवर, बढ़िया जिल्द. दाम केवल दो रुपया. जल्दी आर्डर भेजिये.

— मैनेजर नया हिन्द

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ی کتاب

گنگا سے گومتی تک

……"مجیب کی کہانیوں کی وشیشتا اُنکی شیلی
ی ہے . معمولی پڑھا لکھا آدمی اِنہیں بنا کسی کی
د کے سمجھ سکتا ہے . سرلتا کے ساتھ بھاشا میں ویَنگ
زندہدلی اس طرح ہے جس طرح اُونچے پائے کے
یکوں میں ملتی ہے .

اِن کہانیوں میں ہاسیہ بھی ہے' کرونا بھی ہے. کہیں
سنتے ہنستے پیٹ میں بل پڑینگے' تو کہیں پڑھتے
تے آپ دکھ سے استمبھت رہ جائینگے . مجیب کی
نیاں ہماری کومل بھاؤنائیں جگاتی ہیں' ہمیں اچھا
سان بناتی ہیں."

—ڈاکٹر رام بلاس شرما

. . ." وہ (مجیب) مارگ صاف کرنا چاہتے ہیں'
اج کو سنبھالنا چاہتے ہیں. اِس لئے وہ کلا کو کامکاجی
ہتے ہیں. اور ایسی نوکیلی کہ دھار کرتی چلی جائے
یہ کہانیاں جگہ جگہ ہمارا دھیان سماج میں ہونے والے
یوں اور اتیاچاروں کی طرف کھینچتی ہیں…سنگرہ
کہانیوں میں ایک سیدھی اکرترمتا ہے' جو اچھی
تی ہے."

—جینندر کمار

لگ بھگ ہندی کے سبھی بڑے لیکھکوں نے "گنگا سے
متی" کو سراہا ہے .

"گنگا سے گومتی تک" میں 180 صفحے ہیں' ترنگا
، کور' بڑھیا جلد' دام کیول دو روپیہ . جلدی آرڈر
جئے .

—مینیجر نیا ہند

نے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145' مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद—

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलैमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد—

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:०:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے—

سندرلال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیں گے۔

गीता और क़ुरान

लेखक–पंडित सुन्दरलाल

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 खास खास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक खर्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आई उन का दर्दनाक आंखों देखा बनन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک — پنڈت سندر لال

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیاے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ .

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذہبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارہ کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن . اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. 'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दोरुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

प्रथम एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

هندستانی کلچر سوسائٹی کي کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی ۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا ۔

بھارت کا ودھان

پورا ھندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا ۔ 'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انوادت ۔

ہر بھارت واسی کا فرض ھے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ھے اُسے اچھی طرح سمجھے ۔ بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ھے ۔

آسان بامحاورہ بھاشا ۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز ۔ لگ بھگ چار سو پنّے ۔ کپڑے کی سندر جلد ۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے ۔

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اِس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپیہ ۔

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے ۔ اِس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اِس کا مقصد کیا ہے ۔

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا ۔ یہ دوسرا ایڈیشن ھے ۔ صفحے 25، دام کیول دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'، 145، مٹھی گنج، الہ آباد

को उठाना पड़ेगा और हिम्मत के साथ मैदान में आना होगा. अगर हम यह ख्याल करेंगे कि हमारे बुज़ुर्ग चचा ताऊ जो सियासी आज़ादी में अपने को मिटा दिये वही नई लड़ाई में भी आगे बढ़ेंगे तो यह ज्यादती होगी. यह उम्मीद करना कि वह ऐसा समरस समाज बनाने में मदद देंगे जिसमें कोई किसी को नोचता न हो और जो शासन मुक्त भी हो तो यह नाइन्साफ़ी होगी. क्योंकि अक्सर सिपाही दो लड़ाइयों में नहीं लड़ते हैं. एक लड़ाई के सिपाही दूसरी में कारगर नहीं हुआ करते. हमको अपने उन बुज़ुर्गों का एहसानमन्द होना चाहिये कि सियासी गुलामी से मुल्क को मुक्त करके आर्थिक और सामाजिक आज़ादी के लिये रास्ता साफ़ कर दिया. अगर उनमें से कुछ हमारे साथ आते हैं तो सर आंखों पर. अगर नहीं आते तो कोई शिकायत नहीं होना चाहिये और हमें अकेले ही चलना होगा. और जब एक रहबर सामने आ गया है तब तो हमें आगे बढ़ने में हिचकना ही नहीं चाहिये. अपने भूदान, सम्पत्तिदान, श्रमदान, बुद्धिदान, और प्रेमदान के प्रोग्रामों के ज़रिये सन्त विनोबा ने भूदान यज्ञ मूलक ग्राम उद्योग प्रधान अहिंसात्मक क्रान्ति के लिये बिगुल बजा दिया है. वह भाई बहन जो नई मान्यताओं में, अवाम की ताक़त में, जन शक्ति में, प्रेम बल में यक़ीन करते हैं वह इस लड़ाई में शामिल होंगे. इस नई क्रान्ति के लिये एक दो नहीं, सौ पचास नहीं, हज़ारों और लाखों की तादाद में, हर गांव पीछे पांच या छः लोगों की ज़रूरत होगी. ख़ुशी की बात है कि उन्होंने आना शुरू कर दिया. हमें उम्मीद है कि वह और अधिक तादाद में आयेंगे और झंडा लेकर आगे बढ़ेंगे. मालिक से दुआ है कि नई लड़ाई के नए सिपाहियों को हिम्मत, निडरता और सच्चाई दे ताकि वह क़दम बक़दम आगे बढ़ते चले जायें और मुल्क के प्रति इस वक़्त अपना फ़र्ज़ अदा कर सकें!

16. 8. '54 —सुरेशराम भाई

کو اُٹھانا پڑے گا اور همت کے ساتھ میدان میں آنا ھوگا ۔ اگر هم یه خیال کرینگے که همارے بزرگ چچا تاؤ جوسیاسی آزادی میں اپنے کو مٹا دئے وهی نئی لڑائی میں بھی آگے بڑھینگے تو یه زیادتی هوگی ۔ یه اُمید کرنا که وه ایسا سمرس سماج بنانے میں مدد دینگے جس میں کوئی کسی کو نوچتا نه هو اور جو شاسن مکت بھی هو تو یه نانصافی هوگی ۔ کیونکه اکثر سپاهی دو لڑائیوں میں نهیں لڑتے هیں ۔ ایک لڑائی کے سپاهی دوسری میں کارگر نهیں هوا کرتے ۔ هم کو اپنے اِن بزرگوں کا احسان‌مند هونا چاهئے که سیاسی غلامی سے ملک کو مکت کر کے آرتھک اور سماجک آزادی کے لئے راسته صاف کردیا ۔ اگر اِن میں سے کچھ همارے ساتھ آتے هیں تو سر آنکھوں پر ۔ اگر نهیں آتے تو کوئی شکایت نهیں هونا چاهئے اور همیں اکیلے هی چلنا هوگا ۔ اور جب ایک رهبر سامنے آگیا هے تب تو همیں آگے بڑھنے میں هچکنا هی نهیں چاهئے ۔ اپنے بھودان' سمپتی دان' شرم دان' بدھی دان اور پریم دان کے پروگراموں کے ذریعه' سنت ونوبا نے بھودان یگیه' مولک گرام اُدیوگ پردهان اهنساتمک کرانتی کے لئے بجا دیا هے ۔ وه بھائی بهن جو نئی مانیتاؤں میں' عوام کی طاقت میں' جن شکتی میں' پریم بل میں یقین کرتے هیں وه اِس لڑائی میں شامل هونگے ۔ اِس نئی کرانتی کے لئے ایک دو نهیں' سو پچاس نهیں' هزاروں اور لاکھوں کی تعداد میں' هر گاؤں پیچھے پانچ یا چھ لوگوں کی ضرورت هوگی۔ خوشی کی بات هے که اُنھوں نے آنا شروع کر دیا۔ همیں اُمید هے که وه اور ادھک تعداد میں آئینگے اور جھنڈا لے کر آگے بڑھینگے۔ مالک سے دعا هے که نئی لڑائی کے نئے سپاهیوں کو همت' نڈرتا اور سچائی دے تاکه وه قدم به قدم آگے بڑھتے چلےجائیں اور ملک کے پرتی اِس وقت اپنا فرض ادا کر سکیں !

—سریش رام‌بھائی 16 . 8 . '54

त्याग करेंगे ? कहा जाता है कि सिवाय अपनी जंजीरों के उनके पास त्याग करने को और कुछ है ही नहीं. लेकिन नहीं, ऐसा नहीं है. एक चीज़ जितनी दुखिया या ग़रीब के पास है उतनी ही बड़े से बड़े अमीर या हाकिम या राजा के पास है. वह है मालिकी का ख़्याल. अगर अमीर को अपने चार लाख रुपये या चार हजार एकड़ जमीन की मालकियत का हर वक़्त ध्यान रहता है तो ग़रीब को अपने चार पैसे या चार हाथ जमीन का हर दम ख़्याल बना रहता है. दोनों को अपनी मिलकियत का एहसास रहता है. इस तरह गोकि एक अमीर है और दूसरा ग़रीब, दोनों एक ही दर्जे में आ जाते हैं. दोनों को ज़्यादा पैसा या ज़्यादा जमीन की मालकियत की तमन्ना रहती है. यही वजह है कि बड़े कहलाये जाने वाले लोग छोटे कहलाये जाने वालों को लूटते हैं या एक देहाती की भाशा में कहीं तो "नोचते" हैं हालांकि मेहनत करने की ताक़त व लायक़ी बड़ों के मुक़ाबिले छोटों में कहीं ज़्यादा होती है. इसलिये अगर हम अपना ख़ास और सच्चा स्वराज हासिल करना चाहते हैं तो मालिकी के ख़्याल को अपने अन्दर से क़तई निकालना होगा. हमको अब यह क़ुबूल करना चाहिये कि हमारे पास जो कुछ भी है उसका मालिक वही एक परवर्दिगार, सृजनहार है और वह हमें महज़ थाती के तौर पर इस्तेमाल करने की ख़ातिर मिली है. लिहाज़ा ग़रीबों को मैदान में आगे बढ़ कर ऐलान करना होगा कि हमारे पास जो जमीन है वह कुल गांव की है और अब आपस में 'मैं-मेरी,-तू-तेरी' नहीं चलेगी. इतना होते ही गांव की हवा में फ़र्क़ पड़ जायेगा और ग़रीबों या छोटों के जबरदस्त लोकमत के आगे अमीर या बड़े पल भर भी नहीं टिक सकेंगे. वह भी नई सूरत को देख कर अपनी जमीन या दौलत की मालिकी समाज के सिपुर्द कर देंगे. ऐसी हालत पैदा हो जाने पर गांव की कुल जमीन गांव के लोग आपस में मिल बैठ कर बांट लेंगे और जितनी जिसकी जरूरत होगी उसको मिलेगी. तब मालिकी गांव की होगी और जोतने वाला अपनी जमीन पर थाती के तौर पर खेती करेगा. तब गांव में हर एक के पास रोजगार होगा और गांव के लोग अपनी जरूरत की चीजें जैसे कपड़ा, गुड़, तेल, जूता, दवा दारू वग़ैरा अपने आप बना लेंगे. तालीम भी वह अपने ढंग से अपने बच्चों को देंगे और उनकी अपनी अदालत होगी और अपनी ही शान्ति व सत्याग्रह सेना होगी. गांव गांव न कोई बेजमीन रहेगा न बेरोजगार. सब मिल कर काम करेंगे, मिलकर आराम करेंगे और मिलकर ख़ुशी मनाएंगे. इस तरह नई लड़ाई से समाज के अन्दर नई मान्यतायें क़ायम होंगी और ग्राम राज के लिये रास्ता खुलेगा.

अब सवाल यह है कि नई लड़ाई में शरीक कौन होगा ? इसके लिये सिपाही कहां से मिलेंगे ? यह काम नौजवानों

تیاگ کرینگے ؟ کہا جاتا ھے کہ سوائے اپنی زنجیروں کے اُن کے پاس تیاگ کرنے کو اور کچھ ھے ھی نہیں ۔ لیکن نہیں' ایسا نہیں ھے ۔ ایک چیز جتنی دکھیا یا غریب کے پاس ھے اتنی ھی بڑے سے بڑے امیر یا حاکم یا راجا کے پاس ھے ۔ وہ ھے مالکی کا خیال ۔ اگر امیر کو اپنے چار لاکھ روپئے یا چار ھزار ایکڑ زمین کی مالکیت کا ھر وقت دھیان رھتا ھے تو غریب کو اپنے چار پیسے یا چار ھاتھ زمین کا ھر دم خیال بنا رھتا ھے۔ دونوں کو اپنی اپنی ملکیت کا احساس رھتا ھے۔ اس طرح گوکہ ایک امیر ھے اور دوسرا غریب' دونوں ایک ھی درجہ میں آ جاتے ھیں ۔ دونوں کو زیادہ پیسہ یا زیادہ زمین کی مالکیت کی تمنا رھتی ھے ۔ یہی وجہ ھے کہ بڑے کہلائے جانے والے لوگ چھوٹے کہلائے جانے والوں کو لوٹتے ھیں یا ایک دیہاتی کی بھاشا میں کہیں تو " نوچتے " ھیں حالانکہ محنت کرنے کی طاقت و لائقی بڑوں کے مقابلہ چھوٹوں میں کہیں زیادہ ھوتی ھے ۔ اس لئے اگر ھم اپنا خاص اور سچا سوراج حاصل کرنا چاھتے ھیں تو مالکی کے خیال کو اپنے اندر سے قطعئی نکالنا ھوگا ۔ ھم کو اب یہ قبول کرنا چاھئے کہ ھمارے پاس جو کچھ بھی ھے اِس کا مالک وھی ایک پروردگار' سرجن ھار ھے اور وہ ھمیں محض تھاتی کے طور پر استعمال کرنے کی خاطر ملی ھے ۔ لہذا غریبوں کو میدان میں آگے بڑھ کر اعلان کرنا ھوگا کہ ھمارے پاس جو زمین ھے وہ کل گاؤں کی ھے اور اب آپس میں ' میں ۔ میری' تو ۔ تیری ' نہیں چلے گی ۔ اتنا ھوتے ھی گاؤں کی ھوا میں فرق پڑ جائے گا اور غریبوں یا چھوٹوں کے زبردست لوک مت کے آگے امیر یا بڑے پل بھر بھی نہیں ٹِک سکینگے ۔ وہ بھی نئی صورت کو دیکھکر اپنی زمین یا دولت کی مالکی سماج کے سپرد کر دینگے ۔ ایسی حالت پیدا ھو جانے پر گاؤں کی کل زمین گاؤں کے لوگ آپس میں مل بیٹھ کر بانٹ لینگے اور جتنی جس کی ضرورت ھوگی اِس کو ملے گی ۔ تب مالکی گاؤں کی ھوگی اور جوتنے والا اپنی زمین پر تھاتی کے طور پر کھیتی کرے گا ۔ تب گاؤں میں ھر ایک کے پاس روزگار ھوگا اور گاؤں کے لوگ اپنی ضرورت کی چیزیں جیسے کپڑا' گڑ' تیل' جوتا' دوا دارو وغیرہ اپنے آپ بنا لینگے ۔ تعلیم بھی وہ اپنے ڈھنگ سے اپنے بچوں کو دینگے اور اُن کی اپنی عدالت ھوگی اور اپنا ھی شانتی و ستیاگرہ سینا ھوگی ۔ گاؤں گاؤں نہ کوئی بے زمین رھے گا نہ بے روزگار ۔ سب مل کر کام کرینگے' مل کر آرام کرینگے اور مل کر خوشی منائینگے ۔ اِس طرح نئی لڑائی سے سماج کے اندر نئی مانیہ‌تائیں قائم ھونگی اور گرام راج کے لئے راستہ کھلیگا ۔

اب سوال یہ ھے کہ نئی لڑائی میں شریک کون ھوگا ؟ اِس کے لئے سپاھی کہاں سے ملینگے ؟ یہ کام نوجوانوں

आजादी की लड़ाई ख़त्म हुई और दूसरी लड़ाई, आर्थिक और समाजी आजादी की लड़ाई, शुरू होनी चाहिये.

अब सवाल यह है कि उस नई लड़ाई की बुनियाद क्या हो ? आम जनता इस स्वराज को पाने के लिये किस तरह आगे बढ़े ? जाहिर है कि अगर हम लोग हथियार या डंडे का सहारा लेते हैं तो जरूर हारेंगे. क्योंकि जिनके हाथ में ताक़त आज है और जिनके ख़िलाफ़ हमें लड़ना है उनके पास एक से एक ख़ौफ़नाक हथियार हैं (और उन्हें दूसरों से मिल भी सकते हैं) कि जिनका हमें ख़्वाब में भी ख़्याल नहीं आ सकता. अगर हम क़ानून या एसेम्बली व पार्ल्यामेंट का सहारा लेते हैं तब भी हारेंगे. क्योंकि जिनके ख़िलाफ़ हमें लड़ना है क़ानून आज पूरी तरह उनका तावेदार है और उनकी मर्ज़ी पर चलता है. इस वजह से दुखिया ग़रीबों के सामने बस एक ही रास्ता रह जाता है—वही एक रास्ता कि अपने बल, अपनी क़ुव्वत से लड़ें. और मालिक भी उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद करते हैं. इसलिये सच्चा स्वराज पाने का एक ही ज़रिया है—अपनी शक्ति या जन शक्ति मुहैया की जाये.

उसके बाद सवाल यह उठता है कि आख़िर जन शक्ति कैसे मुहैया हो ? उसका संगठन किस तरह किया जाये ? कौन नहीं जानता कि हिन्दुस्तान की वह जनता जो अपने सर का पसीना एड़ी तक बहाती है उसकी मेहनत पर चन्द दौलतमन्द ज़िन्दा हैं और जिन लाखों देहातों में वह लोग रहते हैं उनको चूसकर चन्द शहर जगमगाते हैं. फिर भी हम सब दुखी हैं. इसकी वजह क्या है ? ज़रा ग़ौर करने पर पता चलेगा कि हम मेहनत तो करते हैं पर दिलों में फ़र्क़ है, एक दूसरे से ज़्यादा दूर होते चले जा रहे हैं. आपस में प्यार बहुत कम है और दिन दिन कम होता जा रहा है. ख़ान्दान बंट रहे हैं. इस प्रेम की कमी की वजह से हमारी ज़िन्दगी वैसी ही नीरस हो रही है जैसे वह नमक जो नमकीन न रह गया हो. इसलिये ज़रूरत इस बात की है कि हम एक दूसरे के नज़दीक आयें और दुख सुख में साथी बनें. जहां प्रेम है, वहां सब कुछ है. जहां प्रेम नहीं वहां कुछ भी नहीं. लेकिन प्रेम कैसे हासिल हो ? प्रेम की फ़सल कैसे उगाई जाये ? मगर यह सवाल इतना टेढ़ा नहीं है क्योंकि रात दिन हमें प्रेम की मिसालें मिलती हैं. मां अपने बच्चे से प्यार करती है. सो किस तरह करती है ? अपने को भूल कर, अपने को तरह तरह की तकलीफ़ें देकर, अपने आप कुछ त्याग करके. उसकी यही चाह रहती है कि बच्चे की ख़ातिर अपने को पूरा मिटा ही दूं. इससे हम यह सबक़ सीखते हैं कि प्रेम वहीं है जहां त्याग है, क़ुर्बानी है. इसलिये जितना ज़्यादा त्याग एक दूसरे के लिये करेंगे उतना ही आपस में प्रेम बढ़ेगा.

इस पर कोई पूछेंगे कि ग़रीब के पास है ही क्या जो

آزادی کی لڑائی ختم ھوئی اور دوسری لڑائی' آرتھک اور سماجی آزادی کی لڑائی' شروع ھونی چاھئے.

اب سوال یہ ھے کہ اس نئی لڑائی کی بنیاد کیا ھو؟ عام جنتا اس سوراج کو پانے کے لئے کس طرح آگے بڑھے؟ ظاھر ھے کہ اگر ھم لوگ ھتھیار یا ڈنڈے کا سہارا لیتے ھیں تو ضرور ھارینگے . کیونکہ جن کے ھاتھ میں طاقت آج ھے اور جن کے خلاف ھمیں لڑنا ھے ان کے پاس ایک سے ایک خوفناک ھتھیار ھیں (اور انھیں دوسروں سے مل بھی سکتے ھیں) کہ جن کا ھمیں خواب میں بھی خیال نہیں آسکتا . اگر ھم قانون یا اسیمبلی و پارلیامنٹ کا سہارا لیتے ھیں تب بھی ھارینگے . کیونکہ جن کے خلاف ھمیں لڑنا ھے قانون آج پوری طرح ان کا تابعدار ھے اور ان کی مرضی پر چلتا ھے . اس وجہ سے دکھیا غریبوں کے سامنے بس ایک ھی راستہ رہ جاتا ھے—وھی ایک راستہ کہ اپنے بل' اپنی قوت سے لڑیں . اور مالک ھی انھیں کی مدد کرتا ھے جو اپنی مدد کرتے ھیں . اس لئے سچا سوراج پانے کا ایک ھی ذریعہ ھے—اپنی شکتی یا جن شکتی مہیا کی جائے .

اس کے بعد سوال یہ اٹھتا ھے کہ آخر جن شکتی کیسے مہیا ھو؟ اس کا سنگٹھن کس طرح کیا جائے؟ کون نہیں جانتا کہ ھندستان کی وہ جنتا جو اپنے سر کا پسینہ ایڑی تک بہاتی ھے اس کی محنت پر چند دولت مند زندہ ھیں اور جن لاکھوں دیہاتوں میں وہ لوگ رھتے ھیں ان کو چوس کر چند شہر جگمگاتے ھیں . پھر بھی ھم سب دکھی ھیں . اس کی وجہ کیا ھے؟ ذرا غور کرنے پر پتہ چلیگا کہ ھم محنت تو کرتے ھیں پر دلوں میں فرق ھے' ایک دوسرے سے زیادہ دور ھوتے چلے جارھے ھیں . آپس میں پیار بہت کم ھے اور دن دن کم ھوتا جارھا ھے . خاندان بنٹ رھے ھیں. اس پریم کی کمی کی وجہ سے ھماری زندگی ویسی ھی نیرس ھورھی ھے جیسے وہ نمک جو نمکین نہ رہ گیا ھو. اِس لئے ضرورت اِس بات کی ھے کہ ھم ایک دوسرے کے نزدیک آئیں اور دکھ سکھ میں ساتھی بنیں . جہاں پریم ھے' وھاں سب کچھ ھے . جہاں پریم نہیں وھاں کچھ بھی نہیں . لیکن پریم کیسے حاصل ھو؟ پریم کی فصل کیسے اگائی جائے؟ مگر یہ سوال اتنا ٹیڑھا نہیں ھے کیونکہ رات دن ھمیں پریم کی مثالیں ملتی ھیں . ماں اپنے بچے سے پیار کرتی ھے . سو کس طرح کرتی ھے؟ اپنے کو بھول کر' اپنے کو طرح طرح کی تکلیفیں دے کر' اپنے آپ کچھ تیاگ کر کے . اِس کی یہی چاہ رھتی ھے کہ بچے کی خاطر اپنے کو پورا مٹا ھی دوں . اِس سے ھم یہ سبق سیکھتے ھیں کہ پریم وھیں ھے جہاں تیاگ ھے' قربانی ھے . اس لئے ھم جتنا زیادہ تیاگ ایک دوسرے کے لئے کرینگے اتنا ھی آپس میں پریم بڑھے گا .

اس پر کوئی پوچھینگے کہ غریب کے پاس ھے ھی کیا جو

वह मौक़ा मिला है कि अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़, जनता की ख़ुदमुख़्तार ताक़त के आधार पर, अपने मुल्क का निर्मान कर सकें. लेकिन आज़ादी के बाद सात साल बीतने के बावजूद हिन्दुस्तान के आम रहने वालों को आज़ादी का कोई ख़ास मज़ा नहीं आया, ज़िन्दगी में कोई ख़ास लज़्ज़त नहीं पैदा हुई और ज़्यादातर तो पहले के मुक़ाबिले ज़्यादा दुखी हैं. इसकी वजह भी है. वह यह है कि आज़ादी के साथ वह इन्क़लाब नहीं आया जो कि आना चाहिये था. कुछ हद तक यह सही है कि हमने अहिंसा की ताक़त से स्वराज लिया. मगर यह कुछ ही हद तक सही है क्योंकि अगर हमारे स्वराज के पीछे सोलह आने अहिंसा ही होती तो आज़ादी के बाद जो हम सब में सुस्ती और बैर भाव वग़ैरा दोश हैं वह न होते. इसलिये यह आज़ादी महज़ हकूमत के बदलाव की ही एक शकल है. इसको इन्क़लाब नहीं कहते. कहीं ज़्यादा बड़ी वजह यह है कि आज़ादी के पहले समाज में जो मान्यतायें थीं वही आज भी चालू हैं. जैसे ऊंचा ओहदा, ऊंचा मकान, ऊंचा महल, ऊंची ज़ात, ऊंची इज़्ज़त, ऊंची डिग्री, ऊंची तनख़्वाह, हाथ काम से ऊंची नफ़रत वग़ैरा. ज़ाहिर है कि अगर यह नाप हमारे समाज में बदस्तूर बने रहते हैं तो शराफ़त या इन्सानियत के दर्जे में हम और हमारा मुल्क और भी गिरेंगे और हिन्दुस्तान नाम का यह क़िला धड़ाम से गिरेगा. इसका यह मतलब नहीं कि हम आज़ादी की कोई क़ीमत नहीं करते. हम फिर अर्ज़ करेंगे कि पिछले दो हज़ार बरस के हमारे इतिहास के अन्दर यह सबसे बड़ी चीज़ है. लेकिन इसके यह मानी नहीं कि अपने मुल्क में जो आज असलियत है उससे आंख बचाई जाये. हमारे समाज में भंगी की हालत देखिये, हमेशा के जैसा नीचा और ग़ुलाम है. आज भी हरिजन और ब्राह्मन साथ साथ अक्सर नहीं बैठते. इन हरिजनों को हमारे मन्दिर में जगह नहीं है, पर वह मन्दिर भी गन्दगी के नमूने हैं और उन मन्दिरों के ठेकेदार पन्डों को आत्म ज्ञान कितना है या नेक चलन कितने हैं यह तो भगवान ही जानता होगा. या फिर हमारे घरों में अपनी बहनों की हालत देखिये. जो एक ज़माने में देवी थी आज वह चूल्हे की दासी बनी हुई है और इस तरह हमारे समाज का आधा हिस्सा पस्त पड़ा है. यह चीज़ें अगर बनी रहती हैं और दुखिया का दुख नहीं दूर होता है तो हमारा ख़्याल है कि अपनी आज़ादी को भी हम ज़्यादा दिन क़ायम नहीं रख सकते. इसलिये एक बुनियादी इन्क़लाब की सख़्त दरकार है. दूसरे लफ़्ज़ों में हमारे यहां के ग़रीब से ग़रीब और दुखी से दुखी आदमी को आर्थिक और समाजी आज़ादी हासिल होनी चाहिये, गांव गांव को अपने विकास व तरक़्क़ी की आज़ादी होनी चाहिये, यानी ग्राम राज क़ायम होना चाहिये. यह काम जल्दी से जल्दी होना चाहिये वर्ना मुल्क ख़तरे में है. कहने का मतलब यह है कि एक लड़ाई यानी सियासी

یہ موقع ملا ہے کہ اپنی مرضی کے مطابق' جنتا کی خود مختار طاقت کے آدھار پر' اپنے ملک کا نرمان کرسکیں . لیکن آزادی کے بعد سات سال بیتنے کے باوجود ہندستان کے عام رہنے والوں کو آزادی کا کوئی خاص مزا نہیں آیا' زندگی میں کوئی خاص لذت نہیں پیدا ہوئی اور زیادہتر تو پہلے کے مقابلہ زیادہ دکھی ہیں . اسکی وجہ بھی ہے . وہ یہ ہے کہ آزادی کے ساتھ وہ انقلاب نہیں آیا جو کہ آنا چاہئے تھا . کچھ حدتک یہ صحیح ہے کہ ہم نے اہنسا کی طاقت سے سوراج لیا . مگر یہ کچھ ہی حدتک صحیح ہے کیونکہ اگر ہمارے سوراج کے پیچھے سولہ آنے اہنسا ہی ہوتی تو آزادی کے بعد جو ہم سب میں سستی اور بیربھاؤ وغیرہ دوش ہیں وہ نہ ہوتے . اس لئے یہ آزادی محض حکومت کے بدلاؤ کی ہی ایک شکل ہے . اس کو انقلاب نہیں کہتے . کہیں زیادہ بڑی وجہ یہ ہے کہ آزادی کے پہلے سماج میں جو مانیہتائیں تھیں وہی آج بھی چالو ہیں . جیسے اونچا عہدہ' اونچا مکان' اونچا محل' اونچی ذات' اونچی عزت' اونچی ڈگری' اونچی تنخواہ' ہاتھ کے کام سے اونچی نفرت وغیرہ . ظاہر ہے کہ اگر یہ ناپ ہمارے سماج میں بدستور بنے رہتے ہیں تو شرافت یا انسانیت کے درجہ میں ہم اور ہمارا ملک اور بھی گرینگے اور ہندستان نام کا یہ قلعہ دھڑام سے گریگا . اس کا یہ مطلب نہیں کہ ہم آزادی کی کوئی قیمت نہیں کرتے . ہم پھر عرض کرینگے کہ پچھلے دو ہزار برس کے ہمارے اتہاس کے اندر یہ سب سے بڑی چیز ہے . لیکن اس کے یہ معنی نہیں کہ اپنے ملک میں جو آج اصلیت ہے اس سے آنکھ بچائی جائے . ہمارے سماج میں بھنگی کی حالت دیکھئے' ہمیشہ کے جیسا نیچا اور غلام ہے . آج بھی ہریجن اور براہمن ساتھ ساتھ اکثر نہیں بیٹھتے . ان ہریجنوں کو ہمارے مندر میں جگہ نہیں ہے' پر وہ مندر بھی گندگی کے نمونے ہیں اور ان مندروں کے ٹھیکیدار پنڈوں کو آتم گیان کتنا ہے یا نیک چلن کتنے ہیں یہ تو بھگوان ہی جانتا ہوگا . یا پھر ہمارے گھروں میں اپنی بہنوں کی حالت دیکھئے . جو ایک زمانہ میں دیوی تھی آج وہ چولھے کی داسی بنی ہوئی ہے اور اس طرح ہمارے سماج کا آدھا حصہ پست پڑا ہے . یہ چیزیں اگر بنی رہتی ہیں اور دکھیا کا دکھ نہیں دور ہوتا ہے تو ہمارا خیال ہے کہ اپنی آزادی کو بھی ہم زیادہ دن قائم نہیں رکھ سکتے . اس لئے ایک بنیادی انقلاب کی سخت درکار ہے . دوسرے لفظوں میں ہمارے یہاں کے غریب سے غریب اور دکھی سے دکھی آدمی کو آرتھک اور سماجی آزادی حاصل ہونی چاہئے . گاؤں گاؤں کو اپنے وکاس و ترقی کی آزادی ہونی چاہئے' یعنی گرام راج قائم ہونا چاہئے . یہ کام جلدی سے جلدی ہونا چاہئے ورنہ ملک خطرہ میں ہے . کہنے کا مقصد یہ ہے کہ ایک لڑائی یعنی سیاسی

आई हुई है, लेकिन दक्खिन बिहार में सूखा पड़ रहा है. पानी का यह बंटवारा एक दम ग़लत है. लेकिन यह ग़लत इसी वजह से है कि जमीन का बंटवारा आपने ग़लत कर रखा है. मुझे गांव की कुल जमीन दान में दे डालिये और जमीन का दोबारा बंटवारा कीजिये. जिस तरह प्रेम से घर में रहते हैं इस तरह यह सब कीजिये. तब आप देखेंगे कि पानी का भी बंटवारा ठीक तरह से हो जायेगा. इसी तरह उन्होंने एक जगह यह कहा कि "बाढ़ का जो संकट आया है इसे वर्दान में बदल सकते हैं. यह संकट भगवान ने आपकी जांच के लिये भेजा है. वह यह बताते हैं कि अपने पास जो भी है इसे इस वक़्त दूसरों के लिये लुटाना चाहिये." उन्होंने ख़ास तौर से अपील व्यापारी समाज से की और उससे कहा कि चीज़ों के दाम न बढ़ाइये.

बाढ़ के बाद जो आफ़तें आती हैं उनकी तरफ़ नेताओं या कारकुनों का ध्यान कम जाता है. बरसात के बाद तरह तरह की बीमारियां और दूसरी मुसीबतें आ घेरती हैं. अपने निजी अनुभव की रोशनी में बाबा ने यह सुझाव पेश किये.

1. पीने के लिये उबले हुए पानी का इस्तेमाल कीजिये.

2. बहुत पके या सड़े हुए फल और ख़राब तरकारियां न खाइये.

3. बाजार की मिठाई और गन्दी चीज न खाइये.

4. गांवों को साफ़ सुथरा रखिये और गांवों के सब लोग, छोटे बड़े, अमीर ग़रीब, विद्यार्थी शिक्षक, मिलकर फावड़ा, कुदाली और टोकरी लेकर लग जाइये.

एक तरफ़ हमारे नेता या अख़बार हैं जो बुलन्द आवाज से करोड़ों रुपये की मांग दिल्ली सरकार से कर रहे हैं, दूसरी तरफ़ विनोबा जी इनका ही एक हिस्सा बन कर गांव के सभी रहने वालों से प्रेम से रहने और अपनी मदद ख़ुद करने की अपील कर रहे हैं. पहली बात के मुक़ाबले में दूसरी बात पागलपन जैसी मालूम होगी. लेकिन वक़्त जल्द ही यह साबित कर देने वाला है कि अपनी मदद ख़ुद करे बग़ैर कोई दूसरा रास्ता नहीं है. यानी जमीन की निजी मालकी ख़तम होकर गांव की मालकी होनी चाहिये और गांव के धन्धों को, जिनका मरकज़ चर्ख़ा है, दोबारा चलाना चाहिए. इसके अलावा कोई दूसरी सूरत नहीं है. हम चाहते हैं कि हमारे सार्वजनिक कार्यकरता इस चीज पर शान्ति के साथ ग़ौर करें और इन्सानियत की तरफ़ क़दम बढ़ायें.

28. 9. '54 —सुरेशराम भाई

آئی ہوئی ھے، لیکن دکھن بہار میں سوکھا پڑ رہا ھے. پانی کا یہ بنٹوارہ ایکدم غلط ھے. لیکن یہ غلط اسی وجہ سے ھے کہ زمین کا بنٹوارہ آپ نے غلط کر رکھا ھے. مجھے گاؤں کی کل زمین دان میں دے ڈالئے اور زمین کا دوبارہ بنٹوارہ کیجئے. جس طرح پریم سے گھر میں رہتے ھیں اس طرح یہ سب کیجئے. تب آپ دیکھینگے کہ پانی کا بھی بنٹوارہ ٹھیک طرح سے ھوجائیگا." اِسی طرح انہوں نے ایک جگہ یہ کہا کہ "باڑھ کا جو سنکٹ آیا ھے اسے بردان میں بدل سکتے ھیں. یہ سنکٹ بھگوان نے آپ کی جانچ کے لئے بھیجا ھے. وہ یہ بتاتے ھیں کہ اپنے پاس جو بھی ھے اسے اس وقت دوسروں کے لئے لٹانا چاھئے." انہوں نے خاص طور سے اپیل ویاپاری سماج سے کی اور اس سے کہا کہ چیزوں کے دام نہ بڑھائیے.

باڑھ کے بعد جو آفتیں آتی ھیں ان کی طرف نیتاؤں یا کارکنوں کا دھیان کم جاتا ھے. برسات کے بعد طرح طرح کی بیماریاں اور دوسری مصیبتیں آگھیرتی ھیں. اپنے نجی انوبھو کی روشنی میں بابا نے یہ سجھاؤ پیش کئے:

1. پینے کے لئے اُبلے ھوئے پانی کا استعمال کیجئے.

2. بہت پکے یا سڑے ھوئے پھل اور خراب ترکاریاں نہ کھائیے.

3. بازار کی مٹھائی اور گندی چیز نہ کھائیے.

4. گاؤں کو صاف ستھرا رکھئے اور گاؤں کے سب لوگ، چھوٹے بڑے، امیر غریب، ودیارتھی شکشک، مل کر پھاوڑا، کدالی اور ٹوکری لے کر لگ جائیے.

ایک طرف ھمارے نیتا یا اخبار ھیں جو بلند آواز سے کروڑوں روپیے کی مانگ دلی سرکار سے کر رھے ھیں، دوسری طرف ونوبا جی ان کا ھی ایک حصہ بن کر گاؤں کے سبھی رہنے والوں سے پریم سے رہنے اور اپنی مدد خود کرنے کی اپیل کر رھے ھیں. پہلی بات کے مقابلہ میں دوسری بات پاگل پن جیسی معلوم ھوگی. لیکن وقت جلد ھی یہ ثابت کردینے والا ھے کہ اپنی مدد خود کرے بغیر کوئی دوسرا راستہ نہیں ھے. یعنی زمین کی نجی مالکی ختم ھوکر گاؤں کی مالکی ھونی چاھئے اور گاؤں کے دھندھوں کو، جن کا مرکز چرخہ ھے، دوبارہ چلانا چاھئے. اس کے علاوہ کوئی دوسری صورت نہیں ھے. ھم چاھتے ھیں کہ ھمارے سارو جنک کاریہ کرتا اس چیز پر شانتی کے ساتھ غور کریں اور اِنسانیت کی طرف قدم بڑھائیں.

28. 9. '54 —سریش رام بھائی.

नई लड़ाई नये सिपाही

आज से सात साल पहले हमने जो आजादी हासिल की वह हमारे इतिहास की एक बेमिसाल घटना है. शायद दो हज़ार बरस के बाद हम हिन्दुस्तान वालों को पहली बार

نئی لڑائی نئے سپاھی

آج سے سات سال پہلے ھم نے جو آزادی حاصل کی وہ ھمارے اتہاس کی ایک بےمثال گھٹنا ھے. شاید دو ھزار برس کے بعد ھم ھندستان والوں کو پہلی بار

कि यह कांग्रेसी सरकार निकम्मी है और कोई मदद नहीं करना चाहती. इसके खिलाफ़ कांग्रेसवाले ऐसी तस्वीर पेश करते थे मानो सरकार ने इस वक़्त जो ख़िदमत की है वह या उससे ज़्यादा ख़िदमत न कभी किसी ने की और न की जा सकती है. लेकिन जब अकेले बैठते तो सत्य क़बूल करते थे. एक कांग्रेसी भाई ने क़बूल किया कि यह चुनावपूर्व मौसम है और इसका हमें फ़ायदा उठाना चाहिये. दूसरे भाई ने (वह कांग्रेसी M. L. A. थे) कहा कि मदद क्या है अपनी हस्ती साबित करने का एक ज़रिया है. सौ बातों की एक बात यह है कि इतनी भयानक बाढ़ आने पर भी हमारे नेता या सियासी कारकुन अपने भेद भाव नहीं दूर कर सके और अपनी आदत से बाज़ न आये. नहीं, नहीं, उन्होंने मुल्क का कुछ ख़याल न करके इससे भी अपना निजी फ़ायदा उठाना मुनासिब समझा.

इस बाढ़ से हम जिन नतीजों पर पहुंचे वह यह हैं:

(1) लोगों में एक दूसरे के दुख का एहसास बहुत कम है.

(2) उनके पास करने को कोई काम नहीं है.

(3) उन्हें हैरत होती है कि भला मिलकर भी इस आफ़त का सामना किया जा सकेगा.

सन्त विनोबा को यह सब देख कर बहुत ही तकलीफ़ हुई. लेकिन उनकी प्रार्थना सभाओं में जो इन्तहाई भीड़ होती थी, पांच हज़ार से कम नहीं और कहीं कहीं बीस हज़ार तक, इससे पता चलता था कि जनता इनका संदेश सुनना चाहती है. हर जगह उन्होंने एक चीज़ पर ज़ोर दिया :

> "गांवों के अन्दर सब लोग एक ख़ान्दान या कुनबे की तरह रहिये. ख़ाली मत बैठिये. कम से कम चर्ख़ ही चलाइये. जिनको कम नक़सान हुआ है वह उनकी मदद करें जिनको ज़्यादा नक़सान हुआ है."

उन्होंने अपने पांव पर खड़े होने और एक दूसरे की मदद करने की अपील की. उन्होंने इस अमर सच की उन्हें याद दिलाई कि बांटने पर दुख घटता है और सुख बढ़ता है. उनके कहने का सार यही था—"अपने सुख दुख में एक हो जाओ." इसलिये उन्होंने मांग की कि मुझे अब पूरे के पूरे गांव दान में दीजिये. "बाढ़ से यह साफ़ पता चल जाता है कि सारी भूमि गोपाल की है." और एक दिन एक ज़मींदार साहब बाबा के पास कुछ ग़ुस्से में आ कर बोले—"बड़े दुख की बात है कि जब बाढ़ से हम मरे जा रहे हैं तभी आप दान मांग रहे हैं." बाबा ने शान्ति के साथ जवाब दिया—"जी हां. इस वजह से दान मांग रहा हूं क्योंकि आप मरे जा रहे हैं. क्या इस दुनिया से जाने के पहले आप दान कर के नहीं जाना चाहते?" एक दूसरी जगह पर बाबा ने कहा—"उत्तर बिहार में बाढ़

کہ یہ کانگریسی سرکار نکمی ہے اور کوئی مدد نہیں کرنا چاہتی۔ اس کے خلاف کانگریس والے ایسی تصویر پیش کرتے تھے مانو سرکار نے اس وقت جو خدمت کی ہے وہ یا اس سے زیادہ خدمت نہ کبھی کسی نے کی اور نہ کی جاسکتی ہے۔ لیکن جب اکیلے بیٹھتے تو ستیہ قبول کرتے تھے۔ ایک کانگریسی بھائی نے قبول کیا کہ یہ چناؤ-پورو موسم ہے اور اس کا ہمیں فائدہ اٹھانا چاہئے۔ دوسرے بھائی نے (وہ کانگریسی M.L.A. تھے) کہا کہ مدد کیا ہے اپنی ہستی ثابت کرنے کا ایک ذریعہ ہے۔ سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ اتنی بھیانک باڑھ آنے پر بھی ہمارے نیتا یا سیاسی کارکن اپنے بھید بھاؤ نہیں دور کرسکے اور اپنی عادت سے باز نہ آئے۔ نہیں، نہیں، انہوں نے ملک کا کچھ خیال نہ کرکے اس سے بھی اپنا نجی فائدہ اٹھانا مناسب سمجھا۔

اس باڑھ سے ہم جن نتیجوں پر پہونچے وہ یہ ہیں :

(1) لوگوں میں ایک دوسرے کے دکھ کا احساس بہت کم ہے۔

(2) ان کے پاس کرنے کو کوئی کام نہیں ہے۔

(3) انہیں حیرت ہوتی ہے کہ بھلا مل کر بھی اس آفت کا سامنا کیا جاسکیگا۔

سنت ونوبا کو یہ سب دیکھکر بہت ہی تکلیف ہوئی۔ لیکن ان کی پرارتھنا سبھاؤں میں جو انتہائی بھیڑ ہوتی تھی، پانچ ہزار سے کم نہیں اور کہیں کہیں بیس ہزار تک، اس سے پتہ چلتا تھا کہ جنتا ان کا سندیش سننا چاہتی ہے۔ ہر جگہ انہوں نے ایک چیز پر زور دیا :

> "گاؤں کے اندر سب لوگ ایک خاندان یا کنبہ کی طرح رہیئے۔ خالی مت بیٹھئے۔ کم سے کم چرخہ ہی چلائیے۔ جن کو کم نقصان ہوا ہے وہ ان کی مدد کریں جن کو زیادہ نقصان ہوا ہے۔"

انہوں نے اپنے پاؤں پر کھڑے ہونے اور ایک دوسرے کی مدد کرنے کی اپیل کی۔ انہوں نے اس امر سچ کی انہیں یاد دلائی کہ بانٹنے پر دکھ گھٹتا ہے اور سکھ بڑھتا ہے۔ ان کے کہنے کا سار یہی تھا—"اپنے سکھ دکھ میں ایک ہو جاؤ۔" اس لئے انہوں نے مانگ کی کہ مجھے اب پورے کے پورے گاؤں دان میں دیجئے۔ "باڑھ سے یہ صاف پتہ چل جاتا ہے کہ ساری بھومی گوپال کی ہے۔" اور ایک دن ایک زمیندار صاحب بابا کے پاس کچھ غصہ میں آکر بولے—"بڑے دکھ کی بات ہے کہ جب باڑھ سے ہم مرے جارہے ہیں تبھی آپ دان مانگ رہے ہیں۔" بابا نے شانتی کے ساتھ جواب دیا—"جی ہاں۔ اس وجہ سے دان مانگ رہا ہوں کیونکہ آپ مرے جارہے ہیں۔ کیا اس دنیا سے جانے کے پہلے آپ دان کرکے نہیں جانا چاہتے؟" ایک دوسری جگہ پر بابا نے کہا—"اگر بہار میں باڑھ

दिये हैं. पर हमारे पास तो कोई ऐसा औजार है नहीं जिसके जरिये से यह नुक़सान नापा जा सके. हम तो सिर्फ़ उन गांव के बारे में कह सकते हैं जो हमने खुद देखे. लिहाजा एक गांव के बारे में नुक़सान की तफ़सील दिखला कर सब्र करेंगे. संघ्य बुजुर्ग नाम का गांव नरहन रेलवे स्टेशन के नजदीक है. इसका रक़बा 1700 बीघा, आबादी क़रीब 6000, घर या खान्दान क़रीब एक हजार. इस गांव में तक़रीबन तीन-चौथाई मकान गिरे थे और आधी फ़सल बरबाद हुई थी. साधारन हिसाब से, फ़सल का नुक़सान क़रीब 76,000 रुपये का हुआ. लेकिन इस सब से ज्यादा नुक़सान की बात यह थी कि लोग घरों पर एक दम बेकार बैठे थे. औरतें तो अपने घरलू काम में लगी थीं, मगर मर्द 100 फ़ी सदी ही हाथ पर हाथ धरे खाली वक़्त गुजार रहे थे. उनको देखकर ऐसा लगता था कि भगवान ने उनके लिये हाथ बिला जरूरत के दिये हैं. उनके पास करने को क़तई कोई काम नहीं था. मानो गांव का हर आदमी एक ऐसे मन्दिर का पुजारी था जिसमें तीन देवता थे—सुस्ती, बेकारी और पर-निन्दा (ग़ैर की बुराई). सब से ज्यादा तकलीफ़दह बात यह थी कि किसी को अपने पड़ोसी के दुख का एहसास नहीं था. अक्सर ऐसा दिखलाई पड़ा कि जो अच्छी तरह खाते पीते, मजा करते थे, उनके ठाठ पहले के जैसे ही जारी थे और ग़रीब पड़ोसी जिसका मकान गिर गया है, सामान बेकार हो गया है, उसकी तरफ़ उनका ध्यान जरा भी नहीं जाता था. एक जगह हमने देखा कि एक बुढ़िया जिसका मकान गिर गया है, रो रही थी. पर कोई उसकी मदद को नहीं आता था.

बाढ़जदा लोगों को जो मदद दी गई है उसके बारे में तो जितना कहा जाए थोड़ा है. नेता लोग, एम. एल. ए. और एम. पी. ज्यादातर ऐसे ही गांव तक पहुंच पाते थे जो रेलवे स्टेशन के या मोटर की सड़क के पास हों. सरकारी अफ़सर जो इस काम के लिये भेजा जाता है उसे मानो इस काम में कोई दिलचस्पी ही नहीं है. वह गांव के रईस या बड़े बड़े हाथी वाले बाबू साहब के पास पहुंचता है जहां उसको मेज कुर्सी मिल सके. और यह बाबू साहब अपने दरबारियों के कहने के मुताबिक़ सरकारी इमदाद तक़सीम करा देते हैं. नतीजा यह है कि जिन्हें मदद नहीं मिलनी चाहिये, इन्हें मिल जाती है और जो असल में जरूरतमन्द हैं उनकी सुनवाई भी नहीं होती. उन ग़रीबों की कहीं पहुंच भी नहीं है. इसलिये वह महज सब्र करके रह जाते हैं और जो देहात ज्यादा अन्दर को हैं वहां तो न कोई मदद गई है और न बाहर से ही कोई पूछने आया. इस इमदाद का एक बड़ा और खतरनाक पहलू यह भी है कि ग़ैर कांग्रेसी सियासतदानों ने यह रुख अख्तियार किया

دیئےهیں . پر همارے پاس تو کوئی ایسا اوزار هےنهیں جس کے ذریعه سے یه نقصان ناپا جا سکے. هم تو صرف اِن گاؤں کے بارے میں کہ سکتے هیں جو هم نے خود دیکھے , لهذا ایک گاؤں کے بارے میں نقصان کی تفصیل دکھلا کر صبر کرینگے . سنگھ بزرگ نام کا گاؤں نرهن ریلوے اسٹیشن کے نزدیک هے . اس کا رقبه 1700 بیگها' آبادی قریب 6000' گھر یا خاندان قریب ایک هزار . اِس گاؤں میں تقریباً تین-چوتھائی مکان گرے تھے اور آدھی فصل برباد هوئی تھی . سادھارن حساب سے' فصل کا نقصان قریب 76,000 روپیه کا هوا . لیکن اس سب سے زیادہ نقصان کی بات یه تھی که لوگ گھروں پر ایکدم بیکار بیٹھے تھے . عورتیں تو اپنے گھریلو کام میں لگی تھیں' مگر مرد 100 فی صدی هی هاتھ پر هاتھ دھرے خالی وقت گذار رهے تھے . اُن کو دیکھکر ایسا لگتا تھا که بھگوان نے اُن کے لئے هاتھ بلا ضرورت کے دیئے هیں. اُن کے پاس کرنےکو قطعی کوئی کام نهیں تھا . مانو گاؤں کا هر آدمی ایک ایسے مندر کا پجاری تھا جس میں تین دیوتا هے—سستی' بیکاری اور پرنندا (غیر کی برائی) . سب سے زیادہ تکلیف ده بات یه تھی که کسی کو اپنے پڑوسی کے دکھ کا احساس نهیں تھا . اکثر ایسا دکھلائی پڑا که جو اچھی طرح کھاتے پیتے' مزہ کرتے تھے' اُن کے ٹھاٹھ پہلے کے جیسے هی جاری هے اور غریب پڑوسی جس کا مکان گر گیا هے' سامان بیکار هو گیا هے' اس کی طرف اُن کا دھیان ذرا بھی نهیں جاتا تھا . ایک جگه هم نے دیکھا که ایک بوڑھیا جسکا مکان گر گیا هے' رو رهی هی . پر کوئی اس کی مدد کو نهیں آتا تھا .

باڑھ زده لوگوں کو جو مدد دی گئی هے اس کے بارے میں جو جتنا کہا جائے تھوڑا هے . نیتا لوگ' ایم . ایل . اے اور ایم . پی' زیادہ تر ایسے هی گاؤں تک پہونچ پاتے تھے جو ریلوے سٹیشن کے یا موٹر کی سڑک کے پاس هوں . سرکاری افسر جو اس کام کے لئے بھیجا جاتا هے اسے مانو اس کام میں کوئی دلچسپی هی نهیں هے . وه گاؤں کے رئیس یا بڑے بڑے هاتھی والے بابو صاحب کے پاس پہونچتا هے جہاں اُس کو میز کرسی مل سکے . اور یه بابو صاحب اپنے درباریوں کے کہنے کے مطابق سرکاری امداد تقسیم کرا دیتے هیں . نتیجه یه هے که جنهیں مدد نهیں ملنی چاهئے' انهیں مل جاتی هے اور جو اصل میں ضرورتمند هیں ان کی سنوائی بھی نهیں هوتی . اِن غریبوں کی کہیں پہونچ بھی نهیں هے . اس لئے وه محض صبر کرکے ره جاتے هیں . اور جو دیهات زیادہ اندر کو هیں وهاں تو نه کوئی مدد گئی هے اور نه باهر سے هی کوئی پوچھنے آیا . اس امداد کا ایک بڑا اور خطرناک پہلو یه بھی هے که غیر کانگریسی سیاست دانوں نے یه رخ اختیار کیا

कि यह कांग्रेसी सरकार निकम्मी है और कोई मदद नहीं करना चाहती. इसके खिलाफ़ कांग्रेसवाले ऐसी तस्वीर पेश करते थे मानो सरकार ने इस वक़्त जो ख़िदमत की है वह या उससे ज़्यादा ख़िदमत न कभी किसी ने की और न की जा सकती है. लेकिन जब अकेले बैठते तो सत्य क़बूल करते थे. एक कांग्रेसी भाई ने क़बूल किया कि यह चुनावपूर्व मौसम है और इसका हमें फ़ायदा उठाना चाहिये. दूसरे भाई ने (वह कांग्रेसी M. L. A. थे) कहा कि मदद क्या है अपनी हस्ती साबित करने का एक ज़रिया है. सौ बातों की एक बात यह है कि इतनी भयानक बाढ़ आने पर भी हमारे नेता या सियासी कारकुन अपने भेद भाव नहीं दूर कर सके और अपनी आदत से बाज़ न आये. नहीं, नहीं, उन्होंने मुल्क का कुछ ख्याल न करके इससे भी अपना निजी फ़ायदा उठाना मुनासिब समझा.

इस बाढ़ से हम जिन नतीजों पर पहुंचे वह यह हैं:

(1) लोगों में एक दूसरे के दुख का एहसास बहुत कम है.

(2) उनके पास करने को कोई काम नहीं है.

(3) उन्हें हैरत होती है कि भला मिलकर भी इस आफ़त का सामना किया जा सकेगा.

सन्त विनोबा को यह सब देख कर बहुत ही तकलीफ़ हुई. लेकिन उनकी प्रार्थना सभाओं में जो इन्तहाई भीड़ होती थी, पांच हज़ार से कम नहीं और कहीं कहीं बीस हज़ार तक, इससे पता चलता था कि जनता इनका संदेश सुनना चाहती है. हर जगह उन्होंने एक चीज़ पर ज़ोर दिया:

> "गांवों के अन्दर सब लोग एक ख़ान्दान या कुनबे की तरह रहिये. ख़ाली मत बैठिये. कम से कम चर्ख़ ही चलाइये. जिनको कम नक़सान हुआ है वह उनकी मदद करें जिनको ज़्यादा नक़सान हुआ है."

उन्होने अपने पांव पर खड़े होने और एक दूसरे की मदद करने की अपील की. उन्होंने इस अमर सच की उन्हें याद दिलाई कि बांटने पर दुख घटता है और सुख बढ़ता है. उनके कहने का सार यही था—"अपने सुख दुख में एक हो जाओ." इसलिये उन्होंने मांग की कि मुझे अब पूरे के पूरे गांव दान में दीजिये. "बाढ़ से यह साफ़ पता चल जाता है कि सारी भूमि गोपाल की है." और एक दिन एक ज़मींदार साहब बाबा के पास कुछ गुस्से में आ कर बोले—"बड़े दुख की बात है कि जब बाढ़ से हम मरे जा रहे हैं तभी आप दान मांग रहे हैं." बाबा ने शान्ति के साथ जवाब दिया—"जी हां. इस वजह से दान मांग रहा हूं क्योंकि आप मरे जा रहे हैं. क्या इस दुनिया से जाने के पहले आप दान कर के नहीं जाना चाहते?" एक दूसरी जगह पर बाबा ने कहा—"उत्तर बिहार में बाढ़

کہ یہ کانگریسی سرکار نکمی ہے اور کوئی مدد نہیں کرنا چاہتی . اس کے خلاف کانگریس والے ایسی تصویر پیش کرتے تھے مانو سرکار نے اس وقت جو خدمت کی ہے وہ یا اس سے زیادہ خدمت نہ کبھی کسی نے کی اور نہ کی جاسکتی ہے . لیکن جب اکیلے بیٹھتے تو ستیہ قبول کرتے تھے . ایک کانگریسی بھائی نے قبول کیا کہ یہ چناؤ - پورو موسم ہے اور اس کا ہمیں فائدہ اُٹھانا چاہئے . دوسرے بھائی نے (وہ کانگریسی M.L.A. تھے) کہا کہ مدد کیا ہے اپنی ہستی ثابت کرنے کا ایک ذریعہ ہے . سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ اتنی بھیانک باڑھ آنے پر بھی ہمارے نیتا یا سیاسی کارکن اپنے بھیدبھاؤ نہیں دور کرسکے اور اپنی عادت سے باز نہ آئے . نہیں، نہیں، انہوں نے ملک کا کچھ خیال نہ کرکے اس سے بھی اپنا نجی فائدہ اُٹھانا مناسب سمجھا .

اس باڑھ سے ہم جن نتیجوں پر پہونچے وہ یہ ہیں :

(1) لوگوں میں ایک دوسرے کے دکھ کا احساس بہت کم ہے .

(2) ان کے پاس کرنے کو کوئی کام نہیں ہے .

(3) انہیں حیرت ہوتی ہے کہ بھلا مل‌کر بھی اس آفت کا سامنا کیا جاسکیگا .

سنت ونوبا کو یہ سب دیکھکر بہت ہی تکلیف ہوئی . لیکن ان کی پرارتھنا سبھاؤں میں جو انتہائی بھیڑ ہوتی تھی، پانچ ہزار سے کم نہیں اور کہیں کہیں بیس ہزار تک، اس سے پتہ چلتا تھا کہ جنتا ان کا سندیش سننا چاہتی ہے . ہر جگہ انہوں نے ایک چیز پر زور دیا :

> ”گاؤں کے اندر سب لوگ ایک خاندان یا کنبہ کی طرح رہیئے. خالی مت بیٹھئے . کم سے کم چرخہ ہی چلائیے . جن کو کم نقصان ہوا ہے وہ ان کی مدد کریں جن کو زیادہ نقصان ہوا ہے .“

انہوں نے اپنے پاؤں پر کھڑے ہونے اور ایک دوسرے کی مدد کرنے کی اپیل کی . انہوں نے اس امر سچ کی انہیں یاد دلائی کہ بانٹنے پر دکھ گھٹتا ہے اور سکھ بڑھتا ہے . ان کے کہنے کا سار یہی تھا—”اپنے سکھ دکھ میں ایک ہو جاؤ .“ اس لئے انہوں نے مانگ کی کہ مجھے اب پورے کے پورے گاؤں دان میں دیجئے. ”باڑھ سے یہ صاف پتہ چل جاتا ہے کہ ساری بھومی گوپال کی ہے.“ اور ایک دن ایک زمیندار صاحب بابا کے پاس کچھ غصہ میں آکر بولے—”بڑے دکھ کی بات ہے کہ جب باڑھ سے ہم مرے جارہے ہیں تبھی آپ دان مانگ رہے ہیں .“ بابا نے شانتی کے ساتھ جواب دیا—”جی ہاں . اس وجہ سے دان مانگ رہا ہوں کیونکہ آپ مرے جارہے ہیں . کیا اس دنیا سے جانے کے پہلے آپ دان کرکے نہیں جانا چاہتے؟“ ایک دوسری جگہ پر بابا نے کہا—”اُتر بہار میں باڑھ

दिये हैं. पर हमारे पास तो कोई ऐसा औज़ार है नहीं जिसके ज़रिये से यह नुक़सान नापा जा सके. हम तो सिर्फ़ उन गांव के बारे में कह सकते हैं जो हमने खुद देखे. लिहाज़ा एक गांव के बारे में नुक़सान की तफ़सील दिखला कर सब्र करेंगे. संघ्य बुजुर्ग नाम का गांव नरहन रेलवे स्टेशन के नज़दीक है. इसका रक़बा 1700 बीघा, आबादी क़रीब 6000, घर या ख़ान्दान क़रीब एक हज़ार. इस गांव में तक़रीबन तीन-चौथाई मकान गिरे थे और आधी फ़सल बरबाद हुई थी. साधारन हिसाब से, फ़सल का नुक़सान क़रीब 76,000 रुपये का हुआ. लेकिन इस सब से ज्यादा नुक़सान की बात यह थी कि लोग घरों पर एक दम बेकार बैठे थे. औरतें तो अपने घरलू काम में लगी थीं, मगर मर्द 100 फ़ी सदी ही हाथ पर हाथ धरे खाली वक़्त गुज़ार रहे थे. उनको देखकर ऐसा लगता था कि भगवान ने उनके लिये हाथ बिला ज़रूरत के दिये हैं. उनके पास करने को क़तई कोई काम नहीं था. मानो गांव का हर आदमी एक ऐसे मन्दिर का पुजारी था जिसमें तीन देवता थे—सुस्ती, बेकारी और पर-निन्दा (ग़ैर की बुराई). सब से ज्यादा तकलीफ़देह बात यह थी कि किसी को अपने पड़ोसी के दुख का एहसास नहीं था. अक्सर ऐसा दिखलाई पड़ा कि जो अच्छी तरह खाते पीते, मजा करते थे, उनके ठाठ पहले के जैसे ही जारी थे और ग़रीब पड़ोसी जिसका मकान गिर गया है, सामान बेकार हो गया है, उसकी तरफ़ उनका ध्यान ज़रा भी नहीं जाता था. एक जगह हमने देखा कि एक बुढ़िया जिसका मकान गिर गया है, रो रही थी. पर कोई उसकी मदद को नहीं आता था.

बाढ़ज़दा लोगों को जो मदद दी गई है उसके बारे में तो जितना कहा जाए थोड़ा है. नेता लोग, एम. एल. ए. और एस. पी. ज्यादातर ऐसे ही गांव तक पहुंच पाते थे जो रेलवे स्टेशन के या मोटर की सड़क के पास हों. सरकारी अफ़सर जो इस काम के लिये भेजा जाता है उसे मानो इस काम में कोई दिलचस्पी ही नहीं है. वह गांव के रईस या बड़े बड़े हाथी वाले बाबू साहब के पास पहुंचता है जहां उसको मेज़ कुर्सी मिल सके. और यह बाबू साहब अपने दरबारियों के कहने के मुताबिक़ सरकारी इमदाद तक़सीम करा देते हैं. नतीजा यह है कि जिन्हें मदद नहीं मिलनी चाहिये, इन्हें मिल जाती है और जो असल में ज़रूरतमन्द हैं उनकी सुनवाई भी नहीं होती. उन ग़रीबों की कहीं पहुंच भी नहीं है. इसलिये वह महज़ सब्र करके रह जाते हैं और जो देहात ज्यादा अन्दर को हैं वहां तो न कोई मदद गई है और न बाहर से ही कोई पूछने आया. इस इमदाद का एक बड़ा और ख़तरनाक पहलू यह भी है कि ग़ैर-कांग्रेसी सियासतदानों ने यह रुख़ अख़्तियार किया

دیئے ہیں ۔ پر ہمارے پاس تو کوئی ایسا اوزار ہے نہیں جس کے ذریعہ سے یہ نقصان ناپا جا سکے۔ ہم تو صرف اِن گاؤں کے بارے میں کہہ سکتے ہیں جو ہم نے خود دیکھے ، لہذا ایک گاؤں کے بارے میں نقصان کی تفصیل دکھلا کر صبر کرینگے ۔ سنگھ بزرگ نام کا گاؤں نرہن ریلوے اسٹیشن کے نزدیک ہے ۔ اس کا رقبہ 1700 بیگھا، آبادی قریب 6000، گھر یا خاندان قریب ایک ہزار ۔ اِس گاؤں میں تقریباً تین-چوتھائی مکان گرے تھے اور آدھی فصل برباد ہوئی تھی ۔ سادھارن حساب سے، فصل کا نقصان قریب 76,000 روپیہ کا ہوا ۔ لیکن اس سب سے زیادہ نقصان کی بات یہ تھی کہ لوگ گھروں پر ایکدم بیکار بیٹھے تھے ۔ عورتیں تو اپنے گھریلو کام میں لگی تھیں، مگر مرد 100 فی صدی ہی ہاتھ پر ہاتھ دھرے خالی وقت گذار رہے تھے ۔ اُن کو دیکھکر ایسا لگتا تھا کہ بھگوان نے اُن کے لئے ہاتھ بلا ضرورت کے دیئے ہیں۔ اُن کے پاس کرنےکو قطعی کوئی کام نہیں تھا ۔ مانو گاؤں کا ہر آدمی ایک ایسے مندر کا پجاری تھا جس میں تین دیوتا تھے—سستی، بیکاری اور پرنندا (غیر کی برائی) ۔ سب سے زیادہ تکلیف دہ بات یہ تھی کہ کسی کو اپنے پڑوسی کے دکھ کا احساس نہیں تھا ۔ اکثر ایسا دکھلائی پڑا کہ جو اچھی طرح کھاتے پیتے، مزہ کرتے تھے، اُن کے ٹھاٹھ پہلے کے جیسے ہی جاری تھے اور غریب پڑوسی جس کا مکان گر گیا ہے، سامان بیکار ہو گیا ہے، اس کی طرف اُن کا دھیان ذرا بھی نہیں جاتا تھا ۔ ایک جگہ ہم نے دیکھا کہ ایک بوڑھیا جسکا مکان گر گیا ہے، رو رہی تھی ۔ پر کوئی اس کی مدد کو نہیں آتا تھا ۔

باڑھ زدہ لوگوں کو جو مدد دی گئی ہے اس کے بارے میں تو جتنا کہا جائے تھوڑا ہے ۔ نیتا لوگ، ایم ۔ ایل ۔ اے اور ایم ۔ پی، زیادہ تر ایسے ہی گاؤں تک پہونچ پاتے تھے جو ریلوے اسٹیشن کے یا موٹر کی سڑک کے پاس ہوں ۔ سرکاری افسر جو اس کام کے لئے بھیجا جاتا ہے اسے مانو اس کام میں کوئی دلچسپی ہی نہیں ہے ۔ وہ گاؤں کے رئیس یا بڑے بڑے ہاتھی والے بابو صاحب کے پاس پہونچتا ہے جہاں اس کو میز کرسی مل سکے۔ اور یہ بابو صاحب اپنے درباریوں کے کہنے کے مطابق سرکاری امداد تقسیم کرا دیتے ہیں ۔ نتیجہ یہ ہے کہ جنہیں مدد نہیں ملنی چاہئے، انہیں مل جاتی ہے اور جو اصل میں ضرورتمند ہیں ان کی سنوائی بھی نہیں ہوتی ۔ اِن غریبوں کی کہیں پہونچ بھی نہیں ہے ۔ اس لئے وہ محض صبر کرکے رہ جاتے ہیں ۔ اور جو دیہات زیادہ اندر کو ہیں وہاں تو نہ کوئی مدد گئی ہے اور نہ باہر سے ہی کوئی پوچھنے آیا ۔ اس امداد کا ایک بڑا اور خطرناک پہلو یہ بھی ہے کہ غیر کانگریسی سیاست دانوں نے یہ رخ اختیار کیا

हम दरभंगा जिले के समस्तीपुर सब डीविजन के सात थानों में गए. ताजपुर, मोहद्दीनगर, दलसिंगसराय, समस्तीपुर, वारिसनगर, रोटरा और संध्य और सदर सब डिवीजन के बहेड़ा और बरौल थानों के कुछ हिस्सों में गए. ज्यादातर सफ़र पैदल ही रहा मगर पानी गहरा होने पर नाव का भी इस्तेमाल किया. जगह जगह पानी इतना गहरा था कि नाववाले मल्लाहों तक को कोई अन्दाज़ उसकी गहराई का नहीं था. क्या दरया और क्या खेत के चूर मिल कर एक हो गए थे और पानी ही पानी नज़र आता था. और क्योंकि ऐसी बाढ़ पहले कभी नहीं आई थी इसलिये कोई कह नहीं सकता था कि कहां कितनी गहराई होगी. नतीजा यह हुआ कि जिन फ़ास्लों को तय करने में तीन तीन घंटे लगने चाहिये थे इनकी जगह छ: छ: घंटे लगे. कई मुक़ाम ऐसे थे जैसे संध्य (नरहन स्टेशन के नज़दीक), संध्य थाना, पोखराम और बंदा जहां हम सुबह के साढ़े चार बजे के चले चलाए दोपहर के बारह बजे या इस के भी बाद पहुंचे. कभी कभी जब क़ुदरत बहुत मेहरबान हो जाती थी तो ऊपर से घनघोर पानी पड़ा करता था और हम लोग बाबा (संत विनोबा को हम इसी नाम से पुकारते हैं) के पीछे बिना किसी छाते या बरसाती के चलते चले जाते थे. कई मुक़ाम ऐसे थे जैसे पतीली, हांसा, समरथा, संध्य और हतौड़ी जो एकदम जज़ीरा जैसे मालूम पड़ते थे. उन के चारों तरफ़ पानी ही पानी था.

इस बाढ़ से नुक़सान कितना हुआ इसका ठीक तख़मीना तो लगाना नामुमकिन सा ही है. जहां तक देखने से पता चलता था मकान तो अंगिन्ती गिरे थे. फ़सलें कितनी बरबाद हुईं इस का भी कोई हिसाब नहीं लगाया जा सकता. और न पैसे से इसे चुकाया ही जा सकता है. जानवर भी बीसयों के तादाद में बह गए. ख़ुशी की बात है कि आदमी की जानें बहुत कम गईं. जितनी बड़ी यह बाढ़ थी उस लिहाज़ से जानें बहुत ही थोड़ी, नहीं के बराबर, ज़ाया हुईं. इस से पता चलता है कि आम जनता वक़्त से जाग गई थी और बहादुरी के साथ उस ने इस आफ़त का सामना किया. बड़ी ख़मोशी, हिम्मत और जवांमर्दी के साथ उन्होंने इसका मुक़ाबला किया जिस पर हर कोई फ़ख़्र कर सकता है. बाढ़ का पहला हमला जुलाई के तीसरे हफ़्ते में हुआ. ढाई तीन हफ़्ते के अन्दर यह बाढ़ घट गई. लेकिन अगस्त के तीसरे हफ़्ते में बाढ़ फिर तेज़ी पकड़ गई और इस मर्तबा पहले के मुक़ाबले ज़्यादा ख़ौफ़नाक थी. अगस्त के आख़री हफ़्ते में वह भी उतर गई. कभी कभी वह फिर भी धमकाती है, लेकिन अब तो वक़्त निकल गया और उम्मीद है कि इस साल अब और न आयेगी.

बिहार में बाढ़ से जो नुक़सान हुआ है इस का अन्दाज़ा लगाते हुए एक से एक तीरअन्दाज़ी बयान प्रेस में नेताओं ने

ہم دربھنگا ضلع کے سمستی‌پور سب ڈویژن کے سات تھانوں میں گئے۔ تاجپور، محدی‌نگر، دلسنگسرائے، سمستی پور، وارثنگر، روڈرا اور سنگھیہ اور صدر سب ڈویژن کے بہیڑا اور برول تھانوں کے کچھ حصوں میں گئے۔ زیادہ تر سفر پیدل ہی رہا مگر پانی گہرا ہونے پر ناؤ کا بھی اِستعمال کیا۔ جگہ جگہ پانی اتنا گہرا تھا کہ ناؤ والے ملاحوں تک کو کوئی انداز اس کی گہرائی کا نہیں تھا۔ کیا دریا اور کیا کھیت کے چور مل کر ایک ہوگئے تھے اور پانی ہی پانی نظر آتا تھا۔ اور کیونکہ ایسی باڑھ پہلے کبھی نہیں آئی تھی اس لئے کوئی کہہ نہیں سکتا تھا کہ کہاں کتنی گہرائی ہوگی۔ نتیجہ یہ ہوا کہ جن فاصلوں کو طے کرنے میں تین تین گھنٹے لگنے چاہئے تھے ان کی جگہ چھ چھ گھنٹے لگے۔ کئی مقام ایسے تھے جیسے سنگھیہ (نرھن اسٹیشن کے نزدیک)، سنگھیہ تھانہ، پوکھرام اور بندہ جہاں ہم صبح کے ساڑے چار بجے کے چلے چلائے دوپہر کے بارہ بجے یا اس کے بھی بعد پہونچے۔ کبھی کبھی جب قدرت بہت مہربان ہو جاتی تھی تو اوپر سے گھنگھور پانی پڑا کرتا تھا اور ہم لوگ بابا (سنت ونوبا کو ہم اسی نام سے پکارتے ہیں) کے پیچھے بنا کسی چھاتے یا برساتی کے چلتے چلے جاتے تھے۔ کئی مقام ایسے تھے جیسے پتیلی، ھانسا، سمرتھا، سنگھیہ اور ہتھوڑی جو ایکدم جزیرہ جیسے معلوم پڑتے تھے۔ اُن کے چاروں طرف پانی ہی پانی تھا۔

اِس باڑھ سے نقصان کتنا ہوا اس کا ٹھیک تخمینہ تو لگانا ناممکن سا ہی ہے۔ جہاں تک دیکھنے سے پتہ چلتا تھا مکان تو اَنگنتی گرے تھے۔ فصلیں کتنی برباد ہوئیں اس کا بھی کوئی حساب نہیں لگایا جا سکتا۔ اور نہ پیسے سے اُسے چکایا ہی جا سکتا ہے۔ جانور بھی بیسیوں کی تعداد میں بہہ گئے۔ خوشی کی بات ہے کہ آدمی کی جانیں بہت کم گئیں۔ جتنی بڑی یہ باڑھ تھی اس لحاظ سے جانیں بہت ہی تھوڑی، نہیں کے برابر، ضائع ہوئیں۔ اِس سے پتہ چلتا ہے کہ عام جنتا وقت سے جاگ گئی تھی اور بہادری کے ساتھ اس نے اس آفت کا سامنا کیا۔ بڑی خاموشی، ہمت اور جوانمردی کے ساتھ اُنہوں نے اس کا مقابلہ کیا جس پر ہر کوئی فخر کر سکتا ہے۔ باڑھ کا پہلا حملہ جولائی کے تیسرے ہفتہ میں ہوا۔ ڈھائی تین ہفتے کے اندر یہ باڑھ گھٹ گئی۔ لیکن اگست کے تیسرے ہفتہ میں باڑھ پھر تیزی پکڑ گئی اور اس مرتبہ پہلے کے مقابلہ زیادہ خوفناک تھی۔ اگست کے آخری ہفتہ میں وہ بھی اُتر گئی۔ کبھی کبھی وہ پھر بھی دھمکاتی ہے، لیکن اب تو وقت نکل گیا اور امید ہے کہ اس سال اب اور نہ آئے گی۔

بہار میں باڑھ سے جو نقصان ہوا ہے اس کا انداز لگاتے ہوئے ایک تیراندازی بیان پریس میں نیتاؤں نے

मगर प्रेम की फ़सल हर साल बढ़ती ही जायेगी और लोग अपनी क़ुर्बानी के लिये हर दम तैयार रह कर एक दूसरे की हमदर्दी में शरीक होकर सारे मुल्क को मजबूत और ठोस बना लेंगे जिस पर न बाहर के हमले का असर होगा और अन्दर बदअम्नी पैदा होने का तो सवाल ही नहीं. हम यह ख्याली बात नहीं कह रहे हैं. ऐसा जमाना आयेगा, आ रहा है और आना शुरू हो गया है. भूदान यज्ञ आन्दोलन को थोड़ी बहुत जो कुछ भी कामयाबी अब तक मिली वह प्रेम की ताक़त की कामयाबी को खूब जाहिर करती है. लेकिन हां, हम क़बूल करते हैं कि वैलफ़ेअर स्टेट के मक़सद की तरफ़ जहां कांग्रेस और कांग्रेसी हुकूमत का जोर लग रहा है, वहां दूसरी सियासी पार्टियों, व्यापारी तबक़ा, पढ़े लिखे और नौकर पेशा भाई बहनों का भी. दरअसल उनका पलड़ा इस वक्त बहुत भारी है. इसके खिलाफ़ ग्रामराज की तरफ़ बहुत कम ही ताक़त अब तक लगी है. लेकिन जो कुछ लगी है वह जनता की अपनी ताक़त है जिसे कोई दूसरा दुनयवी सहारा नहीं. इन दोनों ताक़तों का मुक़ाबिला है कि मुल्क वैलफ़ेअर स्टेट की तरफ़ बढ़े या ग्राम राज की तरफ़. आज मुल्क के नौजवान भाई बहनों के आगे सबसे बड़ा सवाल यही है कि इन दोनों में से वह कौनसी राह चुनते हैं और किस तरफ़ अपना कंधा लगाना चाहते हैं.

23. 8 '54 —सुरेशराम भाई

बाढ़ पीड़ित दरभंगा में

उत्तर बिहार के लोग बाढ़ के आदी हैं. मगर इस साल के जैसी बाढ़ शायद कभी नहीं आई. शायद इसकी वजह यह है कि इस बार की बाढ़ उस बड़ी बाढ़ का हिस्सा है जो पच्छिमी योरप के कुछ हिस्सों से लेकर ठेठ पूरब चीन तक आई और जिस ने सब से ज्यादा तबाही चीन में की. पच्छिम के तरफ़ के देशों में इसकी खफ़्गी कम होती चली गई है. हिन्दुस्तान में सब से ज्यादा नुक़सान आसाम को पहुंचा, इस के बाद बंगाल और फिर बिहार. लेकिन उत्तर बिहार में छोटी बड़ी बहुतसी नदियां बहती हैं जिनकी वजह से उस बाढ़ में सारे उत्तर बिहार ने एक बड़े भारी समुन्दर का सा रूप ले लिया, ऐसा समुन्दर जिसके पूरब में कोसी नदी है, पच्छिम में गुंडक नदी, उत्तर में हिमालय पहाड़ और दक्खिन में गंगा. इस वजह से उत्तर बिहार को जबर्दस्त नुक़सान पहुंचा, गुंडक, बूढ़ी गुंडक, लखन दई, बागमती, कोसी और उनकी अन्गिन्ती छोटी बड़ी शाखें एक दूसरे से मिल गई. अगस्त के दूसरे और तीसरे हफ़्ते में सन्त विनोबा जी के साथ हमारा इत्तफ़ाक़ दरभंगा जिला में पैदल सफ़र करने का हुआ जब हमने बहुत नजदीक से वहां की दर्दभरी हालत को देखा.

مگر پریم کی فصل ہر سال بڑھتی ہی جائیگی اور لوگ اپنی قربانی کے لئے ہر دم تیار رہ کر ایک دوسرے کی ھمدردی میں شریک ہوکر سارے ملک کو مضبوط اور ٹھوس بنالینگے جس پر نہ باھر کے حملہ کا اثر ہوگا اور اندر بدامنی پیدا ہونے کا تو سوال ھی نہیں ۔ ھم یہ خیالی بات نہیں کہہ رہے ھیں ۔ ایسا زمانہ آئیگا' آرہا ھے اور آنا شروع ہوگیا ھے ۔ بھودان یگیہ آندولن کو تھوڑی بہت جو کچھ بھی کامیابی اب تک ملی وہ پریم کی طاقت کی کامیابی کو خوب ظاھر کرتی ھے ۔ لیکن ھاں' ھم قبول کرتے ھیں کہ ویل‌فیئر‌اسٹیٹ کے مقصد کی طرف جہاں کانگریس اور کانگریسی حکومت کا زور لگ رہا ھے' وھاں دوسری سیاسی پارٹیوں' ویاپاری طبقہ' پڑھے لکھے اور نوکر پیشہ بھائی بہنوں کا بھی ۔ دراصل ان کا پلڑا اس وقت بہت بھاری ھے۔ اس کے خلاف گرام راج کی طرف بہت کم ھی طاقت اب تک لگی ھے۔ لیکن جو کچھ لگی ھے وہ جنتا کی اپنی طاقت ھے جسے کوئی دوسرا دنیوی سہارا نہیں ۔ ان دونوں طاقتوں کا مقابلہ ھے کہ ملک ویل‌فیئر‌اسٹیٹ کی طرف بڑھے یا گرام راج کی طرف ۔ آج ملک کے نوجوان بھائی بہنوں کے آگے سب سے بڑا سوال یہی ھے کہ ان دونوں میں سے وہ کونسی راہ چنتے ھیں اور کس طرف اپنا کندھا لگانا چاھتے ھیں ۔

23 . 8 . '54 —سریش رام بھائی

باڑھ پیڑت دربھنگا میں

اُتر بہار کے لوگ باڑہ کے عادی ھیں ۔ مگر اس سال کے جیسی باڑہ شاید کبھی نہیں آئی۔ شاید اِسکی وجہ یہ ھے کہ اس بار کی باڑہ اس بڑی باڑہ کا حصہ ھے جو پچھمی یورپ کے کچھ حصوں سے لے کر ٹھیٹھ پورب چین تک آئی اور جس نے سب سے زیادہ تباھی چین میں کی ۔ پچھم کے طرف کے دیشوں میں اس کی خفگی کم ھوتی چلی گئی ھے ۔ ھندستان میں سب سے زیادہ نقصان آسام کو پہونچا' اس کے بعد بنگال اور پھر بہار ۔ لیکن اُتر بہار میں چھوٹی بڑی بہت سی ندیاں بہتی ھیں جن کی وجہ سے اس باڑہ میں سارے اُتر بہار نے ایک بڑے بھاری سمندر کا سا روپ لے لیا' ایسا سمندر جس کے پورب میں کوسی ندی ھے' پچھم میں گنڈک ندی' اُتر میں ھمالیہ پہاڑ اور دکھن میں گنگا ۔ اس وجہ سے اُتر بہار کو زبردست نقصان پہونچا ۔ گنڈک' بوڑھی گنڈک' لکھن دئی' باگمتی' کوسی اور ان کی آنگنتی چھوٹی بڑی شاخیں ایک دوسرے سے مل گئیں ۔ اگست کے دوسرے اور تیسرے ھفتہ میں سنت ونوبا جی کے ساتھ ھمارا اتفاق دربھنگا ضلع میں پیدل سفر کرنے کا ھوا جب ھم نے بہت نزدیک سے وھاں کی درد بھری حالت کو دیکھا ۔

बनते चले जाते हैं. फिर जो इस लूट खसोट में नाकामयाब रहते हैं इनके लिये सरकार पैनशन देती है. आज हिन्दुस्तान में काफ़ी भेद भाव और दर्जे बने हुए हैं. वैलफ़ेअर स्टेट के मानी होते हैं कि समाज के उस ढांचे में और भी दरारें पैदा करना और मुल्क को कमज़ोर बनाना.

तीसरा और सबसे अहम ख़तरा यह है कि बाहर से अगर किसी मुल्क का हमारे मुल्क पर हमला होता है तो जो मरकज़ या केन्द्र से हुक्म आयेगा वही लोग करेंगे. मान लीजिये कि दुश्मन के डर में आकर या किसी और कमज़ोरी से मरकज़ ने हथियार डालना तय कर दिया तो इसके मानी हुए सारे मुल्क ने हार क़ुबूल कर ली और अपनी आज़ादी ख़त्म. या इस तरह मरकज़ ने किसी बाहरी मुल्क से कोई ख़ास फ़ौजी समझौता कर लिया जैसे पाकिस्तान ने अमरीका से किया, तो हमारा मुल्क दूसरे के हाथों में चला गया. जब जनता से सलाह मशविरा करने का कोई सवाल ही नहीं है तो जो नाच देहली वालों को नाचना मंज़ूर हो वही सारे मुल्क का नाचना होगा.

और यह तो ज़ाहिर ही है कि वैलफ़ेअर स्टेट में मुल्क के सारे रोज़गार व कारोबार मरकज़ के हाथ में आ जाते हैं. तो लाज़िमी तौर पर हमारे हिन्दुस्तान जैसे मुल्क में जहां आज इतनी दर्दनाक बेकारी है वहां वह और भी संगीन हो जायेगी.

इस तरह जिस पहलू से भी देखें वैलफ़ेअर स्टेट का ख़्याल व नक़्शा हमारे देश के लिये नुक़सानदेह ही नहीं तबाहकुन है. हमें इस वक़्त राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के वह लफ़्ज़ याद आ रहे हैं जो उन्होंने गत 20 अप्रैल को बौद्ध गया में एक ज़ाहिर सभा में कहे थे. उन्होंने क़ुबूल किया था कि आज़ादी के बाद जनता को हम आज़ाद बनाने की तरफ़ क़दम बढ़ाने की बजाय उसे नये नये क़ानूनों में बांधते जा रहे हैं जिसका नतीजा अच्छा ही होगा ऐसा नहीं कहा जा सकता. हाल ही में किसी सूबे के चीफ़ जस्टिस ने भी इसी तरह के ख़्याल ज़ाहिर किये हैं.

ख़ुलासा यह है कि वैलफ़ेअर स्टेट का ख़्याल महज़ विदेशी ही नहीं उसका नमूना भी हमारे लिये मौज़ूं नहीं है. इसके ख़िलाफ़ हमको बज़ाहिर एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें दर्जा न हो, जो पानी की मानिन्द एक रस या समरस हो, जहां हुकूमत का हाथ कम से कम हो, यानी जो शासन मुक्त हो और जहां कोई किसी को नोचता या लूटता न हो, यानी जो शोशन रहित हो. इसी को हम दूसरे लफ़्ज़ों में ग्रामराज कह सकते हैं, गांव गांव ख़ुदमुख़्तार हो और सब मिलकर हिन्दुस्तान के इस तरह के जुज़ या हिस्से हों जैसे एक जिस्म के जुज़ हाथ, नाक, कान, सर वग़ैरा होते हैं. एक की ख़ुशी में दूसरे की ख़ुशी हो और एक के दुख में दूसरे का दुख हो. ग्रामराज में कोई फ़सल आए न आए

بنتے چلے جاتے ہیں ۔ پھر جو اس لوٹ کھسوٹ میں ناکامیاب رہتے ہیں ان کے لئے سرکار پنشن دیتی ہے ۔ آج ہندستان میں کافی بھیدبھاو اور درجے بنے ہوئے ہیں ۔ ویلفیئراسٹیٹ بنانے کے معنی ہوتے ہیں کہ سماج کے اس ڈھانچہ میں اور بھی دراریں پیدا کرنا اور ملک کو کمزور بنانا ۔

تیسرا اور سب سے اہم خطرہ یہ ہے کہ باہر سے اگر کسی ملک کا ہمارے ملک پر حملہ ہوتا ہے تو جو مرکز یا کیندر سے حکم آئیگا وہی لوگ کرینگے ۔ مان لیجئے کہ دشمن کے ڈر میں آکر یا کسی اور کمزوری سے مرکز نے ہتھیار ڈالنا طے کردیا تو اس کے معنی ہوئے سارے ملک نے ہار قبول کرلی اور اپنی آزادی ختم ۔ یا اسی طرح مرکز نے کسی باہری ملک سے کوئی خاص فوجی سمجھوتہ کرلیا جیسے پاکستان نے امریکہ سے کیا، تو ہمارا ملک دوسرے کے ہاتھوں میں چلا گیا ۔ جب جنتا سے صلاح مشورہ کرنے کا کوئی سوال ہی نہیں ہے تو جو ناچ دہلی والوں کو ناچنا منظور ہو وہی سارے ملک کو ناچنا ہوگا ۔

اور یہ تو ظاہر ہی ہے کہ ویلفئراسٹیٹ میں ملک کے سارے روزگار و کاروبار مرکز کے ہاتھ میں آجاتے ہیں ۔ تو لازمی طور پر ہمارے ہندستان جیسے ملک میں جہاں آج اتنی دردناک بیکاری ہے وہاں وہ اور بھی سنگین ہوجائیگی ۔

اس طرح جس پہلو بھی دیکھیں ویلفیئراسٹیٹ کا خیال و نقشہ ہمارے دیش کے لئے نقصان‌دہ ہی نہیں تباہ کن ہے ۔ ہمیں اس وقت راشٹرپتی ڈاکٹر راجیندر پرشاد کے وہ لفظ یاد آرہے ہیں جو انہوں نے گت 20 اپریل کو بودھ گیا میں ایک ظاہر سبھا میں کہے تھے ۔ انہوں نے قبول کیا تھا کہ آزادی کے بعد جنتا کو ہم آزاد بنانے کی طرف قدم بڑھانے کی بجائے اسے نئے نئے قانونوں میں باندھتے جا رہے ہیں جس کا نتیجہ اچھا ہی ہوگا ایسا نہیں کہا جاسکتا ۔ حال ہی میں کسی صوبہ کے چیف جسٹس نے بھی اس طرح کے خیال ظاہر کئے ہیں ۔

خلاصہ یہ ہے کہ ویلفیئراسٹیٹ کا خیال محض ودیشی ہی نہیں اس کا نمونہ بھی ہمارے لئے موزوں نہیں ہے ۔ اس کے خلاف ہم کو بظاہر ایک ایسا سماج بنانا ہے جس میں درجہ نہ ہو، جو پانی کی مانند ایک رس یا سمرس ہو، جہاں حکومت کا ہاتھ کم سے کم ہو، یعنی جو شاسن مکت ہو اور جہاں کوئی کسی کو نوچتا یا لوٹتا نہ ہو یعنی جو شوشن رہت ہو ۔ اسی کو ہم دوسرے لفظوں میں گرام راج کہہ سکتے ہیں، گاؤں گاؤں خود مختار ہو اور سب مل کر ہندستان کے اس طرح کے جز یا حصے ہوں جیسے ایک جسم کے جز ہاتھ، ناک، کان، سر وغیرہ ہوتے ہیں ۔ ایک کی خوشی میں دوسرے کی خوشی ہو اور ایک کے دکھ میں دوسرے کا دکھ ہو ۔ گرام راج میں کوئی فصل آئے نہ آئے

यहां वैलफ़ेअर स्टेट बनाने के मानी होंगे कि हमारा खाना पीना, कपड़ा लत्ता, तालीम, दवा दारू, हर चीज़ में हम सरकार के मोहताज बन जायें और हमारी हर हरकत या चहलपहल सरकार के कन्ट्रोल में रहे. इसका नतीजा यह होगा कि मान लीजिये, जैसा आज है भी, उत्तर बिहार में बाढ़ आई तो उसके मुआयने के लिये नई दिल्ली से वफ़द या कमीशन आएगा, वह मौक़ा महल की जांच करेगा, देहली वापिस लौट कर अपनी रिपोर्ट पेश करेगा, तब देहली के दफ़्तर से पटना के दफ़्तर को हुक्म जारी होंगे, फिर पटना के दफ़्तर से कलक्टरों के दफ़्तरों में काग़ज़ दौड़ेंगे, फिर वहां से सबडिविज़न या थानों में और तब कहीं काम का नम्बर आयेगा. इस बीच जो जनता बाढ़ से परेशान हो रही है वह तो तबाह ही हो जायेगी, क्योंकि वैलफ़ेअर स्टेट है, एक दूसरे की मदद कोई करेगा नहीं, जो कुछ करे सरकार करे. और इसके साथ साथ मान लीजिये कि गोदावरी नदी में भी बाढ़ आ गई. तब देहली वाले सोचेंगे कि आंध्र का मसला ज्यादा भयानक है या उत्तर बिहार का और वह किसे मदद करे या न करें या किसको मदद कम करें और किसको ज्यादा. इतना लम्बा चौड़ा मुल्क, और उसकी सारी ताक़त देहली में लाकर समेट दी गई तो इधर जनता हाय हाय करेगी, उधर देहली के हुक्काम तार और फ़ोन की टन टन से घबरा जायेंगे कि कहां जायें कहां न जायें, क्या करें क्या न करें. यह बात एक दूसरी मिसाल से ज्यादा साफ़ हो सकेगी. मान लीजिये इस जहान के बनाने वाले ने यहां वैलफ़ेअर स्टेट बनाने का तय किया होता तो वह अपने सब बन्दों के दिल, दिमाग़, नाक, कान, आंख सब अपने पास रक्खे होते और महज़ धड़ व हड्डियां आदमी को दे दी होती. अब किसी को कुछ देखने की ज़रूरत पड़ी तो आंख के लिये तार भेज रहा है, किसी को चलने की ज़रूरत पड़ी तो टांग की मांग करता. नतीजा यह होता कि वह इतना परेशान हो जाता, इतना परेशान हो जाता कि उसे दम मारने की भी फ़ुर्सत नहीं मिलती. लेकिन उसने यह न करके हर आदमी को स्वावलम्बी बनाया, हर एक को सब साधन दे दिये और आज़ाद छोड़ दिया. उस का फल यह हुआ कि आज वह क्षीर सागर में ऐसे आराम से सोता है कि बहुत से लोग उसकी हस्ती तक को मानने से इन्कार करते हैं !

वैलफ़ेअर स्टेट का दूसरा ख़तरनाक पहलू यह है इसमें समाज में भेद भाव शिद्दत से होता है. हर एक कोई एक दूसरे को लूटने व नोचने की कोशिश में रहता है. जो इस फ़न में ज्यादा माहिर हो गया उसने ज्यादा कमाई कर ली, उसे ज्यादा सहूलियत हासिल हो गई और वह उतना ही बड़ा आदमी हो गया, चाहे वह ब्योपार में हो या सरकारी मुलाज़िमत में. इस तरह ऊपर से नीचे तक दर्जे पर दर्जे

یہاں ویل فیئر اسٹیٹ بنانے کے معنی ہونگے کہ ہمارا کھانا پینا، کپڑا لتا، تعلیم، دوا دارو، ہر چیز میں ہم سرکار کے محتاج بن جائیں اور ہماری ہر حرکت یا چہل پہل سرکار کے کنٹرول میں رہے۔ اِس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ مان لیجئے، جیسا آج ہے بھی، اُتر بہار میں باڑھ آئی، تو اس کے معائنے کے لئے نئی دلی سے وفد یا کمیشن آئے گا، وہ موقع محل کی جانچ کرے گا، دہلی واپس لوٹ کر اپنی رپورٹ پیش کرے گا، تب دہلی کے دفتر سے پٹنہ کے دفتر کو حکم جاری ہونگے، پھر پٹنہ کے دفتر سے کلکٹروں کے دفتروں میں کاغذ دوڑینگے، پھر وہاں سے سب ڈویژن یا تھانوں میں اور تب کہیں کام کا نمبر آئے گا۔ اس بیچ جو جنتا باڑھ سے پریشان ہو رہی ہے وہ تو تباہ ہی ہو جائے گی، کیونکہ ویل فیئر اسٹیٹ ہے، ایک دوسرے کی مدد کوئی کریگا نہیں، جو کچھ کرے سرکار کرے۔ اور اِس کے ساتھ ساتھ مان لیجئے کہ گوداوری ندی میں بھی باڑھ آ گئی۔ تب دہلی والے سوچینگے کہ آندھر کا مسئلہ زیادہ بھیانک ہے یا اُتر بہار کا اور وہ کسے مدد کرے یا نہ کرے یا کس کو مدد کم کرے اور کسی کو زیادہ۔ اتنا لمبا چوڑا ملک، اور اس کی ساری طاقت دہلی میں لاکر سمیٹ دی گئی تو اِدھر جنتا ہائے ہائے کرے گی، اُدھر دہلی کے حکام، تار اور فون کی ٹن ٹن سے گھبرا جائینگے کہ کہاں جائیں کہاں نہ جائیں، کیا کریں کیا نہ کریں۔ یہ بات ایک دوسری مثال سے زیادہ صاف ہو سکے گی۔ مان لیجئے اس جہان کے بنانے والے نے یہاں ویل فیئر اسٹیٹ بنانے کا طے کیا ہوتا تو اپنے سب بندوں کے دل، دماغ، ناک، کان، آنکھ سب اپنے پاس رکھے ہوتے اور محض دھڑ و ہڈیاں آدمی کو دے دی ہوتیں۔ اب کسی کو کچھ دیکھنے کی ضرورت پڑی تو آنکھ کے لئے تار بھیج رہا ہے، کسی کو چلنے کی ضرورت پڑی تو ٹانگ کی مانگ کرتا نتیجہ یہ ہوتا کہ وہ اتنا پریشان ہو جاتا، اتنا پریشان ہوجاتا کہ اسے دم مارنے کی بھی فرصت نہیں ملتی۔ لیکن اس نے یہ نہ کرکے ہر آدمی کو سواولمبی بنایا، ہر ایک کو سب سادھن دے دئے اور آزاد چھوڑ دیا۔ اس کا پھل یہ ہوا کہ آج وہ شیر ساگر میں ایسے آرام سے سوتا ہے کہ بہت سے لوگ اس کی ہستی تک کو ماننے سے انکار کرتے ہیں !

ویل فیئر اسٹیٹ کا دوسرا خطرناک پہلو یہ ہے کہ اس میں سماج میں بھیدبھاو شدت سے ہوتا ہے۔ ہر ایک کوئی ایک دوسرے کو لوٹنے و نوچنے کی کوشش میں رہتا ہے۔ جو اس فن میں زیادہ ماہر ہوگیا اس نے زیادہ کمائی کرلی، اسے زیادہ سہولیت حاصل ہوگئی اور وہ اتنا ہی بڑا آدمی ہوگیا، چاہے وہ بیوپار میں ہو یا سرکاری ملازمت میں۔ اس طرح اوپر سے نیچے تک درجے پر درجے

यहां पर तीसरे ठैहराव पर विचार करेंगे. उसका नाम है "Planned development" (प्लांड डिवैलपमेन्ट) यानी योजना बन्द विकास. इस ठैहराव का पहला जुमला यह है—

"The objective of the Congress is the establishment of a co-operative Commonwealth and a Welfare State."

(कांग्रेस का मक़सद है कि एक कोआप्रेटिव कामनवैल्थ और एक वैलफ़ेअर हुकूमत क़ायम की जाये)

पाठक देखेंगे कि "कोआप्रेटिव कामनवैल्थ" और "वैलफ़ेअर" इन दो ख़्यालों के लिये हम कोई देसी लफ़्ज़ नहीं दे सके और हमारा ख़्याल है कि ऐसा करना नामुमकिन नहीं तो मुश्किल ज़रूर है क्योंकि उनके पीछे जो विचार है वह क़तई अंग्रेजी या मग़रिबी है. यों "वैलफ़ेअर" स्टेट की जगह "कल्यान राज" लफ़्ज़ लिखे जाने लगे हैं लेकिन "वैलफ़ेअर" और "कल्यान" में बहुत भारी फ़र्क़ है, शायद उसी तरह का फ़र्क़ है जैसा "Stateless" और "शासन मुक्त" में. कैसी बदक़िस्मती की बात है कि हिन्दुस्तान जैसे आज़ाद मुल्क की कांग्रेस जैसी बड़ी और पुरानी संस्था या पार्टी का मक़सद ऐसे लफ़्ज़ों में ज़ाहिर किया जाये जिसको बाहर वाले तो समझ सकें पर ख़ुद हिन्दुस्तान के लोग नहीं. इससे इस संस्था की ग़रीब ख़्याली का पता चलता है और यह भी साफ़ मालूम हो जाता है कि उसके सोचने का ढंग किस क़दर प्रदेसी है. जहां विचार या ख़्याल की मोहताजगी है वहां किस तरह लोगों के अन्दर नई जान फूंकी जा सकती है हम नहीं समझ सकते.

मामूली तौर से "वैलफ़ेअर" के मानी हैं "बेहतरी." कहते भी हैं कि मैं आपका "वैलफ़ेअर" यानी "बेहतरी" चाहता हूं. इधर चन्द बरसों से ही इंगलैन्ड और अमरीका में "वैलफ़ेअर स्टेट" का ख़्याल बुलन्द हुआ है और आम जनता की तरफ़ से न उठकर हुकूमती दायरों की तरफ़ से उठा है. उसकी तह में यह जज़बा है कि रिआया की बेहतरी का ज़िम्मा सरकार का है. चुनांचे ज़िन्दगी के ज़्यादा से ज़्यादा पहलुओं पर सरकार को हावी होना चाहिये. यही वजह है कि आज इंगलैन्ड और अमरीका में, बूढ़े लोग हों या बेरोज़गार जवान हों, उनकी परवरिश हुकूमत करती है और बतौर पैन्शन के उन्हें कुछ देती है. वहां आये दिन हर चीज़ के लिये क़ानून बनते चले जा रहे हैं, मानो जनता दिन दिन अपाहिज होती जा रही हो. मगर ख़ैर इंगलैन्ड और अमरीका के पास दौलत, दूसरे मुल्कों पर उनका गुप्त या ज़ाहिर असर है और दुनिया के वह साहूकार भी ठैहरे, जिस वजह से वह इस तरह पैन्शन दे सकते और अपना काम चला सकते हैं. लेकिन हमारे देस की तो हालत ही दूसरी है.

یہاں پر تیسرے ٹھہراؤ پر وچار کرینگے ۔ اس کا نام ہے "Planned development" پلانڈ ڈیولپمنٹ یعنی یوجنا بند وکاس ۔ اس ٹھہراؤ کا پہلا جملہ یہ ہے—

"The objective of the Congress is the establishment of a co-operative common-wealth and a Welfare State"

(کانگریس کا مقصد ہے کہ ایک کوآپریٹو کامن ویلتھ اور ایک ویل فیئر حکومت قائم کی جائے)

پاٹھک دیکھیں گے کہ "کوآپریٹو کامن ویلتھ" اور "ویل فیئر" اِن دو خیالوں کے لئے ہم کوئی دیسی لفظ نہیں دے سکے اور ہمارا خیال ہے کہ ایسا کرنا ناممکن نہیں تو مشکل ضرور ہے کیونکہ اُن کے پیچھے جو وچار ہے وہ قطعی انگریزی یا مغربی ہے ۔ یوں "ویل فیئر اسٹیٹ" کی جگہ "کلیان راج" لفظ لکھے جانے لگے ہیں لیکن "ویل فیئر" اور "کلیان" میں بہت بھاری فرق ہے' شاید اِسی طرح کا فرق ہے جیسا "Stateless" اور "شاسن مکت" میں ۔ کیسی بدقسمتی کی بات ہے کہ ہندستان جیسے آزاد ملک کی کانگریس جیسی بڑی اور پرانی سنستھا یا پارٹی کا مقصد ایسے لفظوں میں ظاہر کیا جائے جس کو باہر والے تو سمجھ سکیں پر خود ہندستان کے لوگ نہیں ۔ اِس سے اس سنستھا کی غریب خیالی کا پتہ چلتا ہے اور یہ بھی صاف معلوم ہو جاتا ہے کہ اس کے سوچنے کا ڈھنگ کس قدر پردیسی ہے ۔ جہاں وچار یا خیال کی محتاجگی ہے وہاں کس طرح لوگوں کے اندر نئی جان پھونکی جا سکتی ہے ہم نہیں سمجھ سکتے ۔

معمولی طور سے "ویل فیئر" کے معنی ہیں "بہتری ۔" کہتے بھی ہیں کہ میں آپ کا "ویل فیئر" یعنی "بہتری" چاہتا ہوں ۔ ادھر چند برسوں سے ہی انگلینڈ اور امریکہ میں "ویل فیئر اسٹیٹ" کا خیال بلند ہوا ہے اور عام جنتا کی طرف سے نہ اُٹھ کر حکومتی دائروں کی طرف سے اُٹھا ہے ۔ اس کی تہ میں یہ جذبہ ہے کہ رعایا کی بہتری کا ذمہ سرکار کا ہے ۔ چنانچہ زندگی کے زیادہ سے زیادہ پہلوؤں پر سرکار کو حاوی ہونا چاہئے ۔ یہی وجہ ہے کہ آج انگلینڈ و امریکہ میں' بوڑھے لوگ ہوں یا بے روزگار جوان ہوں' ان کی پرورش حکومت کرتی ہے اور بطور پنشن کے انہیں کچھ دیتی ہے ۔ وہاں آئے دن ہر چیز کے لئے قانون بنتے چلے جا رہے ہیں' مانو جنتا دن دن اپاہج ہوتی جا رہی ہو' ۔ مگر خیر انگلینڈ اور امریکہ کے پاس دولت' دوسرے ملکوں پر ان کا گپت یا ظاہر اثر ہے اور دنیا کے وہ ساہوکار بھی ٹھہرے' جس وجہ سے وہ اس طرح پنشن دے سکتے اور اپنا کام چلا سکتے ہیں ۔ لیکن ہمارے دیس کی تو حالت ہی دوسری ہے ۔

"रत्न" मानी "राज-रत्न" और "पद्म-विभूशन" मानी "सरकार विभूशन." तो जैसा राज वैसा उनका रत्न और वैसा उनका विभूशन. इसका नतीजा होगा कि आदमी की असली क़ाबलियत या हुनर की उतनी क़दर नहीं होगी जितनी इस बात की कि हुकूमत की निगाह में वह कहां तक और कितना उपयोगी है और आड़े वक़्त काम आनेवाला है. यही वजह है कि आम जनता की निगाह में मैडिल की इज़्ज़त नहीं रहती और शायद इसी वजह से पुराने ज़माने में हमारे रिशी, मुनी और विद्वानों ने मैडिल या ख़िताब की कोई परवाह नहीं की.

इस सिलसिले में एक ख़्याल और भी आता है. वह यह कि श्री राजा जी और डाक्टर राधा कृशनन को "भारत-रत्न" के मैडिल से क्या नई इज़्ज़त या नई प्रेरना हासिल होने वाली है? शायद इसमें पाने वाले की इतनी इज़्ज़त नहीं जितनी कि देने वाले की. मगर दिल में एक और भी ख़्याल आये बिना नहीं रहता कि जब डाक्टर राधा कृशनन उप-राश्ट्रपति हैं तो उन्हीं को मैडिल देना कहां तक शोभा की बात है. हम डाक्टर राधा कृशनन को अपने मुल्क की बहुत आला हस्तियों में शुमार करते हैं और मानते हैं कि वह हिन्दुस्तान के उन चन्द ख़िदमतगारों में से हैं जिन्होंने मुल्क की इज़्ज़त को चार चांद लगाये हैं और दुनिया में उसकी शान बढ़ाई है. लेकिन इस वक़्त तो वह सिर्फ़ एक को, राश्ट्रपति को छोड़ कर, हुकूमत के सब से बड़े ओहदेदार हैं. राश्ट्रपति की ग़ैरहाज़िरी में वही उनका सब काम अंजाम देते हैं. इस तरह यह मैडिल अपने द्वारा ही अपने को देना जैसा लगता है. ईश्वर न करे कि आगे चलकर मौजूदा सरकार या दूसरी सरकारें ख़ुद अपने हाकिमों को इस तरह मैडिल देना शुरू कर दें. तब तो क्या सरकार और क्या पब्लिक, दोनों के लिये शर्म की बात होगी.

हम बड़े अदब के साथ कहना चाहते हैं कि इन मैडिलों से कुल मिलाकर हमें ख़ुशी नहीं हुई और सरकार के इस कारनामे पर हम उसे मुबारकबाद नहीं दे सकते. हम सिफ़ारिश करेंगे कि सरकार इस तरह के नाहक़ बोझ अपने ऊपर न ले और जो ख़िताब या मैडिल जिसे मिलना है वह जनता की तरफ़ से आप से मिलने दे. जैसी जिसकी ख़िदमत होगी जनता ख़ुद उसे वैसे नाम से पुकारेगी, जैसे उसने तिलक को लोकमान्य और गांधी को महात्मा कहा और कहती रहेगी.

22. 8. '54 —सुरेशराम भाई

"वैलफ़ेअर स्टेट" बनाम ग्राम राज

जुलाई के महीने में कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी की एक बैठक अजमेर में हुई. उसमें कुल मिलाकर 13 ठैहराव पास हुए. उनमें से कई महत्वपून हैं. लेकिन हम इस वक़्त

رتن " معنی " راج رتن " اور " پدم وبھوشن " بمعنی " سرکار وبھوشن ." تو جیسا راج ویسا ان کا رتن اور ویسا ان کا وبھوشن . اس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ آدمی کی اصلی قابلیت یا ہنر کی اتنی قدر نہیں ہوگی جتنی اس بات کی کہ حکومت کی نگاہ میں وہ کہاں تک اور کتنا اُپیوگی ہے اور آڑے وقت کام آنے والا ہے . یہی وجہ ہے کہ عام جنتا کی نگاہ میں میڈل کی عزت نہیں رہتی اور شاید اِسی وجہ سے پرانے زمانے میں ہمارے رشی' منی اور ودوانوں نے میڈل یا خطاب کی کوئی پرواہ نہیں کی .

اِس سلسلہ میں ایک خیال اور بھی آتا ہے . وہ یہ کہ شری راجا جی اور ڈاکٹر رادھا کرشنن کو " بھارت رتن " کے میڈل سے کیا نئی عزت یا نئی پریرنا حاصل ہونے والی ہے ؟ شاید اِسمیں پانے والے کی اتنی عزت نہیں جتنی کہ دینے والے کی . مگر دل میں ایک اور بھی خیال آئے بنا نہیں رہتا کہ جب ڈاکٹر رادھا کرشنن اُپ راشٹر پتی ہیں تو اُنہیں کو میڈل دینا کہاں تک شوبھا کی بات ہے . ہم ڈاکٹر رادھا کرشنن کو اپنے ملک کی بہت اعلیٰ ہستیوں میں شمار کرتے ہیں اور مانتے ہیں کہ وہ ہندستان کے ان چند خدمتگاروں میں سے ہیں جنھوں نے ملک کی عزت کو چار چاند لگائے ہیں اور دنیا میں اس کی شان بڑھائی ہے . لیکن اس وقت تو وہ صرف ایک کو' راشٹر پتی کو چھوڑ کر' حکومت کے سب سے بڑے عہدےدار ہیں . راشٹر پتی کی غیر حاضری میں وہی اُن کا سب کام انجام دیتے ہیں . اِس طرح یہ میڈل اپنے دوارا ہی اپنے کو دینا جیسا لگتا ہے . ایشور نہ کرے کہ آگے چل کر موجودہ سرکار یا دوسری سرکاریں خود اپنے حاکموں کو اس طرح میڈل دینا شروع کر دیں. تب تو کیا سرکار اور کیا پبلک' دونوں کے لئے شرم کی بات ہوگی .

ہم بڑے ادب کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں کہ اِن میڈلوں سے کل ملا کر ہمیں خوشی نہیں ہوئی اور سرکار کے اِس کارنامے پر ہم اِسے مبارکباد نہیں دے سکتے . ہم سفارش کرینگے کہ سرکار اِس طرح کے ناحق بوجھ اپنےاوپر نہ لے اور جو خطاب یا میڈل جسے ملنا ہے وہ جنتا کی طرف سے آپ سے ملنے دے . جیسی جس کی خدمت ہوگی جنتا خود اِسے ویسے نام سے پکارے گی' جیسے اس نے تلک کو لوکمانیہ اور گاندھی کو مہاتما کہا اور کہتی رہے گی .

22 . 8 . '54 سریش رام بھائی

" ویل فیئر اسٹیٹ " بنام گرام راج

جولائی مہینے میں کل ہند کانگریس کمیٹی کی ایک بیٹھک اجمیر میں ہوئی . اس میں کل ملا کر 13 ٹھہراؤ پاس ہوئے . ان میں سے کئی مہتوپورن ہیں . لیکن ہم اس وقت

चार मैडिल !

तारीख़ 15 अगस्त को नई दिल्ली से राष्ट्रपति की तरफ़ से एक अजीब व ग़रीब ऐलान निकला. इस ऐलान में दो तरह के, या कहना चाहिये चार तरह के, मैडिलों की तक़सीम का इज़हार किया गया :—"भारत-रत्न" मैडिल और "पद्म-विभूशन" मैडिल में तीन दर्जे या वर्ग किये गये—पहला वर्ग, दूसरा वर्ग और तीसरा वर्ग. इस ऐलान में बताया गया है कि भारत के विधान की धारा 18 के मुताबिक़ ख़िताब नहीं बांटे जा सकते लेकिन देश के बड़े बड़े साइन्सदां, इन्जीनियर, कलाकार वग़ैरा को उनके काम के सिलसिले में यह मैडिल दिये जा रहे हैं.

अंग्रेज़ी दस्तूर के मुताबिक़ मैडिल छाती पर लटकाए जाते हैं और दरबार या ख़ुशी या जल्से के मौक़े पर लोग उन्हें लगा कर आते हैं. हमें नहीं मालूम कि सर, ख़ान-बहादुर या रायबहादुर की तरह लोग अपने नाम के आगे "भारत-रत्न" या "पद्म-विभूशन" लिख सकेंगे या नहीं. लिखें न लिखें, यह कोई अहमियत की चीज़ नहीं है. असल बात यह है कि इन मैडिलों की ज़रूरत क्या पड़ी ? जवाब होगा कि सेवाओं के एवज़ में दिये गये हैं ताकि दूसरे लोगों का भी उत्साह बढ़े. तो क्या हम उसके यह मानी लगायें कि आज़ाद हिन्दुस्तान में बड़े या ऊंचे काम की तरफ़ लोगों के अन्दर प्रेरना पैदा करने के लिये इस वक़्त तक जहां ऊंची तनख़्वाहें दी जाती हैं अब (आज़ादी के सात साल बाद) मैडिल की भी दरकार महसूस होने लगी ? कोई कहेगा कि यह इन्सानी कमज़ोरी (Human weakness) है लेकिन हम इसे अपने मुल्क की बदक़िस्मती समझते हैं कि ख़िदमत करने या नेकी के काम करने के लिये सोने या चांदी के मैडिल से हमें बहलावा दिया जाये. अंग्रेज़ों ने ऊंची तनख़्वाह का क़ायदा जारी किया क्योंकि उन्हें ख़ुद ऊंची तनख़्वाहें लेनी थीं और चाहिये भी थीं. हमने इस क़ायदे को जारी रखा है जिसकी वजह से जिस्मानी काम को या हाथ से मेहनत करने को जिस नफ़रत के साथ पहले देखा जाता था आज भी उसी तरह देखा जाता है. बजाय इसके कि हम इस दस्तूर को ख़तम करते, मैडिल बांटने का सिलसिला और जारी कर दिया. आगे चलकर उन मैडिल वालों या उनके चाहने वालों की एक जात ही खड़ी हो जाने वाली है जो हुकूमत की ख़ुशनूदी के फ़न में अपने को माहिर कर लेती है. कल नतीजा यह होगा कि अच्छी प्रेरनाएं पैदा होने की बजाय नामुनासिब प्रेरनाएं पैदा होंगी और लोगों के आपस के फ़र्क़ और भी बढ़ेंगे.

ज़ाहिर है कि हर सरकार इनाम, इकराम या मैडिल अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तक़सीम करती है. यानी "भारत

چار میڈل !

تاریخ 15 اگست کو نئی دلی سے راشٹرپتی کی طرف سے ایک عجیب و غریب اعلان نکلا . اس اعلان میں دو طرح کے' یا کہنا چاہئے چار طرح کے' میڈلوں کی تقسیم کا اظہار کیا گیا :— "بھارت رتن" میڈل اور "پدم وبھوشن" میڈل . پدم وبھوشن میڈل میں تین درجے یا ورگ کئے گئے—پہلا ورگ' دوسرا ورگ اور تیسرا ورگ . اس اعلان میں یہ بتایا گیا ھے کہ بھارت کے ودھان کی دھارا 18 کے مطابق خطاب نہیں بانٹے جاسکتے لیکن دیش کے بڑے بڑے سائنس داں' انجینیر' کلاکار وغیرہ کو ان کے کام کے صلے میں یہ میڈل دئے جارھے ھیں .

انگریزی دستور کے مطابق میڈل چھاتی پر لٹکائے جاتے ھیں اور دربار یا خوشی یا جلسہ کے موقع پر لوگ انہیں لگا کر آتے ھیں . ھمیں نہیں معلوم کہ سر' خان بہادر' یا رائے بہادر کی طرح لوگ اپنے نام کے آگے "بھارت رتن" یا "پدم وبھوشن" لکھ سکینگے یا نہیں . لکھیں نہ لکھیں' یہ کوئی اھمیت کی چیز نہیں ھے . اصل بات یہ ھے کہ ان میڈلوں کی ضرورت کیا پڑی؟ جواب ھوگا کہ سیواؤں کے عیوض میں دئے گئے ھیں تاکہ دوسرے لوگوں کا بھی اُتساہ بڑھے . تو کیا ھم اس کے یہ معنی لگائیں کہ آزاد ھندستان میں بڑے یا اُونچے کام کی طرف لوگوں کے اندر پریرنا پیدا کرنے کے لئے اس وقت تک جہاں اُونچی تنخواھیں دی جاتی ھیں اب (آزادی کے سات سال بعد) میڈل کی بھی درکار محسوس ھونے لگی . کوئی کہیگا کہ یہ انسانی کمزوری (Human weakness) ھے لیکن ھم اسے اپنے ملک کی بدقسمتی سمجھتے ھیں کہ خدمت کرنے یا نیکی کے کام کرنے کے لئے سونے یا چاندی کے میڈلوں سے ھمیں بہلوا دیا جائے . انگریزوں نے اُونچی تنخواہ کا قاعدہ جاری کیا کیونکہ انہیں خود اُونچی تنخواھیں لینی تھیں اور چاھئیں بھی تھیں . ھم نے اس قاعدہ کو جاری رکھا ھے جس کی وجہ سے جسمانی کام کو یا ھاتھ سے محنت کرنے کو جس نفرت کے ساتھ پہلے دیکھا جاتا تھا آج بھی اس طرح دیکھا جاتا ھے . بجائے اس کے کہ ھم اس دستور کو ختم کرتے' میڈل بانٹنے کا سلسلہ اور جاری کردیا . آگے چل کر ان میڈل والوں یا اُن کے چاھنے والوں کی ایک جات ھی کھڑی ھو جانے والی ھے جو حکومت کی خوشنودی کے فن میں اپنے کو ماھر کر لیتی ھے . کل نتیجہ یہ ھوگا کہ اچھی پریرنائیں پیدا ھونے کے بجائے نامناسب پریرنائیں پیدا ھونگی اور لوگوں کے آپس کے فرق اور بھی بڑھینگے .

ظاھر ھے کہ ھر سرکار انعام' اکرام یا میڈل اپنی مرضی کے مطابق تقسیم کرتی ھے . یعنی "بھارت

लोगों की जान के मुक़ाबले अपनी शान को ज्यादा ऊंचा समझे. इस ठैहराव से भी यह नहीं साफ़ साफ़ पता चलता कि क्या समाजवादी सरकार किसी मौक़े पर गोली चलाने की छूट देगी या नहीं ? इस तरह कांग्रेस प्रधान का ख़त और प्रजा समाजवादी पार्टी के ठैहराव, दोनों इस बात में चुप हैं कि सरकार की तरफ़ से गोली चलनी चाहिये या नहीं. और अगर चले तो कब ? लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि इन दोनों के पीछे एक ही जज़्बा काम कर रहा है—वह यह कि अपने घरेलू मामले में हमको अहिंसा और शान्ति के रास्ते से तय कर लेने चाहिये.

लेकिन सब मामलों में, ख़ासकर आर्थिक मामलों में, दो फ़रीक़ों में से एक फ़रीक़ सरकार जरूर रहती है. इसलिये हमारा ख़याल है कि हमारे देश में शान्ति या अमन का वातावरन तब तक क़ायम नहीं हो सकता जब तक सरकार अपने पर कुछ पाबन्दी न करे और पुलिस या मिलिटरी का सहारा न ले. इस वास्ते हिन्दुस्तान में लोकशाही राज्य के ख़ूबसूरती और शान्ति के साथ चलने के लिये यह जरूरी है कि सरकार की तरफ़ से यह साफ़ साफ़ जाहिर हो जाये कि देश के भीतरी मामलों में वह गोली या हिंसा का रास्ता नहीं अख़्तियार करेगी.

इस सिलसिले में, पाठकों को यह जानकर ख़ुशी होगी कि तारीख़ 22 जुलाई को, बैरिया (मुज़फ़्फ़रपुर ज़िला) गांव में प्रार्थना प्रवचन में श्री विनोबा जी ने क्या कहा था ? उनकी राय है :

> सार्वजनिक कार्यकर्ता भिन्न भिन्न सवालों को लेकर अपने आन्दोलन या तहरीक चलाते रहें. लेकिन वह इस बात का ध्यान रखें कि किसी मौक़े पर भी हिंसा का रास्ता न लिया जाये. इसी तरह से सरकार को भी यह ऐलान कर देना चाहिये कि देश के मामलों में वह कभी बन्दूक़ का इस्तेमाल नहीं करेगी.

यह मसला ऐसा गम्भीर है कि जिस पर क्या सरकारी अहलकार और क्या राजनीतिक या सामाजिक कार्यकर्ता, सबको इसपर गहराई से ग़ौर करना चाहिये. क्या हम यह उम्मीद करें कि कांग्रेस और प्रजा समाजवादी पार्टियों के लोग—अपनी निजी सार्वजनिक हैसियत में, और सरकारी शासन के अलमबर्दार की हैसियत में—यह जाहिर करेंगे कि अपनी जिम्मेदारियों और फ़र्ज़ को निभाने में वह हिंसा की ताक़तों का आश्रय अब नहीं लेंगे. अगर वह ऐसा करते हैं तो इससे मुल्क को एक बड़ी अच्छी रहनुमाई हासिल होगी. इससे लोगों के अन्दर एक जबरदस्त आत्म विश्वास पैदा होगा. इससे हमारी शान्ति और तरक़्क़ी का रास्ता खुल जायेगा और हम दुनिया की निगाह में भी, सही माने में, ऊंचा उठेंगे.

30. 9. '54 —सुरेशराम भाई

لوگوں کی جان کے مقابلے اپنی شان کو زیادہ اُونچا سمجھے۔ اِس ٹھہراؤ سے بھی یہ نہیں صاف صاف پتہ چلتا کہ کیا سماج وادی سرکار کسی موقعے پر گولی چلانے کی چھوٹ دیگی یا نہیں ؟ اِس طرح کانگریس پردھان کا خط اور پرجا سماج‌وادی پارٹی کے ٹھہراؤ' دونوں اِس بات میں چپ ہیں کہ سرکار کی طرف سے گولی چلنی چاہئیے یا نہیں ۔ اور اگر چلے تو کب؟ لیکن اِس سے اِنکار نہیں کیا جاسکتا کہ اِن دونوں کے پیچھے ایک ہی جزبہ کام کررہا ہے—وہ یہ کہ اپنے گھریلو معاملے میں ہم کو اہنسا اور شانتی کے راستے سے طے کرلینے چاہئیے ۔

لیکن سب معاملوں میں' خاص کر آرتھک معاملوں میں' دو فریقوں میں سے ایک فریق سرکار ضرور رہتی ہے۔ اِس لئے ہمارا خیال ہے کہ ہمارے دیش میں شانتی یا امن کا واتاورن تب تک قائم نہیں ہو سکتا جب تک سرکار اپنے پر کچھ پابندی نہ کرے اور پولس یا میلٹری کی گولی کا سہارا نہ لے ۔ اِس واسطے ہندستان میں لوک شاہی راجیہ کے خوبصورتی اور شانتی کے ساتھ چلنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ سرکار کی طرف سے یہ صاف ظاہر ہو جائے کہ دیش کے بھیتری معاملوں میں وہ گولی یا ہنسا کا راستہ' نہیں اختیار کرے گی ۔

اِس سلسلے میں' پاٹھکوں کو یہ جان کر خوشی ہوگی کہ تاریخ 22 جولائی کو' بیریا (مظفرپور ضلع) گاؤں میں پرارتھنا پرورچن میں شری ونوبا جی نے کیا کہا تھا ؟ اُن کی رائے ہے :

> ساروجنک کاریہ‌کرتا بھن بھن سوالوں کو لے کر اپنے آندولن یا تحریک چلاتے رہیں ۔ لیکن وہ اس بات کا دھیان رکھیں کہ کسی موقع پر بھی ہنسا کا راستہ نہ لیا جائے ۔ اِسی طرح سے سرکار کو بھی یہ اعلان کر دینا چاہئیے کہ دیش کے معاملوں میں وہ کبھی بندوق کا اِستعمال نہیں کرے گی ۔

یہ مسئلہ ایسا گمبھیر ہے کہ جس پر کیا سرکاری اہلکار اور کیا راجنتک یا ساماجک کاریہ‌کرتا' سب کو اِس پر گہرائی سے غور کرنا چاہئیے ۔ کیا ہم یہ اُمید کریں کہ کانگریس اور پرجا سماج‌واد پارٹیوں کے لوگ—اپنی نجی ساورجنک حیثیت میں اور سرکاری شاسن کے المبردار کی حیثیت میں—یہ ظاہر کرینگے کہ اپنی ذمہ‌داریوں اور فرض کو نبھانے میں وہ ہنسا کی طاقتوں کا آشرئے اب نہیں لینگے ۔ اگر وہ ایسا کرتے ہیں تو اِس سے ملک کو ایک بڑی اچھی رہنمائی حاصل ہوگی ۔ اِس سے لوگوں کے اندر ایک زبردست آتم وشواس پیدا ہوگا ۔ اِس سے ہماری شانتی اور ترقی کا راستہ کھل جائے گا اور ہم دنیا کی نگاہ میں بھی' صحیح معنی میں' اُونچا اُٹھینگے ۔

—سریش رام‌بھائی 30 . 9 . '54

हमारी राय

ہماری رائے

देश की मांग

हाल ही में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने प्रदेश कांग्रेस कमेटियों के सभापति के नाम एक चिट्ठी भेजी है. उसमें उन्होंने इस बात पर बड़ा दुख जाहिर किया है कि हमारे सार्वजनिक जीवन में लोगों का झुकाव किसी न किसी तरह की हिंसात्मक कार्रवाई की तरफ़ बढ़ता जा रहा है. इस ढंग को उन्होंने खतरनाक कहा है और लोकशाही राज्य की जड़ के खिलाफ़ बताया है. उनका यह भी कहना है :

> जब हम अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे तो हिंसा के खिलाफ़ थे. ऐसी सूरत में आज जब हमने आजादी हासिल कर ली है, तब हमें हिंसा के और भी खिलाफ़ होना चाहिये. आजकल तो अपने सवालों को हल करने के लिये हमारे पास लोकशाही साधन और मशीनरी भी मौजूद है.

कांग्रेस प्रधान की इस सूचना का हम दिल से स्वागत करते हैं. उनका यह सलाह देना कि अब हमको अपने सवाल हल करने में बन्दूक़ या डंडे की मदद नहीं लेनी चाहिये, बहुत ही सुहावनी सलाह है. लेकिन उनकी चिट्ठी से यह नहीं पता चलता कि क्या वह यह भी चाहेंगे कि हिन्दुस्तान के सभी प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारें घरेलू मामलों में हिंसा का सहारा लेना छोड़ दें और उनकी पुलिस आदि केवल शान्तिमय तरीक़ों पर जनता की सेवा करें. थोड़े दिन हुए ट्रावनकोर-कोचीन प्रदेश में गोली चली थी. उस घटना पर प्रजा समाजवादी पार्टी ने अपना बहुत अफ़सोस प्रकट किया और थोड़े दिन हुए जब दिल्ली में उसकी कार्य समिति की बैठक हुई तो एक प्रस्ताव भी प्रजा समाजवादी पार्टी ने पास किया. उसमें कहा गया है कि जब यह डर हो कि जनता की तरफ़ से ईंट पत्थर फेंके जायेंगे, या यह समझा जावे कि भीड़ कोई और खतरनाक रूप ले लेगी, या उससे शान्ति को खतरा पैदा होगा, तो ऐसी हालतों में पुलिस का गोली चलाना या लोगों को मारना इन्साफ़ से दूर है. और कोई भी लोकशाही सरकार यह नहीं बर्दाश्त करेगी कि

دیش کی مانگ

حال ہی میں پنڈت جواہر لال نہرو نے پردیش کانگریس کمیٹیوں کے سبھاپتی کے نام ایک چٹھی بھیجی ھے . اُس میں اُنہوں نے اِس بات پر بڑا دکھ ظاھر کیا ھے کہ ھمارے سارو جنک جیون میں لوگوں کا جھکاؤ کسی نہ کسی طرح کی ھنساتمک کارروائی کی طرف بڑھتا جارھا ھے . اِس ڈھنگ کو اُنہوں نے خطرناک کہا ھے اور لوک شاھی راجیہ کی جڑ کے خلاف بتایا ھے . اُن کا یہ بھی کہنا ھے :

> جب ھم اپنی آزادی کی لڑائی لڑ رھے تھے تو ھنسا کے خلاف تھے . ایسی صورت میں آج جب ھم نے آزادی حاصل کرلی ھے، تب ھمیں ھنسا کے اور بھی خلاف ھونا چاھئے . آجکل تو اپنے سوالوں کو حل کرنے کے لئے ھمارے پاس لوک شاھی سادھن اور مشینری بھی موجود ھے .

کانگریس پردھان کی اِس سوچنا کا ھم دل سے سواگت کرتے ھیں . اُن کا یہ صلاح دینا کہ اب ھم کو اپنے سوال حل کرنے میں بندوق یا ڈنڈے کی مدد نہیں لینی چاھئے، بہت ھی سہاونی صلاح ھے . لیکن اُن کی چٹھی سے یہ نہیں پتہ چلتا کہ کیا وہ یہ بھی چاھینگے کہ ھندستان کے سبھی پرانتیہ اور کیندریہ سرکاریں گھریلو معاملوں میں ھنسا کا سہارا لینا چھوڑ دیں اور اُن کی پولیس آدی کیول شانتی مئے طریقوں پر جنتا کی سیوا کریں . تھوڑے دن ھوئے ٹراونکور- کوچین پردیش میں گولی چلی تھی . اُس گھٹنا پر پرجا سماجوادی پارٹی نے اپنا بہت افسوس پرکٹ کیا اور تھوڑے دن ھوئے جب دلی میں اُس کی کاریہ سمتی کی بیٹھک ھوئی، تو ایک پرستاؤ بھی پرجا سماجوادی پارٹی نے پاس کیا . اُس میں کہا گیا ھے کہ جب یہ ڈر ھو کہ جنتا کی طرف سے اینٹ پتھر پھینکے جائینگے، یا یہ سمجھا جائے کہ بھیڑ کوئی اور خطرناک روپ لے لیگی یا اُس سے شانتی کو خطرہ پیدا ھوگا، تو ایسی حالتوں میں پولس کا گولی چلانا یا لوگوں کو مارنا اِنصاف سے دور ھے . اور کوئی بھی لوک شاھی سرکار یہ نہیں برداشت کریگی کہ

सुनिये काका साहब !

लिखने वाली—रेहाना तैयब जी; निकालने वाले—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा—270; दाम—दो रुपया चार आना.

तैयब जी ख़ानदान से आज़ादी के आन्दोलन से दिलचस्पी रखने वाले सभी वाक़िफ़ हैं. रेहाना जी उसी बाग़ की एक फूल हैं. काका साहब ने इच्छा ज़ाहिर की कि रेहाना जी अपने ख़ानदान के बारे में उन्हें कुछ सुनायें और उन्होंने कहा—सुनिये काका साहब ! यह नाम रेहाना जी की शैली से मेल खाता है. उनकी क़लम ऐसी चलती है जैसी उनकी ज़बान चलती हो. कहीं बनावट नहीं, सीधी सपाट बात ! जैसे दो आदमी बातें कर रहे हों.

रेहाना जी पारसी हैं, अंग्रेज़ी वातावरन में रहीं, गुजराती अंग्रेज़ी के बाद उनकी भाशा बनी. पर हिन्दी वह इतनी अच्छी लिख लेती हैं कि देखकर आश्चर्य होता है.

यह किताब ऐसे तो एक बड़े ख़ानदान का स्मरन है. पर इस के आगे इस किताब का विस्तार है. यह एक समय का एक संक्षिप्त समाजी इतिहास है. इसमें बड़े अच्छे क़िस्सों का ज़िकर है, उनसे सबक़ मिलते हैं, उन्होंने हमारे जीवन पर क्या असर डाला, इसकी झांकी मिलती है.

एक बार जो इस पुस्तक को उठा लेगा वह इसे बिना पूरा किये न छोड़ेगा, यह मुझे विश्वास है. इतनी अच्छी पुस्तक और ख़राब छपाई, यह देखकर मन कुढ़ जाता है. आशा है प्रकाशक दोबारा अच्छे टाइप में इस अनमोल रत्न को छापेंगे. —मुस्तफ़ा हैदर नक़वी

भूदान तहरीक का ख़ाका

लिखने वाले—मुहम्मद हुसैन अन्सारी त्यागी; निकालने वाले—अन्सारी मंज़िल भदाइ (बनारस); लिखावट—उर्दू; सफ़हा—23; दाम—चार आने.

मुहम्मद हुसैन साहब अन्सारी ने गांधी जी की बहुत सेवा की है. महात्मा जी ने अपने ख़त में उन्हें लिखा है—"जिस तरह तुमने हमारी सेवा की है वैसे ही देश की सेवा करते रहो, मैं तुमको अब भी अपना बेटा ही मानता हूं." अन्सारी साहब गांधी भक्त हैं और गांधी जी के उसूलों पर चलना चाहते हैं. आजकल विनोबा जी के भूदान पर अपनी सारी ताक़त लगाए हैं. सर्वोदय साहित्य उर्दू में बहुत कम है. अन्सारी साहब ने यह किताब लिखकर भूदान का परिचय उर्दू प्रेमी जनता से कराया है.

इस किताब में भूदान की तहरीक, उसकी शुरूआत, उसके दर्शन, उसकी तरक़्क़ी, सब पर थोड़ी थोड़ी रोशनी पड़ती है और गांववाला जो शब्दों के बवन्डर में नहीं फंसता इस किताब को पढ़कर भूदान को मोटे तौर पर अच्छी तरह समझ सकता है. —मुस्तफ़ा हैदर नक़वी

سنیئے کاکا صاحب !

لکھنے والی—ریحانہ طیبب جی؛ نکالنے والے—ھندستانی پرچار سبھا؛ لکھاوٹ ھندی؛ صفحہ—270 دام—دو روپیہ چار آنہ .

طیبب جی خاندان سے آزادی کے آندولن سے دلچسپی رکھنے والے سبھی واقف ھیں . ریحانہ جی اُسی باغ کی ایک پھول ھیں . کاکا صاحب نے اچھا ظاھر کی کہ ریحانہ جی اپنے خاندان کے بارے میں اُنھیں کچھ سنائیں اور اُنھوں نے کہا—سنیئے کاکا صاحب ! یہ نام ریحانہ جی کی شیلی سے میل کھاتا ھے . اُن کی قلم ایسی چلتی ھے جیسی اُن کی زبان چلتی ھو . کہیں بناوٹ نہیں' سیدھی سپاٹ بات ! جیسے دو آدمی باتیں کر رھے ھوں .

ریحانہ جی پارسی ھیں' انگریزی واتاورن میں رھیں' گجراتی انگریزی کے بعد ان کی بھاشا بنی . پر ھندی وہ اتنی اچھی لکھ لیتی ھیں کہ دیکھکر آشچریہ ھوتا ھے .

یہ کتاب ایسے تو ایک بڑے خاندان کا اسمرن ھے . پر اِس کے آگے اِس کتاب کا وستار ھے . یہ ایک سمئے کا ایک سنکچھپت سماجی اِتہاس ھے . اِس میں بڑے اچھے قصوں کا ذکر ھے' اُن سے سبق ملتے ھیں' اُنھوں نے ھمارے جیون پر کیا اثر ڈالا' اس کی جھانکی ملتی ھے .

ایک بار جو اِس پستک کو اُٹھالے گا وہ اِسے بنا پورا کئے نہ چھوڑے گا' یہ مجھے وشواس ھے . اتنی اچھی پستک اور خراب چھپائی' یہ دیکھکر من کڑھ جاتا ھے . آشا ھے پرکاشک دوبارا اچھے ٹائپ میں اِس انمول رتن کو چھاپیں گے .

—مصطفیٰ حیدر نقوی

بھودان تحریک کا خاکہ

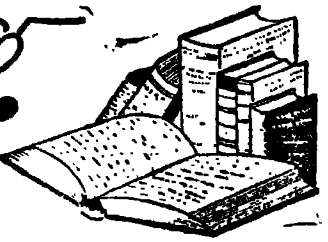
لکھنے والے—محمد حسین انصاری تیاگی؛ نکالنے والے—انصاری منزل بھدرھی (بنارس)؛ لکھاوٹ—اُردو؛ صفحہ—23؛ دام—چار آنہ .

محمد حسین صاحب انصاری نے گاندھی جی کی بہت سیوا کی ھے . مہاتما جی نے اپنے خط میں اُنھیں لکھا ھے—"جس طرح تم نے ھماری سیوا کی ھے ویسے ھی دیش کی کرتے رھو' میں تم کو اب بھی اپنا بیٹا ھی مانتا ھوں ." انصاری صاحب گاندھی بھکت ھیں اور گاندھی جی کے اصولوں پر چلنا چاھتے ھیں . آجکل ونوباجی کے بھودان پر اپنی ساری طاقت لگائے ھیں . سرو ودے ساھتیہ اُردو میں بہت کم ھے . انصاری صاحب نے یہ کتاب لکھکر بھودان کا پریچے اُردو پریمی جنتا سے کرایا ھے .

اس کتاب میں بھودان کی تحریک' اُس کی شروعات' اُس کے درشن' اُس کی ترقی' سب پر تھوڑی تھوڑی روشنی پڑتی ھے اور گاؤں والا جو شبدوں کے بونڈر میں نہیں پھنستا اِس کتاب کو پڑھکر بھودان کو موٹے طور پر اچھی طرح سمجھ سکتا ھے .

—مصطفیٰ حیدر نقوی

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

हिन्दी पाठावली—दूसरी किताब

संपादक—गिरिराज किशोर, नरेन्द्र अंजरिया; निकालने वाले—गुजराती विद्यापीठ, अहमदाबाद; लिखावट—हिन्दी; सफ़े—178; दाम—एक रुपया चार आना.

यह पुस्तक विद्यापीठ ने अपनी तीसरी परीक्षा के लिये तैयार की है. इसमें गद्य और पद्य दोनों हैं. इस संग्रह में पाठों और काव्यों के चुनने में भाशा की सरलता और उसके बहाव का ख़्याल रखा गया है.

यह पुस्तक हमारी पाठावलियों से बिल्कुल अलग है. हमारी पुस्तकें कठिन, ठस, नीरस और बेमतलब सी इसके मुक़ाबिले में दीख पड़ती हैं. इस पुस्तक से हमें प्रेरना लेनी चाहिये.

हिन्दी के विकास में अहिन्दी भाशियों ने शायद अधिक सहयोग दिया है, हम तो केवल रोड़े ही अटकाते रहे हैं. हमारी परम्परा रही है कि यदि कोई थोड़ा करे तो हम अधिक आभार मानते हैं. पर हम यह सब कुछ भूल गए हैं. आज अहिन्दी भाशी लेखकों की रचनाएं हमारे कोर्स में कहां हैं ? दक्खिन में बहुत से हिन्दी प्रचारक हिन्दी में रचनाएं करते हैं, पर हम अपने घमन्ड में उन्हें कोई स्थान नहीं देते.

विद्यापीठ ने यह पुस्तक तैयार करके हमें रास्ता दिखाया है. इसमें हिन्दी के लेखक और अहिन्दी भाशी हिन्दी लेखकों की रचनाएं एक साथ रखी गई हैं, इसमें उर्दू के साथ भी भेद भाव नहीं बरता गया. यह है वह हिन्दी जो सबकी हिन्दी होगी, जो राश्ट्र भाशा होगी. हमारी पुस्तकों की हिन्दी अप्रगतिशील और 'कूप जल' के समान है, बहता नीर इस पुस्तक की हिन्दी है.

आशा है विद्यापीठ दूसरे संग्रह भी शीघ्र निकालेगी और सारे देश में इन संग्रहों का स्वागत होगा.

—मुस्तफ़ा हैदर नक़वी

ھندی پاٹھا ولی—دوسری کتاب

سمپادک—گری راج کشور، نریندر انجریا؛ نکالنے والے—گجراتی ودیاپیٹھ، لکھاوٹ—ھندی؛ صفحے 178؛ دام—اک روپیہ چار آنہ۔

یہ پستک ودیاپیٹھ نے اپنی تیسری پریکشا کے لئے تیار کی ھے. اِس میں گدیہ اور پدیہ دونوں ھیں. اِس سنگرہ میں پاٹھوں اور کاویوں کے چننے میں بھاشا کی سرلتا اور اُس کے بہاؤ کا خیال رکھا گیا ھے .

یہ پستک ھماری پاٹھاولیوں سے بالکل الگ ھے . ھماری پستکیں کٹھن، ٹھس، نیرس اور بے مطلب سی اِس کے مقابلے میں دکھ پڑتی ھیں. اِس پستک سے ھمیں پریرنا لینی چاھئے .

ھندی کے وکاس میں اھندی بھاشیوں نے شاید ادھک سہیوگ دیا ھے، ھم تو کیول روڑے ھی اٹکاتے رھے ھیں . ھماری پرمپرا رھی ھے کہ یدی کوئی تھوڑا کرے تو ھم ادھک آبھار مانتے ھیں . پر ھم یہ سب کچھ بھول گئے ھیں . آج اھندی بھاشی لیکھکوں کی رچنائیں ھمارے کورس میں کہاں ھیں؟ دکھن میں بہت سے ھندی پرچارک ھندی میں رچنائیں کرتے ھیں، پر ھم اپنے گھمنڈ میں اُنھیں کوئی استھان نہیں دیتے .

ودیاپیٹھ نے یہ پستک تیار کرکے ھمیں راستہ دکھایا ھے . اِس میں ھندی کے لیکھک اور اھندی بھاشی ھندی لیکھکوں کی رچنائیں ایک ساتھ رکھی گئی ھیں، اِس میں اُردو کے ساتھ بھی بھیدبھاؤ نہیں برتا گیا . یہ ھے وہ ھندی جو سب کی ھندی ھوگی، جو راشٹر بھاشا ھوگی . ھماری پستکوں کی ھندی اپرگتی‌شیل اور 'کوپ جل' کے سمان ھے، بہتا نیر اِس پستک کی ھندی ھے .

آشا ھے ودیاپیٹھ دوسرے سنگرہ بھی شیگھر نکالیگی اور سارے دیش میں اِن سنگرھوں کا سواگت ھوگا .

—مصطفیٰ حیدر نقوی

बोली में पचास साठ फ़ी सदी द्राविड़ी लफ़्ज़ हैं, चालीस फ़ी सदी तुर्की, अर्बी, फ़ार्सी, अंग्रेज़ी वग़ैरा के. आर्य भाशा के मुश्किल से पांच फ़ी सदी लफ़्ज़ होंगे और वह भी ज़्यादातर पूजा पाठ के जिनका हमारे जीवन से, हमारे काम धन्दों से, बहुत ही कम वास्ता है.

जो कुछ मैं ऊपर लिख आया हूं उसका वास्ता बोली से है, लिखी से नहीं. लिखी को पंडित साहित्य भाशा भी कहते हैं जो असल में साहत (मरी हुई) ज़बान है. लिखी में आजकल जो धांधली मचाई जा रही है वह सब पर राशन है और ख़ूबी यह कि धांधली मचाने वाले बड़े विद्वान और महावीर गिने जाते हैं, क्योंकि न उन्होंने अपनी बोली कभी पढ़ी और न कोई किताब इल्म बोली की पढ़ी.

तीसरा दृश्य इससे भी अनोखा है. खेती बाड़ी और कपड़ा बुनने को छोड़कर जितने लफ़्ज़ हाथ के काम की बाबत हैं वह लगभग सब तुर्की, फ़ार्सी और दूसरी बिदेसी बोलियों के हैं, रोटी और तवा ही नहीं, पकाना, उबालना, भूनना और शायद तलना भी तुर्की है. येही हाल सीने पिरोने का है. सीना पिरोना ही नहीं, तुरपना, बखिया, संजाफ़, गोट, कुर्ता, पाजामा, क़मीज़, कोट वग़ैरा तक़रीबन सभी बिदेसी. तुरखान, लोहार, राज, मज़दूर के जितने औज़ार हैं उनका नाम बिदेसी, यहां तक कि मेख़, कील, बिरन्जी तीनों लफ़्ज़ तुर्की के. समझ में नहीं आता यह हमारी कोरी भारती सभ्यता जिसपर हम सब नाज़ करते हैं कितने पानी में थी. और तो और, पढ़ने लिखने में भी क़लम, दवात, काग़ज़, स्याही पेंसिल वग़ैरा सब बिदेसी. संस्कृत का भी यही हाल है. लफ़्ज़ लिपि फ़ार्सी में से लिया गया. मेला स्याही और मेलानधिक दवात यूनानी में से.

चौथा दृश्य तो इल्म बोली का एक अनटूट क़ानून है जो सब ज़बानों पर लागू है, लेकिन जो हमारी बोली में आसानी से परखा जा सकता है. क़ानून यह है कि बोली का बोली पर असर पड़ता है, लिखी का नहीं या नहीं के बराबर. इन दो हज़ार बरसों में संस्कृत का हमारी बोली पर बराय नाम ही साया पड़ा. इसी तरह मुसलमानों की लिखी भाशा फ़ार्सी थी या अर्बी. लेकिन बोली उन मुसलमानों की जो यहां आये तुर्की थी, इसलिये बिदेसी लफ़्ज़ों में अक्सर लफ़्ज़ तुर्की के हैं. उसकी सबसे अच्छी मिसाल शायद तम्बाकू की है. तम्बाकू लफ़्ज़ तो आया अमरीका से जहां से तम्बाकू आया, लेकिन उसके बारे में और जितने लफ़्ज़ हमारी बोली में आए तक़रीबन सब तुर्की के है—जैसे हुक्क़ा, क़लई, कुल्फ़ी, नै, नैचा, गट्टा, चिलम, तवा, सुल्फ़ा, पेचवान, शायद हुक़्क़ा पीना भी किसी लफ़्ज़ का तरजुमा हो. साफ़ है कि हमारे हिन्दी वालों को इस क़ानून से अपनी जानकारी बढ़ानी चाहिये.

بولی میں پچاس ساٹھ فی صدی دراوڑی لفظ ھیں' چالیس فی‌صدی ترکی' عربی' فارسی' انگریزی وغیرہ کے . آریہ بھاشا کے مشکل سے پانچ فی‌صدی لفظ ھونگے اور وہ بھی زیادہ تر پوجا پاٹھ کے جن کا ھمارے جیون سے' ھمارے کام دھندوں سے' بہت ھی کم واسطا ھے .

جو کچھ میں اوپر لکھ آیا ھوں اس کا واسطا بولی سے ھے' لکھی سے نہیں . لکھی کو پنڈت ساھتیہ بھاشا بھی کہتے ھیں جو اصل میں ساھت (مری ھوئی) زبان ھے . لکھی میں آجکل جو دھاندھلی مچائی جا رھی ھے وہ سب پر روشن ھے اور خوبی یہ کہ یہ دھاندھلی مچانے والے بڑے ودوان اور مہاویر گنے جاتے ھیں' کیونکہ نہ انھوں نے اپنی بولی کبھی پڑھی اور نہ کوئی کتاب علم بولی کی پڑھی .

تیسرا درشیہ اس سے بھی انوکھا ھے . کھیتی باڑی اور کپڑا بننے کو چھوڑ کر جتنے لفظ ھاتھ کے کام کی بابت ھیں وہ لگ بھگ سب ترکی' فارسی اور دوسری بدیسی بولیوں کے ھیں' روٹی اور توا ھی نہیں' پکانا' ابالنا' بھوننا اور شاید تلنا بھی ترکی ھے . یہی حال سینے پرونے کا ھے . سینا پرونا ھی نہیں' ترپنا' بخیہ' سنجاف' گوٹ' کرتا' پاجامہ' قمیض' کوٹ وغیرہ تقریباً سبھی بدیسی . ترکھان' لوھار' راج' مزدور کے جتنے اوزار ھیں ان کا نام بدیسی' یہاں تک کہ میخ' کیل' برنجی تینوں لفظ ترکی کے . سمجھ میں نہیں آتا یہ ھماری کوری بھارتی سبھیتا جس پر ھم سب ناز کرتے ھیں کتنے پانی میں تھی . اور تو اور' پڑھنے لکھنے میں بھی قلم' دوات' کاغذ' سیاھی' پنسل وغیرہ سب بدیسی' سنسکرت کا بھی یہی حال ھے . لفظ لپی فارسی میں سے لیا گیا میلا' سیاھی اور میلا ندھک دوات یونانی میں سے .

چوتھا درشیہ تو علم بولی کا ایک ان ٹوٹ قانون ھے جو سب زبانوں پر لاگو ھے' لیکن جو ھماری بولی میں آسانی سے پرکھا جا سکتا ھے . قانون یہ ھے کہ بولی کا بولی پر اثر پڑتا ھے' لکھی کا نہیں یا نہیں کے برابر . ان دو ھزار برسوں میں سنسکرت کا ھماری بولی پر برائے نام ھی سایہ پڑا . اسی طرح مسلمانوں کی لکھی بھاشا فارسی تھی یا عربی . لیکن بولی ان مسلمانوں کی جو یہاں آئے ترکی تھی' اس لئے بدیسی لفظوں میں اکثر لفظ ترکی کے ھیں . اس کی سب سے اچھی مثال شاید تمباکو کی ھے . تمباکو لفظ تو آیا امریکہ سے جہاں سے تمباکو آیا' لیکن اس کے بارے میں اور جتنے لفظ ھماری بولی میں آئے تقریباً سب ترکی کے ھیں جیسے حقہ' قلعی' کلفی' نے' نیچہ' گٹا' چلم' توا' سلفہ' پیچوان' شاید حقہ پینا بھی کسی ترکی لفظ کا ترجمہ ھو . صاف ھے کہ ھمارے ھندی والوں کو اس قانون سے اپنی جانکاری بڑھانی چاھئے .

स्वरों को वह कैसे बोलते थे. द्रावड़ी बोली की वह आवाज़ें जो आर्य भाषा में बिल्कुल नहीं थीं—जैसे मोरधन्य ट, ठ, ड, ढ, ड़े और ण वग़ैरा—इस भाषा और प्राकृत में ज़ोर पकड़ गईं. ग्रामर भी बदली. और अगरचे कुछ लफ़्ज़ आर्य भाषा के और ख़ासकर वह जिनका वास्ता पूजा पाठ से था इस प्राकृत में लिये गये. देसी भाषा के लफ़्फ़ जो प्राकृत में आये सत्तर, अस्सी फ़ीसदी से कम न थे. फ़र्क़ सिर्फ़ इतना रहा कि देशी भाषा के लफ़्ज़ जो प्राकृत में लिये गये ज्यों के त्यों लिये गये और आर्य भाषा के जो लिये गये उन्हें छोटा करके और देसी गलों के म्वाफ़िक़ बनाकर लिया गया.

इस प्राकृत में से निकलीं हमारी सारी हिन्दुस्तान की बोलियां और इस प्राकृत में से ही गढ़ी गई वह लिखी भाषा जिसे लोग संस्कृत कहते हैं. लिखी और बोली में बड़ा फ़र्क़ यह है कि लिखी के लफ़्ज़ लम्बे होते रहते हैं और बोली के छोटे. बड़ी कोशिशों से इस लिखी में आर्य भाषा के कुछ लफ़्ज़ और ठूंसे गये, लेकिन फिर भी बहुत से लफ़्ज़ देसी बोली के ही इसमें लिये गये लेकिन ज़रा उनकी शकल बिगाड़ कर यानी लम्बी करके. संस्कृत में कितने लफ़्ज़ आर्य भाषा के और कितने देसी बोली के, इसकी अभी तक किसी ने पूरी जांच नहीं की. लेकिन मेरा अनुमान यह है कि इसमें कम से कम 50 फ़ी सदी लफ़्ज़ द्रावड़ी के, 20 फ़ी सदी तुर्की, अर्बी वग़ैरा के हैं जो यहां की प्राकृत में रम गये थे. इन लफ़्ज़ों को आर्य भाषा का जताने के लिये इन लफ़्ज़ों की झूटी आर्य धातु (जड़ें) बनाई गयीं और उसपर ऐसा मुलम्मा चढ़ाया गया कि हमारे अक्सर लोग, अनपढ़ ही नहीं विद्वान भी, संस्कृत को शुद्ध आर्य भाषा समझते हैं. जिसे देखो वह यही कहता है कि हिन्दुस्तान की बोलियां संस्कृत में से निकलीं और तमाशा यह है कि इसके सबूत में अक्सर वही शब्द पेश करता है जो संस्कृत ने हमारी देसी बोली से लिये. चुनांचे हाल ही में मैंने पंडित सुन्दर लाल जैसे आज़ाद दिमाग़ का एक आर्टिकिल पढ़ा जिसमें उन्होंने यह साबित करने की कोशिश की थी कि मद्रास की जो द्रावड़ी ज़बानें कहलाती हैं उनमें बहुत से संस्कृत के लफ़्ज़ लिये गये हैं और इसलिये मद्रास वालों को हिन्दी सीखने में मुश्किल नहीं होनी चाहिये. मुझे अब याद नहीं कि मिसाल के तौर पर कौन से लफ़्ज़ पंडित जी ने संस्कृत के बताये थे, लेकिन वह सब नीर, पाप, चोर, बैर, चूमना, माला की क़िस्म के थे जो संस्कृत ने द्रावड़ी से लिये हैं. यहां इतना और जता देने की ज़रूरत है कि हमारी हिन्दुस्तानी, पंजाबी, राजस्थानी, ब्रज वग़ैरा पुरानी द्रावड़ी यानी प्राकृत के बहुत ज़्यादा नज़दीक हैं बनिस्बत तामिल, तैलेगू या मल्यालम के. डाक्टर एच. हेरास (H. Heras) की यह राय सची मालूम होती है कि हिन्दुस्तानी और पंजाबी बोलियां ही द्रावड़ी से नहीं निकलीं, उनके बोलने वाले भी असली द्रावड़ी हैं. आज हमारी

سوروں کو وہ کیسے بولتے تھے . دراوڑی بولی کی وہ آوازیں جو آریہ بھاشا میں بالکل نہیں تھیں—جیسے موردھینہ ٹ، ٹھ، ڈ، ڈھ، ڑ اور ڑاں وغیرہ—اس بھاشا اور پراکرت میں زور پکڑ گئیں . گرامر بھی بدلی . اور اگرچہ کچھ لفظ آریہ بھاشا کے اور خاصکر وہ جن کا واسطا پوجا پاٹھ سے تھا اس پراکرت میں لئے گئے . دیسی بھاشا کے لفظ جو پراکرت میں آئے ستر، اسی فی‌صدی سے کم نہ تھے . فرق صرف اتنا رہا کہ دیسی بھاشا کے لفظ جو پراکرت میں لئے گئے جیوں کے تیوں لئے گئے اور آریہ بھاشا کے جو لئے گئے انہیں چھوٹا کر کے اور دیسی گلوں کے موافق بنا کر لیا گیا .

اس پراکرت میں سے نکلیں ہماری ساری ہندستان کی بولیاں اور اس پراکرت میں سے ہی گڑھی گئی وہ لکھی بھاشا جسے لوگ سنسکرت کہتے ہیں . لکھی اور بولی میں بڑا فرق یہ ہے کہ لکھی کے لفظ لمبے ہوتے رہتے ہیں اور بولی کے چھوٹے . بڑی کوششوں سے اس لکھی میں آریہ بھاشا کے کچھ لفظ اور ٹھونسے گئے لیکن پھر بھی بہت سے لفظ دیسی بولی کے ہی اس میں لئے گئے، لیکن ذرا ان کی شکل بگاڑ کر یعنے لمبی کر کے . سنسکرت میں کتنے لفظ آریہ بھاشا کے اور کتنے دیسی بولی کے، اس کی ابھی تک کسی نے پوری جانچ نہیں کی . لیکن میرا انومان یہ ہے کہ اس میں کم سے کم 50 فی‌صدی لفظ دراوڑی کے، 20 فی‌صدی ترکی، عربی وغیرہ کے ہیں جو یہاں کی پراکرت میں رم گئے تھے . ان لفظوں کو آریہ بھاشا کا جتانے کے لئے ان لفظوں کی جھوٹی آریہ دھاتو (جڑیں) بنائی گئیں اور اس پر ایسا ملمع چڑھایا گیا کہ ہمارے اکثر لوگ، انپڑھ ہی نہیں ودوان بھی، سنسکرت کو شدھ آریہ بھاشا سمجھتے ہیں . جسے دیکھو وہ یہی کہتا ہے کہ ہندستان کی بولیاں سنسکرت میں سے نکلیں اور تماشا یہ ہے کہ اس کے ثبوت میں اکثر وہی شبد پیش کرتا ہے جو سنسکرت نے ہماری دیسی بولی سے لئے . چنانچہ حال ہی میں میں نے پنڈت سندر لال جیسے آزاد دماغ کا ایک آرٹیکل پڑھا جس میں انہوں نے یہ ثابت کرنے کی کوشش کی تھی کہ مدراس کی جو دراوڑی زبانیں کہلاتی ہیں ان میں بہت سے سنسکرت کے لفظ لئے گئے ہیں اور اس لئے مدراس والوں کو ہندی سیکھنے میں مشکل نہیں ہونی چاہئے . مجھے اب یاد نہیں کہ مثال کے طور پر کون سے لفظ پنڈت جی نے سنسکرت کے بتائے تھے لیکن وہ سب نیر، پاپ، چور، بیر، چومنا، مالا کی قسم کے تھے جو سنسکرت نے دراوڑی سے لئے ہیں . یہاں اتنا اور جتادینے کی ضرورت ہے کہ ہماری ہندستانی، پنجابی، راجستھانی، برج وغیرہ پرانی دراوڑی یعنی پراکرت کے بہت زیادہ نزدیک ہیں بنسبت تامل، تیلیگو یا ملیالم کے . ڈاکٹر ایچ. ہیراس (H. Heras) کی یہ رائے سچی معلوم ہوتی ہے کہ ہندستانی اور پنجابی بولیاں ہی دراوڑی سے نہیں نکلیں، ان کے بولنے والے بھی اصلی دراوڑی ہیں . آج ہماری

चाची, ताऊ, ताई, बाबा, दादा, दादी, नाना, नानी, मामा, मामी, मौसी, मौसा वग़ैरा. लेकिन शादी ब्याह को रिश्तेदारियों में अक्सर आर्य भाशा आ धमकी है—जैसे सास, ससुर, नन्दोई, नन्द, साला, साली, देवर, देवरानी जेट, जेठानी, बहू, विधवा, सुहागिन वग़ैरा. यहां देसी बोली से मुराद है उस बोली की जो आर्यों के आने से पहले यहां बोली जाती थी. यह द्रावड़ी जबान थी जिसमें मिस्री, तुर्की और दूसरी पच्छिमी जबानों की काफ़ी पुट थी. आर्य भाशा से मुराद है उस बोली की जो आर्य हिन्दुस्तान में आने से पहले बोलते थे.

निज की रिश्तेदारियों और ब्याह की रिश्तेदारियों में यह अन्तर क्यों? यह फ़र्क़ उस जमाने की यादगार है जब आर्यों ने हिन्दुस्तान में आकर यहां के आदमियों को तो मार भगाया और उनकी औरतों को जबरदस्ती घर में रख लिया. बावजूद हमारे पुरानों की कहानियों के इसमें तो आजकल शक की गुंजाइश नहीं कि जब आर्य क़ौम यहां आई थी वह चरवाहा थी और इधर उधर घूमती फिरती थी. न उन्हें खेती बाड़ी का काम अच्छी तरह से आता था, न वह मकान वग़ैरा बनाना जानते थे. उनसे यहां के लोग बहुत ज्यादा सुलझे हुए थे. जो बच्चे हुए उन्होंने अपनी माओं की बोली सीखी. क़ुदरती तौर पर जो निजी रिश्तेदारियां थीं वह बराबर देसी बोली की रहीं और जो आर्यों से ब्याह की सी रिश्तेदारियां क़ायम हुईं उन पर आर्य भाशा का असर पड़ा.

दूसरा दृश्य भी इससे मिला जुला है. जैसा कि ऊपर लिख आया हूं, आर्य जब यहां आए तो ख़ासे उजड्ड थे. यहां के द्रावड़ी ख़ासे सुसंस्कृत थे. जब दो क़ौमें मिलती हैं, एक उजड्ड और एक सुसंस्कृत, तो चाहे मुल्की फ़तह उजड्डों की ही हो, जो कलचर पैदा होता है वह सारा नहीं तो बहुत कुछ सुसंस्कृत फ़रीक़ का ही होता है. चुनांचे यहां भी ऐसा ही हुआ. आर्य अपने देवताओं—अग्नि, इन्द्र, मृत्यु वग़ैरा—को छोड़ कर शिव जी के पांव पड़े और पीपल को पूजने लगे जो दोनों द्रावड़ों के देवता थे. चूंकि बोली कलचर का सब से बड़ा अंग है इसलिये यहां एक ऐसी बोली पैदा हुई जिसे वेदों के जमाने में भाशा कहते थे और जो बाद में प्राकृत कहलाने लगी. इसमें द्रावड़ी 95 फ़ीसदी नहीं तो 90 फ़ी सदी घुस गई और आर्य भाशा पीछे रह गई. सब से ज्यादा असर तो उनकी आवाजों में हुआ. आर्य भाशा की जितनी आवाजें ऐसी थीं जो देसी बोली में नहीं पाई जाती थीं वह ऐसी ग़ायब हुईं जैसे गधे के सर से सींग, मसलन भाशा की ग़ैन, ख़े, क़ाफ़, फ़े जाती रहीं और अगर मुसलमान उन आवाजों को फिर यहां पर न लाते तो हमें उनका ज्ञान ही न होता, जैसे हमें उनके स्वरों ऋ, ॠ, लृ, ॡ का अब तक ज्ञान नहीं कि इन

چاچی، تاؤ، تائی، بابا، دادا، دادی، نانا، نانی، ماما، مامی، موسی، موسا وغیرہ. لیکن شادی بیاہ کی رشتہداریوں میں اکثر آریہ بھاشا آدھمکی ہے—جیسے ساس، سسر، نندوئی، نند، سالا، سالی، دیور، دیورانی، جیٹھ، جیٹھانی، بہو، ودھوا، سہاگن، وغیرہ. یہاں دیسی بولی سے مراد ہے اس بولی کی جو آریوں کے آنے سے پہلے یہاں بولی جاتی تھی. یہ دراوڑی زبان تھی جس میں مصری، ترکی اور دوسری پچھمی زبانوں کی کافی پٹ تھی. آریہ بھاشا سے مراد ہے اس بولی کی جو آریہ ہندستان میں آنے سے پہلے بولتے تھے.

نج کی رشتہداریوں اور بیاہ کی رشتہداریوں میں یہ انتر کیوں؟ یہ فرق اُس زمانہ کی یادگار ہے جب آریوں نے ہندستان میں آکر یہاں کے آدمیوں کو تو مار بھگایا اور اُن کی عورتوں کو زبردستی گھر میں رکھ لیا. باوجود ہمارے پرانوں کی کہانیوں کے اِس میں تو آجکل شک کی گنجائش نہیں کہ جب آریہ قوم یہاں آئی تھی وہ چرواہا تھی اور اِدھر اُدھر گھومتی پھرتی تھی. نہ انہیں کھیتی باڑی کا کام اچھی طرح سے آتا تھا، نہ وہ مکان وغیرہ بنانا جانتے تھے. اُن سے یہاں کے لوگ بہت زیادہ سلجھے ہوئے تھے. جو بچے ہوئے انہوں نے اپنی ماؤں کی بولی سیکھی. قدرتی طور پر جو نجی رشتہداریاں تھیں وہ برابر دیسی بولی کی رہیں اور جو آریوں سے بیاہ کی سی رشتہداریاں قائم ہوئیں اُن پر آریہ بھاشا کا اثر پڑا.

دوسرا درشیہ بھی اس سے ملا جلا ہے. جیسا کہ اُوپر لکھ آیا ہوں، آریہ جب یہاں آئے تو خاصے اُجڈ تھے. یہاں کے دراوڑی خاصے سوسنسکرت تھے. جب دو قومیں ملتی ہیں، ایک اُجڈ اور ایک سوسنسکرت، تو چاہے ملکی فتح اُجڈوں کی ہو، جو کلچر پیدا ہوتا ہے وہ سارا نہیں تو بہت کچھ سوسنسکرت فریق کا ہی ہوتا ہے. چنانچہ یہاں بھی ایسا ہی ہوا. آریہ اپنے دیوتاؤں—اگنی، اندر، مرتیو وغیرہ—کو چھوڑکر شوجی کے پاؤں پڑے اور پیپل کو پوجنے لگے جو دونوں دراوڑوں کے دیوتا تھے. چونکہ بولی کلچر کا سب سے بڑا انگ ہے اِسلئے یہاں ایک ایسی بولی پیدا ہوئی جسے ویدوں کے زمانہ میں بھاشا کہتے تھے اور جو بعد میں پراکرت کہلانے لگی. اس میں دراوڑی 95 فیصدی نہیں تو 90 فیصدی گھس گئی اور آریہ بھاشا پیچھے رہ گئی. سب سے زیادہ اثر تو ان کی آوازوں میں ہوا. آریہ بھاشا کی جتنی آوازیں ایسی تھیں جو دیسی بولی میں نہیں پائی جاتی تھیں وہ ایسی غائب ہوئیں جیسے گدھے کے سر سے سینگ، مثلاً آریہ بھاشا کی غ، خ، ف، ق، ز جاتی رہیں اور اگر مسلمان ان آوازوں کو پھر یہاں پر نہ لاتے تو ہمیں اُن کا گیان ہی نہ ہوتا، جیسے ہمیں اُن کے سوروں رِ، رِی، لِر، لری کا اب تک گیان نہیں کہ اُن

बोली—एक इतिहास (तवारीख़)

(मदन गोपाल)

इल्म बोली के माहिर कहते हैं कि हर देस की बोली उस देस की पुराने सामाजिक जीवन का सच्चा इतिहास होती है. किताबें झूटी हो सकती हैं और अगर वह एक फ़रीक़ या एक फ़रीक़ के ढिंढोरचियों ने लिखी हों तो अक्सर झूटी होती हैं, लेकिन बोली कभी झूट नहीं बोलती और न बोल सकती है.

बोली के इस एतिहासिक रूप की मिसाल जो आम तौर पर हिन्दुस्तान में मशहूर है वह अंग्रेज़ी की है. जहां तक मुझे जानकारी है हमने अपनी किसी बोली के एतिहासिक रूप को परखा ही नहीं, इसलिये मैं पहले अंग्रेज़ी मिसाल दर्ज करता हूं. ग्यारहवीं सदी में जब विलियम अव्वल ने इंग्लिस्तान फ़तह किया तो इंग्लिस्तान में जो बोली बोली जाती थी वह सेक्सन (Saxon) कहलाती थी. विलियम और उसके साथी नार्मन (Norman) एक क़िस्म की फ़्रांसीसी बोलते थे. उस ज़माने में सोना चांदी तो कम होता था मगर आदमी का धन उसके डंगर (जानवर) हुआ करते थे. हमारे इस शब्द 'धन' के असली माने हैं ही डंगर. जब नार्मनों की हकूमत जम गई तो वह सारे डंगरों के मालिक बन बैठे. जीते डंगरों की रखवाली सेक्सन लोग करते थे, इसलिये जीते डंगरों का नाम भी सेक्सन ही रहा. लेकिन चूंकि उन डंगरों का गोश्त खाते थे नार्मन, इसलिये उनके गोश्त का नाम नार्मन हुआ. मसलन Cow (गाय) सेक्सन और उसका गोश्त Beef नार्मन लफ़्ज़ है. इसी तरह से Sheep (भेड़), Pig (सूअर) और Deer (हिरन) सेक्सन ज़बान के लफ़्ज़ हैं, लेकिन उनके गोश्त के लिये Mutton, Pork और Venison तीनों नाम नार्मन बोली के हो गये. जीते और मरे हुए जानवरों के नाम का यह फ़र्क़ ग्यारहवीं बारहवीं सदी की धांधली का एक ऐसा सच्चा नक़्शा खींचता है जो जबतक अंग्रेज़ी ज़बान ज़िन्दा है क़ायम रहेगा.

हमारी बोली में भी हमारे पुराने सामाजिक जीवन की काफ़ी यादगारें क़ायम हैं, लेकिन चूंकि हमारे देस में हमें अपनी बोली सिखाने का दस्तूर आम नहीं इसलिये वह यादगारें हमारे ध्यान में नहीं लाई जातीं. दो चार नमूने अपनी समझ के अनुसार मैं नीचे दे रहा हूं.

हमारी बोली में जितनी निज की (पेट की) रिश्तेदारियां हैं वह सब ठेठ देसी बोली की हैं—जैसे मां, बाप, बेटा, बेटी, बहन, भाई, भाभी या भावज, जीजा, जीजी, चाचा,

بولی—ایک اِتہاس (تواریخ)

(مدن گوپال)

علم بولی کے ماہر کہتے ہیں کہ ہر دیس کی بولی اس دیس کی پرانے ساماجک جیون کا سچا اتہاس ہوتی ہے. کتابیں جھوٹی ہوسکتی ہیں اور اگر وہ ایک فریق کے ڈھنڈورچیوں نے لکھی ہوں تو اکثر جھوٹی ہوتی ہیں لیکن بولی کبھی جھوٹ نہیں بولتی اور نہ بول سکتی ہے.

بولی کے اِس اتیہاسک روپ کی مثال جو عام طور پر ہندوستان میں مشہور ہے انگریزی کی ہے. جہاں تک مجھے جانکاری ہے ہم نے اپنی کسی بولی کے اتیہاسک روپ کو پرکھا ہی نہیں، اس لئے میں پہلے انگریزی مثال درج کرتا ہوں. گیارھویں صدی میں جب ولیم اول نے انگلستان فتح کیا تو انگلستان میں جو بولی بولی جاتی تھی وہ سیکسن (Saxon) کہلاتی تھی. ولیم اور اس کے ساتھی نارمن (Norman) ایک قسم کی فرانسیسی بولتے تھے. اس زمانہ میں سونا چاندی تو کم ہوتا تھ مگر آدمی کا دھن اس کے ڈنگر (جانور) ہوا کرتے تھے. ہمارے اس شبد 'دھن' کے اصلی معنے ہیں ہی ڈنگر. جب نارمنوں کی حکومت جم گئی تو وہ سارے ڈنگروں کے مالک بن بیٹھے. جیتے ڈنگروں کی رکھوالی سیکسن لوگ کرتے تھے، اس لئے جیتے ڈنگروں کا نام بھی سیکسن ہی رہا. لیکن چونکہ ان ڈنگروں کا گوشت کھاتے تھے نارمن، اس لئے ان کے گوشت کا نام نارمن ہوا. مثلاً Cow (گاؤ) سیکسن اور اس کا گوشت Beef نارمن لفظ ہے. اسی طرح سے Sheep (بھیڑ) Pig (سور) اور Deer (ہرن) سیکسن زبان کے لفظ ہیں، لیکن ان کے گوشت کے لئے Mutton, Pork اور Venison تینوں نام نارمن بولی کے ہوگئے. جیتے اور مرے ہوئے جانوروں کے نام کا یہ فرق گیارھویں بارھویں صدی کی دھاندھلی کا ایک ایسا سچا نقشہ کھینچتا ہے جو جب تک انگریزی زبان زندہ ہے قائم رہیگا.

ہماری بولی میں بھی ہمارے پرانے ساماجک جیون کی کافی یادگاریں قائم ہیں، لیکن چونکہ ہمارے دیس میں ہمیں اپنی بولی سکھانے کا دستور عام نہیں اس لئے وہ یادگاریں ہمارے دھیان میں نہیں لائی جاتیں. دو چار نمونے اپنی سمجھ کے انوسار میں نیچے دے رہا ہوں.

ہماری بولی میں جتنی نج کی (پیٹ کی) رشتہ داریاں ہیں وہ سب ٹھیٹھ دیسی بولی کی ہیں—جیسے ماں، باپ، بیٹا، بیٹی، بہن، بھائی، بھابی یا بھاوج، جیجا، جی جی، چاچا،

देवता की सलाह से ऐसा ही फ़ैसला किया था. शायद उसको यह नहीं मालुम था कि नील नदी मिस्र में भी बहती है.

नाचते नाचते न्याम न्याम क़बीले के जादूगर डाक्टर ने नील नदी के देवता से जिसको वह हर साल भेंट दिया करता था, सलाह करने के लिये नदी में कूद पड़ा. उसकी इस हरकत को देखकर चुनाव बोर्ड के प्रतिधियों ने आश्चर्य के कारन दांतों तले उंगली दबाली. फिर वह बड़े जोश के साथ पानी पर अपनी जादुई छड़ी मारता हुआ धारे की तरफ़ बढ़ने लगा, पर तुरन्त ही उसने एक डुबकी लगाई. ऊपर उभरने पर इसका मुंह चुनाव की झोपड़ी के सामने था. उसके बाद वह नदी से निकल कर देवता की राय को प्रगट करने के लिये क़बीले के सरदार की तरफ़ बढ़ा. चूंकि नील के देवता ने स्वतंत्र सभा के पक्ष में राय देने की सलाह दी थी, इसलिये सरदार ने पूरे क़बीले समेत इसको वोट दिया.

इस चुनाव के नतीजे की घोशना होते ही सारे मिश्र में ख़ुशी की लहर दौड़ गई क्योंकि मिस्रियों की सूडान की समस्या पर बर्तानिया ऐसे शक्तिशाली देश के मुक़ाबले में सफलता प्राप्त हो गई. इसके अलावा इस नतीजे ने स्वेज़ कैनाल की समस्या पर बर्तानिया और मिस्र के झगड़े में मिस्र की पोजीशन पहले के बनिस्बत अधिक मज़बूत कर दी.

वास्तव में इस चुनाव के नतीजे ने बर्तानिया को गहरे सोच में डाल दिया है. स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए और सूडान में अपने मिटते हुए प्रभाव को दोबारा जमाने के लिये बर्तानिया ने हाथ पैर मारना शुरू कर दिया है. दुनिया ने इसका पहला प्रदर्शन सूडानी पार्लियामेन्ट के उद्घाटन के दिन यानी पहली मार्च' 4 को देखा जब कि दक्खिनी क़बीले और स्वतंत्र सभा के मेम्बरों ने सारे शहर ख़ारतूम में बलवा कर दिया और हवाई अड्डे पर जनरल नजीब के ख़िलाफ़ नारे लगाए जहां वह उद्घाटन की रस्म में शामिल होने के लिये क़ाहिरा से हवाई जहाज़ से आये थे.

इस बलवे के नतीजे में 3) आदमियों ने अपनी जान से हाथ धोया और सैकड़ों ज़खमी हुए और पार्लियामेन्ट का उद्घाटन न हो सका. पर राष्ट्री संगठन सभा के नेता और सूडान के नये प्रधान मंत्री इस्माईल अज़हरी की सख्त कोशिश और सुरक्षा के विशेश प्रबंध करने पर 10 माच '54 को सूडानी पार्लियामेन्ट का उद्घाटन वहां के गवर्नरजनरल सर राबर्ट हू के हाथों हुआ.

अज़हरी के मंत्री मन्डल ने अपने चुनाव के प्रोग्राम को अमली जामा पहनाने की पूरी कोशिश करना शुरू कर दिया है. पर अब देखना यह है कि बर्तानिया के शड्यंत्र का मुक़ाबला करने में कहां तक सफलता होती है.

دیوتا کی صلاح سے ایسا ہی فیصلہ کیا تھا . شاید اُس کو یہ نہیں معلوم تھا کہ نیل ندی مصر میں بھی بہتی ہے .

ناچتے ناچتے نیام نیام قبیلے کے جادوگر ڈاکٹر نے نیل ندی کے دیوتا سے، جس کو وہ ہر سال بھینٹ دیا کرتا تھا، صلاح کرنے کے لئے ندی میں کود پڑا. اُس کی اس حرکت کو دیکھ کر چناؤ بورڈ کے پرتیندھیوں نے آشچریہ کے کارن دانتوں تلے اُنگلی دبالی . پھر وہ بڑے جوش کے ساتھ پانی پر اپنی جادوئی چھڑی مارتا ہوا دھارے کی طرف بڑھنے لگا، پر ترنت ہی اُس نے ایک ڈبکی لگائی. اُوپر اُبھرنے پر اس کا منھ چناؤ کی جھونپڑی کے سامنے تھا . اُس کے بعد وہ ندی سے نکل کر دیوتا کی رائے کو پرگٹ کرنے کے لئے قبیلے کے سردار کی طرف بڑھا . چونکہ نیل کے دیوتا نے سوتنتر سبھا کے پکش میں رائے دینے کی صلاح دی تھی، اس لئے سردار نے پورے قبیلے سمیت اس کو ووٹ دیا .

اِس چناؤ کے نتیجے کی گھوشنا ہوتے ہی سارے مصر میں خوشی کی لہر دوڑ گئی کیونکہ مصریوں کو سوڈان کی سمسیا پر برطانیہ ایسے شکتیشالی دیش کے مقابلے میں سپھلتا پراپت ہوگئی . اِس کے علاوہ اس نتیجے نے سویز کینال کی سمسیا پر برطانیہ اور مصر کے جھگڑے میں مصر کی پوزیشن پہلے کے بنسبت ادھک مضبوط کردی .

واستو میں اِس چناؤ کے نتیجے نے برطانیہ کو گہرے سوچ میں ڈال دیا ہے. استھتی کی گمبھیرتا کو سمجھتے ہوئے اور سوڈان میں اپنے مٹتے ہوئے پربھاؤ کو دوبارہ جمانے کے لئے برطانیہ نے ہاتھ پیر مارنا شروع کردیا ہے . چنانچہ دنیا نے اس کا پہلا پردرشن سوڈانی پارلیامنٹ کے اُدگھاٹن کے دن یعنی پہلی مارچ 54' کو دیکھا جب کہ دکھنی قبیلے اور سوتنتر سبھا کے ممبروں نے سارے شہر خارتوم میں بلوہ کردیا اور ہوائی اڈے پر جنرل نجیب کے خلاف نعرے لگائے جہاں وہ اُدگھاٹن کی رسم میں شامل ہونے کے لئے قاہرہ سے ہوائی جہاز سے آئے تھے .

اس بلوے کے نتیجے میں 35 آدمیوں نے اپنی جان سے ہاتھ دھویا اور سیکڑوں زخمی ہوئے اور پارلیامنٹ کا ادگھاٹن نہ ہوسکا . پر راشٹری سنگھٹن سبھا کے نیتا اور سوڈان کے نئے پردھان منتری اِسمعیل اظہری کی سخت کوشش اور سرکچھا کے وشیش پربندھ کرنے پر 15 مارچ 54' کو سوڈانی پارلیامنٹ کا اُدگھاٹن وہاں کے گورنر جنرل سر رابرٹ ہو کے ہاتھوں ہوا .

اظہری کے منتری منڈل نے اپنے چناؤ کے پروگرام کو عملی جامہ پہنانے کی پوری کوشش کرنا شروع کردیا ہے . پر اب دیکھنا یہ ہے کہ برطانیہ کے شڈینتر کا مقابلہ کرنے میں کہاں تک سپھلتا ہوتی ہے .

प्रतिनिधियों को तेज धूप में बैठना पड़ा. लम्बे, दुबले पतले, नङ्गे और काले पुरुशों ने नाच शुरू किया. अपने पुरुशों के नाच से प्रभावित होकर बीच बीच में स्त्रियां जङ्गी नारे लगाती थीं. जब सरदार ने अपना बायां हाथ उठाया तो नाचने वालों ने जो कि थककर पसीने में तर हो चुके थे, नाच बन्द कर दिया. फिर तुरन्त ही औरतों ने नक़्क़ारे बजाना शुरू किया जिनकी आवाज़ से जंगल और रेगिस्तान गूंजने लगे. कुछ मिनट के बाद पूरा क़बीला सरदार के सामने झुक गया. सरदार के दोनों हाथ आकाश की तरफ़ उठाने पर सब लोगों ने खड़े होकर ज़ोर का नारा लगाया. फिर सरदार ने कुछ आश्चर्यजनक शब्द कहे जिसके बाद क़बीले के सब मर्दों ने सरदार का हाथ चूमा और अदब के साथ जादूगर डाक्टर के फ़ैसले का इन्तिज़ार करने लगे.

राश्ट्री संगठन सभा और स्वतंत्र सभा के प्रतिनिधि अलग बिलकुल शान्ति पूर्वक खड़े हुए इन न टलने वाली रस्मों के समाप्त होने का इन्तिज़ार कर रहे थे. हालांकि दोनों का काम अपनी अपनी सभाओं के लिये वोट प्राप्त करना था पर वह जानते थे कि जादूगर डाक्टर के फ़ैसले पर सारा क़बीला वोट देगा और इस सिलसिले में उनकी कोई भी कोशिश बिलकुल बेकार साबित होगी.

जादूगर डाक्टर ने अपनी हड्डियों और परों की टोपी समेत ज़मीन के देवताओं से सलाह करने के लिये अपना सर ज़मीन पर टेक दिया. देवताओं से सलाह करने में उसको पांच मिनट लगे. इसके बाद वह यकायक खड़ा हो गया. इसका सारा बदन अकड़ा हुआ था और उसने अपनी जादूई छड़ी को आकाश की तरफ़ उठा दिया.

दोनों सभाओं के प्रतिनिधियों ने समझ लिया कि उनके भाग्य के फ़ैसले का समय आ गया. उनकी आंखें इस प्रकार से छड़ी पर गड़ी हुई थीं जैसे कि वह घेरे से बाहर निकल जायेंगी. यकायक जादूगर डाक्टर ने औरतों की तालियों की आवाज़ पर युद्ध नृत्य शुरू कर दिया, फिर तीन बार गहरे झटके के साथ चक्कर काटने के बाद वह राश्ट्री संगठन सभा के प्रतिनिधि के सामने खड़ा हो गया और अपनी छड़ी उठा कर उसको आशीर्वाद दिया. उसने छड़ी को बड़े अदब से चूमकर जादूगर डाक्टर के सामने अपना सर झुका दिया.

इन रोचक रस्मों के बाद सरदार खड़ा हो गया और झोंपड़ी की तरफ़ चल पड़ा. उसके लड़ाकू पुरुश शान्ति पूर्वक उसके पीछे होलिये ताकि जादूगर डाक्टर के फ़ैसले के अनुसार राश्ट्री संगठन सभा के पक्ष में वोट दें.

पर न्याम न्याम नामक अर्द्ध जंगली क़बीले ने इसके बिलकुल उलटा फ़ैसला किया. उन्होंने स्वतंत्र सभा के पक्ष में राय दी, क्योंकि उनके जादूगर डाक्टर ने नील नदी के

پرتیندھیوں کو تیز دھوپ میں بیٹھنا پڑا. لمبے، دبلے پتلے، ننگے اور کالے پرشوں نے ناچ شروع کیا. اپنے پرشوں کے ناچ سے پربھاوت ہوکر بیچ بیچ میں استریاں جنگلی نعرے لگاتی تھیں. جب سردار نے اپنا بایاں ہاتھ اُٹھایا تو ناچنے والوں نے جو کہ تھک کر پسینے میں تر ہوچکے تھے، ناچ بند کردیا ۔ پھر ترنت ہی عورتوں نے نقارے بجانا شروع کیا جن کی آواز سے جنگل اور ریگستان گونجنے لگے ۔ کچھ منٹ کے بعد پورا قبیلہ سردار کے سامنے جھک گیا ۔ سردار کے دونوں ہاتھ آکاش کی طرف اُٹھانے پر سب لوگوں نے کھڑے ہوکر بڑے زور کا نعرہ لگایا ۔ پھر سردار نے کچھ آشچریہ جنک شبد کہے جس کے بعد قبیلے کے سب مردوں نے سردار کا ہاتھ چوما اور ادب کے ساتھ جادوگر ڈاکٹر کے فیصلے کا انتظار کرنے لگے ۔

راشٹری سنگٹھن سبھا کے پرتیندھی الگ بالکل شانتی پوروک کھڑے ہوئے اِن نہ ٹلنے والی رسموں کے سماپت ہونے کا انتظار کر رہے تھے ۔ حالانکہ دونوں کا کام اپنی اپنی سبھاؤں کے لئے ووٹ پراپت کرنا تھا پر وہ جانتے تھے کہ جادوگر ڈاکٹر کے فیصلے پر سارا قبیلہ ووٹ دیگا اور اِس سلسلے میں ان کی کوئی بھی کوشش بالکل بیکار ثابت ہوگی ۔

جادوگر ڈاکٹر نے اپنی ہڈیوں اور پروں کی ٹوپی سمیت زمین کے دیوتاؤں سے صلاح کرنے کے لئے اپنا سر زمین پر ٹیک دیا ۔ دیوتاؤں سے صلاح کرنے میں اُس کو پانچ منٹ لگے ۔ اِس کے بعد وہ یکایک کھڑا ہوگیا ۔ اُس کا سارا بدن اکڑا ہوا تھا اور اس نے اپنی جادوئی چھڑی کو آکاش کی طرف اُٹھا دیا ۔

دونوں سبھاؤں کے پرتیندھیوں نے سمجھ لیا کہ اُن کے بھاگیہ کے فیصلے کا سمے آگیا ۔ اُن کی آنکھیں اِس پرکار سے چھڑی پر گڑی ہوتی نہیں جیسے کہ وہ گھیرے سے باہر نکل جائینگی ۔ یکایک جادوگر ڈاکٹر نے عورتوں کی تالیوں کی آواز پر یدھ نرتیہ شروع کردیا، پھر تین بار گہرے جھٹکے کے ساتھ چکر کاٹنے کے بعد وہ راشٹری سنگھٹن سبھا کے پرتیندھی کے سامنے کھڑا ہوگیا اور اپنی چھڑی اُٹھاکر اُس کو آشیرباد دیا ۔ اُس نے چھڑی کو بڑے ادب سے چوم کر جادوگر ڈاکٹر کے سامنے اپنا سر جھکا دیا ۔

اِن روچک رسموں کے بعد سردار کھڑا ہوگیا اور جھونپڑی کی طرف چل پڑا ۔ اُس کے لڑاکو پرش شانتی پوروک اُس کے پیچھے ہولئے تاکہ جادوگر ڈاکٹر کے فیصلے کے انوسار راشٹری سنگھٹن سبھا کے پکش میں ووٹ دیں ۔

پر نیام نیام نامک اردھ جنگلی قبیلے نے اِس کے بالکل اُلٹا فیصلہ کیا ۔ انہوں نے سوتنتر سبھا کے پکش میں رائے دی کیونکہ اُن کے جادوگر ڈاکٹر نے نیل ندی کے

इन्हीं कारनों से राश्ट्री संगठन सभा चुनाव में भारी बहुमत से सफल हो गई और बर्तानिया की पूर्न सहायता के बावजूद स्वतंत्र सभा बुरी तरह से हार गई.

दक्खिनी सूडान के चुनाव का आंखों देखा हाल एक अरबी जरनलिस्ट ने यूं लिखा है :—

दक्खन के पांच जिलों में जहां हबशी क़बीले आबाद हैं, चुनाव की कार्यवाही आश्चर्यजनक ढंग से हुई. वोटर अपने उम्मेदवारों के पीछे क़तार बांध कर खड़े हो जाते थे. और अन्तर्राश्ट्री चुनाव बोर्ड के प्रतिनिधि उस उम्मेदवार को चुन लेते थे जिसके पीछे सब से अधिक वोटर खड़े होते थे. दक्खिन भाग के गुन्जान जंगली क्षेत्रों में चुनाव की कार्यवाही की सूचना बिगुल और नक़्क़ारों से दी गई थी. अपनी झोपड़ियों को छोड़कर क़बीले के लोग अपने सब सामान और जानवरों समेत चुनाव के केन्द्रों की तरफ़ चल पड़े. कई दिन के सफ़र के बाद अपने देश के भाग्य का फ़ैसला करने के लिये तपती धूप में चुनाव केन्द्र पर सब इकट्ठा हुए. कहीं कहीं तो चुनाव प्रतिनिधियों को वोटिंग कई कई दिन तक मुलतवी करनी पड़ी क्योंकि क़बीले नाच गाने या अच्छी फ़सल तैयार होने के कारन अपने विश्वासों के अनुसार धार्मिक रस्मों को पूरा करने में लगे हुए थे.

इन कठिनाइयों का अंदाज़ा करते हुए पहले ही से चुनाव बोर्ड ने अपने प्रतिनिधियों को क़बीलों में वोटिंग कराने के लिये दो तीन हफ़ते का समय दे दिया था ताकि सब क़बीले आसानी से वोट दे सकें. बहुत से नीलूती क़बीले अपने सब से अच्छे कपड़ों को पहन कर वोट देने के लिये आये. उनकी कमर में एक सफ़ेद कपड़ा लिपटा था और गले में हड्डियों और मूंगे का हार था. हर क़बीले का सरदार सब से आगे सांड पर सवार होकर चलता था. उसके पीछे क़बीले का जादूगर डाक्टर अपने साज़ो सामान यानी आदमी की खोपड़ियां, हड्डियां, जड़ी बूटियां और जादूई लकड़ियों के साथ होता था. उसके बाद स्त्रियां अपने बच्चों को गोद में लिये हुए या पीठ पर बांधे चलती थीं. औरतों के पीछे मर्द रहते थे, कठिन और लम्बे रास्तों को तय करने के लिये उन लोगों के पास क़बाइली धार्मिक गीतों के अलावा दिल बहलाने का और कोई ज़रिया न था.

सूडान के सब से अधिक लड़ाकू शीलुक नामक क़बीले के सब स्त्री पुरुश मनज़िलें तय करते हुए चुनाव के केन्द्र तक पहुंचे जहां मिट्टी और फूस की एक झोंपड़ी चिलचिलाती हुई धूप में खड़ी थी. चुनाव प्रतिनिधियों ने क़बीले के सरदार और उसके प्रसिद्ध लड़ाकू साथियों का बढ़कर स्वागत किया और उसको मोतियों और मूंगों की मालायें भेंट कीं.

थोड़ी देर के बाद क़बीले का युद्ध नृत्य शुरू हुआ जिसको देखने के लिये अमरीका और बेलजियम के

اِنھیں کارنوں سے راشٹری سنگٹھن سبھا چناؤ میں بھاری بہومت سے سپھل ھوگئی اور برطانیہ کی پورن سہائتا کے باوجود سوتنتر سبھا بری طرح سے ھار گئی ۔

دکھنی سوڈان کے چناؤ کا آنکھوں دیکھا حال ایک عربی جرنلسٹ نے یوں لکھا ھے :—

دکھن کے پانچ ضلعوں میں جہاں حبشی قبیلے آباد ھیں، چناؤ کی کاریہ واھی آشچریہ جنک ڈھنگ سے ھوئی ۔ ووٹر اپنے اُمیدواروں کے پیچھے قطار باندھ کر کھڑے ھو جاتے تھے اور انتر راشٹری چناؤ بورڈ کے پرتیندھی اُس اُمیدوار کو چن لیتے تھے جسکے پیچھے سب سے ادھک ووٹر کھڑے ھوتے تھے. دکھن بھاگ کے گنجان جنگلی چھیتروں میں چناؤ کی کاریہ واھی کی سوچنا بگل اور نقاروں سے دی گئی تھی ۔ اپنی جھونپڑیوں کو چھوڑ کر قبیلے کے لوگ اپنے سب سامان اور جانوروں سمیت چناؤ کے کیندروں کی طرف چل پڑے ۔ کئی دن کے سفر کے بعد اپنے دیش کے بھاگیہ کا فیصلہ کرنے کے لئے تپتی دھوپ میں چناؤ کیندر پر سب اِکٹھا ھوئے ۔ کہیں کہیں تو چناؤ پرتیندھیوں کو ووٹنگ کئی کئی دن تک ملتوی کرنی پڑی کیونکہ قبیلے ناچ گانے یا اچھی فصل تیار ھونے کے کارن اپنے وشواسوں کے انوسار دھارمک رسموں کے پورا کرنے میں لگے ھوئے تھے ۔

اِن کٹھنائیوں کا اندازہ کرتے ھوئے پہلے ھی سے چناؤ بورڈ نے اپنے پرتیندھیوں کو قبیلوں میں ووٹنگ کرانے کے لئے دو تین ھفتے کا سمے دے دیا تھا تاکہ سب قبیلے آسانی سے ووٹ دے سکیں. بہت سے نیلوتی قبیلے اپنے سب سے اچھے کپڑوں کو پہن کر ووٹ دینے کے لئے آئے ۔ اُن کی کمر میں ایک سفید کپڑا لپٹا تھا اور گلے میں ھڈیوں اور مونگے کا ھار تھا ۔ ھر قبیلے کا سردار سب سے آگے سانڈ پر سوار ھوکر چلتا تھا ۔ اُس کے پیچھے قبیلے کا جادوگر ڈاکٹر اپنے ساز و سامان یعنی آدمی کی کھوپڑیاں، ھڈیاں، جڑی بوٹیاں اور جادوئی لکڑیوں کے ھوتا تھا ۔ اُس کے بعد اِستریاں اپنے بچوں کو گود میں لئے ھوئے یا پیٹھ پر باندھے چلتی تھیں ۔ عورتوں کے پیچھے مرد رہتے تھے ۔ کٹھن اور لمبے راستوں کو طے کرنے کے لئے اُن لوگوں کے پاس قبائلی دھارمک گیتوں کے علاوہ دل بہلانے کا اور کوئی ذریعہ نہ تھا ۔

سوڈان کے سب سے ادھک لڑاکو شیلوک قبیلے کے سب اِستری پرش منزلیں طے کرتے ھوئے چناؤ کے کیندر تک پہونچے جہاں مٹی اور پھوس کی ایک جھونپڑی چلچلاتی ھوئی دھوپ میں کھڑی تھی ۔ چناؤ پرتیندھیوں نے قبیلے کے سردار اور اُس کے پرسدھ لڑاکو ساتھیوں کا بڑھکر سواگت کیا اور اُس کو موتیوں اور مونگوں کی مالائیں بھینٹ کیں ۔

تھوڑی دیر کے بعد قبیلے کا یدھ نرتیہ شروع ھوا جس کو دیکھنے کے لئے امریکہ اور بیلجیم کے

बहरहाल संसार का यह अनोखा चुनाव 6 नवम्बर, '53 को शुरू हुआ और 10 दिसम्बर, '53 तक जाकर खतम हुआ. 56 साला ग़ुलामी के बाद सूडानियों को अपने भविश्य के मुताल्लिक़ फ़ैसला करने का मौक़ा मिला.

यूं तो चार पार्टियां—राश्ट्री संगठन सभा, स्वतंत्र सभा, सोशलिस्ट पार्टी और दक्खिनी राजनैतिक संस्था—चुनाव के मैदान में उतरीं पर वास्तव में मुक़ाबला पहली दो पार्टियों में ही हुआ. राश्ट्री संगठन सभा 1938 में स्थापित हुई थी. सूडान से बर्तानिया की प्रधानता का अन्त, नील की घाटी का संगठन और देश में सोशलिस्ट शासन की स्थापना, इसके खास उद्देश्य हैं. 1945 ई० में कुछ जाग्रत और इनक़लाबी विचार वाले नौजवानों के शामिल हो जाने से इस सभा ने ज़ोर पकड़ना शुरू किया जिसके कारन सूडान में बर्तानिया को अपनी प्रधानता खतरे में पड़ती दिखाई दी और उसकी साज़िशों से इस सभा में फूट पड़ गई और वह इसमाईल अज़हरी और मुहम्मद नूरउद्दीन के नेतृत्व में दो भागों में बंट गई. पर नील नदी की घाटी के संगठन और सूडान से बर्तानिया के निकलने की मांग करते रहे. मिश्र में जनरल नजीब के हाथ में शासन आजाने पर दोनों दल फिर अज़हरी के नेतृत्व में संगठित हो गये. राश्ट्री संगठन सभा के मुक़ाबले में बर्तानिया ने स्वतंत्र सभा क़ायम कराई जिस का उद्देश्य सूडान की पूरी आज़ादी बताया गया. 1945 में बर्तानिया ने इस सभा को शक्तिशाली बनाने के लिये सूडान के बहुत बड़े धार्मिक नेता सर अब्दुर रहमान अल मेहदी को इसका लीडर बनाया. इस लक्ष्य का हासिल करने के लिये बर्तानिया ने दक्खिनी सूडान के काले आदिवासियों में साम्प्रदायिक भावना पैदा करके, इनको स्वतंत्र सभा की सहायता के लिये तैयार किया. वास्तव में स्वतंत्र सभा के लीडरों का काम सरकारी पदों की गद्दियों पर विराजमान होने के अलावा और कुछ नहीं रहा और इस सभा का असर सिर्फ़ बर्तानिया की सहायता के कारन रहा. पर जैसे जैसे राश्ट्री भावना उभरती गई इस सभा का प्रभाव भी कम होता गया.

राश्ट्री संगठन सभा ने अपने चुनाव प्रचार में राश्ट्री और धार्मिक भावनाओं को उभारा. इसकी सहायता में मिश्र से आये हुए लाखों परचे बांटे गये जिसमें उनको एक धर्म और एक जात मिश्रियों का साथ देने पर आमादा किया गया था. स्वतंत्र सभा ने अपने चुनाव के प्रोग्राम में सूडान की पूर्न स्वतंत्रता और जनता के आर्थिक सुधार पर ज़ोर दिया था पर सूडान के 95 फ़ी सदी अनपढ़ लोगों के लिये पूर्न स्वतंत्रता और आर्थिक सुधार के शब्द कोई मानी नहीं रखते थे मगर इस्लामी भाई चारे और बड़े भाई के संगठन के नारे अवश्य उनके दिल को मोहने वाले थे.

بہر حال سنسار کا یہ انوکھا چناؤ 6 نومبر 53' کو شروع ہوا اور 10 دسمبر 53' تک جا کر ختم ہوا۔ 56 سالہ غلامی کے بعد سوڈانیوں کو اپنے بھوشیہ کے متعلق فیصلہ کرنے کا موقع ملا۔

یوں تو چار پارٹیاں—راشٹریہ سنگٹھن سبھا، سوتنتر سبھا، سوشلسٹ پارٹی اور دکھنی راجنیتک سنستھا—چناؤ کے میدان میں اُتریں پر واستو میں مقابلہ پہلی دو پارٹیوں میں ہی ہوا۔ راشٹریہ سنگٹھن سبھا 1938 میں استھاپت ہوئی تھی۔ سوڈان سے برطانیہ کی پردھانتا کا انت، نیل کی گھاٹی کا سنگٹھن اور دیش میں سوشلسٹ شاسن کی اِستھاپنا، اُس کے خاص اُدیش ہیں۔ 1945 میں کچھ جاگرت اور انقلابی وچار والے نوجوانوں کے شامل ہوجانے سے اِس سبھا نے زور پکڑنا شروع کیا جس کے کارن سوڈان میں برطانیہ کو اپنی پردھانتا خطرے میں پڑتی دکھائی دی اور اُس کی سازشوں سے اِس سبھا میں پھوٹ پڑ گئی اور وہ اسمعیل اظہری اور محمد نورالدین کے نیترتو میں دو بھاگوں میں بٹ گئی۔ پر نیل ندی کی گھاٹی کے سنگٹھن اور سوڈان سے برطانیہ کے نکلنے کی مانگ کرتے رہے۔ مصر میں جرنل نجیب کے ہاتھ میں شاسن آجانے پر دونوں دل پھر اظہری کے نیترتو میں سنگٹھت ہو گئے۔ راشٹری سنگٹھن سبھا کے مقابلہ میں برطانیہ نے سوتنتر سبھا قائم کرائی جس کا اُدیش سوڈان کی پوری آزادی بتایا گیا۔ 1945 میں برطانیہ نے اِس سبھا کو شکتشالی بنانے کے لئے سوڈان کے بہت بڑے دھارمک نیتا سر عبدالرحمان ال مہدی کو اِس کا لیڈر بنایا۔ اِس لکش کو حاصل کرنے کے لئے برطانیہ نے دکھنی سوڈان کے کالے آدی واسیوں میں سامپردائک بھاؤنا پیدا کر کے، ان کو سوتنتر سبھا کی سہائتا کے لئے تیار کیا۔ واستو میں سوتنتر سبھا کے لیڈروں کا کام سرکاری پدوں کی گدیوں پر وراجمان ہونے کے علاوہ اور کچھ نہیں رہا اور اس سبھا کا اثر صرف برطانیہ کی سہائتا کے کارن رہا۔ جیسے جیسے راشٹری بھاؤنا اُبھرتی گئی اس سبھا کا پربھاؤ بھی کم ہوتا گیا۔

راشٹری سنگٹھن سبھا نے اپنے چناؤ پرچار میں راشٹری اور دھارمک بھاونائوں کو اُبھارا۔ اُس کی سہائتا میں مصر سے آئے ہوئے لاکھوں پرچے بانٹے گئے جس میں اُن کو ایک دھرم اور ایک جات مصریوں کا ساتھ دینے پر آمادہ کیا گیا تھا۔ سوتنتر سبھا نے اپنے چناؤ کے پروگرام میں سوڈان کی پورن سوتنترتا اور جنتا کے آرتھک سدھار پر زور دیا تھا، پر سوڈان کے 95 فیصدی اَن پڑھ لوگوں کے لئے پورن سوتنترتا اور آرتھک سدھار کے شبد کوئی معنی نہیں رکھتے تھے مگر اسلامی بھائی چارے اور بڑے بھائی کے سنگٹھن کے نعرے اوشیہ اُن کے دل کو موہنے والے تھے۔

नवीन मिस्र के अरबों ने इस देश का नाम 'सूदान' यानी काली बस्ती रक्खा. नवीन मिस्र के पहले स्वतंत्र महाराजा मुहम्मद अली ने सूडान को अपने शासनाधिकार में ले लिया, पर1841 ई० में उनकी मौत के बाद उनके उत्तराधिकारियों की कमज़ोरी के कारन सूडान में चारों तरफ़ गड़बड़ी फैल गई, जिससे खिन्न होकर दुर्वेश नामक सांप्रदाय के नेता मुहम्मद अहमद अलमहदी ने मिस्री शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और बड़ी घमासान लड़ाइयों के बाद मिस्री और उनकी सहायता पर आई हुई अंग्रेज़ी सेना का बिलकुल सफ़ाया करके पूर्न स्वतंत्रता प्राप्त करली. पर कुछ ही साल के बाद अंग्रेज़ों ने लार्ड किचनर के सेनापतित्व में आधुनिक हथियारों से लैस एक बड़ी सेना के साथ सूडान पर हमला करा दिया. हथियारों की कमी और लड़ाई के तकनीक में निपुन न होने के बावजूद देशभक्त दुरवेशों ने कई स्थानों पर बड़ी वीरता से उसका सामना किया, पर अन्त में घमासान युद्ध के बाद वह 1898 ई० में ख़ारतूम के युद्ध में हार गये और सूडान साम्राज्यवादी ताज का एक अंग बन गया.

चूंकि मिस्र की ज़िन्दगी नील नदी पर निर्भर है इस लिये मिश्री जनता सदा से इच्छुक रही है कि पूरे नील नदी पर उसकी प्रधानता रहे. इसलिये अंग्रेज़ी राजनैतिक नेताओं ने मिस्रियों की इस भावना का ख़याल रखते हुए और उनको प्रसन्न करने के लिये सूडान में मिश्र और बर्तानिया के साझे का शासन स्थापित किया, पर असलियत में सूडान पर शासन करने का पूर्न अधिकार बृटिश गवर्नर जनरल के हाथ में रखा गया.

मगर मिस्री नेता कभी इस तरह के प्रबंध से संतुश्ट नहीं रहे और सूडान की समस्या पर मिस्र में बर्तानिया के विरुद्ध बराबर आवाज़ उठती रही और प्रदर्शन होते रहे. 1936 ई० में मिस्र की आज़ादी के बाद से सूडान को मिस्र के साथ मिलाने की मांग ज़ोर पकड़ती गई, यहां तक कि 1951 ई० में वफ़्द पार्टी की सरकार के 1936 ई० के मिस्री अंग्रेज़ी सम्झौते को तोड़ कर फ़ारुक़ (मिस्र के भूतपूर्व राजा) को सूडान का भी राजा घोशित कर दिया.

जुलाई सन '52 में मिश्र में फ़ौजी क्रांति के बाद जनरल नजीब के हाथ में देश का शासन आ गया. चूंकि वह पैदाइशी सूडानी हैं इसलिये मिश्रियों की तरह सूडानियों में भी नील की घाटी के संगठन की भावना बहुत उभर गई. मिश्री सरकार के दबाव और सूडान में आये दिन के अपने विरुद्ध आन्दोलनों से असमर्थ होकर बर्तानिया ने इस समस्या पर आम चुनाव कराने के लिये यू० एन० ओ० के फ़ैसले को स्वीकार कर लिया. अमरीका, बेलजियम, भारत, पाकिस्तान के प्रतिनिधि चुनाव बोर्ड में शामिल थे. भारत के प्रतिनिधि श्री शिवकुमार सेन इस बोर्ड के अध्यक्ष चुने गये.

نوین مصر کے عربوں نے اِس دیش کا نام ' سودان ' یعنی کالی بستی رکھا ۔ پہلے سوتنتر مہاراجہ محمد علی نے سوڈان کو اپنے ساشنادھیکار میں لے لیا' پر 1841ع میں اُن کی موت کے بعد اُن اُترادھیکاریوں کی کمزوری کے کارن سوڈان میں چاروں طرف گڑبڑی پھیل گئی' جس سے کھن ہوکر درویش نامک سامپردائے کے نیتا محمد احمد اَلمہدی نے مصری شاسن کے وِرودھ وِدروہ کر دیا اور بڑی گھماسان لڑائیوں کے بعد مصری اور اُن کی سہائتا پر آئی ہوئی انگریزی سینا کا بالکل صفایا کرکے پورن سوتنترتا پراپت کرلی ۔ پر کچھ ہی سال کے بعد انگریزوں نے لارڈ کچنر کے سیناپتتو میں آدھونک ہتھیاروں سے لیس ایک بڑی سینا کے ساتھ سوڈان پر حملہ کرا دیا ۔ ہتھیاروں کی کمی اور لڑائی کے تکنیک میں نپن نہ ہونے کے باوجود دیش بھکت درویشوں نے کئی استھانوں پر بڑی ویرتا سے اُس کا سامنا کیا' پر انت میں گھماسان یدھ کے بعد وہ 1898ع میں خارتوم کے یدھ میں ہار گئے اور سوڈان سامراجیہ وادی تاج کا ایک انگ بن گیا ۔

چونکہ مصر کی زندگی نیل ندی پر نربھر ہے اِس لئے مصر جنتا سدا سے اِچھک رہی ہے کہ پورے نیل ندی پر اُس کی پردھانتا رہے ۔ اُس لئے انگریزی راجنیتک نیتاؤں نے مصریوں کی اِس بھاؤنا کا خیال رکھتے ہوئے اور اُن کو پرسن کرنے کے لئے سوڈان میں مصر اور برطانیہ کے ساجھے کا شاسن استھاپت کیا' پر اصلیت میں سوڈان پر شاسن کرنے کا پورن ادھیکار برٹش گورنر جنرل کے ہاتھ میں رکھا گیا ۔

مگر مصری نیتا کبھی اِس طرح کے پربندھ سے سنتشٹ نہیں رہے اور سوڈان کی سمسیا پر مصر میں برطانیہ کے وِرودھ برابر آواز اُٹھتی رہی اور پردرشن ہوتے رہے ۔ 1936ع میں مصر کی آزادی کے بعد سے سوڈان کو مصر کے ساتھ ملانے کی مانگ زور پکڑتی گئی یہاں تک کہ 1951ع میں وفد پارٹی کی سرکار کے 1936 کے مصری انگریزی سمجھوتے کو توڑ کر فاروق (مصر کے بھوتپورو راجا) کو سوڈان کا بھی راجا گھوشت کر دیا ۔

جولائی سن '52 میں مصر میں فوجی کرانتی کے بعد جنرل نجیب کے ہاتھ میں دیش کا شاسن آگیا ۔ چونکہ وہ پیدائشی سوڈانی ہیں اِس لئے مصریوں کی طرح سوڈانیوں میں بھی نیل کی گھاٹی کے سنگٹھن کی بھاؤنا بہت اُبھر آئی ۔ مصری سرکار کے دباؤ اور سوڈان میں آئے دن کے اپنے وِرودھ آندولنوں سے اسمرتھ ہو کر برطانیہ نے اِس سمسیا پر عام چناؤ کرانے کے لئے یو ۔ این ۔ او کے فیصلہ کو سویکار کر لیا ۔ امریکہ بیلجیم' بھارت اور پاکستان کے پرتیندھی چناؤ بورڈ میں شامل تھے ۔ بھارت کے پرتیندھی شری شوکمار سین اِس بورڈ کے ادھیکش چنے گئے ۔

नहीं सकता कल क्या होगा या अगले क्षन ही क्या होगा?"

बेयरा ने बिल लाकर मुझे दिया. उसका होटल मेरे होटल के दूसरी तरफ़ था, इसलिये दरवाज़े से निकलते ही हम लोग विपरीत दिशाओं में मुड़ गये. रास्ते में ठंडी हवायें और गिरती हुई बर्फ़ मुंह पर थपेड़े दे रही थीं पर मैं प्रसन्न चित्त चला जा रहा था. आसमान काला हो चला था और उसमें बर्फ़ से लदे हुये घर और सड़कें रह रह कर चमक रही थीं.

نہیں سکتا کل کیا ہوگا یا اگلے چھن ہی کیا ہوگا؟"

بیرا نے بل لا کر مجھے دیا. اُس کا ہوٹل میرے ہوٹل کے دوسری طرف تھا' اِس لئے دروازے سے نکلتے ہی ہم لوگ وپریت دشاؤں میں مڑ گئے. راستے میں ٹھنڈی ہوائیں اور گرتی ہوئی برف منھ پر تھپیڑے دے رہی تھیں پر میں پرسن چت چلا جا رہا تھا. آسمان کالا ہو چلا تھا اور اُسمیں برف سے لدے ہوئے گھر اور سڑکیں رہ رہ کر چمک رہی تھیں.

"सूडान"

(ज़मीर हसन काज़िमी)

उत्तर में मिस्र, दक्खिन में बृटिश यूगेन्डा और बेलजियन कांगो, पूरब में इथोपिया, उत्तर पूरब में लाल सागर, पच्छिम में फ्रेंच इक्वीटोरियल अफ़रीक़ा और उत्तर पच्छिम में लीबिया से सूडान घिरा है. इसका रक़बा दस लाख वर्ग मील है और आबादी अस्सी लाख है. देश का अधिकतर हिस्सा रेगिस्तान और कम उपजाऊ है. दक्खिन भाग में जहां साल में दो बार बारिश होती है, गुंजान जंगल हैं जिन में रबर और महोगनी के पेड़ बहुतायत से उगते हैं.

नील नदी इसी देश से होकर गुज़रती है. सफ़ेद नील केन्द्रीय अफ़रीक़ा की विक्टोरिया नामक झील से निकल कर सूडान में दाख़िल होती है. ख़ारतूम में उसमें इथोपिया के पहाड़ों से निकली हुई नीली नील नामक नदी मिलती है. नील नदी की उपजाऊ घाटी में रूई बहुतायत से पैदा होती है और विदेशों को भेजी जाती है. रेगिस्तानी क्षेत्रों में बबूल के लाखों पेड़ उगे हैं. इनसे बहुत बड़ी मात्रा में गोंद प्राप्त की जाती है और संसार के बहुत से देशों में भेजी जाती है. ख़ारतूम यहां की राजधानी है और देश का अकेला आधुनिक ढंग पर आबाद नगर है. यह सफ़ेद और नीले नीले के सङ्गम पर बसा हुआ है. लाल सागर पर स्थित सूडान और सुआकीन यहां के बंदरगाह हैं जो ख़ारतूम और दूसरे प्रसिद्ध नगर बर्बर से रेलवे द्वारा मिले हुए हैं.

लगभग बारह सौ साल पहले इस्लाम धर्म यहां अरबों के ज़रिये पहुंचा. यहां के निवासी बहुत काले थे, इसलिये

"سوڈان"

(ضمیر حسن کاظمی)

اُتر میں مصر' دکھن میں برٹش یوگینڈا اور بیلجین کانگو' پورب میں اِتھوپیا' اُتر پورب میں لال ساگر' پچھم میں فرینچ ایکوئٹوریل افریقہ اور اُتر پچھم میں لیبیا سے سوڈان گھرا ہے. اِس کا رقبہ دس لاکھ ورگ میل ہے اور آبادی اسی لاکھ ہے. دیش کا ادھکتر حصہ ریگستان اور کم اُپجاؤ ہے. دکھن بھاگ میں جہاں سال میں دو بار بارش ہوتی ہے' گنجان جنگل ہیں جن میں ربر اور مہوگنی کے پیڑ بہوتایت سے اُگتے ہیں.

نیل ندی اِسی دیش سے ہو کر گذرتی ہے. سفید نیل کیندریہ افریقہ کی وکٹوریا نامک جھیل سے نکل کر سوڈان میں داخل ہوتی ہے. خارتوم میں اُس میں اِتھوپیا کے پہاڑوں سے نکلی ہوئی نیلی نیل نامک ندی ملتی ہے. نیل ندی کی اُپجاؤ گھاٹی میں روئی بہوتایت سے پیدا ہوتی ہے اور ودیشوں کو بھیجی جاتی ہے. ریگستانی چھیتروں میں ببول کے لاکھوں پیڑ اُگے ہیں. ان سے بہت بڑی ماترا میں گوند پراپت کی جاتی ہے اور سنسار کے بہت سے دیشوں میں بھیجی جاتی ہے. خارتوم یہاں کی راجدھانی ہے اور دیش کا اکیلا آدھونک ڈھنگ پر آباد نگر ہے. یہ سفید اور نیلے نیل کے سنگم پر بسا ہوا ہے. لال ساگر پر اِستھت سوڈان اور سواکین یہاں کے بندرگاہ ہیں جو خارتوم اور دوسرے پرسدھ نگر بربر سے ریلوے دوارا ملے ہوئے ہیں.

لگ بھگ بارہ سو سال پہلے اِسلام دھرم یہاں عربوں کے ذریعہ پہونچا. یہاں کے نواسی بہت کالے تھے' اِس لئے

"इस जानकारी के बाद अब मेरे पास कोई काम तो था नहीं. लेकिन फूलों के उन गुच्छों का क्या किया जाय? मैंने उस बुड्ढी स्त्री से कहा कि उन्हें वह आह-चाओ को दे दे. आह-चाओ तो मुझे देख कर ऐसा भागी थी जैसे मैं कोई भेड़िया हूं और उसे दबोच लूंगा. मेरी इच्छा तो नहीं थी कि यह फूल मैं उसे दूं. फिर भी मैंने उन्हें उसको दे दिया ताकि मैं मां से कह सकूं कि आह-शुन उन्हें पाते ही बड़ी प्रसन्न हो गई थी जिससे मां को सन्तोश हो जाय. कौन ऐसी छोटी बातों की परवाह करता है? सब यही चाहते हैं कि किसी प्रकार सिर पर से बला टले. नया साल शुरू होते ही मैं अध्यापन कार्य फिर शुरू कर दूंगा. मुझे कनफ़्यूशियस की विचारधारा पढ़ानी पड़ती है.

मैंने आश्चर्य चकित होकर पूछा—"क्या तुम्हारा विशय कनफ़्यूशियस है?"

उसने उत्तर दिया—"और क्या? तुम समझते थे मैं अंग्रेजी पढ़ाता हूं. पहले मेरे दो विद्यार्थी थे. एक ओडेसे की किताब पढ़ता था दूसरा मेंशियस की. हाल ही में एक लड़की ने "कैनन फ़ार गर्ल्स" पढ़ना शुरू किया है. मैं हिसाब भी नहीं पढ़ाता. कारन यह नहीं है कि मैं पढ़ा नहीं सकता. वह पढ़ना ही नहीं चाहते."

"मैं सोच भी नहीं सकता था कि तुम इस तरह की किताबें पढ़ाते होगे!"

"उनके बाप चाहते हैं कि उन्हें यही पढ़ाया जाय. मैं तो बाहर का रहने वाला हूं. इसलिये मेरे लिये सब एक ही जैसा है. कौन इन बातों की परवाह करे?"

उसका चेहरा लाल हो गया था जैसे उसने बहुत शराब पी ली हो, पर आंखों में वह ज्योति नहीं थी. मैंने भी एक लम्बी सांस ली और कुछ देर तक गुम सुम बैठा रहा. सीढ़ी पर खटखट की आवाज हुई और कुछ ग्राहक ऊपर कमरे में आये. पहला ग्राहक नाटे क़द का गोल मुंह का था, दूसरा लम्बा था और उसके चेहरे पर लम्बी सी लाल नाक थी. उसके पीछे और भी कई व्यक्ति थे. उनके पदचाप से कमरा हिलने लगा. मैंने लू-वी-फ़ू की ओर देखा और फिर बेयरा से बिल लाने के लिये कहा.

जाने के लिये तैयार होते हुये मैंने प्रश्न किया—"क्या तुम्हें गुज़र-बसर करने भर के लिये तनख्वाह मिल जाती है?"

उसने उत्तर दिया—"मुझे बीस डालर प्रतिमाह मिलता है और काम चला सकने के लिये इतना काफ़ी है."

"आगे क्या करने का इरादा है?"

"कह नहीं सकता. इरादा करने से भी क्या फ़ायदा? क्या आज तक अपनी इच्छानुसार काम कर पाया हूं? मैं तो अब किसी चीज के बारे में निश्चित नहीं रहता, कह

"اِس جانکاری کے بعد اب میرے پاس کوئی کام تو تھا نہیں۔ لیکن پھولوں کے اُن گچھوں کا کیا کیا جائے؟ میں نے اُس بڈھی استری سے کہا کہ اُنھیں وہ آہ۔ چاؤ کو دے دے۔ آہ۔ چاؤ تو مجھے دیکھکر ایسا بھاگی تھی جیسے میں کوئی بھیڑیا ہوں اور اُسے دبوچ لونگا۔ میری اچھا تو نہیں تھی کہ یہ پھول میں اُسے دوں۔ پھر بھی میں نے اُنھیں اُس کو دے دیا تاکہ میں ماں سے کہہ سکوں کہ آہ۔ شن اُنھیں پاتے ہی بڑی پرسن ہو گئی تھی جس سے ماں کو سنتوش ہوجائے۔ کون ایسی چھوٹی باتوں کی پرواہ کرتا ہے؟ سب ہی چاہتے ہیں کہ کسی پرکار سر پر سے بلا ٹلے۔ نیا سال شروع ہوتے ہی میں ادھیاپن کاریہ پھر شروع کر دونگا۔ مجھے کنفوشیس کی وچار دھارا پڑھانی پڑتی ہے۔"

میں نے آشچریہ چکت ہو کر پوچھا—"کیا تمہارا وشے کنفوشیس ہے؟"

اُس نے اُتر دیا—"اور کیا؟ تم سمجھتے تھے میں انگریزی پڑھاتا ہوں۔ پہلے میرے دو ودیارتھی تھے۔ ایک اوڈیسے کی کتاب پڑھتا تھا، دوسرا مینشیس کی۔ حال ہی میں ایک لڑکی نے "کینن فار گرلس" پڑھنا شروع کیا ہے۔ میں حساب بھی نہیں پڑھاتا۔ کارن یہ نہیں ہے کہ میں پڑھا نہیں سکتا۔ وہ پڑھنا ہی نہیں چاہتے۔"

"میں سوچ ہی نہیں سکتا تھا کہ تم اس طرح کی کتابیں پڑھاتے ہوگے!"

"اُن کے باپ چاہتے ہیں کہ اُنھیں یہی پڑھایا جائے۔ میں تو باہر کا رہنے والا ہوں۔ اِس لئے میرے لئے سب ایک ہی جیسا ہے۔ کون اِن باتوں کی پرواہ کرے؟"

اس کا چہرہ لال ہوگیا تھا جیسے اس نے بہت شراب پی لی ہو، پر آنکھوں میں وہ جیوتی نہیں تھی۔ میں نے بھی ایک لمبی سانس لی اور کچھ دیر تک گم سم بیٹھا رہا۔ سیڑھی پر کھٹ کھٹ کی آواز ہوئی اور کچھ گراھک اُپر کمرے میں آئے۔ پہلا گراھک ناٹے قد کا گول منہ کا تھا، دوسرا لمبا تھا اور اُس کے چہرے پر لمبی سی لال ناک تھی۔ اس کے پیچھے اور بھی کئی ویکتی تھے۔ اُن کے پد چاپ سے کمرہ ہلنے لگا۔ میں نے لو۔ وی۔ فو کی طرف دیکھا اور پھر بیرا سے بل لانے کے لئے کہا۔

جانے کے لئے تیار ہوتے ہوئے میں نے پرشن کیا—"کیا تمھیں گذر بسر کرنے بھر کے لئے تنخواہ مل جاتی ہے؟"

اُس نے اُتر دیا—"مجھے بیس ڈالر پرتی ماہ ملتا ہے اور کام چلا سکنے کے لئے اتنا کافی ہے۔"

"آگے کیا کرنے کا اِرادہ ہے؟"

"کہہ نہیں سکتا۔ اِرادہ کرنے سے بھی کیا فائدہ؟ کیا آج تک اپنی اچھا نوسار کام کر پایا ہوں؟ میں تو اب کسی چیز کے بارے میں نشچت نہیں رہتا، کہہ

ही था. इसलिये मैं इस बार चांग-फ़ू के घर के सामने वाली लकड़ी की टाल तक गया. दूकानदार की मां दूकान में थीं. उन्होंने मुझे पहचान लिया और दूकान में आने के लिये कहा. शिष्टाचार की बातें समाप्त होने के बाद मैंने उनसे यहां आने का कारन बतलाया. मैंने चांग-फ़ू के बारे में पूछा. मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह इतनी लम्बी सांस लेकर बोलेंगी. "कितने दुख की बात है कि आह-शुन के भाग्य में इन सुन्दर फूलों का पहिनना नहीं बदा था !"

फिर उसने मुझे पूरी कहानी सुनाई. उसने बतलाया—"शायद पिछले बसन्त के बाद से ही वह दुबली और पीली पड़ती दिखाई देने लगी थी. बाद के दिनों में तो वह रोने लगती थी और किसी के कारन पूछने पर उत्तर भी नहीं देती थी. कभी कभी वह रात भर रोती रहती. चांग-फ़ू की बरदाश्त से बात बाहर हो जाती तो वह बिगड़ उठता—"इतनी बड़ी हो जाने पर शादी न हो पाने के कारन ही वह पागल हो गई है." जब हेमन्त आया, उसे जुकाम हो गया और उसने चारपाई पकड़ ली और फिर उसे कभी न छोड़ा. कुछ ही दिन पहले उसकी मौत हो गई. मरने के समय उसने चांग-फ़ू को बतलाया कि वह अपने मां के ही समान बीमार हो गई थी. खांसने से उसे खून आता था और रात में बुखार भी तेज़ हो जाता था. उसने अब तक यह बात छिपा रक्खी थी ताकि उसे परेशानी न हो. एक दिन शाम को उसका चचा चांग-कैंग अपना रुपया मांगने आया. जब उसने रुपये देने में असमर्थता प्रगट की तो वह मुस्कराते हुये बोला—"इतना घमंड मत करो. तुम्हारा आदमी तो मेरे जैसा भी नहीं है." वह बड़ी परेशान हो गई पर लज्जा के कारन कुछ भी पूछ न सकती थी, केवल रो सकती थी. रोकर मन हल्का कर लिया. चांग ने उसे बतलाया कि उसका भावी पति उसके कितने योग्य था, पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी. उसे विश्वास न हुआ. इसलिये वह बोली—"अच्छा है कि मैं ऐसी हूं. किसी को मेरे कारन परेशानी तो नहीं होती."

उस बुढ़ी औरत ने भी कहा—"सचमुच यदि उसका पति चांग-कैंग जैसा भी न होता तो उसे बहुत कष्ट उठाना पड़ता. कैसा आदमी वह होता ? जब वह उसकी अर्थी को उठवाने आया तो मैंने उसे देखा था. वह साफ़ कपड़े पहने था और समाज में रहने योग्य था. उसने मुझे बताया था कि नाव पर बड़ी मेहनत से काम करके वह कुछ पैसे बचा सका था ताकि वह शादी कर सके और अब उसकी भावी पत्नी भी मर गयी. अवश्य ही वह भला आदमी रहा होगा चांग-कैंग ने इसके बारे में जो कुछ भी कहा झूठ था. कितने दुख की बात है कि आह-शुन ने ऐसे पेशेवर झूठे की बातों में विश्वास कर लिया और अकारन ही मर गई. पर कोई किसी को क्यों दोष दे जब अपना भाग्य ही खोटा हो."

ھی تھا ۔ اِس لئے میں اِس بار چانگ ۔ فو کے گھر کے سامنے والی لکڑی کی ٹال تک گیا ۔ دوکاندار کی ماں دوکان میں تھیں ۔ اُنھوں نے مجھے پہچان لیا اور دوکان میں آنے کے لئے کہا ۔ شِشٹاچار کی باتیں سماپت ھونے کے بعد میں نے اُن سے یہاں آنے کا کارن بتلایا ۔ میں نے چانگ ۔ فو کے بارے میں پوچھا ۔ مجھے اُمید نہیں تھی کہ وہ اتنی لمبی سانس لے کر بولینگی—" کتنے دکھ کی بات ھے کہ آہ ۔ شن کے بھاگیہ میں اِن سندر پھولوں کا پہننا نہیں بدا تھا ۔"

" پھر اُس نے مجھے پوری کہانی سنائی ۔ اس نے بتلایا—"شاید پچھلے بسنت کے بعد سے ھی وہ دبلی اور پیلی پڑتی دکھائی دینے لگی تھی ۔ بعد کے دنوں میں تو وہ رونے لگتی تھی اور کسی کے کارن پوچھنے پر اُتر بھی نہیں دیتی تھی ۔ کبھی کبھی وہ رات بھر روتی رھتی ۔ چانگ ۔ فو کے برداشت سے بات باھر ھو جاتی تو وہ بگڑ اُٹھتا—" اتنی بڑی ھو جانے پر شادی نہ ھو پانے کے کارن ھی وہ پاگل ھو گئی ھے ۔" جب ھیمنت آیا اُسے زکام ھوگیا اور اُس نے چارپائی پکڑ لی اور پھر اُسے کبھی نہ چھوڑا ۔ کچھ ھی دن پہلے اُس کی موت ھوگئی ۔ مرنے کے سمئے اُس نے چانگ ۔ فو کو بتلایا کہ وہ اپنے ماں کے ھی سمان بیمار ھو گئی تھی ۔ کھانسنے سے اُسے خون آتا تھا اور رات میں بخار بھی تیز ھو جاتا تھا ۔ اُس نے اب تک یہ بات چھپا رکھی تھی تاکہ اُسے پریشانی نہ ھو ۔ ایک دن شام کو اُس کا چچا چانگ ۔ کینگ اپنا روپیہ مانگنے آیا ۔ جب اُس نے روپئے دینے میں اسمرتھتا پرگٹ کی تو وہ مسکراتے ھوئے بولا—" اتنا گھمنڈ مت کرو ۔ تمہارا آدمی تو میرے جیسا بھی نہیں ھے ۔" وہ بڑی پریشان ھوگئی پر لجا کے کارن کچھ بھی پوچھ نہ سکتی تھی' کیول رو سکتی تھی ۔ رو کر من ھلکا کر لیا ۔ چانگ نے اُسے بتلایا کہ اُس کا بھاوی پتی اُس کے کتنا یوگیہ تھا' پر اب تو بہت دیر ھو چکی تھی ۔ اُسے وشواس نہ ھوا ۔ اس لئے بولی—" اچھا ھے کہ میں ایسی ھوں ۔ کسی کو میرے کارن پریشانی تو نہیں ھوتی ۔"

" اُس بڈھی عورت نے بھی کہا—" سچ مچ یدی اس کا پتی چانگ ۔ کینگ جیسا بھی نہ ھوتا تو اُسے بہت کشٹ اُٹھانا پڑتا ۔ کیسا آدمی وہ ھوتا؟ جب وہ اُس کی ارتھی کو اُٹھوانے آیا تو میں نے اُسے دیکھا تھا ۔ وہ صاف کپڑے پہنے تھا اور سماج میں رھنے یوگیہ تھا ۔ اس نے مجھے بتایا تھا کہ ناؤ پر بڑی محنت سے کام کر کے وہ کچھ پیسے بچا سکا تھا تاکہ وہ شادی کر سکے اور اب اُس کی بھاوی پتنی بھی مر گئی ۔ اوشیہ ھی وہ بھلا آدمی رھا ھوگا ۔ چانگ ۔ کینگ نے اُس کے بارے میں جو کچھ بھی کہا جھوٹ تھا ۔ کتنے دکھ کی بات ھے کہ آہ ۔ شن نے ایسے پیشہ ور جھوٹے کی باتوں میں وشواس کر لیا اور اکارن ھی مر گئی ۔ پر کوئی کسی کو کیوں دوش دے جب اپنا بھاگیہ ھی کھوٹا ھو ۔"

के विचार मेरे स्वप्न ही थे. दूसरे ही छन मुझे अपने विचारों पर बड़ी हंसी आई और मैं उन्हें भूल भी गया.

"मुझे मालूम नहीं था कि उसे एक बार नक़ली फूलों के लिये मार पड़ चुकी है. पर जब मां ने इस बात का ज़िक्र किया, मुझे खीर खाने वाली घटना याद आ गई. मैंने तायुयान की दूकानों में वह फूल ढूंढा पर वहां न मिला. जब मैं सीनान गया तब वहां से लाया."

बाहर कैमीलिया के पेड़ पर लदी हुई बर्फ़ के फिसल कर गिरने से हल्की सी आवाज़ हुई और मेरा ध्यान भी उचट गया. बर्फ़ के बोझ से वह पेड़ झुका जा रहा था. उसकी टहनियां अब फिर सीधी हो गई और उसमें लगे लाल फूल अब पहले से भी अधिक चमकने लगे. आकाश का स्लेटी रंग भी गहरा होता जा रहा था. गौरैय्यों की चूं-चूं शुरू हो गई थी. शाम हो चली थी. जमीन के बरफ़ से ढकी होने के कारन उन्हें खाने को कुछ भी नहीं मिला था. वह सब जल्दी ही अपने घोंसले में चली गयीं और हर तरफ़ फिर शान्ति छा गयी.

खिड़की के बाहर झांक कर उसने प्याला खाली कर दिया और सिगरेट के कश खींचते हुये बोला—"सीनान में मैं नक़ली फूल ख़रीद पाया. यह तो मुझे मालूम नहीं था कि जिन फूलों के लिये उसे मार पड़ी थी वह वैसे ही थे जैसे मैं लाया था. यह भी 'वेलवेट' (एक प्रकार का चिकना मख़मली कपड़ा) के बने थे. मुझे यह भी मालूम नहीं था कि उसे गहरा लाल रंग पसन्द था या हल्का गुलाबी, इस लिये मैं उसके लिये दोनों रंग के एक एक गुच्छे लेता आया."

"आज दोपहर को खाना खाने के बाद मैं चांग-फ़ू के घर गया. इसी काम के लिये मैं एक दिन ज़्यादा रुक गया था. उसका घर ठीक उसी जगह पर पहले ही जैसा था. पर घर में एक अजीब उदासी छायी हुई दिखाई देती थी. शायद यह मेरे मस्तिश्क की कोरी कल्पना ही रही हो. उसका लड़का और छोटी लड़की आह्-चाओ बाहर दरवाज़े पर ही खड़े थे. आह्-चाओ पहले से बहुत बड़ी हो गई थी पर उसकी बहिन से उसमें बड़ी असमानता थी. मुझे आते देखकर वह घर के अन्दर चली गई. लड़के से पूछने पर पता लगा कि चांग-फ़ू घर पर नहीं था. "और तुम्हारी बड़ी बहिन ?" मैंने छा. वह घूर कर मेरी तरफ़ देखने लगा और प्रश्न किया—"उससे क्या काम है ?" मुझे वह बड़ा भयानक दिखने लगा जैसे मेरे ऊपर हमला करना चाहता हो. चुपचाप मैं लौट आया, आजकल मेरा यही हाल होता है...."

"तुम अन्दाज़ नहीं लगा सकते कि आजकल मुझे किसी के यहां जाने में कितना डर लगता है. मुझे मालूम है कि लोग मेरा आना नहीं पसन्द करते और इसी कारन स्वयं अपने से घृना करने लग गया हूं. यह जानकर अब मैं किसी के यहां जाता भी नहीं हूं. पर मां का सहेजा हुआ काम तो करना

ے وچار میرے سوپن ھی تھے . دوسرے ھی چھن مجھے اپنے
چاروں پر بڑی ھنسی آئی اور میں اُنھیں بھول بھی گیا ."

"مجھے معلوم نہیں تھا کہ اُسے ایک بار نقلی پھولوں کے لئے
ار پڑچکی ھے . پر جب ماں نے اس بات کا ذکر کیا ' مجھے
ھیر کھانے والی گھٹنا یاد آگئی . میں نے تایویاں کی دوکانوں
یں وہ پھول ڈھونڈھا پر وھاں نہ ملا . جب میں سینان گیا
ب وھاں سے لایا ."

باھر کیمولیا کے پیڑ پر لدی ھوئی برف کے پھسل کر گرنے
ے ھلکی سی آواز ھوئی اور میرا دھیان بھی اُچٹ گیا . برف کے
وجھ سے وہ پیڑ جھکا جا رھا تھا . اُس کی ٹہنیاں اب پھر سیدھی
وگئیں اور اُس میں لگے لال پھول اب پہلے سے بھی ادھک
چمکنے لگے . آکاش کا سلیٹی رنگ بھی گہرا ھوتا جا رھا تھا .
وڑ وں کی چوں چوں شروع ھوگئی تھی . شام ھو چلی تھی .
مین کے برف سے ڈھکی ھونے کے کارن اُنھیں کھانے کو کچھ بھی
ہیں ملا تھا . وہ سب جلدی ھی اپنے گھونسلوں میں چلی
ئیں اور ھر طرف پھر شانتی چھا گئی .

کھڑکی کے باھر جھانک کر اُس نے پیالہ خالی کر دیا اور
گریٹ کے کش کھینچتے ھوئے بولا—" سینان میں میں نقلی
ول خرید پایا . یہ تو مجھے معلوم نہیں تھا کہ جن پھولوں کے
ئے اُسے مار پڑی تھی وہ ویسے ھی تھے جیسے میں لایا تھا . یہ
ی ویلویٹ (ایک پرکار کا چکنا مخملی کپڑا) کے بنے تھے .
جھے یہ بھی معلوم نہیں تھا کہ اُسے گہرا لال رنگ پسند تھا
ا ھلکا گلابی ' اِس لئے دونوں رنگ کے ایک ایک گچھے لیتا
یا ."

" آج دوپہر کو کھانا کھانے کے بعد میں چانگ . فو کے گھر
یا . اِسی کام کے لئے میں ایک دن زیادہ رک گیا تھا . اُس کا
ھر ٹھیک اُسی جگہ پر پہلے ھی جیسا تھا . پر گھر میں ایک
جیب اُداسی چھائی ھوئی دکھائی دیتی تھی . شاید وہ میرے
ستشک کی کوری کلپنا ھی رھی ھو . اس کا لڑکا اور چھوٹی
ڑکی آہ . چاؤ باھر دروازے پر ھی کھڑے تھے . آہ . چاؤ پہلے سے
ہت بڑی ھوگئی تھی پر اُس کی بہن سے اُس میں بڑی اسمانتا
ی . مجھے آتے دیکھکر وہ گھر کے اندر چلی گئی . لڑکے سے
چھنے پر پتہ لگا کہ چانگ . فو گھر پر نہیں تھا . " اور تمہاری
ہن ؟ " میں نے پوچھا . وہ گھور کر میری طرف دیکھنے لگا اور پرشن
یا—" اُس سے کیا کام ھے ؟ " وہ بڑا بھیانک دیکھنے لگا جیسے
یرے اُوپر حملہ کرنا چاھتا ھو . چپ چاپ میں لوٹ آیا '
جکل میرا یہی حال ھوتا ھے..."

" تم انداز نہیں لگا سکتے کہ آجکل مجھے کسی کے یہاں
جانے میں کتنا ڈر لگتا ھے . مجھے معلوم ھے کہ لوگ میرا
آنا نہیں پسند کرتے اور اِسی کارن میں سویم اپنے سے گھرنا
رنے لگ گیا ھوں . یہ جان کر اب میں کسی کے یہاں
جاتا بھی نہیں ھوں . پر ماں کا سہیجا ھوا کام تو کرنا

किसी स्त्री को अपने बालों में लाल रंग के नक़ली फूल लगाये देखा. उसे वह इतना सुन्दर लगा कि वह उसके लिये मचल उठी और न मिलने पर रात भर रोती रही. ग़ुस्से में उसके पिता ने उसे मारा भी. दो तीन दिन तक उसकी आंखें सूजी रहीं. इस प्रकार के लाल फूल दूसरे शहर से आते थे और 'एस' नगर में नहीं मिलते थे, इसलिये उसे उन फूलों के पाने की कोई आशा भी नहीं थी. चूंकि मैं इस बार इधर आ रहा था, मेरी मां ने दो फूल ख़रीद कर उसको देने के लिये कहा."

"इस काम से परेशान होने के बजाय मुझे ख़ुशी ही हुई. आह-शुन के लिये कुछ कर सकने की उम्मीद में मैं प्रसन्न हो उठा. पारसाल के पहिले जब मैं मां को लिवाने आया था चांग-फ़ू घर में ही था और मैंने उससे घंटों बातें भी की थीं. उसने मुझे अपने घर गेहूं के आटे की खीर जिसमें वह चीनी भी मिलाते थे, खाने के लिये निमंत्रित किया. यह तो तुम समझते ही हो कि मल्लाह के घर में सफ़ेद चीनी मिलने का मतलब है कि वह ग़रीब नहीं है और अच्छा खाता पीता है. मैंने निमंत्रिन तो स्वीकार कर लिया पर आग्रह किया कि मैं बहुत थोड़ा ही खाऊंगा. उसने मेरी बात को मंजूर करते हुये आह-शुन से कहा—इन विद्वानों को भूक नहीं लगती. तुम थोड़ा सामान लाओ पर उसमें चीनी ज्यादा मिला देना. पर जब वह लायी तो मैंने देखा कि वह कटोरा इतना बड़ा था कि शायद मैं दिन भर खाता रहता! फिर भी मैंने खाना शुरू कर दिया. यह सही है कि मेरा प्याला चांग-फ़ू के प्याले से छोटा था. मैंने इसके पहिले ऐसी खीर नहीं खाई थी. यह मीठी थी और बहुत स्वादिश्ठ न थी. थोड़ी सी खाने के बाद मैं खाना बन्द करने की ही सोच रहा था कि मेरी द्रश्टि आह-शुन पर पड़ी. उसे देखकर मेरी हिम्मत नहीं पड़ी कि मैं खाने की तीलियां रख दूं. मैंने उसकी आंखों में आशा और निराशा दोनों के ही भाव देखे —निराशा के इसलिये कि शायद उसने अच्छी न पकायी हो और आशा के इसलिये कि हम और खीर खायेंगे. मैंने सोचा कि यदि मैं प्याले में खीर पड़ी रहने दूंगा तो उसे बहुत दुख होगा, इसलिये मैंने उतनी ही तेज़ी से खाना शुरू किया जैसे चांग-फ़ू खा रहा था. तब मैंने महसूस किया जबरदस्ती खाने का क्या मतलब होता है. मुझे याद है जब मेरे पेट में केंचुये पड़ गये थे मुझे चीनी के साथ दवा खानी पड़ी थी और मेरी हालत ऐसी ही हो गई थी. फिर भी मुझे दुख नहीं हुआ क्योंकि जब वह खाली प्याले उठाने आई तो उसके ओंठों पर संतोश की मुस्कराहट खेल रही थी उस दिन रात में पेट ख़राब रहने के कारन यथार्थ में मुझे नींद नहीं आई और खट्टी खट्टी डकारें आती रहीं पर मैं ईश्वर से यही मनाता रहा कि आह-शुन हमेशा प्रफुल्लित रहे. इस प्रकार

اِستری کو اپنے بالوں میں لال رنگ کے نقلی پھول لگائے دیکھا. وہ اِتنا سندر لگا کہ وہ اُس کے لئے مچل اُٹھی اور نہ ملنے پر بھر روتی رہی. غصے میں اُس کے پتا نے اُسے مارا بھی. دو دِن تک اُس کی آنکھیں سوجی رہیں. اِس پرکار کے لال دوسرے شہر سے آتے تھے اور 'ایس' نگر میں نہیں ملتے تھے، لئے اُسے اُن پھولوں کے پانے کی کوئی آشا بھی نہیں تھی. کہ میں اِس بار اِدھر آرہا تھا، میری ماں نے دو پھول خرید اُس کو دینے کے لئے کہا."

"اِس کام سے پریشان ہونے کے بجائے مجھے خوشی ہی ہوئی. شن کے لئے کچھ کرسکنے کی اُمید میں میں پرسن ہو اُٹھا. سال کے پہلے جب میں ماں کو لوانے آیا تھا چانگ-فو میں ہی تھا اور میں نے اُس سے گھنٹوں باتیں بھی کی . اُس نے مجھے اپنے گھر گیہوں کے آٹے کی کھیر جس وہ چینی بھی ملاتے تھے، کھانے کے لئے نمنترت کیا. یہ تو تم جھتے ہی ہو کہ ملاح کے گھر میں سفید چینی ملنے کا مطلب کہ وہ غریب نہیں ہے اور اچھا کھاتا پیتا ہے. میں نے رن تو سویکار کرلیا پر آگرہ کیا کہ میں بہت تھوڑا ہی نگا. اُس نے میری بات کو منظور کرتے ہوئے آہ-شن سے —اِن ودوانوں کو بھوک نہیں لگتی. تم تھوڑا سامان لاؤ اُس میں چینی زیادہ ملا دینا. پر جب وہ لائی تو میں دیکھا کہ وہ کٹورا اِتنا بڑا تھا کہ شاید میں دن بھر کھاتا رہتا! بھی میں نے کھانا شروع کردیا. یہ صحیح ہے کہ میرا پیالہ گ-فو کے پیالے سے چھوٹا تھا. میں نے اِس کے پہلے ایسی نہیں کھائی تھی. یہ میٹھی تھی اور بہت سوادشٹ نہ تھی. ی سی کھانے کے بعد میں کھانا بند کرنے کی ہی سوچ رہا کہ میری درشٹی آہ-شن پر پڑی. اُسے دیکھکر میری ہمت ں پڑی کہ میں کھانے کی تیلیاں رکھدوں. میں نے اس کی ہوں میں آشا اور نراشا دونوں کے ہی بھاؤ دیکھے—نراشا کے لئے کہ شاید اُس نے اچھی نہ پکائی ہو اور آشا کے اِس کہ ہم اور کھیر کھائینگے. میں نے سوچا کہ یدی میں پیالے کھیر پڑی رہنے دونگا تو اُسے بہت دکھ ہوگا، اِس لئے میں اُتنی ہی تیزی سے کھانا شروع کیا جیسے چانگ-فو کھا رہا . تب میں نے محسوس کیا کہ زبردستی کھانے کا کیا مطلب ہے. مجھے یاد ہے جب میرے پیٹ میں کینچوئے پڑگئے مجھے چینی کے ساتھ دوا کھانی پڑی تھی اور میری حالت ی ہی ہوگئی تھی. پھر بھی مجھے دکھ نہیں ہوا کیونکہ، ب وہ خالی پیالے اُٹھانے آئی تو اس کے ہونٹھوں پر نتوش کی مسکراہٹ کھیل رہی تھی. اُس دن رات پیٹ خراب رہنے کے کارن یتھارتھ میں مجھے نیند نہیں اور کھٹی کھٹی ڈکاریں آتی رہیں پر میں ایشور یہی مناتا رہا کہ آہ-شن ہمیشہ پرپھلت رہے. اِس پرکار

है.......पर तुम मेरी तरफ़ ऐसे क्यों देख रहे हो ?..... क्या मैं सचमुच बहुत बदल गया हूं ? मुझे आज भी वह दिन याद है जब हम दोनों टयूटेलरी के मन्दिर में जाते थे और वहां मूर्तियों की दाढ़ी पकड़ कर खींचते थे. दिन दिन भर हम लोग बहस करते थे कि चीन में क्रान्तिकारी परिवर्तन कैसे किये जा सकते हैं और कभी कभी तो बहस करते करते आपस में लड़ भी जाते थे. लेकिन अब तो मैं बहुत शान्त और समझौता करने वाला हूं. कभी कभी तो मैं सोचता हूं कि यदि मैं अपने पुराने मित्रों से मिलूं तो वह शायद ही मुझे अपना मित्र मानने को तैयार होंगे. जो कुछ भी हो, मैं जैसा हूं तुम्हारे सामने हूं."

उसने रुक कर सिगरेट निकाला और मुंह में रख कर उसे जला लिया, फिर बोला—"तुम्हारे चेहरे से तो मुझे आभास होता है कि तुममें मेरे लिये अब भी आशा है. यह सही है कि पहिले के मुक़ाबले में मैं बहुत ही कुन्दज़ेहन हो गया हूं पर कुछ चीज़ें हैं जिनसे बहुत प्रभावित भी होता हूं. यही कारन है कि तुम्हारे आगे मैं कृतज्ञ भी हूं पर परेशानी भी बहुत अनुभव करता हूं. मुझे दुख इसी बात का है कि मेरे उन तमाम दोस्तों को जिन्हें मेरे बारे में, मेरे भविश्य के बारे में अभी भी कुछ आशा है, उन्हें बाद में कुछ दुख होगा." कुछ छन रुक कर उसने सिगरेट के कश खींचे और मुंह से धुंआं निकालते हुए फिर बोला—"आज ही यहां आने के कुछ ही पहले मैंने एक बेवक़ूफ़ी की है पर मैं उस पर खुश हूं. मेरा वह पड़ोसी जो पूरब की तरफ़ रहता था, चांग-फ़ू कहलाता था. वह मल्लाह था. उसके एक लड़की थी जिसका नाम था आह-शुन. जब तुम मेरे घर आते थे, उसे अवश्य देखा होगा. पर तुमने ध्यान नहीं दिया होगा क्योंकि वह छोटी थी. बड़ी होने पर भी वह सुन्दरी नहीं हुई. साधारन सी लम्बे मुंह की, पीली पड़ कर रह गई. लेकिन उसकी आंखें बहुत बड़ी थीं और बरौनियां भी असाधारन रूप से बड़ी थीं. ऐसी साफ़ आंखें थीं कि उसकी सफ़ेदी की तुलना उत्तर के आसमान से की जा सकती थी जब हवा न बह रही हो और बादल का एक भी टुकड़ा न हो. वह बड़ी योग्य लड़की थी. जब वह छोटी थी तभी उसके मां की मृत्यु हो गई. अपने छोटे भाई और बहन की देख भाल करने की ज़िम्मेदारी उसी पर आ गई. उसे अपने पिता की भी फ़िक्र करनी पड़ती थी और यह सब वह बड़ी ख़ूबी से कर लेती थी. वह कंजूस भी थी. इसलिये धीरे धीरे उसके परिवार ने उन्नति कर ली. शायद ही कोई ऐसा पड़ोसी रहा हो जो उसकी तारीफ़ नहीं करता था. चांग-फ़ू भी उसकी बड़ाई करता था. इस बार जब मैं घर से यहां आ रहा था, मां ने उसे याद किया था. बड़े बूढ़ों की याददाश्त बहुत अच्छी होती है. मां ने बतलाया कि एक बार आह-शुन ने

...پر تم میری طرف ایسے کیوں دیکھ رہے ہو؟...کیا میں
چ مچ بہت بدل گیا ہوں؟ مجھے آج بھی وہ دن یاد ہے جب ہم
ونوں ٹیوٹیلری کے مندر میں جاتے تھے اور وہاں مورتیوں کی داڑھی
کڑ کر کھینچتے تھے. دن دن بھر ہم لوگ بحث کرتے تھے کہ
چین میں کرانتکاری پریورتن کیسے کئے جاسکتے ہیں اور کبھی
بھی تو بحث کرتے کرتے آپس میں لڑ بھی جاتے تھے. لیکن
ب تو میں بہت شانت اور سمجھوتہ کرنے والا ہوں. کبھی کبھی
و میں سوچتا ہوں کہ یدی میں اپنے پرانے متروں سے ملوں تو
ہ شاید ہی مجھے اپنا متر ماننے کو تیار ہونگے. جو کچھ بھی
و، میں جیسا ہوں تمہارے سامنے ہوں."

اس نے رک کر سگریٹ نکالا اور منہ میں رکھ کر اسے جلا لیا،
ھر بولا—"تمہارے چہرے سے تو مجھے آبھاس ہوتا ہے کہ تم
یں میرے لئے اب بھی آشا ہے. یہ صحیح ہے کہ پہلے کے
قابلے میں میں بہت ہی کندذہن ہو گیا ہوں پر کچھ چیزیں
یں جن سے بہت پربھاوت بھی ہوتا ہوں. یہی کارن ہے کہ
مہارے آگے میں کرتگیہ بھی ہوں پر پریشانی بھی بہت انوبھو
رتا ہوں. مجھے دکھ اس بات کا ہے کہ میرے ان تمام دوستوں
و جنہیں میرے بارے میں، میرے بھوشیہ کے بارے میں ابھی بھی
چھ آشا ہے، انہیں بعد میں کچھ دکھ ہوگا." کچھ چھن رک کر
س نے سگریٹ کے کش کھینچے اور منہ سے دھواں نکالتے ہوئے پھر
ولا—"آج یہی یہاں آنے کے کچھ ہی پہلے میں نے ایک بیوقوفی
ی ہے پر میں اس پر خوش ہوں. میرا وہ پڑوسی جو پورب
ی طرف رہتا تھا، چانگ-فو کہلاتا تھا. وہ ملاح تھا. اس کے
یک لڑکی تھی جس کا نام تھا آہ-شن. جب تم میرے گھر آتے
ھے، اسے اوشیہ دیکھا ہوگا. پر تم نے دھیان نہیں دیا ہوگا کیونکہ
ہ چھوٹی تھی. بڑی ہونے پر وہ سندری نہیں ہوئی. سادھارن
سی لمبے منہ کی، پیلی پڑ کر رہ گئی. لیکن اس کی آنکھیں
بہت بڑی تھیں اور برونیاں بھی اسادھارن روپ سے بڑی تھیں.
یسی صاف آنکھیں تھیں کہ اس کی سفیدی کی تولنا اتر کے
سمان سے کی جاسکتی تھی جب ہوا نہ بہ رہی ہو اور بادل
کا ایک بھی ٹکڑا نہ ہو. وہ بڑی یوگیہ لڑکی تھی. جب وہ
چھوٹی تھی تبھی اس کے ماں کی مرتیو ہوگئی. اپنے چھوٹے
بھائی اور بہن کی دیکھ بھال کرنے کی ذمہ داری اسی پر آگئی.
سے اپنے پتا کی بھی فکر کرنی پڑتی تھی اور یہ سب وہ بڑی خوبی سے
کرلیتی تھی. وہ کنجوس بھی تھی. اس لئے دھیرے دھیرے اس
کے پریوار نے انتی کرلی. شاید ہی کوئی ایسا پڑوسی رہا ہو
جو اس کی تعریف نہیں کرتا تھا. چانگ-فو بھی اس کی
بڑائی کرتا تھا. اس بار جب میں گھر سے یہاں آرہا تھا، میں
نے اسے یاد کیا تھا. بڑے بوڑھوں کی یادداشت بہت
اچھی ہوتی ہے. ماں نے بتایا کہ ایک بار آہ-شن نے

को लेकर क़ब्रिस्तान में गया. यह सोच कर कि मैं अपने प्यारे भाई को फिर से देख सकूंगा, मुझे बड़ी ख़ुशी हुई. मेरे लिये यह एक नया अनुभव था. क़ब्र के नज़दीक पहुंच कर हम लोगों ने देखा कि नदी सचमुच किनारा काट रही थी और पानी क़ब्र से केवल दो फ़ीट की दूरी पर था. क़रीब दो साल से उस क़ब्र पर नयी मिट्टी नहीं लगाई गयी थी. मैं उसी बर्फ़ीली ज़मीन पर खड़ा हो गया और मज़दूरों से कहा—"खुदाई शुरू करो."

मैं बहुत साधारन आदमी हूं. मुझे यह महसूस हुआ कि उस समय मेरी आवाज़ बड़ी अस्वाभाविक थी और इससे ज़्यादा बड़ी आज्ञा मैंने ज़िन्दगी में और कभी नहीं दी थी. पर मज़दूरों के लिये इसमें कोई नयापन नहीं था. वे खोदने में जुट गये. जब वह काफ़ी खोद चुके और ताबूत के घेरे तक पहुंच गये, मैंने झांक कर देखा और ताबूत को सचमुच सड़ा हुआ पाया. ताबूत क़रीब क़रीब पूरा टूट चुका था. लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े ही इधर उधर पड़े थे. मेरे हृदय की धड़कन बढ़ गई. मैं अपने भाई को जो देखने वाला था. पर मुझे घोर आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि बिस्तर, कपड़े, लाश सभी नदारद थीं. मैंने सोचा कि सभी चीजें गल गयी होंगी. पर बाल तो सब से देर में और मुश्किल से गल पाता है. शायद कुछ बाल अब भी पड़े हों. इसलिये मैं कीचड़ में उस स्थान पर जहां तकिया रही होगी उसके बाल ढूंढ़ने लगा. पर कुछ पता न लगा."

मैंने देखा कि उसकी आंखें लाल होती जा रही थीं, पर यह शराब का प्रभाव था. उसने खाया कुछ भी नहीं, केवल शराब पीता रहा और क़रीब एक पिन्ट पी गया होगा. अब उसकी शकल और चेहरे के हाव भाव वैसे ही हो रहे थे जैसे मैं अपने पुराने दोस्त लू-वी-फ़ू में देखा करता था. मैंने बेयरा से दो पिंट शराब और गरम करने को कहा. फिर उसी की तरफ़ मुड़ कर उसकी बातें सुनने में लग गया.

"वास्तव में उस क़ब्र को पुरानी जगह से हटाने की कोई आवश्यकता बाक़ी नहीं रह गयी थी. मेरे लिये केवल यही काम बाक़ी था कि ज़मीन को फिर बराबर करवा दूं और ताबूत को वापस कर दूं. हालांकि ताबूत ख़रीद कर फिर वापिस करना अजीब बात थी और दाम भी कम मिलते पर वह दूकानदार उसे ज़रूर वापस ले लेता. इस प्रकार मैं अपने ख़र्चे के लिये कुछ पैसे ज़रूर बचा लेता. पर मैंने ऐसा नहीं किया. मैंने ताबूत में बिस्तरा बिछा कर पुरानी क़ब्र की थोड़ी मिट्टी उसमें रख कर उसको अपने पिता की क़ब्र के बग़ल में एक नयी क़ब्र में रख दिया. चूंकि क़ब्र के चारों तरफ़ मुझे ईंट का घेरा बनवाना था इसलिये कल दिन भर मैं उसी में व्यस्त रहा. इस प्रकार से मैंने यह काम पूरा किया. कम से कम मेरी मां को सन्तोश देने के लिये काफ़ी

کو لے کر قبرستان میں گیا. یہ سوچ کر کہ میں اپنے پیارے بھائی کو پھر دیکھ سکوں گا' مجھے بڑی خوشی ہوئی. میرے لئے یہ ایک نیا انوبھو تھا. قبر کے نزدیک پہونچ کر ہم لوگوں نے دیکھا کہ ندی سچ مچ کنارا کاٹ رہی تھی اور پانی قبر سے کیول دو فیٹ کی دوری پر تھا. قریب دو سال سے اس قبر پر نئی مٹی نہیں لگائی گئی تھی. میں اسی برفیلی زمین پر کھڑا ہوگیا اور مزدوروں سے کہا—"کھدائی شروع کرو."

"میں بہت سادھارن آدمی ہوں. مجھے یہ محسوس ہوا کہ اس سمے میری آواز بڑی اسوابھاوک تھی اور اس سے زیادہ بڑی آگیاں میں نے زندگی میں اور کبھی نہیں دی تھی. پر مزدوروں کے لئے اس میں کوئی نیاپن نہیں تھا. وہ کھود نے جٹ گئے. جب وہ کافی کھود چکے اور تابوت کے گھیرے تک پہونچ گئے' میں نے جھانک کر دیکھا اور تابوت کو سچ مچ سڑا ہوا پایا. تابوت قریب قریب پورا ٹوٹ چکا تھا. لکڑی کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑے ہی ادھر ادھر پڑے تھے. میرے ہردے کی دھڑکن بڑھ گئی. میں اپنے بھائی کو جو دیکھنے والا تھا. پر مجھے گھور آشچریہ ہوا جب میں نے دیکھا کہ بستر' کپڑے' لاش سبھی ندارد تھیں. میں نے سوچا کہ سبھی چیزیں گل گئی ہوں گی. پر بال تو سب سے دیر میں اور مشکل سے گل پاتا ہے. شاید کچھ بال اب بھی پڑے ہوں. اس لئے میں کیچڑ میں اس استھان پر جہاں تکیہ رہی ہوگی اس کے بال ڈھونڈھنے لگا. پر کچھ پتہ نہ لگا."

میں نے دیکھا کہ اس کی آنکھیں لال ہوتی جارہی تھیں' پر یہ شراب کا پربھاؤ تھا. اس نے کھایا کچھ بھی نہیں' کیول شراب پیتا رہا اور قریب ایک پنٹ پی گیا ہوگا. اب اس کی شکل اور چہرے کے ہاؤ بھاؤ ویسے ہی ہو رہے تھے جیسے میں اپنے پرانے دوست لو-وی-فو میں دیکھا کرتا تھا. میں نے بیرا سے دو پنٹ شراب اور گرم کرنے کو کہا. پھر اس کی طرف مڑکر اس کی باتیں سننے میں لگ گیا.

"واستو میں اس قبر کو پرانی جگہ سے ہٹانے کی کوئی آوشیکتا باقی نہیں رہ گئی تھی. میرے لئے کیول یہی کام باقی تھا کہ زمین کو پھر برابر کروا دوں اور تابوت کو واپس کردوں. حالانکہ تابوت خریدکر پھر واپس کرنا عجیب بات تھی اور دام بھی کم ملتے پر وہ دوکاندار اسے ضرور واپس لے لیتا. اس پرکار میں اپنے خرچ کے لئے وہ پیسے ضرور بچالیتا. میں نے ایسا نہیں کیا. میں نے تابوت میں بسترا بچھاکر پرانی قبر کی تھوڑی مٹی اس میں رکھکر اس کو اپنے پتا کی قبر کے بغل میں ایک نئی قبر میں رکھ دیا. چونکہ قبر کے چاروں طرف مجھے اینٹ کا گھیرا بنوانا تھا اس لئے کل دن بھر میں اسی میں ویست رہا. اس پرکار سے میں نے یہ کام پورا کیا. کم سے کم میری ماں کو سنتوش دینے کے لئے کافی

मंगवाया जाय. अन्त में बेयरा की पसन्द से ही तीन चीजें आईं—सूखी तली फलियां, ठंडा गोश्त और तली मछलियां.

एक हाथ में शराब का प्याला लिये और दूसरे हाथ की उंगलियों के बीच सिगरेट दबाये वह मुस्कराकर बोला—"जब मैं लौट कर वापस आया तब मैंने देखा कि मैं कितना बुढ्ढा हूं. जब मैं छोटा था यदि मक्खियों को एक जगह इकट्ठा देखता था तो उन्हें डराकर उड़ा दिया करता था, पर दूसरे ही छन वह उसी जगह फिर आ बैठती थीं. हालांकि यह काम बुढ्ढूपन ही का था और मैं भी ऐसा ही समझता था पर मुझे उन पर दया भी आ जाती थी. मैं सोचता था क्या वह उड़ कर स्वयं नहीं जा सकती थीं ?"

मैं मुस्कराकर बोला—"उत्तर देना तो मुश्किल है. शायद मैं भी उन मक्खियों के सामने एक छोटे से घेरे में ही घूमता रहा हूं. लेकिन तुम क्यों उड़कर यहीं वापस आ गये ?"

"बेकार ही !" वह बोला और एक ही घूंट में ही प्याला खाली कर दिया। फिर सिगरेट के कश पर कश खींचकर आंखें खोलते हुये बोला—"बेकार ही ! पर तुम्हें जल्दी ही मालूम हो जायेगा."

बेयरा तुरन्त गरम ताजी शराब लाया और टेबिल पर तश्तरियां सजा दीं. ताजी तली वस्तुओं की सुगन्ध ऊपर के कमरे में फैल गई और अब कमरे का वातावरन जियादा प्रसन्नतामय हो रहा था.

वह बोलता रहा—"तुमको शायद पहिले ही से मालूम है कि मेरे एक छोटा भाई था जो तीन ही साल की उम्र में मर गया था और यहीं दफन किया गया था. मुझे तो उसकी शकल की याद भी नहीं रही, पर मां कहती है कि वह बड़ा प्यारा लड़का था और मुझसे बहुत हिला हुआ था. अब भी उसकी याद करके मां रोया करती हैं. इस वसन्त में हमारे एक चचेरे भाई ने लिखा कि उसके क़ब्र के पास की मिट्टी बहुत नम हो गई है और यदि हम लोगों ने मरम्मत न कराई तो नदी में गिर जायेगी. जब मां को यह मालूम हुआ तो वह बहुत चिन्तित हुई और कई रात सो न पाईं. वह स्वयं पत्र पढ़ लेती हैं. लेकिन मैं क्या कर सकता था ? न मेरे पास पैसा था, न समय इस सिलसिले में कुछ भी कर सकना असम्भव दीख रहा था. नये साल की छुट्टी के अवसर का लाभ उठा कर मैंने यहां आ पाया हूं ताकि उसके क़ब्र की मरम्मत करवा दूं."

एक प्याला शराब और पीकर वह फिर बोला—"क्या उत्तर में भी ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ता है ? वहां बर्फ की मोटी तहों में और बर्फ के नीचे भी फूल नहीं जमते. इसलिये कल मैंने एक छोटा सा ताबूत खरीदा. मैंने सोचा कि क़ब्र में गड़ा हुआ ताबूत अवश्य खराब हो गया होगा. मैंने कपड़े और बिस्तर खरीदे और चार मजदूरों

منگوایا جائے ۔ آخر میں بیرا کی پسند سے ہی تین چیزیں آئیں—سوکھی تلی پھلیاں، ٹھنڈا گوشت اور تلی مچھلیاں ۔

ایک ہاتھ میں شراب کا پیالہ لئے اور دوسرے ہاتھ کی انگلیوں کے بیچ میں سگریٹ دبائے وہ مسکرا کر بولا—"جب میں لوٹ کر واپس آیا تو میں نے دیکھا کہ میں کتنا بڈھا ہوں۔ جب میں چھوٹا تھا یدی مکھیوں کو ایک جگہ اکٹھا دیکھتا تھا تو انہیں ڈرا کر اڑا دیا کرتا تھا، پر دوسرے ہی چھن وہ اسی جگہ پھر آ بیٹھتی تھیں ۔ حالانکہ یہ کام بڈھوپن ہی کا تھا اور میں بھی ایسا ہی سمجھتا تھا پر مجھے ان پر دیا بھی آجاتی تھی ۔ میں سوچتا تھا کیا وہ اڑکر سویم نہیں جاسکتی تھیں؟"

میں مسکراکر بولا—"اتر دینا تو مشکل ہے ۔ شاید میں بھی ان مکھیوں کے سامنے ایک چھوٹے سے گھیرے میں ہی گھومتا رہا ہوں ۔ لیکن تم کیوں اڑکر یہاں واپس آگئے؟"

"بیکار ہی!" وہ بولا اور ایک ہی گھونٹ میں پیالہ خالی کردیا ۔ پھر سگریٹ کے کش پر کش کھینچ کر آنکھیں کھولتے ہوئے بولا—بیکار ہی! یہ تمہیں جلد ہی معلوم ہوجائیگا ۔"

بیرا ترنت گرم تازی شراب لایا اور ٹیبل پر طشتریاں سجا دیں ۔ تازی تلی وستوؤں کی سوگندھ اوپر کے کمرے میں پھیل گئی اور اب کمرے کا واتاورن زیادہ پرسنتا مے ہو رہا تھا ۔

وہ بولتا رہا—"تم کو شاید پہلے ہی سے معلوم ہے کہ میرا ایک چھوٹا بھائی تھا جو تین ہی سال کی عمر میں مر گیا تھا اور یہیں دفن کیا گیا تھا ۔ مجھے تو اس کی شکل کی یاد بھی نہیں رہی، پر ماں کہتی ہے وہ بڑا پیارا لڑکا تھا اور مجھ سے بہت ہلا ہوا تھا ۔ اب بھی اس کی یاد کرکے ماں رویا کرتی ہیں ۔ اس بسنت میں ہمارے ایک چچیرے بھائی نے لکھا کہ اس کے قبر کے پاس کی مٹی بہت نم ہوگئی ہے اور یدی ہم لوگوں نے مرمت نہ کرائی تو ندی میں گر جائے گی ۔ جب ماں کو یہ معلوم ہوا تو وہ بہت چنتت ہوئیں اور کئی رات سو نہ پائیں ۔ وہ سویم پتر پڑھ لیتی ہیں ۔ لیکن میں کیا کرسکتا تھا؟ نہ میرے پاس پیسہ تھا نہ سمے ۔ اس سلسلے میں کچھ بھی کرسکنا اسمبھو دیکھ رہا تھا ۔ نئے سال کی چھٹی کے اوسر کا لابھ اٹھاکر میں یہاں آپایا ہوں تاکہ اس کے قبر کی مرمت کروادوں ۔"

ایک پیالہ شراب اور پی کر وہ پھر بولا—"کیا اتر میں بھی ایسی استھتی کا سامنا کرنا پڑتا ہے؟ وہاں برف کی موٹی تہوں میں اور برف کے نیچے بھی پھول نہیں جمتے۔ اس لئے کل میں نے ایک چھوٹا تابوت خریدا ۔ میں نے سوچا کہ قبر میں گڑا ہوا تابوت اوشیہ خراب ہوگیا ہوگا۔ میں نے کپڑے اور بستر خریدے اور چار مزدوروں

इस बार सीढ़ी पर कोई काफी धीरे धीरे चढ़ रहा था. मैंने सोचा यह कोई ग्राहक ही होगा. जब आखिरी सीढ़ी पर पैरों की आवाज आई मैंने अपना सिर उठा कर इस तरह देखा जैसे आनेवाले के आने से मुझे परेशानी हुई हो और मैं उठ खड़ा हुआ. मुझे इसकी तनिक भी आशा नहीं थी कि यहां मेरी अपने एक मित्र से भेंट हो जायेगी. शायद वह मुझे अब भी मित्र कहने देगा. आनेवाला मेरा सहपाठी था और जब मैं अध्यापक था, वह भी मेरे साथ ही काम करता था. हालांकि वह बहुत बदल गया था पर मैं उसे देखते ही पहचान गया. पहले के स्वस्थ और फुर्तीले लू-वी-फू के मुक़ाबले में अब वह थोड़ा सुस्त हो गया था.

"अरे ! वी-फू, तुम यहां ! मुझे रत्ती भर उम्मीद नहीं थी कि तुमसे यहां भेंट हो जायेगी."

"अच्छा, तुम हो ! मैंने भी कभी नहीं सोचा था. . . ."

मैंने उससे साथ देने के लिये कहा पर काफी हिचक के बाद वह तैयार हुआ. मुझे यह बहुत अजीब लगा और मेरे मन को तकलीफ़ हुई. उसके बाल आज भी पहले की ही तरह बिखरे थे और चेहरा लम्बा और पीला था, वह अब पहिले से दुबला था. वह बड़ा शान्त था. सम्भव है उसका उत्साह मर चुका हो. घनी भौं के नीचे उसकी आंखों में अब पहिले की तेज, पैनी दृष्टि नहीं थी. पर जब उसने आंगन की तरफ़ नजर डाली तो मुझे उसकी आंखों में वही पुरानी चमक दिखाई दी जो मैं स्कूल के दिनों में देखा करता था.

मैं खुश हो कर, पर कुछ डरता हुआ बोला "क्यों, हम लोग क़रीब दस साल बाद मिल रहे हैं ? बहुत दिन पहिले मैंने सुना था कि तुम सीनान में हो पर मैं इतना निकम्मा और सुस्त हूं कि तुम्हें पत्र भी न लिख सका."

उसने उत्तर दिया—"मैं ठीक ही हूं. क़रीब दो साल से मैं तायुयान में हूं. मेरी मां भी मेरे साथ है. जब मैं उन्हें वापस लेने आया था तो मालूम हुआ कि तुम यहां से जा चुके हो."

मैंने प्रश्न किया—"तायुयान में क्या कर रहे हो ?

"प्रान्तीय अधिकारी के परिवार में पढ़ा रहा हूं."

"और उसके पहले क्या करते थे ?"

अपनी जेब से एक सिगरेट निकाल कर उसने जलायी और मुंह से धुएं के गोले निकालते हुये वह बोला—"उसके पहिले ?. . . . यों ही कुछ नहीं. . . . .बेकार ही था."

उसने मुझसे मेरे बारे में पूछा. बेयरा को बुला कर एक प्याला और लाने के लिया कहकर मैंने अपनी हालत संक्षेप में बता दी. मैं चाहता था कि वह भी जल्दी ही दो प्याले मदिरा पी कर अपने को थोड़ा गरमा ले. हम लोगों ने साथ खाने के लिये और चीजें भी मंगवाई. पहिले तो हम लोग आपस में शिष्टाचार का ध्यान नहीं रखते थे पर इस बार हम दोनों में से कोई भी निश्चय न कर पाया कि क्या

اِس بار سیڑھی پر کوئی کافی دھیرے دھیرے چڑھ رہا تھا . میں نے سوچا یہ کوئی گراھک ھی ھوگا . جب آخری سیڑھی پر پیروں کی آواز آئی میں نے اپنا سر اُٹھاکر اِس طرح دیکھا جیسے آنے والے کے آنے سے مجھے پریشانی ھوئی ھو اور میں اُٹھ کھڑا ھوا . مجھے اُسکی تنک بھی آشا نہیں تھی کہ یہاں میری اپنے ایک متر سے بھینٹ ھوجائیگی . شاید وہ مجھے اب بھی متر کہنے دیگا . آنے والا میرا سہپاٹھی تھا اور جب میں ادھیاپک تھا وہ بھی میرے ساتھ ھی کام کرتا تھا . حالانکہ وہ بہت بدل گیا تھا پر میں اُسے دیکھتے ھی پہچان گیا . پہلے کے سوستھ اور پھرتیلے لو-وی-فو کے مقابلے میں اب وہ تھوڑا سست ھوگیا تھا .

"ارے ! وی-فو' تم یہاں ! مجھے رتی بھر اُمید نہیں تھی کہ تم سے یہاں بھینٹ ھوجائیگی ."

"اچھا' تم ھو ! میں نے بھی کبھی نہیں سوچا تھا . . . ."

میں نے اُس سے ساتھ دینے کے لئے کہا پر کافی ھچک کے بعد وہ تیار ھوا . مجھے یہ بہت عجیب لگا اور میرے من کو تکلیف ھوئی . اُس کے بال آج بھی پہلے کی طرح بکھرے تھے اور چہرہ لمبا اور پیلا تھا' وہ اب پہلے سے دبلا تھا . وہ بڑا شانت تھا . سمبھو ھے اس کا اُتساہ مرچکا ھو . گھنی بھوں کے نیچے اُسکی آنکھوں میں اب پہلے کی تیز' پینی درشٹی نہیں تھی . پر جب اُس نے آنگن کی طرف نظر ڈالی تو مجھے اُسکی آنکھوں میں وھی پرانی چمک دکھائی دی جو میں اسکول کے دنوں میں دیکھا کرتا تھا .

میں خوش ھوکر' پر کچھ ڈرتا ھوا بولا—"کیوں' ھم لوگ قریب دس سال بعد مل رھے ھیں؟ بہت دن پہلے میں نے سنا تھا کہ تم سینان میں ھو پر میں اِتنا نکما اور سست ھوں کہ تمھیں پتر بھی نہ لکھ سکا ."

اُس نے اُتر دیا—"میں ٹھیک ھی ھوں . قریب دو سال سے میں تایویان میں ھوں . میری ماں بھی میرے ساتھ ھے . جب میں انھیں واپس لینے آیا تھا تو معلوم ھوا کہ تم یہاں سے جاچکے ھو ."

میں نے پرشن کیا—"تایویان میں کیا کر رھے ھو؟"

"پرانتیہ ادھیکاری کے پریوار میں پڑھا رھا ھوں ."

"اور اُس کے پہلے کیا کرتے تھے؟"

اپنی جیب سے ایک سگریٹ نکال کر اُس نے جلائی اور منھ سے دھوئیں کے گولے نکالتے ھوئے وہ بولا—"اُس کے پہلے؟ . . . یونہی کچھ نہیں . . . . بیکار ھی تھا ."

اُس نے مجھ سے میرے بارے میں پوچھا . بیرا کو بلاکر ایک پیالہ اور لانے کے لئے کہکر میں نے اپنی حالت سنچھیپ میں بتادی . میں چاھتا تھا کہ وہ بھی جلدی ھی دو پیالے مدرا پی کر اپنے کو تھوڑا گرما لے . ھم لوگوں نے ساتھ کھانے کے لئے اور چیزیں بھی منگوائیں . پہلے تو ھم لوگ آپس میں شِشٹاچار کا دھیان نہیں رکھتے تھے پر اِس بار ھم دونوں میں کوئی بھی نشچے نہیں کرپایا کہ کیا

पुराने पांच टेबिल लगे हुए थे. केवल दीवार की खिड़की में अब शीशे के दरवाजे लगा दिये गये थे जहां पहिले लकड़ी के दरवाजे थे.

"एक प्याला पीली शराब, फलियों के दस टुकड़े और काफ़ी मात्रा में चटनी दो." मैंने आर्डर दिया.

बेयरा को यह आर्डर देते हुए, मैं पीछे जाकर खिड़की से लगी मेज के सहारे बैठ गया. ऊपर का कमरा खाली था. इसलिये मैं सब से अच्छी सीट पर बैठा ताकि मैं नीचे आंगन का पूरा दृश्य देख सकूं. वह आंगन शायद शराब की दूकान का हिस्सा नहीं था. पहिले भी जब मैं यहां आता, घंटों ऐसे ही आंगन को देखता रहता. बर्फ़ पड़ती रहने पर भी मैं अकसर घंटों बैठा रहता था. पर अब मैं उत्तर में रहने लगा था, इसलिये यह दृश्य मेरे लिये नए थे. प्लम के पेड़ बर्फ़ से होड़ ले रहे थे जैसे उन्हें बर्फ़ गिरने से कोई परेशानी ही न हो. दालान के बगल में ही अब भी कैमीला का एक पेड़ था जिसमें सुर्ख़ लाल फूल खिले थे. गहरी हरी रंग की पत्तियों में, जब बर्फ़ गिर रही हो, यह फूल आग जैसे चमकते थे. तभी जमीन पर पड़ी बर्फ़ मुझे पिघलती महसूस हुई. उत्तर की सूखी बर्फ़ीली हवा से जहां एक बार हवा चलने से बर्फ़ उड़कर आकाश में धुन्ध बना देती थी, यहां का मौसम कितना भिन्न था !

"शराब आ गई, महोदय !" बेयरा ने लापरवाही से कहा और प्याला, खाना खाने की तीलियां, शराब की केतली और रकाबियां मेज पर सजा दीं. मेज की तरफ़ मुड़ कर बैठते हुये मैंने बर्तनों को ठीक किया और प्याले में शराब डाल ली. मुझे एहसास होने लगा कि हालांकि मेरा घर उत्तर में नहीं था फिर भी यहां आने पर मैं अजनबी लग रहा था. उत्तर की सूखी बर्फ़ जो पाउडर की भांति उड़ती थी और यहां की कोमल बर्फ़ जो बदन में चिप जाती थी दोनों ही मुझे दूसरी, बाहरी मालूम दे रही थीं. उदासी भरी मुद्रा में ही मैंने प्याला मुंह से लगाया. शराब अच्छी थी और फलियां भी अच्छी पकी थीं, केवल चटनी बड़ी पतली थी, पर क्या किया जाय, 'एस' नगर के लोग तेज़ चटनी पसन्द ही नहीं करते थे.

शायद दोपहर होने के कारन दूकान में शराब की दूकान सा वातावरन नहीं था. मैं अब तक तीन प्याले शराब पी चुका था पर अभी तक बाक़ी चार मेज़ें ख़ाली ही पड़ीं थीं. मैं अकेलापन महसूस कर रहा था, फिर भी इच्छा यह नहीं थी कि और लोग भी आ जायं. इसलिये जब मैं सीढ़ियों पर किसी के पैर पड़ने की आवाज़ सुनता था तो मेरे अन्दर असन्तोश की ही भावना उठती थी और जब सामने बेयरा ही दिखाई पड़ता था तो बड़ा सन्तोश होता था. इसी तरह मैंने दो प्याले शराब और पी डाली.

پرانے پانچ ٹیبل لگے ہوئے تھے. لیکن دیوار کی کھڑکی میں اب شیشے کے دروازے لگا دیئے گئے تھے جہاں پہلے لکڑی کے دروازے تھے.

" ایک پیالہ پیلی شراب، پھلیوں کے دس ٹکڑے اور کافی مادرا میں چٹنی دو " میں نے آرڈر دیا.

بیرا کو یہ آرڈر دیتے ہوئے، میں پیچھے جا کر کھڑکی سے لگی میز کے سہارے بیٹھ گیا. اوپر کا کمرہ خالی تھا. اِس لئے میں سب سے اچھی سیٹ پر بیٹھا تا کہ میں نیچے آنگن کا پورا درشیہ دیکھ سکوں. وہ آنگن شاید شراب کی دوکان کا حصہ نہیں تھا. پہلے جب بھی میں یہاں آتا، گھنٹوں ایسے ھی آنگن کو دیکھتا رھتا. برف پڑتی رھنے پر بھی میں اکثر گھنٹوں بیٹھا رہتا تھا. پر اب میں اُتر میں رھنے لگا تھا، اِس لئے یہ درشیہ میرے لئے نئے تھے. پلم کے پیڑ برف سے ھوڑ لے رھے تھے جیسے اُنھیں برف گرنے سے کوئی پریشانی ھی نہ ھو. دالان کے بغل میں ھی اب بھی کیمیلا کا ایک پیڑ تھا جس میں سرخ لال پھول کھلے تھے. گہری ھری رنگ کی پتیوں میں، جب برف گر رھی ھو، یہ پھول آگ جیسے چمکتے تھے. تبھی زمین پر پڑی برف مجھے پگھلتی محسوس ھوئی. اُتر کی سوکھی برفیلی ھوا سے جہاں ایک بار ہوا چلنے سے برف اُڑ کر آکاش میں دھند بنا دیتی تھی، یہاں کا موسم کتنا بھن تھا !

" شراب آ گئی، مہودئے ! " بیرا نے لاپرواھی سے کہا اور پیالہ، کھانا کھانے کی تیلیاں، شراب کی کیتلی اور رکابیاں میز پر سجا دیں. میز کی طرف مڑ کر بیٹھتے ھوئے میں نے برتنوں کو ٹھیک کیا اور پیالے میں شراب ڈال لی. مجھے احساس ھونے لگا کہ حالانکہ میرا گھر اُتر میں نہیں تھا پھر بھی یہاں آنے پر میں اجنبی لگ رھا تھا. اُتر کی سوکھی برف جو پاوڈر کی بھانتی اُڑتی تھی اور یہاں کی کومل برف جو بدن میں چپک جاتی تھی دونوں ھی مجھے دوسری، باھری معلوم دے رہی تھیں. اُداسی بھری مدرا میں ھی میں نے پیالہ منہ سے لگایا. شراب اچھی تھی اور پھلیاں بھی اچھی پکیں تھیں، کیول چٹنی بڑی پتلی تھی، پر کیا کیا جائے، 'ایس' نگر کے لوگ تیز چٹنی پسند ہی نہیں کرتے تھے.

شاید دوپہر ھونے کے کارن دوکان میں شراب کی دوکان سا واتاورن نہیں تھا. میں اب تک تین پیالے شراب پی چکا تھا پر ابھی تک باقی چار میزیں خالی ھی پڑیں تھیں. میں اکیلا پن محسوس کر رھا تھا، پھر بھی اِچھا یہ نہیں تھی کہ اور لوگ بھی آجائیں. اِس لئے جب میں سیڑھیوں پر کسی کے پیر پڑنے کی آواز سنتا تھا تو میرے اندر اسنتوش کی ھی بھاونا اُٹھتی تھی اور جب سامنے بیرا ھی دیکھائی پڑتا تھا تو بڑا سنتوش ھوتا تھا. اِسی طرح میں نے دو پیالے شراب اور پی ڈالی.

मदिरालय में

लेखक—लू-शुन

अनुवादक—कामेश्वर अग्रवाल

उत्तर से दूर दक्खिन जाते समय मैं अपने गांव में भी रुका था और वहां से "एस" नगर को गया. यह नगर मेरे गांव से लगभग 10 मील की दूरी पर है और नाव से आधे दिन में ही वहां कोई पहुंच सकता है. क़रीब एक साल तक मैंने यहां के एक स्कूल में पढ़ाया है. आधा जाड़ा बीत चुका था. बर्फ़ भी गिर चुकी थी और अब ठंडक काफ़ी बढ़ गई थी. घर की याद और यात्रा की थकन ने मुझे मजबूर कर दिया कि मैं लो-जू होटल में रुक कर कुछ दिन आराम करूं. यह होटल इससे पहले यहां नहीं था. यह एक छोटा सा शहर था. मैंने सोचा कि घूम फिर कर अपने पुराने दोस्तों से मिल लूं. पर किसी से भी भेंट न हो सकी. वह सभी काम धन्दों में लग कर बाहर चले गये थे. जब मैं स्कूल के सामने से गुजरा तो देखा उसका नाम और फाटक दोनों ही बदल गये हैं. उस शहर के लिये मैं अब पूरा अजनबी था. दो घंटे में ही मेरा सब उत्साह खतम हो गया और यहां आने का मुझे अफ़सोस होने लगा.

जिस होटल में मैं रुका था, वहां केवल कमरे किराये पर दिये जाते थे, खाना नहीं दिया जाता था. चावल और दूसरी चीजें बाहर से मंगानी पड़ती थीं और उनका स्वाद बहुत खराब होता था, जैसे मिट्टी सान कर रख दी गई हो. खिड़की के बाहर एक दीवार थी जिस पर लाल पीले, धब्बे पड़ गये थे और काई जम गयी थी. ऊपर आकाश था जो मुर्दे के समान सफ़ेद पड़ गया था, जिसकी सारी रंगीनियां खतम हो चुकी थीं. बर्फ़ भी गिरने लगी थी. मामूली सा खाना खाने को तो मिला पर खाली समय बिताने का वहां कोई साधन न जुट सका. इसलिये मैंने सोचा कि अपनी पुरानी परिचित शराब की छोटी सी दूकान पर जाकर समय बिताऊं. यह दूकान होटल के पास ही थी और बैरेल हाउस के नाम से मशहूर थी. कमरे में ताला डाल कर मैं मदिरालय के लिये चल दिया. शराब पीने की मुझे इतनी इच्छा नहीं थी जितनी इस बात की कि किसी प्रकार समय बीत जाय. बैरेल हाउस अब भी उसी स्थान पर था. उसका साइनबोर्ड भी नहीं बदला था. पर बैरेल हाउस के तमाम कर्मचारी बदल गये थे. उनमें कोई मेरा परिचित नहीं था. यहां भी मैं अजनबी था. एक जानकार की भांति मैं सीढ़ी से होता हुआ दूसरी मंज़िल पर जा बैठा. ऊपर के कमरे में वही

مدرالئے میں

لیکھک—لوشن

انوواد ک—کامیشور اگروال

اُتر سے دور دکھن جاتے سمے میں اپنے گاؤں میں بھی رکا تھا اور وہاں سے "ایس نگر" کو گیا. یہ نگر میرے گاؤں سے لگ بھگ 10 میل کی دوری پر ھے اور ناؤ سے آدھے دن میں ہی وھاں کوئی پہونچ سکتا ھے. قریب ایک سال تک میں نے یہاں کے ایک اسکول میں پڑھایا ھے. آدھا جاڑا بیت چکا تھا' برف بھی گر چکی تھی اور اب ٹھنڈک کافی بڑھ گئی تھی. گھر کی یاد اور یاترا کی تھکن نے مجھے مجبور کر دیا کہ میں لو- زو ھوٹل میں رک کر کچھ دن آرام کروں. یہ ھوٹل اِس سے پہلے یہاں نہیں تھا. یہ ایک چھوٹا سا شہر تھا. میں نے سوچا کہ گھوم پھر کر اپنے پرانے دوستوں سے مل لوں. پر کسی سے بھی بھینٹ نہ ھو سکی. وہ سبھی کام دھندوں میں لگ کر باھر چلے گئے تھے. جب میں اِسکول کے سامنے سے گذرا تو دیکھا اُس کا نام اور پھاٹک دونوں ھی بدل گئے ھیں. اُس شہر کے لئے میں اب پورا اجنبی تھا. دو گھنٹے میں ھی میرا سب اُتساہ ختم ھو گیا اور یہاں آنے کا مجھے افسوس ھونے لگا.

جس ھوٹل میں میں رکا تھا' وھاں کیول کمرے کرائے پر دئے جاتے تھے' کھانا نہیں دیا جاتا تھا. چاول اور دوسری چیزیں باھر سے منگانی پڑتی تھیں اور اُن کا سواد بہت خراب ھوتا تھا' جیسے مٹی سان کر رکھ دی گئی ھو. کھڑکی کے باھر ایک دیوار تھی جس پر لال پیلے دھبے پڑ گئے تھے اور کائی جم گئی تھی. اوپر آکاش تھا جو مردے کے سمان سفید پڑ گیا تھا' جس کی ساری رنگینیاں ختم ھو چکیں تھیں. برف بھی گرنے لگی تھی. معمولی سا کھانا کھانے کو تو ملا پر خالی سمے بتانے کا وھاں کوئی سادھن نہ جٹ سکا. اس لئے میں نے سوچا کہ اپنی پرانی پرچت شراب کی چھوٹی سی دوکان پر جاکر سمے بتاؤں. یہ دوکان ھوٹل کے پاس ھی تھی اور بیرل ھاؤس کے نام سے مشہور تھی. کمرے میں تالا ڈال کر میں مدرالئے کے لئے چل دیا. شراب پینے کی مجھے اتنی اِچھا نہیں تھی جتنی اِس بات کی کہ کسی پرکار سمے بیت جائے. بیرل ھاؤس اب بھی اُسی استھان پر تھا. اُس کا سائن بورڈ بھی نہیں بدلا تھا. پر بیرل ھاؤس کے تمام کرمچاری بدل گئے تھے. اُن میں کوئی میرا پرچت نہیں تھا. یہاں بھی میں اجنبی تھا. ایک جانکار کی بھانتی میں سیڑھی سے ھوتا ھوا دوسری منزل پر جا بیٹھا. اوپر کے کمرے میں وھی

ज्यादा शिकार होती है, जात पात, छुआछूत, भाशा, पार्टी आदि के फ़र्क़ों के कारन आपसी कशमकश जितनी ज्यादा बढ़ती है उतना ही ज्यादा प्लानिंग कमीशन को खुशी होगी.

सौ बातों की एक बात यह है कि प्लानिंग कमीशन ने अपने सामने वही पैमाना और आदर्श रख छोड़े हैं जो पच्छिम के मुल्कों के सामने हैं और जहां प्रेम के मुक़ाबिले क़ानून व हथियार की पनाह बात बात पर ली जाती है, जहां इन्सान को इन्सान उतना नहीं जितना मशीन का एक पुर्ज़ा समझा जाता है. अगर यही हालत बनी रही तो हमें इसमें कोई शक नहीं है कि हिन्दुस्तान में ग़रीबी और तबाही तेज़ रफ़्तार से बढ़ेगी और हो सकता है कि जल्दी ही हमें किसी विदेशी ताक़त की पनाह लेना पड़े. अब जब सरकार दूसरी योजना पर विचार कर रही है तो बड़े अदब के साथ हम कहना चाहते हैं कि उसे इन मद्दों पर ग़ौर करना चाहिये और इन तीन साल की असलियत की रोशनी में आगे के काम की बुनियाद खड़ी होनी चाहिये, मुल्क को और मुल्क के हर गांव को अपने पैरों पर खड़ा करने की कोशिश करनी चाहिये और जनता को सीधे, सच्चे, ईमान, प्रेम और मेहनत के रास्ते पर लाना चाहिये.

—सुरेशराम भाई

شکار ہوتی ھے، جات پات، چھواچھوت، بھاشا، پارٹی آدی فرقوں کے کارن آپسی کشمکش جتنی زیادہ بڑھتی ھے اتنا زیادہ پلاننگ کمیشن کو خوشی ہوگی ۔

سو باتوں کی ایک بات یہ ھے کہ پلاننگ کمیشن نے اپنے ے وہی پیمانے اور آدرش رکھ چھوڑے ھیں جو پچھم کے ملکوں سامنے ھیں اور جہاں پریم کے مقابلہ قانون و ھتھیار کی پناہ بات پر لی جاتی ھے، جہاں انسان کو انسان اتنا نہیں مشین کا ایک پرزہ سمجھا جاتاھے ۔ اگر یہی حالت بنی تو ھمیں اس میں کوئی شک نہیں ھے کہ ھندستان میں اور تباھی تیز رفتار سے بڑھیگی اور ھوسکتا ھے کہ جلدی ھمیں کسی ودیشی طاقت کی پناہ لینا پڑے ۔ اب جب دوسری یوجنا پر وچار کر رھی ھے تو بڑے ادب کے ساتھ ھم چاھتے ھیں کہ اسے ان مدوں پر غور کرنا چاھئے اور ان تین کی اصلیت کی روشنی میں آگے کے کام کی بنیاد کھڑی چاھئے، ملک کو اور ملک کے ھر گاؤں کو اپنے پیروں کھڑا کرنے کی کوشش کرنی چاھئے اور جنتا کو سیدھے، سچے ن، پریم اور محنت کے راستے پر لانا چاھئے ۔

—سریش رام بھائی ۔

रही थीं. मगर हुकूमत की मशीनरी और उसके रवैये से वह इतना तंग आ गई कि उन्होंने वह काम छोड़ दिया और अब गौ सेवा का काम करने कश्मीर चली गई हैं. जाहिर है कि अगर सरकारी बन्दोबस्त में ईमान, लगन और ख़िदमत की बू होती तो वह ऐसा हरगिज़ न करतीं. हुकूमत के निज़ाम के खोखला होते जाने का इस से ज्यादा क्या नमूना हो सकता है ? प्लानिंग कमीशन के मेम्बर खुद उस मशीन का हिस्सा हैं. इसलिये उन्हें अन्दर ही अन्दर उस मशीन की असलियत की जानकारी न होने पर हमें कोई ताज्जब नहीं है. शहर या गांव कहीं भी चले जाइये सरकारी दफ़्तरों की हालत पर और हुक्कामों के रंग ढंग पर कोई भी दो आंसू बहाये बिना नहीं रहेगा.

और जहां तक तीसरे दावे की बात है कि नया नज़रिया पैदा हो रहा है, हमें नहीं मालूम कि श्री कृश्नामाचारी की मुराद क्या है ? क्या महज़ सरकारी नौकरियों में इज़ाफ़ा हो जाने से नया नज़रिया पैदा हो जाता है ? हम बड़े अदब के साथ यह जानना चाहते हैं कि खुद प्लानिंग कमीशन के मेम्बरों के विचार, अमल या काम में कोई नया नज़रिया पैदा हुआ या नहीं ? कहने की ज़रूरत नहीं कि महज़ कुछ दफ़्तरों के बढ़ जाने या देश विदेश से ऊंची तनख्वाह पर माहिरों के आजाने से नया नज़रिया नहीं आ जाता. नया नज़रिया हम तभी मानेंगे जब प्लानिंग कमीशन अपने मेम्बरों या मुल्क पर नये मूल्यों के लिये ज़ोर दे. हम जानना चाहेंगे कि क्या आज हमारे हुक्कामों की वही तमन्नायें नहीं हैं जो पहले थीं, जैसे ज्यादा से ज्यादा तनख्वाह कम से कम जिस्मानी काम, आम जनता से अलग रहन सहन, अलीशान इमारतें और आडम्बर, बड़ी बड़ी फ़ौजें और बड़े बड़े हथियार वग़ैरा ? क्या आज पैसे की लालसा उस से कम है जो अंग्रेज़ी राज के ज़माने में थी ? क्या आज हाथ के काम के लिये नफ़रत उससे कम है जो अंग्रेज़ी दौर में थी ? क्या आपस की छूआ छूत और दूसरे भेद भाव कम हुए हैं ? क्या मुल्क के अन्दर चोरी डकैती और दूसरी बदअमनियां कम हुई हैं ? क्या गांव में पहले से ज्यादा शान्ति, सकून और मोहब्बत है ? हर सवाल के जवाब में दुख पूर्वक हर एक को यही कहना होगा कि "नहीं, नहीं." ऐसी हालत में हमें नहीं मलूम कि किस बिना पर प्लानिंग कमीशन के नायबसदर यह समझ रहे हैं कि लोगों का नज़रिया बदल गया. या शायद देहातों में विदेशी या शहराती माल पहुंचने, देहात में सनीमा खुल जाने, गांव में मोटरें दौड़ने को उन्होंने तरक़्क़ी की निशानी मान लिया. अगर ऐसा है तो बड़ी नम्रता के साथ हम कहना चाहते हैं कि वह सख्त ग़ल्ती पर हैं. अगर यही तरक़्क़ी है तब तो कहना होगा कि जनता जितनी ज्यादा पैसा परस्त बनती है, हाथ का काम हाथ से जितना कम करती है, रोज़ाना ज़रूरत के सामान में दूसरों की मोहताज बनती है, चोरी, डकैती, ऐयाशी वग़ैरा ऐबों की जितनी

رھی تھیں۔ مگر حکومت کی مشینری اور اس کے رویہ سے وہ اتنا تنگ آگئیں کہ انہوں نے وہ کام چھوڑ دیا اور اب گؤسیوا کا کام کرنے کشمیر چلی گئیں ھیں۔ ظاھر ھے کہ اگر سرکاری بندوبست میں ایمان، لگن اور خدمت کی بو ھوتی تو وہ ایسا ھرگز نہیں کرتیں۔ حکومت کے نظام کے کھوکھلا ھوتے جانے کا اس سے زیادہ کیا نمونہ ھوسکتا ھے؟ پلاننگ کمیشن کے ممبر خود اس مشین کا حصہ ھیں۔ اس لئے انہیں اندر ھی اندر اس مشین کی اصلیت کی جانکاری نہ ھونے پر ھمیں کوئی تعجب نہیں ھے۔ شہر یا گاؤں کہیں بھی چلے جائیے سرکاری دفتروں کی حالت پر اور حکاموں کے رنگ ڈھنگ پر کوئی بھی دو آنسو بہائے بنا نہیں رھے گا۔

اور جہاں تک تیسرے دعوے کی بات ھے کہ نیا نظریہ پیدا ھورھا ھے، ھمیں نہیں معلوم کہ شری کرشناماچاری کی مراد کیا ھے؟ کیا محض سرکاری نوکریوں میں اضافہ ھوجانے سے نیا نظریہ پیدا ھوجاتا ھے؟ ھم بڑے ادب کے ساتھ یہ جاننا چاھتے ھیں کہ خود پلاننگ کمیشن کے ممبروں کے وچار، عمل یا کام میں کوئی نیا نظریہ پیدا ھوا یا نہیں؟ کہنے کی ضرورت نہیں کہ محض کچھ دفتروں کے بڑھ جانے یا دیش ودیش سے اونچی تنخواہ پر ماھروں کے آجانے سے نیا نظریہ نہیں آجاتا۔ نیا نظریہ ھم تبھی مانینگے جب پلاننگ کمیشن اپنے ممبروں یا ملک پر نئے مولیوں کے لئے زور دے۔ ھم جاننا چاھینگے کہ کیا آج ھمارے حکاموں کی وھی تمنائیں نہیں ھیں جو پہلے تھیں، جیسے زیادہ سے زیادہ تنخواہ، کم سے کم جسمانی کام، عام جنتا سے الگ رھن سہن، عالیشان عمارتیں اور آڈمبر، بڑی بڑی فوجیں اور بڑے بڑے ھتھیار وغیرہ؟ کیا آج پیسے کی لالسا اس سے کم ھے جو انگریزی راج کے زمانہ میں تھی؟ کیا آج ھاتھ کے کام کے لئے نفرت اس سے کم ھے جو انگریزی دور میں تھی؟ کیا آپس کی چھواچھوت اور دوسرے بھیدبھاؤ کم ھوئے ھیں؟ کیا ملک کے اندر چوری، ڈکیتی اور دوسری بدامنیاں کم ھوئیں ھیں؟ کیا گاؤں میں پہلے سے زیادہ شانتی، سکون اور محبت ھے؟ ھر سوال کے جواب میں دکھ پوروک ھر ایک کو یہی کہنا ھوگا کہ "نہیں، نہیں." ایسی حالت میں ھمیں نہیں معلوم کہ کس بنا پر پلاننگ کمیشن کے نائب صدر یہ سمجھ رھے ھیں کہ لوگوں کا نظریہ بدل گیا. یا شاید دیہاتوں میں ودیشی یا شہراتی مال پہونچنے، دیہات میں سنیما کھل جانے، گاؤں میں موٹریں دوڑنے کو انہوں نے ترقی کی نشانی مان لیا۔ اگر ایسا ھے تو بڑی نمرتا کے ساتھ ھم کہنا چاھتے ھیں کہ وہ سخت غلطی پر ھیں۔ اگر یہی ترقی ھے تب تو کہنا ھوگا کہ جنتا جتنی زیادہ پیسہ پرست بنتی ھے، ھاتھ کا کام ھاتھ سے جتنا کم کرتی ھے، روزانہ ضرورت کے سامان میں دوسروں کا محتاج بنتی ھے، چوری، ڈکیتی، عیاشی وغیرہ عیبوں کی جتنی

(5) पांचवीं हालत में ऊपर के दोनों दर्जों की आमदनी बढ़ती है और नीचे वालों की घटती है लेकिन कुल की आमदनी दुगुनी हो जाती है.

(6) छटी हालत में मालदार की आमदनी पौने तीन बढ़ती है, साईकिल वाले की वैसी ही बनी रहती है और नीचे वालों की आधी रह जाती है.

(7) सातवीं हालत में मालदार की तीन गुनी के क़रीब बढ़ती है और नीचे वालों की आमदनी घटकर दसवें हिस्से पर आजाती है !

देखने की बात यह है कि प्लानिंग कमीशन की योजना से जो मुल्क की औसत आमदनी दुगनी होने की कोशिश है सो कौनसी हालत पैदा होने वाली है. जाहिर है कि क्या पढ़े लिखे लोगों के बीच और क्या देहात के दस्तकारों के बीच बेरोज़गारी बढ़ रही है, यानी समाज के नीचे वाले दोनों दर्जों की आमदनी घट रही है और ऊपर वालों की आमदनी बढ़ रही है. इसलिये ऊपर वाली सूरतों में से (5), (6) या (7) के जैसी चीज़ सामने आ रही है, न कि (3) या (4) जैसी और (1) या (2) का तो सवाल उठता ही नहीं. इस लिये हमें इस बात की कोई ख़ुशी महसूस नहीं होती कि इस योजना से मुल्क की आमदनी दुगुनी या इसी तरह आगे के दो बरस में आज से दस फ़ी सदी ज्यादा बढ़ जायेगी. हां मुट्ठी भर लोग जिनके हाथ में रोज़गार हैं वह ज़रूर मालामाल और ख़ुश हो जायेंगे. मगर 85 का दुख बढ़े और 15 का सुख बढ़े तो उसे ख़ुशहाली नहीं बरबादी ही कहा जायेगा. हम तो यहां तक जाने को तैयार हैं कि मुल्क की औसत आमदनी आज के जैसी रहे मगर नीचे वाले 85 का सुख बढ़ जाये और ऊपर के 15 का घट जाये. या अगर ऊपर वालों का न घटे तो कम से कम नीचे वालों का तो न घटे. जब तक हमारे देश की प्लानिंग में यह रंग नहीं आता तब तक हमें डर है कि सारी योजनायें मुल्क को अन्दर से कमजोर करेंगी और हमारी आज़ादी को उनसे ज़बरदस्त ख़तरा है.

जहां तक श्री कृस्नामाचारी का दूसरा दावा है कि हुकूमत के निज़ाम में सुधार हो रहा है उसके बारे में तो कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है. कौन नहीं जानता कि मुल्क में रिशवत-ख़ोरी बढ़ ही रही है, दफ़्तर के बाबुओं और चपरासियों को बाहर की आमदनी के बिना अक्सर संतोश ही नहीं होता और पुलिस भी पहले के मुक़ाबिले कहीं ज्यादा ज़ालिम और मनचली होती जा रही है. और इन्तज़ाम में बढ़ती हुई ख़राबी का एक ठोस सबूत हमारे पास और भी है. हमारे प्रेमी पाठक शायद जानते हों कि महात्मा गांधी की सरनाम चेली और सेवक श्री मीरा बहन ज़िला टेहरी गढ़वाल में बड़े पैमाने पर एक विकास योजना चलाने जा

(5) پانچویں حالت میں اوپر کے دونوں درجوں کی آمدنی بڑھتی هے اور نیچے والوں کی گھٹتی هے لیکن کل کی آمدنی دگنی هو جاتی هے .

(6) چھٹی حالت میں مالدار کی آمدنی پونے تین بڑھتی هے، سائیکل والے کی ویسی هی بنی رهتی هے اور نیچے والوں کی آدھی رہ جاتی هے .

(7) ساتویں حالت میں مالدار کی تین گنی کے قریب بڑھتی هے اور نیچے والوں کی آمدنی گھٹکر دسویں حصہ پر آجاتی هے !

دیکھنے کی بات یہ هے کہ پلاننگ کمیشن کی یوجنا سے جو ملک کی اوسط آمدنی دگنی هونے کی کوشش هے سو کونسی حالت پیدا هونے والی هے . ظاهر هے کہ کیا پڑھے لکھے لوگوں کے بیچ اور کیا دیہات کے دستکاروں کے بیچ بیروزگاری بڑھ رهی هے، یعنی سماج کے نیچے والے دونوں درجوں کی آمدنی گھٹ رهی هے اور اوپر والوں کی آمدنی بڑھ رهی هے . اس لئے اوپر والی صورتوں میں سے (5)، (6) یا (7) کے جیسی چیز سامنے آرهی هے، نہ کہ (3) یا (4) جیسی اور (1) یا (2) کا تو سوال اٹھتا هی نہیں . اس لئے همیں اس بات کی کوئی خوشی محسوس نہیں هوتی کہ اس یوجنا سے ملک کی آمدنی دگنی یا اسی طرح آگے کے دو برس میں آج سے دس فیصدی زیادہ بڑھ جائیگی . هاں مٹھی بھر لوگ جن کے هاتھ میں روزگار هیں وہ ضرور مالامال اور خوش هوجائینگے . مگر 85 کا دکھ بڑھے اور 15 کا سکھ بڑھے تو اسے خوشحالی نہیں بربادی هی کہا جائیگا . هم تو یہاں تک جانے کو تیار هیں کہ ملک کی اوسط آمدنی آج کے جیسی رهے مگر نیچے والے 85 کا سکھ بڑھ جائے اور اوپر کے 15 کا گھٹ جائے . یا اگر اوپر والوں کا نہ گھٹے تو کم سے کم نیچے والوں کا تو نہ گھٹے . جب تک همارے دیش کی پلاننگ میں یہ رنگ نہیں آتا تب تک همیں ڈر هے کہ ساری یوجنائیں ملک کو اندر سے کمزور کرینگی اور هماری آزادی کو ان سے زبردست خطرہ هے .

جہاں تک شری کرشنماچاری کا دوسرا دعویٰ هے کہ حکومت کے نظام میں سدھار هورها هے اس کے بارے میں تو کچھ کہنے کی ضرورت نہیں هے . کون نہیں جانتا کہ ملک میں رشوتخوری بڑھ هی رهی هے، دفتر کے بابوؤں اور چپراسیوں کو باهر کی آمدنی کے بنا اکثر سنتوش هی نہیں هوتا اور پولس بھی پہلے کے مقابلہ کہیں زیادہ ظالم اور من چلی هوتی جارهی هے . اور انتظام میں بڑھتی هوئی خرابی کا ایک ٹھوس ثبوت همارے پاس اور بھی هے . همارے پریمی پاٹھک شاید جانتے هوں کہ مہاتما گاندھی کی سرنام چیلی اور سیوک شری میرا بہن ضلع ٹھہری گڑھوال میں بڑے پیمانہ پر ایک وکاس یوجنا چلانے جا

होगा जो उस से मन माना नफ़ा कमा लेंगे. इसी वजह से हमें श्री कृष्णमाचारी के इस बयान पर कोई ख़ुशी नहीं होती कि दो साल बाद मुल्क की औसत आमदनी दस फ़ी सदी बढ़ जायेगी. सवाल यह नहीं है कि आमदनी कितनी बढ़ती है बल्कि यह कि किसकी बढ़ती है.

आज हमारे शहर क्या, देहात क्या, वहां की आबादी को हम मोटे तौर से चार हिस्सों में बांट सकते हैं: (1)(A) हाथी या मोटर वाले यानी बहुत मालदार लोग, (2) (B) घोड़ा गाड़ी या साइकिल रखने वाले ख़ुशहाल लोग, (3)(C) साधारन ग़रीब, और (4) (D) बहुत ग़रीब जिन्हें एक जून खाने को मिले तो दूसरे की उम्मीद नहीं. हर सौ आदमी पीछे क़रीब 5 हाथी या मोटर वाले हैं, 10 ख़ुशहाल, 45 ग़रीब और 40 बहुत ही ग़रीब. उनकी आमदनी का निस्बत आज क़रीब इस तरह का है:

$$120 : 70 : 9 : 1$$

इस निसबत के आंकड़ों में तरमीम की गुंजाइश काफ़ी है. बहुत ग़रीब और बहुत अमीर में आज एक और 120 के मुक़ाबिले कहीं ज्यादा का फ़र्क़ है. मगर मोटे तौर पर यह हिसाब सही माना जा सकता है. अब हम देखें कि औसत आमदनी दुगुनी होने की क्या क्या सूरतें हैं. वैसे सूरतें तो बहुत सी हैं मगर नीचे वाली पर आसानी से ध्यान जाता है.

बुनियादी सूरत वह है जो हमने ऊपर दी है :

$$A+B+C+D = T$$

(जहां A = 120, B = 70, C = 9, D = 1, और T = 220)

अब दुगने की हालतें यह हैं :

$$A+B+21\,(C+D) = 2\,T \ldots (1)$$
$$2A+2B+2C+2D = 2\,T \ldots (2)$$
$$2{\cdot}6\,A+B+C+D = 2\,T \ldots (3)$$
$$(2{\cdot}3)\,A+(1{\cdot}5)\,B+C+D = 2\,T \ldots (4)$$
$$(2{\cdot}4)\,A+(1{\cdot}5)A+1/2(C+D) = 2\,T \ldots (5)$$
$$(2{\cdot}7)\,A+B+1/4\,(C+D) = 2\,T \ldots (6)$$
$$(2{\cdot}8)\,A+B+1/10\,(C+D) = 2\,T \ldots (7)$$

अब ग़ौर करने की बात यह है कि :

(1) पहली हालत में मोटर या साईकिल वालों की आमदनी पहले जैसी रहती है और नीचे दर्जे वालों की 21 गुनी बढ़ जाती हैं जिससे कुल आमदनी दुगुनी हो जाती है.

(2) दूसरी हालत में ऊपर से नीचे तक हर एक की आमदनी ठीक दुगुनी होती है.

(3) तीसरी हालत में मोटरवाले की आमदनी ढाई गुनी से ज्यादा बढ़ जाती है और दूसरे सबों की वैसी ही रहती है.

(4) चौथी हालत में ऊपर के दोनों दर्जें की आमदनी बढ़ती है.

ہوگا جو اس سے من مانا نفع کما لینگے . اِسی وجہ سے ہمیں شری کرشناماچاری کے اس بیان پر کوئی خوشی نہیں ہوتی کہ دو سال بعد ملک کی اوسط آمدنی دس فیصدی بڑھ جائے گی . سوال یہ نہیں ہے کہ آمدنی کتنی بڑھتی ہے بلکہ یہ کہ کسکی بڑھتی ہے .

آج ہمارے شہر کیا، دیہات کیا، وہاں کی آبادی کو ہم موٹے طور سے چار حصوں میں بانٹ سکتے ہیں : (1) (A) ہاتھی یا موٹر والے یعنی بہت مالدار لوگ، (2) (B) گھوڑا گاڑی یا سائیکل رکھنے والے خوشحال لوگ، (3) (C) سادھارن غریب اور (4) (D) بہت غریب جنھیں ایک جون کھانے کو ملے تو دوسرے کی اُمید نہیں. ہر سو آدمی پیچھے قریب پانچ ہاتھی یا موٹر والے ہیں، 10 خوشحال، 45 غریب اور 40 بہت ہی غریب . اُن کی آمدنی کا نسبت آج قریب قریب اس طرح کا ہے :

$$120 : 70 : 9 : 1$$

اِس نسبت کے آنکڑوں میں ترمیم کی گنجائش کافی ہے . بہت غریب اور بہت امیر میں آج ایک اور 120 کے مقابلے کہیں زیادہ کا فرق ہے . مگر موٹے طور پر یہ حساب صحیح مانا جاسکتا ہے . اب ہم دیکھیں کہ اوسط آمدنی دگنی ہونے کی کیا کیا صورتیں ہیں . ویسے صورتیں تو بہت سی ہیں مگر نیچے والی پر آسانی سے دھیان جاتا ہے .

بنیادی صورت وہ ہے جو ہم نے اُوپر دی ہے :

$$A+B+C+D = T$$

(جہاں A = 120، B = 70، C = 9، D = 1 اور T = 220)

اب دگنے کی حالتیں یہ ہیں :

$$A+B+21\,(C+D) = 2T \ldots (1)$$
$$2A+2B+2C+2D = 2T \ldots (2)$$
$$2{\cdot}6A+B+C+D = 2T \ldots (3)$$
$$(2{\cdot}3)A+(1{\cdot}5)B+C+D = 2T \ldots (4)$$
$$(2{\cdot}4)A+(1{\cdot}5)A+1/2(C+D) = 2T \ldots (5)$$
$$(2{\cdot}7)A+B+1/4\,(C+D) = 2T \ldots (6)$$
$$(2{\cdot}8)A+B+1/10(C+D) = 2T \ldots (7)$$

اب غور کرنے کی بات یہ ہے کہ :

(1) پہلی حالت میں موٹر یا سائیکل والوں کی آمدنی پہلے جیسی رہتی ہے اور نیچے درجے والوں کی 21 گنی بڑھ جاتی ہیں جس سے کل آمدنی دگنی ہوجاتی ہے .

(2) دوسری حالت میں اوپر سے نیچے تک ہر ایک کی آمدنی ٹھیک دگنی ہوتی ہے .

(3) تیسری حالت میں موٹر والے کی آمدنی ڈھائی گنی سے زیادہ بڑھ جاتی ہے اور دوسرے سبوں کی ویسی ہی رہتی ہے .

(4) چوتھی حالت میں اُوپر کے دونوں درجے کی آمدنی بڑھتی ہے .

(3) जितने ज्यादा लोगों को सरकार अपनी मुलाजिमत में ला सके उतना ही लोगों का नजरिया बदला और उनमें नई आदतें, नई जिन्दगी की तड़प पैदा हो गई.

श्री कृश्नामाचारी या प्लानिंग कमीशन की भाशा में हम इन तीनों बातों को तरक्क़ी की कसौटी कह सकते हैं. आज अमरीका और इंगलेंड या यूरोप के दूसरे मुल्कों में ऐसा हो भी रहा है. वहां पर तहजीब या सभ्यता का नाप ही यही है कि आदमी कितना ज्यादा साबुन, तेल, कपड़ा, जूता, मोटर, बिजली वग़ैरा ख़र्च करता है. अपने जाती जिस्म की वह जितनी ज्यादा ख़िदमत करता है उतना ही बढ़ा चढ़ा माना जाता है और ऊंचा समझा जाता है. आज बताया जाता है कि अमरीका में फ़ी आदमी रोजाना 160 पौंड काग़ज ख़र्च होता है. इसके मानी यह हुए कि हिन्दुस्तान जैसे मुल्क के आदमी के मुक़ाबिले जहां सिर्फ़ एक पौंड काग़ज ख़र्च होता है अमरीका का आदमी 160 गुना ज्यादा विद्वान या तालीमयाफ़्ता है ! मगर कौन नहीं जानता कि यूरोप के मुल्कों में जो ऊंच नीच और भेद भाव हैं, अमीर ग़रीब का जो फ़र्क़ है, समाज के अन्दर जो ऐयाशी, चोरी, डकैती व दूसरे फ़ेल हो रहे हैं उनसे एशिया के मुल्क जितने दूर रह सकें अच्छा है. फिर वह मुल्क कितने ज्यादा भयभीत हैं और वहां की जनता रुपये पैसे के पीछे कितनी पागल है और मशीन की कितनी ज्यादा ग़ुलाम हो गई है. अगर हम हिन्दुस्तान वालों के आगे भी मग़रिब के यह आदर्श अपने सामने रहे तो हम उनके बराबर तो तरक्क़ी पर पहुंच ही नहीं सकते, उनके ऐब और ख़राबियां जरूर हमारे अन्दर घर कर लेंगे. इसलिये पच्छिम के पैमाने हमारे ऊपर न लागू हो सकते हैं और न लागू होने चाहियें. हमारे यहां तो एक ही पैमाना चल सकता है—इन्सानियत का, सारी दुनिया से भाईचारा और सब की भलाई, पड़ोसी की ख़िदमत और आपसी मसले या सवालों का हल, क़ानून या तलवार व बम के जोर से नहीं बल्कि प्रेम से. यही हमारे मुल्क के आर्थिक और सियासी निजाम का आधार होना चाहिये. और इसी लिहाज से हम श्री कृश्नामाचारी के बयान पर साफ़ साफ़ विचार करना चाहते हैं.

श्री कृश्नामाचारी ने पंच साला योजना की तीन साल की कामयाबी का ख़ास पहलू यह बताया है कि मुल्क में पैदावार बहुत काफ़ी बढ़ी है. यह बड़ी ख़ुशी की बात है. मगर महज पैदावार बढ़ना काफ़ी नहीं होता. जरूरी यह है कि जरूरतमन्द को जरूरत की चीज हासिल हो या चीज हासिल करने का जरिया उसे मिले. अगर पैदावार बढ़ती रहे मगर लोगों में जरूरतें पूरा करने की ताक़त पहले जैसी ही कमजोर रहे तो वह सोचने की बात है क्योंकि ऐसे इजाफ़े से महज चन्द व्यापारियों या दूसरे लोगों का ही फ़ायदा

(3) جتنے زیادہ لوگوں کو سرکار اپنی ملازمت میں لا سکے اتنا ہی لوگوں کا نظریہ بدلا اور ان میں نئی عادتیں، نئی زندگی کی تڑپ پیدا ہوگئی ۔

شری کرشنا ماچاری یا پلاننگ کمیشن کی بھاشا میں ہم ان تینوں باتوں کو ترقی کی کسوٹی کہہ سکتے ہیں ۔ آج امریکہ اور انگلینڈ یا یورپ کے دوسرے ملکوں میں ایسا ہو بھی رہا ہے ۔ وہاں پر تہذیب یا سبھیتا کا ناپ ہی یہی ہے کہ آدمی کتنا زیادہ صابن، تیل، کپڑا، جوتا، موٹر، بجلی وغیرہ خرچ کرتا ہے ۔ اپنے ذاتی جسم کی وہ جتنی زیادہ خدمت کرتا ہے اتنا ہی بڑھا چڑھا مانا جاتا ہے اور اونچا سمجھا جاتا ہے ۔ آج بتایا جاتا ہے کہ امریکہ میں فی آدمی روزانہ 160 پونڈ کاغذ خرچ ہوتا ہے ۔ اس کے معنی یہ ہوئے کہ ہندستان جیسے ملک کے آدمی کے مقابلہ جہاں صرف ایک پونڈ کاغذ خرچ ہوتا ہے امریکہ کا آدمی 160 گنا زیادہ ودوان یا تعلیم یافتہ ہے ! مگر کون نہیں جانتا کہ یورپ کے ملکوں میں جو اونچ نیچ اور بھید بھاؤ ہیں، امیر غریب کا جو فرق ہے، سماج کے اندر جو عیاشی، چوری ڈکیتی و دوسرے فعل ہو رہے ہیں ان سے ایشیا کے ملک جتنے دور رہ سکیں اچھا ہے ۔ پھر وہ ملک آج کتنے زیادہ بھے بھیت ہیں اور وہاں کی جنتا روپے پیسے کے پیچھے کتنی پاگل ہے اور مشین کی کتنی زیادہ غلام ہوگئی ہے ۔ اگر ہم ہندستان والوں کے آگے بھی مغرب کے یہ آدرش اپنے سامنے رہے تو ہم ان کے برابر تو ترقی پر پہونچ ہی نہیں سکتے، اُن کے عیب اور خرابیاں ضرور ہمارے اندر گھر کرلیں گے ۔ اس لئے پچھم کے پیمانے ہمارے اوپر نہ لاگو ہوسکتے ہیں اور نہ لاگو ہونے چاہئیں ۔ ہمارے یہاں تو ایک ہی پیمانہ چل سکتا ہے — انسانیت کا، ساری دنیا سے بھائی چارا اور سب کی بھلائی، پڑوسی کی خدمت اور آپسی مسئلہ یا سوالوں کا حل، قانون یا تلوار و بم کے زور سے نہیں بلکہ پریم سے ۔ یہی ہمارے ملک کے آرتھک اور سیاسی نظام کا آدھار ہونا چاہئے ۔ اور اسی لحاظ سے ہم شری کرشناماچاری کے بیان پر صاف صاف وچار کرنا چاہتے ہیں ۔

شری کرشنا ماچاری نے پنچ سالہ یوجنا کی تین سال کی کامیابی کا خاص پہلو یہ بتایا ہے کہ ملک میں پیداوار بہت کافی بڑھی ہے ۔ یہ بڑی خوشی کی بات ہے ۔ مگر محض پیداوار بڑھنا کافی نہیں ہوتا ۔ ضروری یہ ہے کہ ضرورت مند کو ضرورت کی چیز حاصل ہو یا چیز حاصل کرنے کا ذریعہ اُسے ملے ۔ اگر پیداوار بڑھتی رہے مگر لوگوں میں ضرورتیں پورا کرنے کی طاقت پہلے جیسی ہی کمزور رہے تو وہ سوچنے کی بات ہے کیونکہ ایسے اضافہ سے محض چند ویاپاریوں یا دوسرے لوگوں کا ہی فائدہ

श्री कृष्णमाचारी ने बताया कि योजना जबसे शुरू हुई तब से अब तक के दौरान में हिन्दुस्तान की माली हालत बहुत कुछ सुधर गई है. मसलन जहां 19 2-5 में गल्ला 44 लाख टन हुआ वहां 1953-5 में 89 लाख टन हुआ- और मिलों में तैयार होने वाले माल की 1951 में जहां 117 इकाइयां हुई, 1952 में 129 और 1953 में 135. इस सब से वह इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इस योजना के पूरा होते होते मुल्क की आमदनी दस फ़ी सदी बढ़ जायेगी.

दूसरे सवाल के जवाब में श्री वी० टी० कृष्णमाचारी कहते हैं कि पिछले तीन साल में इन्तज़ाम के मुख़तलिफ़ हिस्सों का फिर से संगठन किया गया है और एक वेलफ़ेअर (Welfare) इन्तज़ाम की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये बुनियादें डाली जा रही हैं.

तीसरे सवाल के जवाब में उनका फ़रमाना है कि ऐसी सहूलियत के साथ जिसका पता भी नहीं लगता, लोगों के अन्दर काम करने और सोच विचार करने की पुरानी आदतें छूट रही हैं. आख़िर में उन्होंने ऐलान किया कि योजना कुल मिलाकर कामयाबी के साथ चल रही है और इस बात की पूरी उम्मीद है कि उसके मक़सद पांच साल वाली मुद्दत में हासिल हो ही जायेंगे.

प्लानिंग कमीशन के नायब सदर के इस बयान पर हम, क्या प्लानिंग कमीशन, क्या हिन्द सरकार और क्या सूबे की सरकारें, सब को मुबारकबाद देते हैं. हमें यक़ीन है कि अगर किसी अंग्रेज से कहा जाता कि 1757 से लेकर 1947 तक, यानी 190 साल में हिन्दुस्तान के विकास की हर पांच साल की रिपोर्ट तैयार करो तो इन 48 बयानों से ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी कर रहा है और अगर इसी तरह हुकूमते बर्तानिया को मौक़ा मिलता रहे तो 190 साल गवाह हैं, अगले कुछ सालों में हिन्दुस्तान कहीं से कहीं पहुंच जायेगा और अंग्रेजी हुकूमत से बहतर बरकत हिन्दुस्तान के लिये कोई दूसरी हो नहीं सकती. मगर इतिहास गवाह है कि इन 190 बरस में हिन्दुस्तान की वह गई गुजरी हालत हो गई कि अंग्रेजी हुकूमत को हटाए बिना चारा नहीं था और आख़िर वह हट ही गई. ठीक इसी तरह के ख़्याल हमारे अन्दर श्री वी० टी० कृष्णमाचारी के रेडियो ब्राडकास्ट को पढ़ कर पैदा हो रहे हैं. उनके तीनों सवाल जवाब का निचोड़ अगर साफ़ लफ़्ज़ों में कहें तो यह है:

(1) जनता का जितना ज़्यादा पैसा सरकार ख़र्च कर दे उतनी ही ज़्यादा मुल्क की तरक़्क़ी.

(2) मिलों में जितना ज़्यादा माल तैयार हो उतना ही मुल्क ख़ुशहाल.

شری کرشناماچاری نے بتایا کہ یوجنا جب سے شروع ہوئی تب سے اب تک کے دوران میں ہندستان کی مالی حالت بہت کچھ سدھر گئی ہے۔ مثلاً جہاں 1952-53 میں غلہ 44 لاکھ ٹن ہوا وہاں 1953-54 میں 89 لاکھ ٹن ہوا۔ اور ملوں میں تیار ہونے والے مال کی 1951 میں جہاں 117 اکائیاں ہوئیں، 1952 میں 129 اور 1953 میں 135۔ اس سب سے وہ اس نتیجہ پر پہونچے ہیں کہ اِس یوجنا کے پورا ہوتے ہوتے ملک کی آمدنی دس فیصدی بڑھ جائے گی۔

دوسرے سوال کے جواب میں شری وی۔ ٹی۔ کرشناماچاری کہتے ہیں کہ پچھلے تین سال میں انتظام کے مختلف حصوں کا پھر سے سنگٹھن کیا گیا ہے اور ایک ویل فیئر (Welfare) انتظام کی ضرورتوں کو پورا کرنے کے لئے بنیادیں ڈالی جا رہی ہیں۔

تیسرے سوال کے جواب میں ان کا فرمانا ہے کہ ایسی سہولیت کے ساتھ جس کا پتہ بھی نہیں لگتا، لوگوں کے اندر کام کرنے اور سوچ وچار کرنے کی پرانی عادتیں چھوٹ رہی ہیں۔ آخر میں اُنھوں نے اعلان کیا کہ یوجنا کل ملا کر کامیابی کے ساتھ چل رہی ہے اور اس بات کی پوری اُمید ہے کہ اِس کے مقصد پانچ سال والی مدت میں حاصل ہو ہی جائینگے۔

پلاننگ کمیشن کے نائب صدر کے اِس بیان پر ہم کیا پلاننگ کمیشن، کیا ہند سرکار اور کیا صوبے کی سرکاریں، سب کو مبارکباد دیتے ہیں۔ ہمیں یقین ہے کہ اگر کسی انگریز سے کہا جاتا کہ 1757 سے لیکر 1947 تک، یعنی 190 سال میں ہندستان کے وکاس کی ہر پانچ سال کی رپورٹ تیار کرو تو اُن 48 بیانوں سے ایسا لگتا کہ ہندستان دن دونی رات چوگنی ترقی کر رہا ہے اور اگر اِسی طرح حکومت برطانیہ کو موقع ملتا رہے تو 190 سال گواہ ہیں، اگلے کچھ سالوں میں ہندستان کہیں سے کہیں پہونچ جائے گا اور انگریزی حکومت سے بہتر برکت ہندستان کے لئے کوئی دوسری ہو ہی نہیں سکتی۔ مگر اتہاس گواہ ہے کہ اِن 190 برس میں ہندستان کی وہ گئی گذری حالت ہوگئی کہ انگریزی حکومت کو ہٹائے بنا چارہ نہیں تھا اور آخر وہ ہٹ ہی گئی۔ ٹھیک اِسی طرح کے خیال ہمارے اندر شری وی۔ ٹی۔ کرشناماچاری کے ریڈیو براڈکاسٹ کو پڑھ کر پیدا ہو رہے ہیں۔ ان کے تینوں سوال جواب کا نچوڑ اگر صاف لفظوں میں کہیں تو یہ ہے:

(1) جنتا کا جتنا زیادہ پیسہ سرکار خرچ کر دے اتنی ہی زیادہ ملک کی ترقی۔

(2) ملوں میں جتنا زیادہ مال تیار ہو اتنا ہی ملک خوشحال۔

योजना के तीन साल

हिन्द सरकार की तरफ़ से मुल्क में पंच बरसी योजना के नाम से जो एक योजना चल रही है उसका ख़ाका तो पार्लिमेन्ट के सामने हमारे प्रधान मंत्री ने दिसम्बर सन 1952 में पेश किया था लेकिन उसका अमल जून 1951 से शुरू किया गया बताया जाता है. इस तरह इस योजना के तीन साल पूरे हुए और सन 1954 की जून से चौथा साल शुरू हुआ. इस मौक़े पर प्लानिंग कमीशन के नायब सदर, श्री वी० टी० कृष्नामाचारी ने एक ब्राडकास्ट अंग्रेज़ी में किया जिसमें उन्होंने तीन साल के कारनामों पर तफ़सील के साथ रोशनी डाली.

उन्होंने कहा कि योजना को महज़ कुछ प्रोजैक्टों या कामों की कड़ी नहीं समझनी चाहिये बल्कि यह उस कोशिश की नुमायां है जो हिन्दुस्तान के लोग अपने लिये एक नई ज़िन्दगी पैदा करने की ख़ातिर कर रहे हैं. श्री कृष्नामाचारी का कहना है कि हम नए नमूने का समाज बनाना चाहते हैं और लोगों के अन्दर नया नज़रिया, नया ज्ञान और नये रहन सहन के लिये ख़्वाहिश पैदा करना चाहते हैं. इस मक़सद को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने ब्राडकास्ट में तीन सवालों के जवाब दिये :

1. इस योजना में जो प्रोजैक्ट या काम हैं वह कैसी तरक़्क़ी कर रहे हैं ?

2. विकास की स्कीमों और प्रोग्रामों को ख़ूबी से अंजाम देने के लिये इन्तज़ामी और टेकनिकल दायरों में सुधार की बुनियाद डाली जा रही है या नहीं ?

3. क्या ख़ास मक़सद में यानी नये नज़रिये और बहतर ज़िन्दगी की ख़्वाहिश पैदा होने में कहां तक कामयाबी हासिल हो रही है ?

कहने की ज़रूरत नहीं कि ख़ुद गढ़े हुए तीनों सवालों के जवाब में श्री वी० टी० कृष्नामाचारी ने यही कहा कि "ख़ूब है ! ख़ूब है !" पहले सवाल के जवाब में उनका कहना है कि सन 1952 के शुरू में इस योजना का तख़मीना 1800 करोड़ रुपये के क़रीब था, दिसम्बर 1952 में इस योजना की लागत 2069 करोड़ रुपये रक्खी गई और अब उसे तरक़्क़ी देकर 2244 करोड़ रुपये कर दिया गया है. उसमें अब तक जो ख़र्च हुआ उसका हिसाब यह है :

साल	रुपया (करोड़ में)
1951-52	262
1952-53	271
1953-54	412

और अगले दो साल में इस तरह और ख़र्च करना है :

1954-55	565
1955-56	745

یوجنا کے تین سال

ہند سرکار کی طرف سے ملک میں پنچ برسی یوجنا کے نام سے جو ایک یوجنا چل رہی ہے اس کا خاکہ تو پارلیامنٹ کے سامنے ہمارے پردھان منتری نے دسمبر سن 1952 میں پیش کیا تھا لیکن اس کا عمل جون 1951 سے شروع کیا گیا بتایا جاتا ہے . اس طرح اس یوجنا کے تین سال پورے ہوئے اور سن 1954 کی جون سے چوتھا سال شروع ہوا . اِس موقع پر پلاننگ کمیشن کے نائب صدر شری . ی . ٹی . کرشناماچاری نے ایک براڈکاسٹ انگریزی میں کیا جس میں اِنہوں نے تین سال کے کارناموں پر تفصیل کے ساتھ روشنی ڈالی .

اُنہوں نے کہا کہ یوجنا کو محض کچھ پروجیکٹوں یا کاموں کی کڑی نہیں سمجھنا چاہئے بلکہ یہ اس کوشش کی نمایاں ہے جو ہندستان کے لوگ اپنے لئے ایک نئی زندگی پیدا کرنے کی خاطر کر رہے ہیں . شری کرشنا ماچاری کا کہنا ہے کہ ہم نئے نمونے کا سماج بنانا چاہتے ہیں اور لوگوں کے اندر نیا نظریہ، نیا گیان اور نئے رہن سہن کے لئے خواہش پیدا کرنا چاہتے ہیں . اس مقصد کو دھیان میں رکھتے ہوئے اُنہوں نے اپنے براڈکاسٹ میں تین سوالوں کے جواب دئے :

. اِس یوجنا میں جو پروجیکٹ یا کام ہیں وہ کیسی ترقی کر رہے ہیں ؟

2. وکاس کی اسکیموں اور پروگراموں کو خوبی سے انجام دینے کے لئے انتظامی اور ٹیکنیکل دائروں میں سدھار کی بنیاد ڈالی جا رہی ہے یا نہیں ؟

3. کیا خاص مقصد میں یعنی نئے نظریہ اور بہتر زندگی کی خواہش پیدا ہونے میں کہاں تک کامیابی حاصل ہو رہی ہے ؟

کہنے کی ضرورت نہیں کہ خود گڑھے ہوئے تینوں سوالوں کے جواب میں شری وی. ٹی. کرشناماچاری نے یہی کہا کہ "خوب ہے ! خوب ہے !" پہلے سوال کے جواب میں اِن کا کہنا ہے کہ سن 1952 کے شروع میں اِس یوجنا کا تخمینہ 1800 کروڑ روپئے کے قریب تھا دسمبر 1952 میں اس یوجنا کی لاگت 2069 کروڑ روپئے رکھی گئی اور اب اِسے ترقی دے کر 2244 کروڑ روپئے کردیا گیا ہے . اس میں اب تک جو خرچ ہوا اس کا حساب یہ ہے :

سال	روپئے (کروڑ میں)
1951-52	262
1952-53	271
1953-54	412

اور اگلے دو سال میں اس طرح اور خرچ کرنا ہے :

1954-55	565
1955-56	745

नाटक, संगीत, समाज, जैसी कलचरी संस्थाएं भी खड़ी हो जाती हैं. नये नये रोजगार निकलते हैं और अच्छे से अच्छे पढ़े लिखे लोगों को भी काम मिलने लगता है.

गांव के इस नये जीवन का असर शहरों पर भी पड़ता है. किसानों और गांव के लोगों का रहन सहन ऊंचा होने लगता है. उनमें तरह तरह की चीज़ों की मांग बढ़ती है. शहरों के तरह तरह के बने हुए पक्के माल की खपत बढ़ती है. उनके मकान बनने लगते हैं. राज मज़दूरों और बढ़ई लोहारों को काम मिलता है. इस सब से गांव और शहर दोनों में बेकारी घटती और खुशहाली बढ़ती है. इसी से गांव के लोगों का काम की खोज में शहर आना घटता है. यह सब बातें मिलकर एक ऐसा आर्थिक चक्र चल जाता है जिससे सब जगह नये नये रोज़गार खुलने लगते हैं.

मैं फिर कह देना चाहता हूं कि भूमि का फिर से बंटवारा उन बहुत से कामों में से एक काम है जिनसे देश की बेकारी दूर हो सकती है. और वह एक ऐसा काम है जिससे देश की आम जनता में अपने ऊपर भरोसा पैदा होता है, स्वाभिमान बढ़ता है, और जनता अपनी छिपी हुई शक्ति को पहचानने लगती है. गांधी जी जिस राम राज की बात कहा करते थे वह हम किसी तरह भी इस देश में ला सकते हैं तो इसी तरह ला सकते हैं. गांवों में ही भारत के असली प्रान हैं. वहीं भारत की सच्ची शक्ति छिपी है.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता.

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ناٹک، سنگیت، سماج، جیسی کلچری سنستھائیں بھی کھڑی ہو جاتی ھیں. نئے نئے روزگار نکلتے ھیں اور اچھے سے اچھے پڑھے لکھے لوگوں کو بھی کام ملنے لگتا ھے.

گاؤں کے اِس نئے جیون کا اثر شہروں پر بھی پڑتا ھے. کسانوں اور گاؤں کے لوگوں کا رہن سہن اُونچا ھونے لگتا ھے. اُن میں طرح طرح کی چیزوں کی مانگ بڑھتی ھے. شہروں کے طرح طرح کے بنے پکے مال کی کھپت بڑھتی ھے. اُن کے مکان بننے لگتے ھیں. راج مزدوروں اور بڑھئی لہاروں کو کام ملتا ھے. اِس سب سے گاؤں اور شہر دونوں میں بیکاری گھٹتی اور خوشحالی بڑھتی ھے. اِسی سے گاؤں کے لوگوں کا کام کی کھوج میں شہر آنا گھٹتا ھے. یہ سب باتیں ملکر ایک ایسا آرتھک چکر چل جاتا ھے جس سے سب جگہ نئے نئے روزگار کھلنے لگتے ھیں.

میں پھر کہدینا چاھتا ھوں کہ بھومی کا پھر سے بٹوارہ اُن بہت سے کاموں میں سے ایک کام ھے جن سے دیش کی بیکاری دور ھوسکتی ھے. اور وہ ایک ایسا کام ھے جس سے دیش کی عام جنتا میں اپنے اُوپر بھروسہ پیدا ھوتا ھے، سوابھیمان بڑھتا ھے، اور جنتا اپنی چھپی ھوئی شکتی کو پہچاننے لگتی ھے. گاندھی جی جس رام راج کی بات کہا کرتے تھے وہ ھم کسی طرح بھی اِس دیش میں لا سکتے ھیں تو اِسی طرح لا سکتے ھیں. گاؤں میں ھی بھارت کے اصلی پران ھیں. وھیں بھارت کی سچی شکتی چھپی ھے.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک — ڈاکٹر جے. سی. کمارپا.

انوواک — سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ھے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ھے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری بھائی چارے، پریم اور اھنسا پر کتنا زور دیا ھے.

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ھے کہ

"ھر آستک سے، چاھے وہ عیسائی ھو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ھو، میری سفارش ھے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ.

ملنے کا پتہ.

مینیجر، 'نیا ھند'، 145 مٹھی گنج، الہ آباد.

कितनी भूमि मिल सकेगी. इसका ठीक ठीक जवाब 'भूमि बंटवारा कमीशन' ही दे सकेगा. पर जो आंकड़े हमें मिल सकते हैं उनसे मोटे तौर पर हम अन्दाजा लगा सकते हैं. उत्तर प्रदेश जमींदारी उन्मूलन और भूमि सुधार क़ानून ने यह रोक लगा दी है कि आगे के लिए कोई आदमी तीस एकड़ से ज्यादा खेती की जमीन नहीं खरीद सकता. अब अगर तीस एकड़ से ऊपर के खेत उत्तर प्रदेश में बंटवारे के लिए मिल जावें तो हमें पचास लाख एकड़ भूमि मिलेगी. इससे कई लाख परिवारों की बेकारी दूर हो सकेगी और उन्हें रोजी मिल सकेगी. अलग अलग प्रान्तों की अलग अलग हालत है. फिर भी इसी तरह पर हमें बम्बई में 64 लाख एकड़, मध्य प्रदेश में 66 लाख एकड़ और मद्रास में 35 लाख एकड़ भूमि बंटवारे के लिए मिल सकती है. यह कुल दो सौ पंद्रह लाख एकड़ भूमि हुई. इतनी भूमि पर अगर लोगों को सहकारी ढंग से बसाया जाय तो लगभग बीस लाख परिवारों को आसानी से काम दिया जा सकता है और अच्छी तरह खाना, कपड़ा और रहने को घर दिया जा सकता है. करोड़ों लोगों को इस तरह बेकारी और अर्धबेकारी के चंगुल में छुड़ाया जा सकता है. यह तादाद बहस करने की नहीं है, बल्कि समझदारी और साइन्सी ढंग से जमीन का बंटवारा करने की है.

आचार्य विनोबा भावे को कहा जाता है कि उनके भूमि यज्ञ में कई लाख एकड़ भूमि दान मिल चुकी है. इस तरह क़ानून की मदद से उन जैसे सच्चे सेवकों का समय बचाया जा सकता है और ग़रीबों का दुख जल्दी दूर किया जा सकता है. नहीं तो आजकल के हिसाब से तो उनका काम कई सदी में जाकर पूरा होगा. इस तरह के बंटारे में हमें यह भी देख लेना होगा कि जिस किसी को जमीन दी जाये वह उसे अच्छी तरह जोत बो भी सकता है या नहीं.

सरकार की पहली पांच बरसी योजना में यह भी कहा गया है कि हमें सहकारी खेती को बढ़ाना और मदद देना चाहिये. यह बात उन जोतों के लिए ही ठीक बैठती है और चल सकती है जो नई भूमि तोड़ कर या भूमि के नये बंटबारे में बनाये गये हों. जिन लोगों को नये खेत मिलेंगे वह अधिकतर ग़रीब होंगे. पूंजी की उनके पास कमी रहेगी. सहकारी खेती में, यानी मिलकर खेती करने में, उन्हें साफ़ लाभ दिखाई देगा. जिन जिन देशों में सहकारी खेती सफल हुई है वहां का तजरुबा हमें यही बताता है कि भूमि के नये बंटवारे से जिन लोगों को खेत मिलते हैं वही सहकारी खेती में अगुआ होते हैं. उनकी देखा देखी फिर दूसरे लोग शामिल होने लगते हैं. इस तरह पूरे गांव के आर्थिक और सामाजिक जीवन में एक नई लहर दौड़ने लगती है और सारे गांव में एक नई जान आ जाती है. इससे जनता के जीवन में स्कूल,

کتنی بھومی مل سکیگی. اِس کا ٹھیک ٹھیک جواب 'بھومی بٹوارہ کمیشن' ہی دے سکیگا. پر جو آنکڑے ہمیں مل سکتے ہیں اُن سے موٹے طور پر ہم اندازہ لگا سکتے ہیں. اُتر پردیش زمینداری انسولن اور بھومی سدھار قانون نے یہ روک لگا دی ہے کہ آگے کے لئے کوئی آدمی تیس ایکڑ سے زیادہ کھیتی کی زمین نہیں خرید سکتا. اب اگر تیس ایکڑ سے اُوپر کے کھیت اُتر پردیش میں بٹوارے کے لئے مل جاویں تو ہمیں پچاس لاکھ ایکڑ بھومی ملیگی. اِس سے کئی لاکھ پریواروں کی بیکاری دور ہوسکیگی اور اُنہیں روزی مل سکیگی. الگ الگ پرانتوں کی الگ الگ حالت ہے. پھر بھی اِسی طرح پر ہمیں بمبئی میں 64 لاکھ ایکڑ، مدھیہ پردیش میں 66 لاکھ ایکڑ اور مدراس میں 35 لاکھ ایکڑ بھومی بٹوارے کے لئے مل سکتی ہے. یہ کل دو سو پندرہ لاکھ ایکڑ بھومی ہوئی. اتنی بھومی پر اگر لوگوں کو سہکاری ڈھنگ سے بسایا جائے تو لگ بھگ بیس لاکھ پریواروں کو آسانی سے کام دیا جاسکتا ہے اور اچھی طرح کھانا، کپڑا اور رہنے کو گھر دیا جاسکتا ہے. کروڑوں لوگوں کو اِس طرح بیکاری اور اردھ بیکاری کے چنگل سے چھڑایا جاسکتا ہے. یہ تعداد بحث کرنے کی نہیں ہے، بلکہ سمجھداری اور سائنسی ڈھنگ سے زمین کا بٹوارہ کرنے کی ہے.

آچاریہ ونوبا بھاوے کو کہا جاتا ہے کہ اُن کے بھومی یگیہ میں کئی لاکھ ایکڑ بھومی دان میں مل چکی ہے. اِس طرح قانون کی مدد سے اُن جیسے سچے سیوکوں کا سمے بچایا جاسکتا ہے اور غریبوں کا دکھ جلدی دور کیا جاسکتا ہے. نہیں تو آجکل کے حساب سے تو اُن کا کام کئی صدی میں جاکر پورا ہوگا. اِس طرح کے بٹوارے میں ہمیں یہ بھی دیکھ لینا ہوگا کہ جس کسی کو زمین دی جاوے وہ اُسے اچھی طرح جوت بو بھی سکتا ہے یا نہیں.

سرکار کی پہلی پانچ برسی یوجنا میں یہ بھی کہا گیا ہے کہ ہمیں سہکاری کھیتی کو بڑھانا اور مدد دینا چاہئے. یہ بات اُن جوتوں کے لئے ہی ٹھیک بیٹھتی ہے اور چل سکتی ہے جو نئی بھومی توڑ کر یا بھومی کے نئے بٹوارے میں بنائے گئے ہوں. جن لوگوں کو نئے کھیت ملینگے وہ ادھکتر غریب ہی ہونگے. پونجی کی اُن کے پاس کمی رہیگی. سہکاری کھیتی میں' یعنی ملکر کھیتی کرنے میں' اُنہیں صاف لابھ دکھائی دے گا. جن جن دیشوں میں سہکاری کھیتی سپھل ہوئی ہے وہاں کا تجربہ ہمیں یہی بتاتا ہے کہ بھومی کے نئے بٹوارے سے جن لوگوں کو کھیت ملتے ہیں وہی سہکاری کھیتی میں اگوا ہوتے ہیں. اُن کی دیکھا دیکھی پھر دوسرے لوگ شامل ہونے لگتے ہیں. اِس طرح پورے گاؤں کے آرتھک اور سماجک جیون میں ایک نئی لہر دوڑنے لگتی ہے اور سارے گاؤں میں ایک نئی جان آجاتی ہے. اِس سے جنتا کے جیون میں اسکول،

लिए जरूरी है कि हर सूबे या हर प्रदेश में एक 'भूमि बंटवारा कमीशन' बनाया जाय जिसका काम यह हो कि हर जगह की खेती की हालत देखकर यह तय करे कि अलग अलग जिलों और तहसीलों में आर्थिक जोत क्या मानी जाय? उस आर्थिक जोत से तिगुनी से अधिक भूमि किसी के पास न रहने दी जाय. इस तरह जितनी जमीन मिले उसे बेजमीन खेत मज़दूरों में बांट दी जाय. यदि फिर भी कुछ जमीन बचे तो उसे उन किसानों को दी जाय जिनके पास भूमि तो है पर आर्थिक जोत से कम है.

इस सम्बन्ध में एक सवाल यह उठ सकता है कि बड़ी बड़ी जोतों को तोड़कर छोटी कर देने से देश की नाज की पैदावार कम तो नहीं हो जायगी, खासकर जबकि अब भी हमारे देश में नाज की कमी है?

इसके जवाब में हमें यह कहना है कि हमारे जैसे देश की हालत में अर्थशास्त्र का यह एक माना हुआ असूल है कि पैदावार की इकाई, यानी एक जोत, अगर एक ख़ास मात्रा से कम हो तब भी पैदावार कम होती है और अगर एक खास मात्रा से अधिक हो तब भी सारे देश की पैदावार कम होती है. हमारे देश के अर्थशास्त्र जानकारों ने छोटी छोटी जोतों के नुक़सान को तो सोचा पर इस तरह की बड़ी बड़ी जोतों के नुक़सान की तरफ ध्यान नहीं दिया. इस तरह की बड़ी बड़ी जोतों की न तो ठीक ठीक जुताई होती है, न ठीक ठीक बोआई. ऐसी जोतों का सारा काम एक न एक तरह के बेगार के जरिये होता है. पुराने जमाने में जब बड़े बड़े जमींदारों और सामंतों का बोलबाला था हर आदमी का मान उतना ही अधिक होता था जितनी उसके पास भूमि होती थी. इसी असूल पर हमारे यहां के जमींदारों और ठाकुरों ने भी बड़ी बड़ी जोतों पर क़बजा कर रखा था. पर इन बड़ी बड़ी जोतों का ठीक प्रबंध बहुत ही कम होता था. नतीजा यह कि एक तरफ तो भूमि बेकार पड़ी रहती थी और दूसरी तरफ काम करने वालों का समय बेकार जाता था. इस सम्बन्ध में यही हालत आजकल की बड़ी बड़ी जोतों की है. ठीक ठीक भूमि बंटवारे का मतलब यह है कि हम दोनों तरफ की इस बुराइ को दूर करें. हमें विश्वास है कि इससे बेकारी भी घटेगी और देश में नाज की पैदावार भी बढ़ेगी.

जाहिर है कि बंटवारा केवल उन बड़ी जोतों का होना चाहिये जिन का प्रवन्ध, जैसा हमने ऊपर बताया, ठीक नहीं है. जिन थोड़ी सी बड़ी जोतों पर अच्छी तरह से खेती की जा रही है, चाहे वह खेती आजकल के नये साइन्सी ढंग से होती हो और चाहे पुराने हिन्दुस्तानी ढंग से, ऐसी बड़ी जोतों का बंटवारा हमें नहीं करना है.

अब सवाल यह रहता है कि इस तरह बंटवारे के लिए

لئے ضروری ہے کہ ہر صوبے یا ہر پردیش میں ایک 'بھومی بٹوارہ کمیشن' بنایا جائے جس کا کام یہ ہو کہ ہر جگہ کی کھیتی کی حالت دیکھکر یہ طے کرے کہ الگ الگ ضلعوں اور تحصیلوں میں آرتھک جوت کیا مانی جائے؟ اُس آرتھک جوت سے تگنی سے ادھک بھومی کسی کے پاس نہ رہنے دی جائے. اِس طرح جتنی زمین ملے اُسے بےزمین کھیت مزدوروں میں بانٹ دی جائے. یدی پھر بھی کچھ زمین بچے تو اُسے اُن کسانوں کو دی جائے جن کے پاس بھومی تو ہے پر آرتھک جوت سے کم ہے.

اِس سمبندھ میں ایک سوال یہ اُٹھ سکتا ہے کہ بڑی بڑی جوتوں کو توڑ کر چھوٹی کردینے سے دیش کی ناج کی پیداوار کم تو نہیں ہوجائیگی' خاصکر جب کہ اب بھی ہمارے دیش میں ناج کی کمی ہے؟

اِس کے جواب میں ہمیں یہ کہنا ہے کہ ہمارے جیسے دیش کی حالت میں ارتھ شاستر کا یہ ایک مانا ہوا اُصول ہے کہ پیداوار کی اکائی' یعنی ایک جوت' اگر ایک خاص ماترا سے کم ہو تب بھی پیداوار کم ہوتی ہے اور اگر ایک خاص ماترا سے ادھک ہو تب بھی سارے دیش کی پیداوار کم ہوتی ہے. ہمارے دیش کے ارتھ شاستر جانکاروں نے چھوٹی چھوٹی جوتوں کے نقصان کو تو سوچا پر اِس طرح کی بڑی بڑی جوتوں کے نقصان کی طرف دھیان نہیں دیا. اِسطرح کی بڑی بڑی جوتوں کی نہ تو ٹھیک ٹھیک جتائی ہوتی ہے' نہ ٹھیک ٹھیک بوائی. ایسی جوتوں کا سارا کام ایک نہ ایک طرح کے بیگار کے ذریعہ ہوتا ہے. پرانے زمانے میں جب بڑے بڑے زمینداروں اور سامنتوں کا بول بالا تھا ہر آدمی کا مان اُتنا ہی ادھک ہوتا تھا جتنی اُس کے پاس بھومی ہوتی تھی. اِسی اُصول پر ہمارے یہاں کے زمینداروں اور ٹھاکروں نے بھی بڑی بڑی جوتوں پر قبضہ کر رکھا تھا. پر اِن بڑی بڑی جوتوں کا ٹھیک پربندھ بہت ہی کم ہوتا تھا. نتیجہ یہ کہ ایک طرف تو بھومی بیکار پڑی رہتی تھی اور دوسری طرف کام کرنے والوں کا سمے بیکار جاتا تھا. اس سمبندھ میں یہی حالت آجکل کی بڑی بڑی جوتوں کی ہے. ٹھیک ٹھیک بھومی بٹوارے کا مطلب یہ ہے کہ ہم دونوں طرف کی اِس برائی کو دور کریں. ہمیں وشواس ہے کہ اِس سے بیکاری بھی گھٹیگی اور دیش میں ناج کی پیداوار بھی بڑھیگی.

ظاہر ہے کہ بٹوارہ کیول اُن بڑی بڑی جوتوں کا ہونا چاہئے جن کا پربندھ' جیسا ہم نے اوپر بتایا' ٹھیک نہیں ہے. جن تھوڑی سی بڑی جوتوں پر اچھی طرح سے کھیتی کی جا رہی ہے' چاہے وہ کھیتی آجکل کے نئے سائنسی ڈھنگ سے ہوتی ہو اور چاہے پرانے ہندستانی ڈھنگ سے' ایسی بڑی جوتوں کا بٹوارہ ہمیں نہیں کرنا ہے.

اب سوال یہ رہتا ہے کہ اِس طرح بٹوارے کے لئے

पंच बरसी योजना को तीसरे साल में ही सुधारना और बदलना पड़ा और इससे आगे के पांच साल की जो दूसरी योजना होगी उसका रूप अभी से झलकने लगा है. बेकारी नाम के इस महारोग से छुटकारा पाने के लिए हमें कई और क़दम बढ़ाने होंगे. सरकारी योजना में भी इसकी कुछ चर्चा की गयी है. पर अब आवश्यकता इस बात की है कि कम से कम समय में हम अपने आर्थिक ढांचे को इस तरह बदलें कि बेकारी भी बिलकुल दूर हो जाय और साथ ही साथ देश के हर आदमी की माली हालत और कलचरी जीवन दोनों ऊंचे उठ सकें और हमारा देश और हमारा राज सब के लिए भलाई और कल्यान का राज हो.

सरकारी योजना में भूमि के नये सिरे से बंटवारे की चर्चा भी की गयी है और यह असूल भी मान लिया गया है कि किसी भी एक खेती पेशा आदमी के पास एक ख़ास मात्रा या मिक़दार से अधिक भूमि नहीं होनी चाहिये. अब सवाल यह होता है कि यह अधिक से अधिक भूमि एक आदमी के पास कितनी हो ? सरकारी योजना समिति की राय है कि यह अधिक से अधिक भूमि आर्थिक जोत का तिगुना होनी चाहिये. इससे अधिक भूमि किसी के पास नहीं रहने देनी चाहिये. आर्थिक जोतका मतलब उतनी जमीन है जितनी में एक आदमी का गुजारा अच्छी तरह चल सके. सरकारी योजना समिति की राय में चार एकड़ जमीन में एक आदमी का गुजारा अच्छी तरह चल सकता है. इस तरह एक परिवार में अगर हम चार आदमी गिन लें तो एक खेतिहर परिवार के लिए पंद्रह या सोलह एकड़ जमीन 'आर्थिक जोत' कही जा सकती है. पर इस बारे में कोई कड़ा नियम नहीं बनाया जा सकता. क्योंकि देश के अलग अलग प्रान्तों में ही नहीं, एक एक प्रान्त के अलग अलग हिस्सों में भी अलग अलग तरह की भूमि है जिसके कारन आर्थिक जोत भी सब जगह अलग अलग होगी. आज से पांच साल पहले कांग्रेस खेती सुधार समिति के सामने गवाही देते हुए हमने कहा था कि मोटे तौर पर उत्तर प्रदेश में पंद्रह एकड़ जमीन आर्थिक जोत है. हमने यह भी कहा था कि खेती के काम में आर्थिक जोत हमें उसी तरह तय करनी चाहिये जिस तरह उद्योग धंधों में या बड़े बड़े कल कारख़ानों में हम एक मजदूर की दिन भर की कम से कम मजदूरी तय करते हैं. दोनों में निगाह ठीक ठीक गुजारा चलने पर रहनी चाहिये. इस तरह जिन लोगों के पास उचित से अधिक भूमि है उनसे भूमि लेकर दूसरे खेतिहरों में बांटना बहुत कठिन काम नहीं होना चाहिये.

हमारे देश में इन सब सुधारों के लिए ठीक ठीक आंकड़ों की भी बहुत ही कमी है. बेकारी दूर करने के लिए सबसे पहले भूमि का ठीक ठीक बंटवारा जरूरी है. इस बंटवारे के

پنچ برسی یوجنا کو تیسرے سال میں ہی سدھارنا اور بدلنا پڑا اور اِس سے آگے کے پانچ سال کی جو دوسری یوجنا ہوگی اُس کا روپ ابھی سے جھلکنے لگا ہے ۔ بیکاری نام کے اِس مہاروگ سے چھٹکارا پانے کے لئے ہمیں کئی اور قدم بڑھانے ہونگے ۔ سرکاری یوجنا میں بھی اِس کی کچھ چرچا کی گئی ہے۔ پر اب آوشیکتا اِس بات کی ہے کہ کم سے کم سمے میں ہم اپنے آرتھک ڈھانچے کو اِس طرح بدلیں کہ بیکاری بھی بالکل دور ہو جائے اور ساتھ ہی ساتھ دیش کے ہر آدمی کی مالی حالت اور کلچری جیون دونوں اونچے اُٹھ سکیں اور ہمارا دیش اور ہمارا راج سب کے لئے بھلائی اور کلیان کا راج ہو ۔

سرکاری یوجنا میں بھومی کے نئے سرے سے بٹوارے کی چرچا بھی کی گئی ہے اور یہ اُصول بھی مان لیا گیا ہے کہ کسی بھی ایک کھیتی پیشہ آدمی کے پاس ایک خاص ماترا یا مقدار سے ادھک بھومی نہیں ہونی چاہئے ۔ اب سوال یہ ہوتا ہے کہ یہ ادھک سے ادھک بھومی ایک آدمی کے پاس کتنی ہو؟ سرکاری یوجنا سمتی کی رائے ہے کہ یہ ادھک سے ادھک بھومی آرتھک جوت کا تگنا ہونی چاہئے ۔ اِس سے ادھک بھومی کسی کے پاس نہیں رہنی دینی چاہئے ۔ آرتھک جوت کا مطلب اُتنی زمین ہے جتنی میں ایک آدمی کا گذارا اچھی طرح چل سکے ۔ سرکاری یوجنا سمتی کی رائے میں چار ایکڑ زمین میں ایک آدمی کا گذارا اچھی طرح چل سکتا ہے ۔ اِس طرح ایک پریوار میں اگر ہم چار آدمی گن لیں تو ایک کھیتہر پریوار کے لئے پندرہ یا سولہ ایکڑ زمین 'آرتھک جوت' کہی جاسکتی ہے ۔ پر اِس بارے میں کوئی کڑا نیم نہیں بنایا جاسکتا ۔ کیونکہ دیش کے الگ الگ پرانتوں میں ہی نہیں' ایک ایک پرانت کے الگ الگ حصوں میں بھی الگ الگ طرح کی بھومی ہے جس کے کارن آرتھک جوت بھی سب جگہ الگ الگ ہوگی ۔ آج سے پانچ سال پہلے کانگریس کھیتی سدھار سمتی کے سامنے گواہی دیتے ہوئے ہم نے کہا تھا کہ موٹے طور پر اُترپردیش میں پندرہ ایکڑ زمین آرتھک جوت ہے ۔ ہم نے یہ بھی کہا تھا کہ کھیتی کے کام میں آرتھک جوت ہمیں اُسی طرح طے کرنی چاہئے جس طرح اُدیوگ دھندھوں میں یا بڑے بڑے کل کارخانوں میں ہم ایک مزدور کی دن بھر کی کم سے کم مزدوری طے کرتے ہیں ۔ دونوں میں نگاہ ٹھیک ٹھیک گذارا چلنے پر رہنی چاہئے. اِس طرح جن لوگوں کے پاس اُچت سے ادھک بھومی ہے اُن سے بھومی لیکر دوسرے کھیتہروں میں بانٹنا بہت کٹھن کام نہیں ہونا چاہئے ۔

ہمارے دیش میں اِن سب سدھاروں کے لئے ٹھیک ٹھیک آنکڑوں کی بھی بہت ہی کمی ہے بیکاری دور کرنے کے لئے سب سے پہلے بھومی کا ٹھیک ٹھیک بٹوارہ ضروری ہے. اِس بٹوارے کے

घंटे लगभग चार खरब पांच अरब हो जाते हैं. उनका अनुमान है कि सन 1941 में इन चार खरब पांच अरब घंटों में से लगभग आधा समय बेकार गया. यह अनुमान बिलकुल ठीक हो, या न हो पर इस बात में तो कोई संदेह नहीं हो सकता कि इस तरह की छिपी अर्ध बेकारी हमारे देश में बहुत बढ़ी हुई है. इसका केवल यही एक इलाज है कि कुछ लोगों को खेती से हटा कर दूसरे धन्धों में लगाया जाय. या खेती के लिये नई भूमि तोड़ी जाय और उस नई भूमि पर या इस तरह की नयी भूमियों पर इनमें से बहुत से लोगों को ले जाकर लगाया और बसाया जाय. अब हमें यह देखना है कि भूमि के फिर से बंटवारे के ज़रिये इस मसाल को कहां तक और किस तरह हल किया जा सकता है.

भूमि के उचित और ठीक ठीक बंटवारे का असर हमारे शहरों की बेकारी पर भी पड़ेगा. हमारे देश में छोटे छोटे किसान आजकल अपने खेत, घर और गांव छोड़ कर शहरों में नौकरी की खोज में आते रहते हैं. इसका कारन यह नहीं है कि शहर उन्हें अच्छे लगते हैं और वह शहरों के प्रेम से शहरों की तरफ़ खिंच आते हैं. कारन केवल यह है कि उनके घर और गांव की रोज़गारी हालत और खाने पीने, पैसे की तंगी उन्हें घर छोड़ने पर मजबूर कर देती है. हिन्दुस्तान का किसान जन्म और स्वभाव से ही खुली हवा और वहां के प्राकृतिक जीवन का प्रेमी होता है. पर लगान का बोझ, महाजन का क़र्ज़ा और तक़ाज़ा, घर की गिरती हुई हालत, सब मिलकर उसे मजबूर कर देते हैं कि वह गांव छोड़ कर कहीं और रोज़ी ढूंढ़े. इसलिये यदि भूमि के ठीक ठीक बंटवारे से ऐसी हालत पैदा हो सके जिससे आजकल की एक एक जोत या एक एक खेत पर जितने आदमियों का बोझ है वह कम हो जाये और आम किसानों के लिए गांव का रोज़गारी और समाजी जीवन इतना अच्छा हो जाये कि वह गांव में ही रह सकें तो गांव के लोगों का शहरों में नौकरी के लिये आना बंद हो जावे या कम से कम बहुत ही कम हो जावे. इस तरह जो लोग गांव से भाग कर शहरों के कारखानों में, मिलों में, घरों की नौकरी में, होटलों में, दफ़्तरों में, स्टेशनों पर, रिक्शा चलाने में और तरह तरह के कामों में भरे हुए हैं उनकी तादाद बहुत कम हो जायगी.

सरकारी पंच बरसी योजना में भी यह सुझाव रखा गया है कि जो ज़मीनें परती पड़ी हुई हैं उन्हें तोड़ कर नये खेत बनाये जायें तो सन 1955-56 तक लगभग 75 लाख एकड़ नई ज़मीन खेती के लिये मिल सकती है. इसमें से अगर हर खेतिहर को 10 एकड़ भूमि दी जाय तो साढ़े सात लाख खेतिहर परिवारों को बेकारी के चंगुल से छुड़ाया जा सकता है. यहाँ तक तो बात ठीक है. पर अब इतने ही से काम नहीं चल सकता. देश में बेकारी इतनी तेज़ी से बढ़ रही है कि सरकारी

گھنٹے لگ بھگ چار کھرب پانچ ارب ہوجاتے ہیں. اُن کا انومان ہے کہ سن 1941 میں اِن چار کھرب پانچ ارب گھنٹوں میں سے لگ بھگ آدھا سمے بیکار گیا. یہ انومان بالکل ٹھیک ہو یا نہ ہو پر اِس بات میں تو کوئی سندیہ نہیں ہو سکتا کہ اِس طرح کی چھپی اردھ بیکاری ہمارے دیش میں بہت بڑھی ہوئی ہے. اِس کا کیول یہی ایک علاج ہے کہ کچھ لوگوں کو کھیتی سے ہٹا کر دوسرے دھندھوں میں لگایا جائے. یا کھیتی کے لئے بھومی توڑی جائے اور اُس نئی بھومی پر یا اِس طرح کی نئی بھومیوں پر اِن میں سے بہت سے لوگوں کو لے جا کر لگایا اور بسایا جائے. اب ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ بھومی کے پھر سے بٹوارے کے ذریعہ اس سوال کو کہاں تک اور کس طرح حل کیا جا سکتا ہے.

بھومی کے اُچت اور ٹھیک ٹھیک بٹوارے کا اثر ہمارے شہروں کی بیکاری پر بھی پڑے گا. ہمارے دیش میں چھوٹے چھوٹے کسان آج کل اپنے کھیت، گھر اور گاؤں چھوڑ کر شہروں میں نوکری کی کھوج میں آتے رہتے ہیں. اِس کا کارن یہ نہیں ہے کہ شہر اُنہیں اچھے لگتے ہیں اور وہ شہروں کے پریم سے شہروں کی طرف کھنچ آتے ہیں. کارن کیول یہ ہے کہ اُن کے گھر اور گاؤں کی روزگاری حالت اور کھانے پینے، پیسے کی تنگی اُنہیں گھر چھوڑنے پر مجبور کر دیتی ہے. ہندستان کا کسان جنم اور سوبھاؤ سے ہی کھلی ہوا اور وہاں کے پراکرتک جیون کا پریمی ہوتا ہے. پر لگان کا بوجھ، مہاجن کا قرضہ اور تقاضہ، گھر کی گرتی ہوئی حالت، سب مل کر اُسے مجبور کر دیتے ہیں کہ وہ گاؤں چھوڑ کر کہیں اور روزی ڈھونڈے. اِس لئے یدی بھومی کے ٹھیک ٹھیک بٹوارے سے ایسی حالت پیدا ہو سکے جس سے آجکل کی ایک ایک جوت یا ایک ایک کھیت پر جتنے آدمیوں کا بوجھ ہے وہ کم ہوجائے اور عام کسانوں کے لئے گاؤں کا روزگاری اور سماجی جیون اِتنا اچھا ہوجائے کہ وہ گاؤں میں ہی رہ سکیں تو گاؤں کے لوگوں کا شہروں میں نوکری کے لئے آنا بند ہوجائے یا کم سے کم بہت ہی کم ہوجائے. اِس طرح جو لوگ گاؤں سے بھاگ کر شہروں کے کارخانوں میں، ملوں میں، گھروں کی نوکری میں، ہوٹلوں میں، دفتروں میں، اِسٹیشنوں پر، رکشا چلانے میں اور طرح طرح کے کاموں میں بھرے ہوئے ہیں اُن کی تعداد بہت ہی کم ہوجائے گی.

سرکاری پنچ برسی یوجنا میں بھی یہ سجھاؤ رکھا گیا ہے کہ جو زمینیں پرتی پڑی ہوئی ہیں اُنہیں توڑ کر نئے کھیت بنائے جائیں تو سن 56-1955 تک لگ بھگ 75 لاکھ ایکڑ نئی زمین کھیتی کے لئے مل سکتی ہے. اس میں سے اگر ہر کھیتہر کو 10 ایکڑ بھومی دی جائے تو ساڑھے سات لاکھ کھیتہر پریواروں کو بیکاری کے چنگل سے چھڑایا جا سکتا ہے. یہاں تک تو بات ٹھیک ہے. پر اب اِتنے ہی سے کام نہیں چل سکتا. دیش میں بیکاری اتنی تیزی سے بڑھ رہی ہے کہ سرکاری

होता. फ़सल बोने और काटने के समय अधिक काम होता है. पर साल में कुछ महीने ऐसे होते हैं जब किसान अधिकतर बेकार रहता है. इस तरह की मौसमी बेकारी का इलाज एक तो यह है कि उन दिनों सिंचाई वग़ैरा का अच्छा प्रबन्ध किया जावे और दूसरे यह कि किसानों के अन्दर उनके घरों में और गांव में छोटे छोटे घरेलू उद्योग धन्दों को बढ़ाया जावे, जिन से वह बेकार भी न रहें और उनकी आमदनी भी बढ़े.

तीसरी—तीसरी तरह की बेकारी कभी कभी आए दिन की जरूरत की चीजों की मांग एकदम कम हो जाने से पैदा हो जाती है. पूंजीवादी व्यवस्था में यानी सरमायादारी के निज़ाम में इस तरह की बेकारी हर आठ दस बरस के बाद एक बार आती ही है. कुछ न कुछ दिनों के बाद या तो लोगों के पास चीजें ज्यादा हो जाती हैं या उनकी ख़रीदने की ताक़त इतनी कम हो जाती है कि इच्छा होते हुए भी वह और चीजें नहीं ख़रीद सकते. बाजार में चीजें बढ़ जाती हैं और उन चीजों को पैदा करने वाले मजदूर कम से कम कुछ दिनों के लिये बेकार हो जाते हैं. कारख़ानों में मजदूरों की छटनी होने लगती है. कारख़ानों के मालिक कहने लगते हैं कि माल की पैदावार ज्यादा हो गई, उसे कम करने की जरूरत है. इस तरह की बेकारी भी आजकल हमारे देश में काफ़ी है.

इस तरह की बेकारी लगभग हर देश में हर आठ दस बरस के बाद क्यों आती रहती है इस सवाल पर अर्थशास्त्र के बड़े बड़े विद्वानों की अलग अलग राय है. इस समय हम इन अलग अलग मतों की छान बीन में नहीं पड़ना चाहते. केवल इतना कह देना काफ़ी है कि समय समय पर इस तरह की बेकारी पूंजीवाद यानी सरमायादारी में स्वाभाविक और लाजमी है.

चौथी—चौथी तरह की बेकारी को हम नीम बेकारी या अर्ध बेकारी या छिपी बेकारी भी कह सकते हैं. इसका मतलब यह है कि किसी किसी काम में जितने लोग लगे होते हैं उतनों की उस काम में असल में जरूरत नहीं होती. हम ऊपर कह चुके हैं कि भारतवर्ष अधिकतर गांव में बसा हुआ है. खेती का धन्धा यहां का सबसे बड़ा धन्धा है. जानकार लोगों की राय है कि आज जितने लोग हमारे यहां खेती के काम में लगे हुए हैं उनमें से यदि कुछ खेती से हटा कर दूसरे कामों में लगा दिये जायं तो उससे देश की नाज की पैदावार हरगिज कम नहीं होगी. अर्थशास्त्र के एक विद्वान का कहना है कि यदि हमारे देश में खेती के काम में लगा हुआ हर मजदूर दिन में आठ घंटे भी काम करे तो साल में हर मजदूर के ढाई हजार घंटे हो जाते हैं. इस तरह खेती में लगे हुए कुल आदमियों के साल भर के

هوتا. فصل بونے اور کاٹنے کے سمے ادھک کام هوتا هے . پر سال میں کچھ مہینے ایسے هوتے هیں جب کسان ادھک تر بیکار رهتا هے . اِس طرح کی موسمی بیکاری کا علاج ایک تو یہ هے کہ اُن دنوں سنچائی وغیرہ کا اچھا پربندھ کیا جاوے اور دوسرے یہ کہ کسانوں کے اندر اُن کے گھروں میں اور گاؤں میں چھوٹے چھوٹے گریلو اُدیوگ دھندوں کو بڑھایا جاوے' جن سے وہ بیکار بھی نہ رہیں اور اُن کی آمدنی بھی بڑھے .

تیسری—تیسری طرح کی بیکاری کبھی کبھی آئے دن کی ضرورت کی چیزوں کی مانگ ایک دم کم هوجانے کے پیدا هو جاتی هے . پونجی وادی ویوستھا میں یعنی سرمایہ‌داری کے نظام میں اس طرح کی بیکاری هر آٹھ دس برس کے بعد ایک بار آتی هی هے. کچھ نہ کچھ دنوں کے بعد یا تو لوگوں کے پاس چیزیں زیادہ هو جاتی هیں یا اُن کی خریدنے کی طاقت اتنی کم هو جاتی هے کہ اچھا هوتے هوئے بھی وہ اور چیزیں نہیں خرید سکتے . بازار میں چیزیں بڑھ جاتی هیں اور ان چیزوں کو پیدا کرنے والے مزدور کم سے کم کچھ دنوں کے لئے بیکار هوجاتے هیں . کارخانوں میں مزدوروں کی چھٹنی هونے لگتی هے . کارخانوں کے مالک کہنے لگتے هیں کہ مال کی پیداوار زیادہ هوگئی' اُسے کم کرنے کی ضرورت هے . اِس طرح کی بیکاری بھی آجکل همارے دیش میں کافی هے .

اِس طرح کی بیکاری لگ بھگ هر دیش میں هر آٹھ دس برس کے بعد کیوں آتی رهتی هے اِس سوال پر ارتھ شاستر کے بڑے بڑے ودوانوں کی الگ الگ رائے هے . اس سمے هم اِن الگ الگ متوں کی چھان بین میں نہیں پڑنا چاهتے . کیول اتنا هی کہہ دینا کافی هے کہ سمے سمے پر اِس طرح کی بیکاری پونجی واد یعنی سرمایہ‌داری میں سوابھاوک اور لازمی هے .

چوتھی—چوتھی طرح کی بیکاری کو هم نیم بیکاری یا اردھ بیکاری یا چھپی بیکاری بھی کہہ سکتے هیں . اِس کا مطلب یہ هے کہ کسی نہ کسی کام میں جتنے لوگ لگے هوتے هیں اُتنوں کی اُس کام میں اصل میں ضرورت نہیں هوتی . هم اوپر کہہ چکے هیں کہ بھارت ورش ادھکتر گاؤں میں بسا هوا هے . کھیتی کا دھندھا یہاں کا سب سے بڑا دھندھا هے . جانکار لوگوں کی رائے هے کہ آج جتنے لوگ همارے یہاں کھیتی کے کام میں لگے هوئے هیں اُن میں سے یدی کچھ کھیتی سے هٹا کر دوسرے کاموں میں لگا دئے جائیں تو اُس سے دیش کی ناج کی پیداوار هرگز کم نہیں هوگی. ارتھ شاستر کے ایک ودوان کا کہنا هے کہ یدی همارے دیش میں کھیتی کے کام میں لگا هوا هر مزدور دن میں آٹھ گھنٹے بھی کام کرے تو سال میں هر مزدور کے ڈھائی هزار گھنٹے هوجاتے هیں . اِس طرح کھیتی میں لگے هوئے کل آدمیوں کے سال بھر کے

बेकारी का हल

(डाक्टर वी. वी. सिंह, लखनऊ)

आल इंडिया रेडियो के सौजन्य से एक ब्राडकास्ट के आधार पर

हमारे देश में बेकारी का सवाल दिन दिन बढ़ता जा रहा है. आजकल इसकी बहुत चर्चा है. बेकारी शहरों और क़सबों में ही नहीं, गांव में भी फैली हुई है. कहा जाता है कि भारतवर्ष गांव में बसा है. इसका मतलब यह है कि इस मुल्क का सब से बड़ा सवाल गांव का सवाल है. यानी नए भारत की फिर से तामीर गांव से ही शुरू होगी. इसलिये बेकारी का इलाज भी गांव ही से शुरू होना चाहिए. इलाज किसी रोग का होता है. बेकारी भी एक बहुत बड़ा और भयानक सामाजिक रोग है. जिस तरह और रोग कई तरह के होते हैं, जैसे बुख़ार कई तरह का होता है, उसी तरह बेकारी भी कई तरह की होती है. इन में चार ख़ास तरह की बेकारियां यह हैं :—

पहली—वह बेकारी जो बड़ी मशीनों के चालू हो जाने से पैदा हो जाती है. जब मशीनों का इसतेमाल बढ़ता है तो उसकी वजह से कुछ लोग बेकार हो जाते हैं. ज्यों ज्यों मशीनें जियादा बढ़िया आती जाती हैं त्यों त्यों बेकारी और बढ़ती जाती है. आजकल भी हिन्दुस्तान के कल कारख़ानों में यही बात हो रही है. पहले जिस पुतली घर में एक मजदूर दो मशीनें चला सकता था उस में अब वही एक मजदूर पहले से अच्छी मशीनें लग जाने के कारन चार चला सकता है. इस तरह बाक़ी मजदूर बेकार हो जाते हैं. इस तरह की बेकारी का असर सब उद्योग धंधों और तिजारत में लगे हुए मजदूरों और धीरे धीरे दफ़्तर में काम करने वाले लोगों सब पर पड़ता है. एक समय ऐसा आता है जब इस तरह की बेकारी का असर एक देश के ज़रिये सब देशों पर और सब देशों के रोज़गारी ढांचों पर पड़ता है.

मशीनों से पैदा होने वाली इस बेकारी का असर गांव पर भी पड़ता है. हमारे गांव में जो बेकारी बढ़ती जा रही है उसकी भी एक वजह यह है. मिसाल के लिये पहले गांव में सौ आदमी अपनी बैलगाड़ियां ले कर शहर आते थे और उससे अपनी रोज़ी कमाते थे. पर अब एक ट्रक ने सौ बैलगाड़ी वालों को बेकार कर दिया.

दूसरी—दूसरी तरह की बेकारी मोसमी बेकारी है. खेतिहर देशों में किसानों के लिये पूरे साल भर का काम नहीं

بیکاری کا حل

(ڈاکٹر وی . بی. سنگھ' لکھنؤ)

آل انڈیا ریڈیو کے سوجنیہ سے ایک براڈکاسٹ کے آدھار پر

ہمارے دیش میں بیکاری کا سوال دن دن بڑھتا جا رہا ھے . آجکل اِس کی بہت چرچا ھے. بیکاری شہروں اور قصبوں میں ھی نہیں' گاؤں میں بھی پھیلی ھوئی ھے. کہا جاتا ھے کہ بھارت ورش گاؤں میں بسا ھے . اِس کا مطلب یہ ھے کہ اِس ملک کا سب سے بڑا سوال گاؤں کا سوال ھے . یعنی نئے بھارت کی پھر سے تعمیر گاؤں سے ھی شروع ہوگی . اِس لئے بیکاری کا علاج بھی گاؤں سے ھی شروع ھونا چاہئے . علاج کسی روگ کا ھوتا ھے . بیکاری بھی ایک بہت بڑا اور بھیانک ساماجک روگ ھے . جس طرح اور روگ کئی طرح کے ھوتے ھیں' جیسے بخار کئی طرح کا ھوتا ھے اُسی طرح بیکاری بھی کئی طرح کی ھوتی ھے . اِن میں چار خاص طرح کی بیکاریاں یہ ھیں :—

پہلی—وہ بیکاری جو بڑی بڑی مشینوں کے چالو ھوجانے سے پیدا ھو جاتی ھے . جب مشینوں کا استعمال بڑھتا ھے تو اُس کی وجہ سے کچھ لوگ بیکار ھو جاتے ھیں . جیوں جیوں مشینیں زیادہ بڑھیا آتی جاتی ھیں تیوں تیوں بیکاری اَور بڑھتی جاتی ھے . آجکل بھی ھندستان کے کل کارخانوں میں یہی بات ھو رھی ھے . پہلے جس پتلی گھر میں ایک مزدور دو مشینیں چلا سکتا تھا اُس میں اب وہی ایک مزدور پہلے سے اچھی مشینیں لگ جانے کے کارن چار چلا سکتا ھے . اِس طرح باقی مزدور بیکار ھو جاتے ھیں . اِس طرح کی بیکاری کا اثر سب اُدیوگ دھندوں اور تجارت میں لگے ھوئے مزدوروں اور دھیرے دھیرے دفتر میں کام کرنے والے لوگوں سب پر پڑتا ھے . ایک سمے ایسا آتا ھے جب اِس طرح کی بیکاری کا اثر ایک دیش کے ذریعہ سب دیشوں پر اور سب دیشوں کے روزگاری ڈھانچوں پر پڑتا ھے .

مشینوں سے پیدا ھونے والی اس بیکاری کا اثر گاؤں پر بھی پڑتا ھے . ھمارے گاؤں میں جو بیکاری بڑھتی جا رھی ھے اُس کی بھی ایک وجہ یہ ھے . مثال کے لئے پہلے گاؤں میں سو آدمی اپنی بیل گاڑیاں لے کر شہر آتے تھے اور اُس سے اپنی روزی کماتے تھے. پر اب ایک ٹرک نے سو بیل گاڑی والوں کو بیکار کر دیا .

دوسری—دوسری طرح کی بیکاری موسمی بیکاری ھے. کھیتیہر دیشوں میں کسانوں کے لئے پورے سال بھر کا کام نہیں

की ज़रूरत नहीं, उसकी जात में विश्वास काफ़ी है. ऐसे दर्शन से सभा में एक आदमी चमक सकता है, बहुत से नहीं. अर्थात यह दर्शन सामंतवादी है और वेदों के जनवादी दर्शन के उलटा है.

जो नई जनवादी सभ्यता और कलचर आयेगा, वह वेदों के जमाने की सभ्यता की तरह जनवादी होगा, लेकिन वह ज्यादा खुशहाल और सम्पन्न होगा क्योंकि अब आदमी के पास पैदावार के साधन बहुत बढ़ गए हैं. साइन्स ने क़ुदरत के बारे में बहुत सा ज्ञान हासिल कर लिया है. साइन्स की ईजादों को जनता अधिक जनता के हित के लिये अमल में लाया जायग, उतना ही कल वह आगे बढ़ेगी, उतना ही लोगों को पढ़ने लिखने, सोचने, शरीर को स्वस्थ और सुन्दर बनाने का मौक़ा मिलेगा, और उतना ही सभा में ज़्यादा लोग चमकेंगे.

बुर्ज़्वा सभ्यता इस दिशा में एक हद तक आगे बढ़ती है, वह डार्विन के विकासवाद, डिगरोट के भौतिकवाद और हेगल के द्वंदात्मकवाद को तो मान लेती है, लेकिन उसके लिये इससे आगे बढ़ना मार्क्स के द्वंदात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक विकास को मानना कठिन हो जाता है क्योंकि ऐसा मानने से बुर्ज़्वा कलचर के अपने अस्तित्व पर चोट पड़ती है क्योंकि उसे यह मानना पड़ता है कि अब संसार पूंजीवाद से निकलकर अपने क़ुदरती विकास के रास्ते पर ज़रूर आगे बढ़ेगा और पूंजीवादी जमाने की बुर्ज़्वा कलचर को नये जनवादी और साम्यवादी कलचर को स्थान देना होगा.

इतिहासकार या जीवविज्ञान शास्त्री के अभाव में अनेकों जातियों, धर्मों, भाशाओं और सभ्यताओं के अवशेश भी शेश नहीं रहे—ठीक उसी प्रकार कला के क्षेत्र में भी सही आलोचना और मूल्यांकन के अभाव में कितने ही जीवन और कृतियां अनजानी ही पड़ी रह जाती हैं.

—चेख़व

کی ضرورت نہیں، اُس کی جات میں وشواس کافی ھے . ایسے درشن سے سبھا میں ایک آدمی چمک سکتا ھے، بہت سے نہیں . ارتہات یہ درشن سامنت وادی ھے اور ویدوں کے جن وادی درشن کے اُلٹا ھے .

جو نئی جن وادی سبھیتا اور کلچر آئے گا، وہ ویدوں کے زمانے کی سبھیتا کی طرح جن‌وادی ھوگا، لیکن وہ زیادہ خوشحال اور سمپن ھوگا کیونکہ اب آدمی کے پاس پیداوار کے سادھن بہت بڑھ گئے ھیں . سائنس نے قدرت کے بارے میں بہت سا گیان حاصل کر لیا ھے . سائنس کی ایجادوں کو جتنا ادھک جنتا کے ھت کے لئے عمل میں لایا جائے گا، اُتنا ھی کل وہ آگے بڑھے گی اُتنا ھی لوگوں کو پڑھنے لکھنے، سوچنے، شریر کو سوستھ اور سندر بنانے کا موقع ملے گا، اور اتنا ھی سبھا میں زیادہ لوگ چمکیں گے .

برزوا سبھیتا اِس دشا میں ایک حد تک آگے بڑھتی ھے، وہ ڈارون کے وکاس‌واد، ڈگروٹ کے بھوتک‌واد، اور ھیگل کے دوندآتمک‌واد کو تو مان لیتی ھے، لیکن اُس کے لئے اِس سے آگے بڑھنا مارکس کے دوندآتمک بھوتک‌واد اور اِتہاسک وکاس کو ماننا کٹھن ھو جاتا ھے کیونکہ ایسا ماننے سے برزوا کلچر کے اپنے استتو پر چوٹ پڑتی ھے کیونکہ اُسے یہ ماننا پڑتا ھے کہ اب سنسار پونجی‌واد سے نکل‌کر اپنے قدرتی وکاس کے راستے پر ضرور آگے بڑھیگا اور پونجی‌وادی زمانے کی برزوا کلچر کو نئے جن‌وادی اور سامیہ‌وادی کلچر کو استھان دینا ھوگا .

اتہاسکار یا جیو وگیان شاستری کے ابھاؤ میں انیکوں جاتیوں، دھرموں، بھاشاؤں اور سبھتاؤں کے اوشیش بھی شیش نہیں رہے—ٹھیک اُسی پرکار کلا کے چھیتر میں بھی صحیح آلوچنا اور مولیانکن کے ابھاؤ میں کتنے ھی جیون اور کرتیاں انجانی ھی پڑی رہ جاتی ھیں .

—چیخو

आजादी की लड़ाई में क़ौमी कलचर भी एक बहुत बड़ा हथियार होता है. लेकिन जिस तरह क़ौमी आजादी आंदोलन की बागडोर बुर्जवा और मंझले वर्ग के हाथ में थी, हमारे कलचर का नेतृत्व भी इसी तबक़े के हाथ में था. जिस तरह अंग्रेजों ने कहा था कि पूर्व के पास कुछ भी अपना गर्व के लायक़ नहीं है, उसी तरह हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं ने उनके जवाब में कहना शुरू किया कि हमें पच्छिम से कुछ भी नहीं सीखना, हमारा अतीत (माजी) बहुत ही शानदार है, उससे हमें हर तरह का ज्ञान और शिक्षा मिल सकती है.

इसमें शक नहीं कि हमारा अतीत (माजी) शानदार है, लेकिन राजा राम मोहन राय और गोपाल कृष्ण गोखले आदि नेताओं की इस रवायत और परम्परा को भुला दिया कि हमें अपना अंधविश्वास और रूढ़िवाद छोड़कर पच्छिम से नये विचार सीखने चाहिये क्योंकि जिस तरह पहले हिन्दुस्तानी कलचर यूनान, ईरान से नये विचार लेकर स्वस्थ और सुन्दर बना था उसी तरह अब पच्छिम से साइंटिफ़िक विचार लेकर ही आगे बढ़ सकता था.

हक़ीक़त यह थी कि हिन्दुस्तान में बीसवीं सदी के शुरू तक, जैसा कि लेनिन ने सन १९०८ में लिखा था, हिन्दुस्तान में कारखानादारी बढ़ने से मजदूरों की तादाद और चेतना इतनी बढ़ गई थी कि वह हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय आंदोलन को वर्ग संघर्ष के रूप में आगे बढ़ा सकते थे और उनके नेतृत्व में मजदूर और मेहनतकश जनता का जनवादी कल्चर आगे बढ़ सकता था. लेकिन हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के मंझले और बुर्जवा वर्ग के नेताओं ने मजदूर वर्ग और जनवादी कलचर को नजर अंदाज किया और एक ऐसे दर्शन और कलचर को प्रोत्साहन दिया जिसका मक़सद यह सिखाना था कि आम लोग भेड़ बकरियों की तरह होते हैं, वह अपने आप कुछ नहीं कर सकते, कुछ एक नेता या खास आदमी हमारी क़ौम की क़िस्मत को पलट सकते हैं. ऐसे दर्शन से जाहिर है कि जनवादी नहीं, जनविरोधी कलचर जन्म लेता है. किसी और की बात जाने दीजिये. कांग्रेस में पंडित जवाहर लाल कलचर के सब से बड़े नेता रहे हैं, वह मार्क्सवादी और तरक़्क़ी पसंद कहलाते रहे हैं. वह अपनी पुस्तक 'विश्व इतिहास की झांकियां.' में लिखते हैं—"साधारन मर्द और औरतें आम तौर पर साहसी भावना के नहीं होते..... बड़े नेताओं में कुछ ऐसी बातें होती हैं, जिन से वह सारी जाति में जान पैदा कर देते हैं और उससे बड़े काम करवा लेते हैं." (सफ़ह छः)

यह अवतारवाद का दर्शन है, जिसका मतलब जनता को एक नेता की पूजा करना और उसमें अंधी श्रद्धा रखना सिखाना है. उसके कामों और आदर्शों को देखने और परखने

آزادی کی لڑائی میں قومی کلچر بھی ایک بہت بڑا ھتھیار ھوتا ھے . لیکن جس طرح قومی آزادی آندولن کی باگ ڈور برژوا اور منجھلے ورگ کے ھاتھ میں تھی' ھمارے کلچر کا نیترتو بھی اسی طبقے کے ھاتھ میں تھا . جس طرح انگریزوں نے کہا تھا کہ پورو کے پاس کچھ بھی اپنا گرو کے لائق نہیں ھے' اُسی طرح ھمارے راشٹریہ آندولن کے نیتاؤں نے اُن کے جواب میں کہنا شروع کیا کہ ھمیں پچھم سے کچھ بھی نہیں سیکھنا ھے' ھمارا اتیت (ماضی) بہت ھی شاندار ھے' اسے سے ھمیں ھر طرح کا گیان اور شکشا مل سکتی ھے .

اِس میں شک نہیں کہ ھمارا اتیت (ماضی) شاندار ھے' لیکن راجا رام موھن رائے اور گوپال کرشن گوکھلے آدی نیتاؤں کی اِس روایت اور پرمپرا کو بھلا دیا کہ ھمیں اپنا اندھ وشواس اور روڑھی واد چھوڑ کر پچھم سے نئے وچار سیکھنے چاھئیں کیونکہ جس طرح پہلے ھندستانی کلچر یونان' ایران سے نئے وچار لیکر سوستھ اور سندر بنا تھا اُسی طرح اب پچھم سے سائنٹیفک وچار لیکر ھی آگے بڑھ سکتا تھا .

حقیقت یہ تھی کہ ھندستان میں بیسویں صدی کے شروع تک' جیسا کہ لینن نے سن 1908 میں لکھا تھا' ھندستان میں کارخانہ داری بڑھنے سے مزدوروں کی تعداد اور چیتنا اتنی بڑھ گئی تھی کہ وہ ھندستان کے راشٹریہ آندولن کو ورگ سنگھرش کے روپ میں آگے بڑھا سکتے تھے اور اُن کے نیترتو میں مزدور اور محنت کش جنتا کا جن وادی کلچر آگے بڑھ سکتا تھا . لیکن ھمارے راشٹریہ آندولن کے منجھلے اور برژوا ورگ کے نیتاؤں نے مزدور ورگ اور جن وادی کلچر کو نظرانداز کیا اور ایک ایسے درشن اور کلچر کو پروتساھن دیا جس کا مقصد یہ سکھانا تھا کہ عام لوگ بھیڑ بکریوں کی طرح ھوتے ھیں' وہ اپنے آپ کچھ نہیں کر سکتے' کچھ ایک نیتا یا خاص آدمی ھماری قوم کی قسمت کو پلٹ سکتے ھیں . ایسے درشن سے ظاھر ھے کہ جن وادی نہیں' جن ورودھی کلچر جنم لیتا ھے . کسی اور کی بات جانے دیجئے. کانگریس میں پنڈت جواھر لال کلچر کے سب سے بڑے نیتا رھے ھیں . وہ مارکس وادی اور ترقی پسند کہلاتے رھے ھیں . وہ اپنی پستک ' وشو اتہاس کی جھانکیاں ' میں لکھتے ھیں—" سادھارن مرد اور عورتیں عام طور پر ساھسی بھاونا کے نہیں ھوتے . . . بڑے نیتاؤں میں کچھ ایسی باتیں ھوتی ھیں' جن سے وہ ساری جاتی میں جان پیدا کر دیتے ھیں اور اُس سے بڑے کام کروا لیتے ھیں ." (صفحہ چھ)

یہ اوتار واد کا درشن ھے' جس کا مطلب جنتا کو ایک نیتا کی پوجا کرنا اور اُس میں اندھی شردھا رکھنا سکھانا ھے . اُس کے کاموں اور آدرشوں کو دیکھنے اور پرکھنے

मक़सद हिन्दुस्तान को तरक़्क़ी देना नहीं बल्कि उसका शोशन करना था.

यह ठीक है कि जिस देश का आर्थिक शोशन हो, उस देश में कलचर के स्रोत भी सूख जाते हैं. इसलिये यह सच है *कि ब्रिटिश राज्य में हमारा देश कलचर के मामले में बहुत पीछे* पड़ गया और साम्राज्य ने अपने गुलाम कलचर को हमारे ऊपर लादा. लेकिन इस बारे में इतना ही कहना काफ़ी नहीं होगा. अंग्रेज़ अपने देश में मंझले ज़माने की सामंती सभ्यता से आगे जा चुके थे. वह अपने साथ एक नई विचारधारा और नई सभ्यता लाये थे जो काफ़ी साइंटिफ़िक थी. हिन्दुस्तान की सामंतशाही और पुरानी सभ्यता से उसकी सीधी टक्कर थी. इसलिये उन्होंने सामंतशाही के साथ हिन्दुस्तानी सभ्यता के पिछड़ेपन को भी दूर करना शुरू किया. हिन्दुस्तानी राश्ट्रीयता के पिता राजा राम मोहन राय ने भी अंधविश्वास और रूढ़िवाद के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द की, ब्रह्मसमाज की नींव डाली और पच्छिम से साइंटिफ़िक विचार सीखने की प्रेरना दी.

लेकिन अंग्रेज़ी हुक्मरानों का यह जोश ग़दर सन 1857 के बाद ख़त्म हो गया. इसके बाद उन्होंने हिन्दुस्तान में अपनी लूट खसोट की हुकूमत को पक्का करने के लिये हमारी जनता की लूट खसोट पर पलने वाले वर्गों से नाता जोड़ा. रियासतों में सामंतों को अपना गुलाम बना कर क़ायम रहने दिया, ज़मींदारी को पक्का किया और विक्टोरिया के स्नेह और सहानुभूति भरे फ़रमान के ज़रिये मज़हबी आज़ादी के नाम पर, अंधविश्वास, रूढ़िवाद और तास्सुब को मज़बूत करने की छूट दी.

अब ब्रिटिश सरकार का पुरानी सामंतशाही से नहीं जनता से विरोध शुरू हुआ. उसने 'विद्रोही' जनता को हर तरह दबाना और कुचलना शुरू किया. लेकिन जनता को परास्त करने और ज़ेहनी तौर पर गुलाम बनाने के लिये हमारे देश की जनवादी कलचर को कुचलना और दबाना भी ज़रूरी था. इसलिये हिन्दुस्तान के इतिहास को, जो तमाम कलचर का स्रोत होता है ग़लत रंग से पेश किया गया. हालांकि हिन्दुस्तानी जनता जितनी मेहनत करती है, उतनी शायद किसी और देश की जनता को करनी पड़ती हो, लेकिन हमें बताया गया कि हिन्दुस्तान गर्म देश है, इसलिये उसके वासी सुस्त होते हैं, सदा हारने और गुलाम रहने के लिये पैदा हुए हैं. पूर्व के पास कुछ भी गर्व करने लायक़ नहीं है, अगर उसे तरक़्क़ी करनी है तो भूल जाये कि वह पूर्व है, उसे सब कुछ पच्छिम से सीखना होगा.

उन्नीसवीं सदी के अन्त और बीसवीं सदी के शुरू में जब क़ौमी आज़ादी का आन्दोलन आगे बढ़ा तो क़ौमी कलचर की तरफ़ भी लोगों का ध्यान गया, क्योंकि क़ौमी

مقصد ہندستان کو ترقی دینا نہیں بلکہ اس کا شوشن کرنا تھا۔

یہ ٹھیک ھے کہ جس دیش کا آرتھک شوشن ہو، اس دیش میں کلچر کے سروت بھی سوکھ جاتے ہیں۔ اِس لئے یہ سچ ھے کہ برٹش راج میں ھمارا دیش کلچر کے معاملے میں بہت پیچھے پڑ گیا اور سامراج نے اپنے غلام کلچر کو ہمارے اوپر لادا۔ لیکن اس بارے میں اتنا ہی کہنا کافی نہیں ہوگا۔ انگریز اپنے دیش میں منجھلے زمانے کی سامنتی سبھیتا سے آگے جا چکے تھے۔ وہ اپنے ساتھ ایک نئی وچار دھارا اور نئی سبھیتا لائے تھے جو کافی سائنٹیفک تھی۔ ہندستان کی سامنت شاہی اور پرانی سبھیتا سے اُن کی سیدھی ٹکر تھی۔ اِس لئے انہوں نے سامنت شاہی کے ساتھ ہندستانی سبھیتا کے پچھڑے پن کو بھی دور کرنا شروع کیا۔ ہندستانی راشٹریتا کے پتا راجا رام موہن رائے نے بھی اندھ وشواس اور روڑھی واد کے خلاف آواز بلند کی، برھم سماج کی نیو ڈالی اور پچھم سے سائنٹفک وچار سیکھنے کی پریرنا دی۔

لیکن انگریزی حکمرانوں کا یہ جوش غدر سن 1857 کے بعد ختم ہو گیا۔ اس کے بعد انہوں نے ہندستان میں اپنی لوٹ کھسوٹ کی حکومت کو پکا کرنے کے لئے ہماری جنتا کی لوٹ کھسوٹ پر پلنے والے ورگوں سے ناتا جوڑا۔ ریاستوں میں سامنتوں کو اپنا غلام بنا کر قائم رہنے دیا، زمینداری کو پکا کیا اور وکٹوریا کے اسنیہ اور سہانبھوتی بھرے فرمان کے ذریعہ مذہبی آزادی کے نام پر، اندھ وشواس، روڑھی واد اور تعصب کو مضبوط کرنے کی چھوٹ دی۔

اب برٹش سرکار کا پرانی سامنت شاہی سے نہیں، جنتا سے ورودھ شروع ہوا۔ اُس نے 'ودروھی' جنتا کو ہر طرح دبانا اور کچلنا شروع کیا۔ لیکن جنتا کو پراست کرنے اور ذہنی طور پر غلام بنانے کے لئے ہمارے دیش کے جن وادی کلچر کو کچلنا اور دبانا بھی ضروری تھا۔ اِس لئے ہندستان کے اتہاس کو، جو تمام کلچر کا سروت ہوتا ھے غلط رنگ سے پیش کیا گیا۔ حالانکہ ہندستانی جنتا جتنی محنت کرتی ھے، اتنی شاید کسی اور دیش کی جنتا کو کرنی پڑتی ہو، لیکن ہمیں بتایا گیا کہ ہندستان گرم دیش ھے، اس لئے اُس کے واسی سست ہوتے ہیں، سدا ہارنے اور غلام رہنے کے لئے پیدا ہوئے ہیں۔ پورب کے پاس کچھ بھی گرو کرنے لائق نہیں ھے، اگر اُسے ترقی کرنی ھے تو بھول جائے کہ وہ پورب ھے، اُسے سب کچھ پچھم سے سیکھنا ہوگا۔

اُنیسویں صدی کے انت اور بیسویں صدی کے شروع میں جب قومی آزادی کا آندولن آگے بڑھا تو قومی کلچر کی طرف بھی لوگوں کا دھیان گیا، کیونکہ قومی

आम जनता पर भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और हिन्दू मुसलमानों को मजहबी बराबरी मिली. अकबर ने खूरेंजियों और मुसीबतों में दिन काटे थे और अपनी आंखों से सल्तनतों के उलट फेर देखे थे. जिन्दगी के इस तजुर्बे से उसने समझ लिया था कि जब तक हिन्दू मुसलमान एक दूसरे को ग़ैर समझ कर लड़ते रहेंगे, हिन्दुस्तान में कोई भी राज अधिक दिनों क़ायम नहीं रह सकता. चुनांचे उसने राजपूतों की तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाया और हिन्दू मुसलमानों में मेल क़ायम किया. इतना ही नहीं, हिन्दुस्तानी राजनीति की परम्परा को लेकर नया राजकाजी ढांचा बनाया जिसके बारे में जादूनाथ सरकार ने अपनी तारीख़ में लिखा है कि वह ईरानी राजकाजी ढांचे का हिन्दुस्तानी रूप था. देश की प्रम्परा के मुताबिक़ गांव की ख़ुदमुख़तारी और स्वावलम्बन बहाल की गई.

अमन क़ायम होने से काम धंधे और व्यापार बढ़ा. लोगों में ख़ुशहाली आई. साहित्य और कला की उन्नति हुई. जब आपस का मेल जोल और प्रेम बढ़ता है और जब आदमी अंधविशास और तास्सुब को छोड़ कर स्वतंत्र रूप से सोचने लगता है और जब उसका अपनी निर्मान शक्ति में विश्वास बढ़ता है, तो कलचर और सभ्यता का विकास होता है. मंझले जमाने में हिन्दुस्तानी साहित्य, अदब और कला ने बेहद तरक़्क़ी की. ताजमहल मंझले जमाने के हमारे कलचर का शाहकार है.

समंती ढांचे के अन्दर जितनी तरक़्क़ी हो सकती थी उतनी हिन्दुस्तान शाजहां के जमाने तक कर चुका था. अब इस ढांचे के अन्दर रह कर आगे बढ़ना मुमकिन नहीं था. इसलिये यह सामंती व्यवस्था औरंगजेब के जमाने में टूटनी शुरू हो गई. पंजाब, महाराष्ट्र और भरतपुर आदि में नई शक्तियां उभरने लगीं. दरअसल सामंतवाद ने जिन जातियों को दबाकर रखा था, वह अब उभर रही थीं. सामंती व्यवस्था की तरक़्क़ी में जो व्यापारी पूंजी लगी थी, वह विकास चाहती थी. इसलिये नई शक्तियों के पीछे व्यापारियों का हाथ था. जिसका मतलब है कि हिन्दुस्तान सामंती व्यवस्था से पूंजीवादी व्यवस्था की तरफ़ बढ़ रहा था.

जब कोई देश एक सामाजिक व्यवस्था से दूसरी सामाजिक व्यवस्था की तरफ़ जाने लगता है तो उसको वही कश्ट सहना पड़ता है, जो एक मां को बच्चा जनते समय सहना पड़ता है. हमारे देश की अट्ठारहवीं सदी की ख़ाना जंगी का कारन यह था कि पुराना समाज नये समाज को जन्म दे रहा था. उस समय विदेशी व्यापारियों ने दख़लंदाजी कर के हमारे देश के ऐतिहासिक विकास को रोक दिया और इस ख़ानाजंगी से फ़ायदा उठा कर अंग्रेजों ने एक ऐसा ग़ैरमुल्की राज क़ायम कर लिया जिसका

عام جنتا پر بھی بہت اچھا پربھاؤ پڑا اور هندو مسلمانوں کو مذھبی برابری ملی . اکبر نے خوں‌ریزیوں اور مصیبتوں میں دن کاٹے تھے اور اپنی آنکھوں سے سلطنتوں کے اُلٹ پھیر دیکھے تھے . زندگی کے اِس تجربے سے اُس نے سمجھ لیا تھا کہ جب تک هندو مسلمان ایک دوسرے کو غیر سمجھکر لڑتے رهینگے' هندستان میں کوئی بھی راج ادھک دنوں قائم نہیں رہ سکتا. چنانچہ اُس نے راجپوتوں کی طرف دوستی کا هاتھ بڑھایا اور هندو مسلمانوں میں میل قائم کیا. اُتنا ھی نہیں' هندستانی راج نیتی کی پرمپرا کو لیکر نیا راجکاجی ڈھانچہ بنایا جس کے بارے میں جادو ناتھ سرکار نے اپنی تاریخ میں لکھا ھے کہ وہ ایرانی راجکاجی ڈھانچے کا هندستانی روپ تھا . دیش کی پرمپرا کے مطابق گاؤں کی خود مختاری اور سواولمبن بحال کی گئی .

امن قائم هونے سے کام دھندھے اور ویاپار بڑھا . لوگوں میں خوشحالی آئی . ساھتیہ اور کلا کی اُننتی هوئی . جب آپس کا میل جول اور پریم بڑھتا ھے اور جب آدمی اندھ وشواس اور تعصب کو چھوڑ کر سوتنتر روپ سے سوچنے لگتا ھے اور جب اُسکا اپنی نرمان شکتی میں وشواس بڑھتا ھے' تو کلچر اور سبھیتا کا وکاس هوتا ھے . منجھلے زمانے میں هندستانی ساھتیہ' ادب اور کلا نے بےحد ترقی کی . تاج‌محل منجھلے زمانے کے هماری کلچر کا شاهکار ھے .

سامنتی ڈھانچے کے اندر جتنی ترقی هوسکتی تھی اُتنی هندستان شاہ‌جہاں کے زمانے تک کرچکا تھا . اب اِس ڈھانچے کے اندر رہ کر آگے بڑھنا ممکن نہیں تھا . اس لئے یہ سامنتی ویوستھا اورنگ‌زیب کے زمانے میں ٹوٹنی شروع هوگئی. پنجاب' مہاراشٹر اور بھرتپور آدی میں نئی شکتیاں اُبھرنے لگیں . دراصل سامنت واد نے جن جاتیوں کو دباکر رکھا تھا' وہ اب اُبھر رهی تھیں . سامنتی ویوستھا کی ترقی میں جو ویاپاری پونجی لگی تھی وہ وکاس چاھتی تھی . اِس لئے نئی شکتیوں کے پیچھے ویاپاریوں کا هاتھ تھا . جس کا مطلب ھے کہ هندستان سامنتی ویوستھا سے پونجی‌وادی ویوستھا کی طرف بڑھ رها تھا .

جب کوئی دیش ایک سماجک ویوستھا سے دوسری سماجک ویوستھا کی طرف جانے لگتا ھے تو اُس کو وھی کشٹ سہنا پڑتا ھے' جو ایک ماں کو بچہ جنتے سمے سہنا پڑتا ھے . همارے دیش کی اٹھارهویں صدی کی خانہ جنگی کا کارن یہ تھا کہ پرانا سماج نئے سماج کو جنم دے رها تھا . اُس سمے ودیشی ویاپاریوں نے دخل اندازی کر کے همارے دیش کے ایتہاسک وکاس کو روک دیا' اور اِس خانہ جنگی سے فائدہ اُٹھا کر انگریزوں نے ایک ایسا غیرملکی راج قائم کر لیا جس کا

माहौल और परम्परा को जरूर अपनाता है. फिर मुसलमान हमलावरों ने हिन्दू औरतों से शादियां कीं और बहुत से हिन्दुओं ने इस्लाम क़बूल किया. इन औरतों और मर्दों के ज़ेहन में हिन्दुस्तानी दर्शन और परम्परा खूब बस चुकी थी. इसलिये उन्होंने इस्लाम को भी नया रंग दिया जो अरब और ईरान के इस्लाम से मुख्तलिफ़ था. उसे हिन्दुस्तानी इस्लाम कहा जाय तो ग़लत नहीं होगा.

हिन्दुस्तान में शीया और सुन्नी दोनों आये और हिन्दुस्तान में जो नये मुसलमान बने उनमें से ब्राह्मन और ऊंची जातियों के लोग तो सैयद और शेख़ कहलाये और दूसरे डोम, मीरासी छोटी जातों में गिने जाने लगे. जब मज़हबी जोश ख़त्म हुआ तो सुन्नी और शीयों में खूब लड़ाइयां होने लगीं. सुन्नी और शीया राजे एक दूसरे को हराने लगे. लोगों ने अपनी आंखों देखा कि लड़ाइयां मज़हब के नाम पर गद्दियों के लिये हो रही हैं और हविस को मज़हब का नाम देकर नाहक़ ख़ून बहाया जा रहा है.

मुसलमानों के हमलों से जहां बहुत मत मतांतर टूटे थे वहां ज़ात पात, धर्म कर्म और पूजा पाठ के बंधन सख़्त भी हो गये थे. क्योंकि जिन पंडितों और हिन्दुओं ने इस्लाम क़बूल करने से इनकार किया था उन्होंने इस्लामी विचारधारा से अपने आप को और अपने हममज़हबों को बचाये रखने के लिये विचार और अंधविश्वास की दीवारों को और मज़बूत बना दिया था.

चार पांच सदी के ख़ून ख़राबे, बदअमनी, तास्सुब और अंधविश्वास से हिन्दू मुसलमान दोनों ही तंग आ चुके थे और उन्होंने हिन्दू राजाओं को हिन्दुओं के और मुसलमानों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ते देख कर लड़ाई को अकारन समझ लिया और हिन्दू मुस्लिम जनता में आपस का मेलजोल बढ़ने लगा. जिससे भक्ति आन्दोलन ने जन्म लिया और इस आन्दोलन को संत, कवियों और सूफ़ी शायरों और दुरवेशों का सहयोग प्राप्त था. कबीर, नानक, तुलसीदास, मुईनुद्दीन चिश्ती, बाबा फ़रीद, निज़ामुद्दीन औलिया, रहमान, रसखान, सूरदास, तुक्काराम, वारिसशाह और बुल्लेशाह ने भक्ति और तसव्वुफ़ के दरिया बहाये. आदमी और आदमी में प्रेम बढ़ाया. इस आन्दोलन ने लोगों के पुराने अक़ीदों को बदल दिया और इन साधु संतों ने अगली तीन चार सदी तक कलचर सभ्यता और समाज पर गहरा असर डाला. उन्होंने वेद, क़ुरान, मुल्ला और ब्राह्मन को चैलेंज किया और आदमी को ज़ात पात और मज़हबी तास्सुब के दलदल से निकाल कर सीधी और सच्ची राह दिखाई.

अकबर ने इसी भक्ति आन्दोलन के असर से दीन-इलाही नाम से अपना दरबारी मज़हब चलाया. जिसका

ماحول اور پرمپرا کو ضرور اپناتا ھے . پھر مسلمان حملہ آوروں نے ھندو عورتوں سے شادیاں کیں اور بہت سے ھندؤں نے اِسلام قبول کیا . اِن عورتوں اور مردوں کے ذھن میں ھندستانی درشن اور پرمپرا خوب بس چکی تھی. اس لئے اُنھوں نے اِسلام کو بھی نیا رنگ دیا جو عرب اور ایران کے اِسلام سے مختلف تھا . اُسے ھندستانی اِسلام کہا جائے تو غلط نہیں ھوگا .

ھندستان میں شیعہ اور سنّی دونوں آئے اور ھندستان میں جو نئے مسلمان بنے اُن میں سے براھمن اور اونچی جاتیوں کے لوگ تو سید اور شیخ کہلائے اور دوسرے ڈوم، میراثی چھوٹی جاتوں میں گنے جانے لگے . جب مذھبی جوش ختم ھوا تو سنّی اور شیعوں میں خوب لڑائیاں ھونے لگیں . سنّی اور شیعہ راجے ایک دوسرے کو ھرانے لگے . لوگوں نے اپنی آنکھوں دیکھا کہ لڑائیاں مذھب کے نام پر گدیوں کے لئے ھو رھی ھیں اور ھوس کو مذھب کا نام دیکر ناحق خون بہایا جا رھا ھے .

مسلمانوں کے حملوں سے جہاں بہت سے مت متانتر ٹوٹے تھے وھاں جات پات، دھرم کرم اور پوجا پاٹھ کے بندھن سخت بھی ھوگئے تھے . کیونکہ جن پنڈتوں اور ھندؤں نے اِسلام قبول کرنے سے انکار کیا تھا انھوں نے اِسلامی وچاردھارا سے اپنے آپ کو اور اپنے ھم مذھبوں کو بچائے رکھنے کے لئے وچار اور اندھ وشواس کی دیواروں کو اور مضبوط بنا دیا تھا .

چار پانچ صدی کے خون خرابے، بدامنی، تعصب اور اندھ وشواس سے ھندو مسلمان دونوں ھی تنگ آچکے تھے اور انھوں نے ھندو راجاؤں کو ھندؤں کے اور مسلمانوں کو مسلمانوں کے خلاف لڑتے دیکھکر لڑائی کو اکارن سمجھ لیا اور ھندو مسلم جنتا میں آپس کا میل جول بڑھنے لگا . جس سے بھکتی آندولن نے جنم لیا اور اِس آندولن کو سنت، کویوں اور صوفی شاعروں اور درویشوں کا سہیوگ پراپت تھا . کبیر، نانک، تلسی داس، معین الدین چشتی، بابا فرید، نظام الدین اولیا، رحمان، رسکھان، سورداس، تکارام، وارث شاہ اور بلھے شاہ نے بھکتی اور تصوف کے دریا بہائے . آدمی اور آدمی میں پریم بڑھایا . اِس آندولن نے لوگوں کے پرانے عقیدوں کو بدل دیا اور اِن سادھو سنتوں نے اگلی تین چار صدی تک کلچر، سبھیتا اور سماج پر گہرا اثر ڈالا . اُنھوں نے وید، قرآن، ملا اور براھمن کو چیلینج کیا اور آدمی کو جات پات اور مذھبی تعصب کے دلدل سے نکالکر سیدھی اور سچی راہ دکھائی .

اکبر نے اِسی بھکتی آندولن کے اثر سے دین الٰہی نام سے اپنا درباری مذھب چلایا . جس کا

और अपने साथ गुप्त ज़माने का वैष्णव मत ले गये जो महाभारत की मदद से जनता में फैलने लगा. मुसलमान बहुत से मतमतान्तरों और देवताओं की जगह एक ईश्वर या अल्लाह को मानते थे और उनका मज़हब उस समय के हिन्दु धर्म या शंकराचार्य के अद्वैतवाद के मुक़ाबिले में बहुत सादा और बाअमल था. हिन्दुस्तान के लोगों पर इसका असर पड़ने लगा और ब्राह्मनों ने अपने दर्शनों को भी नये हालात के अनुसार ढालना शुरू किया. रामानुज ने शंकराचार्य की शिक्षा के मुक़ाबिले में अपना मत चलाया जिसकी परम्परा हिन्दुस्तानी थी; लेकिन वह इस्लाम की तरह सादा था और लोगों की समझ में आ सकता था. हावेल लिखता है—"इस्लाम की तलवार भगवान के हाथ में जर्राही का चाक़ू था, जिसके ज़रिये उस ज्ञान के वृक्ष से, जो उसने भारतवर्ष में लगाया था, सड़ी हुई और बेकार शाख़ों को काटा."

मुसलमानों से पहले भी शक, सुंग, कुशान और हुन आदि हमलावर बाहर से आये, लेकिन उन्होंने हिन्दुस्तानी कलचर और दर्शन को अपनाया और हिन्दुस्तानी बन कर रहने लगे. लेकिन मुसलमानों में ग़ैरमामूली जोश था, जीवन शक्ति थी, हिन्दू धर्म की पेचीदगियों को ख़ुद हिन्दुस्तानी जनता नहीं समझती थी, हमलावर उसे क्या स्वीकार करते. राजनीतिक जीतों के साथ उन्होंने कलचर के साधनों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया और ख़ुद हिन्दू बनने के बजाय, हिन्दुस्तानियों को मुसलमान बनाते रहे. जब अपने ही गोरखधंधे में उलझ जाने से हिन्दू धर्म और हिन्दुस्तानी कलचर का विकास रुक गया था इस्लाम फलफूल रहा था.

इस्लाम की नई शक्ति के असर से हिन्दू धर्म और हिन्दू कलचर में भी हरकत पैदा हुई. सिर्फ़ इतना ही नहीं कि मुसलमानों की आमद के कारन पिछड़े हुए दक्खिन का विकास हुआ बल्कि महमूद ग़ज़नवी और मुहम्मद ग़ौरी के हमलों के बाद जब यहां हिन्दुस्तानी मुसलमान राजाओं की राजधानियां बनीं तो कलाकारों को जो अब मुसलमान बन चुके थे अपनी कला को नये रूप में पेश करने का मौक़ा मिला. इन मुसलमान राजाओं के दरबारों में हिन्दु कलचर ख़ूब फला फूला. उन की मस्जिदों, महलों, बाग़ों और हमामों में हिन्दुस्तानी शिल्पी कला का रंग साफ़ उजागर है. महमूद भी क़न्नौज और मथुरा से हिन्दू कारीगरों को पकड़ कर ले गया था. उसने ग़ज़नी में जो मस्जिद बनवाई, उसमें भी दसवीं सदी के मंदिरों का रंग झलकता है. लेकिन इन सब इमारतों में इस्लाम की सादगी और हमलावरों की जुरअत का निरालापन एक ख़ास बात है. उनमें हुस्न के साथ सादगी और वक़ार पैदा हो गया है.

जहां हिन्दू धर्म पर इस्लाम का असर पड़ा वहां इस्लाम भी हिन्दू धर्म से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था. कोई भी धर्म या दर्शन जब दूसरे देश में आता है तो उसके

اور اپنے ساتھ گپتا زمانے کا ویشنو مت لے گئے جو مہابھارت کی مدد سے جنتا میں پھیلنے لگا۔ مسلمان بہت سے مت متانتروں اور دیوتاؤں کی جگہ ایک ایشور یا اللہ کو مانتے تھے اور اُنکا مذہب اُس سمے کے ہندو دھرم یا شنکراچاریہ کے ادویتواد کے مقابلے میں بہت سادہ اور باعمل تھا. ہندستان کے لوگوں پر اِس کا اثر پڑنے لگا اور براہمنوں نے اپنے درشنوں کو بھی نئے حالات کے انوسار ڈھالنا شروع کیا۔ رامانج نے شنکراچاریہ کی شکچھا کے مقابلے میں اپنا مت چلایا جسکی پرمپرا ہندستانی تھی؛ لیکن وہ اِسلام کی طرح سادہ تھا اور لوگوں کی سمجھ میں آسکتا تھا۔ ہاویل لکھتا ہے—"اِسلام کی تلوار بھگوان کے ہاتھ میں جراحی کا چاقو تھا' جس کے ذریعہ اُس گیان کے برکش سے' جو اُس نے بھارت ورش میں لگایا تھا' سڑی ہوئی اور بےکار شاخوں کو کاٹا۔"

مسلمانوں سے پہلے بھی شک' سنگ' کشان اور ہن آدی حملہ‌آور باہر سے آئے' لیکن اُنھوں نے ہندستانی کلچر اور درشن کو اپنایا اور ہندستانی بن‌کر رہنے لگے۔ لیکن مسلمانوں میں غیرمعمولی جوش تھا 'جیون شکتی تھی' ہندو دھرم کی پیچیدگیوں کو خود ہندستانی جنتا نہیں سمجھتی تھی' حملہ‌آور اُسے کیا سویکار کرتے۔ راجنیتک جیتوں کے ساتھ اُنھوں نے کلچر کے سادھنوں پر بھی قبضہ کرلیا اور خود ہندو بننے کے بجائے' ہندستانیوں کو مسلمان بناتے رہے۔ جب اپنے ہی گورکھ دھندھے میں اُلجھ جانے سے ہندو دھرم اور ہندستانی کلچر کا وکاس رک گیا تھا اِسلام پھل پھول رہا تھا۔

اِسلام کی نئی شکتی کے اثر سے ہندو دھرم اور ہندو کلچر میں بھی حرکت پیدا ہوئی۔ صرف اِتنا ہی نہیں کہ مسلمانوں کی آمد کے کارن پچھڑے ہوئے دکھن کا وکاس ہوا بلکہ محمود غزنوی اور محمد غوری کے حملوں کے بعد جب یہاں ہندستانی مسلمان راجاؤں کی راجدھانیاں بنیں تو کلاکاروں کو جو اب مسلمان بن چکے تھے اپنی کلا کو نئے روپ میں پیش کرنے کا موقع ملا۔ اِن مسلمان راجاؤں کے درباروں میں ہندو کلچر خوب پھلا پھولا۔ اُن کی مسجدوں' محلوں' باغوں اور حماموں میں ہندستانی شلپی کلا کا رنگ صاف اُجاگر ہے۔ محمود بھی قنوج اور متھرا سے ہندو کاریگروں کو پکڑ کر لے گیا تھا۔ اس نے غزنی میں جو مسجد بنوائی' اس میں بھی دسویں صدی کے مندروں کا رنگ جھلکتا ہے۔ لیکن اِن سب عمارتوں میں اِسلام کی سادگی اور حملہ‌آوروں کی جرأت کا نرالاپن ایک خاص بات ہے۔ اُن میں حسن کے ساتھ سادگی اور وقار پیدا ہوگیا ہے۔

جہاں ہندو دھرم پر اِسلام کا اثر پڑا وہاں اِسلام بھی ہندو دھرم سے پربھاوت ہوئے بنا نہیں رہ سکتا تھا۔ کوئی بھی دھرم یا درشن جب دوسرے دیش میں جاتا ہے تو اُس کے

कला, साहित्य, दर्शन और साइंस हर तरह के ज्ञान का स्रोत (चश्मा) जनता और उसका अमल है. पैदावार के साधनों की तरक़्क़ी रुक जाने से जनता और सरकार का ताल्लुक़ टूट जाता है, तब यह स्रोत बंद होजाता है और कलचर पिछड़ जाता है. कलचर को फिर आगे बढ़ाने के लिये पैदावार के साधनों को आगे बढ़ाना और जनता और हुकूमत में सम्बन्ध जोड़ना ज़रूरी होता है. वरना काम नहीं चल सकता.

इस समय हिन्दुस्तानी कलचर और सभ्यता इतनी बढ़ी हुई थी कि बाहर से सुंग, कुश, हुन कोई भी जाति आई, उसने इसकी महानता को स्वीकार किया और हमारे समाज ने उन्हें अपने अन्दर समो लिया.

लेकिन बाहर के हमले बढ़ते गये और आवा जाई के काफ़ी साधन न होने के कारन बड़े राज्य बन बन कर टूटते रहे और देश फिर छोटी रियासतों में बंट गया. फिर आदमी दुनिया में अपनी ज़िम्मेदारी को भूल कर दूसरी दुनिया की बातें करने लगा. फिर किताबों और नियमों को आदमी से ज़्यादा अहमियत मिलने लगी. जात पात के झगड़े बढ़ गये. शंकराचार्य ने बुद्ध मत के मुक़ाबिले में जो नया मत चलाया उसमें भी माद्दी दुनिया को नज़र अंदाज़ किया गया. बुद्ध मत संघों का मत था. लोग गृहस्थ छोड़कर संघों में जा रहे थे जिससे ख़राबियां पैदा हो रही थीं. लेकिन हिन्दु मत में गृस्थ धर्म को भी महानता प्राप्त थी. जो आदमी गृहस्थ का पालन अच्छी तरह नहीं करता था, हिन्दु धर्म उसे अच्छा नहीं समझता था. शंकराचार्य ने बौद्ध भिक्षुओं की तरह गृहस्थ छोड़कर साधु और महन्त बनने की रीति चलाई और इन साधुओं और महन्तों के लिये बुद्ध मत के संघों की तरह मठ खोले. इनमें भजन से मुक्ति चाहने वाले बेअमल आदमी भर गये. हमारे समाज की ख़राबियां दूर होने की जगह बढ़ती ही गईं. शंकराचार्य को दूसरा बुद्ध ठीक ही कहा जाता है. दोनों सुधारवादी थे और दोनों ने ख़्वाहिशों को छोड़ कर मुक्ति का मार्ग बताया. बाअमल दुनिया को संघों और मठों में तब्दील किया.

जब दर्शन का अमल से सम्बन्ध नहीं रहता, तो उसका काम बाल की खाल उतारना हो जाता है. विचारधारा आगे बढ़ने के बजाय गोलचक्र में या भूल भलैयों में भटकने लगती है, इससे कलचर का विकास भी रुक जाता है. अब हिन्दू दर्शन अध्यात्मकवाद या रूहानियत की गुत्थियां सुलझा रहा था और उसमें मत मतांतर की कितनी ही बेकार की शाखें फूट आई थीं. आम आदमी भ्रम और अचरज में पड़ गया था.

इस समय हिन्दुस्तान पर मुसलमानों का हमला हुआ और बेहरकत जिन्दगी में उथल पुथल पैदा हुई. बहुत से पंडित हमले की ज़द से बचने के लिये दक्खिन में चले गये

کا سا‌ہتیہ درشن اور سائنس ہر طرح کے گیان کا سروت (چشمہ) جنتا اور اُس کا عمل ہے. پیداوار کے سادھنوں کی ترقی رک جانے سے جنتا اور سرکار کا تعلق ٹوٹ جاتا ہے، تب یہ سروت بند ہوجاتا ہے اور کلچر پچھڑ جاتا ہے. کلچر کو پھر آگے بڑھانے کے لئے پیداوار کے سادھنوں کو آگے بڑھانا اور جنتا اور حکومت میں سمبندھ جوڑنا ضروری ہوتا ہے، ورنہ کام نہیں چل سکتا.

اس سمے ہندستانی کلچر اور سبھیتا اتنی بڑھی ہوئی تھی کہ باہر سے سنگ، کش، ہن کوئی بھی جاتی آئی، اُس نے اِس کی مہانتا کو سوئیکار کیا اور ہمارے سماج نے اُنھیں اپنے اندر سمولیا.

لیکن باہر کے حملے بڑھتے گئے اور آواجائی کے کافی سادھن نہ ہونے کے کارن بڑے راج بن بن کر ٹوٹتے رہے اور دیش پھر چھوٹی ریاستوں میں بنٹ گیا. پھر آدمی دنیا میں اپنی ذمہ‌داری کو بھول کر دوسری دنیا کی باتیں کرنے لگا. پھر کتابوں اور نیموں کو آدمی سے زیادہ اہمیت ملنے لگی. جات پات کے جھگڑے بڑھ گئے. شنکراچاریہ نے بدھ مت کے مقابلے میں جو نیا مت چلایا اُس میں بھی مادی دنیا کو نظر انداز کیا گیا. بدھ مت سنگھوں کا مت تھا. لوگ گرہستھ چھوڑکر سنگھوں میں جا رہے تھے جس سے خرابیاں پیدا ہو رہی تھیں. لیکن ہندو مت میں گرہستھ دھرم کو بھی مہانتا پراپت تھی. جو آدمی گرہستھ کا پالن اچھی طرح نہیں کرتا تھا، ہندو دھرم اُسے اچھا نہیں سمجھتا تھا. شنکراچاریہ نے بودھ بھکشوؤں کی طرح گرہستھ چھوڑ کر سادھو اور مہنت بننے کی ریتی چلائی اور اِن سادھوؤں اور مہنتوں کے لئے بدھ مت کے سنگھوں کی طرح مٹھ کھولے. انمیں بھجن سے مکتی چاہنے والے بے عمل آدمی بھر گئے. ہمارے سماج کی خرابیاں دور ہونے کی جگہ بڑھتی ہی گئیں. شنکراچاریہ کو دوسرا بدھ ٹھیک ہی کہا جاتا ہے. دونوں سدھاروادی تھے اور دونوں نے خواہشوں کو چھوڑکر مکتی کا مارگ بتایا. باعمل دنیا کو سنگھوں اور مٹھوں میں تبدیل کیا.

جب درشن کا عمل سے سمبندھ نہیں رہتا، تو اُس کا کام بال کی کھال اُتارنا ہو جاتا ہے. وچاردھارا آگے بڑھنے کے بجائے گول چکر میں یا بھول بھلیوں میں بھٹکنے لگتی ہے، اِس سے کلچر کا وکاس بھی رک جاتا ہے. اب ہندو درشن ادھیاتمک‌واد یا روحانیت کی گتھیاں سلجھا رہا تھا اور اُس میں مت متانتر کی کتنی ہی بیکار کی شاخیں پھوٹ آئی تھیں. عام آدمی بھرم اور اچرج میں پڑگیا تھا.

اِس سمے ہندستان پر مسلمانوں کا حملہ ہوا اور بےحرکت زندگی میں اُتھل پتھل پیدا ہوئی. بہت سے پنڈت حملے کی زد سے بچنے کے لئے دکھن میں چلے گئے

मिला दिया गया है. कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि क्षत्रि का धर्म लड़ना है. अपने उस धर्म का पालन करो. मरने मारने की चिन्ता में न पड़ो. न कोई किसी को मारता है और न कोई मरता है. आत्मा अमर है, वह मर नहीं सकती. जीत जाओगे तो इस दुनिया पर राज करोगे और मर जाओगे तो स्वर्ग में राज करोगे.

ख्वाहिशों के त्याग की जगह अमल का पैग़ाम फिर गूँज उठा. 'पंचतंत्र' में लिखा है—"लक्ष्मी तो सिंह के समान बाअमल लोगों को हासिल होती है. 'भाग्य देता है, यह कमजोर लोग कहा करते हैं. इसलिये भाग्य को छोड़ कर अपनी शक्ति से पुरुषार्थ करो. अगर यत्न करने से भी कामयाबी न हो, तो देखना चाहिये कि यत्न में क्या खराबी है." फिर लिखा है—"पिछले जन्म में किये हुए काम को ही तक़दीर कहते हैं. इसलिये आदमी को आलस्य छोड़ कर मेहनत करनी चाहिये." इस पुस्तक में यह भी कहा गया है कि जिस जाति के अमल और वचन में अंतर आ जाता है, वह नाश को प्राप्त होती है.

अमल के कारन ही फिर एक मजबूत और बड़ा राज्य क़ायम करने की जरूरत थी. तभी खेती बाड़ी, व्यापार और कला आगे बढ़ सकती थी, तभी आपस के झगड़े खत्म हो सकते थे, तभी बाहर के हमलों से देश की रक्षा हो सकती थी. उस समय उथल पुथल का जमाना था. रोम का महान राज्य टूट रहा था. सारे देश के एक मजबूत राज्य की जरूरत को महसूस करते हुए ही महाभारत में लिखा है कि तुम्हारा स्वर्ग तुम्हारी राजनीति है. और विनसिंट' स्मिथ आदि यूरोपीयन विद्वानों ने भी लिखा है कि महाभारत का बुनियादी नुक्ता एक मरकज़ी हकूमत क़ायम करना है. इसीलिये कुरुक्षेत्र का महाभारत युद्ध हुआ था.

इस विचारधारा को गुप्त राज्य में अमली रूप मिला और इसी बात को लेकर महाकवि कालीदास ने 'रघुवंश' महाकाव्य रचा. इसमें रामचन्द्र के पूर्वज रघू को लेकर एक महान, पराक्रमी और इन्साफ़ पसन्द राजा के गुन बयान किये गये हैं. दर असल यह सामंतवाद की तरक़्क़ी का जमाना था. सामंतवाद की तरक़्क़ी से ज़िन्दगी आगे बढ़ रही थी. राजा को जनता का सहयोग प्राप्त था. वह उनका नेता था और अपने अमल से सारी जनता को हरकत में लाता था. अमल से उनका लोक और परलोक दोनों संवरते थे. यहां मादी और आत्मिक दर्शनों में एक प्रकार का मेल और समझौता हो गया था. इसीलिये इस जमाने में महाभारत और गीता का प्रचार खास तौर पर हुआ. इसीलिये कलचर की तरक़्क़ी हो सकी. कालिदास जैसा महाकवि पैदा हुआ. कुमारिल भट्ट ने जमीन के घूमने, चन्द्र ग्रहन और सूर्य ग्रहन के नियम मालूम किये.

ملا دیا گیا ھے. کرشن ارجن سے کہتے ھیں کہ چھتری کا دھرم لڑنا ھے. اپنے اِس دھرم کا پالن کرو. مرنے مارنے کی چنتا میں نہ پڑو. نہ کوئی کسی کو مارتا ھے اور نہ کوئی مرتا ھے. آتما امر ھے' وہ مر نہیں سکتی. جیت جاؤگے تو اِس دنیا پر راج کروگے اور مرجاؤگے تو سورگ میں راج کروگے.

خواھشوں کے تیاگ کی جگہ عمل کا پیغام پھر گونج اٹھا. 'پنچ تنتر' میں لکھا ھے—"لکشمی تو سنگھ کے سمان با عمل لوگوں کو حاصل ھوتی ھے. 'بھاگیہ دیتا ھے' یہ کمزور لوگ کہا کرتے ھیں. اس لئے بھاگیہ کو چھوڑکر اپنی شکتی سے پروشارتھ کرو. اگر یتن کرنے سے بھی کامیابی نہ ھو' تو دیکھنا چاھئے کہ یتن میں کیا خرابی ھے." پھر لکھا ھے—"پچھلے جنم میں کئے ھوئے کام کو ھی تقدیر کہتے ھیں. اس لئے آدمی کو آلسیہ چھوڑکر محنت کرنی چاھئے." اس پستک میں یہ بھی کہا گیا ھے کہ جس جاتی کے عمل اور وچن میں انتر آ جاتا ھے' وہ ناش کو پراپت ھوتی ھے.

عمل کے کارن ھی پھر ایک مضبوط اور بڑا راج قائم کرنے کی ضرورت تھی. تبھی کھیتی باڑی' ویاپار اور کلا آگے بڑھ سکتی تھی' تبھی آپس کے جھگڑے ختم ھوسکتے تھے' تبھی باھر کے حملوں سے دیش کی رکشا ھوسکتی تھی. اُس سمے اُتھل پتھل کا زمانہ تھا. روم کا مہان راج ٹوٹ رھا تھا. سارے دیش کے ایک مضبوط راج کی ضرورت کو محسوس کرتے ھوئے ھی مہابھارت میں لکھا ھے کہ تمہارا سورگ تمہاری راجنیت ھے. اور ونسینٹ اِسمتھ آدی یوروپین ودوانوں نے بھی لکھا ھے کہ مہابھارت کا بنیادی نکتہ ایک مرکزی حکومت قائم کرنا ھے. اسی لئے کوروچھیتر کا مہابھارت یدھ ھوا تھا.

اس وچاردھارا کو گپت راج میں عملی روپ ملا اور اِسی بات کو لیکر مہاکوی کالیداس نے 'رگھوونش' مہاکاویہ رچا. اس میں رامچندر کے پوروج رگھو کو لیکر ایک مہان' پراکرمی اور انصاف پسند راجا کے گن بیان کئے گئے ھیں. دراصل یہ سامنتواد کی ترقی کا زمانہ تھا. سامنتواد کی ترقی سے زندگی آگے بڑھ رھی تھی. راجا کو جنتا کا سہیوگ پراپت تھا. وہ اُنکا نیتا تھا اور اپنے عمل سے ساری جنتا کو حرکت میں لاتا تھا. عمل سے اُنکا لوک اور پرلوک دونوں سنورتے تھے. یہاں مادی اور آتمک درشنوں میں ایک پرکار کا میل اور سمجھوتہ ھوگیا تھا. اسی لئے اِس زمانے میں مہابھارت اور گیتا کا پرچار خاص طور پر ھوا. اِسی لئے کلچر کی ترقی ھوسکی. کالیداس جیسا مہاکوی پیدا ھوا. کمارل بھٹ نے زمین کے گھومنے' چندر گرھن اور سوریہ گرھن کے نیم معلوم کئے.

को बड़ी तसल्ली देता था. गो इस तरह एक तबक़ा मेहनत से पिसता रहा, लेकिन एक तबक़े को सोचने समझने का अधिक मौक़ा मिला, दर्शन और कला में उन्नति हुई, और कलचर आगे बढ़ता रहा. और इस ज़माने का आदमी माद्दी कम और आत्मिक अधिक हो गया.

बुद्ध के सुधार के बाद भी आक़ा और ग़ुलाम का सम्बन्ध वही रहा. यह तो ठीक है कि अशोक ने कलिंग की तबाही के बाद लड़ाई से तौबा कर ली, लेकिन इस लड़ाई से वह जो दो लाख आदमी ग़ुलाम बना कर लाये थे, उन्हें छोड़ देने का किसी इतिहासकार ने ज़िक्र नहीं किया, क्योंकि वह छोड़े नहीं गये. बुद्ध ने यज्ञों में पशुओं की बलि बन्द करने के लिये अहिंसा का जो प्रचार किया था, उसे बाग़ी ग़ुलामों को शान्ति करने के लिये भी काम में लाया गया.

ग़ुलामी की व्यवस्था से भी कलचर बहुत आगे बढ़ा. लेकिन अब यह व्यवस्था टिकने वाली नहीं थी. खेती बाड़ी और व्यापार बहुत आगे बढ़ गया था. पैदावार के साधनों के साथ नया राजकाजी ढांचा और नई विचारधारा जन्म ले रही थी. अब सुधार से नहीं तब्दीली से ही कलचर आगे बढ़ सकता था. खौलने के बाद, पानी जब दोबारा ठंडा होता है, तो मिलावट और गन्दगी फिर उसमें मिल जाती है. संघों में ख़राबियां पैदा हो गईं. भिक्षु आरामतलब और फ़िज़ूल में बाल की खाल उतारने वाले बन गये. ख़्वाहिशों के त्याग के नाम पर इस दुनिया की और ज़िन्दगी की ज़िम्मेदारियों को नज़रअंदाज़ किया जाने लगा. इतिहास में अशोक को 'महान' और 'देवानामप्रिय' कह कर बहुत ग़लत उछाला गया है. अशोक के ज़माने में हमारा कलचर इतना ही आगे बढ़ा है कि अशोक ने पत्थर के मकान बनाये. और ग़लत दर्शनों का प्रचार करके आदमी के विचारों के गिर्द भी दीवार खड़ी कर दी. कहां हमारी परम्परा यह थी कि जिस सभा में कोई आदमी न चमके, या सिर्फ़ एक आदमी चमके वह सभा, सभा नहीं है, कहां अशोक का यह कहना कि जैसे बाप अपने बेटे का पालन करता है, मैं अपनी प्रजा का पालन करूंगा ! किसी राजा या एक व्यक्ति को सारी क़ौम का पिता बनने और उसके लिये सोचने का कोई अधिकार नहीं है. जिसका नतीजा यह हुआ कि लोग बेहिस और बेअमल हो गये, अशोक के बेटे बाहर के हमलों को नहीं रोक सके और मौर्य राज नष्ट हो गया.

दरअसल यह पिछड़ी हुई ग़ुलामी की व्यवस्था का नाश था. इसके बाद गुप्त राज, नई आर्थिक व्यवस्था और नई विचारधारा पर क़ायम हुआ. महाभारत, और गीता के भागवत मत में इस दुनिया और मौत के बाद की दुनिया को

کو بڑی تسلی دیتا تھا ۔ گو اِس طرح ایک طبقہ محنت سے پستا رہا، لیکن ایک طبقے کو سوچنے سمجھنے کا ادھک موقع ملا، درشن اور کلا میں اُنتی ہوئی، اور کلچر آگے بڑھتا رہا ۔ اور اِس زمانہ کا آدمی مادی کم اور آتمک ادھک ہوگیا ۔

بدھ کے سدھار کے بعد بھی آقا اور غلام کا سمبندھ وھی رھا ۔ یہ تو ٹھیک ھے کہ اشوک نے کلنگ کی تباھی کے بعد لڑائی سے توبہ کر لی، لیکن اِس لڑائی سے وہ جو دو لاکھ آدمی غلام بنا کر لائے تھے، اُنھیں چھوڑ دینے کا کسی اتہاس‌کار نے ذکر نہیں کیا، کیونکہ وہ چھوڑے نہیں گئے ۔ بدھ نے یگیوں میں پشوؤں کی بلی بند کرنے کے لئے اہنسا کا جو پرچار کیا تھا، اِسے باغی غلاموں کو شانت کرنے کے لئے بھی کام میں لایا گیا ۔

غلامی کی ویوستھا سے بھی کلچر بہت آگے بڑھا ۔ لیکن اب یہ ویوستھا ٹکنے والی نہیں تھی ۔ کھیتی باڑی اور ویاپار بہت آگے بڑھ گیا تھا ۔ پیداوار کے سادھنوں کے ساتھ نیا راج‌کاجی ڈھانچہ اور نئی وچار دھارا جنم لے رھی تھی ۔ اب سدھار سے نہیں تبدیلی سے ہی کلچر آگے بڑھ سکتا تھا ۔ کھولنے کے بعد پانی جب دوبارہ ٹھنڈا ہوتا ھے، تو ملاوٹ اور گندگی پھر اِس میں مل جاتی ھے ۔ سنگھوں میں خرابیاں پیدا ہوگئیں ۔ بھکشو آرام طلب اور فضول میں بال کی کھال اُتارنے والے بن گئے ۔ خواھشوں کے تیاگ کے نام پر اِس دنیا کی اور زندگی کی ذمہ‌داریوں کو نظرانداز کیا جانے لگا ۔ اتہاس میں اشوک کو 'مہان' اور 'دیوانام‌پریہ' کہہ کر بہت غلط اُچھالا گیا ھے ۔ اشوک کے زمانے میں ھمارا کلچر اِتنا ھی آگے بڑھا ھے کہ اشوک نے پتھر کے مکان بنائے ۔ اور غلط درشنوں کا پرچار کر کے آدمی کے وچاروں کے گرد بھی دیوار کھڑی کر دی ۔ کہاں ھماری پرمپرا یہ تھی کہ جس سبھا میں کوئی آدمی نہ چمکے، یا صرف ایک آدمی چمکے وہ سبھا، سبھا نہیں ھے، کہاں اشوک کا یہ کہنا کہ جیسے باپ اپنے بیٹے کا پالن کرتا ھے، میں اپنی پرجا کا پالن کرونگا ! کسی راجا یا ایک ویکتی کو ساری قوم کا پتا بننے اور اُس کے لئے سوچنے کا کوئی ادھیکار نہیں ھے ۔ جس کا نتیجہ یہ ھوا کہ لوگ بےحس اور بےعمل ھوگئے، اشوک کے بیٹے باھر کے حملوں کو نہیں روک سکے اور موریہ راج نشٹ ھوگیا ۔

دراصل یہ پچھڑی ھوئی غلامی کی ویوستھا کا ناش تھا ۔ اس کے بعد گپت‌راج، نئی آرتھک ویوستھا اور نئی وچار دھارا پر قائم ھوا ۔ مہابھارت اور گیتا کے بھاگوت مت میں اِس دنیا اور موت کے بعد کی دنیا کو

से यह कलचर बहुत बदनाम हो गया. उस समय एक राजा के घर में बुद्ध का जन्म हुआ और उन्होंने इस कलचर में बहुत कुछ सुधार किया.

सुधार और तब्दीली में बड़ा फ़रक़ है. कलचर में तब्दीली तो उस समय आती है, जब पैदावार के साधन बदलते हैं और उन पर क़ायम समाज बदलता है. लेकिन सुधार में पैदावार के साधन और समाज वैसा ही रहता है. उसमें जो ख़राबियां आ जाती हैं उन्हें उसी समाज की सीमा में रहते हुए दूर करने की कोशिश की जाती है. जैसे पानी उबालने से पानी ही रहता है, लेकिन उसमें जो मिलावट आ जाती है, उबलने से वह नीचे बैठ जाती है. सुधार भी समाज के लिये ऐसा ही अमल है. ब्राह्मनों ने वेदों के नाम पर ज्ञान और विद्या की तिजारत शुरू कर दी थी और आत्मा की सुरक्षा और मुक्ति के लिये देवताओं की क़ुर्बानी देनी शुरू कर दी थी. बुद्ध ने ब्राह्मनों की इजारादारी तोड़ने के लिये वेदों को मानने से इनकार किया. यज्ञों में क़ुर्बानी का विरोध करके नेक कामों और ख़्वाहिशों के त्याग को मुक्ति या निर्वान का साधन बताया. बुद्ध आत्मा को नहीं मानते थे लेकिन कहते थे कि एक जन्म से दूसरे जन्म में आदमी के कामों के संस्कार उसके साथ जाते हैं.

इसका मतलब है कि आत्मा को न मानते हुए भी बुद्ध का दर्शन माद्दी नहीं आत्मिक था. और उन्होंने जिस समानता का प्रचार किया वह भी माद्दी नहीं आत्मिक थी. मोटी तौर पर उनका कहना था कि आक़ा और गुलाम दोनों को मौत आती है. दोनों मौत के सामने एक समान हैं. इसलिये आओ हम दुनिया की ख़्वाहिशों को छोड़-कर मौत का हल ढूँढें.

हावेल ने अपने इतिहास में लिखा है कि बुद्ध ने जो संघ खोले थे उनमें ग़ुलामों को दाख़िल नहीं किया जाता था और ग़ुलामों के अलावा ऐसे लोग भी दाख़िल नहीं हो सकते थे, जिन्हें दूसरों का क़र्ज़ देना होता था, जो अपराधी और डाकू थे या राजा के कर्मचारी थे.

कहने का मतलब यह है कि वेदों के ज़माने के बाद काम की तक़्सीम के कारन ग़ुलामी का ज़माना शुरू हुआ जिसमें नये दर्शनों और नये कलचर ने जन्म लिया. इस दर्शन का निचोड़ यह था कि एक नदी की तरह ज़िन्दगी का सिलसिला जारी रहता है. आदमी एक जन्म के बाद दूसरा जन्म लेता है. किसी जन्म में आक़ा ग़ुलाम और ग़ुलाम आक़ा बन सकता है. ग़ुलाम को सेवा का काम ईमानदारी से करना चाहिये, इस सेवा का फल उसे अगले जन्म में मिलेगा. यह विचार मेहनत से पिसने वाले आदमी

سے یہ کلچر بہت بدنام ہوگیا ۔ اُس سمے ایک راجا کے گھر میں بدھ کا جنم ہوا اور اُنھوں نے اس کلچر میں بہت کچھ سدھار کیا ۔

سدھار اور تبدیلی میں بڑا فرق ہے ۔ کلچر میں تبدیلی تو اُس سمے آتی ہے، جب پیداوار کے سادھن بدلتے ہیں اور اُن پر قائم سماج بدلتا ہے ۔ لیکن سدھار میں پیداوار کے سادھن اور سماج ویسا ہی رہتا ہے ۔ اس میں جو خرابیاں آجاتی ہیں اُنھیں اُسی سماج کی سیما میں رہتے ہوئے دور کرنے کی کوشش کی جاتی ہے ۔ جیسے پانی اُبالنے سے پانی ہی رہتا ہے، لیکن اُس میں جو ملاوٹ آجاتی ہے، اُبلنے سے وہ نیچے بیٹھ جاتی ہے ۔ سدھار بھی سماج کے لئے ایسا ہی عمل ہے ۔ براہمنوں نے ویدوں کے نام پر گیان اور ودیا کی تجارت شروع کر دی تھی اور آتما کی سرکچھا اور مکتی کے لئے دیوتاؤں کو قربانی دینی شروع کر دی تھی ۔ بدھ نے براہمنوں کی اجارہ‌داری توڑنے کے لئے ویدوں کو ماننے سے انکار کیا ۔ یگیوں میں قربانی کا وِرودھ کر کے نیک کاموں اور خواہشوں کے تیاگ کو مکتی یا نروان کا سادھن بتایا ۔ بدھ آتما کو نہیں مانتے تھے لیکن کہتے تھے کہ ایک جنم سے دوسرے جنم میں آدمی کے کاموں کے سنسکار اُس کے ساتھ جاتے ہیں ۔

اِس کا مطلب ہے کہ آتما کو نہ مانتے ہوئے بھی بدھ کا درشن مادی نہیں آتمک تھا ۔ اور اُنھوں نے جس سمانتا کا پرچار کیا وہ بھی مادی نہیں آتمک تھی ۔ موٹے طور پر اُن کا کہنا تھا کہ آقا اور غلام دونوں کو موت آتی ہے، دونوں موت کے سامنے ایک سمان ہیں ۔ اِس لئے آؤ ہم دنیا کی خواہشوں کو چھوڑ کر موت کا حل ڈھونڈھیں ۔

ہاویل نے اپنے اتہاس میں لکھا ہے کہ بدھ نے جو سنگھ کھولے تھے اُن میں غلاموں کو داخل نہیں کیا جاتا تھا اور غلاموں کے علاوہ ایسے لوگ بھی داخل نہیں ہو سکتے تھے، جنھیں دوسروں کا قرض دینا ہوتا تھا، جو اپرادھی اور ڈاکو تھے یا راجا کے کرمچاری تھے ۔

کہنے کا مطلب یہ ہے کہ ویدوں کے زمانے کے بعد کام کی تقسیم کے کارن غلامی کا زمانہ شروع ہوا جس میں نئے درشنوں اور نئے کلچر نے جنم لیا ۔ اِس درشن کا نچوڑ یہ تھا کہ ایک ندی کی طرح زندگی کا سلسلہ جاری رہتا ہے ۔ آدمی ایک جنم کے بعد دوسرا جنم لیتا ہے ۔ کسی جنم میں آقا غلام اور غلام آقا بن سکتا ہے ۔ غلام کو سیوا کا کام ایمانداری سے کرنا چاہئے، اِس سیوا کا پھل اُسے اگلے جنم میں ملےگا ۔ یہ وچار محنت سے پسنے والے آدمی

कृपा का फल बताना शुरू किया. और देवताओं को प्रसन्न करने के लिये यज्ञ होने लगे और उसमें पशुओं और मनुश्यों तक की बलि दी जाने लगी. ब्राह्मनों ने ज्ञान की तिजारत शुरू कर दी. ज़िन्दगी के तजुरबे से वेद की बात को ज़्यादा अहमियत दी जाने लगी. आदमी ने जो नियम, असूल और क़ायदे अपनी बेहतरी के लिये बनाये थे, उन्हें आदमी से बेहतर समझा जाने लगा. आदमी की हिफ़ाज़त की जगह नियमों और असूलों की हिफ़ाज़त के लिये ख़ुद आदमी क़ुरबान होने लगा.

पंडितों के बेअमल हो जाने के कारन वह धरती पर रहने के बजाय हवा में उड़ने लगे और उनका दर्शन कम से कम माद्दी और अधिक से अधिक आत्मिक होता गया. आख़िर यजुर्वेद में "आत्मा ही को सब चीज़ों का नाप और कसौटी मान लिया गया." यजुर्वेद के ही एक मंत्र का मतलब है—

"आत्मा का नाश करने वाला आदमी मौत के बाद अंधेरे में लिपटे हुए लोकों में भटकता रहता है."

ज़ाहिर है कि आदमी उन माद्दी दर्शनों से मुंह मोड़ कर आत्मा की तरफ़ बढ़ रहा था. वह अपने ज्ञान से सिर्फ़ इस दुनिया को ही नहीं मौत के बाद की दुनिया को भी समझने की कोशिश कर रहा था. और वह इस दुनिया और मौत के बाद की दुनिया में सम्बन्ध जोड़ने की फ़िक्र में था. दर्शनों और उपनिशदों में आदमी इस खोज में लगा हुआ मालूम होता है. चूंकि उसका तजरुबा और इस तजरुबे से हासिल किया हुआ ज्ञान इन सब सवालों का जवाब नहीं दे सकता था, इसलिए उसने अपने आपको विचारों में तब्दील किया और आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग और नरक की सृश्टि करके अपने इस सवाल का जवाब दिया.

बच्चा जैसे बड़ा होकर अपनी मासूमियत खोता है, लेकिन ज्ञान और विद्या में वह आगे बढ़ता है इसी तरह वेद के ज़माने के आदमी ने काम करने वालों और काम कराने वालों में तक़सीम होकर अपनी समानता और प्रसन्नता तो खो दी लेकिन वह ज्ञान और इल्म में आगे बढ़ा. यज्ञ और देवताओं की पूजा करते हुए भी वह दुनिया-वादी तौर पर ईमानदार था और ईमानदारी से ज़िन्दगी के नये सवालों का हल ढूंढता था. सांख्य शास्त्र में लिखा है कि असत्य से सत्य का जन्म नहीं हो सकता. उस वक़्त का आदमी भी पूरी ईमानदारी से ज्ञान की खोज में लगा हुआ था. वह आक़ा और ग़ुलाम की तक़सीम को भी ज़िन्दगी की एक सच्चाई मानता था. उसका नया कलचर उसकी नई विचारधारा का नया रूप था.

नियमों और असूलों की ज़्यादा पाबन्दी और देवताओं को ख़ुश करने के लिये आदमियों और पशुओं की क़ुर्बानी

کرپا کا پھل بتانا شروع کیا۔ اور دیوتاؤں کو پرسن کرنے کے لئے یگ ہونے لگے اور اُس میں پشوؤں اور منشیوں تک کی بلی دی جانے لگی۔ براھمنوں نے گیان کی تجارت شروع کر دی۔ زندگی کے تجربے سے وید کی بات کو زیادہ اھمیت دی جانے لگی۔ آدمی نے جو نیم، اصول اور قائدے اپنی بہتری کے لئے بنائے تھے، اُنھیں آدمی سے بہتر سمجھا جانے لگا۔ آدمی کی حفاظت کی جگہ نیموں اور اصولوں کی حفاظت کے لئے خود آدمی قربان ہونے لگا۔

پنڈتوں کے بے عمل ہو جانے کے کارن وہ دھرتی پر رھنے کے بجائے ھوا میں اُڑنے لگے اور اُن کا درشن کم سے کم مادی اور ادھک سے ادھک آتمک ھوتا گیا۔ آخر یجر وید میں آتما ھی کو سب چیزوں کا ناپ اور کسوٹی مان لیا گیا۔ یجروید کے ھی ایک منتر کا مطلب ھے—

" آتما کا ناش کرنے والا آدمی موت کے بعد اندھیرے میں لپٹے ھوئے لوگوں میں بھٹکتا رھتا ھے۔"

ظاھر ھے کہ آدمی اُن مادی درشنوں سے منہ موڑ کر آتما کی طرف بڑھ رھا تھا۔ وہ اپنے گیان سے صرف اِس دنیا کو ھی نہیں موت کے بعد کی دنیا کو بھی سمجھنے کی کوشش کر رھا تھا۔ اور وہ اِس دنیا اور موت کے بعد کی دنیا میں سمبندھ جوڑنے کی فکر میں تھا۔ درشنوں اور اُپنشدوں میں آدمی اِس کھوج میں لگا ھوا معلوم ھوتا ھے۔ چونکہ اُس کا تجربہ اور اِس تجربے سے حاصل کیا ھوا گیان اِن سب سوالوں کا جواب نہیں دے سکتا تھا، اِس لئے اس نے اپنے آپ کو وچاروں میں تبدیل کیا اور آتما، پرماتما، سورگ اور نرک کی سرشٹی کر کے اپنے اِس سوال کا جواب دیا۔

بچہ جیسے بڑا ھو کر اپنی معصومیت کھوتا ھے، لیکن گیان اور ودیا میں وہ آگے بڑھتا ھے، اِسی طرح وید کے زمانہ کے آدمی نے کام کرنے والوں اور کام کرانے والوں میں تقسیم ھوکر اپنی سمانتا اور پرسنتا تو کھو دی لیکن وہ گیان اور علم میں آگے بڑھا۔ یگیہ اور دیوتاؤں کی پوجا کرتے ھوئے بھی وہ بنیادی طور پر ایماندار تھا اور ایمانداری سے زندگی کے نئے سوالوں کا حل ڈھونڈھتا تھا۔ سانکھیہ شاستر میں لکھا ھے کہ اِستیہ سے ستیہ کا جنم نہیں ھو سکتا۔ اُس وقت کا آدمی بھی پوری ایمانداری سے گیان کی کھوج میں لگا ھوا تھا۔ وہ آقا اور غلام کی تقسیم کو بھی زندگی کی ایک سچائی مانتا تھا۔ اُس کا نیا کلچر اُس کی نئی وچار دھارا کا نیا روپ تھا۔

نیموں اور اصولوں کی زیادہ پابندی اور دیوتاؤں کو خوش کرنے کے لئے آدمیوں اور پشوؤں کی قربانی

वेदों के जमाने का कलचर उस जमाने के पैदावार के साधनों और राजकाजी ढांचे की विचारधारा का ही एक रूप था. बेशक देवताओं में उस समय के आदमी का विश्वास था. लेकिन उसने क़ुदरत जैसी जबर्दस्त विरोधी की तबाही से बचने के लिये घर बनाये थे, जमीन जोतना और बोना सीखा था. इसके अलावा वह पशु पालता था, गाय का दूध पीता था और उससे मक्खन निकालता और घोड़े पर चढ़ता था. उसने आग को अपना साथी और मददगार बनाया था. और धात को ढालना सीख लिया था. यह आदमी की बहुत बड़ी कामयाबी थी और इससे अपने आप में उसका विश्वास बढ़ा था. अपने इस विश्वास को जाहिर करने के लिये उसने हवा से भी तेज तक़रीर और ख़याल को ईजाद किया था.

आदमी साझी मेहनत से क़ुदरत को जीत रहा था. सब लोग आपस में मेलजोल से रहते थे, सभी समाज के फ़ायदे के लिये काम करते थे. सब सुरक्षा के लिये क़ायदे क़ानून बनाते थे. उनमें कोई ऊंच नीच और जात पात का भेद नहीं था. लोग भिन्न भिन्न काम करते हुए भी एक समान एक घर में रहते थे. एक वेद मंत्र में कहा है—

"मैं शिल्पी हूं, मेरा पिता वैद्य है, और मेरी मां उपले पाथने का काम करती है. अलग अलग पेशों और मार्गों पर चलते हुए हम एक घर में निवास करते हैं."

धीरे धीरे पैदावार के साधनों की तरक़्क़ी हुई और मेहनत तक़सीम हो गई. इससे चार वर्न वजूद में आये. ब्राह्मन का काम केवल पढ़ना पढ़ाना रह गया. मेहनत से उनका नाता टूट गया. लेकिन आदमी हमेशा अमल और तजरुबे से सीखता है. विचार के साथ जब मेहनत का पसीना मिलता है, तभी उसका ज्ञान ताजा रहता है. इस तक़सीम के कारन वेदों के जमाने का समाज टूटने लगा. फिर आर्यों ने हिन्दुस्तान की दूसरी जातियों, द्राविड़ और कौल आदि, को हरा कर अपना ग़ुलाम या दास बनाना शुरू किया. जो कोई जितना बड़ा पंडित होता था उसे उतने ही अधिक दास दान में मिलते थे. विचार और अमल में जो दरार पड़ी वह धीरे धीरे बढ़ती ही गई. सोचने और काम करने वालों की दो जमातें बन जाने ही से यूनान की पुरानी सभ्यता नश्ट हुई थी. इस तक़सीम के कारन वेदों के जमाने का पुराना समाज टूट गया और क़बीलों के अलग अलग राज्य बने. इन राज्य या रियासतों में ब्राह्मन और क्षत्रिय पढ़ते पढ़ाते और क़ायदे क़ानून बनाते और राज का काम करते थे. दूसरे लोग मेहनत करके उनके लिये जीने के साधन जुटाते थे और उनकी सेवा के लिये दासों की बहुत बड़ी तादाद होती थी.

अब ब्राह्मन और क्षत्रिय दूसरों की मेहनत पर पलने वाला वर्ग था. उसने आदमी की कामयाबी को देवताओं की

ویدوں کے زمانے کا کلچر اُس زمانے کے پیداوار کے سادھنوں اور راج کاجی ڈھانچے کی وچار دھارا کا ہی ایک روپ تھا. بےشک دیوتاؤں میں اُس سمے کے آدمی کا وشواس تھا. لیکن اس نے قدرت جیسی زبردست وِرودھی کی تباہی سے بچنے کے لئے گھر بنائے تھے، زمین جوتنا اور بونا سیکھا تھا. اِس کے علاوہ وہ پشو پالتا تھا، گائے کا دودھ پیتا تھا اور اُس سے مکھن نکالتا اور گھوڑے پر چڑھتا تھا. اُس نے آگ کو اپنا ساتھی اور مددگار بنایا تھا اور دھات کو ڈھالنا سیکھ لیا تھا. یہ آدمی کی بہت بڑی کامیابی تھی اور اس سے اپنے آپ میں اُس کا وشواس بڑھا تھا . اپنے اس وشواس کو ظاہر کرنے کے لئے اس نے ہوا سے بھی تیز تقریر اور خیال کو ایجاد کیا تھا .

آدمی ساجھی محنت سے قدرت کو جیت رہا تھا. سب لوگ آپس میں میل جول سے رہتے تھے، سبھی سماج کے فائدے کے لئے کام کرتے تھے . سب سرکھشا کے لئے قائدے قانون بناتے تھے . اُن میں کوئی اُونچ نیچ اور جات پات کا بھید نہیں تھا . لوگ بھن بھن کام کرتے ہوئے بھی ایک سمان ایک گھر میں رہتے تھے . ایک وید منتر میں کہا ھے—

" میں شلپی ہوں، میرا پتا وید ھے، اور میری ماں اُپلے پاتھنے کا کام کرتی ھے . الگ الگ پیشوں اور مارگوں پر چلتے ہوئے ہم ایک گھر میں نواس کرتے ہیں ."

دھیرے دھیرے پیداوار کے سادھنوں کی ترقی ہوئی اور محنت تقسیم ہوگئی. اِس سے چار ورن وجود میں آئے . براہمنوں کا کام کیول پڑھنا پڑھانا رہ گیا . محنت سے اُن کا ناتا ٹوٹ گیا . لیکن آدمی ہمیشہ عمل اور تجربے سے سیکھتا ھے . وچار کے ساتھ جب محنت کا پسینہ ملتا ھے، تبھی اُس کا گیان تازہ رہتا ھے . اِس تقسیم کے کارن ویدوں کے زمانے کا سماج ٹوٹنے لگا . پھر آریوں نے ہندستان کی دوسری جاتیوں، 'دراوڑ اور کول آدی' کو ہرا کر اپنا غلام یا داس بنانا شروع کیا . جو کوئی جتنا بڑا پنڈت ہوتا تھا اُسے اُتنے ہی ادھک داس دان میں ملتے تھے . وچار اور عمل میں جو دراڑ پڑی وہ دھیرے دھیرے بڑھتی ہی گئی . سوچنے اور کام کرنے والوں کی دو جماعتیں بن جانے ہی سے یونان کی پرانی سبھیتا نشٹ ہوئی تھی . اِس تقسیم کے کارن ویدوں کے زمانے کا پرانا سماج ٹوٹ گیا اور قبیلوں کے الگ الگ راج بنے . اُن راج یا ریاستوں میں براہمن اور چھتری پڑھتے پڑھاتے اور قائدے قانون بناتے اور راج کا کام کرتے تھے . دوسرے لوگ محنت کرکے اُن کے لئے جینے کے سادھن جٹاتے تھے اور اُن کی سیوا کے لئے داسوں کی بہت بڑی تعداد ہوتی تھی .

اب براہمن اور چھتری دوسروں کی محنت پر پلنے والا ورگ تھا . اُس نے آدمی کی کامیابی کو دیوتاؤں کی

एक आदमी चमके वह सभा, सभा नहीं होती. सभा वह होती है, जिसमें सब मिल कर चमकें और हर एक आदमी दूसरे को चमकाने में मदद दे."

'सभ्यता' जिसका मतलब तहज़ीब है, सभा शब्द से बना है. तहज़ीब का कलचर से गहरा सम्बन्ध है. तजरुबे और अमल से आदमी जितना ऊंचा उठता है उतना ही वह कलचर्ड या संस्कृत कहलाता है. और जितना वह इस कलचर को व्यवहार में लाता है उतना ही तहज़ीब आगे बढ़ती है. कलचर आदमी के अन्दर से सम्बन्ध रखती है जिससे उसका मन और शरीर स्वस्थ और मज़बूत बनता है. तहज़ीब या सभ्यता इस कलचर के बाहरी रूप का नाम है. जिस देश या क़ौम के लोगों का जितना ऊंचा कलचर होगा, उतना ही वह मेल जोल से रहेंगे, अपने काम सलाह मशविरे से करेंगे और सभा में ऊंची और सच्ची बात कहेंगे. इन सब बातों के कारन वह मुहज़्ज़ब या संस्कृत कहलायेंगे. उनकी कलचर, उनके खाने, पहनने और रहने सहने, कविता और कला में ज़ाहिर होगी.

जब किसी देश या क़ौम के लोग कलचर में पिछड़ जांय यानी वह सचाई और इन्साफ़ का साथ छोड़ दें, उनके करने और कहने में फ़रक़ आ जाय, लेकिन खाने पहनने और रहने सहने में तड़क भड़क रहे, यानी कलचर के ऊपरी रूप, तहज़ीब में वैसी ही तड़क भड़क रहे, तो वह तहज़ीब खोखली कहलाती है. उस में बनावट और पाखंड आ जाता है. वह तहज़ीब ज़्यादा दिनों टिकने वाली नहीं होती.

इसका कारन क्या है? कलचर और तहज़ीब में तब्दीली क्यों आती है? दुनिया के शुरू से अब तक एक ही कलचर और तहज़ीब क्यों न हुई? तब्दीली में कोई क्रम या सिलसिला है या वह तब्दीली अचानक आ जाती है?

किसी ज़माने में पैदावार के जो साधन होते हैं, उन्हीं के मुताबिक़ उस ज़माने के सामाजिक सम्बन्ध क़ायम होते हैं और एक राजकाजी ढांचा बनता है. फिर इन सबके मेल से उस ज़माने की कलचर जन्म लेती है. हम कलचर को पैदावार के साधनों और राजकाजी ढांचे से अलग नहीं कर सकते. इन तीनों का आपस में गहरा सम्बन्ध है. माउत्से तुंग ने अपनी पुस्तक 'चीन की नई जमहूरियत' में कलचर की व्याख्या इस तरह की है—

"A given culture is the ideological reflection of the political economy of a given society."

(यानी किसी ज़माने का कलचर, उस ज़माने के समाज की आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था की विचारधारा का अक्स या रूप होता है.)

ایک آدمی چمکے وہ سبھا' سبھا نہیں ہوتی . سبھا وہ ہوتی ہے' جس میں سب مل کر چمکیں اور ہر ایک آدمی دوسرے کو چمکانے میں مدد دے ."

" سبھئیتا " جس کا مطلب تہذیب ہے' سبھا شبد سے بنا ہے . تہذیب کا کلچر سے گہرا سمبندھ ہے . تجربے اور عمل سے آدمی جتنا اونچا اُٹھتا ہے اتنا ہی وہ کلچرڈ یا سنسکرت کہلاتا ہے . اور جتنا وہ اِس کلچر کو ویوہار میں لاتا ہے اتنا ہی تہذیب آگے بڑھتی ہے . کلچر آدمی کے اندر سے سمبندھ رکھتا ہے جس سے اُس کا من اور شریر سوستھ اور مضبوط بنتا ہے . تہذیب یا سبھئیتا اِس کلچر کے باہری روپ کا نام ہے. جس دیش یا قوم کے لوگوں کا جتنا اونچا کلچر ہوگا' اتنا ہی وہ میل جول سے رہینگے' اپنے کام صلاح مشورے سے کرینگے اور سبھا میں اونچی اور سچی بات کہیں گے . اِن سب باتوں کے کارن وہ مہذب یا سنسکرت کہلائیں گے . اُن کا کلچر اُن کے کھانے' پہننے اور رہنے سہنے' کویتا اور کلا میں ظاہر ہوگی .

جب کسی دیش یا قوم کے لوگ کلچر میں بچھڑ جائیں یعنی وہ سچائی اور انصاف کا ساتھ چھوڑ دیں' اُن کی کرنے اور کہنے میں فرق آجائے' لیکن کھانے پہننے اور رہنے سہنے میں تڑک بھڑک رہے' یعنی کلچر کے اوپری روپ' تہذیب میں ویسی ہی تڑک بھڑک رہے' تو وہ تہذیب کھوکھلی کہلاتی ہے . اُس میں بناوٹ اور پاکھنڈ آجاتا ہے . وہ تہذیب زیادہ دنوں ٹکنے والی نہیں ہوتی .

اِس کا کارن کیا ہے؟ کلچر اور تہذیب میں تبدیلی کیوں آتی ہے؟ دنیا کے شروع سے اب تک ایک ہی کلچر اور تہذیب کیوں نہ ہوئی؟ تبدیلی کی کیا ضرورت تھی؟ اگر ضرورت تھی' تو کیا اُس تبدیلی میں کوئی کرم یا سلسلہ ہے یا وہ تبدیلی اچانک آجاتی ہے؟

کسی زمانے میں پیداوار کے جو سادھن ہوتے ہیں' اُنہیں کے مطابق اُس زمانے کے سماجک سمبندھ قائم ہوتے ہیں اور ایک راج کاجی ڈھانچا بنتا ہے . پھر اِن سب کے میل سے اُس زمانے کی کلچر جنم لیتی ہے . ہم کلچر کو پیداوار کے سادھنوں اور راج کاجی ڈھانچے سے الگ نہیں کر سکتے . اِن تینوں کا آپس میں گہرا سمبندھ ہے . ماؤتسے تنگ نے اپنی پستک " چین کی نئی جمہوریت " میں کلچر کی ویاکھیا اِس طرح کی ہے—

"A given culture is the idealogical reflection of the political economy of a given society."

(یعنی کسی زمانے کا کلچر' اُس زمانے کے سماج کی آرتھک اور راجنیتک ویوستھا کی وچار دھارا کا عکس یا روپ ہوتا ہے .)

बजाय उन्हें अपना दोस्त बनाते हैं और समाजी ज़िन्दगी के नियम बनाते हैं. यह दुनिया को अमल के ज़रिये तबदील करने का ढंग है.

लेकिन एक दूसरा ढंग है. वह दुनिया को तबदील करने के बजाय अपने आपको भावनाओं और विचारों में तब्दील करने का ढंग है. पहले इसी तरीक़े का नाम मज़हब और फिर दर्शन पड़ा.

यूरोपियन विद्वानों ने वेदों को देवमाला की पुस्तकें लिखा है. इस पर आर्य समाजी विद्वानों को एतराज़ है. वह कहते हैं कि वेद देवमाला की नहीं दर्शन की पुस्तकें हैं. हमारा ख़याल है कि वेदों के बारे में यह दोनों बातें सच हैं. उस समय मनुष्य जो कुछ देखता था उसे अपनी कल्पना से देवता का नाम दे देता था. इस में उस का तजरुबा और दर्शन दोनों शामिल रहते थे. उस समय माद्दी और अध्यात्मिक की बहस में वह नहीं पड़ा था. जिस तरह बच्चे रोटी या फल खाते हैं और ज़िन्दा समझ कर उससे बातें भी करते हैं. वेद के ज़माने का मनुश्य बच्चे क तरह मासूम था, वह क़ुदरत को भोगता भी था और उसे ज़िन्दा समझ कर उससे बातें भी करता था.

वेदों का ज़माना हज़ारों साल तक फैला हुआ है. उस ज़माने में आदमी ने दोनों तरफ़ तरक़्क़ी की. उसने अपनी शक्ति और समझ के मुताबिक़ प्रकृति को भी तब्दील किया और उसने अपने आपको भी विचारों और भावनाओं में बदला. वह सूरज से गर्मी हासिल करता था, उसे अपने खेतों को उगाने वाला समझता था, और उसे देवता समझ कर बल और शक्ति मांगता था. सुबह होती थी, तो वह ऊशा को देख कर नाच उठता था और फिर क़ुदरत को अपने मतलब के लिये तबदील करने को कमर कस लेता था.

उस ज़माने में आदमी आदमी में भेद नहीं था. ज्ञान और धन सबका साझा होता था. लोग जत्थों में मिल कर रहते थे. किसी काम को करने से पहले आपस में सलाह मशविरा करते थे. एक वेद मंत्र का अर्थ है—"हम सब आपस में मिल कर रहा करें. मिल कर आपस में सलाह मशविरा करें. हम सबके विचार या मन एक समान हों."

सलाह मशविरा के लिये सभायें होती थीं. लिखा है—

"हे सभा ! हम तेरा नाम भली भांति जानते हैं. तुझ में मनुश्य इकट्ठे होते हैं, तेरे जो भी सभासद हैं, वह सब सच बोलने वाले हैं."

इस सभा में सब लोगों को बराबर का दर्जा हासिल था और उम्मीद की जाती थी कि सभी लोग ऊंची और सच्ची बात कहेंगे. लिखा है—

"जिस सभा में सब आदमी न चमकें और जिसमें सिर्फ़

بجائے اُنہیں اپنا دوست بناتے ہیں او سماجی زندگی کے نیم بناتے ہیں۔ یہ دنیا کو عمل کے ذریعہ تبدیل کرنے کا ڈھنگ ہے۔

لیکن ایک دوسرا ڈھنگ ہے۔ وہ دنیا کو تبدیل کرنے کے بجائے اپنے آپ کو بھاوناؤں اور وچاروں میں تبدیل کرنے کا ڈھنگ ہے۔ پہلے اِسی طریقے کا نام مذہب اور پھر درشن پڑا۔

یوروپین ودوانوں نے ویدوں کو دیو مالا کی پستکیں لکھا ہے۔ اِس پر آریہ سماجی ودوانوں کو اعتراض ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ وید دیومالا کی نہیں درشن کی پستکیں ہیں۔ ہمارا خیال ہے کہ ویدوں کے بارے میں یہ دونوں باتیں سچ ہیں۔ اُس سمے منشیہ جو کچھ دیکھتا تھا اُسے اپنی کلپنا سے دیوتا کا نام دے دیتا تھا۔ اِس میں اُس کا تجربہ اور درشن دونوں شامل رہتے تھے۔ اُس سے مادی اور ادھیاتمک کی بحث میں وہ نہیں پڑا تھا۔ جس طرح بچے روٹی یا پھل کھاتے ہیں اور زندہ سمجھ کر اُس سے باتیں بھی کرتے ہیں۔ وید کے زمانے کا منشیہ بچے کی طرح معصوم تھا، وہ قدرت کو بھوگتا بھی تھا اور اُسے زندہ سمجھ کر اُس سے باتیں بھی کرتا تھا۔

ویدوں کا زمانہ ہزاروں سال تک پھیلا ہوا ہے۔ اُس زمانے میں آدمی نے دونوں طرف ترقی کی۔ اُس نے اپنی شکتی اور سمجھ کے مطابق پرکرتی کو بھی تبدیل کیا اور اُس نے اپنے آپ کو بھی وچاروں اور بھاوناؤں میں بدلا۔ وہ سورج سے گرمی حاصل کرتا تھا، اُسے اپنے کھیتوں کو اُگانے والا سمجھتا تھا، اور اُسے دیوتا سمجھ کر بل اور شکتی مانگتا تھا۔ صبح ہوتی تھی، تو وہ اُوشا کو دیکھکر ناچ اُٹھتا تھا اور پھر قدرت کو اپنے مطلب کے لئے تبدیل کرنے کو کمر کس لیتا تھا۔

اُس زمانےمیں آدمی آدمی میں بھید نہیں تھا۔ گیان اور دھن سب کا ساجھا ہوتا تھا۔ لوگ جتھوں میں مل کر رہتے تھے۔ کسی کام کو کرنے سے پہلے آپس میں صلاح مشورہ کرتے تھے۔ ایک وید منتر کا ارتھ ہے—"ہم سب آپس میں مل کر رہا کریں، مل کر آپس میں صلاح مشورہ کریں۔ ہم سب کے وچار یا من ایک سمان ہوں۔"

صلاح مشورہ کے لئے سبھائیں ہوتی تھیں۔ لکھا ہے—

"ہے سبھا! ہم تیرا نام بھلی بھانت جانتے ہیں۔ تجھ میں منشیہ اکٹھے ہوتے ہیں، تیرے جو بھی سبھاسد ہیں، وہ سب سچ بولنے والے ہیں۔"

اِس سبھا میں سب لوگوں کو برابر کا درجہ حاصل تھا اور اُمید کی جاتی تھی کہ سبھی لوگ اُونچی اور سچی بات کہیں گے۔ لکھا ہے—

"جس سبھا میں سب آدمی نہ چمکیں اور جس میں صرف

का ज़िक्र है, वह असीरियन के भी देवता थे. पहले पहल आदमी ने अपने जीवन के अनुभव और ज्ञान को देवमाला (Mythology) में ही ज़ाहिर किया क्योंकि वह उस समय अपने ज्ञान के बुनियादी उसूलों को नहीं समझता था. दुनिया के बारे में वह अपने ज्ञान को देवता के नाम से ज़ाहिर करता था. आर्य जब हिन्दुस्तान में आये तो वह इन्द्र, वरुन और सूर्य आदि देवताओं के रूप में कुछ ज्ञान और कलचर अपने साथ लाये. उनके आने से पहले भी यहां द्राविड़ और कोल बसते थे. वह भी हज़ारों साल से क़ुदरत के बारे में जानकारी हासिल करते और उसे अमल में लाते रहे थे. उनका एक कलचर था जो सिंध में फल फूल रहा था. मोहन जोदड़ो और हड़प्पा के खंडरों की खुदाई से पता चला है कि उनका कलचर बहुत तरक़्क़ी कर चुका था. वह रुई उगाते थे, कपड़े पहनते थे और अपने बरतनों और दूसरी चीज़ों पर नक़्क़ाशी करते थे. इसके अलावा मोहन जोदड़ो से एक नृतकी की मूर्ति मिली है जो बहुत सुन्दर है और पता चलता है कि उस समय भी नाचने की कला बहुत आगे बढ़ी हुई थी. आर्यों ने उनके तजरुबे से फ़ायदा उठाया. उन्होंने असीरिया के अपने तजरुबे को इन लोगों के तजरुबे से मिला कर एक नये कलचर को जन्म दिया. उन्होंने यहां आकर नये ढंग से रहना सहना और नये ढंग से सोचना सीखा. हिन्दुस्तान एक विशाल देश है. उसके मैदानों, नदियों और पहाड़ों का नये आने वालों पर असर पड़ना ज़रूरी था. नये देश और नये हालात में रहते हुए उनकी नज़र बहुत गहरी और बहुत ऊंची हो गई. नज़र बदलने से उनकी देवमाला के पुराने मानी बदल गये और उसमें नये देवता भी शामिल हुए. इस बारे में जिन लोगों ने खोज की है उनका कहना है कि विश्नु और शिव बिल्कुल हिन्दुस्तानी देवता हैं. विश्नु एक हरे भरे सुन्दर पहाड़ के प्रतीक हैं और शिव बर्फ़ से ढके काले नंगे पहाड़ के प्रतीक हैं. आगे चल कर जब आर्य पहाड़ों से उतर कर मैदान में पहुंचे तो इन देवताओं के माने और बदले. विश्नु कामयाब और ख़ुशहाल ज़िन्दगी के और शिव नाकाम और निराश ज़िन्दगी के प्रतीक बन गये. अब माद्दी और आत्मिक दर्शन अलग अलग होने लगा.

माद्दी और आत्मिक दर्शनों को शुरू ही से समझ लेना ज़रूरी है क्योंकि कलचर को आगे बढ़ाने में इन दोनों दर्शनों का बड़ा हाथ है और आज माद्दी दर्शन और आत्मिक दर्शन में ज़बर्दस्त टक्कर हो रही है. इसी टक्कर का फ़ैसला होना है.

'टेक्स्ट बुक आफ़ मार्क्सिस्ट फ़िलासफ़ी' में लिखा है कि शुरू का आदमी तबाही की दुनिया में रहता था. वह अपनी सुरक्षा के ढंग सोचता था. एक ढंग जिसे हम अच्छी तरह जानते हैं क़ुदरत पर क़ाबू पाने का है. हम घर बनाते हैं, कपड़े बुनते हैं. आग और बिजली से दुश्मनी ठानने के

ا ذکر ہے' وہ اسیرین کے بھی دیوتا تھے . پہلے پہل آدمی نے اپنے جیون کے انوبھو اور گیان کو دیو مالا Mythology میں ہی ظاہر کیا کیونکہ وہ اُس سمے اپنے گیان کے بنیادی اصولوں کو نہیں سمجھتا تھا . دنیا کے بارے میں وہ اپنے گیان کو دیوتا کے نام سے ظاہر کرتا تھا . آریہ جب ھندستان میں آئے تو وہ اِندر' ورن ور سوریہ آدی دیوتاؤں کے روپ میں کچھ گیان اور کلچر اپنے ساتھ لائے . اُن کے آنے سے پہلے بھی یہاں دراوڑ اور کول بستے تھے . ہ بھی ھزاروں سال سے قدرت کے بارے میں جانکاری حاصل رتے اور اُسے عمل میں لاتے رہے تھے . اُن کا ایک کلچر تھا جو سندھ میں پھل پھول رہا تھا . موھن جودڑو اور ھڑپا کے کھنڈروں ی کھدائی سے پتہ چلا ہے کہ اُن کا کلچر بہت ترقی کرچکا تھا . ہ روئی اُگاتے تھے' کپڑے پہنتے تھے اور اپنے برتنوں اور دوسری چیزوں پر نقاشی کرتے تھے . اِس کے علاوہ موھن جودڑو سے ایک رتکی کی مورتی ملی ہے جو بہت سندر ہے اور پتہ چلتا ہے کہ س سمے بھی ناچنے کی کلا بہت آگے بڑھی ہوئی تھی . آریوں ، اُن کے تجربے سے فائدہ اُٹھایا . انہوں نے اسیریا کے اپنے تجربے و اِن لوگوں کے تجربے سے ملاکر ایک نئے کلچر کو جنم دیا . ہوں نے یہاں آکر نئے ڈھنگ سے رہنا سہنا اور نئے ڈھنگ سے وچنا سیکھا . ھندستان ایک وشال دیش ہے . اُس کے میدانوں' دیوں اور پہاڑوں کا نئے آنے والوں پر اثر پڑنا ضروری تھا . نئے یش اور نئے حالات میں رہتے ہوئے اُن کی نظر بہت گہری اور ہت اُونچی ھوگئی . نظر بدلنے سے اُن کی دیومالا کے پرانے منی بدل گئے اور اُس میں نئے دیوتا بھی شامل ہوئے . اِس رے میں جن لوگوں نے کھوج کی ہے اُن کا کہنا ہے کہ وشنو اور و بالکل ھندستانی دیوتا ھیں . وشنو ایک ھرے بھرے سندر پہاڑ ، پرتیک ھیں اور شو برف سے ڈھکے کالے ننگے پہاڑ کے پرتیک یں . آگے چلکر جب آریہ پہاڑوں سے اُتر کر میدانوں میں پہونچے اِن دیوتاؤں کے معنے اور بدلے . وشنو کامیاب اور خوشحال ندگی کے اور شو ناکام اور نراش زندگی کے پرتیک بن گئے . اب ادی اور آتمک درشن الگ الگ ہونے لگا .

مادی اور آتمک درشنوں کو شروع ہی سے سمجھ لینا ضروری ، کیونکہ کلچر کو آگے بڑھانے میں اِن دونوں درشنوں کا بڑا ھاتھ ، اور آج مادی درشن اور آتمک درشن میں زبردست ٹکر ھو ی ہے . اِسی ٹکر کا فیصلہ ھونا ہے .

'ٹیکسٹ بک آف مارکسسٹ فلسفی' میں لکھا ہے کہ شروع کا می تباھی کی دنیا میں رہتا تھا . وہ اپنی سرکچھا ، ڈھنگ سوچتا تھا . ایک ڈھنگ جسے ھم اچھی طرح انتے ھیں قدرت پر قابو پانے کا ہے . ھم گھر بناتے ھیں' ڑا بنتے ھیں . آگ اور بجلی سے دشمنی ٹھاننے کے

दूसरी पुस्तक यजुर्वेद है. 'यजुर' का मतलब है—काम में लाना, अमल करना. इसलिये यजुर-वेद का मतलब है जानकारी या ज्ञान को अमल में लाना.

ऋग्वेद और यजुर्वेद के इन अर्थों से हम इन नतीजों पर पहुंचते हैं कि हिन्दुस्तान के शुरू के बाशिंदों—हमारे पूर्वजों ने—कुदरत के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करने और उसे अमल में लाने की कोशिश की. इस तरह उन्होंने अपने कलचर को आगे बढ़ाया. ज्ञान के बारे में उनके मन में कोई तास्सुब नहीं था. जिस चीज को वह मुफ़ीद देखते थे उसी को अपना लेते थे और जिसे अपनाते थे, उस पर अमल करते थे. विद्वानों का कहना है कि वेदों के मंत्र ऋशियों ने बनाये या रचे नहीं, बल्कि देखे हैं. इसका भी यही मतलब हुआ कि वेदों के मंत्र कवि के विचार की उड़ान या कल्पना की चीज़ नहीं, बल्कि मनुश्य के तजुरुबे का निचोड़ है. उसने अपने जीवन में जो कुछ देखा और किया उसे मंत्रों में लिख दिया. जाहिर है कि आदमी जो कुछ देखता और करता है, उसे लिख देना आसान नहीं है. आदमी जो कुछ देखता है और करता है उसके साथ उसका अनजाने ही एक दिमाग़ी सम्बन्ध जुड़ जाता है और इस सम्बन्ध के जरिये वह अपने अंदर एक असर क़बूल करता रहता है. यह असर जमा होते होते उसकी आत्मा में एक बीज सा बन जाता है. इस बीज में बहुत से बाहरी तत्व मिले होते हैं. जैसे बीज अंकुर फूटने से पहले जमीन के अन्दर एक अरसे तक पलता रहता है, यह बीज भी आदमी की आत्मा में परवरिश पाता रहता है, और एक दिन अचानक उसका खोल टूट कर अलग हो जाता है और उसमें से एक सुन्दर और कोमल अंकुर फूटता है—यह आदमी का ज्ञान या कलचर का फल होता है, जिसे वह मंत्र, छंद, शेर, नसर, मूर्ति या चित्र में जाहिर करता है. कलचर अतालवी शब्द Cultus से निकला है, जिसका मतलब है जोतना, अपने अन्दर बीज बोना.

वेदों के बनाने वाले बहुत से ऋशि थे. उनमें मर्द भी थे, औरतें भी. यानी वेद मनुश्य के साझे के ज्ञान का भंडार है. कोई भी मंत्र या शेर किसी भी एक आदमी के तजरुबे का नतीजा नहीं होता. एक आदमी दूसरों के तजरुबों से भी सीखता है. वह जो कुछ करते और कहते हैं, उससे असर लेता है. यह तजरुबा और असर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विरासत में मिलता है. इसलिये ऋशियों ने जो वेद मन्त्र देखे थे, वह उन सब मनुश्यों के तजरुबे का निचोड़ थे जो उस समय तक कुदरत की जानकारी हासिल करने और उसे अमल में लाने के लिये जूझते रहे थे.

इतिहासकारों का कहना है कि आर्य लोग असीरिया से आये थे क्योंकि वेदों में जिन इन्द्र और वरुन आदि देवताओं

دوسری پستک یجروید ہے ۔ 'یجر' کا مطلب ہے—کام میں لانا، عمل کرنا ۔ اس لئے یجر وید کا مطلب ہے—جانکاری یا گیان کو عمل میں لانا ۔

رگ وید اور یجر وید کے ان ارتھوں سے ہم ان نتیجوں پر پہنچتے ہیں کہ ہندستان کے شروع کے باشندوں—ہمارے پوروجوں نے—قدرت کے بارے میں ادھک سے ادھک جانکاری حاصل کرنے اور اسے عمل میں لانے کی کوشش کی ۔ اس طرح انہوں نے اپنے کلچر کو آگے بڑھایا ۔ گیان کے بارے میں ان کے من میں کوئی تعصب نہیں تھا ۔ جس چیز کو وہ مفید دیکھتے تھے اسی کو اپنا لیتے تھے اور جسے اپناتے تھے، اس پر عمل کرتے تھے ۔ ودوانوں کا کہنا ہے کہ ویدوں کے منتر رشیوں نے بنائے یا رچے نہیں، بلکہ دیکھے ہیں ۔ اس کا بھی یہی مطلب ہوا کہ ویدوں کے منتر کوی کے وچار کی اڑان یا کلپنا کی چیز نہیں، بلکہ منشیہ کے تجربے کا نچوڑ ہے ۔ اس نے اپنے جیون میں جو کچھ دیکھا اور کیا اسے منتروں میں لکھ دیا ۔ ظاہر ہے کہ آدمی جو کچھ دیکھتا اور کرتا ہے، اسے لکھ دینا آسان نہیں ہے ۔ آدمی جو کچھ دیکھتا ہے اور کرتا ہے اس کے ساتھ اس کا انجانے ہی ایک دماغی سمبندھ جڑ جاتا ہے اور اس سمبندھ کے ذریعہ وہ اپنے اندر ایک اثر قبول کرتا رہتا ہے ۔ یہ اثر جمع ہوتے ہوتے اس کی آتما میں ایک بیج سا بن جاتا ہے ۔ اس بیج میں بہت سے باہری تتو ملے ہوتے ہیں ۔ جیسے بیج انکر پھوٹنے سے پہلے زمین کے اندر ایک عرصے تک پلتا رہتا ہے، یہ بیج بھی آدمی کی آتما میں پرورش پاتا رہتا ہے، اور ایک دن اچانک اس کا خول ٹوٹ کر الگ ہو جاتا ہے اور اس میں سے ایک سندر اور کومل انکر پھوٹتا ہے—یہ آدمی کا گیان یا کلچر کا پھل ہوتا ہے، جسے وہ منتر، چھند، شعر، نثر، مورتی یا چتر میں ظاہر کرتا ہے ۔ کلچر اطالوی شبد Cultus سے نکلا ہے، جس کا مطلب ہے جوتنا، اپنے اندر بیج بونا ۔

ویدوں کے بنانے والے بہت سے رشی تھے ۔ انمیں مرد بھی تھے، عورتیں بھی ۔ یعنی وید منشیہ کے ساجھے کے گیان کا بھنڈار ہے ۔ کوئی بھی منتر یا شعر کسی بھی ایک آدمی کے تجربے کا نتیجہ نہیں ہوتا ۔ ایک آدمی دوسروں کے تجربوں سے بھی سیکھتا ہے ۔ وہ جو کچھ کرتے اور کہتے ہیں، اس سے اثر لیتا ہے ۔ یہ تجربہ اور اثر ایک پیڑھی سے دوسری پیڑھی کو وراثت میں ملتا ہے ۔ اس لئے رشیوں نے جو وید منتر دیکھے تھے، وہ ان سب منشیوں کے تجربے کا نچوڑ تھے جو اس سمے تک قدرت کی جانکاری حاصل کرنے اور اسے عمل میں لانے کے لئے جوجھتے رہے تھے ۔

اتہاسکاروں کا کہنا ہے کہ آریہ لوگ اسیریا سے آئے تھے کیونکہ ویدوں میں جن اندر اور ورن آدی دیوتاؤں

हिन्दुस्तानी कलचर

(हंसराज रहबर)

[पिछले साल हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने हिन्दुस्तानी कलचर पर इनामी लेख लिखाए थे. तीस विद्वानों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया था. देश के तीन जिम्मेदार और बड़े विद्वान व्यक्ति जज बनाए गए थे. उन्होंने मेहनत से सारे लेखों को पढ़कर अपना निर्णय दिया है. इन लेखकों में से कई को इनाम मिला है. चाहिये यह था कि उन लेखों को पहले छापा जाता जिनको इनाम मिला है. लेकिन वह सब लेख अंग्रेजी में हैं और अनुवाद करने में समय लगेगा. इसीलिए हम पहले उन लेखों को छाप रहे हैं जो हिन्दी और उर्दू में हैं.

इन लेखों में जो विचार जाहिर किये गए हैं उनका 'नया हिन्द' से कोई सम्बन्ध नहीं है. इस प्रतियोगिता में हर विचारधारा के लोगों ने भाग लिया है और इसी लिए इन लेखों में हर विचारधारा पढ़ने को मिलेगी. हम 'नया हिन्द' के पाठकों के सामने यह सामग्री इसलिये पेश कर रहे हैं कि वह सब विचारों को सामने रख कर अपना विचार बना सकें और सही कलचर की रूप रेखा सामने आ सके—एडीटर]

❋ ❋ ❋

मेरा ख्याल है कि प्रकृति के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करना और उसे अमल में लाने का नाम कलचर है.

जिस देश या जाति ने प्रकृति के बारे में जितनी अधिक जानकारी हासिल की और अपने जीवन में उस जानकारी पर जितना अमल किया उतना ही उसका कलचर आगे बढ़ा और उस देश या जाति की तरक्क़ी हुई.

हिन्दुस्तान ने प्रकृति के बारे में धीरे धीरे जितना ज्ञान हासिल किया और उस ज्ञान को अपने अमली जीवन में ढाला उसी का नाम हिन्दुस्तानी कलचर है.

वेद—हिन्दुस्तान के शुरू के बाशिंदों—आर्यों के, ज्ञान के भंडार हैं और वह दुनिया की सबसे पुरानी पुस्तकें मानी जाती हैं. वेद शब्द 'विद्' धातु से बना है, जिसका मतलब है—जानना. वेदों में भी सबसे पहली पुस्तक ऋग्वेद है. 'रिग्' का मतलब है—नेचर या प्रकृति, और वेद का मतलब हम पहले बता चुके हैं—जानकारी. इसलिये रिग् वेद का मतलब हुआ—क़ुदरत के बारे में जानकारी.

هندستانی کلچر

(هنس راج رهبر)

[پچھلے سال هندستانی کلچر سوسائٹی نے هندستانی کلچر پر انعامی لیکھ لکھائے تھے ۔ تیس ودوانوں نے اِس پرتی یوگتا میں بھاگ لیا تھا ۔ دیش کے تین ذمہ‌دار اور بڑے ودوان جج بنائے گئے تھے ۔ اُنھوں نے محنت سے سارے لیکھوں کو پڑھکر اپنا نرنے دیا ھے ۔ اِن لیکھکوں میں سے کئی کو اِنعام ملا ھے ۔ چاھئے یہ تھا کہ اُن لیکھوں کو پہلے چھاپا جاتا جن کو اِنعام ملا ھے ۔ لیکن وہ سب لیکھ انگریزی میں ھیں اور انوواد کرنے میں سمے لگے گا ۔ اس لئے هم پہلے اُن لیکھوں کو چھاپ رھے ھیں جو هندی اور اُردو میں ھیں ۔

اِن لیکھوں میں جو وچار ظاہر کئے گئے ھیں اُن کا 'نیا هند' سے کوئی سمبندھ نہیں ھے ۔ اِس پرتی یوگتا میں ھر وچار دھارا کے لوگوں نے بھاگ لیا ھے اور اِسی لئے اِن لیکھوں میں ھر وچار دھارا پڑھنے کو ملےگی ۔ هم 'نیا هند' کے پاٹھکوں کے سامنے یہ سامگری اِس لئے پیش کر رھے ھیں کہ وہ سب وچاروں کو سامنے رکھ کر اپنا وچار بناسکیں اور صحیح کلچر کی روپ ریکھا سامنے آسکے—ایڈیٹر]

❋ ❋ ❋

میرا خیال ھے کہ پرکرتی کے بارے میں ادھک سے ادھک جانکاری حاصل کرنا اور اُسے عمل میں لانے کا نام کلچر ھے ۔

جس دیش یا جاتی نے پرکرتی کے بارے میں جتنی ادھک جانکاری حاصل کی اور اپنے جیون میں اُس جانکاری پر جتنا عمل کیا اتنا ھی اُس کا کلچر آگے بڑھا اور اُس دیش یا جاتی کی ترقی ھوئی ۔

هندستان نے پرکرتی کے بارے میں دھیرے دھیرے جتنا گیان حاصل کیا اور اُس گیان کو اپنے عملی جیون میں ڈھالا اُسی کا نام هندستانی کلچر ھے ۔

وید—هندستان کے شروع کے باشندوں—آریوں کے' گیان کے بھنڈار ھیں اور وہ دنیا کی سب سے پرانی پستکیں مانی جاتی ھیں ۔ وید شبد 'ود' دھاتو سے بنا ھے' جسکا مطلب ھے—جاننا ۔ ویدوں میں بھی سب سے پہلی پستک رگ وید ھے ۔ 'رگ' کا مطلب ھے—نیچر یا پرکرتی' اور وید کا مطلب هم پہلے بتا چکے ھیں—جانکاری ۔ اس لئے رگ وید کا مطلب ھوا—قدرت کے بارے میں جانکاری ۔

नया हिन्द

जिल्द 17 सितम्बर-अक्तूबर सन '54 नम्बर 3-4

نمبر 3-4 ستمبر - اکتوبر سن 54' جلد 17

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، هندستانی بولی،
'نیا هند' پہنچے گا گھر - گھر لئے پریم کی جھولی ۔

"किसान राजा"

(ज़ुबैर रिज़वी)

मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी
ऊंचे परबत मेरे हैं यह नीली छतरी मेरी
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

रंग बिरंगे पेड़ों की यह झूमती डारें मेरी
खलियानों पर मेरा क़ब्ज़ा धान की बालें मेरी
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

खेत हैं मेरे, सागर मेरा, चंचल लहरें मेरी
मस्त पवन, घनघोर घटाएं, ऊदी झीलें मेरी
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

फूल, शगूफ़े, कच्ची कलियां, हरी भरी फुलवारी
खेत का हर हर पौदा मेरा गुलशन की हर क्यारी
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

धरती के सीने में मैंने अपना ख़ून समोया
तपती धूप में नाज उगाने बीज यह मैंने बोया
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

अपने घर में भूक उगाई जग में हुन बरसाया
महलों को उजियारा बख़्शा कुटिया को अंधियारा
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

दाना दाना आज मगर है एक उपी तलवार
देहला देगी सारे जग को आज मेरी ललकार
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

डाली डाली पत्ती पत्ती पर है मेरा अधिकार
मुस्काए है आज दरांती फ़सल खड़ी तैयार
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

"کسان راجه"

(زبیر رضوی)

میں راجه هوں اس نگری کا ساری دھرتی میری
اونچے پربت میرے هیں یه نیلی چھتری میری
میں راجه هوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

رنگ برنگے پیڑوں کی یه جھومتی ڈاریں میری
کھلیانوں پر میرا قبضه دھان کی بالیں میری
میں راجه هوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

کھیت هیں میرے، ساگر میرا، چنچل لہریں میری
مست پون، گھنگھور گھٹائیں، اودی جھیلیں میری
میں راجه هوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

پھول، شگوفے، کچی کلیاں، هری بھری پھلواری
کھیت کا هر هر پودا میرا گلشن کی هر کیاری
میں راجه هوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

دھرتی کے سینے میں میں نے اپنا خون سمویا
تپتی دھوپ میں ناج اگانے بیج یه میں نے بویا
میں راجه هوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

اپنے گھر میں بھوک اگائی جگ میں هن برسایا
محلوں کو اجیارا بخشا کٹیا کو اندھیارا
میں راجه هوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

دانه دانه آج مگر هے ایک اپی تلوار
دهلا دے گی سارے جگ کو آج میری للکار
میں راجه هوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

ڈالی ڈالی پتی پتی پر هے میرا ادھیکار
مسکائے هے آج درانتی فصل کھڑی تیار
میں راجه هوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

नया हिन्द

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

सितम्बर-अक्तूबर 1954

نیا ہند

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

ستمبر-اکتوبر 1954

क्या किस से — सफ़ा

کیا کس سے — صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द

एडीटर— ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، سید محمود، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर— सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی

❀ ❀ ❀ ❀

इस नम्बर के ख़ास लेख

हमारी राय

اس نمبر کے خاص لیکھ

ہماری رائے

...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ...ستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

सितम्बर • अक्तूबर 1954 ستمبر ۔ اکتوبر

क़ीमत दस आना

Registered No. A-210

नई किताब

गंगा से गोमती तक

......' सुनीथ की कहानियों की विशेषता उनकी शैली में है. मामूली पढ़ा लिखा आदमी उन्हें बिना किसी की मदद के समझ सकता है. सरलता के साथ भाषा में ज़ोर और ज़िन्दादिली इस तरह है जिस तरह [illegible] के लेखकों में [illegible] है.

इन कहानियों में हास्य भी है, करुणा भी है. कहीं हँसते हँसते पेट में बल पड़ेंगे, तो कहीं [illegible] आप दुःख से [illegible]. सुनीथ की कहानियाँ [illegible] कोमल भावनाएँ जगाती हैं, [illegible]

[illegible]

... ...वह (सुनीथ) [illegible] है, समाज को बदलना चाहते हैं, [illegible] को कामयाबी चाहते हैं और [illegible] ... यह कहानियाँ [illegible] समाज में होने वाले अन्यायों और अत्याचारों की [illegible] हैं. [illegible] की कहानियों में एक सीधी [illegible] है, जो अच्छी लगती है."

— [illegible]

लगभग हिन्दी के सभी बड़े पत्रों ने "गंगा से गोमती" की सराहना की है.

"गंगा से गोमती तक" में १८० सफ़े हैं, तिरंगा सुन्दर कवर, बढ़िया जिल्द, दाम केवल दो रुपया. जल्दी आर्डर भेजिये.

— मैनेजर नया हिन्द

मिलने का पता -

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گنگا سے گومتی تک

[illegible]

گنگا سے گومتی تک میں 180 صفحے ہیں، [illegible] بڑھیا جلد، دام صرف دو روپیہ۔ جلدی آرڈر [illegible]

— مینیجر نیا ہند

ملنے کا پتہ —

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال
سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
145، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے ۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें

ہمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं

نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुख़न	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنس مرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. सलौना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ
مینیجر 'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد 3.

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ".....वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूझ के क़ायल हैं. वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, सुन्दर छपाई, दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास की सदी कमीशन.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے ' فراق '

" پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے . آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے' اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی . غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی .

" اِن کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اُردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزآنہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں ."

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اُردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں ."

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اِسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے."

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی' تازگی اور سوجھ کے قائل ہیں . وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے . کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے ."

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے ."—' نیا سماج ' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا . سندر جلد' بڑھیا کاغذ . سندر چھپائی . دام صرف تین روپیہ . دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن .

ملنے کا پتہ—

منیجر ' نیا ہند ' 145' مٹھی گنج الہ آباد .

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और वक़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اِس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے' جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں' اپنی اِس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ' اہنسا' پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری' سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اُترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اُٹھانے والے اُپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "اُنہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے. وہ اِسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے.....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر' موٹے ٹائپ میں' بہت سی رنگین تصویریں' آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 [illegible]

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی. راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی' جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی.

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب' دام ڈیڑھ روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

145 [illegible]

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 45, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں.

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے. 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے.

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لایا جا سکتا ہے.

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے.

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے. قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد.

गीता और क़ुरान

लेखक–पंडित सुन्दरलाल

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आई उन का दर्दनाक आंखों देखा बनन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़तम करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ .

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذھبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن . اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 50–1949 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' اِلہ آباد

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. 'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्ण दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिकता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—.

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی ۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا ۔

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا ۔ 'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انوادت ۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے ۔ بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے ۔

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز ۔ لگ بھگ چار سو پنّے ۔ کپڑے کی سندر جلد ۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے ۔

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپئہ ۔

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے. اس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اس کا مقصد کیا ہے ۔

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا ۔ یہ دوسرا ایڈیشن ہے ۔ صفحے 25' دام کیول دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر' نیا ہند' 145, مٹھی گنج' الہ آباد.

सरकार के सामने विद्यार्थी हाथ फैलाकर कभी नहीं गया. कभी किसी ने नहीं चाहा कि गोरे अफसर जनता के बीच में आकर भाषण दें बल्कि अगर कोई साहसी अंग्रेज या बर्तानी सरकार का हिन्दुस्तानी अफसर बीच में आ भी जाता था तो लोग नफरत से मुंह मोड़ लेते थे. जिस दिन लोग यह समझ लेंगे कि कांग्रेस सरकार जनता की सरकार नहीं है उस दिन कांग्रेस मन्त्रियों के साथ भी लोग यही व्यौहार करेंगे. लेकिन आज कांग्रेस को जनता की सरकार समझा जाता है और इसीलिये दावा है कि मन्त्री को जनता के बीच में आना पड़ेगा. जब मन्त्री इन्कार करते हैं तो यही दावा अधिकार को उकसाता है. जब अधिकार को हिंसक हथियार दिखाये जाते हैं तो दूसरी तरफ भी जोश बढ़ता है. तभी यह विचार पैदा होता है कि हमें अपनी मांग के लिये आन्दोलन करना चाहिये. आन्दोलन को दबाने के लिये मन्त्री गोली चलवाने की धमकी देते हैं. इस धमकी को विद्यार्थी सामूहिक रूप से स्वीकार करते हैं एक बात उनके दिल में साफ़ होती है और वह यह है कि संगठित ताक़त के आगे सरकार की फ़ौज और पुलिस हेच है. वह निडर होकर जुलूस ले चलते हैं. सरकार उनमें डर पैदा करने के लिये पुलिस के दस्ते भेजती है. अब यहां संघर्ष चलता है, होड़ लगती है. न जाने क्यों विद्यार्थी इतना मज़बूत है कि वह पुलिस से नहीं डरता और यह भी होता है कि पुलिस को अपनी हीनता का अनुभव कराने के लिये वह कभी कभी कुछ अनुचित क़दम भी उठा लेता है. खिसयानी बिल्ली खम्भा नोचती है. सरकार को जब अपनी हार दिखाई पड़ती है और जब वह देखती है कि उसकी शक्ति को विद्यार्थी हीन मानते हैं तो वह किसी न किसी बहाने से गोली चलाती है. गोया यह बताती है कि हम धमकी ही नहीं देते सचमुच हम में शक्ती है.

यही जड़ है जिसकी वजह से बार बार गोली चलती है. सवाल इस बात का नहीं है कि गोली पहले चली कि विद्यार्थियों ने आग पहले लगाई. सवाल यह है कि कांग्रेस सरकार फ़ौज की सरकार है या जनता की. दोनों सूरतों में मन्त्रियों के आचारन में जमीन आसमान का फ़र्क़ रहेगा. इसलिये ज़रूरी है कि कांग्रेसी मन्त्री अपना रास्ता तय कर लें. अगर पुलिस फ़ौज के वह मन्त्री हैं तो उनका मौजूदा रुख किसी को नहीं अखरेगा, फिर गोली चलाने की नौबत नहीं आयगी. अगर वह अपने को जनता का समझते ? और चाहते हैं कि गोली न चले तो उन्हें अपना मौजूदा व्यौहार बदलना होगा. जितनी जल्दी से जल्दी वह अपने रुख का ऐलान कर दें उतना ही अच्छा है.

30. 6. '54 —मुजीब रिज़वी

سرکار کے سامنے ودیارتھی ہاتھ پھیلاکر کبھی نہیں گیا. کبھی کسی نے نہیں چاہا کہ گورے افسر جنتا کے بیچ میں آکر بھاشن دیں. بلکہ اگر کوئی ساہسی انگریز یا برطانی سرکار کا ہندستانی افسر بیچ میں آ بھی جاتا تھا تو لوگ نفرت سے منھ موڑ لیتے تھے. جس دن لوگ یہ سمجھ لینگے کہ کانگریس سرکار جنتا کی سرکار نہیں ہے اُس دن کانگریس منتریوں کے ساتھ بھی لوگ یہی ویوہار کرینگے. لیکن آج کانگریس کو جنتا کی سرکار سمجھا جاتا ہے اور اسی لئے دعویٰ ہے کہ منتری کو جنتا کے بیچ میں آنا پڑیگا. جب منتری انکار کرتے ہیں تو یہی دعویٰ ادھیکار کو اُکساتا ہے. جب ادھیکار کو ہنسک ہتھیار دکھائے جاتے ہیں تو دوسری طرف بھی جوش بڑھتا ہے. تب ہی یہ وچار پیدا ہوتا ہے کہ ہمیں اپنی مانگ کے لئے آندولن کرنا چاہئے. آندولن کو دبانے کے لئے منتری گولی چلوانے کی دھمکی دیتے ہیں. اس دھمکی کو ودیارتھی ساموہک روپ سے سویکار کرتے ہیں. ایک بات اُن کے دل میں صاف ہوتی ہے اور وہ یہ ہے کہ سنگٹھت طاقت کے آگے سرکار کی فوج اور پولیس ہیچ ہے. وہ نڈر ہوکر جلوس لے چلتے ہیں. سرکار اُن میں ڈر پیدا کرنے کے لئے پولیس کے دستے بھیجتی ہے. اب یہاں سنگھرش چلتا ہے' ہوڑ لگتی ہے. نہ جانے کیوں ودیارتھی اتنا مضبوط ہے کہ وہ پولیس سے نہیں ڈرتا اور یہ بھی ہوتا ہے کہ پولیس کو اپنی ہینتا کا انوبھو کرانے کے لئے وہ کبھی کبھی کچھ اَن اُچت قدم بھی اٹھا لیتا ہے. کھسیانی بلی کھمبا نوچتی ہے. سرکار کو جب اپنی ہار دکھائی پڑتی ہے اور جب وہ دیکھتی ہے کہ اُسکی شکتی کو ودیارتھی ہین مانتے ہیں تو وہ کسی نہ کسی بہانے سے گولی چلاتی ہے. گویا یہ بتاتی ہے کہ ہم دھمکی ہی نہیں دیتے سچ مچ ہم میں شکتی ہے.

یہی جڑ ہے جسکی وجہ سے بار بار گولی چلتی ہے. سوال اِس بات کا نہیں ہے کہ گولی پہلے چلی کہ ودیارتھیوں نے آگ پہلے لگائی. سوال یہ ہے کہ کانگریس سرکار پولیس فوج کی سرکار ہے یا جنتا کی. دونوں صورتوں میں منتریوں کے آچرن میں زمین آسمان کا فرق رہیگا. اِس لئے ضروری ہے کہ کانگریسی منتری اپنا راستہ طے کرلیں. اگر پولیس فوج کے وہ منتری ہیں تو اُن کا موجودہ رخ کسی کو نہیں اکھرے گا' پھر گولی چلانے کی نوبت نہیں آئیگی. اگر وہ اپنے کو جنتا کا سمجھتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ گولی نہ چلے تو انہیں اپنا موجودہ بیوہار بدلنا ہوگا. جلدی جلدی سے جلدی وہ اپنے رخ کا اعلان کردیں اتنا ہی اچھا ہے.

—مجیب رضوی 30.7.54

सरकार उन लोगों की है जिनके हाथ में पैसा है और लड़के भी उन्हीं के हैं जिनके हक़ में पैसा है. लड़का बुरा हो या अच्छा पर मां बाप को प्यारा होता है, वह कभी पसन्द नहीं कर सकते कि उनके बच्चों पर गोली चलाई जाये. अगर उनको यक़ीन हो जाये कि मज़दूर और किसानों की तरह ही यह सरकार हमारे बच्चों पर भी गोली चलाती है तो वह अपना सहयोग सरकार से वापस ले लें. सरकार इस बात को समझती है. जब जब विद्यार्थियों पर गोली चलती है, सरकार कहती है कि गुन्डों ने क़ानून को ख़तरे में डाल दिया था इसलिये गोली चलानी पड़ी. इस तरह वह विद्यार्थियों को पीछे डाल देती है और गुन्डों को आगे कर देती है और यह सिद्ध करती है कि नागरिकों को आफ़त से बचाने के लिये गोली चलाना ज़रूरी था.

दूसरा सवाल यह भी उठ खड़ा होता है कि विद्यार्थी बार बार सरकार के ख़िलाफ़ क्यों खड़े होते हैं. कुछ चीज़ें तो आम हैं. इन पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है. लेकिन एक बात बहुत ख़ास है और आजतक के सारे आन्दोलनों में वह पाई जाती है. वह है मन्त्रियों का अनुचित व्यवहार. जब जब लोग उनसे मिलने जाते हैं और अपनी मांगें उनके सामने रखते हैं तो वह तर्क से नहीं धमकी से जवाब देते हैं. धमकी दूसरे में ग़ुस्सा पैदा करती हैं. कायर धमकी से दब जाते हैं और हमें, इस बात की ख़ुशी है कि हमारे नौजवान कायर नहीं हैं. इन्दौर की दुर्घटना में भी यह बात साफ़ दिखाई पड़ती है. एक प्रिन्सिपल का तबादला कर दिया जाता है. उनसे विद्यार्थी अपार श्रद्धा रखते हैं. विद्यार्थी शिक्षा मन्त्री से मिलना चाहते हैं और प्रार्थना करना चाहते हैं कि वह तबादले को रोक दें. दो एक दिन तबादला रुक सकता था. दावत बाज़ियों से दो एक दिन की फ़ुरसत मन्त्री जी ले सकते थे. अगर मन्त्री जी प्यार से विद्यार्थियों को समझाते और तर्क से उन्हें जीतने की कोशिश करते तो इन्दौर की दुर्घटना न होती. मैं यह नहीं कहता हूं कि एक दिन में विद्यार्थी मान जाते लेकिन यह ज़रूर है कि विद्यार्थी जुलूस न निकालते, जोश में न आते और अगर मन्त्री जी के पक्ष में कुछ जान होती तो वह मान भी जाते. आदमियों की जान लेने से बेहतर होता कि सरकार के मन्त्री अपना कुछ समय बर्बाद कर लेते.

मध्य भारत की सरकार को दोष क्या दिया जाय? हर कांग्रेसी सरकार यही करती है. एक तरफ़ जनता की सरकार होने का दावा है और दूसरी तरफ़ पुलिस और फ़ौज का हर बात में सहारा लिया जाता है. दोनों विरोधी बातें हैं. पुलिस और फ़ौज के बल पर राज्य करने वालों के पास जनता के प्रतिनिधि मांग लेकर नहीं जाते. अंग्रेज़ों

سرکار اُن لوگوں کی ہے جن کے ہاتھ میں پیسہ ہے اور لڑکے بھی انہیں کے ہیں جن کے ہاتھ میں پیسہ ہے. لڑکا برا ہو یا اچھا پر ماں باپ کو پیارا ہوتا ہے، وہ کبھی پسند نہیں کر سکتے کہ اُن کے بچوں پر گولی چلائی جائے. اگر ان کو یقین ہوجائے کہ مزدور اور کسانوں کی طرح ہی یہ سرکار ہمارے بچوں پر بھی گولی چلاتی ہے تو وہ اپنا سہیوگ سرکار سے واپس لے لیں. سرکار اِس بات کو سمجھتی ہے. جب جب ودیارتھیوں پر گولی چلتی ہے، سرکار کہتی ہے کہ غنڈوں نے قانون کو خطرے میں ڈالدیا تھا اِس لئے گولی چلانی پڑی. اِس طرح وہ ودیارتھیوں کو پیچھے ڈال دیتی ہے اور غنڈوں کو آگے کر دیتی ہے اور یہ سدھ کرتی ہے کہ ناگرکوں کو آفت سے بچانے کے لئے گولی چلانا ضروری تھا.

دوسرا سوال یہ بھی اٹھ کھڑا ہوتا کہ ودیارتھی بار بار سرکار کے خلاف کیوں کھڑے ہوتے ہیں. کچھ چیزیں تو عام ہیں. اِن پر بہت کچھ لکھا جا چکا ہے. لیکن ایک بہت خاص ہے اور آج تک کے سارے آندولنوں میں وہ پائی جاتی ہے. وہ ہے منتریوں کا اَن اُچت بیوہار. جب جب لوگ اُن سے ملنے جاتے ہیں اور اپنی مانگیں اُن کے سامنے رکھتے ہیں تو وہ ترک سے نہیں دھمکی سے جواب دیتے ہیں. دھمکی دوسرے میں غصہ پیدا کرتی ہے. کائر دھمکی سے دب جاتے ہیں اور ہمیں اِس بات کی خوشی ہے کہ ہمارے نوجوان کایر نہیں ہیں. اندور کی درگھٹنا میں بھی یہ بات صاف دکھائی پڑتی ہے. ایک پرنسپل کا تبادلہ کر دیا جاتا ہے. اُن سے ودیارتھی اپار شردھا رکھتے ہیں. ودیارتھی شکشا منتری سے ملنا چاہتے ہیں اور پرارتھنا کرنا چاہتے ہیں کہ وہ تبادلے کو روک دیں. دو ایک دن تبادلہ رک سکتا تھا. دعوت بازیوں سے دو ایک دن کی فرصت منتری جی لے سکتے تھے. اگر منتری جی پیار سے ودیارتھیوں کو سمجھاتے اور ترک سے اُنہیں جیتنے کی کوشش کرتے تو اندور کی درگھٹنا نہ ہوتی. میں یہ نہیں کہتا ہوں کہ ایک دن میں ودیارتھی مان جاتے لیکن یہ ضرور ہے کہ ودیارتھی جلوس نہ نکالتے، جوش میں نہ آتے اور اگر منتری جی کے پکش میں کچھ جان ہوتی تو وہ مان بھی جاتے. آدمیوں کی جان لینے سے بہتر ہوتا کہ سرکار کے منتری اپنا کچھ سمے برباد کر لیتے.

مدھیہ بھارت کی سرکار کو دوش کیا دیا جائے؟ ہر کانگریس سرکار یہی کرتی ہے. ایک طرف جنتا کی سرکار ہونے کا دعویٰ ہے اور دوسری طرف پولیس اور فوج کا ہر بات میں سہارا لیا جاتا ہے. دونوں ورودھی باتیں ہیں. پولیس اور فوج کے بل پر راج کرنیوالوں کے پاس جنتا کے پرتیندھی مانگ لیکر نہیں جاتے. انگریز

इन्दौर की दुर्घटना

अभी हाल में इन्दौर में गोलियां चली हैं. सरकार का कहना है कि विद्यार्थी क़ाबू से बाहर हो गये थे. इसलिये यह क़दम उठाना पड़ा. यह घटना होते ही मन्त्री महोदय ने दुख प्रगट किया और सारी ज़िम्मेदारी गुन्डों के सर थोपी. उन्होंने अपने क़दम को ठीक साबित करने के लिये यह भी कहा कि हर सरकार को यही क़दम उठाना चाहिये जब क़ानून को इस तरह का ख़तरा पैदा हो जाये. हमारे पास इन्दौर की कोई ऐसी ख़बर नहीं है जिसके आधार पर हम सच और झूठ के पक्ष में कुछ लिख सकें. हम केवल दुख ही प्रकट कर सकते हैं. हाई कोर्ट का जलाया जाना बहुत दुखदायक घटना है और गोली चलना उससे भी बड़ी दुर्घटना है.

आज जब इस घटना पर सोचते हैं तो बार बार यह सवाल उठता है यह गुन्डे कौन हैं? क्या गुन्डों से मतलब उन लोगों से है जो आम तरीक़े से चोरी बदमाशी करते हैं? अगर ऐसा है तो हमें यह कहने में कोई झिझक नहीं है कि यह बात सरासर झूट है. इस तरह के गुन्डे हाई कोर्ट जलाने नहीं जाते हैं और न उन्हें मन्त्रियों से मिलने में कोई दिलचस्पी होती है हो सकता है कि इस तरह के गुन्डे जुलूस के साथ शामिल हो जायें और दूसरों की जेब काटें. लेकिन यह कभी नहीं हो सकता कि पुलिस की गोली चलती हो और वह मैदान में डटे रहें. झूट बोलना ऐसे भी शोभा नहीं देता और अपने विरोधी के चरित्र पर इलज़ाम लगाना और भी बुरी बात है. लेकिन मालूम होता है कि सरकार अंग्रेज़ों की परम्परा को निभाती है. अंग्रेज़ों के लिये हर कांग्रेसी गुन्डा था और कांग्रेसियों के लिये आज हर विरोधी गुन्डा है. हाई कोर्ट को जलाने वालों को गुन्डा कहे बिना भी परिस्थिति की भयानकता की जानकारी जनता को दी जा सकती थी. शायद उस समय जनता सरकार के पक्ष की तरफ़ ज़्यादा झुकती. पर लगता है कि विरोधियों को गुन्डा कहने के पीछे कोई ख़ास तत्व है. यह तत्व क्या है?

विद्यार्थी किसी बेजान चीज़ का नाम नहीं है यह संज्ञा है उन लड़के लड़कियों की जो शिक्षा संस्थाओं में पढ़ते हैं. यह किस के लड़के लड़कियां होते हैं? यह उनके लड़के लड़कियां होते हैं जो ख़ुशहाल हैं, जो बड़े-बड़े ओहदों पर हैं, जो कारख़ानेदार हैं, जो ज़मींदार हैं. इन्हीं महापुरुषों की सन्तानों के बीच दो एक फ़ी सैकड़ा ऐसे भी होते हैं जो बड़े और भद्र घरानों से ताल्लुक़ नहीं रखते हैं. गुन्डे कहने का भेद यहां छिपा हुआ है अपनी औलाद को गाली कैसे दी जाय, उसे दोषी कैसे ठहराया जाय. इसलिये जो घटना होती है उसे गुन्डों के सर मढ़ दिया जाता है.

اندور کی درگھٹنا

ابھی حال میں اندور میں گولیاں چلی ہیں. سرکار کا کہنا ہے کہ ودیارتھی قابو سے باہر گئے تھے. اس لئے یہ قدم اٹھانا پڑا. یہ گھٹنا ہوتے ہی منتری مہودے نے دکھ پرکٹ کیا اور ساری ذمہ داری غنڈوں کے سر تھوپی. انہوں نے اپنے قدم کو ٹھیک ثابت کرنے کے لئے یہ بھی کہا کہ ہر سرکار کو یہی قدم اٹھانا چاہئے جب قانون کو اس طرح کا خطرہ پیدا ہوجائے. ہمارے پاس اندور کی کوئی ایسی خبر نہیں ہے جس کے آدھار پر ہم سچ اور جھوٹ کے پکش میں کچھ لکھ سکیں. ہم کیول دکھ ہی پرکٹ کر سکتے ہیں. ہائی کورٹ کا جلایا جانا بہت دکھ دائک گھٹنا ہے اور گولی چلنا اس سے بھی بڑی درگھٹنا ہے.

آج جب درگھٹنا پر ہم سوچتے ہیں تو بار بار یہ سوال اٹھتا ہے کہ یہ غنڈے کون ہیں؟ کیا غنڈوں سے مطلب ان لوگوں سے ہے جو عام طریقے سے چوری بدمعاشی کرتے ہیں؟ اگر ایسا ہے تو ہمیں یہ کہنے میں کوئی جھجھک نہیں ہے کہ یہ بات سراسر جھوٹ ہے. اس طرح کے غنڈے ہائی کورٹ جلانے نہیں جاتے ہیں اور نہ انہیں منتریوں سے ملنے میں کوئی دلچسپی ہوتی ہے. ہوسکتا ہے کہ اس طرح کے غنڈے جلوس کے ساتھ شامل ہو جائیں اور دوسروں کی جیب کاٹیں. لیکن یہ کبھی نہیں ہوسکتا کہ پولیس کی گولی چلتی ہو اور وہ میدان میں ڈٹے رہیں. جھوٹ بولنا ایسے بھی شوبھا نہیں دیتا اور اپنے وردھی کے چرتر پر الزام لگانا اور بھی بری بات ہے. لیکن معلوم ہوتا ہے کہ سرکار انگریزوں کی پرمپرا کو نبھاتی ہے. انگریزوں کے لئے ہر کانگریسی غنڈا تھا اور کانگریسیوں کے لئے آج ہر وردھی غنڈہ ہے. ہائی کورٹ کو جلانے والوں کو غنڈہ کہے بنا بھی پرستھتی کی بھیانکتا کی جانکاری جنتا کو دی جا سکتی تھی. شاید اس سمے جنتا سرکار کے پکش کی طرف زیادہ جھکتی. پر لگتا ہے کہ وردھیوں کو غنڈا کہنے کے پیچھے کوئی خاص تتو ہے. یہ تتو کیا ہے؟

ودیارتھی کسی بے جان چیز کا نام نہیں ہے. یہ سنگیا ہے ان لڑکے لڑکیوں کی جو شکشا سنستھاؤں میں پڑھتے ہیں. یہ کس کے لڑکے لڑکیاں ہوتے ہیں؟ یہ ان کے لڑکے لڑکیاں ہوتے ہیں جو خوشحال ہیں، جو بڑے بڑے عہدوں پر ہیں، جو کارخانے دار ہیں، جو زمیندار ہیں. انہیں مہاپرشوں کی سنتانوں کے بیچ دو ایک فی سیکڑہ ایسے بھی ہوتے ہیں جو بڑے اور بھدر گھرانوں سے تعلق نہیں رکھتے ہیں. غنڈے کہنے کا بھید یہاں چھپا ہوا ہے. اپنی اولاد کو گالی کیسے دی جائے، اسے دوشی کیسے ٹھہرایا جائے. اس لئے جو گھٹنا ہوتی ہے اسے غنڈوں کے سر منڈھ دیا جاتا ہے.

अमरीका कोशिश कर रहा था क्योंकि बिना अंग्रेज़ी फ़ौजों स्वेज़ नहर से हटे मिस्र मीडो के सम्बन्ध में सोचने पर तैयार नहीं था. शायद अमरीका को यह उम्मीद बंधी है कि मिस्र, सुलह के बाद, मीडो में शामिल हो जाएगा.

सुलह की एक शर्त यह है कि यदि तुर्की पर कोई हमला होगा तो नहर स्वेज़ में अंग्रेज़ फ़ौजें फिर आजाएंगीं. यह बहुत ख़तरनाक़ शर्त है तुर्की मीडो में है और मीडो रूस के ख़िलाफ़ एक फ़ौजी संगठन है जिस के जन्मदाता अमरीकी हैं. अमरीका वाले झूट मूट के हमले का बवन्डर खड़ा करने में माहिर हैं. कोरिया की मिसाल सामने है. इस तरह जब भी अमरीका का मन स्वेज़ पर क़ब्ज़ा कराने का चाहेगा वह तुर्की पर हमले की कहानी गढ़ेगा और बरतानी फ़ौजें फिर मिस्र की छाती पर चढ़ बैठेंगी. बात चीत के बीच अंग्रेज़ों ने ज़ोर दिया था कि मिस्र यह बात मान ले कि यदि ईरान पर हमला होगा तो बरतानी फ़ौजें नहर स्वेज़ में आजाएंगीं. पर मिस्र ने इस बात को नहीं माना और अंग्रेज़ इस मांग पर डटे रहे. इस सम्बन्ध में तुर्की और ईरान में केवल इतना अन्तर है कि तुर्की मीडो का मेम्बर है और ईरान होने जा रहा है. अगर कल ईरान पर हमला हुआ तो तुर्की मीडो का मेम्बर होने के नाते मैदान में आएगा. तब बरतानी फ़ौजें स्वेज़ में आजाएंगी. इस तरह मिस्र की आज़ादी को हर दम ख़तरा बना रहता है. इसी लिये मिस्र की आज़ादी की ख़ुशी मनाते समय हम चिन्तित भी हैं.

एक बात का ख़तरा और दिखाई पड़ रहा है. खटका है कहीं मिस्र मीडो में न शामिल हो जाए. क्योंकि सुलह होते ही अमरीकी राजदूत फ़ौजी और आर्थिक सहायता की थैलियां लेकर सत्ताधीशों के पास पहुंचने लगे हैं. मिस्र के मीडो में न शामिल होने से अभी तक मीडो बन नहीं सका. अमरीका वालों ने मिस्र पर बहुत ज़ोर डाला पर उन्होंने देखा कि जब तक बरतानिया स्वेज़ नहर नहीं छोड़ता मिस्र क़ाबू में नहीं आने का. मिस्र छोड़ने का कारन श्री चर्चिल ने यह बताया है कि ऐटम बम की लड़ाई में स्वेज़ का कोई उपयोग नहीं है. लेकिन लगता है इस तुरन्त सुलह के पीछे कोई दूसरा भेद है. वाशिंगटन में आइज़नहावर ने चर्चिल पर ज़ोर दिया कि वह मिस्र से समझौता कर लें. चर्चिल को झुकना पड़ा. ख़ुलासा यह है कि जिन परिस्थितियों में यह समझौता हुआ है वह ख़तरे की सूचक हैं.

हम आशा करते हैं कि मिस्र सतर्क रहेगा और न तो अपनी आज़ादी को दोबारा ख़तरे में पड़ने देगा और न बुरी से बुरी परिस्थिति में भी मीडो में शामिल होकर एशिया के दूसरे देशों की आज़ादी को ख़तरे में डालेगा.

30.7.'54 —मुजीब रिज़वी

امریکہ کوشش کر رہا تھا کیونکہ بنا انگریزی فوجوں کے سوئز نہر سے ہٹے مصر میڈو کے سمبندھ میں سوچنے پر تیار نہیں تھا. شاید امریکہ کو یہ امید بندھی ہے کہ مصر صلح کے بعد میڈو میں شامل ہوجائیگا.

صلح کی ایک شرط یہ ہے کہ یدی ترکی پر کوئی حملہ ہوگا تو نہر سوئز میں انگریز فوجیں پھر آجائینگی. یہ بہت خطرناک شرط ہے. ترکی میڈو میں ہے اور میڈو روس کے خلاف ایک فوجی سنگٹھن ہے جس کے جنم داتا امریکی ہیں. امریکہ والے جھوٹ موٹ کے حملے کا بونڈر کھڑا کرنے میں ماہر ہیں. کوریا کی مثال سامنے ہے. اس طرح جب بھی امریکہ کا من سوئز پر قبضہ کرانے کا چاہے گا وہ ترکی پر حملے کی کہانی گڑھے گا اور برطانی فوجیں پھر مصر کی چھاتی پر چڑھ بیٹھیں گی. بات چیت کے بیچ انگریزوں نے زور دیا تھا کہ مصر یہ بات مان لے کہ یدی ایران پر حملہ ہوگا تو برطانی فوجیں پھر نہر سوئز میں آجائینگی. پر مصر نے اس بات کو نہیں مانا اور انگریزی مانگ پر ڈٹے رہے. اس سمبندھ میں ترکی اور ایران میں کیول اتنا انتر ہے کہ ترکی میڈو کا ممبر ہے اور ایران ہونے جا رہا ہے. اگر کل ایران پر حملہ ہوا تو ترکی میڈو کا ممبر ہونے کے ناتے میدان میں آئیگا. تب برطانی فوجیں سوئز میں آجائیں گی. اس طرح مصر کی آزادی کو ہر دم خطرہ بنا رہتا ہے. اس لئے مصر کی آزادی کی خوشی مناتے سمے ہم چنتت بھی ہیں.

ایک بات کا خطرہ اور دکھائی پڑ رہا ہے. کھٹکا ہے کہیں مصر میڈو میں نہ شامل ہوجائے. کیونکہ صلح ہوتے ہی امریکی راجدوت فوجی اور آرتھک سہائتا کی تھیلیاں لیکر ستادھیشوں کے پاس پہونچنے لگے ہیں. مصر کے میڈو میں نہ شامل ہونے سے ابھی تک میڈو بن نہیں سکا. امریکہ والوں نے مصر پر بہت زور ڈالا پر انہوں نے دیکھا کہ جب تک برطانیہ سوئز نہر نہیں چھوڑتا مصر قابو میں نہیں آنیکا. مصر چھوڑنے کا کارن شری چرچل نے یہ بتایا ہے کہ ایٹم بم کی لڑائی میں سوئز کا اوپیوگ نہیں ہے. لیکن لگتا ہے اس ترنت صلح کے پیچھے کوئی دوسرا بھید ہے. واشنگٹن میں آئزن ہاور نے چرچل پر زور دیا کہ وہ مصر سے سمجھوتا کرلیں. چرچل کو جھکنا پڑا. خلاصہ یہ ہے جن پرستھتیوں میں یہ سمجھوتہ ہوا ہے وہ خطرے کی سوچک ہیں.

ہم آشا کرتے ہیں کہ مصر سترک رہے گا اور نہ تو اپنی آزادی کو دوبارہ خطرے میں پڑنے دے گا اور نہ بری سے بری پرستھتی میں بھی میڈو میں شامل ہوکر ایشیا کے دوسرے دیشوں کی آزادی کو خطرے میں نہیں ڈالے گا.

— مجیب رضوی 30.7.54

इन्हें देनी पड़ीं. मिस्र को जग़लोलपाशा ऐसे महान पुरुष मिल गए और उनकी शक्ति के सामने अंग्रेज़ों को अधिक झुकना पड़ा. 1922 में मिस्र का अपना राजा हो गया और उसकी अपनी पार्लियामेन्ट बन गई. इसका मतलब यह नहीं था कि मिस्र आज़ाद हो गया था, ग़ुलामी ने केवल रूप बदल लिया था. अंग्रेज़ अब भी पूरी तरह से हावी थे, फ़ारूक़ के समय तक वह मिस्र के मामलों में हावी रहे. लेकिन अंग्रेज़ों का विरोध भी लगातार बढ़ता रहा. मिस्र में बड़े बड़े पाशा हैं, यह लोग ज़मींदार होते हैं. ज़मींदारों के ख़ून में साज़िश होती है. इसीलिये यहां बहुत सी सरकारें बनती बिगड़ती रहीं. लेकिन जो भी सरकार आई उसने अंग्रेज़ों के मिस्र छोड़ने पर ज़ोर दिया.

अंग्रेज़ स्वेज़ नहर पर क़ब्ज़ा रखना चाहते थे क्योंकि पूरबी ऐशिया के देशों पर वह उसी सूरत में राज कर सकते थे. लेकिन मिस्र वाले अंग्रेज़ फ़ौजों की वापसी की मांग कर रहे थे. अंग्रेज़ मिस्रियों को बहलाना चाहते थे और इस मांग को दबाने के लिये फ़ारूक़ साहब को इस्तेमाल करते थे. लेकिन जनता में जोश बहुत था और नतीजा फ़ारूक़ के गद्दी से हटाए जाने में निकला.

अंग्रेज़ों को शायद उम्मीद थी कि नजीब सरकार बहुत दिन नहीं चल सकेगी. ,वह अपनी साज़िशों पर भी निर्भर करते थे. लेकिन उनकी उम्मीद के ख़िलाफ़ नजीब सरकार ख़तम होने के बजाए मज़बूत होती गई और साथ ही लोगों में अंग्रेज़ों का विरोध भी बढ़ता गया. अंग्रेज़ों ने सुलह की बात चीत शुरू की. पर उसी दरमियान में करनल नासिर और प्रेसीडेन्ट नजीब के झगड़े खड़े हो गए. अंग्रेज़ों को एक बार फिर उम्मीद बंधी कि यह सरकार ख़तम हो जाएगी. लेकिन इस बार भी उनकी आशा पूरी न हुई. कई बार सुलह होने लगी लेकिन अंग्रेज़ों ने इसी उम्मीद पर सुलह न की. इस गड़बड़ में कनज़र-वेटिव पार्टी के नेताओं का भी हाथ था. वह लोग अपनी सरकार को सुलह न करने पर मजबूर करते थे. लेबर पार्टी का भी एक अंग कनज़रवेटिव नेताओं से मिल गया था. कहा जाता है कि इडेन साहब हमेशा सुलह के हक़ में थे. और जब जब चर्चिल साहब को वह तैयार करते थे, पार्टी वाले विरोधी चर्चिल साहब को झुका लेते थे.

लेकिन इस बार इडेन साहब ने चर्चिल साहब को सुलह करने पर तैयार कर ही लिया. इसका श्रेय किसको है? इस प्रश्न पर बहुत से लोग अटकते हैं. ऐसा लगता है कि जहां इडेन साहब हार गए थे वहां डलेस साहब जीत गए हैं. उन्होंने चर्चिल पर ज़ोर डाला कि वह सुलह कर लें और उन्होंने सुलह कर ली. ज़ाहिर है कि इस सुलह की

انہیں دینی پڑیں ۔ مصر کو ذغلول پاشا ایسے مہان پرش مل گئے اور ان کی شکتی کے سامنے انگریزوں کو ادھک جھکنا پڑا ۔ 1922 میں مصر کا اپنا راجا ہوگیا اور اسکی اپنی پارلیمینٹ بن گئی ۔ اس کا مطلب یہ نہیں تھا کہ مصر آزاد ہوگیا تھا' غلامی نے کیول روپ بدل لیا تھا ۔ انگریز اب بھی پوری طرح حاوی تھے' فاروق کے سمے تک وہ مصر کے معاملوں میں حاوی رہے ۔ لیکن انگریزوں کا ورودھ بھی لگاتار بڑھتا رہا ۔ مصر میں بڑے بڑے پاشا ہیں ۔ یہ لوگ زمیندار ہوتے ہیں ۔ زمینداروں کے خون میں سازش ہوتی ہے ۔ اس لئے یہاں بہت سی سرکاریں بنتی بگڑتی رہیں ۔ لیکن جو بھی سرکار آئی اس نے انگریزوں کے مصر چھوڑنے پر زور دیا ۔

انگریز سویز نہر پر قبضہ رکھنا چاہتے تھے کیونکہ پوربی ایشیا کے دیشوں پر وہ اسی صورت میں راج کرسکتے تھے ۔ لیکن مصر والے انگریز فوجوں کی واپسی کی مانگ کر رہے تھے ۔ انگریز مصریوں کو بہلانا چاہتے تھے اور اس مانگ کو دبانے کے لئے فاروق صاحب کو استعمال کرتے تھے ۔ لیکن جنتا میں جوش بہت تھا اور نتیجہ فاروق کے گدی سے ہٹائے جانے میں نکلا ۔

انگریزوں کو شاید امید تھی کہ نجیب سرکار بہت دن نہیں چل سکے گی ۔ وہ اپنی سازشوں پر بھی نربھر کرتے تھے ۔ لیکن ان کی امید کے خلاف نجیب سرکار ختم ہونے کے بجائے مضبوط ہوتی گئی اور ساتھ ہی لوگوں میں انگریزوں کا ورودھ بھی بڑھتا گیا ۔ انگریزوں صلح کی بات چیت شروع کی ۔ پر اسی درمیان میں کرنل ناصر اور پریسیڈینٹ نجیب کے جھگڑے کھڑے ہو گئے ۔ انگریزوں کو ایک بار پھر امید بندھی کہ یہ سرکار ختم ہوجائے گی ۔ لیکن اس بار بھی ان کی آشا پوری نہ ہوئی ۔ کئی بار صلح ہونے لگی لیکن انگریزوں نے اسی امید پر صلح نہ کی ۔ اس گڑبڑ میں کنزرویٹو پارٹی کے نیتاؤں کا بھی ہاتھ تھا ۔ یہ لوگ اپنی سرکار کو صلح نہ کرنے پر مجبور کرتے تھے ۔ لیبر پارٹی کا بھی ایک انگ کنزرویٹو نیتاؤں سے مل گیا تھا ۔ کہا جاتا ہے کہ ایڈن صاحب ہمیشہ صلح کے حق میں تھے اور جب جب چرچل صاحب کو وہ تیار کرتے تھے' پارٹی والے ورودھی چرچل صاحب کو جھکا لیتے تھے ۔

لیکن اس بار ایڈن صاحب نے چرچل صاحب کو صلح کرنے پر تیار کر ہی لیا ۔ اس کا شریہ کس کو ہے ؟ اس پرشن پر بہت سے لوگ اٹکتے ہیں ۔ ایسا لگتا ہے کہ جہاں ایڈن صاحب ہار گئے تھے وہاں ڈلیس صاحب جیت گئے ہیں ۔ انہوں نے چرچل پر زور ڈالا کہ وہ صلح کرلیں اور انہوں نے کرلی ۔ ظاہر ہے کہ اس صلح کی

हालत में हम इस नतीजे पर पहुंच सकते हैं कि हमारे वैज्ञानिक महज़ पच्छिमी वैज्ञानिकों के नक़्शों की नक़ल उतारना जानते हैं और खुद कोई काम ही नहीं कर सकते.

यह एक बहुत सख्त राय है. हम खुद इस राय से न इत्तफ़ाक़ करते हैं और न करना चाहते हैं. लेकिन अगर वनस्पति को रंगने के लिये जो सरकारी हुक्म है उसे वह पूरा नहीं कर सके हैं तो इसके अलावा किसी दूसरे नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता. लेकिन हमारे वैज्ञानिकों की नाकामयाबी की एक वजह ज़रूर हमारी समझ में आती है. वह यह कि बड़े ब्योपारियों ने दबाव डाला हो. इसे कौन नहीं जानता कि वनस्पति के रंग दिये जाने पर उसकी पहचान आसानी से की सकेगी और फिर घी की मिलावट एकदम बन्द हो जायेगी. इसका असर वनस्पति के कारोबार पर भी पड़ सकता है. इस तरह यह मुमकिन हो सकता है कि वनस्पति के कारखाने वालों ने हमारे वैज्ञानिकों के आगे रोड़े डाल दिये हों. लेकिन अगर यह सही बात है तब हमारे वैज्ञानिकों का फ़र्ज़ है कि इस बात को खुले आम ज़ाहिर कर दें और अपनी आबरू पर पानी न पड़ने दें. अगर सरकार की जानकारी या ग़ैर जानकारी में वनस्पति को मिल वाले हमारे वैज्ञानिकों की मेहनत को बेकार बना रहे हैं तो विज्ञान के नाम पर उनको चाहिये कि दुनिया को बतादें कि यह असलियत है जो वनस्पति को रंगने से रोक रही है. अगर हमारे वैज्ञानिक ऐसा नहीं करते हैं तो एक तरफ़ से सरकार उन्हें बदनाम करेगी जिस तरह फ़ाइनेन्स मिनिस्टर ने पालियामेन्ट में किया और दूसरी तरफ़ से वह जनता का विश्वास खोएंगे. आज़ाद और नौजवान हिन्दुस्तान के वैज्ञानिकों का एक फ़र्ज़ सब फ़र्ज़ों से ऊपर है और वह है अपने अन्तःकरन या ईमान के प्रति सच्चा और वफ़ादार होना.

14. 6. '54 —सुरेशराम भाई

حالت میں ہم اس نتیجے پر پہونچ سکتے ہیں کہ ہمارے ویگیانک محض پچھمی ویگیانکوں کے نقشوں کی نقل اُتارنا جانتے ہیں اور خود کوئی کام ہی نہیں کر سکتے .

یہ ایک بہت سخت رائے ہے. ہم خود اس رائے سے نہ اتفاق کرتے ہیں اور نہ کرنا چاہتے ہیں. لیکن اگر ونسپتی کو رنگنے کے لئے جو سرکاری حکم ہے اسے وہ پورا نہیں کرسکے ہیں تو اس کے علاوہ کسی دوسرے نتیجے پر نہیں پہونچا جا سکتا . لیکن ہمارے ویگیانکوں کی ناکامیابی کی ایک وجہ ضرور ہماری سمجھ میں آتی ہے . وہ یہ کہ بڑے بیوپاریوں نے دباؤ ڈالا ہو . اسے کون نہیں جانتا کہ ونسپتی کے رنگ دیئے جانے پر اس کی پہچان آسانی سے کی جا سکے گی اور پھر گھی کی ملاوٹ ایکدم بند ہو جائے گی . اس کا نتیجہ ونسپتی کے کاروبار پر بھی پڑ سکتا ہے . اس طرح ممکن ہو سکتا ہے کہ ونسپتی کے کارخانہ والوں نے ہمارے ویگیانکوں کے آگے روڑے ڈال دیئے ہوں. لیکن اگر یہ صحیح بات ہے تب ہمارے ویگیانکوں کا فرض ہے کہ اس بات کو کھلے عام ظاہر کر دیں اور اپنی آبرو پر پانی نہ پڑنے دیں . اگر سرکار کی جانکاری یا غیر جانکاری میں ونسپتی کی مل والے ہمارے ویگیانکوں کی محنت کو بیکار بنا رہے ہیں تو وگیان کے نام پر ان کو چاہیئے کہ دنیا کو بتا دیں کہ یہ اصلیت ہے جو ونسپتی کو رنگنے سے روک رہی ہے . اگر ہمارے ویگیانک ایسا نہیں کرتے ہیں تو ایک طرف سے سرکار انہیں بدنام کریگی جس طرح فائننس منسٹر نے پارلیامنٹ میں کیا اور دوسری طرف سے وہ جنتا کا وشواس کھوئیں گے . آزاد اور نوجوان ہندستان کے ویگیانکوں کا ایک فرض سب فرضوں سے اوپر ہے اور وہ ہے اپنے انتہ کرن یا ایمان کے پرتی سچا اور وفادار ہونا .

—سریش رام بھائی 14. 6. '54

मिस्र और बरतानिया का समझौता

मिस्र और बरतानिया का झगड़ा 1882 से शुरू होता है जब बरतानिया ने फ्रांस के साथ मिल कर मिस्र पर हमला किया था. कुछ दिनों अंग्रेज़ और फ्रांसीसी साथ रहे और बाद में समझौता कर के मिस्र पर अंग्रेज़ों ने क़ब्ज़ा जमा लिया और मराको और अलजीरिया पर फ्रांसीसी राज करने लगे. यह दोनों विदेशी ताक़तें कभी भी इन देशों की जनता का दिल नहीं जीत पाईं. जनता के आन्दोलनों से मजबूर होकर समय-समय पर रियायतें

مصر اور برطانیہ کا سمجھوتا

مصر اور برطانیہ کا جھگڑا 1882 سے شروع ہوتا ہے جب برطانیہ نے فرانس کے ساتھ ملکر مصر پر حملہ کیا تھا . کچھ دنوں انگریز اور فرانسیسی ساتھ رہے اور بعد میں سمجھوتہ کر کے مصر پر انگریزوں نے قبضہ جما لیا اور مراکو اور الجیریا پر فرانسیسی راج کرنے لگے . یہ دونوں ودیشی طاقتیں کبھی بھی ان دیشوں کی جنتا کا دل نہیں جیت پائیں . جنتا کے آندولنوں سے مجبور ہوکر سمے سمے پر رعایتیں

आम लोगों की सेहत गिरने के अलावा सच्चे घी का कारोबार व सनअत ठप हो रहे हैं. अपने जवाब में हमारे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर ने कहा कि "वनस्पति को रंग देने की बात सरकार ने मान ली है. मगर दिक़्क़त यही है कि कोई ऐसी मुनासिब चीज़ अब तक नहीं मिली है जो वनस्पति को रंग भी दे और खुद उसका रंग कभी कोई मिटा न सके."

बड़ी ख़ुशी की बात है कि मुल्क व्यापी वनस्पति के बारे में मांग को हमारी सरकार ने क़बूल कर लिया है. मगर इस पर यक़ीन मुश्किल से आता है कि वनस्पति को रंग देने के लिये मुनासिब चीज़ अब तक नहीं मिल सकी. आसानी से दिया जा सकने वाला और बेगुनाह पीला रंग बिना किसी दुशवारी के हल्दी से हासिल किया जा सकता है. हमें मालूम हुआ है कि बंगाल के मशहूर साइन्सदां और पुराने ग्राम सेवक डाक्टर सतीश चन्द्रदास गुप्ता ने चुनौती के साथ ऐलान किया है कि वनस्पति के रंग देने की चीज़ न मिल सकने की बात ग़लत है. उनका दावा है कि यह काम बख़ूबी अन्जाम दिया जा सकता है. लेकिन नक़्क़ारख़ाने में तूती की कौन सुनता है. सरकार ने उनकी बात अनसुनी कर दी और वनस्पति दिन दूनी रात चौगुनी रफ़्तार से हमारे घरों, शहरों और क़स्बों को तबाह कर रहा है.

अगर सरकार को सचमुच इस बात की फ़िक्र है कि वनस्पति को रंगा जाये तो वह यह काम सतीश बाबू के सिपुर्द कर सकती है और फिर उनके काम की जांच अपने ऐक्सपर्टों और माहिरों से करा सकती है. या वह अपनी मिनिस्टरी आफ साइन्टिफिक रिसोरसेज़ (Ministry of Scientific Resorucces) को हुक्म दे सकती है कि फलां मुद्दत के अन्दर यह काम कर डालना है. हमारा ख्याल है कि सरकार यह काम मजे में करा सकती है क्योंकि उसके मातहत सारे मुल्क में खोज और रिसर्च करने की लैब्रेट्रियां हैं जहां पर यह तक सोचा जा रहा है कि ऐटम की ताक़त को शान्ति के काम में किस तरह लाया जाये. इतने बड़े काम के सामने वनस्पति को रंगने का काम तो बहुत छोटा मालूम पड़ता है. लेकिन अगर सरकारी लैब्रेट्रियां यह काम नहीं कर पाती हैं तो फिर कौन यक़ीन करेगा कि वह कोई और बड़ा काम ठीक तरह से कर सकेंगी. अगर वाक़ई हमारे देश के वैज्ञानिक और माहिर लोग वनस्पति के रंगने के काम में फ़तह नहीं पा सके हैं तब तो हमें उनकी अक़्ल व क़ाबलियत व जफ़ाकशी के बारे में दोबारा सोचना पड़ेगा और हमारा ख्याल है कि फिर इंजीनियरिंग व फ़ौजी वग़ैरा महकमों में तो वह और भी नाकारा साबित होंगे. ऐसी

عام لوگوں کی صحت گرنے کے علاوہ سچے گھی کا کاروبار و صنعت ٹھپ ہو رہے ہیں۔ اپنے جواب میں ہمارے فائیننس منسٹر نے کہا کہ "ونسپتی کو رنگ دینے کی بات سرکار نے مان لی ہے۔ مگر دقت یہی ہے کہ کوئی ایسی مناسب چیز اب تک نہیں ملی ہے جو ونسپتی کو رنگ بھی دے سکے اور خود اسکا رنگ کبھی کوئی مٹا نہ سکے۔"

بڑی خوشی کی بات ہے کہ ملک ویاپی ونسپتی کے بارے میں مانگ کو ہماری سرکار نے قبول کرلیا ہے۔ مگر اس پر یقین مشکل سے آتا ہے کہ ونسپتی کو رنگ دینے کے لئے مناسب چیز اب تک نہیں مل سکی۔ آسانی سے دیا جا سکنے والا اور بیگناہ پیلا رنگ بنا کسی دشواری کے ہلدی سے حاصل کیا جاسکتا ہے۔ ہمیں معلوم ہوا ہے کہ بنگال کے مشہور سائنسداں اور پرانے گرام سیوک ڈاکٹر ستیش چندر داس گپتا نے چنوتی کے ساتھ اعلان کیا ہے کہ ونسپتی کو رنگ دینے کی چیز نہ مل سکنے کی بات غلط ہے۔ ان کا دعوی ہے کہ یہ کام بخوبی انجام دیا جاسکتا ہے۔ لیکن نقارخانہ میں طوطی کی کون سنتا ہے۔ سرکار نے انکی بات ان‌سنی کردی اور ونسپتی دن دونی رات چوگنی رفتار سے ہمارے گھروں، شہروں اور قصبوں کو تباہ کر رہا ہے۔

اگر سرکار کو سچ مچ اس بات کی فکر ہے کہ ونسپتی کو رنگا جائے تو وہ یہ کام ستیش بابو کے سپرد کرسکتی ہے اور پھر ان کے کام کی جانچ اپنے ایکسپرٹوں اور ماہروں سے کراسکتی ہے۔ یا وہ اپنی منسٹری آف سائینٹیفک ریسورسیز (Ministry of Scientific Resources) کو حکم دے سکتی ہے کہ فلاں مدت کے اندر یہ کام کر ڈالنا ہے۔ ہمارا خیال ہے کہ سرکار یہ کام مزے میں کراسکتی ہے کیونکہ اس کے ماتحت سارے ملک میں بھی کھوج اور ریسرچ کرنے کی لیبریٹریاں ہیں جہاں پر یہ تک سوچا جا رہا ہے کہ ایٹم کی طاقت کو شانتی کے کام میں کس طرح لیا جائے۔ اتنے بڑے کام کے سامنے ونسپتی کو رنگنے کا کام تو بہت چھوٹا معلوم پڑتا ہے۔ لیکن اگر سرکاری لیبریٹریاں یہ کام نہیں کر پاتی ہیں تو پھر کون یقین کریگا کہ وہ کوئی اور بڑا کام ٹھیک طرح سے کر سکینگی۔ اگر واقعی ہمارے دیش کے ویگیانک اور ماہر لوگ ونسپتی کے رنگنے کے کام میں فتح نہیں پا سکے ہیں تب تو ہمیں ان کی عقل و قابلیت و جفاکشی کے بارے میں دوبارہ سوچنا پڑیگا اور ہمارا خیال ہے کہ پھر انجینیرنگ و فوجی وغیرہ محکموں میں تو وہ اور بھی ناکارہ ثابت ہونگے۔ ایسی

पर कोई समझदार आदमी कैसे पहुंच सकता है कि जिसको जितना ग़ल्ला चाहिये उतना मिलने लगा. आज भी हिन्दुस्तान में हज़ारों लाखों को भर पेट भोजन क्या एक जून भी ठीक से खाना नहीं मिलता. और अगर इसका सबूत ही चाहिये तो नई दिल्ली स्टेशन से दिल्ली स्टेशन तक पैदल चल कर मज़े में हासिल किया जा सकता है. दूर की बात छोड़ दें, रेल की पटरी के पास वह तकलीफ़देह नज़्ज़ारे देखने को मिलेंगे जिन से साफ़ पता चल जायेगा कि फ़ाइनेन्स मिनिस्टर साहब कहां तक सच बोल रहे हैं. या फिर दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता या मद्रास के होटलों के आगे जूठन के ढेरों को देखिये जहां इन्सान की औलाद, कुत्ता और कौए अपने अपने हिस्से के लिये लड़ते दीखते हैं. या उनको जाने दें. अपने पढ़े लिखे नौजवानों को लें. उनके बारे में तो सरकारी रिपोर्टें ख़ुद ही बताती हैं कि वह बेरोज़गारी के शिकार हैं और कोई सूरत उनके काम से लगने की नहीं पैदा हो रही है.

इसके अलावा हर आदमी यह जानता है कि अनाज या कोई चीज़ पैदा करना एक बात है मगर उसका तक़सीम हो जाना, और ठीक तक़सीम हो जाना, बिल्कुल दूसरी बात है. पैदा होने पर ही यह नहीं कहा जा सकता कि जिसको जितना मिलना चाहिये उतना मिल गया. अगर ऐसा हुआ करता तो शायद इस दुनिया की शकल ही कुछ दूसरी होती और ग़रीब अमीर में या मालिक मज़दूर में आज ज़मीन आसमान जैसे फ़र्क़ न होते.

हमें अफ़सोस है कि फ़ाइनेन्स मिनिस्टर जैसी ज़िम्मेदार हस्ती इस तरह का प्रचार करे. हम बड़े अदब के साथ यह कहना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के सब मिनिस्टर मिल कर भी अगर असलियत छुपा कर ग़लत बात के प्रचार में लग जायें तो भी उनकी मेहनत उसी तरह बेकार साबित होगी जैसे बहते पानी के आगे बालू की दीवार खड़ी करना. इसके ख़िलाफ़ अगर हालत असलियत में अच्छी है तो मुश्क की तरह उसका असर ख़ुद बख़ुद फैलेगा और कोई प्रचार की ख़ास ज़रूरत नहीं पड़ेगी. आज़ाद व नये हिन्दुस्तान की बुनियाद झूठे प्रचार के बजाय सच्ची असलियत पर खड़ी करना हर इन्सान का फ़र्ज़ है, पर अगर वह मिनिस्टर है तब तो और भी ज़्यादा.

28. 6. '54 —सुरेशराम भाई

वनस्पति और हमारे वैज्ञानिक

पार्लियामेन्ट के पिछले बजट इजलास में वनस्पति घी पर भी कुछ चर्चा चली. पीलीभीत की रानी चन्द्रावती लखनपाल ने उसे नुक़सानदह बताया और कहा कि उससे

پر کوئی سمجھدار آدمی کیسے پہونچ سکتا ہے کہ جس کو جتنا غلہ چاہئے اتنا ملنے لگا۔ آج بھی ہندستان میں ہزاروں لاکھوں کو بھر پیٹ بھوجن کیا ایک جون بھی ٹھیک سے کھانا نہیں ملتا۔ اور اگر اس کا ثبوت ہی چاہئے تو نئی دلی اسٹیشن سے دلی اسٹیشن تک پیدل چل کر مزے میں حاصل کیا جا سکتا ہے۔ دور کی بات چھوڑ دیں' ریل کی پٹری کے پاس وہ تکلیف‌دہ نظارے دیکھنے کو ملینگے جن سے صاف پتہ چل جائے گا کہ فائننس منسٹر صاحب کہاں تک سچ بول رہے ہیں۔ یا پھر دلی' بمبئی' کلکتہ یا مدراس کے ہوٹلوں کے آگے جوٹھن کے ڈھیروں کو دیکھئے جہاں انسان کی اولاد' کتا اور کوئے اپنے اپنے حصے کے لئے لڑتے دیکھتے ہیں۔ یا ان کو جانے دیں۔ اپنے پڑھے لکھے نوجوانوں کو لیں۔ ان کے بارے میں تو سرکاری رپورٹیں خودہی بتاتی ہیں کہ وہ بےروزگاری کے شکار ہیں اور کوئی صورت ان کے کام سے لگنے کی نہیں پیدا ہو رہی ہے۔

اس کے علاوہ ہر آدمی یہ جانتا ہے کہ اناج یا کوئی چیز پیدا کرنا ایک بات ہے مگر اس کا تقسیم ہو جانا' اور ٹھیک تقسیم ہو جانا' بالکل دوسری بات ہے۔ پیدا ہونے پر ہی یہ نہیں کہا جا سکتا کہ جسکو جتنا ملنا چاہئے اتنا مل گیا۔ اگر ایسا ہوا کرتا تو شاید اس دنیا کی شکل ہی کچھ دوسری ہوتی اور غریب امیر میں یا مالک‌مزدور میں آج زمین آسمان کے جیسے فرق نہ ہوتے۔

ہمیں افسوس ہےکہ فائننس منسٹر جیسی ذمہ‌دار ہستی اس طرح کا پرچار کرے۔ ہم بڑے ادب کے ساتھ یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ہندستان کے سب منسٹر مل کر بھی اگر اصلیت چھپا کر غلط بات کے پرچار میں لگ جائیں تو بھی ان کی محنت اسی طرح بیکار ثابت ہوگی جیسے بہتے پانی کے آگے بالو کی دیوار کھڑی کرنا۔ اس کے خلاف اگر حالت اصلیت میں اچھی ہے تو مشک کی طرح اس کا اثر خود بخود پھیلے گا اور کوئی پرچار کی خاص ضرورت نہیں پڑیگی۔ آزاد و نئے ہندستان کی بنیاد جھوٹے پرچار کے بجائے سچی اصلیت پر کھڑی کرنا ہر انسان کا فرض ہے' پر اگر وہ منسٹر ہے تب تو اور بھی زیادہ۔

—سریش رام‌بھائی 28. 6. '54

ونسپتی اور ہمارے ویگیانک

پارلیامنٹ کے پچھلے بجٹ اجلاس میں ونسپتی گھی پر بھی کچھ چرچا چلی۔ پیلی بھیت کی رانی چندراوتی لکھنپال نے اسے نقصان‌دہ بتایا اور کہا کہ اس سے

है इफ़रात से खाना और कपड़ा होता था. मगर वाक़्या है कि अंग्रेज़ी अमलदारी के अन्दर हिन्दुस्तान में जितने अकाल, और एक से एक भयानक अकाल, पड़े इतने हमारे मुल्क के इतिहास में कभी नहीं पड़े. और आंकड़ों के लिहाज़ से यह भी आसानी से साबित किया जा सकता है कि हिन्दुस्तान के बाशिन्दों को रहने सहने के लिये मकान का बन्दोबस्त है.

मगर असलियत कुछ और ही है. मार्च 1953 में पार्लियामेन्ट के सामने एक बयान देते हुए मरकज़ी फ़ूड मिनिस्टर श्री रफ़ी अहमद क़िदवई ने कहा था कि इस साल 2 करोड़ 76 लाख से ज़्यादा यानी तीन करोड़ के लगभग आदमियों को ख़ूराक की तंगी का शिकार होना पड़ा. उन्होंने तफ़सील देते हुए बतलाया था:

सूबा	लाख में तादाद
मद्रास	85
बम्बई	60
मैसूर	43
राजस्थान	26
विंध्य प्रदेश	22
मध्य प्रदेश	15
हैदराबाद	14
मध्य भारत	8
सौराष्ट्र	3

उन्होंने यह भी कहा कि बिहार, पच्छिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में गये साल अकाल की हालतों से ज़्यादा परेशानी थी, मगर इस साल नहीं.

यह इत्तला रफ़ी साहब ने 12 मार्च 1953 को दी थी. इत्तफ़ाक़ की बात है कि उसी दिन बीकानेर शहर में राजस्थान फ़ैमीन कमिश्नर (Famine Commissioner) ने प्रेस नुमाइन्दों के सामने एक बयान में कहा कि इस साल बीकानेर डिवीज़न के दो तिहाई हिस्से की हालत बहुत ख़राब है और चार लाख से ऊपर आदमी अकाल की गिरफ़्त में हैं. उन्होंने यह भी बताया कि इसी तरह जोधपुर और उदयपुर डिविज़नों की हालत है जहां 18 लाख आदमी इस महामारी के शिकार हुए हैं.

भला कौन मान लेगा कि 1953-54 में हालत इतनी बदल गई कि हर एक को भर पेट खाना मिलने लगा. हमें यह भी नहीं भूलना है कि पंचसाला योजना जिसे कहा जाता है वह 1951 में शुरू हुई और यह अकाल उसके दूसरे साल में ही पड़ गये. यह हो सकता है कि फ़ाइनेन्स और फ़ूड मिनिस्ट्रियों को सूबों से ख़बर आ गई हो कि काफ़ी ग़ल्ला 1953-54 में पैदा हो गया है. मगर इस से इस नतीजे

میں ہندستان میں افراط سے کھانا اور کپڑا ہوتا تھا ۔ مگر واقعہ ہے کہ انگریزی عملداری کے اندر ہندستان میں جتنے اکال، اور ایک سے ایک بھیانک اکال، پڑے اتنے ہمارے ملک کے اتہاس میں کبھی نہیں پڑے ۔ اور آنکڑوں کے لحاظ سے یہ بھی آسانی سے ثابت کیا جا سکتا ہے کہ ہندستان کے باشندوں کو رہنے سہنے کے لئے مکان کا بندوبست ہے ۔

مگر اصلیت کچھ اور ہی ہے ۔ مارچ 1953 میں پارلیامنٹ کے سامنے ایک بیان دیتے ہوئے مرکزی فوڈ منسٹر شری رفیع احمد قدوئی نے کہا تھا کہ اس سال 2 کروڑ 76 لاکھ سے زیادہ یعنی تین کروڑ کے لگ بھگ آدمیوں کو خوراک کی تنگی کا شکار ہونا پڑا۔ انہوں نے تفصیل دیتے ہوئے بتلایا تھا :

صوبہ	لاکھ میں تعداد
مدراس	85
بمبئی	60
میسور	43
راجستھان	26
وندھیہ پردیش	22
مدھیہ پردیش	15
حیدرآباد	14
مدھیہ بھارت	8
سوراشٹر	3

انہوں نے یہ بھی کہا کہ بہار، پچھم بنگال اور اتر پردیش میں گئے سال اکال کی حالتوں سے زیادہ پریشانی تھی، مگر اس سال نہیں ۔

یہ اطلاع رفیع صاحب نے 12 مارچ 1953 کو دی تھی ۔ اتفاق کی بات ہے کہ اسی دن بیکانیر شہر میں راجستھان فیمین کمشنر (Famine Commissioner) نے پریس نمائندوں کے سامنے ایک بیان میں کہا کہ اس سال بیکانیر ڈویژن کے دو تہائی حصے کی حالت بہت خراب ہے اور چار لاکھ سے اوپر آدمی اکال کی گرفت میں ہیں ۔ انہوں نے یہ بھی بتایا کہ اسی طرح جودھپور اور اودے پور ڈویژنوں کی حالت ہے جہاں 18 لاکھ آدمی اس مہاماری کے شکار ہوئے ہیں ۔

بھلا کون مان لے گا کہ 1953-54 میں حالت اتنی بدل گئی کہ ہر ایک کو بھر پیٹ کھانا ملنے لگا۔ ہمیں یہ بھی نہیں بھولنا ہے کہ پنچ سالہ یوجنا جسے کہا جاتا ہے وہ 1951 میں شروع ہوئی اور یہ اکال اس کے دوسرے سال میں ہی پڑ گئے ۔ یہ ہو سکتا ہے کہ فائننس اور فوڈ منسٹریوں کو صوبوں سے خبر آ گئی ہو کہ کافی غلہ 1953-54 میں پیدا ہو گیا ہے ۔ مگر اس سے اس نتیجے

निकल पड़ते हैं. इस तक़रीर में जो स्पीचें वह जगह जगह देते हैं उनमें असलियत की जगह प्रचार की ज़्यादा महक आती है. अकसर तक़रीरों में एक ख़तरनाक संतोश रहता है और बाज़ में अजीब व ग़रीब जानकारी भरी होती है. यह सब ख़ुसूसियत हमें केन्द्री फ़ाइनेन्स मिनिस्टर की एक स्पीच में मिलीं जिसकी तरफ़ हम अपने प्रेमी पाठकों का ध्यान खींचना चाहते हैं.

यह भाशन श्री चिन्तामन देशमुख ने 25 मई को दिया जब वह बम्बई में रिज़र्व बैंक आफ़ इन्डिया के मुलाज़िमों के रहने के लिये दो करोड़ रुपये के ख़र्च से बनी एक बस्ती का उद्‌घाटन कर रहे थे. उन्होंने अपनी तक़रीर के दौरान में जो लफ़्ज़ कहे उसके कुछ हिस्से का अनुवाद हम नीचे दे रहे हैं:

"लोगों की दो बुनियादी ज़रूरतों—खाने और कपड़े—का मुनासिब व वाजिब इन्तज़ाम हमारी पहली पंचसाला योजना में हो गया. मेरा ख़याल है कि अब दूसरी पंचसाला योजना में ज़रूरत इस बात की है कि रहाइश या मकान बनाने के काम पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाये. इसमें शहरों के अन्दर मकानों पर ज़्यादा तवज्जह दी जाये ताकि शहरों में जो खींचा-तानी है उसमें कमी आये और नये सलम (Slum) या गन्दी बस्तियां वजूद में न आ सकें. (स्टेट्समैन मई 27)

श्री देशमुख के कहने का मन्शा यह है कि हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर रहने वाले हर इन्सान नाम के हर प्रानी को अब ज़रूरत के लायक़ खाना और कपड़ा मिलने लगा है. यानी सब बरसरे रोज़गार हैं या नौकरी में हैं और खाने पहनने की कोई तकलीफ़ किसी को नहीं है. और श्री देशमुख यह भी जताना चाहते हैं कि यह कमाल सरकार की बनाई पंचसाला योजना की करामात है.

हमें नहीं मालूम कि हमारे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर जैसे जानकार व ज़िम्मेदार आदमी इस नतीजे पर किस तरह पहुंच गये. शायद वह आंकड़ों के बल पर ऐसा कह बैठे हैं. इधर कई बरस से आज़ाद भारत में अनाज बाहर से आ रहा था. मगर सरकारी रिपोर्ट है कि इस साल से अनाज आना बन्द हो गया है. बल्कि यहां तक ख़बर है कि सरकार चावल बाहर भी भेजने वाली है या भेज रही है. ज़रा देर के लिये हम यह मान लें कि यह आंकड़े सही हैं और हिन्दुस्तान में काफ़ी ग़ल्ला पैदा होने लगा है. मगर इससे कोई यह नतीजा कैसे निकाल सकता है कि हिन्दुस्तान के 36 करोड़ बाशिन्दों को ज़रूरत के लायक़, भर पेट भोजन मिलने लगा. अगर आंकड़े के बल पर ही राय क़ायम करनी है तब तो अंग्रेज़ भी कह सकते थे कि उनके ज़माने

نکل پڑتے ہیں. اس تقریر میں جو اسپیچیں وہ جگہ جگہ دیتے ہیں ان میں اصلیت کی جگہ پرچار کی زیادہ مہک آتی ہے. اکثر تقریروں میں ایک خطرناک سنتوش رہتا ہے اور بعض میں عجیب و غریب بھر جانکاری بھری ہوتی ہے. یہ سب خصوصیت ہمیں کیندری فائننس منسٹر کی ایک اسپیچ میں ملیں جسکی طرف ہم اپنے پریمی پاٹھکوں کا دھیان کھینچنا چاہتے ہیں.

یہ بھاشن شری چنتامن دیشمکھ نے 25 مئی کو دیا جب وہ بمبئی میں ریزرو بینک آف انڈیا کے ملازموں کے رہنے کے لئے دو کروڑ روپئے کے خرچ سے بنی ایک بستی کا ادگھاٹن کر رہے تھے. انہوں نے اپنی تقریر کے دوران میں جو لفظ کہے اس کے کچھ حصہ کا انوواد ہم نیچے دے رہے ہیں:

"لوگوں کی دو بنیادی ضرورتوں — کھانے اور کپڑے کا مناسب و واجب انتظام ہماری پہلی پنچ سالہ یوجنا میں ہوگیا. میرا خیال ہے کہ اب دوسری پنچ سالہ یوجنا میں ضرورت اس بات کی ہے کہ رہائش یا مکان بنانے کے کام پر زیادہ زور دیا جائے. اسمیں شہروں کے اندر مکانوں پر زیادہ توجہ دی جائے تاکہ شہروں میں جو کھینچا تانی ہے اسمیں کمی آئے اور نئے سلم (Slum) یا گندی بستیاں وجود میں نہ آسکیں." (اسٹیٹسمین مئی 27)

شری دیشمکھ کے کہنے کا منشا یہ ہے کہ ہندستان کی سرزمین پر رہنے والے ہر انسان نام کے ہر پرانی کو اب ضرورت کے لائق کھانا اور کپڑا ملنے لگا ہے. یعنی سب بر سر روزگار ہیں یا نوکری میں ہیں اور کھانے پہننے کی کوئی تکلیف کسی کو نہیں ہے. اور شری دیشمکھ یہ بھی جتانا چاہتے ہیں کہ یہ کمال سرکار کی بنائی پنچ سالہ یوجنا کی کرامات ہے.

ہمیں نہیں معلوم کہ ہمارے فائننس منسٹر جیسے جانکار و ذمہ دار آدمی اس نتیجہ پر کس طرح پہونچ گئے. شاید وہ آنکڑوں کے بل پر ایسا کہہ بیٹھے ہیں. ادھر کئی برس سے آزاد بھارت میں اناج باہر سے آرہا تھا. مگر سرکاری رپورٹ ہے کہ اس سال سے اناج آنا بند ہوگیا ہے. بلکہ یہاں تک خبر ہے کہ سرکار چاول باہر بھی بھیجنے والی ہے یا بھیج رہی ہے. ذرا دیر کے لئے ہم یہ مان لیں کہ یہ آنکڑے صحیح ہیں اور ہندستان میں کافی غلہ پیدا ہونے لگا ہے. مگر اس سے کوئی یہ نتیجہ کیسے نکال سکتا ہے کہ ہندستان کے 36 کروڑ باشندوں کو ضرورت کے لائق، بھر پیٹ بھوجن ملنے لگا. اگر آنکڑے کے بل پر ہی رائے قائم کرنی ہے تب تو انگریز بھی کہہ سکتے تھے کہ ان کے زمانہ

के भाइयों का काम केवल कांग्रेस को जिस तरह हो पटकी देना ही रह गया है? क्या इस से वह हिन्दुओं को बचा लेंगे? क्या हिन्दुओं को इन गंदे अंधविश्वासों और इन सड़े गले रीत रिवाजों में से निकालना या कम से कम निकालने की कोशिश करना उनका धर्म नहीं है? कांग्रेस के नेताओं और कांग्रेसी अफ़सरों के बारे में तो इस सम्बन्ध में हम अपनी लेखनी को रोक कर ही रक्खें तो अच्छा है. उन्होंने राज सत्ता हाथ में ले ली, बहुत बड़ा काम किया. अब उनका काम रह गया है केवल जिस तरह हो सके राजगद्दी संभाले रखना! हम इस घटना से केवल दो ही नतीजे निकाल सकते हैं :—

पहला यह कि इन बातों में लोगों के साथ किसी तरह की जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए. उनके यहां रोज़ जा कर धरना देना जिसे हम लोग 'सत्याग्रह' कहते हैं, वह भी ख़ास हालतों में, जबरदस्ती हो जाती है. लोगों को बीच बीच में ख़ुद सोचने का मौक़ा भी देना चाहिये. हां, उन्हें जाकर प्रेम से समझाना चाहिये, पर वह भी जब वह सुनने को तैयार हों. हमें विश्वास है कि लोगों को सोचने समझने का मौक़ा मिले तो वह आम तौर पर कार्यकर्ताओं से और नेताओं से ज्यादा समझदार होते हैं.

दूसरा यह कि इन अलग अलग धर्मों का ज़माना अब दुनिया से हमेशा के लिये उठ चुका. अब सांप निकल चुका केवल हम लकीरें पीट रहे हैं. दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी. अब दुनिया को सड़ी गली रूढ़ियों में फंसे हुए इन अलग अलग धर्मों की जगह एक ऐसे धर्म की ज़रूरत है, जिसमें कोई पूजा पाठ हो या न हो, ईश्वर पर विश्वास भी हो या न हो, लेकिन इनसानी बराबरी हो, मुहब्बत हो, नेकी हो, ईमानदारी हो, सच्चाई हो और इनसानियत हो. इन्सानी क़ौम की आगे की चढ़ाई बहुत टेढ़ी और कठिन पहाड़ की चढ़ाई है. सदियों का कचरा कमर पर बांध कर हम इस चढ़ाई को तय नहीं कर सकते. उस चढ़ाई को तय करने के लिये हमें अपने बोझ को हलका करना होगा और हिम्मत और उसूलों की निगाह से अपनी कमर को सीधा रखना होगा.

20. 7. '54 —सुन्दरलाल

کے بھائیوں کا کام کیول کانگریس کو جس طرح ہو پٹخنی دینا ہی رہ گیا ہے؟ کیا اس سے وہ ہندوؤں کو بچالینگے؟ کیا ہندوؤں کو اس گندے اندھ وشواسوں اور ان سڑے گلے ریت رواجوں میں سے نکالنا یا کم سے نکالنے کی کوشش کرنا ان کا دھرم نہیں ہے؟ کانگریس کے نیتاؤں اور کانگریسی افسروں کے بارے میں تو اس سمبندھ میں ہم اپنی لیکھنی کو روک کر ہی رکھیں تو اچھا ہے۔ انہوں نے راج ستا ہاتھ میں لے لی، بہت بڑا کام کیا۔ اب ان کا کام رہ گیا ہے کیول جس طرح ہو سکے راج گدی سنبھالے رکھنا! ہم اس گھٹنا سے کیول دو ہی نتیجے نکال سکتے ہیں :—

پہلا یہ کہ ان باتوں میں لوگوں کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی نہیں کرنی چاہئے۔ ان کے یہاں روز جاکر دھرنا دینا جیسے ہم لوگ 'ستیاگرہ' کہتے ہیں، وہ بھی خاص حالتوں میں، زبردستی ہو جاتی ہے۔ لوگوں کو بیچ بیچ میں خود سوچنے کا موقع بھی دینا چاہئے۔ ہاں، انہیں جاکر پریم سے سمجھانا چاہئے، پر وہ بھی جب وہ سننے کو تیار ہوں۔ ہمیں وشواس ہے کہ لوگوں کو سوچنے سمجھنے کا موقع ملے تو وہ عام طور پر کاریہ کرتاؤں سے اور نیتاؤں سے زیادہ سمجھدار ہوتے ہیں۔

دوسرا یہ کہ ان الگ الگ دھرموں کا زمانہ اب دنیا سے ہمیشہ کے لئے اٹھ چکا۔ اب سانپ نکل چکا، کیول ہم لکیریں پیٹ رہے ہیں۔ دنیا بہت آگے بڑھ چکی۔ اب دنیا کو سڑی گلی روڑھیوں میں پھنسے ہوئے ان الگ الگ دھرموں کی جگہ ایک ایسے دھرم کی ضرورت ہے، جس میں کوئی پوجا پاٹھ ہو یا نہ ہو، ایشور پر وشواس بھی ہو یا نہ ہو، لیکن انسانی برابری ہو، محبت ہو، نیکی، ایمانداری ہو، سچائی ہو اور انسانیت ہو۔ انسانی قوم کی آگے کی چڑھائی بہت ٹیڑھی اور کٹھن پہاڑ کی چڑھائی ہے۔ صدیوں کا کچرا کمر پر باندھکر ہم اس چڑھائی کو طے نہیں کر سکتے۔ اس چڑھائی کو طے کرنے کے لئے ہمیں اپنے بوجھ کو ہلکا کرنا ہوگا اور ہمت اور اصولوں کی نگاہ سے اپنی کمر کو سیدھا رکھنا ہوگا۔

20. 7. '54 — سندرلال

असलियत और प्रचार

नई दिल्ली की पार्लियामेन्ट या लोक सभा के लम्बे इजलास की थकान मिटाने के लिये हमारे ज्यादातर मिनिस्टर आराम की ख़ातिर या तो अंग्रेज़ों की तरह पहाड़ी इलाक़ों पर चले जाते हैं या मुल्क में सैर सपाटे के लिये

اصلیت اور پرچار

نئی دلی کی پارلیامنٹ یا لوک سبھا کے لمبے اجلاس کی تھکن مٹانے کے لئے ہمارے زیادہ تر منسٹر آرام کی خاطر یا تو انگریزوں کی طرح پہاڑی علاقوں پر چلے جاتے ہیں یا ملک میں سیر سپاٹے کے لئے

हमारी राय

ہماری رائے

छुआ छूत

नागपुर से छै मील दूर बहादुरा नाम का एक गांव है. आबादी सब हिन्दुओं की है, जिनमें पचास साठ घर ऊंची जात के हिन्दुओं के हैं और दस पन्द्रह घर हरिजन यानी अछूत समझे जाने वाले हिन्दुओं के. गांव में दो कुएं हैं. ऊंची जात वाले अपने पीने के लिए उन कुओं से पानी भरते हैं, और हरिजन कहलाने वाले गांव से आध मील दूर किसी नाले से पानी भर कर लाते हैं. उन्हें गांव के कुओं से पानी नहीं भरने दिया जाता.

सन 1948 में भारत का विधान पास हो गया. उस में कम से कम काग़ज़ के ऊपर छुआ छूत सारे हिन्दुस्तान से मिटा दी गई. बहादुरा के एक नेक हिन्दू लछमनराव उस्ताद ने चाहा कि उनके गांव के हरिजनों को भी गांव के कुओं से पानी भरने दिया जाय. लोगों को समझाया. ऊंची जात वालों ने न माना. आन्दोलन शुरू हो गया. छै बरस से यह आन्दोलन जारी है. हर हफ़्ते बड़े बड़े सुधारक, नेता, गांधी भक्त, यहां तक कि सरकारी अफ़सर और मिनिस्टर तक बहादुरा जा चुके हैं. हफ़्तों वहां बड़े बड़े कैम्प रहे, बड़ी बड़ी सभाएं हुईं. आन्दोलन जारी है. हम भी एक दिन बहादुरा जा चुके हैं. विनोबा भावे, राजेन्द्र बाबू और जवाहरलाल जी के अशीर्वाद तक बहादुरा के आन्दोलन को मिल चुके हैं. पर आज तक बहादुरा गांव के हरिजनों को गांव के कुओं से पानी लेने की इजाज़त नहीं मिल सकी.

इस सारे आन्दोलन की एक रिपोर्ट ग्यारह पन्नों की छपी हुई 'नया हिन्द' में रिव्यु के लिए हमारे पास आई है, और हम से सलाह भी मांगी गई है. हम हैरान हैं और शरमिन्दा हैं कि क्या कहें. जो धर्म इतना गिर गया हो, वह क्या सचमुच ज़िन्दा रहने का हक़दार है? और क्या दुनिया उसे ज़िन्दा रहने दे सकती है? हमारी बातों में कड़ुवापन हो सकता है. पर हम हैरान हैं कि क्या हमारे हिन्दू सभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

چھوا چھوت

ناگپور سے چھ میل دور بہادرا نام کا ایک گاؤں ہے۔ آبادی سب ہندوؤں کی ہے، جن میں پچاس ساٹھ گھر اونچی جات کے ہندوؤں کے ہیں اور دس پندرہ گھر ہریجن یعنی اچھوت سمجھے جانے والے ہندوؤں کے۔ گاؤں میں دو کنوئیں ہیں۔ اونچی جات والے اپنے پینے کے لئے ان کنوؤں سے پانی بھرتے ہیں، اور ہریجن کہلانے والے گاؤں سے آدھ میل دور کسی نالے سے پانی بھر کر لاتے ہیں۔ انہیں گاؤں کے کنوؤں سے پانی نہیں بھرنے دیا جاتا۔

سن 1948 میں بھارت کا ودھان پاس ہوگیا۔ اس میں کم سے کم کاغذ کے اوپر چھوا چھوت سارے ہندوستان سے مٹا دی گئی۔ بہادرا کے ایک نیک ہندو لچھمن راؤ استاد نے چاہا کہ ان کے ہریجنوں کو بھی گاؤں کے کنوؤں سے پانی بھرنے دیا جائے۔ لوگوں کو سمجھایا۔ اونچی جات والوں نے نہ مانا۔ آندولن شروع ہوگیا۔ چھ برس سے یہ آندولن جاری ہے۔ ہر ہفتے بڑے بڑے سدھارک، نیتا، گاندھی بھگت، یہاں تک کہ سرکاری افسر اور منسٹر تک بہادرا جا چکے ہیں۔ ہفتوں وہاں بڑے بڑے کیمپ رہے، بڑی بڑی سبھائیں ہوئیں۔ آندولن جاری ہے۔ ہم بھی ایک دن بہادرا جا چکے ہیں۔ ونوبا بھاوے، راجیندر بابو اور جواہر لال جی کے آشیرواد تک بہادرا کے آندولن کو مل چکے ہیں۔ پر آج تک بہادرا گاؤں کے ہریجنوں کو گاؤں کے کنوؤں سے پانی لینے کی اجازت نہیں مل سکی۔

اس سارے آندولن کی ایک رپورٹ گیارہ پنوں کی چھپی ہوئی "نیا ہند" میں ریویو کے لئے ہمارے پاس آئی ہے، اور ہم سے صلاح بھی مانگی گئی۔ ہم حیران ہیں اور شرمندہ ہیں کہ کیا کہیں۔ جو دھرم اتنا گر گیا ہو، وہ کیا سچ مچ زندہ رہنے کا حقدار ہے؟ اور کیا دنیا اسے زندہ رہنے دے سکتی ہے؟ ہماری باتوں میں کڑواپن ہوسکتا ہے۔ پر ہم حیران ہیں کہ کیا ہمارے ہندو سبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ

आज के कवि

लिखने वाले—लक्षित मोहन अवस्थी; निकालने वाले—करेन्ट पब्लिशर्स 'दीमाल' कानपुर; लिखावट हिन्दी; सफ़ेह—205, दाम तीन रुपया.

कला को समझने के लिये ज़रूरी है कि कलाकार को समझा जाय. दुनिया के बड़े बड़े कलाकार इस बात पर सहमत हैं कि कलाकार अपने इर्द गिर्द को समझता है, उस समझ को हज़म करता है और तब जो चीज़ लिखता है वह कामयाब होती है. बहुत सी रचनाओं की कामयाबी और नकामयाबी की जड़ लेखक के जीवन में होती है. इस लिये ज़रूरी है की लेखक को हर पहलू से जाना जाये और तब ही उसकी कला का सही अन्दाज़ा किया जायेगा. इसी दृश्टी कोन से "आज के कवि" लिखी गई है.

इस पुस्तक में चौदह कवियों का ज़िक्र है. सब के सब नये हैं, नौजवान हैं. कुछ प्रगतिशील हैं, कुछ अपने को प्रगतिशील नहीं कहते. इस तरह एक साथ बहुत से रूप और बहुत से विचार सामने आते हैं और सुन्दर, कम सुन्दर तय करने में आसानी होती है. इस पुस्तक में चौदहों कवियों के चित्र दिये गये हैं और रचना के नमूने देने से पहले कवियों पर हमदर्दी से भरे अलोचनात्मक नोट दिये गये हैं.

इस में कोई शक नहीं कि अवस्थी जी ने मार्के की साहित्य सेवा की है और उन्हें बधाई मिलनी चाहिये.

इस सिलसिले में दूसरी किताबें अवस्थी जी लिख रहे हैं, जो कवि इस किताब में नहीं हैं, वह उसमें जगह पाएंगे. आने वाली किताबें जल्दी पूरी हों, यही हर साहित्य सेवी की अपील हो सकती है. —मुजीब रिज़वी

परवाने की डायरी

लिखने वाले—मुहीउद्दीन इरफ़ान; निकालने वाले—मकतबा झंकार; चौक (मुक़ाबिल कोतवाली) इलाहाबाद; लिखावट—उर्दू; सफ़्हा—154; दाम—दो रुपये चार आने.

इस किताब का नाम "परवाने की डायरी" है लेकिन रूप इसने ख़तों का ले लिया है. डायरी और ख़त के लिखने में फ़र्क़ है. जो शैली और जो विचार धारा इस किताब में अपनाई गई है वह क़ाज़ी मुहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार की है. लेकिन क़ाज़ी साहब की किताबें बहुत ऊंची हैं, उन तक पहुंचना आसान नहीं है. प्रेम कथा ख़ुद बहुत दिलचस्प नहीं होती, उसे अपने ताज़े अनुभव और सुन्दर सजीली भाषा से दिलचस्प बनाया जाता है. भाषा के नाम पर इस किताब में उर्दू की पिटी पिटाई शरमीली है और अनुभव के नाम पर कुछ भी नहीं देख पड़ता.

अदब की दुनिया में इस किताब का कोई मोल नहीं है. लेकिन मन बहलाव के लिये अच्छी है. —मुस्तफ़ा हैदर

آج کے کوی

لکھنے والے—للت موہن اوستھی؛ نکالنے والے—کرنٹ پبلشرس' دی مال' کانپور؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحے—205؛ دام—تین روپئے ۔

کلا کو سمجھنے کے لئے ضروری ہے کہ کلاکار کو سمجھا جائے۔ دنیا کے بڑے بڑے کلاکار اس بات پر سہمت ہیں کہ کلاکار اپنے اردگرد کو سمجھتا ہے' اس سمجھ کو ہضم کرتا ہے اور تب جو چیز لکھتا ہے وہ کامیاب ہوتی ہے ۔ بہت سی رچناؤں کی کامیابی اور ناکامیابی کی جڑ لیکھک کے جیون میں ہوتی ہے ۔ اس لئے ضروری ہے کہ لیکھک کو ہر پہلو سے جانا جائے اور تب ہے اس کی کلا کا صحیح اندازہ کیا جائے گا۔ اسی درشٹی کون سے "آج کے کوی" لکھی گئی ہے ۔

اس پستک میں چودہ کویوں کا ذکر ہے۔ سب کے سب نئے ہیں' نوجوان ہیں ۔ کچھ پرگتی شیل ہیں' کچھ اپنے کو پرگتی شیل نہیں کہتے۔ اس طرح ایک ساتھ بہت سے روپ اور بہت سے وچار سامنے آتے ہیں اور سندر' کم سندر طے کرنے میں آسانی ہوتی ہے ۔ اس پستک میں چودہوں کویوں کے چتر دئے گئے ہیں اور رچنا کے نمونے دینے سے پہلے کویوں پر ہمدردی سے بھرے آلوچناتمک نوٹ دئے گئے ہیں۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ اوستھی جی نے معرکے کی ساہتیہ سیوا کی ہے اور انہیں بدھائی ملنی چاہئے۔

اس سلسلے میں دوسری کتابیں اوستھی جی لکھ رہے ہیں' جو کوی اس کتاب میں نہیں ہیں' وہ اس میں جگہ پائیں گے ۔ آنے والی کتابیں جلدی پوری ہوں' یہی ہر ساہتیہ سیوی کی اپیل ہوسکتی ہے ۔ —مجیب رضوی

پروانے کی ڈائری

لکھنے والے—محی الدین؛ نکالنے والے—مکتبہ جھنکار' چوک (مقابل کوتوالی)' الہ آباد؛ لکھاوٹ—اردو؛ صفحے—154؛ دام—دو روپئے چار آنے :

اس کتاب کا نام "پروانے کی ڈائری" ہے لیکن روپ اس نے خطوں کا لے لیا ہے ۔ ڈائری اور خط کے لکھنے میں فرق ہے ۔ جو شیلی اور جو وچار دھارا اس کتاب میں اپنائی گئی ہے وہ قاضی محمد عبدالغفار کی ہے ۔ لیکن قاضی صاحب کی کتابیں اونچی ہیں' ان تک پہونچنا آسان نہیں ہے ۔ پریم کتھا خود بہت دلچسپ نہیں ہوتی' اسے اپنے تازے انوبھووں اور سندر سجیلی بھاشا سے دلچسپ بنایا جاتا ہے۔ بھاشا کے نام پر اس کتاب میں اردو کی پٹی پٹائی شرمیلی ہے اور انوبھو کے نام پر کچھ بھی نہیں دیکھ پڑتا ۔

ادب کی دنیا میں اس کتاب کا کوئی مول نہیں ہے ۔ لیکن من بہلاؤ کے لئے اچھی ہے ۔ —مصطفیٰ حیدر

कुछ किताबें  کچھ کتابیں

ज़िन्दगी मुस्कराई

लिखने वाले—कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर; निकालने वाले—भारती ज्ञान पीठ, काशी; लिखावट हिन्दी; सफ़्हे—296; दाम चार रुपये.

"ज़िन्दगी मुस्कराई" को पढ़ कर सचमुच ज़िन्दगी मुस्करा उठती है. पढ़ते जाइये, कभी आप का रस ख़तम नहीं होगा. जिस पन्ने को खोलेंगे उस पर ज़िन्दगी का संदेश अंकित रहेगा. अगर कोई किताब चरित्र निर्मान कर सकती है और नौजवानों को तरक़्क़ी की चोटी पर पहुंचा सकती है तो वह "ज़िन्दगी मुस्कराई" है. शैली इतनी रोचक है कि एक दफ़ा किताब उठाकर फिर बन्द करने का दिल नहीं चाहता. हर सतर एक नश्तर है जो दिल में गड़ता जाता है. काश हर नौजवान तक यह किताब पहुंच सके.

इस पुस्तक में प्रभाकर जी के 43 स्केच और निबन्ध हैं. इन रचनाओं की पीठ पर प्रभाकर जी के गहरे अनुभव और तपस्या का हाथ है. हर रचना में नई ज़िन्दगी है, नई प्रेरना है. प्रभाकर जी के बहुत से विचारों से कोई सहमत न हो, यह सम्भव है. लेकिन "ज़िन्दगी मुस्कराई" की महानता से कोई इनकार नहीं कर सकता. अभी तक हिन्दी में अगर कोई रचना है और नौजवानों को बलवान बनाने का दावा कर सकती है तो "ज़िन्दगी मुस्कराई" के अलावा कोई दूसरी रचना नहीं हो सकती.

अगर कोई शुद्ध और सुन्दर भाशा लिखता है तो प्रभाकर जी को उसे गुरू मानना पड़ेगा. इस किताब की भाशा उन सब को चेलंज करती है जो कहते हैं कि बोल चाल की भाशा और होती है और साहित्य की भाशा और होती है. हिन्दी को संवारने का श्रेय प्रभाकर जी को है और इस अनमोल रत्न के लिये मैं भक्ति से उनके सामने सर झुकाता हूं.

यह किताब है जिस को यूनिवर्सिटी क्लासों में ज़रूर पढ़ाया जाना चाहिये और लाइब्रेरियों में तो इसे पहुंचना ही चाहिये.

—मुजीब रिज़वी

زندگی مسکرائی

لکھنے والے — کنھیا لال مشر پربھاکر؛ نکالنے والے — بھارتیہ گیان پیٹھ، کاشی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے — 296؛ دام چار روپیے ۔

" زندگی مسکرائی " کو پڑھکر سچ مچ زندگی مسکرا اٹھتی ہے ۔ پڑھتے جایئے، کبھی آپ کا رس ختم نہیں ہوگا ۔ جس پنے کو کھولیںگے اس پر زندگی کا سندیش انکت رہے گا ۔ اگر کوئی کتاب چرتر نرمان کر سکتی ہے اور نوجوانوں کو ترقی کی چوٹی پر پہونچا سکتی ہے تو وہ " زندگی مسکرائی " ہے ۔ شیلی اتنی روچک ہے کہ ایک دفعہ کتاب اٹھا کر پھر بند کرنے کا دل نہیں چاہتا. ہر سطر ایک نشتر ہے جو دل میں گڑتا جاتا ہے ۔ کاش ہر نوجوان تک یہ کتاب پہونچ سکے ۔

اِس پستک میں پربھاکر جی کے 43 اِسکیچ اور نبندھ ہیں ۔ اِن رچناؤں کی پیٹھ پر پربھاکر جی کے گہرے انوبھو اور تپسیا کا ہاتھ ہے ۔ ہر رچنا میں نئی زندگی ہے، نئی پریرنا ہے ۔ پربھاکر جی کے بہت سے وچاروں سے کوئی سہمت نہ ہو، یہ سمبھو ہے ۔ لیکن " زندگی مسکرائی " کی مہانتا سے کوئی انکار نہیں کر سکتا ۔ ابھی تک ہندی میں اگر کوئی رچنا ہے اور نوجوانوں کو بلوان بنانے دعویٰ کر سکتی ہے تو وہ " زندگی مسکرائی " کے علاوہ کوئی دوسری رچنا نہیں ہوسکتی ۔

اگر کوئی شدھ اور سندر بھاشا لکھتا ہے تو پربھاکر جی کو اسے گرو ماننا پڑیگا ۔ اِس کتاب کی بھاشا اُن سب کو چیلنج کرتی ہے جو کہتے ہیں کہ بول چال کی بھاشا اور ہوتی ہے اور ساہتیہ کی بھاشا اور ہوتی ہے ۔ ہندی کو سنوارنے کا شریہ پربھاکر جی کو ہے اور اس انمول رتن کے لئے میں بھکتی سے ان کے سامنے سر جھکاتا ہوں ۔

یہ وہ کتاب ہے جسکو یونیورسٹی کلاسوں میں ضرور پڑھایا جانا چاہئے اور لائبریریوں میں تو اِسے پہونچنا ہی چاہئے ۔

— مجیب رضوی

आये थे. आज फिर इन्सान खतरे में घिरा है. बच्चे बूढ़े, औरत मर्द सब चीख रहे हैं. डैन्युब का गुस्सा ठन्डा नहीं हो रहा, उसकी भूख नहीं मिट रही. इन्सानियत ने फिर पुकारा. आज यह सिपाही फिर एक साथ मैदान में आ गये.

जब खतरा होता है तो एका बढ़ता है. जब एका होता तो,विश्वास बढ़ता है. जब विश्वास होता तो हथियार की ज़रूरत नहीं होती. बन्दूकें दूर पड़ी हैं—बहुत दूर, आदमियों से बहुत दूर. रूसी बन्दूकें आंख फाड़े अमरीकी बन्दूकों को देख रही है. अमरीकी बन्दूकें ताज्जुब से रूसी बन्दूकों को देख रही हैं, लेकिन खामोश हैं.

सिपाही सब भूल गये हैं—इन्सान हो गये हैं, केवल इन्सान—आदमियों को बचा रहे हैं, बूढ़ों को किनारे पर पहुंचा रहे हैं, बच्चों के सहारे बन रहे हैं. यह सब भूल गये हैं. केवल उन्हें खतरा याद है और खतरे से मानवता को बचाने का फ़र्ज़!

डैनयुब का खतरा मामूली है, बहुत साधारन. इस से भी बड़े खतरे हैं, हिटलर से भी बड़ा खतारा सामने है ऐटम बम का खतरा, हाईड्रोजन बम का खतरा, निपाम बम का खतरा. एक-दो, दस-बीस, हज़ार दस हज़ार, लाख दस लाख को ही खतरा नहीं है, सारी ज़िन्दगी खतरे में है, सारी मानवता खतरे में है. आज इन्सानियत फिर बुला रही है—अमरीकियों को, रूसियों को—सब को—मेल के लिये. आज रूसी और अमरीकी डैन्युब के खतरे के कारन मिले हैं. एक क़दम और आगे, मानवता को बचा लो, बन्दूकें फेंक दो, एक दूसरे को गले लगा लो.....लेकिन शायद......ऐसा न हो सके......शायद हो सके! इन सिपाहियों की आंखें यही कह रही हैं. ज़रा इनमें देखो, ज़रा इनको पढ़ो. दूर नील गगन में आंसुओं की स्क्रीन पर क्या लिखा है—"हम ज़रूर मिलेंगे, दुनिया की जनता एक है, हम ज़रूर मिलेंगे......

—मुनीब रिज़वी

آئے تھے. آج پھر انسان خطرے میں گھرا ہے. بچے بوڑھے، عورت مرد سب چیخ رہے ہیں. ڈینیوب کا غصہ ٹھنڈا نہیں ہو رہا، اسکی بھوک نہیں مٹ رہی. انسانیت نے پھر پکارا. آج یہ سپاہی پھر ایک ساتھ میدان میں آ گئے.

جب خطرہ ہوتا ہے تو ایکا بڑھتا ہے. جب ایکا ہوتا ہے تو وشواس بڑھتا ہے. جب وشواس ہوتا ہے تو ہتھیار کی ضرورت نہیں ہوتی. بندوقیں دور پڑی ہیں—بہت دور، آدمیوں سے بہت دور. روسی بندوقیں آنکھیں پھاڑے امریکی بندوقوں کو دیکھ رہی ہیں، امریکی بندوقیں تعجب سے روسی بندوقوں کو دیکھ رہی ہیں، لیکن خاموش ہیں.

سپاہی سب بھول گئے ہیں—انسان ہو گئے ہیں، کیول انسان—آدمیوں کو بچا رہے ہیں، بڑھوں کو کنارے پہونچا رہے ہیں، بچوں کے سہارے بن رہے ہیں. یہ سب بھول گئے ہیں. کیول انہیں خطرہ یاد ہے اور خطرہ سے مانوتا کو بچانے کا فرض!

ڈینیوب کا خطرہ معمولی ہے، بہت سادھارن. اس سے بھی بڑے خطرے ہیں، ہٹلر سے بھی بڑا خطرہ سامنے ہے. ایٹم بم کا خطرہ، ہائیڈروجن بم کا خطرہ، نپام بم کا خطرہ. ایک دو، دس بیس، ہزار دس ہزار، لاکھ دس لاکھ کو ہی خطرہ نہیں ہے، ساری زندگی خطرے میں ہے، ساری مانوتا خطرے میں ہے. آج انسانیت پھر بلا رہی ہے—امریکیوں کو، روسیوں کو—سب کو—میل کے لئے. آج روسی اور امریکی ڈینیوب کے خطرے کے کارن ملے ہیں. ایک قدم اور آگے، مانوتا کو بچا لو، بندوقیں پھینک دو، ایک دوسرے کو گلے لگا لو.....لیکن شاید......ایسا نہ ہوسکے......شاید ہوسکے. ان سپاہیوں کی آنکھیں یہی کہہ رہی ہیں. ذرا ان میں دیکھو، ذرا ان کو پڑھو. دور نیل گگن میں آنسوؤں کی اسکرین پر کیا لکھا ہے—ہم ضرور ملینگے، دنیا کی جنتا ایک ہے، ہم ضرور ملینگے......

—منیب رضوی

बहुत दिनों की बात नहीं है. यह सिपाही डैन्यूब के किनारे आये थे—एक तरफ से अमरीकी, दूसरी तरफ से रूसी. जर्मन भाग रहे थे, जा रहे थे, अपने अन्त की तरफ बढ़ रहे थे. गोली चलना बन्द हो गया था. एक नारा गूंजा. ऐलान हुआ कि हमारी जीत हुई......और सब सिपाही सामने आ गये—अमरीकी सिपाही, रूसी सिपाही—सबने बन्दूक़ रख दी, गले मिल गये, एक दूसरे को उठा लिया, नाचने लगे.

लेकिन यह कब हुआ? जब ख़तरा था, जब इन्सानियत पर राक्षसों ने हमला किया था, जब ज़िन्दगी मौत के पन्जे में जकड़ गई थी, जब उजाले को अंधेरा खा रहा था, जब ज़िन्दगी की हर चीज़ मौत से डर रही थी. उस समय, उस युग में अमरीकी आये थे, रूसी आये थे! एक साथ आये थे, एक होकर आये थे...डैन्यूब इसकी गवाह है. जिस किनारे बैठ कर रूसियों ने अमरीकियों को वोडका दिया था और अमरीकियों ने रूसियों को सिगरेट पिलाए थे, जहां उन्होंने जीत के गीत गाये थे, जहां उन्होंने एक दूसरे को भविश्य की ज़िन्दगी का ख़ाका बताया था, जहां बैठ कर वह सब भूल गये थे, दिल खुल गये थे, बातें हो रही थीं, वह आनन्द विभोर हो रहे थे. ज़मीन का वह भाग जो डैन्यूब की लहरों को घेरे हुए था अगर पानी में डूबा नहीं है तो ज़रूर गवाही देगा.

उस वक़्त भी डैन्यूब में लहरें उठी थीं और आज भी उठ रही हैं. लेकिन दोनों की नियत में फ़र्क़ है. पहले की लहरों ने स्वागत किया था. आज की लहरें ग़ुस्सा हैं, ग़ज़बनाक हैं.

सिपाही एक दूसरे को पहचानते हैं. रूसी सिपाही आगे बढ़े. वोडका की बोतलें उन्होंने आगे बढ़ा दीं. उन्होंने नारे लगाये—"दुनिया की जनता एक है." अमरीकी आगे बढ़े—एक क़दम, दो क़दम. मुंह पर मुस्कराहट छा गई. तभी किसी ने याद दिलाया कि आगे मौत है. रूसी सिपाहियों से मिले नहीं कि मैकार्थी तुम्हें फांसी के तख़्ते पर लटका देंगे. अमरीकी सिपाही परेशान हो गये. उनकी समझ में नहीं आता था कि क्या करें. ? पीछे हट जायें या आगे बढ़ कर गले लग जायें. अमरीकी सिपाहियों के मुंह पर दुख की रेखा रूसियों ने देखी. उन्होंने जैसे पढ़ा कि भाई मजबूर हैं, क्या करें. उसी मौन भाषा में रूसियों ने उत्तर दिया—कोई बात नहीं है. तुमने हमारी शुभ कामना स्वीकार कर ली है, इसका हमें विश्वास है. तुम हमें अपना दुश्मन न समझो, बस इतना ही हमें चाहिये.

आज वह सिपाही डैन्यूब के किनारे फिर आये हैं. पहले हिटलर को भगाने आये थे. एक ख़तरा वह था, उसे मिटाने

بہت دنوں کی بات نہیں ہے ۔ یہ سپاہی ڈینیوب کے کنارے آئے تھے — ایک طرف سے امریکی، دوسری طرف سے روسی ۔ جرمن بھاگ رہے تھے، جا رہے تھے، اپنے انت کی طرف بڑھ رہے تھے۔ گولی چلنا بند ہوگیا تھا۔ ایک نعرہ گونجا ۔ اعلان ہوا کہ ہماری جیت ہوئی......اور سب سپاہی سامنے آگئے — امریکی سپاہی، روسی سپاہی — سب نے بندوق رکھ دی۔ گلے مل گئے، ایک دوسرے کو اٹھا لیا، ناچنے لگے ۔

لیکن یہ کب ہوا؟ جب خطرہ تھا، جب انسانیت پر راکشسوں نے حملہ کیا تھا، جب زندگی موت کے پنجے میں جکڑ گئی تھی، جب اجالے کو اندھیرا کھا رہا تھا، جب زندگی کی ہر چیز موت سے ڈر رہی تھی۔ اس سمے، اس یگ میں امریکی آئے تھے، روسی آئے تھے، ایک ہو کر آئے تھے......ڈینیوب اس کی گواہ ہے ۔ جس کنارے بیٹھکر روسیوں نے امریکیوں کو ووڈکا دیا تھا اور امریکیوں نے روسیوں کو سگریٹ پلائے تھے، جہاں انہوں نے جیت کے گیت گائے تھے، جہاں انہوں نے ایک دوسرے کو بھوشیہ کی زندگی کا خاکہ بتایا تھا، جہاں بیٹھکر وہ سب بھول گئے تھے، دل کھل گئے تھے، باتیں ہو رہی تھیں، وہ آنند وبھور ہو رہے تھے ۔ زمین کا وہ بھاگ جو ڈینیوب کی لہروں کو گھیرے ہوئے تھا اگر پانی میں ڈوبا نہیں ہے تو ضرور گواہی دیگا ۔

اس وقت بھی ڈینیوب میں لہریں اٹھی تھیں اور آج بھی اٹھ رہی ہیں ۔ لیکن دونوں کی نیت میں فرق ہے ۔ پہلے کی لہروں نے سواگت کیا تھا ۔ آج کی لہریں غصہ ہیں، غضبناک ہیں ۔

سپاہی ایک دوسرے کو پہچانتے ہیں۔ روسی سپاہی آگے بڑھے ۔ ووڈکا کی بوتلیں انہوں نے آگے بڑھادیں ۔ انہوں نے نعرے لگائے — "دنیا کی جنتا ایک ہے"۔ امریکی آگے بڑھے — ایک قدم، دو قدم ۔ منہ پر مسکراہٹ چھا گئی۔ تب ہی کسی نے یاد دلایا کہ آگے موت ہے ۔ روسی سپاہیوں سے ملے نہیں کہ میکارتھی تمہیں پھانسی کے تختے پر لٹکا دینگے۔ امریکی سپاہی پریشان ہوگئے ۔ ان کی سمجھ میں نہیں آتا تھا کہ کیا کریں؟ پیچھے ہٹ جائیں یا آگے بڑھکر گلے لگ جائیں ۔ امریکی سپاہیوں کے منہ پر دکھ کی ریکھا روسیوں نے دیکھی ۔ انہوں نے جیسے پڑھا کہ بھائی مجبور ہیں، کیا کریں ۔ اسی مون بھاشا میں روسیوں نے اتر دیا — کوئی بات نہیں ہے ۔ تم نے ہماری شبھ کامنا سویکار کر لی ہے، اسکا ہمیں وشواس ہے ۔ تم ہمیں اپنا دشمن نہ سمجھو، بس اتنا ہی ہمیں چاہئے ۔

آج یہ سپاہی ڈینیوب کے کنارے پھر آئے ہیں ۔ پہلے ہٹلر کو بھگانے آئے تھے ۔ ایک خطرہ وہ تھا، اسے مٹانے

आजादी है झूठ बोलने की, आजादी है लूट मार करने की, हर उस चीज़ की आजादी है जिसकी आजादी नहीं होनी चाहिये. केवल एक बात की ही आजादी नहीं है. सच बोलना सबसे बड़ा पाप है और उसकी सज़ा? मालूम है क्या है? —मौत! यही नहीं कि अपनी ज़मीन पर अमरीकी सच नहीं बोल सकते. यदि उन्होंने दूसरे देश में भी सच बोलने की कोशिश की तो उन्हें पकड़ लिया जायेगा, दूतावास के कमरों में ठूंस दिया जायगा, हवाई जहाज़ में बन्द कर के बूचड़खाने में भेज दिया जायेगा. वहां......वहां सदा के लिये सच की आवाज़ शान्त कर दी जायेगी.

ऐसी आजादी को कोई क्या कहे!

× × ×

पानी है कि उमड़ा ही आता है. लहरें किनारे से टकरा रही हैं. ज़मीन पीछे हटती जाती है. हार रही है या पानी ज़मीन को निगले जा रहा है! एक भयानक फुफकार सुनाई देती है, उसमें चीख़ भी मिली हैं. कहते है कि पानी पीछे हटता है, गुर्राता है और फिर पूरी ताक़त से किनारे पर हमला करता है. यह भी हो सकता है कि किनारा जानता हो कि उसकी हार निश्चित है. पर आसानी से हार मानना वह नहीं चाहता. धमकी हर लड़ाई में आखरी हथियार होता है. शायद कटता हुआ किनारा इसलिये फुफकार रहा हो!

बला का तूफ़ान है. डैन्यूब ने जैसे क़सम खा ली है, पुराना ज़माना होता, तो पूजा होती, डैन्यूब देवी को भेंट चढ़ाई जाती. लेकिन इस युग का इन्सान! कुछ अपने ऊपर अधिक विश्वास करने लगा है. किनारे पर पुरोहित नहीं हैं, इन्जीनियर हैं, विशेषज्ञ हैं. योजनायें बन रही हैं कि बाढ़ कैसे रोक दी जाये. डैन्यूब रुक जाये यह उसकी शान के खिलाफ़ है. रोकने की जितनी कोशिश होती हैं, उसका गुस्सा और बढ़ता है, वह और अधिक जोश में आती है.

ख़तरा बढ़ रहा है. आस्ट्रिया वाले क्या करें. हाथ पैर मारते हैं, लेकिन कामयाबी नहीं होती.

यह क्या? फ़ौज आ रही है. लेकिन यह फ़ौज एक देश की नहीं है. दोस्त नहीं है, एक तरफ़ अमरीकी हैं, दूसरी तरफ़ रूसी हैं. दोनों तरफ़ से पचास पचास सिपाही आ रहे हैं. वह सिपाही एक दूसरे से अपरिचित हों ऐसी बात नहीं. वह एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं, ख़ूब पहचानते हैं. इससे पहले भी डैन्यूब के किनारों पर वह मिल चुके हैं. तब डैन्यूब ने उनका स्वागत किया था. लेकिन आज नाराज़ है. क्यों का जवाब बहुत तीखा है. पर इस जवाब में बहुत से भेद छिपे हैं, इतिहास के पन्ने ही इस पर रोशनी डाल सकते हैं.

آزادی ہے جھوٹ بولنے کی' آزادی ہے لوٹ مار کرنے کی' ہر اُس چیز کی آزادی ہے جس کی آزادی نہیں ہونی چاہئے ۔ کیول ایک بات کی ہی آزادی نہیں ہے ۔ سچ بولنا سب سے بڑا پاپ ہے اور اس کی سزا؟ معلوم ہے کیا ہے؟ — موت! یہی نہیں کہ اپنی زمین پر امریکی سچ نہیں بول سکتے ۔ یدی اُنہوں نے دوسرے دیش میں بھی سچ بولنے کی کوشش کی تو اُنہیں پکڑ لیا جائے گا' دوتاواس کے کمروں میں ٹھونس دیا جائے گا' ہوائی جہاز میں بند کر کے بوچڑ خانے میں بھیج دیا جائیگا ۔ وہاں ......وہاں سدا کے لئے سچ کی آواز شانت کر دی جائیگی۔

ایسی آزادی کو کوئی کیا کہے!

+ × ×

پانی ہے کہ اُمڑا ہی آتا ہے ۔ لہریں کنارے سے ٹکرا رہی ہیں ۔ زمین پیچھے ہٹتی جاتی ہے ۔ ہار رہی ہے یا پانی زمین کو نگلے جا رہا ہے! ایک بھیانک پھپھکار سنائی دیتی ہے' اس میں چیخ بھی ملی ہے ۔ کہتے ہیں کہ پانی پیچھے ہٹتا ہے' غراتا ہے اور پھر پوری طاقت سے کنارے پر حملہ کرتا ہے ۔ یہ بھی ہو سکتا ہے کہ کنارا جانتا ہو کہ اُسکی ہار نشچت ہے ۔ پر آسانی سے ہار ماننا وہ نہیں چاہتا ۔ دھمکی ہر لڑائی میں آخری ہتھیار ہوتا ہے ۔ شاید کٹتا ہوا کنارا اس لئے پھپھکار رہا ہو!

بلا کا طوفان ہے ۔ ڈینوب نے جیسے قسم کھا لی ہے ۔ پرانا زمانہ ہوتا تو پوجا ہوتی' ڈینوب دیوی کو بھینٹ چڑھائی جاتی ۔ لیکن اِس یگ کا انسان! کچھ اپنے اوپر ادھک وشواس کرنے لگا ہے ۔ کنارے پر پروہت نہیں ہیں' انجینیر ہیں' وشیشگیہ ہیں ۔ یوجنائیں بن رہی ہیں کہ باڑھ کیسے روک دی جائے ۔ ڈینوب رک جائے' یہ اُسکی شان کے خلاف ہے ۔ روکنے کی جتنی کوشش ہوتی ہے' اُسکا غصہ اور بڑھتا ہے' وہ اور ادھک جوش میں آتی ہے ۔

خطرہ بڑھ رہا ہے ۔ آسٹریا والے کیا کریں ۔ ہاتھ پیر مارتے ہیں' لیکن کامیابی نہیں ہوتی ۔

یہ کیا؟ فوج آ رہی ۔ لیکن یہ فوج ایک دیش کی نہیں ہے' دوست نہیں ہے ۔ ایک طرف امریکی ہیں' دوسری طرف روسی ہیں ۔ دونوں طرف سے پچاس پچاس سپاہی آ رہے ہیں ۔ یہ سپاہی ایک دوسرے سے اپریچت ہوں' ایسی بات نہیں ۔ یہ ایک دوسرے کو اچھی طرح جانتے ہیں' خوب پہچانتے ہیں ۔ اس سے پہلے بھی ڈینوب کے کناروں پر یہ مل چکے ہیں ۔ تب ڈینوب نے ان کا سواگت کیا تھا ۔ لیکن آج ناراض ہے ۔ کیوں کا جواب بہت تیکھا ہے' پر اس جواب میں بہت سے بھید چھپے ہیں' اتہاس کے پنے ہی اس پر روشنی ڈال سکتے ہیں۔

का ख़त.” मैंने उसे छोड़ दिया, लेकिन दूसरी ख़बर ढूंढ़ते ढूंढ़ते उस पर नज़र जा पड़ी. सोचा, पढ़ ही लूं. उस औरत लिखा है : “मैं सीलोन से अमरीका क्यों लाई गई हूं, मेरा क्या दोष है, मेरे पति से मुझे क्यों अलग कर दिया गया है, मेरे पास पैसे नहीं हैं, मैं यहां गुज़र कैसे करूंगी......? मैं अपने पति को बहुत प्यार करती हूं......मैं उस से अलग नहीं रह सकती.”

मैंने आगे पढ़ना बेकार समझा. सोचा शायद बेचारी को इसलिये वापस भेज दिया गया हो क्योंकि उसने एक सीलोनी से शादी कर ली है. शादी—और एक गोरी अमरीकन की काले सीलोनी के साथ ! लेकिन आगे की ख़बर और मज़ेदार है. मैं ग़ौर से पढ़ने लगा. कुछ ऐसा लगने लगा कि मुझे अपने सवाल का जवाब मिल रहा है. उस औरत से प्रेम उमड़ा, सहानुभूति बढ़ी, लेकिन फिर ख़्याल हुआ कि हो न हो उस औरत ने कोई ख़तरनाक काम किया है. नहीं तो अमरीकी सरकार पागल नहीं है, किसी औरत को उसके पति से छुड़ाकर ले जाना मामूली परिस्थिति में समझ में नहीं आ सकता.

मैंने आगे पढ़ा. पता चला कि यह देवी जी श्री जोज़फ़ डी सिलवा की बीवी हैं. जोज़फ़ साहब ने सुप्रीम कोर्ट में दरख़्वास्त दी कि अमरीकी दूतावास वाले उनकी बीवी को ज़बरदस्ती अमरीका भेज रहे हैं. कोर्ट सीलोनी सरकार को आदेश दे कि वह उसे अमरीका न जाने दे.

कोर्ट के फ़ैसले से पहले मिसेज़ सिलवा वाशिंगटन में हैं.

शायद सीलोनी सरकार के हाथ बंधे हैं ! एक नागरिक की स्त्री को दूसरे देश वाले पकड़ कर ले गये. सरकार ख़ामोश है, कुछ नहीं बोलती है. पूरब में औरत को घर की इज़्ज़त कहा जाता है. युगों से यह परम्परा चली आई है. जिसने स्त्री पर हाथ डाला, उसने इज़्ज़त पर हाथ डाला. एक नागरिक की इज़्ज़त देश की इज़्ज़त होती है. जान चली जाये लेकिन इज़्ज़त न जाये. पर यह बीती बातें हैं. लोग कहेंगे कि भावुक लोग ऐसी बातों को महत्व देते हैं. जो भी हो. लेकिन मैं सोचता हूं, सोचने पर मजबूर हूं. सीलोन की इज़्ज़त दिन दहाड़े अमरीकी लूट कर ले गये और सीलोन सरकार ख़ामोश है !

मिसेज़ सिलवा का दोष क्या है ? बहुत भयानक दोष है. अमरीकी सरकार को वह उलट देना चाहती थीं ? उन्होंने आइज़न हावर को क़त्ल कराने की साज़िश की थी ? नहीं, बिल्कुल नहीं. ऐसी कोई बात नहीं. केवल इतना दोष है कि उन्होंने एक किताब लिखी है. उस किताब का नाम है—“रोज़ेन बर्ग—उनका दोष ?”

خط." میں نے اُسے چھوڑ دیا' لیکن دوسری خبر ڈھونڈھتے ڈھونڈھتے اُس پر نظر جا پڑی. سوچا' پڑھ ہی لوں. اُس عورت لکھا ہے : "میں سیلون سے امریکہ کیوں لائی گئی ہوں' میرا کیا دوش ہے' میرے پتی سے مجھے کیوں الگ کردیا گیا ہے' میرے پاس پیسے نہیں ہیں' میں یہاں گزر کیسے کروں گی؟......میں اپنے پتی کو بہت پیار کرتی ہوں...... میں اُس سے الگ نہیں رہ سکتی."

میں نے آگے پڑھنا بیکار سمجھا. سوچا شاید بیچاری کو اس لئے واپس بھیج دیا گیا ہو کیونکہ اُس نے ایک سیلونی سے شادی کرلی ہے. شادی — اور ایک گوری امریکن کی کالے سیلونی کے ساتھ ! لیکن آگے کی خبر اور مزیدار ہے . میں غور سے پڑھنے لگا . کچھ ایسا لگنے لگا کہ مجھے اپنے سوال کا جواب مل رہا ہے . اُس عورت سے پریم اُمڑا' سہانوبھوتی بڑھی' لیکن پھر خیال ہوا کہ ہو نہ ہو اُس عورت نے کوئی خطرناک کام کیا ہے. نہیں تو امریکی سرکار پاگل نہیں ہے. کسی عورت کو اُس کے پتی سے چھڑا کر لے جانا معمولی پرستھتی میں سمجھ میں نہیں آسکتا.

میں نے آگے پڑھا . پتہ چلا کہ یہ دیوی جی شری جوزف ڈی سلوا کی بیوی ہیں . جوزف صاحب نے سپریم کورٹ میں درخواست دی کہ امریکی دوتاواس والے ان کی بیوی کو زبردستی امریکہ بھیج رہے ہیں . کورٹ سیلونی سرکار کو آدیش دے کہ وہ اُسے امریکہ نہ جانے دے.

کورٹ کے فیصلے سے پہلے مسز سلوا واشنگٹن میں ہیں.

شاید سیلونی سرکار کے ہاتھ بندھے ہیں ! ایک ناگرک کی استری کو دوسرے دیش والے پکڑ کر لے گئے . سرکار خاموش ہے' کچھ نہیں بولتی ہے. پورب میں عورت کو گھر کی عزت کہا جاتا ہے. یگوں سے یہ پرمپرا چلی آئی ہے. جس نے استری پر ہاتھ ڈالا' اس نے عزت پر ہاتھ ڈالا . ایک ناگرک کی عزت دیش کی عزت ہوتی ہے . جان چلی جائے' لیکن عزت نہ جائے . پر یہ بیتی باتیں ہیں . لوگ کہینگے کہ بھاوک لوگ ایسی باتوں کو مہتو دیتے ہیں . جو بھی ہو . لیکن میں سوچتا ہوں' سوچنے پر مجبور ہوں کہ سیلون کی عزت دن دہاڑے امریکی لوٹ کر لے گئے اور سیلون سرکار خاموش ہے !

مسز سلوا کا دوش کیا ہے ؟ بہت بھیانک دوش ہے . امریکی سرکار کو وہ اُلٹ دینا چاہتی تھیں ؟ انہوں نے آئزن ہاور کو قتل کرانے کی سازش کی تھی ؟ نہیں' بالکل نہیں . ایسی کوئی بات نہیں . کیول اتنا دوش ہے کہ اُنہوں نے ایک کتاب لکھی ہے . اس کتاب کا نام ہے — "روزن برگ — اُن کا دوش ؟"

महाराज तोंद पर हाथ घुमाते उधर से गुज़रे और उन्होंने कहा—"यह सब झूठ है. कौन है बड़ा विद्वान. जैसे अकबर के बाद सूखा पड़ा ही नहीं ?"

सब ने सुन लिया, कोई जवाब नहीं दिया.

किसान ने फिर कहा—"बनिया ने पानी गाड़ रखा है. भैया, इन लोगों को अपने मुनाफ़े से मतलब......!"

विश्वास न करते हुए दूसरों ने गरदन हिलाई. किसान झूटा बनने को तैयार नहीं है. उसने ज़रा जोश में आकर कहा—"तीन साल पहले तो हमारे गांव में ही एक बनिया पकड़ा गया था. बच्चू की ख़ूब पिटाई हुई. आंगन में पानी गाड़ रखा था. गांव वालों ने मिल कर पूजा कराई और पानी उखेड़ा. दूसरे घंटे ही अर्रा तोड़ पानी बरसा."

विश्वास और अविश्वास के बीच सबने किसान की बात मान ली. सब चुप हो गये.

उसी समय कड़कड़ाहट हुई और टपाटप बूंदें पड़ने लगीं. सब चिलाते हुए भागे—"बरसो देव, बरसो, दिल खोल कर बरसो."

लेकिन दूसरे दिन धूप निकली हुई है.

× × ×

कल एक मित्र से बात हो रही थी. वह अमरीका हो आये हैं. उन्हें अमरीकी जीवन बहुत अच्छा लगता है. बोले—"अमरीका में हर तरह की आज़ादी है."

मैं चुप रहा.

उन्होंने भांपा कि मैं उनकी बात पर यक़ीन नहीं कर रहा हूं. शीघ्र ही उबल पड़े—"और कोई आज़ादी हो या न हो, लेकिन जिन्सी आज़ादी बेहद है, बेहद है ....."

मुझे हंसी आ गई. मुंह दबा कर हंसने को कौन कहे, मैं पूरी ताक़त लगा कर हंस पड़ा.

वह कुछ झेंप से गये.

उन मित्र का ही क्या. बहुत से आते हैं, अमरीका की आज़ादी को सराहते हैं. लेकिन जब जब उनसे प्रश्न किये जाते हैं वह जिन्सी आज़ादी और यह आज़ादी और वह आज़ादी का नाम गिनाने लगते हैं. वह झूट बोलते हैं, कैसे कहूं ? वह भरम में हैं ? हो सकता है. लेकिन वह भरम में हैं कि मैं भरम में हूं ? प्रश्न उठा और फिर शांत होने का उसने नाम न लिया. नींद ग़ायब हो गई. बरसात की रात में सितारे भी नहीं थे कि सितारे गिनता. घर में मच्छर बहुत हैं. अन्धेरे में उन्हें ही मारता रहा. कोई मच्छर मरा या नहीं, लेकिन कई जगह मेरे बदन में दर्द ज़रूर होने लगा. जब कुछ सम्भव न हो तो मैं अख़बार पढ़ता हूं. हिन्दुस्तान टाइम्स का पुराना नम्बर उठा लाया. पढ़ता रहा. एक कोने में ख़बर छपी थी. हैडिंग थी—"अमरीकी औरत का आइक

مہاراج توند پر هاتھ گهماتے اُدھر سے گزرے اور اُنھوں نے کہا—"یہ سب جھوٹ ہے . کون ہے بڑا ودوان . جیسے اکبر کے بعد سوکھا پڑا هی نہیں؟"

سب نے سن لیا' کوئی جواب نہیں دیا .

کسان نے پھر کہا—"بنیا نے پانی گاڑ رکھا ہے . بھیا' کوئی مرے یا جئے' اِن لوگوں کو اپنے منافع سے مطلب......"

وشواس نہ کرتے هوئے دوسروں نے گردن هلائی . کسان جھوٹا بننے کو تیار نہیں ہے . اُس نے ذرا جوش میں آکر کہا—"تین سال پہلے تو همارے گاؤں میں هی ایک بنیا پکڑا گیا تھا . بچو کی خوب پٹائی هوئی . آنگن میں پانی گاڑ رکھا تھا . گاؤں والوں نے ملکر پوجا کرائی اور پانی اُکھیڑا . دوسرے گھنٹے هی ارا توڑ پانی برسا."

وشواس اور اوشواس کے بیچ سب نے کسان کی بات مان لی . سب چپ هوگئے .

اُسی سمے کڑکڑاهٹ هوئی اور ٹپاٹپ بوندیں پڑنے لگیں . سب چلاتے هوئے بھاگے "برسو دیو' برسو' دل کھول کر برسو ."

لیکن دوسرے دن دھوپ نکلی هوئی ہے .

× × ×

کل ایک متر سے بات هو رهی تھی . وہ امریکہ هو آئے هیں . اُنهیں امریکی جیون بہت اچھا لگتا ہے . بولے—"امریکہ میں هر طرح کی آزادی ہے ."

میں چپ رها .

اُنھوں نے بھانپا کہ میں اُن کی بات پر یقین نہیں کر رها هوں . شیگھر اُبل پڑے—"اور کوئی آزادی هو یا نہ هو لیکن جنسی آزادی بےحد ہے' بےحد ہے ."

مجھے هنسی آگئی . منہ دبا کر هنسنے کو کون کہے' میں پوری طاقت لگاکر هنس پڑا .

وہ کچھ جھینپ سے گئے .

اُن متر کا هی کیا . بہت سے آتے هیں' امریکہ کی آزادی کو سراهتے هیں . لیکن جب جب اُن سے پرشن کئے جاتے هیں وہ جنسی آزادی اور یہ آزادی اور وہ آزادی کا نام گنانے لگتے هیں . وہ جھوٹ بولتے هیں' کیسے کہوں؟ وہ بھرم میں هیں؟ هوسکتا ہے . لیکن وہ بھرم میں هیں کہ میں بھرم میں هوں؟ پرشن اُٹھا اور پھر شانت هونے کا اُس نے نام نہ لیا . نیند غائب هوگئی . برسات کی رات میں ستارے بھی نہیں تھے کہ ستارے گنتا . گھر میں مچھر بہت هیں . اندھیرے میں انهیں هی مارتا رها . کوئی مچھر مرا یا نہیں' لیکن کئی جگہ میرے بدن میں درد ضرور هونے لگا . جب کچھ سمبھو نہ هو تو میں اخبار پڑھتا هوں . هندستان ٹائمس کا پرانا نمبر اُٹھا لیا' پڑھتا رها . ایک کونے میں خبر چھپی تھی . هیڈنگ تھی—"امریکی عورت کا آئک

महाराज बिगड़ कर बोले—"हाथ पावों धोना आफ़त हो गई है. भगवान बरस रहे हैं. कुल्ला लगा के पी लेना. धरम करम भी करना मुश्किल हो गया है. एक ऐसे ही सुधार कर लिया है. पर इतना भी पूरा नहीं होने पाता. अब तो केवल सात दफ़ा लोटा मांजता हूं......"

मजदूर ने पूछा—"महाराज पहले कितनी बार लोटा मांजते थे ?"

महाराज ने बम्बा छोड़ते हुये कहा—"चौदह दफ़ा, समझे......लेकिन क्या करें, अब घूर खरबोटने लगे हैं......जै शिव शम्भू, जै शिव शम्भू......"

महाराज चले गए, सब ने जल्दी मचाई, दोनों ने प्यास बुझाई और अपने अपने स्थानों के लिये भागे.

सब ने कहा कि आज पानी बरस कर रहेगा. बादल घिरे रहे. लेकिन पानी नहीं बरसा.

बरसात में डेढ़ महीने और बाक़ी हैं. पानी नहीं बरसा. दो चार छींटे को पानी बरसना नहीं कहते. हर दिल में यह दुविधा उठ रही है कि पानी न बरसेगा तो क्या होगा ? हर एक सोच रहा है कि पानी क्यों नहीं बरसता ? जितने मुंह उतनी बातें. जिसको जिस चीज़ में दिलचस्पी है वह उसी का रोना रोता है. लेकिन एक रोना सब को है. वह रोना पेट का है. पानी नहीं बरसेगा तो रोटी नहीं मिलेगी !

उसी बम्बे पर फिर लोग इकट्ठा हैं. बहस पानी पर चल रही है.

प्रेस के मजदूर ने कहा—"पानी बरसे कहां से ! ऐटम बम, हाईड्रोजन बम छुड़ा छुड़ा कर बादल सुखा दिये हैं......"

तब ही किसी ने जैसे उसका सुधार किया—"बादल कहा सूख सकते हैं ? पानी न हो तो बादल बनें ही क्यों ? असल बात यह है कि ऐटम बम और हाइडरोजन बम के छूटने से जो गर्द उठी है, वह गर्द आसमान पर छा गई है. इसी कारन पानी नहीं बरसता है."

"कहते हैं कि पानी, अच्छा है नहीं बरसता. नहीं तो आसमान से ऐटम के कन गिरेंगे और बीमारी फैल जायगी."

दूसरे आदमी ने व्यंग किया—"भूकों मरें, चाहे रोगी हो कर मरें, मरना तो है ही. जो चाहे करो भगवान !"

पास ही एक किसान खड़ा था. उसने सर हिलाया. कहने का मतलब यह था कि यह सब बातें काल्पनिक हैं. असली बात वह समझता है. तब ही मजदूर ने उसे भांप लिया और बोला—"गांवों में तो त्राहि त्राहि मची होगी."

किसान बोला—"असल बात मैं बताऊं. जब राजा की नीयत ख़राब होती है तो सूखा पड़ता है. कहते हैं कि अकबर बादशाह के समय किसी मंत्री ने लगान बढ़ा दिया था और किसानों से जबरदस्ती लगान वसूला था. उस समय भी सूखा पड़ा था."

مہاراج بگڑ کر بولے—"ہاتھ پاؤں دھونا آفت ہوگئی ہے. بھگوان برس رہے ہیں. چلو لگا کر پی لینا . دھرم کرم بھی کرنا مشکل ہوگیا ہے . ایک ایسے ہی سدھار کرلیا ہے . پر اتنا بھی پورا نہیں ہونے پاتا ہے . اب تو کیول سات دفعہ لوٹا مانجھتا ہوں......"

مزدور نے پوچھا—"مہا راج پہلے کتنی بار لوٹا مانجھتے تھے؟"

"مہاراج نے بمبا چھوڑتے ہوئے کہا—"چودہ دفعہ' سمجھے......لیکن کیا کریں' اب گھور کھربوٹنے لگے ہیں ......جے شیو شمبھو' جے شیو شمبھو......"

مہاراج چلے گئے' سب نے جلدی مچائی' دونوں نے پیاس بجھائی اور اپنے اپنے استھانوں کے لئے بھاگے .

سب نے کہا کہ آج پانی برس کر رہے گا. بادل گھرے رہے. لیکن پانی نہیں برسا .

برسات میں ڈیڑھ مہینے اور باقی ہیں. پانی نہیں برسا. دو چار چھینٹے کو پانی برسنا نہیں کہتے . ہر دل میں یہ دویدھا اٹھ رہی ہے کہ پانی نہ برسے گا تو کیا ہوگا ؟ ہر ایک سوچ رہا ہے کہ پانی کیوں نہیں برستا ؟ جتنے منہ اتنی باتیں. جس کو جس چیز میں دلچسپی ہے وہ اسی کا رونا روتا ہے . لیکن ایک رونا سب کو ہے . وہ رونا پیٹ کا ہے. پانی نہیں برسے گا تو روٹی نہیں ملےگی !

اسی بمبے پر پھر لوگ اکٹھا ہیں . بحث پانی پر چل رہی ہے .

پریس کے مزدور نے کہا—"پانی برسے کہاں سے ! ایٹم بم' ہائڈ روجن بم چھڑا چھڑا کر بادل سکھا دئے ہیں......"

تب ہی کسی نے جیسے اس کا سدھار کیا—"بادل کہاں سوکھ سکتے ہیں؟ پانی نہ ہو تو بادل بنیں ہی کیوں؟ اصل بات یہ ہے کہ ایٹم بم اور ہائڈ روجن بم کے چھوٹنے سے جو گرد اٹھی ہے' وہ گرد آسمان پر چھا گئی ہے . اسی کارن پانی نہیں برستا ہے ."

" کہتے ہیں کہ پانی اچھا ہے نہیں برستا. نہیں تو آسمان سے ایٹم کے کن گریں گے اور بیماری پھیل جائےگی."

دوسرے آدمی نے ویلنگ کیا—"بھوکوں مریں' چاہے روگی ہوکر مریں' مرنا تو ہے ہی . جو چاہے کرو بھگوان !"

پاس ہی ایک کسان کھڑا تھا . اس نے سر ہلایا . کہنے کا مطلب یہ تھا کہ یہ سب باتیں کالپنک ہیں . اصلی بات وہ سمجھتا ہے . تب ہی مزدور نے اسے بھانپ لیا اور بولا—" گاؤں میں تو تراہ تراہ مچی ہوگی ."

کسان بولا—" اصل بات میں بتاؤں . جب راجا کی نیت خراب ہوجاتی ہے تو سوکھا پڑتا ہے . کہتے ہیں کہ اکبر بادشاہ کے سمے کسی منتری نے لگان بڑھا دیا تھا اور کسانوں سے زبردستی لگان وصول تھا . اس سمے بھی سوکھا پڑا تھا ."

प्रवासी की डायरी

پرواسی کی ڈائری

बादल आते हैं लोग आसमान को देखते हैं, घिरती घटाओं को देख कर उनके दिल गद्गद् हो जाते हैं.

लेकिन बादल बिना बरसे चले जाते हैं.

एक फ़ाइल दबाए बेफ़िक्र नौजवान कहता है—"क्या छटा है......बरसो बादल झूम के! क्या मज़ा आता है. रिम झिम फुहार और खिड़की पर खड़े हो कर सड़क पर भीगने वालों का दृश्य!

उसी समय लकड़ी चीरने वाला मज़दूर दरवाज़े पर आकर खड़ा होता है. आंख ऊपर उठाता है और कहता है, सांस खींच कर, मन उदास कर के—बरसो देव, काहे ग़रीबों के पीछे पड़े हो!

कोऊ काहू में मगन, कोऊ काहू में मगन.

एक सौ एक का टीका खींचे, पंडित महावीर, जनेऊ को कान से बांधे बम्बे पर लोटा धो रहे हैं. मुंह से बिरहा की लय फूट रही है और धोते धोते 'हरे राम' भी कह लेते हैं.

पास के प्रेस से एक मज़दूर आता है. "महराज ज़रा जल्दी करो, पानी पी लूं, काम पर जाना है."

"क्या मज़ाक़ है! लूट मज़ा. कहां काम पर चला है? क्या काली घटा छाई है!" महाराज आनन्द विभोर हो कर बोले.

मज़दूर ने कहा—"इस सब को फ़ुरसत हो तो फिर क्या है! काम नहीं करूंगा तो खाऊंगा क्या?"

"चलते हैं भैरो का नाम लेकर भंग छानेंगे, मन्दिर के बरामदे में बैठ कर रसखान का पाठ करेंगे, क्या आनन्द आता है!"

"महाराज जल्दी कर दो."

"क्या बक बक करता है. ज़रा दूर हट, छूना न लेना."

मज़दूर ने फिर प्रार्थना की.

तब ही दो चार बूंदें टपकीं. महाराज ने बम्बे के नीचे पैर रगड़ते हुए कहा—"धन्य हो भगवान! जै सियाराम चन्द्र की जै!"

बम्बे पर दूसरा आदमी भी आ गया. उसने कहा—"महाराज जल्दी करो."

بادل آتے ہیں۔ لوگ آسماں کو دیکھتے ہیں، گھرتی گھٹاؤں کو دیکھکر اُن کے دل گد گد ہو جاتے ہیں ۔
لیکن بادل بن برسے چلے جاتے ہیں ۔

ایک فائل دبائے بےفکر نوجوان کہتا ہے—"کیا چھٹا ہے،...برسو بادل جھوم کے! کیا مزا آتا ہے۔ رم جھم پھوار اور کھڑکی پر کھڑے ہوکر سڑک پر بھیگنے والوں کا درشیہ!
اُسی سمے لکڑی چیرنے والا مزدور دروازے پر آکر کھڑا ہوتا ہے۔ آنکھ اوپر اُٹھاتا ہے اور کہتا ہے—سانس کھینچ کر، من اُداس کرکے—برسو دیو، کاہے غریبوں کے پیچھے پڑے ہو"!

کوؤ کاہو میں مگن، کوؤ کاہو میں مگن ۔

ایک سو ایک کا ٹیکا کھینچے، پنڈت مہابیر، جنیؤ کو کان سے باندھے بمبے پر لوٹا دھو رہے ہیں۔ منہ سے برہا کی لے پھوٹ رہی ہے اور دھوتے دھوتے 'ہرے رام' بھی کہ لیتے ہیں ۔

پاس کے پریس سے ایک مزدور آتا ہے ۔ "مہاراج ذرا جلدی کرو، پانی پی لوں، کام پر جانا ہے ۔"

"کیا مذاق ہے۔ لوٹ مزا ۔ کہاں کام پر چلا ہے، کیا کالی گھٹا چھائی ہے" مہاراج آنند وبھور ہوکر بولے ۔

مزدور نے کہا—"اس سب کو فرصت ہو تو پھر کیا ہے! کام نہیں کروں گا تو کھاؤں گا کیا؟"

"چلتے ہیں بھیرو کا نام لےکر بھنگ چھانیں گے ۔ مندر کے برامدے میں بیٹھ کر رس کھان کا پاٹھ کریں گے ......کیا آنند آتا ہے ۔"

"مہاراج جلدی کردو"

"کیا بک بک کرتا ہے ۔ ذرا دور ہٹ، چھو نہ لینا۔"

مزدور نے پھر پرارتھنا کی ۔

تب ہی دو چار بوندیں ٹپکیں ۔ مہاراج نے بمبے کے نیچے پیر رگڑتے ہوئے کہا—"دھنیہ ہو بھگوان! جے سیارام چندر کی جے!"

بمبے پر دوسرا آدمی بھی آگیا ۔ اُس نے کہا—"مہاراج جلدی کرو۔"

मुझे दिये. मैंने देखा उसके हाथ मिट्टी में सने हुए थे. वह जरूर घुटनों के बल चल कर दूकान तक आया होगा. जल्दी जल्दी शराब पी कर दूसरों की हंसी और तानाबाज़ी की परवाह न करते हुए वह फिर घुटनों के बल ही खिसक खिसक कर वापस चला गया.

उसके बाद फिर काफ़ी दिनों तक कुंग का ज़िक्र नहीं आया. साल के आख़िर में मालिक फिर जब हिसाब बनाने लगा तो उसने कहा-"कुंग पर अभी भी 19 इकन्नियां बाक़ी हैं." शैतानी नाव वाले त्योहार में भी उसने यही कहा, पर उसके बाद हेमन्त के त्योहार के मौक़े पर हिसाब मिलाते समय उसने यह बात नहीं दुहराई. अगले साल भी कुंग नहीं दिखलाई पड़ा.

तब से आज तक कुंग नहीं दिखलाई पड़ा. शायद वह मर चुका हो, पर उसकी याद हमारे दिल में सदा ज़िन्दा रहेगी.

बड़े मज़ेदार आदमी हैं मंसाराम शास्त्री.

वे कई भाषाओं के विद्वान हैं और उनका जीवन एक इन्द्र धनुषी जीवन है, जिसमें अनेक रंग एक साथ समाये हुए हैं.

यों वे सदा अपनी पंडिताऊ हिन्दी में बोलते हैं, जिसमें फ़ारसी अरबी का बहिष्कार और संस्कृत का श्रृंगार होता है. हां, बोलते बोलते भारतीय संस्कृति पर बात आ जाये, तो भक्ति की धारा में बहने लगते हैं और उनकी हिन्दी शुद्ध संस्कृत में इस तरह बदल जाती है, जैसे लहर में लहर !

उनका जीवन एक इन्द्र धनुषी जीवन है, जिसमें अनेक रंग एक साथ समाये हुए हैं. भारतीय संस्कृति की शान्त धारा में तैरते तैरते वे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रचंड प्रवाह में कब आ जायें, इसे कोई नहीं जानता. हां, यह अकसर देखा है कि वह शान्त से उत्साह में आजायें, तो उनकी शुद्ध संस्कृत अंग्रेज़ी में इस तरह बदल जाती है, जैसे कांटे पर रेल !

उनकी बातें आगे बढ़ती रहती हैं और जाने कब अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से घरेलू जीवन पर आ जाती हैं. कमाल यह है कि हम उनकी बातें न समझ रहे हों, तब भी यह समझ सकते हैं, क्योंकि अब वे साधारन हिन्दी में बोल रहे होते हैं.

बड़े मज़ेदार आदमी हैं मंसाराम शास्त्री.

—कन्हैयालाल 'प्रभाकर'

یے دیئے . میں نے دیکھا کہ اس کے ہاتھ مٹی
ں سنے ہوئے تھے . وہ ضرور گھٹنوں کے بل چلکر دوکان
ک آیا ہوگا . جلدی جلدی شراب پی کر دوسروں کی
ہنسی اور طعنہ بازی کی پرواہ نہ کرتے ہوئے وہ پھر گھٹنوں
بل ہی کھسک کھسک کر واپس چلا گیا .

اس کے بعد پھر کافی دنوں تک کونگ کا ذکر نہیں
یا . سال کے آخر میں مالک پھر جب حساب بنانے لگا
اس نے کہا—"کونگ پر ابھی بھی 19 اکنیاں باقی
ہیں." شیطانی ناؤ والے تہوار میں بھی اس نے یہی
ا. پر اس کے بعد ہیمنت کے موقعہ پر حساب ملاتے سمے
س نے یہ بات نہیں دہرائی . اگلے سال بھی کونگ
ہیں دکھلائی پڑا .

تب سے آج تک کونگ نہیں دکھلائی پڑا. شاید وہ مر
کا ہو، پر اسکی یاد ہمارے دل میں سدا زندہ رہےگی .

بڑے مزیدار آدمی ہیں منسارام شاستری .

وے کئی بھاشاؤں کے ودوان ہیں اور ان کا جیون
ک اندردھنشی جیون ہے، جسمیں انیک رنگ ساتھ
مائے ہوئے ہیں .

یوں وے سدا اپنی پنڈتاؤ ہندی میں بولتے ہیں،
سمیں فارسی، عربی کا بہشکار اور سنسکرت کا شرنگار ہوتا
. ہاں، بولتے بولتے بھارتیہ سنسکرتی پر بات آ جائے، تو
ھکتی کی دھارا میں بہنے لگتے ہیں اور ان کی ہندی
دھ سنسکرت میں اس طرح بدل جاتی ہے، جیسے
ر میں لہر !

ان کا جیون ایک اندردھنشی جیون ہے، جسمیں
یک رنگ ایک ساتھ سمائے ہوئے ہیں. بھارتیہ سنسکرتی
ی شانت دھارا میں تیرتے تیرتے وہ انترراشٹری راجنیت
، پرچنڈ پرواہ میں کب آ جائیں، اسے کوئی نہیں جانتا.
اں، یہ اکثر دیکھا ہے کہ وہ شانت سے اتساہ میں
جائیں، تو ان کی شدھ سنسکرت انگریزی میں اس طرح
دل جاتی ہے، جیسے کانٹے پر ریل !

ان کی باتیں آگے بڑھتی رہتی ہیں اور جانے کب
نترراشٹری راجنیت سے گھریلو جیون پر آ جاتی ہیں .
مال یہ ہے کہ ہم ان کی باتیں نہ سمجھ رہے ہوں، تب
ھی یہ سمجھ سکتے ہیں، کیونکہ اب وہ سادھارن ہندی
یں بول رہے ہوتے ہیں .

بڑے مزیدار آدمی ہیں منسارام شاستری :

—کنہیالال 'پربھاکر'

"क्यों ?—"क्या हुआ था ?"

"वह फिर चोरी कर रहा था. इस बार वह मिस्टर लेंग के यहां चोरी करने गया था. कितना बुद्धू था वह ! प्रान्त भर में प्रतिष्ठित विद्वान के घर चोरी करने गया था."

"फिर क्या हुआ ?"

"होता क्या ! पहिले उसने कागज़ पर लिखा कि उसने चोरी की है. फिर उसे मार पड़ी. क़रीब क़रीब रात भर वह पिटता रहा. उसके पैर टूट गये."

"फिर उसके बाद ?"

"मालूम नहीं, फिर उसका क्या हुआ. शायद मर गया हो."

दूकान का मालिक फिर आगे प्रश्न करना बन्द कर अपने काम में लग गया.

हेमन्त के त्योहार के बाद, जैसे जैसे जाड़ा बढ़ता गया, ठंडी हवाएं बहने लगीं. मैं अपना अधिकांश समय चूल्हे के नज़दीक ही बैठा रहता. अपना रूई का कोट बराबर पहिने रहता. एक दिन दोपहर के समय जब दूकान में कोई भी ग्राहक नहीं था मैं बैठा बैठा ऊंघ रहा था तभी किसी ने पुकारा और एक प्याला शराब मांगी.

आवाज़ हालांकि बहुत ही धीमी थी पर परिचित सी थी. जब मैंने आंखें खोलीं तो सामने कोई भी नहीं दिखाई पड़ा. जब मैंने खड़े होकर दरवाज़े की तरफ़ झुक कर झांका तो मेज़ के क़रीब कुंग-ई-ची को बैठा देखा. वह चटाई पर पल्थी मारे बैठा था और फटी पुरानी एक बंडी पहने था. मुझे देखते ही उसने दुहराया—"एक प्याला गरम शराब दो."

अब मेरे मालिक का ध्यान भी उचट गया और उसने पूछा—"क्या कुंग-ई-ची आया है ? उस पर 19 इकन्नियां बाक़ी हैं."

कुंग ने उत्तर दिया—"वह मैं अदा कर दूंगा. आज तो मैं नक़द ले रहा हूं. हां, शराब अच्छी होनी चाहिये."

मालिक ने पहिले की ही तरह पूछा—"कुंग-ई-ची आजकल फिर चोरी करने लगे ?"

पर इस बार बिगड़ कर जवाब देने के बजाय कुंग बोला—"अपना मज़ाक़ अपने ही पास रक्खो."

"अच्छा ! यह मज़ाक़ है ? बताओ तुम्हारे पैर कैसे टूट गये ?"

कुंग ने दबी आवाज़ में उत्तर दिया—"गिर पड़ा था." उसकी आंखें कह रही थीं कि इस बात को यहीं पर ख़तम कर दिया जाय. अब तक काफ़ी लोग इकट्ठा हो गये थे और सभी हंस रहे थे. शराब गरम कर मैंने उसकी तरफ़ बढ़ाई और उसने अपनी बंडी के जेब से पैसे निकाल कर

"کیوں ؟ کیا ہوا تھا ؟"

"وہ پھر چوری کر رہا تھا . اِس بار وہ مسٹر لنگ کے یہاں چوری کرنے گیا تھا . کتنا بدھو تھا وہ ! پرانت بھر میں پرتشٹھت ودوان کے گھر چوری کرنے گیا تھا ."

"پھر کیا ہوا؟"

"ہوتا کیا ! پہلے اُس نے کاغذ پر لکھا کہ اُس نے چوری کی ہے . پھر اُسے مار پڑی . قریب قریب رات بھر وہ پٹتا رہا . اُس کے پیر ٹوٹ گئے ."

"پھر اس کے بعد؟"

"معلوم نہیں' پھر اُسکا کیا ہوا . شاید مرگیا ہو ."

دُوکان کا مالک پھر آگے پرشن کرنا بند کر اپنے کام میں لگ گیا .

ہیمنت کے تیوہار کے بعد' جیسے جیسے جاڑا بڑھتا گیا' ٹھنڈی ہوائیں بہنے لگیں . میں اپنا ادھیکانش سمے چولھے کے نزدیک ہی بیٹھا رہتا . اپنا روئی کا کوٹ میں برابر پہنے رہتا . ایک دن دوپہر کے سمے جب دوکان میں کوئی بھی گراہک نہیں تھا میں بیٹھا بیٹھا اُونگھ رہا تھا . تبھی کسی نے پکارا اور ایک پیالہ شراب مانگی .

آواز حالانکہ بہت ہی دھیمی تھی پر پریچت سی تھی . جب میں نے آنکھیں کھولیں تو سامنے کوئی بھی نہیں دکھائی پڑا . جب میں نے کھڑے ہوکر دروازے کی طرف جھک کر جھانکا تو میز کے قریب کونگ . ای . چی کو بیٹھا دیکھا . وہ ایک چٹائی پر پلتھی مارے بیٹھا تھا اور پھٹی پرانی ایک بنڈی پہنے تھا . مجھے دیکھتے ہی اُس نے دوھرایا—"ایک پیالہ گرم شراب دو ."

اب میرے مالک کا دھیان بھی اُچٹ گیا اور اُس نے پوچھا—"کیا کونگ . ای . چی آیا ہے ؟ اُس پر 19 اکنیاں باقی ہیں ."

کونگ نے اُتر دیا—"وہ میں ادا کردونگا . آج تو میں نقد لے رہا ہوں . ہاں' شراب اچھی ہونی چاہئے ."

مالک نے پہلے کی ہی طرح پوچھا—"کونگ . ای . چی' آجکل پھر چوری کرنے لگے ؟"

پر اِس بار بگڑ کر جواب دینے کے بجائے کونگ بولا—"اپنا مذاق اپنے ہی پاس رکھو ."

"اچھا ! یہ مذاق ہے' تو بتاؤ تمہارے پیر کیسے ٹوٹ گئے ؟"

کونگ نے دبی آواز میں اُتر دیا—"گر پڑا تھا ." اسکی آنکھیں کہہ رہی تھیں کہ اِس بات کو یہیں پر ختم کردیا جائے . اب تک کافی لوگ اِکٹھا ہوگئے تھے اور سبھی ہنس رہے تھے . شراب گرم کر میں نے اُسکی طرف بڑھائی اور اس نے اپنی پھٹی بنڈی کے جیب سے پیسے نکال کر

के बाद बड़ी आजिजी के साथ वह फिर बोला—"तुम नहीं लिख सकते ? देखो मैं तुम्हें बताता हूं. आगे से ध्यान रखना. तुमको यह लिखना जानना चाहिये क्योंकि आगे जब तुम अपनी दूकान खोलोगे तो तुमको ग्राहकों का हिसाब किताब रखना ही पड़ेगा."

मुझे वह दिन तो क़रीब नहीं नज़र आ रहा था जब मैं स्वयं अपनी दूकान खोलता और फिर मेरा मालिक भी अपना हिसाब लिखने में इस अक्षर का इस्तेमाल कभी भी नहीं करता था. कुछ परेशान होकर और कुछ मुस्कराते हुए मैंने उत्तर दिया—"पर तुमसे कौन कहता है कि मुझे पढ़ाओ, क्या अक्षर 'हुई' घास के तिरछेपन की तरह नहीं लिखा जाता है ?"

कुंग ख़ुश हो गया और मेज़ पर हाथ पटकते हुए बोला—"ठीक, ठीक ! लेकिन अक्षर 'हुई' तीन चार प्रकार से लिखा जाता है. क्या तुम्हें मालूम है ?" मैं ऊब गया था. उसको एक हल्की सी डांट बता कर मैं दूसरे कामों में लग गया. कुंग शराब में उंगली डालकर मेज़ पर उन अक्षरों को लिख कर मुझे समझाने जा रहा था, पर मेरा इस प्रकार का व्योहार देख कर वह हताश हो गया, उसने लम्बी सांस ली और चुप हो कर बैठ गया।

अकसर ऐसा होता था कि सराय में हंसी और ग़ुल गपाड़ा सुन कर पास पड़ोस के बच्चे इकट्ठा हो जाते थे और कुंग-ई-ची को घेर लेते थे. कुंग उनमें से हर एक को मसालेदार फलियां देता था. उन्हें खाने के बाद भी बच्चे और पाने की आशा में उसको घेरे खड़े रहते थे. पर जब उसके पास फलियां ख़तम हो जाती थीं तो प्लेट को उलट कर वह बच्चों से कहता था—"अब आज ख़तम हो गइ, फिर दूसरे दिन मिलेंगी." बच्चों को जैसे विश्वास नहीं होता था. वह उचक उचक कर प्लेट देखने का प्रयत्न करते और उसमें कुछ न पा कर निराश हो जाते और फिर धीरे धीरे खेल में लग जाते थे.

कुंग-ई-ची बहुत ही मज़ेदार व्यक्ति था पर उसके बग़ैर भी हमारी दूकान चलती ही रहती थी.

हैमन्त के त्योहार के कुछ दिन पहिले जब हमारी दूकान का मालिक सालाना हिसाब किताब तैयार कर रहा था, हिसाब लिखते लिखते बोला—"कुंग-ई-ची बहुत दिनों से इधर नहीं आया. अभी भी उस पर 19 इकन्नियां बाक़ी हैं." तब मुझे भी इसका ख़्याल हुआ कि इधर बहुत दिनों से कुंग-ई-ची दूकान पर नहीं आया.

उपस्थित ग्राहकों में से एक बोला—"वह आये भी कैसे ? पिछली बार जब वह पिटा था तो उसके दोनों पैर बेकार हो गये थे."

مد بڑی عاجزی کے ساتھ وہ پھر بولا—"تم نہیں لکھ سکتے؟ دیکھو میں تمہیں بتاتا ہوں. آگے سے دھیان رکھنا . تم کو لکھنا جاننا چاہئے کیونکہ آگے جب تم اپنی دوکان کھولوگے تو تمکو گراہکوں کا حساب کتاب رکھنا ہی پڑیگا."

مجھے وہ دن تو قریب نہیں نظر آرہا تھا جب میں خود اپنی دوکان کھولتا اور پھر میرا مالک بھی اپنا حساب لکھنے میں اس اکشر کا استعمال کبھی بھی نہیں کرتا تھا . کچھ پریشان ہوکر اور کچھ مسکراتے ہوئے میں نے جواب دیا—"پر تم سے کون کہتا ہے کہ مجھے پڑھاؤ' کیا اکشر 'ہوئی' گھاس کے ترچھے پن کی طرح نہیں لکھا جاتا ؟"

کونگ خوش ہوگیا اور میز پر ہاتھ پٹکتے ہوئے بولا—"ٹھیک' ٹھیک! لیکن اکشر 'ہوئی' تین چار پرکار سے لکھا جاتا ہے . کیا تمہیں معلوم ہے؟" میں اوب گیا تھا . اسکو ایک ہلکی سی ڈانٹ بتاکر میں دوسرے کاموں میں لگ گیا. کونگ شراب میں انگلی ڈالکر میز پر ان اکشروں کو لکھکر مجھے سمجھانے جا رہا تھا' پر میرا اس پرکار کا بیوہار دیکھکر وہ ہتاش ہوگیا' اس نے لمبی سانس لی اور چپ ہوکر بیٹھ گیا .

اکثر ایسا ہوتا تھا کہ سرائے میں ہنسی اور غل غپاڑہ سنکر پاس پڑوس کے بچے اکٹھا ہوجاتے تھے اور کونگ . ای . چی کو گھیر لیتے تھے . کونگ ان میں سے ہر ایک کو مسالےدار پھلیاں دیتا تھا . انہیں کھانے کے بعد بھی بچے اور پانے کی آشا میں اسکو گھیرے کھڑے رہتے تھے . پر جب اس کے پاس پھلیاں ختم ہوجاتی تھیں تو پلیٹ کو الٹ کر وہ بچوں سے کہتا تھا—"اب آج ختم ہوگئیں . پھر دوسرے دن ملینگی ." بچوں کو جیسے وشواس نہیں ہوتا تھا . وہ اچک اچک کر پلیٹ دیکھنے کا پریتن کرتے اور اس میں کچھ نہ پاکر نراش ہوجاتے اور پھر دھیرے دھیرے کھیل میں لگ جاتے .

کونگ . ای . چی بہت ہی مزیدار ویکتی تھا پر اس کے بغیر بھی ہماری دوکان چلتی ہی رہتی تھی .

ہیمنت کے تیوہار کے کچھ دن پہلے جب ہماری دوکان کا مالک سالانہ حساب کتاب تیار کر رہا تھا' حساب لکھتے لکھتے بولا—کونگ . ای . چی بہت دنوں سے ادھر نہیں آیا . ابھی بھی اس پر 19 اکنیاں باقی ہیں . تب مجھے بھی اسکا خیال ہوا کہ ادھر بہت دنوں سے کونگ . ای . چی دوکان پر نہیں آیا .

اپستھت گراہکوں میں سے ایک بولا—"وہ آئے بھی کیسے؟ پچھلی بار جب وہ پٹا تھا تو اس کے دونوں پیر بیکار ہوگئے تھے ."

कोई निश्चित साधन नहीं था. धीरे धीरे वह बहुत ग़रीब हो गया और भीक मांगने के लिये मजबूर होने लगा. उसकी लिखावट बड़ी सुन्दर थी, इसलिये उसे नक़ल करने का, दस्तावेज़ लिखने का काम अकसर मिल जाया करता था. पर उसमें कमज़ोरियां भी कम नहीं थीं. वह शराब पीने का आदी था और आलसी भी था. कुछ दिन काम करने के बाद वह अकसर काग़ज़ कलम लेकर ग़ायब हो जाता था. उसके बाद फिर कोई रास्ता नहीं रह जाता था, उसे छोटी मोटी चोरियां करनी ही पड़ती थीं. जब कई बार ऐसा हुआ तो उसे सबों ने नक़ल करने के लिये काम देना भी बन्द कर दिया. पर उस सराय में उसका व्योहार आदर्श व्यक्ति का हुआ करता था. वह अपना क़र्ज़ हमेशा चुका दिया करता था. ऐसा भी होता था कि जब उसके पास नक़द पैसे नहीं होते थे तो उसका नाम उधार के ग्राहकों की सूची पर आ जाता था पर महीना ख़तम होने के पहिले ही अपना नाम कटवा भी लेता था.

आधा प्याला शराब पीने के बाद कुंग अपनी स्वस्थ प्रकृति को वापस पा जाता था, लेकिन उसी समय कोई प्रश्न कर बैठता—"कुंग-ई-ची, क्या तुम सचमुच पढ़ना जानते हो ?"

कुंग उसकी तरफ़ घृना भरी नज़रों से देखता, जैसे यह सवाल उसकी इज़्ज़त उतारने के लिये किया गया हो. पर दूसरे ग्राहक अपना सवाल पूछते—"यह क्या बात है कि तुमने कोई परीक्षा नहीं पास की ?"

तब कुंग परेशान और दुखी दिखने लगता था. उसका चेहरा पीला पड़ जाता था और होंट बोलने के लिये हिलने लगते थे. पर धीमे स्वर में कही गई उसकी बातें शायद ही किसी की समझ में आती थीं. फिर सब लोग क़हक़हा मार कर हंसने लगते थे और सराय के वातावरन में ज़िन्दगी और ताज़गी आ जाती थी.

ऐसे मौक़ों पर मैं भी ग्राहकों को हंसी ख़ुशी में साथ दे देता था और मालिक की तरफ़ से मुझे डांट भी नहीं पड़ती थी. दर असल वह ख़ुद भी कुंग से ऐसे उल्टे सीधे सवाल पूछा करता था. यह सोच कर कि दूसरे ग्राहकों से बातें करने में कोई लाभ नहीं है, कुंग दूकान पर बच्चों के बीच खो जाता. था एक बार उसने मुझसे पूछा—"क्या तुमने कभी स्कूल में पढ़ा है ?"

जब मैंने हामी भरते हुए सिर हिलाया, उसने कहा—"अच्छा, तब मैं एक सवाल करूंगा ? तुम 'हुई' अक्षर को 'हुई-सियांग' में आता है कैसे लिखते हो ?"

मैं सोचने लगा कि क्या अब एक भिकमंगा मेरी परीक्षा लेगा ! मैंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और अपना मुंह दूसरी तरफ़ मोड़ लिया. कुछ देर चुप रहने

کوئی نشچت سادھن نہیں تھا . دھیرے دھیرے وہ بہت غریب ہوگیا اور بھیک مانگنے کے لئے مجبور ہونے لگا . اُسکی لکھاوٹ بڑی سندر تھی' اس لئے اُسے نقل کرنے کا' دستاویز لکھنے کا کام اکثر مل جایا کرتا تھا . پر اِس میں کمزوریاں بھی کم نہیں تھیں. وہ شراب پینے کا عادی تھا اور آلسی بھی تھا . کچھ دن کام کرنے کے بعد وہ اکثر کاغذ قلم لے کر غائب ہو جاتا تھا . اس کے بعد پھر کوئی راستہ نہیں رہ جاتا تھا . اُسے چھوٹی موٹی چوریاں کرنی ہی پڑتی تھیں . جب کئی بار ایسا ہوا تو اُسے سبھوں نے نقل کرنے کے لئے کام دینا بھی بند کر دیا . پر اس سرائے میں اُسکا بیوہار آدرش ویکتی کا ہوا کرتا تھا . وہ اپنا قرض ہمیشہ چکا دیا کرتا تھا . ایسا بھی ہوتا تھا کہ جب اس کے پاس نقد پیسے نہیں ہوتے تھے تو اُسکا نام اُدھار کے گراہکوں کی سوچی پر آجاتا تھا پر وہ مہینہ ختم ہونے کے پہلے ہی اپنا نام کٹوا بھی لیتا تھا .

آدھا پیالہ شراب پینے کے بعد کونگ اپنی سوستھ پرکرتی کو واپس پا جاتا تھا' لیکن اُسی سمے کوئی پرشن کر بیٹھتا تھا—" کونگ - اِی - چی' کیا تم سچ مچ پڑھنا جانتے ہو ؟"

کونگ اُس کی طرف گھرنا بھری نظروں سے دیکھتا' جیسے یہ سوال اُسکی عزت اتارنے کے لئے کیا گیا ہو . پر دوسرے گراہک اپنا سوال پوچھتے—''یہ کیا بات ہے کہ تم نے کوئی پریکھشا نہیں پاس کی ؟"

تب کونگ پریشان اور دکھی دیکھنے لگتا تھا . اُسکا چہرہ پیلا پڑ جاتا تھا اور ہونٹ بولنے کے لئے ہلنے لگتے تھے. پر دھیمے سور میں کہی گئی اُسکی باتیں شاید ہی کسی کی سمجھ میں آتی تھیں . پھر سب لوگ قہقہہ مار کر ہنسنے لگتے تھے اور سرائے کے واتاورن میں زندگی اور تازگی آجاتی تھی .

ایسے موقعوں پر میں بھی گراہکوں کی ہنسی خوشی میں ساتھ دے دیتا تھا اور مالک کی طرف سے مجھے ڈانٹ بھی نہیں پڑتی تھی . دراصل وہ خود بھی کونگ سے ایسے الٹے سیدھے سوال پوچھا کرتا تھا . یہ سوچ کر کہ دوسرے گراہکوں سے باتیں کرنے میں کوئی لابھ نہیں ہے' کونگ دوکان پر بچوں کے بیچ کھو جاتا تھا . ایک بار اس نے مجھ سے پوچھا—" کیا تم نے کبھی اسکول میں پڑھا ہے ؟"

جب میں نے حامی بھرتے ہوئے سر ہلایا' اُس نے کہا —'' اچھا' تب میں ایک سوال کرونگا ؟ تم 'ہوئی' اکشر جو 'ہوئی . سیانگ' میں آتا ہے کیسے لکھتے ہو ؟"

میں سوچنے لگا کہ اب ایک بھکمنگا میری پریکھشا لیگا ! میں نے اُسکی باتوں پر دھیان نہیں دیا اور اپنا منھ دوسری طرف موڑ لیا . کچھ دیر چپ رہنے

पर मुझे खुद यह काम पुरा लगता था और मैं असंतुष्ट रहता था. मेरा मालिक डरावनी शक्ल का व्यक्ति था और ग्राहक सुस्त और थके हुये, कुन्द बुद्धि वाले होते थे. इसलिये किसी का प्रसन्न चित्त होकर उस दूकान में रहना असम्भव ही था. दूकान में हंसी तभी सुनाई पड़ती थी जब कुंग-ई-ची आता था. यही कारन है कि मुझे आज भी उसकी याद है.

ऊंची श्रेणी के ग्राहकों की आदत के विपरीत लम्बे गाउन वाला कुंग ही अकेला ऐसा ग्राहक था जो मेज़ के पास खड़ा होकर मदिरा पान करता था. वह ऊंचे क़द का हट्टा कट्टा आदमी था, फिर भी उसके चेहरे पर पीलापन छाया रहता था और चेहरे की झुर्रियों के बीच अकसर चोट के निशान भी दिखाई पड़ने लगते थे. उसकी लम्बी दाढ़ी, हमेशा बिना कंघी की हुई रहती थी. दाढ़ी में भी सफ़ेद बालों की धारियां दीख जाती थीं. हालांकि उसका गाउन लम्बा था पर वह इतना गंदा और पैबंददार था कि यह साफ़ पता लग जाता था कि कम से कम 10 बरस से तो धोया न गया होगा. वह बोलता इस तरह था कि आधी बात ही समझ में आती थी. जब भी वह सराय में आता था हर व्यक्ति उसकी तरफ़ देख कर मुस्कराने लगता और उन में से एक अवश्य कह बैठता—"कुंग-ई-ची, आज तो तुम्हारे चेहरे पर नये घाव के निशान दिखाई पड़ रहे हैं."

इन बातों की परवाह न करते हुये कुंग-ई-ची मेज़ के पास आकर दो प्याले शराब और एक प्लेट फलियों का आर्डर देता था और नौ इकन्नियां निकाल कर रख देता था. फ़ौरन ही कोई फिर बोल पड़ता—"तुमने फिर चोरी की होगी."

घूर कर उस व्यक्ति को देखते हुये वह उत्तर देता—"बेकार ही किसी भले आदमी को क्यों बदनाम करते हो ?"

"क्या भले आदमी को बदनाम करता हूं ? अभी परसों ही तो अपनी आखों के सामने तुम्हें पिटते हुये देखा है. तुमने 'हो' परिवार की किताबें चुराई थीं."

तब कुंग का चेहरा लाल हो जाता था और अपना विरोध प्रगट करते हुए वह उत्तर देता था—"किताबों का चुराना, चोरी नहीं.........किताबें ले लेना तो विद्वानों की आदत है, इसे चोरी नहीं कहते." फिर वह प्राचीन ग्रन्थों में से मिसालें देने लगता—"बड़ा आदमी वह है जो ग़रीबी में, अभाव में भी सन्तुष्ट रहता हो." और फिर उसका धारा प्रवाह भाषण चल निकलता. उस को शायद ही कोई समझ पाता. और तब तक भाषण चलता रहता जब तक सराय का हर ग्राहक हंसी से लोट पोट न हो जाता था.

गांव वालों के ही मुंह सुनने को मिला था कि कुंग-ई-ची को प्राचीन ग्रन्थों का अच्छा ज्ञान था. हालांकि उसने कोई परीक्षा कभी भी नहीं पास की थी. जीवन यापन का भी उसका

پر مجھے خود یہ کام برا لگتا تھا اور میں اسنتشٹ رہتا تھا ۔ میرا مالک ڈراونی شکل کا ویکتی تھا اور گراہک سست اور تھکے ہوئے کند بدھی والے ہوتے تھے ۔ اس لئے کسی کا پرسن چت ہو کر اس دوکان میں رہنا اسمبھو ہی تھا ۔ دوکان میں ہنسی تبھی سنائی پڑتی تھی جب کونگ - ای - چی آتا تھا. یہی کارن ہے کہ مجھے آج بھی اسکی یاد ہے ۔

اونچی شرینی کے گراہکوں کی عادت کے وپریت لمبے گاؤن والا کونگ ہی اکیلا گراہک تھا جو میز کے پاس کھڑا ہو کر مدرا پان کرتا تھا. وہ اونچے قد کا ہٹا کٹا آدمی تھا پھر بھی اس کے چہرے پر پیلا پن چھایا رہتا تھا اور چہرے کی جھریوں کے بیچ اکثر چوٹ کے نشان بھی دکھائی پڑنے لگتے تھے ۔ اسکی لمبی داڑھی ہمیشہ بنا کنگھی کی ہوئی رہتی تھی ۔ داڑھی میں بھی سفید بالوں کی دھاریاں دیکھ جاتی تھیں. حالانکہ اسکا گاؤن لمبا تھا پر وہ اتنا گندا اور پیوند دار تھا کہ یہ صاف پتہ لگ جاتا تھا کہ کم سے کم 10 برس سے تو دھویا نہ گیا ہوگا ۔ وہ بولتا اس طرح تھا کہ آدھی بات ہی سمجھ میں آتی تھی. جب بھی وہ سرائے میں آتا تھا ہر ویکتی اسکی طرف دیکھکر مسکرانے لگتا اور ان میں سے ایک اوشیہ کہہ بیٹھتا—" کونگ - ای - چی' آج تو تمہارے چہرے پر نئے گھاؤ کے نشان دکھائی پڑ رہے ہیں ۔"

ان باتوں کی پرواہ نہ کرتے ہوئے کونگ - ای - چی میز کے پاس آکر دو پیالے شراب اور ایک پلیٹ پھلیوں کا آرڈر دیتا تھا اور نو اکنیاں نکال کر رکھ دیتا تھا ۔ فوراً ہی کوئی پھر بول پڑتا—" تم نے پھر چوری کی ہوگی۔"

گھور کر اس ویکتی کو دیکھتے ہوئے وہ اتر دیتا—" بیکار میں ہی کسی بھلے آدمی کو کیوں بدنام کرتے ہو ؟"

" کیا ؟ بھلے آدمی کو بدنام کرتا ہوں ؟ ابھی پرسوں ہی تو اپنی آنکھوں کے سامنے تمہیں پٹتے دیکھا ہے. تم نے 'ہو' پریوار کی کتابیں چرائی تھیں ۔"

تب کونگ کا چہرہ لال ہوجاتا تھا اور اپنا ورودھ پرگٹ کرتے ہوئے وہ اتر دیتا تھا—" کتابوں کو چرانا' چوری نہیں.....کتابیں لے لینا تو ودوانوں کی عادت ہے' اسے چوری نہیں کہتے." پھر وہ پراچین گرنتھوں میں سے مثالیں دینے لگتا—" بڑا آدمی وہ ہے جو 'غریبی میں' ابھاؤ میں بھی سنتشٹ رہتا ہو ۔" اور پھر اسکا دھارا پرواہ بھاشن چل نکلتا ۔ اس کو شاید ہی کوئی سمجھ پاتا ۔ تب تک بھاشن چلتا رہتا تھا جب تک سرائے کا ہر گراہک ہنسی سے لوٹ پوٹ نہ ہوجاتا تھا ۔

گاؤں والوں کے ہی منہ سننے کو ملا تھا کہ کونگ - ای - چی کو پراچین گرنتھوں کا اچھا گیان تھا. حالانکہ اس نے کوئی پریکشا کبھی پاس نہیں کی تھی. جیون یاپن کا بھی اسکا

कुंग-ई-ची

अनुवादक—कामेश्वर अग्रवाल

लूचेन में शराब की दूकानें चीन के दूसरे शहरों की तरह नहीं हैं. लूचेन की दूकानों में एक चौकोर तख्ता सड़क की तरफ आगे बढ़ा कर रक्खा रहता है. उस पर गर्म पानी की केतली रखी रहती है. यह पानी शराब गरम करने के काम आता है. दोपहर में या फिर शाम को काम खत्म करने के बाद लोग एक प्याला शराब लेने आते हैं. बीस बरस पहिले एक प्याले का दाम चार आने के क़रीब होता था पर अब दस आने लगते हैं. मेज़ के पास खड़े होकर लोग मदिरा पान करते हैं और शरीर को आराम देते हैं. साथ में लोग इकन्नी में मसालेदार फलियां या बांस की मुलायम पत्तियों की नमकीन भुंजिया लेते हैं. गोश्त खरीदने में बारह इकन्नियां लग जाती हैं. इस दूकान में आने वाले ज्यादातर ग्राहक छोटा कोट पहिनते हैं. उनके पास कभी भी पैसे ज्यादा नहीं होते हैं. लम्बा गाउन पहने हुए ग्राहक ही अन्दर जा कर कमरे में बैठते थे और आराम से शराब पीते हैं, बढ़िया नमकीन और गोश्त खाते हैं.

बारह बरस की उम्र ही से मैं 'सियेन-हेंग सराय' में वेटर का काम करने लगा था. शहर में दाखिल होते ही यह होटल मिलता है. सराय के मालिक का कहना था कि मैं शक्ल से इतना भोंदू दिखाई देता हूं कि लम्बा गाउन पहन वाले ऊंची श्रेणी के ग्राहकों के सामने मुझे नहीं भेजा जा सकता. इसलिये मुझे बाहर के कमरे में ही काम करना पड़ता था. यद्यपि निचली श्रेणी के ग्राहक आम तरीक़े से मेरे काम से प्रसन्न रहते थे, लेकिन मुझे परेशान कर देने वालों की संख्या कम न थी. वह देखना चाहते थे कि कहीं मदिरा के प्याले में पानी तो नहीं है. प्याले में पीली शराब का डलना और फिर प्याले का गरम पानी में रक्खा जाना वह बहुत ध्यान से देखते थे. इन तेज नज़रों के सामने शराब में मिलावट कर देना असम्भव था. इसलिये कुछ ही दिनों में मालिक ने यह तय कर दिया कि मैं इस काम के भी योग्य नहीं हूं. मेरी सिफारिश इतने प्रभावशाली व्यक्ति ने की थी कि दूकान का मालिक मुझे निकाल देने की सोच भी नहीं सकता था, इसलिये मेरा तबादला शराब गरम करने के काम में कर दिया गया.

इसके बाद से मैं बराबर बाहर की मेज़ के क़रीब खड़ा होकर शराब गरम करने के काम में लगा रहता था. यद्यपि इस काम में मैं दूसरों को संतुष्ट कर देता था

کونگ اِی- چی

انوادک—کامیشور اگروال

لوچین میں شراب کی دوکانیں چین کے دوسرے شہروں کی طرح نہیں ہیں. لوچین کی دوکانوں میں ایک چوکور تختہ سڑک کی طرف آگے بڑھا کر رکھا رہتا ہے. اس پر گرم پانی کی کیتلی رکھی رہتی ہے. یہ پانی شراب گرم کرنے کے کام آتا ہے. دوپہر میں یا پھر شام کو کام ختم کرنے کے بعد لوگ ایک پیالہ شراب لینے آتے ہیں. بیس برس پہلے ایک پیالے کا دام چار آنے کے قریب ہوتا تھا پر اب دس آنے لگتے ہیں. میز کے پاس کھڑے ہو کر لوگ مدرا پان کرتے ہیں اور شریر کو آرام دیتے ہیں. ساتھ میں لوگ اکنی میں مسالے دار پھلیاں یا بانس کی ملائم پتیوں کی نمکین بھنجیا لیتے ہیں. گوشت خریدنے میں بارہ اکنیاں لگ جاتی ہیں. اس دوکان میں آنے والے زیادہ‌تر گراہک چھوٹا کوٹ پہنتے ہیں؟ ان کے پاس کبھی بھی پیسے زیادہ نہیں ہوتے ہیں. لمبا گاؤن پہنے ہوئے گراہک ہی اندر جا کر کمرے میں بیٹھتے ہیں اور آرام سے شراب پیتے ہیں' بڑھیا نمکین اور گوشت کھاتے ہیں.

بارہ برس کی عمر ہی سے میں سین ہینگ سرائے میں ویٹر کا کام کرنے لگا تھا. شہر میں داخل ہوتے ہی یہ ہوٹل ملتا ہے. سرائے کے مالک کا کہنا تھا کہ میں شکل سے اتنا بھوندو دکھائی دیتا ہوں کہ لمبے گاؤن پہننے والے اونچی شرینی کے گراہکوں کے سامنے مجھے نہیں بھیجا جا سکتا. اس لئے مجھے باہر کے کمرے میں ہی کام کرنا پڑتا تھا. اگرچہ نچلی شرینی کے گراہک عام طریقے سے میرے کام سے پرسن رہتے تھے' لیکن مجھے پریشان کر دینے والوں کی سنکھیا کم نہ تھی. وہ دیکھنا چاہتے تھے کہ کہیں مدرا کے پیالے میں پانی تو نہیں ہے. پیالے میں پیلی شراب کا ڈھلنا اور پھر پیالے کا گرم پانی میں رکھا جانا وہ بہت دھیان سے دیکھتے تھے. ان تیز نظروں کے سامنے شراب میں ملاوٹ کر دینا اسمبھو تھا. اس لئے کچھ ہی دنوں میں مالک نے یہ طے کر دیا کہ میں اس کام کے یوگیہ نہیں ہوں. میری سفارش اتنے پربھاوشالی ویکتی نے کی تھی کہ دوکان کا مالک مجھے نکال دینے کی سوچ بھی نہیں سکتا تھا' اس لئے میرا تبادلہ شراب گرم کرنے کے کام میں کر دیا گیا.

اس کے بعد سے میں برابر باہر کی میز کے قریب کھڑا ہو کر شراب گرم کرنے کے کام میں لگا رہتا تھا. اگرچہ اس کام میں دوسروں کو سنتشٹ کر دیتا تھا

है. [illegible] पड़ता है. जब [illegible] मेरे ही बराबर में बैठती है. आज [illegible] में बोली कि तबियत नहीं लग रही है. मैंने कहा चलिये घूम आयें. उसने कहा कि शाम को ठीक छः बजे काफी हाउस में मिलूंगी. अकेले आना. जरा घूमने चलेंगे. [illegible] ऐसा चुड़ैल को ! मैं कब से प्रतीक्षा कर रहा हूं. और आप आई हैं एक पुरुष लेकर. भाई माफ करना. आज तुम से भी इस औरत की बदौलत झूंठ बोलना पड़ा."

"कोई बात नहीं है आनन्द." जैसे किसी ने उठा कर उसे पटक दिया हो और उसको सांस कुछ क्षणों के बाद आई हो. आगे फिर उसने कहा—"क्षमा कर दो आनन्द. मैं भी छला गया हूं. इसको मैं जानता हूं, वाई. एम. सी. ए. में मेरे साथ बिलियर्ड खेलती है. इस में शक नहीं कि खेलती खूब है. यार, मुझे क्या मालूम था यह पक्की चुड़ैल है. क्लब में मेरे पीछे पीछे घूमती है. बड़ा प्रेम का दम भरती है. आज बोली कि छः बजे काफी हाउस में मिलना. तुमसे कुछ बातें करनी हैं. चलते चलते फिर याद दिलाया और कहा कि देखो अकेले आना. यार, यह लड़कियां भी क्या बला होती हैं ! मैंने तुमको टालना चाहा. क्षमा करना भाई बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी. देखो, अपने यार के साथ कमीनी कैसी जमी है, जैसे हम लोगों को पहचानती ही नहीं......!"

उसी समय कान्ता की मेज से एक गुस्से भरी आवाज सुनाई दी—"क्या है ?"

बैरा बिल हाथ में लिये था. उसने कहा—"मेम साहब, बिल."

"अभी किसने मांगा है?" कान्ता की आवाज का संतुलन बिगड़ने लगा.

"वह साहब जो आपके साथ बैठे थे नां वह गए......"

तब ही चौंक कर आश्चर्य भरी आवाज से कान्ता ने पूछा—"और बिल."

"कह गये हैं कि मेम साहब से ले लेना."

यह सुन कर कान्ता क्षुब्ध हो गई. गुस्से से मुंह लाल हो गया और आते समय जिन आंखों में हंसी थी उनमें क्रोध झलक पड़ा. उसने जोर से बैरे के हाथ से बिल छीन लिया और बोली—"कितने का है ?"

"मैडम, सात रुपये साढ़े पन्द्रह आने."

कान्ता झल्ला कर अपनी कुर्सी से उठी और काउन्टर की तरफ बढ़ी. आनन्द के टेबिल तक पहुंचते पहुंचते वह होठों ही होठों में बड़बड़ाई—"चूना हो गया."

आनन्द ने [illegible] के कन्धे पर एक हाथ जमाया और खुशी से उछल कर बोला—"सबको चूना हो गया."

—सुशील तिवारी

[illegible] مجھے [illegible] لے جاتی ہے۔ سدا میرے ہی برابر میں بیٹھتی ہے۔ آج کلاس میں بولی کہ طبیعت نہیں لگ رہی ہے۔ میں نے کہا چلئے گھوم آیئے۔ اس نے کہا کہ شام کو ٹھیک چھ بجے کافی ہاؤس میں ملونگی، اکیلے آنا۔ ذرا گھومنے چلیں گے۔ لیکن دیکھا چڑیل کو؟ میں کب سے پرتیکچھا کر رہا ہوں اور آپ آئی ہیں ایک جنٹ لے کر۔ بھائی معاف کرنا۔ آج تم سے اس عورت کے بدولت جھوٹ بولنا پڑا۔"

"کوئی بات نہیں ہے آنند۔" جیسے کسی نے اٹھا کر اسے پٹک دیا ہو اور اس کو سانس کچھ چھنوں کے بعد آئی ہو۔ آگے پھر اس نے کہا—"چھما کر دو آنند۔ میں بھی چھلا گیا ہوں۔ اسکو میں جانتا ہوں۔ وائی۔ ایم۔ سی۔ اے۔ میں میرے ساتھ بلیرڈ کھیلتی ہے۔ اس میں شک نہیں کہ کھیلتی خوب ہے۔ یار، مجھے کیا معلوم تھا کہ یہ پکی چڑیل ہے۔ کلب میں میرے پیچھے پیچھے گھومتی ہے۔ بڑا پریم کا دم بھرتی ہے۔ آج بولی کہ چھ بجے کافی ہاؤس میں ملنا۔ تم سے کچھ باتیں کرنی ہیں۔ چلتے چلتے پھر یاد دلایا اور کہا کہ دیکھو اکیلے آنا۔ یار، یہ لڑکیاں بھی کیا بلا ہوتی ہیں! میں نے تم کو ٹالنا چاہا۔ چھما کرنا بھائی بدھی بھرشٹ ہوگئی تھی۔ دیکھو اپنے یار کے ساتھ کمینی کیسی جمی ہے جیسے ہم لوگوں کو پہچانتی ہی نہیں......!"

اسی سمے کانتا کی میز سے ایک غصے بھری آواز سنائی دی—"کیا ہے۔"

بیرا بل ہاتھ میں لئے تھا۔ اس نے کہا—"میم صاحب، بل۔"

"ابھی کس نے مانگا ہے؟" کانتا کی آواز کا سنتولن بگڑنے لگا۔

"وہ صاحب جو آپ کے ساتھ بیٹھے تھے نا۔ وہ گئے......"

تب ہی چونک کر آشچریہ بھری آواز سے کانتا نے پوچھا—"اور بل؟"

"کہہ گئے ہیں کہ میم صاحب سے لے لینا۔"

یہ سن کر کانتا کشبدھ ہوگئی۔ غصے سے منہ لال ہوگیا اور آتے سمے جن آنکھوں میں ہنسی تھی ان میں کرودھ جھلک پڑا۔ اس نے زور سے بیرے کے ہاتھ سے بل چھین لیا اور بولی—"کتنے کا ہے؟"

"میڈم، سات روپئے ساڑھے پندرہ آنے۔"

کانتا جھلا کر اپنی کرسی سے اٹھی اور کاؤنٹر کی طرف بڑھی۔ آنند کے ٹیبل تک پہنچتے پہنچتے وہ ہونٹوں ہی ہونٹوں میں بڑبڑائی—"چونا ہوگیا۔"

آنند نے [illegible] کے کندھے پر ایک ہاتھ جمایا اور خوشی سے اچھل کر بولا—"چلو سب کو چونا ہوگیا!"

—[illegible]

...ड़े से आकर उसकी कमर पर हाथ रक्खा और ... ने
...हा कि उसका मज़ाक़ बहुत ही छोटा है. ...इतना
...हिये कि बाक़िल से कुछ बड़ा. उसने कहा—"हलो, क्या
...ला देर हो गई. तुम्हें प्रतीक्षा करनी पड़ी."

"मैं ही क्या, न जाने कितने वियोग में जला करते हैं,
...म हो भी तो कुछ ऐसी" साथी लड़के ने गद्गद होकर
...ज़ाक़ किया.

"हट्!" कहते कहते वह हंस पड़ी. न वह हंसी धीमी
... और न बहुत ऊंची. सुरीली, मधुर झनझनाहट के बीच
...गीत फैला देने वाली.

यह क्या, आनन्द और गोपाल एक दूसरे के सामने
...ड़े हैं. आनन्द ने गोपाल को देखा और गोपाल ने
...आनन्द को.

दोनों की आंखें झुक गईं.

वह लड़की अब अपने टेबिल पर बैठ गई है. टेबिल
...कोने में है. आनन्द की टेबिल से दो टेबिल और आगे.

लड़का उसके साथ है. बैरा आर्डर ले रहा है. वह दोनों
...छ चुहल कर रहे हैं. केवल मुस्कान भरे चेहरे दीख पड़ते
... मौन भाषा का अर्थ लगाने में समय कौन बर्बाद करे !

"आओ गोपाल, काफी पिओ" आनन्द ने निमन्त्रित
...या.

आनन्द के मुंह पर लज्जा है और गोपाल शायद किसी
...नहोनी से चिढ़ कर ओंठ चबा रहा है. गोपाल आनन्द
...के टेबिल पर बैठ गया. दोनों की आंखें फिर मिलीं और
...झुक गईं. बैरा ने तभी पूछा—"सर, काफी ?"

"दो काफी, दो मटन कटलेट."

गोपाल ने पूछा—"आनन्द, तुम्हारी मां बीमार थीं, तुम
...वा लेने आये थे !"

आनन्द ने कहा—"तुम्हारे भी तो बाप बीमार हैं, तुम
...जेक्शन देने जा रहे थे."

दोनों की आंखें फिर मिलीं और एक दूसरे से क्षमा
...गती झुक गईं.

दोनों चुप थे और बैरा काफी 'सर्व' कर रहा था.

काफी की चुस्की लेते हुये आनन्द ने कहा—"गोपाल,
...स लड़की को जानते हो ?"

गोपाल ने जैसे कुछ कहते कहते अपने को रोका और
...हा—"नहीं, क्यों ?"

"यार अब तुमसे क्या छुपाएं. तुमसे बढ़कर मेरा कोई
...स्त नहीं है. मैं तुम्हें अपना भाई समझता हूं. लेकिन जानते
..., आज मैंने तुमको टालना चाहा. जानते हो क्यों ?"

गोपाल ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला लेकिन
...नन्द ने अवसर नहीं दिया.

आनन्द ने आगे कहा—"इस लड़की का नाम कान्ता
...मेरे साथ पढ़ती है. तुमसे बहुत कुछ छिपाकर बातें करती

پیچھے سے آ کر اس کی کمر پر ہاتھ رکھا اور لڑکی نے دیکھا کہ
اسکا مذاق بہت ہی چھوٹا ہے۔ بس اتنا کہئے کہ باقل سے
کچھ بڑا۔ اس نے کہا— "ہلو' بہت دیر ہوگئی'
تمہیں پرتیکشا کرنی پڑی۔"

"میں ہی کیا' نہ جانے کتنے ویوگ میں جلا کرتے
ہیں' تم ہو بھی تو کچھ ایسی۔" ساتھی لڑکے نے گد گد
ہو کر مذاق کیا۔

"ہٹو" کہتے کہتے وہ ہنس پڑی۔ نہ وہ ہنسی
دھیمی تھی اور نہ بہت اونچی۔ سریلی' مدھر
جھنجھناہٹ کے بیچ سنگیت پھیلا دینے والی۔

یہ کیا ؟ آنند اور گوپال ایک دوسرے کے سامنے کھڑے
ہیں۔ آنند نے گوپال کو دیکھا اور گوپال نے آنند کو۔

دونوں کی آنکھیں جھک گئیں۔

وہ لڑکی اب اپنے ٹیبل پر بیٹھ گئی ہے۔ ٹیبل کونے میں
ہے۔ آنند کی ٹیبل سے دو ٹیبل اور آگے۔

لڑکا اس کے ساتھ ہے۔ بیرا آرڈر لے رہا ہے۔ وہ دونوں
کچھ چہل کر رہے ہیں۔ کیول مسکان بھرے چہرے
دیکھ پڑتے ہیں۔ مون بھاشا کا ارتھ لگانے میں سمے کون
برباد کرے !

"آؤ گوپال' کافی پیئو۔" آنند نے نمنترت کیا۔

آنند کے مکھ پر لجا ہے اور گوپال شاید کسی انہونی
سے چڑھ کر اونٹھ چبا رہا ہے۔ گوپال آنند کی ٹیبل پر
بیٹھ گیا۔ دونوں کی آنکھیں پھر ملیں اور جھک گئیں۔
بیرا نے تب ہی پوچھا— "سر' کافی"

"دو کافی' دو مٹن کٹلیٹ۔"

گوپال نے پوچھا— "آنند' تمہاری ماں بیمار تھیں'
تم دوا لینے آئے تھے !"

آنند نے کہا— "تمہارے بھی تو باپ بیمار ہیں' تم
انجکشن دینے جا رہے تھے۔"

دونوں کی آنکھیں پھر ملیں اور ایک دوسرے سے چھما
مانگتی جھک گئیں۔

دونوں چپ تھے اور بیرا کافی سرو کر رہا تھا۔

کافی کی چسکی لیتے ہوئے آنند نے کہا— "گوپال'
اس لڑکی کو جانتے ہو؟"

گوپال نے جیسے کچھ کہتے کہتے اپنے کو روکا اور بولا—
"نہیں' کیوں؟"

"یار' اب تم سے کیا چھپائیں۔ تم سے بڑھکر میرا
کوئی دوست نہیں ہے۔ میں تمہیں اپنا بھائی سمجھتا
ہوں لیکن جانتے ہو' آج میں نے تم کو ٹالنا چاہا۔ جانتے
ہو کیوں؟"

گوپال نے کچھ کہنے کے لئے منہ کھولا' لیکن آنند نے
اوسر نہیں دیا۔

آنند نے کہا— "اس لڑکی کا نام کانتا ہے۔ میرے
ساتھ پڑھتی ہے۔ تم سے بہت کچھ مل کر باتیں کرتی

से लिये जाते थे. बैरा आनन्द के पास जाता है. आनन्द उसको घूरता है और कहता है—"ठहर जाओ, अभी बताता हूं."

बैरा गोपाल के पास जाता है. हाथ बांध कर खड़ा होता है. गोपाल कहीं खोया है. लेकिन एक चीज़ अवश्य है जो उसे इस दुनिया में खींच लाती है, वह है उसकी घड़ी. गोपाल ने हाथ उठा कर घड़ी देखी. तभी उसकी नज़र बैरे पर पड़ी. कुछ हड़बड़ाहट में उससे कहा—"ठहर जाओ, अभी बताता हूं."

बैरों का तो काम ही है कि वह घूम घूम कर टेबिलों पर बाबू लोगों का आर्डर लें. कहीं किसी को दो चार मिनट से ज़्यादा बैठना पड़ गया और उसने मैनेजर से शिकायत कर दी तो छटी का दूध याद पड़ जायेगा. ऐसे भी कुछ लोग होते होंगे जो बैरे के आने की देरी को ठीक समझते हों, लेकिन इनकी तादाद बहुत कम होती है ? बैरा तो नियम जानता है, उसे अपवाद से क्या मतलब. दूसरे बैरे ने आनन्द सामने झुककर फिर पूछा—"सर, काफी ?"

"नहीं, पानी दे जाओ" आनन्द ने बिना उसकी तरफ देखे आर्डर दिया.

उसी समय बैरा कहलाये जाने वाले किसी जन्तु ने गोपाल को भी छेड़ा.

"सिग्रेट दे जाओ" गोपाल ने डांट कर कहा और यह बात साफ कर दी कि उस का इस तरह बार बार पूछना गोपाल को अच्छा नहीं लगता.

दूसरे मिनट आनन्द पानी का गिलास मुंह से लगाये था और गोपाल छत की ओर धुआं उड़ा रहा था और आंख गड़ाये ताक रहा था जैसे कोई तसवीर उसके सामने खड़ी हो रही हो.

× × ×

काफी हाउस की भनभन जैसे एकदम बन्द हो गई थी. सबकी नज़रें दरवाज़े की तरफ उठी हुई हैं. हर एक मेज़ पर से जैसे कह रहा है—ताड़ने वाले क़यामत की नज़र रखते हैं लेकिन कोई है जो बिना देखे चला आ रहा है. ऐसा तो नहीं कि उसे इसकी इच्छा नहीं कि लोग उसे न देखें और न यह ही कि वह लोगों को नहीं देख रहा है. शायद वह जानता है कि किसी तरफ न देखने से सब तरफ से लोग उसे देखते हैं. उसे अनुभव है और अनुभव आनन्द देने के लिये काफी है. दरवाज़े पर आकर उसने चप्पल को ज़रा पटका. पटका तो पैर को लेकिन पूरे बदन में जाने कितनी लचक पैदा हो गई. यह लचक जैसे एक बिजली हो और उसकी चमक में लोगों ने देखा कि वह पीली साड़ी और [illegible] ब्लाउज पहने है. उसने ऊपरी बदन को ज़रा से हिलाया और आगे बढ़ी. तभी एक व्यक्ति ने

ہوئے تھے . بیرا آنند کے پاس آتا ہے . آنند اسکو گھورتا ہے اور کہتا ہے—"ٹھہر جاؤ، ابھی بتاتا ہوں."

بیرا گوپال کے پاس جاتا ہے . ہاتھ باندھ کر کھڑا ہوتا ہے . گوپال کہیں کھویا ہے . لیکن ایک چیز اوشیہ ہے جو اسے اس دنیا میں کھینچ لاتی ہے . وہ ہے اسکی گھڑی . گوپال نے ہاتھ اٹھاکر گھڑی دیکھی . تب ہی اسکی نظر بیرے پر پڑی . کچھ ہڑبڑاہٹ میں اس نے کہا—"ٹھہر جاؤ، ابھی بتاتا ہوں."

بیروں کا تو کام ہی ہے کہ وہ گھوم گھوم کر ٹیبلوں پر بابو لوگوں کا آرڈر لیں . کہیں کسی کو دو چار منٹ سے زیادہ بیٹھنا پڑ گیا اور اس نے مینیجر سے شکایت کر دی تو چھٹی کا دودھ یاد پڑ جائیگا . ایسے بھی کچھ لوگ ہوتے ہونگے جو بیرے کے آنے کی دیری کو ٹھیک سمجھتے ہوں لیکن ان کی تعداد بہت ہی کم ہوتی ہے . بیرا تو نیم جانتا ہے اسے اپواد سے کیا مطلب . دوسرے بیرے نے آنند کے سامنے جھک کر پھر پوچھا—" سر، کافی ؟"

" نہیں، پانی دے جاؤ " آنند نے بنا اس کی طرف دیکھے آرڈر دیا .

اسی سمے بیرا کہلائے جانیوالے کسی جنتو نے گوپال کو بھی چھیڑا .

" سگریٹ دے جاؤ " گوپال نے ڈانٹ کر کہا اور یہ بات صاف کر دی کہ اسکا اس طرح بار بار پوچھنا گوپال کو اچھا نہیں لگتا .

دوسرے منٹ آنند پانی کا گلاس منہ سے لگائے تھا اور گوپال چھت کی اور دھواں اڑا رہا تھا اور آنکھ گڑائے تاک رہا تھا جیسے کوئی تصویر اس کے سامنے کھڑی ہو رہی ہو .

× × ×

کافی ہاوس کی بھن بھن جیسے ایکدم بند ہو گئی . سب کی نظریں دروازے کی طرف اٹھی ہوئی ہیں . ہر ایک ایک میز پر سے جیسے کہ رہا ہے—تاڑنے والے قیامت کی نظر رکھتے ہیں . لیکن کوئی ہے جو بنا دیکھے چلا آرہا ہے . ایسا تو نہیں کہ اسے اسکی اچھا نہیں کہ لوگ اسے نہ دیکھیں اور نہ یہ ہی کہ وہ لوگوں کو نہیں دیکھ رہا ہے . شاید وہ جانتا ہے کہ کسی طرف نہ دیکھنے سے سب طرف سے لوگ اسے دیکھتے ہیں . اسے انوبھو ہے اور انوبھو آنند دینے کے لئے کافی ہے . دروازے پر آکر اس نے چپل کو ذرا پٹکا . پٹکا تو پیر کو لیکن پورے بدن میں نہ جانے کتنی لچک پیدا ہو گئی . یہ لچک جیسے ایک بجلی ہو اور اس کی چمک میں لوگوں نے دیکھا کہ وہ پیلی ساڑی اور [illegible] بلوز پہنے ہے . اس نے اوپری بدن کو ذرا سا ہلایا اور آگے بڑھی . تب ہی ایک وِیکتی نے

लेकर बैठ गये हैं उन्हें किसी काम धन्धे से मतलब ही नहीं. माता जी हैं कि उन्हें गोपाल के सिवाय कोई दूसरा नाम ही याद नहीं. मैं तो दवा ही ढोते ढोते मरा जा रहा हूं. दर्जनों बच्चे हैं, दिन में कोई न कोई बीमार ही पड़ा करता है. अपने राम को तो सिविल लाइन के चार पांच चक्कर लगाने ही पड़ते हैं. और जो कुछ था तो था ही बाप जान छुट्टी लेकर आ धमके हैं. घन्टों से उनका इन्जेकशन ढूंढ रहा हूं......".

तभी आनन्द ने प्रश्न किया—"इन्जेकशन मिल गये ?"

गोपाल ने जेब में हांथ डाला, जैसे इन्जेकशन निकाल कर दिखाने जा रहा हो. लेकिन उसने दिखाया नहीं और कहा—" हां."

आनन्द बोला—"चलें मित्र, बुढ़िया चिल्ला चिल्ला के घर सर पर उठाये होगी. बीमारी में आदमी, ऐसे भी चिड़-चिड़ा हो जाता है और वह ऐसे भी झांकर हैं. अब तक न जाने कितनी बार मेरा नाम ले चुकी होंगी. लेकिन यार अम्मां चाहती मुझे बहुत हैं."

गोपाल ने फिर घड़ी देखी. पैडिल पर पैर रक्खा और जाना-निश्चय करके बोला—"अच्छा, आनन्द फिर कब मिलोगे ? यार, तुम्हारी अम्मां को देखने चलते, लेकिन बाबू जी का इन्जेकशन पहुंचाना है, कम्पाउन्डर आता होगा, खफ़ा हो जायेंगे.

× × ×

काफी हाउस का भी एक समाज है. इस समाज का मेम्बर होने के लिये कुछ विशेष गुनों का होना जरूरी है. या तो बाप ने पैसे खूब भेजे हों और या फिर खुद ने कहीं कमा लिये हों. पैसा तो होना ही चाहिये, साथ में अवकाश भी, और एक बात और. बात करने के लिये रोमांस और जीती जागती एक लड़की भी ताकि मित्र दूसरी टेबिल पर बैठे सिसकियां भर सकें और कहने को अपनी भी कोई हो सके. इस काफी हाउस में बहुत लोग आते हैं. बैठते हैं, गप्पें मारते हैं, चले जाते हैं.

भोला की दुकान छोड़े अभी पांच ही एक मिनट हुए हैं. काफी हाउस खचाखच भरा है. किसी को किसी की फिक्र नहीं है. सिग्रेट के धुएं उड़ रहे हैं और धुआं ऊपर उठ उठ कर औरतों की तस्वीरें बनाता जाता है—अमीर घराने की निरलज्ज, कालिज में पढ़ती अनगिनत लड़कियां बीच-बीच में एंग्लो इण्डियन लड़कियों की बात भी आ जाती है. दूर किसी कोने में एक ऐसी गोरटी भी बैठी होती है जिसे रति के साथ साथ राजनीति से भी दिलचस्पी है इस समय काफी हाउस खचाखच भरा है और इसी भीड़ में हमारे गोपाल और आनन्द भी बैठे हैं. लेकिन एक दूसरे से बहुत दूर. आनन्द हाल में है और गोपाल हाल

لے کر بیٹھ گئے ہیں۔ انہیں کسی کام دھندے سے مطلب ہی نہیں ہے۔ ماتا جی ہیں کہ انہیں گوپال کے سوائے کوئی دوسرا نام ہی یاد نہیں۔ میں تو دوا ہی ڈھوتے ڈھوتے مرا جا رہا ہوں۔ درجنوں بچے ہیں، دن میں کوئی نہ کوئی بیمار ہی پڑا کرتا ہے۔ اپنے رام کو تو سول لائن کے چار پانچ چکر لگانے ہی پڑتے ہیں۔ اور جو کچھ تھا تو تھا ہی باپ جان چھٹی لے کر آدھمکے ہیں۔ گھنٹوں سے ان کا انجکشن ڈھونڈھ رہا ہوں......"

تب ہی نے آنند نے پرشن کیا—"انجکشن مل گئے؟"

گوپال نے جیب میں ہاتھ ڈالا۔ جیسے انجکشن نکال کر دکھانے جا رہا ہو۔ لیکن اس نے دکھایا نہیں اور کہا—"ہاں."

آنند بولا—"چلیں متر، بڑھیا چلا چلا کے گھر سر پر اٹھائے ہوگی۔ بیماری میں آدمی، ایسے بھی چڑچڑا ہو جاتا ہے اور وہ ایسے بھی جھانکر ہیں۔ اب تک نہ جانے کتنی بار میرا نام لے چکی ہونگی۔ لیکن یار اماں چاہتی مجھے بہت ہیں۔"

گوپال نے پھر گھڑی دیکھی۔ پیڈل پر پیر رکھا اور جانا نشچے کرکے بولا—"اچھا، آنند، پھر کب ملوگے، یار تمہاری اماں کو دیکھنے چلتے، لیکن بابو جی کا انجکشن پہونچانا ہے، کمپاونڈر آتا ہوگا، الف ہو جائینگے۔"

× × ×

کافی ہاؤس کا بھی ایک سماج ہے۔ اس سماج کا ممبر ہونے کے لئے کچھ وشیش گنوں کا ہونا ضروری ہے۔ یا تو باپ نے پیسے خوب بھیجے ہوں یا پھر خود نے کہیں کما لئے ہوں۔ پیسہ تو ہونا ہی چاہئے، ساتھ میں اوکاش بھی، اور ایک بات اور۔ بات کرنے کے لئے رومانس اور جیتی جاگتی ایک لڑکی بھی، تاکہ متر دوسری ٹیبل پر بیٹھے سسکیاں بھر سکیں اور کہنے کو اپنی بھی کوئی ہو سکے۔ اس کافی ہاؤس میں بہت لوگ آتے ہیں، بیٹھتے ہیں، گپیں مارتے ہیں، چلے جاتے ہیں۔

بھولا کی دوکان چھوڑے ابھی پانچ ہی ایک منٹ ہوئے ہیں۔ کافی ہاؤس کھچا کھچ بھرا ہے۔ کسی کو کسی کی فکر نہیں ہے۔ سگریٹ کے دھوئیں اڑ رہے ہیں اور دھواں اوپر اٹھ اٹھ کر عورتوں کی تصویریں بناتا جاتا ہے— امیر گھرانے کی نرلج، کالج میں پڑھتی انگنت لڑکیاں، بیچ بیچ میں اینگلو انڈین لڑکیوں کی بات بھی آجاتی ہے۔ دور کسی کونے میں ایک ایسی گورٹی بھی بیٹھی ہوتی ہے جسے رتی کے ساتھ ساتھ راجنیتی سے بھی دلچسپی ہے۔ اس سمے کافی ہاؤس کھچا کھچ بھرا ہے اور اسی بھیڑ میں ہمارے گوپال اور آنند بھی بیٹھے ہیں۔ لیکن ایک دوسرے سے بہت دور۔ آنند ہال میں ہے اور گوپال ہال

[illegible] में [illegible] कर [illegible] मुंह को [illegible] कर बनाते हुये [illegible] ने गोपाल को पूछा.

गोपाल [illegible] रहा. वह अपनी घड़ी में मग्न था.

भोला ने [illegible] सीरे में पान डुबो कर मीठा बनाते हुये गोपाल को थमाया और कहा—"किसका इन्तजार है...?"

"नहीं तो......कहां......?" गोपाल मुंह बनाने लगे. शायद समझ में नहीं आया कि उत्तर क्या दें. जल्दी से आंख पर चश्मा चढ़ा लिया और भोला को हुक्म दिया "एक मैक्रोपोल".

यह लेन देन हो ही रही थी कि पीछे से आनन्द ने 'हलो गोपाल' का शोर मचाया और साइकिल रोकने के लिये गोपाल के सर का सहारा लिया.

"हलो, पान खाओ आनन्द......"

"नहीं यार मैं-पान तो खाता ही नहीं."

गोपाल ने फिर घड़ी देखी और ऐसा अभिव्यक्त किया कि जैसे उसे ठीक समय पर जरूरी काम के लिये जाना है.

"जाओ जाओ. फिर कब मिलोगे ? तुमसे तो मिलना ही नहीं होता." आनन्द ने कहा.

गोपाल ने उत्तर दिया—"नहीं, जल्दी नहीं है" और जैसे किसी बात को छिपाने के लिये उसने सिगरेट जलाने का सहारा लिया.

"मैं तो चला गोपाल."

"ऐसी भी क्या जल्दी है ?" गोपाल कह तो गया लेकिन शीघ्र ही चेता. जाने या अनजाने उसकी आंख फिर घड़ी पर पहुंच गई."

आनन्द ने कहा—"यार, तुम्हारे साथ घूमने की तबियत चाहती है, दिल चाहता है कि. काफ़ी हाउस चलें. लेकिन क्या बतायें (एक मोटी सी गाली उसने दी, किसी दूसरे को नहीं स्वयं अपनी बहन को). अम्मा को खटिया पकड़ना था तो आज ही कल. बुढ़िया भी समय से बीमार पड़ती है. जब जब मैं अकेला घर पर रहता हूं उसे कोई रोग आ दबाता है......".

तुम्हारी अम्मा कब से बीमार हैं ?" गोपाल ने सहानुभूति प्रकट की.

"दो महीने से भाई. नाक में दम आ गया है. अजीब मुसीबत है. नौकर दवा लाये वह उन्हें पसन्द नहीं है चाहती हैं कि हर समय मैं उनकी पट्टी पकड़े बैठा रहूं".

जैसे कुछ सोच कर आनन्द ने आगे कहा—"गुरू तुम्हीं मजे में हो, कोई फ़िक्र न चिन्ता, मस्त राम घूमते हो, [illegible] तुम्हें देर हो रही है"

"[illegible] ! [illegible] जल्दी [illegible] गई. भगवान न करे कि [illegible] में कोई [illegible] हो. नाक में दम हो गया है. सब [illegible] है. [illegible] [illegible] का इम्तहान

[illegible] میں [illegible] ہوکر اور منہ کو [illegible] بناتے ہوئے بھولا نے گوپال کو گھورا.

گوپال بےآواز رہا . وہ اپنی گھڑی میں مگن تھا .

بھولا نے الل شیرے میں پان ڈبوکر میٹھا بناتے ہوئے گوپال کو تھمایا اور کہا—"کس کا انتظار ہے......؟"

"نہیں تو......کہاں......؟" گوپال منہ بنانے لگے . شاید سمجھ میں نہیں آیا کہ اتر کیا دیں. جلدی سے آنکھ پر چشمہ چڑھا لیا اور بھولا کو حکم دیا "ایک میکرو پول."

یہ لین دین ہو ہی رہی تھی کہ پیچھے سے آنند نے 'ہلو گوپال' کا شور مچایا اور سائیکل روکنے کے لئے گوپال کے سر کا سہارا لیا .

"ہلو، پان کھاؤ آنند......"

"نہیں یار' میں پان تو کھاتا ہی نہیں."

گوپال نے پھر گھڑی دیکھی اور ایسا ابھیویکت کیا کہ جیسے اسے ٹھیک سمے پر ضروری کام کے لئے جانا ہے .

"جاؤ جاؤ . پھر کب ملوگے؟ تم سے تو ملنا ہی نہیں ہوتا"، آنند نے کہا .

گوپال نے اتر دیا—"نہیں' جلدی نہیں ہے" اور جیسے کسی بات کو چھپانے کے لئے اس نے سگریٹ جلانے کا سہارا لیا .

"میں تو چلا گوپال."

"ایسی بھی کیا جلدی ہے؟" گوپال کہہ تو گیا لیکن شیگھر ہی چیتا . جانے یا انجانے اسکی آنکھ گھڑی پر پہنچ گئی .

آنند نے کہا—"یار' تمہارے ساتھ گھومنے کی طبیعت چاہتی ہے' دل چاہتا ہے کہ کافی ہاؤس چلیں . لیکن کیا بتائیں (ایک موٹی سی گالی اس نے دی' کسی دوسرے کو نہیں' سویم اپنی بہن کو) . اماں کو کھٹیا پکڑنا تھا تو آج ہی کل . بڑھیا بھی سمے سے بیمار پڑتی ہے. جب جب میں اکیلا گھر میں رہتا ہوں تو اسے کوئی نہ کوئی روگ آ دباتا ہے......؟"

"تمہاری اماں کب سے بیمار ہیں؟" گوپال نے سہانوبھوتی پرکٹ کی .

"دو مہینے سے بھائی. ناک میں دم آگیا ہے . عجیب مصیبت ہے . نوکر دوا لائے' یہ انہیں پسند نہیں ہے . چاہتی ہیں کہ ہر سمے میں انکی پٹی پکڑے بیٹھا رہوں". جیسے کچھ سوچکر آنند نے آگے کہا—"گرو تم ہی مزے میں ہو' کوئی فکر نہ چنتا' مست رام گھومتے ہو' [illegible] تمہیں دیر ہو رہی ہے ."

"ارے بھائی ؟ [illegible] لیس گئی. بھگوان نہ کرے [illegible] میں کوئی [illegible] ہو . ناک میں دم ہوگیا ہے. سب [illegible] صاحب آئی. اے. ایس کا امتحان

चूना हो गया

भोला की दूकान पर पान, बीड़ी, सिगरेट, बरफ का पानी, कोकाकोला तो मिलता ही है. और भी कई चीजें मिलती हैं. उनका व्योपार जरा छुप के होता है. कुछ लोग यहां छुप कर आते हैं और बहुत से खुल्लम खुल्ला इस दूकान पर भीड़ लगाये रहते हैं. यहां चीजें ही नहीं मिलतीं आदमियों का मिलन भी होता है. यदि आप बाहर से आये हों और मित्रों का हाल-चाल मालूम करना हो तो भोला की दूकान पर चले जाइये. सिविल लाइन घूमने वाले लगभग सभी व्यक्तियों का हाल भोला को मालूम है. वह बता सकते हैं कि आपके मित्र कल सिविल लाइन आये थे या नहीं, वह कितनी देर सिविल लाइन में रहे और कौन कौन उनके साथ था. भोला की जानकारी से हमें कुछ लेना देना नहीं, अपना मतलब केवल दूकान से है. इसी दूकान पर गोपाल ने सायकिल रोकी और धूप का चश्मा बड़ी नजाकत से उतार कर बोला—"भोला, राजू तो नहीं आया ?"

"राजू ?" भोला कुछ सोचने लगे. फिर गोपाल की तरफ देखा और वैसे ही पान लगाते हुये बोला—"नहीं वह तो नहीं आये, कल तो थे, अच्छा माल चुना है."

कहा नहीं जा सकता कि गोपाल ने भोला की बात सुनी या नहीं. चेहरे से कुछ ऐसा जरूर लगा कि राजू को पूछना तो सिर्फ नमस्ते के रूप में था, आगे कुछ बात नहीं थी. आगे बात बढ़ाये बिना गोपाल ने कहा—"एक पान देना."

"मीठा ?"

"खट्टा मैं कब खाता हू ?"

भोला बरफ की सिल्ली से एक लगा लगाया पान उठाकर भावहीन मुद्रा से बीड़ा बनाने लगे. तभी उन्होंने देखा कि गोपाल बार बार घड़ी देख रहे हैं. भोला बहुत घाघ हैं. लौंडों की रग रग पहचानते हैं. वह जानते हैं कि उतावली से लड़के दो ही कारन से घड़ी देखते हैं, या तो किसी खास समय पर किसी लड़की ने सिविल लाइन में मिलने का वादा किया हो और या नई नई घड़ी खरीदी हो और बार बार दिखाकर मित्रों को निमन्त्रित करना हो कि वह पूछें—"कब खरीदी ?". जवाब फौरन दिया जायेगा, लेकिन इस मुद्रा में कि जैसे यह बात पूछनी नहीं चाहिये थी. जवाब भी सुन लीजिये—"मेरी मामी की बहन ने उपहार दिया है". और भी जवाब होते हैं, पर सब जवाबों का सारांश एक है—एक लड़की है, सुन्दर है उसने इतनी नजदीकी है कि उसने घड़ी भेंट की है.

چونا ہوگیا

بھولا کی دوکان پر پان' بیڑی' سگریٹ' برف کا پانی' کوکا کولا تو ملتا ہی ہے ۔ اور بھی کئی چیزیں ملتی ہیں' انکا بیوپار ذرا چھپ کے ہوتا ہے ۔ کچھ لوگ یہاں چھپ کر آتے ہیں اور بہت سے کھلم کھلا اس دوکان پر بھیڑ لگائے رہتے ہیں ۔ یہاں چیزیں ہی نہیں ملتیں آدمیوں کا ملن بھی ہوتا ہے ۔ یدی آپ باہر سے آئے ہوں اور متروں کا حال چال معلوم کرنا ہو تو بھولا کی دوکان پر چلے جائیے ۔ سول لائن گھومنے والے لگ بھگ سبھی ویکتیوں کا حال بھولا کو معلوم ہے ۔ وہ بتا سکتے ہیں کہ آپ کے متر کل سول لائن آئے تھے یا نہیں' وہ کتنی دیر سول لائن میں رہے' اور کون کون ان کے ساتھ تھا ۔ بھولا کی جانکاری سے ہمیں کچھ لینا دینا نہیں' اپنا مطلب کیول دوکان سے ہے ۔ اسی دوکان پر گوپال نے سائیکل روکی اور دھوپ کا چشمہ بڑی نزاکت سے اتار کر بولا—"بھولا' راجو تو نہیں آیا ؟"

"راجو؟" بھولا کچھ سوچنے لگے ۔ پھر گوپال کی طرف دیکھا اور ویسے ہی پان لگاتے ہوئے بولے—"نہیں' وہ تو نہیں آئے' کل تو تھے' اچھا مال چنا ہے ۔"

کہا نہیں جاسکتا کہ گوپال نے بھولا کی بات سنی یا نہیں ۔ چہرے سے کچھ ایسا ضرور لگا کہ راجو کو پوچھنا تو صرف نمستے کے روپ میں تھا' آگے کچھ بات نہیں تھی ۔ آگے بات بڑھائے بنا گوپال نے کہا—"ایک پان دینا ۔"

"میٹھا ؟"

"کھٹا میں کب کھاتا ہوں ؟"

بھولا برف کی سلی سے ایک لگا لگایا پان اٹھاکر بھاوہین مدرا سے بیڑا بنانے لگے ۔ تب ہی انہوں نے دیکھا کہ گوپال بار بار گھڑی دیکھ رہے ہیں ۔ بھولا بہت گھاگ ہیں ۔ لونڈوں کی رگ رگ پہچانتے ہیں ۔ وہ جانتے ہیں کہ اتاولی سے لڑکے دو ہی کارن سے گھڑی دیکھتے ہیں ۔ یا تو کسی خاص سمے پر کسی لڑکی نے سول لائن میں ملنے کا وعدہ کیا ہو اور یا نئی نئی گھڑی خریدی ہو اور بار بار دکھا کر متروں کو نمنترت کرنا ہو کہ وہ پوچھیں—"کب خریدی؟" جواب فوراً دیا جائے گا لیکن اس مدرا میں کہ جیسے یہ بات پوچھنی نہیں چاہئے تھی ۔ جواب بھی سن لیجئے—"میری بھابی کی بہن نے اپہار دیا ہے ۔" اور بھی جواب ہوتے ہیں ۔ پر سب جوابوں کا سارانش ایک ہے [illegible] ہے' [illegible] ہے' اس سے اتنی نزدیکی [illegible]

में जाहिर है कि यह बहुत आगे बढ़ा हुआ है और रूस के सच्ची जम्हूरियत वाली समाज (Democracy) होने में और अमनपसन्द होने में कोई शक नहीं हो सकता.

हमने यहां ओपेरा वगैरा देखे. कल इतवार था. एक बड़े आर्थोडाक्स गिरजे में हजारों आदमियों को दुआ करते और पूरे ईसाई रसूम से पूजा पाठ करते देखा, पादरी देखे, Nuns देखीं, सब अपने अपने विश्वास के अनुसार अपने अपने काम में लगे हुए. कल दोपहर को लेनिन और स्टालिन की समाधि पर हिन्दुस्तान की तरफ से फूल माला भी चढ़ा आये. माला पर रूसी जुबान में यह लिखा दिया था—

India's affectionate homage
to
Lenin & Stalin
Founders of true Democracy
in this world
Indian Peace Delegation
June 1954

कम से कम एक लाख आदमियों की भीड़ रही होगी, कई घंटे में सब देख पाये. लेनिन और स्टालिन दोनों इस तरह लेटे हुए हैं मानो सो रहे हैं. रूसी जनता उसी भक्ति से उन्हें देखती है जिस तरह कोई अपने देवताओं को.

एक दिन यहां की तालीम के ढंग वगैरा पर तीन घंटे डिप्टी वज़ीर तालीम से गुफ्तगू रही. हम ने नोट ले लिये हैं. पर वह तो लम्बी बात है. इसमें कोई शक नहीं हमें इन मुल्कों से बहुत सीखना है बशर्ते कि हम में ज़रा नम्रता आए और दुनिया भर के गुरु होने की अपनी डींग को हम छोड़ दें. पहले सीखें तो फिर कुछ सिखा भी सकें. अब देर हो गई. दूसरे ज़रूरी काम हैं. यहां तुम सबकी हालत और खैरोआफियत का बराबर ख्याल लगा रहता है. बाक़ी फिर. खुश रहो.

तुम्हारा,
सुन्दर लाल.

میں ظاہر ہے روس بہت آگے بڑھا ہوا ہے اور روس کے سچی جمہوریت یعنی جن والے (Democracy) ہونے میں اور امن پسند ہونے میں کوئی شک نہیں ہوسکتا ۔

ہم نے یہاں اوپرا وغیرہ دیکھے ۔ کل اتوار تھا ۔ ایک بڑے آرتھوڈاکس گرجے میں ہزاروں آدمیوں کو دعا کرتے اور پورے عیسائی رسوم سے پوجا پاٹھ کرتے دیکھا، پادری دیکھے، Nuns دیکھیں، سب اپنے اپنے وشواس کے انوسار اپنے اپنے کام میں لگے ہوئے۔ کل دوپہر کو لینن اور اسٹالن کی سمادھی پر ہندستان کی طرف سے پھول مالا بھی چڑھا آئے ۔ مالا پر روسی زبان میں یہ لکھا دیا تھا ۔

India's affectionate homage*
to
Lenin & Stalin
Founders of true Democracy
in this world
Indian Peace Delegation
June 1954.

کم سے کم ایک لاکھ آدمیوں کی بھیڑ رہی ہوگی، کئی گھنٹے میں سب دیکھ پائے۔ لینن اور اسٹالن دونوں اس طرح لیٹے ہوئے ہیں مانو سو رہے ہیں ۔ روسی جنتا اسی بھکتی سے انہیں دیکھتی ہے جس طرح کوئی اپنے دیوتاؤں کو ۔

ایک دن یہاں کی تعلیم کے ڈھنگ وغیرہ پر تین گھنٹے ڈپٹی وزیر تعلیم سے گفتگو رہی ۔ ہم سب نے نوٹ لے لئے ہیں ۔ پر وہ تو لمبی بات ہے ۔ اس میں کوئی شک نہیں ہمیں ابھی ان ملکوں سے بہت سیکھنا ہے بشرطیکہ ہم میں ذرا نمرتا آئے اور دنیا بھر کے گورو ہونے کی اپنی ڈینگ کو ہم چھوڑ دیں ۔ پہلے سیکھیں تو پھر کچھ سکھا بھی سکیں ۔ اب دیر ہوگئی ۔ دوسرے ضروری کام ہیں ۔ وہاں تم سب کی حالت اور خیروعافیت کا برابر خیال لگا رہتا ہے ۔ باقی پھر ۔ خوش رہو ۔

تمہارا سندرلال

भी देते हैं. वहां एक बड़ा Amphi-theatre है जिसमें 20 हज़ार बच्चे एक साथ बैठकर खेल तमाशे देख सकते हैं. दोनों तरफ़ के जर्मन जर्मनी को फिर से एक और पूरी तरह आज़ाद करने को भी तैयार और ख्वाहिशमन्द हैं. पच्छिमी जर्मनी में अमरीका का रुपया बहुत लगा हुआ है. पूर्वी जर्मनी में ऐसी कोई बात नहीं. आम जलसे में मेरी तक़रीर सब जर्मनों को बहुत पसन्द आई.

बर्लिन से मास्को आते हुए रास्ते में ब्रेस्ट (Brest) पड़ा. वहां के रूसियों ने स्टेशन पर ही हम सबका ख़ूब स्वागत किया. उसी गाड़ी में चीनी, जापानी, वेयतनामवाले, लंकावाले, बर्मी वग़ैरा भी थे. कोमोजो भी थे. ख़ूब लुत्फ़ रहा. पांच घंटे वहां ठहरे. एक ओपेरा देखा. वहां का गाना बजाना, नाचना सब देखा. पंडित ओंकारनाथ ने उन्हें हिन्दुस्तानी गाना भी सुनाया. सबको अच्छा लगा. ख़ूब वक़्त गुज़रा.

मास्को में हम सारे शहर का चक्कर भी लगा चुके. क़रीब 50 लाख की आबादी है. 32 मंज़िल तक की इमारतें, बम्बई और कलकत्ते से कहीं चौड़ी चौड़ी सड़कें. सब ख़ुश मालूम होते हैं. सब काम में लगे हुए हैं. हिन्दुस्तान से सबको प्रेम नज़र आता है. गांधी जी का नाम सब जानते हैं. बहुत बड़ा आदमी मानते हैं. जवाहर लाल जी की भी सबके दिल में इज़्ज़त है. अमन का प्रचार यहां ख़ूब है. जंग का प्रचार करना क़ानूनी जुर्म है, जिस पर क़ैद की सज़ा दी जाती है. हमने यहां की ज़मीन के नीचे जाने वाली रेल देखी. बर्लिन में भी ऐसी रेल है, पर मास्को से उसका कोई मुक़ाबिला नहीं हो सकता. क़रीब 60 मील लम्बी यह ज़मीन के नीचे नीचे जाती है. नीचे नीचे इसकी भी चार मंज़िलें हैं. बिजली की सीढ़ियों से एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल जाते हैं और इसी तरह फिर ऊपर आते हैं. 23 लाख आदमी रोज़ाना इससे सफ़र करते हैं. मास्को दरिया मास्को शहर के बीच से बहता है. यह रेल मास्को नदी से ढाई सौ फ़ीट नीचे जाती है. स्टेशन बहुत बड़े बड़े और ख़ूबसूरत हैं. हज़ारों चित्रकारियां हैं. जिन कारीगरों ने काम किया है उनकी तस्वीरें जगह जगह बनी हैं. उनके नाम खुदे हैं. सब जगह दीवारों पर जनता के काम, जनता के कारनामे, जनता की एकता, जनता की ज़िन्दगी, यही सब दिखाया गया है. चीज़ देखने ही से सम्बन्ध रखती है. साइन्स की तरक़्क़ी तो है ही. वह तो इससे ज़्यादा और जगह भी होगी, पर यहां आकर यह मालूम होता है कि अगर सच मुच कहीं जनता का राज और जनता का बोलबाला है तो रूस में है. मुझे कई बातों में पच्छिमी आदर्श के ख़याल से चीन ज़्यादा पसन्द है. चीन हमारे आदर्शों के ज़्यादा नज़दीक है. लेकिन साइन्स

بھی دیتے ہیں ۔ وہاں ایک بڑا Amphi theatre ہے جس میں 20 ہزار بچے ایک ساتھ بیٹھکر کھیل تماشے دیکھ سکتے ہیں ۔ دونوں طرف کے جرمن جرمنی کو پھر سے ایک اور پوری طرح آزاد کرنے کو بھی تیار اور خواہشمند ہیں ۔ پچھمی جرمنی میں امریکہ کا روپیہ بہت لگا ہوا ہے ۔ پوربی جرمنی میں ایسی کوئی بات نہیں ۔ عام جلسہ میں میری تقریر سب جرمنوں کو بہت پسند آئی ۔

برلن سے ماسکو آتے ہوئے راستہ میں بریسٹ Brest پڑا ۔ وہاں کے روسیوں نے اسٹیشن پر ہی ہم سب کا خوب سواگت کیا ۔ اسی گاڑی میں چینی ' جاپانی ' ویت نام والے ' لنکا والے ' برمی وغیرہ بھی تھے ۔ کوموجو بھی تھے ۔ خوب لطف رہا ۔ پانچ گھنٹے وہاں ٹھہرے ۔ ایک اوپرا دیکھا ۔ وہاں کا گانا ' بجانا ' ناچنا سب دیکھا ۔ پنڈت اونکار ناتھ نے انہیں ہندستانی گانا بھی سنایا ۔ سبکو اچھا لگا ۔ خوب وقت گذرا ۔

ماسکو میں ہم سارے شہر کا چکر بھی لگا چکے ۔ قریب 50 لاکھ کی آبادی ہے ۔ 32 منزل تک کی عمارتیں ' بمبئی اور کلکتہ سے کہیں چوڑی چوڑی سڑکیں ۔ سب خوش معلوم ہوتے ہیں ۔ سب کام میں لگے ہوئے ہیں ۔ ہندستان سے سبکو پریم نظر آتا ہے ۔ گاندھی جی کا نام سب جانتے ہیں ۔ بہت بڑا آدمی مانتے ہیں ۔ جواہر لال جی کی بھی سب کے دل میں عزت ہے ۔ امن کا پرچار یہاں خوب ہے ۔ جنگ کا پرچار کرنا قانونی جرم ہے ' جس پر قید کی سزا دیجاتی ہے ۔ ہم نے یہاں کی زمین کے نیچے جانے والی ریل دیکھی ۔ برلن میں بھی ایسی ریل ہے ' پر ماسکو سے اس کا کوئی مقابلہ نہیں ہوسکتا ۔ قریب 60 میل لمبی یہ زمین کے نیچے نیچے جاتی ہے ۔ نیچے نیچے اسکی بھی چار منزلیں ہیں ۔ بجلی کی سیڑھیوں سے ایک منزل سے دوسری منزل جاتے ہیں اور اسی طرح پھر اوپر آتے ہیں ۔ 23 لاکھ آدمی روزانہ اس سے سفر کرتے ہیں ۔ ماسکو دریا ماسکو شہر کے بیچ سے بہتا ہے ۔ یہ ریل ماسکو ندی سے ڈھائی سو فیٹ نیچے جاتی ہے ۔ اسٹیشن بہت بڑے بڑے اور خوبصورت ہیں ۔ ہزاروں چترکاریاں ہیں ۔ جن کاریگروں نے کام کیا ہے انکی تصویریں جگہ جگہ بنی ہیں ۔ ان کے نام کھدے ہیں ۔ سب جگہ دیواروں پر جنتا کے کام ' جنتا کے کارنامے ' جنتا کی ایکتا ' جنتا کی زندگی ' یہی سب دکھایا گیا ہے ۔ چیز دیکھنے ہی سے سمبندھ رکھتی ہے ۔ سائنس کی ترقی ہے ہی ۔ وہ تو اس سے زیادہ اور جگہ بھی ہوگی ' پر یہاں آکر یہ معلوم ہوتا ہے کہ اگر سچ مچ کہیں جنتا کا راج اور جنتا کا بول بالا ہے تو روس میں ہے ۔ مجھے کئی باتوں میں پچھمی آدرش کے خیال سے چین زیادہ پسند ہے ۔ چین ہمارے آدرشوں کے زیادہ نزدیک ہے ۔ لیکن سائنس

वन्देमातरम्

Freiheits-Kampfer
fur Indian
Surendranath Kar
1889-1923
Nripendra Nath Das Gupta
1897-1925
Nilay K. Das Gupta
1934-1938
Ashit Ranjan Sen Gupta
1902-1924

वन्देमातरम नागरी हर्फ़ों में खुदा है, बाक़ी रोमन हर्फ़ों में. जो दो सतरें जर्मन भाषा में हैं उनके मानी हैं :— "Fighter for the freedom of India यानी हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये लड़ने वाले." चार नामों में पहला, दूसरा और चौथा हिन्दुस्तानी क्रान्तिकारी हैं जो अपनी किसी धुन में बर्लिन में आकर मरे और तीसरा एक और क्रान्तिकारी का लड़का है जो बर्लिन में ही पैदा हुआ और यहां ही मर गया. पत्थर के चारों तरफ़ फूल लगे हुए हैं. एक बूढ़ी जर्मन औरत इन फूलों को देखती रहती है और कभी कभी आकर पानी देती रहती है.

हमें यह भी मालूम हुआ कि पच्छिमी बर्लिन में ही कहीं पर हिन्दुस्तान के एक मुसलमान क्रान्तिकारी की भी क़ब्र है. पर हमें उसका पता लगाने और वहां जाने का वक़्त न मिल सका. पच्छिमी बर्लिन होने की वजह से और भी मुश्किल हो गया. हम पूर्वी बर्लिन में ठहरे थे और वीरेन्द्र बाबू अगले ही दिन किसी ज़रूरी काम से लन्दन चले गये. उस क़ब्र को देखने की हसरत दिल की दिल ही में रह गई.

बर्लिन की बमबारी और बर्बादी के निशान चारों तरफ़ फैले हुए हैं. चारों तरफ़ बड़ी बड़ी शानदार इमारतों के खंडर देखकर दुख भी होता है और इबरत भी. फिर भी पूर्वी बर्लिन वाले बहुत कुछ संभाल रहे हैं. उनका मज़दूरों और किसानों के लड़कों लड़कियों के लिये एक खास स्कूल देख कर बड़ी तबियत खुश हुई. प्राइमरी पास लोग लिये जाते हैं. तीन साल का कोर्स है. वहां से सीधे यूनिवर्सिटी जा सकते हैं. बहुत अच्छा बोर्डिंग स्कूल है. 800 लड़के लड़कियां रहते हैं. हमने उनसे बातें कीं, उनका रहना खाना देखा. बहुत पसन्द आया. एक Young Pioneers' Republic देखी. कई मील में बहुत खूबसूरत बाग़, इमारतें और झील. 7 से 14 साल तक के लड़के लड़कियों के लिये. अपना सब इन्तज़ाम वह खुद करते हैं. कुछ लड़के 15 से 25 तक के उन्हें मदद

بندے ماترم

Freiheit-Kampfer
fur Indian
Surendranath Kar
1889-1923
Nripendra Nath Daa Gupta
1897-1925
Nilay K. Das Gupta
1934-1938
Ashit Ranjan Sen Gupta
1902-1924

" بندے ماترم " ناگری حرفوں میں کھدا ہے، باقی رومن حرفوں میں ۔ جو دو سطریں جرمن بھاشا میں ہیں ان کے معنی ہیں:— Fighter for the freedom of India. یعنی ہندستان کی آزادی کے لئے لڑنے والے ۔" چار ناموں میں پہلا، دوسرا اور چوتھا ہندستانی کرانتی کاری ہیں جو اپنی کسی دھن میں برلن میں آکر مرے اور تیسرا ایک اور کرانتی کاری کا لڑکا ہے جو برلن میں ہی پیدا ہوا اور یہاں ہی مر گیا ۔ پتھر کے چاروں طرف پھول لگے ہوئے ہیں ۔ ایک بوڑھی جرمن عورت ان پھولوں کو دیکھتی رہتی ہے اور کبھی کبھی آکر پانی دیتی رہتی ہے ۔

ہمیں یہ بھی معلوم ہوا کہ پچھمی برلن میں ہی کہیں پر ہندستان کے ایک مسلمان کرانتی کاری کی بھی قبر ہے ۔ پر ہمیں اس کا پتہ لگانے اور وہاں جانے کا وقت نہ مل سکا ۔ پچھمی برلن ہونے کی وجہ سے اور بھی مشکل ہوگیا ۔ ہم پوربی برلن میں ٹھہرے تھے اور بیریندر بابو اگلے ہی دن کسی ضروری کام سے لندن چلے گئے ۔ اس قبر کو دیکھنے کی حسرت دل کی دل ہی میں رہ گئی ۔

برلن کی بمباری اور بربادی کے نشان چاروں طرف پھیلے ہوئے ہیں ۔ چاروں طرف بڑی بڑی شاندار عمارتوں کے کھنڈر دیکھ کر دکھ بھی ہوتا ہے اور عبرت بھی ۔ پھر بھی پوربی برلن والے بہت کچھ سنبھال رہے ہیں ۔ انکا مزدوروں اور کسانوں کے لڑکوں لڑکیوں کے لئے ایک خاص اسکول دیکھ کر بڑی طبیعت خوش ہوئی ۔ پرائمری پاس لوگ لئے جاتے ہیں ۔ تین سال کا کورس ہے ۔ وہاں سے سیدھے یونیورسٹی جاسکتے ہیں ۔ بہت اچھا بورڈنگ اسکول ہے ۔ 800 لڑکے لڑکیاں رہتے ہیں ۔ ہم نے ان سے باتیں کیں، انکا رہنا کھانا دیکھا ۔ بہت پسند آیا ۔ ایک Young Pioneers' Republic دیکھی ۔ کئی میل میں بہت خوبصورت باغ، عمارتیں اور جھیل ۔ 7 سے 14 سال تک کے لڑکے لڑکیوں کے لئے ۔ اپنا سب انتظام وہ خود کرتے ہیں ۔ کچھ لڑکے 15 سے 25 تک کے انہیں مدد

क़रीब वैसी ही है जैसी इलाहाबाद में जनवरी में. फिर भी बर्लिन में और यहां भी मैं सब जगह बराबर धोती पहनता रहा. आजकल भी धोती ही पहनता हूं. जब से देहली से चला हूं सिर्फ़ एक दिन बर्लिन में शाम को दो घन्टे के लिये मोज़ा और पाजामा पहन लिया था. वह वाक़िया भी ख़ासा दिलचस्प है.

हुआ यह कि एक दिन बर्लिन में अचानक एक सज्जन वीरेन्द्रनाथ दास गुप्ता ने कहीं से मुझे फ़ोन किया कि वह मुझसे मिलने आना चाहते हैं. मैंने उसी वक़्त बुला लिया. आध घन्टे में एक साहब, छियासठ बरस की उम्र के, लेकिन मज़बूत, अंग्रेज़ी पोशाक में हिन्दुस्तानी, मेरे कमरे में दिखाई दिये और बड़ी मोहब्बत से मिले. पुराने बंग भंग के समय के हिन्दुस्तानी देश भक्त और क्रान्तिकारी थे. अब किसी फ़र्म में इनजीनियर हैं और ज़्यादातर योरूप में ही रहते हैं. आते जाते रहते हैं. ख़ूब बातें हुईं. वह मुझे पच्छिमी बर्लिन (West Berlin) सैर को ले गये. यह बात 22 मई की है. चलते वक़्त कहने लगे कि शाम को सर्दी ज़्यादा हो जायेगी, मोज़ा और गरम पाजामा ज़रूर पहन लीजिये. मैं धोती पहने ही जाना चाहता था. कुछ देर बहस होकर मैं उनकी बातों में आ गया. गरम पाजामा और मोज़ा निकाल कर पहन लिया. बाद में मालूम हुआ कि सर्दी का इतना डर नहीं था जितना वह मुझे धोती पहने साथ ले जाते हुए शर्माते थे, ख़ासकर पच्छिमी बर्लिन में. ख़ैर इनकी यह ख़्वाहिश भी आधी पूरी हुई. क्योंकि जब हम चलने लगे तो कुमारप्पा भी तैयार हो गये और कुमारप्पा वही धोती पहने और नंगे पांव रहे. सैर बहुत अच्छी रही. अन्डर ग्राउन्ड रेल से गये और आये. यहां हमारी धोतियों और कपड़ों को देखकर सब जगह लोग ख़ूब जमा हो जाते हैं. बीसियों पीछे पीछे चलने लगते हैं, लेकिन मोहब्बत के साथ. हिन्दुस्तान का हाल पूछते हैं और ख़ूब हाथ मिलाते हैं. बच्चों से तो इस अर्से में सैकड़ों ही से हाथ मिलाना पड़ा है. हर जगह यही हालत होती है. लोगों की आंखों में जो मोहब्बत और हमदर्दी होती है, उससे मालूम होता कि रंग का अभिमान (Colour Pride) अब दुनिया से जा रहा है और तेज़ी से जा रहा है इसका श्रेय हमें कम्यूनिज़्म को और रूस को देना ही होगा.

उस दिन की पच्छिमी बर्लिन की सैर में एक बात और भी बहुत ही ख़ास हुई. श्री बी. एन. दास गुप्ता हमें बर्लिन के एक क्रीमेटोरियम में ले गये. वहां उन्होंने एक जगह दिखाई जहां चार हिन्दुस्तानियों की राख दफ़न है. यह चारों बर्लिन में मरे, यहां ही फुंके और राख एक ख़ूबसूरत जगह दफ़न कर दी गई—चारों की एक ही जगह अलग अलग लेकिन पास पास. ऊपर एक पत्थर लगा है. उसके ऊपर जो शब्द खुदे हैं वह ज्यों के त्यों नीचे नक़ल करता हूं :

قریب ویسی ہی ہے جیسی الہ آباد میں جنوری میں۔ پھر بھی برلن میں بھی اور یہاں بھی میں سب جگہ برابر دھوتی پہنتا رہا۔ آجکل بھی دھوتی ہی پہنتا ہوں۔ جب سے دہلی سے چلا ہوں صرف ایک دن برلن میں شام کو دو گھنٹے کے لئے موزہ اور پاجامہ پہن لیا تھا۔ وہ واقعہ بھی خاصہ دلچسپ ہے۔

ہوا یہ کہ ایک دن برلن میں اچانک ایک سجن بیرندرناتھ داس گپتا نے کہیں سے مجھے فون کیا کہ وہ مجھ سے ملنے آنا چاہتے ہیں۔ میں نے اسی وقت بلا لیا۔ آدھ گھنٹے میں ایک صاحب، 66 برس کی عمر کے لیکن مضبوط، انگریزی پوشاک میں، ہندستانی، میرے کمرے میں دکھائی دیئے۔ بڑی محبت سے ملے۔ پرانے بنگ بھنگ کے سمے کے ہندستانی دیش بھگت اور کرانتی کاری تھے۔ اب کسی فرم میں انجینیر ہیں اور زیادہ تر یوروپ میں ہی رہتے ہیں۔ آتے جاتے رہتے ہیں۔ خوب باتیں ہوئیں۔ وہ مجھے پچھمی برلن (West Berlin) سیر کو لے گئے۔ یہ بات 22 مئی کی ہے۔ چلتے وقت کہنے لگے کہ شام کو سردی زیادہ ہو جائے گی، موزہ اور گرم پاجامہ ضرور پہن لیجئے۔ میں دھوتی پہنے ہی جانا چاہتا تھا۔ کچھ دیر بحث ہو کر میں اُن کی باتوں میں آ گیا۔ گرم پاجامہ اور موزہ نکال کر پہن لیا۔ بعد میں معلوم ہوا کہ سردی کا اتنا ڈر نہیں تھا جتنا وہ مجھے دھوتی پہنے ساتھ لے جاتے ہوئے شرماتے تھے، خاص کر پچھمی برلن میں۔ خیر اُن کی یہ خواہش بھی آدھی پوری ہوئی۔ کیونکہ جب ہم چلنے لگے تو کمارپپا بھی تیار ہوگئے اور کمارپپا وہی دھوتی پہنے اور ننگے پاؤں رہے۔ سیر بہت اچھی رہی۔ انڈر گراونڈ ریل سے گئے اور آئے۔ یہاں ہمارے دھوتیوں اور کپڑوں کو دیکھکر سب جگہ لوگ خوب جمع ہوجاتے ہیں۔ بیسیوں پیچھے پیچھے چلنے لگتے ہیں، لیکن محبت کے ساتھ۔ ہندستان کا حال پوچھتے ہیں اور خوب ہاتھ ملاتے ہیں۔ بچوں سے تو اس عرصہ میں سیکڑوں ہی سے ہاتھ ملانا پڑا ہے۔ ہر جگہ یہی حالت ہوتی ہے۔ لوگوں کی آنکھوں میں جو محبت اور ہمدردی ہوتی ہے، اُس سے معلوم ہوتا ہے کہ رنگ کا ابھیمان (Colour Pride) اب دنیا سے جارہا ہے۔ اس شریہ ہمیں کمیونزم کو اور روس کو دینا ہی ہوگا۔

اُس دن کی پچھمی برلن کی سیر میں ایک بات اور بھی بہت ہی خاص ہوئی۔ شری بی۔ این۔ داس گپتا ہمیں برلن کے ایک کریمیٹوریم میں لے گئے۔ وہاں اُنہوں نے ایک جگہ دکھائی جہاں چار ہندستانیوں کی راکھ دفن ہے۔ یہ چاروں برلن میں مرے، یہاں ہی پھنکے اور راکھ ایک خوبصورت جگہ دفن کر دی گئی—چاروں کی ایک ہی جگہ الگ الگ لیکن پاس پاس۔ اوپر ایک پتھر لگا ہے۔ اس کے اوپر جو شبد کھدے ہیں وہ جیوں کے تیوں نیچے نقل کرتا ہوں:

मास्को से ख़त

[पूज्य पंडित जी ने इस ख़त से पहले एक ख़त मुझे बर्लिन से लिखा था. एक हफ़्ते के बाद यह दूसरा ख़त है. पहला एयरमेल से आया और जून के पहले हफ़्ते में मिल गया. यह ख़त मामूली डाक से आया और जुलाई के तीसरे हफ़्ते में मिला. पहला भी बहुत दिलचस्प था और अन्तर्राष्ट्री हालत पर काफ़ी रोशनी डालता था. मेरी नालायक़ी से वह ख़त खो गया. इस नामाफ़ी गुनाह के लिये नया हिन्द के पाठकों से क्षमा चाहता हूं. दूसरा ख़त सेवा में हाज़िर है—मुजीब.]

❀ ❀ ❀

Room No. 214
Soviet Hotel
Moscow.
6. 6. '54
Sunday.
7. 6. '54.
Monday.

डियर मुजीब,

एक ख़त तुम्हें बर्लिन से लिखा था. अब तक मिल गया होगा. 29, 30 बर्लिन की सैर करने के बाद 31 मई को हम छै आदमी बर्लिन से बज़रिये रेल मास्को के लिये रवाना हुए और 2 जून की शाम को मास्को पहुंचे. सफ़र में हर तरह का आराम रहा. हमारे रूसी मेज़बान ख़ासे मेहमा-नवाज़ हैं और काफ़ी मोहब्बती. मालूम होता है रूस सचमुच यौरप और एशिया का पुल है और दोनों तरफ़ के इन्सानों और दिलों को मिलाने का काम सब से अच्छा शायद रूस ही कर सकता है. रास्ते में एक केनेडियन दोस्त से जो यहां भी हमारे साथ ठहरे हुए हैं केनेडा की आज की हालत पर ख़ूब गुफ़्तगू हुई. मैंने कुछ नोट कर लिया है.

बर्लिन में सूरज रात को 9 बजे छिपता है और सुबह 3 बजे फिर निकल आता है. यानी रात सिर्फ़ 6 घंटे की होती है. यहां तो रूस से भी ज़्यादा अजीब हालत है. रास्ते में रात को 10 बजे के बाद हम बीच के एक स्टेशन पर रुके थे. बिलकुल ऐसा समां था जैसा इलाहाबाद में जून में शाम को 7 बजे. दिन की रोशनी इतनी काफ़ी थी कि किताब पढ़ी जा सके. सर्दी यहां सब जगह क़रीब

ماسکو سے خط

[پوجیہ پنڈت جی نے اس خط سے پہلے ایک خط مجھے برلن سے لکھا تھا. ایک ہفتے کے بعد یہ دوسرا خط ہے. پہلا ائیر میل سے آیا اور جون کے پہلے ہفتے میں مل گیا. یہ خط معمولی ڈاک سے آیا اور جولائی کے تیسرے ہفتے میں ملا. پہلا بھی بہت دلچسپ تھا اور انتر راشٹری حالت پر کافی روشنی ڈالتا تھا. میری نالائقی سے وہ خط کھو گیا. اس نامعافی گناہ کے لئے نیا ہند کے پاٹھکوں سے چھما چاہتا ہوں. دوسرا خط سیوا میں حاضر ہے—مجیب.]

❀ ❀ ❀

Room No. 214
Soviet Hotel
Moscow
6. 6. 54.
Sunday
7 .6 54.
Monday.

ڈیر مجیب،

ایک خط تمہیں برلن سے لکھا تھا. اب تک مل گیا ہوگا. 29, 30 برلن کی سیر کرنے کے بعد 31 مئی کو ہم چھ آدمی برلن سے بذریعہ ریل ماسکو کے لئے روانہ ہوئے اور 2 جون کی شام کو ماسکو پہونچے. سفر میں ہر طرح کا آرام رہا. ہمارے روسی میزبان خاصے مہمان نواز ہیں اور کافی محبتی. معلوم ہوتا ہے روس سچ مچ یورپ اور ایشیا کے بیچ کا پل ہے اور دونوں طرف کے انسانوں اور دلوں کو ملانے کا کام سب سے اچھا شاید روس ہی کرسکتا ہے. راستہ میں ایک کینیڈین دوست سے جو یہاں بھی ہمارے ساتھ ٹھہرے ہوئے ہیں کینیڈا کی آج کی حالت پر خوب گفتگو ہوئی. میں نے کچھ نوٹ کر لیا ہے.

برلن میں سورج رات کو 9 بجے چھپتا ہے اور صبح 3 بجے پھر نکل آتا ہے. یعنی رات صرف 6 گھنٹے کی ہوتی ہے. یہاں تو روس سے بھی زیادہ عجیب حالت ہے. راستے میں رات کو 10 بجے کے بعد ہم بیچ کے ایک اسٹیشن پر ٹھہرے تھے. بالکل ایسا سماں تھا جیسا الہ آباد میں جون میں شام کو 7 بجے. دن کی روشنی اتنی کافی تھی کہ کتاب پڑھی جا سکے. سردی یہاں سب جگہ قریب

बिना सरकारी सहायता के टिक नहीं पाता. 12 अप्रैल सन 1954 के हरिजन में विनोबा जी का मनीं बहन पटेल के नाम एक पत्र छपा है. उसमें लिखा है: "कोशिश की जा रही है कि दस्तावेज़ी कारवाई और दाखिल खारिज बिना टिकट और रजिस्ट्री खर्चों के पूरी हो सकें. सरकारों से प्रार्थना की जायगी कि वह इस सम्बन्ध में ज़रूरी क़ानून और नियम बना दें." यही नहीं, उसी पत्र में आगे लिखा है: "हैदराबाद में सरकार के सहयोग से ज़मीन के बटवारे का काम शुरू कर दिया गया है. इसका नतीजा यह है कि भूदान वाले अब जिन जिन गांवों में जाते हैं वहां और अधिक ज़मीन दान में मिलती है." इस जगह यह बात समझ में नहीं आती कि दान में बढ़ोती का श्रेय सरकार के सहयोग को है या ज़मीन के बटवारे को ? ज़ाहिर है भूदान को सरकार की मदद ज़रूरी है, न सिर्फ़ असर डालने के लिये बल्कि क़ानून बना कर भूदान को क़ायम करने के लिये भी. फिर यह "हृदय परिवर्तन" कैसा है ?

यहां एक सवाल और खड़ा हो जाता है. वह यह है कि क्या बिना राजसत्ता को हाथ में लिये दूसरे आर्थिक और सामाजिक संस्थाओं का सुधार किया जा सकता है ? इस पर भी बहुत सोचना है. सर्वोदय के नेता राजसत्ता के बिना दूसरी संस्थाओं का सुधार सम्भव समझते हैं. उनका कहना है कि दूसरी संस्थाओं के सुधार के बाद राजकाजी ताक़तें खुद सुधर जायेंगी. लेकिन व्योहार में हम दूसरी बात देखते हैं. सर्वोदय ने भूदान से ज़मीन की समस्या हल करनी चाही, लेकिन सारे ब्योरों से पता चलता है कि भूदान की जो कुछ भी सफलता है वह सरकारी सहयोग के कारन है. अगर यह बात न होती और राजसत्ता के बग़ैर ज़मीन सुधार हो सकता तो विनोबा जी सरकार से क़ानून और नियम बनाने की प्रार्थना क्यों करते ? होना तो यह चाहिये था कि सुधार हो जाता और सरकार मजबूरन उसे मान लेती. भूदान में मिली ज़मीन के आंकड़ों से भी उलटी बात सिद्ध होती है. जहां जहां कांग्रेस सरकारें बहुत मज़बूत हैं वहीं वहीं भूदान में ज़मीन ज़्यादा मिली है और वहीं भूदान ज़्यादा मज़बूत है. यह भी ध्यान देने की बात है.

भूदान के आंकड़े निकलते रहते हैं. सब में मिली ज़मीन और दूसरे साधनों का ज़िक्र होता है लेकिन सर्वोदय की सब से बड़ी पूंजी "हृदय परिवर्तन" के आंकड़े कभी नहीं निकलते हैं. अगर उन लोगों का नाम मालूम हो जाये तो 'हृदय परिवर्तन' की हम जांच कर सकेंगे. जब दिल बदल जाता है तो रहन सहन, आचार विचार, सब बदल जाते हैं. हमें यह देखना पड़ेगा कि ज़मीन के सम्बन्ध में जिनका दिल बदल जाता है कहीं दूसरे मामलों में उनका दिल काला का काला तो नहीं रहता ? आशा है 'हृदय परिवर्तन' करने वाले मुझे इस तजुरबे में सहयोग देंगे.

بنا سرکاری سہائتا کے ٹک نہیں پاتا. 12 اپریل 1954 کے ہریجن میں ونوبا جی کا منی بہن پٹیل کے نام ایک پتر چھپا ہے. اس میں لکھا ہے: "کوشش کی جا رہی ہے کہ دستاویزی کارروائی اور داخل خارج بنا ٹکٹ اور رجسٹری خرچوں کے پوری ہوسکیں. سرکاروں سے پرارتھنا کی جائیگی کہ وہ اس سمبندھ میں ضروری قانون اور نیم بنادیں." یہی نہیں اسی پتر میں آگے لکھا ہے: "حیدرآباد میں سرکار کے سہیوگ سے زمین کے بٹوارے کا کام شروع کردیا گیا ہے. اسکا نتیجہ یہ ہے کہ بھودان والے اب جن جن گاؤں میں جاتے ہیں وہاں اور ادھک زمین دان میں ملتی ہے." اس جگہ یہ بات سمجھ میں نہیں آتی کہ دان میں بڑھوتی کا شریہ سرکار کے سہیوگ کو ہے یا زمین کے بٹوارے کو؟ ظاہر ہے بھودان کو سرکار کی مدد ضروری ہے. نہ صرف اثر ڈالنے کے لئے بلکہ قانون بناکر بھودان کو قائم کرنے کے لئے بھی پھر یہ "ہردے پریورتن" کیسا ہے؟

یہاں ایک سوال اور کھڑا ہو جاتا ہے. وہ یہ ہے کہ کیا بنا راج ستا کو ہاتھ میں لئے دوسرے آرتھک اور سماجک سنستھاؤں کا سدھار کیا جا سکتا ہے؟ اس پر بھی بہت سوچنا ہے. سروودے کے نیتا راج ستا کے بنا دوسری سنستھاؤں کا سدھار سمبھو سمجھتے ہیں. ان کا کہنا ہے کہ دوسری سنستھاؤں کے سدھار کے بعد راج کاجی طاقتیں خود سدھر جائینگی. لیکن بیوہار میں ہم دوسری بات دیکھتے ہیں. سروودے نے بھودان سے زمین کی سمسیا حل کرنی چاہی. لیکن سارے بیوروں سے پتہ چلتا ہے کہ بھودان کی جو کچھ بھی سپھلتا ہے وہ سرکاری سہیوگ کے کارن ہے. اگر یہ بات نہ ہوتی اور راج ستا کے بغیر زمین سدھار ہو سکتا تو ونوبا جی سرکار سے قانون اور نیم بنانے کی پرارتھنا کیوں کرتے؟ ہونا تو یہ چاہئے تھا کہ سدھار ہو جاتا اور سرکار مجبوراً اسے مان لیتی. بھودان میں ملی زمین کے آنکڑوں سے بھی الٹی بات سدھ ہوتی ہے. جہاں جہاں کانگریس سرکاریں بہت مضبوط ہیں وہیں وہیں بھودان میں زمین زیادہ ملی ہے اور وہیں بھودان زیادہ مضبوط ہے. یہ بھی دھیان دینے کی بات ہے.

بھودان کے آنکڑے نکلتے رہتے ہیں. سب میں ملی زمین اور دوسرے سادھنوں کا ذکر ہوتا ہے. لیکن سروودے کی سب سے بڑی پونجی "ہردے پریورتن" کے آنکڑے کبھی نہیں نکلتے ہیں. اگر ان لوگوں کا نام معلوم ہو جائے تو ہردے پریورتن کی ہم جانچ کر سکیں گے. جب دل بدل جاتا ہے تو رہن سہن، آچار وچار، سب بدل جاتے ہیں. ہمیں یہ دیکھنا پڑیگا کہ زمین کے سمبندھ میں جن کا دل بدل جاتا ہے کہیں دوسرے معاملوں میں ان کا دل کالا کا کالا تو نہیں رہتا؟ آشا ہے "ہردے پریورتن" کرنے والے مجھے اس تجربے میں سہیوگ دینگے.

दंगों को समाप्त करके शमात नहीं करा पाये. समय के अलावा परिस्थिति भी जरूरी है. मेवात में परिस्थिति दूसरी थी, इसलिये विनोबा जी मेवातियों को जमीन न दिला सके, लेकिन तिलंगाना में जा कर उन्हें बहुत सी जमीन मिल गई. विनोबा जी वही थे, समय वही था, लोगों के हृदय भी वही थे, केवल परिस्थिति बदली हुई थी. इस तरह से हम देखते हैं कि व्यक्ति, समय और परिस्थिति तीनों हृदय परिवर्तन के लिये जरूरी हैं. परिस्थिति पर समय और व्यक्ति दोनों निर्भर करते हैं. इस तरह परिस्थति प्रधान है.

जब परिस्थिति प्रधान है तो हृदय परिवर्तन से पहले उचित परिस्थिति का होना जरूरी है. विनोबा जी के बारे में तो मैं नहीं कह सकती, लेकिन उनके अच्छे काम करने वाले इस सच्चाई को जानते हैं. इसीलिये अपनी कामयाबी के लिये वह परिस्थिति तैय्यार करते हैं. दान देने वाले दो हैं. दोनों को अलग अलग ढंग से दान के लिये तैयार किया जाता है. जमींदार के पास जमीन है और किसान की ताक़त को भी अब वह महत्व देने लगा है. जमींदारों के दिमाग़ में भी यह बात बैठ गई है कि किसान जमीन पर क़ब्ज़ा करके ही रहेगा. किसान जमींदार का जो झगड़ा होगा उसके नतीजे से जमींदार को बुख़ार आता है. इस मनोविज्ञान से भूदान के नेता फ़ायदा उठाते हैं. वह जगह जगह पर ख़ून ख़राबे और लूट मार के क़िस्से सुनाते हैं. मुसलमान मौलवी नूह के तूफ़ान से डराता है और विनोबा जी के पन्डे कम्युनिस्टों की बरबादी से डराते हैं और उसे यह आश्वासन देते हैं कि अगर वह अपनी जमीन का कुछ हिस्सा भूदान में दे दे तो किसानों के गुस्से को शान्त किया जा सकेगा और वह ख़ून ख़राबे से बच जायगा. एक तरफ़ जमींदार देखता है कि सब कुछ जा रहा है और दूसरी तरफ़ बहुत कुछ बच जाने की उसे उम्मीद मालूम होती है. इसलिये वह दान देता है. इसे 'हृदय परिवर्तन" कैसे कहूं, मेरी समझ में नहीं आता.

दूसरी तरह के दानी किसान हैं. किसानों से धर्म के नाम पर अपील की जाती है. भूदान के सारे परिभाषिक शब्दों को देख लीजिये. सब ऊपर की बात को साबित करते हैं. जमीन तो क्या, धर्म पर हमारा किसान जान भी दे सकता है. कोई माने या न माने लेकिन यह बात बिल्कुल ऐसी ही है कि जैसे शराब पिलाकर किसी को लूट लिया जाय. इस तरह परिस्थिति पैदा होती है, पर डाका भी पड़ता है. नशे की बातों को "हृदय परिवर्तन" नहीं कहा जा सकता.

हृदय परिवर्तन के बाद ऊपरी कन्ट्रोल की जरूरत नहीं रहती. लेकिन आश्चर्य है कि भूदानी हृदय परिवर्तन

فلگوں کو آنھنی کرکے سماپت نہیں کرا پائے. سمے کے علاوہ پرستھتی بھی ضروری ہے. میوات میں پرستھتی دوسری تھی' اس لئے ونوبا جی میواتیوں کو زمین نہ دلا سکے' لیکن تلنگانہ میں جاکر انھیں بہت سی زمین مل گئی. ونوبا جی وہی تھے' سمے وہی تھا' لوگوں کے ہردے بھی وہی تھے' کیول پرستھتی بدلی ہوئی تھی. اس طرح سے ہم دیکھتے ہیں کہ ویکتی' سمے اور پرستھتی تینوں ہردے پریورتن کے لئے ضروری ہیں. پرستھتی پر سمے اور ویکتی دونوں نربھر کرتے ہیں. اس طرح پرستھتی پردھان ہے.

جب پرستھتی پردھان ہے تو "ہردے پریورتن" سے پہلے اُچت پرستھتی کا ہونا ضروری ہے. ونوبا جی کے بارے میں تو میں نہیں کہہ سکتی' اُن کے اچھے کام کرنے والے اِس سچائی کو جانتے ہیں. اِسی لئے اپنی کامیابی کے لئے وہ پرستھتی تیار کرتے ہیں. ڈان دینے والے دو ہیں. دونوں کو الگ الگ ڈھنگ سے دان کے لئے تیار کیا جاتا ہے. زمیندار کے پاس زمین ہے اور کسان کی طاقت کو بھی اب وہ مہتو دینے لگا ہے. زمینداروں کے دماغ میں بھی یہ بات بیٹھ گئی ہے کہ کسان زمین پر قبضہ کرکے ہی رہیگا. کسان زمیندار کا جو جھگڑا ہوگا اُس کے نتیجے سے زمیندار کو بخار آتا ہے. اِس منووگیان سے بھودان کے نیتا فائدہ اُٹھاتے ہیں. وہ جگہ جگہ پر خون خرابے اور لوٹمار کے قصے سناتے ہیں. مسلمان مولوی نوح کے طوفان سے ڈراتا ہے اور ونوبا جی کے پنڈے کمیونسٹوں کی بربادی سے ڈراتے ہیں اور اُسے یہ اشواسن دیتے ہیں کہ اگر وہ اپنی زمین کا کچھ حصہ بھودان میں دے دے تو کسانوں کے غصے کو شانت کیا جاسکیگا اور وہ خون خرابے سے بچ جائیگا. ایک طرف زمیندار دیکھتا ہے کہ سب کچھ جا رہا ہے اور دوسری طرف بہت کچھ بچ جانے کی اُسے اُمید معلوم ہوتی ہے. اِس لئے وہ دان دیتا ہے. اِسے "ہردے پریورتن" 'کیسے کہوں' میری سمجھ میں نہیں آتا.

دوسری طرح کے دانی کسان ہیں. کسانوں سے دھرم کے نام پر اپیل کی جاتی ہے. بھودان کے سارے پاریبھاشک شبدوں کو دیکھ لیجئے. سب اُوپر کی بات کو ثابت کرتے ہیں. زمین تو کیا' دھرم پر ہمارا کسان جان بھی دے سکتا ہے. کوئی مانے یا نہ مانے لیکن یہ بات بالکل ایسی ہی ہے کہ جیسے شراب پلاکر کسی کو لوٹ لیا جائے. اِسی طرح پرستھتی پیدا ہوتی ہے' پر ڈاکہ بھی پڑتا ہے. نشے کی باتوں کو "ہردے پریورتن" نہیں کہا جاسکتا.

"ہردے پریورتن" کے بعد اُوپری کنٹرول کی ضرورت نہیں رہتی. لیکن آشچریہ ہے کہ بھودانی ہردے پریورتن

सहन हो सका, बाद में डिप्टी साहब ने उन्हें मना किया, लेकिन वह नहीं माने. यहां तक कि गाली गलौज की नौबत पहुंच गई. ज़मींदार साहब फिर भी नहीं माने. डिप्टी साहब गाली दे दे कर हार गये. अन्त में उन्होंने ज़मींदार से पूछा कि मैं इतनी गाली देता हूं, आपकी बेइज्ज़ती करता हूं, फिर आप क्यों आते हैं. उन्होंने कहा जनाब आप गाली अकेले में देते हैं और गाली मुझे लगती नहीं. लेकिन आपके दर्शन से मुझे बहुत फ़ायदा होता है. जब आपकी गाली खाकर मैं वापस जाता हूं तो गांव के भोले लोग यह नहीं समझते कि आप मुझे गाली देते हैं. वह मुझे और आपको गहरा दोस्त समझते हैं और इसलिये मेरा रोब मानते हैं. सच पूछिये तो इसी गाली के बदौलत मैं अपने इलाक़े में राज करता हूं.

यही क़िस्सा विनोबाजी के साथ भी है. वह कांग्रेस के ख़िलाफ़ बोलते रहें, मन्त्रियों को गाली देते रहें, लेकिन मन्त्री और अफ़सरों को जब लोग विनोबा जी के साथ देखते हैं तो राजसत्ता के असर को स्वीकार करते हैं और राजपुरोहित समझकर विनोबा जी की भक्ति करते हैं. इस तरह हम देखते हैं कि "हृदय परिवर्तन" का असर कम और राजसत्ता का असर ज़्यादा भूदान के पीछे काम करता है.

भूदान वालों का कहना है कि वह "हृदय परिवर्तन" से ज़मीन लेते हैं. यह "हृदय परिवर्तन" है क्या ? कुछ लोग यह मानते हैं कि यह एक जादू है, एक चमत्कार है. कुछ लोग यह मानते हैं कि भावनाओं पर हमला करके मनुष्य को अपनी इच्छा के ख़िलाफ़ काम करने पर मजबूर किया जाता है. लेकिन मैं मानती हूं कि हृदय परिवर्तन एक प्रक्रिया है और उसका एक विज्ञान भी है मैं यह भी मानती हूं कि कोई भी आदर्श बिना "हृदय परिवर्तन" के हासिल नहीं किया जा सकता. नाम चाहे जो दे लीजिये लेकिन काम वही रहता है. सर्वोदयी हृदय परिवर्तन करता हैं, कम्युनिस्ट ऐजुकेट करता है. पर प्रक्रिया दोनों एक हैं. जो भी साधन चाहे अख़्तियार किया जाय, आख़ीर में इस साधन का तो सहारा लेना ही पड़ता है.

• जब यह विज्ञान है तो हमें यह जानना चाहिये कि वह विज्ञान क्या है ? वह विज्ञान यह है: हृदय परिवर्तन के लिये व्यक्ति, समय और परिस्थिति का होना ज़रूरी है. अनशन से हृदय परिवर्तन होता है, लेकिन हर एक के अनशन से नहीं. यह क्यों ? क्योंकि उचित व्यक्ति की ज़रूरत है. उचित व्यक्ति मिल जाने पर भी उचित समय का होना भी ज़रूरी है. गांधी जी अनशन के लिये उचित व्यक्ति थे. अनशन करके कलकत्ता के दंगे उन्होंने ख़तम करा दिये. लेकिन वही गांधी जी दूसरे समय दिल्ली के

سہن ہوسکا' بعد میں ڈپٹی صاحب نے انہیں منع کیا. لیکن وہ نہیں مانے. یہاں تک کہ گالی گلوچ کی نوبت پہنچ گئی. زمیندار صاحب پھر بھی نہیں مانے. ڈپٹی صاحب گالی دے دے کر ہار گئے انت میں انہوں نے زمیندار سے پوچھا کہ میں اتنی گالی دیتا ہوں' آپ کی بے عزتی کرتا ہوں' پھر آپ کیوں آتے ہیں ؟ انہوں نے کہا. جناب آپ گالی اکیلے میں دیتے ہیں اور گالی مجھے لگتی نہیں. لیکن آپ کے درشن سے مجھے بہت فائدہ ہوتا ہے. جب آپ کی گالی کھاکر میں واپس جاتا ہوں تو گاؤں کے بھولے لوگ یہ نہیں سمجھتے کہ آپ مجھے گالی دیتے ہیں. وہ مجھے اور آپ کو گہرا دوست سمجھتے ہیں اور اس لیئے میرا رعب مانتے ہیں. سچ پوچھئے تو اسی گالی کی بدولت میں اپنے علاقے میں راج کرتا ہوں.

یہی قصہ ونوبا جی کے ساتھ بھی ہے. وہ کانگریس کے خلاف بولتے رہیں' منتریوں کو گالی دیتے رہیں' لیکن منتری اور افسروں کو جب لوگ ونوبا جی کے ساتھ دیکھتے ہیں تو راج سبھا کے اثر کو سویکار کرتے ہیں اور راج پروہت سمجھکر ونوبا جی کی بھکتی کرتے ہیں. اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ "ہردے پریورتن" کا اثر کم اور راج سبھا کا اثر زیادہ بھودان کے پیچھے کام کرتا ہے.

بھودان والوں کا کہنا ہے کہ وہ "ہردے پریورتن" سے زمین لیتے ہیں. یہ "ہردے پریورتن" ہے کیا؟ کچھ لوگ یہ مانتے ہیں کہ یہ ایک جادو ہے' ایک چمتکار ہے. کچھ لوگ یہ مانتے ہیں کہ بھاوناؤں پر حملہ کر کے منش کو اپنی اچھا کے خلاف کام کرنے پر مجبور کیا جاتا ہے. لیکن میں مانتی ہوں کہ "ہردے پریورتن" ایک پرکریا ہے اور اسکا ایک وگیان بھی ہے. میں یہ بھی مانتی ہوں کہ کوئی بھی آدرش بنا "ہردے پریورتن" کے حاصل نہیں کیا جاسکتا. نام چاہے جو دے لیجئے لیکن کام وہی رہتا ہے. سرودئی ہردے پریورتن کرتا ہے' کمیونسٹ ایجوکیٹ (Educate) کرتا ہے. پرکریا دونوں ایک ہیں. جو بھی سادھن چاہے اختیار کیا جائے' آخر میں اس سادھن کا سہارا تو لینا ہی پڑتا ہے.

جب یہ وگیان ہے تو ہمیں یہ جاننا چاہئے کہ وہ وگیان کیا ہے ؟ وہ وگیان یہ ہے : ہردے پریورتن کے لئے ویکتی' سمے اور پرستھتی کا ہونا ضروری ہے. انشن سے ہردے پریورتن ہوتا ہے' لیکن ہر ایک کے انشن سے نہیں. یہ کیوں ؟ کیونکہ اچت ویکتی کی ضرورت ہے. اچت ویکتی مل جانے پر بھی اچت سمے کا ہونا بھی ضروری ہے. گاندھی جی انشن کے لئے اچت ویکتی تھے. انشن کرکے کلکتہ کے دنگے انہوں نے ختم کرا دئے. لیکن وہی گاندھی جی دوسرے سمے دلی کے

कैसे उम्मीद की जाय कि [illegible] जी विनोबा जी के साथ डटे रहेंगे. [illegible] क़िस्म के कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने भूदान को व्योपार का साधन बना लिया है. इसमें बिड़ला जी की कुछ प्रकाशन संस्थायें आती हैं और कुछ लेखक आते हैं जिनकी किताबें भूदान सम्मितियां बेचती हैं. भला व्योपारियों से संघर्ष के समय क्या उम्मीद की जा सकती है !

जब भी कोई भूदान पर ऐतराज़ करता है तो उसे अंग्रेज़ी पढ़ा लिखा और पश्चिमी विचार धाराओं का मानने वाला कहा जाता है. यह ख़ुद बहुत बड़ी कमज़ोरी है. दलील की कमी हमेशा इन बातों पर उतर आने पर मजबूर करती है. पढ़े लिखे लोग हर चीज़ को समझ कर समर्थन करते हैं. जब भूदान की कमज़ोरियों को वह देखते हैं और ठीक जवाब नहीं पाते हैं तो उसे अपना सहयोग नहीं देते हैं. इसी वजह से बुद्धिजीवी भूदान से अलग हैं. यही नहीं, जांचे परखे गांधीवादी नेता भी इससे अलग हैं. इनमें डाक्टर जे० सी० कुमारप्पा, मीरा बहन ऐसे व्यक्ति भी शामिल हैं.

हर काम करने के साधन भी शुद्ध होने चाहिये. भूदान के सहयोगियों की शुद्धता पर हमें शक है. आचार्य नरेन्द्र देव ने ठीक कहा है कि भूदान में ज़मीन डर और धार्मिक भावनाओं को इस्तेमाल करके ली गई है. विनोबा जी का जो प्रचार सरकार करती है क्या वह इसलिये करती है कि विनोबा जी उसको उखाड़ फेंकें ? हर्गिज़ नहीं. प्रचार का यह साधन भूदान के लिये शुद्ध नहीं हो सकता. यह कहा जा सकता है कि सरकार प्रचार करती है, उसे विनोबा जी कैसे रोक सकते हैं ? वह रोकें या न रोकें लेकिन यह वह साधन है जिससे असर पैदा किया जाता है और इसी असर से डर पैदा होता है और डर से विनोबा जी को ज़मीन मिलती है. मेरे विचार में इस साधन का उपयोग उचित नहीं है.

विनोबा जी के साथ मन्त्री चलते हैं. सत्ता के असर से वह ज़मीन दिलाते हैं. उन्हीं के आदेश से सरकारी अफ़सर विनोबा जी की नौकरी बजाते हैं. उनकी नौकरी बजाना बहुत से लोगों का हृदय परिवर्तन करने के लिये काफ़ी है. इस बात को साफ़ करने के लिये ज़रूरी है कि मैं वह क़िस्सा लिख दूं जो एक मित्र ने मुझे बताया. वह मित्र डिप्टी कलेक्टर थे. अपने इलाक़े में दौरे पर जाया करते थे. जब वह दौरे पर चलते थे तो एक काने [illegible] ज़मींदार भी उनके साथ चलते थे. दोनों के ख़ेमे आमने सामने होते थे, लेकिन बीच का फ़ासला क़रीब दो तीन [illegible] होता था. रोज़ सुबह ज़मींदार महोदय डिप्टी साहब के दर्शन को आते थे. दो एक दफ़ा उनका आना

کیسے اُمید کیجائے کہ جے پرکاش جی ونوبا جی کے ساتھ ڈٹے رہینگے ؟ چوتھے قسم کے کچھ ایسے بھی لوگ ہیں جنہوں نے بھودان کو بیوپار کا سادھن بنا لیا ہے . اس میں بڑلا جی کی کچھ پرکاشن سنستھائیں آتی ہیں اور کچھ لیکھک آتے ہیں جن کی کتابیں بھودان سمتیاں بیچتی ہیں . بھلا بیوپاریوں سے سنگھرش کے سمے کیا اُمید کی جاسکتی ہے؟

جب بھی کوئی بھودان پر اعتراض کرتا ہے تو اُسے انگریزی پڑھا لکھا اور پچھمی وچار دھاراؤں کا ماننے والا کہا جاتا ہے . یہ خود بہت بڑی کمزوری ہے . دلیل کی کمی ہمیشہ اِن باتوں پر اُتر آنے پر مجبور کرتی ہے . پڑھے لکھے لوگ ہر چیز کو سمجھکر سمرتھن کرتے ہیں . جب بھودان کی کمزوریوں کو وہ دیکھتے ہیں اور ٹھیک جواب نہیں پاتے ہیں تو اُسے اپنا سہیوگ نہیں دیتے ہیں . اِسی وجہ سے بدھی جیوی بھودان سے الگ ہیں . یہی نہیں' جانچے پرکھے گاندھی وادی نیتا بھی اِس سے الگ ہیں . اِن میں ڈاکٹر جی . سی . کماریا' میرا بہن ایسے ویکتی بھی شامل ہیں .

ہر کام کرنے کے سادھن بھی شدھ ہونے چاہئیں . بھودان کے سہیوگیوں کی شدھتا پر ہمیں شک ہے. آچاریہ نریندر دیو نے ٹھیک کہا ہے کہ بھودان میں زمین ڈر اور دھارمک بھاؤناؤں کو استعمال کر کے لی گئی ہے . ونوبا جی کا جو پرچار سرکار کرتی ہے کیا وہ اس لیئے کرتی ہے کہ ونوبا جی اُسکو اکھاڑ پھینکیں ؟ ہرگز نہیں . پرچار کا یہ سادھن بھودان کے لیئے شدھ نہیں ہوسکتا . یہ کہا جا سکتا ہے کہ سرکار پرچار کرتی ہے' اُسے ونوبا جی کیسے روک سکتے ہیں ؟ وہ روکیں' یا نہ روکیں لیکن یہ وہ سادھن ہے جس سے اثر پیدا کیا جاتا ہے اور اِسی اثر سے ڈر پیدا ہوتا ہے اور ڈر سے ونوبا جی کو زمین ملتی ہے . میرے وچار میں اِس سادھن کا اُپیوگ اُچت نہیں ہے .

ونوبا جی کے ساتھ منتری چلتے ہیں . ستا اثر سے وہ زمین دلاتے ہیں . اِنہیں کے آدیش سے سرکاری افسر ونوبا جی کی نوکری بجاتے ہیں . اُن کی نوکری بجانا بہت سے لوگوں کا "ہردے پریورتن" کرنے کے لیئے کافی ہے . اِس بات کو صاف کرنے کے لیئے ضروری ہے کہ میں وہ قصہ لکھ دوں جو ایک متر نے مجھے بتایا . وہ متر ڈپٹی کلکٹر تھے . اپنے علاقے میں دورے پر جایا کرتے تھے . جب وہ دورے پر چلتے تھے تو ایک کانے بد شکل زمیندار بھی اُن کے ساتھ چلتے تھے . دونوں کے خیمے آمنے سامنے ہوتے تھے' لیکن بیچ کا فاصلہ قریب دو تین فرلانگ ہوتا تھا . روز صبح زمیندار مہودے ڈپٹی صاحب کے درشن کو آتے تھے . دو ایک دفعہ ان کا آنا

पर आज कल की कांग्रेस पर गांधी जी का कोई रंग दिखाई नहीं पड़ता तो मुझे कोई ताज्जुब नहीं होता. जहां गांधी जी हार गये क्या वहां विनोबा जी जीत जायेंगे? जिन शक्तियों का सहारा लेकर गांधी जी सर्वोदय क़ायम न कर सके क्या उनका सहारा लेकर विनोबा जी जीत का सेहरा बांध सकेंगे?

विनोबा जी इन्क़लाब लाना चाहते हैं, इससे कौन इन्कार कर सकता है. पर विनोबा जी केवल कमाण्डर हैं. उनके नीचे बहुत से लेफ्टिनेन्ट भी हैं. वही लोग जनता के बीच में काम करते हैं. ठीक है कि वह विनोबा जी के नाम पर काम करते हैं. लेकिन कल अगर जनता को ग़लत सलत बातें विनोबा जी के नाम पर बताई जाने लगीं तो उसे वह यक़ीन कर लेंगे. कमाण्डर पालिसी तै करता है और हुक्म देता है, पर उस हुक्म और पालिसी पर अमल लेफ्टिनेन्ट कराते हैं. क्या विनोबा जी के आजकल के लेफ्टिनेन्टों पर ऐतबार किया जा सकता है? क्या इस बात का विश्वास है कि यह लेफ्टिनेन्ट अपनी सेना उसी ढर्रे पर चलायेंगे जिस पर चलने के लिये विनोबा जी उन्हें आदेश देंगे? मेरा विचार है कि अगर किसी को इस बात का विश्वास है तो उसे इन व्यक्तियों के बारे में कुछ कम जानकारी है. यह लोग विनोबा जी का साथ नहीं देंगे और विनोबा जी को बस यही कह कर तसल्ली करनी पड़ेगी कि क्या करूं! इन्हीं लोगों से तो काम लेना है, इस तरह हम देखते हैं कि साधन रूप में भी भूदान कामयाब नहीं होता.

ऊपर जो बात हमने कही है उसके सबूत में बहुत कुछ लिखना पड़ेगा. लेकिन एक लेख में सब बातें नहीं आ सकतीं. इसलिये थोड़ा सा ज़िक्र उन व्यक्तियों का हो सकेगा जो विनोबा जी के ख़ास लेफ्टिनेन्ट हैं. नम्बर एक कांग्रेसी सरकार और कांग्रेस कमेटियां. नम्बर दो कुछ ऐसे व्यक्ति जो कांग्रेस से बंधे हुए हैं और विनोबा जी के साथ हैं. तीसरे वह लोग जो दूसरी पार्टियों से ताल्लुक़ रखते हैं और विनोबा जी के समर्थक हैं. कांग्रेस सरकार और कांग्रेस कमेटियां विनोबा जी का साथ देंगी यह एक भ्रम है. दूसरे तरह के लेफ्टिनेन्टों में बाबा राघव दास ऐसे लोग हैं. बाबा जी के बारे में स्वर्गीय किशोरीलाल मशरूवाला बहुत कुछ लिख चुके हैं. उनके चरित्र पर मुझे रोशनी डालने की ज़रूरत नहीं. बस इतना कहना काफ़ी है कि वह चाहे [illegible] विनोबा जी का साथ नहीं दे सकते. तीसरे क़िस्म के व्यक्तियों में बाबू जयप्रकाश नारायन आते हैं. इनकी ढुल-मुल पालीसी बहुत ही मशहूर हो चुकी है. एक पार्टी से वह बंधे हैं जो सर्वोदय की स्पिरिट को नहीं मानती. पार्टी का वह अभी तक काम भी करते हैं. फिर

پر یا آجکل کی کانگریس پر گاندھی جی کا کوئی رنگ دکھائی نہیں پڑتا تو مجھے کوئی تعجب نہیں ہوتا۔ جہاں گاندھی جی ہار گئے کیا وہاں ونوبا جی جیت جائینگے؟ جن شکتیوں کا سہارا لے کر گاندھی جی سروودے قائم نہ کر سکے کیا ان کا سہارا لے کر ونوبا جی جیت کا سہرا باندھ سکیں گے؟

ونوبا جی انقلاب لانا چاہتے ہیں' اس سے کون انکار کر سکتا ہے۔ پر ونوبا جی کیول کمانڈر ہیں۔ ان کے نیچے بہت سے لیفٹیننٹ بھی ہیں۔ وہی لوگ جنتا کے بیچ میں کام کرتے ہیں۔ ٹھیک ہے کہ وہ ونوبا جی کے نام پر کام کرتے ہیں۔ لیکن کل اگر جنتا کو غلط سلط باتیں ونوبا جی کے نام پر بتائی جانے لگیں تو اسے وہ یقین کر لینگے۔ کمانڈر پالیسی طے کرتا ہے اور حکم دیتا ہے' پر اس حکم اور پالیسی پر عمل لفٹیننٹ کراتے ہیں۔ کیا ونوبا جی کے آجکل کے لفٹیننٹوں پر اعتبار کیا جاسکتا ہے؟ کیا اس بات کا وشواس ہے کہ یہ لفٹیننٹ اپنی سینا اسی ڈھرے پر چلائیں گے جس پر چلنے کے لئے ونوبا جی انہیں آدیش دینگے؟ میرا وچار ہے کہ اگر کسی کو اس بات کا وشواس ہے تو اسے ان ویکتیوں کے بارے میں کچھ کم جانکاری ہے۔ یہ لوگ ونوبا جی کا ساتھ نہیں دینگے اور ونوبا جی کو بس یہی کہکر تسلی کرنی پڑے گی کہ کیا کروں' انہیں لوگوں سے تو کام لینا ہے! اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ سادھن روپ میں بھی بھودان کامیاب نہیں ہوتا۔

اوپر جو بات ہم نے کہی ہے اس کے ثبوت میں بہت کچھ لکھنا پڑیگا۔ لیکن ایک لیکھ میں سب باتیں نہیں آ سکتیں۔ اس لئے تھوڑا سا ذکر ان ویکتیوں کا ہوسکیگا جو ونوباجی کے خاص لفٹیننٹ ہیں۔ نمبر ایک کانگریسی سرکار اور کانگریس کمیٹیاں۔ نمبر دو۔ کچھ ایسے ویکتی جو کانگریس سے بندھے ہوئے ہیں اور ونوبا جی کے ساتھ ہیں۔ تیسرے وہ لوگ جو دوسری پارٹیوں سے تعلق رکھتے ہیں اور ونوبا جی کے سمرتھک ہیں۔ کانگریس سرکار اور کانگریس کمیٹیاں ونوبا جی کا ساتھ دینگی یہ ایک بھرم ہے۔ دوسرے طرح کے لفٹیننٹوں میں بابا راگھو داس ایسے لوگ ہیں۔ باباجی کے بارے میں سورگیہ کشوری لعل مشرو والا بہت کچھ لکھ چکے ہیں۔ ان کے چرتر پر مجھے روشنی ڈالنے کی ضرورت نہیں۔ بس اتنا کہنا کافی ہے کہ وہ [illegible] ونوبا جی کا ساتھ نہیں دے سکتے۔ تیسرے قسم کے ویکتیوں میں بابو جے پرکاش نرائن آتے ہیں۔ ان کی [illegible] مشہور ہو چکی ہے۔ ایک پارٹی [illegible] کی اسپرٹ کو نہیں [illegible] کرتے ہیں۔ [illegible]

चाहा कि वह धर्म का सहारा लेकर जनता को आने वाले युगों की तरक्क़ी का सपना दिखाते रहें और जनता में बढ़ती बेचैनी को भगवान का वास्ता दे देकर शान्त रखें. राजपुरोहित जब दिल्ली पधारे तो उनका शानदार स्वागत हुआ. स्वर्गीय पटेल और पण्डित नेहरू के साथ विनोबा जी की तस्वीरें खिचीं. विनोबा जी सरकारी दफ़्तरों में भी घूमें और बापू के बाद नायब बापू का दर्जा उन्हें प्रदान कर दिया गया. उनका काम था सरकारी कामों को आशीष देना, दिन भर चर्खा कातना और शाम को प्रवचन और प्रार्थना करना. कितने दिन तक यह काम चलता रहा ज़रा कहना कठिन है. बस इतना समझ लीजिये कि जब विनोबा जी ने मेवातियों को ज़मीन दिलाने पर ज़ोर दिया और स्वर्गीय पटेल की पालिसी के ख़िलाफ़ दो चार दफ़ा वह बोले बस उनका कल्ला कट गया. इस वक़्त पूरे साधन मेरे पास नहीं हैं जो मैं सरदार पटेल के शब्द भी नक़ल कर सकूं. लेकिन वह शब्द इतने कड़े थे कि विनोबा जी तुरन्त दिल्ली से वर्धा चले आये. यह ठीक है कि उनके चेले मेवात में काम करते रहे लेकिन मुझे ख़ुद तजुरबा है कि सरकार से निपटने के लिये बार बार विनोबा जी को दिल्ली बुलाया गया, लोग उनसे मिलने वर्धा गये, लेकिन वह दिल्ली नहीं आये. सरकार उसका समर्थन करती है जिसका उपयोग उचित समझती है.

हम विनोबा जी की नेक नीयती में शक नहीं कर सकते. लेकिन इसमें भी विश्वास नहीं कर सकते कि भूदान के समर्थन में कांग्रेस नेकनीयत है. यहां पर यह कहा जा सकता है कि काम विनोबा जी का है, समर्थन जिसका जी चाहे करे. यह भी एक नुकता है जो अपनी बुद्धि में नहीं आता. विनोबा जी कांग्रेस से ज़्यादा चालाक नहीं हैं. सवाल यह चालाकी का है. ज़ाहिर बात है कि विनोबा जी हार जायेंगे. कांग्रेस को अगर यह उम्मीद हो कि वह हार जायगी तो वह समर्थन ही न करे. लोग यह भी कहते हैं कि समय आने पर ही इस बात का फ़ैसला होगा. लेकिन पानी में कूदने से पहले गहराई का अन्दाज़ा कर लेना ज़रूरी है!

यह भी मान लिया कि विनोबा जी कांग्रेस को छू लेंगे. कांग्रेस से मदद भी लेंगे और कांग्रेस को ख़तम भी कर देंगे. इस पर मैं ने बहुत सोचा, गांधी जी के भी तजुरबे को पढ़ा और सुना. आख़ीर दिनों में गांधी जी की जो हालत हो गई थी वह किसी से छिपी नहीं है. गांधी जी विनोबा जी के गुरु थे और उनसे कहीं ज़्यादा ताक़तवर थे. पर जिन लोगों का साथ उन्होंने दिया उन्होंने गांधी जी को क़त्ल गाह पर पहुंचाया. इसलिये जब भारत सरकार

چاہا کہ وہ دھرم کا سہارا لے کر جنتا کو آنے والے یگوں کی ترقی کا سپنا دکھاتے رہیں اور جنتا میں بڑھتی بےچینی کو بھگوان کا واسطہ دے دے کر شانت رکھیں۔ راج پروہت جب دلی پدھارے تو اُن کا شاندار سواگت ہوا۔ سورگیہ پٹیل اور پنڈت نہرو کے ساتھ ونوبا جی کی تصویریں کھینچیں۔ ونوبا جی سرکاری دفتروں میں بھی گھومے اور باپو کے بعد نائب باپو کا درجہ انہیں پردان کر دیا گیا۔ اُن کا کام تھا سرکاری کاموں کو آشیرواد دینا، دن بھر چرخہ کاتنا اور شام کو پروچن اور پرارتھنا کرنا۔ کتنے دن تک یہ کام چلتا رہا ذرا کہنا کٹھن ہے۔ بس اتنا سمجھ لیجئے کہ جب ونوبا جی نے میواتیوں کو زمین دلانے پر زور دیا اور سورگیہ پٹیل کی پالیسی کے خلاف دو چار دفعہ وہ بولے بس اُن کا کلا کٹ گیا۔ اس وقت پورے سادھن میرے پاس نہیں ہیں جو میں سردار پٹیل کے شبد بھی نقل کر سکوں۔ لیکن وہ شبد اتنے کڑے تھے کہ ونوبا جی ترنت دلی سے وردھا چلے آئے۔ یہ ٹھیک ہے کہ اُن کے چیلے میوات میں کام کرتے رہے، لیکن مجھے خود تجربہ ہے کہ سرکار سے نپٹنے کے لیئے بار بار ونوبا جی کو دلی بلایا گیا، لوگ اُن سے ملنے وردھا گئے، لیکن وہ دلی نہیں آئے۔ سرکار اُسکا سمرتھن کرتی ہے جسکا اُپیوگ اُچت سمجھتی ہے۔

ہم ونوبا جی کی نیک نیتی میں شک نہیں کر سکتے۔ لیکن اس میں بھی وشواس نہیں کر سکتے کہ بھودان کے سمرتھن میں کانگریس نیک نیت ہے۔ یہاں یہ کہا جا سکتا ہے کہ کام ونوبا جی کا ہے، سمرتھن جسکا جی چاہے کرے۔ یہ بھی ایک نکتہ ہے جو اپنی بدھی میں نہیں آتا۔ ونوبا جی کانگریس سے زیادہ چالاک نہیں ہیں۔ سوال یہ چالاکی کا ہے۔ ظاہر بات ہے کہ ونوبا جی ہار جائیں گے۔ کانگریس کو اگر یہ امید ہو کہ وہ ہار جائے گی تو وہ سمرتھن ہی نہ کرے۔ لوگ یہ بھی کہتے ہیں کہ سمے آنے پر ہی اس بات کا فیصلہ ہوگا۔ لیکن پانی میں کودنے سے پہلے گہرائی کا اندازہ کر لینا ضروری ہے!

یہ بھی مان لیا کہ ونوبا جی کانگریس کو چھو لیں گے۔ کانگریس سے مدد بھی لیں گے اور کانگریس کو ختم بھی کر دینگے۔ اس پر میں نے بہت سوچا، گاندھی جی کے بھی تجربے کو پڑھا اور سنا۔ آخیر دنوں میں گاندھی جی کی جو حالت تھی وہ کسی سے چھپی نہیں ہے۔ گاندھی جی ونوبا جی کے گرو تھے اور اُن سے کہیں زیادہ طاقتور تھے۔ پر جن لوگوں کا ساتھ اُنہوں نے دیا انہوں نے گاندھی جی کو قتل گاہ پر پہنچایا۔ اس لئے جب بھارت سرکار

के ऊपर जेहद जोर देता है. व्यक्ति को ठीक करके ही वह सर्वोदय लाना चाहता है. इस तरह व्यक्ति प्रधान हुआ. यही बात मेरी समझ में नहीं आती कि व्यक्ति प्रधान है या भगवान ?

इस दार्शनिक बहस को हम छोड़कर सर्वोदय के अमली रूप पर आते हैं. इसका अमली रूप भूदान है. इसके इतिहास में हम बाद में जायेंगे. पहले यह तय कर लें कि भूदान है क्या ? शुरू शुरू में भूदान का मतलब था भारत की भूमि समस्या का हल. अब कहा जाता है कि सर्वोदय लाने का साधन. पहले इस पर विचार कर लें कि भूदान भारत की भूमि समस्या को हल कर सकता है या नहीं. इस पर ज्यादा सोच विचार करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि भूदान के नेता भी आज यह मानने लगे हैं कि भूदान से भूमि समस्या का हल नहीं होने का. आचार्य नरेन्द्र देव और मीरा बहन के बहुत से ऐतराज यहां खत्म हो जाते हैं. भूदान अपना दावा छोड़ देता है और अपने को साध्य के बजाय साधन क़रार देता है.

अब भूदान को साधन रूप में देखना होगा. भूदान के नेताओं का कहना है कि जनता में जागरन पैदा करके नया समाज बनाना है. उनका कहना यह भी है कि भूदान से सिर्फ़ वही लोग हमदर्दी दिखा सकते हैं जो आजकल के शासन को सुधार के नाक़ाबिल मानते हों और जिन पर यह बात अच्छी तरह ज़ाहिर हो गई हो कि यह सरकार आने वाले ज़माने का कामयाबी के साथ सामना नहीं कर सकती और इसका हटाया जाना ही निहायत ज़रूरी है. हमें देखना यह पड़ेगा कि भूदान ने अब तक किस हद तक जनता को जगाया है और भूदान के समर्थक कौन हैं ? पहले भूदान के समर्थकों को ले लें. भूदान के समर्थक कांग्रेसी मन्त्री और उनके नीचे काम करने वाले सरकारी अफ़सर हैं. तो क्या कांग्रेस ख़ुद अपने को मिटा देना चाहती है और नया समाज बनाना चाहती है, नया शासन पैदा करना चाहती है ? क्योंकि समर्थक की कसौटी यही है मेरा विचार है कि इस बात को कोई सूझ बूझ वाला आदमी कभी स्वीकार नहीं करेगा. कांग्रेस ने विनोबा जी का यह पहली बार साथ नहीं दिया. बात पुरानी हो गई है, पर उसे दोहरा देना यहां उचित मालूम होता है. गांधी जी के बाद विनोबा जी बड़ी आवभगत से दिल्ली बुलाये गये. यह कहना बेजा न होगा कि वह राजपुरोहित के रूप में वहां आये थे. यह नहीं कह सकती हूं कि विनोबा जी को अपनी नई गद्दी का कुछ ज्ञान था या नहीं, लेकिन दिल्ली के सत्ताधीशों के दिमाग़ में यह बात साफ़ थी. जनता कांग्रेस से हट रही थी और उसको अपने में मिलाये रखने की ज़रूरत थी. लाल बुझक्कड़ों ने राजपुरोहित पद का आविष्कार किया और

کے اوپر بہت زور دیتا ہے ۔ ویکتی کو ٹھیک کرکے ہی وہ سروودے لانا چاہتا ہے۔ اِس طرح ویکتی پردھان ہوا ۔ اور یہی بات میری سمجھ میں نہیں آتی کہ ویکتی پردھان ہے یا بھگوان ؟

اِس دارشنک بحث کو ہم چھوڑ کر سروودے کے عملی روپ پر آتے ہیں۔ اِس کا عملی روپ بھودان ہے ۔ اِس کے اتہاس میں ہم بعد میں جائینگے ۔ پہلے یہ طے کرلیں کہ بھودان ہے کیا ؟ شروع شروع میں بھودان کا مطلب تھا بھارت کی بھومی سمسیا کا حل ۔ اب کہا جاتا ہے کہ سروودے لانے کا سادھن۔ پہلے اِس پر وچار کرلیں کہ بھودان بھارت کی بھومی سمسیا کو حل کرسکتا ہے یا نہیں ۔ اِس پر زیادہ سوچ وچار کرنے کی ضرورت نہیں ہے کیونکہ بھودان کے نیتا بھی آج یہ ماننے لگے ہیں کہ بھودان سے بھومی سمسیا کا حل نہیں ہونے کا ۔ آچاریہ نریندردیو اور میرا بہن کے بہت اعتراض یہاں ختم ہو جاتے ہیں۔ بھودان اپنا دعویٰ چھوڑ دیتا ہے اور اپنے کو سادھیہ کے بجائے سادھن قرار دیتا ہے ۔

اب بھودان کو سادھن روپ میں دیکھنا ہوگا۔ بھودان کے نیتاؤں کا کہنا ہے کہ جنتا میں جاگرن پیدا کر کے نیا سماج بنانا ہے ۔ اُن کا کہنا یہ بھی ہے کہ بھودان سے صرف وہی لوگ ہمدردی دکھا سکتے ہیں جو آجکل کے شاسن کو سدھار کے ناقابل مانتے ہوں اور جن پر یہ بات اچھی طرح ظاہر ہوگئی ہو کہ یہ سرکار آنیوالے زمانے کا کامیابی کے ساتھ سامنا نہیں کر سکتی اور اِس کا ہٹایا جانا ہی نہایت ضروری ہے ۔ ہمیں دیکھنا یہ پڑیگا کہ بھودان نے اب تک کس حد تک جنتا کو جگایا ہے اور بھودان کے سمرتھک کون ہیں ؟ پہلے بھودان کے سمرتھکوں کو لے لیں۔ بھودان کے سمرتھک کانگریسی منتری اور اُن کے نیچے کام کرنے والے سرکاری افسر ہیں ۔ تو کیا کانگریس خود اپنے کو مٹا دینا چاہتی ہے اور نیا سماج بنانا چاہتی ہے، نیا شاسن پیدا کرنا چاہتی ہے ؟ کیونکہ سمرتھک کی کسوٹی یہی ہے ۔ میرا وچار ہے کہ اس بات کو کوئی سوجھ بوجھ والا آدمی کبھی سویکار نہیں کریگا ۔ کانگریس نے ونوبا جی کا یہ پہلی بار ساتھ نہیں دیا ۔ بات پرانی ہو گئی ہے، پر اسے دوہرا دینا یہاں اُچت معلوم ہوتا ہے ۔ گاندھی جی کے بعد ونوبا جی بڑی آؤ بھگت سے دلی بلائے گئے ۔ یہ کہنا بیجا نہ ہوگا کہ وہ راج پروہت کے روپ میں وہاں آئے تھے ۔ یہ نہیں کہ سکتی ہوں کہ ونوبا جی کو اپنی نئی گدی کا کچھ گیان تھا یا نہیں، لیکن دلی کے ستادھیشوں کے دماغ میں یہ بات صاف تھی ۔ جنتا کانگریس سے ہٹ رہی تھی اور اسکو اپنے میں ملائے رکھنے کی ضرورت تھی ۔ لال بجھکڑوں نے راج پروہت پد کا آوشکار کیا اور

तरीकों से साध्य को हासिल किया जाता है उसे साधन कहते हैं. सर्वोदय अगर आदर्श है तो वर्गहीन समाज साधन होगा. यह बात और साफ हो जाती है अगर कम्युनिज्म पर हम रोशनी डालें. कम्युनिज्म एक आदर्श है और मजदूर वर्ग एक साधन है. पहले मजदूर वर्ग दूसरे वर्गों से संघर्ष करेगा, वर्ग बनाने वाले आर्थिक ढांचों को अपने कब्जे में करेगा, दूसरे वर्गों को मजदूर बना लेगा, फिर राज करेगा और तब कम्युनिज्म के आदर्श तक पहुंचेगा, जहां शासन नहीं होगा. यदि सर्वोदय ठीक ढंग से चले तो पहले वर्ग हीन समाज बनाये और तब सर्वोदय को प्राप्त करे. जब समाज वर्गहीन हो जायेगा तो उस एक वर्ग का उदय होगा, सब वर्गों का नहीं. इस तरह फिर घूम घुमाकर इसी एक नुक्ते पर पहुंचते हैं कि या सर्वोदय नामी आदर्श का नाम ही गलत है और या फिर सर्वोदय की जो रूप रेखा बताई जाती है वह गलत है. और इससे यह भी नतीजा निकलता है कि एक खास दर्शन को मानने वाले समाज की जोरदार मांग के सामने घुटने टेक देते हैं. आज के समाज की मांग है वर्गहीन समाज. सर्वोदय के नेता इस मांग को अपने दर्शन के साथ जोड़ लेते हैं. बीच का अन्तर-विरोध या तो उन्हें दिखाई नहीं पड़ता या वह उसे देखना नहीं चाहते.

सर्वोदय का जोर व्यक्ति पर बहुत है. हो सकता है सर्वोदय का अर्थ यह लगाया जाये कि सर्वोदय समाज में हर व्यक्ति का उदय हो जायगा. यह बात भी कुछ समझ में नहीं आती. सारे व्यक्तियों का एक साथ एक बराबर उदय कैसे हो सकता है? मानसिक और जिस्मानी उदय का सम्बन्ध अर्थ से बहुत है. तो इसका मतलब यह होगा कि आर्थिक ढांचा बदला जाय और आर्थिक ढांचा बदल कर अगर सर्वोदय तक पहुंचना है तो वर्ग खत्म करने पड़ेंगे. जब वर्ग खत्म हो जायेंगे तो फिर वही समस्या खड़ी होगी. तब 'सर्व' में कौन शामिल होंगे जिनका उदय होगा?

एक बात और समझ में नहीं आती. वह यह है. सर्वोदयी कहते हैं कि भगवान सब कुछ है और भगवान ही के नाम पर वह सब काम करते हैं. जब भगवान सब कुछ हैं तो व्यक्ति कुछ भी नहीं है. लेकिन सर्वोदयी व्यक्ति का नाम लेकर बड़ा तूमार खड़ा करते हैं. कम्युनिज्म कहता है कि व्यक्ति समाज का अंग है और उसे हर काम समाज के हित के लिये करना चाहिये. समाज इस तरह प्रधान हो जाता है और व्यक्ति का महत्व कम हो जाता है. सर्वोदयी इस पर शोर मचाते हैं. वह कहते हैं कि कम्युनिज्म व्यक्ति को खत्म कर देता है. पर वह खुद व्यक्ति को भगवान में खत्म करते हैं. समाज का नाम यदि भगवान रख दिया जाय तो [illegible] खड़े हैं. लेकिन सर्वोदय व्यक्ति

[illegible] سادھیہ کو حاصل کیا جاتا ہے اُسے سادھن کہتے ہیں۔ سروودے اگر آدرش ہے تو ورگ ہین سماج سادھن ہوگا۔ یہ بات اور صاف ہو جاتی ہے اگر کمیونزم پر ہم روشنی ڈالیں۔ کمیونزم ایک آدرش ہے اور مزدور ورگ ایک سادھن ہے۔ پہلے مزدور ورگ دوسرے ورگوں سے سنگھرش کریگا، ورگ بنانے والے آرتھک ڈھانچوں کو اپنے قبضے میں کریگا، دوسرے ورگوں کو مزدور بنا لے گا، پھر راج کریگا اور تب کمیونزم کے آدرش تک پہونچے گا جہاں شاسن نہیں ہوگا۔ یدی سروودے ٹھیک ڈھنگ سے چلے تو پہلے ورگ ہین سماج بنائے اور تب سروودے کو پراپت کرے۔ جب سماج ورگ ہین ہوجائیگا تو اس ایک ورگ کا اودے ہوگا، سب ورگوں کا نہیں۔ اس طرح پھر ہم گھوم گھما کر پھر اسی ایک نقطہ پر پہونچتے ہیں کہ یا سروودے نامی آدرش کا نام ہی غلط ہے اور یا پھر سروودے کی جو روپ ریکھا بتائی جاتی ہے وہ غلط ہے۔ اور اس سے یہ بھی نتیجہ نکلتا ہے کہ ایک خاص درشن کو ماننے والے سماج کی زوردار مانگ کے سامنے گھٹنے ٹیک دیتے ہیں۔ آج کے سماج کی مانگ ہے ورگ ہین سماج۔ سروودے کے نیتا اس مانگ کو اپنے درشن کے ساتھ جوڑ لیتے ہیں۔ بیچ کا انتروِرودھ یا تو انہیں دکھائی نہیں پڑتا یا وہ اسے دیکھنا نہیں چاہتے۔

سروودے کا زور ویکتی پر بہت ہے۔ ہوسکتا ہے سروودے کا ارتھ یہ لگایا جائے کہ سروودے سماج میں ہر ویکتی کا اودے ہوجائیگا۔ یہ بات بھی کچھ سمجھ میں نہیں آتی۔ سارے ویکتیوں کا ایک ساتھ ایک برابر اودے کیسے ہوسکتا ہے؟ مانسک اور جسمانی اودے کا سمبندھ ارتھ سے بہت ہے۔ تو اس کا مطلب یہ ہوگا کہ پہلے آرتھک ڈھانچہ بدلا جائے اور آرتھک ڈھانچہ بدل کر اگر سروودے تک پہونچنا ہے تو ورگ ختم کرنے پڑیں۔ جب ورگ ختم ہوجائینگے تو پھر وہی سمسیا آن کھڑی ہوگی۔ تب 'سرو' میں کون شامل ہونگے کہ جن کا اودے ہوگا؟

ایک بات اور سمجھ میں نہیں آتی۔ وہ یہ ہے۔ سروودئی کہتے ہیں کہ بھگوان سب کچھ ہے اور بھگوان ہی کے نام پر وہ سب کام کرتے ہیں۔ جب بھگوان سب کچھ ہیں تو ویکتی کچھ بھی نہیں ہے۔ لیکن سروودئی ویکتی کا نام لیکر بڑا طومار کھڑا کرتے ہیں۔ کمیونزم کہتا ہے کہ ویکتی سماج کا انگ ہے اور اسے ہر کام سماج کے ہت کے لئے کرنا چاہیئے۔ سماج اس طرح پردھان ہوجاتا ہے اور ویکتی کا مہتو کم ہوجاتا ہے۔ سروودئی اس پر شور مچاتے ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ کمیونزم ویکتی کو ختم کر دیتا ہے۔ پر وہ خود ویکتی کو بھگوان میں ختم کر دیتے ہیں۔ سماج کا نام بھی بھگوان رکھ دیا جائے تو دونوں ایک جگہ کھڑے ہیں۔ لیکن سروودے ویکتی

खुद अपने ऊपर लागू करेगा. जब वर्ग नहीं होगा तो मतलब यह हुआ कि सब एक वर्ग के हो जायेंगे. जब सब एक वर्ग के हो जायेंगे तो 'सर्व' के 'उदय' की गुंजाइश कहां रहेगी ? क्या उस समय दूसरे प्राणी भी शामिल कर लिये जायेंगे ? और अगर नहीं तो सब के उदय का कोई मतलब नहीं है. सारे वर्ग खत्म होकर एक वर्ग बन जायेंगे और उसी वर्ग का उदय होगा. कम्युनिस्ट इस वर्ग को मजदूर कहते हैं. सर्वोदयों ने अभी तक इसे कोई नाम नहीं दिया. व्योहार और दर्शन में यही विरोध दीख पड़ता है. दर्शन के नाम से ही पता चलता है कि इस आधार पर बने समाज में बहुत से वर्ग होंगे और सब का उदय होगा. पर व्योहार इस बात से इन्कार करता है. समझ में नहीं आता कि दर्शन को मानूं या व्यवहार को ?

यदि सर्वोदय में बहुत से वर्ग होंगे और सब का उदय होगा तो कोई न कोई क़ानून भी होगा और जब क़ानून होगा तो शासक भी होंगे. और जब शासक होंगे तो सर्वोदय के शासन हीन समाज का सपना झूटा निकलेगा.

सर्वोदियों का कहना है कि आध्यात्मिक शासन होगा जिसे व्यक्ति अपने ऊपर खुद लागू करेगा. लेकिन प्रश्न है कि क्या यह आध्यात्मिक शासन कोई नई चीज़ है ? जवाब साफ़ है. यह चीज़ नई नहीं है. कब से इसका रिवाज पड़ा इसकी चर्चा बेकार है. लेकिन यह बात साफ़ है कि आज से नहीं बल्कि हज़ारहा बरस से इस शासन पर ज़ोर दिया जाता रहा है. जितने अवतार आये, पैग़म्बर आये, रिशी मुनी और वली आये, सब ने इस पर ज़ोर दिया. और यह बात भी साफ़ है कि इन लोगों के पैरोकारों की तादाद सर्वोदय के नेताओं के अनुयाइयों की तादाद से बहुत ज़्यादा है, श्रद्धा भी अपार है. यही नहीं, सर्वोदय के नेता भी इनमें से किसी न किसी के पैरोकार हैं. सोचना यह पड़ेगा कि जहां गुरु हार गये क्या वहां चेले जीत जायेंगे ? इतिहास बताता है कि आध्यात्मिक शासन समाज पर राज नहीं कर सका. जब आध्यात्मिक शासन ने राज शासन की जगह लेनी चाही तो वह कुरूप हो गया. फिर क्या उम्मीद की जाय कि आध्यात्मिक शासन इस युग में काम देगा जबकि जनसमूह उससे वैराग ले रहे हैं.

एक मित्र का यह भी कहना है कि सर्वोदय और वर्ग-हीन समाज में कोई विरोध नहीं है. पहले सर्वोदय होगा फिर वर्गहीन समाज. मतलब यह कि आजकल का जो समाज है उसमें वर्ग हैं. इन सब वर्गों का उदय होता रहेगा और फिर यह वर्ग ग़ायब हो जायेंगे. यहां यह बात समझ में नहीं आती कि सर्वोदय साधन है या साध्य. सर्वोदय दर्शन है और दर्शन आदर्श को जन्म देता है. इसलिये आदर्श भी सर्वोदय है. आदर्श सदा साध्य होता है और जिन

خود اپنے اوپر لاگو کریگا ۔ جب ورگ نہیں ہوگا تو مطلب یہ ہوا کہ سب ایک ورگ کے ہوجائینگے ۔ جب سب ایک ورگ کے ہوجائینگے تو 'سرو' کے 'اودے' کی گنجائش کہاں رہے گی ؟ کیا اُس سمے دوسرے پرانی بھی شامل کر لیئے جائینگے ؟ اور اگر نہیں تو سب کے اودے کا کوئی مطلب نہیں ہے ۔ سارے ورگ ختم ہوکر ایک ورگ بن جائینگے اور اُسی ورگ کا اودے ہوگا ۔ کمیونسٹ اِس ورگ کو مزدور کہتے ہیں ۔ سروودیوں نے ابھی تک اُسے کوئی نام نہیں دیا ۔ بیوہار اور درشن میں یہی ورودھ دیکھ پڑتا ہے ۔ درشن کے نام سے پتہ چلتا ہے کہ اِس آدھار پر بنے سماج میں بہت سے ورگ ہونگے اور سب کا اودے ہوگا ۔ پر بیوہار اِس بات سے انکار کرتا ہے ۔ سمجھ میں نہیں آتا کہ درشن کو مانوں یا بیوہار کو ؟

یدی سرودے میں بہت سے ورگ ہونگے اور سب کا اودے ہوگا تو کوئی نہ کوئی قانون بھی ہوگا اور جب قانون ہوگا تو شاسک بھی ہونگے ۔ اور جب شاسک ہونگے تو سرودے کے شاسن ہین سماج کا سپنا جھوٹا نکلے گا ۔

سروودیوں کا کہنا ہے کہ آدھیاتمک شاسن ہوگا جسے ویکتی اپنے اوپر خود لاگو کریگا ۔ لیکن پرشن ہے کیا یہ ادھیاتمک شاسن کوئی نئی چیز ہے ؟ جواب صاف ہے ۔ یہ چیز نئی نہیں ہے ۔ کب سے اِس کا رواج پڑا اِسکی چرچا بیکار ہے ۔ لیکن یہ بات صاف ہے کہ آج سے نہیں بلکہ ہزارہا برس سے اِس شاسن پر زور دیا جاتا رہا ہے ۔ جتنے اوتار آئے، پیغمبر آئے، رشی منی اور ولی آئے، سب نے اِس پر زور دیا ۔ اور یہ بات بھی صاف ہے کہ اِن لوگوں کے پیروکاروں کی تعداد سرودے کے نیتاؤں کے انویائیوں کی تعداد سے بہت زیادہ ہے، شردھا بھی اپار ہے ۔ یہی نہیں، سرودے کے نیتا بھی اِن میں سے کسی نہ کسی کے پیروکار ہیں ۔ سوچنا یہ پڑیگا کہ جہاں گرو ہار گئے کیا وہاں چیلے جیت جائینگے ؟ اتہاس بتاتا ہے کہ ادھیاتمک شاسن سماج پر راج نہیں کرسکا ۔ جب آدھیاتمک شاسن نے راج شاسن کی جگہ لینی چاہی تو وہ کوروپ ہوگیا ۔ پھر کیا اُمید کی جائے کہ ادھیاتمک شاسن اِس یگ میں کام دیگا جبکہ جن سموہ اُس سے ویراگ لے رہے ہیں ۔

ایک متر کا یہ بھی کہنا ہے کہ سروودے اور ورگ ہین سماج میں کوئی ورودھ نہیں ہے ۔ پہلے سروودے ہوگا پھر ورگ ہین سماج ۔ مطلب یہ کہ آجکل کا جو سماج ہے اُس میں ورگ ہیں ۔ اِن سب ورگوں کا اودے ہوتا رہیگا اور پھر یہ ورگ غائب ہوجائینگے ۔ یہاں یہ بات سمجھ میں نہیں آتی کہ سروودے سادھن ہے یا سادھیہ ؟ سروودے درشن ہے اور درشن آدرش کو جنم دیتا ہے ۔ اِس لیئے آدرش بھی سروودے ہے ۔ آدرش سدا سادھیہ ہوتا ہے اور جن

सर्वोदय, भूदान और हृदय परिवर्तन

(कुमारी सरोज अग्रवाल)

विषय बहुत गम्भीर है और जिन व्यक्तियों का विषय से सम्बन्ध है वह भी आदरनीय और पूज्यनीय हैं, पर अपने विचार उस हद तक पहुंच चुके हैं जहां उन्हें अपने आदरनीय और पूज्यनीय व्यक्तियों के सामने रख देना ही चाहिये. विचारों को दबाने से दो ही नतीजे निकलते हैं. या आगे जानने की उत्कण्ठा सदा के लिये मर जाती है या सोचने विचारने की धारा चक्कर में फंस जाती है और मन और मस्तिश्क की शान्ती को भंग करती है. इसलिये अपने विचार पाठकों के सामने रख रही हूं ताकि गुरुजनों की कृपा से अपने को भटकाव से बचा लूं और हो सके तो जो कुछ मैंने इस सम्बन्ध में सीखा, पढ़ा और सुना है उसका कुछ अंश दूसरों को दे सकूं.

कई बार विचार हुआ कि सर्वोदय, भूदान और हृदय परिवर्तन पर लिखूं. बिना समझे समर्थन करना मेरी आदत नहीं और बिना समर्थक बने आलोचना करना मुझे भाता नहीं. फिर इस समस्या का हल कैसे होता ? जब क़लम उठाती तो ऐसा लगता कि इस विशय पर अभी पढ़ना बहुत कुछ बाक़ी है. जब आगे पढ़ती तो विरोधी विचार खड़े होने लगते. आज भी मैं चौराहे पर हूं. सर्वोदय पुरी जाऊं या उसके विरुद्ध, इसका निर्णय नहीं कर पा रही हूं. विवश होकर चौराहे से लिख रही हूं. इसलिये बातें भी चौमुखी होंगी, विचार संगठित नहीं होंगे, उनकी एक लड़ी नहीं होगी. फिर भी वह विचार मेरे ऐसे बहुत से नौजवानों के हृदय में उठते हैं और इन शंकाओं का समाधान सर्वोदय के नेताओं को ताक़त ही देगा.

मैंने 'सर्वोदय' पर बहुत सोचा, सर्वोदय एक आदर्श है, एक दर्शन है. इसको दर्शन रूप में भी पढ़ा और दर्शन के आधार पर जो व्योहार की इमारत खड़ी की गई है उसको भी खूब देखा. दोनों का मिलान करने पर कुछ विरोधी बातें दिखाई पड़ी. सर्वोदय में दो शब्द हैं 'सर्व' और 'उदय'. इस तरह सर्वोदय दर्शन का मतलब है सब का उदय. सब में राजा और रंक सब शामिल हैं (यह मेरा कहना नहीं है. सर्वोदय शास्त्री अपने साहित्य में राजा और रंक दोनों के साथ साथ उदय पर बहुत ज़ोर देते हैं). लेकिन सर्वोदय को जब रूप दिया जाता है तो कहा जाता है कि सर्वोदय समाज में कोई वर्ग नहीं होगा और न कोई शासन होगा. जो शासन होगा वह आध्यात्मिक होगा और व्यक्ति उसे

سروودے' بھودان اور ھردے پریورتن

(کماری سروج اگروال)

وشے بہت گمبھیر ھے اور جن ویکتیوں کا وشے سے سمبندھ ھے وہ بھی آدرنیہ اور پوجنیہ ھیں ۔ پر اپنے وچار اُس حد تک پہونچ چکے ھیں جہاں انھیں اپنے آدرنیہ اور پوجنیہ ویکتیوں کے سامنے رکھ دینا ھی چاھئے ۔ وچاروں کو دبانے سے دو ھی نتیجے نکلتے ھیں ۔ یا آگے جاننے کی اُتکنٹھا سدا کے لیئے مر جاتی ھے یا سوچنے وچارنے کی دھارا چکر میں پھنس جاتی ھے اور من اور مستشک کی شانتی کو بھنگ کرتی ھے. اِسلیئے اپنے وچار پاٹھکوں کے سامنے رکھ رھی ھوں تاکہ گرو جنوں کی کرپا سے اپنے کو بھٹکاؤ سے بچالوں اور ھوسکے تو جو کچھ میں نے اِس سمبندھ میں سیکھا' پڑھا اور سنا ھے اُس کا کچھ انش دوسروں کو دے سکوں ۔

کئی بار وچار ھوا کہ سرودے' بھودان اور ھردے پریورتن پر لکھوں ۔ بنا سمجھے سمرتھن کرنا میری عادت نہیں اور بنا سمرتھک بنے آلوچنا کرنا مجھے بھاتا نہیں ۔ پھر اِس سمسیا کا حل کیسے ھوتا ؟ جب قلم اُٹھاتی تو ایسا لگتا کہ اِس وشے پر ابھی پڑھنا بہت کچھ باقی ھے ۔ جب آگے پڑھتی تو وِرودھی وچار کھڑے ھونے لگتے ۔ آج بھی میں چوراھے پر ھوں ۔ سرودے پوری جاؤں یا اُس کے ورُدھ' اِس کا نرنے نہیں کر پا رھی ھوں. وِوش ھوکر چوراھے سے لکھ رھی ھوں ۔ اِس لیئے باتیں بھی چومکھی ھونگی' وچار سنگٹھت نہیں ھونگے' انکی ایک لڑی نہیں ھوگی. پھر بھی وہ وچار میرے ایسے بہت سے نوجوانوں کے ھردے میں اُٹھتے ھیں اور اِن شنکاؤں کا سمادھان سروودے کے نیتاؤں کو طاقت ھی دے گا ۔

میں نے 'سروودے' پر بہت سوچا. سرودے ایک آدرش ھے' ایک درشن ھے ۔ اِسکو درشن روپ میں بھی پڑھا اور درشن کے آدھار پر جو بیوہار کی عمارت کھڑی کی گئی ھے اُسکو بھی خوب دیکھا. دونوں کا میلان کرنے پر کچھ وِرودھی باتیں دکھائی پڑیں ۔ سروودے میں دو شبد ھیں— 'سرو' اور 'اودے' اِس طرح سروودے درشن کا مطلب ھے سب کا اودے ۔ سب میں راجا اور رنک سب شامل ھیں ۔ (یہ میرا کہنا نہیں ھے ۔ سروودے شاسترِی اپنے ساھتیہ میں راجا اور رنک دونوں کے ساتھ ساتھ اودے پر بہت زور دیتے ھیں) . لیکن سروودے کو جب روپ دیا جاتا ھے تو کہا جاتا ھے کہ سرودیہ سماج میں کوئی ورگ نہیں ھوگا اور نہ کوئی شاسن ھوگا. جو شاسن ھوگا وہ آدھیاتمک ھوگا اور ویکتی اُسے

को खास मार्ग पर रखा. इसलिये वह भारत की नवयात्रा के प्रथम पथदर्शक माने जा सकते हैं. उन्होंने जो कुछ थोड़ी बातें हमें बताई वह यह हैं :—

1. नई विद्या अंग्रेजों के पास है, वह हमें लेनी चाहिये.

2. उनकी विद्या को सीखने के लिये हमें उनकी भाषा भी सीखनी चाहिये.

3. ऐसा करने में नौकरी इत्यादि का आर्थिक फायदा भी था, जो उसमें प्रेरना रूप हुआ.

4. नयापन ग्रहन करने में धर्म दृष्टि और मूर्ति पूजा इत्यादि बातों पर उन्होंने ध्यान दिया. ब्रह्म समाज की स्थापना की.

5. यह सब अपनत्व की रक्षा करते हुये करना चाहिये. वह ईसाई नहीं बने. फिर भी ईसाई धर्म का उन्होंने पूरा पूरा अभ्यास किया और इसमें ईसाई पादरियों से भी आगे निकल गये.

6. वह समय फ्रान्स और अमरीकी क्रांति का था. उसकी क़दर उन्होंने की थी. लेकिन भारत के बारे में उनकी श्रद्धा यह रही कि अंग्रेजी राज भले आया, उससे लाभ उठायेंगे तो वह सुराज बन सकेगा.

अंग्रेजोंने अपना राज किस प्रकार से और किस हद तक व्यवस्थित बनाया उसका साफ़ चित्र देखने के लिये पाठकों को अपनी "हिन्दमां अंग्रेजी वेपारशाही" नाम की किताब को सूचित करके, इस बात को अधिक नहीं बढ़ाना चाहता. भारत के व्यापार, रोज़गार पर भी उसका क्या असर होने लगा वह भी इस किताब में मिल सकेगा.

वह सब बातें सबसे पहले बंगाल में साफ़ साफ़ दिखाई दीं. यह आसानी से समझ में आ सकता है, क्योंकि नया राज सबसे पहले यहीं क़ायम हुआ और उसी ढांचे के अनुसार सारे देश में फैला.

کو خاص مارگ پر رکھا ۔ اس لیئے وہ بھارت کی نویاترا کے پرتھم پتھ درشک مانے جا سکتے ہیں ۔ انہوں نے جو کچھ تھوڑی باتیں ہمیں بتائیں وہ یہ ہیں :—

1. نئی ودیا انگریزوں کے پاس ہے، وہ ہمیں لینی چاہیئے ۔

2. اُن کی ودیا کو سیکھنے کے لیئے ہمیں اُن کی بھاشا بھی سیکھنی چاہیئے ۔

3. ایسا کرنے میں نوکری اتیادی کا آرتھک فائدہ بھی تھا، جو اس میں پریرنا روپ ہوا ۔

4. نیا پن گرہن کرنے میں دھرم درشٹی اور مورتی پوجا اتیادی باتوں پر انہوں نے دھیان دیا ۔ برہم سماج کی استھاپنا کی ۔

5. یہ سب اپنتو کی رکشا کرتے ہوئے کرنا چاہیئے۔ وہ عیسائی نہیں بنے ۔ پھر بھی عیسائی دھرم کا انہوں نے پورا پورا ابھیاس کیا اور اس میں عیسائی پادریوں سے بھی آگے نکل گئے ۔

6. وہ سمے فرانس اور امریکی کرانتی کا تھا ۔ اسکی قدر انہوں نے کی تھی ۔ لیکن بھارت کے بارے میں اُن کی شردھا یہ رہی کہ انگریزی راج بھلے آیا، اُس سے لابھ اُٹھائینگے تو وہ سوراج بن سکے گا ۔

انگریزوں نے اپنا راج کس پرکار سے اور کس حد تک ویوستھت بنایا اُس کا صاف چتر دیکھنے کے لیئے پاٹھکوں کو اپنی " ہندما انگریزی ویوپار شاہی " نام کی کتاب کو سوچت کر کے، اس بات کو ادھک نہیں بڑھانا چاہتا ۔ بھارت کے ویوپار، روزگار پر بھی اُسکا کیا اثر ہونے لگا وہ بھی اس کتاب میں مل سکے گا ۔

یہ سب باتیں سب سے پہلے بنگال میں صاف صاف دکھائی دیں۔ یہ آسانی سے سمجھ میں آ سکتا ہے، کیونکہ نیا راج سب سے پہلے قائم ہوا اور اُسی ڈھانچے کے انوسار سارے دیش میں پھیلا ۔

[illegible] और उससे प्राप्त [illegible] सुधारों को एक [illegible] नया स्वरूप दे रहा था. लेकिन तब इस बात का किसी को खास ख्याल न था. यह नया प्रवाह प्रगतिशील था, ऐसा आज हम कह सकते हैं.

यहाँ की प्रजा को ईसाई बनाने में अंग्रेज भी रस लेते थे. यह ठीक है कि जितना पोर्तुगीज प्रजा उसमें रस लेती थी उतना वह नहीं लेते थे. फिर भी उन्होंने भारत में ईसाई मिशन शुरू किये. उस समय बंगाल में कुछ लोगों की यह प्रवृत्ति लम्बे अरसे से चल रही थी. अंग्रेज अपने व्यापार को ही मुख्य समझते थे. फिर भी धर्मान्तर की उस प्रवृत्ति का त्याग नहीं कर सकते थे. गोरी प्रजा का नई दुनिया में जो प्रयास शुरू हुआ वह इस्लाम का सामना करने के लिये और उसे दबाने के लिये. ऐसा करते करते उन्हें व्यापार की सूझी और उसमें उनके हरीफ होकर उन्होंने इस्लामी प्रजा को पीछे हटाया. इस में उन्हें सफलता प्राप्त हुई. इनके धर्म बदलाव के काम का जो मूल आवेग था वह केवल नाम मात्र के लिये चालू रहा.

मिशनरियों ने भारत के हिन्दुओं में ईसाई धर्म का प्रचार करने के प्रयत्न शुरू किये. प्रजा जीवन पर इसका प्रभाव तुरंत नजर आने लगा, क्योंकि जैसे पहले हम कह चुके हैं—हम लोग संस्कृति के बारे में जागरूक प्रजा हैं.

यह प्रभाव सामाजिक ही नहीं बल्कि राजकाजी भी था. हमारे समाजिक रस्मो-रिवाज और धार्मिक आचार वगैरा परधर्मियों की आलोचना के पात्र बने. हमारी परम्पराओं पर नई आलोचनायें होने लगीं.

खानपान, लगन इत्यादि सभी चीजों में कुछ नया ढंग देखने को मिलने लगा. गोरों के कारन, शराब भी एक प्रतिष्ठित चीज बन सकती है, इसका भी हमें अनुभव हुआ. परिनाम स्वरूप शराब का उपयोग बढ़े, यह स्वाभाविक ही था और कपड़े आदि बातों में भी वैसे ही परिवर्तन का होना स्वभाविक था.

अंग्रेजों के आने से जो नया युग प्रारंभ हुआ उसके बारे में कुछ और भी ऐसी बातें बताई जा सकती हैं. यह चीजें उस समय की ऐतिहासिक सामग्री की छान बीन करके अधिक साफ चोकस और पूरी करने जैसी हैं. 1757 ईसवी से लेकर 1800 ईसवी तक के इस समय की परिस्थिति का संशोधन करके उस समय का सरेख इतिहास [illegible] के सामने रखना चाहिये.

[illegible] युग में पुनरुत्थान का [illegible] प्रकार का रूप रखना चाहिये [illegible] प्रजा जीवन

[illegible] کے ساتھ وِیاپار اور [illegible] پراپت [illegible] اُس سمے نیا روپ دے رہا تھا. لیکن تب اس بات کا کسی کو خاص خیال نہ تھا. یہ نیا پرواہ پرگتی شیل تھا' ایسا آج ہم کہہ سکتے ہیں.

بھارتی پرجا کو عیسائی بنانے میں انگریز بھی رس لیتے تھے. یہ ٹھیک ہے کہ جتنا پورچگیز پرجا اُس میں رس لیتی تھی اُتنا وہ نہیں لیتے تھے. پھر بھی اُنہوں نے بھارت میں عیسائی مشن شروع کیے. اُس سمے بنگال میں کچھ لوگوں کی یہ پرورتی لمبے عرصے سے چل رہی تھی. انگریز اپنے ویاپار کو ہی مکھ سمجھتے تھے. پھر بھی دھرمانتر کی اُس پرورتی کا تیاگ نہیں کر سکتے تھے. گوری پرجا کا نئی دنیا میں جو پریاس شروع ہوا وہ اسلام کا سامنا کرنے کے لیے اور اُسے دبانے کے لیے. ایسا کرتے کرتے انہیں ویاپار کی سوجھی اور اس میں اُن کے حریف ہوکر انہوں نے اسلامی پرجا کو پیچھے ہٹایا. اس میں انہیں سپھلتا پراپت ہوئی. ان کے دھرم بدلاؤ کے کام کا جو مول آویگ تھا وہ کیول نام ماتر کے لیے چالو رہا.

مشنریوں نے بھارت کے ہندوؤں میں عیسائی دھرم کا پرچار کرنے کے پریتن شروع کیے. پرجا جیون پر اس کا پربھاؤ ترنت نظر آنے لگا' کیونکہ جیسے پہلے ہم کہہ چکے ہیں—ہم لوگ سنسکرتی کے بارے میں جاگروک پرجا ہیں.

یہ پربھاؤ سماجک ہی نہیں بلکہ راجکاجی بھی تھا. ہمارے سماجک رسم و رواج اور دھارمک آچار پردھرمیوں کی آلوچنا کے پاتر بنے. ہماری پرمپراؤں پر نئی آلوچنائیں ہونے لگیں.

کھان پان' لگن اتیادی سبھی چیزوں میں کچھ نیا ڈھنگ دیکھنے کو ملنے لگا. گوروں کے کارن' شراب بھی ایک پرتشٹھت چیز بن سکتی ہے' اس کا ہمیں انوبھو ہوا. پرنام سوروپ شراب کا اُپیوگ بڑھے' یہ سوابھاوک ہی تھا اور کپڑے آدی باتوں میں بھی ویسے ہی پریورتن کا ہونا سوابھاوک تھا.

انگریزوں کے آنے سے جو نیا یگ پرارمبھ ہوا اُس کے بارے میں کچھ اور بھی ایسی باتیں بتائی جا سکتی ہیں. یہ چیزیں اُس سمے کی اتہاسک سامگری کی چھان بین کر کے ادھک صاف' چوکس اور پوری کرنے جیسی ہیں. 1757 عیسوی سے لے کر 1800 عیسوی تک کے اس سمے کی پرستھتیوں کا سنشودھن کر کے اُس سمے کا سریکھ اتہاس [illegible] کے سامنے رکھنا چاہیے.

[illegible] والے نے اس نئے یگ میں پنراتھان کا [illegible] کس پرکار کا روپ رکھنا چاہیے. اُس [illegible] کر کے انہوں نے پرجا جیون

1830 ईसवी तक तो आज के पश्चिमी पाकिस्तान को छोड़ कर क़रीब क़रीब सारा भारत अंग्रेज़ों के हाथ में चला गया था.

यह नया राज शुरू में हमें अखरा नहीं, बल्कि संक्रांति काल की अव्यवस्था और पिंडारों के जुल्म के बाद शान्ति प्रदान करने वाला मालूम हुआ और इसी वजह से जब यहां अंग्रेज़ी राज क़ायम हुआ तो उसमें हिन्दुस्तानी भी शामिल हुए और उन्होंने यह महसूस नहीं किया कि वह अपने देश की गुलामी को स्थिर करने में हिस्सा ले रहे हैं.

लेकिन नया युग अपने साथ नये प्रश्न और नई उथल पुथल तो लाया ही था. सचमुच एक ऐसी भारी सामाजिक क्रांति हुई थी जिसने अंत में सांस्कृतिक स्वरूप धारन किया और प्रजा के जीवन पर असर डाला. उसके मुख्य मुद्दे हमें देखने चाहियें.

अंग्रेज़ राजकर्ता भारत में रह कर राज नहीं करते थे. शुरू में हिमालय, नेपाल और ऐसे ही दूसरे पहाड़ी प्रदेशों में रहने और बस्तियों की स्थापना करने का इरादा था, लेकिन वह टिक नहीं पाया. भारत के पैसों से पांच पांच साल के बाद अंग्रेज़ घर जाते रहे और भारत पर राज करते रहे. मुसलमान जिस तरह भारत में रहकर भारत के बन गये, वैसे वह कभी भारत के नहीं बन पाए. इससे अंग्रेज़ों का राज वाक़ई परराज कहा जा सका और ऐसा बना.

राजकर्ताओं की हैसियत से अंग्रेज़ अपने आपको ऊंचा समझें यह स्वाभाविक है. ऊंच नीच के भाव से भरे पूरे भारत के सामाजिक वातावरन में तो उसकी संभावना अधिक थी. इस प्रकार अंग्रेज़ों के राज में भेद भाव और देशवासियों के लिये हीन भाव के बीज रोपे गये.

अफरीक़ा में जिस तरह बस्तियां स्थापित हुईं और अंग्रेज़ वहां बसे, ऐसा भारत में नहीं हुआ. इस वजह से आज जिस प्रकार दक्खनी अफ्रीक़ा, केन्या वग़ैरा देशों में गोरी प्रजा है, उस प्रकार भारत में भारती गोरी प्रजा की बस्ती नहीं है, अलबत्ता ऐंग्लो इन्डियन जाति भारत में ज़रूर पैदा हुई, लेकिन उसका कारन भिन्न है.

उस समय अंग्रेज़ी राज को नौकरियों में, व्यापार में और सरकार में भारती प्रजा के सहयोग की ज़रूरत थी. इसके लिये एक नये मध्यम वर्ग का निर्माण होने लगा. जिसका असर भारत के सामाजिक जीवन पर भिन्न भिन्न प्रकार से हुआ. दोनों प्रजाएं आपस में मिलने लगीं, लेकिन समानता के नाते नहीं. भारत वासी कुछ हीन भाव को लेकर चले यह स्वाभाविक ही था.

अंग्रेज़ प्रजा अपने साथ योरोप का नया सुधार लेकर आई थी. विज्ञान और धर्म के बारे में उसका स्वरूप

1830 عیسوی تک تو آج کے پچھمی پاکستان کو چھوڑ کر قریب قریب سارا بھارت انگریزوں کے ہاتھ میں چلا گیا تھا ۔

یہ نیا راج شروع میں ہمیں اکھرا نہیں، بلکہ سنکرانتی کال کی اَویوستھا اور پنڈاروں کے ظلم کے بعد شانتی پردان کرنیوالا معلوم ہوا اور اسی وجہ سے جب یہاں انگریزی راج قائم ہوا تو اس میں ہندستانی بھی شامل ہوئے اور انہوں نے یہ محسوس نہیں کیا کہ وہ اپنے دیش کی غلامی کو استھر کرنے میں حصہ لے رہے ہیں۔

لیکن نیا یگ اپنے ساتھ نئے پرشن اور نئی اُتھل پتھل تو لایا ہی تھا. سچ مچ ایک ایسی بھاری سماجک کرانتی ہوئی تھی جس نے انت میں سانسکرتک سوروپ دھارن کیا اور پرجا کے جیون پر اثر ڈالا ۔ اس کے مکھ مدے ہمیں دیکھنے چاہئیں۔

انگریز راج کرتا بھارت میں رہکر راج نہیں کرتے تھے ۔ شروع میں ہمالیہ، نیپال اور ایسے ہی دوسرے پہاڑی پردیشوں میں رہنے اور بستیوں کی استھاپنا کرنیکا ارادہ تھا، لیکن وہ ٹک نہیں پایا ۔ بھارت کے پیسوں سے پانچ پانچ سال کے بعد انگریز گھر جاتے رہے اور بھارت پر راج کرتے رہے ۔ مسلمان جس طرح بھارت میں رہکر بھارت کے بن گئے، ویسے وہ کبھی بھارت کے نہیں بن پائے ۔ اس سے انگریزوں کا راج واقعی پرراج کہا جاسکا اور ایسا بنا ۔

راج کرتاؤں کی حیثیت سے انگریز اپنے آپ کو اونچا سمجھیں یہ سوابھاوک ہے ۔ اونچ نیچ کے بھاؤ سے بھرے پورے بھارت کے سماجک واتاورن میں تو اسکی سمبھاونا ادھک تھی ۔ اس پرکار انگریزوں کے راج میں بھید بھاؤ اور دیش واسیوں کے لئے ہین بھاؤ کے بیج روپے گئے ۔

افریقہ میں جس طرح بستیاں استھاپت ہوئیں اور انگریز وہاں بسے، ایسا بھارت میں نہیں ہوا ۔ اس وجہ سے آج جس پرکار دکھنی افریقہ، کینیا وغیرہ دیشوں میں گوری پرجا ہے، اس پرکار بھارت میں بھارتی گوری پرجا کی بستی نہیں ہے، البتہ اینگلوانڈین جاتی بھارت میں ضرور پیدا ہوئی، لیکن اسکا کارن بھن ہے ۔

اس سمے انگریزی راج کو نوکریوں میں، ویاپار میں اور سرکار میں بھارتی پرجا کے سہیوگ کی ضرورت تھی ۔ اس کے لئے ایک نئے مدھیم ورگ کا نرمان ہونے لگا، جس کا اثر بھارت کے سماجک جیون پر بھن بھن پرکار سے ہوا ۔ دونوں پرجائیں آپس میں ملنے لگیں، لیکن سمانتا کے ناتے نہیں ۔ بھارتواسی کچھ ہین بھاؤ کو لیکر چلے یہ سوابھاوک ہی تھا ۔

[illegible]

हमारा यकीन है कि सियासी आज़ादी की मुल्क को ज़रूरत थी और उसके निमित्त बापू पैदा हुए. उसी तरह आर्थिक आज़ादी की ज़रूरत है और उसके निमित्त विनोबा हो रहे हैं. सियासी आज़ादी की तरह आर्थिक आज़ादी भी आकर रहेगी.

—सुरेश रामभाई

ہمارا یقین ہے کہ سیاسی آزادی کی ملک کو ضرورت تھی اور اس کے نمت باپو پیدا ہوئے۔ اسی طرح آرتھک آزادی کی ضرورت ہے اور اس کے نمت ونوبا ہو رہے ہیں۔ سیاسی آزادی کی طرح آرتھک آزادی بھی آکر رہیگی۔

—سریش رام بھائی

राजा राम मोहन राय का युग

लेखक—मगन भाई देसाई

अनुवादक—कनुभाई नानालाल पटेल

राजा राम मोहन राय की पीढ़ी का समय उन्नीसवीं सदी का प्रारम्भ काल था. उस समय बंगाल में अंग्रेज़ों के नये राज का कारोबार ठीक ढंगसे जम चुका था. जहां तक बंगाल का सवाल है सन 1757 के बाद के दस साल में वहां राज्यक्रान्ति सम्पाप्त हो चुकी थी और उस के बाद वहां राज का कारोबार व्यवस्थित करने के लिये हेस्टिंग्ज़ और कार्नवालीस जैसे चतुर अंग्रेज़ों ने काम किया था. पहले के नवाबी राज और मुग़ल राज में जो बदइन्तज़ामी थी उसके मुक़ाबले में यह नया ज़माना किसी हद तक अच्छा और स्थिर मालूम होता था. जनता के कर्ता धर्ता अंग्रेज़ों से मिलकर व्यापार धंधों से फ़ायदा उठा सकते थे और जमाबंदी के सिलसिले में कार्नवालीस ने ज़मींदार वर्ग की रचना भी कर ली थी.

मुग़ल सम्राटों में औरंगज़ेब ने हमारी प्रजा के धर्म और संस्कृति में दख़ल देकर ग़लती की थी. इस सम्बन्ध में हमारी प्रजा जागरूक है, यहां तक कि ज़रा ज़्यादा नाज़ुक प्रकृति की भी कही जा सकती है. इससे हम ने उस राज को जहां तहां से तोड़ डाला. नई रचना करने की ज़िम्मेदारी उस समय अगर किसी की थी भी तो वह मराठों की कही जा सकती है. लेकिन उस ज़िम्मेदारी को उठाने में वह नाकामयाब सिद्ध हुए. 1800 ईसवी तक तो उस राज का अंतिम समय नज़र आने लगा. राजकाजी दृष्टि से उस समय भारत छिन्न भिन्न था. उन्नीसवीं सदी के पहले पच्चीस सालों तक तो सारे रजवाड़े क़रीब क़रीब ख़तम हो चुके थे और पूरा भारत अंग्रेज़ों के हाथ में चला गया था.

راجا رام موہن رائے کا یگ

لیکھک—مگن بھائی دیسائی

انوادک—کانو بھائی نانا لال پٹیل

راجا رام موہن رائے کی پیڑھی کا سمے انیسویں صدی کا پرارمبھ کال تھا۔ اس سمے بنگال میں انگریزوں کے نئے راجیہ کا کاروبار ٹھیک ڈھنگ سے جم چکا تھا۔ جہاں تک بنگال کا سوال ہے سن 1757 کے بعد کے دس سال میں وہاں راج کرانتی سماپت ہوچکی تھی اور اس کے بعد وہاں راج کا کاروبار ویوستھت کرنے کے لیئے ہیسٹنگز اور کارنوالیس جیسے چتر انگریزوں نے کام کیا تھا۔ پہلے کے نوابی راج اور مغل راج میں جو بدانتظامی تھی اس کے مقابلے میں یہ نیا زمانہ کسی حد تک اچھا اور استھر معلوم ہوتا تھا۔ جنتا کے کرتا دھرتا انگریزوں سے ملکر بیوپار دھندھوں سے فائدہ اٹھا سکتے تھے اور جمع بندی سلسلے میں کارنوالیس نے زمیندار ورگ کی رچنا کرلی تھی۔

مغل سمراٹوں میں اورنگزیب نے ہماری پرجا کے دھرم اور سنسکرتی میں دخل دےکر غلطی کی تھی۔ اس سمبندھ میں ہماری پرجا جاگروک ہے یہاں تک کہ ذرا زیادہ نازک پرکرتی کی بھی کہی جاسکتی ہے۔ اس سے ہم نے اس راج کو جہاں تہاں سے توڑ ڈالا۔ نئی رچنا کرنے کی ذمہ داری اس سمے اگر کسی کی تھی بھی تو وہ مراٹھوں کی کہی جاسکتی ہے۔ لیکن اس ذمہ داری کو اٹھانے میں وہ ناکامیاب سدھ ہوئے۔ 1800 عیسوی تک تو اس راج کا انتم سمے نظر آنے لگا۔ راجنیتی درشٹی سے اس سمے بھارت چھن بھن تھا۔ انیسویں صدی کے پہلے پچیس سالوں تک تو سارے رجواڑے قریب قریب ختم ہوچکے تھے اور پورا بھارت انگریزوں کے ہاتھ میں چلا گیا تھا۔

वह मानता है कि यह बातें सही हैं. वह पूछता है कि ऐसी सूरत में क्या किया जाये. हम उससे अपील करते हैं :

आप इस गम्भीर सवाल पर विचार करें. हमारा ख्याल है कि अब इस देश में धरती की खरीद बिक्री नहीं होनी चाहिये, आपको जितनी जरूरत हो खेती करें मगर खेत पर मालकी अपनी न रहकर गांव की कर दीजिये. खेत गांव का, खेती आपकी. अगर आपको यह बात मंजूर हो तो अपनी जमीन का कुछ हिस्सा दान दीजिये.

वह उस पर गौर करता है और फिर बखुशी दान देता है. अब यह क्या है ? "हृदय परिवर्तन" है या "नैतिक दबाव" है या "समझ बूझ का काम" है ? हां, इसमें हृदय परिवर्तन जरूर है. मगर असल में यह किसान के घर की तरह, उनका हमदर्द बनकर, उनके सुख दुख में शरीक होना है. वह महसूस करता है कि अगर "खेत गांव खेती आपकी" वाली चीज मैं मान लेता हूं और मेरी तरह दूसरे सभी गरीब या दुखी किसान मान लेते हैं तो उसके मानी होते हैं कि गांव के क़रीब अस्सी फ़ीसदी लोग उसे मान गये. फिर' आजकल लोकशाही या वोट का जमाना है. अस्सी के आगे बीस की नहीं चलेगी. इस तरह गांव के अन्दर की कुल जमीन गांव की हो जायेगी और जिसे जैसी जरूरत होगी मिलकर आपस में बांट लेंगे. इस तरह गरीब का दान "खेत गांव का खेती आपकी" वाले ख्याल के लिये सम्मति का दान है.

यही कारन है कि गरीबों ने ज्यादा तादाद में दान दिया. उन्हें देना ही चाहिये. इस वक़्त जरूरत है मुल्क को नीचे से, बुनियाद से तामीर करने की. इस काम में बैल वाले या बेजमीन किसानों का जितना ज्यादा हाथ लगे उतना ही अच्छा है. अगर हाथी घोड़े वाले या अमीर लोग अपना सहयोग नहीं देते तो न दें. कब तक नहीं देंगे ? अगर वह बिलकुल ही अलग रहते हैं तो नीचे वाले उनके यहां काम करने से इन्कार कर सकते हैं, उनके छक्के छुड़ा सकते हैं, क्योंकि नीचे वालों के बल पर ही, उनके कंधे पर ही, उनके सहारे से ही वह जीते हैं. इसलिये यह बड़ी खुशी की बात है कि भूदान आन्दोलन ने गरीबों को मौक़ा दिया और वह आगे बढ़ कर नये भारत की नई रचना के काम में हिस्सा ले रहे हैं. इस से समाज के पुराने मूल्य बदलेंगे, नये मूल्य क़ायम होंगे. जिस तरह अंग्रेजी सरकार के पैरोकारों, सर, या खानबहादुरों या रायबहादुरों के कारन हिन्दुस्तान की सियासी आजादी की नाव नहीं ठहरी, उसी तरह चन्द बड़े जमींदारों या पूंजीपतियों के कारन आर्थिक आजादी की नाव नहीं ठहरेगी.

وہ مانتا ہے کہ یہ باتیں صحیح ہیں ۔ وہ پوچھتا ہے کہ ایسی صورت میں کیا کیا جائے ۔ ہم اس سے اپیل کرتے ہیں :

آپ اس گمبھیر سوال پر وچار کریں ۔ ہمارا خیال ہے کہ اب اس دیش میں دھرتی کی خرید بکری نہیں ہونی چاہیئے۔ آپ کو جتنی ضرورت ہو کھیتی کریں مگر کھیت پر مالکی اپنی نہ رکھکر گاؤں کی کردیجئے ۔ کھیت گاؤں کا' کھیتی آپکی ۔ اگر آپکو یہ بات منظور ہو تو اپنی زمین کا کچھ حصہ دان دیجئے۔

وہ اس پر غور کرتا ہے اور پھر بخوشی دان دیتا ہے ۔ اب یہ کیا ہے ؟ "هردے پریورتن" ہے یا "نیتک دباؤ" ہے یا "سمجھ بوجھ کا کام" ہے؟ ہاں' اس میں هردے پریورتن ضرور ہے ۔ مگر اصل میں تو یہ کسان کے گھر کی طرح' اس کا ہمدرد بن کر' اس کے سکھ دکھ میں شریک ہونا ہے ۔ وہ محسوس کرتا ہے کہ اگر "کھیت گاؤں کا کھیتی آپکی" والی چیز میں مان لیتا ہوں اور میری طرح دوسرے سبھی غریب یا دکھی کسان مان لیتے ہیں تو اس کے معنی ہوتے ہیں کہ گاؤں کے قریب اسی فیصدی لوگ اسے مان گئے ۔ پھر' آجکل لوکشاہی یا ووٹ کا زمانہ ہے ۔ اسی کے آگے بیس کی نہیں چلیگی ۔ اس طرح گاؤں کے اندر کی کل زمین گاؤں کی ہوجائیگی اور جسے جیسی ضرورت ہوگی مل کر آپس میں بانٹ لینگے ۔ اس طرح غریب کا دان "کھیت گاؤں کا کھیتی آپکی" والے خیال کے لئے سمتی کا دان ہے ۔

یہی کارن ہے کہ غریبوں نے زیادہ تعداد میں دان دیا۔ انہیں دینا ہی چاہیئے ۔ اس وقت ضرورت ہے ملک کو نیچے سے' بنیاد سے تعمیر کرنے کی ۔ اس کام میں بیل والے یا بےزمین کسانوں کا جتنا زیادہ ہاتھ لگے اتنا ہی اچھا ہے ۔ اگر ہاتھی گھوڑے والے یا امیر لوگ اپنا سہیوگ نہیں دیتے تو نہ دیں ۔ کب تک نہیں دینگے؟ اگر وہ بالکل ہی الگ رہتے ہیں تو نیچے والے ان کے یہاں کام کرنے سے انکار کرسکتے ہیں' ان کے چھکے چھڑا سکتے ہیں' کیونکہ نیچے والوں کے بل پر ہی' ان کے کندھے پر ہی' ان کے سہارے سے ہی وہ جیتے ہیں ۔ اس لئے یہ بڑی خوشی کی بات ہے کہ بھودان آندولن نے غریبوں کو موقع دیا اور وہ آگے بڑھ کر نئے بھارت کی نئی رچنا کے کام میں حصہ لے رہے ہیں ۔ اس سے سماج کے پرانے مولیہ بدلینگے' نئے مولیہ قائم ہونگے ۔ جس طرح انگریزی سرکار کے پیروکاروں' سر یا خان بہادروں یا رائے بہادروں کے کارن ہندستان کی سیاسی آزادی کی ناؤ نہیں ٹھہری' اسی طرح چند بڑے زمینداروں یا پونجی پتیوں کے کارن آرتھک آزادی کی ناؤ نہیں ٹھہریگی ۔

जा [illegible] है [illegible] कि देने वाले का दिल बदल रहा है या [illegible] "हृदय परिवर्तन" हो रहा है जो वह लेने के बजाय देता है. इसमें काफ़ी सच्चाई भी है. लेकिन "हृदय परिवर्तन" के बारे में कुछ लोगों का ख़्याल है कि यह एक जादू है जिसका न कोई तरीक़ा है न विधान, जो चमत्कार अपना रंग दिखाता है और शिकार करता है. दूसरे लोग यह मानते हैं कि उसमें मुख़ालिफ़ मज़हबी भावनाओं या इलाक़ाई जज़्बातों पर बेजा दबाव डाला जाता है. शायद इसी वजह से आचार्य नरेन्द्र देव ने कहा कि भूदान का दायरा महदूद है और वह कोई नया जीवन देश को नहीं दे सकता. बहुत नम्रता के साथ हमारी अर्ज़ यह है कि "हृदय परिवर्तन" एक प्रक्रिया का नाम है जिसकी वैज्ञानिक बुनियाद है और अपना सच्चा तर्क है और जो दूसरे किसी भी काम या सिलसिले की तरह अमली और व्योहारिक है.

मगर सच बात यह है कि भूदान के काम का जो थोड़ा बहुत अनुभव हमने किया है उसमें "हृदय परिवर्तन" लफ़्ज़ों के इस्तेमाल क[illegible] नहीं आई. वैसे हमने जानकर भी उनका इस्त[illegible] की [illegible]. लेकिन हमारा ख़्याल है कि इससे फ़ायदा ज़्यादा[illegible] हुआ. सो क्यों और कैसे ?

अपने देहात की आबादी को हम मोटे तौर पर चार हिस्सों में बांट सकते हैं : (1) बड़े ज़मींदार या हाथी वाले, (2) सुखी ज़मींदार या घोड़े वाले, (3) ग़रीब किसान या बैल वाले और (4) खेतिहर मज़दूर या बेज़मीन. किसी गांव में उनकी औसत आबादी यह है :

5 : 12 : 43 : 40

अब उन सब से भूदान आन्दोलन क्या उम्मीद करता है. हाथी वाले ज़मींदार थोड़ी ज़मीन रखकर ज़्यादा से ज़्यादा ज़मीन दान में दें, घोड़े वाले भाई अपनी ज़मीन का कम से कम छठा हिस्सा दान में दें और बैल वाले संकेत रूप में थोड़ी सी ज़मीन दें. मान लीजिये कि हाथी वाले और घोड़े वाले नहीं सुनते. अब चलें बैल वाले के पास. उनसे हम कहते हैं :

(1) आप के पास जो थोड़ी सी ज़मीन है उसे हाथी वाले या घोड़े वाले हथिया लेना चाहते हैं.

(2) शादी ब्याह या दूसरे ख़र्च के मौक़े पर आप अपनी ज़मीन रेहन रखते और फिर उसे खो बैठते हैं.

(3) अगर गांव में होने वाले कच्चे माल को बाहर शहरों या कारख़ानों में पक्का किया जाता है और आप बाहर का माल ही लेते रहे तो [illegible] तीन सेर का हो या [illegible] है ?

[illegible] کہ دینے والے کا دل بدل رہا ہے یا اس کا "ہردے پریورتن" ہو رہا ہے جو وہ لینے کے بجائے دیتا ہے۔ اس میں کافی سچائی بھی ہے۔ لیکن "ہردے پریورتن" کے بارے میں کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ یہ ایک جادو ہے جس کا نہ کوئی طریقہ ہے نہ ودھان' جو چمتکار اپنا رنگ دکھاتا ہے اور شکار کرتا ہے۔ دوسرے لوگ یہ مانتے ہیں کہ اس میں مخالف مذہبی بھاوناؤں یا علاقائی جذبات پر بیجا دباؤ ڈالا جاتا ہے۔ شاید اسی وجہ سے آچاریہ نریندر دیو نے کہا کہ بھودان کا دائرہ محدود ہے اور وہ کوئی نیا جیون دیش کو نہیں دے سکتا۔ بہت نمرتا کے ساتھ ہماری عرض یہ ہے کہ "ہردے پریورتن" ایک پرکریا کا نام ہے جس کی ویگیانک بنیاد ہے اور اپنا سچا ترک ہے اور جو دوسرے کسی بھی کام یا سلسلے کی طرح عملی اور ویوہارک ہے۔

مگر سچ بات یہ ہے کہ بھودان کے کام کا جو تھوڑا بہت انوبھو ہم نے کیا ہے اس میں "ہردے پریورتن" لفظوں کے استعمال کی نوبت ہی نہیں آئی۔ ویسے ہم نے جانکر بھی ان کا استعمال نہیں کیا۔ لیکن ہمارا خیال ہے کہ اس سے فائدہ زیادہ ہی ہوا۔ سو کیوں اور کیسے ؟

اپنے دیہات کی آبادی کو ہم موٹے طور پر چار حصوں میں بانٹ سکتے ہیں : (1) بڑے زمیندار یا ہاتھی والے' (2) سکھی زمیندار یا گھوڑے والے' (3) غریب کسان یا بیل والے اور (4) کھیتی ہر مزدور یا بے زمین۔ کسی گاؤں میں انکی اوسط آبادی یہ ہے :

5 : 12 : 43 : 40

اب ان سب سے بھودان آندولن کیا امید کرتا ہے۔ ہاتھی والے زمیندار تھوڑی زمین رکھکر زیادہ سے زیادہ زمین دان میں دیں' گھوڑے والے بھائی اپنی زمین کا کم سے کم چھٹا حصہ دان میں دیں' اور بیل والے سنکیت روپ میں تھوڑی سی زمین دیں۔ مان لیجئے کہ ہاتھی والے اور گھوڑے والے نہیں سنتے۔ اب چلیں بیل والے کے پاس۔ ان سے ہم کہتے ہیں :

(1) آپ کے پاس جو تھوڑی سی زمین ہے اسے ہاتھی والے یا گھوڑے والے ہتھیا لینا چاہتے ہیں۔

(2) شادی بیاہ یا دوسرے خرچ کے موقعے پر آپ اپنی زمین رہن رکھتے اور پھر اسے کھو بیٹھتے ہیں۔

(3) اگر گاؤں میں ہونے والے کچے مال کو باہر شہروں یا کارخانوں میں پکا کیا جاتا ہے اور آپ باہر کا مال ہی لیتے رہے تو [illegible] سیر کا ہو یا [illegible] چھٹانک کا آپ کو کیا بچنے والا ہے ؟

को क्या, दूसरों को क्या, सभी लोगों को उसे अपनी तरफ़ खींच लेना होगा.

अब हम हृदय परिवर्तन के सवाल पर आते हैं. शुरू से ही यह बता देना बहतर होगा कि भूदान यज्ञ की तहरीक एक ज़रिया (साधन) है न कि मक़सद. पिछले बोध गया सम्मेलन के मौक़े पर विनोबा जी ने ख़ुद ही कहा था कि मेरी ज़िन्दगी "भूदान यज्ञ मौलक और ग्रामोद्योगिक प्रधान अहिंसात्मक क्रान्ति' के लिये समर्पित है. इस क्रान्ति का मक़सद इन्सानी या सर्वोदय समाज या 'समरस' दंड (सज़ा) से अलग और शासन-मुक्त समाज क़ायम करना है. कौन नहीं जानता कि सर्वोदय विचार धारा का एक अपना दर्शन है, अपना शास्त्र है. यह ज़रूर है कि वह शास्त्र पच्छिमी मार्क्सवादी, साम्राज्यवादी या लोकशाही या लोकसुखी (Welfare) निज़ामों के शास्त्र वग़ैरा से मुख़्तलिफ़ है और अभी इस सम्बन्ध में ज़्यादा साहित्य या अदब तैयार नहीं है. लेकिन दूसरी तरफ़, सच यह भी है कि वेदों से लेकर क़ुरान शरीफ़ तक, पैग़म्बरों ने जो कुछ कहा या उनके अलावा सन्तों की जो बानी है वह इन्सानी समाज या सर्वोदय समाज का ही साहित्य है.

दूसरे यह भी नहीं भूलना चाहिये कि भूदान आन्दोलन का मक़सद बेज़मीन आदमी को ज़मीन देकर पूरा नहीं हो जाता. वह तो उसका एक बहुत छोटा हिस्सा है. आज सारी दुनिया में ज़मीन ख़रीदी बेची जाती है, यानी तिजारत की चीज़ बन गई है. हिन्दुस्तान में इस मर्ज़ ने अंग्रेज़ों के आने के बाद ही ज़ोर पकड़ा. अंग्रेज़ों ने पैसा प्रधान आर्थिक बन्दोबस्त क़ायम करके हम भारत माता की सन्तान को भारत माता का ही व्योपारी बना दिया ! भूदान आन्दोलन इस ज़्यादती को मिटा कर, धरती माता को 'माता' या पंच महाभूत की गद्दी पर फिर से बिठाना चाहता है. कहने की ज़रूरत नहीं कि अगर धरती का व्योपार देश में कुछ अर्से तक आज की तरह और जारी रहा तो देश तबाह हुए बिना नहीं रहेगा. आगे बढ़कर भूदान आन्दोलन का मक़सद है कि हर आदमी मेहनत करे और पैदावार करने का साधन उसे हासिल हो, मुल्क का हर गांव अपने पैरों पर खड़ा हो, प्रेम से मुल्क के सब सवाल हल होते हों, क्या भीतरी और क्या बाहरी, हमारे हर सवाल प्रेम और त्याग की बिना पर हल किये जायें और सारा मुल्क हकूमत नाम की चीज़ से ज़्यादा से ज़्यादा मुक्त या बरी होकर इन्सानी राह पर चले.

भूदान इस तरफ़ बढ़ने का पहला क़दम है. क्योंकि आजकल की दुनिया में 'लेना' और 'खाओ' ही ज़्यादातर चलता है, मगर भूदान में 'देना' और 'दो' पर ज़ोर दिया

کو کیا، دوسروں کو کیا، سبھی لوگوں کو اسے اپنی طرف کھینچ لینا ہوگا .

اب ہم ہردیہ پریورتن کے سوال پر آتے ہیں . شروع میں ہی یہ بتا دینا بہتر ہوگا کہ بھودان یگیہ کی تحریک ایک ذریعہ (سادھن) ہے' نہ کہ مقصد . پچھلے بودھ گیا سمیلن کے موقع پر ونوبا جی نے خود ہی کہا تھا کہ میری زندگی "بھودان یگیہ مولک اور گرام ادیوگ پردھان اہنساتمک کرانتی" کے لیئے سمرپت ہے . اس کرانتی کا مقصد انسانی یا سرودے سماج یا 'سمرس' دنڈ (سزا) سے الگ اور شاسن مکت سماج قائم کرنا ہے . کون نہیں جانتا کہ سرودے وچار دھارا کا اپنا درشن ہے' اپنا شاستر ہے . یہ ضرور ہے کہ وہ شاستر پچھمی مارکس وادی' سامراج وادی یا لوک شاہی یا لوک سکھی (Welfare) نظاموں کے شاستر وغیرہ سے مختلف ہے اور ابھی اس سمبندھ میں زیادہ ساہتیہ یا ادب تیار نہیں ہے . لیکن دوسری طرف' سچ یہ بھی ہے کہ ویدوں سے لے کر قرآن شریف تک' پیغمبروں نے جو کچھ کہا یا ان کے علاوہ سنتوں کی جو بانی ہے وہ انسانی سماج یا سرودے سماج کا ہی ساہتیہ ہے .

دوسرے یہ بھی نہیں بھولنا چاہیئے کہ بھودان آندولن کا مقصد بےزمین آدمی کو زمین دیکر پورا نہیں ہو جاتا . وہ تو اس کا ایک بہت چھوٹا حصہ ہے . آج ساری دنیا میں زمین خریدی بیچی جاتی ہے' یعنی تجارت کی چیز بن گئی ہے . ہندستان میں اس مرض نے انگریزوں کے آنے کے بعد ہی زور پکڑا . انگریزوں نے پیسہ پردھان آرتھک بندوبست قائم کرکے ہم بھارت ماتا کی سنتان کو بھارت ماتا کا ہی بیوپاری بنا دیا ! بھودان آندولن اس زیادتی کو مٹا کر' دھرتی ماتا کو 'ماتا' یا پنچ مہابھوت کی گدی پر پھر سے بٹھانا چاہتا ہے . کہنے کی ضرورت نہیں کہ اگر دھرتی بیوپار دیش میں کچھ عرصے تک آج کی طرح اور جاری رہا تو دیش تباہ ہوئے بنا نہیں رہیگا . آگے بڑھ کر بھودان آندولن کا مقصد ہے کہ ہر آدمی محنت کرے اور پیداوار کرنے کا سادھن اسے حاصل ہو' ملک کا ہر گاؤں اپنے پیروں پر کھڑا ہو' پریم سے ملک کے سب سوال حل ہوتے ہوں' کیا بھیتری اور کیا باہری' ہمارے ہر سوال پریم اور تیاگ کی بنا پر حل کیئے جائیں اور سارا ملک حکومت نام کی چیز سے زیادہ سے زیادہ مکت یا بری ہوکر انسانی راہ پر چلے .

بھودان اس طرف بڑھنے کا پہلا قدم ہے . کیونکہ آجکل کی دنیا میں 'لینا' اور 'لو' ہی زیادہ تر چلتا ہے' مگر بھودان میں 'دینا' اور 'دو' پر زور دیا

ताल्लुक़ में आते हैं. मगर इसकी ख़ास वजह भी है. अंग्रेज़ों के ज़माने में हर हिन्दुस्तानी का फ़र्ज़ था, चाहे वह तालीमयाफ़्ता हो या अपढ़, कि मुल्क की आज़ादी के लिये उठाये जानेवाले हर क़दम के साथ हमदर्दी ज़ाहिर करे और सरकार जो कुछ भी करे उसकी मुख़ालिफ़त करे. मगर आज़ाद होने के बाद यह सूरत बदल गई. 14 अगस्त 1947 तक जहां हर सरकारी मुलाज़िम ग़द्दार या देश द्रोही समझा जाता था 15 अगस्त 1947 से वह देशभक्त और क़ौमी ख़िदमतगार समझा जाने लगा. इसलिये आज-कल हमारे बहुत से तालीमयाफ़्ता भाई इसी में संतोश और गर्व महसूस करते हैं कि वह अपनी ताक़त व ख़ूबियां सरकार की मदद में और मौजूदा निज़ाम क़ायम रखने में लगायें. उनका ऐसा करना ग़लत भी नहीं है. ईमान के साथ उनका यह ख़याल है कि सरकार के साथ कंधे से कंधा लगा कर चलने पर मुल्क की तरक़्क़ी होगी. उनका ध्यान इस तरफ़ नहीं जाता कि मौजूदा सरकार समाज के उन्हीं हितों के स्वार्थों की ख़ुशनूदी में है जिनमें पिछली सरकार थी. इसलिये कम लोग ऐसे बचते हैं जो यह मानते हों कि अगर हिन्दुस्तान में सच्चा सुख और शान्ति क़ायम करना है तो हमें दूसरे हितों की तरफ़ मुख़ातिब होना पड़ेगा. इसलिये कोई ताअज्जुब की बात नहीं कि भूदान जैसी तहरीक की तरफ़ उन तालीमयाफ़्ता लोगों में से कम का ही ध्यान जाता है. ऐसी तहरीक जिसका सरकारी स्कीमों से कोई वास्ता नहीं है, जो मौजूदा निज़ाम का कोई सहारा नहीं लेती और जो उसे बदल कर एक नया समाज बनाने का भी दावा करती है. इसलिये किसी भी ग़ैर सरकारी काम में जो नये तरीक़ों से हमारे सियासी, आर्थिक और समाजी मसलों का हल ढूंढता हो, सिर्फ़ वही हमदर्दी दिखला सकते हैं जो मौजूदा निज़ाम को नाक़ाबिल सुधार मानते हों और जिन पर यह बात अच्छी तरह ज़ाहिर हो गई हो कि यह सरकार आनेवाले ज़माने का कामयाबी के साथ सामना नहीं कर सकती और उसका हटाया जाना ही निहायत ज़रूरी चीज़ है. लेकिन इस तरह के यक़ीन वालों में भी कई ख़याल के लोग हो सकते हैं. कुछ का यह ख़याल हो सकता है कि आहिस्ता आहिस्ता बदला जावे, कुछ सोचते हों कि जैसे भी हो जल्दी से जल्दी उसे बदला जावे और कुछ का यह इसरार हो सकता है कि तब्दीली तो करना है और फ़ौरन करना है मगर कुछ बुनियादी उसूल नहीं छोड़ना हैं. यह एक वजह है कि हमारे पढ़े लिखे भाई बहनों की तवज्जह भूदान की तरफ़ कम गई है. लेकिन अगर भूदान वालों का यह दावा है कि उससे नया समाज क़ायम होगा और नया इन्सान दुनिया के सामने आयेगा तब आज नहीं तो कल, पढ़े लिखे लोगों

تعلقات میں آتے ہیں. مگر اسکی خاص وجہ بھی ہے. انگریزوں کے زمانہ میں ہر ہندوستانی کا فرض تھا چاہے وہ تعلیم یافتہ ہو یا اَن پڑھ کہ ملک کی آزادی کے لیئے اٹھائے جانے والے ہر قدم کے ساتھ ہمدردی ظاہر کرے اور سرکار جو کچھ بھی کرے اسکی مخالفت کرے. مگر آزاد ہونے کے بعد یہ صورت بدل گئی. 14 اگست 1947 تک جہاں ہر سرکاری ملازم غدار یا دیش دروہی سمجھا جاتا تھا 15 اگست 1947 سے وہ دیش بھگت اور قومی خدمتگار سمجھا جانے لگا. اس لیئے آجکل ہمارے بہت سے تعلیم یافتہ بھائی اسی میں سنتوش اور گرو محسوس کرتے ہیں کہ وہ اپنی طاقت و خوبیاں سرکار کی مدد میں اور موجودہ نظام قائم رکھنے میں لگائیں. ان کا ایسا کرنا غلط بھی نہیں ہے. ایمان کے ساتھ ان کا یہ خیال ہے کہ سرکار کے ساتھ کندھے سے کندھا لگا کر چلنے پر ملک کی ترقی ہوگی. ان کا دھیان اس طرف نہیں جاتا کہ موجودہ سرکار سماج کے انہیں ہتوں کے سوارتھوں کی خوشنودی میں ہے جن میں پچھلی سرکار تھی. اس لئے کم لوگ ایسے بچتے ہیں جو یہ مانتے ہوں کہ اگر ہندوستان میں سچا سکھ اور شانتی قائم کرنا ہے تو ہمیں دوسرے ہتوں کی طرف مخاطب ہونا پڑیگا. اس لئے کوئی تعجب کی بات نہیں کہ بھودان جیسی تحریک کی طرف ان تعلیم یافتہ لوگوں میں سے کم کا ہی دھیان جاتا ہے. ایسی تحریک جس کا سرکاری اسکیموں سے کوئی واسطہ نہیں ہے، جو موجودہ نظام کا کوئی سہارا نہیں لیتی اور جو اسے بدل کر ایک نیا سماج بنانے کا بھی دعویٰ کرتی ہے. اس لئے کسی بھی غیر سرکاری کام میں جو نئے طریقوں سے ہمارے سیاسی، آرتھک اور سماجی مسئلوں کا حل ڈھونڈھتا ہو، صرف وہی ہمدردی دکھلا سکتے ہیں جو موجودہ نظام کو ناقابل سدھار مانتے ہوں اور جن پر یہ بات اچھی طرح ظاہر ہوگئی ہو کہ یہ سرکار آنے والے زمانہ کا کامیابی کے ساتھ سامنا نہیں کر سکتی اور اس کا ہٹایا جانا ہی نہایت ضروری چیز ہے. لیکن اس طرح کے یقین والوں میں بھی کئی خیال کے لوگ ہو سکتے ہیں. کچھ کا یہ خیال ہو سکتا ہے کہ آہستہ آہستہ بدلا جائے، کچھ سوچتے ہوں کہ جیسے بھی ہو جلدی سے جلدی اسے بدلا جائے اور کچھ کا یہ اصرار ہو سکتا ہے کہ تبدیلی تو کرنا ہے اور فوراً کرنا ہے مگر کچھ بنیادی اصول نہیں چھوڑنا ہیں. یہ ایک وجہ ہے کہ ہمارے پڑھے لکھے بھائی بہنوں کی توجہ بھودان کی طرف کم گئی ہے. لیکن اگر بھودان والوں کا یہ دعویٰ ہے کہ اس سے نیا سماج قائم ہوگا اور نیا انسان دنیا کے سامنے آئے گا تب آج نہیں تو کل، پڑھے لکھے لوگوں

हृदय परिवर्तन और भूदान

हमारे मुल्क की तारीख़ के विद्वानों के आगे यह एक दिलचस्प सवाल बना रहेगा—अंग्रेज़ों ने जो अपना राज यहां से हटाया तो "हृदय परिवर्तन" की वजह से या सोच समझकर फ़ायदे की निगाह से या देश काल की हालत से मजबूर होकर ? इसी तरह एक नया सवाल अब और पैदा होता जा रहा है कि भूदान आन्दोलन में ग़रीब और अमीर लोग जो ज़मीन दे रहे हैं वह "हृदय परिवर्तन" की वजह से या मजबूरी से या किसी और वजह से. हाल ही में हमारे देश के तपे हुए नेता और बुज़ुर्ग, आचार्य नरेन्द्र देव जी ने इस तरह का शक ज़ाहिर किया है. उनका कहना है : क्योंकि भूदान तहरीक का आधार "हृदय परिवर्तन" है इसलिये उसका दायरा बंधा हुआ है और वह कोई नया जीवन दर्शन (फ़लसफ़ए ज़िन्दगी) नहीं दे सकता. उनका यह भी मत है कि उसमें ज़मीन अमीरों के मुक़ाबिले ग़रीबों ने ज़्यादा दी है और अमीरों ने जो दी है सो मौक़ा महल की वजह से और कुछ नाख़ुशी के साथ दी है. भूदान यज्ञ के इस उसूली या तात्विक पहलू पर रोशनी डालने और चर्चा छेड़ने के लिये हम आचार्य नरेन्द्र देव के बहुत अहसानमन्द हैं. हमें यक़ीन है कि इस चर्चा से हमारे मुल्क के दिमाग़ी काम करने वालों या बुद्धि जीवियों के भी शक कुछ दूर हो जायेंगे और मुल्क के पढ़े लिखे और ऊंचे दर्जे के लोगों का सहयोग भूदान आन्दोलन को मिलेगा.

आज भूदान आन्दोलन को तीन साल से ऊपर हो चुके हैं, उसका पैग़ाम मुल्क के पांच लाख में से एक लाख गांव तक पहुंच चुका है, क़रीब तीन लाख लोग दान दे चुके हैं और 34 लाख एकड़ के क़रीब (यानी मुल्क की जोत की ज़मीन का एक फ़ीसदी) ज़मीन मिल चुकी है. कहने की ज़रूरत नहीं कि अगर इस आन्दोलन को आचार्य नरेन्द्र देव जैसे हिम्मती और मुल्क के तालीम-याफ़्ता दिमाग़दार लोगों की मदद मिल गई होती तो उसने कहीं ज़्यादा तरक़्क़ी की होती. उनका अलग रहना जहां एक दुख की बात है वहां भूदान वालों के लिये एक सोचने और समझने की भी बात है कि ऐसा क्यों हो रहा है ? इसलिये हम ज़रा तफ़सील के साथ इस सवाल में जाना चाहते हैं.

सब से पहले तो हम यह क़बूल करते हैं कि अब तक उसमें ऊंची तालीम पाए हुए या जिन्हें इन्टेलेक्चुअल (Intellectual) कहा जाता है ऐसे लोग बहुत कम

هردے پریورتن اور بھودان

ہمارے ملک کی تاریخ کے ودوانوں کے آگے یہ ایک دلچسپ سوال بنا رہے گا۔ انگریزوں نے جو اپنا راج یہاں سے ہٹایا تو " ہردے پریورتن " کی وجہ سے یا سوچ سمجھکر فائدہ کی نگاہ سے یا دیش کی حالت سے مجبور ہو کر ؟ اسی طرح ایک نیا سوال اب اور پیدا ہوتا جا رہا ہے کہ بھودان آندولن میں غریب اور امیر لوگ جو زمین دے رہے ہیں وہ " ہردے پریورتن " کی وجہ سے یا مجبوری سے یا کسی اور وجہ سے ۔ حال ہی میں ہمارے دیش کے تپے ہوئے نیتا اور بزرگ' آچاریہ نریندر دیو جی نے اس طرح کا شک ظاہر کیا ہے ۔ ان کا کہنا ہے ۔ کیونکہ بھودان تحریک کا آدھار " ہردے پریورتن " ہے اس لیئے اس کا دائرہ بندھا ہوا ہے اور وہ کوئی نیا جیون درشن (فلسفۂ زندگی) نہیں دے سکتا ۔ ان کا یہ بھی مت ہے کہ اس میں زمین امیروں کے مقابلہ غریبوں نے زیادہ دی ہے اور امیروں نے جو دی ہے سو موقع محل کی وجہ سے اور کچھ ناخوشی کے ساتھ دی ہے ۔ بھودان یگیہ کے اس اصولی یا تاتوک پہلو پر روشنی ڈالنے اور چرچا چھیڑنے کے لیئے ہم آچاریہ نریندر دیو کے بہت احسان مند ہیں ۔ ہمیں یقین ہے کہ اس چرچا سے ہمارے ملک کے دماغی کام کرنے والوں یا بدھی جیویوں کے بھی شک کچھ دور ہو جائینگے اور ملک کے پڑھے لکھے اور اونچے درجہ کے لوگوں کا سہیوگ بھودان آندولن کو ملیگا ۔

آج بھودان آندولن کو تین سال سے اوپر ہوچکے ہیں' اس کا پیغام ملک کے پانچ لاکھ میں سے ایک لاکھ گاؤں تک پہنچ چکا ہے' قریب تین لاکھ لوگ دان دے چکے ہیں اور 34 لاکھ ایکڑ کے قریب (یعنی ملک کی جوت کی زمین کا ایک فیصدی) زمین مل چکی ہے ۔ کہنے کی ضرورت نہیں کہ اگر اس آندولن کو آچاریہ نریندر دیو جیسے ہمتی اور ملک کے تعلیم یافتہ دماغ دار لوگوں کی مدد مل گئی ہوتی تو اس نے کہیں زیادہ ترقی کی ہوتی ۔ ان کا الگ رہنا جہاں ایک دکھ کی بات ہے وہاں بھودان والوں کے لیئے ایک سوچنے اور سمجھنے کی بھی بات ہے کہ ایسا کیوں ہو رہا ہے؟ اس لیئے ہم ذرا تفصیل کے ساتھ اس سوال میں جانا چاہتے ہیں ۔

سب سے پہلے تو ہم یہ قبول کرتے ہیں کہ اب تک اس میں اونچی تعلیم پائے ہوئے یا جنہیں انٹیلیکچول (Intellectual) کہا جاتا ہے ایسے لوگ بہت کم

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 17 अगस्त सन '54 नम्बर 2

نمبر 2 اگست سن '54 جلد 17

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

अब सुख के ज़माने आते हैं

(वाक़िफ़ रुदौलवी)

हम जीवन जोत जलाते हैं
वह अन्धयारा फैलाते हैं

हम अम्न के नारे लगाते हैं
वह ऐटम बम बरसाते हैं !

हम रूखी सूखी खाते हैं
वह मक्खन तोस उड़ाते हैं

हम ग़म के मारे रोते हैं
वह गीत ख़ुशी के गाते हैं

हम दिन भर मेहनत करते हैं
वह बे-मेहनत फल खाते हैं

वह कहते हैं बस काम करो
पर काम कहां हम पाते हैं

जो होना है सो हो जाये
हम आगे क़दम बढ़ाते हैं

हम उन को जगा कर छोड़ेंगे
दिन ग़फ़लत में जो गंवाते हैं

तुम आंखें मलकर देख तो लो
हर शय पे उजाले छाते हैं

आकाश पे बादल लहरा कर
धरती पे गुहर बरसाते हैं

गुल खिलते हैं फल लगते हैं
पतझड़ के मौसम जाते हैं

दिन दुख के 'वाक़िफ़' बीत गये
अब सुख के ज़माने आते हैं

اب سکھ کے زمانے آتے ھیں

(واقف ردولوی)

ھم جیون جوت جلاتے ھیں
وہ اندھیارا پھیلاتے ھیں

ھم امن کے نعرے لگاتے ھیں
وہ ایٹم بم برساتے ھیں!

ھم روکھی سوکھی کھاتے ھیں
وہ مکھن توس اڑاتے ھیں

ھم غم کے مارے روتے ھیں
وہ گیت خوشی کے گاتے ھیں

ھم دن بھر محنت کرتے ھیں
وہ بے محنت پھل کھاتے ھیں

وہ کہتے ھیں بس کام کرو
پر کام کہاں ھم پاتے ھیں

جو ھونا ھے سو ھو جائے
ھم آگے قدم بڑھاتے ھیں

ھم اُن کو جگا کر چھوڑیں گے
دن غفلت میں جو گنواتے ھیں

تم آنکھیں مل کر دیکھ تو لو
ھر شے پہ اُجالے چھاتے ھیں

آکاش پہ بادل لہرا کر
دھرتی پہ گہر برساتے ھیں

گل کھلتے ھیں پھل لگتے ھیں
پت جھڑ کے موسم جاتے ھیں

دن دکھ کے 'واقف' بیت گئے
اب سکھ کے زمانے آتے ھیں

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

अगस्त 1954

क्या किस से — सफ़ा

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

اگست

کیا کس سے — صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے۔

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

नया हिन्द — نیا ہند

एडीटर —ताराचंद, भगवानदीन [illegible], विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر - [illegible] سندرلال

नायब एडीटर - सुरेश रामभाई, [illegible]   نائب ایڈیٹر [illegible]

इस नम्बर के खास लेख

- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]

हमारा [illegible] :—

- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]

اس نمبر کے خاص لیکھ

- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]

...ी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

अगस्त 1954 اگست

क़ीमत दस आना   قیمت دس آنہ

गंगा से गोमती तक

……' मुजीब की कहानियों की विशेषता उनकी शैली भी है. मामूली पढ़ा लिखा आदमी इन्हें बिना किसी की मदद के समझ सकता है सरलता के साथ भाषा में व्यंग और ज़िन्दादिली इस तरह है जिस तरह ऊँचे पाए के लेखकों में मिलती है.

इन कहानियों में हास्य भी है, करुणा भी है. कहीं *हंसते हंसते पेट में बल पड़ेंगे, तो कहीं पढ़ते-पढ़ते आप दुःख से स्तंभित रह जाएंगे. मुजीब की कहानियाँ हमारी* कोमल भावनाएँ जगाती हैं, हमें अच्छा इनसान बनाती हैं."

—डाक्टर राम बिलास शर्मा

…….. 'वह (मुजीब) मार्ग साफ़ करना चाहते हैं, समाज को सम्भालना चाहते हैं. इसलिये वह कला को कामकाजी चाहते हैं और ऐसी नुकीली कि धार करती चली जाए…यह कहानियाँ जगह जगह हमारा ध्यान समाज में होने वाले अन्यायों और अत्याचारों की तरफ़ खींचती हैं… संग्रह की कहानियों में एक सीधी अकृत्रिमता है, जो अच्छी लगती है."

—जैनेन्द्र कुमार

लगभग हिन्दी के सभी बड़े लेखकों ने "गंगा से गोमती" को सराहा है.

"गंगा से गोमती तक" में १८० सफ़े हैं, तिरंगा सुन्दर कवर, बढ़िया जिल्द, दाम केवल दो रुपया. जल्दी आर्डर भेजिये.

— मैनेजर नया हिन्द

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گنگا سے گومتی تک

......"مجیب کی کہانیوں کی وشیشتا انکی شیلی ہے . معمولی پڑھا لکھا آدمی انھیں بنا کسی کی کے سمجھ سکتا ہے. سرلتا کے ساتھ بھاشا میں ویںگ زندہ‌دلی اس طرح ہے جس طرح اونچے پائے کے کوں میں ملتی ہے .

ان کہانیوں میں ہاسیہ بھی ہے' کرونا بھی ہے. کہیں سنتے ہنستے پیٹ میں بل پڑینگے' تو کہیں پڑھتے ھتے آپ دکھ سے استمبھت رہ جائینگے . مجیب کی انیاں ہماری کومل بھاونائیں جگاتی ہیں' ہمیں اچھا سان بناتی ہیں."

—ڈاکٹر رام بلاس شرما

... .." وہ (مجیب) مارگ صاف کرنا چاہتے ہیں' ماج کو سنبھالنا چاہتے ہیں. اس‌لئے وہ کلا کو کام‌کاجی اہتے ہیں. اور ایسی نوکیلی کہ دھار کرتی چلی جائے ..یہ کہانیاں جگہ جگہ ہمارا دھیان سماج میں ہونے والے نیایوں اور اتیاچاروں کی طرف کھینچتی ہیں...سنگرہ کہانیوں میں ایک سیدھی اکرترمتا ہے' جو اچھی لگتی ہے."

—جینندر کمار

لگ بھگ ہندی کے سبھی بڑے لیکھکوں نے "گنگا سے گومتی" کو سراہا ہے .

"گنگا سے گومتی تک" میں 180 صفحے ہیں' ترنگا سندر کور' بڑھیا جلد' دام کیول دو روپیہ . جلدی آرڈر بھیجئے .

—مینیجر نیا ہند

ملنے کا پتہ—

مینیجر ' نیا ہند ' 145' مٹھی گنج الہ‌آباد .

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये —

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد:

(1) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی جی کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے ۔

سندر لال
سکریٹری' ھندستانی کلچر سوسائٹی'
145' مٹھی گنج' الہ آباد ۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ھے ۔ "نیا ھند" کے جو گاھک ممبر بننا چاھیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ھی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ھوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ھوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं

نوٹ:- یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1 शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	„	8	0	0	„	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	„	2	8	0	„	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	„	3	0	0	„	5. سنسمرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بکھاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	„	3	0	0	„	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	„	2	4	0	„	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	„	2	8	0	„	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	„	1	4	0	„	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	„	1	6	0	„	21. سروودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	„	1	0	0	„	27. مارنے کی ہمت
28. सलोना सच	„	0	8	0	„	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	„	1	0	0	„	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ

مینیجر 'نیا ہند'

145 مٹھی گنج' الہ آباد

[illegible] जाती है जब [illegible] मिनिस्टरों के यह कहने पर कि यह प्रदेश इत्तफ़ाक़ से नहीं बल्कि तारीख़ की पैदाइश हैं.

सच है कि अक़ल हैरान है कि अगर कुर्ग अंग्रेजों ने अलग सूबा बना रक्खा था तो अब भी अलग प्रदेश क्यों रहे ? या अगर ग्वालियर और इन्दौर को मध्य भारत में मिलाया जा सकता है तो भोपाल को क्यों न मिलाया जाये ? या फिर रामपुर को उत्तर प्रदेश में मिलाने की वजह अलग से (C) प्रदेश क्यों न क़रार दिया जावे ? या कई रियासतें मिला कर जब विंध्य प्रदेश नया खड़ा किया गया तो उसे अजमेर वग़ैरा का दर्जा देने की बजाय सौराष्ट्र और राजस्थान की तरह (B) दर्जे में क्यों न रक्खा गया ? यह ठीक उसी तरह का बेतुका काम नज़र आता है जैसा अंग्रेज़ लोग मजबूरन या मसलहतन करते थे. लेकिन आज उनमें कोई वज़न नहीं मालूम होता.

मगर जैसा हमने ऊपर कहा (C) प्रदेशों के चीफ़ मिनिस्टरों को हम बधाई देते हैं जो उन्होंने इस ख़ूबसूरती के साथ अपनी वकालत की है. उनके ख़्याल की हम क़दर करते हैं. हम चाहते हैं कि नये सूबे या बड़े सूबे चाहने वाली जो जमाअतें हैं वह इस मेमोरेन्डम से सबक़ हासिल करें कि किस संजीदगी और ख़ुशमिज़ाजी के साथ कोई बात कही जाती है. इस काम में दिमाग़ के ठंडा रखने की जितनी ज़रूरत है उतनी और किसी चीज़ की नहीं. हमें यक़ीन है कि भाषावार कमीशन के सामने सभी मेमोरेन्डम (C) प्रदेश वालों की तरह से पेश हों तो उसका आधा बोझ हलका हो जाये और मुल्क की शान भी बढ़े. हम उम्मीद करते हैं कि वह कमीशन पूरे हिन्दुस्तान के नक़्शे को सामने रखते हुए (C) प्रदेशों के भविश्य के बारे में भी मुनासिब राय क़ायम करेगा.

9. 6. '54 —सुरेशराम भाई

[illegible] ملتی ہے جب چیف منسٹروں کے یہ کہنے پر کہ پردیش اتفاق سے نہیں بلکہ تاریخ کی پیدائش ہیں۔

سچ ہے کہ عقل حیران ہے کہ اگر کورگ انگریزوں نے الگ صوبہ بنا رکھا تھا تو اب بھی وہ الگ پردیش کیوں رہے ؟ یا اگر گوالیر اور اندور کو مدھیہ بھارت میں ملایا جا سکتا ہے تو بھوپال کو کیوں نہ ملایا جائے ؟ یا پھر رامپور کو اتر پردیش میں ملانے کی وجہ الگ سے (C) پردیش کیوں نہ قرار دیا جائے ؟ یا کئی ریاستیں ملا کر جب وندھیہ پردیش نیا کھڑا کیا گیا تو اسے اجمیر وغیرہ کا درجہ دینے کی بجائے سوراشٹر اور راجستھان کی طرح (B) درجہ میں کیوں نہ رکھا گیا ؟ یہ ٹھیک اسی طرح کا بے تکا کام نظر آتا ہے جیسا انگریز لوگ مجبوراً مصلحتاً کرتے تھے ۔ لیکن آج ان میں کوئی وزن نہیں معلوم ہوتا ۔

مگر جیسا ہم نے اوپر کہا (C) پردیشوں کے چیف منسٹروں کو ہم بدھائی دیتے ہیں جو انہوں نے اس خوبصورتی کے ساتھ اپنی وکالت کی ہے ۔ ان کے خیال کی ہم قدر کرتے ہیں ۔ ہم چاہتے ہیں کہ نئے صوبے یا بڑے صوبے چاہنے والی جو جماعتیں ہیں وہ اس میمورنڈم سے سبق حاصل کریں کہ کس سنجیدگی اور خوش مزاجی کے ساتھ کوئی بات کہی جاتی ہے ۔ اس کام میں دماغ کو ٹھنڈا رکھنے کی جتنی ضرورت ہے اتنی کسی اور چیز کی نہیں ۔ ہمیں یقین ہے کہ بھاشا وار کمیشن کے سامنے سبھی میمورنڈم (C) پردیش والوں کی طرح سے پیش ہوں تو اس کا آدھا بوجھ ہلکا ہو جائے اور ملک کی شان بھی بڑھے ۔ ہم امید کرتے ہیں کہ وہ کمیشن پورے ہندوستان کے نقشہ کو سامنے رکھتے ہوئے (C) پردیشوں کے بھوشیہ کے بارے میں بھی مناسب رائے قائم کریگا ۔

سریش رام بھائی 9. 6. '54

के मैदान में इन प्रदेशों ने दूसरे बड़े प्रदेशों के मुक़ाबिले अब तक कहीं ज्यादा तरक़्क़ी की है हालांकि हिन्द सरकार से फ़ायदे की मन्ज़ूरी वग़ैरा मिलने में अकसर देर भी लगी.

हम (C) प्रदेशों के चीफ़ मिनिस्टरों को दाद देते हैं. जिस ख़ूबी के साथ उन्होंने अपना मेमोरेन्डम तैयार किया उसके लिये हमारा दिली मुबारकबाद. लेकिन एक कसर बाक़ी रह गई. वह यह कि जब छै (C) प्रदेशों ने इस बहतरीन ढंग से काम किया और वहां की हकूमत ने जनता में जोश पैदा कर दिखलाया तो यह चीफ़ मिस्टर मांग करें कि कोई वजह नहीं है कि (A) और (B) प्रदेशों में छोटे छोटे हिस्से निकाल कर (C) की तादाद बढ़ा दी जाये ताकि सारा मुल्क ज्यादा जोश से आगे बढ़े! हम यह भी सिफ़ारिश ज़रूर करते मगर देखते क्या हैं कि देहली प्रदेश में आए दिन झगड़े और तू तू मैं मैं चल रही है. उधर अजमेर में कहीं संगीन हालत है और ऐसेम्बली क्या है दांव पेच की शतरंज बन गई है. फिर विन्ध्य प्रदेश में भी वैसा ही नज़्ज़ारा है. इसके अलावा वहां के गवर्नर साहब को एक नया शौक़ पैदा हुआ है—एक ठंडी राजधानी खड़ी करना. इस के लिये उन्होंने अमरकंटक का मुक़ाम पसंद किया है. कुछ दिन वह और उनके मिनिस्टर वहां जाकर रहे भी. हमें डर है कि जल्दी ही लाखों रुपये की स्कीम से वहां ईंटों के महल चुनना शुरू हो जायेंगे. कहने का मतलब यह है कि जो बीमारियां (A) और (B) प्रदेशों के हुक्कामों या एसम्बली वालों को हैं उसके शिकार (C) वाले भी बहुत ज्यादा हैं. शायद फ़ैशन में शुमार किये जाने की वजह से वहां ऐसा होता हो. मगर यह साफ़ है कि (C) प्रदेशों ने कोई ऐसा ठोस क़दम नहीं उठाया जिससे वहां की जनता को कोई कारगर फ़ायदा पहुंचा हो. हमें बड़े अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है कि (C) प्रदेश में शामिल होने का नतीजा यह हुआ कि रीवा, ओरछा, टीकमगढ़ और टेहरी गढ़वाल वग़ैरा में अब बनस्पति घी कसरत से पहुंचने लगा और क्या दूध, क्या घी, सभी अच्छी चीज़ों को नापैद कर रहा है. इसी तरह ज्यों (C) प्रदेशों में देहाती दस्तकारियां मिट रही हैं और बेकारी बढ़ रही है.

इसके अलावा इन प्रदेशों के मिनिस्टरों ने उस सादगी का नमूना भी नहीं पेश किया जो उनसे उम्मीद की जा सकती थी. न वहां के दूसरे सरकारी ख़र्चों में कोई ऐसी कमी दिखलाई पड़ती है जिसकी वजह से यह समझा जा सके कि किफ़ायत के लिहाज़ से छोटे प्रदेश रखना बेहतर होगा.

کے میدان میں اِن پردیشوں نے دوسرے بڑے پردیشوں کے مقابلے اب تک کہیں زیادہ ترقی کی ہے حالانکہ ہند سرکار سے فائدے کی منظوری وغیرہ ملنے میں اکثر دیر بھی لگی ۔

ہم (C) پردیشوں کے چیف منسٹروں کی داد دیتے ہیں ۔ جس خوبی کے ساتھ اُنہوں نے اپنا میمورنڈم تیار کیا اُس کے لئے ہمارا دلی مبارک باد ۔ لیکن ایک کسر باقی رہ گئی ۔ وہ یہ کہ جب چھ (C) پردیشوں نے اس بہترین ڈھنگ سے کام کیا اور وہاں کی حکومت نے جنتا میں جوش پیدا کر دکھایا تو یہ چیف منسٹر مانگ کریں کہ کوئی وجہ نہیں ہے کہ (A) اور (B) پردیشوں میں سے چھوٹے چھوٹے حصے نکال کر (C) کی تعداد بڑھا دی جائے تاکہ سارا ملک زیادہ جوش سے آگے بڑھے ! ہم یہ بھی سفارش ضرور کرتے مگر دیکھتے کیا ہیں کہ دہلی پردیش میں آئے دن جھگڑے اور تو تو میں میں چل رہی ہے ۔ ادھر اجمیر میں کہیں سنگین حالت ہے اور اسمبلی کیا ہے داؤ پیچ کی شطرنج بن گئی ہے ۔ پھر وندھیہ پردیش میں بھی ویسا ہی نظارہ ہے ۔ اس کے علاوہ وہاں کے گورنر صاحب کو ایک نیا شوق پیدا ہوا ہے—ایک ٹھنڈی راجدھانی کھڑی کرنا ۔ اس کے لئے انہوں نے امرکنٹک کا مقام پسند کیا ہے ۔ کچھ دن وہ اور ان کے منسٹر وہاں جا کر رہے بھی ۔ ہمیں ڈر ہے کہ جلدی ہی لاکھوں روپیہ کی اسکیم سے وہاں اینٹوں کے محل چننا شروع ہو جائینگے ۔ کہنے کا مطلب یہ ہے کہ جو بیماریاں (A) اور (B) پردیش کے حاکموں یا اسمبلی والوں کو ہیں اس کے شکار (C) والے بھی بہت زیادہ ہیں ۔ شاید فیشن میں شمار کئے جانے کی وجہ سے وہاں ایسا ہوتا ہو ۔ مگر یہ صاف ہے کہ (C) پردیشوں نے کوئی ایسا ٹھوس قدم نہیں اُٹھایا جس سے وہاں کی جنتا کو کوئی کارگر فائدہ پہونچا ہو ۔ ہمیں بڑے افسوس کے ساتھ کہنا پڑ رہا ہے کہ (C) پردیش میں شامل ہونے کا نتیجہ یہ ہوا کہ ریوا' اورچھا' ٹیکم گڑھ اور ٹیہری گڑھوال، وغیرہ میں اب ونسپتی گھی کثرت سے پہونچنے لگا اور کیا دودھ' کیا گھی' سبھی اچھی چیزوں کو ناپید کر رہا ہے ۔ اس طرح جیوں (C) پردیشوں میں دیہاتی دستکاریاں مٹ رہی ہیں اور بیکاری بڑھ رہی ہے ۔

اس کے علاوہ اِن پردیشوں کے منسٹروں نے اس سادگی کا نمونہ بھی نہیں پیش کیا جو اُن سے امید کی جا سکتی تھی ۔ نہ وہاں کے دوسرے سرکاری خرچوں میں کوئی ایسی کمی دکھائی پڑتی ہے جس کی وجہ سے یہ سمجھا جا سکے کہ کفایت کے لحاظ سے چھوٹے پردیش رکھنا بہتر ہوگا ۔

मई महीने की 11-12 तारीख को इन छोटे प्रदेशों के चीफ मिनिस्टरों की कान्फ्रेंस शिमले से 12 मील दूर 'सामो' नाम के एक ठंडे मुक़ाम पर हुई जो हिमांचल प्रदेश में पड़ता है. उस कान्फ्रेंस के सदर अजमेर के चीफ मिनिस्टर श्री हरी भाऊ उपाध्याय जी थे. उस कान्फ्रेंस ने पांच सफ़े का लम्बा एक बयान प्रेस को दिया जो एक मेमोरेन्डम की शकल में उस कमीशन के सामने पेश किया जायेगा जिसके सिपुर्द हिन्दुस्तान के नये नक़्शे की तैयारी का काम किया गया है.

इस बयान को देखने पर पता चलता है कि इन प्रदेशों के चीफ मिनिस्टरों पर नेस्त नाबूद होने का हौवा छाया हुआ है और उन्हें काफ़ी डर इस बात का है कि अगर मुल्क के नक़्शे में कुछ भी तबदीली की गई है तो पहले हम ही शहीद किये जाने वाले हैं. उनका कहना है कि मुल्क की बहतरी के लिहाज़ से यह मुनासिब है कि मौजूदा सियासी निज़ाम को नहीं बदला जावे. पर अगर कुछ थोड़ी बहुत रद्दोबदल ज़रूरी समझी जावे भी तो कम से कम (C) दर्जे के प्रदेशों को बदस्तूर बने रहने दिया जाय. इसकी उन्होंने कई वजह गिनाई हैं :—

(1) उनका जन्म किसी इत्तफ़ाक़ से नहीं बल्कि तारीख़ी सिलसिले से है.

(2) यहां के लोग चाहते हैं कि यह बनी रहें. इसलिये उनकी राय को ठुकराना लोकशाही के ख़िलाफ़ होगा और विधान के उसूलों को नज़रअन्दाज़ करना होगा.

(3) यह ग़लत ख़्याल है कि यह प्रदेश मरकज़ी सरकार पर बोझ हैं. यह ऐतराज़ असलियत से दूर है और सिर्फ़ वही लोग कर सकते हैं जिन्हें हालत की सच्ची जानकारी नहीं है.

(4) हर प्रदेश की आमदनी व ख़र्च की सूरत बहुत अच्छी है और अगर केन्द्र से कुछ मदद आती है तो केवल उन योजनाओं वग़ैरा के लिये जो केन्द्र की सरकार तजवीज़ करती है. ऐसी मदद तो (A) और (B) प्रदेशों को भी दी जा रही है.

(5) केन्द्र में आबकारी और आमदनी पर टैक्स से जो रुपया पहुंचता है उसमें वह (A) और (B) प्रदेशों से तो शिरकत करता है मगर (C) से नहीं. इस चीज़ में हमारा भी हक़ है जिसको कुछ लोग महसूस नहीं करते.

(6) इन प्रदेशों में लोकशाही या प्रजातन्त्र का क़ानून चल रहा है. इसकी वजह से लोगों में एक जोश पैदा हुआ है. इसका नतीजा है कि पंचसाला योजना में जिस हद तक यहां वाले शिरकत कर सकते हैं उस हद तक दूसरे प्रदेश वाले नहीं कर सकते. यही कारन है कि विकास

مئی مہینہ کی 11-12 تاریخ کو ان چھوٹے پردیشوں کے چیف منسٹروں کی کانفرنس شملہ سے 12 میل دور 'سامو' نام کے ایک ٹھنڈے مقام پر ہوئی جو ہماچل پردیش میں پڑتا ہے . اس کانفرنس کے صدر اجمیر کے چیف منسٹر شری ہری بھاؤ اپادھیایہ جی تھے . اس کانفرنس نے پانچ صفحے کا لمبا ایک بیان پریس کو دیا جو ایک میمورنڈم کی شکل میں اس کمیشن کے سامنے پیش کیا جائیگا جس کے سپرد ہندوستان کے نئے نقشہ کی تیاری کا کام کیا گیا ہے .

اس بیان کو دیکھنے پر پتہ چلتا ہے کہ ان پردیشوں کے چیف منسٹروں پر نیست‌نابود ہونے کا ہوا چھایا ہوا ہے اور انہیں کافی ڈر اس بات کا ہے کہ اگر ملک کے نقشہ میں کچھ بھی تبدیلی کی گئی تو پہلے ہم ہی شہید کئے جانے والے ہیں . ان کا کہنا ہے کہ ملک کی بہتری کے لحاظ سے یہ مناسب ہے کہ موجودہ سیاسی نظام کو نہیں بدلا جائے . پر اگر کچھ تھوڑی بہت رد و بدل ضروری سمجھی جائے بھی تو کم سے کم (C) درجہ کے پردیشوں کو بدستور بنے رہنے دیا جائے . اسکی انہوں نے کئی وجہ گنائی ہیں :—

(1 . ان کا جنم کسی اتفاق سے نہیں بلکہ تاریخی سلسلہ سے ہے .

(2). یہاں کے لوگ چاہتے ہیں کہ یہ بنی رہیں. اس لئے انکی رائے کو ٹھکرانا لوک‌شاہی کے خلاف ہوگا اور ودھان کے اصولوں کو نظر انداز کرنا ہوگا .

(3) یہ غلط خیال ہے کہ یہ پردیش مرکزی سرکار پر بوجھ ہیں . یہ اعتراض اصلیت سے دور ہے اور صرف وہی لوگ کرسکتے ہیں جنہیں حالت کی سچی جانکاری نہیں ہے .

(4) ہر پردیش کی آمدنی و خرچ کی صورت بہت اچھی ہے اور اگر کیندر سے کچھ مدد آتی ہے تو کیول ان یوجناؤں وغیرہ کے لئے جو کیندر کی سرکار تجویز کرتی ہے . ایسی مدد تو (A) اور (B) پردیشوں کو بھی دی جارہی ہے .

(5) کیندر میں آبکاری اور آمدنی پر ٹیکس سے جو روپیہ پہونچتا ہے اس میں وہ (A) اور (B) پردیشوں سے تو شرکت کرتا ہے مگر (C) سے نہیں . اس چیز میں ہمارا بھی حق ہے جس کو کچھ لوگ محسوس نہیں کرتے .

(6) ان پردیشوں میں لوک‌شاہی یا پرجاتنتر کا قانون چل رہا ہے. اسکی وجہ سے لوگوں میں ایک جوش پیدا ہوا ہے . اسکا نتیجہ ہے کہ پنچ سالہ یوجنا میں جس حد تک یہاں والے شرکت کرسکتے ہیں اس حد تک دوسرے پردیش والے نہیں کرسکتے . یہی کارن ہے کہ وکاس

जो प्रोजैक्ट चला रही है उनमें है. महज़ खेती की पैदावार बढ़ाने से कोई फ़ायदा नहीं होने वाला है जबतक गांव की ज़रूरत की दीगर चीज़ें भी गांव में नहीं तैयार होतीं. यानी खेती और ग्राम उद्योग एक ही चीज़ के दो पहलू हैं. या यों कहें कि गांव की एक आंख खेती है तो दूसरी ग्राम उद्योग है. उनमें से एक के भी बिगड़ने पर सारी शकल बिगड़ जाती है.

हम चाहते हैं कि क्या प्लानिंग कमीशन वाले और क्या मरकज़ी, क्या सूबे की सब सरकारें सभी इस पहलू पर ज़रा गौर करें और सोचें कि नीलोखेड़ी का सारा काम एक फुलझड़ी जैसा हो कर क्यों रह गया ? हमारा भरोसा है कि अगर नीलोखेड़ी से सरकार ने ठीक सबक़ सही तरीक़े पर सीख लिया और उसके मुताबिक़ सारी स्कीमों और योजनाओं में तबदीली कर दी तो अब तक की गई मेहनत फ़िज़ूल न कही जायेगी, क्योंकि सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आये तो भूला नहीं कहा जाता.

9. 6. '54 —सुरेशराम भाई

جو پروجیکٹ چلا رہی ہے ان میں ہے. محض کھیتی کی پیداوار بڑھانے سے کوئی فائدہ نہیں ہونے والا ہے جب تک گاؤں کی ضرورت کی دیگر چیزیں بھی گاؤں میں نہیں تیار ہوتیں. یعنی کھیتی اور گرام ادیوگ ایک ہی چیز کے دو پہلو ہیں. یا یوں کہیں کہ گاؤں کی ایک آنکھ کھیتی ہے تو دوسری گرام ادیوگ ہے. ان میں سے ایک کے بھی بگڑنے پر ساری شکل بگڑ جاتی ہے.

ہم چاہتے ہیں کہ کیا پلاننگ کمیشن والے اور کیا مرکزی، کیا صوبے کی سب سرکاریں سبھی اس پہلو پر ذرا غور کریں اور سوچیں کہ نیلوکھیڑی کا سارا کام ایک پھل جھڑی جیسا ہو کر کیوں رہ گیا ؟ ہمارا بھروسہ ہے کہ اگر نیلوکھیڑی سے سرکار نے ٹھیک سبق صحیح طریقہ پر سیکھ لیا اور اس کے مطابق ساری اسکیموں اور یوجناؤں میں تبدیلی کر دی تو اب تک کی گئی محنت فضول نہ کہی جائے گی، کیونکہ صبح کا بھولا اگر شام کو گھر لوٹ آئے تو بھولا نہیں کہا جاتا.

9. 6. '54 —سریش رام بھائی

सी-प्रदेशों का भविष्य

भारत के विधान में तीन तरह की स्टेट या प्रदेश मन्ज़ूर किये गये हैं: (A), (B) और (C). दर्जा (A) में ज़्यादातर वह बड़े प्रदेश हैं जो अंग्रेज़ों के ज़माने में गवर्नरों के सूबे कहलाते थे जैसे यूपी, बम्बई, मद्रास वग़ैरा. दर्जा (B) में वह इलाक़े हैं जो अंग्रेज़ों के ज़माने में छोटी बड़ी 600 से ऊपर रियासतें थीं और जिन्हें सरदार पटेल ने मिला मिला कर एक बड़ी शकल दी थी, जैसे सौराष्ट्र, मध्य भारत, त्रिकोची वग़ैरा. दर्जा (C) में वह इलाक़े हैं जो पहले चीफ़ कमिश्नर के सूबे कहे जाते थे या रियासतों की शकल में थे. दर्जा (C) में छै प्रदेश हैं: देहली, अजमेर, कुर्ग, भोपाल, हिमाचल और विंध्य प्रदेश.

जब से यह (C) प्रदेश बने तब से ही यह सवाल अकसर लोगों के सामने पैदा होता है कि आख़िर उनकी ज़रूरत क्या है ? क्या अजमेर को राजस्थान में या भोपाल को मध्य भारत में नहीं शामिल किया जा सकता ? फिर यह भी सुनने में आया कि जब पुराने रजवाड़ों को मिलाया जा रहा था उस वक़्त भी (C) रियासतों को अलग न रखने का सोचा जा रहा था मगर कुछ आला शख़्सियतों की निजी पसंदगी और नापसंदगी भी उनके बनने का एक बाइस बन गई. बहरहाल आज, जैसा हमने ऊपर बयान किया, (C) दरजे में छै प्रदेश हैं.

سی-پردیشوں کا بھوشیہ

بھارت کے ودھان میں تین طرح کی اسٹیٹ یا پردیش منظور کیئے گئے ہیں: (A)، (B) اور (C). درجہ (A) میں زیادہ تر وہ بڑے پردیش ہیں جو انگریزوں کے زمانہ میں گورنروں کے صوبے کہلاتے تھے جیسے یوپی، بمبئی، مدراس وغیرہ. درجہ (B) میں وہ علاقے ہیں جو انگریزوں کے زمانے میں چھوٹی بڑی 600 سے اوپر ریاستیں تھیں اور جنہیں سردار پٹیل نے ملا ملاکر بڑی شکل دی تھی، جیسے سوراشٹر، مدھیہ بھارت، ترو کوچی وغیرہ. درجہ (C) میں وہ علاقے ہیں جو پہلے چیف کمشنر کے صوبے کہے جاتے تھے یا ریاستوں کی شکل میں تھے. درجہ (C) میں چھ پردیش ہیں: دہلی، اجمیر، کرگ، بھوپال، ہماچل اور وندھیہ پردیش.

جب سے یہ (C) پردیش بنے تب سے ہی یہ سوال اکثر لوگوں کے سامنے پیدا ہوتا ہے کہ آخر انکی ضرورت کیا ہے؟ کیا اجمیر کو راجستھان میں یا بھوپال کو مدھیہ بھارت میں نہیں شامل کیا جاسکتا ؟ پھر یہ بھی سننے میں آیا کہ جب پرانے رجواڑوں کو ملایا جا رہا تھا اس وقت بھی (C) ریاستوں کو الگ نہ رکھنے کا سوچا جا رہا تھا مگر کچھ اعلیٰ شخصیتوں کی نجی پسندگی اور ناپسندگی بھی ان کے بننے کا ایک باعث بن گئی. بہرحال جیسا ہم نے اوپر بیان کیا، (C) درجہ میں چھ پردیش ہیں.

[illegible] किया. हम मानते हैं कि इस तरह की बस्तियां बसाने का उन्हें तजुर्बा नहीं था और यह अपने ढंग की पहली कोशिश थी. लिहाज़ा कुछ न कुछ कमी रह जाना तो क़ुदरती बात थी. लेकिन हमारा ख़्याल है कि चाहे कितनी भी ख़ूबी व होशियारी से नीलोखेड़ी का काम क्यों न किया गया होता नतीजा यही या इससे मिलता जुलता होने वाला था. वजह यह है कि गांव या किसी बस्ती की तामीर का जो ढांचा हमारी हुकूमत या प्लानिंग कमीशन के पास है उस ढांचे में इस मुल्क के गांव या बस्तियों को नहीं ढाला जा सकता. हमारा अपना ख़्याल है कि नीलोखेड़ी की नाकामयाबी की बुनियादी वजह सिर्फ़ एक है. वह यह कि उस बस्ती को खाने, कपड़े और दूसरी बुनियादी ज़रूरतों में अपने पांव पर खड़े करने की कोशिश ही नहीं की गई. कपड़ा और ज़रूरी सामान बाहर से ला ला कर तनख़्वाह या पैसे के ज़ोर पर गांव नहीं बसाये जासकते.

ज़रा सोचने की बात है कि आज हमारे गांव क्यों तबाह हैं. अनाज तो वहां होता है. मगर अनाज के अलावा बाक़ी सभी सामान जैसे कपड़ा, जूता, बर्तन, पान, बीड़ी, तम्बाकू, तेल वग़ैरा सभी बाहर से आते हैं. इसका मतलब है कि अनाज तीन सेर की जगह तीन छटांक का भी बिकने लग जाये मगर किसान के पास पैसा रह ही नहीं पायेगा. आज जहां हमारे देहाती भाई बर्बाद हैं शादी ब्याह और गांजा भांग शराब के नशों से, वहां बाज़ार साहूकार, और सरकार मिलकर उनका वजूद मिटा रहे हैं. क़सूर न सरकार का है न साहूकार का, न बाज़ार, वाले व्यापारियों का, बल्कि उस निज़ाम का जो हमको अंग्रेज़ों से विरासत में मिला है. जो ढांचा अंग्रेज़ों ने अपने मतलब के लिये क़ायम किया था वह बदस्तूर चलाया जा रहा है जिसकी वजह से देहातों की हालत दिन दूनी रात चौगुनी ख़राब हो रही है. जब तक देहातों की दौलत बाहर जाती है तब तक देहातों का भला नहीं हो सकता. दूसरे लफ़्ज़ों में देहातों में होने वाला कच्चा माल वहीं काम में आना चाहिये और वहीं उसका पक्का माल बने और वहीं वह ख़र्च हो और ख़र्च से जो बचे वह शहरों में जाये. अंधे बहरे का मेल हमारे देहातों में नहीं ठहर सकता. आंखें एक की और ज़बान कान दूसरे की रखने से काम नहीं चलेगा. जहां का अनाज वहीं का कपड़ा, तेल वग़ैरा हो. इन्सानी जिस्म की तरह गांव की आर्थिक [illegible] भी एक मुकम्मल चीज़ है जिसमें जोड़ की गुंजाइश नहीं है.

नीलोखेड़ी को इस मुकम्मल शक्ल में नहीं बसा[illegible] [illegible] की ज़रूरत थी. [illegible] हमारी सरकार

[illegible] یا انہوں نے اس سے کیا سبق حاصل کیا. ہم مانتے ہیں کہ اس طرح کی بستیاں بسانے کا انہیں تجربہ نہیں تھا اور یہ اپنے ڈھنگ کی پہلی کوشش تھی. لہٰذا کچھ نہ کچھ کمی رہ جانا تو قدرتی بات تھی. لیکن ہمارا خیال ہے کہ چاہے کتنی بھی خوبی و ہوشیاری سے نیلوکھیڑی کا کام کیوں نہ کیا گیا ہوتا نتیجہ یہی یا اس سے ملتا جلتا ہونے والا تھا. وجہ یہ ہے کہ گاؤں یا کسی بستی کی تعمیر کا جو ڈھانچہ ہماری حکومت یا پلاننگ کمیشن کے پاس ہے اس ڈھانچے میں اس ملک کے گاؤں یا بستیوں کو نہیں ڈھالا جا سکتا. ہمارا اپنا خیال ہے کہ نیلوکھیڑی کی ناکامیابی کی بنیادی وجہ صرف ایک ہے. وہ یہ کہ اس بستی کو کھانے، کپڑے اور دوسری بنیادی ضرورتوں میں اپنے پاؤں پر کھڑے کرنے کی کوشش ہی نہیں کی گئی. کپڑا اور ضروری سامان باہر سے لا لا کر تنخواہ یا پیسے کے زور پر گاؤں نہیں بسائے جا سکتے.

ذرا سوچنے کی بات ہے کہ آج ہمارے گاؤں کیوں تباہ ہیں. اناج تو وہاں ہوتا ہے. مگر اناج کے علاوہ باقی سبھی سامان جیسے کپڑا، جوتا، برتن، پان، بیڑی، تمباکو، تیل وغیرہ سبھی باہر سے آتے ہیں. اس کا مطلب ہے کہ اناج تین سیر کی جگہ تین چھٹانک کا بھی بکنے لگ جائے مگر کسان کے پاس پیسہ رہ ہی نہیں پائے گا. آج جہاں ہمارے دیہاتی بھائی برباد ہو رہے ہیں شادی بیاہ اور گانجا بھانگ شراب کے نشوں سے، وہاں بازار، ساہوکار مل کر ان کا وجود مٹا رہے ہیں. قصور نہ سرکار کا ہے نہ ساہوکار کا، نہ بازار والے بیوپاریوں کا، بلکہ اس نظام کا جو ہم کو انگریزوں سے وراثت میں ملا ہے. جو ڈھانچہ انگریزوں نے اپنے مطلب کے لیے قائم کیا تھا وہ بدستور چلایا جا رہا ہے جس کی وجہ سے دیہاتوں کی حالت دن دونی رات چوگنی خراب ہو رہی ہے. جب تک دیہاتوں کی دولت باہر جاتی ہے تب تک دیہاتوں کا بھلا نہیں ہو سکتا. دوسرے لفظوں میں دیہاتوں میں ہونے والا کچا مال وہیں کام میں آنا چاہیے اور وہیں اس کا پکا مال بنے اور وہیں وہ خرچ ہو اور خرچ سے جو بچے وہ شہروں میں جائے. اندھے بہرے کا میل ہمارے دیہاتوں میں نہیں ٹھہر سکتا. آنکھیں ایک کی اور زبان کان دوسرے کی رکھنے سے کام نہیں چلے گا. جہاں کا اناج وہیں کا کپڑا، تیل وغیرہ ہو. انسانی جسم کی طرح گاؤں کی آرتھک بناوٹ بھی ایک مکمل چیز ہے جس میں جوڑ کی گنجائش نہیں ہے.

نیلوکھیڑی کو اس مکمل شکل میں نہیں بسایا گیا جس کی ضرورت تھی. یہی کمی ہماری سرکار

से घट कर 38 की बाक़ी हो गई. वहां के कारख़ाने मानो एक दम बरबाद हो गये.

यह नतीजा है 1948 से लेकर 1953 तक की गई सरकारी कोशिशों का. छै साल की गाढ़ी कमाई ! नीलोखेड़ी बिना गये हम अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि वहां के लोगों की क्या दुर्दशा होगी और वह क्या कहते होंगे. सरकारी और अख़बारी हलक़ों का बयान यह है कि पंजाब सरकार ने जो अब वहां का काम हाथ में लिया है तो पहली चीज़ वह यह करने जा रही है कि पहले जो मिली जुली या (Collective) मिलकियत पर ज़ोर दिया जाता था उसकी बजाय अब निजी मिलकियत पर ज़ोर दिया जायेगा. उनका कहना यह है कि वहां के इर्द गिर्द जो आर्थिक हालत है और वहां पर बसने वाले ज़्यादातर लोगों का जो "बहुत ज़्यादा निजी पसन्द की तबियत" है उसकी वजह से यह तबदीली करना ज़रूरी है. वहां पर जो इन्जीनियरिंग का कारख़ाना और प्रेस वग़ैरा चलते हैं उन्हें पंजाब सरकार ने ले लिया है. ज़ाहिर बात है कि सरकारी काम की बदौलत और दूसरे सरकारी महकमों की मांग की वजह से नीलोखेड़ी के यह कारख़ाने दोबारा चलने लग जायेंगे. मगर इससे कौन इन्कार करेगा कि नीलोखेड़ी बसाने का न यह मक़सद था और न हो सकता है.

जैसा हमने ऊपर कहा हम नीलोखेड़ी देखने नहीं जा सके. लेकिन वहां से आने वाली रिपोर्टों के भरोसे पर इतना समझ में आ जाता है कि सरकार की मनशा यह थी कि नीलोखेड़ी एक अच्छा ख़ासा शहर बन जाये जहां तरह तरह के कारख़ाने और मौजूदा तर्ज़ के कारख़ाने चलते हों और सभी लोग रोज़ी से लगे रहें. हम नहीं कह सकते कि वहां जो कोआप्रेटिव चालू किये गये वह कितनी हद तक सच्चे कोआप्रेटिव थे और कितनी हद तक उनमें सरकारी लोगों या उस बस्ती के ही मालदार और असरदार लोगों का ज़्यादा हाथ था. मगर जब वहां के कारख़ाने ख़त्म हो गये तो उनसे इतना साफ़ पता चलता है कि उनमें जो चीज़ें तैयार होती थीं वह ऐसी नहीं थीं जो वहां के लोगों के लिये बहुत ज़रूरी हों और न ऐसी थीं जो देहली या दूसरे बड़े बाज़ारों में विदेश से आने वाले या बड़ी बड़ी मिलों में बने सामान का मुक़ाबिला कर सकें. उनकी खपत न नीलोखेड़ी में हुई और न बाहर बाज़ार में. लिहाज़ा वह बैठ गईं. इस वजह से नीलोखेड़ी का सारा काम ठंडा पड़ गया और बेरोज़गारी का हो जाना ताज्जुब की बात नहीं है.

हमें नहीं मालूम कि नीलोखेड़ी की नाकामयाबी पर शायद कमीशन वाले या केन्द्री सरकार के रहनुमा लोग

سے گھٹ کر 38 کی باقی ہوگئی . وہاں کے کارخانے مانو ایکدم برباد ہوگئے .

یہ نتیجہ ہے 1948 سے لے کر 1953 تک کی گئی سرکاری کوششوں کا . چھ سال کی گاڑھی کمائی! نیلوکھیڑی بنا گئے ہم اندازہ لگا سکتے ہیں کہ وہاں کے لوگوں کی کیا دردشا ہوگی اور وہ کیا کہتے ہونگے . سرکاری اور اخباری حلقوں کا بیان یہ ہے کہ پنجاب سرکار نے جو اب وہاں کا کام ہاتھ میں لیا ہے تو پہلی چیز وہ یہ کرنے جا رہی ہے کہ پہلے جو ملی جلی یا (Collective) ملکیت پر زور دیا جاتا تھا اس کی بجائے اب نجی ملکیت پر زور دیا جائے گا . ان کا کہنا یہ ہے کہ وہاں کے ارد گرد جو آرتھک حالت ہے اور وہاں پر بسنے والے زیادہ تر لوگوں کا جو "بہت زیادہ نجی پسند کی طبیعت" ہے اسکی وجہ سے یہ تبدیلی کرنا ضروری ہے . وہاں پر جو انجینیرنگ کا کارخانہ اور پریس وغیرہ چلتے ہیں انہیں پنجاب سرکار نے لے لیا ہے . ظاہر بات ہے کہ سرکاری کام کی بدولت اور دوسرے سرکاری محکموں کی مانگ کی وجہ سے نیلوکھیڑی کے یہ کارخانے دوبارہ چلنے لگ جائینگے مگر اس سے کون انکار کریگا کہ نیلوکھیڑی بسانے کا نہ یہ مقصد تھا اور نہ ہوسکتا ہے .

جیسا ہم نے اوپر کہا ہم نیلوکھیڑی دیکھنے نہیں جا سکے . لیکن وہاں سے آنے والی رپورٹوں کے بھروسہ پر اتنا سمجھ میں آ جاتا ہے کہ سرکار کی منشا یہ تھی کہ نیلوکھیڑی ایک اچھا خاصہ شہر بن جائے جہاں طرح طرح کے کارخانے اور موجودہ طرز کے کارخانے چلتے ہوں اور سبھی لوگ روزی سے لگے رہیں . ہم نہیں کہہ سکتے کہ وہاں جو کوآپریٹو چالو کئے گئے وہ کتنی حد تک سچے کوآپریٹو تھے اور کتنی حد تک ان میں سرکاری لوگوں یا اس بستی کے ہی مالدار اور اثر دار لوگوں کا زیادہ ہاتھ تھا . مگر جب وہاں کے کارخانے ختم ہوگئے تو ان سے اتنا صاف پتہ چلتا ہے کہ ان میں جو چیزیں تیار ہوتی تھیں وہ ایسی نہیں تھیں جو وہاں کے لوگوں کے لئے بہت ضروری ہوں اور نہ ایسی تھیں جو دہلی یا دوسرے بڑے بازاروں میں ودیش سے آنے والے یا بڑی بڑی ملوں میں بنے سامان کا مقابلہ کر سکیں . ان کی کھپت نہ نیلوکھیڑی میں ہوئی اور نہ باہر بازار میں . لہذا وہ بیٹھ گئیں . اس وجہ سے نیلوکھیڑی کا سارا کام ٹھنڈا پڑ گیا اور بیروزگاری کا ہوجانا تعجب کی بات نہیں ہے .

ہمیں نہیں معلوم کہ نیلوکھیڑی کی ناکامیابی پر شاید کمیشن والے یا کیندری سرکار کے رہنما لوگ

पर एक नज़र डाल सकते थे. मगर हमें ख़याल आया कि "स्टेट्समैन" ऐसा अंग्रेज़ी अख़बार है और हो सकता है कि उसका नुमाइन्दा देहाती काम का तजुर्बा न रखता हो और इसलिये वह ठीक ठीक न समझ सका हो कि नीलोखेड़ी की असलियत क्या है. इसलिये हम अपने पुराने ख़याल पर जमे रहे कि प्लैनिंग कमीशन जब वहां की बाग डोर लिये हुए है तो कोई शिकायत की गुंजाइश हो ही नहीं सकती.

लेकिन पिछले तीन महीनों में नीलोखेड़ी के बारे में एक के बाद एक ख़बरें आना शुरू हुईं जिनसे हम सोचने लगे कि ज़रूर कोई न कोई घबराहट की बात है और फिर हमें "स्टेट्समैन" के नुमाइन्दे की रिपोर्ट की याद हो आई. मालूम यह हुआ कि पहली जनवरी 1954 को नीलोखेड़ी का इन्तज़ाम पंजाब सरकार के सिपुर्द कर दिया गया. वहां पर एक के बाद एक दुश्वारियां खड़ी होने लगीं और प्लैनिंग कमीशन का सेन्ट्रल कम्युनिटी प्रोजेक्ट ऐडमिनिस्ट्रेशन उनका सामना न कर सका और आख़िर वहां की ज़िम्मेदारी तक वह न संभाल सका. यह भी पता चला कि वहां का काम डांवाडोल देखकर नई दिल्ली सरकार ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के अर्थशास्त्र महकमे की शाख़ देहली स्कूल आफ़ एकोनामिक्स (Delhi Shool of Economics) से दरख़्वास्त की कि वहां के काम धाम पर एक रिपोर्ट तैयार करे. यह रिपोर्ट तो हमारे देखने में नहीं आई मगर 27 अप्रैल 1954 के "स्टेट्समैन" के एडीटर के लिखे मज़मून में उसके कुछ जुमले लिये गये हैं जो हम यहां देते हैं.

रिपोर्ट तैयार करने के लिये 1519 में से 150 ख़ान्दानों की हालत को ग़ौर से देखा गया. यह 150 ख़ान्दान यों ही बिना किसी ख़ास लिहाज़ के चुन लिये गये. 1952 तक बसाने का काम तो काफ़ी हद तक हो चुका था फिर भी बहुतेरा करने को बाक़ी था. ख़ास बात यह कि जिन लोगों को मुलाज़मत पर लगाया गया उनमें 45 फ़ीसदी तो ग़ैर मुस्तक़िल काम पर थे और 35 फ़ीसदी को अपना काम बहुत ही ज़्यादा नापसन्द था. मई 1952 में आकर आर्थिक हालत ख़राब होना शुरू हो गई. सोचा यह गया था कि नीलोखेड़ी बुनियादी ज़रूरतों के मामले में स्वावलम्बी होगी और जहां तक होगा सहकारी या कोआपरेटिव ढंग पर उसे चलाया जायेगा. लेकिन देहली स्कूल वालों ने जब 1953 में वहां की जांच दोबारा की तो पता चला कि "1947 और 1951 के दर्मियान जो बसाने का काम किया गया था वह सब ख़त्म व नष्ट हो गया और हालत फिर वह हो गई जो 1947 की अगस्त से दिसम्बर तक यानी नीलोखेड़ी की शुरुआत के वक़्त थी. बेरोज़गारी 5 फ़ीसदी

پر ایک نظر ڈال سکتے تھے ۔ مگر ہمیں خیال آیا کہ "اسٹیٹسمین" ایسا انگریزی اخبار ہے اور ہوسکتا ہے کہ اسکا نمائندہ دیہاتی کام کا تجربہ نہ رکھتا ہو اور اسلئے وہ ٹھیک ٹھیک نہ سمجھ سکا ہو کہ نیلوکھیڑی کی اصلیت کیا ہے ۔ اسلئے ہم اپنے پرانے خیال پر جمے رہے کہ پلاننگ کمیشن جب وہاں کی باگ ڈور لئے ہوئے ہے تو کوئی شکایت کی گنجائش ہو ہی نہیں سکتی ۔

لیکن پچھلے تین مہینوں میں نیلوکھیڑی کے بارے میں ایک کے بعد ایک خبریں آنا شروع ہوئیں جن سے ہم سوچنے لگے کہ ضرور کوئی نہ کوئی گھبراہٹ کی بات ہے اور پھر ہمیں "اسٹیٹسمین" کے نمائندہ کی رپورٹ کی یاد ہو آئی ۔ معلوم یہ ہوا کہ پہلی جنوری 1954 کو نیلوکھیڑی کا انتظام پنجاب سرکار کے سپرد کردیا گیا ۔ وہاں پر ایک کے بعد ایک دشواریاں کھڑی ہونے لگیں اور پلاننگ کمیشن کا سینٹرل کمیونٹی پروجیکٹ ایڈمنسٹریشن ان کا سامنا نہ کرسکا اور آخر وہاں کی ذمہ داری تک وہ نہ سنبھال سکا ۔ یہ بھی پتہ چلا کہ وہاں کا کام ڈانواڈول دیکھکر نئی دلی سرکار نے دلی یونیورسٹی کے ارتھ شاستر محکمہ کی شاخ دہلی اسکول آف اکونامکس (Delhi School of Economics) سے درخواست کی کہ وہاں کے کام دھام پر ایک رپورٹ تیار کرے ۔ یہ رپورٹ تو ہمارے دیکھنے میں نہیں آئی مگر 27 اپریل 1954 کے "اسٹیٹسمین" کے ایڈیٹر کے لکھے مضمون میں اس کے کچھ جملے لئے گئے ہیں جو ہم یہاں دیتے ہیں ۔

رپورٹ تیار کرنے کے لئے 1519 میں سے 150 خاندانوں کی حالت کو غور سے دیکھا گیا ۔ یہ 150 خاندان یونہی بلا کسی خاص لحاظ کے چن لئے گئے ۔ 1952 تک بسانے کا کام تو کافی حد تک ہوچکا تھا پھر بھی بہتیرا کرنے کو باقی تھا ۔ خاص بات یہ کہ جن لوگوں کو ملازمت پر لگایا گیا ان میں 45 فیصدی تو غیر مستقل کام پر تھے اور 35 فیصدی کو اپنا کام بہت ہی زیادہ ناپسند تھا ۔ مئی 1952 میں آکر آرتھک حالت خراب ہونا شروع ہوگئی ۔ سوچا یہ گیا تھا کہ نیلوکھیڑی بنیادی ضرورتوں کے معاملہ میں سواولمبی ہوگی اور جہاں تک ہوگا سہکاری یا کوآپریٹو ڈھنگ پر اسے چلایا جائیگا ۔ لیکن دہلی اسکول والوں نے جب 1953 میں وہاں کی جانچ دوبارہ کی تو پتہ چلا کہ "1947 اور 1951 کے درمیان جو بسانے کا کام کیا گیا تھا وہ سب ختم و نشٹ ہوگیا اور حالت پھر وہ ہوگئی جو 1947 کی اگست سے دسمبر تک یعنی نیلوکھیڑی کی شروعات کے وقت تھی ۔ بیروزگاری 5 فیصدی

नीलोखेड़ी की फुलझड़ी

दो बरस पहले की बात है. "नया हिन्द" के प्रेमी पाठक जानते हैं कि वर्धा के प्रोफ़ेसर ठाकुर दास बंग और कई साथियों के साथ हम इटावा गये थे जहां हमने एक अमरीकी माहिर की निगरानी में चलने वाली गांव सुधार योजना को खूब अहत्यात से देखा समझा था. हम इस नतीजे पर पहुंचे थे कि इटावा योजना एक घर फूंक तमाशा है जो हमारी देहाती जनता को और भी ज़्यादा तबाह व बर्बाद करेगी. वक्त ने साबित कर दिया है कि हमारा ख्याल सही था. उन्हीं दिनों हमारा इरादा था कि आगे बढ़ कर देहली तक जायें और वहां से थोड़े से फ़ासिले पर पंजाब के सूबे की हद में नीलोखेड़ी नाम का जो मुक़ाम है उसे भी देख आयें. मगर वक्त की तंगी की वजह से ऐसा न हो सका और हम अब तक नीलो खेड़ी नहीं जा सके.

नीलोखेड़ी एक शहराती बस्ती (Township) है जिसे सन 1947 के बाद से बसाया गया है. उसके सभी बाशिन्दे शरनार्थी हैं जो पाकिस्तान से आये हैं. सन 1952 तक वहां पर 1519 ख़ान्दान बसाये गये थे. यहां का सारा इन्तज़ाम मरकज़ी सरकार की देख रेख में था और सन 1952 के शुरू में उसकी सारी ज़िम्मेदारी प्लानिंग कमीशन की तरफ़ से सेन्ट्रल कम्युनिटी प्रोजेक्स ऐडमिनिस्ट्रेशन Central Community Projects Administration) ने ले ली. इटावा की तरह की तरह नीलखेड़ी की भी बड़ी चर्चा थी और कहा जाता था कि यहां शहराती व देहाती दोनों तरह की स्कीम या कम्युनिटी प्रोजेक्ट चलाया जायेगा और सारे मुल्क के लिये मिसाल पेश करने वाला काम किया जायेगा. इसके साथ साथ यह भी दावे थे कि काश्तकारी बढ़ाने, आने जाने के ज़रिये फैलाने, और स्कूल, अस्पताल वग़ैरा खोलने के अलावा खास ज़ोर "इन्सान बसाने" पर दिया जायेगा. हम उम्मीद करते थे कि चूंकि प्लानिंग कमीशन खुद नीलोखेड़ी की कश्ती खे रहा है इसलिये वाक़ई ज़ोरदार नतीजे निकलेंगे और मुल्क की नई तामीर का नक़शा हमारे सामने आयेगा.

हमारा ख्याल था कि नीलोखेड़ी में ढंग से काम चल रहा है मगर 1953 के शुरू में दिल्ली के "स्टेट्समैन" अख़बार के ख़ास नुमाइन्दे की एक हैरतअंगेज़ रिपोर्ट छपी. उसमें लिखा था कि कोआपरेटिव के सरकारी तरीक़े पर जो योजना वहां चल रही है वह नाकाम साबित हुई है और बेरोज़गारी वग़ैरा शिद्दत से बढ़ रही है. ज़िम्मेदार अख़बार की तरफ़ से रिपोर्ट होने की वजह से हम उस

نیلوکھیڑی کی پھل جھڑی

دو برس پہلے کی بات ہے۔ "نیا ہند" کے پریمی پاٹھک جانتے ہیں کہ وردھا کے پروفیسر ٹھاکر داس بنگ اور کئی ساتھیوں کے ساتھ ہم اٹاوہ گئے تھے جہاں ہم نے ایک امریکی ماہر کی نگرانی میں چلنے والی گاؤں سدھار یوجنا کو خوب احتیاط سے دیکھا سمجھا تھا۔ ہم اس نتیجے پر پہونچے تھے کہ اٹاوہ یوجنا ایک گھر پھونک تماشہ ہے جو ہماری دیہاتی جنتا کو اور بھی زیادہ تباہ و برباد کریگی۔ وقت نے ثابت کردیا ہے کہ ہمارا خیال صحیح تھا۔ انہیں دنوں ہمارا ارادہ تھا کہ آگے بڑھکر دہلی تک جائیں اور وہاں سے تھوڑے سے فاصلہ پر پنجاب کے صوبہ کی حد میں نیلوکھیڑی نام کا جو مقام ہے اسے بھی دیکھ آئیں، مگر وقت کی تنگی کی وجہ سے ایسا نہ ہوسکا اور ہم اب تک نیلوکھیڑی نہیں جاسکے۔

نیلوکھیڑی ایک شہراتی بستی (Township) ہے جسے 1947 کے بعد سے بسایا گیا ہے۔ اس کے سبھی باشندے شرنارتھی ہیں جو پاکستان سے آئے ہیں۔ سن 1952 تک وہاں پر 1519 خاندان بسائے گئے تھے۔ یہاں کا سارا انتظام مرکزی سرکار کی دیکھ ریکھ میں تھا اور سن 1952 کے شروع میں اسکی ساری ذمہ داری پلاننگ کمیشن کی طرف سے سینٹرل کمیونٹی پروجیکٹس ایڈمنسٹریشن (Central Community Projects Administration) نے لے لی۔ اٹاوہ کی طرح نیلوکھیڑی کی بھی بڑی چرچا تھی اور کہا جاتا تھا کہ یہاں شہراتی و دیہاتی دونوں طرح کی اسکیم یا کمیونٹی پروجیکٹ چلایا جائیگا اور سارے ملک کے لئے مثال پیش کرنے والا کام کیا جائیگا۔ اس کے ساتھ ساتھ یہ بھی دعوے تھے کہ کاشتکاری بڑھانے، آنے جانے کے ذریعے پھیلانے، اور اسکول، اسپتال وغیرہ کھولنے کے علاوہ خاص زور "انسان بسانے" پر دیا جائیگا۔ ہم امید کرتے تھے کہ چونکہ پلاننگ کمیشن خود نیلوکھیڑی کی کشتی کو کھے رہا ہے اسلئے واقعی زوردار نتیجے نکلینگے اور ملک کی نئی تعمیر کا نقشہ ہمارے سامنے آئیگا۔

ہمارا خیال تھا کہ نیلوکھیڑی میں ڈھنگ سے کام چل رہا ہے۔ مگر 1953 کے شروع میں دلی کے "اسٹیٹسمین" اخبار کے خاص نمائندہ کی ایک حیرت انگیز رپورٹ چھپی۔ اسمیں لکھا تھا کہ کوآپریٹو کے سرکاری طریقہ پر جو یوجنا وہاں چل رہی ہے وہ ناکام ثابت ہوئی ہے اور بیروزگاری وغیرہ شدت سے بڑھ رہی ہے۔ ذمہ دار اخبار کی طرف سے رپورٹ ہونے کی وجہ سے ہم اس

लोगों ने इस बात की तसदीक़ कर ली कि अगर मंहगाई की वजह उन्हें ज़्यादा मिलना चाहिये तो इस हिसाब से मुल्क के दूसरे लोगों की आमदनियां ज़्यादा हो गई हैं. नहीं, उन्हें नहीं ख़याल आया. अफ़सोस इस बात का है कि जब आचार्य कृपलानी जैसे उनके बुज़ुर्ग साथी ने कांग्रेस वालों को याद दिलाई तब भी उनके ऊपर कोई असर नहीं हुआ. मसल मशहूर है कि चिकने घड़े पर पानी का कोई असर ही नहीं होता.

शायद हमारे जवाब में कोई कांग्रेसी भाई कहेंगे कि हमने तनख़्वाह वग़ैरा मुक़र्रर की तो कौन नाइन्साफ़ी की, अंग्रेज़ी पार्लियामेन्ट के मेम्बरों ने तो अपनी तनख़्वाह एक हज़ार पौंड सालाना से डेढ़ हज़ार पौंड कर ली. इस दलील पर सिवाय तरस खाने के और क्या किया जा सकता है क्योंकि इंगलिस्तान हिन्दुस्तान नहीं है और न हिन्दुस्तान इंगलिस्तान है. लेकिन इंगलिस्तान की पार्लियामेन्ट वालों की एक ख़ुसूसियत है कि वह एक हद के अन्दर रह कर काम करते हैं और लोक राज का ख़याल रखते हैं. यह बात हिन्दुस्तान की पार्लिया-मेन्ट वालों के बारे में नहीं कही जा सकती है. कैसे दुख की चीज़ है कि हमारी पार्लियामेन्ट के बहुत से मेम्बर लोगों ने अपने रहने के कमरों को किराये पर उठा रक्खा है और जितना किराया ख़ुद नहीं देते उससे ज़्यादा अपने किरायेदारों से वसूल कर लेते हैं. यानी अपने कमरों को भी उन्होंने आमदनी का ज़रिया बना लिया है. अब यह एक ऐसी बात है जिसे जान कर हर हिन्दुस्तानी की आंखें शर्म से डूब जायेंगी. जब मेम्बर लोग इस तरह नाजाइज़ आमदनी के पीछे पड़ेंगे तो उनसे मुल्क की बेहतरी की क्या उम्मीद की जा सकती है. उनको ख़ुदग़र्ज़ी के पुतले कहा जाये तो बेजा न होगा. एक मछली से सारा तालाब ही गंदा हो जाता है.

तिस पर भी कौन जाने कि हमारे हुक्काम और कांग्रेसी भाई हिन्दुस्तान को इंगलिस्तान बनाने के ख़्वाब देखते हों तो हम उनसे यक़ीन व नम्रता के साथ कहना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान हरगिज़ इंगलिस्तान नहीं बनेगा, आज अपनी हुकूमत के नशे में चूर हो कर कांग्रेस वाले या उनके हमख़याल जिस तरह चाहें जनता को तकलीफ़ दे लें लेकिन कल, कल नहीं तो परसों, इस मुल्क की जनता अपने पैरों पर खड़ी हो कर गांव गांव "ग्राम राज" क़ायम करेगी और मुल्क के अन्दर इन्साफ़ व ईमान की हुकूमत या इन्सानी हुकूमत क़ायम करेगी जिसमें मौजूदा पार्लियामेन्ट जैसी "बांझ" और "वेश्या" जमाअतों की कोई जगह नहीं होगी.

8. 6. '54 —सुरेशराम भाई

ن نے اس بات کی تصدیق کر لی کہ اگر مہنگائی
وجہ سے انہیں زیادہ ملنا چاہئے تو اس حساب سے
ـک کے دوسرے لوگوں کی آمدنیاں زیادہ ہوگئی ہیں۔
ں' انہیں نہیں خیال آیا۔ افسوس اس بات کا ہے
جب آچاریہ کرپلانی جیسے ان کے بزرگ ساتھی نے
گریس والوں کو یاد دلائی تب بھی ان کے اوپر کوئی اثر
یں ہوا۔ مثل مشہور ہے کہ چکنے گھڑے پر پانی کا کوئی
ہی نہیں ہوتا۔

شاید ہمارے جواب میں کوئی کانگریسی بھائی کہینگے
ہم نے تنخواہ وغیرہ مقرر کی تو کون نا انصافی کی'
گریزی پارلیامنٹ کے ممبروں نے تو اپنی تنخواہ ایک
ر پونڈ سالانہ سے ڈیڑھ ہزار پونڈ کر لی۔ اس دلیل پر
وائے ترس کھانے کے اور کیا کیا جا سکتا ہے کیونکہ
گلستان ہندستان نہیں ہے اور نہ ہندستان انگلستان
۔ لیکن انگلستان کی پارلیامنٹ والوں کی ایک
صوصیت ہے کہ وہ ایک حد کے اندر رہ کر کام کرتے ہیں
ر لوک راج کا خیال رکھتے ہیں۔ یہ بات ہندستان کی
رلیامنٹ والوں کے بارے میں نہیں کہی جا سکتی۔
سے دکھ کی چیز ہے کہ ہماری پارلیامنٹ کے بہت سے
مبر لوگوں نے اپنے رہنے کے کمروں کو کرایہ پر اٹھا رکھا ہے
جتنا کرایہ خود نہیں دیتے اس سے زیادہ اپنے کرایہ
روں سے وصول کر لیتے ہیں۔ یعنی اپنے کمروں کو بھی
وں نے آمدنی کا ذریعہ بنا لیا ہے۔ اب یہ ایک ایسی
ت ہے جسے جان کر ہر ہندستانی کی آنکھیں شرم سے
ب جائیں گی۔ جب ممبر لوگ اس طرح ناجائز آمدنی
پیچھے پڑیں گے تو ان سے ملک کی بہتری کی کیا امید
جا سکتی ہے۔ ان کو خود غرضی کے پتلے کہا جائے
بیجا نہ ہوگا۔ ایک مچھلی سے سارا تالاب ہی گندا
و جاتا ہے۔

س پر بھی کون جانے کہ ہمارے حکام اور کانگریسی
ھائی ہندستان کو انگلستان بنانے کے خواب دیکھتے
وں تو ہم ان سے یقین و نمرتا کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں
ہ ہندستان ہرگز انگلستان نہیں بنےگا' آج اپنی حکومت
ے نشہ میں چور ہو کر کانگریس والے یا ان کے ہم خیال
س طرح چاہیں جنتا کو تکلیف دے لیں لیکن کل'
ل نہیں تو پرسوں' اس ملک کی جنتا اپنے پیروں پر
ھڑی ہو کر گاؤں گاؤں "گرام راج" قائم کرے گی اور ملک
ے اندر انصاف و ایمان کی حکومت یا انسانی حکومت
ائم کرے گی جس میں موجودہ پارلیامنٹ جیسی
"بانجھ" اور "ویشیا" جماعتوں کی کوئی جگہ نہیں
وگی۔

—سریش رام بھائی 8. 6. '54

(iii) मौजूदा दस्तूर के मुताबिक़ महज़ चालीस रुपया रोज़ भत्ता.

कांग्रेस की तरफ़ से आने वाली नई तजवीज़ की मुख़ालिफ़त आचार्य कृपलानी ने की और इसी तरह कम्युनिस्ट पार्टी के नाइब लीडर प्रोफ़ेसर मुकर्जी ने भी. मगर जहां अकसरियत पर सारे फ़ैसले होते हों वहां कम तादाद वालों की तरफ़ से अगर कोई अच्छी से अच्छी बात भी पेश की जाये तो वह बेकार सी साबित होती है. ताज्जुब इस बात का है कि जो नई तजवीज़ कांग्रेस मेम्बर ने पार्लियामेन्ट में पेश की वह कांग्रेस की तरफ़ से इस कमेटी में नहीं पेश की गई जिस के हवाले यह काम गया था. हिन्दुस्तान की कैसी बदक़िस्मती है कि इसकी सब से आला कही जाने वाली पार्लियामेन्ट नाम की सभा के मेम्बर अपने खाने पीने और रहने सहने के सवालों पर एक राय नहीं हो पाते. इसमें हम कांग्रेस पार्टी को सब से ज़्यादा क़सूरवार ठैहराये बिना नहीं रह सकते.

ऐसी हालत में जब देश की हाकिम कांग्रेस पार्टी के लोग निजी सवालों पर मिल जुल कर अमल नहीं कर सकते तो भला मुल्क की आम जनता से वास्ता रखने वाले और एक से एक पेचीदा सवालों पर किस तर एक राय हो सकते हैं. शायद यह दोश कांग्रेस पार्टी का इतना नहीं जितना पार्लियामेंट्री निज़ाम का है. जिस अंग्रेज़ी पार्लियामेंट की यह नक़ल है इस पार्लियामेन्ट के बारे में संजीदा अंग्रेज़ों ने 'दुनिया भर की गप का अड्डा", "बच्चा" और "कोई सच्चा ईसाई इसका मेम्बर नहीं हो सकता" वग़ैरा लफ़्ज़ इस्तेमाल किये हैं और महात्मा गांधी जी ने पार्लियामेन्ट की मिसाल "एक बांझ औरत और वैश्या" से दी है. महात्मा गांधी ने यह भी कहा था कि पार्लियामेन्ट के मेम्बरों में "न सच्ची ईमानदारी होती है और न जानदार अन्तःकरन या ज़मीर." हिन्दुस्तान की पार्लियामेन्ट ने साबित कर दिखाया कि महात्मा गांधी के दोनों बयान सोलह आने सही व वाजिब हैं.

इसके अलावा मामूली इन्सानी लिहाज़ से भी देखें तो मानना होगा कि पार्लियामेन्ट वालों ने यह बिल पास कर के ज़्यादती की है. जिस वक़्त उन्होंने ऊपर वाले बिल को पास किया उस वक़्त उन्होंने अपने दिल पर हाथ रख कर देखा होता कि क्या उन्हें अपनी कांस्टी-चुएेन्सी के उन ग़रीबों की याद है जिन्होंने पुश्त दर पुश्त यह भी नहीं जाना कि भर पेट खाना किस चिड़िया का नाम है. जिनको मुल्क की हर तरक़्क़ी तबाही एक से एक गहरे सागर में डुबो देती है और जिनकी आंखों के आगे राज भले कोई आ जाये उजाला नज़र नहीं आता. या जाने हैं उन ग़रीबों को. क्या हमारे हुक्मरां

(iii) موجودہ دستور کے مطابق محض چالیس روپیہ روز بھتہ .

کانگریس کی طرف سے آنے والی نئی تجویز کی مخالفت آچاریہ کرپلانی نے کی اور اسی طرح کمیونسٹ پارٹی کے نائب لیڈر پروفیسر مکرجی نے بھی. مگر جہاں اکثریت پر سارے فیصلے ہوتے ہوں وہاں کم تعداد والوں کی طرف سے اگر کوئی اچھی سے اچھی بات بھی پیش کی جائے تو وہ بیکار سی ثابت ہوتی ہے. تعجب اس بات کا ہے کہ جو نئی تجویز کانگریس ممبر نے پارلیامنٹ میں پیش کی وہ کانگریس کی طرف سے اس کمیٹی میں نہیں پیش کی گئی جس کے حوالے یہ کام کیا گیا تھا . ہندستان کی کیسی بدقسمتی ہے کہ اسکی سب سے اعلیٰ کہی جانے والی پارلیامنٹ نام کی سبھا کے ممبر اپنے کھانے پینے اور رہنے سہنے کے سوالوں پر ایک رائے نہیں ہو پاتے . اس میں ہم کانگریس پارٹی کو سب میں زیادہ قصوروار ٹھہرائے بنا نہیں رہ سکتے .

ایسی حالت میں جب دیش کی حاکم کانگریس پارٹی کے لوگ نجی سوالوں پر مل جلکر عمل نہیں کرسکتے تو بھلا ملک کی عام جنتا سے واسطہ رکھنے والے اور ایک سے ایک پیچیدہ سوالوں پر کس طرح ایک رائے ہوسکتے ہیں. شاید یہ دوش کانگریس پارٹی کا اتنا نہیں جتنا پارلیامنٹری نظام کا ہے . جس انگریزی پارلیامنٹ کی یہ نقل ہے اس پارلیامنٹ کے بارے میں سنجیدہ انگریزوں نے "دنیا بھر کی گپ کا اڈا" "بچہ" اور "کوئی سچا عیسائی ان کا ممبر نہیں ہوسکتا" وغیرہ لفظ استعمال کیئے ہیں اور مہاتما گاندھی جی نے پارلیامنٹ کی مثال " ایک بانجھ عورت اور ویشیا " سے دی ہے . مہاتما گاندھی نے یہ بھی کہا تھا کہ پارلیامنٹ کے ممبروں میں " نہ سچی ایمانداری ہوتی ہے اور نہ جاندار انتہ کرن یا ضمیر ." ہندستان کی پارلیامنٹ نے ثابت کر دکھایا کہ مہاتما گاندھی جی کے دونوں بیان سولہ آنے صحیح و واجب ہیں .

اس کے علاوہ معمولی انسانی لحاظ سے بھی دیکھیں تو ماننا ہوگا کہ پارلیامنٹ والوں نے یہ بل پاس کر کے زیادتی کی ہے . جس وقت انہوں نے اوپر والے بل کو پاس کیا اس وقت انہوں نے اپنے دل پر ہاتھ رکھکر دیکھا ہوتا کہ کیا انہیں اپنی کانسٹی چوینسی کے ان غریبوں کی یاد ہے جنہوں نے پشت درپشت یہ بھی نہیں جانا کہ بھر پیٹ کھانا کس چڑیا کا نام ہے. جن کو ملک کی ہر ترقی تباہی ایک سے ایک گہرے ساگر میں ڈبو دیتی ہے اور جن کی آنکھوں کے آگے راج بھلے کوئی آجائے اجالا نظر نہیں آتا . یا جانے ہیں ان غریبوں کو . کیا ہمارے حکمراں

हमारी राय — ہماری رائے

उनके मन की मौज

नई दिल्ली में जो हमारी पार्लियामेंट (या लोक सभा) है उसके मेम्बरों को अब तक कोई तनख़्वाह नहीं मिलती थी. जिस दिन वह पार्लियामेंट की बैठक में हाज़िर हों उस दिन का वह चालीस रुपया भत्ता लेते थे. मगर पार्लियामेन्ट के पिछले इजलास में 14 मई को एक नया बिल उन्होंने पास किया जिसके मुताबिक़ उन्हें आइन्दा यह चीज़ें मिलेंगी :

(i) तनख़्वाह चार सौ रुपया माहवार.

(ii) पार्लियामेन्ट की बैठक में हाज़िर होने पर इक्कीस (Rs. 21/-) रुपया रोज़.

(iii) हिन्दुस्तान भर में कहीं भी रेल से आने जाने के लिये दूसरे दर्जे के दो मुफ़्त पास.

(iv) उनको और उनके ख़ान्दान वालों को बीमारी में मुफ़्त दवा वग़ैरा.

(v) मकान, टेलीफ़ोन व डाक की सहूलियतें.

(vi) किन्हीं सरकारी कमेटियों के अगर वह मेम्बर हों तो सरकारी क़ायदे के मुताबिक़ रोज़ नया भत्ता, सफ़र ख़र्च वग़ैरा.

पार्लियामेन्ट के मेम्बर ख़ुद ही क़ानून बनाने वाले हैं, जो चाहें वह कर सकते हैं. स्याह या सफ़ेद जो भी करें उनके मन की मौज है. हम जानते हैं कि इस बिल के पास होते वक़्त जो वोट लिये गये उस में पंडित नेहरू व दीगर मिनिस्टरों ने हिस्सा नहीं लिया मगर बिल को यह शकल कांग्रेस पार्टी के एक मेम्बर की तजवीज़ के मुताबिक़ ही हासिल हुई. इसलिये यह मानना पड़ेगा कि कांग्रेसी मिनिस्टरों और कांग्रेस पार्टी की पूरी सलाह से यह काम किया गया. वैसे इस बिल का मसौदा बनाने का काम जिस कमेटी के सिपुर्द हुआ था इसने तो सिर्फ़ यह सिफ़ारिशें की थीं :

(i) तनख़्वाह तीन सौ रुपया माहवार.

(ii) पार्लियामेंट की बैठक में हाज़िर होने पर बीस रुपया रोज़ या इन दोनों की बजाय,

اُنکے من کی موج

نئی دہلی میں جو ہماری پارلیامنٹ (یا لوک سبھا) ے اسکے ممبروں کو اب تک کوئی تنخواہ نہیں ملتی ھی ۔ جس دن وہ پارلیامنٹ کی بیٹھک میں حاضر وں اس دن کا وہ چالیس روپیہ بھتہ لیتے تھے ۔ مگر ارلیامنٹ کے پچھلے اجلاس میں 14 مئی کو ایک نیا ل انہوں نے پاس کیا جس کے مطابق انہیں آئندہ یہ یزیں ملینگی :

(i) تنخواہ چار سو روپیہ ماہوار ۔

(ii) پارلیامنٹ کی بیٹھک میں حاضر ہونے اکیس Rs. 21/- روپیہ روز ۔

(iii) ہندوستان بھر میں کہیں بھی ریل سے ے جانے کے لیئے دوسرے درجہ کے دو مفت پاس۔

(iv) انکو اور انکے خاندان والوں کو بیماری یں مفت دوا وغیرہ ۔

(v) مکان' ٹیلیفون و ڈاک کی سہولیتیں ۔

(vi) کنہیں سرکاری کمیٹیوں کے اگر وہ ممبر وں تو سرکاری قاعدہ کے مطابق روز نیا بھتہ' سفر خرچ غیرہ ۔

پارلیامنٹ کے ممبر خود ہی قانون بنانے والے ہیں' و چاہے وہ کرسکتے ہیں ۔ سیاہ یا سفید جو بھی کریں ن کے من کی موج ہے ۔ ہم جانتے ہیں کہ اس بل کے اس ہوتے وقت جو ووٹ لیئے گئے اس میں پنڈت نہرو و یگر منسٹروں نے حصہ نہیں لیا مگر بل کو یہ شکل انگریس پارٹی کے ایک ممبر کی تجویز کے مطابق ہی حاصل ہوئی۔ اسلئے یہ ماننا پڑیگا کہ کانگریسی منسٹروں ر کانگریس پارٹی کی پوری صلاح سے یہ کام کیا گیا ۔ یسے اس بل کا مسودہ بنانے کا کام جس کمیٹی کے سپرد وا تھا اس نے تو صرف یہ سفارشیں کی تھیں :

(i) تنخواہ تین سو روپیہ ماہوار ۔

(ii) پارلیامنٹ کی بیٹھک میں حاضر ہونے بیس روپیہ روز یا ان دونوں کی بجائے '

"बाप बेटे" का हीरो बज़ारूफ़ है. वह एक नौजवान आदमी है और डाक्टरी का विद्यार्थी है, जीवन से निराश है और किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता. इसी नौजवान के चारों तरफ़ पूरा नाविल घूमता है. जब यह नाविल पहले पहल निकला था तो नौजवानों ने इस की खूब ले दे मचाई. वह लोग इस को नौजवानों पर हमला समझते थे. लेकिन यह यथार्थवादी नाविल है और उस समय नौजवानों की जो असली हालत थी उस का चित्रन इस में मिलता है.

यह नाविल दुनिया के साहित्य में एक नई परम्परा की बुनियाद है. जीवन को परखने, समझने और संवारने का सबक़ इस नाविल से मिलता है.

जामा मिल्लिया उर्दू और हिन्दी को साहित्य के अनमोल रत्न देता रहा है तुरगनेफ़ के "बाप बेटे" को पेश कर के उसने अपनी परम्परा को निभाया है. लेकिन हमें एक शिकायत है. वह यह है कि अनुवाद का स्तर गिरा दिया गया है. जामा मिल्लिया ने बहुत से अनुवाद छापे हैं और वह ऐसे हैं कि पढ़ कर यह कोई नहीं कह सकता कि यह अनुवाद हैं. लेकिन "बाप बेटे" का अनुवाद अनुवाद ही मालूम होता है. छपाई बेहद खराब है. इस से पढ़ने में ध्यान बट जाता है और लुत्फ़ में कमी आ जाती है. दाम भी ज़्यादा रक्खा गया है. उम्मीद है कि दूसरे ऐडीशन में यह कमियां पूरी कर ली जायेंगी.

—मुजीब रिज़वी

शऊर

दो माही रसाला; एडीटर—एस. ए. हुसेनी; मैनेजिंग एडीटर—सर्वर डंडा; मिलने का पता—शऊर पब्लिकेशन्स; 699 उसमान पुरा, हैद्राबाद दकन; सालाना चन्दा—दो रुपया, सफ़ा 112. $\frac{20 \times 30}{16}$ में यह रिसाला निकलता है. एक कापी का दाम छः आना है. कवर पर खूबसूरत कला चित्र है. इस रिसाले का मक़सद जनवादी और तरक़्क़ी पसन्द अदब की सेवा करना है.

इस रिसाले में कई अच्छे चित्र दिये गये हैं. उर्दू के अच्छे लिखने वालों का इस को सहयोग हासिल है. कहानियां, नज़्में, व्यंग और चित्रकला पर लेख, सब अच्छे हैं. उम्मीद है कि दो चार नम्बर निकल कर यह रिसाला बन्द न हो जायेगा.

—मुजीब रिज़वी

"باپ بیٹے" کا هیرو بزاروف هے. وہ ایک نوجوان آدمی هے اور ڈاکٹری کا ودیارتھی هے، جیون سے نراش هے اور کسی چیز پر وشواس نہیں کرتا . اسی نوجوان کے چاروں طرف پورا ناول گھومتا هے . جب یہ ناول پہلے پہل نکلا تھا تو نوجوانوں نے اسکی خوب لے دے مچائی . وہ لوگ اسکو نوجوانوں پر حملہ سمجھتے تھے . لیکن یہ یتھارتھ وادی ناول هے اور اس سمے نوجوانوں کی جو اصلی حالت تھی اس کا چترن اس میں ملتا هے .

یہ ناول دنیا کے ساهتیہ میں ایک نئی پرمپرا کی بنیاد هے . جیون کو پرکھنے، سمجھنے اور سنوارنے کا سبق اس ناول سے ملتا هے .

جامعہ ملیہ اُردو اور هندی کو ساهتیہ کے انمول رتن دیتا رها هے . تورگنیف کے "باپ بیٹے" کو پیش کرکے اس نے اپنی پرمپرا کو نبھایا هے . لیکن هم ایک شکایت هے . وہ یہ هے کہ انوواد کا استر گرا دیا گیا هے . جامعہ ملیہ نے بہت سے انوواد چھاپے هیں اور وہ ایسے هیں کہ پڑھکر یہ کوئی نہیں کہہ سکتا کہ یہ انوواد هیں لیکن "باپ بیٹے" کا انوواد انوواد هی معلوم هوتا هے . چھپائی بےحد خراب هے. اس سے پڑھنے میں دھیان بٹ جاتا هے اور لطف میں کمی آ جاتی هے . دام بھی زیادہ رکھا گیا هے . اُمید هے کہ دوسرے ایڈیشن میں یہ کمیاں پوری کرلی جائیں گی.

—مجیب رضوی

شعور

دو ماهی رسالہ؛ ایڈیٹر—ایس . اے . حسینی؛ مینیجنگ ایڈیٹر—سرور ڈنڈا؛ ملنے کا پتہ—شعور پبلیکیشنز؛ 699 عثمان پورہ، حیدرآباد دکن؛ سالانہ چندہ—دو روپیہ؛ صفحہ—112. $\frac{20 \times 30}{16}$ میں یہ رسالہ نکلتا هے . ایک کاپی کا دام چھ آنہ هے . کور پر خوبصورت کلا چتر هے . اس رسالے کا مقصد جنوادی اور ترقی پسند ادب کی سیوا کرنا هے .

اِس رسالے میں کئی اچھے چتر دئے گئے هیں . اُردو کے اچھے لکھنے والوں کا اِس کو سہیوگ حاصل هے . کہانیاں، نظمیں، ویَنگ اور چترکلا پر لیکھ، سب اچھے هیں . اُمید هے کہ دو چار نمبر نکل کر یہ رسالہ بند نہ هو جائیگا .

—مجیب رضوی

में अनुभव हासिल किया और अब "सेवा ग्राम" नाम का एक हिन्दी साप्ताहिक निकाल रहे हैं. इस अख़बार का लक्ष है—"ग्राम सेवा ही, देश सेवा है."

इस अख़बार में किसानों की मतलब की बातें होती हैं. उन के हित की सूचनायें होती हैं और अपने भाग्य को बदलने के लिये उन्हें नई नई बातें बताई जाती हैं. सच मुच इस अख़बार से किसानों को बहुत फ़ायदा होगा. गांव वालों के लिये बहुत अख़बार निकले हैं लेकिन इस टक्कर का कोई भी मेरी नज़र से नहीं गुज़रा.

इस अख़बार की छपाई बहुत ही सुन्दर होती है और इस की सजावट मन मोहक होती है. यूपी सरकार ने इस अख़बार को मंज़ूरी दी है. अगर जनता भी सहायता दे तो यह अख़बार तरक़्क़ी कर सकता है और देश की कुछ न कुछ सेवा कर सकता है.

—मुजीब रिज़वी

मख़दूम के सौ शेर

संकलन करने वाले—वामिक़ जौनपुरी, वक़ार ख़लील, हफ़ीज़ इक़बाल; निकालने वाले—अदारा मतबुआत मख़ज़न, 235 मुग़लपुरा, हैद्राबाद दकन; लिखावट—उर्दू; दाम चार आना.

मख़दूम का परिचय देना बेकार है. उर्दू के दो चार शायरों का नाम जब भी लिया जाता है मख़दूम उस में ज़रूर आ जाते हैं. उन के बहुत से दीवान हैं. लेकिन इस छोटे से पैम्फ़लेट में संकलन करताओं ने कुल सौ शेर छांट कर रक्खे हैं. शुरू में क़ाज़ी अब्दुल ग़फ़्फ़ार ने "मख़दूम पर एक नज़र" की सुर्ख़ी से दो शब्द लिखे हैं. क़ाज़ी साहब ने मख़दूम की शायरी पर काफ़ी रोशनी डाली है. यह पैम्फ़लेट मख़दूम की शायरी को नमूने के तौर पर पेश करता है और इसे पढ़ कर मुझे यक़ीन है लोग मख़दूम की रचनाओं को ढूंढ कर पढ़ने की कोशिश करेंगे.

—मुजीब रिज़वी

बाप बेटे

लिखने वाले—तुरगनेफ़; अनुवाद करने वाले—अनवर अज़ीम; निकालने वाले—मकतबा जामा लिमिटेड देहली; लिखावट—उर्दू; सफ़ा 399; दाम—पांच रुपये.

तुरगनेफ़ की गिन्ती रूस के महान साहित्यकारों में होती है. यह अपनी रचनाओं में उन्नीसवीं सदी के बीच के युग का चित्रन करते हैं. उस समय की बाहरी घटनाओं और आदमियों के अन्दरूनी भावों को वह अच्छी तरह जानते हैं और उस का चित्रन भी इस तरह करते हैं मानो फ़ोटो सामने रख दें.

میں انوبھو حاصل کیا اور اب "سیوا گرام" نام کا ایک ہندی سابتاہک نکال رہے ہیں. اس اخبار کا لکش ہے— "گرام سیوا ہی، دیش سیوا ہے."

اس اخبار میں کسانوں کی مطلب کی باتیں ہوتی ہیں. اُن کے ہت کی سوچنائیں ہوتی ہیں اور اپنے بھاگیہ کو بدلنے کے لئے انہیں نئی نئی باتیں بتائی جاتی ہیں. سچ مچ اس اخبار سے کسانوں کو بہت فائدہ ہوگا. گاؤں والوں کے لئے بہت سے اخبار نکلے ہیں لیکن اس ٹکر کا کوئی بھی میری نظر سے نہیں گزرا.

اس اخبار کی چھپائی بہت ہی سندر ہوتی ہے اور اسکی سجاوٹ من موہک ہوتی ہے. یوپی سرکار نے اس اخبار کو منظوری دی ہے. اگر جنتا بھی سہائتا دے تو یہ اخبار ترقی کرسکتا ہے اور دیش کی کچھ نہ کچھ سیوا کرسکتا ہے.

—مجیب رضوی

مخدوم کے سو شعر

سنکلن کرنے والے—وامق جونپوری، وقار خلیل، حفیظ اقبال؛ نکالنے والے—ادارہ مطبوعات مخزن، 235 مغلپورہ، حیدرآباد دکن؛ لکھاوٹ—اُردو؛ دام—چار آنے.

مخدوم کا پریچے دینا بیکار ہے. اُردو کے دو چار شاعروں کا نام جب بھی لیا جاتا ہے مخدوم اس میں ضرور آ جاتے ہیں. اُن کے بہت سے دیوان ہیں. لیکن اس چھوٹے سے پمفلٹ میں سنکلن کرتاؤں نے کل سو شعر چھانٹ کر رکھے ہیں. شروع میں قاضی عبدالغفار نے "مخدوم پر ایک نظر" کی سرخی سے دو شبد لکھے ہیں. قاضی صاحب نے مخدوم کی شاعری پر کافی روشنی ڈالی ہے. یہ پمفلٹ مخدوم کی شاعری کو نمونے کے طور پر پیش کرتا ہے اور اسے پڑھکر مجھے یقین ہے لوگ مخدوم کی رچناؤں کو ڈھونڈھ کر پڑھنے کی کوشش کریں گے.

—مجیب رضوی

باپ بیٹے

لکھنے والے—تورگنیف؛ انوواد کرنے والے—انور عظیم؛ نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لمیٹڈ دہلی؛ لکھاوٹ—اُردو؛ صفحے 399؛ دام—پانچ روپئے.

تورگنیف کی گنتی روس کے مہان ساہتیہ کاروں میں ہوتی ہے. یہ اپنی رچناؤں میں انیسویں صدی کے بیچ کے یگ کا چترن کرتے ہیں. اس سمے کی باہری گھٹناؤں اور آدمیوں کے اندرونی بھاؤں کو وہ اچھی طرح جانتے ہیں اور اس کا چترن بھی اسطرح کرتے ہیں مانو فوٹو سامنے رکھدیں.

डाक्टर जगदीश ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि विद्यार्थियों की आपसी सहयोग कमेटियां बनी हुई हैं. तेज विद्यार्थी, कमज़ोर विद्यार्थियों की पूरी सहायता करते हैं. अध्यापक और विद्यार्थी में बहुत सहयोग है.

होड़बाज़ी के समर्थकों को न जाने यह बात कैसी लगे लेकिन चीन ने जो ढर्रा अपनाया है, वह ही तालीम को आगे बढ़ाने में और आम करने में मदद दे सकता है. होड़बाज़ी की जगह पर आपसी सहायता का भाव पैदा किया जाता है.

जब तक अध्यापक परेशान हाल हैं तब तक लोगों को सच्ची शिक्षा नहीं दी जा सकती है. चीन में अध्यापक की इज्ज़त बेहद बढ़ गई है. सरकार "अपने अध्यापकों की सुख सुविधाओं का ध्यान रखती है. उन्हें कम कराये पर मकान मिलते हैं और बीमार हो जाने पर उनकी मुफ्त चिकित्सा (इलाज) का प्रबन्ध है." महिला अध्यापकों को ज़चा काल की आठ हफ्ते की छुट्टी मिलती है. यह छुट्टी तनख्वाह समेत होती है.

इसी पुस्तक में चीनी आधुनिक साहित्य पर भी रोशनी डाली गई है. वहां के बड़े बड़े लेखकों की जीवनी भी डाक्टर जगदेश ने दी है और साथ में चीनी साहित्य का मुख्तसिर इतिहास भी दे दिया है.

अभी तक किसी पुस्तक में नये चीन के जेलों का हाल पढ़ने को नहीं मिला था. डाक्टर जगदीश चन्द्र ने उस पर भी रोशनी डाली है.

जगह जगह पर इतिहास का पुट मिलता है जो पुस्तक को दिलचस्प बनाता है. आख़ीर में डाक्टर साहब ने कुछ चीनी शब्दों के उच्चारन भी दिये हैं.

इस पुस्तक में चीन के बड़े बड़े शहरों का संक्षिप्त इतिहास मिलता है, साथ में उन शहरों की मशहूर इमारतों का भी इतिहास दिया गया है. यह पुस्तक चीन को समझने में बहुत हद तक सहायता देती है.

किताब हर एक के पढ़ने की है लेकिन दाम इतना है कि बहुत कम लोग पढ़ पायेंगे. अगर प्रकाशक सस्ते दाम का एडीशन निकाल दें तो अच्छा होगा.

—मुजीब रिज़वी

सेवा ग्राम

एडीटर—ज्ञानेन्द्र प्रसाद जैन, लिखावट—हिन्दी, मिलने का पता—दरयागंज, देहली; सालाना चन्दा—पांच रूपया, एक कापी का दाम—दो आना.

श्री ज्ञानेन्द्र प्रसाद जैन हाल में अमरीका से जर्नलिज़्म की शिक्षा लेकर वापस आए हैं. कुछ दिन उन्होंने भारत

ڈاکٹر جگدیش نے اپنی پستک میں لکھا ہے کہ ...تھیوں کی آپسی سہیوگ کمیٹیاں بنی ہوئی ہیں۔ ...دیارتھی کمزور ودیارتھیوں کی پوری سہائتا کرتے ہیں۔ ...ایک اور ودیارتھی میں بہت سہیوگ ہے۔

ہوڑ بازی کے سمرتھکوں کو نہ جانے یہ بات کیسی لگے ... چین نے جو ڈھرا اپنایا ہے وہ ہی تعلیم کو آگے ...نے میں اور عام کرنے میں مدد دے سکتا ہے۔ ہوڑ ...کی جگہ پر آپسی سہائتا کا بھاؤ پیدا کیا جاتا ہے۔

جب تک ادھیاپک پریشان حال ہیں تب تک ...کو سچی شکشا نہیں دی جاسکتی ہے۔ چین میں ...ادھیاپک کی عزت بے حد بڑھ گئی ہے۔ سرکار "اپنے ...ادھیاپکوں کی سکھ سودھاؤں کا دھیان رکھتی ہے۔ انہیں ...کرائے پر مکان ملتے ہیں اور بیمار ہو جانے پر اُن کی ...مفت چکتسا (علاج) کا پربندھ ہے۔" مہلا ادھیاپکوں ...زچہ کال کی آٹھ ہفتے کی چھٹی ملتی ہے۔ یہ چھٹی ...تنخواہ سمیت ہوتی ہے۔

اِس پستک میں چینی آدھونک ساہتیہ پر بھی ...روشنی ڈالی گئی ہے۔ وہاں کے بڑے بڑے لیکھکوں کی ...جیونی بھی ڈاکٹر جگدیش نے دی ہے اور ساتھ میں چینی ...ساہتیہ کا مختصر اتہاس بھی دے دیا ہے۔

ابھی تک کسی پستک میں نئے چین کے جیلوں ...کا حال پڑھنے کو نہیں ملا تھا۔ ڈاکٹر جگدیش چندر نے ...اس پر بھی روشنی ڈالی ہے۔

جگہ جگہ پر اتہاس کا پٹ ملتا ہے جو پستک کو ...دلچسپ بناتا ہے۔ آخیر میں ڈاکٹر صاحب نے کچھ ...چینی شبدوں کے اُچّارن بھی دیئے ہیں۔

اِس پستک میں چین کے بڑے بڑے شہروں کا ...سنچھپت اتہاس ملتا ہے، ساتھ میں اُن شہروں کی ...مشہور عمارتوں کا بھی اتہاس دیا گیا ہے۔ یہ پستک چین ...کو سمجھنے میں بہت حد تک سہائتا دیتی ہے۔

کتاب ہر ایک کے پڑھنے کی ہے لیکن دام اتنا ہے کہ بہت کم لوگ پڑھ پائیں گے۔ اگر پرکاشک سستے دام کا ایڈیشن نکال دیں تو اچھا ہوگا۔

—مجیب رضوی

سیوا گرام

ایڈیٹر—گیانیندر پرساد جین؛ لکھاوٹ ہندی؛ ملنے کا پتہ—1 دریا گنج، دہلی، سالانہ چندہ—پانچ روپیہ؛ ایک کا دام—دو آنہ۔

شری گیانیندر پرساد جین حال میں امریکہ سے جرنلزم کی شکشا لے کر واپس آئے ہیں۔ کچھ دن اُنہوں نے بھارت

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

चीनी जनता के बीच

लिखने वाले—डाक्टर जगदीश चन्द्र जैन; निकालने वाले—पीपिल्स पबलिशिंग हाउस लिमिटेड बम्बई 4; लिखावट—हिन्दी; सफ़्हे—256; दाम—चार रुपये.

भारती लेखकों ने नये चीन पर बहुत सी किताबें लिखी हैं. कुछ ने भारत में बैठ कर किताबों की मदद से और कुछ ने वहां जा कर चीज़ों को समझ कर. लेकिन डाक्टर जगदेश चन्द्र की किताब का मूल्य अधिक है क्योंकि वह पीकिंग यूनिवर्सिटी में सालों हिन्दी पढ़ाते रहे हैं. दूसरी किताबें अगर देखी, सुनी और पढ़ी पर निर्भर करती हैं. तो जगदीश जी की पुस्तक अनुभव पर निर्भर करती है. अनुभव ही इस किताब को दिलचस्प बनाता है जहां जहां उन्होंने अपने अनुभव चित्रित किये हैं वहां वहां किताब दिल को छूती है. नया चीन के लिये दिल में प्रेम पैदा होता है और जहां जहां उन्होंने आंकड़े गिनाये हैं और ऐसे विषयों पर लिखा है जिन पर पहले ही बहुत कुछ लिखा जा चुका है वहां वहां पुस्तक नीरस हो गई है.

अगर पुस्तक का नाम "चीनी विद्यार्थियों के बीच" होता तो अच्छा होता. असल में उन्हें विद्यार्थियों और अध्यापकों के सम्बन्ध में ही लिखना चाहिये था. दो तीन अध्याय उन्होंने इस सम्बन्ध में लिखे हैं. उनको पढ़ कर आंख खुल जाती है. चीनी विद्यार्थियों के बारे में वह लिखते हैं:—

> "मैंने काफी नजदीक से चीन के विद्यार्थियों का अध्ययन करने का प्रयत्न (कोशिश) किया और उन्हें सरल, सीधा, परिश्रमी (मेहनती) और अतियन्त (बहुत) सहनशील (रवादार) पाया. परनिन्दा और नरर्थक (बेकार) वाद विवाद (बहस) में अपना समय नष्ट करते हुए उन्हें कभी नहीं देखा. फ़ैशन की ओर उनकी रुचि नहीं है. छात्रों की अपेक्षा (मुक़ाबिले) छात्राएं कुछ अधिक प्रतिभाशाली जान पड़ीं. व्यक्तिवाद के स्थान पर सामुहिकता की स्वस्थ भावना विद्यार्थियों में दिन पर दिन बढ़ रही है."

چینی جنتا کے بیچ

لکھنے والے—ڈاکٹر جگدیش چندر جین؛ نکالنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاؤس لمیٹڈ بمبئی 4؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحے 256؛ دام—چار روپئے۔

بھارتی لیکھکوں نے نئے چین پر بہت سی کتابیں لکھی ہیں۔ کچھ نے بھارت میں بیٹھکر کتابوں کی مدد سے اور کچھ نے وہاں جا کر چیزوں کو سمجھکر۔ لیکن ڈاکٹر جگدیش چندر کی کتاب کا مولیہ ادھک ہے کیونکہ وہ پیکنگ یونیورسٹی میں سالوں ہندی پڑھاتے رہے ہیں۔ دوسری کتابیں اگر دیکھی، سنی اور پڑھی پر نربھر کرتی ہیں تو جگدیش جی کی پستک انوبھو پر نربھر کرتی ہے۔ انوبھو ہی اس کتاب کو دلچسپ بناتا ہے۔ جہاں جہاں انہوں نے اپنے انوبھو چترت کئے ہیں وہاں وہاں کتاب دل کو چھوتی ہے، نیا چین کے لیئے دل میں پریم پیدا ہوتا ہے اور جہاں جہاں انہوں نے آنکڑے گنائے ہیں ایسے وشیوں پر لکھا ہے جن پر پہلے ہی بہت کچھ لکھا جا چکا ہے وہاں وہاں پستک نیرس ہوگئی ہے۔

اگر پستک کا نام "چینی ودیارتھیوں کے بیچ" ہوتا تو اچھا ہوتا۔ اصل میں انہیں ودیارتھیوں اور ادھیاپکوں کے سمبندھ میں ہی لکھنا چاہیئے تھا۔ دو تین ادھیائے انہوں نے اِس سمبندھ میں لکھے ہیں۔ اُن کو پڑھکر آنکھ کھل جاتی ہے۔ چینی ودیارتھیوں کے بارے میں وہ لکھتے ہیں:—

> "میں نے کافی نزدیک سے چین کے ودیارتھیوں کا ادھین کرنے کا پریتن (کوشش) کیا اور انہیں سرل، سیدھا، پریشرمی (محنتی) اور اتینت (بہت) سہن شیل (روادار) پایا۔ پرنندا اور نرتھک (بیکار) واد وواد (بحث) میں اپنا سمے نشٹ کرتے ہوئے انہیں کبھی نہیں دیکھا۔ فیشن کی اور اُن کی رچی نہیں ہے۔ چھاتروں کی اپیکچھا (مقابلے) چھاترائیں کچھ ادھک پرتبھا شالی جان پڑیں۔ ویکتی واد کے استھان پر سامو ہکتا کی سوستھ بھاونا ودیارتھیوں میں دن پر دن بڑھ رہی ہے۔"

हासिल करने के लिये बहुत मज़बूत इरादे और बहुत बड़ी हिम्मत की ज़रूरत है. अगर सारे पिछड़े देश इस बात को समझ लेते हैं और एक साथ खड़े हो जाते हैं तो शान्ति बहुत जल्दी क़ायम हो जायेगी. इस कार्य के लिये हम सबको एक हो जाना चाहिये और हमें यह प्रन करना चाहिये कि मरेंगे तो विश्व शान्ति के लिये और जियेंगे तो विश्व शान्ति के लिये !

حاصل کرنے کے لیئے بہت مضبوط ارادے اور بہت بڑی ہمت کی ضرورت ہے۔ اگر سارے پچھڑے دیش اس بات کو سمجھ لیتے ہیں اور ایک ساتھ کھڑے ہو جاتے ہیں تو شانتی بہت جلدی قائم ہو جائے گی۔ اس کام کے لیئے ہم سب کو ایک ہو جانا چاہیئے اور ہمیں یہ پرن کرنا چاہیئے کہ مرینگے تو وشو شانتی کے لیئے اور جئینگے تو وشو شانتی کے لیئے!

नन्दा कई दिनों से भूका था—पेट की ज्वाला से पीड़ित और रोग से दुखी. उसने देखा—सेठ राम गोपाल मीठे पूड़ों का थाल भरे, देवी कुंड पर बन्दरों को खिलाने जा रहे हैं. गिड़गिड़ा कर नन्दा ने कहा—"सेठ जी ! मैं कई दिनों से भूका हूं, जान निकली जा रही है. कुछ पूड़े मुझे भी दीजिये.

"अबे भूका है, तो शहर में जा कर मांग ?"

"शहर जाने की हिम्मत नहीं है सेठ जी ! बीमारी ने मुझे घर लिया है भूके की जान बचा ने से तो हनूमान जी आपपर प्रसन्न ही होंगे."

"अच्छा रहने दे, मुझे तेरे उपदेश की ज़रूरत नहीं है."

बड़े प्रेम से बन्दरों को खिला कर सेठ जी लौटे तो देखा नन्दा रास्ते पर पड़ा है. घृना के स्वर में आप ही आप बोले—"अभी तो बदमाश भूकों मर रहा था, इतने में सो भी गया !"

यह सुन कर भी नन्दा नहीं जगा. जागने को वह सोया ही न था !

نندا کئی دنوں سے بھوکا تھا—پیٹ کی جوالا سے پیڑت اور روگ سے دکھی۔ اس نے دیکھا—سیٹھ رام گوپال میٹھے پوڑوں کا تھال بھرے، دیوی کنڈ پر بندروں کو کھلا نے جا رہے ہیں۔ گڑگڑا کر نندا نے کہا—"سیٹھ جی! میں کئی دنوں سے بھوکا ہوں جان نکلی جا رہی ہے۔ کچھ پوڑے مجھے بھی دیجئے۔"

"ابے بھوکا ہے، تو شہر میں جاکر مانگ؟"

"شہر جانے کی ہمت نہیں ہے سیٹھ جی! بیماری نے مجھے گھیر لیا ہے۔ بھوکے کی جان بچانے سے تو ہنومان جی آپ پر پرسن ہی ہونگے!"

"اچھا رہنے دے، مجھے تیرے اپدیش کی ضرورت نہیں ہے۔"

بڑے پریم سے بندروں کو کھلاکر سیٹھ جی لوٹے تو دیکھا نندا راستے پر پڑا ہے۔ گھرنا کے سور میں آپ ہی آپ بولے—"ابھی تو بدمعاش بھوکوں مر رہا تھا، اتنے میں سو بھی گیا!"

یہ سن کر بھی نندا نہیں جگا۔ جاگنے کو وہ سویا ہی نہ تھا!

आजकल अजीब घटना हो रही है. आदमी विज्ञान की सहायता से ज्यादा से ज्यादा पैदावार बढ़ाने पर जुटा हुआ है. लेकिन फिर भी इस कोशिश का नतीजा बहुत से देशों की ग़रीबी नहीं दूर कर पाया. अब भी वहां लोग भूखों मरते हैं और हर तरह से दुखी हैं. हद यह हो गई है कि ज़िन्दा रहना भी बहुत मुश्किल हो गया है. ज़िन्दगी की फ़िक्र और परेशानी बढ़ती चली जा रही है. आधुनिक हथियार मनुश्य जाति का ख़ात्मा कर सकते हैं. सारे देशों की जनता इन हथियारों की भयानकता से डर रही है.

लड़ाई के आधुनिक तरीक़ों की जितनी भी निन्दा की जाये कम है. सिवाय नैतिकता का ही सवाल नहीं है. समाजी और आर्थिक दृश्टिकोन से भी यह लड़ाइयां बहुत ही भयंकर हैं. साम्राजी जो लड़ाइयां छेड़ते हैं उसमें बहुत सी अच्छी चीज़ें तबाह हो जाती है और उन थोड़े से लोगों को भी बहुत ज्यादा फ़ायदा नहीं होता. आम जनता को बरबादी के सिवा और कुछ नहीं मिलता. यही नहीं कि घरबार तबाह होता है बल्कि इससे कहीं ज्यादा बुरी बात यह होती है कि आदमियों का आचार गिर जाता है और वह जान से मारे जाते हैं. लड़ाइयों की निन्दा करने के लिये बस इतना ही काफ़ी है.

आर्थिक लक्ष

मैंने जो बातें ऊपर कहीं हैं उनका मतलब एक है दुनिया की सरकारों को चाहिये कि वह ऐसा रास्ता अख़्तियार करें कि वह आम जनता की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा कर सकें और उन्हें जनता को सुख पहुंचाने और उसकी भलाई करने का हर वक़्त ध्यान रहे. दौलत किस तरह से इकट्ठा की जाये इसकी चिन्ता उन्हें नहीं होनी चाहिये. जब तक हम अपना दृश्टिकोन नहीं बदलते हैं, जब तक हम जनता की ज़रूरतों को पूरा नहीं करते हैं, जब तक हम अपने माली ढांचे को नए सिरे से खड़ा नहीं करते हैं जब तक हम अपनी कोशिशों से जनता की ज़रूरत का सामान नहीं पैदा करते, जब तक हम अन्तर्राश्ट्री व्योपार से फ़ायदा उठाने का मोह नहीं छोड़ते हैं. तब तक हम दुनिया में शान्ति नहीं क़ायम कर सकते हैं. साम्राजी सरकारों से काग़ज़ी समझौते चाहे जितनी अच्छी नीयत से किये जायें वह शान्ति को स्थाई नहीं बना सकते. सच्ची और स्थाई शान्ति केवल उसी वक़्त क़ायम हो सकती है जब हम संगठित हों और उसके लिये अमली कोशिश करें. आज की लड़ाई यक़ीनन आर्थिक गड़बड़ी का नतीजा है. अगर हम अपने आर्थिक ढांचे को बदल दें तो हम हमेशा के लिये शान्तिमय जीवन बिता सकते हैं. इसको

آج کل عجیب گھٹنا ہو رہی ہے . آدمی وگیان
، سہائتا سے زیادہ سے زیادہ پیداوار بڑھانے پر جٹا ہوا
، . لیکن پھر بھی اِس کوشش کا نتیجہ بہت سے دیشوں
ی غریبی نہیں دور کر پایا . اب بھی وہاں لوگ بھوکوں
رتے ہیں . اور ہر طرح سے دکھی ہیں . حد یہ ہوگئی ہے
ہ زندہ رہنا بھی بہت مشکل ہوگیا ہے . زندگی کی فکر
ور پریشانی بڑھتی چلی جا رہی ہے . آدھونک ہتھیار
منشیہ جاتی کا خاتمہ کر سکتے ہیں . سارے دیشوں کی
جنتا اِن ہتھیاروں کی بھیانکتا سے ڈر رہی ہے .

لڑائی کے آدھونک طریقوں کی جتنی بھی نندا کی
جائے کم ہے . سوائے نیتکتا کا ہی سوال نہیں ہے. سماجی اور
آرتھک درشٹی کون سے بھی یہ لڑائیاں بہت ہی بھینکر ہیں.
سامراجی جو لڑائیاں چھیڑتے ہیں اُس میں بہت سی
چھی چیزیں تباہ ہو جاتی ہیں اور اُن تھوڑے سے لوگوں
کو بھی بہت زیادہ فائدہ نہیں ہوتا . عام جنتا کو بربادی
کے سوا اور کچھ نہیں ملتا. یہی نہیں کہ گھر بار تباہ ہوتا
ہے بلکہ اِس سے کہیں زیادہ بری بات یہ ہوتی ہے کہ
آدمیوں کا آچار گر جاتا ہے اور وہ جان سے مارے جاتے
ہیں. لڑائیوں کی نندا کرنے کے لیئے بس اتنا ہی کافی ہے.

آرتھک لکش

میں نے جو باتیں اوپر کہی ہیں اُن کا مطلب ایک
ہے . دنیا کی سرکاروں کو چاہیئے کہ وہ ایسا راستہ اختیار
کریں کہ وہ عام جنتا کی بنیادی ضرورتوں کو پورا کر سکیں
اور انہیں جنتا کو سکھ پہونچانے اور اُس کی بھلائی کرنے
کا ہر وقت دھیان رہے . دولت کس طرح سے اِکٹھا کی جائے
اسکی چنتا اُنہیں نہیں ہونی چاہیئے. جب تک ہم اپنا
درشٹی کون نہیں بدلتے ہیں، جب تک ہم جنتا کی ضرورتوں
کو پورا نہیں کرتے ہیں، جب تک ہم اپنے مالی ڈھانچے
کو نئے سرے سے کھڑا نہیں کرتے ہیں، جب تک ہم اپنی
کوششوں سے جنتا کی ضرورت کے سامان پیدا نہیں کرتے
ہیں، جب تک ہم انتر راشٹری بیوپار سے فائدہ اُٹھانے کا
موہ نہیں چھوڑتے ہیں، تب تک ہم دنیا میں شانتی قائم
نہیں کر سکتے ہیں. سامراجی سرکاروں سے کاغذی سمجھوتے
چاہیئے جتنی اچھی نیت سے کیئے جائیں وہ شانتی کو
استھائی نہیں بنا سکتے . سچی اور استھائی شانتی کیول
اُسی وقت قائم ہوسکتی ہے جب ہم سنگٹھت ہوں اور اس
کے لیئے عملی کوشش کریں . آج کی لڑائی یقیناً آرتھک
گڑبڑی کا نتیجہ ہے. اگر ہم اپنے آرتھک ڈھانچے کو بدل دیں
تو ہم ہمیشہ کے لئے شانتی مے جیون بتا سکتے ہیں . اسکو

जायें और ऐसे लोगों को समाज विरोधी समझा जाना चाहिये.

बाज़ार

जो चीज़ें हम बनायें उनके लिये बाजार मौजूद होना चाहिये और यह सारा सामान आस पास की मन्डियों में बिक जाना चाहिये. मन्डियों पर कब्ज़ा करने की वजह से लड़ाइयां होती हैं. बर्तानिया, जर्मनी और जापान में मन्डियों पर असर जमाने की होड़ लगी थी. इसीलिये पिछली भयानक लड़ाई हुई थी. जो देश विकसित नहीं हैं वह उद्योग में बढ़े देशों को कच्चा माल मोहैय्या करते हैं और इस कच्चे माल से जो इस्तेमाल का सामान बनता है उसको ख़रीदते हैं. अगर फ़्रान्स, हिन्दचीन में जमा रहना चाहता है तो इसका कारन यही है. हर देश को अपने ढंग पर विकसित होने का मौक़ा मिलना चाहिये. बाहर से कोई दख़लअन्दाज़ी नहीं होनी चाहिये. विदेशी दख़लअन्दाज़ी राष्ट्र की स्वतन्त्रता को ख़त्म करती है और लड़ाई झगड़े खड़े हो जाते हैं.

खपत में मितता

अगर हम सब मिल कर विदेशी दख़लअन्दाज़ी को नहीं रोक सकते तो हमें पिछड़े देशों की जनता को सीख देनी चाहिये और उनमें ऐसी आदत पैदा करनी चाहिये. ताकि ख़रीदते समय वह दूसरे देशों के सामान को अपने देश के सामान के मुक़ाबिले, में न ख़रीदें. यह बहुत मुश्किल सवाल है. इस पर अमल बहुत ही कठिन है. सबको लालच होती है कि विदेशी सामान सस्ता मिलेगा और देशी सामान से अच्छा मिलेगा, लेकिन विदेशी माल को न ख़रीदने की आदत पैदा करना ज़रूरी है. इसी से शान्ति स्थापित होगी. आर्थिक मैदान में हमें कछुए की नक़ल करनी पड़ेगी. अपनी रक्षा के लिये कछुआ अपने सारे अंग खोपड़ी में सकेल लेता है. हमको अपने राष्ट्र को कछुए की खोपड़ी बना लेना चाहिये और जब कोई दूसरा राष्ट्र हमसे नाजायज़ फ़ायदा उठाना चाहे तो हमें खोपड़ी में घुस जाना चाहिये.

बहुत से लोग "विश्व मन्डी" की चर्चा से मोहित होते हैं. लेकिन इस सवाल पर उन्होंने ग़ौर नहीं किया. आजकल इस तरह की चर्चा पूंजीपति करते हैं. इन सब सम्बन्धों में सोवियत यूनियन ने अच्छी मिसाल क़ायम की है. वहां विदेशी व्योपार की इजारादारी राज्य के हाथ में है. वह लोग बाहरी व्योपारियों को विदेशी मन्डियों में घुसने नहीं देते और इन्हीं कारनों से रूस में अच्छी मज़दूरी मिलती है और काम करने वाले सुखी जीवन बिताते हैं.

جائیں اور ایسے لوگوں کو سماج وِرودھی سمجھا جانا چاہیئے .

بازار

جو چیزیں ہم بنائیں اُن کے لئے بازار موجود ہونا چاہیئے اور یہ سارا سامان آس پاس کی منڈیوں میں بک جانا چاہیئے . منڈیوں پر قبضہ کرنے کی وجہ سے لڑائیاں ہوتی ہیں . برطانیہ' جرمنی اور جاپان میں منڈیوں پر اثر جمانے کی ہوڑ لگی تھی. اسی لئے پچھلی بھیانک لڑائی ہوئی تھی. جو دیش وکست نہیں ہیں وہ ادیوگ میں بڑھے دیشوں کو کچا مال مہیا کرتے ہیں اور اِس کچے مال سے جو استعمال کا سامان بنتا ہے اس کو خریدتے ہیں . اگر فرانس ہند چین میں جما رہنا چاہتا ہے تو اس کا کارن یہی ہے . ہر دیش کو اپنے ڈھنگ پر وکست ہونے کا موقع ملنا چاہیئے. باہر سے کوئی دخل اندازی نہیں ہونی چاہیئے . ودیشی دخل اندازی' راشٹر کی سوتنترتا کو ختم کرتی ہے اور لڑائی جھگڑے کھڑے ہو جاتے ہیں .

کھپت میں بھنتا

اگر ہم سب مل کر ودیشی دخل اندازی کو نہیں روک سکتے تو ہمیں پچھڑے دیشوں کی جنتا کو سیکھ دینی چاہیئے اور ان میں ایسی عادت پیدا کرنی چاہیئے تاکہ خریدتے سمے وہ دوسرے دیشوں کے سامان کو اپنے دیش کے مقابلے میں نہ خریدیں . یہ بہت مشکل سوال ہے . اس پر عمل بہت ہی کٹھن ہے . سب کو لالچ ہوتی ہے کہ ودیشی سامان سستا ملے گا اور دیشی سامان سے اچھا ملے گا' لیکن ودیشی مال کو نہ خریدنے کی عادت پیدا کرنا ضروری ہے. اِسی سے شانتی استھاپت ہوگی . آرتھک میدان میں ہمیں کچھوے کی نقل کرنی پڑے گی . اپنی رکشا کے لئے کچھوا اپنے سارے انگ کھوپڑی میں سکیل لیتا ہے . ہم کو اپنے راشٹر کو کچھوے کی کھوپڑی بنا لینا چاہیئے اور جب کوئی دوسرا راشٹر ہم سے ناجائز فائدہ اٹھانا چاہئے تو ہمیں کھوپڑی میں گھس جانا چاہیئے .

بہت سے لوگ " وشو منڈی " کی چرچا سے موہت ہوتے ہیں. لیکن اس سوال پر انہوں نے غور نہیں کیا . آجکل اس طرح کی چرچا پونجی پتی کرتے ہیں . اِن سب سمبندھوں میں سوویت یونین نے اچھی مثال قائم کی ہے . وہاں ودیشی بیوپار کی اجارہ‌داری راجیہ کے ہاتھ میں ہے. وہ لوگ باہری بیوپاریوں کو ودیشی منڈیوں میں گھسنے نہیں دیتے اور انہیں کارنوں سے روس میں اچھی مزدوری ملتی ہے اور کام کرنے والے سکھی جیون بتاتے ہیں .

शक्ति का कोई उपयोग नहीं होता. अगर होता भी है तो पूरा पूरा नहीं होता. इससे ज़ाहिर है कि जहां तक मुमकिन हो हमें इस शक्ति से काम लेना चाहिये. ऐसा करने पर कुछ बातों का हमें ध्यान रखना पड़ेगा. पहली बात तो यह है कि जब इन्सानी शक्ति का इस्तेमाल करना है तो "मेहनत बचाव" तरीक़ों पर ध्यान नहीं देना है. इसके बजाय पैदावार के ऐसे तरीक़े अपनाने हैं जिसमें बहुत ज़्यादा लोग हाथ बटा सकें. जनता का जो उपेक्षित भाग है इस तरह हम उसको सुख दे सकते हैं.

मज़दूरी

मज़दूरी का आधार एक है. काम के बदले में मज़दूर को इतनी रक़म मिल जानी चाहिये कि उसे ज़रूरत के अनुसार खाना मिल सके और खाना ऐसा हो जो उसके जिस्म को मज़बूत रख सके. मज़दूर को ऐसी सुविधा होनी चाहिये जिससे वह उचित स्तर का जीवन बिता सके. लेकिन आजकल चीज़ों के दाम मज़दूरी तय करते हैं. इस तरह की प्रथा पूंजीवादी देशों में चालू है. ज़्यादातर हालतों में मज़दूरी रबड़ के समान है. बाज़ार भाव बढ़ गया है और ज़्यादा मुनाफ़ा हुआ तो मज़दूरी बढ़ जायगी, और अगर नहीं तो मज़दूरी घटेगी और छटनी होगी. लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिये. मज़दूरी का एक स्तर मुक़र्रर होना चाहिये जिससे कम मज़दूरी नहीं मिलेगी. जब फ़ायदा होता है तो मज़दूरी बढ़ती है और इसलिये जब घाटा हो तो मज़दूरी घटे यह बात उचित नहीं है. मज़दूर को इतना तो मिलना ही चाहिये जिससे वह साल भर तक अपनी ज़रूरतें पूरी कर सके.

हिन्दुस्तान में बहुत से लोग ऐसे हैं जिनके पास खेत नहीं हैं और वह लोग दूसरों के खेतों पर काम करते हैं. यह लोग बरसात के दिनों में ही काम कर पाते हैं और तब भी इन्हें पेट भरने के लिये रोटी नहीं मिल पाती. उन्हें इतना मिलना चाहिये कि वह साल भर तक एक उचित स्तर पर जीवन बिता सकें. इससे खेत की पैदावार का दाम फ़ौरन बढ़ जायेगा और पूंजी का बटवारा उचित ढंग से होगा और ज़्यादा लोगों को सुख मिल सकेगा.

लोगों का दुखी होना, तनाव को बढ़ाता है. यह वह बीज है जिससे लड़ाई झगड़े पैदा होते हैं.

खेती का स्थान

खेती को उद्योग का दर्जा नहीं मिलना चाहिये. उन सब बुराइयों को हम लोग जानते हैं जिनकी वजह से गेहूं की अच्छी फ़सल जला दी गई. फ़सलें इसलिये जलाई गईं ताकि स्टाक कम हो जाये और गेहूं का दाम बढ़ जाये. इस तरह की हरकतें समाज विरोधी समझी

شکتی کا کوئی اپیوگ نہیں ہوتا ۔ اگر ہوتا بھی ہے تو پورا پورا نہیں ہوتا ۔ اس سے ظاہر ہے کہ جہاں تک ممکن ہو ہمیں اس شکتی سے کام لینا چاہیئے ۔ ایسا کرنے میں کچھ باتوں کا ہمیں دھیان رکھنا پڑیگا ۔ پہلی بات تو یہ ہے کہ جب انسانی شکتی کا استعمال کرنا ہے تو "محنت بچاؤ" طریقوں پر دھیان نہیں دینا ہے ۔ اس کے بجائے پیداوار کے ایسے طریقے اپنانے ہیں جس میں بہت زیادہ لوگ ہاتھ بٹا سکیں ۔ جنتا کا جو اپیکشت بھاگ ہے اس طرح ہم اس کو سکھ دے سکتے ہیں ۔

مزدوری

مزدوری کا آدھار ایک ہے ۔ کام کے بدلے میں مزدور کو اتنی رقم مل جانی چاہیئے کہ اسے ضرورت کے انوسار کھانا مل سکے اور کھانا ایسا ہو جو اس کے جسم کو مضبوط رکھ سکے ۔ مزدور کو ایسی سویدھا ہونی چاہیئے جس سے وہ اچت استر کا جیون بتا سکے ۔ لیکن آجکل چیزوں کے دام مزدوری طے کرتے ہیں ۔ اس طرح کی پرتھا پونجی وادی دیشوں میں چالو ہے ۔ زیادہ تر حالتوں میں مزدوری ربڑ کے سمان ہے ۔ بازار بھاؤ بڑھ گیا اور زیادہ منافع ہوا تو مزدوری بڑھ جائیگی اور اگر نہیں تو مزدوری گھٹے گی اور چھٹنی ہوگی ۔ لیکن ایسا نہیں ہونا چاہئے ۔ مزدوری کا ایک استر مقرر ہونا چاہیئے جس سے کم مزدوری نہیں ملے گی ۔ جب فائدہ ہوتا ہے تو مزدوری بڑھتی ہے اور اس لیئے جب گھاٹا ہو تو مزدوری گھٹے یہ بات اچت نہیں ہے ۔ مزدور کو اتنا تو ملنا ہی چاہیئے جس سے وہ سال بھر تک اپنی ضرورتیں پوری کر سکے ۔

ہندستان میں بہت سے لوگ ایسے ہیں جن کے پاس کھیت نہیں ہیں اور وہ لوگ دوسروں کے کھیتوں پر کام کرتے ہیں ۔ یہ لوگ برسات کے دنوں میں ہی کام کر پاتے ہیں اور تب بھی انہیں پیٹ بھرنے کے لیئے روٹی نہیں مل پاتی ۔ انہیں اتنا ملنا چاہیئے کہ وہ سال بھر تک ایک اچت استر پر جیون بتا سکیں ۔ اس سے کھیت کی پیداوار کا دام فوراً بڑھ جائیگا اور پونجی کا بٹوارہ اچت ڈھنگ سے ہوگا اور زیادہ لوگوں کو سکھ مل سکے گا ۔

لوگوں کا دکھی ہونا تناؤ کو بڑھاتا ہے ۔ یہ وہ بیج ہے جس سے لڑائی جھگڑے پیدا ہوتے ہیں ۔

کھیتی کا استھان

کھیتی کو ادیوگ کا درجہ نہیں ملنا چاہیئے ۔ ان سب برائیوں کو ہم سب جانتے ہیں جن کی وجہ سے گیہوں کی اچھی فصلیں جلا دی گئیں ۔ فصلیں اس لیئے جلائی گئیں تاکہ اسٹاک کم ہو جائے اور گیہوں کا دام بڑھ جائے ۔ اس طرح کی حرکتیں سماج ورودھی سمجھی

को पूरी करके दूसरों की जरूरत पूरा नहीं करेगा. दूसरों की जरूरत को वह पूरा करेगा क्योंकि वह मजबूर है. घिर जाने पर उसे खाना और कपड़ा नहीं मुयस्सर होगा क्योंकि बुनियादी जरूरतों को वह विदेशों से मंगाकर पूरी करता है. लंका के व्योपार से जो दौलत मिलती है. वह बाहर माल भेजने वाले और अन्दर माल लाने वाले के हाथों में पहुंचती है. इससे देश में बदअमनी फैलती है. चारों तरफ से घिर जाने पर लोग न तो रबड़ खा सकते हैं और न चाय की पत्तियां पहन सकते हैं. इसलिये लंका की सुरक्षा केवल एक तरीक़े से हो सकती है. उन्हें अपने आर्थिक जीवन को दूसरी तरह ढालना होगा ताकि राष्ट्र की बुनियादी जरूरतें पूरी हो सकें.

धातु रूपी साधन

किसी खुले घर में अगर दौलत रक्खी हो तो राह चलते आदमी को लालच लगती है. अगर हम नहीं चाहते हैं कि चोर हमारे घर आयें तो हमें अपना घर बन्द रखना चाहिये. हमारे प्राकृतिक साधन हमारी विरासत हैं. मन्चूरिया कोयले से माला माल है. इसी कोयले ने जापान को मन्चूरिया पर क़ब्जा करने के लिये आकर्षित किया है. हमें अपने खदानों की जरूरत के अनुसार खुदाई करनी चाहिये और अपनी दौलत खोद खोद कर विदेशों को नहीं भेजनी चाहिये. जब हमारी जमीन के नीचे छिपी दौलत खत्म हो जाती है तब झगड़े शुरू होते हैं क्योंकि हम दूसरे की दौलत पर हाथ मारना चाहते हैं. जहां तक सम्भव हो हमें अपने ही साधनों के ऊपर निर्भर करना चाहिये और उन साधनों को इस तरह इस्तेमाल करना चाहिये जिससे कि उन साधनों को अगली नस्लें भी इस्तेमाल कर सकें. अमरीका में पेट्रोल बेहद खर्च होता है. उसका इस्तेमाल हर चीज में होने लगा है इसलिये अमरीका ट्रान्सजारडन, इराक़ और बोरनियो के तेल के कुओं पर जुल्म ज्यादती और चालबाजी हर तरह से क़ब्जा करना चाहता है. इस कारन ही वह एक लड़ाकू राष्ट्र बन गया है. इस चीज को खत्म करने के लिये हमें एक लम्बी योजना बनानी पड़ेगी.

पैदावार के ढंग

अभी तक हमने इस बात पर विचार किया है कि हमें अपने प्राकृतिक साधनों को कैसे इस्तेमाल करना चाहिये. अब हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि कच्चे माल को अपने जरूरी सामान बनाने में हमें कौन से तरीक़े अपनाने चाहिये. इस बात पर ध्यान हमें उन देशों में खासकर देना चाहिये जो अभी पीछे हैं. एशिया के ज्यादातर देश पूरी तरह विकसित नहीं हैं इन देशों में बेहद आदमी हैं. इन आदमियों की अधिकतर

کو پوری کر کے دوسروں کی ضرورت پورا نہیں کرے گا ۔ دوسروں کی ضرورت کو وہ پورا کرے گا کیونکہ وہ مجبور ہے ۔ گھر جانے پر اسے کھانا اور کپڑا نہیں میسر ہوگا کیونکہ بنیادی ضرورتوں کو وہ ودیشوں سے منگاکر پوری کرتا ہے ۔ لنکا کے بیوپار سے جو دولت ملتی ہے وہ باہر مال بھیجنے والے اور اندر مال لانے والے کے ہاتھوں میں پہنچتی ہے ۔ اس سے دیش میں بدامنی پھیلتی ہے ۔ چاروں طرف سے گھر جانے پر لوگ نہ تو ربڑ کھا سکتے ہیں اور نہ چائے کی پتیاں پہن سکتے ہیں ۔ اسلئے لنکا کی سرکشا کیول ایک طریقے سے ہوسکتی ہے ۔ انہیں اپنے آرتھک جیون کو دوسری طرح ڈھالنا ہوگا تاکہ راشٹر کی بنیادی ضرورتیں پوری ہوسکیں ۔

دھاتو روپی سادھن

کسی کھلے گھر میں اگر دولت رکھی ہو تو راہ چلتے آدمی کو لالچ لگتی ہے ۔ اگر ہم نہیں چاہتے ہیں کہ چور ہمارے گھر آئیں تو ہمیں اپنا گھر بند رکھنا چاہئے ۔ ہمارے پراکرتک سادھن ہماری وراثت ہیں ۔ منچوریا کوئلے سے مالا مال ہے ۔ اسی کوئلے نے جاپان کو منچوریا پر قبضہ کرنے کے لئے آکرشت کیا ۔ ہمیں اپنے کھدانوں کی ضرورت کے انوسار کھدائی کرنی چاہئے اور اپنی دولت کھود کھود کر ودیشوں کو نہیں بھیجنی چاہئے ۔ جب ہماری زمین کے نیچے چھپی دولت ختم ہوجاتی ہے تب جھگڑے شروع ہوتے ہیں کیونکہ ہم دوسرے کی دولت پر ہاتھ مارنا چاہتے ہیں ۔ جہاں تک سمبھو ہو ہمیں اپنے ہی سادھنوں کے اوپر نربھر کرنا چاہئے اور ان سادھنوں کو اس طرح استعمال کرنا چاہئے جس سے کہ ان سادھنوں کو اگلی نسلیں بھی استعمال کرسکیں ۔ امریکہ میں پٹرول بےحد خرچ ہوتا ہے ۔ اس کا استعمال ہر چیز میں ہونے لگا ہے اسی لئے امریکہ ٹرانس جورڈن، عراق اور بورنیو کے تیل کے کنوؤں پر ظلم، زیادتی اور چالبازی ہر طرح سے قبضہ کرنا چاہتا ہے ۔ اس کارن ہی وہ ایک لڑاکو راشٹر بن گیا ہے ۔ اس چیز کو ختم کرنے کے لئے ہمیں ایک لمبی یوجنا بنانی پڑے گی ۔

پیداوار کے ڈھنگ

ابھی تک ہم نے اس بات پر وچار کیا ہے کہ ہمیں اپنے پراکرتک سادھنوں کو کیسے استعمال کرنا چاہئے ۔ اب ہمیں اس بات پر دھیان دینا چاہئے کہ کچے مال کو اپنے ضروری سامان بنانے میں ہمیں کون سے طریقے اپنانے چاہئیں ۔ اس بات پر دھیان ہمیں ان دیشوں میں خاصکر دینا چاہئے جو ابھی پیچھے ہیں ۔ ایشیا کے زیادہ تر دیش پوری طرح وکست نہیں ہیں ۔ ان دیشوں میں بےحد آدمی ہیں ۔ ان آدمیوں کی ادھک تر

तो हम सब को जीविका दे सकते हैं और तब ही शान्ति से लोग रह सकते हैं. लेकिन शक्तिशाली राष्ट्र इन साधनों को हथियाने की कोशिश करते हैं. इससे राष्ट्रों के बीच तनाव बढ़ता है और पड़ोसी दुश्मन हो जाते हैं.

आर्थिक योजना

कम से कम जो एक राष्ट्र जो कर सकता है वह यह है कि अपनी जनता को वह खाना, कपड़ा और मकान मुहय्या करे. यह उसका लक्ष होना चाहिये. इसके बाद अगर ज़मीन, पानी और धातु जैसे साधन मौजूद हों तो हमें ब्योपार की तरफ़ झुकना चाहिये और ऐश परस्ती के सामान सप्लाई करने की कोशिश करनी चाहिये और तब ही बाहरी सामानों से अपने सामानों का बदलाव करना चाहिये. जब भी ज़न्जीर की कोई कड़ी इधर उधर होगी और या ग़लत निर्देश पर काम होगा तो फ़ौरन मुसीबत खड़ी हो जायेगी.

मिसाल के लिये हिन्दचीन को ले लीजिये. दुनिया में रबड़ की जितनी खपत है उसका पचासी प्रतिशत रबड़ हिन्द चीन में पैदा होती है. लेकिन हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि हिन्दचीन अकेले इतने रबड़ का इस्तेमाल कर सकता है. जो देश उद्योग में आगे बढ़े हैं और जिनका विकास बहुत हो चुका है उन्हें कच्चे माल की ज़रूरत पड़ती है. उनकी यह बुनियादी ज़रूरत कैसे पूरी हो सकती है ? इस ज़रूरत को पूरा करने का एक ही तरीक़ा है और वह यह है कि ऐसे राष्ट्र कच्चे माल की पैदावार पर कन्ट्रोल रक्खें और उसके ब्योपार को अपने हाथ में रक्खें. यही करने के लिये विदेशी दूसरे राष्ट्रों पर क़ब्ज़ा जमाने की कोशिश करते हैं. दुनिया में जो कुछ राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के अधीन है और ग़ुलाम मात्र हैं उसका बुनियादी कारन यही है. हिन्द चीन की जनता को इतनी मात्रा में रबड़ नहीं पैदा करना चाहिये. उसके बजाय ऐसी चीज़ों की पैदावार पर उन्हें ज़ोर देना चाहिये जिन से उन्हें खाना मिल सके, उन्हें कपड़ा मुहय्या हो सके और उनके मकान की दिक़्क़त दूर हो सके. उन्हें ऐसे बुनियादी उद्योग धन्धे खड़े करने चाहियें जिससे इस तरह का माली ढांचा तैयार हो सके. अगर अपने आर्थिक जीवन को वह इस रास्ते पर चला सकेंगे तो देशवासियों का जन समूह सुख की सांस ले सकेगा.

इसी तरह लंका में चाय और रबड़ ख़ूब पैदा होती है. जिस देश की आर्थिक रीढ़ ऐसी हो उसका भगवान ही मालिक है. लंका एक द्वीप है. ऐसा राष्ट्र जिसकी समुद्री शक्ति अधिक है वह आसानी से लंका को घेर सकता है और विदेशी उद्योग पतियों की ज़रूरत को पूरा करने पर मजबूर किया जा सकता है. ज़ाहिर है कि लंका अपनी ज़रूरतों

تو ہم سب کو جیوکا دے سکتے ہیں اور تب ہی شانتی سے لوگ رہ سکتے ہیں . لیکن شکتی‌شالی راشٹر ان سادھنوں کو ہتھیانے کی کوشش کرتے ہیں . اس سے راشٹروں کے بیچ تناؤ بڑھتا ہے اور پڑوسی دشمن ہو جاتے ہیں .

آرتھک یوجنا

کم سے کم ایک راشٹر جو کرسکتا ہے وہ یہ ہے کہ اپنی جنتا کو وہ کھانا، کپڑا اور مکان مہیا کرے . یہ اس کا لکش ہونا چاہیئے . اس کے بعد اگر زمین، پانی اور دھاتو جیسے سادھن موجود ہوں تو ہمیں بیوپار کی طرف جھکنا چاہیئے اور عیش پرستی کے سامان سپلائی کرنے کی کوشش کرنا چاہیئے اور تب ہی باہری سامانوں سے اپنے سامانوں کا بدلاؤ کرنا چاہیئے . جب بھی زنجیر کی کوئی کڑی ادھر ادھر ہوگی اور یا غلط نردیش پر کام ہوگا تو فوراً مصیبت کھڑی ہو جائے گی .

مثال کے لئے ہند چین کو لے لیجئے . دنیا میں ربڑ کی جتنی کھپت ہے اس کا پچاسی پرتیشت ربڑ ہند چین میں پیدا ہوتی ہے . لیکن ہم کلپنا بھی نہیں کرسکتے کہ ہند چین اکیلے اتنے ربڑ کا استعمال کرسکتا ہے . جو دیش ادیوگ میں آگے بڑھے ہیں اور جنکا وکاس بہت ہوچکا ہے انہیں کچے مال کی ضرورت پڑتی ہے . ان کی یہ بنیادی ضرورت کیسے پوری ہوسکتی ہے ؟ اس ضرورت کو پورا کرنے کا ایک ہی طریقہ ہے اور وہ یہ ہے کہ ایسے راشٹر کچے مال کی پیداوار پر کنٹرول رکھیں اور اس کے بیوپار کو اپنے ہاتھ میں رکھیں . یہی کرنے کے لیئے ودیشی دوسرے راشٹروں پر قبضہ جمانے کی کوشش کرتے ہیں . دنیا میں جو کچھ راشٹر دوسرے راشٹروں کے ادھین ہیں اور غلام ماتر ہیں اس کا بنیادی کارن یہی ہے . ہند چین کی جنتا کو اتنی ماترا میں ربڑ نہیں پیدا کرنا چاہیئے . اس کے بجائے ایسی چیزوں کی پیداوار پر انہیں زور دینا چاہیئے جن سے انہیں کھانا مل سکے، انہیں کپڑا مہیا ہوسکے اور ان کے مکان کی دقت دور ہوسکے . انہیں ایسے بنیادی ادیوگ دھندے کھڑے کرنے چاہئیں جس سے اس طرح کا مالی ڈھانچہ تیار ہوسکے . اگر اپنے آرتھک جیون کو وہ اس راستے پر چلا سکیں گے تو دیش واسیوں کا جن سموہ سکھ کی سانس لے سکے گا .

اسی طرح لنکا میں چائے اور ربڑ خوب پیدا ہوتی ہے . جس دیش کی آرتھک ریڑھ ایسی ہو اس کا بھگوان ہی مالک ہے . لنکا ایک دیپ ہے . ایسا راشٹر جس کی سمندری شکتی ادھک ہے وہ آسانی سے لنکا کو گھیر سکتا ہے اور ودیشی ادیوگ پتیوں کی ضرورت کو پورا کرنے پر مجبور کیا جاسکتا ہے . ظاہر ہے کہ لنکا اپنی ضرورتوں

कामों से छुट्टी पा गया. उसके बाद इमाम साहब से मिलना चाहा लेकिन वक़्त की कमी के कारन न मिल सका. मुझको साढ़े बारह बजे यूनिवर्सिटी पहुंचना था. हम लोग यूनीवर्सिटी वापस आ गये.

दूसरे दिन मैंने चीन के अंग्रेज़ी अख़बार 'डेली न्यूज़ रिलीज़' में पढ़ा कि सिर्फ़ पीकिंग शहर में साठ से ज़्यादा मसजिदें हैं जिनमें हज़ारों मुसलमानों ने ईद की नमाज़ अदा की.

अन्तर राष्ट्रीय बदअमनी—उसके कारन और इलाज

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

[मई के तीसरे चौथे हफ़्ते में विश्व शान्ती कौंसिल की बैठक बर्लिन में हुई है. पन्डित सुन्दरलाल के नेतृत्व में भारत से एक प्रतिनिधि मंडल बर्लिन गया है. डाक्टर कुमारप्पा भी मन्डल के साथ हैं. यह मन्डल आजकल रूस का दौरा कर रहा है. डाक्टर कुमारप्पा ने शान्ती कौंसिल की बैठक में 27 मई को नीचे दिया भाशन दिया है. हम उसे अंग्रेज़ी से अनुवाद कर के प्रकाशित कर रहे हैं—एडीटर.]

❀ ❀ ❀

आज यहां इस बात पर विचार करने के लिये इकट्ठा हुये हैं कि दुनिया की आजकल जो हालत है उसमें हम कैसे सुरक्षित रह सकें और किस तरह शान्ति रख सकें. जिधर भी नज़र उठती है हमें बदअमनी दिखाई पड़ती है चाहे समाजिक जीवन हो, चाहे आर्थिक हो, चाहे राजकाजी हो और चाहे निजी मामले हों, सब जगह गड़बड़ है. इसी वजह से राष्ट्रों के बीच भयंकर खिंचाव है. मेरा समय सीमित है इसलिये मैं बदअमनी के आर्थिक कारनों का ख़ाका ही पेश करूंगा और अपनी बुद्धि के अनुसार उनका इलाज बताने की कोशिश करूंगा.

प्रकृति ने दुनिया के ज़्यादातर देशों को खदान और दूसरे साधनों। से मालामाल किया है. अगर हम अक़्ल से काम लें और इन साधनों को उचित ढंग से इस्तेमाल करें

سوں سے چھٹی پا گیا. اُس کے بعد امام صاحب سے ملنا چاہا لیکن وقت کی کمی کے کارن نہ مل سکا . مجھکو ساڑھے بارہ بجے یونیورسٹی پہونچنا تھا . ہم لوگ یونیورسٹی واپس آگئے .

دوسرے دن میں نے چین کے انگریزی اخبار 'ڈیلی نیوز ریلیز' میں پڑھا کہ صرف پیکنگ شہر میں ساٹھ سے زیادہ مسجدیں ہیں جن میں ہزاروں مسلمانوں نے عید کی نماز ادا کی .

انتر راشٹریہ بدامنی—اُس کے کارن اور علاج

(ڈاکٹر جے . سی . کماریپا)

[مئی کے تیسرے چوتھے ہفتے میں وشوشانتی کونسل کی بیٹھک برلن میں ہوئی ہے . پنڈت سندرلال کے نیترتو میں بھارت سے ایک پرتی‌ندھی منڈل برلن گیا ہے . ڈاکٹر کماریپا بھی منڈل کے ساتھ ہیں . یہ منڈل آج کل روس کا دورہ کر رہا ہے . ڈاکٹر کماریپا نے شانتی کونسل کی بیٹھک میں 27 مئی کو نیچے دیا بھاشن دیا ہے . ہم اُسے انگریزی سے انوواد کرکے پرکاشت کر رہے ہیں—ایڈیٹر.]

❀ ❀ ❀

آج یہاں اِس بات پر وچار کرنے کے لیئے اکٹھا ہوئے ہیں کہ دنیا کی آجکل جو حالت ہے اُس میں ہم کیسے سرکچھت رہ سکیں اور کس طرح شانتی رکھ سکیں. جدھر بھی نظر اُٹھتی ہے ہمیں بدامنی دکھائی پڑتی ہے. چاہے سماجک جیون ہو' چاہے آرتھک ہو' چاہے راج کاجی اور چاہے نجی معاملے ہوں' سب جگہ گڑبڑ ہے . اسی وجہ سے راشٹروں کے بیچ بھینکر کھنچاؤ ہے . میرا سمے سیمت ہے اسلیئے میں بدامنی کے آرتھک کارنوں کا خاکہ ہی پیش کرونگا اور اپنی بدھی کے انوسار اُن کا علاج بتانے کی کوشش کرونگا .

پرکرتی نے دنیا کے زیادہ‌تر دیشوں کو کھدان اور دوسرے سادھنوں سے مالا مال کیا ہے . اگر ہم عقل سے کام لیں اور اِن سادھنوں کو اُچت ڈھنگ سے استعمال کریں

थे जिससे मैं समझा कि वह नक्क़ाशी लेक्चर की तरह की कोई चीज़ है. मसजिद के मेहराबों पर सुनहरे अक्षरों में ख़ूबसूरती के साथ अरबी आयतें लिखी थीं. दीवारों पर बहुत ख़ूबसूरत पच्चीकारी थी. आज मेरी ज़िन्दगी में पहला मौक़ा था कि मसजिद में हज़ारों चीनी लोगों के दर्मियान अकेला हिन्दुस्तानी अपने राष्ट्रीय लिबास शेरवानी, पैजामा और टोपी में बैठा हुआ था. लोग मुड़ मुड़ कर मुझ को देख रहे थे और बच्चे लगातार टकटकी बांधे थे जैसे सनीमा दे रहे हों.

अभी इमाम साहब का भाशन नहीं हुआ था कि एक लड़की कैमरा लेकर नमाज़ियों के बीच आई. शायद वह चीनी लड़की नहीं थी. उसने इमाम की और नमाज़ियों की कई तस्वीरें लीं, फिर उसने मेरी तस्वीर खींची क्योंकि मेरा लिबास उसको अजीब लग रहा था.

ठीक साढ़े दस बजे भाशन ख़त्म हुआ और नमाज़ की तैयारी शुरू हुई. पहले इमाम साहब पांच मौलानाओं के साथ खड़े हुये. यह लोग लम्बे लम्बे अबा की तरह की कोई चीज़ पहने थे और सिरों पर सफ़ेद पगड़ी बांधे थे. सब नमाज़ी बैठे थे. इमाम ने उन पांच मौलानाओं के साथ पहले कुछ अरबी की आयतें पढ़ीं. उसके बाद सब नमाज़ी यकबारगी खड़े हो गये. मैं भी सब के साथ खड़ा हो गया. फिर दो रकअत नमाज़ बिल्कुल उसी तरीक़े पर हुई जैसे हिन्दुस्तान की मस्जिदों में होती है. नमाज़ के बाद इमाम ने ख़ुतबा पढ़ा और फिर उसके बाद दुआ मांगी गई. दुआ के बाद सब लोग उठ खड़े हुए और ख़ुश ख़ुश एक दूसरे से मुसाफ़हा करने लगे. ईद के नमाज़ के बाद हिन्दुस्तान की तरह यहां गले नहीं मिलते. इमाम और पांच मौलाना एक तरफ़ खड़े हो गये और लोग लाइन लगा कर और बारी बारी आ कर उनसे मुसाफ़हा कर रहे थे. मैंने भी ऐसा ही किया. बहुत से लोग मेरे पास आये. मैंने भी बढ़ कर उनसे मुसाफ़हा किया.

उसके बाद मैं सेहन में आया जहां फ़ंग साहब और राजेश मेरा इन्तज़ार कर रहे थे. लगभग एक हज़ार से ज़्यादा नमाज़ी इधर उधर ख़ुश ख़ुश टहल रहे थे. मैंने अपने कैमरे से मस्जिद की और नमाज़ियों की तस्वीरें खींचीं और अपनी तस्वीर भी इमाम साहब के साथ खिंचवाई. दूसरे लोगों के साथ भी मेरी तस्वीर खींची गई. इस सबसे फ़ुरसत पा कर मैंने झोले से चाकलेट और लेमनड्राप्स निकाले और बच्चों को बांटना शुरू किया. वह लेकर ख़ुश ख़ुश खा रहे थे. उनके साथी बुज़ुर्ग उनको बता रहे थे कि "याखिजनी ता इन्दू की को" (यानी यह तुम्हारे हिन्दुस्तानी बड़े भाई हैं) "शे शे" कहो शे शे को चीनी भाषा में शुक्रिया को कहते हैं. साढ़े ग्यारा बजे मैं इन सब

تھے جس سے میں سمجھا کہ یہ نقاشی لکچر کی طرح کی کوئی چیز ہے۔ مسجد کے محرابوں پر سنہرے اکھشروں میں خوبصورتی کے ساتھ عربی آیتیں لکھی تھیں۔ دیواروں پر بہت خوبصورت پچیکاری تھی۔ آج میری زندگی میں پہلا موقع تھا کہ مسجد میں ہزاروں چینی لوگوں کے درمیان اکیلا ہندستانی اپنے راشٹریہ لباس شیروانی، پائجامہ اور ٹوپی میں بیٹھا ہوا تھا۔ لوگ مڑ مڑ کر مجھکو دیکھ رہے تھے اور بچے لگاتار ٹکٹکی باندھے تھے جیسے سنیما دیکھ رہے ہوں۔

ابھی امام صاحب کا بھاشن نہیں ہوا تھا کہ ایک لڑکی کیمرا لیکر نمازیوں کے بیچ آئی۔ شاید وہ چینی لڑکی نہیں تھی۔ اس نے امام کی اور نمازیوں کی کئی تصویریں لیں، پھر اس نے میری تصویر کھینچی کیونکہ میرا لباس اس کو عجیب لگ رہا تھا۔

ٹھیک ساڑھے دس بجے بھاشن ختم ہوا اور نماز کی تیاری شروع ہوئی۔ پہلے امام صاحب پانچ مولاناؤں کے ساتھ کھڑے ہوئے۔ یہ لوگ لمبے لمبے عبا کی طرح کی کوئی چیز پہنے تھے اور سروں پر سفید پگڑی باندھے تھے۔ سب نمازی بیٹھے تھے۔ امام نے ان پانچ مولاناؤں کے ساتھ پہلے کچھ عربی کی آیتیں پڑھیں۔ اس کے بعد سب نمازی یکبارگی کھڑے ہوگئے۔ میں بھی سب کے ساتھ کھڑا ہوگیا۔ پھر دو رکعت نماز بالکل اسی طریقے پر ہوئی جیسے ہندستان کی مسجدوں میں ہوتی ہے۔ نماز کے بعد امام نے خطبہ پڑھا اور پھر اس کے بعد دعا مانگی گئی۔ دعا کے بعد سب لوگ اٹھ کھڑے ہوئے اور خوش خوش ایک دوسرے سے مصافحہ کرنے لگے۔ عید کی نماز کے بعد ہندستان کی طرح یہاں گلے نہیں ملتے۔ امام اور پانچ مولانا ایک طرف کھڑے ہوگئے اور لوگ لائن لگا کر اور باری باری آکر ان سے مصافحہ کر رہے تھے۔ میں نے بھی ایسا ہی کیا۔ بہت سے لوگ میرے پاس آئے۔ میں نے بھی بڑھکر ان سے مصافحہ کیا۔

اس کے بعد میں صحن میں آیا جہاں فنگ صاحب اور راجیش میرا انتظار کر رہے تھے۔ لگ بھگ ایک ہزار سے زیادہ نمازی ادھر ادھر خوش خوش ٹہل رہے تھے۔ میں نے اپنے کیمرے سے مسجد کی اور نمازیوں کی تصویریں کھینچیں اور اپنی تصویر بھی امام صاحب کے ساتھ کھنچوائی۔ دوسرے لوگوں کے ساتھ بھی میری تصویر کھینچی گئی۔ اس سب سے فرصت پاکر میں نے جھولے سے چاکلیٹ اور لیمن ڈراپس نکالے اور بچوں کو بانٹنا شروع کیا۔ وہ لیکر خوش خوش کھا رہے تھے ان کے ساتھی بزرگ ان کو بتا رہے تھے "یاخِجنی تا اِندو کی کو" (یعنی یہ تمہارے ہندستانی بڑے بھائی ہیں) "شے شے" کہو۔ شے شے کو چینی بھاشا میں شکریہ کو کہتے ہیں۔ ساڑھے گیارہ بجے میں ان سب

फ़ंग साहब आ गये. फ़ौरन कपड़े बदल कर और नाश्ता करके उनके साथ डिपार्टमेंट तक आया. इतने में मेरे साथी राजेश जी भी आ गये जो हमारे साथ चल कर देखना चाहते थे कि यहां के मुसलमान ईद कैसे मनाते हैं. अभी आठ बजने में 10 मिनट बाक़ी थे. हम लोग इधर उधर की बातें करने लगे. ठीक आठ बजे कार आ गई और हम उस पर बैठ कर मसजिद रवाना हो गये. रास्ते में मैंने देखा कि बहुत से मुसलमान मर्द औरतें, बूढ़े, बच्चे सिर पर सुफ़ैद टोपी लगाये साफ़ साफ़ कपड़े पहने मसजिदों की तरफ़ जा रहे थे. नौ बजे के लगभग हम लोग मसजिद पहुंच गये. यहां काफ़ी भीड़ थी लोग अन्दर बाहर आ जा रहे थे. फाटक को तरह तरह के रंग के बड़े बड़े झन्डों से खूब सजाया गया था. लोग हम लोगों को ग़ौर से देख रहे थे. हम लोग मसजिद के अन्दर आ गये. यह हिस्सा भी छोटी छोटी लाल, पीली, हरी, नीली, झन्डियों से खूब सजा हुआ था और जिनके फुरहरे हवा में लहरा लहरा कर अपनी बेपनाह ख़ुशियों को ज़ाहिर कर रहे थे और मौन भाषा में नमाज़ियों को 'ईद मुबारक' पेश कर रहे थे.

मिस्टर फ़ंग ने बताया कि यह पीकिंग शहर की सब से बड़ी मसजिद है और इसका नाम Tung Sze Pailou है. उन्होंने यह भी बताया कि यह मसजिद मिंग ख़ान्दान के समय में बनी है. आज भी यह बहुत अच्छी हालत में है. इसकी वजह यह है कि आजकल की चीनी सरकार इस मामले में बहुत दिलचस्पी लेती है और धार्मिक स्थानों और पुरानी यादगारों को अच्छी हालत में रखने के लिये माली सहायता देती है. इतने में मसजिद के इमाम आ गये. फ़ंग साहब ने हम लोगों को उनसे मिलाया. वह बहुत ख़ुश थे. उन्होंने हम लोगों को एक कमरे में बैठाया. यह कमरा वेटिंग रूम के क़िस्म का था और मसजिद के एक किनारे पर था. इसमें बैठने के लिये बहुत सी बेन्चें पड़ी थीं. थोड़ी देर के बाद इमाम साहब चले गये. मैं भी कमरे से उठ कर सहन में चला आया. वहां मर्द, औरतें, बच्चे, बूढ़े सब जमा थे. एक तरफ़ औरतों का कमरा था जिसके अन्दर बहुत सी बूढ़ी औरतें सिरों पर सफ़ेद कन्टोप पहने बैठी थीं. मर्द सिरों पर सफ़ेद गोल टोपी पहने थे. लड़कियां भी ज़्यादातर मर्दों की तरह सुफ़ेद टोपियां पहने थीं. यह बात मुझको अजीब लगी. हिन्दुस्तान में औरतें मर्दों के साथ मसजिद में नहीं आतीं. मर्द औरत सब नीले रंग की पतलून और उसी रंग का कालरदार कोट पहने हुये थे.

साढ़े नौ बजे वज़ू करके मैं मसजिद के अन्दर बरामदे में गया, वहां इमाम साहब माइक्रोफ़ोन पर चीनी भाषा में तक़रीर कर रहे थे और कभी कभी अरबी पढ़ते जाते

فنگ صاحب آ گئے ۔ فوراً کپڑے بدل کر اور ناشتہ کر کے اُن کے ساتھ ڈیپارٹمنٹ تک آیا ۔ اتنے میں میرے ساتھی راجیش جی بھی آ گئے جو ہمارے ساتھ چلکر دیکھنا چاہتے تھے کہ یہاں کے مسلمان عید کیسے مناتے ہیں ۔ ابھی آٹھ بجنے میں دس منٹ باقی تھے ۔ ہم لوگ ادھر اُدھر کی باتیں کرنے لگے ۔ ٹھیک آٹھ بجے کار آ گئی اور ہم اس پر بیٹھکر مسجد روانہ ہو گئے ۔ راستے میں میں نے دیکھا کہ بہت سے مسلمان مرد عورتیں' بوڑھے' بچے سر پر سفید ٹوپی لگائے صاف صاف کپڑے پہنے مسجدوں کی طرف جا رہے تھے ۔ نو بجے کے لگ بھگ ہم لوگ مسجد پہونچ گئے ۔ یہاں کافی بھیڑ تھی ۔ لوگ اندر باہر آ جا رہے تھے ۔ پھاٹک کو طرح طرح کے رنگ کے بڑے بڑے جھنڈوں سے خوب سجایا گیا تھا ۔ لوگ ہم لوگوں کو غور سے دیکھ رہے تھے ۔ ہم لوگ مسجد کے اندر آ گئے ۔ یہ حصہ بھی چھوٹی چھوٹی' لال پیلی' ہری' نیلی جھنڈیوں سے خوب سجا ہوا تھا ۔ اور جن کے پھریرے ہوا میں لہرا لہرا کر اپنی بے پناہ خوشیوں کو ظاہر کر رہے تھے اور مون بھاشا میں نمازیوں کو 'عید مبارک' پیش کر رہے تھے ۔

مسٹر فنگ نے بتایا کہ یہ پیکنگ شہر کی سب سے بڑی مسجد ہے اور اس کا نام Tung Sze Pailou ہے ۔ انہوں نے یہ بتایا کہ یہ مسجد منگ خاندان کے سمے میں بنی ہے ۔ آج بھی یہ بہت اچھی حالت میں ہے ۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ آج کل کی چینی سرکار اس معاملے میں بہت دلچسپی لیتی ہے اور دھارمک استھانوں اور پرانی یادگاروں کو اچھی حالت میں رکھنے کے لیئے مالی سہائتا دیتی ہے ۔ اتنے میں مسجد کے امام آ گئے ۔ فنگ صاحب نے ہم لوگوں کو اُن سے ملایا ۔ وہ بہت خوش ہوئے۔ انہوں نے ہم لوگوں کو ایک کمرے میں بیٹھایا۔ یہ کمرہ ویٹنگ روم کے قسم کا تھا اور مسجد کے ایک کنارے پر تھا ۔ اس میں بیٹھنے کے لئے بہت سی بینچیں پڑی تھیں ۔ تھوڑی دیر کے بعد امام صاحب چلے گئے ۔ میں بھی کمرے سے اُٹھکر صحن میں چلا آیا۔ وہاں مرد' عورتیں' بچے' بوڑھے سب جمع تھے ۔ ایک طرف عورتوں کا کمرہ تھا جس کے اندر بہت سی بوڑھی عورتیں سروں پر سفید کنٹوپ پہنے بیٹھی تھیں ۔ مرد سروں پر سفید گول ٹوپی پہنے تھے ۔ لڑکیاں بھی زیادہ‌تر مردوں کی طرح سفید ٹوپیاں پہنے تھیں ۔ یہ بات مجھکو عجیب لگی ۔ ہندستان میں عورتیں مردوں کے ساتھ مسجد میں نہیں آتیں ۔ مرد عورت سب نیلے رنگ کی پتلون اور اسی رنگ کا کالردار کوٹ پہنے ہوئے تھے ۔

ساڑھے نو بجے وضو کر کے میں مسجد کے اندر برآمدے میں گیا ۔ وہاں امام صاحب مائیکروفون پر چینی بھاشا میں تقریر کر رہے تھے اور کبھی کبھی عربی آیتیں پڑھتے جاتے

एक छोटा सा खाका लिख रहा हूं ताकि मेरे देश वासियों को सच्चाई समझने में मदद मिले.

ईद के दो दिन पहले मेरे एक चीनी लेक्चरर दोस्त मिस्टर थन पास आये और कहने लगे कि परसों ईद है. डिपार्टमेंट ने नमाज पढ़ने के लिये आपको पीकिंग शहर की सब से बड़ी मस्जिद में भेजने का इन्तज़ाम किया है दस बजे सुबह नमाज़ होगी, आप आठ बजे तैयार हो जाइयेगा मैंने उनसे कहा—"लेकिन परसों तो मेरा क्लास है, उसका क्या होगा?" उन्होंने जवाब दिया कि ईद के दिन पूरे चीन में तमाम मुसलमानों की छुट्टी होती है, आपको फिक्र करने की ज़रूरत नहीं है. जो कुछ हो मुझ से कहिये. मैंने उनका शुक्रिया अदा किया और मैं अपने कमरे में चला आया. दूसरे दिन मैं शाम को टहल कर अपने कमरे में आया तो मालूम हुआ कि मेरे दूसरे चीनी दोस्त मिस्टर फंग, जो हिन्दी डिपार्टमेन्ट में लेक्चरर हैं मुझ से मिलने आये थे. मुझको न पाकर मेरी खोज में गये हैं. यह सुनकर मैं फ़ौरन उनकी तलाश में चल पड़ा. अभी मैं थोड़ी ही दूर चला था कि मिस्टर थन मिल गये सलाम दुआ के बाद उन्होंने बताया कि हमारे डिपार्टमेन्ट में मिस्टर फंग को मेरा दुभाषिया चुना है और यह कि वह मेरे साथ मसजिद में जायेंगे ताकि वह मुझ को हर चीज़ समझाते जायें और ज़रूरत के वक़्त मेरी मदद करें. मैंने उन से कहा कि मैं मसजिद के इमाम से भी मिलना चाहता हूं और उनसे आज के चीन में मुसलमानों की हालत, मज़हबी आज़ादी, सरकार की सहायता, इस्लामी जमाअतें और उनका काम, उनका चुनाव, आम मुसलमानों पर उनका असर, सूअर और शराब के इस्तेमाल के बारे में आम मुसलमानों का ख़याल, मुसलमानी औरतों की हालत इन सब के बारे में पूछना चाहता हूं. उन्होंने इमाम का नाम मुझको बताया और कहा कि मिस्टर फंग आपके साथ रहेंगे और वह आपकी मदद करेंगे. इतने में मिस्टर फंग भी आ गये जो मुझको ढूंढ़ते ढूंढ़ते इधर निकल आये थे. उन्होंने मुझ से कहा कि कल आठ बजे सुबह आप बिल्कुल तैयार रहियेगा. मैं आपके साथ चलूंगा. मैंने उनसे पूछा कि जिस बस से हम लोग पीकिंग शहर जायेंगे (शहर से हमारी यूनिवर्सिटी लगभग दस मील के फ़ासले पर है) वह कितने बजे छूटता है? उन्होंने कहा कि डिपार्टमेंट ने यूनिवर्सिटी कार का प्रबन्ध किया है, हम लोग उसी से जायेंगे कार आठ बजे डिपार्टमेन्ट के सामने खड़ी रहेगी. फिर कुछ इधर उधर की बातें करके वह लोग चले गये और मैं यह सोचता हुआ कमरे में लौट आया कि अगर मैं अपने घर लिखूं कि यहां मुझको इतना आराम है तो क्या लोग यक़ीन कर सकेंगे!

दूसरे दिन नहा धोकर कपड़े बदल ही रहा था कि

ک چھوٹا سا خاکہ لکھ رہا ہوں تاکہ میرے دیش واسیوں
و سچائی سمجھنے میں مدد ملے ۔

عید کے دو دن پہلے میرے ایک چینی لکچرر دوست
سٹر تھن میرے پاس آئے اور کہنے لگے کہ پرسوں عید ہے۔
پارٹ منٹ نے نماز پڑھنے کے لئے آپ کو پیکنگ شہر
ی سب سے بڑی مسجد میں بھیجنے کا انتظام کیا ہے ،
س بجے صبح نماز ہوگی، آپ آٹھ بجے تیار ہو جائیگا ۔
یں نے ان سے کہا۔" لیکن پرسوں تو میرا کلاس ہے،
س کا کیا ہوگا ؟" انہوں نے جواب دیا کہ عید کے دن
ورے چین میں تمام مسلمانوں کی چھٹی ہوتی ہے، آپ
و فکر کرنے کی ضرورت نہیں ہے ۔ جو کچھ ہو مجھ سے
ہئے ۔ میں نے ان کا شکریہ ادا کیا اور میں اپنے کمرے
یں چلا آیا ۔ دوسرے دن میں شام کو ٹہل کر اپنے کمرے
یں آیا تو معلوم ہوا کہ میرے دوسرے چینی
وست مسٹر فنگ جو ہندی ڈیپارٹ منٹ میں لکچرر
یں مجھ سے ملنے آئے تھے ۔ مجھکو نہ پا کر میری کھوج
یں گئے ہیں ۔ یہ سن کر میں فوراً ان کی تلاش میں
ل پڑا ۔ ابھی میں تھوڑی ہی دور چلا تھا کہ مسٹر
ھن مل گئے ۔ سلام دعا کے بعد انہوں نے بتایا کہ ہمارے
یپارٹ منٹ نے مسٹر فنگ کو میرا دو بھاشیہ چنا ہے
ور یہ کہ وہ میرے ساتھ مسجد میں جائینگے تاکہ وہ
جھکو ہر چیز سمجھاتے جائیں اور ضرورت کے وقت میری
دد کریں ۔ میں نے ان سے کہا کہ میں مسجد کے امام
ے بھی ملنا چاہتا ہوں اور ان سے آج کے چین میں
سلمانوں کی حالت، مذہبی آزادی، سرکار کی سہائتا،
سلامی جماعتیں اور ان کا کام، ان کا چناؤ، عام مسلمانوں
ر ان کا اثر، سور اور شراب کے استعمال کے بارے میں عام
سلمانوں کا خیال مسلمانی عورتوں کی حالت ان سب کے
ارے میں پوچھنا چاہتا ہوں ۔ انہوں نے امام کا نام مجھ
و بتایا اور کہا کہ مسٹر فنگ آپ کے ساتھ رہیں گے
ور وہ آپ کی مدد کرینگے۔ اتنے میں مسٹر فنگ بھی آگئے
و مجھکو ڈھونڈتے ڈھونڈتے ادھر نکل آئے تھے۔ انہوں نے مجھ
ے کہا کہ کل آٹھ بجے صبح آپ بالکل تیار رہئے گا ۔ میں
پ کے ساتھ چلوں گا ۔ میں نے ان سے پوچھا کہ جس
س سے ہم لوگ پیکنگ شہر جائیں گے (شہر سے ہماری
ونیورسٹی لگ بھگ دس میل کے فاصلے پر ہے) وہ
تنے بجے چھوٹتی ہے ؟ انہوں نے کہا کہ ڈیپارٹ منٹ نے
ونیورسٹی کار کا پربندھ کیا ہے، ہم لوگ اسی سے جائیں
ے کار آٹھ بجے ڈیپارٹ منٹ کے سامنے کھڑی رہے گی ۔
ھر کچھ ادھر ادھر کی باتیں کر کے وہ لوگ چلے گئے اور
یں یہ سوچتا ہوا کمرے میں لوٹ آیا کہ اگر میں اپنے
ھر لکھوں کہ یہاں مجھکو اتنا آرام ہے تو کیا لوگ یقین
ر سکیں گے !

دوسرے دن صبح نہا دھو کر کپڑے بدل ہی رہا تھا کہ

चीनी दोस्त हमसे ज्यादा हमारा ख्याल रखते हैं. सुना करते थे कि हृदय एक होने पर दिल की बात समझ में आ जाती है. लेकिन यहां तो यह कथन बिल्कुल सच है. इधर किसी जरूरत का एहसास हुआ नहीं कि उधर हमारे दोस्तों को पता चल जाता है और बिना कहे, बिना चर्चा किये हमारी जरूरतें पूरी हो जाती हैं. हम लोगों की जरूरतें पूरी करने के लिये चीनी भाई व्याकुल रहते हैं. जिस दिन उन्हें हम लोगों की सेवा करने का मौका नहीं मिलता उस दिन वह लोग बेचैन रहते हैं. यहां के लोग और यहां का वातावरन हमें बहुत पसन्द आया. इतना पसन्द आया कि शब्दों में मैं उसे जाहिर नहीं कर सकता. प्रभावित हो कर एक दिन मैंने और राजेश ने वर्मा जी से कहा कि हम लोग यहां कम से कम दस साल के लिये आये हैं. वर्मा जी ने डाक्टर ची से यह बात कह दी. उन्होंने कहा कि हम उन लोगों का पंद्रह बरस के लिये स्वागत करते हैं.

हम लोग आम चीनियों के लिये एक तमाशा हैं. एक दिन हम लोग हाई तीन बाजार गये, हम लोगों को देख कर बच्चों की एक भीड़ इकट्ठा हो गई और हर तरफ बच्चे "इन्दू रेन, इन्दू रेन" चिल्लाने लगे. रास्ता चलना मुश्किल हो गया. हम लोग बिल्कुल मदारियों की तरह मालूम हो रहे थे जिनके पीछे बच्चे तालियां बजा कर चलते हैं और वह अपना बन्दर लेकर आगे बढ़ जाते हैं. हम लोग अपना झोला लटकाये खुशी से झूमते, अकड़ते चले जा रहे थे. "नी हाऊ. नी हाऊ" कहते आगे बढ़ जाते थे. वह लोग दूसरी तरफ से फिर आ कर सामने खड़े हो जाते थे. हम लोग बिल्कुल 'नये गांव ऊंट आया' कि मिसाल मालूम हो रहे थे.

अब पीकिंग की ईद का हाल सुनिये. पीकिंग आये अभी मुझे दो महीने भी न हुए थे. हिन्दुस्तान के ज्यादातर लोगों की तरह चीन की जनता की मजहबी आजादी के बारे में मुझको भी कुछ शक ही सा था, मगर यहां पर जो कुछ मुझको अनुभव हुआ उससे न केवल मेरा शक ही दूर हुआ बल्कि पूरा यक़ीन हो गया कि यहां के मुसलमानों को अपने मजहबी मामले में उतनी ही आजादी है जितनी कि किसी भी देश के मुसलमान अपने लिये सोच सकते हैं. शुरू शुरू में मैं सोचता था कि इस नये वातावरन में नये नये आदमियों के दर्मियान पता नहीं मेरी ईद कैसे गुजरे ? मगर अब गर्व से यह कह सकता हूं कि जितनी सहूलियतों के साथ 1000 मुसलमानों के साथ मिल कर पीकिंग शहर की सब से बड़ी मसजिद में मैंने नमाज पढ़ी बहुत से लोग उसकी कल्पना तक नहीं कर सकते. इसीलिये

چینی دوست ہم سے زیادہ ہمارا خیال رکھتے ہیں ۔ سنا کرتے تھے کہ ہردے ایک ہونے پر دل کی بات سمجھ میں آجاتی ہے، لیکن یہاں تو یہ کتھن بالکل سچ ہے ۔ اِدھر کسی ضرورت کا احساس ہوا نہیں کہ اُدھر ہمارے دوستوں کو پتہ چل جاتا ہے اور بنا کہے، بنا چرچا کئے ہماری ضرورتیں پوری ہوجاتی ہیں ۔ ہم لوگوں کی ضرورتیں پوری کرنے کے لئے چینی بھائی بیاکل رہتے ہیں۔ جس دن اُنہیں ہم لوگوں کی سیوا کرنے کا موقع نہیں ملتا اُس دن وہ لوگ بےچین رہتے ہیں ۔ یہاں کے لوگ اور یہاں کا واتاورن ہمیں بہت پسند آیا ۔ اتنا پسند آیا کہ شبدوں میں اُسے ظاہر نہیں کرسکتا ۔ پربھاوت ہوکر ایک دن میں نے اور راجیش نے ورما جی سے کہا کہ ہم لوگ یہاں کم سے کم دس سال کے لئے آئے ہیں۔ ورما جی نے ڈاکٹر چی سے یہ بات کہہ دی ۔ اُنہوں نے کہا کہ ہم اُن لوگوں کا پندرہ برس کے لئے سواگت کرتے ہیں ۔

ہم لوگ عام چینیوں کے لئے ایک تماشہ ہیں ۔ ایک دن ہم لوگ ہائی تین بازار گئے، ہم لوگوں کو دیکھکر بچوں کی ایک بھیڑ اکٹھا ہوگئی، اور ہر طرف بچے "اِندو رین، اِندو رین" چلانے لگے ۔ راستہ چلنا مشکل ہوگیا ۔ ہم لوگ بالکل مداریوں کی طرح معلوم ہو رہے تھے جن کے پیچھے بچے تالیاں بجاکر چلتے ہیں اور وہ اپنا بندر لیکر آگے بڑھ جاتے ہیں ۔ ہم لوگ اپنا جھولا لٹکائے خوشی سے جھومتے، اکڑتے چلے جارہے تھے ۔ "نی ہاؤ، نی ہاؤ" کہتے آگے بڑھ جاتے تھے ۔ وہ لوگ دوسری طرف سے پھر آکر سامنے کھڑے ہو جاتے تھے ۔ ہم لوگ بالکل 'نئے گاؤں اونٹ آیا' کی مثال معلوم ہو رہے تھے ۔

اب پیکنگ کی عید کا حال سنئے ۔ پیکنگ آئے مجھے ابھی دو مہینے بھی نہ ہوئے تھے ۔ ہندوستان کے زیادہ‌تر لوگوں کی طرح چین کی جنتا کی مذہبی آزادی کے بارے میں مجھکو بھی کچھ شک ہی سا تھا، مگر یہاں پر جو کچھ مجھکو انوبھو ہوا اُس سے نہ کیول میرا شک ہی دور ہوا بلکہ پورا یقین ہوگیا کہ یہاں کے مسلمانوں کو اپنے مذہبی معاملے میں اُتنی ہی آزادی ہے جتنی کہ کسی دیش کے مسلمان اپنے لئے سوچ سکتے ہیں ۔ شروع شروع میں میں سوچتا تھا کہ اِس نئے واتاورن میں نئے نئے آدمیوں کے درمیان پتہ نہیں میری عید کیسے گذرے ؟ مگر اب گرو سے یہ کہہ سکتا ہوں کہ جتنی سہولیتوں کے ساتھ 1000 مسلمانوں کے ساتھ ملکر پیکنگ شہر کی سب بڑی مسجد میں میں نے نماز پڑھی بہت سے لوگ اُس کی کلپنا تک نہیں کر سکتے ۔ اِسی لئے

के उस चरित्र को देखते हैं जो शेक्सपियर ने निर्मान किया है.

चरित्रों को जन्म देना लेखक का सब से महत्व पूर्न और सब से मुश्किल काम है. इस का तरीक़ा बहुत पेचीदा है. चरित्र निर्मान उस तरह नहीं हो सकता जिस तरह मशीन सामान पैदा करती है. इसलिये मशीन की पैदावार और लेखक की पैदावार का अनुमूलन करते समय दो अलग दृष्टिकोनों का सहारा लेना पड़ेगा.

(सिलसिले के लिये अगला अंक देखिये)

کے اس چرتر کو دیکھتے ہیں جو شیکسپیر نے نرمان کیا ہے .

چرتروں کو جنم دینا لیکھک کا سب سے مہتو پورن اور سب سے مشکل کام ہے . اِس کا طریقہ بہت پیچیدہ ہے . چرتر نرمان اس طرح نہیں ہوسکتا جس طرح مشین سامان پیدا کرتی ہے . اس لیئے مشین کی پیداوار اور لیکھک کی پیداوار کا انمولن کرتے سمے دو الگ درشٹی کونوں کا سہارا لینا پڑیگا .

(سلسلہ کے لئے اگلا انک دیکھئے)

पीकिंग में मेरी पहली ईद !

(लेखक—मुख़तार अहमद)

[श्री मुख़तार अहमद अभी हाल में पीकिंग गये हैं. पीकिंग यूनीवर्सिटी में वह उर्दू पढ़ाते हैं ऐसे वह 23 अप्रेल सन 1954 ई० को पीकिंग पहुंच गये थे लेकिन चीनियों की मेहमान्दारी ने अवकाश नहीं दिया कि इससे पहले वह कोई पत्र लिख सकें. बक़ौल उनके चीन का वातावरन कुछ इतना पसन्द आया कि वह उसी में डूब कर रह गये. पर अब यकबारगी चौंके हैं तो ख़त लिखने का विचार आया है. आशा है महान चीन का आंखों देखा हाल "नया हिन्द" के पाठकों को आगे भी पढ़ने को मिलता रहेगा और हिन्दुस्तान से चीन में जा कर हिन्दी, उर्दू पढ़ाने वाले साथी ख़त के रूप में ही वहां की जनता, उनकी मेहमान्दारी, उनकी चेतना से हमें परिचित कराते रहेंगे—एडीटर.]

❀ ❀ ❀

इस साल पीकिंग में मैं ने ईद मनाई. उसका वर्नन बाद में करूंगा. पहले अपने बारे में और अपने चीनी दोस्तों के बारे में कह लूं.

यहां के लोग बहुत ही अच्छे हैं. हम लोगों की ज़रा सी तकलीफ़ पर बेचैन हो जाते हैं. हम लोगों को सबसे अच्छा होस्टल दिया गया है. इसमें केवल हिन्दुस्तानी ही रहते हैं. हम लोगों का रसोई घर अलग है. इसमें शुद्ध हिन्दुस्तानी खाना पकता है. रसोई घर की मालिक प्रभा भाभी हैं. सब शाकाहारी भोजन करते हैं और मैं भी साग सब्ज़ी का आनन्द लेता हूं.

پیکنگ میں میری پہلی عید !

(لیکھک — مختار احمد)

[شری مختار احمد ابھی حال میں پیکنگ گئے ہیں. پیکنگ یونیورسٹی میں وہ اُردو پڑھاتے ہیں. ایسے وہ 23 اپریل سن 1954ع کو پیکنگ پہونچ گئے تھے لیکن چینیوں کی مہمانداری نے اوکاش نہیں دیا کہ اِس سے پہلے وہ کوئی پتر لکھ سکیں . بقول ان کے چین کا واتاورن کچھ اتنا پسند آیا کہ وہ اُسی میں ڈوب کر رہ گئے . اب یکبارگی چونکے ہیں تو خط لکھنے کا وچار آیا ہے . آشا ہے مہان چین کا آنکھوں دیکھا حال 'نیا ہند' کے پاٹھکوں کو آگے بھی پڑھنے کو ملتا رہے گا اور ہندستان سے چین میں جاکر ہندی' اُردو پڑھانے والے ساتھی خط کے روپ میں ہی وہاں کی جنتا' اُن کی مہمانداری' اُنکی چیتنا سے ہمیں پرچت کراتے رہیں گے —ایڈیٹر .]

❀ ❀ ❀

اِس سال پیکنگ میں میں نے عید منائی . اُس کا ورنن بعد میں کروں گا . پہلے اپنے بارے میں اور اپنے چینی دوستوں کے بارے میں کہہ لوں .

یہاں کے لوگ بہت ہی اچھے ہیں . ہم لوگوں کی ذراسی تکلیف پر بےچین ہوجاتے ہیں . ہم لوگوں کو سب سے اچھا ہوسٹل رہنے کو دیا گیا ہے . اِس میں کیول ہندستانی ہی رہتے ہیں . ہم لوگوں کا رسوئی گھر الگ ہے . اِس میں شدھ ہندستانی کھانا پکتا ہے . رسوئی گھر کی مالک پربھا بھابی ہیں . سب شاکاہاری بھوجن کرتے ہیں اور میں بھی ساگ سبزی کا آنند لیتا ہوں .

ऐसे ऐसे अनुभवों का सहारा लिया जाता है जो निराधार हैं. हमें उन उपन्यासों में अपने ही जिन्स से काम उत्तेजना शान्त करने वाले दो व्यक्ति मिलते हैं जो एक दूसरे से जलते हैं, हमें ऐसी दुखी माएँ मिलती हैं जो अपने बच्चों से प्यार नहीं कर सकतीं, ऐसे आदमी दिखाई पड़ते हैं जो बिना किसी कारन के आत्महत्या करते हैं.

अकस्मात घटना जो आम तरीक़े से नहीं घटती है लेखक को आकर्शित कर सकती है, लेकिन वह उसको शीघ्र ही या कुछ दिनों के बाद ज्यों का त्यों लिख नहीं डालेगा. एक आदमी या एक घटना दूसरों की तरह लेखक को भी आश्चर्य में डाल सकती है लेकिन अगर मनुश्य की नैतिक मान्यता उसमें नहीं हैं तो वह आदमी या घटना लेखक को याद नहीं रह सकती. उपन्यास के चरित्र न तो तस्वीरों का ऐलबम होते हैं और न तो प्रश्नों की ऐसी फ़ाइल होते हैं जो व्यक्तियों के बारे में जानकारी रखने वाले विभाग रेकार्ड के तौर पर रखते हैं. यह चरित्र काल्पनिक होते हुए भी वास्तविक होते हैं. लेखक को जीवन को देखने और उसको अर्थ पहचानने का वरदान होता है. इसी वरदान से वह अपनी रचना के चरित्रों में जान पैदा कर देता है.

अपने पैदा किये हुए चरित्रों से लेखक दुनिया को आबाद करता है. ग्रीबोय डोफ़ ने ' विटवर्क्स ओ'' लिखा. क्या इस रचना से पहले रूस में कोई चात्सकी जैसा आदमी था ? बेशक ऐसे लोग थे, लेकिन उनको ख़ुद पता नहीं था कि वह क्या हैं और उनके इर्द गिर्द के लोग भी अच्छी तरह से नहीं जानते थे कि वह क्या हैं. इस पुस्तक के बाद लोगों के बारे में कहा जाने लगा कि "यह एक चात्सकी है." गोगोल ने बहुत से व्यक्तियों को पीढ़ियों तक ज़िन्दा रक्खा. आज भी जब लोग किसी झूठे या डींगयल की बात सुनते हैं तो उसे ज़्लसटाकोफ़ का नाम देते हैं. नौजवान लोग लीसा, आसया और जीमा नामी लड़कियों से ऐसे प्रेम करते हैं जैसे वह सचमुच ही दुनिया में मौजूद है. गोर्की की उपन्यास "मां" की नायका हम को इतिहासी व्यक्ति मालूम होती है, हमारे लिये वह ऐसा चरित्र नहीं है जिस का गोर्की ने निर्मान किया है बल्कि वह जाती जागती औरत मालूम होती है.

पांचवीं सदी में जटलेन्ड में हैमलेट नामी क्या कोई शहज़ादा था ? या डेन्मार्क के इतिहास गढ़ने वालों ने इस नाम के शहज़ादे का निर्मान किया है ? आज इस इतिहासिक सच्चाई से किसी को कोई मतलब नहीं है. डेन्मार्क में हैमलेट की क़ब्र दिखाई जाती है. वहां जाने वाले लोग इस काल्पनिक क़ब्र को ग़ौर से देखते हैं. उन्हें इसमें कोई भी शक नहीं है कि हैमलेट हाड़ मांस का पुतला था और वह ज़रूर इस दुनिया में मौजूद था क्योंकि वह अपने सामने हैमलेट

ایسے ایسے انوبھووں کا سہارا لیا جاتا ہے جو نرادھار ہیں۔ ہمیں ان اپنیاسوں میں اپنے ہی جنس سے کام اتیجنا شانت کرنے والے دو ویکتی ملتے ہیں جو ایک دوسرے سے جلتے ہیں، ہمیں ایسی دکھی مائیں ملتی ہیں جو اپنے بچوں سے پیار نہیں کر سکتیں، ایسے آدمی دکھائی پڑتے ہیں جو بنا کسی کارن کے آتم ہتیا کرتے ہیں ۔

اکسمات گھٹنا جو عام طریقے سے نہیں گھٹتی ہے لیکھک کو آکرشت کر سکتی ہے، لیکن وہ اس کو شیگھر ہی یا کچھ دنوں کے بعد جیوں کا تیوں لکھ نہیں ڈالے گا ۔ ایک آدمی یا ایک گھٹنا دوسروں کی طرح لیکھک کو بھی آشچریہ میں ڈال سکتی ہے لیکن اگر منشیہ کی نیتک مانیتائیں اس میں نہیں ہیں تو وہ آدمی یا گھٹنا لیکھک کو یاد نہیں رہ سکتی ۔ اپنیاس کے چرتر نہ تو تصویروں کا البم ہوتے ہیں اور نہ تو پرشنوں کی ایسی فائل ہوتے ہیں جو ویکتیوں کے بارے میں جانکاری رکھنے والے وبھاگ ریکارڈ کے طور پر رکھتے ہیں ۔ یہ چرتر کالپنک ہوتے ہوئے بھی واستوک ہوتے ہیں ۔ لیکھک کو جیون کو دیکھنے اور اس کو ارتھ پہچانے کا وردان ہوتا ہے۔ اسی وردان سے وہ اپنی رچنا کے چرتروں میں جان پیدا کردیتا ہے۔

اپنے پیدا کئے ہوئے چرتروں سے لیکھک دنیا کو آباد کرتا ہے ۔ گری بوئے ڈوف نے "وٹ ورکس او" لکھا ۔ کیا اس رچنا سے پہلے روس میں کوئی چاتسکی جیسا آدمی تھا ؟ بیشک ایسے لوگ تھے، لیکن ان کو خود پتہ نہیں تھا کہ وہ کیا ہیں اور ان کے ارد گرد کے لوگ بھی اچھی طرح سے نہیں جانتے تھے کہ وہ کیا ہیں ۔ اس پستک کے بعد لوگوں کے بارے میں کہا جانے لگا کہ "یہ ایک چاتسکی ہیں ۔" گوگول نے بہت سے ویکتیوں کو پیڑھیوں تک زندہ رکھا ۔ آج بھی جب لوگ کسی جھوٹے یا ڈینگیل کی بات سنتے ہیں تو اسے جلسٹاکوف کا نام دیتے ہیں ۔ نوجوان لوگ لیسا، آسیا اور جیما نامی لڑکیوں سے ایسے پریم کرتے ہیں جیسے وہ سچ مچ ہی دنیا میں موجود ہیں ۔ گورکی کی اپنیاس "ماں" کی نائکا ہم کو اتہاسی ویکتی معلوم ہوتی ہے، ہمارے لئے وہ ایسا چرتر نہیں ہے جس کا گورکی نے نرمان کیا ہے بلکہ وہ جیتی جاگتی عورت معلوم ہوتی ہے ۔

پانچویں صدی میں جٹ لینڈ میں ہیملیٹ نامی کیا کوئی شہزادہ تھا ؟ یا ڈنمارک کے اتہاس گڑھنے والوں نے اس نام کے شہزادے کا نرمان کیا ہے ؟ آج اس اتہاسک سچائی سے کسی کو کوئی مطلب نہیں ہے ۔ ڈنمارک میں ہیملیٹ کی قبر دکھائی جاتی ہے۔ وہاں جانے والے لوگ اس کالپنک قبر کو غور سے دیکھتے ہیں ۔ انہیں اس میں کوئی بھی شک نہیں ہے کہ ہیملیٹ ہاڑ ماس کا پتلا تھا اور وہ ضرور اس دنیا میں موجود تھا کیونکہ وہ اپنے سامنے ہیملیٹ

लिये कलाकार को ऊपरी दृष्टि को इस अनुभव से मिलाना पड़ता है जो दूसरों का है और जो बातें इन भावों के बारे में दूसरों ने कही हैं उन्हें भी उसे समझना होता है. तब ही उसके चरित्रों में समाज की झांकी मिलती है और यह चरित्र एक नमूना होते हैं. नमूने के बारे में जो आम तरीक़े से समझा जाता है वह ग़लत है. गिन्ती से नमूने का कोई सम्बन्ध नहीं है. अगर उपन्यास के चरित्र की तरह तीस लाख आदमी हैं तो यह कहना नामुमकिन है कि एक नमूने का चरित्र पेश करने में लेखक सफल रहा है और अगर उस चरित्र से मेल खाने वाले तीन हज़ार ही आदमी हैं तो यह कहना भी असम्भव है कि लेखक विफल रहा है. जैसा समाज होता है वैसा ही लेखक का जीवन होता है और जीवन के पर्दे पर जो घटनाएं हो रही हैं उन्हीं को लेखक दिखाता है. जीवन के घेरे से बाहर की कोई चीज़ वह पेश नहीं करता, वह आदमियों और राष्ट्रों का असली जीवन चित्रित करता है. जहां तक गिन्ती का सवाल है वहां तक चात्सकी के चरित्र नमूने के चरित्र नहीं हैं. लेकिन फिर भी अपने समय के रूसी प्रगतिशील दल की धुंधली आशा और ग़ुस्से को उन्होंने अपनी रचनाओं में पेश किया है. गांचारोफ़ ने आबलोमोफ़ के चरित्र का निर्माण इसलिये नहीं किया कि उनमें अनोखापन है बल्कि इसलिये कि उन जैसे लोगों के लिये समाज ने ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी है जिसमें वह हमेशा दुखी रहते हैं. 'अन्नाकेना' का प्रेम बेमिसाल है, उसमें बहुत गहराई है, लेकिन फिर भी सब लोग उसे समझ लेते हैं. हमारे समय के बुर्ज़वाई लेखक आज इतने बांझ क्यों हैं? कारन यह है कि वह जीवन से भागते हैं और अपनी रचनाओं में ऐसे लोगों का चित्रन करते हैं जो किसी रूप में भी दूसरे से नहीं मिलते इसमें कोई शक नहीं कि ऐसे लोग मौजूद हैं और यह भी हो सकता है कि उन लोगों की तादाद हमारे अनुमान से ज़्यादा हो. लेकिन ऐसे लोगों का चित्रन पाठक के हृदय को नहीं छूता, क्योंकि उपन्यास में वह अपने और अपने युग की झांकी को ढूंढता है. मैं नहीं मानता हूं कि स्टैन्डहाल के समय में फ़्रांस के हर गली कूचे में जूलियन सारिल या लूशियन लेविन मिल सकते थे. मेरा ख़्याल है ऐसे चरित्र मुश्किल से मिलते हैं, लेकिन यह चरित्र भावों और झुकावों को इस तरह से पेश करते हैं जिस से समय की परिस्थिति का पता चलता है और यही भाव और रुझान आज भी मौजूद हैं, केवल उनका रूप बदल गया है. इसी कारन स्टैन्डहाल आज तक पढ़े जाते हैं और भविष्य में भी बहुत दिनों तक पढ़े जाते रहेंगे.

आधुनिक बुर्ज़्वाई उपन्यास के चरित्रों में मानसिक भाव नहीं हैं बल्कि उनका आधार अनूठेपन पर है और

لیئے کلاکار کو اوپری درشٹی کو اس انوبھو سے ملانا پڑتا ہے جو دوسروں کا ہے اور جو باتیں ان بھاؤں کے بارے میں دوسروں نے کہی ہیں انہیں بھی اُسے سمجھنا ہوتا ہے . تب ہی اس کے چرتروں میں سماج کی جھانکی ملتی ہے اور یہ چرتر ایک نمونہ ہوتے ہیں . نمونے کے بارے میں جو عام طریقے سے سمجھا جاتا ہے وہ غلط ہے . گنتی سے نمونے کا کوئی سمبندھ نہیں ہے . اگر اپنیاس کے چرتر کی طرح تیس لاکھ آدمی ہیں تو یہ کہنا ناممکن ہے کہ ایک نمونے کا چرتر پیش کرنے میں لیکھک سپھل رہا ہے اور اگر اس چرتر سے میل کھانے والے تین ہزار ہی آدمی ہیں تو یہ کہنا بھی اسمبھو ہے کہ لیکھک وپھل رہا ہے . جیسا سماج ہوتا ہے ویسا ہی لیکھک کا جیون ہوتا ہے اور جیون کے پردے پر جو گھٹنائیں ہو رہی ہیں انہیں کو لیکھک دکھاتا ہے . جیون کے گھیرے سے باہر کوئی چیز وہ پیش نہیں کرتا' وہ آدمیوں اور راشٹروں کا اصلی جیون چترت کرتا ہے . جہاں تک گنتی کا سوال ہے وہاں تک چاتسکی کے چرتر نمونے کے چرتر نہیں ہیں . لیکن پھر بھی اپنے سمے کے روسی پرگتی شیل دل کی دھندلی آشا اور غصے کو انہوں نے اپنی رچناؤں میں پیش کیا ہے . گانچاروف نے آبلوموف کے چرتر کا نرمان اس لئے نہیں کیا کہ ان میں انوکھاپن ہے بلکہ اس لئے کہ ان جیسے لوگوں کے لئے سماج نے ایسی پرستھتی پیدا کر دی ہے جس میں وہ ہمیشہ دکھی رہتے ہیں . ' انّا کرینا ' کا پریم بے مثال ہے' اس میں بہت گہرائی ہے' لیکن پھر بھی سب لوگ اسے سمجھ لیتے ہیں . ہمارے سمے کے برژوائی لیکھک آج اتنے بانجھ کیوں ہیں ؟ کارن یہ ہے کہ وہ جیون سے بھاگتے ہیں اور اپنی رچناؤں میں ایسے لوگوں کا چترن کرتے ہیں جو کسی روپ میں بھی دوسرے سے نہیں ملتے . اس میں کوئی شک نہیں کہ ایسے لوگ موجود ہیں اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اُن لوگوں کی تعداد ہمارے انومان سے زیادہ ہو . لیکن ایسے لوگوں کا چترن پاٹھک کے ہردے کو نہیں چھوتا' کیونکہ اپنیاس میں وہ اپنے اور اپنے یگ کی جھانکی ڈھونڈتا ہے . میں نہیں مانتا ہوں کہ اسٹنڈھال کے سمے میں فرانس کے ہر گلی کوچے میں جولین ساریل یا لوشین لیون مل سکتے تھے . میرا خیال ہے ایسے چرتر مشکل سے ملتے ہیں' لیکن یہ چرتر بھاؤں اور جھکاؤں کو اس طرح سے پیش کرتے ہیں جس سے سمے کی پرستھتی کا پتہ چلتا ہے اور یہی بھاؤ اور رجحان آج بھی موجود ہیں' کیول اُن کا روپ بدل گیا ہے . اسی کارن سے اسٹنڈھال آج تک پڑھے جاتے ہیں اور بھوشیہ میں بھی بہت دنوں تک پڑھے جاتے رہیں گے .

آدھونک برژوائی اپنیاس کے چرتروں میں مانسک بھاؤ نہیں ہیں بلکہ اُن کا آدھار انوکھے پن پر ہے اور

चरित्रों का निर्मान करते समय उन तत्वों के हिस्सों को लेखक बदल देता है जिन से कि वह व्यक्ति बना है; उस व्यक्ति की आगे बढ़ने और पीछे हटने की सम्भावना को भी वह बदल देता है.

एक चरित्र में बहुत से व्यक्ति छुपे होते हैं

जब 'गोया" ने लड़ाई के भयानक दृश्यों का चित्रन किया तो इन्सानी जिस्म के चीर फाड़ के से निकलने वाले नतीजों की उसने कोई परवाह नहीं की, लेकिन डेढ़ सौ बरस बाद इसकी रचना ने हमें ताज्जुब में डाल दिया. जिस तरह का चित्रन उस ने उस समय किया है वह बिलकुल सच है. लड़ाई की जो तस्वीर उसने खींची है वह उन चित्रों के मुक़ाबिले में सच्चाई के बहुत नज़दीक है जो कि कैनावस पर लड़ाई का दृश्य खींचने वालों ने हर देश और हर युग में खींचा है.

आम तरीक़े से नाविल के चरित्र एक व्यक्ति के चरित्र की नक़ल नहीं होते बल्कि वह बहुत से व्यक्तियों के चरित्र की मिली जुली तस्वीर होते हैं. इनको बनाने में लेखक बहुत से व्यक्तियों से मिलता है. अपने निर्मित चरित्र में लेखक अपने जीवन का अनुभव भर देता है. लेखक के उपन्यास और कहानी को पढ़ कर नज़दीकी दोस्तों को ताज्जुब होता है क्योंकि उन्हें पता चलता है कि जाना पहचाना घटनाओं का रूप बदल गया है, क्योंकि उन्हें अपने शब्द दूसरे के मुंह से सुनने को मिलते हैं, क्योंकि उन्हें दिखाई पड़ता है कि लेखक ने अपने एक पुराने दोस्त का ऊपरी ढांचा एक ऐसे व्यक्ति को उढ़ा दिया है जिसकी जीवन कथा उस दोस्त से बिलकुल अलग है.

आधुनिक लेखक के दिमाग़ में तरह तरह के विचार उठते रहते हैं और वह उन का प्रयोग किया करता है. इन विचारों की जानकारी हासिल करना ज़रा मुश्किल है. हालांकि वह बिलकुल हमारे बग़ल में रहता है लेकिन उसके चरित्र और उसकी जीवन कथा से हम पूरी तरह वाक़िफ़ नहीं होते. लेकिन अगर हम इस भेद को मालूम करना चाहते हैं कि प्रमानित उपन्यासों के चरित्र कैसे पैदा हुए हैं तो हमें लेखक के पत्रों का सहारा लेना पड़ेगा, उसकी डायरी और नोटबुक को पढ़ना पड़ेगा और उस समय के दूसरे लेखकों के संस्मरन से मदद लेनी पड़ेगी. इस तरह हम देखते हैं कि आम तरीक़े से उपन्यास के चरित्र का निर्मान उस व्यक्ति पर आधारित नहीं है जिस के व्यक्तित्व ने लेखक को आकर्शित किया है. लेखक बहुत से लोगों के व्यक्तित्व पर विचार करता है और तब जाकर अपने उपन्यास का चरित्र निर्मान करता है.

ऊपरी नज़र से देख कर रचना के चरित्र नहीं पैदा किये जा सकते. पक्का वास्तविक चरित्र पैदा करने के

چرتروں کا نرمان کرتے سمے ان تتوں کے حصوں کو لیکھک بدل دیتا ہے جن سے کہ وہ ویکتی بنا ہے، اس ویکتی کی آگے بڑھنے اور پیچھے ہٹنے کی سمبھاؤنا کو بھی وہ بدل دیتا ہے ۔

[ایک] چرتر میں بہت سے ویکتی چھپے ہوتے ہیں

جب "گویا" نے لڑائی کے بھیانک درشیوں کا چترن کیا تو انسانی جسم کے چیر پھاڑ کے سے نکلنے والے نتیجوں کی اس نے کوئی پرواہ نہیں کی، لیکن ڈیڑھ سو برس بعد اس کی رچنا نے ہمیں تعجب میں ڈال دیا ۔ جس طرح کا چترن اس نے اس سمے کیا ہے وہ بالکل سچ ہے ۔ لڑائی کی جو تصویر اس نے کھینچی ہے وہ ان چتروں کے مقابلے میں سچائی کے بہت نزدیک ہے جو کہ کینوس پر لڑائی کا درشیہ کھینچنے والوں نے ہر دیش میں اور ہر یگ میں کھینچی ہیں ۔

عام طریقے سے ناول کے چرتر ایک ویکتی کے چرتر کی نقل نہیں ہوتے بلکہ وہ بہت سے ویکتیوں کے چرتر کی ملی جلی تصویر ہوتے ہیں ۔ ان کو بنانے میں لیکھک بہت سے ویکتیوں سے ملتا ہے ۔ اپنے نرمت چرتر میں لیکھک اپنے جیون کا انوبھو بھر دیتا ہے ۔ لیکھک کے اپنیاس اور کہانی کو پڑھ کر نزدیکی دوستوں کو تعجب ہوتا ہے کیونکہ انہیں پتہ چلتا ہے کہ جانی پہچانی گھٹناؤں کا روپ بدل گیا ہے، کیونکہ انہیں اپنے شبد دوسرے کے منہ سے سننے کو ملتے ہیں، کیونکہ انہیں دکھائی پڑتا ہے کہ لیکھک نے اپنے ایک پرانے دوست کا اوپری ڈھانچہ ایک ایسے ویکتی کو اڑھا دیا ہے جس کی جیون کتھا اس دوست سے بالکل الگ ہے ۔

آدھونک لیکھک کے دماغ میں طرح طرح کے وچار اٹھتے رہتے ہیں اور وہ ان کا پریوگ کیا کرتا ہے ۔ ان وچاروں کی جانکاری حاصل کرنا ذرا مشکل ہے ۔ حالانکہ وہ بالکل ہمارے بغل میں رہتا ہے لیکن اس کے چرتر اور اس کی جیون کتھا سے ہم پوری طرح واقف نہیں ہوتے ۔ لیکن اگر ہم اس بھید کو معلوم کرنا چاہتے ہیں کہ پرمانت اپنیاسوں کے چرتر کیسے پیدا ہوئے ہیں تو ہمیں لیکھک کے پتروں کا سہارا لینا پڑیگا، اس کی ڈائری اور نوٹ بک کو پڑھنا پڑیگا اور اس سمے کے دوسرے لیکھکوں کے سنسمرن سے مدد لینی پڑے گی ۔ اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ عام طریقے سے اپنیاس کے چرتر کا نرمان اس ویکتی پر آدھارت نہیں ہے جس کے ویکتتو نے لیکھک کو آکرشت کیا ہے ۔ لیکھک بہت سے لوگوں کے ویکتتو پر وچار کرتا ہے اور تب جاکر اپنے اپنیاس کا چرتر نرمان کرتا ہے ۔

اوپری نظر سے دیکھ کر رچنا کے چرتر نہیں پیدا کیے جا سکتے ۔ پکا واستوک چرتر پیدا کرنے کے

क्यों चाहिये ? हमारे यहां बहुत से लेखक हैं. अगर एक लेखक किसी चीज का चित्रन नहीं करता तो दूसरा उस कमी को पूरा कर देगा. कुछ लेखक अपनी कहानियों में सफ़े के सफ़े लिख मारते हैं जिनमें हृदय की गरमी नहीं होती है और जो पाठक को अपनी तरफ़ नहीं खींच पाते हैं. यह हरकत समालोचकों के ऐतराज़ से बचने के लिये की जाती है कि "लेकिन देखो इसने फ़लां चीज़ का चित्रन नहीं किया." यह परिस्थिति बहुत दुखदायक है.

कभी कभी लेखक से यह भी पूछा जाता है कि वह अपने हीरो के काल्पिनिक नाम के पीछे किसी व्यक्ति का चित्रन कर रहा है. बहुत से पाठकों का विचार है कि लेखक उन्हीं व्यक्तियों का चित्रन करता है जो वास्तविक रूप में मौजूद हैं और जिन्हें वह जानता पहचानता है मेरा विचार है कि लेखक शायद ही ऐसे लोगों को अपने उपन्यासों में जगह देता है जो वास्तविक रूप में मौजूद हों और अगर कभी ऐसे लोगों का चित्रन करता भी है तो उन्हें बदल देता है.

एलेक्सी टालस्टाय ने रूस के महान राजा पीटर पर आधारित कर के एक नाविल लिखा है और उससे बहुत पहले "पीटर का समय" नाम की कहानी भी उन्होंने लिखी थी. लेकिन नाविल और कहानी के पीटर में बड़ा अन्तर है. चूंकि लेखक बदल गया था इसलिये उसके हीरो में भी तबदीली आ गई. "नौजवान गार्ड" नामक उपन्यास का आधार एक सच्ची कहानी है लेकिन उस कहानी में लेखक ने बहुत सी तब्दीलियां कर दी हैं.

एक कलाकार प्रकृति की नक़ल नासमझी से नहीं करता. प्रकृति को वह बदलता है और इस बदलाव से ऐसा रूप पैदा करता है जो असली बन जाता है. दो प्रेमियों की बात चीत अगर कोई शार्टहैन्ड में लिख ले तो उनका महत्व बहुत नहीं होगा और वह अधिक बनावटी दिखाई पड़ेगी. इसके मुक़ाबिले में ऐसी बात चीत का चित्रन जब एक महान लेखक करता है तो उसका बड़ा महत्व होता है और वह बातें सच्ची मालूम होती हैं. लेखक इस बात चीत को सच्चाई से मिलाता है, कुछ चीज़ों को छोड़ देता है और कुछ का स्थान बदल देता है और साथ में वह बातें भी जोड़ देता है जो प्रेमियों ने सोची अवश्य हैं लेकिन जो उनके मुंह से नहीं निकली हैं. रंगीन फ़ोटोग्राफ़ी (जैसे पेन्टिंग, जो फ़ोटोग्राफ़ी की तरह होता है) व्यक्ति को कुरूप दिखाती है क्योंकि यह उसके ऊपरी बनाव का चित्रन करती है और या ज़्यादा से ज़्यादा ज़ाहिरी भावों को दिखा पाती है. असली कलाकार व्यक्ति के अन्दरूनी और बाहरी जीवन के मेल को दिखाता है और अपने हीरो के व्यक्तित्व को उभारता है.

کیوں چاہیئے ؟ ہمارے یہاں بہت سے لیکھک ہیں ۔ اگر ایک لیکھک کسی چیز کا چترن نہیں کرتا تو دوسرا اس کمی کو پورا کردیگا ۔ کچھ لیکھک اپنی کہانیوں میں صفحے کے صفحے لکھ مارتے ہیں جن میں ہردے کی گرمی نہیں ہوتی ہے اور جو پاٹھک کو اپنی طرف نہیں کھینچ پاتے ہیں ۔ یہ حرکت سمالوچکوں کے اعتراض سے بچنے کے لئے کی جاتی ہے کہ "لیکن دیکھو اس نے فلاں چیز کا چترن نہیں کیا ۔" یہ پرستھتی بہت دکھ دایک ہے ۔

کبھی کبھی لیکھک سے یہ بھی پوچھا جاتا ہے کہ وہ اپنے ہیرو کے کالپنک نام کے پیچھے کس ویکتی کا چترن کر رہا ہے ۔ بہت سے پاٹھکوں کا وچار ہے کہ لیکھک انہیں ویکتیوں کا چترن کرتا ہے جو واستوک روپ میں موجود ہیں اور جنہیں وہ جانتا پہچانتا ہے ۔ میرا وچار ہے کہ لیکھک شاید ہی ایسے لوگوں کو اپنے اپنیاسوں میں جگہ دیتا ہے جو واستوک روپ میں موجود ہوں اور اگر کبھی ایسے لوگوں کا چترن کرتا بھی ہے تو انہیں بدل دیتا ہے ۔

الکسی ٹالسٹائی نے روس کے مہان راجا پیٹر پر آدھارت کرکے ایک ناول لکھا ہے اور اس سے بہت پہلے "پیٹر کا سمے" نام کی کہانی بھی انہوں نے لکھی تھی ۔ لیکن ناول اور کہانی کے پیٹر میں بڑا انتر ہے ۔ چونکہ لیکھک بدل گیا تھا اسلیئے اس کے ہیرو میں بھی تبدیلی آگئی ۔ "نوجوان گارڈ" نامک اپنیاس کا آدھار ایک سچی کہانی ہے لیکن اس کہانی میں لیکھک نے بہت سی تبدیلیاں کردی ہیں ۔

ایک کلاکار پرکرتی کی نقل ناسمجھی سے نہیں کرتا ۔ پرکرتی کو وہ بدلتا ہے اور اس بدلاؤ سے ایسا روپ پیدا کرتا ہے جو اصلی بن جاتا ہے ۔ دو پریمیوں کی بات چیت اگر کوئی شارٹ ہینڈ میں لکھ لے تو اُن کا مہتو بہت نہیں ہوگا اور وہ ادھک بناوٹی دکھائی پڑیگی ۔ اس کے مقابلے میں ایسی بات چیت کا چترن جب ایک مہان لیکھک کرتا ہے تو اُس کا بڑا مہتو ہوتا ہے اور وہ باتیں سچی معلوم ہوتی ہیں ۔ لیکھک اس بات چیت کو سچائی سے ملاتا ہے، کچھ چیزوں کو چھوڑ دیتا ہے کچھ کا استھان بدل دیتا ہے اور ساتھ میں وہ باتیں بھی جوڑ دیتا ہے جو پریمیوں نے سوچی اوشیہ ہیں لیکن جو اُن کے منہ سے نہیں نکلی ہیں ۔ رنگین فوٹو گرافی (جیسے پینٹنگ جو فوٹو گرافی کی طرح ہوتی ہے) ویکتی کو کروپ دکھاتی ہے کیونکہ یہ اس کے اوپری بناؤ کا چترن کرتی ہے اور یا زیادہ سے زیادہ ظاہری بھاؤں کو دکھا پاتی ہے ۔ اصلی کلاکار ویکتی کے اندرونی اور باہری جیون کے میل کو دکھاتا ہے اور اپنے ہیرو کے ویکتتو کو اُبھارتا ہے ۔

चेकोफ़ के युग में रूस में जोर क्रान्तिकारी मौजूद थे. यह लोग बुद्धिमान थे और इनके इरादे मज़बूत थे. लेकिन चेकोफ़ ने उन मर्द और औरतों का चित्रन किया जो कि जीवन में नाकाम थे, हर वक़्त सपनों की दुनिया में रहते थे, बहुत ही नेक आदमी थे लेकिन ज़िन्दगी के भौंडेपन और नीचता के हाथों परेशान थे. चेकोफ़ के संस्मरन और पत्र जब हम पढ़ते हैं तो हमें चेकोफ़ का यह रूप दिखाई पड़ता है: वह बहुत ही सज्जन पुरुश हैं, दुख में चुपे रहते हैं, किसी के ज़ोर से बोलने पर चुप हो जाते हैं, झगड़े झंझट की परिस्थितियों से दूर भागते हैं और अपने इर्द गिर्द के लोगों की विफलताओं और कमज़ोरियों का लिहाज़ रखते हैं. उनका यही रूप ज्यों का त्यों साहित्य में भी मौजूद है. वह अपने इसी रूप के आधार पर चरित्रों को चुनते थे और उसी से चरित्रों के सम्बन्ध में उनके रुख़ का पता चलता है.

"पुरफ़ोक" दोस्तोव्स्की ने अपनी जवानी में लिखा है. "दी ब्रोदर्स करमाज़ोफ़" उन्होंने बाद में लिखी. लेकिन पहली पुस्तक से ले कर अन्त तक उन्होंने औरतों के अन्दर की दुनिया का गहरा चित्रन कभी नहीं किया. उन्होंने औरतों को केवल भाग्य का रूप दिया है और वह रचना में हीरो का भाग्य पलटने के लिये आती हैं. उनके उपन्यासों में न आपसी प्रेम है और न दोस्ती. इस बात का सम्बन्ध ख़ुद उनके चरित्र से है. यह चीज़ उनके भाव, उनके अकेलेपन और उनकी सख़्त ज़िन्दगी में छुपी है.

जब कोई लेखक ऐसे लोगों का चित्रन करता है जिन्हें वह नहीं जानता या जिन्हें वह नहीं समझता तो हमेशा उसे नाकामी होती है. लेखक चाहे जिस कारन से ऐसा करे उसे कामयाबी कभी नहीं हो सकती.

बुर्ज़्वाई व्यक्तिवाद के प्रचारक इल्ज़ाम लगाते हैं कि व्यक्ति को समाजवाद में ख़त्म कर दिया जाता है. लेकिन वास्तविकता इसके ख़िलाफ़ है, व्यक्ति के फलने फूलने में समाजवाद मदद देता है. अमरीका ऐसा देश है जहां पैदावार के साधन व्यक्तियों के हाथ में होते हैं, जहां इस ढंग के आर्थिक ढांचे की पूजा होती है, जहां पूंजीवाद को धर्म का रूप दे दिया गया है, वहां ज़रूर सब को एक तरह के ढांचे में ढाला जा रहा है. उनकी आत्मा को एक जैसा बनाया जा रहा है और यह काम ख़ूब तेज़ी से हो रहा है. दूसरी तरफ़ हम इस वास्तविकता की क़दर करते हैं कि रूसी मर्द और औरत एक आदर्श रखते हुए भी एक दूसरे से भिन्न हैं. वह एक हैं पर उनकी बनावट अलग अलग है. किसी लेखक से यह मांग कैसे की जा सकती है कि वह हर चीज़ व हर मनुश्य का चित्रन करे. हम ऐसा कैसे कर सकते हैं और हमें ऐसा करना भी

چیکوف کے یگ میں روس میں گھور کرانتکاری موجود تھے، یہ لوگ بدھیمان تھے اور ان کے ارادے مضبوط تھے. لیکن چیکوف نے اُن مرد اور عورتوں کا چترن کیا جو کہ جیون میں ناکام تھے، ہر وقت سپنوں کی دنیا میں رہتے تھے، بہت ہی نیک آدمی تھے لیکن زندگی کے بھونڈے پن اور نیچتا کے ہاتھوں پریشان تھے. چیکوف کے سنسمرن اور پتر جب ہم پڑھتے تو ہمیں چیکوف کا یہ روپ دکھائی پڑتا ہے: وہ بہت ہی سجن پرش ہیں، دکھ میں چُپے رہتے ہیں، کسی کے زور سے بولنے پر چپ ہو جاتے ہیں، جھگڑے جھنجھٹ کی پرستھتیوں سے دور بھاگتے ہیں اور اپنے ارد گرد کے لوگوں کی وپھلتاؤں اور کمزوریوں کا لحاظ رکھتے ہیں. اُن کا یہی روپ جیوں کا تیوں ساہتیہ میں بھی موجود ہے. وہ اپنے اسی روپ کے آدھار پر چرتروں کو چنتے تھے اور اسی سے چرتروں کے سمبندھ میں ان کے رخ کا پتہ چلتا ہے.

"پور فوک" دوستوسکی نے اپنی جوانی میں لکھا ہے. "دی بروذرس کرامازوف" انہوں نے بعد میں لکھی. لیکن پہلی پستک سے لے کر انت تک انہوں نے عورتوں کے اندر کی دنیا کا گہرا چترن کبھی نہیں کیا. انہوں نے عورتوں کو کیول بھاگیہ کا روپ دیا ہے اور وہ رچنا میں ہیرو کا بھاگیہ پلٹنے کے لئے آتی ہیں. اُن کے اپنیاسوں میں نہ آپسی پریم ہے اور نہ دوستی. اِس بات کا سمبندھ خود ان کے چرتر سے ہے. یہ چیز ان کے بھاؤ، ان کے اکیلے پن اور ان کی سخت زندگی میں چھپی ہے.

جب کوئی لیکھک ایسے لوگوں کا چترن کرتا ہے جنہیں وہ نہیں جانتا یا جنہیں وہ نہیں سمجھتا تو ہمیشہ اسے ناکامی ہوتی ہے. لیکھک چاہے جس کارن سے ایسا کرے اسے کامیابی کبھی نہیں ہوسکتی.

بورژوائی ویکتی واد کے پرچارک الزام لگاتے ہیں کہ ویکتی کو سماج واد میں ختم کردیا جاتا ہے. لیکن واستوکتا اِس کے خلاف ہے. ویکتی کے پھلنے پھولنے میں سماج واد مدد دیتا ہے. امریکہ ایسا دیش ہے جہاں پیداوار کے سادھن ویکتیوں کے ہاتھ میں ہوتے ہیں، جہاں اِس ڈھنگ کے آرتھک ڈھانچے کی پوجا ہوتی ہے، جہاں پونجی واد کو دھرم کا روپ دے دیا گیا ہے، وہاں ضرور سب کو ایک طرح کے ڈھانچے میں ڈھالا جا رہا ہے، اس کی آتما کو ایک جیسا بنایا جا رہا ہے اور یہ کام خوب تیزی سے ہو رہا ہے. دوسری طرف ہم اِس واستوکتا کی قدر کرتے ہیں کہ روسی مرد اور عورت ایک آدرش رکھتے ہوئے بھی ایک دوسرے سے بھن ہیں. وہ ایک ہیں پر انکی بناوٹ الگ الگ ہے. کسی لیکھک سے یہ مانگ کیسے کی جاسکتی ہے کہ وہ ہر چیز و ہر منشیہ کا چترن کرے. ہم ایسا کیسے کرسکتے ہیں اور ہمیں ایسا کرنا بھی

यही बात लेखक के साथ भी होती है. किसी चीज़ की छाप उसके दिमाग़ पर पड़ती है और दूसरी चीज़ से वह कोई दूसरी दिलचस्पी नहीं लेता. इसका कारन यह नहीं है कि लेखक भूलते बहुत हैं या सुस्त होते हैं बल्कि इसका कारन यह है कि लेखकों की प्रकृति और जीवन की विशेषता है. हर लेखक किसी समस्या की तह में पहुंच जाता है, किसी के हृदय में उतर जाता है और किसी को बिल्कुल नहीं समझ पाता है और अगर समझता भी है तो उसकी जानकारी ऊपरी होती है. दिलों की कुंजी लेखकों के पास होती है. किसी के पास कम दिलों की कुंजी होती है और किसी के पास ज़्यादा दिलों की. लेकिन आज तक कोई ऐसा लेखक नहीं हुआ जो सारे दिलों की कुन्जी रखता हो.

हम देखते हैं कि लेखक अपनी रचनाओं में घूम फिर कर वही के वही चरित्र निर्मान करते हैं. जब हम पुराने साहित्य की बात करते है तो उसी आधार पर हम "तुर्गनेव की सुन्दियां" और "चैकोफ़ के चरित्र" की चर्चा करते हैं. इस क़िस्म के चरित्रों के निर्मान का सम्बन्ध युग से नहीं है. लेखकों की विशेषताओं ने इन्हें ख़ुद चुना है. क्या तुर्गनेव के युग में मेहनती और शक्ति पोशक स्त्रियां नहीं थी? क्या उस युग में भोग विलास से लोग आनन्दित नहीं होते थे? क्या वह अनुमान नहीं करते थे और भविश्यवानी नहीं किया करते थे? क्या उस समय कोई प्रेम सम्बन्ध सुखदायक साबित नहीं हुआ? तुर्गनेव ने मेहनती और शक्ति उपासक स्त्रियों का चित्रन किया है, सुख देने वाले प्रेम सम्बन्धों का भी वर्नन उन्होंने किया है. लेकिन उन हीरोइन का जो "तुर्गनेव की सुन्दरियां" कहलाती हैं उनका चित्रन उन्होंने ख़ास प्रभाव से किया है और उनको नया अर्थ पहनाया है.

इस बात को तुर्गनेव के साहित्यक और दार्शनिक शौक़ों के आधार पर नहीं बयान किया जा सकता. यह भेद इस बात में भी नहीं है कि तुर्गनेव गोयटे या शीलिंग से प्रेम करते थे. असल में तुर्गनेव को अभागी और पवित्र सुन्दरियों के अक्स की ज़रूरत थी, जिस की मदद से वह "बेकार लोगों" के समाज का चित्रन कर सकें और कुलीन लोगों के ढहते हुए समाज की तस्वीर पेश कर सकें. इस पर भी आप यह सोचने पर मजबूर हैं कि इन चित्रों के निर्मान में तुर्गनेव के अनुभवों का हाथ है. तुर्गनेव शायद ही किसी ऐसे चित्र से यथार्थ जीवन में मिले हों. लेकिन उन का ख़ुद का चरित्र और जीवन "तुर्गनेव सुन्दरियों" में से किसी एक चरित्र और उसके भाग्य की अकसर याद दिलाता है.

یہی بات لیکھک کے ساتھ بھی ہوتی ہے . کسی چیز کی چھاپ اُس کے دماغ پر پڑتی ہے اور دوسری چیز سے وہ کوئی دلچسپی نہیں لیتا . اِس کا کارن یہ نہیں ہے کہ لیکھک بھولتے بہت ہیں یا وہ سست ہوتے ہیں بلکہ اِس کا کارن یہ ہے کہ لیکھکوں کی پرکرتی اور جیون کی وشیشتا ہے . ہر لیکھک کسی سمسیا کی تہہ میں پہونچ جاتا ہے، کسی کے ہردے میں اتر جاتا ہے اور کسی کو بالکل نہیں سمجھ پاتا ہے اور اگر سمجھتا بھی ہے تو اس کی جانکاری اوپری ہوتی ہے . دلوں کی کنجی لیکھکوں کے پاس ہوتی ہے. کسی کے پاس کم دلوں کی کنجی ہوتی ہے اور کسی کے پاس زیادہ دلوں کی . لیکن آج تک کوئی ایسا لیکھک نہیں ہوا جو سارے دلوں کی کنجی رکھتا ہو .

ہم دیکھتے ہیں کہ لیکھک اپنی رچناؤں میں گھوم پھر کر وہی کے وہی چرتر نرمان کرتے ہیں . جب ہم پرانے ساہتیہ کی بات کرتے ہیں تو اسی آدھار پر ہم " ترگنیو کی سندریاں " اور " چے کوف کے چرتر " کی چرچا کرتے ہیں. اِس قسم کے چرتروں کے نرمان کا سمبندھ یگ سے نہیں ہے، لیکھکوں کی وشیشتاؤں نے اِنہیں خود چنا ہے . کیا ترگنیو کے یگ میں محنتی اور شکتی پوشک استریاں نہیں تھیں ؟ کیا اُس یگ میں بھوگ ولاس سے لوگ آنندت نہیں ہوتے تھے ؟ کیا وہ انومان نہیں کرتے تھے اور بھوشیہ بانی نہیں کیا کرتے تھے ؟ کیا اُس سمے کوئی پریم سمبندھ سکھ دایک ثابت نہیں ہوا ؟ ترگنیو نے محنتی اور شکتی اُپاسک استریوں کا چترن کیا ہے، سکھ دینے والے پریم سمبندھوں کا بھی ورنن اُنہوں نے کیا ہے . لیکن ان ہیروئن کا جو " ترگنیو کی سندریاں " کہلاتی ہیں ان کا چترن انہوں نے خاص پربھاؤ سے کیا ہے اور ان کو نیا ارتھ پہنایا ہے .

اِس بات کو ترگنیو کے ساہتیک اور دارشنک شوقوں کے آدھار پر نہیں بیان کیا جا سکتا . یہ بھید اُس بات میں بھی نہیں ہے کہ ترگنیو گوئٹے یا شیلنگ سے پریم کرتے تھے . اصل میں ترگنیو کو ابھاگی اور پوتر سندریوں کے عکس کی ضرورت تھی، جس کی مدد سے وہ " بیکار لوگوں " کے سماج کا چترن کر سکیں اور کلین لوگوں کے ڈھتے ہوئے سماج کی تصویر پیش کر سکیں . اِس پر بھی آپ یہ سوچنے پر مجبور ہیں کہ اِن چتروں کے نرمان میں ترگنیو کے انوبھووں کا ہاتھ ہے . ترگنیو شاید ہی کسی ایسے چتر سے یتھارتھ جیون میں ملے ہوں . لیکن اِن کا خود کا چرتر اور جیون " ترگنیو سندریوں " میں سے کسی ایک چرتر اور اُس کے بھاگیہ کی اکثر یاد دلاتا ہے .

उनकी यूनीवर्सिटियां बन गईं. कोरोलेंको को देश निकाला मिला. यह लोग साहित्य के मैदान में जब उतरे तो इनके पास दरजनों किताबों का मवाद था, इनके आत्म ज्ञान का भंडार भरा पड़ा था.

"डैविड कूपर फ़ील्ड" "ओलीवर ट्विस्ट" और "लिटिल डोरिट" लिखने से पहले डिकिंस ने भयानक परिस्थितियों का अनुभव किया था. बचपन में मुश्किलों के पहाड़ टूटे थे, उन्हें सख्तियां झेलनी पड़ी थीं, एक लोहार के घर काम करना पड़ा था. बालज़क ने एक दफ़्तर में काम किया. कुछ दिनों व्योपार करते रहे, जिसमें कभी सफल न हुए. उन्होंने फ़्रांसीसी बुर्जवाई समाज के ग़म ग़ुस्सों, दुख सुख, जोश निराशा का अनुभव किया और बाद में इन सब का वर्नन अपनी रचनाओं में किया.

पूंजीवादी देशों में लिखकर जीविका कमाना बहुत ही मुश्किल है. पेशेवर लेखक बनने से पहले पच्छमी यूरोप और ख़ास करके अमरीका के बहुत से मशहूर लेखक या मज़दूरी करते थे या डाक बांटते थे या जहाज़ों पर माल लादते उतारते थे. इनमें से कोई कोई सड़कों के किनारे फ़ोटो खींचते थे. कुछ बाल बनाने का पेशा करते थे और कुछ सोने की कानों की खोज में मारे मारे फिरते थे. इन लोगों की बहुत से इन्सानों से मुलाक़ात हुई. इनको बहुत से उथल पुथल से गुज़रना पड़ा. इन अनुभवों से उपन्यास लिखने में इन लेखकों को सहायता मिली. उन्होंने पूंजीवादी समाज के कालेपन को ख़ुद अनुभव किया और उस समाज के उस पहलू का अपनी रचनाओं में पूरा वर्नन किया.

अध्यन रचना की सीढ़ी है

रचना करने के लिये अध्यन ज़रूरी सीढ़ी है. लेखक लिख कर जो काम करता है पाठक वही काम पढ़कर करता है. कहानी में जो तफ़सील इशारों में दी जाती है उसे पाठक की कल्पना शक्ति पूरी कर लेती है. यह काम वह अपने अनुभव के घेरे के अन्दर ही करता है. अलग अलग पाठक उपन्यास के अलग अलग चरित्रों को अपने रंग में रंग लेती है या उसे बेरंग बना देती है, चरित्र को ऊपर उठा देती है या उसकी अहमियत को बहुत कम कर देती है. बहुत सी पाठक कान्फ़्रेंसों में मुझे इस बात का अनुभव हुआ है. इन कान्फ़्रेंसों में जब मेरे उपन्यासों पर चर्चा चली है तो बे इच्छा ही मेरा ध्यान अपनी बहुत सी साहित्यक ग़लतियों की तरफ़ गया है और इस बात का भी अनुभव हुआ है कि मानव प्रकृति एक दूसरे से कितनी भिन्न है. पाठक एक चरित्र के हृदय में उतर जाता है लेकिन दूसरे के प्रति वह उदासीन रहता है.

ان کی یونیورسٹیاں بن گئیں ۔ کورولنکو کو دیش نکالا ملا ۔ یہ لوگ ساہتیہ کے میدان میں جب اترے تو ان کے پاس درجنوں کتابوں کا مواد تھا' ان کے آتمک گیان کا بھنڈار بھرا پڑا تھا ۔

" ڈیوڈ کوپرفیلڈ" "اولیور ٹوسٹ" اور "لٹل ڈورٹ" لکھنے سے پہلے ڈکنس نے بھیانک پرستھتیوں کا انوبھو کیا تھا ۔ بچپن میں مشکلوں کے پہاڑ ٹوٹے تھے' انہیں سختیاں جھیلنی پڑی تھیں' ایک لوہار کے گھر کام کرنا پڑا تھا ۔ بالزک نے ایک دفتر میں کام کیا ۔ کچھ دنوں بیوپار کرتے رہے جس میں کبھی سپھل نہ ہوئے ۔ انہوں نے فرانسیسی برژوائی سماج کے غم غصوں' دکھ سکھ' جوش نراشا کا انوبھو کیا اور بعد میں ان سب کا ورنن اپنی رچناؤں میں کیا ۔

پونجی وادی دیشوں میں لکھکر جیوکا کمانا بہت ہی مشکل ہے ۔ پیشہ ور لیکھک بننے سے پہلے پچھمی یورپ اور خاص کر کے امریکہ کے بہت سے مشہور لیکھک یا مزدوری کرتے تھے یا ڈاک بانٹتے تھے یا جہازوں پر مال لادتے اتارتے تھے ۔ ان میں سے کوئی کوئی سڑکوں کے کنارے فوٹو کھینچتے تھے ۔ کچھ بال بنانے کا پیشہ کرتے تھے اور کچھ سونے کی کانوں کی کھوج میں مارے مارے پھرتے تھے ۔ ان لوگوں کی بہت سے انسانوں سے ملاقات ہوئی ۔ ان کو بہت سے اتھل پتھل سے گزرنا پڑا ۔ ان انوبھوں سے اپنیاس لکھنے میں ان لیکھکوں کو سہایتا ملی ۔ انہوں نے پونجی وادی سماج کے کالے پن کو خود انوبھو کیا اور اس سماج کے اس پہلو کا اپنی رچناؤں میں پورا ورنن کیا ۔

ادھین رچنا کی سیڑھی ہے

رچنا کرنے کے لئے ادھین ضروری سیڑھی ہے ۔ لیکھک لکھکر جو کام کرتا ہے پاٹھک وہی کام پڑھ کر کرتا ہے ۔ کہانی میں جو تفصیل اشاروں میں دی جاتی ہے اسے پاٹھک کی کلپنا شکتی پوری کرلیتی ہے ۔ یہ کام وہ اپنے انوبھو کے گھیرے کے اندر ہی کرتا ہے ۔ الگ الگ پاٹھک اپنیاس کے الگ الگ چرتروں کو اپنے رنگ میں رنگ لیتی ہے یا اسے بے رنگ بنا دیتی ہے' چرتر کو اوپر اٹھا دیتی ہے یا اس کی اہمیت کو بہت ہی کم کردیتی ہے ۔ بہت سی پاٹھک کانفرنسوں میں مجھے اس بات کا انوبھو ہوا ہے ۔ ان کانفرنسوں میں جب میرے اپنیاسوں پر چرچا چلی ہے تو بے اچھا ہی میرا دھیان اپنی بہت سی ساہتیک غلطیوں کی طرف گیا ہے اور اس بات کا بھی انوبھو ہوا ہے کہ مانو پرکرتی ایک دوسرے سے کتنی بھن ہے ۔ پاٹھک ایک چرتر کے ہردے میں اتر جاتا ہے لیکن دوسرے کے پرتی وہ اداسین رہتا ہے ۔

उसने दूसरों से सम्बन्ध स्थापित किये हों, उनको समझा हो, उन सम्बन्धों के दुख सुख को खुद भोगा हो.

ऊपर जो बात मैंने कही है उससे मेरा मतलब यह नहीं है कि लेखक केवल उन्हीं चीजों का वर्नन करता है जिनका उसे अनुभव है. यही नहीं कि लेखक अपने खुद के अनुभवों को बदल देता है बल्कि वह अपने मुशाहदों को भी बदल देता है. लेकिन वह हमेशा उन लोगों का ही वर्नन करता है जिनके विचारों और भावों को वह समझ सकता है. साहित्य का यह बहुत ही जरूरी तत्व है. चरित्रों के कारनामों को समझने के लिए लेखक के लिए इतना अनुभव जरूरी है जो इस बात को जाहिर कर सके कि वह परिस्थितियां कौन सी थीं और क्यों थीं जिन में चरित्र मरते जीते और काम करते हैं.

बारम्बार हमें यह दिखाई पड़ता है कि एक नौजवान लेखक उभरता है और पूरी तरह चमकने से पहले ही साहित्य का यह सितारा डूब जाता है. पहली पुस्तक निकलती है. उनमें लेखक की प्रतिभा दिखाई पड़ती है, लोगों का ध्यान वह अपनी तरफ खींचती है. लेकिन दूसरी पुस्तक के निकलने की नौबत नहीं आती. इस तरह के कुछ ऐसे भी लेखक हैं जिन की दूसरी पुस्तक भी निकलती है और उसके बाद तीसरी भी पढ़ने को मिलती है. लेकिन इन किताबों को पढ़कर पाठक का भरम दूर हो जाता है. इस तरह की दुखद घटना का सम्बन्ध उन लेखकों की जीवन कथा से होता है. एक नौजवान जीवन के संघर्ष में अमली हिस्सा लेता है. वह एक इंजीनियर है, एक भूमि शास्त्री है, एक विद्यार्थी है, एक मजदूर है. उसे अनुभव होता रहता है और लिखने के लिए उसके पास कुछ जमा होता रहता है. अगर उसके पास रचना करने की प्रतिभा है तो वह पुस्तक के रूप में अपने अनुभव लिखता है. यह पुस्तक कामियाब होती है. लेकिन जब यही नौजवान पेशेवर लेखक बन जाता है तो वह अपने पिछले जीवन से बिल्कुल अलग हो जाता है. उस समय वह नए नए अनुभव नहीं कर पाता, नई नई समस्याएं वह देख नहीं पाता. उस नौजवान लेखक की दूसरी और तीसरी किताबें विफल रहती हैं क्योंकि वह अनुभव के आधार पर नहीं लिखी जातीं. ऐसी रचनाओं का आधार अटकल पर होता है, इनको लिखने में लेखक साहित्यिक स्मृतियों पर निर्भर करता है, इन पुस्तकों का ढांचा पिटा पिटाया होता है.

याद कीजिए कि पुराने लेखकों का जीवन कितना पेचीदा और टेढ़ा मेढ़ा था. याद कीजिए कि साल्टी कोफ श्चेद्रीन को बहुत से शहरों में सरकारी नौकरी करनी पड़ी. वहां वह ऊंचे ओहदे पर रहे. दोस्तोवस्की को गुलामी की सजा मिली. गोर्की जगह जगह मारे मारे फिरे. यही जगहें

ں نے دوسروں سے سمبندھ استھاپت کئے ہوں، اُن سمجھا ہو، اُن سمبندھوں کے دکھ سکھ کو خود بھوگا ہو ۔

اوپر جو بات میں نے کہی ہے اُس سے میرا مطلب نہیں ہے کہ لیکھک کیول اُنہیں چیزوں کا ورنن کرتا جن کا اُسے انوبھو ہے ۔ یہی نہیں کہ لیکھک اپنے خود انوبھوں کو بدل دیتا ہے بلکہ وہ اپنے مشاہدوں کو بھی بدل دیتا ہے ۔ لیکن وہ ہمیشہ ان لوگوں کا ہی ورنن کرتا ہے جن کے وچاروں اور بھاؤں کو وہ سمجھ سکتا ہے ۔ ساہتیہ کا یہ بہت ہی ضروری تتو ہے۔ چرتروں کے کارناموں کو سمجھنے کے لئے لیکھک کے لئے اتنا انوبھو ضروری ہے جو اس بات کو ظاہر کر سکے کہ وہ پرستھتیاں کونسی تھیں اور کیوں تھیں جن میں چرتر مرتے جیتے اور کام کرتے ہیں ۔

بارمبار ہمیں یہ دکھائی پڑتا ہے کہ ایک نوجوان لیکھک اُبھرتا ہے اور پوری طرح چمکنے سے پہلے ہی ساہتیہ کا یہ ستارہ ڈوب جاتا ہے ۔ پہلی پستک نکلتی ہے۔ اسمیں لیکھک کی پرتبھا دکھائی پڑتی ہے، لوگوں کا دھیان وہ اپنی طرف کھینچتی ہے۔ لیکن دوسری پستک کے نکلنے کی نوبت نہیں آتی ۔ اسطرح کے کچھ ایسے بھی لیکھک ہیں جن کی دوسری پستک بھی نکلتی ہے اور اُسکے بعد تیسری بھی پڑھنے کو ملتی ہے ۔ لیکن اِن کتابوں کو پڑھکر پاٹھک کا بھرم دور ہو جاتا ہے ۔ اسطرح کی دکھد گھٹنا کا سمبندھ ان لیکھکوں کی جیون کتھا سے ہوتا ہے ۔ ایک نوجوان جیون کے سنگھرش میں عملی حصہ لیتا ہے۔ وہ ایک انجینیر ہے، ایک بھومی شاستری ہے، ایک ودیارتھی ہے، ایک مزدور ہے ۔ اُسے انوبھو ہوتا رہتا ہے اور لکھنے کے لئے اس کے پاس کچھ جمع ہوتا رہتا ہے ۔ اگر اُسکے پاس رچنا کرنے کی پرتبھا ہے تو وہ پستک کے روپ میں اپنے انوبھو لکھتا ہے ۔ یہ پستک کامیاب ہوتی ہے ۔ لیکن جب یہی نوجوان پیشہ ور لیکھک بن جاتا ہے تو وہ اپنے پچھلے جیون سے بالکل الگ ہو جاتا ہے ۔ اس سمے وہ نئے نئے انوبھو نہیں کر پاتا، نئی نئی سمسیائیں وہ دیکھ نہیں پاتا ۔ اس نوجوان لیکھک کی دوسری اور تیسری کتابیں وپھل رہتی ہیں کیونکہ وہ انوبھو کے آدھار پر نہیں لکھی جاتیں ۔ ایسی رچناؤں کا آدھار اٹکل پر ہوتا ہے، اِن کو لکھنے میں لیکھک ساہتیک اسمرتیوں پر نربھر کرتا ہے، اِن پستکوں کا ڈھانچہ پٹاپٹایا ہوتا ہے ۔

یاد کیجئے کہ پرانے لیکھکوں کا جیون کتنا پیچیدہ اور ٹیڑھا میڑھا تھا ۔ یاد کیجئے کہ سالتی کوف شچدرین کو بہت سے شہروں میں سرکاری نوکری کرنی پڑی ۔ وہاں وہ اونچے عہدے پر رہے ۔ دوستو وسکی کو غلامی کی سزا ملی ۔ گورکی جگہ جگہ مارے مارے پھرے ۔ یہی جگہیں

सेवा" जैसे शब्दों का उपयोग साहित्य चर्चा के सम्बन्ध में लगभग अब हमारे यहां नहीं होता. लेकिन सचमुच ही यह शब्दार्थ से खाली नहीं हैं, मज़ाक़ उड़ाने की चीज़ नहीं हैं. इन शब्दों में लेखक के कर्तव्य की उचित समझ छिपी हुई है. लेखक वह आदमी है जो छोटे से जीवन में बहुत से जन्म लेता है, जिसका फ़र्ज़ है कि वह जनता के दिल में गरमी पैदा करे, जो जनता में जोश पैदा करने के लिये अपने को साधन के रूप में इस्तेमाल करे, जिसका कर्तव्य है कि वह आदमी के अन्तरात्मा को रोशन करे, जिसे चाहिये कि वह अपने पाठकों के दिमाग़ी जालों और नज़र की धुंधलाहट को साफ़ करे ताकि वह जीवन को अधिक अच्छी तरह देख सकें और ज्यादा जीवन का आनन्द ले सकें, अधिक शान से ज़िन्दगी बिता सकें.

लेखक में सीखने की शक्ति होती है. वह अपनी जनता से प्रेम करता है और उसकी समस्याओं में दिलचस्पी लेता है. लेकिन यह सोचना महज़ भोलापन है कि लेखक हर तरह के आदमियों को समझ सकता है. सब लोग एक दूसरे के भावों को समझते हैं. इन "सब" में लेखक भी शामिल हैं. लेकिन भावों को समझने की एक सीमा है. अपने अनुभवों के घेरे से बाहर कोई किसी की भावनाओं को नहीं समझ सकता. एक ऐसा भाव जिस का अनुभव लेखक को नहीं है, जिसका लेखक के मानसिक ढांचे से कोई सम्बन्ध नहीं है, उस भाव को लेखक नहीं समझ सकता. अगर लेखक उस भाव का वर्नन करता है तो उसे उन किताबों का सहारा लेना पड़ेगा जिन में उस ख़ास भाव का वर्नन किया गया है. इस भाव का वर्नन तो हो जायेगा लेकिन इस वर्नन में मार्मिकता नहीं होगी, सत्य भी नहीं होगा. जिस तरह तर्क शास्त्री बहस में अटकल लगाया करते हैं उसी तरह लेखक अटकल लगाएगा. जिन किताबों या उपन्यास के पन्नों में इस तरह का वर्नन होता है वह नीरस होते हैं और उनकी कोई छाप पाठक के दिल पर नहीं पड़ती.

पच्छिम वालों का विचार है कि जीवन में जो ड्रामें होते हैं उनको लेखक केवल देखा करता है, उनमें हिस्सा नहीं लेता. यह विचार सचाई के विरुद्ध है. लेखक तमाशाई मात्र नहीं है, वह जीवन के मंच पर खेले जाने वाले ड्रामों में भाग लेता है. उपन्यास के पहले अध्याय को लिखने से पहले महीनों या सालों तैयारी होनी चाहिए. योजना बनाई जाए, नोट तैयार किये जाएं. लेखक सालों जीवन की समस्याओं के बीच रहा हो, उसने जीवन के सुख दुख ख़ुद झेले हों, कभी उसका दिल जोश से भर गया हो, उमंगें जाग उठी हों और कभी वह निराश हो गया हो,

سیوا" جیسے شبدوں کا اپیوگ ساہتیہ چرچا کے سمبندھ میں لگ بھگ اب ہمارے یہاں نہیں ہوتا ۔ لیکن سچ مچ ہی یہ شبدارتھ سے خالی نہیں ہیں، مذاق اڑانے کی چیز نہیں ہیں ۔ ان شبدوں میں لیکھک کے کرتویہ کی اچت سمجھ چھپی ہوئی ہے ۔ لیکھک وہ آدمی ہے جو چھوٹے سے جیون میں بہت سے جنم لیتا ہے، جس کا فرض ہے کہ وہ جنتا کے دل میں گرمی پیدا کرے، جو جنتا میں جوش پیدا کرنے کے لیئے اپنے کو سادھن کے روپ میں استعمال کرے، جس کا کرتویہ ہے کہ وہ آدمی کی انترآتما کو روشن کرے، جسے چاہیئے کہ وہ اپنے پاٹھکوں کے دماغی جالوں اور نظر کی دھندلاہٹ کو صاف کرے تاکہ وہ جیون کو ادھک اچھی طرح دیکھ سکیں اور زیادہ جیون کا آنند لے سکیں، ادھک شان سے زندگی بتا سکیں ۔

لیکھک میں سیکھنے کی شکتی ہوتی ہے ۔ وہ اپنی جنتا سے پریم کرتا ہے اور اس کی سمسیاؤں میں دلچسپی لیتا ہے ۔ لیکن یہ سوچنا محض بھولا پن ہے کہ لیکھک ہر طرح کے آدمیوں کو سمجھ سکتا ہے ۔ سب لوگ ایک دوسرے کے بھاؤں کو سمجھتے ہیں ۔ ان "سب" میں لیکھک بھی شامل ہیں ۔ لیکن بھاؤں کو سمجھنے کی ایک سیما ہے ۔ اپنے انوبھوؤں کے گھیرے سے باہر کوئی کسی کی بھاؤناؤں کو نہیں سمجھ سکتا ۔ ایک ایسا بھاو جس کا انوبھو لیکھک کو نہیں ہے، جس کا لیکھک کے مانسک ڈھانچے سے کوئی سمبندھ نہیں ہے، اس بھاو کو لیکھک نہیں سمجھ سکتا ۔ اگر لیکھک اس بھاو کا ورنن کرتا ہے تو اسے ان کتابوں کا سہارا لینا پڑے گا جن میں اس خاص بھاو کا ورنن کیا گیا ہے ۔ اس بھاو کا ورنن تو ہو جائے گا لیکن اس ورنن میں مارمکتا نہیں ہوگی، ستیہ بھی نہیں ہوگا ۔ جس طرح ترک شاستری بحث میں اٹکل لگایا کرتے ہیں اسی طرح لیکھک بھی اٹکل لگائے گا ۔ جن کتابوں یا اپنیاس کے پنوں میں اس طرح کا ورنن ہوتا ہے وہ نیرس ہوتے ہیں اور ان کی کوئی چھاپ پاٹھک کے دل پر نہیں پڑتی ۔

پچھم والوں کا وچار ہے کہ جیون میں جو ڈرامے ہوتے ہیں ان کو لیکھک کیول دیکھا کرتا ہے، ان میں حصہ نہیں لیتا ۔ یہ وچار سچائی کے وردھ ہے ۔ لیکھک تماشائی ماتر نہیں ہے، وہ جیون کے منچ پر کھیلے جانے والے ڈراموں میں بھاگ لیتا ہے ۔ اپنیاس کے پہلے ادھیائے کو لکھنے سے پہلے مہینوں یا سالوں تیاری ہونی چاہیئے ۔ یوجنا بنائی جائے، نوٹ تیار کیئے جائیں ۔ لیکھک سالوں جیون کی سمسیاؤں کے بیچ رہا ہو، اس نے جیون کے سکھ دکھ خود جھیلے ہوں، کبھی اس کا دل جوش سے بھر گیا ہو، امنگیں جاگ اٹھی ہوں اور کبھی وہ نراش ہو گیا ہو،

महान और राष्ट्री पसन्द की तरफ हो सकता है. यह दूसरी बात है कि अपने झुकाव को वह रईसाना ठाट बाट का ढांचा, धर्म और देश भक्ती का नाम दे दे.

पिछली सदी के महान रूसी लेखक इस बात से नहीं डरते थे जिसे आजकल उत्तेजना कहा जाता है. जब टाल्सटाय सन 1812 की लड़ाई की चर्चा करते हैं तो क्या यह बात साफ नहीं हो जाती कि उनकी सहानुभूति किधर है? क्या इस में किसी को शक है कि "स्पोटस मैन्स स्केचेज़" के लेखक को कौन सी चीज़ प्यारी है और किस चीज़ से उसे नफ़रत है. रूसी समाज के ऊंचे तबक़े वाले बेईमानों, बेरहमों और रूसी जनता के बीच होने वाले टकराव का वर्नन करते समय क्या साल्टी कोफ़ शेचद्रीन ने तटस्थ होने की कोशिश की है?

लेखक में किसी के प्रति हमदर्दी होने का मतलब यह नहीं है कि वह भोंडेपन और लाचारी से पक्षपात करे. लेखक लालच, जालसाज़ी और पाखन्ड से नफ़रत कर सकता है लेकिन वह एक कन्जूस, जालसाज़ और पाखन्डी को इन्सानी हमदर्दी से वंचित नहीं कर सकता. दुनिया को काले और सफ़ेद दो ही रंग में न रंगना चाहिये. प्रेम की तरह नफ़रत का भी सम्बन्ध जीवन और चलते फिरते आदमियों से होता है, नफ़रत कोई विचार मात्र नहीं है.

शालोकोफ़ पक्षपाती थे. उनके उपन्यास "सायल अप टर्न्ड" का एक लक्ष है. वह जानते थे कि किसानों की परिस्थिति में तबदीली आने का मतलब है समाज की तरक़्क़ी. चूंकि उनकी रचना का लक्ष तय था इसलिये वह कुलकों की आत्मा में घुस सके, बाहर ही नहीं रह गए. इसीलिये उनकी रचना तरह के ऊपर ही ऊपर ऊपर नहीं रह गई, एक इश्तहार नहीं बन गई जिस में होने वाली घटनाएं ज्यों की त्यों लिख दी गई हैं. उनकी रचनाओं में मनोवैज्ञानिक सचाई पाई जाती है, समाज की सतह के अन्दर जो कुछ ढका है उसका वर्नन मिलता है.

कला बग़ैर भावना के नहीं होती

मेरा विचार है कि आज तक कोई कला ऐसी नहीं हुई है जिसे शुद्ध कहा जा सके और उसमें किसी तरह का वलवला न हो, जोश न हो. मैं यह भी मानता हूं कि बग़ैर भावुकता के भविश्य में भी कोई शुद्ध कला नहीं हो सकती.

शैली के भटकावों, रचना की कमज़ोरियों और दूसरी साहित्यिक त्रुटियों से आसानी से छुटकारा हासिल किया जा सकता है लेकिन जहां ठंडक हो, कोई उमंग न हो, कोई जोश न हो वहां जोश पैदा करना, भावों में आग लगाना बहुत मुश्किल है. "आत्मा की पुकार, प्रेरना और

مہان اور راشٹری پسند کی طرف ہوسکتا ہے. یہ دوسری بات ہے کہ اپنے جھکاؤ کو وہ رئیسانہ ٹھاٹ باٹ کا ڈھانچہ، دھرم اور دیش بھکتی کا نام دے دے.

پچھلی صدی کے مہان روسی لیکھک اس بات سے نہیں ڈرتے تھے جسے آجکل اُتیجنا کہا جاتا ہے. جب ٹالسٹائے سن 1812 کی لڑائی کی چرچا کرتے ہیں تو کیا یہ بات صاف نہیں ہو جاتی کہ اُن کی سہانوبھوتی کدھر ہے؟ کیا اِس میں کسی کو شک ہے کہ "اسپورٹس مینس اسکیچیز" کے لیکھک کو کون سی چیز پیاری ہے اور کس چیز سے اُسے نفرت ہے. روسی سماج کے اونچے طبقے والے بے ایمانوں، بے رحموں اور روسی جنتا کے بیچ ہونے والے ٹکراؤ کا ورنن کرتے سمے کیا سالٹی کوف شیچدرین نے تٹستھ ہونے کی کوشش کی ہے؟

لیکھک میں کسی کے پرتی ہمدردی ہونے کا مطلب یہ نہیں ہے کہ وہ بھونڈے پن اور لاچاری سے پکشپات کرے. لیکھک لالچ، جعل سازی اور پاکھنڈ سے نفرت کرسکتا ہے لیکن وہ ایک کنجوس، جعل ساز اور پاکھنڈی کو انسانی ہمدردی سے ونچت نہیں کرسکتا. دنیا کو کالے اور سفید دو ہی رنگ میں نہ رنگنا چاہیئے. پریم کی طرح نفرت کا بھی سمبندھ جیون اور چلتے پھرتے آدمیوں سے ہوتا ہے، نفرت کوئی وچار ماتر نہیں ہے.

شالو کوف پکش پاتی تھے. اُن کے اپنیاس "سائل اپ ٹرنڈ" کا ایک لکش ہے. وہ جانتے تھے کہ کسانوں کی پرستھتی میں تبدیلی آنے کا مطلب ہے سماج کی ترقی. چونکہ اُن کی رچنا کا لکش طے تھا اس لیئے وہ کلکوں کی آتما میں گھس سکے، باہر ہی نہیں رہ گئے. اسی لیئے اُن کی رچنا سطح کے اوپر ہی اوپر نہیں رہ گئی، ایک اشتہار نہیں بن گئی جس میں ہونے والی گھٹنائیں جیوں کی تیوں لکھ دی گئی ہیں. اُن کی رچناؤں میں منوویگیانک سچائی پائی جاتی ہے، سماج کی سطح کے اندر جو کچھ ڈھکا ہے اُس کا ورنن ملتا ہے.

کلا بغیر بھاونا کے نہیں ہوتی

میرا وچار ہے کہ آج تک کوئی کلا ایسی نہیں ہوئی ہے جسے شدھ کہا جاسکے اور اس میں کسی طرح کا ولولہ نہ ہو، جوش نہ ہو. میں یہ بھی مانتا ہوں کہ بغیر بھاوکتا کے بھوشیہ میں بھی کوئی شدھ کلا نہیں ہوسکتی.

شیلی کے بھٹکاؤں، رچنا کی کمزوریوں اور دوسری ساہتیک ترٹیوں سے آسانی سے چھٹکارا حاصل کیا جا سکتا ہے لیکن جہاں ٹھنڈک ہو، کوئی امنگ نہ ہو، کوئی جوش نہ ہو وہاں جوش پیدا کرنا، بھاؤں میں آگ لگانا بہت مشکل ہے. "آتما کی پکار، پریرنا اور

गुलाम बन कर. इस जादू का कोई इलाज नहीं है......" शायद वह सोचने लगा, कुछ चिन्तित सा हुआ और फिर उसी परेशानी में बोला—"पर एक इलाज है, बड़ा कारगर इलाज......"

छै बज गए थे, अनिल तकिये में मुंह गड़ाए चारपाई पर पड़े थे. कल्लन, मुराद, नन्कू, राम प्रसाद और दरजनों मज़दूर कोठे पर आ गए थे. सबके सब अनिल की तरफ़ बढ़े. ज्यंकि जैसे डर कर भाग गया. कल्लन ने कहा—"भैया जी."

और वह उठकर बैठ गए. एक दफ़ा आंख मली और सब की शकल देख कर मुसकरा दिए. बोले—"यार, रात भर बुरे बुरे सपने देखते रहे, इसलिए उठने में देर हो गई. मुंह हाथ धोलें, बस जुटते हैं काम में.

अवकाश के अंधियारे में जो अनिल मर गए थे संघर्ष के उजियाले में वह फिर जी उठे.

लेखक और उसकी कला

(लेखक—एलिया एहरन बर्ग; अनुवादक—मुजीब रिज़वी)

(गतांक से आगे)

प्रगतिशील साहित्य और उसका मक़सद

बुर्ज़्वा विचार धारा के अनुयाई सोवियत लेखकों और पच्छिम के प्रगतिशील लेखकों पर इलज़ाम लगाते हैं कि इनकी रचनाओं का आधार अपनी ख़ास विचार धारा को फैलाना होता है. यह लोग कहते हैं कि प्रगति शील लेखकों की रचनाएं "टेनडेन्शस" होती है. फ़्रान्सीसी डिक्शनरी के इस शब्द का मतलब है:—किसी चीज़ की तरफ़ झुकाव. यह बिल्कुल क़ुदरती बात है कि दूसरे लोगों की तरह लेखक भी किसी चीज़ से प्रेम करे और किसी चीज़ से नफ़रत. लेखकों और आम लोगों के भावनाओं में अन्तर ज़रूर है. लेकिन अन्तर इस बात का नहीं है कि लेखक दूसरों की तरह प्रेम और नफ़रत नहीं करता. बल्कि अन्तर इस बात में है कि लेखक की इन्द्रियां आम लोगों की इन्द्रियों से तेज़ चलती हैं. लेखक जल्द ही ऊपरी खोल को फाड़ कर तह में पहुंच जाता है. एक लेखक का झुकाव न्याय, बद्धि और भाई चारे की तरफ़ हो सकता है, दूसरे का झुकाव समाजी नाबराबरी,

غلام بنکر . اِس جادو کا کوئی علاج نہیں ہے......" شاید وہ سوچنے لگا' کچھ چنتت سا ہوا اور پھر اسی پریشانی میں بولا—"پر ایک علاج ہے' بڑا کارگر علاج..."

چھ بج گئے تھے' انل تکیہ میں منہ گڑائے چارپائی پر پڑے تھے. کلن' مراد' ننکو' رام پرشاد اور درجنوں مزدور کوٹھے پر آگئے تھے . سب کے سب انل کی طرف بڑھے . ویکتی جیسے ڈر کر بھاگ گیا . کلن نے کہا—"بھیا جی"

اور وہ اٹھکر بیٹھ گئے . ایک دفعہ آنکھ ملی اور سب کی شکل دیکھکر مسکرا دیئے . بولے—"یار' رات بھر برے برے سپنے دیکھتے رہے' اس لیئے اٹھنے میں دیر ہوگئی . منہ ہاتھ دھولیں' بس جٹتے ہیں کام میں .

اوکاش کے اندھیارے میں جو انل مر گئے تھے سنگھرش کے اجیالے میں وہ پھر جی اٹھے .

لیکھک اور اُس کی کلا

(لیکھک—ایلیا اہرن برگ؛ انوواک—مجیب رضوی)

(گتانک سے آگے)

پرگتی شیل ساہتیہ اور اُس کا مقصد

بورژوا وچاردھارا کے انویائی سوویت لیکھکوں اور پچھم کے پرگتی شیل لیکھکوں پر الزام لگاتے ہیں کہ اِن کی رچناؤں کا آدھار اپنی خاص وچار دھارا کو پھیلانا ہوتا ہے . یہ لوگ کہتے ہیں کہ پرگتی شیل لیکھکوں کی رچنائیں "ٹینڈینشس" ہوتی ہیں. فرانسیسی ڈکشنری کے اس شبد کا مطلب ہے :—کسی چیز کی طرف جھکاؤ. یہ بالکل قدرتی بات ہے کہ دوسرے لوگوں کی طرح لیکھک بھی کسی چیز سے پریم کرے اور کسی چیز سے نفرت . لیکھکوں اور عام لوگوں کے بھاوناؤں میں انتر ضرور ہے . لیکن انتر اِس بات کا نہیں ہے کہ لیکھک دوسروں کی طرح پریم اور نفرت نہیں کرتا . بلکہ انتر اِس بات میں ہے کہ لیکھک کی اندریاں عام لوگوں کی اندریوں سے تیز چلتی ہیں . لیکھک جلد ہی اوپری کھول کو پھاڑ کر تہ میں پہونچ جاتا ہے . ایک لیکھک کا جھکاؤ نیائے' بدھی اور بھائی چارے کی طرف ہوسکتا ہے' دوسرے کا جھکاؤ سماجی نابرابری'

पछताव का होता है. अब चिड़िया चुग गई खेत... ......अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, अपने बारे में सोचो, अब भी संभल जाओ......"

अनिल में शायद संघर्ष की ताक़त नहीं रह गई थी या हमदर्दी ने उनको मजबूर कर दिया था. वह उस व्यक्ति से लिपट गए और फूट फूट कर रो दिये. उस व्यक्ति ने उन पर जादू करना आरम्भ किया और फिर मेस्मरेजम का उन पर पूरा असर हो गया. उस व्यक्ति ने कहा अपने बारे में सोचो और अनिल अपने बारे में सोचने लगे—

"क्या मैं नौकरी नहीं कर सकता था? ज़रूर कर सकता था. मैं वकील हो सकता था, बहुत अच्छा वकील. मैं...... मैं पुलीस अफ़सर हो सकता था. मेरे पास पैसे होते...... वनिता होती......एक सुन्दर घर होता.........दो एक बच्चे......वनिता मेरे पास होती......लेकिन आज मेरी क्या हालत है......?यह फटे कुर्ते, यह लू, धूप, माना कि समाज को कुछ मैंने दिया लेकिन मुझे क्या मिला, मुझे क्या मिला?

अनिल का व्यक्ति समाज की क़ब्र फाड़ कर निकल आया था. उनकी नस नस पर उसने अपना जाल कस लिया था. कभी कभी इस सपने से जागने की वह कोशिश करते तो वह उन्हें थपकी देकर फिर सुला देता. वह सोचते रहे. जो जीवन आज तक उनका आदर्श था, उसी से उन्हें नफ़रत होने लगी. आज तक जिस पथ पर वह चले थे उसे वह भटकाऊ समझने लगे. बीच बीच में मज़दूरों के मुक़दमे, उनकी कुटियां, संघर्ष, उनकी दुर्दशा, अपने किए वादे अनिल को मिले लेकिन रास्ते का पत्थर समझ कर वह उन्हें फेंकते गए. अब रास्ता साफ़ दिखाई पड़ने लगा था. जीवन के चढ़ान से मुंह मोड़ कर वह ढलान के पथ पर चल रहे थे और ढुलकते जा रहे थे. उसी स्थिति में उन्होंने पिता जी से भेंट की—

"पिता जी, मैं लौट आया."

"मैं जानता था बेटा, कूद लो जब तक तुम्हारे घुटनों में बूता है, जब उबाल ख़त्म होगा, ख़ून में ठंडक आएगी, तो आजाओगे......अब क्या इरादे हैं.... ?"

"जो आप कहें पिता जी......मैं नौकरी करूंगा, धन कमाऊंगा, आपकी सेवा करूंगा."

"अच्छा" पिता जी ने ऐसे कहा जैसे उनकी मांगी मुराद मिल गई हो.

अन्दर वाला इतमीनान से यह सब देखता रहा और कहीं अनिल की नींद उचट न जाए वह उन्हें थपथपाता रहा. पिता जी की "अच्छा" के साथ उसने कहा—"चले थे मुझ से लड़ने! तुम क्या हो? बड़ों बड़ों से मैंने टक्कर ली है. वह टोना किया है मैंने तुम पर बच्चू! कि ज़िन्दगी भर अब होश में नहीं आ सकते......पड़े रहो यूं ही, मेरे

پچھتاوے کا ہوتا ہے' جب چڑیاں چگ گئیں کھیت...... اب بھی کچھ نہیں بگڑا' اپنے بارے میں سوچو' اب بھی سنبھل جاؤ......"

انل میں شاید سنگھرش کی طاقت نہیں رہ گئی تھی یا ہمدردی نے اُن کو مجبور کردیا تھا. وہ اُس ویکتی سے لپٹ گئے اور پھوٹ پھوٹ کر رو دیئے. اُس ویکتی نے اُن پر جادو کرنا آرمبھ کیا اور پھر مسمریزم کا اُن پر پورا اثر ہوگیا. اُس ویکتی نے کہا اپنے بارے میں سوچو اور انل اپنے بارے میں سوچنے لگے—

"کیا میں نوکری نہیں کرسکتا تھا؟ ضرور کرسکتا تھا. میں وکیل ہوسکتا تھا' بہت اچھا وکیل. میں... میں پولیس افسر ہوسکتا تھا. میرے پاس پیسے ہوتے... ونتا ہوتی...... ایک سندر گھر ہوتا......دو ایک بچے...... ونتا میرے پاس ہوتی...... لیکن آج میری کیا حالت ہے......؟ یہ پھٹے کرتے' یہ لو' دھوپ' مانا کہ سماج کو کچھ میں نے دیا لیکن مجھے کیا ملا' مجھے کیا ملا؟

انل کا ویکتی سماج کی قبر پھاڑ کر نکل آیا تھا. اُن کی نس نس پر اس نے اپنا جال کس لیا تھا. کبھی کبھی اِس سپنے سے جاگنے کی وہ کوشش کرتے تو وہ انہیں تھپکی دےکر پھر سلا دیتا. وہ سوچتے رہے. جو جیون آج تک ان کا آدرش تھا' اسی سے انہیں نفرت ہونے لگی. آج تک جس پتھ پر وہ چلے تھے اسے وہ بھٹکاؤ سمجھنے لگے. بیچ بیچ میں مزدوروں کے مقدمے' ان کی کٹیاں' سنگھرش' ان کی دردشا' اپنے کئے وعدے انل کو ملے لیکن راستے کا پتھر سمجھکر وہ انہیں پھینکتے گئے. اب راستہ صاف دکھائی پڑنے لگا تھا. جیون کے چڑھان سے منہ موڑ کر وہ ڈھلان کے پتھ پر چل رہے تھے اور ڈھلکتے جا رہے تھے. اسی استھتی میں انہوں نے پتا جی سے بھینٹ کی—

"پتا جی' میں لوٹ آیا"

"میں جانتا تھا بیٹا' کود لو جب تک تمہارے گھٹنوں میں بوتا ہے' جب اُبال ختم ہوگا' خون میں ٹھنڈک آئےگی' تو آجاؤگے...... اب کیا ارادے ہیں......؟"

"جو آپ کہیں پتا جی......میں نوکری کروں گا' دھن کماؤں گا' آپ کی سیوا کروں گا."

"اچھا" پتا جی نے ایسے کہا جیسے ان کی مانگی مراد مل گئی ہو.

اندر والا اطمینان سے یہ سب دیکھتا رہا اور کہیں انل کی نیند اچٹ نہ جائے وہ انہیں تھپتھپاتا رہا. پتا جی کی "اچھا" کے ساتھ اس نے کہا—"چلے تھے مجھ سے لڑنے! تم کیا ہو؟ بڑوں بڑوں سے میں نے ٹکر لی ہے. وہ ٹونا کیا ہے میں نے تم پر بچو! کہ زندگی بھر اب ہوش میں نہیں آسکتے......پڑے رہو یوں ہی' میرے

सिसकता रहता हूं, तुम सालगिरह मनाती हो, मैं किसी कुटिया में पड़ा रहता हूं....." कहते कहते उसे गुदगुदा देते हैं.

वनिता हंसती नहीं है, जल भुन कर कहती है—"यह सब बकवास है. असल में तुम किसी और से प्रेम करते हो."

"हां, जीवन से."

"अपने" वनिता ने करुन भाव से कहा और अनिल पर नज़र डाली जिस में हज़ारों अर्थ समोए थे.

"नहीं, "अपना", "सब" का अन्श है, इसलिये सब से."

दोनों कुछ देर मौन रहे. फिर चलने की तैयारी करते हुए अनिल ने कहा—"वनिता, तुम अपनी शादी में बुलाना ज़रूर, भूलना मत, जेल के बाहर रहा तो तुम्हें आशीर्वाद देने आऊंगा......"

वनिता रो पड़ी.

अरे यह क्या, इन को क्या हो गया, अभी अच्छे भले थे, इन्होंने टिसवे क्यों बहाने शुरू कर दिए? उन्हों ने ही तो वनिता से कहा था कि अपनी शादी पर ज़रूर बुलाना. और आज जब उसने बुलाया है तो—यह क्या? आंखें खुली हैं और उनमें से तरल पदार्थ इस धार से बूंद बूंद चू रहा है जैसे किसी देवता पर यह जल चढ़ा रहे हों!

अन्दर वाला व्यक्ति बोल उठा—"अब आप हो ठीक रास्ते पर, भटकना मत."

नहीं कहा जा सकता कि शराबी को नशे का आभास कब होता है? नशे पीने के बाद या नशा उतरने के बाद! शायद आज तक अनिल नशे में बदमस्त थे, उन्हें कुछ होश नहीं था. वनिता से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है, वह इन चक्करों में नहीं पड़ते. यह सब बातें नशे की थीं. और आज जब नशा उतर चुका है तो उन्हें लग रहा है कि बिना वनिता रूपी शराब मिले उनका सिर दर्द से फट जाएगा. लेकिन बेबस हैं. अब तीर हाथ से छूट चुका है, रो रहे हैं. कल तक वनिता के सम्बन्ध में उन्होंने नहीं सोचा था शायद यह समझ बैठे थे कि वह अपनी है ही, उस पर किसी दूसरे का अधिकार नहीं. जैसे लोग घर में पड़ी चीज़ की अपेक्षा करते हैं, यूं ही कोने कतरे में फेंक देते हैं. अनिल ने वनिता से कोई लगाव ज़ाहिर नहीं किया लेकिन वह कोने कतरे में पड़ी रही. नहीं तो आज जब वह दूसरे की हो रही है तो उन्हें कसक न होती, उनके आंसू न उमड़ते.

शायद अन्दर का व्यक्ति उन्हीं क्षनों के ताक में था जब कमज़ोरी अनिल पर छा जाए. सहानुभूति दिखाते हुए, तसल्ली देते हुए, चुमकारते हुए उसने कहा—"अब

سسکتا رہتا ہوں، تم سالگرہ مناتی ہو، میں کسی کٹیا میں پڑا رہتا ہوں" کہتے کہتے انل اسے گدگدا دیتے ہیں۔

ونتا ہنستی نہیں ہے، جل بھن کر کہتی ہے—"یہ سب بکواس ہے۔ اصل میں تم کسی اور سے پریم کرتے ہو۔"

"ہاں، جیون سے"

"اپنے" ونتا نے کرن بھاؤ سے کہا اور انل پر نظر ڈالی جس میں ہزاروں ارتھ سموئے تھے۔

"نہیں، "اپنا" "سب" کا انش ہے، اس لیے سب سے۔"

دونوں کچھ دیر مون رہے۔ پھر چلنے کی تیاری کرتے ہوئے انل نے کہا—"ونتا، تم اپنی شادی میں بلانا ضرور، بھولنا مت، جیل کے باہر رہا تو تمہیں آشیرواد دینے آؤں گا۔"

ونتا رو پڑی۔

ارے یہ کیا، ان کو کیا ہو گیا، ابھی اچھے بھلے تھے، انہوں نے ٹسوے کیوں بہانے شروع کر دیئے۔ انہوں نے ہی تو ونتا سے کہا تھا کہ اپنی شادی پر ضرور بلانا۔ اور آج جب اس نے بلایا ہے تو—یہ کیا؟ آنکھیں کھلی ہیں اور ان میں سے ترل پدارتھ اس دھار سے بوند بوند چو رہا ہے جیسے کسی دیوتا پر یہ جل چڑھا رہے ہوں!

اندر والا ویکتی بول اٹھا—"اب آئے ہو ٹھیک راستے پر، بھٹکنا مت۔"

نہیں کہا جا سکتا کہ شرابی کو نشے کا آبھاس کب ہوتا ہے؟ نشہ پینے کے بعد یا نشہ اترنے کے بعد! شاید آج تک انل نشے میں بدمست تھے، انہیں کچھ ہوش نہیں تھا۔ ونتا سے ان کا کوئی سمبندھ نہیں ہے، وہ ان چکروں میں نہیں پڑتے۔ یہ سب باتیں نشے کی تھیں۔ اور آج جب نشہ اتر چکا ہے تو انہیں لگ رہا ہے کہ بنا ونتا روپی شراب ملے ان کا سر درد سے پھٹ جائے گا۔ لیکن بے بس ہیں۔ اب تیر ہاتھ سے چھوٹ چکا ہے، رو رہے ہیں۔ کل تک ونتا کے سمبندھ میں انہوں نے نہیں سوچا تھا۔ شاید یہ سمجھ بیٹھے تھے کہ وہ اپنی ہے ہی، اس پر کسی دوسرے کا ادھیکار نہیں۔ جیسے لوگ گھر میں پڑی چیز کی اپیکشا کرتے ہیں، یوں ہی کونے کترے میں پھینک دیتے ہیں۔ انل نے ونتا سے کوئی لگاؤ ظاہر نہیں کیا لیکن وہ کونے کترے میں پڑی رہی۔ نہیں تو آج جب وہ دوسرے کی ہو رہی ہے تو انہیں کسک نہ ہوتی، ان کے آنسو نہ امڑتے۔

شاید اندر کا ویکتی انہیں چھنوں کے تاک میں تھا جب کمزوری انل پر چھا جائے۔ سہانوبھوتی دکھاتے ہوئے، تسلی دیتے ہوئے، چمکارتے ہوئے اس نے کہا—"اب

आनन्द का आभास करता हूं, जब इनकी जीत होती है तो मुझमें आगे बढ़ने का उत्साह पैदा होता है........ तुम क्या समझो इन सब बातों को........"

"झूट, बकवास, अपने को धोखा देते हो........ वनिता की बात करो यार, चिन्ता की. आकाश पर पाले क्यों पड़े हैं ?"

"वनिता !" अनिल ने इस तरह कहा जैसे उसे सम्बोधित कर रहे हों. तुरन्त ही उन्होंने कार्ड फिर उठा लिया. कार्ड एक आईना बन गया जिस में केवल वनिता का चेहरा दिखाई पड़ रहा था और सब कुछ लुप्त हो गया था. अनिल ने वनिता को भगाने की कोशिश नहीं की और उस कार्ड पर नज़र जमाए रहे. उन्होंने देखा—

वनिता के घर अनिल जाते हैं. वह पाउडर लगा रही है, अनिल ने पानी का गिलास उस पर उंडेल दिया है. वह रुष्ट है. लेकिन गुस्से में भी मुस्कान ने पीछा नहीं छोड़ा........फिर वनिता की मां आ जाती हैं. वह प्यार से अनिल की बलाएं लेती हैं, एक लम्बा चिट्ठा खोल कर बैठ जाती हैं और बातें करते करते कहती हैं —

"अनिल, अब शादी कर डालो, क्या बुढ़ाई में ब्याह रचाओगे?"

"हां, बावन बरस में, तेजस्वी बच्चे होंगे.' अनिल जवाब देते हैं.

अन्दर के व्यक्ति ने इतमीनान की जैसे सांस ली और सराहना के स्वर में बोला —"हां, अब ठीक है. सोचो, कुछ अपने बारे में सोचो........"

अनिल जैसे फिर व्यतीत से दामन छुड़ा कर भागे और अन्दर वाले व्यक्ति के पीछे दौड़े और जैसे उसे चेतावनी दी—"बच्चू ! अगर फिर दिखाई पड़े तो कच्चा चबा जाऊंगा." अनिल ने कार्ड उठा कर कुरसी पर रख दिया. कुछ देर आंख बन्द किये लेटे रहे. शायद सो जाते लेकिन वनिता कब मानती है ? आ धमकी. बोली—"अनिल क्या तुम मुझसे ब्याह नहीं कर सकते ?"

अनिल ने कहा—"सफेद हाथी बांधने का सामर्थ नहीं है..........मेरा जीवन तुम्हारा जीवन दो अलग राहें हैं जो कभी नहीं मिल सकतीं."

"मैं तुम्हारा जीवन अपनाऊंगी, मुझसे इतने निराश क्यों हो ?"

"निराश नहीं हूं........तुम मुझसे कुछ मांगोगी, मैं तुम्हें क्या दूंगा ? सब तो तो मजदूरों को दे चुका हूं........"

"मैं तुम से कुछ नहीं मांगूंगी."

"यह तो तुम आज ही मांगती हो. देख लो न, तुम कशीदा दिखाने को बुलाती हो, मैं मजदूरों की मरजी

آنند کا ابھاس کرتا ہوں، جب ان کی جیت ہوتی ہے تو مجھ میں آگے بڑھنے کا اتساہ پیدا ہوتا ہے......تم کیا سمجھو ان سب باتوں کو......"

" جھوٹ، بکواس، اپنے کو دھوکا دیتے ہو..... ونتا کی بات کرو یار، ونتا کی، آکاش پر پالے کیوں پڑے ہیں ؟"

" ونتا !" انل نے اس طرح کہا جیسے وہ اسے سمبودھت کر رہے ہوں . ترنت ہی انہوں نے کارڈ پھر اٹھا لیا . کارڈ ایک آئینہ بن گیا جس میں کیول ونتا کا چہرہ ہی دکھائی پڑ رہا تھا اور سب کچھ لپت ہوگیا تھا . انل نے ونتا کو بھگانے کی کوشش نہیں کی اور اس کارڈ پر نظر جمائے رہے . انہوں نے دیکھا—

ونتا کے گھر انل جاتے ہیں . وہ پاوڈر لگا رہی ہے، انل نے پانی کا گلاس اس پر انڈیل دیا ہے . وہ رشٹ ہے . لیکن غصے میں بھی مسکان نے پیچھا نہیں چھوڑا..... پھر ونتا کی ماں آجاتی ہیں . وہ پیار سے انل کی بلائیں لیتی ہیں، ایک لمبا چٹھا کھول کر بیٹھ جاتی ہیں اور باتیں کرتے کرتے کہتی ہیں—

" انل، اب شادی کر ڈالو، کیا بڑھائی میں بیاہ رچاؤ گے ؟"

" ہاں، باون برس میں، تیجسوی بچے ہونگے" انل جواب دیتے ہیں .

اندر کے ویکتی نے اطمینان کی جیسے سانس لی اور سراہنا کے سور میں بولا—" ہاں، اب ٹھیک ہے، سوچو، کچھ اپنے بارے میں سوچو... ..."

انل جیسے پھر ویتیت سے دامن چھڑا کر بھاگے اور اندر والے ویکتی کے پیچھے دوڑے اور جیسے اسے چیتاونی دی—"بچو! اگر پھر دکھائی پڑے تو کچا چبا جاؤں گا." انل نے کارڈ اٹھا کر کرسی پر رکھ دیا . کچھ دیر آنکھ بند کئے لیٹے رہے . شاید سو جاتے لیکن ونتا کب مانتی ہے ؟ آدھمکی بولی—" انل تم کیا مجھ سے بیاہ نہیں کرسکتے ؟"

انل نے کہا—" سفید ہاتھی باندھنے کا سامرتھ نہیں ہے.....میرا جیون تمہارا جیون دو الگ راہیں ہیں جو کبھی نہیں مل سکتیں."

" میں تمہارا جیون اپناؤں گی، مجھ سے اتنے نراش کیوں ہو ؟"

" نراش نہیں ہوں......تم مجھ سے کچھ مانگوگی، میں تمہیں کیا دونگا ؟ سب تو مزدوروں کو دے چکا ہوں..."

"میں تم سے کچھ نہیں مانگونگی"

"وہ تو تم آج ہی مانگتی ہو . دیکھ لو نہ، تم کشیدا دکھانے کو بلاتی ہو، میں مزدوروں کی مرضی

में वनिता जीत गई. क़ानून की किताब अनिल ने सीने पर उलट ली और आसमान ताकने लगे. अपने इर्द गिर्द की दुनिया से दूर किसी आईने में उन्होंने अपना व्यतीत देखा—

वनिता फ़ाइल दबाए झूमती आती है. अनिल उसके आगे जा रहे हैं. वह दूर से पुकारती है—"अनिल, अनिल." अनिल केवल मुस्कुरा देते हैं और ठिठक जाते हैं वह क़रीब आती है. साड़ी का पल्लू ठीक करती है और गरदन को एक झटका देती है ताकि बाल ठीक हो जाएं. फिर कहती है—

"अनिल, सुना तुम बीमार हो गए थे, रात तुम्हारी तबियत ख़राब हो गई थी, मैं तो धक से रह गई...वह... वह......क्या नाम है जी उसका......वह तुम्हारा दोस्त कहता था......" अनिल अर्थ पूर्ण हंसी हंसते हैं और सीधे सुभाव अपनी कलाई उसको थमा देते हैं और कहते हैं—

"देख लो, ठीक हूं."

अनिल चेत से गए. चारपाई से उठे. बम्बे के नीचे मुंह धोया और आकर क़ानून की किताब पढ़ने लगे. वनिता ने फिर प्रवेश किया लेकिन इस बार अनिल सतर्क थे और जैसे उन्होंने गरज कर हुक्म दिया कि अनिता वनिता कोई इस समय नहीं आ सकता, इस वक़्त मैं मुराद से ज़रूरी बातें कर रहा हूं. वनिता नहीं आई और श्री मुराद आजमान रहे. पढ़ते पढ़ते अनिल के मानस पटल पर मुराद का चित्र खिंचा. चुग्गी दाढ़ी का साईन बोर्ड लगाए, एक शेरवानी ओढ़े वह आ धमके. कुछ देर अपने मुक़दमे की बातें करते रहे. अनिल मन ही मन उनको जवाब देते रहे. दोनों ने प्रन किया कि मालिक को हरा कर रहेंगे. मज़दूर की जीत होगी, इसमें तो उन्हें कभी शंका ही नहीं है. मुराद कमरे से निकलते हैं. अनिल टाइप करने लगते हैं. मुराद बाहर निकल कर मज़दूरों से कहते हैं—

"क्या दिमाग़ पाया है अनिल बाबू ने.........सच, आज तक ऐसा क़ाबिल आदमी तो मैंने देखा ही नहीं.......बड़े बड़े देखे हैं.........लेकिन इन जैसा नहीं मिला.........बिना लिखे पढ़े फ़र फ़र टाइप मशीन पर टाइप कर लेते हैं! दिमाग़ है कि मशीन.........!" अनिल हंसी नहीं रोक सके और बोले—

"कितने भोले हैं यह लोग!"

"क्या मिलता है तुम्हें बेगारी कर के" अन्दर के व्यक्ति ने फिर व्यंग किया. उल्लास भरे स्वर में अनिल ने कहा—"जीवन मिलता है, निराशा दूर हो जाती है, मैं इनके बीच जा कर आनन्द विभोर हो जाता हूं, जब इन के जलूस लेकर सड़कों पर चलता हूं तो मैं आत्मिक

میں ونتا جیت گئی. قانون کی کتاب انل نے سینے پر الٹ لی اور آسمان تاکنے لگے. اپنے اردگرد کی دنیا سے دور کسی آئینے میں انہوں نے اپنا ویتیت دیکھا—

ونتا فائل دبائے جھومتی آتی ہے. انل اس کے آگے جا رہے ہیں. وہ دور سے پکارتی ہے—" انل انل." انل کیول مسکرا دیتے ہیں اور ٹھٹک جاتے ہیں. وہ قریب آتی ہے. ساڑی کا پلو ٹھیک کرتی ہے اور گردن کو ایک جھٹکا دیتی ہے تا کہ بال ٹھیک ہو جائیں. پھر کہتی ہے—

" انل، سنا تم بیمار ہو گئے تھے، رات تمہاری طبیعت خراب ہوگئی تھی، میں تو دھک سے رہ گئی......وہ......وہ......کیا نام ہے جی اس کا......وہ تمہارا دوست کہتا تھا......" انل ارتھ پورن ہنسی ہنستے ہیں اور سیدھے سبھاؤ اپنی کلائی اس کو تھما دیتے ہیں اور کہتے ہیں—

" دیکھ لو، ٹھیک ہوں."

انل چیت سے گئے. چارپائی سے اٹھے. بمبے کے نیچے منہ دھویا اور آ کر قانون کی کتاب پڑھنے لگے. ونتا نے پھر پرویش کیا لیکن اس بار انل ستترک تھے اور جیسے انہوں نے گرج کر حکم دیا کہ انتا ونتا کوئی اس سمے نہیں آ سکتا، اس وقت میں مراد سے ضروری باتیں کر رہا ہوں. ونتا نہیں آئی اور شری مراد براجمان رہے. پڑھتے پڑھتے انل کے مانس پٹل پر مراد کا چتر کھنچا. چگی داڑھی کا سائن بورڈ لگائے، ایک شیروانی اوڑھے وہ آدھمکے. کچھ دیر اپنے مقدمے کی باتیں کرتے رہے. انل من ہی من ان کو جواب دیتے رہے. دونوں نے پرن کیا کہ مالک کو ہرا کر رہیں گے، مزدور کی جیت ہوگی، اس میں تو انہیں کبھی شنکا ہی نہیں ہے. مراد کمرے سے نکلتے ہیں. انل ٹائپ کرنے لگتے ہیں. مراد باہر نکل کر دوسرے مزدوروں سے کہتے ہیں—

" کیا دماغ پایا ہے انل بابو نے......سچ، آج تک ایسا قابل آدمی تو میں نے دیکھا ہی نہیں......بڑے بڑے دیکھے ہیں......لیکن ان جیسا نہیں ملا......بنا لکھے پڑھے پھر پھر ٹائپ مشین پر ٹائپ کر لیتے ہیں! دماغ ہے کہ مشین......!" انل ہنسی نہیں روک سکے اور بولے—

" کتنے بھولے ہیں یہ لوگ!"

" کیا ملتا ہے تمہیں بیگاری کر کے" اندر کے ویکتی نے پھر ویَنگ کیا. اُلہاس بھرے سور میں انل نے کہا—" جیون ملتا ہے، نراشا دور ہو جاتی ہے، میں ان کے بیچ جا کر آنند وبھور ہو جاتا ہوں، جب ان کے جلوس لے کر سڑکوں پر چلتا ہوں تو میں آتمک

अनिल ने सारे कार्डों को सीने से उठा कर कुर्सी पर फेंक दिया. लेकिन वह कार्ड ज्यों का त्यों हाथ में लिए रहे. आंखें उनकी कार्ड पर नहीं थीं लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे इसी के सम्बन्ध में वह सोच रहे हैं. अकस्मात धीरे स्वर में उन्होंने कहा—"वनिता !" फिर कार्ड को भी कुर्सी पर रख दिया.

"वनिता भी गई" अन्दर के व्यक्ति ने कहा.

"गई तो क्या हुआ, उसका ब्याह हो रहा है, अच्छा है."

"तुम्हें दुख नहीं ?"

"मुझे दुख क्यों ? मुझे खुशी है"

"झूट मत बोलो, दाई से पेट मत छिपाओ, समझे. तुम कहते हो कि तुम्हें दुख नहीं है......"

"मुझे दुख क्यों हो ? वह मेरी कौन थी ? मेरा उसका कोई सम्बन्ध नहीं था."

"वह तुम्हारी थी, बुद्धू राम वह तुम्हारी थी."

जैसे इस कथन का सुबूत चाहते हों, जैसे वह चाहते हों कि कोई कहता रहे कि "वह तुम्हारी है, सदा से तुम्हारी है" उनके मन पुलकन हुई. बस इतना कहा जा सकता है कि उन्हें आनन्द आया. लेकिन फिर वह गुम सुम हो गए. कुछ देर आसमान पर टकटकी बांधे देखते रहे, फिर उस कार्ड को उठा लिया. दो चार बार पढ़ा और पुलकित स्वर में बोले—"वनिता !"

अन्दर के व्यक्ति ने एक ज़ोर का ठहाका लगाया, हंसता ही चला गया.

जैसे सेंध पर चोर पकड़ जाए, अनिल लाल हो गए, कार्ड उठा कर ज़ोर से कुरसी पर उन्होंने फेंक दिया. क़ानून की किताब उठाली. नज़ीरें ढूंढने लगे. कल मुराद का मुक़दमा है, बेचारे की अट्ठाईस साल की नौकरी थी. मालिक ने ज़बानी नोटिस दे कर निकाल दिया है. वजह मालिक ही जानता है और शायद अब उसका वकील भी जानकारी रखता हो !

अनिल पढ़ते जाते थे लेकिन केवल आंखों से. मन कहीं और था. एक दो लाइन पढ़ते पढ़ते किताब ग़ायब हो जाती और वनिता सामने खड़ी हो जाती. वह झुंझला कर किताब के पन्ने को हाथ से साफ़ कर देते. जैसे किताब कोई आईना हो और उस पर वनिता की प्रतिबिम्ब आ रही हो. लेकिन फिर वही वनिता. वनिता हटती है तो मुराद सामने आता है, नज़ीरें, मुक़दमे, संघर्ष सब सामने आते हैं और आंख झपकते यह सब ग़ायब हो जाते हैं और वनिता सामने मुस्कुराने लगती है. वनिता और मुराद में यह संघर्ष चलता रहा. अन्त

انل نے سارے خطوں کو سینے سے اٹھا کر کرسی پر پھینک دیا ۔ لیکن وہ کارڈ جیوں کا تیوں ہاتھ میں لئے رہے ۔ آنکھیں اُن کی کارڈ پر نہیں تھیں لیکن ایسا لگ رہا تھا جیسے اسی کے سمبندھ میں وہ سوچ رہے ہیں ۔ اکسمات دھیرے سور میں اُنہوں نے کہا—" ونتا ! " پھر کارڈ کو بھی کرسی پر رکھ دیا ۔

" ونتا بھی گئی " اندر کے ویکتی نے کہا ۔

" گئی تو کیا ہوا' اس کا بیاہ ہو رہا ہے' اچھا ہے "

" تمہیں دکھ نہیں ؟"

" مجھے دکھ کیوں ؟ مجھے خوشی ہے ."

" جھوٹ مت بولو' دائی سے پیٹ مت چھپاؤ' سمجھے. تم کہتے ہو کہ تمہیں دکھ نہیں......"

" مجھے دکھ کیوں ہو؟ وہ میری کون تھی؟ میرا اس کا کوئی سمبندھ نہیں تھا ."

" وہ تمہاری تھی' بدھو رام وہ تمہاری تھی ."

جیسے اس کتھن کا ثبوت وہ چاہتے ہوں' جیسے وہ چاہتے ہوں کہ کوئی کہتا رہے کہ " وہ تمہاری ہے' سدا سے تمہاری ہے " اُن کے من میں پلکن ہوئی' بس اتنا کہا جا سکتا ہے کہ انہیں انند آیا. لیکن پھر وہ گم سم ہوگئے. کچھ دیر آسمان پر ٹکٹکی باندھے دیکھتے رہے' پھر اس کارڈ کو اٹھا لیا ۔ دو چار بار پڑھا اور پلکت سور میں بولے—"ونتا !"

اندر کے ویکتی نے ایک زور کا ٹھہاکا لگایا' ہنستا ہی چلا گیا ۔

جیسے سیندھ پر چور پکڑا جائے ۔ انل لال ہوگئے' کارڈ اٹھا کر زور سے کرسی پر انہوں نے پھینک دیا ۔ قانون کی کتاب اٹھا لی. نظیریں ڈھونڈنے لگے. کل مراد کا مقدمہ ہے' بیچارے کی اٹھائیس سال کی نوکری تھی ۔ مالک نے زبانی نوٹس دے کر نکال دیا ہے ۔ وجہ مالک ہی جانتا ہے اور شاید اب اس کا وکیل بھی جانکاری رکھتا ہو !

انل پڑھتے جاتے تھے لیکن کیول آنکھوں سے ۔ من کہیں اور تھا ۔ ایک دو لائن پڑھتے پڑھتے کتاب غائب ہوجاتی اور ونتا سامنے کھڑی ہو جاتی ۔ وہ جھنجھلا کر کتاب کے پنے کو ہاتھ سے صاف کر دیتے ۔ جیسے کتاب کوئی آئینہ ہو اور اس پر ونتا کی پرتی بمب آ رہی ہو ۔ لیکن پھر وہی ونتا ۔ ونتا ہٹتی ہے تو مراد سامنے آتا ہے' نظیریں' مقدمے' سنگھرش سب سامنے آتے ہیں اور آنکھ جھپکتے یہ سب غائب ہوجاتے ہیں اور ونتا سامنے مسکرانے لگتی ہے. ونتا اور مراد میں یہ سنگھرش چلتا رہا. انت

पड़े. उसी समय वह "कोई" ज़ोर से हंसा. वह कहता जाता था और हंसता जाता था—

"कुछ हो......मैं व्यक्ति हूं. बहुत सख्त जान हूं. मुझे समाज की क़ब्रस्तान में दफ़न कर देना चाहते हो ......? मैं आसानी से मिटने वाला नहीं हूं......मैं आख़री दम तक तुमसे लड़ूंगा......समझे......मैं पूछता हूं कि तुम क्या हो ? इस समय भूके हो, किसी ने तुम्हें पूछा ? इस समय अकेले हो, किसा ने तुम्हारा साथ दिया......? मेरी राय मानो, मुझे फलने फूलने दो...... तुम्हारे पास सब कुछ होगा. माना कि मुझे मिटाना तुम्हारा आदर्श है, लेकिन हर आदर्श के पूरा होने का समय होता है, तुम क्यों कटीले तारों से खेल रहे हो......? तुम्हें विश्वास है कि माली ढांचा ठीक हो जाने पर मैं ख़ुद मर जाऊंगा. फिर मुझे क्यों इस तरह मार रहे हो.........? मैं ख़ुद ही मर जाऊंगा......"

अनिल ने एक मोटी क़ानूनी किताब उठाई, टेबुल-लैम्प लिया और सोने के लिए आंगन की तरफ़ चल पड़े. जैसे ही मुड़े, दीवार पर कपड़े का पोस्ट बाक्स दिखाई पड़ा. एक नीले कपड़े का टुकड़ा और उसमें बहुत सी थैलियां. हर थैली पर किसी न किसी कार्यकर्ता का नाम लिखा है. अनिल ने अपने नाम वाली थैली में से सारी डाक निकाल ली. सारा सामान चारपाई पर रक्खा और दूसरे कमरे से कुर्सी उठा लाए. टेबुल-लैम्प जला कर कुर्सी पर रक्खा और तकिये का सहारा लेकर चारपाई पर चारों ख़ाने चित लेट गए.

"मेरे प्रश्नों का तुम ने उत्तर नहीं दिया" अन्दर का व्यक्ति फिर बोला.

अनिल ने उसकी बात सुनी अनसुनी कर दी. एक जमाही ली. जांघ पर हाथ मारा, एक तेज़ ध्वनि सुनसान कोठे के घेरे को चीरती शायद दूसरे सोने वालों के कानों तक भी पहुंची. ऊपर वाले कोठे से दूसरे साथी ने कहा— "क्या नींद नहीं आ रही ?"

"नहीं, कल मुक़दमे हैं, नज़ीरें देख रहा हूं........." अनिल ने किताब उठा ली थी और उसी पर नज़र गड़ाए यह सब कह गए.

पढ़ते पढ़ते उन्होंने घड़ी देखी, एक बज गए थे. बदन थकान से चूर था लेकिन नींद ग़ायब थी. क़ानून के रूखे विषय से तबीयत ऊब गई. अपने ख़तों को उन्होंने खोलना शुरू किया. एक पार्टी सकुलर था, एक मिल की चिट्ठी थी, दो तीन मज़दूरों की अर्ज़ियां थीं और आख़री एक छपा कार्ड था. पता चला कि वनिता का ब्याह हो रहा है. उसी कार्ड पर लिखा था—'आना ज़रूर, आकर मुझ से मिलना भी, चोरों की तरह आकर भाग मत जाना, समझे!—वनिता."

پڑے ۔ اُسی سمے وہ " کوئی " زور سے ہنسا ۔ وہ کہتا جاتا تھا اور ہنستا جاتا تھا—

" کچھ ہو......میں ویکتی ہوں' بہت سخت جان ہوں ۔ مجھے سماج کی قبرستان میں دفن کردینا چاہتے ہو......؟ میں آسانی سے مٹنے والا نہیں ہوں......میں آخری دم تک تم سے لڑوں گا......سمجھے......میں پوچھتا ہوں کہ تم کیا ہو ؟ اِس سمے بھوکے ہو' کسی نے تمہیں پوچھا ؟ اس سمے اکیلے ہو' کسی نے تمہارا ساتھ دیا......؟ میری رائے مانو' مجھے پھلنے پھولنے دو......تمہارے پاس سب کچھ ہوگا. مانا کہ مجھے مٹانا تمہارا آدرش ہے' لیکن ہر آدرش کے پورا ہونے کا سمے ہوتا ہے ۔ تم کیوں کٹیلے تاروں سے کھیل رہے ہو......؟ تمہیں وشواس ہے کہ مالی ڈھانچہ ٹھیک ہو جانے پر میں خود مر جاؤں گا ۔ پھر مجھے اِسطرح کیوں مار رہے ہو......؟ میں خود ہی مر جاؤں گا......"

انل نے ایک موٹی قانونی کتاب اُٹھائی' ٹیبل لیمپ لیا اور سونے کے لیئے آنگن کی طرف چل پڑے ۔ جیسے ہی مڑے' دیوار پر کپڑے کا پوسٹ بکس دکھائی پڑا ۔ ایک نیلے کپڑے کا ٹکڑا اور اس میں بہت سی تھیلیاں ۔ ہر تھیلی پر کسی نہ کسی کاریہ کرتا کا نام لکھا ہے ۔ انل نے اپنے نام والی تھیلی میں سے ساری ڈاک نکال لی ۔ سارا سامان چارپائی پر رکھا اور دوسرے کمرے سے کرسی اُٹھالائے ۔ ٹیبل لیمپ جلا کر کرسی پر رکھا اور تکیہ کا سہارا لے کر چارپائی پر چاروں خانے چت لیٹ گئے ۔

"میرے پرشنوں کا تم نے اُتر نہیں دیا" اندر کا ویکتی پھر بولا ۔

انل نے اُسکی بات سنی ان سنی کر دی ۔ ایک جما ہی لی ۔ جانگ پر ہاتھ مارا' ایک تیز دھونی سنسان کوٹھے کے گھیرے کو چیرتی شاید دوسرے سونے والوں کے کانوں تک بھی پہونچی ۔ اوپر والے کوٹھے سے دوسرے ساتھی نے کہا— " کیا نیند نہیں آ رہی ؟"

" نہیں' کل مقدمے ہیں' نظیریں دیکھ رہا ہوں......" انل نے کتاب اُٹھالی تھی اور اُس پر نظر گڑائے یہ سب کہ گئے ۔

پڑھتے پڑھتے انہوں نے گھڑی دیکھی' ایک بج گئے تھے ۔ بدن تھکان سے چور تھا لیکن نیند غائب تھی ۔ قانون کے روکھے وشے سے طبیعت اوب گئی ۔ اپنے خطوں کو انہوں نے کھولنا شروع کیا ۔ ایک پارٹی سرکلر تھا' ایک مل کی چٹھی تھی' دو تین مزدوروں کی عرضیاں تھیں اور آخری ایک چھپا کارڈ تھا ۔ پتہ چلا کہ ونتا کا بیاہ ہو رہا ہے ۔ اسی کارڈ پر لکھا تھا—"آنا ضرور' آکر مجھ سے ملنا بھی' چوروں کی طرح آکر بھاگ مت جانا' سمجھے!—ونتا ."

कल्लन चौराहे पर जा कर बायें हाथ सड़क पर मुड़ा और अनिल की आंखों से ओझल हो गया. अनिल ने ज़ीने के दरवाज़े के ऊपरी कोने को दोनों हाथ के पंजों से ज़ोर से पकड़ा और ऐसी कोशिश की कि जैसे उसके सहारे लटक रहे हों. एक ज़ोर की अंगड़ाई ली. अंगड़ाई के साथ साथ मुंह खुला और खुलता ही चला गया, एक हाथ उन्होंने फैलते होंटों पर रख लिया. फिर "हो" का एक स्वर धीरे से गूंजा और ऐसी आवाज़ हुई जैसे ट्यूब से यकबारगी लेकिन धीरे से सीं कर के हवा निकल गई हो अनिल ज़ीने चढ़ने लगे...अब उनकी हालत बदल गई थी. वही थकान, वही ख़ुमार, वही बोझल आंखें, सब कुछ वही था जैसे पहले. कल्लन से मुलाक़ात के बाद जो स्थिति थी वह जैसे एक लिबास थी. एक लिबास बदल कर उन्होंने दूसरा बदल लिया था, केवल कल्लन से मुलाक़ात करने के लिए. अब फिर वही पहला लिबास धारन कर लिया है.

अनिल इस बार धीरे धीरे नहीं बल्कि तेज़ी से सीढ़ियां चढ़ने लगे. आख़री ज़ीने पर पहुंच कर उन्होंने घड़ी देखी. आश्चर्य के स्वर में बोले—"उफ़ ओह, बारह बज रहे हैं !" समय की गति के आभास ने उनमें भी तेज़ी पैदा कर दी. यह विचार उन्हें सता नहीं रहा था कि उन्हें सोना है बल्कि इस विचार से वह चिन्ता ग्रस्त हुए कि कल सुबह उठना है, बहुत से मज़दूरों को उन्होंने बुलाया है, उनके मुक़दमे के काग़ज़ टाइप करने हैं.

ज़ीने से वह दूसरे कमरे में घुसे. यहां पहुंच कर जैसे उन्हें कुछ सुनाई पड़ा. बाहरी कोई नहीं था. कोई था जो अन्दर से कुछ कह रहा था. इस "कोई" को वह अपनी जानकारी में मुरदा बना चुके थे. लेकिन कहीं सांस बाक़ी थी, अभी इस में ज़िन्दा हो जाने की ताक़त थी. वह आज न जाने क्यों जीवन पाने की कोशिश कर रहा था. उन्होंने सुना—

"क्या हर वक़्त मुक़दमे, अदालत, रिक्शे वाले, क़ुली, प्रेस, मज़दूर, यह कमेटी, वह कमेटी.....कुछ तुम्हारा भी है, कोई तुम्हारा भी है......तुम्हारी कोई ज़िन्दगी है ? न वक़्त तुम्हारा न बदन तुम्हारा......सब के लिए सोचा करते हो. कभी अपने लिए भी कभी कुछ सोचा है......? तुम को खाने की दिक़्क़त, पहनने की दिक़्क़त, सोने की दिक़्क़त, आराम नहीं, चैन नहीं......!"

अनिल ने होंट चबाए, जैसे उसका सिर कुचल रहे हों. वह अपने कमरे में घुसे. स्विच दबा दी. कुर्सी पर बैठ गए. मेज़ पर फ़ाइलों का अम्बार था. दो एक को उठा कर उन पर सरसरी नज़र दौड़ाई. फिर उन्हें वहीं रख दिया. एक कोने से तकिया उठाया और बाहर सोने के लिए चल

کلی چوراہے پر جا کر بائیں ہاتھ سڑک پر مڑا اور انل کی آنکھوں سے اوجھل ہوگیا ۔ انل نے زینے کے دروازے کے اوپری کونے کو دونوں ہاتھ کے پنجوں سے زور سے پکڑا اور ایسی کوشش کی کہ جیسے اسکے سہارے لٹک رہے ہوں ۔ ایک زور کی انگڑائی لی ۔ انگڑائی کے ساتھ ساتھ منہ کھلا اور کھلتا ہی چلا گیا، ایک ہاتھ انہوں نے پھیلتے ہونٹوں پر رکھ لیا ۔ پھر "ہو" کا ایک سور دھیرے سے گونجا اور ایسی آواز ہوئی جیسے ٹیوب سے یک بارگی لیکن دھیرے سے سی کر کے ہوا نکل گئی ہو ۔ انل زینے چڑھنے لگے . . اب ان کی حالت بدل گئی تھی ۔ وہی تھکن، وہی خمار، وہی بوجھل آنکھیں، سب کچھ وہی تھا جیسے پہلے ۔ کلی سے ملاقات کے بعد جو استھتی تھی وہ جیسے ایک لباس تھی ۔ ایک لباس بدل کر انہوں نے دوسرا بدل لیا تھا، کیول کلی سے ملاقات کرنے کے لیئے ۔ اب پھر وہی پہلا لباس دھارن کر لیا ہے۔

انل اس بار دھیرے دھیرے نہیں بلکہ تیزی سے سیڑھیاں چڑھنے لگے ۔ آخری زینے پر پہونچ کر انہوں نے گھڑی دیکھی ۔ آشچریہ کے سور میں بولے—" اف اوہ، بارہ بج رہے ہیں !" سمے کے گتی کی آبھاس نے ان میں بھی تیزی پیدا کر دی ۔ یہ وچار انہیں ستا نہیں رہا تھا کہ انہیں سونا ہے بلکہ اس وچار سے وہ چنتا گرست ہوئے کہ کل صبح اٹھنا ہے، بہت سے مزدوروں کو انہوں نے بلایا ہے، ان کے مقدمے کے کاغذ ٹائپ کرنے ہیں ۔

زینے سے وہ دوسرے کمرے میں گھسے ۔ یہاں پہونچ کر جیسے انہیں کچھ سنائی پڑا ۔ باہری کوئی نہیں تھا ۔ کوئی تھا جو اندر سے کچھ کہہ رہا تھا ۔ اس "کوئی" کو وہ اپنی جانکاری میں مردہ بنا چکے تھے ۔ لیکن کہیں سانس باقی تھی، ابھی اس میں زندہ ہو جانے کی طاقت تھی ۔ وہ آج نہ جانے کیوں جیون پانے کی کوشش کر رہا تھا ۔ انہوں نے سنا—

"کیا ہر وقت مقدمے، عدالت، رکشے والے، قلی، پریس، مزدور، یہ کمیٹی، وہ کمیٹی......کچھ تمہارا بھی ہے، کوئی تمہارا بھی ہے......تمہاری کوئی زندگی ہے ؟ نہ وقت تمہارا نہ بدن تمہارا......سب کے لیئے سوچا کرتے ہو ۔ کبھی اپنے لیئے بھی کچھ سوچا ہے...... ؟ تمکو کھانے کی دقت، پہننے کی دقت، سونے کی دقت، آرام نہیں، چین نہیں......!"

انل نے ہونٹ چبائے، جیسے اس کا سر کچل رہے ہوں ۔ وہ اپنے کمرے میں گھسے ۔ سوچ دبا دی ۔ کرسی پر بیٹھ گئے ۔ میز پر فائلوں کا امبار تھا ۔ دو ایک کو اٹھا کر اس پر سرسری نظر دوڑائی ۔ پھر انہیں وہیں رکھ دیا ۔ ایک کونے سے تکیہ اٹھایا اور باہر سونے کے لیئے چل

"गलती, तू ने आपको खाना भी नहीं मिला………!" कल्लन कहता हुआ जीने से उतरने लगा. उसके स्वर में सहानुभूति थी और साथ में कृतज्ञता भी.

अनिल फिर सोचने लगे. सोचते सोचते नींद का एक झोंका आया. चारपाई पर लेट रहे. फिर पता नहीं क्या हुआ. बस इतना पता है कि किसी ने जगाया और हाथ में शरबत का गिलास थमा दिया और वह गट गट पी गए और गिलास वापिस करते समय उन्होंने इस स्वर में कहा जैसे कल्लन को वह पहली बार देख रहे हैं—"कल्लन !"

भैया जी, मेरा चालान हो गया है, क्या करूं ? पुलिस वाला कहता था कि लाइसेन्स न होना बड़ा जुर्म है, बड़ी सजा मिलती है……'

अनिल ने पहली बार उसे नज़र भर कर देखा और फिर चारपाई से उठकर उसके कंधे पर हाथ फेरा और बोले-"घबराते क्यों हो, हम तो ज़िन्दा हैं, तुम लोग बहुत ज्यादती करते हो, लाइसेन्स क्यों नहीं बनवाते……?"

'हमें जरको मालूम नहीं रहा ….."

"तुम को मालूम नहीं था, यह बात अफ़सर लोग थोड़े मानेंगे, उन्हें तो जुरमाना करने से मतलब वह तो जुरमाना छाप, दस्तखत घसीट मशीन हैं. बलिहारी है तेरी राम राज्य. जाओ, घबराने की कोई बात नहीं है. सवेरे म्युनिसिपल बोर्ड जाकर लाइसेन्स बनवालेना. अपने यूनियन के सेक्रेट्री से मिल लो, उनको हम चिट्ठी लिखे देते हैं, वह लाइसेन्स बनवा देंगे. रिक्शा तो जमा नहीं करवा लिया……?"

"वही तो और दिक़्क़त है……"

"हां" अनिल ने इस तरह इस वाक्य का उच्चारन किया जैसे मामला बहुत गम्भीर है.

"फिर भी घबराने की कोई बात नहीं है. कल ठीक हो जाएगा. रात को जा कर सो रहो, सुबह आ जाना, लेकिन लाइसेन्स कल बन जाए, कोई ढाल ढाल नहीं होनी चाहिए."

कल्लन की घबराहट कम हो गई. वह चलने लगा. अनिल उसे जीने तक छोड़ने आए. उसकी पीठ पर हाथ सहलाया और हंसकर बोले—'बच्चू, पुलीस वालों ने मरम्मत तो नहीं की……. ?"

"नहीं………"और वह मुसकरा दिया.

जीने से उतर कर कल्लन ने अनिल को मुड़कर देखा. इन आंखों में बहुत कुछ था. भक्ति थी, अनिल की सराहना थी, पीछे न हटने का प्रन था और यह आंखें अनिल से वादा पक्का करा रही थीं कि कल कोई अड़चन तो नहीं आएगी, मेरा काम हो तो जाएगा, आप सुबह ही मिल जाएंगे न. अनिल ने कहा—"जाओ जाओ, सुबह आजाना, निश्चिन्त रहो, गहरी नींद सोना……"

" غلطی، تو میں آپ کو کھانا بھی نہیں ملا ……!" کلن کہتا ہوا زینے سے اترنے لگا. اس کے سور میں سہانبھوتی تھی اور ساتھ میں کرتگیتا بھی .

انل پھر سوچنے لگے . سوچتے سوچتے نیند کا ایک جھونکا آیا. چار پائی پر لیٹ رہے . پھر پتہ نہیں کیا ہوا . بس اتنا پتہ ہے کہ کسی نے جگایا اور ہاتھ میں شربت کا گلاس تھما دیا اور وہ غٹ غٹ پی گئے اور گلاس واپس کرتے سمے انہوں نے اس سور میں کہا جیسے کلن کو پہلی بار دیکھ رہے ہیں—" کلن !"

" بھیا جی، میرا چالان ہوگیا ہے، کیا کروں؟ پولس والا کہتا تھا کہ لائسنس نہ ہونا بڑا جرم ہے، بڑی سزا ملتی ہے……"

انل نے پہلی بار اُسے نظر بھر کر دیکھا اور پھر چارپائی سے اُٹھکر اُسکے کندھے پر ہاتھ پھیرا اور بولے—" گھبراتے کیوں ہو، ہم تو زندہ ہیں، تم لوگ بہت زیادتی کرتے ہو، لائسنس کیوں نہیں بنواتے……؟"

" ہمیں جرکو معلوم نہیں رہا……"

" تم کو معلوم نہیں تھا، یہ بات افسر لوگ تھوڑے مانیں گے، انہیں تو جرمانہ کرنے سے مطلب . وہ تو جرمانہ چھاپ، دستخط گھسیٹ مشین ہیں . بلہاری ہے تیری رام راجیہ. جاؤ، گھبرانے کی کوئی بات نہیں ہے . سویرے میونسپل بورڈ جا کر لائسنس بنوا لینا . اپنے یونین کے سکریٹری سے مل لو، اُن کو ہم چٹھی لکھے دیتے ہیں، وہ لائسنس بنوا دیں گے. رکشا تو جمع نہیں کروایا لیا……؟"

" وہی تو اور دقت ہے……"

" ہاں " انل نے اسطرح اِس واکیہ کا اُچارن کیا جیسے معاملہ بہت گمبھیر ہے .

" پھر بھی گھبرانے کی کوئی بات نہیں ہے. کل ٹھیک ہو جائے گا . رات کو جا کر سو رہو، صبح آجانا، لیکن لائسنس کل بن جائے، کوئی ڈھیل ڈھال نہیں ہونی چاہیئے ."

کلن کی گھبراہٹ کم ہو گئی . وہ چلنے لگا . انل اسے زینے تک چھوڑنے آئے . اسکی پیٹھ پر سہلایا اور ہنس کر بولے—"بچو، پولیس والوں نے مرمت تو نہیں کی……؟"

" نہیں……" اور وہ مسکرا دیا .

زینے سے اتر کر کلن نے انل کو مڑ کر دیکھا . ان آنکھوں میں بہت کچھ تھا . بھگتی تھی، انل کی سراہنا تھی، پیچھے نہ ہٹنے کا پرن تھا اور یہ آنکھیں انل سے وعدہ پکا کرا رہی تھیں کہ کل کوئی اڑچن تو نہیں آئے گی، میرا کام تو ہو جائے گا، آپ صبح ہی مل جائیں گے نہ." انل نے کہا—"جاؤ جاؤ، صبح آجانا، نشچنت رہو، گہری نیند سونا……"

सिनेमा में लोग पैसे बरबाद करते हैं. हम मुफ्त में वह सनीमा दिखा सकते हैं जिसमें इतना आनन्द मिलता है कि दो चार हफ्ते मनोरंजन की ज़रूरत नहीं पड़ती......" कोई कुछ कहे, अनिल का मनोरंजन होता है. उनको ऐसी गोष्ठी में आनन्द मिलता है.

ऐसी ही एक गोष्ठी में कल्लन के नाम फाल निकल पड़ी. उस ने बहुत इधर उधर की हांकी लेकिन एक न चली. वह समझता था कि लोग उसकी हंसी उड़ाएंगे. लेकिन वहां हंसी नहीं उड़ाई गई. अनिल सुनते रहे और उसकी पीठ ठोंकते रहे. हर ठोंक पर कल्लन की श्रद्धा बढ़ रही थी, अनिल को वह अपना भाग्य सौंप देने को तैयार हो रहा था. गोष्ठी लम्बी खिंच गई, बारह बज गए. अनिल चलने लगे. कल्लन ने कहा "बाबू जी फिर कब?" दूसरे रिक्शे वाले ने कान ऐंठ कर कल्लन को प्यार से एक चपत मारी—"बाबू जी नहीं बेटा, भैया जी, साथी!" अनिल ने कहा "जब मन चाहे".

कई रोज़ से अनिल प्रेस मज़दूरों के झगड़ों में फंसे थे. रिक्शे वालों की तरफ़ नहीं गए थे. उन्होंने पूछा—"कहो कल्लन, सब कुशल मंगल.' अब वह बिल्कुल बदल से गए थे. जैसे ताज़ा दम होकर सिपाही मौज में आता है, अनिल को भी मौज आने लगी, कल्लन से बोले—"ज़रा एक गिलास पानी देना."

पानी पिया नहीं, पूरा मग मुंह पर छिड़क लिया. फिर रिक्शे वालों की एक लम्बी लिस्ट गिनाई. सब का हाल चाल पूछा, कुछ चलने वाले मुक़दमों के सम्बन्ध में पूछ ताछ की. कल्लन ने सब का जवाब या 'हां' कह कर दिया और या कह दिया कि मुझे पता नहीं भैया जी. अनिल फिर कुछ देर रुके, केवल मिन्टों के लिये. रात के सन्नाटे को तोड़ते हुए उन्होंने फिर कहा—

"इतनी रात गए कहां भटक रहे हो, कोई ख़ास बात......?"

"हां भैया जी, हमारा चालान हो गया है......मुझे कुछ पता नहीं था. पुलिस वाला आया......"

'अच्छा" अनिल ने इस स्वर में कहा जैसे यह जताया हो कि मैं सब समझ गया. फिर दोनों मुट्ठी बांध कर उन पर सिर रख दिया. कुछ सोचते रहे. उनके पैर ताल दे रहे थे. विचारों का कारवां चल पड़ा था. बैंड बज रहा था. सोचते सोचते उन्होंने जेब में हाथ डाला. इकन्नी और पैसा निकाला. पैसा जेब में वापिस डाल दिया. इकन्नी कल्लन को दी और कहा—"ज़रा दो पैसे की चीनी और दो पैसे की चाय लाना. प्रेस वालों का मुक़दमा था. दिन भर खड़े खड़े तबीयत परेशान हो गई. न जाने किस का मुंह देखा था कि खाने को भी नहीं मिला......लू बहुत चलने लगी है, गर्मी का मज़ा जैसे फट गया है......"

سنیما میں لوگ پیسے برباد کرتے ہیں۔ ہم مفت میں وہ سنیما دکھا سکتے ہیں جس میں اتنا آنند ملتا ہے کہ دو چار ہفتے منورنجن کی ضرورت نہیں پڑتی..." کوئی کچھ کہے، انل کا منورنجن ہوتا ہے، ان کو ایسی گوشٹی میں آنند ملتا ہے۔

ایسی ہی ایک گوشٹی میں کلن کے نام فال نکل پڑی۔ اس نے بہت اِدھر ادھر کی ہانکی لیکن ایک نہ چلی۔ وہ سمجھتا تھا کہ لوگ اسکی ہنسی اڑائیں گے۔ لیکن یہاں ہنسی نہیں اڑائی گئی۔ انل سنتے رہے اور اسکی پیٹھ ٹھونکتے رہے۔ ہر ٹھونک پر کلن کی شردھا بڑھ رہی تھی، انل کو وہ اپنا بھاگیہ سونپ دینے کو تیار ہو رہا تھا۔ گوشٹی لمبی کھنچ گئی، بارہ بج گئے۔ انل چلنے لگے۔ کلن نے کہا "باہو جی پھر کب؟" دوسرے رکشے والے نے کان اینٹھ کر کلن کو پیار سے ایک چپت ماری — "باہو جی نہیں بیٹا، بھیا جی، ساتھی!" انل نے کہا "جب من چاہے۔"

کئی روز سے انل پریس مزدوروں کے جھگڑوں میں پھنسے تھے۔ رکشے والوں کی طرف نہیں گئے تھے۔ انہوں نے پوچھا — "کہو کلن، سب کشل منگل۔" اب وہ بالکل بدل سے گئے تھے۔ جیسے تازہ دم ہوکر سپاہی موج میں آتا ہے، انل کو بھی موج آنے لگی۔ کلن سے بولے — "ذرا ایک گلاس پانی دینا۔"

پانی پیا نہیں، پورا مگ منہ پر چھڑک لیا۔ پھر رکشے والوں کی ایک لمبی لسٹ گنائی۔ سب کا حال چال پوچھا، کچھ چلنے والے مقدموں کے سمبندھ میں پوچھ تاچھ کی۔ کلن نے سب کا جواب یا 'ہاں' کہکر دیا اور یا کہہ دیا کہ مجھے پتہ نہیں بھیا جی۔ انل پھر کچھ دیر رکے، کیول منٹوں کے لئے۔ رات کے سناٹے کو توڑتے ہوئے انہوں نے پھر کہا —

"اتنی رات گئے کہاں بھٹک رہے ہو، کوئی خاص بات.....؟"

"ہاں بھیا جی، ہمارا چالان ہو گیا ہے......مجھے کچھ پتہ نہیں تھا۔ پولیس والا آیا......"

"اچھا" انل نے اس سور میں کہا جیسے یہ جتایا ہو کہ میں سب سمجھ گیا۔ پھر دونوں مٹھی باندھ کر ان پر سر رکھ دیا۔ کچھ سوچتے رہے۔ ان کے پیر تال دے رہے تھے۔ وچاروں کا کارواں چل پڑا تھا، بینڈ بج رہا تھا۔ سوچتے سوچتے انہوں نے جیب میں ہاتھ ڈالا۔ اکنی اور پیسہ نکالا۔ پیسہ جیب میں واپس ڈال دیا۔ اکنی کلن کو دی اور کہا — "ذرا دو پیسے کی چینی اور دو پیسے کی چائے لانا۔ پریس والوں کا مقدمہ تھا۔ دن بھر کھڑے کھڑے طبیعت پریشان ہوگئی۔ نہ جانے کس کا منہ دیکھا تھا کہ کھانے کو بھی نہیں ملا......لو بہت چلنے لگی ہے، گرمی کا مزہ جیسے پھٹ گیا ہے......"

"देखने को जवान, सूनने को पानी ! एक लुगाई तक तो है नहीं, बातें बनाता है. चुप रह यार, कान न खा."

अनिल रिक्शा यूनियन में भी काम करते हैं. सारे रिक्शे वालों से सम्पर्क है. सब उनका आदर करते हैं. वह हैं भी तो आदर के योग्य रिक्शे वाले कहते हैं—"अनिल मनुष्य नहीं हैं—वह अपने लिये क्या करते हैं ? वह मनुष्य ही क्या जो अपने लिये कुछ न करे ? वह चाहते तो लाट गवरनर हो सकते थे, नहीं तो चार पांच सौ की नौकरी तो कहीं गई ही नहीं थी लेकिन नहीं, वह तो हम लोगों के पीछे अपने को बर्बाद किये हैं. मजदूरों के हित के आगे उन्हें कोई सुधि ही नहीं है." रिक्शे वाले जानते हैं कि उनके पास खाने को भी पैसे नहीं हैं. इसी कारन जहां किसी के घर के आगे अनिल मिल जाएंगे तो उन्हें वह ज़बरदस्ती खाने के लिये पकड़ ले जाएगा. जिसके पास खाने को न पैसे हों न अपने समय पर खुद का अधिकार हो वह फ़िल्में कैसे देख सकता है, अपना मनोरंजन कैसे कर सकता है ? लेकिन और वस्तुओं की तरह मनोरंजन भी ज़रूरी है. अनिल मनोरंजन भी करते हैं. लेकिन इनका मनोरंजन अनोखा है—न फ़िल्म, न ड्रामा, न रेडियो, न संगीत सभा, न नाच, न गाना. मज़दूरों की किसी टोली में बैठ जाते हैं और किसी को पकड़ कर उसकी जीवन कथा सुनने लगते हैं. वह पहले नहीं बताता. उसे वह बनाते हैं, छेड़ते हैं. सभी हंसते हैं. वह फिर नहीं बताता. तब अनिल पीठ ठोंक कर कहते हैं—"बताओ यार, कुछ ताक़त मिले. हंसी की एक खुराक तन्दरुस्ती बढ़ाती है, तुम तो ऐसे कंजूस हो कि मुरदे के मुंह में पानी भी न चुवाओ." अनिल की बात अब नहीं टाली जा सकती. वह व्यक्ति अपनी राम कथा ले कर बैठ जाता है. इस गोष्टी में दूसरे पात्रों से सब को हमदर्दी होती है. लेकिन सब पात्रों में एक अभागा पात्र ऐसा है जिसकी सब हंसी उड़ाते हैं. वह पत्नी है. जिसके जो मुंह में आता है कहता है. हर आदमी ताक में रहता है कि शब्द चूके और वह आवाज़ें फेंके. काश बेचारी पत्नी यह सब सुन सकती ! लेकिन कहां गांव में पिया की राह जोहती हुई वह और कहां हज़ारों लाखों खेतों के पार यह शहर ! यह कहानी कहीं ख़त्म नहीं होती है, बढ़ती ही जाती है. इसको ख़त्म करना पड़ता है. जब अनिल को नींद आने लगती है या समय ज़्यादा हो जाता है तो गोष्टी ख़त्म हो जाती है. हो सकता है फिर कभी इस कहानी की बारी न आए, यह भी हो सकता है कि फिर किसी दिन आरम्भ हो जाए. यह भी कोई मनोरंजन है ? न इसका कुछ नियम न उसूल. अजीब लंगड़ा, लूला मनोरंजन है ! लेकिन मनोरंजन है. अनिल गर्व से कहते हैं—"क्या सनीमा

"دیکھنے کو جوان سوننے کو پانی ! ایک لگائی تک تو ہے نہیں، باتیں بناتا ہے ۔ چپ رہ یار، کان نہ کھا ۔"

انل رکشا یونین میں بھی کام کرتے ہیں ۔ سارے رکشا والوں سے سمپرک ہے ۔ سب اُن کا آدر کرتے ہیں ۔ وہ ہیں بھی تو آدر کے یوگیہ ۔ رکشے والے کہتے ہیں— "انل منشیہ نہیں ہیں ۔ وہ اپنے لئے کیا کرتے ہیں ؟ وہ منشیہ ہی کیا جو اپنے لئے کچھ نہ کرے ۔ وہ چاہتے تو لاٹ گورنر ہوسکتے تھے، نہیں تو چار پانچ سو کی نوکری تو کہیں گئی ہی نہیں تھی ۔ لیکن نہیں، وہ تو ہم لوگوں کے پیچھے اپنے کو برباد کئے ہیں ۔ مزدوروں کے ہت کے آگے انہیں کوئی سدھ ہی نہیں ۔" رکشے والے جانتے ہیں کہ اُن کے پاس کھانے کو بھی پیسے نہیں ہیں ۔ اسی کارن جہاں کسی کے گھر کے آگے انل مل جائیں گے تو انہیں وہ زبردستی کھانے کے لئے پکڑ لے جائیگا ۔ جس کے پاس کھانے کو نہ پیسے ہوں نہ اپنے سمے پر خود کا ادھیکار ہو وہ فلمیں کیسے دیکھ سکتا ہے، اپنا منورنجن کیسے کرسکتا ہے ؟ لیکن اور وستوؤں کی طرح منورنجن بھی ضروری ہے ۔ انل منورنجن بھی کرتے ہیں ۔ لیکن اِن کا منورنجن انوکھا ہے— نہ فلم، نہ ڈرامہ، نہ ریڈیو، نہ سنگیت سبھا، نہ ناچ، نہ گانا ۔ مزدوروں کی کسی ٹولی میں بیٹھ جاتے ہیں اور کسی کو پکڑ کر اسکی جیون کتھا سننے لگتے ہیں ۔ وہ پہلے نہیں بتاتا ۔ اسے وہ بناتے ہیں، چھیڑتے ہیں ۔ سبھی ہنستے ہیں ۔ وہ پھر نہیں بتاتا ۔ تب انل پیٹھ ٹھونک کر کہتے ہیں— "بتاؤ یار، کچھ طاقت ملے ۔ ہنسی کی ایک خوراک تندرستی بڑھاتی ہے، تم تو ایسے کنجوس ہو کہ مردہ کے منہ میں پانی بھی نہ چواؤ ۔" انل کی بات اب نہیں ٹالی جاسکتی ۔ وہ ویکتی اپنی رام کتھا لیکر بیٹھ جاتا ہے ۔ اس گوشٹی میں دوسرے پاتروں سے سب کو ہمدردی ہوتی ہے ۔ لیکن سب پاتروں میں ایک ابھاگا پاتر ایسا ہے جس کی سب ہنسی اڑاتے ہیں ۔ وہ پتنی ہے ۔ جس کے جو منہ میں آتا ہے کہتا ہے ۔ ہر آدمی تاک میں رہتا ہے کہ شبد چوکے اور وہ آوازے پھینکے ۔ کاش بیچاری پتنی یہ سب سن سکتی ! لیکن کہاں گاؤں میں پیا کی راہ جوہتی ہوئی وہ اور کہاں ہزاروں لاکھوں کھیتوں کے پار یہ شہر ! یہ کہانی کہیں ختم نہیں ہوتی ہے، بڑھتی ہی جاتی ہے ۔ اسکو ختم کرنا پڑتا ہے ۔ جب انل کو نیند آنے لگتی ہے یا سمے زیادہ ہو جاتا ہے تو گوشٹی ختم ہو جاتی ہے ۔ ہوسکتا ہے پھر کبھی اس کہانی کی باری نہ آئے، یہ بھی ہوسکتا ہے کہ پھر کسی دن آرمبھ ہو جائے ۔ یہ بھی کوئی منورنجن ہے ؟ نہ اس کا کچھ نیم، نہ اصول ۔ عجیب لنگڑا لولا منورنجن ہے ! لیکن منورنجن ہے ۔ انل گرو سے کہتے ہیں— "کیا سنیما

नहीं किया, यह समझने में उसे देर नहीं लगी. जैसे एक बिजली कौंधी और सावन की अंधेरी रात में घास पर चमकता किसी सुन्दर घसियारिन का बिछिया उसे दिखाई पड़ गया. वह तुरन्त बाहर आ गया. ताला खुल गया था लेकिन दरवाज़ा उसने नहीं खोला.

"कहो साथी, क्या बात है ?" उसने मुंह पर हंसी ओढ़ने की कोशिश की. अपने को हर तरह से तैयार होने की बेकार चेष्टा की. लेकिन जमाही आ ही गई. आंखों में भी कुछ तरल भर आया. यह आंसू हरगिज़ नहीं थे. मशीन चलते चलते जाम हो रही थी, उसमें तेल दिया गया था. प्रकृति अपना काम करती ही रहती है. वह कोठे पर पड़ी चारपाई पर बैठ गया और आगे के दामन से आंख पोंछ ली.

"आपकी तबीयत कुछ खराब दीख पड़ती है, सिर में दर्द है क्या...?" दूसरे व्यक्ति ने कहा.

"नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूं ..ऐसे ही...." आलिम ने ऐसे उत्तर दिया जैसे कह रहे हों कि कोई बात नहीं है. भला मैं कहीं बीमार पड़ सकता हूं ! कहना ठीक नहीं है कि उत्तर के भाव वह थे जो शाहनुमा चोर सफ़ाई के समय अभिव्यक्त करते हैं ! लेकिन वास्तविकता पर जो शब्दों का परदा उन्होंने डाला था उसके अन्दर से भाव की फ़ोकस लाइट स्थिति का पूरा चित्र पेश कर रही थी. उन्होंने ठंडी सांस लेकर फिर कहा—"रात बहुत हो गई है, नींद लग रही है. कहो क्या बात है ?"

दूसरा व्यक्ति कल्लन है. सोलह या अट्ठारह साल की उम्र होगी. आदमी गम्भीर है. बोलता कम है और काम ज्यादा करता है. पेशा किसानी है और रिक्शा चलाने का धंधा करता है. पन्द्रह बीस दिन हुए गांव से आया है. कुछ भी नहीं जानता. पुराने घाग रिक्शे वाले गर्व से कहते हैं—"बच्चू ! रिक्शा चलाना हंसी ठट्ठा नहीं है, खेत में हंसिया चलाना नहीं है, न बैल के दुम के पीछे टिकटिक करना है. अम्मा का दूध निकल पड़ेगा...... !" वह सुनता रहता है. जवाब में केवल मुस्करा देता है. वह कुछ भी नहीं जानता. उसे केवल इतना मालूम है कि रिक्शा कैसे चलाया जाता है, मालिक से रिक्शा किन किन शर्तों पर लिया जाता है, उसको रिक्शा मिलने का कौन समय है और उसे रिक्शा कब जमा करना है. वह इलाहाबाद के मुहल्ले, सड़कें और स्थान भी नहीं जानता. किराये का दर भी उसे नहीं मालूम. अभी अभी तो आया है. महीने दो महीने में "डाइवर" चाचा के कथनानुसार चन्ट हो जायगा. वह जब बात करता है तो पिता की बात करता है, माता की बात करता है, घर वाली को—वह तो है ही नहीं. दूसरे रिक्शे वाले सब ही तो कहते हैं

ہں کیا' یہ سمجھنے میں اُسے دیر نہیں لگی .
یسے ایک بجلی کوندھی اور ساون کی اندھیری رات
ں گھاس پر چمکتا کسی سندر گھسیارن کا بچھیا
، دکھائی پڑگیا . وہ ترنت باہر آگیا . تالا کھل گیا تھا
کن دروازہ اُس نے نہیں کھولا .

"کہو ساتھی' کیا بات ہے؟" اُس نے منہ پر ہنسی
ڑھنے کی کوشش کی' اپنے کو ہر طرح سے تیار ہونے کی
کار چیشٹا کی . لیکن جماہی آہی گئی . آنکھوں
ں بھی کچھ ترل بھر آیا . یہ آنسو ہرگز نہیں تھے .
شین چلتے چلتے جام ہو رہی تھی' اُس میں تیل دیا
ا تھا . پرکرتی اپنا کام کرتی ہی رہتی ہے . وہ کوٹھے پر
ی چار پائی پر بیٹھ گیا اور آگے کے دامن سے آنکھ
نچھ لی .

"آپ کی طبیعت کچھ خراب دیکھ پڑتی ہے' سر
یں درد ہے کیا.......؟" دوسرے ویکتی نے کہا .

"نہیں' میں بالکل ٹھیک ہوں...ایسے ہی..."
ل نے ایسے اُتر دیا جیسے کہ رہے ہوں کہ کوئی بات
ہیں ہے . بھلا میں کہیں بیمار پڑسکتا ہوں ! کہنا ٹھیک
ہیں ہے کہ اُتر کے بھاؤ وہ تھے جو شاہ نما چور صفائی کے
مے ابھی ویکت کرتے ہیں ! لیکن واستوکتا پر جو شبدوں
پردہ اُنہوں نے ڈالا تھا اُس کے اندر سے بھاؤ کی فوکس
ئٹ استتھی کا پورا چتر پیش کر رہی تھی . انہوں نے
ھنڈی سانس لیکر پھر کہا— "رات بہت ہوگئی ہے'
یند لگ رہی ہے . کہو کیا بات ہے ؟"

دوسرا ویکتی کلن ہے . سولہ یا اٹھارہ سال کی عمر
وگی . آدمی گمبھیر ہے . بولتا کم ہے اور کام زیادہ کرتا ہے.
یشہ کسانی ہے اور رکشا چلانے کا دھندا کرتا ہے . پندرہ
یس دن ہوئے گاؤں سے آیا ہے . کچھ بھی نہیں جانتا .
رانے گھاگ رکشے والے گرو سے کہتے ہیں— "بچو! رکشا چلانا
ہنسی ٹھٹھا نہیں ہے' کھیت میں ہنسیا چلانا نہیں
ہے' نہ بیل کے دم کے پیچھے ٹک ٹک کرنا ہے . اماں کا
دودھ نکل پڑےگا......!" وہ سنتا رہتا ہے . جواب میں
کیول مسکرا دیتا ہے . وہ کچھ بھی نہیں جانتا . اُسے
کیول اتنا معلوم ہے کہ رکشا کیسے چلایا جاتا ہے' مالک
سے رکشا کن کن شرطوں پر لیا جاتا ہے' اُس کو رکشا ملنے
کا کون سمے ہے اور اُسے رکشا کب جمع کرنا ہے . وہ الٰہ آباد
کے محلے' سڑکیں' اور استھان بھی نہیں جانتا . کرائے کا
در بھی اُسے نہیں معلوم . ابھی ابھی تو آیا ہے . مہینے
دو مہینے میں "ڈرائیور" چاچا کے کتھن انوسار چنٹ
ہو جائےگا . وہ جب بات کرتا ہے تو پتا کی بات کرتا
ہے' ماتا کی بات کرتا ہے' گھر والی کو—وہ تو ہے
ہی نہیں . دوسرے رکشے والے سب ہی تو کہتے ہیں—

वह झांकने लगा. कई कागज निकले. रास्ते चलते लोग अपना दुखड़ा उसे लिख कर दे जाते हैं. वह जेब में डाल लेता है और फिर अवकाश के समय सबकी फ़ाइल बना लेता है. मित्र गन उसके जेब को इसी से चलता फिरता रेकार्ड रूम कहते हैं! जो चीज़ उसको चाहिये वह नहीं मिल रही है.

"बाबू जी, आपके पास आए हैं. दो घंटे से राह जोख रहे हैं" उसके कान में आवाज़ गई. वह बोला कुछ नहीं. बड़ी बड़ी रोबीली आंखें उसकी तन गईं. उसने नज़र भर कर उस व्यक्ति की तरफ़ देखा. वह दरवाज़े के बाहर खड़ा था और उससे कुछ कहना चाहता था.

उसे झुंझलाहट हुई. कुरते के दोनों जेब उसने उलट दिये. कुछ चिटें गिरीं और उनमें फंसा हुआ कुछ पैसा—कुल एक पैसा और एक इकन्नी. रात के सन्नाटे में इकन्नी और पैसे ने मिल कर शोर नहीं किया क्योंकि कागज़ों से इनकी दोस्ती हो गई थी. दोस्त दोस्त के काम न आए तो दोस्ती क्या? पैसों को चोट न आ जाए इसलिये कागज़ पहले ही फ़र्श पर बिछ गए. पैसे उसने उठा लिए. दाएं हाथ की हथेली पर रख कर उन्हें देखा, शायद गिन रहा था. फिर अपनी मूर्खता पर मुसकराया और इकन्नी और पैसे को जेब में ठूंस लिया.

"अनिल बाबू, आप से ज़रा काम रहा......" वही आवाज़ फिर उसके कान में गई. उसने सुना. शायद उत्तर देना चाहा. लेकिन मुंह तक बात आ कर रह गई. उसकी उठी गरदन फिर झुक गई. उसने नीचे गिरे कागज़ों को झाड़ झाड़ कर फिर जेब के तहखाने में ठूंसना शुरू कर दिया. छन से एक गूंज हुई और लोहे की एक चाबी फ़र्श पर चमकती हुई दिखाई पड़ी. उसने उसे उठा लिया. इसकी खोज में तो वह अभी तक झक मार रहा था. कोई जानदार वस्तु होती तो वह इस समय ज़रूर मार बैठता, अगर न मारता तो बिगड़ता ज़रूर ही. लेकिन क्या करे बेवकूफ़ तो है नहीं जो भैंस के आगे बीन बजाए. कागज़ों को जेब में ठूंस कर वह आगे बढ़ गया.

तब फिर आवाज़ आई—"अनिल बाबू, आप से काम रहा." तुरन्त उसने उत्तर दिया "क्या है?" उसकी आवाज़ तेज़ थी. उस आवाज़ का अर्थ था कि मुझे मत छेड़ो. मैं इस समय कुछ सुनने को तैयार नहीं हूं. "क्या है?" कह कर वह आगे बढ़ गया. आगे वाले कमरे में रोशनी जलाई और अपने कमरे का दरवाज़ा खोल दिया. दरवाज़ा खोलते खोलते वह बदल गया था. वह दुखी था. "क्या है?" उसने मन ही मन में दुहराया कई रूप में "क्या है?" उसके सामने आया. उसकी समझ में आ गया कि इन दो शब्दों से बने वाक्य का उपयोग उसने उचित

وہ جھانکنے لگا۔ کئی کاغذ نکلے۔ راستے چلتے لوگ اپنا دکھڑا اسے لکھ کر دے جاتے ہیں۔ وہ جیب میں ڈال لیتا ہے اور پھر اوکاش کے سمے سب کی فائل بنا لیتا ہے۔ مترگن اس کے جیب کو اسی سے چلتا پھرتا ریکارڈ روم کہتے ہیں! جو چیز اس کو چاہیئے وہ نہیں مل رہی ہے۔

"بابو جی، آپ کے پاس آئے ہیں۔ دو گھنٹے سے راہ جوکھ رہے ہیں" اس کے کان میں آواز گئی۔ وہ بولا کچھ نہیں۔ بڑی بڑی رسیلی آنکھیں اس کی تن گئی۔ اس نے نظر بھرکر اس ویکتی کی طرف دیکھا۔ وہ دروازے کے باہر کھڑا تھا اور اس سے کچھ کہنا چاہتا تھا۔

اسے جھنجھلاہٹ ہوئی۔ کرتے کے دونوں جیب اس نے الٹ دیئے۔ کچھ چٹھیں گریں اور ان میں پھنسا ہوا کچھ پیسے—کل ایک پیسہ اور ایک اکنی۔ رات کے سناٹے میں اکنی اور پیسے نے ملکر شور نہیں کیا کیوں کہ کاغذوں سے ان کی دوستی ہوگئی تھی۔ دوست دوست کے کام نہ آئے تو دوستی کیا؟ پیسوں کو چوٹ نہ آجائے اس لئے کاغذ پہلے ہی فرش پر بچھ گئے۔ پیسے اس نے اٹھا لیئے۔ داہنے ہاتھ کی ہتھیلی پر رکھ کر انہیں دیکھا، شاید گن رہا تھا۔ پھر اپنی مورکھتا پر مسکرایا اور اکنی اور پیسے کو جیب میں ٹھونس لیا۔

"انل بابو، آپ سے ذرا کام رہا......" وہی آواز پھر اس کے کان میں گئی۔ اس نے سنا۔ شاید اتر دینا چاہا۔ لیکن منہ تک بات آکر رہ گئی۔ اسکی اٹھی گردن پھر جھک گئی۔ اس نے نیچے گرے کاغذوں کو جھاڑ جھاڑ کر پھر جیب کے تہ خانے میں ٹھونسنا شروع کردیا۔ چھن سے ایک گونج ہوئی اور لوہے کی ایک چابی فرش پر چمکتی ہوئی دکھائی پڑی۔ اس نے اسے اٹھا لیا۔ اسکی کھوج میں تو وہ ابھی تک جھک مار رہا تھا۔ کوئی جاندار وستو ہوتی تو وہ اس سمے ضرور مار بیٹھتا، اگر نہ مارتا تو بگڑتا ضرور ہی۔ لیکن کیا کرے۔ بیوقوف تو ہے نہیں جو بھینس کے آگے بین بجائے۔ کاغذوں کو جیب میں ٹھونس کر وہ آگے بڑھ گیا۔

تب پھر آواز آئی—"انل بابو، آپ سے کام رہا۔" ترنت اس نے اتر دیا "کیا ہے؟" اسکی آواز تیز تھی۔ اس آواز کا ارتھ تھا کہ مجھے مت چھیڑو۔ میں اس سمے کچھ سننے کو تیار نہیں ہوں۔ "کیا ہے؟" کہہ کر وہ آگے بڑھ گیا۔ آگے والے کمرے میں روشنی جلائی اور اپنے کمرے کا دروازہ کھول دیا۔ دروازہ کھولتے کھولتے وہ بدل گیا تھا۔ وہ دکھی تھا۔ "کیا ہے؟" اس نے من ہی من دہرایا۔ کئی روپ میں "کیا ہے؟" اس کے سامنے آیا۔ اسکی سمجھ میں آگیا کہ ان دو شبدوں سے بنے واکیہ کا اپیوگ اس نے اچت

एक रात

(मुजीब रिज़वी)

'अच्छा, सवेरे छै बजे मिल लेना, यहीं मिलूंगा" कहता हुआ वह एक ज़ीना चढ़ गया. एक साथ कई आवाज़ें आईं—"नमस्ते". जैसे उत्तर देने की उसे इच्छा न हो या उसने नमस्ते के इस शोर को सुना ही न हो, वह दो चार ज़ीने और ऊपर चढ़ गया. तब शायद नीचे खड़े व्यक्तियों की आवाज़ परदे फाड़ती हुई उस केन्द्र पर पहुंची जहां से बटन दबते ही कान में घंटी बजने लगती है. वह कुछ चेता. एक सीढ़ी और चढ़ते चढ़ते मरियल, धीमी आवाज़ में बोला—"नमस्ते". फिर पीछे मुड़ कर देखा. लोग जा चुके थे. उसने लम्बी सांस ली. बाएं हाथ से ज़ीने की दीवार का सहारा लिया और दायां हाथ मुंह पर फेरा. उंगुली बाईं आंख पर रक्खी और अंगूठा दाईं आंख पर और ऊपर की पलक की पुतली पर दबाने लगा. अंगूठा और उंगुली नाक रूपी ज़ीना दीवार के नीचे आ कर रुक गईं. इन बिन्दुओं पर उसने ज़रा शक्ति का इस्तेमाल किया. फिर पूरा हाथ मुंह पर मला और पीछे गुद्दी पर मलता हुआ सीने पर हाथ रोक लिया. ऐसा लगा जैसे कुछ पोंछ रहा हो, लेकिन क्या पोंछ रहा है ? दिन की थकान ?—हो सकता है. दिन भर खटता रहा है. नींद ? यह भी सम्भव है. ग्यारह बज रहे हैं, नींद आ ही रही होगी. लेकिन शायद वह कुछ और पोंछ रहा है. मुंह देखिए, आंख देखिये, गाल देखिये. सब लाल हो रहे हैं. क्या वह आंसू पोंछ रहा है ? हो सकता है. लेकिन नहीं. उसकी आंखें भीगी नहीं हैं, आंसू गालों पर नहीं ढलके हैं वह ज़ीने पर चढ़ता जाता है और ठंडी सांसें भरता जाता है. ज़रा पलकें देखिये वह स्थिर क्यों हैं ? क्या उनके पीछे कोई तूफ़ान छिपा है !

वह आखरी सीढ़ी पर पहुंच गया वहीं ठिठका. सारे कोठे पर एक विहंगम दृष्टि डाली. फिर आंखें झपकाईं. ऊपर वाले दांतों की पंक्ति से नीचे वाले होंट का दाहना कोना दबा लिया और ज़ीने से मिले हुए दरवाज़े में दाहना पैर रख दिया. उसी समय किसी की आवाज़ आई. "आ गए." उसने सुना और बस इतना बोल सका—"हां……!……"फिर वह एक क़दम आगे बढ़ा. बाएं हाथ की तरफ़ स्विच थी. रोशनी कर दी. उसी कमरे के बाद एक कमरा है और उसी कमरे में उसके कमरे का दरवाज़ा है. उसने जेब में हाथ डाला और कुछ चीज़ ढूंढने लगा. लेकिन शायद नहीं मिली. कुरते के दोनों जेब

ایک رات

(مجیب رضوی)

"اچھا" سویرے چھ بجے مل لینا" یہیں ملونگا" کہتا ہوا وہ ایک زینہ چڑھ گیا۔ ایک ساتھ کئی آوازیں آئیں— "نمستے۔" جیسے اُتر دینے کی اسے اچھا نہ ہو یا اُس نے نمستے اِس شور کو سنا ہی نہ ہو، وہ دو چار زینے اور اوپر چڑھ گیا. تب شاید نیچے کھڑے ویکتیوں کی آواز پردے پھاڑتی ہوئی اُس کیندر پر پہونچی جہاں سے بٹن دبتے ہی کان میں گھنٹی بجنے لگتی ہے۔ وہ کچھ چونکا۔ ایک سیڑھی اور چڑھتے چڑھتے مریل، دھیمی آواز میں بولا— "نمستے۔" پھر پیچھے مڑ کر دیکھا۔ لوگ جا چکے تھے۔ اُس نے ایک لمبی سانس لی۔ بائیں ہاتھ سے زینے کی دیوار کا سہارا لیا اور دایاں ہاتھ منہ پر پھیرا۔ چھنگلی بائیں آنکھ پر رکھی اور انگوٹھا دائیں آنکھ پر اور اوپر کی پلک کو پتلی پر دبانے لگا۔ انگوٹھا اور چھنگلی ناک روپی چھتی دیوار کے نیچے آکر رک گئیں۔ اِن بندوں پر اس نے ذرا شکتی کا استعمال کیا۔ پھر پورا ہاتھ منہ پر ملا اور پیچھے گدی پر ملتا ہوا سینے پر ہاتھ روک لیا۔ ایسا لگا جیسے کچھ پونچھ رہا ہو، لیکن کیا پونچھ رہا ہے ؟ دن کی تھکان ؟—ہوسکتا ہے۔ دن بھر کھٹتا رہا ہے۔ نیند ؟ یہ بھی سمبھو ہے۔ گیارہ بج رہے ہیں، نیند آ ہی رہی ہوگی۔ لیکن شاید وہ کچھ اور پونچھ رہا ہے۔ منہ دیکھئے، آنکھ دیکھئے، گال دیکھئے۔ سب لال ہو رہے ہیں۔ کیا وہ آنسو پونچھ رہا ہے ؟ ہوسکتا ہے۔ لیکن نہیں۔ اس کی آنکھیں بھیگی نہیں ہیں، آنسو گالوں پر نہیں ڈھلکے ہیں۔ وہ زینہ چڑھتا جاتا ہے اور ٹھنڈی سانسیں بھرتا جاتا ہے۔ ذرا پلکیں دیکھئے۔ یہ استھر کیوں ہیں ؟ کیا ان کے پیچھے کوئی طوفان چھپا ہے !

وہ آخری سیڑھی پر پہونچ گیا۔ وہیں ٹھٹکا۔ سارے کوٹھے پر ایک وہنگم درشٹی ڈالی۔ پھر آنکھیں جھپکائیں۔ اوپر والے دانتوں کی پنکتی سے نیچے والے ہونٹ کا داہنا کونا دبا لیا اور زینے سے ملے ہوئے دروازے میں داہنا پیر رکھ دیا۔ اسی سمے کسی کی آواز آئی—"آگئے۔" اس نے سنا اور بس اتنا بول سکا—"ہا.. ں.." پھر وہ ایک قدم آگے بڑھا۔ بائیں ہاتھ کی طرف سوچ تھی۔ روشنی کردی۔ اسی کمرے کے بعد ایک کمرہ ہے اور اسی کمرے میں اس کے کمرہ کا دروازہ ہے۔ اس نے جیب میں ہاتھ ڈالا اور کچھ چیز ٹٹولنے لگا۔ لیکن شاید نہیں ملی۔ کرتے کے دونوں جیب

तैयार हुए और इस तरह तीन या चार पीढ़ी के बाद—ग्यारहवीं सदी के आखीर तक—हमारे लोगों को महसूस हुआ कि सिर्फ़ स्वराज्य होना ही काफ़ी नहीं है; ऐसा होने के लिये उसे सुराज भी होना चाहिये और पर राज्य चला जाना चाहिये; क्योंकि हम भी एक राष्ट्र हैं. इस प्रकार की विशेश राष्ट्रीय नाबराबरी का उदय पिछली सदी का एक महान और नया लक्षन है.

इस अनुभव से जाना गया कि भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करनी चाहिये. राष्ट्र की हैसियत से उसे एक स्वतंत्र राज्य बनना चाहिये; वरना उसका विकास नहीं हो सकता. यह राजा राम मोहन राय के युग से अलग होता हुआ युगांतर था.

इस विचार के कारन एक ऐसा समय आया कि अंग्रेज भी इच्छा या अन इच्छा से समझ गये कि भारत छोड़ने में ही उनका हित छुपा है, वरना भारत तो जायगा ही, लेकिन उसके साथ भारत की दोस्ती से भी हाथ धो बैठेंगे. नतीजा यह कि दोनों देश दोस्ती के साथ अलग हुए और इस तरह एक महान क्रांति हुई. हिन्द ने राष्ट्र के तौर पर और 'पोलिटिकल स्टेट' की हैसियत से नया जन्म लिया. हिन्द के सांस्कृतिक विकास में योरप की यह नई बात शामिल हो चुकी और हमारी संस्कृति उसी प्रमान में ज्यादा विकसित हो कर फिर से इस युग में अपनी प्राचीन यात्रा आगे बढ़ाने के लायक़ हो सकी.

इस नव यात्रा के समय हमारे प्रजा की आत्मा को आगे बढ़ने का मंत्र गांधी जी ने दिया. टैगोर के कहे अनुसार ऐसा ही मंत्र ग्यारहवीं सदी में राजा राम मोहन राय ने उस काल के लिये दिया था जिसे हम ऊपर देख चुके हैं.

इस यात्रा का इतिहास हमारी स्वतंत्रता का इतिहास है. वह एक सांस्कृतिक चीज़ है—केवल राजकाजी नहीं. उस इतिहास को उनके मुख्य मुख्य सूत्रधारों के ज़रिये देखने का हमने सोच रखा है जिनके द्वारा उनकी बीती हुई पांच पीढ़ियां गिनाई जा सकें. उन पीढ़ियों को सिलसिलेवार उसके बाद देखेंगे.

(बाक़ी फिर)

تیار ہوئے' اور اس طرح تین یا چار پیڑھی کے بعد— گیارھویں صدی کے آخیر تک—ہمارے لوگوں کو محسوس ہوا کہ صرف سوراجیہ ہونا ہی کافی نہیں ہے؛ ایسا ہونے کے لیے سوراج بھی ہونا چاہیئے اور پر راجیہ چلا جانا چاہیئے؛ کیونکہ ہم بھی ایک راشٹر ہیں ۔ اس پرکار کی وشیش راشٹریہ نابرابری کا ادے پچھلی صدی کا ایک مہان اور نیا لکشن ہے ۔

اس انوبھو سے جانا گیا کہ بھارت کو سوتنترتا پراپت کرنی چاہیئے ۔ راشٹر کی حیثیت سے اسے ایک سوتنتر راجیہ بننا چاہیئے؛ ورنہ اسکا وکاس نہیں ہو سکتا ۔ یہ راجا رام موہن رائے کے یگ سے الگ ہوتا ہوا یوگانتر تھا ۔

اس وچار کے کارن ایک ایسا سمے آیا کہ انگریز بھی اچھا یا ان اچھا سے سمجھ لگے کہ بھارت چھوڑنے میں ہی اُن کا ہت چھپا ہے' ورنہ بھارت تو جائیگا ہی' لیکن اُس کے ساتھ بھارت کی دوستی سے بھی ہاتھ دھو بیٹھیں گے. نتیجہ یہ کہ دونوں دیش دوستی کے ساتھ الگ ہوئے اور اسطرح ایک مہان کرانتی ہوئی ۔ ہند نے راشٹر کے طور پر اور ' پولیٹیکل اسٹیٹ ' کی حیثیت سے نیا جنم لیا ۔ ہند کے سانسکرتک وکاس میں یورپ کی یہ نئی بات شامل ہو چکی اور ہماری سانسکرتی اسی پرمان میں زیادہ وکست ہو کر پھر سے اس یگ میں اپنی پراچین یاترا آگے بڑھانے کے لیق ہو سکی ۔

اس نو یاترا کے سمے ہمارے پرجا کی آتما کو آگے بڑھنے کا منتر گاندھی جی نے دیا ۔ ٹیگور کے کہے انوسار ایسا ہی منتر گیارھویں صدی میں راجا رام موہن رائے نے اُس کال کے لئے دیا تھا جسے ہم اوپر دیکھ چکے ہیں ۔

اس یاترا کا اتہاس ہماری سوتنترتا کا اتہاس ہے ۔ وہ ایک سانسکرتک چیز ہے—کیول راجکاجی نہیں۔ اس اتہاس کو اُن کے مکھیہ مکھیہ سوتردھاروں کے ذریعہ دیکھنے کا ہم نے سوچ رکھا ہے جن کے دوارا اُن کی بیتی ہوئی پانچ پیڑھیاں گنائی جا سکیں ۔ اُن پیڑھیوں کو سلسلہ وار اسکے بعد دیکھینگے ۔

(باقی پھر)

अंग्रेज़ी में 'कल्चरल स्टेट' कहा जाय. जिसे 'पोलिटिकल स्टेट' या नेशन स्टेट' कहा जाय वैसा अलग राष्ट्रभाव का ख़याल हमें न था. डच, अंग्रेज़, फ्रैंच इत्यादि प्रजा इस दूसरे प्रकार के ख़याल की थी. यूरप में उस ख़याल का उदय हुआ था और वहां की प्रजा उसे लेकर दुनिया में निकल पड़ी थी.

राज्य संस्था के बारे में ऐसी भावना उस समय भारत में एक नयी चीज़ थी इससे अंग्रेजों के सम्पर्क में आने पर राजा राम मोहन राय ने उसका सांस्कृतिक मूल्य आंका. उन्होंने देखा कि इस नयी प्रजा के पास जो नयी विद्या है, उसे भारत को उनकी भाषा के ज़रिये प्राप्त करना चाहिये. अरबी, फ़ारसी, और संस्कृत के इस महा पंडित ने एक नयी भाषा के ज़रिये जो नया ख़ज़ाना प्राप्त हो सकता था उसे देखा और भारत की सांस्कृतिक संपत्ति के और प्रजाकीय विकास के पक्ष में उसे अपनाने का आदेश दिया. उसमें उन्होंने भारत और इंग्लिस्तान के समान हितको देखा.

अपनी 'पोलिटिकल स्टेट' की भावना के कारन विलियम बैन्टिक और मेकॉले को उसमें अपने राज्य संगठन का हित नज़र आया और राजा राम मोहन राय को उसमें अपने लोगों की संस्कृति का और विद्या का विकास नज़र आया. इस प्रकार ताल में ताल मिल गई. फलस्वरूप भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना के उपाय किये गये. राजा राम मोहन राय को इसमें ग़ुलामी का अनुभव नहीं हुआ. अंग्रेज़ी राज्य की नयी तासीर वह न देख सके; उस समय यह बात समझ में आने योग्य थी भी नहीं. भारत के देशी राज्य भी 'नेशन स्टेट' राष्ट्रीय राज्य के भाव को साफ़ तौर से नहीं समझे थे. इस वजह से वह अन्दर ही अन्दर लड़ते रहे और अंग्रेज़ों के साथ भी उन्होंने एक नये देशी राज्य की तरह ही बर्ताव किया.

उस समय की देशी राज्य व्यवस्था के मुक़ाबले में, अन्य प्रकार से भी अंग्रेज़ी राज्य व्यवस्था हमारे कुछ लोगों को अच्छी लगी और ग़ैर होते हुए भी वह उन्हें अखरी नहीं; एक कारन यह भी सही, लेकिन उसे हमने ग़ुलामी नहीं माना क्योंकि हमारा मुख्य विचार सांस्कृतिक स्वराज्य के आदर्श का था.

लेकिन धीरे धीरे अनुभव से वह विचार पलटता गया. जैसे जैसे अंग्रेज़ी राज्य आगे बढ़ा वैसे वैसे उस बात का ख़याल हमें आता गया. नयी प्रजा के और उसकी राष्ट्र दृष्टि के विचार देखने, जानने और पढ़ने को मिले. इस प्रकार से हम अपने देश और उसके हित के प्रति देखने लगे और उसके मुताबिक़ आगे बढ़ाने के लिये

انگریزی میں ' کلچرل اسٹیٹ ' کہا جائے . جسے ' پولیٹکل اسٹیٹ ' یا ' نیشن اسٹیٹ ' کہا جائے ویسا الگ راشٹر بھاو کا خیال ہمیں نہ تھا . ڈچ، انگریز، فرینچ اتیادی پرجا اِس دوسرے پرکار کے خیال کی تھی . یورپ میں اُس خیال کا اُدے ہوا تھا اور وہاں کی پرجا اُسے لیکر دنیا میں نکل پڑی تھی .

راجیہ سنستھا کے بارے میں ایسی بھاونا اُس سمے بھارت میں ایک نئی چیز تھی . اِس سے انگریزوں کے سمپرک میں آنے پر راجا رام موہن رائے نے اُس کا سانسکرتک مولیہ آنکا . اُنہوں نے دیکھا کہ اس نئی پرجا کے پاس جو نئی ودیا ہے، اُسے بھارت کو اُن کی بھاشا کے ذریعے پراپت کرنا چاہیئے . عربی، فارسی اور سنسکرت کے اس مہا پنڈت نے ایک نئی بھاشا کے ذریعے جو نیا خزانہ پراپت ہوسکتا تھا اُسے دیکھا اور بھارت کی سانسکرتک سمپتی کے اور پرجاکیہ وکاس کے پکش میں اُسے اپنانے کا آدیش دیا . اُس میں اُنہوں نے بھارت اور انگلستان کے سمان ہت کو دیکھا .

اپنی ' پولیٹکل اسٹیٹ ' کی بھاونا کے کارن ولیم بینٹنک اور میکولے کو اس میں اپنے راجیہ سنگٹھن کا ہت نظر آیا اور راجا رام موہن رائے کو اُسمیں اپنے لوگوں کی سنسکرتی کا اور ودیا کا وکاس نظر آیا . اس پرکار تال میں تال مل گئی . پھل سوروپ بھارت میں انگریزی راجیہ کی استھاپنا کے اپائے کیئے گئے . راجا رام موہن رائے کو اس میں غلامی کا انوبھو نہیں ہوا . انگریزی راجیہ کی نئی تاثیر وہ نہ دیکھ سکے؛ اُس سمے یہ بات سمجھ میں آنے یوگیہ تھی بھی نہیں . بھارت کے دیشی راجیہ بھی 'نیشن اسٹیٹ' راشٹریہ راجیہ کے بھاؤ کو صاف طور سے نہیں سمجھے تھے . اس وجہ سے وہ اندر ہی اندر لڑتے رہے اور انگریزوں کے ساتھ بھی انہوں نے ایک نئے دیشی راجیہ کی طرح ہی برتاؤ کیا .

اُس سمے کی دیشی راجیہ ویوستھا کے مقابلے میں، انیہ پرکار سے بھی انگریزی راجیہ ویوستھا ہمارے کچھ لوگوں کو اچھی لگی اور غیر ہوتے ہوئے بھی وہ انہیں اکھری نہیں؛ ایک کارن یہ بھی صحیح، لیکن اُسے ہم نے غلامی نہیں مانا کیونکہ ہمارا مکھیہ وچار سانسکرتک سوراجیہ کے آدرش کا تھا .

لیکن دھیرے دھیرے انوبھو سے وہ وچار پلٹتا گیا . جیسے جیسے انگریزی راجیہ آگے بڑھا ویسے ویسے اُس بات کا خیال ہمیں آتا گیا . نئی پرجا کے اور اُسکی راشٹر درشٹی کے وچار دیکھنے، جاننے اور پڑھنے کو ملے . اِس پرکار سے ہم اپنے دیش اور اُس کے ہت کے پرتی دیکھنے لگے اور اُس کے مطابق آگے بڑھانے کے لیئے

इस प्रकार के युग परिवर्तन का अन्त भी उसी के अनुरूप हुआ. भारत की पसन्दगी से ही स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल अंग्रेज़ बना. इन दो महापुरुषों की दृष्टि में जो विश्व एकता की भावना और विश्व विजयी प्रेम भाव था, उसने इस डेढ़ सौ, दो सौ साल के भारत के इतिहास को गढ़ने का मुख्य काम किया है. इस लम्बे युग का प्रधान सुर यही रहा है, और उसे आगे लेकर विश्व संगीत को जन्म देने का काम हिन्द के इतिहास पर निश्चय रूप से आ पड़ा है.

अंग्रेज़ राज्यकाल की इस सदी का इतिहास कुछ निखर रहा है, इस समय उसका एक और अति महत्व का लक्षण भी देखने लायक़ है, क्योंकि वह इन दो युग पुरुषों के नवविधान का हूबहू निर्देशक भी है.

इस लक्षण को हमने सरल भाषा में ऊपर देखा. राजा राममोहन राय ने अंग्रेज़ राज्यकाल की स्थापना का मंत्र दिया, गांधी जी उसकी उत्थापना का मंत्र दिया. इस चीज़ को ज़रा गहराई में जा कर देखने की ज़रूरत है. इन दोनों समय पर भारत और इंग्लिस्तान के नेताओं ने एक मत से बर्ताव किया. यह ध्यान रखने योग्य चीज़ हमने ऊपर देखी. ऊपर से देखने पर यह क्या विचित्र लगे ऐसा नहीं है? बीसवीं सदी में अंग्रेज़ राज्य त्याग के लिये तैयार हो और भारतवासी उससे पहले की सदी में पर राज्य स्वीकार करने के लिये तैयार हों यह घटना समझने योग्य है. दूसरे ढंग से कहें तो राजा राम मोहन राय जैसे उदारमतवादी व्यक्ति भारत की ग़ुलामी में सहयोग दें, यह आज की दृष्टि से विचित्र नज़र आता है. वैसे ही गांधी जैसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श में श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति अंग्रेज़ों को जाने को कहें यह भी उतना ही विचित्र कहा जायगा.

एक दृष्टि से देखें तो यह विचित्रता दूर हो जाती है और इस पूरे युग के इतिहास के क्रमिक विकास को एक धागे में पिरोया जा सकता है. यह दृष्टि हमारी प्रजा के विकास की है जिस के द्वारा इस युग में राज्य संस्था के विषय में हमारे प्रजा के विचारों में नवपूर्त और नवदर्शन हुआ है. यह वही दृष्टि है. उसे संक्षेप में देख सकना वास्तव में यह घटना ऐसी गम्भीर बात है कि उसका पूरा विवेचन करने के लिये एक ग्रंथ लिखा जा सकता है.

राजा राम मोहन राय और उनके पहले के समय में राज्य संस्था के बारे में हमारे विचार एक ऐसे प्रकार के थे जो उस समय के यूरप के विचारों से भिन्न थे. हमारी दृष्टि नीति धर्म या संस्कृत पुरातन समाज व्यवस्था की थी जिसके आधार पर राजा और राज्य उसके प्रमुख अंग की हैसियत से रहते थे. हमारे विचार ऐसे थे जिसे

اس پرکار کے یگ پریورتن کا انت بھی اسی کے انوروپ ہوا . بھارت کی پسندگی سے ہی سوتنتر بھارت کا پرتھم گورنر جنرل انگریز بنا . ان دو مہاپرشوں کی درشٹی میں جو وشو ایکتا کی بھاونا اور وشو وجئی پریم بھاو تھا، اس نے اس ڈیڑھ سو دو سال کے بھارت کے اتہاس کو گڑھنے کا مکھیہ کام کیا ہے . اس لمبے یگ کا پردھان سر یہی رہا ہے اور اسے آگے لیکر وشو سنگیت کو جنم دینے کا کام ہند کے اتہاس پر نشچے روپ سے آ پڑا ہے .

انگریز راجیہ کال کی اس صدی کا اتہاس کچھ نکھر رہا ہے، اس سمے اس کا ایک اور اتی مہتو کا لکشن بھی دیکھنے لائق ہے، کیونکہ وہ ان دو یگ پرشوں کے نو ودھان کا ہوبہو نردیشک بھی ہے .

اس لکشن کو ہم نے سرل بھاشا میں اوپر دیکھا . راجا رام موہن رائے نے انگریز راجیہ کال کی استھاپنا کا منتر دیا، گاندھی جی نے اسکی اتھاپنا کا منتر دیا . اس چیز کو ذرا گہرائی میں جاکر دیکھنے کی ضرورت ہے . ان دونوں سمے پر بھارت اور انگلستان کے نیتاؤں نے ایک مت سے برتاؤ کیا . وہ دھیان رکھنے یوگیہ چیز ہم نے اوپر دیکھی . اوپر سے دیکھنے پر یہ کیا وچتر لگے ایسا نہیں ہے ؟ بیسویں صدی میں انگریز راجیہ تیاگ کے لئے تیار ہو اور بھارت واسی اس سے پہلے کی صدی میں پر راجیہ سویکار کرنے کے لئے تیار ہو یہ گھٹنا سمجھنے یوگیہ ہے . دوسرے ڈھنگ سے کہیں تو راجا رام موہن رائے جیسے ادار مت وادی ویکتی بھارت کی غلامی میں سہیوگ دیں، یہ آج کی درشٹی سے وچتر نظر آتا ہے . ویسے ہی گاندھی جیسے 'وسودھیو کٹمبکم' کے آدرش میں شردھا رکھنے والے ویکتی انگریزوں کو جانے کو کہیں یہ بھی اتنا ہی وچتر کہا جائیگا .

ایک درشٹی سے دیکھیں تو یہ وچترتا دور ہوجاتی ہے اور اس پورے یگ کے اتہاس کے کرمک وکاس کو ایک دھاگے میں پرویا جاسکتا ہے . یہ درشٹی ہماری پرجا کے وکاس کی ہے جس کے دوارا اس یگ میں راجیہ سنستھا کے وشے میں ہمارے پرجا کے وچاروں میں نو پورتی اور نو درشن ہوا ہے . یہ وہی درشٹی ہے . اسے سنکشیپ میں دیکھ سکنا واستو میں یہ گھٹنا ایسی گمبھیر بات ہے کہ اس کا پورا وویچن کرنے کے لئے ایک گرنتھ لکھا جاسکتا ہے .

راجا رام موہن رائے اور ان کے پہلے کے سمے میں راجیہ سنستھا کے بارے میں ہمارے وچار ایک ایسے پرکار کے تھے جو اس سمے کے یورپ کے وچار سے بھن تھے . ہماری درشٹی نیتی دھرم یا سنسکرت پراتن سماج ویوستھا کی تھی جس کے آدھار پر راجا اور راجیہ اس کے پرمکھ انگ کی حیثیت سے رہتے تھے . ہمارے وچار ایسے تھے جسے

विकास यात्रा में कदम कदम पर बाधा रूप होने वाली रुकावटों को दूर किया और आज के नवयुग के जगत व्यापी मानव प्रेम की हमें शिक्षा दी.

राजा राम मोहन राय ने भारत के आधुनिक युग की नींव डाली और उस समय एक ऐसी राष्ट्रीय हलचल उन्होंने शुरू की जिसके जोर पर उस समय की गिरावट से उन्नति के मार्ग पर भारत अग्रसर हुआ.

इसी ढंग से देखते हुए भारत में जो दूसरा नया युग शुरू हुआ वह अंग्रेज़ों के राज्य के क़रीब 100 साल बाद भारत की जो परिस्थिति हमारे सामने आने लगी उसमें से पैदा हुआ. राजा राम मोहन राय के आदेशानुसार चलते हुए भारत को जो दूसरा अनुभव हुआ वह था पर राष्ट्र की ग़ुलामी का, उसके अपमान का, राष्ट्रीय आत्मा के ह्रास का, हतक-इज़्ज़ती और प्रजा के अपनत्व की अवनति होने के डर का.

यह नया नतीजा भी उतना ही मर्म भेदी और घातक था. उस समय भी नवपथ प्रदर्शक की ज़रूरत थी क्योंकि पुराने युग की शिक्षा काफ़ी न थी. उसकी शक्ति कम साबित होती थी. उस समय वैसी ही प्रचंड प्रतिभा वाले भारत के महान पुरुष गांधी जी हमें मिले. टैगोर ने जिन शब्दों का उपयोग राजा के लिये किया था, हम इस नये युग का मार्ग दिखाने वाले के लिये भी उन्हीं शब्दों का उपयोग कर सकते हैं.

इस दृष्टि से देखें तो भारत के इन दोनों महापुरुषों की प्रतिभा में काफ़ी समानता थी. दोनों धर्म पुरुष थे, देश भक्त थे, मानवता के प्रेमी थे और महान हिन्दू थे.

ख़ास विशेषता यह कि दोनों अंग्रेज़ प्रजा के दोस्त थे और हिन्दी तथा अंग्रेज़ दोनों के इकट्ठे कल्यान में श्रद्धा रखने वाली एक मिली जुली नीति में विश्वास रखते थे. लेकिन समय का खेल ऐसा था कि एक ने भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना में योग दिया, दूसरे ने उसे उखाड़ने में. दोनों के काम प्रजाओं के हित में थे. बाहरी दृष्टि से देखने पर वह चाहे विचित्र और विरोधी प्रतीत होते हों, परन्तु ठीक और ग़ौर से देखने पर एक ही प्रकार का काम इन दोनों महापुरुषों ने किया है. दोनों के समकालीन गवर्नर जनरलों को याद करने से एक सुन्दर उदाहरन देखने को मिलता है दोनों उनके मित्र थे और आपस में मदद करने के लिये उत्सुक थे. बैन्टिक और राम मोहन राय ने और माउन्टबेटन और गांधी जी ने मित्रों की तरह बर्ताव किया. दोनों ने आपस में मदद की और दी और इस तरह अपने अपने देशों का काम किया.

وکاس یاترا میں قدم قدم پر بادھا روپ ہونے والی رکاوٹیں کو دور کیا اور آج کے نویگ کے جگت ویاپی مانو پریم کی شکشا دی ۔

راجا رام موہن رائے نے بھارت کے آدھونک یگ کی نیو ڈالی اور اُس سمے ایک ایسی راشٹریہ ہلچل انہوں نے شروع کی جس کے زور پر اُس سمے کی گراوٹ سے اُنتی کے مارگ پر بھارت اگرسر ہوا ۔

اسی ڈھنگ سے دیکھتے ہوئے بھارت میں جو دوسرا نیا یگ شروع ہوا وہ انگریزوں کے راجیہ کے قریب 100 سال بعد بھارت کی جو پرستھتی ہمارے سامنے آنے لگی اس میں سے پیدا ہوا ۔ راجا رام موہن رائے کے آدیش انوسار چلتے ہوئے بھارت کو جو دوسرا انوبھو ہوا وہ تھا پر راشٹر کی غلامی کا، اُس کے اپمان کا، راشٹریہ آتما کے ہراس کا، ہتک عزتی کا اور پرجا کے اپنتو کی اونتی ہونے کے ڈر کا ۔

یہ نیا نتیجہ بھی اتنا ہی مرم بھیدی اور گھاتک تھا ۔ اُس سمے بھی نویگ پردرشک کی ضرورت تھی کیونکہ پرانے یگ کی شکشا کافی نہ تھی ۔ اُس کی شکتی کم ثابت ہوتی تھی ۔ اُس سمے ویسی ہی پرچنڈ پرتبھا والے بھارت کے مہان پرش گاندھی جی ہمیں ملے ۔ ٹیگور نے جن شبدوں کا اپیوگ راجا کے لئے کیا تھا، ہم اس یگ کا مارگ دکھانے والے کے لئے بھی انہیں شبدوں کا اپیوگ کرسکتے ہیں ۔

اس درشٹی سے دیکھیں تو بھارت کے اِن دونوں مہاپرشوں کی پرتبھا میں کافی سمانتا تھی ۔ دونوں دھرم پرش تھے، دیش بھکت تھے، مانوتا کے پریمی تھے اور مہان ہندو تھے ۔

خاص وشیشتا یہ کہ دونوں انگریز پرجا کے دوست تھے اور ہندی تتھا انگریز دونوں کے اکٹھے کلیان میں شردھا رکھنے والی ایک ملی جلی نیتی میں وشواس رکھتے تھے ۔ لیکن سمے کا کھیل ایسا تھا کہ ایک نے بھارت میں انگریزی راجیہ کی استھاپنا میں یوگ دیا، دوسرے نے اُسے اکھاڑنے میں ۔ دونوں کے کام پرجاؤں کے ہت میں تھے ۔ باہری درشٹی سے دیکھنے پر وہ چاہے وچتر اور ورودھی پرتیت ہوتے ہوں پرنتو ٹھیک اور غور سے دیکھنے پر ایک ہی پرکار کا کام اِن دونوں مہاپرشوں نے کیا ہے ۔ دونوں کے سمکالین گورنر جنرلوں کو یاد کرنے سے ایک سندر اداہرن دیکھنے کو ملتا ہے ۔ دونوں اُن کے متر تھے اور آپس میں مدد کرنے کے لئے اُتسک تھے ۔ بینٹنک اور رام موہن رائے نے اور ماؤنٹ بیٹن اور گاندھی جی نے متروں کی طرح برتاؤ کیا ۔ دونوں نے آپس میں مدد کی اور دی اور اس طرح اپنے اپنے دیشوں کا کام کیا ۔

राजा राम मोहन राय से गांधी जी

लेखक—मगनभाई देसाई
अनुवादक—कानुभाई नानालाल पटेल

<u>हिन्द की स्वतंत्रता का इतिहास</u>

राजा राममोहन राय का युग यानी ईसवी सन 1772 से 1833 तक रहा है. उस ज़माने में अंग्रेजों का राज्य बंगाल में स्थिर हो चुका था और उसकी योग्य स्थापना स्थिर ढंग से करने के बारे में अंग्रेज राज्यकर्ता सोच रहे थे. वह समय अंग्रेजों के राज्य का स्थापना युग था.

गांधी जी का समय ई० सन 1869 से 1948 तक रहा. इस समय में अंग्रेजों का राज्य पूरी तरह से जमकर बाद में उखड़ने लगा. जिस तरह चूल पर की गई लिपाई की पपड़ी उखड़ने से पहले ऊंची नीची होती है वैसा ही कुछ इस समय हुआ. यह समय अंग्रेजी राज्य के उखड़ने का युग था.

स्थापना युग के हिन्द का नेतृत्व राम मोहन राय ने किया. यह जो मैं कहता हूं वह भारतवर्ष के उस महान पुरुष की किसी प्रकार की निंदा या बुराई के तौर पर नहीं कहता. बल्कि इसमें मैं उनकी पूरी प्रशंसा करता हूं. उस युग में भारत ने कुछ नया ही अनुभव किया. हथियार होते हुए, शक्ति होते हुए, ताक़त होते हुए और पूरी सूझ समझ होते हुए भी सैकड़ों मील दूरी से आये हुए चंद अंग्रेजों के सामने भारत परास्त होकर उनके लोभ और व्यापार का ग्रास हुआ और हिन्द का कोई राजा उसे इस प्रकार गुलाम होने से बचा नहीं सका. यह ठीक है जैसा कि अंग्रेज इतिहासकार सिली ने कहा है कि अंग्रेजों ने हमें अपने ही हाथों से, अपने ही धन से और अपने ही लश्कर से परास्त किया और अपना काम निकाला. लेकिन ऐसा होना तो और विचित्र बात है. इस विचित्रता से हमारी प्रजा सहम गई; फिर भी नये राज्यकर्ताओं में उसने कुछ निश्चिन्तता और झूठी सच्ची व्यवस्था की झलक देखी.

इतिहास यह ज़रूर कहता है जिस प्रकार के विचित्र परिवर्तन के रुख को पहचान कर देश को मार्ग दिखाने की बड़ी ज़िम्मेदारी राजा राम मोहन राय ने पूरी की. कवि श्री टैगोर के शब्दों में कहें तो—

अपनी प्रतिभा और अडिग आत्मबल के कारन उन्होंने यह समझ लिया कि हमारी राष्ट्रआत्मा को अपने विकास के लिये सृजनात्मक पुरुषार्थ शुरू करने की फ़ौरन ज़रूरत है. इस सदी के वह महान पथप्रदर्शक थे. उन्होंने हमारी

راجا رام موھن رائے سے گاندھی جی

لیکھک—مگن بھائی دیسائی
انوواد‌ک—کانو بھائی نانا لال پٹیل

<u>ھند کی سوتنترتا کا اتہاس</u>

راجا رام موھن رائے کا یگ عیسوی سن 1772 سے 1833 رھا ھے ۔ اُس زمانے میں انگریزوں کا راجیہ بنگال میں استھر ھوچکا تھا اور اسکی یوگیہ استھاپنا استھر ڈھنگ سے کرنے کے بارے میں انگریز راج کرتا سوچ رھے تھے ۔ وہ سمے انگریزوں کے راجیہ کا استھاپنا یگ تھا ۔

گاندھی جی کا سمے عیسوی سن 1869 سے 1948 تک رھا ۔ اس سمے میں انگریزوں کا راجیہ پوری طرح سے جم کر بعد میں اکھڑنے لگا ۔ جس طرح چولھے پر کی گئی لپائی کی پپڑی اکھڑنے سے پہلے اونچی نیچی ھوتی ھے ویسا ھی کچھ اُس سمے ھوا ۔ یہ سمے انگریزی راجیہ کے اُکھڑنے کے یگ تھا ۔

استھاپنا یگ کے ھند کا نیترتو رام موھن رائے نے کیا ۔ یہ جو میں کہتا ھوں وہ بھارت ورش کے اُس مہان پرش کی کسی پرکار کی نندا یا برائی کے طور پر نہیں کہتا ۔ بلکہ اِسمیں میں اُن کی پوری پرشنسا کرتا ھوں ۔ اس یگ میں بھارت نے کچھ نیا ھی انوبھو کیا ۔ ھتھیار ھوتے ھوئے' شکتی ھوتے ھوئے' طاقت ھوتے ھوئے اور پوری سوجھ سمجھ ھوتے ھوئے بھی سیکڑوں میل دوری سے آئے ھوئے چند انگریزوں کے سامنے بھارت پراست ھو کر ان کے لوبھ اور بیوپار کا گراس ھوا اور ھند کا کوئی راجا اُسے اس پرکار غلام ھونے سے بچا نہیں سکا ۔ یہ ٹھیک ھے جیسا کہ انگریز اتہاسکار سلی نے کہا ھے کہ انگریزوں نے ھمیں اپنے ھی ھاتھوں سے' اپنے ھی دھن سے اور اپنے ھی لشکر سے پراست کیا اور اپنا کام نکالا ۔ لیکن ایسا ھونا تو اور وچتر بات ھے ۔ اِس وچترتا سے ھماری پرجا سہم گئی' پھر بھی نئے راجیہ کرتاؤں میں اس نے کچھ نشچنتتا اور جھوٹی سچی ویوستھا کی جھلک دیکھی ۔

اِتہاس یہ ضرور کہتا ھے کہ اس پرکار کے وچتر پریورتن کے رخ کو پہچان کر دیش کو مارگ دکھانے کی بڑی ذمہ‌داری راجا رام موھن رائے نے پوری کی ۔ کوی شری ٹیگور کے شبدوں میں کہیں تو—

اپنی پرتبھا اور اڈگ آتم بل کے کارن اُنھوں نے یہ سمجھ لیا کہ ھماری راشٹر آتما کو اپنے وکاس کے لئے سرجناتمک پرشارتھ شروع کرنے کی فوراً ضرورت ھے ۔ اِس صدی کے وہ مہان پتھ پردرشک تھے ۔ انھوں نے ھماری

और हृदय को परिवर्तन करने का अहिंसक तरीका काम में लेते हैं. इस तरह तीन बरस के भीतर जमींदारों ने बेजमीनों में बांटने के लिये 30 लाख एकड़ से ज्यादा जमीन दान में दी है. सन 1957 तक भारत के सारे बेजमीन किसानों में मुफ्त बांटने के लिये काफी जमीन प्राप्त करने की और इस तरह खेती के मैदान में पूर्ण अहिंसक तरीकों से क्रान्ति करने की आशा रक्खी जाती है. जब यह काम हो जायेगा तब आशा है कि जमींदार और किसान साथ साथ काम करेंगे और उनमें से हर एक अपनी बुद्धि और शक्ति का उपयोग सब के भले को आगे बढ़ाने में करेगा.

इससे ज्यादा इस संबन्ध में आपसे कहने का मेरे पास समय नहीं है. लेकिन आप देख सकते हैं कि गांधी जी के नेतृत्व में भारती शान्ति आन्दोलन सिर्फ युद्ध और नाइन्साफी की निन्दा करने से आगे बढ़ा है और उसने संघर्ष के सारे कारनों का जड़ से अन्त करने के लिये व्यक्ति और समाज के जीवन में घुसने की कोशिश की है. इस तरह गांधी जी ने शान्ति के लिये भारत की शोध की एक अहम दिशा प्रदान की है. मैं आशा करता हूं कि यहां इकट्ठे होने वाले हम लोग इस महान आन्दोलन का अध्यन करेंगे जो गांधी जी ने शुरू किया है क्योंकि हमें लगता है कि मानव सम्बन्धों में रहे सारे संघर्षों को दूर करने के लिये ऐसे चौतरफा प्रयत्न हुए बिना युद्ध की निन्दा करने वाली परिषदें भरने से कुछ नहीं होगा. जब तक व्यक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन से अहिंसा कम न हो, तब तक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की आशा रखना बेकार है. यही गांधी जी की खास देन है और भारत में अहिंसा और शान्ति के लिये जो काम हो रहा है उसमें से यही सन्देश मैं आप के पास लाया हूं.

कुछ गत बाद जब बुद्ध को काफी गालियां दे चुके तब बुद्ध हंसते हुए बोले—

"भद्र ! यह तो बताओ, यदि कोई दाता दान करे और भिखारी न ले तो वह वस्तु किस के पास रहेगी ?"

"दाता के पास."

"ऐसी बात है तो जो तुम गालियां मुझे दे रहे हो, मैं नहीं लेना चाहता."

اور ھردے کو ابھل کرنے کا اھنسک طریقہ کام میں لیتے ھیں ۔ اس طرح تین برس کے بھیتر زمینداروں نے بےزمینوں میں بانٹنے کے لیئے 30 لاکھ ایکڑ سے زیادہ زمین دان میں دی ھے ۔ سن 1957 تک بھارت کے سارے بےزمین کسانوں میں مفت بانٹنے کے لیئے کافی زمین پراپت کرنے کی اور اس طرح کھیتی کے میدان میں پورن اھنسک طریقوں سے کرانتی کرنے کی آشا رکھی جاتی ھے ۔ جب یہ کام ھوجائیگا تب آشا ھے کہ زمیندار اور کسان ساتھ ساتھ کام کرینگے اور ان میں سے ھر ایک اپنی بدھی اور شکتی کا اپیوگ سب کے بھلے کو آگے بڑھانے میں کریگا ۔

اس سے زیادہ اس سمبندھ میں آپ سے کہنے کا میرے پاس سمے نہیں ھے ۔ لیکن آپ دیکھ سکتے ھیں کہ گاندھی جی کے نیترتو میں بھارتی شانتی آندولن صرف یدھ اور ناانصافی کی نندا کرنے سے آگے بڑھا ھے اور اس نے سنگھرش کے سارے کارنوں کا جڑ سے انت کرنے کے لیئے ویکتی اور سماج کے جیون میں گھسنے کی کوشش کی ھے ۔ اس طرح گاندھی جی نے شانتی کے لیئے بھارت کی شودھ کی ایک اھم دشا پردان کی ھے ۔ میں آشا کرتا ھوں کہ یہاں اکٹھے ھونے والے ھم لوگ اس مہان آندولن کا ادھین کرینگے جو گاندھی جی نے شروع کیا ھے کیونکہ ھمیں لگتا ھے کہ مانو سمبندھوں میں رھے سارے سنگھرشوں کو دور کرنے کے لیئے ایسے چوطرفہ پریتن ھوئے بنا یدھ کی نندا کرنے والی پریشدیں بھرنے سے کچھ نہیں ھوگا ۔ جب تک ویکتک، ساماجک، راجنیتک اور آرتھک جیون سے اھنسا کم نہ ھو، تب تک انترراشٹری شانتی کی آشا رکھنا بیکار ھے ۔ یہی گاندھی جی کی خاص دین ھے، اور بھارت میں اھنسا اور شانتی کے لیئے جو کام ھو رھا ھے اسمیں سے یہی سندیش میں آپ کے پاس لایا ھوں ۔

کچھ سمے کے بعد جب بدھ کو کافی گالیاں دے چکے تب بدھ ھنستے ھوئے بولے—

" بھدر ! یہ تو بتاؤ، یدی کوئی داتا دان کرے اور بھکاری نہ لے تو وہ وستو کس کے پاس رھے گی ؟"

" داتا کے پاس "

" ایسی بات ھے تو جو تم گالیاں مجھے دے رھے ھو، میں نہیں لینا چاھتا ۔"

जब राष्ट्र कपास, रबड़, जूट वग़ैरा जैसे कच्चे माल, कोयला और पेट्रोल जैसे ईंधनों, खनिज पदार्थों, युद्ध में काम आने वाले दूसरे पदार्थों और बाज़ारों के लिये आपस में छीना झपटी मचाते हैं और लड़ते झगड़ते हैं. इसी लिये दुनिया में युद्ध होते हैं. इस तरह जिस युद्ध और साम्राज्यवाद का जन्म होता है, उनका अन्त सिर्फ़ प्रस्ताव पास करने से नहीं हो सकता.

गांधी जी ने चरखे के लिये जो आन्दोलन किया वह उनकी इस इच्छा का प्रतीक था कि आर्थिक मैदान से युद्ध और साम्राज्यवाद के कारनों का अन्त किया जाये और विकेन्द्रित, स्वावलम्बी ढंग पर गांव का आर्थिक ढांचा खड़ा किया जाये, जिसका मक़सद स्थानी कच्चे माल से दूर के बाज़ारों के लिये नहीं, बल्कि स्थानी ज़रूरत पूरी करने के लिये उत्पादन करना हो. जब तक शांतिवादी लोग युद्ध और साम्राज्यवाद के इस बिल्कुल साफ़ कारन की उपेक्षा करेंगे और बेअमल बन कर बड़े पैमाने के उत्पादन के सामने झुकते रहेंगे, तब तक भले वह युद्ध और कमज़ोर देशों के दमन और शोषन के ख़िलाफ़ प्रचार करते रहें उसका कोई नतीजा नहीं होगा. उलटे उनका प्रचार इन बुराइयों को बढ़ाने में ही मदद करेगा. इसी लिये गांधी जी ने घरेलू धन्धों और ग्रामोद्योगों का आन्दोलन किया था.

इतना ही नहीं, उद्योगीकरन का मतलब है मुट्ठी भर लोगों के हाथ में सत्ता का केन्द्रीकरन और जनता के बहुत बड़े भाग को लाचार और बेबस बनाना. गांधी जी को इस बात का डर था, क्योंकि कुछ लोगों के हाथ में सत्ता का ऐसा केन्द्रीकरन ग़ुलामी, शोषन और लड़ाई झगड़े को ही जन्म दे सकता है. इसलिये उन्होंने भारत से आग्रह पूर्वक कहा कि अगर वह शान्तिपूर्न और अहिंसक बनना चाहता है तो उसे विकेन्द्रित ढंग से घरेलू धन्धों के ज़रिये उत्पादन करना चाहिये जिसमें व्यक्ति अपने उद्योग धन्धे ख़ुद या पड़ोसियों के सहयोग से चलाना सीखता है.

(ii) खेती

शान्तिवादी को यह देखना चाहिये कि मज़दूर को उसके औज़ार छीन कर ग़ुलाम न बनाया जाये क्योंकि उसका नतीजा देर सवेर शोषन और लड़ाई झगड़े में ही निकलेगा. उदाहरन के लिये ज़मीन जब जोतने वाले किसान के हाथ में नहीं होती, तब यही होता है. इसलिये गांधी जी के मरने के बाद से शान्ति आन्दोलन में भाग लेने वाले उनके चेले ज़मींदारों से ज़मीन ले कर काश्तकारों को देने के काम में लगे हुए हैं. उनका तरीक़ा जबरन ज़मीन छीन लेने का हिंसक तरीक़ा नहीं है, वह ज़मींदारों की बुद्धि

جب راشٹر کپاس، ربڑ، جوٹ وغیرہ جیسے کچے مال، کوئلہ اور پیٹرول جیسے ایندھنوں، کھنج پداتھوں، یدھ میں کام آنے والے دوسرے پداتھوں اور بازار کے لیئے آپس میں چھینا جھپٹی مچاتے ہیں اور لڑتے جھگڑتے ہیں۔ اسی لیئے دنیا میں یدھ ہوتے ہیں۔ اس طرح جس یدھ اور سامراجیہ واد کا جنم ہوتا ہے' انکا انت صرف پرستاؤ پاس کرنے سے نہیں ہوسکتا۔

گاندھی جی نے چرخے کے لیئے جو آندولن کیا وہ انکی اس اچھا کا پرتیک تھا کہ آرتھک میدان سے یدھ اور سامراجیہ واد کے کارنوں کا انت کیا جائے اور وکیندرت سواولمبی ڈھنگ پر گاؤں کا آرتھک ڈھانچہ کھڑا کیا جائے' جسکا مقصد استھانی کچے مال سے دور کے بازاروں کے لیئے نہیں' بلکہ استھانی ضرورتیں پوری کرنے کے لیئے اتپادن کرنا ہو۔ جب تک شانتی وادی لوگ یدھ اور سامراجیہ واد کے اس بالکل صاف کارن کی اپیکشا کریں گے اور بےعمل بنکر بڑے پیمانے کے اتپادن کے سامنے جھکتے رہیں گے' تب تک بھلے وہ یدھ اور کمزور دیشوں کے دمن اور شوشن کے خلاف پرچار کرتے رہیں اسکا کوئی نتیجہ نہیں ہوگا۔ الٹے انکا پرچار ان برائیوں کو بڑھانے میں ہی مدد کریگا۔ اسی لیئے گاندھی جی نے گھریلو دھندھوں اور گرام ادیوگوں کا آندولن کیا تھا۔

اتنا ہی نہیں' ادیوگیکرن کا مطلب ہے مٹھی بھر لوگوں کے ہاتھ میں ستا کا کیندریکرن اور جنتا کے بہت بڑے بھاگ کو لاچار اور بے بس بنانا۔ گاندھی جی کو اس بات کا ڈر تھا' کیونکہ کچھ لوگوں کے ہاتھ میں ستا کا ایسا کیندریکرن غلامی' شوشن اور لڑائی جھگڑے کو ہی جنم دے سکتا ہے۔ اسلیئے انہوں نے بھارت سے آگرہ پوروک کہا کہ اگر وہ شانتی پورن اور اہنسک بننا چاہتا ہے تو اسے وکیندرت ڈھنگ سے گھریلو دھندھوں کے ذریعے اتپادن کرنا چاہیئے جسمیں ویکتی اپنے ادیوگ دھندھے خود یا پڑوسیوں کے سہیوگ سے چلانا سیکھتا ہے۔

(ii) کھیتی

شانتی وادی کو یہ دیکھنا چاہیئے کہ مزدور کو اسکے اوزار چھین کر غلام نہ بنایا جائے کیونکہ اسکا نتیجہ دیر سویر شوشن اور لڑائی جھگڑے میں ہی نکلیگا۔ اداہرن کے لیئے زمین جب جوتنے والے کسان کے ہاتھ میں نہیں ہوتی' تب یہی ہوتا ہے۔ اسلیئے گاندھی جی کے مرنے کے بعد سے شانتی آندولن میں بھاگ لینے والے انکے چیلے زمینداروں سے زمین لیکر کاشتکاروں کو دینے کے کام میں لگے ہوئے ہیں۔ انکا طریقہ جبراً زمین چھین لینے کا ہنسک طریقہ نہیں ہے؛ وہ زمینداروں کی بدھی

देन लिखी है उसमें उन्होंने बताया है कि एक अहिंसक आदमी अहिंसक साधनों के जरिये राजनीतिक दमन का विरोध कैसे कर सकता है.

उन्होंने विकेन्द्रित राजनीतिक व्यवस्था की भी हिमायत की थी, जिसमें सत्ता मुट्ठी भर लोगों के हाथ में नहीं रहती. आज हम लोकशाही या लोगोंके राज की बात तो कहते हैं, लेकिन राज्य में सत्ता का केन्द्रीकरन जितना आज होता है, उतना पहले कभी नहीं हुआ था. आज राज्य हमारे खान पान, मकानों, उद्योगों, खेती, व्यापार वानिज्य, यात्रा, पैसे, आने जाने के साधनों —सच पूछा जाय तो हमारे रोज के जीवन पर असर डालने वाली हर चीज पर—कन्ट्रोल रखता है इस स्थिति का सब से बुरा पहलू यह है कि जब सत्ता कुछ शक्तिशाली लोगों या शासन करने वाले कमगिनत हाथ में केन्द्रित हो जाती है तब लोगों को शासकों की सत्ता की प्यास पूरी करने के लिए बेजबान जानवरों की तरह युद्ध में ढकेला जाता है. लोग अपने लिए खुद सोचने के आदी न होने के कारन राज्य के खिलाफ खड़े नहीं हो सकते. इसलिए शासक उन्हें आसानी से सेना में भर्ती कर लेते हैं और दूसरे राष्ट्र से लड़ाते हैं.

इसलिये गांधी जी मानते थे कि आज के ऐसे सत्ता-धारी राज्य का अन्त करने का एकमात्र इलाज यह है कि सच्ची लोकशाही या लोकराज की स्थापना की जाये, जो अपने कामकाज की खुद व्यवस्था करने वाले गांवों जैसे छोटे समूहों में ही मुमकिन हो सकता है. इन गांव प्रजातंत्रों की बुनियाद पर ही वह राष्ट्र का राजनीतिक जीवन खड़ा करने की आशा रखते थे, जिसमें रक्षा और विदेशी मामलों जैसे विशयों की ही केन्द्रित व्यवस्था होनी चाहिये.

गांधी जी की इस सीख में भी आज के शांतिवादी के लिये विचार का काफी मसाला है. केवल ऐसी राज-नीतिक व्यवस्था में ही लोग अपना शासन खुद कर सकते हैं और तभी वह इतने मजबूत बनेंगे कि अपनी मरजी के खिलाफ युद्ध में घसीटे जाने का डट कर विरोध कर सकें.

8. आर्थिक जीवन में

(i) उद्योग-धन्धे

इसमें कोई शक नहीं कि आज दुनिया के राष्ट्रों के बीच जो कशमकश और तनातनी चली आ रही है, उसका काफी बड़ा कारन कच्चे माल की और बाजारों की खोज है. जब उत्पादन छोटे पैमाने पर होता है, तो स्थानीय कच्चे माल और बाजारों से काम चल जाता है और लड़ाई झगड़े और संघर्ष का कारन नहीं रहता. लेकिन जब उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है, जैसा कि उद्योगीकरन में होता है,

ھی ملی ہے اسمیں اُنھوں نے بتایا ہے کہ ایک اہنسک آدمی اہنسک سادھنوں کے ذریعے راجنیتک دمن کا وِرودھ کیسے کر سکتا ہے۔

انھوں نے وکیندرت راجنیتک اوستھا کی بھی حمایت کی تھی، جس میں ستّا مٹھی بھر لوگوں کے ہاتھ میں نہیں رہتی۔ آج ہم لوک شاہی یا لوگوں کے راج کی بات تو کہتے ہیں، لیکن راج میں ستّا کا کیندریکرن جتنا آج ہوتا ہے، اتنا پہلے کبھی نہیں ہوا تھا۔ آج راجیہ ہمارے کھان پان، مکانوں، اُدیوگوں، کھیتی، ویاپار بانجیہ، یاترا، پیسے، آنے جانے کے سادھنوں—سچ پوچھا جائے تو ہمارے روز کے جیون پر اثر ڈالنے والی ہر چیز پر—کنٹرول رکھتا ہے۔ اس استھتی کا سب سے برا پہلو یہ ہے کہ جب ستّا کچھ شکتی شالی لوگوں یا شاسن کرنے والے کم گنت ہاتھ میں کیندرت ہو جاتی ہے تب لوگوں کو شاسکوں کی ستّا کی پیاس پوری کرنے کے لیئے بے زبان جانوروں کی طرح یدھ میں ڈھکیلا جاتا ہے۔ لوگ اپنے لیئے خود سوچنے کے عادی نہ ہونے کے کارن راجیہ کے خلاف کھڑے نہیں ہو سکتے۔ اس لیئے شاسک انہیں آسانی سے سینا میں بھرتی کر لیتے ہیں اور دوسرے راشٹر سے لڑاتے ہیں۔

اسلیئے گاندھی جی مانتے تھے کہ آج کے ایسے ستّا دھاری راجیہ کا انت کرنے کا ایک ماتر علاج یہ ہے کہ سچی لوک شاہی یا لوک راج کی استھاپنا کی جائے، جو اپنے کام کاج کی خود ویوستھا کرنے والے گاؤں جیسے چھوٹے سموہوں میں ہی ممکن ہوسکتا ہے۔ اِن گاؤں پرجاتنتروں کی بنیاد پر ہی وہ راشٹر کا راجنیتک جیون کھڑا کرنے کی آشا رکھتے تھے، جس میں رکشا اور ودیشی معاملوں جیسے وشیوں کی ہی کیندرت ویوستھا ہونی چاہیئے۔

گاندھی جی کی اِس سیکھ میں بھی آج کے شانتی وادی کے لیئے وچار کا کافی مسالہ ہے۔ کیول ایسی راجنیتک ویوستھا میں ہی لوگ اپنا شاسن خود کرسکتے ہیں اور تبھی وہ اتنے مضبوط بنینگے کہ اپنی مرضی کے خلاف یدھ میں گھسیٹے جانے کا ڈٹ کر وِرودھ کرسکیں۔

۸—آرتھک جیون میں

(i) اُدیوگ دھندے

اسمیں کوئی شک نہیں کہ آج دنیا کے راشٹروں کے بیچ جو کشمکش اور تنا تنی چلی آ رہی ہے، اسکا کافی بڑا کارن کچے مال کی اور بازاروں کی کھوج ہے۔ جب اُتپادن چھوٹے پیمانے پر ہوتا ہے، تو استھانیہ کچے مال اور بازاروں سے کام چل جاتا ہے اور لڑائی جھگڑے اور سنگھرش کا کارن نہیں رہتا۔ لیکن جب اُتپادن بڑے پیمانے پر ہوتا ہے، جیسا کہ اُدیوگیکرن میں ہوتا ہے،

की स्थापना और प्रचार किया गया. भारत में प्रतिदिन के जीवन में अहिंसा का प्रयोग करने और दुख का अनुभव कर सकने वाले प्रानियों को कष्ट न पहुंचाने या उनकी हत्या न करने की सीख देने की दिशा में यह पहला अमली क़दम था. गांधी जी बेशक शाकाहारी थे और भारत के हम लोगों को यह देखकर थोड़ा ताज्जुब होता है कि यहां इकट्ठे होने वाले हम में से बहुत से लोगों ने, जो शांतिवाद में विश्वास रखते हैं, अभी तक भोजन के बारे में अहिंसा का पहला अमली प्रयोग भी शुरू नहीं किया है. हमें लगता है कि जब तक हम रोज़ाना ज़िन्दगी में—भोजन में भी—अहिंसा की शुरुआत नहीं करते, तब तक पब्लिक जीवन में उसे दाख़िल करना बहुत कठिन है.

(ii) जो अहिंसा का पालन करे उसमें भारतीय विचार के अनुसार ख़ुद पर भरोसा करने का या आत्म त्याग का भी बड़ा गुन होना ही चाहिये. भोगी मनुष्य वह है जो अपने ही सुख और आनन्द की चिन्ता करता है; ऐसा मनुष्य लाज़िमी तौर पर दूसरों के संघर्ष में आता है. लेकिन जो मनुष्य अपने आप पर संयम रख सकता है, वह दूसरों के साथ होने वाले झगड़े से अपने को बचा सकता है, उसकी ज़रूरतें थोड़ी और सादी होती हैं और जब उसे पता चलता है कि उन ज़रूरतों की पूर्ति में दूसरों से उसका झगड़ा होता है, तब वह उनके लिये कोशिश करना छोड़ सकता है. इसलिए ऐसी हर चीज़ से, जो मनुष्य को अपनी इच्छा पर चलने वाला और भोग विलास का दास बनाती है—जैसे शराब या बनावटी साधनों के ज़रिये बेरोक टोक भोग—इन से बचना चाहिये.

भारत में सदियों से जो सिखाया गया है और गांधी जी ने जिसे बार बार दोहराया है आत्म संयम का यह पाठ अभी हममें से बहुतेरे लोगों को सीखना बाक़ी है 'जो तरह तरह के माल असबाब, धन दौलत वग़ैरा परिग्रह से अपने को घिरा रखना चाहते हैं और ज़रूरतें बढ़ाने में विश्वास रखते हैं. परिग्रह का यह कभी न शान्त होने वाला लोभ और स्वेच्छाचार संघर्ष और हिंसा को जन्म देने के सिवा और कुछ कर ही नहीं सकते. इसलिए शांति और अहिंसा के प्रेमी के लिए गांधी जी ने अपने बुज़ुर्गों की परम्परा के अनुसार ऊंचे से ऊंचे फ़र्ज़ के रूप में संक्षेप में यह बता दिया है कि जीवन के हर मैदान में—खान पान, विषय भोग वग़ैरा हर बात में—ब्रह्मचर्य या कठोर आत्म संयम का पालन किया जाये.

2. राजकाजी जीवन में

लड़ाई झगड़े और युद्ध का एक कारन है लोगों के एक दल के ज़रिये दूसरे दल को दबाना. जैसा कि आप सब जानते हैं, इस सम्बन्ध में हमें गांधी जी की जो बड़ी

کی استھاپنا اور پرچار کیا گیا. بھارت میں پرتی دن کے جیون میں اہنسا کا پریوگ کرنے اور دکھ کا انوبھو کر سکنے والے پرانیوں کو کشٹ نہ پہونچانے یا اُن کی ہتیا نہ کرنے کی سیکھ دینے کی دشا میں یہ پہلا عملی قدم تھا. گاندھی جی بے شک شاکاہاری تھے اور بھارت کے ہم لوگوں کو یہ دیکھکر تھوڑا تعجب ہوتا ہے کہ یہاں اکٹھے ہونے والے ہم میں سے بہت سے لوگوں نے، جو شانتی واد میں وشواس رکھتے ہیں، ابھی تک بھوجن کے بارے میں اہنسا کا پہلا عملی پریوگ بھی شروع نہیں کیا ہے. ہمیں لگتا ہے کہ جب تک ہم روزانہ زندگی میں—بھوجن میں بھی—اہنسا کی شروعات نہیں کرتے، تب تک پبلک جیون میں اُسے داخل کرنا بہت کٹھن ہے.

(ii) جو اہنسا کا پالن کرے اُسمیں بھارتیہ وچار کے انوسار خود پر بھروسہ کرنے کا یا آتم تیاگ کا بھی بڑا گن ہونا ہی چاہیئے. بھوگی منشیہ وہ ہے جو اپنے ہی سکھ اور آنند کی چنتا کرتا ہے؛ ایسا منشیہ لازمی طور پر دوسروں کے سنگھرش میں آتا ہے. لیکن جو منشیہ اپنے آپ پر سنیم رکھ سکتا ہے، وہ دوسروں کے ساتھ ہونے والے جھگڑے سے اپنے کو بچا سکتا ہے، اُسکی ضرورتیں تھوڑی اور سادی ہوتی ہیں اور جب اُسے پتہ چلتا ہے کہ اُن ضرورتوں کی پورتی میں دوسروں سے اُسکا جھگڑا ہوتا ہے، تب وہ اُن کے لیئے کوشش کرنا چھوڑ سکتا ہے. اِس لیئے ایسی ہر چیز سے، جو منشیہ کو اپنی اِچھا پر چلنے والا اور بھوگ ولاس کا داس بناتی ہے—جیسے شراب یا بناوٹی سادھنوں کے ذریعے بے روک ٹوک بھوگ—اِن سے بچنا چاہیئے.

بھارت میں صدیوں سے جو سکھایا گیا ہے اور گاندھی جی نے جسے بار بار دوہرایا ہے آتم سنیم کا یہ پاٹھ ابھی ہم میں سے بہتیرے لوگوں کو سیکھنا باقی ہے' جو طرح طرح کے مال اسباب، دھن دولت وغیرہ پریگرہ سے اپنے کو گھرا رکھنا چاہتے ہیں اور ضرورتیں بڑھانے میں وشواس رکھتے ہیں. پریگرہ کا یہ کبھی نہ شانت ہونے والا لوبھ اور سویچھا چار سنگھرش اور ہنسا کو جنم دینے کے سوا اور کچھ کر ہی نہیں سکتے. اِس لیئے شانتی اور اہنسا کے پریمی کے لیئے گاندھی جی نے اپنے بزرگوں کی پرمپرا کے انوسار اونچے سے اونچے فرض کے روپ میں سنکشیپ میں یہ بتا دیا ہے کہ جیون کے ہر میدان میں—کھان پان، وشے بھوگ وغیرہ ہر بات میں—برہمچریہ یا کٹھور آتم سنیم کا پالن کیا جائے.

2—راجکاجی جیون میں

لڑائی جھگڑے اور یدھ کا ایک کارن ہے لوگوں کے ایک دل کے ذریعے دوسرے دل کو دبانا. جیسا کہ آپ سب جانتے ہیں' اِس سمبندھ میں ہمیں گاندھی جی کی جو بڑی

भारत में शान्ति के लिये आन्दोलन

(डाक्टर भारतन कुमारप्पा)

[इस साल अप्रैल महीने में दुनिया भर के पैसिफ़िस्ट जापान में जमा हुए थे. डाक्टर कुमारप्पा भारत के नुमाइन्दे के रूप में वहां गए थे. उनके भाशन को हम 'हरिजन' से नक़ल करके पाठकों के सामने पेश कर रहे हैं—एडीटर.]

❀ ❀ ❀

हम में से ज्यादातर लोगों को ऐसा लगता है कि शान्ति आन्दोलनों का हाल में ही जन्म हुआ है. लेकिन भारत में शान्ति और अहिंसा का आन्दोलन लगभग दो हज़ार बरस पहले शुरू हुआ था. हमारे देश के अच्छे से अच्छे ऋषि मुनियों, पैग़म्बरों और साधु संतों की पीढ़ियों ने उसके पीछे अपना गम्भीर विचार और शक्ति लगाई है. इसलिये दस मिनिट के समय में भारत के इस आन्दोलन के बारे में कुछ कहने की कोशिश करना बड़ा कठिन है. गांधी जी ने शान्ति के लिये भारत की इस खोज को और आगे बढ़ाया और उसका विकास किया. यहां मुझे शांति के लिये गांधी जी ने जो काम किया उसके कुछ बुनियादी उसूलों की चर्चा तक ही ज्यादातर सीमित रहना पड़ेगा.

गांधी जी के नेतृत्व में भारत में जो शान्ति आन्दोलन हुआ, वह सिर्फ़ युद्ध का विरोध करने और मार काट के भयंकर हथियारों की निन्दा करने से कहीं आगे बढ़ा हुआ था. लड़ाई से नफ़रत शान्ति की खोज में केवल पहला क़दम है. इस परिषद् में मैंने जो भाशन सुने हैं, उनसे मुझे यह लगता रहा है कि गांधी जी ने शांति के मक़सद को आगे बढ़ाने में जो भारी मदद पहुंचाई है, उसे हम में से बहुत से अभी तक भी शायद नहीं समझ पाये हैं.

गांधी जी जानते थे कि केवल युद्ध की निन्दा करने से ही युद्ध बन्द नहीं होंगे. हमें युद्ध के कारनों का जड़ से अंत करना चाहिये. यह कारन क्या हैं ?

1. व्यक्ति के जीवन में

(i) मानव भावना की कठोरता:—भगवान बुद्ध के समय से यानी 2500 बरस से भी ज्यादा अरसे से भारत में यही सिखाया गया है कि किसी को कष्ट न पहुंचाया जाये. लेकिन लोगों को रोज़ रोज़ के जीवन में अहिंसा का व्यवहार करने की आदत डाले बिना ऐसी शिक्षा अपने आप में बेकार साबित होगी. इसलिये भारत में शाकाहारवाद

بھارت میں شانتی کے لیئے آندولن

(ڈاکٹر بھارتن کمارپا)

[اس سال اپریل مہینے میں دنیا بھر کے پیسیفسٹ جاپان میں جمع ہوئے تھے . ڈاکٹر کمارپا بھارت کے نمائندہ کے روپ میں وہاں گئے تھے . اُن کے بھاشن کو ہم ' ہریجن ' سے نقل کر کے پاٹھکوں کے سامنے پیش کر رہے ہیں—ایڈیٹر .]

❀ ❀ ❀

ہم میں سے زیادہ تر لوگوں کو ایسا لگتا ہے کہ شانتی آندولنوں کا حال میں ہی جنم ہوا ہے . لیکن بھارت میں شانتی اور اہنسا کا آندولن لگ بھگ دو ہزار برس پہلے شروع ہوا تھا . ہمارے دیش کے اچھے سے اچھے رشی منیوں' پیغمبروں اور سادھوسنتوں کی پیڑھیوں نے اس کے پیچھے اپنا گمبھیر وچار اور شکتی لگائی ہے . اس لیئے دس منٹ کے سمے میں بھارت کے اس آندولن کے بارے میں کچھ کہنے کی کوشش کرنا بڑا کٹھن ہے . گاندھی جی نے شانتی کے لیئے بھارت کی اس کھوج کو اور آگے بڑھایا اور اُسکا وکاس کیا . یہاں مجھے شانتی کے لیئے گاندھی جی نے جو کام کیا اُسکے کچھ بنیادی اُصولوں کی چرچا تک ہی زیادہ تر سیمت رہنا پڑیگا .

گاندھی جی کے نیترتو میں بھارت میں جو شانتی آندولن ہوا' وہ صرف یدھ کا ورودھ کرنے اور مارکاٹ کے بھینکر ہتھیاروں کی نندا کرنے سے کہیں آگے بڑھا ہوا تھا . لڑائی سے نفرت شانتی کی کھوج میں کیول پہلا قدم ہے . اس پریشد میں میں نے جو بھاشن سنے ہیں' اُن سے مجھے یہ لگتا رہا ہے کہ گاندھی جی نے شانتی کے مقصد کو آگے بڑھانے میں جو بھاری مدد پہونچائی ہے' اُسے ہم میں سے بہت سے ابھی تک بھی شاید نہیں سمجھ پائے ہیں .

گاندھی جی جانتے تھے کہ کیول یدھ کی نندا کرنے سے ہی یدھ بند نہیں ہونگے . ہمیں یدھ کے کارنوں کا جڑ سے انت کرنا چاہیئے . یہ کارن کیا ہیں ؟

1—ویکتی کے جیون میں

(i) مانو بھاونا کی کٹھورتا :—بھگوان بدھ کے سمے سے یعنی 2500 برس سے بھی زیادہ عرصے سے بھارت میں یہی سکھایا گیا ہے کہ کسی کو کشٹ نہ پہونچایا جائے . لیکن لوگوں کو روز روز کے جیون میں اہنسا کا ویوہار کرنے کی عادت ڈالے بنا ایسی شکشا اپنے آپ میں بیکار ثابت ہوگی. اس لیئے بھارت میں شاکاہار واد

रैन सोहानी नील गगन पर तारों की दीवाली
कलियां चिटकें खुशबू फैले झूले डाली डाली
सोना उगले झूला झूले खेतों की हरयाली
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने बोल दे

❀

जंग हुई तो मच जाएगी घर घर हाहाकार
टूट टूट कर रह जाएंगे मन बीना के तार
शोर में खो कर रह जाएगी पायल की झंकार
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने बोल दे

❀

नगरी नगरी लूट मचेगी जब होगी बमबारी
गली गली आज़ाद फिरेगी, मौत, भूक, बेकारी
जल जाएंगे चाँद सितारे, खेत, चमन, फुलवारी
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने बोल दे

❀

हो जाएंगे आशाओं के शीशमहल वीरान
संगीनों की नोक पै तौले जाएंगे इन्सान
टूट गिरेंगे मन्दिर मस्जिद चुप होगा भगवान
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने बोल दे

❀

बोल, कि हम संसार में अब जंग न होने देंगे
सोग में सुन्दर लालों के ममता को न रोने देंगे
धरती के सीने में जंग के बीज न बोने देंगे
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने बोल दे

رین سہانی نیل گگن پر تاروں کی دیوالی
کلیاں چٹکیں خوشبو پھیلے جھولے ڈالی ڈالی
سونا اگلے جھولا جھولے کھیتوں کی ہریالی
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

❀

جنگ ہوئی تو مچ جائیگی گھر گھر ہاہاکار
ٹوٹ ٹوٹ کر رہ جائیں گے من بینا کے تار
شور میں کھو کر رہ جائے گی پایل کی جھنکار
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

❀

نگری نگری لوٹ مچے گی جب ہوگی بمباری
گلی گلی آزاد پھرے گی موت، بھوک، بیکاری
جل جائینگے چاند ستارے، کھیت، چمن، پھلواری
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

❀

ہو جائیں گے آشاؤں کے شیش محل ویران
سنگینوں کی نوک پر تولے جائیں گے انسان
ٹوٹ گریں گے مندر مسجد چپ ہوگا بھگوان
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

❀

بول، کہ ہم سنسار میں اب جنگ نہ ہونے دینگے
سوگ میں سندر لالوں کے ممتا کو نہ رونے دینگے
دھرتی کے سینے میں جنگ کے بیج نہ بونے دینگے
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 17 जुलाई सन '54 नम्बर 1

نمبر 1 جولائی سن '54 جلد 17

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات' آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی .

परचम खोल दे

(ज़ुबैर रिज़वी)

परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे
जंग न होने पाए, फ़िज़ा में नीला परचम खोल दे
पूरब की जानिब से बढ़ा है ख़ून का एक व्योपारी
जग में चारों ओर है उसके नाम से एक बेज़ारी
जाग ज़रा हुश्यार वगरना घाव पड़ेंगे कारी
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

❀

तेरे देस, तेरी धरती पर पैर न रखने पाए
बाग़ों, खेतों, खलयानों में आग न लगने पाए
शोलों की आग़ोश में तेरा नाज न जलने पाए
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

❀

तेरे देस, यों ही लहराएं रंग बिरंगे आँचल
गागर भर भर लाएं यूं ही यह काले काले बादल
बिन्दिया चमके नैन कटोरों में मुसकाए काजल
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

❀

پرچم کھول دے

(زبیر رضوی)

پرچم کھول دے
او مورکھ انسان' سمے پہچان' ترانے کھول دے
جنگ نہ ہونے پائے' فضا میں نیلا پرچم کھول دے
پورب کی جانب سے بڑھا ہے خون کا اِک بیوپاری
جگ میں چاروں اور ہے اسکے نام سے اک بیزاری
جاگ ذرا ہوشیار وگرنہ گھاؤ پڑیں گے کاری
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان' سمے پہچان' ترانے کھول دے

❀

تیرے دیس' تیری دھرتی پر پیر نہ رکھنے پائے
باغوں' کھیتوں' کھلیانوں میں آگ نہ لگنے پائے
شعلوں کی آغوش میں تیرا ناج نہ جلنے پائے
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان' سمے پہچان' ترانے کھول دے

❀

تیرے دیس' یونہی لہرائیں رنگ برنگے آنچل
گاگر بھر بھر لائیں یونہی یہ کالے کالے بادل
بندیا چمکے نین کٹوروں میں مسکائے کاجل
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان' سمے پہچان' ترانے کھول دے

❀

“नया हिन्द”

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

जुलाई 1954

क्या किस से — सफ़ा

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने.

मैनेजर
‘नया हिन्द’
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

“نیا ہند”

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

جولائی 1954

کیا کس سے — صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے

مینیجر
‘نیا ہند’
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

सुधार

जुलाई के अंक में सफहे एक से शुरू होते हैं. लेकिन ग़लती से इस बार सफहे का नम्बर नहीं बदला जा सका. पाठकों से निवेदन है कि 417 सफहे को सफह नम्बर एक समझा जाए. चार फरमे के बाद ग़लती सुधार ली गई है.

इस ग़लती के लिये हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं.

—मैनेजर

سدھار

جولائی کے انک میں صفحے ایک سے شروع ہوتے ہیں . لیکن غلطی سے اس بار صفحے کا نمبر نہیں بدلا جاسکا . پاٹھکوں سے نویدن ہے کہ 417 صفحہ کو صفحہ نمبر ایک سمجھا جائے . چار فرمے کے بعد غلطی سدھار لی گئی ہے .

اس غلطی کے لیئے ہم پاٹھکوں سے چھما چاہتے ہیں .

—مینیجر

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

जुलाई 1954

क्या किस से — सफ़ा

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

جولائی 1954

کیا کس سے — صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

नया हिंद
نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند' بھگوان دین' سید محمود' بشمبھر ناتھ' سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی' مجیب رضوی

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

जुलाई 1954 جولائی